PAIA-SADDA-MAHANNAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY
with Sanskrit equivalents, quotations
AND
complete references.

Vol. I.

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH, Nyaya-Vyakaran-tirtha,
Lecturer in Prakrit, Calcutta University.



CALCUTTA.

——: 0 ——

FIRST EDITION.

——: 0 :——



संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गए हैं वह।
भत्त	= भत्तपरिण्णा	१ जैन धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	...	गाथा
		२ शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२	...	„
भवि	= भविसयत्तकहा	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, १९१८	...	
भाव	= भावकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	गाथा
भास	= भाषारहस्य	शेठ मनसुखभाई भगुभाई, अमदावाद,	...	„
मध्य	= मध्यमव्यायोग	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज़	...	पृष्ठ
महा	= आउस्गेवाल्ते-एर्त्सेलुंगेन् इन् महाराष्ट्री	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपज़िग, १८८६	...	
महानि	= महानिशीथसूत्र	हस्तलिखित	...	अध्ययन
मा	= मालविकाग्निमित्र	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	...	पृष्ठ
माल	= मालतीमाधव	„ „	...	„
मुणि	= मुनिसुव्रतस्वामिचरित	हस्तलिखित	...	गाथा
मुद्रा	= मुद्राराक्षस	बम्बई-संस्कृत-सिरिज़, १९१७	...	पृष्ठ
मृच्छ	= मृच्छकटिक	१ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१६	...	„
		२ बम्बई-संस्कृत-सिरिज़, १८९६	...	„
मै	= मैथिलीकल्याण	माणिकचंद्र-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थमाला, बम्बई, १९७३	...	„
रंभा	= रंभामंजरी	निर्णय-सागर प्रेस, बम्बई, १८८९	...	
रयण	= रयणसेहरनिवकहा	स्व-संपादित, बनारस, १९१८	...	पृष्ठ
राज	= अभिधानराजेन्द्र	जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम.	...	
राय	= रायपसेणीसुत्त	हस्तलिखित	...	
लहु	= लघुसंग्रहणी	भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९०८	...	गाथा
लहुअ	= लहु-अजिअसंति-स्तव	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	„
वज्जा	= वज्जालग्ग	एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता	...	पृष्ठ
वव	= व्यवहारसूत्र, सभाष्य	हस्तलिखित	...	उद्देश
वसु	= वसुदेवहिंडि	„	...	
वा	= वाग्भटकाव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	...	पृष्ठ
वाग्भ	= वाग्भटालंकार	„ १९१६	...	„
विक	= विक्रमोर्वशीय	„ १९१४	...	„
विक्र	= विक्रान्तकौरव	माणिकचंद्र-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थ-माला, संवत् १९७१	...	„
विपा	= विपाकश्रुत	स्वसंपादित कलकत्ता, संवत् १९७६	...	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
विवे	= विवेकमञ्जरी	स्वसंपादित बनारस, संवत् १९७५-७६	...	गाथा
विसे	= विशेषावश्यकभाष्य	स्वसंपादित, बनारस, वीर-संवत् २४४१	...	„
वृष	= वृषभानुजा	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८९५ ...	...	पृष्ठ
वेणी	= वेणीसंहार	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५ ...	...	„
वै	= वैराग्यशतक	[illegible] जीवाभाई पटेल, अहमदाबाद, १९२०	...	गाथा
श्रा	= श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९	...	मूल-गाथा

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गए हैं वह।
पंच	= पंचसंग्रह	१ हस्तलिखित	...	द्वार, गाथा
		२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९१९	...	
पंचभा	= पंचकल्पभाष्य	हस्तलिखित ...	...	
पंचव	= पंचवस्तुक	,, ...	...	द्वार
पंचा	= पंचासकप्रकरण	जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	...	पंचासक
पंचू	= पंचकल्पचूर्णि	हस्तलिखित ...	...	
पंनि	= पंचनिर्ग्रन्थीप्रकरण	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १९७४	...	गाथा
पंरा	= पंचरात्र	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	...	पृष्ठ
पंसु	= पंचसुत्र	हस्तलिखित ...	...	सूत्र
पक्खि	= पक्खिसूत्र	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	
पच्च	= महापच्चक्खाणपयन्नो	शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२	...	गाथा
पडि	= पंचप्रतिक्रमणसूत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक मंडल, बम्बई, १९११	...	
		२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, १९२१	...	
पण्ण	= पण्णवणासुत्त	राय धनपतिसिंह बाहादुर, बनारस, संवत् १९४०	...	पद
पण्ह	= प्रश्नव्याकरणसूत्र	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९	...	श्रुतस्कन्ध, द्वार
पभा	= पच्चक्खाण भाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	गाथा
पव	= प्रवचनसारोद्धार	,, संवत् १९३४	...	द्वार
पत्नं	= प्रज्ञापनोपाङ्ग-तृतीयपदसंग्रहणी	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १९७४	...	गाथा
पाअ	= पाइअलच्छीनाममाला	* बी. बी. एण्ड कंपनी, भावनगर, संवत् १९७३	...	
पि	= ग्रामेटिक् देर् प्राकृत स्प्राखन्	डॉ. आर्. पिशेल्-कृत, १९००	...	पैरा
पिंग	= प्राकृतपिंगल	* एसियाटिक् सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०२	...	
पिंड	= पिंडनिर्युक्ति	हस्तलिखित	...	गाथा
पुप्फ	= पुष्पमालाप्रकरण	जैन-श्रेयस्कर-मंडल, म्हेसाणा, १९११	...	,,
प्रति	= प्रतिमानाटक	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	...	पृष्ठ
प्रबो	= प्रबोधचन्द्रोदय	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १९१०	...	,,
प्रयौ	= प्रतिमायौगन्धरायण	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	...	,,
प्राप	= इन्ट्रडक्शन् टु दि प्राकृत	* पंजाब युनिवर्सिटि, लाहोर, १९१७	...	
प्राप्र	= प्राकृतप्रकाश	* डॉ. कॉवेल्-संपादित, लंडन, १८६८	...	
प्रामा	= प्राकृतमार्गोपदेशिका	* शाह हर्षचन्द्र भूराभाई, बनारस, १९११	...	
प्रारू	= प्राकृतशब्दरूपावली	* शेठ मनसुखभाई भगुभाई, अमदावाद, संवत् १९६८	...	
प्रासू	= प्राकृतसूक्तरत्नमाला	जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१९	...	गाथा
बाल	= बालचरित	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज् ...	...	पृष्ठ
बृह	= बृहत्कल्पभाष्य (१)	हस्तलिखित ...	...	उद्देश
भग	= भगवतीसूत्र	* १ जिनागमप्रकाश सभा, बम्बई, संवत् १९७४	...	
		२ आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८--१९१९--१९२१...		शतक, उद्देश

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।	जिसके अंक दिये गये हैं।
प्रत्रि	= प्रव्रज्याविधानकुलक	†हस्तलिखित	गाथा
प्राकृ	= प्राकृतसर्वस्व (मार्कण्डेयकृत)	विझागापटम्	पृष्ठ
भवि	= भविसयत्तकहा	*१ गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, १९२३ ...	
मंगल	= मंगलकुलक	†हस्तलिखित ...	गाथा
मन	= मनोनिग्रहभावना	" ...	"
मोह	= मोहराजपराजय	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं. ९. १९१८	पृष्ठ
यति	= यतिशिक्षापंचाशिका	†हस्तलिखित ...	गाथा
रत्न	= रत्नत्रयकुलक	" ...	"
रुक्मि	= रुक्मिणीहरण (ईहामृग)	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं० ८. १९१८	पृष्ठ
वि	= विषयत्यागोपदेशकुलक	†हस्तलिखित ...	गाथा
विचार	= विचारसारप्रकरण	आगमोदय समिति, बम्बई. १९२३ ...	"
श्रावक	= श्रावकप्रज्ञप्ति	श्रीयुत केशवलाल प्रेमचंद संपादित. १९०५ ...	गाथा
श्रु	= श्रुतास्वाद	†हस्तलिखित ...	"
संबोध	= संबोधप्रकरण	जैन-ग्रन्थ-प्रकाशक सभा, अहमदाबाद, १९१६ ...	पत्र
संवे	= संवेगचूलिकाकुलक	†हस्तलिखित ...	गाथा
संवेग	= संवेगमंजरी	" ...	"
सट्ठि	= सट्ठिसयपयरण सटीक	सत्यविजय जैन ग्रन्थमाला, नं० ६, अहमदाबाद. १९२५	"
समु	= समुद्रमथन (समवकार)	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं० ८. १९१८	पृष्ठ
सम्मत्त	= सम्यक्त्वसप्तति सटीक	दे० ला०पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई. १९१६ ...	पत्र
सम्यक्त्वो	= सम्यक्त्वोत्पादविधिकुलक	†हस्तलिखित ...	गाथा
सा	= सामान्यगुणोपदेशकुलक	" ...	"
सिक्खा	= शिक्षाशतक	" ...	"
सिरि	= सिरिसिरिवालकहा	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई १९२३. ...	"
सुख	= सुखबोधा टीका (उत्तराध्ययनस्य)	‡हस्तलिखित ...	अध्ययन, गाथा
सूअनि	= सूत्रकृतांगनिर्युक्ति	१ आगमोदय समिति, बम्बई. संवत १९७३ ...	गाथा
		२ भीमसिंह माणक, बम्बई. संवत १९३६ ...	"
हम्मीर	= हम्मीरमदमर्दन	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरिज़, नं १०. १९२०	पृष्ठ
हास्य	= हास्यचूडामणि (प्रहसन)	" ...	"
हि	= हितोपदेशकुलक	†हस्तलिखित ...	गाथा
हित	= हितोपदेशसारकुलक		

पाइअ-सद्द-महण्णवो ।

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

णासिअ-दोस-समूहं, भासिअणेगंतवाय-ललिअत्थं ।
पासिअ-लोआलोअं, वंदामि जिणं महावीरं ॥ १ ॥

निक्कित्तिम-साउ-पयं, अइसइअं सयल-वाणि-परिणमिरं ।
वायं अवाय-रहिअं, पणमामि जिणिंद-देवाणं ॥ २ ॥

पाइअ-भासामइअं, अवलोइअ सत्थ-सत्थमइविउलं ।
सद्द-महण्णव-णामं, रएमि कोसं स-वण्ण-कमं ॥ ३ ॥

अ

अ पुं [**अ**] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम अक्षर (हे १, १; प्रामा)। २ विष्णु, कृष्ण; (से १, १)।

अ देखो **च** अ; (श्रा १४, जी २; पउम ११३, १४; कुमा)।

अ° अ [**अ°**] निम्न-लिखित अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक को बतलानेवाला अव्यय;—१ निषेध, प्रतिषेध; जैसे—'अंदसण' (सुर ७,२४८) "सव्वनिसेहे मओऽकारो" (विसे १२३२)। २ विरोध, उल्टापन; जैसे—'अधम्म' (णाया १,१८)। ३ अयोग्यता, अनुचितपन; जैसे—'अयाल' (पउम २२, ८५)। ४ अल्पता, थोड़ापन, जैसे—'अधण' (गउड); 'अचेल' (सम ४०)। ५ अभाव, अविद्यमानता; जैसे—'अगुण' (गउड)। ६ भेद, भिन्नता; यथा—'अमणुस्स' (णंदि)। ७ सादृश्य, तुल्यता; जैसे—'अचक्खुदंसण' (सम १५)। ८ अप्रशस्तता, बुरापन; जैसे—'अभाइ' (चारु २६)। ९ लघुपन, छोटाई; जैसे—'अतड' (बृह १)।

°अ पु [**क**] १ सूर्य, सूरज, (से ७,४३)। २ अग्नि, आग; ३ मयूर, मोर; (से ९,४३)। ४ न. पानी, जल; (से १, १)। ५ शिखर, ढोंच; (से ९,४३)। ६ मस्तक, सिर; (से ९,१८)।

°अ वि [**°ज**] उत्पन्न, जात; (गा ९७१)।

अअंख वि [**दे**] स्नेह-रहित, सूखा (दे १,१३)।

अअर देखो **अवर**; (पि १६५)।

अअर देखो **आयर**; (पि १६५)।

अइ अ [**अयि**] १-२ संभावना और आमंत्रण अर्थ का सूचक अव्यय; (हे २, २०५; स्वप्न ५८)।

अइ अ [**अति**] यह अव्यय नाम और धातु के पूर्व में लगता है और नीचे के अर्थों में से किसी एक को सूचित करता है;—१ अतिशय, अतिरेक; जैसे—'अइउण्ह' 'अइउत्ति' 'अइचिंतंत' (श्रा १४, रंभा, गा २१४)। २ उत्कर्ष, महत्त्व, जैसे—'अइवेग' (कप्प)। ३ पूजा, प्रशंसा; जैसे—'अइजाय' (ठा ४)। ४ अतिक्रमण, उल्लंघन, जैसे—'अइक्कंसो' (दस ५, ४, ४२)। ५ ऊपर, ऊंचा, जैसे—'अइमंच' 'अइपडागा' (औप, णाया १,१)। ६ निन्दा, जैसे—'अइपंडिय' (बृह १)।

अइ सक [**आ+इ**] आगमन करना, आ गिरना। "अइंति नाराया" (स ३८३)।

अइइ स्त्री. [**अदिति**] पुनर्वसु नक्षत्र का अधिष्ठाता देव; (सुज्ज १०)।

अइइ सक [**अति+इ**] १ उल्लंघन करना। २ गमन करना। ३ प्रवेश करना। वकृ—**अईंत**; (से ६, २६, कप्प)। संकृ—**अइच्च**; (सूअ १,७,२८)।

अइंच सक [**अति+अञ्च्**] १ अभिषेक करना, स्थानापन्न करना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. दूर जाना (से १३, ८; ८६)।

अइंचिअ वि [**अत्यञ्चित**] १ अभिषिक्त, स्थानापन्न किया हुआ; (से १३,८)। २ उल्लंघित, अतिक्रान्त (से १३, ८)। ३ दूर गया हुआ; (से १३,८६)।

अइंछ देखो **अइंच**; (से १३,८)।

अइंछिअ देखो **अइंचिअ** (से १३,८)।

अइंछण न [**अत्यञ्चन**] १ उल्लंघन; (से १३, ३८)। २ आकर्षण, खींचाव, (से ८, ६४)।

अईंत देखो **अइइ**=अति+इ।

अईंत वि [**अनायत्**] १ नहीं आता हुआ; २ जो जाना न जाता हो, "गमहाहिं पणइणीहिं य खिज्जइ चित्तं अइंतीहिं" (वज्जा ४)।

अइंदिय वि [**अतीन्द्रिय**] इंद्रियों से जिसका ज्ञान न हो सके वह; (विसे; २८१८)।

अइकाय पुं [**अतिकाय**] १ महोरग--जातीय देवों का एक इन्द्र; (ठा २)। २ रावण का एक पुत्र; (से १६, ५६)। ३ वि. बडा शरीर वाला; (णाया १,६)।

अइक्कंत वि [**अतिक्रान्त**] १ अतीत, गुजरा हुआ "अइक्कंतजोव्वणा" (ठा ५)। २ तीर्ण, पार पहुंचा हुआ; (आव)। ३ जिसने त्याग किया हो वह "सव्व-सिणेहाइक्कंता" (औप)।

अइक्कम सक [**अति+क्रम्**] १ उल्लंघन करना। २ व्रत-नियम का आंशिक रूप से खण्डन करना। अइक्कमइ; (भग)। वकृ—**अइक्कमंत, अइक्कममाण**; (सुपा २३८; भग)। कृ—**अइक्कमणिज्ज**; (सूअ २,७)।

अइक्कम पुं [**अतिक्रम**] १ उल्लंघन; (गा ३४८)। २ व्रत या नियम का आंशिक खण्डन, (ठा ३,४)।

अइक्कमण न [**अतिक्रमण**] ऊपर देखो; (सुपा २३८)।

अइगच्छ } अक [**अति+गम्**] १ गुजरना, बीतना।
अइगम } २ सक. पहुंचना। ३ प्रवेश करना। ४ उल्लंघन करना। ५ जाना, गमन करना। वकृ—**अइगच्छमाण**; (णाया १, १)। संकृ-**अइयच्च**; (आचा); "**अइगंतूण** अलोगं" (विसे ६०४)।

अइगम पुं [**अतिगम**] प्रवेश; (विसे ३८६)।

अइगमण न [**अतिगमन**] १ प्रवेश-मार्ग; (णाया १, २)। २ उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा में जाना; (भग)।

अइगय वि (**दे**) १ आया हुआ; २ जिसने प्रवेश किया हो वह; (दे १,५७) "ससुरकुलम्मि अइगओ, दिट्ठा य सगउरवं तत्थ" (उप ५६७ टी)। ३ न. मार्ग का पाछला भाग; (दे १,५७)।

अइगय वि [**अतिगत**] अतिक्रान्त, गुजरा हुआ "हिंडं-तस्स अइगयं वरिसमेगं" (महा; से १०, १८; विसे ७ टी)।

अइचिरं अ [**अतिचिरम्**] बहुत काल तक; (गा ३४६)।

अइच्च देखो **अइइ**=अति+इ।

अइच्छ सक [**गम्**] जाना, गमन करना। अइच्छइ; (हे ४,१६२)।

अइच्छ सक [**अति+क्रम्**] उल्लंघन करना। अइच्छइ; (आघ ५१८)। वकृ—**अइच्छंत**; (उत्त १८)।

अइच्छा स्त्री [**अदित्सा**] १ देने की अनिच्छा; २ प्रत्याख्यान विशेष; (विसे ३५०४)।

अइच्छिय वि [**गत**] गया हुआ, गुजरा हुआ, (पउम ३, १२२; उप पृ १३३)।

अइच्छिय वि [**अतिक्रान्त**] अतिक्रान्त, उल्लंघित; (पाअ; विसे ३५८२)।

अइजाय पुं [**अतिजात**] पिता से अधिक संपत्ति को प्राप्त करनेवाला पुत्र; (ठा ४)।

अइट्ठ वि [**अदृष्ट**] १ जो देखा गया न हो वह। २ न. कर्म, दैव, भाग्य; (भवि)। °**उव्व**, °**पुव्व** वि [°**पूर्व**] जो पहले कभी न देखा गया हो वह; (गा ४१४;७४८)।

अइट्ठ वि [**अनिष्ट**] १ अप्रिय; २ खराब, दुष्ट "जो पुणु खलु खुद्दु अइट्ठसंगु, तो किमब्भत्थिउ देइ अंगु" (भवि)।

अइट्ठा सक [**अति+स्था**] उल्लंघन करना। संकृ-**अइट्ठिय**; (उत्त ७)।

अइट्ठिय वि [**अतिष्ठित**] अतिक्रान्त, उल्लंघित; (उत्त ७)।

अइण न [**दे**] गिरि-तट, तराई, पहाड का निम्न भाग; (दे १, १०)।

अइण न [**अजिन**] चर्म, चमडा, (पाअ)।

अइणिय वि [दे. अतिनीत] आनीत, लाया हुआ; (दे १,२४)।

अइणिय } वि [अतिनीत] १ फेंका हुआ; (से ६, ५६)।
अइणीय } २ जो दूर ले जाया गया हो; (प्राप)।

अइणीय वि [दे. अतिनीत] आनीत, लाया हुआ; (महा)।

अइणु वि [अतिनु] जिसने नौका का उल्लंघन किया हो वह, जहाज से ऊतरा हुआ; (षड्)।

अइतह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा; (उप १०३१ टी)।

अइदंपज्ज न [ऐदंपर्य] तात्पर्य, रहस्य, भावार्थ; (उप ८६४; ८७६)।

अइदुसमा }
अइदुस्समा } स्त्री [अतिदुष्षमा] देखो **दुस्समदुस्समा**; (पउम २०, ८३; ६०; उप पृ १४७)।
अइदूसमा }

अइदंपज्ज देखो **अइदंपज्ज**; (पंचा १४)।

अइधाडिय वि [अतिध्राटित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ, (पण्ह १,३)।

अइनिट्ठुहावण वि [अतिविष्टम्भन] स्तब्ध करने वाला, रोकने वाला; (कुमा)।

अइन्न न [अजीर्ण] १ बदहजमी, अपच। २ वि. जो हजम हुआ न हो वह। ३ जो पुराणा न हुआ हो, नूतन; (उव)।

अइन्न वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ। °**याण** न [°दान] चोरी; (आचा)।

अइपंडुकंबलसिला स्त्री [अतिपाण्डुकम्बलशिला] मेरु पर्वत पर स्थित दक्षिण दिशा की एक शिला; (ठा ४)।

अइपडाग पुं [अतिपताक] १ मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८)। २ स्त्री. पताका के ऊपर की पताका; (णाया १, १)।

अइपरिणाम वि [अतिपरिणाम] आवश्यकता न रहने पर भी अपवाद-मार्ग का ही आश्रय लेनेवाला, शास्त्रोक्त अपवादों की मर्यादा का उल्लंघन करनेवाला;
"जो दव्वखेत्तकालभावकयं जं जहिं जया काले।
तल्लेसुस्सुत्तमई, अइपरिणामं वियाणाहि" (बृह १)।

अइपास पुं [अतिपार्श्व] भगवान् अरनाथ के समकालिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर-देव; (तित्थ)।

अइप्पगे अ [अतिप्रगे] पूर्व-प्रभात, बडी सवेर; (सुर ७, ७८)।

अइप्पसंग पुं [आत्मप्रसङ्ग] १ आत-परिचय; (पञ्चा १०)। २ तर्क-शास्त्र में प्रसिद्ध अतिव्याप्ति-नामक दोष; (स १६६; उवर ४८)

अइप्पहाय न [अतिप्रभात] बड़ी सवेर; (गा ६८)।

अइबल वि [अतिबल] १ बलिष्ठ, शक्ति-शाली; (औप)। २ न. अतिशय बल, विशेष सामर्थ्य; ३ बड़ा सैन्य; (हे ४, ३५४)। ४ पुं. एक राजा, जो भगवान् ऋषभ-देव के पूर्वीय चतुर्थ भव में पिता या पितामह था; (आचू)। ५ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र, (ठा ८)। ६ भरत क्षेत्र में आगामी चौवीसी में होनेवाला पांचवाँ वासुदेव; (सम ५)। ७ रावण का एक योद्धा; (पउम ५६, २७)।

अइभद्दा स्त्री [अतिभद्रा] भगवान् महावीर के प्रभास-नामक ग्यारहवें गणधर की माता; (आचू)।

अइभूइ पुं [अतिभूति] एक जैन मुनि, जो पंचम वासुदेव के पूर्व-जन्म में गुरू थे; (पउम २०, १७६)।

अइभूमि स्त्री [अतिभूमि] १ परम प्रकर्ष; २ बहुत जमीन; (स ३, ४२)। ३ गृहस्थों के घर का वह भाग, जहां साधुओं का प्रवेश करने की अनुज्ञा न हो; "अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी" (दस ५, १, २४)।

अइमट्टिया स्त्री [अतिमृत्तिका] कीचवाली मट्टी; (जीव ३)।

अइमत्त } वि [अतिमात्र] बहुत, परिमाणसे अधिक;
अइमाय } (उव ठा ६)।

अइमुंक }
अइमुंत }
अइमुंतय } पुं [अतिमुक्त, °क] १ स्वनाम-ख्यात एक अन्तकृद् (उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला) जैन मुनि, जो पोलासपुर के राजा विजय का पुत्र था और जिसने बहुत छोटी ही उम्र में भगवान महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अन्त)। २ कंस का एक छोटा भाई; (आव)। ३ वृक्ष-विशेष; (पउम ४२, ८)। ४ माधवी लता; (पाअ; स ३५)। ५ न. अन्तगडदसा-नामक अंग-ग्रन्थ का एक अध्ययन; (अन्त)। (हे १, २६; १७८, पि २४६)।
अइमुत्त }
अइमुत्तय }

अइय वि [अतिग] अतिक्रान्त "अन्नो अइअम्मि तुमे, णवरं जइ सा न जूरिहिइ" (हे २, २०४)। २ करने वाला; "ठाणाइय" (औप)।

°**अइय** वि [दयित] १ प्रिय, प्रीतिपात्र; २ दया-पात्र, दया करने योग्य; (से ६, ३१)।

अइयच्च देखो **अइगच्छ**।

अइयण न [**अत्यदन**] बहुत खाना, अधिक भोजन करना; (वव २)।

अइयय वि [**अतिगत**] गया हुआ; (स ३०३)।

अइयर सक [**अति+चर्**] १ उल्लंघन करना; २ व्रत को दूषित करना। वकृ— **अइयरंत**; (सुपा ३५४)।

अइया सक [**अति+या**] जाना, गुजरना; (उत्त २०)।

अइया स्त्री [**अजिका**] बकरी, छागी; (उप २३७)।

°**अइया** स्त्री [**दयिता**] स्त्री, पत्नी; (से ९, ३१)।

अइयाण न [**अतियान**] १ गमन, गुजरना; २ राजा वगैरः का नगर आदि में धूमधाम से प्रवेश करना; (ठा ४)।

अइयाय वि [**अतियात**] गया हुआ, गुजरा हुआ (उत्त २०)।

अइयार पुं [**अतिचार**] उल्लंघन, अतिक्रमण; (भवि)। २ गृहीत व्रत या नियम में दूषण लगाना; (श्रा ६)।

अइर अ [**अचिर**] जल्दी, शीघ्र; (स्वप्न ३७)।

अइर न [**अजिर**] आंगन, चौक; (पाअ)।

अइर पुं [**दे**] आयुक्त, गांवका राज-नियुक्त मुखिया; (दे १, १६)।

अइर न [**दे. अतर**] देखो **अयर**=अतर; (सुपा ३०)।

अइरजुवइ स्त्री (दे) नई वहू, दुलहिन; (दे १, ४८)।

अइरत्त पुं [**अतिरात्र**] अधिक तिथि, ज्योतिष की गिनती से जो दिन अधिक होता है वह; (ठा ६)।

अइरत्त वि [**अतिरक्त**] १ गाढा लाल; २ विशेष रागी। °**कंबलसिला**, °**कंबला** स्त्री [°**कम्बलशिला, कम्बला**] मेरु पर्वत के पांडुक वन में स्थित एक शिला, जिस पर जिनदेवों का जन्माभिषेक किया जाता है; (ठा २, ३)।

अइरा अ [**अचिरात्**] शीघ्र, जल्दी (से ३, १५)।

अइरा } **अइराणी** } स्त्री [**अचिरा**] पांचवें चक्रवर्ती और सोलहवें तीर्थंकर-देव की माता; (सम १५२; पउम २०, ४२)।

अइराणी स्त्री [**दे**] १ इन्द्राणी; २ सौभाग्य के लिए इन्द्राणी-व्रत करनेवाली स्त्री; (दे १, ५८)।

अइरावण पुं [**ऐरावण**] इन्द्र का हाथी; (पाअ)।

अइरावय पुं [**ऐरावत**] इन्द्र का हाथी; (भवि)।

अइराहा स्त्री [**अचिराभा**] बिजली, चपला; (दे१,३४टी)।

अइरि न [**अतिरि**] धन या सुवर्ण का अतिक्रमण करने वाला, धनाढ्य; (षड्)।

अइरिंप पुं [**दे**] कथाबन्ध, बातचीत, कहानी; (दे १,२६)।

अइरित्त वि [**अतिरिक्त**] १ बचा हुआ, अवशिष्ट; (पउम ११८, ११६)। २ अधिक, ज्यादः; (ठा २, १) "पवड्ढमाणाइरित्तगुणनिलओ" (सार्ध ६३)। °**सिज्जासणिय** वि [**शय्यासनिक**] लम्बी चौड़ी शय्या और आसन रखनेवाला (साधु); (आचू)।

अइरूव वि [**अतिरूप**] १ सुरूप, सुडौल; (पउम २०, ११३)। २ पुं. भूत-जातीय देव-विशेष; (पगण १)।

अइरेग पुं [**अतिरेक**] १ आधिक्य, अधिकता; "साइरेग-अट्ठवासजाययं" (णाया १, ५)। २ अतिशय; (जीव ३)।

अइरेण } **अइरेणं** } अ [**अचिरेण**] जल्दी, शीघ्र; (गा १३५; पउम ६२, ४; उवर ४३)।

अइरेय देखो **अइरेग**; (णाया १, १)।

अइव अ [**अतीव**] अतिशय, अत्यन्त;

"रित्तं अइव महंतं, चिट्ठइ मज्झम्मि तस्स भवणस्स।
ता तं सव्वं सुपुरिस ! अप्पायत्तं करेज्जासु॥" (महा)।

अइवट्टण न [**अतिवर्त्तन**] उल्लंघन, अतिक्रमण; (आचा)।

अइवत्त सक [**अति+वृत्**] अतिक्रमण करना। अइवत्तइ; (आचा)।

अइवत्तिय वि [**अतिव्रतिक**] १ जिसका उल्लंघन किया गया हो वह; २ प्रधान, मुख्य; ३ उल्लंघन करने वाला; (आचा)।

अइवय सक [**अति+व्रज्**] १ उल्लंघन करना। २ संमुख जाना। ३ प्रवेश करना। अइवयंति; (पगह १, ५)। वकृ—"नियगवयणं **अइवयंतं** गयं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा" (णाया १, १; कप्प)।

अइवय सक [**अति+पत्**] १ उल्लंघन करना। २ संबन्ध करना। ३ प्रवेश करना। ४ अक. मरना। ५ गिरजाना। "अवरे रण-सीस-लद्ध-लक्खा संगामम्मि अइवयंति; (पगह १,३) "लोभघत्था संसारं अइवयंति (पगह १,५)। वकृ—"जरं वा सरीररूव-विणासिणिं सरीरं वा **अइवयमाणिं** निवारेसि" (णाया १, ५); **अइवयंत**; (कप्प)। प्रयो—**अइवाएमाण**; (आचा; ठा ७)।

अइवाइ वि [**अतिपातिन्**] १ हिंसक; (सूअ १, ५)। विनश्वर; (विसे १५७८)।

अइवाइत्तु वि [**अतिपातयितृ**] मारनेवाला (ठा ३, २)।

अइवाइय वि [**अतिपातिक**] ऊपर देखो; (सूअ २,१)।

अइवाएत्तु देखो **अइवाइत्तु** ; (ठा ७) ।
अइवाएमाण देखो **अइवय=अति+पत्** ।
अइवाय पुं [**अतिपात**] १ हिंसा आदि दोष ; (ओघ ४६) । २ विनाश; "पाणाइवाएणं" (णाया १,५) ।
अइवाय पुं [**अतिवात**] १ उल्लंघन; २ भयंकर पवन, तूफान; (उप ७६८ टी) ।
अइविरिय वि [**अतिवीर्य**] १ बलिष्ठ, महा-पराक्रमी; २ पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ५) । ३ नन्दावर्त नगर का एक राजा ; (पउम ३७, ३) ।
अइविसाल वि [**अतिविशाल**] १ बहुत बड़ा, विस्तीर्ण । २ स्त्री. यमप्रभ-नामक पर्वत के दक्षिण तरफ की एक नगरी ; (दीव) ।
अइस [**अप**] वि [**ईदृश**] ऐसा, इस तरह का ; (हे ४, ४०३) ।
अइसइ वि [**अतिशयिन्**] अतिशयवाला, विशिष्ट, आश्चर्य-कारक ; (सुपा २५७) ।
अइसइअ वि [**अतिशयित**) ऊपर देखो ; (पाअ) ।
अइसंधाण (**अतिसंधान**] ठगाई, वंचना; "भियगाणइसंधाणं सासयवुड्ढी य जयणा य" (पंचा ७) ।
अइसक्कणा स्त्री [**अतिष्वष्कणा**] उत्तेजना, प्रेरणा, बढ़ावा, (निसी)
अइसय सक [**अति+शी**] मात करना । वकृ—"परबलमइसयंतो" (पउम ६०, १५) ।
अइसय पुं [**अतिशय**] १ श्रेष्ठता, उत्तमता; (कुमा १,५) । २ महिमा, प्रभाव ; "वयणाइसओ" (महा) । ३ बहुत, अत्यन्त ; (सुर, १२, ८१) । ४ चमत्कार; (उर १,३) । °**भरिय** वि [°**भृत**] पूर्ण, पूरा भरा हुआ; (पाअ) ।
अइसरिय न [**ऐश्वर्य**] वैभव, संपत्ति, गौरव; (हे१,१५१) ।
अइसाइ वि [**अतिशायिन्**] १ श्रेष्ठ; (धम्म ६ टी) २ दूसरे को मात करनेवाला। स्त्री—°**णी**; (सुपा ११४) ।
अइसार पुं [**अतिसार**] संग्रहणी-रोग, जठर की व्याधि-विशेष; (लहुअ १५) ।
अइसेस पुं [**अतिशेष**] १ महिमा, प्रभाव, आध्यात्मिक सामर्थ्य; (सम ५६) । २ बचा हुआ, अवशिष्ट; (ठा ४,२) । ३ अतिशय वाला; (विसे ५५२) ।
अइसेसि वि [**अतिशेषिन्**] १ प्रभावशाली, महिमान्वित; २ समृद्ध ; (राज) ।
अइसेसिय वि [**अतिशेषित**] ऊपर देखो; (ओघ ३०) ।
अइहर पुं [**अतिभर**] हद, अवधि, मर्यादा; "सत्तीय को अइहरो ?" (अच्चु २३) ।
अइहारा स्त्री [**दे**] बिजली, चपला; (दे १, ३४) ।
अइहि पुं (**अतिथि**) जिसकी आने की तिथि नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, भिक्षुक, साधु; (आचा) । °**संविभाग** पुं [°**संविभाग**] साधु को भोजन आदिका निर्दोष दान ; (धर्म ३) ।
अई सक [**गम्**] जाना, गमन करना । अईइ; (हे ४,१६२; कुमा;) अइंति; (गउड) ।
अईअ [**अतीत**] १ भूतकाल (पच्च ६०) । २ जो बीत चुका हो, गुजरा हुआ; "जे अ अईआ सिद्धा" (पडि) । ३ अतिक्रान्त; (सूअ १, १०; सार्ध ४; विसे ८०८) । ४ जो दूर गया हो ; (उत्त १५) ।
अईअ } **अईव** } अ [**अतीव**] बहुत, विशेष, अत्यन्त ; (भग २, १ ; पण्ह १, २) ।
अईसंत वि [**अ+दृश्यमान**] जो दिखता न हो; (से १, ३५) ।
अईसय देखो **अइसय** ; (पउम ३, १०५; ७५, २६) ।
अईसार पुं [**अतीसार**] १ संग्रहणी-रोग। २ इस नामका एक राजा; (ठा ५, ३) ।
अउअ न [**अयुत**] १ दस हजार की संख्या । २ 'अउअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४) ।
अउअंग न [**अयुताङ्ग**] 'अच्छणिउर' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४) ।
अउंठ वि [**अकुण्ठ**] निपुण, कार्य-दक्ष; (गउड) ।
अउज्झ वि [**अयोध्य**] १ युद्ध में जिसका सामना न किया जा सके वह; (सम १३७) । २ जिस पर रिपु-सैन्य आक्रमण न कर सके ऐसा किला, नगर आदि ; (ठा ४) ।
अउज्झा स्त्री [**अयोध्या**] नगरी-विशेष, इक्ष्वाकुवंश के राजाओं की राजधानी, विनीता, कोसला, साकेतपुर आदि नामोंसे विख्यात नगरी, जो आजकल भी अयोध्या नाम से ही प्रसिद्ध है ; (ठा २) ।
अउण वि [**एकोन**] जिसमें एक कम हो वह । यह शब्द वीस से लेकर तीस, चालीस आदि दहाई संख्या के पूर्व में लगता है और जिसका अर्थ उस संख्या से एक कम होता है । °**ट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] उनसाठ, ५६; (कप्प) । °**त्तरि** स्त्री [**सप्तति**] उनसत्तर, ६६; (कप्प) °**तीस** तीन

अइयच्छ देखो **अइगच्छ** ।
अइयण न [**अत्यदन**] बहुत खाना, अधिक भोजन करना ; (वव २) ।
अइयय वि [**अतिगत**] गया हुआ ; (स ३०३) ।
अइयर सक [**अति+चर्**] १ उल्लंघन करना ; २ व्रत को दूषित करना । वकृ— **अइयरंत** ; (सुपा ३५४) ।
अइया सक [**अति+या**] जाना, गुजरना ; (उत्त २०) ।
अइया स्त्री [**अजिका**] बकरी, छागी ; (उप २३७) ।
°**अइया** स्त्री [**दयिता**] स्त्री, पत्नी ; (से ६, ३१) ।
अइयाण न [**अतियान**] १ गमन, गुजरना ; २ राजा वगैरः का नगर आदि में धूमधाम से प्रवेश करना ; (ठा ४) ।
अइयाय वि [**अतियात**] गया हुआ, गुजरा हुआ (उत्त २०) ।
अइयार पुं [**अतिचार**] उल्लंघन, अतिक्रमण ; (भवि) । २ गृहीत व्रत या नियम में दूषण लगाना ; (श्रा ६) ।
अइर अ [**अचिर**] जल्दी, शीघ्र ; (स्वप्न ३७) ।
अइर न [**अजिर**] आंगन, चौक ; (पाअ) ।
अइर पुं [**दे**] आयुक्त, गांवका राज-नियुक्त मुखिया ; (दे १, १६) ।
अइर न [**दे. अतर**] देखो **अयर**=अतर ; (सुपा ३०) ।
अइरजुवइ स्त्री (दे) नई वहू, दुलहिन; (दे १, ४८) ।
अइरत्त पुं [**अतिरात्र**] अधिक तिथि, ज्योतिष की गिनती से जो दिन अधिक होता है वह; (ठा ६) ।
अइरत्त वि [**अतिरक्त**] १ गाढा लाल; २ विशेष रागी । °**कंबलसिला**, °**कंबला** स्त्री [°**कम्बलशिला, कम्बला**] मेरु पर्वत के पांडुक वन में स्थित एक शिला, जिस पर जिनदेवों का जन्माभिषेक किया जाता है ; (ठा २, ३) ।
अइरा अ [**अचिरात्**] शीघ्र, जल्दी (से ३, १५) ।
अइरा, **अइराणी** स्त्री [**अचिरा**] पांचवें चक्रवर्ती और सोलहवें तीर्थंकर-देव की माता ; (सम १५२; पउम २०, ४२) ।
अइराणी स्त्री [**दे**] १ इन्द्राणी; २ सौभाग्य के लिए इन्द्राणी-व्रत करनेवाली स्त्री; (दे १, ५८) ।
अइरावण पुं [**ऐरावण**] इन्द्र का हाथी; (पाअ) ।
अइरावय पुं [**ऐरावत**] इन्द्र का हाथी; (भवि) ।
अइराहा स्त्री [**अचिराभा**] बिजली, चपला; (दे१,३४टी) ।
अइरि न [**अतिरि**] धन या सुवर्ण का अतिक्रमण करने वाला, धनाढ्य; (षड्) ।
अइरिंप पुं [**दे**] कथाबन्ध, बातचीत, कहानी; (दे १,२६) ।
अइरित्त वि [**अतिरिक्त**] १ बचा हुआ, अवशिष्ट; (पउम ११८, ११६) । २ अधिक, ज्यादः; (ठा २, १) "पवड्ढमाणाइरित्तगुणनिलओ" (सार्ध ६३) । °**सिज्जासणिय** वि [**शय्यासनिक**] लम्बी चौड़ी शय्या और आसन रखनेवाला (साधु) ; (आचू) ।
अइरूव वि [**अतिरूप**] १ सुरूप, सुडौल ; (पउम २०, ११३) । २ पुं. भूत-जातीय देव-विशेष ; (पराण १) ।
अइरेग पुं [**अतिरेक**] १ आधिक्य, अधिकता ; "साइरेगअट्ठवासजाययं" (णाया १, ५) । २ अतिशय; (जीव ३) ।
अइरेण, **अइरेणं** अ [**अचिरेण**] जल्दी, शीघ्र ; (गा १३५; पउम ६२, ४ ; उवर ४३) ।
अइरेय देखो **अइरेग** ; (णाया १, १) ।
अइव अ [**अतीव**] अतिशय, अत्यन्त;
"रित्तं अइव महंतं, चिट्ठइ मज्झम्मि तस्स भवणस्स ।
ता तं सव्वं सुपुरिस ! अप्पायत्तं करेज्जासु ।।" (महा) ।
अइवट्टण न [**अतिवर्त्तन**] उल्लंघन, अतिक्रमण; (आचा) ।
अइवत्त सक [**अति+वृत्**] अतिक्रमण करना । **अइवत्तइ** ; (आचा) ।
अइवत्तिय वि [**अतिव्रतिक**] १ जिसका उल्लंघन किया गया हो वह ; २ प्रधान, मुख्य ; ३ उल्लंघन करने वाला; (आचा) ।
अइवय सक [**अति+व्रज्**] १ उल्लंघन करना । २ संमुख जाना । ३ प्रवेश करना । अइवयंति ; (पराह १ , ५) । वकृ—"नियगवयणं **अइवयंतं** गयं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा" (णाया १, १ ; कप्प) ।
अइवय सक [**अति+पत्**] १ उल्लंघन करना । २ संबन्ध करना । ३ प्रवेश करना । ४ अक. मरना । ५ गिरजाना । "अवरे रण-सीस-लद्ध-लक्खा संगामम्मि अइवयंति; (पराह १,३) "लोभघत्था संसारं अइवयंति (पराह १,५) । वकृ—"जरं वा सरीररूव-विणासिणिं सरीरं वा **अइवयमाणिं** निवारेसि" (णाया १, ५) ; **अइवयंत** ; (कप्प) । प्रयो—**अइवाएमाण** ; (आचा; ठा ७) ।
अइवाइ वि [**अतिपातिन्**] १ हिंसक ; (सूअ १, ५) । विनश्वर ; (विसे १५७८) ।
अइवाइत्तु वि [**अतिपातयि**[illegible]] मारनेवाला (ठा ३, २) ।
अइवाइय वि [**अतिपातिक**] ऊपर देखो ; (सूअ २,१) ।

अइवाएत्तु देखो **अइवाइत्तु** ; (ठा ७) ।

अइवाएमाण देखो **अइवय=अति+पत्** ।

अइवाय पुं [**अतिपात**] १ हिंसा आदि दोष ; (ओघ ४६) । २ विनाश; "पाणाइवाएणं" (णाया १,५) ।

अइवाय पुं [**अतिवात**] १ उल्लंघन; २ भयंकर पवन, तूफान; (उप ७६८ टी) ।

अइविरिय वि [**अतिवीर्य**] १ बलिष्ठ, महा-पराक्रमी; २ पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ५) । ३ नन्दावर्त नगर का एक राजा ; (पउम ३७, ३) ।

अइविसाल वि [**अतिविशाल**] १ बहुत बड़ा, विस्तीर्ण । २ स्त्री. यमप्रभ-नामक पर्वत के दक्षिण तरफ की एक नगरी ; (दीव) ।

अइस [**अप**] वि [**ईदृश**] ऐसा, इस तरह का ; (हे ४, ४०३) ।

अइसइ वि [**अतिशयिन्**] अतिशयवाला, विशिष्ट, आश्चर्य-कारक ; (सुपा २५७) ।

अइसइअ वि [**अतिशयित**) ऊपर देखो ; (पाअ) ।

अइसंधाण (**अतिसंधान**] ठगाई, वंचना; "भियगाणइ-संधाणं सासयवुड्ढी य जयणा य" (पंचा ७) ।

अइसक्कणा स्त्री [**अतिष्वष्कणा**] उत्तेजना, प्रेरणा, बढ़ावा, (निसी)

अइसय सक [**अति+शी**] मात करना । वकृ—"परबलम् **अइसयंतो**" (पउम ६०, १५) ।

अइसय पुं [**अतिशय**] १ श्रेष्ठता, उत्तमता; (कुमा १,५) । २ महिमा, प्रभाव ; "वयणाइसओ" (महा) । ३ बहुत, अत्यन्त ; (सुर, १२, ८१) । ४ चमत्कार; (उर १,३) । °**भरिय** वि [°**भृत**] पूर्ण, पूरा भरा हुआ; (पाअ) ।

अइसरिय न [**ऐश्वर्य**] वैभव, संपत्ति, गौरव; (हे१,१५१) ।

अइसाइ वि [**अतिशायिन्**] १ श्रेष्ठ; (धम्म ६ टी) २ दूसरे को मात करनेवाला। स्त्री—°**णी**; (सुपा ११४) ।

अइसार पुं [**अतिसार**] संग्रहणी-रोग, जठर की व्याधि-विशेष; (लहुअ १५) ।

अइसेस पुं [**अतिशेष**] १ महिमा, प्रभाव, आध्यात्मिक सामर्थ्य; (सम ५६) । २ बचा हुआ, अवशिष्ट; (ठा ४,२) । ३ अतिशय वाला; (विसे ५५२) ।

अइसेसि वि [**अतिशेषिन्**] १ प्रभावशाली, महिमा-न्वित; २ समृद्ध ; (राज) ।

अइसेसिय वि [**अतिशेषित**] ऊपर देखो; (ओघ ३०) ।

अइहर पुं [**अतिभर**] हद, अवधि, मर्यादा; "सतीय को अइहरो ?" (अच्चु २३) ।

अइहारा स्त्री [**दे**] विजली, चपला; (दे १, ३४) ।

अइहि पुं (**अतिथि**) जिसकी आने की तिथि नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, भिक्षुक, साधु; (आचा) । °**संविभाग** पुं [°**संविभाग**] साधु को भोजन आदिका निर्दोष दान ; (धर्म ३) ।

अई सक [**गम्**] जाना, गमन करना । अईइ; (हे ४,१६२; कुमा;) अइंति; (गउड) ।

अईअ [**अतीत**] १ भूतकाल (पच्च ६०) । २ जो बीत चुका हो, गुजरा हुआ; "जे अ अईआ सिद्धा" (पडि) । ३ अतिक्रान्त; (सूअ १, १०; सार्ध ४; विसे ८०८) । ४ जो दूर गया हो ; (उत्त १५) ।

अईअ } **अईव** } अ [**अतीव**] बहुत, विशेष, अत्यन्त ; (भग २, १ ; पण्ह १, २) ।

अईसंत वि [**अ+दृश्यमान**] जो दिखता न हो; (से १, ३५) ।

अईसय देखो **अइसय** ; (पउम ३, १०५; ७५, २६) ।

अईसार पुं [**अतीसार**] १ संग्रहणी-रोग। २ इस नामका एक राजा; (ठा ५, ३) ।

अउअ न [**अयुत**] १ दस हजार की संख्या । २ 'अउअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४) ।

अउअंग न [**अयुताङ्ग**] 'अच्छणिउर' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४) ।

अउंठ वि [**अकुण्ठ**] निपुण, कार्य-दक्ष; (गउड) ।

अउज्झ वि [**अयोध्य**] १ युद्ध में जिसका सामना न किया जा सके वह; (सम १३७) । २ जिस पर रिपु-सैन्य आक्रमण न कर सके ऐसा किल्ला, नगर आदि ; (ठा ४) ।

अउज्झा स्त्री [**अयोध्या**] नगरी-विशेष, इक्ष्वाकुवंश के राजाओं की राजधानी, विनीता, कोसला, साकेतपुर आदि नामोंसे विख्यात नगरी, जो आजकल भी अयोध्या नाम से ही प्रसिद्ध है ; (ठा २) ।

अउण वि [**एकोन**] जिसमें एक कम हो वह । यह शब्द वीस से लेकर तीस, चालीस आदि दहाई संख्या के पूर्व में लगता है और जिसका अर्थ उस संख्या से एक कम होता है । °**ट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] उनसाठ, ५६; (कप्प) । °**त्तरि** स्त्री [**सप्तति**] उनसत्तर, ६६; (कप्प) °**तीस** तीन

[°त्रिंशत्] उनतीस, २६; (गाया १, १३)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५६; (कप्प)। °पन्न, °वन्न स्त्रीन [पञ्चाशत्] उनपचास, ४६; (जी ३५; पउम १०२, ७०)। देखो **एगूण**।

अउणोणिउत्ति स्त्री [**अपुनर्निवृत्ति**] अन्तिम निवृत्ति, मोक्ष; (अच्चु १०)।

अउण्ण, **अउन्न** न [**अपुण्य**] १ पाप; (सुर ६, २५)। २ वि. अपवित्र। ३ पुण्य-रहित, पापी; (पउम २८, ११२; सुर २, ५१)।

अउम देखो **ओम**; (सुभा १४)।

अउल वि [**अतुल**] असाधारण, अद्वितीय; (उप ७२८ टी; पण्ह १, ४)।

अउलीन वि [**अकुलीन**] कुल-हीन, कुजाति, संकर; (गा २५३)।

अउव्व वि [**अपूर्व**] अनौखा, अद्वितीय; (गा ११६)।

अउस पुं [**दे**] उपासक, पूजारी; (प्रयौ ८२)।

अए अ [**अये**] आमन्त्रण-सूचक अव्यय; (कप्पू)।

अओ अ [**अतस्**] १ यहां से लेकर; (सुपा ४७८)। २ इसलिए, इस कारण से ; (उप ७३०)।

अओ° [**अयस्°**] लोह। °घण पुं [**घन**] लोहे का हथौड़ा "सीसंपि भिंदंति अओघणेहिं" (सूअ १, ५, २, १४)। °मय वि [°**मय**] लोहे की बनी हुई चीज; (सूअ २, २)। °मुह पुं [**मुख**] १-२ इस नाम का अन्तर्द्वीप और उसके निवासी; (ठा ५)। ३ वि. लोहे की माफिक मजबूत मुंह वाला "पक्खीहिं खज्जंति अओमुहेहिं" (सूअ १, ५, २, ४)। °मुही स्त्री [°**मुखी**] एक नगरी; (उप ७६४)।

अओज्झा देखो **अउज्झा**; (प्रति ११५)।

अंक पुं [**अङ्क**] १ उत्संग, कोला ; (स्वप्न २१६)। २ रत्न की एक जाति; (कप्प)। ३ नौ की एक संख्या "कासी विक्कमवच्छरम्मि य गए बाणंकमुन्नोडुवे" (सुर १६, २४६)। ४ संख्या-दर्शक चिन्ह, जैसे १, २, ३ः (पण्ण २)। ५ नाटक का एक अंश "सुरगणा मणुस्सभवणाडएसु निज्झाइआ अंका" (धण ४५)। ६ सफेद मणि की एक जाति ; (उत्त ३४)। ७ चिन्ह, निशान; (चंद २०)। ८ मनुष्य के बत्तीस प्रशस्त लक्षणो में से एक; (पण्ह १, ४)। ६ आसन-विशेष; (चंद ४)। °**कण्ड** पुंन. [**काण्ड**] रत्नप्रभा पृथ्वी के खर-काण्ड का एक हिस्सा, जो अंक रत्नों का है ; (ठा १०)। °अरेल्लुग, °करेल्लुअ पुं [°**करेल्लुक**] पानी में होनेवाली एक जातकी वनस्पति ; (आचा)। °ट्ठिइ स्त्री [°**स्थिति**] अंक रेखाओं की विचित्र स्थापना, ६४ कलाओं में एक कला ; (कप्प)। °धर पुं [**धर**] चन्द्रमा ; (जीव ३)। °धाई स्त्री [°**धात्री**] पांच प्रकार की धाई-माताओं में से एक, जिसका काम बालक को उत्संग में ले उसका जी बहलाना है; (णाया १, १)। °लिवि स्त्री [°**लिपि**] अठारह लिपिओं में की एक लिपि, वर्णमाला-विशेष; (सम ३५)। °वणिय पुं [°**वणिक्**] अंक-रत्नों का व्यापारी; (राय)। °वाली °ली स्त्री [°**पालि**, °**ली**,] आलिंगन; (काप्र १६४)। °हर देखो °धर; (जीव ३)

अंक [**दे अङ्क**] निकट, समीप, पास; (दे १, ५)।

अंकण न [**अङ्कन**] १ चिह्नित करना; (आव)। २ बैल आदि पशुओं को लोहे की गरम सलाई आदि से दागना; (पण्ह १, १)। ३ वि. अंकित करनेवाला, गिनती में लानेवाला "अंकणं जोइसस्स......सूरं" (कप्प)।

अंकणा स्त्री [**अङ्कना**] ऊपर देखो; (णाया १, १७)।

अंकार पुं [**दे**] सहायता, मदद; (दे १, ६)।

अंकावई स्त्री [**अङ्कावती**] १ महाविदेह क्षेत्र के रम्य-नामक विजय की राजधानी; (ठा २)। २ मेरु की पश्चिम दिशा में बहती हुई शीतोदा महानदी की दक्षिण दिशा में वर्तमान एक वक्षस्कार पर्वत; (ठा ४, २)।

अंकिअ न [**दे**] आलिंगन; (दे १, ११)।

अंकिअ वि [**अङ्कित**] चिह्नित, निशानवाला; (औप)।

अंकिल्ल पुं [**दे**] नट, नर्तक, नचवैया; (णाया १, १)।

अंकुडग पुं [**अङ्कुटक**] नागदन्तक, खूँटी, ताख; (जं १)।

अंकुर पुं [**अङ्कुर**] प्ररोह, फुनगी; (जी ६)।

अंकुरिय वि [**अङ्कुरित**] अंकुर-युक्त, जिसमें अंकुर उत्पन्न हुए हों वह; (उवा)।

अंकुस पुं [**अङ्कुश**] १ आंकडी, लोहे का एक हथियार जिससे हाथी चलाये जाते हैं "अंकुसेण जहा णागो धम्मे संपडिवाइओ" (उत्त २२) । २ ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। ३ सीता का एक पुत्र, कुस; (पउम ६७, १६)। ४ नियन्त्रण करनेवाला, काबु में रखने वाला; (गउड)। ५ एक देव-विमान; (राज)। ६ पुंन. गुरु-वन्दन का एक दोष; (पव २)।

अंकुसइय न [**दे. अंकुशित**] अंकुश के आकार वाली चीज;

(दे १, ३८; से ६,६३) ।

अंकुसय पुं [**अङ्कुशक**] देखो **अंकुस** । २ संन्यासी का एक उपकरण, जिससे वह देव-पूजा के वास्ते वृक्ष के पल्लवों को काटता है; (औप) ।

अंकुसा स्त्री [**अङ्कुशा**] चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ भगवान् की शासन-देवी; (पव २८) ।

अंकुसिअ वि [**अङ्कुशित**] अंकुश की तरह मुडा हुआ; (से १४, २६) ।

अंकुसी स्त्री [**अङ्कुशी**] देखो **अंकुसा**; (संति १०) ।

अंकेल्लण न [**दे**] घोड़ा आदि को मारने का चाबुक, कोडा, औंगो; (जं ४) ।

अंकेल्लि पुं [**दे**] अशोक-वृक्ष; (दे १,७) ।

अंकोल्ल पुं [**अङ्कोठ**] वृक्ष-विशेष; (हे १, २००) ।

अंग पुं [**अङ्ग**] १ ब. इस नामका एक देश, जिसको आजकल बिहार कहते हैं; (सुर २, ६७) । २ रामका एक सुभट; (पउम ५६, ३७) । ३ न. आचारांग सूत्र आदि बारह जैन आगम-ग्रन्थ; (विपा २, १) । ४ वेदांग, वेदके शिक्षादि छः अंग; (आचू) । ५ कारण, हेतु; (पव १) । ६ आत्मा, जीव; (भवि) । ७ पुंन, शरीर; (प्रासू ८४) । ८ शरीर के मस्तक आदि अवयव; (कम्म १, ३४) । ९ अ. मित्रता का आमंत्रण, संबोधन; (राय) । १० वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (ठा ४) । °**इ** पुं [°**जित्**] इस नामका एक गृहस्थ, जिसने भगवान् पार्श्वनाथ के पास दीक्षा ली थी; (निर) । °**इसि** पुं [°**र्षि**] चंपा नगरी का एक ऋषि; (आचू) । °**चूलिया** स्त्री [°**चूलिका**] अंग-ग्रन्थों का परिशिष्ट; (पक्खि) । °**च्छहिय** वि [**छिन्नाङ्ग**] जिसका अंग काटा गया हो वह; (सूअ २, २, ६३) । °**जाय** वि [°**जात**] बच्चा, लड़का; (उप ६४८) । °**द** देखो °**य=°द**; (ठा ८) । °**पविट्ठ** न [°**प्रविष्ट**] १ बारह जैन अंग-ग्रन्थों में से कोई भी एक; (कम्म १, ६;) २ अंग-ग्रन्थों का ज्ञान (ठा २, १) । °**बाहिर** न [°**बाह्य**] १ अंग-ग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आगम; (आचू) । २ अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन आगमोंका ज्ञान; (ठा २) । °**मंग** न [°**ङ्ग**] १ अंग-प्रत्यंग; (राय) । २ हर एक अवयव; (षड्) । °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] चम्पा नगरी का एक देव-गृह; (भग १, १) । °**मद्द मद्दय** पुं [°**मर्द, मर्दक**] १ शरीर की चंपी करनेवाला नौकर; २ वि शरीर को मलनेवाला, चंपी करनेवाला; (सुपा १०८; महा; भग ११, १) । °**य** पुं [°**द**] १ वाली-नामक विद्याधर-राज का पुत्र; (पउम १०, १०; ५६, ३७) । २ न. बाजूबंद, केयुंटा; (पराह १, ४) । °**य** वि [°**ज**] १ शरीर में उत्पन्न । २ पुं. पुत्र, लडका; (उप १३४ टी) । °**या** स्त्री [°**जा**] कन्या, पुत्री; (पाअ) । °**रक्ख**, °**रक्खग** वि [°**रक्ष, °रक्षक**] शरीर की रक्षा करनेवाला; (सुपा ५२७; इक) । °**राग °राय** पुं [°**राग**] शरीर में चन्दनादि का विलेपन; (औप; गा १८६) । °**राय** पुं [°**राज**] १ अंग-देश का राजा; (उप ७६५) । २ अंग देश का राजा कर्ण; (गाया १, १६; वेणी १०४) । °**रिसि** देखो °**इसि** । °**रुह** वि [°**रुह**] देखो °**य=°ज**; (सुपा ५१२; पउम ५६, ३२) । °**रुहा** स्त्री [°**रुहा**] पुत्री, लडकी; (सुपा १५०) । °**विज्जा** स्त्री (°**विद्या**) १ शरीर के स्फुरण का शुभाशुभ फल बतलाने वाली विद्या ; (उत ८) । २ उस नाम का एक जैन ग्रन्थ; (उत ८) । °**वियार** पुं [°**विचार**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (उत १५) । °**संभूय** वि [**संभूत**] संतान, बच्चा; (उप ६४८) । °**हारय** पुं [°**हारक**] शरीर के अवयवों के विक्षेप, - हाव-भाव ; (अजि ३१) । °**दाण** न [°**दान**], पुरुषेन्द्रिय, पुरुष-चिन्ह; (निसी) ।

अंग वि [**आङ्ग**] १ शरीर का विकार; (ठा ८) । २ शरीर-संबंधी, शारीरिक; (सुअ २, २) । ३ न. शरीर के स्फुरण आदि विकारों के शुभाशुभ फल को बतलानेवाला शास्त्र, निमित-शास्त्र; (सम ४६) ।

°**अंग** वि [**चङ्ग**] सुन्दर, मनोहर; (भवि) ।

अंगइया स्त्री [**अङ्गदिका**] एक नगरी, तीर्थ-विशेष; (उप ५५२) ।

अंगंगीभाव पुं [**अङ्गाङ्गीभाव**] अभेद-भाव, अभिन्नता; "अंगंगीभावेण परिणएणन्नसरिसजिणवम्मे" (सुपा २१८) ।

अंगण न [**अङ्गण**] आंगन, चौक; (सुर ३, ७१) ।

अंगणा स्त्री [**अङ्गना**] स्त्री, औरत; (सुर ३,१८) ।

अंगदिआ देखो **अङ्गइया**; (ती) ।

अंगवड्ढण न [**दे**] रोग, बिमारी; (दे १, ४७) ।

अंगवलिज्ज न [**दे**] शरीर को मोडना; (दे १, ४२) ।

अंगार पुं [**अङ्गार**] १ जलता हुआ कोयला; (हे १, ४७) । २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष; (आचा) । °**मद्दग** पुं [°**मर्दक**] एक अभव्य जैन-आचार्य;

(उप २५४)। °वई स्त्री [°वती] सुंसुमार नगर के राजा धुन्धुमार की एक कन्या का नाम (धम्म ८ टी)।

अंगारग } पुं [अङ्गारक] १-२ ऊपर देखो; (गा२६१)। **अंगारय** } ३ मंगल-ग्रह; (पण्ह १,५)। ४ पहला महाग्रह; (ठा २)। ५ राक्षस-बंश का एक राजा; (पउम ५, २६२)।

अंगारिय वि [अङ्गारित] कोयलेकी तरह जला हुआ, विवर्ण; (नाट; आचा)।

अंगाल देखो **अंगार**; "निदड्ढंगालनिभ" (पिंड ६७५)।

अंगालग देखो **अंगारग**; (राज)।

अंगालिय न [दे] ईख का टुकड़ा; (दे १, २८)।

अंगालिय देखो **अंगारिय**; (आचा)।

अंगि पुं [अङ्गिन्] १ प्राणी, जीव; (गण ८)। २ वि. शरीर-वाला। ३ अंग-ग्रन्थो का ज्ञाता; (कप्प)।

अंगिरस न [अङ्गिरस] एक गोत्र, जो गोतम-गोत्र की शाखा है; (ठा ७)।

अंगिरस वि [आङ्गिरस] १ अंगिरस-गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७)। २ पुं. एक तापस; (पउम ४, ८६)।

अंगीकड } वि [अङ्गीकृत] स्वीकृत; (ठा ५; सुपा **अंगीकय** } ५२६)।

अंगीकर } सक [अङ्गी+कृ] स्वीकार करना। अंगी- **अंगीकुण** } करेइ; (महा; नाट)। अंगीकरेहि; (स ३०६) संकृ-**अंगीकरेऊण**; (विसे २६४२)।

अंगुअ पुं [इङ्गुद] १ वृक्ष-विशेष; २ न. इंगुद वृक्ष का फल; (हे १, ८९)।

अंगुट्ठ पुं [अङ्गुष्ठ] अंगूठा; (ठा १०) °**पसिण** पुं [°प्रश्न] १ एक विद्या; २ 'प्रश्न-व्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन; (ठा १०)।

अंगुट्ठी स्त्री [दे] सिरका अवगुण्ठन, घूंघट; (दे १, ६; स २८४)।

अंगुत्थल न [दे] अंगुठी, अंगुलीय; (दे १, ३१)।

अंगुब्भव वि [अङ्गोद्भव] संतान, बच्चा; (उप २६४)।

अंगुम सक [पूरय्] पूर्ति करना, पूरा करना। अंगुमइ; (हे ४,१६९)।

अंगुमिय वि [पूरित] पूर्ण किया हुआ; (कुमा)।

अंगुरि, °री स्त्री [अङ्गुलि °ली] उंगली; (गा २७७)।

अंगुल न [अङ्गुल] यव के आठ मध्य-भाग के बराबर का एक नाप, मान-विशेष; (भग ३, ७)। °**पोहत्तिय** वि [°पृथक्त्विक] दो से लेकर नव अंगुल तक का परिणाम वाला; (जीव १)।

अंगुलि स्त्री [अङ्गुलि] उंगली; (कुमा)। °**कोस** पुं [°कोश] अंगुलि-त्राण, दास्ताना; (राय)। °**प्फोडण** न [°स्फोटन] उंगली फोड़ना, कड़ाका करना; (तंदु)।

अंगुलिअ } न [अङ्गुलीयक] अंगुठी; (दे ५, ६; **अंगुलिज्जक** } कप्प; पि २५२)। **अंगुलिज्जग** }

अंगुलिणी स्त्री [दे] प्रियंगु, वृक्ष-विशेष; (दे १, ३२)।

अंगुली स्त्री [अङ्गुली] देखो **अंगुलि**; (कप्प)।

अंगुलीय } पुं न [अङ्गुलीयक] अंगुठी; (सुर १०, **अंगुलीयग** } ६४) "पायवडिएण सामिय ! समप्पिओ **अंगुलीयय** } अंगुलीयओ तीए" (पउम ५४, ६; सुर १ **अंगुलेज्जक** } १३२; पि २५२; पउम ४६, ३५)। **अंगुलेयय** }

अंगुवंग } न [अङ्गोपाङ्ग] १ शरीर के अवयव; **अंगोवंग** } (पण्ण २३)। २ नख वगैरः शरीर के छोटे छोटे अवयव; "नहकेसमंसुअंगुलीओट्ठा खलु अंगोवंगाणि" (उत्त ३)। °**णाम** न [°नामन्] शरीर के अवयवों के निर्माण में कारण-भूत कर्म-विशेष; (कम्म १, ३४; ४८)।

अंगोहलि स्त्री [दे] शिर को छोड़ कर बाकी शरीर का स्नान; (उप पृ २३)।

अंघो अ [अङ्ग] भय-सूचक अव्यय; (प्रति ३६; प्रयौ २०५)।

अंच सक [कृष्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। ४ ऊठाना। अंचइ; (हे ४, १८७)। संकृ-**अंचेइत्ता**; (आव)।

अंच सक [अञ्च्] पूजना, पूजा करना। अंचए; (भवि)।

अंचल पुं [अञ्चल] कपडे का शेष भाग; (कुमा)।

अंचि पुं [अञ्चि] गमन, गति; (भग १५)।

अंचि पुं [आञ्चि] आगमन, आना; (भग १५)।

अंचिय वि [अञ्चित] १ युक्त, सहित; (सुर ४, ६७)। २ पूजित; (सुपा २१८)। ३ प्रशस्त, श्लाघित; (प्रासू १८)। ४ न. एक प्रकार का नृत्य; (ठा ४, ४; जीव ३)। ५ एक वार का गमन; (भग १५)। °**यंचि** पुं [°ाञ्चि] १ गमनागमन, आना जाना; (भग १५)। २ ऊंचा-नीचा होना; (ठा १०)।

अंचिया स्त्री [अञ्चिका] आकर्षण; (स १०२)।

अंछ सक [कृष्] १ खींचना "अंछंति वासुदेवं अगड-

तडम्मि ठियं संतं (विसे ७६४) । २ अक. लम्बा होना । वकृ-**अंछमाण**; (विसे ७६५) । प्रयो—अंछावेइ; (णाया १,१) ।

अंछण न [**कर्षण**] खींचाव; (पगह २, ५) ।

अंछिय वि [**दे**] आकृष्ट, खींचा हुआ ; (दे १, १४) ।

अंज सक [**अञ्ज्**] आंजना । कृ-**अंजियव्व**; (स ५४३) ।

अंजण पुं [**अञ्जन**] १ पर्वत-विशेष; (ठा ५) । २ एक लोकपाल देव; (ठा ४) । ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर, जो दिग्हस्ती कहा जाता है; (ठा २,३; ८) । ४ वृक्ष-विशेष; (आव) । ५ न. एक जात का रत्न; (णाया १, १) ६ देवविमान-विशेष; (सम ३५) । ७ काजल, कज्जल; (प्रासू ३०) । ८ जिसका सुरमा बनता है ऐसा एक पार्थिव द्रव्य; (जी ४) । ९ आंखको आंजना; (सूत्र १, ६) । १० तैल आदि से शरीर की मालिस करना; (राज)। ११ लेप; (स ५८२) । १२ रत्नप्रभा पृथिवी के खर-कागड का दशवाँ अंश-विशेष; (ठा १०) । °**केसिया** स्त्री [°**केशिका**] वनस्पति-विशेष; (पगण १७; राय) । °**जोग** पुं [°**योग**] कला-विशेष; (कप्प) । °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष; (इक) । °**पुलय** पुं [°**पुलक**] १ एक जातिका रत्न; (ठा १०) । २ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (ठा ८) । °**प्पहा** स्त्री [**प्रभा**] चौथी नरक-पृथ्वी; (इक) । °**रिट्ठ** पुं [°**रिष्ट**] इन्द्र-विशेष; (भग ३,८) । °**सलागा** स्त्री [°**शलाका**] १ जैन-मूर्तिकी प्रतिष्ठा । २ अंजन लगाने की सलाई ; (सूत्र १, ५) । °**सिद्ध** वि (°**सिद्ध**) आंख में अंजन-विशेष लगाकर अदृश्य होने की शक्ति वाला; (निसी) । °**सुन्दरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] एक सती स्त्री, हनूमान् की माता; (पउम १५, १२) ।

अंजणइसिआ स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष, श्याम तमाल का पेड़ ; (दे १, ३७) ।

अंजणई स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष ; (पगण १) ।

अंजणईस न [**दे**] देखो **अंजणइसिआ**; (दे २, ३७) ।

अंजणग देखो **अंजण** ।

अंजणा स्त्री [**अंजना**] १ हनूमान् की माता ; (पउम १, ६०) । २ स्वनाम-ख्यात चौथी नरक-पृथिवी; (ठा २, ४) । ३ एक पुष्करिणी; (जं ४) । °**तणय** पुं [°**तनय**] हनूमान्; (पउम ४७, २८) । °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] हनूमान् की माता ; (पउम १८, ५८) ।

अंजणाभा स्त्री [**अञ्जनाभा**] चौथी नरक-पृथिवी; (इक) ।

अंजणिआ स्त्री (**दे**) देखो **अंजणइसिआ**; (दे १, ३७) ।

अंजणिआ स्त्री [**अञ्जनिका**] कज्जल का आधार-पात्र; (सूत्र १, ४) ।

अंजलि, °**ली** पुंस्त्री [**अञ्जलि**] १ हाथ का संपुट; (हे १, ३५) । २ एक या दोनों संकुचित हाथों को ललाट पर रखना " एगेण वा दोहि वा मउलिएहिं हत्थेहिं णिडालसंसितेहिं अंजली भगणति" (निसी) । ३ कर-संपुट, नमस्कार रूप विनय, प्रणाम ; (प्रासू ११० ; स्वप्न ६३) । °**उड** पुं [°**पुट**] हाथ का संपुट; (महा) । °**करण** न [°**करण**] विनय-विशेष, नमन ; (दे) । °**पग्गह** पुं [°**प्रग्रह**] १ नमन, हाथ जोड़ना ; (भग १४, ३) । २ संभोग-विशेष ; (राज) ।

अंजस वि (दे) ऋजु, सरल ; (दे १, १४) ।

अंजिय वि [**अञ्जित**] आंजा हुआ, अंजन-युक्त किया हुआ ; (से ६, ४८) ।

अंजु वि [**ऋजु**] १ सरल, अकुटिल "अंजुधम्मं जहा तच्चं, जिणाणं तह सुणेह मे " (सूत्र १, ६ ; १, १, ४, ८) । २ संयम में तत्पर, संयमी "पुट्ठोवि नाइवत्तइ अंजू" (आचा) । ३ स्पष्ट, व्यक्त; (सूत्र २, १) ।

अंजुआ स्त्री [**अञ्जुका**] भगवान् अनन्तनाथ की प्रथम शिष्या; (सम १५२) ।

अंजू स्त्री [**अञ्जू**) १ एक सार्थवाह की कन्या ; (विपा १, १०) । २ 'विपाकश्रुत' का एक अध्ययन; (विपा १, १) । ३ एक इन्द्राणी; (ठा ८) । ४ 'ज्ञाता-धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाया १, २) ।

अंठि पुंन [**अस्थि**] हड्डी, हाड; (षड्) । "अहिअमहुरस्स अंबस्स अजोग्गदाए अगठी न भक्खीअदि " (चारु ६) ।

अंड, **अंडअ**, **अंडग** } न [**अण्ड**, °**क**] १ अंडा; (कप्प; औप) । २ अंड-कोश ; (महानि ४) । ३ 'ज्ञाता धर्मकथा' सूत्र का तृतीय अध्ययन ; (णाया १, १) । °**कड** वि [°**कृत**] जो अगडे से बनाया गया हो "बंभणा माहणा एगे, आह अगडकडे जगे" (सूत्र १, ३) । °**बंध** पुं [**बन्ध**] मन्दिर के शिखर पर रखा जाता अगडाकार गोला (गउड) । °**वाणियय** पुं [°**वाणिजक**] अगडों का व्यापारी; (विपा १, ३) ।

अंडग } वि [**अण्डज**] १ अण्डे से पैदा होनेवाले जंतु;
अंडय } जैसे पक्षी, सांप, मछली वगैरः; (ठा ३, १; ८)। २ रेशम का धागा; ३ रेशमी वस्त्र; (उत्त २६)। ४ शण का वस्त्र; (सूअ २, २)।

अंडय पुं [**दे, अण्डज**] मछली, मत्स्य; (दे १, १६)।

अंडाउय वि [**अण्डज**] अण्डे से पैदा होनेवाला; (पउम १०२, ६७)।

अंत पुं [**अन्त**] १ स्वरूप, स्वभाव; (से ६, १८)। २ प्रान्त भाग; (से ६, १८)। ३ सीमा, हद; (जी ३३)। ४ निकट, नजदीक; (विपा १, १)। ५ भंग, विनाश; (विसे ३४५४, जी ४८)। ६ निर्णय, निश्चय; (ठा ३)। ७ प्रदेश, स्थान "एगंतमंतमवक्कमइ" (भग ३, २)। ८ राग और द्वेष; "दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणो" (आचा)। ९ रोग, बिमारी; (विसे ३४५४)। १० वि. इन्द्रियों को प्रतिकूल लगनेवाली चीज, असुन्दर, नीरस वस्तु; (पण्ह २, ४)। ११ मनोहर, सुन्दर; (से ६, १८)। १२ नीच, क्षुद्र, तुच्छ; (कप्प)। °**कर** वि [°**कर**] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला; (सूअ १, १५)। °**करण** वि [°**करण**] नाशक; (पण्ह १, ६)। °**काल** पुं (°**काल**) १ मृत्यु-काल; २ प्रलय-काल (से ५, ३२)। °**किरिया** स्त्री [°**क्रिया**] मुक्ति, संसार का अन्त करना; (ठा ४, १)। °**कुल** न [**कुल**] क्षुद्र कुल; (कप्प) °**गड** वि [**कृत्**] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला; (उप ४६१)। °**गडदसा** स्त्री [**कृद्दशा**] जैन अंग-ग्रन्थों में आठवाँ अंग-ग्रन्थ; (अणु १)। °**चर** वि (°**चर**) भिक्षा में नीरस पदार्थों की ही खोज करनेवाला; (पण्ह २, १)।

अंत वि [**अन्त्य**] अन्तिम, अन्त का; (पराण १५)। °**क्खरिया** स्त्री [°**क्षरिका**] १ ब्राह्मी लिपि का एक भेद; (पण्ण १)। २ कला-विशेष; (कप्प)।

अंत न [**अन्त्र**] आंत; (सुपा १८२, गा ५८५)।

अंत अ [**अन्तर्**] मध्य में, बीच में; (हे १, १४)। °**उर** न [°**पुर**] देखो **अंतेउर**; (नाट)। °**करण**, °**क्करण** [°**करण**] मन, हृदय "करुणारसपरवसंतकरणेण" (उप ६ टी; नाट)। °**गय** वि [°**गत**] मध्यवर्ती, बीच-वाला; (हे १, ६०)। °**द्धा** स्त्री [°**धा**] १ तिरोधान; नाश; (आचू)। °**द्धाण** न [°**धान**] अदृश्य होना, तिरोहित होना; (उप १३६ टी)। °**द्धाणिया** स्त्री [**धानिका**] जिससे अदृश्य हो सके ऐसी विद्या; (सूअ २, २)। °**द्धाभूअ** वि (**धाभूत**) नष्ट, विगत "नट्ठेति वा विगतेति वा अंतद्धाभूतेत्ति वा एगट्ठा" (आचू)। °**प्पाअ** पुं [°**पात**] अन्तर्भाव, समावेश; (हे २, ७७)। °**भाव** पुं [°**भाव**] समावेश; (विसे)। °**मुहुत्त** न [°**मुहूर्त**] कुछ कम मुहूर्त, न्यून मुहूर्त; (जी १४)। °**रद्धा** स्त्री [°**धा**] १ तिरोधान; २ नाश "वुड्ढी सइ-अन्तरद्धा" (श्रा १६)। °**रद्धा** स्त्री (**अद्धा**) मध्य-काल, बीच का समय; (आचा)। °**रप्प** पुं [°**आत्मन्**] आत्मा, जीव; (हे १.१४)। °**रहिय**, °**रिहिद** (शौ) वि [°**हित**] १ व्यवहित, अंतराल युक्त; (आचा)। २ गुप्त अदृश्य; (सम ३६; उप १६६ टी; अभि १२०)। °**विइ** पुं [°**वेदि**] गंगा और यमुना के बीचका देश; (कुमा)।

°**अंत** वि [**कान्त**] सुन्दर, मनोहर; (से १, ५६)।

अंतअ वि [**आयात्**] आता हुआ; (से ६, ४६)।

अंतअ वि [**अन्तग**] पार-गामी, पार-प्राप्त; (से ६,१८)।

अंतअ वि [**अन्तद**] १ अविनाशी, शाश्वत; २ जिसकी सीमा न हो वह; (से ६, १८)।

अंतअ } वि [**अन्तक**] १ मनोहर, सुन्दर; (से
अंतग } ६.१८)। २ अन्तर्गत, समाविष्ट; (सूअ १ १५)। ३ पर्यन्त, प्रान्त भाग "जे एवं परिभासंति अन्तए ते समाहिए" (सूअ १,२)। ४ यम, मृत्यु; (से ६,१८; उप ६६६ टी)। "समागमं कंखति अन्तगस्स" (सूअ १,७)।

अंतग वि [**अन्तग**] १ पार-गामी। २ दुस्त्यज, जो कठिनाई से छोड़ा जा सके "चिच्चाण अन्तगं सोयं निरवेक्खो परिव्वए" (सूअ १,६)।

°**अंतण** न [**यन्त्रण**] बन्धन, नियन्त्रण; (प्रयौ २४)।

अंतर न [**अन्तर**] १ मध्य, भीतर "गामंतरं पविट्ठो सो" (उप ६ टी)। २ भेद, विशेष, फर्क; (प्रासू १६८)। ३ अवसर, समय; (गाया १,२)। ४ व्यवधान; (जं १)। ५ अवकाश, अन्तराल; (भग ७,८)। ६ विवर, छिद्र; (पाअ)। ७ रजोहरण; ८ पात्र; ६ पुं. आचार, कल्प; १० सूते के कपड़े पहननेका आचार, सौत कल्प; (कप्प)। °**कप्प** पुं (°**कल्प**) जैन साधु का एक आत्मिक प्रशस्त आचरण; (पंचू) °**कंद**

पुं [°कन्द] कन्द की एक जाति, वनस्पति-विशेष; (पण्ण १) । °करण न [°करण] आत्मा का शुभ अध्यवसाय-विशेष ; (पंच) । °गिह न [°गृह] १ घर का भीतरी भाग; २ दो घरों के बीच का अंतर ; (बृह ३) । °णई स्त्री [नदी] छोटी नदी ; (ठा ६) । °दीव पुं [°द्वीप] १ द्वीप-विशेष; (जी २३) । २ लवण समुद्र के बीच का द्वीप (पण्ण १) । °सत्तु पुं [°शत्रु] भीतरी शत्रु, काम-क्रोधादि ; (सुपा ८५) ।

अंतर सक [अन्तरय्] व्यवधान करना, बीच में डालना । अंतरेहि. अंतरेमि ; (विक्र १३६) ।

अंतर वि [आन्तर] १ अभ्यन्तर, भीतरी " सयलसुराणंपि अंतरो अप्पाणो " (अच्चु २०) । २ मानसिक ; (उवर ७१) ।

अंतरंग वि [अन्तरङ्ग] भीतरी ; (विसे २०२७) ।

अंतरंजी स्त्री [आन्तरञ्जी] नगरी-विशेष ; (विसे २३०३) ।

अंतरा अ [अन्तरा] १ मध्य में, बीचमें; (उप ६५४) । २ पहले, पूर्व में ; (कप्प) ।

अंतराइय न [आन्तरायिक] १ कर्म-विशेष, जो दान आदि करने में विघ्न करता है ; (ठा २) । २ विघ्न, रुकावट, (पण्ह २,१) ।

अंतराईय न [अन्तरायीय] ऊपर देखो ; (सुपा ६०१) ।

अंतराय पुंन. [अंतराय] देखो अन्तराइय ; (ठा २,४ ; स २०)

अंतराल पुं [अन्तराल] अंतर, बीच का भाग ; (अभि ८२) ।

अंतरावण पुंन [अन्तरापण] दुकान, हाट; (चारु ३) ।

अंतरावास पुं [अन्तरवर्ष, अन्तरावास] वर्षा-काल, (कप्प) ।

अंतरिक्ख पुंन [अन्तरिक्ष] अन्तराल, आकाश ; (भग १७, १०, स्वप्न ७०) । °जाय वि [°जात] जमीन के ऊपर रही हुई प्रासाद, मंच आदि वस्तु ; (आचा २, ५) । °पासणाह पुं [°पार्श्वनाथ] खानदेश में अकोला के पासका एक जैन-तीर्थ और वहां की भगवान् श्रीपार्श्वनाथ की मूर्ति ; (ती)

अंतरिक्ख वि [आन्तरिक्ष] १ आकाश-संबंधी, आकाश का ; (जी ५) । २ ग्रहों के परस्पर युद्ध और भेद का फल बतलानेवाला शास्त्र ; (सम ४९) ।

अंतरिज्ज न [अंतरीय] १ वस्त्र, कपड़ा ; २ शय्या का नीचला वस्त्र " अंतरिज्जं णाम णियंसणं, अहवा अंतरिज्जं नाम सेज्जाए हेट्ठिल्लं पोत्तं " (निसी १५) ।

अंतरिज्ज न [दे] करधनी, कटीसूत ; (दे १, ३५) ।

अंतरिज्जिया स्त्री [अन्तरीया] जैनीय वेशवाटिक गच्छ की एक शाखा ; (कप्प) ।

अंतरित / **अंतरिय** वि [अन्तरित] व्यवहित, अंतरवाला ; (सुर ३, १४३ ; से १, २७) ।

अंतरिया स्त्री [दे] समाप्ति, अंत ; (जं २) ।

अंतरिया स्त्री [अन्तरिका] छोटा अन्तर, थोड़ा व्यवधान ; (राय) ।

अंतरेण अ [अन्तरेण] बिना, सिवाय ; (उत्त १) ।

अंतलिक्ख देखो अंतरिक्ख; (णाया १, १; चारु ७) ।

°**अंति** देखो पंति ; (से ६, ६९) ।

अंतिम वि [अन्तिम] चरम, शेष, अन्त्य ; (ठा १) ।

अंतिय न [अन्तिक] १ समीप, निकट ; (उत्त १) । २ अवसान, अंत "अह भिक्खू गिलाएज्जा आहारस्सेव अंतिया" (आचा १, ८) । ३ अन्तिम, चरम; (सूत्र २, २) ।

अंतीहरी स्त्री [दे] दूती ; (दे १, ३५) ।

अंतेआरि वि [अन्तश्चारिन्] बीच में जानेवाला, बीचका; (हे १, ६०) ।

अंतेउर न [अन्तःपुर] १ राज-स्त्रीओं का निवास-गृह । २ राणी ; " सणंकुमारो वि तेसिं वंदणत्थं संतेउरो गओ तमुज्जाणं " (महा) ।

अंतेउरिगा / **अंतेउरिया** / **अंतेउरी** स्त्री [आन्तःपुरिकी, °री] अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री. राज्ञी; (उप ६ टी; सुपा २२८; २८९) । २ रोगी का नाम-मात्र लेने से उसको नीरोग बनानेवाली एक विद्या; (वव ५) ।

अंतेल्ली स्त्री [दे] १ मध्य, बीच ; २ उदर, पेट ; ३ कल्लोल , तरंग, (दे १, ५५) ।

अंतेवासि वि [अन्तेवासिन्] शिष्य ; (कप्प) ।

अंतेवुर देखो अंतेउर; (प्रति ५७) ।

अंतो अ [अन्तर्] बीच, भीतर ; " गामंतो संपत्ता " (उप ६ टी; सुर ३, ७४) । °खरिया स्त्री [°खरिका] नगर में रहनेवाली वेश्या ; (भग १५) । °गइया स्त्री [°गतिका] स्वागत के लिए सामने जाना " सव्वाए विभूईए अंतोगइयाए तणयस्स " (सुर १५, १६१) ।

°गय वि [°गत] मध्यवर्ती, समाविष्ट; (उप ६८६ टी)। °णिअंसणी स्त्री [°निवसनी] जैन साध्वीओं को पहनने का एक वस्त्र; (बृह ३)। °दहण न [°दहन] हृदय-दाह; (तंदु)। °मज्झोवसाणिय पुं [°मध्यावसानिक] अभिनय का एक भेद; (राय)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त] कम मुहूर्त, ४८ मिनिट से कम समय; (कप्प)। °वाहिणी स्त्री [°वाहिनी] क्षुद्र नदी; (ठा २, ३)। °वीसंभ पुं [°विश्रम्भ] हार्दिक विश्वास; (हे १, ६०)। °सल्ल न [°शल्य] १ भीतरी शल्य, घाव; (ठा ४)। २ कपट, माया; (औप)। °साला स्त्री [°शाला] घरका भीतरी भाग "कोलालभंडं अंतोसालाहिंतो बहिया नीणेइ" (उवा; पि ३४३)। °हुत्त वि [°मुख] भीतर, "अंताहुत्त हज्जइ जायासुण्णे घरे हलिअउत्तो" (गा ३७३)।

अंतोहुत्त वि [दे] अधोमुख, औंधा मुंह वाला; (दे १, २१)।

अंत्रडी (अप) स्त्री [अन्त्र] आंत, आंती; (हे ४, ४४५)।

°**अंद** पुं [चन्द्र] १ चन्द्रमा, चांद "पसुवइणो रोसारुण-पडिमासंकंतगोरिमुहअंदं" (गा १)। २ कपूर; (से ६, ४७)। °राअ पुं (°राग) चन्द्रकान्त मणि; (से ६, ४७)।

°**अंदरा** स्त्री [कन्दरा] गुफा; (से ६, ४७)।

°**अंदल** पुं [कन्दल] वृक्ष-विशेष; (से ७, ४७)।

°**अंदावेदि** (शौ) देखो **अंतावेइ**; (हे ४, २८६)।

अंदु } स्त्री [अन्दु] शृङ्खला, जंजीर; (औप, **अंदुया** } स ५३०)।

अंदेउर (शौ) देखो **अंतेउर**; (हे ४, २६१)।

अंदोल अक [अन्दोल्] १ हिंचकना, झूलना। २ कंपना, हिलना। ३ संदिग्ध होना "अंदोलइ दोलासु व माणो मज्झोवि विलयाणं" (स ५३१)। वकृ— **अंदोलंत, अंदोलिंत, अंदोलमाण**; (से ८, ५१, ११, २५; सुर ३, ११६)।

अंदोल सक [अन्दोलय्] कंपाना, हिलाना। वकृ— **अंदोलंत**; (सुर ३, ६७)।

अंदोलग पुं [आन्दोलक] हिंडोला; (राय)।

अंदोलण न [आन्दोलन] १ हिंचकना, झूलना; (सुर ४, २२५)। २ हिंडोला; ३ मार्ग-विशेष; (सूअ १, ११)।

अंदोलय देखो **अंदोलग**; (सुर ३, १७५)।

अंदोलि वि [आन्दोलिन्] हिलानेवाला, कंपानेवाला; (गा २३७)।

अंदोलिर वि [आन्दोलितृ] झुलनेवाला; (सुपा ७८)।

अंदोलुण देखो **अंदोलण**।

अंध वि [अन्ध] १ अंधा, नेत्र-हीन; (विपा १, १)। २ अज्ञान, ज्ञान-रहित; "एए णं अंधा मूढा तमप्पइट्ठा" (भग ७, ७)। °कंटइज्ज न [°कण्टकीय) अंध पुरुष के कंटक पर चलने के माफिक अविचारित गमन करना; (आचा)। °तम न [°तमस] निबिड अन्धकार; (सूअ १, ५)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष; (बृह ४)।

अंध पुं.ब. [अन्ध्र] इस नाम का एक देश; (पउम ६८,६७)।

अंध वि [आन्ध्र] अन्ध्र देश का रहनेवाला; (पण्ह १,१)।

अंधंधु पुं [दे] कूप, कुँआ; (दे १,१८)।

अंधकार देखो **अंधयार**; (चंद ४)।

अंधग पुं [दे] वृक्ष, पेड़; (भग १८, ४)। °वण्हि पुं [वह्नि] स्थूल अग्नि; (भग १८,४)।

अंधग देखो **अंध**; (भग १८, ४)। °वण्हि पुं [°वह्नि] सूक्ष्म अग्नि; (भग १८, ४)। °वण्हि पुं (°वृष्णि) यदुवंश का एक राजा, जो समुद्रविजयादि के पिता था; (अंत २)।

अंधय } पुं [अन्धक] १ अंधा, नेत्र-हीन; (पण्ह **अंधयग** } १, २)। २ वानर-वंश का एक राज-कुमार; (पउम ६,१८६)।

अंधयार पुंन [अन्धकार] अंधेरा, अंधकार; (कप्प; स ४२६)। °पक्ख पुं [°पक्ष] कृष्ण-पक्ष; (सुज्ज १३)।

अंधयारण न [अन्धकार] अन्धेरा; (भवि)।

अंधयारिय वि [अन्धकारित] अंधकार-वाला; (से १,१५; ५३)।

अंधरअ } वि [अन्ध] अंधा, नेत्र-हीन; (गा ७०४; **अंधल** } हे २, १७३)।

अंधलरिल्ली स्त्री [अन्धयित्री] अंध बनानेवाली एक विद्या; (सुपा ४२८)।

अंधार पुं [अन्धकार] अंधेरा; (ओघ १११;२७०)।

अंधारिय वि [अन्धकारित] अंधकार वाला; (सुपा ५४, सुर ३,२३०)।

अंधाव सक [**अन्धय्**] अंधा करना। अंधावेइ; (विक ८४)।
अंधिआ स्त्री [**अन्धिका**] द्यूत-विशेष; (दे २,१)।
अंधिल्लग वि [**अन्ध**] अन्धा, जन्मांध; (पराह २, ५)।
अंधोकिद (शौ) वि [**अन्धीकृत**] अंध किया हुआ; (स्वप्न ४६)।
अंधु पुं [**अन्धु**] कूप कुँआ; (प्रामा; दे १ १८)।
अंधेल्लग देखो **अंधिल्लग**; (पिण्ड)।
°**अंप** पुं [**कम्प**] कंपन; (से ५,३२)।
अंब पुं [**अम्ब**] एक जात के परमाधार्मिक देव, जा नरक के जीवों को दुख देते हैं; (सम २८)।
अंब पुं [**आम्र**] १ आम का पेड; २ न. आम, आम्र-फल; (हे १, ८४)। °**गट्ठिया** स्त्री [**दे**] आम की आंटी, गुठली; (निचू १५)। °**चोयग** न [**दे**] १ आम का छिलका; (निचू १५)। २ आम को छाल; (आचा २,७,२)। °**डगल** न [**दे**] आम का टुकड़ा; (निचू १५)। °**डालग** न [**दे**] आम का छोटा टुकड़ा; (आचा २, ७, २)। °**पेसिया** स्त्री [**पेशिका**] आम का लम्बा टुकड़ा; (निचू १५)। °**भित्त** न [**दे**] आम का टुकड़ा; (निचू १५)। °**सालग** न [**दे**] आम की छाल; (निचू १५)। °**सालवण** न [°**शालवन**] चैत्य-विशेष; (राय)।
अंब न [**अम्ल**] १ तक्र, मट्ठा; (जं ३)। २ खट्टा रस; ३ खट्टी चीज; (विसे)। ४ वि. निष्ठुर वचन बोलने वाला; (बृह १)।
अंब वि [**आम्ल**] १ खट्टी वस्तु; २ मट्ठे से संस्कृत चीज; (जं ३)।
°**अंब** वि [**ताम्र**] लाल, रक्त-वर्ण वाला; (से ३,३४)।
अंबग देखो **अंब**=आम्र; (अणु) °**ट्ठिया** स्त्री [°**स्थि**] आम की गुठली; (अणु)।
अंबट्ठ पुं [**अम्बष्ठ**] १ देश-विशेष; (पउम ९८,६५)। २ जिसका पिता ब्राह्मण और माता वैश्य हो वह; (सूअ १,९)।
अंबड पुं [**अम्बड**] १ एक परिव्राजक, जो महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर मोक्ष जायगा; (औप)। २ भगवान् महावीर का एक श्रावक, जो आगामी चौविसी में २२ वाँ तीर्थंकर होगा; (ठा ९)।
अंबड वि [**दे**] कठिन; (दे १,१६)।
अंबधाई स्त्री [**अम्बाधात्री**] धाई माता; (सुपा २६८)।
अंबमसी स्त्री [**दे**] कठिन और वासी कनिक; (दे १,३७)।
अंबय देखो **अंब**; (सुपा ३३४)।
अंबर न [**अम्बर**] १° आकाश; (पाअ; भग २,२) २ वस्त्र, कपडा; (पाअ; निचू १)। °**तिलय** पुं (°**तिलक**) पर्वत-विशेष; (आव)। °**वत्थ** न [°**वस्त्र**] स्वच्छ वस्त्र; (कप्प)।
अंबरिस पुंन [**अम्बरिष**] १ भट्ठी, भाठा; (भग ३,६)। २ कोष्ठक; (जीव ३)। ३ पुं. नारक-जीवों को दुःख देनेवाले एक प्रकार के परमाधार्मिक देव; (पव १८०)।
अंबरिसि पुं [**अम्बऋषि**] १ ऊपर का तीसरा अर्थ देखो; (सम २८)। २ उज्जयिनी नगरी का निवासी एक ब्राह्मण; (आव)।
अंबरीस देखो **अंबरिस**।
अंबरीसि देखो **अंबरीसि**।
अंबसमिआ, **अंबसमी** } देखो **अंबमसी**।
अंबहुंडी स्त्री [**अम्बहुण्डी**] एक देवी; (महानि २)।
अंबा स्त्री [**अम्बा**] १ माता, मां; (स्वप्न २२४)। २ भगवान् नेमिनाथ को शासन-देवी; (संति १०)। ३ वल्ली-विशेष; (पराण १)।
अंबाड सक [**खरण्ट्**] खरडना, लेप करना; "चमढेति खरण्टेति अंबाडेति त्ति वुत्तं भवति" (निचू ४)।
अंबाड सक [**तिरस् + कृ**] उपालंभ देना, तिरस्कार करना "तओ हक्कारिय अंबाडिओ भणिओ य" (महा)।
अंबाडग, **अंबाडय** } पुं [**आम्रातक**] १ आमला का ; (पराण १; पउम ४२, ६)। २ न. आमला का फल; (अनु ६)।
अंबाडिय वि [**तिरस्कृत**] १ तिरस्कृत; (महा)। २ उपालब्ध; (स ५१२)।
अंबिआ स्त्री [**अम्बिका**] १ भगवान् नेमिनाथ की शासन-देवी; (ती १०)। २ पांचवें वासुदेव की माता; (पउम २०,१८४)। °**समय** पुं [°**समय**] गिरनार पर्वत पर का एक तीर्थ स्थान; (ती ४)।
अंबिर न [**आम्र**] आम का फल; (दे १,१५)।
अंबिल पुं [**आम्ल**] १ खट्टा रस; (सम ४१)। २ वि. खट्टाई वाली चीज, खट्टी वस्तु; (ओघ ३४०)। ३

नामकर्म-विशेष ; (कम्म १, ४१) ।

अंबिलिया स्त्री [**अम्लिका**] १ इम्ली का पेड़ ; (उप १०३१ टी) । २ इम्ली का फल ; (श्रा २०) ।

अंबु न [**अम्बु**) पानी, जल ; (पाअ) । °**अ,** °**ज** न [°**ज**] कमल, पद्म ; (अच्चु ५५ ; कुमा) । °**णाह** पुं [**नाथ**] समुद्र ; (वव ६) । °**रुह** न [°**रुह** कमल ; (पाअ) । °**वह** पुं [°**वह**] मेघ, वारिस ; (गउड) । °**वाह** पुं [°**वाह**] मेघ, वारिस ; (गउड) ।

अंबुपिसाअ पुं [**दे**] राहु ; (गा ८०४) ।

अंबुसु पुं [**दे**] श्वापद जन्तु विशेष, हिंसक पशु-विशेष, शरभ ; (दे १,११) ।

अंबेट्टिआ } स्त्री [**दे**] एक प्रकार का जूआ, मुष्टि-द्यूत ;
अंबेट्टी } (दे १, ७)

अंबेसि पुं [**दे**] द्वार-फलह, दरवाजा एक अंश ; (दे १,८) ।

अंबोची स्त्री [**दे**] फूलों को बिननेवाली स्त्री ; (दे १,६ ; नाट) ।

अंभ पुं [**अम्भस्**] पानी, जल ; (श्रा १२) ।

अंभु (अप) पुं [**अश्मन्**] पत्थर, पाषाण ; (षड्) ।

अंभो पुं [**अम्भस्**] पानी, जल । °**अ** न [°**ज**] कमल; दे ७, ३८) । °**इणी** स्त्री [°**जिनी**] कमलिनी, पद्मिनी; (मै ६१) । °**निहि** पुं [°**निधि**] समुद्र; (श्रा १२) । °**रुह** न [°**रुह**] कमल, पद्म, " कुंभंभोरुह-सरजलनिहिणो, दिव्वविमाणरयणगणसिहिणो" (उप ६ टी) ।

अंस पुं [**अंश**] १ भाग, अवयव, खंड, टुकडा; (पाअ) । २ भेद, विकल्प ; (विसे) । ३ पर्याय, धर्म, गुण ; (विसे) ।

अंस } पुं [**अंस**] कान्ध, कंधा ; (गाया १, १८;
अंसलग्ग } तंदु) ।

अंसि देखो **अस**=**अस्** ।

अंसि स्त्री [**अश्रि**] १ कोण, कोना ; (उप पृ ६८) । २ धार, नोक ; (ठा ८) ।

अंसिआ स्त्री [**अंशिका**] भाग, हिस्सा ; (बृह ३) ।

अंसिया स्त्री [**अर्शिका**] १ बवासीर का रोग; (भग १६, ३) । २ नासिका का एक रोग ; (निचू ३) । ३ फुनसी, फोड़ा ; (निचू ३) ।

अंसु पुं [**अंशु**] किरण ; (लहुअ ६) । °**मालि** पुं (°**मालिन्**) सूर्य, सूरज ; (रयण १) ।

अंसु } न [**अश्रु**] आंसु, नेत्र-जल ; (हे १, २६ ;
अंसुय } कुमा) ।

अंसुय न [**अंशुक**] १ वस्त्र, कपड़ा; (से ६, ८२) । २ बारीक वस्त्र ; (बृह २) । ३ पोषाक, वेश ; (कप्प) ।

अंसोत्थ देखो **अस्सोत्थ**; (पि ७४, १५२, ३०६) ।

अंहि पुं [**अंह्रि**] पाद, पाँव ; (कप्पू) ।

अकइ वि [**अकति**] असंख्यात, अनन्त ; (ठा ३) ।

अकंड देखो **अयंड** ; (गा ६६५) ।

अकंडतलिम वि [**दे**] १स्नेह-रहित ; २ जिसने शादी न की हो वह ; (दे १,६०) ।

अकंपण वि [**अकम्पन**] १ कंप-रहित । २ पुं. रावण का एक पुत्र ; (से १४,७०) ।

अकंपिय वि [**अकम्पित**] १ कम्प-रहित । २ पुं. भगवान् महावीर का आठवाँ गणधर ; (सम १६) ।

अकज्ज देखो **अकय**=अकृत्य; (उव) ।

अकण्ण } वि [**अकर्ण**] १ कर्ण-रहित । २-३ पुं.
अकन्न } स्वनाम-ख्यात एक अंतर्द्वीप और उसमें रहने-वाला ; (ठा ४,२) ।

अकप्प पुं [**अकल्प**] अयोग्य आचार, शास्त्रोक्त विधि-मर्यादा से बहार का आचरण ; (कप्प) ।

अकप्प वि [**अकल्प्य**] अनाचरणीय, शास्त्र-निषिद्ध आहार-वस्त्र आदी अग्राह्य वस्तु; (वव १) ।

अकप्पिय पुं [**अकल्पिक**] जिसको शास्त्र का पूरा २ ज्ञान न हो ऐसा जैन साधु ; (वव १) ।

अकप्पिय देखो **अकप्प**=अकल्प्य ; (दस ५) ।

अकम वि [**अक्रम**] १ क्रम-रहित; २ क्रिवि. एक साथ; (कुमा) ।

अकम्म } न [**अकर्मन्**, °**क**] १ कर्म का अभाव ;
अकम्मग } (बृह १) । २ पुं. मुक्त, सिद्ध जीव; (आचा) । ३ वि. कृषि-आदि कर्म-रहित (देश, भूमि वगैरः); (जी २४) । °**भूमग**, °**भूमय** वि [°**भूमक**] अकर्म-भूमि में उत्पन्न होने वाला ; (जीव १) । °**भूमि**, °**भूमी** स्त्री [°**भूमि, भूमी**] जिस भूमि में कल्पवृक्षों से ही आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति होनेसे कृषि वगैरः कर्म करने की आवश्यकता नही है वह, भोग-भूमि ; (ठा ३, ४) । °**भूमिय** वि [°**भूमिज**] अकर्म-भूमि में उत्पन्न ; (ठा ३, १) ।

अकम्हा अ [**अकस्मात्**] अचानक, निष्कारण; (सुपा ५६६) ।
अकय वि [**अकृत**] नहीं किया हुआ ; (कुमा) । °**मुह** वि [°**मुख**] अपठित, अशिक्षित ; (बृह ३) । °**त्थ** वि [°**ार्थ**] असफल; (नाट) ।
अकय वि [**अकृत्य**] १—२ करने को अयोग्य या अशक्य । ३ न. अनुचित काम । °**कारि** वि [°**कारिन्**] अकृत्य को करनेवाला ; (पउम ८०,७१) ।
अकय्य (मा) ऊपर देखो ; (नाट) ।
अकरण न [**अकरण**] १ नहीं करना ; (कस) । २ मैथुन " जइ सेवंति अकरणं पंचराहवि बाहिरा हुंति " (वव ३) ।
अकाइय वि [**अकायिक**] १ शारीरिक चेष्टा से रहित । २ पुं. मुक्तात्मा ; (भग ८,२) ।
अकाम पुं [**अकाम**] १ अनिच्छा; (सूअ २, ६) । २ वि. इच्छा-रहित, निष्काम; (सुपा २०६) । °**णिज्जरा** स्त्री [°**निर्जरा**] कर्म-नाश की अनिच्छा से बुभुक्षा आदि कष्टों को सहन करना; (ठा ४, ४) ।
अकामग } [**अकामक**] ऊपर देखो । ३ अवांछ-
अकामय } नीय, इच्छा करने को अयोग्य; (पराह १, १; णाया १, १) ।
अकामिय वि [**अकामिक**] निराश; (विपा १, १) ।
अकाय वि [**अकाय**] १ शरीर-रहित । २ पुं. मुक्तात्मा; (ठा २, ३) ।
अकार पुं [**अकार**] 'अ' अक्षर, प्रथम स्वर वर्ण; (विसे ४६५) ।
अकारग पुं [**अकारक**] १ अरुचि, भोजन की अनिच्छा रूप रोग; (णाया १, १३) । २ वि. अकर्ता; (सूअ १, १) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**) आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला; (सूअ १, १) ।
अकासि अ [**दे**] निषेध-सूचक अव्यय, अलम्, "अकासि लज्जाए" (दे १, ८) ।
अकिंचण वि (**अकिञ्चन**) १ साधु, मुनि, भिक्षुक; (पराह २, ५) । २ गरीब, निर्धन, दरिद्र; (पाअ) ।
अकिट्ठ वि (**अकृष्ट**) नहीं जोती हुई जमीन "अकिट्ठजाय-" (पउम ३३, १४) ।
अकिट्ठ वि [**अक्लिष्ट**] १ क्लेश-रहित, बाधा-रहित ; "पेच्छामि तुज्झ कंतं, संगामे कइवएसु दियहेसु । मह नाहेण विणिहयं रामेण अकिट्ठधम्मेणं" (पउम ५३,५२) ।
अकिरिय वि [**अक्रिय**] १ आलसु, निरुद्यम । २ अशुभ व्यापार से रहित; (ठा ७) । ३ परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक, (णंदि) । °**प्प** वि [°**ात्मन्**] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला, सांख्य; (सूअ १, १०) ।
अकिरिया स्त्री [**अक्रिया**] १ क्रिया का अभाव; (भग २६, २) । २ दुष्ट क्रिया, खराब व्यापार; (ठा ३, ३) । ३ नास्तिकता; (ठा ८) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**] परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक; (ठा ४, ४) ।
अकीरिय देखो **अकिरिय** ; "जे केइ लोगम्मि अकीरियाया; अन्नेण पुट्ठा धुयमादिसंति" (सूअ १, १०) ।
अकुइया स्त्री [**अकुचिका**] देखो **अकुय** ।
अकुओभय वि [**अकुतोभय**] जिसको किसी तर्फ से भय न हो वह, निर्भय ; (आचा) ।
अकुंठ वि [**अकुण्ठ**] अपने कार्य में निपुण (गउड) ।
अकुय वि [**अकुच**] निश्चल, स्थिर; (निचू १) । स्त्री— **अकुइया** ; (कप्प) ।
अकोप्प वि [**अकोप्य**] रम्य, सुन्दर ; (पराह १, ४) ।
अकोप्प पुं [**दे**] अपराध, गुनाह ; (षड्) ।
अकोस देखो **अक्कोस**=आक्रोश ।
अकोसायंत वि [**अकोशायमान**] विकसता हुआ "रविकिरणतरुणबोहियअकोसायंतपउमगंभीरवियडणाभे" (औप)।
अक्क पुं [**अर्क**] १ सूर्य, सूरज ; (सुर १०, २२३) । २ आक का पेड़; (प्रासू १६८) । ३ सुवर्ण, सोना "जेण अन्नुन्नसरिसो विहिओ रयणक्क-संजोगो" (रयण ५४) । ४ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २) । °**तूल** न [°**तूल**] आक की रूई; (पराण १) । °**तेअ** पुं [°**तेजस्**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४६) । °**बोंदीया** स्त्री [°**बोन्दिका**] वल्ली-विशेष; (पराण १) ।
अक्क पुं [**दे**] दूत, संदेश-हारक; (दे १, ६) ।
°**अक्क** देखो **चक्क**; (गा ५३०, से १, ५) ।
अक्कअ वि [**अकृत**] नहीं किया गया ; °**पुव्व** वि [°**पूर्व**] जो पहले कभी न किया गया हो; (से १२, ५०) ।
अक्कंड देखो **अकंड**; (आउ ५३) ।
अक्कंत वि [**आक्रान्त**] १ बलवान् के द्वारा दबाया हुआ; (णाया १, ८) । २ घेरा हुआ, ग्रस्त; (आचा) । ३ परास्त, अभिभूत; (सूअ १, १, ४) । ४ एक

जाति का निर्जीव वायु; (ठा ५, ३) । ५ न. आक्रमण, उल्लंघन; (भग १, ३) । °दुक्ख वि [°दुःख] दुःख से दबा हुआ; (सूत्र १, १, ४) ।

अक्कंत वि [दे] बढ़ा हुआ, प्रवृद्ध; (दे १, ६) ।

अक्कंद अक [आ+क्रन्द्] रोना, चिल्लाना; (प्रामा) । वकृ- **अक्कंदंत**; (सुपा ५७४) ।

अक्कंद (अप) देखो **अक्कम=आ+क्रम्** । **अक्कंदइ**; संकृ—**अक्कंदिऊण**; (सण) ।

अक्कंद पुं [आक्रन्द] रोदन, विलाप, चिल्लाकर रोना; (सुर २, ११४) ।

अक्कंद वि [दे] त्राण करनेवाला, रक्षक; (दे १, १५) ।

अक्कंदावणय वि [आक्रन्दक] रुलानेवाला; (कुमा) ।

अक्कंदिय न [आक्रन्दित] विलाप, रोदन; (से ४, ६४; पउम ११०, ५) ।

अक्कम सक [आ+क्रम्] १ आक्रमण करना; दबाना; २ परास्त करना । वकृ—**अक्कमंत**; (पि ४८१) । संकृ— **अक्कमित्ता**; (पण्ह १, १) ।

अक्कम पुं (आक्रम) १ दबाना; चढ़ाई करना; २ पराभव (आव) ।

अक्कमण न [आक्रमण] १—२ ऊपर देखो (से १४,६६) । ३ पराक्रम; (विसे १०४६) । ४ वि. आक्रमण करनेवाला ; (से ६,१) ।

अक्कमिअ देखो **अक्कंत=आक्रान्त**; (काप्र १७२ ; सुपा १२७) ।

अक्कसाला स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती ; २ उन्मत्त सी स्त्री ; (दे १,५८) ।

अक्का स्त्री [दे] बहिन ; (दे १,६) ।

अक्कासी स्त्री [अक्कासी] व्यन्तर-जातीय एक देवी ; (ती ६) ।

अक्किज्ज वि [अक्रेय] खरीदने के अयोग्य ; (ठा ६) ।

अक्किट्ठ वि [अक्लिष्ट] १ क्लेश-वर्जित ; (जीव ३) । २ बाधा-रहित ; (भग ३,२) ।

अक्किट्ठ वि [अकृष्ट] अ-विलिखित; (भग ३,२) ।

अक्किय वि [अक्रिय] क्रिया-रहित ; (विसे २२०६) ।

अक्कुट्ठ वि [दे] अध्यासित, अधिष्ठित ; (दे १,११) ।

अक्कुस सक [गम्] जाना । **अक्कुसइ**; (हे ४,१६२) ।

अक्कुहय वि [अकुहक] निष्कपट, माया-रहित ; (दस ६,२) ।

अक्कूर वि [अक्रूर] क्रूरता-रहित, दयालु ; (पव २३६) ।

अक्केज्ज देखो **अक्किज्ज** ।

अक्केल्लय वि [एकाकिन्] एकिला, एकाकी ; (नाट) ।

अक्कोड पुं [दे] छाग, बकरा ; (दे १,१२) ।

अक्कोडण न [आक्रोडन] इकट्ठा करना, संग्रह करना ; (विसे) ।

अक्कोस न [अक्रोश] जिस ग्राम की अति नजदीक में अटवी, श्वापद या पर्वतीय नदी आदि का उपद्रव हो वह; "खेत्तं चलमचलं वा, इंदमणिंदं सकोसमक्कोसं । वाघातम्मि अकोसं, अडवीजले सावए तेणे" (बृह ३) ।

अक्कोस सक [आ+क्रुश्] आक्रोश करना । वकृ— **अक्कोसिंत** ; (सुर १२,४०) ।

अक्कोस पुं [आक्रोश] कटु वचन, शाप, भर्त्सना ; (सम ४०) ।

अक्कोसग वि [आक्रोशक] आक्रोश करनेवाला ; (उत्त २) ।

अक्कोसणा स्त्री [आक्रोशना] अभिशाप, निर्भर्त्सना ; (गाया १,१६) ।

अक्कोसिअ वि [आक्रोशित] कटु वचनों से जिसकी भर्त्सना की गई हो वह ; (सुर ६, २३४) ।

अक्कोह वि [अक्रोध] १ अल्प-क्रोधी ; (जं २) । २ क्रोध-रहित ; (उत्त २) ।

अक्ख पुं [अक्ष] १ जीव, आत्मा; (ठा १) । २ रावण का एक पुत्र ; (से १४,६५) । ३ चन्दनक, समुद्र में होनेवाला एक द्वीन्द्रिय जन्तु, जिसके निर्जीव शरीर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं; (श्रा १) । ४ पहिया की धुरी, कील ; (ओघ ५४६) । ५ चौसर का पाँसा ; (धण ३२) । ६ बिभीतक, बहेडा का वृक्ष ; (से ६,४४) । ७ चार हाथ या ६६ अंगुलों का एक मान ; (अणु; सम) । ८ रुद्राक्ष ; (अणु ३) । ६ न. इन्द्रिय; (विसे ६१ ; धण ३२) । १० द्यूत, जूआ; (से ६,४४) । °**चम्म** न [°चर्मन्] पखाल, मसक "अक्खचम्मं उट्टगंडदेसं" (गाया १,६) । °**पाडय** न [°पादक] कील का टुकड़ा "राइणा हाहारवं करेमाणेण पहओ सो सुणओ अक्खपाडएणं ति" (स २५५) । °**माला** स्त्री (°**माला**) जपमाला ; (पउम ६६,३१) । °लया स्त्री [°लता] रुद्राक्ष की माला ; (दे) ।

अक्खाया स्त्री [**आख्याता**] एक प्रकार की जैन दीक्षा; "अक्खायाए सुदंसणो सेट्ठी सामिणा पडिबोहिओ" (पंचू)।

अक्खि त्रि [**अक्षि**] आंख, नेत्र; (हे १, ३३; ३५; स २; १०४; प्राप्र; स्वप्न ६१)।

अक्खिअ वि [**आक्षिक**] पाँसा से जूआ खेलने वाला, जुआड़ी; (दे ७, ८)।

अक्खिअ वि [**आख्यात**] प्रतिपादित, कथित; (श्रा १४)।

अक्खिंतर न [**अक्ष्यन्तर**] आंख का कोटर; (विपा १, १)।

अक्खिज्जंत देखो **अक्खा**=आ+ख्या।

अक्खित्त वि [**आक्षिप्त**] १ व्याकुल। २ जिस पर टीका की गई हो वह। ३ आकृष्ट, खींचा हुआ; (सुर ३,११५)। ४ सामर्थ्य से लिया हुआ; (से ४,३१)।

अक्खित्त न [**अक्षेत्र**] मर्यादित क्षेत्र के बहार का प्रदेश; (निचू १)।

अक्खिव सक [**आ+क्षिप्**] १ आक्षेप करना, टीका करना, दोषारोप करना। २ रोकना। ३ गँवाना। ४ व्याकुल करना। ५ फेंकना। ६ स्वीकार करना। "अक्खिवइ पुरिसगारं" (उवर ४६)। हेकृ—**अक्खिविउं**; (निर १,१)। "तओ न जुत्तमिह कालम् **अक्खिविउं**" (स २०५; पि ५७७)। कर्म—"अक्खिप्पइ य मे वाणी" (स २३; प्रामा)।

अक्खिवण न [**आक्षेपण**] व्याकुलता, घबराहट; (पण्ह १,३)।

अक्खीण वि [**अक्षीण**] १ ह्रास-शून्य, क्षय-रहित, अखूट; (कप्प)। २ परिपूर्ण, संपूर्ण; (कुमा)। °**महाणसिय** वि [°**महानसिक**] जिसको निम्नोक्त अक्षीण-महानसी शक्ति प्राप्त हुई हो वह; (पण्ह २,१) °**महाणसी** स्त्री [°**महानसी**] वह अद्भुत आत्मिक शक्ति, जिससे थोड़ा भी भिक्षान्न दूसरे सैंकड़ो लोगों को यावत्तृप्ति खिलाने पर भी तबतक कम न हो, जबतक भिक्षान्न लानेवाला स्वयं उसे न खाय; (पव २७०)। °**महालय** वि [°**महालय**] जिससे थोड़ी जगह में भी बहुत लोगों का समावेश हो सके ऐसी अद्भुत आत्मिक शक्ति से युक्त; (गच्छ २)।

अक्खुअ वि [**अक्षत**] अक्षीण, त्रुटि-शून्य "अक्खुआयारचरित्ता" (पडि)।

अक्खुडिय वि [**अखण्डित**] संपूर्ण, अखण्ड, त्रुटि-रहित "अक्खुडिओ पक्खुडिओ छिक्कंतोवि सबालवुड्ढजणो" (सुपा ११६)।

अक्खुण्ण वि [**अक्षुण्ण**] जो तुटा हुआ न हो, अविच्छिन्न; (बृह १)।

अक्खुद्द वि [**अक्षुद्र**] १ गंभीर, अतुच्छ; (दव्व ५)। २ दयालु, करुण; (पंचा २)। ३ उदार; (पंचा ७)। ४ सूक्ष्म बुद्धि वाला; (धर्म २)।

अक्खुद्द न [**अक्षौद्र्य**] क्षुद्रता का अभाव; (उप ६१५)।

अक्खुपुरी स्त्री [**अक्षपुरी**] नगरी-विशेष; (गाया २)।

अक्खुब्भमाण वि [**अक्षुभ्यमान**] जो क्षोभ को प्राप्त न होता हो; (उप पृ ६२)।

अक्खुहिय वि [**अक्षुभित**] क्षोभ-रहित, अक्षुब्ध; (सण)।

अक्खूण वि [**अक्षूण**] अन्यून, परिपूर्ण "भोयणवत्थाहरणं संपायंतेण सव्वमक्खूणं" (उप ७२८ टी)।

अक्खेअ देखो **अक्खा**=आ+ख्या।

अक्खेव पुं [**अ+क्षेप**] शीघ्रता, जल्दी; (सुपा १२६)।

अक्खेव पुं [**आक्षेप**] १ आकर्षण, खींच कर लाना; (पण्ह १, ३)। २ सामर्थ्य, अर्थ की संगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलाना; (उप १००२)। ३ आशंका, पूर्वपक्ष; (भग २, १; विसे १४३६)। ४ उत्पत्ति; "दइवेण फलक्खेवे अइप्पसंगो भवे पयडो" (उवर ४८)।

अक्खेवग पुं [**आक्षेपक**] १ खींच कर लानेवाला, आकर्षक; २ समर्थक पद, अर्थ-संगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलानेवाला शब्द; (उप ६६६)। ३ सान्निध्य-कारक; (उवर १८८)।

अक्खेवणी स्त्री [**आक्षेपणी**] श्रोताओं के मन को आकर्षण करनेवाली कथा; (औप)।

अक्खेवि वि [**आक्षेपिन्**] आकर्षण करनेवाला, खींच कर लानेवाला; (पण्ह १, ३)।

अक्खोड सक [**कृष्**] म्यान से तलवार को खींचना—बाहर करना। अक्खोडइ; (हे ४, १८७)।

अक्खोड सक [**आ+स्फोटय्**] थोड़ा या एक बार झाटकना। अक्खोडिज्जा। वकृ—**अक्खोडंत**; (दस ४)।

अक्खोड पुं [**अक्षोट**] १ अखरोट का पेड़; २ न. अखरोट वृक्ष का फल; (पण्ण १७; सण)। ३ राज-कुल को दी जाती सुवर्ण आदि की भेंट; (वव १)।

अक्खोडिय वि [**कृष्ट**] खींचा हुआ, बहार निकाला हुआ (खड्ग); (कुमा)।

अक्खोभ } पुं [**अक्षोभ**] १ क्षोभ का अभाव, घबराहट; (णाया १, ६)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ले कर शत्रुंजय पर मोक्ष गया था; (अंत १, ७)। ३ न. "अन्तकृद्दशा" सूत्र का एक अध्ययन; (अंत १, ७)। ४ वि. क्षोभ-रहित, अचल, स्थिर; (पगह २,५; कुमा)।
अक्खोह }

अक्खोहणिज्ज वि [**अक्षोभणीय**] जो क्षुब्ध न किया जा सके; (सुपा ११४)।

अक्खोहिणी स्त्री [**अक्षौहिणी**] एक बड़ी सेना, जिसमें २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०६३५० पैदल होते हैं; (पउम ५५, ७; ११)।

अखंड वि [**अखंड**] परिपूर्ण, खण्ड-रहित; (औप)।

अखंडल पुं [**आखण्डल**] इन्द्र; (पउम ४६, ४४)।

अखंडिय वि [**अखण्डित**] नही तुटा हुआ, परिपूर्ण; (पंचा १८)।

अखंपण वि [**दे**] स्वच्छ, निर्मल "आयवत्ताइं। धारिंति, ठविंति पुरो अखम्पणं दप्पणं केवि" (सुपा ७४)।

अखज्ज वि [**अखाद्य**] जो खाने लायक न हो; (णाया १, १६)।

अखत्त न [**अक्षात्र**] क्षत्रिय-धर्म के विरुद्ध, जुलम, "संपइ विज्जाबलिओ, अहह अखत्तं करेइ कोइ इमो" (धम्म ८ टी)।

अखम देखो **अक्खम**; (कुमा)।

अखलिअ देखो **अक्खलिय**=अस्खलित; (कुमा)।

अखादिम वि [**अखाद्य**] खाने को अयोग्य, अभक्ष्य "कुपहे धावंति, अखादिमं खादंति" (कुमा)।

अखाय वि [**अखात**] नहीं खुदा हुआ। °**तल** न [°**तल**] छोटा तलाव; (पाअ)।

अखिल वि [**अखिल**] १ सर्व, सकल, परिपूर्ण; (कुमा)। २ ज्ञान-आदि गुणों से पूर्ण "अखिले अगिद्धे अणिए अचारी" (सूअ १, ७)।

अखुट्ट वि [**दे**] अखूट; (भवि)।

अखुट्टिअ वि (**अतुडित**) अखूट, परिपूर्ण; (कुमा)।

अखुडिअ देखो **अक्खुडिअ**; (कुमा)।

अखेयण्ण वि [**अखेदज्ञ**] अकुशल, अनिपुण; (सूअ १, १०)।

अखोहा स्त्री [**अक्षोभा**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३७)।

अग पुं [**अग**] १ वृक्ष, पेड; २ पर्वत, पहाड; (से ६, ४२) "उच्चागयठाणलट्ठसंठियं" (कप्प)।

अगइ स्त्री [**अगति**] १ नीच गति, नरक या पशु-योनि में जन्म; (ठा २, २)। २ निरुपाय; (अच्चु ६६)।

अगंठिम न [**अग्रन्थिम**] १ कदली-फल, केला; (बृह १)। २ फल की फाँक, टुकड़ा; (निचू १६)।

अगंडिगेह वि [**दे**] यौवनोन्मत्त, जुवानी से उन्मत्त बना हुआ; (दे १, ४०)।

अगंडूयग वि [**अकण्डूयक**] नहीं खुजलानेवाला; (सूअ २, २)।

अगंथ वि [**अग्रन्थ**] १ धन-रहित। २ पुंस्त्री. निर्ग्रन्थ, जैन साधु "पावं कम्मं अकुव्वमाणे एस महं अगंथे विआहिए" (आचा)।

अगंधण पुं [**अगन्धन**] इस नाम की सर्पों की एक जाति "नेच्छंति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे" (दस २)।

अगड पुं [**दे. अवट**] कूप, इनारा; (सुर ११, ८६; उव)। °**तड** त्रि [°**तट**] इनारा का किनारा; (विसे)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] इस नाम का एक राज-कुमार; (उत्त)। °**दद्दुर** पुं [°**दर्दुर**] कुँए का मेढक; अल्पज्ञ, वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहिर न गया हो; (णाया १, ८)।

अगड पुं [**अवट**] कूप के पास पशुओं के जल पीने के लिए जो गर्त बनाया जाता है वह; (उप २०५)।

अगड वि [**अकृत**] नहीं किया हुआ; (वव ६)।

अगणि पुं [**अग्नि**] आग; (जी ६)। °**काय** पुं [°**काय**] अग्नि के जीव; (भग ७,१०)। °**मुह** पुं [°**मुख**] देव, देवता; (आचू)।

अगणिअ वि [**अगणित**] अवगणित, अपमानित; (गा ४८४; पउम ११७,१४)।

अगणिज्जंत वि [**अगण्यमान**] जो गुणने में न आता हो, जिसकी आवृत्ति न की जाती हो "अगणिज्जंती नासे विज्जा" (प्रासू ६६)।

अगत्थि } पुं [**अगस्ति, °क**] १ इस नाम का एक ऋषि। २ वृक्ष विशेष; (दे ६,१३३;
अगत्थिय }

म्नु)। ३ एक तारा, अठासी महाग्रहों में ५४ वाँ महाग्रह ; (ठा २,३)।

अगन्न वि [**अगण्य**] १ जिसकी गिनती न हो सके वह ; (उप ७२८ टी)।

अगन्न वि [**अकर्ण्य**] नहीं सुनने लायक, अश्राव्य ; (भवि)।

अगम न [**अगम**] आकाश, गगन ; (भग २०,२)।

अगमिय वि [**अगमिक**] वह शास्त्र, जिसमें एक-सदृश पाठ न हो, या जिसमें गाथा वगैरः पद्य हो ; " गाहाइ अगमियं खलु कालियसुयं " (विसे ५४९)।

अगम्म वि [**अगम्य**] १ जाने को अयोग्य। २ स्त्री. भोगने को अयोग्य—भगिनी, परस्त्री आदि—स्त्री ; (भवि; सुर १२,५२)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] परस्त्री को भोगनेवाला, पारदारिक ; (पराह १, २)।

अगय न [**अगद**] औषध, दवाई ; (सुपा ४४७)।

अगय पुं [**दे**] दैत्य, दानव ; (दे १,६)।

अगर पुंन [**अगरु**] सुगन्धि काष्ठ-विशेष ; (पराह २,५)।

अगरल वि [**अगरल**] सुविभक्त, स्पष्ट, " अगरलाए अमम्मणाए......भासाए भासेइ " (औप)।

अगरु देखो **अगर** ; (कुमा)।

अगरुअ वि [**अगरुक**] बड़ा नहीं, छोटा, लघु ; (गउड)।

अगरुलहु वि [**अगुरुलघु**] जो भारी भी न हो और हलका भी न हो वह, जैसे आकाश, परमाणु वगैरः ; (विसे)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिससे जीवों का शरीर न भारी न हलका होता है ; (कम्म १,४७)।

अगलदत्त पुं [**अगडदत्त**] एक रथिक-पुत्र ; (महा)।

अगलुय देखो **अगर**; (औप)।

अगहण पुं [**दे**] कापालिक, एक ऐसे संप्रदाय के लोग, जो माथे की खोपड़ी में ही खाने पीने का काम करते हैं ; (दे १,३१)।

अगहिल वि [**अग्रहिल**] जो भूतादि से आविष्ट न हो, अपागल ; (उप ५६७ टी)। °**राय** पुं [°**राज**] एक राजा, जो वास्तव में पागल न होने पर भी पागल-प्रजा के आग्रह से बनावटी पागल बना था ; (ती २१)।

अगाढ वि [**अगाध**] अथाह, बहुत गहरा " अगाढपण्णेसु वि भाविअप्पा " (सुअ १,१३)।

अगामिय वि [**अग्रामिक**] ग्राम-रहित " अगामियाए... अडवीए " (औप)।

अगार पुं [**अकार**] ' अ ' अक्षर ; (विसे ४८४)।

अगार न [**अगार**] १ गृह, घर ; (सम ३७)। २ पुं. गृहस्थ, गृही, संसारी ; (दस १)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] गृही, संसारी; (आचा)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] गृहि-धर्म, श्रावक-धर्म; (औप)।

अगारि वि [**अगारिन्**] गृहस्थ, गृही ; (सुअ २,६)।

अगारी स्त्री [**अगारिणी**] गृहस्थ स्त्री ; (वव ४)।

अगाल देखो **अयाल** ; (स ८२)।

अगाह वि [**अगाध**] गहरा, गंभीर ; (पाअ)।

अगिला स्त्री [**अग्लानि**] अखिन्नता, उत्साह ; (ठा ५, १)।

अगिला स्त्री [**दे**] अवज्ञा, तिरस्कार ; (दे १,१७)।

अगीय वि [**अगीत**] शास्त्रों का पूरा ज्ञान जिसको न हो वैसा (जैन साधु) ; (उप ८३३ टी)।

अगीयत्थ वि [**अगीतार्थ**] ऊपर देखो ; (वव १)।

अगुज्झहर वि [**दे**] गुप्त बात को प्रकाशित करनेवाला ; (दे १,४३)।

अगुण देखो **अउण** ; (पि २६५)।

अगुण वि [**अगुण**] १ गुण-रहित, निर्गुण ; (गउड)। २ पुं. दोष, दूषण ; (दस ५)।

अगुणि वि [**अगुणिन्**] गुण-वर्जित, निर्गुण ; (गउड)।

अगुरु, **अगुरुअ** वि [**अगुरु**] १ बड़ा नहीं सो, छोटा, लघु । २ पुंन. सुगन्धि काष्ठ विशेष, अगुरु-चंदन " धूवेण किं अगुरुणो किमु कंकणेण " (कप्पू ; पउम २,११)।

अगुरुलहु, **अगुरुलहुअ** देखो **अगरुलहु** ; (सम ५१; ठा १०)।

अगुलु देखो **अगुरु** "संखतिणिसागुलुचंदणाइं" (निचू २)।

अग्ग न [**अग्र**] १ आगे का भाग, ऊपर का भाग ; (कुमा)। २ पूर्व-भाग, पहले का भाग ; (निचू १)। ३ परिमाण " अग्गं ति वा परिमाणं ति वा एगट्ठा " (आचू १)। ४ वि. प्रधान, श्रेष्ठ ; (सुपा २४८)। ५ प्रथम, पहला ; (आव १)। °**क्खंध** पुं [°**स्कन्ध**] सैन्य का अग्र भाग ; (से ३,४०)। °**गामिग** वि [°**गामिक**] अग्र-गामी, आगे जानेवाला ; (स १४७)। °**ज** देखो °**य** (दे ६,४६)। °**जम्म** [°**जन्मन्**] देखो °**य** ; (उप ७२८ टी)। °**जाय** [°**जात**] देखो °**य** ; (आचा)। °**जीहा** स्त्री

[जिह्वा] जीभ का अग्र-भाग। °णिय, °णी वि [°णी] अगुआ, मुखिया, नायक ; (कप्प ; नाट)। °तावसग पुं [°तापसक] ऋषि-विशेष का नाम ; (सुज्ज १०)। °द्ध न [°ार्ध] पूर्वार्ध ; (निचू १)। °पिंड पुं [°पिण्ड] एक प्रकारका भिक्षान्न ; (आचा)। °प्पहारि वि [°प्रहारिन्] पहले प्रहार करनेवाला ; (आव १)। °बीय वि [°बीज] जिसमें बीज पहले ही उत्पन्न हो जाता है या जिसकी उत्पत्ति में उसका अग्र-भाग ही कारण होता है ऐसी आम, कोरंटक आदि वनस्पति ; (पण्ण १ ; ठा ४,१) °मणि पुं (°मणि) मुख्य, श्रेष्ठ शिरोमणि ; (उप ७२८ टी)। °महिसी स्त्री [°महिषी] पट्टरानी ; (सुपा ४६)। °य वि [°ज] १ आगे उत्पन्न होने वाला। २ पुं. ब्राह्मण। ३ बड़ा भाई। ४ स्त्री. बड़ी बहन ; (नाट)। °लोग पुं [°लोक] मुक्ति-स्थान सिद्धि-क्षेत्र ; (श्रा १२)। °हत्थ पुं [°हस्त] १ हाथ का अग्र भाग; (उवा)। २ हाथ का अवलम्बन, सहारा ; (से ४, ३)। ३ अंगुली ; (प्राप)।

अग्ग वि [अग्र्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम ; (से ८, ४४)। २ प्रधान, मुख्य ; (उत्त १४)।

अग्गओ अ [अग्रतस्] सामने, आगे ; (कुमा)।

अग्गंथ वि [अग्रन्थ] १ धन-रहित। २ पुं. जैन साधु; (औप)।

अग्गक्खंध पुं [दे] रण-भूमि का अग्र-भाग ; (दे १, २७)।

अग्गल न [अर्गल] १ किवाड़ बंद करने की लकड़ी, आगल ; (दस ५, २)। २ पुं. एक महाग्रह ; (सुज्ज २०)। °पासय पुं [°पाशक] जिसमें आगल दिया जाता है वह स्थान ; (आचा २, १, ५)। °पासाय पुं [°प्रासाद] जहां आगल दिया जाता है वह घर (राय)।

अग्गल वि [दे) अधिक; "वीसा एक्कग्गला" (पिंग)।

अग्गला स्त्री [अर्गला] आगल, हुड़का ; (पाअ)।

अग्गलिअ वि [अर्गलित] जो आगल से बंद किया गया हो वह ; (सुर ६, १०)।

अग्गवेअ पुं [दे] नदी का पूर ; (दे १, २६)।

अग्गह पुं (आग्रह] आग्रह, हठ, अभिनिवेश ; (सूअ १, १, ३; स ५१३)।

अग्गहण न [अग्रहण] १ अज्ञान ; (सुर १२, ४६)। २ नहीं लेना ; (से ११, ६८)।

अग्गहण न [दे. अग्रहण] अनादर, अवज्ञा ; (दे १, १७ ; से ११, ६८)।

अग्गहणिया स्त्री [दे] सीमंतोन्नयन, गर्भाधान के बाद किया जाता एक संस्कार और उसके उपलक्ष्य में मनाया जाता उत्सव, जिसको गुजराती भाषा में "अघयणी" कहते हैं ; (सुपा २३)।

अग्गहि वि [आग्रहिन्] आग्रही, हठी ; (सूअ १, १३)।

अग्गहिअ वि [दे] १ निर्मित, विरचित ; २ स्वीकृत कबूल किया हुआ ; (षड्)।

अग्गाणी वि [अग्रणी] मुख्य, प्रधान, नायक "दक्खिन्न-दयाकलिओ अग्गाणी सयलवणियसत्थस्स" (सुर ६, १३८)।

अग्गारण न [उद्गारण] वमन, वान्ति ; (चारु ७)।

अग्गाह वि [अगाध] अगाध, गंभीर ; "खीरादहिणुव्व अग्गाहा" (गुरु ४)।

अग्गाहार पुं [अग्राधार] ग्राम-विशेष का नाम ; (सुपा ५४५)।

अग्गि पुंस्त्री [अग्नि] १ आग, वह्नि ; (प्रासू २२), "एस पुण कावि अग्गी" (सट्टि ६१)। २ कृत्तिका नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ३ लोकान्तिक देव-विशेष; (आवम)। °आरिआ स्त्री [°कारिका] अग्नि-कर्म, होम; (कप्पू)। °उत्त पुं [°पुत्र] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर का नाम ; (सम १५३)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति ; (पण्ण १)। °कोण पुं [°कोण] पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा ; (सुपा ६८)। °जस पुं [°यशस्] देव-विशेष ; (दीव)। °ज्जोय पुं [°द्योत] भगवान् महावीर का पूर्वीय बीसवें ब्राह्मण-जन्म का नाम ; (आचू)। °ट्ठ वि [°स्थ] आग में रहा हुआ ; (हे ४, ४२६)। °ट्ठोम पुं [°ष्टोम] यज्ञ-विशेष ; (पि १०; १५६)। °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] आग की शक्ति को रोकने वाली एक विद्या ; (पउम ७, १३६)। °दत्त पुं [°दत्त] १ भगवान् पार्श्वनाथ के समकालीन ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव; (तित्थ) २। भद्रबाहुस्वामी का एक शिष्य ; (कप्प)। °दाण पुं

[°दान] सातवें वासुदेव के पिता का नाम ; (पउम २०, १८२)। °देव पुं. [°देव] देव-विशेष; (दीव)। °भूइ पुं [°भूति] १ भगवान् महावीर का द्वितीय गणधर; (कप्प)। २ भगवान् महावीर का पूर्वीय अठारहवें ब्राह्मण-जन्म का नाम ; (आचू)। °माणव पुं [°माणव] अग्निकुमार देवों का उत्तर-दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३)। °माली स्त्री [°माली] एक इन्द्राणी; (दीव)। °वेस पुं [°वेश] १ इस नाम का एक प्रसिद्ध ऋषि ; (णंदि)। २ न. एक गोत्र ; (कप्प)। °वेस पुं [°वेश्मन्] १ चतुर्दशी तिथि ; (जं)। २ दिवस का बाइसवाँ मुहूर्त ; (चंद १०)। °वेसायण पुं [°वैश्यायन) १ अग्निवेश ऋषि का पौत्र ; (णंदि; म २२५)। २ अग्निवेश-गोत्र में उत्पन्न ; (कप्प)। ३ गोशालक का एक दिक्चर ; (भग १५)। ४ दिन का बाइसवाँ मुहूर्त ; (सम ५१)। °सक्कार पुं [°संस्कार] विधि-पूर्वक जलाना, दाह देना ; (आवम)। °सप्पभा स्त्री [°सप्रभा] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा समय की पालखी का नाम; (सम)। °सम्म पुं [°शर्मन्] एक प्रसिद्ध तपस्वी ब्राह्मण ; (आचा)। °सिह पुं [°शिख] १ सातवें वासुदेव का पिता ; (सम १५२)। २ अग्निकुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३)। °सिह पुं [°सिंह] एक जैन मुनि ; (उप ४८६)। °सिहा-चारण पुं [°शिखाचारण] अग्नि-शिखा में निर्बाधतया गमन करने की शक्ति वाला साधु ; (पव ६८)। °सीह पुं [°सिंह] सातवें वासुदेव के पिता का नाम ; (ठा ६)। °सेण पुं [°षेण] ऐरवत क्षेत्र के तीसरे और बाईसवें तीर्थंकर ; (तित्थ, सम १५३)। °होत्त न [°होत्र] १ अन्याधान, होम ; (विसे १६४०)। २ पुं. ब्राह्मण ; (पउम ३५, ६)। °होत्तवाइ वि [°होत्रवादिन्] होम से ही स्वर्ग की प्राप्ति माननेवाला (सूअ १, ७)। °होत्तिय वि [°होत्रिक] होम करनेवाला ; (सुपा ७०)।

अग्गिअ पुं [अग्निक] १ यमदग्नि-नामक एक तापस ; (आचू)। २ भस्मक रोग, जिससे जो कुछ खाय वह तुरंत ही हजम हो जाता है ; (विपा १, १; विसे २०४८)।

अग्गिअ पुं [दे] इन्द्रगोप, एक जातका क्षुद्र कीट ; (दे १, ५३)। २ वि. मन्द ; (दे १, ५३)।

अग्गिआय पुं [दे] इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष; (षड्)।

अग्गिच्च वि [आग्नेय] १ अग्नि-संबन्धी। २ पुं. लोकान्तिक देवों की एक जाति ; [गाथा १, ८)। ३ न. गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र की शाखा है ; (ठा ७)।

अग्गिच्चाभ न [आग्नेयाभ] देव-विमान विशेष; (सम १४)।

अग्गिज्झ वि [अग्राह्य] लेने के अयोग्य ; (पउम ३१, ५४)।

अग्गिम वि [अग्रिम] १ प्रथम, पहला ; (कप्पू)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य ; (सुपा १)।

अग्गियय पुं [आग्नेयक] इस नाम का एक राजपुत्र; (उप ६३७)।

अग्गिलिय देखो **अग्गिम** ; (पंचव २)।

अग्गिल्ल पुं [अग्निल] एक महाग्रह ; (ठा २, ३)।

अग्गीय देखो **अगीय** ; (उप ८४०)।

अग्गीवय न [दे] घर का एक भाग ; (पउम १६, ६४)।

अग्गुच्छ वि (दे) प्रमित, निश्चित ; (षड्)।

अग्गे अ [अग्रे] आगे, पहले ; (पिंग)। °यण वि [°तन] आगे का, पहले का ; (आवम)। °सर वि [°सर] अगुआ, मुखिया, नायक; (श्रा २८)।

अग्गेई स्त्री [आग्नेयी) अग्निकोण, दक्षिण-पूर्व दिशा ; (धण १८)।

अग्गेणिय न [अग्रायणीय] दूसरा पूर्व, बारहवें जैनागम का दूसरा महान् भाग ; (सम २६)।

अग्गेणी देखो **अग्गेई** ; (आवम)।

अग्गेणीय देखो **अग्गेणिय** ; (णंदि)।

अग्गेय वि (आग्नेय) १ अग्नि-संबंधी, अग्नि का ; (पउम १२,१२६ ; विसे १६६०)। २ न. शस्त्र-विशेष ; (सुर ८, ४१)। ३ एक गोत्र, जो वत्स गोत्र की शाखा है ; (ठा ७)। ४ अग्नि-कोण, दक्षिण-पूर्व दिशा ; (भवि)।

अग्गोदय न (अग्रोदक) समुद्रीय वेला की वृद्धि और हानि ; (सम ७६)।

अग्घ अक [राज्] बिराजना, शोभना, चमकना। अग्घइ ; (हे ४, १००)।

अग्घ सक [अर्ह] योग्य होना, लायक होना "कलं ण अग्घइ" (गाथा १, ८)।

अग्घ सक [**अर्घ्**] १ अच्छी किम्मत से बेचना, २ आदर करना, सम्मान करना ।
" पहिएण पुणो भणियं, तुब्भेहिं सिद्धि ! कम्मि नयरम्मि । गंतव्वं सो साहइ, पंणियं अग्घिस्सए जत्थ" (सुपा ५०१)। वकृ—**अग्घायमाण** (गाया १, १) ।

अग्घ पुं (**अर्घ**) १ मछली की एक जाति ; (जीव ३) । २ पूजा-सामग्री ; (गाया १, १६) । ३ पूजा में जलादि देना ; (कुमा) । ४ मूल्य, मोल, किम्मत ; (निचू २) । °**वत्त** न [°**पात्र**] पूजा का पात्र ; (गउड) ।

अग्घ वि [**अर्घ्य**) १ पूजा में दिया जाता जलादि द्रव्य ; (कप्पू) । २ कीमती, बहु-मूल्य ; (प्राप) ।

अग्घव सक [**पूर्**] पूर्ति करना, पूरा करना । अग्घवइ ; (हे ४, ६६) ।

अग्घविय वि [**पूर्ण**] १ भरा हुआ, संपूर्ण ; २ पूरा किया गया ; (सुपा १०६, कुमा) ।

अग्घविय वि [**अर्घित**] -पूजित, सत्कृत, सम्मानित ; (से ११, १६ ; गउड) ।

अग्घा सक [**आ+घ्रा**] सूँघना । वकृ—**अग्घाअंत, अग्घायमाण** ; (गा ५६५ ; गाया १, ८) । कवकृ—**अग्घाइज्जमाण** ; (पराण २८) ।

अग्घाइ वि [**आघ्रायिन्**] सूँघनेवाला " सभमरपउमग्घाइणि ! वारियवामे ! सहसु इण्हिं " (काप्र २६४) ।

अग्घाइअ वि [**आघ्रात**] सूँघा हुआ ; (गा ६७) ।

अग्घाइज्जमाण देखो **अग्घा** ।

अग्घाइर वि [**आघ्रातृ**] सूँघनेवाला । स्त्री—°**री** ; (गा ८८६) ।

अग्घाड सक [**पूर्**] पूर्ति करना, पूरा करना । अग्घाडइ; (हे ४,१६६) ।

अग्घाड, **अग्घाडग** पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, चिचड़ा, लटजीरा ; (दे १,८ ; पराण १) ।

अग्घाण वि [**दे**] तृप्त, संतुष्ट ; (दे १,१८) ।

अग्घाय वि [**आघ्रात**] सूँघा हुआ ; (पाअ) । २ आहूत बुलाया हुआ; "बलभद्देणग्घाया भणंति" (विसे २३८४) ।

अग्घायमाण देखो **अग्घ=अर्घ्** ।

अग्घायमाण देखो **अग्घा** ।

अग्घिय वि [**राजित**] विराजित, शोभित ; (कुमा) ।

अग्घिय वि [**अर्घित**] १ बहु-मूल्य, कीमती " अग्घियं नाम बहुमोल्लं " (निसी २) । २ पूजित ; (दे १,१०७ ; से २०२) ।

अग्घोदय न [**अर्घोदक**] पूजा का जल; (अभि ११८) ।

अघ न [**अघ**] १ पाप कुकर्म ; (कुमा) । २ वि. शोचनीय, शोक का हेतु, " अघं बम्हणभावं " (प्रयौ ८०) ।

अघो देखो **अहो** ; (नाट) ।

अचक्खु पुंन [**अचक्षुस्**] १ आँख सिवाय बाकी इन्द्रियाँ और मन; (कम्म १, १०) । २ आँख को छोड़ बाकी इन्द्रिय और मन से होनेवाला सामान्य ज्ञान; (दं १६) । ३ वि अंधा, नेत्र-हीन ; (कम्म ४) । °**दंसण** न [°**दर्शन**] आँख को छोड़ बाकी इन्द्रियां और मनसे होनेवाला सामान्य ज्ञान ; (सम १५) । °**दंसणावरण** न [°**दर्शनावरण**] अचक्षुर्दर्शन को रोकनेवाला कर्म ; (ठा ६) । °**फास** पुं [°**स्पर्श**) अंधकार, अंधेरा; (गाया १ १४) ।

अचक्खुस वि [**अचाक्षुष**] जो आँख से देखा न जा सके; (पराह १,१) ।

अचक्खुस्स वि [**अचक्षुष्य**] जिसको देखनेको मन न चाहता हो ; (बृह ३) ।

अचर वि (**अचर**) पृथिव्यादि स्थिर पदार्थ, स्थावर ; (दंस) ।

अचल वि [**अचल**] १ निश्चल, स्थिर ; (आचा) । २ पुं. यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम ; (अंत ३) । एक बलदेव का नाम ; (पव २०६) । ४ पर्वत, पहाड़ ; (गउड १२०) । ५ एक राजा, जिसने रामचन्द्र के छोटे भाई के साथ जैन दीक्षा ली थी ; (पउम ८५,४) । °**पुर** न [°**पुर**] ब्रह्म-द्वीप के पास का एक नगर ; (कप्प) । °**प्प** न [°**ात्मन्**] हस्तप्रहेलिका को ८४ लाख से गुणाने पर जो संख्या लब्ध हो वह, अन्तिम संख्या ; (इक) । °**भाय** पुं [°**भ्रातृ**] भगवान् महावीर का नववाँ गणधर ; (कप्प) ।

अचल न (**दे**) १ घर ; २ घर का पिछला भाग ; ३ वि. कहा हुआ ; ४ निष्ठुर, निर्दय ; ५ नीरस, सूखा ; (दे १, ५३) ।

अचला स्त्री [**अचला**] पृथिवी । २ एक इन्द्राणी ; (गाया २) ।

अचिंत वि [**अचिन्त**] निश्चिन्त, चिन्ता-रहित ।

अचिंत वि [**अचिन्त्य**] अनिर्वचनीय, जिसकी चिन्ता भी न हो सके वह, अद्भुत ; (लहुअ ३) ।

अचिंतणिज्ज } वि [**अचिन्तनीय**] ऊपर देखो ; (अभि
अचिंतणीअ } २०३; महा)।

अचिंतिय वि [**अचिन्तित**] आकस्मिक, असंभवित ; (महा)।

अचित्त वि [**अचित्त**] जीव-रहित, अचेतन " चित्तमचित्तं वा णेव सयं अजिन्नं गिण्हेज्जा " (दस ४)।

अचियंत } वि [**दे**] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर ; (सूत्र २,२ ;
अचियत्त } पण्ह २, ३)। २ न. अप्रीति, द्वेष; (ओघ २६१)।

अचिरा देखो **अइरा** ; (पउम ३७, ३७)।

अचिराभा स्त्री [**अचिराभा**] बिजली, विद्युत् ; (पउम ४२, ३२)।

अचिरेण देखो **अइरेण** ; (प्रारु)।

अचेयण वि [**अचेतन**] चैतन्य-रहित निर्जीव ; (पण्ह १, २)।

अचेल न [**अचेल**] १ वस्त्रों का अभाव। २ अल्प-मूल्यक वस्त्र ; ३ थोडा वस्त्र ; (सम ४०)। ४ वि. वस्त्र-रहित, नग्न ; ५ जीर्ण वस्त्र वाला ; ६ अल्प वस्त्र वाला ; ७ कुत्सित वस्त्र वाला, मैला " तह थोव-जुन्न-कुत्थियचेलेहिवि भण्णए अचेलोत्ति " (विसे २६०१)। °**परिसह**, °**परीसह** पुं [°**परिषह**, °**परीषह**] वस्त्र के अभाव से अथवा जीर्ण, अल्प या कुत्सित वस्त्र होने से उसे अदीन भाव से सहन करना ; (सम ४०; भग ८, ८)।

अचेलग } वि [**अचेलक**] १ वस्त्र-रहित, नग्न ; २ फटा-
अचेलय } टुटा वस्त्र वाला ; ३ मलिन वस्त्र वाला ; ४ अल्प वस्त्र वाला ; ५ निर्दोष वस्त्र वाला ; ६ अनियत रूप से वस्त्र का उपभोग करने वाला ; (ठा ५, ३)।
" परिसुद्धजिण्ण-कुच्छियथोवानिययत्तभोगभोगेहिं "।
मुणओ मुच्छारहिया, संतेहिं अचेलया हुंति" (विसे २५९९)।

अच्च सक [**अर्च्**] पूजना, सत्कार करना। अच्चेइ ; (औप)। अच्च ; (दे २, ३५ टी)। कवकृ—**अच्चिज्जंत,** (सुपा ७८)। कृ—**अच्चणिज्ज** ; (गाया १, १)।

अच्च पुं [**अर्च्य**] १ लव (काल-मान) का एक भेद ; (कप्प)। २ वि. पूज्य, पूजनीय ; (हे १,१७७)।

अच्चंग न [**अत्यङ्ग**] विलासिता के प्रधान अंग, भोग के मुख्य साधन " अच्चंगाणं च भोगओ माणं " (पंचा १)।

अच्चंत वि [**अत्यन्त**] हद से ज्यादः, अत्यधिक, बहुत ; (सुर ३, २२)। °**थावर** वि [°**स्थावर**] अनादि-काल से स्थावर-जाति में रहा हुआ ; (आवम)। °**दूसमा** स्त्री [°**दुष्षमा**] देखो **दुस्समदुस्समा** ; (पउम २०, ७२)।

अच्चंतिअ वि [**आत्यन्तिक**] १ अत्यन्त, अधिक, अतिशयित। २ जिसका नाश कभी न हो वह, शाश्वत ; (सूत्र २,६)।

अच्चग वि [**अर्चक**] पूजक ; (चैत्य १२)।

अच्चण न [**अर्चन**] पूजा, सम्मान ; (सुर ३, १३ ; सत्त १२ टी)।

अच्चणा स्त्री [**अर्चना**] पूजा; (अच्चु ५७)।

अच्चत्त वि [**अत्यक्त**] नहीं छोड़ा हुआ, अपरित्यक्त ; (उप पृ १०७)।

अच्चत्थ वि [**अत्यर्थ**] १ अतिशयित, बहुत ; (पण्ह १,१)। २ गंभीर अर्थ वाला ; (राय)। ३ क्रिवि. ज्यादः, अत्यंत; (सुर १,७)।

अच्चब्भुय वि [**अत्यद्भुत**] बड़ा आश्चर्य-जनक ; (प्रासू ४२)।

अच्चय पुं [**अत्यय**] १ विपरीत आचरण ; (बृह ३)। २ विनाश, मरण ; (उव)।

अच्चय वि [**अर्चक**] पूजक, " अणच्चयाणं च चिरंतणाणं, जहारिहं रक्खणवद्धणंति " (विवे ७० टी)।

अच्चर
अच्चरिअ } न [**आश्चर्य**] विस्मय, चमत्कार; (विक्र ६४;
अच्चरीअ } प्रबो १७ ; रंभा ; भवि ; नाट)।

अच्चहम वि [**अत्यधम**] अति नीच ; (कप्पू)।

अच्चा स्त्री [**अर्चा**] पूजा, सत्कार; (गउड)।

अच्चासणया स्त्री [**अत्यासनता**] खूब बैठना, देर तक या वारंवार बैठना ; (ठा ६)।

अच्चासणया स्त्री [**अत्यशनता**] खूब खाना ; (ठा ६)।

अच्चासण्ण } न [**अत्यासन्न**] अति समीप, खूब
अच्चासन्न } नजदीक ; (भग ९,१ ; उवा)।

अच्चासाइय } वि [**अत्याशातित**] अपमानित, हैरान
अच्चासादिय } किया गया ; (ठा १० ; भग ३,२)।

अच्चासाय सक [**अत्या+शातय्**] अपमान करना, हैरान करना। वकृ—**अच्चासाएमाण** ; (ठा १०)। हेकृ—**अच्चासाइत्तए** ; (भग ३, २)।

अच्चाहिअ } वि [**अत्याहित**] १ महा-भीति, बड़ा भय;
अच्चाहिद } २ झुठा, असत्य ; (स्वप्न ४७) । ३ ऐसा जोखमी कार्य, जिसमें प्राण-हानि की संभावना हो ; (अभि ३७) ।

अच्चि स्त्री [**अर्चिस्**] १ कान्ति, तेज ; (भग २,५) । २ अग्नि की ज्वाला ; (पण्ण १) । ३ किरण ; (राय) । ४ दीप की शिखा ; (उत्त ३) । ५ न. लोकान्तिक देवों का एक विमान ; (सम १४) । °**मालि** पुं [°**मालिन्**] १ सूर्य, रवि ; (सूअ १,६) । २ वि. किरणों से शोभित ; (राय) । ३ न. लोकान्तिक देवों का एक विमान; (सम १४) । °**माली** स्त्री [°**माली**] १ चन्द्र और सूर्य की तृतीय अग्र-महिषी का नाम ; (ठा ४,१) । २ 'ज्ञातासूत्र' के द्वितीय श्रुतस्कन्ध के एक अध्ययन का नाम ; (णाया २) । ३ शक्रेन्द्र की तृतीय अग्रमहिषी की राजधानी का नाम ; (ठा ४,२) । °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] चन्द्र और सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम ; (भग १०,५ ; इक) ।

अच्चिअ वि [**अर्चित**] १ पूजित, सत्कृत ; (गा १५०) । २ न. विमान-विशेष; (जीव ३—पत्र १३७) ।

अच्चित्त देखो **अचित्त**; (ओघ २२; सुर १२,२७) ।

अच्चीकर सक [**अर्ची+कृ**] १ प्रशंसा करना । २ खुशामद करना । अच्चीकरेइ । वकृ— **अच्चीकरंत** ; (निचू ५) ।

अच्चीकरण न [**अर्चीकरण**] १ प्रशंसा ; २ खुशामद ; "अच्चीकरणं रण्णो, गुणवयणं तं समासओ दुविहं ।
संतमसंतं च तहा, पच्चक्खपरोक्खमेक्केक्कं ॥" (निचू ५) ।

अच्चुअ पुं [**अच्युत**] १ विष्णु; (अच्चु ५) । २ बारहवाँ देवलोक ; (सम ३६) । ३ ग्यारहवें और बारहवें देवलोक का इन्द्र; (ठा २,३) । ४ अच्युत-देवलोकवासी देव ; "तं चेव आरणच्चुय ओहिण्णाणेण पासंति" (विसे ६६६) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] बारहवें देवलोक का इन्द्र ; (भवि) । °**वइ** पुं [°**पति**] इन्द्र-विशेष; (सुपा ६१) । °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] विमान-विशेष का नाम ; (सम ४१) । °**सग्ग** पुं [**स्वर्ग**] बारहवाँ देवलोक ; (भवि) ।

अच्चुआ स्त्री [**अच्युता**] छठवें और सतरहवें तीर्थंकर की शासन-देवी ; (संति ६; १०) ।

अच्चुइंद पुं [**अच्युतेन्द्र**] ग्यारहवें और बारहवें देवलोक का स्वामी, इन्द्र-विशेष ; (पउम ११७,७) ।

अच्चुक्कड वि [**अत्युत्कट**] अत्यंत उग्र ; (आवम) ।

अच्चुग्ग वि [**अत्युग्र**] ऊपर देखो ; (पव २२४) ।

अच्चुच्च वि [**अत्युच्च**] खूब ऊंचा, विशेष उन्नत ; (उप ६८६ टी) ।

अच्चुट्ठिय वि [**अत्युत्थित**] अकार्य करनेको तय्यार ; (सूअ १,१४) ।

अच्चुण्ह वि [**अत्युष्ण**] खूब गरम ; (ठा ५,३) ।

अच्चुत्तम वि [**अत्युत्तम**] अति श्रेष्ठ ; (कप्पू) ।

अच्चुदय न [**अत्युदक**] १ बड़ी वर्षा ; (ओघ ३०) । २ प्रभूत पानी ; (जीव ३) ।

अच्चुदार वि [**अत्युदार**] अत्यन्त उदार ; (स ६००) ।

अच्चुन्नय वि [**अत्युन्नत**] बहुत ऊंचा ; (कप्प) ।

अच्चुब्भड वि [**अत्युद्भट**] अति-प्रबल ; (भवि) ।

अच्चुवयार पुं [**अत्युपकार**] महान् उपकार ; (गा ५१४) ।

अच्चुवयार पुं [**अत्युपचार**] विशेष सेवा-सुश्रूषा ; (गा ५१४) ।

अच्चुव्वाय वि [**अत्युद्वात**] अत्यंत थका हुआ ; (बृह ३) ।

अच्चुसिण वि [**अत्युष्ण**] अधिक गरम ; (आचा २, १, ७) ।

अच्चेअर न [**आश्चर्य**] आश्चर्य, विस्मय ; (विक्र १५) ।

अच्छ अक [**आस्**] बैठना । अच्छइ ; (हे १,२१५) । वकृ—**अच्छंत**, **अच्छमाण** ; (सुर ७,१३ ; णाया १,१) कृ—**अच्छियव्व** ; **अच्छेयव्व** ; (पि ५७० ; सुर १२,२२८) ।

अच्छ वि [**अच्छ**] १ स्वच्छ, निर्मल; (कुमा) । २ पुं. स्फटिक रत्न ; (पव २७५) । ३ पुं.ब. आर्य देश-विशेष ; (प्रव २७५) ।

अच्छ पुं [**ऋक्ष**] रींछ, भालुक ; (पण्ह १,१) ।

अच्छ वि [**आच्छ**] अच्छ-देश में उत्पन्न, (पण्ण ११) ।

अच्छ न [**दे**] १ अत्यन्त, विशेष ; २ शीघ्र, जल्दी ; (दे १,४६) ।

°**अच्छ** वि [°**अक्षि**] आंख, नेत्र ; (कुमा) ।

°**अच्छ** पुं [**कच्छ**] १ अधिक पानीवाला प्रदेश ; २ लताओं का समूह ; ३ तृण, घास ; (से ६,४७) ।

°**अच्छ** पुं [**वृक्ष**] वृक्ष, पेड़ ; (से ६,४७) ।

अच्छअ पुं [**अक्षक**] १ बहेड़ा का वृक्ष ; २ न. स्वच्छ जल ; (से ६, ४७) ।

अच्छअर न [**आश्चर्य**] विस्मय, चमत्कार ; (कुमा) ।

अच्छंद वि [**अच्छन्द**] जो स्वाधीन न हो, पराधीन " अच्छंदा जे ण भुंजंति ण से चाइत्ति वुच्चइ " (दस २) ।

अच्छक्क देखो **अत्थक्क** ; (गउड) ।

अच्छण न [**आसन**] १ बैठना ; (णाया १, १) । २ पालखी वगैरः सुखासन ; (ओघ ७८) । °**घर** न [°**गृह**] विश्राम-स्थान ; (जीव ३) ।

अच्छण न [**दे**] १ सेवा, शुश्रूषा ; (बृह ३) । २ देखना, अवलोकन ; (वव १) । ३ अहिंसा, दया ; (दस ८) ।

अच्छणिउर न [**अच्छनिकुर**] अच्छनिकुरांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, १) ।

अच्छणिउरंग न [**अच्छनिकुराङ्ग**] संख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, १) ।

अच्छण्ण वि [**अच्छन्न**] अगुप्त, प्रकट ; (बृह ३) ।

अच्छभल्ल पुं [**ऋक्षभल्ल**] रींछ, भालुक ; (दे १, ३७ ; पण्ह १, १) ।

अच्छभल्ल पुं [**दे**] यक्ष, देव-विशेष ; (दे १, ३७) ।

अच्छरआ देखो **अच्छरा** ; (षड्) ।

अच्छरय पुं [**आस्तरक**] शय्या पर बिछानेका वस्त्र-विशेष ; (णाया १, १) ।

अच्छरसा, **अच्छरा** स्त्री [**अप्सरस्**] १ इन्द्र की एक पट्टरानी ; (ठा ६) । २ ' ज्ञाताधर्मकथा ' का एक अध्ययन ; (णाया २) । ३ देवी ; (पउम २, ४१) । ४ रूपवती स्त्री ; (पण्ह १, ४) ।

अच्छराणिवाय पुं [**दे**] १ चुटकी ; २ चुटकी बजाने में जितना समय लगता है वह, अत्यल्प समय ; (पण्ण ३६) ।

अच्छरिअ, **अच्छरिज्ज**, **अच्छरीअ** न [**आश्चर्य**] विस्मय, चमत्कार ; (हे १, ५८ ; प्रयौ ४२) ।

अच्छल न [**अच्छल**] निर्दोषता, अनपराध ; (दे १,२०) ।

अच्छवि वि [**अच्छवि**] जैन-दर्शन में जिसको स्नातक कहते हैं वह, जीवन्मुक्त योगी ; (भग २५, ६) ।

अच्छविकर पुं [**अक्षपिकर**] एक प्रकार का मानसिक विनय ; (ठा ८) ।

अच्छहल्ल पुं [**ऋक्षभल्ल**] रींछ, भालुक ; (पाअ) ।

अच्छा स्त्री (**अच्छा**) वरुण देश की राजधानी ; (पव २७५) ।

°**अच्छा** स्त्री [**कक्षा**] गर्व, अभिमान ; (से ६,४७) ।

अच्छाइ वि [**आच्छादिन्**] ढकने वाला, आच्छादक ; (स ३५१) ।

अच्छायण न [**आच्छादन**] १ ढकना ; (दे ७, ४५) । २ वस्त्र, कपड़ा ; (आचा) ।

अच्छायणा स्त्री [**आच्छादना**] ढकना, आच्छादित करना ; (वव ३) ।

अच्छायंत वि [**अच्छातान्त**] तीक्ष्ण, धारदार ; (पाअ) ।

अच्छि लि [**अक्षि**] आँख, नेत्र ; (हे १, ३३ ; ३५) । °**चमढण** न [°**मलन**] आँख का मलना ; (बृह २) । °**णिमीलिय** न [**निमीलित**] १ आँख का मूँदना, मींचना ; २ आँख मिंचने में जो समय लगे वह " अच्छिणिमीलियमेत्तं, णात्थि सुहं दुक्खमेव अणुबद्धं । णरए णेरइआणं, अहोणिसं पच्चमाणाणं " (जीव ३) । °**पत्त** न [°**पत्र**] आँख का पक्ष्म, पपनी ; (भग १४, ८) । °**वेहग** पुं [°**वेधक**] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र जीव-विशेष ; (उत्त ३६) । °**रोडय** पुं [°**रोडक**] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र कीट-विशेष ; (उत्त ३६) । °**ल्ल** वि [°**मत्**] १ आँख वाला प्राणी ; २ चौइन्द्रिय जन्तु ; (उत्त ३६) । °**मल** पुं [°**मल**] आँख का मैल, कीट्ट ; (निचू ३) ।

अच्छिंद सक [**आ+छिद्**] १ थोड़ा छेद करना । २ एक वार छेद करना । ३ बलात्कार से छीन लेना । वकृ— **अच्छिंदमाण** ; (भग ८,३) ।

अच्छिंद पुं [**अक्षीन्द्र**] गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम ; (भग १५) ।

अच्छिंदण न [**आच्छेदन**] १ एक वार छेदना ; (निचू ३) । २ छीनना । ३ थोड़ा छेद करना, थोड़ा काटना ; (भग १५) ।

अच्छिक्क वि [**दे**] अस्पृष्ट, नहीं छुआ हुआ ; (वव १) ।

अच्छिघरुल्ल वि [**दे**] अप्रीतिकर ; २ पुं. वेष, पोषाक ; (दे १,४१) ।

अच्छिज्ज वि [**आच्छेद्य**] १ जबरदस्ती जो दूसरे से छीन लिया जाय ; (पिंड) । २ पुं. जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष ; (आचा) ।

अच्छिज्ज वि [**अच्छेद्य**] जो तोड़ा न जा सके ; (ठा ३, २) ।

अच्छित्ति स्त्री [**अच्छित्ति**] १ नाश का अभाव, नित्यता । २ वि. नाश-रहित ; (विसे) । °**णय** पुं [°**नय**] नित्यता-वाद, वस्तु को नित्य माननेवाला पक्ष ; (पव) ।

अच्छिद्द वि [**अच्छिद्र**] १ छिद्र-रहित, निबिड, गाढ़; (जं २) । २ निर्दोष ; (भग २, ५) ।

अच्छिण्ण, **अच्छिन्न** वि [**आच्छिन्न**] १ बलात्कार से छीना हुआ । २ छेदा हुआ, तोड़ा हुआ; (पाअ) ।

अच्छिण्ण, **अच्छिन्न** वि [**अच्छिन्न**] १ नहीं तोड़ा हुआ, अलग नहीं किया हुआ ; (ठा १०) । २ अव्यवहित, अन्तर-रहित ; (गउड) ।

अच्छिप्प वि [**अस्पृश्य**] छूने को अयोग्य; (सुपा २८१) ।

अच्छिप्पंत वि [**अस्पृशत्**] स्पर्श नहीं करता हुआ ; (श्रा १२) ।

अच्छिय वि [**आसित**] बैठा हुआ ; (पि ४८०; ५६५) ।

अच्छिवडण न [**दे**] आँख का मूँदना ; (दे १, ३६) ।

अच्छिविअच्छि स्त्री [**दे**] परस्पर-आकर्षण, आपस की खींचतान ; (दे १, ४१) ।

अच्छिहरिल्ल, **अच्छिहरुल्ल** देखो **अच्छिघरुल्ल** ; (दे १, ४१) ।

अच्छी देखो **अच्छि** ; (रंभा) ।

अच्छुक्क न [दे] अक्षि-कूप-तुला, आँख का कोटर; (सुपा २०) ।

अच्छुत्ता स्त्री [**अच्छुप्ता**] १ एक विद्याधिष्ठात्री देवी ; (ति ८) । २ भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी की शासन-देवी ; (संति १०) ।

अच्छुद्धसिरी स्त्री [**दे**] इच्छा से अधिक फल की प्राप्ति, असंभावित लाभ ; (षड्) ।

अच्छुल्लूढ वि [**दे**] निष्कासित, बहार निकाला हुआ, स्थान-भ्रष्ट किया हुआ ; (बृह १) ।

अच्छेज्ज देखो **अच्छिज्ज** ; (ठा ३, २; ४) ।

अच्छेर, **अच्छेरग**, **अच्छेरय** न [**आश्चर्य**] १ विस्मय, चमत्कार ; (हे १, ५८) । २ पुंन. विस्मय-जनक घटना, अपूर्व घटना; (ठा १०, १३८) । °**कर** वि [°**कर**] विस्मय-जनक, चमत्कार उपजानेवाला; (श्रा १४) ।

अच्छोड सक [**आ+छोटय्**] १ पटकना, पछाड़ना । २ सिंचना, छिटकना । "अच्छोडेमि सिलाए, तिलं तिलं किं नु छिंदामि" (सुर १५, २३ ; सुर २, २४५) ।

अच्छोड पुं [**आच्छोट**] १ सिंचन । २ आस्फालन करना, पटकना ; (ओघ ३५७) ।

अच्छोडण न [**आच्छोटन**] १ सिंचन । २ आस्फालन ; (सुर १३, ४१ ; सुपा ५६३ ; वेणी १०६) । ३ मृगया, शिकार ; (दे १, ३७) ।

अच्छोडाविय वि [**दे. अच्छोटित**] बन्धित, बँधाया हुआ ; (स ५२५; ५२६) ।

अच्छोडिअ वि [**दे**] आकृष्ट, खींचा हुआ "अच्छोडिअव-त्थद्धं ; (गा १६०) ।

अच्छोडिअ वि [**आच्छोटित**] सिक्त, सिंचा हुआ ; (सुर २, २४५) ।

अछिप्प वि [**अस्पृश्य**] स्पर्श करने को अयोग्य "सो सुणओव्व अछिप्पो कुलुग्गयाणं, न उण पुरिसो" (सुपा ४८७) ।

अज देखो **अय=अज** ; (पउम ११, २५; २६) ।

अजगर देखो **अयगर** ; (भवि) ।

अजड पुं [**दे**] जार, उपपति ; (षड्) ।

अजड वि [**अजड**] १ पक्व, विकसित ; (गउड) । २ निपुण, चतुर ; (कुमा) ।

अजम वि [**दे**] १ सरल, ऋजु ; (षड्) । २ जमाईन; (पभा १५) ।

अजय वि [**अयत**] १ पाप-कर्म से अविरत, नियम-रहित ; (कम्म ४) । २ अनुद्योगी, यत्न-रहित ; (ओघ ५४) । ३ उपयोग-शून्य, बे-ख्याल; (सुपा ५२२) । ४ क्रिवि. बे-ख्याल से, अनुपयोग से "अजयं चरमाणो य पाणभूयाइ हिंसइ ; (दस ४; उवर ४ टी) ।

अजय पुं [**अजय**] षट्पद छंद का एक भेद ; (पिंग) ।

अजयणा स्त्री [**अयतना**] अनुपयोग, ख्याल नहीं रखना, गफलती ; (गच्छ ३) ।

अजर वि [**अजर**] १ वृद्धावस्था-रहित, बुढ़ापा-वर्जित । २ पुं. देव, देवता; (आवम) । ३ मुक्त-आत्मा; (ओघ) ।

अजराउर वि [**दे**] उष्ण, गरम ; (दे १, ४५) ।

अजरामर वि [**अजरामर**] १ बुढ़ापा और मृत्यु से रहित "णत्थि कोइ जगम्मि अजरामरो" (महा) । २ न. मुक्ति, मोक्ष । ३ स्त्री—°**रा** विद्या-विशेष; (पउम ७, १३६) ।

अजस पुं [**अयशस्**] १ अपयश, अपकीर्ति ; (उप ७६८) । °**कित्तिणाम** न [°**कीर्तिनामन्**] अप-कीर्ति का कारण-भूत एक कर्म ; (सम ६७) ।

अजस्स क्रिवि [**अजस्र**] निरन्तर, हमेशां "आमरणंतम-जस्सं संजमपरिपालणं विहिणा" (पंचा ८) ।

अजा देखो **अया** ; (कुमा) ।

अजाण वि [**अज्ञान**] अनजान, मूर्ख; (रयण ८५)।
अजाणअ वि [**अज्ञायक**] अनजान, जानकारी-रहित; (काल)
अजाणणा स्त्री [**अज्ञान**] अ-जानकारी बे-समझी 'अजाणणाए तब्बती न कया तम्मि केणावि" (श्रा २८)।
अजाणुय वि [**अज्ञायक**] अज्ञ, नहीं जानने वाला; (ठा ३, ४)।
अजाय वि [**अजात**] अनुत्पन्न, अ-निष्पन्न। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] शास्त्रोंको पूरा २ नहीं जाननेवाला जैन साधु, अगीतार्थ "गीयत्थ जायकप्पो अगीओ खलु भवे अजाओ अ" (धर्म ३)। °**कप्पिय** पुं [°**कल्पिक**] अगीतार्थ जैन साधु; (गच्छ १)।
अजिअ वि [**अजित**] १ अपराजित, अपराभूत; २ पुं. दुसरे तीर्थंकर का नाम; (अजि १)। ३ नववें तीर्थंकर का अधिष्ठाता देव; (संति ७)। ४ एक भावी बलदेव; (ती २१)। °**बला** स्त्री [°**बला**] भगवान् अजितनाथ की शासन-देवी; (पव २७)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ एक प्रसिद्ध राजा; (आव)। २ चौथा कुलकर; (ठा १०)। ३ एक विख्यात जैन मुनि; (अंत ४)।
अजिअ वि [**अजीव**] जीव-रहित, अचेतन; (कम्म १,१५)।
अजिअ वि [**अजय्य**] जो जिता न जा सके; (सुपा ७५)।
अजिआ स्त्री [**अजिता**] १ भगवान् अजितनाथ की शासन-देवी; (संति ६)। २ चतुर्थ तीर्थंकर की एक मुख्य शिष्या; (तित्थ)।
अजिण न [**अजिन**] १ हरिण-आदि पशुओं का चमड़ा; (उत्त ५; दे ७, २७)। २ वि. जिसने राग-द्वेष का सर्वथा नाश नहीं किया है वह; (भग १५)। ३ जिन-भगवान् के तुल्य सत्योपदेशक जैन साधु "अजिणा जिणसंकासा, जिणा इवावितहं वागरेमाणा" (औप)।
अजिण्ण देखो **अइन्न**=अजीर्ण; (आव)।
अजिर न [**अजिर**] आँगन, चौक; (सण)।
अजीर, **अजीरय** देखो **अइन्न**=अजीर्ण; (वव १; गाया १, १३)।
अजीव पुं [**अजीव**] अचेतन, निर्जीव, जड पदार्थ; (नव २)। °**काय** पुं [°**काय**] धर्मास्तिकाय आदि अजीव पदार्थ; (भग ७, १०)।
अजुअ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, सप्तच्छद, सतौना; (दे १,१७)
अजुअ न [**अयुत**] दश हजार "दोणि सहस्सा रहाणं, पंच अजुयाणि हयाणं" (महा)।
अजुअलवण्ण पुं [**अयुगलपर्ण**] सतौना; (दे १,४८)।
अजुअलवण्णा स्त्री [**दे**] इम्ली का पेड़; (दे १, ४८)।
अजुत्त वि [**अयुक्त**] अयोग्य, अनुचित; (प्रिमे)। °**कारि** वि [**कारिन्**] अयोग्य कार्य करनेवाला; (सुपा ६०४)।
अजुत्तीय वि [**अयुक्तिक**] युक्ति-शून्य, अन्याय्य; (सुर १२, ५४)।
अजेअ वि [**अजय्य**] जो जिता न जा सके "सो मउडरयणपहावेण अजेओ दोमुहराया" (महा)।
अजोग पुं [**अयोग**] मन, वचन और काया के सब व्यापारों का जिसमें अभाव होता है वह सर्वोत्कृष्ट योग, शैलेशी-करण; (औप)।
अजोग वि [**अयोग्य**] अयोग्य, लायक नहीं वह; (निचू ११)।
अजोगि पुं [**अयोगिन्**] १ सर्वोत्कृष्ट योग को प्राप्त योगी; २ मुक्त आत्मा; (ठा २, १; कम्म ४, ४७; ५०)।
अज्ज सक [**अर्ज्**] पैदा करना, उपार्जन करना, कमाना। अज्जइ; (हे ४, १०८)। संकृ—**अज्जिय**; (पिंग)।
अज्ज वि [**अर्य**] १ वैश्य; २ स्वामी, मालक; (दे १, ५)।
अज्ज वि [**आर्य**] १ उत्तम, श्रेष्ठ; (ठा ४, २)। २ मुनि, साधु; (कप्प)। ३ सत्कार्य करनेवाला; (वव १)। ४ पूज्य, मान्य; (विपा १, १)। ५ पुं. मातामह; (निसी)। ६ पितामह; (गाया १,८)। ७ एक ऋषि का नाम; (णंदि)। ८ न. गोत्र-विशेष; (णंदि)। ९ जैन साधु, साध्वी और उनकी शाखाओं के पूर्व में यह शब्द प्रायः लगता है, जैसे **अज्जवइर**, **अज्जचंदणा**, **अज्जपोमिला**; (कप्प)। °**उत्त** पुं [°**पुत्र**] १ पति, भर्ता; (नाट)। २ मालक का पुत्र; (नाट)। °**घोस** पुं [°**घोष**] भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर; (ठा ८)। °**मंगु** पुं [**मङ्गु**] एक प्राचीन जैनाचार्य; (सार्ध २२)। °**मिस्स** वि [°**मिश्र**] पूज्य, मान्य; (अभि १३)। °**समुद्द** पुं [°**समुद्र**] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (सार्ध २२)।
अज्ज अ [**अद्य**] आज; (सुर २, १६७)। °**त्त** वि [°**तन**] अधुनातन, आजकलका; (रंभा)। °**त्ता** स्त्री [°**ता**] आज कल; (कप्प)। °**प्पभिइ** अ [°**प्रभृति**] आज से ले कर; (उवा)।
अज्ज्ज पुं [**दे**] १ जिनेन्द्र देव; २ बुद्ध देव; (दे १,५)।

अज्ज न [**आज्य**] घी, घृत ; (पाअ)।
अज्ज देखो **रि**=ऋ।
अज्जं अ [**अद्य**] आज ; (गा ५८)।
अज्जंत वि [**आयत्**] आगामी। °**काल** पुं [°**काल**] भविष्य काल ; (पाअ)।
अज्जंहिज्जो अ [**अद्यह्यः**] आजकल ; (उप पृ ३३४)।
अज्जग देखो **अज्जय**=अर्जक ; "अज्जगतरुमंजरिव्व" (सुपा ५३)।
अज्जग देखो **अज्जय**=आर्यक ; (निर १, १)।
अज्जण } [**अर्जन**] उपार्जन पैदा करना ; (श्रा **अज्जणण** } १२; सत्त १८) "रज्जं करिसमेवं करेसुवायं तदज्जणणे" (उप ७ टी)।
अज्जम पुं [**अर्यमन्**] १ सूर्य ; (पि २६१)। २ देव-विशेष ; (जं ७)। ३ उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ४ न. उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र ; (ठा २, ३)।
अज्जय पुं [**आर्यक**] १ मातामह, मां का बाप ; (पउम ५०,२)। २ पितामह, पिता का पिता; (भग ९,३३); "जं पुण अज्जय-पज्जय-जणयज्जियअत्थमज्झओ दाणं। परमत्थओ कलंकं तयं तु पुरिसाभिमाणीणं" (सुर १, २२०)।
अज्जय वि [**अर्जक**] १ उपार्जन करने वाला, पैदा करने वाला; (सुपा १२४)। २ पुं. वृक्ष-विशेष; (पण्ण १)।
अज्जय पुं [**दे**] १ सुरस-नामक तृण ; २ गुरेटक-नामक तृण ; (दे १, ५४)। ३ तृण, घास ; (निचू ११)।
अज्जल पुं [**आर्यल**] म्लेच्छों की एक जाति; (पण्ण १)।
अज्जव न [**आर्जव**] सरलता, निष्कपटता; (नव २९)।
अज्जव (अप) देखो **अज्ज**=आर्य। °**खंड** पुं [**खण्ड**] आर्य-देश ; (भवि)।
अज्जवया स्त्री [**आर्जव**] ऋजुता, सरलता; (पक्खि)।
अज्जवि वि [**आर्जविन्**] सरल, निष्कपट; (आचा)।
अज्जा स्त्री [**आर्या**] १ साध्वी ; (गच्छ २)। २ गौरी, पार्वती ; (दे १, ५)। ३ आर्या-छन्द ; (जं २)। ४ भगवान् मल्लिनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२)। ५ मान्या, पूज्या स्त्री (पि १०६, १४३, १४५)। ६ एक कला ; (औप)।
अज्जा स्त्री [**आज्ञा**] आदेश, हुकुम ; (हे २, ८३)।
अज्जाव सक [**आ+ज्ञापय्**] आज्ञा करना, हुकुम फरमाना। कृ—**अज्जावेयव्व** ; (सूअ २, २)।
अज्जिअ वि [**अर्जित**] उपार्जित, पैदा किया हुआ ; (श्रा १४)।
अज्जिआ स्त्री [**आर्यिका**] १ मान्या, पूज्या स्त्री ; २ साध्वी ; संन्यासिनी ; (सम ६५ ; पि ४४८)। ३ माता की माता ; (दस ७)। ४ पिता की माता ; (स २५५)।
अज्जिणण देखो **अज्जणण** ; (उप ९९४)।
अज्जीव देखो [**अजीव**] "धम्माधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अज्जीवा" (नव १०)।
अज्जु (अप) अ [**अद्य**] आज; (हे ४,३४३; भवि; पिंग)।
अज्जुअ (शौ) देखो **अज्ज**=आर्य ; (नाट)।
अज्जुआ (शौ) देखो **अज्जा**=आर्या ; (पि १०५)।
अज्जुण पुं [**अर्जुन**] १ तीसरा पांडव ; (णाया १, १६)। २ वृक्ष-विशेष ; (णाया १, ९ ; औप)। ३ गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम ; (भग १५)। ४ न. श्वेत सुवर्ण, सफेद सोना; "सव्वज्जुणसुवण्णगमई" (औप)। ५ तृण-विशेष ; (पण्ण १)। ६ अर्जुन वृक्ष का पुष्प ; (णाया १, ९)।
अज्जुणग } [**अर्जुनक**] १-६ ऊपर देखो। ७ एक **अज्जुणय** } माली का नाम ; (अंत १८)।
अज्जू स्त्री [**आर्या**] सासू, श्वश्रू ; (हे १, ७७)।
अज्जोग देखो **अजोग**=अयोग ; (पंच १)।
अज्जोगि देखो **अजोगि** ; (पंच १)।
अज्जोरुह न [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)।
अज्झक्ख वि [**अध्यक्ष**] अधिष्ठाता ; (कप्पू)।
अज्झ पुं [**दे**] यह (पुरुष, मनुष्य) ; (दे १, ५०)।
अज्झत्त देखो **अज्झप्प** ; (सूअ १, २, २, १२)।
अज्झत्थ वि [**दे**] आगत, आया हुआ ; (दे १, १०)।
अज्झत्थ } न [**अध्यात्म**] १ आत्मा में, आत्म-**अज्झप्प** } संबंधी, आत्म-विषयक ; (उत्त १; आचा)। २ मन में, मन-संबंधी, मनो-विषयक ; (उत्त ६; सूअ १, १६, ४)। ३ मन, चित्त "अज्झप्पसाणयणं" (दसनि १, २९)। ४ शुभ-ध्यान "अज्झप्प-रए सुसमाहिअप्पा, सुत्तत्थं च विआणइ जे स भिक्खू" (दस १०, १५)। ५ पुं. आत्मा ; (ओघ ७४५)। °**जोग** पुं [°**योग**] योग-विशेष, चित्त की एकाग्रता ; (सूअ १, १६, ४)। °**दोस** पुं [°**दोष**] आध्यात्मिक दोष—क्रोध, मान, माया और लोभ ; (सूअ १, ६)

°वत्तियं वि [°प्रत्ययिक] चित्त-हेतुक, मन से ही उत्पन्न होने वाला, शोक, चिन्ता आदि ; (सूत्र २, २, १६) । °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] आत्म-शुद्धि ; (ओघ ७४५) । °संवुड वि [°संवृत] मनो-निग्रही, मन को काबू में रखनेवाला ; (आचा) । °सुइ स्त्री [°श्रुति] अध्यात्म-शास्त्र, आत्म-विद्या, योग-शास्त्र ; (पगह २, १)। °सुद्धि स्त्री [°शुद्धि] मन की शुद्धि ; (आचू १) । °सोहि स्त्री [°शुद्धि] मनः-शुद्धि ; (आचू १) ।

अज्झत्थिय वि [आध्यात्मिक] आत्म-विषयक, आत्मा या मन से संबंध रखनेवाला ; (विपा १,१; भग २,१) ।

अज्झय वि [दे] प्रातिवेश्मिक, पडौसी ; (दे १, १७) ।

अज्झयण पुंन [अध्ययन] १ शब्द, नाम ; (चंद १)। २ पढ़ना, अभ्यास ; (विसे) । ३ ग्रन्थ का एक अंश ; (विपा १, १) ।

अज्झयणि वि [अध्ययनिन्] पढ़ने वाला, अभ्यासी ; (विसे १४६५) ।

अज्झयाव सक [अधि+आप्] पढ़ाना, सीखाना । अज्झयाविंति ; (विसे ३१६६) ।

अज्झवस सक [अध्यव+सो] विचार करना, चिंतन करना । वकृ—**अज्झवसंत** ; (सुपा ५६५) ।

अज्झवसण } न [अध्यवसान] चिन्तन, विचार, **अज्झवसाण** } आत्म-परिणाम, "तो कुमरेणं भणियं, मुणिपुंगव ! रइसुहज्झवसणंपि । किं इयफलयं जायइ ?" (सुपा ५६५ ; प्रासू १०४ ; विपा १, २) ।

अज्झवसाय पुं [अध्यवसाय] विचार, आत्म-परिणाम, मानसिक संकल्प ; (आचा ; कम्म ४, ८२) ।

अज्झवसिय वि [अध्यवसित] १ जिसका चिन्तन किया गया हो वह ; (औप) । २ न. चिन्तन, विचार; (अणु) ।

अज्झवसिय न [दे] मुँडा हुआ मुंह ; (दे १, ४०) ।

अज्झसिय वि [दे] देखा हुआ, दृष्ट ; (दे १, ३०) ।

अज्झस्स सक [आ+क्रुश] आक्रोश करना, अभिशाप देना । अज्झस्सइ ; (दे १, १३) ।

अज्झस्स } वि [आक्रुष्ट] जिस पर आक्रोश किया **अज्झस्सिय** } गया हो वह ; (दे १, १३) ।

अज्झहिय वि [अध्यधिक] अत्यंत, अतिशयित; (महा) ।

अज्झा स्त्री [दे] १ असती, कुलटा ; २ प्रशस्त स्त्री ; ३ नवोढा, दुलहिन ; ४ युवती स्त्री ; ५ यह (स्त्री) ; (दे १, ५० ; गा ८३८, ८५८ ; वज्जा ६४) ।

अज्झाइअव्व वि [अध्येतव्य] पढ़ने योग्य ; "सुअं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइअव्वं भवइ" (दस ६, ४, ३) ।

अज्झाय पुं [अध्याय] १ पठन, अभ्यास ; (नाट) । २ ग्रन्थ का एक अंश ; (विसे १११५; प्राप) ।

अज्झारुह पुं [अध्यारुह] १ वृक्ष-विशेष ; २ वृक्षों के ऊपर बढ़नेवाली वल्ली या शाखा वगैरः ; (पगण १) ।

अज्झारोवण न [अध्यारोपण] १ आरोपण, ऊपर चढ़ाना । २ पूछना, प्रश्न करना ; (विसे २६२८) ।

अज्झारोह पुं (अध्यारोह] देखो **अज्झारुह** ; (सूत्र २, ३, ७; १८; १६) ।

अज्झावणा स्त्री [अध्यापना] पढ़ाना; (कम्म १,६०) ।

अज्झावय वि [अध्यापक] पढ़ानेवाला, शिक्षक, गुरु ; (वसु; सुर ३,२६) ।

अज्झावस अक [अध्या+वस्] रहना, वास करना । वकृ—**अज्झावसंत** ; (उवा) ।

अज्झास पुं [अध्यास] १ ऊपर बैठना ; २ निवास-स्थान ; (सुपा २०) ।

अज्झासणा स्त्री [अध्यासना] सहन करना ; (राज) ।

अज्झासिअ वि [अध्यासित] १ आश्रित, अधिष्ठित ; २ स्थापित, निवेशित ; (नाट) ।

अज्झाहय वि [अध्याहत] १ उत्तेजित "सीयलेणं सुरहिगंधमड्डियागंधेणं हत्थी अज्झाहओ वणं संभरेइ" (महा) ।

अज्झीण वि [अक्षीण] १ अक्षय, अखूट ; २ न. अध्ययन ; (विसे ६५८) ।

अज्झुववज्ज देखो **अज्झोववज्ज** ; (पि ७७; औप) ।

अज्झुववण्ण देखो **अज्झोववण्ण** ; (विपा १, १) ।

अज्झुववाय देखो **अज्झोववाय** ; (उप पृ २८१) ।

अज्झुसिर वि [अशुषिर] छिद्र-रहित ; (ओघ ३१३) ।

अज्झेउ वि [अध्येतृ] पढ़नेवाला ; (विसे १४६५) ।

अज्झेल्ली स्त्री [दे] दोहनेपर भी जिसका दोहन हो सके ऐसी गैया ; (दे १, ७) ।

अज्झेसणा स्त्री [अध्येषणा] अधिक प्रार्थना, विशेष याचना ; (राज) ।

अज्झोयरग } पुं [अध्यवपूरक] १ साधु के लिए अधिक **अज्झोयरय** } रसोई करना ; २ साधु के लिए बढ़ाकर की हुई रसोई ; (औप; पव ६७) ।

अज्झोल्लिआ स्त्री [दे] वक्षः-स्थल के आभूषण में की जाती मोतीओं की रचना ; (दे १, ३३) ।

अज्झोवगमिय वि [**आभ्युपगमिक**] स्वेच्छा से स्वीकृत; (पराण ३४)।

अज्झोववज्ज अक [**अध्युप+पद्**] अत्यासक्त होना, आसक्ति करना। अज्झोववज्जइ; (पि ७७)। भवि-अज्झोववज्जिहिइ; (औप)।

अज्झोववण्ण } वि [**अध्युपपन्न**] अत्यंत आसक्त;
अज्झोववन्न } (विपा १, २; णाया १, २; महा; पि ७७)।

अज्झोववाय पुं [**अध्युपपाद**] अत्यन्त आसक्ति, तल्लीनता; (पराह २, ५)।

अट } सक [**अट्**] भ्रमण करना, घूमना। अटइ;
अट्ट } (षड्; हे १, १६५)। परिअट्टइ; (हे ४, २३०)।

अट्ट सक [**क्वथ्**] क्वाथ करना। अट्टइ; (हे ४, ११६; षड्; गउड)।

अट्ट अक [**शुष्**] सूकना, शुष्क होना। अट्टंति (से ५, ६१)। वकृ—**अट्टंत**; (से ५, ७३)।

अट्ट वि [**आर्त**] १ पीडित, दुःखित; (विपा १, १)। २ ध्यान-विशेष—इष्ट-संयोग, अनिष्ट-वियोग, रोग-निवृत्ति और भविष्य के लिए चिन्ता करना; (ठा ४, १)। °**ण्ण** वि [°**ज्ञ**] पीड़ित की पीडा को जाननेवाला; (षड्)।

अट्ट वि [**ऋत**] गत, प्राप्त; (णाया १,१; भग १२,२)।

अट्ट पुंन [**अट्ट**] १ दुकान, हाट; (श्रा १४)। २ महल के ऊपर का घर, अटारी; (कुमा)। ३ आकाश; (भग २०, २)।

अट्ट वि [**दे**] १ कृश, दुबल; २ बड़ा, महान्; ३ निर्लज्ज, बेशरम; ४ आलसु, सुस्त; ५ पुं. शुक, तोता; ६ शब्द, अवाज; ७ न. सुख; ८ झूठ, असत्योक्ति; (दे १,५०)।

अट्टट्ट वि [**दे**] गया हुआ, गत; (दे १, १०)।

अट्टट्टहास पुं [**अट्टट्टहास**] देखो **अट्टहास**, (उव)।

अट्टण न [**अट्टन**] १ व्यायाम, कसरत; (औप)। २ पुं. इस नाम का एक प्रसिद्ध मल्ल; (उत्त ४)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] व्यायाम-शाला, कसरत-शाला; (औप; कप्प)।

अट्टण न [**अटन**] परिभ्रमण; (धर्म ३)।

अट्टमट्ट पुं [**दे**] १ आलवाल, कियारी; (हे २, १७४)। २ अशुभ संकल्प-विकल्प, पाप-संबद्ध अव्यवस्थित विचार; "अणवट्ठियं मणो जस्स झाइ बहुयाइं अट्टमट्टाइं। तं चिंतियं च न लहइ, संचिणइ य पावकम्माइं" (उव)।

अट्टय पुं [**अट्टक**] १ हाट, दुकान; (श्रा १२)। २ पात्र के छिद्र को बन्ध करने में उपयुक्त द्रव्य-विशेष; (बृह १)।

अट्टयक्कली स्त्री [**दे**] कमर पर हाथ रख कर खड़ा रहना; (पाअ)।

अट्टहास पुं [**अट्टहास**] बहुत हँसना, खिलखिला कर हँसना; (पि २७१)।

अट्टालग } पुंन [**अट्टालक**] महल का उपरि-भाग, अटारी;
अट्टालय } (सम १३७; पउम २, ६)।

अट्टि स्त्री [**आर्ति**] पीड़ा, दुःख; (आचा)।

अट्टिय वि [**आर्तित**] शोकादि से पीडित "अट्टा अट्टिय-चित्ता, जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति" (औप)।

अट्टिय वि [**अर्दित**] व्याकुल, व्यग्र "अट्टदुहट्टियचित्ता" (औप)।

अट्ठ पुंन [**अर्थ**] १ वस्तु, पदार्थ; (उवा २; अच्चु); "अट्ठदंसी" (सूअ १, १४) "अट्ठाइं, हेऊइं, पसिणाइं" (भग २, १)। २ विषय "इंदियट्ठा" (ठा ६)। ३ शब्द का अभिधेय, वाच्य; (सूअ १, ६)। ४ मतलब, तात्पर्य; (विपा २,१; भास १८)। ५ तत्त्व, परमार्थ "तुब्भेत्थ भो भारहरा गिराणं, अट्ठं न याणाह अहिज्ज वेए" (उत्त १२, ११)। "इओ चुएसु दुहमट्ठदुग्गं" (सूअ १, १०, ६)। ६ प्रयोजन, हेतु; (हे २, ३३)। ७ अभिलाष, इच्छा "अट्ठो भंते! भोगेहिं, हंता अट्ठो" (णाया १, १६; उत्त ३)। ८ उद्देश्य, लक्ष्य; (सूअ १, २, १)। ६ धन, पैसा; (श्रा १४; आचा)। १० फल, लाभ "अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा णिरट्ठाणि उ वज्जए" (उत्त १)। ११ मोक्ष, मुक्ति; (उत्त १)। °**कर** पुं [°**कर**]। १ मंत्री; २ निमित्त शास्त्र का विद्वान्; (ठा ४, ३)। °**जाय** वि (**जातार्थ**) जिसकी आवश्यकता हो, जिसका प्रयोजन हो वह "अट्ठेण जस्स कज्जं संजातं एस अट्ठजाओ य" (वव २)। °**जाय** वि [°**याच**] धनार्थी, धन की चाह वाला; (वव २)। °**सइय** वि [°**शतिक**] सौ अर्थवाला, जिसका सौ अर्थ हो सके ऐसा (वचन आदि); जं २)। °**सेण** पुं [°**सेन**] देखो **अट्ठिसेण**। देखो **अत्थ=अर्थ**।

अट्ठ त्रि.ब. [**अष्टन्**] संख्या-विशेष, आठ, ८ ; (जी ४१)। °**चत्ताल** वि [°**चत्वारिंश**] अठतालीसवाँ ; (पउम ४८, १२६)। °**चत्तालीस** त्रि [°**चत्वरिंशत्**] अठतालीस ; (पि ४४५)। °**ट्ठमिया** स्त्री [°**ष्टमिका**] जैन साधुओं का ६४ दिन का एक व्रत, प्रतिमा-विशेष ; (सम ७७)। °**तालीस** वि [°**चत्वारिंशत्**] अठतालीस ; (नाट)। °**तीस** त्रि [°**त्रिंशत्**] संख्या-विशेष, अठतीस ; (सम ६५; पि ४४२; ४४५)। °**तीसइम** वि [°**त्रिंश**] अठतीसवाँ ; (पउम ३८, ५८)। °**त्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] अठत्तर, ७८ की संख्या ; (पि ४४६)। °**त्तीस** त्रि [°**त्रिंशत्**] अठतीस ; (सुपा ६५६ ; पि ४४५)। °**दस** त्रि [°**दशन्**] अठारह, १८ ; (संति ३)। °**दसुत्तरसय** वि [°**दशोत्तरशत**] एक सौ अठारहवाँ ; (पउम ११८, १२०)। °**दह** त्रि [°**दशन्**] अठारह, १८ की संख्या ; (पिंग)। °**पएसिय** वि [°**प्रदेशिक**] आठ अवयव वाला ; (ठा १०)। °**पया** स्त्री [°**पदा**] एक वृत्त, छन्द-विशेष ; (पिंग) °**पाहरिअ** वि [°**प्राहरिक**] आठ प्रहर संबंधी ; (सुर १५, २१८)। °**भाइया** स्त्री [°**भागिका**] तरल वस्तु नापने का बत्तीस पलों का एक परिमाण ; (अणु)। °**म** न [°**म**] तेला, लगा तार तीन दिनों का उपवास ; (सुर ४, ५५)। °**मंगल** पुंन [°**मङ्गल**] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक वस्तु ; (राय)। °**मभत्त** पुंन [°**मभक्त**] तेला, लगा तार तीन दिनों का उपवास ; (णाया १, १)। °**मभत्तिय** वि [°**मभक्तिक**] तेला करनेवाला ; (विपा २, १)। °**मी** स्त्री [°**मी**] तिथि-विशेष अष्टमी ; (विपा २, १)। °**मुत्ति** पुं [°**मूर्ति**] महादेव, शिव ; (ठा ६)। °**याल** त्रि [°**चत्वारिंशत्**] अठतालीस ; (भवि)। °**वन्न** त्रि [°**पञ्चाशत्**] संख्या-विशेष, अट्ठावन, ५८ ; (कम्म १, ३२)। °**वरिस**, °**वारिस** वि [°**वार्षिक**] आठ वर्ष की उम्र का ; (सुर २, १४६ ; ८, १०१)। °**विह** वि [°**विध**] आठ प्रकार का ; (जी २४)। °**वीस** त्रि [°**विंशति**] अट्ठाईस ; (कम्म १, ५)। °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] संख्या-विशेष, अठसठ ; (पि ४४२-६)। °**समइय** वि (°**समयिक**) जिसकी अवधि आठ 'समय' की हो वह ; (औप)। °**सय** न [°**शत**] एक सौ आठ, १०८ ; (ठा १०)। °**सहस्स** न [°**सहस्र**] एक हजार और आठ ; (औप)। °**सामइय** देखो °**समइय** ; (ठा ८)। °**सिर** वि [°**शिरस्**, °**सिर**] अष्ट-कोण, आठ कोण वाला ; (औप)। °**सेण** पुं [°**सेन**] देखो **अट्ठिसेण**। °**हत्तर** वि [°**सप्ततितम**] अठत्तरवाँ ; (पउम ७८, ५७)। °**हत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] अठत्तर की संख्या, ७८; (सम ८६)। °**हा** अ [°**धा**] आठ प्रकार का ; (पि ४५१)।

°**अट्ठ** न [**काष्ठ**] काष्ठ, लकड़ी ; (प्रयौ ७४)।

अट्ठंग वि [**अष्टाङ्ग**] जिसका आठ अंग हो वह। °**णिमित्त** न [°**निमित्त**] वह शास्त्र जिसमें भूमि, स्वप्न, शरीर, स्वर आदि आठ विषयों के फलाफल का प्रतिपादन हो ; (सूअ १, १२)। °**महाणिमित्त** न [°**महानिमित्त**) अनन्तर-उक्त अर्थ ; (कप्प)।

अट्ठा स्त्री [**अष्टा**] १ मुष्टि "चउहिं अट्ठाहिं लोयं करेइ" (जं २ ; स १८२)। २ मुट्ठीभर चीज ; (पंचव २)।

अट्ठा स्त्री [**आस्था**] श्रद्धा, विश्वास ; (सूअ २, १)।

अट्ठा स्त्री [**अर्थ**] लिए, वास्ते "तइया य मणी दिव्वो, समप्पिओ जीवरक्खट्ठा" (सुर ६, ६ ; ठा ५, २)। °**दंड** पुं [°**दण्ड**] कार्य के लिए की गई हिंसा ; (ठा ५, २)।

अट्ठाइस वि [**अष्टाविंश**] अठाईसवाँ ; (पिंग)।

अट्ठाइस } स्त्री [**अष्टाविंशति**] संख्या-विशेष, अठाईस ;
अट्ठाईस } (पिंग; पि ४४२)।

अट्ठाण न [**अस्थान**] १ अयोग्य स्थान ; (ठा ६ ; विसे ८४५)। २ कुत्सित स्थान, वेश्या का मुहल्ला वगैरः ; (वव २)। ३ अयोग्य, गैरव्याजबी "अट्ठाणमेयं कुसला वयंति, दगेण जे सिद्धिमुयाहरंति" (सूअ १,७)।

अट्ठाण न [**आस्थान**] सभा, सभा-गृह ; (ठा ५, १)।

अट्ठाणउइ स्त्री [**अष्टानवति**] अठाणवे, ६८ ; (सम ६६)।

अट्ठाणउय वि [**अष्टानवत**] अठाणवाँ, ६८ वाँ ; (पउम ६८, ७८)।

अट्ठाणिय न [**अस्थान**] अपात्र, अनाश्रय। "अट्ठाणिए होइ बहू गुणाणं, जेणाणसंकाइ मुसं वएज्जा" (सूअ १, १३)।

अट्ठायमाण वकृ [**अतिष्ठत्**] नहीं बैठता हुआ ; (पंचा १६)।

अट्ठार } त्रि. ब. [**अष्टादशन्**] संख्या-विशेष, अठारह ;
अट्ठारस } (पउम ३५, ७६ ; संति ५) । °**विह** वि [°**विध**] अठारह प्रकार का ; (सम ३५) ।

अट्ठारसम वि [**अष्टादश**] १ अठारहवाँ ; (पउम १८, ५८) । २ न. लगा तार आठ दिनों का उपवास ; (णाया १, १) ।

अट्ठारसिय वि [**अष्टादशिक**] अठारह वर्ष की उम्र का ; (वव ४) ।

अट्ठारह }
अट्ठाराह } देखो **अट्ठार** ; (षड् ; पिंग) ।

अट्ठावण्ण } स्त्रीन [**अष्टापञ्चाशत्**] संख्या-विशेष, पचास
अट्ठावन्न } और आठ, ५८ ; (पि २६५ ; सम ७४) ।

अट्ठावन्न वि [**अष्टापञ्चाश**] अठावनवाँ ; (पउम ५८, १६) ।

अट्ठावय पुं [**अष्टापद**] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, कैलास ; (पगह १, ४) । २ न. एक जात का जुआ ; (पगह १, ४) । द्यूत-फलक, जिस पर जुआ खेला जाता है वह ; (पगह १, ४) । ४ सुवर्ण, सोना ; (धण ८) । °**सेल** पुं [°**शैल**] १ मेरु-पर्वत ; २ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, जहां भगवान् ऋषभदेव निर्वाण पाये थे, "जम्मि तुमं अहिसित्तो, जत्थ य सिवसुक्खसंपयं पत्तो । ते अट्ठावयसेला, सीसामेला गिरिकुलस्स" (धण ८) ।

अट्ठावय न [**अर्थपद**] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र, (सूअ १, ७; पगह १, ४) ।

अट्ठावीस स्त्रीन [**अष्टाविंशति**] अठाईस, २८; (पि ४४२, ४४५) ।

अट्ठावीसइ स्त्री [**अष्टाविंशति**] संख्या-विशेष, अठाईस, २८ । °**विह** वि [°**विध**] अठाईस प्रकार का, (पि ४५१) ।

अट्ठावीसइम वि [**अष्टाविंश**] १ अठाईसवां ; (पउम २८, १४१) । २ न. तेरह दिनों के लगातार उपवास ; (णाया १, १) ।

अट्ठासट्ठि स्त्री [**अष्टाषष्टि**] संख्या-विशेष, अठसठ, ६८ ; (पिंग) ।

अट्ठासि } स्त्री [**अष्टाशीति**] संख्या-विशेष ; अठासी,
अट्ठासीइ } ८८ ; (पिंग ; सम ७३) ।

अट्ठासीय वि [**अष्टाशीत**] अठासीवाँ; (पउम ८८, ४४) ।

अट्ठाह न [**अष्टाह**] आठ दिन ; (णाया १, ८) ।

अट्ठाहिया स्त्री [**अष्टाहिका**] १ आठ दिनों का एक उत्सव; (पंचा ८) । २ उत्सव ; (णाया १, ८) ।

अट्ठि वि [**अर्थिन्**] प्रार्थी, गरज वाला, अभिलाषी; (आचा)।

अट्ठि } स्त्रीन [**अस्थि, °क**] १ हड्डी, हाड; (कुमा;
अट्ठिग } पगह १, ३) । २ जिसमें बीज उत्पन्न न
अट्ठिय } हुए हों ऐसा अपरिपक्व फल ; (बृह १) । ३ पुं. कापालिक 'अट्ठी विज्जा कुच्छियभिक्खू'' (बृह १; वव २) । °**मिंजा** स्त्री [°**मिञ्जा**] हड्डी के भीतर का रस ; (ठा ३, ४) । °**सरक्ख** पुं [°**सरजस्क**] कापालिक ; (वव ७) । °**सेण** न [°**षेण**] १ वत्स-गोत्र की शाखारूप एक गोत्र; २ पुं. इस गोत्र का प्रवर्तक पुरुष और उसकी संतान ; (ठा ७) ।

अट्ठिय वि [**अर्थिक**] १ गरजू, याचक, प्रार्थी ; (सूअ १, २, ३) । २ अर्थ का कारण, अर्थ-संबन्धी ; ३ मोक्ष का हेतु, मोक्ष का कारण-भूत "पसन्ना लाभइस्संति विउलं अट्ठियं सुयं" (उत्त १) ।

अट्ठिय वि [**आर्थिक**] १ अर्थ का कारण, अर्थ-संबन्धी, २ मोक्ष का कारण ; (उत्त १) ।

अट्ठिय वि [**अर्थित**] अभिलषित, प्रार्थित ; (उत्त १) ।

अट्ठिय वि [**अस्थित**] १ अव्यवस्थित, अनियमित ; (पगह १, ३) । २ चंचल, चपल ; (से २, २४) ।

अट्ठिय वि [**आस्थिक**] हड्डी-संबन्धी, हाड का, "अट्ठियं रसं सुणआ" (भत्त १४२) ।

अट्ठिय वि [**अस्थित**] स्थित, रहा हुआ , (से १, ३५) ।

अट्ठुत्तर वि [**अष्टोत्तर**] आठ से अधिक ; (औप) । °**सय** न [°**शत**] एक सौ और आठ; (काल) । °**सय** वि [°**शततम**] एक सौ आठवां ; (पउम १०८, ५०) ।

अठ } देखो **अट्ठ=अष्टन्** ; (पिंग; पि ४४२; १४६ ; भग;
अड } सम १३४) ।

√**अड** सक [**अट्**] भ्रमण करना, फिरना "अडंति संसारे" (पगह १, १) । वकृ—**अडमाण** ; (णाया १,१४) ।

अड पुं [**अवट**] १ कूप, इनारा ; (पाअ) । २ कूप के पास पशुओं के पानी पीने के लिये जो गर्त किया जाता है वह ; (हे १, २७१) ।

°**अड** देखो **तड=तट** ; (गा ११७ ; से १, ५५) ।

अडइ } स्त्री [**अटवि, °वी**] भयानक जंगल, वन ; (सुपा
अडई } १८१, नाट) ।

अडडज्झिय न [**दे**] विपरीत मैथुन ; (दे १, ४२) ।
अडक्खम्म सक [दे] सँभालना, रक्षण करना । कर्म— "अडक्खम्मिज्जंति सवरिआहिं वणे" (दे १, ४१) ।
अडक्खम्मिअ वि [**दे**] सँभाला हुआ, रक्षित; (दे १, ४१) ।
अडड न [**अटट**] 'अटटांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा ३, ४) ।
अडडंग न [**अटटाङ्ग**] संख्या-विशेष, 'तुडिय' या 'महातुडिय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा ३, ४) ।
अडण न [**अटन**] भ्रमण, घूमना ; (ठा ६) ।
अडणी स्त्री [**दे**] मार्ग, रास्ता ; (दे १, १६) ।
अडपल्लण न [**दे**] वाहन-विशेष ; (जीव ३) ।
अडयणा } स्त्री [**दे**] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (दे १, **अडया** } १८; पाअ; गा २७४; ६६२ ; वज्जा ८६) ।
अडयाल न [दे] प्रशंसा, तारीफ ; (पण्ण २) ।
अडयाल } स्त्रीन [**अष्टचत्वारिंशत्**] अठतालीस, **अडयालीस** } ४८ की संख्या ; (जीव ३; सम ७०) । °**सय** न [°**शत**] एक सौ और अठतालीस, १४८ ; (कम्म २, २५) ।
अडवडण न [**दे**] स्खलना, रुक रुक चलना, "तुरयावि परिस्संता अडवडणं काउमारद्धा" (सुपा ६४५) ।
अडवि } स्त्री [**अटवि**, °**वी**] भयंकर जंगल, गहरा वन; **अडवी** } (पण्ह १, १; महा) ।
अडसट्ठि स्त्री [**अष्टषष्टि**] अठसठ ; (पि ४४२) । °**म** वि [**तम**] अठसठवाँ ; (पउम ६८, ५१) ।
अडाड पुं [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे १, १६) ।
अडिल्ल पुं [**अटिल**] एक जात का पक्षी ; (पण्ण १) ।
अडिल्ला स्त्री [**अडिल्ला**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
अडोलिया स्त्री [**अटोलिका**] १ एक राज-पुत्री, जो यवराज की पुत्री और गर्दभराज की बहिन थी ; २ मूषिका, चूही ; (बृह १) ।
अडोविय वि [**अटोपित**] भरा हुआ ; (पण्ह १, ३) ।
अड्ड वि [**दे**] जो आड़े आता हो, बीच में बाधक होता हो वह, "सो कोहाडओ अड्डो आवडिओ" (उप १४६ टी) ।
अड्डक्ख सक [**क्षिप्**] फेंकना, गिराना । अड्डक्खइ ; (हे ४, १४३; षड्) ।
अड्डक्खिय वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ ; (कुमा) ।
अड्डण न [**अड्डन**] १ चर्म, चमड़ा ; २ ढाल, फलक "नवमुग्गवण्णअड्डणढक्किआजाणुभीसणसरीरा" (सुर २,५) ।
अड्डिया स्त्री [**अड्डिका**] मल्लों की क्रिया-विशेष ; (विसे ३३५७) ।
अड्ढ देखो **अद्ध=अर्ध** ; (हे २, ४१; चंद १०; सुर ६, १२६; महा) ।
अड्ढ वि [**आढ्य**] १ संपन्न, वैभव-शाली, धनी ; (पाअ; उवा) । २ युक्त, सहित ; (पंचा १२) । ३ पूर्ण, परिपूर्ण "विगुणमवि गुणड्ढं" (प्रासू ७१) ।
अड्ढअक्खली स्त्री [**दे**] देखो **अड्डयक्खली**; (दे १,४५) ।
अड्ढत्त वि [**आरब्ध**] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध ; (से १३, ६) ।
अड्ढाइज्ज } वि [**अर्धतृतीय**] ढ़ाई ; (सम १०१; सुर **अड्ढाइय** } १, ४४; भवि; विसे १४०१) ।
°**अड्ढिय** वि [**कृष्ट**] खींचा हुआ ; (से ५, ७२) ।
अड्ढुट्ठ वि [**अर्धचतुर्थ**] साढ़े तीन ; "अड्ढुट्ठाइं सयाइं" (पि ४५०) ।
अड्ढेज्ज न [**आढ्यत्व**] धनिपन, श्रीमंताई ; (ठा १०) ।
अड्ढेज्जा स्त्री [**आढ्येज्या**] श्रीमंत ने किया हुआ सत्कार ; (ठा १०) ।
अड्ढोरुग पुं (**अर्धोरुक**] जैन साध्वीओं के पहननेका एक वस्त्र ; (ओघ ३१५) ।
अढ (अप) देखो **अट्ठ=अष्टन्** ; (पि ६७; ३०४; ४४२; ४४५) ।
अढाइस (अप) स्त्रीन [**अष्टाविंशति**] संख्या-विशेष, अठाईस, २८ ; (पि ४४५) ।
अढारसम देखो **अट्ठारसम**; (भग १८; णाया १ १८) ।
अण अ [**अ°**, **अन्°**] देखो **अ°**; (हे २, १९०; से ११ ६४) ।
अण सक [**अण्**] १ अवाज करना । २ जाना । ३ जानना । ४ समझाना । अणइ ; (विसे ३४४१) ।
अण पुं [**अण**] १ शब्द, अवाज ; २ गमन गति ; (विसे ३४४०) । ३ कषाय, क्रोध आदि आन्तर शत्रु ; (विसे १२८७) । ४ गाली, आक्रोश अभिशाप ; (तंदु) । ५ न. पाप ; (पण्ह १, १) । ६ कर्म ; (आचा) । ७ वि. कुत्सित, खराब ; (विसे २७९७ टी) ।
अण पुं [**अन**] देखो **अणंताणुबंधि** ; (कम्म २, ५; १४;२६) ।

अण पुं [**अनस्**] शकट, गाड़ी ; (धर्म २) ।
अण देखो **अण्ण**=अन्य " अणहिअग्रा वि पिआणं " (से ११, १६; २०) ।
अण न [**ऋण**] १ करजा, ऋण ; (हे १, १४१) । २ कर्म ; (उत्त १) । °**धारग** वि [°**धारक**] करजदार, ऋणी ; (णाया १, १७) । °**बल** वि [°**बल**] उत्तमर्ण, लेनदार; (पण्ह १, २) । ° **भंजग** वि [°**भञ्जक**] देउलिया ; (पण्ह १, ३) ।
°**अण** देखो **गण** ; (से ६, ६६) ।
°**अण** देखो **जण** ; " अणणं महिलाअणं रमंतस्स " (गा ४४) ; " गुरुअणपरवस पिअ किं (काप्र ६१) ; " दास-अणाणं " (अच्चु ३२) ।
अण देखो **तण**; (से ६, ६६) ।
°**अणअरद** देखो **अणवरय** ; (नाट) ।
अणइवर वि [**अनतिवर**] जिससे बढ़कर दूसरा न हो, सर्वोत्तम ; " अच्छराओ.........अणइवरसोमचारुरूवाओ " (औप) ।
अणईइ वि [**अनीति**] ईति-रहित, शलभादि-कृत उपद्रव से रहित " अणईइपत्ता " (औप) ।
अणंग पुं [**अनङ्ग**] १ काम, विषयाभिलाष, रमणेच्छा; (श्रा १६; आव ६) । २ कामदेव, मन्मथ ; (गा २३३; गउड; कप्पू) । ३ एक राजकुमार, जो आनन्दपुर के राजा जितारि का पुत्र था ; (गच्छ २) । ४ न. विषय-सेवन के मुख्य अंगों के अतिरिक्त स्तन, कुक्षि, मुख आदि अंग; (ठा ५, २) । ५ बनावटी लिंग आदि; (ठा ५.२) । ६ बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन शास्त्र; (विसे ८४४) । ७ वि. शरीर-रहित, अंग-हीन, मृत ; " पहरइ कह णु अणंगो, कह णु हु विंधंति कोसुमा बाणा" (गउड); "पईव-मज्झे पडई पयंगो, रूवाणुरत्तो हवई अणंगो " (सत्त ४८) । °**घरिणी** स्त्री [°**गृहिणी**] रति, कामदेव की पत्नी ; (सुपा ६६७) । °**पडिसेविणी** स्त्री [°**प्रतिषेविणी**] अमर्यादित रीति से विषय-सेवन करनेवाली स्त्री; (ठा ५, २) । °**पविट्ठ** न [°**प्रविष्ट**] बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन ग्रन्थ; (विसे ५२७) । °**बाण** पुं [°**बाण**] काम के बाण ; (गा ७४८) । °**लवण** पुं [°**लवन**] रामचन्द्रजी का एक पुत्र, लव; (पउम ६७,६) । °**सर** पुं [°**शर**] काम के बाण; (गा १०००) । °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] द्वारका की एक विख्यात गणिका ; (णाया १, ५; १६) ।
अणंत पुं [**अनन्त**] चालु अवसर्पिणी काल के चौदहवें तीर्थंकर-देव " विमलमणंतं च जिणं " (पडि) । २ विष्णु, कृष्ण ; (पउम ५, १२२) । ३ शेष नाग ; (से ६, ८६) । ४ जिसमें अनन्त जीव हों ऐसी वनस्पति, कन्द-मूल वगैरः ; (ओघ ४१) । ५ न. केवल-ज्ञान ; (णाया १, ८) । ६ आकाश ; (भग २०, २) । ७ वि. नाश-वर्जित, शाश्वत ; (सूअ १,१,४ ; पण्ह १, ३) । ८ निःसीम, अपरिमित, असंख्य से भी कहीं अधिक ; (विसे)। ९ प्रभूत, बहुत, विशेष ; (प्रासू २६ ; ठा ४, १) । °**काइय** वि [°**कायिक**] अनन्त जीव वाली वनस्पति, कन्द-मूल आदि ; (धर्म २) । °**काय** पुं [°**काय**] कन्द-मूल आदि अनन्त जीव वाली वनस्पति ; (पण्ण १)। °**खुत्तो** अ [°**कृत्वस्**] अनन्त वार ; (जी ४४) । °**जीव** पुं [°**जीव**] देखो °**काइय** ; (पण्ण १) । °**जीविय** वि [°**जीविक**] देखो °**काइय** ; (भग ८,३) । °**णाण** न [°**ज्ञान**] केवल-ज्ञान ; (दस २) । °**णाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ ; (सूअ १, ६) । °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] सर्वज्ञ ; (पउम ४८, १०५) । °**पासि** वि [°**दर्शिन्**] ऐरवत क्षेत्र के वीसवें जिन-देव ; (तित्थ) । °**मिस्सिया** स्त्री [°**मिश्रिका**] सत्य-मिश्र भाषा का एक भेद ; जैसे अनन्तकाय से भिन्न प्रत्येक-वनस्पति से मिली हुई अनन्तकाय को भी अनन्तकाय कहना ; (पण्ण ११) । °**मीसय** न [°**मिश्रक**] देखो °**मिस्सिया**; (ठा १०) । °**रह** पुं [°**रथ**] विख्यात राजा दशरथ के बड़े भाईका नाम; (पउम २२,१०१)। °**विजय** पुं [°**विजय**] भरतक्षेत्र के २४ वें और ऐरवत क्षेत्र के वीसवें भावि तीर्थंकर का नाम ; (सम १५४)। °**वीरिय** वि [°**वीर्य**] १ अनन्त बल वाला । २ पुं. एक केवलज्ञानी मुनि का नाम ; (पउम १४, १५८) । ३ एक ऋषि, जो कार्तवीर्य के पिता थे ; (आचू १) । ४ भरतक्षेत्र के एक भावि तीर्थंकर का नाम; (ती २१) । °**संसारिय** वि [°**संसारिक**] अनन्त काल तक संसार में जन्म-मरण पानेवाला; (उप ३८४) । °**सेण** पुं [°**सेन**] १ चौथा कुलकर ; (सम १५०) । २ एक अन्तकृद् मुनि ; (अंत ३) ।
अणंतइ पुं [**अनन्तजित्**] चालु काल के चौदहवें जिन-देव; (पउम ५, १४८) ।
अणंतग, **अणंतय** } १ देखो **अणंत**; (ठा ५, ३) । २ न. वस्त्र-विशेष; (ओघ ३६) । ३ पुं. ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव;

(सम १५३)।

अणंतर वि [**अनन्तर**] १ व्यवधान-रहित, अव्यवहित "अणंतरं चयं चइत्ता" (णाया १, ८)। २ पुं. वर्तमान समय; (ठा १०)। ३ क्रिवि. बाद में, पीछे, (विपा १, १)।

अणंतरहिय वि [**अनन्तर्हित**] १ अव्यवहित, व्यवधान-रहित ; (आचा)। २ सजीव, सचित्त, चेतन ; (निचू ७)।

अणंतसो अ [**अनन्तशस्**] अनन्त वार ; (दं ४५)।

अणंताणुबंधि पुं [**अनन्तानुबन्धिन्**] अनन्त काल तक आत्मा को संसार में भ्रमण कराने वाले कषायों की चार चौकडियों में प्रथम चौकड़ी, अतिप्रचंड क्रोध, मान, माया और लोभ ; (सम १६)।

अणक्क पुं [**दे**] १ एक म्लेच्छ देश; २ एक म्लेच्छ जाति; (पण्ह १, १)।

अणक्ख पुं [**दे**] १ रोष, गुस्सा, क्रोध ; (सुपा १३; १२०; ६१४ ; भवि)। २ लज्जा ; (स ३७६)।

अणक्खर न [**अनक्षर**] श्रुत-ज्ञान का एक भेद—वर्ण के विना संपर्क के, छींकना, चुटकी बजाना, सिर-हिलाना आदि संकेतों से दूसरे का अभिप्राय जानना ; (णंदि)।

अणगार वि [**अनगार**] १ जिसने घर-बार त्याग किया हो वह, साधु, यति, मुनि ; (विपा १, १ ; भग १७, ३)। २ घर-रहित, भिक्षुक, भीखमँगा; (ठा ६)। ३ पुं. भरतक्षेत्र के भावी पांचवें तीर्थंकर का एक पूर्वभवीय नाम; (सम १५४)।

°**सुय** न [°**श्रुत**] 'सूत्रकृतांग' सूत्र का एक अध्ययन ; (सूअ २, ५)।

अणगार वि [**ऋणकार**] १ करजा करनेवाला ; २ दुष्ट शिष्य, अपात्र ; (उत्त १)।

अणगार वि [**अनाकार**] आकृति-शून्य, आकार-रहित "उवलंभव्ववहाराभावओ नाणगारं च" (विसे ६५)।

अणगारि पुं [**अनगारिन्**] साधु, यति, मुनि; (सम ३७)।

अणगारिय वि [**अनगारिक**] साधु-संबन्धी, मुनि का ; (विसे २६७३)।

अणगाल पुं [**अकाल**] दुर्भिक्ष, अकाल ; (बृह ३)।

अणगिण पुं [**अनग्न**] १ जो नंगा न हो, वस्त्रों से आच्छादित। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देता है ; (तंदु)।

अणग्घ वि [**ऋणघ्न**] ऋण-नाशक, कर्म-नाशक ; (दंस)।

अणग्घ, **अणग्घेय** वि [**अनर्घ्य**] १ अमूल्य, बहुमूल्य, किंमती ; (आव ४) "रयणाइं अणग्घेयाइं हुंति पंचप्पयारवण्णाइं" (उप ५९७ टी ; स ८०)। २ महान्, गुरु ; ३ उत्तम, श्रेष्ठ; "तं भगवंतं अणग्घ नियत्तीए अणग्घभत्तीए, सक्कारेमि" (विवे ६५; ७१)।

अणघ वि [**अनघ**] शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ ; (पंचव ४)।

अणच्छ देखो **करिस**=कृष्। अणच्छइ; (हे ४, १८७)।

अणच्छिआर वि [**दे**] अच्छिन्न, नहीं छेदा हुआ; (दे १,४४)।

अणज्ज वि [**अन्याय्य**] अयोग्य, जो न्याय-युक्त नहीं ; (पण्ह १, १)।

अणज्ज वि [**अनार्य**] आर्य-भिन्न, दुष्ट, खराब, पापी ; (पण्ह १, १ ; अभि १२३)।

अणज्जव (अप) ऊपर देखो। °**खंड** पुं [°**खण्ड**] अनार्य देश, (भवि ३१२, २)।

अणज्झवसाय पुं [**अनध्यवसाय**] अव्यक्त ज्ञान, अनि सामान्य ज्ञान ; (विसे ६२)।

अणज्झाय पुं [**अनध्याय**] १ अध्ययन का अभाव ; २ जिसमें अध्ययन निषिद्ध है वह काल ; (नाट)।

अणट्ट वि [**अनार्त**] आर्त-ध्यान से रहित; "अणट्टा कित्ति पव्वए" (उत्त १८, ५०)।

अणट्ठ पुं [**अनर्थ**] १ नुकसान , हानि ; (णाया १, ६ ; उप ६ टी)। २ प्रयोजन का अभाव ; (आव ६)। ३ वि. निष्कारण, वृथा, निष्फल ; (निचू १ ; पण्ह २, १)।

°**दंड** पुं [**दण्ड**] निष्कारण हिंसा, विना ही प्रयोजन दूसरे की हानि; (सूअ २, २)।

अणड पुं [**दे**] जार, उपपति ; (दे १, १८ ; षड्)।

अणड्ढ वि [**अनर्ध**] विभाग-रहित, अखण्ड ; (ठा ३, ३)

अणण्ण वि [**अनन्य**] १ अभिन्न, अपृथग्भूत ; (निचू १)। २ मोक्ष-मार्ग "अणण्णं चरमाणे से ण छणे ण छणावए" (आचा)। ३ असाधारण, अद्वितीय ; (सुपा १८६; सुर १, ७)। °**तुल्ल** वि [°**तुल्य**] असाधारण, अनुपम; (उप ६४८ टी)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] पदार्थ को सत्य २ देखने वाला; (आचा)। °**परम** वि [°**परम**] संयम, इन्द्रिय-निग्रह "अणण्णपरमे णाणी, णो पमाए कयाइवि" (आचा)। °**मण**, °**मणस** वि [°**मनस्क**] एकाग्र चित्त वाला, तल्लीन; (औप ; पउम ६, ६३)। °**समाण** वि [°**समान**] असाधारण, अद्वितीय; (उप ५९७ टी)।

अणत्त वि [**अनात्त**] अगृहीत, अस्वीकृत (ठा २, ३)।

अणत्त वि [**अनार्त्त**] अपीडित "दव्वावइमाईसु अत्तमणत्ते गवेसणं कुणइ" (वव १)।

अणत्त वि [**ऋणार्त्त**] ऋण से पीडित ; (ठा ३, ४)।

अणत्त वि [**अनात्र**] दुःखकर, सुख-नाशक "णेरइआणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता वा" (भग १४, ६)।

अणत्त न [**दे**] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य ; (दे १, १०)।

अणत्थ देखो **अणट्ठ** ; (पउम ६२, ४ ; श्रा २७ ; सण)।

अणथंत वकृ [**अतिष्ठत्**] १ नहीं रहता हुआ ; २ अस्त होता हुआ "अणथंते दिवसयरे जो चयइ चउव्विहंपि आहारं" (पउम १४, १३४)।

अणन्न देखो **अणण्ण** ; (सुपा १८६ ; सुर १, ७ ; पउम ६, ६३)।

अणपन्निय देखो **अणवण्णिय** ; (भग १०, २)।

अणप्प वि [**अनर्प्य**] अर्पण करने को अयोग्य या अशक्य ; (ठा ६)।

अणप्प वि [**अनल्प**] अधिक, बहुत ; (औप)।

अणप्प पुं [**अनात्मन्**] निजसे भिन्न, आत्मा से पर ; (पउम ३७, २२)। °**ज्ज** वि (°**ज्ञ**) १ निर्बोध, मूर्ख ; २ पागल, भूताविष्ट, पराधीन ; (निचू १)। °**वसग** वि [°**वश**] परवश, पराधीन ; (पउम ३७,२२)।

अणप्प पुं [**दे**] खड्ग, तलवार ; (दे १, १२)।

अणप्पिय वि [**अनर्पित**] १ नहीं दिया हुआ ; २ साधारण, सामान्य, अविशेषित ; (ठा १०)। °**णय** पुं [°**नय**] सामान्य-ग्राही पक्ष ; (विसे)।

अणब्भंतर वि [**अनभ्यन्तर**] भीतरी तत्व को नहीं जानने वाला, रहस्य-अनभिज्ञ "अणब्भंतरा खु अम्हे मदणगदस्स वुत्तंतस्स" (अभि ६१)।

अणभिग्गह न [**अनभिग्रह**] "सर्वे देवा वन्द्याः" ... दिरूप मिथ्यात्व का एक भेद ; (श्रा ६)।

अणभिग्गहिय न [**अनभिग्रहिक**] ऊपर देखो ; (ठा २, १)।

अणभिग्गहिय वि [**अनभिगृहीत**] १ कदाग्रह-शून्य ; (श्रा ६) २ अस्वीकृत ; (उत २८)।

अणभिण्ण } वि [**अनभिज्ञ**] अजान, निर्बोध ; (अभि **अणभिन्न** } १७४ ; सुपा १६८)।

अणभिलप्प वि [**अनभिलाप्य**] अनिर्वचनीय, जो वचन से न कहा जा सके ; (लहुअ ७)।

अणमिस वि [**अनिमिष**] १ विकसित, खुला हुआ ; (सुर ३, १४३)। २ निमेष-रहित, पलक-वर्जित ; (सुपा ३५४)।

अणय पुं [**अनय**] अनीति, अन्याय ; (श्रा २७ ; स ५०१)।

अणयार देखो **अणगार** ; (पउम ०१, ७)।

अणरण्ण पुं [**अनरण्य**] साकेतपुर का एक राजा, जो पीछे से ऋषि हुआ था ; (पउम १०, ८७)।

अणरह } वि [**अनर्ह**] अयोग्य, नालायक ; (कुमा) ;
अणरिह } "णवि दिज्जंति अणरिहे, अणरिहत्तं तु इमो
अणरुह } होइ" (पंचभा)।

अणरहू स्त्री [**दे**] नवोढ़ा, दुलहिन ; (षड्)।

अणरामय पुं [**दे**] अरति, बेचैनी ; (दे १, ४५ ; भवि)।

अणराय वि [**अराजक**) राज-शून्य, जिसमें राजा न हो वह ; (बृह १)।

अणराह पुं (**दे**) सिर में पहनी जाती रंग-बेरंगी पट्टी ; (दे १, २४)।

अणरिक्क वि [**दे**] अवकाश-रहित, फुरसद-वर्जित ; (दे १,२०)। २ दधि, क्षीर आदि गोरस भोज्य ; (निचू १६)।

अणरिह } वि [**अनर्ह**] अयोग्य, अ-लायक ; (णाया
अणरुह } १, १)।

अणल पुं [**अनल**] १ अग्नि, आग ; (कुमा)। २ वि. असमर्थ ; ३ अयोग्य "अणलो अपच्चलोत्ति य होंति अजोगो व एगट्ठा" (निचू ११)।

अणव वि [**ऋणवत्**] १ करजदार ; २ पुं. दिवस का छब्बीसवाँ मुहूर्त ; (चंद)।

अणवकय वि [**अनपकृत**] जिसका अपकार न किया गया हो वह ; (उव)।

अणवगल्ल वि [**अनवग्लान**] ग्लानि-रहित, नीरोग, "रुद्दस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स, जंतुणा
एगे ऊसासनीसासे. एस पाणुत्ति वुच्चइ" (ठा २, ४)।

अणवच्च वि [**अनपत्य**] सन्तान-रहित, निर्वंश ; (सुपा २५६)।

अणवज्ज न [**अनवद्य**] १ पाप का अभाव, कर्म का अभाव ; (सूअ १, १, २)। २ वि. निर्दोष, निष्पाप ; (षड्)।

अणवज्ज वि [**अणवर्ज्य**] ऊपर देखो ; (विसे)।

अणवट्ठप्प वि [**अनवस्थाप्य**] १ जिसको फिरसे दीक्षा न दी जा सके ऐसा गुरु अपराध करनेवाला ; (बृह ४)। २ न. गुरु प्रायश्चित्त का एक भेद ; (ठा ३, ४)।

अणवट्ठिय वि [**अनवस्थित**] १ अव्यवस्थित, अनियमित ;

(प्रासू १३७; सुर ४,७६)। २ चंचल, अस्थिर "अणव-ट्ठियं च चित्तं" (सुर १२, १३८)। ३ पल्य-विशेष, नाप-विशेष; (कम्म ४, ७३)।

अणवण्णिय पुं [**अणपन्निक, अणपर्णिक**] वानव्यंतर देवों की एक जाति; (पगह १, ४; भग १०, २)।

अणवत्थ वि [**अनवस्थ**] अव्यवस्थित, अनियमित असमं-जस; (दे १, १३६)।

अणवत्था स्त्री [**अनवस्था**] १ अवस्था का अभाव; (उव)। २ एक तर्क-दोष; (विसे)। ३ अव्यवस्था; "जणणी जायइ जाया, जाया माया पिया य पुत्तो य। अणवत्था संसारे, कम्मवसा सव्वजीवाणं" (धर्वि १०७)।

अणवदग्ग वि [**दे**] १ अनन्त, अपरिमित, निस्सीम; (भग १, १)। २ अविनाशी; (सूअ २, ५)।

अणवन्निय देखो **अणवण्णिय**; (औप)।

अणवयग्ग देखो **अणवदग्ग**; (सम १२५; पगह १, ३; प्राप)।

अणवयमाण वकृ [**अनपवदत्**] १ अपवाद नहीं करता हुआ। २ सत्यवादी; (वव ३)।

अणवरय वि [**अनवरत**] १ सतत, निरन्तर, अविच्छिन्न; २ न. सदा, हमेशाँ; (गा २८०; सुपा ६)।

अणवराइस (अप) वि [**अनन्यादृश**] असाधारण, अद्वितीय; (कुमा)।

अणवसर वि [**अनवसर**] आकस्मिक, अचिन्तित; (पाअ)।

अणवाह वि [**अबाध**] बाधा-रहित, निर्बाध; (सुपा २६८)।

अणवेक्खिय वि [**अनपेक्षित**] उपेक्षित, जिसकी परवा न हो।

अणवेक्खिय वि [**अनवेक्षित**] १ नहीं देखा हुआ; २ अविचारित, नहीं सोचा हुआ। °**कारि** वि (°**कारिन्**) साहसिक। °**कारिया** स्त्री (°**कारिता**) साहस कर्म; (उप ७६८ टी)।

अणसण न [**अनशन**] आहार का त्याग, उपवास; (सम ११६)।

अणसिय वि [**अनशित**] उपोषित, उपवासी; (आवम)।

अणह वि [**अनघ**] निर्दोष, पवित्र; (औप; गा २७२; से ६, ३)।

अणह वि [**दे**] अक्षत, क्षति-रहित, व्रण-शून्य; (दे १, १३; सुपा ६, ३३; सण)।

अणह न [**अनभस्**] भूमि, पृथिवी; (से ६, ३)।

अणहप्पणय वि [**दे**] अनष्ट, विद्यमान; (दे १,४८)।

अणहवणय वि [**दे**] तिरस्कृत, भर्त्सित; (षड्)।

अणहारय पुं [**दे**] खल, खला, जिसका मध्य-भाग नीचा हो वह जमीन; (दे १, ३८)।

अणहिअअ वि [**अहृदय**] हृदय-रहित, निष्ठुर, निर्दय; (प्राप; गा ४१)।

अणहिगय वि [**अनधिगत**] १ नहीं जाना हुआ। २ पुं. वह साधु, जिसको शास्त्रों का पूरा ज्ञान न हो, अगीतार्थ; (वव १)।

अणहिण्ण देखो **अणभिण्ण**; (प्राप)।

अणहियास वि [**अनध्यासक**] असहिष्णु, सहन नहीं करने वाला; (उव)।

अणहिल } न [**अणहिल्ल**] गुजरात देश की प्राचीन राज-
अणहिल्ल } धानी, जो आजकल 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है; (ती २६; कुमा)। °**वाडय** न [**पाटक**] देखो **अणहिल**; (गु १०; मुणि १०८८८)।

अणहीण वि [**अनधीन**] स्वतन्त्र, अनायत्त; (संग १६१)।

अणाइ वि [**अनादि**] आदि-रहित, नित्य; (सम १२५)। °**णिहण, निहण** वि [°**निधन**] आद्यन्त-वर्जित, शाश्वत; (उव; सम्म ६५; आव ४)। °**मंत, °वंत** वि [**मत्**] अनादि काल से प्रवृत्त; (पउम ११८, ३२; भवि)।

अणाइज्ज वि [**अनादेय**] १ अनुपादेय, ग्रहण करने को अयोग्य। २ नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का वचन, युक्त होने पर भी, ग्राह्य नहीं समझा जाता है; (कम्म १, २७)।

अणाइय वि [**अनादिक**] आदि-रहित, नित्य; (सम १२५)।

अणाइय वि [**अज्ञातिक**] स्वजन-रहित, अकेला; (भग १, १)।

अणाइय वि [**अणातीत**) पापी, पापिष्ठ; (भग १, १)।

अणाइय पुं [**ऋणातीत**] संसार, दुनयां; (भग १, १)।

अणाइय वि [**अनादृत**] जिसका आदर न किया गया हो वह; (उप ८३३ टी)।

अणाइल वि [**अनाविल**] १ अकलुषित, निर्मल; (पगह २, १)।

अणाईअ देखो **अणाइय**; (उप १०३१ टी; पि ७०)।

अणाउ } पुं [**अनायुष्क**] १ जिन-देव; (सूअ १, ६)।
अणाउय } २ मुक्तात्मा, सिद्ध; (ठा १)।

अणाउल वि [**अनाकुल**] अव्याकुल, धीर ; (सुअ १, २, २ ; गाया १, ८) ।
अणाउत्त वि [**अनायुक्त**] उपयोग-शून्य, बे-ख्याल, असावधान ; (औप) ।
अणाएज्ज देखो **अणाइज्ज** ; (सम १५६) ।
अणागय पुं [**अनागत**] १ भविष्य काल,
" अणागयमपस्संता, पच्चुप्पन्नगवेसगा ।
ते पच्छा परितप्पंति, खीणे आउम्मि जोव्वणे" (सुअ १,३,४)।
२ वि. भविष्य में होनेवाला ; (सुअ १, २) । °द्धा स्त्री [°द्धा) भविष्य काल ; (नव ४२) ।
अणागलिय वि [**अनर्गलित**] नहीं रोका हुआ ; (उवा)।
अणागलिय वि [**अनाकलित**] १ नहीं जाना हुआ, अलक्षित ; (गाया १, ६) । २ अपरिमित " अणागलियतिव्वचंडरोसं सप्परूवं विउव्वइ " (उवा) ।
अणागार वि [**अनाकार**] १ आकार-रहित, आकृति-शून्य; (ठा १०) । २ विशेषता-रहित ; (कम्म ४, १२) । ३ न. दर्शन, सामान्य ज्ञान ; (सम ६५) ।
अणाजीव वि [**अनाजीव**] १ आजीविका-रहित ; २ आजीविका की इच्छा नहीं रखने वाला ; ३ निःस्पृह, निरीह ; (दस ३) ।
अणाजीवि वि [**अनाजीविन्**] ऊपर देखो " अगिलाई अणाजीवी " (पडि ; निचू १) ।
अणाड पुं [**दे**] जार, उपपति ; (दे १, १८) ।
अणाढिय वि [**अनादृत**] १ जिसका आदर न किया गया हो वह, तिरस्कृत ; (आव ३) । २ पुं. जम्बूद्वीप का अधिष्ठायक एक देव; (ठा २, ३) । ३ स्त्री. जम्बूद्वीप के अधिष्ठायक देव की राजधानी ; (जीव ३) ।
अणाणुगामिय वि [**अनानुगामिक**] १ पीछे नहीं जाने वाला ; (ठा ५, १) । २ न. अवधिज्ञान का एक भेद ; (णंदि) ।
अणादिय } देखो **अणाइय**; (इक; पण्ह १, १ ; ठा
अणादीय } ३, १) ।
अणादेज्ज देखो **अणाइज्ज** ; (पण्ह १, ३) ।
अणाभोग पुं [**अनाभोग**] १ अनुपयोग, बे-ख्याली, असावधानी ; (आव ४) । २ न. मिथ्यात्व-विशेष ; (कम्म ४, ५१) ।
अणामिय वि [**अनामिक**] १ नाम-रहित ; २ पुं. असाध्य रोग ; (तंदु) । ३ स्त्री. कनिष्ठांगुली के ऊपर की अंगुली।

अणाय वि [**अज्ञात**] नहीं जाना हुआ, अपरिचित ; (पउम २४, १७) ।
अणाय पुं [**अनाक**] मर्त्यलोक, मनुष्य-लोक ; (से १,१)।
अणाय पुं [**अनात्मन्**] आत्म-भिन्न; आत्मा से पर ; (सम १) ।
अणायग वि [**अनायक**] नायक-रहित ; (पउम ५६, ७०) ।
अणायग वि [**अज्ञातक**] स्वजन-रहित, अकेला; (निचू ६)।
अणायग वि [**अज्ञायक**] अजान, निर्बोध; (निचू ११)।
अणायतण } न [**अनायतन**] १ वेश्या आदि नीच
अणाययण } लोगों का घर ; (दस ५, १) । २ जहां सज्जन पुरुषों का संसर्ग न होता हो वह स्थान ; (पण्ह २, ४) । ३ पतित साधुओं का स्थान ; (आव ३) । ४ पशु, नपुंसक वगैरः के संसर्ग वाला स्थान ; (ओघ ७६३) ।
अणायत्त वि [**अनायत्त**] पराधीन ; (पउम २६,२६)।
अणायर पुं [**अनादर**] अ-बहुमान, अपमान; (पाअ) ।
अणायरण न [**अनाचरण**] अनाचार, खराब आचरण ।
अणायरणया स्त्री [**अनाचरण**] ऊपर देखो ; (सम ७१) ।
अणायरिय देखो **अणज्ज**=अनार्य ; (पण्ह १, १; पउम १४, ३०) ।
अणायार देखो **अणागार**=अनाकार ; (विसे) ।
अणायार पुं [**अनाचार**] १ शास्त्र-निषिद्ध आचरण ; (स १८८) । २ गृहीत नियमों का जान-बुझ कर उल्लंघन करना, व्रत-भङ्ग ; (वव १) ।
अणारिय देखो **अणज्ज**=अनार्य ; (उवा) ।
अणारिस वि [**अनार्ष**] जो ऋषि-प्रणीत न हो वह ; (पउम ११, ८०) ।
अणारिस वि [**अन्यादृश**] दूसरे के जैसा; (नाट) ।
अणालत्त वि [**अनालपित**] अनुक्त, अकथित, नहीं बुलाया हुआ; (उवा) ।
अणालवय पुं [**अनालपक**] मौन, नहीं बोलना; (पाअ)।
अणावरण वि [**अनावरण**] १ आवरण-रहित; २ न. केवल ज्ञान; (सम्म ७१) ।
अणाविट्ठि } स्त्री [**अवृष्टि**] वर्षा का अभाव ; (पउम
अणावुट्ठि } २०, ८७; सम ६०) ।
अणाविल वि [**अनाविल**] १ निर्मल, स्वच्छ ; (गउड) ।

अणासंसि वि [**अनाशंसिन्**] अनिच्छु, निस्पृह ; (बृह १)।

अणासय पुं [**अनाश, °क**] अनशन, भोजनाभाव "खारस्स लोणस्स अणासएणं" (सूत्र १, ७, १३)।

अणासव वि [**अनाश्रव**] १ आश्रव-रहित; २ पुं. आश्रव का अभाव, संवर ; ३ अहिंसा, दया; (पराह २, १)।

अणासिय [**अनशित**] भूखा ; (सूत्र १, ५, २)।

अणाह वि [**अनाथ**] १ शरण-रहित ; (निवू ३)। २ स्वामि-रहित, मालिक-रहित। ३ रंक, गरीब, बिचारा ; (णाया १, ८)। ४ पुं. एक जैन मुनि ; (उत्त २०)।

अणाहि, **अणाहिय** वि [**अनाधि, °क**] मानसिक पीड़ा से रहित; (स ३, ४४ ; पि ३६५)।

अणाहिट्ठि पुं [**अनाधृष्टि**] एक अन्तकृद् मुनि ; (अन्त३)।

अणिइय वि [**अनियत**] १ अनियमित , अव्यवस्थित ; २ पुं. संसार ; (भग ६, ३३)।

अणिउंचिय वि [**अनिकुञ्चित**] टेढ़ा नहीं किया हुआ, सरल ; (गउड)।

अणिउँत, **अणिउँतय**, **अणिउँत्तय** देखो **अइमुत्त** ; (दे ४,३८ ; हे १, १७८ ; कुमा)।

अणिएय वि [**अनियत**] अनियमित, अप्रतिबद्ध ; "अखिले अगिद्धे अणिएयचारी, अभयंकरे भिक्खू अणाविलप्पा" (सूत्र १, ७, २८)।

अणिंदिय वि [**अनिन्दित**] १ जिसकी निन्दा न की गई हो वह, उत्तम ; (धर्म १)। २ पुं. किन्नर देव की एक जाति ; (पण्ण १)।

अणिंदिय वि [**अनिन्द्रिय**] १ इंद्रिय-रहित; २ पुं. मुक्त जीव; ३ केवलज्ञानी; (ठा १०)। ४ वि. अतीन्द्रिय, जो इंद्रियों से जाना न जा सके "नय विज्जइ तग्गहणे लिंगंपि अणिंदियत्तणओ" (सुर १२, ४८; स १६८; विसे १८६२)।

अणिंदिया स्त्री [**अनिन्दिता**] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)।

अणिक्क वि [**अनेक**] एक से ज्यादः ; (नव ४३)। **°वाइ** वि [**°वादिन्**] अक्रियावादी ; (ठा ८)।

अणिक्किणी स्त्री [**अनीकिनी**] ऐसी सेना जिसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०६३५ प्यादें हों; (पउम ५६, ६)।

अणिक्खित्त वि [**अनिक्षिप्त**] नहीं छोड़ा हुआ, अपरित्यक्त, अविच्छिन्न, "अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ" (उवा; औप)।

अणिगण, **अणिगिण** देखो **अणगिण** ; (जीव ३; सम १७)।

अणिग्गह वि (**अनिग्रह**) स्वच्छन्द, असंयत; (पराह १, २)।

अणिच्च वि [**अनित्य**] नश्वर, अस्थायी ; (नव २४; प्रासू ६५)। **°भावणा** स्त्री [**°भावना**] सांसारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन ; (पव ६७)। **°णुप्पेहा** स्त्री [**°नुप्रेक्षा**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ४, १)।

अणिट्ठ वि [**अनिष्ट**] अप्रीतिकर, द्वेष्य ; (उव)।

अणिट्ठिय वि [**अनिष्ठित**] असंपूर्ण ; (गउड)।

अणिण देखो **अणिरिण** ; (नाट)।

अणिदा स्त्री [**दे. अनिदा**] १ बिना ख्याल किये की गई हिंसा ; (भग १६, ५)। २ चित्त की विकलता ; ३ ज्ञान का अभाव ; (भग १, २)।

अणिमा पुंस्त्री [**अणिमन्**] आठ सिद्धियों में एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति ; (पउम ७, १३६)।

अणिमिस, **अणिमेस** वि [**अनिमिष, °मेष**] १ निमेष-शून्य ; (सुर ३, १७३)। २ पुं. मत्स्य, मछली ; (दस १)। ३ देव, देवता ; (वव १; श्रा १६)। **°नयण** पुं [**नयन**] देव, देवता ; (विसे ३४८६)।

अणिय न [**अनीक**] सैन्य, लश्कर ; (कप्प)।

अणिय न [**अनृत**] असत्य, भूठ ; (ठा १०)।

अणिय न [**दे**] धार, अग्र भाग ; (पराह २, २)।

अणिय वि [**अनित्य**] अस्थिर, अनित्य ; (उव)।

अणियट्ट पुं (**अनिवर्त**] १ मोक्ष, मुक्ति ; (आचा १, ५, १)। २ एक महाग्रह ; (ठा २, ३)।

अणियट्टि वि [**अनिवर्तिन्**] १ निवृत्त नहीं होनेवाला ; पीछे नहीं लौटने वाला ; (औप)। २ न. शुक्ल-ध्यान का एक भेद ; (ठा ४, १)। ३ पुं. एक महाग्रह ; (चंद २०)। ४ आगामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर देव का नाम ; (सम १५४)।

अणियट्टि वि [**अनिवृत्ति**] १ निवृत्ति-रहित, व्यावृत्ति-वर्जित; (कर्म २, २)। २ नववाँ गुण-स्थानक ; (कर्म २)। **°करण** न [**°करण**] आत्मा का विशुद्ध परिणाम-विशेष ; (आचा)। **°बादर** न [**°बादर**] १ नववाँ गुण-स्थानक ; २ नववें गुण-स्थानक में प्रवृत्त जीव; (आव ४)।

अणियण देखो **अणगिण** ; (जीव ३)।

अणियय वि [**अनियत**] १ अव्यवस्थित, अनियमित; (उव)। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देती है; (ठा १०)।

अणिया देखो **अणिंदा**; (पिंड)।

अणिरिक्क वि [**दे**] परतन्त्र, पराधीन; (काप्र ५४; गा ६६१)।

अणिरिण वि [**अनृण**] ऋण-वर्जित, उऋण, अनृणी; (अभि ४६; चारु ६६)।

अणिरुद्ध वि [**अनिरुद्ध**] १ अप्रतिहत, नहीं रोका हुआ; (सूअ १, १२)। २ एक अन्तकृद् मुनि; (अन्त ४)।

अणिल पुं [**अनिल**] १ वायु, पवन; (कुमा)। २ एक अतीत तीर्थंकर का नाम; (तित्थ)। ३ राक्षस-वंशीय एक राजा; (पउम ५, २६४)।

अणिला स्त्री [**अनिला**] बाईसवें तीर्थंकर की एक शिष्या; (पव ६)।

अणिल्ल न [**दे**] प्रभात, सवेरा; (दे १, १६)।

अणिस न [**अनिश**] निरन्तर, सदा, हमेशां; (गा २६२, प्रासू २६)।

अणिसट्ठ } वि [**अनिसृष्ट**] १ अनिक्षिप्त; २ असंमत,
अणिसिट्ठ } अननुज्ञात; ३ ऐसी भिक्षा, जिसके मालिक अनेक हों और जो सब की अनुमति से ली न गई हो,—साधु की भिक्षा का एक दोष; (पिंड; औप)।

अणिसीह वि [**अनिशीथ**] शास्त्र-विशेष, जो प्रकाश में पढ़ा या पढ़ाया जाय; (आवम)।

अणिस्सकड वि [**अनिश्राकृत**] जिस पर किसी खास व्यक्ति का अधिकार न हो, सर्व-साधारण; (धर्म २)।

अणिस्सा स्त्री [**अनिश्रा**] अनासक्ति, आसक्ति का अभाव; (उव)।

अणिस्सिय वि [**अनिश्रित**] १ अनासक्त, आसक्ति-रहित; (सूअ १, १६)। २ प्रतिबन्ध-रहित, रुकावट-वर्जित, (दस १)। ३ अनाश्रित, किसी के साहाय्य की इच्छा न रखने वाला; (उत्त १६)। ४ न. ज्ञान-विशेष, अवग्रह-ज्ञान का एक भेद, जो लिंग या पुस्तक के विना ही होता है; (ठा ६)।

अणिह वि [**अनीह**] १ धीर, सहिष्णु; (सूअ १, २, २) २ निष्कपट, सरल; (सूअ १, ८)। ३ निर्मम, निःस्पृह; (आचा)।

अणिह वि [**दे**] १ सदृश, तुल्य; २ न. मुख, मुँह; (दे १, ५१)।

अणिहय वि [**अनिहत**] अहत, नहीं मारा हुआ। °रिउ पुं [°**रिपु**] एक अन्तकृद् मुनि; (अन्त ३)।

अणिहस वि [**अनीदृश**] इस माफिक नहीं, विलक्षण; (स ३०७)।

अणिय न [**अनीक**] सेना, लश्कर; (औप)।

अणीयस पुं [**अनीयस**] एक अन्तकृद् मुनि का नाम; (अन्त ३)।

अणीस वि [**अनीश**] असमर्थ; (अभि ६०)।

अणीसकड देखो **अणिस्सकड**; (धर्म २)।

अणोहारिम वि [**अनिर्हारिम**] गुफा आदि में होने वाला मरण-विशेष; (भग १३, ८)।

अणु अ [**अनु**] यह अव्यय नाम और धातु के साथ लगता है और नीचेके अर्थों में से किसी एक को बतलाता है;—१ समीप, नजदीक; जैसे—'अणुकुंडल'; (गउड)। २ लघु, छोटा; जैसे—'अणुगाम' (उत्त ३)। ३ क्रम, परिपाटी; जैसे—'अणुगुरु'; (बृह १)। ४ में, भीतर; जैसे—'अणुजत्त' (महा)। ५ लक्ष्य करना; जैसे—"अणु जिणं अकारि संगीयं इत्थीहिं" (कुमा); "अणु धारं संदट्ठभमोत्तिए तुह असिम्मि सच्चविया" (गउड)। ६ योग्य, उचित; जैसे—'अणुजुत्ति' (सूअ १, ४, १)। ७ वीप्सा, जैसे—'अणुदिण' (कुमा)। ८ बीच का भाग, जैसे—'अणुदिसी' (पि ४१३)। ९ अनुकूल, हितकर; जैसे—'अणुधम्म' (सूअ १, २, १)। १० प्रतिनिधि, जैसे—'अणुप्पभु' (निचू २)। ११ पीछे, बाद; जैसे—'अणुमज्जण' (गउड)। १२ बहुत, अत्यंत; जैसे—'अणुवंक' (मा ६२)। १३ मदद करना, सहायता करना, जैसे—'अणुपरिहारि' (ठा ३, ४)। १४ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, जैसे—देखो 'अणुक्कम', 'अणुसरिस'।

अणु वि [**अणु**] १ थोड़ा, अल्प; (पण्ह २, ३)। २ छोटा; (आचा)। ३ पुं. परमाणु; (सम्म १३६)। °**मय** वि (°मत) उत्तम कुल, श्रेष्ठ वंश; (कप्प)। °**विरइ** स्त्री [°**विरति**] देखो **देसविरइ**; (कम्म १, १८)।

अणु पुं [**दे**] धान-विशेष, चावलकी एक जाति; (दे १, ५२)

°**अणु** स्त्री [**तनु**] शरीर "सुअणु" (गा २६६)।

अणुअ देखो **अणु**=अणु; (पाअ)।

अणुअ वि [**अज्ञ**] अजान, मूर्ख; (गा १८४, ३४५)।

अणुअ पुं [दे] १ आकृति, आकार। २ पुंस्त्री. धान्य-विशेष ; (दे १, ५२ ; आ १८)।
अणुअ वि [अनुग] अनुसरण करने वाला "अधम्माणुए" (विपा १, १)।
अणुअ वि [अनुज] १ पीछे से उत्पन्न ; २ पुं. छोटा भाई ; ३ स्त्री. छोटी बहिन ; (अभि ८२; पउम २८,१००)।
अणुअंच सक [अनु+कृष्] पीछे खींचना। संकृ—**अणुअंचिवि** ; (भवि)।
अणुअंपा स्त्री [अनुकम्पा] दया, करुणा ; (से ५, २४; गा १६३)।
अणुअंपि वि [अनुकम्पिन्] दयालु, करुणा करने वाला ; (अभि १७३)।
अणुअत्तय वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल आचरण करने वाला, अनुसरण करने वाला ; (विसे ३४०२)।
अणुअत्ति देखो **अणुवत्ति** ; (पुप्फ ३२६)।
अणुअर वि [अनुचर] १ सहायताकारी, सहचर ; (पात्र)। २ सेवक, नौकर ; (प्रामा)।
अणुअल्ल न [दे] प्रभात, सुबह ; (दे १, १६)।
अणुआ स्त्री [दे] लाठी ; (दे १, ५२)।
अणुआर पुं [अनुकार] अनुकरण ; (नाट)।
अणुआरि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करने वाला; (नाट)।
अणुआस पुं [अनुकास] प्रसार, विकास; (गाया १ १)।
अणुइअ पुं [दे] धान्य-विशेष, चना ; (दे १, २१)।
अणुइअ देखो **अणुदिय**।
अणुइण्ण वि [अनुकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ। २ नहीं गिरा हुआ, अपतित "अवाइरणपत्ता अणुइरणपत्ता निद्धु-यजरढपंडुपत्ता" (औप)।
अणुइण्ण वि [अनुदगीर्ण] बहार नहीं निकला हुआ ; (औप)।
अणुइण्ण देखो **अणुचिण्ण**।
अणुइण्ण देखो **अणुदिण्ण**।
अणुऊल वि [अनुकूल] अप्रतिकूल, अनुकूल ; (गा ५२३)।
अणुऊल सक [अनुकूलय्] अनुकूल करना। भवि—अणु-ऊलइस्सं ; (पि ५२८)।
अणुओअ पुं [अनुयोग] १ व्याख्या, टीका, सूत्र का विस्तार से अर्थ-प्रतिपादन ; (ओघ २)। २ पृच्छा, प्रश्न, (अभि ४४)।
अणुओइय वि [अनुयोजित] प्रवर्तित, प्रवृत्त कराया हुआ ; (णंदि)।
अणुओग देखो **अणुओअ** ; (वसे ६)।
अणुओगि पुं [अनुयोगिन्] सूत्रों का व्याख्याता आचार्य "अणुओगी लोगाणं कल संसयणासओ दढं होइ" (पंचव ४)।
अणुओगिअ वि [अनुयोगिक] दीक्षित, मुनि-शिष्य ; (णंदि)।
अणुओयण न [अनुयोजन] बन्धन, जोड़ना ; (विसे १३८५)।
अणुकंप सक [अनु+कम्प्] १ दया करना। २ भक्ति करना। ३ हत करना। वकृ—**अणुकंपंत** (नाट)। कृ—**अणुकंपणिज्ज, अणुकंपणीअ** (अभि ६४; रयण १५)।
अणुकंप वि [अनुकम्प्य] अनुकम्पा के योग्य; (दे १,२२)।
अणुकंप } वि [अनुकम्प, °क] १ दयालु, करुण ; २
अणुकंपय } भक्त, भक्तिमान् ; (उत १२); "हिआणुकंपएण देवेणं हरिणगमेसिणा" (कप्प)। ३ हितकर "आया-णुकंपए णाममेगे, नो पराणुकंपए" (ठा ४, ४)।
अणुकंपण न [अनुकम्पन] १ दया, कृपा ; (वव ३)। २ भक्ति, सेवा "माउअणुकंपणट्ठाए" (कप्प)।
अणुकंपा स्त्री [अनुकम्पा] ऊपर देखो ; (गाया १, १); "आयरियणुकंपाए गच्छो अणुकंपिओ महाभागो" (कप्प-टी)। °**दाण** न [°दान] करुणा से गरीबों को अन्न आदि देना "अणुकंपादाणं सड्ढयाण न कहिंपि पडिसिद्धं" (धर्म २)।
अणुकंपि वि [अनुकम्पिन्] १ दयालु, कृपालु ; (माल ७५)। २ भक्ति करने वाला ; (सूअ १, ३, २)।
अणुकंपिअ वि [अनुकम्पित] जिस पर अनुकम्पा की गई हो वह ; (नाट)।
अणुकड्ढ सक [अनु+कृष्] १ खींचना ; २ अनुसरण करना। वकृ—**अणुकड्ढमाण, अणुकड्ढेमाण** ; (विपा १, १; णंदि)।
अणुकड्ढि स्त्री [अनुकृष्टि] अनुवर्तन, अनुसरण ; (पंच ५)।
अणुकड्ढिय वि [अनुकृष्ट] अनुवृत्त, अनुसृत ; (स १८२)।
अणुकप्प पुं [अनुकल्प] १ बड़े पुरुषों के मार्ग का अनु-करण ; २ वि. महापुरुषों का अनुकरण करनेवाला "णाण-चरणाड्ढगाणं पुव्वायरियाण अणुकित्ति कुणइ, अणुगच्छइ गुणधारी, अणुकप्पं तं वियाणाहि" (पंचभा)।

अणुकम पुं [**अनुक्रम**] परिपाटी, क्रम ; (महा)। °**सो** **अ** [°**शस्**] क्रम से, परिपाटी से ; (जी २८)।
अणुकर सक [**अनु+कृ**] अनुकरण करना, नकल करना। अणुकरेइ ; (स ४३६)।
अणुकरण न [**अनुकरण**] नकल ; (वव ३)।
अणुकह सक [**अनु+कथय्**] अनुवाद करना, पीछे बोलना।
अणुकहण न [**अनुकथन**] अनुवाद ; (सूअ १, १३)।
अणुकार पुं [**अनुकार**] अनुकरण, नकल ; (कप्पू)।
अणुकारि वि [**अनुकारिन्**] अनुकरण करने वाला "किन्नराणुकारिणा महुरगेएण" (महा)।
अणुकिइ स्त्री [**अनुकृति**] अनुकरण, नकल ; "पुव्वायरियाणं नाणग्गहणेण य तवोविहाणेसु य अणुकिइं करेइ" पंचू)।
अणुकिण्ण वि [**अनुकीर्ण**] व्याप्त, भरा हुआ ; (पउम ६१, ७)।
अणुकित्तण न [**अनुकीर्तन**] वर्णन, प्रशंसा, श्लाघा ; (पउम ६३, ७३)।
अणुकित्ति देखो **अणुकिइ** ; (पंचभा)।
अणुकुइय वि [**अनुकुचित**] १ पीछे फेंका हुआ ; २ ऊंचा किया हुआ ; (निचू ८)।
अणुकुण सक [**अनु+कृ**] अनुकरण करना। अणुकुणइ ; (विक १२६)।
अणुकूल देखो **अणुऊल** ; (हे २, २१७)।
अणुकूलण न [**अनुकूलन**] अनुकूल करना, प्रसन्न करना "तं कहइ। तम्मज्झे जिट्ठमुणी तच्चित्तणुकूलणत्थं जं" (सुपा २३४)।
अणुक्कंत वि [**अन्वाक्रान्त**] आचरित, अनुष्ठित ; (आचा)।
अणुक्कंत वि [**अनुक्रान्त**] आचरित, विहित, अनुष्ठित "एस विही अणुक्कंते माहणेणं मइमया" (आचा)।
अणुक्कम सक [**अनु+क्रम्**] अतिक्रमण करना। वकृ—**अणुक्कमंत** ; (सूअ १, ५, १, ७)।
अणुक्कम देखो **अणुवाम** ; (महा ; नव १६)।
अणुक्कोस पुं [**अनुक्रोश**] दया, करुणा ; (ठा ४, ४)।
अणुक्कोस पुं [**अनुत्कर्ष**] १ उत्कर्ष का अभाव ; २ वि. उत्कर्ष-रहित ; (भग ८, १०)।
अणुक्खित्त वि [**अनुत्क्षिप्त**] ऊंचा न किया हुआ "दिट्ठ धणुक्खित्तमुहं एसो मग्गो कुलवहूणं" (गा ५२६)।

अणुग वि [**अनुग**] अनुचर, नौकर ; (दे ७, ६६)।
अणुगंतव्व देखो **अणुगम=**अनु+गम्।
अणुगंपा स्त्री [**अनुकम्पा**] करुणा, दया; (स १५८)।
अणुगंपिय वि [**अनुकम्पित**] जिस पर करुणा की गई हो वह ; (स ४७५)।
अणुगच्छ देखो **अणुगम=**अनु+गम्। अणुगच्छइ ; वकृ—**अणुगच्छंत, अणुगच्छमाण** ; (नाट ; सूअ १, १४)। कवकृ—**अणुगच्छिज्जंत** ; (णाया १, २)। संकृ—**अणुगच्छित्ता** ; (कप्प)।
अणुगच्छण देखो **अणुगमण** ; (पुप्फ ४०८)।
अणुगच्छिर वि [**अनुगामिन्**] अनुसरण करने वाला ; (सण)।
अणुगज्ज अक [**अनु+गर्ज्**] प्रतिध्वनि करना, प्रतिशब्द करना। वकृ—**अणुगज्जेमाण** ; (णाया १, १८)।
अणुगम सक [**अनु+गम्**] १ अनुसरण करना, पीछे २ जाना। २ जानना, समझना। ३ व्याख्या करना, सूत्र के अर्थों का स्पष्टीकरण करना। कर्म---अणुगम्मइ; (विसे ६१३)। कवकृ—**अणुगम्मंत, अणुगम्ममाण** ; (उप ६ टी; सुपा ७८; २०८)। संकृ—**अणुगम्म** ; (सूअ १, १४)। कृ—**अणुगंतव्व** ; (सुर ७, १७६ ; पराण १)।
अणुगम पुं [**अनुगम**] १ अनुसरण, अनुवर्तन; (दे ३,६१)। २ जानना, ठीक २ समझना, निश्चय करना ; (ठा १)। ३ सूत्र की व्याख्या, सूत्र के अर्थ का स्पष्टीकरण ; (वव १)। ४ अन्वय, एक की सत्ता में दूसरे की विद्यमानता; (विसे २६०)। ५ व्याख्या, टीका ; (विसे १३५७)। "अणुगम्मइ तेण तहिं, तओ व अणुगमणमेव वाणुगमो। अणुणोणुरूवओ वा, जं सुत्तत्थाणमणुसरणं" (विसे ६१३)।
अणुगमण न [**अनुगमन**] ऊपर देखो।
अणुगमिर वि [**अनुगन्तृ**] अनुसरण करने वाला ; (दे ६, १२७)।
अणुगय वि [**अनुगत**] १ अनुसृत, जिसका अनुसरण किया गया हो वह ; (पगह १, ४)। २ ज्ञात, जाना हुआ ; (विसे)। ३ अनुवृत्त, जो पूर्व से बराबर चला आया हो ; (पगह १, ३)। ४ अतिक्रान्त ; (विसे ६५६)।
अणुगर देखो **अणुकर**। अणुगरेइ ; (स ३३४)। वकृ—**अणुगरिंत** ; (स ६८)।
अणुगवेस सक [**अनु+गवेष्**] खोजना, शोधना, तलाश

करना। अणुगवेसइ ; (कस)। वकृ—**अणुगवेसेमाण** ; (भग ८, ५)। कृ—**अणुगवेसियव्व** ; (कस)।

अणुगह देखो **अणुग्गह**=अनु+ग्रह् ; (नाट)।

अणुगहिअ देखो **अणुगिहिअ** ; (दे ८, २६)।

अणुगाम पुं [**अनुग्राम**] १ छोटा गाँव ; (उत्त ३)। २ उपपुर, शहर के पास का गाँव ; (ठा ५, २)। ३ विवक्षित गाँव से दुसरा गाँव "गामाणुगामं दुइज्जमाणे" (विपा १, १ ; औप ; आचा)।

अणुगामि, **अणुगामिय** वि [**अनुगामिन्**, °**मिक**] १ अनुसरण करनेवाला, पीछे २ जानेवाला ; (औप)। २ निर्दोष हेतु, शुद्ध कारण ; (ठा ३, ३)। ३ अवधिज्ञान का एक भेद ; (कम्म १, ८)। ४ अनुचर, सेवक ; (सुअ १,२,३)।

अणुगारि वि [**अनुकारिन्**] अनुकरण करनेवाला ; नक्कालची ; (महा; धर्म ५; स ६३०)।

अणुगिइ स्त्री [**अनुकृति**] अनुकरण, नकल ; (श्रा १)।

अणुगिण्ह देखो **अणुग्गह**=अनु+ग्रह्। वकृ—**अणुगिण्हमाण**, **अणुगिण्हेमाण**; (निर १,१; णाया १, १६)।

अणुगिद्ध वि [**अनुगृद्ध**] अत्यंत आसक्त ; लोलुप ; (सुअ १, ३, ३)।

अणुगिद्धि स्त्री [**अनुगृद्धि**] अत्यासक्ति ; (उत्त ३)।

अणुगिल सक [**अनु+गृ**] भक्षण करना। संकृ—**अणुगिलइत्ता** ; (णाया १, ७)।

अणुगिहीअ वि [**अनुगृहीत**] जिस पर महरबानी की गई हो वह ; (स १४; १६३)।

अणुगीय वि [**अनुगीत**] १ पीछे कहा हुआ, अनूदित ; २ पूर्व ग्रन्थकार के भाव के अनुकूल किया हुआ ग्रन्थ, व्याख्यान आदि ; (उत्त १३)। ३ जिसका गान किया गया हो वह, कीर्तित, वर्णित। ४ न. गाना, गीत "उज्जाणे ......मत्तसिंगाणुगीए" (पउम ३३, १४८)।

अणुगुण वि [**अनुगुण**] १ अनुकूल, उचित, योग्य ; (नाट)। २ तुल्य, सदृश गुण वाला,
"जाण अलंकारसमो, विहवो मइलेइ तेवि वड्ढंतो।
विच्छाएइ मियंकं, तुसार-वरिसो अणुगुणेवि" (गउड)।

अणुगुरु वि [**अनुगुरु**] गुरु-परम्परा के अनुसार जिस विषय का व्यवहार होता हो वह ; (बृह १)।

[अणु]**गूल** वि [**अनुकूल**] अनुकूल ; (स ३७८)।

अणुगेज्झ वि [**अनुग्राह्य**] अनुग्रह के योग्य, कृपा-पात्र ; (प्राप)।

अणुगेण्ह देखो **अणुग्गह**=अनु+ग्रह्। अणुगेण्हंतु ; (पि ५१२)।

अणुग्गह सक [**अनु+ग्रह्**] कृपा करना, महरबानी करना। कृ—**अणुग्गहइदव्व**, **अणुग्गाहिदव्व** (शौ) (नाट)।

अणुग्गह पुं [**अनुग्रह**] १ कृपा, महरबानी ; (कप्पू)। २ उपकार ; (औप)। ३ वि. जिस पर अनुग्रह किया जाय वह ; (वव १)।

अणुग्गह पुं [**अनवग्रह**] जैन साधुओं को रहने के लिए शास्त्र-निषिद्ध स्थान,
"णो गोयरे णो वणगोणियाणं, णो बद्ध दुज्झंति य जत्थ गावो।
अण्णत्थ गोणेहिसु जत्थ खुण्णं, स उग्गहो सेसमणुग्गहो तु" (बृह ३)।

अणुग्गहिअ, **अणुग्गहीअ**, **अणुग्गिहीअ** वि [**अनुगृहीत**] जिस पर कृपा की गई हो वह, आभारी ; (महा ; सुपा १६२ ; स ६७)।

अणुग्घाइम न [**अनुद्घातिम**] १ महा-प्रायश्चित्त का एक भेद ; (ठा ३, ४)। २ वि. महा प्रायश्चित्त का पात्र ; (ठा ३, ४)।

अणुग्घाइय वि [**अनुद्घातिक**] १ अनुद्घातिम-नामक महा प्रायश्चित्त का पात्र, (ठा ५, ३)। २ न. ग्रन्थांश-विशेष, जिसमें अनुद्घातिम प्रायश्चित्त का वर्णन है ; (पण्ह २, ५)।

अणुग्घाय वि [**अनुद्घात**] १ उद्घात-रहित ; २ न. निशीथ सूत्र का वह भाग, जिसमें अनुद्घातिक प्रायश्चित्त का विचार है "उग्घायमणुग्घायं आरोवण तिविहमो निसीहं तु" (आव ३)।

अणुग्घायण न [**अणोद्घातन**] कर्मों का नाश ; (आचा)।

अणुग्घास सक [**अनु+ग्रासय्**] खीलाना, भोजन कराना ; "असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा" (निसी ७)। वकृ—**अणुग्घासंत** ; (निचू ७)।

अणुचय पुं [**अनुचय**] फैला कर इकट्ठा करना ; (उप पृ १५)।

अणुचर सक [**अनु+चर्**] १ सेवा करना। २ पीछे २ जाना, अनुसरण करना। ३ अनुष्ठान करना। अणुचरइ ; (आरा ६)। अणुचरंति ; (स १३०)। कर्म—अणुचरिज्जइ ; (विसे २५५४)। वकृ—**अणुचरंत** ;

(पुप्फ ३१३)। संकृ—**अणुचरित्ता** ; (चउ १४)।
अणुचर देखो **अणुअर** ; (उत्त २८)।
अणुअरिय वि [**अनुचरित**] अनुष्ठित, विहित, किया हुआ ; (कप्प)
अणुचि सक [**अनु+च्यु**] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। संकृ—**अणुचिऊण** ; (महा)।
अणुचिंत सक [**अनु+चिन्त्**] विचारना, याद करना, सोचना। अणुचिंते; (संथा ६६)। वकृ—**अणुचिंतेमाण**; (णाया १,१)। संकृ—**अणुचीइ, अणुचीति, अणुवीइ**; (आचा; सूअ १, १, ३, १३ ; दस ७)।
अणुचिंतण न [**अनुचिन्तन**] सोच-विचार, पर्यालोचन ; (आव ४)।
अणुचिंता स्त्री [**अनुचिन्ता**] ऊपर देखो; (आव ४)।
अणुचिट्ठ सक [**अनु+स्था**] १ अनुष्ठान करना। २ करना। अणुचिट्ठइ ; (महा)।
अणुचिण्ण वि [**अनुचीर्ण**] १ अनुष्ठित, आचरित, विहित ; "मोहतिगिच्छा य कया, विरियायारो य अणुचिण्णो" (ओघ २४६)। २ प्राप्त, मिला हुआ "कायसंफासमणुचिण्णा एगइया पाणा उद्दाइया" (आचा)। ३ परिणमित ; (जीव १)।
अणुचिण्णव वि [**अनुचीर्णवत्**] जिसने अनुष्ठान किया हो वह ; (आचा)।
अणुचिन्न देखो **अणुचिण्ण** ; (सुपा १६२ ; रयण ७५ ; पुप्फ ७५)।
अणुचिय वि [**अनुचित**] अयोग्य ; (बृह १)।
अणुचीइ } **अणचीति** } देखो **अणुचिंत**।
अणुच्च वि [**अनुच्च**] ऊंचा नहीं, नीचा। °**कुइय** वि [°**कुचिक**] नीची और अस्थिर शय्या वाला ; (कप्प)।
अणुच्छहंत वि [**अनुत्सहमान**] उत्साह नहीं रखता हुआ; (पउम १८, १८)।
अणुच्छित्त वि [**अनुत्क्षिप्त**] नहीं छोड़ा हुआ, अत्यक्त ; (गउड २३८)।
अणुच्छित्त वि [**अनुत्थित**] १ गर्व-रहित, विनीत ; २ स्फीत, समृद्ध ; ३ सबसे उन्नत, सर्वोच्च ;
"पडिबद्धं नवर तुमे, नरिंदचक्कं पयाववियडंपि।
गहवलयमणुच्छित्तं; धुवेव्व परियत्तइ णरिंद" (गउड)।

अणुच्छूढ वि [**अनुत्क्षिप्त**] अत्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ ; (गा ५२६)।
अणुज पुं [**अनुज**] छोटा भाई ; (स ३८८)।
अणुजत्त न [**अनुयात्र**] यात्रा में "अरणया अणुजत्त निग्गओ पेच्छइ कुसुमियं चूयं" (महा)।
अणुजा सक [**अनु+या**] अनुसरण करना, पीछे चलना। अणुजाइ ; (विसे ७१६)।
अणुजाइ वि [**अनुयायिन्**] अनुसरण करने वाला ; (सुपा ४०५)।
अणुजाण न [**अनुयान**] १ पीछे २ चलना ; २ महोत्सव-विशेष, रथयात्रा ; (बृह १)।
अणुजाण सक [**अनु+ज्ञा**] अनुमति देना, सम्मति देना। अणुजाणइ ; (उव)। भूका—अणुजाणित्था ; (पि ५१७)। हेकृ—**अणुजाणित्तए** ; (ठा २, १)।
अणुजाणण न [**अनुज्ञान**] अनुमति, सम्मति; (सूअ १, ६)।
अणुजाणावण न [**अनुज्ञापन**] अनुमति लेना, "अणुजाणावणविहिणा" (पंचा ६, १३)।
अणुजाणिय वि [**अनुज्ञात**] सम्मत, अनुमत ; (सुपा ५८४)।
अणुजाय वि [**अनुयात**] १ अनुगत, अनुसृत ; (उप १३७ टी)।
अणुजाय वि [**अनुजात**] १ पीछे से उत्पन्न ; २ सदृश, तुल्य "वसभाणुजाए" (सुज्ज १२)।
अणुजीवि वि [**अनुजीविन्**] १ आश्रित, नौकर, सेवक "पयईए चिय अणुजीविवच्छले" (सुपा ३३७; पाअ; स २४३) °**त्तण** न [°**त्व**] आश्रय, नौकरी; (पि ५६७)।
अणुजुत्ति स्त्री [**अनुयुक्ति**] योग्य युक्ति, उचित न्याय ; (सूअ १, ४, १)
अणुजेट्ठ वि [**अनुज्येष्ठ**] १ बडे के नजदीक का; (आवम)। २ छोटा, उतरता ; (पउम २२, ७६)।
अणुजोग देखो **अणुओअ** ; (ठा १०)।
अणुज्ज वि [**अनूर्ज**] उत्साह-रहित, अनुत्साही, हताश ; (कप्प)।
अणुज्ज वि [**अनोजस्क**] तेज-रहित, फीका "अणुज्ज दीणवयणं विहरइ" (कप्प)।
अणुज्ज वि [**अनूद्य**] उद्देश्य, लक्ष्य ; (धर्म १)।
अणुज्जा स्त्री (**अनुज्ञा**) अनुमति, सम्मति ; (पउम ३८, २४)।

अणुज्जिय वि [**अनुर्जित**] बल-रहित, निर्बल; (बृह ३)।

अणुज्जुय वि [**अनृजुक**] असरल, वक्र, कपटी, (गा ७८६)।

अणुज्झा सक [**अनु+ध्या**] चिन्तन करना, ध्यान करना। संकृ—**अणुज्झाइत्ता**; (आवम)।

अणुज्झाण न [**अनुध्यान**] चिन्तन, विचार; (आवम)।

अणुझा देखो **अणुज्झा**। वकृ—**अणुझायंत**; (कुमा)।

अणुझिअअ वि [**दे**] १ प्रयत, प्रयत्न-शील; २ जागता, सावधान; (षड्)।

अणुट्ठ वि [**अनुत्थ**] नहीं ऊठा हुआ, स्थित; (ओघ ७०)।

अणुट्ठा सक [**अनु+स्था**] १ अनुष्ठान करना, शास्त्रोक्त विधान करना। २ करना। कृ—**अणुट्ठियव्व, अणुट्ठेअ** (सुपा ५३७; सुर १४, ८५)।

अणुट्ठाइ वि [**अनुष्ठायिन्**] अनुष्ठान करने वाला; (आचा)।

अणुट्ठाण न [**अनुष्ठान**] १ कृति; २ शास्त्रोक्त विधान; (आचा)।

अणुट्ठाण न [**अनुत्थान**] क्रिया का अभाव; (उवा)।

अणुट्ठावण न [**अनुष्ठापन**] अनुष्ठान कराना; (कस)।

अणुट्ठिय वि [**अनुष्ठित**] विधि से संपादित, विहित, किया हुआ; (षड्; सुर ४, १६६)।

अणुट्ठिय वि [**अनुत्थित**] १ बैठा हुआ। २ आलसु, प्रमादी (आचा)।

अणुट्ठियव्व देखो **अणुट्ठा**।

अणुट्ठुभ न [**अनुष्टुप्**] एक प्रसिद्ध छंद "पच्चक्खरगणणाए अणुट्ठुभाणं हवंति दस सहस्सा" (सुपा ६५६)।

अणुट्ठेअ देखो **अणुट्ठा**

अणुण देखो **अणुणी**। अणुणह; (भवि)।

अणुणंत देखो **अणुणी**।

अणुणय पुं [**अनुनय**] विनय, प्रार्थना; (महा; अभि ११६)।

अणुणाइ वि [**अनुनादिन्**] प्रतिध्वनि करने वाला "गज्जिअसद्दस्स अणुणाइणा" (कप्प)।

अणुणाय पुं [**अनुनाद**] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द; (विसे ३४०४)।

अणुणाय वि [**अनुज्ञात**] अनुमत, अनुमोदित; (पंचू)।

अणुणास पुं [**अनुनास**] १ अनुनासिक, जो नाक से बोला जाता है वह अक्षर; २ वि सानुस्वार, अनुस्वार-युक्त; (ठा ७)। "कागस्सरमणुणासं च" (जीव ३ टी)।

अणुणासिअ पुं [**अनुनासिक**] देखो ऊपर का १ ला अर्थ; (वज्जा ६)।

अणुणी सक [**अनु+नी**] १ अनुनय करना, विनय करना, प्रार्थना करना। २ समझाना, दिलासा देना, सान्तवन करना। वकृ—**अणुणंत** "पुरोहियं तं कमसोणुणंतं" (उत्त १४; भवि); **अणुणेंत**; (गा ६०२)। कवकृ—**अणुणिज्जंत, अणुणिज्जमाण, अणुणोअमाण**; (सुपा ३६७; से २, १६, पि ५३६)।

अणुणीअ वि [**अनुनीत**] जिसका अनुनय किया गया हो वह; (दे ८, ४८)।

अणुणेंत देखो **अणुणी**।

अणुण्णय वि [**अनुन्नत**] १ नीचा, नम्र; (दस ५, १)। २ गर्व-रहित, निरभिमानी "एत्थवि भिक्खू अणुण्णए विणीए" (सूअ १, १६)।

अणुण्णव सक [**अनु+ज्ञापय्**] १ अनुमति देना; २ आज्ञा देना, हुकुम देना। कर्म—अणुण्णविज्जइ; (उवा)। वकृ—**अणुण्णवेमाण**; (ठा ६)। कृ—**अणुण्णवेयव्व**; (ओघ ३८५ टी)। संकृ—**अणुण्णवित्ता, अणुण्णविय**; (आवम; आचा २, २, ६)।

अणुण्णवणया } स्त्री [**अनुज्ञापना**] १ अनुमति, सम्मति; २ आज्ञा, फरमायश; (सम ४४; ओघ ३८४ टी)।
अणुण्णवणा }

अणुण्णवणी स्त्री [**अनुज्ञापनी**] अनुमति-प्रकाशक भाषा, अनुमति लेनेका वाक्य; (ठा ४, ३)।

अणुण्णा स्त्री [**अनुज्ञा**] १ अनुमति, अनुमोदन; (सूअ २, २)। २ आज्ञा। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] जैन साधुओं के लिए वस्त्र-पात्रादि लेने के विषय में शास्त्रीय विधान; (पंचभा)।

अणुण्णाय वि [**अनुज्ञात**] १ जिसको आज्ञा दी गई हो वह। २ अनुमत, अनुमोदित; (ठा ३, ४)।

अणुण्ह वि [**अनुष्ण**] ठंडा, गरम नहीं वह; (पि ३१२)।

अणुतड पुं [**अनुतट**] भेद, पदार्थों का एक जात का पृथक्करण, जैसे संतप्त लोहे को हथोड़े से पीटने से स्फुलिंग पृथक् होते हैं (ठा ५)।

अणुतडिया स्त्री [**अनुतटिका**] १ ऊपर देखो; (पण्ण ११)। २ तलाव, द्रह आदि का भेद; (भास ७)।

अणुतप्प अक [**अनु+तप्**] अनुताप करना, पछताना। अणुतप्पइ; (स १८४)।

अणुतप्पि वि [**अनुतापिन्**] पश्चात्ताप करने वाला ; (वव १) ।

अणुताव पुं [**अनुताप**] पश्चात्ताप ; (पाअ; स १८४) ।

अणुतावि देखो **अणुतप्पि** ; (उप ७२८ टी) ।

अणुत्त वि [**अनुक्त**] अकथित ; (पंच ५) ।

अणुत्तंत देखो **अणुवत्त** ।

अणुत्तप्प वि [**अनुत्त्रप्य**] १ परिपूर्ण शरीर । २ पूर्ण शरीरवाला 'हाइ अणुतप्पो सो अविगलइंदियपडिपुरणो।" (वव २) ।

अणुत्तर वि [**अनुत्तर**] १ सर्व-श्रेष्ठ, सर्वोत्तम ; (ठा १०) । २ एक सर्वोत्तम देवलोक का नाम ; (अनु) । ३ छोटा " अणुत्तरो भाया " (पउम ६, ४) । °**ग्गा** स्त्री [°**अग्र्या**] एक पृथिवी जहां मुक्त जीवों का निवास है, (सूअ १, ६) । °**णाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] केवल-ज्ञानी ; (सूअ १, २, ३) । °**विमाण** न [°**विमान**] एक सर्वोत्कृष्ट देवलोक ; (भग ६, ६) । °**ोववाइय** वि [°**ौपपातिक**] अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न; (अनु) । °**ोववाइयदसा** स्त्री. ब. [°**ौपपातिकदशा**] नववाँ जैन अंग-ग्रन्थ ; (अनु) ।

अणुत्थाण देखो **अणुट्ठाण** ; (स ६४६) ।

अणुत्थाह वि [**अनुत्साह**] हतोत्साह, निराश ; (कुमा)।

अणुदत्त पुं [**अनुदात्त**] नीचे से बोला जानेवाला स्वर ; (बृह १) ।

अणुदय पुं [**अनुदय**] १ उदय का अभाव ; २ कर्म-फल के अनुभव का अभाव ; (कम्म २, १३; १४;१५) ।

अणुदवि न [**दे**] प्रभात, सुबह ; (दे १, १६) ।

अणुदिअ वि [**अनुदित**] जिसका उदय न हुआ हो ; (भग) ।

अणुदिअस न [**अनुदिवस**] प्रतिदिन, हमेशां; (नाट) ।

अणुदिज्जंत वि [**अनुदीयमान**] उदय में न आता हुआ ; (भग) ।

अणुदिण न [**अनुदिन**] प्रतिदिन, हमेशां ; (कुमा) ।

अणुदिण्ण } वि [**अनुदित**] १ उदय को अप्राप्त ; २
अणुदिन्न } फल-दान में अतत्पर (कर्म); (भग १,२;३; " उदिरणा=उदित " (भग १, ४; ७ टी) ।

अणुदिण्ण } व [**अनुदीरित**] १ जिसकी उदीरणा दूर
अणुदिन्न } भविष्य में हो ; २ जिसकी उदीरणा भविष्य में न हो ; (भग १, ३) ।

अणुदिय वि [**अनुदित**] उदय को अप्राप्त " मिच्छत्तं जमुदिन्नं तं खीणं अणुदियं च उवसंतं " (भग १, ३ टी) ।

अणुदियह न [**अनुदिवस**] प्रतिदिन, हमेशां ; (सुर १, ११५) ।

अणुदिव न [**दे**] प्रभात, प्रातःकाल ; (षड्) ।

अणुदिसा } स्त्री [**अनुदिक्**] विदिक्, ईशान कोण आदि
अणुदिसी } विदिशा ; (विसे २७०० टी; पि ६८; ४१३; कप्प) ।

अणुद्दिट्ठ वि [**अनुद्दिष्ट**] जिसका उद्देश न किया गया हो वह ; (पण्ह २, १)

अणुद्ध वि [**अनूर्ध्व**] ऊंचा नहीं, नीचा ; (कुमा) ।

अणुद्धय वि [**अनुद्धत**] सरल, भद्र, विनयी; (उप ७६८ टी)।

अणुद्धरि पुं [**अनुद्धरिन्**] एक क्षुद्र जन्तु, कुंथु ; (कप्प) ।

अणुद्धिय वि [**अनुद्धृत**] १ जिसका उद्धार न किया गया हो वह ; २ बहार नहीं निकाला हुआ " जं कुणइ भावसल्लं अणुद्धियं इत्थ सव्वदुहमूलं " (श्रा ४०) ।

अणुद्धुय वि [**अनुद्धूत**] अपरित्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ (कप्प) ।

अणुधम्म पुं [**अणुधर्म**] गृहस्थ-धर्म; (विसे) ।

अणुधम्म पुं [**अनुधर्म**] अनुकूल—हितकर धर्म " एसो-णुधम्मो मुणिणा पवेइओ " (सूअ १ २,१) । °**चारि** वि [°**चारिन्**] हितकर धर्म का अनुयायी, जैन-धर्मी ; (सूअ १, २, २)

अणुधम्मिय वि [**अनुधार्मिक**] धर्म के अनुकूल, धर्मोचित, " एयं खु अणुधम्मियं तस्स " (आचा) ।

अणुधाव सक [**अनु+धाव्**] पीछे दौड़ना । वकृ—**अणुधावंत** ; (से ४, २१) ।

अणुधावण सक [**अनुधावन**] पीछे दौड़ना; (सुपा ५०३) ।

अणुधाविर वि [**अनुधावितृ**] पीछे दौड़ने वाला ; (उप ७२८ टी) ।

अणुनाइ वि [**अनुनादिन्**] प्रतिध्वनि करने वाला; (कप्प)।

अणुनाय वि [**अनुज्ञात**] अनुमत, जिसको अनुमति दी गई हो वह " आहवणे मऽकलयं अणुनायाए तए नाह " (सुपा ४७७) ।

अणुनास देखो **अणुणास** ; (जीव ३ टी)

अणुन्नव देखो **अणुण्णव** । वकृ—**अणुन्नवेमाण** ; (ठा ५, ३) । कृ—**अणुन्नवेयव्व** ; (कस) । संकृ—**अणुन्नवेत्ता** ; (कस) ।

अणुन्नवणा देखो **अणुण्णवणा** ; (ओघ ६३० ; कस) ।
अणुन्नवणी देखो **अणुण्णवणी**; (ठा ४, १) ।
अणुन्ना देखो **अणुण्णा** ; (सुर ४, १३३ ; प्रासू १८१) ।
अणुन्नाय देखो **अणुण्णाय** ; (ओघ १; महा) ।
अणुपंथ पुं [**अनुपथ**] १ समीप का मार्ग ; (कस) । २ मार्ग के समीप, रास्ता के पास ; (बृह २) ।
अणुपत्त वि [**अनुप्राप्त**] प्राप्त, मिला हुआ ; (सुर ४, २११) ।
अणुपयट्ट वि [**अनुप्रवृत्त**] अनुसृत, अनुगत ; (महा) ।
अणुपरियट्ट सक [**अनुपरि+अट्**] घूमना, परिभ्रमण करना । संकृ—**अणुपरियट्टित्ताणं** "देवे णं भंते महिड्ढिए ......पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छित्तए ?" (भग १८, ७) कृ—**अणुपरियट्टियव्व** ; (णाया १, ६) । हेकृ—**अणुपरियट्टेउं** ; (णाया १, ६) ।
अणुपरियट्ट अक [**अनुपरि+वृत्**] फिरना, फिरते रहना । "दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ" (आचा) । वकृ—**अणुपरियट्टमाण**; (आचा) । संकृ— **अणुपरियट्टित्ता** ; (औप) ।
अणुपरियट्टण न [**अनुपर्यटन**] परिभ्रमण ; (सूअ १, १, २) ।
अणुपरियट्टण न [**अनुपरिवर्तन**] परिवर्तन, फिरना; (भग १, ६) ।
अणुपरिवट्ट देखो **अणुपरियट्ट**=अनुपरि + वृत् । वकृ—**अणुपरिवट्टमाण** ; (पि २८६) ।
अणुपरिवाडि, °**डी** स्त्री [**अनुपरिपाटि**, °**टी**] अनुक्रम ; (स १५, ६६ ; पउम २०, ११ ; ३२, १६) ।
अणुपरिहारि वि [**अणुपरिहारिन्**] 'परिहारी' को मदद करनेवाला, त्यागी मुनि को सेवा-शुश्रूषा करनेवाला; (ठा ३, ४) ।
अणुपरिहारि वि [**अनुपरिहारिन्**] ऊपर देखो ; (ठा ३, ४) ।
अणुपवाएत्तु वि [**अनुप्रवाचयितृ**] पढ़ानेवाला, पाठक, उपाध्याय ; (ठा ५, २) ।
अणुपवाय देखो **अणुप्पवाय**=अनुप्र+वाचय् ।
अणुपविट्ठ वि [**अनुप्रविष्ट**] पीछे से प्रविष्ट ; (णाया १, १ ; कप्प) ।
अणुपविस सक [**अनुप्र+विश्**] १ पीछे से प्रवेश करना । २ प्रवेश करना, भीतर जाना । अणुपविसइ ; (कप्प) । वकृ—**अणुपविसंत** ; (निचू २) । संकृ—**अणुपविसित्ता** ; (कप्प) ।
अणुपवेस पुं [**अनुप्रवेश**] प्रवेश, भीतर जाना ; (निचू ७) ।
अणुपस्स सक [**अनु+दृश्**] पर्यालोचन करना, विवेचना करना । संकृ—**अणुपस्सिय** ; (सूअ १, २, २) ।
अणुपस्सि वि [**अनुदर्शिन्**] पर्यालोचक, विवेचक ; (आचा) ।
अणुपाल सक [**अनु+पालय्**] १ अनुभव करना । २ रक्षण करना । ३ प्रतीक्षा करना, राह देखना । अणुपालेइ ; (महा) ; वकृ—"सायासोक्खम् **अणुपालंतेण**" (पक्खि) ; **अणुपालिंत, अणुपालेमाण** ; (महा) । संकृ—**अणुपालेऊण, अणुपालित्ता, अणुपालिय** ; (महा; कप्प; पि ५७०) ।
अणुपालण न [**अनुपालन**] रक्षण, प्रतिपालन; (पंचभा) ।
अणुपालणा देखो **अणुवालणा** ; (विसे २५२० टी) ।
अणुपालिय वि [**अनुपालित**] रक्षित, प्रतिपालित; (ठा ८) ।
अणुपास देखो **अणुपस्स** । वकृ—**अणुपासमाण** ; (दसचू २) ।
अणुपिट्ठ न [**अनुपृष्ठ**] अनुक्रम, "अणुपिट्ठसिद्धाइं" (सम्म) ।
अणुपुव्व वि [**अनुपूर्व**] क्रमवार, आनुक्रमिक ; (ठा ४, ४) । क्रिवि. क्रमशः ; (पाअ) । °**सो** [**शस्**] अनुक्रम से ; (आचा ।
अणुपुव्व न [**आनुपूर्व्य**] क्रम, परिपाटी, अनुक्रम; (राय) ।
अणुपुव्वी स्त्री [**आनुपूर्वी**] ऊपर देखो ; (पाअ) ।
अणुपेक्खा स्त्री [**अनुप्रेक्षा**] भावना, चिन्तन, विचार ; (पउम १४, ७७) ।
अणुपेहण न [**अनुप्रेक्षण**] ऊपर देखो; (उप १४२ टी)।
अणुपेहा स्त्री [**अनुप्रेक्षा**] ऊपर देखो ; (पि ३२३) ।
अणुप्पइन्न वि [**अनुप्रकीर्ण**] एक दूसरे से मिला हुआ, मिश्रित ; (कप्प) ।
अणुप्पणो सक [**अनुप्र+णी**] १ प्रणय करना । २ प्रसन्न करना । वकृ—**अणुप्पणंत** ; (उप पृ २८) ।
अणुप्पगंथ वि [**अणुप्रग्रन्थ**] संतोषी, अल्प परिग्रह वाला; (ठा ६) ।
अणुप्पगंथ वि [**अनुप्रग्रन्थ**] ऊपर देखो ; (ठा ६) ।
अणुप्पण्ण वि [**अनुत्पन्न**] अविद्यमान ; (निचू ५) ।
अणुप्पत्त देखो **अणुपत्त** ; (कप्प) ।

अणुप्पदा सक [**अनुप्र+दा**] दान देना, फिर २ देना। अणुप्पदेइ; (कस)। कृ—**अणुप्पदायव्व**; (कस)। हेकृ—**अणुप्पदाउं**; (उवा)।

अणुप्पदाण न [**अनुप्रदान**] दान, फिर २ दान देना; (आव ६)।

अणुप्पभु पुं [**अनुप्रभु**] स्वामी के स्थानापन्न, प्रतिनिधि; (निचू २)।

अणुप्पया देखो **अणुप्पदा**। अणुप्पएइ; (कस)। हेकृ—**अणुप्पयाउं**; (उवा)।

अणुप्पयाण देखो **अणुप्पदाण**; (आचा)।

अणुप्पवत्त सक [**अनुप्र+वृत्**] अनुसरण करना। हेकृ—**अणुप्पवत्तए**; (विसे २२०७)।

अणुप्पवाइत्तु } वि [**अनुप्रवाचयितृ**] अध्यापक, पाठक, **अणुप्पवाएत्तु** } पढ़ानेवाला; (ठा ५, १; गच्छ १)।

अणुप्पवाय सक [**अनुप्र+वाचय्**] पढ़ाना। वकृ—**अणुप्पवाएमाण**; (जं ३)।

अणुप्पवाय न [**अनुप्रवाद**] नववाँ पूर्व, बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक अंश-विशेष; (ठा ६)।

अणुप्पविट्ठ देखो **अणुपविट्ठ**; (कस)।

अणुप्पवित्ति स्त्री [**अनुप्रवृत्ति**] अनुप्रवेश, अनुगम; (विसे २११६०)।

अणुप्पविस देखो **अणुपविस**। अणुप्पविसइ; (उवा)। संकृ—**अणुप्पवेसेत्ता**; (निचू १)।

अणुप्पवेस देखो **अणुपवेस**; (नाट)।

अणुप्पवेसण न [**अनुप्रवेशन**] देखो **अणुपवेस**; (नाट)।

अणुप्पसाद (शौ) सक [**अनुप्र+सादय्**] प्रसन्न करना। अणुप्पसादेदि; (नाट)।

अणुप्पसूय वि [**अनुप्रसूत**] उत्पन्न, पैदा किया हुआ; (आचा)।

अणुप्पाइ वि [**अनुपातिन्**] युक्त, संबद्ध, संबन्धी; (निचू १)।

अणुप्पिय वि [**अनुप्रिय**] अनुकूल, इष्ट; (सूअ १, ७)।

अणुप्पेंत वि [**अनुत्प्रयत्**] दूर करता, हटाता हुआ;
"जम्मि अविसरणहियियत्तणेण ते गारवं वलग्गंति।
तं विसममणुप्पेंतो गरुयाण विही खलो होइ" (गउड)।

अणुप्पेच्छ देखो **अणुप्पेह**;
"तह पुव्विं किं न कयं, न वाहए जेण मे समत्थोवि।
एण्हिं किं कस्स व कुप्पिमो त्ति धीरा! अणुप्पेच्छ" (उव)।

अणुप्पेसिय वि [**अनुप्रेषित**] पीछे से भेजा हुआ; (नाट)।

अणुप्पेह सक [**अनुप्र+ईक्ष्**] चिन्तन करना, विचारना। अणुप्पेहंति; (पि ३२३)। कृ—**अणुप्पेहियव्व**; (पंसू १)।

अणुप्पेहा स्त्री [**अनुप्रेक्षा**] चिन्तन, भावना, विचार; स्वाध्याय-विशेष; (उत्त २६)।

अणुप्फास पुं [**अनुस्पर्श**] अनुभाव, प्रभाव; "लोहस्सेव अणुप्फासो मन्ने अन्नयरामवि" (दस ६)।

अणुफुसिय वि [**अनुप्रोञ्छित**] पोंछा हुआ, साफ किया हुआ; (स ३४४)।

अणुबंध सक [**अनु+बन्ध्**] १ अनुसरण करना। २ संबन्ध बनाये रखना। अणुबंधंति; (उत्तर ७१)। वकृ—**अणुबंधंत**; (वेणी १८३)। कवकृ—**अणुबंधीअमाण**, **अणुबंधिज्जमाण**; (नाट)। हेकृ—**अणुबंधिदुं** (शौ); (मा ६)।

अणुबंध पुं [**अनुबन्ध**] १ सततपन, निरन्तरता, विच्छेद का अभाव; (ठा ६; उवर १२८)। २ संबन्ध; (स १३८; गउड)। ३ कर्मों का संबन्ध; (पंचा १५)। ४ कर्मों का विपाक, परिणाम; (उवर ४; पंचा १८)। ५ स्नेह, प्रेम; (स २७६);
"नयणाण पडउ वज्जं, अहवा वज्जस्स वड्डिलं किंपि।
अमुणियजणेवि दिट्ठे, अणुबंधं जाणि कुव्वंति" (सुर ४,२०)।
६ शास्त्र के आरम्भ में कहने लायक अधिकारी, विषय, प्रयोजन और संबन्ध; (आव १)। ७ निर्बन्ध, आग्रह; (स ४५८)।

अणुबंधअ वि [**अनुबन्धक**] अनुबन्ध करने वाला; (नाट)।

अणुबंधि वि [**अनुबन्धिन्**] अनुबन्ध वाला, अनुबन्ध करने वाला; (धर्म २; स १२७)।

अणुबंधिअ न [**दे**] हिक्का-रोग, हिचकी; (दे १, ४४)।

अणुबंधेल्ल वि [**अनुबन्धिन्**] विच्छेद-रहित, अनुगम वाला, अविनश्वर; (उप २३३)।

अणुबज्झ } वि [**अनुबद्ध**] १ बँधा हुआ, संबद्ध; (से **अणुबद्ध** } ११, ६०)। २ सतत, अविच्छिन्न "अणुबद्ध-तिव्ववेरा परोप्परं वेयणं उदीरेंति" (पण्ह १, १)। ३ व्याप्त; (णाया १, २)। ४ प्रतिबद्ध; (णाया १,२)। ५ अत्यंत, बहुत "अणुबद्धनिरंतरवेयणासु" (पण्ह १, १)। ६ उत्पन्न; (उत्तर ६२)।

अणुवूह देखो **अणुवूह**।

अणुब्भड वि [**अनुद्भट**] अनुद्धत, अनुल्बण ; (उत्त २)।

अणुब्भूय वि [**अनुद्भूत**] अप्रकट, अनुत्पन्न ; (नाट)।

अणुभअ देखो **अणुभव**=अनुभव ; (नाट)।

अणुभव सक [**अनु+भू**] १ अनुभव करना, जानना, समझना। २ कर्मफल को भोगना। अणुभवंति ; (पि ४७५)। वकृ—**अणुभवंत**; (पि ४७५)। संकृ—**अणुभविअ, अणुभवित्ता** ; (नाट ; पराह १,१)। हेकृ—**अणुभविउं** ; (उत्त १८)।

अणुभव पुं [**अनुभव**] १ ज्ञान, बोध, निश्चय ; (पंचा ५)। २ कर्म-फल का भोग ; (विसे)।

अणुभवण न [**अनुभवन**] ऊपर देखो ; (आव ४; विसे २०६०)।

अणुभवि वि [**अनुभविन्**] अनुभव करने वाला ; (विसे १६५८)।

अणुभाग पुं [**अनुभाग**] १ प्रभाव, माहात्म्य ; (सूअ १, ५, १)। २ शक्ति, सामर्थ्य ; (पराण २)। ३ कर्मों का विपाक—फल; (सूअ १, ५, १)। ४ कर्मों का रस, कर्मों में फल उत्पन्न करने की शक्ति "ताण रसो अणुभागो" (कम्म १, २ टी ; नव ३१)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] कर्म-पुद्गलों में फल उत्पन्न करने की शक्ति का बनना ; (ठा ४, २)।

अणुभाय, **अणुभाव** पुं [**अनुभाव**] १-४ ऊपर देखो ; (प्रासू ३५ ; ठा ३, ३ ; गउड ; आचा ; सम ६)। ५ मनोगत भाव की सूचक चेष्टा, जैसे भौंका चढाना वगैरः, (नाट)। ६ कृपा, महरबानी ; (स ३५५)।

अणुभावग वि [**अनुभावक**] बोधक, सूचक; (आवम)।

अणुभास सक [**अनु+भाष्**] १ अनुवाद करना, कही हुई बात को उसी शब्द में, शब्दान्तर में या दूसरी भाषा में कहना। २ चिन्तन करना। "अणुभासइ गुरुवयणं" (आचू ६; वव ३)। वकृ—**अणुभासयंत; अणुभासमाण**; (स १८४ ; विसे २५१२)।

अणुभासण न [**अनुभाषण**] अनुवाद, उक्त बात का कहना ; (नाट)।

अणुभासणा स्त्री [**अनुभाषणा**] ऊपर देखो ; (ठा ५, ३ ; विसे २५२० टी)।

अणुभासय वि [**अनुभाषक**] अनुवादक, अनुवाद करने वाला ; (विसे ३२१७)।

अणुभासयंत देखो **अणुभास**।

अणुभुंज सक [**अनु+भुज्**] भोग करना। वकृ—**अणुभुंजमाण** ; (सं १६)।

अणुभूइ स्त्री [**अनुभूति**] अनुभव ; (विसे १६११)।

अणुभूय वि [**अनुभूत**] ज्ञात, निश्चित ; (महा)। °**पुव्व** वि [°**पूर्व**] पहले ही जिसका अनुभव हो गया हो वह ; (गाया १, १)।

अणुभूस सक [**अनु+भूष्**] भूषित करना, शोभित करना। अणुभूसेदि (शौ); (नाट)।

अणुमइ स्त्री [**अनुमति**] अनुमोदन, सम्मति; (श्रा ६)।

अणुमंतव्व देखो **अणुमण्ण** ; (विसे १६६०)।

अणुमग्ग न [**दे**] पीछे पीछे "एवं विचिंतयंती अणुमग्गेणेव चलिया हं" (सुर ४, १४२ ; महा)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] पीछे २ जाने वाला ; (पि ४०५)।

अणुमण्ण, **अणुमन्न** सक [**अनु+मन्**] अनुमति देना, अनुमोदन करना। अणुमरणे, अणुमन्नइ ; (पि ४५७ ; महा)। वकृ—**अणुमण्णमाण** ; (उवर ३१)। संकृ—**अणुमन्निऊण** ; (महा)।

अणुमन्निय, **अणुमय** वि [**अनुमत**] अनुमोदित, सम्मत ; (उप पृ २६१)।

अणुमर अक [**अनु+मृ**] १ मरना। २ सती होना, पति के मरने से मर जाना। "जं केवलिणो अणुमरंति" (आउ ३५)। भवि—अणुमरिहिइ ; (पि ५२२)।

अणुमरण न [**अनुमरण**] ऊपर देखो ; (गउड)।

अणुमहत्तर वि [**अनुमहत्तर**] मुखिया का प्रतिनिधि ; (निचू ३)।

अणुमाण न [**अनुमान**] १ अटकल-ज्ञान, हेतु के द्वारा अज्ञात वस्तु का निर्णय ; (गा ३४५ ; ठा ४, ४)।

अणुमाण सक [**अनु+मानय्**] अनुमान करना। संकृ—**अणुमाणइत्ता** ; (वव १)।

अणुमाय वि [**अणुमात्र**] बहुत थोड़ा, थोड़ा परिमाण वाला ; (दस ५, २)।

अणुमाल अक [**अनु+मालय्**] शोभित होना, चमकना। संकृ—**अणुमालिवि** ; (भवि)।

अणुमेअ वि [**अनुमेय**] अनुमान के योग्य ; (मै ७३)।

अणुमेरा स्त्री [**अनुमर्यादा**] मर्यादा , हद ; (कस)।

अणुमोइय वि [**अनुमोदित**] अनुमत, संमत, प्रशंसित ; (आउर ; भवि)।

अणुमोय सक (अनु + मुद्] अनुमति देना, प्रशंसा करना। अणुमोयइ ; (उव)। अणुमोएमो ; (चउ ५८)।
अणुमोयग वि [**अनुमोदक**] अनुमोदन करने वाला ; (विसे)।
अणुमोयण न [**अनुमोदन**] अनुमति, सम्मति, प्रशंसा ; (उव; पंचा ६)।
अणुम्मुक्क वि [**अनुन्मुक्त**] नहीं छोड़ा हुआ ; (पण्ह १,४)।
अणुम्मुह वि [**अनुन्मुख**] अ-संमुख, विमुख ; "किह साहुस्स अणुम्मुहो चिट्ठामि त्ति" (महा)।
अणुयंपा देखो **अणुकंपा** ; (गउड ; स २१४)।
अणुयत्त देखो **अणुवत्त**=अनु+वृत्। **अणुयत्तइ** ; (भवि)। वकृ—**अणुयत्तंत, अणुयत्तमाण** ; (पंचभा ; विसे १४५१)। संकृ—**अणुयत्तिऊण** ; (गउड)।
अणुयत्त देखो **अणुवत्त**=अनुवृत्त ; (भवि)।
अणुयत्तणा स्त्री [**अनुवर्तना**] १ बिमार की सेवा-शुश्रूषा करना; (बृह १)। २ अनुसरण; ३ अनुकूल वर्तन; (जीव १)।
अणुयत्तिय वि [**अनुवृत्त**] अनुकूल किया हुआ, प्रसादित ; (सुपा १३०)।
अणुयरिय वि [**अनुचरित**] आचरित, अनुष्ठित ; (णाया १, १)।
अणुया देखो **अणुण्णा** ; (सूअ २, १)।
अणुयाव देखो **अणुताव** ; (स १८३)।
अणुयास पुं [**अनुकाश**] विशेष विकास; (णाया १, १)।
अणुरंगा स्त्री [**दे**] गाड़ी ; (बृह १)।
अणुरंगिय वि [**अनुरङ्गित**] रँगा हुआ ; (भवि)।
अणुरंज सक [**अनु + रञ्जय्**] अनुरागी करना, प्रीणित करना। वकृ—**अणुरंजअंत** ; (नाट)। संकृ—**अणुरंजिअ** ; (नाट)।
अणुरंजण न [**अनुरञ्जन**] राग, आसक्ति ; (विसे २६७७)।
अणुरंजिएल्लय } वि [**अनुरञ्जित**] अनुरक्त किया हुआ,
अणुरंजिय } अनुरागी बनाया हुआ; (जं ३; महा)।
अणुरक्क वि [**अनुरक्त**] अनुराग-प्राप्त, प्रेम-प्राप्त ; (नाट)।
अणुरज्ज अक [**अनु+रञ्ज्**] अनुरक्त होना, प्रेमी होना। "अणुरज्जंति खणेणं जुवईउ खणेण पुण विरज्जंति" (महा)।
अणुरत्त देखो **अणुरक्क** ; (णाया १, १६)।
अणुरसिय वि [**अनुरसित**] बोलाया हुआ, आहूत ; (णाया १, ६)।

अणुराइ } वि [**अनुरागिन्**] अनुराग वाला, प्रेमी ;
अणुराइल्ल } (स ३३० ; महा ; सुर १३, १२०)।
अणुराग पुं [**अनुराग**] प्रेम, प्रीति ; (सुर ४, २२८)।
अणुरागय वि [**अन्वागत**] १ पीछे आया हुआ ; २ ठीक २ आया हुआ ; ३ न. स्वागत ; (भग २, १)।
अणुरागि देखो **अणुराइ** ; (महा)।
अणुराय देखो **अणुराग** ; (प्रासू १११)।
अणुराहा स्त्री [**अनुराधा**] नक्षत्र-विशेष ; (सम ६)।
अणुरुंध सक [**अनु + रुध्**] १ अनुरोध करना। २ स्वीकार करना। ३ आज्ञा का पालन करना। ४ प्रार्थना करना। ५ अक. अधीन होना। कर्म—अणुरुंधिज्जइ; (हे ४, २४८ ; प्रामा)।
अणुरूअ } वि [**अनुरूप**] १ योग्य, उचित ; (से ६,
अणुरूव } ३६)। २ अनुकूल ; (सुपा ११२)। ३ सदृश, तुल्य ; (णाया १, १६)। ४ न. समानता, योग्यता ; (सम्म)।
अणुरोह पुं [**अनुरोध**] १ प्रार्थना "ता ममाणुरोहेण एत्थ घरे निच्चमेव आगंतव्वं" (महा)। २ दाक्षिण्य, दक्षिणता ; (पाअ)।
अणुरोहि वि [**अनुरोधिन्**] अनुरोध करने वाला ; (स १२१)।
अणुलग्ग वि [**अनुलग्न**] पीछे लगा हुआ ; (गा ३४५ ; सुर ३, २२६ ; सूक्त ७)।
अणुलद्ध वि [**अनुलब्ध**] १ पीछे से मिला हुआ ; २ फिर से मिला हुआ ; (नाट)।
अणुलाव पुं [**अनुलाप**] फिर २ बोलना ; (ठा ७)।
अणुलिंप सक [**अनु + लिप्**] १ पोतना, लेप करना। २ फिर से पोतना। संकृ—**अणुलिंपित्ता** ; (पि ५८२)। हेकृ—**अणुलिंपित्तए** ; (पि ५७८)।
अणुलिंपण न [**अनुलेपन**] लेप, पोतना ; (पण्ह २, ३)।
अणुलित्त वि [**अनुलिप्त**] लिप्त, पोता हुआ, (कप्प)।
अणुलिह सक [**अनु + लिह्**] १ चाटना। २ छूना। वकृ—**अणुलिहंत**; (सम १३१)। "गयणयलमणुलिहंतं" (पउम ३६, १२)।
अणुलेवण न [**अनुलेपन**] १ लेप, पोतना; (स्वप्न ६४)। २ फिर से पोतना ; (पणण २)।
अणुलेविय वि [**अनुलेपित**] लिप्त, पोता हुआ "कम्माणुलेविओ सो" (पउम ८२, ७८)।

अणुलोम सक [**अनुलोमय्**] १ क्रम से रखना। २ अनुकूल करना। संकृ—**अणुलोमइत्ता** ; (ठा ६)।

अणुलोम न [**अनुलोम**] १ अनुक्रम, यथाक्रम "वत्थं दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थं" (सुर १६, ४८)।

अणुलोम वि [**अनुलोम**] सीधा, अनुकूल ; (जं २)।

अणुल्लण वि [**अनुल्बण**] अनुद्धत, अनुद्भट ; (बृह ३)।

अणुल्लय पुं [**अनुल्लक**] एक द्वीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु ; (उत्त ३६)।

अणुल्लाव पुं [**अनुल्लाप**] खराब कथन, दुष्ट उक्ति; (ठा ३)।

अणुव पुं [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे १, १६)।

अणुवइट्ठ वि [**अनुपदिष्ट**] १ अ-कथित, अ-व्याख्यात ; २ जो पूर्व-परम्परा से न आया हो "अणुवइट्ठं नाम जं णो आयरियपरंपरागयं" (निचू ११)।

अणुवउत्त वि [**अनुपयुक्त**] असावधान ; (विसे)।

अणुवएस पुं [**अनुपदेश**] १ अयोग्य उपदेश ; (पंचा १२)। २ उपदेश का अभाव ; ३ स्वभाव ; (ठा २, १)।

अणुवओग वि [**अनुपयोग**] १ उपयोग-रहित ; २ उपयोग का अभाव, असावधानता ; (अणु)।

अणुवंक वि [**अनुवक्र**] अत्यंत वक्र, बहुत टेढ़ा "जाव अंगारओ रासिं विअ अणुवंकं परिगमणं ण करेदि" (माल ६२)।

अणुवंदण न [**अनुवन्दन**] प्रति-नमन, प्रति-प्रणाम ; (सार्ध ३६)।

अणुवक्क देखो **अणुवंक** ; (पि ७४)

अणुवक्ख वि [**अनुपाख्य**] नाम-रहित, अनिर्वचनीय ; (बृह १)।

अणुवक्खड वि [**अनुपस्कृत**] संस्कार-रहित (पाक) ; (निचू १)।

अणुवच्च सक [**अनु+व्रज्**] अनुसरण करना, पीछे २ जाना। अणुवच्चइ ; (हे ४, १०७)।

अणुवज्जिय वि [**अनुव्रजित**] अनुसृत ; (कुमा)।

अणुवजीवि वि [**अनुपजीविन्**] १ अनाश्रित ; २ आजीविका-रहित ; (पंचा १५)।

अणुवजुत्त वि [**अनुपयुक्त**] असावधान, ख्याल-शून्य ; (अभि १३१)।

अणुवज्ज सक [**गम्**] जाना। अणुवज्जइ ; (हे ४,१६२)।

अणुवज्ज सक [**दे**] सेवा-शुश्रूषा करना ; (दे १, ४१)।

अणुवज्जण न [**दे**] सेवा-शुश्रूषा ; (दे १, ४१)।

अणुवज्जिअ वि [**दे**] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह ; (दे १, ४१)।

अणुवज्जिअ वि [**दे**] गत, गया हुआ ; (दे १, ४१)।

अणुवट्ट देखो **अणुवत्त**=अनु + वृत्। कृ—**अणुवट्टणीअ**; (नाट)।

अणुवट्टि देखो **अणुवत्ति**=अनुवर्तिन् ; (विसे २४१७)।

अणुवड सक [**अनु+पत्**] अभिन्न होना। अणुवडइ ; (उवर ७१)।

अणुवत्त सक [**अनु+वृत्**] १ अनुसरण करना। २ सेवा-शुश्रूषा करना। ३ अनुकूल बरतना। ४ व्याकरण आदि के पूर्व सूत्र के पद का, अन्वय के लिए, नीचे के सूत्र में जाना। अणुवत्तइ ; (स ४२)। वकृ—**अणुत्तंत, अणुवत्तंत, अणुवत्तमाण** ; (प्राप्र ; विसे ३५६८ ; नाट)। कृ—**अणुवट्टणीअ, अणुवत्तणीअ, अणुवत्तियव्व** ; (नाट ; उप १०३१ टी)।

अणुवत्त वि [**अनुवृत्त**] १ अनुसृत, अनुगत ; २ अनुकूल किया हुआ ; ३ प्रवृत्त ; (वव २)।

अणुवत्तग वि [**अनुवर्त्तक**] अनुकूल प्रवृत्ति करने वाला, सेवा करने वाला ; (उव)।

अणुवत्तण न [**अनुवर्त्तन**] १ अनुसरण ; (स २३६)। २ अनुकूल प्रवृत्ति ; (गा २६५)। ३ पूर्व सूत्र के पद का, अन्वय के लिए, नीचे के सूत्र में जाना ; (विसे ३५६८)।

अणुवत्तणा स्त्री [**अनुवर्त्तना**] ऊपर देखो ; (उवर १४८)।

अणुवत्तय देखो **अणुवत्तग** "अन्नमन्नच्छंदाणुवत्तया" (णाया १, ३)।

अणुवत्ति स्त्री [**अनुवृत्ति**] १ अनुसरण ; (स ४५६)। २ अनुकूल प्रवृत्ति ; ३ अनुगम ; (विसे ७०५)।

अणुवत्ति वि [**अनुवर्त्तिन्**] अनुकूल प्रवृत्ति करने वाला, भक्त, सेवक;

"तुह चंडि ! चलणकमलाणुवत्तिणो कह ण संजमिज्जंति।
सेरिहवहसंकियमहिसहीरमाणेण व जमेण" (गउड)।

अणुवम वि [**अनुपम**] उपमा-रहित, बेजोड़, अद्वितीय ; (श्रा २७)।

अणुवमा स्त्री [**अनुपमा**] एक प्रकारका खाद्य द्रव्य ; (जीव ३)।

अणुवमिय वि [**अनुपमित**] देखो **अणुवम** ; (सुपा ६८) ।

अणुवय देखो **अणुव्वय** ; (पउम २, ६२) ।

अणुवय सक [**अनु+वद्**] अनुवाद करना, कहे हुए अर्थ को फिरसे कहना । वकृ—**अणुवयमाण** ; (आचा) ।

अणुवरय वि [**अनुपरत**] १ असंयत, अनिग्रही; (ठा २,१)। २ क्रिवि. निरन्तर, हमेशां ; (रयण २५) ।

अणुवलद्धि स्त्री [**अनुपलब्धि**] १ अभाव, अप्राप्ति ; २ अभाव-ज्ञान ; " दुविहा अणुवलद्धीउ " (विसे १६८२) ।

अणुवलब्भमाण वि [**अनुपलभ्यमान**] जो उपलब्ध न होता हो, जो जानने में न आता हो ; (दसनि १) ।

अणुवलेवय वि [**अनुपलेपक**] उपलेप-रहित, अलिप्त ; (पगह १, २)

अणुवसंत वि [**अनुपशान्त**] अशान्त, कुपित ; (उत १६)

अणुवसम पुं [**अनुपशम**] उपशम का अभाव ; (उव) ।

अणुवसु वि [**अनुवसु**] रागवाला, प्रीतिवाला ; (आचा) ।

अणुवह न [**अनुपथ**] पीछे " कुमराणुवहेण सो लग्गो " (उप ६ टी) ।

अणुवहय वि [**अनुपहत**] अविनाशित ; (पिंड) ।

अणुवहुआ स्त्री [**दे**] नवोढ़ा स्त्री, दुलहिन ; (दे १,४८) ।

अणुवाइ वि [**अनुपालिन्**] १ अनुसरण करने वाला ; (ठा ६) । २ संबन्ध रखने वाला ; (सम १५) ।

अणुवाइ वि [**अनुवादिन्**] अनुवाद करने वाला, उक्त अर्थ को कहने वाला ; (सूअ १, १२ ; सत्त १४ टी) ।

अणुवाइ वि [**अनुवाचिन्**] पढ़ने वाला, अभ्यासी ; " संपुन्नतीसवरिसो अणुवाई सव्वसुत्तस्स " (सत्त १४ टी) ।

अणुवाएज्ज वि [**अनुपादेय**] ग्रहण करने के अयोग्य ; (आवम) ।

अणुवाद देखो **अणुवाय**=अनुवाद ; (विसे ३५७७) ।

अणुवाय पुं [**अनुपात**] १ अनुसरण ; (पगण १७) । २ संबन्ध, संयोग ; (भग १२, ४) । ३ आगमन ; (पंचा ७) ।

अणुवाय पुं [**अनुवात**] १ अनुकूल पवन ; (राय) । २ वि. अनुकूल पवन वाला प्रदेश—स्थान ; (भग १६, ६)।

अणुवाय वि [**अनुपाय**] उपाय-रहित, निरुपाय ; (उप पृ १४) ।

अणुवाय पुं [**अनुवाद**] अनुभाषण, उक्त बात को फिर से कहना ; (उवा ; दे १, १३१) ।

अणुवायण न [**अनुपातन**] अवतारण, उतीरना; (धर्म २)।

अणुवायय वि [**अनुवाचक**] कहने वाला, अभिधायक, "पोसहसद्दो रूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ" (सुपा ६१६)।

अणुवाल देखो **अणुपाल** । वकृ—**अणुवालेंत**; (स २३)। संकृ—**अणुवालिऊण** ; (स १०२) ।

अणुवालण न [**अनुपालन**] रक्षण, परिपालन ; (आचा)।

अणुवालणा स्त्री [**अनुपालना**] १ ऊपर देखो; (पंचू) । २ °**कप्प** पुं [°**कल्प**] साधु-गण के नायक की अकस्मात् मृत्यु हो जाने पर गण की रक्षा के लिए शास्त्रीय विधान ; (पंचभा) ।

अणुवालय वि [**अनुपालक**] १ रक्षक, परिपालक । २ पुं. गोशालक के एक भक्त का नाम ; (भग २४, २०) ।

अणुवास सक [**अनु+वासय्**] व्यवस्था करना । अणु-वासेजासि ; (आचा) ।

अणुवास पुं [**अनुवास**] एक स्थान में अमुक काल तक रह कर फिर वहां ही वास करना ; (पंचभा) ।

अणुवासण न [**अनुवासन**] १ ऊपर देखो । २ यन्त्र-द्वारा तेल आदि को अपान से पेट में चढ़ाना ; (णाया १, १३) ।

अणुवासणा स्त्री [**अनुवासना**] ऊपर देखो ; (पंचभा ; णाया १, १३) । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] अनुवास के लिए शास्त्रीय व्यवस्था ; (पंचभा) ।

अणुवासग वि [**अनुपासक**] १ सेवा नहीं करने वाला । २ पुं. जैनेतर गृहस्थ ; (निचू ८) ।

अणुवासर न [**अनुवासर**] प्रतिदिन, हमेशाँ ; (सुर १, २४१) ।

अणुवित्ति स्त्री [**अनुवृत्ति**] १ अनुकूल वर्तन ; (कुमा) । २ अनुसरण ; (उप ८३३ टी) ।

अणुविद्ध वि [**अनुविद्ध**] संबद्ध, जुड़ा हुआ ; (से ११, १५) ।

अणुविहाण न [**अनुविधान**] १ अनुकरण ; २ अनुसरण; (विसे २०७) ।

अणुवीइ स्त्री [**अनुवीचि**] अनुकूलता " वेयाणुवीइं मा कासि चोइज्जंतो गिलाइ से भुज्जो " (सूअ १, ४, १, १६) ।

अणुवीइ, **अणुवीई**, **अणुवीति**, **अणुवीतिय** } अ [**अनुविचिन्त्य**] विचार कर, पर्यालोचना कर ; (पि ५९३ ; आचा ; दस ७) । देखो **अणुचिंत** ।

अणुवूह सक [अनु+वृंह्] अनुमोदन करना, प्रशंसा करना। अणुवूहेइ ; (कप्प)।

अणुवूहेत्तु वि [अनुबृंहितृ] अनुमोदन करने वाला ; (ठा ७)।

अणुवेय सक [अनु+वेदय्] अनुभव करना। वकृ—**अणुवेयंत** ; (सूत्र १, ५, १)।

अणुवेयण न [अनुवेदन] फल-भोग, अनुभव ; (स ४०३)।

अणुवेल अ [अनुवेल] निरन्तर, सदा ; (पाअ)।

अणुवेलंधर पुं [अनुवेलन्धर] नाग-कुमार देवों का एक इन्द्र ; (सम ३३)।

अणुवेह देखो **अणुप्पेह**। वकृ—**अणुवेहमाण** ; (सूत्र १, १०)।

अणुव्वज सक [अनु+व्रज्] १ अनुसरण करना। २ सामने जाना। अणुव्वजे ; (सूत्र १, ४, १,३)।

अणुव्वय न [अणुव्रत] छोटा व्रत, साधुओं के महाव्रतों की अपेक्षा लघु व्रत, जैन गृहस्थ के पालने के नियम ; (ठा ५, १)।

अणुव्वय न [अनुव्रत] ऊपर देखो ; (ठा ५, १)।

अणुव्वयय वि [अनुव्रजक] अनुसरण करने वाला "अन्न-मन्नमणुव्वयया" (णाया १, ३)।

अणुव्वया स्त्री [अनुव्रता] पतिव्रता स्त्री ; (उत्त २०)।

अणुव्वस वि [अनुवश] आधीन, आयत्त "एवं तुब्भे सरागत्था अन्नमन्नमणुव्वसा" (सूत्र १, ३, ३)।

अणुव्वाण वि [अनुद्वान] १ अ-बन्ध, खुला हुआ ; (उप २११ टी)। २ स्निग्ध, चिकना "पव्वाणं किंचि-उव्वाणमेव किंचिच होअणुव्वाणं" (ओघ ४८८)।

अणुव्विग्ग वि [अनुद्विग्न] अ-खिन्न, खेद-रहित; (णाया १, ८; गा २८५)।

अणुव्विवाग न [अनुविपाक] विपाक के अनुसार "एवं तिरिक्खे मणुयासुरेसु चउरंतणंतं तयणुव्विवागं" (सूत्र १, ५, २)।

अणुव्वीइय देखो **अणुवीइ** ; (जीव १)।

अणुसंग पुं [अनुषङ्ग] १ प्रसंग, प्रस्ताव ; (प्रासू ३६; भवि)। २ संसर्ग, सौबत; "मज्झट्ठिई पुण एसा; अणुसङ्गेणं हवन्ति गुण-दोसा" (सट्ठि २८; २७)।

अणुसंचर सक [अनुसं+चर्] १ परिभ्रमण करना। २ पीछे चलना। अणुसंचरइ ; (आचा; सूत्र १, १०)।

अणुसंध सक [अनुसं+धा] १ खोजना, ढुंढना, तलाश करना। २ विचार करना। ३ पूर्वापर का मिलान करना। **अणुसंधेमि** ; (पि ५००)। संकृ—**अणु-संधिवि** ; (भवि)।

अणुसंधण } न [अनुसंधान] १ खोज, शोध। **अणुसंधाण** } २ विचार, चिन्तन "अत्ताणुसंधणपरा सुसावगा एरिसा हुंति" (श्रा २०)। ३ पूर्वापर का मिलान ; (पंचा १२)।

अणुसंधिअ न [दे] अविच्छिन्न हिक्का, निरन्तर हिचकी ; (दे १, ५६)।

अणुसंवेयण न [अनुसंवेदन] १ पीछेसे जानना; २ अनुभव करना; (आचा)।

अणुसंसर सक [अनुसं+सृ] गमन करना, भ्रमण करना। "जो इमाओ दिसाओ वा विदिसाओ वा अणुसंसरइ" (आचा)।

अणुसंसर सक [अनुसं+स्मृ] स्मरण करना, याद करना। अणुसंसरइ; (आचा)।

अणुसज्ज अक [अनु+संज्] १ अनुसरण करना, पूर्व काल से कालान्तर में अनुवर्तन करना। २ प्रीति करना। ३ परिचय करना। अणुसज्जन्ति ; (स ३)। भूका— अणुसज्जित्था; (भग ६,७)।

अणुसज्जणा स्त्री [अनुसज्जना] अनुसरण, अनुवर्तन; (वव १)।

अणुसट्ठ वि [अनुशिष्ट] जिसको शिक्षा दी गई हो वह, शिक्षित; (सुर ११,२६)।

अणुसट्ठि वि [अनुशिष्टि] १ शिक्षण, सीख, उपदेश; (ठा ३, ३)। २ स्तुति, श्लाघा "अणुसट्ठी य थुइ त्ति एगट्ठा" (वव १)। ३ आज्ञा, अनुज्ञा, सम्मति "इच्छामो अणुसट्ठिं पव्व-ज्जं देह में भयवं" (सुर ६,२०६)।

अणुसमय न [अनुसमय] प्रतिक्षण; (भग ४१,१)।

अणुसय पुं [अनुशय] १ पश्चात्ताप, खेद; (से २, १६) २ गर्व, अभिमान; (अणु)।

अणुसर सक [अनु+सृ] पीछा करना, अनुवर्तन करना। अणुसरइ; (सण)। वकृ—**अणुसरंत** ; (महा)। कृ—**अणु-सरियव्व**; (ठा ५, १)।

अणुसर सक [अनु+स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। वकृ—**अणुसरंत**; (पउम ६६, ७)। कृ—**अणुसरियव्व**; (आवम)।

अणुसरण न [**अनुसरण**] १ पीछा करना; २ अनुवर्तन; (विसे ६१३)।

अणुसरण न [**अनुस्मरण**] अनुचिन्तन, याद करना; (पंचा १; स २३१)।

अणुसरिउ वि [**अनुस्मर्तृ**] याद करने वाला; (विसे ६२)।

अणुसरिच्छ, **अणुसरिस** वि [**अनुसदृश**] १ समान, तुल्य; (पउम ६४, ७०)। २ योग्य, लायक (से ११, ११५; पउम ८५, २६)।

अणुसार पुं [**अनुस्वार**] १ वर्ण-विशेष, बिन्दी; २ वि. अनुनासिक वर्ण; (विसे ५०१)।

अणुसार पुं [**अनुसार**] अनुसरण, अनुवर्तन; (गउड़ ; भवि)। २ माफिक, मुताबिक "कहियाणुसारओ सव्वमुवगयं सुमइणा सम्मं" (सार्ध १४४)।

अणुसारि वि [**अनुसारिन्**] अनुसरण करने वाला; (गउड़; स १०१; सार्ध २६)।

अणुसास सक [**अनु+शास्**] १ सीख देना, उपदेश देना। २ आज्ञा करना। ३ शिक्षा करना, सजा देना। अणुसासंति; (पि १७२)। वकृ—**अणुसासंत** (पि ३६७)। कवकृ—**अणुसासिज्जंत**; (सुपा २७३)। कृ—**अणुसासणिज्ज**; (कुमा)। हेकृ—**अणुसासिउं**; (पि ५७६)।

अणुसासण न [**अनुशासन**] १ सीख, उपदेश; (सूअ १, १५)। २ आज्ञा, हुकुम; (सूअ १, २,३)। ३ शिक्षा, सजा; (पंचा ६)। ४ अनुकम्पा, दया "अणुकंपंति वा अणुसासणंति वा एगट्ठा" (पंचचू)।

अणुसासणा स्त्री [**अनुशासना**] ऊपर देखो; (णाया १, १३)।

अणुसासिय वि [**अनुशासित**] शिक्षित; (उत्त १; पि १७३)।

अणुसिक्खिर वि [**अनुशिक्षितृ**] सिखने वाला;
"जं जं करेसि जं जं, जंपसि जह जह तुमं निअच्छेसि।
तं तं अणुसिक्खिरीए, दीहो दिअहो ण संपडइ"।
(गा ३७८)।

अणुसिट्ठ देखो **अणुसट्ठ**; (सूअ १, ३, ३)।

अणुसिट्ठि देखो **अणुसट्ठि**; (ओघ १७३; बृह १; उत्त १०)।

अणुसिण वि [**अनुष्ण**] गरम नहीं वह; ठण्डा; (कम्म १, ४६)।

अणुसील सक [**अनु+शीलय्**] पालन करना, रक्षण करना। **अणुसीलइ**; (सण)।

अणुसुत्ति वि [**दे**] अनुकूल; (दे १, २५)।

अणुसूआ स्त्री [**दे**] शीघ्र ही प्रसव करने वाली स्त्री; (दे १, २३)।

अणुसूय वि [**अनुस्यूत**] अनुविद्ध, मिला हुआ; (सूअ २, ३)।

अणुसूयग वि [**अनुसूचक**] जासुस की एक श्रेणी,
"सूयग तहाणुसूयग-पडिसूयग-सव्वसूयगा एव।
पुरिसा कयवित्तीया, वसंति सामंतनगरेसु।
महिला कयवित्तीया, वसंति सामंतनगरेसु।।" (वव १)।

अणुसेढि स्त्री [**अनुश्रेणि**] १ सीधी लाइन। २ न. लाइनसर ; (पि ६६ ; ३०४)।

अणुसोय पुं [**अनुस्रोतस्**] १ अनुकूल प्रवाह; (ठा ४, ४)। २ वि. अनुकूल "अणुसोयसुहो लोगो पडिसोओ आसमो सुविहियाणं" (दसचू २)। ३ न. प्रवाह के अनुसार,
"अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेणं।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेणं।" (दसचू २)।

अणुसोय सक [**अनु+शुच्**] सोचना, चिन्ता करना, अफसोस करना। वकृ—**अणुसोयमाण**; (सुपा १३३)।

अणुस्सर देखो **अणुसर**=अनु + स्मृ। संकृ-**अणुस्सरित्ता**; (सूअ १, ७, १६)।

अणुस्सर देखो **अणुसर**=अनु + सृ। वकृ—**अणुस्सरंत**; (स १४०)।

अणुस्सरण न [**अनुस्मरण**] चिन्तन करना; याद करना; (उव; स ५३५)।

अणुस्सार पुं [**अनुस्वार**] १ अनुस्वार, बिन्दी। २ वि. अनुस्वार वाला अक्षर, अनुस्वार के साथ जिसका उच्चारण हो वह; (णंदि; विसे ५०३)।

अणुस्सुय वि [**अनुत्सुक**] उत्कण्ठा-रहित; (सूअ १, ६)।

अणुस्सुय वि [**अनुश्रुत**] १ अवधारित; (उत्त ५)। २ सुना हुआ; (सूअ १,२,१)। ३ न. भारत-आदि पुराण-शास्त्र; (सूअ १,३,४)।

अणुहर सक [**अनु+हृ**] अनुकरण करना, नकल करना। अणुहरइ; (पि ४७७)।

अणुहरिय वि [**अनुहृत**] जिसका अनुकरण किया गया हो वह, अनुकृत;

"अणुहरियं धीर तुमे, चरियं निययस्स पुव्वपुरिसस्स।
भरह-महानरवइणो, तिहुयणविक्खाय-कित्तिस्स" (महा)।

अणुहव सक [अनु+भू] अनुभव करना। अणुहवइ; (पि ४७५)। वकृ—**अणुहवमाण**; (सुर १, १७१)। कृ—**अणुहवियव्व, अणुहवणीय**; (पउम १७, १४; सुपा ६८१)। संकृ—**अणुहवेऊण, अणुहविउं**; (प्रारू; पंचा २)।

अणुहवण न [अनुभवन] अनुभव; (स २८७)।

अणुहविय वि [अनुभूत] जिसका अनुभव किया गया हो वह; (सुपा ६)।

अणुहारि वि [अनुहारिन्] अनुकरण करने वाला, नकलची; (कुमा)।

अणुहाव देखो **अणुभाव**; (स ४०३; ६५६)।

अणुहियासण न [अन्वध्यासन] धैर्य से सहन करना; (जं २)।

अणुहु सक [अनु+भू] अनुभव करना। वकृ—**अणुहुंत**; (पउम १०३, १५२)।

अणुहुंज सक [अनु+भुञ्ज्] भोग करना, भोगना। अणुहुंजइ; (भवि)।

अणुहुत्त देखो **अणुहूअ**; (गा ६५९)।

अणुहूअ वि [अनुभूत] १ जिसका अनुभव किया गया हो वह; (कुमा)। २ न. अनुभव; (से ४, २७)।

अणुहो सक [अनु+भू] अनुभव करना। अणुहोंति; (पि ४७५)। वकृ—**अणुहोंत**; (पउम १०६, १७)। कवकृ—**अणुहोईअंत, अणुहोइज्जंत, अणुहोइज्जमाण; अणुहोईअमाण**; (षड्)। कृ—**अणुहोदव्व** (शौ); (अभि १३१)।

अणूकप्प देखो **अणुकप्प**; "एत्तो वोच्छं अणूकप्पं" (पंचभा)।

अणूण वि [अनून] कम नहीं, अधिक; (कुमा)।

अणूय } पुं [अनूप] अधिक जल वाला देश, जल-बहुल
अणूव } स्थान; (विसे १७०३; वव ४)।

अणेअ वि [अनेक] देखो **अणेक्क**; (कुमा; अभि २४९)।

अणेकज्झ वि [दे] चञ्चल, चपल; (दे १,३०)।

अणेक्क } वि [अनेक] एक से अधिक, बहुत; (औप;
अणेग } प्रासू ५३)। °**करण** न [°करण] पर्याय, धर्म, अवस्था; (सम्म १०९)। °**राइय** वि [°रात्रिक] अनेक रातों में होने वाला, अनेक रात संबन्धी (उत्सवादि); (कस)। °**सो** अ [°शस्] अनेक वार; (श्रा १४)।

अणेगंत पुं [अनेकान्त] अनिश्चय, नियम का अभाव; (विसे)। °**वाय** पुं [°वाद] स्याद्वाद, जैनों का मुख्य सिद्धान्त, सत्व-असत्व आदि अनेक विरुद्ध धर्मों का भी एक वस्तु में सापेक्ष स्वीकार,

"जेण विणा लोगस्सवि, ववहारो सव्वहा न निव्वडइ।
तस्स भुवणेक्कगुरुणो नमो अणेगंतवायस्स" (सम्म १६६)।

अणेगंतिय वि [अनैकान्तिक] ऐकान्तिक नहीं, अनिश्चित, अनियमित; (भग १, १)।

अणेगावाइ वि [अनेकवादिन्] पदार्थों को सर्वथा अलग २ मानने वाला, अक्रियवाद-मत का अनुयायी; (ठा ८)।

अणेच्छंत वि [अनिच्छत्] नहीं चाहता हुआ; (उप ७६८ टी)।

अणेज वि [अनेज] निश्चल, निष्कम्प; (आक)।

अणेज्ज वि [अज्ञेय] जानने को अयोग्य, जानने को अशक्य; (महा)।

अणेलिस वि [अनीदृश] अनुपम, असाधारण, "जे धम्मं सुद्धमक्खंति पडिपुण्णमणेलिसं" (सूअ १, ११)।

अणेवंभूय वि [अनेवम्भूत] विलक्षण, विचित्र "अणेवं-भूयंपि वेयणं वेदंति" (भग ५,५)।

अणेस देखो **अण्णेस**। वकृ—**अणेसंत**; (नाट)।

अणेसण न [अन्वेषण] खोज, तलास; (महा)।

अणेसणा स्त्री [अनेषणा] एषणा का अभाव; (उवा)।

अणेसणिज्ज वि [अनेषणीय] अकल्पनीय, जैन साधुओं के लिए अग्राह्य (भिक्षा-आदि); (ठा ३,१; णाया १ ५)।

अणोउया स्त्री [अनृतुका] जिसको ऋतु-धर्म न आता हो वह स्त्री; (ठा ५,२)।

अणोक्कंत वि [अनवक्रान्त] जिसका पराभव न किया गया हो वह, अजित, 'परवाईहिं अणोक्कंता' (औप)।

अणोग्गह देखो **अणुग्गह**=अनवग्रह; "नागरगो संवट्टो अणोग्गहो" (बृह ३)।

अणोग्घसिय वि [अनवघर्षित] नहीं घिसा हुआ, अमार्जित; (राय)।

अणोज्ज वि [अनवद्य] निर्दोष, शुद्ध; (णाया १,८)।

अणोज्जंगी स्त्री [अनवद्याङ्गी] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम; (आचू)।

अणोज्जा स्त्री [**अनवद्या**] ऊपर देखो; (कप्प)।
अणोणअ वि [**अनवनत**] नहीं नमा हुआ; (से १,१)।
अणोत्तप्प देखो **अणुत्तप्प**; (पव ६४)।
अणोम वि [**अनवम**] अ-हीन, परिपूर्ण; (आचा)।
अणोमाण न [**अनपमान**] अनादर का अभाव, सत्कार, "एवं उग्गमदोसा विजढा पइरिक्कया अणोमाणं।
मोहतिगिच्छा य कया, विरियायारो य अणुचिरणो" (ओघ २४६)।
अणोरपार वि [**दे**] १ प्रचुर, प्रभूत; (आवम)। २ अनादि-अनन्त; (पंचा १५; जी ४४)। ३ अति विस्तीर्ण; (पण्ह १,३)।
अणोरुम्मिअ वि [**अनुद्वान**] अ-शुष्क, गिला; (कुमा)।
अणोलय न [**दे**] प्रभात, प्रातःकाल; (दे १,१६)।
अणोवणिहिया स्त्री [**अनौपनिधिकी**] आनुपूर्वी का एक भेद; क्रम-विशेष; (अणु)।
अणोवणिहिया स्त्री [**अनुपनिहिता**] ऊपर देखो; (पि ७७)।
अणोल्ल वि [**अनार्द्र**] १ शुष्क, सूखा हुआ; (गा ५४१)। °**मण** वि [°**मनस्क**] अकरुण, निष्ठुर, निर्दय; (काप्र ८६)।
अणोवम वि [**अनुपम**] उपमा-रहित, अद्वितीय; (पउम ७६, २६; सुर ३,१३०)।
अणोवमिय वि [**अनुपमित**] ऊपर देखो; (पउम २,६३)।
अणोवसंखा स्त्री [**अनुपसंख्या**] अज्ञान, सत्य ज्ञान का अभाव; (सूअ २,१२)।
अणोवहिय वि [**अनुपधिक**] १ परिग्रह-रहित, संतोषी। २ सरल, अकपटी; (आचा)।
अणोवाहणग, **अणोवाहणय** वि [**अनुपानत्क**] जूता-रहित, जो जूता-पहिना न हो; (औप; पि ७७)।
अणोसिय वि [**अनुषित**] १ जिसने वास न किया हो। २ अव्यवस्थित "अणोसिएणं न करेइ णच्चा" (धर्म ३; सूअ १,१४)।
अणोहंतर वि [**अनोघन्तर**] पार जाने के लिए असमर्थ, "मुणिणा हु एयं पवेइयं अणोहंतरा एए, नो य ओहं तरित्तए" (आचा)।
अणोहट्टय वि [**अनपघट्टक**] निरंकुश, स्वच्छन्दी; (णाया १,१६)।
अणोहीण वि [**अनवहीन**] हीनता-रहित; (पि १२०)।
अण्ण सक [**भुज्**] भोजन करना, खाना। अण्णाइ; (षड्)।
अण्ण स [**अन्य**] दूसरा, पर; (प्रासू १३१)। °**उत्थिय** वि [°**तीर्थिक** °**यूथिक**] अन्य दर्शन का अनुयायी; (सम ६०)। °**गहण** न [°**ग्रहण**] १ गान के समय होने वाला एक प्रकार का मुख-विकार। २ पुं. गाने वाला, गान्धर्विक, गवैया; (निचू १७)। °**धम्मिय** वि [°**धर्मिक**] भिन्न धर्म वाला; (ओघ १५)।
अण्ण न [**अन्न**] १ नाज, चावल आदि धान्य; (सूअ १,४,२)। २ भक्ष्य पदार्थ; (उत्त २०)। ३ भक्षण, भोजन; (सूअ १,२)। °**इलाय**, °**गिलाय** वि [°**ग्लायक**] वासी अन्न को खाने वाला; (औप; भग १६,३)। °**विहि** पुंस्त्री [°**विधि**] पाक-कला; (औप)।
अण्ण न [**अर्णस्**] पानी, जल; (उत्त ५)।
अण्ण वि [**दे**] १ आरोपित; २ खण्डित; (षड्)।
°**अण्ण** देखो **कण्ण**=कर्ण; (गा ५६४, कप्पू)।
अण्णअ पुं [**दे**] १ युवान, तरुण; २ धूर्त, ठग; ३ देवर; (दे १,५५)।
अण्णइअ वि [**दे**] १ तृप्त; (दे १,१६)। २ सब विषयों में तृप्त, सर्वार्थ-तृप्त; (षड्)
अण्णओ अ [**अन्यतस्**] दूसरे से, दूसरी तर्फ; (उत्त १)। देखो **अन्नओ**।
अण्णण्ण वि [**अन्योन्य**] परस्पर, आपस में; (षड्)।
अण्णण्ण वि [**अन्यान्य**] और और, अलग अलग, "अण्णण्णाइं उवेंता, संसारवहम्मि णिरवसाणम्मि।
मरणंति धीरहियआ, वसइट्ठाणाइंव कुलाइं" (गउड)।
अण्णत्त अ [**अन्यत्र**] दूसरे में, भिन्न स्थान में; (गा ६५५)।
अण्णत्ति स्त्री [**दे**] अवज्ञा, अपमान, निरादर; (दे १, १७)।
अण्णत्तो देखो **अण्णओ**; (गा ६३६)।
अण्णत्थ देखो **अण्णत्त**; (विपा १, २)।
अण्णत्थ वि [**अन्यस्थ**] दूसरे (स्थान) में रहा हुआ; (गा ५५०)।
अण्णत्थ वि [**अन्वर्थ**] यथार्थ, यथा नाम तथा गुण वाला; "ठियमण्णत्थे तयत्थनिरवेक्खं" (विसे)।
अण्णमण्ण देखो **अण्णण्ण**=अन्योन्य "अण्णमण्णमणुरत्तया" (णाया १, २)।
अण्णमय वि [**दे**] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ; (दे १, २८)।

अण्णयर वि [**अन्यतर**] दो में से कोई एक ; (कप्प) ।
अण्णया अ [**अन्यदा**] कोई समय में ; (उप ६ टी) ।
अण्णव पुं [**अर्णव**] १ समुद्र ; २ संसार " अण्णवंसि महोवंसि एगे तिण्णे दुरुत्तरे " (उत्त ५) ।
अण्णव न [**ऋणवत्**] एक लोकोत्तर मुहूर्त का नाम; (जं ७)।
अण्णह न [**अन्वह**] प्रतिदिन, हमेशां , (धर्म १) ।
अण्णह देखो **अण्णत्त** ; (षड्) ।
अण्णह } अ [**अन्यथा**] अन्य प्रकार से, विपरीत रीति से, उलटा ; (षड् ; महा) । °**भाव** पुं [°**भाव**] वैपरीत्य, उलटापन ; (बृह ४) ।
अण्णहा }
अण्णहि देखो **अण्णत्त** ; (षड्) ।
अण्णा स्त्री [**आज्ञा**] आज्ञा, आदेश ; (गा २३; अभि ६३ ; मुद्रा ५७) ।
अण्णाइट्ठ वि [**अन्वादिष्ट**] आदिष्ट, जिसको आदेश दिया गया हो वह " अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे " (अंत २०) ।
अण्णाइट्ठ वि [**अन्वाविष्ट**] १ व्याप्त ; (भग १४, १) । २ पराधीन, परवश ; (भग १८, ६) ।
अण्णाइस (अप) वि [**अन्यादृश**] दूसरे के जैसा ; (पि २४५) ।
अण्णाण न [**अज्ञान**] १ अज्ञान, अजानकारी, मूर्खता ; (दे १, ७) । २ मिथ्या ज्ञान, झूठा ज्ञान; (भग ८, २) । ३ वि. ज्ञान-रहित, मूर्ख ; (भग १, ६) ।
अण्णाण न [**दे**] दाय, विवाह-काल में वधू को अथवा वर को जो दान दिया जाता है वह ; (दे १, ७) ।
अण्णाणि वि [**अज्ञानिन्**] १ ज्ञान-रहित, मूर्ख ; (सुअ १, ७) । २ मिथ्या-ज्ञानी (पंच १) । ३ अज्ञान को ही श्रेयस्कर मानने वाला, अज्ञान-वादी ; (सुअ १, १२) ।
अण्णाणिय वि [**आज्ञानिक**] १ अज्ञान-वादी, अज्ञानवाद का अनुयायी ; (आव ६; सम १०६) । २ मूर्ख, अज्ञानी; (सुअ १, १, २) ।
अण्णाय वि [**अज्ञात**] अ-विदित, नहीं जाना हुआ; (पण्ह १ १) ।
अण्णाय पुं [**अन्याय**] न्याय का अभाव ; (श्रा १२) ।
अण्णाय वि [**दे**] आर्द्र, गिला ; (से ४, ६) ।
अण्णाय वि [**अन्याय्य**] न्याय से च्युत, न्याय-विरुद्ध, " जे विग्गहीए अण्णायभासी, न से समे होइ अझंझपत्ते " (सुअ १, १३) ।
अण्णाय्य (शौ) ऊपर देखो ; (मा २०) ।
अण्णारिच्छ वि [**अन्यादृक्ष**] दूसरे के जैसा ; (प्रामा)।
अण्णारिस वि [**अन्यादृश**] दूसरे के जैसा ; (पि २४५)।
अण्णासय वि [**दे**] आस्तृत, बिछाया हुआ ; (षड्) ।
अण्णिज्जमाण देखो **अण्णे** ।
अण्णिय वि [**अन्वित**] युक्त, सहित; (सुअ १, १० ; नाट)।
अण्णिया स्त्री [**दे**] देखो **अण्णी** ; (दे १, ५१) ।
अण्णिया स्त्री [**अन्निका**] एक विख्यात जैन मुनि की माता का नाम ; (ती ३६) । °**उत्त** पुं [°**पुत्र**] एक विख्यात जैन मुनि ; (ती ३६) ।
अण्णी स्त्री [**दे**] १ देवर की स्त्री ; २ पति की बहिन, ननंद; ३ फूफा, पिता की बहिन ; (दे १, ५१) ।
अण्णु } वि [**अज्ञ**] अजान, निर्बोध, मूर्ख ; (षड् ; गा १८४) ।
अण्णुअ }
अण्णुण्ण वि [**अन्योन्य**] परस्पर, आपस में ; (गउड) ।
अण्णूण वि [**अन्यून**] परिपूर्ण ; (उप पृ २२४) ।
अण्णे सक [**अनु+इ**] अनुसरण करना । अण्णेइ ; (विसे २५२६) । अण्णेंति ; (पि ४६३) । कवकृ— **अण्णिज्जमाण** ; (अन्वीयमान) ; (विपा १, १) ।
अण्णेस सक [**अनु+इष्**] १ खोजना, ढूँढना, तहकीकात करना । २ चाहना, वांछना । ३ प्रार्थना करना । अण्णेसइ ; (पि १६३) । वकृ—**अण्णेसंत, अण्णेसअंत, अण्णेसमाण** ; (महा; काल) ।
अण्णेसण न [**अन्वेषण**] खोज, तलाश, तहकीकात ; (उप ६ टी) ।
अण्णेसणा स्त्री [**अन्वेषणा**] १ खोज, तहकीकात; (प्राप) । २ प्रार्थना ; (आचा) । ३ गृहस्थ से दी जाती भिक्षा का ग्रहण ; (ठा ३, ४) ।
अण्णेसि वि [**अन्वेषिन्**] खोज करने वाला ; (आचा) ।
अण्णेसिय वि [**अन्वेषित**] जिसकी तहकीकात की गई हो वह, " अण्णेसिया सव्वओ तुब्भे न कहिंचि दिट्ठा " (महा) ।
अण्णोण्ण देखो **अण्णुण्ण**, " अण्णोण्णसमणुबद्धं णिच्छयओ भणियविसयं तु " (पंचा ६ ; स्वप्न ५२) ।
अण्णोसरिअ वि [**दे**] अतिक्रान्त, उल्लङ्घित ; (दे १, ३६) ।
अण्ह सक [**भुज्**] १ खाना, भोजन करना । २ पालन करना । ३ ग्रहण करना । अण्हइ ; (हे ४, ११०; षड्) । अण्हाइ ; (औप) । अण्हए ; (कुमा) ।

°**अण्ह** न [**अहन्**] दिवस, दिन " पुव्वावरण्हकालसमयंसि " (उवा) ।
अण्हग } पुं [**आश्रव**] कर्म-बन्ध के कारण हिंसादि ;
अण्हय } (पण्ह १, १; ५ ; औप) ।
°**अण्हा** स्त्री [**तृष्णा**] तृषा, प्यास ; (गा ६३) ।
अण्हेअअ वि [**दे**] भ्रान्त, भूला हुआ ; (दे १, २१) ।
अतक्किय वि [**अतर्कित**] १ अचिन्तित, आकस्मिक, " अतक्कियमेव एरिसं वसणमहं पत्ता " (महा) । २ ठीक २ नहीं देखा हुआ, अपरिलक्षित ; (वव ८) । ३ क्रिवि. " अतक्कियं चेच......विहरिओ रायहत्थी " (महा) ।
अतड त्रि [**अतट**] छोटा किनारा " अतडुववातो सो चेव मग्गो " (बृह १) ।
अतण्हाअ वि [**अतृष्णाक**] तृष्णा-रहित, निःस्पृह; (अच्चु ६४) ।
अतत्त न [**अतत्व**] असत्य, झूठ, गैरव्याजवी ; (उप ५०८) ।
अतत्थ वि [**अत्रस्त**] नहीं डरा हुआ ; निर्भीक ; (कुमा) ।
अतत्थ वि [**अतथ्य**] असत्य, झूठा ; (आचा) ।
अतर देखो **अयर** ; (पव १ ; कम्म ५ ; भवि) ।
अतव पुंन [**अतपस्**] १ तपश्चर्या का अभाव ; (उत्त २३) । २ वि. तप-रहित ; (बृह ४) ।
अतव पुं [**अस्तव**] अ-प्रशंसा, निन्दा ; (कुमा) ।
अतसी देखो **अयसी** ; (पण्ण १) ।
अतह वि [**अतथ**] असत्य, अ-वास्तविक, झूठा ; (सूत्र १, १, २ ; आचा) ।
अतह वि [**अतथा**] उस माफिक नहीं,
" जाओ चिय कायव्वे उच्छाहेंति गरुयाण कित्तीओ ।
ताओ चिय अतह-णिवेयणेण अलसेंति हिययाइं " (गउड) ।
अतार वि [**अतार**] तरने को अशक्य; (णाया १, ६; १४) ।
अतारिम वि [**अतारिम**] ऊपर देखो ; (सूत्र १, ३, २) ।
अतिउट्ट अक [**अति+त्रुट्**] १ खूब टूटना ; टूट जाना ; २ सर्व बन्धन से मुक्त होना । अतिउट्टइ ; (सूत्र १, १५, ५) ।
अतिउट्ट सक [**अति+वृत्**] १ उल्लंघन करना । २ व्याप्त होना । °तिउट्टइ ; (सूत्र १, १५, ६ टी) ।
अतिउट्ट वि [**अतिवृत्त**] १ अतिक्रान्त ; २ अनुगत, व्याप्त ; " जंसी गुहाए जलणेतिउट्टे अविजाणओ डज्झइ लुत्तपण्णो " (सूत्र १, ५, १, १२) ।
अतित्थ न [**अतीर्थ**] १ तीर्थ (चतुर्विध संघ) का अभाव, तीर्थ की अनुत्पत्ति ; २ वह काल, जिसमें तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका अभाव रहा हो ; (पण्ण १) । °**सिद्ध** वि [°**सिद्ध**] अतीर्थ काल में जो मुक्त हुआ हो वह " अतित्थसिद्धा य मरुदेवी " (नव ५६) ।
अतिहि देखो **अइहि** ।
अतीगाढ वि [**अतिगाढ**] १ अति-निबिड ; २ क्रिवि. अत्यंत, बहुत " अतीगाढं भीओ जक्खाहिवो " (पउम ८, ११३) ।
अतुल वि [**अतुल**] अनुपम, असाधारण ; (पण्ह १, १) ।
अतुलिय वि [**अतुलित**] असाधारण, अद्वितीय ; (भवि) ।
अत्त देखो **अप्प=आत्मन्** ; (सुर ३, १७४ ; सम ५७ ; णंदि) । °**लाभ** पुं [°**लाभ**] स्वरूप की प्राप्ति, उत्पत्ति; (कम्म २, २५) ।
अत्त वि [**आर्त्त**] पीडित, दुःखित, हैरान; (सुर ३,१४३; कुमा) ।
अत्त वि [**आत्त**] १ गृहीत, लिया हुआ ; (णाया १, १) । २ स्वीकृत, मंजुर किया हुआ ; (ठा २, ३) । ३ पुं. ज्ञानी मुनि ; (बृह १) ।
अत्त वि [**आप्त**] १ ज्ञानादि-गुण-संपन्न, गुणी ; २ राग-द्वेष वर्जित, वीतराग ; ३ प्रायश्चित्त-दाता गुरु,
" नाणमादीणि अत्ताणि, जेण अत्तो उ सो भवे ।
रागद्दोसपहीणो वा, जे व इट्ठा विसोहिए " (वव १०) ।
४ मोक्ष, मुक्ति; (सूत्र १, १०) । ५ एकान्त हितकर; (भग १४, ६) । ६ प्राप्त, मिला हुआ ; (वव १०) " अत्तप्प-सरणलेस्से " (उत्त १२) ।
अत्त वि [**आत्र**] दुःख का नाश करने वाला, सुख का उत्पादक ; (भग १४, ६) ।
अत्त अ [**अत्र**] यहां, इस स्थान में ; (नाट) । °**भव** वि [°**भवत्**] पूज्य, माननीय ; (अभि ६१ ; पि २६३) ।
अत्तट्ठ वि [**आत्मार्थ**] १ आत्मीय, स्वकीय ; (धर्म २) । २ पुं. स्वार्थ " इह कामनियत्तस्स अत्तट्ठे नावरज्झइ " (उत्त ८) ।
अत्तट्ठिय वि [**आत्मार्थिक**] १ आत्मीय ; २ जो अपने लिए किया गया हो, " उवक्खडं भोयण माहणाणं अत्तट्ठियं सिद्धमहेगपक्खं " (उत्त १२) ।
अत्तण } देखो **अप्प=आत्मन्** ; (मृच्छ २३६) ।
अत्तणअ } °**केरक** वि [**आत्मीय**] निजीय, स्वकीय (नाट; पि ४०१) ।

अत्तणअ } (शौ) वि [**आत्मीय**] स्वकीय, अपना,
अत्तणक } निजका ; (पि २७७ ; नाट)।
अत्तणिज्जिय वि [**आत्मीय**] स्वकीय ; (ठा ३, १)।
अत्तणीअ (शौ) ऊपर देखो; (स्वप्न २७)।
अत्तमाण देखो **आवत्त**=आ+वृत्।
अत्तय पुं [**आत्मज**] पुत्र, लड़का। °**या** स्त्री [°**जा**] पुत्री, लड़की ; (विपा १, १)।
अत्तव्व वि [**अत्तव्य**] खाने लायक, भक्ष्य ; (नाट)।
अत्ता स्त्री [**दे**] १ माता, माँ ; (दे १, ५१ ; चारु ७०)। २ सासू ; (दे १, ५१; गा ६६७; हेका ३०)। ३ फूफा; ४ सखी ; (दे १, ५१)।
°**अत्ता** देखो **जत्ता**; (प्रति ८२)।
अत्ताण देखो **अत्त**=आत्मन्; (पि ४०१)
अत्ताण वि [**अत्राण**] १ शरण-रहित, रक्षक-वर्जित; (पगह १,१)। २ पुं कन्धे पर लट्ठी रख कर चलने वाला मुसाफिर; ३ फटे-टुटे कपड़े पहन कर मुसाफिरी करने वाला यात्री; (बृह १)।
अत्ति पुं [**अत्रि**] इस नाम का एक ऋषि; (गउड)।
अत्ति स्त्री [**अर्त्ति**] पीड़ा, दुःख; (कुमा ; सुपा १८५)। °**हर** वि [°**हर**] पीड़ा-नाशक, दुःख का नाश करने वाला; (अभि १०३)।
अत्तिहरी स्त्री [**दे**] दूती, समाचार पहुँचाने वाली स्त्री; (षड्)।
अत्तीकर सक [**आत्मी+कृ**] अपने आधीन करना, वश करना। अत्तीकरेइ; वकृ—**अत्तीकरंत**; (निचू ४)।
अत्तीकरण न [**आत्मीकरण**] अपने वश करना; (निचू ४)।
अत्तुक्करिस } पुं [**आत्मोत्कर्ष**] अभिमान, गर्व,
अत्तुक्कोस } "तम्हा अत्तुक्करिसो वज्जेयव्वो जइजणेणं" (सूअ १,१३; सम ७१)।
अत्तुक्कोसिय वि [**आत्मोत्कर्षिक**] गर्विष्ठ, अभिमानी; (औप)।
अत्तेय पुं [**आत्रेय**] १ अत्रि ऋषि का पुत्र; (पि १०; ८३)। २ एक जैन मुनि; (विसे २७६६)।
अत्तो अ [**अतस्**] १ इससे, इस हेतु से; (गउड)। २ यहाँ से; (प्रामा)।
अत्थ देखो **अट्ठ**=अर्थ; (कुमा; उप ७२८ ; ८८४ टी; जी १; प्रासू ६५; गउड) "अरोइअत्थे कहिए विलावो" (गोय ७) "अत्थसद्दो फलत्थोयं" (विसे १०३६ ; १२४३)। °**जोणि** स्त्री [°**योनि**] धनोपार्जन का उपाय, साम-दाम दगड-रूप अर्थ-नीति; (ठा ३,३)। °**णय** पुं [°**नय**] शब्द को छोड़ अर्थ को ही मुख्य वस्तु मानने वाला पक्ष ; (अणु)। °**सत्थ** न [**शास्त्र**] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र; (णाया १, १)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ धनी; २ कुबेर ; (वव ७)। °**वाय** पुं [°**वाद**] १ गुण-वर्णन ; २ दोष-निरूपण; ३ गुण-वाचक शब्द ; ४ दोष-वाचक शब्द; (विसे)। °**वि** वि [**वित्**] अर्थ का जानकार; (पिंड १ भा)। °**सिद्ध** वि [°**सिद्ध**] १ प्रभूत धन वाला; (जं ७)। २ पुं. ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव; (तित्थ)। °**लिय** न [°**लीक**] धन के लिए असत्य बोलना; (पगह १, २)। °**लोयण** न [°**लोचन**] पदार्थ का सामान्य ज्ञान (आचू १)। °**लोयण** न [°**लोकन**] पदार्थ का निरीक्षण,
"अत्थालोयण-तरला, इयरकईणं भमंति बुद्धीओ।
अत्थच्चेय निरारम्भमेंति हिययं कइन्दाणं ॥" (गउड)।
अत्थ पुं [**अस्त**] १ जहां सूर्य अस्त होता है वह पर्वत; (से १०,१०)। २ मेरु पर्वत; (सम ६५)। ३ वि. अविद्यमान; (णाया १,१३)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] अस्ताचल; (सुर ३, २७७; पउम १६,४५)। °**सेल** पुं [°**शैल**] अस्ताचल ; (सुर ३, २२६)। °**चल** पुं [°**चल**] अस्त-गिरि ; (कप्पू)।
अत्थ न [**अस्त्र**] हथियार, आयुध; (पउम ८,५०; से १४ ६१)।
अत्थ सक [**अर्थय्**] मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना, विज्ञप्ति करना। अत्थयए; (निचू ४)।
अत्थ अक [**स्था**] बैठना। अत्थइ; (आरा ७१)।
अत्थ }
अत्थं } देखो **अत्त**=अत्; (कप्प; पि २६३; ३६१)।
अत्थंडिल वि [**अस्थण्डिल**] साधुओं के रहने के लिए अयोग्य स्थान, क्षुद्र जन्तुओं से व्याप्त स्थान; (ओघ १३)।
अत्थंत वकृ [**अस्तं यत्**] अस्त होता हुआ; (वज्जा २२)।
अत्थक्क न [**दे**] १ अकाण्ड, अकस्मात्, बे-समय; (उप ३३०; से ११,२४; श्रा ३०; भवि)। अत्थक्कगज्जिउब्भंत-हित्थहिअआ पहिअजाआ" (गा ३८६)। २ वि. अखिन्न; (वज्जा ६)। ३ क्रिवि. अनवरत, हमेशा; (गउड)।

अत्थग्घ वि [**दे**] १ मध्य-वर्ती, बीच का "सभए अत्थग्घे वा ओइगणेसु घसं पट्ट" (ओघ ३४)। २ अगाध, गंभीर; ३ न. लम्बाई, आयाम; ४ स्थान, जगह; (दे १,५४)।

अत्थण न [**अर्थन**] प्रार्थना, याचना; (उप ७२८ टी)।

अत्थत्थि वि [**अर्थार्थिन्**] धन की इच्छा वाला; (उप १३९ टी)।

अत्थम अक [**अस्तम् + इ**] अस्त होना, अदृश्य होना। अत्थमइ; (पि ५५८)। वकृ—**अत्थमंत**; (पउम ८२, ५९)।

अत्थम न [**अस्तमयन**] अस्त हाना, अदृश्य होना; (ओघ ५०७; से ८, ८५; गा २८४)।

अत्थमिय वि [**अस्तमित**] १ अस्त हुआ, डुब गया, अदृश्य हुआ; (ओघ ५०७; महा; सुपा १५५)। २ हीन. हानि-प्राप्त; (ठा ४,३)।

अत्थयारिआ स्त्री [**दे**] सखी, वयस्या; (दे १, १६)।

अत्थर सक [**आ + स्तृ**] बिछाना, शय्या करना, पसारना। अत्थरइ; (उव)। संकृ—**अत्थरिऊण**; (महा)।

अत्थरण न [**आस्तरण**] १ बिछौना, शय्या; (से १४, ५०)। २ बिछाना, शय्या करना; (विसे २३२२)।

अत्थरय वि [**आस्तरक**] १ आच्छादन करने वाला; (राय)। २ पुं. बिछौने के ऊपर का वस्त्र; (भग ११, ११; कप्प)।

अत्थरय वि [**अस्तरजस्क**] निर्मल, शुद्ध; (भग ११, ११)।

अत्थवण देखो **अत्थमण** ; (भवि)।

अत्था देखो **अट्ठा**=आस्था।

अत्था } सक [**अस्ताय्**] अस्त होना, डूब जाना, अदृ-
अत्थाअ } श्य होना। अत्थाइ, अत्थाए; (पउम ७३, ३५)। अत्थाअंति; (से ७,२३)। वकृ—**अत्था-अंत**; (से ७, ६६)।

अत्थाअ वि [**अस्तमित**] अस्त हुआ, डूबा हुआ "ताव-च्चिय दिवसयरो अत्थाओ विगयकिरणसंघाओ" (पउम १०, ६९; से ९,५२)।

अत्थाइया स्त्री [**दे**] गोष्ठी-मण्डप; (स ३६)।

अत्थाण न [**आस्थान**] सभा, सभा-स्थान; (सुर १, ८०)।

अत्थाणिय वि [**अस्थानिन्**] गैर-स्थान में लगा हुआ, "अत्थाणियनयणहिं" (भवि)।

अत्थाणी स्त्री [**आस्थानी**] सभा-स्थान; (कुमा)।

अत्थाम वि [**अस्थामन्**] बल-रहित, निर्बल; (णाया १,१)।

अत्थार पुं [**दे**] सहायता, साहाय्य; (दे १,९; पाअ)।

अत्थारिय पुं [**दे**] नौकर, कर्मचारी; (वव ६)।

अत्थावग्गह देखो **अत्थुग्गह**; (पण्ण ५)।

अत्थावत्ति स्त्री [**अर्थापत्ति**] अनुक्त अर्थ को अटकल से समझना, एक प्रकार का अनुमान-ज्ञान, जैसे 'देवदत्त पुष्ट है और दिन में नहीं खाता है' इस वाक्य से 'देवदत्त रात में खाता है' ऐसा अनुक्त अर्थ का ज्ञान; (उप ९९८)।

अत्थाह वि [**अस्ताघ**] १ अथाह, थाह-रहित, गंभीर ; (णाया १, १४)। २ नासिका के ऊपर का भाग भो जिसमें डूब सके इतना गहरा जलाशय ; (बृह ४)। ३ पुं. अतीत चौवीसी में भारत में समुत्पन्न इस नाम के एक तीर्थकर-देव ; (पव ६)।

अत्थाह वि [**दे**] देखो **अत्थग्घ** ; (दे १,५४ ; भवि)।

अत्थि वि [**अर्थिन्**] १ याचक, माँगने वाला ; (सुर १०, १००)। २ धनी, धन वाला ; (पंचा)। ३ मालिक, स्वामी ; (विसे)। ४ गरजू, चाहने वाला;

"धणओ धणत्थियाणं, कामत्थीणं च सव्वकामकरो।
सग्गापवग्गसंगमहेऊ जिणदेसिओ धम्मो ॥" (महा)।

अत्थि न [**अस्थि**] हाड, हड्डी ; (महा)।

अत्थि अ [**अस्ति**] १ सत्व-सूचक अव्यय, है, "अत्थे-गइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया" (औप); "अत्थि णं भंते ! विमाणाइं" (जीव ३)। २ प्रदेश, अवयव "चत्तारि अत्थिकाया" (ठा ४, ४)। °**अवत्तव्व** वि [°**अवक्तव्य**] सप्तभङ्गी का पांचवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्य आदि की अपेक्षा से विद्यमान और एक ही साथ कहने को अशक्य पदार्थ,

"सब्भावे आइट्ठो देसो देसो अ उभयहा जस्स।
तं अत्थिअवत्तव्वं च होइ दविअं विअप्पवसा" (सम्म ३८)।

°**काय** पुं [°**काय**] प्रदेशों का—अवयवों का समूह ; (सम १०)। °**णत्थवत्तव्व** वि [°**नास्त्यवक्तव्य**] सप्तभङ्गी का सातवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान, परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान और एक ही समय में दोनों धर्मों से कहने को अशक्य पदार्थ,

"सब्भावासब्भावे, देसो देसो अ उभयहा जस्स।
तं अत्थिणत्थवत्तव्वयं च दविअं विअप्पवसा" (सम्म ४०)।

°त्त न [°त्व] सत्त्व, विद्यमानता, हयाती; (सुर २, १४२)। °त्ता स्त्री [°ता] सत्त्व, हयाती; (उप पृ ३७४)। °त्तिनय पुं [°इतिनय] द्रव्यार्थिक नय; (विसे ५३७)। °नत्थि वि (°नास्ति) सप्तभङ्गी का तीसरा भङ्ग—प्रकार, स्वद्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान और परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान वस्तु,
"अह देसो सब्भावे देसोऽसब्भावपज्जवे णिअओ।
तं दवियमत्थिनत्थि अ, आएसविसेसिअं जम्हा"
(सम्म ३७)।

°नत्थिप्पवाय न [°नास्तिप्रवाद] बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग, चौथा पूर्व; (सम २६)।

अत्थिक्क न [आस्तिक्य] आस्तिकता, आत्मा-परलोक आदि पर विश्वास; (श्रा ६; पुप्फ ११०)।

अत्थिय देखो अत्थि=अर्थिन्; (महा; औप)।

अत्थिय वि [अर्थिक] धनी, धनवान्; (हे २, १५९)

अत्थिय न [अस्थिक] १ हड्डी, हाड। २ पुं. वृक्ष-विशेष; ३ न. बहु बीज वाला फल-विशेष; (पराण १)।

अत्थिय वि [आस्तिक] आत्मा, परलोक आदि की हयाती पर श्रद्धा रखने वाला; (धर्म २)।

अत्थिर देखो अथिर; (पंचा १२)।

अत्थीकर सक [अर्थी+कृ] प्रार्थना करना, याचना करना। अत्थीकरेइ; (निचू ४)। वकृ—अत्थीकरंत; (निचू ४)।

अत्थीकरण न [अर्थीकरण] प्रार्थना, याचना; (निचू ४)।

अत्थु सक [आ+स्तृ] बिछाना, शय्या करना। कर्म—अत्थुव्वइ; कवकृ— अत्थुव्वंत; (विसे २३२१)।

अत्थुअ वि [आस्तृत] बिछाया हुआ; (पाअ; विसे २३२१)।

अत्थुग्गह पुं [अर्थावग्रह] इन्द्रियाँ और मन द्वारा होने वाला ज्ञान-विशेष, निर्विकल्पक ज्ञान; (सम ११; ठा २, १)।

अत्थुग्गहण न [अर्थावग्रहण] फल का निश्चय; (भग ११, ११)।

अत्थुड वि [दे] लघु, छोटा; (दे १, ६)।

अत्थुरण न [दे. आस्तरण] बिछौना; (स ६७)।

अत्थुरिय वि [दे. आस्तृत] बिछाया हुआ; (स २३६; दे १, ११३)।

अत्थुल्लड न [दे] भल्लातक, भिलावाँ वृक्ष का फल; (दे १, २३)।

अत्थेक्क वि [दे] आकस्मिक, अचिन्तित; (से १२, ४७)।

अत्थोग्गह देखो अत्थुग्गह; (सम ११)।

अत्थोग्गहण देखो अत्थुग्गहण; (भग ११, ११)।

अत्थोडिय वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ; (महा)।

अत्थोभय वि [अस्तोभक] 'उत' 'वै' आदि निरर्थक शब्दों के प्रयोग से अदूषित (सूत्र); (बृह १)।

अत्थोवग्गह देखो अत्थुग्गह; (पराण १५)।

अथक्क न [दे] १ अकाण्ड, अनवसर, अकस्मात्; (षड्)। २ वि. पसरने वाला, फैलने वाला; (कुमा)।

अथव्वण पुं [अथर्वण] चौथा वेद-शास्त्र; (कप्प; णाया १, ५)।

अथिर वि [अस्थिर] १ चंचल, चपल; (कुमा)। २ अनित्य, विनश्वर; (कुमा)। ३ अदृढ, शिथिल; (ओघ) ४ निर्बल; (वव २)। ५ मजबूती से नहीं बैठा हुआ, नहीं जमा हुआ (अभ्यास), "अथिरस्स पुव्वगहियस्स, वत्तणा जं इह थिरीकरणं" (पंचा १२)। °णाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद; (सम ६७)।

अद सक [अद्] खाना, भोजन करना। अदइ, अदए; (षड्)।

अदंसण देखो अद्दंसण; (पंचभा)।

अदंसण पुं [दे] चोर, डाकू; (दे १, २६; षड्)।

अदंसिया स्त्री [अदंशिका] एक प्रकार की मिष्ट चीज; (पराण १७)।

अदक्खु वि [अदृष्ट] १ नहीं देखा हुआ; २ असर्वज्ञ; (सूअ १, २, ३)।

अदक्खु वि [अदक्ष] अनिपुण, अकुशल; (सूअ १, २, ३)।

अदक्खु वि [अपश्य] १ नहीं देखने वाला, अन्धा; २ असर्वज्ञ; "अदक्खुव! दक्खुवाहियं सद्दहसु अदक्खुदंसणा" (सूअ १, २, ३)।

अदण न [अदन] भोजन; (बृह १)।

अदत्त वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ; (पराह १, ३)। °हार वि [°हार] चोर; (आचा)। °हारि वि [°हारिन्] चोर; (सूअ १, ५, १)। °दाण न [°दान] चोरी; (सम १०)। °दाणवेरमण न [°दानविरमण] चोरी से निवृत्ति, तृतीय व्रत; (पराह २, ३)।

अदब्भ वि [अदभ्र] अनल्प, बहुत; (जं ३)।

अदय वि [अदय] निर्दय, निष्ठुर; (निचू २)।

अदिइ देखो **अइइ** ; (ठा २, ३)।

अदिण्ण देखो **अदत्त** ; (ठा १)।

अदित्त वि [**अदृप्त**] १ दर्प-रहित, नम्र ; (बृह १)। २ अहिंसक ; (ओघ ३०२)।

अदिन्न देखो **अदत्त** ; (सम १०)।

अदिस्स देखो **अद्दिस्स** ; (सम ६० ; सुपा १५३)।

अदिहि स्त्री [**अधृति**] अधीराई, धीरज का अभाव ; (पाअ)।

अदीण वि [**अदीन**] दीनता-रहित। °**सत्तु** पुं [°**शत्रु**] हस्तिनापुर का एक राजा ; (णाया १, ८)।

अदु अ [**दे**] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब ; (आचा)। २ इस से ; (सूअ १, २, २)।

अदुत्तरं अ [**दे**] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब, बाद ; (णाया १, १)।

अदुय न [**अद्रुत**] अ-शीघ्र, धीरे २ ; (भग ७, ६)। °**बंधण** न [°**बन्धन**] दीर्घ काल के लिए बन्धन ; (सूअ २, २)।

अदुव } **अदुवा** } अ [**दे**] या, अथवा, और ; "हिंसेज्ज पाणभूयाइं, तसे अदुव थावरे" (दस ५, ५ ; आचा)।

अदोलि } **अदोलिर** } वि [**अदोलिन्**] स्थिर, निश्चल ; (कुमा)।

अद्द वि [**आर्द्र**] १ गिला, भींजा हुआ, अकठिन ; (कुमा)। २ पुं. इस नाम का एक राजा; ३ एक प्रसिद्ध राज-कुमार और पीछे से जैन मुनि ; ४ वि. आर्द्र राजा के वंशज; ५ नगर-विशेष ; (सूअ २, ६)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक राज-कुमार और बाद में जैन मुनि "अद्दकुमारो दढप्पहारो अ" (पडि)। °**मुत्था** स्त्री [°**मुस्ता**] कन्द-विशेष, नागर मोथा ; (श्रा २०)। °**मलग** न [°**मलक**] १ हरा आमला ; २ पीलु-वृक्ष की कली ; (धर्म २)। ३ शणवृक्ष की कली ; (पव ४)। °**रिट्ठ** पुं [°**रिष्ट**] कमल कौआ (आवम)।

अद्द पुं [**अब्द**] १ मेघ, वर्षा, वारिस ; (हे २, ७९)। २ वर्ष, संवत्सर, संवत् ; (सुर १३, ७०)।

अद्द पुं [**अर्द**] आकाश ; (भग २०, २)।

अद्द सक [**अर्द्**] मारना, पीटना ; (वव १०)।

अद्दइअ न [**अद्वैत**] १ भेद का अभाव ; २ वि. भेद-रहित ब्रह्म वगैरः (नाट)।

अद्दइज्ज वि [**आर्द्रीय**] १ आर्द्रकुमार-संबन्धी ; २ इस नाम का 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन; (सूअ २, ६)।

अद्दंसण न [**अदर्शन**] १ दर्शन का निषेध, नहीं देखना ; (सुर ७, २४८)। २ वि. परोक्ष, जिसका दर्शन न हो "एक्कपएच्चिय हाहिंति मज्झ अद्दंसणा इण्हिं" (सुपा ६१७)। ३ नहीं देखने वाला, अन्धा ; ४ 'थीणद्धी' निद्रा वाला ; (गच्छ १ ; पव १०७)। °**भूअ,** °**हूय** वि [°**भूत**] जो अदृश्य हुआ हो ; (सुर १०, ५६ ; महा)।

अद्दण } **अद्दण्ण** } वि [**दे**] आकुल, व्याकुल; (दे १, १५ ; बृह १; निचू १०)।

अद्दव वि [**आद्रव**] गाला हुआ ; (आव ६)।

अद्दव्व न [**अद्रव्य**] अवस्तु, वस्तु का अभाव ; (पंचा ३)।

अद्दह सक [**आ+द्रह्**] उबालना, पानी-तैल वगैरः को खूब गरम करना। अद्दहेइ, अद्दहेमि ; संकृ—**अद्दहेत्ता** ; (उवा)।

अद्दहिय वि [**आहित**] रखा हुआ, स्थापित ; (विपा १, ६)।

अद्दा स्त्री [**आर्द्रा**] १ नक्षत्र-विशेष ; (सम २)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

अद्दाअ पुं [**दे**] १ आदर्श, दर्पण ; (दे १, १४ ; पण्ण १५ ; निचू १३)। °**पसिण** पुं [°**प्रश्न**] विद्या-विशेष, जिससे दर्पण में देवता का आगमन होता है ; (ठा १०)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] चिकित्सा का एक प्रकार, जिससे बिमार को दर्पण में प्रतिबिम्बित करानेसे वह नीरोग होता है ; (वव ५)।

अद्दाइअ वि [**दे**] आदर्श वाला, आदर्श से पवित्र; (बृह १)

अद्दाग [**दे**] देखो **अद्दाअ** ; (सम १२३)।

अद्दि पुं [**अद्रि**] पहाड़, पर्वत ; (गउड)।

अद्दि पुंन [**दे**] गाडी का चाकड़ा ; "सगडद्दिसंठियाओ महा-दिसाओ हवंति चत्तारि" (विसे २७००)।

अद्दिट्ठ वि [**अदृष्ट**] १ नहीं देखा हुआ ; (सुर १, १७२)। २ दर्शन का अविषय ; (सम्म ६६)।

अद्दिय वि [**आर्द्रित**] आर्द्र किया हुआ, भींजाया हुआ ; (विक्र २३)।

अद्दिय वि [**अर्दित**] पीटा हुआ, पीडित ; (वव १०)।

अद्दिस्स वि [**अदृश्य**] देखने को अयोग्य या अशक्य ; (सुर ६, १२० ; सुपा ८५ ; श्रा २७)।

अद्दिस्संत } **अद्दिस्समाण** } वकृ [**अदृश्यमान**] नहीं दिखाता हुआ ; (सुपा १५४ ; ४५७)।

अद्दीण वि [अद्दीण] क्षोभ को अप्राप्त, अक्षुब्ध, निर्भीक ; (पण्ह २, १) ।
अद्दीण देखो **अद्दीण** ; (ओघ ५३७) ।
अद्दुदुमाअ वि [दे] पूर्ण, भरा हुआ; (षड्) ।
अद्दुदेस वि [अद्रश्य] देखने का अशक्य; (स १७०) ।
अद्दुदेसीकारिणी स्त्री [अद्रश्यीकारिणी] अदृश्य बनाने वाली विद्या; (सुपा ४५४) ।
अद्दुदेस्सीकरण वि [अद्रश्योकरण] १ अदृश्य करना, २ अदृश्य करने वाली विद्या "किंपुण विज्जासिज्झा अद्दस्सीकरणसंगओ वावि" (सुपा ४५५) ।
अद्दोहि वि [अद्रोहिन्] द्रोह-रहित, द्वेष-वर्जित; (धर्म ३) ।
अद्ध पुंन [अर्ध] १ आधा; (कुमा) । २ खण्ड, अंश; (पि ४०२) । °**करिस** पुं [°कर्ष] परिमाण-विशेष, पल का आठवाँ भाग; (अणु) । °**कुडव,** °**कुलव** पुं [°कुडव, °कुलव] एक प्रकार का धान्य का परिमाण; (राय) । °**क्खेत्त** न [°क्षेत्र] एक अहोरात्र में चन्द्र के साथ योग प्राप्त करने वाला नक्षत्र; (चंद १०) । °**खल्ला** स्त्री [°खल्वा] एक प्रकार का जूता; (बृह ३) । °**घडय** पुं [°घटक] आधा परिमाण वाला घडा, छोटा घडा; (उवा) । °**चंद** पुं [°चन्द्र] १ आधा चन्द्र; (गा ५७१) । २ गल-हस्त, गला पकड़ कर बाहर करना; (उप ७२८ टी) । ३ न. एक हथियार; (उप पृ ३६५) । ४ अर्ध चन्द्र के आकार वाला सोपान; (णाया १, १) । ५ एक जात का बाण "एसा तुह तिक्खेणं सीसं छिंदामि अद्धचंदेण" (सुर ८, ३७) । °**चक्कवाल** न [°चक्रवाल] गति-विशेष; (ठा ७) । °**चक्कि** पुं [°चक्रिन्] चक्रवर्ती राजा से अर्ध विभूति वाला राजा, वासुदेव; (कम्म १, १२) । °**च्छट्ठ,** °**छट्ठ** वि [°षष्ठ] साढ़े पांच; (पि ४५०; सम १००) । °**ट्ठम** वि [°ष्टम] साढ़े सात; (ठा ६) । °**णाराय** न [°नाराच] चौथा संहनन, शरीर के हाड़ों की रचना-विशेष; (जीव १) । °**णारीसर** पुं [°नारीश्वर] शिव, महादेव; (कप्पू) । °**तइय** वि [°तृतीय] ढाई; (पउम ४८, ३५) । °**तेरस** वि [°त्रयोदश] साढ़े बारह; (भग) । °**तेवन्न** वि [°त्रिपञ्चाश] साढ़े बावन्न ; (सम १३४) । °**द्ध** वि [°र्ध] चौथा भाग, पौआ; (बृह ३) । °**नवम** वि [°नवम] साढ़े आठ; (पि ४५०) । °**नाराय** देखो °**णाराय;** (कम्म १, ३८) । °**पंचम** वि [°पञ्चम] साढ़े चार; (सम १०२) । °**पलिअंक** वि [°पर्यङ्क] आसन-विशेष; (ठा ५, १) । °**पहर** पुं [°प्रहर] ज्यौतिष शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग; (गण १८) । °**बब्बर** पुं [°बर्बर] देश-विशेष; (पउम २७, ५) । °**मागहा,** °**ही** स्त्री [°मागधी] जैन प्राचीन साहित्य की प्राकृत भाषा, जिस में मागधी भाषा के भी कोई २ नियम का अनुसरण किया गया है "पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं" (हे ४, २८७; पि १६; सम ६०; पउम २, ३४] °**मास** पुं [°मास] पक्ष; पन्नरह दिन; (दं १०) । °**मासिय** वि [°मासिक] पाक्षिक,पक्ष-संबन्धी; (महा) । °**यंद** देखो °**चंद;** (उप ७२८ टी) । °**रज्जिय** वि [°राज्यिक] राज्य का आधा हिस्सेदार, अर्ध राज्य का मालिक; (विपा १,६) । °**रत्त** पुं [°रात्र] मध्य रात्रि का समय; निशीथ ; (गा २३१) । °**वेयाली** स्त्री [°वेताली] विद्या-विशेष ; (सूअ २, २) । °**संकासिया** स्त्री [°सांकाश्यिका] एक राज-कन्या का नाम ; (आव ४) । °**सम** न [°सम] एक वृत्त, छन्द-विशेष ; (ठा ७) । °**हार** पुं [°हार] १ नवसरा हार ; (राय; औप) । २ इस नाम का एक द्वीप ; ३ समुद्र-विशेष ; (जीव ३) । °**हारभद्द** पुं [°हारभद्र] अर्धहार-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**हारमहाभद्द** पुं [°**हारमहाभद्र**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (जीव ३) । °**हारमहावर** पुं [°हारमहावर] अर्धहार समुद्र का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३) । °**हारवर** पुं [°हारवर] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; ३ उनका अधिष्ठायक देव ; (जीव ३) । °**हारवरभद्द** पुं [°हारवरभद्र] अर्धहारवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**हारवरमहावर** पुं [°हारवरमहावर] अर्धहारवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**हारोभास** पुं [°हारावभास] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (जीव ३) । °**हारोभासभद्द** पुं [°हारावभासभद्र] अर्धहारावभास-नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**हारोभासमहाभद्द** पुं [°हारावभासमहाभद्र] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (जीव ३) । °**हारोभासमहावर** पुं [°हारावभासमहावर] अर्धहारावभास-नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**हारोभासवर** पुं [°हाराव-

भासवर] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (जीव ३) । °**ढ़य** पुं [°**ढ़क**] एक प्रकार का परिमाण, आढ़क का आधा भाग ; (ठा ३, १) ।

अद्ध पुं [**अध्वन्**] मार्ग, रास्ता ; (महा; आचा) ।

अद्धंत पुं [**दे**] १ पर्यन्त, अन्त भाग ; (दे १, १८ ; से ६, ३२ ; पात्र) "भरिज्जंतसिद्धपहद्धंतो (विक १०१) । २ पुं.व. कतिपय, कइएक ; (से १३, ३२) ।

अद्धक्खण न [**दे**] १ प्रतीक्षा करना ; राह देखना ; (दे १, ३४) । २ परीक्षा करना ; (दे १, ३४) ।

अद्धक्खिअ न [**दे**] १ संज्ञा करना ; इसारा करना, संकेत करना ; (दे १, ३४) ।

अद्धक्खिअ वि [**अर्धाक्षिक**] विकृत आंख वाला ; (महानि ३) ।

अद्धजंघा } **अद्धजंघी** } स्त्री [**दे. अर्धजङ्घा**] एक प्रकारका जूता, मोचक-नामक जूता, जिसे गुजराती में 'मोजड़ी' कहते हैं ; (दे १, ३३ ; २, ५ ; ६, १३६) ।

अद्धद्धा स्त्री [**दे. अद्धाद्धा**] दिन अथवा रात्रि का एक भाग ; (सत्त ६ टी) ।

अद्धर पुं [**अध्वर**] यज्ञ, याग ; (पात्र) ।

अद्धविआर न [**दे**] १ मण्डन, भूषा, "मा कुण अद्धविआरं" (दे १, ४३) । २ मंडल, छोटा मंडल ; (दे १, ४३)।

अद्धा स्त्री [**दे. अद्धा**] १ काल, समय, वख्त; (ठा २,१ ; नव ४२) । २ संकेत; (भग ११, ११) । ३ लब्धि, शक्ति-विशेष; (विसे) । ४ अ. तत्वतः, वस्तुतः, ५ साक्षात् प्रत्यक्ष; (पिंग) । ६ दिवस ; ७ रात्रि ; (सत्त ६ टी) । °**काल** पुं (°**काल**) सूर्य आदि की क्रिया (परिभ्रमण) से व्यक्त होने वाला समय "सूरकिरियाविसिद्वो गोदोहाइकिरियासु निरवेक्खो । अद्धाकालो भरणई" (विसे) । °**छेय** पुं [°**छेद**] समय का एक छोटा परिमाण, दो आवलिका परिमित काल ; (पंच) । °**पच्चक्खाण** न [°**प्रत्याख्यान**] अमुक समय के लिए कोई व्रत या नियम करना ; (आचू ६) । °**मीसय** न [°**मिश्रक**] एक प्रकार की सत्य-मृषा भाषा ; (ठा १०) । **मीसिया** स्त्री [°**मिश्रिता**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (परण ११) । °**समय** पुं [°**समय**] सर्व-सूक्ष्म काल ; (परण ४) ।

अद्धाण पुं [**अध्वन्**] मार्ग, रास्ता; (णाया १, १४; सुर ३, २२७) °**सीसय** न [°**शीर्षक**] मार्ग का अन्त, अटवी आदि का अन्त भाग; (वव ४; बृह ३) ।

अद्धाणिय वि [**आध्विक**] पथिक, मुसाफिर; (बृह ४)

अद्धासिय वि [**अध्यासित**] अधिष्ठित, आश्रित ; (सुर ७, २१४; उप २६४ टी) । २ आरूढ; (स ६३०) ।

अद्धि देखो **इड्ढि** ;

"धएणा बहिरंधरआ, ते चिअ जीअंति माणुसे लोए ।
ण सुणंति खलवअणं, खलाण अद्धिं न पेक्खंति"
(गा ७०४) ।

अद्धिइ स्त्री [**अधृति**] धीरज का अभाव, अधीरज; (पउम ११८, ३६) ।

अद्धुइअ वि [**अर्धोदित**] थोड़ा कहा हुआ; (पि १५८) ।

अद्धुग्घाड वि [**अर्धोद्घाट**] आधा खुला "अद्धोग्घाडा थणया" (पउम ३८, १०७) ।

अद्धुट्ठ वि [**अर्धचतुर्थ**] साढ़े तीन; (सम १०१; विसे ६६३) ।

अद्धुत्त वि [**अर्धोक्त**] थोड़ा कहा हुआ; (वव १०) ।

अद्धुव वि [**अध्रुव**] १ चंचल, अस्थिर, विनश्वर ; (स ३३६ ; पंचा १६ ; पउम २६, ३०) । २ अनियत; (आचा) ।

अद्धेअद्ध वि [**अर्धार्ध**] १ द्विधा-भूत, दो टुकड़े वाला, खण्डित । २ क्रिवि. आधा आधा जैसे हो,

"अद्धेअद्धप्फुडिआ, अद्धेअद्धकडउक्खअसिलावेढा ।
पवअभुआहअविसढा, अद्धेअद्धसिहरा पडंति महिहरा ॥"
(से ६, ६६) ।

अद्धोरु } **अद्धोरुग** } देखो **अड्ढोरुग**, (दे ३, ४५; ओघ ६७६) ।

अद्धोवमिय वि [**अद्धौपम्य, अद्धौपमिक**] काल का वह परिमाण जो उपमा से समझाया जा सके, पल्योपम आदि उपमा-काल; (ठा २,४; ८) ।

अध अ [**अधस्**] नीचे; (आचा; पि १६०) ।

अध (शौ) अ [**अथ**] अब, बाद; (कप्पू) ।

अधइं (शौ) [**अथकिम्**] १ हाँ; २ और क्या; ३ जरूर, अवश्य; (कप्पू) ।

अधं अ [**अधस्**] नीचे ; (पि ३४५) ।

अधट्ठ वि [**अधृष्ट**] अ-धीठ; (कुमा) ।

अधण वि [**अधन**] निर्धन, गरीब,

"रमइ विहवी विसेसे, थिइमेत्तं थोयवित्थरो महइ ।
मग्गइ सरीरमधणो, रोई जीए च्चिय कयत्थो ॥"
(गउड; सण)

अधणि वि [**अधनिन्**] धन-रहित, निर्धन; (श्रा १४)।
अधण्ण वि [**अधन्य**] अकृतार्थ, निन्द्य; (पण्ह १,१)।
अधम देखो **अहम**; (उत्त ६)।
अधम्म पुं [**अधर्म**] १ पाप-कार्य, निषिद्ध कर्म, अनीति, "अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ" (णाया १, १८)। २ एक स्वतन्त्र और लोक-व्यापी अजीव वस्तु, जो जीव वगैरः को स्थिति करने में सहायता पहुँचाती है; (सम २; नव ५)। ३ वि. धर्म-रहित, पापी; (विपा १,१)। °**केउ** पुं [°**केतु**] पापिष्ठ; (णाया १,१८)। °**क्खाइ** वि [°**ख्याति**] प्रसिद्ध पापी; (विपा १,१)। °**क्खाइ** वि [°**ख्यायिन्**] पाप का उपदेश देने वाला; (भग ३,७)। °**त्थिकाय** पुं [°**ास्तिकाय**] अधम्म का दूसरा अर्थ देखो; (अणु)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] पापी, पापिष्ठ; (उप ७२८ टी)।
अधम्मिट्ठ वि [**अधर्मिष्ठ**] १ धर्म को नहीं करने वाला; (भग १२,२)। २ महा-पापी, पापिष्ठ; (णाया १,१८
अधम्मिट्ठ वि [**अधर्मेष्ट**] अधर्म-प्रिय, पाप-प्रिय; (भग १२,२)।
अधम्मिट्ठ वि [**अधर्मीष्ट**] पापिओं का प्यारा; (भग १२, २)।
अधम्मिय देखो **अहम्मिय**; (ठा ४,१)।
अधर देखो **अहर**; (उवा; सुपा १३८)।
अधवा (शौ) देखो **अहवा**; (कप्पू)।
अधा स्त्री [**अधस्**] अधो-दिशा, नीचली दिशा; (ठा ६)।
अधि देखो **अहि**=अधि।
अधिइ देखो **अद्धिइ**; (सुपा ३५६)।
अधिकरण देखो **अहिगरण**; (पण्ह १,२)।
अधिग वि [**अधिक**] विशेष, ज्यादः; (बृह १)।
अधिगम देखो **अहिगम**; (धर्म २; विसे १२)।
अधिगरण देखो **अहिगरण**; (निचू १)।
अधिगरणिया देखो **अहिगरणिया**; (पण्ण २१)।
अधिण्ण } (अप) वि [**आधीन**] आयत्त, पर-वश;
अधिन्न } (पि ६१; हे ४, ४२७)।
अधिमासग पुं [**अधिमासक**] अधिक मास; (निचू २०)।
अधीस वि [**अधीश**] नायक, अधिपति; (कुम्मा २३)।
अधुव देखो **अद्धुव**; (णाया १,१, पउम ६५,४६)।
अधो देखो **अहो**=अधस्; (पि ३४५)।
अनंदि स्त्री [**अनन्दि**] अमङ्गल, अकुशल "तं मोएउ अनंदिं" (अजि ३७)।
अनन्न देखो **अणण्ण**; (कुमा)।
अनय देखो **अणय**; (सुपा ३७१)।
अनल देखो **अणल**; (हे १, २२८; कुमा)।
अनागय देखो **अणागय**; (भग)।
अनागार देखो **अणागार**; (भग)।
अनाय देखो **अणाय**; (सुपा ४७०; पि ३८०)।
अनालंफ (चूपै) वि [**अनारम्भ**] पाप-रहित; (कुमा)।
अनालंफ (चूपै) वि [**अनालम्भ**] अहिंसक, दयालु; (कुमा)।
अनिगिण देखो **अणगिण**; (सम १७)।
अनिदाया } देखो **अणिदा**; (पण्ण ३४)।
अनिद्दाया }
अनिमित्ती स्त्री [**अनिमित्ती**] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।
अनियमिय वि [**अनियमित**] १ अव्यवस्थित; २ असंयत, इन्द्रियों का निग्रह नहीं करने वाला; "गओ य नरयं अनियमियप्पा" (पउम ११४, २६)।
अनियट्टि देखो **अणियट्टि**; (सम २६; कम्म २; सत्त ७१ टी)।
अनियय देखो **अणियय**; (ओघ ८२)।
अनिरुद्ध देखो **अणिरुद्ध**; (अंत १४)।
अनिल देखो **अणिल**; (हे १, २२८; कुमा)।
अनिसट्ठ देखो **अणिसट्ठ**; (ठा ३, ४)।
अनिहारिम } देखो **अणीहारिम**; (भग; ठा २,४)।
अनीहारिम }
अनु (अप) देखो **अण्णहा**; (कुमा)।
अनुकूल देखो **अणुकूल**; (सुपा ४७४)।
अनुग्गह देखो **अणुग्गह**; (अभि ४१)।
अनुच्चिट्ठिय देखो **अणुट्ठिय**; (स १५)।
अनुज्जुय देखो **अणुज्जुय**; (पि ५७)।
अनुहव देखो **अणुहव**=अनु+भू। वकृ—**अनुहवंत**; (रंभा)।
अन्न देखो **अण्ण**; (सुपा ३६०; प्रासू ४३; पण्ह २, १; ठा ३, २; ५,१; श्रा ६)।

अन्नइय देखो **अण्णइय** ; (भवि)।
अन्नओ देखो **अण्णओ**। °**हुत्त** क्रिवि [°**मुख**] दूसरी तर्फ ; (सुर ३, १३६)।
अन्नत्तो देखो **अण्णत्तो** ; (कुमा)।
अन्नत्थ, **अन्नत्थं** देखो **अण्णत्थ** ; (आचा ; स १५० ; कुमा)।
अन्नद्दो देखो **अण्णत्तो** ; (कुमा)।
अन्नमन्न देखो **अण्णमण्ण** ; (णाया १, १)।
अन्नन्न देखो **अण्णण्ण** ; (महा; कुमा)।
अन्नय पुं [**अन्वय**] एक की सत्ता में ही दूसरे की विद्यमानता, जैसे अग्नि की हयाती में ही धूमकी सत्ता, नियमित संबन्ध ; (उप ४१३ ; स ६५१)।
अन्नयर देखो **अण्णयर** ; (सुपा ३७०)।
अन्नया देखो **अण्णया** ; (महा)।
अन्नव देखो **अण्णव** ; (सुपा ८५; ५२६)।
अन्नह देखो **अण्णह** ; (सुर १, १५६ ; कुमा)।
अन्नहा देखो **अण्णहा** ; (पउम १००, २४ ; महा; सुर १, १४३ ; प्रासू ७)।
अन्नहि देखो **अण्णहि** ; (कुमा)।
अन्नाइट्ठ वि [**अन्वाविष्ट**] आक्रान्त ; "तुमं णं आउसो कासवा ! ममं तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि" (भग १५)।
अन्नाण देखो **अण्णाण=**अज्ञान ; (कुमा; सुर १, १५ ; महा ; उवर ६५ ; कम्म ४, ६ ; ११)।
अन्नाणि देखो **अण्णाणि** ; (उव; सुपा ५८८)।
अन्नाणिय देखो **अण्णाणिय** ; (पउम ४, २७)।
अन्नाय देखो १ ला और २ रा **अण्णाय** ; (सुर ६, २ ; सुपा २५६ ; सुर २, ६ ; २०२ ; सम्म ६६ ; सुपा २३३ ; सुर २, १६५ ; सुपा ३०८)। "नाएण जं न सिद्धं को खलु सहलो तयत्थमन्नाओ ?" (उप ७२८ टी)।
अन्नारिस देखो **अण्णारिस** ; (हे १, १४२ ; महा)।
अन्निज्जमाण देखो **अण्णिज्जमाण** ; (णाया १, १६)।
अन्निय देखो **अण्णिय**।
अन्नियसुय पुं [**अग्निकासुत**] एक विख्यात जैन मुनि ; (उव)।
अन्निया देखो **अण्णिया** ; (संथा ५६)।

अन्नुन्न, **अन्नुमन्न** देखो **अण्णुण्ण** ; (हे १, १५६ ; कप्प)।
अन्नेस देखो **अण्णेस**। वकृ—**अन्नेसमाण** ; (उप ६ टी)।
अन्नेसण देखो **अण्णेसण** ; (सुर १०, २१८ ; सण)।
अन्नेसणा देखो **अण्णेसणा**; (ठा ३, ४)।
अन्नेसय वि [**अन्वेषक**] गवेषक, खोज करने वाला ; (स ५३५)।
अन्नेसि, **अन्नेसिय** देखो **अण्णेसि**; (पि ५१६ ; आचा)।
अन्नोन्न देखो **अण्णोण्ण**; (कुमा; महा)।
अप स्त्री. ब. [**अप्**] पानी, जल; (सुज्ज १०)। °**काय** पुं:[°**काय**] पानी के जीव; (दं १३)।
अपइट्ठाण देखो **अप्पइट्ठाण**; (आचा; ठा ४,३)।
अपइट्ठिय देखो **अप्पइट्ठिय**; (ठा ४,१)।
अपएस वि [**अप्रदेश**] १ निरंश, अवयव-रहित; (भग २०,५)। २ पुं. खराब स्थान; (पंचा ७)।
अपंग पुं [**अपाङ्ग**] १ नेत्र का प्रान्त भाग; २ तिलक; ३ वि. हीन अंग वाला ; (नाट)।
अपंडिअ वि [**दे**] अ-नष्ट, विद्यमान; (षड्)।
अपंडिअ वि [**अपण्डित**] १ सद्बुद्धि-रहित; (बृह १)। २ मूर्ख; (अच्चु ५)।
अपगंड वि [**अपगण्ड**] १ निर्दोष। २ न. फेन, पानी का झाग; (सूअ १, ६)।
अपचय पुं [**अपचय**] अपकर्ष, हीनता; (उत्त १)।
अपच्च देखो **अवच्च**; अपचणिव्विसेसाणि सत्ताणि" (पि ३६७)।
अपच्चय पुं [**अप्रत्यय**] अविश्वास; (पण्ह १,२)।
अपच्चल वि [**अप्रत्यल**] १ असमर्थ; २ अयोग्य; (निचू ११)।
अपच्छ वि [**अपथ्य**) १ अ-हितकर; (पउम ८२,७२)। २ न. नहीं पचने वाला भोजन; "थेवेण अपच्छासेवणेण रोगुव्व वड्ढेइ" (सुपा ४३८)।
अपच्छिम वि [**अपश्चिम**] अन्तिम; (णंदि; पाअ; उप २६४ टी)।
अपज्जत्त, **अपज्जत्तग** वि [**अपर्याप्त**] १ अपर्याप्त, असमर्थ; (गउड)। २ पर्याप्ति (आहारादि-ग्रहण करने की शक्ति) से रहित; (ठा २,१; नव ४)। °**नाम** न [°**नामन्**] नाम-कर्म का एक भेद; (सम ६७)।

अपज्जवसिय वि [**अपर्यवसित**] १ नाश-रहित; (सम्म ६१)। २ अन्त-रहित; (ठा १)।

अपडिच्छिर वि [**दे**] जड-बुद्धि, मूर्ख; (दे १,४३)।

अपडिण्ण, **अपडिन्न** वि [**अप्रतिज्ञ**] १ प्रतिज्ञा-रहित, निश्चय-रहित; (आचा)। २ राग-द्वेष आदि बन्धनों से वर्जित; (सूअ १, ३, ३)। ३ फल की इच्छा न रखकर अनुष्ठान करने वाला, निष्काम; "गन्धेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु" (सूअ १,६)।

अपडिपोग्गल वि [**अप्रतिपुद्गल**] दरिद्र, निर्धन; (निचू ५)।

अपडिबद्ध वि [**अप्रतिबद्ध**] १ प्रतिबन्ध-रहित, बेरोक, "अपडिबद्धो अनलो व्व" (पण्ह २,५)। २ आसक्ति-रहित; (पव १०४)।

अपडिवाइ देखो **अप्पडिवाइ**;(ठा ६; ओघ ५३२; णंदि)।

अपडिसंलीण वि [**अप्रतिसंलीन**] असंयत, इन्द्रिय आदि जिसके काबू में न हों; (ठा ४,२)।

अपडिहट्टु अ [**अप्रतिहृत्य**] नहीं दे कर; (कस; बृह ३)।

अपडिहय देखो **अप्पडिहय**; (णाया १,१६)।

अपडीकार वि [**अप्रतीकार**] इलाज-रहित, उपाय-रहित; (पण्ह १,१)।

अपडुप्पण्ण, **अपडुप्पन्न** वि [**अप्रत्युत्पन्न**] १ अ-वर्तमान, अ-विद्यमान; (पि १६३)। २ प्रतिपत्ति में अ-कुशल; (वव ६)।

अपणट्ठ वि [**अप्रनष्ट**] नाश को अप्राप्त; (सुर ४, २४०)।

अपत्त देखो **अप्पत्त**; (बृह १; ठा ५,२; सूअ १, १४)।

अपत्तिअंत वकृ [**अप्रतियत्**] विश्वास नहीं करता हुआ; (गा ६७८; पि ४८७)।

अपत्तिय देखो **अप्पत्तिय**; (भग १६,३; पंचा ७)।

अपत्थ देखो **अपच्छ**; (उत्त ७; पंचा ७)।

अपमत्त देखो **अप्पमत्त**; (आचा)।

अपमाण न [**अप्रमाण**] १ झूठा, असत्य; (श्रा १२)। २ वि. ज्यादः, अधिक; (उत्त २४)।

अपमाय वि [**अप्रमाद**] १ प्रमाद-रहित। २ पुं. प्रमाद का अभाव, सावधानी; (पण्ह २,१)।

अपय वि [**अपद**] १ पाँव रहित, वृक्ष, द्रव्य, भूमि वगैरः पैर रहित वस्तु; (णाया १,८)। २ पुं. मुक्तात्मा "अपयस्स पयं नत्थि" (आचा)। ३ सूत्र का एक दोष; (बृह १; विसे)।

अपय स्त्री [**अप्रज**] सन्तानरहित; (बृह १)।

अपर देखो **अवर**; (निचू २०)। २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध अवान्तर सामान्य; (विसे २४६१)।

अपरक्ख वि [**अपराक्ष**] असमक्ष, परोक्ष; (पण्ह १,३)।

अपरद्ध देखो **अवरज्झ**; (कप्प)।

अपरंतिया स्त्री [**अपरान्तिका**] छन्द-विशेष; (अजि ३४)।

अपराइय वि [**अपराजित**] १ अ-परिभूत; (पण्ह १,४)। २ पुं. सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम; (सम १५३)। ३ भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव; (सम १५४)। ४ उत्तम-पंक्ति के देवों की एक जाति; (सम ५६)। ५ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र; (कप्प)। ६ एक महाग्रह ; (ठा २, ३)। ७ न. अनुत्तर देव-लोक का एक विमान—देवावास ; (सम ५६)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८)। ९ जम्बूद्वीप की जगती का उत्तर द्वार ; (ठा ४, २)।

अपराइया स्त्री [**अपराजिता**] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३)। २ आठवें बलदेव की माता ; (सम १५२)। ३ अङ्गारक ग्रह की एक पट्टरानी का नाम ; (ठा ४, १)। ४ एक दिशा-कुमारी देवी ; (ठा ८)। ५ ओषधि-विशेष ; (ती ७)। ६ अञ्जनाद्रि पर्वत पर स्थित एक पुष्करिणी ; (ती २)।

अपराजिय देखो **अपराइय** ; (कप्प ; सम ५६ ; १०२ ; ठा २, ३)।

अपराजिया देखो **अवराइया** ; (ठा २, ३)।

अपरिग्गह वि [**अपरिग्रह**] १ धन-धान्य आदि परिग्रह से रहित ; (पण्ह २, ३)। २ ममता-रहित, निर्मम ; "अपरिग्गहा अणारंभा भिक्खू ताणं परिव्वए" (सूअ १, १, ४)।

अपरिग्गहा स्त्री [**अपरिग्रहा**] वेश्या ; (वव २)।

अपरिग्गहिआ स्त्री [**अपरिगृहीता**] १ वेश्या, कन्या वगैरः अविवाहिता स्त्री ; (पडि)। २ पति-हीना स्त्री, विधवा ; (धर्म २)। ३ घर-दासी ; ४ पनीहारी ; ५ देव-पुत्रिका, देवता को भेंट की हुई कन्या ; (आचू ५)।

अपरिच्छण्ण, **अपरिच्छन्न** वि [**अपरिच्छन्न**] १ नहीं ढका हुआ, अनावृत ; (वव ३)। २ परिवार-रहित ; (वव १)।

अपरिणय वि [**अपरिणत**] १ रूपान्तर को अप्राप्त ; (ठा २, १) । २ जैन साधु की भिक्षा का एक दोष ; (आचा) ।

अपरित्त वि [**अपरीत**] अपरिमित, अनन्त ; (पराण १८)।

अपरिसेस वि [**अपरिशेष**] सब, सकल, निःशेष ; (पराह १, २ ; पउम ३, १४०) ।

अपरिहारिय वि [**अपरिहारिक**] १ दोषों का परिहार नहीं करने वाला ; (आचा) । २ पुं. जैनेतर दर्शन का अनुयायी गृहस्थ ; (निचू २) ।

अपवग्ग पुं [**अपवर्ग**] मोक्ष, मुक्ति ; (सुर ८, १०६ ; सत्त ११) ।

अपविद्ध वि [**अपविद्ध**] १ प्रेरित ; (से ७, ११) । २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन कर के तुरन्त ही भाग जाना ; (गुभा २३) ।

अपह वि [**अप्रभ**] निस्तेज ; (दे १, १६४) ।

अपहत्थ देखो **अवहत्थ** ; (भवि) ।

अपहारि वि [**अपहारिन्**] अपहरण करने वाला ; (स २१७) ।

अपहिय वि [**अपहृत**] छीना हुआ ; (पउम ७६, ५) ।

अपहु वि [**अप्रभु**] १ असमर्थ ; २ नाथ-रहित, अनाथ ; (पउम १०१, ३५) ।

अपाइय वि [**अपात्रित**] पात्र-रहित, भाजन-वर्जित "नो कप्पइ निग्गंथीए अपाइयाए होत्तए" (कस) ।

अपाउड वि [**अप्रावृत**] नहीं ढका हुआ, वस्त्र-रहित, नग्न ; (ठा ५, १) ।

अपादाण न [**अपादान**] कारक-विशेष, जिसमें पञ्चमी विभक्ति लगती है ; (विसे २११७) ।

अपाण न [**अपान**] १ पान का अभाव ; (उप ८४५)। २ पानी जैसी ठंडी पेय वस्तु-विशेष ; (भग १५) । ३ पुंन. अपान वायु ; ४ गुदा ; (सुपा ६२०) । ५ वि. जल-वर्जित, निर्जल (उपवास), "छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं" (जं २) ।

अपार वि [**अपार**] पार-रहित, अनन्त ; (सुपा ४५०)।

अपारमग्ग पुं [**दे**] विश्राम, विश्रान्ति ; (दे १, ४३) ।

अपाव वि [**अपाप**] १ पाप-रहित ; (सूअ १, १, ३) । २ न. पुराय ; (उव) ।

अपावा स्त्री [**अपापा**] नगरी-विशेष, जहां भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ था, यह आजकल 'पावापुरी' नाम से प्रसिद्ध है और बिहार से आठ माईल पर है ; (राज) ।

अपिट्ठ वि [**दे**] पुनरुक्त, फिरसे कहा हुआ ; (षड्) ।

अपिय वि [**अप्रिय**] अनिष्ट ; (जीव १) ।

अपिह अ [**अपृथक्**] अ-भिन्न ; (कुमा) ।

अपुणबंधग, **अपुणबंधय** वि [**अपुनर्बन्धक**] फिर से उत्कृष्ट कर्म-बन्ध नहीं करने वाला, तीव्र भाव से पाप को नहीं करने वाला ; (पंचा ३ ; उप २५३; ६५१) ।

अपुणब्भव पुं [**अपुनर्भव**] १ फिर से नहीं होना । २ वि. जिससे फिर जन्म न हो वह, मुक्ति-प्रद ; (पराह २, ४)।

अपुणब्भाव वि [**अपुनर्भाव**] फिर से नहीं होने वाला ; (पंच १) ।

अपुणभव देखो **अपुणब्भव** ; (कुमा) ।

अपुणरागम पुं [**अपुनरागम**] १ मुक्त आत्मा ; २ मुक्ति, मोक्ष ; (दसचू १) ।

अपुणरावत्तग, **अपुणरावत्तय** पुं [**अपुनरावर्त्तक**] १ फिर नहीं घूमने वाला, मुक्त आत्मा ; २ मोक्ष, मुक्ति ; (पि ३४३ ; औप ; भग १ १) ।

अपुणरावत्ति पुं [**अपुनरावर्तिन्**] मुक्त आत्मा ; (पि ३४३) ।

अपुणराविति पुं [**अपुनरावृत्ति**] मोक्ष, मुक्ति ; (पडि)।

अपुणरुत्त वि [**अपुनरुक्त**] फिर से अकथित, पुनरुक्ति-दोष से रहित "अपुणरुत्तेहिं महावित्तेहिं संथुणइ" (राय)।

अपुणागम देखो **अपुणरागम** ; (पि ३४३) ।

अपुणागमण न [**अपुनरागमन**] १ फिर से नहीं आना ; २ फिर से अनुत्पत्ति ; "अपुणागमणाय व तं तिमिरं उम्मूलिअं रविणा" (गउड) ।

अपुण्ण न [**अपुण्य**] १ पाप ; २ वि. पुराय-रहित, कम-नसीब, हत-भाग्य ; (विपा १, ७) ।

अपुण्ण वि [**अपूर्ण**] अधुरा, अपरिपूर्ण ; (विपा १, ७)।

अपुण्ण वि [**दे**] आक्रान्त ; (षड्) ।

अपुत्त, **अपुत्तिय** वि [**अपुत्र, °क**] १ पुत्र-रहित ; (सुपा ४१२; ३१४) । २ स्वजन-रहित, निर्मम ; निःस्पृह; (आचा) ।

अपुन्न देखो **अपुण्ण** ; (णाया १, १३) ।

अपुम न [**अपुंस्**] नपुंसक ; (ओघ २२३) ।

अपुल्ल देखो **अप्पुल्ल** ; (चंड) ।

अपुव्व वि [**अपूर्व**] १ नूतन, नवीन ; २ अद्भुत, आश्चर्य-कारक ; ३ असाधारण, अद्वितीय ; (हे ४; २७० ; उप

६ टी) । °करण न [°करण] १ आत्मा का एक अभूतपूर्व शुभ परिणाम ; (आचा) । २ आठवाँ गुण-स्थानक ; (पव २२४ ; कम्म २, ६) ।

अपूय } पुं [**अपूप**] एक भक्ष्य पदार्थ, पूआ, पूड़ा ; (औप;
अपूव } पराग ३६ ; दे १, १३४ ; ६, ८१) ।

अपेक्ख सक [**अप+ईक्ष्**] अपेक्षा करना, राह देखना । हेकृ—**अपेक्खिदुं** (शौ) ; (नाट) ।

अपेच्छ वि [**अप्रेक्ष्य**] १ देखने को अशक्य ; २ देखने को अयोग्य ; (उव) ।

अपेज वि [**अपेय**] पीने को अयोग्य, मद्य आदि ; (कुमा)।

अपेय वि [**अपेत**] गया हुआ, नष्ट ; " अपेयचक्खु " (बृह १) ।

अपेहय वि [**अपेक्षक**] अपेक्षा करने वाला; (आव ४)।

अपोरिसिय } वि [**अपौरुषिक**] पुरुष से ज्यादः परिमाण
अपोरिसीय } वाला ; अगाध ; (णाया १, ५ ; १४) ।

अपोरिसीय वि [**अपौरुषेय**] पुरुष ने नहीं बनाया हुआ, नित्य ; (ठा १०) ।

अपोह सक [**अप+ऊह्**] निश्चय करना, निश्चय रूप से जानना । अपोहए ; (विसे ५६१) ।

अपोह पुं [**अपोह**] १ निश्चय-ज्ञान ; (विसे ३९६) । २ पृथग्भाव, भिन्नता ; (ओघ ३) ।

अप्प देखो **अत्त**=आप्त ; " अप्पोलंभनिमित्तं पढमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पराणत्तेत्ति बेमि " (णाया १, १) ।

अप्प वि [**अल्प**] १ थोड़ा ; स्तोक ; (सुपा २८०; स्वप्न ६७) । २ अभाव ; (जीव ३ ; भग १४, १) ।

अप्प पुं [**आत्मन्**] १ आत्मा, जीव, चेतन ; (णाया १, १) । २ निज, स्व, " अप्पणा अप्पणो कम्मक्खयं करित्तए " (णाया १, ५) । ३ देह, शरीर ; (उत्त ३) । ४ स्वभाव, स्वरूप ; (आचा) । °**घाइ** वि [°**घातिन्**] आत्म-हत्या करने वाला ; (उप ३५७ टी) °**छंद** वि [°**च्छन्द**] स्वैरी, स्वच्छन्दी ; (उप ८३३ टी) । °**ज्ञ** वि [°**ज्ञ**] १ आत्मज्ञ ; (हे २, ८३) । २ स्वाधीन ; (निचू १) । °**ज्जोइ** पुं [°**ज्योतिस्**] ज्ञान-स्वरूप, " किंजोइरयं पुरिसो अप्पज्जोइ त्ति णिद्दिट्ठो " (विसे)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] आत्म-ज्ञानी ; (षड्) । °**वस** वि [°**वश**] स्वतन्त्र, स्वाधीन ; (पाअ ; पउम ३७, २२)। °**वह** पुं [°**वध**] आत्म-हत्या, आपघात ; (सुर २, १६६; ५, २३७) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**] आत्मा के अतिरिक्त दूसरे पदार्थ को नहीं मानने वाला ; (णंदि) ।

अप्प पुं [**दे**] पिता, बाप ; (दे १, ६) ।

अप्प सक [**अर्पय्**] अर्पण करना, भेंट करना । अप्पेइ ; (हे १, ६३) । अप्पअइ ; (नाट) । संकृ—**अप्पिअ** ; (सुपा २८०) । कृ—**अप्पेयव्व** ; (सुपा २६५; ५१६) ।

अप्पइट्ठाण पुंन [**अप्रतिष्ठान**] १ मोक्ष, मुक्ति ; (आचा)। २ सातवीं नरक-भूमि का बीचला आवास ; (सम २ ; ठा ५, ३)।

अप्पआस देखो **अप्पगास** ; (नाट) ।

अप्पआस सक [**श्लिष्**] आलिङ्गन करना । अप्पआसइ; (षड्) ।

अप्पउलिय वि [**अपक्वौषधि**] नहीं पकी हुई फल फुलेरी ; (स ५०) ।

अप्पंभरि वि [**आतमम्भरि**] एकलपेटा, स्वार्थी ; (उप ५७०) ।

अप्पकंप वि [**अप्रकम्प**] निश्चल, स्थिर ; (ठा १०) ।

अप्पकेर वि [**आत्मीय**] स्वकीय, निजीय ; (प्रामा) ।

अप्पक्क वि [**अपक्व**] नहीं पका हुआ, कच्चा ; (सुपा ४१३) ।

अप्पग देखो **अप्प** ; (आव ४ ; आचा) ।

अप्पगास पुं [**अप्रकाश**] प्रकाश का अभाव, अन्धकार ; (निचू १) ।

अप्पगुत्ता स्त्री [**दे**] कपिकच्छू, कौंच वृक्ष; (दे १,२६)।

अप्पज्झ वि [**दे**] आत्म-वश, स्वाधीन ; (दे १, १४) ।

अप्पडिआर वि [**अप्रतिकार**] इलाज-रहित, उपाय-रहित; (मा ४३) ।

अप्पडिकंटय वि [**अप्रतिकण्टक**] प्रतिपक्ष-शून्य, प्रतिस्पर्धि-रहित ; (राय) ।

अप्पडिकम्म वि [**अप्रतिकर्मन्**] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, " सुराणागारे व अप्पडिकम्मे " (पराह २, ५) ।

अप्पडिक्कंत वि [**अप्रतिक्रान्त**] दोष से अनिवृत्त, व्रत-नियम में लगे हुए दूषणों की जिसने शुद्धि न की हो वह ; (औप) ।

अप्पडिकुट्ठ वि [**अप्रतिक्रुष्ट**] अनिवारित, नहीं रोका हुआ; (ठा २,४) ।

अप्पडिचक्क वि [**अप्रतिचक्र**] अ-तुल्य, अ-समान; (णंदि) ।

अप्पडिण्ण } देखो **अपडिण्ण** ; (आचा) ।
अप्पडिन्न }

अप्पडिबंध पुं [**अप्रतिबन्ध**] १ प्रतिबन्ध का अभाव ; २ वि. प्रतिबन्ध-रहित ; (सुपा ६०८) ।

अप्पडिबद्ध देखो **अपडिबद्ध** ; (उत्त २६ ; पि २१८) ।

अप्पडिबुद्ध वि [**अप्रतिबुद्ध**] १ अ-जागृत । २ कोमल, सुकुमार ; (अभि १६१) ।

अप्पडिम वि [**अप्रतिम**] असाधारण, अनुपम; (उप ७६८ टी ; सुपा ३५) ।

अप्पडिरूव वि [**अप्रतिरूप**] ऊपर देखो ; (उप७२८ टी) ।

अप्पडिलद्ध वि [**अप्रतिलब्ध**] अप्राप्त ; (गाया १, १) ।

अप्पडिलेस्स वि [**अप्रतिलेश्य**] असाधारण मनो-बल वाला; (औप) ।

अप्पडिलेहण न [**अप्रतिलेखन**] अ-पर्यवेक्षण ; अन-वलोकन, नहीं देखना ; (आव ६) ।

अप्पडिलेहणा स्त्री [**अप्रतिलेखना**] ऊपर देखो ; (कप्प) ।

अप्पडिलेहिय वि [**अप्रतिलेखित**] अ-पर्यवेक्षित, अनव-लोकित, नहीं देखा हुआ; (उवा) ।

अप्पडिलोम वि [**अप्रतिलोम**] अनुकूल ; (भग २५, ७ ; अभि २४) ।

अप्पडिवरिय पुं [**अप्रतिवृत**] प्रदोष काल ; (बृह १) ।

अप्पडिवाइ वि [**अप्रतिपातिन्**] १ जिसका नाश न हो ऐसा, नित्य; (सुर १४, २६) । २ अवधिज्ञान का एक भेद, जो केवल ज्ञान को बिना उत्पन्न किये नहीं जाता ; (विसे) ।

अप्पडिहत्थ वि [**अप्रतिहस्त**] असमान, अद्वितीय ; (से १३, १२) ।

अप्पडिहय वि [**अप्रतिहत**] १ किसी से नहीं रुका हुआ; (पण्ह २, ५) । २ अखण्डित, अबाधित ; " अप्पडिहय-सासणे " (गाया १, १६) । ३ विसंवाद-रहित " अप्प-डिहयवरनाणदंसणधरे " (भग १, १) ।

अप्पडीबद्ध देखो **अपडिबद्ध** ; " निम्ममनिरहंकारा निअय-सरीरेवि अप्पडीबद्धा " (संथा ६०) ।

अप्पड्ढिय वि [**अल्पर्द्धिक**] थोड़ी ऋद्धि वाला, अल्प वैभव वाला ; (सुपा ४३०) ।

अप्पण न [**अर्पण**] १ भेंट, उपहार, दान ; (श्रा २७) । २ प्रधान रूप से प्रतिपादन ; (विसे १८४३) ।

अप्पण देखो **अप्प**=आत्मन् ; (आचा ; उत्त १; महा ; हे ४, ४२२) ।

अप्पण वि [**आत्मीय**] स्वकीय; निजका ; " नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि होंति सुद्धाणं " (सट्ठि १०५) ।

अप्पणय वि [**आत्मीय**] स्वकीय, निजीय ; (पउम ५०, १६ , सुपा २७६ ; हे २, १५३) ।

अप्पणा अ [**स्वयम्**] स्वयं, आप, निज, खुद ; (षड्) ।

अप्पणिज्ज } वि [**आत्मीय**] स्वकीय, स्वीय ; (ठा १; आवम) ।
अप्पणिज्जिय }

अप्पणो अ [**स्वयम्**] आप, खुद; निज ; " विअसंति अप्पणो चेव कमलसरा ; (हे २, २०६) ।

अप्पतक्किय वि [**अप्रतर्कित**] अवितर्कित, असंभावित ; (स ५३०) ।

अप्पत्त पुंन [**अपात्र**] १ अयोग्य, नालायक, कुपात्र, " अरणेवि हु अप्पत्ता परिद्धिं नेय विसहंति " (सुर ३, ४५; गा १५७) । २ वि. आधार-रहित, भाजन-शून्य ; (सुर १३, ४५) ।

अप्पत्त वि [**अपत्र**] १ पत्ती से रहित (वृक्ष) ; (सुर ३, ४५) । २ पांख से रहित (पक्षी); (सूअ १, १४) ।

अप्पत्त वि [**अप्राप्त**] अ-लब्ध, अनवाप्त ; (सुर १३, ४५ ; आघ ८६) । °**कारि** वि [**कारिन्**] वस्तु का बिना ही स्पर्श किये (दूर से) ज्ञान उत्पन्न करने वाला, " अप्पत्तकारि णयणं " (विसे) ।

अप्पत्ति स्त्री [**अप्राप्ति**] नहीं पाना ; (सुर ४, २१३) ।

अप्पत्तिय पुंन [**अप्रत्यय**] अविश्वास ; (स ६६७ ; सुपा ५१२) ।

अप्पत्तिय न [**अप्रीति**] १ अप्रीति, प्रेम का अभाव ; (ठा ४, ३) । २ क्रोध, गुस्सा ; (सूअ १,१, २) । ३ मानसिक पीड़ा ; (आचा) । ४ अपकार; (निचू १) ।

अप्पत्तिय वि [**अपात्रिक**] पात्र-रहित, आधार-वर्जित ; (भग १६, ३) ।

अप्पत्तियण न [**अप्रत्ययन**] अ-विश्वास, अ-श्रद्धा ; (उप ३१२) ।

अप्पत्थ वि [**अप्रार्थ्य**] १ प्रार्थना करने को अयोग्य ; २ नहीं चाहने लायक ; (सुपा ३३६) ।

अप्पत्थण न [**अप्रार्थन**] १ अयाच्ञा । २ अनिच्छा, अचाह ; (उत्त ३२) ।

अप्पत्थिय वि [**अप्रार्थित**] १ अयाचित ; २ अनभिलषित, अवांछित; (जं ३)। °**पत्थय,** °**पत्थिय** वि [°**प्रार्थक,** °**र्थिक**] मरणार्थी, मौत को चाहने वाला, " कीस णं एस अप्पत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे " (भग ३, २ ; णाया १, ८; पि ७१) ।

अप्पत्थुय वि [**अप्रस्तुत**] प्रसंग के अनुपयुक्त, विषयान्तर ; (सुपा १०६) ।

अप्पदुट्ठ वि [**अप्रद्विष्ट**] जिस पर द्वेष न हो वह, प्रीतिकर; ओघ ७४४) ।

अप्पदुस्समाण वकृ [**अप्रद्विष्यत्**] द्वेष नहीं करता हुआ ; (अंत १२) ।

अप्पप्प वि [**अप्राप्य**] प्राप्त करने को अशक्य ; (विसे २६८७) ।

अप्पभाय न [**अप्रभात**] १ बड़ी सवेर; २ वि. प्रकाश-रहित, कान्ति-वर्जित ; " अज्ज पुण अप्पभाए गयणे " (सुर ११, ११०) ।

अप्पभु वि [**अप्रभु**] १ असमर्थ ; (भग) । २ पुं. मालिक से भिन्न, नौकर वगैरः ; (धर्म ३) ।

अप्पमज्जिय वि [**अप्रमार्जित**] साफ नहीं किया हुआ ; (उवा) ।

अप्पमत्त वि [**अप्रमत्त**] प्रमाद-रहित, सावधान, उपयोग वाला ; (पण्ह २, ५; हे १, २३१ ; अभि १८५) । °**संजय** पुंस्त्री [°**संयत**] १ प्रमाद-रहित मुनि ; २ न. सातवाँ गुण-स्थानक ; (भग ३, ३) ।

अप्पमाण देखो **अपमाण** ; (बृह ३ ; पण्ह २, ३) ; " अइक्कमित्ता जिणरायआणं, तवंति तिव्वं तवमप्पमाणं ।
पढंति नाणं तह दिंति दाणं, सव्वंपि तेसिं कयमप्पमाणं "
(सत्त २०) ।

अप्पमाय पुं [**अप्रमाद**] प्रमाद का अभाव ; (निचू १) ।

अप्पमेय वि [**अप्रमेय**] १ जिसका मान न हो सके ऐसा, अनन्त ; (पउम ७५, २३) । २ जिसका ज्ञान न हो सके ऐसा ; (धर्म १) । ३ प्रमाण से जिसका निश्चय न किया जा सके वह ; (पण्ह १, ४) ।

अप्पय देखो **अप्प** ; (उव ; पि ४०१) ।

अप्परिचत्त वि [**अपरित्यक्त**] नहीं छोड़ा हुआ ; अपरि-मुक्त; (सुपा ११०) ।

अप्परिवडिय वि [**अपरिपतित**] अ-नष्ट, विद्यमान ; (श्रा ६) ।

अप्पलहुअ वि [**अप्रलघुक**] महान्, बड़ा ; (से १, १) ।

अप्पलीण वि [**अप्रलीन**] अ-संबद्ध, सङ्ग-वर्जित ; (सूअ १, १, ४) ।

अप्पलीयमाण वकृ [**अप्रलीयमान**] आसक्ति नहीं करता हुआ ; (आचा) ।

अप्पवित्त वि [**अप्रवृत्त**] प्रवृत्ति-रहित ; (पंचा १४) ।

अप्पवित्ति स्त्री [**अप्रवृत्ति**] प्रवृत्ति का अभाव ; (धर्म १) ।

अप्पसंत वि [**अप्रशान्त**] अशान्त, कुपित ; (पंचा २) ।

अप्पसंसणिज्ज वि [**अप्रशंसनीय**] प्रशंसा के अयोग्य ; (तंदु) ।

अप्पसज्झ वि [**अप्रसह्य**] १ सहने को अशक्य ; २ सहन करने को अयोग्य ; (वव ७) ।

अप्पसण्ण वि [**अप्रसन्न**] उदासीन ; (नाट) ।

अप्पसत्थ वि [**अप्रशस्त**] अ-चारु, अ-सुन्दर, खराब ; (ठा ३, ३ ; भग ; श्रा ४) ।

अप्पसत्तिय वि [**अल्पसत्त्विक**] अल्प सत्त्व वाला, " सुसमत्थाविसमत्था कीरंति अप्पसत्तिया पुरिसा " (सूअ १, ४, १) ।

अप्पसारिय वि [**अप्रसारिक**] निर्जन, विजन (स्थान); (उप १७०) ।

अप्पहवंत वकृ [**अप्रभवत्**] समर्थ नहीं होता हुआ, नहीं पहुँच सकता हुआ ; (स ३०५) ।

अप्पहिय वि [**अप्रथित**] १ अ-विस्तृत ; २ अ-प्रसिद्ध ; (सुपा १२५) ।

अप्पाअप्पि स्त्री [**दे**] उत्कण्ठा, औत्सुक्य ; (पिंग) ।

अप्पाउड वि [**अप्रावृत**] अनाच्छादित, नग्न; (सूअ २, २) ।

अप्पाउय वि [**अल्पायुष्क**] थोड़ा आयुष्य वाला ; (ठा ३, ३ ; पउम १४, ३०) ।

अप्पाउरण वि [**अप्रावरण**] १ नग्न । २ न. वस्त्र का अभाव; ३ वस्त्र नहीं पहनने का नियम ; (पंचा ५ ; पव ४) ।

अप्पाण देखो **अप्प**=आत्मन् ; (पण्ह १, २ ; ठा २, २ ; प्राप्र ; हे ३, ५६) । °**रक्खि** वि [°**रक्षिन्**] आत्मा की रक्षा करने वाला ; (उत्त ४) ।

अप्पाबहु, **अप्पाबहुय** न [**अल्पबहुत्व**] न्यूनाधिक्ता, कम-वेशीपन; (नव ३२ ; ठा ४,२) ।

अप्पावय वि [**अप्रावृत**] १ वस्त्र-रहित, नग्न ; (पण्ह २, १) । २ खुला हुआ ; बँद नहीं किया हुआ ; (सूअ १, ५, १) ।

अप्पाविय वि [**अर्पित**] दिलाया हुआ ; (सुपा ३३१)।
अप्पाह सक [**सं+दिश्**] संदेश देना, खबर पहुँचाना। अप्पाहइ ; (षड् ; हे ४, १८०)। अप्पाहेइ (गा ६३२)। संकृ—**अप्पाहट्टु, अप्पाहिवि**; (पि ५७७ ; भवि)।
अप्पाह सक [**अधि+आपय्**] पढ़ाना, सीखाना। कर्म—अप्पाहिज्जइ ; (से १०, ७४)। वकृ—**अप्पाहेंत** ; (से १०, ७५)। हेकृ—**अप्पाहेउं** ; (पि २८६)।
अप्पाहण्ण न [**अप्राधान्य**] मुख्यता का अभाव, गौणता; (पंचा १ ; भास ११)।
अप्पाहिय वि [**संदिष्ट**] संदेश दिया हुआ; (भवि)।
अप्पाहिय वि [**अध्यापित**] १ पाठित, शिक्षित ; (से ११, ३८ ; १४, ६१)। २ न. सीख, उपदेश ; " अप्पाहियत्तरणं " (उप ५६२ टी)।
अप्पिड्ढिय वि [**अल्पर्द्धिक**] अल्प संपत्ति वाला ; (भग; पउम २, ७४)।
अप्पिण सक [**अर्पय्**] अर्पण करना, भेंट करना, देना। " अहीरंवि वारगेण अप्पिणइ " (आक)। अप्पिणामि ; (पि ५५७)। अप्पिणंति ; (विसे ७ टी)।
अप्पिणण न [**अर्पण**] दान, भेंट ; (उप १७४)।
अप्पिणिच्चिय वि [**आत्मीय**] स्वकीय, निजीय ; (भग)।
अप्पिय वि [**अर्पित**] १ दिया हुआ, भेंट किया हुआ ; (विपा १, २ ; हे १, ६३)। २ विवक्षित, प्रतिपादन करने को इष्ट, " जह दवियमप्पियं तं तहेव अत्थित्ति पज्जवनयस्स " (सम्म ४२)। ३ पुं. पर्यायार्थिक नय, " अप्पियमयं विसेसो सामन्नमणप्पियनयस्स " (विसे)।
अप्पिय वि [**अप्रिय**] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर; (भग १, ५ ; विपा १,१)। २ न. मन का दुःख; ३ चित्त की शङ्का, " अदु णाईणं व सुहीणं वा अप्पियं दट्ठु एगता होंति " (सूअ १, ४, १, १४)।
अप्पीइ स्त्री [**अप्रीति**] अप्रेम, अरुचि ; (सुपा २६४)।
अप्पीकय वि [**आत्मीकृत**] आत्मा से संबद्ध ; (विसे)।
अप्पुट्ठ वि [**अस्पृष्ट**] नहीं छूआ हुआ; असंयुक्त, "जं अप्पुट्ठा भावा ओहिनाणस्स हुंति पच्चक्खा " (सम्म ८१)।
अप्पुट्ठ वि [**अपृष्ट**] नहीं पूछा हुआ ; (सुपा १११)।
अप्पुण्ण वि [**दे. आपूर्ण**] पूर्ण ; (षड्)।
अप्पुल्ल वि [**आत्मीय**] आत्मा में उत्पन्न ; (हे २, १६३ ; षड् ; कुमा)।

अप्पुव्व देखो **अप्पुव्व** ; "अप्पुव्वो पडिबंधो जीवियमवि चयइ मह कज्जे " (सुपा ३११)।
अप्पेयव्व देखो **अप्प=अर्पय्**।
अप्पोलि स्त्री [**अप्रज्वलिता**] कच्ची फल-फुलेरी ; (श्रा २१)।
अप्पोल्ल वि [**दे**] पोल-रहित, नक्कर ; (बृह ३)।
अप्फडिअ वि [**आस्फालित**] आस्फालित, आहत ; (विसे २६८२ टी)।
अप्फाल सक [**आ+स्फालय्**] १ आस्फोटन करना, हाथ से आघात करना। २ ताडना, पीटना। ३ ताल ठोकना। अप्फालेइ ; (महा)। कवकृ—**अप्फालिज्जंत**; (राय)। संकृ—**अप्फालिऊण** ; (काप्र १८६ ; महा)।
अप्फालण न [**आस्फालन**] १ ताल ठोकना ; २ ताड़न, आघात ; (गा ५४८ ; से ५, २२ ; सुपा ८७)।
अप्फालिय वि [**आस्फालित**] १ हाथ से ताडित, आहत; (पि ३११)। २ वृद्धि-प्राप्त, उन्नत ; (राज)।
अप्फुंद सक [**आ+क्रम्**] १ आक्रमण करना। २ जाना। " संझाराओ व्व णहं अप्फुंदइ मलिअरविअरं कुसुमरओ " (से ६, ५७)।
अप्फुडिय देखो **अफुडिय** ; (जं २ ; दस ६)।
अप्फुण्ण वि [**दे. आक्रान्त**] आक्रान्त, दबाया हुआ ; (हे ४, २५८)।
अप्फुण्ण वि [**अपूर्ण**] अपूर्ण, अधूरा ; (गउड)।
अप्फुण्ण } **अप्फुन्न** } वि [**दे. आपूर्ण**] पूर्ण, भरा हुआ ; (दे १, २० ; सुर १०, १७० ; पाअ) " महया पुत्तसोएणं अप्फुन्ना समाणी " (निर १, १)।
अप्फुल्लय देखो **अप्पुल्ल** ; (गउड)।
अप्फोआ स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पराण १)।
अप्फोड सक [**आ+स्फोटय्**] १ आस्फालन करना, हाथ से ताल ठोकना। २ ताड़न करना। वकृ—**अप्फोडंत** ; (णाया १, ८; सुर १३, १८२)।
अप्फोडण न [**आस्फोटन**] आस्फालन ; (गउड)।
अप्फोडिय } **अप्फोलिय** } वि [**आस्फोटित**] १ आस्फालित, आहत। २ न. आस्फालन, आघात ; (पराह १, ३ ; कप्प)।
अप्फोव वि [**दे**] वृक्षादि से व्याप्त, गहन, निबिड ; (उत्त १, १८)।
अफल वि [**अफल**] निष्फल, निरर्थक ; (द्र १)।

अफाय पुं [दे] भूमि-स्फोट, वनस्पति-विशेष ; (पराग १)।
अफास वि [अस्पर्श] १ स्पर्श-रहित ; (भग)। २ खराब स्पर्श वाला ; (सूत्र १, ५, १)।
अफासुय वि [अप्रासुक] १ सचित्त, सजीव ; (भग ५, ६)। २ अग्राह्य (भिक्षा) ; (ठा ३, १)।
अफुड वि [अस्फुट] अस्पष्ट, अव्यक्त ; (सुर ३, १०६; २१३ ; गा २६६ ; उप ७२८ टी)।
अफुडिअ वि [अस्फुटित] अखण्डित, नहीं टूटा हुआ ; (कुमा)।
अफुस वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने को अयोग्य ; (भग)।
अफुसिय वि [अभ्रान्त] भ्रम-रहित ; (कुमा)।
अफुस्स देखो **अफुस** ; (ठा ३, २)।
अब्° स्त्री. ब. [अप्°] पानी, जल ; (श्रा २३)।
अबंभ न [अब्रह्म] मैथुन, स्त्री-सङ्ग ; (पराह १, ४)। **°चारि** वि [°चारिन्] ब्रह्मचर्य नहीं पालने वाला ; (पि ४०५; ५१५)।
अबद्धिय पुं [अबद्धिक] 'कर्मों का आत्मा से स्पर्श ही होता है, न कि क्षीर-नीर की तरह ऐक्य' ऐसा मानने वाला एक निह्नव—जैनाभास; २ न. उसका मत; (ठा ७; विसे)।
अबल वि [अबल] बल-रहित, निर्बल; (पउम ४८, ११७)।
अबला स्त्री [अबला] स्त्री, महिला, जनाना; (पात्र)।
अबश पुं [अबश] वडवानल ; (से १, १)।
अबहिट्ठ न [दे. अवहित्थ] मैथुन, स्त्री-सङ्ग; (सूत्र १, ६)।
अबहिम्मण वि [अबहिर्मनस्क] धर्मिष्ठ, धर्म-तत्पर ; (आचा)।
अबहिल्लेस } वि [अबहिर्लेश्य] जिसकी चित्त-वृत्ति
अबहिल्लेस्स } बाहर न घूमती हो, संयत; (भग ; पराह २, ५)।
अबाधा देखो **अबाहा** ; (जीव ३)।
अबाह पुं [अबाह] देश-विशेष ; (इक)।
अबाहा स्त्री [अबाधा] १ बाध का अभाव ; (ओघ ५२ भा; भग १४,८)। २ व्यवधान, अन्तर ; (सम १६)। ३ बाध-रहित समय ; (भग)।
अबाहिर अ [अबहिस्] बाहर नहीं, भीतर; (कुमा)।
अबाहिरय वि [अबाह्य] भीतरी, आभ्यन्तर; (वव १)
अबाहिरिय वि [अबाहिरिक] जिसके किले के बाहर वसति न हो ऐसा गाँव या शहर; (बृह १)।
अबीय देखो **अवीय** ; (कप्प)।
अबुज्झ अ [अबुद्ध्वा] नहीं जान कर; "केसिंचि तक्काइ अबुज्झ भावं" (सूत्र १, १३, २०)।
अबुद्ध वि [अबुध] १ अजान, मूर्ख ; (दस २)। २ अविवेकी ; (सूत्र १, ११)।
अबुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से भी अधिक फल की प्राप्ति ; (दे १, ४२)।
अबुद्धिय } वि [अबुद्धिक] बुद्धि-रहित, मूर्ख; (णाया
अबुद्धीय } १, १७; सूत्र १, २, १; पउम ८, ७४)।
अबुह वि [अबुध] १ अजान ; (सूत्र १, २, १ ; जी १)। २ मूर्ख, बेवकुफ ; (पराह १, १)।
अबोह वि [अबोध] १ बोध-रहित, अजान। २ पुं. ज्ञान का अभाव ; (धर्म १)।
अबोहि पुंस्त्री [अबोधि] १ ज्ञान का अभाव ; (सूत्र २, ६)। २ जैन धर्म की अप्राप्ति; ३ बुद्धि-विशेष का अभाव; (भग १, ६)। ४ मिथ्या-ज्ञान, "अबोहिं परियाणामि बोहिं उवसंपज्जामि" (आव ४)। ५ वि. बोधि-रहित ; (भग)।
अबोहिय न [अबोधिक] ऊपर देखो ; (दस ६; सूत्र १, १, २)।
अब्बंभ देखो **अबंभ**; (सुपा ३१०)।
अब्बंभणण } न [अब्रह्मण्य] ब्रह्मण्य का अभाव ;
अब्बम्हण्ण } (नाट ; प्रयौ ७६)।
अब्बुय पुं [अर्बुद] पर्वत-विशेष, जो आजकल 'आबू' नाम से प्रसिद्ध है ; (राज)।
अब्भ न [अभ्र] १ आकाश ; (राय; पात्र)। २ मेघ, बद्दल ; (ठा ४, ४ ; पात्र)।
अब्भंग सक [अभि+अञ्ज्] तैल आदि से मर्दन करना, मालिश करना। अब्भंगइ, अब्भंगेइ ; (महा)। संकृ—**अब्भंगिउं, अब्भंगेत्ता, अब्भंगित्ता,** (ठा ३, १; पि २३४)। हेकृ—**अब्भंगेत्तए** ; (कस)।
अब्भंग पुं [अभ्यङ्ग] तैल-मर्दन, मालिश ; (निचू ३)।
अब्भंगण न [अभ्यञ्जन] ऊपर देखो ; (णाया १, १; महा)।
अब्भंगिएल्लय } वि [अभ्यक्त] तैलादि से मर्दित,
अब्भंगिय } मालिश किया हुआ; (ओघ ८२; कप्प)।
अब्भंतर न [अभ्यन्तर] १ भीतर, में ; (गा ६२३)। २ वि. भीतर का, भीतरी; (राय; महा)। ३ समीप का,

नजदीक का (सम्बन्धी); (ठा ८)। °**ठाणिज्ज** वि [**स्थानीय**] नजदीक के सम्बन्धी, कौटुम्बिक लोक; (विपा १, ३) °**तव** पुं [°**तपस्**] विनय, वैयावृत्य, प्रायश्चित्त, स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग रूप अन्तरंग तप; (ठा ६)। °**परिसा** स्त्री [°**परिषद्**] मित्र आदि समान जनों की सभा; (राय)। °**लद्धि** स्त्री [°**लब्धि**] अवधिज्ञान का एक भेद; (विसे)। °**संबुक्का** स्त्री [°**शम्बूका**] भिक्षा की एक चर्या, गति-विशेष; (ठा ६)। °**सगडुद्धिया** स्त्री [°**शकटोद्धिका**] कायोत्सर्ग का एक दोष; (पव ५)।

अब्भंतर वि [**अभ्यन्तर**] भीतरी, भीतर का; (जं ७; ठा २, १; पराण ३६)।

अब्भंसि वि [**अभ्रंशिन्**] १ भ्रष्ट नहीं होने वाला; (नाट)। २ अनष्ट; (कुमा)।

अब्भक्खइज्ज देखो **अब्भक्खा**।

अब्भक्खण न [**दे**] अकीर्त्ति, अपयश; (दे १, ३१)।

अब्भक्खा सक [**अभ्या+ख्या**] झूठा दोष लगाना, दोषारोप करना। अब्भक्खाइ; (भग ५; ७)। कृ—**अब्भक्खइज्ज**; (आचा)।

अब्भक्खाण न [**अभ्याख्यान**] झूठा अभियोग, असत्य दोषारोप; (पराह १, २)।

अब्भड अ [**दे**] पीछे जा कर; (हे ४, ३९५)।

अब्भणुजाण सक [**अभ्यनु+ज्ञा**] अनुमति देना, सम्मति देना। अब्भणुजाणिस्सदि (शौ); (पि ५३४)।

अब्भणुण्णा स्त्री [**अभ्यनुज्ञा**] अनुमति, सम्मति; (राज)।

अब्भणुण्णाय वि [**अभ्यनुज्ञात**] अनुमत, संमत; (ठा ५, १)।

अब्भणुन्ना देखो **अब्भणुण्णा**।

अब्भणुन्नाय देखो **अब्भणुण्णाय**; (णाया १, १; कप्प; सुर ३, ८८)।

अब्भण्ण न [**अभ्यर्ण**] १ निकट, नजदीक। २ वि. समीपस्थ; (पउम ९८, ५८)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम ९८, ५८)।

अब्भत्त वि (**अभ्यक्त**) १ तैलादि से मर्दित, मालिश किया हुआ। २ सिक्त, सिञ्चा हुआ, "दिसि दिसि चब्भत्त-भरिकेयारो, पत्तो वासारत्तो" (सुर २, ७८)।

अब्भत्थ वि [**अभ्यस्त**] पठित, शिक्षित; (सुपा ६७)।

अब्भत्थ सक [**अभि+अर्थय्**] १ सत्कार करना। २ प्रार्थना करना। अब्भत्थम्ह; (पि ४७०)। संकृ—**अब्भत्थइअ, अब्भत्थिअ**; (नाट)। कृ—**अब्भत्थणीय**; (अभि ७०)।

अब्भत्थण न [**अभ्यर्थन**] १ सत्कार; २ प्रार्थना; (कप्पू; हे ४, ३८४)।

अब्भत्थणा } स्त्री [**अभ्यर्थना**] १ आदर, सत्कार;
अब्भत्थणिया } (से ४,४८); २ प्रार्थना, विज्ञप्ति; (पंचा ११; सुर १, १९)।

"न सहइ अब्भत्थणियं, असइ गयाणंपि पिट्ठिमंसाइं।
दट्ठूण भासुरमुहं, खलसीहं को न बीहेइ" (वज्जा१२)।

अब्भत्थिय वि [**अभ्यर्थित**] १ आदृत, सत्कृत। २ प्रार्थित; (सुर १, २१)।

अब्भन्न देखो **अब्भण्ण**; (पाअ)।

अब्भपिसाअ पुं [**दे**] राहु; (दे १, ४२)।

अब्भय पुं [**अर्भक**] बालक, बच्चा; (पाअ)।

अब्भय पुं [**अभ्रक**] अभरख; (जी ४)।

अब्भरहिय वि [**अभ्यर्हित**] सत्कार-प्राप्त, गौरव-शाली; (बृह १)।

अब्भवहार पुं [**अभ्यवहार**] भोजन, खाना; (विसे २२१)।

अब्भव्व देखो **अभव्व**। "अब्भव्वाणं सिद्धा णंतगुणा णंतया भव्वा" (पसं ८४)।

अब्भस सक [**अभि+अस्**] सीखना, अभ्यास करना। वकृ—**अब्भसंत**; (स ६०६)। कृ—**अब्भसियव्व**; (सुर १४, ८५)।

अब्भसण न [**अभ्यसन**] अभ्यास; (दसनि १)।

अब्भसिय वि [**अभ्यस्त**] सीखा हुआ; (सुर १, १८०; ६, १९)।

अब्भहिय वि [**अभ्यधिक**] विशेष, ज्यादः; (सम २; सुर १, १७०)।

अब्भाअच्छ वि [**अभ्या+गम्**] संमुख आना, सामने आना। अब्भाअच्छइ; (षड्)।

अब्भाइक्ख देखो **अब्भक्खा**। अब्भाइक्खइ, अब्भाइक्खेज्जा; (आचा)।

अब्भागम पुं [**अभ्यागम**] १ संमुखागमन; २ समीप स्थिति; (निचू २)।

अब्भागमिय } वि [**अभ्यागत**] १ संमुखागत; २
अब्भागय } पुं. आगन्तुक, पाहुन, अतिथि; (सूअ १, २, ३; सुपा ५)।

अब्भायत्त } वि [**दे**] प्रत्यागत, वापिस आया हुआ ;
अब्भायत्थ } (दे १, ३१)।

अब्भास न [**अभ्यास**] १ निकट, नजदीक ; (से ६, ६० ; पात्र) । २ वि. समीप-वर्ती, पार्श्व-स्थित ; (पात्र) । ३ पुं. शिक्षा, पढ़ाई, सीख ; ४ आवृत्ति; (पात्र ; बृह १) । ५ आदत ; (ठा ४, ४) । ६ आवृत्ति से उत्पन्न संस्कार ; (धर्म २) । ७ गणित का संकेत-विशेष ; (कम्म ४, ७८ ; ८३) ।

अब्भास सक [**अभि+अस्**] अभ्यास करना, आदत डालना।

"जं अब्भासइ जीवो, गुणं च दोसं च एत्थ जम्मम्मि । तं पावइ पर-लोए, तेण य अब्भास-जोएण" (धर्म २; भवि)।

अब्भाहय वि [**अभ्याहत**] आघात-प्राप्त ; (महा) ।

अब्भिंग देखो **अब्भंग**=अभि + अंज् । प्रयो—अब्भिंगावइ; (पि २३४) ।

अब्भिंग देखो **अब्भंग**=अभ्यंग ; (णाया १, १८) ।

अब्भिंगण देखो **अब्भंगण** ; (कप्प) ।

अब्भिंगिय देखो **अब्भंगिय** ; (कप्प) ।

अब्भिंतर देखो **अब्भंतर** ; (कप्प ; सं ७; पण्ह ३, ५ ; णाया १, १३) ।

अब्भिंतरओ अ [**अभ्यन्तरतस्**] १ भीतर से ; २ भीतर-में ; (आवम) ।

अब्भिंतरिय वि [**आभ्यन्तरिक**] भीतर का, अन्तरङ्ग ; (सम ६७ ; कप्प ; णाया १, १) ।

अब्भिट्ट वि [**दे**] संगत, सामने आकर भीडा हुआ, "हत्थी हत्थीण समं अब्भिट्टो रहवरो सह रहेणं" (पउम ६,१८२ ; ६८, २७) ।

अब्भिड सक [**सं+गम्**] संगति करना, मिलना । अब्भिडइ ; (कुमा ; हे ४, १६४) । अब्भिडसु ; (सुपा १५२)।

अब्भिडिअ वि [**संगत**] संगत, युक्त ; (पात्र ; दे १, ७८) ।

अब्भिडिय वि [**दे**] सार, मजबूत ; (दे १, ७८) ।

अब्भिण्ण वि [**अभिन्न**] भेद को अप्राप्त ; (धर्म २) ।

अब्भुअअ देखो **अब्भुदय** ; (से १५, ६५ ; स ३०) ।

अब्भुक्ख सक [**अभि+उक्ष्**] सिञ्चन करना । वकृ—**अब्भुक्खंत** ; (वज्जा ८६) ।

अब्भुक्खण न [**अभ्युक्षण**] सिञ्चन करना, छिटकाव ; (स ५७६) ।

अब्भुक्खणीया स्त्री [**अभ्युक्षणीया**] सीकर, आसार, पवन से गिरता जल ; (बृह १) ।

अब्भुक्खिय वि [**अभ्युक्षित**] सिक्त ; (स ३४०) ।

अब्भुगम पुं [**अभ्युद्गम**] उदय, उन्नति ; (सूत्र १,१४)।

अब्भुग्गय वि [**अभ्युद्गत**] १ उन्नत ; २ उत्पन्न ; (णाया १, १) । ३ ऊंचा किया हुआ, उठाया हुआ ; (औप) । ४ चारों तरफ फैला हुआ ; (चंद १८) ।

अब्भुग्गय वि [**अभ्रोद्गत**] ऊंचा, उन्नत ; (भग १२,५)।

अब्भुच्चय पुं [**अभ्युच्चय**] समुच्चय ; (भास ६५) ।

अब्भुज्जय वि [**अभ्युद्यत**] १ उद्यत, उद्यम-युक्त ; (णाया १, ५) । २ तय्यार ; (णाया १, १ ; सुपा २२२) । ३ पुं. एकाकी विहार ; (धम्म १२ टी) । ४ जिनकल्पिक मुनि ; (पंचव ४) ।

अब्भुट्ठ उभ [**अभ्युत्+स्था**] १ आदर करने के लिए खड़ा होना । २ प्रयत्न करना । ३ तय्यारी करना । अब्भुट्ठेइ; (महा) । वकृ—**अब्भुट्ठमाण** ; (स ४१६)। संकृ—**अब्भुट्ठित्ता** ; (भग) । हेकृ—**अब्भुट्ठित्तए** ; (ठा २, १) । कृ—**अब्भुट्ठेयव्व** ; (ठा ८) ।

अब्भुट्ठण न [**अभ्युत्थान**] आदर के लिए खड़ा होना ; (स १०, ११) ।

अब्भुट्ठा देखो **अब्भुट्ठ** ।

अब्भुट्ठाण देखो **अब्भुट्ठण** ; (सम ५१ ; सुपा ३७६) ।

अब्भुट्ठिय वि [**अभ्युत्थित**] १ सम्मान करने के लिए जो खड़ा हुआ हो ; (णाया १, ८) । २ उद्यत, तय्यार ; "अब्भुट्ठिएसु मेहेसु" (णाया १, १ ; पडि) ।

अब्भुट्ठेत्तु [**अभ्युत्थातृ**] अभ्युत्थान करने वाला ; (ठा ५, १) ।

अब्भुण्णय वि [**अभ्युन्नत**] उन्नत, ऊंचा ; (पण्ह १,४)।

अब्भुण्णयंत वकृ [**अभ्युन्नयत्**] १ ऊंचा करता हुआ; २ उत्तेजित करता हुआ ; "तीएवि जलंतिं दीववत्तिमब्भुण्णअंतीए" (गा २६४) ।

अब्भुत्त अक [**स्ना**] स्नान करना । अब्भुत्तइ ; (हे ४, १४) । वकृ—**अब्भुत्तंत** ; (कुमा) ।

अब्भुत्त अक [**प्र+दीप्**] १ प्रकाशित होना । २ उत्तेजित होना । अब्भुत्तइ ; (हे ४, १५२) । अब्भुत्तए; (कुमा) । प्रयो—अब्भुत्तेति ; (से ५, ५६) ।

अब्भुत्तिअ वि [**प्रदीप्त**] १ प्रकाशित ; २ उत्तेजित ; (से १५, ३८) ।

अब्भुत्थ वि [**अभ्युत्थ**] उत्पन्न, " पुव्वभवब्भुत्थसिणे-हाओ " (महा) ।

अब्भुत्थ) देखो **अब्भुट्ठा** । वकृ—**अब्भुत्थंत** ; (से
अब्भुत्था) १२, १८) । संकृ—**अब्भुत्थित्ता**; (काल) ।

अब्भुदय पुं [**अभ्युदय**] १ उन्नति, उदय ; (प्रयौ २६) ; " अब्भुयभूयब्भुदयं लद्धूणं नरभवं सुदीहद्धं " (उप ७६८ टी) ।

अब्भुद्धर सक [**अभ्युद्** + **धृ**] उद्धार करना । अब्भुद्धरामि; (भवि) ।

अब्भुद्धरण न [**अभ्युद्धरण**] १ उद्धार ; (स ५४३) । २ वि. उद्धार-कारक ; (हे ४, ३६४) ।

अब्भुन्नय देखो **अब्भुण्णय** ; (णाया १, १) ।

अब्भुब्भड वि [**अभ्युद्भट**] अत्युद्भट, विशेष उद्धत; (भवि)।

अब्भुय न [**अद्भुत**] १ आश्चर्य, विस्मय ; (उप ७६८ टी) । २ वि. आश्चर्य-कारक ; (राय ; सुपा; ३५) । ३ पुं. साहित्य शास्त्र प्रसिद्ध रसों में से एक ;
" विम्हयकरो अपुव्वो, अभूयपुव्वो य जो रसो होइ ।
हरिसविसाउप्पत्ती, लक्खणओ अब्भुओ नाम " (अणु) ।

अब्भुवगच्छ सक [**अभ्युप+गम्**] १ स्वीकार करना । २ पास जाना । प्रयो,—संकृ—**अब्भुवगच्छाविय** ; (पि १६३) ।

अब्भुवगच्छाविअ वि [**अभ्युपगमित**] स्वीकार कराया हुआ ; " ताहे तेहिं कुमारेहिं सव्वो मज्जं पाएत्ता अब्भुवग-च्छाविओ विगयमओ चिंतेइ " (आक पृ ३०) ।

अब्भुवगम पुं [**अभ्युपगम**] १ स्वीकार, अङ्गीकार ; (सम १४५ ; स १७०) । २ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध सिद्धान्त-विशेष ; (बृह १ ; सूअ १, १२) ।

अब्भुवगमणा स्त्री [**अभ्युपगमना**] स्वीकार, अङ्गी-कार ; (उप ८०५) ।

अब्भुवगय वि [**अभ्युपगत**] १ स्वीकृत ; (सुर ६, ४८)। २ समीप में गया हुआ ; (आचा) ।

अब्भुववण्ण वि [**अभ्युपपन्न**] अनुग्रह-प्राप्त, अनुगृहीत ; (नाट ; पि १६३; २७६) ।

अब्भुववत्ति स्त्री [**अभ्युपपत्ति**] अनुग्रह, महरबानी ; (अभि १०४) ।

अब्भो देखो **अव्वो** ; (षड्) ।

अब्भोक्खिय वि [**अभ्युक्षित**] सिक्त, सींचा हुआ ; (सुर ६, १६१) ।

अब्भोय (अप) देखो **आभोग** ; (भवि) ।

अब्भोवगमिय वि [**आभ्युपगमिक**] स्वेच्छा से स्वीकृत । °**ा** स्त्री [°**ा**] स्वेच्छा से स्वीकृत तपश्चर्यादि की वेदना ; (ठा ४, ३) ।

अब्भिड देखो **अब्भिड** । अब्भिडइ ; (षड्) ।

अब्हुत्त देखो **अब्भुत्त** । अब्हुत्तइ ; (षड्) ।

अभग्ग वि [**अभग्न**] १ अखण्डित, अत्रुटित ; (पडि) । २ इस नाम का एक चोर ; (विपा १,१) ।

अभत्त वि [**अभक्त**] १ भक्ति नहीं करने वाला ; (कुमा) । २ न. भोजन का अभाव; (वव ७) । °**ट्ठ** पुं [°**ार्थ**] उपवास ; (आचू ; पडि ; सुपा ३१७) । °**ट्ठिय** वि [°**ार्थिक**] उपोषित, जिसने उपवास किया हो वह ; (पंचव २) ।

अभय न [**अभय**] १ भय का अभाव, धैर्य ; (राय) । २ जीवित, मरण का अभाव ; (सूअ १, ६) । ३ वि. भय-रहित, निर्भीक ; (आचा) ४ पुं. राजा श्रेणिक का एक विख्यात पुत्र और मन्त्री, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (अनु १; णाया १, १) । °**कुमार** पुं [°**कुमार**] देखो अनन्तरोक्त अर्थ; (पडि) । °**दय** वि [°**दय**] भय-विनाशक, जीवित-दाता ; (पडि) । °**दाण** न [°**दान**] जीवित-दान ; (पण्ह २, ४) । °**देव** पुं [°**देव**] कईएक विख्यात जैनाचार्य और ग्रन्थकारों का नाम; (मुणि १०८७४ ; गु १४; ती ४०; सार्ध ७३) । °**प्पदाण** न [**प्रदान**] जीवित का दान ; (सूअ १, ६) । °**वत्त** न [°**वत्त्व**] निर्भयता, अभय ; (सुपा १८) । °**सेण** पुं [°**सेन**] एक राजा का नाम; (पिंड) ।

अभयंकर वि [**अभयंकर**] अभय देने वाला, अहिंसक ; (सूअ १, ७, २८) ।

अभया स्त्री [**अभया**] १ हरीतकी, हरडई; (निचू १५) । २ राजा दधिवाहन की स्त्री का नाम ; (ती ३५) ।

अभयारिट्ठ न [**अभयारिष्ट**] मद्य-विशेष ; (सूअ १, ८) ।

अभवसिद्धिय) पुं [**अभवसिद्धिक**] अभव्य, मुक्ति के
अभवसिद्धिय) लिये अयोग्य जीव ; (ठा २, २ ; णंदि ; ठा १) ।

अभविय) वि [**अभव्य**] १ असुन्दर, अचारु; (विसे)
अभव्व) २ पुं. मुक्ति के लिये अयोग्य जीव ; (विसे ; कम्म ३, २३) ।

अभाअ वि [**अभाग**] अ-स्थान, अयोग्य स्थान ; (से ८, ४२)।

अभाइ वि [**अभागिन्**] अभागा,, हत-भाग्य, कमनसीब ; (चारु २६)।

अभागधेज्ज वि [**अभागधेय**]ऊपर देखो; (पउम २८,८६)

अभाव पुं [**अभाव**] १ ध्वंस, नाश ; (बृह १)। २ अ-विद्यमानता, असत्त्व ; (पंचा ३)। ३ असम्भव ; (दस १)। ४ अशुभ परिणाम ; (उत्त १)।

अभाविय वि [**अभावित**] अयोग्य, अनुचित ; (ठा १० ; बृह ३)।

अभावुग वि [**अभावुक**] जिस पर दूसरे के संग की असर न पड़ सके वह, "विसहरमणी अभावुगदव्वं जीवो उ भावुगं तम्हा" (सुपा १७५; ओघ ७७३)।

अभासग, **अभासय** वि [**अभाषक**] १ बोलने की शक्ति जिसको उत्पन्न न हुई हो वह ; २ नहीं बोलने वाला ; ३ पुं. केवल त्वग्-इन्द्रिय वाला, एकेन्द्रिय जीव; ४ मुक्त आत्मा ; (ठा २, ४; भग; अणु)।

अभासा स्त्री [**अभाषा**] १ असत्य वचन ; २ सत्य-मिश्रित असत्य वचन ; (भग २५, ३)।

अभि अ [**अभि**] निम्न-लिखित अर्थों में से किसी एक को बतलाने वाला अव्यय;— १ संमुख, सामने ; जैसे—'अभिगच्छणया' (औप)। २ चारों ओर, समन्तात् ; जैसे—'अभिदो' (स्वप्न ४२)। ३ बलात्कार ; जैसे—'अभिओग' (धर्म २)। ४ उल्लंघन, अतिक्रमण ; जैसे—'अभिक्कंत' (आचा)। ५ अत्यन्त, ज्यादः ; जैसे—'अभिदुग्ग' (सूअ १, ५, २)। ६ लक्ष्य ; जैसे—'अभिमुहं'। ७ प्रतिकूल , जैसे—'अभिवाय' (आचा)। ८ विकल्प ; ९ संभावना ; (निचू १)। १० निरर्थक भी इस अव्यय का प्रयोग होता है; जैसे—'अभिमंतिय' (सुर १६, ६२)।

अभिअण पुं [**अभिजन**] १ कुल ; २ जन्म-भूमि ; (नाट)।

अभिआवण्ण वि [**अभ्यापन्न**] संमुख-आगत ; (सूअ १, ४,२)।

अभिइ स्त्री [**अभिजित्**] नक्षत्र-विशेष ; (ठा २, ३)।

अभिइ सक [**अभि+इ**] सामने जाना, संमुख जाना। वकृ— **अभिइंत** ; (उप १४२ टी)।

अभिउंज देखो **अभिजुंज**। संकृ—**अभिउंजिय** ; (ठा ३, ४ ; दस १०)।

अभिओअ, **अभिओग** पुं [**अभियोग**] १ आज्ञा, हुकुम; (औप; ठा १०)। २ बलात्कार, "अभिओगे अ निओगे" (श्रा ५)। ३ बलात्कार से कोई भी कार्य में लगाना ; (धर्म २)। ४ अभिभव, पराभव ; (आव ५)। ५ कार्मण-प्रयोग, वशीकरण, वश करने का चूर्ण या मन्त्र-तन्त्रादि ;

"दुविहो खलु अभिओगो, दव्वे भावे य होइ नायव्वो।
दव्वम्मि होइ जोगो, विज्जा मंता य भावम्मि"
(ओघ ५९७)।

६ गर्व, अभिमान; (आव ५)। ७ आग्रह, हठ; (नाट)। °**पण्णत्ति** स्त्री [°**प्रज्ञप्ति**) विद्या-विशेष ; (णाया १, १६)। देखो **अहिओय**।

अभिओगी स्त्री [**आभियोगी**] भावना-विशेष, ध्यान-विशेष, जो अभियोगिक देव-गति (नौकर-स्थानीय देव-जाति) में उत्पन्न होने का हेतु है ; (बृह १)।

अभिओयण न [**अभियोजन**] देखो **अभिओग** ; (आव; पराण २०)।

अभिंगण, **अभिंजण** देखो **अब्भंगण** ; (नाट ; रंभा)।

अभिकंख सक [**अभि+काङ्क्ष्**] इच्छा करना, चाहना। अभिकंखेज्जा ; (आचा)। वकृ—**अभिकंखमाण** ; (दस ६, ३)।

अभिकंखा स्त्री [**अभिकाङ्क्षा**] अभिलाषा, इच्छा ; (आचा)।

अभिकंखि, **अभिकंखिर** वि [**अभिकाङ्क्षिन्**] अभिलाषी, इच्छुक ; (पि ४०५ ; सुपा १२६)।

अभिक्कंत वि [**अभिक्रान्त**] १ गत, अतिक्रान्त, "अणभिक्कंतं च खलु वयं संपेहाए" (आचा)। २ संमुख गत ; ३ आरब्ध ; ४ उल्लंघित ; (आचा ; सूअ २, २)।

अभिक्कम सक [**अभि+क्रम्**] १ जाना गुजरना। २ सामने जाना। ३ उल्लंघन करना। ४ शुरू करना। वकृ—**अभिक्कममाण** ; (आचा)। संकृ—**अभिक्कम्म** ; (सूअ १, १, २)।

अभिक्कम पुं [**अभिक्रम**] १ उल्लंघन। २ प्रारम्भ। ३ संमुख-गमन। ४ गमन, गति ; (आचा)।

अभिक्ख, **अभिक्खण** अ [**अभीक्ष्ण**] बारंवार ; (उप १४७ टी ; ठा २, ४ ; वव ३)।

अभिक्खा स्त्री [**अभिख्या**] नाम ; (विसे १०४८)।

अभिगच्छ सक [**अभि + गम्**] सामने जाना। अभिगच्छंति ; (भग २, ५)।

अभिगच्छणया स्त्री [**अभिगमन**] संमुख-गमन; (औप)।

अभिगज्ज अक [**अभि+गर्ज्**] गर्जना, खूब जोर से अवाज करना। वकृ—**अभिगज्जंत**; ; (गाया १, १८ ; सुर १३, १८३)।

अभिगम पुं [**अभिगम**] १ प्राप्ति, स्वीकार ; (पक्खि)। २ आदर, सत्कार ; (भग २, ५)। ३ (गुरु का) उपदेश, सीख ; (गाया १, १)। ४ ज्ञान, निश्चय; (पव १४६)। ५ सम्यक्त्व का एक भेद ; (ठा २, १)। ६ प्रवेश ; (से ८, ३३)।

अभिगमण न [**अभिगमन**] ऊपर देखो ; (स्वप्न १६ ; गाया १, १२)।

अभिगमि वि [**अभिगमिन्**] १ आदर करने वाला। २ उपदेशक। ३ निश्चय-कारक। ४ प्रवेश करने वाला। ५ स्वीकार करने वाला, प्राप्त करने वाला ; (पण्ण ३४)।

अभिगय वि [**अभिगत**] १ प्राप्त। २ सत्कृत। ३ उपदिष्ट। ४ प्रविष्ट ; (बृह १)। ५ ज्ञात, निश्चित ; (गाया १, १)।

अभिगहिय न [**अभिग्रहिक**] मिथ्यात्व-विशेष ; (कम्म ४, ५१)।

अभिगिज्झ अक [**अभि+ गृध्**] अति लोभ करना, आसक्त होना। वकृ—**अभिगिज्झंत** ; (सूत्र २, २)।

अभिगिण्ह, **अभिगिन्ह** सक [**अभि + ग्रह्**] ग्रहण करना, स्वीकारना। अभिगिण्हइ; (कप्प)। संकृ—**अभिगिन्हित्ता, अभिगिज्झ**; (पि ५८२; ठा २, १)।

अभिग्गह पुं [**अभिग्रह**] १ प्रतिज्ञा, नियम ; (ओघ ३)। २ जैन साधुओं का आचार-विशेष ; (बृह १)। ३ प्रत्याख्यान, (नियम-विशेष) का एक भेद ; (आव ६)। ४ कदाग्रह, हठ ; (ठा २, १)। ५ एक प्रकार का शारीरिक विनय ; (वव १)।

अभिग्गहिय वि [**अभिग्रहिक**] अभिग्रह वाला ; (ठा २, १ ; पव ६)।

अभिग्गहिय वि [**अभिगृहीत**] १ जिसके विषय में अभिग्रह किया गया हो वह ; (कप्प ; पव ६)। २ न. अवधारण, निश्चय ; (पण्ण ११)।

अभिघट्ट सक [**अभि + घट्ट्**] वेग से जाना। कवकृ—**अभिघट्टिज्जमाण** ; (राय)।

अभिघाय पुं [**अभिघात**] प्रहार, मार-पीट, हिंसा ; (पण्ह १, १; बृह ४)।

अभिचंद पुं [**अभिचन्द्र**] १ यदु-वंश के राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी ; (अंत ३)। २ इस नाम का एक कुलकर पुरुष ; (पउम ३, ५५)। ३ मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१)।

अभिजण देखो **अभिअण** ; (स्वप्न २६)।

अभिजस न [**अभियशस्**] इस नाम का एक जैन साधुओं का कुल (एक आचार्य को संतति) ; (कप्प)।

अभिजाइ स्त्री [**अभिजाति**] कुलीनता, खानदानी ; (उत्त ११)।

अभिजाण सक [**अभि+ज्ञा**] जानना। वकृ— **अभिजाणमाण** ; (आचा)।

अभिजाय वि [**अभिजात**] १ उत्पन्न, " अभिजायसड्ढो " (उत्त १४)। २ कुलीन ; (राज)।

अभिजुंज सक [**अभि+युज्**] १ मन्त्र-तन्त्रादि से वश करना। २ कोई कार्य में लगाना। ३ आलिंगन करना। ४ स्मरण कराना, याद दिलाना। संकृ—**अभिजुंजिय, अभिजुंजियाणं, अभिजुंजित्ता** ; (भग २, ५ ; सूत्र १, ५, २; आचा ; भग ३, ५)।

अभिजुत्त वि [**अभियुक्त**] १ व्रत-नियम में जिसने दूषण न लगाया हो वह ; (गाया १, १४)। २ जानकार, पण्डित ; (णंदि)। ३ दुश्मन से घिरा हुआ ; (वेणी १२०)।

अभिज्झा स्त्री [**अभिध्या**] लोभ, लोलुपता, आसक्ति ; (सम ७१ ; पण्ह १, ५)।

अभिज्झिय वि [**अभिध्यित**] अभिलषित, वाञ्छित ; (पण्ण २८)।

अभिट्ठुय वि [**अभिष्टुत**] वर्णित, श्लाघित, प्रशंसित ; (आव २)।

अभिड्डुय देखो **अभिद्दुय** ; (सूत्र १, २, ३)।

अभिणअंत, **अभिणइज्जंत** देखो **अभिणी** ।

अभिणंद सक [**अभि+नन्द्**] १ प्रशंसा करना, स्तुति करना। २ आशीर्वाद देना। ३ प्रीति करना। ४ खुशो

मनाना । ५ चाहना, इच्छना । ६ बहुमान करना, आदर करना । अभिणंदइ ; (स १६३) । वकृ— **अभिणंदंत**; (औप ; णाया १, १ ; पउम ५, १३०) । कवकृ— **अभिणंदिज्जमाण** ; (ठा ६ ; णाया १, १) ।

अभिणंदिय वि [**अभिनन्दित**] जिसका अभिनन्दन किया गया हो वह ; (सुपा ३१०) ।

अभिणंदण न [**अभिनन्दन**] १ अभिनन्दन; २ पुं. वर्तमान अवसर्पिणी-काल के चतुर्थ जिन-देव ; (सम ४३) । ३ लोकोत्तर श्रावण मास ; (सुज्ज १०) ।

अभिणय पुं [**अभिनय**] शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना , नाट्य-क्रिया; (ठा ४, ४) ।

अभिणव वि [**अभिनव**] नूतन, नया ; (जीव ३) ।

अभिणिक्खंत वि [**अभिनिष्क्रान्त**] दीक्षित, प्रव्रजित ; (स २७८) ।

अभिणिगिण्ह सक [**अभिनि+ग्रह्**] रोकना, अटकाना । संकृ—**अभिणिगिज्झ** ; (पि ३३१; ५९१) ।

अभिणिचारिया स्त्री [**अभिनिचारिका**] भिक्षा के लिए गति-विशेष ; (वव ४) ।

अभिणिपया स्त्री [**अभिनिप्रजा**] अलग २ रही हुई प्रजा; (वव ६) ।

अभिणिबुज्झ सक [**अभिनि+बुध्**] जानना, इन्द्रिय आदि द्वारा निश्चित रूप से ज्ञान करना । अभिणिबुज्झए; (विसे ८१)।

अभिणिबोह पुं [**अभिनिबोध**] ज्ञान विशेष, मति-ज्ञान ; (सम्म ८६) ।

अभिणियट्टण न [**अभिनिवर्त्तन**] पीछे लौटना, वापिस जाना ; (आचा) ।

अभिणिविट्ठ वि [**अभिनिविष्ट**] १ तीव्र रूप से निविष्ट ; २ आग्रही ; (उत्त १४) ।

अभिणिवेस पुं [**अभिनिवेश**] आग्रह, हठ ; (णाया १, १२) ।

अभिणिवेह पुं [**अभिनिवेध**] उलटा मापना ; (आवम)।

अभिणिव्वगड वि [**दे. अभिनिर्व्याकृत**] भिन्न परिधि वाला, पृथग्भूत (घर वगैरः); (वव १, ६) ।

अभिणिव्वट्ट सक [**अभिनि+वृत्**] रोकना, प्रतिषेध करना । "से मेहावी अभिणिव्वट्टेज्जा कोहं च माणं च मायं च लोभं च पेज्जं च दोसं च मोहं च गब्भं च जम्मं च मारं च नरयं च तिरियं च दुक्खं च " (आचा) ।

अभिणिव्वट्ट सक [**अभिनिर्+वृत्**] १ संपादित करना, निष्पन्न करना । २ उत्पन्न करना । संकृ—**अभिणिव्वट्टित्ता**, (भग ५, ४) ।

अभिणिव्वट्ट वि [**अभिनिर्वृत्त**] १ निष्पन्न । २ उत्पन्न ; " इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूआ अभिसंजाया अभिणिव्वट्टा अभिसंवुड्ढा अभिसंबुद्धा अभिनिक्खंता अणुपुव्वेण महामुणी " (आचा) ।

अभिणिव्वुड वि [**अभिनिर्वृत**] १ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त ; (सूअ १, २, १) । २ शान्त, अकुपित; (आचा) । ३ पाप से निवृत्त ; (सूअ १, २, १) ।

अभिणिसज्जा स्त्री [**अभिनिषद्या**] जैन साधुओं को रहने का स्थान-विशेष ; (वव १) ।

अभिणिसिट्ठ वि [**अभिनिसृष्ट**] बाहर निकला हुआ ; (जीव ३) ।

अभिणिसेहिया स्त्री [**अभिनैषेधिकी**] जैन साधुओं का स्वाध्याय करने का स्थान-विशेष ; (वव १) ।

अभिणिस्सड वि [**अभिनिस्सृत**] बाहर निकला हुआ ; (भग १४, ६) ।

अभिणी सक [**अभि+नी**] अभिनय करना, नाट्य करना । वकृ—**अभिणअंत** ; (मै ७५) । कवकृ—**अभिणइज्जंत** ; (सुपा ३५६) ।

अभिणूम न [**अभिनूम**] माया, कपट; (सुअ १, २, १) ।

अभिण्ण वि [**अभिज्ञ**] जानकार, निपुण ; (उप ५८०) ।

अभिण्ण वि [**अभिन्न**] १ अ-त्रुटित, अ-विदारित, अ-खण्डित ; (उवा ; पंचा ११) । २ भेद-रहित, अपृथग्भूत ; (बृह ३) ।

अभिण्णपुड पुं [**दे**] खाली पुड़िया, लोगों को ठगने के लिए लड़के लोग जिसको रास्ता पर रख देते हैं; (दे १,४४)।

अभिण्णाण न [**अभिज्ञान**] निशानी, चिह्न; (श्रा १४) ।

अभिण्णाय वि [**अभिज्ञात**] जाना हुआ, विदित; (आचा)।

अभितज्ज सक [**अभि+तर्ज्**] तिरस्कार करना, ताड़न करना । वकृ—**अभितज्जेमाण** ; (णाया १, १८) ।

अभितत्त वि [**अभितप्त**] १ तपाया हुआ, गरम किया हुआ ; (सूअ १, ४, १, २७) ।

अभितव सक [**अभि+तप्**] १ तपाना ; २ पीडा करना । "चत्तारि अगणिओ समारभिता जेहिं कूरकम्मा भितविंति , बालं " (सूअ १, ५, १, १३) । कवकृ—**अभितप्पमाण**; " ते तत्थ चिट्ठंतिभितप्पमाणा मच्छा व जीवंतुवजोतिपत्ता " (सुअ १, ५, १, १३) ।

अभिताव सक [**अभि+तापय्**] १ तपाना, गरम करना। २ पीडित करना। अभितावयंति; (सूअ १, ५, १, २१; २२)।

अभिताव पुं [**अभिताप**] १ दाह; २ पीडा; (सूअ १, ५, १; २, ६)।

अभितास सक [**अभि+त्रासय्**] त्रास उपजाना, भय-भीत करना। वकृ—**अभितासेमाण**; (णाया १,१८)।

अभित्थु सक [**अभि+स्तु**] स्तुति करना, श्लाघा करना, वर्णन करना। अभित्थुणंति, अभित्थुणामि; (पि ४६४; विसे १०५४)। वकृ—**अभित्थुणमाण**; (कप्प)। कवकृ—**अभित्थुव्वमाण**; (रयण ६८)।

अभित्थुय वि [**अभिष्टुत**] स्तुत, श्लाघित; (संथा)।

अभिथु देखो **अभित्थु**। वकृ—**अभिथुणंत**; (णाया १, १)। कवकृ—**अभिथुव्वमाण**; (कप्प; ठा ६)।

अभिदुग्ग वि [**अभिदुर्ग**] १ दुःखोत्पादक स्थान; २ अतिविषम स्थान; (सूअ १, ५, १, १७)।

अभिदो (शौ) अ [**अभितः**] चारों ओर से; (स्वप्न ४२)।

अभिद्दव सक [**अभि+द्रु**] पीड़ा करना, दुःख उपजाना, हैरान करना। "नुदंति वायाहिं अभिद्दवं णरा" (आचा २, १६, २)।

अभिद्दविय वि [**अभिद्रुत**] उपद्रुत, हैरान किया हुआ; (सुर १२, ६७)।

अभिद्दुय देखो **अभिद्दविय**; (णाया १, ६; स ५६)।

अभिधाइ वि [**अभिधायिन्**] वाचक, कहने वाला; (विसे ३४७२)।

अभिधारण न [**अभिधारण**] धारणा, चिन्तन; (बृह ३)।

अभिधेज्ज } पुं [**अभिधेय**] अर्थ, वाच्य, पदार्थ;
अभिधेय } (विसे १ टी)।

अभिनंद देखो **अभिणंद**। वकृ—**अभिनंदमाण**; (कप्प)। कवकृ— **अभिनंदिज्जमाण**; (महा)।

अभिनंदण देखो **अभिणंदण**; (कप्प)।

अभिनंदि स्त्री [**अभिनंदि**] आनन्द, खुशी, "पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं" (अजि ३७)।

अभिनिक्खंत देखो **अभिणिक्खंत**; (आचा)।

अभिनिक्खम अक [**अभिनिर्+क्रम्**] दीक्षा (संन्यास) लेना, दीक्षा लेने की इच्छा करना, गृहवास से बाहर निकलना। वकृ—**अभिनिक्खमंत**; (पि ३६७)।

अभिनिगिण्ह देखो **अभिणिगिण्ह**; (आचा)।

अभिनिबुज्झ देखो **अभिणिबुज्झ**। अभिनिबुज्झइ; (विसे ९८)।

अभिनिवट्ट देखो **अभिणिवट्ट**। संकृ—**अभिनिवट्टित्ताणं**; (पि ५८३)।

अभिनिविट्ठ देखो **अभिणिविट्ठ**; (भग)।

अभिनिवेसिय न (**अभिनिवेशिक**) मिथ्यात्व का एक प्रकार, सत्य वस्तु का ज्ञान होने पर भी उसे नहीं मानने का दुराग्रह; (श्रा ६; कम्म ४, ५१)।

अभिनिव्वट्ट देखो **अभिणिव्वट्ट**; (कप्प; आचा)।

अभिनिव्विट्ठ वि [**अभिनिर्विष्ट**] संजात, उत्पन्न; (कप्प)।

अभिनिव्वुड देखो **अभिणिव्वुड**; (पि २१९)।

अभिनिस्सव अक [**अभिनि+स्रु**] टपकना, झरना। अभिनिस्सवइ; (भग)।

अभिन्न देखो **अभिण्ण**; (प्राप्र)।

अभिन्नाण देखो **अभिण्णाण**; (ओघ ४३९; सुर ७, १०१)।

अभिन्नाय देखो **अभिण्णाय**; (कप्प)।

अभिपल्लाणिय वि [**अभिपर्याणित**] अध्यारोपित, ऊपर रखा हुआ; (कुमा)।

अभिपाइय वि [**आभिप्रायिक**] अभिप्राय-संबन्धी, मनः-कल्पित; (अणु)।

अभिप्पाय पुं [**अभिप्राय**] आशय, मन-परिणाम; (आचा; स ३४; सुपा २६२)।

अभिप्पेय वि [**अभिप्रेत**] इष्ट; अभिमत; (स २३)।

अभिभव सक [**अभि+भू**] पराभव करना, परास्त करना। अभिभवइ; (महा)। संकृ—**अभिभविय, अभिभूय**; (भग ६, ३३; पण्ह १, २)।

अभिभव पुं [**अभिभव**] पराभव, पराजय, तिरस्कार; (आचा; दे १, ५७)।

अभिभवण न [**अभिभवन**] ऊपर देखो; (सुपा ४७९)।

अभिभास सक [**अभि+भाष्**] संभाषण करना। अभिभासे; (पि १६६)।

अभिभूइ स्त्री [**अभिभूति**] पराभव, अभिभव; (द्र ३०)।

अभिभूय वि [**अभिभूत**] पराभूत, पराजित; (आचा; सुर ४, ७५)

अभिमंजु देखो **अभिमण्णु**; (हे ४, ३०५)।

अभिमंत सक [अभि+मन्त्रय्] मंत्रित करना, मन्त्र से संस्कारना । संकृ—**अभिमंतिऊण, अभिमंतिय** ; (निचू १; आवम)।

अभिमंतिय वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से संस्कारित; (सुर १६, ६२)।

अभिमन्न सक [अभि+मन्] १ अभिमान करना । २ सम्मत करना । अभिमन्नइ ; (विसे २१६०, २६०३)।

अभिमय वि [अभिमत] इष्ट, अभिप्रेत ; (सूअ २, ४)।

अभिमाण पुं [अभिमान] अभिमान, गर्व ; (निचू १)।

अभिमार पुं [अभिमार] वृक्ष-विशेष ; (राज)।

अभिमुह वि [अभिमुख] १ संमुख, सामने स्थित ; २ क्रिवि. सामने ; (भग)।

अभिरइ स्त्री [अभिरति] १ रति, संभोग , २ प्रीति, अनुराग ; (विसे ३२२३)।

अभिरम अक [अभि+रम्] १ क्रीड़ा करना, संभोग करना । २ प्रीति करना । ३ तल्लीन होना, आसक्ति करना । अभिरमइ ; (महा)। वकृ—**अभिरमंत, अभिरममाण** ; (सुपा १२० ; गाया १, २; ४)।

अभिरमिय वि [अभिरमित] अनुरक्त किया हुआ, " अभिरमियकुसुयवणसंडं ससिमंडलं पलोयइ " (सुपा ३४)।

अभिरमिय) वि [अभिरत] १ अनुरक्त; (सुपा ३४)।
अभिरय) २ तल्लीन, तत्पर "साहू तवनियमसंजमाभिरया" (पउम ३७, ६३; स १२२)।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोहर, (गाया १, १३ ; स्वप्न ४५)।

अभिरुइय वि [अभिरुचित] पसंद, मन का अभिमत; (गाया १, १ ; उवा ; सुपा ३४४ ; महा)।

अभिरुय सक [अभि+रुच्] पसंद पडना, रुचना । अभिरुयइ ; (महा)।

अभिरुह सक [अभि+रुह्] १ रोकना । २ ऊपर चढ़ना, आरोहना । संकृ—

" चत्तारि साहिए मासे बहवे पाणजाइया आगम्म ।
अभिरुज्झ कायं विहरिंसु, आरुहिया णं तत्थ हिंसिंसु "
(आचा)।

अभिरोहिय वि [अभिरोधित] चारों ओर से निरुद्ध, रोका हुआ ; (णाया १, ६)।

अभिरोहिय वि [अभिरोहित] ऊपर देखो " परचक्करायाभिरोहिया " (" परचक्रराजेनापरसैन्यनृपतिनाभिरोहिताः सर्वतः कृतनिरोधा या सा तथा " टी); (णाया १,६)।

अभिलंघ सक [अभि+लङ्घ्] उल्लंघन करना । वकृ—**अभिलंघमाण** ; (णाया १, १)।

अभिलप्प वि [अभिलाप्य] कथन-योग्य, निर्वचनीय ; (आचू १)।

अभिलस सक [अभि+लष्] चाहना, वाञ्छना । अहिलसइ ; (उव)।

अभिलाअ) पुं [अभिलाप] १ शब्द, ध्वनि ; (ठा ३,
अभिलाव) १ ; भास २७)। २ संभाषण ; (गाया १, ८; विसे)।

अभिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, चाह ; (गाया १, ६ ; प्रयौ ६१)।

अभिलासि) वि [अभिलाषिन्] चाहने वाला, इच्छुक;
अभिलासिण) (वसु ; स ६५४ ; पउम ३१, १२८)।

अभिलासुग वि [अभिलाषुक] अभिलाषी ; (उप ३५७ टी)।

अभिलोयण न [अभिलोकन] जहां खड़े रह कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान ; (पगह २, ४)।

अभिलोयण न [अभिलोचन] ऊपर देखो ; (पगह २, ४)।

अभिवंद सक [अभि+वन्द्] नमस्कार करना, प्रणाम करना । वकृ—**अभिवंदंत** ; (पउम २३, ६)। कृ— " जे साहुणो ते **अभिवंदियव्वा** " (गोय १४); **अभिवंदणिज्ज** ; (विसे २६४३)।

अभिवंदय वि [अभिवन्दक] प्रणाम करने वाला ; (औप)।

अभिवड्ढ अक [अभि + वृध्] बढ़ना, बड़ा होना, उन्नत होना । अभिवड्ढामो ; भूका—अभिवड्ढित्था ; (कप्प)। वकृ—**अभिवड्ढेमाण** ; (जं ७)।

अभिवड्ढि देखो **अभिवुड्ढि** ; (इक)।

अभिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] १ बढ़ाया हुआ । २ अधिक मास ; ३ अधिक मास वाला वर्ष ; (सम ५६ ; चन्द १२)।

अभिवत्ति स्त्री [अभिव्यक्ति] प्रादुर्भाव ; (उप २८५)।

अभिवय सक [अभि + व्रज्] सामने जाना । वकृ—**अभिवयंत** ; (गाया १, ८)।

अभिवाइय वि [**अभिवादित**] प्रणत, नमस्कृत ; (सुपा ३१०)।

अभिवात पुं [**अभिवात**] १ सामने का पवन; २ प्रतिकूल (गरम या रूक्ष) पवन ; (आचा)।

अभिवाद } सक [**अभि+वादय्**] प्रणाम करना,
अभिवाय } नमस्कार करना। अभिवाएइ; (महा)। अभिवादये (विसे १०५४)। वकृ—**अभिवायमाण** ; (आचा)। कृ—**अभिवायणिज्ज** ; (सुपा ५६८)।

अभिवाय देखो **अभिवात** ; (आचा)।

अभिवायण न [**अभिवादन**] प्रणाम, नमस्कार ; (आचा ; दसचू)।

अभिवाहरणा स्त्री [**अभिव्याहरणा**] बुलाहट, पुकार ; (पंचा २)।

अभिवाहार पुं [**अभिव्याहार**] प्रश्नोत्तर, सवाल-जवाब ; (विसे ३३९६)।

अभिविहि पुंस्त्री [**अभिविधि**] मर्यादा, व्याप्ति ; (पंचा १५ ; विसे ८७४)।

अभिवुड्ढ देखो **अभिवड्ढ** । संकृ—**अभिवुड्ढित्ता**; (सुज्ज १)।

अभिवुड्ढि स्त्री [**अभिवृद्धि**] १ वृद्धि, बढाव। २ उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र ; (जं ७)।

अभिव्वंजण न [**अभिव्यञ्जन**] देखो **अभिवत्ति**; (सूत्र १, १, १)।

अभिव्वाहार देखो **अभिवाहार** ; (विसे ३४१२)।

अभिसंका स्त्री [**अभिशङ्का**] संशय, संदेह ; (सूत्र १, ६, १, १४)।

अभिसंकि वि [**अभिशङ्किन्**] १ संदेह करने वाला। २ भीरु, डरने वाला ; "उज्जु माराभिसंकी मरणा पमुच्चति" (आचा ; णाया १, १८)।

अभिसंग पुं [**अभिष्वङ्ग**] आसक्ति ; (ठा ३, ४)।

अभिसंजाय वि [**अभिसंजात**] उत्पन्न ; (आचा)।

अभिसंथुण सक [**अभिसं+स्तु**] स्तुति करना, वर्णन करना। वकृ—**अभिसंथुणमाण** ; (णाया १, ८)।

अभिसंधारण न [**अभिसंधारण**] पर्यालोचन; विचारणा; (आचा)।

अभिसंधि पुंस्त्री [**अभिसंधि**] आशय, अभिप्राय; (उप २११ टी)।

अभिसंधिय वि [**अभिसंहित**] गृहीत, उपात्त ; (आचा)।

अभिसंभूय वि [**अभिसंभूत**] उत्पन्न, प्रादुर्भूत; (आचा)।

अभिसंबुद्ध वि [**अभिसंबुद्ध**] ज्ञान-प्राप्त, बोध-प्राप्त ; (आचा)।

अभिसंवुड्ढ वि [**अभिसंवृद्ध**] बढ़ा हुआ, उन्नत अवस्था को प्राप्त ; (आचा)।

अभिसमण्णागय } वि [**अभिसमन्वागत**] १ अच्छी
अभिसमन्नागय } तरह जाना हुआ, सुनिर्णीत ; (भग ५, ४)। २ व्यवस्थित ; (सूत्र २, १)। ३ प्राप्त, लब्ध ; (भग १५ ; कप्प ; णाया १, ८)।

अभिसमागम सक [**अभिसमा+गम्**] १ सामने जाना। २ प्राप्त करना। ३ निर्णय करना, ठीक २ जानना। संकृ—**अभिसमागम्म** ; (आचा ; दस ५)।

अभिसमागम पुं [**अभिसमागम**] १ संमुख गमन। २ प्राप्ति। ३ निर्णय ; (ठा ३, ४)।

अभिसमे सक [**अभिसमा+इ**] देखो **अभिसमागम**= अभिसमा+गम्। अभिसमेइ ; (ठा ३, ४)। संकृ— **अभिसमेच्च** ; (आचा)।

अभिसरण न [**अभिसरण**] १ सामने जाना, संमुख गमन; (पण्ह १,१)। २ प्रिय के पास जाना; (कुमा)।

अभिसव पुं [**अभिषव**] १ मद्य आदि का अर्क ; २ मद्य-मांस आदि से मिश्रित चीज ; (पव ६)।

अभिसारिआ देखो **अहिसारिआ** ; (गा ८७१)।

अभिसिंच सक [**अभि+सिच्**] अभिषेक करना। अभिसिंचति; (कप्प)। कवकृ—**अभिसिच्चमाण**; (कप्प)। प्रयो, हेकृ—**अभिसिंचावित्तए**; (पि ५७८)।

अभिसित्त वि [**अभिषिक्त**] जिसका अभिषेक किया गया हो वह ; (आवम)।

अभिसेअ } पुं [**अभिषेक**] १ राजा, आचार्य आदि पद पर
अभिसेग } आरूढ करना ; (संथा ; महा) ; २ स्नान-महोत्सव ; "जिणाभिसेगे" (सुपा ५०)। ३ स्नान ; (औप; स ३२)। ४ जहां पर अभिषेक किया जाता है वह स्थान ; (भग)। ५ शुक्र-शोणित का संयोग "इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूया" (आचा १, ६,१)। ६ वि. आचार्य आदि पद के योग्य; (बृह ३)। ७ अभिषिक्त; (निचू १५)।

अभिसेगा स्त्री [**अभिषेका**] १ साध्वी, संन्यासिनी ; (निचू १५)। २ साध्वीओं की मुखिया, प्रवर्तिनी ; (धर्म ३; निचू ६)।

अभिसेज्जा स्त्री [**अभिशय्या**] देखो **अभिणिसज्जा** ; (वव १)। २ भिन्न स्थान ; (विसे ३४६१)।

अभिसेवण न [**अभिषेवण**] पूजा, सेवा, भक्ति ; (पउम १४, ४६)।

अभिस्संग पुं [**अभिष्वङ्ग**] आसक्ति; (विसे २९६४)।

अभिहट्टु अ [**अभिहृत्य**] बलात्कार करके, जबरदस्ती करके ; (आचा ; पि ५७७)।

अभिहड वि [**अभिहृत**] १ सामने लाया हुआ ; (पंचा १३)। २ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष ; (ठा ३, ४)।

अभिहण सक [**अभि+हन्**] मारना, हिंसा करना। (पि ४९९)। वकृ—**अभिहणमाण** ; (जं ३)।

अभिहणण न [**अभिहनन**] अभिघात ; हिंसा ; (भग ८, ७)।

अभिहय वि [**अभिहत**] मारा हुआ, आहत ; (पडि)।

अभिहा स्त्री [**अभिधा**] नाम, आख्या ; (सण)।

अभिहाण न [**अभिधान**] १ नाम, आख्या ; (कुमा)। २ वाचक, शब्द ; (वव ६)। ३ कथन, उक्ति; (विसे)।

अभिहिय वि [**अभिहित**] कथित, उक्त ; (आचा)।

अभिहेअ पुं [**अभिधेय**] वाच्य, पदार्थ ; (विसे ८४१)।

अभीइ) स्त्री [**अभिजित्**] १ नक्षत्र-विशेष ; (सम ८;
अभीजि) १५)। २ पुं. एक राज-कुमार; (भग १३,६)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी ; (अनु)।

अभीरु वि [**अभीरु**] १ निडर, निर्भीक; (आचा)। २ स्त्री. मध्यम-ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७)।

अभेज्झा देखो **अभिज्झा** ; (पण्ह १, ३)

अभोज्ज वि [**अभोज्य**] भोजन के अयोग्य ; (णाया १, १६)। °**घर** न [°**गृह**] भिक्षा के लिए अयोग्य घर, धोबी आदि नीच जाति का घर ; (बृह १)।

अम सक [**अम्**] १ जाना। २ अवाज करना। ३ खाना। ४ पीडना। ५ अक. रोगी होना। "अम गत्याईसु" (विसे ३४५३); "अम रोगे वा" (विसे ३४५४)। अमइ ; (विसे ३४५३)।

अमग्ग पुं [**अमार्ग**] १ कुमार्ग, खराब रास्ता ; (उव)। २ मिथ्यात्व, कषाय आदि हेय पदार्थ; "अमग्गं परियाणामि मग्गं उवसंपज्जामि" (आव ४)। ३ कुमत, कुदर्शन ; (दंस)।

अमग्घाय पुं [**अमाघात**] १ द्रव्य का अ-हरण; २ अमारि-निवारण, अभय-घोषणा ; (पंचा ६)।

अमच्च पुं [**अमात्य**] मन्त्री, प्रधान ; (औप ; सुर ४, १०४)।

अमच्च पुं [**अमर्त्य**] देव, देवता ; (कुमा)।

अमज्झ वि [**अमध्य**] १ मध्य-रहित, अखण्ड; (ठा ३,२)। २ परमाणु ; (भग २०, ६)।

अमण न [**अमन**] १ ज्ञान, निर्णय ; (ठा ३, ४)। २ अन्त, अवसान ; (विसे ३४५३)।

अमण) वि [**अमनस्क**] १ अप्रीतिकर, अभीष्ट; (ठा
अमणक्ख) ३, ३)। २ मन-रहित; (आव ४; सूअ २, ४, २)।

अमणाम वि [**अमनआप**] अनिष्ट, अ-मनोहर ; (सम १४६ ; विपा १, १)।

अमणाम वि [**अमनोम**] ऊपर देखो ; (भग; विपा १, १)।

अमणाम वि [**अवनाम**] पीड़ा-कारक, दुःखोत्पादक ; (सूअ २, १)।

अमणुस्स पुं [**अमनुष्य**] १ मनुष्य-भिन्न देव आदि ; (णंदि)। २ नपुंसक ; (निचू १)।

अमत्त न [**अमत्र**] भाजन, पात्र ; (सूअ १, ६)।

अमम वि [**अमम**] १ ममता-रहित, निःस्पृह ; (पण्ह २, ५; सुपा ५००)। २ पुं. आगामी काल में होने वाले एक जिन-देव का नाम ; (सम १५३)। ३ युग्म रूप से होने वाले मनुष्यों की एक जाति ; (जं ४)। ४ न. दिन के २५ वाँ मुहूर्त का नाम ; (चंद १०)। °**त्त** वि [°**त्व**] निःस्पृह, ममता-रहित ; (पंचव ४)।

अमय वि [**अमय**] विकार-रहित,
"अमओ य होइ जीवो, कारणविरहा जहेव आगासं।
समयं च होअनिच्चं, मिम्मयघडतंतुमाईयं" (विसे)।

अमय न [**अमृत**] १ अमृत, सुधा ; (प्रासू ६६)। २ क्षीर समुद्र का पानी; (राय)। ३ पुं. मोक्ष, मुक्ति ; (सम्म १६७; प्रामा)। ४ वि. नहीं मरा हुआ, जीवित, "अमओ हं नय विमुञ्चामि" (पउम ३३, ८२)। °**कर** पुं [°**कर**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (उप ७६८ टी)। °**किरण** पुं [°**किरण**] चन्द्र ; (सुपा ३७७)। °**कुंड** पुं [°**कुण्ड**] चन्द्र, चाँद ; (श्रा २७)। °**घोस** पुं [°**घोष**] एक राजा का नाम ; (संथा)। °**फल** न [°**फल**] अमृतोपम फल ; (णाया १, ६)। °**मइय**,

मय वि [°**मय**] अमृत-पूर्ण ; (कुमा ; सुर ३, १२१ ; २३३) । °**मऊह** पुं [°**मयूख**] चन्द्र ; (मै ६८) । °**वल्लरि**, °**वल्लरी** स्त्री [°**वल्लरि**, °**री**] अमृतलता, वल्ली-विशेष, गुडूची । °**वल्लि**, °**वल्ली** स्त्री [°**वल्लि**, °**ल्ली**] वल्ली-विशेष, गुडूची ; (श्रा २० ; पव ४) । °**वास** पुं [°**वर्ष**] सुधा-वृष्टि; (आचा) । देखो **अमिय**=अमृत ।

अमय पुं [**दे**] १ चन्द्र, चन्द्रमा ; (दे १, १५) । २ असुर, दैत्य ; (षड्) ।

अमयणिग्गम पुं [**दे. अमृतनिर्गम**] १ चन्द्र, चन्द्रमा ; (दे १, १५) ।

अमर वि [**आमर**] दिव्य, देव-संबन्धी, "अमरा आउहभेया" (पउम ६१, ४६) ।

अमर पुं [**अमर**] १ देव, देवता ; (पात्र) । २ मुक्त आत्मा ; (औप) । ३ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र ; (राज) । ४ अनन्तवीर्य-नामक भावी जिन-देव के पूर्व-जन्म का नाम; (ती २१) । ५ वि मरण-रहित "पावंति अविग्घेणं जोवा अयरामरं ठाणं" (पडि) । °**कंका** स्त्री [°**कङ्का**] एक नगरी का नाम ; (उप ६४८ टी) । °**केउ** पुं [°**केतु**] एक राज-कुमार ; (दंस) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] मेरु पर्वत ; (पउम ६५, ३७) । °**गेह** न [°**गेह**] स्वर्ग; (उप ७२८ टी) । °**चन्दण** न [**चन्दन**] १ हरिचन्दन वृक्ष ; २ एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ ; (पात्र) । °**तरु** पुं [°**तरु**] कल्प-वृक्ष; (सुपा ४४) । °**दत्त** पुं [°**दत्त**] एक श्रेष्ठि-पुत्र का नाम; (धम्म) । °**नाह** पुं [**नाथ**] इन्द्र ; (पउम १०१, ७५) । °**पुर** न [°**पुर**] स्वर्ग ; (पउम २, १४) । °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] स्वर्ग-पुरी, अमरावती; (उप पृ १०५) । °**पभ** पुं [°**प्रभ**] वानर-द्वीप का एक राजा ; (पउम ६, ६६) °**वइ** पुं [°**पति**] इन्द्र ; (पउम १०१, ७० ; सुर १, १) । °**वहू** स्त्री [°**वधू**] देवी; (महा) । °**सामि** पुं [**स्वामिन्**] इन्द्र; (विसे १४३६ टी) । °**सेण** पुं [°**सेन**] १ एक राजा का नाम ; (दंस) । २ एक राज-कुमार का नाम ; (णाया १, ८) । °**ालय** लि [°**ालय**] स्वर्ग ; "चविउममरालयाए" (उप ७२८ टी ; सुपा ३५) । °**ावई** स्त्री [°**ावती**] १ देव-नगरी, स्वर्ग-पुरी ; (पात्र) । २ मर्त्य-लोक की एक नगरी, राजा श्रीसेण की राजधानी ; (उप ९८६ टी) ।

अमरंगणा स्त्री [**अमराङ्गना**] देवी ; (श्रा २७) ।

अमरिंद पुं [**अमरेन्द्र**] देवों का राजा, इन्द्र ; (भवि) ।

अमरिस पुं [**अमर्ष**] १ असहिष्णुता ; (हे २, १०५) । २ कदाग्रह ; (उत्त ३४) । ३ क्रोध, गुस्सा ; (पण्ह १, ३; पात्र) ।

अमरिसण न [**अमर्षण**] १—३ ऊपर देखो । ४ वि. असहिष्णु, क्रोधी ; (पण्ह १, ४) । ५ सहिष्णु, क्षमा-शील ; (सम १५३) ।

अमरिसण वि [**अमसृण**] उद्यमी, उद्योगी ; (सम १५३) ।

अमरिसिय वि [**अमर्षित**] १ मत्सरी, असहिष्णु ; (आवम ; स ५६५) ।

अमरी स्त्री (**अमरी**) देवी ; (कुमा) ।

अमल वि [**अमल**] १ निर्मल, स्वच्छ; (उव ; सुपा ३४) । २ पुं. भगवान् ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम ; (राज) ।

अमला स्त्री [**अमला**] शक्र की एक अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष ; (ठा ८) ।

अमाइ, **अमाइल्ल** वि [**अमायिन्**] निष्कपट, सरल ; (आचा ; ठा १०; द ४७) ।

अमाघाय देखो **अमग्घाय** ; (उवा) ।

अमाण वि [**अमान**] १ गर्व-रहित, नम्र ; (कप्प) । २ असंख्य, "ठाणट्ठाणविलोइज्जमाणमाणोसहिसमूहो" (उव ६ टी) ।

अमाय वि [**अमात**] नहीं माया हुआ ; "सुसाहुवग्गस्स मणे अमाया" (सत्त ३५) ।

अमाय वि [**अमाय**] निष्कपट, सरल ; (कप्प) ।

अमायि देखो **अमाइ** ; (भग) ।

अमारि स्त्री [**अमारि**] हिंसा-निवारण, जीवित-दान ; (सुपा ११२) । °**घोस** पुं [°**घोष**] अहिंसा की घोषणा ; (सुपा ३०६) । °**पडह** पुं [°**पटह**] हिंसा-निषेध का डिण्डिम, "अमारिपडहं च वोसावेइ" (रयण ६०) ।

अमावसा, **अमावस्सा**, **अमावासा** स्त्री [**अमावास्या**] तिथि-विशेष, अमावस; (कप्प ; सुपा २२६ ; णाया १, १० ; चंद १०) ।

अमिज्ज वि [**अमेय**] माप करने के लिये अशक्य, असंख्य; (कप्प) ।

अमिज्झ न [**अमेध्य**] १ अशुचि वस्तु, "भरियममिज्झस्स दुरहिगंधस्स" (उप ७२८ टी) । २ विष्ठा ; (सुपा ३१३) ।

अमित्त पुंन [**अमित्र**] रिपु, दुश्मन ; (ठा ४, ४; से ५, १७) ।

अमिय देखो **अमय**=अमृत; (प्रासू १; गा २; विसे; आवम; पिंग)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] नगर-विशेष का नाम; (सुपा ५७८)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] एक छन्द का नाम; (पिंग)। °**णाणि** पुं [°**ज्ञानिन्**] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव का नाम; (सम १५३)। °**भूय** वि [**भूत**] अमृत-तुल्य; (आउ)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] अमृत-वर्षा; (जं ३)। °**रुइ** पुं [°**रुचि**] चन्द्र, चन्द्रमा; (श्रा १६)।

अमिय वि [**अमित**] परिमाण-रहित, असंख्य, अनन्त; (भग ५, ४; सुपा ३१; श्रा २७)। °**गइ** पुं [°**गति**] दक्षिण दिशा के एक इन्द्र का नाम, दिक्कुमारों का इन्द्र; (ठा २, ३)। °**जस** पुं [°**यशस्**] एक चक्रवर्ती राजा का नाम; (महा)। °**णाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] १ सर्वज्ञ; (विसे)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिन-देव का नाम; (सम १५३)। °**तेय** पुं [°**तेजस्**] एक जैन मुनि का नाम; (उप ७६८टी)। °**बल** पुं [°**बल**] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] दिक्कुमार देवों के एक इन्द्र का नाम; (ठा २, ३)। °**वेग** पुं [°**वेग**] राक्षस वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, २६१)। °**सणिय** वि [°**सनिक**] एक स्थान पर नहीं बैठने वाला, चंचल; (कप्प)।

अमिल न [**दे**] ऊन का बना हुआ वस्त्र; (श्रा १८)। २ पुं. मेष, भेड़; (ओघ ३६८)।

अमिला स्त्री [**अमिला**] १ बीसवें जिन-देव की प्रथम शिष्या; (सम १५२)। २ पाड़ी, छोटी भैंस; (बृह १)।

अमिलाण, **अमिलाय** वि [**अम्लान**] १ म्लानि-रहित, ताजा, हृष्ट; (सुर ३, ६५; भग ११, ११)। २ पुं. कुरण्टक वृक्ष; ३ न. कुरण्टक वृक्ष का पुष्प; (दे १, ३७)।

अमु स [**अदस्**] वह, अमुक; (पि ४३२)।

अमुअ स [**अमुक**] वह, कोई, अमका-ढमका; (ओघ ३२ भा; सुपा ३१४)।

अमुअ देखो **अमय**=अमृत; (प्रासू ५१; गा ६७६)।

अमुअ देखो **अमय**=अमय; (काप्र ७७७)।

अमुअ वि [**अस्मृत**] स्मरण में नहीं आया हुआ; (भग ३, ६)।

अमुइ वि [**अमोचिन्**] नहीं छोड़ने वाला; (उव)।

अमुग देखो **अमुअ**=अमुक; (कुमा)।

अमुगत्थ वि [**अमुत्र**] अमुक स्थान में; (सुपा ६०२)।

अमुण वि [**अज्ञ**] अजान, मूर्ख; (बृह १)।

अमुणिय वि [**अज्ञात**] अविदित; (सुर ४, २०)।

अमुणिय वि [**अज्ञान**] मूर्ख, अजान; (पराह १, २)।

अमुत्त वि [**अमुक्त**] अपरित्यक्त; (ठा १०)।

अमुत्त वि [**अमूर्त्त**] रूप-रहित, निराकार; (सुर १४, ३६)।

अमुदग्ग, **अमुयग्ग** न [**अमुदग्र**] १ अतीन्द्रिय मिथ्याज्ञान विशेष, जैसे देवताओं के पुद्गल-रहित शरीर को देख कर जीव का शरीर पुद्गल से निर्मित नहीं है ऐसा निर्णय; (ठा ७)।

अमुसा स्त्री [**अमृषा**] सत्य वचन; (सूअ १, १०)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] सत्यवादी; (कुमा)।

अमुह वि [**अमुख**] निरुत्तर; (वव ६)।

अमुहरि वि [**अमुखरिन्**] अ-वाचाट, मित-भाषी; (उत्त १)।

अमूढ वि [**अमूढ**] अ-मुग्ध, विचक्षण; (णाया १, ६)। °**णाण** न [°**ज्ञान**] सत्य ज्ञान; (आवम)। °**दिट्ठि** स्त्री [°**दृष्टि**] १ सम्यग्दर्शन; (पव ६)। २ अविचलित बुद्धि; (उत्त २)। ३ वि. अविचलित दृष्टि वाला, सम्यग्दृष्टि; (गच्छ १)।

अमूस वि [**अमृष**] सत्यवादी; (कुमा)।

अमेज्ज देखो **अमिज्ज**; (भग ११, ११)।

अमेज्झ देखो **अमिज्झ**; (महा)।

अमोल्ल वि [**अमूल्य**] जिसकी कीमत न हो सके वह, बहुमूल्य; (गउड; सुपा ५१६)।

अमोसलि न [**दे. अमुशलि**] वस्त्रादि-निरीक्षण का एक प्रकार; (ओघ २५)।

अमोसा देखो **अमुसा**; (कुमा)।

अमोह वि [**अमोघ**] १ अवन्ध्य, सफल; (सुपा ८३; ५७५)। २ पुं. सूर्य के उदय और अस्त के समय किरणों के विकार से होने वाली रेखा-विशेष; (भग ३, ६)। ३ एक यक्ष का नाम; (विपा १, ४)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] १ ठीक २ देखने वाला; (दस ६)। २ न. उद्यान-विशेष; ३ पुं. यक्ष-विशेष; (विपा १, ३)। °**पहारि** वि [°**प्रहारिन्**] अचूक प्रहार करने वाला, निशान-बाज; (महा)। °**रह** पुं [°**रथ**] इस नाम का एक रथिक; (महा)।

अमोह पुं [**अमोह**] १ मोह का अभाव, सत्य-ग्रह ; (विसे)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ८)। ३ वि. मोह-रहित, निर्मोह ; (सुपा ८३)।

अमोहण न [**अमोहन**] १ मोह का अभाव; (वव १०)। २ वि. मुग्ध नहीं करने वाला ; (कप्प)।

अमोहा स्त्री [**अमोघा**] १ एक जम्बू-वृक्ष, जिसके नाम से यह जम्बूद्वीप कहलाता है; (जीव ३)। २ एक पुष्करिणी; (दीव)।

अम्म देखो **अंब**=आम्ल ; (उर २, ६)।

अम्मएव पुं [**आम्रदेव**] एक जैन आचार्य ; (पव २७६-गा ६०६)।

अम्मगा देखो **अम्मया** ; (उवा)।

अम्मच्छ वि [**दे**] असंबद्ध; (षड्)।

अम्मड देखो **अंबड** ; (औप)।

अम्मडी (अप) स्त्री [**अम्बा**] माता, माँ ; (हे ४, ४२४)।

अम्मणुअंचिय न [**दे**] अनुगमन, अनुसरण; (दे १,४६)।

अम्मधाई देखो **अंबधाई**; (विपा १, ६)।

अम्मया स्त्री [**अम्बा**] १ माता, जननी ; (उवा)। २ पांचवें वासुदेव की माता का नाम ; (सम १५२)।

अम्महे (शौ) अ. हर्ष-सूचक अव्यय ; (हे ४, २८४)।

अम्मा स्त्री (**दे. अम्बा**) माता; माँ ; (दे १, ५)। °**पिइ**, °**पिउ**, °**पियर**, °**पीइ** पुंब. [°**पितृ**] माँ-बाप, माता-पिता ; (वव ३ ; कप्प; सुर ३, ८३ ; ठा ३, १ ; सुर ३, ८८ ; ७, १७०)। °**पेइय** वि [°**पैतृक**] माँ-बाप-संबन्धी ; (भग १, ७)।

अम्माइआ स्त्री [**दे**) अनुसरण करने वाली स्त्री, पीछे २ जाने वाली स्त्री (दे १, २२)।

अम्मो अ [ ] १ आश्चर्य-सूचक अव्यय ; (हे २, २०८ ; स्वप्न २६)। २ माता का संबोधन, हे माँ ; (उवा ; कुमा)।

अम्मोस वि [**अमर्ष्य**] अक्षम्य, क्षमा के अयोग्य ; (सुपा ४८७)।

अम्ह स [**अस्मत्**] हम, निज, खुद ; (हे २, ६६; १४२)। °**केर**, °**क्केर**, °**च्चय** वि [°**ीय**] अस्मदीय, हमारा ; (हे २, ६६ ; सुपा ४६६)।

अम्हत्त वि [**दे**] प्रमृष्ट, प्रमार्जित ; (षड्)।

अम्हार } (अप) वि [**अस्मदीय**] हमारा ; (षड्;
अम्हारय } कुमा)।

अम्हारिच्छ वि [**अस्मादृक्ष**] हमारे जैसा ; (प्रामा)।

अम्हारिस वि [**अस्मादृश**] हमारे जैसा; (हे १, १४२; षड्)।

अम्हेच्चय वि [**आस्माक**] अस्मदीय, हमारा ; (कुमा ; हे २, १४६)।

अम्हो अ [**अहो**] आश्चर्य-सूचक अव्यय ; (षड्)।

अय पुं [**अग**] १ पहाड़, पर्वत ; २ साँप, सर्प ; ३ सूर्य, सूरज ; (श्रा २३)।

अय पुं [**अज**] १ छाग, बकरा ; (विपा १, ४)। २ पूर्व भाद्रपदा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ३ महादेव ; ४ विष्णु ; ५ रामचन्द्र ; ६ ब्रह्मा ; ७ कामदेव ; (श्रा २३)। ८ महाग्रह-विशेष ; (ठा ६)। ६ बीजोत्पादक शक्ति से रहित धान्य ; (पउम ११, २५)। °**करक** पुं [°**करक**] एक महाग्रह का नाम ; (ठा २, ३)। °**वाल** पुं [°**पाल**] आभीर ; (श्रा २३)।

अय पुं [**अय**]. १ गमन, गति ; (विसे २७६३; श्रा २३)। २ लाभ, प्राप्ति; ३ अनुभव ; (विसे)। ४ न. पुण्य ; (ठा १०)। ५ भाग्य, नसीब; (श्रा २३)।

अय न [**अक**] १ दुःख ; २ पाप ; (श्रा २३)।

अय न [**अयस्**] लोहा, लोहे ; (ओघ ६२)। °**आगर** पुं [°**आकर**] १ लोहे की खान ; (निचू ५)। २ लोहे का कारखाना ; (ठा ८)। °**कंत** °**क्खंत** पुं [°**कान्त**] लोह-चुम्बक; (आवम)। °**कडिल्ल** न [**दे.** °**कडिल्ल**] कटाह ; (आव)। °**कुंडी** स्त्री [°**कुण्डी**] लोहे का भाजन-विशेष ; (विपा १, ६)। °**कोट्ठय** पुं [°**कोष्ठक**] लोहे का कुशूल, लोहे का गोला ; "पोट्टं अयकोट्ठओ व्व वट्टं" (उवा)। °**गोलय** पुं [°**गोलक**] लोहे का गोला ; (श्रा १६)। °**दव्वी** स्त्री [°**दर्वी**] लोहे की कड़छी , जिससे दाल, कढ़ी आदि हलाया जाता है ; (दे २, ७)। °**पाय** न [°**पात्र**] लोहे का भाजन। °**सलागा** स्त्री [°**शलाका**] लोहे की सलाई ; (उप २११ टी)।

अय सक [**अय्**] १ गमन करना, जाना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । वकृ—**अयमाण** ; (सम ६३)।

अयंछ सक [**कृष्**] १ खींचना । २ जोतना, चास करना । ३ रेखा करना । अयंछइ ; (हे ४, १८७)।

अयंछिर वि [**कर्षिन्**] कर्षण-शील, खींचने वाला ; (कुमा)।

अयंड पुं [**अकाण्ड**] १ अनुचित समय ; (महा)। २ अकस्मात्, हठात् ; (पउम ५, १६४; से ६,४४; गउड)। ३ क्रिवि. अनधारा, अतर्कित ; (पात्र)।

अयंत वकृ [**आयत्**] आता हुआ, प्रवेश करता हुआ ; (आवम)।

अयंपिर वि [**अजल्पितृ**] नहीं बोलने वाला, मौनी ; (पि २६६; ५६६)।

अयंपुल पुं [**अयंपुल**] गो-शालक का एक शिष्य ; (भग ८, ५)

अयंस पुं [**आदर्श**] दर्पण, काँच। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ इस नाम का एक द्वीप ; २ द्वीप-विशेष का निवासी ; (इक)।

अयंसंधि वि [**इदंसंधि**] उपयुक्त कार्य को यथासमय करने वाला ; (आचा)।

अयक्क / **अयग** } पुं [**दे**] दानव, असुर ; (दे १, ६)।

अयगर पुं [**अजगर**] अजगर, मोटा साँप ; (पराह १, १ ; पउम ६३, ५४)।

अयड पुं [**दे. अवट**] कूप, कुँआ ; (दे १, १८)।

अयण न [**अतन**] सतत होना, निरन्तर होना ; (विसे ३५७८)।

अयण न [**अयन**] १ गमन ; २ प्राप्ति, लाभ ; (विसे ८३)। ३ ज्ञान, निर्णय ; (विसे ८३)। ४ गृह, मन्दिर "चंडियायणं" (स ४३५)। ५ वि. प्रापक, प्राप्त करने वाला ; (विसे ६६०)। ६ पुंन. वर्ष का आधा भाग, जिसमें सूर्य दक्षिण से उत्तर में या उत्तर से दक्षिण में जाता है ; ((ठा २, ४) ;

"एक्के अयणे दिअहा, बीए रअणीओ होंति दीहाओ।
विरहाअणो अउव्वो, इत्थ दुवे च्चेअ वड्ढंति"
(गा ८४६)।

अयण न [**अदन**] १ भक्षण ; २ खुराक, भोजन ; (स १३० ; उर ८, ७)।

अयणु वि [**अज्ञ**] अजान, मूर्ख ; (सुर ३, १६६)।

अयणु वि [**अतनु**] स्थूल, मोटा, महान् ; (सरण)।

अयतंचिअ वि [**दे**] पुष्ट, उपचित; (दे १, ४७)।

अयर वि [**अजर**] वृद्धावस्था-रहित "अयरामरं ठाणं" (पडि; उव)।

अयर पुंन [**अतर**] १ सागर, समुद्र ; (दं २८)। २ समय का मान-विशेष, सागरोपम ; (संग २१, २५ ; धण ४३)। ३ वि. तरने को अशक्य ; (बृह १)। ४ असमर्थ, अशक्त ; (निचू १)। ५ ग्लान, बिमार ; (बृह १)।

अयरामर वि [**अजरामर**] १ जरा और मरण से रहित ; (नव २)। २ न.मुक्ति, मोक्ष ; (पउम ८, १२७)।

अयल देखो **अचल**=अचल ; (पात्र ; गउड; उप पृ १०५; अंत ३ ; पउम ८५, ४; सम ८८ ; कप्प ; सम १६)।

अयला देखो **अचला**; (पउम १२०, १५६)।

अयस देखो **अजस** ; (गउड ; प्रासू २३; १५३ ; गा १७८)।

अयसि वि [**अयशस्विन्**] अजसी, यशो-रहित, कीर्ति-शून्य; (गउड)।

अयसि / **अयसी** } स्त्री [**अतसी**] धान्य-विशेष, अलसी ; (भग; ठा ७ ; णाया १, ५)।

अया स्त्री [**अजा**] १ बकरी ; २ माया, अविद्या ; ३ प्रकृति, कुदरत; (हे ३, ३२;१३)। °**किवाणिज्ज** पुं [°**कृपाणीय**] न्याय-विशेष, जैसे बकरी के गले पर अनधारी छुरी पड़ती है उस माफिक अनधारा किसी कार्य का होना; (आचा)। °**पाल** पुं [°**पाल**] आभीर, बकरी चराने वाला ; (स २६०)। °**वय** पुं [°**व्रज**] बकरी का वाडा ; (भग १६, ३)।

अयागर देखो **अय-आगर**; (ठा ८)।

अयाण न [**अज्ञान**] ज्ञान का अभाव ; (सत्त ६३)।

अयाण वि [**अज्ञ, अज्ञान**] अजान, अज्ञानी, मूर्ख ; (ओघ ७४ ; पउम २२, ८३ ; गा २७५ ; दे ७, ७३)।

अयाणअ वि [**अज्ञायक**] ऊपर देखो ; (पात्र; भवि)।

अयाणंत देखो **अजाणंत** ; (ओघ ११)।

अयाणमाण देखो **अजाणमाण** ; (नव ३६)।

अयाणिय देखो **अजाणिय** ; (उप ७२८ टी)।

अयाणुय देखो **अजाणुय** ; (सुर ३, १६८ ; सुपा ५४३)।

अयार पुं [**अकार**] 'अ' अक्षर; (विसे ४७८)।

अयाल पुं [**अकाल**] अयोग्य समय, अनुचित काल ; (पउम २२, ८५)।

अयालि पुं [**दे**] दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस ; (दे १, १३)।

अयालिय वि [**अकालिक**] आकस्मिक, अकाण्डोत्पन्न, "पडउ पडउ एयस्स हत्थतले अयालिया विज्जू" (रंभा)।

अयि देखो **अइ**=अयि ; (हे २, २१७)।

अयुजरेवइ स्त्री [दे] अचिर-युवति, नवोढा, दुलहिन ; (षड्) ।

अयोमय देखो **अओ-मय** ; (अंत १६) ।

अय्यावत्त (शौ) पुं [**आर्यावर्त**] भारत, हिन्दुस्थान ; (कुमा) ।

अय्युण (म) देखो **अज्जुण** ; (हे ४, २६२) ।

अर पुं [**अर**] १ धूरी, पहिये का बीचका काष्ठ; २ अठारहवाँ जिनदेव और सातवाँ चक्रवर्ती राजा; " सुमिणे अरं महरिहं पासइ जणणी अरो तम्हा " (आव २ ; सम ५३ ; उत्त १८) । ३ समय का एक परिमाण, कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा ; (तो २१) ।

°**अर** पुं [°**कर**] १ किरण ; (गा ३४३ ; से १, १७) । हस्त; हाथ ; (से १, २८) । ३ शुल्क, चुंगी ; (से १, २८) ।

अरइ स्त्री [**अरति**] १ बेचैनी ; (भग ; आचा ; उत्त २)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] अरति का हेतु-भूत कर्म-विशेष ; (ठा ६) । °**परिसह, परीसह** पुं (°**परिषह, °परीषह**) अरति को सहन करना; (पंच ८) । °**मोहणिज्ज** न [°**मोह-नीय**] अरति का उत्पादक कर्म-विशेष ; (कम्म १) । °**रइ** स्त्री [°**रति**] सुख-दुःख ; (ठा १) ।

°**अरंग** देखो **तरंग** ; (से २, २६) ।

अरंजर पुंन [**अरञ्जर**] घड़ा, जल-घट ; (ठा ४, ४) ।

°**अरक्ख** देखो **वरक्ख** ; (से ६, ४४) ।

अरक्खरी स्त्री [**अराक्षरी**] नगरी-विशेष ; (आक) ।

अरग देखो **अर** ; (पगह २, ४ ; भग ३, ५) ।

अरज्झिय वि [**अरहित**] निरन्तर, सतत " अरज्झि-याभितावा " (सूअ १, ५, १) ।

अरडु पुं [**अरडु**] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी) ।

अरण न [**अरण**] हिंसा ; (उव) ।

अरणि पुं [**अरणि**] १ वृक्ष-विशेष ; २ इस वृक्ष की लकड़ी, जिसको घिसने पर अग्नि जल्दी पैदा होती है; (आवम; गाया १, १८) ।

अरणि पुंस्त्री [**दे**] १ रास्ता, मार्ग ; २ पङ्क्ति, कतार ; (षड्) ।

अरणिया स्त्री [**अरणिका**] वनस्पति-विशेष ; (आचा)।

अरणेट्टय पुं [**दे. अरणेटक**] पत्थरों के टुकडों से मिली हुई सफेद मिट्टी ; (जी ३) ।

अरण्ण न [**अरण्य**] वन, जंगल ; (हे १, ६६) । ° **वडिंसग** न [°**ावतंसक**] देव-विमान विशेष ; (सम ३६) । °**साण** पुं [°**श्वन्**] जंगली कुत्ता; (कुमा) ।

अरण्णय वि [**आरण्यक**] जंगली, जंगल-वासी ; (अभि ५२) ।

अरत्त वि [**अरक्त**] राग-रहित, नीराग ; (आचा) ।

अरन्न देखो **अरण्ण** ; (कप्प ; उव) ।

अरमंतिया स्त्री [**अरमन्तिका**] अ-रमणता, कार्य में अत-त्परता ; (उवा) ।

अरय देखो **अर** ; (खेत्त १०८) ।

अरय वि [**अरजस्**) १ रजोगुण-रहित ; (पउम ६, १४६) । २ एक महाग्रह का नाम ; (ठा २, ३) । ३ वि. धूली-रहित, निर्मल ; (कप्प) । ४ न. पांचवें देव-लोक का एक प्रतर ; (ठा ६) । ५ रजोगुण का अभाव ; " अरो य अरयं पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं " (उत्त १८) ।

अरय वि [**अरत**] अनासक्त, निःस्पृह ; (आचा) ।

अरया स्त्री [**अरजा**] कुमुद-नामक विजय की राजधानी ; (जं ४) ।

अरयणि पुं [**अरत्नि**] परिमाण-विशेष, खुली अंगुली वाला हाथ ; (ठा ४, ४) ।

अरर न [**अरर**] १ युद्ध ; २ ढकना । °**कुरी** स्त्री [°**कुरी**] नगरी-विशेष ; (धम्म ६ टी) ।

अररि पुंन [**अररि**] किवाड, द्वार ; (प्रामा) ।

अरल न [**दे**] १ चीरी, कीट-विशेष ; २ मशक, मच्छड ; (दे १, ५३) ।

अरलाया स्त्री [**दे**] चीरी, कीट-विशेष ; (दे १, २६) ।

अरलु देखो **अरडु** ; (पउम ४२, ८) ।

अरविंद न [**अरविन्द**] कमल, पद्म ; (पगह २, ४) ।

अरविंदर वि [**दे**] दीर्घ, लम्बा ; (दे १, ४५) ।

अरस पुं [**अरस**] रस-रहित, नीरस ; (गाया १, ५) ।

अरस पुं [**अर्शस्**] व्याधि-विशेष, बवासीर ; (श्रा २२)।

अरह वक्र [**अर्हत्**] १ पूजा के योग्य, पूज्य ; (षड् ; हे २, १११) । २ पुं. जिन-देव, तीर्थंकर ; (सम्म ६७) । °**मित्त** पुं [°**मित्र**] एक व्यापारी का नाम ; (गच्छ २)।

अरह वि [**अरहस्**] १ प्रकट । २ जिससे कुछ भी छिपा न हो । ३ पुं. जिन-देव, सर्वज्ञ ; (ठा ४, १ ; ६) ।

अरह वि [**अरथ**] परिग्रह-रहित ; (भग) ।

अरहंत वक्र [**अर्हत्**] १ पूजा के योग्य, पूज्य ; (षड् ; हे २, १११ ; भग ८, ५)। २ पुं. जिन भगवान्, तीर्थंकर-देव ; (आचा; ठा ३, ४)।

अरहंत वि [**अरहोन्तर्**] १ सर्वज्ञ, सब कुछ जानने वाला। २ पुं. जिन भगवान् ; (भग २, १)।

अरहंत वि [**अरथान्त**] १ निःस्पृह, निर्मम ; २ पुं. जिन-देव ; (भग)।

अरहंत वक्र [**अरहयत्**] १ अपने स्वभाव को नहीं छोडने वाला ; २ पुं. जिनेश्वर देव ; (भग)।

अरहट्ट पुं [**अरघट्ट**] अरहट, पानी का चरखा, पानी निकालने का यन्त्र-विशेष ; (गा ४६० ; प्रासू ५५ ; "भमिश्रो कालमणंतं अरहट्टघडिव्व जलमज्झे" (जीवा १)।

अरहण्णय पुं [**अरहन्नक**] एक व्यापारी का नाम ; (णाया १, ८)।

अराइ पुं [**अराति**] रिपु, दुश्मन ; (कुमा)।

अराइ स्त्री [**अरात्रि**] दिन, दिवस ; (कुमा)।

अरागि वि [**अरागिन्**] राग-रहित; वीतराग ; (पउम ११७, ४१)।

अरि पुं [**अरि**] दुश्मन, रिपु ; (पउम ७३, १६)। °**छव्वग्ग** पुं [°**षड्वर्ग**] छः आन्तरिक शत्रु—काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, हर्ष ; (सूत्र १, १, ४)। °**दमण** वि [°**दमन**] १ रिपु-विनाशक। २ पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ७)। ३ एक जैन मुनि जो भगवान् अजितनाथ के पूर्वजन्म के गुरू थे ; (पउम २०, ७)। °**दमणी** स्त्री [°**दमनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४५)। °**विद्धंसी** स्त्री [°**विध्वंसिनी**] रिपु का नाश करने वाली एक विद्या ; (पउम ७, १४०)। °**संतास** पुं [°**संत्रास**] राक्षस वंश में उत्पन्न लङ्का का एक राजा ; (पउम ५, २६५)। °**हंत** वि [°**हन्तृ**] १ रिपु-विनाशक ; २ पुं जिन-देव ; (आवम)।

अरिस देखो **अरस** ; (णाया १, १३)।

अरिसल्ल, **अरिसिल्ल** वि [**अर्शस्वत्**] बवासीर रोग वाला ; (पात्र ; विपा १, ७)।

अरिह वि [**अर्ह**] १ योग्य, लायक ; (सुपा २६६ ; प्राप्र)। २ जिन-देव ; (औप)।

अरिह सक [**अर्ह**] १ योग्य होना। २ पूजा के योग्य होना। ३ पूजा करना। अरिहइ ; (महा)। अरिहेति ; (भग)।

अरिह देखो **अरह=अर्हत्** ; (हे २, १११ ; षड्)। °**दत्त**, °**दिण्ण** पुं [°**दत्त**] जैन मुनि-विशेष का नाम ; (कप्प)।

अरिहंत देखो **अरहंत** = अर्हत् ; (हे २, १११ ; षड् ; णाया १, १)। °**चेइय** न [°**चैत्य**] १ जिन-मन्दिर ; (उवा ; आचू)। °**सासण** न [°**शासन**] १ जैन आगम-ग्रन्थ ; २ जिन-आज्ञा ; (पण्ह २, ५)।

°**अरु** देखो **तरु** ; (से २, १६; ५, ८५)।

अरुग न [**दे. अरुक**] व्रण, घाव, "अरुगं इहरा कुत्थइ" (बृह ३)।

अरुण पुं [**अरुण**] १ सूर्य, सूरज ; (से ३, ६)। २ सूर्य का सारथि ; ३ संध्याराग, सन्ध्या की लाली ; (से ८, ७)। ४ द्वीप-विशेष ; ५ समुद्र-विशेष, "गंतूण होइ अरुणो, अरुणो दीवो तओ उदही" (दीव)। ६ एक ग्रह-देवता का नाम ; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ७ गन्धावती-पर्वत का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३—पत्र ६६))। ८ देव-विशेष ; (णंदि)। ६ रक्त रंग, लाली ; (गउड)। १० न. विमान-विशेष ; (सम १४)। ११ वि. रक्त, लाल ; (गउड)। °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान-विशेष ; (उवा)। °**कील** न [°**कील**] देव-विमान-विशेष ; (उवा)। °**गंगा** स्त्री [°**गङ्गा**] महाराष्ट्र देश की एक नदी; (ती २८)। °**गव** न [°**गव**] देव-विमान-विशेष ; (उवा)। °**ज्झय** न [°**ध्वज**] एक देव-विमान का नाम ; (उवा)। °**प्पभ**, °**प्पह** न [°**प्रभ**] इस नाम का एक देव-विमान ; (उवा)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] एक देवता का नाम ; (सुज्ज १६)। °**भूय** न [°**भूत**] एक देव-विमान ; (उवा)। °**महाभद्द** पुं [°**महाभद्र**] देव-विशेष ; (सुज्ज १६)। °**महावर** पुं [°**महावर**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (इक)। °**वडिंसय** न [°**ावतंसक**] एक देव-विमान ; (उवा)। °**वर** पुं [°**वर**] १ द्वीप विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (सुज्ज १६)। °**वरोभास** पुं [°**वरावभास**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष; (सुज्ज १६)। °**सिट्ठ** न [°**शिष्ट**] एक देव-विमान ; (उवा)। °**ाभ** न [°**ाभ**] देव-विमान-विशेष ; (उवा)।

अरुण न [**दे**] कमल, पद्म ; (दे १, ८)।

अरुणिय वि [**अरुणित**] रक्त, लाल ; (गउड)।

अरुणुत्तरवडिंसग न [**अरुणोत्तरावतंसक**] इस नाम का एक देव-विमान; (सम १४)।
अरुणोदग पुं [**अरुणोदक**] समुद्र-विशेष; (सुज्ज १६)।
अरुणोदय पुं [**अरुणोदय**] समुद्र-विशेष; (भग)।
अरुणोववाय पुं [**अरुणोपपात**] ग्रन्थ-विशेष का नाम; (णंदि)।
अरुय वि [**अरुष्**] व्रण, घाव; (सूत्र १, ३, ३)।
अरुय वि [**अरुज्**] नीरोगी, रोग-रहित; (सम १; अजि २१)।
अरुह देखो **अरह**=अर्हत्; (हे २, १११; षड्; भवि)।
अरुह वि [**अरुह**] १ जन्म-रहित; २ पुं. मुक्त आत्मा; (पव २७५; भग १, १)। ३ जिन-देव; (पउम ५, १२२)।
अरुह देखो **अरिह**=अर्ह्। अरुहसि; (अभि १०४)। वकृ—**अरुहमाण**; (षड्)।
अरुह वि [**अर्ह**] योग्य; (उत्तर ८४)।
अरुहंत देखो **अरहंत**=अर्हत्; (हे २, १११; षड्)।
अरुहंत वि [**अरोहत्**] १ नहीं उगता हुआ, जन्म नहीं लेता हुआ; (भग १, १)।
अरूव वि [**अरूप**] रूप-रहित, अमूर्त; (पउम ७५, २६)।
अरूवि वि [**अरूपिन्**] ऊपर देखो; (ठा ५, ३; आचा; पराण १)।
अरे अ [**अरे**] १—२ संभाषण और रति-कलह का सूचक अव्यय; (हे २, २०१; षड्)।
अरोअ अक [**उत्+लस्**] उल्लास पाना, विकसित होना। अरोअइ; (हे ४, २०२; कुमा)।
अरोअअ पुं [**अरोचक**] रोग-विशेष, अन्न की अरुचि; (श्रा २२)।
अरोइ वि [**अरोचिन्**] अरुचि वाला, रुचि-रहित, "अरोइ अत्थे कहिए विलावो" (गोय ७)।
अरोग वि [**अरोग**] रोग-रहित; (भग १८, १)। °**या** स्त्री [°**ता**] आरोग्य, नीरोगता; (उप ७२८ टी)।
अरोगि वि [**अरोगिन्**] नीरोग, रोग-रहित। °**या** स्त्री [°**ता**] आरोग्य, तंदुरस्ती; (महा)।
अरोस वि [**अरोष**] १ गुस्सा-रहित। २—३ पुं. एक म्लेच्छ देश और उसमें रहने वाली म्लेच्छ-जाति; (पराह १, १)।

अल न [**अल**] १ बिच्छू के पुच्छ का अग्र भाग,
"अलमेव विच्छुआणं, मुहमेव अहीणं तह य मंदस्स।
दिट्ठि-विसं पिसुणाणं, सव्वं सव्वस्स भय-जणयं"
(प्रासू १६)।
२ अला-देवी का एक सिंहासन; (णाया २)। ३ वि. समर्थ; (आचा)। °**पट्ट** न [°**पट्ट**] बिच्छू के पूंछ जैसे आकार वाला एक शस्त्र; (विपा १, ६)।
°**अल** देखो **तल**; (गा ७५; से १, ७८)।
अलं अ [**अलम्**] १ पर्याप्त, पूर्ण; "अलमाणंदं जणंतीए" (सुर १३, २१)। २ प्रतिषेध, निवारण, बस; (उप २, ७)।
अलंकर सक [**अलं+कृ**] भूषित करना, विराजित करना। अलंकरेंति; (पि ५०६)। वकृ—**अलंकरंत**; (माल (१४३)। संकृ—**अलंकरिअ**; (पि ५८१)। प्रयो, कर्म—अलंकरावीयउ; (स ६४)।
अलंकरण न [**अलङ्करण**] १ आभूषण, अलंकार; (रयण ७४, भवि)। २ वि. शोभा-कारक; "मज्झमलोअस्स अलंकरणिं सुलोअणिं" (विक्र १४)।
अलंकरिय वि [**अलंकृत**] सुशोभित, विभूषित, "किं नयरमलंकरियं जम्ममहेणं तए महापुरिस।" (सुपा ५८४; सुर ४, ११८)।
अलंकार पुं [**अलंकार**] १ भूषण, गहना; (औप; राय)। २ भूषा, शोभा; (ठा ४, ४)। °**सहा** स्त्री [°**सभा**] भूषा-ग्रह, शृङ्गार-घर; (इक)।
अलंकारिय पुं [**अलंकारिक**] नापित, नाई, हजाम; (णाया १, १३)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] हजामत, क्षौर-कर्म; (णाया १, १३)। °**सहा** स्त्री [°**सभा**] हजामत बनाने का स्थान; (णाया १, १३)।
अलंकिय वि [**अलंकृत**] १ विभूषित, सुशोभित; (कप्प; महा)। २ न. संगीत का एक गुण; (जीव ३)।
अलंकुण देखो **अलंकर**। अलंकुणंति; (रयण ५२)।
अलंघ वि [**अलङ्घ्य**] १ उल्लंघन करने को अयोग्य; (सुर १, ४१)। २ उल्लंघन करने को अशक्य; (उप ५९७ टी)।
अलंघणिय, **अलंघणीय** वि [**अलङ्घनीय**] ऊपर देखो; (महा; सुपा ६०१; पि ९६; नाट)।
अलंप पुं [**दे**] कुर्कुट, मुर्गा; (दे १, १३)।

अलंबुसा स्त्री [**अलम्बुषा**] १ एक दिक्कुमारी देवी का नाम ; (ठा ८)। २ गुल्म-विशेष ; (पाअ)।

अलंभि स्त्री [**अलाभ**] अ-प्राप्ति ; (ओघ २३ भा)।

अलका स्त्री [**अलका**] नगरी-विशेष, पहले प्रतिवासुदेव की राजधानी ; (पउम २०, २०१)। देखो **अलया**।

अलक्ख पुं [**अलक्ष**] १ इस नामका एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर मुक्ति पाई थी ; (अंत १८)। २ न. 'अंतगडदसा' सूत्र के एक अध्ययन का नाम ; (अंत १८)।

अलक्ख वि [**अलक्ष्य**] लक्ष्य में न आ सके ऐसा ; (सुर ३, १३६ ; महा)।

अलक्खमाण वि [**अलक्ष्यमाण**] जो पिछाना न जा सकता हो, गुप्त ; (उप ५६३ टी)।

अलक्खिय वि [**अलक्षित**] १ अज्ञात, अपरिचित ; (से १३, ४५)। २ नहीं पिछाना हुआ ; (सुर ४, १४०)।

अलग देखो **अलय**=अलक ; (महा)।

अलगा देखो **अलया** ; (अंत १)।

अलग्ग न [**दे**] कलंक देना, दोष का झूठा आरोप ; (दे १, ११)।

अलचपुर न [**अचलपुर**] नगर-विशेष ; (कुमा)।

अलज्ज वि [**अलज्ज**] निर्लज्ज, बेशरम ; (पराह १, ३)।

अलज्जिर वि [**अलज्जालु**] ऊपर देखो ; (गा ६०; ४४५ ; ६६१ ; महा)।

अलट्टपल्लट्ट न [**दे**] पार्श्व का परिवर्तन ; (दे १, ४८)।

अलत्त पुं [**अलक्त**] आलता, स्त्री-लोक हाथ-पैर को लाल करने के लिए जो रंग लगाती है वह ; (अनु ५)।

अलत्तय पुं [**अलक्तक**] १ ऊपर देखो ; (सुपा ४०६)। २ आलता से रँगा हुआ ; (अनु)।

°**अलघोय** देखो **कलधोय** ; (से ६, ४६)।

अलमंजुल वि [**दे**] आलसी, सुस्त ; (दे १, ४६)।

अलमंथु वि [**अलमस्तु**] १ समर्थ; २ निषेधक, निवारक; (ठा ४, २)।

अलमल पुं [**दे**] दुर्दान्त बैल ; (दे १, २५)।

अलमलवसह पुं [**दे**] उन्मत्त बैल ; (दे १, २५)।

अलय न [**दे**] विद्रुम, प्रवाल ; (दे १, १६ ; भवि)।

अलय पुं [**अलक**] १ बिच्छू का कांटा ; (विपा १, ६)। २ केश, घुंघराले बाल ; (पाअ ; स ६६)।

अलया स्त्री [**अलका**] कुबेर की नगरी ; (पाअ ; णाया १, ४)। देखो **अलका**।

अलव वि [**अलप**] मौनी, नहीं बोलने वाला ; (सुअ २, ६)।

अलवलवसह पुं [**दे**] धूर्त बैल ; (षड्)।

अलस वि [**अलस**] १ आलसी, सुस्त ; (प्रासू ७)। २ मन्द, धीमा ; (पाअ)। ३ पुं. क्षुद्र कीट-विशेष, भू-नाग, वर्षा-ऋतु में साँप-सरीखा लाल रंग का जो लम्बा जन्तु उत्पन्न होता है वह ; (जी १५ ; पुप्फ २६५)।

अलस वि [**दे**] १ मधुर अवाज वाला "खं अलसं कलमंजुलं" (पाअ)। २ कुसुम्भ रंग से रँगा हुआ ; ३ न. मोम ; (दे १, ५२)।

°**अलस** देखो **कलस**; (से १, ६; ११, ४०; गा ३६६)।

अलसग } पुं [**अलसक**] १ विसूचिका रोग ; (उवा)।
अलसय } २ श्वयथु, सूजन ; (आचा)।

अलसाइअ वि [**अलसायित**] जिसने आलसी की तरह आचरण किया हो, मन्द; (गा ३५२)।

अलसाय अक [**अलसाय्**] आलसी होना, आलसी की तरह काम करना। अलसाअइ ; (पि ५५८)। वकृ— **अलसायंत, अलसायमाण** ; (से १४, १ ; उप पृ ३१५ ; गच्छ १)।

अलसी देखो **अयसी** ; (आचा ; षड् ; हे २, ११)।

अला स्त्री [**अला**] १ इस नाम की एक देवी ; (ठा ६)। २ एक इन्द्राणी का नाम ; (णाया २)। °**वडिंसग** न [°**वतंसक**] अलादेवी का भवन ; (णाया २)।

°**अला** देखो **कला** ; (गा ६५७)।

अलाउ न [**अलाबु**] तुम्बी-फल, तुम्बा ; (औप; प्रासू १५१)।

अलाऊ } स्त्री [**अलाबू**] तुम्बी-लता ; (कुमा ; षड्)।
अलाबू }

अलाय न [**अलात**] १ उल्मुक, जलता हुआ काष्ठ ; (दे १, १०७ ; ओघ २१ भा)। २ अङ्गार, कोयला ; (से ३, ३४)।

अलावु देखो **अलाउ** ; (जं ३)।

अलावू देखो **अलाऊ** ; (पि १४१; २०१)।

अलाह पुं [**अलाभ**] नुकसान, गैरलाभ; "ववहरमाणाण पुणो होइ सुलाहो कयावलाहो वा" (सुपा ४४६)।

अलाहि देखो **अलं** ; (उव ७२८ टी; हे २, १८९ ; गाया १, १ ; गा १२७) ।

अलि पुं [**अलि**] भ्रमर ; (कुमा) । °**उल** न [°**कुल**] भ्रमरों का समूह ; (हे ४, २५३) । °**विरुय** न [°**विरुत**] भ्रमर का गुञ्जारव ; (पाअ) ।

अलिअल्ली स्त्री [**दे**] १ कस्तूरी ; २ व्याघ्र, शेर ; (दे १, ५६) ।

अलिआ स्त्री [**दे**] सखी ; (दे १, १६) ।

अलिआर न [**दे**] दूध ; (दे १, २३) ।

अलिंजर न [**अलिञ्जर**] १ घड़ा, कुम्भ ; (ठा ४, २) । २ कुण्ड, पात्र-विशेष ; (दे १, ३७) ।

अलिंजरअ पुं [**अलिञ्जरक**] १ घड़ा ; (उवा) । २ रंगने का कुंडा, रंग-पात्र ; (पाअ) ।

अलिंद न [**अलिन्द**] पात्र-विशेष, एक प्रकार का जल-पात्र; (ओघ ४७६) ।

अलिंदग पुं [**अलिन्दक**] १ द्वार का प्रकोष्ठ ; (स ४७६) । २ घर के बाहर के दरवाजे का चौक ; ३ बाहर का अग्र-भाग ; (बृह २ ; राज) ।

अलिण पुं [**दे**] वृश्चिक, बिच्छू ; (दे १, ११) ।

अलिणी स्त्री [**अलिनी**] भ्रमरी ; (कुमा) ।

अलित्त न [**अरित्र**] नौका खेवने का डाँड़, चप्पू ; (आचा २, ३ १) ।

अलिय न [**अलिक**] कपाल ; (पाअ) ।

अलिय न [**अलीक**] १ मृषावाद, असत्य वचन ; (पाअ) । २ वि. झूठा, खोटा, " अलिअपरुसालाव—" (पाअ) । ३ निष्फल, निरर्थक ; (पराह १, २) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**] मृषावादी ; (पउम ११, २७; महा) ।

अलिल्ल सक [**कथय्**] कहना, बोलना । अलिल्लह ; (पिंग) ।

अलिल्लह न [**दे**] १ छन्द-विशेष का नाम ; २ वि. अप्रयोजक , नियम-रहित ; (पिंग) ।

अलिल्ला स्त्री [**अलिल्ला**] इस नाम का एक छन्द ; (पिंग) ।

अलीग } देखो **अलिय=**अलीक; (सुर ४ २२३ ; सुपा
अलीय } ३०० ; महा) ।

अलीवहू स्त्री [**अलिवधू**] भमरी ; (कुमा) ।

अलीसअ पुं [**दे**] शाक-वृक्ष, साग का पेड़ ; (दे १, २७) ।

अलुक्खि वि [**अरूक्षिन्**] कोमल ; (भग ११, ४) ।

अलेसि वि [**अलेश्यिन्**] १ लेश्या-रहित ; २ पुं. मुक्त आत्मा ; (ठा ३, ४) ।

अलोग पुं [**अलोक**] जीव-पुद्गल आदि रहित आकाश ; (भग) ।

अलोणिय वि [**अलवणिक**) लूण-रहित, नमक-शून्य, " नय अलोणियं सिलं कोइ चट्टेइ " (महा) ।

अलोय देखो **अलोग** ; (सम १) ।

अलोभ पुं [**अलोभ**] १ लोभ का अभाव, संतोष । २ वि. लोभ-रहित, संतोषी ; (भग; उव) ।

अलोल वि [**अलोल**] अ-लम्पट, निर्लोभ ; (दस १० ; पि ८५) ।

अलोह देखो **अलोभ** ; (कप्प) ।

अल्ल न [**दे**] दिन, दिवस ; (दे १, ५) ।

अल्ल देखो **अद्द** ; (हे १, ८२) ।

अल्ल अक [**नम्**] नमना, नीचे झुकना । ओअल्लंति ; (से ६, ४३) ।

अल्लई स्त्री [**आर्द्रकी**] लता-विशेष, आर्द्रक-लता ; (पराण १७) ।

अल्लग देखो **अल्लय=**आर्द्रक ; (धर्म २) ।

अल्लत्थ सक [**उत्+क्षिप्**] ऊंचा फेंकना । अल्लत्थइ ; (हे ४, १४४) ।

अल्लत्थ न [**दे**] १ जलार्द्रा, गिला पंखा ; २ केयूर, भूषण-विशेष ; (दे १, ५४) ।

अल्लत्थिअ वि [**उत्क्षिप्त**] ऊंचा फेंका हुआ ; (कुमा) ।

अल्लय न [**आर्द्रक**] आदा ; (जी ६) । °**तिय** न [°**त्रिक**] आदा, हल्दी और कचूरा ; (जी ६) ।

अल्लय वि [**दे**] परिचित, ज्ञात ; (दे १, १२) ।

अल्लय पुं [**अल्लक**] इस नाम का एक विख्यात जैन मुनि और ग्रन्थकार, उद्द्योतनसूरि का उपाध्याय-अवस्था का नाम; (सुर १६, २३६) ।

अल्लल्ल पुं [**दे**] मयूर, मोर ; (दे १, १३) ।

अल्लविय [**अप**] देखो **आलत्त=**आलपित ; (भवि) ।

अल्ला स्त्री [**दे**] माता, माँ ; (दे १, ५) ।

अल्लि } देखो **अल्ली** । अल्लिइ ; (षड्) । अल्लि-
अल्लिअ } अइ ; (दे १, ५८ ; हे ४, ५४) । वकृ— **अल्लिअंत** ; (से १२, ७१ ; पउम १२, ५१) ।

अल्लिअ सक [**उप+सृप्**] समीप में जाना। अल्लिअइ ; (हे ४, १३६)। वकृ—**अल्लिअंत** ; (कुमा)। प्रयो—अल्लियावेइ ; (पि ४८२; ५५१)।

अल्लिअ वि [**आर्द्रित**] गिला किया हुआ ; (गा ४४०)।

अल्लियावण न [**आलायन**] आलीन करना, श्लिष्ट करना, मिलान; (भग ८, ६)।

अल्लिल्ल पुं [**दे**] भमरा ; (षड्)।

अल्लिव सक [**अर्पय्**] अर्पण करना। अल्लिवइ ; (हे ४ ३६ ; भवि ; पि १९६; ४८५)।

अल्ली } सक [**आ+ली**] १ आना। २ प्रवेश
अल्लीअ } करना। ३ जोड़ना। ४ आश्रय करना। ५ आलिंगन करना। ६ अक. संगत होना। अल्लीअइ ; (हे ४, ५४)। भूका—अल्लीसी ; (प्रामा)। हेकृ—**अल्लीउं** (बृह ६)।

अल्लीण वि [**आलीन**] १ आश्लिष्ट ; २ आगत ; ३ प्रविष्ट ; ४ संगत ; ५ योजित ; ६ थोड़ा लीन ; (हे ४, ५४)। ७ आश्रित ; (कप्प)। ८ तल्लीन, तत्पर ; (वव १०)।

अल्लेस वि [**अलेश्य**] लेश्या-रहित ; (कम्म ४, ५०)।

अल्हाद पुं [**आह्लाद**] खुशी, प्रमोद, आनन्द ; (प्राप्र)।

अव अ [**अप**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ; — १ विपरीतता, उल्टापन ; जैसे—' अवकय, अवंगुय '। २ वापिसी, पीछेपन ; जैसे—' अवक्कमइ '। ३ बुरापन, खराबपन ; जैसे—' अवमग्ग, अवसद्द '। ४ न्यूनता, कमी; जैसे—' अवड्ढ '। ५ रहितपन, वियोग ; जैसे—' अवबाह '। ६ बाहरपन ; जैसे—' अवक्कमण '।

अव अ [**अव**] निम्न-लिखित अर्थों का सूचक अव्यय ; १ निम्नता ; जैसे—' अवइण्ण '। २ पीछेपन ; जैसे—' अवकुल्ली '। ३ तिरस्कार; अनादर ; जैसे—'अवगणंत' ४ खराबी, बुराई ; जैसे—' अवगुण '। ५ गमन ; ६ अनुभव; (राज)। ७ हानि, ह्रास; जैसे—' अवक्कास '। ८ अभाव ; जैसे—' अवलद्धि '। ९ मर्यादा ; (विसे ८२)। १० निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है; जैसे—' अवपुट्ठ , अवगल्ल '।

अव सक [**अव्**] १ रक्षण करना ;—" अवंतु मुणिणो य पयकमलं " (रयण ६)। २ जाना, गमन करना ; ३ इच्छा करना ; ४ जानना ; ५ प्रवेश करना ; ६ सुनना ; ७ माँगना, याचना ; ८ करना, बनाना ; ९ चाहना ; १० प्राप्त करना ; ११ आलिङ्गन ; १२ मारना, हिंसा करना ; १३ जलाना ; १४ अक. प्रीति करना ; १५ तृप्त होना ; १६ प्रकाशना ; १७ बढ़ना। अव ; (श्रा २३ ; विसे २०२०)

अव पुं [**अव**] शब्द, अवाज ; (श्रा २३)।

अवअक्ख सक [**दृश्**] देखना। अवअक्खइ ; (हे ४, १८१ ; कुमा)।

अवअक्खिअ न [**दे**] निवापित मुख, मुंडाया हुआ मुँह ; (दे १, ४०)।

अवअच्छ न [**दे** [कक्षा-वस्त्र ; (दे १,२६)।

अवअच्छ अक [**ह्लाद्**] आनन्द पाना, खुश होना। अवअच्छइ; (हे ४, १२२)।

अवअच्छ सक [**ह्लादय्**] खुश करना। अवअच्छइ ; (हे ४, १२२)।

अवअच्छिअ [**दे**] देखो **अवअक्खिअ** ; (दे १, ४०)।

अवअच्छिअ वि [**ह्लादित**] १ हृष्ट, आह्लाद-प्राप्त। २ खुश किया हुआ, हर्षित ; (कुमा)।

अवअज्झ सक [**दृश्**] देखना। अवअज्झइ ; (षड्)।

अवअणिअ वि [**दे**] असंघटित, असंयुक्त ; (दे १, ४३)।

अवअण्ण पुं [**दे**] ऊखल, गूगल ; (दे १, २६)।

अवअत्त वि [**अपवृत्त**] स्खलित ; (से १०, १८)।

अवआस सक [**दृश्**] देखना। अवआसइ ; (हे ४, १८१ ; कुमा)।

अवइ वि [**अव्रतिन्**] व्रत-शून्य, अ-विरत, असंयत ; (बृह १)।

अवइण्ण वि [**अवतीर्ण**] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ। २ जन्मा हुआ ; (कप्पू ; पउम ७६, २८)।

अवइद (शौ) वि [**अवचित**] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ ; (अभि ११७)।

अवइद (शौ) वि [**अपकृत**] १ जिसका अहित किया गया हो वह। २ न. अपकार, अ-हित ; (चारु ४०)।

अवइन्न देखो **अवइण्ण** ; (सुर ३, १२२)।

अवउज्ज सक [**अवकुब्ज्**] नीचे नमना। संकृ—**अवउज्जिय** ; (आचा २, १, ७)।

अवउज्झ सक [**अप+उज्झ्**] परित्याग करना ; छोड़ देना। संकृ—**अवउज्झिऊण** ; (बृह ३)।

अवउडग } देखो **अवओडग** ; (णाया १, २ ; अनु)।
अवउडय }

अवउंठण न [**अवगुण्ठन**] १ ढकना। २ मुँह ढकने का वस्त्र, घूँघट; (चारु ७०)।

अवऊढ वि [**अवगूढ**] आलिंगित; "संझावहूअवऊढो णववारिहरोव्व विज्जुलापडिभिन्नो" (हे २, ६; स ४६६)।

अवऊसण न [**अपवसन**] तपश्चर्या-विशेष; (पंचा १६)।

अवऊसण न [**अपजोषण**] ऊपर देखो; (पंचा १६)।

अवऊहण न [**अवगूहन**] आलिङ्गन; (गा ३३४; ५५६; वज्जा ७४)।

अवएड पुं [**अवएज**] तापिका-हस्त, पात्र-विशेष; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

अवएस पुं [**अपदेश**] बहाना, छल; (पाअ)।

अवओडग न [**अवकोटक**] गले को मरोड़ना, कृकाटिका को नीचे ले जाना; (विपा १, २)। °**बंधण** न [°**बन्धन**] १ हाथ और सिर को पृष्ठ भाग से बाँधना; (पण्ह १, २)। २ वि. रस्सी से गला और हाथ को मोड़ कर पृष्ठ भाग के साथ जिसको बांधा जाय वह; (विपा १, २)।

अवंग पुं [**अपाङ्ग**] नेत्र का प्रान्त भाग; (सुर ३,१२४; ११, ६१)।

अवंग पुं [**दे**] कटाक्ष; (दे १, १५)।

अवंगु, **अवंगुय** वि [**दे. अपावृत**] नहीं ढका हुआ, खुला; (औप; पण्ह २, ४)।

अवंचिअ वि [**अवञ्चित**] अधोमुख, अवाङ्मुख; (वज्जा १०)।

अवंचिअ वि [**अवञ्चित**] नहीं ठगा हुआ; (वज्जा १०)।

अवंझ वि [**अवन्ध्य**] सफल, अचूक; (सुपा ३२५)। °**पवाय** न [°**प्रवाद**] ग्यारहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष; (सम २६)।

अवंतर वि [**अवान्तर**] भीतरी, बीचका; (आवम)।

अवंति, **अवंती** स्त्री [**अवन्ति °न्ती**] १ मालव देश; २ मालव देश की राजधानी, जो आजकल राजपूताना में 'उजैन' नाम से प्रसिद्ध है; (महा; सुपा ३९६; आवम)। °**गंगा** स्त्री [°**गङ्गा**] आजीविक मत में प्रसिद्ध काल-विशेष; (भग २४, १)। °**वड्ढण** पुं [°**वर्धन**] इस नाम का एक राजा, (आव ४)। °**सुकुमाल** पुं [°**सुकुमाल**] एक श्रेष्ठि-पुत्र जो आर्यसुहस्ति आचार्य के पास दीक्षा ले कर देव-लोक के नलिनीगुल्म विमान में उत्पन्न हुआ है; (पडि)। °**सेण** पुं [°**षेण**] एक राजा; (आक)।

अवंदिम वि [**अवन्द्य**] वन्दन करने को अयोग्य, प्रणाम के अयोग्य; (दसचू १)।

अवकंख सक [**अव+काङ्क्ष्**] १ चाहना। २ देखना। अवकंखइ; (भग)। वकृ—**अवकंखमाण**; (णाया १, ९)।

अवकंत देखो **अवक्कंत**; "कुमरोवि सत्थराओ उट्ठेत्ता सणियमवकंतो" (महा)।

अवकय वि [**अपकृत**] १ जिसका अपकार किया गया हो वह; (उव)। २ अपकार, अहित; (सुपा ६४१)।

अवकर सक [**अप+कृ**] अहित करना। अवकरेंति; (सूअ १, ४, १, २३)।

अवकरिस पुं [**अपकर्ष**] अपकर्ष, ह्रास, हानि; (सम ६०)।

अवकलुसिय वि [**अपकलुषित**] मलिन; (गउड)।

अवकस सक [**अव+कष्**] त्याग करना। संकृ—**अवकसित्ता**; (चउ १४)।

अवकारि वि [**अपकारिन्**] अहित करने वाला; (पउम ६, ८५)।

अवकिण्ण वि [**अवकीर्ण**] परित्यक्त; (दे १, १३०)।

अवकिण्णग, **अवकिण्णय** पुं [**अपकीर्णक**] करकण्डू-नामक एक जैन महर्षि का पूर्व नाम; (महा)।

अवकित्ति स्त्री [**अपकीर्त्ति**] अपयश; (दे १, ६०)।

अवकीरण न [**अवकरण**] छोड़ना, त्याग, उत्सर्ग; (आव ५)।

अवकीरिअ वि [**दे**] विरहित, वियुक्त; (दे १, ३८)।

अवकीरियव्व वि [**अवकरितव्य**] त्याज्य, छोड़ने लायक; (पण्ह १, ५)।

अवकूजिय न [**अवकूजित**] हाथ को ऊंचा-नीचा करना; (निचू १७)।

अवकेसि पुं [**अवकेशिन्**] फल-वन्ध्य वनस्पति; (उर २, ८)।

अवकोडक देखो **अवओडग**; (पण्ह १, १)।

अवक्कंत वि [**अपक्रान्त**] १ पीछे हटा हुआ, वापस लौटा हुआ; (सुपा २९२; उप १३४ टी; महा)। २ निकृष्ट, जघन्य; (ठा ६)।

अवक्कंति स्त्री [**अपक्रान्ति**] १ अपसरण; २ निर्गमन; (णाया १, ८)।

अवक्कंति स्त्री [**अवक्रान्ति**] गमन, गति; (आचा)।

अवक्कम अक [अप + क्रम्] १ पीछे हटना। २ बाहर निकलना। अवक्कमइ ; (महा, कप्प)। वकृ—**अवक्कममाण** ; (विपा १, ६)। संकृ—**अवक्कमइत्ता, अवक्कम्म** ; (कप्प, वव १)।

अवक्कम सक [अव + क्रम्] जाना। अवक्कमइ ; (भग)। संकृ—**अवक्कमित्ता**; (भग)।

अवक्कमण न [अपक्रमण] १ बाहर निकलना ; (ठा ३, २)। २ पलायन, भागना ; "निग्गमणमवक्कमणं निस्सरणं पलायणं च एगट्ठा" (वव १०)। ३ पीछे हटना ; (णाया १, १)।

अवक्कय पुं [अवक्रय] भाड़ा, भाटि ; (बृह १)।

अवक्करस पुं [दे] दारु, मद्य ; (दे १, ४६ ; पाअ)।

अवक्करिस } [अपकर्ष] हानि, अपचय; (विसे १७६६;
अवक्कास } भग १२, ५)।

अवक्कास पुं [अवकर्ष] ऊपर देखो ; (भग १२, ५)।

अवक्कास पुं [अप्रकाश] अन्धकार, अँधेरा ; (भग १२, ५)।

अवक्कोस पुं [अवक्रोश] मान, अहंकार ; (सम ७१)।

अवक्ख सक [दृश्] देखना। अवक्खइ ; (षड्)। अवक्खए ; (भवि)। वकृ—**अवक्खंत** ; (कुमा)।

अवक्खंद पुं [अवस्कन्द] १ शिबिर, छावनी, सैन्य का पड़ाव ; २ नगर का रिपु-सैन्य द्वारा वेष्टन, घेरा ; (हे २, ४ ; स ४१२)।

अवक्खारण न [अपक्षारण] १ निर्भर्त्सना, कठोर वचन; २ सहानुभूति का अभाव ; (पराह १, २)।

अवक्खेव पुं [अवक्षेप] विघ्न, बाधा ; (विपा १, ६)।

अवक्खेवण न [अवक्षेपण] १ बाधा ; अन्तराय ; २ क्रिया-विशेष, नीचे जाना ; (आवम; विसे २४६२)।

अवक्खेर सक [दे] १ खिन्न करना। २ तिरस्कार करना। अवक्खेरइ ; (भवि)। वकृ—**अवक्खेरंत** ; (भवि)।

अवगइ स्त्री [अपगति] १ खराब गति ; २ गोपनीय स्थान ; (सुपा ३४५)।

अवगंड न [अवगण्ड] १ सुवर्ण ; २ पानी का फेन ; (सूअ १, ६)।

अवगंतव्व देखो **अवगम**=अवगम्।

अवगच्छ सक [अव + गम्] जानना। अवगच्छइ ; (महा)। अवगच्छे ; (स १५२)।

अवगच्छ अक [अप + गम्] दूर होना ; निकल जाना। अवगच्छइ ; (महा)।

अवगण } सक [अव+गणय्] अनादर करना, तिरस्कारना।
अवगण्ण } वकृ—**अवगणंत**; (श्रा २७)। संकृ—**अवगण्णिय** ; (आरा १०५)।

अवगणणा स्त्री [अवगणना] अवज्ञा, अनादर ; (दे १, २७)।

अवगणिय } वि [अवगणित] अवज्ञात, तिरस्कृत;
अवगण्णिय } (दे ; जीव १)।

अवगद वि [दे] विस्तीर्ण, विशाल ; (दे १, ३०)।

अवगन्न देखो **अवगण**। अवगन्नइ ; (भवि)। संकृ—**अवगन्निवि** ; (भवि)।

अवगन्निय देखो **अवगण्णिय** ; (सुपा ४२१ ; भवि)।

अवगम पुं [अपगम] १ अपसरण ; (सुपा ३०२)। २ विनाश ; (स १५३, विसे ११८२)।

अवगम सक [अव + गम्] १ जानना, २ निर्णय करना। संकृ—**अवगमित्तु** ; (सार्ध ६३)। कृ—**अवगंतव्व** ; (स ५२६)।

अवगम पुं [अवगम] १ ज्ञान ; २ निर्णय, निश्चय ; (विसे १८०)।

अवगमण न [अवगमन] ऊपर देखो ; (स ६७०, विसे १८६ ; ४०१)।

अवगमिअ } वि [अवगत] १ ज्ञात, विदित ; (सुपा
अवगय } २१८)। २ निश्चित, अवधारित ; (दे ३, २३ ; स १४०)।

अवगय वि [अपगत] गुजरा हुआ, विनष्ट ; (णाया १, १ ; दस १०, १६)।

अवगर सक [अप + कृ] अपकार करना, अहित करना। अवगरेइ ; (स ६३६)।

अवगरिस देखो **अवक्करिस** ; (विसे १५८३)।

अवगल वि [दे] आक्रान्त ; (षड्)।

अवगल्ल वि [अवग्लान] बिमार ; (ठा २, ४)।

अवगाढ देखो **ओगाढ** ; (ठा १ ; भग ; स १७२)।

अवगाढु वि [अवगाहितृ] अवगाहन करने वाला ; (विसे २८२२)।

अवगार पुं [अपकार] अपकार, अहित-करण ; (सुर २, ४३)।

अवगास पुं [**अवकाश**] १ फुरसद ; (महा) । २ जगह, स्थान ; (आवम) । ३ अवस्थान, अवस्थिति ; (ठा ४, ३) ।

अवगाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहन करना । अवगाहइ ; (सण) ।

अवगाह पुं [**अवगाह**] १ अवगाहन ; २ अवकाश ; (उत्त २८) ।

अवगाहण न [**अवगाहन**] अवगाहन " तित्थावगाहणत्थं आगंतव्वं तए तत्थ " (सुपा ५६३) ।

अवगाहणा देखो **ओगाहणा** ; (ठा ४, ३ ; विसे २०८८) ।

अवगिंचण न [**दे. अवविवेचन**] पृथक्करण ; (उप पृ ६६) ।

अवगिज्झ देखो **ओगिज्झ** । संकृ—**अवगिज्झिय** ; (कप्प) ।

अवगीय वि [**अवगीत**] निन्दित ; (उप पृ १८१) ।

अवगुंठण देखो **अवउंठण** ; (दे १, ६) ।

अवगुंठिय वि [**अवगुण्ठित**] आच्छादित ; (महा) ।

अवगुण पुं [**अवगुण**] दुर्गुण, दोष ; (हे ४, ३६५) ।

अवगुण सक [**अव+गुणय्**] खोलना, उद्घाटन करना । अवगुणेज्जा ; (आचा २, २, २,४) । वकृ—**अवगुणंत**; (भग १५) ।

अवगूढ वि [**अवगूढ**] १ आलिंगित; (हे २, १६८) । २ व्याप्त ; (गाया १, ८) ।

अवगूढ न [**दे**] व्यलीक, अपराध ; (दे १, २०) ।

अवगूहण न [**अवगूहन**] आलिंगन ; (सुर १४, २२० ; पउम ७४, २४) ।

अवग्ग वि [**अव्यक्त**] १ अस्पष्ट । २ पुं. अगीतार्थ, शास्त्रानभिज्ञ साधु; (उप ८७४) ।

अवग्गह देखो **उग्गह** ; (पव ३०) ।

अवग्गहण न [**अवग्रहण**] देखो **उग्गह** ; (विसे १८०) ।

अवच देखो **अवय=**अवच ; (भग) ।

अवचइय वि [**अपचयिक**] अपकर्ष-प्राप्त, ह्रास वाला ; (आचा) ।

अवचय पुं [**अपचय**] ह्रास, अपकर्ष ; (भग ११, ११ ; स २८२) ।

अवचय पुं [**अवचय**] इकट्ठा करना ; (कुमा) ।

अवचयण न [**अवचयन**] ऊपर देखो ; (दे ३, ५६) ।

अवचि अक [**अप + चि**] हीन होना, कम जाना । अवचिज्जइ ; (भग) । अवचिज्जंति ; (भग २५, २) ।

अवचि } **अवचिण** } सक [**अव+चि**] इकट्ठा करना (फूल आदि को वृक्ष से तोड़ कर) । अवचिणइ ; (नाट) । भवि—अवचिणिस्सं ; (पि ५३१) । हेकृ—**अवचिणेदुं** (शौ); (पि ५०२) ।

अवचिय वि [**अपचित**] हीन, ह्रास-प्राप्त; (विसे ८६७) ।

अवचिय वि [**अवचित**] इकट्ठा किया हुआ ; (पाअ) ।

अवचुण्णिय वि [**अवचूर्णित**] तोड़ा हुआ, चूर २ किया हुआ ; (महा) ।

अवचुल्ली स्त्री [**अवचुल्ली**] चूल्हे का पीछला भाग ; (पिंड) ।

अवचूल देखो **ओऊल** ; (गाया १, १६—पत्र २१६) ।

अवच्च न [**अपत्य**] संतान, बच्चा ; (कप्प ; आव १ ; प्रासू ८३) । °**व** वि [°**वत्**] संतान वाला ; (सुपा १०६) ।

अवच्चीय वि [**अपत्यीय**] संतानीय, संतान-संबन्धी ; (ठा ६) ।

अवच्छुण्ण न [**दे**] क्रोध से कहा जाता मार्मिक वचन ; (दे १, ३६) ।

अवच्छेय पुं [**अवच्छेद**] विभाग, अंश ; (ठा ३, ३) ।

अवछंद वि [**अपच्छन्दस्क**] छन्द के लक्षण से रहित, छन्दो-दोष-दुष्ट ; (पिंग) ।

अवजस पुं [**अपयशस्**] अपकीर्ति ; (उप पृ १८७) ।

अवजाण सक [**अप+ज्ञा**] १ अपलाप करना । " बालस्स मंदयं बीयं जं च कडं अवजाणई भुज्जो " (सूअ १, ४, १, २६) ।

अवजाय पुं [**अपजात**] पिता की अपेक्षा से हीन वैभव वाला पुत्र ; (ठा ४, १) ।

अवजीव वि [**अपजीव**] जीव-रहित, मृत, अ-चेतन ; (गउड) ।

अवजुय वि [**अवयुत**] पृथग्भूत, भिन्न ; (वव ७) ।

अवज्ज न [**अवद्य**] १ पाप ; (पराह २, ४) । २ वि. निन्दनीय ; (सूअ १, १, २) ।

अवज्जस सक [**गम्**] जाना, गमन करना । अवज्जसइ ; (हे ४, १६२) । वकृ— **अवज्जसंत** ; (कुमा) ।

अवज्जा स्त्री [**अवज्ञा**] अनादर ; (स ६०४) ।
अवज्झ वि [**अवध्य**] मारने के अयोग्य ; (गाया १, १६) ।
अवज्झस न [**दे**] १ कटी, कमर ; २ वि. कठिन ; (दे १, ५६) ।
अवज्झा स्त्री [**अवध्या**] १ अयोध्या नगरी ; (इक) । २ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३) ।
अवज्झाण न [**अपध्यान**] बुरा चिन्तन, दुर्ध्यान ; (सुपा ५४६ ; उप ४६६ ; सम ५० ; विसे ३०१३) ।
अवज्झाय वि [**अपध्यात**] १ दुर्ध्यान का विषय ; २ अवज्ञात, तिरस्कृत ; (गाया १, १४) ।
अवज्झाय (अप) देखो **उवज्झाय** ; (दे १, ३७) ।
अवट्ट सक [**अप+वृत्**] घुमाना, फिराना । "अवट्ट अवट्ट ति वाहरंते कण्णहारे रज्जुपरिवत्तणुज्जएसु निज्जामएसु अयंडम्मि चेव गिरिसिहरनिवडियं पिव विवन्नं जाणवत्तं" (स ३५५) ।
अवट्टा स्त्री [**आवर्त्ता**] राज-मार्ग से बाहर की जगह ; (उप ६६१) ।
अवट्टंभ पुं [**अवष्टम्भ**] अवलम्बन, आश्रय ; (पउम २६, २७ ; स ३३१) ।
अवट्ठव सक [**अव+स्तम्भ्**] अवलम्बन करना, सहारा लेना । संकृ—**अवट्ठविअ** ; (विक ६४) ।
अवट्ठद्ध वि [**अवष्टब्ध**] १ अवलम्बित । २ आक्रान्त, "अवट्ठद्धा महाविसाएणं" (स ५८४) ।
अवट्ठाण न [**अवस्थान**] १ अवस्थिति, अवस्था । २ व्यवस्था ; (बृह ५) ।
अवट्ठिअ वि [**अवस्थित**] १ स्थिर रहा हुआ ; (भग) । २ नित्य, शाश्वत ; (ठा ३, ३) । ३ जो बढ़ता-घटता न हो ; (जीव ३) ।
अवट्ठिइ स्त्री [**अवस्थिति**] अवस्थान ; (ठा ३, ४ ; विसे ७५८) ।
अवठंभ सक [**अव+स्तम्भ्**] अवलम्बन करना । संकृ—
"धाएण मओ, सद्देण मई, चोज्जेण वाहवहुयावि ।
अवठंभिऊण धणुहं वाहेणावि मुक्किया पाणा"
(वज्जा ४६) ।
अवठंभ पुं [**दे**] ताम्बूल, पान ; (दे १, ३६) ।
अवड पुं [**अवट**] कूप, कुँआ ; (गउड) ।
अवड / **अवडअ** } पुं [**दे**] १ कूप, कुँआ ; २ आराम, बगीचा ; (दे १, ५३) ।
अवडअ पुं [**दे**] १ चञ्चा, तृण-पुरुष ; (दे १, २०) ।
अवडंक पुं [**अवटङ्क**] प्रसिद्धि, ख्याति, "जणकयावडंकेण निग्घिणसम्मो णाम" (महा) ।
अवडक्किअ वि [**दे**] कूप आदि में गिर कर मरा हुआ, जिसने आत्म-हत्या की हो वह ; (दे १, ४७) ।
अवडाह सक [**उत्+क्रुश्**] ऊंचे स्वर से रुदन करना । अवडाहेमि ; (दे १, ४७) ।
अवडाहिअ न [**दे**] १ ऊंचे स्वर से रोदन ; (दे १, ४७) । २ वि. उत्कृष्ट ; (षड्) ।
अवडिअ वि [**दे**] खिन्न, परिश्रान्त ; (दे १, २१) ।
अवडु पुं [**अवटु**] कृकाटिका, घंटी, कण्ठ-मणि ; (पाअ) ।
अवडुअ पुं [**दे**] उदूखल, उलूखल ; (दे १, २६) ।
अवडुल्लिअ वि [**दे**] कूप आदि में गिरा हुआ ; (षड्) ।
अवड्ढ वि [**अपार्ध**] १ आधा ; (सुज्ज १०) । २ आधा दिन "अवड्ढं पच्चक्खाइ" (पडि ; भग १६, ३) । ३ आधे से कम ; (भग ७, १ ; नव ४१) । °**क्खेत्त** न [°**क्षेत्र**] १ नक्षत्र-विशेष ; (चंद १०) । २ मुहूर्त-विशेष ; (ठा ६) ।
अवण पुं [**दे**] १ पानी का प्रवाह ; २ घर का फलहक ; (दे १, ५५) ।
अवण न [**अवन**] १ गमन ; २ अनुभव ; (णंदि ; विसे ८३) ।
अवणद्ध वि [**अवनद्ध**] १ संबद्ध, जोड़ा हुआ ; (सुर २, ७) । २ आच्छादित ; (भग) ।
अवणम अक [**अव+नम्**] नीचे नमना । वकृ—**अवणमंत** ; (राय) ।
अवणमिय वि [**अवनत**] अवनत ; (सुपा ४२६) ।
अवणमिय वि [**अवनमित**] नीचे किया हुआ, नमाया हुआ ; (सुर २, ४१) ।
अवणय वि [**अवनत**] नमा हुआ ; (दस ५) ।
अवणय पुं [**अपनय**] १ अपनयन, हटाना, (ठा ८) । २ निन्दा ; (पव १४३ ; विसे १४०३ टी) ।
अवणयण न [**अपनयन**] हटाना, दूर करना ; (सुपा ११ ; स ४८३ ; उप ४६६) ।

अवणि स्त्री [**अवनि**] पृथिवी, भूमि; (उप ३३६ टी) ।
अवणिंत देखो **अवणी**=अप+नी ।
अवणिंद पुं [**अवनीन्द्र**] राजा, भूप ; (भवि) ।
अवणिय देखो **अवणीय** ; " तं कुणसु चित्तनिवसणमवणिय-नीसेसदोसमलं " (विवे १३८) ।
अवणी देखो **अवणि**; (सुपा ३१०) । °**सर** पुं [°**श्वर**] राजा, भूमि-पति ; (भवि) ।
अवणी सक [**अप+नी**] दूर करना, हटाना । अवणेइ, अवणेमि ; (महा) । वकृ—**अवणिंत, अवणेंत** ; (निचू १ ; सुर २, ८) । कवकृ—**अवणेज्जंत** ; (उप १४६ टी) । कृ—**अवणेअ** ; (द्र ३७) ।
अवणीय वि [**अपनीत**] दूर किया हुआ ; (सुपा ५४) ।
अवणेंत देखो **अवणी**=अप+नी ।
अवणोय पुं [**अपनोद**] अपनयन, हटाना ; (विसे ६८२) ।
अवणोयण न [**अपनोदन**] अपनयन ; दूरीकरण ; (स ६२१) ।
अवण्ण वि [**अवर्ण**] १ वर्ण-रहित, रूप-रहित; (भग) । २ पुं. निन्दा ; (पंचव ४) । ३ अपकीर्ति ; (ओघ १८४ भा) । °**व** वि [°**वत्**] निन्दक " तेसिं अवण्णवं बाले महामोहं पकुव्वइ " (सम ५१) । °**वाय** पुं [°**वाद**] निन्दा ; (द्र २६) ।
अवण्ण न [**दे**] अवज्ञा, निरादर ; (दे १, १७) ।
अवण्णा स्त्री [**अवज्ञा**] निरादर, तिरस्कार ; (औप) ।
अवण्हअ पुं [**अपह्नव**] अपलाप ; (षड्) ।
अवण्हवण न [**अपह्नवन**] अपलाप ; (आचा) ।
अवण्हाण न [**अवस्नान**] साबुन आदि से स्नान करना ; (णाया १, १३ ; विपा १, १)
अवतंस देखो **अवयंस**=अवतंस ; (कुमा) ।
अवतंसिय वि [**अवतंसित**] विभूषित ; (कुमा) ।
अवतट्ठ वि [**अवतष्ट**] तनूकृत, छिला हुआ; (सूअ १, ५,२)।
अवतट्ठि देखो **अवयट्ठि**=अवतष्टि ; (सूअ १, ७) ।
अवतारण न [**अवतारण**] १ उतारना ; २ योजना करना; (विसे ६४०) ।
अवतित्थ न [**अपतीर्थ**] कुत्सित घाट, खराब किनारा ; (सुपा १५) ।
अवत्त वि [**अव्यक्त**] १ अ-स्पष्ट ; (विसे) । २ कम उमर वाला ; (बृह १) । ३ अ-संस्कृत ; (गच्छ १) । ४पुं. देखो **अवग्ग** ; (निचू २) ।
अवत्त वि [**अवात**] पवन-रहित ; (गच्छ १) ।
अवत्त वि [**अवाप्त**] प्राप्त, लब्ध ।
अवत्त न [**अवत्र**] आसन-विशेष ; (निचू १) ।
अवत्तय वि [**दे**] विसंस्थुल, अव्यवस्थित ; (दे १, ३४)।
अवत्तव्व वि [**अवक्तव्य**] १ वचन से कहने को अशक्य, अनिर्वचनीय ; २ सप्त-भंगी का चतुर्थ भंग ; "अत्थंतरभूएहि अ नियएहिं दोहिं समयमाईहिं । वयणविसेसाईअं दव्वमवत्तयं पडइ " (सम्म ३६) ।
अवत्तिय न [**अव्यक्तिक**] १ एक जैनाभास मत, निह्नव-प्रचालित एक मत; २ वि. इस मत का अनुयायी; (ठा ७)।
अवत्थंतर न [**अवस्थान्तर**] जुदी दशा, भिन्न अवस्था ; (सुर ३, २०६) ।
अवत्थग वि [**अपार्थक**] १ निरर्थक, व्यर्थ ; २ अ-संबद्ध अर्थ वाला (सूत्र वगैरः); (विसे) ।
अवत्थद्ध वि [**अवष्टब्ध**] अवलम्बन-प्राप्त, जिसको सहारा मिला हो वह ; (णाया १, १८) ।
अवत्थय वि [**अपार्थक**] निरर्थक ; (विसे ६६६ टी) ।
अवत्थरा स्त्री [**दे**] पाद-प्रहार, लात मारना ; (दे १, २२) ।
अवत्था स्त्री [**अवस्था**] दशा, अवस्थिति ; (ठा ८, कुमा) ।
अवत्थाण न [**अवस्थान**] अवस्थिति ; (ठा ४, १ ; स ६२७ ; महा ; सुर १, २)।
अवत्थाव सक [**अव+स्थापय्**] १ स्थिर करना, ठहराना । २ व्यवस्थित करना । हेकृ—**अवत्थाविदुं** ; **अवत्था-वइदुं** (शौ); (पि ५७३ ; नाट) ।
अवत्थाविद (शौ) वि [**अवस्थापित**] अवस्थित किया हुआ ; (नाट) ।
अवत्थिय देखो **अवट्ठिय** ; (महा ; स २७४) ।
अवत्थिय वि [**अवस्तृत**] फैलाया हुआ, प्रसारित ; (णाया १, ८) ।
अवत्थु न [**अवस्तु**] १ अभाव, असत्त्व ; (भवि ; आवम) । २ वि. निरर्थक, निष्फल ; (पण्ह १, २) ।
अवदग्ग देखो **अवयग्ग** (सूअ २, २; ५)
अवदल वि [**अपदल**] १ निःसार, सार-रहित ; २ कच्चा, अपक्व ; (ठा ४, ४) ।
अवदहण न [**अवदहन**] दम्भन, गरम लोहे की कोश आदि से चर्म (फोड़े आदि) पर दागना ; (णाया १,४) ।

अवदाय वि [**अवदात**] १ पवित्र, निर्मल "दिणयरकरावदायं भत्तं पेहित्तु चक्खुणा सम्मं" (सुपा ४६१)। २ श्वेत, सफेद ; (पराह १, ४ ; पात्र)।
अवदार न [**अपद्वार**] १ छोटी खिड़की ; २ गुप्त द्वार ; (उप ६६१)।
अवदाल सक [**अव+दलय्**] खोलना। अवदालेइ ; (औप)। संकृ—**अवदालेत्ता** ; (औप)।
अवदालिय वि [**अवदलित**] विकसित, विजृम्भित ; "अवदालियपुंडरीयनयणे" (औप; पराह १, ४ ; उवा)।
अवदिसा स्त्री [**अपदिक्**] भ्रान्त दिशा ; (स ५२६)।
अवदेस देखो **अवएस** ; (अभि ७६)।
अवद्दार } देखो **अवदार** ; (गाया १, २ ; प्रारू)।
अवद्दाल }
अवद्दाहणा स्त्री देखो **अवदहण** ; (विपा १, १)।
अवद्दुस न [**दे**] उलूखल आदि घर का सामान्य उपकरण, गुजराती में जिसको 'राचरचिलु' कहते हैं ; (दे १, ३०)।
अवद्धंस पुं [**अवध्वंस**] विनाश ; (ठा ४, ४)।
अवधार सक [**अव+धारय्**] निश्चय करना। कृ—**अवधारियव्व** ; (पंचा ३)।
अवधारण न [**अवधारण**] निश्चय, निर्णय ; (श्रा ३०)।
अवधारिय वि [**अवधारित**] निश्चित, निर्णीत ; (वसु)।
अवधारियव्व देखो **अवधार**।
अवधाव सक [**अप+धाव्**] पीछे दौड़ना। अवधावइ ; (सण)। वकृ—**अवधावंत** ; (स २३२)।
अवधिका स्त्री [**दे**] उपदेहिका, दिमक ; (पराह १, १)।
अवधीरिय वि [**अवधीरित**] तिरस्कृत, अपमानित ; (बृह १, ४)।
अवधुण } सक [**अव+धू**] १ परित्याग करना। २
अवधूण } अवज्ञा करना। संकृ—**अवधुणिअ, अवधूणिअ** ; (माल २३२ ; वेणी ११०)।
अवधूय वि [**अवधूत**] १ अवज्ञात, तिरस्कृत ; (ओघ १८ भा. टी)। २ विक्षिप्त ; (आव ४)।
अवनिद्दय पुं [**अपनिद्रक**] उजागर, निद्रा का अभाव ; (सुर ६, ८३)।
अवन्न देखो **अवण्ण**=अवर्ण ; (भग; उव ; ओघ ३५१)।
अवन्ना देखो **अवण्णा** ; (ओघ ३८२ भा; सुर १६, १३१ ; सुपा ३७२)।
अवपक्का स्त्री [**अवपाक्या**] तापिका, तवी; छोटा तवा ; (गाया १, १ टी—पत्र ४३)।
अवपुट्ठ वि [**अवस्पृष्ट**] जिसका स्पर्श किया गया हो वह; "जीए ससिकंतमणिमंदिराइं निसि ससिकरावपुट्ठाइं। वियलियबाहजलाइं रोयंतिव तरणितवियाइं" (सुपा ३)।
अवपुसिय वि [**दे**] संघटित, संयुक्त ; (दे १, ३६)।
अवप्पओग पुं [**अपप्रयोग**] उल्टा प्रयोग, विरुद्ध औषधियों का मिश्रण ; (बृह १)।
अवप्फार पुं [**अवस्फार**] विस्तार, फैलाव, "ता किमिमिणा अहोपुरिसियावप्फारपाएणं" (स २८८)।
अवबंध पुं [**अवबन्ध**] बन्ध, बन्धन ; (गउड)।
अवबद्ध वि [**अवबद्ध**] बंधा हुआ, नियन्त्रित ; (धर्म ३)।
अवबाण वि [**अपबाण**] बाण-रहित ; (गउड)।
अवबुज्झ सक [**अव+बुध्**] १ जानना। २ समझना। "जत्थ तं मुज्झसी रायं, पेच्चत्थं नावबुज्झसे" (उत्त १८,१३)। वकृ—**अवबुज्झमाण** ; (स ८५)। संकृ—**अवबुज्झेऊण** ; (स १६७)।
अवबोह पुं [**अवबोध**] १ ज्ञान, बोध ; (सुपा १७)। २ विकास ; (गउड)। ३ जागरण ; (धर्म २)। ४ स्मरण, यादी ; (आचा)।
अवबोहय वि [**अवबोधक**] अवबोध-कारक ; "भवियकमलावबोहय, मोहमहातिमिरपसरभरसूर" (काल)।
अवबोहि पुं [**अवबोधि**] १ ज्ञान ; २ निश्चय, निर्णय; (आचू १, विसे ११५४)।
अवभास अक [**अव+भास्**] चमकना, प्रकाशित होना।
अवभास पुं [**अवभास**] प्रकाश ; (सुज्ज ३)।
अवभासय वि [**अवभासक**] प्रकाशक ; (विसे ३१७; २०००)।
अवभासि वि [**अवभासिन्**] देदीप्यमान, प्रकाशने वाला ; (गउड)।
अवभासिय वि [**अवभासित**] प्रकाशित ; (विसे)।
अवभासिय वि [**अवभाषित**] आक्रुष्ट, अभिशप्त ; (वव १)।
अवम देखो **ओम** ; (आचा)।
अवमग्ग पुं [**अपमार्ग**] कुमार्ग, खराब रास्ता; (कुमा)।
अवमग्ग पुं [**अपामार्ग**] वृक्ष-विशेष, चिचड़ा, लटजीरा ; (दे १, ८)।

अवमच्चु पुं [**अपमृत्यु**] अकाल मृत्यु, अनमौत मरण ; (दे ६, ३ ; कुमा)

अवमज्ज सक [**अव+मृज्**] पोंछना, झाड़ना, साफ करना। संकृ—**अवमज्जिऊण** ; (स ३४८) ।

अवमण्ण सक [**अव+मन्**] तिरस्कार करना। अवमण्णंति ; (उवर १२२) ।

अवमद्द पुं [**अवमर्द**] मर्दन, विनाश ; (पराह १, २)।

अवमद्दग वि [**अवमर्दक**] मर्दन करने वाला ; (णाया १, १६) ।

अवमन्न सक [**अव+मन्**] अवज्ञा करना, निरादर करना। अवमन्नइ ; (महा)। वकृ—**अवमन्नंत** ; (सूत्र १,३,४) संकृ—**अवमन्निऊण** ; (महा) ।

अवमन्निय, **अवमय** } वि [**अवमत**] अवज्ञात, अवगणित ; (सुर १६, १२७ ; महा ; उव) ।

अवमाण पुं [**अपमान**] तिरस्कार ; (सुर १, २३५) ।

अवमाण पुंन [**अवमान**] १ अवज्ञा, तिरस्कार। २ परिमाण ; (ठा ४, १) ।

अवमाण सक [**अव+मानय्**] अवगणना करना। अवमाणइ ; (भवि) ।

अवमाणण न [**अवमानन**] अनादर, अवज्ञा ; (पराह १, ५ ; औप) ।

अवमाणण न [**अपमानन**] तिरस्कार, अपमान; (स १०)।

अवमाणणा स्त्री [**अवमानना**] अवगणना ; (काल) ।

अवमाणि वि [**अवमानिन्**] अवज्ञा करने वाला ; (अभि ६६) ।

अवमाणिय वि [**अपमानित**] तिरस्कृत ; (से १०, ६६; सुपा १०५) ।

अवमाणिय वि [**अवमानित**] १ अवज्ञात, अनादृत ; (सुर २, १७६) । २ अपूरित, " अवमाणियदोहला " (भग ११, ११) ।

अवमार पुं [**अपस्मार**] भयंकर रोग-विशेष ; पागलपन ; (आचा) ।

अवमारिय वि [**अपस्मारित**, °**रिक**] अपस्मार रोग वाला ; (आचा) ।

अवमारुय पुं [**अवमारुत**] नीचे चलता पवन ; (गउड)।

अवमिच्चु देखो **अवमच्चु** ; (प्रारू) ।

अवमिय वि [**दे**] जिसको घाव हो गया हो वह, व्रणित ; (बृह ३) ।

अवमुक्क वि [**अवमुक्त**] परित्यक्त ; (पि ५६६) ।

अवमेह वि [**अपमेघ**] मेघ-रहित ; (गउड) ।

अवय देखो **अपय**=अपद ; (सूत्र १, ८; ११) ।

अवय न [**अब्ज**] कमल, पद्म ; (पराण १) ।

अवय वि [**अवच**] १ नीचा ; अनुच्च ; (उत्त ३) । २ जघन्य, हीन ; अश्रेष्ठ ; (सूत्र १, १०) । ३ प्रतिकूल ; (भग १, ६) ।

अवयंस पुं [**अवतंस**] १ शिरो-भूषण विशेष ; (कुमा ; गा १७३) । २ कान का आभूषण ; (पात्र) ।

अवयंस सक [**अवतंसय्**] भूषित करना। अवअंसअंति; (पि १४२; ४६०) ।

अवयक्ख सक [**अप+ईक्ष्**] अपेक्षा करना, राह देखना। अवयक्खइ ; (णाया १, ६) । वकृ—**अवयक्खंत**, **अवयक्खमाण** ; (णाया १, ६ ; भग १०, २) ।

अवयक्ख सक [**अव+ईक्ष्**] १ देखना। २ पीछे से देखना। वकृ—**अवयक्खंत** ; (आव १८८ भा) ।

अवयक्खा स्त्री [**अपेक्षा**] अपेक्षा ; (णाया १, ६) ।

अवयग्ग न [**दे**] अन्त, अवसान ; (भग १, १) ।

अवयच्छ सक [**अव+गम्**] जानना। अवयच्छइ ; (स ११३) । संकृ—**अवयच्छिय** ; (स २१०) ।

अवयच्छ सक [**दृश्**] देखना। अवयच्छइ ; (हे ४, १८१) । वकृ—**अवयच्छंत** ; (कुमा) ।

अवयच्छिय वि [**दृष्ट**] देखा हुआ ; (णाया १, ८) ।

अवयच्छिय वि [**दे**] प्रसारित, " फुंकारपवणपिसुणियमवयच्छियमयगरमहा य " (स ११३) ।

अवयज्झ सक [**दृश्**] देखना। अवयज्झइ ; (हे ४, १८१) । संकृ—**अवयज्झिऊण** ; (कुमा) ।

अवयट्ठि स्त्री [**अवतष्टि**] तनूकरण, पतला करना ; (आचा) ।

अवयट्ठि वि [**अवस्थायिन्**] अवस्थिति करने वाला ; स्थिर रहने वाला ; (आचा) ।

अवयट्ठि स्त्री [**अवकृष्टि**] आकर्षण ; (आचा) ।

अवयड्ढिअ वि [**दे**] युद्ध में पकड़ा हुआ ; (दे १, ४६)।

अवयण न [**अवचन**] कुत्सित वचन, दूषित भाषा ; (ठा ६) ।

अवयर सक [**अव+तृ**] १ नीचे उतरना। २ जन्म-ग्रहण करना। अवयरइ ; (हे १, १७२) । वकृ—

अवयरंत. अवयरमाण; (पउम ८२, ६३ ; सुपा १८१)। संकृ—अवयरिउं; (प्रासू)।

अवयरिअ पुं [दे] वियोग, विरह ; (दे १, ३६)।

अवयरिअ वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह। २ न. अपकार, अहित-करण, "को हेऊ तुह गमणे तुह अवयरियं मए किं व" (सुपा ४२१)।

अवयरिअ वि [अवतीर्ण] १ जन्मा हुआ। २ नीचे उतरा हुआ ; (सुर ६, १८६)।

अवयव पुं [अवयव] १ अंश, विभाग। २ अनुमान-प्रयोग का वाक्यांश ; (दसनि १ ; हे १, २४५)।

अवयवि वि [अवयविन्] अवयव वाला (ठा १ ; विसे २३५०)।

अवयाढ देखो **ओगाढ** ; (नाट ; गउड)।

अवयाण न [दे] खींचने की डोरी, लगाम ; (दे १, २४)।

अवयाय पुं [अववाय] अपराध, दोष; (उप १०३१ टी)।

अवयार पुं [अपकार] अहित-करण ; (स ४३७ ; कुमा ; प्रासू ६)।

अवयार पुं [अवतार] १ उतरना। २ देहान्तर-धारण, जन्म-ग्रहण। ३ मनुष्य रूपमें देवता का प्रकाशित होना "अज्ज ! एवं तुमं देवावयारो विय आगईए" (स ४१६; भवि)। ४ संगति, योजना ; (विसे १००८)। ५ प्रवेश ; (विसे १०४३)।

अवयार पुं [दे] माघ-पूर्णिमा का एक उत्सव, जिसमें इख से दतवन आदि किया जाता है ; (दे १, ३२)।

अवयारि वि [अपकारिन्] अपकार करने वाला; (स १७६; विवे ७६)।

अवयालिय वि [अवचालित] चलायमान किया हुआ ; (स ४२)।

अवयास सक [श्लिष्] आलिंगन करना। अवयासइ ; (हे ४, १९०)। कवकृ—**अवयासिज्जमाण** ; (औप)। संकृ—**अवयासिय** ; (णाया १, २)।

अवयास सक [अव+काश्] प्रकट करना। संकृ—**अवयासेऊण** ; (तंदु)।

अवयास देखो **अवगास** ; (गउड, कुमा)।

अवयास पुं [श्लेष] आलिंगन ; (ओघ २४४ भा)।

अवयासण न [श्लेषण] आलिंगन ; (बृह १)।

अवयासाविय वि [श्लेषित] आलिंगन कराया हुआ ; (विपा १, ४)।

अवयासिय वि [श्लिष्ट] आलिंगित ; (कुमा; पाअ)।

अवयासिणी स्त्री [दे] नासा-रज्जु, नाक में डाली जाती डोर ; (दे १, ४६)।

अवर वि [अपर] अन्य, दूसरा, तद्भिन्न ; (श्रा २७ ; महा)। °**हा** अ [°**था**] अन्यथा ; (पंचा ८)।

अवर स [अपर] १ पिछला काल या देश ; (महा)। २ पिछले काल या देशमें रहा हुआ ; पाश्चात्य ; (सम १३ ; महा)। ३ पश्चिम दिशा में स्थित, "अवरद्दारेणं,, (स ६४६)। °**कंका** स्त्री [°**कङ्का**] १ धातकी-खंड के भरतक्षेत्र की एक राजधानी; २ इस नामका "ज्ञात-धर्मकथा" सूत्र का एक अध्ययन ; (णाया १, १६)। °**ण्ह** पुं [°**ाह्न**] १ दिन का अन्तिम प्रहर; (ठा ४, २)। २ दिनका उत्तरी भाग ; (आचू १; गा २६६; प्रासू ५४)। °**दाहिण** पुं [°**दक्षिण**] १ नैऋत्य कोण ; २ वि. नैऋत्य कोण में स्थित ; (पंचा २)। °**दाहिणा** स्त्री [°**दक्षिणा**] पश्चिम और दक्षिण दिशा के बीच की दिशा, नैऋत कोण ; (वव ७)। °**फाणु** स्त्री [°**पार्ष्णि**] एड़ी, अड्डी का पिछला भाग ; (वव ८)। °**राय** पुं [°**रात्र**] देखो **अवरत्त**=अपररात्र ; (आचा)। °**विदेह** पुं [°**विदेह**] महाविदेह-नामक वर्ष का पश्चिम भाग ; (ठा २, ३; पडि)। °**विदेहकूड** न [°**विदेहकूट**] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष ; (जं ४)। देखो **अपर**।

अवर स [अवर] ऊपर देखो ; (महा; णाया १, १६; वव ७; पंचा २)।

अवरंमुह वि [अपराङ्मुख] १ संमुख ; २ तत्पर ; (पि २६६)।

अवरच्छ देखो **अपरच्छ** ; (पण्ह १, ३)।

अवरज्ज पुं [दे] १ गत दिन ; २ आगामी दिन ; ३ प्रभात, सुबह ; (दे १, ५६)।

अवरज्झ अक [अप+राध्] १ अपराध करना, गुनाह करना। २ नष्ट होना। अवरज्झइ ; (महा; उव)। वकृ—**अवरज्झंत** ; (राज)।

अवरत्त पुं [अपररात्र, अवररात्र] रात्रि का पिछला भाग ; (भग; णाया १, १)।

अवरत्त वि [अपरक्त] १ विरक्त, उदास ; (उप पृ ३०८)। २ नाराज, नाखुश ; (मुद्रा २६७)।

अवरत्तअ, **अवरत्तेअ** पुं [दे] पश्चात्ताप, अनुताप; (दे १,४५; पाअ)।

अवरद्ध न [**अपराद्ध**] १ अपराध, गुनाह; (सुर २, १२१)। २ वि. जिसने अपराध किया हो वह, अपराधी, "सगडे दारए ममं अंतेउरंसि अवरद्धे" (विपा १, ४; स २८)। ३ विनाशित, नष्ट किया हुआ; (णाया १,१)।

अवरद्धिग } पुंस्त्री [**अपराद्धिक**] १ सर्प-दंश; २ **अवरद्धिय** } फुनसी, छोटा फोड़ा; (ओघ ३४१; पिंड)।

अवरा स्त्री [**अपरा**] विदेह-वर्ष की एक नगरी; (ठा २,३)।

अवराइया देखो **अपराइया**; (पउम २५, १; जं ४; ठा २, ३)।

अवराइस देखो **अण्णाइस**; (षड्; हे ४, ४१३)।

अवराजिय देखो **अपराइय**, (इक)।

अवराजिया देखो **अपराइया**; (इक)।

अवराह पुं [**अपराध**] १ अपराध, गुनाह; (आव १)। २ अनिष्ठ, बुराई; "अवराहेसु गुणेसु य निमित्तमेत्तं परो होइ" (प्रासू १२२)।

अवराह पुं [**दे**] कटी, कमर; (दे १, २८)।

अवराहिय न [**अपराधित**] १ अपराध, गुनाह, "जंपइ जणो महल्लं कस्सवि अवराहियं जायं" (पउम ६४, २५; स ३२०)। २ अपकार, अनिष्ट, अहित,

"सिरि चडिआ खंति प्फलइं, पुणु डालइं मोडंति।
तोवि महद्दुम सउणाहं, अवराहिउ न करंति" (हे ४,४४५)।

अवराहुत्त वि [**अपराभिमुख**] १ पराङ्मुख; २ पश्चिम दिशा तरफ मुँह किया हुआ; (आव ४)।

अवरि }
अवरिं } अ [**उपरि**] ऊपर; (दे १, २६; प्राप्र)।

अवरिक्क वि [**दे**] अवसर-रहित, अनवसर; (दे १, २०)।

अवरिगलिअ वि [**अपरिगलित**] पूर्ण, भरपूर; (से ११, ८८)।

अवरिज्ज वि [**दे**] अद्वितीय, असाधारण; (दे १,३६; षड्)।

अवरिल्ल वि [**उपरि**] उत्तरीय वस्त्र, चद्दर; (हे २, १६६; कुमा; गउड; पाअ)।

अवरिल्ल वि [**अपरीय**] पाश्चात्य, पश्चिम दिशा-संबन्धी "तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह" (णाया १, ६)।

अवरिहड्ढपुसण न [**दे**] १ अकीर्ति, अजस; २ असत्य, भूठ; ३ दान; (दे १, ६०)।

अवरुंड सक [**दे**] आलिङ्गन करना। अवरुंडइ, (दे १, ११; सुर ३, १८२; भवि) कर्म—अवरुंडिज्जइ; (दे १, ११)। संकृ—अवरुंडिऊण; (दे १, ११; स ४२१)।

अवरुंडण } न [**दे**] आलिङ्गन; (भवि; पाअ; दे
अवरुंडिअ } १, ११,)।

अवरुत्तर पुं [**अपरोत्तर**] १ वायव्य कोण; २ वि. वायव्य कोण में स्थित; (भग)।

अवरुत्तरा स्त्री [**अपरोत्तरा**] वायव्य दिशा, पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा; (वव ७)।

अवरुद्ध वि [**अवरुद्ध**] घिरा हुआ; (विसे २९७५)।

अवरुप्पर देखो **अवरोप्पर**; (कुमा; रंभा)।

अवरुह अक [**अव+रुह**] नीचे उतरना। अवरुहहि; (मै १४)।

अवरोप्पर } वि [**परस्पर**] आपस में; (हे ४, ४०९;
अवरोवर } गउड; सुपा २२; सुर ३, ७६; षड्)।

अवरोह पुं [**अवरोध**] १ अन्तःपुर, जनानखाना; (सुपा ६३)। २ अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री; (विपा १, ४)। ३ नगर को सैन्य से घेरना; (निचू ८)। ४ संक्षेप; (विसे ३५५५)। ५ प्रतिबन्ध; "कहं सव्वत्थित्तावरोहोत्ति" (विसे १७२३)। °**जुवइ** स्त्री [°**युवति**] अन्तःपुर की स्त्री; (पि ३८७)।

अवरोह पुं [**अवरोह**] उगने वाला, (तृण आदि); (गउड)।

अवरोह पुं [**दे**] कटी, कमर; (दे १, २८)।

अवलंब सक [**अव+लम्ब्**] १ सहारा लेना, आश्रय लेना। २ लटकना। अवलंबइ; (कस)। अवलंबेइ; (महा)। वकृ—**अवलंबमाण**; (सम्म ५८)। कवकृ—**अवलंबिज्जंत**; (पि ३९७)। संकृ—**अवलंबिऊण, अवलंबिय**; (आव ५; आचा २, १, ६)। हेकृ—**अवलंबित्तए**; (दसा ७)। कृ—**अवलंबणिय, अवलंबिअव्व**; (से १०, २९)।

अवलंब } पुं [**अवलम्ब, °क**] १ सहारा, आश्रय;
अवलंबग } (श्रा १६)। २ वि. लटकने वाला; (औप; वव ४)। ३ सहारा लेने वाला; (पच्च ८०)।

अवलंबण न [**अवलम्बन**] १ लटकना। २ आश्रय, सहारा; (ठा ५, २; राय)।

अवलंबि वि [**अवलम्बिन्**] अवलम्बन करने वाला; (गउड; विसे २३२९)।

अवलंबिय वि [**अवलम्बित**] १ लटका हुआ। २ आश्रित; (णाया १, १)।

अवलंबिर देखो **अवलंबि** ; (गा ३६७)।
अवलक्खण न [**अपलक्षण**] खराब लक्षण, बुरी आदत ; (भवि)।
अवलग्ग वि [**अवलग्न**] १ आरूढ ; २ लगा हुआ, संलग्न ; (महा)।
अवलत्त वि [**अपलपित**] अपह्नुत, छिपाया हुआ ; (स २१२)।
अवलद्ध वि [**अपलब्ध**] अनादर से प्राप्त ; (ठा ६)।
अवलद्धि स्त्री [**अवलब्धि**] अ-प्राप्ति ; (भग)।
अवलय न [**दे**] घर, मकान ; (दे १, २३)।
अवलव सक [**अप+लप्**] १ असत्य बोलना। २ सत्य का छिपाना। कवकृ—**अवलविउजंत** ; (सुपा १३२)। कृ—**अवलवणिज्ज** ; (सुपा ३१६)।
अवलाव पुं [**अपलाप**] अपह्नव ; (निचू १)।
अवलिअ न [**दे**] असत्य, झूठ ; (दे १, २२)।
अवलिंब पुं [**अवलिम्ब**] जीव या पुद्गलों से व्याप्त स्थान-विशेष ; (ठा २, ४)।
अवलिच्छअ वि [**दे**] अ-प्राप्त, अनासादित ; (से ६, ७८)।
अवलित्त वि [**अवलिप्त**] १ लिप्त ; २ गर्वित ; "अलसो सढोवलित्तो, आलंबण-तप्परो अइपमाई। एवं ठिओवि मन्नइ, अप्पाणं सुट्ठिओ मित्ति" (उव)।
अवलुआ स्त्री [**दे**] क्रोध, गुस्सा ; (दे १, ३६)।
अवलुत्त वि [**अवलुप्त**] लोप-प्राप्त ; (नाट)।
अवलेव) [**अवलेप**] १ अहंकार, गर्व। २ लेप,
अवलेव) लेपन ; (पाअ ; महा ; नाट)। ३ अवज्ञा, अनादर ; (गउड)।
अवलेहणिया स्त्री [**अवलेखनिका**] १ वांस का छिलका ; (ठा ४, २)। २ धूली आदि झाड़ने का एक उपकरण ; (निचू १)।
अवलेहि) स्त्री [**अवलेखि, °का**] १ वांसका छिलका;
अवलेहिया) (कम्म १, २०)। २ लेह्य-विशेष ; (पव ४)। ३ चावल के आटा के साथ पकाया हुआ दूध ; (पभा ३२)।
अवलोअ सक [**अव+लोक्**] देखना, अवलोकन करना। वकृ—**अवलोअंत, अवलोएमाण**; (रयण ३६ ; णाया १, १) संकृ—**अवलोइऊण** ; (काल)। कृ—**अवलोयणीय** ; (सुपा ७०)।
अवलोग) पुं [**अवलोक**] अवलोकन, दर्शन ; (उप
अवलोय) ६८६ टी ; सुपा ६ ; स २७६ ; गउड)।
अवलोयण न [**अवलोकन**] १ दर्शन ; विलोकन ; (गउड)। २ स्थान-विशेष ; "तुंगं अवलोयणं चेव" (पउम ८०, ४)। ३ शिखर-विशेष ; (ती ४)
अवलोव पुं [**अपलोप**] छिपाना, लोप करना; (पण्ह १,२)।
अवलोवणी स्त्री [**अपलोपनी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३६)।
अवलोह वि [**अपलोह**] लोह-रहित ; (गउड)।
अवल्लय न [**दे. अवल्लक**] नौका खेवने का उपकरण-विशेष ; (आचा २, ३, १)।
अवल्लाव) पुं [**दे. अपलाप**] असत्य-कथन, अपलाप ;
अवल्लावय) (दे १, ३८)।
अवव न [**अवव**] संख्या-विशेष 'अववाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४)।
अववंग न [**अववाङ्ग**] संख्या-विशेष, 'अडड' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४)।
अववक्कल वि [**अपवल्कल**] त्वचा-रहित ; (गउड)।
अववक्का स्त्री [**अवपाक्या**] तापिका, छोटा तवा ; (भग ११, ११)।
अववग्ग पुं [**अपवर्ग**] मोक्ष, मुक्ति ; (आवम)।
अववट्टण न [**अपवर्तन**] १ अपसरण। २ कर्म-परमाणुओं को दीर्घ स्थिति को छोटी करना ; (पंच ५)।
अववट्टणा स्त्री [**अपवर्तना**] ऊपर देखो ; (पंच ५)।
अववत्त वि [**अपवृत्त**] १ वापिस लौटा हुआ ; २ अप-सृत ; (दे १, १५२)।
अववरक पुं [**अपवरक**] कोठरी, छोटा घर ; (मुद्रा ८१)।
अववाइय वि [**अपवादिक**] अपवाद वाला ; (नाट)।
अववाय पुं [**अपवाद**] १ विशेष नियम, अपवाद ; (उप ७८१)। २ निन्दा, अवर्ण-वाद; (पण्ह २, २)। ३ अनुज्ञा, संमति ; (निचू १)। ४ निश्चय, निर्णय वाली हकीकत ; (निचू ५)।
अववास सक [**अव+काश्**] अवकाश देना, जगह देना। अववासइ ; (प्राप्र)।
अववाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहन करना। अव-वाहइ; (प्राप्र)।

अवविह पुं [**अवविध**] गोशालक के एक भक्त का नाम ; (भग ८, ५) ।
अववीड पुं [**अवपीड**] निष्पीड़न, दबाना ; (गउड) ।
अववीडण न [**अवपीडन**] ऊपर देखो ; (गउड) ।
अवस वि [**अवश**] १ अ-स्वाधीन, पराधीन ; (सूत्र १, ३, १) । २ स्वतन्त्र, स्वाधीन ; (से १, १) ।
अवसं अ [**अवश्यम्**] अवश्य, जरूर, निश्चय ; (हे ४, ४२७) ।
अवसउण न [**अपशकुन**] अनिष्ट-सूचक निमित्त, खराब शकुन ; (ओघ ८१ भा ; गा २६१ ; सुपा ३६३) ।
अवसक्क सक [**अव+ष्वष्क्**] पीछे हट जाना । अवसक्केज्जा ; (आचा) ।
अवसक्कण न [**अवष्वष्कण**] अपसरण, पीछे हटना ; (पंचा १३) ।
अवसक्कि वि [**अवष्वष्किन्**] पीछे हटने वाला ; (आचा) ।
अवसण्ण वि [**दे**] झरा हुआ, टपका हुआ; (षड्) ।
अवसद्द पुं [**अपशब्द**] १ अशुद्ध शब्द ; (सुर १६, २४८) । २ खराब वचन ; (हे १, १७२) । ३ अपकीर्ति, अपयश ; (कुमा) ।
अवसप्प अक [**अव+सृप्**] १ पीछे हटना । २ निवृत्त होना । ३ उतरना । अवसप्पंति ; (पि १७३) ।
अवसप्पण न [**अपसर्पण**] अपसरण, अपवर्तन ; (पउम ५६, ७८) ।
अवसप्पि वि [**अपसर्पिन्**] १ पीछे हटने वाला ; २ निवृत्त होने वाला ; (सूत्र १, २, २) ।
अवसप्पिय वि [**अपसर्पित**] १ अपसृत । २ निवृत्त । ३ अवतीर्ण ; (भवि) ।
अवसप्पिणी देखो **ओसप्पिणी** ; (भग ३, २; भवि) ।
अवसमिआ (**दे**) देखो **अंबसमी** ; (दे १, ३७) ।
अवसय वि [**अपशद**] नीच, अधम ; (ठा ४, ४) ।
अवसर अक [**अप+सृ**] १ पीछे हटना । २ निवृत्त होना । अवसरइ; (हे १, १७२) । कृ—**अवसरियव्व**; (उप १४६ टी) ।
अवसर सक [**अव+सृ**] आश्रय करना । संकृ— " ओसरणम् **अवसरित्ता** " (चउ १८) ।
अवसर पुं [**अवसर**] १ काल, समय ; (पाअ) । २ प्रस्ताव, मौका ; (प्रासू ५७; महा) ।
अवसरण देखो **ओसरण** ; (पव ६२) ।
अवसरण न [**अपसरण**] १ पीछे हटना । २ निवृत्ति ; (गउड) ।
अवसरिय वि [**आवसरिक**] सामयिक, समयोपयुक्त ; (सण) ।
अवसरीर पुं [**अपशरीर**] रोग, व्याधि, " सव्वावसरीरहिओ " (उप ५६७ टी) ।
अवसवस वि [**अपस्ववश**] पराधीन, परतन्त्र ; (णाया १, १६) ।
अवसव्वय न [**अपसव्यक**] शरीर का दहिना भाग ; (उप पृ २०८) ।
अवसह पुं [**आवसथ**] घर, मकान ; (उत्त ३२) ।
अवसह न [**दे**] १ उत्सव ; २ नियम ; (दे १, ५८) ।
अवसाइअ वि [**अप्रसादित**] प्रसन्न नहीं किया हुआ ; (से १०, ६३) ।
अवसाण न [**अवसान**] १ नाश ; २ अन्त भाग ; (गउड; पि ३६६) ।
अवसाय पुं [**अवश्याय**] हिम, बर्फ ; (गउड) ।
अवसारिअ वि [**अप्रसारित**] नहीं फैलाया हुआ, अ-विस्तारित ; (से ,१) ।
अवसारिअ वि [**अपसारित**] १ आकृष्ट, खींचा हुआ ; (से १, १) । २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ ; (सुपा २२२) ।
अवसावण न [**अवस्रावण**] १ काञ्जी ; (बृह १) । २ भात वगैरः का पानी ; (सूक्त ८६) ।
अवसिअ वि [**अपसृत**] पीछे हटा हुआ; (से १३, ६३) ।
अवसिअ वि [**अवसित**] १ समाप्त, परिपूर्ण । २ ज्ञात, जाना हुआ ; (विसे २४८२) ।
अवसिज्ज अक (**अव+सद्**] हारना, पराजित होना "एक्कोवि नावसिज्जइ " (विसे २४८४) ।
अवसिद (शौ) वि [**अवसित**] समाप्त, पूर्ण ; (अभि १३३, प्रति १०६) ।
अवसिद्धंत पुं [**अपसिद्धान्त**] दूषित सिद्धान्त ; (विसे २४५७; ६) ।
अवसीय अक [**अव+सद्**] क्लेश पाना, खिन्न होना । वकृ—**अवसीयंत** ; (पउम ३३, १३१) ।

अवसुअ अक [उद्+वा] सूखना, शुष्क होना । अवसुअइ ; (षड्) ।

अवसेअ पुं [**अवसेक**] सिञ्चन, छिटकाव ; (अभि २१०) ।

अवसेअ वि [**अवसेय**] जानने योग्य ; (विसे २६७१) ।

अवसें (अप) देखो **अवस्सं** ; (हे ४, ४२७) ।

अवसेण देखो **अवस्सं** " अवसेण भुंजियव्वा ; (पउम १०२, २०१) ।

अवसेस पुं [**अवशेष**] १ अवशिष्ट, बाकी ; (सुपा ७७) । २ वि. सब, सर्व ; (उप २११ टी) ।

अवसेसिय वि [**अवशेषित**] १ समाप्त किया हुआ, पार पहुँचाया हुआ ; (से ४, ४७) । २ बाकी का, अवशिष्ट ; (भग) ।

अवसेह सक [**गम्**] जाना । अवसेहइ ; (हे ४, १६२) । अवसेहंति ; (कुमा) ।

अवसेह अक [**नश्**] भागना, पलायन करना । अवसेहइ ; (हे ४, १७८ ; कुमा) ।

अवसोइया स्त्री [**अवस्वापिका**] निद्रा ; (सुपा ६०६) ।

अवसोग वि [**अपशोक**] १ शोक-रहित । २ देव-विशेष ; (दीव) ।

अवसोण वि [**अपशोण**] थोड़ा लाल ; (गउड) ।

अवसोवणी स्त्री [**अवस्वापनी**] निद्रा ; (सुपा ४७) ।

अवस्स वि [**अवश्य**] जरूरी, नियत ; (आवम, आव ४) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] आवश्यक क्रिया ; (आचू १) । °**करणिज्ज** वि [°**करणीय**] अवश्य करने लायक कर्म, सामायिक आदि । °**किरिया** स्त्री [°**क्रिया**] आवश्यक अनुष्ठान ; (आचू १) । °**किच्च** वि [°**कृत्य**] आवश्यक कार्य ; (दे) ।

अवस्सं अ [**अवश्यम्**] जरूर, निश्चय ; (पि ३१५) ।

अवस्सिय वि [**अवाश्रित**] आश्रित, अवलग्न ; (अनु ६) ।

अवह सक [**रच्**] निर्माण करना, बनाना । अवहइ ; (हे ४, ६४) ।

अवह स [**उभय**] दोनों, युगल ; (हे २, १३८) ।

अवहइ स्त्री [**अपहति**] विनाश ; (विसे २०१५) ।

अवहट्ट वि [**दे**] अभिमानी, गर्वित ; (दे १, ३३) ।

अवहट्टु देखो **अवहर**=अप+हृ ।

अवहड वि [**अपहृत**] ले लिया गया, छीना हुआ ; (सुपा २६६ ; पगह १, ३) ।

अवहड वि [**अवहृत**] ऊपर देखो ; (प्रारू) ।

अवहड न [**दे**] मुसल ; (दे १, ३२) ।

अवहण्ण पुं [**दे**] ऊखल, उदूखल ; (दे १, २६) ।

अवहत्थ पुं [**अपहस्त**] मारने के लिए या निकाल बाहर करने के लिए ऊंचा किया हुआ हाथ, " अवहत्थेण हओ कुमरो " (महा) ।

अवहत्थ सक [**अपहस्तय्**] १ हाथ को ऊंचा करना । २ त्याग करना, छोड़ देना । अवहत्थेइ ; (महा) । संकृ—**अवहत्थिऊण, अवहत्थेऊण** ; (पि ५८६ ; महा) ।

अवहत्थरा स्त्री [**दे**] लात मारना, पाद-प्रहार ; (दे १, ३३) ।

अवहत्थिय वि [**अपहस्तित**] परित्यक्त, दूर किया हुआ ; (महा ; काप्र ५२४ ; गा ३५३ ; सुपा १६३ ; गंदि) ।

अवहय वि [**अपहत**] नष्ट, नाश-प्राप्त ; (से १४, २८) ।

अवहय वि [**अघातक**] अहिंसक ; (ओघ ७५०) ।

अवहर सक [**गम्**] जाना । अवहरइ ; (हे ४, १६२) ।

अवहर अक [**नश्**] भाग जाना, पलायन करना । अवहरइ ; (हे ४, १७८ ; कुमा) ।

अवहर सक [**अप+हृ**] १ छीन लेना, अपहरण करना । २ भागाकार करना, भाग देना । अवहरइ ; (महा) । अवहरेज्जा ; (उवा) । कवकृ—**अवहरिज्जंत, अवहीरमाण** ; (सुर ३, १४२; भग २५, ४ ; गाया १, १८) । संकृ—**अवहरिऊण, अवहट्टु** ; (महा ; आचा ; भग) ।

अवहर वि [**अपहर**] अपहारक, छीन लेने वाला ; (गा १५६) ।

अवहरण न [**अपहरण**] छीन लेना ; (कुमा ; सुपा २५०) ।

अवहरिअ वि [**गत**] गया हुआ ; (कुमा) ।

अवहरिअ वि [**अपहृत**] छीन लिया हुआ ; (सुर ३, १४१ ; कुम्मा ६) ।

अवहस सक [**अव, अप+हस्**] तुच्छकारना, तिरस्कारना, उपहास करना । अवहसइ ; (गाया १, १८) ।

अवहसिय वि [**अप°, अवहसित**] तिरस्कृत, उपहसित ; (णाया १, ८; सुर १२, ६७) ।
अवहाय पुं [**दे**] विरह, वियोग ; (दे १, ३६) ।
अवहाय अ [**अपहाय**] छोड़ कर, त्याग कर ; (भग १५) ।
अवहाण न [**अवधान**] १ ख्याल, उपयोग ; (सुर १०, ७१ ; कुमा) । २ ज्ञान, जानना ; (विसे ८२) ।
अवहार सक [**अव+धारय्**] निर्णय करना, निश्चय करना । कर्म—अवहारिज्जइ ; (स १६६) । हेकृ—**अवहारेउं** ; (भास १६) ।
अवहार (अप) देखो **अवहर=अप+हृ** । अवहारइ ; (भवि) । संकृ—**अवहारिवि** ; (भवि) ।
अवहार पुं [**अपहार**] १ अपहरण ; (पण्ह १, ३ ; सुपा २७५) । २ दूर करना, परित्याग ; (णाया १, ६) । ३ चोरी ; (सुपा ४४६) । ४ बाहर करना; निकालना ; (निचू ७)। ५ भागाकार ; (भग २५, ४) । ६ नाश, विनाश ; (सुर ७, १२५) ।
अवहार पुं [**अवधार**] निश्चय, निर्णय । °**व** वि [**वत्**] निश्चय वाला ; (ठा १०) ।
अवहारण न [**अवधारण**] निश्चय, निर्णय ; (से ११, १५ ; स १६६) ।
अवहारय वि [**अपहारक**] छीनने वाला, अपहरण करने वाला ; (सुर ११, १२) ।
अवहारि वि [**अपहारिन्**] अपहारक, छीनने वाला ; (सुपा ५०३) ।
अवहारिय वि [**अवधारित**] निश्चित ; (स ५७६ ; पउम २३, ६ ; सुपा ३३१) ।
अवहाव सक [**कृप्**] दया करना, कृपा करना । अवहावेइ ; (षड् ; हे ४, १५१) । अवहावसु (कुमा) ।
अवहास पुं [**अवभास**] प्रकाश, तेज ; (गउड ; प्राप्र) ।
अवहासिणी स्त्री [**अवहासिनी**] नासा-रज्जु ; "मोत्तव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवहासिणी मुक्का" (गा ६६४) ।
अवहासिय वि [**अवभासित**] प्रकाशित ; (सुपा १४२)
अवहि देखो **ओहि**; (सुपा ८६; ५७८; विसे ८२; ७३७) ।
अवहिट्ठ वि [**दे**] दर्पित, अभिमानी, गर्वित ; (षड्) ।
अवहिय वि [**अपहृत**] छीन लिया हुआ ; (पउम २०, ६६ ; सुर ११,३२ ; सुपा ४१३) ।
अवहिय वि [**अवधृत**] नियमित ; (विसे २६३३) ।
अवहिय वि [**अवहित**] सावधान, ख्याल-युक्त ; (पाअ ; महा ; णाया १, २ ; पउम १०, ६५ ; सुपा ४२३) । °**मण** वि [°**मनस्**] तल्लीन, एकाग्र-चित्त ; (सुपा ६) ।
अवहिय वि [**रचित**] निर्मित, बनाया हुआ ; (कुमा) ।
अवहीण वि [**अवहीन**] हीन, उतरता, कम दरजा वाला ; (नाट ; पि १२०) ।
अवहीय वि [**अपधीक**] निन्द्य बुद्धि वाला, दुर्बुद्धि ; (पण्ह १, २) ।
अवहीर सक [**अव+धीरय्**] अवज्ञा करना, तिरस्कार करना । अवहीरेइ ; (महा) । वकृ—**अवहीरंत** ; (सुपा ३१२) । कवकृ—**अवहीरिज्जंत**; (सुपा ३७६)। संकृ—**अवहीरिऊण** ; (महा) ।
अवहीरण न [**अवधीरण**] अवहेलना, तिरस्कार ; (गा १४६; अभि ६८ ; गउड) ।
अवहीरणा स्त्री [**अवधीरणा**] ऊपर देखो ; (से १३, १६ ; वेणी १८) ।
अवहीरमाण देखो **अवहर=अप+हृ** ।
अवहीरिअ वि [**अवधीरित**] अवज्ञात, तिरस्कृत; (से ११, ७ ; गउड) ।
अवहील देखो **अवहीर** । अवहीलइ ; (सण) ।
अवहेअ वि [**दे**] दया-योग्य, कृपा-पात्र ; (दे १, २२) ।
अवहेड सक [**मुच्**] छोड़ना, त्याग करना । अवहेडइ ; (हे ४, ९१) । संकृ—**अवहेडिउं** ; (कुमा) ।
अवहेडिय वि [**दे**] नीचे की तरफ मोड़ा हुआ, अवमोटित ; (उत्त १२) ।
अवहेरि / **अवहेरी** स्त्री [**अवहेला**] अवगणना, तिरस्कार ; (उप २६०, ५६७ टी ; भवि ; सुपा २६१ ; महा)।
अवहेलअ वि [**अवहेलक**] तिरस्कारक ; (सुपा १०६) ।
अवहोअ पुं [**दे**] विरह, वियोग ; (षड्) ।
अवहोल अक [**अव+होलय्**] १ भूलना । २ संदेह करना । वकृ—**अवहोलंत** ; (णाया १, ८) ।
अवाइ वि [**अपायिन्**] १ दुःखी, २ दोषी, अपराधी ; " निब्भिच्चसच्चवाई होइ अवाई य नेहलोएवि " (सुपा २७५) ।
अवाईण वि [**अवाचीन**] अधो-मुख ; (णाया १, १) ।
अवाईण वि [**अवातीन**] वायु से अनुपहत; (णाया १, १)।

अवाउड वि [**अ-व्यापृत**] किसी कार्य में नहीं लगा हुआ; (उप पृ ३०२)।

अवाउड वि [**अप्रावृत**] अनाच्छादित, नग्न, दिगम्बर ; (णाया १, १ ; ठा ५, १)।

अवाडिअ वि [**दे**] वञ्चित; प्रतारित ; (षड्)।

अवाण देखो **अपाण** ; (पात्र ; विपा १, ६)।

अवाय पुं [**अपाय**] १ अनर्थ, अनिष्ट ; (ठा १)। २ दोष, दूषण ; (सुर ४, १२०)। ३ उदाहरण-विशेष ; (ठा ४, ३)। ४ विनाश ; (धर्म १)। ५ वियोग, पार्थक्य ; (णंदि)। ६ संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष ; (ठा ४, ४ ; णंदि)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] भावी अनर्थों को जानने वाला ; (ठा ८ ; द ४६)। °**विजय** न [°**विचय**, °**विजय**] ध्यान-विशेष ; (ठा ४, २)।

अवाय पुं [**अवाय**] संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, मति ज्ञान का एक भेद ; (ठा ४, ४ ; णंदि)।

अवाय वि [**अम्लान**] अ-म्लान, म्लानि-रहित ; ताजा ; "अवायमल्लमंडिया" (स ३७२)।

अवायाण न [**अपादान**] कारक-विशेष, स्थानान्तरीकरण ; (ठा ८ ; विसे २०६६)।

अवार वि [**अपार**] पार-रहित, अनन्त ; (मै ६८)।

अवार पुं [**दे**] दुकान, हाट ; (दे १, १२)।

अवारी स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (दे १, १२)।

अवालुआ स्त्री [**दे**] होठ का प्रान्त भाग ; (दे १, २८)।

अवालुआ स्त्री [**अवालुका**] एक स्निग्ध द्रव्य ; (तंदु)।

अवाव पुं [**अवाप**] रसोई, पाक। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] रसोई-संबन्धी कथा ; (ठा ४, २)।

अवास, **अवासें** (अप) देखो **अवसें** ; (षड्)।

अवाह पुं [**अवाह**] देश-विशेष ; (इक)।

अवाहा देखो **अबाहा** ; (औप)।

अवि अ [**अपि**] निम्न-लिखित अर्थों का सूचक अव्यय ; १ प्रश्न ; (से ५, ४)। २ अवधारण ; निश्चय ; (आचा ; गा ५०२)। ३ समुच्चय ; (विसे ३५५१; भग १, ७)। ४ संभावना ; (विसे ३५४८ ; उत्त ३)। ५ विलाप ; (पात्र)। ६-७ वाक्य के उपन्यास और पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (आचा ; पउम ८, १४६ ; षड्)।

अवि पुं [**अवि**] १ अज ; २ मेष ; (विसे १७७४)।

अविअ वि [**दे**] उक्त, कथित ; (दे १, १०)।

अविअ वि [**अवित**] रक्षित ; (दे ५, ३५)।

अविअ अ [**अपिच**] समुच्चय-द्योतक अव्यय ; (सुर २, २४६ ; भग ३, २)।

अविअ पुं [**अविक**] मेष, भेड़ ; (आचा)।

अविउ वि [**अवित्**] अज्ञ, मूर्ख ; (सट्टि ४६)।

अविउक्कंतिय वि [**अव्युत्क्रान्तिक**] उत्पत्ति-रहित ; (भग)।

अविउसरण न [**अव्युत्सर्जन**] अ-परित्याग, पास में रखना; (भग)।

अविकरण न [**अविकरण**] गृहीत वस्तुओं को यथास्थान नहीं रखना ; (बृह ३)।

अविक्ख देखो **अवेक्ख**। अविक्खइ ; (महा)। हेकृ—**अविक्खिउं**; (स ३०७)। कृ—**अविक्खणिज्ज**; (विसे १७१६)।

अविक्खग वि [**अपेक्षक**] अपेक्षा करने वाला ; (विसे १७१६)।

अविक्खण न [**अवेक्षण**] अवलोकन, निरीक्षण ; (भवि)।

अविक्खण न [**अपेक्षण**] अपेक्षा ; परवा ; (विसे १७१६)।

अविक्खा देखो **अवेक्खा** ; (कुमा)।

अविक्खिय वि [**अपेक्षित**] १ अपेक्षित ; २ न. अपेक्षा, परवा, "नाविक्खियं सभाए" (श्रा १४)।

अविक्खिय वि [**अवेक्षित**] अवलोकित ; (सुपा ७२)।

अविगइय वि [**अविकृतिक**] घृत आदि विकार-जनक वस्तुओं का त्यागी ; (सूअ २, २)।

अविगडिय वि [**अविकटित**] अनालोचित ; (वव १)।

अविगप्प देखो **अवियप्प** ; (सुर ४, १८६)।

अविगल वि [**अविकल**] अखण्ड, पूर्ण ; (उप २८३)।

अविगिच्छ वि [**अविचिकित्स्य**] जिसका इलाज न हो सके ऐसा, असाध्य व्याधि,

"तालपुडं गरलाणं, जह बहुवाहीण खित्तिओ वाही।
दोसाणमसेसाणं, तह अविगिच्छो मुसादोसो" (श्रा १२)।

अविगीय पुं [**अविगीत**] अगीतार्थ, शास्त्रों के रहस्य का अनभिज्ञ साधु ; (वव ३)।

अविग्गह वि [**अविग्रह**] १ शरीर-रहित ; २ युद्ध-रहित, कलह-वर्जित ; (सुपा २३४)। ३ सरल, सीधा ; (भग)।

°गइ स्त्री [°गति] अकुटिल गति ; (भग १४, ५) ।
अविच्छ वि [**अवीप्स्य**] वीप्सा-रहित, व्याप्ति-रहित ; (षड्) ।
अविजाणय वि [**अविज्ञायक**] अनजान, मूर्ख ; (सूअ १, ५, १) ।
अविज्ज वि [**अवीज**] बीज-शक्ति से रहित ; (पउम ११, २५) ।
अविणय पुं [**अविनय**] विनय का अभाव ; (ठा ३, ३)।
अविणयवइ } **अविणयवर** } पुं [**दे**] जार, उपपति ; (दे १, १८) ।
अविणिद्द वि [**अविनिद्र**] निद्रा-विच्छेद-रहित ; (गा ६६)।
अविण्णा स्त्री [**अविज्ञा**] अनुपयोग, ख्याल का अभाव ; (सूअ १, १, १) ।
अवितह वि [**अवितथ**] सत्य, सच्चा ; (महा ; उव) ।
अविद } अ [**अविद, °दा**] विषाद-सूचक अव्यय ;
अविदा } (पि २२ ; स्वप्न ५८) ।
अविधि पुंस्त्री [**अविधि**] १ विरुद्ध विधि ; २ विधि का अभाव ; (बृह ३ ; आचू १) ।
अविन्नाण वि [**अविज्ञान**] १अजान। २ अज्ञात, अपरिचित ; (पउम ५, २१६) ।
अवियड्ढ वि [**अविदग्ध**] अ-निपुण; (सुपा ५८२) ।
अवियत्त न [**अप्रीतिक**] १ प्रीति का अभाव; (ठा १०)। २ वि. अप्रीति-कारक ; (पण्ह १, १) ।
अवियत्त वि [**अव्यक्त**] अस्फुट, अस्पष्ट, "अवियत्तं दंसणं अणागारं" (सम्म ६५) ।
अवियप्प वि [**अविकल्प**] १ भेद-रहित, "वंजणपज्जायस्स उ पुरिसो पुरिसो त्ति निच्चमवियप्पो" (सम्म ३५) । २ क्रिवि निःसंशय, संशय-रहित, "सवियप्पनिव्वियप्पं इय पुरिसं जो भणिज्ज अवियप्पं" (सम्म ३५) ।
अवियाउरी स्त्री [**दे. अविजनयित्री**] वन्ध्या स्त्री ; (गाया १, २) ।
अवियाणय देखो **अविजाणय** ; (आचा) ।
अविरइ स्त्री [**अविरति**] १ विराम का अभाव, अ-निवृत्ति; २ पाप-कर्म से अनिवृत्ति ; (सम १०; पण्ह २, ५) । ३ हिंसा ; (कम्म ४) । ४ अब्रह्म, मैथुन; (ठा ६) । ५ विरति-परिणाम का अभाव ; (सूअ २, २) । ६ वि विरति-रहित ; (नाट) । °वाय पुं [°वाद] १ अविरति की चर्चा ; २ मैथुन-चर्चा ; (ठा ६) ।
अविरइय वि [**अविरतिक**) विरति से रहित, पाप-निवृत्ति से वर्जित, पाप-कर्म में प्रवृत्त ; (भग; कस) ।
अविरत्त वि [**अविरक्त**] वैराग्य-रहित ; (णाया १, १४)।
अविरय वि [**अविरत**] १ विराम-रहित, अविच्छिन्न ; (गा १५५) । २ पाप-निवृत्ति से रहित ; (ठा २, १) । ३ चतुर्थ गुण-स्थानक वाला जीव ; (कम्म ४, ६३) । ४ क्रिवि. सदा, हमेशा ; (पाअ) । °सम्मद्दिट्ठि स्त्री [°सम्यग्दृष्टि] चतुर्थ गुण-स्थानक ; (कम्म २, २) ।
अविरल वि [**अविरल**] निबिड, घन ; (णाया १, १)।
अविरहि वि [**अविरहिन्**] विरह-रहित ; (कुमा) ।
अविराम वि [**अविराम**] १ विराम-रहित । २ क्रिवि. निरन्तर, हमेशा ; (पाअ) ।
अविराय वि [**अविलीन**] अभ्रष्ट ; (कुमा) ।
अविराहिय वि [**अविराधित**] अ-खण्डित, आराधित ; (भग १५) ।
अविरिय वि [**अवीर्य**] वीर्य-रहित ; (भग) ।
अविल पुं [**दे**] १ पशु ; २ वि. कठिन ; (दे १, ५२) ।
अविलंबिय वि [**अविलम्बित**] विलम्ब-रहित, शीघ्र ; (कप्प) ।
अविला स्त्री [**अविला**] मेषी, भेड़ी ; (पाअ) ।
अविवेग पुं [**अविवेक**] १ विवेक का अभाव । २ वि. विवेक-रहित । °वंत वि [°वत्] अविवेकी ; (पउम ११३, ३६) ।
अविसंधि वि [**अविसंधि**] पूर्वापर-विरोध से रहित, संगत, संबद्ध ; (औप) ।
अविसंवाइ वि [**अविसंवादिन्**] विसंवाद-रहित, प्रमाण भूत, सत्य ; (कुमा ; सुर ६, १७८) ।
अविसम वि [**अविषम**] सदृश, तुल्य ; (कुमा) ।
अविसाइ वि [**अविषादिन्**] विषाद-रहित ; (पण्ह २, १)।
अविसेस वि [**अविशेष**] तुल्य, समान ; (ठा २, ३ ; उप ८७७) ।
अविसेसिय वि [**अविशेषित** (ठा १०) ।
अविस्स न [**अविश्र**] मांस और रुधिर ; (पव ४०) ।
अविस्साम वि [**अविश्राम**] १ विश्राम-रहित ; (पण्ह १, १) । २ क्रिवि. निरन्तर, सदा ; (उप ७२८ टी) ।
अविहड पुं [**दे**] बालक, बच्चा ; (बृह १) ।
अविवह वि [**अविभव**] दरिद्र ; (गउड) ।

अविहवा स्त्री [**अविधवा**] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री, सधवा ; (गाया १, १)।

अविहा देखो **अविदा** ; (अभि २२४)।

अविहाड वि [**अविघाट**] अ-विकट ; (वव ७)।

अविहाविअ वि [**दे**] १ दीन, गरीब ; १ न. मौन ; (दे १, ५६)।

अविहाविअ वि [**अविभावित**] अनालोचित ; (गउड)।

अविहि देखो **अविधि** ; (दस १)।

अविहिअ वि [**दे**] मत, उन्मत ; (षड्)।

अविहिंत वकृ [**अविघ्नत्**] नहीं मारता हुआ, हिंसा नहीं करता हुआ,

" वज्जेमित्ति परिणाओ, संपत्तीए विमुच्चई वेरा।
अविहिंतावि न मुच्चइ, किलिट्ठभावोत्ति वा तस्स "
(ओघ ६०)।

अविहिंस वि [**अविहिंस**] अहिंसक ; (आचा)।

अविहिंसा स्त्री [**अविहिंसा**] अहिंसा ; (सुअ १, २, १)।

अविहीर वि [**अप्रतीक्ष**] प्रतीक्षा नहीं करने वाला ; (कुमा)।

अविहेडय वि [**अविहेटक**] आदर करने वाला ; (दस १०, १०)।

अवीइय अ [**अविविच्य**] अलग न हो कर ; (भग १०, २)।

अवीइय अ [**अविचिन्त्य**] विचार न कर; (भग १०,२)।

अवीय वि [**अद्वितीय**] १ असाधारण, अनुपम ; (कुमा)। २ एकाकी, असहाय ; (विपा १, २)।

अवुक्क सक [**वि+ज्ञपय्**] विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना। अवुक्कइ ; (हे ४, ३८)। वकृ—**अवुक्कंत** ; (कुमा)।

अवुड्ढ वि [**अवृद्ध**] तरुण, जवान ; (कुमा)।

अवुग्गह देखो **अविग्गह** ; (ठा ५, १)।

अवुह देखो **अबुह** ; (सण)।

अवूह देखो **अवोह** ; (णाया १, १)।

अवे सक [**अव+इ**] जानना। अवेसि ; (विसे १७७३)।

अवे अक [**अप+इ**] दूर होना, हटना। अवेइ ; (स २०)। अवेह ; (मुद्रा १६१)।

अवेक्ख सक [**अप+ईक्ष्**] अपेक्षा करना। अवेक्खइ ; (महा)।

अवेक्ख सक [**अव+ईक्ष्**] अवलोकन करना। अवेक्खाहि; (स ३१७)। संकृ—**अवेक्खिऊण**; (स ६२७)।

अवेक्खा स्त्री [**अपेक्षा**] अपेक्षा, परवा ; (सुर ३, ८४ ; स ५६२)।

अवेक्खि वि [**अपेक्षिन्**] अपेक्षा करने वाला ; (गउड)।

अवेक्खिय वि [**अपेक्षित**] जिसकी अपेक्षा हुई हो वह ; (अभि २१६)।

अवेक्खिय वि [**अवेक्षित**] अवलोकित ; (अभि १६६)।

अवेय वि [**अपेत**] रहित, वर्जित ; (विसे २२१३)। °**रुइ** वि [°**रुचि**] रुचि-रहित, निरीह ; (उप ७२८ टी)।

अवेय }
अवेयग } वि [**अवेद, °क**] १ पुरुष-वेदादि वेद से रहित ; (पगण १)। २ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त ; (ठा २, १)।

अवेसि देखो **अंबेसि** ; (दे १, ८ ; पाअ)।

अवोअड वि [**अव्याकृत**] अव्यक्त, अस्पष्ट ; (भास ७६)।

अवोच्छिण्ण देखो **अव्वोच्छिण्ण** ; (आचा)।

अवोच्छित्ति देखो **अव्वोच्छित्ति**; (ठा ५, ३)।

अवोह सक [**अप+ऊह्**] १ विचार करना। २ निर्णय करना। अवोहए ; (आवम)।

अवोह पुं [**अपोह**] १ विकल्प-ज्ञान, तर्क-विशेष। २ त्याग, वर्जन ; (उप ६६७)। ३ निर्णय, निश्चय ; (णंदि)।

अव्वईभाव पुं [**अव्ययीभाव**] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास ; (अणु)।

अव्वंग वि [**अव्यङ्ग**] अक्षत, अखण्ड ; (वव ७)।

अव्वक्खित्त वि [**अव्याक्षिप्त**] १ विक्षेप-रहित ; २ तल्लीन, एकाग्र ; (उत २०)।

अव्वग्ग वि [**अव्यग्र**] व्यग्रता-शून्य, अनाकुल ; (उत्त १५)।

अव्वत्त }
अव्वत्तय } वि [**अव्यक्त**] १ अस्पष्ट, अस्फुट ; (उप ७६८ टी ; सुर ४, २१४ ; श्रा २७)। २ छोटी उमर का बालक, बच्चा ; (निचू १८)। ३ अगीतार्थ, शास्त्र-रहस्यानभिज्ञ (साधु) ; (धर्म २ ; आचा)। ४ पुं. अव्यक्त मत का प्रवर्तक एक जैनाभास मुनि ; (ठा ७)। ५ न. सांख्य मत में प्रसिद्ध प्रकृति ; (आवम)। °**मय** न [°**मत**] एक जैनाभास मत ; (विसे)।

अव्वत्तिय देखो **अवत्तिय** ; (औप ; विसे ; आवम)।

अव्वय न [**अव्रत**] १ व्रत का अभाव ; (श्रा १६ ; सम १३२)। २ वि. व्रत-रहित ; (विसे २५४२)।

अव्वय वि [**अव्यय**] १ अक्षय, अखूट ; (सुपा ३२१)। २ नित्य, शाश्वत ; (भग २, १)।

अव्ववसिय वि [**अव्यवसित**] १ अनिश्चित, संदिग्ध। २ अपराक्रमी ; (ठा ३, ४)।

अव्वसण न [**अव्यसन**] १ व्यसन-रहित ; २ लोकोत्तर रीति से १२ वाँ दिन ; (जं ७)।

अव्वह वि [**अव्यथ**] १ व्यथा-रहित। २ न. निश्चल ध्यान ; (ठा ४, १ ; औप)।

अव्वहिय वि [**अव्यथित**] १ अपीडित ; (पंचा ५)। २ निश्चल ; (बृह १)।

अव्वा स्त्री [**दे. अम्बा**] माता, जननी ; (दे १, ५ ; षड्)।

अव्वाइद्ध वि [**अव्याविद्ध**] १ अ-विपर्यस्त, अ-विपरीत। २ न. सूत्र का एक गुण, अक्षरों की उलट-पुलट का अभाव ; (बृह १ ; गच्छ २)।

अव्वागड वि [**अव्याकृत**] अ-व्यक्त, अस्फुट ; (आचा ; सत्त ६ टी)।

अव्वाण वि [**आव्यान**] थोड़ा स्निग्ध ; (ओघ ४८८)।

अव्वाबाह वि [**अव्याबाध**] १ हरज-रहित, बाधा-वर्जित ; (आव ३)। २ न. रोग का अभाव ; (भग १८, १०)। ३ सुख ; (आवम)। ४ मोक्ष-स्थान, मुक्ति ; (भग १, १)। ५ पुं. लोकान्तिक देव-विशेष ; (णाया १, ८)।

अव्वावड वि [**अव्यापृत**] १ जो व्यवहार में न लाया गया हो, व्यापार-रहित। २ एक प्रकार का वास्तु ; (बृह ३)।

अव्वावन्न वि [**अव्यापन्न**] अ-विनष्ट, नाश को अप्राप्त ; (भग १, ७)।

अव्वावार वि [**अव्यापार**] व्यापार-वर्जित ; (स ५०)।

अव्वाहय वि [**अव्याहत**] १ रुकावट-वर्जित ; (ठा ४, ४ ; सुपा ८६)। २ अनुपहत, आघात-रहित ; (णंदि)। °**पुव्वावरत्त** न [°**पूर्वापरत्व**] जिसमें पूर्वापर का विरोध या असंगति न हो ऐसा (वचन) ; (राय)।

अव्वाहार पुं [**अव्याहार**] नहीं बोलना; मौन ; (पाअ)।

अव्वाहिय वि [**अव्याहृत**] नहीं बुलाया हुआ ; (जीव ३ ; आचा)।

अव्विरय वि [**अविरत**] विरति-रहित ; (सट्ठि ८)।

अव्वो अ नीचे के अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक अर्थ का सूचक अव्यय ;—१ सूचना ; २ दुःख ; ३ संभाषण ; ४ अपराध ; ५ विस्मय ; ६ आनन्द ; ७ आदर ; ८ भय ; ९ खेद ; १० विषाद ; ११ पश्चात्ताप ;

"अव्वो हरंति हिययं, तहवि न वेसा हवंति जुवईण।
अव्वो किंपि रहस्सं, मुणंति धुत्ता जणब्भहिआ ॥
अव्वो सुपहायमिणं,अव्वो अज्जम्ह सप्फलं जीअं।
अव्वो अइअम्मि तुमे, नवरं जइ सा न जूरिहिइ ॥"
(हे २, २०४)।

अव्वोगड वि [**अव्याकृत**] १ अविशेषित ; (बृह २)। २ फैलाव-रहित ; (दसा ३)। ३ नहीं बांटा हुआ ; ४ अस्फुट, अस्पष्ट ; ५ न. एक प्रकार का वास्तु ; (बृह ३)।

अव्वोच्छिण्ण वि [**अव्युच्छिन्न, अव्यवच्छिन्न**] १ आन्तर-रहित, सतत, विच्छेद-वर्जित ; (वव ७)। २ नित्य ; ३ अव्याहत; (गउड)।

अव्वोच्छित्ति स्त्री [**अव्युच्छित्ति, अव्यवच्छित्ति**] १ सातत्य, प्रवाह, बीचमें विच्छेद का अभाव, परंपरा से बराबर चला आना ; (आवम)। °**नय** पुं [°**नय**] वस्तु को किसी न किसी रूप से स्थायी मानने वाला पक्ष, द्रव्यार्थिक नय ; (भग ७, ३)।

अव्वोच्छिन्न देखो **अव्वोच्छिण्ण** ; (ओघ ३२२ ; स २५६)।

अव्वोयड देखो **अव्वोगड** ; (भग १०, ४ ; भास ७१)।

अस सक [**अश्**] व्याप्त करना। असइ, असए ; (षड्)।

अस अक [**अस्**] होना। अस्सि, "हाहा हओहमस्सि त्ति कट्टु" (भग १५)। अंसि ; (प्राप)। अत्थि ; (हे ३, १४६ ; १४७ ; १४८)। भूका—आसि, आसी; (भग ; उवा)।

अस सक [**अश्**] भोजन करना, खाना। असइ ; "भत्त-मणोसालूरं नासइ दोसोवि जत्थाहो ; (सार्ध १०६ ; भवि)। वकृ—**असंत** ; (भवि)। कृ—**असियव्व** ; (सुपा ४३८)।

अस वकृ [**असत्**] अविद्यमान, असत् ; "दुहओ ण विण-स्संति, नो य उप्पज्जए असं" (सूअ १, १, १, १६)।

असइ स्त्री [**असृति**] १ उलटा रखा हुआ हस्त तल ; २ धान्य मापने का एक परिमाण; ३ उससे मापा हुआ धान्य; (अणु ; णाया १, ७)।

असइ स्त्री [**दे. असत्त्व**] अभाव, अ-विद्यमानता,
"पढमं जईण दाऊण, अप्पणा पणमिऊण पारेइ।
असईय सुविहियाणं, भुंजेइ य कयदिसालोओ" (उवा)।

असइ } अ [**असकृत्**] अनेक वार, वारंवार ; (भवि ;
असइं } आचा ; उप ८३३ टी)।
असई }

असई स्त्री [**असती**] १ कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (सुपा ६)। २ दासी ; (भग ८, ६)। °**पोस** पुं [°**पोष**] धन के लिए दासी, नपुंसक या पशुओं का पालन, "असई-पासं च वज्जिज्जा" (श्रा २२)। °**पोसणया** स्त्री [°**पोषणा**] देखो अनन्तरोक्त अर्थ ; (पडि)।

असउण पुंन [**अशकुन**] अपशकुन ; (पंचा ७)।

असंक वि [**अशङ्क**] १ शङ्का-रहित. अ-संदिग्ध। २ निडर, निर्भय ; (आचा ; सुर २, २६)।

असंकल वि [**अशृङ्खल**] शृङ्खला-रहित, अनियन्त्रित ; (कुमा)।

असंकि वि [**अशङ्किन्**] संदेह नहीं करने वाला ; (सूअ १, १, २)।

असंकिलिट्ठ वि [**असंक्लिष्ट**] १ संक्लेश-रहित ; २ विशुद्ध, निर्दोष; (औप ; पण्ह २, १)।

असंख वि [**असंख्य**] संख्या-रहित, परिमाण-रहित ; (सुपा ५६६ ; जी २७ ; ४०)।

असंख न [**असंख्य**] सांख्य-मत से भिन्न दर्शन ; (सुपा ५६६)।

असंखड न [**दे**] कलह, झगड़ा; (निचू १)।

असंखडिय वि [**दे**] कलह करने वाला, झगडाखोर ; (बृह १)।

असंखय देखो **असंख**=असंख्य ; (सं ८५)।

असंखय वि [**असंस्कृत**] १ संस्कार-हीन। २ संधान करने को अशक्य ; (राज)।

असंखिज्ज वि [**असंख्येय**] गिनती या परिमाण करने को अशक्य ; (नव ३५)।

असंखिज्जय देखो **असंखेज्जय** ; (अणु)।

असंखेज्ज देखो **असंखिज्ज** ; (भग)।

असंखेज्जइ° वि [**असंख्येय**] असंख्यातवाँ। °**भाग** पुं [°**भाग**] असंख्यातवाँ हिस्सा ; (औप ; भग)।

असंखेज्जय पुंन [**असंख्येयक**] गणना-विशेष ; (अणु)।

असंग वि [**असङ्ग**] १ निस्सङ्ग, अनासक्त; (पण्ण २)। २ पुं. आत्मा; (आचा)। ३ मुक्त जीव। ४ न. मोक्ष, मुक्ति ; (पंचव ३ ; औप)।

असंगय न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (दे १, ३४)।

असंगहिय वि [**असंगृहीत**] १ जिसका संग्रह न किया गया हो वह ; २ अनाश्रित ; (ठा ८)।

असंगहिय वि [**असंग्रहिक**] १ संग्रह नहीं करने वाला ; २ पुं. नैगम नय का एक भेद ; (विसे)।

असंगिअ पुं [**दे**] १ अश्व, घोडा ; २ वि. अनवस्थित, चञ्चल ; (दे १, ५५)।

असंघयण वि [**असंहनन**] १ संहनन से रहित। २ वज्रऋषभनाराच आदि प्राथमिक तीन संघयणों से रहित ; (निचू २०)।

असंजण न [**असञ्जन**] निःसङ्गता, अनासक्ति; (निचू १)

असंजम वि [**असंयम**] १ हिंसा, झूठ आदि सावद्य अनुष्ठान ; (सूअ १, १३)। २ हिंसा आदि पाप-कार्यों से अनिवृत्ति ; (धर्म ३)। ३ अज्ञान ; (आचा)। ४ असमाधि ; (वव १)।

असंजय वि [**असंयत**] १ हिंसा आदि पाप कार्यों से अनिवृत्त; (सूअ १, १०)। २ हिंसा आदि करने वाला ; (भग ६, ३)। ३ पुं. साधु-भिन्न, गृहस्थ ; (आचा)।

असंजल पुं [**असंज्वल**] ऐरवत वर्ष के एक जिन-देव का नाम ; (सम १५३)।

असंजोगि वि [**असंयोगिन्**] १ संयोग-रहित। २ पुं. मुक्त जीव, मुक्तात्मा ; (ठा २, १)।

असंत वकृ [**असत्**] १ अविद्यमान ; (नव ३३)। २ झूठ, असत्य ; (पण्ह १, २)। ३ असुंदर, अचारु ; (पण्ह २, २)।

असंत देखो **अस**=अश् ।

असंत वि [**अशान्त**] शान्त नहीं, क्रुद्ध ; (पण्ह २, २)।

असंत वि [**असत्त्व**] सत्त्व-रहित, बल-शून्य; (पण्ह १, २)।

असंथड वि [**दे. असंस्तृत**] अशक्त, असमर्थ; (आचा ; बृह ५)।

असंथरंत वकृ [**दे. असंस्तरत्**] १ समर्थ नहीं होता हुआ; २ खोज नहीं करता हुआ ; (वव ४)। ३ तृप्त नहीं होता हुआ ; (ओघ १८२)।

असंथरण न [**दे. असंस्तरण**] १ निर्वाह का अभाव; (बृह १)। २ पर्याप्त लाभ का अभाव ; (पंचव ३)। ३ असमर्थता, अशक्त अवस्था ; (धर्म ३; निचू १)।

असंथरमाण वकृ [**दे. असंस्तरमाण**] देखो **असंथरंत**; (वव ४ ; ओघ १८१)।

असंधिम वि [**असंधिम**] संधान-रहित, अखण्ड ; (बृह ५)।
असंभव्व वि [**असंभाव्य**] जिसकी संभावना न हो सके ऐसा ; (श्रा १२)।
असंभावणीय वि [**असंभावनीय**] ऊपर देखो ; (महा)।
असंलप्प वि [**असंलप्य**] अनिर्वचनीय ; (अणु)।
असंलोय पुं [**असंलोक**] १ अ-प्रकाश। २ वह स्थान जिसमें लोगों का गमनागमन न हो, भीड़-रहित स्थान ; (आचा)।
असंवर पुं [**असंवर**] आश्रव, संवर का अभाव ; (ठा ५, २)।
असंवरीय वि [**असंवृत**] १ अनाच्छादित। २ नहीं रुका हुआ ; (कुमा)।
असंवुड वि [**असंवृत**] असंयत, पाप-कर्म से अनिवृत ; (सूअ १, १, ३)।
असंसइय वि [**असंशयित**] अ-संदिग्ध; (सूअ २, २)।
असंसट्ठ वि [**असंसृष्ट**] १ दूसरे से नहीं मिला हुआ ; (बृह २)। २ लेप-रहित ; (औप)। ३ स्त्री. पिण्डैषणा का एक भेद ; (पव ६६)।
असंसत्त वि [**असंसक्त**] १ अ-मिलित ; (उत्त २)। २ अनासक्त ; (दस ८ ; उत्त ३)।
असंसय वि [**असंशय**] १ संशय-रहित ; (बृह १)। २ क्रिवि. निःसंदेह, नक्की ; (अभि ११०)।
असंसार पुं [**असंसार**] संसार का अभाव, मोक्ष ; (जीव १)।
असंसि वि [**अस्रंसिन्**] अ-विनश्वर ; (कुमा)।
असक्क वि [**अशक्य**] जिसको न कर सके वह ; (सुपा ६५१)।
असक्क वि [**अशक्त**] असमर्थ ; (कुमा)।
असक्कय वि [**असंस्कृत**] संस्कार-रहित ; (पण्ह १, २)।
असक्कय वि [**असत्कृत**] सत्कार-रहित ; (पण्ह १, २)।
असक्कणिज्ज वि [**अशकनीय**] अशक्य ; (कुमा)।
असगाह, **असग्गह**, **असग्गाह** } पुं [**असद्ग्रह**] १ कदाग्रह ; (उप ६७२ ; सुपा १३४)। २ अति-निर्बन्ध, विशेष आग्रह ; (भवि)।

असच्च न [**असत्य**] १ झूठ वचन ; (प्रासू १५१)। २ वि. झूठा ; (पण्ह १, २)। °**मोस** न [°**मृष**] झूठ से मिला हुआ सत्य ; (द्र २२)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] झूठ बोलने वाला ; (सम ५० ; पउम ११, ३४)। °**ामोस** न [°**ामृष**] नहीं सत्य और नहीं झूठ ऐसा वचन ; (आचा)। °**ामोसा** स्त्री [°**ामृषा**] देखो अनन्तरोक्त अर्थ ; (पंच १)। °**संध** वि [°**संध**] १ असत्य- प्रतिज्ञ ; २ असत्य अभिप्राय वाला ; (महा ; पण्ह १, २)।
असज्ज, **असज्जमाण** } वकृ [**असजत्**] संग नहीं करता हुआ ; (आचा ; उत्त १४)।
असज्झाइय वि [**अस्वाध्यायिक**] पठन-पाठन का प्रतिबन्धक कारण ; (पव २६८)।
असड्ढ वि [**अश्रद्ध**] श्रद्धा-रहित ; (कुमा)।
असढ वि [**अशठ**] सरल, निष्कपट ; (सुपा ५५०)। °**करण** वि [°**करण**] निष्कपट भाव से अनुष्ठान करने वाला ; (बृह ६)।
असण न [**अशन**] १ भोजन, खाना ; (निचू ११)। २ जो खाया जाय वह, खाद्य पदार्थ ; (पव ४)।
असण पुं [**असन**] १ बीजक-नामक वृक्ष ; (पण्ण १ ; णाया १, १ ; औप ; पाअ ; कुमा)। २ न. क्षेपण, फेंकना ; (विसे २७६५)।
असणि पुंस्त्री [**अशनि**] १ वज्र ; (पाअ)। २ आकाश से गिरता अग्नि-कण ; (पण्ण १)। ३ वज्र का अग्नि ; (जी ६)। ४ अग्नि ; (स ३३२)। ५ अस्त्र-विशेष ; (स ३८५)। °**प्पह** पुं [°**प्रभ**] रावण के मामा का नाम ; (से १२,६१)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] १ वह वर्षा जिसमें ओले गिरते हैं ; २ अति भयंकर वर्षा, प्रलय-मेघ ; (भग ७, ६)। °**वेग** पुं [**वेग**] विद्याधरों का एक राजा ; (पउम ६, १५७)।
असणी स्त्री [**अशनी**] एक इन्द्राणी ; (ठा ४, १)।
असण्ण वि [**असंज्ञ**] संज्ञा-रहित, अचेतन ; (लहुअ ६)।
असण्णि वि [**असंज्ञिन्**] १ संज्ञि-भिन्न, मनो-ज्ञान से रहित (जीव) ; (ठा २, २)। २ सम्यग्दृष्टि-भिन्न, जैनेतर ; (भग १, २)। °**सुय** न [°**श्रुत**] जैनेतर शास्त्र ; (णंदि)।
असत्त वि [**अशक्त**] असमर्थ ; (सुर ३, २४४ ; १०, १७४)।

असत्त वि [**असक्त**] अनासक्त ; (आचा)।

असत्त न [**असत्त्व**] अभाव, असत्ता ; (णंदि)।

असत्ति स्त्री [**अशक्ति**] सामर्थ्य का अभाव। °**मंत** वि [°**मत्**] असमर्थ, अशक्त ; (पउम ६६, ३६)।

असत्थ वि [**अस्वस्थ**] अ-तंदुरस्त, बिमार ; (सुर ३, १२७)।

असत्थ न [**अशस्त्र**] १ शस्त्र-भिन्न। २ संयम, निर्दोष अनुष्ठान ; (आचा)।

असद्द पुं [**अशब्द**] १ अ-कीर्त्ति, अपयश ; (गच्छ २)। २ वि. शब्द-रहित ; (बृह ३)।

असद्ध वि [**अश्रद्ध**] श्रद्धा-रहित। स्त्री—°**द्धी** ; (उप पृ ३६४)।

असन्नि देखो **असण्णि** ; (भग ; जी ४३)।

असबल वि [**अशबल**] १ अमिश्रित ; २ निर्दोष, पवित्र ; (पगह २, १)।

असब्भ वि [**असभ्य**] अशिष्ट, जंगली ; (स ६५०)। °**भासि** वि [**भाषिन्**] असभ्य-भाषी ; (सुर ६, २१५)।

असब्भाव पुं [**असद्भाव**] १ यथार्थता का अभाव, झूठ ; (पिंड)। २ वि. असत्य, अ-यथार्थ ; (उत्त ३ ; औप)।

असब्भावि वि [**असद्भाविन्**] झूठा, असत्य ; (महा)।

असब्भूय वि [**असद्भूत**] असत्य ; (भग)।

असम वि [**असम**] १ अ-समान, अ-साधारण ; (सुर ३, २४)। २ एक, तीन, पांच आदि एकाई संख्या वाला, विषम। °**सर** पुं [°**शर**] कामदेव ; (गउड)।

असमवाइ न [**असमवायिन्**] नैयायिक और वैशेषिक मत प्रसिद्ध कारण-विशेष ; (विसे २०६६)।

असमंजस वि [**असमञ्जस**]१ अव्यवस्थित, गैरव्याजबी ; (आचा ; सुर २, १३१ ; सुपा ६२३ ; उप १०००)। २ क्रिवि. अव्यवस्थित रूप से ; (पात्र)।

असमिक्खिय वि [**असमीक्षित**] अनालोचित, अविचारित ; (पगह १, २)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] साहसिक। °**कारिया** स्त्री [°**कारिता**] साहस कर्म ; (उप ७६८ टी)।

असरासय वि [**दे**] निर्दय, निष्ठुर हृदय वाला ; (दे १, ४०)।

असव पुं [**असु**] प्राण, "विउत्तासवो विअ ठिओ कंचि कालं" (स ३५७)।

असवण्ण वि [**असवर्ण**] असमान, असाधारण ; (सगण)।

असह वि [**असह**] १ असहिष्णु ; (कुमा ; सुपा ६२०)। २ असमर्थ ; (वव १)। ३ खेद करने वाला ; (पाअ)।

असहण वि [**असहन**] असहिष्णु, क्रोधी ; (पाअ)।

असहाय वि [**असहाय**] १ सहाय-रहित ; (भग)। २ एकाकी ; (बृह ४)।

असहिज्ज वि [**असाहाय्य**] १ सहायता-रहित। २ सहायता का अनिच्छुक ; (उवा)।

असहीण वि [**अस्वाधीन**] परतन्त्र, पराधीन ; (दस ८)।

असहु वि [**असह**] १ असहिष्णु ; (उव)। २ असमर्थ, अशक्त ; (ओघ ३६ भा)। ३ बिमार, ग्लान ; (निचू १)। ४ सुकुमार, कोमल ; (ठा ३, ३)।

असहेज्ज देखो **असहिज्ज** ; (भग)।

असागारिय वि [**असागारिक**] गृहस्थों के आवागमन से रहित स्थान ; (वव ३)।

असाढय न [**असाढक**] तृण-विशेष ; (पगण १—पत्र ३३)।

असाय न [**असात**] दुःख, पीड़ा ; (पगह १, १)। "रागंधा इह जीवा, दुल्लहलंयम्मि गाढमणुरत्ता। जं वेइंति असायं, कत्तो तं हंदि नरएवि" (सुर ८, ७६)। °**वेयणिज्ज** न [°**वेदनीय**] दुःख का कारण-भूत कर्म ; (ठा २, ४)।

असार } वि [**असार**, °**क**] निस्सार सार-रहित ;
असारय } (महा ; कुमा)।

असारा स्त्री [**दे**] कदली-वृक्ष, केला का पेड़ ; (दे १, १२)।

असासय वि [**अशाश्वत**] अनित्य, विनश्वर ; (णाया १, १ ; गा २४७)।

असाहण न [**असाधन**] असिद्धि ; (सुर ४, २४८)।

असाहारण वि [**असाधारण**] अतुल्य, अनुपम ; (भग ; दंस)।

असि पुं [**असि**] १ खड्ग, तलवार ; (पाअ)। २ इस नाम की नरकपाल देवों की एक जाति ; (भग ३, ६)। ३ स्त्री बनारस की एक नदी का नाम ; (ती ३८)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] मथुरा का एक तीर्थ-स्थान ; (ती ६)। °**घाय** पुं [°**घात**] तलवार का घाव ; (पउम ५६, २५)। °**चम्मपाय** न [°**चर्मपात्र**] तलवार की म्यान, कोश ; (भग ३, ५)। °**धारा** स्त्री [°**धारा**]

तलवार की धार ; (उत्त १६) । °धेणु, °धेणुआ स्त्री [°धेनु, °धेनुका] छुरी ; (गउड ; पात्र) । °पत्त न [°पत्र] १ तलवार ; (विपा १, ६) । २ तलवार के जैसा तीक्ष्ण पत्र ; (भग ३, ६) । ३ तलवार की पतरी ; (जीव ३) । ४ पुं. नरकपाल देवों की एक जाति ; (सम २६) । °पुत्तगा स्त्री [°पुत्रिका] छुरी ; (उप पृ ३३४) । °मुट्ठि स्त्री [°मुष्टि] तलवार की मूठ ; (पात्र) । °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती राजा की एक उत्तम तलवार ; (ठा ७) । °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] खड्ग-लता, तलवार ; (विपा १, ३) । °वण न [°वन] खड्गाकार पत्ती वाले वृक्षों का जंगल ; (पराह १, १) । °वत्त देखो °पत्त ; (से ३, ४२) । °हर वि [°धर] तलवार-धारक, योद्धा ; (से ६, १८) । °हारा देखो °धारा ; (उव) ।

असिइ (अप) देखो **असीइ** ; (सण) ।

असिण न [**अशन**] भोजन, खाना ; "अग्गपिंडं परिट्ठविज्जमाणं पेहाए, पुरा असिणा इवा अवहारा इवा " (आचा २, १, ५, १) ।

असिद्ध वि [**असिद्ध**] १ अ-निष्पन्न । २ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध दुष्ट हेतु ; (विसे २८२४) ।

असिय वि [**अशित**] भुक्त, खादित ; (पात्र ; सुपा २१२) ।

असिय वि [**असित**] १ कृष्ण, अ-श्वेत ; (पात्र) । २ अशुभ ; (विसे) । ३ अबद्ध, अ-यन्त्रित ; (सूत्र १, २, १) । "सिया एगे अणुगच्छंति, असिया एगे अणुगच्छंति ; (आचा) । °क्ख पुं [°ाक्ष] यक्ष-विशेष ; (सण) ।

असिय न [**दे**] दात्र, दाँती ; (दे १, १४) ।

असियव्व देखो **अस**=अश् ।

असिलेसा स्त्री [**अश्लेषा**] नक्षत्र-विशेष ; (सम ११) ।

असिलोग पुं [**अश्लोक**] अकीर्त्ति, अजस ; (सम १२) ।

असिव न [**अशिव**] १ विनाश ; २ असुख ; ३ देवतादि कृत उपद्रव ; (ओघ ७) । ४ मारी रोग ; (वव ४) ।

असिविण पुं [**अस्वप्न**] देव, देवता ; (प्रामा) ।

असिव्व देखो **असिव** ; (वव ७ ; प्राप्र) ।

असिह वि [**अशिख**] शिखा-रहित ; (वव ४) ।

असीइ स्त्री [**अशीति**] संख्या-विशेष, अस्सी, ८० ; (सम ८८) । °म वि [°तम] अस्सीवाँ, ८० वाँ ; (पउम ८०, ७४) ।

असीम वि [**असीमन्**] निस्सीम ; "असीमंतभत्तिराएण" (उप ७२८ टी) ।

असील वि [**अशील**] १ दुःशील, असदाचारी ; (पराह १, २) । २ न. असदाचार, अ-ब्रह्मचर्य । °मंत वि [°वत्] १ अब्रह्मचारी; (ओघ ७७७) । २ अ-संयत ; (सूत्र १,७) ।

असु पुं. ब [**असु**] १ प्राण ; (स ३८३) । २ न. चित्त ; ३ ताप ; (प्राप्र ; वृष ५१) ।

असु देखो **अंसु** ; (प्राप्र) ।

असुइ वि [**अशुचि**] १ अपवित्र, अ-स्वच्छ, मलिन ; (औप ; वव ३) । २ न. अमेध्य, विष्ठा ; (ठा ६ ; प्रासू १६६) ।

असुइ वि [**अश्रुति**] शास्त्र-श्रवण-रहित ; (भग ७, ६) ।

असुईकय वि [**अशुचीकृत**] अपवित्र किया हुआ ; (उप ७२८ टी) ।

असुग पुं [**असुक**] देखो **असु**=असु ; (हे १,१७७) ।

असुज्झंत वि [**अ-दृश्यमान**] नहीं दिखाता हुआ, "अन्नंपि जं असुज्झंतं । भुंजंतएण रत्तिं" (पउम १०३, २५) ।

असुणि वि [**अश्रोतृ**] नहीं सुनने वाला, "अलियपयंपिरि अणिमित्तकोवणे असुणि सुणसु मह वयणं" (वज्जा ७२) ।

असुद्ध वि [**अशुद्ध**] १ अस्वच्छ, मलिन । २ न. मैला, अशुचि । °विसोहय पुं [°विशोधक] भंगी, मेहतर ; (सुर १६, १६५) ।

असुभ देखो **असुह**=अशुभ ; (सम ६७ ; भग) ।

असुय वि [**अश्रुत**] नहीं सुना हुआ ; (ठा ४, ४) । °णिस्सिय न [°निश्रित] शास्त्र-श्रवण के बिना ही होने वाली बुद्धि—ज्ञान ; (णंदि) । °पुव्व वि [°पूर्व] पहले कभी नहीं सुना हुआ ; (महा ; णाया १, १ ; पउम ६५, १४) ।

असुय वि [**असुत**] पुत्र-रहित ; (उत्त २) ।

असुर पुं [**असुर**] १ दैत्य, दानव ; (पात्र) । २ देवजाति-विशेष, भवनपति और व्यन्तर देवों की जाति ; (पराह १, ४) । ३ दास-स्थानीय देव ; (आउ ३६) । °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति ; (ठा १, १ ; महा) । °राय पुं [°राज] असुरों का इन्द्र ; (पि ४००) । °वंदि पुं [°बन्दिन्] राक्षस ; (से ६, ५०) ।

असुरिंद पुं [**असुरेन्द्र**] असुरों का राजा, इन्द्र-विशेष; (णाया १, ८; सुपा ७७)।
असुह न [**अशुभ**] १ अ-मंगल, अनिष्ट; (सुर ४, १६३)। २ पाप-कर्म; (ठा ४, ४)। ३ वि. खराब, अ-सुन्दर; (जीव १; कुमा)। °**णाम** न [°**नामन्**] अशुभ फल देने वाला कर्म-विशेष; (सम ६७)।
असुह न [**असुख**] दुःख; (ठा ३, ३)।
असूअ सक [**असूय्**] असूया करना। असूएहि; (मै ७)।
असूया स्त्री [**असूचा**] १ सूचना का अभाव। २ दूसरे के दोषों को न कह कर अपना ही दोष कहना; (निचू १०)।
असूया स्त्री [**असूया**] असूया, असहिष्णुता; (दंस)।
असूरिय वि [**असूर्य**] १ सूर्य-रहित, अन्धकार-मय स्थान। २ पुं. नरक-स्थान; (सूअ १, ५, १)।
असेव्व देखो **असिव**; (प्राप्र)।
असेव्व वि [**असेव्य**] सेवा के अयोग्य; (गउड)।
असेस वि [**अशेष**] निःशेष, सर्व; (प्राप)।
असोग पुं [**अशोक**] १ सुप्रसिद्ध वृक्ष-विशेष, (औप)। २ महाग्रह-विशेष; (ठा २,३)। ३ हरा रंग; (राय)। ४ भगवान् मल्लिनाथ का चैत्य-वृक्ष; (सम १५२)। ५ देव-विशेष; (जीव ३)। ६ न. तीर्थ-विशेष; (ती १०)। ७ यक्ष-विशेष; (विपा १, ३)। ८ वि. शोक-रहित। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ राजा श्रेणिक का पुत्र, राजा कोणिक; (आवम)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (सार्ध ७७)। °**ललिय** पुं [°**ललित**] चतुर्थ बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम; (सम १५३)। °**वण** न [°**वन**] अशोक वृक्षों वाला वन; (भग)। °**वणिया** स्त्री [°**वनिका**] अशोक वृक्ष वाला बगीचा; (णाया १, १६)। °**सिरि** पुं [°**श्री**] इस नाम का एक प्रख्यात राजा, सम्राट् अशोक; (विसे ८६२)।
असोगा स्त्री [**अशोका**] १ इस नाम की एक इन्द्राणी; (ठा ४, १)। २ भगवान् श्रीशीतलनाथ की शासन-देवी; (पव २७)। ३ एक नगरी का नाम; (पउम २०, १८६)।
असोभण वि [**अशोभन**] अ-सुन्दर, खराब; (पउम ६६, १६)।
असोय देखो **असोग**; (भग; महा; रंभा)।
असोय पुं [**अश्वयुक्**] आश्विन मास; (सम २६)।
असोय वि [**अशौच**] १ शौच-रहित; (महा)। २ न. शौच का अभाव; अशुचिता। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] अशौच को ही मानने वाला; (ओघ ३१८)।
असोयणया स्त्री [**अशोचनता**] शोक का अभाव; (पक्खि)।
असोया देखो **असोगा**; (ठा २, ३; संति ६)।
असोल्लिय वि [**अपक्व**] कच्चा; (उवा)।
असोहि स्त्री [**अशोधि**] १ अशुद्धि; २ विराधना; (ओघ ७८८)। °**ठाण** न [°**स्थान**] १ पाप-कर्म; २ अशुद्धि का स्थान; ३ दुर्जन का संसर्ग; ४ अनायतन; (ओघ ७६३)।
अस्स न [**आस्य**] मुख, मुँह; (गा ६८६)।
अस्स वि [**अस्व**] १ द्रव्य-रहित, निर्धन। २ पुं. निर्ग्रन्थ, साधु, मुनि; (आचा)।
अस्स पुं [**अश्व**] १ घोड़ा; (उप ७६८ टी)। २ अश्विनी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३)। ३ ऋषि-विशेष; (जं ७)। °**कण्ण** पुं [°**कर्ण**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ इस अन्तर्द्वीप का निवासी; (णंदि) °**कण्णी** स्त्री [°**कर्णी**] वनस्पति-विशेष; (पगण १)। °**करण** न [°**करण**] जहां घोडा रखने में आता हो वह स्थान, अस्तबल; (आचा २, १०, १४)। °**ग्गीव** पुं [°**ग्रीव**] पहले प्रतिवासुदेव का नाम; (सम १५३)। °**तर** पुंस्त्री [°**तर**] खच्चड़; (पगण १)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १-२ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप और उसके निवासी; (णंदि; पगण १)। °**मेह** पुं [°**मेध**] यज्ञ-विशेष, जिसमें अश्व मारा जाता है; (अणु)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ एक प्रसिद्ध राजा, भगवान् पार्श्वनाथ का पिता; (पव ११)। २ एक महाग्रह का नाम; (चंद २०)। °**यर** पुं [°**दर**] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४२)।
अस्संख वि [**असंख्य**] संख्या-रहित; (उप १७)।
अस्संगिअ वि [**दे**] आसक्त; (षड्)।
अस्संघयणि वि [**असंहननिन्**] संहनन-रहित; किसी प्रकार के शारीरिक बन्ध से रहित; (भग)।
अस्संजम देखो **असंजम**; (उव)।
अस्संजय वि [**अस्वयत**] १ गुरु की आज्ञानुसार चलने वाला, अ-स्वच्छंदी; (श्रा ३१)।

अस्संजय देखो **असंजय** ; (उव) ।

अस्संदम पुं [**अश्वन्दम**] अश्व-पालक ; (सुपा ६४५) ।

अस्सच्च देखो **असच्च** ; " सुरिणो हवउ वयणमस्सचं " (उप १४६ टी) ।

अस्सण्णि देखो **असण्णि** ; (विसे ५१६) ।

अस्सत्थ पुं [**अश्वत्थ**] वृक्ष-विशेष, पीपल ; (नाट) ।

अस्सत्थ वि [**अस्वस्थ**] अ-तंदुरस्त, बिमार ; (सुर ३, १५१ ; माल ६५) ।

अस्सन्नि देखो **असण्णि** ; (सुर १४, ६६ ; कम्म ४, २ ; ३) ।

अस्सम पुं [**आश्रम**] १ स्थान, जगह ; २ ऋषियों का स्थान ; (अभि ६६ ; स्वप्न २५) ।

अस्समिअ वि [**अश्रमित**] श्रम-रहित; अनभ्यासी ; (भग) ।

अस्सस अक [**आ+श्वस्**] आश्वासन लेना । हेकृ— **अस्ससिदुं** (शौ) ; (अभि १२०) ।

अस्साइय वि [**आस्वादित**] जिसका आस्वादन किया गया हो वह ; (दे) ।

अस्साएमाण देखो **अस्साय**=आस्वादय् ।

अस्साद सक [**आ+सादय्**] प्राप्त करना । अस्सादेंति; अस्सादेस्सामो ; (भग १५) ।

अस्साद सक [**आ+स्वादय्**] आस्वादन करना ।

अस्सादिय वि [**आसादित**] प्राप्त किया हुआ ; (भग १५) ।

अस्साय देखो **अस्साद**=आ+सादय् ।

अस्साय देखो **अस्साद**=आ+स्वादय् । वकृ—**अस्साएमाण** ; (भग १२, १) । कृ—**अस्सायणिज्ज** ; (णाया १, १२) ।

अस्साय देखो **असाय** ; (कम्म २, ७ ; भग) ।

अस्सायण पुं [**आश्वायन**] १ अश्व ऋषि का संतान ; (जं ७) । २ अश्विनी नक्षत्र का गोत्र ; (इक) ।

अस्सावि वि [**आस्राविन्**] झरता हुआ, टपकता हुआ, सच्छिद्र, " जहा अस्साविणिं नावं जाइअंधो दुरुहए " (सूअ १, १, २) ।

अस्सास सक [**आ+श्वासय्**] आश्वासन देना ; दिलासा देना । अस्सासअदि (शौ); (पि ४६०) । अस्सासि; (उत्त २, ४० ; पि ४६१) ।

अस्सि स्त्री [**अश्रि**] १ कोण, घर आदि का कोना ; (ठा ६) । २ तलवार आदि का अग्र-भाग—धार ; (उप पृ ६६) ।

अस्सि पुं [**अश्विन्**] अश्विनी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३) ।

अस्सिणी स्त्री [**अश्विनी**] इस नाम का एक नक्षत्र ; (सम ८) ।

अस्सिय वि [**आश्रित**] आश्रय-प्राप्त ; " विरागमेगमस्सिओ " (वसु ; ठा ७ ; संथा १८) ।

अस्सु (शौ) न [**अश्रु**] आंसू ; (अभि ५६ ; स्वप्न ८५) ।

अस्सुंक वि [**अशुल्क**] जिसकी चुंगी माफ की गई हो वह ; (उप ५६७ टी) ।

अस्सुद (शौ) देखो **असुय**=अश्रुत ; (अभि १६३) ।

अस्सुय वि [**अस्मृत**] याद नहीं किया हुआ ; (भग) ।

अस्सेसा देखो **असिलेसा** ; (सम १७; विसे ३४०८) ।

अस्सोई स्त्री [**आश्वयुजी**] आश्विन मास की पूर्णिमा ; (चंद १०) ।

अस्सोक्कंता स्त्री [**अश्वोत्क्रान्ता**] संगीत-शास्त्र प्रसिद्ध मध्यम ग्राम की पांचवीं मूर्च्छना ; (ठा ७) ।

अस्सोत्थ देखो **अस्सत्थ** ; (पि ७४; १५२; ३०६) ।

अस्सोयव्व वि [**अश्रोतव्य**] सुनने के अयोग्य ; (सुर १४, २) ।

अह अ [**अथ**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ अब, बाद; (स्वप्न ४३ ; दं ३१ ; कुमा) । २ अथवा, और ;

" छिज्जउ सीसं अह होउ बंधणं चयउ सव्वहा लच्छी ।
पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं होइ तं होउ ॥ " (प्रासू ३)।

३ मङ्गल ; (कुमा) । ४ प्रश्न ; ५ समुच्चय ; ६ प्रतिवचन, उत्तर ; (बृह १) । ७ विशेष ; (ठा ७) । ८ यथार्थता, वास्तविकता; (विसे १२७६) । ९ पूर्वपक्ष; (विसे १७८३) । १०-११ वाक्य की शोभा बढ़ाने के लिए और पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (सूअ १, ७ ; पंचा १६) ।

अह न [**अहन्**] दिवस, दिन ; (श्रा १४ ; पाअ) ।

अह अ [**अधस्**] नीचे ; (सुर २, ३८) । °**लोग** पुं [°**लोक**] पाताल-लोक; (सुपा ४०)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] नीचे रहा हुआ ; निम्न-स्थित ; (पउम १०२, ६५) ।

अह स [**अदस्**] यह, वह ; (पाअ) ।

अह न [दे] दुःख ; (दे १, ६)।
अह न [अघ] पाप ; (पात्र)।
अह° देखो अहा ; (हे १, २४५ ; कुमा)। °क्कम, °क्कमसो अ [°क्रम] क्रम के अनुसार, अनुक्रम से ; (ओघ ५ भा ; स ६)। °क्खाय, °खाय न [°ख्यात] निर्दोष चारित्र, परिपूर्ण संयम ; (ठा ५, २ ; नव २६ ; कुमा)। °क्खायसंजय वि [°ख्यातसंयत] परिपूर्ण संयम वाला ; (भग २५, ७)। °च्छंद देखो अहा-छंद ; (स ६)। °त्थ वि [°स्थ] ठीक २ रहा हुआ, यथास्थित ; (ठा ५, ३)। °त्थ वि [°र्थ] वास्तविक ; (ठा ५, ३)। °प्पहाण अ [°प्रधान] प्रधान के हिसाब से ; (भग १५)।
अहइं अ [अथकिम्] स्वीकार-सूचक अव्यय ; हाँ, अच्छा; (नाट ; प्रयौ ५)।
अहंकार पुं [अहंकार] अभिमान, गर्व ; (सूअ १, ६ ; स्वप्न ८२)।
अहंकारि वि [अहंकारिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ; (गउड)।
अहंणिस न [अहर्निश] रात-दिन, सर्वदा ; (पिंग)।
अहण वि [अधन] निर्धन, धन-रहित ; (विमे २८१२)।
अहण्णिस न [अहर्निश] रात-दिन, निरन्तर ; (नाट)।
अहत्ता अ [अधस्तात्] नीचे ; (भग)।
अहन्न वि [अधन्य] अप्रशस्य हतभाग्य ; (सुर २,३७)।
अहन्निस देखो अहण्णिस ; (सुपा ४६२)।
अहम वि [अधम] अधम, नीच ; (कुमा)।
अहमंति वि [अहमन्तिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ ; (ठा १०)।
अहमहमिआ, अहमहमिगया, अहमहमिगा स्त्री [अहमहमिका] मैं इससे पहले हो जाऊं ऐसी चेष्टा, अत्युत्कण्ठा ; (गा ५८० ; सुपा ५४; १३२; १४८)।
अहमिंद पुं [अहमिन्द्र] १ उत्तम-श्रेणीय पूर्ण स्वाधीन देव-जाति विशेष ; ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव; (इक)। २ अपने को इन्द्र समझने वाला, गर्विष्ठ, "संपइ पुण रायाणो नरिंद ! सव्वेवि अहमिंदा" (सुर १, १२६)।
अहम्म देखो अधम्म ; (सूअ १, १, २ ; भग ; नव ६ ; सुर २, ४४ ; सुपा २५८ ; प्रासू १३६)।
अहम्म वि [अधर्म्य] धर्म-च्युत, धर्म-रहित, गैरव्याजबी ; (सण)।
अहम्माणि वि [अहम्मानिन्] अभिमानी; (आवम)।
अहम्मि वि [अधर्मिन्] धर्म-रहित, पापी ; (सुपा १७२)।
अहम्मिट्ठ देखो अधम्मिट्ठ ; (भग १२, २ ; राय)।
अहम्मिय वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी; (विपा १, १)।
अहय वि [अहत] १ अनुबद्ध, अव्यवच्छिन्न ; (ठा ८—पत्र ४१८)। २ अक्षत, अखण्डित ; (सूअ २, २)। ३ जो दूसरी तरफ लिया गया हो ; (चंद १६)। ४ नया, नूतन ; (भग ८, ६)।
अहर वि [दे] अशक्त, असमर्थ ; (दे १, १७)।
अहर पुं [अधर] १ होठ, ओष्ठ ; (गांदि)। २ वि. नीचे का, नीचला; (पराह १, ३)। ३ नीच, अधम; (पराह १, २) ४ दूसरा, अन्य ; (प्रामा)। °गइ स्त्री [°गति] अधोगति, दुर्गति, नीच गति ; "अहरगइं निंति कम्माइं" (पिंड)।
अहरिय वि [अधरित] तिरस्कृत ; (सुपा ४७)।
अहरी स्त्री [अधरी] पेषण-शिला, जिस पर मसाला वगैरः पीसा जाता है वह पत्थर; (उवा)। °लोट्ठ पुं [°लोष्ट] जिससे पीसा जाता है वह पत्थर ; लोढ़ा ; (उवा)।
अहरीकय वि [अधरीकृत] तिरस्कृत, अवगणित ; (सुपा ४)।
अहरीभूय वि [अधरीभूत] तिरस्कृत ;
"उयरेण धरंतीए, नररयणमिमं महप्पहं देवि!।
अहरीभूयमसेसं, जयंपि तुह रयणगब्भाए" (सुपा ३५)।
अहरुट्ठ पुंन [अधरोष्ठ] नीचे का होठ ; (पराह १, ३ ; हे १, ८४ ; षड्)।
अहरेम देखो अहिरेम । अहरेमइ (हे ४, १६६)।
अहरेमिअ वि [पूरित] पूरा किया हुआ ; (कुमा)।
अहल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक ; (प्रासू १३५ ; रंभा)।
अहव देखो अहवा ; (हे १, ६७)।
अहवइ (अप) देखो अहवा ; (कुमा)।
अहवण, अहवा अ [अथवा] १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (अणु ; सूअ २, २)। २ या, अथवा ; (बृह १; निचू १ ; पंचा ३ ; हे १, ६७)।
अहव्व देखो अभव्व ; (गा ३६०)।
अहव्वण पुं [अथर्वन्] चौथा वेद-शास्त्र ; (औप)।
अहव्वा स्त्री [दे] असती, कुलटा स्त्री; (दे १, १८)।
अहह अ [अहह] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१

आमन्त्रण ; २ खेद ; ३ आश्चर्य ; ४ दुःख ; ५ आधिक्य, प्रकर्ष ; (हे २, २१७ ; श्रा १४ ; कप्पू ; गा ६५६)।
अहा° अ [**यथा**] जैसे, माफिक, अनुसार ; (हे १, २४५)। °**छंद** वि [°**च्छन्द**] १ स्वच्छन्दी, स्वैरी ; (उप ८३३ टी)। २ न. मरजी के अनुसार ; (वव २)। °**जाय** वि [°**जात**] १ नग्न, प्रावरण-रहित ; (हे १, १४५)। २ न. जन्म के अनुसार ; ३ जैन साधुओं में दीक्षा काल के परिमाण के अनुसार किया जाता वन्दन—नमस्कार ; (धर्म २)। °**णुपुव्वी** स्त्री [°**नुपूर्वी**] यथाक्रम, अनुक्रम; (णाया १, १ ; पउम १, ८)। °**तच्च** न [°**तत्त्व**] तत्त्व के अनुसार ; (भग २, १)। °**तच्च** न [°**तथ्य**] सत्य सत्य ; (सम १६)। °**पडिरूव** वि [°**प्रतिरूप**] १ उचित, योग्य ; (औप)। २ क्रिवि. यथायोग्य ; (विपा १, १)। °**पवत्त** वि [**प्रवृत्त**] १ पूर्व की तरह ही प्रवृत्त, अपरिवर्तित ; (णाया १, ५)। २ न. आत्मा का परिणाम-विशेष ; (स ४७)। °**पवित्तिकरण** न [°**प्रवृत्तिकरण**] आत्मा का परिणाम-विशेष; (कम्म ५)। °**बायर** वि [°**बादर**] निस्सार, सार-रहित ; (णाया १, १)। °**भूय** वि [°**भूत**] तात्त्विक, वास्तविक; (ठा १, १)। °**राइणिय**, °**रायणिय** न [°**रात्निक**] यथाज्येष्ठ, बडे के क्रम से ; (णाया १, १ ; आचा)। °**रिय** न [**ऋजु**] सरलता के अनुसार ; (आचा)। °**रिह** न [°**र्ह**] यथोचित ; (ठा २, १)। २ वि. उचित, योग्य ; (धर्म १)। °**रीय** न [°**रीत**] १ रीति के अनुसार ; २ स्वभाव के माफिक ; (भग ५, २)। °**लंद** पुं [°**लन्द**] काल का एक परिमाण, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतना समय ;(कप्प)। °**वगास** न [°**वकाश**] अवकाश के अनुसार ; (सूत्र २, ३)। °**वच्च** वि [°**पत्य**] पुत्र-स्थानीय ; (भग ३, ७)। °**संथड** वि [°**संस्तृत**] शयन के योग्य ; (आचा)। °**संविभाग** पुं [°**संविभाग**] साधु को दान देना ; (उवा)। °**सच्च** न [°**सत्य**] वास्तविकता, सचाई ; (आचा)। °**सत्ति** न [°**शक्ति**] शक्ति के अनुसार ; (पंसू ४)। °**सुत्त** न [°**सूत्र**] आगम के अनुसार ; (सम ७७)। °**सुह** न [°**सुख**] इच्छानुसार ; (णाया १, १ ; भग)। °**सुहुम** वि [°**सूक्ष्म**] सारभूत ; (भग ३, १)। देखो **अह°** ।

अहासंखड वि [**दे**] निष्कम्प, निश्चल ; (निचू २)।
अहासल वि [**अहास्य**] हास्य-रहित ; (सुपा ६१०)।
अहाह अ [**अहाह**] देखो **अहह** ; (हे २, २१७)।
अहि देखो **अभि** ; (गउड ; पाअ ; पंचव ४)।
अहि अ [**अधि**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ आधिक्य, विशेषता ; जैसे—'अहिगंध, अहिमास'। २ अधिकार, सत्ता ; जैसे—'अहिगय'। ३ ऐश्वर्य ; जैसे—'अहिट्ठाण'। ४ ऊंचा, ऊपर ; जैसे—'अहिट्ठ'।
अहि पुं [**अहि**] १ सर्प. साँप ; (पगण १ ; प्रासू १६ ; ३६; १०५)। २ शेष नाग ; (पिंग)। °**च्छत्ता** स्त्री [°**च्छत्रा**] नगरी-विशेष ; (णाया १, १६ ; ती ७)। °**मड** पुंन [°**मृतक**] साँप का मुर्दा ; (णाया १, ६)। °**वइ** पुं [°**पति**] शेष नाग ; (अच्चु ६०)। °**विंछिअ** पुं [°**वृश्चिक**] सर्प के मूत्र से उत्पन्न होने वाली वृश्चिक जाति ; (कुमा)।
अहिअल न [**दे**] क्रोध, गुस्सा ; (दे १, ३६ ; षड्)।
अहिआअ न [**अभिजात**] कुलीनता ; खानदानी ; (गा ३८)।
अहिआइ स्त्री [**अभिजाति**] कुलीनता ; (षड्)।
अहिआर पुं [**दे**] लोक-यात्रा, जीवन-निर्वाह; (दे १, २६)।
अहिउत्त वि [**दे**] व्याप्त, खचित ; (गउड)।
अहिउत्त वि [**अभियुक्त**] १ विद्वान्, परिडत। २ उद्यत, उद्योगी ; (पाअ)। ३ शत्रु से घिरा हुआ ; (वेणी १२३ टि)।
अहिऊर सक [**अभि+पूरय्**] पूर्ण करना, व्याप्त करना। कर्म—अहिऊरिज्जंति ; (गउड)।
अहिऊल सक [**दह्**] जलाना, दहन करना। अहिऊलइ ; (हे ४, २०८ ; षड् ; कुमा)।
अहिओय पुं [**अभियोग**] १ संबन्ध ; (गउड)। २ दोषारोपण ; (स २२६)। देखो **अभिओअ** ; (भवि)।
अहिंद पुं [**अहीन्द्र**] १ सर्पों का राजा, शेष नाग ; (अच्चु १)। २ श्रेष्ठ सर्प ; (कुमा)। °**उर** न [°**पुर**] वासुकि-नगर। °**उरणाह** पुं [°**पुरनाथ**] विष्णु, अच्युत ; (अच्चु २६)।
अहिंसग वि [**अहिंसक**] हिंसा नहीं करने वाला ; (ओघ ७४७)।
अहिंसण न [**अहिंसन**] अहिंसा ; (धर्म १)।
अहिंसय देखो **अहिंसग** ; (पगह २, १)

अहिंसा स्त्री [**अहिंसा**] दूसरे को किसी प्रकार से दुःख नहीं देना ; (निचू २ ; धर्म ३ ; सुअ १, ११)।

अहिंसिय वि [**अहिंसित**] अ-मारित, अ-पीड़ित , (सूअ १, १, ४)।

अहिकंख देखो **अभिकंख**। वकृ—**अहिकंखंत** ; (पंचव ४)।

अहिकंखिर वि [**अभिकांक्षिन्**] अभिलाषी, इच्छुक ; (सण)।

अहिकय वि [**अधिकृत**] जिसका अधिकार चलता हो वह, प्रस्तुत ; (विसे १५८)।

अहिकरण देखो **अहिगरण** ; (निचू ४)।

अहिकरणी देखो **अहिगरणी** ; (ठा ८)।

अहिकारि देखो **अहिगारि** ; (रंभा)।

अहिकिच्च अ [**अधिकृत्य**] अधिकार कर ; उद्देश कर ; (आचू १)।

अहिक्खण न [**दे**] उपालंभ, उलहना ; (दे १, ३५)।

अहिक्खित्त वि [**अधिक्षिप्त**] १ तिरस्कृत ; २ निन्दित ; ३ स्थापित ; ४ परित्यक्त ; ५ क्षिप्त ; (नाट)।

अहिक्खिव सक [**अधि+क्षिप्**] १ तिरस्कार करना। २ फेंकना। ३ निन्दना। ४ स्थापित करना। ५ छोड़ देना। अहिक्खिवइ ; (उव)। अहिक्खिवाहि ; (स ३२६)। वकृ—**अहिक्खिवंत** ; (पउम ६५, ४४)।

अहिक्खेव पुं [**अधिक्षेप**] १ तिरस्कार ; २ स्थापन; ३ प्रेरणा ; (नाट)।

अहिखिव देखो **अहिक्खिव**। वकृ—**अहिखिवंत** ; (स ५७)।

अहिग देखो **अहिय**=अधिक ; (विसे ११४३ टी)।

अहिखीर सक [**दे**] १ पकड़ना। २ आघात करना। अहिखीरइ ; (भवि)।

अहिगंध वि [**अधिगन्ध**] अधिक गन्ध वाला ; (गउड)।

अहिगम सक [**अधि+गम्**] १ जानना। २ निर्णय करना। ३ प्राप्त करना। कृ—**अहिगम्म** ; (सम्म १६७)।

अहिगम सक [**अभि+गम्**] १ सामने जाना। २ आदर करना। कृ—**अहिगम्म** ; (सण)।

अहिगम पुं [**अधिगम**] १ ज्ञान ; (विसे ६०८)। "जीवाईणमहिगमो मिच्छत्तस्स खओवसमभावे" (धर्म २)। २ उपलम्भ , प्राप्ति ; (दे ७, १४)। ३ गुरु आदि का उपदेश; (विसे २६७५)। ४ सेवा, भक्ति; (सम ५१)। ५ न. गुर्वादि के उपदेश से होने वाली सद्धर्म-प्राप्ति—सम्यक्त्व; (सुपा ६४८)। °**रुइ** स्त्री [°**रुचि**] १ सम्यक्त्व का एक भेद। २ सम्यक्त्व वाला ; (पव १४५)।

अहिगम देखो **अभिगम** ; (औप ; से ८,३३; गउड)।

अहिगमण न [**अधिगमन**] १ ज्ञान ; २ निर्णय ; ३ प्राप्ति, उपलम्भ ; (विसे)।

अहिगमय वि [**अधिगमक**] जनाने वाला, बतलाने वाला ; (विसे ५०३)।

अहिगमिय वि [**अधिगत**] १ ज्ञात ; २ निश्चित; (सुर १, १८१)।

अहिगम्म देखो **अहिगम**=अधि+गम्।

अहिगम्म देखो **अहिगम**=अभि+गम्।

अहिगय वि [**अधिकृत**] १ प्रस्तुत, (रयण ३६)। २ न. प्रस्ताव, प्रसंग ; (राज)।

अहिगय वि [**अधिगत**] १ उपलब्ध, प्राप्त ; (उत्त १०)। २ ज्ञात ; (दे ६, १४८)। ३ पुं. गीतार्थ मुनि, शास्त्राभिज्ञ साधु ; (वव १)।

अहिगर पुं [**दे**] अजगर ; (जीव १)।

अहिगरण पुंन [**अधिकरण**] १ युद्ध, लड़ाई ; (उप पृ २६८)। २ असंयम, पाप-कर्म से अनिवृत्ति ; (उप ८७२)। ३ आत्म-भिन्न बाह्य वस्तु ; (ठा २, १)। ४ पाप-जनक क्रिया ; (णाया १, ५)। ५ आधार ; (विसे ८४)। ६ भेंट, उपहार ; (बृह १)। ७ कलह, विवाद ; (बृह १)। ८ हिंसा का उपकरण ; "मोहंधेण य रइयं हलउक्खलमुसलपमुहमहिगरणं" (विवे ६१)। °**कड**, °**कर** वि [°**कर**] कलह-कारक ; (सूअ १, २, २ ; आचा)। °**किरिया** स्त्री [°**क्रिया**] पाप-जनक कृति, दुर्गति में ले जाने वाली क्रिया ; (पण्ह १, २)। °**सिद्धंत** पुं [°**सिद्धान्त**] आनुषंगिक सिद्धि करने वाला सिद्धान्त ; (सूअ १, १२)।

अहिगरणी स्त्री [**अधिकरणी**] लोहार का एक उपकरण ; (भग १६, १)। °**खोडि** स्त्री [°**खोटि**] जिस पर अधिकरणी रखी जाती है वह काष्ठ ; (भग १६, १)।

अहिगरणिया, **अहिगरणीया** } स्त्री [**आधिकरणिकी**] देखो **अहिगरण-किरिया** ; (सम १० ; ठा २, १ ; नव १७)।

अहिगरी स्त्री [**दे**] अजगरिन, स्त्री अजगर ; (जीव २)।

अहिगार पुं [**अधिकार**] १ वैभव, संपत्ति; " नियअहिगाराणुरूवं जम्मणमहिमं विहिस्सामो " (सुपा ४१)। २ हक्क, सत्ता ; (सुपा ३५०)। ३ प्रस्ताव, प्रसंग ; (विसे ४८७)। ४ ग्रन्थ-विभाग ; (वसु)। ५ योग्यता, पात्रता ; (प्रासू १३५)।

अहिगारि, **अहिगारिय** वि [**अधिकारिन्**] १ अमलदार, राज-नियुक्त सत्ताधीश ; " ता तप्पुराहिगारी समागओ तत्थ तम्मि खणे " (सुपा ३५० ; श्रा २७)। २ पात्र, योग्य ; (प्रासू १३५ ; सण)।

अहिगिच्च अ [**अधिकृत्य**] अधिकार करके; (उवर ३६; ६६)।

अहिघाय पुं [**अभिघात**] आस्फालन, आघात ; (गउड)।

अहिजाय वि [**अभिजात**] कुलीन ; (भग ६, ३३)।

अहिजाइ स्त्री [**अभिजाति**] कुलीनता ; (प्राप्र)।

अहिजाण सक [**अभि+ज्ञा**] पीछानना। भवि—अहिजाणिस्सदि (शौ); (पि ५३४)।

अहिजुंज देखो **अभिजुंज**। संकृ—**अहिजुंजिय**; (भग)।

अहिजुत्त देखो **अभिजुत्त**; (प्रबो ८४)।

अहिज्ज सक [**अधि+इ**] पढ़ना, अभ्यास करना। अहिज्जइ ; (अंत २)। वकृ—**अहिज्जंत, अहिज्जमाण** ; (उप १६६ टी; उवा)। संकृ—**अहिज्जित्ता, अहित्ता** ; (उत्त १ ; सूअ १, १२) हेकृ—**अहिज्जिउं** ; (दस ४)।

अहिज्ज वि [**अधिज्य**] धनुष की डोरी पर चढ़ाया हुआ (बाण) ; (दे ७, ६२)।

अहिज्ज, **अहिज्जग** वि [**अभिज्ञ**] जानकार, निपुण ; (पि २६६ ; प्रारू ; दस ५)।

अहिज्जण न [**अध्ययन**] पठन, अभ्यास; (विसे ७ टी)।

अहिज्जाविय वि [**अध्यापित**] पाठित, पढ़ाया हुआ ; (उप पृ ३३)।

अहिज्जिय वि [**अधीत**] पठित, अभ्यस्त ; (सुर ८, १२१ ; उप ५३० टी)।

अहिज्झिय वि [**अभिध्यित**] लोभ-रहित, अ-लुब्ध ; (भग ६, ३)।

अहिट्ठग वि [**अधिष्ठक**] अधिष्ठाता, विधायक, कारक ; " नासंदीपलिअंकेसु, न निसिज्जा न पीढए। निग्गंथापडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा " (दस ६, ५५)।

अहिट्ठा सक [**अधि+स्था**] १ ऊपर चलना। २ आश्रय लेना। ३ रहना, निवास करना। ४ शासन करना। ५ करना। ६ हराना। ७ आक्रमण करना। ८ ऊपर चढ़ बैठना। ६ वश करना। अहिट्ठेइ ; (निचू ५)। " ता अहिट्ठेहि इमं रज्जं " (स २०४)। अहिट्ठेज्जा ; (पि २५२; ४६६)। वकृ—**अहिट्ठंत** ; (निचू ५)। कवकृ—**अहिट्ठिज्जमाण**; (ठा ४, १)। संकृ—**अहिट्ठेइत्ता**; (निचू १२)। हेकृ—**अहिट्ठित्तए**; (बृह ३)।

अहिट्ठाण न [**अधिष्ठान**] १ बैठना ; (निचू ५)। २ आश्रयण ; (सूअ १, २, ३)। ३ मालिक बनना ; (आचा)। ४ स्थान, आश्रय ; (स ४६६)।

अहिट्ठावण न [**अधिष्ठापन**] ऊपर रखना ; (निचू ५)।

अहिट्ठिय वि [**अधिष्ठित**] १ अध्यासित ; (णाया १, १४)। २ आधीन किया हुआ ; (णाया १, १४)। ३ आक्रान्त, आविष्ट ; (ठा ५, २)।

अहिडुय वि [**दे. अभिद्रुत**] पीडित, " अहिडुयं पीडिअं परद्धं च " (पाअ)।

अहिणंद देखो **अभिणंद**। वकृ—**अहिणंदमाण** ; (पउम ११, १२०) कवकृ—**अहिणंदिज्जमाण, अहिणंदीअमाण** ; (नाट ; पि ५६३)।

अहिणंदण देखो **अभिणंदण** ; (पउम २०, ३० ; भवि)।

अहिणंदिय देखो **अभिणंदिय** ; (पउम ८, १२३ ; स १४)।

अहिणय देखो **अभिणय** ; (कप्पू ; सण)।

अहिणव पुं [**अभिनव**] १ सेतुबन्ध काव्य का कर्ता राजा प्रवरसेन; (से १, ६)। २ नूतन, नया ; (णाया १, १ ; सुपा ३३०)।

अहिणवेमाण देखो **अहिणी**।

अहिणवेमाण देखो **अहिणु**।

अहिणाण देखो **अहिण्णाण** ; (भवि)।

अहिणिबोह पुं [**अभिनिबोध**] ज्ञान-विशेष, मतिज्ञान ; (पण्ण २६)।

अहिणिवस सक [**अभिनि+वस्**] वसना, रहना। वकृ—**अहिणिवसमाण** ; (मुद्रा २३१)।

अहिणिविट्ठ वि [**अभिनिविष्ट**] आग्रह-ग्रस्त ; (स २७३)।

अहिणिवेस पुं [**अभिनिवेश**] आग्रह, हठ ; (स ६२३ ; अभि ६५)।

अहिणिवेसि वि [**अभिनिवेशिन्**] आग्रही; (पि ४०५)।
अहिणी देखो **अभिणी**। वकृ—**अहिणवेमाण**; (सुर ३, १५०)।
अहिणील वि [**अभिनील**] हरा, हरा रंग वाला; (गउड)।
अहिणु सक [**अभि+नु**] स्तुति करना, प्रशंसना। वकृ—**अहिणवेमाण**; (सुर ३, ७७)।
अहिण्ण वि [**अभिन्न**] भेद-रहित, अ-पृथग्भूत; (गा २६५; ३८०)।
अहिण्णाण न [**अभिज्ञान**] चिन्ह, निशानी; (अभि १३)।
अहिण्णु वि [**अभिज्ञ**] निपुण, ज्ञाता; (हे १, ५६)।
अहितत्त वि [**अभितप्त**] तापित, संतापित; (उत्त २)।
अहित्ता देखो **अहिज्ज**=अधि+इ।
अहिदायग वि [**अभिदायक**] देने वाला, दाता; (सुपा ५४)।
अहिदेवया स्त्री [**अधिदेवता**] अधिष्ठाता देव; (सुपा ६०; कप्पू)।
अहिद्दव सक [**अभि+द्रु**] हैरान करना। अहिद्दवंति; (स ३६३)। भवि—अहिद्दविस्सइ; (स ३६६)।
अहिद्दुय वि [**अभिद्रुत**] हैरान किया हुआ; (स ५१४)।
अहिधाव सक [**अभि+धाव्**] दौड़ना, सामने दौड कर जाना। वकृ—**अहिधावंत**; (से १३, २६)।
अहिनाण } **अहिन्नाण** } देखो **अहिण्णाण**; (श्रा १६; सुपा २५०)।
अहिनिवेस देखो **अहिणिवेस**; (स १२५)।
अहिपच्चुअ सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना। अहिपच्चुअइ; (हे ४, २०९; षड्)। **अहिपच्चुअंति**; (कुमा)।
अहिपच्चुअ सक [**आ+गम्**] आना। अहिपच्चुअइ; (हे ४, १६३)।
अहिपच्चुइअ वि [**आगत**] आयात; (कुमा)।
अहिपच्चुइअ न [**दे**] अनुगमन, अनुसरण; (दे १, ४९)।
अहिप्पाय देखो **अभिप्पाय**; (महा; कप्पू)।
अहिप्पेय देखो **अभिप्पेय**; (उप १०३१ टी; स ३४)।
अहिभव देखो **अभिभव**; (गउड)।
अहिमंजु पुं [**अभिमन्यु**] अर्जुन के एक पुत्र का नाम; (कुमा)।
अहिमंतण वि [**अभिमन्त्रण**] मन्त्रित करना, मन्त्र से संस्कारना; (भवि)।
अहिमंतिअ वि [**अभिमन्त्रित**] मन्त्र से संस्कृत; (महा)।
अहिमज्जु } **अहिमण्णु** } **अहिमन्नु** } देखो **अहिमंजु** (कुमा; षड्)।
अहिमय वि [**अभिमत**] संमत, इष्ट; (स २००)।
अहिमयर पुं [**अहिमकर**] सूर्य, रवि; (पाअ)।
अहिमर पुं [**अभिमर**] धनादि के लोभ से दूसरे को मारने का साहस करने वाला; (सुर १, ६८)। २ गजादि-घातक; (विसे १७६४)।
अहिमाण पुं [**अभिमान**] गर्व, अहंकार; (प्रासू १७; सण)।
अहिमाणि वि [**अभिमानिन्**] अभिमानी, गर्विष्ठ; (स ४३१)।
अहिमास } **अहिमासग** } पुं [**अधिमास, °क**] अधिक मास; (आव १; निचू २०)।
अहिमुह वि [**अभिमुख**] संमुख, सामने रहा हुआ; (से १, ४४; पउम ८, १६७; गउड)।
अहिमुहिहूअ } **अहिमुहीहूअ** } वि [**अभिमुखीभूत**] सामने आया हुआ; (पउम १२, १०५; ४५, ६)।
अहिय वि [**अधिक**] १ ज्यादः, विशेष; (औप; जी २७; स्वप्न ४०)। २ क्रिवि. बहुत, अत्यन्त; (महा)।
अहिय वि [**अहित**] अहितकर, शत्रु, दुश्मन; (महा; सुपा ९९)।
अहिय वि [**अधीत**] पठित, अभ्यस्त; "अहियसुओ पडिवज्जिय एगल्लविहारपडिमं सो" (सुर ४, १५४)।
अहिया स्त्री [**अधिका**] भगवान् श्रीनमिनाथ की प्रथम शिष्या; (सम १५२)।
अहियाय देखो **अहिजाय**; (पाअ)।
अहियाइ देखो **अहिजाइ**; (षड्)।
अहियार पुं [**अभिचार**] शत्रु के वध के लिए किया जाता मन्त्रादि-प्रयोग; (गउड)।
अहियार देखो **अहिगार**; (स ५४३; पाअ; मुद्रा २६६; सट्टि ७ टी; भवि; दे ७, ३२)।
अहियारि देखो **अहिगारि**; (दे ६, १०८)।

अहियास सक [**अधि+आस्, अधि+सह्**] सहन करना, कष्टों को शान्ति से झेलना। अहियासइ, अहियासए, अहियासेइ ; (उव; महा)। कर्म—अहियासिज्जंति; (भग)। वकृ— **अहियासेमाण** ; (आचा)। संकृ—**अहियासित्ता, अहियासेत्तु** ; (सूअ १, ३, ४ ; आचा) हेकृ—**अहियासित्तए** ; (आचा)। कृ—**अहियासियव्व** ; (उप ५४३)।

अहियास वि [**अध्यास, अधिसह**] सहिष्णु; (बृह १)।

अहियासण न [**अध्यासन, अधिसहन**] सहन करना ; (उप ५३६ ; स १६२)।

अहियासण न [**अधिकाशन**] अधिक भोजन, अजीर्ण ; (ठा ६)।

अहियासिय वि [**अध्यासित, अधिषोढ**] सहन किया हुआ ; (आचा)।

अहिर पुं [**अभीर**] अहीर, गोवाला ; (गा ८११)।

अहिरम अक [**अभि+रम्**] क्रीड़ा करना, संभोग करना। अहिरमदि (शौ); (नाट)। हेकृ—**अभिरमिदुं** (शौ); (नाट)।

अहिरम्म वि [**अभिरम्य**] सुन्दर, मनोहर ; (भवि)।

अहिराम वि [**अभिराम**] सुन्दर, मनोरम ; (पाअ)।

अहिरामिण वि [**अभिरामिन्**] आनन्द देने वाला ; (सण)।

अहिराय पुं [**अधिराज**] १ राजा ; (बृह ३)। २ स्वामी, पति ; (सण)।

अहिराय न [**अधिराज्य**] राज्य, प्रभुत्व ; (सट्ठि ७)।

अहिरीअ वि [**अह्रीक**] निर्लज्ज, बेशरम ; (हे २, १०४)।

अहिरीअ वि [**दे**] निस्तेज, फीका ; (दे १, २७)।

अहिरीमाण वि [**दे, अहारिन्, अह्रीमनस्**] १ अमनोहर, मनको प्रतिकूल ; २ अलज्जाकारक ; " एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तितिक्खमाणे परिव्वए, जे य हिरी, जे य अहिरीमाणा " (आचा १, ६, २)।

अहिरूव वि [**अभिरूप**] १ सुन्दर, मनोहर; (अभि २११)। २ अनुरूप, योग्य ; (विक ३८)।

अहिरेम सक [**पृ**] पूरा करना, पूर्ति करना। अहिरेमइ ; (हे ४, १६९)।

अहिरोइअ वि [**दे**] पूर्ण ; (षड्)।

अहिरोहण न [**अधिरोहण**] ऊपर चढ़ना, आरोहण ; (मा ४०)।

अहिरोहि वि [**अधिरोहिन्**] ऊपर चढ़ने वाला ; (अभि १७०)।

अहिरोहिणी स्त्री [**अधिरोहिणी**] निःश्रेणी, सीढ़ी ; (दे ८, २६)।

अहिल वि [**अखिल**] सकल, सब ; (गउड ; रंभा)।

अहिलंख, **अहिलंघ**, **अहिलक्ख** } सक [**काङ्क्ष्**] चाहना, अभिलाष करना। अहिलंखइ, अहिलंघइ ; (हे ४, १९२)। " अहिलक्खंति मुअंति अ रइवावारं विलासिणीहिअआइं " (से १०, ५७)।

अहिलक्ख वि [**अभिलक्ष्य**] अनुमान से जानने योग्य ; (गउड)।

अहिलव सक [**अभि+लप्**] संभाषण करना, कहना। कवकृ—**अहिलप्पमाण** ; (स ८४)।

अहिलस सक [**अभि+लष्**] अभिलाष करना, चाहना। अहिलसइ ; (महा)। वकृ—**अहिलसंत** ; (नाट)।

अहिलसिय वि [**अभिलषित**] वाञ्छित ; (सुर ४, २४८)।

अहिलसिर वि [**अभिलाषिन्**] अभिलाषी ; इच्छुक ; (दे ६, ५८)।

अहिलाण न [**अभिलान**] मुख का बन्धन विशेष ; (णाया १, १७)।

अहिलाव पुं [**अभिलाप**] शब्द, अवाज ; (ठा २, ३)।

अहिलास पुं [**अभिलाष**] इच्छा, वाञ्छा, चाह ; (गउड)।

अहिलासि वि [**अभिलाषिन्**] चाहने वाला ; (नाट)।

अहिलिअ न [**दे**] १ पराभव ; २ क्रोध, गुस्सा ; (दे १, ५७)।

अहिलिह सक [**अभि+लिख्**] १ चिन्ता करना। २ लिखना। अहिलिहंति ; (मुद्रा १०८)। संकृ—**अहिलिहिअ** ; (वेणी २५)।

अहिलोयण न [**अभिलोकन**] ऊंचा स्थान ; (पण्ह २, ४)।

अहिलोल वि [**अभिलोल**] चपल, चञ्चल ; (गउड)।

अहिलोहिआ स्त्री [**अभिलोभिका**] लोलुपता, तृष्णा ; (से ३, ४७)।

अहिल्ल वि [**दे**] धनवान्, धनी ; (दे १, १०)।

अहिल्लिया स्त्री [**अहिल्या**] एक सती स्त्री ; (पण्ह १, ४)।

अहिव वि [**अधिप**] १ ऊपरी, मुखिया ; (उप ७२८ टी)। २ मालिक, स्वामी ; (गउड)। ३ राजा, भूप ; " दुद्धाहिवा दंडपरा हवंति " (गाय ८)।

अहिवइ वि [**अधिपति**] ऊपर देखो ; (गाया १, ८ ; गउड ; सुर ६, ६२)।

अहिवंजु देखो **अहिमंजु** ; (षड्)।

अहिवंदिय वि [**अभिवन्दित**] नमस्कृत ; (स ६४१)।

अहिवज्जु देखो **अहिमंजु** ; (षड्)।

अहिवड सक [**अधि+पत्**] आना। वकृ—**अहिवडंत** ; (राज)।

अहिवड्ढ देखो **अभिवड्ढ**। अहिवड्ढामो ; (कप्प)।

अहिवड्ढिय वि [**अभिवर्धित**] बढ़ाया हुआ ; (स २४७)।

अहिवण्ण वि [**दे**] पीला और लाल रंग वाला ; (दे १, ३३)।

अहिवण्णु, **अहिवन्नु** } देखो **अहिमंजु** ; (षड् ; कुमा)।

अहिवस सक [**अधि+वस्**] निवास करना, रहना। वकृ—**अहिवसंत** ; (स २०८)।

अहिवाइय वि [**अभिवादित**] अभिनन्दित ; (स ३१४)।

अहिवायण देखो **अभिवायण** ; (भवि)।

अहिवाल वि [**अधिपाल**] पालक, रक्षक ; (भवि)।

अहिवास पुं [**अधिवास**] वासना, संस्कार ; (दे ७, ८७)।

अहिवासण न [**अधिवासन**] संस्काराधान ; (पंचा ८)।

अहिविण्णा स्त्री [**दे**] कृत-सापत्न्या स्त्री, उपपत्नी ; (दे १, २५)।

अहिसंका स्त्री [**अभिशङ्का**] भ्रम, संदेह ; (पउम ४२, ३१)।

अहिसंजमण न [**अभिसंयमन**] नियन्त्रण ; (गउड)।

अहिसंधि पुंस्त्री [**अभिसंधि**] अभिप्राय, आशय ; (पण्ह १, २ ; स ४६३)।

अहिसंधि पुं [**दे**] वारंवार ; (दे १, ३२)

अहिसर सक [**अभि+सृ**] १ प्रवेश करना। २ अपने दयित—प्रिय के पास जाना। प्रयो,—कर्म—अभिसारीअदि (शौ); (नाट)। हेकृ—**अभिसारिदुं** (शौ); (नाट)।

अहिसरण न [**अभिसरण**] प्रिय के समीप गमन ; (स ५३३)।

अहिसरिअ वि [**अभिसृत**] १ प्रिय के समीप गत ; २ प्रविष्ट ; (आवम)।

अहिसहण न [**अधिसहन**] सहन करना ; (ठा ६)।

अहिसाम वि [**अभिशाम**] काला, कृष्ण वर्ण वाला ; (गउड)।

अहिसाय वि [**दे**] पूर्ण, पूरा ; (दे १, २०)।

अहिसारण न [**अभिसारण**] १ आनयन ; (से १०, ६२)। २ पति के लिए संकेत स्थान पर जाना ; (गउड)।

अहिसारिअ वि [**अभिसारित**] आनीत ; (से १, १३)।

अहिसारिआ स्त्री [**अभिसारिका**] नायक को मिलने के लिए संकेत स्थान पर जाने वाली स्त्री ; (कुमा)।

अहिसिअ न [**दे**] १ अनिष्ट ग्रह की आशंका से खेद करना—रोना ; (दे १, ३०)। २ वि. अनिष्ट ग्रह से भय-भीत ; (षड्)।

अहिसिंच देखो **अभिसिंच**। अहिसिंचइ ; (महा)। संकृ—**अहिसिंचिऊण** ; (स ११६)।

अहिसिंचण न [**अभिषेचन**] अभिषेक ; (सम १२५)।

अहिसित्त देखो **अभिसित्त** ; (महा ; सुर ८, ११६)।

अहिसेअ देखो **अभिसेअ** ; (सुपा ३७ ; नाट)।

अहिसोढ वि [**अधिसोढ**] सहन किया हुआ ; (उप १४७ टी)।

अहिस्संग पुं [**अभिष्वङ्ग**] आसक्ति ; (नाट)।

अहिहय वि [**अभिहत**] १ आघात-प्राप्त ; (से ५, ७७)। २ मारित, व्यापादित ; (से १४, १२)।

अहिहर सक [**अभि+हृ**] १ लेना। २ ऊठाना। ३ अक. शोभना, विराजना। ४ प्रतिभास होना, लगना।
" वीयाभरणा अकयप्पसाहणा अहिहरंति रमणीओ।
सुण्णाओ व कुसुमफलंतरम्मि सहयारवल्लीओ ॥
इह हि हलिद्दाहयदविडसामलीगंडमंडलानीलं।
फलमसअलपरिणामावलंबि अहिहरइ चूयाण" (गउड)।

अहिहर न [**दे**] १ देव-कुल, पुराना देव-मन्दिर; २ वल्मीक; (दे १, ५७)।

अहिहव सक [**अभि+भू**] पराभव करना, जितना। अहिहवंति ; (स १६८)। कर्म—अहिहवीयंति ; (स ६६८)।

अहिहाण न [**दे. अभिधान**] वर्णना, प्रशंसा ; (दे १, २१)।
अहिहाण देखो **अभिहाण** ; (स १६५ ; गउड ; सुर ३, २५ ; पाअ)।
अहिहू देखो **अहिहव**। कवकृ—**अहिहूअमाण** ; (अभि ३७)।
अहिहूअ वि [**अभिभूत**] पराभूत, परास्त ; (दे १, १५८)।
अही सक [**अधि+इ**] पढ़ना। कर्म—अहीयइ ; (विसे ३१६६)।
अही स्त्री [**अही**] नागिन, स्त्री-साँप ; (जीव २)।
अहीकरण न [**अधिकरण**] कलह, झगड़ा ; (निचू १०)।
अहीगार देखो **अहिगार** ; "सेसेसु अहीगारो, उवगरण-सरीरमुक्खेसु" (आचानि २५४)।
अहीण वि [**अधीन**] आयत्त, आधीन ; (पण्ह २, ४)।
अहीण वि [**अ-हीन**] अन्यून, पूर्ण ; (विपा १, १ ; उवा)।
अहीय वि [**अधीत**] पठित, अभ्यस्त "वेया अहीया ण भवंति ताणं" (उत्त १५, १२ ; गाया १, १४ ; सं ७८)।
अहीरग वि [**अहीरक**] तन्तु-रहित (फलादि) ; (जी १२)।
अहीरु वि [**अभीरु**] निडर, निर्भीक ; (भवि)।
अहीसर पुं [**अधीश्वर**] परमेश्वर ; (प्रामा)।
अहुआसेय वि [**अहुताशेय**] अग्नि के अयोग्य; (गउड)।
अहुणा अ [**अधुना**] अभी, इस समय, आजकल ; (ठा ३, ३ ; नाट)।
अहुलण वि [**अमार्जक**] अ-नाशक ; (कुमा)।
अहुल्ल वि [**अफुल्ल**] अ-विकसित ; (कुमा)।
अहुवंत वकृ [**अभवत्**] नहीं होता हुआ ; (कुमा)।
अहूण देखो **अहीण** = अहीन ; (कुमा)।
अहूव वि [**अभूत**] जो न हुआ हो। °**पुव्व** वि [°**पूर्व**] जो पहले कभी न हुआ हो ; (कुमा)।
अहे अ [**अधस्**] नीचे ; (आचा)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] आधाकर्म, भिक्षा का एक दोष ; (पिंड)। °**काय** पुं [°**काय**] शरीर का नीचला हिस्सा ; (सूअ १, ४, १)। °**चर** वि [°**चर**] बिल आदि में रहने वाले सर्प वगैरः जन्तु ; (आचा)। °**तारग** पुं [°**तारक**] पिशाच-विशेष ; (पराण १)। °**दिसा** स्त्री [°**दिक्**] नीचे की दिशा ; (आचा)। °**लोग** पुं [°**लोक**] पाताल-लोक ; (ठा २, २)। °**वाय** पुं [°**वात**] नीचे वहने वाला वायु ; (पराण १)। २ अपान-वायु, पर्दन ; (आवम)। °**वियड** वि [°**विकट**] भित्त्यादि-रहित स्थान, खुल्ला स्थान ; "तंसि भगवं अपडिन्ने अहे-वियडे अहियासए दविए" (आचा)। °**सत्तमा** स्त्री [°**सप्तमी**] सातवीं या अन्तिम नरक-भूमि ; (सम ४१ ; णाया १, १६ ; १६)। देखो **अहो** = अधस्।
अहे देखो **अह** = अथ ; (भग १, ६)।
अहेउ पुं [**अहेतु**] १ सत्य हेतु का विरोधी, हेत्वाभास ; (ठा ५, १)। २ वि. कारण-रहित, नित्य ; (सूअ १, १, १)। °**वाय** पुं [°**वाद**] आगम-वाद, जिसमें तर्क—हेतु को छोड़ कर केवल शास्त्र ही प्रमाण माना जाता हो ऐसा वाद ; (सम्म १४०)।
अहेउय वि [**अहेतुक**] हेतु-वर्जित, निष्कारण ; (पउम ६३, ४)।
अहेसणिज्ज वि [**यथैषणीय**] संस्कार-रहित, कोरा ; "अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा" (आचा)।
अहेसर पुं [**अहरीश्वर**] सूर्य, सूरज ; (महा)।
अहो देखो **अह** = अधस् ; (सम ३६ ; ठा २, २ ; ३, १ ; भग ; णाया १, १ ; पउम १०२, ८१ ; आव ३)। °**करण** न [°**करण**] कलह, झगड़ा ; (निचू १०)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] १ नरक या तिर्यञ्च योनि। २ अवनति ; (पउम ८०, ४६)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] दुर्गति में जाने वाला ; (सम १५३ ; श्रा ३३)। °**तरण** न [°**तरण**] कलह, झगड़ा ; (निचू १०)। °**मुह** वि [°**मुख**] अधोमुख, अवनत-मुख, लज्जित ; (सुर २, १५८ ; ३, १३५ ; सुपा २४२)। °**लोइय** वि [°**लौकिक**] पाताल लोक से संबन्ध रखने वाला ; (सम १४२)। °**हि** वि [°**अवधि**] १ नीचला दरजा का अवधिज्ञान वाला ; (राय)। २ पुंस्त्री. नीचला दरजा का अवधिज्ञान, अवधिज्ञान का एक भेद ; (ठा २, २)।
अहो अ [**अहनि**] दिवस में, "अहो य राओ य सिवाभि-लासिणो" (पउम ३१, १२८ ; पण्ह २, १)।
अहो अ [**अहो**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ विस्मय, आश्चर्य ; २ खेद, शोक ; ३ आमन्त्रण, संबोधन ; ४ वितर्क ; ५ प्रशंसा ; ६ असूया, द्वेष ; (हे २, २१७ ;

आचा ; गउड)। °**दाण** न [°**दान**] आश्चर्य-कारक दान ; (उत्त २ ; कप्प)। °**पुरिसिगा, °पुरिसिया** स्त्री [°**पुरुषिका**] गर्व, अभिमान ; (स १३३ ; २८८)। °**विहार** पुं [°**विहार**] संयम का आश्चर्य-जनक अनुष्ठान ; (आचा)।

अहो° पुंन [**अहन्**] दिन दिवस ; (पिंग)। °**णिस निस, निसि** न [°**निश**] रात और दिन, दिन-रात, " णिरए णेरइयाणं अहोणिसं पच्चमाणाणं " (सुअ १, ५, १ ; श्रा ५०) " अंतो अहोनिसिस्स उ " (विसे ८७३)। °**रत्त** पुं [°**रात्र**] १ दिन और रात्रि परिमित काल, आठ प्रहर ; (ठा २, ४) ; " तिण्णि अहोरत्ता पुण न खामिया कयंतेणं " (पउम ४३, ३१)। २ चार-प्रहर का समय ; (जो २)। °**राइया** स्त्री [°**रात्रिकी**] ध्यान-प्रधान अनुष्ठान-विशेष ; (पंचा १८ ; आव ४ ; सम २१)। °**राइंदिय** न [°**रात्रिन्दिव**] दिन-रात ; (भग ; औप)।

अहोरण न [**दे**] उत्तरीय वस्त्र, चद्दर ; (दे १, २५ ; गा ७७१)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवे** अयाराइसद्दसंकलणो णाम पढमो तरंगो समत्तो।



आ

आ पुं [**आ**] १ प्राकृत वर्णमाला का द्वितीय स्वर-वर्ण; (प्रामा)। **इन** अर्थों का सूचक अव्यय;—२ अ. मर्यादा, सीमा; जैसे—'आसमुद्द' (गउड; विसे ८७४)। ३ अभिविधि, व्याप्ति; जैसे—"आमूलसिरं फलिहथंभाओ" (कुमा; विसे ८७४)। ४ थोडाई, अल्पता; जैसे—"आणीलकक्करुद्दतुरं वरणं" (गउड); 'आअंब' (से ६, ३१; विसे १२३५)। ५ समन्तात्, चारों ओर; जैसे—"आणुकंडलमा विवइण्णसरसकवरीविलंघियंसम्मि" (गउड; विसे ८७५)। ६ अधिकता, विशेषता; जैसे—'आदीण' (सूअ १, ५)। ७ स्मरण, याद; (षड्)। ८ विस्मय, आश्चर्य; (ठा ५)। ९-१० क्रिया-शब्द के योग में अर्थ-विस्तृति और विपर्यय; जैसे—'आरुहइ' 'आगच्छंत' (षड्; कुमा)। ११ वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है; (णाया १, २)। १२ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (षड् २, १, ७६)।

आ अ [**आस्**] **इन** अर्थों का सूचक अव्यय; १ खेद; (गा ६२६)। २ दुःख; ३ गुस्सा, क्रोध; (कप्पू)।

आ सक [**या**] जाना। "अव्वो ण आमि छेत्तं" (गा ८२१)।

आअ वि [**दे**] १ अत्यंत, बहुत; २ दीर्घ, लम्बा; ३ विषम, कठिन; ४ न. लोह, लोहा; ५ मुसल, मूषल; (दे १, ७३)।

आअ वि [**आगत**] आया हुआ; "पत्थंति आअरोसा" (से १२, ६८; कुमा)।

आअअ वि [**आगत**] आया हुआ; (से ३, ४; १२, १८; गा ३०१)।

आअअ वि [**आयत**] लम्बा, विस्तीर्ण; (से ११, ११); "मरगयसूईविद्धं व मोत्तिअं पिअइ आअअग्गीवो। मोरो पाउसआले तणग्गलग्गं उअअबिंदु" (गा ३६४)।

आअंछ सक [**कृष्**] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। आअंछइ; (षड्)।

आअंतव्व देखो **आगम**=आ+गम्।

आअंतुअ देखो **आगंतुय**; (स्वप्न २०; अभि १२१)।

आअंपिअ देखो **आकंपिय**; (से १०, ५१)।

आअंब वि [**आताम्र**] थोडा लाल; (से ६, ३१; सुर ३, ११०)।

°**आअंब** पुं [**कादम्ब**] हंस, पक्षि-विशेष; (से ६, ३१)।

आअक्ख सक [**आ+चक्ष्**] कहना, बोलना, उपदेश करना। आयक्खाहि; (भग)। कर्म—आअक्खीअदि (शौ); (नाट)। भूकृ—आअक्खिद (शौ); (नाट)।

आअच्छ देखो **आगच्छ**। आअच्छइ; (षड्)। संकृ—**आअच्छिअ, आअच्छिऊण**; (नाट; पि ५८१; ५८४)।

आअड्ड अक [**दे**] परवश होकर चलना। आअड्डइ; (दे १, ६६)।

आअड्ड अक [**व्या+पृ**] व्यापृत होना, काम में लगना। आअड्डइ; (सण; षड्)। आअड्डेइ; (हे ४, ८१)।

आअड्डिअ वि [**दे**] परवश-चलित, दूसरे की प्रेरणा से चला हुआ; (दे १, ६८)।

आअड्डिअ वि [**व्यापृत**] कार्य में लगा हुआ; (कुमा)।

आअण्णण देखो **आयन्नण**; (गा ६५६)।

आअत्ति देखो **आयइ**; (पिंग)।

आअम देखो **आगम**; (अच्चु ७; अभि १८४; गा ४७६; स्वप्न ४८; मुद्रा ८३)।

आअमण देखो **आगमण**; (से ३, २०; मुद्रा १८७)।

आअर सक [**आ+दृ**] आदर करना, सत्कार करना। आअरइ; (षड्)।

आअर न [**दे**] १ उदूखल, ऊखल; २ कूर्च; (दे १, ७४)।

आअल्ल पुं [**दे**] १ रोग, बिमारी; (दे १, ७५; पाअ)। २ वि. चंचल, चपल; (दे १, ७५)। देखो **आयल्लया**।

आअल्लि } स्त्री [**दे**] झाड़ी, लताओं से निबिड प्रदेश; **आअल्ली** } (दे १, ६१)।

आअव्व अक [**वेप्**] काँपना। आअव्वइ; (षड्)।

आआमि देखो **आगामि**; (अभि ८१)।

आआस देखो **आयंस**; (षड्)।

आआसतअ (**दे**) देखो **आयासतल**; (षड्)।

आइ सक [**आ+दा**] ग्रहण करना, लेना। आइएज्जा; (सूअ १, ७, २६)। आइयत्ति; (भग)। कर्म—आइयइ; (कस)। संकृ—**आइत्तूण; आयइत्ता, आइत्तु**; (आचा; सूअ १, १२; पि ५७७)। प्रयो—आइयावेंति; (सूअ २, १)। कृ—**आइयव्व**; (कस)।

आइ पुं [**आदि**] १ प्रथम, पहला; (सुर २, १३२)। २ वगैरः, प्रभृति; (जी ३)। ३ समीप, पास। ४ प्रकार, भेद। ५ अवयव, अंश। ६ प्रधान, मुख्य; "इअ आसंसंति निसीह! सिंहदत्ताइणो दिआ तुज्झ"

(कुमा ; सुअ १, ५)। ७ उत्पत्ति ; (सम्म ६५)। °गर वि [°कर] १ संसार, दुनयाँ; (सुअ १, ७)। °गर वि [°कर] १ आदि-प्रवर्तक; (सम१)। २ पुं. भगवान् ऋषभदेव; (पउम २८, ३६)। °गुण पुं [°गुण] सहभावी गुण; (आव ४)। °णाह पुं [°नाथ] भगवान् ऋषभदेव ; (आवम)। °तित्थयर पुं [°तीर्थकर] भगवान् ऋषभदेव; (णंदि)। °देव पुं [°देव] भगवान् ऋषभदेव ; (सुर २, १३२)। °म वि [°म] प्रथम, आद्य, पहला; (आव ५)। °मूल न [°मूल] मुख्य कारण ; (आचा)। °मोक्ख पुं [°मोक्ष] संसार से छूटकारा, मोक्ष ; २ शीघ्र ही मुक्त होने वाली आत्मा ; " इत्थीओ जे ण सेवंति आइमोक्खा हि ते जणा " (सुअ १, ७)। °राय पुं [°राज] भगवान् ऋषभदेव ; (ठा ६)। °वराह पुं [°वराह] कृष्ण, नारायण ; (से ७, २)।

आइ स्त्री [**आजि**] संग्राम, लडाई ; (संथा)।

आइअंतिय देखो **अच्चंतिय** ; (भग १२, ६)।

आइं अ [**दे**] वाक्य की शोभा के लिए प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (भग ३, २)।

आइंग न [**दे**] वाद्य-विशेष ; (पउम ३, ८७ ; ६६, ६)।

आइंच देखो **आयंच**। आइंचइ ; (उवा)।

आइंछ देखो **आअंछ**। आइंछइ ; (हे ४, १८७)।

आइक्ख सक [**आ+चक्ष्**] कहना, उपदेश देना, बोलना ; आइक्खइ, (उवा)। वकृ—**आइक्खमाण** ; (गाया १, १२)। हेकृ—**आइक्खित्तए** ; (उवा)।

आइक्खग वि [**आख्यायक**] कहने वाला, वक्ता ; (पण्ह २, ४)।

आइक्खण न [**आख्यान**] कथन, उपदेश ; (बृह ३)।

आइक्खिय वि [**आख्यात**] उक्त, उपदिष्ट ; (स ३२)।

आइक्खिया स्त्री [**आख्यायिका**] १ वार्ता, कहानी ; (गाया १, १)। २ एक प्रकार की मैली विद्या, जिससे चाण्डालनी भूत-काल आदि की परोक्ष बातें कहती है ; (ठा ६)।

आइग्ग वि [**आविग्न**] उद्विग्न, खिन्न ; (पाअ)।

आइग्घ सक [**आ+घ्रा**] सूँघना। आइग्घइ, आइग्घाइ ; (षड्)। हेकृ—**आइग्घिउं** ; (कुमा)।

आइच्च अ [**दे**] कदाचित्, कोइवार ; (पएण १७—पत्र ४८५)।

आइच्च पुं [**आदित्य**] १ सूर्य, सूरज, रवि ; (सम ५६)। २ लोकान्तिक देव-विशेष ; (गाया १, ८)। ३ न. देवविमान-विशेष ; ४ पुं. तन्निवासी देव ; (पव)। ५ वि. आद्य, प्रथम ; (सुज्ज २०)। ६ सूर्य-संबन्धी ; " आइच्चे णं मासे " (सम ५६)। °गइ पुं [°गति] राक्षस वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, २६१)। °जस पुं [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पुत्र, जिससे इक्ष्वाकु वंश की शाखारूप सूर्यवंश की उत्पत्ति हुई थी ; (पउम ५, ३ ; सुर २, १३४)। °पभ न [°प्रभ] इस नाम का एक नगर ; (पउम ५, ८२)। °पीढ न [°पीठ] भगवान् ऋषभदेव का एक स्मृति-चिन्ह—पादपीठ; (आवम)। °रक्ख पुं [°रक्ष] इस नाम का लङ्का का एक राज-पुत्र ; (पउम ५, १६६)। °रय पुं [°रजस्] वानर वंश का एक विद्याधर राजा ; (पउम ८, २३४)।

आइज्ज देखो **आएज्ज** ; (नव १५)।

आइज्जमाण वकृ [**आर्द्रीक्रियमाण**] आर्द्र किया जाता, भींजाया जाता ; (आचा)।

आइज्जमाण देखो **आढा=आ+दृ**।

आइट्ठ वि [**आदिष्ट**] १ उक्त, उपदिष्ट ; (सुर ४, १०१)। २ विवक्षित ; (सम्म ३८)।

आइट्ठ वि [**आविष्ट**] अधिष्ठित, आश्रित ; (कस)।

आइट्ठि स्त्री [**आदिष्टि**] धारणा ; (ठा ७)।

आइड्ढि स्त्री [**आत्मर्द्धि**] आत्मा की शक्ति, आत्मीय सामर्थ्य ; (भग १०, ३)।

आइड्ढिय वि [**आत्मर्द्धिक**] आत्मीय-शक्ति-संपन्न ; (भग १०, ३)।

आइण्ण देखो **आइन्न** ; (औप ; भग ७, ८ ; हे ३, १३४)।

आइत्त वि [**आदीप्त**] थोड़ा प्रकाशित—ज्वलित ; (गाया १, १)।

आइत्त वि [**आयत्त**] अधीन, वशीभूत ; " तुज्झ सिरी जा परस्स आइत्ता " (जीवा १०)।

आइत्तु वि [**आदातृ**] ग्रहण करने वाला ; (ठा ७)।

आइत्तूण देखो **आई=आ+दा**।

आइदि स्त्री [**आकृति**] आकार ; (प्राप्र ; स्वप्न २०)।

आइद्ध वि [**आविद्ध**] १ प्रेरित ; (से ७, १०)। २ स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (से ३, ३५)। ३ पहना हुआ, परिहित ; (आक ३८)।

आइद्ध वि [**आदिग्ध**] व्याप्त ; (णाया १, १)।
आइन्न वि [**आकीर्ण**] १ व्याप्त, भरा हुआ ; (सुर १, ४६ ; ३, ७१)। २ पुं. वस्त्र-दायक कल्प-वृक्ष ; (ठा १०)।
आइन्न वि [**आचीर्ण**] आचरित, विहित ; (आचा ; चैत्य ४६)।
आइन्न वि [**आदीर्ण**] उद्विग्न, खिन्न ; " आइन्नाइं पियराइं तीए पुच्छंति दिव्व-देवन्नं " (सुपा ६९७)।
आइन्न पुं [**दे**] जात्याश्व, कुलीन घोड़ा ; (पण्ह १, ४)।
आइप्पण न [**दे**] १ आटा ; (गा १६६; दे १, ७८)। २ घर को शोभा के लिये जो चूना आदि की सफेदी दी जाती है वह ; ३ चावल के आटा का दूध ; ४ घर का मण्डन—भूषण ; (दे १, ७८)।
आइय (अप) वि [**आयात**] आया हुआ ; (भवि)।
आइय वि [**आचित**] १ संचित, एकत्रीकृत ; २ व्याप्त, आकीर्ण ; ३ ग्रथित, गुम्फित ; (कप्प; औप)।
आइय वि [**आदृत**] आदर-प्राप्त ; (कप्प)।
आइयण न [**आदान**] ग्रहण, उपादान ; (पण्ह १, ३)।
आइयणया स्त्री [**आदान**] ग्रहण, उपादान; (ठा २,१)।
आइरिय देखो **आयरिय**=आचार्य ; (हे १, ७३)।
आइल वि [**आविल**] मलिन, कलुष, अ-स्वच्छ; (पण्ह १, ३)।
आइल्ल } **आइल्लिय** } वि [**आदिम**] प्रथम, पहला ; (सम १२६ ; भग)। " आइल्लियासु तिसु लेसासु " (पण्ण १७ ; विसे २६२४)।
आइवाहिअ पुं [**आतिवाहिक**] देव-विशेष, जो मृत जीव को दूसरे जन्म में ले जाने के लिए नियुक्त है ;
" काहे अमाणवंता अग्गिमुहा आइवाहिआ तंव पुरिसा।
अइलंघेहिंति ममं अच्चुआ ! तमगहणनिउणयरकंतारं "
(अच्चु ८५)।
आइस सक [**आ+दिश्**] आदेश करना, हुकुम करना, फरमाना। आइसइ ; (पि ४७१)। वकृ—**आइसंत** ; (सुर १६, १३)।
आइसण वि [**दे**] उज्झित, परित्यक्त ; (दे १, ७१)।
आईण वि [**आदीन**] १ अतिदीन, बहुत गरीब ; (सूअ १, ५)। २ न. दूषित भिक्षा ; (सूअ १, १०)।
आईण पुं [**दे**] जातिमान् अश्व, कुलीन घोड़ा ; (णाया १, १७)।

आईण } **आईणग** } न [**आजिन °क**] १ चमडे का बना हुआ वस्त्र ; (णाया १, १; आचा)। २ पुं. द्वीप-विशेष ; ३ समुद्र-विशेष ; (जीव ३)। **°भद्द** पुं [**°भद्र**] आजिन-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। **°महाभद्द** पुं [**°महाभद्र**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (जीव ३)। **°महावर** पुं [**°महावर**] आजिन और आजिनवर-नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। **°वर** पुं [**°वर**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; ३ आजिन और आजिनवर समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। **°वरभद्द** पुं [**°वरभद्र**] आजिनवर-द्वीप का अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। **°वरमहाभद्द** पुं [**°वरमहाभद्र**] देखो अनन्तर उक्त अर्थ; (जीव ३)। **°वरोभास** पुं [**°वरावभास**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (जीव ३)। **°वरोभासभद्द** पुं [**°वरावभासभद्र**] उक्त द्वीप का अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। **°वरोभासमहाभद्द** पुं [**°वरावभासमहाभद्र**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (जीव ३)। **°वरोभासमहावर** पुं [**°वरावभासमहावर**] आजिनवरावभास-नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। **°वरोभासवर** [**°वरावभासवर**] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ ; (जीव ३)।
आईनीइ स्त्री [**आदिनीति**] साम-रूप पहली राज-नीति ; (सुपा ४६२)।
आईय देखो **आइ**=आदि ; (जी ७ ; काल)।
आईय वि [**आतीत**] १ विशेष-ज्ञात ; २ संसार-प्राप्त, संसार में घुमने वाला ; (आचा)।
आईल पुंन [**आचील**] पान का थूंकना ; (पव)।
आईव अक [**आ+दीप्**] चमकना। वकृ—**आईवमाण** ; (महानि)।
आउ स्त्री [**दे**] १ पानी, जल, (दे १, ६१)। २ इस नाम का एक नक्षत्र-देव; (ठा २, ३)। **°काय, °क्काय** पुं [**°काय**] जल का जीव ; (उप ६८५ ; पण्ण १)। **°काइय, °क्काइय** पुं [**°कायिक**] जल का जीव; (पण्ण १; भग २४, १२)। **°जीव** पुं [**°जीव**] जल का जीव (सूअ १, ११)। **°बहुल** वि [**°बहुल**] १ जल-प्रचुर ; २ रत्नप्रभा पृथिवी का तृतीय काण्ड ; (सम ८८)।
आउ अ [**दे**] अथवा, या; "आउ पलोहेइ मं अज्जउत्त-वेसेण कोइ अमाणुसो, आउ सच्चयं चेव अज्जउत्तोत्ति" (स ३४६)।

आउ } न [**आयुष्**] १ आयु, जीवन-काल ; (कुमा ;
आउअ } रयण १६)। २ उम्मर, वय ; (गा ३२१)। ३ आयु के कारण-भूत कर्म-पुद्गल; (ठा ८)। °**क्काल** पुं [°**काल**] मरण, मृत्यु ; (आचा)। °**क्खय** पुं [°**क्षय**] मरण, मौत ; (विपा १, १०)। °**क्खेम** न [°**क्षेम**] आयु-पालन, जीवन ; (आचा)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] वैद्यक-शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र; (आव)। °**व्वेय** पुं [°**वेद**] वैद्यक, चिकित्सा-शास्त्र ; (विपा १, ७)।

आउंच सक [**आ+कुञ्चय्**] संकुचित करना, समेटना। संकृ—**आउंचिवि** (अप); (भवि)।

आउंचण न [**आकुञ्चन**] संकोच, गात्र-संक्षेप ; (कस)।

आउंचणा स्त्री [**आकुञ्चना**] ऊपर देखो; (धर्म ३)।

आउंचिअ वि [**आकुञ्चित**] १ संकुचित ; २ ऊँचा कर धारण किया हुआ ; (से ६, १७)।

आउंजि वि [**आकुञ्चिन्**] १ संकुचने वाला ; २ निश्चल ; (गउड)।

आउंट देखो **आउट्ट** = आ-वर्तय् । आउंटावेमि ; (णाया १, ५)।

आउंटण न [**आकुञ्चन**] संकोच, गात्र-संक्षेप ; (हे १, १७७)।

आउंबालिय वि [**दे**] आप्लावित, डुबोया हुआ, पानी आदि द्रव पदार्थ से व्याप्त ; (पाअ)।

आउक्क } देखो **आउ**=आयुष् ; (सुपा ६५५ ; भग
आउग } ६, ३)।

आउच्छ सक [**आ+प्रच्छ्**] आज्ञा लेना, अनुज्ञा लेना। वकृ—**आउच्छंत, आउच्छमाण** ; (से १२, २१ ; ४७)। संकृ—**आउच्छिऊण, आउच्छिय** ; (महा ; सुपा ६१)।

आउच्छण न [**आप्रच्छन**] आज्ञा, अनुज्ञा ; (गा ४७; ५००)।

आउच्छिय वि [**आपृष्ट**] जिसकी आज्ञा ली गई हो वह ; (से १२, ६४)।

आउज्ज देखो **आओज्ज**=आतोद्य ; (हे १, १५६)।

आउज्ज पुं [**आवर्ज**] १ संमुख करना ; २ शुभ क्रिया ; (पण्ण ३६)।

आउज्ज वि [**आवर्ज्य**] सम्मुख करने योग्य ; (आवम)।

आउज्ज वि [**आयोज्य**] जोडने योग्य, संबन्ध करने योग्य ; (विसे ७४; ३२६६)।

आउज्जण न [**आवर्जन**] ऊपर देखो।

आउज्जिय वि [**आतोद्यिक**] वाद्य बजाने वाला ; (सुपा १६६)।

आउज्जिय वि [**आयोगिक**] उपयोग वाला, सावधान; (भग २, ५)।

आउज्जिय वि [**आवर्जित**] संमुख किया हुआ ; (पण्ण ३६)।

आउज्जिया स्त्री [**आवर्जिका**] क्रिया, व्यापार ; (आवम)। °**करण** न [°**करण**] शुभ-व्यापार विशेष ; (पण्ण ३६)।

आउज्जीकरण न [**आवर्जीकरण**] शुभ व्यापार-विशेष; (पण्ण ३६)।

आउट्ट सक [**आ+वृत्**] १ करना। २ भुलाना। ३ व्यवस्था करना। ४ अक. संमुख होना, तत्पर होना। ५ निवृत्त होना। ६ घुमना, फिरना। आउट्टइ, आउट्टंति, (भग ७, १ ; निचू ३)। वकृ—**आउट्टंत**; (सम २२)। संकृ—**आउट्टिऊण** ; (राज)। हेकृ—**आउट्टित्तए** ; (कप्प)। प्रयो—आउट्टावेमि ; (णाया १, ५ टी)।

आउट्ट सक [**आ+कुट्ट्**] छेदन करना, हिंसा करना। आउट्टामो ; (आचा)।

आउट्ट वि [**आवृत्त**] १ निवृत्त, पीछे फिरा हुआ ; (उप ६६८); "दप्पकए वाउट्टे जइ खिंसति तत्थवि तहेव" (बृह ३)। २ भ्रामित, भुलाया हुआ ; (उप ६००)। ३ ठीक २ व्यवस्थित; (आचा)। ४ कृत, विहित; (राज)।

आउट्ट पुं [**आकुट्ट**] छेदन, हिंसा ; (सूअ १, १)।

आउट्टण न [**आकुट्टन**] हिंसा ; (सूअ १, १)।

आउट्टण न [**आवर्त्तन**] १ आराधन, सेवा, भक्ति ; (वव १, ६)। २ अभिमुख होना, तत्पर होना ; (सूअ १, १०)। ३ अभिलाषा, इच्छा ; (आचा)। ४ घुमाना, भ्रमण। ५ निवृत्ति ; (सूअ १, १०)। ६ करना, क्रिया, कृति ; (राज)।

आउट्टणया स्त्री [**आवर्त्तनता**] ऊपर देखो ; (णंदि)।

आउट्टणा स्त्री [**आवर्त्तना**] ऊपर देखो ; (निचू २)।

आउट्टावण न [**आवर्त्तन**] अभिमुख करना, तत्पर करना; (आचा २)।

आउट्टि स्त्री [**आकुट्टि**] १ हिंसा, मारना ; (आचा ; उव)। २ निर्दयता ; (आप १८)।

आउट्टि स्त्री [**आवृत्ति**] देखो **आउट्टण**=आवर्तन ; (वव १, १ ; २, १० ; सूअ १, १ ; आचा) । ५ फिर २ करना, पुनः पुनः क्रिया ; (सुज्ज १२) ।

आउट्टि वि [**आकुट्टिन्**] १ मारने वाला, हिंसक ; " जाणं काएण णाउट्टी " (सूअ) । २ अकार्य-कारक ; (दसा)।

आउट्टि वि [**दे**] साढ़े तीन ; " एगे पुण एवमाहंसु ता आउट्टिं चंदा आउट्टिं सूरा सव्वलोयं ओभासेंति ; (सुज्ज १६) ।

आउट्टिय देखो **आउट्ट**=आवृत्त ; (दसा) ।

आउट्टिय पुं [**आकुट्टिक**] दण्ड-विशेष; (भत्त २७) ।

आउट्टिय वि [**आकुट्टित**] छिन्न, विदारित ; (सूअ) ।

आउट्ठ वि [**आतुष्ट**] संतुष्ट ; (निचू १) ।

आउड सक [**आ+जोडय्**] संबन्ध करना, जोडना। कवकृ—**आउडिज्जमाण** ; (भग ५, ४) ।

आउड सक [**आ+कुट्**] १ कुटना, पीटना । २ ताडन करना, आघात करना । आउडेइ ; (जं ३)। कवकृ— **आउडिज्जमाण** ; (भग ५, ४) ।

आउड सक [**लिख्**] लिखना, "इति कट्टु णामगं आउडेइ" संकृ—**आउडित्ता** ; (जं ३—पत्र २५०) ।

आउडिय वि [**आकुटित**] आहत, ताडित ; (जं ३—पत्र २२२) ।

आउड्ड अक [**मस्ज्**] मज्जन करना, डूबना । आउड्डइ ; (हे ४, १०१ ; षड्) ।

आउड्डिअ वि [**मग्न**] डूबा हुआ, तल्लीन ; (कुमा) ।

आउण्ण वि [**आपूर्ण**] पूर्ण, भरपूर, व्याप्त ; " कुसुमफला-उरण्णहत्थेहिं " (पउम ८, २०३)।

आउत्त वि [**आयुक्त**] १ उपयोग वाला, सावधान; (कप्प)। २ क्रिवि. उपयोग-पूर्वक ; (भग) । ३ न. पुरीषोत्सर्ग, फरागत जाना (?); (उप ६८५) । ४ पुं. गाँव का नियुक्त किया हुआ मुखिया ; (दे १, १६) ।

आउत्त वि [**आगुप्त**] १ संक्षिप्त ; (ठा ३, १) । २ संयत ; (भग) ।

आउर वि [**आतुर**] १ रोगी, बीमार ; (णंदि) । २ उत्कण्ठित ; ३ दुःखित, पीडित ; (प्रासू २८ ; ६५) ।

आउर न [**दे**] १ लडाई, युद्ध; २ वि. बहुत ; ३ गरम ; (दे १, ६५ ; ७६) ।

आउरिय वि [**आतुरित**] दुःखित, पीडित ; (आचा) ।

आउल वि [**आकुल**] १ व्याप्त ; (औप) । २ व्यग्र ; (आव) । ३ व्याकुल, दुःखित; ४ संकीर्ण ; (स्वप्न ७३)। ५ पुं. समूह ; (विसे ७००) ।

आउल सक [**आकुलय्**] १ व्याप्त करना । २ व्यग्र करना । ३ दुःखी करना । ४ संकीर्ण करना । ५ प्रचुर करना । कवकृ—**आउलिज्जंत, आउलीअमाण**; (महा ; पि ५६३) ।

आउलि स्त्री [**आतुलि**] वृक्ष-विशेष ; (दे ५, ५) ।

आउलिअ वि [**आकुलित**] आकुल किया हुआ ; (गा २५ ; पउम ३३, १०६ ; उप पृ ३२) ।

आउलीकर सक [**आकुली+कृ**] देखो **आउल**=आकुलय् । आउलीकरेंति ; (भग) । कवकृ—**आउलीकिज्जमाण** ; (नाट) ।

आउलीभूअ वि [**आकुलीभूत**] घबडाया हुआ ; (सुर २, १०) ।

आउस अक [**आ+वस्**] रहना, वास करना । वकृ— **आउसंत** ; (सम १) ।

आउस सक [**आ+क्रुश्**] आक्रोश करना, शाप देना, निष्ठुर वचन बोलना । आउसइ ; (भग १५) । आउसेज्ज, आउसेसि ; (उवा) ।

आउस सक [**आ+मृश्**] स्पर्श करना, छूना । वकृ— **आउसंत** ; (सम १) ।

आउस सक [**आ+जुष्**] सेवा करना । वकृ—**आउसंत**; (सम १) ।

आउस न [**दे**] कूर्च ; (दे १, ६५) ।

आउस देखो **आउ**=आयुष् ; (कुमा) ।

आउस } वि [**आयुष्मत्**] चिरायुष्क, दीर्घायु ; (सम
आउसंत } २६ ; आचा) ।

आउसणा स्त्री [**आक्रोशना**] अभिशाप, निर्भर्त्सन ; (णाया १, १८ ; भग १५) ।

आउस्स देखो **आउस**=आ+क्रुश् । आउस्सति; (णाया १, १८) ।

आउस्सिय वि [**आवश्यक**] १ जरूरी । २ क्रिवि. जरूर, अवश्य; (पण्ण ३६) । °**करण** न [°**करण**] १ मन, वचन और काया का शुभ व्यापार; २ मोक्ष के लिए प्रवृत्ति ; (पण्ण ३६) ।

आउह न [**आयुध**] १ शस्त्र, हथियार; (कुमा)। २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४४) । °**घर** न [°**गृह**] शस्त्र-शाला ; (जं) । °**घरसाला** स्त्री

[°गृहशाला] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ ; (जं)। °घरिय वि [°गृहिक] आयुधशाला का अध्यक्ष—प्रधान कर्मचारी ; (जं)। °गार न [°गार] शस्त्र-गृह ; (औप)।

आउहि वि [**आयुधिन्**] योद्धा, शस्त्र-धारक ; (विसे)।

आऊड अक [**दे**] जुए में पण करना। आऊडइ ; (दे १, ६६)।

आऊडिय न [**दे**] द्यूत-पण, जुए में की जाती प्रतिज्ञा ; (दे १, ६८)।

आऊर सक [**आ+पूरय्**] भरना, पूर्ति करना, भरपूर करना। आऊरेइ ; (महा)। वकृ—**आऊरयंत, आऊरमाण**; (पउम १०२, ३३; से १२, २८)। कवकृ—**आऊरिज्जमाण** ; (पि ५३७)। संकृ—**आऊरिवि** (अप); (भवि)।

आऊरिय वि [**आपूरित**] भरा हुआ, व्याप्त ; (सुर २, १६६)।

आऊसिय वि [**आयूषित**] १ प्रविष्ट ; २ संकुचित ; (णाया १, ८)।

आएज्ज वि [**आदेय**] ग्रहण करने के योग्य, उपादेय। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से किसी का कोई भी वचन ग्राह्य माना जाता है ; (सम ६७)।

आएस देखो **आवेस** ; (भग १४, २)।

आएस, **आएसग** पुं [**आदेश**] १ उपदेश, शिक्षा ; २ आज्ञा हुकुम ; (महा)। ३ विवक्षा, सम्मति ; (सम्म ३७)। ४ अतिथि, महमान ; (सुअ २, १, ५६)। ५ प्रकार, भेद; " जीवे णं भंते ! कालाएसेणं किं सपदेसे अपदेसे " (भग ६, ४ ; जीव २; विसे ४०३)। ६ निर्देश ; (निचू)। ७ प्रमाण ; " जाव न बहुप्पसन्नं ता मीसं एस इत्थ आएसो " (पिंड २१)। ८ इच्छा, अभिलाषा ; देखो **आएसि**। ६ दृष्टान्त, उदाहरण ; " वाघाइयमाएसो अवरद्धो हुज्ज अन्नतरएणं " (आचानि २६७)। १० सूत्र, ग्रन्थ, शास्त्र ; (विसे ४०५)। ११ उपचार, आरोप ; " आएसो उवयारो " (विसे ३४८८)। १२ शिष्ट-सम्मत ;

" बहुसुयमाइण्णं तु, न बाहियण्णेहिं जुगप्पहाणेहिं ।
आएसो सो उ भवे, अहवावि नयंतरविगप्पो " (वव २, ८)।

आएसण न [**आदेशन**] ऊपर देखो ; (महा)।

आएसण न [**आदेशन, आवेशन**] लोहा वगैरः का कारखाना, शिल्पशाला ; (आचा २, २, २, १० ; औप)।

आएसि वि [**आदेशिन्**] १ आदेश करने वाला। २ अभिलाषी, इच्छुक ; (आचा)।

आएसिय वि [**आदिष्ट**] जिसको आज्ञा दी गई हो वह ; (भवि)।

आओ अ [**दे**] अथवा, या " हंत किमेयं ति, किं ताव सुविणओ, आओ इंदजालं, आओ मइविब्भमो, आओ सच्चयं चेवत्ति " (स ४५४)।

आओग पुं [**आयोग**] १ लाभ, नफा ; (औप)। २ अत्यधिक सूद के लिए करजा देना ; (भग)। ३ परिकर, सरञ्जाम ; (औप)।

आओग्ग पुं [**आयोग्य**] परिकर, सरञ्जाम ; (औप)।

आओज्ज पुंन [**आयोग्य**] वाद्य, बाजा; (महा ; षड्)।

आओज्ज वि [**आयोज्य**] संबन्ध-योग्य, जोड़ने योग्य ; (विसे २३)।

आओड सक [**आ+खोटय्**] प्रवेश कराना, घुसेड़ना। आओडावेंति ; (विपा १, ६)।

आओडण न [**आकोलन**] मजबूत करना ; (से ६,६)।

आओडिअ वि [**दे**] ताडित, मारा हुआ ; (से ६, ६)।

आओध अक [**आ+युध्**] लड़ना। आओधेहि ; (वेणी १११)।

आओस सक [**आ+क्रुश्, क्रोशय्**] आक्रोश करना, शाप देना। आओसइ ; (निर १, १)। आओसेज्जसि, आओसेमि ; (उवा)। कवकृ—**आओसेज्जमाण** ; (अंत २२)।

आओस पुं [**दे**] प्रदोष-समय, सन्ध्या-काल ; (ओघ ६१ भा)।

आओसणा स्त्री [**आक्रोशना**] निर्भर्त्सना, तिरस्कार ; (निर १, १)।

आओहण न [**आयोधन**] युद्ध, लडाई ; (उप ६४८ टी ; सुर ६, २२०)।

आकंख सक [**आ+काङ्क्ष्**] चाहना, इच्छना। आकंखिहि ; (भवि)।

आकंखा स्त्री [**आकाङ्क्षा**] चाह, इच्छा, अभिलाषा ; (विसे ८५६)।

आकंखि वि [**आकाङ्क्षिन्**] अभिलाषी, इच्छुक; (आचा)।

आकंद अक [**आ+क्रन्द्**] रोना, चिल्लाना। आकंदामि; (पि ८८)।
आकंदिय न [**आक्रन्दित**] १ आक्रन्द, रोदन; २ जिसने आक्रन्द किया हो वह; (दे ७, २७)।
आकंप अक [**आ+कम्प्**] १ थोडा काँपना। २ तत्पर होना। ३ आराधन करना। संकृ—**आकंपइत्ता, आकंपइत्तु**; (राज)।
आकंप पुं [**आकम्प**] १ थोडा काँपना; २ आराधन; (वव)। ३ तत्परता, आवर्जन; (राज)।
आकंपण न [**आकम्पन**] ऊपर देखो; (वव; धर्म)।
आकंपिय वि [**आकम्पित**] ईषत् चलित, कम्पित; (उप ७२८ टी)
आकड्ढ पुं [**आकर्ष**] खींचाव; °**विकड्ढ** स्त्री [°**वि-कृष्टि**] खींचतान; (भग १५)।
आकड्ढण न [**आकर्षण**] खींचाव; (निचू)।
आकण्णण न [**आकर्णन** श्रवण; (नाट)।
आकण्णिय वि [**आकर्णित**] श्रुत, सुना हुआ; (आचा)।
आकम्हिय वि [**आकस्मिक**] अकस्मात् होने वाला, विना ही कारण होने वाला; "बज्झनिमित्ताभावा जं भय-माकम्हियं तंति" (विसे ३४५१)।
आकर पुं [**आकर**] १ खान; २ समूह; (कुमा)।
आकस देखो **आगस**। आकसिस्सामो; (आचा २, ३, १, १५)। हेकृ—**आकसित्तए**; (आचा २, ३, १, १५)।
आकार देखो **आगार**; (कुमा; दं १३)।
आकास देखो **आगास**; (भग)।
आकासिय वि [**दे**] पर्याप्त, काफी; (षड्)।
आकिइ स्त्री [**आकृति**] स्वरूप, आकार; (हे १, २०९)।
आकिंचण न [**आकिञ्चन्य**] निस्पृहता, निष्परिग्रहता; "आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो" (नव २३)।
आकिंचणया स्त्री [**आकिञ्चनता**] ऊपर देखो; (सम १२०)।
आकिंचणिय, **आकिंचन्न** } देखो **आकिंचण**; (आवू; सुपा ६०८)।
आकिदि देखो **आकिइ**; (कुमा)।
आकुंच सक [**आ+आकुञ्चय्**] संकोच करना। आकुंचइ; संकृ—**आकुंचिवि** (अप); (भवि)।
आकुंचण न [**आकुञ्चन**] संकोच, संक्षेप; (सम्म १३३; विसे २४९२)।

आकुंचिय वि [**आकुञ्चित**] संकुचित, "रुद्धं गलयं आकुं-चियाओ धमणीओ पसरिया वियणा" (सुर ४, २३८)।
आकुट्ठ न [**आक्रुष्ट**] १ आक्रोश; २ वि. जिस पर आक्रोश किया गया हो वह; (३, ३२)।
आकुल देखो **आउल**; (कप्प)।
आकूय न [**आकूत**] १ इङ्गित, ईसारा; (उप ७२८ टी)। २ अभिप्राय; (विसे ९२८)।
आकेवलिय वि [**आकेवलिक**] असंपूर्ण; (आचा)।
आकोडण न [**आकोटन**] कूट कर घुसेड़ना; (पण्ह १, ३)।
आकोसाय अक [**आकोशाय्**] विकसित होना। वकृ—**आकोसायंत**; (पण्ह १, ४)।
आक्कंद (मा) देखो **आकंद**। आक्कंदामि; (पि ८८)।
आखंच (अप) सक [**आ+कृष्**] पीछे खींचना। संकृ—**आखंचिवि**; (भवि)।
आखंडल पुं [**आखण्डल**] इन्द्र; (सुपा ४७)। °**धणुह** न [°**धनुष्**] इन्द्र-धनुष्; (उप ९८६ टी)। °**भूइ** पुं [°**भूति**] भगवान् महावीर के मुख्य शिष्य गौत-म-स्वामी; (पउम ११८, १०२)।
आगइ स्त्री [**आगति**] आगमन; (आचा; विसे २१४६)।
आगइ देखो **आकिइ**; (महा)।
आगंतव्व देखो **आगम**=आ+गम्।
आगंतगार, **आगंतार** } न [**आगन्त्रगार**] धर्म-शाला, मुसाफिर-खाना; (औप; आचा)।
आगंतु वि [**आगन्तृ**] आने वाला; (सूअ)।
आगंतु देखो **आगम**=आ+गम्।
आगंतुग, **आगंतुय** } वि [**आगन्तुक**] १ आने वाला; २ अतिथि; (स ४७१; चारु २४; सुपा ३३६; ओघ २१६)। ३ कृत्रिम, अस्वाभाविक; (सुर १२, १०)।
आगंतूण देखो **आगम**=आ+गम्।
आगंप सक [**आ+कम्पय्**] कँपाना, हिलाना। वकृ—**आगंपयंत**; (स ३३१; ४४३)।
आगंपिय देखो **आकंपिय**; (पउम ३४, ४३)।
आगच्छ सक [**आ+गम्**] आना, आगमन करना। आगच्छइ; (महा)। भवि—आगच्छिस्सइ; (पि ५२३)। वकृ—**आगच्छंत, आगच्छमाण**; (काल; भग)।

हेकृ—**आगच्छित्तए**; (पि ५७८)।

आगत देखो **आगय**; (सुर २, २४८)।

आगत्ती स्त्री [दे] कूप-तुला; (दे १, ६३)।

आगम सक [आ+गम्] १ आना, आगमन करना। २ जानना। भवि—आगमिस्सं; (पि ५२३; ५६०)। वकृ—**आगममाण**; (आचा)। संकृ—**आगंतूण**; **आगमेत्ता**, **आगम्म**; (पि ५८१; ५८२; औप)। कृ—**आगंतव्व**; (सुपा १२)। हेकृ—**आगंतुं**; (काल)।

आगम पुं [आगम] १ आगमन; (से १४, ७५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त; (जी ४८)। °**कुसल** वि [°कुशल] सिद्धान्तों का जानकार; (उत)। °**ज्ञ** वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार; (प्रारू)। °**णोइ** स्त्री [°नीति] आगमोक्त विधि; (धर्म २)। °**ण्णु** वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार; (प्रारू)। °**परतंत** वि [°परतन्त्र] सिद्धान्त के अधीन; (पंचव)। °**वलिय** वि [°बलिक] सिद्धान्तों का अच्छा जानकार; (भग ८, ८)। °**ववहार** पुं [°व्यवहार] सिद्धान्तानुमोदित व्यवहार; (वव)।

आगमण न [आगमन] आगमन; (श्रा ४)।

आगमि वि [आगमिन्] आने वाला, आगामी; (विसे ३१५४)।

आगमिय वि [आगमिक] १ शास्त्र-संबन्धी, शास्त्र-प्रतिपादित; (उवर १५१)। २ शास्त्रोक्त वस्तु को ही मानने वाला; (सम्म १४२)।

आगमिर वि [आगन्तृ] आने वाला, आगमन करने वाला; (सण)।

आगमिस्स वि [आगमिष्यत्] १ आगामी, होने वाला; (पउम ११८, ६३)। २ आने वाला; (सम १५३)।

आगमिस्सा स्त्री [आगमिष्यन्ती] भविष्य काल; "अईअकालम्मि आगमिस्साए" (पच्च ६०)।

आगमेस, **आगमेसि** } देखो **आगमिस्स**; (अंत १६; औप)

आगम्म देखो **आगम** = आ+गम्।

आगय वि [आगत] १ आया हुआ; (प्रासू ५)। २ उत्पन्न; (णाया १, ७)।

आगर देखो **आकर**=आकर; (आचा; उप ८३३ टी)।

आगरि वि [आकरिन्] खान का मालिक, खान का काम करने वाला; (पण्ह १, २)।

आगरिस पुं [आकर्ष] १ ग्रहण, उपादान; (विसे २७८०; सम १४७)। २ खींचाव; (विसे २७८०; हे १, १७७)। ३ ग्रहण कर छोड़ देना; (आचू)। ४ प्राप्ति; (भग २५, ७)।

आगरिसग वि [आकर्षक] १ खींचने वाला; २ पुं. अयस्कान्त, लोह-चुम्बक; (आवम)।

आगरिसणी स्त्री [आकर्षणी] विद्या-विशेष; (सुर १३, ८१)।

आगरिसिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ; (सुपा १६६; महा)।

आगल सक [आ+कलय्] १ जानना। २ लगाना। ३ पहुँचाना। ४ संभावना करना। आगलेइ; (उव)। आगलेंति; (भग ३, २)। संकृ—"हत्थिं खंभम्मि **आगलेऊण**" (महा)।

आगल्ल वि [आग्लान] ग्लान, बिमार; (बृह १)।

आगस सक [आ+कृष्] खींचना। आगसाहि; (आचा २, ३, १, १४)। संकृ—**आगसिउं**; (विसे २२२)।

आगहिअ वि [आगृहीत] संगृहीत; (विसे २२०४)।

आगाढ वि [आगाढ] १ प्रबल, दुःसाध्य; "कडुगोसहंव आगाढरोगिणो रोगसमदच्छं" (उप ७२८ टी)। "नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अन्नमन्नस्स मोए आइइत्तए, नन्नत्थ आगाढेहिं रोगायंकेहिं" (कस)। २ अपवाद, खास कारण; (पंचभा)। ३ अत्यंत गाढ; (निचू)। °**जोग** पुं [°योग] योग-विशेष; गणि-योग; (ओघ ५४८)। °**पण्ण** न [°प्रज्ञ] शास्त्र, आगम; "आगाढपण्णेसु य भावियप्पा" (वव)। °**सुय** न [°श्रुत] आगम-विशेष; (निचू)।

आगामि वि [आगामिन्] आने वाला; (सुपा ६)।

आगार सक [आ+कारय्] बोलाना, आह्वान करना। संकृ—**आगारेऊण**; (आव)।

आगार न [आगार] १ घर, गृह; (णाया १, १; महा)। २ वि. गृहस्थ, गृही; (ठा)। °**त्थ** वि [°स्थ] गृही; (पि ३०६)।

आगार पुं [आकार] १ अपवाद; (उप ७२८ टी; पडि)। २ इंगित, चेष्टा-विशेष; (सुर ११, १६२)। ३ आकृति, रूप; (सुपा ११५)।

आगारिय वि [आगारिक] गृहस्थ-संबन्धी; (विसे)।

आगारिय वि [**आकारित**] १ आहूत। २ उत्सारित, परित्यक्त ; (आव)।

आगाल पुं [**आगाल**] १ समान प्रदेश में रहना ; २ सम भाव से रहना ; (आचा)। ३ उदीरणा-विशेष ; (राज)।

आगास पुंन [**आकाश**] आकाश, अन्तराल; (उवा)। °**गमा** स्त्री [°**गमा**] विद्या-विशेष, जिसके बल से आकाश में गमन कर सकता है ; (पउम ७, १४४)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] आकाश में गमन करने वाला, पक्षि-प्रभृति ; (आचा)। °**जोइणी** स्त्री [°**योगिनी**] पक्षि-विशेष; "आगासजोइणीए निसुओ सद्दोवि वामपासम्मि" (सुपा १८५)। °**त्थिकाय** पुं [°**अस्तिकाय**] आकाश-प्रदेशों का समूह, अखण्ड आकाश-द्रव्य ; (पण्ण १)। °**थिग्गल** न [**दे**] मेघ-रहित आकाश का भाग, (आवम)। °**फलिह,** °**फालिय** पुं [°**स्फटिक**] निर्मल स्फटिक-रत्न ; (राय ; औप)। °**फालिया** स्त्री [°**फालिका**] एक मिष्ट द्रव्य ; (पण्ण १७)। ° **इवाइ** वि [°**अतिपायिन्**] विद्या आदि के बल से आकाश में गमन करने वाला ; (औप)।

आगासिय वि [**आकाशित**] आकाश को प्राप्त ; (औप)।

आगासिय वि [**आकर्षित**] खींचा हुआ ; (औप)।

आगिइ स्त्री [**आकृति**] आकार, रूप, मूर्ति ; (सुर २, २२ ; विपा १, १)।

आगिट्ठि स्त्री [**आकृष्टि**] आकर्षण ; (सुपा २३२)।

आगी देखो **आगिइ** ; "छिण्णावलिरुयगागीदिसासु सामाइयं न जं तासु" (विसे २७०७)।

आगु पुं [**आकु**] अभिलाष, इच्छा ; (आक)।

आघं देखो **आघव**। 'सूत्रकृतांग' सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का दशवाँ अध्ययन ; (सुअ १, १०)।

आघंस सक [**आ+घृष्**] घर्षण करना ; (निचू)।

आघंसण न [**आघर्षण**] एक वार का घर्षण; (निचू)।

आघयण न [**दे**] वध-स्थान ; (णाया १, ६—पत्र १६७)।

आघव सक [**आ+ख्या**] १ कहना, उपदेश देना। २ ग्रहण करना। आघवेइ ; (ठा)। कवकृ—आघविज्जए ; (भग)। भूका—आघं ; (सूअ ; पि ८८) वकृ—**आघवेमाण** ; (पि ४४)। हेकृ—**आघवित्तए** ; (पि ८८)।

आघवणा स्त्री [**आख्यान**] कथन, उक्ति ; (णाया १,६)।

आघवइत्तु वि [**आख्यायक**] कथक, वक्ता, उपदेशक ; (ठा ४, ४)।

आघविय वि [**आख्यात**] उक्त, कहा हुआ ; (पि ४४)।

आघवेत्तग वि [**आख्यापयितृक**] उपदेष्टा, वक्ता ; (आचा)।

आघस सक [**आ+घस्**] थोडा घिसना। आघसावेज्ज ; (निचू)।

आघा सक [**आ+ख्या**] कहना। (आचा)।

आघा सक [**आ+घ्रा**] सूँघना। वकृ—**आघायंत** ; (उप ३५७ टी)।

आघाय वि [**आख्यात**] कथित, उक्त ; (आचा)।

आघाय पुं [**आघात**] १ वध ; २ चोट, प्रहार ; (कुमा ; णाया १, ६)।

आघायंत देखो **आघा**=आ+घ्रा।

आघाव देखो **आघव**। आघावेइ ; (पि ८८; २०२)।

आघुट्ठ वि [**आघुष्ट**] घोषित, जाहिर किया हुआ ; (भवि)।

आघुम्म अक [**आ+घूर्ण्**] डोलना, हिलना, काँपना, चलना।

आघुम्मिय वि [**आघूर्णित**] डोला हुआ, कम्पित, चलित ; "आघुम्मियनयणजुओ" (पउम १०, ३२ ; ८७, ५६)।

आघोस सक [**आ+घोषय्**] घोषणा करना, ढिंढेरा पिटवाना। आघोसेह ; (स ६०)।

आघोसण न [**आघोषण**] ढिंढ़ेरा, घोषणा ; (महा)।

आचक्ख सक [**आ+चक्ष्**] कहना। वकृ—**आचक्खंत**; (पि २५; ८८ ; नाट)।

आचक्खिद (शौ) वि [**आख्यात**] उक्त, कथित ; (अभि २००)।

आचरिय वि [**आचरित**] १ अनुष्ठित, विहित। २ न. आचरण ; (प्रासू १११)।

आचार देखो **आयार**=आचार ; (कुमा)।

आचारिअ देखो **आयरिय**=आचार्य ; (प्राप)।

आचिक्ख सक [**आ+चक्ष्**] कहना। कृ— **आचिक्खणीय** ; (स ४०)।

आचिक्खिय वि [**आख्यात**] कथित, उक्त; (स ११६)।

आचुण्णिअ वि [**आचूर्णित**] चूर २ किया हुआ ; (पउम १७, १२०)।

आचेलक्क न [**आचेलक्य**] १ वस्त्र का अभाव; (कप्प)। २ वि. आचार-विशेष ; "आचेलक्को धम्मो" (पंचा)।
आच्छेदण न [**आच्छेदन**] १ नाश। २ वि. नाशक ; (कुमा)।
आजाइ देखो **आयाइ** ; (ठा ; स १७८)।
आजि देखो **आइ**=आजि ; (कुमा ; दे १, ४६)।
आजीरण पुं [**आजीरण**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; "आजीरणो य गीओ" (संथा ६७)।
आजीव } पुं [**आजीव**] १ आजीविका, जीवन-निर्वाह का
आजीवग } उपाय; "आजीवमेयं तु अबुज्झमाणो पुणो पुणो विप्परियासुवेंति" (सूअ)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष—गृहस्थ को अपने जाति-कुल आदि को समानता बतलाकर उससे भिक्षा ग्रहण करना ; (ठा ३, ४)। ३ गोशालक-मत का अनुयायी साधु ; (पव)। ४ धन का समूह ; (सूअ)।
आजीवग पुं [**आजीवक**] १ धन का गर्व ; (सूअ)। २ सकल जीव ; (जीव ३ टी)। देखो **आजीवय**।
आजीवण न [**आजीवन**] १ आजीविका, जीवन-निर्वाह का उपाय। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष; (वव)।
आजीवणा स्त्री [**अजीवना**] ऊपर देखो ; (दंस ; जीत)।
आजीवय देखो **आजीवग**; "आजीवयदिट्ठंतेणं चउरासीति-जातिकुलकोडीजोणिपमुहसयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया" (जीव ३)।
आजीविय वि [**आजीविक**] गोशालक के मत का अनुयायी; (पएण २० ; उवा)।
आजीविया स्त्री [**आजीविका**] १ निर्वाह ; (आव)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष ; (उत्त)।
आजुत्त वि [**आयुक्त**] अ-प्रमादी ; (निचू)।
आजुज्झ अक [**आ+युध्**] लड़ना। हेकृ—**आजुज्झिदुं** (शौ) ; (वेणी १२४)।
आजुह न [**आयुध**] हथियार ; (मै २४)।
आजोज्ज देखो **आओज्ज** ; (विसे १५०३)।
आडंबर पुं [**आडम्बर**] १ आटोप, ऊपरी दिखाव ; (पाअ)। २ वाद्य का अवाज; (ठा)। ३ यक्ष-विशेष; (आचू)। ४ न. यक्ष का मन्दिर ; (पव)।
आडंबरिल्ल वि [**आडम्बरवत्**] आडम्बरी; (पाअ)।
आडविय वि [**दे**] चूर्णित, चूर २ किया हुआ ; (षड्)।
आडविय वि [**आटविक**] जंगल में रहने वाला, जंगली ; (स १२१)।
आडह सक [**आ+दह्**] चारों ओर से जलाना। आडहइ; (पि २२२ ; २२३)। आडहंति; (पि २२२ ; २२३)।
आडह सक [**आ+धा**] स्थापन करना, नियुक्त करना। आडहइ। संकृ—**आडहेत्ता** ; (औप)।
आडाडा स्त्री [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती; (दे १, ६४)।
आडासेतीय पुं [**आडासेतीक**] पक्षि-विशेष ; (पगह १, १)।
आडि स्त्री [**आटि**] १ पक्षि-विशेष ; २ मत्स्य-विशेष ; (दे ८, २४)।
आडियत्तिय पुं [**दे**] शिबिका-वाहक पुरुष (?); (स ५३७; ५४१)।
आडुआल सक [**दे**] मिश्र करना, मिलाना। आडुआलइ; (दे १, ६६)।
आडुआलि पुं [**दे**] मिश्रता, मिलावट ; (दे १, ६६)।
आडोय देखो **आडोव**=आटोप ; (सुपा २६२)।
आडोलिय वि [**दे**] रुद्ध, रोका हुआ ; (णाया १, १८)।
आडोव सक [**आ+टोपय्**] १ आडंबर करना। २ पवन द्वारा फूलाना। आडोवेइ ; (भग)। संकृ—**आडोवेत्ता** ; (भग)।
आडोव पुं [**आटोप**] आडम्बर ; (उवा ; सण)।
आडोविअ वि [**दे**] आरोषित, गुस्से किया हुआ ; (दे १, ७०)।
आडोविअ वि [**आटोपिक**] आटोप वाला, स्फारित ; (पगह १, ३)।
आढई स्त्री [**आढकी**] वनस्पति-विशेष ; (पएण १)।
आढग पुंन [**आढक**] १ चार प्रस्थ (सेर) का एक परिमाण ; २ चार सेर परिमित चीज ; (औप ; सुपा ६७)।
आढत्त वि [**दे**] आक्रान्त; "एत्थंतरम्मि विजयवम्मनरवइणा आढत्तो लच्छिनिलयसामी सूरतेओ नाम नरवई ; (स १४०)।
आढत्त वि [**आरब्ध**] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध ; (ओघ ४८२ ; हे २, १३८)।
आढप्प° देखो **आढव**।
आढय देखो **आढग** ; (महा ; ठा ३, १)।
आढव सक [**आ+रभ्**] आरंभ करना, शुरू करना। आढवइ; (हे ४, १५५; धम्म २२)। कर्म—आढप्पइ, आढवीअइ ; (हे ४, २५४)।

आढा सक [आ + दृ] आदर करना, मानना । आढाइ; (उवा) । वकृ—**आढामाण, आढायमाण**; (पि ५०० ; आचा)। कवकृ—**आइज्जमाण**; (आचा)।
आढिअ वि [आदृत] सत्कृत, सम्मानित; (हे १,१४३)।
आढिअ वि [दे] १ इष्ट, अभीष्ट ; २ गणनीय, माननीय ; ३ अप्रमत्त, उद्युक्त ; ४ गाढ, निबिड ; (दे १, ७४) ।
आण सक [ज्ञा] जानना । "किंव न आणह एअं" (से १३, ३)। आणसि; (से १५, २८)। "अमिअं पाइअकव्वं पढिउं सोउं च जे ण आणंति" (गा २) । आणे; (अभि १९७) ।
आण सक [आ + णी] लाना, आनयन करना; ले आना । आणइ ; (पि १७ ; भवि) । वकृ—**आणमाणे** ; (णाया १,१६) । हेकृ—**आणिति** (अप); (भवि) ।
आण पुं [आन] १ श्वासोच्छ्वास, सांस ; २ श्वास के पुद्गल ; (पण्ण) ।
°**आण** देखो **जाण**=यान ; (चारु ८) ।
आणंछ देखो **आअंछ** । आणंछइ ; (षड्) ।
आणंत देखो **आणी** ।
आणंतरिय न [आनन्तर्य] १ अविच्छेद, व्यवधान का अभाव ; (ठा ४, ३) । २ अनुक्रम, परिपाटि; "आणंतरियंति वा अणुपरिवाडित्ति वा अणुक्कमेत्ति वा एगट्ठा" (आचू) ।
आणंद अक [आ+नन्द्] आनन्द पाना, खुश होना ।
आणंद सक [आ + नन्दय्] खुश करना । आणंदेदि (शौ); नाट । कृ—**आणंदिअव्व** ; (रयण १०) ।
आणंद पुं [आनन्द] १ हर्ष ; खुशी ; (कुमा) । २ भगवान् शीतलनाथ के एक मुख्य-शिष्य; (सम १५२) । ३ पातनपुर नगर का एक राजा, जो भगवान् अजितनाथ का मातामह था ; (पउम ५, ५२) । ४ भावी छठवाँ बलदेव ; (सम १५४) । ५ नागकुमार-जातीय देवों के स्वामी धरणेन्द्र के एक रथ-सैन्य का अधिपति देव ; (ठा ५, १) । ६ मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१) । ७ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र ; (राज) । ८ भगवान् महावीर के एक साधु-शिष्य का नाम ; (कप्प) । ९ भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासको (श्रावक-शिष्य) में पहला ; (उवा) । १० देव-विशेष ; (जं; दीव) । ११ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम ; (निर २, १) । १२ 'उपासगदसा' सूत्र का एक अध्ययन; (उवा) । १३ 'अणुत्तरोपपातिक दसा' सूत्र का सातवाँ अध्ययन ; (भग) । १४ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन; (निर २,१) । १५ ब. देश-विशेष; (पउम ९८, ६६) । °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष; (बृह)। °**रक्खिय** पुं [°रक्षित] स्वनाम-ख्यात एक जैन साधु ; (भग) ।
आणंदण न [आनन्दन] १ खुशी, हर्ष; (सुपा ४४०) । २ वि. खुश करने वाला, आनन्द-दायक; (स ३१२; रयण ३; सण) ।
आणंदवड } पुं [दे] पहली वार की रजस्वला का रक्त
आणंदवस } वस्त्र ; (गा ४५७ ; दे १, ७२ ; षड्) ।
आणंदा स्त्री [आनन्दा] १ देवी-विशेष; मेरु को पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी ; (ठा ८) । २ इस नाम की एक पुष्करिणी ; (राज) ।
आणंदिय वि [आनन्दित] १ हर्ष-प्राप्त ; (औप) । २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेने वाला एक राजा ; (पउम ८५, ३) ।
आणंदिर वि [आनन्दिन्] आनन्दी, खुश रहने वाला ; (भवि) ।
आणक्ख सक [परि + ईक्ष्] परीक्षा करना । हेकृ—**आणक्खेउं** ; (ओघ ३६) ।
आणच्छ देखो **आअंछ** । आणच्छइ ; (षड्) ।
आणण न [आनन] मुख, मुँह ; (कुमा) ।
आणण न [आनयन] लाना ; (महा) ।
आणत्त वि [आज्ञप्त] आदिष्ट, जिसको हुकुम दिया गया हो वह ; (णाया १, ८ ; सुर ४, १००) ।
आणत्ति स्त्री [आज्ञप्ति] आज्ञा, हुकुम ; (अभि ८१) । °**अर** वि [°कर] आज्ञा-कारक , नौकर ; (से ११, ९५) । °**किंकर** वि [°किङ्कर] नौकर ; (पण्ह) । °**हर** वि [°हर] आज्ञा-वाहक, संदेश-वाहक ; (अभि ८१) ।
आणत्तिया स्त्री [आज्ञप्तिका] ऊपर देखो ; (उवा ; पि ८८) ।
आणप (अशो) देखो **आणव** = आ+ज्ञपय् । आणपयति ; (पि ४) ।
आणपाण देखो **आणापाण** ; (नव ६) ।
आणप्प वि [आज्ञाप्य] आज्ञा करने योग्य ; (सूअ १, ४, २, १५) ।
आणम अक [आ+अन्] श्वास लेना । आणमंति ; (भग) ।

आणमणी देखो **आणवणी** ; (भास १८ ; पि ८८ ; २४८) ।
आणय पुंन [**आनत**] १ देवलोक-विशेष ; (सम ३५) । २ पुं. उस देवलोक-वासी देव ; (उत्त) ।
आणयण न [**आनयन**] लाना, आनना ; (श्रा १४ ; स ३७६) ।
आणव सक [**आ+ज्ञपय्**] आज्ञा देना, फरमाना । आणवइ, आणवेसि ; (पउम ३३, १००; ६८) । वकृ— **आणवेमाण** ; (पि ५५१) । कृ—**आणवेयव्व** ; (महा) ।
आणव देखो **आणाव** = आ + नायय् ।
आणवण न [**आज्ञापन**] आज्ञा, आदेश, फरमाइश ; (उवा; प्रामा) ।
आणवण न [**आनायन**] मंगवाना ; (सुपा ५७८) ।
आणवणिया स्त्री [**आज्ञापनिका, आनायनिका**] देखो दोनों **आणवणी** ; (ठा २, १) ।
आणवणी स्त्री [**आज्ञापनी**] १ क्रिया-विशेष, हुकुम करना । २ हुकुम करने से होने वाला कर्म-बन्ध ; (नव १६) ।
आणवणी स्त्री [**आनायनी**] १ क्रिया-विशेष, मंगवाना । २ मंगवाने से होने वाला कर्म-बन्ध ; (नव १६) ।
आणा स्त्री [**आज्ञा**] आदेश, हुकुम ; (ओघ ६०) । २ उपदेश ; "एसा आणा निग्गंथिया" (आचा) । ३ निर्देश ; "उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा" (वव) । ४ आगम, सिद्धान्त ; (विसे ८६४ ; णंदि) । ५ सूत्र की व्याख्या ; (औप) । °**ईसर** पुं [°**ईश्वर**] आज्ञा फरमाने वाला मालिक; (विपा १, १) । °**जोग** पुं [°**योग**] १ आज्ञा का संबन्ध ; (पंचा) । २ शास्त्र के अनुसार कृति ; "पावं विसाइतुल्लं आणाजोगो अ मंतसमो" (पंचव) । °**रुइ** स्त्री [°**रुचि**] सम्यक्त्व-विशेष ; (उत्त) । २ वि. आगमों पर श्रद्धा रखने वाला ; (पंच) । °**व** वि [°**वत्**] आज्ञा मानने वाला ; (पंचा) °**वत्त** न [°**पत्र**] आज्ञा-पत्र, हुकुमनामा ; (से १, १८) । °**ववहार** पुं [°**व्यवहार**] व्यवहार-विशेष; (पंचा) । °**विजय** न [°**विचय, °विजय**] धर्म-ध्यान-विशेष, जिसमें आज्ञा—आगम के गुणों का चिन्तन किया जाता है ; (औप) ।
आणाइ पुं [**दे**] शकुनि, पक्षी ; (दे १, ६४) ।
आणाइत्त वि [**आज्ञावत्**] आज्ञा मानने वाला; (पंचा) ।
आणाइय वि [**आनायित**] मंगाया हुआ ; (कुमा २, २१) ।
आणापाण पुं [**आनप्राण**] १ श्वासोच्छ्वास ; (प्रासू १०४) । २ श्वासोच्छ्वास-परिमित समय ; (अणु) । °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] श्वासोछ्वास लेने की शक्ति ; (नव ६ ; पव) ।
आणापाणु स्त्री [**आनप्राण**] ऊपर देखो; "आणापाणूओ" (भग २५, ५) ।
आणापाणुय पुं [**आनप्राणक**] श्वासोच्छ्वास-परिमित काल ; (कप्प) ।
आणाम पुं [**आनाम**] श्वास, अन्तः-श्वास ; (भग) ।
आणामिय वि [**आनामित**] १ थोड़ा नमाया हुआ ; (पण्ह १, ४)। २ आधीन किया हुआ ; (पउम ६८, ३७)।
आणाल पुं [**आलान**] १ बन्धन ; २ हाथी बांधने की रज्जु—डोरी ; ३ जहां पर हाथी बांधा जाता है वह स्तम्भ, खीला ; (हे २, ११७ ; प्रामा) । °**क्खंभ, °खंभ** पुं [°**स्तम्भ**] जहां हाथी बांधा जाता है वह स्तम्भ; (हे २, ११७) ।
आणाव देखो **आणव**=आ+ज्ञपय् । आणावेइ ; (स १२६) । कवकृ—**आणाविज्जंत** ; (सुपा ३२३) । कृ—**आणावेयव्व** ; (आचा) ।
आणाव सक [**आ+नायय्**] मंगवाना । आणावइ ; (भवि) । संकृ—**आणाविय** ; (नाट) ।
आणावण न [**आज्ञापन**] आज्ञा, हुकुम ; (षड्) ।
आणाविय वि [**आज्ञापित**] जिसको हुकुम किया गया हो वह, फरमाया हुआ ; (सुपा २५१) ।
आणाविय वि [**आनायित**] मंगवाया हुआ ; (सुपा ३८५) ।
आणि देखो **आणी** । कृ—**आणियव्व** ; (रयण ६) । संकृ—**आणिय** ; (नाट) ।
आणिअ वि [**आनीत**] लाया हुआ ; (हे १, १०१) ।
आणिअ [**दे**] देखो **आढिअ** ; (दे १, ७४) ।
आणिक्क वि [**दे**] टेढ़ा, वक्र ; (से ६, ८६) ।
आणी सक [**आ+नी**] लाना । कर्म—आणीअइ ; (पि ५४८) । वकृ—"**आणंतीए** गुणेसु, दोसेसु परंमुहं कुणंतीए" (मुद्रा २३६) । संकृ— **आणीय** ; (विसे ६१६) । कवकृ—**आणिज्जंत**; (सुपा १६३) ।

आणीय वि [**आनीत**] लाया हुआ ; (हे १, १०१ ; काल) ।
आणुअ न [**दे**] १ मुख, मुँह ; (दे १, ६२ ; षड्) । २ आकार, आकृति ; (दे १, ६२) ।
आणुकंपिय वि [**आनुकम्पिक**] दयालु, कृपालु ; (राज) ।
आणुगामि वि [**अनुगामिन्**] नीचे देखो ; (विसे ७३६) ।
आणुगामिय वि [**आनुगामिक**] १ अनुसरण करने वाला, पीछे २ जाने वाला; (भग) । २ न. अवधिज्ञान का एक भेद ; (आवम) ।
आणुधम्मिय वि [**आनुधर्मिक**] इतर धर्म वालों को भी अभीष्ट, सर्व-धर्म-सम्मत ; (आचा) ।
आणुपुव्व न [**आनुपूर्व्य**] अनुक्रम, परिपाटी ; (निर १, १) ।
आणुपुव्वी स्त्री [**आनुपूर्वी**] क्रम, परिपाटी ; (अणु) । °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] नामकर्म का एक भेद ; (सम ६७) ।
आणुवित्ति स्त्री [**अनुवृत्ति**] अनुसरण ; (सं ६१) ।
आणूव पुं [**दे**] श्व-पच, डोम ; (दे १, ६४) ।
आणे सक [**आ+नी**] लाना, ले आना । **आणेइ** ; (महा) । कृ—**आणेयव्व** ; (सुपा १६३) । संकृ—**आणेऊण** ; (महा) ।
आणे सक [**ज्ञा**] जानना **आणेइ** ; (नाट) ।
आणेसर देखो **आणा-ईसर** ; (श्रा १०) ।
आत देखो **आय**=आत्मन् ; (ठा १) ।
आतंब देखो **आयंब**=आताम्र ; (स २६१) ।
आत्त देखो **अत्त**=आत्मन् । "आत्तहियं खु दुहेण लब्भइ" (सूअ १, २, २, ३०) ।
आदंस, **आदंसग** } देखो **आयंस** ; (गा २०४; प्रति ८ ; सूअ १, ४) ।
आदण्ण, **आदन्न** } वि [**दे**] आकुल, व्याकुल, घबडाया हुआ ; (उप पृ २२१ ; हे ४, ४२२) ।
आदर देखो **आयर**=आ+दृ । आदरइ ; (हे ४, ८३) ।
आदरिस देखा **आयंस** ; (कुमा ; दे २, १०७) ।
आदाउ वि [**आदातृ**] ग्रहण करने वाला ; (विसे १५-६८) ।
आदाण देखो **आयाण** ; (ठा ४, १) ; "गब्भादाणेण संजुयासि तुमं" (पउम ६५, ६० ; उवा) ।
आदाण न [**आग्रहण**] उबाला हुआ, गरम किया हुआ (जल तैल आदि) ; (उवा) ।
आदाणीय देखो **आयाणीय** ; (कप्प) ।
आदाय देखो **आया**=आ+दा ।
आदि देखो **आइ**=आदि ; (कप्प ; सूअ १, ५) ।
आदिच्च देखो **आइच्च** ; (ठा ५, ३ ; ८) ।
आदिच्छा स्त्री [**आदित्सा**] ग्रहण करने की इच्छा ; (आव) ।
आदिज्ज देखो **आएज्ज** ; (भग) ।
आदिट्ठ देखो **आइट्ठ** ; (अभि १०६) ।
आदित्तु वि [**आदातृ**] ग्रहण करने वाला ; (ठा ७) ।
आदिय सक [**आ+दा**] ग्रहण करना । आदियइ ; (उवा) । प्रयो—आदियावेंति ; (सूअ २, १) ।
आदिल्ल, **आदिल्लग** } देखो **आइल्ल** ; (पि ५६५) ।
आदी स्त्री [**आदी**] इस नाम की एक महानदी; (ठा ५, ३)।
आदीण वि [**आदीन**] १ अत्यंत दीन, बहुत गरीब; (सूअ १, ५)। २ न. दूषित भिक्षा । °**भोइ** वि [°**भोजिन्**] दूषित भिक्षा को लेने वाला ; "आदीणभोईवि करेति पावं" (सूअ १, १०) ।
आदीणिय वि [**आदीनिक**] अत्यन्त-दीन-संबन्धी ; "आदीणियं उक्कडियं पुरत्था" (सूअ १, ४) ।
आदेज्ज देखो **आएज्ज** ; (पण्ह १, ४) ।
आदेस आएस=आदेश (कुमा ; वव २, ८) ।
आधरिस सक [**आ+धर्षय्**] परास्त करना, तिरस्कारना । आधरिसिहि ; (आवम) ।
आधा देखो **आहा** ; (पिंड) ।
आधार देखो **आहार**=आधार ; (पण्ह २, ५) ।
आनय देखो **आणय** ; (अनु) ।
आनामिय देखो **आणामिय** ; (पण्ह १, ४) ।
आपण देखो **आवण** ; (अभि १८८) ।
आपण्ण देखो **आवण्ण**; (अभि ६५) ।
आपाइय वि [**आपादित**] १ जिसकी आपत्ति की गई हो वह । २ उत्पादित, जनित ; (विसे १७४६) ।
आपीड पुं [**आपीड**] शिरो-भूषण ; (श्रा २८) ।
आपीण देखो **आवीण** ; (गउड) ॥
आपुच्छ सक [**आ+प्रच्छ्**] आज्ञा लेना ; सम्मति लेना । आपुच्छइ ; (महा) । वकृ—**आपुच्छंत** ; (पि ३६७) ।

कृ—**आपुच्छणीय** ; (णाया १, १)। संकृ—**आपुच्छित्ता, आपुच्छित्ताणं, आपुच्छिऊण, आपुच्छिउं, आपुच्छिय** ; (पि ५८२; ५८३; कप्प; ठा ५, १)।

आपुच्छण न [**आप्रच्छन**] आज्ञा, अनुमति; (णाया १, ६)।

आपुट्ठ वि [**आपृष्ट**] जिसकी आज्ञा या सम्मति ली गई हो वह ; (सुर १०, ५१)।

आपुण्ण वि [**आपूर्ण**] पूर्ण, भरपूर ; (दे १, २०)।

आपूर पुं [**आपूर**] पूरने वाला ; " मयणासरापूरं... ससिं " (कप्प)।

आपूर देखो **आऊर** । कर्म—आपूरिज्जइ; (महा)। वकृ—**आपूरमाण, आपूरेमाण** ; (भग ; राय)।

आपेड / **आपेड्ड** / **आपेल्ल** } देखो **अपीड** ; (पि १२२, महा)।

आप्पण न [**दे**] पिष्ट, आटा ; (षड्)।

आफंस पुं [**आस्पर्श**] अल्प स्पर्श ; (हे १, ४४)।

आफर पुं [**दे**] द्यूत, जुआ ; (दे १, ६३)।

आफाल सक [**आ+स्फालय्**] आस्फालन करना, आघात करना। संकृ—**आफालित्ता** ; **आफालिऊण** ; (पि ५८२ ; ५८६)।

आफालण देखो **अप्फालण** ; (गा ५४६)।

आफोडिअ न [**आस्फोटित**] हाथ पछाडना ; (पराह १, ३)।

आबंध सक [**आ+बन्ध्**] मजबूत बाँधना। वकृ—**आबंधंत** ; (हे १, ७)। संकृ—**आबंधिऊण**; (पि ५८६)।

आबंध पुं [**आबन्ध**] संबन्ध, संयोग ; (गउड)।

आबद्ध वि [**आबद्ध**] बँधा हुआ ; (स ३५८)।

आबाहा स्त्री [**आबाधा**] १ अल्प बाधा ; (णाया १, ४)। २ अन्तर ; (सम १५)। ३ मानसिक पीड़ा ; (बृह)।

आभंकर पुं [**आभङ्कर**] १ ग्रह- विशेष ; (ठा २, ३)। २ न. विमान-विशेष; (सम ८)। °**पभंकर** न [**प्रभङ्कर**] विमान-विशेष ; (सम ८)।

आभक्खाण देखो **अब्भक्खाण** ; (उवा)।

आभट्ठ वि [**आभाषित**] १ कथित, उक्त ; (सुपा १५१) २ संभाषित ; (सुर २, २४८)।

आभरण न [**आभरण**] अलंकार, आभूषण ; (पि ६०३)।

आभव्व वि [**आभाव्य**] होने योग्य ; संभाव्य ; (वव ; सुपा ३०७)।

आभा स्त्री [**आभा**] प्रभा, कान्ति, तेज ; (कुमा; औप)।

आभागि वि [**आभागिन्**] भोक्ता, भोगी "अणेगाणं जम्ममरणाणं आभागी भवेज्ज" (वसु ; णाया १, १८)।

आभार पुं [**आभार**] बोझ, भार ; (सुपा २३६)।

आभास सक [**आ+भाष्**] कहना, संभाषण करना। आभासइ ; (हे ४, ४४७)।

आभास पुं [**आभास**] १ जो वास्तविक में वह न होकर उसके समान लगता हो ; २ विपरीत ; "करणाभासेहिं" (कुमा)।

आभासिय पुं [**आभाषिक**] १ इस नामका एक म्लेच्छ देश; २ उसमें रहने वाली म्लेच्छ जाति ; (पराह १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप ; ४ उसमें रहने वाला ; "कहि णं भंते ! आभासियमणुयाणं आभासियदीवे नामं दीवे" (जीव ३ ; ठा ४, २)।

आभासिय देखो **आभट्ठ** ; (निर)।

आभिओइय देखो **आभिओगिय** ; (महा)।

आभिओग पुं [**आभियोग्य**] १ किंकर-स्थानीय देव-विशेष ; (ठा ४, ४)। २ नौकर, किंकर ; (राय)। ३ किंकरता, नौकरी ; (दस ६, २)।

आभिओगि वि [**आभियोगिन्**] किंकर-स्थानीय देव ; (दस ६)।

आभिओगिय वि [**आभियोगिक**] १ मन्त्र आदि से आजीविका चलाने वाला ; (पराग २०)। २ नौकर-स्थानीय देव-विशेष ; (णाया १, ८)। ३ वशीकरण, दूसरे को वश में करने का मन्त्रादि-कर्म ; (पंचा ; महा)।

आभिओगिय वि [**आभियोगित**] वशीकरण आदि से संस्कृत ; (आव)।

आभिओग्ग देखो **आभिओग** ; (पराग २०)।

आभिग्गहिय वि [**आभिग्रहिक**] १ प्रतिज्ञा से संबन्ध रखने वाला ; २ प्रतिज्ञा का निर्वाह करने वाला ; (आव)। ३ न. मिथ्यात्व-विशेष ; (श्रा ६)।

आभिणंदिय पुं [**आभिनन्दित**] श्रावण मास ; (चंद)।

आभिट्ट / **आभिडिय** } वि [**दे**] प्रवृत्त; "आभिट्टं परसरणं" (पउम ४, ४२ ; ६, १६२ ; वज्जा ४२)।

आभिणिबोहिय न [**आभिनिबोधिक**] इन्द्रिय और मन से होने वाला प्रत्यक्ष ज्ञान-विशेष ; (सम ३३)।
आभिसेक्क वि [**आभिषेक्य**] १ अभिषेक के योग्य ; (निर १, १)। २ मुख्य,प्रधान ; "आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह" (औप)।
आभीर } पुं [**आभीर**] एक शूद्र-जाति, अहीर,
आभीरिय } गोवाला ; (सूअ १, ८ ; सुर ६, ६२)।
आभूअ वि [**आभूत**] उत्पन्न ; (निर १, १)।
आभेडिय [**दे**] देखो **आभिट्ट** ; (उप पृ ४२)।
आभोइअ वि [**आभोगित**] देखा हुआ ; (कप्प)।
आभोग पुं [**आभोग**] १ विलोकन, देखना ; (उप १४७)। २ प्रदेश, स्थान ; (सुर २, २२१)। ३ उपकरण, साधन ; (ओघ ३६)। ४ प्रतिलेखन ; (ओघ ३)। ५ उपयोग, ख्याल ; (भग)। ६ विस्तार ; (णाया १, १)। ७ ज्ञान, जानना ; (भग २५, ६ ; ठा ४)। देखो **आभोय**=आभोग।
आभोगण न [**आभोगन**] ऊपर देखो ; (णंदि)।
आभोगि वि [**आभोगिन्**] परिपूर्ण, "जह कमलो निरवाओ जाओ जसविहवाभोगी" (सुपा २७५)। °**णी** स्त्री [°**नी**] मानसिक निर्णय उत्पन्न कराने वाली विद्या-विशेष ; (बृह)।
आभोय सक [**आ+भोगय्**] १ देखना। २ जानना। ३ ख्याल करना। आभोएइ ; (उवा ; णाया)। वकृ— **आभोएमाण** ; (कप्प)। संकृ—**आभोइत्ता, आभोएऊण, आभोइअ** ; (दस ५; महा; पंचव)।
आभोय पुं [**आभोग**] १ सर्प की फणा ; (स ६१०)। २ देखो **आभोग** ; (आव ; महा ; सुर ३, ३२)।
आमं अ [**आम**] अनुमति-प्रकाशक अव्यय, हाँ ; (गा ४१७ ; सुर २, २४५ ; स ४५६)।
आम पुं [**आम**] १ रोग, पीड़ा ; (से ६, ४४)। २ वि. अपक्व, कच्चा ; (श्रा २०)। ३ अशुद्ध, अपवित्र ; (आचा)। °**जर** पुं [°**ज्वर**] अजीर्ण से उत्पन्न बुखार ; (गा ५१)।
आमइ वि [**आमयिन्**] रोगी; (वव १, १)।
आमंड न [**दे**] बनावटी आमला का फल, कृत्रिम आमलक ; (उप पृ २१४ ; उप १४५ टी)।
आमंडण न [**दे**] भाण्ड, पात्र ; (दे १, ६८)।
आमंत सक [**आ+मन्त्रय्**] १ आह्वान करना, संबोधन करना। २ अभिनन्दन करना। वकृ—**आमंतेमाण** ; (आचा)। संकृ—**आमंतित्ता**; (कप्प) ; **आमंतिय** ; (सूअ १, ४)।
आमंतण न [**आमन्त्रण**] आह्वान, संबोधन ; (वव) °**वयण** न [°**वचन**] संबोधन-विभक्ति; (विसे ३४५७)।
आमंतणी स्त्री [**आमन्त्रणी**] १ संबोधन की भाषा; आह्वान की भाषा ; (दस ६)। २ आठवीं संबोधन-विभक्ति ; (ठा ८)।
आमंतिय वि [**आमन्त्रित**] संबोधित; (विपा १, ६)।
आमग देखो **आम** ; (णाया १, ६)।
आमज्ज सक [**आ+मृज्**] एक वार साफ करना। आमज्जेज्ज; (आचा)। वकृ—**आमज्जंत**; (निचू) प्रयो— **आमज्जावंत**, (निचू)।
आमद्द पुं [**आमर्द**] संघर्ष, आघात ; (कुमा)।
आमय पुं [**आमय**] रोग, दर्द ; (स ५६६ ; स्वप्न ६०)। °**करणी** स्त्री [°**करणी**] विद्या-विशेष ; (सूअ २, २)।
आमय वि [**आमत**] संमत, अनुमत ; (विवे १३६)।
आमरिस पुं [**आमर्ष**] स्पर्श ; (विसे ११०६)।
आमलई स्त्री [**आमलकी**] आमला का पेड ; (दे)।
आमलकप्पा स्त्री [**आमलकल्पा**] नगरी-विशेष ; (णाया २, १)।
आमलग पुं [**आमरक**] १ चारों ओर से मारना। २ विपाक-श्रुत का एक अध्ययन ; (ठा १०)।
आमलग } पुंन [**आमलक**] १ आमला का पेड; (ठा ४)।
आमलय } २ आमला का फल ; " मुक्खोवाओ आमलगो त्रिव करतले देसिओ भगवया " (वसु ; कुमा)।
आमलय न [**दे**] नूपुर-गृह, नूपुर रखने का स्थान; (दे १, ६७)।
आमसिण वि [**आमसृण**] १ थोडा चिकना ; २ उल्लसित ; (से १२, ४३)।
आमिल्ल सक [**आ+मुच्**] छोड़ना। **आमिल्लइ** ; (भवि)।
आमिस न [**आमिष**] १ मांस ; (णाया १, ४)। २ वि. मनोहर, सुन्दर ; (से ६, ३१)। ३ आसक्ति का कारण ; " आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो निरामिसा " (उत्त १४)। ४ आहार, फलादि भोज्य वस्तु ; (पंचा ६)।

आमुंच सक [**आ+मुच्**] १ छोड़ना। २ उतारना। ३ पहनना। वकृ—**आमुंचंत** ; (श्राक ३८)।

आमुक्क वि [**आमुक्त**] १ त्यक्त ; (गा ५३६; गउड)। २ उतारा हुआ ; (श्राक ३८)। ३ परिहित ; (वेणी १११ टी)।

आमुट्ठ वि [**आमृष्ट**] १ स्पृष्ट। २ उलटा किया हुआ ; (ओघ)।

आमुय सक [**आ+मुच्**] छोड़ना, त्यागना। आमुयइ ; (गउड)।

आमुस सक [**आ+मृश्**] थोड़ा या एक वार स्पर्श करना। वकृ—**आमुसंत, आमुसमाण** ; (ठा १; आचा ; भग ८, ३)।

आमेडणा स्त्री [**आम्रेडना**] विपर्यस्त करना, उलटा करना ; (पगह १, ३)।

आमेल पुं (**दे**) लट, जटा ; (दे १, ६२)।

आमेल } **आमेलग** } **आमेलय** } पुं [**आपीड़**] फूलों की माला, जो मुकुट पर धारण की जाती है, शिरो-भूषण; (हे १, १०५; पि १२२ ; भग ६, ३३)।

आमेलिअ वि [**आपीडित**] अवतंसित, शिरो-भूषण से विभूषित ; (से ६, २१)।

आमोअ अक [**आ+मुद्**] खुश होना। संकृ—**आमोएवि** (अप) ; (भवि)।

आमोअ पुं [**दे. आमोद**] हर्ष, खुशी ; (दे १, ६४)।

आमोअ पुं [**आमोद**] सुगन्ध, अच्छी गन्ध ; (से १, २३)।

आमोअअ वि [**आमोदक**] १ सुगन्ध उत्पन्न करने वाला। २ आनन्द-जनक ; (से ६, ४०)।

आमोअअ वि [**आमोदद**] सुगन्ध देने वाला ; (से ६, ४०)।

आमोइअ वि [**आमोदित**] हृष्ट, हर्षित ; (भवि)।

आमोक्खा स्त्री [**आमोक्ष**] १ छुटकारा। २ परित्याग ; (सूत्र १, ३ ; पि ४६०)।

आमोड पुं [**दे**] जूट, लट, समूह ; (दे १, ६२)।

आमोडग न [**आमोटक**] १ वाद्य-विशेष; (आचू)। २ फूलों से बालों का एक प्रकार का बन्धन ; (उत्त ३)।

आमोडण न [**आमोटन**] थोडा मोड़ना; (पगह १, १)।

आमोडिअ वि [**आमोटित**] मर्दित ; (माल ६०)।

आमोद } **आमोय** } देखो **आमोअ** ; (स्वप्न ५२; सुर ३, ४१ ; काल)।

आमोय पुं [**आमोक**] कतवर-पुञ्ज, कतवार का ढग, कूडे का पुञ्ज ; (आचा २, ७, ३)।

आमोरअ वि [**दे**] विशेष-ज्ञ, अच्छा जानकार ; (दे १, ६६)।

आमोस पुं [**आमर्श , °र्ष**] स्पर्श, छूना ; "संकरिसण-मामोसो" (पगह २, १ टी ; विसे ७८१)।

आमोसग वि [**आमोषक**] १ चोर, चोरी करने वाला ; (ठा ५, २)। २ चोरों की एक जाति ; (उर २, ६)।

आमोसहि पुं [**आमर्शौषधि**] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से स्पर्श मात्र से ही सब रोग नष्ट होते हैं ; (पगह २, १ ; औप)।

आय पुं [**आय**] १ लाभ, प्राप्ति, फायदा; (अणु)। २ वनस्पति-विशेष ; (पगण १)। ३ कारण, हेतु ; (विसे १२२६; २६७६) ४ अध्ययन, पठन ; (विसे ६५८)। ५ गमन ; (विसे २७६२)।

आय वि [**आज**] १ अज-संबन्धी, २ बकरे के बाल से उत्पन्न (वस्त्रादि) ; (आचा)।

आय वि [**आगत**] आया हुआ ; (काल)।

आय वि [**आत्त**] गृहीत ; "आयचरित्तो करेइ सामगणं" (संथा ३६)।

आय पुं [**आगस्**] १ पाप ; २ अपराध, गुन्हा ; (श्रा २३)।

आय पुंस्त्री [**आत्मन्**] १ आत्मा, जीव ; (सम १)। २ निज, स्वयं ; "अहालहुस्सगाइं रयणाइं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कामंति" (भग ३, २)। ३ शरीर, देह; (णाया १, ८)। ४ ज्ञान आदि आत्मा के गुण ; (आचा)। **°गुत्त** वि [**°गुप्त**] संयत, जितेन्द्रिय ; "आयगुत्ता जिइंदिया" (सूत्र)। **°जोगि** वि [**°योगिन्**] मुमुक्षु, ध्यानी; (सूत्र)। **°ट्ठि** वि [**°र्थिन्**] मुमुक्षु; "एवं से भिक्खू आयट्ठी" (सूत्र)। **°तंत** वि [**°तन्त्र**] स्वाधीन, स्वतन्त्र ; (राज)। **°तत्त** न [**°तत्त्व**] परम पदार्थ, ज्ञानादि रत्न-त्रय ; (आचा)। **°प्पमाण** वि [**°प्रमाण**] साढ़े तीन हाथ का परिमाण वाला; (पव)। **°प्पवाय** न [**°प्रवाद**] बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग, सातवाँ पूर्व ; (सम २६)। **°भाव** पुं [**°भाव**] १ आत्म-स्वरूप; २ निज अभिप्राय ; (भग)। ३ विषया-

सत्ति ; " विणइज्जओ सव्वह आयभावं " (सूअ)। °य पुं [°ज] पुत्र, लड़का; (भवि)। °रक्ख वि [°रक्ष] अङ्ग-रक्षक ; (णाया १, ८)। °व वि [°वत्] ज्ञानादि आत्म-गुणों से संपन्न ; (आचा)। °हम्म वि [°घ्न] आत्मा को अधोगति में ले जाने वाला; २ देखो **आहाकम्म**; (पिंड)।

आय° देखो **आवइ** ; " किंचायरक्खिओ जो पुरिसो सो होइ वरिससयआऊ " (सुपा ४५३)

आयइ स्त्री [**आयति**] भविष्य काल ; (सुर ४, १३१)।

आयइत्ता देखो **आइ**=आ+दा।

आयंक पुं [**आतङ्क**] १ दुःख; २ पीडा ; (आचा)। ३ दुःसाध्य रोग, आशु-घाती रोग ; (औप)।

आयंगुल न [**आत्माङ्गुल**] परिमाण का एक भेद ;

" जेणं जया मणूसा, तेसिं जं होइ माणरूवं तु।
तं भणियमिहायंगुलमणिययमाणं पुण इमं तु। "
(विसे ३४० टी)।

आयंच सक [**आ+तञ्च्**] सींचना, छिटकना। आयंचइ, आयंचामि ; (उवा)।

आयंचणिया स्त्री [**आतञ्चनिका**] कुम्भकार का पात्र-विशेष, जिसमें वह पात्र बनाने के समय मिट्टी वाला पानी रखता है ; (भग १५)।

आयंचणी स्त्री [**आतञ्चनी**] ऊपर देखो ; (भग १५)।

आयंत वि [**आचान्त**] जिसने आचमन किया हो वह ; (णाया १, १ ; स १८६)।

आयंत देखो **आया**=आ+या।

आयंतम वि [**आत्मतम**] आत्मा को खिन्न करने वाला ; (ठा ४, २)।

आयंतम वि [**आत्मतमस्**] १ अज्ञानी, अजान ; २ क्रोधी ; (ठा ४, २)।

आयंदम वि [**आत्मदम**] १ आत्मा को शान्त रखने वाला, मन और इन्द्रियों का निग्रह करने वाला ; २ अश्व आदि को संयत रहने को सीखाने वाला ; (ठा ४, २)।

आयंप पुं [**आकम्प**] १ काँपना, हिलना। २ कँपाने वाला ; (पउम ६६, १८)।

आयंपिय वि [**आकम्पित**] कँपाया हुआ ; (स ३५३)।

आयंब अक [**वेप्**] काँपना, हिलना। आयंबइ ; (हे ४, १४७)।

आयंब } **आयंबिर** } वि [**आताम्र**] थोड़ा लाल ; (औप; सुर ३, ११०, सुपा ६, १४४)।

आयंबिल न [**आचाम्ल**] तप-विशेष, आंबिल ; (णाया १, ८)। °**वड्ढमाण** न [°**वर्धमान**] तपश्चर्या-विशेष ; (अंत ३२ ; महा)।

आयंबिलिय वि [**आचाम्लिक**] आम्बिल-तप का कर्त्ता ; (ठा ७ ; पराह २, १)।

आयंभर } **आयंभरि** } वि [**आत्मम्भरि**] स्वार्थी, एकलपेटा ; (ठा ४, ३)।

आयंव अक [**आ+कम्प्**] काँपना, हिलना ; (प्रामा)।

आयंस } **आयंसग** } पुं [**आदर्श**] १ दर्पण ; (पराह १, ४ ; सूअ १, ४)। २ बैल आदि के गले का भूषण-विशेष ; (अणु)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ एक अन्तर्द्वीप ; २ उसके निवासी मनुष्य ; (ठा ४, २)।

आयक्ख देखो **आइक्ख**। आयक्खाहि ; (भग)।

आयग वि [**आजक**] देखो **आय**=आज ; (आचा)।

आयज्झ अक [**वेप्**] काँपना, हिलना। आयज्झइ ; (हे ४, १४७ ; षड्)। वकृ—**आयज्झंत** ; (कुमा)।

आयट्ट सक [**आ+वर्त्तय्**] १ फिराना, घूमाना। २ उबालना। वकृ—**आअट्टंत** ; (से ५, ७५ ; ८, १६)। कवकृ—**आयट्टिज्जमाण** ; (णाया १, ६)।

आयट्टण न [**आवर्त्तन**] फिराना ; (सुपा ५३०)।

आयड्ढ सक [**आ+कृष्**] खींचना। आयड्ढइ, (महा)। कवकृ—**आअड्ढिज्जंत** ; (से ५, २८)। संकृ—**आयड्ढिऊण** ; (महा)।

आयड्ढण न [**आकर्षण**] आकर्षण, खींचाव ; (सुपा १२, ७६ ; गा ११८)।

आयड्ढि स्त्री [**आकृष्टि**] ऊपर देखा ; (गउड ; दे ६, २१)।

आयड्ढि पुं [**दे**] विस्तार ; (दे १, ६४)।

आयड्ढिय वि [**आकृष्ट**] खींचा हुआ ; (काल; कप्पू)।

आयण्ण सक [**आ+कर्णय्**] सुनना, श्रवण करना। आअण्णेइ ; (गा ३६५)। वकृ—**आअण्णंत** ; (से १, ६५ ; गा ४६५ ; ६४३)। संकृ—**आयण्णिऊण**; (उवा)।

आयण्णण न [**आकर्णन**] श्रवण ; (महा)।

आयण्णिय वि [**आकर्णित**] सुना हुआ ; (उवा)।

आयतंत वक्र [आददत्] ग्रहण करता हुआ; (सूत्र २, १)।
आयत्त वि [आयत्त] आधीन, स्व-वश; (गा ३७६)।
आयन्न देखो आयण्ण। वक्र—आयन्नंत; (सुर १, २४७)।
आयन्नण देखो आयण्णण; (सुर ३, २१०)।
आयम सक [आ+चम्] आचमन करना, कुल्ला करना। हेक्र—आयमित्तए; (कप्प)। वक्र—आयममाण; (ठा ५)।
आयमण न [आचमन] शुद्धि, शौच; (श्रा १२; गा ३३०; निचू ४; स २०६; २५२)।
आयमिअ देखो आगमिअ; (हे १, १७७)।
आयमिणी स्त्री [आयमिनी] विद्या-विशेष; (सूत्र २, २)।
आयय वि [आयत] १ लम्बा, विस्तृत; (उवा; पउम ८, २१५)। २ पुं. मोक्ष; (सूत्र १, २)।
आययण न [आयतन] १ घर, गृह; (गउड)। २ आश्रय, स्थान; (आचा)। ३ देव-मन्दिर; (आवम)। ४ धार्मिक जनों का एकत्र होने का स्थान;
"जत्थ साहम्मिया बहवे सीलवंता बहुस्सुया।
चरित्तायारसंपण्णा आययणं तं वियाण हु" (धम्म)।
५ कर्म-बन्ध का कारण; (आचा)। ६ निर्णय, निश्चय; (सूत्र १, ९)। ७ निर्दोष स्थान; (सार्ध १०६)।
आयर सक [आ+चर्] आचरना, करना। आयरइ; (महा; उव)। वक्र—आयरंत, आयरमाण; (भग)। कृ—आयरियव्व; (स १)
आयर पुं [आकर] १ खानि, खान; २ समूह; (काल; कप्पू)।
आयर देखो आयार=आचार; (पुष्फ ३५६)।
आयर पुं [आदर] १ सत्कार, सम्मान; (गउड)। २ परिग्रह, असंतोष; (पण्ह १, ५)। ३ ख्याल, संभाल; (कप्पू)।
आयरंग पुं [आयरङ्ग] इस नाम का एक म्लेच्छ राजा; (पउम २७, ६)।
आयरण न [आचरण] प्रवृत्ति, अनुष्ठान; (पडि)।
आयरण न [आदरण] आदर; (भग १२, ५)।
आयरणा स्त्री [आचरणा] आचरण, अनुष्ठान; (सट्ठि १४५; उवर १४५)।

आयरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित, कृत; (उवा)। २ न. शास्त्र-सम्मत चाल-चलन;
"असढेण समाइन्नं जं कत्थइ केणइ असावज्जं।
न निवारियमन्नेहि य, बहुमणुमयमेयमायरियं" (उप ८१३)।
आयरिय पुं [आचार्य] १ गण का नायक, मुखिया; (आवम)। २ उपदेशक, गुरु, शिक्षक; (भग १, १)। ३ अर्थ पढाने वाला; (भग ८, ८)।
आयरिस देखो आयंस; (हे २, १०५)।
आयल्ल अक [लम्ब्] १ व्याप्त होना। २ लटकना।
"केसकलाउ खंधि ओणल्लइ, परिमोक्कलु नियंबि आयल्लइ" (भवि)।
आयल्लया स्त्री [दे] बेचैनी; "मयणसरविहुरियंगी सहसा आयल्लयं पत्ता" (पउम ८, १८९)। "विद्धो अणंग-बाणेहिं झत्ति आयल्लयं पत्तो" (सुर १६, ११०)। "किं उण पिअवअस्स मअणाअल्लअं अत्तणो उइदेहिं अक्खरेहिं णिवेदेमि" (कप्पू)। देखो आअल्ल।
आयल्लिय वि [दे] आक्रान्त; व्याप्त; (उप १०३१ टी; भवि)।
आयव वि [आतप] १ उद्योत, प्रकाश; (गा ४९)। २ ताप, घाम; (उत्त)। ३ न. मुहूर्त-विशेष; (सम ५१)।
°णाम °नाम न [°नामन्] नामकर्म का एक भेद; (सम ६७)।
आयवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता; (णाया १, १)।
आयवत्त पुं [आर्यावर्त्त] भारत, हिंदुस्तान; (इक)।
आयवा स्त्री [आतपा] १ सूर्य की एक अग्र-महिषी—पटरानी; २ इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाया २, १)।
आयस वि [आयस] लोहे का, लोह-निर्मित; (गउड; निचू १)।
आयसी स्त्री [आयसी] लोहे की कोश; (पण्ह १, १)।
आया देखो आय=आत्मन्।
आया सक [आ+या] आना, आगमन करना। आयंति; (सुपा ५७)। आयाइंति, आयाइंसु; (कप्प)। वक्र—आयंत।
आया सक [आ+दा] ग्रहण करना, स्वीकार करना। आयइज्ज; (उत्त ६)। कृ—आयाणिज्ज; (ठा ६)। संकृ—आयाए, आदाय, आयाय; (कस; कप्प; महा)।

आयाइ स्त्री [**आजाति**] १ उत्पत्ति, जन्म; (ठा १०) । २ जाति, प्रकार ; ३ आचार, आचरण ; (आचा) । °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] १ संसार, जगत ; २ 'आचाराङ्ग' सूत्र के एक अध्ययन का नाम ; (ठा १०) ।

आयाइ स्त्री [**आयाति**] १ आगमन । २ उत्पत्ति, गर्भ से बाहर निकलना ; (ठा ३, ३) । ३ आयति, भविष्य काल ; (दसा) ।

आयाए देखो **आया=**आ+दा ।

आयाण पुंन [**आदान**] १ ग्रहण, स्वीकार ; (आचा)। २ इन्द्रिय ; (भग ५, ४) । ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य वस्तु; (ठा ४; सूत्र २, ७) । ४ कारण, हेतु ; " संति मे तउ आयाणा जेहिं कीरइ पावगं " (सूत्र १, १) ; " किंवा दुक्खायाणं अट्टज्झाणं समारुहसि " (पउम ६५, ४८) । ५ आदि, प्रथम ; (अणु) ।

आयाण न [**आयान**] १ आगमन । २ अश्व का एक आभरण-विशेष ; (गउड) ।

आयाम सक [**आ+यमय्**] लम्बा करना । कवकृ— **आआमिज्जंत** ; (से १०, ७) । संकृ—**आयामेत्ता, आयामेत्ताणं** ; (भग ; पि ५८३) ।

आयाम सक [**दा**] देना, दान करना । आयामेइ ; (भग १५) । संकृ—**आयामेत्ता** ; (भग १५) ।

आयाम पुं [**आयाम**] लम्बाई, दैर्घ्य ; (सम २; गउड)।

आयाम पुं [**दे**] बल, जोर ; (दे १, ६५) ।

आयाम न [**आचाम्ल**] तप-विशेष, आयंबिल ; " नाइविगिट्ठो उ तवो छम्मासे परिमियं तु आयामं" (आचानि २७२ ; २७३) ।

आयाम, **आयामग** न [**आचाम**] अवस्रावण, चावल आदि का पानी ; (ओघ ३४९ ; उत्त १५) ।

आयामणया स्त्री [**आयामनता**] लम्बाई ; (भग) ।

आयामि वि [**आयामिन्**] लम्बा ; (गउड) ।

आयामुही स्त्री [**आयामुखी**] इस नाम की एक नगरी ; (स ४३१) ।

आयाय देखो **आया=**आ+दा ।

आयाय वि [**आयात**] आया हुआ; (पउम १४, १३० ; (दे १, ६६ ; कुम्मा १६) ।

आयार सक [**आ+कारय्**] बोलाना, आह्वान करना । आआरेदि (शौ) ; (नाट) । संकृ—**आआरिअ; आयारेऊण** ; (नाट ; स ५७८) ।

आयार पुं [**आकार**] १ आकृति, रूप ; (णाया १, १)। २ इङ्गित, इसारा ; (पाअ) ।

आयार पुं [**आचार**] १ आचरण, अनुष्ठान ; (ठा २, ३ ; आचा) । २ चालचलन, रीतभात ; (पउम ६३, ८) । ३ बारह जैन अङ्ग-ग्रन्थो में पहला ग्रन्थ " आयारपढमसुत्ते " (उप ६८०)। ४ निपुण शिष्य; (भग १, १) । °**क्खेवणी** स्त्री [°**ाक्षेपणी**] कथा का एक भेद; (ठा ४) । °**भंडग °भंडय** न [°**भाण्डक**] ज्ञानादि का उपकरण—साधन ; (णाया १, १ ; १६) ।

आयारिमय न [**आचारिमक**] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान ; (स ७७) ।

आयारिय वि [**आकारित**] १ आहूत, बोलाया हुआ ; (पउम ६१, २५) । २ न. आह्वान-वचन, आक्षेप-वचन ; (से १३, ८० ; अभि २०५) ।

आयाव सक [**आ+तापय्**] सूर्य के ताप में शरीर को थोडा तपाना । २ शीत, आतप आदि को सहन करना । वकृ— **आयावंत**; (पउम ६, ६१); **आयाविंत**; (काल); **आयावेंत**; (पउम २६, २१) ; **आयावेमाण**; (महा ; भग)। हेकृ—**आयावेत्तए**; (कस) । संकृ – **आयाविय**; (आचा)।

आयाव पुं [**आताप**] असुरकुमार-जातीय देव-विशेष ; (भग १३, ६) ।

आयावग वि [**आतापक**] शीत आदि को सहन करने वाला; (सूत्र २, २) ।

आयावण न [**आतापन**] एक वार या थोडा आतप आदि को सहन करना ; (णाया १, १६) । °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] शीतादि सहन करने का स्थान; (भग ६, ३३)।

आयावणया, **आयावणा** स्त्री [**आतापना**] ऊपर देखो ; (ठा ३, ५) ।

आयावय वि [**आतापक**] शीत आदि को सहन करने वाला ; (पण्ह २, १) ।

आयावल, **आयावलय** पुं [**दे**] सवेर का तड़का, बालातप ; (दे. १, ७० ; पाअ) ।

आयावि वि [**आतापिन्**] देखो **आयावय**; (ठा ४) ।

आयास सक [**आ+यासय्**] तकलीफ देना, खिन्न करना । आआसंति ; (पि ४६०)। संकृ—**आआसिअ**; (मा ४५)।

आयास पुं [**आयास**] १ तकलीफ, परिश्रम, खेद ; (गउड) । २ परिग्रह, असन्तोष ; (पण्ह १, ५) । °**लिवि** स्त्री [°**लिपि**] लिपि-विशेष ; (पण्ण १) ।

आयास देखो **आयंस** ; (षड्) ।
आयास देखो **आगास**; (पउम ६६, ४० ; हे १, ८४) । °**तिलय** न [°**तिलक**] नगर-विशेष ; (भवि) ।
आयासइत्तिअ वि [**आयासयितृ**] तकलीफ देने वाला ; (अभि ६३) ।
आयासतल न [**दे**] प्रासाद का पृष्ठ भाग; (दे १,७२) ।
आयासलव न [**दे**] पक्षि-गृह, नीड़ ; (दे १, ७२) ।
आयासिअ वि [**आयासित**] परिश्रान्त, खिन्न ; (गा १६०) ।
आयाहिण न [**आदक्षिण**] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण करना ; (उवा) । °**पयाहिण** वि [°**प्रदक्षिण**] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण कर दक्षिण पार्श्व में स्थित होने वाला ; (विपा १, १) । °**पयाहिणा** स्त्री [°**प्रदक्षिणा**] दक्षिण पार्श्व से परिभ्रमण, प्रदक्षिणा ; (ठा १) ।
आयु देखो **आउ**=आयुष् । °**वंत** वि [°**वत्**] चिरायुष्क, दीर्घ आयु वाला ; (पण्ह १, ४) ।
आर पुं [**आर**] १ मंगल-ग्रह ; (पउम १७, १०८ ; सुर १०, २२४) । २ चौथी नरक का एक नरकावास ; (ठा ६) । ३ वि. अर्वाक्तन, पूर्व का ; (सूअ १, ६) ।
°**आरअ** वि [**कारक**] कर्ता, करने वाला ; (गा १७६; ३४८) ।
आरओ अ [**आरतस्**] १ पूर्व, पहले, अर्वाक् ; (सूअ १, ८ ; स ६४३) । २ समीप में, पास में; (उप ३३१) । ३ शुरु कर के, प्रारम्भ कर के ; (विसे २२८५) ।
आरंदर वि [**दे**] १ अनेकान्त ; २ संकट, व्याप्त; (दे १, ७८) ।
आरंभ सक [**आ+रभ्**] १ शुरू करना । २ हिंसा करना । आरंभइ ; (हे ४, १५५) । वकृ—**आरंभंत** (गा ४२ ; हे ८, ८२) । संकृ—**आरंभइत्ता, आरंभिअ**; (नाट) ।
आरंभ पुं [**आरम्भ**] १ शुरुआत, प्रारम्भ ; (हे १, ३०) । २ जीव-हिंसा, वध; (श्रा ७) । ३ जीव, प्राणी ; (पण्ह १, १) । ४ पाप-कर्म ; (आचा) । °**य** वि [°**ज**] पाप-कार्य से उत्पन्न ; (आचा) । °**विणय** पुं [°**विनय**] आरंभ का अभाव । °**विणइ** वि [°**विनयिन्**] आरंभ से विरत ; (आचा) ।
आरंभग } पुं [**आरम्भक**] १ ऊपर देखो ; (सूअ २,
आरंभय } ६) । २ वि. शुरु करने वाला ; (विसे ६२८ ; उप पृ ३) । ३ हिंसक, पाप-कर्म करने वाला ; (आचा) ।
आरंभि वि [**आरम्भिन्**] १ शुरू करने वाला ; (गउड) । २ पाप-कार्य करने वाला ; (उप ८६६) ।
आरंभिअ पुं [**दे**] मालाकार, माली ; (दे १, ७१) ।
आरंभिअ वि [**आरब्ध**] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ ; (भवि) ।
आरंभिअ देखो **आरंभ**=आ+ रभ् ।
आरंभिया स्त्री [**आरम्भिकी**] १ हिंसा से सम्बन्ध रखने वाली क्रिया ; २ हिंसक क्रिया से होने वाला कर्म-बन्ध ; (ठा २, १ ; नव १७) ।
आरक्ख वि [**आरक्ष**] १ रक्षण करने वाला ; (दे १, १५) । २ पुं. कोटवाल, नगर का रक्षक ; (पात्र) ।
आरक्खग वि [**आरक्षक**] १ रक्षण करने वाला, त्राता ; (कप्प; सुपा ३५१) । २ पुं. क्षत्रियों का एक वंश; ३ वि. उस वंश में उत्पन्न ; (ठा ६) ।
आरक्खि वि [**आरक्षिन्**] रक्षक, त्राता ; (ठा ३, १ ; ओघ २६०) ।
आरक्खिग } वि [**आरक्षिक**] १ रक्षक, त्राता ; २ पुं.
आरक्खिय } कोटवाल ; (निचू १, १६ ; सुपा ३३६ ; महा ; स १२७; १५१) ।
आरज्झ वि [**आराध्य**] पूज्य, माननीय; (अच्चु ७१) ।
आरड सक [**आ+रट्**] १ चिल्लाना, बूम मारना । २ रोना । वकृ—**आरडंत** ; (उप १२८ टी) । संकृ—**आरडिऊण**; (महा) ।
आरडिअ न [**दे**] १ विलाप, क्रन्दन; २ वि. चिल-युक्त ; (दे १, ७५) ।
आरण पुं [**आरण**] १ देवलोक-विशेष ; (अनु ; सम ३६ ; इक) । २ उस देवलोक का निवासी देव ; "तं चेव आरण-च्चुय ओहीनाणेण पासंति" (संग २२१; विसे ६९६) ।
आरण न [**दे**] १ अधर, होठ ; २ फलक ; (दे १,७६) ।
आरणाल न [**आरनाल**] कांजी, सावुदाना ; (दे १,६७) ।
आरणाल न [**दे**] कमल, पद्म ; (दे १, ६७) ।
आरण्ण वि [**आरण्य**] जंगली, जंगल-निवासी ; (से ८, ५६) ।
आरण्णग } वि [**आरण्यक**] १ जंगली, जंगल-निवासी ,
आरण्णय } जंगल में उत्पन्न; (उप २२६; दसा) । २ न, शास्त्र-विशेष, उपनिषद्-विशेष , (पउम ११, १०) ।
आरण्णिय वि [**आरण्यिक**] जंगल में बसने वाला (तापस आदि) ; (सूअ २, २) ।

आरत वि [**आरत**] १ थोड़ा रक्त ; (आचा) । २ अत्यन्त अनुरक्त ; (पराह २, ४) ।

आरत्तिय न [**आरात्रिक**] आरती; (सुर १०, १६; कुमा) ।

आरद्ध वि [**आरब्ध**] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ ; (काल) ।

आरद्ध वि [**दे**] १ बढ़ा हुआ ; २ सतृष्ण, उत्सुक ; ३ घर में आया हुआ ; (दे १, ७५) ।

आरनाल देखो **आरणाल**=आरनाल ; (पाअ) ।

आरनाल न [**दे**] कमल, पद्म ; (षड्) ।

आरब देखो **आरव** ।

आरब्भ नीचे देखो ।

आरभ देखो **आरंभ**=आ+रभ् । आरभइ ; (हे ४, १५५ ; उवर १०) । वकृ—**आरभंत, आरभमाण** ; (ठा ७) । संकृ—**आरब्भ**; (विसे ७६५) ।

आरभड न [**आरभट**] १ नृत्य का एक भेद; (ठा ४, ४) । २ इस नाम का एक मुहूर्त ; "छच्चेव य आरभडो सोमित्तो पंचअंगुलो होइ" (गणि) ।

आरभडा स्त्री [**आरभटा**] प्रतिलेखना-विशेष ; (ओघ १६२ भा) ।

आरभिय न [**आरभित**] नाट्यविधि-विशेष ; (राय) ।

आरय वि [**आरत**] १ उपरत ; २ अपगत ; (सूअ १, १५) ।

आरव पुं [**आरव**] शब्द, अवाज, ध्वनि ; (सण) ।

आरव पुं [**आरब**] इस नाम का एक प्रसिद्ध म्लेच्छ-देश ; (पराह १, १) ।

आरव } **आरवग** } वि [**आरब**] अरब देश में उत्पन्न, अरब देश का निवासी । स्त्री—°**वी** ; (णाया १, १) ।

आरविंद वि [**आरविन्द**] कमल-सम्बन्धी ; (गउड) ।

आरस सक [**आ+रस्**] चिल्लाना, बूम मारना । वकृ—**आरसंत**; (उत्त १६) । हेकृ—**आरसिउं**; (काल) ।

आरसिय न [**आरसित**] १ चिल्लाहट; बूम; २ चिल्लाया हुआ ; (विपा १, २) ।

आरह देखो **आरभ** । आरहइ; (षड्) । संकृ—**आरहिअ** ; (अभि ६०) ।

आरा स्त्री [**आरा**] लोहे की सलाई, पैनेमें डाली जाती लोहे की खीली ; (पराह १, १ ; स ३८) ।

आरा अ [**आरात्**] १ अर्वाक्, पहले ; (दे १, ६३) । २ पूर्व-भाग ; (विसे १७४०) ।

आरइअ वि [**दे**] १ गृहीत, स्वीकृत ; २ प्राप्त ; (दे १, ७०) ।

आराडी स्त्री [**दे**] देखो **आरडिअ**; (दे १, ७५) ।

आराम पुं [**आराम**] बगीचा, उपवन; (औप; णाया १,१) ।

आरामिअ पुं [**आरामिक**] माली ; (कुमा) ।

आराव पुं [**आराव**] शब्द, अवाज ; (स ५७७; गउड) ।

आराह सक [**आ+राधय्**] १ सेवा करना, भक्ति करना । २ ठीक ठीक पालन करना । आराहइ, आराहेइ ; (महा; भग) । वकृ—**आराहंत**; (रयण ७०) । संकृ—**आराहित्ता, आराहेत्ता, आराहिऊण**; (कप्प; भग; महा) । हेकृ—**आराहिउं** ; (महा) ।

आराह वि [**आराध्य**] आराधन-योग्य ; (आरा ११) ।

आराहग वि [**आराधक**] १ आराधन करने वाला ; २ मोक्ष का साधक ; (भग ३, १) ।

आराहण न [**आराधन**] १ सेवना ; (आरा ११) । २ अनशन ; (राज) ।

आराहणा स्त्री [**आराधना**] १ सेवा, भक्ति ; २ परिपालन ; (णाया १, १२ ; पंचा ७) ३ मोक्ष-मार्ग के अनुकूल वर्तन; (पक्खि) । ४ जिसका आराधन किया जाय वह ; (आरा १) ।

आराहणी स्त्री [**आराधनी**] भाषा का एक प्रकार ; (दस ७) ।

आराहिय वि [**आराधित**] १ सेवित, परिपालित ; (सम ७०) । २ अनुरूप, योग्य ; (स ६२३) ।

आरिट्ठ वि [**दे**] यात, गत, गुजरा हुआ ; (षड्) ।

आरिय देखो **अज्ज**=आर्य । (भग; षड् ; सुपा १२८ ; पउम १४, ३० ; सुर ८, ६३) ।

आरिय वि [**आरित**] सेवित "आरिओ आयरिओ सेवितो वा एगट्ठत्ति " (आचू) ।

आरिय वि [**आकारित**] आहूत, बोलाया हुआ ; 'आरिओ आगारिओ वा एगट्ठा " (आव) ।

आरिया देखो **अज्जा**=आर्या ; (प्रारू) ।

आरिल्ल वि [**दे**] अर्वाक् उत्पन्न, पहले जो उत्पन्न हुआ हो ; (दे १, ६३) ।

आरिस वि [**आर्ष**] ऋषि-सम्बन्धी ; (कुमा) ।

आरुग्ग देखो **आरोग्ग**=आरोग्य ; " आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु " (पडि) ।

आरुट्ठ वि [**आरुष्ट**] क्रुद्ध, रुष्ट ; (पउम ५३, १४१) ।

आरुभ देखो **आरुह=**आ+रुह् । वकृ—**आरुभमाण** ; (कस)।

आरुवणा देखो **आरोवणा** ; (विसे २६२८)।

आरुस सक [**आ+रुष्**] क्रोध करना, रोष करना। संकृ—**आरुस्स** ; (सूत्र १, ५)।

आरुसिय वि [**आरुष्ट**] क्रुद्ध, कुपित ; (णाया १, २)।

आरुह सक [**आ+रुह्**] ऊपर चढ़ना, ऊपर बैठना । **आरुहइ** ; (षड् ; महा)। आरुहेइ ; (भग)। वकृ—**आरुहंत, आरुहमाण** ; (से ५, १६ ; श्रा ३६)। संकृ—**आरुहिऊण, आरुहिय** ; (महा; नाट)। हेकृ—**आरुहिउं** ; (महा)।

आरुह वि [**आरुह**] उत्पन्न, उद्भूत, जात ;

"गामारुह म्हि गामे, वसामि नअरट्ठिइं ण आणामि।
णाअरिआणं पइणो हरेमि जा होमि सा होमि"
(गा ७०५)।

आरुहण न [**आरोहण**] ऊपर बैठना ; (णाया १, २; गा ६३०; सुपा २०३; विपा १, ७ ; गउड)।

आरुहिय वि [**आरोपित**] १ स्थापित, २ ऊपर बैठाया हुआ ; (से ८, १३)।

आरुहिय } वि [**आरूढ**] १ ऊपर चढा हुआ ; (महा)।
आरूढ } २ कृत, विहित ; " तीए पुरओ पइण्णा आरुहिया दुक्करा मए सामि " (पउम ८, १६१)।

आरेइअ वि [**दे**] १ मुकुलित, संकुचित ; २ भ्रान्त ; ३ मुक्त ; (दे १, ७७)। ४ रोमाञ्चित, पुलकित ; (दे १, ७७ ; पाअ)।

आरेण अ [**आरेण**] १ समीप, पास ; (उप ३३६ टी)। २ अर्वाक्, पहले ; (विसे ३५१७)। ३ प्रारम्भ कर ; (विसे २२८४)।

आरोअ अक [**उत्+लस्**] विकसित होना, उल्लास पाना। आरोअइ ; (हे ४, २०२)।

आरोअणा देखो **आरोवणा** ; (ठा ४, १ ; विसे २६२७)।

आरोइअ [**दे**] देखो **आरेइअ** ; (षड्)।

आरोग्ग सक [**दे**] खाना, भोजन करना, आरोगना। आरोग्गइ ; (दे १, ६६)।

आरोग्ग न [**आरोग्य**] १ नीरोगता, रोग का अभाव ; (ठा ४, ३ ; उव)। २ वि. रोग-रहित, नीरोग ; (कप्प)। ३ पुं. एक ब्राह्मणोपासक का नाम ; (उप ५४०)।

आरोग्गरिअ वि [**दे**] रक्त, रँगा हुआ ; (षड्)।

आरोग्गिअ वि [**दे**] भुक्त, खाया हुआ ; (दे १, ६६)।

आरोद्ध वि [**दे**] १ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ ; २ गृहागत, घर में आया हुआ ; (षड्)।

आरोल सक [**पुञ्ज्**] एकत्र करना, इकट्ठा करना। आरोलइ ; (हे ४, १०२ ; षड्)।

आरोलिअ वि [**पुञ्जित**] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ ; (कुमा)।

आरोव सक [**आ+रोपय्**] १ ऊपर चढ़ना, ऊपर बैठना। २ स्थापन करना। आरोवेइ ; (हे ४, ४७)। संकृ—**आरोवेत्ता, आरोविउं, आरोविऊण** ; (भग; कुमा; महा)।

आरोवण न [**आरोपण**] ऊपर चढ़ाना ; (सुपा २४६)। २ संभावना ; (दे १, १७४)।

आरोवणा स्त्री [**आरोपणा**] १ ऊपर चढ़ाना। २ प्रायश्चित्त-विशेष ; (वव १, १)। ३ प्ररूपणा, व्याख्या का एक प्रकार; ४ प्रश्न, पर्यनुयोग; (विसे २६२७; २६२८)।

आरोविय वि [**आरोपित**] १ चढ़ाया हुआ ; २ संस्थापित ; (महा ; पाअ)।

आरोस पुं [**आरोष**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ वि. उस देश का निवासी ; (पण्ह १, १; कस)।

आरोसिअ वि [**आरोषित**] कोपित, रुष्ट किया हुआ ; (से ६, ६६ ; भवि ; दे १, ७०)।

आरोह सक [**आ+रुह्**] ऊपर चढ़ना, बैठना। आरोहइ (कस)।

आरोह सक [**आ+रोहय्**] ऊपर चढाना। कृ—**आरोहइयव्व** ; (वव १)।

आरोह पुं [**आरोह**] १ सवार; हाथी, घोड़ा आदि पर चढ़ने वाला ; (से १३, ७५)। २ ऊंचाई, (बृह)। ३ लम्बाई; (वव १, ५)।

आरोह पुं [**दे**] स्तन, थन, चूँची ; (दे १, ६३)।

आरोहग वि [**आरोहक**] १ सवार होने वाला ; २ हस्तिपक, हाथी का रक्षक ; (औप)।

आरोहि वि [**आरोहिन्**] ऊपर देखो ; (गउड)।

आरोहिय वि [**आरूढ**] ऊपर बैठा हुआ, ऊपर चढ़ा हुआ ; (भवि)।

आल न [**दे**] १ छोटा प्रवाह ; २ वि. कोमल, मृदु ; (दे १, ७३)। ३ आगत; (रंभा)।

आल न [**आल**] कलंकारोप, दोषारोपण; (स ४३३); "न दिज्ज कस्सवि कूडआलं" (सत्त २) ।

°**आल** देखो **काल** ; (गा ५५; से १, २६ ; ५, ८५ ; ६, ५६) ।

°**आल** देखो **जाल** ; (से ५, ८५; ६, ५६) ।

°**आल** देखो **ताल** "समविसमं णमंति हरिआलवंकियाइ" ; (से ६, ५६) ।

आलइअ वि [**आलगित**] यथास्थान स्थापित, योग्य स्थान में रखा हुआ ; (कप्प) ।

आलइअ वि [**आलयिक**] गृही, आश्रय वाला ; (आचा) ।

आलंकारिय वि [**आलङ्कारिक**] १ अलंकार-शास्त्र-ज्ञाता ; २ अलंकार-संबन्धी । ३ अलंकार के योग्य ; "आलंकारियं भंडं उवणेह" (जीव ३) ।

आलंकिअ वि [**दे**] पंगु किया हुआ ; (दे १, ६८) ।

आलंद न [**आलन्द**] समय का परिमाण-विशेष, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतनेसे लेकर पांच अहोरात्र तक का काल ; (विसे) ।

आलंदिअ वि [**आलन्दिक**] उपर्युक्त समय का उल्लंघन न कर कार्य करने वाला ; (विसे) ।

आलंब सक [**आ+लम्ब्**] आश्रय करना, सहारा लेना । संकृ—**आलंबिय** ; (भास ११) ।

आलंब पुं [**आलम्ब**] आश्रय, आधार ; (सुपा ६३५) ।

आलंब न [**दे**] भूमि-छत्र, वनस्पति-विशेष जो वर्षा में होता है; (दे १, ६४) ।

आलंबण न [**आलम्बन**] १ आश्रय, आधार, जिसका अवलम्बन किया जाय वह; (णाया १, १) । २ कारण, हेतु, प्रयोजन ; (आवम; आचा) ।

आलंबणा स्त्री [**आलम्बना**] ऊपर देखो; (पि ३६७) ।

आलंबि वि [**आलम्बिन्**] अवलम्बन करने वाला, आश्रयी; (गउड) ।

आलंभिय न [**आलम्भिक**] १ नगर-विशेष ; (ठा १) । २ भगवती सूत्र के ग्यारहवें शतक का बारहवाँ उद्देश; (भग ११, १२) ।

आलंभिया स्त्री [**आलम्भिका**] नगरी-विशेष ; (भग ११, १२) ।

आलक्क पुं [**दे**] पागल कुत्ता ; (भत्त १२५) ।

आलक्ख सक [**आ+लक्षय्**] १ जानना । २ चिह्न से पिछानना । आलक्खिमो ; (गउड) ।

आलक्खिय वि [**आलक्षित**] १ ज्ञात, परिचित । २ चिह्न से जाना हुआ ; (गउड) ।

आलग्ग वि [**आलग्न**] लगा हुआ, संयुक्त; (से ५, ३३)।

आलत्त वि [**आलपित**] संभाषित, आभाषित; (पउम १६, ४२ ; सुपा २०८; श्रा ६) ।

आलत्तय देखो **अलत्त** ; (गउड; गा ६४६) ।

आलत्थ पुं [**दे**] मयूर, मोर ; (दे १, ६५) ।

आलद्ध वि [**आलब्ध**] १ संसृष्ट ; २ संयुक्त ; ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ ; ४ मारा हुआ ; (नाट) ।

आलप्प वि [**आलाप्य**] कहने के योग्य, निर्वचनीय ; "सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं" (लहुअ ८) ।

आलभ सक [**आ+लभ्**] प्राप्त करना । आलभिज्जा ; (उवर ११) ।

आलभिया स्त्री [**आलभिका**] नगरी-विशेष ; (उवा ; भग ११, २) ।

आलय पुंन [**आलय**] गृह, घर, स्थान ; (महा ; गा १३५)।

आलयण न [**दे**] वास-गृह, शय्या-गृह; (दे १,६६; ८,५८)।

आलव सक [**आ+लप्**] १ कहना, बातचीत करना । २ थोडा या एक वार कहना । वकृ—**आलवंत** ; (गा ११८; अभि ३८) ; **आलवमाण** ; (ठा ४) । **आलविऊण**; (महा) ; **आलविय** ; (नाट) ।

आलवण न [**आलपन**] संभाषण, बातचीत, वार्तालाप ; (ओघ ११३; उप १२८ टी; श्रा १६; दे १,५६; स ६६)।

आलवाल न [**आलवाल**] कियारी, थाँवला ; (पाअ) ।

आलस वि [**आलस**] आलसी, सुस्त ; (भग १२,२) ।
°**त्त** न [°**त्व**] आलस, सुस्ती ; (श्रा २३) ।

आलसिय वि [**आलसित**] आलसी, मन्द, (भग १२,२)।

आलस्स न [**आलस्य**] आलस, सुस्ती ; (कुमा; सुपा २५१)।

आलाअ देखो **आलाव** ; (गा ४२८; ६१९ ; मै १६)।

आलाण देखो **आणाल** ; (पाअ; से ५, १७ ; महा) ।

आलाणिय वि [**आलानित**] नियन्त्रित, मजबुती से बाँधा हुआ ; "दढभुयदंडालाणियकमलाकरिणी निवो समरसीहो" (सुपा ४) ।

आलाव पुं [**आलाप**] १ संभाषण, बातचीत ; (श्रा ६) । २ अल्प भाषण ; (ठा ५) । ३ प्रथम भाषण ; (ठा ४) । ४ एक वार की उक्ति ; (भग ५, ४) ।

आलावग पुं [**आलापक**] पेरा, पेरेग्राफ, ग्रन्थ का अंश-विशेष; (ठा २, २)।
आलावण न [**आलापन**] बाँधने का रज्जु आदि साधन, बन्धन-विशेष। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] बन्ध-विशेष; (भग ८, ६)।
आलावणी स्त्री [**आलापनी**] वाद्य-विशेष; (वज्जा ८०)।
आलास पुं [**दे**] वृश्चिक, बिच्छू; (दे १, ६१)।
आलाहि देखो **अलाहि**; (षड्)।
आलि पुं [**आलि**] भ्रमर, भमरा; (पडि)।
आलि देखो **आली**; (राय; पाअ)।
आलिंग सक [**आ+लिङ्ग्**] आलिङ्गन करना, भेटना। **आलिंगइ**; (महा)। संकृ—**आलिंगिऊण**; (महा)। हेकृ—**आलिंगिउं**; (महा)।
आलिंग पुं [**आलिङ्ग**] वाद्य-विशेष; (राय)।
आलिंग पुं [**आलिङ्ग्य**] १ आलिङ्गन करने योग्य। २ वाद्य-विशेष; (जीव ३)।
आलिंगण न [**आलिङ्गन**] आलिंगन; भेट; (कप्पू)। °**वट्टि** स्त्री [°**वृत्ति**] उपधान, शरीर-प्रमाण उपधान; (भग ११, ११)।
आलिंगणिया स्त्री [**आलिङ्गनिका**] देखो **आलिंगण-वट्टि**; (जीव ३)।
आलिंगिय वि [**आलिङ्गित**] आश्लिष्ट, जिसका आलिंगन किया गया हो वह; (काल)।
आलिंद पुं [**आलिन्द**] बाहर के दरवाजे के चौकठे का एक हिस्सा; (अभि १५६; अवि २८)।
आलिंप सक [**आ+लिप्**] पोतना, लेप करना। **आलिंपइ**; (उव)। हेकृ—**आलिंपित्तए**; (कस)। वकृ—**आलिंपंत**; प्रयो—**आलिंपावंत**; (निचू ३)।
आलिंपण न [**आलेपण**] १ लेप करना, विलेपन; (रयण ५५)। २ जिसका लेप होता है वह चीज; (निचू १२)
आलित्त वि [**आलिप्त**] चारों ओर से जला हुआ; "जह आलित्ते गेहे कोइ पसुत्तं नरं तु बोहेज्जा" (वव १,३; गाया १, १; १४) २ न. आग लगनी, आग से जलना; "कोट्ठिमघरे वसंते आलित्तम्मि वि न डज्झइ" (वव ४)।
आलिद्ध वि [**आश्लिष्ट**] आलिंगित; (भग १६, ३; सुर ३, २२२)।
आलिद्ध वि [**आलीढ**] चखा हुआ, आस्वादित; (से ६,

आलिसंदग पुं [**दे. आलिसन्दक**] धान्य-विशेष; (ठा ५, ३; भग ६, ७)।
आलिसिंदय पुं [**दे. आलिसिन्दक**] ऊपर देखो; (ठा ५, ३)।
आलिह सक [**स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना। आलिहइ (हे ४, १८२)। वकृ—**आलिहंत**; (नाट)।
आलिह सक [**आ+लिख्**] १ विन्यास करना, स्थापन करना। २ चित्र करना, चितरना। वकृ—**आलिहमाण**; (सुर १२, ४०)।
आलिहिअ वि [**आलिखित**] चित्रित; (सुर १, ८७)।
आली सक [**आ+ली**] १ लीन होना, आसक्त होना। २ आलिंगन करना। ३ निवास करना। वकृ—**आलीयमाण**; (गउड)।
आली स्त्री [**आली**] १ पंक्ति, श्रेणी; २ सखी, वयस्या; (हे १, ८३)। ३ वनस्पति-विशेष; (णाया १, ३)।
आलीढ वि [**आलीढ**] १ आसक्त; "आमूलालोलधूली-बहुलपरिमलालीढलोलालिमाला" (पडि)। २ न. आसन-विशेष; (वव १)।
आलीण वि [**आलीन**] १ लीन, आसक्त, तत्पर; (पउम ३२, ६)। २ आलिंगित, आश्लिष्ट; (कप्प)।
आलीयग वि [**आदीपक**] जलाने वाला, आग सुलगाने वाला; (णाया १, २)।
आलीयमाण देखो **आली=आ+ली**।
आलील न [**दे**] समीप का भय, पास का डर; (दे १,६५)।
आलीवग देखो **आलीयग**; (पराह १, ३)।
आलीवण न [**आदीपन**] आग लगाना; (दे १, ७१; विपा १, १)।
आलीविय वि [**आदीपित**] आग से जलाया हुआ; (पि २४४)।
आलु पुंन [**आलु**] कन्द-विशेष, आलु; (श्रा २०)।
आलुई स्त्री [**आलुकी**] वल्ली-विशेष; (पव १०)।
आलुंख सक [**दह्**] जलाना, दाह देना। आलुंखइ; (हे ४, २०८; षड्)।
आलुंख सक [**स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना। आलुंखइ; (हे ४, १८२)।
आलुंखण न [**स्पर्शन**] स्पर्श, छूना; (गउड)।
आलुंखिअ वि [**स्पृष्ट**] स्पृष्ट, छुआ हुआ; (से १, २१; पाअ)।
आलुंखिअ वि [**दग्ध**] जला हुआ; (सुर ६, २०३)।
आलुंप सक [**आ+लुम्प्**] हरण करना। आलुंपइ; (आचा)।

आलुंप वि [**आलुम्प**] अपहारक, हरण करने वाला, छीन लेने वाला ; (आचा)।
आलुग देखो **आलु** ; (पराण १)।
आलुगा स्त्री [**दे**] घटी, छोटा घड़ा ; (उप ६६०)।
आलुयार वि [**दे**] निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन ; "ता दंसिमो समग्गं अन्नह किं आलुयारभणिएहिं" (सुपा ३४३)।
आलेक्ख } वि [**आलेख्य**] चित्रित, "रतिं परिवट्टेउं
आलेक्खिय } लक्खं आलेक्खदिणयराणवि न खमं" (अच्चु २५ ; से २, ४५ ; गा ६४१ ; गउड)।
आलेट्ठुअं } देखो **आसिलिस**।
आलेट्ठुं }
आलेव पुं [**आलेप**] विलेपन, लेप ; "आलेवनिमितं च देवीओ वलयालंकियबाहाओ घसंति चंदणं" (महा)।
आलेवण न [**आलेपन**] १ लेप, विलेपन ; २ जिसका लेप किया जाता है वह वस्तु; " जे भिक्खू रतिं आलेवणजायं पडिग्गाहेत्ता" (निचू १२)।
आलेह पुं [**आलेख**] चित्र ; (आवम)।
आलेहिअ वि [**आलेखित**] चित्रित ; (महा)।
आलोअ सक [**आ+लोक्**] देखना, विलोकन करना। वकृ— **आलोअंत, आलोइंत, आलोएमाण** ; (गा ५४६; उप पृ ४३ ; आचा)। कवकृ—**आलोक्कंत** ; (से १, २५) संकृ—**आलोएऊण; आलोइत्ता**; (काल; ठा ६)।
आलोअ सक [**आ+लोच्**] १ देखाना ; २ गुरु को अपना अपराध कह देना। ३ विचार करना। ४ आलोचना करना। अलोएइ ; (भग)। वकृ—**आलोअंत** ; (पडि)। संकृ—**आलोएत्ता, आलोचित्ता** ; (भग; पि ५८२)। हेकृ—**आलोइत्तए** ; (ठा २, १)। कृ— **आलोएयव्व, आलोएइयव्व**; (उप ६८२; ओघ ७६६)।
आलोअ पुं [**आलोक**] १ तेज, प्रकाश; (से २, १२)। २ विलोकन, अच्छी तरह देखना ; (ओघ ३)। ३ पृथ्वी का समान-भाग, सम भू-भाग; (ओघ ५६५)। ४ गवाक्षादि प्रकाश-स्थान ; (आचा)। ५ जगत, संसार; (आव)। ६ ज्ञान ; (पराह १, ४)।
आलोअग } वि [**आलोचक**] आलोचना करने वाला ;
आलोअय } (श्रा ४० ; पुप्फ ३५५ ; ३६०)।
आलोअण न [**आलोकन**] विलोकन, दर्शन, निरीक्षण ; (ओघ ५६ भा) ;
"अत्थालोअणतरला, इअरकईणं भमंति बुद्धीओ।
त एव निरारंभं, एंति हिययं कइंदाणं" (गउड)।
आलोअण न [**आलोचन**] नीचे देखो ; (पराह २, १ ; प्रासू २४)।
आलोअणा स्त्री [**आलोचना**] १ देखना, बतलाना ; २ प्रायश्चित के लिए अपने दोषों को गुरु को बता देना ; ३ विचार करना ; (भग १७, २ ; श्रा ४२ ; स ५०६)।
आलोइअ वि [**आलोकित**] दृष्ट, निरीक्षित ; (से ६, ६४)।
आलोइअ वि [**आलोचित**] प्रदर्शित, गुरु को बताया हुआ; (पडि)।
आलोइअ देखो **आलोअ**=आ+लोच्।
आलोइत्तु वि [**आलोकयितृ**] देखने वाला, द्रष्टा ; (सम १५)।
आलोक्कंत देखो **आलोअ**=आ+लोक्।
आलोग देखो **आलोअ**=आलोक ; (ओघ ५६५)।
°**नयर** न [°**नगर**] नगर-विशेष ; (पउम ६८, ५७)।
आलोच देखो **आलोअ**=आ+लोच्। वकृ—**आलोच्चंत** ; (सुपा ३०७)। संकृ—**आलोचिऊण**; (स ११७)।
आलोचण देखो **आलोअण** ; (उप ३३२)।
आलोड सक [**आ+लोडय्**] हिलोरना, मथन करना। संकृ— **आलोडिवि** (अप); (सण)।
आलोडिय } वि [**आलोडित**] मथित, हिलोरा हुआ ;
आलोलिय } "आलोडिया य नयरी" (पउम ५३, १२६ ; उप १४२ टी)।
आलोव सक [**आ+लोपय्**] आच्छादित करना। कवकृ— **आलोविज्जमाण** ; (स ३८२)।
आलोव देखो **आलोअ**=आलोक। "मंते अत्थालोवे भेसज्जे भोयणे पियागमणे" (रंभा)।
आलोविय वि [**आलोपित**] आच्छादित, ढका हुआ ; (णाया १, १)।
आव वि [**यावत्**] जितना। आवंति ; (पि ३६६)।
आव अ [**यावत्**] जब तक, जब लग। °**कह** वि [°**कथ**] देखो °**कहिय** ; (विसे १२६३; श्रा १)। °**कहं** अ [°**कथम्**] यावज्जीव, जीवन-पर्यन्त ; (आव)। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] जीवन-पर्यन्त "धरणा आवकहाए गुरुकुल-वासं न मुंचंति" (उप ६८१)। °**कहिय** वि [°**कथिक**] यावज्जीविक, जीवन-पर्यन्त रहने वाला ; (ठा ६ ; उप ५२०)।

आव पुं [**आप**] १ प्राप्ति, लाभ; (पण्ह २, १)। २ जल का समूह। °**वहुल** न [°**वहुल**] देखो **आउ-वहुल**; (कस)।

आव सक [**आ+या**] आना, आगमन करना। "वणव-सिराणवि निच्चं आवइ निद्दासुहं ताण" (सुपा ६४७)। आवेइ; (नाट)। आवंति; (संग १६२)।

आवइ स्त्री [**आपद्**] आपत्ति, विपत्त, संकट; (सम ५७; सुपा ३२१; सुर ४, २१५; प्रासू ५, १५६)।

आवंग पुं [**दे**] अपामार्ग, वृक्ष-विशेष, लटजीरा; (दे १, ६२)।

आवंडु वि [**आपाण्डु**] थोड़ा सफेद, फीका; (गा २६५)।

आवंडुर वि [**आपाण्डुर**] ऊपर देखो; (से ६, ७४)।

आवग्गण न [**आवल्गन**] अश्व पर चढ़ने की कला; (भवि)।

आवच्चेज्ज वि [**अपत्यीय**] अपत्य-स्थानीय; (कप्प)।

आवज्ज देखो **आओज्ज**; (हे १, १५६)।

आवज्ज अक [**आ+पद्**] प्राप्त होना, लागु होना। आवज्जइ; (कस)। कृ—**आवज्जियव्व**; (पण्ह २, ५)।

आवज्ज सक [**आ+वर्ज्**] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना। "आवज्जंति गुणा खलु अवुहंपि जणं अमच्छरियं" (स ११)।

आवज्जण न [**आवर्जन**] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना; (आचू)। ३ उपयोग, ख्याल; ४ उपयोग-विशेष; ५ व्यापार-विशेष; (विसे ३०५१)।

आवज्जिय वि [**आवर्जित**] १ प्रसन्न किया हुआ; २ अभिमुख किया हुआ; (महा; सुर ६, ३१; सुपा २३२)। °**करण** न [°**करण**] व्यापार-विशेष; (आचू)।

आवज्जिय देखो **आउज्जिय**=आतोद्यिक; (कुमा)।

आवज्जीकरण न [**आवर्जीकरण**] उपयोग-विशेष या व्यापार-विशेष का करना, उदीरणावलिका में कर्म-प्रक्षेप रूप व्यापार; (औप; विसे ३०५०)।

आवट्ट अक [**आ+वृत्**] १ चक्र की तरह घूमना, फिरना। २ विलीन होना। ३ सक. शोषण करना; सूखाना। ४ पीड़ना, दुःखी करना। आवट्टइ; (हे ४, ४१६; सूअ १, १; ५)। वकृ—**आवट्टमाण**; (से ५, ८०)।

आवट्ट देखो **आवत्त**; (आचा; सुपा ६४; सूअ १, ३)।

आवट्टिआ स्त्री [**दे**] १ नवोढ़ा, दुलहिन; २ परतन्त्र स्त्री; (दे १, ७७)।

आवड सक [**आ+पत्**] १ आना, आगमन करना। २ आ लगना। वकृ—**आवडंत**; (प्रासू १०६)।

आवडण न [**आपतन**] १ गिरना; (से ६, ४२)। २ आ लगना; (स ३८४)।

आवडिअ वि [**आपतित**] १ गिरा हुआ; (महा)। २ पास में आया हुआ; (से १४, ३)।

आवडिअ वि [**दे**] १ संगत, संबद्ध; (दे १, ७८; पाअ)। २ सार, मजबूत; (दे १, ७८)।

आवण पुं [**आपण**] १ हाट, दुकान; (णाया १, १; महा)। २ बाजार; (प्रामा)।

आवणिय पुं [**आपणिक**] सौदागर, व्यापारी; (पाअ)।

आवण्ण वि [**आपन्न**] १ आपत्ति-युक्त। २ प्राप्त; (गा ४६७)। °**सत्ता** स्त्री [°**सत्त्वा**] गर्भिणी, गर्भवती स्त्री; (अभि १२४)।

आवत्त अक [**आ+वृत्**] १ परिभ्रमण करना। २ बदलना। ३ चक्राकार घूमना। ४ सक. पठित पाठ को याद करना। ५ घुमाना। आवत्तइ; (सूक्त ५१)। वकृ—**अत्तमाण, आवत्तमाण**; (हे १, २७१; कुमा)।

आवत्त पुं [**आवर्त्त**] १ चक्राकार परिभ्रमण; (स्वप्न ५६)। २ मुहूर्त्त-विशेष; (सम ५१)। ३ महाविदेह क्षेत्रस्थ एक विजय (प्रदेश) का नाम; (ठा २, ३)। ४ एक खुर वाला पशु-विशेष; (पण्ह १, १)। ५ एक लोकपाल का नाम; (ठा ४, १)। ६ पर्वतविशेष; (ठा ६)। ७ मणि का एक लक्षण; (राय)। ८ ग्राम-विशेष; (आवम)। ९ शारीरिक चेष्टा-विशेष, कायिक व्यापार-विशेष; "दुवालसावत्ते कितिकम्मे" (सम २१)। °**कूड** न [°**कूट**] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष; (इक)। °**ायंत** वकृ [°**ायमान**] दक्षिण की तर्फ चक्राकार घुमने वाला; (भग ११, ११)।

आवत्त न [**आतपत्र**] छत्र, छाता; (पाअ)।

आवत्तण न [**आवर्त्तन**] चक्राकार भ्रमण; (हे २, ३०)। °**पेढ़िया** स्त्री [°**पीठिका**] पीठिका-विशेष; (राय)।

आवत्तय पुं [**आवर्त्तक**] देखो **आवत्त**। १० वि. चक्राकार भ्रमण करने वाला; (हे २, ३०)।

आवत्ता स्त्री [**आवर्त्ता**] महाविदेह-क्षेत्र के एक विजय (प्रदेश) का नाम; (इक)।

आवत्ति स्त्री [**आपत्ति**] १ दोष-प्रसंग, "सव्वत्तिमोक्खा-वत्ती" (विसे १६३४)। २ आपदा, कष्ट; ३ उत्पत्ति; (विसे ६६)।

आवन्न देखो **आवण्ण**; (पउम ३४, ३०; णाया १, २; स २५६; उवर १६०)।

आवय पुं [**आवर्त्त**] देखो **आवत्त**; "कितिकम्मं बारसा-वयं" (सम २१)।

आवय देखो **आवड**। वकृ—**आवयंत, आवयमाण**; (पउम ३३, १३; णाया १, १; ८)।

आवया स्त्री [**आपगा**] नदी; (पाअ; स ६१२)।

आवया स्त्री [**आपद्**] आपदा, विपद्, दुःख; (पाअ; धण ४२); "न गणंति पुव्वनेहं, न य नीइं नेय लोय-अववायं। नय भाविआवयाओ, पुरिसा महिलाण आयत्ता" (सुर २, १८६)।

आवर सक [**आ+वृ**] आच्छादन करना, ढाँकना। **आव-रिज्जइ**; (भग ६, ३३)। कवकृ—**आवरिज्जमाण**; (भग १५)। संकृ—**आवरित्ता**; (ठा)।

आवरण न [**आवरण**] १ आच्छादन करने वाला, ढ़कने वाला, तिरोहित करने वाला; (सम ७१; णाया १, ८)। २ वास्तु-विद्या; (ठा ६)।

आवरणिज्ज वि [**आवरणीय**] १ आच्छादनीय। २ ढकने वाला, आच्छादन करने वाला; (औप)।

आवरिय वि [**आवृत**] आच्छादित, तिरोहित; "आवरिओ कम्मेहिं" (निचू १)।

आवरिसण न [**आवर्षण**] छिटकना, सिञ्चन; (बृह १)।

आवरेइया स्त्री [**दे**] करिका, मद्य परोसने का पात्र-विशेष; (दे १, ७१)।

आवलण न [**आवलन**] मोड़ना; (पण्ह १, १)।

आवलि स्त्री [**आवलि**] १ पङ्क्ति; श्रेणी; (महा)। २ पुं. एक विद्यार्थी का नाम; (पउम ५, ६५)।

आवलिआ स्त्री [**आवलिका**] १ पङ्क्ति, श्रेणी; (राय)। २ क्रम, परिपाटी; (सुज्ज १०)। ३ समय-विशेष, एक सूक्ष्म काल-परिमाण; (भग ६, ७)। °**पविट्ठ** वि [°**प्रविष्ट**] श्रेणि से व्यवस्थित; (भग)। °**बाहिर** वि [°**बाह्य**] विप्रकीर्ण, श्रेणि-बद्ध नहीं रहा हुआ; (भग)।

आवली स्त्री [**आवली**] १ पङ्क्ति, श्रेणी; (पाअ)। २ रावण की एक कन्या का नाम; (पउम ६, ११)।

आवस सक [**आ+वस्**] रहना, वास करना। आवसेज्जा; (सुअ १, १२)। वकृ—"आगारं **आवसंता** वि" (सुअ १, ६)।

आवसह पुं [**आवसथ**] १ घर, आश्रय, स्थान; (सूअ १, ४)। २ मठ, संन्यासिओं का स्थान; (पण्ह; हे २, १८७)।

आवसहिय पुं [**आवसथिक**] १ गृहस्थ, गृही; (सूअ २, २)। २ संन्यासी; (सूअ २, ७)।

आवसिय, आवस्सग, आवस्सय वि [**आवश्यक**] १ अवश्य-कर्तव्य, जरूरी; २ न. सामायिकादि धर्मानुष्ठान, नित्य-कर्म; (उव; दस १०; णंदि)। ३ जैन ग्रन्थ-विशेष, आवश्यक सूत्र; (आवम)। °**णुओग** पुं [°**नुयोग**] आवश्यक-सूत्र की व्याख्या; (विसे १)।

आवस्सय पुंन [**आपाश्रय**] १—३ ऊपर देखो; ४ आधार, आश्रय; (विसे ८७४)।

आवस्सिया स्त्री [**आवश्यकी**] सामाचारी-विशेष, जैन साधु का अनुष्ठान-विशेष; (उत्त २६)।

आवह सक [**आ+वह्**] धारण करना, वहन करना। "थेवोवि गिहिपसंगो जइणो सुद्धस्स पंकमावहइ" (उव)। "णो पूयणं तवसा आवहेज्जा" (सू १, ७)।

आवह वि [**आवह**] धारण करने वाला; (आचा)।

आवा सक [**आ+पा**] १ पीना। २ भोग में लाना, उप-भोग करना। हेकृ—"वंतं इच्छसि **आवेउं**, सेयं ते मरणं भवे" (दस २, ७)।

आवाग पुं [**आपाक**] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान; (उप ६४८; विसे २४६ टी)।

आवाड पुं [**आपात**] भीलों की एक जाति, "तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरड्ढभरहे वासे बहवे आवाडा णामं चिलाया परिवसंति" (जं ३)।

आवाणय न [**आपाणक**] दुकान, "भिन्नाइं आवाणयाइं" (स ५३०)।

आवाय पुं [**आपात**] १ प्रारम्भ, शुरूआत; (पाअ; से ११, ७५)। २ प्रथम मेलन; (ठा ४, १)। ३ तत्काल, तुरंत; (श्रा २३)। ४ पतन, गिरना; (श्रा २३)। ५ संबन्ध, संयोग; (उव; कस)।

आवाय पुं [**आवाप**] १ आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान; २ आलवाल; ३ प्रक्षेप, फेंकना; ४ शत्रु की चिन्ता; ५ बोना, वपन; (श्रा २३)।

आवाल } न [**दे**] जल के निकट का प्रदेश ; (दे
आवालय } २, ७०) ।
आवाव देखो **आवाय**=आवाप । °**कहा** स्त्री [°**कथा**] रसोई संबन्धी कथा, विकथा-विशेष ; (ठा ४, २)
आवास पुं [**आवास**] १ वास-स्थान ; (ठा ६; पात्र) । २ निवास, अवस्थान, रहना ; (परह १, ४ ; औप) । ३ पक्षि-गृह, नीड; (वव १,१) । ४ पडाव, डेरा; (सुपा २५६; उप पृ १३०) । °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] रहने का पर्वत; (इक) ।
आवास } देखो **आवस्सय**=आवश्यक; (पि ३४८;
आवासग } ओघ ६३८; विसे ८५०) ।
आवासणिया स्त्री [**आवासनिका**] आवास-स्थान ; (स १२२) ।
आवासय न [**आवासक**] १ आवश्यक, जरूरी । २ नित्य-कर्तव्य धर्मानुष्ठान ; (हे १, ४३ ; विसे ८५८) । ३ पुं. पक्षि-गृह, नीड़ ; (वव १, १) । ४ संस्काराधायक, वासक ; ५ आच्छादक ; (विसे ८७५) ।
आवासि वि [**आवासिन्**] रहने वाला; "एगंतनियावासी" (उव)
आवासिय वि [**आवासित**] संनिवेशित, पडाव डाला हुआ ; (सुपा ४५६ ; सुर २, १) ।
आवाह सक [**आ+वाहय्**] १ सांनिध्य के लिए देव या देवाधिष्ठित चीज को बुलाना । २ बुलाना । संकृ—**आवाहिवि** (अप); (भवि) ।
आवाह पुं [**आबाध**] पीडा, बाध ; (विपा १, ६) ।
आवाह पुं [**आवाह**] १ नव-परिणीत वधू को वर के घर लाना ; (परह २, ४) । २ विवाह के पूर्व किया जाता पान देने का एक उत्सव ; (जीव ३) ।
आवाहण न [**आवाहन**] आह्वान ; (विसे १८८३) ।
आवाहिय वि [**आवाहित**] १ बुलाया हुआ, आहूत; (भवि)। २ मदद के लिए बुलाया हुआ देव या देवाधिष्ठित वस्तु " एवं च भणंतेणं तेणं आवाहियाइं सत्थाइं " (सुर ८, ४२) ।
आवि न [**दे**] १ प्रसव-पीडा ; २ वि. नित्य, शाश्वत ; ३ दृष्ट, देखा हुआ ; (दे १, ७३) ।
आवि अ [**चापि**] समुच्चय-द्योतक अव्यय; (कप्प) ।
आवि अ [**आविस्**] प्रकटता-सूचक अव्यय ; (सुर १४, २११) ।
आविअ सक [**आ+पा**] पीना । " जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आविअइ रसं " (दस १, २) ।
आविअ वि [**आवृत**] आच्छादित ; (से ६, ६२) ।
आविअ पुं [**दे**] १ इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष; २ वि. मथित, आलोडित; (दे १, ७६) । ३ प्रोत; (दे १, ७६; पात्र; षड्) ।
आविअ वि [**आविच**] अविच-देशोत्पन्न ; (राय) ।
आविअज्झा स्त्री [**दे**] १ नवोढ़ा, दुलहिन ; २ परतन्त्रा, पराधीन स्त्री ; (दे १, ७७) ।
आविंध सक [**आ+व्यध्**] १ विंधना । २ पहनना । ३ मन्त्र से आधीन करना । आविंध; (आक ३८) । आविंधामो ; (पि ४८६) ; " पालंबं वा सुवरणसुत्तं वा आविंधेज्ज पिणिधेज्ज वा " (आचा २, १३, २०)। कर्म—आविज्झइ ; (उव) ।
आविंधण न [**आव्यधन**] १ पहनना ; २ मन्त्र से आविष्ट करना, मन्त्र से आधीन करना ; (परह १, २ ; आक ३८) ।
आविग्ग वि [**आविग्न**] उद्विग्न, उदासीन ; (से ६, ८६ ; १३, ६३ ; दे ७, ६३) ।
आविट्ठ वि [**आविष्ट**] १ आवृत, व्याप्त; (सम ५१; सुपा १८७) । २ प्रविष्ट; (सूअ १, ३)। ३ अधिष्ठित, आश्रित ; (ठा ५; भास ३६) ।
आविद्ध वि [**आविद्ध**] परिहित, पहना हुआ ; (कप्प) ।
आविद्ध वि [**दे**] क्षिप्त, प्रेरित ; (दे १, ६३) ।
आविब्भाव पुं [**आविर्भाव**] १ उत्पत्ति । २ प्रादुर्भाव, अभिव्यक्ति ; " आविब्भावतिरोभावमेत्तपरिणामिदव्वमेवायं " (विसे) ।
आविब्भूय वि [**आविर्भूत**] १ उत्पन्न ; २ प्रादुर्भूत ; (कप्प) । ३ अभिव्यक्त ; (सुर १४, २११) ।
आविल वि [**आविल**] १ मलिन, अ-स्वच्छ; (सम ५१)। २ आकुल, व्याप्त ; (सूअ १, १५) ।
आविलिअ वि [**दे**] कुपित, क्रुद्ध ; (षड्) ।
आविलुंपिअ वि [**आकाङ्क्षित**] अभिलषित ; (दे १, ७२) ।
आविस अक [**आ+विश्**] १ संबद्ध होना, युक्त होना । २ सक. उपभोग करना, सेवना । " परदारमाविसामित्ति " (विसे ३२५६) ।
" जं जं समयं जीवो, आविसई जेण जेण भावेण।
सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं " (उव) ।

आविहव अक [**आविर्+भू**] १ प्रकट होना। २ उत्पन्न होना। आविहवइ ; (स ४८)।
आवीअ वि [**आपीत**] १ पीत ; २ शोषित ; (से १३, ३१)।
आवीइ वि [**आवीचि**] निरन्तर, अविच्छिन्न ;
" गब्भप्पभिइमावीइसलिलच्छेए सरं व सूसंतं।
अणुसमयं मरमाणे, जीयंति जणो कहं भणइ ? "
(सुपा ६५१)।
°**मरण** न [°**मरण**] मरण-विशेष ; (भग १३,७)।
आवीकम्म न [**आविष्कर्मन्**] १ उत्पत्ति ; २ अभिव्यक्ति ; (ठा ६; कप्प)।
आवीड सक [**आ+पीड्**] १ पीड़ना। २ दबाना। आवीडइ ; (सण)।
आवीण वि [**आपीन**] स्तन, थन ; (गउड)।
आवील देखो **आमेल**=आपीड ; (स ३१५)।
आवीलण न [**आपीडन**] समूह, निचय ; (गउड)।
आवुअ पुं [**आवुक**) नाटक की भाषा में पिता, बाप ; (नाट)।
आवुण्ण वि [**आपूर्ण**] पूर्ण, भरपूर ; (दे २, १०२)।
आवुत्त पुं [**दे**] भगिनी-पति ; (अभि १८३)।
आवूर देखो **आपूर**=आ+पूरय्। वकृ—**आवूरंत**; (पउम ७६, ८)। कवकृ—**आवूरिज्जमाण** ; (स ३८२)।
आवूरण न [**आपूरण**] पूर्ति ; (स ४३६)।
आवूरिय देखो **आऊरिय** ; (पउम ६४, ५२ ; स ७७)।
आवेअ सक [**आ+वेदय्**] १ विनति करना, निवेदन करना। २ बतलाना। **आवेएइ** ; (महा)।
आवेअ पुं [**आवेग**] कष्ट, दुःख ; (से १०, ५७; ११, ७२)।
आवेउं देखो **आवा**।
आवेड्ढिय वि [**आवेष्टित**] वेष्टित, घिरा हुआ ; (गा २८)।
आवेड } देखो **आमेल** ; (हे २, २३४ ; कुमा)।
आवेडय }
आवेढ पुं [**आवेष्ट**] १ वेष्टन। २ मण्डलाकार करना ; (से ७, २७)।
आवेढण न [**आवेष्टन**] ऊपर देखो; (गउड; पि ३०४)।
आवेढिय वि [**आवेष्टित**] १ चारों ओर से वेष्टित ; (भग १६, ६ ; उप पृ ३२७)। २ एक वार वेष्टित ; (ठा)।
आवेयण न [**आवेदन**] निवेदन, मनो-भाव का प्रकाशकरण ; (गउड ; दे ७, ८७)।
आवेवअ वि [**दे**] १ विशेष आसक्त ; २ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ; (षड्)।
आवेस सक [**आ+वेशय्**] भूताविष्ट करना। संकृ—**आवेसिऊण** ; (स ६४)।
आवेस पुं [**आवेश**] १ अभिनिवेश ; २ जुस्सा ; ३ भूतग्रह ; ४ प्रवेश ; (नाट)।
आवेसण न [**आवेशन**] शून्य गृह ; " आवेसणसभापवासु पणियसालासु एगया वासो " (आचा)।
आस अक [**आस्**] बैठना। वकृ—"अजयं **आसमाणो** य पाणभूयाइं हिंसइ" (दस ४)। हेकृ—**आसित्तए**, **आसइत्तए**, **आसइत्तु** ; (पि ५७८; कस; दस ६,५४)।
आस पुं [**अश्व**] १ अश्व, घोड़ा ; (णाया १, १७)। २ देव-विशेष, अश्विनी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (जं)। ३ अश्विनी नक्षत्र ; (चंद २०)। ४ मन, चित्त ; (पण्ण २)। °**कण्ण**, °**कन्न** पुं [°**कर्ण**] १ एक अन्तर्द्वीप ; २ उसका निवासी ; (ठा ४, २)। °**ग्गीव** पुं [°**ग्रीव**] एक प्रसिद्ध राजा, पहला प्रतिवासुदेव ; (पउम ५, १५६)। °**तर** पुं [°**तर**] खच्चर ; (श्रा १८)। °**त्थाम** पुं [°**स्थामन्**] द्रोणाचार्य का प्रख्यात पुत्र; (कुमा)। °**द्धअ** पुं [°**ध्वज**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५,४२) °**धम्म** पुं [°**धर्म**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (पउम ५, ४२)। °**धर** वि [°**धर**] अश्वों को धारण करने वाला ; (औप)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (इक)। °**पुरा**, °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] नगरी-विशेष; (कस; ठा २, ३)। °**मक्खिया** स्त्री [°**मक्षिका**] चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष; (ओघ ३६७)। °**मद्दग**, °**मद्दय** पुं [°**मर्दक**] अश्व का मर्दन करने वाला ; (णाया १, १७)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] एक जैनाभास दार्शनिक, जो महागिरि के शिष्य कौण्डिन्य का शिष्य था और जिसने सामुच्छेदिक पंथ चलाया था ; (ठा ७)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ उसका निवासी; (ठा ४, २)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] यज्ञ-विशेष ; (पउम ११, ४२)। °**रह** पुं [°**रथ**] घोड़ा-गाड़ी ; (णाया १, १)। °**वार** पुं [°**वार**] घुड़-सवार, घुड़-चढ़ैया; (सुपा २१४)। °**वाहणिया** स्त्री [°**वाहनिका**] घोड़े की सवारी, घोड़े पर सवार होकर फिरना ; (विपा १, ६)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ भगवान् पार्श्वनाथ के पिता ; (कप्प)। २

पांचवें चक्रवर्ती का पिता ; (सम १५२)। °रोह पुं [°रोह] घुड-सवार, घुड़-चढ़ैया ; (से १२, ६६)।

आस पुंस्त्री [**आश**] भोजन ; "सामासाए पायरासाए" (सूत्र २, १)।

आस पुं [**आस**] क्षेपण, फेंकना ; (विसे २७६५)।

आस न [**आस्य**] मुख, मुँह ; (गाया १, ८)।

आसंक सक [**आ+शङ्क्**] १ संदेह करना, संशय करना। २ अक. भय-भीत होना। आसंकइ ; (स ३०)। वकृ— **आसंकंत, आसंकमाण** ; (नाट ; माल ८३)।

आसंका स्त्री [**आशङ्का**] शङ्का, भय, वहम, संशय ; (सुर ६, १२१ ; महा; नाट)।

आसंकि वि [**आशङ्किन्**] आशङ्का करने वाला ; (गा २०५)।

आसंकिय वि [**आशङ्कित**] १ संदिग्ध, संशयित; २ संभावित; (महा)।

आसंकिर वि [**आशङ्कितृ**] आशंका करने वाला, वहमी ; (सुर १४, १७ ; गा २०६)।

आसंग पुं [**दे**] वास-गृह, शय्या-गृह ; (दे १, ६६)।

आसंग पुं [**आसङ्ग**] १ आसक्ति, अभिष्वंग ; २ संबन्ध ; (गउड)। ३ रोग ; (आचा)।

आसंगि वि [**आसङ्गिन्**] १ आसक्त; २ संबन्धी, संयोगी ; (गउड)। स्त्री—°**णी** ; (गउड)।

आसंघ सक [**सं+भावय्**] १ संभावना करना। २ अध्यवसाय करना। ३ स्थिर करना, निश्चय करना। **आसंघइ** ; (से १५, ६०)। वकृ—**आसंघंत** ; (से १५, ६२)।

आसंघ पुं [**दे**] १ श्रद्धा, विश्वास ; (सुपा ५२६; षड्)। २ अध्यवसाय, परिणाम ; (से १, १५)। ३ आशंसा, इच्छा, चाह ; (गउड)।

आसंघा स्त्री [**दे**] १ इच्छा, वाञ्छा ; (दे १, ६३)। २ आसक्ति ; (मे २)।

आसंघिअ वि [**दे**] १ अध्यवसित ; २ अवधारित ; (से १०, ६६)। ३ संभावित ; (कुमा ; स १३७)।

आसंजिअ वि [**आसक्त**] पीछे लगा हुआ ; (सुर ८, ३० ; उत्तर ६१)।

आसंदय न [**आसन्दक**] आसन-विशेष ; (आचा; महा)।

आसंदाण न [**आसन्दान**] अवष्टम्भन, अवरोध, रुकावट ; (गउड)।

आसंदिआ स्त्री [**आसन्दिका**] छोटा मञ्च ; (सूत्र १, ४, २, १५ ; गा ६६७)।

आसंदी स्त्री [**आसन्दी**] आसन-विशेष, मञ्च ; (सूत्र १, ६ ; दस ६, ५४)

आसंधी स्त्री [**अश्वगन्धी**] वनस्पति-विशेष ; (सुपा ३२४)।

आसंबर वि [**आशाम्बर**] १ दिगम्बर, नग्न ; (प्रामा)। २ जैन का एक मुख्य भेद ; ३ उसका अनुयायी ; (सं २)।

आसंसण न [**आशंसन**] इच्छा, अभिलाषा; (भास ६५)।

आसंसा स्त्री [**आशंसा**] अभिलाषा, इच्छा; (आचा)।

आसंसि वि [**आशंसिन्**] अभिलाषी, इच्छा करने वाला; (आचा)।

आसंसिअ वि [**आशंसित**] अभिलषित ; (गा ७६)।

आसक्खय पुं [**दे**] प्रशस्त पक्षि-विशेष, श्रीवद ; (दे १, ६७)।

आसग देखो **आस**=अश्व ; (गाया १, १२)।

आसगलिअ वि [**दे**] आक्रान्त ; "आसगलिओ तिव्वकम्म-परिणईए" (स ४०४)।

आसज्ज अ [**आसाद्य**] प्राप्त कर के ; (विसे ३०)।

आसड पुं [**आसड**] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार ; (विवे १४३)।

आसण न [**आसन**] १ जिस पर बैठा जाता है वह चौकी आदि ; (आव ४)। २ स्थान, जगह ; (उत्त १, १)। ३ शय्या ; (आचा)। ४ बैठना, उपवेशन ; (ठा ६)।

आसणिय वि [**आसनित**] आसन पर बैठाया हुआ ; (स २६२)।

आसण्ण न [**आसन्न**] १ समीप, पास। २ वि. समीपस्थ; (गउड)। देखो **आसन्न**।

आसत्त वि [**आसक्त**] लीन, तत्पर; (महा; प्रासू ६४)।

आसत्ति स्त्री [**आसक्ति**] अभिष्वङ्ग, तल्लीनता; (कुमा)।

आसत्थ पुं [**अश्वत्थ**] पीपल का पेड़ ; (पउम ५३, ७६)।

आसत्थ वि [**आश्वस्त**] १ आश्वासन-प्राप्त, स्वस्थ; २ विश्रान्त; (गाया १, १ ; सम १५२; पउम ७, ३८ ; दे ७, २८)।

आसन्न देखो **आसण्ण** ; (कुमा ; गउड)। °**वत्ति** वि [°**वर्त्तिन्**] नजदीक में रहने वाला ; (सुपा ३५१)।

आसम पुं [**आश्रम**] तापस आदि का निवास स्थान, तीर्थ-स्थान ; (पण्ह १, ३ ; औप)। २ ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य,

वानप्रस्थ, और भैक्ष्य ये चार प्रकार की अवस्था ; (पंचा १०)।

आसमि वि [**आश्रमिन्**] आश्रम में रहने वाला, ऋषि, मुनि वगैरः ; (पंचव १)।

आसय अक [**आस्**] बैठना। आसयंति ; (जीव ३)।

आसय सक [**आ+श्री**] १ आश्रय करना, अवलम्बन करना। २ ग्रहण करना। आसयइ ; (कप्प)। वकृ— **आसयंत** ; (विसे ३२२)।

आसय पुं [**आशक**] खाने वाला ; (आचा)।

आसय पुं [**आश्रय**] आधार, अवलम्बन ; (उप ७१४, सुर १३, ३६)।

आसय पुं [**आशय**] १ मन, चित , हृदय ; (सुर १३, ३६ ; पात्र)। २ अभिप्राय ; (सूत्र १, १५)।

आसय न [**दे**] निकट, समीप ; (दे १, ६५)।

आसरिअ वि [**दे**] संमुख-आगत, सामने आया हुआ ; (दे १, ६६)।

आसव अक [**आ+स्रु**] धीरे २ झरना, टपकना। वकृ— **आसवमाण** ; (आचा)।

आसव पुं [**आसव**] मद्य, दारू ; (उप ७२८ टी)।

आसव पुं [**आश्रव**] १ कर्मों का प्रवेश-द्वार, जिससे कर्म-बन्ध होता है वह हिंसा आदि; (ठा २, १)। २ वि. श्रोता, गुरु-वचन को सुनने वाला ; (उत१)। °**सक्कि** वि [°**सक्किन्**] हिंसादि में आसक्त ; (आचा)।

आसवण न [**दे**] वास-गृह, शय्या-घर ; (दे १, ६६)।

आसस अक [**आ+श्वस्**] आश्वासन लेना, विश्राम लेना। आससइ, आसससु ; (पि ८८; ४६६)।

आससण न [**आशसन**] विनाश, हिंसा; (पराह १, ३)।

आससा स्त्री [**आशंसा**] अभिलाषा ; "जेसिं तु परिमाणं, तं दुट्ठं आससा होइ" (विसे २५१६)।

आससिय वि [**आश्वस्त**] आश्वासन-प्राप्त ; (स ३७८)।

आसा स्त्री [**आशा**] १ आशा, उम्मीद ; (औप; से १, २६ ; सुर ३, १७७)। २ दिशा; (उप ६४८ टी)। ३ उत्तर रुचक पर वसने वाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष ; (ठा ८)।

आसाअ सक [**आ+स्वाद्**] स्वाद लेना, चखना, खाना। आसायंति ; (भग)। वकृ—**आसाअअंत, आसाएंत, आसायमाण** ; (नाट; से ३, ४५ ; गाया १, १)।

आसाअ सक [**आ+सादय्**] प्राप्त करना। वकृ— **आसाएंत** ; (से ३, ४५)।

आसाअ सक [**आ+शातय्**] अवज्ञा करना, अपमान करना। आसाएज्जा ; (महानि ५)। वकृ—**आसायंत, आसाएमाण** ; (श्रा ६ ; ठा ४)।

आसाअ पुं [**आस्वाद**] १ स्वाद, रस ; (गा ५६३ ; से ६, ६८ ; उप ७६८ टी)। २ तृप्ति ; (से १, २६)।

आसाअ पुं [**आसाद**] प्राप्ति ; (से ६, ६८)।

आसाइअ वि [**आशातित**] १ अवज्ञात, तिरस्कृत ; (पुप्फ ४५४)। २ न. अवज्ञा, तिरस्कार; (विवे ६२)।

आसाइअ वि [**आस्वादित**] चखा हुआ, थोड़ा खाया हुआ ; (से ५, ४६)।

आसाइअ वि [**आसादित**] प्राप्त, लब्ध ; (हेका ३० ; भवि)।

आसाढ पुं [**आषाढ**] १ आषाढ़ मास ; (सम ३५)। २ एक निह्नव, जो अव्यक्तिक मत का उत्पादक था ; (ठा ७)। °**भूइ** पुं [°**भूति**] एक प्रसिद्ध जैन मुनि ; (कुम्मा २६)।

आसाढा स्त्री [**आषाढा**] नक्षत्र-विशेष ; (ठा २)।

आसाढी स्त्री [**आषाढ़ी**] आषाढ़ मास की पूर्णिमा ; (सुज्ज)।

आसादेत्तु वि [**आस्वादयितृ**] आस्वादन करने वाला ; (ठा ७)।

आसामर पुं [**आशामर**] सातवें वासुदेव और बलदेव के पूर्वभवीय धर्मगुरु का नाम ; (सम १५३)।

आसायण न [**आस्वादन**] स्वाद लेना, चखना ; (पउम २२, २७ ; गाया १, ६ ; सुपा १०७)।

आसायण न [**आशातन**] १ नीचे देखो; (विवे ६६)। २ अनन्तानुबन्धि कषाय का वेदन ; (विसे)।

आसायणा स्त्री [**आशातना**] विपरीत वर्तन, अपमान, तिरस्कार ; (पडि)।

आसार पुं [**आसार**] वेग से पानी का बरसना, (से १, २० ; सुपा ६०६)।

आसालिय पुंस्त्री [**आशालिक**] १ सर्प की एक जाति ; (पराह १, १)। २ स्त्री. विद्या-विशेष ; (पउम १२, ६४ ; ५२, ६)।

आसावि वि [**आस्राविन्**] झरने वाला, सच्छिद्र ; (सूत्र, १, ११)।

आसास सक [आ+शास्] आशा करना, उम्मीद रखना। आसासदि ; (वेणी ३०)।

आसास अक [आ+श्वासय्] आश्वासन देना, सान्त्वन करना। आसासइ ; (वज्जा १६)। वकृ—**आसासंत, आसासिंत** ; (से ११, ८७ ; श्रा १२)।

आसास पुं [आश्वास] १ आश्वासन, सान्त्वन ; (श्रोघ ७३ ; सुपा ८३ ; उप ६६२)। २ विश्राम ; (ठा ४, ३)। ३ द्वीप-विशेष ; (आचा)।

आसासअ पुं [आश्वासक] विश्राम-स्थान, ग्रन्थ का अंश, सर्ग, परिच्छेद, अध्याय; (से २, ४६)। २ वि. आश्वासन देने वाला ; " नाणं आसासयं सुमित्तुव्व " (पुप्फ ३८)।

आसासग पुं [आशासक] बीजक-नामक वृक्ष ; (औप)।

आसासण न [आश्वासन] १ सान्त्वन, दिलासा ; (सुर ६, ११० ; १२, १५ ; उप पृ ५७)। २ ग्रहों के देव-विशेष ; (ठा २, ३)।

आसासिअ वि [आश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह ; (से ११, १३६ ; सुर ४, २८)।

आसि सक [आ+श्रि] आश्रय करना । संकृ—**आसिज्ज** ; (आरा ६६)।

आसि देखो **अस**=अस् ।

आसि वि [आशिन्] खाने वाला, भोजक ; (सट्टि १३)।

आसिअ वि [आश्विक] अश्व का शिक्षक; "दुट्ठेवि य जो आसे दमेइ तं आसियं बिंति " (वव ४)।

आसिअ वि [आशित] खिलाया हुआ, भोजित ; (से ८, ६३)।

आसिअ वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त ; (कप्प ; सुर ३, १७ ; से ६, ६५ ; विसे ७५६)।

आसिअ वि [आसित] १ उपविष्ट, बैठा हुआ ; (से ८, ६३)। २ रहा हुआ, स्थित ; (पउम ३२, ६६)।

आसिअ देखो **आसित्त** ; (णाया १, १ ; कप्प ; औप)।

आसिअअ वि [दे] लोहे का, लोह-निर्मित ; (दे १, ६७)।

आसिआ स्त्री [आसिका] बैठना, उपवेशन ; (से ८, ६३)।

आसिआ देखो **आसी**=आशिष् ; (षड्)।

आसिण वि [आशिन्] खाने वाला, भोक्ता ; " मंसासिणस्स " (पउम २६, ३७)।

आसिण पुं [आश्विन] आश्विन मास ; (पाअ)।

आसित्त वि [आसिक्त] १ थोडा सिक्त ; (भग ६, ३३)। २ सिक्त, सीचा हुआ ; (आवम)। ३ पुं. नपुंसक का एक भेद ; (पुप्फ १२८)।

आसिलिट्ठ वि [आश्लिष्ट] आलिंगित ; (नाट)।

आसिलिस सक [आ+श्लिष्] आलिंगन करना । हेकृ—**आलेट्ठुअं, आलेट्ठुं** ; (हे २, १६४)।

आसिसा देखो **आसी**=आशिष् ; (महा ; अभि १३३)।

आसी देखो **अस्**=अस् ।

आसी स्त्री [आशी] दाढ़ा ; (विसे)। °**विस** पुं [°विष] १ जहरिला साँप ; " आसी दाढा तग्गयविसासीविसा मुणेयव्वा " (जीव १ टी ; प्रासू १२०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (ठा २, ३)। ३ निग्रह और अनुग्रह करने में समर्थ, लब्धि-विशेष को प्राप्त ; (भग ८, १)।

आसी स्त्री [आशिष्] आशीर्वाद ; (सुर १, १३८)। °**वयण** न [°वचन] आशीर्वाद ; (सुपा ४६०)। °**वाय** पुं [°वाद] आशीर्वाद ; (सुर १२, ४३ ; सुपा १७४)।

आसीण वि [आसीन] बैठा हुआ ; " नमिऊण आसीणा तओ " (वसु)।

आसीवअ पुं [दे] दरजी, कपड़ा सीने वाला; (दे १, ६६)।

आसीसा देखो **आसी**= आशिष् ; (षड्)।

आसु } अ [आशु] शीघ्र, तुरंत, जल्दी ; (सार्ध १८; **आसुं** } महा; काल)। °**क्कार** पुं [°कार] १ हिंसा, मारना ; २ मरने का कारण, विसूचिका वगैरः; (आव)। ३ शीघ्र उपस्थित ; "आसुक्कारे मरणे, अच्छिन्नाए य जीवियासाए" (आउ ६)। °**पण्ण** वि [°प्रज्ञ] १ शीघ्र-बुद्धि ; २ दिव्य-ज्ञानी, केवल-ज्ञानी ; (सूअ १, ६ ; १४)।

आसुर वि [आसुर] असुर-संबन्धी ; (ठा ४, ४ ; आउ ३६)।

आसुरिय पुं [आसुरिक] १ असुर, असुर रूप से उत्पन्न ; (राज)। २ वि. असुर-संबन्धी ; (सूअ २, २, २७)।

आसुरुत्त वि [आशुरुप्त] १ शीघ्र-क्रुद्ध ; २ अति कुपित (णाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आसुरोक्त] अति-कुपित; (णाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आशुरुष्ट] अति-कुपित ; (विपा १, ६)।

आसूणि न [आशूनि] १ बलिष्ठ बनाने वाली खुराक ; २ रसायण-क्रिया ; (सूअ १, ६)।

आसूणिय वि [आशूनित] थोड़ा स्थूल किया हुआ ; (पण्ह १, ३)।

आसेअणय वि [**आसेचनक**] जिसको देखने से मन को तृप्ति न होती हो वह ; (दे १, ७२) ।
आसेव सक [**आ+सेव्**] १ सेवना । २ पालना । ३ आचरना । आसेवए ; (आप ६७) ।
आसेवण न [**आसेवन**] १ परिपालन, संरक्षण ; (सुपा ४३८) । २ आचरण ; (स २७१) । ३ मैथुन, रति-संभोग ; (दसचू १ ; पव १७०) ।
आसेवणया } स्त्री [**आसेवना**] १ परिपालन ; (सूत्र १,
आसेवणा } १४) । २ विपरीत आचरण ; (पव) । ३ अभ्यास ; (आचू) । ४ शिक्षा का एक भेद ; (धर्म ३) ।
आसेवा स्त्री [**आसेवा**] ऊपर देखो ; (सुपा १०) ।
आसेविय वि [**आसेवित**] १ परिपालित । २ अभ्यस्त ; (आचा) । ३ आचरित, अनुष्ठित ; (स ११८) ।
आसोअ पुं [**अश्वयुक्**] आश्विन मास ; (रयण ३६) ।
आसोअ वि [**आशोक**] अशोक वृक्ष संबन्धी ; (गउड) ।
आसोइया स्त्री [**दे. आसोतिका**] ओषधि-विशेष, "आसोइयाइमीसं चोलं घुसिणं कुसुंभसंमीसं" (सुपा ३६७) ।
आसोई स्त्री [**आश्वयुजी**] आश्विन पूर्णिमा ; (इक) ।
आसोकंता स्त्री [**आशोकान्ता**] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७)
आसोत्थ पुं [**अश्वत्थ**] पीपल का पेड़ ; (पण्ण १ ; उप २३६) ।
आह सक [**ब्रू**] कहना । भूका—आहंसु, आहु ; (कप्प) ।
आह सक [**काङ्क्ष्**] चाहना, इच्छा करना । आहइ ; (हे ४, १६२ ; षड्) । वकृ—**आइंत** ; (कुमा) ।
आहंतु देखो **आहण** ।
आहच्च न [**दे**] १ अत्यर्थ, बहुत, अतिशय ; (दे १, ६२) । २ अ. शीघ्र, जल्दी ; (आचा) । ३ कदाचित्, कभी ; (भग ६, १०) । ४ उपस्थित होकर ; (आचा) । ५ व्यवस्था कर ; (सूत्र २, १) । ६ विभक्त कर ; (आचा) । ७ छीन कर ; (दसा) ।
आहच्चा स्त्री [**आहत्या**] प्रहार, आघात ; (भग १५) ।
आहट्टु स्त्री [**दे**] प्रहेलिका, पहेलियाँ ; "तेसु न विम्हयइ सयं आहट्ट-कुहेडएहिं व" (पव ७३) ।
आहट्टु देखो **आहर=**आ+हृ ।
आहड [**आहृत**] १ छीन लिया हुआ; २ चोरी किया हुआ; (सुपा ६४३)। ३ सामने लाया हुआ, उपस्थापित; (स १८८)।
आहड न [**दे**] सीत्कार, सुरत-शब्द ; (षड्) ।
आहण सक [**आ+हन्**] आघात करना, मारना । आहणामि ; (पि ४९९) । संकृ—**आहणिअ, आहणिऊण, आहणित्ता**; (पि ५९१; ५८५; ५८२) । हेकृ—**आहंतुं** ; (पि ५७६) ।
आहणण न [**आहनन**] आघात ; (उप ३६६) ।
आहणाविय वि [**आघातित**] आहत कराया हुआ ; (स ५२७) ।
आहत्तहीय न [**याथातथ्य**] १ यथावस्थितपन, वास्तविकता ; २ तथ्य-मार्ग—सम्यग्ज्ञान आदि; ३ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का तेरहवाँ अध्ययन ; (सूत्र १, १३ ; पि ३३५) ।
आहम्म सक [**आ+हम्म्**] आना, आगमन करना । आहम्मइ ; (हे ४, १६२) ।
आहम्मिय वि [**अधार्मिक**] अधर्मी, पापी ; (सम ५१) ।
आहय वि [**आहत**] आघात-प्राप्त, प्रेरित ; (कप्प) ।
आहय वि [**आहृत**] १ आकृष्ट, खींचा हुआ; २ छीना हुआ; (उप २११ टी) ।
आहर सक [**आ+हृ**] १ छीनना, खींच लेना । २ चोरी करना । ३ खाना, भोजन करना । आहरइ; (पि १७३) । कवकृ—**आहरिज्जमाण** ; (ठा ३) । संकृ—**आहट्टु** ; (पि २८६) । हेकृ—**आहरित्तए**; (तंदु) ।
आहरण पुंन [**आहरण**] १ उदाहरण, दृष्टान्त ; (ओघ ५३६; उप २६३; ६५१) । २ आह्वान, बुलाना ; (सुपा ३१७) । ३ ग्रहण, स्वीकार ; ४ व्यवस्थापन ; (आचा) । ५ आनयन, लाना ; (सूत्र २, २) ।
आहरण पुंन [**आभरण**] भूषण, अलंकार ; "देहे आहरणा बहू" (श्रा १२; कप्पू) ।
आहरणा स्त्री [**दे**] खर्राट, नाक का खरखर शब्द ; (ओघ २) ।
आहरिसिय वि [**आधर्षित**] तिरस्कृत, भर्त्सित ; "आहरिसिओ दूओ संभंतेण नियन्तिओ" (आवम) ।
आहल्ल (अप) अक [**आ+चल्**] हिलना, चलना । "नवमइ दंतपंतो आहल्लइ, खलइ जीहा" (भवि) ।
आहल्ला स्त्री [**आहल्या**] विद्याधर-राज की एक कन्या ; (पउम १३, ३५) ।
आहव पुं [**आहव**] युद्ध, लड़ाई ; (पाअ ; सुपा २८८ ; आरा ४१) ।

आहवण } न [**आह्वान**] १ बुलाना ; २ ललकारना ;
आहव्वण } (आ१२; सुपा ६०; पउम ६१, ३०; स ६४)।

आहव्वणी स्त्री [**आह्वानी**] विद्या-विशेष ; (सूअ २, २)।

आहा सक [**आ+ख्या**] कहना । कर्म—आहिज्जइ ; (पि ५४५) ; आहिज्जंति ; (कप्प) ।

आहा सक [**आ+धा**] स्थापन करना । कर्म—आहिज्जइ ; (सूअ २, २) । हेकृ—**आहेउं** ; (सूअ १, ६) । संकृ—**आहाय** ; (उत्त ५) ।

आहा स्त्री [**आभा**] कान्ति, तेज ; (कप्पू) ।

आहा स्त्री [**आधा**] १ आश्रय, आधार ; (पिंड) । २ साधु के निमित्त आहार के लिए मनः-प्रणिधान ; (पिंड) । °**कड** वि [**कृत**) आधा-कर्म-दोष से युक्त ; (स १८८) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ साधु के लिए आहार पकाना ; २ साधु के निमित्त पकाया हुआ भोजन, जो जैन साधुओं के लिए निषिद्ध है (पराह २, ३ ; ठा ३, ४) । °**कम्मिय** वि [°**कर्मिक**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (अनु) ।

आहाण न [**आधान**] १ स्थापन ; २ स्थान, आश्रय ; " सव्वगुणाहाणं " (आव ४ ; उवर २६) ।

आहाण } न [**आख्यान क**] १ उक्ति, वचन ; २
आहाणय } किंवदन्ती, कहावत, लोकोक्ति ; (सुर २, ६६ ; उप ७२८ टी) ।

आहार सक [**आ+हारय्**] खाना, भोजन करना, भक्षण करना । आहारइ, आहारेंति ; (भग) । वकृ—**आहारेमाण** ; (कप्प) । भकृ—**आहारिज्जस्समाण**, (भग) । हेकृ—**आहारित्तए, आहारेत्तए** ; (कप्प) । कृ—**आहारेयव्व** ; (ठा ३) ।

आहार पुं [**आहार**] १ खुराक, भोजन ; (स्वप्न ६० ; प्रासू १०४) । २ खाना, भक्षण ; (पव) । ३ न. देखो **आहारग** ; (पउम १०२, ६८) । °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] भुक्त आहार को खल और रस के रूप में बदलने की शक्ति ; (पण्ण १) । °**पोसह** पुं [°**पोषध**] व्रत-विशेष, जिसमें आहार का सर्वथा या आंशिक त्याग किया जाता है ; (आव ६) । °**सण्णा** स्त्री [°**संज्ञा**] आहार करने की इच्छा ; (ठा ४) ।

आहार पुं [**आधार**] १ आश्रय, अधिकरण ; (सुपा १२८; संथा १०३) । २ आकाश ; (भग २, २) । ३ अव-धारण, याद रखना ; (पुप्फ ३५६) ।

आहारग न [**आहारक**] १ शरीर-विशेष, जिसको चौदह-पूर्वी, केवलज्ञानी के पास जाने के लिए बनाता है; (ठा २, २) । २ वि. भोजन करने वाला ; (ठा २, २) । ३ आहारक-शरीर वाला ; (विसे ३७५) । ४ आहारक शरीर उत्पन्न करने का जिसे सामर्थ्य हो वह ; (कप्प) । °**जुगल** न [°**युगल**] आहारक शरीर और उसके अंगोपाङ्ग ; (कम्म २, १७ ; २४) । °**णाम** न [°**नामन्**] आहारक शरीर का हेतु-भूत कर्म ; (कम्म १, ३३) । °**दुग** न [°**द्विक**] देखो °**जुगल** ; (कम्म २, ३ ; ८ ; १७) ।

आहारण वि [**आधारण**] १ धारण करने वाला ; २ आधार-भूत ; (से ६, ५०) ।

आहारण वि [**आहारण**] आकर्षक ; (से ६, ५०) ।

आहारय देखो **आहारग** ; (ठा ६ ; भग ; पण्ण २८ ; ठा ५, १ ; कर्म १, ३७) ।

आहाराइणिया स्त्री [**याथारात्निकता**] यथा-ज्येष्ठ ; ज्येष्ठानुक्रम ; (कस) ।

आहारिम वि [**आहार्य**] आहार के योग्य, खाने लायक ; (निचू ११) ।

आहारिय वि [**आहारित**] १ जिसने आहार किया हो वह ; " तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स " (णाया १, १६) । २ भक्षित, भुक्त ; (भग) ।

आहावणा स्त्री [**आभावना**] अपरिगणना, गणना का अभाव ; (राज) ।

आहाविर वि [**आधावितृ**] दौड़ने वाला ; (सण) ।

आहास देखो **आभास=आ+भाष्** । संकृ—**आहासिवि** (अप) ; (भवि) ।

आहाह अ [**आहाह**] आश्चर्य-द्योतक अव्यय ; (हे २, २१७) ।

आहि पुंस्त्री [**आधि**] मन की पीड़ा ; (धम्म १२ टी) ।

आहिआइ स्त्री [**अभिजाति**] कुलीनता, खानदानी ; (से १, ११) ।

आहिआई स्त्री [**आभिजाती**] कुलीनता ; (गा २८५) ।

आहिंड सक [**आ+हिण्ड्**] १ गमन करना, जाना । २ परिश्रम करना । ३ घूमना, परिभ्रमण करना । वकृ—**आहिंडंत, आहिंडेमाण** ; (उप २६४ टी ; णाया १, १) । संकृ—**आहिंडिय** ; (महा ; स १६३) ।

आहिंडग } वि [**आहिण्डक**] चलने वाला, परिभ्रमण करने
आहिंडय } वाला ; (ओघ ११५ ; ११८ ; औप)।
आहिक्क न [**आधिक्य**] अधिकता ; (विसे २०८७)।
आहिजाइ देखो **आहिआइ** ; (महा)।
आहिजाई देखो **आहिआई** ; (गा २४)।
आहितुंडिअ पुं [**आहितुण्डिक**] गारुडिक, सपहरिया ; (मुद्रा ११६)।
आहित्थ वि [**दे**] १ चलित, गत ; २ कुपित, क्रुद्ध ; (दे १, ७६ ; जीव ३ टी)। ३ आकुल, घबडाया हुआ ; (दे १, ७६ ; से १३, ८३ ; पाअ) "आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोसभरियं च" (जीव ३ टी)।
आहिद्ध वि [**दे**] १ रुद्ध, रुका हुआ ; २ गलित, गला हुआ ; (षड्)।
आहिपत्त न [**आधिपत्य**] मुखियापन, नेतृत्व ; (उप १०३१ टी)।
आहिय वि [**आहित**] १ स्थापित, निवेशित ; (ठा ४)। २ संपूर्ण हितकर ; (सूअ)। ३ विरचित, निर्मित ; (पाअ)। °**ग्गि** पुं [°**ाग्नि**] अग्नि-होत्रीय ब्राह्मण ; (पउम ३५, ५)।
आहिय वि [**आख्यात**] कहा हुआ, प्रतिपादित, उक्त ; (पराण ३३ ; सुज्ज १६)।
आहियार पुं [**अधिकार**] अधिकार, सत्ता, हक ; (पउम ५५, ८)।
आहिवत्त देखो **आहिपत्त** ; (काल)।
आहिसारिअ वि [**अभिसारित**] नायक-बुद्धि से गृहीत ; पति-बुद्धि से स्वीकृत ; (से १३, १७)।
आहीर पुं [**आहीर**] १ देश-विशेष ; (कप्प)। २ शूद्र जाति-विशेष, अहीर ; (सूअ १, १)। ३ इस नामका एक राजा ; (पउम ६८, ६४)। स्त्री °**री**—अहीरन ; (सुपा ३६०)।
आहु सक (**आ+ह्वे**) बुलाना। कृ—**आहुणिज्ज** ; (औप)।
आहु [**आ+हु**] दान करना, त्याग करना। कृ—**आहुणिज्ज** ; (णाया १, १)।
आहु अ [**आहु**] अथवा, या ; (नाट)।
आहु पुं [**दे**] घूक, उल्लु ; (दे १, ६१)।
आहु देखो **आह**=ब्रू।
आहुइ वि [**आहोतृ**] दाता, त्यागी ; (णाया १, १)।

आहुइ स्त्री [**आहुति**] १ हवन, होम ; (गउड)। २ होमने का पदार्थ, बलि ; (स १७)।
आहुंदुर } पुं [**दे**] बालक, बच्चा ; (दे १, ६६)।
आहुंदुरु }
आहुड न [**दे**] १ सीत्कार, सुरत-समय का शब्द ; २ पणित, विक्रय, बेचना ; (दे १, ७४)।
आहुड अक [**दे**] गिरना। आहुडइ ; (दे १, ६६)।
आहुडिअ वि [**दे**] निपतित, गिरा हुआ ; (दे १, ६६)।
आहुण सक [**आ+धु**] कँपाना, हिलाना। कवकृ—**आहुणिज्जमाण** ; (णाया १, ६)।
आहुणिय वि [**आधुनिक**] १ आज-कल का, नवीन। २ पुं. ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)।
आहुत्त न [**दे. अभिमुख**] सम्मुख, सामने "कुमरोवि पहाविओ तयाहुत्तं" (महा ; भवि)।
आहूअ वि [**आहूत**] बुलाया हुआ ; (पाअ)।
आहूअ पुं [**आहूक**] पिशाच-विशेष ; (इक)।
आहूअ वि [**आभूत**] उत्पन्न, जात ; "आहूओ से गब्भो" (वसु)।
आहेउं देखो **आहा**=आ+धा।
आहेड } पुंन [**आखेट**, °**क**] शिकार, मृगया ; (सुपा
आहेडग } १६७ ; स ६७ ; दे)।
आहेडय }
आहेण न [**दे**] विवाह के बाद वर के घर वधू के प्रवेश होने पर जो जिमाने का उत्सव किया जाता है वह ; (आचा २, १, ४)।
आहेय वि [**आधेय**] १ स्थाप्य ; २ आश्रित ; (विसे ६२४)।
आहेर देखो **आहीर** ; (विसे १४५४)।
आहेवच्च न [**आधिपत्य**] नेतृत्व, मुखियापन ; (सम ८६)।
आहेवण न [**आक्षेपण**] १ आक्षेप ; २ क्षोभ उत्पन्न करना ; (पराह १, २)।
आहोअ देखो **आभोग** ; (से १, ४६ ; ६, ३ ; गा ८८ ; गउड)।
आहोअ देखो **आभोय**=आ+भोजय्। संकृ—**आहोइऊण** ; (स ५५)।
आहोइअ वि [**आभोगित**] ज्ञात, दृष्ट ; (स ४८५)।

आहोइअ वि [**आभोगिक**] उपयोग ही जिसका प्रयोजन हो वह, उपयोग-प्रधान ; (कप्प)।

आहोड सक [**ताडय्**] ताडन करना, पिटना। **आहोडइ** ; (हे ४, २७)।

आहोरण पुं [**दे**] हस्तिपक, हाथी का महावत ; (पात्र ; स ३६६)।

आहोहि } वि [**आधोवधिक**] अवधिज्ञानी का एक
आहोहिय } भेद, नियत क्षेत्र को अवधिज्ञान से देखने वाला; (भग ; सम ६६)।

इअ **पाइअसद्दमहण्णवे** आयाराइसद्दसंकलणो बिइओ तरंगो समत्तो।



इ

इ पुं [इ] १ प्राकृत वर्णमाला का तृतीय स्वर-वर्ण ; (प्रामा)। २—३ अ. वाक्यालङ्कार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (कप्प ; हे २, ११७; षड्)।

इ देखो **इइ** ; (उवा)।

ई सक [इ] १ जाना, गमन करना। २ जानना । एइ, एंति ; (कुमा)। वकृ—**एंत**; (कुमा)। संकृ—**इच्चा** ; (आचा)। हेकृ—**इत्तए** ; **एत्तए** ; (कप्प ; कस)।

इइ अ [इति] इन अर्थों का सूचक अव्यय; —१ समाप्ति; (आचा)। २ अवधि, हद ; (विसे)। ३ मान, परिमाण ; (पव ८४)। ४ निश्चय ; (निचू २ ; १५)। ५ हेतु, कारण ; (ठा ३)। ६ एवम्, इस तरह, इस प्रकार ; (उत्त २२)। देखो **इति**।

इओ अ [इतस्] १ इससे, इस कारण ; (पि १७४)। २ इस तरफ ; (सुपा ३६४)। ३ इस (लोक) में ; (विसे २६८२)।

इओअ अ [इतश्च] प्रसंगान्तर-सूचक अव्यय ; (श्रा २८)।

इंखिणिया स्त्री [दे. इङ्खिनिका] निन्दा, गर्हा ; (सूअ १, २)।

इंखिणी स्त्री [दे. इङ्खिनी] ऊपर देखो ; (सूअ १, २)।

इंगार } देखो **अंगार** ; (पि १०२ ; जी ६ ; प्राप्र)।
इंगाल } °**कम्म** न [°कर्मन्] कोयला आदि उत्पन्न करने का और बेचने का व्यापार ; (पडि)। °**सगडिया** स्त्री [°शकटिका] अंगीठी, आग रखने का बर्तन ; (भग)।

इंगाल वि [आङ्गार] अङ्गार-संबन्धी ; (दस ५)।

इंगालग देखो **अंगारग** ; (ठा २, ३)।

इंगाली स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा, गंडेरी ; (दे १, ७९ ; पाअ)।

इंगाली स्त्री [आङ्गारी] देखो **इंगाल-कम्म** ; (श्रा २२)।

इंगिअ न [इङ्गित] इसारा, संकेत, अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा ; (पाअ)। °**ज्ज**, °**ण्ण**, **ण्णु** वि [°ज्ञ] इसारे से समझने वाला ; (प्राप्र ; हे २, ८३ ; पि २७६)। °**मरण** न [°मरण] मरण-विशेष ; (पंचा)।

इंगिणी स्त्री [इङ्गिनी] मरण-विशेष, अनशन-क्रिया-विशेष; (सम ३३)।

इंगुअ न [इङ्गुद] इंगुदी वृक्ष का फल ; (कुमा ; पउम ४१, ६)।

इंगुई } स्त्री [इङ्गुदी] वृक्ष-विशेष, इसके फल तैलमय
इंगुदी } होते हैं, इसका दूसरा नाम व्रण-विरोपण भी है, क्योंकि इसके तैल से व्रण बहुत शीघ्र अच्छे होते है ; (आचा ; अभि ७३)।

इंघिअ वि [दे] घ्रात, सूंघा हुआ ; (दे १, ८०)।

°**इंणर** देखो **किण्णर** ; (से ८, ६१)।

इंत देखो **ए**=आ+इ।

इंद पुं [इन्द्र] १ देवताओं का राजा, देव-राज ; (ठा २)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक, जैसे 'णरिंद' (गउड) 'देविंद' (कप्प)। ३ परमेश्वर, ईश्वर ; (ठा ४)। ४ जीव, आत्मा ; "इंदो जीवो सव्वोवलद्धिभोगपरमेसरत्तणओ" (विसे २९९३)। ५ ऐश्वर्य-शाली ; (आवम)। ६ विद्याधरों का प्रसिद्ध राजा ; (पउम ६, २ ; ७, ८)। ७ पृथ्वीकाय का एक अधिष्ठायक देव; (ठा ५, १)। ८ ज्येष्ठा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ९ उन्नीसवें तीर्थंकर के एक स्वनाम-ख्यात गणधर ; (सम १५२)। १० सप्तमी तिथि ; (कप्प)। ११ मेघ, वर्षा ; "किं जयइ सव्वत्था दुब्भिक्खं अह भवे इंदो" (दसनि १०५)। १२ न. देव-विमान-विशेष ; (सम ३७)। °**इ** पुं [°जित्] १ इस नामका राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश ; (पउम ५, २६२)। २ रावण के एक पुत्र का नाम ; (से १२, ५८)। °**ओव** देखो °**गोव** ; (पि १६८)। °**काइय** पुं [°कायिक] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष ; (पण्ण १)। °**कील** पुं [°कील] दरवाजा का एक अवयव ; (औप)। °**कुंभ** पुं [°कुम्भ] १ बड़ा कलश ; (राय)। २ उद्यान-विशेष ; (णाया १, ८)। °**केउ** पुं [°केतु] इन्द्र-ध्वज, इन्द्र-यष्टि ; (पण्ह १, ४ ; २, ४)। °**खील** देखो °**कील** ; (औप ; पि २०६)। °**गाइय** देखो °**काइय** ; (उत्त ३६)। °**गाह** पुं [°ग्रह] इन्द्रावेश, किसी के शरीर में इन्द्र का अधिष्ठान, जो पागलपन का कारण होता है, ; "इंद-गाहा इवा खंदगाहा इवा" (भग ३, ७)। °**गोव**, °**गोवग**, °**गोवय** पुं [°गोप] वर्षा ऋतु में होने वाला रक्त वर्ण का क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती में 'गोकुल

गाय' कहते हैं ; (उत्त ३२ ; सुर २, ८७, जी १७ ; पि १६८)। °ग्गह पुं [°ग्रह] ग्रह-विशेष ; (जीव ३)। °ग्गि पुं [°ाग्नि] १ विशाखा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (अणु)। २ महाग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। °जसा स्त्री [°यशस्] काम्पिल्य नगर के ब्रह्मराज की एक पत्नी ; (उत्त १३)। °जाल न [°जाल] माया-कर्म, छल, कपट ; (स ४५४)। °जालि, °जालिअ वि [°जालिन्, °क] मायावी, वाजीगर ; (ठा ४ ; सुपा २०३)। °जुइण्ण पुं [°द्युतिज्ञ] स्वनाम-ख्यात इक्ष्वाकु वंश का एक राजा ; (पउम ५, ६)। °ज्झय पुं [°ध्वज] बडी ध्वजा ; (पि २६६)। °ज्झया स्त्री [°ध्वजा] इन्द्र ने भरतराज को दिखाई हुई अपनी दिव्य अङ्गुलि के उपलक्ष में राजा भरत ने उस अङ्गुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना, और उसके उपलक्षमें किया गया उत्सव ; (आचू २०)। °णील पुंन [°नील] नीलम, नील-मणि, रत्न-विशेष ; (गउड; पि १६०)। °तरु पुं [°तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् संभवनाथ को केवल-ज्ञान हुआ था ; (पउम २०, २८)। °त्त न [°त्व] १ स्वर्ग का आधिपत्य, इन्द्र का असाधारण धर्म ; २ राजत्व ; ३ प्राधान्य; (सुपा २५३)। °दत्त पुं [°दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा ; (उप ९३६)। २ एक जैन मुनि ; (विपा २, ७)। °दिण्ण पुं [°दिन्न] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य ; (कप्प)। °धणु न [°धनुष्] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष का आकार दीख पड़ता है वह। २ विद्याधरवंश के एक राजा का नाम ; (पउम ८, १८६)। °नील देखो °णील ; (पउम ३, १३२)। °पाडिवया स्त्री [°प्रतिपत्] कार्तिक (गुजराती आश्विन) मास के कृष्ण-पक्ष की पहली तिथि ; (ठा ४)। °पुर न [°पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती ; (उप पृ १२६) २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रदत्त की राजधानी; (उप ९३६)। °पुरग न [°पुरक] जैनीय वेशवाटिक गण के चौथे कुल का नाम ; (कप्प)। °प्पभ पुं [°प्रभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, जो लङ्का का राजा था ; (पउम ५, २६१)। °भूइ पुं [°भूति] भगवान् महावीर का प्रथम—मुख्य शिष्य, गौतमस्वामी ; (सम १६ ; १५२)। °मह पुं [°मह] १ इन्द्र की आराधना के लिए किया जाता एक उत्सव ; २ आश्विन पूर्णिमा ; (ठा ४, २)। °माली स्त्री [°माली] राजा आदित्य की पत्नी ; (पउम ६, १)। °मुद्धाभिसित्त पुं [°मुर्द्धाभिषिक्त] पक्ष की सातवीं तिथि, सप्तमी ; (चंद्र १०)। °मेह पुं [°मेघ] राक्षस वंश में उत्पन्न एक राजा; (पउम ५, २६१)। °य [°क] १ देखो इन्द्र ; (ठा ६)। २ नरक-विशेष ; ३ द्वीप-विशेष ; ४ न. विमान-विशेष; (इक)। °याल देखो °जाल ; (महा)। °रह पुं [°रथ] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४४)। °राय पुं [°राज] इन्द्र ; (तित्थ)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] इन्द्र-ध्वज; (णाया १, १)। °लेहा स्त्री [°लेखा] राजा त्रिकसंयत की पत्नी ; (पउम ५, ५१)। °वज्जा स्त्री [°वज्रा] छन्द-विशेष का नाम, जिसके एक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं ; (पिंग)। °वसु स्त्री [°वसु] ब्रह्मराज की एक पत्नी ; (राज)। °वाय पुं [°वात] एक माण्डलिक राजा ; (भवि)। °वारण पुं [°वारण] इन्द्र का हाथी, ऐरावत; (कुमा)। °सम्म पुं [°शर्मन्] स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण; (आवम)। °सामाणिय पुं [°सामानिक] इन्द्र के समान ऋद्धि वाला देव ; (महा)। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा ब्रह्मदत्त की एक पत्नी ; (राज)। °सुअ पुं [°सुत] इन्द्र का लड़का, जयन्त ; (दे ६, १६)। °सेणा स्त्री [°सेना] १ इन्द्र का सैन्य। २ एक महानदी ; (ठा ५, ३)। °हणु देखो °धणु ; (हे १, १८७)। °ाउह न [°ायुध] इन्द्रधनु ; (णाया १, १)। °ाउहप्पभ पुं [°ायुधप्रभ] वानरद्वीप का एक राजा ; (पउम ६, ६६)। °ामअ पुं [°ामय] राजा इन्द्रायुधप्रभ का पुत्र, वानरद्वीप का एक राजा ; (पउम ६, ६७)।

इंद वि [ऐन्द्र] १ इन्द्र-संबन्धी ; (णाया १, १)। २ संस्कृत का एक प्राचीन व्याकरण ; (आवम)।

इंदगाइ पुं [दे] साथ में संलग्न रहने वाले कीट-विशेष ; (दे १, ८१)।

इंदग्गि पुं [दे] बर्फ, हिम ; (दे १, ८०)।

इंदग्गिधूम न [दे] बर्फ, हिम ; (दे १, ८०)।

इंदड्ढलअ पुं [दे] इन्द्र का उत्थापन ; (दे १, ८२)।

इंदमह वि [दे] १ कुमारी में उत्पन्न ; २ कुमारता, यौवन ; (दे १, ८१)।

इंदमहकामुअ पुं [दे. इन्द्रमहकामुक] कुत्ता, श्वान; (दे. १, ८२ ; पाअ)।

इंदा स्त्री [**इन्द्रा**] १ एक महानदी ; (ठा ५, ३)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (णाया २)।

इंदा स्त्री [**ऐन्द्री**] पूर्व दिशा ; (ठा १०)।

इंदाणी स्त्री [**इन्द्राणी**] १ इन्द्र की पत्नी ; (सुर १, १७०)। २ एक राज-पत्नी ; (पउम ६, २१६)।

इंदिंदिर पुं [**इन्दिन्दिर**] भ्रमर, भमरा ; (पाअ; दे १, ७६)।

इंदिय पुंन [**इन्द्रिय**] १ आत्मा का चिन्ह, इन्द्री, ज्ञान के साधन-भूत—श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, जिह्वा, त्वक् और मन ; "तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया" (दसचू १, १६ ; ठा ६)। २ अंग, शरीर के अवयव ; "नो निग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ" (उत्त १६)। °**अवाय** पुं [°**पाय**] इन्द्रियों द्वारा होने वाला वस्तु का निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष ; (पराण १५)। °**ओगाहणा** स्त्री [°**ावग्रहणा**] इन्द्रियों द्वारा उत्पन्न होने वाला ज्ञान-विशेष ; (पराण १५)। °**जय** पुं [°**जय**] १ इन्द्रियों का निग्रह, इन्द्रियों को वश में रखना ; "अजिइंदिएहिं चरणं, कट्ठं व घुणेहि कोरइ असारं। तो धम्मत्थीहिं दढं, जइअव्वं इंदियजयम्मि" (इंदि ४)। २ तप-विशेष ; (पव २७०)। °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] इन्द्रियों का उपादान कारण, जैसे श्रोत्रेन्द्रिय का आकाश, चक्षु का तेज वगैरः ; (सूअ १, १)। °**णिव्वत्तणा** स्त्री [°**निर्वर्त्तना**] इन्द्रियों के आकार की निष्पत्ति ; (पराण १५)। °**णाण** न [°**ज्ञान**] इन्द्रिय-द्वारा उत्पन्न ज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान ; (वव १०)। °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] इन्द्रिय से जानने योग्य वस्तु, रूप-रस-गन्ध वगैरः ; (ठा ६)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] शक्ति-विशेष, जिसके द्वारा जीव धातुओं के रूप में बदले हुए आहार को इन्द्रियों के रूप में परिणत करता है ; (पराण १)। °**विजय** पुं [°**विजय**] देखो °**जय** ; (पंचा १८)। °**विसय** पुं [°**विषय**] देखो °**त्थ** ; (उत्त ५)।

इंदियाल देखो **इंद-जाल** ; (सुपा ११७; महा)।

इंदियाल } देखो **इंद-जालि** ; "तुह कोउयत्थमित्थं
इंदियालि } विहियं मे खयरइंदियालेण" (सुपा २४२)। "जह एस इंदियालो, दंसइ खणनस्सराइं रूवाइं" (सुपा २४३)।

इंदियालीअ देखो **इंद-जालिअ** ; "न भवामि अहं खयरो नरपुंगव ! इंदियालीओ" (सुपा २४३)।

इंदिर पुं [**इन्दिर**] भ्रमर, भमरा ; "झंकारमुहरिंदिराइं" (विक्र २६)।

इंदीवर न [**इन्दीवर**] कमल, पद्म; (पउम १०, ३६)।

इंदु पुं [**इन्दु**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (पाअ)।

इंदुत्तरवडिंसग न [**इन्द्रोत्तरावतंसक**] देव-विमान-विशेष ; (सम ३७)।

इंदुर पुंस्त्री [**उन्दुर**] चूहा, मूषक ; (नाट)।

इंदोकंत न [**इन्दुकान्त**] विमान-विशेष ; (सम ३७)।

इंदोव देखो **इंद-गोव**; (पाअ; दे १, ७६)।

इंदोवत्त पुं [**दे**] इन्द्रगोप, कीट-विशेष ; (दे १, ८१)।

इंद्र देखो **इंद**=इन्द्र ; (पि २६८)।

इंध न [**चिह्न**] निशानी, चिन्ह ; (हे १, १७७ ; २, ५० ; कुमा)।

इंधण न [**इन्धन**] १ ईंधन, जलावन, लकड़ी वगैरः दाह्य वस्तु ; (कुमा)। २ अस्त्र-विशेष ; (पउम ७१, ६४)। ३ उद्दीपन, उत्तेजन ; (उत्त १४)। ४ पलाल, तृण वगैरः, जिससे फल पकाये जाते हैं ; (निचू १५)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] वह घर, जिसमें जलावन रक्खे जाते हैं ; (निचू १६)।

इंधिय वि [**इन्धित**] उद्दीपित, प्रज्वलित ; (बृह ४)।

इक्क न [**दे**] प्रवेश, पैठ "इक्कमप्पए पवेसणं" (विसे ३४८३)।

इक्क देखो **एक्क**; (कुमा; सुपा ३७७; दं ४०; पाअ ; प्रासू १०; कस; सुर १०, २१२ ; श्रा १०; दं २१; रयण २; श्रा ६; पउम ११, ३२)।

इक्कड पुं [**इक्कड**] तृण-विशेष ; (परह २, ३; पराण १)।

इक्कण वि [**दे**] चोर, चुराने वाला ; (दे १, ८०); "बाहुलयामूलेसुं रइयाओ जणमणेक्कणाओ उ। बाहुसरियाउ तीसे" (स ७६)।

इक्किक्क वि [**एकैक**] प्रत्येक ; (जी ३३; प्रासू ११८; सुर ८, ४२)।

इक्कुस न [**दे**] नीलोत्पल, कमल ; (दे १, ७६)।

इक्ख सक [**ईक्ष्**] देखना। इक्खइ ; (उव)। इक्ख ; (सूअ १, २, १, २१)।

इक्खअ वि [**ईक्षक**] देखने वाला ; (गा ५५७)।

इक्खण न [**ईक्षण**] अवलोकन, प्रेक्षण; (पउम १०१, ७)।

इक्खाउ देखो **इक्खागु** ; (विक्र ६४)।

इक्खाग वि [**ऐक्ष्वाक**] इक्ष्वाकु-नामक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश में उत्पन्न ; (तित्थ) ।

इक्खाग } पुं [**इक्ष्वाकु**] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राज-**इक्खागु** } वंश, भगवान् ऋषभदेव का वंश ; २ उस वंश में उत्पन्न ; (भग ६, ३३ ; कप्प ; औप; अजि १३) । ३ कोशल देश ; (णाया १, ८) °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] अयोध्या नगरी ; (आव २) ।

इक्खु पुं [**इक्षु**] १ ईख, ऊख ; (हे २, १७ ; पि ११७) । २ धान्य-विशेष, 'बरट्टिका' नाम का धान्य ; (श्रा १८) । °**गंडिया** स्त्री [°**गण्डिका**] गंडेरी, ईख का टुकड़ा ; (आचा) । °**घर** न [°**गृह**] उद्यान-विशेष ; (विसे) । °**चोयग** न [**दे**] ईख का कुचा ; (आचा) । °**डालग** न [°**दे**] ईख की शाखा का एक भाग ; (आचा) । २ ईख का च्छेद ; (निचू १) । °**पेसिया** स्त्री [°**पेशिका**] गण्डेरी ; (निचू १६) । °**भित्ति** स्त्री [**दे**] ईख का टुकड़ा ; (निचू १६) °**मेरग** न [°**मेरक**] गण्डेरी, कटे हुए ऊख के गुल्ले ; (आचा) । °**लट्ठि** स्त्री [°**यष्टि**] ईख की लाठी, इक्षु-दण्ड; (आचू) । °**वाड** पुं [°**वाट**] ईख का खेत, "सुचिरंपि अच्छमाणो नलथंभो इच्छुवाडमज्झम्मि" (आव ३) । °**सालग** न [**दे**] १ ईख की लम्बी शाखा ; (आचा) । २ ईख की बाहर की छाल ; (निचू १६) । देखो **उच्छु** ।

इग देखो **एक्क** ; (कम्म १, ८ ; ३३ ; सुपा ४०६ ; श्रा १४ ; नव ८ ; पि ४४५; श्रा ४४ ; सम ७५) ।

इगुचाल वि [**एकचत्वारिंशत्**] संख्या-विशेष, ४१, चालीस और एक ; (भग ; पि ४४५) ।

इग्ग वि [**दे**] भीत, डरा हुआ ; (दे १, ७६) ।

इग्ग देखो **एक्क** ; (नाट) ।

इग्घिअ वि [**दे**] भर्त्सित, तिरस्कृत ; (दे १, ८०) ।

इच्चा देखो **इ** सक ।

इच्चाइ पुंन [**इत्यादि**] वगैरः, प्रभृति ; (जी ३) ।

इच्चेवं अ [**इत्येवम्**] इस प्रकार, इस माफिक ; (सूअ १, ३) ।

इच्छ सक [**इष्**] इच्छा करना, चाहना । **इच्छइ** ; (उव ; महा) । वकृ—**इच्छंत, इच्छमाण**; (उत्त १; पंचा ५) ।

इच्छ सक [**आप्+सन्=ईप्स्**] प्राप्त करने को चाहना । कृ—**इच्छियव्व**; (वव १) ।

इच्छकार देखो **इच्छा-कार**; (पडि) ।

इच्छा स्त्री [**इच्छा**] अभिलाषा, चाह, वाञ्छा ; (उवा ; प्रासू ४८) । °**कार** पुं [°**कार**] स्वकीय इच्छा, अभिलाष ; (पडि) । °**छंद** वि [°**च्छन्द**] इच्छा के अनुकूल; (आव ३) । °**णुलोम** वि [°**नुलोम**] इच्छा के अनुकूल ; (पराण ११) । °**णुलोमिय** वि [°**नुलोमिक**] इच्छा के अनुकूल ; (आचा) । °**पणिय** वि [°**प्रणीत**] इच्छानुसार किया हुआ ; (आचा) । °**परिमाण** न [°**परिमाण**] परिग्राहय वस्तुओं के विषय की इच्छा का परिमाण करना, श्रावक का पांचवाँ व्रत; (ठा ५) । °**मुच्छा** स्त्री [°**मूर्च्छा**] अत्यासक्ति, प्रबल इच्छा ; (पराह १, ३) । °**लोभ** पुं [°**लोभ**] प्रबल लोभ ; (ठा ६) । °**लोभिय** वि [°**लोभिक**] महा-लोभी ; (ठा ६) । °**लोल** पुं [°**लोल**] १ महान् लोभ ; २ वि. महा-लोभी ; (बृह ६) ।

°**इच्छा** स्त्री [**दित्सा**] देने की इच्छा ; (आव) ।

इच्छिय [**इष्ट**] इष्ट, अभिलषित, वाञ्छित ; (सुर ४, १५३) ।

इच्छिय वि [**ईप्सित**] प्राप्त करने को चाहा हुआ, अभिलषित ; (भग ; सुपा ६२५) ।

इच्छिय वि [**इच्छित**] जिसको इच्छा की गई हो वह ; (भग) ।

इच्छिर वि [**एषितृ**] इच्छा करने वाला ; (कुमा) ।

इच्छु देखो **इक्खु** ; (कुमा ; प्रासू ३३) ।

इच्छु वि [**इच्छु**] अभिलाषी ; (गा ७४०) ।

इज्ज सक [**आ+इ**] आना, आगमन करना । वकृ—**इज्जंत**, "विणयम्मि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पई नरो ।
दिव्वं सो सिरिमिज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए ॥" (दस९,२,४) ।

इज्जा स्त्री [**इज्या**] १ याग, पूजा; २ ब्राह्मणों का सन्ध्यार्चन; (अणु; ठा १०) ।

इज्जा स्त्री [**दे**] माता, जननी ; (अणु) ।

इज्जिसिय वि [**इज्यैषिक**] पूजा का अभिलाषी ; (भग ६, ३३) ।

इज्झ अक [**इन्ध्**] चमकना ; (हे २, २८) । वकृ—**इज्झमाण** ; (राय) ।

इट्टगा स्त्री [**इष्टका**] नीचे देखो ; (पराह २, २ ; पिंड)

इट्टा स्त्री [**इष्टका**] ईंट ; (गउड; हे २, ३४) । °**पाय**, °**वाय** पुं [°**पाक**] ईंटो का पकना ; २ जहां पर ईंटें पकाई जाती हैं वह स्थान ; (ठा ८) ।

इट्टाल न [**इट्टाल**] ईंट का टुकड़ा ; (दस ५, ४५)।

इट्ठ वि [**इष्ट**] १ अभिलषित, अभिप्रेत, वाञ्छित ; (विपा १, १ ; सुपा ३७०)। २ पूजित, सत्कृत ; (औप)। ३ आगमोक्त, सिद्धान्त से अ-विरुद्ध ; (उप ८८२)।

इट्ठि स्त्री [**इष्टि**] १ इच्छा, अभिलाष, चाह ; (सुपा २४६)। २ याग-विशेष ; (अभि २२७)।

°**इट्ठि** स्त्री [**कृष्टि**] खींचाव, खींचना ; (गा १८)।

इडा स्त्री [**इडा**] शरीर के दक्षिण भाग स्थित नाड़ी ; (कुमा)।

इडुर न [**दे**] गाड़ी ; (ओघ ४७६)।

इडुरिया स्त्री [**दे**] मिष्टान्न-विशेष, एक प्रकार की मीठाई ; (सुपा ४८५)।

इड्ढ वि [**ऋद्ध**] ऋद्धि-संपन्न ; (भग)।

इड्ढि स्त्री [**ऋद्धि**] १ वैभव, ऐश्वर्य, संपत्ति ; (सुर ३, १७)। २ लब्धि, शक्ति, सामर्थ्य; (उत्त ३)। ३ पदवी; (ठा ३, ४)। °**गारव** न [°**गौरव**] संपत्ति या पदवी आदि प्राप्त होने पर अभिमान और प्राप्त न होने पर उसकी लालसा; (सम ३; ठा ३, ४)। °**पत्त** वि [°**प्राप्त**] ऋद्धि-शाली ; (पण्ण ११; सुपा ३६०)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] ऋद्धि वाला ; (निचू १; ठा ६)।

इड्ढिसिय वि [**दे**] याचक-विशेष, माँगन की एक जाति ; (भग ६, ३३ टी)।

इणं, **इणमो** } अ [**एतत्**] यह ; (दे १, ७६)।

°**इण्ण** देखो **दिण्ण** ; (से ४, ३५)।

°**इण्ण** देखो **किण्ण** ; (से ८, ७१)।

इण्ह न [**चिह्न**] चिन्ह, निशान ; (से १, १२ ; षड्)।

°**इण्हा** स्त्री [**तृष्णा**] तृष्णा, प्यास, स्पृहा ; (गा ६३)।

इण्हिं अ [**इदानीम्**] इस समय, इस बख्त ; (दे १, ७६ ; पाअ)।

इति देखो **इइ** ; (पि १८)। °**हास** पुं (°**हास**) पूर्व वृत्तान्त, अतीत काल की घटनाओं का विवरण, पुरावृत्त ; (कप्प)। २ पुराण-शास्त्र ; (भग)।

इत्तए देखो **इ** सक।

इत्तर वि [**इत्वर**] १ अल्प, थोड़ा ; (अणु)। २ अल्प-कालिक, थोड़े समय के लिए जो किया जाता हो वह; (ठा ६)। ३ थोड़े समय तक रहने वाला ; (श्रा १६)। °**परिग्गहा** स्त्री [°**परिग्रहा**] थोड़े समय के लिए रक्खी हुई वेश्या, रखात आदि ; (आव ६)। °**परिग्गहिया** स्त्री [°**परि-गृहीता**] देखो °**परिग्गहा** ; (आव ६)।

इत्तरिय वि [**इत्वरिक**] ऊपर देखो; (निवू २ ; आचा ; उवा ; पंचा १०)।

इत्तरिय देखो **इयर** ; (सूअ २, २)।

इत्तरी स्त्री [**इत्वरी**] थोड़े काल के लिए रखी हुई वेश्या आदि ; (पंचा १)।

इत्तहे (अप) अ [**अत्र**] यहां पर ; (कुमा)।

इत्ताहे अ [**इदानीम्**] इस समय, इस बख्त, अधुना; (पाअ)।

इत्ति देखो **इइ** ; (कुमा)।

इत्तिय वि [**इयत्**, **एतावत्**] इतना ; (हे २, १५६ ; कुमा; प्रासू १३८ ; षड्)।

इत्तिरिय वि [**इत्वरिक**] अल्पकालिक, जो थोड़े समय के लिए किया जाता हो ; (स ४६; विसे १२६५)।

इत्तिल देखो **इत्तिय** ; (हे २, १५६)।

इत्तो देखो **इओ** ; (श्रा १७)।

इत्तोअ देखो **इओअ** ; (श्रा १४)।

इत्तोप्पं अ [**दे**] यहां से लेकर, इतः प्रभृति (पाअ)।

इत्थ अ [**अत्र**] यहां, इसमें ; (कप्प; कुमा; प्रासू १४१)।

इत्थं अ [**इत्थम्**] इस तरह, इस प्रकार ; (पण्ण २)। °**थ** वि [°**स्थ**] नियत आकार वाला, नियमित; (जीव १)।

इत्थत्थ पुं [**इत्यर्थ**] वह अर्थ ; (भग)।

इत्थत्थ पुं [**स्त्र्यर्थ**] स्त्री-विषय; (पि १६२)।

इत्थयं देखो **इत्थ** ; (श्रा १२)।

इत्थि, **इत्थी** } स्त्री [**स्त्री**] जनाना, औरत, महिला ; (सूअ २, २ ; हे २, १३०)। °**कला** स्त्री [°**कला**] स्त्री के गुण, स्त्री को सीखने योग्य कला ; (जं २)। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] स्त्री-विषयक वार्त्तालाप ; (ठा ४)। °**णपुंसग** पुं [°**नपुंसक**] एक प्रकार का नपुंसक ; (निचू १)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है ; (णाया १, ८)। °**परिसह** पुं [°**परिषह**] ब्रह्मचर्य ; (भग ८, ८)। °**विप्पजह** वि [°**विप्रजह**] १ स्त्री का परित्याग करने वाला; २ पुं. मुनि, साधु; (उत्त ८)। °**वेद**, °**वेय** पुं [°**वेद**] १ स्त्री को पुरुष-संग की इच्छा; २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री को पुरुष के साथ भोग करने की इच्छा होती है ; (भग ; पण्ण २३)।

इत्थेण त्रि [**स्त्रैण**] स्त्रीओं का समूह, स्त्री-जन; " लज्जसि किं न महंता दीणाओ मारिसित्थेणा" (उप ७२८ टी)।
इदाणिं देखो **इयाणिं**; (आचा)।
इदुर न [**दे**] १ गाड़ी के ऊपर लगाया जाता आच्छादन-विशेष ; (अणु)। २ ढकने का पात्र-विशेष ; (राय)।
इद्ददंड पुं [**दे**] भमरा, मधुकर ; (दे १, ७६)।
इद्धग्गिधूम न [**दे**] तुहिन, हिम ; (षड्)।
इद्धि देखो **इड्ढि** ; (षड्)।
इध (शौ) देखो **इह** ; (हे ४, २६८)।
इब्भ पुं [**इभ्य**] धनी, आढ्य ; (पाअ)।
इब्भ पुं [**दे**] वणिक्, व्यापारी ; (दे १, ७६)।
इभ पुं [**इभ**] हाथी, हस्ती ; (जं २; कुमा)।
इम स [**इदम्**] यह ; (हे ३, ७२)।
इमेरिस वि [**एतादृश**] ऐसा, इसके जैसा ; (सण)।
इय देखो **इम** ; (महा)।
इय देखो **इइ** ; (षड् ; हे १, ६१ ; औप)।
इय न [**दे**] प्रवेश, पैठ ; (आवम)।
इय वि [**इत**] १ गत, गया हुआ ; (सूअ १, ६)। २ प्राप्त ; " उदयमिओ जस्सीसो जयम्मि चंदुव्व जिणचंदो" (सार्ध ७१; विसे)। ३ ज्ञात, जाना हुआ ; (आचा)।
इयण्हिं अ [**इदानीम्**] हाल में, इस समय, अधुना ; (ठा ३, ३)।
इयर वि [**इतर**] १ अन्य, दूसरा ; (जी ४६; प्रासू १००)। २ हीन, जघन्य ; (आचा १, ६, २)।
इयरहा अ [**इतरथा**] अन्यथा, नहीं तो, अन्य प्रकार से ; (कम्म १, ६०)।
इयरेयर वि [**इतरेतर**] अन्योन्य, परस्पर ; (राज)।
इयाणि, **इयाणिं** अ [**इदानीम्**] हाल में, इस समय ; (भग ; पि १४४)।
इर देखो **किल** ; (हे २, १८६ ; नाट)।
इरमंदिर पुं [**दे**] करभ, ऊंट ; (दे १, ८१)।
इराव पुं [**दे**] हाथी ; (दे १, ८०)।
इरावदी (शौ) स्त्री [**इरावती**] नदी-विशेष ; (नाट)।
°**इरि** देखो **गिरि** " विंझइरिपवरसिहरे " (पउम १०, २७)।
इरिया स्त्री [**दे**] कुटी, कुटिया ; (दे १, ८०)।
इरिया स्त्री [**ईर्या**] गमन, गति, चलना ; (आचा)। °**वह** पुं [°**पथ**] १ मार्ग में जाना ; (ओघ ५४)। २ जाने का मार्ग, रास्ता ; (भग ११, १०)। ३ केवल शरीर से होने वाली क्रिया ; (सूअ २, २)। °**वहिय** न [°**पथिक**] केवल शरीर की चेष्टा से होने वाला कर्म-बन्ध, कर्म-विशेष ; (सूअ २, २; भग ८, ८)। °**वहिया** स्त्री [°**पथिकी**] कषाय-रहित केवल कायिक क्रिया ; क्रिया-विशेष ; (पडि; ठा २)। °**समिइ** स्त्री [°**समिति**] विवेक से चलना, दूसरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उपयोग-पूर्वक चलना ; (ठा ८)। °**समिय** वि [°**समित**] विवेक-पूर्वक चलने वाला ; (विपा २, १)।
इरिण न [**ऋण**] करजा, ऋण ; (चारु ६६)।
इरिण न [**दे**] कनक, सुवर्ण ; (दे १, ७६ ; गउड)।
इल पुं [**इल**] १ वाराणसी का वास्तव्य स्वनाम-ख्यात एक गृह-पति—गृहस्थ ; (णाया २)। २ न. इलादेवी के सिंहासन का नाम ; (णाया २)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] इल-नामक गृहस्थ की स्त्री ; (णाया २)।
°**इलंतअ** देखो **किलंत** ; (से ३, ४७)।
इला स्त्री [**इला**] १ पृथिवी, भूमि ; (से २, ११)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी ;(णाया २)। ३ इल-नामक गृहस्थ की पुत्री ; (णाया २) । ४ रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी ; (ठा ८)। ५ राजा जनक की माता ; (पउम २१, ३३)। ६ इलावर्धन नगर में स्थित एक देवता ; (आवम)। °**कूड** न [°**कूट**] इलादेवी के निवास-भूत एक शिखर ; (ठा ४)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] इलादेवी के प्रसाद से उत्पन्न एक श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने नटिनी पर मोहित होकर नट का पेशा सीखा और अन्त में नाच करते करते ही शुद्ध भावना से केवल-ज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाई ; (आचू)। °**वइ** पुं [°**पति**] एलापत्य गोत्र का आदि-पुरुष; (णंदि)। °**वडंसय** न [°**ावतंसक**] इलादेवी का प्रासाद ; (णाया २)।
इलाइपुत्त देखो **इला-पुत्त**; " धन्नो इलाइपुत्तो चिलाइ-पुत्तो अ बाहुमुणी" (पडि)।
इलिया स्त्री [**इलिका**] क्षुद्र जीव-विशेष, चीनी और चावल में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष ; (जी १७)।
इली स्त्री [**इली**] शस्त्र-विशेष, एक जात का तरवार की तरह का हथियार ; (पण्ह १, ३)।
इल्ल पुं [**दे**] १ प्रतीहार, चपरासी ; २ लविल, दाँती; ३ वि. दरिद्र, गरीब ; ४ कोमल, मृदु ; ५ काला, कृष्ण वर्ण वाला ; (दे १, ८२)।

इल्लि पुं [**दे**] १ शार्दूल, व्याघ्र ; २ सिंह ; ३ छाता ; (दे १, ८३)।

इल्लिय वि [**दे**] आसिक्त ; "उप्पेलणफुल्लाविअहल्लअफुल्लासवेल्लिअमल्लिआअक्खतल्लएण" (विक्र २३)।

इल्लिया स्त्री [**इल्लिका**] क्षुद्र जीव-विशेष, अन्न में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष ; (जी १६)।

इल्लीर न [**दे**] १ आसन-विशेष ; २ छाता ; ३ दरवाजा, गृह-द्वार ; (दे १, ८३)।

इव अ [**इव**] इन अर्थों का द्योतक अव्यय;—१ उपमा; २ २ सादृश्य, तुलना ; ३ उत्प्रेक्षा ; (हे २, १८२ ; सण)।

इसअ वि [**दे**] विस्तीर्ण ; (षड्)।

इसणा देखो **एसणा** ; (रंभा)।

इसाणी स्त्री [**ऐशानी**] ईशान कोण, पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा ; (नाट)।

इसि पुं [**ऋषि**] १ मुनि, साधु, ज्ञानी, महात्मा; (उत्त १२; अवि १४)। २ ऋषिवादि-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र, इन्द्र-विशेष ; (ठा २, ३)। °**गुत्त** पुं [°**गुप्त**] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (कप्प)। २ न. जैन मुनिओं का एक कुल; (कप्प)। °**गुत्तिय** न [°**गुप्तीय**] जैन मुनिओं का एक कुल ; (कप्प)। °**दास** पुं [°**दास**] १ इस नाम का एक शेठ, जिसने जैन दीक्षा ली थी ; २ 'अनुत्तरोववाइदसा' सूत्र का एक अध्ययन ; (अनु २)। °**दिण्ण** पुं [°**दत्त**] एक जैन मुनि ; (कप्प)। °**पालिय** °**दत्त**, पुं [°**पालित**] ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें तीर्थंकर का नाम ; (सम १५३)। °**पालिया** स्त्री [°**पालिता**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)। °**भद्दपुत्त** पुं [**भद्रपुत्र**] एक जैन श्रावक ; (भग ११, १२)। °**भासिय** न [°**भाषित**] १ अंग ग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आचार्यों के बनाए हुए उत्तराध्ययन आदि शास्त्र; (आवम)। २ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का तृतीय अध्ययन ; (ठा १०)। °**वाइ**, °**वाइय**, °**वादिय** पुं [°**वादिन्**] व्यन्तरों की एक जाति ; (औप ; पण्ह १, ४) °**वाल** पुं [°**पाल**] १ ऋषिवादि-व्यन्तरों का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३)। २ पांचवें वासुदेव का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५३)। °**वालिय** पुं [°**पालित**] ऋषिवादि-व्यन्तरों के एक इन्द्र का नाम ; (देव)।

इसिण पुं [**इसिन**] अनार्य देश-विशेष; (णाया १, १)।

इसिणय वि [**इसिनक**] इसिन-नामक अनार्य देश में उत्पन्न ; (णाया १, १ ; इक)।

इसिया स्त्री [**इषिका**] सलाई, शलाका ; (सुअ २, २)।

इसु पुं [**इषु**] बाण ; (पाअ)।

इस्स वि [**एष्यत्**] १ भविष्य काल ; "जुत्तं संपयमिस्सं" (विसे)। २ होने वाला, भावी ; "संभरइ भूयमिस्सं" (विसे ५०८)।

इस्सर देखो **ईसर** ; (प्राप्र; पि ८७; ठा २, ३)।

इस्सरिय देखो **ईसरिय** ; (पउम ५, २७० ; सम १३; प्रासू ७५)।

इस्सास पुं [**इष्वास**] १ धनुष, कार्मुक, शरासन ; २ बाण-क्षेपक, तीरंदाज ; (प्रारू)।

इह पुं [**इभ**] हाथी, हस्ती ; (प्रारू)।

इह अ [**इह**] यहां, इस जगह ; (आचा; स्वप्न २२)। °**पारलोइय** वि [**एहपरलोकिक**] इस और परलोक से सम्बन्ध रखने वाला ; (स १५६)। °**भविय** वि [**ऐहभविक**] इस जन्म-संबन्धी ; (भग)। °**लोअ**, °**लोग** पुं [°**लोक**] वर्तमान जन्म, मनुष्य-लोक ; (ठा ३; प्रासू ७५; १५३) °**लोय**; °**लोइय** वि [**ऐहलौकिक**] इस जन्म-संबन्धी, वर्त्तमान-जन्म-संबन्धी; (कप्प; सुपा ४०८; पण्ह १,३; स ४८१) ; "इहलोयपारलोइयसुहाइं सव्वाइं तेण दिन्नाइं" (स १५५)।

इहअ, **इहइं** } ऊपर देखो; (षड् ; पउम २१, ७)।

इहइं अ [**इदानीम्**] हाल, संप्रति, इस समय ; (पाअ)।

इहं, **इहयं** } देखो **इह**=इह ; (औप ; श्रा १४)।

इहरहा, **इहरा** } देखो **इयर-हा**; (उप ८६०; भत्त ३६; हे २,२१२)।

इहरा देखो **इहइं**=इदानीम् ; (गउड)।

इहामिय देखो **ईहामिय**; (पि ५४)।

इहिं अ [**इह**] यहां ; (रंभा)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे इआराइसद्दसंकलणो णाम
तइओ तरंगो समत्तो।

ई

ई पुं [**ई**] प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थ वर्ण, स्वर-विशेष ; (प्रामा)।

ईअ स [**एतत्, इदम्**] यह ; (पि ४२६; ४२६)।

ईअ अ [**इति**] इस तरह ; "ईय मणोविसईणं" (विसे ५१४)।

ईइ पुंस्त्री [**ईति**] धान्य वगैरः को नुकसान पहुंचाने वाला चूहा आदि प्राणि-गण ; (औप)।

ईइस वि [**ईदृश**] ऐसा, इस तरह का, इसके समान; (महा; स १५)।

°**ईड** देखो **कीड**=कीट ; "दुद्द्सणाणिंवईडसारिच्छं" (गा ३०)

°**ईण** देखो **दीण** ; (से ८, ६१)।

ईति देखो **ईइ** ; (सम ६०)।

ईदिस देखो **ईइस** ; (स १४० ; अभि १८२; कप्पू)।

✓**ईर** सक [**ईर्**] १ प्रेरण करना। २ कहना। ३ गमन करना। ४ फेंकना। ईरेइ ; (विसे १०६०)। कृ—"ठाण-गमणगुणजोगजुंजणजुगंतरनिवातियाए दिट्ठीए **ईरियव्वं**" (पराह २, १)। भूकृ—**ईरिद** (शौ); (अभि ३०)।

ईरिय वि [**ईरित**] प्रेरित ; (विसे ३१४४)।

ईरिया देखो **इरिआ**; (सम १०; ओघ ७४८; सुर २,१०४)।

ईरिस देखो **ईइस** ; (कुमा; स्वप्न ५५)।

ईस न [**दे**] खूंटा, खीला, कीलक ; (दे १, ८४)।

✓**ईस** सक [**ईर्ष्**] ईर्ष्या करना, द्वेष करना । ईसाअंति ; (गा २४०)।

ईस पुं [**ईश**] देखो **ईसर**=ईश्वर ; (कुमा ; पउम १०२, ५८)। २ न. ऐश्वर्य, प्रभुता ; (पगण २)।

ईस देखो **ईसि** ; (कप्पू)।

ईसअ पुं [**दे**] रोझ, हरिण की एक जाति; (दे १, ८४)।

ईसत्थ न [**इष्वस्त्र, इषुशास्त्र**] धनुर्वेद, बाण-विद्या ; (औप ; पराह १, ५)। "विन्नाणनाणकुसला ईसत्थक-यस्समा वीरा" (पउम ६८, ४० ; पि ११७)।

ईसर पुं [**दे**] मन्मथ, काम-देव ; (दे १, ८४)।

ईसर पुं [**ईश्वर**] १ परमेश्वर, प्रभु ; (हे १, ८४)। २ महादेव, शिव ; (पउम १०६, १२)। ३ स्वामी, पति ; (कुमा)। ४ नायक, मुखिया ; (विपा १, १)। ५ देवताओं का एक आवास, बेलंधर-देवों का आवास-विशेष ; (सम ७३)। ६ एक पाताल-कलश ; (ठा ४, २)। ७ आढ्य, धनी ; (सुपा ४३६)। ८ ऐश्वर्य-शाली, वैभवी ; (जीव ३)। ६ युवराज ; १० माण्डलिक, सामन्त राजा ; ११ मन्त्री; (अणु)। १२ इन्द्र-विशेष, भूतवादि-निकाय का इन्द्र ; (ठा २, ३)। १३ पाताल-विशेष ; (ठा ४)। १४ एक राजा का नाम ; १५ एक जैन मुनि ; (महानि ६) १६ यक्ष-विशेष ; (पव २७)।

ईसरिय न [**ऐश्वर्य**] वैभव, प्रभुता, ईश्वरपन ; (पउम ८६, ६३)।

ईसा स्त्री [**ईषा**] १ लोकपालों के अग्र-महिषीओं की एक पर्षदा ; (ठा ३, २)। २ पिशाचेन्द्र की एक परिषद् ; (जीव ३)। ३ हल का एक काष्ठ ; (दे २, ६६)।

ईसा स्त्री [**ईर्षा**] ईर्ष्या, द्रोह ; (गउड)। °**रोस** पुं [°**रोष**] क्रोध, गुस्सा ; (कप्पू)।

ईसाइय वि [**ईर्ष्यायित**] जिसको ईर्ष्या हुई हो वह ; (सुपा ६१)।

ईसाण पुं [**ईशान**] १ देवलोक-विशेष, दूसरा देव-लोक ; (सम २)। २ दूसरे देवलोक का इन्द्र ; (ठा २, ३)। ३ उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा, ईशान-कोण; (सुपा ६८)। ४ मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१)। ५ दूसरे देवलोक के निवासी देव ; (ठा १०)। ६ प्रभु, स्वामी ; (विसे)। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] विमान-विशेष का नाम ; (सम २५)।

ईसाणा स्त्री [**ऐशानी**] ईशान-कोण ; (ठा १०)।

ईसाणी स्त्री [**ऐशानी**] १ ईशान-कोण ; २ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४१)।

ईसालु वि [**ईर्ष्यालु**] ईर्ष्यालु, असहिष्णु, द्वेषी ; (महा ; गा ६३४ ; प्राप्र)। स्त्री °**णी** ; (पउम ३६, ४५)।

ईसास देखो **इस्सास**; "ईसासट्ठाण" (निर ; पि १६२)।

ईसि अ [**ईषत्**] १ थोड़ा, अल्प ; (पगण ३६)। २ पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र, मुक्त-भूमि ; (सम २२)। °**पब्भार** वि [°**प्राग्भार**] थोड़ा अवनत; (पंचा १८)। °**पब्भारा** स्त्री [°**प्राग्भारा**] पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र ; (ठा ८ ; सम २२)।

ईसिअ न [**ईर्ष्यित**] १ ईर्ष्या, द्वेष ; (गा ५१०)। २ वि. जिस पर ईर्ष्या की गई हो वह ; (दे २, १६)।

ईसिअ न [**दे**] १ भील के सिर पर का पत्र-पुट, भीलों की

एक तरह की पगड़ी; २ वि. वशीकृत, वश किया हुआ; (दे १, ८४)।

ईसिं } देखो **ईसि**; (महा; सुर २, ६६; कस; पि
ईसीं } १०२)।

√**ईह** सक [**ईक्ष्, ईह्**] १ देखना। २ विचारना। ३ चेष्टा करना। **ईहए**; (विसे ५६१)। वकृ—**ईहंत**; **ईहमाण**; (गउड; सुपा ८८; विसे २५८)। संकृ—"अनिआणो **ईहिऊण** मइपुव्वं" (पच ८६; विसे २५७)।

ईहण न [**ईहन**] नीचे देखो; (आचू १)।

ईहा स्त्री [**ईहा**] १ विचार, ऊहापोह, विमर्श; (णाया १, १; सुपा ५७२)। २ चेष्टा, प्रयत्न; (ओघ ३)। ३ मति-ज्ञान का एक भेद; (पगण १५; ठा ५)। ४ इच्छा; (स ६१२)। °**मिग**, °**मिय** पुं [°**मृग**] १ वृक, भेडिया; (णाया १, १; भग ११, ११)। २ नाटक का एक भेद; (राय)।

ईहा स्त्री [**ईक्षा**] अवलोकन, विलोकन; (औप)।

ईहिय वि [**ईहित**] चेष्टित; (सुअ १, १, ३)। २ विमर्शित, विचारित, ईहा-विषयीकृत; (विसे २५७)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवे** ईआराइसद्दसंकलणो णाम चउत्थो तरंगो समत्तो।

——:०:——

उ

उ पुं [**उ**] प्राकृत वर्णमाला का पञ्चम अक्षर, स्वर-विशेष; (प्रामा)। २ उपयोग रखना, ख्याल करना ; " उत्ति उव-ओगकरणे "। (विसे ३१६८)। ३ गति-क्रिया ; (आवम)।

उ अ [**उ**] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय ; — १ संबोधन, आमन्त्रण ; २ कोप-वचन, क्रोधोक्ति ; ३ अनुकम्पा, दया; ४ नियोग, हुकुम ; ५ विस्मय, आश्चर्य ; ६ अंगीकार, स्वीकार ; ७ प्रश्न, पृच्छा ; (हे २, २१७)।

उ अ [**तु**] इन अर्थों का द्योतक अव्यय ; — १ समुच्चय, और ; (कप्प)। २ अवधारण, निश्चय ; (आवम)। ३ किन्तु, परन्तु ; (ठा ३, १)। ४ नियोग, आज्ञा ; ५ प्रशंसा ; ६ विनिग्रह ; ७ शंका की निवृत्ति ; (उव)। ८ पादपूर्ति के लिए भी इसका प्रयोग होता है ; (उव)।

उ देखो **उव** ; " उओ उपे " (षड् २, १, ६८)।

उ° अ [**उत्**] निम्न अर्थों का सूचक अव्यय; — १ ऊंचा, ऊर्ध्व ; जैसे— 'उक्कमंत' (आवम)। २ विपरीत, उलटा ; जैसे— 'उक्कम' (विसे)। ३ अभाव, रहितता ; जैसे — 'उक्कर' (णाया १, १)। ४ ज्यादः, विशेष ; जैसे— 'उक्कोविय' (उप पृ ७८ ; विसे ३५७६)।

उअ अ [**दे**] विलोकन करो, देखो ; (दे १, ८६ टी ; हे २, २११)।

उअ अ [**उत**] इन अर्थों का सूचक अव्यय; — १ विकल्प, अथवा ; २ वितर्क, विमर्श ; (कुमा)। ३ प्रश्न, पृच्छा ; ४ समुच्चय ; ५ बहुत, अतिशय ; (हे १, १७२)।

उअ अ [**दे**] ऋजु, सरल ; (षड्)।

उअ देखो **उव** ; (गा ५० ; से ६, ६)।

उअ न [**उद**] पानी, जल। °**सिंधु** पुं [°**सिन्धु**] समुद्र, सागर ; (पि ३४०)।

उअ वि [**उदञ्च्**] उत्तर, उत्तर दिशा में स्थित। °**म-हिहर** पुं [°**महिधर**] हिमाचल पर्वत ; (गउड)।

उअअ न [**उदक**] पानी, जल ; (गा ५३ ; से ६, ८८)।

उअअ देखो **उदय** ; (से १०, ३१)।

उअअ न [**उदर**] पेट, उदर ; (से ६, ८८)।

उअअ वि [**दे**] ऋजु, सरल, सीधा ; (दे १, ८८)।

उअअद (शौ) देखो **उवगय** ; (नाट)।

उअआरअ वि [**उपकारक**] उपकार करने वाला ; (गा ५०)।

उअआरि वि [**उपकारिन्**] ऊपर देखो ; (विक २५)।

उअइव्व वि [**उपजीव्य**] आश्रय करने योग्य, सेवा करने योग्य ; (से ६, ६)।

उअऊह सक [**उप+गूह्**] आलिंगन करना। संकृ—**उ-अऊहेऊण** ; (पि ५८६)।

उअएस देखो **उवएस** ; (गा १०१)।

उअंचण न [**उदञ्चन**] १ऊंचा फेंकना ; २ ढकने का पात्र, आच्छादक पात्र ; (दे ४, ११)

उअंचिद (शौ) वि [**उदञ्चित**] १ ऊंचा ऊठाया हुआ; ऊंचा फेंका हुआ ; (नाट)।

उअंत पुं [**उदन्त**] हकीकत , वृत्तान्त, समाचार ; (पाअ ; प्रामा)।

उअकिद (शौ) वि [**उपकृत**] जिस पर उपकार किया गया हो वह ; (पि ६४)।

उअक्किअ वि [**दे**] पुरस्कृत, आगे किया हुआ ; (दे १, १०७)।

उअगअ देखो **उवगय** ; (गा ६४४)।

उअचित्त वि [**दे**] अपगत, निवृत्त ; (दे १, १०८)।

उअजीवि वि [**उपजीविन्**] आश्रित ; (अभि १८६)।

उअज्झाअ देखो **उवज्झाय** ; (नाट)।

उअट्टी स्त्री [**दे**] नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की नाडी; " उअट्टी उचओ नीवी " (पाअ)।

उअट्ठिअ देखो **उवट्ठिय** ; (प्राप)।

उअण्णास देखो **उवण्णास** ; (नाट)।

उअत्तंत देखो **उव्वट्ट**=उद्+वृत्।

उअत्थाण देखो **उवट्ठाण** ; (नाट)।

उअत्थिअ देखो **उवट्ठिय** ; (से ११, ७८)।

उअदिट्ठ देखो **उवइट्ठ** ; (नाट)।

उअभुत्त देखो **उवभुत्त** ; (रंभा)।

उअभोग देखो **उवभोग** ; (नाट)।

उअमिज्जंत वकृ [**उपमीयमान**] जिसकी तुलना की जाती हो वह ; (काप्र ८६६)।

उअर न [**उदर**] पेट ; (कुमा)।

उअरि } **उअरिं** } देखो **उवरि** ; (गा ६४; से ८, ७५) ।

उअरी स्त्री [**दे**] शाकिनी, देवी-विशेष ; (दे १, ६८) ।

उअरुज्झ देखो **उवरुज्झ**। उअरुज्झदि (शौ); (नाट) ।

उअरोअ } **उअरोह** } देखो **उवरोह** ; (प्राप ; नाट) ।

उअलद्ध देखो **उवलद्ध** ; (नाट) ।

उअविय वि [**दे**] उच्छिष्ट " इहरा मे णिसिभत्तं उअवियं चेव गुरुमादी " (बृह १) ।

उअह अ [**दे**] देखो, देखिए ; (दे १, ६८ ; प्राप्र) ।

उअहार देखो **उवहार** ; (नाट) ।

उअहारी स्त्री [**दे**] दोग्ध्री , दोहने वाली स्त्री ; (दे १, १०८) ।

उअहि पुं [**उदधि**] १ समुद्र, सागर ; (गउड) । २ स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राज-कुमार; (पउम ५, १६६) । ३ काल परिमाण, सागरोपम ; (सुर २, १३६) । ४ स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि ; (पउम २०, ११७) । देखो **उदहि** ।

उअहि देखो **उवहि**=उपधि ; (पच्च ६) ।

उअहुज्जंत देखो **उवभुंज** ।

उअहोअ देखो **उवभोग** ; (प्रबो ३०; नाट) ।

उआअ देखो **उवाय** ; (नाट) ।

उआअण देखो **उवायण** ; (माल ४६) ।

उआर देखो **उराल** ; (सुपा ६०७ ; कप्पू) ।

उआर देखो **उवयार** ; (षड्; गउड) ।

उआलंभ देखो **उवालंभ**=उपा+लभ् । कृ—**उआलंभणिज्ज**; (नाट) ।

उआलंभ देखो **उवालंभ**=उपालम्भ ; (गा २०१) ।

उआलि स्त्री [**दे**] अवतंस, शिरो-भूषण ; (दे १, ६०) ।

उआस पुं [**उदास**] नीचे देखो ; (पिंग) ।

उआसीण वि [**उदासीन**] १ उदासी, दिलगीर ; २ मध्यस्थ, तटस्थ ; (स ५४६ ; नाट) ।

उइ सक [**उप+इ**] समीप जाना । उएइ, उएउ; (वि ४६३) ।

उइ अक [**उद्+इ**] उदित होना । उएइ ; (रंभा) । वकृ—**उइयंत** ; (रंभा) ।

उइ देखो **उउ** । "अन्नं वि हुतु उइओ सरिसा परं ते " (रंभा)। °**राय** पुं [°**राज**] वसन्त ऋतु ; ; (रंभा) ।

उइअ वि [**उदित**] १ उदय-प्राप्त, उद्गत ; (सुपा १२७) । २ उक्त, कथित ; (विसे २३३; ८४६) । °**परक्कम** पुं [°**पराक्रम**] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ६) ।

उइअ वि [**उचित**] योग्य, लायक ; (से ८, १०३) ।

उइंतण न [**दे**] उत्तरीय वस्त्र, चादर; (दे १, १०३ ; कुमा) ।

उइंद पुं [**उपेन्द्र**] इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार; जो अदिति के गर्भ से हुआ था ; (हे १, ६) ।

उइट्ठ वि [**अपकृष्ट**] हीन, संकुचित, " आउसियअक्खचम्म-उइट्ठगंडदेसं " (णाया १, ८) ।

उइण्ण देखो **उदिण्ण** ; (ठा ५; विसे ५०३) ।

उइण्ण वि [**उदीच्य**] उत्तर-दिशा-संबन्धी, उत्तर दिशा में उत्पन्न ; (आवम) ।

उइयंत देखो **उइ**=उद्+इ ।

उईण देखो **उदीण** ; (राय)

उईर देखो **उदीर** । " उईरेइ अइपीडं " (श्रा २७) । वकृ—**उईरंत** ; (पुप्फ १३) । संकृ— **उईरइत्ता** ; (सुअ १, ६) ।

उईरण देखो **उदीरण** ; (ठा ४; पुप्फ १६५) ।

उईरणया } **उईरणा** } देखो **उदीरणा** ; (विसे २५१५ टी ; कम्मप १५८; विसे २६६२) ।

उईरिय देखो **उदीरिय** ; (पुप्फ २१६) ।

उउ त्रि [**ऋतु**] १ ऋतु, दो मास का काल-विशेष, वसन्त आदि छः प्रकार का काल ; (औप; अंत ७) । ' उऊए,' ' उऊइं ' (कप्प) । २ स्त्री-कुसुम, रजो-दर्शन, स्त्री-धर्म; (ठा ५, २) । °**बद्ध** पुं [°**बद्ध**] शीत और उष्ण-काल, वर्षा-काल के अतिरिक्त आठ मास का समय ; (ओघ २६; २६५; ३४८) । °**मास** पुं [°**मास**] १ श्रावण मास ; (वव १, १) । २ तीस दिन वाला मास ; (सम) । °**य** वि [°**ज**] ऋतु में उत्पन्न, समय पर उत्पन्न होने वाला ; (पराह २, ५ ; णाया १, १) ;

" उयअगुरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा "
(णाया १,१७) ।

°**संधि** पुंस्त्री [°**संधि**] ऋतु का सन्धि-काल, ऋतु का अन्त समय ; (आचा) । °**संवच्छर** पुं [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष ; (ठा ५) । देखो **उइ**=उउ ।

उउंबर देखो उंबर=उदुम्बर ; (कुमा; हे १, २७० ; षड्)।

उऊखल } उऊहल } पुंन [उदूखल] उलुखल, गूगल ; (कुमा; षड् ; हे १, १, १)।

उओग्गिअ वि [दे] संबद्ध , संयुक्त ; (षड्)।

उंघ अक [नि + द्रा] नींद लेना। उंघइ ; (हे ४, १२)।

उंचहिआ स्त्री [दे] चक्र-धारा ; (दे १, १०६)।

उंछ पुं [उञ्छ] भिक्षा, माधुकरी ; (उप ६७७; ओघ ४२४)।

उंछअ पुं [दे] वस्त्र छीपने का काम करने वाला शिल्पी , छीपी ; जो कपड़ा छापता है , छींट बनाता है वह ; (दे १, ६८ ; पाअ)।

उंज सक [सिच्] सींचना, छींटकना। उंजिज्जा; (राज)। भवि—उंजिस्सइ ; (सुपा १३६)।

उंज सक [युज्] प्रयोग करना, जोड़ना। "अहमवि उंजेमि तह किंपि" (धम्म ८ टी)।

उंजायण न [उञ्जायन] गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७)।

उंजिअ वि [सिक्त] सिक्त, छींटका हुआ ; (सुपा १३६)।

उंड } उंडग } उंडय } वि [दे] १ गभीर, गहरा ; (दे १, ८५ ; सुपा १५ ; उप १४७ टी ; ठा १० ; श्रा १६)। २ पुं. पिण्ड, "बालाई मंसउंडग मज्जाराई विराहेज्जा" (ओघ २४६ भा)। ३ चलते समय पाँव में पिण्ड रूप से लग जाय उतना गहरा कीच, कर्दम ; (ओघ ३३ भा)। ४ शरीर का एक भाग, मांस-पिण्ड "हियउंडए" (विपा १, ५)।

उंडल न [दे] १ मञ्च, मचान, उच्चासन ; २ निकर, समूह; (दे १, १२६)।

उंडिया स्त्री [दे] मुद्रा-विशेष ; (राज)।

उंडी स्त्री [दे] पिण्ड, गोलाकार वस्तु "तत्थ णं एगा वरमऊरी दो पुट्ठे परियागते पिट्ठुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरीअंडए पसवति" (णाया १, ३)।

उंदर } उंदुर } पुंस्त्री [उन्दुर] मूषक, चूहा ; (गउड; पराह १, १ ; उवा; दे १, १०२)।

उंदुरअ पुं [दे] लम्बा दिवस ; (दे २, १०५)।

उंब पुं [उम्ब] वृक्ष-विशेष, "निंबंबउंबउंबर" (उप १०३१ टी)।

उंबर पुं [उदुम्बर] १ वृक्ष-विशेष, गूलर का पेड़ ; (पराण १)। २ न. गूलर का फल; (प्राप्र)। ३ देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी ; (दे १, ६०)। °दत्त पुं [°दत्त] १ यक्ष-विशेष ; (विपा १, ७)। २ एक सार्थवाह का पुत्र ; (विपा १, ७)। °पंचग, °पणग न [°पञ्चक] वड, पीपल, गूलर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी इन पांच वृक्षों के फल ; (सुपा ४६; भग ६, ३३)। °पुप्फ न [°पुष्प] गूलर का फूल; (भग ६, ३३)।

उंबर वि [दे] बहुत, प्रचुर ; (दे १, ६०)।

उंबरउप्फ न [दे] नवीन अभ्युदय, अपूर्व उन्नति ; (दे १, ११६)।

उंबा स्त्री [दे] बन्धन ; (दे १, ८६)।

उंबी स्त्री [दे] पका हुआ गेहूँ ; (दे १, ८६; सुपा ४७३)।

उंबेभरिया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष ; (पराण १)।

उंभ सक [दे] पूर्ति करना, पूरा करना ; (राज)।

उकिट्ठ देखो उक्किट्ठ ; (पिंग)।

उकुरुडिया [दे] देखो उक्कुरुडिया ; (निर १, १)।

उक्क वि [उत्क] १ उत्सुक, उत्कण्ठित ; (सुर ३, ५३)। एक विद्याधर राजा का नाम; (पउम १०, २०)।

उक्क वि [उक्त) कथित ; (पिंग)।

उक्क न [दे] पाद पतन, पाँव पर गिर कर नमस्कार करना; (दे १, ८५)।

उक्कअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ ; (षड्)।

उक्कंचण } उक्कंचणया } न [दे] १ झूठी प्रशंसा करना, खुशामद ; (णाया १, २)। २ ऊंचा करना, ऊठाना ; (सूअ २, २)। ३ झाड़ू निकालना ; (निचू ५)। ४ घूस, रिशवत; (दसा २)। ५ मूर्ख पुरुष को ठगने वाले धूर्त का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से, थोडी देर के लिए निश्चेष्ट रहना ; (औप)। °दीव पुं [°दीप] ऊंचा दंड वाला प्रदीप ; (अंत)।

उक्कंछण न [दे] देखो उक्कंवण ; (राज)।

उक्कंठ अक [उत्+कण्ठ] उत्कण्ठा करना, उत्सुक होना। उक्कंठेहि; (मै ७३)। वकृ—उक्कंठंत ; (मै ६३)। हेकृ—उक्कंठिदुं (शौ) ; (अभि १४७)।

उक्कंठा स्त्री [उत्कण्ठा] उत्सुकता, औत्सुक्य; (हे १, २५ ; ३०)।

उक्कंठिय } वि [**उत्कण्ठित**] उत्सुक ; (गा ५४२ ;
उक्कंठिर } सुर ३, ८६; पउम ११, ११८ ; वज्जा
उक्कंठुलय } ६०) ।

उक्कंडय सक [**उत्कण्टय्**] पुलकित करना "दियसेवि भूअसंभावणाए उक्कंटयंति अंगाइं" (गउड) ।

उक्कंडय वि [**उत्कण्टक**] पुलकित, रोमाञ्चित ; (गउड) ।

उक्कंडा स्त्री [**दे**] घूस, रिशवत ; (दे १, ६२) ।

उक्कंडिअ वि [**दे**] १ आरोपित ; २ खण्डित ; (षड्) ।

उक्कंत वि [**उत्क्रान्त**] ऊंचा गया हुआ ; (भवि) ।

उक्कंति } स्त्री [**दे**] देखो **उक्कंदा** ; (दे १, ८७) ।
उक्कंती }

उक्कंद वि [**दे**] विप्रलब्ध, ठगा हुआ, वञ्चित ; (षड्) ।

उक्कंदल वि [**उत्कन्दल**] अङ्कुरित ; (गउड) ।

उक्कंदि } स्त्री [**दे**] कूपतुला; (दे १, ८७) ।
उक्कंदी }

उक्कंप अक [**उत्+कम्प्**] काँपना, हिलना ।

उक्कंप पुं [**उत्कम्प**] कम्प, चलन ; (सण ; गा ७३५) ।

उक्कंपिय वि [**उत्कम्पित**] १ चञ्चल किया हुआ; (राज) । २ न. कम्प, हिलन ;

"णीसासुक्कंपिअपुलइएहिं जाणंति णच्चिउं धरणा ।
अम्हारिसीहिं दिट्ठे, पिअम्मि अप्पावि वीसरिओ"
(गा ३६१) ।

उक्कंपिय वि [**दे**] धवलित, सफेद किया हुआ ; (कप्प) ।

उक्कंबण न [**दे**] काठ पर काठ के हाते से घर की छत बांधना, घर का संस्कार-विशेष ; (बृह १) ।

उक्कंबिय वि [**दे**] काठ से बांधा हुआ ; (राज) ।

उक्कच्छ वि [**उत्कच्छ**] स्फुट, स्पष्ट ; (पिंग) ।

उक्कच्छा स्त्री [**उत्कच्छा**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

उक्कच्छिआ स्त्री [**औपकक्षिकी**] जैन साध्वीओं को पहनने का वस्त्र-विशेष ; (ओघ ६७७) ।

उक्कज्ज वि [**दे**] अनवस्थित, चञ्चल ; (षड्) ।

उक्कट्ठि स्त्री [**उत्कृष्टि**] उत्कर्ष, " महता उक्कट्ठिसीहणादकलकलरवेणं" (सुज्ज १६—पत्र २७८) । देखो **उक्किट्ठि** ।

उक्कड वि [**उत्कट**] १ तीव्र, प्रचण्ड, प्रखर ; (णंदि; महा) । २ विशाल, विस्तीर्ण ; (कप्प; सुर १, १०६) । ३ प्रबल ; (उवा ; सुर ६, १७२) ।

°**उक्कड** देखो **दुक्कड** ; (उप ६४६) ।

उक्कडिय वि [**दे**] तोड़ा हुआ, छिन्न ; (पाअ) ।

उक्कडिय देखो **उक्कुड्य** ; (कस) ।

उक्कड्ढग पुं [**अपकर्षक**] चोर की एक जाति—१ जो घर से धन आदि ले जाते हैं; २ जो चोरों को बुलाकर चोरी कराते हैं, ३ चोर की पीठ ठोकने वाले, चोर के सहायक; (पण्ह १,३ टी)।

उक्कड्ढिय वि [**उत्कर्षित**] १ उत्पाटित, ऊठाया हुआ ; २ एक स्थान से उठा कर अन्यत्र स्थापित ; (पिंड ३६१) ।

उक्कण्ण वि [**उत्कर्ण**] सुनने के लिए उत्सुक ; (से ६, १६) ।

उक्कत्त सक [**उत्+कृत्**] काटना, कतरना । वकृ—**उक्कत्तंत** ; (सुपा २१६) ।

उक्कत्त वि [**उत्कृत्त**] कटा हुआ, छिन्न; (विपा १, २) ।

उक्कत्तण न [**उत्कर्त्तन**] काट डालना, छेदन ; (पुष्फ ३८४) ।

उक्कत्तिय देखो **उक्कत्त**=उत्कृत ; (पउम ५६, २४) ।

उक्कत्थण न [**उत्कत्थन**] उखाडना ; (पण्ह १, १) ।

उक्कप्प पुं [**उत्कल्प**] शास्त्र-निषिद्ध आचरण ;(पंचभा)

उक्कम सक [**उत्+क्रम्**] १ ऊँचा जाना । २ उलटे क्रम से रखना । वकृ—**उक्कमंत** ; (आवम) । संकृ—**उक्कमिऊणं** ; (विसे ३५३१) ।

उक्कम पुं [**उत्क्रम**] उलटा क्रम, विपरीत क्रम ; (विसे २७१) ।

उक्कमित वि [**उपक्रान्त**] १ प्रारब्ध ; २ क्षीण;

"अब्भागमितम्मि वा दुहे, अहवा उक्कमिते भवंतीए ।
एगस्स गती य आगती, विदुमं ता सरणं ण मन्नइ"
(सुअ १, २, ३, १७) ।

उक्कर सक [**उत्+कृ**] खोदना । कवकृ—**उक्करिज्जमाण** ; (आवम) ।

उक्कर पुं [**उत्कर**] १ समूह, संघात; "सक्करुक्कररसड्ढे" (सुपा ५१८) ; २ कर-रहित, राज-देय शुल्क से रहित ; (णाया १, १) ।

उक्करड पुं [**दे**] १ अशुचि राशि ; २ जहां मैला इकट्ठा किया जाता है वह स्थान ; (श्रा २७; सुपा ३५५) ।

उक्करिअ वि [**दे**] १ विस्तीर्ण, आयत ; २ आरोपित ; ३ खण्डित ; (षड्) ।

उक्करिअ वि [**उत्कीर्ण**] खोदित, खोदा हुआ ; "टंकुक्करियव्व निच्चलनिहित्तलोयणा" (महा) ।

उक्करिद (शौ) वि [उत्कृत] ऊंचा किया हुआ ; (स्वप्न ३६)।

उक्करिया स्त्री [उत्करिका] जैसे एरण्ड के बीज से उसका छिलका अलग होता है उस तरह अलग होना, भेद विशेष ; (भग ५, ४)।

उक्करिस सक [उत्+कृष्] १ खींचना। २ गर्व करना, बड़ाई करना। वकृ—उक्करिसंत ; (से १४, ६)।

उक्करिस देखो उक्कस्स=उत्कर्ष ; (उव; विसे १७६६)।

उक्करिसण न [उत्कर्षण] १ उत्कर्ष, बड़ाई, महत्व। २ स्थापन, आधान ;

"उम्मिल्लइ लायण्णं पययच्छायाए सक्कय वयाणं।

सक्कयसक्कारुक्करिसणेण पययस्सवि पहावो ॥" (गउड)।

उक्करिसिय वि [उत्कृष्ट] खींच निकाला हुआ, उन्मूलित ; (से १४, ३)।

उक्कल देखो उक्कड ; (ठा ५, ३)।

उक्कल वि [उत्कल] १ धर्म-रहित ; २ न. चोरी ; (पण्ह १, ३ टी)। ३ पुं. देश-विशेष, जिसको आजकल 'उडिया' या 'ओरिसा' कहते हैं ; (प्रवो ७८)।

उक्कलंब सक [उत्+लम्बय्] फांसी लटकाना। उक्कलंबेमि ; (स ६३)।

उक्कलंबण न [उल्लम्बन] फांसी लटकना ; (स ३५८)।

उक्कलिया स्त्री [उत्कलिका] १ लूता, मकड़ी, एक प्रकार का कीड़ा जो जाल बनाता है "उक्कलियंडे" (कप्प)। २ नीचे की तरफ वहने वाला वायु ; (जी ७)। ३ छोटा समुदाय, समूह-विशेष ; (ठा ३, १)। ४ लहरी, तरंग ; (राज)। ५ ठहर ठहर कर तरंग की तरह चलने वाला वायु ; (आचा)।

उक्कस सक [गम्] जाना, गमन करना। उक्कसइ ; (हे ४, १६२ ; कुमा)। प्रयो—उक्कसावेइ ; वकृ—उक्कसावंत ; (निचू १०)।

उक्कस देखो ओकस। वकृ—उक्कसमाण ; (कस)। हेकृ—उक्कसित्तए ; (आचा २, ३ १, १५)।

उक्कस देखो उक्कुस ; (कुमा)।

उक्कस देखो उक्कस्स=उत्कर्ष ; (सूअ १, १, ४, १२) "तवस्सी अइउक्कसो" (दस ५, २, ४२)।

उक्कसण न [उत्कर्षण] १ अभिमान करना; (सूअ १, १३) २ ऊँचा जाना। ३ निवर्तन, निवृत्ति ; ४ प्रेरणा; (राज)।

उक्कसाइ वि [उत्कशायिन्] सत्कारादि के लिए उत्कण्ठित ; (उत्त ३)।

उक्कसाइ वि [उत्कषायिन्] प्रबल कषाय वाला ; (उत्त १५)।

उक्कस्स अक [अप+कृष्] १ ह्रास प्राप्त होना, हीन होना। २ फिछलना; गिरना, पैर रपटने से गिर जाना। वकृ—उक्कस्समाण ; (ठा ५)।

उक्कस्स पुं [उत्कर्ष] १ गर्व, अभिमान ; (सूअ १, १, ४, २)। २ अतिशय, उत्कृष्टता ; (भवि)।

उक्कस्स वि [उत्कर्षवत्] १ उत्कृष्ट, ज्यादः से ज्यादः "उक्कस्सठिईयाणं" (ठा १, १) ; "उक्कस्सा उदीरणया" (कम्मप १६६)। २ अभिमानी, गर्विष्ठ; (सूअ १, १)।

उक्का स्त्री [उल्का] १ लूका, आकाश से जो एक प्रकार का अंगार सा गिरता है ; (ओघ ३१० भा ; जी ६)। छिन्न मूल दिग्दाह ; (आचू)। ३ अग्नि-पिण्ड ; (ठा ८)। ४ आकाश-वह्नि ; (दस ४)। °मुह पुं [°मुख] १ अन्तर्द्वीप विशेष ; २ उसके निवासी लोक ; (ठा ४, २)। °वाय पुं [°पात] तारा का गिरना, लूका गिरना। (भग ३, ६)।

उक्का स्त्री [दे] कूप-तुला (दे १, ८७)।

उक्काम सक [उत्+क्रमय्] दूर करना, पीछे हटाना। "उक्कामयंति जीवं धम्माओ तेण ते कामा" (दसनि २—पत्र ८७)।

उक्कारिया देखो उक्करिया ; (पण्ण ११ ; भास ७)।

उक्कालिय वि [उत्कालिक] वह शास्त्र, जिसका अमुक समय में ही पढ़ने का विधान न हो ; (ठा २,१)।

उक्कास देखो उक्कस्स=उत्कर्ष ; (भग १२, ५)।

उक्कास वि [दे] उत्कृष्ट ; ज्यादः से ज्यादः ; (षड्)।

उक्कासिअ वि [दे] उत्थित, उठा हुआ ; (दे १, ११४)।

उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] १ उत्कृष्ट, उत्तम ; (हे १, १२८; दे २६)। २ फल का शस्त्र-द्वारा किया हुआ टुकड़ा ; (दस ५, १, ३४)।

उक्किट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] हर्ष-ध्वनि, आनन्द का आवाज ; (औप ; भग २, १)। देखो उक्कट्ठि।

उक्किणण वि [**उत्कीर्ण**] १ खोदित, खोदा हुआ ; (अभि १८२)। २ नष्ट ; (आचू २)।
उक्कित्त वि [**उत्कृत्त**] कटा हुआ ; (से ५, ५१)।
उक्कित्तण न [**उत्कीर्त्तन**] १ कथन ; (पउम ११८, ३)। २ प्रशंसा, श्लाघा ; (चउ १)।
उक्कित्तिय वि [**उत्कीर्त्तित**] कथित, कहा हुआ ; (चंद २)।
उक्किर सक [**उत्+कॄ**] खोदना, पत्थर आदि पर अक्षर वगैरः का शस्त्र से लिखना। उक्किरइ ; (पि ४७७)।
उक्किरिय देखो **उक्करिअ**=उत्कीर्ण ; (श्रा १४ ; सुपा ५१८)।
उक्कीर देखो **उक्किर**। उक्कीरसि ; (अणु)। वकृ—**उक्कीरमाण** ; (अणु)।
उक्कीरिअ देखो **उक्करिअ**=उत्कीर्ण ; (उप पृ ३१५)।
उक्कीलिय न [**उत्क्रीडित**] उत्तम क्रीड़ा ; (पउम ११५, ६)।
उक्कीलिय वि [**उत्कीलित**] कीलक से नियन्त्रित ; " उक्कीलिउव्व परिथंभिउव्व सुन्नुव्व मुक्कजीउव्व " (सुपा ४७५)।
उक्कुंड वि [**दे**] मत्त, उन्मत्त ; (दे १, ६१)।
उक्कुक्कुर अक [**उत्+स्था**] उठना, खड़ा होना। उक्कुक्कुरइ ; (हे ४, १७ ; षड्)।
उक्कुज्ज अक [**उत्+कुब्ज्**] ऊँचा होकर नीचा होना। संकृ—**उक्कुज्जिय** ; (आचा)।
उक्कुज्जिय न [**उत्कूजित**] अव्यक्त शब्द ; (निचू)।
उक्कुट्ट न [**उत्कुष्ट**] वनस्पति का कूटा हुआ चूर्ण ; (आचा ; निचू १ ; ४)।
उक्कुट्ठ न [**उत्क्रुष्ट**] ऊँचे स्वर से रोदन ; (दे १, ४७)।
उक्कुडुग } वि [**उत्कुटुक**] आसन-विशेष, निषद्या-विशेष ;
उक्कुडुय } (भग ७, ६ ; ओव १५६ भा ; णाया १, १)। स्त्री—उक्कुडुई ; (ठा ५, १)। °**ासणिय** वि [°**ासनिक**] उत्कुटुक-आसन से स्थित ; (ठा ५, १)।
उक्कुद्द अक [**उत् + कूर्द्**] कूदना, उछलना। उक्कुद्दइ ; (उत्त २७, ५)।
उक्कुरुड पुं [**दे**] राशि, ढग ; (दे १, ११०)।
उक्कुरुडिगा } स्त्री [**दे**] घूरा, कूडा डालने की जगह ;
उक्कुरुडिया } (उप ५६३ टी ; विपा १, १, णाया १, २;
उक्कुरुडी } दे १, ११०)।

उक्कुस सक [**गम्**] जाना, गमन करना। उक्कुसइ ; (हे ४, १६२)।
उक्कुस वि [**उत्कृष्ट**] उत्तम, श्रेष्ठ ; (कुमा)।
उक्कूइय वि [**उत्कूजित**] अव्यक्त महा-ध्वनि ; (पराह १, १)।
उक्कूल वि [**उत्कूल**] १ सन्मार्ग से भ्रष्ट करने वाला ; २ किनारे से बाहर का ; ३ चोरी ; (पराह १, ३)।
उक्कूव अक [**उत्+कूज्**] अव्यक्त आवाज करना, चिल्लाना। वकृ—**उक्कूवमाण** ; (विपा १, ८ ; निर ३, १)।
उक्केर पुं [**उत्कर**] १ समूह, राशि ; ढग ; (कुमा ; महा)। २ करण-विशेष, कर्मों की स्थित्यादि को बढ़ाना ; (विसे २५१४)। ३ भिन्न, एरण्ड के बीज की तरह जो अलग किया गया हो वह ; (राज)।
उक्केर पुं [**दे**] उपहार, भेंट ; (दे १, ६६)।
उक्केल्लाविय वि [**दे**] उकेलाया हुआ, खुलवाया हुआ ; " राइणा उक्केलियाइं चोल्लयाइं, निरुवियाइं समन्तओ, जाव दिट्ठं कत्थइ सुवराणं, कत्थइ रुप्पयं, कत्थइ मणिमोत्तियपवालाइं " (महा)।
उक्कोट्टिय वि [**दे**] अवरोध-रहित किया हुआ, घेरा ऊठाया हुआ ; (स ६३६)।
उक्कोड न [**दे**] राज-कुल में दातव्य द्रव्य, राजा आदि को दिया जाता उपहार ; (वव १, १)।
उक्कोडा स्त्री [**दे**] घूस, रिशवत ; (दे १, ६२ ; पराह १, ३ ; विपा १, १)।
उक्कोडिय वि [**दे**] घूस लेकर कार्य करने वाला, घुसखोर ; (णाया १, १ ; औप)।
उक्कोडी स्त्री [**दे**] प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि ; (दे १, ६४)।
उक्कोय वि [**उत्कोप**] प्रखर, उत्कट ; (सण)।
उक्कोयण देखो **उक्कोवण** ; (भवि)।
उक्कोया स्त्री [**उत्कोचा**] १ घूस, रिशवत ; २ मूर्ख को ठगने में प्रवृत्त धूर्त पुरुष का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से, थोड़ी देर के लिए अपने कार्य को स्थगित करना ; (राज)।
उक्कोल पुं [**दे**] घाम, धूप, गरमी ; (दे १, ८७)।
उक्कोवण न [**उत्कोपन**] उद्दीपन, उत्तेजन ; " मयणुक्कोवण " (भवि)।

उक्कोविअ वि [**उत्कोपित**] अत्यंत क्रुद्ध किया हुआ; (उप पृ ७८)।

उक्कोस सक [**उत्+क्रुश्**] १ रोना, चिल्लाना। २ तिरस्कार करना। वकृ—**उक्कोसंत** ; (राज)।

उक्कोस पुं [**उत्कर्ष**] १ प्रकर्ष, अतिशय ; "उक्कोस-जहन्नेणं अंतमुहुत्तं चिय जियंति" (जी ३८ ; औप)। २ गर्व, अभिमान ; (सूअ १, २, २, २६ ; सम ७१ ; ठा ४, ४—पत्र २७४)।

उक्कोस वि [**उत्कृष्ट**] उत्कृष्ट, अधिक से अधिक ; "सुरनेरइयाण ठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीसं" (जी ३६); कोसतिगं च मणुस्सा उक्कोससरीरमाणेणं" (जी ३२); तओ वियडदत्तीओ पडिगाहित्तए, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा" (ठा ३ ; उव)।

उक्कोस पुं [**उत्क्रोश**] १ कुरर, पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)। २ जोर से चिल्लाने वाला ; (राज)।

उक्कोसण न [**उत्क्रोशन**] १ क्रन्दन। २ निर्भर्त्सन, तिरस्कार ;

"उक्कोसणतज्जणताडणाओ अवमाणहीलणाओ य।
मुणिणो मुणियपरभवा दढप्पहारिव्व विसहंति" (उव)।

उक्कोसिअ वि [**उत्क्रोशित**] भर्त्सित, तिरस्कृत, धूतकारा हुआ ; (उप पृ ७८)।

उक्कोसिअ देखो **उक्कोस**=उत्कृष्ट ; (कप्प ; भत्त ३७)।

उक्कोसिअ पुं [**उत्कौशिक**] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक एक ऋषि ; २ न. गोत्र-विशेष ; "थेरस्स णं अज्जवइरसेणस्स उक्कोसियगोत्तस्स" (कप्प)।

उक्कोसिअ वि [**दे**] पुरस्कृत, आगे किया हुआ ; (षड्)।

उक्कोसिया स्त्री [**उत्कृष्टि**] उत्कर्ष, आधिक्य ; (भग)।

उक्कोस्स देखो **उक्कोस**=उत्कृष्ट ; (विसे ५८७)।

उक्ख सक [**उक्ष्**] सिंचना ; (सूअ २, २, ५५)।

उक्ख पुं [**उक्ष**] १ संबन्ध ; (राज)। २ जैन साध्वीओं के पहनने के वस्त्र-विशेष का एक अंश ; (बृह १)।

उक्ख देखो **उच्छ**=उक्षन् ; (पाअ)।

उक्खइअ वि [**उत्खचित**] व्याप्त, भरा हुआ ; (से १, ३३)।

उक्खंड सक [**उत्+खण्डय्**] तोड़ना, टुकड़ा करना। वकृ—**उक्खंडंत** ; (नाट)।

उक्खंड पुं [**दे**] १ संघात, समूह ; २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश ; (दे १, १२६)।

उक्खंडण न [**उत्खण्डन**] उत्कर्तन, विच्छेदन ; (विक्र २८)।

उक्खंडिअ वि [**उत्खण्डित**] खण्डित, छिन्न ; (से ५, ४३)।

उक्खंडिअ वि [**दे**] आक्रान्त, दबाया हुआ ; (दे १, ११२)।

उक्खंद पुं [**अवस्कन्द**] १ घेरा डालना ; २ छल से शत्रु-सैन्य को मारना ; (पण्ह १, २)।

उक्खंभ पुं [**उत्तम्भ**] अवलम्ब, सहारा ; (संथा)।

उक्खंभिय देखो **उत्थंभिय** ; (भवि)।

उक्खंभिय न [**औत्तम्भिक**] अवलम्ब, सहारा ; (राज)।

उक्खडमड्डु अ [**दे**] पुनः पुनः, वारंवार ; "उक्खडमड्डु-ति वा भुज्जो भुज्जोत्ति वा पुणो पुणोत्ति वा एगट्ठा" (वव २, १)।

उक्खण सक [**उत्+खन्**] उखेडना, उच्छेदन करना, काटना। **उक्खणाहि** ; (पण्ह १, १)। संकृ—**उक्खणिऊण** ; (निचू १)। कर्म—**उक्खम्मंति** ; (पि ५४०)। कवकृ—**उक्खम्मंत** ; (से ७, २८)। कृ—**उक्खम्मिअव्व** ; (से १०, २६)।

उक्खण सक [**दे**] खांडना, कूटना, मुशल वगैरः से व्रीहि आदि का छिलका दूर करना ; (दे १,११५)।

उक्खण वि [**दे**] अवकीर्ण, चूर्णित ; (षड्)।

उक्खणण न [**उत्खनन**] उन्मूलन, उत्पाटन ; (पण्ह १, १)।

उक्खणण न [**दे**] खांडना, निस्तुषीकरण ; (दे १, ११५ टी)।

उक्खणिअ न [**दे**] खण्डित, निस्तुषीकृत ; (दे १, ११५)।

उक्खत्त देखो **उक्खय** ; (पि ९० ; १६३ ; ५६६)।

उक्खम्म° देखो **उक्खण**= उत्+खन्।

उक्खय वि [**उत्खात**] १ उखाडा हुआ, उन्मूलित ; (णाया १, ७ ; हे १, ६७ ; षड् ; महा)। २ खुला हुआ, उद्घाटित ;

"एत्थन्तरम्मि पत्तो, सुदाढविज्जाहरो तहिं भवणे।
उक्खयखग्गा दिट्ठा, जूयारा तेणवि दुवारे"
(सुपा ४००)।

उक्खल } देखो **उऊखल** ; (हे २, ९० ; सूअ १, ४,
उक्खलग } २, १२)।

उक्खळिय वि [दे. उत्खण्डित] उन्मूलित, उत्पाटित ; (से ६, ३६) ।

उक्खलिया } स्त्री [दे] थाली, पात्र-विशेष ; (दे १, **उक्खली** } ८८) ; " उक्खलिया थाली जा साधुणिमित्तं सा आहाकम्मिया " (निचू १) ।

उक्खा स्त्री [ऊखा] स्थाली, भाजन-विशेष ; (आचा २, १, १) ।

उक्खाइद (शौ) वि [उत्खातित] उद्धृत ; (उत्तर ६७) ।

उक्खाय देखो **उक्खय** ; (हे १, ६७ ; गा २७३) ।

उक्खाल सक [उत्+खन्, खालय्] उखाड़ना, उन्मूलन करना । संकृ—**उक्खालइत्ता** ; (रंभा) ।

उक्खिण देखो **उक्खण**=उत्+खन् । उक्खिणमि ; (भवि) । संकृ—**उक्खिणिवि** (अप) ; (भवि) ।

उक्खिण्ण वि [दे] १ अवकीर्ण, ध्वस्त, चूर्णित ; २ छन्न, गुप्त ; ३ पार्श्व में शिथिल, एक तरफ से ढीला ; (दे १, १३०) ।

उक्खित्त } वि [उत्क्षिप्त] १ फेंका हुआ ; २ ऊँचा **उक्खित्तय** } उडाया हुआ ; (पाअ) । ३ ऊँचा किया हुआ ; (णाया १, १) । ४ उन्मूलित, उत्पाटित ; (राज) । ५ बाहर निकाला हुआ ; (पण्ह २, १) । ६ उत्थित ; (पिंग) । ७ न. गेय-विशेष ; (राय ; ठा ४, ४) । °**चरय** वि [°चरक] पाक-पात्र से बाहर निकाले हुए भोजन को ही ग्रहण करने का नियम वाला (साधु) ; (पण्ह २, १) ।

उक्खिप्प देखो **उक्खिव**=उत्+क्षिप् ।

उक्खिय वि [उक्षित] सिक्त, सिंचा हुआ ; "चंदणोक्खिय-गायसरीरे " (सूअ २, २, ५५ ; कप्पू) ।

उक्खिव सक [उप+क्षिप्] स्थापन करना ; " सुयस्स य भगवओ चेव नामं उक्खिविस्सामो " । (स १९२) ।

उक्खिव सक [उत्+क्षिप्] १ फेंकना । २ ऊँचा फेंकना । ३ उडाना । ४ बाहर करना । ५ काटना । ६ उठाना । उक्खिवेइ ; (सूक्त ५६) । वकृ—" पाएवि **उक्खिवंती** **न** लज्जति णट्टिया सुणेवत्था " (बृह ३) । संकृ—**उक्खिविउं** ; **उक्खिप्प** ; (पि ५७५ ; आचा २, २, ३) । कवकृ—**उक्खिप्पंत, उक्खिप्पमाण** ; (से ६, ३५ ; पण्ह १, ४) ; **उच्छिप्पंत** ; (से २, १३) ।

उक्खिवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना, दूर करना । २ वि. दूर करने वाला ; (कुमा) ।

उक्खिवणा स्त्री [उत्क्षेपणा] बाहर करना, दूर करना ; (बृह १) ।

उक्खिविय देखो **उक्खित्त** ; (सुर २, १८०) ।

उक्खुंड पुं [दे] १ उल्मुक, अलात, मसाल ; २ समूह ; ३ वस्त्र का एक अंश, अञ्चल ; (दे १, १२५) ।

उक्खुड सक [तुड्] तोड़ना, टुकडा करना । उक्खुडइ ; (हे ४, ११६) ।

उक्खुडिअ वि [तुडित] १ खण्डित, छिन्न, भिन्न ; (कुमा ; से ४, २१ ; सुपा २६२) । २ व्यय किया हुआ, खर्च किया हुआ,

" एत्तियकाला इण्हिं, उक्खुडियं सालिमाइयं नाउं ।
तुह जोग्गं तो सहसा, पुणो पुणो कुट्टियं हियं "
(सुपा १५) ।

उक्खुत्त वि [दे. उत्कृत्त] काटा हुआ ; " रणुंदुर-दंतुक्खुत्तविसंवलियं तिलच्छेत्तं " (गा ७६९) ।

उक्खुरुहुंचिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (दे १, ४) ।

उक्खुहिअ वि [उत्क्षुब्ध] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त ; (से ७, १६) ।

उक्खेव पुं [उत्क्षेप] १ उत्पाटन, उन्मूलन ; (औप) । २ ऊँचा करना ; (गउड) । ३ जो उठाया जाय वह ; "उक्खेवे निक्खेवे महल्लभाणम्मि " (पिंड ५७०) ।

उक्खेव पुं [उपक्षेप] उपोद्घात, भूमिका ; (उवा ; विपा १, २ ; ३ ; ४) ।

उक्खेवग वि [उत्क्षेपक] १ ऊँचा फेंकने वाला । २ पुं. एक जात का पंखा , व्यजन-विशेष ; (पण्ह २, ५) ।

उक्खेवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना ; (पउम ३७, ५०)। २ उन्मूलन, उत्पाटन ; (सूअ २, १) ।

उक्खेविअ वि [उत्क्षेपित] जलाया हुआ (धूप) ; (भवि) ।

उक्खोडिअ वि [उत्खोटित] १ उत्क्षिप्त, उडाया हुआ ; (पाअ) । २ छिन्न, उखाडा हुआ ; (दे १, १०५ ; १११) ।

उग अक [उत् + गम्] उदित होना । उगइ ; (नाट) ।

उग (अप) वि [उद्गत] उदित ; (पिंग) ।

उगाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (षड्) ।

उग्ग अक [**उद्+गम्**] उदित होना। उग्गे ; (पिंग)। वकृ—**उग्गंत** ; "देव ! पणयजणकल्लाणकंदुद्दविसट्टणुग्गंतमिह (? हि) राणुगारिणा" (धर्म ५)।

उग्ग सक [**उद्+घाटय्**] खोलना। उग्गइ ; (हे ४, ३३)।

उग्ग वि [**उग्र**] १ तेज, तीव्र, प्रबल ; (पउम ८३, ४)। २ क्षत्रिय की एक जाति, जिसको भगवान् आदिदेव ने आरक्षक-पद पर नियुक्त की थी ; (ठा ३, १)। °**वई** स्त्री [°**वती**] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध नन्दा-तिथि की रात ; (जं ७)। °**सिरि** पुं [°**श्रीक**] राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लंकेश ; (पउम ५, २६४)। °**सेण** पुं [°**सेन**] मथुरा नगरी का एक यदुवंशीय राजा ; (णाया १, १६ ; अंत)।

उग्गंध वि [**उद्गन्ध**] अत्यन्त सुगन्धित ; (गउड)।

उग्गच्छ } अक [**उद्+गम्**] उदय-प्राप्त होना, उदित
उग्गम } होना। उग्गच्छदि (शौ) ; (नाट)। उग्गमइ ; (वज्जा १६)। उग्गमेज्ज ; (काल)। वकृ—**उग्गमंत, उग्गममाण** ; (सुपा ३८ ; पण्ण १)।

उग्गम पुं [**उद्गम**] १ उत्पत्ति, उद्भव ; "तत्थुग्गमो पसूई पभवो एमाई होंति एगट्ठा" (राज)। २ उदय, "सूरुग्गमो" (सुर ३, २५०)। ३ उत्पत्ति से संबन्ध रखने वाला एक भिक्षा-दोष ; (ओघ ६५ ; ५३० भा ; ठा १०)।

उग्गमिय वि [**उद्गमित**] उपार्जित ; (निचू २)।

उग्गय वि [**उद्गत**] उत्पन्न, जात ; (आव ३)। २ उदित, उदय-प्राप्त ; (सुर ३, २४७)। ३ व्यवस्थित ; (राज)।

उग्गह सक [**रचय्**] रचना, बनाना, निर्माण करना, करना। उग्गहइ ; (हे ४, ९४)।

उग्गह सक [**उद्+ग्रह**] ग्रहण करना। उग्गहेइ ; (भग)। संकृ—**उग्गहित्ता** ; (भग)।

उग्गह पुं [**अवग्रह**] इन्द्रिय-द्वारा होने वाला सामान्य ज्ञान-विशेष ; (विसे)। २ अवधारण, निश्चय ; (उत्त)। ३ प्राप्ति, लाभ ; (आचू)। ४ पात्र, भाजन ; (पंचा ३)। ५ साध्वीओं का एक उपकरण ; (ओघ ६६६ ; ६७६)। ६ योनि-द्वार ; (बृह ३)। ७ ग्रहण करने योग्य वस्तु ; (पण्ह १, ३)। ८ आश्रय, आवास-स्थान, वसति ; (आचा) ; "आहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता" (णाया १, १)। ९ वह वस्तु, जिस पर अपना प्रभुत्व हो, अधीन चीज ; (बृह ३)। १० देव या गुरु से जितनी दूरी पर रहने का शास्त्रीय विधान है उतनी जगह, मर्यादित भू-भाग, गुर्वादि की चारों तरफ की शरीर प्रमाण जमीन ; "अणुजाणह मे मिउग्गहं" (पडि)। °**णंत**, °**णंतग** न [°**नन्त**, °**क**] जैन साध्वीओं का एक गुह्याच्छादक वस्त्र ; जांघिया, लंगोट ; "छादंतोग्गहणंतं" (बृह ३)। °**पट्ट**, °**पट्टग** पुंन [°**पट्ट** °**क**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; "नो कप्पइ निग्गंथाणं उग्गहणंतगं वा उग्गहपट्टगं वा धारित्तए वा परिहरित्तए वा" (बृह ३)।

उग्गहण न [**अवग्रहण**] इन्द्रिय-द्वारा होने वाला सामान्य ज्ञान ; " अत्थाणं उग्गहणं अवग्गहं " (विसे १७९)।

उग्गहिअ वि [**रचित**] १ निर्मित, विहित ; (कुमा)।

उग्गहिअ वि [**अवगृहीत**] १ सामान्य रूप से ज्ञात ; २ परोसने के लिए उठाया हुआ ; (ठा १)। ३ गृहीत ; ४ आनीत ; ५ मुख में प्रक्षिप्त ; "तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते ;—जं च उग्गिण्हइ, जं च साहरइ, जं च आसगम्मि पक्खिवति" (वव. २, ८)।

उग्गहिअ वि [**दे**] निपुण-गृहीत, अच्छी तरह लिया हुआ ; (दे १, १०४)।

उग्गा सक [**उद्+गै**] १ ऊँचे स्वर से गाना, गान करना। २ वर्णन करना। ३ श्लाघा करना।

"उग्गाइ गाइ हसइ, असंवुडो सय करेइ कंदप्पं।
गिहिकज्जचिंतगो वि य, ओसन्ने देइ गेण्हइ वा" (उव)।

वकृ—**उग्गायंत** ; (सुर ८, १८९)। कवकृ—**उग्गीयमाण** ; (पउम २, ४१)।

उग्गाढ वि [**उद्गाढ**] १ अति-गाढ, प्रबल ; (उप ९८६ टी ; सुपा ९४)। २ स्वस्थ, तंदुरस्त ; (बृह १)।

उग्गायंत देखो **उग्गा**।

उग्गार } पुं [**उद्गार**] १ वचन, उक्ति ; "ते पिसुणा
उग्गाल } जे ण सहंति णिग्गुणा परगुणुग्गारे" (गउड)। २ शब्द, आवाज, ध्वनि ; "तियसरहपेल्लियघणो णहदुंदुहिबहलगज्जिउग्गारो", "अहिताडियकंसुग्गारझंझणापडिरवाहोओ" (गउड)। ३ डकार ; ४ वमन, ओकाई ; (नाट ; कस) "जिणझाणालणडज्झंतमयणधूमुग्गारेणं पिव .....केसकलावेणं" (स ३१३ ; निचू १०)। ५ जल का छोटा प्रवाह; "उग्गालो छिंछोली" (पाअ)। ६ रोमन्थ, पगुराना ; "रोमंथो उग्गालो" (पाअ)।

उग्गाह सक [**उद्+ग्रह्**] ग्रहण करना ; " भायणवत्थाइं पमज्जइ, पमज्जइत्ता भायणाइं **उग्गाहेइ** " (उवा)। संकृ—" **उग्गाहेत्ता** जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ " (उवा)।

उग्गाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहन करना। " उग्गाहेंति नाणाविहाओ चिगिच्छासंहियाओ " (स १७)।

उग्गाह पुं देखो **उग्गाहा** ; (पिंग)।

उग्गाहण न [**उद्ग्राहण**] तगादा, दी हुई चीज की माँग ; (सुपा ५७८)।

उग्गाहणिआ स्त्री [**उद्ग्राहणिका**] ऊपर देखो " उज्जाणपालयाणं पासम्मि गओ तया सोवि। उग्गाहणियाहेउं " (सुपा ६३२)।

उग्गाहणी स्त्री [**उद्ग्राहणी**] ऊपर देखो ; (द ६)।

उग्गाहा स्त्री [**उद्गाथा**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

उग्गाहिअ वि [**दे, उद्ग्राहित**] १ गृहीत, लिया हुआ ; २ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; ३ प्रवर्तित ; (दे १, १३७)। ४ उचालित, ऊँचे से चलाया हुआ ; (पाअ; स २१३)।

उग्गाहिम वि [**अवगाहिम**] तली हुई वस्तु ; (पण्ह २, ५)।

उग्गिण्ण } वि [**उद्गीर्ण**] १ उक्त, कथित ; (भवि)।
उग्गिन्न } २ वान्त, उद्गीर्ण ; (गाया १, १)। ३ उठाया हुआ, ऊपर किया हुआ ;

" उग्गिन्नखग्गमवलं, अवलोइय नरवईवि विम्हइओ।
चिंतेइ अहो धट्ठा, मज्झ वहट्ठा इह पविट्ठा" (सुर १६, १४७);
" निद्दय ! नियंबिणीवहकलंकमलिणोव्व रे तुमं जाओ।
उग्गिन्नखग्गपसरंतकंतिसामलियसव्वंगो " (सुपा ५३८)।

उग्गिर देखो **उग्गिल**। उग्गिरेइ ; (मुद्रा १२१)। वकृ—**उग्गिरंत** ; (काल)।

उग्गिरण न [**उद्गरण**] १ वान्ति, वमन ; २ उक्ति, कथन;

" मायासिरोवि अवमाणवंचणा ते परस्स न करेंति।
सुहदुक्खुग्गिरणत्थं, साहू उयहिव्व गंभीरा " (उव)।

उग्गिल सक [**उद्+गॄ**] १ कहना, बोलना। २ डकार करना। ३ उलटी करना, वमन करना। ४ उठाना। वकृ—" अग्गिजालु**ग्गिलंत**वयणं " (गाया १, ८)। संकृ—**उग्गिलित्ता** ; (कस), **उग्गिलेत्ता** ; (निचू १०)।

उग्गिलिअ देखो **उग्गिण्ण** ; (पाअ)।

उग्गीय वि [**उद्गीत**] १ उच्च स्वर से गाया हुआ ; (दे १, १६३)। २ न. संगीत; गीत, गान ; (से १, ६५)।

उग्गीयमाण देखो **उग्गा**।

उग्गीर देखो **उग्गिर**। वकृ—" खग्गं **उग्गीरंतो** इत्थिवहत्थं, हयासलोयाणं " (सुपा १५८)।

उग्गीरिअ देखो **उग्गिण्ण** ; " उग्गीरिओ ममोवरि, जमजीहादीहतरलकरवालो " (सुपा १५८)।

उग्गीव वि [**उद्ग्रीव**] उत्कण्ठित, उत्सुक ; (कुमा)। **°किय** वि [**°कृत**] उत्कण्ठित किया हुआ ; (उप १०३१ टी)।

उग्गुलुंछिआ स्त्री [**दे**] हृदय-रस का उछलना, भावोद्रेक ; (दे १, ११८)।

उग्गोव सक [**उद्+गोपय्**] १ खोजना। २ प्रकट करना। ३ विमुग्ध करना। वकृ—" इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं वा जाव सुक्किल्लसुत्तगं वा पासमाणे पासति, **उग्गोवेमाणे** उग्गोवेइ " (भग १६, ६)।

उग्गोवणा स्त्री [**उद्गोपना**] १ खोज, गवेषणा ;

" एसण गवेसणा मग्गणा य उग्गोवणा य बोद्धव्वा।
एए उ एसणाए नामा एगट्ठिया होंति " (पिंड ७३)।

२ देखो **उग्गम** ; " उग्गम उग्गोवण मग्गणा य एगट्ठियाणि एयाणि " (पिंड ८५)।

उग्गोविय वि [**उद्गोपित**] विमोहित, भ्रान्त ; " उग्गोवियमिति अप्पाणं मन्नति " (भग १६, ६)।

उग्घ देखो **उंघ**। उग्घइ ; (षड्)।

उग्घट्टि } स्त्री [**दे**] अवतंस, शिरो-भूषण ; (दे
उग्घट्टी } १, ६०)।

उग्घड सक [**उद्+घाटय्**] खोलना ; (प्रामा)।

उग्घडिअ वि [**उद्घाटित**] खुला हुआ। २ छिन्न, नष्ट किया हुआ ; (से ११, १३०)।

उग्घर वि [**उद्गृह**] गृह-त्यागी, जिसने घरबार छोड़ कर संन्यास लिया हो वह, साधु ;

" चंदोव्व कालपक्खे परिहाई पए पए पमायपरो।
तह उग्घरविग्घरनिरंगणो वि नय इच्छियं लहइ "
(गाया १, १० टी)।

उग्घव देखो **अग्घव**। उग्घवइ ; (हे ४, १६६ टि ; राज)।

उग्घाअ पुं [**दे**] १ समूह, संघात ; (दे १, १२६ ; स ७७; ४३६ ; गउड ; से ५, ३४) । २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश ; (दे १, १२६) ।

उग्घाअ पुं [**उद्घात**] १ आरम्भ, प्रारंभ ; " उग्घाओ आरंभो " (पाअ) । २ प्रतिघात; ठोकर लगना ; ३ लघूकरण, भाग-पात ; (ठा ३) । ४ उपोद्घात, भूमिका ; (विसे १३४८) । ५ ह्रास ; (ठा ५, २) । ६ न. प्रायश्चित्त-विशेष ; ७ निशीथ सूत्र का एक अंश, जिसमें उक्त प्रायश्चित्त का वर्णन है ; " उग्घायमणुग्घायं आरोवण तिविहमो निसीहं तु " (आव ३) ।

उग्घाइम वि [**उद्घातिम**] १ लघु, छोटा ; २ न. लघु प्रायश्चित ; (ठा ३) ।

उग्घाइय वि [**उद्घातित**] १ विनाशित ; (ठा १०) । २ न. लघु प्रायश्चित्त ; (ठा ५) ।

उग्घाइय न [**उद्घातिक**] लघु प्रायश्चित ; (कस) ।

उग्घाड सक [**उद्+घाटय्**] १ खोलना । २ प्रकट करना । ३ बाहर करना । उग्घाडइ ; (हे ४, ३३) । उग्घाडए ; (महा) । संकृ—**उग्घाडिऊण** ; (महा) । कृ—**उग्घाडिअव्व** ; (श्रा १६) । कवकृ— **उग्घाडिज्जंत** ; (से ५, १२) ।

उग्घाड वि [**उद्घाट**] १ खुला हुआ, अनाच्छादित ; (पउम ३६, १०७) । २ थोड़ा बन्द किया हुआ ; " उग्घाडकवाडउग्घाडणाए " (आव ४) । ३ व्यक्त, प्रकट ; ४ परिपूर्ण, अन्यून ; " एत्थंतरम्मि उग्घाडपोरिसीसूयगो वली पत्तो " (सुपा ६७) ।

उग्घाडण न [**उद्घाटन**] १ खोलना ; (आव ४) । २ बाहर करना, बाहर निकालना ; (उप पृ ३६७) ।

उग्घाडणा स्त्री [**उद्घाटना**] ऊपर देखो ; (आव ४) ।

उग्घाडिअ वि [**उद्घाटित**] १ खुला हुआ ; २ प्रकटित, प्रकाशित ; (से २, ३७) ।

उग्घायण न [**उद्घातन**] १ नाश, विनाश ; (आचा) । २ पूज्य स्थान, उत्तम जगह ; ३ सरोवर में जाने का मार्ग ; (आचा २, ३) ।

उग्घार पुं [**उद्घार**] सिञ्चन, छिटकाव ; " विणिंतरुहिरुग्घारं निवडिओ धरणिवट्टे " (स ५६८) ।

उग्घिट्ठ } वि [**उद्घृष्ट**] संघृष्ट " नमिरसुरकिरीडुग्घिट्ठ-
उग्घुट्ठ } पायारविंदे " (लहुअ ४ ; से ६, ८०) ।

उग्घुट्ठ [**उद्घुष्ट**] घोषित , उद्घोषित ; (सुर १०, १४ ; सण), " अमरवहुग्घुट्ठजयजयारवं " (महा) ।

उग्घुट्ठ वि [**दे**] उत्प्रोञ्छित, लुप्त, दूरीकृत, विनाशित ; (दे १, ६६ ;) उरवालिरवेणीमुहथणलग्गुग्घुट्ठमहिरआ ःजणअसुआ " (से ११, १०२) ।

उग्घुस सक [**मृज्**] साफ करना मार्जन करना । उग्घुसइ; (हे ४, १०५) ।

उग्घुस सक [**उद्+घुष्**] देखो **उग्घोस** । संकृ—**उग्घुसिअ** ; (नाट) ।

उग्घुसिअ वि [**मृष्ट**] मार्जित, साफ किया हुआ ; (कुमा) ।

उग्घोस सक [**उद्+घोषय्**] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना, जाहिर करना । उग्घोसेह ; (विपा १, १) । वकृ—**उग्घोसेमाण** ; (विपा १, १ ; णाया १, ५) । कवकृ—**उग्घोसिज्जमाण** ; (विपा १, २) ।

उग्घोस पुं [**उद्घोष**] नीचे देखो ; (स्वप्न २१) ।

उग्घोसणा स्त्री [**उद्घोषणा**] डोंडी पिटवाना, ढिंढोरा पिटवा कर जाहिर करना ; (विपा १, १) ।

उग्घोसिय वि [**मार्जित**] साफ किया हुआ " उग्घोसियसुनिम्मलं व आयंसमंडलतलं " (पण्ह २, ५) ।

उग्घोसिय वि [**उद्घोषित**] जाहिर किया हुआ, घोषित ; (भवि) ।

उघूण वि [**दे**] पूर्ण, भरपूर ; (षड्) ।

उचिय वि [**उचित**] योग्य, लायक, अनुरूप ; (कुमा ; महा) । °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] विवेकी ; (उप ७६८ टी) ।

उच्च न [**दे**] नाभि-तल ; (दे १, ८६) ।

उच्च } वि [**उच्च, °क, उच्चैस्**] १ ऊँचा ; (कुमा) । २ उत्तम, उत्कृष्ट ; (हे २,
उच्चअ } १५४ ; सुअ १, १०) । °**च्छंद** वि [°**च्छन्दस्**] स्वैर, स्वेच्छाचारी ; (पण्ह १, २) । °**णागरी** देखो °**नागरी** ; (कप्प) । °**त्त** न [**त्व**] १ ऊँचाई; (सम १२; जी २८) । २ उत्तमता ; (ठा ४, १) । °**त्तभयग, °त्तभयय** पुं [°**त्वभृतक**] जिससे समय और वेतन का इकरार कर यथा-समय नियत काम लिया जाय,वह नौकर ; (राज ; ठा ४, १) । °**त्तरिया** स्त्री [°**त्तरिका**] लिपि-विशेष ; (सम ३५) । °**त्थवणय** न [°**स्थापनक**] लम्बगोलाकार वस्तु-विशेष, " धरणस्स णं अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तवरूवलावन्ने होत्था, से जहानामए करगगीवा इवा कुंडियागीवा इवा उच्चत्थवणए इवा " (अनु) । °**वचिआ**

स्त्री [°ावचिका] ऊँचा-नीचा करना, जैसे तैसे रखना, "कह तंपि तुइ ण णाअं जह सा आसं दआस बहुआणं। काऊण उच्चवचिअं तुह दंसणलेहला पडिआ" (गा ६६७)। °वाय पुं [°वाद] प्रशंसा, श्लाघा ; (उप ७२८ टी)। देखो **उच्चा**।

उच्चइअ वि [**उच्चयित**] एकत्रीकृत, इकट्ठा किया हुआ ; (काल)।

उच्चंतय पुं [**उच्चन्तग**] दन्त-रोग, दान्त में होने वाला रोग-विशेष ; (राज)।

उच्चंपिअ वि [**दे**] दीर्घ, लम्बा, आयत ; (दे १, ११६)। २ आक्रान्त, दबाया हुआ, रोंदा हुआ ; "सीसं उच्चंपिअं" (तंदु)।

उच्चड्डिअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, ऊँचा फेंका हुआ ; (दे १, १०६)।

उच्चत्त वि [**उत्यक्त**] पतित, त्यक्त ; (पाअ)।

उच्चत्तवरत्त न [**दे**] १ दोनों तरफ का स्थूल भाग ; २ अनियमित भ्रमण, अव्यवस्थित विवर्तन ; (दे १, १३६); ३ दोनों तरफ से ऊँचा नीचा करना ; (पाअ)।

उच्चत्थ वि [**दे**] दृढ़, मजबूत ; (दे १, ६७)।

उच्चदिअ वि [**दे**] मुषित, चुराया हुआ ; (षड्)।

उच्चप्प वि [**दे**] आरूढ़, ऊपर बैठा हुआ ; (दे १, १००)।

उच्चय सक [**उत्+त्यज्**] त्याग देना, छोड़ देना। कृ—**उच्चयणिज्ज** ; (पउम ६६, २८)।

उच्चय पुं [**उच्चय**] १ समूह, राशि ; "रयणोच्चयं विसालं" (सुपा ३४ ; कप्प)। २ ऊँचा ढग करना ; (भग ८, ६)। ३ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाड़ी ; (पाअ)। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष, ऊपर ऊपर रख कर चीजों को बांधना ; (भग ८, ६)।

उच्चय पुं [**अवचय**] इकट्ठा करना, एकत्रीकरण ; (दे २,५६)।

उच्चर सक [**उत्+चर्**] १ पार जाना, उत्तीर्ण होना। २ कहना, बोलना। ३ अक. समर्थ होना, पहुँच सकना ; ४ बाहर निकलना। उच्चरए ; (सूक्त ४६)। "मूलदेवेण य निरूवियाइं पासाइं जाव दिट्ठं निसियासिहत्थेहिं वेढियमताणयं मणूसेहिं। चिंतियं च ; णाहमेएसिं उच्चरामि, कायव्वं च मए वइरनिज्जायणं ; निराउहो संपयं, ता न पोरिसस्सावसरोत्ति चिंतिय भणियं" (महा)। वकृ—"भरिउच्चरंतपसरिअपिअसंभरणपिसुणो वराईए। परिवाहो विअ दुक्खस्स वहइ णअणट्ठिओ वाहो" (गा ३७७)।

उच्चरण न [**उच्चरण**] कथन, उच्चारण ; "सिद्धसमक्खं सोहिं वय-उच्चरणाइ काऊण" (सुपा ३१७)।

उच्चरिय वि [**उच्चरित**] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त ; "तीए हत्थिसंभमुच्चरियाए उज्झिऊण भयं, जीवियदायगोत्ति मुणिऊण तुमं साहिलासं पलोइओ" (महा)। २ उच्चरित, कथित, उक्त ; (विसे १०८३)।

उच्चलण न [**उच्चलन**] उन्मर्दन, उत्पीडन ; (पाअ)।

उच्चलिय वि [**उच्चलित**] चलित, गत ; (भवि)।

उच्चल्ल वि [**दे**] १ अध्यासित, आरूढ ; २ विदारित, छिन्न ; (षड्)।

उच्चल्ल सक [**उत्+चल्**] १ चलना, जाना ; २ समीप में आना।

उच्चल्लिय वि [**उच्चलित**] १ गत, गया हुआ ; २ समीप में आया हुआ ; 'जिणभवणदुवारट्ठियउच्चल्लियफुल्लमालिओहस्स। पुप्फाइं गेण्हंतो, अंतो विहिणा पविट्ठो हं" (सुर ३, ७४)।

उच्चा अ [**उच्चैस्**] १ ऊँचा, "तो तेण दुट्ठहरिणा, उच्चा हरिऊण लोय-पच्चक्खं। उवणीओ सो रण्णे" (महा)। २ उत्तम, श्रेष्ठ ; (ठा २, १)। °गोत्त, °गोय न [°गोत्र] १ उत्तम गोत्र, श्रेष्ठ वंश ; २ कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव उत्तम माना जाता कुल में उत्पन्न होता है ; (ठा २, ४ ; आचा)। °वय न [°व्रत] १ महाव्रत ; (उत्त १)। २ वि. महाव्रतधारी ; (उत्त १५)।

उच्चाअ वि [**दे**] १ श्रान्त, थका हुआ ; (ओघ ५१८)। २ पुं. आलिंगन, परिरम्भ ; (सुपा ३३२)।

उच्चाइय वि [**दे. उत्याजित**] उत्थापित, उठाया हुआ ; "उच्चाइया नगरा" (स २०६)।

उच्चाग पुं [**उच्चाग**] हिमाचल पर्वत। °य वि [°ज] हिमाचल में उत्पन्न ; "उच्चागयठाणलट्ठसंठियं" (कप्प)।

उच्चाड वि [**दे**] विपुल, विशाल ; (दे १, ६७)।

उच्चाड सक [**दे**] १ रोकना, निवारना। २ अक. अफसोस करना, दिलगीर होना ; (हे २, १९३ टि)।

उच्चाडण न [**उच्चाटन**] १ एक स्थान से दूसरे स्थान में उठा ले आना, स्व-स्थान से भ्रष्ट करना। २ मन्त्र-विशेष, जिसके प्रभाव से वस्तु अपने स्थान से उड़ायी जा सकती है ; "उच्चाडणथंभणमोहणाइ सव्वंपि मह करगयं व" (सुपा ५६६)।

उच्चाडणी स्त्री [**उच्चाटनी**] विद्या-विशेष, जिसके द्वारा वस्तु अपने स्थान से उड़ायी जा सकती है ; (सुर १३, ८१)।

उच्चाडिर वि [**दे**] १ रोकने वाला, निवारण करने वाला ; २ अफसोस करने वाला, दिलगीर ;

"किं उल्लावेंतीए, उअ जूरंतीए किं नु भीआए।
उच्चाडिरीए वेव्वेत्ति, तीए भणिअं न विम्हरिमो"
(हे २, १९३)।

उच्चार सक [**उत्+चारय्**] १ बोलना, उच्चारण करना। २ मलोत्सर्ग करना, पाखाना जाना। उच्चारेइ; (उवा)। वकृ— **उच्चारयंत** ; (स १०७) ; **उच्चारेमाण** ; (कप्प ; णाया १, १)। कृ—**उच्चारेयव्व** ; (उवा)।

उच्चार पुं [**उच्चार**] १ उच्चारण। २ विष्ठा, मलोत्सर्ग ; (सम १०; उवा ; सुपा ६११)।

उच्चार वि [**दे**] विमल, स्वच्छ ; (दे १, ९७)।

उच्चारण न [**उच्चारण**] कथन, "इसिं हस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए" (औप)।

उच्चारिअ वि [**दे**] गृहीत, उपात्त ; (दे १, ११४)।

उच्चारिअ वि [**उच्चारित**] १ कथित, उक्त ; २ पाखाना गया हुआ ; (राज)।

उच्चाल सक [**उत्+चालय्**] १ ऊँचा फेंकना। २ दूर करना। संकृ—"**उच्चालइय** निहाणिंसु अदुवा आसणाओ खलइंसु" (आचा)।

उच्चालइय वि [**उच्चालयितृ**] दूर करने वाला, त्यागने वाला ; "जं जाणेज्जा उच्चालइयं तं जाणेज्जा दुरालइयं" (आचा)।

उच्चालिय वि [**उच्चालित**] उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उत्थापित; "उच्चालियम्मि पाए इरियासमियस्स संकमट्ठाए" (ओघ ७४८ ; दसनि ४५)।

उच्चाव सक [**उच्चय**] ऊँचा करना, उठाना। संकृ— **उच्चावइत्ता**। "दोवि पाए उच्चावइत्ता सव्वओ समंत सममिलोएज्ज" (पण्ण १७)।

उच्चावय वि [**उच्चावच**] १ ऊँचा और नीचा ; (णाया, १, १; पण्ण ३४)। २ उत्तम और अधम ; (भग १५)। ३ अनुकूल और प्रतिकूल ; (भग १, ९)। ४ असमञ्जस, अव्यवस्थित; (णाया १,१६)। ५ विविध, नानाविध "उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खू थामवं" (उत्त ८)। ६ उत्कृष्टतर, विशेष उत्तम "तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स" (उवा ; औप)।

उच्चिट्ठ अक [**उत्+स्था**] खडा होना। उच्चिट्ठइ; (काल)।

उच्चिडिम वि [**दे**] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज, "उच्चिडिमं मुक्कमज्जायं" (पाअ)।

उच्चिण सक [**उत्+चि**] फूल वगैरः को तोड़ कर एकत्रित करना, इकट्ठा करना। उच्चिणइ ; (हे ४, २४१)। वकृ— **उच्चिणंत** ; (भवि)।

उच्चिणण न [**उच्चयन**] अवचयन, एकत्रीकरण ; (सुपा ४९९)।

उच्चिणिय वि [**उच्चित**] इकट्ठा किया हुआ; अवचित ; (पाअ)।

उच्चिणिर वि [**उच्चेतृ**] फूल वगैरः को चुनने वाला ; (कुमा)।

उच्चिय देखो **उचिय** "तस्स सुओच्चियपन्नत्तणेण संतोसमणुपत्ता" (उप १६९टी)।

उच्चिवलय न [**दे**] कलुषित जल, मैला पानी ; (पाअ)।

उच्चुंच वि [**दे**] दृप्त, गर्विष्ठ, अभिमानी ; (दे १, ९९)।

उच्चुग वि [**दे**] अनवस्थित ; (षड्)।

उच्चुड अक [**उत्+चुड्**] अपसरण करना, हटना। वकृ—**उच्चुडंत** ; (गउड ७३३)।

उच्चुप्प सक [**चट्**] चढ़ना, आरूढ़ होना, ऊपर बैठना। उच्चुप्पइ ; (हे ४, २५९)।

उच्चुप्पिअ वि [**दे. चटित**] आरूढ, ऊपर चढा हुआ ; (दे १, १००)।

उच्चुरण [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा ; (षड्)।

उच्चुलउलिअ न [**दे**] कुतूहल से शीघ्र २ जाना ; (दे १, १२१)।

उच्चुल्ल वि [**दे**] १ उद्विग्न, खिन्न ; २ अधिरूढ, आरूढ; ३ भीत, डरा हुआ ; (दे १, १२७)।

उच्चूड पुं [**उच्चूड**] निशान का नीचे लटकता हुआ शृङ्गारित वस्त्रांश ; (उव ४४६)।

उच्चूर वि [**दे**] नानाविध, बहुविध ; (राज)।
उच्चूल पुं [**अवचूल**] १ निशान का नीचे लटकता हुआ शृङ्गारित वस्त्रांश ; (उप ४४६ टि)। २ ऊंधा-सिर—पैर ऊपर और सिर नीचे कर—खड़ा किया हुआ; (विपा १, ६)।
उच्चे देखो **उच्चिण**। उच्चेइ ; (हे ४, २४१)। हेकृ—**उच्चेउं** ; (गा १५६)।
उच्चेय वि [**उच्चेतस्**] चिन्तातुर मन वाला ; (पाअ)।
उच्चेल्लर न [**दे**] १ ऊषर भूमि ; २ जघन-स्थानीय केश ; (दे १, १३६)।
उच्चेव वि [**दे**] प्रकट, व्यक्त ; (दे १, ६७)।
उच्चोड पुं [**दे**] शोषण ; "चंदणुच्चोडकारी चंडो देहस्स दाहो" (कप्पू ; प्राप)।
उच्चोल पुं [**दे**] १ खेद, उद्वेग ; २ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाडी ; (दे १, १३१)।
उच्छ पुं [**उक्षन्**] बैल, वृषभ ; (हे २, १७)।
उच्छ पुं [**दे**] १ आँत का आवरण ; (दे १, ८५)। २ वि. न्यून, हीन, ; "उच्छतं वा न्यूनत्वम्" (पण्ह २, १)।
उच्छअ पुं [**उत्सव**] क्षण, उत्सव ; (हे २, २२)।
°**उच्छअ** वि [**प्रच्छक**] प्रश्न-कर्ता ; (गा ५०)।
उच्छइअ वि [**उच्छदित**] आच्छादित; "पालंबउच्छइय-वच्छयलो" (काल)।
उच्छंखल वि [**उच्छृङ्खल**] १ शृङ्खला-रहित, अवरोध-वर्जित, बन्धन-शून्य ; २ उद्धत, निरंकुश ; (गउड)।
उच्छंखलिय वि [**उच्छृङ्खलित**] अवरोध-रहित किया हुआ, खुला किया हुआ, "उच्छंखलियवणाणं सोहग्गं किंपि पवणाणं" (गउड)।
उच्छंग पुं [**उत्सङ्ग**] मध्य भाग ; "मउडुच्छंगपरिग्गहमि-यंकजोण्हावभासिणो पसुवइणो" (गउड ; से १०, २)। २ क्रोड, कोला ; (पाअ) ; "उच्छंगे णिविसेत्ता" (आवम)। ३ पृष्ठ देश ; (औप)।
उच्छंगिअ वि [**उत्सङ्गित**] कोले में लिया हुआ ; (उप ६४८टी)।
उच्छंगिअ वि [**दे**] आगे किया हुआ, आगे रखा हुआ ; (दे १, १०७)।
उच्छंघ देखो **उत्थंघ** ; (हे ४, ३६ टि)।
उच्छंट पुं [**दे**] झड़प से की हुई चोरी ; (दे १, १०१; पाअ)।

उच्छट्ट पुं [**दे**] चोर, डाकू ; (दे १, १०१)।
उच्छडिअ वि [**दे**] चुराई हुई चीज, चोरी का माल ; (दे १, ११२)।
°**उच्छण** न [**प्रच्छन**] प्रश्न, पूछना ; (गा ५००)।
उच्छण्ण देखो **उच्छन्न**; (हे १, ११४)।
उच्छत न [**अपच्छत्र**] १ अपने दोष को ढकने का व्यर्थ प्रयत्न, गुजराती में "ढांकपिछोडो ;" २ मृषावाद, झूठ वचन ; (पण्ह १, २)।
उच्छन्न वि [**उत्सन्न**] छिन्न, खण्डित, नष्ट ; (कुमा ; सुपा ३८४)।
उच्छप्प सक [**उत्+सर्पय्**] उन्नत करना, प्रभावित करना। उच्छप्पइ ; (सुपा ३५२)। वकृ—**उच्छप्पंत** ; (सुपा २६६)।
उच्छप्पण न [**उत्सर्पण**] उन्नति, अभ्युदय ; (सुपा २७१)।
उच्छप्पणा स्त्री [**उत्सर्पणा**] ऊपर देखो ; "जिणपवयणम्मि उच्छप्पणाउ कारेइ विविहाओ" (सुपा २०६ ; ६४६)।
उच्छल अक [**उत्+शल्**] १ उछलना, ऊँचा जाना। २ कूदना। ३ पसरना, फैलना। वकृ—**उच्छलंत** ; (कप्प; गउड)।
उच्छलण न [**उच्छलन**] उछलना ; (दे १, ११८ ; ६, ११५)।
उच्छलिअ वि [**उच्छलित**] उछला हुआ, ऊँचा गया हुआ, (गा ११७ ; ६२४ ; गउड)। २ प्रसृत, फैला हुआ "ता ताण वरगंधो। उच्छलिओ छलिउं पिव गंधं गोसीसचंदणवणस्स" (सुपा ३८५)।
उच्छल्ल देखो **उच्छल**। उच्छल्लइ ; (पि ३२७)। "उच्छ-ल्लंति समुद्दा" (हे ४, ३२६)।
उच्छल्ल वि [**उच्छल**] ऊछलने वाला ; (भवि)।
उच्छल्लणा स्त्री [**दे**] अपवर्तना, अपप्रेरणा "कप्पडप्पहार-निद्दयआरक्खियखरफरुसवयणतज्जणगलच्छल्लुच्छल्लणाहिं विमणा चारगवसहिं पवेसिया" (पण्ह १, ३)।
उच्छल्लिअ देखो **उच्छलिअ** ; (भवि)।
उच्छल्लिअ वि [**दे**] जिसकी छाल काटी गई हो वह ; "तरुणो उच्छल्लिआ य दंतीहिं" (दे १, १११)।
उच्छव देखो **उच्छअ** ; (कुमा)। २ उत्सेक ; (भवि)।
उच्छविअ न [**दे**] शय्या, बिछौना ; (दे १, १०३)।

उच्छह अक [**उत्+सह्**] उत्साहित होना। वकृ—**उच्छहंत** : (भवि)।

उच्छहिय वि [**उत्सहित**] उत्साह-युक्त ; (सण)।

उच्छाइअ वि [**अवच्छादित**] आच्छादित, ढका हुआ ; (पउम ६१, ४२ ; सुर ३, ७१)।

उच्छाडिअ (अप) वि [**अवच्छादित**] ढका हुआ ; भवि)।

उच्छाण देखो **उच्छ**=उत्तन् ; (प्रामा)।

उच्छाय पुं [**उच्छ्राय**] उत्सेध, ऊँचाई ; (ठा ७)।

उच्छायण वि [**अवच्छादन**] आच्छादक, ढकने वाला ; (स ३२३)।

उच्छायण वि [**उच्छादन**] नाशक ; (स ३२३ ; ५६३)।

उच्छायणया, **उच्छायणा** } स्त्री [**उच्छादना**] १ उच्छेद, विनाश ; (भग १५)। २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति ; (राज)।

उच्छार देखो **उत्थार**=आ+क्रम् ; (हे ४, १६० टि)।

उच्छाल सक [**उत्+शालय्**] उछालना, ऊँचा फेंकना वकृ—**उच्छालिंत** ; (कुम्मा ४)।

उच्छालण न [**उच्छालन**] उछालना, उत्क्षेपण ; (कुम्मा ५)।

उच्छालिअ वि [**उच्छालित**] फेंका हुआ, उत्क्षिप्त ; (सुपा ६७)।

उच्छास देखो **ऊसास** ; (मै ६८)।

उच्छाह सक [**उत्+साहय्**] उत्साह दिलाना, उत्तेजित करना। उच्छाहइ ; (सुपा ३५२)।

उच्छाह पुं [**उत्साह**] १ उत्साह ; (ठा २, १)। २ दृढ़ उद्यम, स्थिर प्रयत्न ; (सुज्ज २०)। ३ उत्कंठा, उत्सुकता ; (चंद २०)। ४ पराक्रम, बल ; ५ सामर्थ्य, शक्ति ; (आचू १ ; हे १, ११४ ; २, ४८ ; पउम २०, ११८)।

उच्छाह पुं [**दे**] सूत का डोरा ; (दे १, ६२)।

उच्छाहण न [**उत्साहन**] उत्तेजन, प्रोत्साहन ; (उप ५६७ टी)।

उच्छाहिय वि [**उत्साहित**] प्रोत्साहित, उत्तेजित ; (पिंड)।

उच्छिंद सक [**उत्+छिद्**] उन्मूलन करना, ऊखेडना। संकृ—**उच्छिंदिअ** ; (सूक्त ४४)।

उच्छिंपग वि [**अवच्छिम्पक**] चोरों को खान-पान वगैरः की सहायता देने वाला ; (पण्ह १, ३)।

उच्छिंपण न [**उत्क्षेपण**] १ ऊपर फेंकना ; २ बाहर निकालना ; (पण्ह १, १)।

उच्छिट्ठ वि [**उच्छिष्ट**] जूठा, उच्छिष्ट ; (सुपा ११७ ; ३७५ ; प्रासू १५८)।

उच्छिण्ण वि [**उच्छिन्न**] उच्छिन्न, उन्मूलित ; (ठा ५)।

उच्छित्त वि [**दे**] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; २ विक्षिप्त, पागल ; (दे १, १२४)।

उच्छित्त वि [**उत्क्षिप्त**] फेंका हुआ ; (से ५, ६१ ; पाअ)।

उच्छित्त देखो **उट्ठिय** ; (से २, १३ ; गउड)।

उच्छित्त वि [**उत्सिक्त**] सींचा हुआ, सिक्त ; (दे १, १२३)।

उच्छिन्न देखो **उच्छिण्ण** ; (कप्प)।

उच्छिप्पंत देखो **उक्खिव**।

उच्छिय वि [**उच्छ्रित**] उन्नत, ऊँचा ; (राज)।

उच्छिरण वि [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा ; (षड्)।

उच्छिल्ल न [**दे**] १ छिद्र, विवर ; (दे १, ६५)। २ वि. अवजीर्ण ; (षड्)।

उच्छु देखो **इक्खु** ; (पाअ ; गा ५४१ ; पि १७७ ; ओघ ७७१ ; दे १, ११७)। °**जंत** न [°**यन्त्र**] ईख पीलने का सांचा ; (दे ६, ५१)।

उच्छु पुं [**दे**] पवन, वायु ; (दे १, ८५)।

उच्छुअ वि [**उत्सुक**] उत्कण्ठित ; (हे २, २२)।

उच्छुअ न [**दे**] डरते २ की हुई चोरी ; (दे १, ६५)।

उच्छुअरण न [**दे**] ईख का खेत ; (दे १, ११७)।

उच्छुआर वि [**दे**] संछन्न, ढका हुआ ; (दे १, ११५)।

उच्छुंडिअ वि [**दे**] १ बाण वगैरः से आहत ; २ अपहृत, छीना हुआ ; (दे १, १३५)।

उच्छुग देखो **उच्छुअ** ; (सुर ८, ६१)। °**भूय** वि [°**भूत**] जो उत्कण्ठित हुआ हो ; (सुर २, २१४)।

उच्छुच्छु वि [**दे**] दृप्त, अभिमानी ; (दे १, ९९)।

उच्छुण्ण वि [**उत्क्षुण्ण**] १ खण्डित, तोड़ा हुआ "उच्छुण्णं मद्दिअं च निद्दलिअं" (पाअ)। २ आक्रान्त,

"रइणावि अणुच्छुण्णा, बीसत्थं मारुएण वि अणालिद्धा।
तिअसेहिंवि परिहरिआ, पवंगमेहिं मलिआ सुवेलुच्छंगा"
(से १०, २)।

उच्छुद्ध वि [दे] १ विक्षिप्त; २ पतित ; (ओघ २२० भा) ।
उच्छुभ सक [अप+क्षिप्] आक्रोश करना, गाली देना । उच्छुभह ; (भग १५) ।
उच्छुर वि [दे] अविनश्वर, स्थायी ; (दे १, ९०) ।
उच्छुरण न [दे] १ ईख का खेत ; २ ईख, ऊख ; (दे १, ११७) ।
उच्छुल्ल पुं [दे] १ अनुवाद ; २ खेद, उद्वेग ; (दे १, १३१) ।
उच्छूढ वि [दे] आरूढ़, ऊपर बैठा हुआ ; (षड्) ।
उच्छूढ वि [उत्क्षिप्त] १ त्यक्त, उज्झित ; (णाया १, १ ; उव) । २ मुषित, चुराया हुआ ; (राज) । ३ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ ; (औप) ।
उच्छूढ वि [उत्क्षुब्ध] ऊपर देखो "उच्छूढसरीरघरा अन्नो जीवो सरीरमन्नं ति" (उव ; पि ६६) ।
उच्छूर देखो **उल्लूर=तुड्** ; (हे ४, ११६ टि) ।
उच्छूल देखो **उच्चूल** ; (उव) ।
उच्छेअ पुं [उच्छेद] १ नाश, उन्मूलन ; " एगंतुच्छेअम्मिवि सुहदुक्खविअप्पणमजुत्तं " (सम्म १८) । २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति ; " उच्छेओ सुत्तत्थाणं ववच्छेदत्ति वुत्तं भवति " (निचू १) ।
उच्छेयण न [उच्छेदन] विनाश, उन्मूलन ; " चिंतेइ एस समओ एयस्सुच्छेयणे मज्झ " (सुपा ३३५) ।
उच्छेर अक [उत्+श्रि] १ ऊँचा होना ; उन्नत होना । २ अधिक होना, अतिरिक्त होना । वकृ—**उच्छेरंत** ; (काप्र १६४) ।
उच्छेव पुं [उत्क्षेप] १ ऊँचा करना, उठाना । २ फेंकना ; (वव २, ४) ।
उच्छेवण न [उत्क्षेपण] ऊपर देखो ; (से ६, २४) ।
उच्छेवण न [दे] घृत, घी ; (दे १, ११६) ।
उच्छेह पुं [उत्सेध] ऊँचाई, ; (दे १, १३०) ।
उच्छोडिय वि [उच्छोटित] छुडाया हुआ, मुक्त किया हुआ ; "उच्छोडिय-बंधो सो रन्ना भणिओ य भद्द ! उवविससु" (सुर १, १०५) ; " पासट्ठियपुरिसेहिं तक्खणमुच्छोडिया य से बंधा " (सुर २, ३६) ।
उच्छोभ वि [उच्छोभ] १ शोभा-रहित ; २ न. पिशुनता, चुगली ; (राज) ।
उच्छोल सक [उत्+मूलय्] उन्मूलन करना, उखेडना । वकृ—**उच्छोलंत** ; (राज) ।
उच्छोल सक [उत्+क्षालय्] प्रक्षालन करना, धोना । वकृ—**उच्छोलंत** ; (निचू १७) । प्रयो; वकृ—**उच्छोलावंत** ; (निचू १६) ।
उच्छोलण न [उत्क्षालन] प्रभूत जल से प्रक्षालन ; " उच्छोलणं च कक्कं च तं निज्जं परियाणिया " (सूअ १, ९ ; औप) ।
उच्छोलणा स्त्री [उत्क्षालना] प्रक्षालन ; (दस ४) ।
उच्छोला स्त्री [दे] प्रभूत जल " नहदंतकेसरोमे जमेइ उच्छोलधोयणो अजओ " (उव) ।
उज्जु देखो **उज्जु** ; (आचा ; कप्प) ।
उजुअ देखो **उज्जुअ** ; (नाट) ।
उज्ज देखो **ओय=ओजस्** ; (कप्प) ।
उज्ज न [ऊर्ज] १ तेज, प्रताप ; २ बल ; (कप्प) ।
उज्जअणी } स्त्री [उज्जयनी, °यिनी] नगरी-विशेष,
उज्जइणी } मालव देश की प्राचीन राजधानी, आजकल भी यह " उज्जैन " नाम से प्रसिद्ध है ; (चारु ३९ ; पि ३८६) ।
उज्जंगल न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती ; २ वि. दीर्घ, लम्बा; (दे १, १३५) ।
उज्जगरय पुं [उज्जागरक] १ जागरण, निद्रा का अभाव ;
" जत्थ न उज्जगरओ, जत्थ न ईसा विसूरणं माणं ।
सब्भावचाडुयं जत्थ, नत्थि नेहो तहिं नत्थि "
(वज्जा ९८) ।
उज्जगिर न [ ] जागरण, निद्रा का अभाव ; (दे १, ११७ ; वज्जा ७४) ।
उज्जगुज्ज वि [दे] स्वच्छ, निर्मल ; (दे १, ११३) ।
उज्जड वि [दे] ऊजाड, वसति-रहित ; (दे १, ९६) ;
उक्किरणरयभरोणयतलजज्जरभूविसट्ठबिलविसमा ।
थोउज्जडक्कविडवा इमाओ ता उन्दरथलीओ " (गउड) ।
उज्जणिअ वि [दे] वक्र, टेढ़ा ; (दे १, १११) ।
उज्जम अक [उद्+यम्] उद्यम करना, प्रयत्न करना । उज्जमइ ; (धम्म १४) । उज्जमह ; (उव) । वकृ—**उज्जमंत, उज्जममाण** ; (पण्ह १, ३) ; " ण करेइ दुक्खमोक्खं उज्जममाणावि संजमतवेसु " (सूअ १, १३) । कृ—**उज्जमिअव्व, उज्जमेयव्व** ; (सुर १४, ८३ ; सुपा २८७ ; २२४) । हेकृ—**उज्जमिउं** ; (उव) ।
उज्जम पुं [उद्यम] उद्योग, प्रयत्न ; (उव ; जी ५० ; प्रासू ११५) ।

उज्जमण (अप) न [**उद्यापन**] उद्यापन, व्रत-समाप्ति-कार्य ; (भवि)।

उज्जमिय (अप) वि [**उद्यापित**] समापित (व्रत) ; (भवि)।

उज्जय वि [**उद्यत**] उद्योगी, उद्युक्त, प्रयत्नशील ; (पाअ ; काप्र १६६ ; गा ४४८)। °**मरण** न [°**मरण**] मरण-विशेष ; (आचा)।

उज्जयंत पुं [**उज्जयन्त**] गिरनार पर्वत ; "इय उज्जयंतकप्पं, अविअप्पं जो करेइ जिणभत्तो" (ती ; विवे १८) ; "ता उज्जयंतसत्तुंजएसु तित्थेसु दोसुवि जिणिंदे" (मुणि १०९७५)।

उज्जल अक [**उद्+ज्वल्**] १ जलना। २ प्रकाशित होना, चमकना। उज्जलंति ; (विक ११४)। वकृ—**उज्जलंत** ; (णंदि)।

उज्जल वि [**उज्ज्वल**] १ निर्मल, स्वच्छ ; (भग ७, ८ ; कुमा)। २ दीप्त, चमकीला ; (कप्प ; कुमा)।

उज्जल [**दे**] देखो **उज्जल्ल** ; (हे २, १७४ टि)।

उज्जलण वि [**उज्ज्वलन**] चमकीला, देदीप्यमान, "जालुज्जलणगअंबरंव कत्थइ पयंतं अइवेगचंचलं सिहिं" (कप्प।

उज्जलिअ वि [**उज्ज्वलित**] १ उद्दीप्त, प्रकाशित ; (पउम ११८, ८८ ; औप)। २ ऊँची ज्वालाओं से युक्त ; (जीव ३)। ३ न. उद्दीपन ; (राज)।

उज्जल्ल वि [**दे**] स्वेद-सहित, पसीना वाला, मलिन ; "मुंडा कंडूविणट्ठंगा उज्जल्ला असमाहिया" (सूअ १, ३)। २ बलवान, बलिष्ठ ; (हे २, १७४)।

उज्जल्ल न [**औज्ज्वल्य**] उज्ज्वलता ; (गा ६२६)।

उज्जल्ला स्त्री [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे १, ९७)।

उज्जव अक [**उद्+यत्**] प्रयत्न करना। वकृ—"सट्ठुवि **उज्जवमाणं** पंचेव करंति रित्तयं समणं" (उव)।

उज्जवण देखो **उज्जावण** ; (भवि)।

उज्जाअर } पुं [**उज्जागर**] जागरण, निद्रा का अभाव ; **उज्जागर** } (गा ४८२ ; वज्जा ७६

उज्जाडिअ वि [**दे**] उजाड किया हुआ ; (भवि)।

उज्जाण न [**उद्यान**] उद्यान, बगीचा, उपवन ; (अणु ; कुमा)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] गोष्ठी, गोठ ; (णाया १, १)। °**पालअ**, °**वाल** वि [**पालक**, °**पाल**] बगीचा का रक्षक, माली ; (सुपा २०८; ३०५)।

उज्जाणिअ वि [**औद्यानिक**] उद्यान-संबन्धी, बगीचा का ; (भग १४, १)।

उज्जाणिअ वि [**दे**] निम्नीकृत, नीचा किया हुआ ; (दे १, ११३)।

उज्जाणिआ } स्त्री [**औद्यानिका**] गोष्ठी, गोठ ; "उज्जाणं **उज्जाणिगा** } जत्थ लोगो उज्जाणिआए वच्चइ" (निचू ८ ; स १५१)।

उज्जाणी स्त्री [**औद्यानी**] गोष्ठी, गोठ ; (सुपा ४८५)।

उज्जाल सक [**उद्+ज्वालय्**] १ ऊजाला करना २ जलाना। संकृ—**उज्जालिय, उज्जालित्ता** ; (दस ५ ; आचा)।

उज्जालण न [**उज्ज्वालन**] जलाना ; (दस ५)।

उज्जालिअ वि [**उज्ज्वालित**] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ ; (सुर ६, ११७)।

उज्जावण न [**उद्यापन**] व्रत का समाप्ति-कार्य ; (प्रारू)।

उज्जाविय वि [**दे**] विकासित ; (सण)।

उज्जिंत देखो **उज्जयंत** ; (णाया १, १६) ;
"उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि" (पडि)।

उज्जीरिअ वि [**दे**] निर्भर्त्सित, अपमानित, तिरस्कृत ; (दे १, ११२)।

उज्जीवण न [**उज्जीवन**] १ पुनर्जीवन, जिलाना ; "तस्स पभावो एसो कुमरस्सुज्जीवणे जाओ" (सुपा ५०४)। २ उद्दीपन ; (सण)।

उज्जीविय वि [**उज्जीवित**] पुनर्जीवित, जिलाया हुआ ; (सुपा २७०)।

उज्जु वि [**ऋजु**] सरल, निष्कपट, सीधा ; (औप; आचा)। °**कड** वि [°**कृत**] १ निष्कपट तपस्वी ; (आचा ; उत्त)। °**कड** वि [°**कृत्**] माया-रहित आचरण वाला ; (आचा)। °**जड**, °**जड्ड** वि [°**जड**] सरल किन्तु मूर्ख, तात्पर्य को नहीं समझने वाला ; (पंचा १९ ; उत्त २६)। °**मइ** स्त्री [°**मति**] १ मनःपर्यव ज्ञान का एक भेद, सामान्य मनोज्ञान ; सामान्य रीति से दूसरों के मनोभाव को जानना ; २ वि उक्त मनो-ज्ञान वाला ; (पण्ह २, १ ; औप)। °**वालिया** स्त्री [°**वालिका**] नदी-विशेष, जिसके किनारे भगवान् महावीर को केवल-ज्ञान उत्पन्न हुआ था ; (कप्प ; स ४३२)। °**सुत्त** पुं [°**सूत्र**] वर्त्तमान वस्तु को ही मानने वाला नय-विशेष ; (ठा ७)। °**सुय** पुं [°**श्रुत**] देखो पूर्वोक्त

अर्थ ; "पच्चुप्पन्नग्गाही उज्जुसुओ णयविही मुणेअव्वो" (अणु)। °हत्थ पुं [°हस्त] दाहिना हाथ ; (ओघ ५११)।

उज्जुअ वि [**ऋजुक**] ऊपर देखो ; (आचा ; कुमा ; गा १५६; ३५२)।

उज्जुआइअ वि [**ऋजुकायित**] सरल किया हुआ ; (से १३ ; २०)।

उज्जुग देखो **उज्जुअ** ; (पि ५७)।

उज्जुत्त वि [**उद्युक्त**] उद्यमी, प्रयत्न शील ; (सुर ४, १५ ; पाअ)।

उज्जुरिअ वि [**दे**] १ क्षीण, नष्ट ; २ शुष्क, सूखा ; (दे १, ११२)।

उज्जेणग पुं [**उज्जयनक**] श्रावक-विशेष, एक उपासक का नाम ; (आचू ४)।

उज्जेणी देखो **उज्जइणी** ; (महा ; काप्र ३३३)।

उज्जोअ सक [**उद्+द्योतय्**] प्रकाश करना, उद्द्योत करना। उज्जोएइ ; (महा)। वकृ—**उज्जोयंत, उज्जोइंत, उज्जोयमाण, उज्जोएमाण** ; (णाया १, १; सुपा ४७; सुर ८, ८७ ; सुपा २४२ ; जीव ३)।

उज्जोअ पुं [**उद्योग**] प्रयत्न, उद्यम ; (पउम ३, १२६ ; सुक्त ३६ ; पुप्फ २८ ; २६)।

उज्जोअ पुं [**उद्द्योत**] १ प्रकाश, उजैला। °गर वि [°**कर**] प्रकाशक ; "लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे" (पडि ; पाअ ; हे १, १७७)। २ उद्द्योत का कारण-भूत कर्म-विशेष ; (सम ६७ ; कम्म १)। °त्थ न [°**स्त्र**] शस्त्र-विशेष ; (पउम १२, १२८)।

उज्जोअग वि [**उद्द्योतक**] प्रकाशक "सव्वजगुज्जोयगस्स" (णंदि)।

उज्जोअण न [**उद्द्योतन**] १ प्रकाशन, अवभासन ; २ वि. प्रकाश करने वाला ; (उप ७२८ टी)। ३ पुं. सूर्य, रवि। ४ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (गु ७ ; सार्ध ६२)।

उज्जोअय वि [**उद्द्योतक**] १ प्रकाशक। २ प्रभावक, उन्नति करने वाला ; (उरु ८, १२)।

उज्जोइंत देखो **उज्जोअ**=उद्+द्योतय्।

उज्जोइय वि [**उद्द्योतित**] प्रकाशित ; (सम १५३ ; सुपा २०५)।

उज्जोएमाण देखो **उज्जोअ**=उद्+द्योतय्।

उज्जोमिआ स्त्री [**दे**] रश्मि, किरण ; (दे १, ११५)।

उज्जोव देखो **उज्जोअ**=उद्+द्योतय्। वकृ—**उज्जोवंत, उज्जोवयंत, उज्जोवेंत, उज्जोवेमाण** ; (पउम २१, १५ ; स २०७ ; ६३१, ; ठा ८)।

उज्जोवण न [**उद्द्योतन**] प्रकाशन ; (स ६३१)।

उज्जोविय देखो **उज्जोइय** ; (कप्प ; णाया १, १ ; पराह १, ४ ; पउम ८, २६० ; स ३६)।

उज्झ सक [**उज्झ्**] त्याग करना, छोड़ देना। उज्झइ ; (महा)। कवकृ—**उज्झिज्जमाण** ; (उप २११ टी)। संकृ—**उज्झिअ, उज्झिउं, उज्झिऊण** ; (अभि ६० ; पि ५७६ ; राज)। हेकृ—**उज्झित्तए** ; (णाया १, ८)। कृ—**उज्झियव्व** ; (उप ५६७ टी)।

उज्झ पुं [**उज्झ, उद्ध्य**] उपाध्याय, पाठक ; (विसे ३१६८)।

उज्झअ, उज्झग वि [**उज्झक**] त्याग करने वाला, छोड़ने वाला ; (सूअ १, ३ ; उप १७६ टी)।

उज्झण न [**उज्झन**] परित्याग ; (उप १७६; पृ ४०३ ; पउम १, ६० ; औप)।

उज्झणा स्त्री [**उज्झना**] परित्याग ; (उप ५६३ ; आव ४)।

उज्झणिअ वि [**दे**] १ विक्रीत, बेचा हुआ ; २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ ; (षड्)।

उज्झमण न [**दे**] पलायन, भागना ; (दे १, १०३)।

उज्झमाण वि [**दे**] पलायित, भागा हुआ ; (षड्)।

उज्झर पुं [**निर्झर**] पर्वत से गिरने वाला जल-प्रवाह, पहाड़ का झरना ; (णाया १, १ ; गउड ; गा ६३६)। °**वण्णी** स्त्री [°**पर्णी**] उदक-पात, जल-प्रपात ; (निचू ५)।

उज्झरिअ वि [**दे**] टेढ़ी नजर से देखा हुआ ; २ विक्षिप्त ; ३ क्षिप्त, फेंका हुआ ; ४ परित्यक्त, उज्झित ; (दे १, १३३)।

उज्झल वि [**दे**] प्रबल, बलिष्ठ ; (षड्)।

उज्झलिअ वि [**दे**] १ प्रक्षिप्त, फेंका हुआ ; २ विक्षिप्त ; (षड्)।

उज्झस पुं [**दे**] उद्यम, उद्योग, प्रयत्न ; (दे १, ६५)।

उज्झसिअ वि [**दे**] उत्कृष्ट, उत्तम ; (षड्)।

°**उज्झा** देखो **अउज्झा** ; (उप पृ ३७४)।

उज्झाय पुं [**उपाध्याय**] विद्या-दाता गुरु, शिक्षक, पाठक ; (महा ; सुर १, १८०)।

उब्भासि वि [उद्भासिन्] चमकने वाला, देदीप्यमान, "कंकणुब्भासिहत्था" (रंभा)।

उज्झिंखिअ न [दे] १ वचनीय, लोकापवाद ; २ वि. निन्दनीय ; ३ कथनीय ; (दे ३, ५५)।

उज्झिय वि [उज्झित] १ परित्यक्त, विमुक्त ; (कुमा)। २ भिन्न ; (आव ४)। ३ न. परित्याग ; (अणु)। °य पुं [°क] एक सार्थवाह का पुत्र ; (विपा १, २)।

उज्झिय वि [दे] १ शुष्क, सूखा हुआ ; २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ ; (पड्)।

उज्झिया स्त्री [उज्झिता] एक सार्थवाह-पत्नी ; (णाया १, ७)।

उट्ट पुंस्त्री [उष्ट्र] ऊँट, करभ ; (विपा १, ६ ; हे २, ३४ ; उवा)। स्त्री—**उट्टी** ; (राज)।

उट्टार पुं [अवतार] घाट, तीर्थ, जलाशय का तट ;
" अह ते तुरउट्टारे बहुभडमयरे सुसत्थकमलवणे।
लीलायंति जहिच्छं समरतलाए कुमारगया"
(पउम ६८, ३०)।

उट्टिय } वि [औष्ट्रिक] १ ऊँट संबन्धी ; २ ऊँट के
उट्टियय } रोमों का बना हुआ ; (ठा ५, ३ ; ओघ ७०९)। ३ भृत्य, नौकर ; (कुमा)। ४ बड़ा, घट ; (उवा)।

उट्टिया स्त्री [उष्ट्रिका] घड़ा, घट, कुम्भ ; (विपा १, ६ ; उवा)। °**समण** पुं [°श्रमण] आजीविक-मत का साधु जो बड़े घड़े में बैठ कर तपस्या करता है ; (औप)।

उट्ठ अक [उत्+स्था] उठना, खड़ा होना। उट्ठइ ; (हे ४, १७ ; महा)। उट्टेइ ; (पि ३०९)। वकृ—**उट्ठंत** ; (गा ३८२ ; सुपा २९९) ; **उट्ठिंत** ; (सुर ८, ४३ ; १३, ५३)। संकृ- **उट्ठाय**. **उट्ठित्तु**, **उट्ठित्ता**, **उट्ठेत्ता** ; (राज ; आचा ; पि ५८२) हेकृ—**उट्ठिउं** ; (उपपृ २५८)।

उट्ठ वि [उत्थ] उत्थित, उठा हुआ ; (ओघ ७० ; उवा)। °**वइस** अप [°पवेश] उठ-बैठ ; (हे ४, ४२३)।

उट्ठ पुं [ओष्ठ] होंठ, अधर ; (सम १२५ ; सुपा ५२३)।

उट्ठंभ सक [अव+स्तम्भ्] १ आलम्बन देना, सहारा देना। २ आक्रमण करना। कर्म—**उट्ठब्भइ** ; (हे ४, ३९५)। संकृ—"**उट्ठंभिया** एगया कायं" (आचा १, ९, ३, ११)।

उट्ठवण न [उत्थापन] उत्थापन, ऊँचा करना, उठाना ; (ओघ २१४ ; दे १, ८२)।

उट्ठविय वि [उत्थापित] उत्पाटित, उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ ; "सा सखियं उट्ठविया भणइ किमागमणकारणं सुणहे" (सुर ६, १६०)।

उट्ठा देखो **उट्ठ**=उत्+स्था ; (प्रामा)।

उट्ठा स्त्री [उत्था] उत्थान, उठान ; " उट्ठाए उट्ठेइ" (णाया १, १ ; औप)।

उट्ठाइ वि [उत्थायिन्] उठने वाला ; (आचा)।

उट्ठाइअ वि [उत्थित] १ जो तय्यार हुआ हो, प्रगुण ; (पउम १२, ९९)। २ उत्पन्न, उत्थित ; (स ३७९)।

उट्ठाइअ देखो **उट्ठाविअ** ; (उवा)।

उट्ठाण न [उत्थान] १ उठान, ऊँचा होना ; (उव) ; "मअसलिलेहिं घडासु अ वोच्छिज्जइ पसरिअं महिरउट्ठाणं" (से १३, ३७)। २ उद्भव, उत्पत्ति ; (णाया १, १४)। ३ आरम्भ, प्रारंभ ; (भग १५)। ४ उद्वसन, बाहर निकलना ; (णंदि)। °**सुय** न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष ; (णंदि)।

उट्ठाय देखो **उट्ठ**=उत्+स्था।

उट्ठाव सक [उत्+स्थापय्] उठाना। उट्ठावेइ ; (महा)।

उट्ठावण देखो **उट्ठवण** ; (कस)।

उट्ठावण देखो **उवट्ठावण** ; "पव्वावणाविहिमुट्ठावणं च अज्जाविहिं निरवसेसं" (उव)।

उट्ठावणा देखो **उवट्ठावणा** ; (भत्त २५)।

उट्ठाविअ वि [उत्थापित] १ उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ ; (नाट) ; २ उत्पादित ; " तुमए उट्ठाविओ कली एस " (उप ६४८ टी)।

उट्ठिउं }
उट्ठिंत } देखो **उट्ठ**=उत्+स्था।
उट्ठित्ता }
उट्ठित्तु }

उट्ठिय वि [उत्थित] उत्थित, खड़ा हुआ ; (सुर ३, ९९)। २ उत्पन्न, उद्भूत ; (पण्ह १, ३) ; " विहीसिया कावि उट्ठिया एसा " (सुपा ५४१)। ३ उदित, उदय-प्राप्त ; "उट्ठियम्मि सूरे " (अणु)। ४ उद्यत, उद्युक्त ; (आचा)। ५ उद्वसित, बाहर निकला हुआ ; (ओघ ६५ भा)।

उट्ठिर वि [उत्थातृ] उठने वाला ; (सण)।

उट्ठिसिय वि [उद्घुषित] पुलकित, रोमाञ्चित ; (ओघ ; कुमा)।

उट्ठीअ (अप) देखो **उट्ठिय** ; (पिंग)।

उट्ठुभ } अक [**अव+ष्ठीव्**] थूकना । उट्ठुभंति, उट्ठुभइ ;
उट्ठुह } (पि १२०) । उट्ठुहइ ; (भग १५) । संकृ—**उट्ठुहइत्ता** ; (भग १५) ।

उठिअ (अप) देखो **उट्ठिय**—; (पिंग—पत्र ५८१) ।

°**उड** पुंन [**कुट**] घट, कुम्भ;
" पडिवक्खमण्णुपुंजे लावण्णउडे अणंगगअकुंभे ।
पुरिससअहिअअधरिए कीस थणंती थणे वहसि"
(गा २६०) ।

°**उड** पुं [**कूट**] समूह, राशि ; " सप्पो जहा अंडउडं भत्तारं जो विहिंसइ " (सम ५१) ।

°**उड** देखो **पुड**; (उवा ; महा ; गउड ; गा ६६० ; सुर २,१३ ; प्रासू ३६) ।

उडंक पुं [**उटङ्क**] एक ऋषि, तापस-विशेष ; (निचू १२) ।

उडंब वि [**दे**] लिप्त, लिपा हुआ ; (षड्) ।

उडज } पुं [**उटज**] ऋषि-आश्रम, पर्ण-शाला, पत्तों से
उडय } बना हुआ घर ; (अभि १११ ; प्रति ८४ ; अभि
उडव } ३७ ; स १०) ; " उडवो तावसगेहं " (पाअ) ।
" जमहं दिया य राओ य, हुणामि महुसप्पिसं ।
तेण मे उडओ दड्ढो, जायं सरणओ भय " (निचू १) ।

उडाहिअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (षड्) ।

उडिअ वि [**दे**] अन्विष्ट, खोजा हुआ ; (षड्) ।

उडिद पुं [**दे**] उडिद, माष, धान्य विशेष ; (दे १, ६८) ।

उडु न [**उडु**] १ नक्षत्र ; (पाअ) । २ विमान-विशेष; (सम ६६) । °**प,** °**व** पुं [°**प**] १ चन्द्र, चन्द्रमा ; (औप ; सुर १६, २४६) । २ जहाज, नौका ; (दे १, १२२)। ३ एक की संख्या ; (सुर १६, २४६) । °**वइ** पुं [°**पति**] चन्द्र ; (सम ३० ; पण्ह १, ४) । °**वर** पुं [°**वर**] सूर्य ; (राज) ।

उडु देखो **उउ** ; (ठा २, ४ ; ओघ १२३ भा) ।

उडुंबरिज्जिया स्त्री [**उदुम्बरीया**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प) ।

उडुहिअ न [**दे**] १ विवाहित स्त्री का कोप ; २ वि. उच्छिष्ट, जूठा ; (दे १, १३७) ।

उड्डु पुं [**उड्र**] १ देश-विशेष, उत्कल, ओड़, ओड्र नामों से प्रसिद्ध देश, जिसको आजकल उड़ीसा कहते हैं; (स २८६) । २ इस देश का निवासी, उड़िया; " सग-जवण-बब्बर-गाय-मुरुंडोड्ड-भडग—" (पण्ह १, १) ।

उड्ड वि [**दे**] कुँआ आदि को खोदने वाला, खनक ; (दे १, ८५) ।

उड्डण पुं [**दे**] १ बैल, सांड ; २ वि. दीर्घ, लम्बा ; (दे १, १२३) ।

उड्डस पुं [**दे**] खटमल, खटकीरा, उड़िस ; (दे १, ६६) ।

उड्डहण पुं [**दे**] चोर, डाकू ; (दे १, ६१) ।

उड्डाअ पुं [**दे**] उद्गम, उदय, उद्भव ; (दे १, ६१) ।

उड्डाण न [**उड्डयन**] उड़ान, उड़ना ; " मोरोवि अहव खिप्पइ, हंत तइज्जम्मि उड्डाणे " (सुर ८, ५२) ।

उड्डाण पुं [**दे**] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि ; २ कुरर, पक्षि-विशेष ; ३ विष्ठा, पुरीष ; ४ मनोरथ, अभिलाष ; ५ वि. गर्विष्ठ, अभिमानी ; (दे १, १२८) ।

उड्डामर वि [**उड्डामर**] १ भय, भीति ; २ आडम्बर वाला, टाप-टीप वाला ; (पाअ) ।

उड्डामरिअ वि [**उड्डामरित**] भय-भीत किया हुआ; (कप्पू) ।

उड्डाव सक [**उद्+डायय्**] उड़ाना । उड्डावइ ; (भवि) । वकृ—**उड्डावंत** ; (हे ४, ३५२) ।

उड्डावण न [**उड्डायन**] १ उड़ाना ' मत्तजलवायसुड्डावणेण जलकलुसणं किमिमं " (कुमा) । २ आकर्षण ; "हिय-उड्डावणे " (णाया १, १४) ।

उड्डाविअ वि [**उड्डायित**] उड़ाया हुआ ; (गा ११० ; पिंग) ।

उड्डाविर वि [**उड्डायितृ**] उड़ाने वाला ; (वज्जा ६४) ।

उड्डास पुं [**दे**] संताप, परिताप ; (दे १, ६६) ।

उड्डाह पुं [**उद्दाह**] १ भयङ्कर दाह, जला देना ; (उप २०८) । २ मालिन्य, निन्दा, उपघात ; (ओघ २२१) ।

उड्डिअ वि [**औड्र**] उड़ीसा देश का निवासी ; (नाट) ।

उड्डिअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (षड्) ।

उड्डिअंत देखो **उड्डी**=उत्+डी ।

उड्डिआहरण न [**दे**] छुरी पर रक्खे हुए फूल को पाँव की दो उंगलीओं से लेते हुए चल जाना ; " छुरिअग्गमुक्कपुप्फं घेत्तुअ पायंगुलीहि उप्पयणं । तं उड्डिआहरणं "
" कुसुमं यत्रोड्डीय, चुरिकाग्राल्लाघवेन संगृह्य ।
पादाङ्गुलिभिर्गच्छति, तद्विज्ञातव्यमुड्डिआहरणं "
(दे १, १२१) ।

उड्डिहिअ वि [**दे**] ऊपर फेंका हुआ ; (पाअ) ।

उड्डी अक [**उद्+डी**] उड़ना। उड्डेइ; उड्डिंति; (पि ४७४)। वकृ—**उड्डिअंत, उड्डेंत**; (दे ६, ६४; उप १०३१ टी)। संकृ—**उड्डेऊण, उड्डेवि**; (पि ५८६; भवि)।

उड्डी स्त्री [**औड्री**] लिपि-विशेष, उत्कल देश की लिपि; (विसे ४६४ टी)।

उड्डीण वि [**उड्डीन**] उड़ा हुआ; (गाया १, १; पाअ; सुपा ४६४)।

उड्डुअ पुं [**दे**] डकार, उद्गार; "जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेण" (पडि)।

उड्डुवाडिय पुं [**उड्डुवाटिक**] भगवान् महावीर के एक गण का नाम; (कप्प)। देखो **उद्दवाइअ**।

उड्डुहिअ देखो **उडुहिअ**; (दे १, १३७)।

उड्डोय देखो **उड्डुअ**; (राज)।

उड्ढ न [**ऊर्ध्व**] १ ऊपर, ऊँचा; (अणु)। २ वमन, उलटी; "उड्ढणिरोहो कुट्ठं" (बृह ३)। ३ उत्तम, मुख्य; "अहत्ताए नो उड्ढत्ताए परिणमंति" (भग ६, ३; आचम)। ४ खड़ा, दण्डायमान; "खाणुव्व उड्ढदेहो काउस्सग्गं तु ठाइज्जा" (आव ६)। ५ ऊपर का, उपरितन; (उवा)। °**कंडूयग** पुं [°**कण्डूयक**] तापसों का एक सम्प्रदाय जो नाभि के ऊपर भाग में ही खुजाते हैं; (भग ११, ६)। °**काय** पुं [°**काय**] शरीर का उपरितन भाग; (राज)। °**काय** पुं [°**काक**] काक, वायस; "ते उड्ढकाएहिं पखज्जमाणा अवरेहिं खज्जंति सणप्फएहिं" (सूअ १, ५, २, ७)। °**गम** वि [°**गम**] ऊपर जाने वाला; (सुपा ४५६)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] ऊपर जाने वाला; (सम १५३)। °**चर** वि [°**चर**] ऊपर चलने वाला, आकाश में उड़ने वाला (गृध्रादि); (आचा)। °**दिसा,** स्त्री [°**दिक्**] ऊर्ध्व दिशा; (उवा; आव ६)। °**रेणु** पुं [°**रेणु**] परिमाण-विशेष, आठ श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका; (इक)। °**लोग,** °**लोय** पुं [°**लोक**] स्वर्ग, देवलोक; (ठा ५, ३; भग)। °**वाय** पुं [°**वात**] ऊँचा गया हुआ वायु, वायु-विशेष; (जीव १)।

उड्ढं ऊपर देखो; "उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए" (भग १, १; महा; श्रा ३३)।

उड्ढंक न [**दे**] मार्ग का उन्नत भू-भाग; (सूअ १, २)।

उड्डल } **उड्डल्ल** } पुं [**दे**] उल्लास, वकास; (दे १, ६१।

उड्ढा स्त्री [**ऊर्ध्वा**] ऊर्ध्व-दिशा; (ठा ६)।

उड्ढि देखो **वुड्ढि**; (षड्)।

उड्ढि देखो **बुद्धि**; (षड्)।

उड्ढिय देखो **उद्धरिअ**=उद्धृत; (रंभा)।

उड्ढिया स्त्री [**दे**] १ पात्र-विशेष; (स १७३)। २ कम्बल वगैरः ओढ़ने का वस्त्र; (स ५८६)।

उढि देखो **बुद्धि**; (षड्)।

उण न [**ऋण**] ऋण, करजा; (षड्)।

उण } **उणा** } **उणाइ** } देखो **पुण**; (प्रामा; प्रासू ६१; कुमा; हे १, ६५)।

उणाइ पुं [**उणादि**] व्याकरण का एक प्रकरण; (पण्ह २, २)।

उणो देखो **पुण**; (गउड; पि ३४२; हे १, ६५)।

उण्ण न [**ऊर्ण**] भेड़ या बकरी के रोम। देखो **उन्न**। °**कप्पास** पुं [°**कार्पास**] ऊन, भेड़ के रोम; (निचू १)। °**णाभ** पुं [°**नाभ**] मकरी, कोट-विशेष; (राज)।

°**उण्ण** देखो **पुण्ण**=पूर्ण; (से ८, ६१; ६५)।

उण्णइ स्त्री [**उन्नति**] उन्नति, अभ्युदय; (गा ४६७)।

उण्णइज्जमाण देखो **उण्णो**।

उण्णम अक [**उद्+नम्**] ऊँचा होना, उन्नत होना। वकृ—**उण्णमंत**; (पि १६६)। संकृ—**उण्णमिय**; (आचा २, १, ५)।

उण्णम वि [**दे**] समुन्नत; ऊँचा; (दे १, ८८)।

उण्णय वि [**उन्नत**] १ उन्नत, ऊँचा; (अभि २०६)। २ गुणवान्, गुणी; (णाया १, १)। ३ अभिमानी; (सूअ १, १६)। ४ अभिमान, गर्व; (भग १२, ५)।

उण्णय पुं [**उन्नय**] नीति का अभाव; (भग १२, ५)।

उण्णा स्त्री [**ऊर्णा**] ऊन, भेड के रोम; (आवम)। °**पिपीलिया** स्त्री [°**पिपीलिका**] जन्तु-विशेष; (दे ६, ४८)।

उण्णाअक वि [**उन्नायक**] १ उन्नति-कारक; २ छन्दःशास्त्र प्रसिद्ध मध्य-गुरु चतुष्कल की संज्ञा; (पिंग)।

उण्णाग पुं [**उन्नाक**] ग्राम-विशेष; (आवम)।

उण्णाम पुं [**उन्नाम**] १ उन्नति, ऊँचाई; (से ६, ५६)। २ गर्व, अभिमान; ३ गर्व का कारण-भूत कर्म; (भग १२, ५)।

उण्णाम सक [**उद्+नमय्**] ऊँचा करना; (से ४, ५६)।

उण्णामिय वि [**उन्नमित**] ऊँचा किया हुआ; (गा १६; २५६ ; से ६, ७१)।

उण्णालिय वि [**दे**] १ कृश, दुर्बल ; २ उन्नमित, ऊँचा किया हुआ ; (दे १, १३६)।

उण्णिअ वि [**उन्नीत**] वितर्कित; विचारित ; (से १३, ७७)।

उण्णिअ वि [**और्णिक**] ऊन का बना हुआ ; (ठा ६, ३ ; ओघ ७०६ ; ८६ भा)।

उण्णिद्द वि [**उन्निद्र**] १ विकसित, उल्लसित ; (गउड)। २ निद्रा-रहित ; (माल ८५)।

उण्णी सक [**उद्+नी**] १ ऊँचा ले जाना। २ कहना। भवि—उण्णेहं ; (विसे ३५८५)। कवकृ—**उण्णइज्जमाण** ; (राज)।

उण्णुइअ पुं [**दे**] १ हुँकार ; २ आकाश तरफ मुँह किए हुए कुत्ते की आवाज; (दे १, १३२)। ३ वि. गर्वित, "एवं भणिओ संतो उण्णुइओ सो कहेइ सव्वं तु " (वव २, १०)।

उण्ह पुं [**उष्ण**] १ आतप, गरमी ; (णाया १, १)। २ वि. गरम, तप्त ; (कुमा)।

उण्हिआ स्त्री [**दे**] कृसरा, खीचड़ी ; (दे १, ८८)।

उण्हीस पुंन [**उष्णीष**] पगडी, मुकुट ; (हे २, ७५)।

उण्होदयभंड पुं [**दे**] भ्रमर, भमरा ; (दे १, १२०)।

उण्होला स्त्री [**दे**] कीट-विशेष ; (आवम)।

उताहो अ [**उताहो**] अथवा, या ; (पि ८५)।

उत्त वि [**उक्त**] कथित, अभिहित ; (सुर १०, ७६ ; स ३७६)

उत्त वि [**उप्त**] १ बोया हुआ ; २ निष्पादित, उत्पादित, " देवउत्ते अए लोए बंभउत्तेति यावरे " (सूअ १, १, ३)।

उत्त पुं [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (राज)।

°**उत्त** देखो **पुत्त** ; (गा ८४ ; सुर ७, १५८)।

उत्तंघ देखो **उत्थंघ**=रुध्। उत्तंघइ ; (हे ४, १३३)।

उत्तंत देखो **वुत्तंत** ; (षड् ; विक्र ३६)।

उत्तंपिअ वि [**दे**] खिन्न, उद्विग्न ; (दे १, १०२)।

उत्तंभ सक [**उत्+स्तम्भ्**] १ रोकना। २ अवलम्बन देना, सहारा देना। कर्म—उत्तंभिज्जइ, उत्तंभिज्जेंति; (पि ३०८)।

उत्तंभण न [**उत्तम्भन**] १ अवरोध। २ अवलम्बन ; (उप पृ २२१)।

उत्तंभय वि [**उत्तम्भक**] १ रोकने वाला। २ अवलम्बन देने वाला, सहायक ; (उप पृ २२०)।

उत्तंस पुं [**अवतंस**] शिरो-भूषण, अवतंस ; (गउड ; दे २, ५७)।

उत्तंस पुं [**उत्तंस**] कर्णपूरक, कर्ण-भूषण ; (पाअ)।

उत्तण वि [**उत्तृण**] तृण वाली जमीन ; " खित्तखिलभूमि-वल्लराइं उत्तणघडसंकडाइं डज्झंतु " (पण्ह १, १)।

उत्तणुअ वि [**उत्तनुक**] अभिमानी, गर्विष्ठ ; (पाअ)।

उत्तत्त वि [**उत्तप्त**] अति-तप्त, बहुत गरम ; (सुपा ३७)।

उत्तत्त वि [**दे**] अध्यासित, आरूढ ; (षड्)।

उत्तत्थ वि [**उत्त्रस्त**] भय-भीत, त्रास-प्राप्त ; (पण्ह १,३; पाअ)।

उत्तद्ध देखो **उत्तरद्ध** ; (पिंग)।

उत्तप्प वि [**दे**] १ गर्वित, अभिमानी ; (दे १, १३१ ; पाअ)। २ अधिक गुण वाला ; (दे १, १३१)।

उत्तप्प वि [**उत्तप्त**] देदीप्यमान ; (राज)।

उत्तम वि [**उत्तम**] १ श्रेष्ठ, प्रशस्त, सुन्दर ; (कप्प ; प्रासू ६)। २ प्रधान, मुख्य ; (पंचा ४)। ३ परम, उत्कृष्ट " उत्तमकट्ठपत्ते " (भग ७, ६)। ४ अन्त्य, अन्तिम ; (राज)। ५ पुं. मेरु पर्वत ; (इक)। ६ संयम, त्याग ; (दसा ५)। ७ राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लंकेश, (पउम ५, २६४)। °**ट्ठ** पुं [°**ार्थ**] १ श्रेष्ठ वस्तु ; २ मोक्ष ; (उत्त २)। ३ मोक्ष-मार्ग " जीवा ठिया परमट्ठम्मि " (पउम २, ८१)। ४ अनशन, मरण; (ओघ ७)। °**ण्ण** वि [°**र्ण**] लेन-दार ; (नाट)।

उत्तम वि [**उत्तमस्**] अज्ञान-रहित ; " तिविहतमा उम्मुक्का, तम्हा ते उत्तमा हुंति " (आवनि ५५ ; कप्प)।

उत्तमंग न [**उत्तमाङ्ग**] मस्तक, सिर; (सम ५० ; कुमा)।

उत्तमा स्त्री [**उत्तमा**] १ 'णायाधम्मकहा' का एक अध्ययन ; (णाया २, १)। २ एक इन्द्राणी ; (णाया २, १ ; ठा ४, १)।

उत्तम्म अक [**उत्+तम्**] खिन्न होना, उद्विग्न होना। उत्तम्मइ ; (स २०३)। वकृ—**उत्तम्मंत** ; **उत्तम्ममाण** ; (नाट)। संकृ—**उत्तम्मिअ** ; (नाट)।

उत्तम्मिअ वि [**उत्तान्त**] खिन्न, दिलगीर; (दे १, १०२; पाअ)।

उत्तर अक [**उत्+तॄ**] १ बाहर निकलना। २ सक. पार करना। उत्तरिस्सामो ; (स १०१)। वकृ—**उत्तरंत**,

"पेच्छंति अणिमिसच्छा पहिआ हलिअस्स पिट्ठपंडुरिअं ।
धूअं दुद्धसमुद्दुत्तरंतलच्छिं विअ सअण्हा"
(गा ३८८) ।

"**उत्तरंताण** य मरु, खंधवारो तिसाए मरिउमारद्धो" (महा)। संकृ—**उत्तरित्तु** ; (पि ५७७) । हेकृ—**उत्तरित्तए** ; (पि ५७८) ।

उत्तर अक [**अव+तॄ**] उतरना, नीचे आना । वकृ—**उत्तरमाण**, " उत्तरमाणस्स तो विमाणाओ " (सुपा ३४०) ।

उत्तर वि [**उत्तर**] १ श्रेष्ठ, प्रशस्त; (पउम ११८, ३०) । २ प्रधान, मुख्य ; (सूअ १, ३) । ३ उत्तर-दिशा में रहा हुआ. (जं १) । ४ उपरि-वर्ती, उपरितन ; (उत्त २) । ५ अधिक अतिरिक्त ; "अट्ठुत्तर—" (औप ; सूअ १, २)। ६ अवान्तर, भेद, शाखा; " उत्तरपगइ " (कम्म १) । ७ ऊन का बना हुआ वस्त्र, कम्बल वगैरः ; (कप्प) । ८ न, जवाब, प्रत्युत्तर ; (वव १, १) । ९ वृद्धि ; (भग १३, ४) । १० पुं. ऐरवत क्षेत्र के बाईसवें भावि जिन-देव का नाम; (सम १५४) । ११ वर्षा-कल्प ; (कप्प) । १२ एक जैन मुनि, आर्य-महागिरि के प्रथम शिष्य ; (कप्प) । °**कंचुय** पुं [°**कञ्चुक**] बख्तर-विशेष ; (विपा १, २) । °**करण** न [°**करण**] उपस्कार, संस्कार, विशेष गुणाधान ;

" खंडियविराहियाणं, मूलगुणाणं सउत्तरगुणाणं ।
उत्तरकरणं कीरइ, जह सगड-रहंग-गेहाणं" (आव ५) ।

°**कुरा** स्त्री [°**कुरु**] स्वनाम-ख्यात क्षेत्र-विशेष ; "उत्तरकुराए णं भंते ! कुराए केरिसए आगारभावपाडोयारे पण्णत्ते " (जीव ३) । °**कुरु** पुं [°**कुरु**] १ वर्ष-विशेष; " उत्तरकुरुमाणुसच्छराओ " (पि ३२८ ; सम ७० ; पण्ह १, ४ ; पउम ३५, ५०) । २ देव-विशेष ; (जं २) । °**कुरुकूड** न [°**कुरुकूट**] १ माल्यवंत पर्वत का एक शिखर ; (ठा ६) । २ देव-विशेष ; (जं ४) । °**कोडि** स्त्री [°**कोटि**] संगीतशास्त्र-प्रसिद्ध गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) । °**गंधारा** स्त्री [°**गान्धारा**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ७) । °**गुण** पुं [°**गुण**] शाखा-गुण, अवान्तर गुण ; (भग ७, ३) । °**चावाला** स्त्री [°**चावाला**] नगरी-विशेष ; (आवम) । °**चूल** न [°**चूड**] गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन कर बडे आवाज से " मत्थएण वंदामि " कहना ; (धर्म २) । °**चूलिया** स्त्री [°**चूलिका**] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ ; (बृह ३ ; गुभा २५) । °**डूढ** न [°**ार्ध**] पिछला आधा भाग उत्तरार्ध ; (जं ४) । °**दिसा** स्त्री [°**दिश्**] उत्तर दिशा ; (सुर २, २२८) । °**द्ध** न [°**ार्ध**] पिछला आधा भाग ; (पिंग) । °**पगइ**, °**पयडि** स्त्री [°**प्रकृति**] कर्मों के अवान्तर भेद ; (उत्त ३३ ; सम ६६) । °**पच्चत्थिमिल्ल** पुं [°**पाश्चात्य**] वायव्य कोण ; (पि) । °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] बिछौना का ऊपर का वस्त्र ; (ओघ १५६ भा) । °**पारणग** न [°**पारणक**] उपवासादि व्रत की समाप्ति , पारण ; (काल) । °**पुरच्छिम**, °**पुरत्थिम** पुं [°**पौरस्त्य**] ईशान कोण, उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा ; (णाया १, १ ; भग ; पि ६०२) । °**पोट्ठवया** स्त्री [°**प्रोष्ठपदा**] उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र ; (सुज्ज ४) । °**फग्गुणी** स्त्री [°**फाल्गुनी**] उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र ; (कप्पू ; पि ६२) । °**बलिस्सह** पुं [°**बलिस्सह**] १ एक प्रसिद्ध जैन साधु ; (कप्प) । २ उत्तर बलिस्सह-नामक स्थविर से निकला हुआ एक गण, भगवान् महावीर का द्वितीय गण—साधु-संप्रदाय ; (कप्प ; ठा ९) । °**भद्दवया** स्त्री [°**भद्रपदा**] नक्षत्र-विशेष ; (ठा ६) । °**मंदा** स्त्री [°**मन्दा**] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) । °**महुरा** स्त्री [°**मथुरा**] नगरी-विशेष ; (दंस) । °**वाय** पुं [°**वाद**] उत्तरवाद ; (आचा) । °**विकिकय**, °**वेउव्विय** वि [°**वैक्रिय**] स्वाभाविक-भिन्न वैक्रिय, बनावटी वैक्रिय ; (कम्म १ ; कप्प) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] १ क्रीड़ा-गृह ; २ पीछे से बनाया हुआ घर ; ३ वाहन-गृह, हाथी-घोड़ा आदि बाँधने का स्थान, तवेला ; (निचू ८) । °**साहग**, °**साहय** वि [°**साधक**] विद्या, मन्त्र वगैरः का साधन करने वाले का सहायक ; (सुपा १५१ ; सं ३६६) । देखो **उत्तरा**° ।

उत्तरओ अ [**उत्तरतः**] उत्तर दिशा तरफ ; (ठा ८ ; भग) ।

उत्तरंग न [**उत्तरङ्ग**] १ दरवाजे का ऊपर का काष्ठ; (कुमा) । २ चपल, चंचल ; (मुद्रा २६८) ।

उत्तरण न [**उत्तरण**] १ उतरना, पार करना ; (ठा ५; स ३६२) । २ अवतरण, नीचे आना ; (ठा १०) ।

उत्तरणवरंडिया स्त्री [**दे**] उडुप, जहाज, डोंगी, (दे १, १२२) ।

उत्तरा स्त्री [**उत्तरा**] १ उत्तर दिशा ; (ठा १०) । २ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) । ३ एक दिशा-

कुमारी देवी ; (ठा ८) । ४ दिगम्बर-मत-प्रवर्तक आचार्य शिवभूति की स्वनाम-ख्यात भगिनी ; (विसे) । ५ अहिच्छत्रा नगरी की एक वापी का नाम ; (ती) । °णंदा स्त्री [°नन्दा] एक दिक्कुमारी देवी ; (राज) । °पह पुं [°पथ] उत्तरदिशा-स्थित देश; उत्तरीय देश ; (आचू २)। °फग्गुणी देखो **उत्तर-फग्गुणी** ; (सम ७ ; इक)। °भद्दवया देखो **उत्तर-भद्दवया** ; (सम ७ ; इक) । °यण न [°यण] उत्तरायण, सूर्य का उत्तर-दिशा में गमन, माघ से लेकर छः महीना ; (सम ५३) । °यया स्त्री [°यता] गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) । °वह देखो °पह ; (महा; उव १४२ टी) । °संग पुं [°संग] उत्तरीय वस्त्र का शरीर में न्यास-विशेष, उत्तरासण ; (कप्प ; भग ; औप) । °समा स्त्री [°समा] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) । °साढा स्त्री [°षाढा] नक्षत्र-विशेष ; (सम ६ ; कस) । °हुत्त न [°भिमुख] १ उत्तर की तरफ ; २ वि. उत्तर दिशा तरफ मुँह किया हुआ ; (ओघ ६५० ; आव ४) ।

उत्तरिज्ज } न [**उत्तरीय**] चद्दर, दुपट्टा ; (उवा ; प्राप्र ;
उत्तरिय } हे १, २४८), "जरजिन्नं उत्तरियं" (सुपा ५४६) ।

उत्तरिय वि [**उत्तीर्ण**] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ ; (सुर ६, १५६) । २ पार पहुँचा हुआ ; (महा) ।

उत्तरिय वि [**औत्तरिक, औत्तराह**] देखो **उत्तर** ; (ठा १० ; विसे १२४५) ।

उत्तरिल्ल वि [**औत्तराह**] उत्तर दिशा या काल में उत्पन्न या स्थित, उत्तर-संबन्धी, उत्तरीय ; "अह उत्तरिल्लरुयगे" (सुपा ४२ ; सम १०० ; भग) ।

उत्तरीअ देखो **उत्तरिय=उत्तरीय** ; (कुमा ; हे १, २४८ ; महा) ।

उत्तरीकरण न [**उत्तरीकरण**] उत्कृष्ट बनाना, विशेष शुद्ध करना "तस्स उत्तरीकरणेणं" (पडि) ।

उत्तरोट्ठ पुं [**उत्तरौष्ठ**] १ ऊपर का होठ ; (पि ३६७) । २ श्मश्रु, मूँछ ; (राज) ।

उत्तलहअ पुं [**दे**] विटप, अङ्कुर ; (दे १, ११६) ।

उत्तव वि [**उक्तवत्**] जिसने कहा हो वह ; (पि ५६६) ।

उत्तस अक [**उत्+त्रस्**] १ त्रास पाना, पीडित होना । २ डरना, भयभीत होना । वकृ—**उत्तसंत** ; (सुर १, २४६ ; १०, २२०) ।

उत्तसिय वि [**उत्त्रस्त**] १ भय-भीत ; २ पीडित ; (सुर १, २४६) ।

उत्ताड सक [**उत्+ताडय्**] १ ताडना, ताड़न करना ; २ वाद्य बजाना । कवकृ—"**उत्ताडिज्जंताणं** दद्दरियाणं कुडवाणं" (राय) ।

उत्ताडण न [**उत्ताडन**] १ ताडन करना ; (कुमा) । २ वाद्य बजाना ; (राज) ।

उत्ताण वि [**उत्तान**] १ उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख ; (पंचा १८) । २ चित ; (विपा १, ६ ; ठा ४, ४) । ३ विस्फारित, "उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा पासादीया दरिसणिज्जा" (औप) । ४ अनिपुण, अकुशल "उत्ताणमई न साहए धम्मं" (धम्म ८)। °साइय वि [°शायिन्] चित्त सोने वाला ; (कस) ।

उत्ताणअ } ऊपर देखो ; (भग; गा ११० ; कस) ।
उत्ताणग }

उत्ताणपत्तय वि [**दे**] एरण्ड-संबन्धी (पत्ती वगैर); (दे १, १२०) ।

उत्ताणिअ वि [**उत्तानित**] १ चित्त किया हुआ ; (से ६, ८६ ; गा ४६०) । २ चित्त सोने वाला ; (दस) ।

उत्तार सक [**अव+तारय्**] नीचे उतारना । वकृ—**उत्तारेमाण** ; (ठा ५) ।

उत्तार सक [**उत्+तारय्**] १ पार पहुँचाना । २ बाहर निकालना । ३ दूर करना । "देहो...नईए खित्तो, तओ एए जइ नो **उत्तारिंता** तो हं मरिऊण" (सुपा ३५७ ; काल) ।

उत्तार पुं [**उत्तार**] १ उतरना, पार करना ; "अणुसोओ संसारो पडिसोओ तस्स उत्तारो" (दस २) ; "णइउत्ताराइ" (उवर ३२) । २ परित्याग ; (विसे १०४२) । ३ उतारने वाला, पार करने वाला ;

"भवसयसहस्सदुलहे, जाइजरामरणसागरोत्तारे ।
जिणवयणम्मि गुणायर ! खणमवि मा काहिसि पमायं"
(प्रासू १३४) ।

उत्तारण न [**उत्तारण**] १ उतारना । २ दूर करना । ३ बाहर निकालना । ४ पार करना ।

"ता अज्जवि मोहमहाअहिविसवेगा फुरंति तुह बाढं ।
तागुत्तारणहेउं, तम्हा जत्तं कुणसु भद्द ! ॥"
(सुपा ५५७ ; विसे १०४०) ।

उत्तारय वि [**उत्तारक**] पार उतारने वाला ; (स ६४७) ।

उत्तारिअ वि [**उत्तारित**] १ पार पहुँचाया हुआ। २ दूर किया हुआ। ३ बाहर निकाला हुआ ; "तेणवि उत्तारिओ भूमिविवराओ" (महा)।

उत्ताल वि [**उत्ताल**] १ महान्, बड़ा "उत्तालतालयाणं वणिएहिं दिज्जमाणाणं" (सुपा ५०२)। २ उतावला, शीघ्रकारी, 'कहवि उत्तालो अप्पडिलेहियसेज्जं गिण्हंतो" (सुपा ६२०)। ३ उद्धत ; (दे १, १०१)। ४ बेताल, ताल-विरुद्ध, गान का एक दोष; "गायंतो मा पगाहि उत्तालं" (ठा ७) "भीयं दुयमुप्पिच्छत्थमुत्तालं च कमसो मुणेयव्व" (जीव ३)।

उत्ताल न [**दे**] लगातार रुदन, अन्तर-रहित क्रन्दन की आवाज ; (दे १, १०१)।

उत्तालण देखो **उत्ताडण**।

उत्तावल न [**दे**] उतावल, शीघ्रता ; २ वि. शीघ्रकारी, आकुल "हल्लुत्तावलिगिहदासिविहियतक्कालकरणिज्जे" (सुर १०, १)।

उत्तास सक [**उत्+त्रासय्**] १ भयभीत करना, डराना। २ पीड़ना, हैरान करना। उत्तासेदि (शौ) ; (नाट)। कृ— **उत्तासणिज्ज** ; (तंदु)।

उत्तास पुं [**उत्त्रास**] १ त्रास, भय ; २ हैरानी; (कप्पू)।

उत्तासइत्तु वि [**उत्त्रासयितृ**] १ भय-भीत करने वाला; २ हैरान करने वाला ; (आचा)।

उत्तासणअ } वि [**उत्त्रासनक**] १ भयंकर, उद्वेग-जनक;
उत्तासणग } २ हैरान करने वाला ; (पउम २२, ३५ ; णाया १, ८)।

उत्तासिय वि [**उत्त्रासित**] १ हैरान किया हुआ; २ भयभीत किया हुआ ; (सुर १, २४७ ; आव ४)।

उत्ताहिय वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (दे १, १०६)।

उत्ति स्त्री [**उक्ति**] वचन, वाणी ; (श्रा १४ ; सुपा २३ ; कप्पू)।

उत्तिंग पुं [**उत्तिङ्ग**] १ गर्दभाकार कीट-विशेष ; (धर्म २; निचू १३)। २ चींटीओं का बिल; "उत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे" (पडि)। ३ चींटीओं का संतान ; (दसा ३)। ४ तृण के अग्रभाग पर स्थित जल-बिन्दु ; (आचा)। ५ वनस्पति-विशेष, सर्पच्छत्रा, गुजराती में जिसको "बिलाडी नी टोप" कहते हैं,

"गहणेसु न चिट्ठिज्जा, बीएसु हरिएसु वा।
उदगम्मि तहा निच्चं, उत्तिंगपणगेसु वा" (दस ८, ११)।

६ न. छिद्र, विवर, रन्ध्र ; (निचू १८; आचा २, ३, १, १६)। °**लेण** न [°**लयन**] कीट-विशेष का गृह—बिल; (कप्प)।

उत्तिण वि [**उत्तृण**] तृण-शून्य ;

"झंझावाउत्तिणघरविवरपलोट्टंतसलिलधाराहिं।
कुड्डलिहिओहिदिअहं रक्खइ अज्जा करअलेहिं"
(गा १७०)।

उत्तिणिअ वि [**उत्तृणित**] तृण-रहित किया हुआ "झंझावाउत्तिणिए घरम्मि" (गा ३१५)।

उत्तिण्ण वि [**उत्तीर्ण**] १ बाहर निकला हुआ "उत्तिण्णा तलागाओ" (महा) ; 'दिट्ठं च महासरवरं, मज्जिओ जहाविहिं तम्मि, उत्तिण्णो य उत्तरपच्छिमतीरे" (महा)। २ पार पहुँचा हुआ, पार-प्राप्त ; (स ३३२); "उत्तिण्णा समुद्दं, पत्ता वीयभयं" (महा)। ३ जो कम हुआ हो, 'संचरइ चिरपडिग्ग हलायरणुत्तिसरणवेससोहग्गो" (गउड) ; ४ रहित "सोहइ अदोसभावो गुणोव्व जइ होइ मच्छरुत्तिण्णो ; (गउड)। ५ निपटा हुआ, जिसने कार्य समाप्त किया हो वह "ण्हाणुत्तिण्णाए" (गा ५५५)। ६ उल्लंघित, अतिक्रान्त ; (राज)।

उत्तिण्ण वि [**अवतीर्ण**] १ नीचे उतरा हुआ ; "राया दक्खो, तेण साहा गहिया, उत्तिण्णो, निराणंदो किंकायव्वविमूढो गओ चंपं" (महा)।

उत्तित्थ पुंन [**उत्तीर्थ**] कुपथ, अपमार्ग ; (भवि)।

उत्तिम देखो **उत्तम** ; (षड् ; पि १०१ ; हे १, ४१ ; निचू १)।

उत्तिमंग देखो **उत्तमंग** ; (महा ; पि १०१)।

उत्तिन्न देखो **उत्तिण्ण** ; (काप्र १४६ ; कुमा)।

उत्तिरिविडि } स्त्री [**दे**] भाजन वगैरः का ऊंचा ढग,
उत्तिवडा } भाजनों की थप्पी ; गुजराती में जिसको 'उतरेवड' कहते हैं; (दे १, १२२)। "फोडेइ बिरालो लोलयाए सारेवि उत्तिवडं" (उप ७२८ टी)।

उत्तुंग वि [**उत्तुङ्ग**] ऊँचा, उन्नत; (महा; कप्पू ; गउड)।

उत्तुंड वि [**उत्तुण्ड**] उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख ; (गउड)।

उत्तुण वि [**दे**] गर्व-युक्त, दृप्त, अभिमानी ; (दे १, ६६; गउड)।

उत्तुप्पिय वि [**दे**] स्निग्ध, चिकना ; (विपा १, २)।

उत्तुय सक [**उत्+तुद**] पीडा करना, हैरान करना। वकृ—**उत्तुयंत** ; (विपा १, ७)।

उत्तुरिद्धि स्त्री [दे] १ गर्व, अभिमान ; २ वि. गर्वित, अभिमानी ; (दे १, ६६) ।

उत्तुर्व वि [दे] दृष्ट, देखा हुआ ; (षड्) ।

उत्तुहिअ वि [दे] उत्खोटित, छिन्न, नष्ट; (दे १, १०५ ; १११) ।

उत्तूह पुं [दे] किनारा-रहित इनारा, तट-शून्य कूप ; (दे १, ६४) ।

उत्तेअ वि [उत्तेजस्] १ तेजस्वी, प्रखर ; २ पुं. मात्रा-वृत का एक भेद ; (पिंग ; नाट) ।

उत्तेअण न [उत्तेजन] उत्तेजन ; (मुद्रा १६८) ।

उत्तेइअ, उत्तेजिअ वि [उत्तेजित] उद्दीपित, प्रोत्साहित, प्रेरित; (दस ३ ; पाअ) ।

उत्तेड, उत्तेडय पुं [दे] बिन्दु; (पिण्ड १६); "सितो य एसो घड-उत्तेडएहिं" (स २६४) ।

उत्थ न [उक्थ] १ स्तोत्र-विशेष; २ याग-विशेष; (विसे)

उत्थ वि [उत्थ] उत्पन्न, उत्थित; (सुपा १६६; गउड) ।

उत्थइय वि [अवस्तृत] १ व्याप्त ; (से ४, ३८) । २ प्रसारित, फैलाया हुआ ; ३ आच्छादित; "अच्छरगमउयमसूरगउच्छ-(? त्थ)-इयं भद्दासणं रयावेइ" (णाया १, १ ; पि ३०६) ।

उत्थंगिअ देखो **उत्थंघिअ**=उत्तम्भित; (पि ५०५) ।

उत्थंघ सक [उद्+नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना । उत्थंघइ ; (हे ४, ३६) ।

उत्थंघ सक [उत्+स्तम्भ्] १ उठाना । २ अवलम्बन देना । ३ रोकना; (गउड; से ५, ६) । उत्थंघेइ; (गा ७२४) ।

उत्थंघ सक [उत्+क्षिप्] ऊँचा फेंकना । उत्थंघइ; (हे ४, १४४) । संकृ—**उत्थंघिअ** ; (कुमा) ।

उत्थंघ सक [रुध्] रोकना । उत्थंघइ ; (हे ४, १३३) ।

उत्थंघ पुं [उत्तम्भ] ऊर्ध्व-प्रसरण, ऊँचा फैलना ; (से ६, ३३) ।

उत्थंघण न [उत्तम्भन] ऊपर देखो ; (गउड) ।

उत्थंघि वि [उत्क्षेपिन्] ऊँचा फेंकना ; (गउड) ।

उत्थंघिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ ; (कुमा) ।

उत्थंघिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ ; (कुमा) ।

उत्थंघिअ वि [उत्तम्भित] उत्थापित, उठाया हुआ (से ५, ६०) ।

उत्थंभि वि [उत्तम्भिन्] १ आघात-प्राप्त ; २ अवलम्बन करने वाला ;

"धारिज्जइ जलनिहीवि कल्लोलोत्थंभिसत्तकुलसेलो ।
न हु अन्नजम्मनिम्मिअसुहासुहो कम्म-परिणामो ॥"
(प्रासू १२७) ।

उत्थंभिअ वि [उत्तम्भित] १ अवलम्बित; २ रुका हुआ ; स्तम्भित ; "अइपीणत्थणउत्थंभिआणणे सुअणु सुणसु मह वअणं" (गा ६२४) । ३ बन्धन-मुक्त किया हुआ ; (स ५६८) ।

उत्थग्घ पुं [दे] संमर्द, उपमर्द ; (दे १, ६३) ।

उत्थय देखो **उत्थइय** ; (कप्प); "निवडंति तणोत्थयकूविया-सु तुंगावि मायंगा" (उप ७२८ टी) ।

उत्थर सक [आ+क्रम्] आक्रमण करना । संकृ—**उत्थरिवि** (अप) ; (भवि) ।

उत्थर सक [अव+स्तृ] १ आच्छादन करना, ढकना । २ पराभव करना । वकृ—**उत्थरंत, उत्थरमाण**; (पण्ह १, ३; राज) ।

उत्थरिअ वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ ; "उत्थरिओवग्गिआइं अक्कंतं" (पाअ ; भवि) ।

उत्थरिय वि [दे] १ निःसृत, निर्गत ; (स ४७३); "अच्छुक्कुत्थरियमहल्लवाहभरनीसहा पडिया" (सुपा २०) । २ उत्थित, उठा हुआ; (दे ७, ६२) ।

उत्थल न [उत्स्थल] १ ऊँचा धूलि-राशि, उन्नत रजः-पुञ्ज; (भग ७, ६) । २ उन्मार्ग, कुपथ; (से ८, ६) ।

उत्थलिअ न [दे] १ घर, गृह ; २ उन्मुख-गत, ऊँचा गया हुआ ; (दे १, १०७ ; स १८०) ।

उत्थल्ल अक [उत्+शल्] उछलना, कूदना । उत्थल्लइ ; (षड्) ।

उत्थल्लपत्थल्ला स्त्री [दे] दोनों पार्श्वों से परिवर्त्तन, ऊथल-पाथल ; (दे १, १२२) ।

उत्थल्ला स्त्री [दे] १ परिवर्तन; (दे १, ६३) । २ उद्वर्तन; (गउड) ।

उत्थल्लिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ "उत्थल्लिअं उच्छलिअं" (पाअ) ।

उत्थाइ वि [उत्थायिन्] उठने वाला; (दे ८, १६) ।

उत्थाइय वि [उत्थापित] उठाया हुआ "पुव्वुत्थाइयनरवर-देसे दंडाहिवं ठवइ महणं" (सुपा ३५२) ।

उत्थाण न [**उत्थान**] १ वीर्य, बल, पराक्रम; (विसे २८-२६) । २ उत्थान, उत्पत्ति ;

"वंछावाही असज्झो न नियत्तइ ओसहेहिं कएहिं ।
तम्हा तीउत्थाणं निरुंभियव्वं हिएसीहिं"
(सुपा ४०४) ।

उत्थामिय (अप) वि [**उत्थापित**] उठाया हुआ; (भवि) ।

उत्थार सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना, दबाना । उत्थारइ ; (हे ४, १६० ; षड्) ।

उत्थार देखो **उच्छाह**=उत्साह; (हे २, ४८ ; षड्) ।

उत्थारिय वि [**आक्रान्त**] आक्रान्त, दबाया हुआ "उत्थारि-अअंतरंगरिउवग्गो" (कुमा ; सुपा ५४६) ।

उत्थिय देखो **उट्ठिय** ; (हे ४, १६ ; पि ३०६) ।

उत्थिय देखो **उत्थइअ** ; (पंचा ८) ।

°**उत्थिय** वि [°**तीर्थिक**] मतानुयायी, दर्शनानुयायी; (उवा; जीव ३) ।

°**उत्थिय** वि [°**यूथिक**] यूथ-प्रविष्ट, "अरणउत्थिय—"(उवा; जीव ३) ।

उत्थुभण न [**अवस्तोभन**] अनिष्ट की शान्ति के लिए किया जाता एक प्रकार का कौतुक, थू थू आवाज करना ; (बृह १) ।

उद न [**उद**] जल, पानी ; "अवि साहिए दुवे वासे सीओदं अभोच्चा निक्खंते" (आचा ; भग ३, ६) । °**उल्ल** °**ओल्ल** वि (°**आर्द्र**) पानी से गीला; (ओघ ४८६ ; पि १६१) । °**गत्ताभ** न (°**गर्त्ताभ**) गोत्र विशेष; (ठा ७) ।

उदइय देखो **ओदइय** ; (अणु) ।

उदइल्ल वि [**उदयिन्**] उदयवान्, उन्नति-शील ; "सिरि-अभयदेवसूरी अपुव्वसूरो सयावि उदइल्लो" (सुपा ६२२) ।

उदंक पुं [**उदङ्क**] जल का पात्र-विशेष, जिससे जल ऊँचा छिटका जाता है ; (जं २) ।

उदंच सक [**उद्+अञ्च्**] ऊँचा जाना ; (कुमा) ।

उदंचण न [**उदञ्चन**] १ ऊँचा फेंकना ; २ वि. ऊँचा फेंकने वाला ; (अणु) ।

उदंचिर वि [**उदञ्चितृ**] ऊँचा जाने वाला ; (कुमा) ।

उदंत पुं [**उदन्त**] हकीकत, समाचार, वृत्तान्त ; "णिअमे-ऊण कइवलं बीओदंतो व्वराहवस्स उवणिओ" (से ४, ५५; स ३० ; भग) ।

उदग पुंन [**उदक**] जल, पानी ; "चत्तारि उदगा पएणत्ता" (ठा ४; जी ५) । २ वनस्पति-विशेष; (दस ८, ११) । ३ जलाशय; (भग १, ८) । ४ पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन साधु ; ५ सातवें भावि जिनदेव; (सूअ २, ७) । °**गब्भ** पुं [°**गर्भ**] बद्दल, बादल, अभ्र ; (भग २, ५) । °**दोणि** स्त्री [°**द्रोणि**] १ जल रखने का पात्र-विशेष, ठंढा करने के लिए गरम लोहा जिसमें डाला जाता है वह ; (भग १६, १) । २ जो अरघट्ट में लगाया जाता है वह छोटा घड़ा; (दस ७) । °**पोग्गल** न [°**पौद्गल**] बद्दल, मेघ ; (ठा ३, ३) । °**मच्छ** पुं [°**मत्स्य**] इन्द्र-धनुष का खण्ड, उत्पात-विशेष ; (भग ३, ६) । °**माल** पुंस्त्री [°**माल**] जल का ऊपर चढ़ता तरङ्ग, उदक-शिखा, वेला ; (ठा १० ; जीव ३) । °**वत्थि** स्त्री [°**वस्ति**] दृति, पानी भरने की मशक ; (णाया १, १८) । °**सिहा** स्त्री [°**शिखा**] वेला ; (ठा १०) । °**सीम** पुं [°**सीमन्**] पर्वत-विशेष ; (इक) ।

उदग्ग वि [**उदग्र**] १ सुन्दर, मनोहर; "ततो दट्ठुं तीए रूवं तह जोव्वणमुदग्गं" (सुर १, १२२) । २ उग्र, उत्कट, प्रखर ; (ठा ४, २ ; णाया १, १ ; सत्त ३०) । ३ प्रधान, मुख्य ; "उदग्गचारित्ततवो महेसी" (उत्त १३) ।

उदत्त वि [**उदात्त**] स्वर-विशेष, जो उच्च स्वर से बोला जाय वह स्वर ; (विसे ८५२) ।

उदन्ना स्त्री [**उदन्या**] तृषा, तरस, पिपासा ; (उप १०३१ टी) ।

उदय देखो **उदग** ; (णाया १, ८ ; सम १५३ ; उप ७२८ टी ; प्रासू ७२ ; पण्ण १) ।

उदय पुं [**उदय**] १ अभ्युदय, उन्नति ; "जो एवंविहंपि कज्जं आयरइ, सो किं बंभदत्तकुमारस्स उदयं इच्छइ ?" (महा) । २ उत्पत्ति, (विसे) । ३ विपाक, कर्म-परिणाम;

"वहमारणअब्भक्खाणदाणपरधरविलोवणाईणं ।
सव्वजहन्नो उदओ दसगुणिओ एक्कसि कयाणं"
(उव) ।

४ प्रादुर्भाव, उद्गम "आइच्चोदए चंदगहा इव निप्पभा जाया सुरा" (महा) ;

"उदयम्मिवि अत्थमणेवि धरइ रत्तत्तणं दिवसनाहो ।
रिद्धीसु आवईसुवि तुल्लच्चिय गुणा सप्पुरिसा ।"
(प्रासू १२) ।

५ भरतक्षेत्र के भावी सातवें जिन-देव ; (सम १५३) । ६ भरत क्षेत्र में होने वाले तीसरे जिन-देव का पूर्व-भवीय नाम ; (सम १५४) । ७ स्वनाम-ख्यात एक राजकुमार ; (पउम

२१, ५६)। °यल पुं [°चल] पर्वत-विशेष, जहां सूर्य उदित होता है ; (सुपा ८८)।

उदयंत देखो **उदि**।

उदायण पुं [**उदयन**] १ एक राज-कुमार, कोशाम्बी नगरी के राजा शतानीक का पुत्र ; (विपा १, ५)। २ एक विख्यात जैन राजा ; (कप्प)। ३ न. उन्नति, उदय ; ४ वि. उन्नत होने वाला, प्रवर्धमान ; (ठा ५, ३)।

उदर न [**उदर**] १ पेट, जठर ; (सुअ १, ८)। २ पेट की बिमारी ; "खयजरवणलूआसाससोसोदराणि" (लहुअ १५)।

उदरंभरि वि [**उदरम्भरि**] स्वार्थी, एकलपेटा ; (पि ३७६)।

उदरि वि [**उदरिन्**] पेट की बीमारी वाला ; (पण्ह २, ५)।

उदरिय वि [**उदरिक**] ऊपर देखो ; (विपा १, ७)।

उदवाह वि [**उदवाह**] १ पानी वहन करने वाला, जल-वाहक ; २ पुं. छोटा प्रवाह ; (भग ३, ६)।

उदहि पुं [**उदधि**] १ समुद्र, सागर; (कुमा)। २ भवनपति देवों की एक जाति, उदधिकुमार; (पण्ह १, ४)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] देवों की एकजाति; (पण्ण १)। देखो **उअहि**।

उदाइ पुं [**उदायिन्**] १ एक जैन राजा, महाराजा कोणिक का पुत्र, जिसको एक दुष्ट ने जैन साधु बन कर धर्मच्छल से मारा था, और जो भविष्य में तीसरा जिन-देव होगा; (ठा ६; ती)। २ पुं. राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती; (भग १६, १)।

उदायण पुं [**उदायन**] सिन्धु-देश का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (ठा ८; भग ३, ६)।

उदार देखो **उराल** ; (उप पृ १०८)।

उदासि वि [**उदासिन्**] उदास, उदासीन। °**त्त** न [°**त्व**] औदासीन्य ; (रंभा ; स ४५६)।

उदासीण वि [**उदासीन**] १ मध्यस्थ, तटस्थ ; (पण्ह १, २)। २ उपेक्षा करने वाला ; (ठा ६)।

उदाहड वि [**उदाहृत**] कथित, दृष्टान्तित ; (राज)।

उदाहर सक [**उदा+हृ**] १ कहना। २ दृष्टान्त देना। उदाहरंति; (पि १४१)। "भासं मुसं नेव उदाहरिज्जा" (सत्त ४३)। भूका—उदाहु; (आचा; उत्त १४, ६); उदाहू ; (सूअ १, १२, ४)। वकृ—**उदाहरंत** ; (सूअ १, १२, ३)।

उदाहरण न [**उदाहरण**] १ कथन, प्रतिपादन। २ दृष्टान्त; (सूअ १, १२ ; विसे)।

उदाहिय वि [**उदाहृत**] १ कथित, प्रतिपादित ; २ दृष्टान्तित ; (आचा ; गाया १, ८)।

उदाहिय वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका गया ; (षड्)।

उदाहु देखो **उदाहर**।

उदाहु अ [**उताहो**] अथवा, या ; (उवा)।

उदाहू देखो **उदाहर**।

उदाहो देखो **उदाहु**=उताहो ; (स्वप्न ७०)।

उदि अक [**उद्+इ**] १ उन्नत होना। २ उत्पन्न होना। उदेइ ; (विसे १२६६; जीव ३)। वकृ—**उदयंत** ; (भग ; पउम ८२, ५६ ; सुपा १६८)। कवकृ—**उदिज्जंत** ; (विसे ५३०)।

उदिक्खिअ वि [**उदीक्षित**] अवलोकित; (दे ६, १४४)।

उदिण्ण वि [**उदीच्य**] उत्तर-दिशा में उत्पन्न; (आवम)।

उदिण्ण } वि [**उदीर्ण**] १ उदित, उदय-प्राप्त; (ठा ५);
उदिन्न } "इक्को वि इक्को विसओ उदिन्नो" (सत्त ५२)। २ फलोन्मुख (कर्म); (पण्ण १६; भग)। ३ उत्पन्न; "जहा उदिण्णो नणु कोवि वाही" (सत्त ५ ; श्रा २७)। ४ उत्कट, प्रबल "अणुत्तरोववाइयाणं भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, खीणमोहा ?" (भग ५, ४)।

उदिय वि [**उदित**] उदित, उद्गत ; (सम ३६)। २ उन्नत ; (ठा ४)। ३ उक्त, कथित ; (विसे ३५७६)।

उदीण वि [**उदीचीन**] १ उत्तर दिशा से संबन्ध रखने वाला, उत्तर दिशा में उत्पन्न ; (आचा ; पि १६५)। °**पाईणा** स्त्री [°**प्राचीना**] ईशान कोण ; (भग ५, १)।

उदीणा स्त्री [**उदीचीना**] उत्तर दिशा ; (ठा १, १)

उदीर सक [**उद्+ईरय्**] १ प्रेरणा करना। २ कहना, प्रतिपादन करना। ३ जो कर्म उदय-प्राप्त न हो उसको प्रयत्न-विशेष से फलोन्मुख करना। उदीरइ, उदीरेंति; (भग; पंनि ७८)। भूका—उदीरिंसु, उदीरेंसु ; (भग)। भवि—उदीरिस्संति ; (भग)। वकृ—**उदीरंत** ; (ठा ७)। "कुसलवइमुदीरंतो" (उप ६०४)। कवकृ—**उदीरिज्जमाण** ; (पण्ण २३)। हेकृ—**उदीरेत्तए** ; (कस)।

उदीरण न [**उदीरण**] १ कथन, प्रतिपादन। २ प्रेरणा। ३ काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से किया जाता कर्म-फल का अनुभव ; (कम्म २, १३)।

उदीरणया } स्त्री [उदीरणा] ऊपर देखो ; (कम्म २,
उदीरणा } १३; १) । " जं करणेणोकड्ढिय उदए दिज्जइ उदीरणा एसा " (कम्मप १४३ ; १६६) ।

उदीरय वि [उदीरक] १ कथक, प्रतिपादक । २ प्रेरक, प्रवर्तक " एक्कमेक्कं विसयविसउदीरएसु " (पराह १, ४) । ३ उदीरणा करने वाला, काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से कर्म-फल का अनुभव करने वाला ; (कम्मप १५६) ।

उदीरिय वि [उदीरित] १ प्रेरित " वालियाणं घट्टियाणं खोभियाणं उदीरियाणं केरिसे सद्दे भवति " (राय; जीव ३) । २ कथित, प्रतिपादित " धीरे धम्मे उदीरिए " (आचा) । ३ जनित, कृत; "ससद्दफासा फरुसा उदीरिया" (आचा) ४ समय-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से खींच कर जिसके फलका अनुभव किया जाय वह (कर्म) ; (पराग २३ ; भग) ।

उदु देखो उउ ; (प्राप ; अभि १८६ ; पि ५७) ।

उदुंबर देखो उंबर; (कस) ।

उदुरूह सक [उद +रुह्] ऊपर चढ़ना । उदुरूहइ ; (पि ११८) ।

उदूखल देखो उऊखल ; (पि ६६) ।

उदूलिय वि [दे] अवनत, नीचा नमा हुआ ; (षड्) ।

उदूहल देखो उऊहल ; (आचा ; पि ६६) ।

उद्द न [दे] १ जल-मानुष; २ ककुद, बैल के कंधे का कुब्बड; (दे १, १२३) । ३ मत्स्य-विशेष ; ४ उसके चर्म का बना हुआ वस्त्र ; (आचा) ।

उद्द वि [आर्द्र] गिला, आर्द्र ; (षड्) ।

उद्दंड } वि [उद्दण्ड] १ प्रचण्ड, उद्धत ; (कुमा;
उद्दंडग } गउड) । २ पुं. हाथ में दण्ड को ऊँचा रख कर चलने वाले तापसों की एक जाति; (औप; निचू १) ।

उद्दंतुर वि [उद्दन्तुर] १ जिसका दान्त बाहर आया हो वह ; २ ऊँचा ; (गउड) ।

उद्दंभ पुं [उद्दम्भ] छन्द का एक भेद ; (पिंग) ।

उद्दंस पुं [उद्दंश] मधुमक्षिका, मत्कुण आदि छोटा कीट ; (कप्प) ।

उद्दड्ढ पुं [उद्दग्ध] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास; (ठा ६) । °मज्झिम पुं [°मध्यम] रत्नप्रभा पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६) । °वत्त पुं [°वर्त्त] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ६) । °वसिट्ठ पुं [°वशिष्ट] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ६) ।

उद्दद्दर न [दे. ऊर्ध्वदर] सुभिक्ष, सुकाल ; (बृह १) ।

उद्दरिअ वि [दे] १ उत्खात, उखाड़ा हुआ; (दे १, १००) । २ स्फुटित, विकसित " फुडिअं फलिअं च दलिअं उद्दरिअं " (पाअ) ।

उद्दरिअ वि [उद्+दृप्त] गर्वित, उद्धत, अभिमानी; (णंदि) ।

उद्दलण न [उद्दलन] विदारण ; (गउड) ।

उद्दव सक [उद्, उप+द्रु] १ उपद्रव करना, पीड़ा करना । २ मारना, विनाश करना हिंसा करना । " तए णं सा रेवई गाहावईणी अन्नया कयाइ तासिं दुवालसराहं सवत्तीणं अंतरं जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेणं उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता छ सवत्तीओ विसप्पओगेणं उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता तासिं दुवालसराहं सवत्तीणं कोलवरियं एगमेगं हिरगणकोडिं एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जेइ, २ त्ता महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइ भोगभोगाइ भुंजमाणी विहरइ " (उवा) । भवि—उद्दवेहिइ; (भग १५) । कवकृ —उद्दविज्जमाण; (सूअ २, १) । कृ—उद्दवेयव्व ; (सूअ २, ३) ।

उद्दवअ पुं [उद्द्रव, उपद्रव] १ उपद्रव ; २ विनाश, हिंसा ; " आरंभो उद्दवओ " (श्रा ७) ।

उद्दवइत्तु वि [उद्द्रोतृ, उपद्रोतृ,] १ उपद्रव करने वाला; २ हिंसक, विनाशक ; "से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता उद्दवइत्ता विलुंपित्ता अकडं करिस्सामि त्ति मन्नमाणे " (आचा) ।

उद्दवण न [उद्द्रवण, उपद्रवण] १ उपद्रव, हरकत ; " उद्दवणं पुण जाणासु अइवायविवज्जियं " (पिंड; औप) । २ विनाश, हिंसा ; (सं ८४ ; आचा २) ।

उद्दवणया } स्त्री [उद्द्रवणा, उपद्रवणा] ऊपर देखो ;
उद्दवणा } (भग ; पराह १, १) ।

उद्दवाइअ देखो उड्डुवाइय ; " समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं०—गोदासे गणे उत्तरबलिस्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उद्दवातित-(इअ)-तगणे विस्सवाति-(इअ)-गणे कामड्ढित-(अ)-गणे माणवगणे कोडितगणे " (ठा ६) ।

उद्दविअ वि [उद्द्रुत, उपद्रुत] १ पीडित ; " संघाइआ संघट्टिआ परियाविआ किलामिआ उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिआ" (पडि) । २ विनाशित "नाऊण विभंगेणं नियजिट्ठसुयस्स विलसियं, तो सो सकुडुंबो उद्दविओ " (सुपा ४०६) ।

उद्दवेत्तु देखो उद्दवइत्तु ; (आचा) ।

उद्दा सक [उद्+दा] बनाना, निर्माण करना । उद्दाइ; (भग) ।

उद्दा अक [**अव+द्रा**] मरना। उद्दाइ, उद्दायाति ; (भग)। संकृ—**उद्दाइत्ता** ; (जीव ३; ठा १०; भग)।

उद्दाइआ स्त्री [**उद्द्रोत्री, उपद्रोत्री**] उपद्रव करने वाली स्त्री ; "ताए वा उद्दाइआए कोइ संजओ गहितो होज्जा" (आव १८भा, टी)।

उद्दाइंत देखो **उद्दाय**=शुभ्।

उद्दाइत्ता देखो **उद्दा**=अव+द्रा।

उद्दाण स्त्री [**दे**] चुल्हा, चुल्ली, जिस पर रसोई पकाई जाती है ; (दे १, ८७)।

उद्दाम वि [**उद्दाम**] १ स्वैर, स्वच्छन्द ; (पाअ)। २ प्रचण्ड, प्रखर ; "ता सजलजलहरुद्दामगहिरसद्देण ताण तं कहइ" (सुपा २३४)। ३ अव्यवस्थित ; (हे १, १७७)।

उद्दाम पुं [**दे**] १ संघात, समूह; २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश; (दे १, १२६)।

उद्दामिय वि [**उद्दामित**] लटकता हुआ, प्रलम्बित ; "तत्थ णं बहवे हत्थी पासति सण्णद्धबद्धवम्मियगुडिते उप्पीलियकच्छे उद्दामियघंटे" (विपा १, २)।

उद्दाय अक [**शुभ्**] शोभना, शोभित होना, अच्छा मालूम देना। वकृ—"उववणेसु परहुयरुयपरिभितसंकुलेसु **उद्दायंत**-रतइंदगोवयथोवयकारुन्नविलविएसु" (णाया १, १)। **उद्दाइंत** ; (णाया १, १ टी)।

उद्दरिअ वि [**दे**] १ युद्ध से पलायित, रण-द्रुत। २ उत्खात, उन्मूलित ; (षड्)।

उद्दाल सक [**आ+छिद्**] खींच लेना, हाथ से छीन लेना। उद्दालइ; (हे ४, १२५ ; षड् ; महा)। हेकृ—**उद्दालेउं**; (पि ५७७)।

उद्दाल पुं [**अवदाल**] १ दबाव, अवदलन "तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि...गंगापुलिणवालुअउद्दालसालिसए" (कप्प ; णाया १, १)। २ वृक्ष-विशेष ; (जीव ३)। ३ अवसर्पिणी काल का प्रथम आरा—समय-विशेष ; (जं २)।

उद्दालिय वि [**आच्छिन्न**] छीना हुआ; खींच लिया गया ; (पाअ; कुमा; उप पृ ३२३)। "दो सारबलिद्दावि हु तेहिं उद्दालिया" (सुपा २३८)।

उद्दावणया स्त्री [**उपद्रावणा**] उपद्रव, हैरानी ; (राज)।

उद्दाह पुं [**उद्दाह**] १ प्रखर दाह ; २ आग ; (ठा १०)।

उद्दाहग वि [**उद्दाहक**] आग लगाने वाला; (पण्ह १,३)।

उद्दिट्ठ वि [**उद्दिष्ट**] १ कथित, प्रतिपादित ; (विपा २, १)। २ निर्दिष्ट ; (दस)। ३ दान के लिए संकल्पित (अन्न, पानादि); "णायपुत्ता उद्दिट्ठभत्तं परिवज्जयंति" (सूअ २, ६)। ४ लक्षित; (सूअ २, ६)। ५ न. उद्देश; (पंचा १०)। °**कड** वि [°**कृत**] साधु के उद्देश से बनाया हुआ, साधु के निमित किया हुआ (भोजनादि) ; (दस १०)।

उद्दिट्ठा स्त्री [**दे. उद्दृष्टा**] तिथि-विशेष, अमावस्या ; (औप)।

उद्दित्त वि [**उद्दीप्त**] प्रज्वलित ; (बृह १)।

उद्दिस सक [**उद्+दिश्**] १ नाम निर्देश-पूर्वक वस्तु का निरूपण करना। २ देखना। ३ संकल्प करना। ४ लक्ष्य करना। ५ अंगीकार करना। ६ सम्मति लेना। ७ समाप्त करना। ८ उपदेश देना। उद्दिसइ; (वव २, ७)। कर्म—"दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिस्संति" (उवा)। कवकृ—**उद्दिसिज्जंत**; (आवम)। संकृ—"गओ तासिं समीवं, पुच्छियं महुरवाणीए एक्कं कन्नगं **उद्दिसिऊण,** कओ तुब्भे" (महा ; वव १, ७) ; "तदवसाणे य एक्का पवरमहिला बंधुमइं **उद्दिस्स** कुमारउत्तमंगे अक्खए पक्खिवइ; (महा); **उद्दिसिय**; (आचा २, १; अभि १०४)। हेकृ-**उद्दिसिउं, उद्दिसित्तए** ; (वव १,१० भा; ठा २,१); प्रयो—**उद्दिसावित्तए, उद्दिसावेत्तए**; (बृह १; कस)।

उद्दिसिअ देखो **उद्दिट्ठ** ; (आचा २)।

उद्दिसिअ वि [**दे**] उत्प्रेक्षित, वितर्कित; (दे १, १०६)।

उद्दीवण न [**उद्दीपन**] १ उत्तेजन; २ वि. उत्तेजक; (मै ५८ ; रंभा)।

उद्दीवणिज्ज वि [**उद्दीपनीय**] उद्दीपक, उत्तेजक, "मयणुद्दीवणिज्जेहिं विविहेहिं भूसणेहिं" (रंभा)।

उद्दीविअ वि [**उद्दीपित**] प्रदीपित, प्रज्वालित; (पाअ)। "चीयाए पक्खिविउं तत्तो उद्दीविओ जलणो" (सुर ६, ८८)।

उद्दुय वि [**उद्द्रुत**] पलायित ; (पउम ६, ७०)।

उद्दुय वि [**उपद्रुत**] हैरान किया हुआ ; (स १३१)।

उद्देस देखो **उद्दिस**। उद्देसइ ; (भवि)।

उद्देस पुं [**उद्देश**] १ नाम-निर्देश-पूर्वक वस्तु-निरूपण ; (विसे)। २ शिक्षा, उपदेश; "उद्देसो पासगस्स णत्थि" ३ व्यपदेश, व्यवहार ; (आचा)। ४ लक्ष्य ; ५ अभिप्राय, मतलब ; (विसे)। ६ ग्रन्थ का एक अंश ; (भग

१, १)। ७ प्रदेश, अवयव; "खुब्भंति खुहिअमअरा आवाआलगहिरा समुद्दुद्देसा" (से ५, १६ ; १, २०)। ८ गुरु-प्रतिज्ञा, गुरु-वचन ; (विसे)। ६ जगह, स्थान ; (कप्पू)।

उद्देसण न [**उद्देशन**] १ पाठन, वाचना, अध्यापन ; "उद्दिसण वायणत्ति पाठणया चेव एगट्ठा" (पंचभा ; पराह २, ५)। २ अधिकारिता, योग्यता ; (ठा ४, ३)।

उद्देसणा स्त्री [**उद्देशना**] ऊपर देखो ; (पंचभा)।

उद्देसिय न [**औद्देशिक**] १ भिक्षा का एक दोष, साधु के लिए भोजन-निर्माण; २ वि. साधु-निमित बनाया हुआ (भोजन) ; (कस)। "उद्देसियं तु कम्मं एत्थं उद्दिस्स कीरए जंति" (पंचा १७ ; ठा ६ ; अंत)।

उद्देह पुं [**उद्देह**] भगवान् महावीर का एक गण—साधु-समुदाय ; (ठा ६ ; कप्प)।

उद्देहलिया स्त्री [**उद्देहलिका**] वनस्पति-विशेष; (राज)।

उद्देहिया, **उद्देही** स्त्री [**दे**] उपदेहिका, दिमक, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जी १६ ; स ४३५ ; ओघ ३२३) ; "उवदेहीइ उद्देही" (दे १, ६३)।

उद्दोहग वि [**उद्द्रोहक**] घातक, हिंसक (पराह १, ३)।

उद्ध देखो **उड्ढ** ; (से ३, ३३ ; पि ८३; महा ; हे २, ५६; ठा ३, २)।

उद्धअ वि [**उद्धत**] १ उन्मत ; (से ४, १३ ; पाअ)। २ गर्वित, अभिमानी ; (भग ११, १०)। ३ उत्पाटित; (गाया १, १)। ४ अतिप्रबल "उद्धततमंधकार—" (पराह १, ३)।

उद्धअ देखो **उद्धरिअ**=उद्धृत। "पावल्लेण उवेच्च व उद्धयपयधारणा उ उद्धारो" (वव १, १०)।

उद्धअ वि [**दे**] शान्त, ठंढा ; (षड्)।

उद्धंत देखो **उद्धा**।

उद्धंस सक [**उद्+धृष्**] १ मारना। २ आक्रोश करना, गाली देना। उद्धंसेइ ; (भग १५)। उद्धंसेंति ; (गाया १, १६)।

उद्धंस सक [**उद्+ध्वंस्**] विनाश करना। संकृ—**उद्धंसिऊण** ; (स ३६२)।

उद्धंसण न [**उद्धर्षण**] १ आक्रोश, निर्भर्त्सन ; २ वध, हिंसा ; (राज)।

उद्धंसणा स्त्री [**उद्धर्षणा**] ऊपर देखो; (ओघ ३८ भा); "उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति" (गाया १, १६)।

उद्धंसिय वि [**उद्धर्षित**] आक्रुष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह ; (निचू ४)।

उद्धच्छवि वि [**दे**] विसंवादित, अप्रमाणित ; (दे १, ११४)।

उद्धच्छविअ वि [**दे**] सज्जित, तय्यार ; (दे १, ११६)।

उद्धच्छिअ वि [**दे**] निषिद्ध, प्रतिषिद्ध; (दे १, १११)।

उद्धट्टु देखो **उद्धर**।

उद्धड वि [**उद्धृत**] उठा कर रखा हुआ ; (धर्म ३)।

उद्धण वि [**दे**] उद्धत, अविनीत ; (षड्)।

उद्धत्थ वि [**दे**] विप्रलब्ध, वञ्चित ; (दे १, ६६)।

उद्धदेहिय न [**और्ध्वदेहिक**] अग्नि-संस्कार आदि अन्त्येष्टि-क्रिया ; (स १०६)।

उद्धम सक [**उद्+हन्**] १ शङ्ख वगैरः फूँकना, वायु भरना। २ ऊँचा फेंकना, उड़ाना। कवकृ—**उद्धम्मंताणं** संखाणं सिंगाणं संखियाणं खरमुहीणं" (राय) ; "पायालसहस्सवायवसवेगसलिल**उद्धम्ममाण**दगरयरयंधकारं (रयणागरसागरं)" (पराह १, ३ ; औप)।

उद्धर सक [**उद्+हृ**] १ फँसे हुए को निकालना, ऊपर उठाना। २ उन्मूलन करना। ३ दूर करना। ४ खींचना। ५ जीर्ण मन्दिर वगैरः का परिष्कार-संस्कार करना। ६ किसी ग्रन्थ या लेख के अंश-विशेष को दूसरी पुस्तक या लेख में अविकल नकल करना। भवि—उद्धरिस्सइ ; (स ५६६)। वकृ—पइनगरं पइगामं पायं जिणमंदिराइं पूयंतो, जिन्नाइं **उद्धरंतो**" (सुपा २२४) ;

"जयइ धरमुद्धरंतो भरणीसारियमुहग्गचलणेण।
णियदेहेण करेण व पंचंगुलिणा महाकुम्मो ॥" (गउड)।

संकृ—**उद्धरिउं, उद्धरिऊण, उद्धरित्ता, उद्धरित्तु, उद्धट्टु** ; (पंचा १६; प्रारू)। "तं लयं सव्वसो छित्ता, **उद्धरित्ता** समूलया" (उत्त २३ ; पंचा १६) ; "बाहू उद्धट्टु कक्खमणुव्वजे" (सूअ १, ४) ; "तसे पाणे उद्धट्टु पादं रीइज्जा" (आचा २, ३, १, ४)।

उद्धर (अप) देखो **उद्धुर** ; (भवि)।

उद्धरण न [**उद्धरण**] १ ऊपर उठाना ; २ फँसे हुए को निकालना ; (गउड) ; "दीणुद्धरणम्मि धणं न पउत्तं" (विवे १३५)। ३ उन्मूलन ; ४ अपनयन ; (सूअ १, ४ ; ६)।

उद्धरण वि [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा ; (दे १,१०६)।

उद्धरिअ वि [**उद्धृत**] १ उत्पाटित, उत्क्षिप्त; "हक्खुत्तं उच्छूढं उक्खित्त-उप्पाडिआइं उद्धरिअं" (पाअ)। २ किसी ग्रन्थ या लेख के अंश-विशेष को दूसरे पुस्तक या लेख में अविकल नकल कर देना;

"एसो जीववियारो, संखेवरुईण जाणणा-हेउं।
संखित्तो उद्धरिओ, रुंदाओ सुय-समुद्दाओ" (जी ५१);
"जेण उद्धरिया विज्जा, आगासगमा महापरिण्णाओ" (आवम)।

३ आकृष्ट, खींचा हुआ; ४ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ; "उद्धरियसव्वसल्ल—" (पंचा १६)। ५ जीर्ण वस्तु का परिष्कार करना, "जिणमंदिरं न उद्धरिअं" (विवे १३३)।

उद्धरिअ वि [**दे**] अर्दित, विनाशित; (षड्)।

उद्धल पुं [**दे**] दोनों तरफ की अप्रवृत्ति; (षड्)।

उद्धवअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (दे १, १०६)।

उद्धविअ वि [**दे**] अर्चित, पूजित; (दे १, १०७)।

उद्धा, **उद्धाअ** सक [**उद्+धाव्**] १ दौड़ना, वेग से जाना। २ उँचे जाना। उद्धाइ; (पि १६५)। वकृ—**उद्धंत, उद्धाअंत, उद्धायमाण**; (कप्प; से ६, ६६; १३, ६१; औप)।

उद्धाअ अक [**ऊर्ध्वाय्**] ऊँचा होना। वकृ—**उद्धाअमाण**; (से १३, ६१)।

उद्धाअ वि [**उद्धाव**] उद्धावित, ऊँचा गया हुआ "छिण्णकडए वहंतं उद्धाअणिअत्तगरुडमग्गिअसिहरे" (से ६, ३६)।

उद्धाअ पुं [**दे**] १ विषमोन्नत प्रदेश; २ समूह; ३ वि. थका हुआ, श्रान्त; (दे १, १२४)।

उद्धाइअ वि [**उद्धावित**] १ फैला हुआ, विस्तीर्ण, प्रसृत; (से ३, ५२)। २ ऊँचा दौड़ा हुआ; (से २, २२)।

उद्धार पुं [**उद्धार**] १ त्राण, रक्षण; (कुमा)। २ ऋण देना, धार देना; (सुपा ५६७; श्रा १४)। ३ अपहरण; (अणु)। ४ अपवाद; (राज)। ५ धारणा, पढ़े हुए पाठ का नहीं भूलना "पाबल्लेण उवेच्च व उद्धयपयधारणा उ उद्धारो" (वव १, १०)। °**पलिओवम** न [°**पल्योपम**] समय का एक परिमाण; (अणु)। °**समय** पुं [°**समय**] समय-विशेष; (अणु)। °**सागरोवम** न [°**सागरोपम**] समय का एक दीर्घ परिमाण; (अणु)।

उद्धाव देखो **उद्धा**।

उद्धावण न [**उद्धावन**] नीचे देखो; (श्रा १)।

उद्धावणा स्त्री [**उद्धावना**] १ प्रबल प्रवृत्ति; २ दूर-गमन, दूर क्षेत्र में जाना; (धर्म ३)। ३ कार्य की शीघ्र-सिद्धि; (वव १, १)।

°**उद्धि** देखो **बुद्धि**; (षड्)।

उद्धिअ देखो **उद्धरिअ**=उद्धृत; (श्रा ४०; औप; राय; वव १, १; औप; पच्च २८)।

उद्धीमुह वि [**ऊर्ध्वीमुख**] मुँह ऊँचा किया हुआ; (चंद ४)।

उद्धुंधलिय वि [**दे**] धुँधलाया हुआ; (सण)।

उद्धुणिय देखो **उद्धुय**; (सण)।

उद्धुम सक [**पृ**] पूर्ण करना, पूरा करना। उद्धुमइ; (हे ४, १६६)।

उद्धुमा सक [**उद्+ध्मा**] १ आवाज करना; २ जोर से धमनी को चलाना। उद्धुमाइ, उद्धुमाअइ; (षड्; प्रामा)।

उद्धुमाइअ वि [**उद्ध्मापित**] ठंढा किया हुआ, निर्वापित; (से १, ८)।

उद्धुमाय वि [**दे**] १ परिपूर्ण; "मायाइ उद्धुमाया" (कुमा); "पडिहत्थमुद्धुमायं आहिरेइयं च जाण आउण्णे" (णादि)। २ उन्मत्त; "मअरंदरसुद्धुमाअमुहलमहुअरं" (से ६, ११);

उद्धुय वि [**उद्धूत**] १ पवन से उड़ा हुआ; (से ७, १४)। २ प्रसृत, फैला हुआ "गंधुद्धुयाभिरामे" (औप)। ३ प्रकम्पित; "वाउद्धुयविजयवेजयंती" (जीव ३)। ४ उत्कट, प्रबल; (सम १३७)। ५ व्यक्त, प्रकट; (कप्प)।

उद्धुर वि [**उद्धुर**] १ ऊँचा, उच्च; "उद्धुरं उच्चं" (पाअ)। २ प्रचण्ड, प्रबल; (सुर ३, ३६; १२, १०६)।

उद्धुव्वंत, **उद्धुव्वमाण** देखो **उद्धू**।

उद्धुसिय वि [**उद्धुषित**] १ रोमाञ्च, "अन्नोन्नजंपिएहिं हसिउद्धुसिएहिं खिप्पमाणो य" (उव)। २ वि. रोमाञ्चित, पुलकित; (दे १, ११५; २, १००); "उद्धुसियरोमकूवो सीयलअनिलेण संकुइयगत्तो" (सुर २, १०१); "उद्धुसियकेसरसढ" (महा)।

उद्धू सक [**उद्+धू**] १ काँपना, चलाना; २ चामर वगैरः बीजना, पंखा करना। कवकृ—**उद्धुव्वंत, उद्धुव्वमाण**; (पउम २, ४०; कप्प)।

उद्धूणिय देखो **उद्धुय**; (सण)।

उद्धूद (शौ) देखो **उद्धुय**; (चारु ३५)।

उद्धूल सक [उद्+धूलय्] १ व्याप्त करना। २ धूलि लगाना। **उद्धूलेइ** ; (हे ४, २९)।

उद्धूलण न [**उद्धूलन**] धूलि को अङ्ग पर लगाना।

"जारमसाणसमुब्भवभूइसुहप्फंससिज्जिरंगीए।
ण समप्पइ णवकावालिआइ उद्धूलणारंभो ॥"
(गा ४०८)।

उद्धूलिय वि [**उद्धूलित**] १ धूलि से लपेटा हुआ। २ व्याप्त "तिमिरोद्धूलिअभवणं" (कुमा)।

उद्धूवणिया स्त्री [**उद्धूपनिका**] धूप देना ;

"केवि हु बिरालतन्नयपुरीससमीसेहिं गुग्गुलाईहिं।
उव्वरियम्मि खिविता उद्धूवणियं पयच्छंति ॥"
(सुर १४, १७४)।

उद्धूविअ वि [**उद्धूपित**] जिसको धूप किया गया हो वह ; (विक्र ११३)।

उद्धोस पुं [**उद्धर्ष**] उल्लास, ऊँचा होना ; (सहि ६५)। "जं जं इह सुहमवुद्धीए चिंतिज्जइ तं सव्वं रोमुद्धोसं जणेइ मह अम्मो" (सुपा ६४)।

उन्न न [**ऊर्ण**] ऊन, भेड़ या बकरी के रोम। °**मय** वि [°**मय**] ऊन का बना हुआ ;

"गोवालियाण विंदं नच्चावइ फारमुत्तियाहारं।
उन्नमयवासनिवसणपीणुन्नयथणहराभोगं ॥"
(सुपा ४३२)।

उन्न (अप) वि [**विषण्ण**] विषाद-प्राप्त, खिन्न; (षड्)।

उन्नइ देखो **उण्णइ** ; (काल; सुपा २५७; प्रासू २८ ; सार्ध ३४)।

उन्नइज्जमाण देखो **उन्नी**।

उन्नइय वि [**उन्नीत**] ऊँचा लिया हुआ; (पउम १०५, ५७)।

उन्नंद सक [**उद्+नन्द्**] अभिनन्दन करना। कवकृ—"हियमालासहस्सेहिं **उन्नंदिज्जमाणे**" (कप्प)।

उन्नय देखो **उण्णय** ; (सुपा ४७६ ; सम ७१; कप्प)।

उन्ना देखो **उण्णा**। °**मय** वि [°**मय**] ऊन का बना हुआ; (सुपा ६४१)।

उन्नाडिय न [**उन्नाटित**] हर्ष-द्योतक आवाज ; (स ३७६)।

उन्नाम पुं [**उन्नाम**] १ ऊँचाई। २ अभिमान, गर्व; (सम ७१)।

उन्नामिअ वि [**उन्नमित**] ऊँचा किया हुआ ; (पाअ ; महा ; स ३७७)।

उन्नालिअ वि [**दे**] देखो **उण्णालिअ** ; "उन्नालिअं उन्नामिअं" (पाअ)।

उन्नाह पुं [**उन्नाह**] ऊँचाई ; (पाअ)।

उन्निअ देखो **उण्णिअ**=और्णिक; (ओघ ७०५)।

उन्निक्खमण न [**उन्निष्क्रमण**] दीक्षा छोड़ कर फिर गृहस्थ होना, साधुपन छोड़कर फिर गृहस्थ बनना ; (उप १३० टी; ३९६)।

उन्नी देखो **उण्णी**। कवकृ—**उन्नइज्जमाण**; (कप्प)।

उन्हाल (अप) पुं [**उष्णकाल**] ग्रीष्म ऋतु; (भवि)।

उपंत न [**उपान्त**] १ पीछला भाग ; २ वि. समीपस्थ ; (गा ९६३)।

उपरि } देखो **उवरि** ; (विसे १०२१; षड्)।
उपरिं }

उपरिल्ल देखो **उवरिल्ल** ; (षड्)।

उपवज्जमाण देखो **उववाय**=उप+वादय्।

उपसप्प देखो **उवसप्प**। उपसप्पइ ; (षड्)। संकृ—**उपसप्पिय** ; (नाट)।

उपाणहिय पुंस्त्री [**उपानत्**] जूता ; "अन्नदिणे जंपाणेपाणहिए मुत्तमारुढा" (सुपा ३९२)। "तह तं निउपाणहियाउवि वाहिस्सं" (सुपा ३९२)।

उप्प देखो **ओप्प**=अर्पय्। उप्पेइ; (पि १०४; हे १, २६९)।

उप्पइअ वि [**उत्पतित**] १ उँचा गया हुआ, उड़ा हुआ "सेवि य आगासे उप्पइए" (उवा ; सुर ३, ६६)। २ उन्नत, ऊँचा ; (आचा)। ३ उद्भूत, उत्पन्न; (उत्त २)। ४ न. उत्पतन, उड़ना ; (औप)।

उप्पइअ वि [**उत्पाटित**] उत्थापित, उठाया हुआ; "खुडिउप्पइअमुणालं दट्ठूण पिअं व सिढिलवलअं णलिणिं" (से १, ३०)।

उप्पइअव्व } देखो **उप्पय**=उत्+पत्।
उप्पइउं }

उप्पंक वि [**दे**] १ बहु, अत्यन्त ; २ पुं. पङ्क, कीचड, कादा ; ३ उन्नति ; (दे १, १३०)। ४ समूह, राशि; (दे १, १३० ; पाअ ; गउड ; स ४३७)।

उप्पंग पुं [**दे**] समूह; राशि ;

"णवपल्लवं विसण्णा, पहिआ पेच्छंति चूअरुक्खस्स।
कामस्स लेहिउप्पंगराइअं हत्थभल्लं व ॥" (गा ५८५)।

उप्पज्ज अक [**उत् + पद्**] उत्पन्न होना। उप्पज्जंति; (कप्प)। वकृ—**उप्पज्जंत, उप्पज्जमाण**; (से ८, ५५; सम्म १३४; भग; विसे ३३२२)।

उप्पड सक [**उत् + पत्**] उड़ना, ऊँचा जाना, कूदना; (प्रामा)।

उप्पड पुं [**उत्पट**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष; (राज)।

उप्पडिअ देखो **उप्पइअ**; (नाट)।

उप्पण सक [**उत् + पू**] धान्य वगैरः को सूर्प आदि से साफ-सुथरा करना। कर्म—"साली वीही जवा य लुव्वंतु मलिज्जंतु उप्पणिज्जंतु य" (पगह १, २)।

उप्पणण न [**उत्पवन**] सूर्प आदि से धान्य वगैरः को साफ-सुथरा करना; (दे १, १०३)।

उप्पण्ण त्रि [**उत्पन्न**] उत्पन्न, संजात, उद्भूत; (भग; नाट)।

उप्पत्त वि [**दे**] १ गलित; २ विरक्त; (षड्)।

उप्पत्ति स्त्री [**उत्पत्ति**] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव; (उव)।

उप्पत्तिया स्त्री [**औत्पत्तिकी**] बुद्धि विशेष, विना ही शास्त्राभ्यासादि के होने वाली बुद्धि, स्वाभाविक मति; (ठा ४, ४; णाया १, १)।

उप्पन्न देखो **उप्पण्ण**; (उवा; सुर २, १६०)।

उप्पय अक [**उत्+पत्**] उड़ना, कूदना। उप्पयइ; (महा)। वकृ—**उप्पयंत, उप्पयमाण**; (उप १४२ टी; णाया १, १६)। संकृ—**उप्पइत्ता**; (औप)। कृ—**उप्पइअव्व**; (से ६, ७८)। हेकृ—**उप्पइउं**; (सुर ६, २२२)।

उप्पय देखो **उप्पव**। वकृ—**उप्पअंत**; (से ५, ५६)।

उप्पय पुं [**उत्पात**] १ उत्पतन, ऊँचे जाना, कूदना, उड्डयन। २ उत्पत्ति; "अवट्ठिए चले मंदपडिवाउप्पयाई य" (विसे ५७७)। °**निवय** पुं [°**निपात**] १ ऊँचा-नीचा होना;

"खरपवणुद्धुयसायरतरंगवेगेहिं हीरए नावा।
गुरुकल्लोलवसुट्ठियनंगरनियरेण धरियावि ॥
अणवरयतरंगेहिं उप्पयनिवयं कुणंतिया वहइ"

(सुर १३, १६७)। २ नाट्य-विधि का एक प्रकार; (जीव ३)।

उप्पयण न [**उत्पतन**] ऊँचा जाना, उड्डयन; (ठा १०; से ६, २४)।

उप्पयण न [**उत्प्लवन**] जल में गोता लगाना; (से ५, ६०)।

उप्परिं (अप) देखो **उवरि**; (हे ४, ३३४; पिंग)।

उप्परिवाडि, °डी स्त्री [**उत्परिपाटि, °टी**] उलटा क्रम, विपर्यास, विपर्यय; "उप्परिवाडीवहणे चाउम्मासा भवे लहुगा" (गच्छ १)।

उपरोप्पर अ [**उपर्युपरि**] ऊपर ऊपर; (स १४०)।

उप्पल न [**उत्पल**] १ कमल, पद्म; (णाया १, १; भग)। २ विमान-विशेष; (सम ३८)। ३ संख्या-विशेष, 'उप्पलंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४)। ४ सुगन्धि द्रव्य-विशेष "परमुप्पलगंधिए" (जं ३)। ५ पुं. परिव्राजक-विशेष; (आचू १)। ६ द्वीप-विशेष; ७ समुद्र-विशेष; (पगण १५)। °**वेंटग** पुं [°**वृन्तक**] आजीविक मत का एक साधु-समाज; (औप)।

उप्पलंग न [**उत्पलाङ्ग**] संख्या-विशेष, 'हुहुय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४)।

उप्पला स्त्री [**उत्पला**] १ एक इन्द्राणी, काल-नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १)। २ इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन; (णाया २, १)। ३ स्वनाम ख्यात एक श्राविका; (भग १२, १)। ४ एक पुष्करिणी; (जीव ३)।

उप्पलिणी स्त्री [**उत्पलिनी**] कमलिनी, कमल का गाछ; (पगण १)।

उप्पल्ल वि [**दे**] अध्यासित, आरूढ; (षड्)।

उप्पव सक [**उत्+प्लु**] १ गोता लगाना, तैरना। २ ऊँचा जाना, उड़ना। वकृ—**उप्पवंत, उप्पवमाण**; (से ५, ६१; ८, ८६)।

उप्पवइय वि [**उत्प्रव्रजित**] जिसने दीक्षा छोड़ दी हो वह, साधु होकर फिर गृहस्थ बना हुआ; (स ४८५)।

उप्पह पुं [**उत्पथ**] उन्मार्ग, कुमार्ग; "पंथाउ उप्पहं नेंति" (निचू ३; से ४, २६; हेका २५६)। °**जाइ** वि [°**यायिन्**] उलटे रास्ते जाने वाला, विपथ-गामी; (ठा ४, ३)।

उप्पा स्त्री. देखो **उप्पाय**=उत्पाद; (ठा १—पत्र १६; ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

उप्पाइ वि [**उत्पादिन्**] उत्पन्न होने वाला; (विसे २८१६)।

उप्पाइत्ता देखो **उप्पाय**=उत्+पादय्।

उप्पइत्तु वि [उत्पादयितृ] उत्पादक, उत्पन्न करने वाला; (ठा ७)।

उप्पाइय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ ; " उप्पाइयाविच्छिण्णकोउहलत्ते " (राय)।

उप्पाइय वि [औत्पातिक] १ अस्वाभाविक, कृत्रिम; "उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं " २ आकस्मिक, अकस्मात् होने वाला "उप्पाइया वाही" (राज)। ३ न. अनिष्ट-सूचक आकस्मिक उपद्रव, उत्पात ;

"भो भो नावियपुरिसा सकन्नधारा समुज्जया होह।
दीसइ कयंतवयणं व भीममुप्पाइयं जेण"
(सुर १३, १८६)।

उप्पाएउं
उप्पाएंत
उप्पाएत्तए } देखो **उप्पाय**= उत्+पादय्।

उप्पाड सक [उत् + पाटय्] १ ऊपर उठाना ; २ उखेड़ना, उन्मूलन करना। उप्पाडेह; (पराह १, १ ; स ६५ ; काल)। कृ—**उप्पाडणिज्ज** ; (सुपा २४६)। संकृ—**उप्पाडिय** ; (नाट)।

उप्पाड सक [उत्+पादय्] उत्पन्न करना। संकृ—**उप्पाडिऊण** ; (विसे ३३२ टी)।

उप्पाड पुं [उत्पाट] उन्मूलन, उत्खनन; "नयणोप्पाडो" (उप १४६ टी; ६८६ टी)।

उप्पाडण न [उत्पाटन] १ उत्थापन, ऊपर उठाना ; २ उन्मूलन, उत्खनन ; (स २६६ ; राज)।

उप्पाडिय वि [उत्पाटित] १ ऊपर उठाया हुआ ; (पात्र ; प्रारू)। २ उन्मूलित ; (आक)।

उप्पाडिय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ; "उप्पाडियणाणं खंदगसीसाण तेसिं नमो" (भाव १३)।

उप्पादय वि [उत्पादक] उत्पन्न कर्ता ; (प्रयौ १७)।

उप्पादीअमाण देखो **उप्पाय**=उत्+पादय्।

उप्पाय सक [उत् + पादय्] उत्पन्न करना, बनाना। उप्पाएहि ; (काल)। वकृ—**उप्पाएंत, उप्पायंत** ; (सुर २, २२ ; ६, १३)। संकृ—**उप्पाएत्ता** ; (भग)। हेकृ—**उप्पाइत्ता, उप्पाएउं, उप्पाएत्तए**; (राज, पि ४६५; गाया १,४)। कवकृ—**उप्पादीअमाण** (शौ); (नाट)।

उप्पाय पुंन [उत्पात] १ उत्पतन, ऊर्ध्व-गमन ; "न सग्गं गंतुमणा सिक्खंति नहंगणुप्पायं" (सुपा १८०)। २ आकस्मिक उपद्रव ; "पवहणं च पासइ समुद्दमज्झे उप्पाएण छम्मासे भमंतं ताहे अणेण तं उत्पायं उवसामियं" (महा)। ३ आकस्मिक उपद्रव का प्रतिपादक शास्त्र, निमित्त-शास्त्र-विशेष; (ठा ६; सम ४७; पराह १, ४) °**निवाय** पुं [°**निपात**] चढना और उतरना ; (स ४११)।

उप्पाय पुं [उत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव; (सुपा ६; कुमा)। °**पव्वय** पुं [**पर्वत**] एक प्रकार के पर्वत, जहां आकर कइ व्यन्तर-जातीय देव-देवियां क्रीडा के लिए विचित्र प्रकार के शरीर बनाते हैं ; (सम ३३; जीव ३)। °**पुव्व** न [°**पूर्व**] प्रथम पूर्व, ग्रन्थांश-विशेष, बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग ; (सम २६)।

उप्पायग वि [उत्पादक] १ उत्पन्न करने वाला; २ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, कीट-विशेष ; (वव १, ८)।

उप्पायण न [उत्पादन] १ उत्पादन; उपार्जन; (ठा ३, ४)। २ वि. उत्पादक, उपार्जक ; (पउम ३०, ४०)।

उप्पायणया
उप्पायणा } स्त्री [उत्पादना] १ उपार्जन, उत्पन्न करना ; २ जैन साधु की भिक्षा का एक दोष ; (ओघ ७४६ ; ठा ३, ४ ; पिण्ड १)।

उप्पाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उप्पालइ ; (हे ४, २)। उप्पालसु ; (कुमा)।

उप्पाव सक [उत्+प्लावय्] १ गोता खिलाना; २ कूदाना, उड़ाना। उप्पावेइ; (हे २, १०६)। कवकृ—**उप्पियमाण**; (उवा)।

उप्पाहल न [दे] उत्कंठा, उत्सुकता ; (पात्र)।

उप्पि सक [अर्पय्] देना। उप्पिउ; (कप्प)।

उप्पिं अ [उपरि] ऊपर ; "कहि णं भंते ! जोइसिआ देवा परिवसंति ? गोयमा ! उप्पिं दीवसमुद्दाणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए" (जीव ३ ; णाया १, ६ ; ठा ३, ४ ; औप)।

उप्पिंगलिआ स्त्री [दे] हाथ का मध्य भाग, करोत्संग; (दे १, ११८)।

उप्पिंजल न [दे] १ सुरत, संभोग ; २ रज, धूली; ३ अपकीर्ति, अपयश ; (दे १, १३५)।

उप्पिंजल वि [उत्पिञ्जल] अति-आकुल, व्याकुल ; (कप्प)।

उप्पिंजल अक [उत्पिञ्जलय्] आकुल की तरह आचरण करना। वकृ—**उप्पिंजलमाण** ; (कप्प)।

उप्पिच्छ [दे] देखो **उप्पित्थ**। "आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोसभरियं च" "भीयं दुयमुप्पिच्छमुत्तालं च कमसो

मुणेयव्वं" (जीव ३)। "हत्थी अह तस्स सवडहुत्तो पहाविओ आयउप्पिच्छो", "रक्खससेन्नंपि आयरुप्पिच्छं" (पउम ८, १७५ ; १२, ८७) 'उप्पिच्छमंथरगईहिं" (भत ११६)।

उप्पिण देखो **उप्पण**। वकृ—उप्पिणिंत; (सुपा ११)।

उप्पित्थ वि [**दे**] १ त्रस्त, भीत ; (दे १, १२६ ; से १०, ६१ ; स ५७४ ; पुप्फ ४४३ ; गउड) "किं कायरविमड्ढा सरणविहूणा भयुप्पित्था" (सुर १२, १६०)। २ कुपित, क्रुद्ध ; ३ विधुर, आकुल; (दे १, १२६ ; पाअ)।

उप्पिय सक [**उत्+पा**] १ आस्वादन करना । २ फिर २ श्वास लेना। वकृ—**उप्पियंत**; (पण्ह १,३—पत्र ५५; राज)।

उप्पिय वि [**अर्पित**] अर्पण किया हुआ; (हे १, २६९)।

उप्पियण न [**उत्पान**] फिर २ श्वास लेना ; (राज)।

उप्पियमाण देखो **उप्पाव**।

उप्पिलाव देखो **उप्पाव**। उप्पिलावेइ। वकृ—**उप्पिलावंत** "जे भिक्खू सणं नावं उप्पिलावेइ, उप्पिलावंतं वा साइज्जइ" (निचू १८)।

उप्पीड पुं [**दे. उत्पीड**] समूह, राशि; (से ४, ३७; ८,३)।

उप्पीडण न [**उत्पीडन**] १ कस कर बाँधना। २ दबाना; (से ८, ६७)।

उप्पील सक [**उत्+पीडय्**] १ कस कर बाँधना। २ उठवाना। "सणं वा णावं उप्पीलावेज्जा ; (आचा २, ३, १, ११)। उप्पीलवेज्जा ; (पि २४०)।

उप्पील पुं [**दे**] १ संघात; समूह ; (दे १, १२६ ; सुपा ६१; सुर ३, ११६; वज्जा ६०; पुप्फ ७३; धम्म १२ टी)। "हुयासणो देहे सव्वं जालुप्पीलो विणासए" (महा)। २ स्थपुट-विषमोन्नत प्रदेश ; (दे १, १२६)।

उप्पीलण न [**उत्पीडन**] पीडा; उपद्रव; (स २७२)।

उप्पीलिय वि [**उत्पीडित**] कस कर बाँधा हुआ "उप्पीलिय-चिंधपट्टगहियाउहपहरणा" (पण्ह १, ३; विपा १, २)।

उप्पुअ वि [**उत्प्लुत**] उच्छलित, कूदा हुआ; (से ६, ४८; पण्ह १, ३)।

उप्पुंसिअ देखो **उप्पुसिअ**; (से ६, ८५)।

उप्पुणिअ वि [**उत्पूत**] सूर्प से साफ-सूथरा किया हुआ ; (पाअ)।

उप्पुण्ण वि [**उत्पूर्ण**] पूर्ण, व्याप्त ; (स २५)।

उप्पुलइअ वि [**उत्पुलकित**] रोमाञ्चित; (स २८१)।

उप्पुसिअ वि [**उत्प्रोञ्छित**] लुप्त, प्रोञ्छित; (से ६, ८५; गउड)।

उप्पूर पुं [**उत्पूर**] १ प्राचुर्य; (पण्ह १, ३)। २ प्रकृष्ट प्रवाह ; (औप)।

उप्पेक्ख (अप) देखो **उविक्ख**। उप्पेक्ख ; (पिंग)।

उप्पेक्ख सक [**उत्प्र+ईक्ष्**] संभावना करना, कल्पना करना। उप्पेक्खामि ; (स १४७)। उप्पेक्खेमि ; (स ३४६)।

उप्पेक्खा स्त्री [**उत्प्रेक्षा**] १ अलंकार-विशेष ; २ वितर्कणा, संभावना ; (गा ३३९)।

उप्पेक्खिअ वि [**उत्प्रेक्षित**] संभावित, विकल्पित; (दे १, १०९)।

उप्पेय न [**दे**] अभ्यंग, तैलादि की मालिस; "पुव्वं च मंगलट्ठा उप्पेयं जइ करेइ गिहियाणं" (वव १, ६)।

उप्पेल सक [**उद्+नमय्**] ऊँचा करना, उन्नत करना। उप्पेलइ ; (हे ४, ३६)।

उप्पेलिअ वि [**उन्नमित**] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ ; (कुमा)।

उप्पेस पुं [**उत्पेष**] त्रास, भय, डर ; (से १०, ६१)।

उप्पेहड वि [**दे**] उद्भट, आडम्बर वाला ; (दे १, ११६ ; पाअ ; स ४४९)।

°**उप्फ** देखो **पुप्फ** ; (गा ६३९)।

उप्फंदोल वि [**दे**] चल, अस्थिर ; (दे १, १०२)।

उप्फाल पुं [**दे**] खल, दुर्जन ; (दे १, ९० ; पाअ)

उप्फाल सक [**उत्+पाटय्**] १ उठाना। २ उखेड़ना। उप्फालेइ ; (हे २, १७४)।

उप्फाल सक [**कथ्**] कहना, बोलना। उप्फालेइ ; (हे २, १७४)।

उप्फाल वि [**कथक**] कहने वाला, सूचक ; (स ६४४)।

उप्फालिअ वि [**कथित**] १ कथित ; २ सूचित ; (पाअ; उप ७२८ टी ; स ४७८)।

उप्फिड अक [**उत्+स्फिट्**] कुण्ठित होना, असमर्थ होना। उप्फिडइ, उप्फेडइ; "एमाइविगप्पणेहिं वाहिज्जमाणो उप्फिड-(प्फे)-डइ परसू" (महा)।

उप्फिडिय वि [**उत्स्फटित**] १ कुण्ठित। २ बाहर निकला हुआ ; "कत्थइ नक्कुक्कत्तियसिप्पिपुडुप्फिडियमोत्तियाइन्नो" (सुर १३, २१३)।

उप्फुंकिआ स्त्री [**दे**] धोबिन, कपड़ा धोने वाली ; (दे १, ११४)।

उप्फुंडिअ वि [**दे**] आस्तृत, बिछाया हुआ ; (दे १,११३)

उप्फुण्ण वि [दे] आपूर्ण, भरा हुआ, व्याप्त ; (दे १, ९२; सुर १, २३३ ; ३, २१५) ।

उप्फुल्ल वि [उत्फुल्ल] विकसित ; (पाअ ; से ६, ८६)।

उप्फुल्लिआ स्त्री [उत्फुल्लिका] क्रीड़ा विशेष,पाँव पर बैठ कर वारंवार ऊँचा नीचा होना ;

"उप्फुल्लिआइ खेल्लउ, मा णं वारेहि होउ परिऊढा ।
मा जहणभारगरुई, पुरिसाअंती किलिम्मिहिइ"
(गा १९६) ।

उप्फुस सक [उत्+स्पृश्] सिंचना, छिटकना । संकृ—**उप्फुसिऊण** ; (राज) ।

उप्फेणउप्फेणिय क्रिवि [दे] क्रोध-युक्त प्रबल वचन से; "उप्फेणउप्फेणियं सीहरायं एवं वयासी" (विपा १, ९—पत्र ९०) ।

उप्फेस पुं [दे] १ त्रास, भय ; (दे १,९४) । २ मुकुट, पगड़ी, शिरोवेष्टन ; "पंच रायककुहा पण्णत्ता, तं जहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं उवाहणाउ वालवियणी" (ठा ५, १—पत्र ३०३ ; औप ; आचा २, ३, २, २) ।

उप्फोअ पुं [दे] उद्गम, उदय ; (दे १, ९१) ।

उबुस सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्धि करना, साफ करना । **उबुसइ** ; (षड्) ।

उब्बंध सक [उद्+बन्ध्] १ फाँसी लगाना, फाँसी लगा कर मरना । २ वेष्टन करना । वकृ—"जलनिहितडम्मि दिट्ठा **उब्बंधंती** इहप्पाणं" (सुपा १६०) । संकृ—**उब्बंधिअ, उब्बंधिऊण** ; (नाट ; पि २७० ; स ३४६) ।

उब्बंधण न [उद्बन्धन] फाँसी लगाना, उल्लम्बन ; (पण्ह २, ५) ।

उब्बण वि [उल्बण] उत्कट ; (पि २६६) ।

उब्बद्ध वि [उद्बद्ध] १ जिसने फाँसी लगाई हो वह, फाँसी लगा कर मरा हुआ । २ वेष्टित; "भुअंगसंघायउब्बद्धो" (सुर ८, ५७) । ३ शिक्षक के साथ शर्तों से बँधा हुआ, शिक्षक के आयत्त ; (ठा ३),

"सिप्पाई सिक्खंतो, सिक्खावेंतस्स देइ जा सिक्खा ।
गहियम्मिवि सिक्खम्मि, जं चिरकालं तु उब्बद्धो" (बृह) ।

उब्बिंब वि [दे] १ खिन्न, उद्विग्न ; २ शून्य ; ३ क्रान्त, ४ प्रकट वेष वाला ; ५ भीत, डरा हुआ ; ६ उद्भट ; (दे १, १२७ ; वज्जा ६२) ।

उब्बिंबल न [दे] कलुष जल, मैला पानी ; (दे १, १११) ।

उब्बिबिर वि [दे] खिन्न, उद्विग्न ; (कप्पू) ।

उब्बुक्क सक [उद्+बुक्क्] बोलना, कहना । उब्बुक्कइ ; (हे ४, २) ।

उब्बुक्क न [दे] १ प्रलपित, प्रलाप ; २ संकट ; ३ बलात्कार ; (दे १, १२८) ।

उब्बुड अक [उद्+ब्रुड्] तैरना ।

उब्बुड पुं [उद्ब्रुड] तैरना । °**निबुड**, °**निब्बुड्डण**
उब्बुड्डु न [**निब्रुड,°ण**] उबडुब करना ; (पण्ह १, ३ ; उप १२८ टी) ।

उब्बुड्डु वि [उद्ब्रुडित] उन्मग्न, तीर्ण ; (गा ३७ ; स ३९०) ।

उब्बुड्डण न [उद्ब्रुडन] उन्मज्जन ; (कप्पू) ।

उब्बूर वि [दे] १ अधिक, ज्यादः ; २ पुं. संघात, समूह ; ३ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश ; (दे १, १२६) ।

उब्भ सक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना । उब्भेउ ; (वज्जा ६४) ; उब्भेह ; (महा) ।

उब्भ देखो **उड्ढ** ; (हे २, ५९ ; सुर २, ६ ; षड्) ।

उब्भंड पुं [उद्भाण्ड] १ उत्कट भाँड, बहुरूपा, निर्लज्ज हंड़ा ;

"खरउत्ति कहं जाणसि देहागारा कहिंति से हंदि ।
छिक्कोवण उब्भंडो णीयासि दारुणसहावो ॥" (ठा ६ टी) ।

२ न. गाली, कुत्सित वचन ; "उब्भंडवयण—" (भवि) ।

उब्भंत वि [दे] ग्लान, बिमार ; (दे १, ९५ ; महा) ।

उब्भंत वि [उद्भ्रान्त] १ आकुल, व्याकुल, खिन्न ; (दे १, १४३) ;

"अवलंबह मा संकह ण इमा गहलंघिआ परिब्भमइ ।
अत्थक्कगज्जिउब्भंतहित्थहिअआ पहिअजाआ"
(गा ३८६) ।

"भवभमणुब्भंतमाणसा अम्हे" (सुर १५, १२३) । २ मूर्च्छित ; (से १, ८) । ३ भ्रान्ति-युक्त, भौंचक्का, चकित ; (हे २, १६४) ।

उब्भग्ग वि [दे] गुण्ठित, व्याप्त ; "तिमिरोब्भग्गणिसाए" (दे १, ९५ ; नाट) ।

उब्भज्जि स्त्री [दे] कोद्रव-समूह ; (राज) ।

उब्भड वि [उद्भट] १ प्रबल, प्रचण्ड "उब्भडपवणपकंपिरजयप्पडागाइ अइपयडं" (सुपा ४६) "उब्भडकल्लोलभीसणारावे" (णमि ४) । २ भयंकर विकराल ; (भग ७, ६) । ३ उद्धत, आडंबरी ; (पाअ) ।

" अइरोसो अइतोसो अइहासो दुज्जणेहिं संवासो ।
अइउब्भडो य वेसो पंचवि गरुयंपि लहुअंति ॥" (धम्म)।

उब्भम पुं [**उद्भ्रम**] १ उद्वेग ; २ परिभ्रमण ; (नाट)।

उब्भव अक [**उद् + भू**] उत्पन्न होना । उब्भवइ ; (पि ४७५ ; नाट)। वकृ—**उब्भवंत** ; (सुपा ५७१; ६५६)।

उब्भव अक [**ऊर्ध्वय्**] ऊँचा करना, खड़ा करना।

उब्भव पुं [**उद्भव**] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव ; (विसे; णाया १, २)।

उब्भविय वि [**ऊर्ध्वित**] ऊँचा किया हुआ; (उप पृ १३०; वज्जा १४)।

उब्भाअ वि [**दे**] शान्त, ठंढा ; (दे १, ९६)।

उब्भाम पुं [**उद्भ्राम**] १ परिभ्रमण ; (ठा ४)। २ वि. परिभ्रमण करने वाला ; (वव १, १)।

उब्भामइल्ला स्त्री [**उद्भ्रामिणी**] स्वैरिणी, कुलटा स्त्री ; (वव १, ४ ; बृह ६)।

उब्भामग पुं [**उद्भ्रामक**] १ पारदारिक, परस्त्री-लम्पट ; (ओघ ६० भा)। २ वायु-विशेष, जो तृण वगैरः को ऊपर ले उड़ता है ; (जी ७)। ३ वि. परिभ्रमण करने वाला ; (वव १, १)।

उब्भामिगा } स्त्री [**उद्भ्रामिका**] कुलटा स्त्री, स्वैरिणी ;
उब्भामिया } (वव १, ६ ; उप पृ २६४)।

उब्भालण न [**दे**] १ सूर्प आदि से साफ-सुथरा करना, उत्पवन ; २ वि. अपूर्व, अद्वितीय ; (दे १, १०३)।

उब्भालिअ वि [**दे**] सूर्प आदि से साफ किया हुआ, उत्पूत ; " उब्भालिअं उप्पुणिअं" (पाअ)।

उब्भाव अक [**रम्**] क्रीड़ा करना, खेलना । उब्भावइ ; (हे ४, १६८ ; षड्)। वकृ—**उब्भावंत** ; (कुमा)।

उब्भावणया } स्त्री [**उद्भावना**] १ प्रभावना, गौरव,
उब्भावणा } उन्नति; "पवयणउब्भावणया" (ठा १०—पत्र ५१४)। २ उत्प्रेक्षा, वितर्कणा ; "असब्भावउब्भावणाहिं" (णाया १, १२—पत्र १७४)। ३ प्रकाशन, प्रकटीकरण; (णंदि)।

उब्भाविअ न [**रमण**] सुरत, क्रीड़ा, संभोग ; (दे १, ११७)।

उब्भास सक [**उद्+भासय्**] प्रकाशित करना । वकृ—**उब्भासंत, उब्भासेंत** ; (पउम २८, ३६ ; ३, १५५)

उब्भासिय वि [**उद्भासित**] प्रकाशित ; (हेका २८२);

"भवणाओ नीहरंते जिणम्मि चाउव्विहेहिं देवेहिं ।
इंतेहि य जंतेहि य कहमिव उब्भासियं गयणं ॥ "
(सुपा ७७)।

उब्भासुअ वि [**दे**] शोभा-हीन ; (दे १, ११०)।

उब्भासेंत देखो **उब्भास**।

उब्भि देखो **उब्भिय**=उद्भिद् ; (आचा)।

उब्भिउडि वि [**उद्भ्रुकुटि**] भौं चढ़ाया हुआ; (गउड)।

उब्भिंद सक [**उद्+भिद्**] १ ऊँचा करना, खड़ा करना । २ विकसित करना । ३ अङ्कुरित करना । ४ खोलना । कर्म—उब्भिज्जंति । वकृ—**उब्भिंदमाण**; (आचा २,७)। कवकृ—
" भत्तिभरनिब्भर**उब्भिज्जमाण**घणपुलयपूरियसरीरा "
(सुपा ६५६ ६७ ; भग १६, ६)। संकृ—**उब्भिंदिय, उब्भिंदिउं** ; (पंचा १३; पि ५७४)।

उब्भिग देखो **उब्भिय**=उद्भिद् ; (पण्ह १, ४)।

उब्भिडण न [**उद्भेदन**] लग कर अलग होना, आघात कर पीछे हटना;

"जेसु चिय कुंठिज्जइ, रहसुब्भिडणमुहलो महिहरेसु ।
तेसु चेय णिसिज्जइ, पहिरोहंदोलिरो कुलिसो" ॥
(गउड)।

उब्भिण्ण } वि [**उद्भिन्न**] १ अङ्कुरित; (ओघ ११३) ;
उब्भिन्न } "उब्भिन्ने पाणियं पडियं" (सुर ७, ११४)। २ उद्घाटित, खोला हुआ ; ३ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष, मिट्टी वगैरः से लिप्त पात्र को खोल कर उसमें से दी जाती भिक्षा; "छगणाइणोवउत्तं उब्भिंदिय जं तमुब्भिण्णं" (पंचा १३; ठा ३, ४)। ४ ऊँचा हुआ, खड़ा हुआ "हरिसवसुब्भिन्नरोमंचा" (महा)।

उब्भिय वि [**उद्भिद्**] पृथ्वी को फाड कर उगनेवाली वनस्पति; (पण्ह १, ४)।

उब्भिय वि [**ऊर्ध्वित**] ऊँचा किया हुआ, खड़ा किया हुआ; (सुपा ८९ ; महा ; वज्जा ८८)।

उब्भीकय वि [**ऊर्ध्वीकृत**] ऊँचा किया हुआ "उब्भीकयबाहुजुओ" (उप ५९७ टी)।

उब्भुअ अक [**उद्+भू**] उत्पन्न होना । उब्भुअइ ; (हे ४, ६०)।

उब्भुआण वि [**दे**] १ उबलता हुआ, अग्नि से तप्त जो दूध वगैरः उछलता है वह ; (दे १, १०५ ; ७, ८१)।

उब्भुग्ग वि [**दे**] चल, अस्थिर ; (दे १, १०२)।

उब्भुत्त सक [**उत्+क्षिप्**] ऊँचा फेंकना। उब्भुत्तइ ; (हे ४, १४४)।

उब्भुत्तिअ वि [**उत्क्षिप्त**] ऊँचा फेंका हुआ ; (कुमा)।

उब्भुत्तिअ वि [**दे**] उद्दीपित, प्रदीपित ; (पाअ)।

उब्भूअ वि [**उद्भूत**] १ उत्पन्न ; (सुर ३, २३६)। २ आगन्तुक कारण ; (विसे १४७६)।

उब्भूइआ स्त्री [**औद्भूतिकी**] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी जो किसी आगन्तुक प्रयोजन के उपस्थित होने पर बजायी जाती थी ; (विसे १४७६)।

उब्भेअ पुं [**उद्भेद**] उद्गम, उत्पत्ति ; "उम्हाअंतगिरियडं-सीमागिव्वडियकंदलुब्भेयं" (गउड) ; "अभिणवजोव्वणउब्भे-यसुन्दरा सयलमणहरारावा" (सुर ११, ११६)।

उब्भेइम वि [**उद्भेदिम**] स्वयं उत्पन्न होने वाला ; "उब्भेइमं पुण सयंरुहं जहा सामुद्दं लोणं" (निचू ११)।

उभओ अ [**उभतस्**] द्विधा ; दोनों तरह से, दोनों ओर से ; (उव ; औप)।

उभय वि [**उभय**] युगल, दो, दोनों ; (ठा ४, ४)। °**त्थ** अ (°**त्र**) दोनों जगह ; (सुपा ६४८)। °**लोग** पुं [°**लोक**] यह और पर जन्म ; (पंचा ११)। °**हा** अ [°**था**] दोनों तरफ से, द्विधा ; (सम्म ३८)।

उमच्छ सक [**वञ्च्**] ठगना, धूतना। उमच्छइ ; (हे ४, ९३)। वकृ—**उमच्छंत** ; (कुमा)।

उमच्छ सक [**अभ्या+गम्**] सामने आना। उमच्छइ ; (षड्)।

उमा स्त्री [**उमा**] १ गौरी, पार्वती ; (पाअ)। २ द्वितीय वासुदेव की माता ; (सम १५२)। ३ गणिका-विशेष ; (आचू)। ४ स्त्री-विशेष ; (कुमा)। °**साइ** पुं [°**स्वाति**] स्वनाम-धन्य एक प्राचीन जैनाचार्य और विख्यात ग्रन्थकार ; (सार्ध ५०)।

°**उमार** देखो **कुमार** ; (अच्चु २६)।

उमीस वि [**उन्मिश्र**] मिश्रित; "पलिलसिरपलिअपीवल-करणाघुसणुमीसरुहवणजलं" (कुमा)।

उम्मइअ वि [**दे**] १ मूढ, मूर्ख ; (दे १, १०२)। २ उन्मत्त ; (गा ४६८ ; वज्जा ४२)।

उम्मऊह वि [**उन्मयूख**] प्रभा-शाली ; (गउड)।

उम्मंड पुं [**दे**] १ हठ ; २ वि. उद्वृत्त ; (दे १, १२४)।

उम्मंथिय वि [**दे**] दग्ध, जला हुआ ; (वज्जा ६२)।

उम्मग्ग वि [**उन्मग्न**] १ पानी के ऊपर आया हुआ, तीर्ण ; (राज)। २ न. उन्मज्जन, तैरना, जल के ऊपर आना ; (आचा)। °**जला** स्त्री [°**जला**] नदी-विशेष, जिसमें पत्थर वगैरः भी तैर सकते हैं ; (जं ३)।

उम्मग्ग पुं [**उन्मार्ग**] १ कुपथ, उलटा रास्ता ; विपरीत मार्ग ; (सुर १, २४३ ; सुपा ६५)। २ छिद्र, रन्ध्र ; (आचा)। ३ अकार्य करना ; (आचा)।

उम्मग्गणा स्त्री [**उन्मार्गणा**] छिद्र, विवर ; (आचा)।

उम्मच्छ न [**दे**] १ क्रोध, गुस्सा ; (दे १, १२५ ; से ११, १६ ; २०)। २ वि. असंबद्ध ; ३ प्रकारान्तर से कथित ; (दे १, १२५)।

उम्मच्छर वि [**उन्मत्सर**] १ ईर्ष्यालु, द्वेषी ; (से ११, १४)। २ उद्भट ; (गा १२७ ; ६७५)।

उम्मच्छविअ वि [**दे**] उद्भट ; (दे १, ११६)।

उम्मच्छिअ वि [**दे**] १ रुषित, रुष्ट ; २ आकुल, व्याकुल ; (दे १, १३७)।

उम्मज्ज न [**उन्मज्जन**] तरण, तैरना। °**णिमज्जिया** स्त्री [°**निमज्जिका**] उबडुब करना ; पानी में ऊँचा नीचा होना ; (ठा ३, ४)।

उम्मज्जग पुं [**उन्मज्जक**] १ उन्मज्जन करने वाला, गोता लगाने वाला ; २ उन्मज्जन से ही स्नान करने वाले तापसों की एक जाति ; (औप ; भग ११, ६)।

उम्मड्डा स्त्री [**दे**] १ बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे १, ९७)। २ निषेध, अस्वीकार ; (उप ७२८ टी)।

उम्मण वि [**उन्मनस्**] उत्कण्ठित, उत्सुक ; (उप पृ ५८)।

उम्मत्त पुं [**दे**] १ धतूरा, वृक्ष-विशेष ; २ एरण्ड, वृक्ष-विशेष ; (दे १, ८६)।

उम्मत्त वि [**उन्मत्त**] १ उद्धत, उन्माद-युक्त; (बृह १)। २ पागल, भूताविष्ट ; (पिंड ३८०)। °**जला** स्त्री [°**जला**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३)।

उम्मत्थ सक [**अभ्या+गम्**] सामने आना। उम्मत्थइ ; (हे ४, १६५ ; कुमा)।

उम्मत्थ वि [**दे**] अधो-मुख, विपरीत ; (दे १, ९३)।

उम्मर पुं [**दे**] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी ; (दे १, ६५)।

उम्मरिअ वि [**दे**] उत्खात, उन्मूलित ; (दे १, १०० ; षड्)।

उम्मल वि [**दे**] स्त्यान, कठिन, घट्ट ; (दे १, ९१)।

उम्मलण न [**उन्मर्दन**] मसलना ; (पात्र) ।
उम्मल्ल पुं [**दे**] १ राजा, नृप ; २ मेघ; वारिस; ३ बलात्कार; ४ वि. पीवर, पुष्ट; (दे १, १३१) ।
उम्मल्ला स्त्री [**दे**] तृष्णा ; (दे १, ६४) ।
उम्महण वि [**उन्मथन**] नाशक, विनाश-कारी; (सुर ३,२३१)।
उम्माइअ वि [**उन्मादित**] उन्मत्त किया हुआ; (पउम २४, १५) ।
उम्माण न [**उन्मान**] १ माप, माशा आदि तुला-मान ; (ठा २, ४) । २ जो तौला जाता है वह ; (ठा १०) ।
उम्माद देखो **उम्माय** ; (भग १४, २) ।
उन्मादइत्तअ (शौ) वि [**उन्मादयितृ**] उन्माद कराने वाला; (अभि ४२) ।
उम्माय अक [**उद्+मद्**] उन्माद करना, उन्मत्त होना। वकृ—**उम्मायंत** ; (उप ६८६ टी) ।
उम्माय पुं [**उन्माद**] १ चित्त-विभ्रम, पागलपन ; (ठा ६ ; महा) । २ कामाधीनता, विषय में अत्यन्तासक्ति ; (उत्त १६) । ३ आलिङ्गन ; (विसे) ।
उम्माल देखो **ओमाल** ; (पात्र) ।
उम्मालिय वि [**उन्मालित**] सुशोभित ; (भवि) ।
उम्माह पुं [**उन्माथ**] विनाश; "निसेविज्जंतावि (कामभोगा) करेंति अहियगुम्माहयं" (महा) ।
उम्माहय वि [**उन्माथक**] विनाशक ; "अहो उम्माहयत्तं विसयाणं" (महा ; भवि) ।
उम्माहि वि [**उन्माथिन्**] विनाशक; (महा-टि) ।
उम्माहिय वि [**उन्माथित**] विनाशित ; (भवि) ।
उम्मि पुंस्त्री [**ऊर्मि**] १ कल्लोल, तरंग ; (कुमा; दे ३,६); २ भीड़, जन-समुदाय ; (भग २, १) । °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३) ।
उम्मिंठ वि [**दे**] हस्तिपक-रहित, महावत-रहित, निरंकुश ; "उम्मिंठकरिवरो इव उम्मूलइ नयसमूहं सो" (सुपा ३४८ ; २०३)।
उम्मिय वि [**उन्मित**] प्रमित, "कोडाकोडिजुगुम्मियावि विहिणो हाहा विचित्ता गदी" (रंभा) ।
उम्मिलिर वि [**उन्मीलितृ**] विकासी "तत्थ य उम्मिलिरपढमपल्लवारुणियसयलसाहस्स" (सुपा ८६) ।
उम्मिल्ल अक [**उद्+मील्**] १ विकसित होना । २ खुलना । ३ प्रकाशित होना । उम्मिल्लइ; (गउड) । वकृ—**उम्मिल्लंत**; (से १०, ३१) ।
उम्मिल्ल वि [**उन्मील**] १ विकसित ; (पात्र ; से १०, ५०; स ७६) । २ प्रकाशमान ; (से ११, ६४ ; गउड) ।
उम्मिल्लण न [**उन्मीलन**] विकास, उल्लास ; (गउड) ।
उम्मिल्लिय वि [**उन्मीलित**] १ विकसित; उल्लसित; २ उद्घाटित, खुला हुआ; "तओ उम्मिल्लियाणि तस्स नयणाणि" (आवम; स २८०) । ३प्रकाशित; ४ बहिष्कृत; "पंजरुम्मिल्लियमणिकणगथूमियागे" (जीव ४) । ५ न. विकास; (अणु) ।
उम्मिस अक [**उद्+मिष्**] खुलना, विकसना । वकृ—**उम्मिसंत** ; (विक्र ३४) ।
उम्मिसिय वि [**उन्मिषित**] १ विकसित, प्रफुल्ल ; (भग १४, १) । २ न. विकास, उन्मेष; (जीव ३) ।
उम्मिस्स देखो **उम्मीस** ; (पव ६७) ।
उम्मीलण देखो **उम्मिल्लण** ; (कुमा; गउड) ।
उम्मीलणा स्त्री [**उन्मीलना**] प्रभव, उत्पत्ति ; (राज) ।
उम्मीलिय देखो **उम्मिल्लिय** ; (राज) ।
उम्मीस वि [**उन्मिश्र**] मिश्रित, युक्त ; (सुपा ७८ ; प्रासू ३२) ।
उम्मुअ न [**उल्मुक**] अलात, लूका ; (पात्र) ।
उम्मुंच सक [**उद्+मुच्**] परित्याग करना । वकृ—**उम्मुंचंत** ; (विसे २७५०) ।
उम्मुक्क वि [**उन्मुक्त**] १ विमुक्त, रहित ; "ते वीरा बंधणुम्मुक्का नावकंखंति जीवियं" (सूअ १, ६) । २ उत्क्षिप्त ; (औप) । ३ परित्यक्त ; (आवम) ।
उम्मुग्ग वि [**उन्मग्न**] १ जल के ऊपर तैरा हुआ । २ न. तैरना । °**निमुग्गिया** स्त्री [°**निमग्नता**] उबडुब करना ; "से भिक्खू वा० उदगंसि पवमाणे नो उम्मुग्गनिमुग्गियं करेज्जा" (आचा २, ३, २, ३) ।
उम्मुग्गा } स्त्री. देखो **उम्मग्ग**=उन्मग्न ; (पण्ह १, ३ ;
उम्मुज्जा } पि १०४ ; २३४ ; आचा) ।
उम्मुट्ठ वि [**उन्मृष्ट**] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (पात्र) ।
उम्मुद्दिअ वि [**उन्मुद्रित**] १ विकसित, प्रफुल्ल ; (गउड ; कप्पू) । २ उद्घाटित, खोला हुआ ; "उम्मुद्दिओ समुग्गो, तम्मज्झे लहुसमुग्गयं नियइ" (सुपा १४४) ।
उम्मुयण न [**उन्मोचन**] परित्याग, छोड देना ; (सुर २, १६०) ।
उम्मुयणा स्त्री [**उन्मोचना**] त्याग, उज्झन ; (आव ५) ।
उम्मुह वि [**दे**] दृप्त, अभिमानी ; (दे १, ६६ ;षड्) ।
उम्मुह वि [**उन्मुख**] १ संमुख ; (उप पृ १३४) । २ ऊर्ध्व-मुख ; (से ६, ८२) ।

उम्मूढ वि [उन्मूढ] विशेष मूढ, अत्यन्त मुग्ध । °**विसूइया** स्त्री [°विसूचिका] रोग-विशेष ; (सुपा १६) ।
उम्मूल वि [उन्मूल] उन्मूलन करने वाला, विनाशक ; (गा ३५५) ।
उम्मूल सक [उद्+मूलय्] उखेडना, मूल से उखाड़ फेंकना । उम्मूलेइ ; (महा) । वकृ—**उम्मूलंत, उम्मूलयंत** ; (से १, ४; स ५६६) । संकृ—**उम्मूलिऊण** ; (महा) ।
उम्मूलण न [उन्मूलन] उत्पाटन, उत्खनन ; (पि २७८) ।
उम्मूलणा स्त्री [उन्मूलना] ऊपर देखो ; (पगह १, १) ।
उम्मूलिअ वि [उन्मूलित] उत्पाटित, मूल से उखाड़ा हुआ ; (गा ४७५ ; सुर ३, २४५) ।
उम्मेंठ [दे] देखो **उम्मिंठ** ; (पउम ७१, २६ ; स ३३२) ।
उम्मेस पुं [उन्मेष] उन्मीलन, विकास ; (भग १३, ४) ।
उम्मोयणी स्त्री [उन्मोचनी] विद्या-विशेष ; (सुर १३, ८१) ।
उम्ह पुंस्त्री [ऊष्मन्] १ संताप, गरमी, उष्णता ; "सरीर-उम्हाए जीवइ सयावि" (उप ५९७ टी ; णाया १, १ ; कुमा) । २ भाफ, बाष्प ; (से २, ३२ ; हे २, ७४) ।
उम्हइअ } वि [उष्मायित] संतप्त, गरम किया हुआ ; (से
उम्हविय } ४, १ ; पउम २, ६६ ; गउड) ।
उम्हाअ अक [ऊष्माय्] १ गरम होना । २ भाफ निकालना । वकृ—**उम्हाअंत, उम्हाअमाण** ; (से ६, १० ; पि ५५८) ।
उम्हाल वि [ऊष्मवत्] १ गरम, परितप्त; २ बाष्प-युक्त ; (गउड) ।
उम्हाविअ न [दे] सुरत, संभोग ; (दे १, ११७) ।
उयट्ट देखो **उव्वट्ट**=उद्+वृत् । उयट्टेंति ; भूका—उयट्टिंसु ; (भग) ।
उयट्ट देखो **उव्वट्ट**=उद्वृत्त ।
उयचिय [दे] देखो **उविय**=परिकर्मित ; " उयचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे" (णाया १, १—पत्र १३) ।
उयर वि [उदार] श्रेष्ठ, उत्तम ; "देवा भवंति विमलोयरकंतिजुत्ता" (पउम १०, ८८) ।
उयाइय न [उपयाचित] मनौती ; (सुपा ८ ; ५७८) ।
उयाय वि [उपयात] उपगत ; (राज) ।
उयाहु देखो **उदाहु** ; (सुर १२, ५६ ; काल ; विसे १६१०) ।
उय्यकिअ वि [दे] इकट्ठा किया हुआ ; (षड्) ।
उय्यल वि [दे] अध्यासित, आरूढ ; (षड्) ।
उर पुंन [उरस्] वक्षःस्थल, छाती ; (हे १, ३२) । °**अ**, °**ग** पुंस्त्री [°ग] सर्प, साँप ; (काप्र १७१) ; " उरगगिरिजलणसागरनहतलतरुगणसमो अ जो होइ । भमरमियधरणिजलरुहरविपवणसमो अ सो समणो ।।" (अणु) । °**त्थ** न
°**तव** पुं [°तपस्] तप-विशेष ; (ठा ४) । [°स्त्र] अस्त्र-विशेष, जिसके फेंकने से शत्रु सर्पों से वेष्टित होता है ; (पउम ७१, ६६) । °**परिसप्प** पुंस्त्री [°परिसर्प] पेट से चलने वाला प्राणी (सर्पादि) ; (जो २०) । °**सुत्तिया** स्त्री [°सूत्रिका] मोतियों का हार ; (राज) ।
उर न [दे] आरम्भ, प्रारंभ ; (दे १, ८६) ।
उरंउरेण अ [दे] साक्षात् ; (विपा १, ३) ।
उरत्त वि [दे] खण्डित, विदारित ; (दे १, ६०) ।
उरत्थय न [दे] वर्म, बख्तर ; (पाअ) ।
उरब्भ पुंस्त्री [उरभ्र] मेष, भेड़ ; (णाया १, १ ; पगह १, १) ।
उरब्भिज्ज } वि [उरभ्रीय] १ मेष-संबन्धी ; २ उत्तरा-
उरब्भिय } ध्ययन सूत्र का एक अध्ययन ; " तत्तो समुट्ठियमेयं उरब्भिज्जंति अज्झयणं " (उत्तनि ; राज) ।
उरय पुं [उरज] वनस्पति-विशेष ; (राज) ।
उररि पुं [दे] पशु, बकरा ; (दे १, ८८) ।
उरल देखो **उराल** ; (कम्म १ ; भग ; दं २२) ।
उरविय वि [दे] १ आरोपित ; २ खण्डित, छिन्न ; (षड्) ।
उरस्स वि [उरस्य] १ सन्तान, बच्चा ; (ठा १०) । २ हार्दिक, आभ्यन्तर ; "उरस्सबलसमण्णागय—" (राय) ।
उराल वि [उदार] १ प्रबल ; (राय) । २ प्रधान, मुख्य ; (सुज्ज १) । ३ सुन्दर, श्रे ; (सूअ १, ६) । ४ अद्भुत ; (चंद २०) । ५ विशाल, विस्तीर्ण ; (ठा ५) । ६ न. शरीर-विशेष, मनुष्य और तिर्यञ्च् (पशु-पक्षी) इन दोनों का शरीर ; (अणु) ।
उराल वि [दे] भयंकर, भीष्म ; (सुज्ज १) ।
उरालिय न [औदारिक] शरीर-विशेष ; (सण) ।
उरिआ स्त्री [उड्रिका] लिपि-विशेष ; (सम ३५) ।
उरितिय न [दे. उरसि-त्रिक] तीन सर वाला हार ; (औप) ।

°**उरिस** देखो **पुरिस** ; (गा २८२)।
उरु वि [**उरु**] विशाल, विस्तीर्ण ; (पाअ)।
उरुपुल्ल पुं [**दे**] १ अपूप, पूआ ; २ खिचडी ; (दे १, १३४)।
उरुमल्ल / **उरुमिल्ल** / **उरुसोल्ल** } वि [**दे**] प्रेरित ; (षड् ; दे १, १०८)।
उरोरुह न [**उरोरुह**] १ स्तन, थन ; २ जैन साध्वीओं का उपकरण-विशेष ; (ओघ ३१७ भा)।
°**उल** देखो **कुल** ; (से १, २६ ; गा ११६; सुर ३, ४१ ; महा)।
उलय / **उलव** } पुंन [**उलप**] तृण-विशेष ; (सुपा २८१ ; प्राप्र)।
उलवी स्त्री [**उलपी**] तृण-विशेष ; " उलवी वीरणं " (पाअ)।
उलिअ वि [**दे**] अ-संकुचित नजर वाला, स्फार-दृष्टि ; (दे १, ८८)।
उलित्त न [**दे**] ऊँचा कुँआ ; (दे १, ८६)।
°**उलीण** देखो **कुलीण** ; (गा २५३)।
उलुउंडिअ वि [**दे**] प्रलुठित, विरेचित ; (दे १, ११६)।
उलुओसिअ वि [**दे**] रोमाञ्चित, पुलकित ; (षड्)।
उलुकसिअ वि [**दे**] ऊपर देखो ; (दे १, ११५)।
उलुखंड पुं [**दे**] उल्मुक, अलात, लूका ; (दे १, १०७)।
उलुग पुं [**उलुक**] १ उल्लू, पेचक ; २ देश-विशेष ; (पउम ६८, ६६)।
उलुगी स्त्री [**औलुकी**] विद्या-विशेष ; (विसे २४५४)।
उलुग्ग वि [**अवरुग्ण**] बिमार ; (महा)।
उलुग्ग वि [**दे**] देखो **ओलुग्ग** ; (महा)।
उलुफुंटिअ वि [**दे**] १ विनिपातित, विनाशित; २ प्रशान्त ; (दे १, १३८)।
उलुय देखो **उलूअ** ; " अह कह दिणमणितेयं, उलुयाणं हरइ अंधत्तं " (सट्ठि १०८ ; सुर १, २६ ; पउम ६७, २४)।
उलुहंत पुं [**दे**] काक, कौआ ; (दे १, १०६)।
उलुहलिअ वि [**दे**] अतृप्त, तृप्ति-रहित ; (दे १, ११७)।
उलुहुलअ वि [**दे**] अ-वितृप्त, तृप्ति-रहित ; (षड्)।
उलूअ पुं [**उलूक**] १ उल्लू, पेचक ; (पाअ)। २ वैशेषिक मत का प्रवर्त्तक कणाद मुनि ; (सम्म १४६; विसे २५०८)।
उलूखल देखो **उऊखल** ; (कुमा)।
उलूलु पुं [**उलूलु**] मङ्गल-ध्वनि ; (रंभा)।
उलूहल देखो **उऊखल**; (हे १, १७१ ; महा)।
उल्ल वि [**आर्द्र**] गीला, आर्द्र ; (कुमा; हे १, ८२)।
°**गच्छ** पुं [°**गच्छ**] जैन मुनिओं का गण विशेष ; (कप्प)।
उल्ल सक [**आर्द्रय्**] १ गीला करना, आर्द्र करना। २ अक. आर्द्र होना। उल्लेइ; (हे १, ८२)। वकृ—**उल्लंत, उल्लिंत** ; (गउड)। संकृ—**उल्लेत्ता** ; (महा)।
उल्ल न [**दे**] ऋण, करजा; " तो मं उल्ले धरिऊण " (सुपा ४८६)।
उल्लअण न [**उल्लयन**] अर्पण, समर्पण; (से ११, ५१)।
उल्लंक पुं [**उल्लङ्क**] काष्ठ-मय बारक ; (निचू १२)।
उल्लंघ सक [**उत्+लङ्घ्**] उल्लङ्घन करना, अतिक्रमण करना। उल्लंघेज्ज; (पि ४५६)। हेकृ—**उल्लंघित्तए** ; (भग ८, ३३)।
उल्लंघण न [**उल्लङ्घन**] १ अतिक्रमण, उत्प्लवन ; (पराण ३६)। २ वि. अतिक्रमण करने वाला " उल्लंघणे य चंडे य पावसमणे त्ति वुच्चइ " (उत्त ८)।
उल्लंठ वि [**उल्लण्ठ**] उद्धत ; " जंपंति उल्लंठ-वयणाइं " (काल)।
उल्लंडग पुं [**उल्लण्डक**] छोटा मृदङ्ग, वाद्य-विशेष ; (राज)।
उल्लंडिअ वि [**दे**] बहिष्कृत, बाहर निकाला हुआ ; (पाअ)।
उल्लंबण न [**उल्लम्बन**] उद्बन्धन, फाँसी लगा कर लटकना ; (सम १२५)।
उल्लक्क वि [**दे**] १ भग्न, टूटा हुआ ; २ स्तब्ध ; " उल्लक्कं सिराजालं " (स २६४)।
उल्लट्ट वि [**दे**] उल्लुण्ठित, खाली किया हुआ ; (दे ७, ८१)।
उल्लण वि [**उल्बण**] उत्कट ; (पंचा २)।
उल्लण न [**आर्द्रीकरण**] गीला करना ; (उवा; ओघ ३६; से २, ८)।
उल्लणिया स्त्री [**आर्द्रयणिका**] जल पोंछने का गमछा, टोपिया ; (उवा)।
उल्लट्ठिय वि [**दे**] भाराक्रान्त, जिस पर बोझा लादा गया हो वह " अह तम्मि सत्थलोए उल्लट्ठियसयलवसहनियरम्मि " (सुर २, २)।

उल्लरय न [दे] कौड़ीओं का आभूषण; (दे १, ११०)।

उल्लल अक [उत्+लल्] १ चलित होना, चञ्चल होना। २ ऊँचा चलना। ३ उत्पन्न होना। उल्ललइ ; (से ११, १३)। वकृ—**उल्ललंत** ; (काल)।

उल्ललिअ वि [उल्ललित] १ चञ्चल ; (गा ५६६)। २ उत्पन्न ; (से ६, ६८)।

उल्ललिअ वि [दे] शिथिल, ढ़ीला ; (दे १, १०४)।

उल्लव सक [उत्+लप्] १ कहना। २ बकना, बकवाद करना, खराब शब्द बोलना। " जं वा तं वा उल्लवइ " (महा)। वकृ—**उल्लवंत, उल्लवेमाण** ; (पउम ६४, ८ ; सुर १, १६६)।

उल्लवण न [उल्लपन] १ बकवाद ; २ कथन ; " जइवि न जुज्जइ जह तह मणवल्लहनामउल्लवणं" (सुपा ४६८)।

उल्लविय वि [उल्लपित] १ कथित, उक्त ; २ न. उक्ति, वचन ; " अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहणं " (उत्त)।

उल्लविर वि [उल्लपितृ] १ वक्ता, भाषक ; २ बकवादी, वाचाट ; (गा १७२ ; सुपा २२६)।

उल्लस अक [उत्+लस्] १ विकसित होना। २ खुश होना। उल्लसइ ; (षड्)। वकृ—**उल्लसंत** ; (गा ५६०; कप्प)।

उल्लस देखो **उल्लास**; (गउड)।

उल्लसिअ वि [उल्लसित] १ विकसित ; २ हर्षित ; (षड् ; निचू १)।

उल्लसिअ वि [दे.उल्लसित] पुलकित, रोमाञ्चित ; (दे १, ११५)।

उल्लाय वि [दे] लात मारना, पाद-प्रहार; (तंदु)।

उल्लाय पुं [उल्लाप] १ वक्र वचन ; २ कथन ; (भग)।

उल्लाल सक [उत्+नमय्] १ ऊँचा करना। २ ऊपर फेंकना। उल्लालइ ; (हे ४, ३६) वकृ—**उल्लालेमाण** ; (अंत २१)

उल्लाल सक [उत्+लालय्] ताडन करना, पीडना। वकृ—**उल्लालेमाण** ; (राज)।

उल्लाल पुंन [उल्लाल] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

उल्लालिअ वि [उन्नमित] १ ऊँचा किया हुआ ; २ ऊपर फेंका हुआ ; (कुमा; हे ४, ४२२)।

उल्लालिय वि [उल्लालित] ताडित ; (राज)।

उल्लाव सक [उत्+लप्, लापय्] १ कहना, बोलना। २ बकवाद करना। ३ बुलवाना। ४ बकवाद कराना। वकृ—**उल्लावंत, उल्लावेंत** ; (से ११, १० ; गा ५३६; ६५१ ; हे २, १९३)।

उल्लाव पुं [उल्लाप] १ शब्द, आवाज ; (से १, ३०)। २ उत्तर, जवाब ; (ओघ ५६ भा ; गा ५१४)। ३ बकवाद, विकृत वचन; ४ उक्ति, कथन ; (पउम ७०, ५८)। ५ संभाषण ;

" नयणेहिं को न दीसइ; केण समाणं न होंति उल्लावा।
हिययाणंदं जं पुण, जणेइ तं माणुसं विरलं ॥ " (महा)।

उल्लाविअ वि [उल्लपित] १ उक्त, कथित ; २ न. उक्ति, वचन ; (गा ५८६)।

उल्लाविर वि [उल्लपितृ] १ बोलनेवाला, भाषक ; (हे २, १९३ ; सुपा २२६)।

उल्लासग वि [उल्लासक] १ विकसित होने वाला ; २ आनन्द-जनक; (श्रा २७)।

उल्लासि } वि [उल्लासिन्) ऊपर देखो ; (कप्पू;
उल्लासिर } लहुअ १ ; प्रासू ६६)।

उल्लाह सक [उत्+लाघय्] कम करना, हीन करना। वकृ—**उल्लाहअंत** ; (उत्तर ६१)।

उल्लिअ वि [दे] उपसर्पित; उपागत ; (षड्)।

उल्लिअ वि [आर्द्रित] गीला किया हुआ ; (गउड ; हे ३, १६)।

उल्लिंच सक [उद्+रिच्] खाली करना। हेकृ— " **उल्लिंचिऊण** य समत्थो हत्थउडेहिं समुद्दं" (पुप्फ ४०)।

उल्लिंचिय वि [दे] उद्रिक्त, खाली किया हुआ;

" तह नाहिदहो जुव्वणवणेण लायन्नवारिणा भरिओ।
नहु निट्ठइ जह उल्लिंचिओवि पियनयणकलसेहिं "
(सुपा ३३)।

उल्लिक्क न [दे] दुश्चेष्टित, खराब चेष्टा ; (षड्)।

उल्लिया स्त्री [दे] राधा-वेध का निशाना " विंधेयव्वा विवरीयभमंतट्ठचक्कोवरिथिउल्लिया " (स १६२)।

उल्लिह सक [उद्+लिह्] १ चाटना। २ खाना, भक्षण करना ; " उक्खलिउरिहिअमुररी उअ रोरघरम्मि उल्लिहइ " (दे १, ८८)।

उल्लिह सक [उद+लिख्] १ रेखा करना। २ लिखना। ३ घिसना।

उल्लिहण न [उल्लेखन] १ घर्षण ; (सुपा ४८)। २ विलेखन ; " वहुआइ नहुल्लिहणे " (हे १, ७)।

उल्लिहिय वि [**उल्लिखित**] १ घृष्ट, घिसा हुआ ; (णाया १, २)। २ छिला हुआ, तक्षित; (पाअ)। ३ रेखा किया हुआ ; (सुपा १६३ ; प्रासू ७)।

उल्ली स्त्री [**दे**] १ चुल्हा ; (दे १, ८७)। २ दाँत का मैल ; "उल्ली दंतेसु दुग्गंधा" (महा)।

उल्लुअ वि [**दे**] १ पुरस्कृत, आगे किया हुआ; २ रक्त, रँगा हुआ ; (षड्)।

उल्लुंचिअ वि [**उल्लुञ्चित**] उखाड़ा हुआ, उन्मूलित; "मुट्ठीहिं कुंतलकलावा उल्लुंचिया" (सुपा ८०; प्रवो ६८)।

उल्लुंटिअ वि [**दे**] संचूर्णित, टुकड़ा टुकड़ा किया हुआ; (दे १, १०६)।

उल्लुंठ वि [**उल्लुण्ठ**] उल्लंठ, उद्धत ; (सुपा ४६५ ; सुर ६, २१५)।

उल्लुंड सक [**वि+रेचय्**] झरना, टपकना, बाहर निकलना। उल्लुंडइ; (हे ४, २६)। प्रयो, वकृ—**उल्लुंडावंत**; (कुमा)।

उल्लुक्क वि [**दे**] त्रुटित, टुटा हुआ ; (दे १, ६२)।

उल्लुक्क सक [**तुड्**] तोड़ना। उल्लुक्कइ ; (हे १, ११६; षड्)।

उल्लुक्किअ वि [**तुडित**] त्रोटित, तोड़ा हुआ; (कुमा)।

उल्लुग°, **उल्लुगा** स्त्री [**उल्लुका**] १ नदी-विशेष; (विसे २४२६)। २ उल्लुका नदी के किनारे का प्रदेश; (विसे २४२५)। °**तीर** न [°**तीर**] उल्लुका नदी के किनारे बसा हुआ एक नगर ; (विसे २४२४; भग २६, ३)।

उल्लुज्झण न [**दे**] पुनरुत्थान, कटे हुए हाथ पाँव की फिर से उत्पत्ति ; (उप ३८१)।

उल्लुट्ट अक [**उत्+लुट्**] नष्ट होना, ध्वंस पाना। वकृ— "तहवि य सा रायसिरी उल्लुट्टंती न ताइया ताहिं" (उव)।

उल्लुट्ट वि [**दे**] मिथ्या, असत्य, झूठा ; (दे १, ८६)।

उल्लुरुह पुं [**दे**] छोटा शङ्ख ; (दे १, १०५)।

उल्लुलिअ वि [**उल्लुलित**] चलित ; (गा ५६७)।

उल्लुह अक [**निस्+सृ**] निकला। उल्लुहइ ; (हे ४, २५६)।

उल्लुहुंडिअ वि [**दे**] उन्नत, उच्छ्रित ; (षड्)।

उल्लूढ वि [**दे**] १ आरूढ़ ; (दे १, १०० ; षड्)। २ अङ्कुरित ; (दे १, १०० ; पाअ)।

उल्लूर सक [**तुड्**] १ तोडना। २ नाश करना। उल्लूरइ; (हे ४, ११६ ; कुमा)।

उल्लूरण न [**तोडन**] छेदन, खण्डन ; (गा १६६)।

उल्लूरिअ वि [**तुडित**] विनाशित, "उल्लूरिअपहिअसत्थेसु" (गामि १० ; पाअ)।

उल्लूह वि [**दे**] शुष्क, सूखा "उल्लूहं च नलवणं हरियं जायं" (ओव ४४६ टी)।

उल्लेत्ता देखो **उल्ल**=आर्द्रय्।

उल्लेव पुं [**दे**] हास्य, हाँसी ; (दे १, १०२)।

उल्लेहड वि [**दे**] लम्पट, लुब्ध; (दे १, १०४ ; पाअ)।

उल्लोइय न [**दे**] १ पोतना, भीत को चूना वगैरः से सफेद करना; (औप)। २ वि. पोता हुआ; (णाया १, १; सम १३७)।

उल्लोक वि [**दे**] त्रुटित, छिन्न ; (षड्)।

उल्लोच पुं [**दे. उल्लोच**] चन्द्रातप, चाँदनी ; (दे १, ६८; सुर १२, १; उप १०७)।

उल्लोय पुं [**उल्लोक**] १ अगासी, छत ; (णाया १, १ ; कप्प ; भग)। २ थोड़ी देर, थोडा विलम्ब ; (राज)।

उल्लोय देखो **उल्लोच** ; (सुर ३, ७० ; कुमा)।

उल्लोल अक [**उत्+लुल्**] लुठना, लेटना। वकृ—**उल्लोलंत** ; (निचू १७)।

उल्लोल पुं [**दे**] १ शत्रु, दुश्मन ; (दे १, ६६)। २ कोलाहल ; (पउम १६, ३६)।

उल्लोल पुं [**उल्लोल**] १ प्रबन्ध; "उद्देसे आसि णाराहिवाण वियडा कहुल्लोला" (गउड)। २ उद्भट, उद्धत ; "तरुणजण-विब्भमुल्लोलसागरे" (स ६७)। ३ वि. उत्सुक; "बहुसो घडंतविहडंतसइसुहासायसंगमुल्लोले।
हियए च्चेय समप्पंति चंचला वीइवावारा" (गउड)।

उल्लोव (अप) देखो **उल्लोच** ; (भवि)।

उल्हव सक [**वि+ध्मापय्**] ठंढ़ा करना, आग को बुझाना। उल्हवइ ; (हे ४, ४१६)।

उल्हविय वि [**दे. विध्मापित**] बुझाया हुआ, शान्त किया हुआ ; (पउम २, ६६)।

उल्हसिअ वि [**दे**] उद्भट, उद्धत ; (दे १, ११६)।

उल्हा अक [**वि+ध्मा**] बुझ जाना। उल्हाइ ; (स २८३)।

उव अ [**उप**] निम्न लिखित अर्थों का सूचक अव्यय;— १ समीपता ; जैसे—'उवदंसिय' (पण्ण १)। २ सदृशता, तुल्यता ; (उत्त ३)। ३ समस्तपन ; (राय)। ४ एक-वार ; ५ भीतर ; (आव ४)।

उवअंठ वि [**उपकण्ठ**] समीप का, आसन्न ; (गउड)।

उवइट्ठ वि [**उपदिष्ट**] कथित, प्रतिपादित, शिक्षित ; (ओघ १४ भा; पि १७३)।

उवइण्ण वि [**उपचीर्ण**] सेवित ; (स ३६) ।
उवइय वि [**उपचित**] १ मांसल, पुष्ट ; (पराह १, ४) । २ उन्नत ; (ओप) ।
उवइय पुंस्त्री [**दे**] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष ; देखो **ओवइय** ; (जीव १ टी; पराण) ।
उवइस सक [**उप+दिश**] १ उपदेश देना, सीखाना । २ प्रतिपादन करना । उवइसइ ; (पि १८४) । उवइसंति ; (भग) ।
उवउंज सक **उप+युज्**] उपयोग करना । कर्म—उवउज्जंति ; (विसे ४८०) । संकृ—**उवउंजिऊण, उवउज्ज** ; (पि ५८५; निचू १) ।
उवउज्ज पुं [**दे**] १ उपकार ; (दे १, १०८) । २ वि. उपकारक ; (षड्) ।
उवउत्त वि [**उपयुक्त**] १ न्याय्य, वाजबी । २ सावधान, अप्रमत्त ; (उव; उप ७७३) ।
उवऊढ वि [**उपगूढ**] आलिङ्गित ; (पाअ ; से १, ३८; गा १३३) ।
उवऊहण न [**उपगूहन**] आलिङ्गन ; (से ५, ४८) ।
उवऊहिअ वि [**उपगूहित**] आलिङ्गित ; (गा ६२१) ।
उवएइआ स्त्री [**दे**] शराब परोसने का पात्र ; (दे १, ११८) ।
उवएस पुं [**उपदेश**] १ शिक्षा, बोध ; (उव) । २ कथन, प्रतिपादन ; ३ शास्त्र, सिद्धान्त ; (आचा ; विसे ८६४) । ४ उपदेश्य, जिसके विषय में उपदेश दिया जाय वह ; (धर्म १) ।
उवएसग वि [**उपदेशक**]उपदेश देने वाला ; "हिचाणं पुव्वसंजोगं, सिया किचोवएसगा" (सूअ १, १) ।
उवएसण न [**उपदेशन**] देखो **उवएस**; (उत्त २८ ; ठा ७; विसे २५८३) ।
उवएसणया } स्त्री [**उपदेशना**] उपदेश ; (राज ; विसे
उवएसणा } २५८३) ।
उवएसिय वि [**उपदेशित**] उपदिष्ट ; " सामाइयणिज्जुत्तिं वोच्छं उवएसियं गुरुजणेणं" (विसे १०८०; सण) ।
उवओग पुं [**उपयोग**] १ ज्ञान, चैतन्य ; (पराण १२ ; ठा ४, ४ ; दं ४) । २ ख्याल, ध्यान, सावधानी ; "तं पुण संविग्गेणं उवओगजुएण तिव्वसद्धाए" (पंचा ४) । ३ प्रयोजन, आवश्यकता ; (सुपा ६४३) ।
उवओगि वि [**उपयोगिन्**] उपयुक्त, योग्य, प्रयोजनीय ; "पत्ताईण विसुद्धिं साहेउं गिराहए जमुवओगिं" (सुपा ६४३; स ५) ।
उवंग पुंन [**उपाङ्ग**] १ छोटा अवयव, क्षुद्र भाग ; "एवमादी सव्वे उवंगा भरणंति" (निचू १) । २ ग्रन्थ-विशेष, मूल-ग्रन्थ के अंश-विशेष को लेकर उसका विस्तार से वर्णन करने वाला ग्रन्थ, टीका ; "संगोवंगाणं सरहस्साणं चउरहं वेयाणं" (औप) । ३ 'औपपातिक' सूत्र वगैरः बारह जैन ग्रन्थ; (कप्प ; जं १ ; सूक्त ७०) ।
उवंजण न [**उपाञ्जन**] मृक्षण, मालिस ; (पराह २, १) ।
उवकंठ देखो **उवअंठ**; (भवि) ।
उवकप्प सक [**उप+क्लृ**] १ उपस्थित करना; । २ करना । " उवकप्पइ करेइ उवणेइ वा होंति एगट्ठा" (पंचभा) । प्रयो—उवकप्पयंति ; (सूअ १, १३) ।
उवकप्प पुं [**उपकल्प**] साधु को दी जाती भिक्षा, अन्न-पान वगैरः ; (पंचभा) ।
उवकय वि [**उपकृत**] जिस पर उपकार किया गया हो वह, अनुगृहीत ; "अणुवकयपराणुग्गहपरायणा" (आव ४) ।
उवकय वि [**दे**] सज्जित, प्रगुण, तय्यार ; (दे १, ११६) ।
उवकर देखो **उवयर**=उप+कृ । उवकरेउ ; (उवा) ।
उवकर सक [**अव+कॄ**] व्याप्त करना । भूका—"अहवा पंसुणा उवकरिंसु" (आचा १, ६, ३, ११)
उवकरण देखो **उवगरण** ; (औप)
उवकस सक [**उप+कष्**] प्राप्त होना । "नारीण वसमुवकसंति" (सूअ १, ४) ।
उवकसिअ वि [**दे**] १ संनिहित ; २ परिसेवित ; ३ सर्जित, उत्पादित ; (दे १, १३८) ।
उवकिइ } स्त्री [**उपकृति**] उपकार ; (दे ४, ३४ ; ८;
उवकिदि } ४५) ।
उवकुल न [**उपकुल**] नक्षत्र-विशेष, श्रवण आदि बारह नक्षत्र ; (जं ७) ।
उवकोसा स्त्री [**उपकोशा**] एक प्रसिद्ध वेश्या ; (उव) ।
उवक्कंत वि [**उपक्रान्त**] १ समीप में आनीत ; २ प्रारब्ध, प्रस्तावित ; (विसे ६८७) ।
उवक्कम सक [**उप+क्रम्**] १ शुरू करना, प्रारम्भ करना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । ४ समीप में लाना । ५ संस्कार करना । ६ अनुसरण करना । "सीसो गुरुणो भावं जमुवक्कमए" (विसे ६२६) । "ता तुब्भे ताव अवक्कमह लहुं, जाव एयासिं भावमुवक्कमामि त्ति" (महा) । "जेणोवक्कामि

उज्जइ समीवमाणिज्जए" (विसे २०३९)। "जण्णं हलकुलिआईहिं खेत्ताइं उवक्कमिज्जंति से तं खेत्तोवक्कमे" (अणु)। वकृ—**उवक्कमंत**; (विसे ३४१८)।

उवक्कम पुं [**उपक्रम**] १ आरम्भ, प्रारंभ; २ प्राप्ति का प्रयत्न ; 'साच्चा भगवाणुसासणं सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं" (सूअ १,२,३,१४) । ३ कर्मों के फल का अनुभव; (सूअ १,३; भग १,४)। ४ कर्मों की परिणति का कारण-भूत जीव का प्रयत्न-विशेष; (ठा ४, २)। ५ मरण, मौत, विनाश; "हुज्ज इमम्मि समए उवक्कमो जीवियस्स जइ मज्झ" (आउ १५ ; बृह ४) । ६ दूर स्थित को समीप में लाना; "सत्थस्सोवक्कमणं उवक्कमो तेण तम्मि अ तओ वा सत्थसमीवीकरणं" (विसे; अणु)। ७ आयुष्य-विघातक वस्तु; (ठा ४, २ ; स २८७)। ८ शस्त्र, हथियार ; "भुम्माहारच्छेए उवक्कमेणं च परिणाए" (धर्म २) । ९ उपचार; (स २०५) । १० ज्ञान, निश्चय; ११ अनुवर्तन, अनुकूल प्रवृत्ति; (विसे ९२९; ९३०) । १२ संस्कार, परिकर्म ; "खेत्तोवक्कमे" (अणु) ।

उवक्कमण न [**उपक्रमण**] ऊपर देखो ; (अणु; उवर ४६; विसे ९११; ९१७; ९२१) ।

उवक्कमिय वि [**औपक्रमिक**] उपक्रम से संबन्ध रखने वाला; (ठा २, ४ ; सम १४५ ; पराण ३५) ।

उवक्काम देखो **उवक्कम**=उप+क्रम् । कर्म—उवक्कामिज्जइ; (विसे २०३९) ।

उवक्कामण देखो **उवक्कमण** ; (विसे २०५०) ।

उवक्केस पुं [**उपक्लेश**] १ बाधा; २ शोक; (राज) ।

उवक्खड सक [**उप+स्कृ**] १ पकाना, रसोई करना । २ पाक को मसाले से संस्कारित करना । उवक्खडेइ, उवक्खडिंति; (पि ५५९)। संकृ—**उवक्खडेत्ता**; (आचा)। प्रयो—उवक्खडावेइ, उवक्खडाविंति ; (पि ५५९; कप्प)। संकृ—**उवक्खडावेत्ता**; (पि ५५९) ।

उवक्खड } वि [**उपस्कृत**] १ पकाया हुआ; २ मसाला
उवक्खडिय } वगैरः के संस्कार-युक्त पकाया हुआ; (निचू ८; पि ३०६; ५५९; उत्त १२,,११)। ३ पुंन. "रसोई, पाक "भणिया महाणसणरा जह अज्ज उवक्खडो न कायव्वो" (उप ३५६ टी; ठा ४, २; णाया १, ८; ओघ ५४ भा)। °**आम** वि [°**आम**] पकाने पर भी जो कच्चा रह जाता है वह मुंग वगैरः अन्न-विशेष; "उवक्खडामं णाम जहा चणयादीणं उवक्खडियाणं जे ण सिज्झंति ते कंकडुयामं उवक्खडियामं भण्णइ" (निचू १५) ।

उवक्खर पुं [**उपस्कर**] १ संस्कार ; २ जिससे संस्कार किया जाय वह ; (ठा ४, २) ।

उवक्खरण न [**उपस्करण**] ऊपर देखो । °**साला** स्त्री [°**शाला**] रसोई-घर, पाक-गृह ; (निचू ९) ।

उवक्खाइया स्त्री [**उपख्यायिका**] उपकथा, अवान्तर कथा; (सम ११६) ।

उवक्खाण न [**उपाख्यान**] उपाख्यान, कथा ; (पउम ३३, १४९) ।

उवक्खित्त वि [**उपक्षिप्त**] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ; (सुपा ९३) ।

उवक्खिव सक [**उप+क्षिप्**] १ स्थापन करना । २ प्रयत्न करना । ३ प्रारंभ करना । उवक्खिव ; (पि ३१९) ।

उवक्खेअ पुं [**उपक्षेप**] १ प्रयत्न, उद्योग ; २ उपाय ; "ण भणामि तस्सिं साहणिज्जे किदो उवक्खेओ" (मा ३९) ।

उवग वि [**उपग**] १ अनुसरण करने वाला ; (उप २४३; औप) । २ समीप में जाने वाला ; (विसे २५६५) ।

उवगच्छ सक[**उप+गम्**] १ समीप में आना। २ प्राप्त करना। ३ जानना । ४ स्वीकार करना । उवगच्छइ; (उव; स २३७)। उवगच्छंति; (पि ५८२)। संकृ—**उवगच्छिऊण**; (स ४४)।

उवगणिय वि [**उपगणित**] गिना हुआ, संख्यात, परिगणित; (स ४६१) ।

उवगम देखो **उवगच्छ**। संकृ—**उवगम्म** ; (विसे ३१९९) । हेकृ—**उवगंतुं** ; (निचू १९) ।

उवगय वि [**उपगत**] १ पास आया हुआ ; (से १, १६ ; गा ३२१)। २ ज्ञात, जाना हुआ ; (सम ८८; उप पृ ५९ ; सार्ध १४४) । ३ युक्त, सहित; (राय) । ४ प्राप्त ; (भग) । ५ प्रकर्ष-प्राप्त ; (सम्म १) । ६ स्वीकृत ; "अज्झप्पबद्धमूला, अएणेहि वि उवगया किरिया" (उवर ५५) । ७ अन्तर्भूत, अन्तर्गत ;

"जं च महाकप्पसुयं, जाणि अ सेसाणि छेअसुत्ताणि ।
चरणकरणाणुओगो त्ति कालियत्थे उवगयाणि"

(विसे २२९५) ।

उवगय वि [**उपकृत**] जिस पर उपकार किया गया हो वह ; (स २०१) ।

उवगर सक [**उप+कृ**] हित करना । उवगरेमि; (स २०९) ।

उवगरण न [**उपकरण**] १ साधन, सामग्री, साधक वस्तु; (ओघ ६६६) । २ बाह्य इन्द्रिय-विशेष; (विसे ११९४) ।

उवइण्ण वि [**उपचीर्ण**] सेवित ; (स ३६) ।
उवइय वि [**उपचित**] १ मांसल, पुष्ट ; (पण्ह १, ४) । २ उन्नत ; (ओप) ।
उवइय पुंस्त्री [**दे**] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष ; देखो **ओवइय** ; (जीव १ टी; पण्ण) ।
उवइस सक [**उप+दिश**] १ उपदेश देना, सीखाना । २ प्रतिपादन करना । उवइसइ ; (पि १८४) । उवइसंति ; (भग) ।
उवउंज सक **उप+युज्**] उपयोग करना । कर्म—उवउज्जंति ; (विसे ४८०) । संकृ—**उवउंजिऊण, उवउज्ज** ; (पि ५८५; निचू १) ।
उवउज्ज पुं [**दे**] १ उपकार ; (दे १, १०८) । २ वि. उपकारक ; (षड्) ।
उवउत्त वि [**उपयुक्त**] १ न्याय्य, वाजबी । २ सावधान, अप्रमत्त ; (उव; उप ७७३) ।
उवऊढ वि [**उपगूढ**] आलिङ्गित ; (पाअ ; से १, ३८; गा १३३) ।
उवऊहण न [**उपगूहन**] आलिङ्गन ; (से ५, ४८) ।
उवऊहिअ वि [**उपगूहित**] आलिङ्गित ; (गा ६२१) ।
उवएइआ स्त्री [**दे**] शराव परोसने का पात्र ; (दे १, ११८) ।
उवएस पुं [**उपदेश**] १ शिक्षा, बोध ; (उव) । २ कथन, प्रतिपादन ; ३ शास्त्र, सिद्धान्त ; (आचा ; विसे ८६४) । ४ उपदेश्य, जिसके विषय में उपदेश दिया जाय वह ; (धर्म १) ।
उवएसग वि [**उपदेशक**] उपदेश देने वाला ; "हिच्चाणं पुव्वसंजोगं, सिया किच्चोवएसगा" (सूअ १, १) ।
उवएसण न [**उपदेशन**] देखो **उवएस**; (उत्त २८ ; ठा ७; विसे २५८३) ।
उवएसणया } स्त्री [**उपदेशना**] उपदेश ; (राज ; विसे
उवएसणा } २५८३) ।
उवएसिय वि [**उपदेशित**] उपदिष्ट ; " सामाइयणिज्जुत्तिं वोच्छं उवएसियं गुरुजणेणं" (विसे १०८०; सण) ।
उवओग पुं [**उपयोग**] १ ज्ञान, चैतन्य ; (पण्ण १२ ; ठा ४, ४ ; दं ४) । २ ख्याल, ध्यान, सावधानी ; "तं पुण संविग्गेणं उवओगजुएण तिव्वसद्धाए" (पंचा ४) । ३ प्रयोजन, आवश्यकता ; (सुपा ६४३) ।
उवओगि वि [**उपयोगिन्**] उपयुक्त, योग्य, प्रयोजनीय ; "पत्ताईण विसुद्धिं साहेउं गिण्हए जमुवओगिं" (सुपा ६४३; स ५) ।
उवंग पुंन [**उपाङ्ग**] १ छोटा अवयव, क्षुद्र भाग ; "एवमादी सव्वे उवंगा भण्णंति" (निचू १) । २ ग्रन्थ-विशेष, मूल-ग्रन्थ के अंश-विशेष को लेकर उसका विस्तार से वर्णन करने वाला ग्रन्थ, टीका ; "संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेयाणं" (औप) । ३ 'औपपातिक' सूत्र वगैरः बारह जैन ग्रन्थ; (कप्प ; जं १ ; सूक्त ७०) ।
उवंजण न [**उपाञ्जन**] मृक्षण, मालिस ; (पण्ह २, १) ।
उवकंठ देखो **उवअंठ**; (भवि) ।
उवकप्प सक [**उप+क्लृ**] १ उपस्थित करना; । २ करना । " उवकप्पइ करेइ उवणेइ वा होंति एगट्ठा" (पंचभा) । प्रयो—उवकप्पयंति ; (सूअ १, १३) ।
उवकप्प पुं [**उपकल्प**] साधु को दी जाती भिक्षा, अन्न-पान वगैरः ; (पंचभा) ।
उवकय वि [**उपकृत**] जिस पर उपकार किया गया हो वह, अनुगृहीत ; "अणुवकयपराणुग्गहपरायणा" (आव ४) ।
उवकय वि [**दे**] सज्जित, प्रगुण, तय्यार ; (दे १, ११६) ।
उवकर देखो **उवयर**=उप+कृ । उवकरेउ ; (उवा) ।
उवकर सक [**अव+कृ**] व्याप्त करना । भूका—"अहवा पंसुणा उवकरिंसु" (आचा १, ६, ३, ११)
उवकरण देखो **उवगरण** ; (औप)
उवकस सक [**उप+कष्**] प्राप्त होना । "नारीण वसमुवकसंति" (सूअ १, ४) ।
उवकसिअ वि [**दे**] १ संनिहित ; २ परिसेवित ; ३ सर्जित, उत्पादित ; (दे १, १३८) ।
उवकिइ } स्त्री [**उपकृति**] उपकार ; (दे ४, ३४ ; ८,
उवकिदि } ४५) ।
उवकुल न [**उपकुल**] नक्षत्र-विशेष, श्रवण आदि बारह नक्षत्र ; (जं ७) ।
उवकोसा स्त्री [**उपकोशा**] एक प्रसिद्ध वेश्या ; (उव) ।
उवक्कंत वि [**उपक्रान्त**] १ समीप में आनीत ; २ प्रारब्ध, प्रस्तावित ; (विसे ६८७) ।
उवक्कम सक [**उप+क्रम्**] १ शुरू करना, प्रारम्भ करना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । ४ समीप में लाना । ५ संस्कार करना । ६ अनुसरण करना । "सीसो गुरुणो भावं जमुवक्कमए" (विसे ९२९) । "ता तुब्भे ताव अवक्कमह लहुं, जाव एयासिं भावमुवक्कमामि त्ति" (महा) । "जेणोवक्कामि

ज्जइ समीवमाणिज्जए" (विसे २०३६)। "जरणं हलकुलिआईहिं खेत्ताइं उवक्कमिज्जंति से तं खेत्तोवक्कमे" (अणु)। वक्र—**उवक्कमंत**; (विसे ३४१८)।

उवक्कम पुं [**उपक्रम**] १ आरम्भ, प्रारंभ; २ प्राप्ति का प्रयत्न ; 'साच्चा भगवाणुसासणं सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं" (सूअ १,२,३,१४)। ३ कर्मों के फल का अनुभव; (सूअ १,३; भग १,४)। ४ कर्मों की परिणति का कारण-भूत जीव का प्रयत्न-विशेष; (ठा ४, २)। ५ मरण, मौत, विनाश; "हुज्ज इमम्मि समए उवक्कमो जीवियस्स जइ मज्झ" (आउ १५ ; बृह ४)। ६ दूर स्थित को समीप में लाना; "सत्थस्सोवक्कमणं उवक्कमो तेण तम्मि अ तओ वा सत्थसमीवीकरणं" (विसे; अणु)। ७ आयुष्य-विघातक वस्तु; (ठा ४, २ ; स २८७)। ८ शस्त्र, हथियार; "भुम्माहारच्छेए उवक्कमेणं च परिणाए" (धर्म २)। ९ उपचार; (स २०५)। १० ज्ञान, निश्चय; ११ अनुवर्तन, अनुकूल प्रवृत्ति; (विसे ९२९; ९३०)। १२ संस्कार, परिकर्म ; "खेत्तोवक्कमे" (अणु)।

उवक्कमण न [**उपक्रमण**] ऊपर देखो ; (अणु; उवर ४६; विसे ९११; ९१७; ९२१)।

उवक्कमिय वि [**औपक्रमिक**] उपक्रम से संबन्ध रखने वाला; (ठा २, ४ ; सम १४५ ; पगण ३५)।

उवक्काम देखो **उवक्कम**=उप+क्रम् । कर्म—उवक्कामिज्जइ; (विसे २०३६)।

उवक्कामण देखो **उवक्कमण** ; (विसे २०५०)।

उवक्केस पुं [**उपक्लेश**] १ बाधा; २ शोक; (राज)।

उवक्खड सक [**उप+स्कृ**] १ पकाना, रसोई करना । २ पाक को मसाले से संस्कारित करना । उवक्खडेइ, उवक्खडिंति; (पि ५५९)। संकृ—**उवक्खडेत्ता**; (आचा)। प्रयो—उवक्खडावेइ, उवक्खडाविंति; (पि ५५९; कप्प)। संकृ—**उवक्खडावेत्ता**; (पि ५५९)।

उवक्खड } वि [**उपस्कृत**] १ पकाया हुआ; २ मसाला
उवक्खडिय } वगैरः के संस्कार-युक्त पकाया हुआ; (निचू ८; पि ३०६; ५५९; उत्त १२,,१९)। ३ पुंन. "रसोई, पाक "भणिया महाणसणरा जह अज्ज उवक्खडो न कायव्वो" (उप ३५६ टी; ठा ४, २; णाया १, ८; ओघ ५४ भा)। °**आम** वि [°**आम**] पकाने पर भी जो कच्चा रह जाता है वह मुंग वगैरः अन्न-विशेष; "उवक्खडामं णाम जहा चणयादीणं उवक्खडियाणं जे ण सिज्झंति ते कंकडुयामं उवक्खडियामं भण्णइ" (निचू १५)।

उवक्खर पुं [**उपस्कर**] १ संस्कार ; २ जिससे संस्कार किया जाय वह ; (ठा ४, २)।

उवक्खरण न [**उपस्करण**] ऊपर देखो। °**साला** स्त्री [°**शाला**] रसोई-घर, पाक-गृह ; (निचू ९)।

उवक्खाइया स्त्री [**उपख्यायिका**] उपकथा, अवान्तर कथा; (सम ११९)।

उवक्खाण न [**उपाख्यान**] उपाख्यान, कथा ; (पउम ३३, १४९)।

उवक्खित्त वि [**उपक्षिप्त**] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ; (मुद्रा ६३)।

उवक्खिव सक [**उप+क्षिप्**] १ स्थापन करना । २ प्रयत्न करना । ३ प्रारंभ करना । उवक्खिव ; (पि ३१९)।

उवक्खेअ पुं [**उपक्षेप**] १ प्रयत्न, उद्योग ; २ उपाय ; "ण भणामि तस्सिं साहणिज्जे किंदो उवक्खेओ " (मा ३९)।

उवग वि [**उपग**] १ अनुसरण करने वाला ; (उप २४३; औप)। २ समीप में जाने वाला ; (विसे २५६५)।

उवगच्छ सक[**उप+गम्**] १ समीप में आना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। ४ स्वीकार करना । उवगच्छइ; (उव; स २३७)। उवगच्छंति; (पि ५८२)। संकृ—**उवगच्छिऊण**; (स ४४)।

उवगणिय वि [**उपगणित**] गिना हुआ, संख्यात, परिगणित; (स ४६१)।

उवगम देखो **उवगच्छ**। संकृ—**उवगम्म** ; (विसे ३१९९)। हेकृ—**उवगंतुं** ; (निचू १९)।

उवगय वि [**उपगत**] १ पास आया हुआ ; (से १, १६ ; गा ३२१)। २ ज्ञात, जाना हुआ ; (सम ८८; उप पृ ५९ ; सार्ध १४४)। ३ युक्त, सहित; (राय)। ४ प्राप्त ; (भग)। ५ प्रकर्ष-प्राप्त ; (सम्म १)। ६ स्वीकृत ; " अज्झप्पबद्धमूला, अण्णेहि वि उवगया किरिया " (उवर ५५)। ७ अन्तर्भूत, अन्तर्गत ;
"जं च महाकप्पसुयं, जाणि अ सेसाणि छेअसुत्ताणि ।
चरणकरणाणुओगो त्ति कालियत्थे उवगयाणि"
(विसे २२९५)।

उवगय वि [**उपकृत**] जिस पर उपकार किया गया हो वह ; (स २०१)।

उवगर सक [**उप+कृ**] हित करना। उवगरेमि; (स २०९)।

उवगरण न [**उपकरण**] १ साधन, सामग्री, साधक वस्तु; (ओघ ६६६)। २ बाह्य इन्द्रिय-विशेष; (विसे १९४)।

उवगस सक [उप+कष्] समीप आना, पास आना। संकृ —**उवगसित्ता** ; (सूअ १, ४)। वकृ—
"**उवगसंतं** भंपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं।
भोगभोगे वियारेई, महामोहं पकुव्वइ" (सम ५०)।

उवगा सक [उप + गै] वर्णन करना, श्लाघा करना, गुण-गान करना। कवकृ-**उवगाइज्जमाण, उवगिज्जमाण, उवगीयमाण** ; (राय ; भग ६, ३३; स ६३)।

उवगार देखो **उवयार**=उपकार ; (सुर २, ४३)।

उवगारग वि [**उपकारक**] उपकार करने वाला ; (स ३२१)।

उवगारि वि [**उपकारिन्**] ऊपर देखो; (सुर ७, १६७)।

उवगिअ न [**उपकृत**] १ उपकार; २ वि. जिस पर उपकार किया गया हो वह; (स ६३६)।

उवगिज्जमाण देखो **उवगा**।

उवगिण्ह सक [**उप+ग्रह्**] १ उपकार करना। २ पुष्टि करना। ३ ग्रहण करना। उवगिरहह ; (पि ५१२)।

उवगीय वि [**उपगीत**] १ वर्णित, श्लाघित। २ न. संगीत, गीत, गान; "वाइयसुवगीयं नट्टमवि सुयं दिट्ठं चिह्नमुत्ति-करं" (सार्ध १०८)।

उवगीयमाण देखो **उवगा**।

उवगूढ वि [**उपगूढ**] १ आलिङ्गित ; (गा ३५१; स ४४८)। २ न. आलिंगन ; (राज)।

उवगूह सक [**उप+गुह्**] १ आलिंगन करना। २ गुप्त रीति से रक्षण करना। ३ रचना करना, बनाना। कवकृ—**उवगूहिज्जमाण** ; (णाया १, १ ; औप)।

उवगूहण न [**उपगूहन**] १ आलिंगन ; २ प्रच्छन्न-रक्षण; ३ रचना, निर्माण ; "आरुहणगट्ठेहिं वालयउवगूहणेहिं च" (तंदु)।

उवगूहिय वि [**उपगूढ**] आलिंगित ; (आवम)।

उवग्ग न [**उपाग्र**] १ अग्र के समीप। २ आषाढ़ मास "एसो चिय कालो पुणरेव गणं उवग्गम्मि" (वव १)।

उवग्गह पुं [**उपग्रह**] १ पुष्टि, पोषण ; (विसे १८५०)। २ उपकार; (उप ५६७ टी; स १५४)। ३ ग्रहण, उपादान; (ओघ २१२ भा)। ४ उपधि, उपकरण, साधन ; (ओघ ६६६)।

उवग्गहिअ वि [**उपगृहीत**] १ उपस्थापित ; (पगण २३)। २ आलिंगनादि चेष्टा ; "उवहसिएहिं उवग्गहिएहिं उवसद्देहिं" (तंदु)। ३ उपकृत ; (स १५६)। ४ उपष्टम्भित ; (राज)।

उवग्गहिअ देखो **ओवग्गहिअ** ; (पंचव)।

उवग्गाहि वि [**उपग्राहिन्**] संबन्धी, संबन्ध रखने वाला ; (स ५२)।

उवग्घाय पुं [**उपोद्घात**] ग्रन्थ के आरम्भ का वक्तव्य, भूमिका ; (विसे ६६२)।

उवघाइ वि [**उपघातिन्**] उपघात करने वाला ; (भास ८७ ; विसे २००८)।

उवघाइय वि [**उपघातिक**] १ उपघात-कारक ; (विसे २००६)। २ हिंसा से संबन्ध रखने वाला "भूओवघाइए" (औप)।

उवघाय पुं [**उपघात**] १ विराधना, आघात; (ओघ ७८८)। २ अशुद्धता ; (ठा ५)। ३ विनाश ; (कम्म १, ५४)। ४ उपद्रव; (तंदु)। ५ दूसरे का अशुभ-चिन्तन; (भास ५१)।

°**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपने ही शरीर के पडजीभ, चोरदन्त, रसौली आदि अवयवों से क्लेश पाता है वह कर्म ; (सम ६७)।

उवघायण न [**उपघातन**] ऊपर देखो ; (विसे २२३)।

उवचय पुं [**उपचय**] १ वृद्धि ; (भग ६, ३)। २ समूह ; (पिंड २; ओघ ४०७)। ३ शरीर ; (आव ५)। ४ इन्द्रिय-पर्याप्ति ; (पगण १५)।

उवचयण न [**उपचयन**] १ वृद्धि ; २ परिपोषण, पुष्टि ; (राज)।

उवचर सक [**उप+चर्**] १ सेवा करना। २ समीप में घूमना-फिरना। ३ आरोप करना। ४ समीप में खाना। ५ उपद्रव करना। उवचरइ, उवचरए, उवचरामो, उवचरंति ; (बृह १; पि ३४६; ४५५ ; आचा)।

उवचरिय वि [**उपचरित**] १ उपासित, सेवित, बहुमानित ; (स ३०)। २ न. उपचार, सेवा ; (पंचा ६)।

उवचि सक [**उप+चि**] १ इकट्ठा करना। २ पुष्ट करना। उवचिणइ, उवचिणाइ; उवचिणंति; भूका—उवचिणिंसु; भवि—उवचिणिस्संति ; (ठा २, ४ ; भग)। कर्म—उवचिज्जइ, उवचिज्जंति ; (भग)।

उवचिट्ठ सक [**उप + स्था**] उपस्थित होना, समीप आना। उवचिट्ठे, उवचिट्ठेज्जा ; (पि ४६२)।

उवचिय वि [**उपचित**] १ पुष्ट, पीन ; (पगह १, ४ ; कप्प)। २ स्थापित, निवेशित ; (कप्प; पगण २)। ३

उन्नति ; (औप) । ४ व्याप्त ; (अणु) । ५ वृद्ध, बढा हुआ ; (आचा) ।
उवच्छंदिद (शौ) वि [**उपच्छन्दित**] अभ्यर्थित ; (अभि १७३) ।
उवजंगल वि [**दे**] दीर्घ, लम्बा ; (दे १, ११६) ।
उवजा अक [**उप + जन्**] उत्पन्न होना । उवजायइ; (विसे ३०२९) ।
उवजाइ स्त्री [**उपजाति**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
उवजाइय देखो **उवयाइय**; (श्राद्ध १६; सुपा ३५४) ।
उवजाय वि [**उपजात**] उत्पन्न; (सुपा ६००) ।
उवजीव सक [**उप+जीव्**] आश्रय लेना । उवजीवइ; (महा) ।
उवजीवग वि [**उपजीवक**] आश्रित; (सुपा ११९) ।
उवजीवि वि [**उपजीविन्**] १ आश्रय लेने वाला ; "न करेइ नेय पुच्छइ निद्धम्मा लिंगमुवजीवी" (उव) । २ उपकारक ; (विसे २८८९) ।
उवजोइय वि [**उपज्योतिष्क**] १ अग्नि के समीपमें रहने वाला; २ पाक-स्थान में स्थित; "के इत्थ खत्ता उवजोइया वा अज्झावया वा सह खंडिएहिं" (उत्त १२, १८) ।
उवज्जण न [**उपार्जन**] पैदा करना, कमाना; (सुर ८, १४४)।
उवज्जिण सक [**उप+अर्ज्**] उपार्जन करना । उवज्जिणेमि; (स ४४३) ।
उवज्झय } पुं [**उपाध्याय**] १ अध्यापक, पढ़ाने वाला ;
उवज्झाय } (पउम ३९, ९० ; षड्) । २ सूत्राध्यापक जैन मुनि को दी जाती एक पदवी ; (विसे) ।
उवज्झिय वि [**दे**] आकारित, बुलाया हुआ ; (राज) ।
उवट्टण देखो **उव्वट्टण** ; (राज) ।
उवट्टणा देखो **उव्वट्टणा** ; (भग; विसे २५१५ टी) ।
उवट्ठ वि [**उपस्थ**] एक ही स्थान में सतत अवस्थित ; (वव ४) । °**काल** पुं [°**काल**] आने की वेला, अभ्यागम समय ; (वव ४) ।
उवट्ठंभ पुं [**उपष्टम्भ**] १ अवस्थान ; (भग) । २ अनुकम्पा, करुणा ; (ठा २) ।
उवट्ठप्प वि [**उपस्थाप्य**] १ उपस्थित करने योग्य ; २ व्रत—दीक्षा के योग्य "वियत्तकिच्चे सेहे य उवट्ठप्पा य आहिया" (बृह ६) ।
उवट्ठव सक [**उप+स्थापय्**] १ उपस्थित करना । २ व्रतों का आरोपण करना, दीक्षा देना । उवट्ठवेइ, उवट्ठवेह ; (महा; उवा) । हेकृ—**उवट्ठवेत्तए**; (बृह ४) ।
उवट्ठवणा स्त्री [**उपस्थापना**] १ चारित्र-विशेष, एक प्रकार की जैन दीक्षा ; (धर्म २) । २ शिष्य में व्रत की स्थापना ; "वयट्ठवणमुवट्ठवणा" (पंचभा) ।
उवट्ठवणीय वि [**उपस्थापनीय**] देखो **उवट्ठप्प**; (ठा ३) ।
उवट्ठा सक [**उप+स्था**] उपस्थित होना । उवट्ठाएज्जा ; (भग) ।
उवट्ठाण न [**उपस्थान**] १ बैठना, उपवेशन ; (णाया १, १) । २ व्रत-स्थापन ; (महानि ७) । ३ एक ही स्थान में विशेष काल तक रहना ; (वव ४) । °**दोस** पुं [°**दोष**] नित्यवास दोष; (वव ४) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] आस्थान-मण्डप, सभा-स्थान ; (णाया १, १ ; निर १, १) ।
उवट्ठाणा स्त्री [**उपस्थाना**] जिसमें जैन साधु-लोक एक वार ठहर कर फिर भी शास्त्र-निषिद्ध अवधि के पहले ही आकर ठहरे वह स्थान ; (वव ४) ।
उवट्ठाव देखो **उवट्ठव** । उवट्ठावेहि ; (पि ४६८)। हेकृ—**उवट्ठावित्तए, उवट्ठावेत्तए** ; (ठा) ।
उवट्ठावणा देखो **उवट्ठवणा** ; (बृह ६) ।
उवट्ठिय वि [**उपस्थित**] १ प्राप्त ; "जणवादमुवट्ठिओ" (उत्त १२) । २ समीप-स्थित; (आव १०) । ३ तय्यार, उद्यत ; (धर्म ३) । ४ आश्रित ; "निम्ममत्तमुवट्ठिओ" (आउ; सूअ १, २) । ५ मुमुक्षु, प्रव्रज्या लेने को तय्यार ; "उवट्ठियं पडिरयं, संजयं सुतवस्सियं । वुक्कम्म धम्माओ भंसेइ, महामोहं पकुव्वइ" (सम ५१) ।
उवडहित्तु वि [**उपदाहयितृ**] जलाने वाला "अगणिकाएणं कायमुवडहित्ता भवइ" (सूअ २, २) ।
उवडिअ वि [**दे**] अवनत, नमा हुआ ; (षड्) ।
उवणगर न [**उपनगर**] उपपुर, शाखा-नगर ; (औप) ।
उवणच्च सक [**उप + नर्त्तय्**] नचाना, नाच कराना । कवकृ—**उवणच्चिज्जमाण** ; (औप) ।
उवणद्ध वि [**उपनद्ध**] घटित ; (उत्तर ९१) ।
उवणम सक [**उप + नम्**] १ उपस्थित करना, ला रखना । २ प्राप्त करना । उवणमइ ; (महा) । वकृ—**उवणमंत** ; (उप १३९ टी ; सूअ १, २) ।
उवणमिय वि [**उपनमित**] उपस्थापित ; (सण) ।
उवणय वि [**उपनत**] उपस्थित ; (से १, ३६) ।
उवणय पुं [**उपनय**] १ उपसंहार, दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृत में जोड़ना, हेतु का पक्ष में उपसंहार ; (पव ६६; ओघ ४४

मा)। २ स्तुति, श्लाघा; (विसे १४०३ टी; पव १४१)। ३ अवान्तर नय; (राज)। ४ संस्कार-विशेष, उपनयन; (स २७२)।

उवणयण न [**उपनयन**] उपवीत-संस्कार, यज्ञ-सूत्र धारण संस्कार; (पराह १, २)।

उवणिअ देखो **उवणीय**; (से ४, ५५)।

उवणिक्खित्त वि [**उपनिक्षिप्त**] व्यवस्थापित; (आचा २)।

उवणिक्खेव पुं [**उपनिक्षेप**] धरोहर, रखा के लिए दूसरे के पास रखा धन; (वव ४)।

उवणिग्गम पुं [**उपनिर्गम**] १ द्वार, दरवाजा। (से १२, ६८)। २ उपवन, बगीचा; (गउड)।

उवणिग्गय वि [**उपनिर्गत**] समीप में निकला हुआ; (औप)।

उवणिज्जंत देखो **उवणी**।

उवणिमंत सक [**उपनि+मन्त्रय्**] निमन्त्रण देना। भवि—उवणिमंतहिंति; (औप)। संकृ—**उवणिमंतिऊण**; (स २०)।

उवणिमंतण न [**उपनिमन्त्रण**] निमन्त्रण; (भग ८, ६)।

उवणिविट्ठ वि [**उपनिविष्ट**] समीप-स्थित; (राय)।

उवणिसआ स्त्री [**उपनिषत्**] वेदान्त-शास्त्र, वेदान्त-रहस्य, ब्रह्म-विद्या; (अच्चु ८)।

उवणिहा स्त्री [**उपनिधा**] मार्गण, मार्गणा; (पंचसं)।

उवणिहि पुंस्त्री [**उपनिधि**] १ समीप में आनीत; (ठा ५)। २ विरचना, निर्माण; (अणु)।

उवणिहिय वि [**उपनिहित**] १ समीप में स्थापित; २ आसन्न-स्थित; (सूअ २, २)। °**य** पुं [°**क**] नियम-विशेष को धारण करने वाला भिक्षु; (सूअ २, २)।

उवणी सक [**उप+नी**] १ समीप में लाना, उपस्थित करना। २ अर्पण करना। ३ इकट्ठा करना। उवणेंति; (उवा)। उवणेमो; भवि—उवणेहिइ; (पि ४५५; ४७४; ५२१) कवकृ—**उवणिज्जंत**; (से ११, ५३)। संकृ—"से भिक्खुणो **उवणेत्ता** अणेगे" (सूअ २, ६, १)।

उवणीय वि [**उपनीत**] १ समीप में लाया हुआ; (पाअ; महा)। २ अर्पित, उपढौकित; (औप)। ३ उपनय-युक्त, उपसंहृति; (विसे ६६६ टी; अणु)। ४ प्रशस्त, श्लाघित; (आचा २)। °**चरय** पुं [°**चरक**] अभिग्रह-विशेष को धारण करने वाला साधु; (औप)।

उवण्णत्थ वि [**उपन्यस्त**] उपन्यस्त, उपढौकित; "गुव्विणीए उवण्णत्थं विविहं पाणभोअणं। भुंजमाणं विवज्जिज्जा" (दस ५, ३६)।

उवण्णास पुं [**उपन्यास**] १ वाक्योपक्रम, प्रस्तावना; (ठा ४)। २ दृष्टान्त-विशेष; (दस १)। ३ रचना; (अभि ६८)। ४ छल-प्रयोग; (प्रयौ २२)।

उवतल न [**उपतल**] हस्त-तल की चारों ओर का पार्श्व-भाग; (निचू १)।

उवताव पुं [**उपताप**] संताप, पीडा; (सूअ १, ३)।

उवताविय वि [**उपतापित**] १ पीडित; २ तप्त किया हुआ, गरम कया हुआ; (सुर २, २२६; सण)।

उवत्त वि [**उपात्त**] गृहीत; (पउम २६, ४६; सुर १४, १६०)।

उवत्थड वि [**उपस्तृत**] ऊपर २ आच्छादित; (भग)।

उवत्थाणा देखो **उवट्ठाणा**; (पि ३४१)।

उवत्थिय देखो **उवट्ठिय**; (सम १७)।

उवत्थु सक [**उप+स्तु**] स्तुति करना, श्लाघा करना। उवत्थुणंति; (पि ४६४)। उवत्थुवंदि (शौ); (उत्तर २२)।

उवदंस सक [**उप+दर्शय्**] दिखलाना, बतलाना। उवदंसइ; (कप्प; महा)। उवदंसमि; (विपा १, १)। भवि—उवदंसिस्सामि; (महा)। वकृ—**उवदंसेमाण**; (उवा)। कवकृ—**उवदंसिज्जमाण**; (णाया १, १३) संकृ—**उवदंसिय**; (आचा २)।

उवदंस पुं [**उपदंश**] १ रोग-विशेष, गर्मी, सुजाक। २ अवलेह, चाटना; (चारु ६)।

उवदंसण न [**उपदर्शन**] दिखलाना; (सण)। °**कूड** पुं [°**कूट**] नीलवंत-नामक पर्वत का एक शिखर; (ठा २, ३)।

उवदंसिय वि [**उपदर्शित**] दिखलाया हुआ; (सुपा ३११)।

उवदंसिर वि [**उपदर्शिन्**] दिखलाने वाला; (सण)।

उवदंसेत्तु वि [**उपदर्शयितृ**] दिखलाने वाला; (पि ३६०)।

उवदव पुं [**उपद्रव**] ऊधम, बखेड़ा; (महा)।

उवदा स्त्री [**उपदा**] भेंट, उपहार; (रंभा)।

उवदाई स्त्री [**उदकदायिका**] पानी देने वाली "पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेति" (णाया १, ७)।

उवदाण न [**उपदान**] भेंट, नजराना; (भवि)।

उवदिस सक [**उप+दिश्**] उपदेश देना। उवदिसइ ; (कप्प)।

उवदीव न [**दे**] द्वीपान्तर, अन्य द्वीप ; (दे १, १०६)।

उवदेसग वि [**उपदेशक**] व्याख्याता ; (औप)।

उवदेसणया देखो **उवएसणया** ; (विसे २६१६)।

उवदेसि वि [**उपदेशिन्**] उपदेशक ; (चारु ४)।

उवदेही स्त्री [**उपदेहिका**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, दिमक; (दे १, ९३)।

उवद्दव सक [**उप+द्रु**] उपद्रव करना, ऊधम मचाना। भवि—उवद्दविस्सइ ; (महा)।

उवद्दव देखो **उवदव** ; (ठा ५)।

उवद्दवण न [**उपद्रवण**] उपद्रव करना, उपसर्ग करना ; (धर्म ३)।

उवद्दविय वि [**उपद्रुत**] पीडित, भय-भीत किया हुआ; (आव ४; विवे ७६)।

उवद्दुअ वि [**उपद्रुत**] हैरान किया हुआ; (भत्त १०५)।

उवधारणया स्त्री [**उपधारणा**] धारणा, धारण करना ; (ठा ८)।

उवधारिय वि [**उपधारित**] धारण किया हुआ ; (भग)।

उवनंद पुं [**उपनन्द**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (कप्प)।

उवनंद सक [**उप+नन्द्**] अभिनन्दन करना। कवकृ—**उवनंदिज्जमाण** ; (कप्प)।

उवनयर देखो **उवणयर** ; (सुपा ३४१)।

उवनिक्खित्त देखो **उवणिक्खित्त** ; (कस)।

उवनिक्खेव सक [**उपनि+क्षेपय्**] १ धरोहर रखना। २ स्थापन करना। कृ—**उवनिक्खेवियव्व** ; (कस)।

उवनिग्गय देखो **उवणिग्गय**; (णाया १, १)।

उवनिबंधण न [**उपनिबन्धन**] १ संबन्ध; २ वि. संबन्ध-हेतु ; (विसे १६३६)।

उवनिमंत देखो **उवणिमंत**। उवनिमंतेइ, उवनिमंतेमि ; (कस; उवा)।

उवनिहिय वि [**औपनिधिक**] देखो **उवणिहिय**; (पराह २, १)।

उवन्नत्थ वि [**उपन्यस्त**] स्थापित ; (स ३१०)।

उवप्पदाण, **उवप्पयाण** न [**उपप्रदान**] नीति-विशेष, दाम-नीति, अभिमत अर्थ का दान; (विपा १, ३; णाया १, १)।

उवप्पुय वि [**उपप्लुत**] उपद्रुत, भय से व्याप्त; (राज)।

उवभुंज सक [**उप+भुज्**] उपभोग करना, काम में लाना। उवभुंजइ ; (षड्)। वकृ—**उवभुंजंत**; (उप पृ १८०)। कवकृ—**उवहुज्जंत, उवभुज्जंत**; (से २, १०; सुर ८, १६१)। संकृ—**उवभुंजिऊण**; (महा)।

उवभुंजण न [**उपभोजन**] उपभोग ; (सुपा १६)।

उवभुत्त वि [**उपभुक्त**] १ जिसका उपभोग किया हो वह ; (वव ३)। २ अधिकृत ; (उप पृ १२४)।

उवभोअ, **उवभोग** पुं [**उपभोग**] १ भोजनातिरिक्त भोग, जिसका फिर २ भोग किया जाय वैसे वस्त्र-गृहादि; "उवभोगो उ पुणो पुणो उवभुज्जइ भवणवलयाई" (उत्त ३३ ; अभि ३१)। २ जिसका एक बार भोग किया जाय वह, अशन-पान वगैरः ; (भग ७, २ ; पडि)।

उवभोग्ग, **उवभोज्ज** वि [**उपभोग्य**] उपभोग-योग्य; (राज ; बृह ३)।

उवमा स्त्री [**उपमा**] १ सादृश्य, दृष्टान्त; (अणु; उर; प्रासू १२०)। २ स्वनाम-ख्यात एक इन्द्राणी ; (ठा ८)। ३ खाद्य-पदार्थ विशेष; (जीव ३)। ४ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन ; (ठा १०)। ५ अलङ्कार-विशेष; (विसं ९९९ टी)। ६ प्रमाण विशेष, उपमान-प्रमाण ; (विसं ४७०)।

उवमाण न [**उपमान**] १ दृष्टान्त, सादृश्य ; २ जिस पदार्थ से उपमा दी जाय वह; (दसनि १)। ३ प्रमाण-विशेष ; (सुअ १, १२)।

उवमालिय वि [**उपमालित**] विभूषित, सुशोभित ;

"अमलामयपडिपुन्नं, कुवलयमालोवमालियमुहं च।
कणयमयपुरणकलसं, विलसंतं पासए पुरओ"
(सुपा ३४)।

उवमिय वि [**उपमित**] १ जिसको उपमा दी गई हो वह ; २ जिसको उपमा दी गई हो वह; (आवम)। ३ न. उपमा, सादृश्य ; (विसे ६८५)।

उवमेअ वि [**उपमेय**] उपमा के योग्य ; (मै ७३)।

उवय पुं [**दे**] हाथी को पकड़नेका खड्डा ; (पाअ)।

उवय देखो **ओवय**। वकृ—**उवयंत**; (कप्प)।

उवय (अप) देखो **उदय** ; (भवि)।

उवयर सक [**उप+कृ**] उपकार करना, हित करना। उवयरेइ; (सण)। कृ—**उवयरियव्व** ; (सुपा ५६४)।

उवयर सक [उप+चर्] १ आरोप करना। २ भक्ति करना। ३ कल्पना करना। ४ चिकित्सा करना। कवकृ—**उवयरिज्जंत**; (सुपा ५७)।

उवयरण न [उपकरण] साधन, सामग्री; "माए घरोवअरणं अज्ज हु णत्थि त्ति साहिअं तुमए" (काप्र २६; गउड)। २ उपकार; (सत्त ४१ टी)।

उवयरिय वि [उपकृत] १ उपकृत; २ उपकार; (वज्जा १०)।

उवयरिय वि [उपचरित] आरोपित; (विसे २८३)।

उवयरिया स्त्री [उपचरिका] दासी; (उप पृ ३८७)।

उवया सक [उप+या] समीप में जाना। उवयाइ; (सूअ १, ४, १, २७)। उवयंति; (विसे १४६)।

उवयाइय वि [उपयाचित] १ प्रार्थित, अभ्यर्थित। २ न. मनौती, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प; (ठा १०; णाया १, ८)।

उवयाण न [उपयान] समीप में गमन; (सूअ १, २)।

उवयार पुं [उपकार] भलाई, हित; (उव; गउड; वज्जा ५८)।

उवयार पुं [उपचार] १ पूजा, सेवा; आदर, भक्ति; (स ३२; प्रति ४)। २ चिकित्सा, शुश्रूषा; (पंचा ६)। ३ लक्षणा, शब्द-शक्ति-विशेष, अध्यारोप; "जो तेसु धम्मसद्दो सो उवयारेण, निच्छएण इहं" (दसनि १)। ४ व्यवहार; "णिउणाजुत्तोवयारकुसला" (विपा १, २)। ५ कल्पना; "उवयारओ खित्तस्स विणिगमणं सरूवओ नत्थि" (विसे)। ६ आदेश; (आवम)।

उवयारग वि [उपचारक] सेवा-शुश्रूषा करने वाला; (निचू ११)।

उवयारण न [उपकारण] अन्य-द्वारा उपकार करना; "उवयारणपारणासु विणओ पउंजियव्वो" (पण्ह २, ३)।

उवयारय वि [उपकारक] उपकार करने वाला; (धम्म ८ टी)।

उवयारि वि [उपकारिन्] उपकारक; (स २०८; विक २३; विवे ७६)।

उवयारिअ वि [औपचारिक] उपचार से संबन्ध रखने वाला; (उवर ३४)।

उवयालि पुं [उपजालि] १ एक अन्तकृद् मुनि, जो वसुदेव का पुत्र था और जिसने भगवान् श्रीनेमिनाथजी के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर मुक्ति पाई थी; (अंत १४)। २ राजा श्रेणिक का इस नाम का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-विमान में देव-गति प्राप्त की थी; (अनु १)।

उवरइ स्त्री [उपरति] विराम, निवृत्ति; (विसे २१७७; २६४०; सम ४४)।

उवरंज सक [उप+रञ्ज्] ग्रस्त करना। कर्म—उवरज्जदि (शौ); (मुद्रा ५८)।

उवरग पुंन [उपरक] सब से ऊपर का कमरा, अटारी, अट्टालिका; "उवरगपविट्ठाए कणगमंजरीए निरूवणत्थं दारदेसट्ठिएण दिट्ठं तं पुव्ववण्णियचेट्ठियं" (महा)।

उवरत्त वि [उपरक्त] १ अनुरक्त, राग-युक्त; "कुमरगुणेसुवरत्ता" (सुपा २५६)। २ राहु से ग्रसित; (पाअ)। ३ म्लान; (स ४७३)।

उवरम अक [उप+रम्] निवृत्त होना, विरत होना। "भो उवरमसु एयाओ असुभज्झवसाणाओ" (महा)।

उवरम पुं [उपरम] १ निवृत्ति, विराम; (उप पृ ६३)। २ नाश; (विसे ६२)।

उवरय वि [उपरत] १ विरत, निवृत्त; (आचा; सुपा ५०८)। २ मृत; (स १०४)।

उवरय देखो **उवरग**; "उवरयगया दारं पिहिऊण किंपि मुणमुणंती चिट्ठइ" (महा)।

उवरल (अप) देखो **उव्वरिय (दे)**; (पिंग)।

उवराग } पुं [उपराग] सूर्य वा चन्द्र का ग्रहण, राहु-ग्रहण;
उवराय } (पण्ह, १, २; से ३, ३६; गउड)।

उवराय पुं [उपरात्र] दिन, "राओवरायं अपडिन्ने अन्नगिलायं एगया भुंजे" (आचा)।

उवरि अ [उपरि] ऊपर, ऊर्ध्व; (उव)। °**भासा** स्त्री [°भाषा] गुरु के बोलने के अनन्तर ही विशेष बोलना; (पडि)। °**म**, °**मग**, °**मय**, °**तल** वि [°तन] ऊपर का ऊर्ध्व-स्थित; (सम ४३; सुपा ३५; भग; हे २, १६३; सम २२; ८६)। °**हुत्त** वि [अभिमुख] ऊपर की तरफ; (सुपा २६६)।

उवरिं ऊपर देखो; (कुमा)।

उवरुंध सक [उप+रुध्] १ अटकाव करना, रोकना। २ अड़चन डालना। ३ प्रतिबन्ध करना। कर्म—उवरुज्झइ, उवरुंधिज्जइ; (हे ४, २४८)।

उवरुद्द पुं [**उपरुद्र**] नरक के जीवों को दुःख देने वाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; "रुद्दोवरुद्द काले अ, महाकाले ति यावरे" (सम २८)।

" भंजंति अंगमंगाणि, ऊरुबाहुसिराणि कर-चरणा।
कप्पेंति कप्पणीहिं, उवरुद्दा पावकम्मरया "
(सुअ १, ५)।

उवरुद्ध वि [**उपरुद्ध**] १ रक्षित। २ प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध; "पासत्थपमुहचोरोवरुद्धधणभव्वसत्थाणं " (सार्ध ६८ ; उप पृ ३८५)।

उवरोह पुं [**उपरोध**] १ अड़चन, बाधा; (विसे १४१३; स ३१६) ; "भूओवरोहरहिए" (आव ४) । २ अटकाव, प्रतिबन्ध ; (बृह १; स १५)। ३ घेरा, नगर आदि का सैन्य द्वारा वेष्टन; "उवरोहभया कीरइ सप्परिखे पुरवरस्स पागारो" (बृह ३)। ४ निर्बन्ध, आग्रह; (स ४५७)।

उवरोहि वि [**उपरोधिन्**] उपरोध करने वाला; (आव ४)।

उवल पुं [**उपल**] १ पाषाण, पत्थर ; (प्रास १७५)। २ टाँकी वगैरः को संस्कृत करने वाला पाषाण-विशेष; (पराण १)।

उवलम्बण पुं [**उपलम्बन**] साँकल वाला एक प्रकार का दीपक ; (अनु)।

उवलंभ सक [**उप+लभ्**] १ प्राप्त करना। २ जानना। ३ उलहना देना। कर्म—उवलंभिज्जइ ; (पि ५४१)। वकृ—**उवलंभेमाण** ; (णाया १, १८)।

उवलंभ पुं [**उपलम्भ**] १ लाभ, प्राप्ति ; (सुपा ६)। २ ज्ञान ; (स ६५१)। ३ उलहना; "एवं बहूवलंभे" (उप ६४८ टी)।

उवलंभणा स्त्री [**उपलम्भना**] उलहना; "धरणं सत्थवाहं बहूहिं खेज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खेज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभेमाणा य धणस्स एयमट्ठं णिवेदेंति" (णाया १, १८)।

उवलक्ख सक [**उप + लक्षय्**] जानना, पहिचानना। उवलक्खेइ ; (महा)। संकृ—**उवलक्खेऊण**; (महा)। कृ—**उवलक्खिज्ज** ; (उप पृ ८७)।

उवलक्खण न [**उपलक्षण**] १ पहिचान; (सुपा ६१)। २ अन्यार्थ-बोधक संकेत ; (श्रा ३०)।

उवलक्खिअ वि [**उपलक्षित**] १ पहिचाना हुआ, परिचित; (श्रा १२)।

उवलग्ग वि [**उपलग्न**] लगा हुआ, लग्न; "पउमिणिपत्तोवलग्गजलबिंदुनिचयचित्तं" (कप्प; भवि)।

उवलद्ध वि [**उपलब्ध**] १ प्राप्त ; २ विज्ञात ; " जइ सव्वं उवलद्धं, जइ अप्पा भाविओ उवसमेण" (उव ; णाया १. १३ ; १४)। ३ उपालब्ध, जिसको उलहना दिया गया हो वह ; (उप ७२८ टी)।

उवलद्धि स्त्री [**उपलब्धि**] १ प्राप्ति, लाभ ; २ ज्ञान ; (विसे २०६)।

उवलद्धु वि [**उपलब्धृ**] ग्रहण करने वाला, जानने वाला ; (विसे ६२)।

उवलभ देखो **उवलंभ**=उप+लभ्। वकृ—**उवलभंत**; (पि ४५७)। संकृ—**उवलब्भ** ; (पि ५९०)।

उवलभत्ता } स्त्री [दे] वलय, कङ्गन ; (दे १,
उवलयभग्गा } १२०)।

उवलल अक [**उप + लल्**] क्रीड़ा करना, विलास करना। वकृ—**उवललंत** ; (महा)। प्रयो, वकृ—**उवलालिज्जमाण** ; (णाया १, १)।

उवललय न [**दे**] सुरत, मैथुन ; (दे १, ११७)।

उवललिय न [**उपललित**] क्रीडा-विशेष; (णाया १. ६)।

उवलह देखो **उवलंभ**=उप+लभ्। संकृ—**उवलहिय** ; (स ३२) ; **उवलहिऊण** ; (स ६१०)।

उवला सक [**उप+ला**] १ ग्रहण करना। २ आश्रय करना। हेकृ—**उवलाउं**; (वव १)।

उवलि देखो **उवल्लि**। उवलिइज्जा ; (आचा २, ३, १, २)।

उवलिंप सक [**उप+लिप्**] लीपना, पोतना। भवि—उवलिंपिहिइ ; (पि ५४९)।

उवलित्त वि [**उपलिप्त**] लीपा हुआ, पोता हुआ ; (णाया १, १)।

उवलीण देखो **उवल्लीण**।

उवलुअ वि [**दे**] सलज्ज, लज्जा-युक्त ; (दे १, १०७)।

उवलेव पुं [**उपलेप**] १ लेपना। २ कर्म-बन्ध; (औप)। ३ संश्लेष ; (आचा)। ४ आश्लेष; (सूअ १, १, २)।

उवलेवण न [**उपलेपन**] ऊपर देखो ; (भग ११, ६ ; निचू १ ; औप)।

उवलेविय वि [**उपलेपित**] लीपा हुआ, पोता हुआ ; (कप्प)।

उवलोभ सक [**उप+लोभय्**] लालच देना, लोभ दिखाना। संकृ—**उवलोभेऊण** ; (महा)।

उवलोहिय वि [**उपलोभित**] जिसको लालच दी गई हो वह ; (उप ७२८ टी)।

उवल्लि सक [**उप+ली**] १ रहना, स्थिति करना। २ आश्रय करना। उवल्लियइ ; (पि १६६; ४७४)। "नओ संजयामेव वासावासं उवल्लिइज्जा" (आचा २, ३,१, १ ; २)।

उवल्लीण वि [**उपलीन**] १ स्थित। २ प्रच्छन्न-स्थित; "उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति" (आचा २)।

उववज्ज अक [**उप+पद्**] १ उत्पन्न होना। २ संगत होना, युक्त होना। उववज्जइ; भवि—उववज्जिहिइ; (भग; महा) वकृ—**उववज्जमाण**; (ठा ४)। संकृ—**उववज्जित्ता**; (भग १७, ६)। हेकृ—**उववज्जिउं** ; (सूअ २, १)।

उववज्जण न [**उपवर्जन**] त्याग, " असमंजसोववज्जण-मिह जायइ सव्वसंगचायाओ " (सुपा ४७१)।

उववज्जमाण देखो **उववाय**=उप+वादय्।

उववट्ट अक [**उप+वृत्**] च्युत होना, मरना, एक गति से दूसरी गति में जाना। उववट्टइ ; (भग)। वकृ—**उववट्टमाण** ; (भग)।

उववण न [**उपवन**] बगीचा ; (गाया १, १ ; गउड)।

उववण्ण वि [**उपपन्न**] १ उत्पन्न ; "उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि" (उत्त ६)। २ संगत, युक्त ; (पंचा ६; उवर ४७)। ३ प्रेरित ; "उववण्णो पावकम्मुणा" (उत्त १६)। ४ न. उत्पत्ति, जन्म ; (भग १४,१)।

उववत्ति स्त्री [**उपपत्ति**] १ उत्पत्ति, जन्म ; (ठा २)। २ युक्ति, न्याय; (पउम २, ११७; उवर ४६)। ३ विषय; ४ संभव; "विसउ त्ति वा संभउ त्ति वा उववत्ति त्ति वा एगट्ठा" (आचू १)।

उववत्तु वि [**उपपत्तृ**] उत्पन्न होने वाला, "देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति" (औप; ठा ८)।

उववन्न देखो **उववण्ण** ; (भग ; ठा २, २ ; स १५८ ; १६२)।

उववयण न [**उपपतन**] देखो **उववाय**=उपपात; "उववयणं उववाओ" (पंचभा)।

उववसण न [**उपवसन**] उपवास ; (सुपा ६१६)।

उववाइय वि [**औपपादिक, औपपातिक**] १ उत्पन्न होने वाला ; "अत्थि मे आया उववाइए, नत्थि मे आया उववाइए" (आचा)। २ देवरूप या नारक रूप से उत्पन्न होने वाला ; (पण्ह १, ४)।

उववाय पुं [**उप+वादय्**] वाद्य बजाना। कवकृ—**उववज्जमाण, उववज्जमाण** ; (कप्प; राज)।

उववाय पुं [**उपपात**] १ देव या नारक जीव की उत्पत्ति—जन्म ; (कप्प)। २ सेवा, आदर ; "आणोववायवयणनिद्देसे चिट्ठंति" (भग ३, २)। ३ विनय; ४ आज्ञा ; 'उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा" (वव ४)। ५ प्रादुर्भाव; (पण्ण १६)। ६ उपसंपादन, संप्राप्ति; (निचू ५)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] साध्वाचार-विशेष, पार्श्वस्थों के साथ रह कर संविग्न-विहार की संप्राप्ति ; (पंचभा)। °**य** वि [°**ज**] देव या नारक गति में उत्पन्न जीव ; (आचा)।

उववास पुंन [**उपवास**] उपवास, अनाहार, दिन-रात भोजनादि का अभाव ; (उवा; महा)।

उववासि वि [**उपवासिन्**] जिसने उपवास किया हो वह (पउम ३३, ५१; सुपा ४७८)।

उववासिय वि [**उपवासित**] उपवास किया हुआ ; (भवि)।

उवविट्ठ वि [**उपविष्ट**] बैठा हुआ, निषण्ण ; (आवम)।

उवविणिग्गय वि [**उपविनिर्गत**] सतत निर्गत; (जीव३)।

उवविस अक [**उप+विश्**] बैठना। उवविसइ ; (महा)। संकृ—**उवविसिअ** ; (अभि ३८)।

उववीअ न [**उपवीत**] १ यज्ञसूत्र, जनेऊ ; (गाया १, १६ ; गउड)। २ सहित, युक्त ; " गुणसंपओववीओ" (विसे ३४११)।

उववीड अ [**उपपीड**] उपमर्दन ; "सिविणोववीडं आलिंगणेण गाढं पीडिओ" (रंभा)।

उववूह सक [**उप+बृंह्**] १ पुष्ट करना। २ प्रशंसा करना, तारीफ करना। संकृ—**उववूहेऊण** ; (दसनि ३)। कृ—**उववूहेयव्व** ; (दसनि ३)।

उववूहण न [**उपबृंहण**] १ वृद्धि, पोषण ; (पण्ह २, १)। २ प्रशंसा, श्लाघा ; (पंचा २)।

उववूहा स्त्री [**उपबृंहा**] ऊपर देखो; "उववूहं-थिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ" (पडि)।

उववूहणिय वि [**उपबृंहणीय**] पुष्टि-कर्ता ; (निचू ८)। स्त्री. पट्ट-विशेष, राजा वगैरः के भोजन-समय में उपभोग में आने वाला पट्टा ; (निचू ६)।

उववूहिय वि [**उपबृंहित**] १ वृद्धि को प्राप्त पुष्ट; (सं १५)। २ प्रशंसित ; (उप पृ ३८६) ।

उववूहिर वि [**उपबृंहिन्**] १ पोषक, पुष्टि-कारक ; २ प्रशंसक ; (सण) ।

उववेय वि [**उपेत**] युक्त, सहित ; (णाया १, १ ; औप वसु ; सुर १, ३४ ; विसे ६६६) ।

उवसंखा स्त्री [**उपसंख्या**] यथावस्थित पदार्थ-ज्ञान; (सूत्र २, १६) ।

उवसंगह सक [**उपसं+ग्रह्**] उपकार करना। कर्म—उवसंगहिज्जइ ; (स १६१) ।

उवसंघर सक [**उपसं+हृ**] उपसंहार करना । उवसंघरमि; (भवि) ।

उवसंघरिय देखो **उवसंहरिय** ; (भवि) ।

उवसंघिय वि [**उपसंहृत**] जिसका उपसंहार किया गया हो वह, समापित ; (विसे १०११) ।

उवसंचि सक [**उपसं+चि**] संचय करना । संकृ—**उवसंचिवि** ; (सण) ।

उवसंठिय वि [**उपसंस्थित**] १ समीप में स्थित; २ उपस्थित ; (सण) ।

उवसंत वि [**उपशान्त**] १ क्रोधादि-विकार-रहित; (सूत्र १, ६; धर्म ३) । २ नष्ट, अपगत; "उवसंतरयं करेह" (राय) । ३ पुं. ऐरवत क्षेत्र के स्वनाम-धन्य एक तीर्थङ्कर-देव; (पव ७) । °**मोह** पुं [°**मोह**] ग्यारहवाँ गुण-स्थानक ; (सम २६) ।

उवसंति स्त्री [**उपशान्ति**] उपशम ; (आचा) ।

उपसंधारिय वि [**उपसंधारित**] संकल्पित; (निचू १)।

उवसंपज्ज [**उपसं+पद्**] १ समीप में जाना । २ स्वीकार करना । ३ प्राप्त करना । उवसंपज्जइ; (स १६१)। वकृ—**उवसंपज्जंत**; (वव १) । संकृ—**उवसंपज्जित्ता, उवसंपज्जित्ताणं** ; (कप्प ; उवा) । हेकृ—**उवसंपज्जिउं**; (बृह १) ।

उवसंपण्ण वि [**उपसंपन्न**] १ प्राप्त ; २ समीप-गत ; (धर्म ३) ।

उवसंपया स्त्री [**उपसंपद्**] १ ज्ञान वगैरः की प्राप्ति के लिए दूसरे गुर्वादि के पास जाना; (धर्म ३)। २ अन्य गुरु आदि की सत्ता का स्वीकार करना ; (ठा ३, ३) । ३ लाभ, प्राप्ति; (उत्त २६) ।

उवसंहरिय वि [**उपसंहृत**] हटाया हुआ "वंतरेण य उवसहरिया माया" (महा) ।

उवसंहार पुं [**उपसंहार**] १ समाप्ति ; २ उपनय ; (श्रा ३६) ।

उवसग्ग पुं [**उपसर्ग**] १ उपद्रव, बाधा ; (ठा १०) । २ अव्यय-विशेष, जो धातु के पूर्व में जोड़े जाने से उस धातु के अर्थ की विशेषता करता है ; (पण्ह २, २) ।

उवसग्ग वि [**दे**] मन्द, आलसी; (दे १, ११२) ।

उवसज्जण न [**उपसर्जन**] १ अ-प्रधान, गौण ; (विसे २२६२) । २ सम्बन्ध ; (विसे ३००५) ।

उवसत्त वि [**उपसक्त**] विशेष आसक्ति वाला, (उत्त ३२)।

उवसद्द पुं [**उपशब्द**] सुरत-समय का शब्द ; (तंदु) ।

उवसप्प सक [**उप+सृप्**] समीप जाना । संकृ—**उवसप्पिऊण**; (महा ; स ५२६) ।

उवसप्पि वि [**उपसर्पिन्**] समीप में जाने वाला; (भवि)।

उवसप्पिय वि [**उपसर्पित**] पास गया हुआ; (पाअ) ।

उवसम पुं [**उप+शम्**] १ क्रोध-रहित होना । २ शान्त होना, ठंढा होना । ३ नष्ट होना । उवसमइ ; (कप्प; कस; महा) । कृ—**उवसमियव्व**; (कप्प) । प्रयो—उवसमेइ; (विसे १२८४), उवसमावेइ ; (पि ५५२) ; कृ—**उवसमावियव्व**; (कप्प) ।

उवसम पुं [**उपशम**] १ क्रोध का अभाव, क्षमा; (आचा)। २ इन्द्रिय-निग्रह ; (धर्म ३) । ३ पन्द्रहवाँ दिवस; (चंद १०) । ४ मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१) । °**सम्म** न [°**सम्यक्त्व**] सम्यक्त्व-विशेष ; (भग) ।

उवसमणा स्त्री [**उपशमना**] आत्मिक प्रयत्न विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल उदय-उदीरणादि के अयोग्य बनाये जाँय वह ; (पंच) ।

उवसमि वि [**उपशमिन्**] उपशम वाला ; (विसे ५३० टी) ।

उवसमिय वि [**उपशमित**] उपशम-प्राप्त ; (भवि) ।

उवसमिय वि [**औपशमिक**] १ उपशम से होने वाला; २ उपशम से संबन्ध रखने वाला ; (सुपा ६४८) ।

उवसाम सक [**उप+शमय्**] १ शान्त करना । २ रहित करना । उवसामेइ ; (भग) । वकृ—**उवसामेमाण**; (राज) कृ—**उवसामियव्व** ; (कप्प) । संकृ—**उवसामइत्तु** ; (पंच) ।

उवसाम देखो **उवसम** ; (विसे १३०६) ।

उवसामग वि [**उपशमक**] १ क्रोधादि को उपशान्त करने वाला ; (विसे ५२६; ओव ४) । २ उपशम से संबन्ध रखने वाला ; " उवसामगसेढिगयस्स होइ उवसामगं तु सम्मत्तं " (विसे २७३५) ।

उवसामण न [**उपशमन**] उपशान्ति, उपशम ; (स ४६६) ।

उवसामणया स्त्री [**उपशमना**] उपशम ; (ठा ८) ।

उवसामय देखो **उवसामग** ; (सम २६; विसे १३०२) ।

उवसामिय वि [**औपशमिक**] १ उपशम-संबन्धी ; २ भाव-विशेष ; " मोहोवसमसहावो, सव्वो उवसामिओ भावो " (विसे ३४६४) । ३ सम्यक्त्व-विशेष ; (विसे ५२९) ।

उवसामिय वि [**उपशमित**] शान्त किया हुआ ; (वव १) ।

उवसाह सक [**उप+कथ्**] कहना । उवसाहइ; (सण) ।

उवसाहण वि [**उपसाधन**] निष्पादक ; (सण) ।

उवसाहिय वि [**उपसाधित**] तय्यार किया हुआ; (पउम ३४, ८; सण) ।

उवसित्त वि [**उपसिक्त**] सिक्त, छिटका हुआ; (रंभा) ।

उवसिलोअ सक [**उपश्लोकय्**] वर्णन करना, प्रशंसा करना । कृ—**उवसिलोअइदव्व** (शौ) ; (मुद्रा १६८) ।

उवसुत्त वि [**उपसुप्त**] सोया हुआ ; (से १५, ११) ।

उवसुद्ध वि [**उपशुद्ध**] निर्दोष ; (सूअ १, ७) ।

उवसूइय वि [**उपसूचित**] संसूचित ; (सण) ।

उवसेर वि [**दे**] रति-योग्य ; (दे १, १०४) ।

उवसेवय वि [**उपसेवक**] सेवा करने वाला, भक्त; (भवि) ।

उवसोभ अक [**उप+शुभ्**] शोभना, विराजना । वकृ —**उवसोभमाण, उवसोभेमाण** ; (भग; णाया १, १) ।

उवसोभिय वि [**उपशोभित**] सुशोभित, विराजित; (औप) ।

उवसोहा स्त्री [**उपशोभा**] शोभा, विभूषा ; (सुर ३, १०४) ।

उवसोहिय वि [**उपशोधित**] निर्मल किया हुआ, शुद्ध किया हुआ ; (णाया १, १) ।

उवसोहिय देखो **उवसोभिय** ; (सुपा ५ ; भवि ; सार्ध ६६) ।

उवस्सग्ग देखो **उवसग्ग** ; (कस) ।

उवस्सय पुं [**उपाश्रय**] जैन साधुओं को निवास करने का स्थान ; (सम १८८ ; ओघ १७ भा ; उप ६४८ टी) ।

उवस्सा स्त्री [**उपाश्रा**] द्वेष; (वव १) ।

उवस्सिय वि [**उपाश्रित**] १ द्वेषी ; (वव १) । २ अङ्गीकृत ; ३ समीप में स्थित; ४ न द्वेष ; (राज) ।

उवह स [**उभय**] दोनों, युगल; (कुमा; हे २, १३८) ।

उवह अ [**दे**] 'देखो' अर्थ को बतलाने वाला अव्यय; (षड्) ।

उवहट्ट सक [**समा+रभ्**] शुरू करना, आरम्भ करना । उवहट्टइ ; (षड्) ।

उवहड वि [**उपहृत**] १ उपढौकित, उपस्थापित; (राज) । २ भोजन-स्थान में अर्पित भोजन ; (ठा ३, ३) ।

उवहण सक [**उप+हन्**] १ विनाश करना । २ आघात पहुँचाना । उवहणइ ; (उव) । कर्म—उवहम्मइ ; (षड्) । वकृ—**उवहणंत** ; (राज) ।

उवहणण न [**उपहनन**] १ आघात ; २ विनाश ; (ठा १०) ।

उवहत्थ सक [**समा+रच्**] १ रचना, बनाना । २ उत्तेजित करना । उवहत्थइ ; (हे ४, ९५) ।

उवहत्थिय वि [**समारचित**] १ बनाया हुआ; २ उत्तेजित; (कुमा) ।

उवहम्म° देखो **उवहण** ।

उवहय वि [**उपहत**] १ विनाशित ; (प्रासू १३५) । २ दूषित ; (बृह १) ।

उवहर सक [**उप+हृ**] १ पूजा करना । २ उपस्थित करना । ३ अर्पण करना । उवहरइ; (हे ४, २५९) । भूका—उवहरिंसु; (ठा ९) ।

उवहस सक [**उप+हस्**] उपहास करना, हाँसी करना । कृ—**उवहसणिज्ज**; (स ३) ।

उवहसिअ वि [**उपहसित**] १ जिसका उपहास किया गया हो वह ; (पि १५५) । २ न. उपहास; (तंदु) ।

उवहा स्त्री [**उपधा**] माया, कपट ; (धर्म ३) ।

उवहाण न [**उपधान**] १ तकिया, उसीसा; (दे १, १४०; सुर १२, २५; सुपा ४) । २ तपश्चर्या; (सूअ १, ३; २, २१) । ३ उपाधि; "सच्छंपि फलिहरयणं उवहाणवसा कलिज्जए कालं" (उप ७२८ टी) ।

उवहार पुं [**उपहार**] १ भेंट, उपहार ; (प्रति ७४) । २ विस्तार, फैलाव ; "पहासमुदओवहारेहिं सव्वओ चेव दीवयंतं" (कप्प) ।

उवहारणया देखो **उवधारणया** ; (राज) ।

उवहारिअ वि [**उपधारित**] अवधारित, निश्चित; (सूअ २) ।

उवहारिआ } स्त्री [**दे**] दोहने वाली स्त्री; (गा ७३१; दे १, १०८) ।
उवहारी }

उवहास पुं [**उपहास**] हाँसी, ठट्ठा ; (हे २, २०१) ।

उवहास वि [उपहास्य] हाँसी के योग्य, "सुसमत्थो वि हु जो, जणयअज्जियं संपयं निसेवेइ। सो अम्मि! ताव लोए, ममंव उवहासयं लहइ" (सुर १, २३२)।

उवहासणिज्ज वि [उपहसनीय] हास्यास्पद ; (पउम १०६, २०)।

उवहि पुं [उदधि] समुद्र, सागर ; (से ५, ४०; ४२; भवि)।

उवहि पुंस्त्री [उपधि] १ माया, कपट ; (आचा)। २ कर्म; (सूअ १, २)। ३ उपकरण, साधन ; "तिविहा उवही पण्णत्ता" (ठा ३ ; ओघ २)।

उवहिय वि [उपहित] १ उपढौकित, अर्पित ; २ निहित, स्थापित ; (आचा; विसे ६३७)। ३ न. उपढौकन, अर्पण ; (निचू २०)।

उवहिय वि [औपधिक] माया से प्रच्छन्न विचरने वाला ; (णाया १, २)।

उवहुंज सक [उप+भुज्] उपभोग करना, कार्य में लाना। उवहुंजइ ; (पि ५०७)। कवकृ—**उवहुज्जंत** ; (पि ५४६)।

उवहुत्त देखो **उवभुत्त** ; (पाअ ; से १०, ४५)।

उवाइण सक [उप + याच्] मनौती करना, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प करना। हेकृ—"जति णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि, ताणं अहं तुब्भं जायं च दायं च भागं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेस्सामि त्ति कट्टु ओवाइयं **उवाइणित्तए**" (विपा १, ७)।

उवाइण सक [उपा+दा] १ ग्रहण करना। २ प्रवेश करना। हेकृ—**उवाइणित्तए**; (ठा ३); प्रयो—"तं सेयं खलु मम जितसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताण जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं **उवाइणावित्तए**" (णाया १, १२)।

उवाइणाव सक [अति+क्रम्] १ उल्लंघन करना। २ गुजारना, पसार करना। उवाइणावेइ; वकृ—**उवाइणावेंत**; हेकृ—**उवाइणावेत्तए** ; (कस); **उवाइणावित्तए** ; (कप्प)। "से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहिया से णं संनिविट्ठं पेहाए कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा तद्दिवसं भिक्खायरियाए गंतूण पडिनियत्तए; नो से कप्पइ तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेत्तए। जे खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेइ, उवाइणावेंतं वा साइज्जइ, से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं" (कस)। "नो से कप्पइ तं रयणिं उवाइणावित्तए" (कप्प)।

उवाइणाविय वि [अतिक्रान्त] १ उल्लङ्घित। २ गुजारा हुआ, पसार किया हुआ, बिताया हुआ; "नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा असणं वा ४ पढमाए पोरुसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरुसिं उवाइणावेत्तए। से य आहच्च उवाइणाविए सिया, तं नो अप्पणा भुंजेज्जा" (कस)।

उवाइय देखो **उवयाइय** ; (णाया १, २ ; सुपा १० ; महा)।

उवाई स्त्री [उलावकी] पोताकी-नामक विद्या की प्रतिपक्ष-भूत एक विद्या ; (विसे २४५४)।

उवाएज्ज } वि [उपादेय] ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य ;
उवाएय } (विसे ; स १४८)।

उवागच्छ } सक [उपा+गम्] समीप में आना। उवागच्छइ ;
उवागम } (भग; कप्प)। भवि—उवागमिस्संति; (आचा २, ३, १, २) संकृ—**उवागच्छित्ता** ; (भग; कप्प)। हेकृ—**उवागच्छित्तए** ; (कप्प)।

उवागम पुं [उपागम] समीप में आगमन ; (राज)।

उवागमण न [उपागमन] १ समीप में आगमन। २ स्थान, स्थिति ; (आचानि ३११)।

उवागय वि [उपागत] १ समीप में आया हुआ ; (आचा २, ३, १, २)। २ प्राप्त; "एगदिवसंपि जीवो पव्वज्जमुवागओ अणन्नमणो" (उव)।

उवाडिय वि [उत्पाटित] उखेड़ा हुआ ; (विपा १, ६)।

उवाणया } स्त्री [उपानह्] जूता; (षड्)। "पुव्वसुतारि-
उवाणहा } याओ उवाणहाओ पएसु ठवियाओ" (सुपा ६१०; सूअ १, ४, २, ६)।

उवादा सक [उपा+दा] ग्रहण करना। कर्म—उवादीयंति; (भग)। संकृ—**उवादाय, उवादिएत्ता** ; (भग)। कवकृ—**उवादीयमाण** ; (आचा २)।

उवादाण न [उपादान] १ ग्रहण, स्वीकार। २ कार्यरूप में परिणत होने वाला कारण ; ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य; "नाओवादाणे च्चिय मुच्छा लोभोत्ति तो रागो" (विसे २९७०)।

उवादिय वि [उपजग्ध] उपभुक्त; (राज)।

उवाय पुं [उपाय] १ हेतु, साधन ; (उत्त ३२)। २ दृष्टान्त, "उवाओ सो साधम्मेण य विधम्मेण य" (आचू १)। ३ प्रतीकार ; (ठा ४,३)।

उवाय सक [**उप+याच्**] मनौती करना। वकृ—**उवायमाण**; (णाया १, २; १०)।

उवायण न [**उपायन**] भेंट, उपहार, नजराना ; (उप २५५; सुपा २२४ ; ४१० ; गउड)।

उवायणाव देखो **उवाइणाव**। उवायणावेइ ; वकृ—**उवायणावेंत**; हेकृ—**उवायणावेत्तए**; (कस) ; **उवायणावित्तए** ; (कप्प)।

उवायाण देखो **उवादाण**; (अच्चु १२; स २; विसे २९७६)।

उवायाय वि [**उपायात**] समीप में आया हुआ ; (निर १,१)।

उवारूढ वि [**उपारूढ**] आरूढ ; (स ३३१)।

उवालंभ सक [**उपा+लभ्**] उलहना देना। उवालंभइ ; (कप्प)। वकृ—**उवालंभंत**; (पउम १६, ४१) संकृ—**उवालंभित्ता**; (बृह ४)। कृ—**उवालंभणिज्ज**; (माल १५५)।

उवालंभ पुं [**उपालम्भ**] उलहना ; (णाया १, १ ; मा ४)।

उवालद्ध वि [**उपालब्ध**] जिसको उलहना दिया गया हो वह "उवालद्धो य सो सिवो वंभणो" (निचू १; •माल १६७)।

उवालह सक [**उपा+लभ्**] उलहना देना। भवि—उवालहिस्सं ; (प्राप)।

उवास सक [**उप+आस्**] उपासना करना, सेवा करना। सुस्सूसमाणो उवासेज्जा सुपण्णं सुतवस्सियं" (सूअ १, ६)। वकृ—**उवासमाण** ; (ठा ६)।

उवास पुं [**अवकाश**] खाली जगह, आकाश; (ठा २, ४; ८ ; भग)।

उवासग वि [**उपासक**] १ उपासना करने वाला, सेवक ; २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ; (उत्त २)। °**दसा** स्त्री [°**दशा**] सातवाँ जैन अंग-ग्रन्थ ; (सम १)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] श्रावकों को करने योग्य नियम-विशेष; (उत्त २)।

उवासण न [**उपासन**] उपासना, सेवा ; (स ५४३; मै ८६)।

उवासणा स्त्री [**उपासना**] १ क्षौर-कर्म, हजामत वगैरहः सफाई ; २ सेवा, शुश्रूषा "उवासणा मंसुकम्ममाइया, गुरुराईणं वा उवासणा पज्जुवासणया" (आवम)।

उवासय देखो **उवासग** ; (सम ११६)।

उवासय पुं [**उपाश्रय**] जैन मुनिओं का निवास-स्थान ; (उप १४२ टी)।

उवासिय वि [**उपासित**] सेवित; (पउम ६८, ४२)।

उवाहण सक [**उपा+हन्**] विनाश करना, मारना। वकृ—**उवाहणंत** ; (पण्ह १, २)।

उवाहणा देखो **उवाणहा** ; (अनु; णाया १,१५)।

उवाहि पुंस्त्री [**उपाधि**] १ कर्म-जनित विशेषण ; (आचा)। २ सामीप्य, संनिधि ; (भग १, १)। ३ अस्वाभाविक धर्म ; "सुद्धोवि फलिहमणी उपाहिवसओ धरेइ अन्नत्तं" (धम्म ११ टी)।

उवि सक [**उप+इ**] १ समीप आना। २ स्वीकार करना। ३ प्राप्त करना। उविंति ; (भग)। वकृ—**उविंत** ; (पि ४९३; प्रामा)।

उविअ देखो **अविअ**=अपिच ; (स २०६)।

उविअ वि [**उपेत**] युक्त, सहित ; (भवि)।

उविअ न [**दे**] शीघ्र, जल्दी ; (दे १, ८९)। २ वि. परिकर्मित, संस्कारित ; " णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसिंतविरइयमुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थआविद्धवीरवलए " (णाया १, १)।

उविंद पुं [**उपेन्द्र**] कृष्ण; (कुमा)। °**वज्जा** स्त्री [°**वज्रा**] ग्यारह अक्षरों के पाद वाला एक छन्द ; (पिंग)।

उविक्ख सक [**उप+ईक्ष्**] उपेक्षा करना, अनादर करना। वकृ—**उविक्खमाण** ; (द्र १६)।

उविक्खा स्त्री [**उपेक्षा**] उपेक्षा, अनादर ; (काल)।

उविक्खिय वि [**उपेक्षित**] तिरस्कृत, अनादृत ; (सुपा ३९५)।

उविक्खेव पुं [**उद्क्षेप**] हजामत, मुण्डन ; (तंदु)।

उवियग्ग वि [**उद्विग्न**] खिन्न, उद्वेग-प्राप्त ; (राज)।

उवीव अक [**उद्+विच्**] उद्वेग करना, खिन्न होना। उवीवइ ; (नाट)।

उवुज्झमाण देखो **उव्वह**।

उवे देखो **उवि**। उवेइ, उवेंति ; (औप)। वकृ—**उवेंत** ; (महा)। संकृ—**उवेच्च** ; (सूअ १, १४)।

उवेक्ख देखो **उविक्ख**। उवेक्खह ; (सुपा ३५४)। कृ—**उवेक्खियव्व** ; (स ६०७)।

उवेक्खिअ देखो **उविक्खिय** ; (गा ४२०)।

उवेच्च देखो **उवे**।

उवेय वि [**उपेत**] १ समीप-गत ; २ युक्त, सहित ; (संथा ६)।

उवेय वि [**उपेय**] उपाय-साध्य ; (राज)।

उवेल्ल अक [**प्र+सृ**] फैलना, प्रसारित होना। उवेल्लइ; (हे ४, ७७)।

उवेह सक [**उप+ईक्ष्**] उपेक्षा करना, तिरस्कार करना, उदासीन रहना। उवेहइ; (धम्म १६)। वक्र—**उवेहंत, उवेहमाण**; (सु ४६; ठा ६)। कृ—**उवेहियव्व**; (सण)।

उवेह सक [**उत्प्र+ईक्ष्**] १ जानना; समझना। २ निश्चय करना। ३ कल्पना करना। उवेहाहि; वक्र—**उवेहमाण**; "उवेहमाणे अणुवेहमाणं बूया, उवेहाहि समियाए" (आचा)। संक्र—**उवेहाए**; (आचा)।

उवेहा स्त्री [**उपेक्षा**] तिरस्कार, अनादर, उदासीनता; (सम ३२)। °**कर** वि [°**कर**] उपेक्षक, उदासीन; (श्रा २८)।

उवेहा स्त्री [**उत्प्रेक्षा**] १ ज्ञान, समझ। २ कल्पना। ३ अवधारण, निश्चय; (औप)।

उवेहिय वि [**उपेक्षित**] अनादृत, तिरस्कृत; (उप १२६; सुपा १३५)।

°**उव्व** देखो **पुव्व**; (गा ४१४)।

उव्वंत वि [**उद्वान्त**] १ वमन किया हुआ; २ निष्क्रान्त, निर्गत; (अभि २०६)।

उव्वक्क सक [**उद्+वम्**] १ बाहर निकालना। २ वमन करना। हेकृ—**उव्वक्किउं**; (सुपा १३६)।

उव्वक्क } वि [**उद्वान्त**] १ बाहर निकाला हुआ;
उव्वक्किय } (वव १)। २ वमन किया हुआ;

"संतोसामयपाणं, काउं उव्वक्कियं हयासेण।
जं गहिऊणं विरई, कलंकिया मोहमूढेण" (सुपा ४३५)।

उव्वग्ग देखो **ओवग्ग**। संकृ—**उव्वग्गिवि**; (भवि)।

उव्वट्ट उभ [**उद्+वृत्, वर्त्तय्**] १ चलना-फिरना। २ २ मरना, एक गति से दूसरी गति में जन्म लेना। ३ पिष्टिका आदि से शरीर के मल को दूर करना। ४ कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति को हटा कर लम्बी स्थिति करना। ५ पार्श्व को चलाना-फिराना। ५ उत्पन्न होना, उदित होना। उव्वट्टइ; (भग)। वकृ—**उव्वट्टंत, उव्वट्टमाण; उअत्तंत**; (भग; नाट; उत्तर १०७; बृह १)। संकृ—**उव्वट्टित्ता, उहट्टु, उव्वट्टिय**; (जीव १; विपा १, १; आचा २, ७; स २०६)। °—**उव्वट्टित्तए**; (कस)।

उव्वट्ट देखो **उव्वट्टिय**=उद्वृत्त; (भग)।

उव्वट्ट वि [**दे**] १ नीराग, राग-रहित; २ गलित; (दे १, १२६)।

उव्वट्टण न [**उद्वर्त्तन**] १ शरीर पर से मल वगैरः को दूर करना; २ शरीर को निर्मल करने वाला द्रव्य—सुगन्धि वस्तु; (उवा; गाया १, १३)। ३ दूसरे जन्म में जाना, मरण; ४ पार्श्व का परिवर्तन; (आव ४)। ५ कर्म-परमाणुओं की ह्रस्व स्थिति को दीर्घ करना; (पंच)।

उव्वट्टण न [**अपवर्त्तन**] देखो **उव्वट्टणा**=अपवर्तना; (विसे २५१४)।

उव्वट्टणा स्त्री [**उद्वर्त्तना**] १ मरण, शरीर से जीव का निकलना; (ठा २, ३)। २ पार्श्व का परिवर्तन; (आव ४)। ३ जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति दीर्घ होती है, करण-विशेष; (भग ३१, ३२)।

उव्वट्टणा स्त्री [**अपवर्त्तना**] जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्मों की दीर्घ स्थिति का ह्रास होता है; (विसे २५१५ टी)।

उव्वट्टिय वि [**उद्वृत्त**] किसी गति से बाहर निकला हुआ, मृत; "आउक्खएण उव्वट्टिया समाणा" (पण्ह १, १)।

उव्वट्टिय वि [**उद्वर्त्तित**] १ जिसने किसी भी द्रव्य से शरीर पर का तैल वगैरः का मैल दूर किया हो वह; 'तओ तत्थट्ठिओ चेव अब्भंगिओ उव्वट्टिओ उण्हखलउदगेहिं पमज्जिओ" (महा)। २ प्रच्यावित, किसी पद से भ्रष्ट किया हुआ; (पिंड)।

उव्वड्ढ वि [**उद्वृद्ध**] वृद्धि-प्राप्त; (आवम)।

उव्वण वि [**उल्वण**] प्रचण्ड, उद्भट; (उप पृ ७०; गउड; धम्म ११ टी)।

उव्वत्त देखो **उव्वट्ट**=उद्+वृत्। उव्वत्तइ; (पि २८६)। वकृ—**उव्वत्तंत, उव्वत्तमाण**; (से ५, ४२; स २५८; ६२७)। कवकृ—**उव्वत्तिज्जमाण**; (गाया १, ३) संकृ—**उव्वत्तिवि**; (भवि)।

उव्वत्त देखो **उव्वट्ट** (दे)।

उव्वत्त वि [**उद्वृत्त**] १ उत्तान, चित्त; (से ५, ६२)। २ उल्लसित; (हे ४, ४३४)। ३ जिसने पार्श्व को घुमाया हो वह; (आव ३)। ४ ऊर्ध्व-स्थित; "सो उव्वत्तविसाणो खंधवसभो जाओ" (महा)। ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (प्राप)।

उव्वत्त वि [**अपवृत्त**] उलटा रहा हुआ, विपरीत स्थित; (से १, ६१)।

उव्वत्तण न [**उद्वर्त्तन**] १ पार्श्व का परिवर्तन; (गा २८३; निचू ४)। २ ऊँचा रहना, ऊर्ध्व-वर्तन; (ओघ १६ भा)।

उव्वत्तिय वि [**उद्वर्त्तित**] १ परिवर्तित, चक्राकार घुमा हुआ; (स ८५); "मनिवं व अगातलहिं उव्वत्तियवं व सयलवसुहाए" (सुर १२, १६६) ।

उव्वद्ध देखो **उव्वड्ढ** ; (महा) ।

उव्वम सक [**उद् + वम्**] उलटी करना, पीछा निकाल देना । वकृ—**उव्वमंत** ; (से ५, ६ ; गा ३४१) ।

उव्वमिअ वि [**उद्वान्त**] उलटी किया हुआ, वमन किया हुआ ; (पाअ) ।

उव्वर अक [**उद्+वृ**] शेष रहना, बच जाना ; "तुम्हाण देणाण जमुव्वरेइ देज्जाह साहूण तमायरेण" (उप २११ टी)। वकृ—**उव्वरंत** ; (नाट) ।

उव्वर पुं [**दे**] घर्म, ताप ; (दे १, ८७) ।

उव्वरिअ वि [**दे**] १ अधिक, बचा हुआ, अवशिष्ट ; (दे १, १३२; पिंग; गा ४७४; सुपा ११, ५३२; ओघ १६८ भा) । २ अनीप्सित, अनभीष्ट ; ३ निश्चित ; ४ अगणित; ५ न. ताप, गरमी; (दे १, १३२)। ६ वि. अतिक्रान्त, उल्लङ्घित ; "परदव्वहरणविरया निरयाइदुहाण ते खलुव्वरिया" (सुपा ३६८) ।

उव्वरिअ न [**अपवरिका**] कोठरी, छोटा घर; (सुर १४, १७४) ।

उव्वल सक [**उद् + वल्**] १ उपलेपन करना । २ पीछे लौटना । हेकृ—**उव्वलित्तए** ; (कस) ।

उव्वलण न [**उद्वलन**] १ शरीर का उपलेपन-विशेष ; (णाया १, १; १३) । २ मालिश, अभ्यङ्गन ; (बृह ३, औप) ।

उव्वलिय वि [**उद्वलित**] पीछे लौटा हुआ ; (महा) ।

उव्वस वि [**उद्वस**] उजाड़, वसति-रहित ; (सुपा १८८; ४०६) ।

उव्वसिय वि [**उद्वसित**] ऊपर देखो ; (गा १६४ ; सुर २, ११६ ; सुपा ५४१) ।

उव्वसी स्त्री [**उर्वशी**] १ एक अप्सरा ; (सण) । २ रावण की एक स्वनाम-ख्यात पत्नी ; (पउम ७४, ८) ।

उव्वह सक [**उद् + वह्**] १ धारण करना । २ उठाना । उव्वहइ ; (महा) । वकृ—**उव्वहंत, उव्वहमाण** ; (पि ३६७; से ६, ५)। कवकृ—**उव्वुज्झमाण**; (णाया १,६)।

उव्वहण न [**उद्वहन**] १ धारण ; २ उत्थापन ; (गउड; नाट) ।

उव्वहण न [**दे**] महान् आवेश ; (दे १, ११०) ।

उव्वा स्त्री [**दे**] घर्म, ताप ; (दे १, ८७) ।

उव्वा } अक [**उद्+वा**] १ सूखना, शुष्क होना ।
उव्वाअ } उव्वाइ, उव्वाअइ ; (षड् ; हे ४, २४०)।

उव्वाअ वि [**उद्वात**] शुष्क, सूखा ; (गउड) ।

उव्वाअ } वि [**दे**] खिन्न, परिश्रान्त ; (दे १, १०२ ;
उव्वाइअ } बृह १; वव ४; पाअ; गा ७५८; सुपा ४३६)।

उव्वाउल न [**दे**] १ गीत ; २ उपवन, बगीचा ; (दे १, १३४) ।

उव्वाडुल न [**दे**] १ विपरीत सुरत; २ मर्यादा-रहित मैथुन; (दे १, १३३) ।

उव्वाढ वि [**दे**] १ विस्तीर्ण, विशाल ; २ दुःख रहित ; (दे १, १२६) ।

उव्वार (अप) सक [**उद् + वर्तय्**] त्याग करना, छोड़ देना । कर्म—उव्वारिज्जइ ; (हे ४, ४३८) ।

उव्वाल सक [**कथ्**] कहना, बोलना । उव्वालइ; (षड्)।

उव्वास सक [**उद् + वासय्**] १ दूर करना । २ देश-निकाल करना । ३ उजाड़ करना । उव्वासइ; (नाट; पिंग)।

उव्वासिय वि [**उद्वासित**] १ उजाड़ किया हुआ; (पउम २७, ११) । २ देश-बाहर किया हुआ ; (सुपा ५४२) । ३ दूर किया हुआ ; (गा १०६) ।

उव्वाह पुं [**दे**] घर्म, ताप ; (दे १, ८७) ।

उव्वाह पुं [**उद्वाह**] वीवाह ; (मै २१) ।

उव्वाह सक [**उद् + बाधय्**] विशेष प्रकार से पीडित करना । कवकृ—**उव्वाहिज्जमाण** ; (आचा; णाया १, २) ।

उव्वाहिअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (दे १, १०६) ।

उव्वाहुल न [**दे**] १ उत्सुकता, उत्कण्ठा ; (भवि ; दे १, १३६) । २ वि. द्वेष्य, अप्रीतिकर ; (दे १, १३६) ।

उव्वाहुलिय वि [**दे**] उत्सुक, उत्कण्ठित ; (भवि) ।

उव्विआइअ वि [**उद्वेदित**] उत्पीडित ; (से १३, २६) ।

उव्विक्क न [**दे**] प्रलपित, प्रलाप ; (षड्) ।

उव्विग्ग वि [**उद्विग्न**] १ खिन्न; २ भीत, घबड़ाया हुआ; (हे २, ७६) ।

उव्विग्गिर वि [**उद्वेगशील**] उद्वेग करने वाला ; (वाका ३८) ।

उव्विड वि [**दे**] १ चकित, भीत ; २ क्लान्त, क्लेश-युक्त; (षड्) ।

उव्विडिम वि [दे] १ अधिक प्रमाण वाला ; २ मर्यादा-रहित, निर्लज्ज ; (दे १, १३४)।

उव्विण्ण देखो **उव्विग्ग** ; (पि २१६)।

उव्विद्ध वि [उद्विद्ध] १ ऊँचा गया हुआ, उच्छ्रित ; (पण्ह १, ४)। २ गभीर, गहरा ; (सम ४४; णाया १, १)। ३ विद्ध; "कोलयसएहिं धरणियले उव्विद्धो" (संथा ८७)।

उव्विन्न देखो **उव्विग्ग** ; (हे २, ७९ ; सुर ४, २४८)।

उव्विय अक [उद्+विज्] उद्वेग करना, उदासीन होना, खिन्न होना। "को उव्विएज्ज नरवर ! मरणस्स अवस्स गंतव्वे" (स १२९)। वकृ—**उव्वियमाण**; (स १३६)।

उव्वियणिज्ज वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-प्रद ; (पउम १६, ३९ ; सुपा ५९७)।

उव्विरेयण न [उद्विरेचन] खाली करना। "एवं च भरिउव्विरेयणं कुव्वंतस्स" (काल)।

उव्विल्ल अक [उद्+वेल्] १ चलना, काँपना। २ वेष्टन करना। वकृ—**उव्विल्लंत, उव्विल्लमाण**; (सुपा ८८; उप पृ ७७)।

उव्विल्ल अक [प्र+सृ] फैलना, पसरना। उव्विल्लइ; (भवि)।

उव्विल्ल वि [उद्वेल] चञ्चल, चपल ; (सुपा ३४)।

उव्विल्लिर वि [उद्वेलितृ] चलने वाला, हिलने वाला ; (सुपा ८८)।

उव्विव अक [उद्+विज्] उद्वेग करना, खिन्न होना; उव्विवइ ; (षड्)।

उव्विव्व वि [दे] १ क्रुद्ध , क्रोध युक्त ; (षड्)। २ उद्भट वेष वाला ; (पाअ)।

उव्विह सक [उत्+व्यध्] १ ऊँचा फेंकना। २ ऊँचा जाना, उडना। "से जहाणामए केइ पुरिसे उसुं उव्विहइ" (पि १२९)। वकृ—"मणसावि उव्विहंताइं अणेगाइं आससयाइं पासंति" (णाया १, १७ टी—पत्र २३१)। वकृ—**उव्विहमाण** ; (भग १६)। संकृ—**उव्विहित्ता**; (पि १२९)।

उव्विह पुं [उद्विह] स्वनाम-ख्यात एक आजीविक मत का उपासक ; (भग ८, ५)।

उव्वी स्त्री [ऊर्वी] पृथिवी ; (से २, ३०)। °स पुं [°श] राजा ; (कुमा)।

उव्वीढ देखो **उव्वूढ** ; (कुमा ; हे १, १२०)।

उव्वीढ वि [दे] उत्खात, खोदा हुआ ; (दे १, १००)।

उव्वीड वि [उद्विद्ध] उत्क्षिप्त ; "तस्स उसुस्स उव्वीडस्स समाणस्स" (पि १२९)।

उव्वील सक [अव+पीडय्] पीडा पहुँचाना, मार-पीट करना। वकृ—**उव्वीलेमाण** ; (राज)।

उव्वीलय वि [अपव्रीडक] लज्जा-रहित करने वाला, शिष्य को प्रायश्चित लेने में शरम को दूर करने का उपदेश देने वाला (गुरु) ; (भग २५, ७ ; द ४९)।

उव्वुण्ण } वि [दे] १ उद्विग्न ; २ उत्सिक्त ; ३ शून्य ;
उव्वुन्न } (दे १, १२३)। ४ उद्भट, उल्बण ; (दे १, १२३ ; सुर ३, २०५)।

उव्वूढ वि [उद्व्यूढ] १ धारण किया हुआ, पहना हुआ ; (कुमा)। २ ऊँचा लिया हुआ, ऊपर धारण किया हुआ; (से ५, ५४ ; ६, ११)। ३ परिणीत, कृत-विवाह ; (सुपा ४५६)।

उव्वेअणीअ वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-कारक ; (नाट)।

उव्वेग पुं [उद्वेग] १ शोक, दिलगीरी ; (ठा ३, ३)। २ व्याकुलता ; (भग ३, ६)।

उव्वेढ सक [उद्+वेष्ट्] १ बाँधना। २ पृथक् करना, बन्धन-मुक्त करना। उव्वेढइ ; (षड्)। उव्वेढिज्ज ; (आचा २, ३, २, २)।

उव्वेढण न [उद्वेष्टन] १ बन्धन। २ वि. बन्धन-रहित किया हुआ ; (राज)।

उव्वेढिअ वि [उद्वेष्टित] १ बन्धन-रहित किया हुआ ; २ परिवेष्टित ; (दे ४, ४९)।

उव्वेत्ताल न [दे] अविच्छिन्न चिल्लाना, निरन्तर रोदन ; (दे १, १०१)।

उव्वेय देखो **उव्वेग** ; (कुमा; महा)।

उव्वेयग वि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक ; (रयण ४०)।

उव्वेयणग } वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक ; (आउ;
उव्वेयणय } पण्ह १, १)।

उव्वेल अक [प्र+सृ] फैलना। उव्वेलइ ; (षड्)।

उव्वेल वि [उद्वेल] उच्छलित ; (से २, ३०)।

उव्वेलिअ वि [उद्वेलित] फैला हुआ, प्रसृत ; (माल १४२)।

उव्वेल्ल देखो **उव्वेढ**। उव्वेल्लइ ; (हे ४, २२३)। कर्म— उव्वेल्लिज्जइ ; (कुमा)।

उव्वेल्ल सक [उद् + वेल्ल्] १ सत्वर जाना । २ त्याग करना । ३ ऊँचा उडना, ऊँचा जाना । ४ अक. फैलना, पसरना । वकृ—**उव्वेल्लंत** ; (पि १०७)।

उव्वेल्ल वि [उद्वेल] १ उच्छलित, उछला हुआ "उव्वेल्ला सलिलनिही " (पउम ६, ७२)। २ प्रसृत, फैला हुआ; (पाअ)। ३ उद्भिन्न ; "हरिसवसुव्वेल्लपुलयाए " (स ६२५)।

उव्वेल्लिअ वि [उद्वेल्लित] १ कम्पित ; (गा ६०५)। २ उत्तारित ; (बृह ३)। ३ प्रसारित ; (स ३३५)।

उव्वेल्लिर वि [उद्वेल्लितृ] सत्वर जाने वाला; (कुमा)।

उव्वेव देखो **उव्विव** । उव्वेवइ ; (षड्)।

उव्वेव देखो **उव्वेग** ; (कुमा; सुर ४, ३६ ; ११, १६४)।

उव्वेवग वि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक,

"थद्धा छिद्दप्पेही, अवन्नवाई सयम्मई चवला ।

वंका कोहणसीला, सीसा उव्वेवगा गुरुणो " (उव)।

उव्वेवणय वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक; (पच्च ४५)।

उव्वेवय देखो **उव्वेवग** ; (स २६२)।

उव्वेसर पुं [उव्वेश्वर] इस नामका एक राजा ; (कुमा)।

उव्वेह पुं [उद्वेध] १ ऊँचाई; (सम १०४)। २ गहराई; (ठा १०)। ३ जमीन का अवगाह ; (ठा १०)।

उव्वेहलिया स्त्री [उद्वेधलिका] वनस्पति-विशेष; (पराण १)।

उसड्ढ वि [दे] ऊँचा ; (राय)।

उसण पुं [उशनस्] ग्रह-विशेष, शुक्र, भार्गव ; (पाअ)।

उसणसेण पुं [दे] बलभद्र ; (दे १, ११८)।

उसत्त वि [उत्सक्त] ऊपर बँधा हुआ ; (णाया १, १)।

उसन्न पुं [उत्सन्न] भ्रष्ट यति-विशेष की एक जाति ; (सं ६१)।

उसप्पिणी देखो **उस्सप्पिणी** ; (जी ४० ; विसे २७०६)।

उसभ पुं [ऋषभ, वृषभ] १ स्वनाम-ख्यात प्रथम जिन-देव ; (सम ४३ ; कप्प) २ बैल, साँढ; (जीव ३)। ३ वेष्टन-पट्ट; (पव २१६)। ४ देव-विशेष ; (ठा ८)। ५ ब्राह्मण-विशेष ; (उत्त १)। °**कंठ** पुं [°कण्ठ] १ बैल का गला ; २ रत्न-विशेष ; (जीव ३)। °**कूड** पुं [°कूट] पर्वत-विशेष; (ठा ८)। °**णाराय** न [°नाराच] संहनन-विशेष, शरीर-बन्ध-विशेष ; (पंच)। °**दत्त** पुं [°दत्त] ब्राह्मणकुण्ड ग्राम का रहने वाला एक ब्राह्मण, जिसके घर भगवान् महावीर अवतरे थे ; (कप्प)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष ; (विपा २, २)। °**पुरी** स्त्री [°पुरी] एक राजधानी ; (ठा ८)। °**सेण** पुं [°सेन] भगवान् ऋषभ-देव के प्रथम गणधर ; (आचू १)।

उसर (पै) पुंस्त्री [उष्ट्र] ऊँट ; (पि २५६)।

उसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित ; (षड्)।

उसह देखो **उसभ** ; (हे १, १३१; १३३; १४१; षड् ; कुमा ; सम १५२ ; पउम ४, ३५)।

उसा अ [उषस्] प्रभात-काल ; (गउड)।

उसिण वि [उष्ण] गरम, तप्त ; (कप्प ठा ३,१)। २ पुंन. गरम स्पर्श; (उत १)। ३ गरमी, ताप; (उत्त २)।

उसिय वि [उत्सृत] व्याप्त, फैला हुआ ; (सम १३७)।

उसिय वि [उषित] रहा हुआ, निवसित ; (से ८,६३ ; भत्त १२८)।

उसीर न [उशीर] सुगन्धि तृण-विशेष, खश ; (पण्ह २, ५)।

उसार न [दे] कमल-दण्ड, बिस ; (दे १, ६४)।

उसु पुं (इषु) १ बाण, शर ; (सूअ १, ५,१)। २ धनुराकार क्षेत्र का बाण-स्थानीय क्षेत्र-परिमाण ;

"धणुवग्गाओ नियमा, जीवावग्गं विसोहइत्ताणं ।

सेसस्स छब्भागे, जं मूलं तं उसू होइ" (जा १)।

°**कार**, °**गार**, °**यार** पुं [°कार] १ पर्वत-विशेष ; (सम ६६ ; ठा २, ३ ; राज)। २ इस नाम का एक राजा ; ३ स्वनाम-ख्यात एक पुरोहित; (उत्त १४)। ४ वि. बाण बनाने वाला ; (राज)। ५ स्वनाम-ख्यात एक नगर ; (उत्त १४)।

उसुअ पुं [दे] दोष, दूषण ; (दे १, ८६)।

उसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित ; (सुपा २२४)।

उसुयाल न [दे] उदूखल ; (राज)।

उसूलग पुं [दे] परिखा, शत्रु-सैन्य का नाश करने के लिए ऊपर से आच्छादित गर्त्त विशेष ; (उत्त ६)।

उस्स पुं [दे] हिम, ओस ; "अप्पहरिएसु अप्पुस्सेसु" (बृह ४)।

उस्संकलिअ वि [उत्संकलित] निसृष्ट, परित्यक्त ; (आचा २)।

उस्संखलअ वि [उच्छृङ्खलक] उच्छृङ्खल, निरङ्कुश ; (पि २१३)।

उस्संग पुं [उत्सङ्ग] क्रोड, कोला ; (नाट)।

उस्संघट्ट वि [उत्संघट्ट] शरीर-स्पर्श से रहित; (उप ५५५)।
उस्सक्क अक [उत्+ष्वष्क्] १ उत्कण्ठित होना। २ पीछे हटना। ३ सक. स्थगित करना। संकृ—**उस्सक्कइत्ता**; प्रयो—**उस्सक्कावइत्ता**; (ठा ६)।
उस्सक्कण न [उत्ष्वष्कण] किसी कार्य को कुछ समय के लिये स्थगित करना (धर्म ३)।
उस्सग्ग पुं [उत्सर्ग] १ त्याग; (आव ५)। २ सामान्य विधि; (उप ७८१)।
उस्सण्ण वि [अवसन्न] निमग्न; "अबंभे उस्सण्णा" (पण्ह १, ४)।
उस्सण्ण अ [दे] प्रायः, प्रायेण; (राज)।
उस्सण्हसण्हिआ स्त्री [उत्श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका] परिमाण-विशेष, ऊर्ध्व-रेणु का ६४ वाँ हिस्सा; (इक)।
उस्सन्न वि [उत्सन्न] निज धर्म में आलसी साधु; (गुभा १२)।
उस्सप्पण न [उत्सर्पण] १ उन्नति, पोषण; २ वि. उन्नत करने वाला, बढ़ाने वाला; "कंदप्पदप्पउस्सप्पणाइं वयणाइं जंपए जा सो" (सुपा ५०६)।
उस्सप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] उन्नति, प्रभावना; (उप ३२६)।
उस्सप्पिणी स्त्री [उत्सर्पिणी] उन्नत काल विशेष, दश कोटाकोटि-सागरोपम-परिमित काल-विशेष, जिसमें सर्व पदार्थों की क्रमशः उन्नति होती है; (सम ७२; ठा १, १; पउम २०, ६८)।
उस्सय पुं [उच्छ्रय] १ उन्नति, उच्चता; (विसे ३४१)। २ अहिंसा; (पण्ह २, १)। ३ शरीर; (राज)।
उस्सयण न [उच्छ्रयण] अभिमान, गर्व; (सूअ १, ६)।
उस्सर अक [उत्+सृ] हटना, दूर जाना। उस्सरह; (स्वप्न ६)।
उस्सव सक [उत्+श्रि] १ ऊँचा करना। २ खड़ा करना। उस्सवेह; संकृ—**उस्सवित्ता**; (कप्प)। प्रयो, संकृ—**उस्सविय**; (आचा २, १)।
उस्सव पुं [उत्सव] उत्सव; (अभि १६४)।
उस्सवणया स्त्री [उच्छ्रयणता] ऊँचा ढेर करना, इकट्ठा करना; (भग)।
उस्सस अक [उत्+श्वस्] १ उच्छ्वास लेना, श्वास लेना। २ उल्लसित होना। उस्ससइ; (भग)। कवकृ—**उस्ससिज्जमाण**; (ठा १०)।

उस्ससिय वि [उच्छ्वसित] १ उच्छ्वास-प्राप्त; २ उल्लसित; (उत्त २०)।
उस्सा स्त्री [उस्रा] गैया, गौ; (दे १, ८६)।
उस्सा [दे] देखो **ओसा**; (ठा ४, ४)। °**चारण** पुं [°चारण] ओस के अवलम्बन से गति करने की सामर्थ्य वाला मुनि; (पव ६८)।
उस्सार सक [उत्+सारय्] १ दूर करना, हटाना। २ बहुत दिन में पाठनीय ग्रन्थ को एक ही दिन में पढ़ाना। वकृ—**उस्सारिंत**; (बृह १)। संकृ—**उस्सारित्ता**; (महा)। कृ—**उस्सारइदव्व** (शौ); (स्वप्न २०)।
उस्सार पुं [उत्सार] अनेक दिन में पढ़ाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन में अध्यापन। °**कप्प** पुं [°कल्प] पाठन-संबन्धी आचार-विशेष; (बृह १)।
उस्सारग वि [उत्सारक] दूर करने वाला; २ उत्सार-कल्प के योग्य; (बृह १)।
उस्सारण न [उत्सारण] १ दूरीकरण; २ अनेक दिनों में पढ़ाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन में अध्यापन; "अरिहइ उस्सारणं काउं" (बृह १)।
उस्सारिय वि [उत्सारित] दूरीकृत; हटाया हुआ; (संथा ५७)।
उस्सास पुं [उच्छ्वास] १ ऊसास, ऊँचा श्वास; (पण्ण १)। २ प्रबल श्वास; (आव ५)। °**नाम** न [°नामन्] उसास-हेतुक कर्म-विशेष; (सम ६७)।
उस्सासय वि [उच्छ्वासक] उसास लेने वाला; (विसे २७१५)।
उस्सिंखल वि [उच्छृङ्खल] स्वैरी, स्वेच्छाचारी, निरङ्कुश; (उप १४६ टी)।
उस्सिंघिय वि [दे] आघ्रात, सूँघा हुआ; (स २६०)।
उस्सिंच सक [उत्+सिच्] १ सिंचना, सेक करना। २ ऊपर सिंचना। ३ आक्षेप करना। ४ खाली करना। "पुण्णं वा नावं उस्सिंचेज्जा" (आचा २, ३, १, ११)। उस्सिंचति; (निचू १८)। वकृ—**उस्सिंचमाण**; (आचा २, १, ६)।
उस्सिंचण न [उत्सेचन] १ सिञ्चन। २ कूपादि से जल वगैरः को बाहर खींचना; (आचा)। ३ सिंचन के उपकरण; (आचा २)।
उस्सिक्क सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना। उस्सिक्कइ; (हे ४, ६१)।

उस्सिक्क सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उस्सिक्कइ ; (हे ४, १४४)।

उस्सिक्किअ वि [मुक्त] मुक्त, परित्यक्त ; (कुमा)।

उस्सिक्किअ वि [उत्क्षिप्त] १ ऊँचा फेंका हुआ। २ ऊपर रखा हुआ; (स ५०३)।

उस्सिय वि [उच्छ्रित] उन्नत, ऊँचा किया हुआ ; (कप्प)।

उस्सिय वि [उत्सृत] १ व्याप्त ; २ ऊँचा किया हुआ ; (कप्प)।

उस्सीस न [उच्छीर्ष] तकिया; (सुपा ४३७; णाया १, १; ओघ २३२)।

उस्सुआव सक [उत्सुकय्] उत्कण्ठित करना; उत्सुक करना। उस्सुआवेइ ; (उत्तर ७१)।

उस्सुंक } वि [उच्छुल्क] शुल्क-रहित, कर-रहित ;
उस्सुक्क } (कप्प ; णाया १, १)।

उस्सुक्क वि [उत्सुक] उत्कण्ठित।

उस्सुक्काव वि [उत्सुकय्] उत्सुक करना, उत्कण्ठित करना। संकृ—**उस्सुक्कावइत्ता** ; (राज)।

उस्सुग वि [उत्सुक] उत्कण्ठित ; (पउम ७६,२६; पराह २, ३)।

उस्सुत्त वि [उत्सूत्र] सूत्र-विरुद्ध, सिद्धान्त-विपरीत ; (वव १ ; उप १४६ टी)।

उस्सुय देखो **उस्सुग** ; (भग ५, ४ ; औप)।

उस्सुय न [औत्सुक्य] उत्कण्ठा, उत्सुकता। °**कर** वि [°कर] उत्कण्ठा-जनक; (णाया १, १)।

उस्सूण वि [उच्छून] सूजा हुआ, फूला हुआ ; (उप ५६४ ; गउड ; स २०३)।

उस्सूर न [उत्सूर] सन्ध्या, शाम; " वच्चामो नियनयरे उस्सूरं वट्टए जेण " (सूर ७, ६३ ; उप पृ २२०)।

उस्सेअ पुं [उत्सेक] १ सिंचन ; २ उन्नति ; ३ गर्व ; (चारु ४५)।

उस्सेइम वि [उत्स्वेदिम] आटा से मिश्रित पानी, आटा-धोया जल ; (कप्प ; ठा ३, ३)।

उस्सेह पुं [उत्सेध] १ ऊँचाई ; (विपा १, १)। २ शिखर, टोंच; (जीव ३)। ३ उन्नति, अभ्युदय; " पड-णांता उस्सेहा " (स ३६६)।

उस्सेहंगुल न [उत्सेधाङ्गुल] एक प्रकार का परिमाण; (विसे ३४० टी)।

उह स [उभ] दोनों, युग्म, युगल ; (षड्)।

उहट्टु देखो **उव्वट्ट** = उद् + वृत्।

उहय स [उभय] दोनों, युग्म ; (कुमा; भवि)।

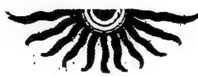
उहर न [उपगृह] छोटा घर, आश्रय-विशेष; (पराह १, १)।

उहार पुं [उहार] मत्स्य-विशेष ; (राज)।

उहु [अप] देखो **अहो** = अहो ; (सण)।

उहुर वि [दे] अवाङ्मुख, अधोमुख ; (गउड)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे उआराइसद्दसंकलणो
पंचमो तरंगो समत्तो।



ऊ

ऊ पुं [**ऊ**] प्राकृत वर्णमाला का षष्ठ स्वर-वर्ण; (हे १, १ ; प्रामा)।

ऊ अ [**दे**] निम्न-लिखित अर्थों का सूचक अव्यय;—१ गर्हा, निन्दा, जैसे—"ऊ णिल्लज्ज"; २ आक्षेप, प्रस्तुत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशंका से उसे उलटाना, जैसे—"ऊ किं मए भणिअं" ; ३ विस्मय, आश्चर्य ; जैसे—"ऊ कह मुणिआ अहयं ; ४ सूचना, जैसे—"ऊ केण ण विण्णायं" (हे २, १९९ ; षड्) ।

ऊअट्ठ वि [**अववृष्ट**] वृष्टि से नष्ट ; (पाअ) ।

ऊआ स्त्री [**दे**] यूका, जू ; (दे १, १३९) ।

ऊआस पुं [**उपवास**] भोजनाभाव ; (हे १, १७३) ।

ऊगिय वि [**दे**] अलंकृत ; (षड्) ।

ऊज्झाअ देखो **उवज्झाय** ; (हे १, १७३ ; प्रामा) ।

°**ऊड** देखो **कूड** ; (से १२, ७८ ; गा ५८३) ।

ऊढ वि [**ऊढ**] वहन किया हुआ, धारण किया हुआ "ऊढ-कलं वज्जुणपरिमलेसु सुरमंदिरंतेसु" (गउड) ।

ऊढा स्त्री [**ऊढा**] विवाहिता स्त्री ; (पाअ) ।

ऊढिअय वि [**दे**] १ प्रावृत, आच्छादित ; २ आच्छादन, प्रावरण ; (पाअ) ।

ऊण वि [**ऊन**] न्यून, हीन ; (पउम ११८, ११९) । °**वीसइम** वि [°**विंशतितम**] उन्नीसवाँ ; (पउम १९, ८०) ।

ऊण न [**ऋण**] ऋण, करजा ; (नाट) ।

ऊणंदिअ वि [**दे**] आनन्दित, हर्षित ; (दे १, १४१ ; षड्) ।

ऊणिमा स्त्री [**पूर्णिमा**] पूर्णिमा" तओ तीए चेव ऊणिमाए भरिऊण भंडस्स वहणाइं पत्थिओ पारसउलं" (महा) ।

ऊणिय वि [**ऊनित**] कम किया हुआ ; (जं २) ।

ऊणोयरिआ स्त्री [**ऊनोदरिता**] कम आहार करना, तप-विशेष ; (भग २५, ७ ; नव २८) ।

ऊमिणण न [**दे**] प्रोंखणक, चुमना ; (धर्म २) ।

ऊमिणिय वि [**दे**] प्रोञ्छित, जिसने स्नान के बाद शरीर पोंछा हो वह ; (स ७५) ।

ऊमित्तिअ न [**दे**] दोनों पार्श्वों में आघात करना ; (दे १, १४२) ।

ऊर पुं [**दे**] १ ग्राम, गाँव ; २ संघ, समूह ; (दे १, १४३) ।

°**ऊर** देखो **तूर** ; (से ८, ६५) ।

°**ऊर** देखो **पूर** ; (से ८, ६५ ; गा ४५ ; २३१) ।

ऊरण पुं [**ऊरण**] मेष, भेड़ ; (राय ; विसे) ।

ऊरणी स्त्री [**दे**] मेष, भेड़ ; (दे १, १४०) ।

°**ऊरय** वि [**पूरक**] पूर्ति करने वाला ; (भवि) ।

ऊरस वि [**औरस**] पुत्र-विशेष, स्व-पुत्र ; (ठा १०) ।

ऊरिसंकिअ वि [**दे**] रुद्ध, रोका हुआ ; (षड्) ।

ऊरी अ [**ऊरी**] १ अंगीकार । २ विस्तार । °**कय** वि [°**कृत**] अंगीकृत, स्वीकृत ; (उप ७२८ टी) ।

ऊरु पुं [**ऊरु**] जङ्घा, जाँघ ; (णाया १, १८ ; कुमा) । °**जाल** न [°**जाल**] जाँघ तक लटकने वाला एक आभूषण ; (औप) ।

ऊरुदग्घ वि [**ऊरुदघ्न**] जंघा-प्रमाण (गहरा वगैरः) ; (षड्) ।

ऊरुद्दअस वि [**ऊरुद्वयस**] ऊपर देखो ; (षड्) ।

ऊरुमेत्त वि [**ऊरुमात्र**] ऊपर देखो ; (षड्) ।

ऊल पुं [**दे**] गति-भंग ; (दे १, १३९) ।

°**ऊल** देखो **कूल** ; (गा १८९) ।

ऊस पुं [**उस्र**] किरण ; (हे १, ४३) । °**मालि** पुं [°**मालिन्**] सूर्य ; (कुमा) ।

ऊस पुं [**ऊष**] क्षार-भूमि की मिट्टी ; (पगण १ ; जी ४) ।

ऊसअ न [**दे**] उपधान ; ओसीसा ; (दे १, १४० ; षड्) ।

ऊसढ वि [**उत्सृष्ट**] १ परित्यक्त ; २ न. उत्सर्जन, मलादि का त्याग ; "नो तत्थ ऊसढं पकरेज्जा, तं जहा ; उच्चारं वा" (आचा २, २, १, ३) ।

ऊसढ वि [**दे, उच्छ्रित**] १ उच्च, श्रेष्ठ ; (आचा २, ४, २, ३ ; जीव ३) । २ ताजा ; "भद्दं भद्दएति वा, ऊसढं ऊसढेति वा, रसियं रसिए ति वा" (आचा २, ४, २, २) ।

ऊसण न [**दे**] गति-भङ्ग ; (दे १, १३९) ।

ऊसण्हसण्हिया देखो **उस्सण्हसण्हिया** ; (पव २५४) ।

ऊसत्त देखो **उसत्त** ; (कप्प ; आवम) ।

ऊसत्थ पुं [**दे**] १ जम्भाई ; २ वि. आकुल ; (दे १, १४३) ।

ऊसर अक [**उत्+सृ**] १ खिसकना । २ दूर होना । ३ सक. त्यागना । ऊसरइ ; (भवि) । संकृ—**ऊसरिवि** ; (भवि) ।

ऊसर न [**ऊषर**] क्षार-भूमि, जिसमें बीज नहीं पैदा होता है ; "ऊसरदवदलियदड्ढरुक्खनाएण" (सम्य १७; भक्त ७३)।

ऊसरण न [**उत्सरण**] आरोहण; "थाणुसरणं तओ समुप्पयणं" (विसे १२०८)।

ऊसल अक [**उत्+लस्**] उल्लसित होना। ऊसलइ; (हे ४, २०२ ; षड् ; कुमा)।

ऊसल वि [**दे**] पीन, पुष्ट ; (दे १, १४०)।

ऊसलिअ वि [**उल्लसित**] उल्लसित, पादुर्भूत; (कुमा)।

ऊसलिअ वि [**दे**] रोमाञ्चित; पुलकित; (दे १, १४१ ; पात्र)।

ऊसव देखो **उस्सव**=उत्सव ; (स्वप्न ६३)।

ऊसव देखो **उस्सव**=उत्+श्रि। उस्सवेह ; (पि ६४ ; ५५१)। संकृ—**ऊसविय** ; (कप्प ; भग)।

ऊसविअ वि [**दे**] १ उद्भ्रान्त; (दे १, १४३)। २ ऊँचा किया हुआ; (दे १, १४३; गाया १, ८ ; पात्र)। ३ उद्वान्त; वमित ; (षड्)।

ऊसविअ वि [**उच्छ्रित**] ऊर्ध्व-स्थित ; (कप्प)।

ऊसस सक [**उत्+श्वस्**] १ उसास लेना, ऊँचा साँस लेना। विकसित होना। ३ पुलकित होना। ऊससइ ; (पि ६४; ३१५)। वकृ—**ऊससंत, ऊससमाण,** (गा ७४; धण ४ ; पि ४९६)।

ऊससण न [**उच्छ्वसन**] उसास। °**लद्धि** स्त्री [°**लब्धि**] श्वासोच्छ्वास की शक्ति ; (कम्म १, ४४)।

ऊससिअ न [**उच्छ्वसित**] १ उसास; (पडि)। २ वि. उल्लसित ; ३ पुलकित ; (स ८३)।

ऊससिर वि [**उच्छ्वसितृ**] उसास लेने वाला; (हे २, १४५)।

ऊसाअंत वि [**दे**] खेद होने पर शिथिल ; (दे १, १४१)।

ऊसाइअ वि [**दे**] १ विक्षिप्त ; २ उत्क्षिप्त ; (दे १, १४१)।

ऊसार सक [**उत्+सारय्**] दूर करना, त्यागना। संकृ—**ऊसारिवि** (अप); (भवि)।

ऊसार पुं [**दे**] गर्त-विशेष ; (दे १, १४०)।

ऊसार पुं [**उत्सार**] परित्याग ; (भवि)।

ऊसार पुं [**आसार**] वेग वाली वृष्टि ; (हे १, ७६ ;

ऊसारि वि [**आसारिन्**] वेग से बरसने वाला; (कुमा)।

ऊसारिअ वि [**उत्सारित**] दूर किया हुआ ; (महा ; भवि)।

ऊसास पुं [**उच्छ्वास**] १ उसास, ऊँचा श्वास; (आचू ५)। २ मरण ; (बृह १)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष ; (कम्म १, ४४)।

ऊसासय वि [**उच्छ्वासक**]:उसास लेने वाला; (विसे २७१४)।

ऊसासिअ वि [**उच्छ्वासित**] बाधा-रहित किया हुआ ; (से १२, ६२)।

ऊसाह पुं [**उत्साह**] उत्साह, उछाह ; (मा १०)।

ऊसिक्क सक [**उत्+ष्वष्क्**] ऊँचा करना। संकृ—**ऊसिक्किऊण** ; (भग १, ८ टी)।

ऊसिक्किअ वि [**दे**] प्रदीप्त, शोभायमान ; (पात्र)।

ऊसित्त वि [**उत्सिक्त**] १ गर्वित ; २ उद्धत ; ३ बढ़ा हुआ ; ४ अतिशायित ; (हे १, ११४)।

ऊसित्त वि [**अवसिक्त**] उपलिप्त ; (पात्र)।

ऊसिय देखो **उस्सिय**=उच्छ्रित ; (औप; कप्प; सण)।

ऊससी, **ऊसीसग**, **ऊसीसय** न [**उच्छीर्ष,** °**क**] ओसीसा, सिरहाना; (गाया १, ७ ; पात्र ; सुपा ५३; १२०)।

ऊसुअ वि [**उत्सुक**] उत्कण्ठित ; (गा ५४३; कुमा)।

ऊसुअ वि [**उच्छुक**] जहां से शुक उद्गत हुआ हो वह ; (हे १, ११४)।

ऊसुइअ वि [**उत्सुकित**] उत्सुक किया हुआ; (गा ३१२)।

ऊसुंभ अक [**उत्+लस्**] उल्लसित होना। ऊसुंभइ ; (हे ४, २०२)।

ऊसुंभिअ वि [**उल्लसित**] उल्लास-प्राप्त ; (कुमा)।

ऊसुंभिअ न [**दे**] १ रोदन-विशेष, गला बैठ जाय ऐसा रुदन ; (दे १, १४२ ; षड्)

ऊसुक्किअ वि [**दे**] विमुक्त, परित्यक्त; (दे १, १४२)।

ऊसुग देखो **ऊसुअ**=उत्सुक ; (उप ५९७ टी)।

ऊसुम्भिअ वि [**दे**] ओसीसा किया हुआ ; (षड्)।

ऊसुर न [**दे**] ताम्बूल, पान ; (हे २, १७४)।

ऊसुरुसुंभिअ [**दे**] देखो **ऊसुंभिअ** ; (दे १, १४२)।

ऊह सक [**ऊह्**] १ तर्क करना। २ बिचारना। ऊहइ ; (विसे ८३१)। ऊहेमि; (सुर ११, १८५)। संकृ—**ऊहिऊण** ; (आउ ५२)।

ऊह न [**ऊधस्**] स्तन ; (विपा १, २) ।

ऊह पुं [**ऊह**] १ विचार, विवेक-बुद्धि ; (राज) । २ तर्क, वितर्क ; (सूअ २, ४) । ३ संख्या-विशेष ; (राज) । ४ ओघ-संज्ञा, अव्यक्त ज्ञान; (विसे ५२२; ५२३)।

ऊहंग न [**ऊहाङ्ग**] संख्या-विशेष ; (राज) ।

ऊहट्ट वि [**दे**] उपहसित ; (दे १, १४०) ।

ऊहसिय वि [**उपहसित**] जिसका उपहास किया गया हो वह ; (दे १, १४०) ।

ऊहा स्त्री [**ऊहा**] तर्क, विचार-बुद्धि ; (आवम) ।

ऊहिअ वि [**ऊहित**] अनुमान से ज्ञात ; (से ६, ४२) ।

इअ सिरि-**पाइअसद्दमहण्णवे** ऊआराइसद्दसंकलणो
छट्ठो तरंगो समत्तो ।

ए

ए पुं [ए] स्वर-वर्ण विशेष ; (हे १, १; प्रामा)।

ए अ [ए, ऐ] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ आमन्त्रण, सम्बोधन; जैसे—"ए एहि सवडहुत्तो मज्झ" (पउम ८, १७४)। २ वाक्यालंकार, वाक्य-शोभा; जैसे—"से जहा-णामए" (अणु)। ३ स्मरण ; ४ असूया, ईर्ष्या ; ५ अनुकम्पा, करुणा ; ६ आह्वान ; (हे २, २१७ ; भवि; गा ६०४)।

ए सक [आ+इ] आना, आगमन करना। एइ ; (उवा)। भवि—एहिइ ; (उवा)। वकृ—एंत; (पउम ८, ४३ ; सुर ११, १४८); इंत ; (सुर ३, १३)। एज्जंत ; (पि ५६१); एज्जमाण ; (उप ६४८ टी)।

ए° देखो एत्तिअ ; (उवा)।

ए° देखो एवं ; (उवा)।

एअ स [एतत्] यह ; (भग; हे १, ११ ; महा)। °रिस वि [°दृश] ऐसा, इसके जैसा ; (द ३२)। °रूव वि [°रूप] ऐसा, इस प्रकार का ; (णाया १, १, महा)।

एअ देखो एग; (गउड; नाट; स्वप्न ६०; १०६)। °आइ वि [°किन्] अकेला; (अभि १६०; प्रति ६५)। °रह वि. ब. [°दशन्] ग्यारह की संख्या, दश और एक ; (पि २४५)। °रहम वि [°दश] ग्यारहवाँ ; (भवि)।

एअ देखो एव=एव ; (कुमा)।

एअ } देखो एवं ; "एअ वि सिरीअ दिट्ठआ" (से ३, ४६ ;
एअं } गउड ; पिंग)।

एअंत देखो एक्कंत ; (वेणी १८)।

एआईस (अप) पुं. ब. [एकविंशति] एक्कीस; (पिंग)।

एआरिच्छ वि [एतादृक्ष] ऐसा, इसके जैसा; (प्रामा)।

एइज्जमाण देखो एय=एज्।

एईस वि [एतादृश] ऐसा ; (विसे २५४६)।

एउंजि (अप) अ [एवमेव] १ इसी तरह ; २ यही ; (भवि)।

एऊण देखो एगूण ; (पिंग)।

एंत देखो इ=इ।

एंत देखो ए=आ+इ।

एक देखो एक्क तथा एग ; (षड्; सम ६६; पउम १०३; १७२ ; हेका ११६; पराह २, ५ ; पउम ११४, २४ ; सुपा १६५ ; कप्प ; सम ७१; १५३)। °इआ अ [°दा] एक समय में, कोई वख्त ; (हे २, १६२)। °ल (अप) वि [°क] एकाकी ; (पि ५९५)। °लिय वि [°किन्] एकाकी, अकेला ; (उप ७२८ टी)। °णउइ स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, एकानवें ; (सम ९५; पि ४३५)।

एकूण देखो अउण=एकोन ; (सुज्ज १९)।

एक्क देखो एक तथा एग ; (हे २, ९९; सुपा १४३; सम ६६; ५५; पउम ३१, १२८ ; गउड; कप्पू; मा १८; सुपा ४८९ ; मा ४१; पि ५९५; नाट; णाया १, १ ; गा ६१८; काल; सुर ५, २४२ ; भग ; सम ३९; पउम २१, ९३ ; कप्प)। °वए देखो एगवए ; (गउड; सुर १, ३८)। °सणिय वि [°शनिक] एक ही वार भोजन करने वाला; (पराह २, १)। °सत्तरि स्त्री [°सप्तति] संख्या-विशेष, ७१, एकहत्तर ; (सम ८२)। °सरग, सरय वि [°सरक, °सर्ग] एक समान, एक सरीखा ; (उवा; भग १६; पराह २,५)। °सि अ [°शस्] एक वार; "सव्व-जहन्नो उदओ दसगुणिओ एक्कसि कयाणं" (भग) ; "ए-क्कसि कओ पमाओ जीवं पाडेइ भवसमुद्दम्मि" (सुर ८, ११२) "एक्कसि सीलकलंकिअहं देज्जहिं पच्छिताइं" (हे ४, ४२८)। °सि अ [°त्र] एक (किसी एक) में, "एक्कसि न खु त्थिरो सित्ति पिओ कीइवि उवालद्धो" (कुमा)। °सि, °सिअं अ [°दा] कोई एक समय में; (हे २, १६२)। °सिं अ [°शस्] एक वार ; (पि ४५१)। °इ वि [°किन्] अकेला ; (प्रयौ २३)। °इ पुं [°दि] स्वनाम-ख्यात एक माण्डलिक; (सुबा); (विपा १, १)। °णउय वि [°नवत] ९१ वाँ ; (पउम ९१, ३०)। °रसम वि [°दश] ग्यारहवाँ ; (विपा १, १; उवा; सुर ११, २५०)। °रह त्रि. ब. [°दशन्] ग्यारह, दश और एक; (षड्)। °सीइ स्त्री [°शीति] संख्या-विशेष, एकासी ; (सम ८८)। °सीइविह वि [°शीतिविध] एकासी तरह का; (पराण १; १७)। °सीय वि [°शीत] एकासीवाँ, ८१ वाँ; (पउम ८१, १६)। °त्तरसय वि [°त्तरशततम] एक सौ एक वाँ, १०१ वाँ; (पउम १०१, ७६)। °यर पुं [°दर] सहोदर भाई, सगा भाई ; (पउम ६, ६० ; ४६ , १८)। °यरा स्त्री [°दरा] सगी बहिन ; (पउम ८, १०६)।

एक्कक वि [एकक] अकेला ; (हेका ३१)।

एक्क वि [दे] स्नेह-पर, प्रेम-तत्पर ; (दे १, १४४)।

एक्कई (अप) वि [**एकाकिन्**] एकाकी, अकेला ; (भवि)।

एक्कंग न [दे] चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष ; (दे १, १४४)।

एक्कंत पुं [**एकान्त**] १ सर्वथा ; २ तत्त्व, प्रमेय ; ३ जरूर, अवश्य ; ४ असाधारणता, विशेष; (से ४, २३)। ५ निर्जन, निराला ; (गा १०२)। देखो **एगंत**।

एक्कक्क वि [**एकैक**] हर एक, प्रत्येक ; (नाट)।

एक्कक्कम [दे] देखो **एक्केक्कम** ; (से ५, ५६)।

एक्कघरिल्ल पुं [दे] देवर , पति का छोटा भाई; (दे १, १४६)।

एक्कणड पुं [दे] कथक, कथा कहने वाला; (दे १, १४५)।

एक्कमुह वि [दे] १ धर्म-रहित, निधर्मी ; २ दरिद्र, निर्धन ; ३ प्रिय, इष्ट ; (दे १, १४८)।

एक्कमेक्क वि [**एकैक**] प्रत्येक, हर एक ; (हे ३, १ ; षड् ; कुमा)।

एक्कल्ल वि [दे] प्रबल, बलवान् ; (षड्)।

एक्कल्लपुडिंग न [दे] विरल-बिन्दु-वृष्टि, अल्प बिन्दु-वाली बारिस ; (दे १, १४७)।

एक्कसरिअं अ [दे] १ शीघ्र, तुरन्त; २ संप्रति, आजकल ; (हे २, २१३ ; षड्)।

एक्कसाहिल्ल वि [दे] एक स्थान में रहने वाला ; (दे १, १४६)।

एक्कसिंबली स्त्री [दे] शाल्मली-पुष्पों से नूतन फल वाली ; (दे १, १४६)।

एक्कार पुं [**अयस्कार**] लोहार ; (हे १, १६६ ; कुमा)।

एक्की स्त्री [**एका**] एक (स्त्री) ; (निचू १)।

एक्कूण देखो **अउण** ; (पि ४४५)।

एक्केक्कम वि [दे] परस्पर, अन्योन्य; (दे १, १४५)। "सुहडा एक्केक्कमं अपेच्छंता" (पउम ६८, १५)।

एग स [**एक**] १ एक, प्रथम संख्या ; (अणु)। २ एकाकी, अकेला ; (ठा ४,१)। ३ अद्वितीय ; (कुमा)। ४ असहाय, निःसहाय ; (विपा १, २)। ५ अन्य, दूसरा "एवमेगे वदंति मोसा" (पण्ह १, २)। ६ समान, सदृश, तुल्य ; (उवा)। °**इय** देखो **एग** ; " अत्थेगइ-याणं नेरइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता " (सम २ ; ठा ७ ; औप)। °**इय** वि [°**क**] अकेला, एकाकी ; (भग)। °**ओ** अ [°**तस्**] एक तरफ; (कप्प)। °**क्खरिय** वि [°**क्षरिक**] एक अक्षर वाला (नाम) ; (अणु)। °**खंधी** स्त्री [°**स्कन्ध**] एक स्कन्ध वाला (वृक्ष वगैरः); (जीव ३)। °**खुर** वि [°**खुर**] एक खुर वाला (गौ वगैरः पशु) ; (पण्ण १)। °**ग** वि [°**क**] एकाकी, अकेला ; (श्रा १४)। °**ग्ग** वि [°**ग्र**] तल्लीन, तत्पर ; (सुर १, ३०)। °**चक्खु** वि [°**चक्षुष्क**] एक आँख वाला, एकाक्ष, काना ; (पण्ह २, ५)। °**चत्ताल** वि [°**चत्वारिंश**] एकतालीसवाँ ; (पउम ४१, ७६)। °**चर** वि [°**चर**] एकाकी विहरने वाला ; (आचा)। °**चरिया** स्त्री [°**चर्या**] एकाकी विहरना; (आचा)। °**चारि** वि [°**चारिन्**] एकल-विहारी ; (सूअ १, १३)। °**चूड** पुं [°**चूड**] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४५)। °**च्छत्त** वि [°**च्छत्र**] १ पूर्ण प्रभुत्व वाला, अकण्टक; "एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं" (पण्ह २, ४)। २ अद्वितीय ; (काप्र १८६)। °**जडि** वि [°**जटिन्**] महाग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °**जाय** वि [°**जात**] अकेला, निस्सहाय; " खग्गविसाणं व एगजाए " (पण्ह २, ५)। °**ट्ठ** वि [°**स्थ**] इक्कट्ठा, एकत्रित ; (भग १४, ६ ; उप पृ ३४१)। °**ट्ठ** वि [°**ार्थ**] एक अर्थ वाला, पर्याय-शब्द; (ओघ १ भा)। °**ट्ठ**, °**ट्ठं** अ [°**त्र**] एक स्थान में " मिलिया सव्वेवि एगट्ठं " (पउम ४७, ४४)। °**ट्ठिय** वि [°**ार्थिक**] एक ही अर्थ वाला, समानार्थक, पर्याय-शब्द ; (ठा १)। °**ट्ठिय** वि [°**ास्थिक**] जिसके फल में एक ही बीज होता है ऐसा आम वगैरः पेड़ ; (पण्ण १)। °**णासा** स्त्री [°**नासा**] एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष ; (आव १)। °**त्त** न [°**त्र**] एक ही स्थान में " एगत्ते ठिओ " (स ४७०)। °**त्थ** देखो °**ट्ठ** ; (सम्म १०६ ; निचू १)। °**नासा** देखो °**णासा** ; (ठा ८)। °**पए** अ [°**पदे**] एक ही साथ, युगपत् ; (पि १७१)। °**पक्ख** वि [°**पक्ष**] १ अस-हाय ; (राज)। २ ऐकान्तिक, अविरुद्ध ; (सूअ १, १२)। °**पन्नास** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] एकावन, पचास और एक। °**पन्नासइम** वि [°**पञ्चाशत्तम**] एकावनवाँ, ५१ वाँ ; (पउम ५१, २८)। °**पाइअ** वि [°**पादिक**] एक पाँव ऊँचा रखने वाला (आतापना में) ; (कस)। °**पासग** वि [°**पार्श्वक**] एक ही पार्श्व का भूमि-

संबन्ध रखने वाला (आतापना में); (पराह २, १)। °**पासिय** वि [°**पार्श्विक**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (कस)। °**भत्त** न [°**भक्त**] व्रत-विशेष, एकाशन; (पंचा १२)। °**भूय** वि [°**भूत**] १ एकीभूत, मिला हुआ; (ठा १)। २ समान; (ठा १०)। °**मण** वि [°**मनस्**] एकाग्र-चित्त, तल्लीन; (सुर २, २२६)। °**मेग** वि [°**एक**] प्रत्येक, हर एक; (सम ६७)। °**य** वि [°**क**] एकाकी, अकेला; (दस ५)। °**य** वि [°**ग**] अकेला जाने वाला; (उत्त ३)। °**यर** वि [°**तर**] दो में से कोई भी एक; (षड्)। °**या** अ [°**दा**] एक समय में; (प्रासू; नव २४)। °**राइय** वि [°**रात्रिक**] एक-रात्रि-संबन्धी, एक रात में होने वाला; (सम २१; सुर ६, ६०)। °**राय** न [°**रात्र**] एक रात; (ठा ५, २)। °**ल्ल** वि [**एक**] एकाकी, अकेला; (ठा ७; सुर ४, ५४)। °**विह** वि [°**विध**] एक प्रकार का; (नव ३)। °**विहारि** वि [°**विहारिन्**] एकल-विहारी, अकेला विचरने वाला; (बृह १)। °**वीसइम** वि [°**विंशतितम**] एक्कीसवाँ; (पउम २१, ८१)। °**वीसा** स्त्री [°**विंशति**] एक्कीस; (पि ४४५)। °**सट्ठ** वि [°**षष्ट**] एकसठवाँ, ६१ वाँ; (पउम ६१, ७५)। °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] एकसठ; (सम ७५)। °**सत्तर** वि [°**सप्तत**] एकहतरवाँ, ७१ वां; (पउम ७१, ७०)। °**समइय** वि [°**सामयिक**] एक समय में होने वाला; (भग २४, १)। °**सरिया** स्त्री [°**सरिका**] एकावली, हार-विशेष; (जं १)। °**साडिय** वि [°**शाटिक**] एक वस्त्र वाला, "एगसाडियमुत्तरासंगं करेइ" (कप्प; णाया १, १)। °**सिअं** अ [°**दा**] एक समय में; (षड्)। °**सेल** पुं [°**शैल**] पर्वत-विशेष; (ठा २, ३)। °**सेलकूड** पुंन [°**शैलकूट**] एकशैल पर्वत का शिखर-विशेष; (जं ४)। °**सेस** पुं [°**शेष**] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष; (अणु)। °**हा** अ [°**धा**] एक प्रकार का; (ठा १)। °**हुत्त** अ [**सकृत्**] एक बार; (प्रामा)। °**णिअ** वि [°**किन्**] अकेला; (कस; ओघ २८ भा)। °**दस** त्रि. ब. [°**दशन्**] ग्यारह। °**दसुत्तरसय** वि [°**दशोत्तरशततम**] एक सौ ग्यारहवाँ, १११ वाँ; (पउम १११, २४)। °**भोग** पुं [°**भोग**] एकल-बन्धन; (निचू १)। °**मोस** वि [°**मर्श**] १ प्रत्युपेक्षणा का एक दोष, वस्त्र को मध्य में ग्रहण कर हाथ से घसीट कर उठाना; (ओघ २६७)। °**यय** वि [°**यत**] एकत्र संबद्ध; (कप्प)। °**रस** देखो °**दस**; (पि ४३५)। °**रसी** स्त्री [°**दशी**] तिथि-विशेष, एकादशी; (कप्प; पउम ७३, ३४)। °**वण्ण** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] एकावन; (पि २६५)। °**वलि**, °**ली** स्त्री [°**वलि**, °**ली**] विविध प्रकार के मणियों से ग्रथित हार; (औप)। °**वलीप-विभत्ति** न [°**वलीप्रविभक्ति**] नाटक-विशेष; (राय)। °**वाइ** पुं [°**वादिन्**] एक ही आत्मा वगैरः पदार्थ को मानने वाला दर्शन, वेदान्त-दर्शन; (ठा ८)। °**वीस** स्त्रीन [°**विंशति**] संख्या-विशेष, एक्कीस; (पउम २०, ७२)। °**सण** न [°**शन**, °**सन**] व्रत-विशेष, एकाशन; (धर्म २)। °**ह** पुंन [°**ह**] एक दिन; (आचा २, ३, १)। °**हच्च** वि [°**हत्य**] एक ही प्रहार से नष्ट हो जानेवाला; (भग ७, ६)। °**हिय** वि [°**हिक**] १ एक दिन का उत्पन्न; २ पुं. ज्वर-विशेष, एकान्तर ज्वर; (भग ३, ७)। °**हिय** वि [°**धिक**] एक से ज्यादः (पंच)। देखो **एअ**, **एक** और **एक्क**।

एगंत देखो **एक्कंत**; (ठा ५; सूअ १, १३; ओघ ५५; पंचा ५; १०)। °**दिट्ठि** स्त्री [°**दृष्टि**] १ जैनेतर दर्शन; २ वि. जैनेतर दर्शन को मानने वाला; (सूअ २, ६)। ३ स्त्री. निश्चित सम्यक्त्व, निश्चल सत्य-श्रद्धा; (सूअ १, १३)। °**दूसमा** स्त्री [°**दुषमा**] अवसर्पिणी-काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी-काल का पहला आरा, काल-विशेष; (सूअ १, ३)। °**पंडिय** पुं [°**पण्डित**] साधु, संयत; (भग)। °**बाल** पुं [°**बाल**] १ जैनेतर दर्शन को मानने वाला; २ असंयत जीव; (भग)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] जैनेतर दर्शन का अनुयायी; (राज)। °**वाय** पुं [°**वाद**] जैनेतर दर्शन; (सुपा ६५८)। °**सुसमा** स्त्री [°**सुषमा**] काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का प्रथम और उत्सर्पणी काल का छठवाँ आरा; (णंदि)।

एगंतिय वि [**ऐकान्तिक**] १ अवश्यंभावी; (विसे)। २ अद्वितीय, "एगंतियं कम्मवाहिओसहं" (स ५६२)। ३ जैनेतर दर्शन; (सम्म १३०)।

एगट्ठिया स्त्री [**दे**] नौका, जहाज; (णाया १, १६)।

एगिंदिय वि [**एकेन्द्रिय**] एक इन्द्रिय वाला, केवल स्पर्शेन्द्रिय वाला (जीव); (ठा ६)।

एगीभूत वि [**एकीभूत**] मिला हुआ, एकता-प्राप्त; (सुपा ८६)।

एगूण देखो **अउण**। °**चत्ताल** वि [°**चत्वारिंश**] उन-चालीसवाँ; (पउम ३६, १३४)। °**चत्तालीस** स्त्रीन

[चत्वारिंशत्] उनचालीस ; (सम ६६)। °चत्तालीसइम वि [चत्वारिंशत्तम] उनचालीसवाँ; (सम ८६)। °णउइ स्त्री [°नवति] नवासी; (पि ४४४)। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] उनतीस, २६। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] उनतीसवाँ, २६ वाँ; (पउम २६, ४६)। °नउइ देखो °णउइ; (सम ६४)। °नउय वि [°नवत] नवासीवाँ ; (पउम ८६, ६५)। °पन्न, °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] उनपचास ; (सम ७० ; भग)। °पन्नास वि [°पञ्चाश] उनपचासवाँ; (पउम ४६, ४०)। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] उनपचासवाँ ; (सम ६६)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] उन्नीस ; (सम ३६; पि ४४४ ; णाया १, १६)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] उन्नीस ; (सम ७३)। °वीसइम, °वीसईम, °वीसम वि [°विंशतितम] उन्नीसवाँ ; (णाया १, १८ ; पउम १६, ४५; पि ४४६)। °सट्ठ वि [°षष्ट] उनसठवाँ, ५६ वाँ ; (पउम ५६, ८६)। °सत्तर वि [°सप्तत] उनसत्तरवाँ ; (पउम ६६, ६०)। °ासी, °ासीइ स्त्री [°शीति] उन्नासी; (सम ८७; पि ४४४; ४४६)। °ासीय वि [°शीत] उन्नासीवाँ, ७६ वाँ ; (पउम ७६, ३५)। देखो अउण।

एगूरुय पुं [**एकोरुक**] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप; २ उसका निवासी ; (ठा ४, २)।

एग्ग (अप) देखो **एग**; (पिंग)।

एज पुं [**एज**] वायु, पवन ; (आचा)।

एज्जंत देखो **ए**=आ+इ।

एज्जण न [**आयन**] आगमन ; (वव ३)।

एज्जमाण देखो **ए**=आ+इ।

एड सक [**एड्**] छोड़ना, त्याग करना। एडेइ; (भग)। कवकृ—**एडिज्जमाण**; (णाया १, १६)। संकृ—**एडित्ता**; (भग)। कृ—**एडेयव्व** ; (णाया १, ६)।

एडक्क पुं [**एडक**] मेष, भेड़ ; (उप पृ २३४)।

एडया स्त्री [**एडका**] भेडी ; (षड्)।

एण पुं [**एण**] कृष्ण मृग, हरिण ; (कप्पू)। °णाहि [°नाभि] कस्तूरी ; (कप्पू)।

एणंक पुं [**एणाङ्क**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (कप्पू)।

एणिज्ज वि [**एणेय**] हरिण-संबन्धी, हरिण का (मांस वगैरः); (राज)।

एणिज्जय पुं [**एणेयक**] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (ठा ८)।

एणिस पुं [**एणिस**] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)।

एणी स्त्री [**एणी**] हरिणी; (पाअ ; पण्ह १, ४)। °यार पुं [°चार] हरिणी को चराने वाला, उनका पोषण करने वाला ; (पण्ह १, १)।

एणुवासिअ पुं [**दे**] भेक, मेढ़क ; (दे १, १४७)।

एणेज्ज देखो **एणिज्ज** ; (विपा १, ८)।

एण्हं, **एण्हिं** अ [**इदानीम्**] अधुना, संप्रति ; (महा ; हे २, १३४)।

एत्तअ वि [**इयत्**, **एतावत्**] इतना ; (अभि ५६ ; स्वप्न ४०)।

एत्तए देखो **इ**=इ।

एत्तहि (अप) अ [**इतस्**] यहां से ; (कुमा)।

एत्तहे देखो **इत्तहे** ; (कुमा)।

एत्ताहे देखो **इत्ताहे** ; (हे २, १३४ ; कुमा)।

एत्तिअ, **एत्तिल** वि [**इयत्**, **एतावत्**] इतना ; (हे २, १५७)। °मत्त, °मेत्त वि [°मात्र] इतना ही; (हे १, ८१)।

एत्तुल (अप) ऊपर देखो ; (हे ४, ४०८ ; कुमा)।

एत्तो देखो **इओ** ; (महा)।

एत्तोअ अ [**दे**] यहां से लेकर ; (दे १, १४४)।

एत्थ अ [**अत्र**] यहां, यहां पर ; (उवा ; गउड ; चारु १०३)।

एत्थी देखो **इत्थी** ; (उप १०३१ टी)।

एत्थु (अप) देखो **एत्थ**; (कुमा)।

एदंपज्ज न [**ऐदंपर्य**] तात्पर्य, भावार्थ ; (उप ८५६ टी)।

एदिहासिअ (शौ) वि [**ऐतिहासिक**] इतिहास-संबन्धी ; (प्राप)।

एद्दह देखो **एत्तिअ** ; (हे २, १५७ ; कुमा ; काप्र ७७)।

एम (अप) अ [**एवं**] इस तरह, ऐसा ; (षड्; पिंग)।

एमइ (अप) अ [**एवमेव**] इसी तरह, ऐसा ही ; (षड्; वज्जा ६०)।

एमाइ, **एमाइय** वि [**एवमादि**] इत्यादि, वगैरः; (सुर ८, २६; उव)।

एमाण वि [**दे**] प्रवेश करता हुआ ; (दे १, १४४)।

एमिणिआ स्त्री [**दे**] वह स्त्री, जिसके शरीर को, किसी देश के रिवाज के अनुसार, सूत के धागे से माप कर उस धागे को फेंक दिया जाता है ; (दे १, १४५)।

एमेअ } अ [**एवमेव**] इसी तरह, इसी प्रकार ; " ता भण
एमेव } किं करणिज्जं एमेअ ण वासरो ठाइ " (काप्र २६ ; हे १, २७१)।

एम्व (अप) अ [**एवम्**] इस तरह, इस प्रकार ; (हे ४, ४१८)।

एम्वइ (अप) अ [**एवमेव**] इसी तरह, इस प्रकार ; (हे ४, ४२०)।

एम्वहिं (अप) अ [**इदानीम्**] इस समय, अधुना ; (हे ४, ४२०)।

एय अक [**एज्**] १ काँपना, हिलना। २ चलना। एयइ ; (कप्प)। वकृ—**एयंत** ; (ठा ७)। प्रयो, कवकृ—**एइज्जमाण** ; (राज)।

एय पुं [**एज**] गति, चलन ; (भग २५, ४)।

एयंत देखो **एक्कंत** ; (पउम १५, ५८)।

एयण न [**एजन**] कम्प, हिलन; " निरियणं भ्याणं" (आव ४)।

एयणा स्त्री [**एजना**] १ कम्प ; २ गति, चलन ; (सूत्र २, ३; भग १७, ३)।

एयाणिं देखो **इयाणिं** ; (रंभा)।

एयावंत वि [**एतावत्**] इतना; (आचा)।

एरंड पुं [**एरण्ड**] १ वृत्त-विशेष, एरण्ड का पेड़ ; (ठा ४, ४; णाया १, १)। २ तृण-विशेष; (पण्ण १)। °**मिंजिया** स्त्री [°**मिञ्जिका**] एरण्ड-फल ; (भग ७, १)।

एरंड वि [**ऐरण्ड**] एरण्ड-वृत्त-संबन्धी (पत्रादि) ; (दे १, १२०)।

एरंडइय } पुं [**दे**] पागल कुत्ता; " एरंडए साणे एरंडइय-
एरंडय } साणेति हडक्कयितः " (बृह १)।

एरण्णवय न [**ऐरण्यवत**] १ क्षेत्र-विशेष ; (सम १२)। २ वि. उस क्षेत्र में रहने वाला ; (ठा २)।

एरवई स्त्री [**ऐरावती, अजिरवती**] नदी-विशेष; (राज; कस)।

एरवय न [**ऐरवत**] १ क्षेत्र-विशेष; (सम १२; ठा २, ३)। २ पुं. पर्वत-विशेष ; (ठा १०)।

एरवय वि [**ऐरवत**] एरवत क्षेत्र का रहने वाला; (अणु)। °**कूड** न [°**कूट**] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष ; (ठा १०)।

एराणी स्त्री [**दे**] १ इन्द्राणी ; २ इन्द्राणी व्रत का सेवन करने वाली स्त्री ; (दे १, १४७)।

एरावई स्त्री [**ऐरावती**] नदी-विशेष ; (ठा ५, २; पि ४६५)।

एरावण पुं [**ऐरावण**] १ इन्द्र का हाथी, जो कि इन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव है ; (ठा ५, १; प्रयौ ७८)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] इन्द्र ; (उप ५३० टी)।

एरावय पुं [**ऐरावत**] १ ह्रद-विशेष ; (राज)। २ ह्रद-विशेष का अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। ३ छन्दः-शास्त्र-प्रसिद्ध पञ्चकला-प्रस्तार में आदि के ह्रस्व और अन्त के दो गुरु अक्षरों का संकेत ; (पिंग)। ४ लकुच वृक्ष ; ५ सरल और लम्बा इन्द्र-धनुष ; ६ इरावती नदी का समीपवर्ती देश ; ७ इन्द्र का हाथी ; (हे १, २०८)।

एरिस वि [**ईदृश**] इस तरह का, ऐसा ; (आचा ; कुमा ; प्रासू २१)।

एरिसिअ (अप) ऊपर देखो ; (पिंग)।

एल वि [**दे**] कुशल, निपुण ; (दे १, १४४)।

एल } पुं [**एड, एल**] १ मृगों की एक जाति ; (विपा
एलग } १, ४)। २ मेष भेड़; (सूत्र २, २)। °**मूअ**, °**मूग** वि [°**मूक**] १ मूक, भेड़ की तरह अव्यक्त बोलने वाला ; " जलएलमूअमम्मणअलियवयणजंपणे दोसा " (श्रा १२ ; दस ५ ; आव ४ ; निचू ११)।

एलगच्छ न [**एलकाक्ष**] स्वनाम-ख्यात नगर-विशेष ; (उप २११ टी)।

एलय देखो **एल** ; (उवा ; पि २४०)।

एलविल वि [**दे**] १ धनाढ्य, धनी ; २ पुं. वृषभ, बैल ; (दे १, १४८ ; षड्)।

एला स्त्री [**एला**] १ एलायची का पेड़ ; (से ७,६२)। २ एलायची-फल; (सुर १३, ३३)। °**रस** पुं [°**रस**] एलायची का रस ; (पण्ह २, ५)।

एलालुय पुंन [**एलालुक**] आलू की एक जाति, कन्द-विशेष ; (अनु ६)।

एलावच्च न [**एलापत्य**] माण्डव्य गोत्र का एक शाखा-गोत्र ; (ठा ७)।

एलावच्चा स्त्री [**एलापत्या**] पक्ष की तीसरी रात ; (चंद १४)।

एलिंघ पुं [**एलिङ्ग**] धान्य-विशेष ; (पण्ण १)।

एलिया स्त्री [**एडिका, एलिका**] १ एक जात की मृगी; २ भेड़िया ; (हे ३, ३२)।

एलु पुं [**एलु**] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)।

एलुग } पुंन. [**एलुक**] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी;
एलुय } जीव ३ ; आचा २)।

एल्ल वि [**दे**] दरिद्र, निर्धन ; (दे १, १७४)।

एव अ [**एव**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अवधारण, निश्चय ; (ठा ३, १ ; प्रासू १६)। २ सादृश्य, तुल्यता; ३ चार-नियोग ; ४ निग्रह ; ५ परिभव ; ६ अल्प, थोडा ; (हे २, २१७)।

एअ देखो **एवं**; (हे १, २९ ; पउम १५, २४)।

एवइ वि [**इयत्, एतावत्**] इतना। °**खुत्तो** अ [°**कृत्वस्**] इतनी वार ; (कप्प)।

एवइय वि [**इयत्, एतवात्**] इतना ; (कप्प ; विसे ४४४)।

एवं अ [**एवम्**] इस तरह ; इस रीति से, इस प्रकार ; (सूअ १, १ ; हे १, २९)। °**भूअ** पुं [°**भूत**] १ व्युत्पत्ति के अनुसार उस क्रिया से विशिष्ट अर्थ को ही शब्द का अभिधेय मानने वाला पक्ष ; (ठा ७)। २ वि. इस तरह का, एवं-प्रकार ; (उप ८७७)। °**विध**, °**विह** वि [°**विध**] इस प्रकार का ; (हे ४, ३२३; काल)।

एवड (अप) वि [**इयत्**] इतना ; (हे ४, ४०८ ; कुमा; भवि)।

एवमाइ देखो **एमाइ** ; (पण्ह १, ३)।

एवमेव } देखो **एमेव** ; (हे १, २७१ ; उवा)।
एवामेव }

एव्व देखो **एव**=एव ; (अभि १३; स्वप्न ४०)।

एव्वं देखो **एवं** ; (षड् ; अभि ७२, स्वप्न १०)।

एव्वहि (अप) अ [**इदानीम्**] इस समय, अधुना ; (षड्)।

एव्वारु पुं [**एर्वारु**] ककड़ी ; (कुमा)।

एस सक [**आ+इष्**] १ खोजना, शुद्ध भिक्षा की खोज करना। २ निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना। एसंति; (आचा २, ६, २)। वकृ—**एसमाण** ; (आचा २, ५, १)। संकृ—**एसित्ता, एसिया** ; (उत्त १ ; आचा)। हेकृ—**एसित्तए** ; (आचा २, २, १)।

एस वि [**एष्य**] १ भावी पदार्थ, होने वाली वस्तु ; (आव ५)। २ पुं. भविष्य काल ; (दसनि १); " अकयंव संपइ गए कह कीरइ, किह व एसम्मि " (विसे ४२२)।

°**एस** देखो **देस** ; " भण को ण रुस्सइ जणो पत्थिज्जंतो अएसकालम्मि " (गा ४००)।

एसग वि [**एषक**] अन्वेषक, गवेषक ; (आचा)।

एसज्ज न [**ऐश्वर्य**] वैभव, प्रभुत्व, संपत्ति ; (ठा ७)।

एसण न [**एषण**] १ अन्वेषण, खोज ; २ ग्रहण ; (उत्त २)।

एसणा स्त्री [**एषणा**] १ अन्वेषण, गवेषण, खोज; (आचा)। २ प्राप्ति, लाभ; " विसएसणं झियायंति " (सूअ १, ११)। ३ प्रार्थना ; (सूअ १, २)। ४ निर्दोष आहार की खोज करना ; (ठा ६)। ५ निर्दोष भिक्षा ; (आचा २)। ६ इच्छा, अभिलाष ; (पिंड १)। ७ भिक्षा का ग्रहण; (ठा ३, ४)। °**समिइ** स्त्री [°**समिति**] निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना ; (ठा ५)। °**समिय** वि [°**समित**] निर्दोष भिक्षा को ग्रहण करने वाला ; (उत्त ६ ; भग)।

एसणिज्ज वि [**एषणीय**] ग्रहण-योग्य ; (णाया १, ५)।

एसि वि [**एषिन्**] अन्वेषक, खोज करने वाला ; (आचा)।

एसिय वि [**एषिक**] १ खोज करने वाला, गवेषक; २ पुं. व्याध ; ३ पाखण्ड-विशेष ; (सूअ १, ९)। ४ मनुष्यों की एक नीच जाति ; (आचा २, १, २)

एसिय वि [**एषित**] गवेषित, अन्वेषित ; (भग ७, १)। २ निर्दोष भिक्षा ; (वव ४)।

एस्सरिय देखो **एसज्ज** ; (उव)।

एह अक [**एध्**] बढना, उन्नत होना। एहइ ; (षड्)। प्रयो, कवकृ—" दीसंति दुहम् **एहंता** ; (दस ६)।

एह (अप) वि [**ईदृक्**] ऐसा, इस के जैसा ; (षड्; भवि)।

एहत्तरि (अप) स्त्री [**एकसप्तति**] संख्या-विशेष, ७१; (पिंग)।

एहिअ वि [**ऐहिक**] इस जन्म-संबन्धी ; (ओघ ६२)।

इअ सिरिपाईअसद्दमहण्णवे एआराइसद्दसंकलणो
सत्तमो तरंगो समत्तो।



ऐ

ऐ अ [अयि] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ संभावना ; २ आमन्त्रण , संबोधन ; ३ प्रश्न ; ४ अनुराग, प्रीति ; ५ अनुनय ;" ऐ बीहेमि; ऐ उम्मत्तिए " (हे १, १६६)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ऐआराइअद्दसंकलणो
अट्ठमो तरंगो समत्तो।

ओ

ओ पुं [**ओ**] स्वर वर्ण-विशेष ; (हे १, १ ; प्रामा)।
ओ देखो **अव**=अप ; (हे १, १७२ ; प्राप्र; कुमा ; षड्)।
ओ देखो **अव**=अव ; (हे १, १७२ ; प्राप्र; कुमा; षड्)।
ओ देखो **उअ**=उत ; (हे १, १७२ ; कुमा ; षड्) ।
ओ देखो **उव** ; (हे १, १७३ ; कुमा) ।
ओ अ [**ओ**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ सूचना; जैसे— "ओ अविणयतत्तिल्ले " २ पश्चात्ताप, अनुताप, जैसे— "ओ न मए छाया इत्तिआए " (हे २, २०३ ; षड्; कुमा; प्राप्र) । ३ संबोधन, आमन्त्रण ; (नाट—चैत ३४)। ४ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (पंचा १; विसे २०२४) ।
ओअ न [**दे**] वार्त्ता, कथा, कहानी; (दे १, १४६) ।
ओअअ वि [**अपगत**] अपसृत ; " ओअआअव—" (पि १६५) ।
ओअंक पुं [**दे**] गर्जित, गर्जना ; (दे १, १५४) ।
ओअंद सक [**आ+छिद्**] १ बलात्कार से छीन लेना । २ नाश करना । ओअंदइ ; (हे ४, १२५ ; षड्) ।
ओअंदणा स्त्री [**आच्छेदना**] १ नाश । २ जबरदस्ती छीनना ; (कुमा) ।
ओअक्ख सक [**दृश्**] देखना । ओअक्खइ; (हे ४, १८१; षड्) ।
ओअग्ग सक [**वि+आप्**] व्याप्त करना । ओअग्गइ ; (हे ४, १४१) ।
ओअग्गिअ वि [**व्याप्त**] विस्तृत, फैला हुआ ; (कुमा)।
ओअग्गिअ वि [**दे**] १ अभिभूत, परिभूत ; २ न. केश वगैरः को एकत्रित करना ; (दे १, १७२) ।
ओअग्घिअ } वि [**दे**] घ्रात, सूँघा हुआ; (दे १, १६२;
ओअग्घिअ } षड्) ।
ओअण्ण वि [**अवनत**] नमा हुआ, नीचे की तरफ मुड़ा हुआ ; (से ११, ११८) ।
ओअत्त वि [**अपवृत्त**] औंधा किया हुआ, उलटा किया हुआ ; "ओअत्ते कुंभमुहे जललवकणिआवि किं ठाइ ? " (गा ६५४) ।
ओअत्तअ वि [**अपवर्त्तितव्य**] १ अपवर्तन-योग्य ; २ त्यागने योग्य, छोडने लायक ; " कुसुमम्मि व पव्वाअए भमरोअत्तअम्मि " (से ३, ४८) ।
ओअम्मअ वि [**दे**] अभिभूत, पराभूत ; (षड्) ।
ओअर सक [**अव+तॄ**] १ जन्म-ग्रहण करना । २ नीचे उतरना । ओयरइ ; (हे ४, ८५) । वकृ— **ओयरंत**; (ओघ १६१; सुर १४,२१) । हेकृ—**ओयरिउं**; (प्रारू) । कृ—**ओयरियव्व**; (सुर १०, १११) ।
ओअरण न [**उपकरण**] साधन, सामग्री ; (गा ६८१)।
ओअरण न [**अवतरण**] उतरना, नीचे आना ; (गउड)।
ओअरय पुं [**अपवरक**] कमरा, कोठरी ; (सुपा ४१५) ।
ओअरिअ वि [**अवतीर्ण**] उतरा हुआ ; (पाअ) ।
ओअरिअ वि [**औदरिक**] पेट-भरा, उदर भरने मात्र की चिन्ता करने वाला ; (ओघ ११८ भा) ।
ओअरिया स्त्री [**अपवरिका**] कोठरी, छोटा कमरा; (सुपा ४१५) ।
ओअल्ल अक [**अव+चल्**] चलना । ओअल्लंति ; (पि १६७ ; ४८८) वकृ—**ओअल्लंत** ; (पि १६७; ४८८) ।
ओअल्ल पुं [**दे**] १ अपचार, खराब आचरण, अहित आचरण; (षड्; स ५२१) । २ कम्प, काँपना ; (षड् ; दे १, १६५) । ३ गौओं का बाड़ा; ४ वि. पर्यस्त, प्रक्षिप्त; ५ लम्बमान, लटकता हुआ ; (दे १, १६५) । ६ जिसकी आँखें निमीलित होती हो वह ; "मुच्छिज्जंतोअल्ला अक्कंता णिअअमहिहेरेहि पत्तंगा " (स १३, ४३) ।
ओअल्लअ वि [**दे**] विप्रलब्ध, प्रतारित ; (षड्) ।
ओअव सक [**साधय्**] साधना, वश में करना, जीतना । "गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिआ ! सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेहि " (जं ३)। संकृ—**ओअवेत्ता** ; (जं ३) ।
ओअवण न [**साधन**] विजय, वश करना, स्वायत्त करना ; (जं ३—पत्र २४८) ।
ओआअ पुं [**दे**] १ ग्रामाधीश, गाँव का स्वामी ; २ आज्ञा, आदेश ; ३ हस्ती वगैर : को पकडने का गर्त ; ४ वि. अपहृत, छीना हुआ ; (दे १, १६६) ।
ओआअव पुं [**दे**] अस्त-समय ; (दे १, १६२) ।
ओआर सक [**अप+वारय्**] ढकना । " कहं सुज्जं हत्थेण ओआरेसि " (मै ४६) ।
ओआर पुं [**अपकार**] अनिष्ट, हानि, क्षति ; (कुमा) ।

ओआर पुं [**अवतार**] १ अवतारण ; (ठा १ ; गउड)। २ अवतार, देहान्तर-धारण ; (षड्)। ३ उत्पत्ति, जन्म; "अच्चंतमणोयारो जन्थ जगरोगवाहीणं" (स १३१)। ४ प्रवेश ; (विसे १०४०)।

ओआर देखो **उवयार** ; (षड्)।

ओआरण न [**अवतारण**] उतारना, अवतारित करना ; (दे ४, ४०)।

ओआरिअ वि [**अवतारित**] उतारा हुआ ; (से ११, ६३ ; उप ६६७ टी)।

ओआल पुं [**दे**] छोटा प्रवाह ; (दे १, १५१)।

ओआली स्त्री [**दे**] १ खड्ग का दोष; २ पङ्क्ति, श्रेणि ; (दे १, १६४)।

ओआवल पुं [**दे**] बालातप, सुबह का सूर्य-ताप ; (दे १, १६१)।

ओआस देखो **अवगास**; (हे १, १७२ ; कुमा ; गा २०); "अम्हारिसाण सुंदर ! ओआसो कत्थ पावाणं" (काप्र ६०३)।

ओआस देखो **उववास** ; (हे १, १७३ ; प्राकृ)।

ओआहिअ वि [**अवगाहित**] जिसका अवगाहन किया गया हो वह ; (से १, ४ ; ८, १००)।

ओइंध सक [**आ+मुच्**] १ छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना। २ उतार कर रख देना। "तो उज्झिऊण लज्जं ओइंधइ कंचुयं सरीराओ" (पउम ३४, १६)। "तहेव य झडत्ति परिवाडीए ओइंधइ त्ति" (आक ३८)।

ओइण्ण वि [**अवतीर्ण**] उतरा हुआ ; (पाअ ; गा ६३)

ओइत्त, **ओइत्तण** न [**दे**] परिधान, वस्त्र ; (दे १, १५५)।

ओइल्ल वि [**दे**] आरूढ ; (दे १, १५८)।

ओउंठण न [**अवगुण्ठन**] स्त्री के मुँह पर का वस्त्र, घूँघट ; (अभि १६८)।

ओउल्लिय वि [**दे**] पुरस्कृत, आगे किया हुआ ; (षड्)।

ओऊल न [**अवचूल**] लटकता हुआ वस्त्राञ्चल, प्रालम्ब; (पाअ); "मरगयलंबंतमोत्तिओऊलं" (पउम ८, २८३)। देखो **ओचूल**।

ओ अ [**ओम्**] प्रणव, मुख्य मन्त्राक्षर ; (पडि)।

ओंघ देखो **उंघ**। ओंघइ ; (हे ४, १२ टि)।

ओंडल न [**दे**] केश-गुम्फ, केश-रचना, धम्मिल्ल; (दे १, १५०)।

ओंदुर देखो **उंदुर** ; (षड्)।

ओंबाल सक [**छादय्**] ढकना, आच्छादित करना। ओंबालइ ; (हे ४, २१)।

ओंबाल सक [**प्लावय्**] १ डुबौना। २ व्याप्त करना। ओंबालइ ; (हे ४, ४१)।

ओंबालिअ वि [**छादित**] ढका हुआ ; (कुमा)।

ओंबालिअ वि [**प्लावित**] १ डुबाया हुआ ; २ व्याप्त; (कुमा)।

ओकड्ढ वि [**अपकृष्ट**] १ खींचा हुआ ; २ न. अपकर्षण, खींचाव ; (उत्त १९)।

ओकड्ढग देखो **उक्कड्ढग** ; (पराह १, ३)।

ओक्कस सक [**अव+कृष्**] १ निमग्न होना, गड़ जाना। २ खींचना। ३ बह जाना। वकृ—**ओकसमाण** ; (कस)।

ओक्कंत वि [**अवक्रान्त**] निराकृत, पराजित; "परवाईहिं **अणोक्कंता** अरणउत्थिएहिं अणाद्धंसिज्जमाणा विहरंति" (औप)।

ओक्कंदी देखो **उक्कंदी**; (दे १, १७४)।

ओक्कणी स्त्री [**दे**] यूका, जू; (दे १, १५९)।

ओक्किअ न [**दे**] १ वास, वसन, अवस्थान ; २ वमन, उल्टी ; (दे १, १५१)।

ओक्खंच सक [**आ+कृष्**] खींचना। कर्म—"जह जह आक्खंचिज्जइ, तह तह वेगं पगिराहमाणेण। भयवं ! तुरंगमेणं, इहाणिओ आसमे तुम्ह" (सुर ११, ५१)।

ओक्खंड सक [**अव+खण्डय्**] तोड़ना, भाँगना। कृ—**ओक्खंडेअव्व**; (से १०, २६)।

ओक्खंडिअ वि [**दे**] आक्रान्त ; (दे १, ११२)।

ओक्खंद देखो **अवक्खंद** ; (सुर १०, २१० ; पउम ३७, २६)।

ओक्खल देखो **उऊखल**; (कुमा; प्राप्र)।

ओक्खली [**दे**] देखो **उक्खली**; (दे १,१७४)।

ओक्खिण्ण त्रि [**दे**] १ अवकीर्ण; २ खण्डित, चूर्णित; (कस; दे १, १३०)। ३ छन्न, ढका हुआ; ३ पार्श्व में शिथिल; (दे १, १३०)।

ओक्खित्त वि [**अवक्षिप्त**] फेंका हुआ; (कस)।

ओखंच देखो **ओक्खंच**।

ओगम देखो **अवगम**। कृ—**ओगमिदव्व** (शौ) ; (मा ४८)।

ओगर देखो **ओग्गर**; (पिंग)।

ओगलिअ वि (**अवगलित**) गिरा हुआ, खिसका हुआ; (गा २०५)।

ओगसण न [**अपकसन**] ह्रास; (राज)।

ओगहिय वि [**अवगृहीत**] उपात्त, गृहीत; (ठा ३)।

ओगाढ वि [**अवगाढ**] १ आश्रित, अधिष्ठित ; (ठा २, २)। २ व्याप्त ; (णाया १, १६)। ३ निमग्न ; (ठा ४)। ४ गंभीर, गहरा ; (पउम २०, ६५ ; से ६, २६)।

ओगास पुं [**अवकाश**] जगह, स्थान ; (विवे १३६ टी)।

ओगाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहन करना। ओगाहइ ; (षड्)। वक्र—**ओगाहंत** ; (आव २)। संकृ—**ओगाहइत्ता, ओगाहित्ता** ; (दस ५ ; भग ५, ४)।

ओगाहण न [**अवगाहन**] अवगाहन ; (भग)।

ओगाहणा स्त्री [**अवगाहना**] १ आधार-भूत आकाश-क्षेत्र ; (ठा १)। २ शरीर; (भग ६, ८)। ३ शरीर-परिमाण; (ठा ४, १)। ४ अवस्थान, अवस्थिति ; (विसे) °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, (भग ६, ८)। °**णाम** पुं [°**नाम**] अवगाहनात्मक परिणाम ; (भग ६, ८)।

ओगाहिम वि [**अवगाहिम**] पक्वान्न ; (पंचा ५)।

ओगिज्झ } सक [**अव+ग्रह्**] १ आश्रय लेना। २
ओगिण्ह } अनुज्ञा-पूर्वक ग्रहण करना। ३ जानना। ४ उद्देश करना। ५ लक्ष्य कर कहना। ओगिण्हइ; (भग; कप्प)। संकृ—**ओगिज्झिय, ओगिण्हइत्ता, ओगिण्हित्ता, ओगिण्हित्ताणं**; (आचा ; णाया १, १; कस; उवा)। कृ—**ओघेत्तव्व**; (कप्प; पि ५७०)।

ओगिण्हण न [**अवग्रहण**] सामान्य ज्ञान-विशेष, अवग्रह; (णंदि)।

ओगिण्हणया स्त्री [**अवग्रहणता**] १ ऊपर देखो ; (णंदि)। २ मनो-विषयीकरण, मन से जानना; (ठा ८)।

ओगिन्ह देखो **ओगिण्ह**। संकृ—**ओगिन्हित्ता** ; (निर १, १)।

ओगुंडिय वि [**अवगुण्डित**] लिप्त ; (बृह १)।

ओगुट्ठि स्त्री [**अपकृष्टि**] अपकर्ष, हलकाइ, तुच्छता ; (पउम ५६, १५)।

ओगूहिय वि [**अवगूहित**] आलिङ्गित ; (णाया १,६)।

ओग्गर पुं [**ओगर**] धान्य-विशेष, व्रीहि-विशेष; (पिंग)।

ओग्गह देखो **उग्गह** ; (सम्म ७५; उव; कस; स ३५ ; ५६८)।

ओग्गहण देखो **ओगिण्हण**। °**पट्टग** पुंन [°**पट्टक**] जैन साध्वीओं को पहनने का एक गुह्याच्छादक वस्त्र; जाँघिया, लंगोट ; (कस)।

ओग्गहिय वि [**अवगृहीत**] १ अवग्रह-ज्ञान से जाना हुआ, अवग्रह का विषय। २ अनुज्ञा से गृहीत। ३ बद्ध, बँधा हुआ; (उवा)। ४ देने के लिए उठाया हुआ ; (औप)।

ओग्गहिय वि [**अवग्रहिक**] अनुज्ञा से गृहीत, अवग्रह वाला ; (औप)।

ओग्गारण न [**उद्गारण**] उद्गार ; (चारु ७)।

ओग्गाल पुं [**दे**] छोटा प्रवाह ; (दे १, १५१)।

ओग्गाल सक [**रोमन्थाय्**] पगुराना, चबाई हुई वस्तु का पुनः चबाना। ओग्गालइ ; (हे ४, ४३)।

ओग्गालिर वि [**रोमन्थायितृ**] पगुराने वाला, चबाई हुई वस्तु का पुनः चबाने वाला ; (कुमा)।

ओग्गिअ वि [**दे**] अभिभूत, पराभूत ; (दे १, १५८)।

ओग्गीअ पुं [**दे**] हिम, बर्फ ; (दे १, १४६) ।

ओग्घसिय वि [**अवघर्षित**] प्रमार्जित ; साफ-सुथरा किया हुआ ; (राय)।

ओघ पुं [**ओघ**] १ समूह, संघात ; (णाया १, ५)। २ संसार, " एते ओघं तरिस्संति समुद्दं ववहारिणो " (सूत्र १, ३)। ३ अविच्छेद, अविच्छिन्नता; (पण्ह १, ४)। ४ सामान्य, साधारण। **सण्णा** स्त्री [°**संज्ञा**] सामान्य ज्ञान; (पण्ण ७)। °**देस** पुं [°**देश**] सामान्य विवक्षा ; (भग २५, ३)। देखो **ओह**=ओघ।

ओघट्टिद (शौ) वि [**अवघट्टित**] आहत ; (प्रयौ २७)।

ओघसर पुं [**दे**] १ घर का जल-प्रवाह; २ अनर्थ, खराबी, नुकशान ; (दे १, १७० ; सुर २, ६६)।

ओघसिय देखो **ओग्घसिय**।

ओघेत्तव्व देखो **ओगिण्ह**।

ओचिदी (शौ) स्त्री [**औचिती**] उचितता, औचित्य ; (रंभा)।

ओचुंब सक [**अव+चुम्ब्**] चुम्बन करना। संकृ—**ओचुंबिऊण** ; (भवि)।

ओचुल्ल न [**दे**] चुल्हा का एक भाग ; (दे १, १५३)।

ओचूल } देखो **ओऊल** ; (विपा १, २ ; सुर ३, ७०)।
ओचूलग } २ मुख से हटा हुआ शिथिल—ढीला (वस्त्र); "ओचूलगनियत्था " (जं ३—पत्र २४५)।

ओच्चय देखो **अवचय** ; (महा)।

ओचिया स्त्री [**अवचायिका**] तोड़ कर (फूलों को) इकट्ठा करना ; (गा ७६७)।

ओच्चेल्लर न [**दे**] ऊसर-भूमी ; २ जघन के रोम ; (दे १, १३६)।

ओच्छअ } वि [**अवस्तृत**] १ आच्छादित ; २ निरुद्ध,
ओच्छइय } रोका हुआ ; (पण्ह १, ४; गउड ; स १६४)।

ओच्छंदिअ वि [**दे**] १ अपहृत ; २ व्यथित, पीडित ; (षड्)।

ओच्छण्ण वि [**अवच्छन्न**] आच्छादित, ढ़का हुआ ; "णिच्चोउगो असोगो ओच्छण्णो सालरुक्खेणं" (सम १५२)। देखो **ओच्छन्न**।

ओच्छत्त न [**दे**] दन्त-धावन, दतवन; (दे १, १५२)।

ओच्छन्न देखो **ओच्छण्ण**; (स ११२, औप)। २ अवष्टब्ध, आक्रान्त ; (आचा)।

ओच्छर (शौ) सक [**अव+स्तृ**] १ बिछाना, फैलाना। २ आच्छादित करना, ढाँकना। ओच्छरीअदि ; (नाट—उत्तम १०५)।

ओच्छविय } वि [**अवच्छादित**] आच्छादित, ढ़का
ओच्छाइय } हुआ ; " गुच्छलयारुक्खगुम्मवल्लिगुच्छओच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरिकडगपायमूलं " (णाया १, १—पत्र २५; २८ टी ; महा ; स १५०)।

ओच्छाइवि नीचे देखो।

ओच्छाय सक [**अव+छादय्**] आच्छादन करना। संकृ—**ओच्छाइवि** ; (भवि)।

ओच्छायण वि [**अवच्छादन**] ढाँकना, पिधान ; (स ५५७)।

ओच्छाहिय देखो **उच्छाहिय** ;

"ओच्छाहिओ परेण व लद्धिपसंसाहिं वा समुत्तइओ।
अवमाणिओ परेण य जो एसइ माणपिंडो सो॥"
(पिंड ४६५)।

ओच्छिअ न [**दे**] केश-विवरण; (दे १, १५०)।

ओच्छिण्ण वि [**अवच्छिन्न**] आच्छादित ; "पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छिण्णपलिच्छिण्णा" (जीव ३)।

ओच्छुंद सक [**आ+क्रम्**] १ आक्रमण करना। २ गमन करना। ओच्छुंदंति ; (से १३, १६)। कर्म—ओच्छुंदइ ; (से १०, ५५)।

ओच्छुण्ण वि [**आक्रान्त**] १ दबाया हुआ। २ उल्लंघित; "ओच्छुण्णदुग्गमपहा" (से १३, ६३; १५, १३)।

ओच्छोअअ न [**दे**] घर की छत के प्रान्त भाग से गिरता पानी ;

"रक्खेइ पुत्तअं मत्थएण ओच्छोअअं पडिच्छंती।
अंसूहिं पहिअघरिणी ओलिज्जंतं ण लक्खेइ" (गा ६३१)।

ओज्जर वि [**दे**] भीरु, डरपोक ; (षड्)।

ओज्जल देखो **उज्जल** (दे)।

ओज्जल्ल वि [**दे**] बलवान्, प्रबल ; (दे १, १५४)।

ओज्जाअ पुं [**दे**] गर्जित, गर्जारव ; (दे १, १५४)।

ओज्झ वि [**दे**] मैला, अस्वच्छ, चोखा नहीं वह ; (दे १, १४८)।

ओज्झंत देखो **ओज्झा** = अप + ध्या।

ओज्झमण न [**दे**] पलायन, भाग जाना ; (दे १, १०३)।

ओज्झर पुं [**निर्झर**] झरना, पर्वत से निकलता जल-प्रवाह ; (गा ६४० ; हे १, ६८ ; कुमा ; महा)।

ओज्झरिअ [**दे**] देखो **उज्झरिअ** ; (दे १, १३३)।

ओज्झरी स्त्री [**दे**] ओझ, आँत का आवरण ; (दे १, १५७)।

ओज्झा सक [**अप+ध्या**] खराब चिन्तन करना। कवकृ—**ओज्झंत** ; (भवि)।

ओज्झा देखो **अउज्झा** ; (उप पृ ३७४)।

ओज्झाय देखो **उवज्झाय** ; (कुमा ; प्रारू)।

ओज्झाय वि [**दे**] दूसरे को प्रेरणा कर हाथ से लिया हुआ ; (दे १, १५६)।

ओज्झावग देखो **उवज्झाय** ; (उप ३५७ टी)।

ओट्ठ पुं [**ओष्ठ**] होठ, अधर ; (पउम १, २४ ; स्वप्न १०४; कुमा)।

ओट्टिय वि [**औष्ट्रिक**] उष्ट्र-संबन्धी, उष्ट्र के बालों से बना हुआ ; (कस ; स ५८६)।

ओडड्ढ वि [**दे**] अनुरक्त, रागी, (दे १, १५६)।

ओड्ड पुं [**ओड्र**] १ उत्कल देश; २ वि. उत्कल देश का निवासी, उडिया ; (पिंग)।

ओड्डिअ वि [**ओड्रीय**] उत्कल-देशीय ; (पिंग)।

ओड्ढण न [**दे**] ओढन, उत्तरीय, चादर ; (दे १, १५५)।

ओड्ढिगा स्त्री [दे] ओढ़नी ; (स २११)।
ओण देखो **ऊण**=ऊन ; (रंभा)।
ओणंद सक [**अव+नन्द्**] अभिनन्दन करना। कवकृ—**ओणंदिज्जमाण** ; (कप्प)।
ओणम अक [**अव+नम्**] नीचे नमना। वकृ—**ओणमंत** ; (से १, ४५)। संकृ—**ओणमिअ, ओणमिऊण** ; (आचा २ ; निचू १)।
ओणय वि [**अवनत**] १ नमा हुआ ; (सुर २, ४६)। २ न. नमस्कार, प्रणाम ; (सम २१)।
ओणल्ल अक [**अव+लम्ब्**] लटकना। "केसकलावु खंधे ओणल्लइ" (भवि)।
ओणविय वि [**अवनमित**] नमाया हुआ, अवनत किया हुआ ; (गा ६३५)।
ओणाम सक [**अव+नमय्**] नीचे नमाना, अवनत करना। ओणामेहि ; (मृच्छ ११०)। संकृ—**ओणामित्ता** ; (निचू)।
ओणामणी स्त्री [**अवनामनी**] एक विद्या, जिसके प्रभाव से वृक्ष वगैरः स्वयं फलादि देने के लिए अवनत होते हैं ; (उप पृ १५५; निचू १)।
ओणामिय } वि [**अवनमित**] अवनत किया हुआ ; (से **ओणाविय** } ५, ३६ ; ६, ४ ; गा १०३ ; भवि)।
ओणिअत्त अक [**अपनि+वृत्**] पीछे हटना, वापिस आना। वकृ—**ओणिअत्तंत** ; (से २, ७)।
ओणिअत्त वि [**अपनिवृत्त**] पीछे हटा हुआ, वापिस आया हुआ ; (से ५, ५८)।
ओणिमिल्ल वि [**अवनिमीलित**] मुद्रित, मूँदा हुआ ; (से ६,८७ ; १३, ८२)।
ओणियट्ट देखो **ओनियट्ट**; (पि ३३३)।
ओणिव्व पुं [**दे**] वल्मीक, चींटीओं का खुदा हुआ मिट्टी का ढ़ेर ; (दे १, १५१)।
ओणीवी स्त्री [**दे**] नीवी, कटी-सूत्र ; (दे १, १५०)।
ओणुणअ वि [**दे**] अभिभूत, पराभूत ; (दे १, १५८)।
ओण्णिद्द न [**औन्निद्र्य**] निद्रा का अभाव; "ओण्णिद्दं दोब्बल्लं" (काप्र ८५ ; दे १, ११७)।
ओण्णिय वि [**और्णिक**] ऊन का बना हुआ, ऊर्ण-निर्मित; (कस)।
ओत्तलहअ पुं [दे] विटप ; (दे १, ११६)।
ओत्ताण देखो **उत्ताण**; (विक्र २८)।

ओत्थअ वि [**अवस्तृत**] १ फैला हुआ, प्रसृत ; (से २, ३)। २ आच्छादित, पिहित; "समंतओ अत्थयं गयणं" (आवम; दे १, १५१ ; स ७७, ३७६)।
ओत्थअ वि [**दे**] अवसन्न, खिन्न ; (दे १, १५१)।
ओत्थइअ देखो **ओच्छइय**; (गा ५६६; से ८, ६२ ; स ५७६)।
ओत्थर देखो **ओच्छर**। ओत्थरइ ; (पि ५०५; नाट)।
ओत्थर पुं [**दे**] उत्साह ; (दे १, १५०)।
ओत्थरण न [**अवस्तरण**] बिछौना ; (पउम ४६,८४)।
ओत्थरिअ वि [**अवस्तृत**] १ बिछाया हुआ ; २ व्याप्त ; (से ७, ४७)।
ओत्थरिअ वि [**दे**] १ आक्रान्त ; २ जो आक्रमण करता हो वह ; (दे १, १६६)।
ओत्थल्लपत्थल्ला देखो **उत्थल्लपत्थल्ला**; (दे १, १२२)।
ओत्थाडिय वि [**अवस्तृत**] बिछाया हुआ ; (भवि)।
ओत्थार सक [**अव+स्तारय्**] आच्छादित करना। कर्म—ओत्थारिज्जंति ; (स ६६८)।
ओदइय वि [**औदयिक**] १ उदय, कर्म-विपाक ; (भग ७, १४; विसे २१७४)। २ उदय-निष्पन्न ; (विसे २१७४; सूअ १,१३)। ३ कर्मोदय-रूप भाव ; "कम्मोदयसहावो सव्वो असुहो सुहो य ओदइओ" (विसे ३४६४)। ४ उदय होने पर होनेवाला ; (विसे २१७४)।
ओदच्च न [**औदात्य**] उदात्तता, श्रेष्ठता ; (प्राकृ)।
ओदज्ज न [**औदार्य**] उदारता ; (प्राकृ)।
ओदण न [**ओदन**] भात, राँधे हुए चावल ; (पण्ह २, ५; ओघ ७१४ ; चारु १)।
ओदरिय वि [**औदरिक**] पेट-भरा, पेट भरने के लिए ही जो साधु हुआ हो वह ; (निचू १)।
ओदहण न [**अवदहन**] तप्त किए हुए लोहे के कोश वगैरः से दागना ; (राज)।
ओदारिय न [**औदार्य**] उदारता ; (प्राकृ)।
ओद्दंपिअ वि [**दे**] १ आक्रान्त ; २ नष्ट; (दे१, १७१)।
ओद्धंस सक [**अव+ध्वंस्**] १ गिराना। २ हटाना। ३ हराना। कवकृ—"परवाईहिं अणोक्कंता अण्णउत्थिएहिं **अणोद्धंसिज्जमाणा** विहरंति" (औप)।
ओधाव सक [**अव+धाव्**] पीछे दौड़ना। ओधावइ ; (महा)।

ओधुण देखो **अवधुण**। कर्म—ओधुव्वंति; (पि ५३६)। संकृ—**ओधुणिअ** ; (पि ५९१)।

ओधूअ वि [**अवधूत**] कम्पित ; (नाट)।

ओधूसरिअ वि [**अवधूसरित**] धूसर रंग वाला, हलका पीला रंग वाला ; (से १०, २१)।

ओनियट्ट वि [**अवनिवृत्त**] देखो **ओणिअत्त**=अपनिवृत्त ; (कप्प)।

ओपल्ल वि [**दे**] अपदीर्ण, कुरिठत ; "तते णं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधे ओहरति, तत्थवि य से धारा ओपल्ला" (णाया १, १४)।

ओप्प वि [**दे**] मृष्ट, ओप दिया हुआ ; (षड्)।

ओप्प सक [**अर्पय्**] अर्पण करना। ओप्पेइ ; (हे १, ६३)।

ओप्पा स्त्री [**दे**] शाण आदि पर मणि वगैरः का घर्षण करना ; (दे १, १४८)।

ओप्पाइय वि [**औत्पातिक**] उत्पात-संबन्धी; (औप)।

ओप्पिअ वि [**अर्पित**] समर्पित ; (हे १, ६३)।

ओप्पिअ वि [**दे**] शाण पर घिसा हुआ, "णिवमउडोप्पिअ-पयणह" (दे १, १४८)।

ओप्पील पुं [**दे**] समूह, जत्था ; (पाअ)।

ओप्पुंसिअ / **ओप्पुसिअ** } देखो **उप्पुसिअ**; (गउड; पि ४८६)।

ओबद्ध वि [**अवबद्ध**] १ बँधा हुआ ; २ अवसन्न ; (वव १)।

ओबुज्झ सक [**अव+बुध्**] जानना। वकृ—**ओबुज्झमाण**; (आचा)।

ओब्भालण देखो **उब्भालण** ; (दे १, १०३)।

ओभग्ग वि [**अवभग्न**] भग्न, नष्ट ; (से ३, ६३ ; १०, २६)।

ओभावणा स्त्री [**अपभ्राजना**] लोक-निन्दा, अपकीर्त्ति ; (राज)।

ओभास अक [**अव+भास्**] प्रकाशना, चमकना। वकृ—**ओभासमाण** ; (भग ११, ६)। प्रयो—ओभासेइ; (भग) ; ओभासंति, ओभासेंति ; (सुज्ज १६) ; वकृ—**ओभासमाण** ; (सूअ १, १४)।

ओभास सक [**अव+भाष्**] याचना करना, माँगना। कवकृ—**ओभासिज्जमाण** ; (निचू २)।

ओभास पुं [**अवभास**] १ प्रकाश ; (औप)। २ महाग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)।

ओभासण न [**अवभासन**] १ प्रकाशन, उद्द्योतन; (भग ८, ८)। २ आविर्भाव ; ३ प्राप्ति ; (सूअ १, १२)।

ओभासण न [**अवभाषण**] याचना, प्रार्थना ; (वव ८)।

ओभासिय वि [**अवभाषित**] १ याचित, प्रार्थित ; (वव ६)। २ न. याचना, प्रार्थना ; (बृह १)।

ओभुग्ग वि [**अवभुग्न**] वक्र, बाँका ; (णाया १, ८—पत्र १३३)।

ओमेडिय वि [**अवमुक्त**] छुड़ाया हुआ, रहित किया हुआ; "तेणवि कड्ढिऊणालक्खं पिव सूई-ओमेडिओ नियकुक्कुडो" (महा)।

ओम वि [**अवम**] १ कम, न्यून, हीन ; (आचा)। २ लघु, छोटा ; (ओघ २२३ भा)। ३ न. दुर्भिक्ष, अकाल ; (ओघ १३ भा)। °**कोट्ठ** वि [°**कोष्ठ**] ऊनोदर, जिसने कम खाया हो वह ; (ठा ४)। °**चेलग**, °**चेलय** वि [°**चेलक**] जीर्ण और मलिन वस्त्र धारण करने वाला ; (उत्त १२ ; आचा)। °**रत्त** पुं [°**रात्र**] १ दिन-क्षय, ज्योतिष की गिनती के अनुसार जिस तिथि का क्षय होता है वह ; (ठा ६)। २ अहोरात्र, रात-दिन ; (ओघ २८५)।

ओमइल्ल वि [**अवमलिन**] मलिन, मैला ; (से २, २५)।

ओमंथ (**दे**) देखो **ओमत्थ** ; (पाअ)।

ओमंथिय वि [**दे**] अधोमुख किया हुआ, नमाया हुआ ; (णाया १, १)।

ओमंस वि [**दे**] अपसृत, अपगत ; (षड्)।

ओमज्जण न [**अवमज्जन**] स्नान-क्रिया ; (उप ६४८टी)।

ओमज्जायण पुं [**अवमज्जायन**] ऋषि-विशेष ; (जं ७ ; कस)।

ओमज्जिअ वि [**अवमार्जित**] जिसको स्पर्श कराया गया हो वह, स्पर्शित ; (स ५६७)।

ओमट्ठ वि [**अवमृष्ट**] स्पृष्ट, छुआ हुआ ; (से ५, २१)।

ओमत्थ वि [**दे**] नत, अधोमुख ; (पाअ)।

ओमत्थिय [**दे**] देखो **ओमंथिय** ; (ओघ ३८६)।

ओमल्ल न [**निर्माल्य**] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य ; (षड्)।

ओमल्ल वि [**दे**] घनीभूत; कठिन, जमा हुआ ; (षड्)।

ओमाण पुं [**अपमान**] अपमान, तिरस्कार ; (उत्त २६)।

ओमाण न [**अवमान**] १ जिससे क्षेत्र वगैरः का माप किया जाता है वह, हस्त, दण्ड वगैरः मान ; (ठा २, ४) । २ जिसका माप किया जाता है वह क्षेत्रादि ; (अणु) ।

ओमाल देखो **ओमल्ल**=निर्माल्य ; (हे १, ३८ ; कुमा; वज्जा ८८) ।

ओमाल अक [**उप+माल्**] १ शोभना, शोभित होना । २ सक. सेवा करना, पूजना । संकृ—**ओमालिवि**; (भवि)। कवकृ—

"अहवावि भत्तिपणनंततियसवहूलीसकुसुमदामेहिं ।
ओमालिज्जंतकमो, नियमा तित्थाहिवो होइ"
(उप ६८६ टी) ।

ओमालिअ वि [**उपमालित**] १ शोभित ; २ पूजित, अर्चित ; (भवि) ।

ओमालिआ स्त्री [**अवमालिका**] चिमड़ी हुई माला ; (गा १६४) ।

ओमास पुं [**अवमर्श**] स्पर्श ; (से ६, ६७) ।

ओमिण सक [**अव+मा**] मापना, मान करना । कर्म—ओमिणिज्जइ ; (अणु) ।

ओमिय वि [**अवमित**] परिच्छिन्न, परिमित ; (सुज्ज ६)।

ओमील अक [**अव+मील्**] मुद्रित होना, बन्द होना । वकृ—**ओमीलंत**; (से ३, १) ।

ओमीस वि [**अवमिश्र**] १ मिश्रित ; २ समीपस्थ । ३ न. सामीप्य, समीपता ;

" सुचिरंपि अच्छमाणो, वेरुलिओ कायमणियओमीसे ।
न उवेइ कायभावं, पाहन्नगुणेण नियएण ॥"
(ओघ ७७२) ।

ओमुग्ग देखो **उम्मुग्ग** ; (पि १०४; २३४) ।

ओमुच्छिअ वि [**अवमूर्च्छित**] महा-मूर्छा को प्राप्त; (पउम ७, १५८) ।

ओमुद्धग वि [**अवमूर्धक**] अधोमुख; "ओमुद्धगा धरणियले पडंति" (सूअ १, ५) ।

ओमुय सक [**अव+मुच्**] पहनना । ओमुयइ ; (कप्प)। वकृ—**ओमुयंत** ; (कप्प) । संकृ—**ओमुइत्ता** ; (कप्प)।

ओमोय पुं [**ओमोक**] आभरण, आभूषण ; (भग ११, ११) ।

ओमोयर वि [**अवमोदर**] भूख की अपेक्षा न्यून भोजन करनेवाला ; (उत्त ३०) ।

ओमोयरिय न [**अवमोदरिक**] १ न्यून-भोजत्व, तप-विशेष ; (आचा) । २ दुर्भिक्ष, अकाल ; (ओघ ७) ।

ओमोयरिया स्त्री [**अवमोदरिता, °रिका**] न्यून-भोजन रूप तप ; (ठा ६) ।

ओय वि [**ओकस्**] गृह, घर ; (वव ५) ।

ओय वि [**ओज**] १ एक, असहाय ; (सूअ १, ४, २, १) । २ मध्यस्थ, तटस्थ, उदासीन ; (बृह १) । ३ पुं. विषम राशि ; (भग २५, ३) ।

ओय न [**ओजस्**] १ बल ; (आचा) । २ प्रकाश, तेज ; (चंद ५) । ३ उत्पत्ति-स्थान में आहृत पुद्गलों का समूह ; (पगण ८; संग १८२) । ४ आर्तव, ऋतु-धर्म; (ठा ३, ३) ।

ओयंसि वि [**ओजस्विन्**] १ बलवान्; २ तेजस्वी ; (सम १५२ ; औप) ।

ओयट्टण न [**अपवर्त्तन**] पीछे हटना, वापिस लौटना ; (उप ७६०) ।

ओयड्ढ सक [**अप+कृष्**] खींचना । कवकृ—**ओय-ड्ढियंत** ; (पउम ७१, २६) ।

ओयण देखो **ओदण** ; (पउम ६६, १६) ।

ओयत्त वि [**अववृत्त**] अवनत, अधोमुख ; (पाअ) ।

ओयविय वि [**दे**] परिकर्मित ; (पगह १, ४ ; औप) ।

ओया स्त्री [**ओजस्**] शक्ति, सामर्थ्य; (णाया १, १०—पत्र १७०) ।

ओयाइअ देखो **उवयाइय**; (सुपा ६२५ ; दे ४, २२)।

ओयाय वि [**उपयात**] उपागत, समीप पहुँचा हुआ ; (णाया १, ६ ; निर १, १) ।

ओयारग वि [**अवतारक**] १ उतारने वाला ; २ प्रवृत्ति करने वाला ; (सम १०६) ।

ओयावइत्ता अ [**ओजयित्वा**] १ बल दिखा कर २ चमत्कार दिखा कर ३ विद्या आदि का सामर्थ्य दिखा कर (जो दीक्षा दी जाय वह) ; (ठा ४) ।

ओर वि [**दे**] चारु, सुन्दर ; (दे १, १४६) ।

ओरंपिअ वि [**दे**] १ आक्रान्त; २ नष्ट ; (दे १, १७१)।

ओरंपिअ वि [**दे**] पतला किया हुआ; छिला हुआ; (पाअ)।

ओरत्त वि [**दे**] १ गर्विष्ठ, अभिमानी; २ कुसुम्भ से रक्त ; ३ विदारित, काटा हुआ ; (दे १, १६५ ; पाअ) ।

ओरल्ली स्त्री [**दे**] लम्बा और मधुर आवाज; (दे १, १५४; पाअ) ।

ओरस सक [**अव+तॄ**] नीचे उतरना। ओरसइ (हे ४, ८५)।

ओरस वि [**उपरस**] स्नेह-युक्त, अनुरागी ; (ठा १०)।

ओरस वि [**औरस**] १ स्वोत्पादित पुत्र, स्व-पुत्र; (ठा १०)। २ उरस्य, हृदयोत्पन्न; (जीव ३)।

ओरसिअ वि [**अवतीर्ण**] उतरा हुआ; (कुमा)।

ओरस्स वि [**औरस्य**] हृदयोत्पन्न, आभ्यन्तरिक; (प्राकृ)।

ओराल देखो **उराल**=उदार; (ठा ४; १०; जीव १)।

ओराल देखो **उराल** (दे); (चंद १)।

ओराल न [**औदार**] नीचे देखो ; (विसे ६३१)।

ओरालिय न [**औदारिक**] १ शरीर विशेष, मनुष्य और पशुओं का शरीर; (औप)। २ वि. शोभायमान, शोभा वाला; (पाअ)। ३ औदारिक शरीर वाला; (विसे ३७५)। °**णाम** न [°**नामन्**] औदारिक शरीर का हेतु-भूत कर्म; (कम्म १)।

ओरालिय वि [**दे**] १ पोंछा हुआ; "मुहि करयलु देवि पुणु ओरालिउ मुहकमलु" (भवि)। २ फैलाया हुआ, प्रसारित "दसदिसि वहकयंबु ओरालिओ" (भवि)।

ओराली देखो **ओरल्ली**; (सुर ११, ८६)।

ओरिंकिय न [**अवरिङ्कित**] महिष का आवाज; "कत्थइ महिसोरिंकिय कत्थइ डुहुडुहुडुहंतनइसलिलं" (पउम ६४, ४३)।

ओरिल्ल पुं [**दे**] लम्बा काल, दीर्घ काल; (दे १, १५५)।

ओरुंज न [**दे**] क्रीडा-विशेष; (दे १, १५६)।

ओरुंभिअ वि [**उपरुद्ध**] आवृत, आच्छादित; (गा ६१४)।

ओरुण्ण वि [**अवरुदित**] रोया हुआ; (गा ५३८)।

ओरुद्ध वि [**अवरुद्ध**] रुका हुआ, बंद किया हुआ; (गा ८००)।

ओरुभ सक [**अव+रुह्**] उतरना। वकृ—**ओरुभमाण**; (कस)।

ओरुम्मा अक [**उद्+वा**] सूखना, सूख जाना। ओरुम्माइ; (हे ४, ११)।

ओरुह देखो **ओरुभ**। वकृ—**ओरुहमाण**; (संथा ६३; कस)।

ओरुहण न [**अवरोहण**] नीचे उतरना; (पउम २६, ५५; विसे १२०८)।

ओरोध देखो **ओरोह**=अवरोध; (विपा १, ६)।

ओरोह देखो **ओरुभ**। वकृ—**ओरोहमाण**; (कस; ठा ५)।

ओरोह पुं [**अवरोध**] १ अन्तःपुर, जनानखाना; (औप)। २ अन्तःपुर की स्त्री; (सुर १, १४३)। ३ नगर के दरवाजा का अवान्तर द्वार ; (णाया १, १; औप)। ४ संघात, समूह; (राज)।

ओलअ पुं [**दे**] १ श्येन पक्षी, बाझ पक्षी; २ अपलाप, निह्नव; (दे १, १६०)।

ओलअणी स्त्री [**दे**] नवोढा, दुलहिन; (दे १, १६०)।

ओलइअ वि [**दे. अवलगित**] १ शरीर में सटा हुआ, परिहित; (दे १, १६२; पाअ)। २ लगा हुआ; (से १, १६२)।

ओलइणी स्त्री [**दे**] प्रिया, स्त्री; (दे १, १६०)।

ओलंड सक [**उत्+लङ्घ्**] उल्लंघन करना। ओलंडेंति; (णाया १, १—पत्र ६१)।

ओलंब देखो **अवलंब**=अव+लम्ब्। संकृ—**ओलंबिऊण**; (महा)।

ओलंब पुं [**अवलम्ब**]नीचे लटकना; (औप; स्वप्न ७३)।

ओलंबण न [**अवलम्बन**] सहारा, आश्रय। °**दीव** पुं [°**दीप**] शृङ्खला-बद्ध दीपक; (राज)।

ओलंबिय वि [**अवलम्बित**] आश्रित, जिसका सहारा लिया गया हो वह; (निचू १)। २ लटकाया हुआ; (औप)।

ओलंबिय वि [**उल्लंबित**] लटकाया हुआ; (सुअ २,२ औप)।

ओलंभ पुं [**उपालम्भ**] उलहना; "अप्पोलंभणिमित्तं पढमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि" (णाया १, १)।

ओलक्खिअ वि [**उपलक्षित**] पहिचाना हुआ; (पउम १३, ४२; सुपा २५४)।

ओलग्ग सक [**अव+लग्**] १पीछे लगना। २ सेवा करना। ओलग्गंति; (पि ४८८)। हेकृ—**ओलग्गिउं**; (सुपा २३४; महा)। प्रयो, संकृ—**ओलग्गाविवि**; (सण)।

ओलग्ग वि [**अवरुग्ण**] १ ग्लान, बिमार; २ दुर्बल, निर्बल; (णाया १, १—पत्र २८ टी; विपा १, २)।

ओलग्ग वि [**अवलग्न**] पीछे लगा हुआ, अनुलग्न; (महा)।

ओलग्ग [**दे**] देखो **ओलुग्ग**; (दे १, १६४)।

ओलग्गा स्त्री [**दे**] सेवा, भक्ति, चाकरी ; "करेउ देवो पसायं मम ओलग्गाए" (स ६३६)। "ओलग्गाए वेलत्ति जंपिउं निग्गओ खुज्जो" (धम्म ८ टी)।

ओलग्गि वि [**अवलागिन्**] सेवा करने वाला। स्त्री-°**णी**; (रंभा)।

ओलग्गिअ वि [**अवलग्न**] सेवित ; (वज्जा ३२)।

ओलावअ पुं [**दे**] श्येन, बाझ पक्षी ; (दे १, १६० ; स २१३)।

ओलि देखो **ओली**=आली ; (हे १, ८३)।

ओलिंदअ पुं [**अलिन्दक**] बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ ; (गा २५४)।

ओलिंप सक [**अव+लिप्**] लीपना, लेप लगाना। वकृ—**ओलिंपमाण**; (राज)।

ओलिंभा स्त्री [**दे**] उपदेहिका, दिमक ; (दे १, १५३ ; गउड)।

ओलिज्झमाण देखो **ओलिह**।

ओलित्त वि [**अवलिप्त, उपलिप्त**] लीपा हुआ, कृतलेप ; (पराह १, ३ ; उव ; पाअ; दे १, १५८; औप)।

ओलित्ती स्त्री [**दे**] खड्ग आदि का एक दोष; (दे १, १५६)।

ओलिप्प न [**दे**] हास, हाँसी ; (दे १, १५३)।

ओलिप्पंती स्त्री [**दे**] खड्ग आदि का एक दोष ; (दे १, १५६)।

ओलिह सक [**अव+लिह्**] आस्वादन करना। कवकृ—**ओलिज्झमाण** ; (कप्प)।

ओली सक [**अव+ली**] १ आगमन करना। २ नीचे आना। ३ पीछे आना। "नीयं च काया ओलिंति" (विसे २०६४)।

ओली स्त्री [**आली**] पंक्ति, श्रेणी ; (कुमा)।

ओली स्त्री [**दे**] कुल-परिपाटी, कुलाचार ; (दे १, १४८)।

ओलुंकी स्त्री [**दे**] बालकों की एक प्रकार की क्रीडा; (दे १, १५३)

ओलुंड सक [**वि+रेचय्**] झरना, टपकना, बाहर निकालना। ओलुंडइ ; (हे ४, २६)।

ओलुंडिर वि [**विरेचयितृ**] झरने वाला ; (कुमा)।

ओलुंप पुं [**अवलोप**] मसलना, मर्दन करना ; (गउड)।

ओलुंपअ पुं [**दे**] तापिका-हस्त, तवा का हाथा ; (दे १, १६३)।

ओलुग्ग वि [**अवरुग्ण**] १ रोगी, बीमार ; (पाअ)। २ भग्न, नष्ट ; (पराह १, १)। "सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा" (निर १, १)।

ओलुग्ग वि [**दे**] १ सेवक, नौकर ; २ निस्तेज ; निर्बल, बल-हीन; (दे १, १६४)। ३ निश्छाय, निस्तेज; (सुर २ १०२ ; दे १, १६४ ; स ४६६; ५०४)।

ओलुग्गाविय वि [**दे**] १ बीमार; २ विरह-पीडित ; (वज्जा ८६)।

ओलुट्ट वि [**दे**] १ असंघटमान, असंगत ; २ मिथ्या, असत्य; (दे १, १६४)।

ओलेहड वि [**दे**] १ अन्यासक्त ; २ तृष्णा-पर ; ३ प्रवृद्ध ; (दे १, १७२)।

ओलोअ देखो **अवलोअ**। वकृ—**ओलोअंत, ओलोएमाण** ; (मा ५; णाया १, १६ ; १, १)।

ओलोट्ट सक [**अप+लुठ्**] पीछे लौटना। वकृ—**ओलोट्टमाण** ; (राज)।

ओलोयण न [**अवलोकन**] १ देखना। २ दृष्टि, नजर; (उप पृ १२७)।

ओलोयणा स्त्री [**अवलोकना**] १ देखना। २ गवेषणा, खोज ; (वव ४)।

ओल्ल पुं [**दे**] १ पति, स्वामी ; २ दराड-प्रतिनिधि पुरुष, राज-पुरुष विशेष ; (पिंग)।

ओल्ल देखो **उल्ल**=आर्द्र ; (हे १, ८२ ; काप्र १७२)।

ओल्ल देखो **उल्ल**=आर्द्रय्। ओल्लेइ ; (पि १११)। वकृ—**ओल्लंत**; (से १३, ६६)। कवकृ—**ओल्लिज्जंत**; (गा ६२१)।

ओल्लण न [**आर्द्रयण**] गीला करना, भिजाना ; (पि १११)।

ओल्लणी स्त्री [**दे**] मार्जिता, इलायची; दालचीनी आदि मसाला से संस्कृत दधि ; (दे १,१५४)।

ओल्लरण न [**दे**] स्वाप, सोना ; (दे १, १६३)।

ओल्लरिअ वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ ; (दे १, १६३ ; सुपा ३१२)।

ओल्लविद (शौ) नीचे देखो ; (पि १११; मृच्छ १०५)।

ओल्लिअ वि [**आर्द्रित**] आर्द्र किया हुआ ; (गा ३३० ; सण)।

ओल्हव सक [**वि+ध्यापय्**] बुझाना, ठंढा करना। कवकृ—**ओल्हविज्जंत** ; (स ३६२)। कृ—**ओल्हवेयव्व**; (स ३६२)।

ओल्हविअ [**दे**] देखो **उल्हविय**; (सुर १०, १४६)।

ओव न [**दे**] हाथी वगैरः को बाँधने के लिए किया हुआ गर्त ; (दे १, १४६) ।

ओवअण न [**अवपतन**] नीचे गिरना, अधःपात ; (से ६, ७७ ; १३, २२) ।

ओवइणी स्त्री [**अवपातिनी**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से स्वयं नीचे आता है या दूसरे को नीचे उतारता है ; (सूअ २, २) ।

ओवइय वि [**अवपतित**] १ अवतीर्ण, नीचे आया हुआ ; (से ६, २८; औप) । २ आ पड़ा हुआ, आ डटा हुआ ; (से ६, २६) । ३ न. पतन ; (औप) ।

ओवइय पुंस्त्री [**दे**] तीन इन्द्रिय वाला एक क्षुद्र जन्तु ; "से किं तं तेइंदिया ? तेइंदिया अणेगविहा पराणत्ता, तं जहा ;— ओवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा" (जीव १) ।

ओवइय वि [**औपचयिक**] उपचित, परिपुष्ट ; (राज) ।

ओवगारिय वि [**औपकारिक**] उपकार करने वाला ; (भग १३, ६) ।

ओवग्ग सक [**उप+वल्ग्, आ + क्रम्**] १ आक्रमण करना; २ पराभव करना । ओवग्गइ; (भवि)। संकृ—**ओवग्गिवि**; (भवि) ।

ओवग्गहिय वि [**औपग्रहिक**] जैन साधुओं के एक प्रकार का उपकरण, जो कारण-विशेष से थोड़े समय के लिए लिया जाता है ; (पव ६०) ।

ओवग्गिअ वि [**दे. उपवल्गित**] १ अभिभूत; २ आक्रान्त; (से ६, ३० ; पाअ; सुर १३, ४२) ।

ओवघाइय वि [**औपघातिक**] उपघात करने वाला, पीड़ा उत्पन्न करने वाला ; "सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लविज्जोवघाइयं" (दस ८) ।

ओवच्च सक [**उप+व्रज्**] पास जाना । "सुहाए ओवच्च वासहरे" (भवि) ।

ओवट्ट अक [**अप + वृत्**] १ पीछे हटना । २ कम होना, ह्रास-प्राप्त होना। वकृ—**ओवट्टंत** ; (उप ७६२) ।

ओवट्ट पुं [**अपवर्त्त**] १ ह्रास, हानि ; २ भागाकार ; (विसे २० ६२) ।

ओवट्टणा स्त्री [**अपवर्त्तना**] भागाकार, भाग-हरण ; (राज) ।

ओवट्टिअ न [**दे**] चाटु, खुशामद ; (दे १, १६३) ।

ओवट्ठ वि [**अववृष्ट**] वरसा हुआ, जिसने वृष्टि की हो वह ; (से ६, ३४) ।

ओवट्ठ पुं [**दे. अववर्ष**] १ वृष्टि, वारिस ; (से ६, २५) । २ मेघ-जल का सिञ्चन; (दे १, १५२) ।

ओवट्ठिअ वि [**औपस्थितिक**] उपस्थिति के योग्य, नौकर ; (प्रयौ ११) ।

ओवड अक [**अव+पत्**] गिरना, नीचे पड़ना । वकृ— **ओवडंत** ; (से १३, २८) ।

ओवडण न [**अवपतन**] १ अधःपात ; २ झम्पा-पात ; (से २, ३२) ।

ओवड्ढ वि [**उपार्ध**] आधे के करीब । °**मोयरिया** स्त्री [°**ावमोदरिका**] बारह कवल का ही आहार करना, तप-विशेष ; (भग ७, १) ।

ओवड्ढि स्त्री [**अपवृद्धि**] ह्रास ; (निचू २०) ।

ओवड्ढी स्त्री [**दे**] ओढ़नी का एक भाग ; (दे १, १५१) ।

ओवण न [**उपवन**] बगीचा, आराम ; (कुमा) ।

ओवणिहिय पुं [**औपनिहित, औपनिधिक**] भिक्षाचर-विशेष; समीपस्थ भिक्षा को लेने वाला साधु ; (ठा ५ ; औप) ।

ओवणिहिया स्त्री [**औपनिधिकी**] आनुपूर्वी-विशेष, अनुक्रम-विशेष ; (औप) ।

ओवत्त सक [**अप+वर्त्तय्**] १ उलटा करना । २ फिराना; घुमाना । ३ फेंकना । संकृ—**ओवत्तिय** ; (दस ५) । कृ—**ओवत्तेअव्व** ; (से १०, ५०) ।

ओवत्त वि [**अपवृत्त**] फिराया हुआ ; (से ६, ६१) ।

ओवत्तिय वि [**अपवर्त्तित**] १ घुमाया हुआ । २ क्षिप्त ; (णाया १, १—पत्र ४७) ।

ओवत्थाणिय वि [**औपस्थानिक**] सभा का कार्य करने वाला नौकर। स्त्री—°**या** ; (भग ११, ११) ।

ओवमिय वि [**औपम्यिक**] उपमा-संबन्धी ; (अणु) ।

ओवमिय } न [**औपम्य**] १ उपमा ; (ठा ८; अणु) ।
ओवम्म } २ उपमान प्रमाण ; (सूअ १, १०) ।

ओवय सक [**अव+पत्**] १ नीचे उतरना । २ आ पडना। वकृ—**ओवयंत, ओवयमाण**; (कप्प; स ३७०; पि ३६६ ; णाया १, १; ६)।

ओवयण न [**दे. अवपदन**] प्रोङ्खणक, चुमना ; (णाया १, १—पत्र ३६) ।

ओवयाइयय वि [**औपयाचितक**] मनौती से प्राप्त किया हुआ, मनौती से मिला हुआ ; (ठा १०) ।

ओवयारिय वि [**औपचारिक**] उपचार-संबन्धी ; (पंचा ६ ; पुप्फ ४०६) ।

ओवर पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे १, १५७) ।

ओववाइय वि [**औपपातिक**] १ जिसकी उत्पति होती हो वह ; (पंच १) । २ पुं. संसारी, प्राणी ; (आचा) । ३ देव या नारक जीव ; (दस ४) । ४ न. देव या नारक जीव का शरीर ; (पंच १) । ५ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, औपपातिक सूत्र ; (औप) ।

ओवसग्गिय वि [**औपसर्गिक**] १ उपसर्ग से संबन्ध रखने वाला, उपद्रव—समर्थ रोगादि । २ शब्द-विशेष, प्र परा आदि अव्यय रूप शब्द ; (अणु) ।

ओवसमिअ वि [**औपशमिक**] १ उपशम; २ उपशम से उत्पन्न ; ३ उपशम होने पर होने वाला; (विसे २१७४) ।

ओवसेर न [**दे**] १ चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष; २ वि. रति-योग्य ; (दे १, १७३) ।

ओवह सक [**अव+वह्**] १ बह जाना, बह चलना । २ डूबना । कवकृ—**ओवुब्भमाण**; (कस) ।

ओवहारिअ वि [**औपहारिक**] उपहार-संबन्धी ; (विक ७५) ।

ओवहिय वि [**औपधिक**] माया से गुप्त विचरने वाला ; (गाया १, २) ।

ओवाअअ पुं [**दे**] आपातप, जल-समूह की गरमी; (षड्) ।

ओवाइय देखो **ओववाइय** ; (राज) ।

ओवाइय देखो **उवयाइय** ; (सुपा ११३) ।

ओवाइय वि [**आवपातिक**] सेवा करने वाला ; (ठा १०) ।

ओवाडण न [**अवपाटन**] विदारण, नाश ; (ठा २, ४) ।

ओवाडिय वि [**अवपाटित**] विदारित ; (औप) ।

ओवाय सक [**उप+याच्**] मनौती करना । वकृ—**ओवायंत, ओवाइयमाण** ; (सुर १३, २०६ ; गाया १, ८—पत्र १३४) ।

ओवाय पुं [**अवपात**] १ सेवा, भक्ति ; (ठा ३, २ ; औप) । २ गर्त, खड्डा ; (पण्ह १, १) । ३ नीचे गिरना ; (पण्ह १, ४) ।

ओवाय वि [**औपाय**] उपाय-जन्य, उपाय-संबन्धी ; (उत्त १, २८) ।

ओवार सक [**अप+वारय्**] आच्छादन करना, ढकना । संकृ—**ओवारिअ** ; (अभि २१३) ।

ओवारि न [**दे**] धान्य भरने का एक जात का लम्बा कोठा, गोदाम ; (राज) ।

ओवारिअ वि [**दे**] ढेर किया हुआ, राशी-कृत ; (स ४८७; ४८) ।

ओवारिअ वि [**अपवारित**] आच्छादित, ढका हुआ ; (मै ६१) ।

ओवास अक [**अव+काश्**] शोभना, विराजना । ओवासइ ; (प्राप) ।

ओवास पुं [**अवकाश**] अवकाश, खाली जगह; (पाअ; प्राप्र; से १, ५४) ।

ओवास पुं [**उपवास**] उपवास, भोजनाभाव ; (पउम ४२, ८६) ।

ओवाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहना । ओवाहइ ; (प्राप्र)।

ओवाहिअ वि [**अपवाहित**] १ नीचे गिराया हुआ ; (से ६, १६ ; १३, ७२) । २ घुमा कर नीचे डाला हुआ; (से ७, ५५) ।

ओविअ वि [**दे**] १ आरोपित, अध्यासित; २ मुक्त, परित्यक्त; ३ हृत, छीना हुआ ; ४ न. खुशामद ; ५ रुदित, रोदन ; (दे १, १६७) । ६ वि. परिकर्मित, संस्कारित; (कप्प) । ७ खचित, व्याप्त ; (आवम) । ८ उज्ज्वालित, प्रकाशित ; (गाया १, १६) । ६ विभूषित, शृंगारित ; (प्राप) । देखो **उविय** ।

ओविद्ध वि [**अपविद्ध**] १ प्रेरित, आहत ; (से ७, १२) । २ नीचे गिराया हुआ ; (से १३, २६) ।

ओवील सक [**अव+पीडय्**] पीडा पहुँचाना, मार-पीट करना । वकृ—**ओवीलेमाण** ; (गाया १, १८—पत्र २३६) ।

ओवीलय देखो **उव्वीलय** ; (पण्ह १, ३) ।

ओवुब्भमाण देखो **ओवह** ।

ओवेहा स्त्री [**उपेक्षा**] १ उपदर्शन, देखना ; २ अवधीरणा ; "संजयगिहिचोयणचोयणे य वावारओवेहा" (ओघ १७९ भा) ।

°**ओव्वण** देखो **जोव्वण** ; (से ७, ६२) ।

ओव्वत्त अक [**अप+वृत्**] १ पीछे फिरना, लौटना । २ अवनत होना । संकृ—**ओवत्तिऊण** ; (ओघभा ३० टी)

ओऽवत्त वि [**अपवृत्त**] पीछे फिरा हुआ ; २ नमा हुआ ; अवनत ; (से ८, ८४)।
ओस पुं [**दे**] देखो **ओसा** ; (राज)। °**चारण** पुं [°**चारण**] हिम के अवलम्बन से जाने वाला साधु ; (गच्छ २)।
ओसक्क अक [**अव+ष्वष्क्**] १ पीछे हटना, अपसरण करना। २ भागना, पलायन करना। ३ उदीरण करना, उत्तेजित करना। ओसक्कइ; (पि ३०२; ३१५)। वकृ—**ओसक्कंत, ओसक्कमाण** ; (से ५, ७३; स ६४)। संकृ—**ओसक्कइत्ता, ओसक्किय, ओसक्किऊण**; (ठा ८; दस ४; सुर २, १५)।
ओसक्क वि [**दे. अवष्वष्कित**] अपसृत, पीछे हटा हुआ; (दे १, १४९ ; पाअ)।
ओसक्कण न [**अवष्वष्कण**] १ अपसरण ; (स ६३)। २ नियत काल से पहले करना ; (धर्म ३)। ३ उत्तेजन ; (बृह २)।
ओसट्ट वि [**दे**] विकसित, प्रफुल्लित ; (षड्)।
ओसडिअ वि [**दे**] आकीर्ण, व्याप्त ; (षड्)।
ओसढ न [**औषध**] दवा, इलाज, भैषज; (हे १, २२७)।
ओसढिअ वि [**औषधिक**] वैद्य, चिकित्सक ; (कुमा)।
ओसण न [**दे**] उद्वेग, खेद ; (दे १, १५५)।
ओसण्ण वि [**अपसन्न**] १ खिन्न ; (गा ३८२ ; से १३, ३०)। २ शिथिल, ढीला ; (वव ३)। देखो **ओसन्न**।
ओसण्ण वि [**दे**] त्रुटित, खण्डित ; (दे १, १५६; षड्)।
ओसण्णं अ [**दे**] प्रायः, बहुत कर ; (कप्प)।
ओसत्त वि [**अवसक्त**] संबद्ध, संयुक्त; (णाया १, ३; स ४४६)।
ओसधि देखो **ओसहि** ; (ठा २, ३)।
ओसद्ध वि [**दे**] पातित, गिराया हुआ ; (पाअ)।
ओसन्न देखो **ओसण्ण**=अवसन्न ; (सुर ४, ३४ ; णाया १, ५ ; सं ६; पुप्फ २१)। ३ न. एकान्त ; " ओसन्ने देइ गेण्हइ वा " (उव)।
ओसन्नं देखो **ओसण्णं** ; (कम्म १, १३ ; विसे २२७५)।
ओसप्पिणी स्त्री [**अवसर्पिणी**] दश कोटाकोटि सागरोपम-परिमित काल-विशेष, जिसमें सर्व पदार्थों के गुणों की क्रमशः हानि होती जाती है ; (सम ७२ ; ठा १)।
ओसमिअ वि [**उपशमित**] शान्ति-प्राप्त ; (सम ३७)।
ओसर अक [**अव+तॄ**] १ नीचे आना। २ अवतरना, जन्म लेना। ओसरइ ; (षड्)।
ओसर अक [**अप+सृ**] अपसरण करना, पीछे हटना। २ सरकना, खिसकना, फिसलना। ओसरइ ; (महा; काल)। वकृ—**ओसरंत** ; (गा १८; ३६३ ; से ६, २६; ६, ८२ ; १२, ६; से ६३)।
ओसर सक [**अव+सृ**] आना, तीर्थंकर आदि महापुरुष का पधारना ; (उप ७२८ टी)
ओसर पुं [**अवसर**] १ अवसर, समय; (सूअ १, २)। २ अन्तर ; (राज)।
ओसरण न [**अवसरण**] १ जिन-देव का उपदेश-स्थान ; (उप १३३ ; रयण १)। २ साधुओं का एकत्रित होना; (सूअ १, १२)।
ओसरण न [**अपसरण**] १ हटना, दूर होना। २ वि. दूर करने वाला ; " बहुपावकम्मओसरणं" (कुमा १)।
ओसरिअ वि [**दे**] १ आकीर्ण, व्याप्त ; २ आँख के इसारे से संज्ञित ; (षड्)। ३ अधोमुख, अवनत ; ४ न. आँख का इसारा ; (दे १, १७१)।
ओसरिअ वि [**अवसृत**] आगत, पधारा हुआ ; (उप ७२८ टी)।
ओसरिअ वि [**अपसृत**] १ पीछे हटा हुआ ; (पउम १६, २३ ; पाअ ; गा ३५१)। २ न. अपसरण ; (से २, ८)।
ओसरिअ वि [**उपसृत**] संमुखागत, सामने आया हुआ ; (पाअ)।
ओसरिआ स्त्री [**दे**] अलिन्दक, बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ; (दे १, १६१)।
ओसव पुं [**उत्सव**] उत्सव, आनन्द-क्षण ; (प्राप्र)।
ओसविय वि [**उच्छ्रयित**] ऊँचा किया हुआ ; (पउम ८, २६६)।
ओसव्विअ वि [**दे**] १ शोभा-रहित ; २ न. अवसाद, खेद ; (दे १, १६८)।
ओसह न [**औषध**] दवाई, भैषज ; (औप ; स्वप्न ५६)।
ओसहि° ही स्त्री [**ओषधि**] १ वनस्पति ; (पण्ण १)। २ नगरी-विशेष ; (राज)। °**महिहर** पुं [°**महिधर**] पर्वत-विशेष ; (अच्चु ४४)।

ओसहिअ वि [**आवसथिक**] चन्द्रार्घ-दानादि व्रत को करने वाला ; (गा ३४६) ।
ओसा स्त्री [**दे**] १ ओस, निशा-जल ; (जी ५ ; आचा ; विसे २५७६) । २ हिम, बरफ ; (दे १, १६४) ।
ओसाअ पुं [**दे**] प्रहार की पीड़ा ; (दे १, १५२) ।
ओसाअ पुं [**अवश्याय**] हिम, ओस ; (से १३, ५२ ; दे ८, ५३) ।
ओसाअंत वि [**दे**] १ जँभाई खाता हुआ आलसी; २ बैठता ; ३ वेदना-युक्त ; (दे १, १७०) ।
ओसाअण वि [**दे**] १ महीशान, जमीन का मालिक ; २ आपोशान ; (षड्) ।
ओसाण न [**अवसान**] १ अन्त ; (ठा ४) । २ समीपता, सामीप्य ; (सूअ १, ४) ।
ओसाणिहाण वि [**दे**] विधि-पूर्वक अनुष्ठित ; (दे १, १६३) ।
ओसायण न [**अवसादन**] परिशाटन, नाश; (विसे) ।
ओसार सक [**अप+सारय्**] दूर करना । ओसारेहि; (स ४०८) । कर्म—ओसारिज्जंतु; (स ४१०) । संकृ— **ओसारिवि** ; (भवि) ।
ओसार पुं [**दे**] गो-वाट, गो-वाड़ा ; (दे १, १४६) ।
ओसार पुं [**अपसार**] अपसरण; (से १३, १४) ।
ओसार देखो **ऊसार** = उत्सार; (भवि) ।
ओसार पुं [**अवसार**] कवच, बख्तर ; (से १२, ५६) ।
ओसारिअ वि [**अपसारित**] दूर किया हुआ, अपनीत ; (गा ६६; पउम २३, ८) ।
ओसारिअ वि [**अवसारित**] अवलम्बित, लटकाया हुआ ; (औप) ।
ओसास (अप) देखो **ओवास** = अवकाश ; (भवि) ।
ओसिअ वि [**दे**] १ अबल, बल-रहित; (दे १, १५०) । २ अपूर्व, असाधारण; (षड्) ।
ओसिअंत वकृ [**अवसीदत्**] पीड़ा पाता हुआ ; (हे १, १०१ ; से ३, ५१) ।
ओसिंघिअ वि [**दे**] घ्रात, सूँघा हुआ ; (दे १, १६२ ; पाअ) ।
ओसिंचित्तु वि [**अपसेचयितृ**] अपसेक करने वाला ; (सूअ २, २) ।
ओसिक्खिअ न [**दे**] १ गति-व्याघात ; २ अरति-निहित ; (दे १, १७३) ।

ओसित्त वि [**दे**] उपलिप्त ; (दे १, १५८) ।
ओसिय वि [**अवसित**] १ पर्यवसित ; २ उपशान्त ; (सूअ १, १३) । ३ जित, पराभूत ; (विसे) ।
ओसिरण न [**दे**] व्युत्सर्जन, परित्याग ; (षड्) ।
ओसीअ वि [**दे**] अधो-मुख, अवनत ; (दे १, १५८) ।
ओसीर देखो **उसीर** ; (पण्ह २, ५) ।
ओसीस अक [**अप+वृत्**] १ पीछे हटना ; २ घूमना, फिरना । संकृ—**ओसीसिऊण** ; (दे १, १५२) ।
ओसीस वि [ ] अपवृत्त ; (दे १, १५२) ।
ओसुअ वि [**उत्सुक**] उत्कण्ठित ; (प्राप्र) ।
ओसुंखिअ वि [**दे**] उत्प्रेक्षित, कल्पित ; (दे १, १६१) ।
ओसुंभ सक [**अव+पातय्**] १ गिरा देना । २ नष्ट करना । कर्म—ओसुब्भंति ; (स ७, ६१) । वकृ—**ओसुंभ**- (से ४, ५४) । कवकृ—**ओसुब्भंत** ; (पि ५३५) ।
ओसुक्क सक [**तिज्**] तीक्ष्ण करना, तेज करना । ओसुक्कइ ; (हे ४, १०४) ।
ओसुक्क वि [**अवशुष्क**] सूखा हुआ ; (पउम ५३, ७६ ; दे ५, १४) ।
ओसुक्ख अक [**अव+शुष्**] सूखना । वकृ—**ओसुक्खंत**; (से ६, ६३) ।
ओसुद्ध वि [**दे**] १ विनिपतित ; (दे १, १५७) । २ विनाशित ; (से १३, २२) ।
ओसुब्भंत देखो **ओसुंभ** ।
ओसुय न [**औत्सुक्य**] उत्सुकता, उत्कण्ठा ; (औप; पि ३२७ ए) ।
ओसोयणी
ओसोवणिया
ओसोवणी
} स्त्री [**अवस्वापनी**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से दूसरे को गाढ़ निद्राधीन किया जा सकता है ; (सुपा २२० ; णाया १, १६ ; कप्प) ।
ओस्सा [**दे**] देखो **ओसा** ; (कस) ।
ओस्साड पुं [**अवशाट**] नाश, विनाश ; (सण) ।
ओह देखो **ओघ** ; (पण्ह १, ४ ; गा ५१८ ; निचू १६; ओघ २; धम्म १० टी) । ५ सूत्र, शास्त्र-सम्बन्धी वाक्य ; (विसे ६५७) ।
ओह सक [**अव+तॄ**] नीचे उतरना । ओहइ; (हे ४, ८५) ।
ओहंक पुं [**दे**] हास, हाँसी ; (दे १, १९३) ।

ओहंजलिया स्त्री [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष ; (जीव १)।

ओहंतर वि [ओघतर] संसार पार करने वाला (मुनि) ; (आचा)।

ओहंस पुं [दे] १ चन्दन ; २ जिस पर चन्दन घिसा जाता है वह शिला, चन्द्रौटा; (दे १, १६८)।

ओहट्ट अक [अप+घट्ट्] १ कम होना, ह्रास पाना। २ पीछे हटना ३ सक. हटाना, निवृत्त करना। ओहट्टइ ; (हे ४, ४१९) । वकृ—**ओहट्टंत**; (से ८, ६०; सुपा २३३)।

ओहट्ट पुं [दे] १ अवगुण्ठन ; २ नीवी, कटी-वस्त्र ; ३ वि. अपसृत, पीछे हटा हुआ ; (दे १, १६६ ; भवि)।

ओहट्ट } वि [अपघट्टक] निवारक, हटाने वाला, निषेधक;
ओहट्टय } (विपा १, २ ; णाया १, १६; १८)।

ओहट्टिअ वि [दे] दूसरे को दबा कर हाथ से गृहीत ; (दे १, १५९)।

ओहट्ठ पुं [दे] हास, हाँसी ; (दे १, १५३)।

ओहट्ठ वि [अवघृष्ट] घिसा हुआ ; (पउम ३७, ३)।

ओहडणी स्त्री [दे] अर्गला ; (दे १, १६०)।

ओहत्त वि [दे] अवनत ; (दे १, १५६)।

ओहत्थिअ वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ ; (मै ३५)।

ओहय वि [उपहत] उपघात-प्राप्त ; (णाया १, १)।

ओहय वि [अवहत] विनाशित ; (औप)।

ओहर सक [अप + हृ] अपहरण करना। कर्म—ओहरिआमि ; (पि ९८)।

ओहर अक [अव + हृ] टेढ़ा होना, वक्र होना। २ सक. उलटा करना। ३ फिराना। संकृ—**ओहरिय** ; (आचा २, १, ७)।

ओहर न [उपगृह] छोटा गृह, कोठरी ; (पण्ह १, १)।

ओहरण न [अपहरण] उठा ले जाना, अपहार ; (उप ९७९)।

ओहरण न [दे] १ विनाशन, हिंसा ; २ असंभव अर्थ की संभावना ; (दे १, १७४)। ३ अस्त्र, हथियार ; (स ५३१; ६३७)। ४ वि. आघ्रात ; (षड्)।

ओहरिअ वि (दे. अपहृत) १ फेंका हुआ; (से १३, ३)। २ नीचे गिराया हुआ ; (से ३, ३७)। ३ उतारा हुआ, उत्तारित ; (ओघ ८०६)। ४ अपनीत ; "ओहरिअभरुव्व भारवहो" (श्रा ४०)।

ओहरिस वि [दे] १ आघ्रात, सूँघा हुआ ; २ पुं. चन्दन घिसने की शिला, चन्द्रौटा; (दे १, १६९)।

ओहल देखो **उऊखल**; (हे १, १७१ ; कुमा)।

ओहलिय वि [अवखलित] निस्तेज किया हुआ, मलिन किया हुआ; "अंसुजलाहलियगंडयलो" (सुर १, १८६ ; सण)।

ओहली स्त्री [दे] ओघ, समूह ; (सुपा ३६४)।

ओहस सक [उप + हस्] उपहास करना। ओहसइ ; (नाट)। कवकृ —**ओहसिज्जंत** ; (से १५, १०)। कृ—**ओहसणिज्ज** ; (स ८)।

ओहसिअ न [दे] १ वस्त्र, कपड़ा ; २ वि. धूत, कम्पित ; (दे १, १७३)।

ओहसिअ वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह ; (गा ६०; दे १, १७३ ; स ४४८)।

ओहाइअ वि [दे] अधो-मुख ; (दे १, १५८)।

ओहाडण न [अवघाटन] ढकना, पिधान ; (वव १)।

ओहाडणी स्त्री [दे.अवघाटनी] १ पिधानी ; (दे १, १६१)। २ एक प्रकार की ओढनी ; (जीव ३)।

ओहाडिय वि [अवघाटित] १ पिहित, बन्द किया हुआ; "वइरामयकवाडोहाडियाओ" (जं १—पत्र ७१)। २ स्थगित ; (आव ५)।

ओहाण न [अवधान] उपयोग, ख्याल ; (आचा)।

ओहाण न [अवधावन] अवक्रमण, पीछे हटना ; (निचू १६)।

ओहाम सक [तुलय्] तौलना, तुलना करना। ओहामइ ; (हे ४, २५)। वकृ—**ओहामंत**; (कुमा)।

ओहामिय वि [तुलित] तौला हुआ ; (पाअ; सुपा २६९)।

ओहामिय वि [दे] १ अभिभूत ; (षड्)। २ तिरस्कृत ; (स ३१३ ; ओघ ६०)। ३ बंद किया हुआ, स्थगित ; "जह वीणावंसरवा खणेण ओहामिआ सव्वा" (पउम ४९, ६)।

ओहार सक [अव+धारय्] निश्चय करना। संकृ—**ओहारिअ**; (अभि १६४)।

ओहार पुं [दे] १ कच्छप ; २ नदी वगैरः के बीच को शुष्क जगह, द्वीप ; ३ अंश, विभाग ; (दे १, १६७)। ४ जलचर-जन्तु विशेष ; (पण्ह १, ३)।

ओहार पुं [**अवधार**] निश्चय । °**व** वि [°**वत्**] निश्चय वाला ; (द्र ४६) ।

ओहारइत्तु वि [**अवधारयितृ**] निश्चय करने वाला ; (राज) ।

ओहारइत्तु वि [**अवहारयितृ**] दूसरे पर मिथ्याभियोग लगाने वाला ; (राज) ।

ओहारण न [**अवधारण**] नियम, निश्चय ; (द्र २) ।

ओहारणी स्त्री [**अवधारणी**] निश्चयात्मक भाषा ; "ओहारणिं अप्पियकारिणिं च भासं न भासिज्ज सया स पुज्जो" (दस ८, ३) ।

ओहारिणी स्त्री [**अवधारिणी**] ऊपर देखो ; (भास १४) ।

ओहाव सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना । ओहावइ ; (हे ४, १६० ; षड्) ।

ओहाव अक [**अव+धाव्**] पीछे हटना । वकृ—**ओहावंत, ओहावेंत** ; (ओघ १२६ ; वव ८) ।

ओहावण न [**अवधावन**] १ अपसर्पण, पलायन ; (वव १) । २ दीक्षा से भागना, दीक्षा को छोड देना; (वव ३) ।

ओहावणा स्त्री [**अपभावना**] तिरस्कार, अनादर ; (उप १२६ टी ; स ४१०) ।

ओहावणा स्त्री [**आक्रान्ति**] आक्रमण ; (काल) ।

ओहाविअ वि [**अपभावित**] १ तिरस्कृत ; (सुपा २२४) । २ ग्लान, ग्लानि-प्राप्त ; (वव ८) ।

ओहाविअ वि [**अवधावित**] पलायित, अपसृत ; (दस-चू १, २) ।

ओहास पुं [**अवहास, उपहास**] हाँसी, हास्य ; (प्राप्र; मै ४३) ।

ओहासण न [**अवभाषण**] याचना, माँग, विशिष्ट भिक्षा ; (आव ४) ।

ओहि पुंस्त्री [**अवधि**] १ मर्यादा, सीमा, हद ; (गा १७०; २०६) । २ रूपि-पदार्थ का अतीन्द्रिय ज्ञान-विशेष ; (उवा ; महा) । °**जिण** पुं [°**जिन**] अवधिज्ञान वाला साधु; (पराह २, १) । °**णाण** न [°**ज्ञान**] अवधि-ज्ञान; (वव १) । °**णाणावरण** न [°**ज्ञानावरण**] अवधि-ज्ञान का प्रतिबन्धक कर्म ; (कम्म १) । °**दंसण** न [°**दर्शन**] रूपी वस्तु का अतीन्द्रिय सामान्य ज्ञान ; (सम १५) । °**दंसणावरण** न [°**दर्शनावरण**] अवधिदर्शन का आवारक कर्म ; (ठा ६) । °**नाण** देखो °**णाण**; (प्रासू) । °**मरण** न [°**मरण**] मरण-विशेष ; (भग १३, ७) ।

ओहिअ वि [**अवतीर्ण**] उतरा हुआ ; (कुमा) ।

ओहिण्ण वि [**अपभिन्न**] रोका हुआ, अटकाया हुआ ; (से १३, २४) ।

ओहित्थ न [**दे**] १ विषाद, खेद ; २ रभस, वेग ; ३ वि. विचारित ; (दे १, १६८) ।

ओहिर देखो **ओहीर** । ओहिरइ ; (षड्) ।

ओहिर देखो **ओहर**=अव+हृ । कर्म—ओहिरिआमि ; (पि ६८) ।

ओहीअंत वि [**अवहीयमान**] क्रमशः कम होता हुआ ; (से १२, ४२) ।

ओहीण वि [**अवहीन**] १ पीछे रहा हुआ ; (अभि ५६) । २ अपगत, गुजरा हुआ ; (से १२, ६७) ।

ओहीर अक [**नि+द्रा**] सो जाना, निद्रा लेना ; (हे ४, १२) । वकृ—**ओहीरमाण** ; (णाया १, १ ; विपा २, १ ; कप्प) ।

ओहीरिअ वि [**अवधीरित**] तिरस्कृत, परिभूत ; (आचा २, १) ।

ओहीरिअ वि [**दे**] १ उद्गीत; २ अवसन्न, खिन्न ; (दे १, १६३) ।

ओहुअ वि [**दे**] अभिभूत, पराभूत ; (दे १, १५८) ।

ओहुंज देखो **उवहुंज** । ओहुंजइ ; (भवि) ।

ओहुड वि [**दे**] विफल, निष्फल ; (दे १, १५७) ।

ओहुप्पंत वि [**आक्रम्यमाण**] जिस पर आक्रमण किया जाता हो वह ; (से ३, १८) ।

ओहुर वि [**दे**] १ अवनत, अवाङ्मुख ; (गउड) । २ खिन्न, खेद-प्राप्त ; ३ स्रस्त, ध्वस्त ; (दे १, १५७) ।

ओहुल्ल वि [**दे**] १ खिन्न; २ अवनत, नीचे झुका हुआ ; (भवि) ।

ओहूणण न [**अवधूनन**] १ कम्प; २ उल्लङ्घन ; ३ अपूर्व करण से भिन्न ग्रन्थि का भेद करना ; (आचा १, ६, १) ।

ओहूय वि [**अवधूत**] उल्लंघित ; (बृह १) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ओआराइसद्दसंकलणो णवमो तरंगो समत्तो । तस्समत्तीए अ सरविहाओवि समत्तो ।

क

क पुं [**क**] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम व्यञ्जनाक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; (प्राप; प्रामा) । २ ब्रह्मा ; (दे ५, २६) । ३ किए हुए पाप का स्वीकार ; " कत्ति कडं मे पावं " (आवम) । ४ न. पानी, जल ; (स ६११)। ५ सुख ; (सुर १६,५५) । देखो °**अ**=क ।

क देखो **किम्** ; (गउड ; महा) ।

कइ वि. ब. [**कति**] कितना "तं भंते ! कइदिसं ओभासेइ" (भग) । °**अ** वि [°**क**] कतिपय, कईएक, "मोएमि जाव तुज्झं, पियरं कइएसु दियहेसु" (पउम ३४,२७) । °**अव** वि [°**पय**] कतिपय,कईएक; (हे १,२५०) । °**इ** अ [°**चित्**] कईएक ; (उप पृ ३) । °**त्थ** वि (°**थ** कितनावाँ, कौन संख्या का ? ; (विसे ६१७) । °**वइय**, °**वय**, °**वाह** वि [°**पय**] कईएक ; (पउम ६१, १६ ; उवा ; षड् ; कुमा ; हे १,२५०) । °**वि** अ [°**अपि**] कईएक ; (काल; महा) । °**विह** वि [°**विध**] कितने प्रकार का; (भग) ।

कइ अ [**कदा**] कब, किस समय ? "एआई उण मज्झो थणभारं कइ णु उव्वहइ ? " (गा ८०३) ।

कइ पुं [**कपि**] बन्दर, वानर ; (पाअ) । °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष, वानर-द्वीप ; (पउम ५५,१६) । °**द्धय**, °**धय** पुं [°**ध्वज**] १ वानर-द्वीप के एक राजा का नाम; (पउम ६,८३) । २ अर्जुन ; (हे २, ६०) । °**हसिअ** न [°**हसित**] १ स्वच्छ आकाश में अचानक बीजली का दर्शन ; २ वानर के समान विकृत मुँह का हसना ; (भग ३,६) ।

कइ देखो **कवि**=कवि ; (गउड ; सुर १, २७) । °**अर** (अप) पुं [**कवि**] श्रेष्ठ कवि; (पिंग) । °**मा** स्त्री [°**त्व**] कवित्व, कविपन; (षड्)। °**राय** पुं [°**राज**] १ श्रेष्ठ कवि; (पिंग) । २ "गउडवहो" नामक प्राकृत काव्य के कर्ता वाक्पतिराज-नामक कवि ; "आसि कइरायइंधो वप्पइराओ त्ति पणइलवो" (गउड ७९७) ।

कइअ पुं [**क्रयिक**] खरीदने वाला, ग्राहक ; "किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ" (उत्त ३५, १४) ।

कइअंक } **कइअंकसइ** } पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे २, १३) ।

कइअव न [**कैतव**] कपट, दम्भ ; (कुमा; प्राप्र) ।

कइआ अ [**कदा**] कब, किस समय ? ; (गा १३८ ; कुमा) ।

कइउल्ल वि [**दे**] थोडा, अल्प ; (दे १, २१) ।

कइंद पुं [**कवीन्द्र**] श्रेष्ठ कवि ; (गउड) ।

कइकच्छु स्त्री [**कपिकच्छु**] वृक्ष-विशेष, केवाँच ; (गा ५३२) ।

कइगई स्त्री [**कैकयी**] राजा दशरथ की एक रानी ; (पउम ६५, २१) ।

कइत्थ पुं [**कपित्थ**] १ वृक्ष-विशेष, कैथ का पेड़ ; २ फल-विशेष, कैथ, कैथा ; (गा ६४१) ।

कइम वि [**कतम**] बहुत में से कौन सा ? (हे १, ४८ ; गा ११६) ।

कइयहा (अप) अ [**कदा**] कब, किस समय ? (सण) ।

कइर पुं [**कदर**] वृक्ष-विशेष ; "जं कइररुक्खहिट्ठा इह दसकोडी दविणमत्थि" (श्रा १६) ।

कइरव न [**कैरव**] कमल, कुमुद ; (हे १, १५२) ।

कइरविणी स्त्री [**कैरविणी**] कुमुदिनी, कमलिनी; (कुमा) ।

कइलास पुं [**कैलास**, °**श**] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत विशेष ; (पाअ ; पउम ५, ५३ ; कुमा) । २ मेरु पर्वत ; (निचू १३) । ३ देव-विशेष, एक नाग-राज ; (जीव ३) । °**सय** पुं [°**शय**] महादेव, शिव ; (कुमा) । देखो **केलास** ।

कइलासा स्त्री [**कैलासा**, °**शा**] देव-विशेष की एक राजधानी ; (जीव ३) ।

कइल्लवइल्ल पुं [**दे**] स्वच्छन्द-चारी बैल; (दे २, २५)।

कइविया स्त्री [**दे**] बरतन-विशेष, पीकदान, पीकदानी ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

कइस (अप) वि [**कीदृश**] कैसा ; (कुमा) ।

कईया (अप) देखो **कइआ**; (सुपा ११६) ।

कईवय देखो **कइवय**; (पउम २८, १६) ।

कईस पुं [**कवीश**] श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि ; (पिंग) ।

कईसर पुं [**कवीश्वर**] उत्तम कवि ; (रंभा) ।

कउ पुं [**क्रतु**] यज्ञ ; (कप्पू) ।

कउ (अप) अ [**कुतः**] कहां से ; (हे ४, ४१६) ।

कउअ वि [**दे**] १ प्रधान, मुख्य ; २ चिन्ह निशान ; (दे २, ५६) ।

कउच्छेअय पुं [**कौक्षेयक**] पेट पर बँधी हुई तलवार ; (हे १, १६२ ; षड्) ।

कउड न [दे. **ककुद**] देखो **कउह**=ककुद; (षड्)।

कउरअ } पुं [**कौरव**] १ कुरु देश का राजा; २ पुंस्त्री.
कउरव } कुरु वंश में उत्पन्न; ३ वि. कुरु (देश या वंश) से संबन्ध रखने वाला; ४ कुरु देश में उत्पन्न; (प्राप्र; नाट; हे १, १६२)।

कउल न [दे] १ करीष, गोइठा का चूर्ण; (दे २, ७)।

कउल न [**कौल**] तान्त्रिक मत का प्रवर्तक ग्रन्थ, कौलोपनिषद् वगैरः। २ वि. शक्ति का उपासक। ३ तान्त्रिक मत को जानने वाला; ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी। ५ देवता-विशेष;

"विसनिज्जंतमहापसुदंसणसंभमपरोप्परारूढा।
गयणे च्चिय गंधउडिं कुणंति तुह कउलणारीओ"
(गउड)।

कउलव देखो **कउरव**; (चंड)।

कउसल न [**कौशल**] कुशलता, दक्षता, हुशियारी; (हे १, १६२; प्राप्र)।

कउह न [**दे**] नित्य, सदा, हमेशा; (दे २, ५)।

कउह पुंन [**ककुद**] १ बैल के कंधे का कुब्बड; २ सफेद छत्र वगैरः राज-चिह्न; ३ पर्वत का अग्रभाग, टोंच; (हे १, २२५)। ४ वि. प्रधान, मुख्य;

"कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु।
सद्देसु रज्जमाणा, रमंती सोइंदियवसट्टा"
(णाया १, १७)।

देखो **ककुह**।

कउहा स्त्री [**ककुभ्**] १ दिशा; (कुमा)। २ शोभा, कान्ति; ३ चम्पा के पुष्पों की माला; ४ इस नाम की एक रागिणी; ५ शास्त्र; ६ विकीर्ण केश; (हे १, २१)।

कए } अ [**कृते**] वास्ते, निमित्त, लिए; "तत्तो सो तस्स
कएण } कए, खणेइ खाणीउणेगठाणेसु" (कुम्मा १५;
कएणं } कुमा)। "अवरदहमज्जिरीणं कएण कामो वहइ चावं" (गा ४७३)।

"लज्जा चत्ता सीलं च खंडिअं अजसघोसणा दिण्णा।
जस्स कएणं पिअसहि! सो चेअ जणो जणो जाओ"
(गा ५२५)।

कओ अ [**कुतः**] कहां से? (आचा; उव; रयण २६)।
°**हुत्त** क्रिवि [**दे**] किस तरफ; "कओहुत्तं गंतव्वं?" (महा)।

कओ अ [**क्व**] कहां, किस स्थान में; "कओ वयामो?" (णाया १, १४)।

कओल देखो **कवोल**; (से ३, ४६)।

कंइ अ [**दे**] किससे; "कंइ पंइ सिक्खिउ ए गइलालस" (विक १०२)।

कंक पुं [**कङ्क**] १ पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १; ४; अनु ४)। २ एक प्रकार का मजबूत और तीक्ष्ण लोहा; (उप ४६४)। ३ वृक्ष-विशेष; "कंककलसरलनयणा—" (उप १०३१ टी)। °**पत्त** न [°**पत्र**] बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण, जो उड़ता है; (वेणी १०२)। °**लोह** पुंन [°**लोह**] एक प्रकार का लोहा; (उप पृ ३२६; सुपा २०७)। °**वत्त** देखो °**पत्त**; (नाट)।

कंकइ पुं [**कङ्कति**] वृक्ष-विशेष, नागबला-नामक ओषधि; (उप १०३१ टी)।

कंकड पुं [**कङ्कट**] वर्म, कवच; "रामो चावे सकंकडे दिट्ठी देंतो" (पउम ४४, २१; औप)।

कंकडइय वि [**कङ्कटित**] कवच वाला, वर्मित; (पण्ह १, ३)।

कंकडुअ } पुं [**काङ्कटुक**] दुर्भेद्य माष, उरद की एक
कंकडुग } जाति, जो कभी पकता ही नहीं; "कंकडुओ विव मासो, सिद्धिं न उवेइ जस्स ववहारो" (वव ३)।

कंकण न [**कङ्कण**] हाथ का आभरण-विशेष, कँगन; (श्रा २८; गा ६६)।

कंकति पुं [**कङ्कति**] ग्राम-विशेष; (राज)।

कंकतिज्ज पुंस्त्री [**काङ्कतीय**] माधराज वंश में उत्पन्न; (राज)।

कंकय पुं [**कङ्कत**] १ नागबला-नामक ओषधि। २ सर्प की एक जाति। ३ पुंस्त्री. कङ्घा, केश सँवारने का उपकरण; (सुअ १, ४)।

कंकलास पुं [**कृकलास**] ककोंट, साँप की एक जाति; (पाअ)।

कंकाल न [**कङ्काल**] चमड़ी और मांस रहित अस्थि-पञ्जर; "कंकालवेसाए" (श्रा १६); "अह नरकरंककंकालसंकुले भीसणमसाणे" (वज्जा २० ; दे २, ५३)।

कंकावंस पुं [**कङ्कावंश**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण ३३)।

कंकिल्लि देखो **कंकेल्लि**; (सुपा ५५६; कुमा)।

कंकेलि पुं [**कङ्केलि**] अशोक वृक्ष; (मै ६०; विक्र २८)।

कंकेल्लि पुं [**दे. कङ्केल्लि**] अशोक वृक्ष ; (दे २, १२; गा ४०४ ; सुपा १४०; ५६२ ; कुमा)।

कंकोड न [**दे. कर्कोट**] १ वनस्पति-विशेष, ककरैल, एक प्रकार की सब्जी, जो वर्षा में ही होती है, (दे २, ७ ; पात्र)। २ पुं. एक नागराज ; ३ साँप की एक जाति ; (हे १, २६ ; षड्)।

कंकोल पुं [**कङ्कोल**] १ कङ्कोल, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद ; २ न. उस वृक्ष का फल ; " सकप्पूरेला-कंकोलं तंबोलं " (उप १०३१ टी)। देखो **कक्कोल**।

कंख सक [**काङ्क्ष्**] चाहना, वाँछना। कंखइ ; (हे ४, १९२ ; षड्)।

कंखण न [**काङ्क्षण**] नीचे देखो ; (धर्म २)।

कंखा स्त्री [**काङ्क्षा**] १ चाह, अभिलाष ; (सूत्र १, १५)। २ आसक्ति, गृद्धि ; (भग)। ३ अन्य धर्म की चाह अथवा उसमें आसक्ति रूप सम्यक्त्व का एक अतिचार ; (पडि)। °**मोहणिज्ज** न [°**मोहनीय**] कर्म-विशेष ; (भग)।

कंखि वि [**काङ्क्षिन्**] चाहने वाला; (आचा ; गउड ; सुर १३, २४३)।

कंखिअ वि [**काङ्क्षित**] १ अभिलषित। २ काङ्क्षा-युक्त, चाह वाला ; (उवा; भग)।

कंखिर वि [**काङ्क्षितृ**] चाहने वाला, अभिलाषी ; (गा ५५; सुपा ५३७)।

कंगणी स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, काँगनी ; (पण्ण १)।

कंगु स्त्रीन [**कङ्गु**] १ धान्य-विशेष, काँगन ; (ठा ७ ; दे ७, १)। २ वल्ली-विशेष ; (पण्ण १)।

कंगुलिया स्त्री [**दे. कङ्गुलिका**] जिन-मन्दिर की एक बड़ी आशातना, जिन-मन्दिर में या उसके नजदीक लघु या वृद्ध नीति का करना; (धर्म २)।

कंचण पुं [**काञ्चन**] १ वृक्ष-विशेष ; २ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी ; (उप ७२८ टी)। ३ न. सुवर्ण, सोना ; (कप्प)। °**उर** न [°**पुर**] कलिंग देश का एक मुख्य नगर; (आक)। °**कूड** न [°**कूट**] १ सौमनस-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर; (ठा ७)। २ देव विमान-विशेष; (सम १२)। ३ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८)। °**केअई** स्त्री [°**केतकी**] लता-विशेष ; (कुमा)। °**तिलय** न [°**तिलक**] इस नाम का विद्याधरों का एक नगर; (इक)। °**त्थल** न [°**स्थल**] स्वनाम-ख्यात एक नगर ; (दंस)। °**वलाणग** न [°**वलानक**] चौरासी तीर्थों में एक तीर्थ का नाम ; (राज)। °**सेल** पुं [°**शैल**] मेरु पर्वत; (कप्पू)।

कंचणग पुं [**काञ्चनक**] १ पर्वत विशेष ; (सम ७०)। २ काञ्चनक पर्वत का निवासी देव ; (जीव ३)।

कंचणा स्त्री [**काञ्चना**] स्वनाम ख्यात एक स्त्री ; (पण्ह १, ४)।

कंचणार पुं [**काञ्चनार**] वृक्ष-विशेष ; (पउम ५३, ७९ ; कुमा)।

कंचणिया स्त्री [**काञ्चनिका**] रुद्राक्ष-माला ; (औप)।

कंचा (पै) देखो **कण्णा** ; (प्राप्र)।

कंचि } स्त्री [**काञ्चि,°ञ्ची**] १ स्वनाम-ख्यात एक देश;
कंची } (कुमा)। २ कटी-मेखला, कमर का आभूषण ; (पात्र)। ३ स्वनाम-ख्यात एक नग ; सुपा ४०६)।

कंची स्त्री [**दे**] मुशल के मुँह में रक्खी जाती लोहे की एक वलयाकार चीज ; (दे २, १)।

कंचु } पुं [**कञ्चुक**] १ स्त्री का स्तनाच्छादक वस्त्र,
कंचुअ } चोली ; (पउम ६, ११ ; पात्र)। २ सर्प-त्वक्, साँप की कंचली ; (विसे २५१७)। ३ वर्म, कवच ; (भग ६, ३३)। ४ वृक्ष-विशेष ; (हे १, २५;३०)। ५ वस्त्र, कपड़ा ; "तो उज्झिऊण लज्जा (लज्जं), ओइं-धइ कंचुयं सरीराओ" (पउम ३४, १५)।

कंचुइ पुं [**कञ्चुकिन्**] १ अन्तःपुर का प्रतीहार, चपरासी; (णाया १, १ ; पउम ८, ३६ ; सुर २, १०६)। २ साँप ; (विसे २५१७)। ३ यव, जव ; ४ चणक, चना; ५ जुआरि, अगहन में होने वाला एक प्रकार का अन्न, जोन्हरी। ६ वि. जिसने कवच धारण किया हो वह ; (हे ४, २६३)।

कंचुइअ वि [**कञ्चुकित**] कञ्चुक वाला ; (कुमा ; विपा १, २)।

कंचुइज्ज पुं [**कञ्चुकीय**] अन्तःपुर का प्रतीहार ; (भग ११, ११)।

कंचुइज्जंत वि [**कञ्चुकायमान**] कञ्चुक की तरह आचरण करता ; "रोमंचकंचुइज्जंतसव्वगत्तो" (सुपा १८१)।

कंचुग देखो **कंचुअ** ; (ओघ ६७६; विसे २५२८)।

कंचुगि देखो °**कंचुइ** ; (सण)।

कंचुलिआ स्त्री [**कञ्चुलिका**] कंचली, चोली; (कप्पू)।

कंछुल्ली स्त्री [**दे**] हार, कण्ठाभरण ; (भवि)।

कंजिअ न [**काञ्जिक**] काञ्जिक ; (सुर ३, १३३ ; कप्पू)।

कंटअंत वि [**कण्टकायमान**] १ कण्टक जैसा, कण्टक की तरह आचरता ; (से ६, २४)। २ पुलकित होता ; (अच्चु ५८)।

कंटइअ वि [**कण्टकित**] १ कण्टक वाला ; (से १, ३२)। २ रोमाञ्चित, पुलकित ; (कुमा ; पाअ)।

कंटइज्जंत देखो **कंटअंत** ; (गा ६७)।

कंटइल पुं [**कण्टकिल**] १ एक जात का वाँस ; २ वि. कण्टकों से व्याप्त ; (सूअ १, ५)।

कंटइल्ल देखो **कंटइअ** ; (पण्ह १, १ ; कुमा)।

कंटउच्चि वि [**दे**] कण्टक-प्रोत ; (दे २, १७)।

कंटकिल्ल देखो **कंटइअ** ; (दे २, ७५)।

कंटग, **कंटय** पुं [**कण्टक**] १ काँटा, कण्टक ; (कस; हे १, ३०)। २ रोमाञ्च, पुलक ; (गा ६७)। ३ शत्रु, दुश्मन ; (णाया १, १)। ४ वृश्चिक का पूँछ ; (वव ६)। ५ शल्य ; (विपा १, ८)। ६ दुःखोत्पादक वस्तु ; (उत्त १)। ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग ; (गण १६)। °**बोंदिया** स्त्री [°**दे**] कण्टक-शाखा ; (आचा २, १, ५)।

कंटाली स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष, कण्टकारिका, भटकटैया ; (दे २, ४)।

कंटिय वि [**कण्टिक**] १ कण्टक वाला, कण्टक-युक्त। २ वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)।

कंटिया स्त्री [**कण्टिका**] वनस्पति-विशेष ; (बृह १ ; आचू १)।

कंटी स्त्री [**दे**] उपकण्ठ, कण्ठिका, पर्वत के नजदीक की भूमि;
"एयाओ पक्कदारुणफलभरबंधुरिया भूमिखज्जूरा।
कंटीओ निव्ववंति व, असंदकरमंदआभोया"
(गउड)।

कंटुल्ल, **कंटोल** (दे) देखो **कंकोड** = (दे); (पाअ ; दे २, ७)।

कंठ पुं [**दे**] १ सूकर, सूअर ; २ मर्यादा, सीमा ; (दे २, ५१)।

कंठ पुं [**कण्ठ**] १ गला, घाँटी ; (कुमा)। २ समीप, पास। ३ अञ्चल ; "कंठे वत्थाईणं णिबद्धगंठिम्मि" (दे २, १८)। °**दरखलिअ** वि [°**दरस्खलित**] गद्गद ; (पाअ)। °**मुरय** न [°**मुरज**] आभरण-विशेष ; (णाया १, १)। °**मुरवी** स्त्री [°**मुरवी**] गले का एक आभरण ; (औप)। °**मुही** स्त्री [°**मुखी**] गले का एक आभूषण ; (राज)। °**सुत्त** न [°**सूत्र**] १ सुरत-बन्ध विशेष। २ गले का एक आभूषण ; (औप)।

कंठ वि [**कण्ठ्य**] १ कण्ठ से उत्पन्न। २ सरल, सुगम; (निचू १५)।

कंठकुंची स्त्री [**दे**] १ वस्त्र वगैरः के अञ्चल में बँधी हुई गाँठ ; २ गले में लटकायी हुई लम्बी नाडि-ग्रन्थि ; (दे २, १८)।

कंठदीणार पुं [**दे**] छिद्र, विवर ; (दे १, २४)।

कंठमल्ल न [**दे**] १ ठठरी, मृत-शिबिका ; २ यान पात्र, वाहन ; (दे २, २०)।

कंठय पुं [**कण्ठक**] स्वनाम-ख्यात एक चौर-नायक ; (महा)।

कंठाकंठि अ [**कण्ठाकण्ठि**] गले गले में ग्रहण कर ; (णाया १, २—पत्र ८८)।

कंठिअ पुं [**दे**] चपरासी, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कंठिआ स्त्री [**कण्ठिका**] गले का एक आभूषण; (गा ७५)।

कंठीरव पुं [**कण्ठीरव**] सिंह, शार्दूल ; (प्रयौ २१)।

कंड सक [**कण्ड्**] १ व्रीहि वगैरः का छिलका अलग करना। २ खींचना। ३ खुजवाना। वकृ—**कंडंत** ; (ओघ ४६८ ; गा ६६३) ; **कंडिंत**; (णाया १, ७)।

कंड पुंन [**काण्ड**] १ दण्ड, लाठी ; २ निन्दित समुदाय ; ३ पानी, जल ; ४ पर्व ; ५ वृक्ष का स्कन्ध ; ६ वृक्ष की शाखा ; ७ वृक्ष का वह एक भाग, जहाँ से शाखाएँ नीकलती हैं ; ८ ग्रन्थ का एक भाग ; ९ गुच्छ, स्तबक ; १० अश्व, घोड़ा ; ११ प्रेत, पितृ और देवता के यज्ञ का एक हिस्सा ; १२ रीढ़, पृष्ठभाग की लम्बी हड्डी; १३ खुशामद ; १४ श्लाघा, प्रशंसा ; १५ गुप्तता, प्रच्छन्नता ; १६ एकान्त, निर्जन ; १७ तृण-विशेष ; १८ निर्जन पृथ्वी ; (हे १, ३०)। १९ अवसर, प्रस्ताव ; (गा ६६३)। २० समूह ; (णाया १, ८)। २१ बाण, शर ; (उप ६६६)। २२ देव-विमान-विशेष ; (राज)। २३ पर्वत वगैरः का एक भाग ; (सम ६५)। २४ खण्ड टुकडा, अवयव ; (आचू १)। °**च्छारिय** पुं [°**च्छारिक**] १ इस नाम का एक ग्राम; २ एक ग्राम-नायक ; (वव ७)। देखो **कंडग**, **कंडय**।

कंड पुं [**दे**] १ फेन, फीन ; २ वि. दुर्बल ; ३ विपन्न, विपत्ति-ग्रस्त ; (दे २, ५१) ।

कंडइअ देखो **कंटइअ**; (गा ५५८) ।

कंडइज्जंत देखो **कंटइज्जंत** ; (गा ६७ अ) ।

कंडग पुंन [**काण्डक**] देखो **कंड** = काण्ड ; (आचा ; आवम) । २५ संयम-श्रेणि विशेष ; (बृह ३) । २६ इस नाम का एक ग्राम; (आचू १) । देखो **कंडय** ।

कंडण न [**कण्डन**] व्रीहि वगैरः को साफ करना, तुष-पृथक्करण ; (श्रा २०) ।

कंडपंडवा स्त्री [**दे**] यवनिका, परदा ; (दे २,२५) ।

कंडय पुंन [**काण्डक**] देखो **कंड** = काण्ड तथा **कंडग** २७ वृक्ष-विशेष , राक्षसों का चैत्य वृक्ष ; " तुलसी भूयाण भवे, रक्खसाणं च कंडओ " (ठा ८) । २८ तावीज, गण्डा, यन्त्र ; " बज्झंति कंडयाइं, पउणीकीरंति अगयाइं " (सुर १६, ३२) ।

कंडरीय पुं [**कण्डरीक**] महापद्म राजा का एक पुत्र, पुण्डरीक का छोटा भाई, जिसने वर्षों तक जैनी दीक्षा का पालन कर अन्त में उसका त्याग कर दिया था ; (णाया १, १९; उव) ।

कंडलि } स्त्री [**कन्दरिका**] गुफा, कन्दरा; (पि ३३३;
कंडलिआ } हे २, ३८ ; कुमा) ।

कंडवा स्त्री [**कण्डवा**] वाद्य-विशेष ; (राय) ।

कंडार सक [**उत्** + **कृ**] खुदना, छील-छाल कर ठीक करना । संकृ—

" णूणं दुवे इह पआवइणो जअम्मि,
जे देहणिम्मवणजोव्वणदाणदक्खा ।
एक्के घडेइ पढमं कुमरीणमंगं,
कंडारिऊण पअडेइ पुणो दुईओ" (कप्पू) ।

कंडावेल्ली स्त्री [**काण्डवल्ली**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १) ।

कंडिअ वि [**कण्डित**] साफ-सुथरा किया हुआ; (दे १, ११५) ।

कंडियायण न [**कण्डिकायन**] वैशाली (बिहार) का एक चैत्य ; (भग १५) ।

कंडिल्ल पुं [**काण्डिल्य**] १ काण्डिल्य-गोत्र का प्रवर्तक ऋषि-विशेष ; २ पुंस्त्री. काण्डिल्य गोत्र में उत्पन्न ; ३ न. गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है; (ठा ७—पत्र ३९०) । °**यण** पुं [°**यन**] स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष ; (चंद १०) ।

कंडु देखो **कंडू** ; (राज) ।

कंडु देखो **कंदु**; (सूअ १, ५) ।

कंडुअ सक [**कण्डूय्**] खुजवाना । कंडुअइ ; (हे १, १२१ ; उव) । कंडुअए ; (पि ४६२) । वकृ—**कंडुअंत** ; (गा ४६०) ; **कंडुअमाण**; (प्रासू २८) ।

कंडुअ पुं [**कान्दविक**] हलवाई, मिठाई बेचने वाला ; "राया चिंतेइ; कओ कंडुयस्स जलकंतरयणसंपत्ती ?" (आवम)।

कंडुअ } पुं [**कन्दुक**] गेंद ; (दे ३, ५९ ; राज) ।
कंडग }

कंडुज्जुय वि [**काण्डर्जु**] बाण की तरह सीधा ; (स ३१७ ; गा ३५२) ।

कंडुयग वि [**कण्डूयक**] खुजाने वाला ; (औप) ।

कंडुयण न [**कण्डूयन**] १ खुजली, खाज, पामा, रोग-विशेष ; २ खुजवाना ; " पामागहियस्स जहा, कंडुयणं दुक्खमेव मूढस्स " (स ५१५ ; उव २६४ टी ; गउड) ।

कंडुयय देखो **कंडुयग** ; " अकंडुयएहिं " (पण्ह २, १—पत्र १००) ।

कंडुरु पुं [**कण्डुरु**] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने रामचन्द्र के भाई भरत के साथ जैनी दीक्षा ली थी ; (पउम ८५, ५) ।

कंडू स्त्री [**कण्डू**] १ खुजलाहट, खुजवाना ; (णाया १, ५)) । २ रोग-विशेष, पामा, खाज ; (णाया १, १३) ।

कंडूइ स्त्री [**कण्डूति**] ऊपर देखो; (गा ५३२; सुर २, २३) ।

कंडूइअ न [**कण्डूयित**] खुजवाना ; (सूअ १, ३, ३ ; गा १८१) ।

कंडूय देखो **कंडुअ**=कण्डूय् । कंडूयइ ; (महा) । वकृ—**कंडूयमाण** ; (महा) ।

कंडूयग वि [**कण्डूयक**] खुजवाने वाला ; (ठा ५, १) ।

कंडूयण देखो **कंडुयण** ; (उप २५९ ; सुपा १७६ ; २२७) ।

कंडूयय देखो **कंडूयग** ; (महा) ।

कंडूर पुं [**दे**] बक, बगुला ; (दे २, ९) ।

कंडूल वि [**कण्डूल**] खाज वाला, कण्डू-युक्त; कुमा) ।

कंत वि [**कान्त**] १ मनोहर, सुन्दर ; (कुमा) । २ अभिलषित, वाञ्छित ; (णाया १, १) । ३ पुं. पति, स्वामी ; (पाअ) । ४ देव-विशेष ; (सुज्ज १९) । ५ न. कान्ति, प्रभा ; (आचा २, ५, १) ।

कंत वि [**क्रान्त**] गत, गुजरा हुआ ; (प्राप)।

कंता स्त्री [**कान्ता**] १ स्त्री, नारी ; (सुर ३, १४ ; सुपा ५७३)। २ रावण की एक पत्नी का नाम ; (पउम ७४, ११)। ३ एक योग-दृष्टि ; (राज)।

कंतार न [**कान्तार**] १ अरण्य, जङ्गल ; (पाअ)। २ दुष्ट, दूषित ; ३ निराश्रय ; ४ पागल ; (कप्पू)।

कंति स्त्री [**कान्ति**] १ तेज, प्रकाश; (सुर २, २३६)। २ शोभा, सौन्दर्य ; (पाअ)। ३ इस नाम की रावण की एक पत्नी ; (पउम ७४, ११)। ४ अहिंसा ; (पण्ह २, १)। ५ इच्छा ; ६ चन्द्र की एक कला ; (राज ; विक १०७)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] नगरी-विशेष ; (ती)। °**म, °ल्ल** पुं [°**मत्**] कान्ति-युक्त ; (आवम ; गउड; सुपा ८; १८८)।

कंति स्त्री [**क्रान्ति**] १ परिवर्त्तन, फेरफार ; २ गमन, गति ; (नाट—विक्र ६०)।

कंतु पुं [**दे**] काम, कामदेव ; (दे २, १)।

कंथक } पुं [**कन्थक**] अश्व की एक जाति ; (ठा ४, ३ ; उत्त २३)। "जहा से कंबोयाणं आइन्ने कंथए सिया" (उत्त ११)।
°**थग** }
°**थय** }

कंथा स्त्री [**कन्था**] कथड़ी, गुदड़ी, पुराने वस्त्र से बना हुआ ओढ़ना ; (हे १, १८७)।

कंथार पुं [**कन्थार**] वृक्ष-विशेष ; (उप २२० टी)।

कंथारिया } स्त्री [**कन्थारिका, °री**] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)। °**वण** न [°**वन**] उज्जैन के समीप का एक जंगल, जहां अवन्तीसुकुमार-नामक जैन मुनि ने अनशन व्रत किया था ; (आक)।
कंथारी }

कंथेर पुं [**कन्थेर**] वृक्ष-विशेष ; (राज)।

कन्थेरी स्त्री [**कन्थेरी**] कण्टकमय वृक्ष-विशेष ; (उर ३, २)।

कंद अक [**क्रन्द्**] कँदना, रोना। कंदइ ; (पि २३१)। भूका—कंदिंसु ; (पि ५१६)। वकृ—**कंदंत**; (गा ५८४), **कन्दमाण** ; (णाया १, १)।

कंद वि [**दे**] १ दृढ, मजबूत ; २ मत्त, उन्मत्त ; ३ न. स्तरण, आच्छादन , (दे २, ५१)।

कंद पुं [**क्रन्द, क्रन्दित**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (ठा २, ३—पत्र ८५)।

कंद पुं [**कन्द**] १ गूदेदार और बिना रेशे की जड ; जैसे—जमींकन्द, सूरन, शकरकन्द, बिलारीकन्द, ओल, गाजर, लहसुन वगैरः ; (जी ९)। २ मूल, जड़ ; (गउड)। ३ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

कंद पुं [**स्कन्द**] कार्तिकेय; षडानन ; (कुमा ; हे २, ५ ; षड्)।

कन्दणया स्त्री [**क्रन्दनता**] मोटे स्वर से चिल्लाना ; (ठा ४, १)।

कंदप्प पुं [**कन्दर्प**] १ कामदेव, अनंग ; (पाअ)। २ कामोद्दीपक हास्यादि ; "कंदप्पे कुक्कुइए" (पडि; णाया १, १)। ३ देव-विशेष ; (पव ७३)। ४ काम-संबन्धी कषाय ; ५ वि. काम-युक्त, कामी ; (बृह १)।

कंदप्प वि [**कान्दर्प**] कन्दर्प-संबन्धी ; (पव ७३)।

कंदप्पि वि [**कन्दर्पिन्**] कामोद्दीपक ; कन्दर्प का उत्तेजक ; (वव १)।

कंदप्पिय पुं [**कान्दर्पिक**] १ मजाक करने वाला भाण्ड वगैरः ; (औप; भग)। २ भाण्ड-प्राय देवों की एक जाति; (पण्ह २, २)। ३ हास्य वगैरः भाण्ड कर्म से आजीविका चलाने वाला ; (पण्ण २०)। ४ वि. काम-संबन्धी; (बृह १)।

कंदर न [**कन्दर**] १ रन्ध्र, विवर ; (णाया १, २)। २ गुहा, गुफा ; (उवा ; प्रासू ७३)।

कंदरा } स्त्री [**कन्दरा**] गुहा, गुफा; (से ४, १९ ; राज)।
कंदरी }

कंदल पुं [**कन्दल**] १ अङ्कुर, प्ररोह ; (सुपा ४)। २ लता-विशेष ; (णाया १, ९)।

कंदल न [**दे**] कपाल ; (दे २, ४)।

कंदलग पुं [**कन्दलक**] एक खुर वाला जानवर विशेष ; (पण्ण १)।

कंदलिअ } वि [**कन्दलित**] अङ्कुरित ; (कुमा ; पि ५९५)।
कंदलिल्ल }

कंदली स्त्री [**कन्दली**] १ लता-विशेष ; (सुपा ९; पउम ५३, ७९)। २ अङ्कुर, प्ररोह ; "दारिद्दद्दुमकंदलीवणदवो" (उप ७२८ टी)।

कंदविय पुं [**कान्दविक**] हलवाई, मिठाई बेचने वाला ; (उप २११ टी)।

कंदिंद पुं [**क्रन्देन्द्र, क्रन्दितेन्द्र**] क्रन्दित-नामक देव-निकाय का इन्द्र ; (ठा २, ४—पत्र ८५)।

कंदिय पुं [**क्रन्दित**] १ वाणव्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १, ४ ; औप)। २ न. रोदन, आक्रन्द ; (उत्त २)।

कंदिर वि [**क्रन्दिन्**] काँदने वाला ; (भवि)।
कंदी स्त्री [**दे**] मूला, कन्द-विशेष ; (दे २, १)।
कंदु पुंस्त्री [**कन्दु**] एक प्रकार का बरतन, जिसमें मांगड वगैरः पकाया जाता है, हाँड़ा ; (विपा १, ३ ; सुअ १, ५)।
कंदुअ पुं [**कन्दुक**] १ गेंद ; (पाअ ; स्वप्न ३६ ; मै ६१)। २ वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)।
कंदुइअ पुं [**कान्दविक**] हलवाई, मिठाई बेचने वाला ; (दे २, ४१ ; ६, ६३)।
कंदुग देखो **कंदुअ** ; (राज)।
कंदुट्ट (**दे**) देखो **कंदोट्ट** ; (पाअ ; धर्म ५ ; सण)।
कंदोइय देखो **कंदुइअ** ; (सुपा ३८५)।
कंदोट्ट न [**दे**] नील कमल ; (दे २, ६ ; प्राप्र ; षड् ; गा ६२२ ; उत्तर ११७ ; कप्पू ; भवि)।
कंध देखो **खंध**=स्कन्ध ; (नाट ; वज्जा ३६)।
कंधरा स्त्री [**कन्धरा**] ग्रीवा, गरदन ; (पाअ ; सुर ४, १६६ ; गण ६)।
कंधार पुं [**दे** [स्कन्ध, ग्रीवा का पीछला भाग ; (उप पृ ८६)।
कंप अक [**कम्प्**] काँपना, हिलना। कंपइ ; (हे १, ३०)। वकृ—**कंपंत, कंपमाण**; (महा; कप्प)। कवकृ—**कंपिज्जंत** ; (से ६, ३८ ; १३, ५६)। प्रयो, वकृ—**कंपाविंत** ; (सुपा ५६३)।
कंप पुं [**कम्प**] अस्थैर्य, चलन, हिलन ; (कुमा ; आउ)।
कंपड पुं [**दे**] पथिक, मुसाफिर ; (दे २, ७)
कंपण न [**कम्पन**] १ कम्प, हिलन ; (भवि)। २ रोग-विशेष। °**वाइअ** वि [°**वातिक**] कम्प वायु नामक रोग वाला ; (अनु ६)।
कंपि वि [**कम्पिन्**] काँपने वाला ; (कप्पू)।
कंपिअ वि [**कम्पित**] काँपा हुआ ; (कुमा)।
कंपिर वि [**कम्पितृ**] काँपने वाला ; (गा ६५६ ; सुपा १५८ ; श्रा २७)।
कंपिल्ल वि [**कम्पवत्**] काँपने वाला, अस्थिर ; "निच्चमकंपिल्लं परभयाहि कंपिल्लनामपुरं" (उप ६ टी)।
कंपिल्ल पुं [**काम्पिल्य**] १ यदुवंशीय राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम ; (अन्त ३)। २ पन्जाब देश का एक नगर ; (ठा १० ; उप ६४८ टी)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (पउम ८, १४३ ; उवा)।

कंब वि [**कम्र**] १ कामुक, कामी ; २ सुन्दर, मनोहर ; (पि २६५)।
कंबं देखो **कंबा**।
कंबर पुं [**दे**] विज्ञान ; (दे २, १३)।
कंबल पुंन [**कम्बल**] १ कामरी, ऊनी कपड़ा ; (आचा ; भग)। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक बलीबर्द ; (राज)। ३ गौ के गले का चमड़ा, सास्ना ; (विपा १, २)।
कंबा स्त्री [**कम्बा**] यष्टि, लकडी ; "दिट्ठो तज्जणएणं, निसुडिउं कंबघाएहिं; बद्धो" (सुपा ३६६)।
कंबि } स्त्री [**कम्बि, °म्बी**] १ दर्वी, कड़छी। २
कंबी } लीला-यष्टि, छड़ी, शौख से हाथ में रखी जाती लकड़ी; (उप पृ २३७)।
कंबु पुं [**कम्बु**] १ शङ्ख; (पण्ह १, ४)। २ इस नाम का एक द्वीप ; (पउम ४५, ३२)। ३ पर्वत-विशेष; (पउम ४५, ३२)। ४ न. एक देव-विमान ; (सम २२)। °**ग्गीव** न [°**ग्रीव**] एक देव-विमान; (सम २२)।
कंबोय पुं [**कम्बोज**] देश-विशेष ; (पउम २७, ७ ; स ८०)।
कंबोय वि [**काम्बोज**] कम्बोज देश में उत्पन्न ; (स ८०)।
कंभार पुं.ब. [**कश्मीर**] इस नाम का एक प्रसिद्ध देश ; (हे २, ६८ ; षड्)। °**जम्म** न [°**जन्मन्**] कुङ्कुम, केसर ; (कुमा)। देखो **कम्हार**।
कंभूर (अप) ऊपर देखो ; (षड्)।
कंस पुं [**कंस**] १ राजा उग्रसेन का एक पुत्र, श्रीकृष्ण का मातुल ; (पण्ह १, ४)। २ महाग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ काँसा, एक प्रकार की धातु ; (णाया १, ७—पत्र ११८)। °**णाभ** पुं [°**नाभ**] ग्रह विशेष ; (सुज्ज २० ; इक)। °**वण्ण** पुं [°**वर्ण**] ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८)। °**वण्णाभ** पुं [°**वर्णाभ**] ग्रह-विशेष, (ठा २, ३)। °**संहारण** पुं [°**संहारण**] कृष्ण, विष्णु ; (पिंग)।
कंस न [**कांस्य**] १ धातु-विशेष, काँसा; २ वाद्य-विशेष ; ३ परिमाण-विशेष ; ४ जल पीने का पात्र, प्याला ; (हे १, २६; ७०)। °**ताल** न [°**ताल**] वाद्य-विशेष ; (जीव ३)। °**पत्ती,** °**पाई** स्त्री [°**पात्री**] काँसा का बना हुआ पात्र-विशेष ; (कप्प ; ठा ६)। °**पाय** न [°**पात्र**] काँसा का बना हुआ पात्र ; (दस ६)।

कंसार पुं [**दे**] कसार, एक प्रकार की मिठाई ; " ता करेऊण कंसार नालपुडसंजुयं चेव विसमोयगं गोसे उवणेमि एयाणं " (स १८७) ।
कंसारी स्त्री [**दे**] त्रीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु की एक जाति ; (जी १८) ।
कंसाल पुं [**कांस्याल**] वाद्य-विशेष; (हे २, ९२; सुपा ५०) ।
कंसाला स्त्री [**कंसताला, कांस्यताला**] वाद्य का एक प्रकार का निर्घोष, ताल ; (सांदि) ।
कंसालिया स्त्री [**कांस्यतालिका**] एक प्रकार का वाद्य ; (सुपा २४२) ।
कंसिअ पुं [**कांस्यिक**] १ कसेरा, कँसारी, कांस्य-कार; (हे १, ७०) । २ वाद्य-विशेष ; (सुपा २४२) ।
कंसिआ स्त्री [**कंसिका**] १ ताल ; (गाया १, १७) । २ वाद्य-विशेष ; (आचा २) ।
ककुध } देखो **कउह**=ककुद ; (पि २०६ ; हे २, १७४) ।
ककुभ }
ककुह देखो **कउह** = ककुद; (ठा ५, १ ; णाया १, १७ ; विपा १, २) । ५ हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ६६)।
ककुहा देखो **कउहा** ; (षड्) ।
कक्क पुं [**कल्क**] १ उद्वर्तन-द्रव्य, शरीर पर का मैल दूर करने के लिए लगाया जाता द्रव्य ; (सूत्र १, ६ ; निचू १) । २ न. पाप ; (भग १२, ५) । ३ माया, कपट ; (सम ७१) । °**गरुग** न [°**गुरुक**] माया, कपट; (पण्ह १, २—पत्र २८) ।
कक्कंध पुं [**कर्कन्ध**] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३) ।
कक्कंधु स्त्री [**कर्कन्धु**] बेर का वृक्ष ; (पाअ) ।
कक्कड न [**कर्कट**] १ जलजन्तु-विशेष; कुलीर ; (पाअ) । २ ककडी, फल-विशेष; (पव ४)। ३ हृदय का एक प्रकार का वायु ; (भग १०, ३) ।
कक्कडच्छ पुं [**कर्कटाक्ष**] ककड़ी, खीरा ; (कप्प) ।
कक्कडिया } स्त्री [**कर्कटिका, °टी**] ककडी (खीरा) का गाछ ; (उप ६६१) ।
कक्कडी }
कक्कणा स्त्री [**कल्कना**] १ पाप; २ माया ; (पण्ह १, ३) ।
कक्कर पुं [**कर्कर**] १ कर, पत्थर ; (विपा १, २ ; गउड ; सुपा ५९७ ; प्रासू १६८) । २ कठिन, परुष ; (आचू ४) । ३ कर्कर आवाज वाला; (उत ७) ।
कक्करणया स्त्री [**कर्करणता**] १ दोषोद्भावन; दोषोद्भावन-गर्भित प्रलाप; (ठा ३, ३ —पत्र १४७) ।
कक्कराइय न [**कर्करायित**] १ कर्कर की तरह आचरित । २ दोषोच्चारण, दोष प्रकटन ; (आव ४) ।
कक्कस वि [**कर्कश**] १ कठोर, परुष ; (पाअ ; सुपा ५८ ; आरा ६४ ; पउम ३१, ६६)। २ प्रखर, चण्ड; ३ तीव्र; प्रगाढ ; (विपा १, १) । ४ अनिष्ट, हानि-कारक ; (भग ६, ३३) । ५ निष्ठुर, निर्दय ; (उत्रा) । ६. चबा २ कर कहा हुआ वचन ; (आचा २, ४, १) ।
कक्कस } पुं [**दे**] दध्योदन, करम्ब ; (दे २, १४) ।
कक्कसार }
कक्कसेण पुं [**कर्कसेन**] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक स्वनाम-ख्यात कुलकर पुरुष ; (राज) ।
कक्कालुआ स्त्री [**कर्कारुका**] १ कूष्माण्ड-वल्ली, कोहला का गाछ; " कक्कालुआ गोछडलित्तवेंटा " (मृच्छ ५६) ।
कक्कि पुं [**कल्किन्**] भविष्य में होने वाला पाटलिपुत्र का एक राजा ; (ती) ।
कक्किय न [**कल्किक**] मांस ; (सूत्र १, ११) ।
कक्केअण पुंन [**कर्केतन**] रत्न की एक जाति ; (कप्प; पउम ३, ७५) ।
कक्केरअ पुं [**कर्केरक**] मणि-विशेष की एक जाति ; (मृच्छ २०२) ।
कक्कोड न [**कर्कोट**] शाक-विशेष ; ककरैल, कक्कोडा ; (राज) । देखो **कक्कोडय** ।
कक्कोडई स्त्री [**कर्कोटकी**] ककोडे का वृक्ष, ककरैल का गाछ ; (पण्ण १ —पत्र ३३) ।
कक्कोडय न [**कर्कोटक**] देखो **कक्कोड** । २ पुं. अनुवेलन्धर-नामक एक नाग-राज ; ३ उसका आवास-पर्वत ; (भग ३, ६ ; इक) ।
कक्कोल पुं [**कङ्कोल**] १ वृक्ष-विशेष; शीतलचीनी के वृक्ष का एक भेद ; (गउड; स ७१) । २ न. फल-विशेष, जो सुगंधी होता है ; (पण्ह २, ५) । देखो **कंकोल** ।
कक्ख देखो **कच्छ**=कक्ष ; (उव ; कप्प ; सुर १, ८८ पउम ४४, १ ; पि ३१८ ; ४२०) ।
कक्खड देखो **कक्कस**; (सम ४१ ; ठा १, १ ; वज्ज ८४ ; उव) ।

कक्खड वि [**दे**] पीन, पुष्ट ; (दे २, ११ ; कप्प ; आचा ; भवि)।
कक्खडंगी स्त्री [**दे**] सखी, सहेली ; (दे २, १६)।
कक्खल [**दे**] देखो **कक्कस** ; (षड्)।
कक्खा देखो **कच्छा**=कक्षा ; (पाअ ; णाया १, ८ ; सुर ११, २२१)।
कग्घाड पुं [**दे**] १ अपामार्ग, चिरचिरा, लटजीरा ; २ किलाट, दूध की मलाई ; (दे २, ५४)।
कग्घायल पुं [**दे**] किलाट, दूध का विकार, दूध की मलाई ; (२, २२)।
कच्च न [**दे. कृत्य**] कार्य, काम ; (दे २, २ ; षड्)।
कच्च (पै) देखो **कज्ज** ; (प्राप्र)।
कच्च न [**काच**] काच, शीशा ; "कच्चं माणिक्कं च समं आहरणे पउंजीअदि" (कप्पू)।
कच्चंत वि [**कृत्यमान**] पीडित किया जाता ; (सूअ १, २, १)।
कच्चरा स्त्री [**दे**] १ कचरा, कच्चा खरबूजा ; २ कचरा को सूखाकर, तलकर और मसाला डालकर बनाया हुआ खाद्य विशेष, एक प्रकार का आचार, गुजराती में जिसको 'काचरी' कहते हैं ; "पुणो कच्चरा पप्पड़ा दिएणभेया" (भवि)।
कच्चवार पुं [**दे**] कतवार, कूड़ा ; (सूक्त ४४)।
कच्चाइणी स्त्री [**कात्यायनी**] देवी-विशेष, चण्डी ; (स ४३७)।
कच्चायण पुं [**कात्यायन**] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष ; (सुज्ज १०)। २ न. कौशिक गोत्र की शाखा-रूप एक गोत्र ; ३ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न ; (ठा ७—पत्र ३६०)।
कच्चायणी स्त्री [**कात्यायनी**] पार्वती, गौरी ; (पाअ)।
कच्चि अ [**कच्चित्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ प्रश्न ; २ मंगल ; ३ अभिलाप ; ४ हर्ष ; (पि २७१; हे २, २१७; २१८)।
कच्चु (अप) ऊपर देखो (हे ४, ३२६)।
कच्चूर पुं [**कर्चूर**] वनस्पति-विशेष, कचूर, काली हलदी ; (श्रा २०)।
कच्चोल } पुंन [**कच्चोलक**] पात्र-विशेष, प्याला ;
कच्चोलय } (पउम १०२, १२० ; भवि ; सुपा २०१)।
कच्छ पुं [**कक्ष**] १ काँख, कखरी ; २ वन, जंगल ; (भग ३, ६)। ३ तृण, घास ; ४ शुष्क तृण ; ५ वल्ली, लता ; ६ शुष्क काष्ठों वाला जंगल ; ७ राजा वगैरः का जनानखाना ; ८ हाथी को बाँधने का डोर ; ९ पार्श्व, बाजु ; १० ग्रह-भ्रमण ; ११ कक्षा, श्रेणी ; १२ द्वार, दरवाजा ; १३ वनस्पति-विशेष, गूगल ; १४ विभीतक वृक्ष ; १५ घर की भींत ; १६ स्पर्धा का स्थान ; १७ जल-प्राय देश ; (हे २, १७)।
कच्छ पुं. ब. [**कच्छ**] १ स्वनाम-ख्यात देश, जो आज कल भी 'कच्छ' नाम से प्रसिद्ध है ; (पउम ९८, ६४ ; दे २, १ टी)। २ जलप्राय देश, जल-बहुल देश ; (णाया १, १—पत्र ३३ ; कुमा)। ३ कच्छा ; लँगोट ; (सुर २, १६)। ४ इक्षु वगैरः की वाटिका ; (कुमा ; आचा २, ३)। ५ महाविदेह वर्ष में स्थित एक विजय-प्रदेश ; (ठा २, ३)। ६ तट, किनारा ; "गोलाणईए कच्छे, चक्खंतो राइआइ पत्ताइं" (गा १७१)। ७ नदी के जल से वेष्टित वन ; (भग)। ८ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र ; (आवम)। ९ कच्छ-विजय का एक राजा ; १० कच्छ-विजय का अधिष्ठायक देव ; (जं ४)। ११ पार्श्ववर्ती प्रदेश ; १२ राजा वगैरः के उद्यान के समीप का प्रदेश ; (उप ९८६ टी)। १२ छन्द-विशेष, दोधक छंद का एक भेद ; (पिंग)। °**कूड** न [°**कूट**] १ माल्यवन्त-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर ; २ कच्छ-विजय के विभाजक वैताढय पर्वत के दक्षिणोत्तर पार्श्ववर्ती दो शिखर ; (ठा ९)। ३ चित्रकूट पर्वत का एक शिखर ; (जं ४)। °**हिव** पुं [°**धिप**] कच्छ देश का राजा ; (भवि)। °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] कच्छ देश का राजा ; (भवि)।
कच्छगावई स्त्री [**कच्छकावती**] महाविदेह वर्ष का एक विजय-प्रदेश ; (ठा २, ३)।
कच्छट्टी स्त्री [**दे**] कछौटी, लंगोटी, कछनी ; (रंभा—टि)।
कच्छभ पुं [**कच्छप**] १ कूर्म, कछुआ ; (पण्ह १, १; णाया १, १)। २ राहु, ग्रह-विशेष ; (भग १२, ६)। °**रिंगिय** न [°**रिङ्गित**] गुरु-वन्दन का एक दोष, कछुए की तरह चलते हुए वन्दन करना ; (बृह ३ ; गुभा)।
कच्छभी स्त्री [**कच्छपी**] १ कच्छप-स्त्री, कूर्मी। २ वाद्य-विशेष ; (पण्ह २, ५)। ३ नारद की वीणा ; (णाया १, १७)। ४ पुस्तक-विशेष ; (ठा ४, २)।
कच्छर पुं [**दे**] पङ्क, कीच, कर्दम ; (दे २, २)।
कच्छरी स्त्री [**कच्छरी**] गुच्छ-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३२)।

कच्छव (अप) पुं [**कच्छ**] स्वनाम-प्रसिद्ध देश-विशेष ; (भवि)।

कच्छउ देखो **कच्छभ** ; (पउम ३४, ३३ ; दे १, १६७ ; गउड)।

कच्छवी देखो **कच्छभी** ; (बृह ३)।

कच्छह देखो **कच्छभ** ; (पाअ)।

कच्छा स्त्री [**कक्षा**] १ विभाग, अंश; (पउम १६, ७०)। २ उरो-बन्धन, हाथी के पेट पर बाँधने की रज्जू ; "उप्पीलियकच्छे" (विपा १, २—पत्र २३ ; औप)। ३ काँख, बगल ; (भग ३, ६ ; प्रामा)। ४ श्रेणि, पङ्क्ति; "चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररगणो दुमस्स पायत्ताणियाहिवस्स सत्त कच्छाओ पगणत्ताओ" (ठा ७)। ५ कमर पर बाँधने का वस्त्र ; (गा ६८४)। ६ जनानखाना, अन्तःपुर ; (ठा ७)। ७ संशय-कोटि ; ८ स्पर्धा-स्थान ; ९ घर की भींत; १० प्रकोष्ठ ; (हे २, १७)।

कच्छा स्त्री [**कच्छा**] कटि-मेखला, कमर का आभूषण ; (पाअ)। °**वई** स्त्री [°**वती**] देखो **कच्छगावई** ; (जं ४)। °**वईकूड** न [°**वतीकूट**] महाविदेह वर्ष में स्थित ब्रह्मकूट पर्वत का एक शिखर ; (इक)।

कच्छु स्त्री [**कच्छू**] १ खुजली, खाज, रोग-विशेष; (प्रासू २८)। २ खाज को उत्पन्न करने वाली ओषधि, कपिकच्छु; (पगह २, ५)। °**ल**, °**ल्ल** वि [°**मत्**] खाज रोग वाला; (राज ; विपा १, ७)।

कच्छुट्टिया स्त्री [**दे. कच्छपटिका**] कछौटी, लंगोटी ; (रंभा)।

कच्छुरिअ वि [**दे**] १ ईर्षित, जिसकी ईर्ष्या की जाय वह; २ न. ईर्ष्या ; (दे २, १६)।

कच्छुरिअ वि [**कच्छुरित**] व्याप्त, खचित ; (कुम्मा ६ टी)।

कच्छुरी स्त्री [**दे**] कपिकच्छु, केवाँच ; (दे २, ११)।

कच्छुल पुं [**कच्छुल**] गुल्म-विशेष ; (पगण १—पत्र ३२)।

कच्छुल्ल पुं [**कच्छुल्ल**] स्वनाम-ख्यात एक नारद-मुनि ; (णाया १, १६)।

कच्छू देखो **कच्छु** ; (प्रासू ७२)।

कच्छोटी स्त्री [**दे**] कछौटी, लंगोटी ; (रंभा—टि)।

कज्ज वि [**कार्य**] १ जो किया जाय वह ; २ करने योग्य; ३ जो किया जा सके ; (हे २, २४)। ४ प्रयोजन, उद्देश्य ; "न य साहेइ सकज्जं" (प्रासू २७ ; कप्पू)। ५ कारण, हेतु ; (वव २)। ६ काम, काज ;

"अन्नह परिचिंतिज्जइ, सहरिसकंडुज्जएण हियएण।
परिणमइ अन्नह च्चिय, कज्जारंभो विहिवसेण"
(सुर ४, १६)।

°**जाण** वि [°**ज्ञ**] कार्य को जानने वाला ; (उप ६४८)। °**सेण** पुं [°**सेन**] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न स्वनाम-ख्यात एक कुलकर-पुरुष ; (सम १५०)।

कज्जउड पुं [**दे**] अनर्थ ; (दे २, १७)।

कज्जमाण वि [**क्रियमाण**] जो किया जाता हो वह; "कज्जं च कज्जमाणं च आगमिस्सं च पावगं" (सूअ १, ८)।

कज्जल न [**कज्जल**] १ काजल, मसी; २ अञ्जन, सुरमा; (कुमा)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] सुदर्शना-नामक जम्बू-वृक्ष की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी; (जीव ३)।

कज्जलइअ वि [**कज्जलित**] १ काजल वाला; २ श्याम, कृष्ण; (पाअ)।

कज्जलंगी स्त्री [**कज्जलाङ्गी**] कज्जल-गृह, दीप के ऊपर रखा जाता पात्र, जिसमें काजल इकट्ठा होता है, कजरौटी ; (अंत; णाया १ १—पत्र ६)।

कज्जला स्त्री [**कज्जला**] इस नाम की एक पुष्करिणी; (इक)।

कज्जलाव अक [**ब्रुड्**] डूबना, बूडना। "आउसंतो समणा ! एयं ते णावाए उदयं उत्तिंगेण आसवइ, उवरुवरि वा णावा कज्जलावेइ" (आचा २, ३, १, १६)। वकृ—**कज्जलावेमाण** ; (आचा २, ३, १, १६)।

कज्जलिअ देखो **कज्जलइअ** ; (से २, ३६ ; गउड)।

कज्जव } पुं [**दे**] १ विष्ठा, मैला ; २ तृण वगैरः का
कज्जवय } समूह, कूडा, कतवार; (दे २, ११ ; उप १७६; ५६३ ; स २६४ ; दे ६, ५६; अणु)।

कज्जिय वि [**कार्यिक**] कार्यार्थी, प्रयोजनार्थी ; (वव ३)।

कज्जोवग पुं [**कार्योपग**] अठासी महाग्रहों में एक ग्रह का नाम ; (ठा २, ३—पत्र ७८)।

कज्झाल न [**दे**] सेवाल, एक प्रकार की घास, जो जलाशयों में लगती है ; (दे २, ८)।

कटरि (अप) अ [**कटरे**] इन अर्थों का द्योतक अव्यय;— १ आश्चर्य, विस्मय ; "कटरि थणंतरु मुद्धडहे, जे मणु विच्चिन माइ" (हे ४, ३५०)। २ प्रशंसा, श्लाघा ;

" कटरि भालु सुविसालु, कटरि मुहकमल पसन्निम " (धम्म ११ टी)।

कटार (अप) न [**दे**] छुरी, चुरिका ; (हे ४, ४४५)।

कट्ट सक [**कृत्**] काटना, छेदना। कट्टइ; (भवि)। संकृ—**कट्टि, कट्टिवि, कट्टिअ** ; (रंभा ; भवि ; पिंग)।

कट्ट वि [**कृत्त**] काटा हुआ, छिन्न ; (उप १८०)।

कट्ट न [**कष्ट**] १ दुःख ; २ वि. कष्ट-कारक, कष्ट-दायी ; (पिंग)।

कट्टर न [**दे**] खण्ड, अंश, टुकड़ा ; " से जहा चित्तय-कट्टरे इ वा वियाणपट्टे इ वा " (अनु)।

कट्टारय न [**दे**] छुरी, शस्त्र-विशेष ; (स १४३)।

कट्टारी स्त्री [**दे**] चुरिका, छुरी ; (दे २, ४)।

कट्टिअ वि [**कर्त्तित**] काटा हुआ, छेदित ; (पिंग)।

कट्टु वि [**कर्तृ**] कर्ता, करने वाला ; (षड्)।

कट्टु अ [**कृत्वा**] करके ; (णाया १, ५ ; कप्प ; भग)।

कट्टोरग पुं [**दे**] कटोरा, प्याला, पात्र-विशेष ; " तओ पासेहिं करोडगा कट्टोरगा मंकुआ सिप्पाओ य ठविज्जंति " (निचू १)।

कट्ठ न [**कष्ट**] १ दुःख, पीड़ा, व्यथा ; (कुमा)। २ पाप ; ३ वि. कष्ट-दायक, पीड़ा-कारक ; (हे २, ३४ ; ९०)। °**हर** न [°**गृह**] कठघरा, काठ की बनी हुई चार-दिवारी ; (सुर २, १८१)।

कट्ठ न [**काष्ठ**] काठ, लकडी ; (कुमा; सुपा ३५४)। २ पुं राजगृह नगर का निवासी एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी। (आवम)। °**कम्मंत** न [°**कर्मान्त**] लकड़ी का कार-खाना ; (आचा २, २)। °**करण** न [°**करण**] श्यामक-नामक गृहस्थ के एक खेत का नाम; (कप्प)। °**कार** पुं [°**कार**] काठ-कर्म से जीविका चलाने वाला; (अणु)। °**कोलंब** पुं [°**कोलम्ब**] वृक्ष की शाखा के नीचे झुकता हुआ अग्र-भाग ; (अनु)। °**खाय** पुं [°**खाद**] कीट-विशेष, घुण ; (ठा ४)। °**दल** न [°**दल**] रहर की दाल ; (राज)। °**पाउया** स्त्री [°**पादुका**] काठ का जुता, खडाऊँ ; (अनु ४)। °**पुत्तलिया** स्त्री [°**पुत्तलिका**] कठपुतली ; (अणु)। °**पेज्जा** स्त्री [°**पेया**] १ मुंग वगैरः का क्वाथ ; २ घृत से तली हुई तण्डुल की राब ; (उवा)। °**महु** न [°**मधु**] पुष्प-मकरन्द ; (कुमा)। °**मूल** न [°**मूल**] द्विदल धान्य, जिसका दो टुकड़ा समान होता है ऐसा चना, मुंग आदि अन्न ; (वृह १)। °**हार** पुं [°**हार**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, चुद्र कीट-विशेष ; (जीव १)। °**हारय** पुं [°**हारक**] कठहरा, लकड़हारा ; (सुपा ३८५)।

कट्ठ वि [**कृष्ट**] विलिखित, चासा हुआ ; " खीरदुमहेट्ठपंथ-कट्ठोल्ला इंधणे य मीसो य " (ओघ ३३९)।

कट्ठण न [**कर्षण**] आकर्षण, खींचाव ; (गउड)।

कट्ठा स्त्री [**काष्ठा**] १ दिशा ; (सम ८८)। २ हद, सीमा ; " कवडस्स अहो परा कट्ठा " (श्रा १६)। ३ काल का एक परिमाण, अठारह निमेष ; (तंदु)। ४ प्रकर्ष ; (सुज्ज ९)।

कट्ठिअ पुं [**दे**] चपरासी, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कट्ठिअ वि [**काष्ठित**] काठ से संस्कृत भीत वगैरः; (आचा २, २)।

कट्ठिण देखो **कढिण** ; (नाट—मालती ५९)।

कड वि [**दे**] १ चीण, दुर्बल ; २ मृत, विनष्ट ; (दे २, ५१)।

कड वि [**कट**] १ गण्ड-स्थल, गाल ; (णाया १, १—पत्र ६५)। २ तृण, घास ; ३ चटाई, आस्तरण-विशेष ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। ४ लकडी, यष्टि ; " तेसिं च जुद्धं लयालिट्ठुकडपासाणदंतनिवाएहिं " (वसु)। ५ वंश, बाँस; (विपा १, ६; ठा ४, ४)। ६ तृण-विशेष ; (ठा ४, ४)। ७ छिला हुआ काष्ट ; (आचा २, २, १)। °**च्छेज्ज** न [°**च्छेद्य**] कला-विशेष ; (औप ; जं २)। °**तड** न [°**तट**] १ कटक का एक भाग; २ गण्ड-तल ; (णाया १, १)। °**पूयणा** स्त्री [°**पूतना**] व्यन्तरी-विशेष ; (विसे २५४९)।

कड वि [**कृत**] १ किया हुआ, बनाया हुआ, रचित ; (भग ; पण्ह २, ४ ; विपा १, १ ; कप्प ; सुपा २६)। २ युग-विशेष, सत्ययुग ; (ठा ४, ३)। ३ चार की संख्या; (सुअ १, २)। °**जुग** न [°**युग**] सत्य युग, उन्नति का समय, आदि युग, १७२८००० वर्षों का यह युग होता है; (ठा ४, ३)। °**जुम्म** पुं [°**युग्म**] सम राशि-विशेष, चार से भाग देने पर जिसमें कुछ भी शेष न बचे ऐसी राशि ; (ठा ४, ३)। °**जुम्मकडजुम्म** पुं [°**युग्म-कृतयुग्म**] राशि-विशेष ; (भग ३४, १)। °**जुम्मक-**

°लिओय [°युग्मकल्योज] राशि-विशेष; (भग ३४, १)। °जुम्मतेओग पुं [°युग्मत्र्योज] राशि-विशेष ; (भग ३४, १)। °जुम्मदावरजुम्म पुं [°जुग्मद्वापरयुग्म] राशि-विशेष ; (भग ३४, १) °जोगि त्रि [°योगिन्] १ कृत-क्रिय; (निचू १)। २ गीतार्थ, ज्ञानी ; (ओघ १३४ भा)। ३ तपस्वी ; (निचू १)। °वाइ पुं [°वादिन्] सृष्टि को नैसर्गिक न मान कर किसी की बनाई हुई मानने वाला, जगत्कर्तृत्व-वादी ; (सूअ १, १, १)। °इ पुं [°दि] देखो °जोगि; (भग ; णाया १, १—पत्र ७४)। देखो कय=कृत।

कडअल्ल पुं [दे] दौवारिक, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कडअल्ली स्त्री [दे] कण्ठ, गला ; (दे २, १५)।

कडइअ पुं [दे] स्थपति, बढई ; (दे २, २२)।

कडइअ वि [कटकित] वलय की तरह स्थित ; (से १२, ४१)।

कडइल्ल पुं [दे] दौवारिक, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कडंगर न [कडङ्गर] तुष, छिलका ; (सुपा १२६)।

कडंत न [दे] मूली, कन्द-विशेष ; २ मुसल ; (दे २, ५६)।

कडंतर न [दे] पुराना सूर्प आदि उपकरण ; (दे २, १६)।

कडंतरिअ वि [दे] दारित, विदारित, विनाशित; (दे २,२०)।

कडंब पुं [कडम्ब] वाद्य-विशेष ; (विसे ७८ टी)।

कडंभुअ न [दे] १ कुम्भग्रीव-नामक पात्र-विशेष; २ घडे का कण्ठ-भाग ; (दे २, २०)।

कडक देखो **कडग** ; (नाट—रत्ना ५८)।

कडकडा स्त्री [कडकडा] अनुकरण-शब्द विशेष, कड-कड आवाज; (स २५७ ; पि ५५८; नाट—मालती ५६)।

कडकडिअ वि [कडकडित] जिसने कड़-कड़ आवाज किया हो वह, जीर्ण ; (सुर ३, १६३)।

कडकडिर वि [कडकडायितृ] कड-कड आवाज करने वाला ; (सण)।

कडक्ख पुं [कटाक्ष] कटाक्ष, तिरछी चितवन, भाव-युक्त दृष्टि, आँख का संकेत ; (पात्र ; सुर १,४३; सुपा ६)।

कडक्ख सक [कटाक्षय्] कटाक्ष करना। कडक्खइ ; (भवि)। संकृ—**कडक्खेवि** ; (भवि)।

कडक्खण न [कटाक्षण] कटाक्ष करना ; (भवि)।

कडक्खिअ वि [कटाक्षित] १ जिस पर कटाक्ष किया गया हो वह ; (रंभा)। २ न. कटाक्ष ; (भवि)।

कडग पुंन [कटक] १ कडा, वलय, हाथ का आभूषण-विशेष ; (णाया १, १)। २ यवनिका, परदा ; "अन्नस्स सग्गगमणं होही कडंतरेण तं सव्वं। निसुयमुवज्भाएणं" (उप १६६ टी)। ३ पर्वत का मूल भाग ; ४ पर्वत का मध्य भाग ; ५ पर्वत की सम भूमि; ६ पर्वत का एक भाग ; "गिरिकंदरकडगविसमदुग्गेसु" (पच्च ८२ ; पण्ह १, ३ ; णाया १, ४ ; १८)। ७ शिबिर, सेना रहने का स्थान; (बृह २)। ८ पुं. देश-विशेष; (णाया १, १—पत्र ३३)। देखो **कडय**।

कडच्छु स्त्री [दे] कर्छी, चमची, डोई ; (दे २, ७)।

कडण न [कदन] १ मार डालना, हिंसा ; (कुमा)। २ नाश करना ; ३ मर्दन ; ४ पाप ; ५ युद्ध ; ६ विह्वलता, आकुलता ; (हे १, २१७)।

कडण न [कटन] १ घर की छत ; २ घर पर छत डालना; (गच्छ १) ।

कडणा स्त्री [कटना] घर का अवयव-विशेष ; (भग ८, ६)।

कडणी स्त्री [कटनी] मेखला ; "सुरगिरिकडणिपरिट्ठिय-चंदाइच्चाण सिरिमणुहरंति" (सुपा ६१५)।

कडतला स्त्री [दे] लोहे का एक प्रकार का हथियार, जो एक धार वाला और वक्र होता है ; (दे २, १९)।

कडत्तरिअ [दे] देखो **कडंतरिअ** ; (भवि)।

कडद्दरिअ वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ ; २ न. छिद्रता ; (षड्)।

कडप्प पुं [दे. कटप्र] १ समूह, निकर, कलाप ; (दे २, १३ ; षड् ; गउड ; सुपा ६२ ; भवि ; विक्र ६५)। २ वस्त्र का एक भाग ; (दे २, १३)।

कडय देखो **कडग**; (सुर १, १६३; पात्र ; गउड; महा; सुपा १६२ ; दे ५, ३३)। ९ लश्कर, सैन्य ; (ठा ९)। १० पुं. काशी देश का एक राजा; (महा)। °**वई** स्त्री [°वती] राजा कटक की एक कन्या ; (महा)।

कडयड पुं [कडकड] कड़-कड़ आवाज; "कत्थइ खरपवहाणयकडम (? य) डभज्जंतदुमगहणं" (पउम ९४, ४४)।

कडयडिय वि [दे] परावर्तित, फिराया हुआ, घुमाया हुआ; "नं कुम्मह कडयडिय पिट्ठि नं पविहउ गिरिवरु" (सुपा १७६)।

कडसक्करा स्त्री [दे] वंश-शलाका, बाँस की सलाई; (विपा १, ६)।

कडसी स्त्री [दे] श्मशान, मसाण ; (दे २, ६)।

कडहू पुं [**कटभू**] वृक्ष-विशेष ; (बृह १)।

कडा स्त्री [दे] कडी, सिकली, जंजीर की लडी ; "वियडक-वाडकडाणं खडक्खग्रो निसुणिग्रो तत्तो" (सुपा ४१४)।

कडार न [दे] नालिकेर, नरियर ; (दे २, १०)।

कडार पुं [**कडार**] १ वर्ण-विशेष, तामड़ा वर्ण, भूरा रंग ; २ वि. कपिल वर्ण वाला, भूरा रंग का, मटमैला रंग का ; (पाग्र ; रयण ७७ ; सुपा ३३; ६२)।

कडाली स्त्री [दे. **कटालिका**] घोड़े के मुँह पर बाँधने का एक उपकरण ; (अनु ६)।

कडाह पुं [**कटाह**] १ कडाह, लोहे का पात्र, लोहे की बड़ी कड़ाही ; (अनु ६ ; नाट—मृच्छ ३)। २ वृक्ष-विशेष ; (पउम १३, ७६)। ३ पाँजर की हड्डी, शरीर का एक अवयव ; (पराण १)।

कडाहपल्हत्थिअ न [दे] दोनों पार्श्वों का अपवर्तन, पार्श्वों को घुमाना-फिराना ; (दे २, २५)।

कडि स्त्री [**कटि**] १ कमर, कटी ; (विपा १, २ ; अनु ६)। २ वृक्षादि का मध्य भाग ; (जं १)। °**तड** न [°**तट**] १ कटी-तल ; २ मध्य भाग ; (राय)। °**पट्टय** न [°**पट्टक**] धोती, वस्त्र-विदेश ; (बृह ४)। °**पत्त** न [°**पत्र**] १ सर्गादि वृक्ष की पत्ती; २ पतली कमर; (अनु ५)। °**यल** न [°**तल**] कटी-प्रदेश ; (भवि)। °**ल्ल** वि [°**टीय**] देखो **कडिल्ल** (दे) का २ रा अर्थ। °**वट्टी** स्त्री [°**पट्टी**] कमर का पट्टा, कमर-पट्टा ; (सुपा ३३१)। °**वत्थ** न [°**वस्त्र**] धोती, कमर में पहनने का कपड़ा; (दे २, १७)। °**सुत्त** न [°**सूत्र**] कमर का आभूषण, मेखला; (सम १५३ ; कप्पू)। °**हत्थ** पुं [°**हस्त**] कमर पर रखा हुआ हाथ ; (दे २, १७)।

कडिअ वि [**कटित**] १ कट—चटाई से आच्छादित ; (कप्प)। २ कट से संस्कृत ; (आचा २, २, १)। ३ एक दूसरे में मिला हुआ ; "घणकडियकडिच्छाए" (औप)।

कडिअ वि [दे] प्रीणित, खुश किया हुआ; (षड्)।

कडिखंभ पुं [दे] १ कमर पर रक्खा हुआ हाथ ; (पाग्र; दे २, १७)। २ कमर में किया हुआ आघात ; (दे २, १७)।

कडित्त देखो **कलित्त**; (णाया १, १ टी—पत्र ६)।

कडिभिल्ल न [दे] शरीर के एक भाग में होने वाला कुष्ठ-विशेष ; (बृह ३)।

कडिल्ल वि [दे] १ छिद्र-रहित; निश्छिद्र ; (दे २, ५२ ; षड्)। २ न. कटी-वस्त्र, कमर में पहनने का वस्त्र, धोती वगैरः ; (दे २, ५२ ; पाग्र ; षड् ; सुपा १५२ ; कप्पू ; भवि ; विसे २६००)। ३ वन, जंगल, अटवी ;

"संसारभवकडिल्ले, संजोगवियोगसोगतरुगहणे ।
कुपहपणट्ठाण तुमं, सत्थाहो नाह ! उप्पन्नो ॥"

(पउम २, ४५ ; वव २; दे २, ५२)। ४ गहन, निबिड, सान्द्र ; " भिल्लिभिल्लायइकडिल्लं " (उप १०३१ टी ; दे २, ५२; षड्)। ५ आशीर्वाद, आसीस; ६ पुं. दौवारिक, प्रतीहार ; ७ विपक्ष, शत्रु, दुश्मन ; (दे २, ५२ ; षड्)। ८ कटाह, लोहे का बडा पात्र ; (ओघ ६२)। ९ उपकरण-विशेष ; (दस ६)।

कडी देखो **कडि** ; (सुपा २२९)।

कडु / **कडुअ** पुं [**कटुक**] १ कडुआ, तिक्त, रस-विशेष ; (ठा १)। २ वि. तित्ता, तिक्त रस वाला; (से १,६१; कुमा)। ३ अनिष्ट ; (पगह २, ५)। ४ दारुण, भयंकर ; (पगह १, १)। ५ परुष, निष्ठुर ; (नाट—रत्ना ६६)। ६ स्त्री. वनस्पति-विशेष, कुटकी ; (हे २, १५५)।

कडुअ (शौ) अ [**कृत्वा**] करके ; (हे २, २७२)।

कडुआल पुं [दे] घण्टा, घण्ट ; (दे २, ५७)। २ छोटी मछली ; (दे २, ५७ ; पाग्र)।

कडुइय वि [**कटुकित**] १ कडुआ किया हुआ। २ दूषित ; (गउड)।

कडुइया स्त्री [**कटुकी**] वल्ली-विशेष, कुटकी; (पराण १)।

कडुच्छय / **कडुच्छु** / **कडुच्छुय** पुंस्त्री (दे) देखो **कडच्छु** ; " धूवकडुच्छय-हत्था " (सुपा ५१; पाग्र ; निर ३, १ ; धम्म

कडुयाविय वि [दे] १ प्रहत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह ; (उप पृ ६५)। २ व्यथित, पोडित, " सा य (चोरधाडी) कुमारपहारकडुयाविया भग्गा परम्मुहा कया " (महा)। ३ हराया हुआ, पराभूत ; ४ भारी विपद् में फँसा हुआ ; (भवि)।

कडुइद (शौ) वि [**कटूकृत**] कटुक किया हुआ ; (नाट)।

कडेवर न [**कलेवर**] शरीर, देह ; (राय ; हे ४, ३६५)।

कड्ढ सक [**कृष्**] १ खींचना। २ चास करना। ३ रेखा करना। ४ पढ़ना। ५ उच्चारण करना। कड्ढइ; (हे ४, १८७)। वकृ—**कड्ढंत, कड्ढमाण**; (गा ६८७; महा)। कवकृ—**कड्ढिज्जंत, कड्ढिज्जमाण**; (से ५, २६; ६, ३६; पगह १, ३)। संकृ—**कड्ढिऊण, कड्ढेउं, कड्ढित्तु कड्ढिय**; (महा), "कड्ढेतु नमोक्कारं" (पंचव), **कड्ढिउं**; (पि ५७७)। कृ—**कड्ढेयव्व**; (सुपा २३६)।

कड्ढ पुं [**कर्ष**] खींचाव, आकर्षण; (उत्त १६)।

कड्ढण न [**कर्षण**] १ खींचाव, आकर्षण; (सुपा २६१)। २ वि. खींचने वाला, आकर्षक; (उप पृ २७७)।

कड्ढणया स्त्री [**कर्षणता**] आकर्षण; (उप पृ २७७)।

कड्ढाविय वि [**कर्षित**] खींचवाया हुआ, बाहर निकलवाया हुआ; (भवि)।

कड्ढिय वि [**कृष्ट**] १ आकृष्ट, खींचा हुआ; (पगह १,३)। २ पठित, उच्चारित; (स १८२)।

कड्ढोकड्ढ न [**कर्षापकर्ष**] खींचातान; (उत्त १६)।

कढ सक [**कथ्**] १ क्वाथ करना। २ उबालना। ३ तपाना, गरम करना। कढइ; (हे ४, २२०)। वकृ—**कढमाण**; (पि २२१)। कवकृ—"राया जंपइ एयं सिंचह रे रे **कढंत**तिल्लेण" (सुपा १२०), **कढीअमाण**; (पि २२१)।

कढकढकढेंत वि [**कडकडायमान**] कड़-कड़ आवाज करता; (पउम २१, ५०)।

कढिअ वि [**क्वथित**] १ उबाला हुआ; २ खूब गरम किया हुआ; "कढिओ खलु निंबरसो अइकडुओ एव जाएइ" (श्रा २७; ओघ १४७; सुपा ४६६)।

कढिआ स्त्री [**दे**] कढ़ी, भोजन-विशेष; (दे २, ६७)।

कढिण } वि [**कठिन**] १ कठिन, कर्कश, कठोर, परुष; **कढिणग** } (पगह १, ३; पाअ)। २ न. तृण-विशेष; (आचा २, २, ३)। ३ पर्ण, पत्ती; (पगह २, ५)।

कढोर वि [**कठोर**] १ कठिन, परुष, निष्ठुर। २ पुं. इस नाम का एक राजा; (पउम ३२, २३)।

कण सक [**क्वण्**] शब्द करना, आवाज करना। कणइ; (हे ४, २३६)। वकृ—**कणंत**; (सुर १०, २१८; वज्जा ६६)।

कण सक [**कण्**] आवाज करना। कणइ; (हे ४, २३६)।

कण पुं [**कण**] १ कणा, लेश; "गुणकणमवि परिकहिउं न सक्कइ" (सार्ध ७६)। २ विकीर्ण दाना; (कुमा)। ३ वनस्पति-विशेष; (पगण १)। ४ पुं. एक म्लेच्छ देश; (राज)। ५ ग्रह विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७७)। ६ तगडुल, ओदन; (उत्त १२)। ७ कनिक; (आचा २, १)। ८ बिंदु; "बिंदुइअं कणइअ" (पाअ)। °**इअ** वि [°**वत्**] बिन्दु वाला; (पाअ)। °**कुंडग** पुं [°**कुण्डक**] ओदन को बनी हुई एक भक्ष्य वस्तु; "कणकुंडगं चइत्ताणं विट्ठं भुंजइ सूयरो" (उत्त १२)। °**पूपलिया** स्त्री [°**पूपलिका**] भाजन-विशेष, कणिक की बनाई हुई एक खाद्य वस्तु; (आचा २, १)। °**भक्ख** पुं [°**भक्ष**] वैशेषिक मत का प्रवर्तक एक ऋषि; (राज)। °**वित्ति** स्त्री [°**वृत्ति**] भिक्षा, भीख; (सुपा २३४)। °**वियाणग** पुं [°**वितानक**] देखो **कणग-वियाणग**; (सुज्ज २०; इक)। °**संताणय** पुं [°**संतानक**] देखो **कणग-संताणय**; (इक)। °**ाद** पुं [°**ाद**] वैशेषिक मत का पवर्तक ऋषि; (विसे २१६४)। °**ायण्ण** वि [°**ाकीर्ण**] बिन्दु वाला; (पाअ)।

कण पुं [**क्वण**] शब्द, आवाज; (उप पृ १०३)।

कणइकेउ पुं [**कनकिकेतु**] इस नाम का एक राजा; (दंस)।

कणइपुर न [**कनकिपुर**] नगर-विशेष; जो महाराज जनक के भाई कनक की राजधानी थी; (ती)।

कणइर पुं [**कर्णिकार**] कणेर, वनस्पति-विशेष; (पगण १—पत्र ३२)।

कणइल्ल पुं [**दे**] शुक, तोता; (दे २, २१; षड्; पाअ)।

कणई स्त्री [**दे**] लता, वल्ली; (दे २, ५; षड्; स ४१६; पाअ)।

कणंगर न [**कनङ्गर**] पाषाण का एक प्रकार का हथियार; (विपा १, ६)।

कणकण पुं [**कणकण**] कण-कण आवाज; (आवम)।

कणकणकण अक [**दे**] कण कण आवाज करना। कणकणकणंति; (पउम २६, ५३)। वकृ—**कणकणकणंत**; (पउम ५३, ८६)।

कणकणग पुं [**कनकनक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३)।

कणक्कणिअ वि [**क्वणक्वणित**] कण-कण आवाज वाला; (कप्पू)।

कणग देखो **कण** ; (कप्प) ।

कणग (**दे**) देखो **कणय**= (दे) ; (पराह १, २) ।

कणग पुं [**कनक**] १ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७७) । २ रेखा-सहित ज्योतिः-पिण्ड, जो आकाश से गिरता है ; (ओघ ३१० भा; जी ६)। ३ बिन्दु ; ४ शलाका, सलाई ; (राज) । ५ घृतवर द्वीप का अधिपति देव ; (सुज्ज १६) । ६ बिल्व वृक्ष, बेल का पेड़ ; (उत्तर) । ७ न. सुवर्ण, सोना ; (सं ६४ ; जी ३) । °**कंत** वि [°**कान्त**] १ कनक की तरह चमकता ; (आचा २, ५, १) । २ पुं. देव-विशेष ; (दीव) । °**कूड** न [°**कूट**] १ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (जं ४) । २ पुं. स्वर्ण-मय शिखर वाला पर्वत ; (जीव ३) । °**केउ** पुं [°**केतु**] इस नाम का एक राजा ; (गाया १, १४)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] १ मेरु पर्वत; २ स्वर्ण-प्रचुर पर्वत ; (औप) । °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] इस नाम का एक राजा ; (पंचा ५) । °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (विपा २, ६) । °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] देव-विशेष ; (सुज्ज १६) । °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] १ देवी-विशेष; २ 'ज्ञाताधर्मसूत्र' का एक अध्ययन ; (गाया २, १) । °**फुल्लिअ** न [**पुष्पित**] जिसमें सोने के फूल लगाए गये हों ऐसा वस्त्र ; (निचू ७) । °**माला** स्त्री [°**माला**] १ एक विद्याधर की पुत्री ; (उत ६) । २ एक स्वनाम-ख्यात साध्वी ; (सुर १५, ६७) । °**रह** पुं [°**रथ**] इस नाम का एक राजा; (ठा ७ ; १०) । °**लया** स्त्री [°**लता**] चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल-देव की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १—पत्र २०४)। °**वियाणग** पुं [°**वितानक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २. ३—पत्र ७७)। °**संताणग** पुं [°**संतानक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७७) । °**ावलि** स्त्री [°**ावलि**] १ सुवर्ण का एक आभूषण, सुवर्ण के मणिओं से बना आभूषण ; (अंत २७)। २ तप विशेष, एक प्रकार की तपश्चर्या ; (औप) । ३ पुं. द्वीप-विशेष ; ४ समुद्र विशेष; (जीव ३)। °**ावलिपविभत्ति** स्त्री [°**ावलि-प्रविभक्ति**] नाट्य का एक प्रकार ; (राय)। °**ावलिभद्द** पुं [°**ावलिभद्र**] कनकावलि द्वीप का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३) । °**ावलिमहाभद्द** पुं [°**ावलिमहाभद्र**] कनकावलिवर-नामक समुद्र का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। °**ावलिमहावर** पुं [°**ावलिमहावर**] कनकावलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**ावलिवर** पुं [°**ावलिवर**] १ इस नाम का एक द्वीप ; २ इस नाम का एक समुद्र ; ३ कनकवलिवर समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष ; (जीव ३) । °**ावलिवरभद्द** पुं [°**ावलिवरभद्र**] कनकावलिवर द्वीप का एक अधिपति देव; (जीव ३)। °**ावलिवरमहाभद्द** पुं [°**ावलिवरमहाभद्र**] कनकावलिवर-नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °**ावलिवरोभास** पुं [°**ावलिवरावभास**] १ इस नाम का एक द्वीप; २ इस नाम का एक समुद्र ; (जीव ३) । °**ावलिवरोभासभद्द** पुं [°**ावलिवरावभासभद्र**] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**ावलिवरोभासमहाभद्द** पुं [°**ावलिवरावभासमहाभद्र**] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३) । °**ावलिवरोभासमहावर** पुं [°**ावलिवरावभासमहावर**] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**ावलिवरोभासवर** पुं [°**ावलिवरावभासवर**] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**ावली** स्त्री [°**ावली**] देखो °**ावलि** का १ला और २रा अर्थ ; (पव २७१) । देखो **कणय**=कनक ।

कणगा स्त्री [**कनका**] १ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, २—पत्र ७७) । २ चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, २)। ३ 'णायाधम्मकहा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाया २, १)। ४ क्षुद्र जन्तु-विशेष की एक जाति, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष ; (जीव १) ।

कणगुत्तम पुं [**कनकोत्तम**] इस नाम का एक देव ; (दीव) ।

कणय पुं [**दे**] १ फूलों को इकट्ठा करना, अवचय; २ बाण, शर ; "असिखेडयकणयतोमर—" (पउम ८, ८८ ; पराह १, १ ; दे २, ५६ ; पाअ) ।

कणय देखो **कणग**=कनक; (ओघ ३१० भा ; प्रासू १५६; हे १, २२८ ; उव ; पाअ ; महा; कुमा) । ८ पुं. राजा जनक के एक भाई का नाम ; (पउम २८, १३२) । ६ रावण का इस नाम का एक सुभट ;

(पउम ५६, ३२)। १० धतूरा, वृक्ष-विशेष ; (से ६, ४८)। ११ वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३३)। १२ न. छन्द-विशेष ; (पिंग)। °पव्वय पुं [°पर्वत] देखो **कणग-गिरि** ; (सुपा ४३)। °मय वि [°मय] सुवर्ण का बना हुआ ; (सुपा २०)। °भ न [°भ] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। °ली स्त्री [°ली] घर का एक भाग; (णाया १, १—पत्र १२)। °वली स्त्री [°वली] देखो **कणगावली**। ३ एक राज-पत्नी ; (पउम ७, ४५)।

कणयंदी स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, पाउरी, पाढल; (दे २, ५८)।

कणवीर पुं [**करवीर**] १ वृक्ष-विशेष, कनेर ; (हे १, २५३ ; सुपा १५१)। २ न. कणेर का फूल ; (पण्ह १, ३)।

कणि पुंस्त्री [दे] स्फुरण , स्फूर्ति, " कणी फुरणं " (पाअ)।

कणिआर देखो **कण्णिआर** ; (कुमा ; प्राप्र ; हे २, ६५)।

कणिआरिअ वि [दे] १ कानी आँख से जो देखा गया हो वह ; २ न. कानी नजर से देखना ; (दे २, २४)।

कणिका स्त्री [**कणिका**] कनेक, रोटी के लिए पानी से भिजाया हुआ आटा ; (दे १, ३७)।

कणिक्क वि [**कणिक्क**] मत्स्य-विशेष ; (जीव १)।

कणिक्का देखो **कणिका**; (श्रा १४)।

कणिट्ठ वि [**कनिष्ठ**] १ छोटा, लघु ; (पउम १५, १२ ; हे २, १७२)। २ निकृष्ट, जघन्य ; (रंभा)।

कणिय न [**कणित**] १ आर्त-स्वर ; २ आवाज, ध्वनि ; (आव ४)।

कणिय° } देखो **कणिका** ; (कप्प)। २ कणिका, चावल
कणिया } का टुकड़ा ; (आचा २, १, ८)। °कुंडय देखो **कण-कुंडग** ; (स ४८७)।

कणिया स्त्री [**क्वणिता**] वीणा-विशेष ; (जीव ३)।

कणिर वि [**कणितृ**] आवाज करने वाला ; (उप पृ १०३; पाअ)।

कणिल्ल न [**कनिल्य**] नक्षत्र-विशेष का गोल ; (इक)।

कणिस न [**कणिश**] सस्य-शीर्षक, धान्य का अग्र-भाग ; (दे २, ६)।

कणिस न [दे] किंशारु, सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग ; (दे २, ६ ; भवि)।

कणीअ } वि [**कनीयस्**] छोटा, लघु ; " तस्स भाया
कणीअस } कणीयसो पहू नामं " (वसु ; वेणी १७६ ; कप्प ; अंत १४)।

कणीणिगा स्त्री [**कनीनिका**] १ आँख की तारा ; २ छोटी उंगली ; (राज)।

कणुय न [**कणुक**] त्वग् वगैरः का अवयव; (आचा २,१,८)।

कणूया देखो **कणिया** = कणिका ; (कस)।

कणेड्डिआ स्त्री [दे] गुञ्जा, घुङ्गची ; (दे २, २१)।

कणेर देखो **कण्णिआर** ; (हे १, १६८ ; षड् २५८)।

कणेरु } स्त्री [**करेणु**] हस्तिनी, हाथिन ; (हे २,
कणेरुया } ११६ ; कुमा ; णाया १, १—पत्र ६४)।

कणोवअ न [दे] गरम किया हुआ जल, तेल वगैरः ; (दे २, १६)।

कण्ण पुं [**कन्या**] राशि-विशेष, कन्या-राशि ; " बुहो य कण्णम्मि वट्टए उच्चो " (पउम १७, ८१)।

कण्ण पुं [**कण्व**] इस नामका एक परिव्राजक, ऋषि विशेष ; (औप ; अभि २६२)।

कण्ण पुंन [**कर्ण**] १ कान , श्रवण , श्रोत्र ; " कण्णाइं " (वि ३५८ ; प्रासू २)। २ अङ्ग देश का इस नाम का एक राजा , युधिष्ठिर का बड़ा भाई ; (णाया १, १६) °उर, °ऊर न [°पूर] कान का आभूषण; (प्राप्र ; हेका ४५)। °गइ स्त्री [°गति] मेरु-सम्बन्धी एक डोरी ; (जो १०)। °जयसिंहदेव पुं [°जयसिंहदेव] गुजरात देश का बारहवीं शताब्दी का एक यशस्वी राजा ; (ती)। °देव पुं [°देव] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का सौराष्ट्र-देशीय एक राजा ; (ती)। °धार पुं [°धार] नाविक , निर्यामक ; (णाया १, ८)। °पाउरण पुं [°प्रावरण] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप ; २ उस अन्तर्द्वीप का निवासी ; (पण्ण १)। °पावरण देखो °पाउरण ; (इक)। °पीढ न [°पीठ] कान का एक प्रकार का आभूषण ; (ठा ६)। °पूर देखो °ऊर; (णाया १, ८)। °रवा स्त्री [°रवा] नदी-विशेष ; (पउम ४०, १३)। °वालिया स्त्री [°वालिका] कान के ऊपर भाग में पहना जाता एक प्रकार का आभूषण ; (औप)। °वेहणग न [°वेधनक] उत्सव-विशेष, कर्णवेधोत्सव ; (औप)। °सक्कुली स्त्री [°शष्कुली] १ कान का छिद्र ; २ कान की

लंबाई ; (णाया १, ८) । °सोहण न [°शोधन] कान का मैल निकालने का एक उपकरण ; (निचू ४) । °हार पुं [°धार] देखो °धार ; (अच्चु २४ ; स ३२७) । देखो कन्न ।

कण्णउज्ज पुं [**कान्यकुब्ज**] १ देश-विशेष, दोआब, गङ्गा और यमुना नदी के बीच का देश; २ न. उस देश का प्रधान नगर, जिसको आजकल 'कनौज' कहते है ; (ती ; कप्पू) ।

कण्णंबाल न [**दे**] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरः ; (दे २, २३) ।

कण्णगा देखो **कन्नगा** ; (आव ४) ।

कण्णच्छुरी स्त्री [**दे**] गृह-गोधा, छिपकली ; (दे २, १६) ।

कण्णडय (अप) देखो **कण्ण** ; (हे ४, ४३२; ४३३) ।

कण्णल (अप) वि [**कर्णाट**] १ देश-विशेष, कर्णाटक; २ वि. उस देश का निवासी ; (पिंग) ।

कण्णस वि [**कन्यस**] अधम, जघन्य ; (उत्त ५) ।

कण्णसरिय वि [**दे**] १ कानी नजर से देखा हुआ ; २ न. कानी नजर से देखना ; (दे २, २४) ।

कण्णा स्त्री [**कन्या**] १ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक राशि । २ कन्या, लडको, कुमारो ; (कप्पू ; पि २८२) । °**चोलय** न [°**चोलक**] धान्य-विशेष, जवनाल ; (गंदि) । °**णय** न [°**नय**] चोल देश का एक प्रधान नगर ; "चोलदेसावयंसे कण्णाणयनयरे" (ती) । °**लिय** न [°**लीक**] कन्या के विषय में बोला जाता झूठ ; (पण्ह १, ३) ।

कण्णाआस न [**दे**] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरः (दे २, २३) ।

कण्णाइंधण न [**दे**] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरः ; (दे २, २३) ।

कण्णाड पुं [**कर्णाट**] १ देश-विशेष, जो आजकल 'कर्णाटक' नाम से प्रसिद्ध है ; २ वि. उस देश में उत्पन्न, वहां का निवासी ; (कप्पू) ।

कण्णास पुं [**दे**] पर्यन्त, अन्त-भाग ; (दे २, १४) ।

कण्णिआ स्त्री [**कर्णिका**] १ पद्म-उदर, कमल का बीज-कोष ; (दे ६, १४०) । २ कोण, अस्र ; (अणु; ठा ८) । ३ शालि वगैरः के बीज का मुख-मूल, तुष-मुख ; (ठा ८) ।

कण्णिआर पुं [**कर्णिकार**] १ वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ ; (कुमा; हे २, ९५ ; प्राप्र) । २ गोशालक का एक भक्त ; (भग १४, १०) । ३ न. कनेर का फूल ; (णाया १, ६) ।

कण्णिलायण न [**कर्णिलायन**] नक्षत्र-विशेष का एक गोत्र ; (इक) ।

कण्णोरह देखो **कन्नीरह** ।

कण्णुप्पल न [**कर्णोत्पल**] कान का आभूषण-विशेष ; (कप्पू) ।

कण्णेर देखो **कण्णिआर** ; (हे १, १६८) ।

कण्णोच्छडिआ स्त्री [**दे**] दूसरे की बात गुपचुप सुनने वाली स्त्री ; (दे २, २२) ।

कण्णोड्डिआ } स्त्री [**दे**] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष,
कण्णोड्डी } नीरङ्गी ; (दे २, २० टी) ।

कण्णोढत्ती [**दे**] देखो **कण्णोच्छडिआ** ; (दे २, २२) ।

कण्णोप्पल देखो **कण्णुप्पल** ; (नाट) ।

कण्णोल्ली स्त्री [**दे**] १ चञ्चु, चोंच, पक्षी का ठोंठ; २ अवतंस, शेखर, भूषण-विशेष ; (दे २, ५७) ।

कण्णोवगण्णिआ स्त्री [**कर्णोपकर्णिका**] कर्णाकर्णी, कानाकानी ; (दे २, ६१) ।

कण्णोस्सरिअ [**दे**] देखो **कण्णसरिअ**; (दे २, २४)।

कण्ह पुं [**कृष्ण**] १ श्रीकृष्ण, माता देवकी और पिता वसुदेव से उत्पन्न नववाँ वासुदेव; (णाया १, १६) । २ पांचवाँ वासुदेव और बलदेव के पूर्व जन्म के गुरू का नाम ; (सम १५३) । ३ देशावकाशिक व्रत को अतिचरित करने वाला एक उपासक ; (सुपा ५९२) । ४ विक्रम की तृतीय शताब्दी का एक प्रसिद्ध जैनाचार्य, दिगम्बर जैन मत के प्रवर्तक शिवभूति-मुनि के गुरू ; (विसे २५५३) । ५ काला वर्ण ; (आचा) । ६ इस नाम का एक परिव्राजक, तापस ; (औप) । ७ वि. श्याम-वर्ण, काला रङ्ग वाला ; (कुमा) । °**ओराल** पुं [°**ओराल**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३४) । °**कंद** पुं [°**कन्द**] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३६)। °**कण्णियार** पुं [°**कर्णिकार**] काली कनेर का गाछ ; (जीव ३) । °**कुमार** पुं [°**कुमार**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, ४) । °**गोमी** स्त्री [°**गोमिन्**] काला शृगाल ; "कण्हगोमी जहा चित्ता, कंटगं वा विचित्तयं" (वव ६) ।

°णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव का शरीर काला होता है ; (राज)। °पक्खिय वि [°पाक्षिक] १ क्रूर कर्म करने वाला ; (सूत्र २, २)। २ बहुत काल तक संसार में भ्रमण करने वाला (जीव) ; (ठा १, १)। °बंधुजीव पुं [°बन्धुजीव] वृक्ष-विशेष, श्याम पुष्प वाला दुपहरिया ; (जीव २)। °भूम, °भोम पुं [°भूम] काली जमीन ; (आवम ; विसे १४५८)। °राइ, °राई स्त्री [°राजि, °जी] १ काली रेखा; (भग ६, ५; ठा ८)। २ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ८; जीव ४)। ३ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन—परिच्छेद; (णाया २, १)। °रिसि पुं [°ऋषि] इस नाम का एक ऋषि, जिसका जन्म शंखावती नगरी में हुआ था; (ती)। °लेस, °लेस्स वि [°लेश्य) कृष्ण-लेश्या वाला ; (भग)। °लेसा, °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] जीव का अति-निकृष्ट मनः—परिणाम, जघन्य वृत्ति ; (भग ; सम ११ ; ठा १, १)। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] एक देव-विमान ; (राज ; णाया २, १)। °वल्लि, °वल्ली स्त्री [°वल्लि, °ल्ली] वल्ली-विशेष, नागदमनी लता ; (पराण १)। °सप्प पुं [°सर्प] १ काला साँप ; (जीव ३)। २ राहु ; (सुज्ज २०)। देखो कन्ह।

कण्हा स्त्री [कृष्णा] १ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ८—पत्र ४२६)। २ एक अन्तकृत् स्त्री ; (अंत २५)। ३ द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री; (राज)। ४ राजा श्रेणिक की एक रानी; (निर १, ४)। ५ ब्रह्म देश की एक नदी ; (आवम)।

कण्हुइ अ [कच्चित्] क्वचित्, कभी ; (सूत्र १, १)। २ कहां से ? (उत्त २)।

कतवार पुं [दे] कतवार, कूड़ा; (दे २, ११)।

कति देखो **कइ**=कति ; (पि ४३३; भग)।

कतु देखो **कउ**=क्रतु ; (कप्प)।

✓**कत्त** सक [कृत्] काटना, छेदना, कतरना। कत्ताहि ; (पराह १, १)। वकृ—**कत्तंत** ; (ओघ ४६८)।

कत्त न [दे] कलत्र, स्त्री ; (षड्)।

कत्तण न [कर्त्तन] १ कतरना, काटना ; (सम १२५ ; उप पृ २)। २ काटने वाला, कतरने वाला ; (सुर १, ७२)।

कत्तणया स्त्री [कर्त्तनता] लवन, कतराई ; (सुर १, ७२)।

कत्तर पुं [दे] कतवार, कूड़ा ; "इतो य कविलमूस-यकत्तरबहुभ्कारितिड्डपभिईहिं ; केसव-किसी विरुद्धा" (सुपा २३७)।

कत्तरिअ वि [कृत्त, कर्त्तित] कतरा हुआ, काटा हुआ, लून ; (सुपा ५४६)।

कत्तरी स्त्री [कर्त्तरी] कतरनी, कैंची ; (कप्प)।

कत्तवीरिअ पुं [कार्त्तवीर्य] नृप-विशेष ; (सम १५३ ; प्रति ३६)।

कत्तव्व वि [कर्त्तव्य] १ करने योग्य ; (स १७२)। २ न. कार्य, काज, काम ; (श्रा ६)।

कत्ता स्त्री [दे] अन्धिका-द्यूत की कपर्दिका कौड़ी ; (दे २, १)।

कत्ति स्त्री [कृत्ति] चर्म, चमड़ा ; (स ४३६ ; गउड ; णाया १, ८)।

कत्तिकेअ पुं [कार्त्तिकेय] महादेव का एक पुत्र; षडानन; (दे ३, ५)।

कत्तिगी स्त्री [कार्त्तिकी] कार्तिक मास की पूर्णिमा; (पउम ८६, ३० ; इक)।

कत्तिम वि [कृत्रिम] कृत्रिम; बनावटी ; (सुपा ८३ ; जं २)।

कत्तिय पुं [कार्त्तिक] १ कार्तिक मास ; (सम ६५)। २ इस नाम का एक श्रेष्ठी ; (निर १, ३, १)। ३ भरत क्षेत्र के एक भावी तीर्थङ्कर के पूर्व भव का नाम ; (सम १५४)।

कत्तिया स्त्री [कृत्तिका] नक्षत्र-विशेष ; (सम ११ ; इक)।

कत्तिया स्त्री [कर्त्तिका] कतरनी, कैंची ; (सुपा २६०)।

कत्तिया स्त्री [कार्त्तिकी] १ कार्तिक मास की पूर्णिमा ; (सम ६६)। २ कार्तिक मास की अमावास्या ; (चंद १०)।

कत्तिववियं वि [दे] कृत्रिम, दीखाऊ ; "कत्तिववियाहिं उवहिप्पहाणाहिं" (सूत्र १, ४)।

कत्तु वि [कर्तृ] करने वाला ; "कत्ता भुत्ता य पुन्नपावाणं" (श्रा ६)।

कत्तो अ [कुतः] कहां से, किससे ? (पउम ४७, ८; कुमा)। °च्चय वि [°त्य] कहां से उत्पन्न ? (विसे १०१६)।

कत्थ सक [**कत्थ्**] श्लाघा करना, प्रशंसना। कत्थइ ; (हे १, १८७)।

कत्थ अ [**कुतः**] कहां से ? (षड्)।

कत्थ अ [**क्व, कुत्र**] कहां ? (षड् ; कुमा ; प्रासू १२३)। °**इ** अ [°**चित्**] कहीं, किसी जगह ; (आचा; कप्प ; हे २, १७४)।

कत्थ वि [**कथ्य**] १ कहने योग्य, कथनीय ; २ काव्य का एक भेद ; (ठा ४, ४—पत्र २८७)। ३ वनस्पति-विशेष ; (राज)।

कत्थंत देखो **कह**=कथय्।

कत्थभाणी स्त्री [**कस्तभानी**] पानी में होने वाली वनस्पति-विशेष ; (पराण १—पत्र ३४)।

कत्थूरिया } स्त्री [**कस्तुरी**] मृग-मद , हरिण के नाभि में **कत्थूरी** } उत्पन्न होने वाली सुगन्धित वस्तु ; (सुपा २४७ ; स ३३९ ; कप्पू)।

कथ वि [**दे**] १ उपरत , मृत ; २ क्षीण , दुर्बल ; (षड्)।

कदण देखो **कडण** = कदन ; (कुमा)।

कदली देखो **कयली** ; (पराण १— पत्र ३२)।

कदुइया स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष , कद्दु , लौकी ; (पराण १—पत्र ३३)।

कद्दम } पुं [**कर्दम**] १ कादा, कीच ; (पगह १, **कद्दमग** } ४)। २ देव विशेष, एक नाग-राज ; (भग ६ , ३)।

कद्दमिअ वि [**कर्दमित**] पङ्क-युक्त , कीच वाला ; (से ७ , २० ; गउड)।

कद्दमिअ पुं [**दे**] महिष , भैंसा ; (दे २ , १५)।

कन्न देखो **कण्ण** = कर्ण ; (सुर १, २ ; सुर २. १७१; सुपा ५२४ ; धम्म १२ टी ; ठा ४ , २ ; सुपा ९५ ; पाअ)। °**यंस** पुं [°**वतंस**] कान का आभूषण ; (पाअ)।

कन्नउज्ज देखो **कण्णउज्ज** ; (कुमा)।

कन्नगा स्त्री [**कन्यका**] कन्या, लडकी , कुमारी ; (सुर ३ , १२२ ; महा)।

कन्ना देखो **कण्णा** ; (सुर २ ,१५४ ; पाअ)।

कन्नाड देखो **कण्णाड** ; (भवि)।

कन्नारिय वि [**दे**] विभूषित, अलंकृत, " आराहेँ कन्नारिउ गइंदु " (भवि)।

कन्नीरह पुं [**कर्णीरथ**] एक प्रकार की शिविका , धनाढ्य का एक प्रकार का वाहन ; (गाया १, ३)।

कन्नुल्लड (अप) पुं [**कर्ण**] कान, श्रवणेन्द्रिय ; (कुमा)।

कन्नेरय देखो **कण्णिआर** ; (कुमा)।

कन्नोली (**दे**) देखो **कण्णोल्ली** ; (पाअ)।

कन्ह देखो **कण्ह** ; (सुपा ५९६ ; कप्प)। °**सह** न [°**सह**] जैन साधुओं के एक कुल का नाम ; (कप्प)।

कपिंजल पुं [**कपिञ्जल**] पक्षि-विशेष—१ चातक , २ गौरा पक्षी ; (पगह १ , १)।

कपूर देखो **कप्पूर** ; (श्रा २७)।

कप्प अक [**क्लृप्**] १ समर्थ होना। २ कल्पना, काम में लाना। ३ काटना , छेदना। कप्पइ, कप्पए ; (कप्प; महा; पिंग) कर्म—कप्पिज्जइ; (हे ४, ३५७)। कृ— **कप्पणिज्ज**; (आव ६)। प्रयो—**कप्पावेज्ज**; (निचू १७)। वकृ—**कप्पावंत**; (निचू १७)।

कप्प सक [**कल्पय्**] १ करना, बनाना। २ वर्णन करना। ३ कल्पना करना। वकृ—**कप्पेमाण**, (विपा १, १)। संकृ—**कप्पेऊण**; (पंचव १)।

कप्प वि [**कल्प्य**] ग्रहण योग्य; (पंचा १२)।

कप्प पुं [**कल्प**] १ काल-विशेष, देवों के दो हजार युग परिमित समय; " कम्माण कप्पिआणं काहि कप्पंतरेसु णिव्वेसं " (अच्चु १८; कुमा)। २ शास्त्रोक्त विधि, अनुष्ठान; (ठा ६)। ३ शास्त्र-विशेष; (विसे १०७५; सुपा ३२४)। ४ कम्बल-प्रमुख उपकरण; (ओघ ४०)। ५ देवों का स्थान, बारह देव-लोक; (भग ५, ४; ठा २; १०)। ६ बारह देव-लोक निवासी देव, वैमानिक देव; (सम २)। ७ वृक्ष-विशेष, मनो-वाञ्छित फल को देने वाला वृक्ष, कल्प-वृक्ष; (कुमा)। ८ शस्त्र-विशेष; " असिखेडयकप्पतोमरविहत्था " (पउम ९,७३)। ९ अधिवास, स्थान; (बृह १)। १० राजा नन्द का एक मन्त्री; (राज)। ११ वि. समर्थ, शक्तिमान्; (गाया १, १३)। १२ सदृश, तुल्य; " केवलकप्पं " (आवम; पगह २, २)। °**ट्ठ** पुं [°**स्थ**] बालक, बच्चा; (वव ७)। °**ट्ठिइ** स्त्री [°**स्थिति**] साधुओं का शास्त्रोक्त अनुष्ठान; (बृह ६)। °**ट्ठिया** स्त्री [°**स्थिका**] १ लड़की, बालिका; (वव ४)। २ तरुण स्त्री; (बृह १)। °**ट्ठी** स्त्री [°**स्था**] १ बालिका, लड़की; (वव ६)। २ कुलाङ्गना, कुल-वधू; (वव ३)। °**तरु** पुं [°**तरु**]

कल्प-वृक्ष; (प्राप् ११६८; हे २, ७६)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] देवी, देव-स्त्री; (ठा ३)। °दुम, °द्दुम पुं [°द्रुम] कल्प-वृक्ष; (धण ६; महा)। °पायव पुं [°पादप] कल्प-वृक्ष; (पडि; सुपा ३६) । °पाहुड न [°प्राभृत] जैन ग्रन्थ-विशेष; (तो)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] कल्प-वृक्ष; (पगह १, ४)। °वडिंसय न [°ावतंसक] १ विमान-विशेष; २ विमान-वासी देव-विशेष; (निर)। °वडिंसया स्त्री [°ावतंसिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमें कल्पावतंसक देव-विमानों का वर्णन है; (राय ; निर १)। °विडवि पुं [°विटपिन्] कल्प-वृक्ष ; (सुपा १२६)। °साल पुं [°शाल] कल्प-वृक्ष ; (उप १४२ टी) °साहि पुं [°शाखिन्] कल्प-वृक्ष; (सुपा ३६६)। °सुत्त न [°सूत्र] श्रीभद्रबाहु स्वामि-विरचित एक जैन ग्रन्थ ; (कप्प; कस)। °सुय न [°श्रुत] १ ज्ञान-विशेष; २ ग्रन्थ-विशेष; (णंदि)। °ाईअ पुं [°ातीत] उत्तम जाति के देव-विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव; (पगह १, ५ ; पगण १)। °ाग पुं [°ाक] विधि को जानने वाला ; (कस ; औप)। °ाय पुं [°ाय] कर, चुंगी, राज-देय भाग ; (विपा १, ३)।

कप्पंत पुं [**कल्पान्त**] प्रलय-काल, संहार-समय ; (कप्पू)।

कप्पड पुं [**कर्पट**] १ कपड़ा, वस्त्र; (पउम २५, १८ ; सुपा ३४४ ; स १८०)। २ जीर्ण वस्त्र, लकुटाकार कपड़ा; (पगह १, ३)।

कप्पडिअ वि [**कार्पटिक**] भिक्षुक, भीखमंगा ; (गाया १, ८ ; सुपा १३८ ; बृह १)।

कप्पडिअ वि [**कापटिक**] कपटी, मायावी ; (गाया १, ८—पत्र १५०)।

कप्पण न [**कल्पन**] छेदन, काटना ; (सुपा १३८)।

कप्पणा स्त्री [**कल्पना**] १ रचना, निर्माण ; २ प्ररूपण, निरूपण ; (निचू १)। ३ कल्पना, विकल्प ; (विसे १६३२)।

कप्पणी स्त्री [**कल्पनी**] कतरनी, कैंची ; (पगह १, १ ; विपा १, ४ ; स ३७१)।

कप्पर पुं [**कर्पर**] खप्पर, कपाल, सिर की खोपड़ी, (बृह ४ ; नाट)। देखो **कुप्पर**=कर्पर।

कप्परिअ वि [**दे**] दारित, चीरा हुआ ; (दे २,२०; वज्जा ३४ ; भवि)।

कप्पास पुं [**कार्पास**] १ कपास, रुई ; २ ऊन ; (निचू ३)।

कप्पासत्थि पुं [**कार्पासास्थि**] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (जीव १)।

कप्पासिय वि [**कार्पासिक**] कपास का बना हुआ, सूता वगैरः ; (अणु)।

कप्पासी स्त्री [**कर्पासी**] रुई का गाछ ; (राज)।

कप्पिय वि [**कल्पित**] १ रचित, निर्मित ; (औप)। २ स्थापित, समीप में रखा हुआ ; ' से अभए कुमारे तं अल्लं मंसं रुहिरं अप्पकप्पियं करेइ ; (निर १,१)। ३ कल्पना निर्मित, विकल्पित; (दसनि १)। ४ व्यवस्थित; (आचा; सूअ १, २)। ५ छिन्न, काटा हुआ ; (विपा १, ४)।

कप्पिय वि [**कल्पिक**] १ अनुमत, अ-निषिद्ध ; (उवर १३०)। २ योग्य, उचित ; (गच्छ १ ; वव ८)। ३ पुं. गीतार्थ, ज्ञानी साधु; "किं वा अकप्पिएणं" (वव १)।

कप्पिया स्त्री [**कल्पिका**] जैन ग्रन्थ-विशेष, एक उपाङ्ग-ग्रन्थ ; (जं १ ; निर)।

कप्पूर पुं [**कर्पूर**] कपूर, सुगन्धि द्रव्य-विशेष ; (पगह २, ५ ; सुर २, ६ ; सुपा २६३)।

कप्पोवग पुं [**कल्पोपग**] १ कल्प-युक्त। २ देव-विशेष, बारह देव लोक-वासी देव ; (पगण २१)।

कप्पोववण्ण पुं [**कल्पोपपन्न**] ऊपर देखो ; (सुपा ८८)।

कप्पोववत्तिआ स्त्री [**कल्पोपपत्तिका**] देवलोक-विशेष में उत्पत्ति ; (भग)।

कप्फल न [**कट्फल**] इस नाम की एक वनस्पति, कायफल; (हे २, ७७)।

कप्फाड देखो **कवाड**=कपाट ; (गउड)।

कप्फाड [**दे**] देखो **कफाड**; (पाअ)।

कफ पुं [**कफ**] कफ, शरीर-स्थित धातु–विशेष; (राज)।

कफाड पुं [**दे**] गुफा, गुहा ; (दे २, ७)।

कब्बड } पुंन [**कर्बट**] १ खराब नगर, कुत्सित शहर;
कब्बडग } (भग ; पगह १, २)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ वि. कुनगर का निवासी ; (उत्त ३०)।

कब्बाडभयय पुं [**दे**] ठीका पर जमीन खोदने का काम करने वाला मजदूर ; (ठा ४, १—पत्र २०३)।

कब्बुर } वि [**कर्बुर**] १ कबरा, चितकबरा, चितला ;
कब्बुरय } (गउड ; अच्चु ६)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३ ; राज)।

कब्बुरिअ वि [**कर्बुरित**] अनेक वर्ण वाला, चितकबरा किया हुआ ; "देहकंतिकब्बुरियजम्मगिहं" (सुपा ५४); "मणिमयतोरणथोरणितरुणपहाकिरणकब्बुरिअं" (कुम्मा ६ ; पउम ८२, ११)।

कभ (अप) देखो **कफ** ; (षड्)।

कभल्ल न [**दे**] कपाल, खप्पर ; (अनु ५ ; उवा)।

कम सक [**क्रम्**] १ चलना, पाँव उठाना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. फैलना, पसरना। ४ होना। "मणसो-वि विसयनियमो न क्कमइ जओ स सव्वत्थ" (विसे २४६); "न एत्थ उवायंतरं कमइ" (स २०६)। वकृ—**कमंत** ; (से २, ६)। कृ—**कमणिज्ज** ; (औप)।

कम सक [**कम्**] चाहना, वाञ्छना। कवकृ—**कम्ममाण**; (दे २, ८५)। कृ—**कमणीय** ; (सुपा ३४; २६२); **कम्म** ; (णाया १, १४ टी—पत्र १८८)।

कम पुं [**क्रम**] १ पाद, पग, पाँव ; (सुर १, ८)। २ परम्परा, "नियकुलकमागयाओ पिउणा विज्जाओ मज्झ दिन्नाओ" (सुर ३, २८)। ३ अनुक्रम, परिपाटी; (गउड)। ४ मर्यादा, सीमा ; (ठा ४)। ५ न्याय, फैसला ; "अविआरिअ कमं ण करिस्सदि" (स्वप्न २१)। ६ नियम ; (बृह १)।

कम पुं [**क्लम**] श्रम, थकावट, क्लान्ति ; (हे २, १०६; कुमा)।

कमंडलु पुंन [**कमण्डलु**] संन्यासिओं का एक मिट्टी या काष्ठ का पात्र ; (निर ३, १ ; पण्ह १, ४ ; उप ६४८ टी)।

कमंध पुंन [**कबन्ध**] रुंड, मस्तक-हीन शरीर ; (हे १, २३९ ; प्राप्र ; कुमा)।

कमढ पुं [**दे**] १ दही की कलशी ; २ पिठर, स्थाली ; ३ बलदेव ; ४ मुख, मुँह ; (दे २, ५५)।

कमढ, **कमढग**, **कमढय** पुं [**कमठ, °क**] १ तापस-विशेष, जिसको भगवान् पार्श्वनाथ ने वाद में जीता था और जो मर कर दैत्य हुआ था ; (णमि २२)। २ कूर्म, कच्छप ; (पाअ)। ३ वंश, बाँस ; ४ शल्लकी वृक्ष; (हे १, १९९)। ५ न. मैल, मल ; (निचू ३)। ६ साध्वीओं का एक पात्र ; (निचू १ ; ओघ ३९ भा)। ७ साध्वीओं को पहनने का एक वस्त्र ; (ओघ ६७५ ; बृह ३)।

कमण न [**क्रमण**] १ गति, चाल ; २ प्रवृत्ति ; (आचू ४)।

कमणिया स्त्री (**क्रमणिका**] उपानत् , जूता ; (बृह ३)।

कमणिल्ल वि [**कमणीवत्**] जूता वाला, जूता पहना हुआ; (बृह ३)।

कमणी स्त्री [**क्रमणी**] जूता, उपानत् ; (बृह ३)।

कमणी स्त्री [**दे**] निःश्रेणि, सीढ़ी ; (दे २, ८)।

कमणीय वि [**कमनीय**] सुन्दर, मनोहर ; (सुपा ३४; २६२)।

कमल पुं [**दे**] १ पिठर, स्थाली ; २ पटह, ढोल ; (दे २, ५४)। ३ मुख, मुँह ; (दे २, ५४ ; षड्)। ४ हरिण, मृग ; "तत्थ य एगो कमलो सगब्भहरिणीए संगओ वसइ" (सुर १५, २०२ ; दे २, ५४ ; अणु ; कप्प ; औप)। ५ कलह, झगड़ा ; (षड्)।

कमल न [**कमल**] १ कमल, पद्म, अरविन्द ; (कप्प ; कुमा ; प्रासू ७१)। २ कमलाख्य इन्द्राणी का सिंहासन; ३ संख्या-विशेष, 'कमलाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। ४ छन्द-विशेष; (पिङ्ग)। ५ पुं. कमलाख्य इन्द्राणी के पूर्व जन्म का पिता ; (णाया २)। ६ श्रेष्ठि-विशेष ; (सुपा २७५)। ७ पिङ्गल-प्रसिद्ध एक गण, अन्त्य अक्षर जिसमें गुरु हो वह गण ; (पिंग)। ८ एक जात का चावल, कलम ; (प्राप्र)। **°क्ख** पुं [**°क्ष**] इस नाम का एक यक्ष ; (सण)। **°जय** न [**°जय**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। **°जोणि** पुं [**°योनि**] ब्रह्मा, विधाता ; (पाअ)। **°पुर** न [**°पुर**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। **°प्पभा** स्त्री [**°प्रभा**] १ काल-नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १)। २ 'ज्ञाता धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाया २)। **°बन्धु** पुं [**°बन्धु**] १ सूर्य, रवि ; (पउम ७०, ६२)। २ इस नाम का एक राजा ; (पउम २२, ९८)। **°माला** स्त्री [**°माला**] पोतनपुर नगर के राजा आनन्द की एक रानी, भगवान् अजितनाथ की मातामही—दादी ; (पउम ५, ५२)। **°रय** पुं [**°रजस्**] कमल का पराग; (पाअ)। **°वडिंसय** न [**°ावतंसक**] कमला-नामक इन्द्राणी का प्रासाद; (णाया २)। **°सिरी** स्त्री [**°श्री**] कमला-नामक इन्द्राणी की पूर्व जन्म की माता का नाम ; (णाया २)। **°सुंदरी** स्त्री [**°सुन्दरी**] इस नाम की एक रानी ; (उप ७२८

टी)। °सेणा स्त्री [°सेना] एक राज-पुत्री; (महा)। °अर, °गर पुं [°कर] १ कमलों का समूह। २ सरोवर, ह्रद वगैरः जलाशय; (से १, २६ ; कप्प)। °पीड, °मेल पुं [°पीड] भरत चक्रवर्ती का अश्व-रत्न; (जं ३ ; पि ६२)। °सण पुं [°सन] ब्रह्मा, विधाता; (पाअ ; दे ७, ६२)।

कमला स्त्री [दे] हरिणी, मृगी; (पाअ)।

कमला स्त्री [**कमला**] १ लक्ष्मी; (पाअ ; सुपा २७५)। २ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ६)। ३ काल-नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष; (ठा ४, १)। ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाया २)। ५ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**अर** पुं [°**कर**] धनाढ्य, धनी; (से १, २६)।

कमलिणी स्त्री [**कमलिनी**] पद्मिनी, कमल का गाछ; (पाअ)।

कमव } अक [**स्वप्**] सोना, सो जाना। कमवइ;
कमवस } (षड्), कमवसइ; (हे ४, १४६ ; कुमा)।

कमसो अ [**क्रमशः**] क्रम से, एक एक करके; (सुर १, ११६)।

कमिअ वि [**दे**] उपसर्पित, पास आया हुआ; (दे २,३)।

कमेलग } पुंस्त्री [**कमेलक**] उष्ट्र, ऊँट; (पाअ; उप १०३१
कमेलय } टी; कुप्र ३३)। स्त्री—°**गी**; (उप १०३१ टी)।

कम्म सक [**कृ**] हजामत करना, क्षौर-कर्म करना। कम्मइ; (हे ४, ७२ ; षड्)। वकृ—**कम्मंत**; (कुमा)।

कम्म सक [**भुज्**] भोजन करना। कम्मइ; (षड्)। कम्मेइ; (हे ४, ११०)।

कम्म देखो **कम**=क्रम्।

कम्म पुंन [**कर्मन्**] १ जीव द्वारा ग्रहण किया जाता अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गल; (ठा ४, ४ ; कम्म १, १)। २ काम, क्रिया, करनी, व्यापार; (ठा १ ; आचा)। "कम्मा णाणफला" (पि १७२)। ३ जो किया जाय वह; ४ व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष; (विसे २०६६; ३४२०)। ५ वह स्थान, जहां पर चूना वगैरः पकाया जाता है; (पण्ह २, ५—पत्र १२३)। ६ पूर्व-कृति, भाग्य; "कम्मत्ता दुब्भगा चेव" (सुअ १, ३, १ ; आचा ; षड्)। ७ कार्मण शरीर; ८ कार्मण-शरीर नामकर्म, कर्म-विशेष; (कम्म २, २१)। °**कर** वि [°**कर**] नौकर, चाकर; (आचा) देखो °**गार**। °**करण** न [°**करण**] कर्म-विषयक बन्धन, जीव-पराक्रम विशेष; (भग ६, १)। °**कार** वि [°**कार**] नौकर; (पउम १७, ७)। °**किब्बिस** वि [°**किल्बिष**] कर्म-चाण्डाल, खराब काम करने वाला; (उत्त ३)। °**क्खंध** पुं [°**स्कन्ध**] कर्म-पुद्गलों का पिण्ड; (कम्म ५)। °**गर** देखो °**कर**; (प्रारू)। °**गार** पुं [°**कार**] १ कारीगर, शिल्पी; (णाया १,६) देखो °**कर**। °**जोग** पुं [°**योग**] शास्त्रोक्त अनुष्ठान; (कम्म)। °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] कारखाना; (आवा)। °**ट्ठिइ** स्त्री [°**स्थिति**] १ कर्म-पुद्गलों का अवस्थान-समय; (भग ६, ३)। २ वि. संसारी जीव; (भग १४, ६)। °**णिसेग** पुं [°**निषेक**] कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष; (भग ६, ३)। °**धारय** पुं [°**धारय**] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास; (अणु)। °**परिसाडणा** स्त्री [°**परिशाटना**] कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों से पृथक्करण; (सुअ १, १)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] कर्म-प्रधान पुरुष—१ कारीगर, शिल्पी; (सूअ १, ४, १) ; २ महारम्भ करने वाले वासुदेव वगैरः राजा लोक; (ठा ३, १—पत्र ११३)। °**प्पवाय** न [°**प्रवाद**] जैन ग्रन्थांश-विशेष, आठवाँ पूर्व; (सम २६)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] कर्म-पुद्गलों का आत्मा में लगना, कर्मों से आत्मा का बन्धन; (आव ३)। °**भूमग** वि [°**भूमिक**] कर्म-भूमि में उत्पन्न; (पण्ण १)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] कर्म-प्रधान भूमि, भरत क्षेत्र वगैरः; (जी २३)। °**भूमिग** देखो °**भूमग**; (पण्ण २३)। °**भूमिय** वि [°**भूमिज**] कर्म-भूमि में उत्पन्न; (ठा ३, १—पत्र ११४)। °**मास** पुं [°**मास**] श्रावण मास; (जो १)। °**मासग** पुं [°**माषक**] मान-विशेष, चार गुञ्जा, चार रत्ती; (अणु)। °**य** वि [°**ज**] १ कर्म से उत्पन्न होने वाला, २ कर्म-पुद्गलों का बना हुआ शरीर-विशेष, कार्मण शरीर; (ठा २, १; ५, १)। °**या** स्त्री [°**जा**] अभ्यास से उत्पन्न होने वाली बुद्धि, अनुभव; (णंदि)। °**लेस्सा** स्त्री [°**लेश्या**] कर्म द्वारा होने वाला जीव का परिणाम; (भग १४, १)। °**वग्गणा** स्त्री [°**वर्गणा**] कर्म-रूप में परिणत होने वाला पुद्गल-समूह; (पंच)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] भाग्य को ही सब कुछ मानने वाला; (राज)। °**विवाग** पुं [°**विपाक**] १ कर्म परीणाम, कर्म-फल; २ कर्म-विपाक का प्रतिपादक ग्रन्थ; (कम्म १, १)। °**संवच्छर** पुं

[°संवत्सर] लौकिक वर्ष ; (सुज्ज १०)। °साला स्त्री [°शाला] १ कारखाना ; २ कुम्भकार का घटादि बनाने का स्थान ; (बृह २)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] कारीगर, शिल्पी ; (आवम)। °ाजीव [°ाजीव] १ कारीगर ; २ कारीगरी का कोई भी काम बतला कर भिक्षादि प्राप्त करने वाला साधु; (ठा ५, १)। °ादाण न [°ादान] जिसमें भारी पाप हो ऐसा व्यापार ; (भग ८, ५)। °ायरिय पुं [°ार्य] से आर्य, नदोष व्यापार करने वाला ; (पराण १)। °ावाइ देखो °वाइ ; (आचा)।

कम्म वि [**कार्मण**] १ कर्म-संबन्धी, कर्म-जन्य, कर्म-निर्मित, कर्म-मय ; २ न. कर्म-पुद्गलों का ही बना हुआ एक अत्यन्त सूक्ष्म शरीर, जो भवान्तर में भी आत्मा के साथ ही रहता है ; (ठा १ ; कम्म ४)। २ कर्म-विशेष, कार्मण शरीर का हेतु-भूत कर्म ; (कम्म २, २१)। ३ कार्मण-शरीर का व्यापार ; (कम्म ३, १५ ; कम्म ४)।

कम्मइय न [**कर्मचित, कार्मण**] ऊपर देखो ; (पउम १०२, ६८)।

कम्मंत पुं [**दे. कर्मान्त**] १ कर्म-बन्धन का कारण; (आचा; सूअ २,२)। २ कर्म-स्थान, कारखाना; (दे २,५२)।

कम्मंत वि [**कुर्वत्**] १ हजामत करता हुआ ; २ हजाम, नापित ; (कुमा)। °साला स्त्री [°शाला] जहां पर अस्तुरा आदि सजाया जाता हो वह स्थान; (निचू ८)।

कम्मग न [**कर्मक,कार्मक, कार्मण**] देखो **कम्म**= कार्मण ; (ठा २, २ ; पराण २१ ; भग)।

कम्मण न [**कार्मण**] १ कर्म-मय शरीर ; (दं २२)। २ औषध, मन्त्र आदि के द्वारा मोहन-वशीकरण-उच्चाटन आदि कर्म ; (उप १३४ टी ; स १०८)। °गारि वि [°कारिन्] कामण करने वाला ; (सुर १, ६८)। °जोय पुं [°योग] कार्मण-प्रयोग ; (गाया १, १४)।

कम्मण न [**भोजन**] भोजन ; (कुमा)।

कम्ममाण देखो **कम**=कम् ।

कम्मय देखो **कम्मग** ; (भग ; पंच)।

कम्मव सक [**उप+भुज्**] उपभोग करना । कम्मवइ ; (हे ४, १११ ; षड्)।

कम्मवण न [**उपभोग**] उपभोग, काम में लाना ; (कुमा)।

कम्मस वि [**कल्मष**] १ मलिन ; २ न. पाप ; (पाअ ; हे २, ७६ ; प्रामा)।

कम्मा स्त्री [**कर्मन्**] क्रिया, व्यापार ; (ठा ४, २—पत्र २१०)।

कम्मार पुं [**कर्मार**] १ लोहार, लोहकार ; (विसे १५६८)। २ ग्राम-विशेष ; (आचू १)।

कम्मार ⎫
कम्मारग ⎬ वि [**कर्मकार,°क**] १ नौकर, चाकर ; (स
कम्मारय ⎭ ५३७ ; औप ४, ६४ टी)। २ कारीगर, शिल्पी ; (जीव ३)।

कम्मारिया स्त्री [**कर्मकारिका**] स्त्री-नौकर, दासी ; सुपा ६३०)।

कम्मि ⎫ वि [**कर्मिन्**] कर्म करने वाला, अभ्यासी ;
कम्मिअ ⎭

"गावकम्मिएण उग्ग पामरेण दट्ठूण पाउहारीओ ।
मोत्तव्वे जोत्तअवग्गहम्मि अवरा(?)गो मुक्का "
(गा ६६४)।

२ पाप कर्म करने वाला ; (सूअ १, ७; ६)।

कम्मिया स्त्री [**कर्मिका, कार्मिका**] १ अभ्यास से उत्पन्न होने वाली बुद्धि ; (गाया १, १)। २ अक्षीण कर्म-शेष, अवशिष्ट कर्म ; (भग)।

कम्हल न [**कश्मल**] पाप ; (राज)।

कम्हा अ [**कस्मात्**] क्यों, किस कारण से ? (औप)।

कम्हार देखो **कंभार** ; (हे २, ७४)। °ज न [°ज] केसर, कुङ्कुम ; (कुमा)।

कम्हिअ पुं [**दे**] माली, मालाकार ; (दे २, ८)।

कम्हीर देखो **कंभार** ; (मुद्रा २४२ ; पि १२०; ३१२)।

कय पुं [**कच**] केश, बाल ; (हे १, १७७ ; कुमा)।

कय पुं [**क्रय**] खरीदना ; (सुपा ३४४)।

कय देखो **कड**=कृत ; (आचा ; कुमा ; प्रासू १५)। °उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, भाग्यशाली ; (स ६०७ ; सुपा ६०६)। °क देखो °ग (पराह १, २)। °कज्ज वि [°कार्य] कृतार्थ, सफल-मनोरथ ; (गाया १, ८)। °करण वि [°करण] अभ्यासी, कृताभ्यास ; (बृह १ ; पराह १, ३)। °किच्च वि [°कृत्य] कृतार्थ, सफल-मनोरथ ; (सुपा २७)। °ग वि [°क] १ अपनी उत्पत्ति में दूसरे की अपेक्षा करने वाला, प्रयत्न-जन्य ; (विसे १८३७ ; स ६५३)। २ पुं. दास-विशेष, गुलाम ; "भयगभतं वा बलभतं वा कयगभतं वा" (निचू ६)। ३ न. सुवर्ण, सोना ; (राज)। °ग्घ वि [°घ्न] उपकार न मानने वाला, कृतघ्न ; (सुर २, ४४ ; सुपा

४८८)। °जाणुअ वि [°ज्ञायक] कृतज्ञ, उपकार का मानने वाला; (पि ११८)। °ण्णु वि [°ज्ञ] उपकार का मानने वाला, किए हुए उपकार की कद्र करने वाला ; (धम्म २६)। °ण्णुया स्त्री [°ज्ञता] कृतज्ञता, एहसानमन्दी, निहोरा मानना ; (उप पृ ८६)। °त्थ वि [°र्थ] कृतकृत्य, चरितार्थ, सफल-मनोरथ ; (भग ; प्रासू २३)। °नासि वि [°नशिन्] कृतघ्न ; (आव १६६)। °न्न, °न्नु देखो °ण्णु; " जं कित्तिजलहिराया विवेयनयमंदिरं कयन्नगुरू" (सुपा ३०१ ; महा ; सं ३३ ; श्रा २८)। °पंजलि वि [°प्राञ्जलि] कृताञ्जलि, नमस्कार के लिए जिसने हाथ ऊँचा किया हो वह ; (आव)। °पडिकइ स्त्री [°प्रतिकृति] १ प्रत्युपकार ; (पंचा १६)। २ विनय-विशेष ; (वव १)। °पडिकइया स्त्री [°प्रतिकृतिता] १ प्रत्युपकार; (णाया १, २)। २ विनय का एक भेद; (ठा ७)। °बलिकम्म वि [°बलिकर्मन्] जिसने देवता की पूजा की है वह ; (भग २, ५ ; णाया १, १६—पत्र २१०; तंदु)। °मंगला स्त्री [°मङ्गला] इस नामकी एक नगरी; (संथा)। °माल, °मालय वि [°माल, °क] १ जिसने माला बनाई हो वह। २ पुं. वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ ; "अंकोल्लबिल्लसल्लइकयमालतमालसालड्ढं" (उप १०३१ टी)। ३ तमिस्रा-नामक गुफा का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। °लक्खण वि [°लक्षण] जिसने अपने शरीर चिन्ह को सफल किया हो वह ; (भग ६, ३३ ; णाया १, १)। °व वि [°वत्] जिसने किया हो वह ; (विसे १५५५)। °वणमालपिय पुं [°वनमालप्रिय] इस नाम का एक यक्ष ; (विपा २, १)। °वम्म पुं [°वर्मन्] नृप-विशेष, भगवान् विमलनाथ का पिता; (सम १५१)। °वीरिय पुं [°वीर्य] कार्तवीर्य के पिता का नाम ; (सूअ १, ८)।

कयं अ [**कृतम्**] अलम्, बस ; (उवर १४४)।

कयंगला स्त्री [**कृतङ्गला**] श्रावस्ती नगरी के समीप की एक नगरी ; (भग)।

कयंत पुं [**कृतान्त**] १ यम, मृत्यु, मरण; (सुपा १९९ ; सुर २, ५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त ; "मण्णंति कयं तं जं कयंतसिद्धं उ सपरहिअं" (सार्ध ११७ ; सुपा ११६)। ३ रावण का इस नाम का एक सुभट ; (पउम ५६, ३१)। °मुह पुं [°मुख] रामचन्द्र के एक सेनापति का नाम ; (पउम ६४, ६२)। °वयण पुं [°वदन] राम का एक सेनापति ; (पउम ६४, २०)।

कयंध देखो **कमंध**; (हे १, १३६ ; षड्)।

कयंब देखो **कलंब** ; (पण्ण १; हे १, २२२)।

कयंबिय वि [**कदम्बित**] अलंकृत, विभूषित ; (कप्प)।

कयंबुअ देखो **कलंबुअ** ; (कप्प)।

कयग पुं [**कतक**] १ वृक्ष-विशेष, निर्मली। २ न. कतक-फल, निर्मली-फल, पायपसारी ; " जह कयगमंजणाई जलवुट्ठीओ विसोहिंति " (विसे ५३६ टी)।

कयज्ज वि [**कदर्य**] कंजूस, कृपण ; (राज)।

कयड्डि पुं [**कपर्दिन्**] इस नाम का एक यक्ष-देवता ; (सुपा ५४२)।

कयण न [**कदन**] हिंसा, मार डालना; (हे १, २१७)।

कयत्थ सक [**कदर्थय्**] हैरान करना, पीडा करना। कयत्थसे ; (धम्म ८ टी)। कवकृ—**कयत्थिज्जंत** ; (स ८)।

कयत्थण न [**कदर्थन**] हैरानी, हैरान करना, पीडन ; (सुपा १८० ; महा)।

कयत्थणा स्त्री [**कदर्थना**] ऊपर देखो ; (स ४७२ ; सुर १५, १)।

कयत्थिय वि [**कदर्थित**] हैरान किया हुआ, पीडित ; (सुपा २२७ ; महा)।

कयम वि [**कतम**] बहुत में से कौन ? (स ४०२)।

कयर वि [**कतर**] दो में से कौन ? (हे ३, ५८)।

कयर पुं [**क्रकर**] १ वृक्ष-विशेष, करीर, करील ; (स २५६)। २ न. करीर का फल ; (पभा १४)।

कयल पुं [**कदल**] १ कदली-वृक्ष, केला का गाछ। २ न. कदली-फल ; केला; (हे १, १६७)।

कयल न [**दे**] अलिञ्जर, पानी भरने का बड़ा गगरा ; (दे २, ४)।

कयलि, °ली स्त्री [**कदलि, °ली**] केला का गाछ; (महा; हे १, २२०)। °समागम पुं [°समागम] इस नाम का एक गाँव ; (आवम)। °हर न [°गृह] कदली-स्तम्भ से बनाया हुआ घर; (महा; सुर ३, १४ ; ११६)।

कयवर पुं [**दे**] १ कतवार, कूड़ा, मैला ; (णाया १, १ ; सुपा ३८; ८७; स २६४; भत्त ८६; पाअ; सण; पुप्फ ३१; निचू ७)। २ विष्ठा ; (आव १)।

कयवरुज्झिया स्त्री [**दे. कचवरोज्झिका**] कूड़ा साफ करने वाली दासी ; (णाया १, ७—पत्र ११७)।

कयवाउ पुं [**कृकवाकु**] कुक्कुट, कुकड़ा, मुर्गा; (गउड)।

कयवाय पुं [**कृकवाक**] कुक्कुट, कुकड़ा, मुर्गा; (पाअ)।

कयसण न [**कदशन**] खराब भोजन; (विवे १३६)।

कयसेहर पुं [**दे**] कुकड़ा, मुर्गा; " कयसेहराण सुम्मइ आलावो झत्ति गोसम्मि " (वज्जा ७२)।

कया अ [**कदा**] कब, किस समय? (ठा ३, ४; प्रासू १६६)।

कयाइ अ [**कदापि**] कभी भी, किसी समय भी; (उवा)।

कयाइ, **कयाइं**, **कयाई** अ [**कदाचित्**] १ किसी समय, कभी; (उवा; वसु)। " अह अन्नया कयाई " (सुपा ५०६; पि ७३)। २-वितर्क-द्योतक अव्यय; " नट्ठेसि कयाइत्ति " (भग १५)।

कयाण न [**क्रयाणक**] बेचने योग्य वस्तु, करियाना; (उप पृ १२०)।

कयार पुं [**दे**] कतवार, कूड़ा, मैला; (दे २, ११; भवि)।

कयावि देखो **कयाइ**=कदापि; (प्रासू १३१)।

कर सक [**कृ**] करना, बनाना। करइ; (हे ४, २३४)। भूका—कासी, काही, काहीअ, करिंसु; करेंसु, अकासि, अकासी; (हे ४, १६२; कुमा; भग; कप्प)। भवि—काहिइ, काही, करिस्सइ, करिहिइ, काहं, काहिमि; (हे १,५; पि ५३३; कुमा)। कर्म—कज्जइ, कीरइ, करिज्जइ; (भग; हे ४, २५०) वकृ—**करंत**, **करिंत**, **करेंत**, **करेमाण**; (पि ५०६; रयण ७२; से २, १५; सुर २, २४०; उवा)। कवकृ—**कज्जमाण**, **कीरंत**, **कीरमाण**; (पि ५४७; कुमा; गा २७२; रयण ८६)। संकृ—**करित्ता**, **करित्ताणं**, **करिदूण**, **काउं**, **काऊण**, **काऊणं**, **कट्टु**, **करिअ**, **किच्चा**, **कियाणं**; (कप्प; दस ३; षड्; कुमा; भग; अभि ४१; सूअ १, १, १; औप)। हेकृ—**काउं**, **करेत्तए**; (कुमा; भग ८,२)। कृ—**करणिज्ज**, **करणीअ**, **करिअव्व**, **करेअव्व**, **कायव्व**; (दस १०; षड्; स २१; प्रासू १४८; कुमा)। प्रयो—करावेइ, करावेइ; (पि ५५३; ५५२)।

कर पुं [**कर**] १ हस्त, हाथ; (सुर १, ५४; प्रासू ५७)। २ महसूल, चुँगी; (उप ७६८ टी; सुर १, ५४)। ३ किरण, अंशु; (उप ७६८ टी; कुमा)। ४ हाथी की सूँढ़; (कुमा)। ५ करका, शिला-वृष्टि, ओला; "करच्छडाझडियपक्खिउले " (पउम ६६, १५)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] १ हाथ से ग्रहण करना; " दइअकरग्गहलुलिओ धम्मिल्लो " (गा ५४४)। २ पाणि-ग्रहण, शादी; (राज)। °**य** पुं [°**ज**] नख; (काप्र १७२)। °**रुह** पुंन [°**करुरुह**] १ नख; (हे १, ३४)। २ नृप-विशेष; (पउम ७७, ८८)। °**लाघव** न [°**लाघव**] कला-विशेष, हस्त-लाघव; (कप्प)। °**वंदण** न [°**वन्दन**] वन्दन का एक दोष, एक प्रकार का शुल्क समझ कर वन्दन करना; (बृह ३)।

करअडी, **करअरी** स्त्री [**दे**] स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा; (दे २, १६)।

करआ स्त्री [**करका**] करका, ओला, शिला-वृष्टि; (अच्चु ६४)।

करइल्ली स्त्री [**दे**] शुष्क वृक्ष, सूखा पेड़; (दे २, १७)।

करंक पुं [**दे. करङ्क**] १ भिक्षा-पात्र; (दे २,५५; गउड)। २ अशोक वृक्ष; (दे २, ५५)।

करंक पुंन [**करङ्क**] १ हड्डी, हाड़; " करंकचयभीसणे मसाणम्मि " (सुपा १७५)। २ अस्थि-पञ्जर, हाड़-पञ्जर; (उप ७२८ टी)। ३ पानदान, पान वगैरः रखने की छोटी पेटी; " तंबोलकरंकवाहिणीओ " (कप्पू)। ४ हड्डीओं का ढेर; (सुर ६, २०३)।

करंज सक [**भञ्ज्**] तोड़ना, फोड़ना, टुकड़ा करना। करंजइ; (हे ४, १०६)।

करंज पुं [**करञ्ज**] वृक्ष-विशेष, करिञ्जा; (पण्ण १; दे १, १३; गा १२१)।

करंज पुं [**दे**] शुष्क त्वक्, सूखी त्वचा; (दे २, ८)।

करंजिअ वि [**भग्न**] तोड़ा हुआ; (कुमा)।

करंड, **करंडग**, **करंडय** पुं [**करण्ड, °क**] १ करण्ड, डिब्बा, पेटिका; (पण्ह १, ५; श्रा १४; ठा ४, ४)।

करंडिया स्त्री [**करण्डिका**] छोटा डिब्बा; (णाया १, ७; सुपा ४२८)।

करंडी स्त्री [**करण्डी**] १ डिब्बा, पेटिका; (श्रा १४)। २ कुंडी, पात्र-विशेष; (उप ५६३)।

करंडुय न [**दे**] पीठ के पास की हड्डी; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

करंत देखो **कर**=कृ।

करंब पुं [**करम्ब**] दही और भात का बना हुआ एक खाद्य द्रव्य, दध्योदन; (पाअ; दे २, १४; सुपा १३६)।

करिल्ल न [**दे**] १ वंशाङ्कुर, बाँस का कोपड़, रेतीली भूमि में उत्पन्न होने वाला वृक्ष-विशेष, जिसे ऊँट खाते हैं ; (दे २, १०)। २ करैला, तरकारी-विशेष ; "थाणु-पुरिसाइकुट्टुप्पलाइसंभियकरिल्लमंसाई" (विसे २६३)। ३ अंकुर, कन्दल ; (अनु)। ४ पुं. करीर-वृक्ष, करील ; (षड्)। ५ वि. वंशाङ्कुर के समान; "हाहा ते चेय करिल्लपियमाबाहुसयणडुल्ललियं" (गउड)।

करिस देखो **कड्ढ**=कृष्। करिसइ ; (हे ४, १८७)। वकृ—**करिसंत**; (सुर १, २३०)। संकृ—**करिसित्ता**; (पि ५८२)।

करिस पुं [**कर्ष**] १ आकर्षण, खींचाव। २ विलेखन, रेखा-करण। ३ मान-विशेष, पल का चौथा हिस्सा ; (जो १)।

करिस देखो **करीस** ; (हे १, १०१ ; पात्र)।

करिसग वि [**कर्षक**] खेती करने वाला, कृषीवल ; (उत्त ३ ; आवम)

करिसण न [**कर्षण**] १ खींचाव, आकर्षण। २ चासना, खेती करना ; ३ कृषि, खेती ; (पण्ह १, १)।

करिसय देखो **करिसग** ; (सुपा २, २६० ; सुर २, ७७)।

करिसावण पुंन [**कार्षापण**] सिक्का विशेष ; (विसे ५०६ ; अणु)।

करिसिद (शौ) वि [**कर्षित**] १ आकर्षित। २ चासा हुआ, खेती किया हुआ ; (हेका ३३१)।

करिसिय वि [**कृशित**] दुर्बल किया हुआ ; (सूअ २, ३)।

करीर पुं [**करीर**] वृक्ष-विशेष, करीर, करील ; (उप ७२८ टी ; श्रा १६ ; प्रासू ६२)।

करीस पुं [**करीष**] जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, कंडा, गोइठा ; (हे १, १०१)।

करुण देखो **कलुण** ; (स्वप्न ५३; सुपा २१६); "उज्झइ उयारभावं दक्खिण्णं करुणयं च आमुयइ" (गउड)।

करुणा स्त्री [**करुणा**] दया, दूसरे के दुःख को दूर करने की इच्छा ; (गउड; कुमा)।

करुणाइय वि [**करुणायित**] जिस पर करुणा की गई हो वह ; (गउड)।

करुणि वि [**करुणिन्**] करुणा करने वाला, दयालु ; (सण)।

करेअव्व } देखो **कर**=कृ।
करेंत }

करेडु पुं [**दे**] कृकलास, गिरगिट, सरट ; (दे २, ५)।

करेणु पुं [**करेणु**] १ हस्ती, हाथी ; २ कनेर का गाछ ; "एसो करेणू" (हे २, ११६)। ३ स्त्री. हस्तिनी, हथिनी; (हे २, ११६ ; गाया १, १; सुर ८, १३६)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री ; (उत्त १३)। °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (उत्त १३)।

करेणुआ स्त्री [**करेणु**] हस्तिनी, हथिनी ; (पात्र ; महा)।

करेमाण } देखो **कर**=कृ।
करेअव्व }

करेवाहिय वि [**करबाधित**] राज-कर से पीडित, महसूल से हैरान ; (औप)।

करोड पुं [**दे**] १ नालिकेर, नलिएर ; २ काक, कौआ ; ३ वृषभ, बैल ; (दे २, ५४)।

करोडग पुं [**दे**] पात्र-विशेष, कटोरा ; (निचू १)।

करोडिय पुं [**करोटिक**] कापालिक, भिक्षुक-विशेष ; (गाया १, ८—पत्र १५०)।

करोडिया } स्त्री [**करोटिका**, °**टी**] १ कुंडा, बड़े मुँह का
करोडी } एक पात्र; कांस्य-पात्र विशेष ; (अनु ; दे ७, १५ ; पात्र)। २ स्थगिका, पानदान ; (गाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ मिट्टी का एक जात का पात्र; (औप)। ४ कपाल, भिक्षा-पात्र ; (गाया १, ८)। ५ परोसने का एक उपकरण ; (दे २, ३८)।

करोडी स्त्री [**दे**] एक प्रकार की चींटी, क्षुद्र-जन्तु-विशेष ; (दे २, ३)।

कल सक [**कलय्**] १ संख्या करना। २ आवाज करना। ३ जानना। ४ पहिचानना। ५ संबन्ध करना। कलइ ; (हे ४, २५९ ; षड्)। कलयंति ; (विसे २०२९)। भवि—कलइस्सं; (पि ५३३)। कर्म—कलिज्जए; (विसे २०२९)। वकृ—**कलयंत**; (सुपा ४)। कवकृ—**कलिज्जंत**; (सुपा ६४)। संकृ—**कलिऊण**, **कलिअ** ; (महा; अभि १८२)। कृ—**कलणिज्ज**, **कलणीअ** ; (सुपा ६३२; पि ९१)।

कल वि [**कल**] १ मधुर, मनोहर ; (पात्र)। २ पुं. अव्यक्त मधुर शब्द; (गाया १, १६)। ३ कोलाहल, कल-कल ; (चंद १९)। ४ कर्दम, कीच, कादा ; (भत्त १३०)। ५ धान्य-विशेष, गोल चना, मटर ; (ठा ५, ३)। °**कंठी** स्त्री [°**कण्ठी**] कोकिला, कोयल ; (दे २, ३० ; कप्पू)। °**मंजुल** वि [°**मञ्जुल**] शब्द

से मधुर ; (पाअ)। °यंठ वि [°कण्ठ] कोकिल, कोयल ; (कुमा)। °यंठी देखो °कण्ठी ; (सुर ४, ४८)। °हंस पुं [°हंस] एक पक्षी, राज-हंस; (कप्प; गउड)।

कलंक पुं [**कलङ्क**] १ दाग, दोष ; (प्रासू ६४)। २ लाञ्छन, चिन्ह ; (कुमा ; गउड)।

कलंक सक [**कलङ्कय्**] कलंकित करना। कलंकइ ; (भवि)। कृ—**कलंकियव्व** ; (सुपा ४४८ ; ५८१)।

कलंक पुं [**दे**] १ वाँस, वंश ; (दे २, ८)। २ वाँस की बनाई हुई वाड ; (गाया १, १८)।

कलंकण न [**कलङ्कन**] कलंकित करना ; (पत्र ८)।

कलंकल वि [**कलङ्कल**] असमञ्जस, अशुभ ; (औप ; संथा)।

कलंकवई स्त्री [**दे**] वृति, वाड, काँटे आदि से परिच्छन्न स्थान-परिधि ; (दे २, २४)।

कलंकिअ वि [**कलङ्कित**] कलंकित, दागी ; (हे ४, ४३८)।

कलंकिल्ल वि [**कलङ्किन्**] कलंक वाला, दागी; (काल; पि ५९५)।

कलंद पुं [**कलन्द**] १ कुण्ड, कुण्डा, रंग-पात्र ; (उवा)। २ जाति से आर्य एक प्रकार के मनुष्य ; (ठा ६—पत्र ३५८)।

कलंब पुं [**कदम्ब**] १ वृक्ष-विशेष, नीप, कदम का गाछ ; (हे १, ३० ; २२२ ; गा ३७ ; कप्पू)। °**चीर** न [°**चीर**] शस्त्र-विशेष ; (विपा १, ६—पत्र ६६)। °**चीरिया** स्त्री [°**चीरिका**] तृण-विशेष, जिसका अग्र भाग अति तीक्ष्ण होता है ; (जीव ३)। °**वालुया** स्त्री [°**वालुका**] १ कदम्ब के पुष्प के आकार वाली धूली ; २ नरक की नदी; "कलंबवालुयाए दड्ढपुव्वो अणंतसो" (उत्त १९)।

कलंबु स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, नालिका; (दे २, ३)।

कलंबुअ न [**कदम्बक**] कदम्ब-वृक्ष का पुष्प ; " धारा-हयकलंबुअं पिव समुस्ससियरोमकूवे " (कप्प)।

कलंबुआ [**दे**] देखो **कलंबु** ; (पराण १ ; सुज्ज ४)।

कलंबुआ स्त्री [**कलम्बुका**] १ कदम्ब पुष्प के समान मांस-गोलक ; २ एक गाँव का नाम, जहां पर भगवान् महा-वीर को कालहस्ती ने सताया था ; (राज)।

कलकल पुं [**कलकल**] १ कोलाहल, कलकलारव ; (१४)। २ व्यक्त शब्द, स्पष्ट आवाज; (भग ६, ३३ राय)। ३ चूना आदि से मिश्रित जल; (विपा १, ६)

कलकल अक [**कलकलाय्**] 'कल-कल' आवाज करना वकृ—**कलकलंत, कलकलिंत, कलकलेंत, कलक लमाण**; (पराह १, १ ; ३ ; औप)।

कलकलिअ न [**कलकलित**] कोलाहल करना ; (दे ३६)।

कलक्ख देखो **कडक्ख**=कटाक्ष ; (गा ७०२)।

कलचुलि पुं [**करचुलि**] १ क्षत्रिय-विशेष ; २ इस का एक क्षत्रिय-वंश ; (पिंग)।

कलण देखो **करण** ; " तीसुवि कलणेसु होसु सुहसंकप्पो " (अच्चु ८२)।

कलण न [**कलन**] १ शब्द, आवाज; २ संख्यान, गिनती (विसे २०२८)। ३ धारण करना ; (सुपा २५)। ४ जानना ; (सुपा १६)। ५ प्राप्ति, ग्रहण ; " जुत्तं वा सयलकलाकलणं रयणायरसुअस्स " (श्रा १६)।

कलणा स्त्री [**कलना**] १ कृति, करण ; " जुण्णं कंदप्प-दप्पं णिहुवणकलणाकंदलिल्लं कुणंता " (कप्पू)। २ धारण करना, लगाना ; " मज्झरहे सिरिखंडपंककलणा " (कप्पू)।

कलणिज्ज देखो **कल**=कलय् ।

कलत्त न [**कलत्र**] स्त्री, भार्या ; (प्रासू ७६)।

कलधोय देखो **कलहोय** ; (औप)

कलभ पुंस्त्री [**कलभ**] १ हाथी का बच्चा ; (णाया १, १)। २ बच्चा, बालक ; " उवमासु अपज्जत्तेभकलभदंता-वहासमूरुजुअं " (हे १, ७)।

कलभिआ स्त्री [**कलभिका**] हाथी का स्त्री-बच्चा; (णाया १, १—पत्र ६३)।

कलम पुं [**दे. कलम**] १ चोर, तस्कर ; (दे २, १० ; पाअ ; आचा)। २ एक प्रकार का उत्तम चावल ; (उवा; जं २ ; पाअ)।

कलमल पुं [**कलमल**] १ पेट का मल ; (ठा ३, ३)। २ वि, दुर्गन्धि, दुर्गन्ध वाला ; (उप ८३३)

कलय देखो **कालय** ; (हे १, ६७)।

कलय पुं [**दे**] १ अर्जुन वृक्ष ; २ सोनार, सुवर्णकार ; (दे २, ५४)।

नार, सुवर्णकार ; (षड्) ।
प्रसिद्ध, विख्यात ; २ स्त्री. वृक्ष-
; (दे २, ५८) ।
ओष्ठ-लेप, होठ पर लगाया जाता
।
कल ; (हे २, २२० ; पाअ ; गा

कलायितृ] कलकल करने वाला ;

कलरुद्राणी] इस नाम का एक छन्द ;

] १ वीर्य और शोणित का समुदाय ;
सुतन्तवुतंवसंनिभं कललं" (पउम ११८,
तसंभसोणिय—" (पउम ३६, ५६) । २
३ गर्भ के अवयव रूप रक्त-विकार; (गउड) ।
कर्दम ; (गउड) ।
कलित] कर्दमित, कीच वाला किया हुआ;
वेअलियकेसरकीलालकललियद्दारा" (गउड) ।
कलविङ्क] पक्षि-विशेष, चटक, गौरिया
; गउड) ।
] तुम्बी-पात्र ; (दे २, १२ ; षड्) ।
कश] १ कलश, घड़ा ; (उवा ; णाया १,
धक छन्द का एक भेद, छन्द-विशेष; (पिंग) ।
[कलशिका] १ छोटा घड़ा ; (अणु) ।
; (आचू १) ।
ह] क्लेश, झगड़ा; (उव ; औप) ।
; (उव; पउम ७८, २८) ।
र की म्यान ; (दे २, ५ ; पाअ) ।
ड़ा करना, लड़ाई करना । वकृ—
पउम २८, ४ ; सुपा ११ ;

] म.
ाण ; (उव) ।
दि (शौ) ;
हन] झगड़ा करना ; ।
कलह=कलहाय् । कलहा खोर ;
वकृ—कलहाअंत ; (गा ६०)
[कलहायित] कलह वाला, झगड़
५४) ।

चाँदी, रजत ; (गउड ; पण्ह १, ४ ; पाअ) ।

कला स्त्री [**कला**] १ अंश, भाग, मात्रा ; (अनु ४) । २ समय का सूक्ष्म भाग ; (विसे २०२८) । ३ चन्द्रमा का सोलहवाँ हिस्सा ; (प्रासू ६५) । ४ कला, विद्या, विज्ञान ; (कप्प ; राय ; प्रासू ११२) । पुरुष-योग्य कला के मुख्य बहत्तर और स्त्री-योग्य कला के मुख्य चौसठ भेद हैं ; " बावत्तरी कला " (अणु) ; "बावत्तरिकलापंडियाविपुरिसा" (प्रासू १२६) । "चउसट्ठिकलापंडिया" (णाया १, ३) । पुरुष-कला ये हैं ;—१ लिपि-ज्ञान । २ अंक-गणित । ३ चित्र-कला । ४ नाट्य-कला । ५ गान, गाना । ६ वाद्य बजाना । ७ स्वर-गत (षड्ज, ऋषभ वगैरः स्वरों का ज्ञान) । ८ पुष्कर-गत (मृदंग, मुरजादि विशेष वाद्य का ज्ञान) । ६ समताल (संगीत के ताल का ज्ञान) । १० द्यूत कला । ११ जनवाद (लोगों के साथ आलाप-संलाप करने की विधि) । १२ पाँसे का खेल । १३ अष्टापद (चौपाट खेलने की रीति) । १४ शीघ्र-कवित्व । १५ दक-मृत्तिका (पृथक्करण-विद्या) । १६ पाक-कला । १७ पान-विधि (जलपान के गुण-दोष का ज्ञान) । १८ वस्त्र-विधि (वस्त्र के सजावट की रीति)। १६ विलेपन-विधि। २० शयन-विधि। २१ आर्या (छन्द-विशेष) बनाने की रीति। २२ प्रहेलिका (विनोद के लिए पहेलियाँ-गूढ़ाशय पद्य)। २३ मागधिका (छन्द-विशेष) । २४ गाथा (छन्द विशेष) । २५ गीति (छन्द-विशेष)। २६ श्लोक (अनुष्टुप् छन्द)। २७ हिरण्य-युक्ति (चाँदी के आभूषण की यथास्थान योजना) । २८ सुवर्ण-युक्ति । २६ चूर्ण-युक्ति (सुगन्धि पदार्थ बनाने की रीति) । ३० आभरण-विधि (आभूषणों की सजावट) । ३१ तरुणी-परिकर्म (स्त्री को सुन्दर बनाने की रीति) । ३२ स्त्री-लक्षण (स्त्री के शुभाशुभ चिह्नों का परिज्ञान) । ३३ पुरुष-लक्षण । ३४ अश्व-लक्षण । ३५ गज-लक्षण । ३६ गो-लक्षण । ३७ कुक्कुट-लक्षण । ३८ छत्र-लक्षण । ३६ दण्ड-लक्षण । ४० असि-लक्षण । ४१ मणि-लक्षण (रत्न-परीक्षा) । ४२ काकणि-लक्षण (रत्न-विशेष की परीक्षा) । ४३ वास्तुविद्या (गृह बनाने और सजाने की रीति) । ४४ स्कन्धावार-मान (सैन्य-परिमाण) । ४५ नगर-मान । ४६ चार (ग्रह-चार का परिज्ञान) । ४७ प्रतिचार (ग्रहों के वक्र-गमन वगैरः का ज्ञान, अथवा रोग-प्रतीकार-ज्ञान) । ४८ व्यूह (सैन्य-रचना) । ४६ प्रतिव्यूह (प्रतिद्वन्द्वि-व्यूह) । ५० चक्र-व्यूह । ५१

गरुड-व्यूह। ५२ शकट-व्यूह। ५३ युद्ध (मल्ल-युद्ध)। ५५ युद्धातियुद्ध (खड्गादि शस्त्र से युद्ध)। ५६ दृष्टि-युद्ध। ५७ मुष्टि-युद्ध। ५८ बाहु-युद्ध। ५९ लता-युद्ध। ६० इषु-शास्त्र (दिव्यास्त्र-सूचक शास्त्र)। ६१ त्सरु-प्रपात (खड्ग-शिक्षा शास्त्र)। ६२ धनुर्वेद। ६३ हिरण्य-पाक (चाँदी बनाने की रीति)। ६४ सुवर्ण-पाक। ६५ सूत्रक्रीड़ा (एकही सूत को अनेक प्रकार कर दिखाना)। ६६ वस्त्र-क्रीड़ा। ६७ नालिका खेल (द्यूत-विशेष)। ६८ पत्र-च्छेद्य (अनेक पत्रों में अमुक पत्र का छेदन, हस्त-लाघव)। ६९ कट-च्छेद्य (कट की तरह क्रम से छेद करने का ज्ञान)। ७० सजीव (मरी हुई धातु को फिर असल बनाना)। ७१ निर्जीव (धातु-मारण, रसायण)। ७२ शकुन-रुत (शकुन-शास्त्र); (जं २ टी; सम ८३)। °**गुरु** पुं [°**गुरु**] कलाचार्य, विद्याध्यापक, शिक्षक; (सुपा २५)। °**यरिय** पुं [°**चार्य**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (णाया १, १)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ कला वाली स्त्री। २ एक पतिव्रता स्त्री; (उप ७३६; पडि)। °**सवण्ण** न [**सवर्ण**] संख्या-विशेष; (ठा १०)।

कलाइआ स्त्री [**कलाचिका**] प्रकोष्ठ; कोनी से लेकर मणिबन्ध तक का हस्तावयव; (पाअ)।

कलाय पुं [**कलाद**] सोनार, सुवर्णकार; (पण्ह १, २; णाया १, ८)।

कलाय पुं [**कलाय**] धान्य-विशेष, गोल चना, मटर; (ठा ३, ५; अनु ५)।

कलाव पुं [**कलाप**] १ समूह, जत्था; (हे १, २३१)। २ मयूर-पिच्छ; (सुपा ४८)। ३ शरधि, तूण, जिसमें बाण रक्खे जाते हैं; (दे २, १५)। ४ कण्ठ का आभूषण; (औप)।

कलावग न [**कलापक**] १ चार श्लोकों की एक-वाक्यता। २ ग्रीवा का एक आभरण; (पण्ह २, ५)।

कलावि पुंस्त्री [**कलापिन्**] मयूर, मोर; (उप ७२८ टी)।

कलि पुं [**कलि**] १ कलह, झगड़ा; (कुमा; प्रासू ६४)। २ युग-विशेष, कलि-युग; (उप ८३३)। ३ पर्वत-विशेष; (ती ५४)। ४ प्रथम भेद; (निचू १५)। ५ एक, अकेला; (सूअ १, २, ३; भग १८, ४)। ६ दुष्ट पुरुष; "दुट्ठो कली" (पाअ)। °**ओग**, °**ओय** पुं [°**ओज**] युग्म-राशि विशेष; (भग १८, ४; ठा ४, ३)। °**ओयकडजुम्म** पुं [°**ओजकृतयुग्म**] युग्म (भग ३४, १)। °**ओयकलिओय** पुं [°**ओज**] युग्म-राशि विशेष; (भग ३४, १)। °**ओयत्र्योज** पुं [°**ओजत्र्योज**] युग्म-राशि विशेष; (भग °**ओयदावरजुम्म** पुं [°**ओजद्वापरयुग्म**] विशेष; (भग ३४, १)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] विशेष; (ती १५)। °**जुग** न [°**युग**] व (ती २१)।

कलि पुं [**दे**] शत्रु, दुश्मन; (दे २, २)।

कलिअ वि [**कलित**] १ युक्त, सहित; (पण्ह १, २ प्राप्त, गृहीत; ३ ज्ञात, विदित; (दे २, ५६; पा

कलिअ देखो **कल**=कलय्।

कलिअ पुं [**दे**] १ नकुल, न्यौला, नेवला; २ वि. गर्व-युक्त; (दे २, ५६)।

कलिआ स्त्री [**दे**] सखी, सहेली; (दे २, ५६)।

कलिआ स्त्री [**कलिका**] अविकसित पुष्प; (पाअ; ग ४४२)।

कलिंग पुं [**कलिङ्ग**] १ देश-विशेष, यह देश उड़ीसा से दक्षिण की ओर गोदावरी के मुहाने पर है; (पउम ९८, ६७; ओघ ३० भा; प्रासू ६०)। २ कलिंग देश का राजा; (पिंग)।

देखो **किलिंच**; (गा ७७०)।

कलिञ्ज पुं [**कलिञ्ज**] कट, चटाई; (निचू १७)।

कलिंज न [**दे**] छोटी लकडी; (दे २, ११)।

कलिम्ब] १ बाँस का पात्र-विशेष; "कलिंबो वंसकप्परी" (गच्छ २)। २ सूखी लकड़ी; (भग ८, ३)।

कलित्त न [**कटित्र**] कमर पर पहना जाता एक प्रकार का चर्म-मय कवच; (णाया १, १; औप)।

कलिम न [**दे**] कमल, पद्म; (दे २, ९)।

कलिल वि [**कलिल**] गहन, घना, दुर्भेद्य; (पाअ)।

कलुण वि [**करुण**] १ दीन, दया-जनक, कृपा-पात्र; (हे १, २५४; प्रासू १२६; सुर २, २२९)। २ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों में एक रस; (अणु)।

कलुणा देखो **करुणा**; (राज)।

कलुस वि [**कलुष**] १ मलिन, अस्वच्छ; "कलिकलुसं" (विपा १, १; पाअ)। २ न. पाप, दोष, मैल; (स १३२; पाअ)।

कलुसिअ वि [**कलुषित**] पाप-ग्रस्त, मलिन ; (से १०, ५ ; गउड)।

कलुसीकय वि [**कलुषीकृत**] मलिन किया हुआ ; (उव)।

कलेर पुं [**दे**] १ कंकाल, अस्थि-पञ्जर ; २ वि. कराल, भयानक ; (दे २, ५३)।

कलेवर न [**कलेवर**] शरीर, देह ; (आउ ४८ ; पिंग)।

कलेसुय न [**कलेसुक**] तृण-विशेष ; (सूअ २, २)।

कल्ल न [**कल्य**] १ कल, गया हुआ या आगामी दिन ; (पाअ ; णाया १, १ ; दे ८, ६७)। २ शब्द, आवाज ; ३ संख्या, गिनती ; (विसे ३४४२)। ४ आरोग्य, निरोगता; "कल्लं किलारुग्गं" (विसे ३४३६)। ५ प्रभात, सुबह ; (अणु)। ६ वि. नीरोग, रोग-रहित ; (ठा ३, ३ ; दे ८, ६५)। ७ वि. दक्ष, चतुर ; (दे ८, ६५)।

कल्लवत्त पुं [**कल्यवर्त्त**] कलेवा, प्रातर्भोजन, जल-पान ; (स्वप्न ६० ; नाट)।

कल्लविअ वि [**दे**] १ तीमित, आर्द्रित ; २ विस्तारित, फैलाया हुआ ; (दे २, १८)।

कल्ला स्त्री [**दे**] मद्य, दारू ; (दे २, २)।

कल्लाकल्लि, **कल्लाकल्लिं** अ [**कल्याकल्य**] १ प्रतिदिन, हर रोज ; (विपा १, ३ ; णाया १, १८)। २ प्रति-प्रभात, रोज सुबह ; (उवा ; प्राप)।

कल्लाण पुंन [**कल्याण**] १ सुख, मंगल, क्षेम ; "गुणट्ठाणपरिणामे संते जीवाण सयलकल्लाणा" (उप ६०० ; महा; प्रासू १४६)। २ निर्वाण, मोक्ष ; (विसे ३४४०)। ३ विवाह, लग्न ; (वसु)। ४ जिन भगवान् का पूर्व भव से च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल-ज्ञान तथा मोक्ष-प्राप्ति रूप अवसर ; "पंच महाकल्लाणा सव्वेसिं जिणाण होंति णिअमेण" (पंचा ८)। ५ समृद्धि, वैभव ; (कप्प)। ६ वृक्ष-विशेष; (पण्ण १)। ७ तप-विशेष ; (पव)। ८ देश-विशेष। ९ नगर-विशेष ; "कल्लाणदेसे कल्लाणनयरे संकरो णाम राया जिणभत्तो हुत्था" (ती ५१)। १० पुण्य, शुभ कर्म ; (आचा)। ११ वि. हित-कारक, सुख-कारक ; (जीव ३ ; उत्त ३)। °**कडय** न [°**कृतक**] नगर-विशेष; (ती)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] सुखावह, मङ्गल-कारक; (णाया १, १६)।

कल्लाणि वि [**कल्याणिन्**] कल्याण-प्राप्त ; (राज)।

कल्लाणी स्त्री [**कल्याणी**] १ कल्याण करने वाली स्त्री ; (गउड)। २ दो वर्ष की बछिया ; (उत्तर १०३)।

कल्लाल पुं [**कल्यपाल**] कलाल, दारू बेचने वाला ; (अणु ; आव ६)।

कल्लिं अ [**कल्ये**] कल दिन, कल को ; (गा ५०२)।

कल्लुग पुं [**कल्लुक**] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, कीट की एक जाति ; (जीव ३)।

कल्लुरिया [**दे**] देखो **कुल्लरिया**; (राज)।

कल्लेउय पुंन [**दे**] कलेवा, प्रातराश ; (ओघ ४६४ टी)।

कल्लोडय पुं [**दे**] दमनीय बैल, साँढ; (आचा २, ४, २)।

कल्लोडिआ [**दे**] देखो **कल्होडी** ; (नाट)।

कल्लोल पुं [**कल्लोल**] तरङ्ग, ऊर्मि ; (औप ; प्रासू १२७)।

कल्लोल वि [**दे. कल्लोल**] शत्रु, दुश्मन ; (दे २, २)।

कल्लोलिणी स्त्री [**कल्लोलिनी**] नदी ; (कप्पू)।

कल्हार न [**कह्लार**] सफेद कमल ; (पण्ण १ ; दे २, ७६)।

कल्हिं देखो **कल्लिं** ; (गा ८०२)।

कल्होड पुं [**दे**] वत्सतर, बछड़ा ; (दे २, ६)।

कल्होडी स्त्री [**दे**] वत्सतरी, बछिया ; (दे २, ६)।

कव अक [**कु**] आवाज करना, शब्द करना। **कवइ** ; (हे ४, २३३)।

कवइय वि [**कवचित**] बख्तर वाला, वर्मित ; (पउम ७०, ७१ ; औप)।

कवंध देखो **कमंध** ; (पण्ह १, ३ ; महा ; गउड)।

कवचिया स्त्री [**कवचिका**] कलाचिका, प्रकोष्ठ ; (राज)।

कवट्टिअ वि [**कदर्थित**] पीड़ित, हैरान किया हुआ ; (हे १, १२४)।

कवड न [**कपट**] माया, छद्म, शाठ्य; (पाअ ; सुर ४, १६१)।

कवडि देखो **कवड्डि** ; "तो भणइ कवडिजक्खो अज्जवि तं पुच्छसे एयं" (सुपा ५४२)।

कवड्ड पुं [**कपर्द**] बड़ी कौड़ी, वराटिका ; (दे १, ११० ; जी १५)।

कवड्डि पुं [**कपर्दिन्**] १ यक्ष-विशेष ; (सुपा ५१२)। २ महादेव, शिव ; (कुमा)।

कवड्डिया स्त्री [**कपर्दिका**] कौड़ी, वराटिका; (सुपा १४; ५४५)।

कवण वि [**किम्**] कौन ? (पउम ७२, ८ ; कुमा)।

कवय पुंन [**कवच**] वर्म, बख्तर ; (विपा १, २ ; पउम २४, ३१ ; पाअ)।

कवय न [**दे**] वनस्पति-विशेष, भूमिच्छत्र ; (दे २, ३)।

कवरी स्त्री [**कवरी**] केश-पाश, धम्मिल्ल ; (कुमा ; वेणी १८३)।

कवल सक [**कवलय्**] ग्रसना, हड़प करना। कवलेइ ; (गउड)। कर्म—कवलिज्जइ ; (गउड)। कवकृ— **कवलिज्जंत** ; (सुपा ७०)। संकृ—**कवलिऊण** ; (गउड)।

कवल पुं [**कवल**] कवल, ग्रास; (पव ४ ; औप)।

कवलण न [**कवलन**] ग्रसन, भक्षण ; (काप्र १७० ; सुपा ४७४)।

कवलिअ वि [**कवलित**] ग्रसित, भक्षित ; (पाअ; सुर २, १४६ ; सुपा १२१; ३१६)।

कवलिआ स्त्री [**दे**] ज्ञान का एक उपकरण; (आप ८)।

कवल्लि, **कवल्ली** स्त्री [**दे**] पात्र-विशेष, गुड़ वगैरः पकाने का भाजन, कड़ाह, कराह "डज्झंतेण य गिम्हे कालसिलाए कवल्लिभूयाए" (संथा १२० ; विपा १, ३)।

कवाड, **कवाल** पुंन [**कपाट**] किवाड़, किवाड़ी, (गउड ; औप ; गा ६२०)।

कवाल न [**कपाल**] १ खोपड़ी, सिर की हड्डी ; "करकलिअकवालो" (सुपा १५२)। २ घट-कर्पर, भिक्षा-पात्र; (आचा; हे १, २३१)।

कवास पुं [**दे**] एक प्रकार का जूता, अर्धजङ्घा ; (दे २, ५)।

कवि देखो **कइ**=कपि ; (सुर १, २४६)।

कवि पुं [**कवि**] १ कविता करने वाला ; (सुर १, १८ ; सुपा ५६२ ; प्रासु ६३)। २ शुक्र, ग्रह-विशेष ; (सुपा ५६२)। °**त्त** न [°**त्व**] कविता, कवित; (सुर १, ४२)। देखो **कइ**=कवि।

कविअ न [**कविक**] लगाम ; (पाअ ; सुपा २१३)।

कविंजल देखो **कपिंजल** ; (आचा २)।

कविकच्छु, **कविगच्छु** देखो **कइकच्छु** ; (पण्ह २, ५ ; आ १४ ; दे १, २६ ; जीवे ३)।

कविट्ठ देखो **कइत्थ** ; (पण्ण १ ; दे ३, ४५)।

कविड न [**दे**] घर का पीछला आँगन ; (दे २, ८)।

कवित्थ देखो **कइत्थ** ; (उप १०३१ टी)।

कवियच्छु देखो **कइकच्छु** ; (स २३६)।

कविल पुं [**दे**] श्वान; कुत्ता ; (दे २, ६ ; पाअ)।

कविल पुं [**कपिल**] १ वर्ण-विशेष, भूरा रंग, तामड़ा वर्ण; (उवा २)। २ पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, ४)। ३ सांख्य मत का प्रवर्तक मुनि-विशेष ; (आवम ; औप)। ४ एक ब्राह्मण महर्षि ; (उत्त ८)। ५ इस नामका एक वासुदेव ; (णाया १, १६)। ६ राहु का पुद्गल-विशेष ; (सुज्ज २०)। ७ भूरा रंग का, मटमैला रंग का ; (पउम ६, ७० ; से ७, २२)। °**ा** स्त्री [°**ा**] एक ब्राह्मणी का नाम; (आचू)।

कविलडोला स्त्री [**दे. कपिलडोला**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती में "खडमाकडी" कहते हैं; (जी १८)।

कविलास देखो **कइलास** ; "तेसुवि हवेज्ज कविलासमेरुगिरिसंनिभा कूडा" (उव)।

कविलिअ वि [**कपिलित**] कपिल रंग वाला किया हुआ ; भूरे रंग से रंगित ; (गउड)।

कविल्लुअ न [**दे**] पात्र-विशेष, कड़ाही; (बृह ५)।

कविस पुं [**कपिश**] १ वर्ण-विशेष,काला-पीला रंग, बदामी, कृष्ण-पीत-मिश्रित वर्ण ; २ वि. कपिश वर्ण वाला ; (पाअ ; गउड)।

कविस न [**दे**] दारू, मद्य, मदिरा ; (दे २, २)।

कविसा स्त्री [**दे**] अर्धजङ्घा, एक प्रकार का जूता; (दे २, ५)।

कविसायण पुंन [**कपिशायन**] मद्य-विशेष, गुड़ का दारू; (पण्ण १७—पत्र ५३२)।

कविसीसग, **कविसीसय** पुंन [**कपिशीर्षक**] प्राकार का अग्र-भाग ; (औप ; णाया १, १ ; राय)।

कवेल्लुय देखो **कविल्लुय** ; (ठा ८—पत्र ४१७)।

कवोय पुं [**कपोत**] १ कबूतर, परेवा ; (गउड ; विपा १, ७)। २ म्लेच्छ-देश विशेष ; (पउम २७, ७)। ३ न. कूष्माण्ड, कोहला ; (भग १५)।

कवोल पुं [**कपोल**] गाल, गण्ड ; (सुर ३, १२० ; हे ४, ३६५)।

कव्व न [**काव्य**] १ कविता, कवित्व ; (ठा ४, ४ ; प्रासू १)। २ पुं. ग्रह-विशेष, शुक्र ; (सुर ३, ५३)। ३ वि. वर्णनीय, श्लाघनीय ; (हे २, ७९)। °**इत्त** वि [°**वत्**] काव्य वाला; (हे २, १५९)।

कव्व न [**क्रव्य**] मांस ; (सुर ३, ५३)।

कव्वड देखो **कब्बड** ; (भवि)।

कलुसिअ वि [**कलुषित**] पाप-ग्रस्त, मलिन ; (से १०, ५ ; गउड) ।

कलुसीकय वि [**कलुषीकृत**] मलिन किया हुआ ; (उव)।

कलेर पुं [**दे**] १ कंकाल, अस्थि-पञ्जर ; २ वि. कराल, भयानक ; (दे २, ५३) ।

कलेवर न [**कलेवर**] शरीर, देह ; (आउ ४८ ; पिंग)।

कलेसुय न [**कलेसुक**] तृण-विशेष ; (सूअ २, २) ।

कल्ल न [**कल्य**] १ कल, गया हुआ या आगामी दिन ; (पाअ ; णाया १, १ ; दे ८, ६७) । २ शब्द, आवाज ; ३ संख्या, गिनती ; (विसे ३४४२) । ४ आरोग्य, निरोगता; "कल्लं किलारुग्गं" (विसे ३४३६)। ५ प्रभात, सुबह ; (अणु) । ६ वि. नीरोग, रोग-रहित ; (ठा ३, ३ ; दे ८, ६५) । ७ वि. दक्ष, चतुर ; (दे ८, ६५) ।

कल्लवत्त पुं [**कल्यवर्त्त**] कलेवा, प्रातर्भोजन, जल-पान ; (स्वप्न ६० ; नाट) ।

कल्लविअ वि [**दे**] १ तीमित, आर्द्रित ; २ विस्तारित, फैलाया हुआ ; (दे २, १८) ।

कल्ला स्त्री [**दे**] मद्य, दारू ; (दे २, २) ।

कल्लाकल्लि, **कल्लाकल्लिं** अ [**कल्याकल्य**] १ प्रतिदिन, हर रोज ; (विपा १, ३ ; णाया १, १८) । २ प्रति-प्रभात, रोज सुबह ; (उवा ; प्राप) ।

कल्लाण पुंन [**कल्याण**] १ सुख, मंगल, क्षेम ; "गुणट्ठाणपरिणामे संते जीवाण सयलकल्लाणा" (उप ६०० ; महा; प्रासू १४६) । २ निर्वाण, मोक्ष ; (विसे ३४४०) । ३ विवाह, लग्न ; (वसु) । ४ जिन भगवान् का पूर्व भव से च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल-ज्ञान तथा मोक्ष-प्राप्ति रूप अवसर ; "पंच महाकल्लाणा सव्वेसिं जिणाण होंति णिअमेण" (पंचा ८) । ५ समृद्धि, वैभव ; (कप्प) । ६ वृक्ष-विशेष; (पण्ण १)। ७ तप-विशेष ; (पव)। ८ देश-विशेष । ९ नगर-विशेष ; "कल्लाणदेसे कल्लाणनयरे संकरो णाम राया जिणभत्तो हुत्था" (ती ५१) । १० पुण्य, शुभ कर्म ; (आचा) । ११ वि. हित-कारक, सुख-कारक ; (जीव ३ ; उत्त ३) । °कडय न [°कृतक] नगर-विशेष; (ती)। °कारि वि [°कारिन्] सुखावह, मङ्गल-कारक; (णाया १, १६) ।

कल्लाणि वि [**कल्याणिन्**] कल्याण-प्राप्त ; (राज) ।

कल्लाणी स्त्री [**कल्याणी**] १ कल्याण करने वाली स्त्री ; (गउड) । २ दो वर्ष की बछिया ; (उत्तर १०३) ।

कल्लाल पुं [**कल्यपाल**] कलाल, दारू बेचने वाला ; (अणु ; आव ६) ।

कल्लिं अ [**कल्ये**] कल दिन, कल को ; (गा ५०२) ।

कल्लुग पुं [**कल्लुक**] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, कीट की एक जाति ; (जीव ३) ।

कल्लुरिया [**दे**] देखो **कुल्लरिया**; (राज) ।

कल्लेउय पुंन [**दे**] कलेवा, प्रातराश ; (ओघ ४६४ टी) ।

कल्लोडय पुं [**दे**] दमनीय बैल, साँढ; (आचा २, ४, २)।

कल्लोडिआ [**दे**] देखा **कल्होडी** ; (नाट) ।

कल्लोल पुं [**कल्लोल**] तरङ्ग, ऊर्मि ; (औप ; प्रासू १२७) ।

कल्लोल वि [**दे. कल्लोल**] शत्रु, दुश्मन ; (दे २, २) ।

कल्लोलिणी स्त्री [**कल्लोलिनी**] नदी ; (कप्पू) ।

कल्हार न [**कह्लार**] सफेद कमल ; (पण्ण १ ; दे २, ७६) ।

कल्हिं देखो **कल्लिं** ; (गा ८०२) ।

कल्होड पुं [**दे**] वत्सतर, बछड़ा ; (दे २, ६) ।

कल्होडी स्त्री [**दे**] वत्सतरी, बछिया ; (दे २, ६) ।

कव अक [**कु**] आवाज करना, शब्द करना । **कवइ** ; (हे ४, २३३) ।

कवइय वि [**कवचित**] बख्तर वाला, वर्मित ; (पउम ७०, ७१ ; औप) ।

कवंध देखो **कमंध** ; (पण्ह १, ३ ; महा ; गउड) ।

कवचिया स्त्री [**कवचिका**] कलाचिका, प्रकोष्ठ ; (राज)।

कवट्टिअ वि [**कदर्थित**] पीड़ित, हैरान किया हुआ ; (हे १, १२४) ।

कवड न [**कपट**] माया, छद्म, शाठ्य; (पाअ ; सुर ४, १६१) ।

कवडि देखो **कवड्डि** ; "तो भणइ कवडिजक्खो अज्जवि तं पुच्छसे एयं" (सुपा ५४२) ।

कवड्ड पुं [**कपर्द**] बड़ी कौड़ी, वराटिका ; (दे १, ११० ; जी १५) ।

कवड्डि पुं [**कपर्दिन्**] १ यक्ष-विशेष ; (सुपा ५१२) । २ महादेव, शिव ; (कुमा) ।

कवड्डिया स्त्री [**कपर्दिका**] कौड़ी, वराटिका; (सुपा १४; ५४५) ।

कवण वि [**किम्**] कौन ? (पउम ७२, ८ ; कुमा) ।

कवय पुंन [**कवच**] वर्म, बख्तर ; (विपा १, २ ; पउम २४, ३१ ; पाअ) ।

कवय न [**दे**] वनस्पति-विशेष, भूमिच्छत्र ; (दे २, ३) ।

कवरी स्त्री [**कवरी**] केश-पाश, धम्मिल्ल ; (कुमा ; वेणी १८३) ।

कवल सक [**कवलय्**] ग्रसना, हड़प करना । कवलेइ ; (गउड) । कर्म—कवलिज्जइ ; (गउड) । कवक्—**कवलिज्जंत** ; (सुपा ७०) । संक्—**कवलिऊण** ; (गउड) ।

कवल पुं [**कवल**] कवल, ग्रास; (पव ४ ; औप) ।

कवलण न [**कवलन**] ग्रसन, भक्षण ; (काप्र १७० ; सुपा ४७४) ।

कवलिअ वि [**कवलित**] ग्रसित, भक्षित ; (पाअ; सुर २, १४६ ; सुपा १२१; ३१६) ।

कवलिआ स्त्री [**दे**] ज्ञान का एक उपकरण; (आप ८) ।

कवल्लि, **कवल्ली** स्त्री [**दे**] पात्र-विशेष, गुड़ वगैरः पकाने का भाजन, कड़ाह, कराह "डज्झंतेण य गिम्हे कालसिलाए कवल्लिभूयाए " (संथा १२० ; विपा १, ३) ।

कवाड, **कवाल** पुंन [**कपाट**] किवाड़, किवाड़ी, (गउड ; औप ; गा ६२०) ।

कवाल न [**कपाल**] १ खोपड़ी, सिर की हड्डी ; "करकलिअकवालो" (सुपा १५२) । २ घट-कर्पर, भिक्षा-पात्र; (आचा; हे १, २३१) ।

कवास पुं [**दे**] एक प्रकार का जूता, अर्धजङ्घा ; (दे २, ५) ।

कवि देखो **कइ**=कपि ; (सुर १, २४६) ।

कवि पुं [**कवि**] १ कविता करने वाला ; (सुर १, १८ ; सुपा ५६२ ; प्रासू ६३) । २ शुक्र, ग्रह-विशेष ; (सुपा ५६२) । °**त्त** न [°**त्व**] कविता, कवित; (सुर १, ४२) । देखो **कइ**=कवि ।

कविअ न [**कविक**] लगाम ; (पाअ ; सुपा २१३) ।

कविंजल देखो **कपिंजल** ; (आचा २) ।

कविकच्छु, **कविगच्छु** देखो **कइकच्छु** ; (पण्ह २, ५ ; श्रा १४ ; दे १, २६ ; जीव ३) ।

कविट्ठ देखो **कइत्थ** ; (पण्ण १ ; दे ३, ४५) ।

कविड न [**दे**] वर का पीछला आँगन ; (दे २, ६) ।

कवित्थ देखो **कइत्थ** ; (उप १०३१ टी) ।

कवियच्छु देखो **कइकच्छु** ; (स २३६) ।

कविल पुं [**दे**] श्वान; कुत्ता ; (दे २, ६ ; पाअ) ।

कविल पुं [**कपिल**] १ वर्ण-विशेष, भूरा रंग, तामड़ा वर्ण; (उवा २) । २ पक्षि-विशेष ; (पगह १, ४) । ३ सांख्य मत का प्रवर्तक मुनि-विशेष ; (आवम ; औप) । ४ एक ब्राह्मण महर्षि ; (उत ८) । ५ इस नामका एक वासुदेव ; (णाया १, १६) । ६ राहु का पुद्गल-विशेष ; (सुज्ज २०) । ७ भूरा रंग का, मटमैला रंग का ; (पउम ६, ७० ; से ७, २२) । °**ा** स्त्री [°**ा**] एक ब्राह्मणी का नाम; (आचू) ।

कविलडोला स्त्री [**दे. कपिलडोला**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती में "खडमाकड़ी" कहते हैं; (जी १८) ।

कविलास देखो **कइलास** ; "तेसुवि हवेज्ज कविलासमेरुगिरिसंनिभा कूडा" (उव) ।

कविलिअ वि [**कपिलित**] कपिल रंग वाला किया हुआ; भूरे रंग से रंगित ; (गउड) ।

कविल्लुअ न [**दे**] पात्र-विशेष, कड़ाही; (बृह ५) ।

कविस पुं [**कपिश**] १ वर्ण-विशेष,काला-पीला रंग, बदामी, कृष्ण-पीत-मिश्रित वर्ण ; २ वि. कपिश वर्ण वाला ; (पाअ ; गउड) ।

कविस न [**दे**] दारू, मद्य, मदिरा ; (दे २, २) ।

कविसा स्त्री [**दे**] अर्धजङ्घा, एक प्रकार का जूता; (दे २, ५) ।

कविसायण पुंन [**कपिशायन**] मद्य-विशेष, गुड़ का दारू; (पण्ण १७—पत्र ५३२) ।

कविसीसग, **कविसीसय** पुंन [**कपिशीर्षक**] प्राकार का अग्र-भाग ; (औप ; णाया १, १ ; राय) ।

कवेल्लुय देखो **कविल्लुय** ; (ठा ८—पत्र ४१७) ।

कवोय पुं [**कपोत**] १ कबूतर, परेवा ; (गउड ; विपा १, ७) । २ म्लेच्छ-देश विशेष ; (पउम २७, ७) । ३ न. कूष्माण्ड, कोहला ; (भग १५) ।

कवोल पुं [**कपोल**] गाल, गण्ड ; (सुर ३, १२० ; हे ४, ३९५) ।

कव्व न [**काव्य**] १ कविता, कवित्व ; (ठा ४, ४ ; प्रासू १) । २ पुं. ग्रह-विशेष, शुक्र ; (सुर ३, ५३) । ३ वि. वर्णनीय, श्लाघनीय ; (हे २, ७६) । °**इत्त** वि [°**वत्**] काव्य वाला; (हे २, १५६) ।

कव्व न [**क्रव्य**] मांस ; (सुर ३, ५३) ।

कव्वड देखो **कब्बड** ; (भवि) ।

कव्वाड पुं [**दे**] दक्षिण हस्त, दाहिना हाथ; (दे २, १०)।
कव्वाय पुं [**क्रव्याद**] १ राक्षस, पिशाच ; (पउम ७, १० ; दे २, १६ ; स २१३) । २ वि. कच्चा मांस खाने वाला ; (पउम २२, ३५) ; ३ मांस खाने वाला ; (पाअ)।
कव्वाल न [**दे**] १ कर्म-स्थान, कार्यालय ; २ गृह, घर ; (दे २, ५२)।
कस सक [**कष्**] १ ठार मारना। २ कसना, घिसना। ३ मलिन करना। कसंति ; (पराण १३)। कवकृ— **कसिज्जमाण** ; (सुपा ६१५)।
कस पुं [**कश**] चर्म-यष्टि, चाबुक ; (पराह १, ३ ; णाया १, २ ; स २८७)।
कस पुं [**कष**] १ कसौटी, कष-क्रिया ; " तावच्छेयकसेहिं सुद्धं पावइ सुवन्नमुप्पन्नं " (सुपा ३८६)। २ कसौटी का पत्थर ; (पाअ)। ३ वि. हिंसक, मार डालने वाला, ठार मारने वाला ; (ठा ४, १)। ४ पुंन. संसार, भव, जगत् ; (उत्त ४)। ५ न. कर्म, कर्म-पुद्गल ; " कम्मं कसं भवो वा कसं " (विसे १२२८)। °**पट्ट**, °**वट्ट** पुं [°**पट्ट**] कसौटी का पत्थर ; (अणु ; गा ६२६; सुर २, २४)। °**हि** पुंस्त्री [°**हि**] सर्प की एक जाति ; (पराण १)।
कसई स्त्री [**दे**] फल-विशेष, अरगयचारी वनस्पति का फल; (दे २, ६)।
कसट (पै) देखो **कट्ठ=**कष्ट ; (हे ४, ३१४ ; प्राप्र)।
कसट्ट पुं [**दे**] कतवार, कूड़ा ; (ओघ ५५७)।
कसण पुं [**कृष्ण**] १ वर्ण-विशेष; २ वि. कृष्ण वर्ण वाला, काला, श्याम ; (हे २, ७५ ; ११० ; कुमा)। °**पक्ख** पुं [°**पक्ष**] कृष्ण-पक्ष, बदि पखवारा ; (पाअ)। °**सार** पुं [°**सार**] १ वृक्ष-विशेष ; २ हरिण की एक जाति ; (नाट—मृच्छ ३)।
कसण वि [**कृत्स्न**] सकल, सब, सर्व ; (हे २, ७५)।
कसणसिअ पुं [**दे**] बलभद्र, वासुदेव का बड़ा भाई ; (दे २, २३)।
कसणिअ वि [**कृष्णित**] काला किया हुआ ; (पाअ)।
कसमीर देखो **कम्हीर** ; (पउम ६८, ६५)।
कसर पुं [**दे**] अधम बैल ; (दे २, ४ ; गा ७६५)। " नणु सीलभरुव्वहणे, तेवि हु सीयंति का(? क)सरुव्व" (पुप्फ ६३)।
कसर पुंन [**दे. कसर**] रोग-विशेष, कराडू-विशेष ; " कच्छुख(? क)सराभिभूआ खरतिक्खणक्खकंडूइअविकय-तणू " (जं २—पत्र १६५)।
कसरक्क पुंन [**दे. कसरत्क**] १ चर्वण-शब्द, खाते समय जो शब्द होता है वह ; " खज्जइ न उ कसरक्केहिं " (हे ४, ४२३ ; कुमा)। २ कुड्मल ;
"ते गिरिसिहरा ते पीलुपल्लवा ते करीरकसरक्का।
लब्भंति करह ! मरुविलसियाइं कत्तो वणेत्थम्मि "
(वज्जा ४६)।
कसव्व न [**दे**] वाष्प, भाफ ; २ वि. स्तोक, अल्प ; ३ प्रचुर, व्याप्त ; (दे २, ५३)। ४ आर्द्र, गीला ; " रुहिरकसव्वालंबियदीहरवणकोलवत्थनिउरंबं " (स ४३७; दे २, ५३)। ५ कर्कश, परुष; " बूढोअयकयरवचुगण-कलुसपालासकलकसव्वाओ " (गउड)।
कसा स्त्री [**कशा, कसा**] चर्म-यष्टि, चाबुक, कोड़ा ; (विपा १, ६ ; सुपा ३४५)।
कसा देखो **कासा** ; (षड्)।
कसाइ वि [**कषायिन्**] १ कषाय रंग वाला। २ क्रोध-मान-माया-लोभ वाला ; (पराण १८ ; आचा)।
कसाइअ वि [**कषायित**] ऊपर देखो ; (गा ४८२ ; श्रा ३५ ; आचा)।
कसाय सक [**कशाय्**] ताड़न करना, मारना। भूका— कसाइत्था ; (आचा)।
कसाय पुं [**कषाय**] १ क्रोध, मान, माया और लोभ ; (विसे १२२६ ; दं ३)। २ रस-विशेष, कबैला ; (ठा १)। ३ वर्ण-विशेष, लाल-पीला रङ्ग ; (उवा २२)। ४ क्वाथ, काढ़ा ; ५ वि. कबैला स्वाद वाला ; ६ कषाय रंग वाला ; ७ सुगन्धी, खुशबुदार ; (हे २, १६०)।
कसार [**दे**] देखो **कंसार** ; (भवि)।
कसिअ न [**कशिका**] प्रतोद, चाबुक ; " अंबो मए भद्दवदीए कसिअं आढत्तं " (प्रयौ १०८)।
कसिआ स्त्री ऊपर देखो ; (सुर १३, १७०)।
कसिआ स्त्री [**दे**] फल-विशेष; अरगयचारी नामक वनस्पति का फल ; (दे २, ६)।
कसिट (पै) देखो **कट्ठ=**कष्ट ; (षड्)।
कसिण देखो **कसण=**कृष्ण, कृत्स्न ; (हे २, ७५ ; कुमा ; पाअ ; दे ४, १२)।

कसेरु } पुंन [**कशेरु, °क**] जलीय कन्द-विशेष; (गउड;
कसेरुय } पएण १) ।

कस्स पुं [**दे**] पङ्क, कर्दम, कादा ; (दे २, २) ।

कस्सय न [**दे**] प्राभृत, उपहार, भेंट; (दे २, १२) ।

कस्सव पुं [**°काश्यप**] १ वंश-विशेष ; " कस्सववंसुतंसो" (विक्र ६५) । २ ऋषि-विशेष ; (अभि २६) ।

कह सक [**कथय्**] कहना, बोलना । कहइ; (हे ४,२)। कर्म—कत्थइ, कहिज्जइ ; (हे १, १८७ ; ४, २४६)। वकृ—**कहंत, कहिंत, कहेमाण**; (रयण ७२ ; सुर ११, १४८)। कवकृ—**कत्थंत, कहिज्जंत, कहिज्जमाण**; (राज ; सुर १, ४४ ; गा १६८; सुर १४, ६४)। संकृ—**कहिउं, कहिऊण** ; (महा ; काल) । कृ—**कहणिज्ज, कहियव्व, कहेयव्व, कहणीय**; (सूत्र १, १, १ ; सुर ४, १६२ ; सुपा ३१६ ; (पण्ह २, ४; सुर १२, १७०) ।

कह सक [**क्वथ्**] क्वाथ करना, उबालना । कहइ ; (षड्) ।

कह पुं [**कफ**] कफ, शरीरस्थ धातु विशेष, बलगम ; (कुमा) ।

कह देखो **कहं** ; (हे १, २६ ; कुमा ; षड्) । **°कहवि** देखो **कहं-कहंपि** ; (गउड ; उप ७२८ टी) । **°वि** देखो **कहं-पि** ; (प्रासू ११४; १४१) ।

कहआ अ [**कथंवा**] वितर्क और आश्चय अर्थ को बतलाने वाला अव्यय ; (से ७, ३४) ।

कहं अ [**कथम्**] १ कैसे, किस तरह ? (स्वप्न ४५ ; कुमा) । २ क्यों, किस लिए ? (हे १, २६ ; षड् ; महा) । **°कहंपि** अ [**°कथमपि**] किसी तरह ; (गा १४६) । **°कहा** स्त्री [**°कथा**] राग-द्वेष को उत्पन्न करने वाली कथा, विकथा ; (आचा) । **°चि, °ची** अ [**°चित्**] किसी तरह, किसी प्रकार से ; (श्रा १२ ; उप ५३० टी) । **°पि** अ [**°अपि**] किसी तरह ; (गउड) ।

कहकह पुं [**कहकह**] प्रमोद-कलकल, खुशी का शोर ; (ठा ३, १—पत्र ११६ ; कप्प) ।

कहकह अक [**कहकहय्**] खुशी का शोर मचाना । वकृ—**कहकहिंत** ; (पण्ह १, ३) ।

कहकहकह पुं [**कहकहकह**] खुशी का शोर; (भग) ।

कहग वि [**कथक**] १ कहने वाला, (सद्धि २३) । २ पुं. कथा-कार ; (उप १०३१ टी) ।

कहण न [**कथन**] कथन, उक्ति ; (धर्म १) ।

कहणा स्त्री [**कथना**] ऊपर देखो ; (अत २ ; उप ४६७; ६६८) ।

कहय देखो **कहग** ; (दे १, १४५) ।

कहल्ल पुंन [**दे**] कर्पर, खप्पर ; (अंत १२) ।

कहा स्त्री [**कथा**] कथा, वार्ता, हकीकत ; (सुर २, २५०; कुमा ; स्वप्न ८३) ।

कहाणग } न [**कथानक**] १ कथा, वार्ता ; (श्रा १२ ;
कहाणय } उप पृ ११६) । २ प्रसंग, प्रस्ताव ; " कयं से नामं जालिणित्ति कहाणयविसेसेण" (स १३३ ; ५८८) । ३ प्रयोजन, कार्य ; "कहाणयविसेसेण समागओ पाडलावहं" (स ५८५) ।

कहाव सक [**कथय्**] कहलाना, बुलवाना । कहावेइ ; (महा) ।

कहावण पुं [**कार्षापण**] सिक्का-विशेष ; (हे २ , ७१ ; ९३ ; कुमा) ।

कहाविअ वि [**कथित**] कहलाया हुआ ; (सुपा ६५ ; ४५७) ।

कहि } अ [**क्व, कुत्र**] कहां, किस स्थान में ? (उवा;
कहिआ } भग; नाट ; कुमा ; उवा) ।
कहिं }

कहित्तु वि [**कथयितृ**] कहने वाला, भाषक ; (सम १५) ।

कहिय वि [**कथित**] कथित, उक्त ; (उव ; नाट) ।

कहिया स्त्री [**कथिका**] कथा, कहानी ; (उप १०३१ टी) ।

कहु (अप) अ [**कुतः**] कहां से, ? (षड्) ।

कहेड वि [**दे**] तरुण, जुवान ; (दे २, १३) ।

कहेत्तु देखो **कहित्तु** ; (ठा ४, २) ।

काइअ वि [**कायिक**] शारीरिक; शरीर-संबन्धी ; (श्रा ३४ ; प्रामा) ।

काइआ } स्त्री [**कायिकी**] १ शरीर-सबन्धी क्रिया, शरीर
काइगा } से निर्वृत्त व्यापार ; (ठा २, १ ; सम १०; नव १७) । २ शौच-क्रिया ; (स ६४६) । ३ मूत्र, पेशाब; (ओघ २१६ ; उप पृ २७८) ।

काइंदी स्त्री [**काकन्दी**] इस नाम की एक नगरी, बिहार की एक नगरी ; (संथा ७६) ।

काइणी स्त्री [**दे**] गुन्जा, लाल रत्ती ; (दे २, २१) ।

काई स्त्री [**काकी**] कौए की मादा ; (विपा १, ३)।
काउ स्त्री [**कापोती**] लेश्या-विशेष, आत्मा का एक प्रकार का परिणाम ; (भग ; आचा)। °**लेसा** स्त्री [°**लेश्या**] आत्म-परिणाम विशेष ; (सम ; ठा ३, १)। °**लेस्स** वि [°**लेश्य**] कापोत लेश्या वाला ; (पगण १७ ; भग)। °**लेस्सा** देखो °**लेसा** ; (पगण १७)।
काउं देखो **कर=कृ** ।
काउंवर पुं [**काकोदुम्बर**] नीचे देखो ; (राज)।
काउंवरी स्त्री [**काकोदुम्बरी**] औषधि-विशेष ; "निवंब-उंवउंवरकाउंवरिवोरि—" (उप १०३१ टी ; पगण १)।
काउकाम वि [**कर्त्तुकाम**] करने को चाहने वाला; (ओघ ५३७)।
काउड्डावण न [**कायोड्डायन**] उच्चाटन, दूर-स्थित दूसरे के शरीर का आकर्षण करना ; (णाया १, १४)।
काउदर पुं [**काकोदर**] साँप की एक जाति ; (पगह १, १)।
काउमण वि [**कर्त्तुमनस्**] करने की चाह वाला; (उव ; उप पृ ७० ; सं ६०)।
काउरिस पुं [**कापुरुष**] १ खराब आदमी, नीच पुरुष ; २ कातर, डरपोक पुरुष ; (गउड ; सुर ८, १५० ; सुपा १६२)।
काउल्ल पुं [**दे**] वक, बगुला ; (दे २, ६)।
काउसग्ग / **काउस्सग्ग** पुं [**कायोत्सर्ग**] १ शरीर पर के ममत्व का त्याग ; (उत्त २६)। २ कायिक क्रिया का त्याग ; ३ ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता ; (पडि)।
काऊ देखो **काउ** ; (ठा १ ; कम्म ४, १३)।
काऊण / **काऊणं** देखो **कर=कृ** ।
काओदर देखो **काउदर** ; (स्वप्न ६८)।
काओली स्त्री [**काकोली**] कन्द-विशेष, वनस्पति-विशेष; (पगण १)।
काओवग पुं [**कायोपग**] संसारी आत्मा ; (सूअ २, ६)।
काओसग्ग देखो **काउसग्ग** ; (भवि)।
काक पुं [**काक**] १ कौआ, वायस ; (अनु ३)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। °**जंघा** स्त्री [°**जङ्घा**] वनस्पति-विशेष, चकसेनी, घूंघची ; (अनु ३)। देखो **काग, काय=काक** ।
काकंदग पुं [**काकन्दक**] एक जैन महर्षि ; (कप्प)।
काकंदिय पुं [**काकन्दिक**] एक जैन महर्षि ; (कप्प)।
काकंदिया स्त्री [**काकन्दिका**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।
काकंदी देखो **काइंदी** ; (णाया १, ६ ; ठा ५, १)।
काकणि देखो **कागणि** ; (विपा १, २)।
काकलि देखो **कागलि** ; (ठा १०—पत्र ४७१)।
काग देखो **काक** ; (दे १, १०६ ; प्रासू ६०)। °**ताल-संजीवगनाय** पुं [°**तालसंजीवकन्याय**] काकतालीय-न्याय ; (उप १४२ टी)। °**तालिज्ज**, °**तालीअ** न [°**तालीय**] जैसे कौए का अतर्कित आगमन और ताल-फल का अकस्मात् गिरना होता है ऐसा अवितर्कित संभव, अकस्मात् किसी कार्य का होना ; (आचा ; दे ५, १५)। °**थल** न [°**स्थल**] देश-विशेष; (दे २, २७)। °**पाल** पुं [°**पाल**] कुष्ट-विशेष ; (राज)। °**पिंडी** स्त्री [°**पिण्डी**] अग्र-पिण्ड ; (आचा २, १, ६)। देखो **काय=काक** ।
कागंदी देखो **काइंदी** ; (अनु २)।
कागणि स्त्री [**दे**] १ राज्य ; " असोगसिरिणो पुत्तो अंधो जायइ कागणिं " (विसे ८६२)। २ मांस का छोटा टुकड़ा ; (औप)।
कागणी देखो **कागिणी** ; (श्रा २७ ; ठा ७)।
कागल पुं [**काकल**] ग्रीवास्थ उन्नत प्रदेश ; (अनु)।
कागलि / **कागली** स्त्री [**काकलि**, °**ली**] १ सूक्ष्म गीत-ध्वनि, स्वर-विशेष ; (सुपा ५६ ; उप पृ ३५)। २ देवी-विशेष, भगवान् अभिनन्दन की शासन-देवी; (पव २७)।
कागिणी स्त्री [**काकिणी**] १ कौड़ी, कपर्दिका; (उर ७, ३ ; उव ; श्रा २८ टी)। २ बीस कौडी के मूल्य का एक सिक्का ; (उप ५४५)। ३ रत्न-विशेष; (सम २७ ; उप ६८६ टी)।
कागी स्त्री [**काकी**] १ कौए की मादा ; (व २ विद्या-विशेष ; (विसे २४५३)।
कागोणंद पुं [**काकोनन्द**] इस नाम की एक म्लेच्छ-जाति ; " मिच्छा कागोणंदा विक्खाया महियलम्मि ते सूरा " (पउम ३४, ४१)।
काण वि [**काण**] काना, एकाक्ष; (सुपा ६४३)।
काण वि [**दे**] १ सच्छिद्र, काना ; आचा २, १, ८)। २ चुराया हुआ। °**क्कय** पुं [°**क्रय**] चुराई हुई चीज को खरीदना ; (सुपा ३४३ ; ३४४)।

काणच्छि } स्त्री [**दे**] टेढ़ी नजर से देखना, कटाक्ष ;
काणच्छिया } (दे २, २४ ; भवि) । "काणच्छियाओ य जहा विडो तहा करेइ " (आवम
काणण न [**कानन**] १ वन, जंगल ; (पाअ) । २ बगीचा, उपवन ; (अनु ; औप) ।
काणत्थेव पुं [**दे**] विरल जल-वृष्टि, बुंद बुंद बरसना ; (दे २, २६) ।
काणद्धी स्त्री [**दे**] परिहास; (दे २, २८) ।
काणिक्का स्त्री [**दे**] बडी ईंट ; (बृह ३) ।
काणिट्टा स्त्री [**काणेष्टा**] लोहे की ईंट ; (वव ४) ।
काणिय न [**काण्य**] आँख का रोग ; " काणियं झिम्मियं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा " (आचा) ।
काणीण पुं [**कानीन**] कुँवारी कन्या से उत्पन्न पुत्र ; (भवि) ।
कादंब देखो **कायंब** ; (पगह १, १) ।
कादंबरी देखो **कायंबरी** ; (अभि १८८) ।
कापुरिस देखो **काउरिस** ; (णाया १, १) ।
काम सक [**कामय्**] चाहना, वाञ्छना । कामेइ ; (पि ४६१) । कामेंति ; (गउड) । वकृ—**कामेंत कामअमाण** ; (गा २५६ ; अभि ६१) ।
काम पुं [**काम**] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा; (उत्त १४; आचा ; प्रासू ६६) । २ सुन्दर शब्द, रूप वगैरः विषय ; (भग ७, ७ ; ठा ४, ४) । ३ विषय का अभिलाष ; (कुमा) । ४ मदन, कन्दर्प ; (कुमा ; प्रासू १) । ५ इन्द्रिय-प्रीति ; (धर्म १)। ६ मैथुन ; (पगण २) । ७ छन्द-विशेष ; (पिंग) । °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**कम** न [°**कम**] लान्तक देव-लोक के इन्द्र का एक यात्रा-विमान ; (ठा १०—पत्र ४३७) । °**काम** वि [°**काम**] विषय की चाह वाला ; (पगण २) । °**कामि** वि [°**कामिन्**] विषयाभिलाषी ; आचा) । °**कूड** न [°**कूट**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**गम** वि [°**गम**] १ स्वेच्छाचारी, स्वैरी ; (जीव ३) । २ न. देखो °**कम** ; (जीव ३) । °**गामि** स्त्री [°**गामी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३५) । °**गुण** न [°**गुण**] १ मैथुन ; (पगह १, ४) । २ शब्द-प्रमुख विषय ; (उत्त १४) । °**घड** पुं [°**घट**] ईप्सित चीज को देने वाला दिव्य कलश ; (श्रा १४) । °**जल** न [°**जल**] स्नान-पीठ, जिस पर बैठकर स्नान किया जाता है वह पट्ट ; "सिणाणपीढं तु कामजलं" (निचू १३) । °**जुग** पुं [°**युग**] पक्षि-विशेष ; (जीव ३) । °**ज्झय** न [°**ध्वज**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**ज्झया** स्त्री [°**ध्वजा**] इस नाम की एक वेश्या ; (विपा १, २) । °**ट्ठि** वि [°**र्थिन्**] विषयाभिलाषी ; (णाया १, १) । °**ड्डिय** पुं [°**र्द्धिक**] १ जैन साधुओं का एक गण; (ठा ६—पत्र ४५१) । २ न. जैन मुनिओं का एक कुल; (राज) । °**णयर** न [°**नगर**] विद्याधरों का एक नगर; (इक) । °**दाइणी** स्त्री [°**दायिनी**] ईप्सित फल को देने वाली विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३५) । °**दुहा** स्त्री [°**दुघा**] काम-धेनु ; (श्रा १६) । °**देअ, °देव** पुं [°**देव**] १ अनंग, कन्दर्प; (नाट ; स्वप्न ५५) । २ एक जैन श्रावक का नाम ; (उवा) । °**धेणु** स्त्री [°**धेनु**] ईप्सित फल देने वाली गौ; (काल) । °**पाल** पुं [°**पाल**] १ देव-विशेष ; (दीव) । २ बलदेव, हलायुध ; (पाअ); °**पिपासय** त्रि [°**पिपासक**] विषयाभिलाषी; (भग) ; °**पुर** न [°**पुर**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर; (इक) ; °**प्पभ** न [°**प्रभ**] देव-विमान-विशेष ; (जीव ३) ; °**फास** पुं [°**स्पर्श**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष ; (सुज्ज २०) । °**महावण** न [°**महावन**] बनारस के समीप का एक चैत्य ; (भग १५) । °**रूअ** पुं [°**रूप**] देश-विशेष, जो आसाम में है ; (पिंग) । °**लेस्स** न [°**लेश्य**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**वण्ण** न [°**वर्ण**] एक देव-विमान ; (जीव ३) । °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] रति-शास्त्र ; (धर्म २) । °**समणुण्ण** वि [°**समनोज्ञ**] कामासक्त, कामान्ध ; (आचा) । °**सिंगार** न [°**शृङ्गार**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**सिट्ठ** न [°**शिष्ट**] एक देव-विमान ; (जीव ३) । °**ावट्ट** न [°**ावर्त**] देव-विमान-विशेष ; (जीव ३) । °**ावसाइत्ता** स्त्री [°**ावशायिता**] योगी का एक तरह का ऐश्वर्य, जिसमें योगी अपनी इच्छा के अनुसार सर्व पदार्थों का अपने चित्त में समावेश करता है ; (राज) । °**ासंसा** स्त्री [°**ाशंसा**] विषयाभिलाष ; (ठा ४, ४) ।
कामं अ [**कामम्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अवधारण ; (सुअ २, १) । २ अनुमति, सम्मति ; (निचू १६) । ३ अभ्युपगम, स्वीकार ; (सूअ २, ६) । ४ अतिशय, आधिक्य ; (हे २, २१७ ;

कामंग न [**कामाङ्ग**] कन्दर्प का उत्तेजक स्नान वगैरः ; (सूअ २, २)।

कामंदुहा स्त्री [**कामदुघा**] काम-धेनु, ईप्सित वस्तु को देने वाली दिव्य गौ ; (पउम ८२, १४)।

कामंध पुं [**कामान्ध**] विषयातुर, तीव्र-कामी ; (प्रासू १७६)।

कामकिसोर पुं [**दे**] गर्दभ, गधा ; (दे २, ३०)।

कामग वि [**कामक**] १ अभिलषणीय, वाञ्छनीय ; (पगह १, १)। २ चाहने वाला, इच्छुक ; (सूअ १, २, २)।

कामण न [**कामन**] चाह, अभिलाष ; "परइत्थिकामणेणं जीवा नरयम्मि वच्चंति" (महा)।

कामय देखो **कामग** ; (उवा)।

कामि वि [**कामिन्**] विषयाभिलाषी ; (आचा ; गउड)।

कामिअ वि [**कामित**] वाञ्छित, अभिलषित ; (सुपा २५५)।

कामिअ वि [**कामिक**] १ काम-संबन्धी, विषय संबन्धी ; (भत्त १११)। २ न. तीर्थ-विशेष ; (ती २८)। ३ सरोवर-विशेष, जिसमें गिरने से ईप्सित जन्म मिलता है ; (राज)। ४ इच्छा पूर्ण करने वाला ; (स ३६०)। ५ वि. इच्छुक, इच्छा वाला, साभिलाष ; (विपा १, १)।

कामिआ स्त्री [**कामिका**] इच्छा, अभिलाषा; "अकामिआए चिणंति दुक्खं" (पगह १, ३)।

कामिंजुल पुं [**कामिञ्जुल**] पक्षि-विशेष ; (दे २, २६)।

कामिड्ढि पुं [**कामर्द्धि**] एक जैन मुनि, आर्य सुहस्ति-सूरि का एक शिष्य ; (कप्प)।

कामिड्ढिय न [**कामर्द्धिक**] जैन मुनिओं का एक कुल ; (कप्प)।

कामिणी स्त्री [**कामिनी**] कान्ता, स्त्री ; (सुपा ५)।

कामुअ, **कामुग** वि [**कामुक**] कामी, विषयाभिलाषी ; (मै २५ ; महा)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] काम-शास्त्र, रति-शास्त्र ; (उप ५३० टी)।

कामुत्तरवडिंसग न [**कामोत्तरावतंसक**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३)।

काय पुं [**काय**] १ शरीर, देह ; (ठा ३, १ ; कुमा)। २ समूह, राशि ; (विसे ६००)। ३ देश-विशेष ; (पगह १, १)। ४ वि. उस देश में रहने वाला ; (पगण-१)। °**गुत्त** वि [°**गुप्त**] शरीर को वश में रखने वाला ; (भग)। °**गुत्ति** स्त्री [°**गुप्ति**] शरीर का वश में रखना, जितेन्द्रियता ; (भग)। °**जोअ**, °**जोग** पुं [°**योग**] शरीर-व्यापार, शारीरिक क्रिया ; (भग)। °**जोगि** वि [°**योगिन्**] शरीर-जन्य क्रिया वाला ; (भग)। °**ट्ठिइ** स्त्री [°**स्थिति**] मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर रहना ; (ठा २, ३)। °**णिरोह** पुं [°**निरोध**] शरीर-व्यापार का परित्याग ; (आव ४)। °**तिगिच्छा** स्त्री [°**चिकित्सा**] १ शरीर-रोग की प्रतिक्रिया ; २ उसका प्रतिपादक शास्त्र ; (विपा १, ८)। °**भवत्थ** वि [°**भवस्थ**] माता के उदर में स्थित ; (भग)। °**वंझ** पुं [°**वन्ध्य**] ग्रह-विशेष ; (राज)। °**समिअ** स्त्री [°**समित**] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति करने वाला ; (भग)। °**समिइ** स्त्री [°**समिति**] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति ; (ठा ८)।

काय पुं [**काक**] १ कौआ, वायस ; (उप पृ २३ ; हेका १४८ ; वा २६)। २ वनस्पति-विशेष, काला उम्बर ; (पगण १—पत्र ३५)। देखो **काक**, **काग**।

काय पुं [**काच**] काँच, सीसा ; (महा ; आचा)।

काय पुं [**दे**] १ कावर, बहङ्गी, बोझ ढोने के लिए तराजूनुमाँ एक वस्तु, इसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं ; (णाया १, ८ टी—पत्र १५२)। °**कोडिय** पुं [°**कोटिक**] कावर से भार ढोने वाला ; (णाया १, ८ टी)। देखो **काव**।

काय पुं [**दे**] १ लक्ष्य, वेध्य, निशाना ; २ उपमान, जिस पदार्थ की उपमा दी जाय वह ; (दे २, २६)।

कायंचुल पुं [**दे**] कामिञ्जुल, जल-पक्षी विशेष ; (दे २, २६)।

कायंदी स्त्री [**दे**] परिहास, उपहास ; (दे २, २८)।

कायंदी देखो **काइंदी** ; (स ६)।

कायंधुअ पुं [**दे**] कामिञ्जुल, जल-पक्षी विशेष ; (दे २, २६)।

कायंब, **कायंबग** पुं [**कादम्ब**, °**क**] १ हंस-पक्षी; (पाअ; कप्प)। २ गन्धर्व-विशेष ; ३ कदम्ब-वृक्ष ; (राज)। ४ त्रि. कदम्ब-वृक्ष-संबन्धी; "कायंबपुप्फगोलयमसूरअइमुत्तयस्स पुप्फं व" (पुप्फ २६८)।

कायंबर न [**कादम्बर**] मद्य-विशेष; गुड़ का दारू ; "कायंबरपसन्ना" (पउम १०२, १२२)।

कायंवरी स्त्री [**कादम्बरी**] १ मदिरा, दारू ; (पात्र ; पउम ११३, १०) । २ अटवी-विशेष ; (स ५५१) ।
कायक न [**दे. कायक**] हरा रंग की रूई से बना हुआ वस्त्र ; (आचा २, ५, १) ।
कायत्थ पुं [**कायस्थ**] जाति-विशेष, कायथ जाति, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति, लेखक, लिखने का काम करने वाली मनुष्य-जाति ; (मुद्रा ७६ ; मृच्छ ११७) ।
कायपिउच्छा, **कायपिउला** } स्त्री [**दे**] कोकिला, कोयल, पिकी ; (दे २, ३० ; षड्) ।
कायर वि [**कातर**] अधीर, डरपोक ; (णाया १, १ ; प्रासू ५८) ।
कायर वि [**दे**] प्रिय, स्नेह-पात्र ; (दे २, ५८) ।
कायरिय वि [**कातर**] १ डरपोक, भयभीत, अ-धीर ; "धीरणवि मरियव्वं कायरिएणावि अवस्समरियव्वं" (प्रासू १०६) । २ पुं. गोशालक का एक भक्त ; (भग ८, ५) ।
कायरिया स्त्री [**कातरिका**] माया, कपट ; (सूअ १, २, १) ।
कायल पुं [**दे**] १ काक, कौआ ; (दे २, ५८ ; पाअ) । २ वि. प्रिय, स्नेह-पात्र ; (दे २, ५८) ।
कायलि देखो **कागलि** ; (नाट—मृच्छ ६२) ।
कायवंझ [**कायवन्ध्य**] ग्रह-विशेष ; ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (राज) ।
कायव्व देखो **कर**=कृ ।
काया स्त्री [**काया**] शरीर, देह ; (प्रासू ११२) ।
कायाग पुं [**कायाक**] नट-विशेष, बहुरुपिया ; (बृह ४) ।
कार सक [**कारय्**] करवाना, बनवाना । कारेइ, कारेह ; (पि ४७२ ; सुपा ११३) । भूका—कारेत्था ; (पि ५१७) । वकृ—**कारयंत** ; (सुर १६, १०) ; **कारेमाण** ; (कप्प) । कवकृ—**कारिज्जंत** ; (सुपा ५७) । संकृ—**कारिऊण** ; (पि ५८४) । कृ—**कारेयव्व** ; (पंचा ६) ।
कार वि [**दे**] कटु, कड़वा, तीता ; (दे २, २६) ।
कार पुंन. देखो **कारा**=कारा ; (स ६११ ; णाया १, १) ।
कार पुं [**कार**] १ क्रिया, कृति, व्यापार ; (ठा १०) । २ रूप, आकृति ; ३ संघ का मध्य भाग ; (वव ३) ।
°**कार** वि [°**कार**] करने वाला ; (पउम १७, ७) ।
कारंकड वि [**दे**] परुष, कठिन ; (दे २, ३०) ।
कारंड, **कारंडग**, **कारंडव** } पुं [**कारण्ड, °क**] पक्षि-विशेष ; "हंसकारंडव-चक्कवाओवसोभियं" (भवि ; औप ; स ६०१ ; णाया १, १ ; पण्ह १, १ ; विक्र ४१) ।
कारग वि [**कारक**] १ करने वाला ; (पउम ८२, ७६ ; उप पृ २१५) । २ कराने वाला ; (श्रा ६ ; विसे) । ३ न. कर्ता, कर्म वगैरः व्याकरण-प्रसिद्ध कारक ; (विसे ३३८४) । ४ कारण, हेतु ; "कारगं ति वा कारणं ति वा साहारणं ति वा एगट्ठा" (आचू १) । ५ उदाहरण, दृष्टान्त ; (ओघ १६ भा) । ६ पुंन. सम्यक्त्व-विशेष, शास्त्रानुसार शुद्ध क्रिया ; "जं जह भणियं तुमए तं तह करणम्मि कारगो होइ" (सम्य १४) ।
कारण न [**कारण**] १ हेतु, निमित्त ; (विसे २०६८ ; स्वप्न १७) । २ प्रयोजन ; (आचा) । ३ अपवाद ; (कप्प) ।
कारणिज्ज वि [**कारणीय**] प्रयोजनीय ; (स ३२६) ।
कारणिय वि [**कारणिक**] १ प्रयोजन से किया जाता ; (उवर १०८) । २ कारण में प्रवृत्त ; (वव २) । ३ पुं. न्याय-कर्ता, न्यायाधीश ; (सुपा ११८) ।
कारय देखो **कारग** ; (श्रा १६ ; विसे ३४२०) ।
कारव सक [**कारय्**] करवाना, बनवाना । कारवेइ ; (उव) । वकृ—**कारविंत** ; (सुपा ६३२ ; पुप्फ ४७) । संकृ—**कारवित्ता** ; (कप्प) ।
कारवण न [**कारण**] निर्मापन, बनवाना ; (राज) ।
कारवस पुं [**कारवश**] देश-विशेष ; (भवि) ।
कारवाहिय वि [**कारवाधित**] देखो **करवाहिय** ; (औप) ।
कारविय वि [**कारित**] कराया हुआ ; (सुर १, २२६) ।
कारह वि [**कारभ**] करभ-संबन्धी ; (गउड) ।
कारा स्त्री [**कारा**] कैदखाना ; (दे २, २० ; पाअ) । °**गार** पुंन [°**गार**] कैदखाना, जेल ; (सुपा १२२ ; सार्ध ५२) । °**घर** न [°**गृह**] कैदखाना ; (अच्चु ८३) । °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] कैदखाना, जेलखाना ; (कप्प) ।
कारा स्त्री [**दे**] लेखा, रेखा ; (दे २, २६) ।
कारायणी स्त्री [**दे**] शाल्मलि-वृक्ष, सेमल का पेड़ ; (दे २, १८) ।
कराव देखो **कारव** । कारावेइ ; (पि ५५२) । भवि—काराविस्सं ; (पि ५२८) ।
करावण देखो **कारवण** ; (पण्ह १, ३ ; उप ४०६) ।
कारावय वि [**कारक**] कराने वाला, विधापक ; (स ५५७) ।

काराविय वि [**कारित**] करवाया हुआ, बनवाया हुआ ; (विसे १०१६ ; सुर ३, २४ ; स १६३) ।

कारि वि [**कारिन्**] कर्ता, करने वाला : "एयस्स कारिणो बालिसत्तमारोविया जेण" (उव ५६७ टी) । "एयअणत्थस्स कारिणी अहयं" (सुर ८, ५६) ।

कारिम वि [**दे**] कृत्रिम, बनावटी, नकली ; (दे २, २७ ; गा ४५७ ; षड् ; उप ७२८ टी ; स ११६ ; प्रासू २०) ।

कारिय वि [**कारित**] कराया हुआ, बनवाया हुआ ; (पराह २, ५) ।

कारियल्लई स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, करैला का गाछ; (पराण १—पत्र ३३) ।

कारिया स्त्री [**कारिका**] करने वाली, कर्त्री ; (उवा) ।

कारिल्ली स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, करैला का गाछ; (सूक्त ६१) ।

करीस पुं [**करीष**] गोइठा का अग्नि, कंडा की आग; (उत्त १२) ।

कारु पुं [**कारु**] कारीगर, शिल्पी ; (पात्र ; प्रासू ८०) ।

कारुइज्ज वि [**कारुकीय**] कारीगर से संबन्ध रखने वाला; (पराह १, २) ।

कारुणिय वि [**कारुणिक**] दयालु, कृपालु ; (ठा ४, २ ; सण) ।

कारुण्ण } न [**कारुण्य**] दया, करुणा ; (महा ; उप
कारुन्न } ७२८ टी) ।

कारेमाण } देखो **कार**=कारय् ।
कारेयव्व }

कारेल्लय न [**दे**] करैला, तरकारी विशेष ; (अनु ६) ।

कारोडिय पुं [**कारोटिक**] १ कापालिक, भिक्षुक-विशेष ; २ ताम्बूल-वाहक, स्थगीधर ; (औप) ।

काल न [**दे**] तमिस्र, अन्धकार ; (दे २, २६; षड्) ।

काल पुं [**काल**] १ समय, वख्त ; (जी ४६) । २ मृत्यु, मरण ; (विसे २०६७ ; प्रासू ११२) । ३ प्रस्ताव, प्रसङ्ग, अवसर ; (विसे २०६७) । ४ विलम्ब, देरी ; (स्वप्न ६१) । ५ उमर, वय ; (स्वप्न ४२) । ६ ऋतु ; (स्वप्न ४२) । ७ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८) । ८ ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग ; (गण १६) । ६ सातवीं नरक-पृथ्वी का एक नरकावास ; (ठा ५, ३—पत्र ३४१ ; सम ५८) । १० नरक के जीवों को दुःख देने वाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २८) । ११ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १—पत्र १६८) । १२ प्रभञ्जन इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १—पत्र १६८) । १३ इन्द्र-विशेष, पिशाच-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३—पत्र ८५) । १४ पूर्वीय लवण समुद्र के पाताल-कलशों का अधिष्ठाता देव ; (ठा ४, २—पत्र २२६) । १५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र ; (निर १, १) । १६ इस नाम का एक गृहपति ; (णाया २, १) । १७ अभाव ; (बृह ४) । १८ पिशाच देवों की एक जाति ; (पराण १) । १६ निधि-विशेष ; (ठा ६—पत्र ४४६) । २० वर्ण-विशेष, श्याम-वर्ण ; (पराण २) । २१ न. देव-विमान-विशेष ; (सम ३५) । २२ निरयावली सूत्र का एक अध्ययन ; (निर १, १) । २३ काली-देवी का सिंहासन ; (णाया २) । २४ वि. कृष्ण, काला रंग का ; (सुर २, ५) । °**कंखि** वि [°**काङ्क्षिन्**] १ समय की अपेक्षा करने वाला; (आचा) । २ अवसर का ज्ञाता ; (उत्त ६) । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ समय-संबन्धी शास्त्रीय विधान ; २ उसका प्रतिपादक शास्त्र; (पंचभा) । °**काल** पुं [°**काल**] मृत्यु-समय ; (विसे २०६६) । °**कूड** न [°**कूट**] उत्कट विष-विशेष ; (सुपा २३८)। °**क्खेव** पुं [°**क्षेप**] विलम्ब, देरी ; (से १३, ४२) । °**गय** वि [°**गत**] मृत्यु-प्राप्त, मृत ; (णाया १, १ ; महा) । °**चक्क** न [°**चक्र**] १ बीस सागरोपम परिमित समय ; (गांदि) । २ एक भयंकर शस्त्र ; "जाहे एवमवि न सक्कइ ताहे कालचक्कं विउव्वइ" (आवम) । °**चूला** स्त्री [°**चूडा**] अधिक मास वगैरः का अधिक समय ; (निचू १) । °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] अवसर का जानकार ; (उप १७६ टी ; आचा) । °**दट्ठ** वि [°**दष्ट**] मौत से मरा हुआ ; (उप ७२८ टी) । °**देव** पुं [**देव**] देव-विशेष ; (दीव) । °**धम्म** पुं [°**धर्म**] मृत्यु, मरण ; (णाया १, १ ; विपा १, २) । °**न्न,** °**न्नु** देखो **ण्णु** ; (पि २७६ ; सुपा १०६) । °**परियाय** पुं [°**पर्याय**] मृत्यु-समय; (आचा)। °**परिहीण** न [°**परिहीन**] विलम्ब, देरी; (राय)। °**पाल** पुं [°**पाल**] देव-विशेष, धरणेन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। °**पास** पुं [°**पाश**] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग; (गण १८)। °**पिट्ठ,** °**पुट्ठ** पुंन [°**पृष्ठ**] १ धनुष ; २ कर्ण का धनुष ; ३ काला हरिण ; ४ क्रौञ्च पक्षी ; (पि ५३) ।

°पुरिस पुं [°पुरुष] जो पुं-वेद कर्म का अनुभव करता हो वह ; (सूअ १, ४, १, २ टी)। °प्पभ पुं [°प्रभ] इस नाम का एक पर्वत ; (ठा १०)। °फोडय पुंस्त्री [°स्फोटक] प्राणहर फोड़ा। स्त्री—°डिया ; (रंभा)। °मास पुं [°मास] मृत्यु-समय ; "कालमासे कालं किच्चा" (विपा १, १ ; २ ; भग ७, ६)। °मासिणी स्त्री [°मासिनी] गर्भिणी, गुर्विणी; (दस ५, १)। °मिग पुं [°मृग] कृष्ण मृग की एक जाति ; (जं २)। °रत्ति स्त्री [°रात्रि] प्रलय-रात्रि, प्रलय-काल; (गउड)। °वडिंसग न [°ावतंसक] देव-विमान विशेष, काली देवी का विमान ; (णाया २)। °वाइ वि [°वादिन्] जगत् को काल-कृत मानने वाला, समय को ही सब कुछ मानने वाला ; (णंदि)। °वासि पुं [°वर्षिन्] अवसर पर बरसने वाला मेघ ; (ठा ४, ३—पत्र २६०)। °संदीव पुं [°संदीप] असुर-विशेष, त्रिपुरासुर ; (आक)। °समय पुं [°समय] समय, बख्त ; (सुज्ज ८)। °समा स्त्री [°समा] समय-विशेष, आरक-रूप समय ; (जो २)। °सार पुं [°सार] मृग की एक जाति, काला मृग; "एक्को वि कालसारो ण देइ गंतुं पयाहिणवलंतो" (गा २५)। °सोअरिय पुं [°सौकरिक] स्वनाम-ख्यात एक कसाई ; (आक)। °ागरु, °ागुरु, °ायरु न [°ागुरु] सु-गन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में लाया जाता है ; (णाया १, १ ; कप्प ; औप ; गउड)। °ायस, °ास न [°ायस] लोहे की एक जाति ; (हे १, २६६ ; कुमा ; प्राप्र ; से ८, ४६)। °ासवेसियपुत्त पुं [°ास्यवैशिकपुत्र] इस नाम का एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में थे ; (भग)।

कालंजर पुं [**कालञ्जर**] १ देश-विशेष ; (पिंग)। २ पर्वत-विशेष ; (आवम)। देखो **कालिंजर**।

कालक्खर सक [**दे**] १ निर्भर्त्सना करना, फटकारना। २ निर्वासित करना, बाहर निकाल देना। "तो तेण भणिया भज्जा, पिए ! पुत्तो कालक्खरियइ एसो, तो सा रोसेण भणइ तयभिमुहं, मइ जीवंतीए ईमं न होइ ता जाउ दव्वंपि ; किं कज्जइ लच्छीए, पुत्तविउत्ताण पिउणा पियय म ! जयम्मि" (सुपा ३६६ ; ४००)।

कालक्खर पुंन [**कालाक्षर**] १ अल्प ज्ञान, अल्प शिक्षा ; २ वि. अल्प-शिक्षित ; "कालक्खरदूसिक्खिअ धम्मिअ रे निंबकीडअसरिच्छ" (गा ८७८)।

कालक्खरिअ वि [**दे**] १ उपालब्ध, निर्भर्त्सित ; २ निर्वासित ; "तहवि न विरमइ दुलहो अणाहकुलडाए संगमे, तत्तो कालक्खरिओ पिउणा" (सुपा ३८८); "तो पिउणा कालेणं कालक्खरिओ" (सुपा ४८८)।

कालक्खरिअ वि [**कालाक्षरिक**] अक्षर-ज्ञान वाला, शिक्षित; "भो तुम्हाणं सव्वाणं मज्झे अहं एक्को कालक्खरिओ" (कप्पू)।

कालग } पुं [**कालक**] १ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (पुप्फ
कालय } १४६; २४०)। २ भ्रमर, भमरा; (राज)। देखो **काल** ; (उवा; उप ६८६ टी)।

कालय वि [**दे**] धूर्त, ठग ; (दे २, २८)।

कालवट्ठ न [**दे. कालपृष्ठ**] धनुष ; (दे २, २८)।

कालवेसिय पुं [**कालवैशिक**] एक वेश्या-पुत्र ; (उत्त २)।

काला स्त्री [**काला**] १ श्याम-वर्ण वाली ; २ तिरस्कार करने वाली ; (कुमा)। ३ एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ५, १)। ४ वेश्या-विशेष ; (उत्त २)।

कालि पुं [**कालिन्**] बिहार का एक पर्वत ; (ती १३)।

कालिआ स्त्री [**दे**] १ शरीर, देह ; २ कालान्तर ; ३ मेघ, वारिस ; (दे २, ५८)। ४ मेघ-समूह, बादल ; (पाअ)।

कालिआ स्त्री [**कालिका**] १ देवी-विशेष ; (सुपा १८२)। २ एक प्रकार का तोफानी पवन ; (उप ७२८ टी ; णाया १, ६)।

कालिंग पुं [**कालिङ्ग**] १ देश-विशेष ; "पत्तो कालिंगदेसओ" (श्रा १२)। २ वि. कलिङ्ग देश में उत्पन्न ; (पउम ६६, ५५)।

कालिंगी स्त्री [**कालिङ्गी**] वल्ली-विशेष, तरबूज का गाछ ; (पराण १)।

कालिंजण न [**दे**] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़ ; (दे २, २६)।

कालिंजणी स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (दे २, २६)।

कालिंजर पुं [**कालिञ्जर**] १ देश-विशेष ; (पिंग)। २ पर्वत-विशेष ; (उत्त १३)। ३ न. जंगल-विशेष ; (पउम ५८, ६)। ४ तीर्थ-स्थान विशेष ; (ती ६)।

कालिंदी स्त्री [**कालिन्दी**] १ यमुना नदी ; (पाअ)। २ एक इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी ; (पउम १०२, १५९)।

कालिंब पुं [**दे**] १ शरीर, देह ; २ मेघ, वारिस ; (दे २, ५९)।

कालिग देखो **कालिय**=कालिक ; (राज)।

कालिगी स्त्री [**कालिकी**] संज्ञा-विशेष, बहुत समय पहले गुजरी हुई चीज का भी जिससे स्मरण हो सके वह ; (विसे ५०८)।

कालिज्ज न [**कालेय**] हृदय का गूढ़ मांस-विशेष ; (तंदु)।

कालिम पुंस्त्री [**कालिमन्**] श्यामता, कृष्णता, दागीपन ; (सुर ३, ४४ ; श्रा १२)।

कालिय पुं [**कालिय**] इस नाम का एक सर्प ; (सुपा १८१)।

कालिय वि [**कालिक**] १ काल में उत्पन्न, काल-संबन्धी ; २ अनिश्चित, अव्यवस्थित ; " हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणागया " (उत्त ५; करु १६)। ३ वह शास्त्र, जिसको अमुक समय में ही पढ़ने की शास्त्रीय आज्ञा है; (ठा २, १—पत्र ४९)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष ; (णाया १, १७—पत्र २२८)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] एक जैन मुनि ; जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में से थे ; (भग)। °**सण्णि** वि [°**संज्ञिन्**] कालिकी संज्ञा वाला ; (विसे ५०९)। °**सुय** न [°**श्रुत**] वह शास्त्र जो अमुक समय में ही पढ़ा जा सके ; (णंदि)। °**णुओग** पुं [°**नुयोग**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (भग)।

काली स्त्री [**काली**] १ विद्या-देवी विशेष ; (संति ५)। २ चमरेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ५, १ ; णाया २, १)। ३ वनस्पति-विशेष, काकजङ्घा ; (अनु ४)। ४ श्याम-वर्ण वाली स्त्री ; "सामा गायइ महुरं, काली गायइ खरं च रुक्खं च " (ठा ७)। ५ राजा श्रेणिक की एक रानी ; (निर १, १)। ६ चौथी जैन शासन-देवी ; (संति ९) ७ पार्वती, गौरी ; (पाअ)। ८ इस नाम का एक छंद ; (पिंग)।

कालुण न [**कारुण्य**] दया, करुणा। °**वडिया** स्त्री [°**वृत्ति**] भीख माँग कर आजीविका करना ; (विपा १, १)।

कालुणिय देखो **कारुणिय** ; (सूअ १, १, १)।

कालुसिय न [**कालुष्य**] कलुषता, मलिनता ; (आउ)।

कालेज्ज न [**दे**] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़ ; (दे २, २९)।

कालेय न [**कालेय**] १ काली देवी का अपत्य ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, कालचन्दन ; (स ७५)। ३ हृदय का मांस-खण्ड, कलेजा ; (सूअ १, ५, १ ; रंभा)।

कालोद देखो **कालोय** ; (जीव ३)।

कालोदधि पुं [**कालोदधि**] समुद्र-विशेष ; (पण्ह १, ५)।

कालोदाइ पुं [**कालोदायिन्**] इस नाम का एक दार्शनिक विद्वान ; (भग ७, १०)।

कालोय पुं [**कालोद**] समुद्र-विशेष, जो धातकी-खण्ड द्वीप को चारों तरफ घिर कर स्थित है ; (सम ६७)।

काव, **कावड** पुं [**दे**] १ कावर, बहङ्गी, बोझ ढ़ोनेके लिए तरा-जूनुमाँ एक वस्तु, इसमें दोनों और सिकहर लटकाये जाते हैं ; (जीव ३ ; पउम ७५, ५२)। °**कोडिय** पुं [°**कोटिक**] कावर से भार ढ़ोने वाला ; (अणु)। देखो **काय**=(दे)।

कावडिअ पुं [**दे**] वैवधिक, कावर से भार ढोने वाला ; (पउम ७५, ५२)।

कावध पुं [**कावध्य**] एक मल्ल-ग्रह, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (राज)।

कावलिअ वि [**दे**] अ-सहन, अ-सहिष्णु; (दे २, २८)।

कावलिअ वि [**कावलिक**] कवल-प्रक्षेप रूप आहार ; (भग ; संग १८१)।

कावालिअ पुं [**कापालिक**] वाम-मार्गी, अघोर सम्प्रदाय का मनुष्य ; (सुपा १७४ ; ३९७ ; दे १, ३१ ; प्रबो ११५)।

कावालिआ, **कावालिणी** स्त्री [**कापालिकी**] कापालिक-व्रत वाली स्त्री ; (गा ४०८)।

काविट्ठ न [**कापिष्ठ**] देव-विमान विशेष ; (सम २७ ; पउम २०, २३)।

काविल न [**कापिल**] १ सांख्य-दर्शन; (सम्म १४५)। २ वि. सांख्य मत का अनुयायी ; (औप)।

काविलिय वि [**कापिलीय**] १ कपिल-मुनि-संबन्धी ; २ न. कपिल-मुनि के वृत्तान्त वाला एक ग्रन्थांश; ' उत्तराध्ययन' सूत्र का आठवाँ अध्ययन ; (सम ६४)।

काविसायण देखो **कविसायण** ; (जीव ३)।

कावी स्त्री [**दे**] नीलवर्ण वाली, हरा रंग की चीज ; (दे २, २६) ।

कावुरिस देखो **कापुरिस** ; (स ३७५) ।

कावेअ न [**कापेय**] वानरपन, चञ्चलता ; (अच्चु ६२)।

कास देखो **कड्ड**=कृष् । कासइ ; (षड्) ।

कास अक [**कास्**] १ कहरना, रोग-विशेष से खराब आवाज करना । २ कासना, खाँसी की आवाज करना । ३ खोखार करना । ४ छींक खाना । वकृ—**कासंत, कासमाण** ; (पण्ह १, ३—पत्र ५४ ; आचा) । संकृ—**कासित्ता** ; (जीव ३) ।

कास पुं [**काश, °स**] १ रोग-विशेष, खाँसी ; (गाया १, १३) । २ तृण-विशेष, कास ; "कासकुसुमंव मन्ने सुनिप्फलं जम्म-जीवियं निययं" (उप ७२८ टी) ; "कासकु-सुमंव विहलं" (आप ५८) । ३ उसका फूल जो सफेद और शोभायमान होता है ; "ता तत्थ नियइ धूलिं ससहरहरहासकाससंकासं" (सुपा ४२८ ; कुमा) । ४ ग्रह-विशेष, ग्रह-देव-विशेष; (ठा २, ३) । ५ रस ; (ठा ७) । ६ संसार, जगत् ; (आचा) ।

कास देखो **कंस**=कांस्य ; (हे १, २६ ; षड्) ।

कासंकस वि [**कासङ्कष**] प्रमादी, संसार में आसक्त ; (आचा) ।

कासग देखो **कासय** ; "जेण रोहंति वीजाइं, जेण जीवंति कासगा" (निचू १) ।

कासण न [**कासन**] खोखारना, खाट्कार ; (ओघ २३५) ।

कासमद्दग पुं [**कासमर्दक**] वनस्पति-विशेष, गुच्छ-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३२) ।

कासय } पुं [**कर्षक**] कृषीबल, किसान ; (दे १, ८७ ;
कासव } पाअ) ;

"जह वा लुणाइ सस्साइं, कासवो परिणयाइं छित्तम्मि ।
तह भूयाइं कयंतो, वत्थुसहावो इमो जम्हा"
(सुपा ६५१) ।

कासव पुं [**कश्यप**] १ इस नाम का एक ऋषि ; (प्रामा) । २ हरिण की एक जाति ; ३ एक जात की मछली ; ४ दक्ष प्रजापति का जामाता ; ५ वि. दारू पीने वाला ; (हे १, ४३ ; षड्) ।

कासव न [**काश्यप**] १ इस नाम का एक गोत्र ; (ठा ७ ; गाया १, १ ; कप्प) । २ पुं. भगवान् ऋषभदेव का एक पूर्व पुरुष ; ३ वि. काश्यप गोत्र में उत्पन्न-काश्यप-गोत्रीय ; (ठा ७—पत्र ३९० ; उत्त ७ ; कप्प; सूअ १, ६) । ४ पुं. नापित, हजाम ; (भग ६, १० ; आवम) । ५ इस नाम का एक गृहस्थ ; (अंत १८) । ६ न. इस नाम का एक 'अंतगडदसा' सूत्र का अध्ययन ; (अंत १८) ।

कासविज्जया स्त्री [**काश्यपीया**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प) ।

कासवी स्त्री [**काश्यपी**] १ पृथिवी, धरित्री ; (कुमा) । २ कश्यप-गोत्रीया स्त्री ; (कप्प) । **°रइ** स्त्री [**°रति**] भगवान् सुमतिनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२) ।

कासा स्त्री [**कृशा**] दुर्बल स्त्री ; (हे १, १२७ ; षड्) ।

कासाइया } स्त्री [**काषायी**] कषाय-रंग से रंगी हुई
कासाई } साड़ी, लाल साड़ी ; (कप्प ; उवा) ।

कासाय वि [**काषाय**] कषाय-रंग से रंगा हुआ वस्त्रादि; (गउड)।

कासार न [**कासार**] १ तलाव, छोटा सरोवर ; (सुपा १६६) । २ पक्वान्न-विशेष, कँसार ; (स १८६) । ३ पुं. समूह, जत्था ; (गउड) । ४ प्रदेश, स्थान ; (गउड) । **°भूमि** स्त्री [**°भूमि**] नितम्ब-प्रदेश ; (गउड)।

कासार न [**दे**] धातु-विशेष, सीसपत्रक ; (दे २, २७) ।

कासि पुं [**काशि**] १ देश-विशेष, काशी जिला ; "का-सित्ति जणवओ" (सुपा ३१ ; उत्त १८) । २ काशी देश का राजा; (कुमा) । ३ स्त्री. काशी नगरी, बनारस शहर; (कुमा) । **°पुर** न [**°पुर**] काशी नगरी, बनारस शहर ; (पउम ६, १३७) । **°राय** पुं [**°राज**] काशी-देश का राजा ; (उत्त १८) । **°व** पुं [**°प**] काशी-देश का राजा ; (पउम १०४, ११) । **°वड्ढण** पुं [**°वर्धन**] इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (ठा ८—पत्र ४३०) ।

कासिअ न [**दे**] १ सूक्ष्म वस्त्र, बारीक कपड़ा ; २ सफेद वस्त्र ; (दे २, ५६) ।

कासिअ न [**कासित**] छींक, क्षुत् ; (राज) ।

कासिज्ज न [**दे**] काकस्थल-नामक देश ; (दे २, २७) ।

कासिल्ल वि [**कासिक**] खाँसी रोग वाला; (विपा १, ७—पत्र ७२) ।

कासी स्त्री [**काशी**] काशी, बनारस ; (गाया १, ८) । **°राय** पुं [**°राज**] काशी का राजा ; (पिंग) । **°स** पुं [**°श**] काशी का राजा ; (पिंग) । **°सर** पुं [**°श्वर**] काशी का राजा ; (पिंग) ।

काहल त्रि [**दे**] १ मृदु, कोमल ; २ ठग, धूर्त; (दे २, ५८)।

काहल वि [**कातर**] कातर, डरपोक, अ-धीर ; (हे १, २१४ ; २५४)।

काहल पुंन [**काहल**] १ वाद्य-विशेष ; (सुर ३, ६६ ; औप ; णंदि)। २ अव्यक्त आवाज; (पगह २, २)।

काहला स्त्री [**काहला**] वाद्य-विशेष ; महा-ढक्का ; (विक्र ८७)।

काहली स्त्री [**दे**] तरुणी, युवति ; (दे २, २६)।

काहल्ली स्त्री [**दे**] १ खर्च करने का धान्यादि ; २ तवा, जिस पर पूरी वगैरः पकाया जाता है ; (२, ५६)।

काहार पुं [**दे**] कहार, पानी वगैरः ढोने का काम करने वाला नौकर ; (दे २, २७ ; भवि)।

काहावण पुं [**कार्षापण**] सिक्का-विशेष ; (हे २,७१ ; पगह १, २ ; षड् ; प्राप्र)।

काहिय वि [**काथिक**] कथा-कार, वार्ता करने वाला ; (बृह १)।

काहिल पुं [**दे**] गोपाल, ग्वाला ; स्त्री—°**ला** ; (दे २, २८)।

काहिल्लिआ स्त्री [**दे**] तवा, जिस पर पूरी आदि पकाया जाता है ; (पाअ)।

काहीइदाण न [**करिष्यतिदान**] प्रत्युपकार की आशा से दिया जाता दान ; (ठा १०)।

काहे अ [**कदा**] कब, किस समय ? (हे २, ६५ ; अंत २४ ; प्राप्र)।

काहेणु स्त्री [**दे**] गुञ्जा, लाल रत्ती ; (दे २, २१)।

कि देखो **किं** ; (हे १, २६ ; षड्)।

कि सक [**कृ**] करना, बनाना ; "डुक्कियं करणे" (विसे ३३००)। कवकृ—**किज्जंत**; (सुर १, ६० ; ३, १४ ; ५६)।

किअ देखो **कय**=कृत ; (काप्र ६२५ ; प्रासू १५ ; धम्म २४ ; मै ६५ ; वज्जा ४)।

किअ देखो **किव**=कृप ; (षड्)।

किअंत वि [**कियत्**] कितना ; (सण)।

किअंत देखो **कयंत** ; (अच्चु ५६)।

किआडिआ स्त्री [**कृकाटिका**] गला का उन्नत भाग ; (पाअ)।

किइ स्त्री [**कृति**] कृति, क्रिया, विधान ; (षड् ; प्राप्र ; उव)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ वन्दन, प्रणमन ; (सम २१)। २ कार्य-करण ; (भग १४, ३)।

किं स [**किम्**] कौन, क्या, क्यों, निन्दा, प्रश्न, अतिशय, अल्पता और सादृश्य को बतलाने वाला शब्द; (हे १, २६; ३, ५८ ; ७१ ; कुमा ; विपा १, १ ; निचू १३)। "किं बुल्लंति मणीओ जाउ सहस्सेहिं घिप्पंति" (प्रासू ४)। °**उण** अ [°**पुनः**] तब फिर, फिर क्या ? (प्राप्र)।

किंकत्तव्वया देखो **किंकायव्वया** ; (आचा २, २, ३)।

किंकम्म पुं [**किंकर्मन्**] इस नाम का एक गृहस्थ ; (अंत)।

किंकर पुं [**किङ्कर**] नौकर, चाकर, दास ; (सुपा ६० ; २२३)। °**सच्च** पुं [°**सत्य**] १ परमेश्वर, परमात्मा ; २ अच्युत, विष्णु ; (अच्चु २)।

किंकरी स्त्री [**किङ्करी**] दासी, नौकरानी ; (कप्पू)।

किंकायव्वया स्त्री [**किंकर्त्तव्यता**] क्या करना है यह जानना। °**मूढ** वि [°**मूढ**] किंकर्तव्य-विमूढ, हक्काबक्का, भौंचक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया जाय ; (महा)।

किंकिअ वि [**दे**] सफेद, श्वेत ; (दे २, ३१)।

किंकिच्चजड वि [**किंकृत्यजड**] हक्काबक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया जाय ; (श्रा २७)।

किंकिणिआ स्त्री [**किङ्किणिका**] क्षुद्र घण्टिका ; (सुपा १५६)।

किंकिणी स्त्री [**किङ्किणी**] ऊपर देखो ; (सुपा १५४; कुमा)।

किंगिरिड पुं [**किङ्गिरिट**] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति ; (राज)।

किंच अ [**किञ्च**] समुच्चय-द्योतक अव्यय, और भी, दूसरा भी ; (सुर १, ४० ; ४१)।

किंचण न [**किञ्चन**] १ द्रव्य-हरण, चोरी ; (विसे ३४५१)। २ अ. कुछ, किञ्चित् ; (वव २)।

किंचहिय वि [**किञ्चिदधिक**] कुछ ज्याद ; (सुपा ४३०)।

किंचि अ [**किञ्चित्**] अल्प, ईषत्, थोड़ा ; (जी १ ; स्वप्न ४७)।

किंचिम्मत्त वि [**किञ्चिन्मात्र**] स्वल्प, बहुत थोड़ा, यत्किञ्चित् ; (सुपा १४२)।

किंचूण वि [**किञ्चिदून**] कुछ कम, पूर्ण-प्राय ; (औप)।
किंजक्क पुं [**किञ्जल्क**] पुष्प-रेणु, पराग ; (गाया १, १)।
किंजक्ख पुं [**दे**] शिरीष-वृक्ष, सिरस का पेड़ ; (दे २, ३१)।
किंणेदं (शौ) अ [**किमिदम्, किमेतत्**] यह क्या ? ; (षड् ; कुमा)।
किंतु अ [**किन्तु**] परन्तु, लेकिन ; (सुर ४, ३७)।
किंथुग्घ देखो **किंसुग्घ** ; (राज)।
किंदिय न [**केन्द्र**] १ वर्तुल का मध्य-स्थल ; २ ज्योतिष में इष्ट लग्न से पहला; चौथा, सातवाँ और दशवाँ स्थान ; " किंदियठाणट्ठियगुरुम्मि " (सुपा ३६)।
किंदुअ पुं [**कन्दुक**] कन्दुक, गेंद ; (भवि)।
किंधर पुं [**दे**] छोटी मछली ; (दे २, ३२)।
किंनर पुं [**किन्नर**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १, ४)। २ भगवान् धर्मनाथजी के शासन-देव का नाम ; (संति ८)। ३ चमरेन्द्र की रथ-सेना का अधिपति देव ; (ठा ५, १)। ४ एक इन्द्र ; (ठा २, ३)। ५ देव-गन्धर्व, देव-गायन ; (कुमा)। °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] किन्नर के कण्ठ जितना बड़ा एक मणि ; (जीव ३)।
किंनरी स्त्री [**किन्नरी**] किन्नर देव की स्त्री ; (कुमा)।
किंपय वि [**दे**] कृपण, कंजूस ; (दे २, ३१)।
किंपाग पुं [**किम्पाक**] १ वृक्ष-विशेष ; " हुंति मुहि चिय महुरा विसया किंपागभूरुहफलं व" (पुप्फ ३६२ ; औप)। २ न. उसका फल, जो देखने में और स्वाद में सुन्दर, परन्तु खाने से प्राण का नाश करता है; " किंपागफलोवमा विसया " (सुर १२, १३८)।
किंपि अ [**किमपि**] कुछ भी ; (प्रासू ६०)।
किंपुरिस पुं [**किंपुरुष**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १, ४)। २ एक इन्द्र, किन्नर-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३)। ३ वैरोचन बलीन्द्र के रथ-सेना का अधिपति देव ; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] मणि की एक जाति, जो किंपुरुष के कण्ठ जितना बड़ा होता है ; (जीव ३)।
किंबोड वि [**दे**] स्खलित, गिरा हुआ, भुला हुआ ; (दे २, ३१)।
किंमज्झ वि [**किंमध्य**] असार, निःसार; (पण्ह २, ४)।
किंसारु पुं [**किंशारु**] सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग ; (दे २, ६)।
किंसुग्घ न [**किंस्तुघ्न**] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण ; (विसे ३३५०)।
किंसुअ पुं [**किंशुक**] १ पलाश का पेड़, टेसू, ढाक ; (सुर ३, ४६)। २ न. पलाश का पुष्प ; (हे १, २६ ; ८६)।
किक्किंडि पुं [**दे**] सर्प, साँप ; (दे २, ३२)।
किक्किंधा स्त्री [**किष्किन्धा**] नगरी-विशेष ; (से १४, ५५)।
किक्किंधि पुं [**किष्किन्धि**] १ पर्वत विशेष ; (पउम ६, ४५)। २ इस नाम का एक राजा; (पउम ६, १५४; १०, २०)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम ६, ४५)।
किच्च वि [**कृत्य**] १ करने योग्य, कर्तव्य, फरज ; (सुपा ४६५ ; कुमा)। २ वन्दनीय, पूजनीय ; "न पिट्ठओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ" (उत्त ३)। ३ पुं. गृहस्थ; (सूअ १, १, ४)। ४ न. शास्त्रोक्त अनुष्ठान, क्रिया कृति; (आचा २, २, २ ; सूअ १, १, ४)।
किच्चंत वि [**कृत्यमान**] १ छिन्न किया जाता, काटा जाता ; २ पीड़ित किया जाता, सताया जाता ; (राज)।
किच्चण न [**दे**] प्रक्षालन, धोना ; " हरिअच्छेयण छप्पइयघच्चणं किच्चणं च पोत्ताणं" (ओघ १६८—पत्र ७२)।
किच्चा स्त्री [**कृत्या**] १ काटना, कर्तन ; (उप पृ ३५६)। २ क्रिया, काम, कर्म ; ३ देव वगैरः की मूर्ति का एक भेद; ४ जादुगिरी, जादू ; ५ रोग-विशेष, महामारी का रोग; (हे १, १२८)।
किच्चा देखो **कर=कृ**।
किच्चि स्त्री [**कृत्ति**] १ मृग वगैरः का चमड़ा; २ चमड़े का वस्त्र; ३ भूर्जपत्र, भोजपत्र; ४ कृत्तिका नक्षत्र; (हे २,१२; ८६ ; षड्)। °**पाउरण** पुं [°**प्रावरण**] महादेव, शिव; (कुमा)। °**हर** पुं [°**धर**] महादेव, शिव ; (षड्)।
किच्चिरं अ [**कियच्चिरम्**] कितने समय तक, कब तक ? (उप १२८ टी)।
किच्छ न [**कृच्छ्र**] १ दुःख, कष्ट ; (ठा ५, १)।

२ वि. कष्ट-साध्य, कष्ट-युक्त ; (हे १, १२८)। ३ क्रिवि. दुःख से, मुश्किल से ; (सुर ८, १४८)।

किज्ज वि [क्रेय] खरीदने योग्य; " अकिज्जं किज्जमेव वा" (दस ७)।

किज्जंत देखो **कि**=कृ।

किज्जिअ वि [कृत] किया गया, निर्मित ; (पिंग)।

किट्ट सक [कीर्त्तय्] १ श्लाघा करना, स्तुति करना। २ वर्णन करना। ३ कहना, बोलना। किट्टइ, किट्टेइ ; (आचा ; भग)। वकृ—**किट्टमाण** ; (पि २८६)। संकृ—**किट्टइत्ता, किट्टित्ता**; (उत्त २६ ; कप्प)। हेकृ—**किट्टित्तए** ; (कस)।

किट्ट स्रीन [किट्ट] १ धातु का मल, मैल ; (उप ५३२)। २ रंग-विशेष ; (उर ६, ५)। ३ तेल, घी वगैरः का मैल। स्त्री—°**ट्टी** ; (पभा ३३)।

किट्टण देखो **कित्तण** ; (बृह ३)।

किट्टि स्त्री [किट्टि] १ अल्पीकरण-विशेष, विभाग-विशेष; " अपुव्वविसोहीए अणुभागोणूणविभयणं किट्टी " (पंच १२; आवम)।

किट्टिय वि [कीर्तित] १ वर्णित, प्रशंसित ; (सूअ २, ६)। २ प्रतिपादित, कथित ; (सूअ २, २ ; ठा ७)।

किट्टिया स्त्री [कीटिका] वनस्पति-विशेष ; (पराण १ ; भग ७, २)।

किट्टिस न [किट्टिस] १ खली, सरसों, तिल आदि का तैल-रहित चूर्ण ; (अणु)। २ एक प्रकार का सूत, सूता; (अणु ; आवम)।

किट्टी देखो **किट्ट**=किट्ट।

किट्टीकय वि [किट्टीकृत] आपस में मिला हुआ, एकाकार, जैसे सुवर्ण आदि का किट्ट उसमें मिल जाता है उस तरह मिला हुआ ; (उव)।

किट्ठ वि [क्लिष्ट] क्लेश-युक्त; (भग ३, २; जीव ३)।

किट्ठ वि [कृष्ट] जोता हुआ, हल-विदारित ; (सुर ११, ५६ ; भग ३, २)। २ न. देव-विमान विशेष; " जे देवा सिरिवच्छं सिरिदामकंडं मल्लं किट्ठं (? ट्ठं) चावोण्णयं अरणवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववरणा " (सम ३६)।

किट्ठि स्त्री [कृष्टि] १ कर्षण; २ खींचाव, आकर्षण। ३ देव-विमान विशेष ; (सम ६)। °**कूड** न [°कूट] देव-विमान-विशेष ; (सम ६)। °**घोस** न [°घोष] विमान-विशेष ; (सम ६) °**जुत्त** न [°युक्त] विमान-विशेष ; (सम ६)। °**ज्झय** न [°ध्वज] विमान-विशेष ; (सम ६)। °**प्पभ** न [°प्रभ] देव-विमान विशेष ; (सम ६)। °**वण्ण** न [°वर्ण] विमान-विशेष ; (सम ६)। °**लिंग** न [°शृङ्ग] विमान-विशेष ; (सम ६)। °**सिट्ठ** न [°शिष्ट] एक देव-विमान ; (सम ६)।

किट्ठियावत्त न [कृष्ट्यावर्त्त] देव-विमान विशेष; (सम ६)।

किट्ठुत्तरवडिंसग न [कृष्ट्युत्तरावतंसक] इस नाम का एक देव-विमान, देव-भवन ; (सम ६)।

किडि पुं [किरि] सूकर, सूअर ; (हे १, २५१ ; षड्)।

किडिकिडिया स्त्री [किटिकिटिका] सूखी हड्डी का आवाज ; (णाया १, १—पत्र ७४)।

किडिभ पुं [किटिभ] रोग-विशेष, एक जात का क्षुद्र कोढ; (लहुअ १५ ; भग ७, ६)।

किडिया स्त्री [दे] खिड़की, छोटा द्वार ; (स ५८३)।

किड्ड अक [क्रीड्] खेलना, क्रीड़ा करना। वकृ—**किड्डंत**; (पि ३६७)।

किड्डकर वि [क्रीडाकर] क्रीड़ा-कारक ; (औप)।

किड्डा स्त्री [क्रीडा] १ क्रीड़ा, खेल; (विपा १, ७)। २ बाल्यावस्था ; (ठा १०—पत्र ५१६)।

किड्डाविया स्त्री [क्रीडिका] क्रीड़न-धात्री, बालक को खेल-कूद कराने वाली दाई ; (णाया १, १६—पत्र २११)।

किढि वि [दे] १ संभोग के लिए जिसको एकान्त स्थान में लाया जाय वह ; (वव ३)। २ स्थविर, वृद्ध ; (बृह १)।

किढिण न [किठिन] संन्यासिओं का एक पात्र, जो बाँस का बना हुआ होता है ; (भग ७, ६)।

किण सक [क्री] खरीदना। किणइ ; (हे ४, ५२)। वकृ—"से **किणं** किणावेमाणे हणं घायमाणे" (सूअ २, १)। **किणंत** ; (सुपा ३६६)। संकृ—**किणित्ता**; (पि ५८२)। प्रयो—किणावेइ ; (पि ५५१)।

किण पुं [किण] १ घर्षण-चिन्ह, घर्षण की निशानी ; (गउड)। २ मांस-ग्रन्थि; ३ सूखा घाव; (सुपा ३७०; वज्जा ३६)।

किणइय वि [दे] शोभित, विभूषित ; (पउम ६२, ६)।

किणण न [क्रयण] किनना, खरीद, क्रय; (उप पृ २५८)।

किणा देखो **किण्णा**; (प्राप्र; हे ३, ६६)।

किणिकिण अक [**किणिकिणय्**] किण किण आवाज करना। वकृ—**किणिकिणिंत;** (औप)।
किणिय वि [**क्रीत**] किना हुआ, खरीदा हुआ; (सुपा ४३४)।
किणिय पुं [**किणिक**] १ मनुष्य की एक जाति, जो वादित्र बनाती और बजाती है; (वव ३)। २ रस्सी बनाने का काम करने वाली मनुष्य-जाति; "किणिया उ वरत्ताओ वलिंति" (पंचू)।
किणिय न [**किणित**] वाद्य-विशेष; (राय)।
किणिया स्त्री [**किणिका**] छोटा फोड़ा, फुनसी;
"अन्नेवि सइं महियलनिसीयणुप्पन्नकिणियपोंगिल्ला।
मलिणजरकप्पडोच्छइयविग्गहा कहवि हिंडंति"
(स १८०)।
किणिस सक [**शाणय्**] तीक्ष्ण करना, तेज करना। किणिसइ; (पिंग)।
किणो अ [**किमिति**] क्यों, किस लिए? (दे २, ३१; हे २, २१६; पाअ; गा ६७; महा)।
किण्ण वि [**कीर्ण**] १ उत्कीर्ण, खुदा हुआ; "उवलकिण्णव्व कट्ठघडियव्व" (सुपा ५७१)। २ क्षिप्त, फेंका हुआ; (ठा ६)।
किण्ण पुं [**किण्व**] १ फल वाला वृक्ष-विशेष, जिससे दारू बनता है; (गउड; आचा)। २ न. सुरा-बीज, किण्व-वृक्ष के बीज, जिस का दारू बनता है; (उत्त २)। °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] किण्व-वृक्ष के फल से बनी हुई मदिरा; (गउड)।
किण्ण वि [**दे**] शोभमान, राजमान; (दे २, ३०)।
किण्णं अ [**किंनम्**] प्रश्नार्थक अव्यय; (उवा)।
किण्णर देखो **किंनर**; (जं १; राय; इक)।
किण्णा अ [**कथम्**] क्यों, क्यों कर, कैसे? "किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता" (विपा २, १—पत्र १०६)।
किण्णु अ [**किंनु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ प्रश्न; २ वितर्क; ३ सादृश्य; ४ स्थान, स्थल; ५ विकल्प; (उवा; स्वप्न ३४)।
किण्ह देखो **कण्ह**; (गा ६५; णाया १, १; उर ६, ५; पण्ण १७)।
किण्ह न [**दे**] १ बारीक कपड़ा; २ सफेद कपड़ा; (दे २, ५६)।
किण्हा देखो **कण्हा**; (ठा ५, ३—पत्र ३५१; कम्म ४ १३)।
कितव पुं [**कितव**] द्यूतकर, जूआरी; (दे ४, ८)।
कित्त देखो **किट्ट**=कीर्तय्। भवि—कित्तइस्सं; (पडि)। संकृ—**कित्तइत्ताण**; (पच्च ११६)।
कित्तण न [**कीर्त्तन**] १ श्लाघा, स्तुति; "तव य जिणुत्तम संति। कित्तणं" (अजि ४; से ११, १३३)। २ वर्णन, प्रतिपादन; ३ कथन, उक्ति; (विसे ६४० ; गउड; कुमा)।
कित्तवीरिअ देखो **कत्तवीरिअ**; (ठा ८)।
कित्ति स्त्री [**कीर्त्ति**] १ यश, कीर्ति, सुख्याति; (औप; प्रासू ४३; ७४; ८२)। २ एक विद्या-देवी; (पउम ७, १४१)। ३ केसरि-द्रह की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२)। ४ देव-प्रतिमा विशेष; (णाया १, १ टी – पत्र ४३)। ५ श्लाघा, प्रशंसा; (पंच ३)। ६ नीलवन्त पर्वत का एक शिखर; (जं ४)। ७ सौधर्म देवलोक की एक देवी; (निर)। ८ पुं. इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पांचवें बलदेव ने दीक्षा ली थी; (पउम २०, २०५)। °**कर** वि [°**कर**] १ यशस्कर, ख्याति-कारक; (णाया १, १)। २ पुं. भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम; (राज)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] नृप-विशेष; (धम्म)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] इस नाम का एक राजा; (दंस)। °**धर** पुं [°**धर**] १ नृप-विशेष; (तंदु)। २ एक जैन मुनि, दूसरे बलदेव के गुरु; (पउम २०,२०५)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] कीर्ति-प्रधान पुरुष, वासुदेव वगैरः; (ठा ६)। °**म** वि [°**मत्**] कीर्ति-युक्त। °**मई** स्त्री [°**मती**] १ एक जैन साध्वी, (आक)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री; (उत्त १३)। °**य** वि [°**द**] कीर्तिकर, यशस्कर; (औप)।
कित्ति स्त्री [**कृत्ति**] चर्म, चमड़ा; "कुत्तो अम्हाण वग्घकित्तो य" (काप्र ८६३; गा ६४०; वज्जा ४४)।
कित्तिम वि [**कृत्रिम**] बनावटी, नकली; (सुपा २४; ६१३)।
कित्तिय वि [**कीर्त्तित**] १ उक्त, कथित; "कित्तियवंदियमहिया" (पडि)। २ प्रशंसित, श्लाघित; (ठा २, ४)। ३ निरूपित, प्रतिपादित; (तंदु)।
कित्तिय वि [**कियत्**] कितना; (गउड)।
किन्न वि [**क्लिन्न**] आर्द्र, गीला; (हे ४, ३२६)।
किन्ह देखो **कण्ह**; (कप्प)।

किपाड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ ; (षड्) ।

किव्बिस न [**किल्बिष**] १ पाप, पातक ; (पण्ह १, २) । २ मांस ; "निग्गयं च से वीयपासेणं किव्बिसं" (स २६३) । ३ पुं. चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति ; (भग १२, ५) । ४ वि. मलिन; ५ अधम, नीच ; (उत्त ३)। ६ पापी, दुष्ट ; (धर्म ३) । ७ कर्बुर, चितकबरा ; (तंदु) ।

किव्बिसिय पुं [**किल्बिषिक**] १ चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति ; (ठा ३, ४—पत्र १६२) । २ केवल वेषधारी साधु ; (भग) । ३ वि. अधम, नीच; (सूअ १, १, ३)। ४ पाप-फल को भोगने वाला दरिद्र, पंगु वगैरः ; (णाया १, १) । ५ भाण्ड-चेष्टा करने वाला ; (औप) ।

किव्बिसिया स्त्री [**कैल्बिषिकी**] १ भावना-विशेष, धर्म-गुरु वगैरः की निन्दा करने की आदत ; (धर्म ३) । २ केवल वेष-धारी साधु की वृत्ति ; (भग) ।

किम (अप) अ [**कथम्**] क्यों, कैसे ? (हे ४, ४०१) ।

किमण देखो **किवण** ; (आचा) ।

किमस्स पुं [**किमश्व**] नृप-विशेष, जिसने इन्द्र को संग्राम में हराया था और शाप लगने से जो मर कर अजगर हुआ था ; (निचू १) ।

किमि पुं [**कृमि**] १ क्षुद्र जीव, कीट-विशेष; (पण्ह १,३)। २ पेट में, फुनसी में और बवासीर में उत्पन्न होता जन्तु-विशेष, (जी १५)। ३ द्वीन्द्रिय कीट-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र २३)। °**य** न [°**ज**] कृमि-तन्तु से उत्पन्न वस्त्र; "कोसेज्जपट्टमाई जं, किमियं तु पवुच्चइ" (पंचभा) । °**राग** , °**राय** पुं [°**राग**] किरमिजी का रंग ; (कम्म १, २० ; दे २, ३२ ; पण्ह २, ४) । °**रासि** पुं [°**राशि**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३६) ।

किमिघरवसण [दे] देखो **किमिहरवसण** ; (षड्) ।

किमिच्छय न [**किमिच्छक**] इच्छानुसार दान ; (णाया १, ८—पत्र १५०) ।

किमिण वि [**कृमिमत्**] कृमि-युक्त ; "किमिणबहुदुरभिगंधेसु" (पण्ह २, ५) ।

किमिराय वि [दे] लाक्षा से रक्त ; (दे २, ३२) ।

किमिहरवसण न [दे] कौशेय वस्त्र ; (दे २, ३३) ।

किमु अ [**किमु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ प्रश्न; २ वितर्क ; ३ निन्दा ; ४ निषेध ; (हे २, २१७ ; पिंग) ।

किमुय अ [**किमुत**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ प्रश्न ; २ विकल्प ; ३ वितर्क ; ४ अतिशय ; (हे २, २१८) "अमरनररायमहियं ति पूइयं तेहिं, किमुय सेसेहिं" (विसे १०६१) ।

किम्मिय न [दे. **किम्मित**] जड़ता, जाड्य ; (राज) ।

किम्मीर वि [**किर्मीर**] १ कर्बर, कबरा; (पाअ) । २ पुं. राक्षस-विशेष, जिसको भीमसेन ने मारा था ; (वेणी ११७) । ३ वंश-विशेष; "जाया किम्मीरवंसे " (रंभा) ।

कियत्थ देखो **कयत्थ** ; (भवि) ।

कियव्व देखो **कइअव** ; (उप ७२८ टी) ।

किया देखो **किरिया** ; " हयं नाणं कियाहीणं " (हे २, १०४) ; " मग्गणुसारी सद्धो पन्नवणिज्जो कियावरो चेव " (उप १६६ ; विसे ३५६३ टी ; कप्पू) ।

कियाणं देखो **कर**=कृ ।

कियाणग न [**क्रयाणक**] किराना, करियाना, बेचने योग्य चीज ; (सुर १, ६०) ।

किर पुं [दे] सूकर, सूअर ; (दे २, ३० ; षड्) ।

किर अ [**किल**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ संभावना ; २ निश्चय ; ३ हेतु, निश्चित कारण ; ४ वार्ता-प्रसिद्ध अर्थ ; ५ अरुचि ; ६ अलीक, असत्य ; ७ संशय, संदेह ; (हे २, १८६ ; षड् ; गा १२६ ; प्रासू १७ ; दस १)। ७ पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (कम्म ४, ७६) ।

किर सक [**कृ**] १ फेंकना । २ पसारना, फैलाना । ३ विखेरना । वकृ—**किरंत** ; (से ४, ५८ ; १४, ५७) ।

किरण पुंन [**किरण**] किरण, रश्मि, प्रभा ; (सुपा ३५१; गउड ; प्रासू ८२) ।

किरणिल्ल वि [**किरणवत्**] किरण वाला, तेजस्वी ; (सुर २, २४२) ।

किराड } पुं [**किरात**] १ अनार्य देश-विशेष ; (पव **किराय** } १४८) । २ भील, एक जंगली जाति ; (सुर २, २७ ; १८० ; सुपा ३६१ ; हे १, १८३) ।

किरि पुं [**किरि**] भालु का आवाज ; " कत्थइ किरित्ति कत्थइ हिरित्ति कत्थइ छिरित्ति रिच्छाणं सद्दो"(पउम ६४,४५)।

किरि पुं [**किरि**] सूकर, सूअर ; (गउड) ।

किरिइरिआ } स्त्री [दे] १ कर्णोपकर्णिका, एक कान से **किरिकिरिआ** } दूसरे कान गई हुई बात, गप ; २ कुतूहल, कौतुक ; (दे २, ६१) ।

किरित्तण देखो **कित्तण** ; (नाट—माल ६७) ।

किरिया स्त्री [**क्रिया**] १ क्रिया, कृति, व्यापार, प्रयत्न ; (सूअ २, १ ; ठा ३, ३) । २ शास्त्रोक्त अनुष्ठान, धर्मानुष्ठान ; (सुअ २, ४ ; पव १४६) । ३ सावद्य व्यापार ; (भग १७, १) । ४ °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] कर्म-बन्ध का कारण ; (सूअ २, २ ; आव ४) । °**वर** वि [°**पर**] अनुष्ठान-कुशल ; (षड्) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**] १ आस्तिक, जीवादि का अस्तित्व मानने वाला ; (ठा ४, ४) । २ केवल क्रिया से ही मोक्ष होता है ऐसा मानने वाला ; (सम १०६) । °**विसाल** न [°**विशाल**] एक जैन ग्रन्थांश, तेरहवाँ पूर्व-ग्रन्थ ; (सम २६) ।

किरीड पुं [**किरीट**] मुकुट, शिरो-भूषण ; (पाअ) ।

किरीडि पुं [**किरीटिन्**] अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (वेणी १६२) ।

किरीत वि [**क्रीत**] किना हुआ, खरीदा हुआ ; (प्राप्र) ।

किरीय पुं [**किरीय**] १ एक म्लेच्छ देश; २ उसमें उत्पन्न म्लेच्छ जाति; (राज) ।

किरोलय न [**किरोलक**] फल-विशेष, किरोलिका वल्ली का फल ; (उर ६, ५) ।

किल देखो **किर**=किल ; (हे २, १८६ ; गउड ; कुमा) ।

किलंत वि [**क्लान्त**] खिन्न, श्रान्त ; (षड्) ।

किलंज न [**किलिञ्ज**] बाँस का एक पात्र, जिस में गैया वगैरः को खाना खिलाया जाता है ; (उवा) ।

किलकिल अक [**किलकिलाय्**] 'किल किल' आवाज करना, हँसना । "किलकिलइ व्व सहरिसं मणिकंचीकिंकिणिरवेण" (कप्पू) ।

किलकिलाइय न [**किलकिलायित**] 'किलकिल' ध्वनि, हर्ष-ध्वनि ; (आवम) ।

किलणी स्त्री [**दे**] रथ्या, गली ; (दे २, ३१) ।

किलम्म अक [**क्लम्**] क्लान्त होना, खिन्न होना । किलम्मइ ; (कप्पू) । किलम्मसि ; (वज्जा ६२) । वकृ—**किलम्मंत** ; (पि १३६) ।

किलाचक्क न [**क्रीडाचक्र**] इस नाम का एक छन्द—वृत्त ; (पिंग) ।

किलाड पुं [**किलाट**] दूध का विकार-विशेष, मलाई ; (दे २, २२) ।

किलाम सक [**क्लमय्**] क्लान्त करना, खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना । किलामेज्ज ; (पि १३६) । वकृ—**किलामेंत** ; (भग ५, ६) । कवकृ—**किलामीअमाण** ; (मा ४६) ।

किलाम पुं [**क्लम**] खेद, परिश्रम, ग्लानि ; "खमणिज्जो भे किलामो" (पडि; विसे २४०४) ।

किलामणया स्त्री [**क्लमना**] खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना ; (भग ३, ३) ।

किलामिअ वि [**क्लमित**] खिन्न किया हुआ, हैरान किया हुआ, पीड़ित ; "तण्हाकिलामिअंगो" (पउम १०३, २२ ; सुर १०, ४८) ।

किलिंच न [**दे**] छोटी लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा ; "दंतंतरसोहणयं किलिंचमित्तं पि अविदिन्नं" (भत्त १०२ ; पाअ ; दे २, ११) ।

किलिंचिअ न [**दे**] ऊपर देखो ; (गा ८०) ।

किलिंत देखो **किलंत** ; (नाट—मृच्छ २५ ; पि १३६) ।

किलिकिंच अक [**रम्**] रमण करना, क्रीड़ा करना । किलिकिंचइ ; (हे ४, १६८) ।

किलिकिंचिअ न [**रत**] रमण, क्रीड़ा, संभोग ; (कुमा) ।

किलिकिल अक [**किलकिलाय्**] 'किल किल' आवाज करना । वकृ—**किलिकिलंत** ; (उप १०३१ टी) ।

किलिकिलि न [**किलिकिलि**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक) ।

किलिकिलिकिल देखो **किलकिल** । वकृ—**किलिकिलिकिलंत** ; (पउम ३३, ८) ।

किलिगिलिय न [**किलिकिलित**] 'किल किल' आवाज करना, हर्ष-द्योतक ध्वनि-विशेष ; (स ३७० ; ३८५) ।

किलिट्ठ वि [**क्लिष्ट**] १ क्लेश-युक्त; (उत्त ३२) । २ कठिन, विषम ; ३ क्लेश-जनक ; (प्राप्र ; हे २, १०६ ; उव) ।

किलिण्ण देखो **किलिन्न** ; (स्वप्न ८५) ।

किलित्त वि [**क्लृप्त**] कल्पित, रचित ; (प्राप्र ; षड् ; हे १, १४५) ।

किलित्ति स्त्री [**क्लृप्ति**] रचना, कल्पना ; (पि ५६) ।

किलिन्न वि [**क्लिन्न**] आर्द्र, गीला ; (हे १, १४५ ; २, १०६) ।

किलिम्म देखो **किलम्म** । किलिम्मइ ; (पि१७७) । वकृ—**किलिम्मंत** ; (से ६, ८० ; ११, ५०) ।

किलिम्मिअ वि [दे] कथित, उक्त; (दे २, ३२)।
किलिव देखो **कीव** ; (वव २ ; मै ४३)।
किलिस अक [**क्लिश्**] खेद पाना, थक जाना, दुःखी होना। वकृ—**किलिसंत** ; (पउम २१, ३८)।
किलिस देखो **किलेस**; "मिच्छत्तमच्छमीयाण, किलिससलिलम्मि वुड्डाणं" (सुपा ६४)।
किलिसिअ वि [**क्लेशित**] आयासित, क्लेश-प्राप्त ; (स १४६)।
किलिस्स देखो **किलिस**=क्लिश्। किलिस्सइ ; (महा; उत्त)। वकृ—**किलिस्संत** ; (नाट—माल ३१)।
किलिस्सिअ वि [**क्लिष्ट**] क्लेश-प्राप्त, क्लेश-युक्त ; (उप पृ ११६)।
किलीण देखो **किलिण्ण** ; (भवि)।
किलीव देखो **कीव** ; (स ६०)।
किलेस पुं [**क्लेश**] १ खेद, थकावट; (औप)। २ दुःख, पीड़ा, बाधा; (पउम २२, ७५ ; सुज्ज २०)। ३ दुःख का कारण ; ४ कर्म, शुभाशुभ कर्म ; (बृह १)। °**यर** वि [°**कर**] क्लेश-जनक ; (पउम २२, ७५)।
किलेसिय वि [**क्लेशित**] दुःखी किया हुआ ; (सुर ४, १६७ ; १६६)।
किल्ला देखो **किड्डा** ; (मै ६१)।
किव पुं [**कृप**] १ इस नाम का एक ऋषि, कृपाचार्य ; (हे १, १२८)। "भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणिं कीवं (? सउणिं किवं) आसत्थामं" (णाया १, १६—पत्र २०८)।
किवँ (अप) देखो **कहं** ; (कुमा)।
किवण वि [**कृपण**] १ गरीब, रंक, दीन ; (सूअ १, १, ३ ; अच्चु ६७)। २ दरिद्र, निर्धन ; (पण्ह १, २)। ३ कंजूस, अ-दाता ; (दे २, ३१)। ४ क्लीब, कायर ; (सूअ २, २)।
किवा स्त्री [**कृपा**] दया, मेहरबानी ; (हे १, १२८)। °**वन्न** वि [°**पन्न**] कृपा-प्राप्त, दयालु ; (पउम ६५,४७)।
किवाण पुंन [**कृपाण**] खड्ग, तलवार ; (सुपा १५८ ; हे १, १२८ ; गउड)।
किवालु वि [**कृपालु**] दयालु, दया करने वाला ; (पउम ३४, ५० ; ६७, २०)।
किविड न [**दे**] १ खलिहान, अन्न साफ करने का स्थान ; २ वि. खलिहान में जो हुआ हो वह ; (दे २, ६०)।
किविडी स्त्री [**दे**] १ किवाड, पार्श्व-द्वार ; २ घर का पिछला आँगन ; (दे २, ६०)।
किविण देखो **किवण** ; (हे १, ४६ ; १२८ ; गा १३६; सुर ३, ४४ ; प्रासू ५१ ; पण्ह १, १)।
किस वि [**कृश**] १ दुर्बल, निर्बल ; (उवर ११३)। २ पतला ; (हे १, १२८ ; ठा ४, २)।
किसंग वि [**कृशाङ्ग**] दुर्बल शरीर वाला; (गा ६५७)।
किसर पुं [**कृशर**] १ पक्वान्न-विशेष, तिल, चावल और दूध की बनी हुई एक खाद्य चीज ; २ खिचड़ी, चावल और दाल का मिश्रित भोजन-विशेष ; (हे १, १२८)।
किसर देखो **केसर** ; "महमहिअदसणकिसरं" (हे १,१४६)।
किसरा स्त्री [**कृशरा**] खिचड़ी, चावल-दाल का मिश्रित भोजन-विशेष ; (हे १. १२८ ; दे १, ८८)।
किसल देखो **किसलय** ; (हे १, २६६ ; कुमा)।
किसलइय वि [**किसलयित**] अङ्कुरित, नये अङ्कुर वाला; (सुर ३, ३६)।
किसलय पुंन [**किसलय**] १ नूतन अङ्कुर ; (श्रा २०)। २ कोमल पत्ती ; (जी ६)। "सव्वोवि किसलओ खलु उग्गममाणो अणंतओ भणिओ" (पण्ण १)। °**माला** स्त्री [°**माला**] छन्द-विशेष ; (अजि १६)।
किसा देखो **कासा** ; (हे १, १२७)।
किसाणु पुं [**कृशानु**] १ अग्नि, वह्नि, आग ; २ वृक्ष-विशेष, चित्रक वृक्ष ; ३ तीन की संख्या ; (हे १, १२८ ; षड्)।
किसि स्त्री [**कृषि**] खेती, चास ; (विसे १६१५ ; सुर १५, २०० ; प्राप्र)।
किसिअ वि [**कृशित**] दुर्बलता-प्राप्त, कृशता-युक्त ; (गा ४० ; वज्जा ४०)।
किसिअ वि [**कृषित**] १ विलिखित, रेखा किया हुआ ; २ जोता हुआ, कृष्ट ; ३ खींचा हुआ ; (हे १, १२८)।
किसीवल पुं [**कृषीवल**] कर्षक, किसान ; "पायं परस्स धन्नं भक्खंति किसीवला पुव्विं" (श्रा १६)।
किसोर पुं [**किशोर**] बाल्यावस्था के बाद की अवस्था वाला बालक ; "सीहकिसोरोव्व गुहाओ निग्गओ" (सुपा ५४१)।
किसोरी स्त्री [**किशोरी**] कुमारी, अविवाहिता युवती ; (णाया १, ६)।

किस्स देखो **किलिस**=क्लिश् । संकृ—**किस्सइत्ता** ; (सूअ १, ३, २) ।
किह } देखो **कहं**; (आचा; कुमा; भग ३, २; णाया १,१७) ।
किहं }
कीअ देखो **कीव** ; (षड् ; प्राप्र) ।
कीइस वि [**कीदृश**] कैसा, किस तरह का ; (स १४०) ।
कीकस पुं [**कीकश**] १ कृमि-जन्तु विशेष; २ न. हड्डी, हाड़ ; ३ कठिन, कठोर ; (राज) ।
कीचअ देखो **कीयग** ; (वेणी १७७) ।
कीड देखो **किड्डु**=क्रीड् । भवि—कीडिस्सं; (पि २२६) ।
कीड पुं [**कीट**] १ कीड़ा, क्षुद्र जन्तु ; (उव) । २ कीट-विशेष; चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (उत्त २) ।
कीडइल्ल वि [**कीटवत्**] कीड़ा वाला, कीटक-युक्त ; (गउड) ।
कीडण न [**क्रीडन**] खेल, क्रीड़ा ; (सुर १, ११८) ।
कीडय पुं [**कीटक**] देखो **कीड**=कीट ; (नाट ; सुपा ३७०) ।
कीडय न [**कीटज**] कीड़े के तन्तु से उत्पन्न होता वस्त्र, वस्त्र-विशेष ; (अणु) ।
कीडा देखो **किड्डा** ; (सुर ३, ११६ ; उवा) ।
कीडाविया देखो **किड्डाविया** ; (राज) ।
कीडिया स्त्री [**कीटिका**] पिपीलिका, चींटी; (सुर १०, १७६) ।
कीडी स्त्री [**कीटी**] ऊपर देखो ; (उप १४७ टी ; दे २, ३) ।
कीण सक [**क्री**] खरीदना, मोल लेना । कीणइ, कीणए ; (षड्) । भवि—कीणिस्सं ; (पि ५११ ; ५३४) ।
कीणास पुं [**कीनाश**] यम, जम ; (पाअ; सुपा १८३) । °**गिह** न [°**गृह**] मृत्यु, मौत ; (उप १३६ टी) ।
कीय वि [**क्रीत**] १ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ ; (सम ३९ ; पण्ह २, १ ; सुपा ३४५) । २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष; (ठा ३, ४)। ३ न. क्रय, खरीद; (दस ३ ; सूअ १, ६) । °**कड**, °**गड** वि [°**कृत**] १ मूल्य देकर लिया हुआ ; (बृह १) । २ साधु के लिए मोल से किना हुआ, जैन साधु के लिए भिक्षा-दोष-युक्त वस्तु ; (पि ३३०) ।
कीयग पुं [**कीचक**] विराट देश के राजा का साला, जिस-भीम ने मारा था ; (उप ६४८ टी) । "नवमं दूयं विराडनयरं, तत्थ णं तुमं कि(? की)यगं भाउसयसमग्गं" (णाया १, १६—पत्र २०९) ।
कीया स्त्री [**कीका**] नयन-तारा; "मरकतमसारकलितनयण-कीयरासिवन्ने" (णाया १, १ टी—पत्र ६) ।
कीर पुं [**दे.कीर**] शुक, तोता ; (दे २, २१ ; उर १, १४) ।
कीर पुं [**कीर**] १ देश-विशेष, काश्मीर देश ; २ वि. काश्मीर देश संबन्धी, ३ वि. काश्मीर देश में उत्पन्न ; (विसे ४६४ टी) ।
कीरंत } देखो **कर**=कृ ।
कीरमाण }
कीरल पुं [**कीरल**] देश-विशेष ; (पउम ९८, ६४) ।
कीरिस देखो **केरिस** ; (गा ३७४ ; मा ४) ।
कीरी स्त्री [**कीरी**] लिपि-विशेष, कीर देश की लिपि ; (विसे ४६४ टी) ।
कील अक [**क्रीड्**] क्रीड़ा करना, खेलना । कीलइ; (प्राप्र) । वकृ—**कीलंत**, **कीलमाण**; (सुर १, १२१; पि २४०) । संकृ—**कीलेत्ता**, **कीलिऊण**; (सुर १, ११७; पि २४०)।
कील वि [**दे**] स्तोक, अल्प, थोड़ा ; (दे २, २१) ।
कील देखो **खील** ; (पाअ) ।
कीलण न [**क्रीडन**] क्रीड़ा, खेल ; (औप) । °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] बालक को खेल-कूद कराने वाली दाई ; (णाया १, १) ।
कीलणअ न [**क्रीडनक**] खिलौना ; (अभि २४२) ।
कीलणिआ } स्त्री [**दे**] रथ्या, गली ; (दे २, ३१) ।
कीलणी }
कीला स्त्री [**दे**] १ नव-वधू, दुलहिन ; (दे २, ३३) ।
कीला स्त्री [**कीला**] सुरत समय में किया जाता हृदय-ताड़न विशेष ; (दे २, ६४) ।
कीला स्त्री [**क्रीडा**] खेल, क्रीडन ; (सुपा ३५८; सुर १, ११७)। °**वास** पुं [°**वास**] क्रीड़ा करने का स्थान; (इक)।
कीलाल न [**कीलाल**] रुधिर, खून, रक्त; (उप ८६; पाअ) ।
कीलालिअ वि [**कीलालित**] रुधिर-युक्त, खून वाला ; (गउड) ।
कीलावण न [**क्रीडन**] खेल कराना ; (णाया १, २)।
कीलावणय न [**क्रीडनक**] खिलौना ; (निर १, १) ।
कीलिअ न [**क्रीडित**] क्रीड़ा, रमण, क्रीड़न ; (सम १५ ; स २४१) ।

कीलिअ वि [**कीलित**] खूँटा ठोका हुआ ; "लिहियव्व कीलियव्व" (महा ; सुपा २५४)।

कीलिआ स्त्री [**कीलिका**] १ छोटा खूँटा, खूँटी ; (कम्म १, ३६)। २ शरीर-संहनन विशेष, शरीर का एक प्रकार का बाँधा, जिसमें हड्डियां केवल खूँटो से बँधी हुई हो ऐसा शरीर-बन्धन ; (सम १४६ ; कम्म १, ३६)।

कीव पुं [**क्लीव**] १ नपुंसक ; (बृह ४)। २ वि. कातर, अधीर ; (सुर २, १४ ; णाया १, १)।

कीव पुं [**दे. कीव**] पक्षि-विशेष; (पगह १, १—पत्र ८)।

कीस वि [**कीदृश**] कैसा, किस तरह का ; (भग ; पगण ३४)।

कीस वि [**किंस्व**] कौन स्वभाव वाला, कैसे स्वभाव का ; (भग)।

कीस अ [**कस्मात्**] क्यों, किस से, किस कारण से ? (उव ; हे ३, ६८)।

कु अ [**कु**] १ अल्प, थोड़ा ; २ निषिद्ध, निवारित ; ३ कुत्सित, निन्दित ; (हे २, २१७ ; से १, २६ ; सम्म १)। ४ विशेष, ज्यादः ; (णाया १, १४)। °**उरिस** पुं [°**पुरुष**] खराब आदमी, दुर्जन ; (से १२, ३३)। °**चर** वि [°**चर**] खराब चाल-चलन वाला, सदाचार-रहित ; (आचा)। °**डंड** पुं [°**दण्ड**] पाश-विशेष, जिसका प्रान्त भाग काष्ठ का होता है ऐसा रज्जु-पाश ; (पगह १, ३)। °**डंडिम** वि [°**दण्डिम**] दगड देकर छीना हुआ द्रव्य ; (विपा १, ३)। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] १ जलाशय में उतरने का खराब मार्ग ; (प्रासू ६०)। २ दूषित दर्शन ; (सुअ १, १, १)। ३ °**तित्थि** वि [°**तीर्थिन्**] दूषित मत का अनुयायी ; (कुमा)। °**दंडिम** देखो **डंडिम** ; (णाया १, १—पत्र ३७)। °**दंसण** न [°**दर्शन**] दुष्ट मत, दूषित धर्म ; (पगण २)। °**दंसणि** वि [°**दर्शनिन्**] १ दुष्ट दार्शनिक; २ दूषित मत का अनुयायी; (श्रा ६)। °**दिट्ठि** स्त्री [°**दृष्टि**] १ कुत्सित दर्शन ; (उत २८)। २ दूषित मत का अनुयायी ; (धर्म २)। °**दिट्ठिय** वि [**दृष्टिक**] दुष्ट दर्शन का अनुयायी, मिथ्यात्वी; (पउम ३०, ४४)। °**प्पवयण** न [°**प्रवचन**] १ दूषित शास्त्र ; २ वि. दूषित सिद्धान्त को मानने वाला ; (अणु)। °**प्पावयणिय** वि [°**प्रावचनिक**] १ दूषित सिद्धान्त का अनुसरण करने वाला ; (सुअ १, २, २)। २ दूषित आगम-संबन्धी (अनुष्ठान); (अणु)। °**भत्त** न [°**भक्त**] खराब भोजन; (पउम २०, १६६)। °**मार** पुं [°**मार**] १ कुत्सित मार ; (सुअ २, २)। २ अत्यन्त मार, मृत-प्राय करने वाला ताडन ; (णाया १, १४)। °**रंडा** स्त्री [°**रण्डा**] राँड़, विधवा ; (श्रा १६)। °**रुव**, °**रूव** न [°**रूप**] १ खराब रूप ; (उप ३६२ टी ; पगह १, ४)। २ माया-विशेष ; (भग १२, ५)। °**लिंग** न [°**लिङ्ग**] १ कुत्सित भेष ; (दंस)। २ पुं. कीट वगैरः क्षुद्र जन्तु ; (विसे १७५४)। ३ वि. कुतीर्थिक, दूषित धर्म का अनुयायी ; (आवम)। °**लिंगि** पुं [**लिङ्गिन्**] १ कीट वगैरः क्षुद्र जन्तु ; (ओघ ७४८)। २ वि. कुतीर्थिक, असत्य धर्म का अनुयायी ; (पगह १, २)। °**वय** न [°**पद**] खराब शब्द ;

"सो सोहइ दूसंतो, कइयणरइयाइं विविहकव्वाइं ।
जो भंजिऊण कुवयं, अन्नपयं सुंदरं देइ"
(वज्जा ६)।

°**वियप्प** पुं [°**विकल्प**] कुत्सित विचार ; (सुपा ४४)। °**वुरिस** देखो °**उरिस** ; (पउम ६५, ४५)। °**संसग्ग** पुं [°**संसर्ग**] खराब सोबत, दुर्जन-संगति ; (धर्म ३)। °**सत्थ** पुंन [°**शास्त्र**] कुत्सित शास्त्र, अनाप्त-प्रणीत सिद्धान्त ; "ईसरमयाइया सव्वे कुसत्था" (निचू ११)। °**समय** पुं [°**समय**] १ अनाप्त-प्रणीत शास्त्र; (सम्म १)। २ वि. कुतीर्थिक, कुशास्त्र का प्रणेता और अनुयायी ; (सम)। °**सल्लिय** वि [**शल्यिक**] जिसके भीतर खराब शल्य घुस गया हो वह ; (पगह २, ४)। °**सील** न [°**शील**] १ खराब स्वभाव ; (आचा)। २ अब्रह्मचर्य, व्यभिचार ; (ठा ४, ४)। ३ वि. जिसका आचरण अच्छा न हो वह, दुराचारी ; (ओघ ७६३)। ४ अब्रह्मचारी, व्यभिचारी ; (ठा ५, ३)। °**स्सुमिण** पुंन [°**स्वप्न**] खराब स्वप्न; (श्रा ६)। °**हण** वि [°**धन**] अल्प धन वाला, दरिद्र; (पगह २, १—पत्र १००)।

कु स्त्री [**कु**] १ पृथिवी, भूमि; "कुसमयविसासणं" (सम्म १ टी—पत्र ११४ ; से १, २६)। °**त्तिअ** न [°**त्रिक**] १ तीनों जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; २ तीन जगत् में स्थित पदार्थ ; (औप)। °**त्तिअ** वि [°**त्रिज**] तीनों जगत् में उत्पन्न वस्तु ; (आवम)। °**त्तिआवण** पुंन [°**त्रिकापण**] तीनों जगत् के पदार्थ जहां मिल सके ऐसी दुकान ; (भग ; णाया १, १—पत्र ५३)।

°वलय न [°वलय] पृथ्वी-मण्डल; (श्रा २७)।
कुअरी देखो **कुआँरी**; (पि २५१)।
कुअलअ देखो **कुवलय**; (प्राप्र)।
कुआँरी देखो **कुमारी**; (गा २६८)।
कुइमाण वि [दे] म्लान, शुष्क; (दे २, ४०)।
कुइय वि [कुचित] अवस्यन्दित, क्षरित; (ठा ६)।
कुइय वि [कुपित] क्रुद्ध, कोप-युक्त; (भवि)।
कुइयण्ण पुं [कुविकर्ण] इस नाम का एक गृहपति, एक गृहस्थ; (विसे ६३२)।
कुउअ पुंन [कुतुप] स्नेह-पात्र, घी तैल वगैरः भरनेका चमड़े का पात्र-विशेष; "तुप्पाइं को(? कु)उआइं" (पाअ)। देखो **कुतुव**।
कुउआ स्त्री [दे] तुम्बी-पात्र, तुम्बा; (दे २, १२)।
कुऊल न [दे] १ नीवी, नारा, इजारबन्द; २ पहने हुए कपड़े का प्रांत भाग, अञ्चल; (दे २, ३८)।
कुऊहल न [कुतूहल] १ अपूर्व वस्तु देखने की लालसा—उत्सुकता; २ कौतुक, परिहास; (हे १, ११७; कुमा)।
कुओ अ [कुतः] कहांसे ? (षड्)। °इ अ [°चित्] कहींसे, किसीसे; (स १८५)। °वि अ [°अपि] कहीं से भी; (काल)।
कुंआरी स्त्री [कुमारी] वनस्पति-विशेष, कुवारपाठा, घी कुवार, घीगुवार; (श्रा २०; जी १०)।
कुंकण न [दे] १ कोकनद, रक्त कमल; (पण्ण १—पत्र ४०)। २ पुं. क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीड़े की एक जाति; (उत्त ३६)।
कुंकण पुं [कोङ्कण] देश-विशेष; (अणु; सार्ध ३४)।
कुंकुम न [कुङ्कुम] केसर, सुगन्धी द्रव्य-विशेष; (कुमा; श्रा १८)।
कुंग पुं [कुङ्ग] देश-विशेष; (भवि)।
✓**कुंच** सक [कुञ्च्] १ जाना, चलना; २ अक. संकुचित होना; ३ टेढ़ा चलना; (कुमा; गउड)।
कुंच पुं [क्रौञ्च] १ पक्षि-विशेष; (पगह १, १; उप पृ २०८; उर १, १४)। २ इस नाम का एक असुर; (पाअ)। ३ इस नामका एक अनार्य देश; ४ वि. उसके निवासी लोग; (पव २७४)। °रवा स्त्री [°रवा] दण्डकारण्य की इस नाम की एक नदी; (पउम ४२, १५)। °वीरग न [°वीरक] एक प्रकार का जहाज; (निचू १६)। °ारि पुं [°ारि] कार्त्तिकेय, स्कन्द; (पाअ)। देखो **कोंच**।
कुंचल न [दे] मुकुल, कलि, बौर; (दे २, ३६; पाअ)।
कुंचि वि [कुञ्चिन्] १ कुटिल, वक्र; २ मायावी, कपटी; (वव १)।
कुंचिगा देखो **कोंचिगा**।
कुंचिय वि [कुञ्चित] १ संकुचित; (सुपा ५८)। २ कुण्डल आकार वाला, गोलाकृति; (औप; जं २)। ३ कुटिल, वक्र; (वव १)।
कुंचिय पुं [कुञ्चिक] इस नाम का एक जैन उपासक; (भत्त १३३)।
कुंचिया देखो **कोंचिगा**। रूई से भरा हुआ पहनने का एक प्रकार का कपड़ा; (जीत)।
कुंजर पुं [कुञ्जर] हस्ती, हाथी; (हे १, ६६; पाअ)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष; हस्तिनापुर; (पउम ६५, ३४)। °सेणा स्त्री [°सेना] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक रानी; (उत्त १३)। °ावत्त न [°ावर्त] नगर-विशेष; (सुर ३, ८८)।
कुंट वि [कुण्ट] १ कुब्ज, वामन; (आचा)। २ हाथ-रहित, हस्त-हीन; (पव ११०; निचू ११; आचा)।
कुंटलविंटल न [दे] १ मंत्र-तंत्रादि का प्रयोग, पाखण्ड-विशेष; (आवम)। २ मंत्र-तंत्रादि से आजीविका चलाने वाला; (आक)।
कुंटार वि [दे] म्लान, सूखा, मलिन; (दे २, ४०)।
कुंटि स्त्री [दे] १ गठरी, गाँठ; (दे २, ३४)। २ शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का औजार; "मुसलुक्खलहलदंताल-कुंटिकुद्दालपमुहसत्थाणं" (सुपा ५२६)।
कुंठ वि [कुण्ठ] १ मंद, अलस; (श्रा १६)। २ मूर्ख, बुद्धि-रहित; (आचा)।
कुंड न [कुण्ड] १ कूँड़ा, पात्र-विशेष; (षड्)। २ जलाशय-विशेष; (णंदि)। ३ इस नाम का एक सरोवर; (ती ३४)। ४ आज्ञा, आदेश; "वेसमणकुंडधारिणो तिरियजंभगा देवा" (कप्प)। °कोलिय पुं [°कोलिक] एक जैन उपासक; (उवा)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] मगध देश का एक गाँव; (कप्प; पउम २, २१)। °धारि वि [°धारिन्] आज्ञा-कारी; (कप्प)। °पुर न [°पुर] ग्राम-विशेष; (कप्प)।
कुंड न [दे] ऊख पीलने का जीर्ण काण्ड, जो बाँस का बना हुआ होता है; (दे २, ३३; ४, ४५)।

कुंडभी स्त्री [**दे**] छोटी पताका ; (आवम) ।

कुंडल पुंन [**कुण्डल**] १ कान का आभूषण ; (भग ; औप)। २ पुं. विदर्भ देश के एक राजा का नाम ; (पउम ३०, ७७)। ३ द्वीप-विशेष ; ४ समुद्र-विशेष ; ५ देव-विशेष; (जीव ३)। ६ पर्वत-विशेष; (ठा १०)। ७ गोल आकार; (सुपा ६२)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] कुण्डल-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। °**मंडिअ** वि [°**मण्डित**] १ कुण्डल से विभूषित। २ विदर्भ देश का इस नाम का एक राजा; (पउम ३०, ७४)। °**महाभद्द** पुं [°**महाभद्र**] देव-विशेष ; (जीव ३)। °**महावर** पुं [°**महावर**] कुण्डलवर समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (सुज्ज १६)। °**वर** पुं [°**वर**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; ३ देव-विशेष ; (जीव ३)। ४ पर्वत-विशेष ; (ठा ३, ४)। °**वरभद्द** पुं [°**वरभद्र**] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव; (जीव ३)। °**वरमहाभद्द** पुं [°**वरमहाभद्र**] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**वरोभास** पुं [°**वरावभास**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (जीव ३)। °**वरोभासभद्द** पुं [°**वरावभासभद्र**] कुण्डलवरावभास द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**वरोभासमहाभद्द** पुं [°**वराव-भासमहाभद्र**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (जीव ३)। °**वरो-भासमहावर** पुं [°**वरावभासमहावर**] कुण्डलवरावभास समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष; (जीव ३)। °**वरोभासवर** पुं [°**वरावभासवर**] समुद्र-विशेष का अधिपति देव-विशेष ; (जीव ३)

कुंडला स्त्री [**कुण्डला**] विदेहवर्ष-स्थित नगरी-विशेष ; (ठा २, ३)।

कुंडलि वि [**कुण्डलिन्**] कुण्डल वाला ; (भास ३३)।

कुंडलिअ वि [**कुण्डलित**] वर्तुल, गोल आकार वाला ; (सुपा ६२ ; कप्पू)।

कुंडलिआ स्त्री [**कुण्डलिका**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

कुंडलोद पुं [**कुण्डलोद**] इस नाम का एक समुद्र ; (सुज्ज १६)।

कुंडाग पुं [**कुण्डाक**] संनिवेश-विशेष, ग्राम-विशेष ; (आवम)।

कुंडि देखो **कुंडी** ; (महा)।

कुंडिअ पुं [**दे**] ग्राम का अधिपति, गाँव का मुखिया ; (दे २, ३७)।

कुंडिअपेसण न [**दे**] ब्राह्मण-विष्टि, ब्राह्मण की नौकरी, ब्राह्मण की सेवा ; (दे २, ४३)।

कुंडिगा } स्त्री [**कुण्डिका**] नीचे देखो ; (रंभा ;
कुंडिया } अनु ५ ; भग ; णाया २, ५)।

कुंडी स्त्री [**कुण्डी**] १ कुण्डा, पात्र-विशेष ; "तेसिमहो-भूमीए ठविया कुंडी य तेल्लपडिपुन्ना" (सुपा २६६)। २ कमण्डल, संन्यासी का जल-पात्र ; (महा)।

कुंढ देखो **कुंठ** ; (सुपा ४२२)।

कुंढय न [**दे**] १ चुल्ली, चुल्हा ; २ छोटा बरतन ; (दे २, ६३)।

कुंत पुं [**दे**] शुक, तोता ; (दे २, २१)।

कुंत पुं [**कुन्त**] १ हथियार विशेष, भाला ; (पण्ह १, १ ; औप)। २ राम के एक सुभट का नाम; (पउम ५६,३८)।

कुंतल पुं [**कुन्तल**] १ केश, बाल ; (सुर १, १ ; सुपा ६१ ; २००)। २ देश-विशेष ; (सुपा ६१ ; उव ४६५)। °**हार** पुं [°**हार**] धम्मिल्ल, संयत केश ; (पाअ)।

कुंतल पुं [**दे**] सातवाहन, नृप-विशेष ; (दे २, ३६)।

कुंतला स्त्री [**कुन्तला**] इस नाम की एक रानी; (दंस)।

कुंतली स्त्री [**दे**] करोटिका, परोसने का एक उपकरण ; (दे २, ३८)।

कुंतली स्त्री [**कुन्तली**] कुन्तल देश की रहने वाली स्त्री; कप्पू)।

कुंती स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर; (दे २, ३४)।

कुंती स्त्री [**कुन्ती**] पाण्डवों की माता का नाम ; (उप ६४८ टी)। °**विहार** पुं [°**विहार**] नासिक-नगर का एक जैन मन्दिर, जिसका जीर्णोद्धार कुन्तीजी ने किया था ; (ती २८)।

कुंतीपोट्टलय वि [**दे**] चतुष्कोण, चार कोण वाला ; (दे २, ४३)।

कुंथु पुं [**कुन्थु**] १ एक जिन-देव, इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न सतरहवाँ तीर्थंकर और छठवाँ चक्रवर्ती राजा ; (सम ४३ ; पडि)। २ हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ६८)। ३ चमरेन्द्र की हस्ति-सेना का अधिपति देव-विशेष; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ४ एक क्षुद्र जन्तु, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (उत्त ३६ ; जी १७)।

कुंद पुं [**कुन्द**] १ पुष्प-वृक्ष विशेष; (जं २)। २ न. पुष्प-विशेष, कुन्द का फूल; (सुर २, ७६ ; णाया १, १)। ३

विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। ४ पुंन. छन्द-विशेष ; (पिंग)।
कुंदय वि [दे] कृश, दुर्बल ; (दे २, ३७)।
कुंदा स्त्री [**कुन्दा**] एक इन्द्राणी, मानिभद्र इंद्र की पटरानी; (इक)।
कुंदीर न [दे] बिम्बी-फल, कुन्दरुन का फल ; (दे २, ३६)।
कुंदुक्क पुं [**कुन्दुक्क**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ४१)।
कुंदुरुक्क पुं [**कुन्दुरुक**] सुगन्धि पदार्थ-विशेष ; (णाया १, १—पत्र ४१ ; सम १३७)।
कुंदुल्लुअ पुं [दे] पक्षि-विशेष, ऊलुक, उल्लू ; (पाअ)।
कुंधर पुं [दे] छोटी मछली ; (दे २, ३२)।
कुंपय पुंन [**कूपक**] तैल वगैरः रखने का पात्र-विशेष ; (रयण ३१)।
कुंपल पुंन [**कुट्मल, कुड्मल**] १ इस नाम का एक नरक ; २ मुकुल, कलि, कलिका; (हे १, २६ ; कुमा ; षड्)।
कुंबर [दे] देखो **कुंधर** ; (पाअ)।
कुंभ पुं [**कुम्भ**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, भगवान् मल्लिनाथ का पिता ; (सम १५१; पउम २०, ४५)। २ स्वनाम-ख्यात जैन महर्षि, अठारहवें तीर्थंकर के प्रथम शिष्य; (सम १५२)। ३ कुम्भकर्ण का एक पुत्र ; (से १२,६५)। ४ एक विद्याधर सुभट का नाम ; (पउम १०, १३)। ५ परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २६)। ६ कलश, घड़ा ; (महा ; कुमा)। ७ हाथी का गण्ड-स्थल; (कुमा)। ८ धान्य मापने का एक परिमाण ; (अणु)। ९ तरने का एक उपकरण ; (निचू १)। १० ललाट, भाल-स्थल ; (पव २)। ११ °**अण्ण** पुं [°**कर्ण**] रावण के छोटे भाई का नाम ; (१५, ११)। °**आर** पुं [°**कार**] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का बरतन बनाने वाला; (हे १, ८)। °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (दंस)। °**गार** देखो °**आर** ; (महा)। °**ग्ग** न [°**ग्र**] मगध-देश-प्रसिद्ध एक परिमाण; (णाया १, ८—पत्र १२५)। °**सेण** पुं [°**सेन**] उत्सर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर के प्रथम शिष्य का नाम; (तित्थ)।
कुंभंड न [**कूष्माण्ड**] फल-विशेष, कोहला ; (कप्पू)।
कुंभार पुं [**कुम्भकार**] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का बरतन बनाने वाला ; (हे १, ८)। °**ावाय** पुं [°**ापाक**] कुम्हार का बरतन पकाने का स्थान; (ठा ८)।
कुंभि पुं [**कुम्भिन्**] १ हस्ती, हाथी ; (सण)। २ नपुंसक-विशेष, एक प्रकार का षण्ढ पुरुष ; (पुप्फ १२७)।
कुंभिणी स्त्री [दे] जल का गर्त ; (दे २, ३८)।
कुंभिय वि [**कुम्भिक**] कुम्भ-परिमाण वाला ; (ठा ४,२)।
कुंभिल पुं [**दे. कुम्भिल**] १ चोर, स्तेन ; (दे २, ६२ ; विक ५६)। २ पिशुन, दुर्जन ; (दे २, ६२)।
कुंभिल्ल वि [दे] खोदने योग्य ; (दे २, ३६)।
कुंभी स्त्री [**कुम्भी**] १ पात्र-विशेष, घड़े के आकार वाला छोटा कोष्ठ ; (सम १२५)। २ कुंभ, घड़ा ; (जं ३)। °**पाग** पुं [°**पाक**] १ कुंभी में पकना ; (पण्ह २, ५)। २ नरक की एक प्रकार की यातना ; (सूअ १, १, १)।
कुंभी स्त्री [**कूष्माण्डी**] कोहले का गाछ; "चलिओ कुंभीफल दंतुरासु" (गउड)।
कुंभी स्त्री [दे] केश-रचना, केश-संयम ; (दे २, ३४)।
कुंभील पुं [**कुम्भील**] जलचर प्राणि-विशेष, नक्र, मगर ; (चारु ६४)।
कुंभुब्भव पुं [**कुम्भोद्भव**] ऋषि-विशेष, अगस्त्य ऋषि ; (कप्पू)।
कुकुला स्त्री [दे] नवोढ़ा, दुलहिन ; (दे २, ३३)।
कुकुस [दे] देखो **कुक्कुस** ; (दस ५, ३४)।
कुकुहाइय न [**कुकुहायित**] चलते समय का शब्द-विशेष ; (तंदु)।
कुकूल पुं [**कुकूल**] कारीषाग्नि, कंडे की आग ; (पण्ह १, १)।
कुक्क देखो **कोक्क**। कुक्कइ ; (पि १६७; ४८८)।
कुक्क पुं [दे] कुत्ता, कुक्कुर ; "कुक्केहि कुक्कहि अ बुक्कअंते" (मृच्छ ३६)।
कुक्कयय न [दे] आभरण-विशेष ; "अदु अंजणिं अलंकारं कुक्कययं मे पयच्छाहि" (सूअ १, ४, २, ७)। देखो **कुक्कुडय**।
कुक्की स्त्री [दे] कुत्ती, कुकुरी ; (मृच्छ ३६)।
कुक्कुअ वि [**कुत्कुच**] भाँड की तरह शरीर के अवयवों की कुचेष्टा करने वाला ; (धर्म २ ; पव ६)।
कुक्कुअ न [**कौकुच्य**] कुचेष्टा, कामोत्पादक अंग-विकार ; (पउम ११, ६७ ; आचा)।
कुक्कुअ वि [**कुकूज**] आक्रन्द करने वाला ; (उत्त २१)।
कुक्कुआ स्त्री [**कुचकुचा**] अवस्यन्दन, चरण; (बृह ६)।
कुक्कुइअ वि [**कौकुचिक**] भाँड की तरह कुचेष्टा करने वाला, काम-चेष्टा करने वाला ; (भग ; औप)।

कुक्कुइअ न [**कौकुच्य**] काम-कुचेष्टा ; " भंडाईण व नयणाइयाण सविवारकरणमिह भणियं। कुक्कुइयं" (सुपा ५०६; पडि)।

कुक्कुड पुं [**कुक्कुट**] १ कुक्कुट, मुर्गा ; (गा ५८२ ; उवा)। २ वनस्पति-विशेष ; (भग १५)। ३ विद्या द्वारा किया जाता हस्त-प्रयोग-विशेष ; (वव १)। °**मंसय** न [°**मांसक**] १ मुर्गा का मांस ; २ बीजपूरक वनस्पति का गुदा ; (भग १५)।

कुक्कुड वि [**दे**] मत्त, उन्मत्त ; (दे २, ३७)।

कुक्कुडय न [**कुक्कुटक**] देखो **कुक्कयय** ; (सूत्र १, ४, २, ७ टी)।

कुक्कुडिया) स्त्री [**कुक्कुटिका, टी**] कुक्कुटी, मुर्गी ;
कुक्कुडी) (णाया १, ३ ; विपा १, ३)।

कुक्कुडेसर न [**कुक्कुटेश्वर**] तीर्थ-विशेष ; (ती १६)।

कुक्कुर पुं [**कुक्कुर**] कुत्ता, श्वान ; (पउम ६४, ८० ; सुपा २७७)।

कुक्कुरुड पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे २, १३)।

कुक्कुस पुं [**दे**] धान्य आदि का छिलका, भूँसा ; (दे २, ३६ ; दस ५, ३४)।

कुक्कुह पुं [**कुक्कुभ**] पक्षि-विशेष ; (गउड)।

कुक्खि [**दे. कुक्षि**] देखो **कुच्छि**; (दे २, ३४; औप ; स्वप्न ६१ ; करु ३३)।

कुग्गाह पुं [**कुग्राह**] १ कदाग्रह, हठ ; (उप ८३३ टी)। २ जल-जन्तु विशेष ; " कुग्गाहगाहाइयजंतुसंकुलो " (सुपा ६२६)।

कुच पुं [**कुच**] स्तन, थन ; (कुमा)।

कुच्च न [**कूर्च**] १ दाढ़ी-मूँछ ; (पाअ ; अभि २१२)। २ तृण-विशेष ; (पण्ह २, ३)। देखो **कुच्चग**।

कुच्चंधरा स्त्री [**कूर्चधरा**] दाढ़ी-मूँछ धारण करने वाली ; (ओघ ८३ भा)।

कुच्चग) देखो **कुच्च** ; (आचा २, २, ३ ; काल)।
कुच्चय) ३ कूची, तृण-निर्मित तूलिका, जिससे दीवाल में चूना लगाया जाता है ; (उप पृ ३४३ ; कुमा)।

कुच्चिय वि [**कूर्चिक**] दाढ़ी-मूँछ वाला ; (बृह १)।

कुच्छ सक [**कुत्स्**] निन्दा करना, धिक्कारना। कृ—**कुच्छ, कुच्छणिज्ज** ; (श्रा २७ ; पण्ह १, ३)।

कुच्छ पुं [**कुत्स**] १ ऋषि-विशेष ; २ गोत्र-विशेष ; " थेरस्स णं अज्जसिवभूइस्स कुच्छसगुत्तस्स " (कप्प)।

कुच्छ देखो **कुच्छ**=कुत्स्।

कुच्छग पुं [**कुत्सक**] वनस्पति-विशेष ; (सूत्र २, २)।

कुच्छणिज्ज देखो **कुच्छ**=कुत्स्। " अन्नेसिं कुच्छणिज्जं साणाणं भक्खणिज्जं हि " (श्रा २७)।

कुच्छा स्त्री [**कुत्सा**] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा; (ओघ ४४४; उप ३२० टी)।

कुच्छि पुंस्त्री [**कुक्षि**] १ उदर, पेट ; (हे १, ३५ ; उवा; महा)। २ अठचालीस अंगुल का मान ; (जं २)। °**किमि** पुं [°**कृमि**] उदर में उत्पन्न होता कीड़ा, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (पण्ण १)। °**धार** पुं [°**धार**] १ जहाज का काम करने वाला नौकर ; " कुच्छिधारकन्नधार-गब्भजसंजत्ताणावावाणियगा " (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ एक प्रकार का जहाज का व्यापारी ; (णाया १, १६)। °**पूर** पुं [°**पूर**] उदर-पूर्ति ; (वव ४)। °**वेयणा** स्त्री [°**वेदना**] उदर का रोग-विशेष; (जीव ३)। °**सूल** पुंन [°**शूल**] रोग-विशेष ; (णाया १, १३; विपा १, १)।

कुच्छिंभरि वि [**कुक्षिम्भरि**] एकलपेटा, पेटू, स्वार्थी; "हा तियचरित्तकुत्तिं(? च्छिं)भरिए ! " (रंभा)।

कुच्छिमई स्त्री [**दे. कुक्षिमती**] गर्भिणी, आपन्न-सत्वा; (दे २, ४१ ; षड्)।

कुच्छिय वि [**कुत्सित**] खराब, निन्दित, गर्हित ; (पंचा ७ ; भवि)।

कुच्छिल्ल न [**दे**] १ वृति का विवर, बाड़ का छिद्र ; (दे २, २४)। २ छिद्र, विवर ; (पाअ)।

कुच्छेअय पुं [**कौक्षेयक**] तलवार, खड्ग ; (दे १, १६१; षड्)।

कुज पुं [**कुज**] वृक्ष, पेड़ ; (जं २)।

कुजय पुं [**कुजय**] जूआरी, जूआखोर; (सूत्र १, २, २)।

कुज्ज वि [**कुब्ज**] १ कुब्ज, वामन ; (सुपा २ ; कप्पू)। २ पुंन. पुष्प-विशेष ; (षड्)।

कुज्जय पुं [**कुब्जक**] १ वृक्ष-विशेष, शतपत्रिका ; (पउम ४२, ८ ; कुमा)। २ न. उस वृक्ष का पुष्प ; "बंधेउं कुज्जयपसूणं" (हे १, १८१)।

कुज्झ सक [**क्रुध्**] क्रोध करना, गुस्सा करना। कुज्झइ ; (हे ४, २१७ ; षड्)।

कुट्ट सक [**कुट्ट्**] १ कूटना, पीटना, ताड़न करना। २ काटना, छेदना। ३ गरम करना। ४ उपालम्भ देना। भवि—कुट्टइस्सं ; (पि ५२८)। वकृ—**कुट्टिंत**; (सुर ११,

१)। कवकृ—कुट्टिज्जंत, कुट्टिज्जमाण; (सुपा ३४०; प्रासू ६६; राय)। संकृ—कुट्टिय; (भग १४, ८)।

कुट्ट पुं [**कुट**] घड़ा, कुम्भ; (सूअ २, ७)।

कुट्ट पुंन [**दे**] १ कोट, किला; "दिज्जंति कवाडाइं कुट्टुवरि भडा ठविज्जंति" (सुपा ५०३)। २ नगर, शहर; (सुर १५, ८१)। °**वाल** पुं [°**पाल**] कोटवाल, नगर-रक्षक; (सुर १५, ८१)।

कुट्टण न [**कुट्टन**] १ छेदन, चूर्णन, भेदन; (औप)। २ कूटना, ताड़न; (हे ४, ४३८)।

कुट्टणा स्त्री [**कुट्टना**] शारीरिक पीड़ा; (सूअ १, १२)।

कुट्टणी स्त्री [**कुट्टनी**] १ मूसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं; (बृह १)। २ दूती, कूटनी, कुट्टिनी; (रंभा)।

कुट्टा स्त्री [**दे**] गौरी, पार्वती; (दे २, ३५)।

कुट्टाय पुं [**दे**] चर्मकार, मोची; (दे २, ३७)।

कुट्टिंत देखो **कुट्ट**=कुट्ट्।

कुट्टिंतिया देखो **कोट्टंतिया**; (राज)।

कुट्टिंब [**दे**] देखो **कोट्टिंब**; (पाअ)।

कुट्टिणी स्त्री [**कुट्टिनी**] कूटनी, दूती; (कप्पू; रंभा)।

कुट्टिम देखो **कोट्टिम**=कुट्टिम; (भग ८, ६; राय; जीव ३)।

कुट्टिय वि [**कुट्टित**] १ कूटा हुआ, ताड़ित; (सुपा १५; उत्त १६)। २ छिन्न, छेदित; (बृह १)।

कुट्ठ पुंन [**कुष्ठ**] १ पसारी के यहां बेची जाती एक वस्तु; (विसे २६३; पराह २, ५)। २ रोग-विशेष, कोढ़; (वव ६)।

कुट्ठ पुं [**कोष्ठ**] १ उदर, पेट; "जहा विसं कुट्ठगयं मंतमूल-विसारया। वेज्जा हणंति मंतेहिं" (पडि)। २ कोठा, कुशूल, धान्य भरने का बड़ा भाजन; (पराह २, १)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] एक बार जानने पर नहीं भूलने वाला; (पराह २, १)। देखो **कोट्ठ, कोट्ठग**।

कुट्ठ वि [**क्रुष्ट**] १ शापित, अभिशप्त; २ न. शाप, अभि-शाप-शब्द; "उड्ढं कुट्ठ केहिं पेच्छंता आगया इत्थ" (सुपा २५०)।

कुट्ठा स्त्री [**कुष्ठा**] इमली, चिञ्चा; (बृह १)।

कुट्ठि वि [**कुष्ठिन्**] कुष्ठ रोग वाला; (सुपा २४३; ५७६)।

कुड पुं [**कुट**] १ घड़ा, कलश; (दे २, ३५; गा २२६; विसे १४५६)। २ पर्वत; ३ हाथी वगैरः का बन्धन-स्थान; (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ वृक्ष, पेड़; "तडुवियसिहंडमंडियकुडग्गो" (सुपा ५६२)। °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] पात्र-विशेष, घड़ा के जैसा पात्र; (दे २, २०)। °**दोहिणी** स्त्री [°**दोहिनी**] घट-पूर्ण दूध देने वाली; (गा ६३७)।

कुडंग पुंन [**कुटङ्क**] १ कुञ्ज, निकुञ्ज, लता वगैरः से ढ़का हुआ स्थान; (गा ६८०; हेका १०५)। २ वन, जंगल; (उप २२० टी)। ३ बाँस की जाली, बाँस की बनी हुई छत; (बृह १)। ४ गह्वर, कोटर; (राज)। ५ वंश-गहन; (णाया १, ८; कुमा)।

कुडंग पुंन [**दे. कुटङ्क**] लता-गृह, लता से ढका हुआ घर; (दे २, ३७; महा; पाअ; षड्)।

कुडंगा स्त्री [**कुटङ्का**] लता-विशेष; (पउम ५३, ७६)।

कुडंगी स्त्री [**दे. कुटङ्की**] बाँस की जाली; "एक्कपहारेण निवडिया वंसकुडंगी" (महा; सुर १२, २००; उप पृ २८१)।

कुडंब देखो **कुडुंब**; (महा; गा ६०६)।

कुडग देखो **कुड**; (आवम; सूअ १, १२)।

कुडभी स्त्री [**कुटभी**] छोटी पताका; (सम ६०)।

कुडय न [**दे**] लता-गृह, लता से आच्छादित घर, कुटीर, झोंपड़ा; (दे २, ३७)।

कुडय पुंन [**कुटज**] वृक्ष-विशेष, कुरैया; (णाया १,६; पराण १७; स १६४), "कुडयं दलइ" (कुमा)।

कुडव पुं [**कुडव**] अनाज नापने का एक माप; (णाया १, ७; उप पृ ३७०)।

कुडाल देखो **कुड्डाल**; (उवा)।

कुडिअ वि [**दे**] कुब्ज, वामन; (पाअ)।

कुडिआ स्त्री [**दे**] बाड़ का विवर; (दे २, २४)।

कुडिच्छ न [**दे**] १ बाड़ का छिद्र; २ कुटी, झोंपड़ा। ३ वि. त्रुटित, छिन्न; (दे २, ६४)।

कुडिल वि [**कुटिल**] वक्र, टेढा; (सुर १, २०; २, ८६)।

कुडिलविडल न [**दे. कुटिलविटल**] हस्ति-शिक्षा; (राज)।

कुडिल्ल न [**दे**] १ छिद्र, विवर; (पाअ)। २ वि. कुब्ज, कूबड़ा; (पाअ)।

कुडिल्लय वि [दे. **कुटिलक**] कुटिल, टेढ़ा, वक्र ; (दे २, ४० ; भवि)।

कुडिव्वय देखो **कुलिव्वय** ; (राज)।

कुडी स्त्री [**कुटी**] छोटा गृह, झोंपड़ा, कुटीर; (सुपा १२० ; वज्जा ६४)।

कुडीर न [**कुटीर**] झोंपड़ा, कुटी ; (हे ४, ३६४ ; पउम ३३, ८५)।

कुडीर न [**दे**] वाड़ का छिद्र ; (दे २, २४)।

कुडुंग पुं [**दे**] लतागृह, लताओं से ढका हुआ घर ; (षड्; गा १७५ ; २३२ अ)।

कुडुंब न [**कुटुम्ब**] परिजन, परिवार, स्वजन-वर्ग ; (उवा ; महा ; प्रासू १६७)।

कुडुंबय पुं [**कुस्तुम्बक**] १ वनस्पति-विशेष, धनियाँ ; (पराण १—पत्र ४०)। २ कन्द-विशेष ; "पलंडुलसण-कंदे य कंदली य कुडुंबए" (उत्त ३६, ६८ का)।

कुडुंबि } वि [**कुटुम्बिन्, °क**] १ कुटुम्ब-युक्त, गृहस्थ;
कुडुंबिअ } २ कुनबे वाला, कर्षक ; (गउड)। ३ संबन्धी; "सोभागुणसमुदएणं आणणकुडुंबिएणं" (कप्प)।

कुडुंबीअ न [**दे**] सुरत, संभोग, मैथुन ; (षड्)।

कुडुंभग पुं [**दे**] जल-मण्डूक, पानी का मेढक; (निचू १)।

कुडुक्क पुं [**दे**] लता-गृह ; (षड्)।

कुडुच्चिअ न [**दे**] सुरत, संभोग, मैथुन ; (दे २, ४१)।

कुडुल्ली (अप) स्त्री [**कुटी**] कुटिया, झोंपड़ी; (कुमा)।

कुड्ड पुंन [**कुड्य**] १ भित्ति, भींत ; (पउम ६८, ६ ; हे २, ७८)।

"अज्जं गओत्ति अज्जं गओत्ति अज्जं गओत्ति गणिरीए।
पढमव्विअ दिअहद्धे कुड्डो लेहाहिं चित्तलिओ"
(गा २०८)।

कुड्ड न [**दे**] आश्चर्य, कौतुक, कुतूहल ; (दे २, ३३ ; पाअ ; षड् ; हे २, १७४)।

कुड्डगिलोई [**दे**] गृह-गोधा, छिपकली ; (दे २, १६)।

कुड्डलेवणी स्त्री [**दे. कुड्यलेपनी**] सुधा, खड़ी, खटिका ; (दे २, ४२)।

कुड्डाल न [**दे**] हल का ऊपला विस्तृत अंश ; (उवा)।

कुड्ढ पुंन [**दे**] १ चुरायी हुई वस्तु की खोज में जाना ; (दे २, ६२ ; सुपा ५०३)। २ छीनी हुई चीज को छुड़ाने वाला, वापिस लेने वाला ; (दे २, ६२)।

कुढार पुं [**कुठार**] कुल्हाड़ा, फरसा ; (हे १, १६६ ; षड्)।

कुढावय न [**दे**] अनुगमन, पीछे जाना ; (विसे १४३६ टी)।

कुढिय वि [**दे**] कूढ, मूर्ख, बेसमझ ; "कुणंति नेउराइं पुणो पुणो कुढियपुरिसोव्व" (सुर ३, १४२)।

कुण सक [**कृ**] करना, बनाना। कुणइ, कुणउ, कुण ; (भग ; महा ; सुपा ३२०)। वकृ—**कुणंत, कुणमाण** ; (गा १६५ ; सुपा ३६ ; ११३ ; आचा)।

कुणक्क पुं [**कुणक**] वनस्पति-विशेष ; (पराण १—पत्र ३५)।

कुणव न [**कुणप**] १ मुरदा, मृत-शरीर ; (पाअ ; गउड)। २ वि. दुर्गन्धी ; (हे १, २३१)।

कुणाल पुं.ब. [**कुणाल**] १ देश-विशेष ; (णाया १, ८ ; उप ६८६ टी)। २ प्रसिद्ध महाराज अशोक का एक पुत्र; (विसे ८६१)। **°नयर** न [**°नगर**] एक शहर, उजैन ; "आसी कुणालनयरे" (संथा)।

कुणाला स्त्री [**कुणाला**] इस नाम की एक नगरी ; (सुपा १०३)।

कुणि } पुं [**कुणि**] १ हस्त-विकल, ठूँठ, हाथ-कटा
कुणिअ } मनुष्य ; (पउम २, ७७)। २ जन्म से ही जिसका एक हाथ छोटा हो वह ; ३ जिसका एक पाँव छोटा हो, खञ्ज ; (पराह २, ५—पत्र १५० ; आचा)।

कुणिआ स्त्री [**दे**] वृति-विवर, बाड़ का छिद्र ; (दे २, २४)।

कुणिम पुंन [**दे. कुणप**] १ शव, मृतक, मुरदा ; (पराह २, ३)। २ मांस; (ठा ४, ४ ; औप)। ३ नरकावास-विशेष ; (सूअ १, ५, १)। ४ शव का रुधिर, वसा वगैरः ; (भग ७, ६)।

कुणुकुण अक [**कुणुकुणाय्**] शीत से कम्प होने पर 'कड़ कड़' आवाज करना। वकृ—**कुणुकुणंत** ; (सुर २, १०३)।

कुण्हरिया स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पराण १—पत्र ३५)।

कुतत्ती स्त्री [**दे**] मनोरथ, वाञ्छा ; (दे २, ३६)।

कुतुव पुंन [**कुतुप**] १ तैल वगैरः भरने का चमड़े का पात्र; (दे ५, २२)। देखो **कुउअ**।

कुत्त पुं [**दे**] कुत्ता, कुक्कुर ; (रंभा)।

कुत्त न [दे. **कुतक**] ठेका, इजारा; (विसा १, १—पत्र ११)।

कुत्तिय पुंस्त्री [**दे**] एक जात का कीड़ा, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; "करालिय कुत्तिय विच्छू" (आप १७ ; पभा ४१)।

कुत्ती स्त्री [**दे**] कुती, कुकुरी ; (रंभा)।

कुत्थ अ [**कुत्र**] कहां, किस स्थान में ? (उत्तर १०४)।

कुत्थ देखो **कढ** । कुत्थसि; कुत्थसु ; (गा ५०१ अ)।

कुत्थण न [**कोथन**] सड़ना, सड़ जाना ; (वव ४)।

कुत्थर न [**दे**] १ विज्ञान ; (दे २, १३)। २ कोटर, वृक्ष की पोल, गह्वर ; (सुपा २४६)। ३ सर्प वगैरः का बिल ; (उप ३५७ टी)।

कुत्थुंब पुं [**कुस्तुम्ब**] वाद्य-विशेष ; (राय)।

कुत्थुंभरी स्त्री [**कुस्तुम्बरी**] वनस्पति-विशेष, धनियाँ ; (पराण १—पत्र ३१)।

कुत्थुह पुंन [**कौस्तुभ**] मणि-विशेष, जो विष्णु की छाती पर रहता है ; (हेका २५७)।

कुत्थुहवत्थ न [**दे**] नीवी, नारा, इजारबन्द ; (दे २, ३८)।

कुदो देखो **कुओ** ; (हे १, ३७)।

कुद्द वि [**दे**] प्रभूत, प्रचुर ; (दे २, ३४)।

कुद्दण पुं [**दे**] रासक, रासा ; (दे २, ३८)।

कुद्दव पुं [**कोद्रव**] धान्य-विशेष, कोदा, कोद्व ; (सम्य १२)।

कुद्दाल पुं [**कुद्दाल**] १ भूमि खोदने का साधन, कुदार, कुदारी ; (सुपा ५२६)। २ वृक्ष-विशेष ; (जं २)।

कुद्ध वि [**क्रुद्ध**] कुपित, क्रोध-युक्त ; (महा)।

कुप्प सक [**कुप्**] कोप करना, गुस्सा करना। कुप्पइ ; (उव ; महा)। वकृ—**कुप्पंत** ; (सुपा १६७)। कृ-**कुप्पियव्व** ; (स ६१)।

✓**कुप्प** सक [**भाष्**] बोलना, कहना। कुप्पइ; (भवि)।

कुप्प न [**कुप्य**] सुवर्ण और चाँदी को छोड़ कर अन्य धातु और मिट्टी वगैरः के बने हुए गृह-उपकरण ; "लोहाई उवक्खरो कुप्पं" (बृह १ ; पडि)।

कुप्पढ पुं [**दे**] १ गृहाचार, घर का रिवाज ; २ समुदाचार; सदाचार ; (दे २, ३६)।

कुप्पर न [**दे**] सुरत के समय किया जाता हृदय-ताड़न-विशेष ; २ समुदाचार, सदाचार ; ३ नर्म, हाँसी, ठट्ठा; (दे २, ६४)।

कुप्पर पुं [**कूर्पर**] १ कफोणि, हाथ का मध्य भाग; २ जानु, घुटना ; ३ रथ का अवयव-विशेष ; (जं ३)।

कुप्पर पुं [**कर्पर**] देखो **कप्पर**। भींत को परत, भींत की जीर्ण-शीर्ण थर; "एयाओ पाडलावंडकुप्परा जुगणभित्तीओ" (गउड)।

कुप्पल देखो **कुंपल** ; (पि २७७)।

कुप्पास पुं [**कूर्पास**] कञ्चुक, काँचली, जनानी कुरती ; (हे १, ७२ ; कप्पू ; पाअ)।

कुप्पिय वि [**कुपित**] १ कुपित, क्रुद्ध; २ न. क्रोध, गुस्सा; "कुप्पियं नाम कुज्झियं" (आचू ४)।

कुप्पिस देखो **कुप्पास** ; (हे १, ७२ ; दे २, ४०)।

] भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष ; (पव २७)।

कुबेर पुं [**कुबेर**] १ कुबेर, यक्ष-राज, धनेश ; (पाअ ; गउड)। २ भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठाता यक्ष-विशेष; (संति ८)। ३ काञ्चनपुर के एक राजा का नाम ; (पउम ७, ४५)। ४ इस नाम का एक श्रेष्ठी ; (उप ७२८ टी)। ५ एक जैन मुनि ; (कप्प)। °**दिसा** पुं [°**दिश्**] उत्तर दिशा ; (सुर २, ८५)। °**नयरी** स्त्री [°**नगरी**] कुबेर की राजधानी, अलका ; (पाअ)।

कुबेरा स्त्री [**कुबेरा**] जैन साधु-गण की एक शाखा ; (कप्प)।

कुब्बड वि [**दे**] कूबड़, कुब्ज, वामन ; (श्रा २७)।

कुब्बर पुं [**कूबर**] वैश्रमण के एक पुत्र का नाम; (अंत ५)।

कुभंड पुं [**कुभाण्ड**] देव-विशेष की जाति; (ठा २, ३—पत्र ८५)।

कुभंडिंद पुं [**कुभाण्डेन्द्र**] इन्द्र-विशेष, कुभाण्ड देवों का स्वामी ; (ठा २, ३)।

कुमर देखो **कुमार** ; (हे १, ६७; सुपा २४३; ६५६; कुमा)।

कुमरी देखो **कुमारी**; (कप्पू ; पाअ)।

कुमार पुं [**कुमार**] १ प्रथम-वय का बालक, पाँच वर्ष तक का लड़का ; (ठा १० ; णाया १, २)। २ युवराज, राज्यार्ह पुरुष ; (पण्ह १, ५)। ३ भगवान् वासुपूज्य का शासनाधिष्ठाता यक्ष ; (संति ७)। ४ लोहकार, लोहार ; "चवेडमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव" (उत्त २३)। ५ कार्तिकेय, स्कन्द ; (पाअ)। ६ शुक पक्षी ; ७ घुड़सवार ; ८ सिन्धु नद ; ९ वृक्ष-विशेष, वरुण-वृक्ष ; (हे १, ६७)। १० अ-विवाहित, ब्रह्मचारी ; (सम ५०)। °**ग्गाम** पुं [°**ग्राम**] ग्राम-विशेष ; (आचा २, ३)। °**णंदि**

पुं [°नन्दिन्] इस नाम का एक सोनार ; (आवम)। °धम्म पुं [°धर्म] एक जैन साधु ; (कप्प)। °वाल पुं [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध जैन राजा ; (दे १, ११३ टी)।

कुमार पुं [दे] कुआँर का महीना, आश्विन मास ; (ठा२,१)।

कुमारा स्त्री [कुमारा] इस नाम का एक संनिवेश ; "तओ भगवं कुमाराए संनिवेसं गओ" (आवम)।

कुमारिय पुं [कुमारिक] कसाई, शौनिक ; (बृह १)।

कुमारिया स्त्री [कुमारिका] देखो **कुमारी** ; (पि ३५०)।

कुमारी स्त्री [कुमारी] १ प्रथम वय की लड़की ; २ अविवाहित कन्या ; (हे ३, ३२)। ३ वनस्पति-विशेष, घीकुआरी ; (पव ४)। ४ नवमल्लिका ; ५ नदी-विशेष ; ६ जम्बू-द्वीप का एक भाग; ७ वनस्पति-विशेष, अपराजिता ; ८ सीता ; ९ बड़ी इलाची ; १० वन्ध्या ककड़ी की लता ; ११ पक्षि-विशेष ; (हे ३, ३२)।

कुमारी स्त्री [दे. कुमारी] गौरी, पार्वती ; (दे २, ३५)।

कुमुअ पुं [कुमुद] १ इस नाम का एक वानर ; (से१,३४)। २ महाविदेह-वर्ष का एक विजय-युगल, भूमि-प्रदेश-विशेष ; (ठा२, ३—पत्र ८०)। ३ न. चन्द्र-विकासी कमल ; (णाया १, ३—पत्र ६६; से १, २६)। ४ संख्या-विशेष, कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। ५ शिखर-विशेष ; (ठा ८)। ६ वि. पृथ्वी में आनन्द पाने वाला; ७ खराब प्रीति वाला; (से १, २६)। देखो कुमुद।

कुमुअंग न [कुमुदाङ्ग] संख्या-विशेष, 'महाकमल' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो२)।

कुमुआ स्त्री [कुमुदा] १ इस नाम की एक पुष्करिणी ; (जं ४)। २ एक नगरी ; (दीव)।

कुमुइणी स्त्री [कुमुदिनी] १ चन्द्र-विकासी कमल का पेड़; (कुमा; रंभा)। २ इस नाम की एक रानी ; (उप १०३१ टी)।

कुमुद देखो **कुमुअ** ; (इक)। देव-विमान विशेष ; (सम ३३ ; ३५)। °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष; (सम ३५)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष ; (इक)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] इस नाम की एक पुष्करिणी ; (जं ४)। °वण न [°वन] मथुरा नगरी के समीप का एक जङ्गल; (ती ११)। °ागर पुं [°ाकर] कुमुदषण्ड, कुमुदों से भरा हुआ वन ; (पगह १, ४)।

कुमुदंग देखो **कुमुअंग** ; (इक)।

कुमुदग न [कुमुदक] तृण-विशेष; (सूअ २, २)।

कुमुली स्त्री [दे] चुल्ली, चुल्हा ; (दे २, ३६)।

कुम्म पुं [कूर्म] कच्छप, कछुआ ; (पाअ)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] मगध देश के एक गाँव का नाम; (भग १५)।

कुम्मण वि [दे] म्लान, शुष्क ; (दे २, ४०)।

कुम्मास पुं [कुल्माष] १ अन्न-विशेष, उड़िद ; (ओघ ३५६ ; पगह २, ५)। २ थोड़ा भीजा हुआ मुंग वगैरः धान्य ; (पगह २, ५—पत्र १४८)।

कुम्मी स्त्री [कूर्मी] १ स्त्री-कछुआ, कच्छपी। २ नारद की माता का नाम ; (पउम ११, ५२)। °पुत्त पुं [°पुत्र] दो हाथ ऊँचा इस नाम का एक पुरुष, जिसने मुक्ति पाई थी ; (औप)।

कुम्ह पुंब. [कुश्मन्] देश-विशेष ; (हे २, ७४)।

कुय पुं [कुच] १ स्तन, थन। २ वि. शिथिल ; (वव ७)। ३ अस्थिर ; (निचू १)।

कुयवा स्त्री [दे] वल्ली-विशेष ; (पगग १—पत्र ३३)।

कुरंग पुं [कुरङ्ग] १ मृग की एक जाति ; (जं २)। २ कोई भी मृग, हरिण ; (पगह १, १; गउड)। स्त्री—°गी ; (पाअ)। °च्छी स्त्री [°ाक्षी] हरिण के नेत्र जैसे नेत्र वाली स्त्री, मृग-नयनी स्त्री ; (वाअ २०)।

कुरंटय पुं [कुरण्टक] वृक्ष-विशेष, पियवाँसा ; (उप १०३१ टी)।

कुरकुर देखो **कुरुकुर**। वकृ—**कुरकुराइंत** ; (रंभा)।

कुरय पुं [कुरक] वनस्पति-विशेष; (पगग १—पत्र ३५)।

कुरर पुं [कुरर] कुरल-पक्षी, उत्क्रोश ; (पगह १, १ ; उप १०२६)।

कुररी स्त्री [दे] पशु, जानवर ; (दे २, ४०)।

कुररी स्त्री [कुररी] १ कुरर पक्षी की मादा ; २ गाथा-छन्द का एक भेद ; (पिंग)। ३ मेषी, मेढ़ी ; (रंभा)।

कुरल पुं [कुरल] १ केश, बाल ; "कुरलकुरलीहिं कलिओ तमालदलसामलो अइसणिद्धो" (सुपा २४ ; पाअ)। २ पक्षि-विशेष ; (जीव १)।

कुरली स्त्री [कुरली] १ केशों की वक्र सटा , (सुपा १ ; २४)। २ कुरल-पक्षिणी ; "कुरलिव्व नहंगणे भमइ" (पउम १७, ७६)।

कुरवय पुं [कुरबक] वृक्ष-विशेष, कटसरैया ; (गा ६ ; मा ४० ; विक्र २६ ; स ४१४ ; कुमा ; दे ५, ६)।

कुरा स्त्री [**कुरा**] वर्ष-विशेष, अकर्म भूमि विशेष ; (ठा २, ३ ; १०)।

कुरिण न [**दे**] बड़ा जंगल, भयंकर अटवी ; (ओघ ४४७)।

कुरु पुं.ब. [**कुरु**] १ आर्य देश-विशेष, जो उत्तर भारत में है ; (णाया १, ८ ; कुमा)। २ भगवान् आदिनाथ का इस नाम का एक पुत्र ; (ती १६)। ३ अकर्म-भूमि विशेष; (ठा ६)। ४ इस नाम का एक वंश ; (भवि)। ५ पुंस्त्री. कुरु वंश में उत्पन्न, कुरु-वंशीय ; (ठा ६)। °**अरा**, °**अरी** देखो नीचे °**चरा**, °**चरी**; (षड्)। °**खेत्त** °**क्खेत्त**, न [°**क्षेत्र**] १ दिल्ली के पास का एक मैदान, जहां कौरव और पाण्डवों की लडाई हुई थी ; २ कुरु देश की राजधानी, हस्तिनापुर नगर ; (भवि ; ती १६)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] इस नाम का एक राजा ; (धम्म ; आवम)। °**चर** वि [°**चर**] कुरु देश का रहने वाला। स्त्री—°**चरा**, °**चरी**; (हे ३, ३१)। °**जंगल** न [°**जङ्गल**] कुरु-भूमि ; देश-विशेष ; (भवि ; ती ७)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] दुर्योधन ; (गा ४४३ ; गउड)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] इस नाम का एक श्रेष्ठी और जैन महर्षि ; (उत्त २ ; संथा)। °**मई** स्त्री [°**मती**] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की पटरानी ; (सम १५२)। °**राय** पुं [°**राज**] कुरु देश का राजा ; (ठा ७)। °**वइ** पुं [°**पति**] कुरु देश का राजा ; (उप ७२८ टी)।

कुरुकुया स्त्री [**कुरुकुचा**] पाँव का प्रक्षालन ; (ओघ ३१८)।

कुरुकुरु अक [**कुरुकुराय्**] 'कुर कुर' आवाज करना, कुलकुलाना, बड़बड़ाना। कुरुकुराअसि ; (पि ५५८)। वकृ—**कुरुकुराअंत** ; (कप्पू)।

कुरुकुरिअ न [**दे**] रणरणक, औत्सुक्य ; (दे २, ४२)।

कुरुगुर देखो **कुरुकुर**। कुरुगुरेंति ; (स ५०३)।

कुरुचिल्ल पुं [**दे**] १ कुलीर, जल-जन्तु-विशेष ; २ न. ग्रहण, उपादान ; (दे २, ४१)। देखो **कुरुविल्ल**।

कुरुच्च वि [**दे**] अनिष्ट, अप्रिय ; (दे २, ३६)।

कुरुड वि [**दे**] १ निर्दय, निष्ठुर ; (दे २, ६३ ; भवि)। २ निपुण, चतुर ; (दे २, ६३ ; भवि)।

कुरुण न [**दे**] राजा का या दूसरे का धन ; (राज)।

कुरुय न [**दे. कुरुक**] माया, कपट ; (सम ७१)।

कुरुया स्त्री [**दे.कुरुका**] शरीर-प्रक्षालन, स्नान; (वव १)।

कुरुर देखो **कुरर** ; (कुमा)।

कुरुल पुं [**दे**] १ कुटिल केश, वक्र बाल ; (दे २, ६३ ; भवि)। २ वि. निर्दय ; ३ निपुण, चतुर ; (दे २, ६३)।

कुरुल अक [**कु**] आवाज करना, कौए का बोलना। कुरुलहि ; (भवि)।

कुरुलिअ न [**कुत**] वायस का शब्द, कौए का आवाज ; (भवि)।

कुरुव देखो **कुरु** ; (पउम ११८, ८३ ; भवि)।

कुरुवग देखो **कुरवय** ; (सुपा ७७)।

कुरुविंद पुं [**कुरुविन्द**] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति ; (गउड)। २ तृण-विशेष ; (पराण १ ; पराह १, ४—पत्र ७८)। ३ कुटिलिक-नामक रोग, एक प्रकार का जंघा-रोग ; "एणीकुरुविंदचत्तवट्टाणुपुव्वजंघे" (ओप)। °**ावत्त** पुंन [°**ावर्त्त**] भूषण-विशेष ; (कप्प)।

कुरुविंदा स्त्री [**कुरुविन्दा**] इस नाम की एक वणिग्-भार्या; (पउम ५५, ३८)।

कुरुविल्ल [**दे**] देखो **कुरुचिल्ल** ; (पाअ)।

कुल पुंन [**कुल**] १ कुल, वंश, जाति ; (प्रासू १७)। २ पैतृक वंश ; (उत्त ३)। ३ परिवार, कुटुम्ब ; (उप ६७७)। ४ सजातीय समूह ; (पराह १, ३)। ५ गोत्र; (सुपा ८ ; ठा ४, १)। ६ एक आचार्य की संतति; (कप्प)। ७ घर, गृह ; (कप्प ; सुअ १, ४, १)। ८ सान्निध्य, सामीप्य ; (आचा)। ९ ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध नक्षत्र-संज्ञा; (सुज्ज १० ; इक)। "कुलो, कुलं" (हे १, ३३)। °**उव्व** पुं [°**पूर्व**] पूर्वज, पूर्व-पुरुष; (गउड)। °**कम** पुं [°**क्रम**] कुलाचार, वंश-परम्परा का रिवाज ; (सट्टि ७४)। °**कर** देखो नीचे °**गर** ; (ठा १०)। °**कोडि** स्त्री [°**कोटि**] जाति-विशेष ; (पव १५१ ; ठा ६ ; १०)। °**क्कम** देखो **कम** ; (सट्टि ६)। °**गर** पुं [°**कर**] कुल की स्थापना करने वाला, युग के प्रारम्भ में नीति वगैरः की व्यवस्था करने वाला महा-पुरुष; (सम १२६; धण ५)। °**गेह** न [°**गेह**] पितृ-गृह ; (सण)। °**घर** न [°**गृह**] पितृ-गृह; (ओप)। °**ज** वि [°**ज**] कुलीन; खानदान कुल में उत्पन्न; (द्र ५)। °**जाय** वि [°**जात**] कुलीन, खानदान कुल का; (सुपा ५९८ ; पाअ)। °**जुअ** वि [°**युत**] कुलीन ; (पव ६४)। °**णाम** न [°**नामन्**] कुल के अनुसार किया जाता नाम ; (अणु)। °**तंतु** पुं [°**तन्तु**] कुल-संतान, कुल-संतति ; (वव ६)। °**तिलग** वि [°**तिलक**] कुल में श्रेष्ठ; (भग ११,११)। °**त्थ**

वि [°स्थ] कुलीन, खानदान वंश का; (गाया १, ५)। °त्थेर पुं [°स्थविर] श्रेष्ठ साधु ; (पंचू)। °दिणयर पुं [°दिनकर] कुल में श्रेष्ठ ; (कप्प)। °दीव पुं [°दीप] कुल-प्रकाशक, कुल में श्रेष्ठ; (कप्प)। °देव पुं [°देव] गोत्र-देवता ; (काल)। °देवया स्त्री [°देवता] गोत्र-देवता ; (सुपा ५९७)। °देवी स्त्री [°देवी] गोत्र-देवी; (सुपा ६०२)। °धम्म पुं [°धर्म] कुलाचार; (ठा१०)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष; (सम ६६; सुपा ४३)। °पुत्त पुं [°पुत्र] वंश-रक्षक पुत्र ; (उत्त १)। °बालिया स्त्री [°बालिका] कुलीन कन्या ; (सुर १,४३ ; हेका ३०१)। °भूसण न [°भूषण] १ वंश को दीपाने वाला, २ एक केवली भगवान् ; (पउम ३९, १२२)। °मय पुं [°मद] कुल का अभिमान ; (ठा १०)। °मयहरिया, °महत्तरिया स्त्री [°महत्तरिका] कुल में प्रधान स्त्री, कुटुम्ब की मुखिया ; (सुपा ७६; आवम)। °य देखो °ज ; (सुपा ५९८)। °रोग पुं [°रोग] कुल-व्यापक रोग ; (जं २)। °वइ पुं [°पति] तापसों का मुखिया, प्रधान संन्यासी ; (सुपा १६०; उप ३१)। °वंस पुं [°वंश] कुल रूप वंश, वंश ; (भग ११, १०)। °वंस पुं [°वंश्य] कुल में उत्पन्न, वंश में संजात ; (भग ६,३३)। °वडिंसय पुं [°ावतंसक] कुल-भूषण, कुल-दीपक; (कप्प)। °वहू स्त्री [°वधू] कुलीन स्त्री, कुलाङ्गना ; (आव ५ ; पि ३८७)। °संपण्ण वि [°संपन्न] कुलीन, खानदान कुल का ; (औप)। °समय पुं [°समय] कुलाचार ; (सूअ १, १, १)। °सेल पुं [°शैल] कुल-पर्वत ; (सुपा ६०० ; सं ११९)। °सेलया स्त्री [°शैलजा] कुल पर्वत से निकली हुई नदी ; "कुलसेलयावि सरिया नूणं नीययरमणुसरइ" (सुपा ६००)। °हर न [°गृह] पितृ-गृह, पिता का घर ; (गा १२१ ; सुपा ३६४; से ६,५३)। °ाजीव वि [°ाजीव] अपने कुल की बड़ाई बतला कर आजीविका प्राप्त करने वाला; (ठा ५,१)। °ाय न [°ाय] पक्षी का घर, नीड़ ; (पाअ)। °ायार पुं [°ाचार] कुलाचार वंश-परम्परा से चला आता रिवाज; (वव १)। °ारिय पुं [°ार्य] पितृ-पक्ष की अपेक्षा से आर्य ; (ठा३, १)। °ालय वि [°ालय] गृहस्थों के घर भीख माँगने वाला ; (सूअ २, ६)।

कुलंकर पुं [**कुलङ्कर**] इस नाम का एक राजा ; (पउम ८२, २९)।

कुलंप पुं [**कुलम्प**] इस नाम का एक अनार्य देश; २ उसमें रहने वाली जाति ; (सूअ २, २)।

कुलकुल देखो **कुरकुर**। कुलकुलइ ; (भवि)।

कुलक्ख पुं [**कुलक्ष**] १ एक म्लेच्छ देश ; २ उसमें रहने वाली जाति ; (पण्ह १, १ ; इक)।

कुलडा स्त्री [**कुलटा**] व्यभिचारिणी स्त्री, पुंश्चली ; (सुपा ३८४)।

कुलत्थ पुंस्त्री [**कुलत्थ**] अन्न-विशेष, कुलथी ; (ठा ५, ३ ; गाया १,५)। स्त्री—°त्था ; (श्रा १८)।

कुलफंसण पुं [**दे**] कुल-कलङ्क, कुल का दाग, कुल की अपकीर्त्ति ; (दे २, ४२ ; भवि)।

कुलल पुं [**कुलल**] १ पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)। २ गृद्ध पक्षी ; (उत्त १४)। ३ कुरर पक्षी ; (सूअ १,११)। ४ मार्जार, बिड़ाल ; "जहा कुक्कुडपोयस्स णिच्चं कुललओ भयं" (दस ४)।

कुलव देखो **कुडव** ; (जो २)।

कुलसंतइ स्त्री [**दे**] चुल्ली, चुल्हा ; (दे २, ३९)।

कुलाण देखो **कुणाल** ; (राज)।

कुलाल पुं [**कुलाल**] कुम्भकार, कुम्हार ; (पाअ ; गउड)।

कुलाल पुं [**कुलाट**] १ मार्जार, बिलाड़ ; २ ब्राह्मण, विप्र ; (सूअ २, ६)।

कुलिंगाल पुं [**कुलाङ्गार**] कुल में कलंक लगाने वाला, दुराचारी ; (ठा ४, १—पत्र १८५)।

कुलिक, **कुलिय** पुं [**कुलिक**] १ ज्योतिः-शास्त्र में प्रसिद्ध एक कुयोग ; (गण १८)। २ न. एक प्रकार का हल ; (पण्ह १, १)।

कुलिय न [**कुड्य**] १ भींत, भित्ति ; (सूअ १,२,१)। २ मिट्टी की बनाई हुई भींत; (बृह २ ; कस)।

कुलिया स्त्री [**कुलिका**] भींत, कुड्य ; (बृह २)।

कुलिर पुं [**कुलिर**] मेष वगैरः बारह राशि में चतुर्थ राशि; (पउम १७, १०८)।

कुलिव्वय पुं [**कुटिव्रत**] परिव्राजक का एक भेद, तापस-विशेष, घर में ही रहकर क्रोधादि का विजय करने वाला; (औप)।

कुलिस पुंन [**कुलिश**] वज्र, इन्द्र का मुख्य आयुध; (पाअ ; उप ३२० टी)। °**णिणाय** पुं [°**निनाद**] रावण का इस नाम का एक सुभट ; (पउम ५६, २९)। °**मज्झ** न [°**मध्य**] एक प्रकार की तपश्चर्या ; (पउम २२, २४)।

कुलीकोस पुं [**कुटीकोश**] पक्षि-विशेष; (पगह १,१—पत्र ८)।

कुलीण वि [**कुलीन**] उत्तम कुल में उत्पन्न; (प्रासू ७१)।

कुलीर पुं [**कुलीर**] जन्तु-विशेष; (पात्र; दे २,४१)।

कुलुंच सक [**दह, म्लै**] १ जलाना। २ म्लान करना। संकृ— "मालइकुसुमाइं **कुलुंचिऊण** मा जाणि णिव्वुओ सिसिरो" (गा ४२६)।

कुलुक्किय वि [**दे**] १ जला हुआ; "विरहदवग्गिकुलुक्किय-कायहो" (भवि)।

कुल्ल पुं [**दे**] १ ग्रीवा, कण्ठ; २ वि. असमर्थ, अशक्त; ३ छिन्न-पुच्छ, जिसका पूँछ कट गया हो वह; (दे २,६१)।

कुल्ल अक [**कूर्द्**] कूदना। वकृ— "मारुईरक्खसाण बलं मुक्कवुक्कारपाइक्क**कुल्लंत**वग्गंतनेणामुहं" (पउम ५३, ७६)।

कुल्लउर न [**कुल्यपुर**] नगर विशेष; (संथा)।

कुल्लड न [**दे**] १ चुल्ली, चुल्हा; (दे २,६३)। २ छोटा पात्र, पुड़वा; (दे २,६३; पाअ)।

कुल्लरिअ पुं [**दे**] कान्दविक, हलवाई, मीठाई बनाने वाला; (दे २,४१)।

कुल्लरिया स्त्री [**दे**] हलवाई की दुकान; (आवम)।

कुल्ला स्त्री [**कुल्या**] १ जल की नीक, सारिणी; (कुमा; हे २,७६)। २ नदी, कृत्रिम नदी; (कप्पू)।

कुल्लाग पुं [**कुल्याक**] संनिवेश-विशेष, मगध देश का एक गाँव; (कप्प)।

कुल्लुडिया स्त्री [**कुल्लुडिका**] घटिका, घड़ी; (सूअ१,४,२)।

कुल्लूरिअ [**दे**] देखो **कुल्लरिअ**; (महा)।

कुल्ह पुं [**दे**] शृगाल, सियार; (दे २,३४)।

कुवणय न [**दे**] लकुट, यष्टि, लकड़ी; (राज)।

कुवलय न [**कुवलय**] १ नीलोत्पल, हरा रंग का कमल; (पाअ)। २ चन्द्र-विकासी कमल; (श्रा २७)। ३ कमल, पद्म; (गा ५)।

कुविंद पुं [**कुविन्द**] तन्तुवाय, कपड़ा बुनने वाला; (सुपा १८८)। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] वल्ली-विशेष; (पगण १—पत्र ३३)।

कुविय वि [**कुपित**] क्रुद्ध, जिसको गुस्सा हुआ हो वह; (पगह १, १; सुर २, ५; हेका ७३; प्रासू ६४)।

कुविय देखो **कुप्प**=कुप्य; (पगह१,५; सुपा४०६)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] बिछौना आदि गृहोपकरण रखने की कुटिया, घर का वह भाग जिसमें गृहोपकरण रक्खे जाते हैं; (पगह १,४—पत्र १३३)।

कुवेणी स्त्री [**कुवेणी**] शस्त्र विशेष, एक जात का हथियार; (पगह १,३—पत्र ४४)।

कुवेर देखो **कुबेर**; (महा)।

कुव्व सक [**कृ, कुर्व्**] करना, बनाना। कुव्वइ; (भग)। भूका—कुव्वित्था; (पि ५१७)। वकृ—**कुव्वंत, कुव्वमाण**; (ओघ १५ भा; णाया १,६)।

कुस पुं न [**कुश**] १ तृण-विशेष, दर्भ, डाभ, काश; (विपा १,६; निचू १)। २ पुं. दाशरथी राम के एक पुत्र का नाम; (पउम १००, २)। °**ग्ग** न [°**ाग्र**] दर्भ का अग्र भाग जो अत्यन्त तीक्ष्ण होता है; (उत ७)। °**ग्गनयर** न [°**ाग्रनगर**] नगर-विशेष, बिहार का एक नगर, राजगृह, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है; (पउम २, ६८)। °**ग्गपुर** न [°**ाग्रपुर**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (सुर १, ८१)। °**ट्ट** पुं [°**ावर्त्त**] आर्य देश-विशेष; (सत ६७ टी)। °**ट्ट** पुं [°**ार्य**] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी शौर्यपुर था; (इक)। °**त्त** न [°**क्त, ाक्त**] आस्तरण-विशेष, एक प्रकार का बिछौना; (णाया १, १—पत्र १३)। °**त्थलपुर** न [°**स्थलपुर**] नगर-विशेष; (पउम २१, ७६)। °**मट्टिया** स्त्री [°**मृत्तिका**] डाभ के साथ कुटी जाती मिट्टी; (निचू १८)। °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष; (अणु)।

कुसण न [**दे**] तीमन, आर्द्र करना; (दे २, ३५)।

कुसल वि [**कुशल**] १ निपुण, चतुर, दक्ष, अभिज्ञ; (आचा; णाया १, २)। २ न. सुख, हित; (राय)। ३ पुण्य; (पंचा ६)।

कुसला स्त्री [**कुशला**] नगरी-विशेष, विनीता, अयोध्या; (आवम)।

कुसी स्त्री [**कुशी**] लोहे का बना हुआ एक हथियार; (दे ८, ५)।

कुसुंभ पुंन [**कुसुम्भ**] १ वृक्ष-विशेष, कसुम, कर्र; (ठा ८—पत्र ४०५)। २ न. कसुम का पुष्प, जिसका रंग बनता है; (जं २)। ३ रंग-विशेष; (श्रा १२)।

कुसुंभिअ वि [**कुसुम्भित**] कुसुम्भ रंग वाला; (श्रा१२)।

कुसुंभिल पुं [**दे**] पिशुन, दुर्जन, चुगलीखोर; (दे२,४०)।

कुसुंभी स्त्री [**कुसुम्भी**] वृक्ष-विशेष, कसूम का पेड़; (पाअ)।

कुसुम न [**कुसुम**] १ पुष्प, फूल; (पाअ; प्रासू ३४)। २ पुं. इस नाम का भगवान् पद्मप्रभ का शासनाधिष्ठायक यक्ष; (संति ७)। °**केउ** पुं [°**केतु**] अरुणवर द्वीप का अधिष्ठायक देव; (दीव)। °**चाय**, °**चाव** पुं [°**चाप**] कामदेव, मकरध्वज; (सुपा५६;५३०; महा)। °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] वसन्त ऋतु; (कुमा)। °**णयर** न [°**नगर**] नगर-विशेष, पाटलिपुत्र, आजकल जो 'पटना' नाम से प्रसिद्ध है; (आवम)। °**दंत** पुं [°**दन्त**] एक तीर्थङ्कर देव का नाम, इस अवसर्पिणी काल के नववें जिन-देव, श्री सुविधिनाथ; (पउम १, ३)। °**दाम** न [°**दामन्**] फूलों की माला; (उवा)। °**धणु** न [**धनुष्**] कामदेव; (कुमा)। °**पुर** न [°**पुर**] देखो ऊपर °**णयर**; (उप ४८६)। °**बाण** पुं [°**बाण**] कामदेव; (सुर ३, १६२; पाअ)। °**रअ** पुं [°**रजस्**] मकरन्द; (पाअ)। °**रद** पुं [°**रद**] देखो **दंत**; (पउम २०, ५)। °**लया** स्त्री [°**लता**] छन्द-विशेष; (अजि १५)। °**संभव** पुं [°**संभव**] मधु-मास, चैतमास; (अणु)। °**सर** पुं [°**शर**] कामदेव; (सुर ३, १०६)। °**ाअर** पुं [°**ाकर**] इस नाम का एक छन्द; (पिंग)। °**ाउह** पुं [°**ायुध**] काम, कामदेव; (स ५३८)। °**ावई** स्त्री [°**ावती**] इस नाम की एक नगरी; (पउम ५, २६)। °**ासव** पुं [°**ासव**] किञ्जल्क, पराग, पुष्प-रेणु; (णाया १, १; औप)।

कुसुमाल पुं [**दे**] चोर, स्तेन; (दे २, १०)।

कुसुमालिअ वि [**दे**] शून्य-मनस्क, भ्रान्त-चित्त; (दे २, ४२)।

कुसुमिअ वि [**कुसुमित**] पुष्पित, पुष्प-युक्त, खिला हुआ; (णाया १, १; पउम ३३, १४८)।

कुसुमिल्ल वि [**कुसुमवत्**] ऊपर देखो; (सुपा २२३)।

कुसुर [**दे**] देखो **भसुर**; (हे २, १७४ टि)।

कुसूल पुं [**कुशूल**] कोष्ठ, अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा पात्र; (पाअ)।

कुह अक [**कुथ्**] सड़ जाना, दुर्गन्धी होना। कुहइ; (भवि; हे ४, ३६५)।

कुह पुं [**कुह**] वृक्ष, पेड़, गाछ; "कुहा महीरुहा वच्छा" (दस ७)।

कुह देखो **कहं**; (गा ५०७ अ)।

कुहंड पुं [**कूष्माण्ड**] व्यन्तर देवों की एक जाति; (औप)।

कुहंडिया स्त्री [**कूष्माण्डी**] कोहला का गाछ; (राय)।

कुहग पुं [**कुहक**] कन्द-विशेष; "लोहिणीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य" (उत्त ३६, ६६ का)।

कुहड वि [**दे**] कुब्ज, कूबड़ा; (दे २, ३६)।

कुहण पुं [**कुहन**] १ वृक्षों का एक प्रकार, वृक्षों की एक जाति; "से किं तं कुहणा? कुहणा अणेगविहा पगणत्ता" (पगण १—पत्र ३५)। २ वनस्पति-विशेष; ३ भूमि-स्फोट; (पगण १—पत्र ३०; आचा)। ४ देश-विशेष, ५ इस में रहने वाली जाति; (पगह १, १—पत्र १४; इक)।

कुहण वि [**कोपन**] क्रोधी, क्रोध करने वाला; (पगह १, ४—पत्र १००)।

कुहणी स्त्री [**दे**] कूर्पर, हाथ का मध्य-भाग; (सुपा ४१२)।

कुहय पुंन [**कुहक**] १ वायु-विशेष, दौड़ते हुए अश्व उदर-प्रदेश के समीप उत्पन्न होता एक प्रकार का वायु; "घण-गज्जियहयकुहए" (गच्छ २)। २ इन्द्रजालादि कौतुक; "अलोलुए अक्कुहए अमाई" (दस ६, २)।

कुहर न [**कुहर**] १ पर्वत का अन्तराल; (णाया १, १—पत्र ६३)। "गेहंव वितरहिअं णिज्जरकुहरं व सलिल-सुगणविअं" (गा ६०७)। २ छिद्र, बिल, विवर; (पगह १, ४; पासू २)। ३ पुं.ब. देश-विशेष; (पउम ६८, ६७)।

कुहाड पुं [**कुठार**] कुल्हाड़, फरसा; (विवा १, ६; पउम ६६, २४; स २१४)।

कुहाडी स्त्री [**कुठारी**] कुल्हाड़ी, कुठार; (उप ६६३)।

कुहावणा स्त्री [**कुहना**] १ आश्चर्य-जनक दम्भ-क्रिया, दम्भ-चर्या; २ लोगों से द्रव्य हासिल करने के लिए किया हुआ कपट-भेष; (जीत)।

कुहिअ वि [**दे**] लिप्त, पोता हुआ; (दे २, ३५)।

कुहिअ वि [**कुथित**] १ थोड़ी दुर्गन्ध वाला; (णाया १, १२—पत्र १७३)। २ सड़ा हुआ; (उप ५६७ टी)। ३ विनष्ट; (णाया १, १)। °**पूइय** वि [°**पूतिक**] अत्यन्त सड़ा हुआ; (पगह २, ५)।

कुहिणी स्त्री [**दे**] १ कूर्पर, हाथ का मध्य भाग; २ रथ्या, महल्ला; (दे २, ६२)।

कुहिल पुंस्त्री [**कुहुमत्**] कोयल पक्षी; (पिंग)।

कुहु स्त्री [**कुहु**] कोकिल पक्षी का आवाज; (पिंग)।

कुहुण देखो **कुहण**=कुहन; (उत्त ३६, का)।

कुहुव्वय पुं [**कुहुव्रत**] कन्द-विशेष ; (उत्त ३६, ६८) ।
कुहेड पुं [**दे**] ओषधी-विशेष, गुरेटक, एक जात का हर्रे का गाछ ; (दे २, ३५) ।
कुहेड } पुं [**कुहेट, °क**] १ चमत्कार उपजाने वाला मन्त्र-
कुहेडअ } तन्त्रादि ज्ञान ; "कुहेडविज्जासवदारजीवी न गच्छई सरणं तम्मि काले" (उत्त २०, ४५) । २ आभाणक, वक्रोक्ति-विशेष ; "तेसु न विम्हयइ सयं आहट्टुकुहेडएहिं व" (पव ७३ ; बृह १) ।
कुहेडगा स्त्री [**कुहटका**] कन्द-विशेष, पिण्डालु ; (पव ४)।
कूअण न [**कूजन**] १ अव्यक्त शब्द ; २ वि. ऐसा आवाज करने वाला ; (ठा ३, ३) ।
कूअणया स्त्री [**कूजनता**] कूजन, अव्यक्त शब्द ; (ठा ३, ३) ।
कूइय न [**कूजित**] अव्यक्त आवाज; (महा ; सुर ३, ४८)।
कूचिया स्त्री [**कूचिका**] बुद्बुद, बुलबुला, पानी का बुल-का ; (विसे १४६७) ।
कूज अक [**कूज्**] अव्यक्त शब्द करना । कूजाहि ; (चारु २१) । वकृ—**कूजंत**; (मै २६) ।
कूजिअ न [**कूजित**] अव्यक्त आवाज ; (कुमा; मै २६)।
कूड पुं [**दे. कूट**] पाश, फाँसी, जाल ; (दे २, ४३ ; राय ; उत्त ५ ; सूअ १, ५, २) ।
कूड पुंन [**कूट**] १ असत्य, छल-युक्त, भूठा ; "कूडतुल-कूडमाणे" (पडि) । २ भ्रान्ति-जनक वस्तु ; (भग ७, ६) । ३ माया, कपट, छल, दगा, धोखा ; (सुपा ६२७)। ४ नरक ; (उत्त ५) । ५ पीड़ा-जनक स्थान, दुःखोत्पादक जगह ; (सूअ १, ५, १ ; उत्त ६)। ६ शिखर, टोंच ; (ठा ४, २ ; रंभा) । ७ पर्वत का मध्य भाग ; (जं २) । ८ पाषाणमय यन्त्र-विशेष, मारने का एक प्रकार का यन्त्र ; (भग १५)। ६ समूह, राशि; (निर १, १) । **°कारि** वि [**°कारिन्**] धोखेबाज, दगाखोर ; (सुपा ६२७) । **°ग्गाह** पुं [**°ग्राह**] धोखे से जीवों को फँसाने वाला ; (विपा १, २) । स्त्री—**°ग्गाहणी** ; (विपा १, २) । **°जाल** न [**°जाल**] धोखे की आल, फाँसी ; (उत्त १६)। **°तुला** स्त्री [**°तुला**] भूठा नाप, बनावटी नाप ; (उवा १) । **°पास** न [**°पाश**] एक प्रकार की मछली पकड़ने की जाल ; (विपा १, ८) । **°प्पओग** पुं [**°प्रयोग**] प्रच्छन्न पाप ; (आव ४) । **°लेह** पुं [**°लेख**] १ जाली लेख, दूसरे के हस्ताक्षर-तुल्य अक्षर बना कर धोखेबाजी करना ; २ दूसरे के नाम से भूठी चिठ्ठी वगैरः लिखना ; (पडि ; उवा) । **°वाहि** पुं [**°वाहिन्**] बैल, बलीवर्द; (आव ५)। **°सक्ख** न [**°साक्ष्य**] भूठी गवाही; (पंचा १)। **°सक्खि** वि [**°साक्षिन्**] भूठी साक्षी देने वाला; (श्रा १४)। **°सक्खिज्ज** न [**°साक्ष्य**] भूठी गवाही ; (सुपा ३७५) । **°सामलि** स्त्री [**°शाल्मलि**] १ वृक्ष-विशेष के आकार का एक स्थान, जहां गरुड-जातीय देवों का निवास है; (सम १३; ठा २,३) । २ नरक स्थित वृक्ष-विशेष ; (उत्त २०) । **°ागार** न [**°ागार**] १ शिखर के आकार वाला घर; (ठा ४, २) । २ पर्वत पर बना हुआ घर; (आचा २,३,३) । ३ पर्वत में खुदा हुआ घर ; (निचू १२) । ४ हिंसा-स्थान ; (ठा ४,२) । **°ागारसाला** स्त्री [**°ागारशाला**] षड्यन्त्र वाला घर, षड्यन्त्र करने के लिए बनाया हुआ घर ; (विपा १,३) । **°ाहच्च** न [**°ाहत्य**] पाषाण-मय यन्त्र की तरह मारना, कुचल डालना ; (भग १५) ।
कूडग देखो **कूड** ; (आवम) ।
कूण अक [**कूणय्**] संकुचित होना, संकोच पाना ; (गउड) ।
कूणिअ वि [**कूणित**] संकोच-प्राप्त, संकोचित ; (गउड) ।
कूणिअ वि [**दे**] ईषद् विकसित, थोड़ा खिला हुआ ; (दे २, ४४) ।
कूणिअ पुं [**कूणिक**] राजा श्रेणिक का पुत्र ; (औप) ।
कूय अक [**कूज्**] अव्यक्त आवाज करना । वकृ—**कूयंत**, **कूयमाण** ; (ओघ २१ भा ; विपा १,७) ।
कूय पुं [**कूप**] १ कूप, कुँआ ; (गउड) । २ घी, तैल वगैरः रखने का पात्र, कुतुप ; (णाया १,१—पत्र ५८ ; औप) । **°दद्दुर** पुं [**°दर्दुर**] १ कूप का मेढ़क ; २ वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो, अल्पज्ञ ; (उप ६४८ टी) । देखो **कूव** ।
कूर वि [**क्रूर**] १ निर्दय, निष्कृप, हिंसक ; (पगह १, ३)। २ भयंकर, रौद्र ; (णाया १,८ ; सूअ १, ७) । ३ पुं. रावण का इस नाम का एक सुभट ; (पउम ५६,२६) ।
कूर न [**कूर**] भात, ओदन; (दे २,४३) । **°गडुअ, °गड्डुअ** पुं [**°गडुक**] एक जैन महर्षि ; (आचा ; भाव ८) ।
कूर° अ [**ईषत्**] थोड़ा, अल्प; (हे २,१२६ ; षड्) ।
कूरपिउड न [**दे**] भोजन-विशेष, खाद्य-विशेष ; (आवम) ।
कूरि वि [**क्रूरिन्**] १ निर्दयी, क्रूर चित्त वाला ; २ निर्दय परिवार वाला ; (पगह १,३) ।

कूल न [**दे**] सैन्य का पिछला भाग; (दे २,४३ ; से १२, ६२)।

कूल न [**कूल**] तट, किनारा ; (पात्र ; णाया १, १६)। °**धमग** पुं [°**धमायक**] एक प्रकार का वानप्रस्थ जो किनारे पर खड़ा हो आवाज कर भोजन करता है ; (औप)। °**वालग**, °**वालय** पुं [°**बालक**] एक जैन मुनि ; (आव; काल)।

कूलंकसा स्त्री [**कूलङ्कषा**] नदी, तीर को तोड़ने वाली नदी ; (वेणी १२०)।

कूव पुंन [**दे**] १ चुराई चीज की खोज में जाना ; (दे २, ६२ ; पाअ)। २ चुराई चीज को छुड़ाने वाला, छीनी हुई चीज को लड़ाई वगैरः कर वापिस लेने वाला ; "तए णं सा दोवदी देवी पउमणाभं एवं वयासी—एवं खलु देवा० जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवतीए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे मम प्पियभाउए परिवसति ; तं जइ णं से छण्हं मासाणं ममं कूवं नो हव्वमागच्छइ, तए णं अहं देवा० जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि" (णाया १, १६—पत्र २१५)। "दोवईए कूवग्गाहा" (उप ६४८ टी; दे ६, ६२)।

कूव } **कूवग** } **कूवय** } पुं [**कूप**, °**क**] १ कूप, कुँआ, गर्त्त; (प्रासू ४५)। २ स्नेह-पात्र, कुतुप; (वज्जा ७२; उप पृ ४१२)। ३ जहाज का मध्य स्तम्भ, जहाँ पर सढ बाँधा जाता है ; (औप; णाया १,८)। °**तुला** स्त्री [°**तुला**] कूपतुला, ढेंकुवा ; (दे १, ६३ ; ८७)। °**मंडुक्क** पुं [°**मण्डूक**] १ कूप का मेंढ़क; २ अल्पज्ञ मनुष्य, जो अपना घर छोड़ बाहर न जाता हो ; (निचू १)।

कूवय पुं [**कूपक**] देखो **कूव=कूप** ; (रयण ३२)। स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि ; (अंत ३)।

कूवर पुंन [**कूवर**] १ जहाज का एक अवयव, जहाज का मुख-भाग ; "संचुण्णियकट्ठकूवरा" (णाया १, ६—पत्र १५७)। २ रथ या गाड़ी वगैरः का एक अवयव, युगन्धर; (से १२, ८४)।

कूवल न [**दे**] जघन-वस्त्र ; (दे २, ४३)।

कूविय न [**कूजित**] अव्यक्त शब्द ; "तह कहवि कुणइ सो सुरयकूवियं तम्पुरो जेण" (सुपा ५०८)।

कूविय पुं [**कूपिक**] इस नाम का एक संनिवेश—गाँव ; (आवम)।

कूविय वि [**दे**] मोष-व्यावर्तक, चुरायी हुई चीज की खोज कर उसे लेने वाला; (णाया १, १८—पत्र २३६)। २ चोर की खोज करने वाला ; (णाया १, १)।

कूविया स्त्री [**कूपिका**] १ छोटा कूप ; (उप ७२८ टी)। २ छोटा स्नेह-पात्र ; (राज)।

कूवी स्त्री [**कूपी**] ऊपर देखो ; "एयाओ अमयकूवीओ" (उप ७२८ टी)।

कूसार पुं [**दे**] गर्ताकार, गर्त्त जैसा स्थान, खड्डा ; "कूसारगलंतपओ" (दे २,४४ ; पाअ)।

कूहंड पुं [**कूष्माण्ड**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पग्ह १,४)।

के सक [**क्री**] किनना, खरीदना। केइ, केअइ ; (षड्)।

के° वि [**कियत्**] कितना ? °**च्चिरेण** अ [°**च्चिरेण**] कितने समय में ? (अंत २४)। °**च्चिरं** अ [°**च्चिरं**] कितने समय तक ? (पि १४६)। °**च्चिरेण** देखो °**च्चिरेण** ; (पि १४६)। °**दूर** न [°**दूर**] कितना दूर ? "केदूरे सा पुरी लंका ?" (पउम ४८, ४७)। °**महालय** वि [°**महालय**] कितना बड़ा ? (णाया १,८)। °**महालिय** वि [°**महत्**] कितना बड़ा ? (पगण २१)। °**महिड्ढिय** वि[°**महर्द्धिक**] कितनी बड़ी ऋद्धि वाला ; (पि १४६)।

केअइ पुं [**केकय**] देश-विशेष, जिसका आधा भाग आर्य और आधा भाग अनार्य है, सिन्धु देश की सीमा पर का देश ; (इक)। "केयइअद्धं च आरियं भणियं" (पगण १ ; सत्त ६७ टी)।

केअई स्त्री [**केतकी**] वृक्ष-विशेष, केवड़ा का वृक्ष ; (कुमा; दे ८, २५)।

केअग } **केअय** } पुं [**केतक**] १ वृक्ष-विशेष, केवड़ा का गाछ, केतकी ; (गउड)। २ न. केतकी-पुष्प, केवड़ा का फूल ; (गउड)। ३ चिन्ह, निशान; (ठा १०)।

केअल देखो **केवल** ; (अभि २६)।

केअव देखो **कइअव=कैतव** ; "जं केअवेण पिम्मं" (गा ७४४)।

केआ स्त्री [**दे**] रज्जु, रस्सी ; (दे २, ४४ ; भग १३,६)।

केआर पुं [**केदार**] १ क्षेत्र, खेत ; (सुर २, ७८)। २ आलवाल, क्यारी ; (पाअ ; गा ६६०)।

केआरवाण पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, पलाश का पेड़; (दे २,४५)।

केआरिआ स्त्री [**केदारिका**] घास वाली जमीन, गोचर-भूमि ; (कप्पू)।

केउ पुं [**केतु**] १ ध्वज, पताका ; (सुपा २२६) । २ ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २० ; गउड) । ३ चिन्ह, निशान ; (औप) । ४ तुला-सूत्र, रुई का सूता ; (गउड) । °**खेत्त** न [°**क्षेत्र**] मेघ-वृष्टि से ही जिसमें अन्न पैदा हो सकता हो ऐसा क्षेत्र-विशेष ; (आव ६) । °**मई** स्त्री [°**मती**] किन्नरेन्द्र और किंपुरुषेन्द्र की अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष ; (भग १०, ५ ; णाया २) । °**माल** न [°**माल**] वैताढ्य पर्वत पर स्थित इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक) ।

केउ पुं [**दे**] कन्द, काँदा ; (दे २, ४४) ।

केउग } पुं [**केतुक**] पाताल-कलश विशेष ; (सम ७१ ;
केउय } ठा ४, २—पत्र २२६) ।

केऊर पुंन [**केयूर**] १ हाथ का आभूषण-विशेष, अङ्गद, बाजूबन्द ; (पाअ ; भग ६, ३३) । २ पुं. दक्षिण समुद्र का पाताल-कलश ; (पव २७२) ।

केऊव पुं [**केयूप**] दक्षिण समुद्र का एक पाताल-कलश ; (इक) ।

केंकाय अक [**केङ्काय्**] 'कें कें' आवाज करना । वकृ—"पेच्छइ तओ जडागिं **केंकायंतं** महीपडियं " (पउम ४४, ५४) ।

केंसुअ देखो **किंसुअ** ; (कुमा) ।

केकई स्त्री [**केकयी**] १ राजा दशरथ की एक रानी, केकय देश के राजा की कन्या ; (पउम २२, १०८ ; उप पृ ३७) । २ आठवें वासुदेव की माता ; (सम १५२) । ३ अपर-विदेह के बिभीषण-वासुदेव की माता ; (आवम) ।

केकय पुं [**केकय**] १ देश-विशेष, यह देश प्राचीन वाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर तथा सिंधु देश की सीमा पर स्थित है ; २ इस देश का रहने वाला ; (पगह १, १) । ३ केकय देश का राजा ; (पउम २२, १०८) ।

केकसिया स्त्री [**कैकसिका**] रावण की माता का नाम ; (पउम ७, ५४) ।

केका स्त्री [**केका**] मयूर-शब्द । °**रव** पुं [°**रव**] मयूर की आवाज, मयूर-वाणी ; (णाया १, १—पत्र २५) ।

केकाइय न [**केकायित**] मयूर का शब्द ; (सुपा ७६) ।

केक्कई देखो **केकई**; (पउम ७६, २६) ।

केक्कसी स्त्री [**कैकसी**] रावण की माता ; (पउम १०३, ११४) ।

केक्काइय देखो **केकाइय** ; (णाया १, ३—पत्र ६५)

केगई देखो **केकई** ; (पउम १, ६४ ; २०, १८४) ।

केगाइय देखो **केकाइय** ; (राज) ।

केज्ज वि [**क्रेय**] बेचने की चीज ; (ठा ६) ।

केढ } पुं [**कैटभ**] १ इस नाम का एक प्रतिवासुदेव
केढव } राजा ; (पउम ५,१५६) । २ दैत्य-विशेष ; (हे १,२४० ; कुमा) । °**रिउ** पुं [°**रिपु**] श्रीकृष्ण, नारायण ; (कुमा) ।

केत्तिअ } वि [**कियत्**] कितना ? (हे २, १५७ ; कुमा ;
केत्तिल } षड् ; महा) ।

केत्तुल (अप) ऊपर देखो; (कुमा ; षड् ; हे ४,४०८) ।

केत्थु (अप) अ [**कुत्र**] कहां, किस जगह ? (हे ४,४०५) ।

केद्दह देखो **केत्तिअ** ; (हे २,१५७ ; प्राप्र) ।

केम } (अप) देखो **कहं** ; (षड् ; हे ४, ४०१ ;
केम्व } ४१८) ।

केय न [**केत**] १ गृह, घर; २ चिह्न, निशानी ; (पव ४) ।

केयण न [**केतन**] १ वक्र वस्तु, टेढ़ी चीज ; २ चंगेरी का हाथा ; (ठा ४, २—पत्र २१८) । ३ संकेत, संकेत-स्थान ; (वव ४) । ४ धनुष की मूठ ; (उत्त ६) । ५ मछली पकड़ने की जाल ; (सूअ १, ३, १) । ६ स्थान, जगह ; (आचा) ।

केयय देखो **केकय**; (सुपा १४२) ।

केर } वि [**दे. संबन्धिन्**] संबन्धी वस्तु, संबन्धी चीज;
केरय } (स्वप्न ५१ ; हे ४, ३५६ ; ३७३ ; प्राप्र ; भवि) ।

केरव न [**कैरव**] १ कुमुद, सफेद कमल ; (पाअ ; सुपा ४६) । २ कैतव, कपट ; (हे १, १५२) ।

केरिच्छ वि [**कीदृक्ष**] कैसा, किस तरह का ? (हे १, १०५; प्राप्र ; काल) ।

केरिस वि [**कीदृश**] कैसा, किस तरह का ? (प्रामा) ।

केरी स्त्री [**क्रकटी**] वृक्ष-विशेष, करीर का गाछ ; "निंबंब-बोरिकेरि—" (उप १०३१ टी) ।

केल देखो **कयल**=कदल ; (हे १, १६७) ।

केलाइय वि [**समारचित**] साफसुफ किया हुआ ; (कुमा) ।

केलाय सक [**समा + रचय्**] समारचन करना, साफ कर ठीक करना । केलायइ ; (हे ४, ६५) ।

केलास पुं [**कैलास**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पर्वत-विशेष ; (से ६, ७३ ; गउड ; कुमा) । २ इस नाम का एक नाग-राज ; (इक) । ३ इस नाग-राज का आवास-पर्वत;

(ठा ४, २)। ५ मिट्टी का एक तरह का पात्र ; (निर १, ३)। देखो **कइलास**।

केलि देखो **कयलि** ; (कुमा)।

केलि } स्त्री [**केलि, °ली**] १ क्रीड़ा, खेल, गम्मत ; (कुमा; **केली** } पाअ ; कप्पू)। २ परिहास, हाँसी, ठट्ठा ; (पाअ ; औप)। ३ काम-क्रीड़ा ; (कप्पू ; औप)। **°आर** वि [**°कार**] क्रीड़ा करने वाला, विनोदी ; (कप्पू)। **°काणण** न [**°कानन**] क्रीड़ोद्यान; (कप्पू)। **°किल, °गिल** वि [**°किल**] १ विनोदी, क्रीड़ा-प्रिय ; (सुपा ३१४)। २ व्यन्तर-जातीय देव-विशेष ; (सुपा ३२०)। ३ स्थान-विशेष ; (पउम ५५, १७)। **°भवण** न [**°भवन**] क्रीड़ा-गृह, विलास-घर ; (कप्पू)। **°विमाण** न [**°विमान**] विलास-महल ; (कप्पू)। **°सअण** न [**°शयन**] काम-शय्या ; (कप्पू)। **°सेज्जा** स्त्री [**°शय्या**] काम-शय्या; (कप्पू)।

केली देखो **कयली** ; (हे १, १२०)।

केली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (दे २, ४४)।

केलीगिल वि [**कैलीकिल**] केलीकिल स्थान में उत्पन्न; (पउम ५५, १७)।

केव° देखो **के°** ; (भग ; पराण १७—पत्र ५४५ ; विसे २८६१)।

केवँ (अप) देखो **कहं** ; (कुमा)।

केवइय वि [**कियत्**] कितना ? (सम १३४ ; विसे ६४६ टी)।

केवट्ट पुं [**कैवर्त्त**] धीवर, मच्छीमार ; (पाअ ; स २५८ ; हे २, ३०)।

केवड (अप) देखो **केत्तिअ** ; (हे ४, ४०८ ; कुमा)।

केवल वि [**केवल**] १ अकेला, असहाय ; (ठा २, १ ; औप)। २ अनुपम, अद्वितीय ; (भग ६, ३३)। ३ शुद्ध, अन्य वस्तु से अ-मिश्रित; (दस ४)। ४ संपूर्ण, परिपूर्ण ; (निर १, १)। ५ अनन्त, अन्त-रहित ; (विसे ८४)। ६ न. ज्ञान-विशेष, सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, भूत, भावि वगैरः सर्व वस्तुओं का ज्ञान, सर्वज्ञता; (विसे ८२७)। **°कप्प** वि [**°कल्प**] परिपूर्ण, संपूर्ण ; (ठा ३, ४)। **°णाण** न [**°ज्ञान**] सर्व-श्रेष्ठ ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान ; (ठा २, १)। **°णाणि, °नाणि** वि [**°ज्ञानिन्**] १ केवल-ज्ञान वाला, सर्वज्ञ ; (कप्प; औप)। २ पुं. इस नाम के एक अर्हन् देव, अतीत उत्सर्पिणी-काल के प्रथम तीर्थ-ङ्कर ; (पव ६)। **°ण्णाण, °नाण, °न्नाण** देखो **°णाण** ; (विसे ८२६ ; ८२६ ; ८२३)। **°दंसण** न [**°दर्शन**] परिपूर्ण सामान्य बोध ; (कम्म ४, १२)।

केवलं अ [**केवलम्**] केवल, फक्त, मात्र ; (स्वप्न ६२; ६३; महा)।

केवलाअ सक [**समा+रभ्**] आरम्भ करना, शुरू करना। केवलाअइ ; (षड्)।

केवलि वि [**केवलिन्**] केवल ज्ञान वाला, सर्वज्ञ ; (भग)। **°पक्खिय** वि [**पाक्षिक**] १ स्वयंबुद्ध; २ . जिनदेव, तीर्थ-कर ; (भग ६, ३१)।

केवलिअ वि [**केवलिक**] १ केवलज्ञान वाला ; (भग)। २ परिपूर्ण, संपूर्ण ; " सामाइयं केवलियं पसत्थं " (विसे २६८१)।

केवलिअ वि [**कैवलिक**] १ केवल ज्ञान से संबन्ध रखने वाला ; (दं १७)। २ केवलि-प्रोक्त ; (सूअ १,१४)। ३ केवल-ज्ञानि-संबन्धी; (ठा ४, २)। ४ न. केवल ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान ; (आव ४)।

केवलिअ न [**कैवल्य**] केवल ज्ञान ; " केवलिए संपत्ते " (सत्त ६७ टी ; विसे ११८०)।

केस पुं [**केश**] केश, बाल ; (उप ७६८ टी ; प्रयौ २६)। **°पुर** न [**°पुर**] वैताढ्य पर स्थित एक विद्या-धर-नगर ; (इक)। **°लोअ** पुं [**°लोच**] केशों का उन्मूलन ; (भग ; पराह २, ४)। **°वाणिज्ज** न [**°वाणिज्य**] केश वाले जीवों का व्यापार ; (भग ८, ५)। **°हत्थ, °हत्थय** पुं [**°हस्त, °क**] केश-पाश, समारचित केश, संयत बाल ; (कप्प ; पाअ)।

केस देखो **किलेस** ; (उप ७६८ टी ; धम्म २२)।

केसर पुं [**कवीश्वर**] उत्तम कवि, श्रेष्ठ कवि ; (उप ७२८ टी)।

केसर पुंन [**केसर**] १ पुष्प-रेणु, किंजल्क ; (से १, ५० ; दे ६, १३)। २ सिंह वगैरः के स्कन्ध का बाल, केसरा ; (से १, ५० ; सुपा २१५)। ३ पुं. बकुल वृक्ष ; (कप्पू ; गउड ; पाअ)। ४ न. इस नाम का एक उद्यान, काम्पिल्य नगर का एक उपवन ; (उत्त १७)। ५ फल-विशेष ; (राज)। ६ सुवर्ण, सोना ; ७ छन्द-विशेष ; (हे १, १४६)। ८ पुष्प-विशेष ; (गउड ११२२)।

केसरा स्त्री [**केसरा**] १ सिंह वगैरः के स्कन्ध पर के बालों की सटा ; "केसरा य सीहाणं" (प्रासू ५१ ; गउड ; प्रामा)।

केसरि पुं [**केसरिन्**] १ सिंह, वनराज, कण्ठीरव ; (उप ७२८ टी ; से ८, ६४ ; पण्ह १, ४)। २ द्रह-विशेष, नीलवन्त पर्वत पर स्थित एक ह्रद ; (सम १०४)। ३ नृप-विशेष, भरत-क्षेत्र के चतुर्थ प्रतिवासुदेव ; (सम १५४)। °**द्दह** पुं [°**द्रह**] द्रह-विशेष ; (ठा २, ३)।

केसरिआ स्त्री [**केसरिका**] साफ करने का कपड़े का टुकड़ा ; (भग ; विसे २५५२ टी)।

केसरिल्ल वि [**केसरवत्**] केसर वाला ; (गउड)।

केसरी स्त्री [**केसरी**] देखो **केसरिआ** ; "तिदंडकुंडिय-छत्तछलुयंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए" (णाया १, ५—पत्र १०५)।

केसव पुं [**केशव**] १ अर्ध-चक्रवर्ती राजा ; (सम)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव, नारायण; (गउड)।

केसि वि [**क्लेशिन्**] क्लेश-युक्त, क्लिष्ट ; (विसे ३१५४)।

केसि पुं [**केशि**] १ एक जैन मुनि, भगवान् पार्श्वनाथ के शिष्य ; (राय ; भग)। २ असुर-विशेष, अश्व के रूप को धारण करने वाला एक दैत्य, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ; (मुद्रा २६२)।

केसि पुं [**केशिन्**] देखो **केसव** ; (पउम ७५, २०)।

केसिअ वि [**केशिक**] केश वाला, बाल युक्त। स्त्री—°**आ**; (सूअ १, ४, २)।

केसी स्त्री [**केशी**] सातवें वासुदेव की माता ; (पउम २०, १८४)।

°**केसी** स्त्री [°**केशी**] केश वाली स्त्री; "विइण्णकेसी" (उत्त)।

केसुअ देखो **किंसुअ** ; (हे १, २६ ; ८६)।

केह (अप) वि [**कीदृश्**] कैसा, किस तरह का ? (भवि; षड् कुमा)।

केहिं (अप) अ. लिए, वास्ते ; (दे ४, ४२५)।

कैअव न [**कैतव**] कपट, दम्भ ; (हे १, १ ; गा १२४)।

कोअ देखो **कोक** ; (दे २, ४५,टी)।

कोअ देखो **कोव** ; (गउड)।

कोअंड देखो **कोदंड** ; (पाअ)।

कोआस अक [**वि+कस्**] विकसना, खीलना। कोआसइ ; (हे ४ १९५)

कोआसिय वि [**विकसित**] विकसित, प्रफुल्ल ; (कुमा ; जं २)।

कोइल पुं [**कोकिल**] १ कोयल, पिक ; (पण्ह १, ४ ; उप २३ ; स्वप्न ६१)। २ छन्द का एक भेद ; (पिंग)। °**च्छय** पुं [°**च्छद**] वनस्पति-विशेष, तैलकण्टक ; (पण्ण १७—पत्र ५२७)।

कोइला स्त्री [**कोकिला**] स्त्री-कोयल, पिकी ; "कोइला पंचमं सरं" (अणु ; पाअ)।

कोइला स्त्री [**दे**] कोयला, काष्ठ के अंगार; (दे २, ४८)।

कोउआ स्त्री [**दे**] गोइठा का अग्नि, करीषाग्नि ; (दे २, ४८ ; पाअ)।

कोउग } न [**कौतुक**] १ कुतूहल, अपूर्व वस्तु देखने का
कोउय } अभिलाष ; (सुर २, २२६)। २ आश्चर्य, विस्मय ; (वव १)। ३ उत्सव ; (राय)। ४ उत्सुकता, उत्कण्ठा ; (पंचव १)। ५ दृष्टि-दोषादि से रक्षा के लिए किया जाता मषी-तिलक, रक्षा-बन्धनादि प्रयोग ; (राय ; औप ; विपा १, १ ; पण्ह १, २ ; धर्म ३)। ६ सौभाग्य आदि के लिए किया जाता स्नपन, विस्मापन, धूप, होम वगैरः कर्म ; (वव १ ; णाया १, १४)।

कोउहल } देखो **कुऊहल** ; (हे १, ११७ ; १७१ ; २,
कोउहल्ल } ९९ ; कुमा ; प्राप्र)।

कोउहल्लि वि [**कुतूहलिन्**] कुतूहली, कौतुकी, कुतूहल-प्रिय ; (कुमा)।

कोऊहल } देखो **कुऊहल**; (कुमा ; पि ६१)।
कोऊहल्ल }

कोंकण पुं [**कोङ्कण**] देश-विशेष ; (स ४१२)।

कोंकणग पुं [**कोङ्कणक**] १ अनार्य देश-विशेष ; (इक)। २ वि. उस देश में रहने वाला ; (पण्ह १, १ ; विसे १४१२)।

कोंच पुं [**क्रौञ्च**] १ नाम का एक अनार्य देश ; (पण्ह १, १)। २ पक्षि-विशेष ; (ठा ७)। ३ द्वीप-विशेष ; (ती ४५)। ४ इस नाम का एक असुर ; (कुमा)। ५ वि. क्रौञ्च देश का निवासी ; (पण्ह १, १)। °**रिवु** पुं [°**रिपु**] कार्तिकेय, स्कन्द; (कुमा) °**वर** पुं [°**वर**] इस नाम का एक द्वीप; (अणु)। °**वीरग** पुंन [°**वीरक**] एक प्रकार का जहाज ; (बृह १)। देखो **कुंच**।

कोंचिगा स्त्री [**कुञ्चिका**] ताली, कुञ्जी ; (उप १७७)।

कोंचिय वि [**कुञ्चित**] आकुञ्चित, संकुचित ; (पण्ह १, ४) ।

कोंटलय न [**दे**] १ ज्योतिष-संबन्धी सूचना ; २ शकुनादि निमित्त-संबन्धी सूचना; "पउंजणे कोंटलयस्स" (ओव २२१ भा) ।

कोंठ देखो **कुंठ** ; (हे १, ११६ पि) ।

कोंड देखो **कुंड** ; (हे १, २०२) ।

कोंड पुं [**कौण्ड, गौड**] देश-विशेष ; (इक) ।

कोंडल देखो **कुंडल** ; (राज) । °**मेत्तग** पुं [°**मित्रक**] एक व्यन्तर देव का नाम ; (बृह ३) ।

कोंडलग पुं [**कुण्डलक**] पक्षि-विशेष ; (ओप) ।

कोंडलिआ स्त्री [**दे**] १ श्वापद जन्तु-विशेष, साही, शल्यकी; २ कीड़ा, कीट ; (दे २, ५०) ।

कोंडिअ पुं [**दे**] ग्राम-निवासी लोगों में फूट करा कर छल से गाँव का मालिक बन बैठने वाला ; (दे २, ४८) ।

कोंडिया देखो **कुंडिया** ; (पण्ह २, ५) ।

कोंडिण्ण देखो **कोडिन्न** ; (राज) ।

कोंढ देखो **कुंढ** ; (हे १, ११६) ।

कोंडुल्लु पुं [**दे**] उलूक, उल्लू, पक्षि-विशेष; (दे २, ४६) ।

कोंत देखो **कुंत**; (पण्ह १, १ ; सुर २, २८) ।

कोंती देखो **कुंती** ; (णाया १, १६—पत्र २१३) ।

कोक पुं [**कोक**] १ चक्रवाक पक्षी ; (दे ८, ४३) । २ वृक, भेड़िया ; (इक) ।

कोकंतिय पुंस्त्री [**दे**] जन्तु-विशेष, लोमड़ी, लोखरिया ; (पण्ह १, १) । स्त्री—°**या**; (णाया १,१—पत्र ६५) ।

कोकणय न [**कोकनद**] १ रक्त कुमुद ; २ रक्त कमल ; (पण्ण १; स्वप्न ७२) ।

कोकासिय [**दे**] देखो **कोक्कासिय** ; (पण्ह १, ४—पत्र ७८) ।

कोकुइय देखो **कुक्कुइअ** ; (ठा ६—पत्र ३७१) ।

कोक्क सक [**व्या+हृ**] बुलाना, आह्वान करना । कोक्कइ; (हे १, ७६ ; षड्) । वकृ— **कोक्कंत** ; (कुमा) । संकृ—**कोक्किवि**; (भवि) । प्रयो—कोक्कावइ; (भवि) ।

कोक्कास पुं [**कोक्कास**] इस नाम का एक वर्धकि, बढ़ई ; (आचू १) ।

कोक्कासिय [**दे**] देखो **कोआसिअ** ; (दे २, ५०) ।

कोक्किय वि [**व्याहृत**] आहूत, बुलाया हुआ ; (भवि) ।

कोक्कुइय देखो **कुक्कुइअ**; (कस ; ओप) ।

कोखुब्भ देखो **खोखुब्भ** । वकृ—**कोखुब्भमाण** ; (पि ३१६) ।

कोच्चप्प न [**दे**] अलीक-हित, झूठी भलाई, दीखावटी हित; (दे २, ४६) ।

कोच्चिचय पुंस्त्री [**दे**] शैक्षक, नया शिष्य ; (वव ६) ।

कोच्छ न [**कौत्स**] १ गोत्र-विशेष ; २ पुंस्त्री. कौत्स गोत्र में उत्पन्न ; (ठा ७—पत्र ३९०) ।

कोच्छ वि [**कौक्ष**] १ कुक्षि-संबन्धी, उदर से संबन्ध रखने वाला ; २ न. उदर-प्रदेश ; "गणियायारकणेरुकोत्थ(? च्छ)हत्थी" (णाया १, १—पत्र ६४) ।

कोच्छभास पुं [**दे.कुत्सभाष**] काक, कौआ, वायस ; "न मणी सयसाहस्सो आविज्झइ कोच्छभासस्स" (उव) ।

कोच्छेअय देखो **कुच्छेअय** ; (हे १, १६१ ; कुमा ; षड्) ।

कोज्ज देखो **कुज्ज** ; (कप्प) ।

कोज्जप्प न [**दे**] स्त्री-रहस्य; (दे २,४६) ।

कोज्जय देखो **कुज्जय** ; (णाया १,८—पत्र १२५) ।

कोज्जरिअ वि [**दे**] आपूरित, पूर्ण किया हुआ, भरा हुआ; (षड्) ।

कोज्झरिअ वि [**दे**] ऊपर देखो; (दे २, ५०) ।

कोटुंभ पुंन [**दे**] हाथ से आहत जल ; "कोटुंभो जलकरप्फालो" (पाअ) । देखो **कोट्टुंभ** ।

कोट्ट देखो **कुट्ट=कुट्ट्** । कवकृ—**कोट्टिज्जमाण** ; (आवम) । संकृ—**कोट्टिय** ; (जीव ३) ।

कोट्ट न [**दे**] १ नगर, शहर ; (दे २, ४५) । २ कोट, किला, दुर्ग ; (णाया १,८—पत्र१३४; उत्त ३० ; बृह १; सुपा ११८) । °**वाल** पुं [°**पाल**] कोटवाल, नगर-रक्षक ; (सुपा ४१३) ।

कोट्टंतिया स्त्री [**कुट्टयन्तिका**] तिल वगैरः को चूरने का उपकरण ; (णाया १,७—पत्र ११७) ।

कोट्टग पुं [**कोट्टाक**] १ वर्धकि, बढ़ई ; (आचा२, १,२)। २ न. हरे फलों को सूखाने का स्थान-विशेष ; (बृह १) ।

कोट्टण देखो **कुट्टण** ; (उप ९७६ ; पण्ह १, १) ।

कोट्टर देखो **कोडर** ; (महा ; हे ४, ४२२ ; गा ५६३ अ) ।

कोट्टवीर पुं [**कोट्टवीर**] इस नाम का एक मुनि, आचार्य शिवभूति का एक शिष्य ; (विसे २५५२) ।

कोट्टा स्त्री [दे] १ गौरी, पार्वती ; (दे २,३५—१,१७४) । २ गला, गर्दन ; (उप ६६१) ।

कोट्टिंब पुं [दे] द्रोणी, नौका, जहाज ; (दे २,४७) ।

कोट्टिम पुंन [**कुट्टिम**] १ रत्नमय भूमि ; (गाया१,२) । २ फरस-बंध जमीन, बँधी हुई जमीन ; (जं १) । ३ भूमि-तल ; (सुर ३,१००)। ४ एक या अनेक तला वाला घर; (वव४)। ५ झोंपड़ा, मढ़ी ; ६ रत्न की खान ; ७ अनार का पेड़ ; (हे१,११६ ; प्राप्र) ।

कोट्टिम वि [**कृत्रिम**] बनावटी, बनाया हुआ, अ-कुदरती ; (पउम ६६,३६) ।

कोट्टिल } पुं [**कौट्टिक**] मुद्गर, मुगरी, मुगरा ; (राज ;
कोट्टिल्ल } बपा १.६—पत्र ६६ ; ६६) ।

कोट्टी स्त्री [**दे**] १ दोह, दोहन ; २ विषम स्खलना ; (दे २, ६४) ।

कोट्टुंभ पुंन [**दे**] हाथ से आहत जल; "कोट्टुंभं करहए तोए" (दे २,४७) ।

कोट्टुम•अक [**रम्**] क्रीड़ा करना, रमण करना । कोट्टुमइ ; (हे ४, १६८) ।

कोट्टुवाणी स्त्री [**कोट्टुवाणी**] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (कप्प) ।

कोट्ठ देखो **कुट्ठ**=कुष्ठ ; (भग १६, ६ ; गाया १, १७)।

कोट्ठ } देखो **कुट्ठ**=कोष्ठ ; (गाया १, १ ; ठा ३, १ ;
कोट्ठग } पाअ) । २ आश्रय-विशेष, आवास-विशेष, (ओघ
कोट्ठय } २००; वव १) । ४ अपवरक, कोठरी; (दस ५,१; उप ४८६) । ५ चैत्य-विशेष ; (गाया २,१) । °**गार** न [°**गार**] धान्य भरने का घर ; (औप ; कप्प) । २ भाण्डागार, भण्डार ; (गाया १, १) ।

कोट्ठार पुंन [**कोष्ठागार**] भाण्डागार, भण्डार; (पउम २, ३)।

कोट्ठि वि [**कुष्ठिन्**] कुष्ठ-रोगी ; (आचा) ।

कोट्ठिया स्त्री[**कोष्ठिका**] छोटा कोष्ठ, लघु कुशूल ; (उवा) ।

कोट्ठु पुं [**क्रोष्टु**] श्रृगाल, सियार ; (षड्) ।

कोडंड देखो **कोदंड** ; (स २५६) ।

कोडंडिय देखो **कोदंडिय** ; (कप्प) ।

कोडंब न [**दे**] कार्य, काम, काज; (दे २, २) ।

कोडय [**दे**] देखो **कोडिअ** ; (पाअ) ।

कोडर न [**कोटर**] गह्वर, वृक्ष का पोला भाग, विवर ; (गा ५६२) ।

कोडल पुं [**कोटर**] पक्षि-विशेष ; (राज) ।

कोडाकोडि स्त्री [**कोटाकोटि**] संख्या-विशेष, करोड़ को करोड़ से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (सम १०५ ; कप्प ; उव) ।

कोडाल पुं [**कोडाल**] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक पुरुष ; २ न. गोत्र विशेष ; (कप्प) ।

कोडि स्त्री [**कोटि**] १ संख्या विशेष, करोड़, १०००००००; (गाया १,८; सुर १, ६७; ४, ६१)। २ अग्र-भाग, अणी, नोक ; (से १२,२६ ; पाअ) । ३ अंश, विभाग, भाग ; 'नत्थिक्कसो पएसो लोए वालग्गकोडिमित्तोवि' (पव्व ३६ ; ठा ६) । °**कोडि** देखो **कोडाकोडि**; (सुपा २६६) । °**बद्ध** वि [°**बद्ध**] करोड़ संख्या वाला ; (वव ३) । °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] एक जैन तीर्थ ; (ती ४३) । °**सिला** स्त्री [°**शिला**] एक जैन तीर्थ ; (पउम ४८, ६६) । °**सो** अ [°**शस्**] करोड़ों, अनेक करोड़; (सुपा ४२०)। देखो **कोडी**।

कोडिअ न [**दे**] १ छोटा मिट्टी का पात्र, लघु शराव ; (दे २,४७) ।२ पुं. पिशुन, दुर्जन, चुगलीखोर ; (षड्) ।

कोडिअ पुं [**कोटिक**] १ एक जैन मुनि ; (कप्प) । २ एक जैन मुनि-गण ; (कप्प ; ठा ६) ।

कोडिण्ण } न [**कौण्डिन्य**] १ इस नाम का एक नगर ;
कोडिन्न } (उप ६४८ टी) । २ वासिष्ठ गोत्र की शाखा रूप एक गोत्र ; (कप्प) । ३ पुं. कौण्डिन्य गोत्र का प्रवर्तक पुरुष; ४ वि. कौण्डिन्य-गोत्रीय; (ठा ७—पत्र ३६०; कप्प) । ५ पुं. एक मुनि, जो शिवभूति का शिष्य था; (विसे २५५२)। ६ महागिरिसूरि का शिष्य, एक जैन मुनि ; (कप्प) । ७ गोतम-स्वामी के पास दीक्षा लेने वाले पाँच सौ तापसों का गुरू ; (उप १४२ टी) ।

कोडिन्ना स्त्री [**कौण्डिन्या**] कौण्डिन्य-गोत्रीय स्त्री; (कप्प)।

कोडिल्ल पुं [**दे**] पिशुन, दुर्जन, चुगलीखोर ; (दे २,४० ; षड्) ।

कोडिल्ल देखो **कोट्टिल** ; (राज) ।

कोडिल्ल पुं [**कौटिल्य**] इस नाम का एक ऋषि, चाणक्य मुनि ; (वव १ ; अणु) ।

कोडिल्लय न [**कौटिल्यक**] चाणक्य-प्रणीत नीति-शास्त्र ; (अणु) ।

कोडी देखो **कोडि** ; (उव ; ठा ३, १ ; जी ३७) । °**करण** न [°**करण**] विभाग, विभजन ; (पिंड ३०७) । °**णार** न [°**नार**] इस नाम का सोरठ देश का एक नगर; (ती ५६)। °**मातसा** स्त्री [°**मातसा**] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७—पत्र ३९३) । °**वरिस** न [°**वर्ष**] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष ; (इक; पत्र १७४)। °**वरिसिया** स्त्री [°**वर्षिका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प) । °**सर** पुं [°**श्वर**] करोड़-पति, कोटीश; (सुपा ३) ।

कोडीण न [**कोडीन**] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा रूप है ; २ वि. इस गोत्र में उत्पन्न ; (ठा ७—पत्र ३९०) ।

कोडुंबि देखो **कुडुंबि** ; (ठा ३, १—पत्र १२५) ।

कोडुंबिय पुं [**कौटुम्बिक**] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया; (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का बड़ा आदमी; (पगह १,५—पत्र ९४)। ३ वि. कुटुम्ब में उत्पन्न, कुटुम्ब से संबन्ध रखने वाला, कुटुम्ब-संबन्धी ; (महा; जीव ३) ।

कोडूसग पुं [**कोदूषक**] अन्न-विशेष, कोद्रव की एक जाति ; (राज) ।

कोड्ड [**दे**] देखो **कुड्ड** ; (दे २,३३ ; स ६४१ ; ६४२ ; हे ४, ४२२ ; गाया १, १६—पत्र २२४ ; उप ८६२ ; भवि) ।

कोड्डम देखो **कोट्टुम** ; (कुमा) ।

कोड्डमिअ न [**रत**] रति-क्रीड़ा-विशेष ; (कुमा) ।

कोड्डिय वि [**दे**] कुतुहली, कुतुकी, उत्कण्ठित; (उप ७६८ टी)।

कोड्ड }
कोढ } पुं [**कुष्ठ**] रोग-विशेष, कुष्ठ-राग; (पि ६६; गाया १, १३ ; श्रा २०) ।

कोढि वि [**कुष्ठिन्**] कुष्ठ-रोग से ग्रस्त; कुष्ठ-रोगी ; (आचा) ।

कोढिक }
कोढिय } वि [**कुष्ठिक**] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-ग्रस्त; (पगह २, ५ ; विपा १,७) ।

कोण वि [**दे**] १ काला, श्याम वर्ण वाला ; (दे २, ४५) । २ पुं. लकुट, लकड़ी, यष्टि; (दे २, ४५ ; निचू १ ; पाग्र) । ३ बीणा वगैरः बजाने की लकड़ी, वीणा-वादन-दगड; (जीव ३)।

कोण }
कोणग } पुंन [**कोण**] कोण, अस्र, घर का एक भाग; (गउड ; दे २, ४५ ; रंभा) ।

कोणव पुं [**कौणप**] राक्षस, पिशाच ; (पाग्र) ।

कोणालग पुं [**कोनालक**] जलचर पक्षि-विशेष ; (पगह १,१) ।

कोणाली स्त्री [**दे**] गोष्ठी, गोठ; (बृह १) ।

कोणिअ }
कोणिग } पुं [**कोणिक**] राजा श्रेणिक का पुत्र, नृप-विशेष ; (अंत; गाया १, १ ; महा ; उव) ।

कोणु स्त्री [**दे**] लेखा, रेखा ; (दे २, २६) ।

कोण्ण पुं [**दे. कोण**] गृह-कोण, घर का एक भाग ; (दे २, ४५) ।

कोतव न [**कौतव**] मूषक के रोम से निष्पन्न सूता ; (राज) ।

कोतुहल देखो **कुऊहल** ; (काल) ।

कोत्तलंका स्त्री [**दे**] दारू परोसने का भाण्ड, पात्र-विशेष ; (दे २, १४)

कोत्तिअ वि [**कौतुकिक**] कौतूकी, कुतुहली; (गा ६७२)।

कोत्तिअ पुं [**कोत्रिक**] १ भूमि-शयन करने वाला वान-प्रस्थ ; (औप) । २ न. एक प्रकार का मधु ; (ठा ६) ।

कोत्थ देखो **कोच्छ** = कौत्स ।

कोत्थर न [**दे**] १ विज्ञान ; (दे २, १३) । २ कोटर, गह्वर ; (सुपा २४७ ; निचू १५) ।

कोत्थल पुं [**दे**] १ कुशूल, कोष्ठ; (दे २,४८)। २ कोथली, थैला; (स १६२)। °**कारा** स्त्री [°**कारी**] भमरी, कीट-विशेष; (बृह १) ।

कोत्थुभ }
कोत्थुह }
कोथुभ } पुं [**कौस्तुभ**] वासुदेव के वक्षःस्थल का मणि ; (ती १० ; प्राप्र ; महा ; गा १५१ ; पगह १, ४) ।

कोदंड पुं [**कोदण्ड**] धनुष, धनु, कार्मुक, चाप ; (अंत १६) ।

कोदंडिम }
कोदंडिय } देखो **कु-दंडिम** ; (जं ३ ; कप्प) ।

कोदूसग देखो **कोडूसग** ; (भग ६, ७) ।

कोद्दव देखो **कुद्दव** ; (भवि) ।

कोद्दाल देखो **कुद्दाल** ; (पगह १, १—पत्र २३) ।

कोद्दालिया स्त्री [**कुद्दालिका**] छोटा कुदार, कुदारी ; (विपा १, ३) ।

कोध पुं [**कोध**] इस नाम का एक राजा; जिसने दाशरथि भरत के साथ जैन दीक्षा ली थी ; (पउम ८५, ४) ।

कोप्प देख **कुप्प**=कुप् । कोप्पइ ; (नाट) ।

कोप्प पुं [**दे**] अपराध, गुनाह ; (दे २, ४५) ।

कोप्प वि [**कोप्य**] द्वेष्य, अप्रीतिकर ; "अकोप्पजंघजुगला" (पगह १, ३) ।

कोप्पर पुंन [कूर्पर] १ हाथ का मध्य भाग ; (ओघ २६६ भा ; कुमा ; हे १, १२४) । २ नदी का किनारा, तट, तीर ; (ओघ ३०) ।

कोबेरी स्त्री [कौबेरी] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२) ।

कोभग } पुं [कोभक] पक्षि-विशेष ; (अंत ; औप) ।
कोभगक }

कोमल वि [कोमल] मृदु, सुकुमार ; (जी १० ; पाअ ; कप्पू) ।

कोमार वि [कौमार] १ कुमार से संबन्ध रखने वाला, कुमार-संबन्धी ; (विपा १, ७१) । २ कुमारी-संबन्धी ; (पाअ) । ३ कुमारी में उत्पन्न ; (दे १, ८१) । स्त्री—°रिया, °री ; (भग १५) । °भिच्च न [°भृत्य] वैद्यक शास्त्र-विशेष, जिसमें बालकों के स्तन-पान-संबन्धी वर्णन है ; (विपा १, ७—पत्र ७५) ।

कोमारी स्त्री [कौमारी] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३७)।

कोमुइया स्त्री [कौमुदिका] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी, जो उत्सव की सूचना के समय बजाई जाती थी ; (विसे १४७६ ;) ।

कोमुई स्त्री [दे] पूर्णिमा, कोई भी पूर्णिमा ; (दे २, ४८)।

कोमुई स्त्री [कौमुदी] १ शरद् ऋतु की पूर्णिमा ; (दे २, ४८) । २ चन्द्रिका, चाँदनी ; (औप ; धम्म ११ टी) । ३ इस नाम की एक नगरी ; (पउम ३९, १००) । ४ कार्तिक की पूर्णिमा ; (राय) । °णाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा, चाँद ; (धम्म ११ टी) । °महूसव पुं [°महोत्सव] उत्सव-विशेष ; (पि ३६६) ।

कोमुदिया देखो **कोमुइया** ; (णाया १, ५—पत्र १००) ।

कोमुदी देखो **कोमुई**=कौमुदी ; (णाया १, १ २) ।

कोयवग } पुं [दे] रुई से भरे हुए कपड़े का बना हुआ
कोयवय } प्रावरण-विशेष ; (णाया १, १७—पत्र २२९) ।

कोयवी स्त्री [दे] रुई से भरा हुआ कपड़ा ; (बृह ३) ।

कोरंग पुं [कोरङ्ग] पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

कोरंट } पुं [कोरण्ट, °क] १ वृक्ष-विशेष ; (पाअ) ।
कोरंटग } २ न. इस नाम का भृगुकच्छ (भडौच) शहर का एक उपवन ; (वव १) । ३ कोरण्टक वृक्ष का पुष्प ; (पण्ह १, ४ ; जं १) ।

कोरय } पुंन [कोरक] फलोत्पादक मुकुल, फल की कली;
कोरव } (पाअ) । "चत्तारि कोरवा पन्नत्ता" (ठा ४, १—पत्र १८५) ।

कोरव्व पुंस्त्री [कौरव्य] १ कुरु-वंश में उत्पन्न ; (सम १५२ ; ठा ६) । २ कौरव्य-गोत्रीय ; ३ पुं. आठवाँ चक्रवर्ती राजा ब्रह्मदत्त ; (जीव ३) ।

कोरव्वीया स्त्री [कौरव्वीया] इस नाम की षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) ।

कोरिंट } देखो **कोरंट** ; (णाया १, १—पत्र १९ ;
कोरिंटय } कप्प ; पउम ४२, ८ ; औप ; उवा) ।
कोरेंट }

कोल पुं [दे] ग्रीवा, डोक, गला ; (दे २, ४५) ।

कोल पुं [क्रोड] १ सूअर, वराह; (पण्ह १, १—पत्र ७; से १११) । २ उत्सङ्ग, कोला ; "कोलंकिय—" (गउड) ।

कोल पुं [कोल] १ देश-विशेष ; (पउम ९८, ६६) । २ घुण, काष्ठ-कीट ; (सम्म ३९) । ३ शूकर, वराह, सूअर; (उप ३२० टी ; णाया १, १; कुमा ; पाअ) । ४ मूषिक के आकार का एक जन्तु ; (पण्ह १, १—पत्र ७) । ५ अस्त्र-विशेष ; (धम्म ५) । ६ मनुष्य की एक नीच जाति ; (आचू ४) । ७ बदरी-वृक्ष, बैर का गाछ ; ८ न. बदरी-फल, बैर ; (दस ५, १ ; भग ६, १०) । °पाग न [°पाक] नगर-विशेष, जहां श्रीऋषभदेव भगवान् का मंदिर है, यह नगर दक्षिण में है ; (ती ४५) । °पाल पुं [°पाल] देव-विशेष, धरणेन्द्र का लोकपाल ; (ठा ३, १—पत्र १०७) । °सुणय, °सुणह पुंस्त्री [°शुनक] १ बड़ा शूकर, सूअर की एक जाति, जंगली वराह ; (आचा २, १, ५) । २ शिकारी कुत्ता; (पण्ण ११) । स्त्री—°णिया ; (पण्ण ११) । °वास पुंन [°वास] काष्ठ, लकड़ी ; (सम ३९) ।

कोल वि [कौल] १ शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी ; २ तान्त्रिक मत से संबन्ध रखने वाला ; "कोलो धम्मो कस्स णो भाइ रम्मो" (कप्पू) । ३ न. बदर-फल-संबन्धी ; (भग ६, १०) । °चुण्ण न [°चूर्ण] बैर का चूर्ण, बैर का सत्थु; (दस ५, १) । °ट्ठिय न [°ास्थिक] बैर की गुठिया ; (भग ६, १०) ।

कोलंब पुं [दे] पिठर, स्थाली ; (दे २, ४७; पाअ) । २ गृह, घर ; (दे २, ४७) ।

कोलंब पुं [कोलम्ब] वृक्ष की शाखा का नमा हुआ अग्र भाग ; (अनु ५) ।

कोलगिणी स्त्री [कोली, कोलकी] कोल-जातीय स्त्री ; (आचू ४) ।

कोलघरिय वि [**कौलगृहिक**] कुल-गृह-संबन्धी, पितृ-गृह-संबन्धी, पितृ-गृह से संबन्ध रखने वाला ; (उवा)।

कोलज्जा स्त्री [**दे**] धान्य रखने का एक तरह का गर्त्त ; (आचा २, १, ७)।

कोलर देखो **कोटर** ; (गा ५६३ अ)।

कोलव न [**कौलव**] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध एक करण; (विसे ३३४८)।

कोलाल वि [**कौलाल**] १ कुम्भकार-संबन्धी ; २ न. मिट्टी का पात्र ; (उवा)।

कोलालिय पुं [**कौलालिक**] मिट्टी का पात्र बेचने वाला; (बृह २)।

कोलाह पुं [**कोलाभ**] साँप की एक जाति ; (पण्ण १)।

कोलाहल पुं [**दे**] पक्षी का आवाज, पक्षि-शब्द ; (दे २, ५०)।

कोलाहल पुं [**कोलाहल**] तुमुल, शोरगुल, गैला, बहुत दूर जाने वाला अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द ; (दे २, ५०; हेका १०५ ; उत्त ६)।

कोलाहलिय वि [**कोलाहलिक**] कोलाहल वाला, शोर-गुल वाला ; (पउम ११७, १६)।

कोलिअ पुं [**दे**] कोली, तन्तुवाय, कपड़ा बुनने वाला ; (दे २,६५ ; णंदि ; पव २ ; उप पृ २१०)। २ जाल का कीड़ा, मकड़ा ; (दे २, २५ ; पाअ ; श्रा २० ; आव ४ ; बृह १)।

कोलित्त न [**दे**] उल्मुक, लूका ; (दे २, ४६)।

कोलीकय वि [**क्रोडीकृत**] स्वीकृत, अंगीकृत ; (गउड)।

कोलीण न [**कौलीन**] १ किंवदन्ती, लोक-वार्ता, जन-श्रुति; (मा ३७)। २ वि. वंश-परंपरागत, कुलक्रम से आयात ; ३ उत्तम कुल में उत्पन्न ; ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी ; (नाट—महावी १३३)।

कोलीर न [**दे**] लाल रंग का एक पदार्थ, कुरुविन्द ; "कोलीररत्तणयणेअं" (दे २, ४६)।

कोलुण्ण न [**कारुण्य**] दया, अनुकम्पा, करुणा; (निचू ११)। °**पडिया**, °**वडिया** स्त्री [°**प्रतिज्ञा**] अनुकम्पा की प्रतिज्ञा; (निचू ११)।

कोल्ल पुंन [**दे**] कोयला, जली हुई लकड़ी का टुकड़ा ; (निचू १)।

कोल्लइर न [**कोल्लकिर**] १ वार्धक्य, बुढ़ापन ; (पिंड)। २ नगर-विशेष ; (आव ३)।

कोल्लपाग न [**कोल्लपाक**] दक्षिण देश का एक नगर, जहां श्री ऋषभदेव का मन्दिर है ; (ती ४५)।

कोल्लर पुं [**दे**] पिठर, स्थाली ; (दे २,४७)।

कोल्ला देखो **कुल्ला**; (कुमा)।

कोल्लाग देखो **कुल्लाग** ; (अंत)।

कोल्लापुर न [**कोल्लापुर**] दक्षिण देश का एक नगर ; (ती ३४)।

कोल्लासुर पुं [**कोल्लासुर**] इस नाम का एक दैत्य ; (ती ३४)।

कोल्लुग [**दे**] देखो **कोल्हुअ** ; (वव १; बृह १)।

कोल्हाहल न [**दे**] फल-विशेष, बिम्बी-फल; (दे२,३६)।

कोल्हुअ पुं [**दे**] १ शृगाल, सियार ; (दे २, ६५ ; पाअ ; पउम ७, १७ ; १०५, ४२)। २ कोल्हू, चरखी, ऊख से रस निकालने की कल ; (दे २, ६५ ; महा)।

कोव पुं [**कोप**] क्रोध, गुस्सा ; (विपा १,६ ; प्रासू १७५)।

कोवण वि [**कोपन**] क्रोधी, क्रोध-युक्त; (पाअ; सुपा ३८५ ; सम ३४७ ; स्वप्न ८२)।

कोवासिअ देखो **कोआसिय**; (पाअ)।

कोवि वि [**कोपिन्**] क्रोधी, क्रोध-युक्त ; (सुपा २८१ ; श्रा २०)।

कोविअ वि [**कोविद**] निपुण, विद्वान् , अभिज्ञ; (आचा ; सुपा १३० ; ३६२)।

कोविअ वि [**कोपित**] १ क्रुद्ध किया हुआ। २ दूषित, दोष-युक्त किया हुआ ; "वइरो किर दाही वायूणंति नवि कोवियं वयणं" (उव)।

कोविआ स्त्री [**दे**] शृगाली, स्त्री-सियार ; (दे २, ४६)।

कोविआर पुं [**कोविदार**] वृक्ष-विशेष ; (विक्र ३३)।

कोविणी स्त्री [**कोपिनी**] कोप-युक्त स्त्री ; (श्रा १२)।

कोस पुं [**दे**] १ कुसुम्भ रंग से रक्त वस्त्र ; २ समुद्र, जलधि, सागर ; (दे २, ६५)।

कोस पुं [**क्रोश**] कोस, मार्ग की लम्बाई का परिमाण, दो मील ; (कप्प ; जी ३२)।

कोस पुं [**कोश**, °**ष**] १ खजाना, भण्डार; (णाया १,१३१; पउम ५, २४)। २ तलवार की म्यान ; (सुअ १, ६)। ३ कुड्मल, " कमलकोसव्व " (कुमा)। ४ मुकुल, कली ; (गउड)। ५ गोल, वृत्ताकार; "ता मुहमेलियकर-कोसपिहियपसरंतदंतकरपसरं " (सुपा २७ ; गउड)। ६ दिव्य-भेद, तप्त लोहे का स्पर्श वगैरः शपथ ; " एत्थ अम्हे

कोसविसएहिं पच्चाएमो" (स ३२४)। ७ अभिधान-शास्त्र, शब्दार्थ-निरूपक ग्रन्थ, जैसा प्रस्तुत पुस्तक। ८ पुंन. पान-पात्र, चषक ; (पाअ)। ८ न. नगर-विशेष ; "कोसं नाम नयरं" (स १३३)। °पाण न [°पान] सौगन, शपथ ; (गा ४४८)। °ाहिव पुं [°ाधिप] खजानची, भंडारी ; (सुपा ७३)।

कोसंब पुं [**कोशाम्र**] फल-वृक्ष-विशेष ; (पराग १—पत्र ३१)। °**गंडिया** स्त्री [°**गण्डिका**] खड्ग-विशेष, एक प्रकार को तलवार ; (राज)।

कोसंबिया स्त्री [**कौशाम्बिका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प)।

कोसंबी स्त्री [**कौशाम्बी**] वत्स देश की मुख्य नगरी ; (ठा १० ; विपा १, ५)।

कोसग पुं [**कोशक**] साधुओं का एक चर्म-मय उपकरण, चमड़े की एक प्रकार की थैली ; (धर्म ३)।

कोसट्टइरिआ स्त्री [**दे**] चण्डी, पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी; (दे २, ३५)।

कोसय न [**दे. कोशक**] लघु शराव, छोटा पान-पात्र ; (दे २, ४७; पाअ)।

कोसल न [**कौशल**] कुशलता, निपुणता, चातुरी; (कुमा)।

कोसल न [**दे**] नीवी, नारा, इजारबन्द ; (दे २, ३८)।

कोसल } पुं [**कोसल, °क**] १ देश-विशेष ; (कुमा ;
कोसलग } महा)। २ एक जैन महर्षि, सुकोसल मुनि ; (पउम २२, ४४)। ३ कोसल देश का राजा ; ४ वि. कोशल देश में उत्पन्न ; (ठा ५, २)। ५ °**पुर** न [°**पुर**] अयोध्या नगरी; (आक १)।

कोसला स्त्री [**कोसला**] १ नगरी-विशेष, अयोध्या-नगरी; (पउम २०, २८)। २ अयोध्या-प्रान्त, कोसल-देश ; (भग ७, ६)।

कोसलिअ वि [**कौशलिक**] १ कोसल देश में उत्पन्न, कोसल-देश-संबन्धी ; (भग २०, ८)। २ अयोध्या में उत्पन्न, अयोध्या-संबन्धी ; (जं २)।

कोसलिअ न [**दे.कौशलिक**] प्राभृत, भेंट, उपहार ; (दे २, १२ ; सण ; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसलिआ स्त्री [**दे.कौशलिका**] ऊपर देखो ; (दे २, १२ ; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसल्ल न [**कौशल्य**] निपुणता, चतुराई ; (कुमा; सुपा १६ ; सुर १०, ८०)।

कोसल्ल न [**दे**] प्राभृत, भेंट, उपहार ; "तं पुरजणकोसल्लं नरवइणा अप्पियं कुमारस्स" (महा)।

कोसल्लया स्त्री [**कौशल्य**] निपुणता, चतुराई; "तह मज्झ-नीइकोसल्लया य खीणच्चिय इयाणिं" (सुपा ६०३)।

कोसल्ला स्त्री [**कौशल्या**] दाशरथि राम की माता; (उप पृ ३७४)।

कोसल्लिअ न [**दे.कौशलिक**] भेंट, उपहार; (दे २, १२; महा ; सुपा ४१३ ; ५२७ ; सण)।

कोसा स्त्री [**कोशा**] इस नाम की एक प्रसिद्ध वेश्या, जिसके यहां जैन महर्षि श्रीस्थूलभद्र मुनि ने निर्विकार भाव से चातु-र्मास किया था ; (विवे ३३)।

कोसिण वि [**कोष्ण**] थोड़ा गरम ; (नाट—वेणी)।

कोसिय न [**कौशिक**] १ मनुष्य का गोत्र विशेष ; (अभि ४१ ; ठा ३६०)। २ वीसवें नक्षत्र का गोत्र; (चंद १०)। ३ पुं. उलूक, घूक, उल्लू ; (पाअ ; सार्ध ५६)। ४ साँप-विशेष, चण्डकोशिक-नामक दृष्टि-विष सर्प, जिसको भगवान् श्रीमहावीर ने प्रबोधित किया था ; (आवम)। ५ वृक्ष-विशेष ; ६ इन्द्र ; ७ नकुल; ८ कोशाध्यक्ष, खजानची ; ६ प्रीति, अनुराग ; १० इस नाम का एक राजा ; ११ इस नाम का एक असुर ; १२ सर्प को पकड़ने वाला, गारुड़िक ; १३ अस्थि-सार, मज्जा ; १४ शृङ्गार रस ; (हे १, १५६)। १५ इस नाम का एक तापस ; (भवि)। १६ पुंस्त्री. कौशिक गोत्र में उत्पन्न, कौशिक-गोत्रीय ; (ठा ७—पत्र ३६०); स्त्री—**कोसिई** ; (मा १६)।

कोसिया स्त्री [**कोशिका**] १ भारतवर्ष की एक नदी; (कस)। २ इस नाम की एक विद्याधर-राज-कन्या; (पउम ७, ५४)। ३ चमड़े का जूता ; "कोसियमालाभूसियसिरोहरो विगय-वसणो य" (स २२३)। देखो **कोसी**।

कोसियार पुं [**कोशिकार**] १ कीट-विशेष, रेशम का कीड़ा; (पण्ह १, ३)। २ न. रेशमी वस्त्र ; (ठा ५, ३)।

कोसी स्त्री [**कोशी**] देखो **कोसिया** ; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। २ गोलाकार एक वस्तु; 'कंचणकोसीपविट्ठदंताणं' (औप)।

कोसुम वि [**कौसुम**] फूल-संबन्धी, फूल का बना हुआ ; "कोसुमा बाणा" (गउड)।

कोसेअ } न [**कौशेय**] १ रेशमी वस्त्र, रेशमी कपड़
कोसेज्ज } (दे २, ३३; सम १५३ ; पण्ह १, ४)। २ तसर का बना हुआ वस्त्र ; (जीव ३)।

कोह पुं [क्रोध] गुस्सा, कोप ; (औप २ भा ; ठा ४, १)। °**मुंड** वि [°मुण्ड] क्रोध-रहित ; (ठा ५, ३)।

कोह पुं [कोथ] सड़ना, सीर्णता ; (भग ३, ६)।

कोह पुं [दे. कोथ] कोथली थैला ; (विसे २६८८)।

कोह वि [क्रोधवत्] क्रोध-युक्त, कोप-सहित; "कोहाए माणाए मायाए लोभाए......आसायणाए" (पडि)।

कोहंगक पुं [कोभङ्गक] पक्षि-विशेष ; (औप)।

कोहज्झाण न [क्रोधध्यान] क्रोध-युक्त चिन्तन; (आउ ११)।

कोहंड न [कूष्माण्ड] १ कुष्माण्डी-फल, कोहला ; (पि ७६; ८६; १२७)। २ न. देव-विमान-विशेष ; (ती ५६)। ३ पुं. व्यन्तर-निकाय देव-जाति-विशेष ; (पव १६४)।

कोहंडी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहले का गाछ ; (हे१, १२४ ; दे २, ५० टी)।

कोहण वि [क्रोधन] १ क्रोधी, गुस्साखोर ; (सम ३७ ; पउम ३५, ७)। २ पुं. इस नाम का रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३२)।

कोहल देखो **कुऊहल** ; (हे १, १७१)।

कोहलिअ वि [कुतूहलिन्] कुतूहली ; कुतूहल-प्रेमी। स्त्री—°आ; (गा ७६८)।

कोहलिआ स्त्री [कूष्माण्डिका] कोहले का गाछ ;

"जह लंघेसि परवइं, नियवइं भरसहंपि मोत्तूणं।
तह मण्णे कोहलिए, अज्जं कल्लंपि फुट्टिहिसि" (गा७६८)।

कोहली देखो **कोहंडी** ; (हे २, ७३ ; दे २, ५० टी)।

कोहल्ल देखो **कोहल** ; (षड्)।

कोहल्ली स्त्री [दे] तापिका, तवा, पचन-पात्र विशेष; (दे २, ४६)।

कोहल्ली देखो **कोहंडी** ; (षड्)।

कोहि } वि [क्रोधिन्] क्रोधी, क्रोध-स्वभावी, गुस्सा-
कोहिल्ल } खोर ; (कम्म ४, १४० ; बृह २)।

°**क्किलिय** देखो **किलिय**=क्लपित ; (उप ७२८ टी)।

°**क्कूर** देखो **क्रूर**=क्रूर ; (वा २६)।

°**क्केर** देखो °**केर** ; (हे २, ९९)।

°**क्खंड** देखो **खंड** ; (गउड)।

°**क्खंभ** देखो **खंभ** ; (से ३, ५९)।

°**क्खम** देखो **खम** ; (प्रासू २७)।

°**क्खलण** देखो **खलण** ; (गउड)।

°**क्खिंसा** देखो **खिंसा** ; (सुपा ५१०)।

°**क्खु** देखो **खु** ; (कप्पू ; अभि ३७ ; चारु १४)।

°**क्खुर** देखो **खुर** ; (गउड)।

°**क्खेडु** देखो **खेडु** ; (सुपा ५५२)।

°**क्खेव** देखो **खेव**; "खारक्खेवं व खए" (उप ७२८ टी)।

°**क्खोडी** देखो **खोडी** ; (पण्ह १, ३)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ककाराइसद्दसंकलणो
दसमो तरंगो समत्तो।

ख

ख पुं [ख] १ व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है ; (प्रामा ; प्राप) । २ न. आकाश, गगन ; " गज्जंते खे मेहा " (हे १, १८७ ; कुमा ; दे ६, १२१) । ३ इन्द्रिय ; (विसे ३४४३) । °ग पुं [°ग] १ पक्षी, खग ; (पाअ ; दे २, ५०) । २ मनुष्य की एक जाति, जो विद्या के बल से आकाश में गमन करते हैं, विद्याधर-लोक ; (आरा ५६) । देखो खय = खग । °गइ स्त्री [°गति] १ आकाश-गति ; २ कर्म-विशेष, जो आकाश-गति का कारण है ; (कम्म २, ३; नव ११) । °गामिणी स्त्री [°गामिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है ; (पउम ७, १४५) । °पुप्फ न [°पुष्प] आकाश-कुसुम, असंभवित वस्तु; (कुमा) ।

खइ वि [क्षयिन्] १ क्षय वाला, नाश वाला । २ क्षय रोग वाला, क्षय-रोगी ; (सुपा २२३ ; ५७६) ।

खइअ वि [क्षपित] नाशित, उन्मूलित ; (औप ; भवि) ।

खइअ वि [खचित] १ व्याप्त, जटित ; २ मण्डित, विभूषित; (हे १, १९३ ; औप ; स ११४) ।

खइअ वि [खादित] १ खाया हुआ, भुक्त, ग्रस्त ; (पाअ ; स २५० ; उप पृ ४६) । २ आक्रान्त ; " तह य होंति उ कसाया । खइओ जेहिं मणुस्सो कज्जाकज्जाइं न मुणेइ " (स ११४) । ३ न. भोजन, भक्षण ; "खइएण व पीएण व न य एसो ताइओ हवइ अप्पा" (पच्च ६२ ; ठा ४, ४—पत्र २७६) ।

खइअ वि [क्षयित] क्षय-प्राप्त, क्षीण ; "किमिकायखइय-देहो " (सुर १६, १६१) ।

खइअ पुं [दे] हेवाक, स्वभाव ; (ठा ४, ४—पत्र २७६) ।

खइअ, **खइग** पुं [क्षायिक] १ क्षय, विनाश, उन्मूलन; "से किं तं खइए? खइए अट्ठण्हं कम्मपयडीणं खइएणं " (अणु) । २ वि. क्षय से उत्पन्न, क्षय-संबन्धी, क्षय से संबन्ध रखने वाला; ३ कर्म-नाश से उत्पन्न ; " कम्मक्खय-सहावो खइओ " (विसे ३४९५ ; कम्म १, १५ ; ३, १९ ; ४, २२ ; सम्य २३ ; औप) ।

खइत्त न [क्षैत्र] खेतों का समूह, अनेक खेत; (पि ६१) ।

खइया स्त्री [खदिका] खाद्य-विशेष, सेका हुआ व्रीहि ; " दहिदुद्धपायसखइयनिओए " (भवि) ।

खइर पुं [खदिर] वृक्ष-विशेष, खैर का गाछ ; (आचा ; कुमा) ।

खइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-संबन्धी ; (हे १, ६७ ; सुपा १२१) ।

खइव [दे] देखो खइअ ; (ठा ४, ४—पत्र १७६ टी) ।

खउड पुं [खपुट] स्वनाम प्रसिद्ध एक जैनाचार्य ; (आकम ; आचू) ।

खउर अक [क्षुभ्] १ क्षुब्ध होना, डर से विह्वल होना । २ सक. कलुषित करना । खउरइ ; (हे ४, १५४ ; कुमा) । " खउरेंति दिइम्बहलं " (से ५, ३) ।

खउर वि [दे] कलुषित ; " उव्वूढविसमविसदुस्सह-अंगखउरा " (से ५, ४७ ; स ५०८) ।

खउर न [क्षौर] क्षौर-कर्म, हजामत ; (हेका १८६) ।

खउर पुंन [खपुर] खैर वगैरः का चिकना रस, गोंद ; (बृह ३ ; निचू १६) । °कढिणय न [°कठिनक] तापसों का एक प्रकार का पात्र ; (विसे १४६५) ।

खउरिअ वि [क्षुब्ध] कलुषित ; (पाअ ; बृह ३) ।

खउरिअ वि [क्षौरित] मुण्डित, लुञ्चित, केश-रहित किया हुआ ; (से १०, ४३) ।

खउरिअ वि [खपुरित] खरण्टित, चिपकाया हुआ; (निचू ५) ।

खउरीकय वि [खपुरीकृत] गोंद वगैरः की तरह चिकना किया हुआ ;

"कलुसीकओ य किट्टीकओ य खउरीकओ य मलिणिओ ।
कम्मेहि एस जीवो, नाऊणवि मुज्झई जेण" (उव) ।

खओवसम पुं [क्षयोपशम] कुछ भाग का विनाश और कुछ का दबना ; (भग) ।

खओवसमिय वि [क्षायोपशमिक] १ क्षयोपशम से उत्पन्न, क्षयोपशम-संबन्धी ; (सम १४५ ; ठा २, १; भग) । २ क्षयोपशम ; (भग ; विसे २१७५) ।

खंखर पुं [दे] पलाश वृक्ष ; (ती ५३) ।

खंगार पुं [खङ्गार] राजा खेंगार, विक्रम की बारहवीं शताब्दी का सोरठ देश का एक भूपति, जिसको गूजरात के राजा सिद्धराज ने मारा था ; (ती ५) । °गढ पुं [°गढ] नगर-विशेष, सौराष्ट्र का एक नगर, जो आजकल 'जूनागढ' के नाम से प्रसिद्ध है ; (ती ५) ।

खंच सक [कृष्] १ खींचना । २ वश में करना । खंचइ ; (भवि) । "ता गच्छ तुरियतुरियं तुरयं मा खंच मुंच हुक्क-लयं" (सुपा १९८) ।

खंचिय वि [**कृष्ट**] १ खींचा हुआ ; (स ५७४) । २ वश में किया हुआ ; (भवि) ।

खंज अक [**खञ्ज्**] लंगड़ा होना ; (कप्पू) ।

खंज वि [**खञ्ज**] लंगड़ा, पङ्गु, लूला ; (सुपा २७६) ।

खंजण पुं [**खञ्जन**] १ पक्षि-विशेष, खञ्जरीट ; (दे २, ७०) । २ वृक्ष-विशेष ; "ताडवडखज्जखंजणसुक्खयरगहीर-दुक्खसंचारे" (स २५६) ।

खंजण पुं [**दे**] १ कर्दम, कीच ; (दे २,६६ ; पाअ) । २ कज्जल, काजल, मषी ; (ठा ४,२) । ३ गाड़ी के पहिए के भीतर का काला कीच ; (पण्ण १७—पत्र ५२५) ।

खंजर पुं [**दे**] सूखा हुआ पेड़ ; (दे २, ६८) ।

खंजा स्त्री [**खञ्जा**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

खंजिअ त्रि [**खञ्जित**] जो लंगड़ा हुआ हो, पंगूभूत ; (कप्पू) ।

खंड सक [**खण्डय्**] तोड़ना, टुकड़ा करना, विच्छेद करना । खंडइ; (हे ४,३६७)। कवकृ—**खंडिज्जंत**; (से १३,३२ ; सुपा १३४) । हेकृ—**खंडित्तए**; (उवा) । कृ—**खंडियव्व**; (उप ७२८ टी) ।

खंड पुंन [**खण्ड**] १ टुकड़ा, अंश, हिस्सा ; (हे २,६७; कुमा) । २ चीनी, मिस्री ; (उर ६,८) । ३ पृथ्वी का एक हिस्सा ; "छक्खंड—" (सण) । °**घडग** पुं [°**घटक**] भिक्षुक का जल-पात्र ; (णाया १, १६) । °**प्पवाया** स्त्री [°**प्रपाता**] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा ; (ठा २,३) । °**भेय** पुं [°**भेद**] विच्छेद-विशेष, पदार्थ का एक तरह का पृथक्करण, पटके हुए घड़े की तरह पृथग्भाव ; (भग ५, ४) । °**मल्लय** पुंन [°**मल्लक**] भिक्षा-पात्र ; (णाया १, १६) । °**सो** अ [°**शस्**] टुकड़ा टुकड़ा, खण्ड-खण्ड ; (पि ५१६) । °**भेय** देखो °**भेय** ; (ठा १०) ।

खंड न [**दे**] १ मुण्ड, शिर, मस्तक ; २ दारू का बरतन, मद्य-पात्र ; (दे २, ६८) ।

खंडई स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; (दे २,६७) ।

खंडग न [**खण्टक**] शिखर-विशेष ; (ठा ६ ; इक) ।

खंडण न [**खण्डन**] १ विच्छेद, भञ्जन, नाश ; (णाया १, ८) । २ कण्डन, धान्य वगैरः का छिलका अलग करना ; "खंडणदलणाइं गिहकम्मे" (सुपा १४) । ३ वि. नाश करने वाला, नाशक ; (सुपा ४३२) ।

खंडणा स्त्री [**खण्डना**] विच्छेद, विनाश; (कप्पू; निचू १) ।

खंडपट्ट पुं [**खण्डपट्ट**] १ द्यूतकार, जूआरी; (विपा १,३)। २ धूर्त, ठग; ३ अन्याय से व्यवहार करने वाला; (विपा १,३)।

खंडरक्ख पुं [**खण्डरक्ष**] १ दाण्डपाशिक, कोटवाल; (णाया १,१ ; पण्ह १,३ ; औप) । २ शुल्कपाल, चुंगी वसूल करने वाला ; (णाया १,१ ; विसे २३६० ; औप) ।

खंडव न [**खाण्डव**] इन्द्र का वन-विशेष, जिसको अर्जुन ने जलाया बतलाया जाता है ; (नाट— वेणी ११४) ।

खंडा स्त्री [**खण्ड**] मिस्री, चीनी, सक्कर ; (ओघ ३७३)।

खंडा स्त्री [**खण्डा**] इस नाम की एक विद्याधर-कन्या ; (महा)।

खंडाखंडि अ [**खण्डशस्**] टुकड़े टुकड़ा, खण्डखण्ड ; (उवा ; णाया १,६) । °**डीकय** वि [°**कृत**] टुकड़े टुकड़ा किया हुआ ; (सुर १६, ५६) ।

खंडामणिकंचण न [**खण्डामणिकाञ्चन**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक) ।

खंडावत्त न [**खण्डावर्त्त**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक) ।

खंडाहंड वि [**खण्डखण्ड**] टुकड़े टुकड़ा किया हुआ ; (सुपा ३८५) ।

खंडिअ पुं [**खण्डिक**] छात्र, विद्यार्थी ; (औप) ।

खंडिअ वि [**खण्डित**] छिन्न, विछिन्न; (हे १, ५३ ; महा) ।

खंडिअ पुं [**दे**] १ मागध, बिरुद-पाठक ; २ वि. अनिवार, निवारण करने को अशक्य ; (दे २, ७८) ।

खंडिआ स्त्री [**खण्डिका**] खण्ड, टुकड़ा ; (अभि ६२) ।

खंडिआ स्त्री [**दे**] नाप-विशेष, बीस मन का नाप ; (सं २४) ।

खंडी स्त्री [**दे**] १ अपद्वार, छोटा गुप्त द्वार ; (णाया १, १८—पत्र २३६) । २ किले का छिद्र; (णाया १, २—पत्र ७६) ।

खंडुअ न [**दे**] बाहु-वलय, हाथ का आभूषण-विशेष ; (मृच्छ १८१) ।

खंत देखो **खा** ।

खंत वि [**क्षान्त**] क्षमा-शील, क्षमा-युक्त; (उप ३२० टी; कप्पू; भवि) ।

खंतव्व वि [**क्षन्तव्य**] क्षमा-योग्य, माफ करने लायक; (विक ३८; भवि) ।

खंति स्त्री [**क्षान्ति**] क्षमा, क्रोध का अभाव; (कप्प; महा; प्रासू ४८) ।

खंति देखो **खा** ।

खंद पुं [**स्कन्द**] १ कार्त्तिकेय, महादेव का एक पुत्र; (हे २, ५; प्राप्र; णाया १,१—पत्र ३६)। २ राम का इस नाम का एक सुभट ; (पउम ६७, ११)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक जैन मुनि ; (उव)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] १ स्कन्द-कृत उपद्रव; स्कन्दावेश; (जं २)। २ ज्वर-विशेष ; (भग ३, ६)। °**मह** पुं [°**मह**] स्कन्द का उत्सव ; (णाया १,१)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] एक चोर-सेनापति की भार्या का नाम; (विपा १, ३)।

खंदग) पुं [**स्कन्दक**] १-२ ऊपर देखो । ३ एक जैन **खंदय**) मुनि ; (उव ; भग ; अंत; सुपा ४०८)। ४ एक परिव्राजक, जिसने भगवान् महावीर के पास पीछे से जैन दीक्षा ली थी ; (पुप्फ ८४)।

खंदिल पुं [**स्कन्दिल**] एक प्रख्यात जैनाचार्य, जिसने मथुरा में जैनागमों को लिपि-बद्ध किया; (गच्छ १)।

खंध पुं [**स्कन्ध**] १ पुद्गल-प्रचय, पुद्गलों का पिण्ड ; (कम्म ४, ६६)। २ समूह, निकर ; (विसे ६००)। ३ कन्धा, काँध ; (कुमा)। ४ पेड़ का धड़, जहां से शाखा निकलती है ; (कुमा)। ५ छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**करणी** स्त्री [°**करणी**] साध्वीओं को पहनने का उपकरण-विशेष ; (ओघ ६७७)। °**मंत** वि [°**मत्**] स्कन्ध वाला ; (णाया १, १)। °**बीय** पुं [°**बीज**] स्कन्ध ही जिसका बीज होता है ऐसा कदली वगैरः गाछ ; (ठा ५, २)। °**सालि** पुं [°**शालिन्**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (राज)।

खंधग्गि पुं [**दे. स्कन्धाग्नि**] स्थूल काष्ठों की आग; (दे २, ७० ; पाअ)।

खंधमंस पुं [**दे**] हाथ, भुजा, बाहू ; (दे २, ७१)।

खंधमसी स्त्री [**दे**] स्कन्ध-यष्टि, हाथ ; (षड्)।

खंधय देखो **खंध** ; (पिंग)।

खंधयट्ठि स्त्री [**दे**] हाथ, भुजा ; (दे २, ७१)।

खंधर पुंस्त्री [**कन्धर**] ग्रीवा, डोक; (सण)। स्त्री—°**रा**; (महा)।

खंधलट्ठि स्त्री [**दे**] स्कन्ध-यष्टि, हाथ, भुजा ; (षड्)।

खंधवार देखो **खंधावार**; (महा)।

खंधार पुं. ब. [**स्कन्धार**] देश-विशेष ; (पउम ६८, ६६)।

खंधार देखो **खंधावार** ; (पउम ६६, २८ ; महा ; विसे २४४१)।

खंधाल वि [**स्कन्धमत्**] स्कन्ध वाला ; (सुपा १२६)।

खंधावार पुं [**स्कन्धावार**] छावनी, सैन्य का पड़ाव, शिबिर ; (णाया १, ८ ; स ६०३ ; महा)।

खंधि वि [**स्कन्धिन्**] स्कन्ध वाला ; (औप)।

खंधी स्त्री. देखो **खंध** ; (औप)।

खंधोधार पुं [**दे**] बहुत गरम पानी की धारा ; (दे २, ७२)।

खंप सक [**सिच्**] सिञ्चना, छिटकना । खंपइ ; (भवि)।

खंपणय न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; "बहुसेयसिन्नमलमइलखंपणय-चिक्कणसरीरो" (सुपा ११)।

खंभ पुं [**स्तम्भ**] खंभा, थंभा ; (हे १, १८७ ; २, ४; ६ ; भग ; महा)।

खंभल्लिअ वि [**स्तम्भनिगडित**] खंभे से बाँधा हुआ ; (से ६, ८५)।

खंभाइत्त न [**स्तम्भादित्य**] गूर्जर देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम से प्रसिद्ध है ; (ती २३)।

खंभालण न [**स्तम्भालगन**] थम्भे से बाँधना ; (पण्ह १, ३)।

खक्खरग पुंन [**दे**] सूखी हुई रोटी ; (धर्म २)।

खग्ग पुं [**खड्ग**] १ पशु-विशेष, गेंडा ; (उप १४८ ; पण्ह १, १)। २ पुंन. तलवार, असि ; (हे १, ३४ ; स ५३१)। °**धेणुआ** स्त्री [°**धेनु**] छूरी, चाकू ; (दंस)। °**पुरा** स्त्री [°**पुरा**] विदेह-वर्ष की स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी ; (ठा २, ३)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (इक)।

खग्गि पुं [**खड्गिन्**] जन्तु-विशेष, गेंडा ; (कुमा)।

खग्गिअ पुं [**दे**] ग्रामेश, गाँव का मुखिया ; (दे २, ६६)।

खग्गी स्त्री [**खड्गी**] विदेह वर्ष की नगरी-विशेष ; (ठा २, ३)।

खग्गूड वि [**दे**] १ शठ-प्राय, धूर्त-सदृश ; (ओघ ३६ भा)। २ धर्म-रहित, नास्तिक-प्राय ; (ओघ ३५ भा)। ३ निद्रालु ; ४ रस-लम्पट ; (बृह १)।

खच्च सक [**खच्**] १ पावन करना, पवित्र करना । २ कस कर बाँधना । खचइ ; (हे ४, ८६)।

खचिअ देखो **खइअ**=खचित ; (कुमा)। ३ पिञ्जरित ; (कप्प)।

खचल्ल पुं [**दे**] ऋच्छ, भल्लूक, भालू ; (दे २, ६६)।

खचोल पुं [**दे**] व्याघ्र, शेर ; (दे २, ६६)।

खज्जग पुं [खर्जो] वृक्ष-विशेष ; (स २५६)।

खज्जा वि [खाद्य] १ खाने योग्य वस्तु; (सुर ३, २)। २ न. खाद्य-विशेष ; (भवि)।

खज्जा वि [क्षय्य] जिस का क्षय किया जा सके वह; (षड्)।

खज्जंत देखो खा।

खज्जग देखो खज्जग=खाद्य ; (भग १५)।

खज्जमाण देखो खा।

खज्जय देखो खज्जग=खाद्य ; (पउम ६६, १६)।

खज्जिअ वि [दे] १ जीर्ण, सड़ा हुआ ; २ उपालब्ध, जिसको उलहना दिया गया हो वह ; (दे २, ७८)।

खज्जिर (अप) वि [खाद्यमान] जो खाया गया हो वह ; (सण)।

खज्जू स्त्री [**खर्जू**] खुजली, पामा; (राज)।

खज्जूर पुं [**खर्जूर**] १ खजूर का पेड़; (कुमा ; उर ३४)। २ न. खजूर-फल ; (पउम ४१, ६ ; सुपा ५७)।

खज्जूरी स्त्री [**खर्जूरी**] खजूर का गाछ; (पाअ; पण्ण १)।

खज्जोअ पुं [**दे**] नक्षत्र ; (दे २, ६६)।

खज्जोअ पुं [**खद्योत**] कीट-विशेष, जुगनू ; (सुपा ४७ ; गउड १, ८)।

खट्ट न [**दे**] १ तीमन, कढ़ी ; (दे २, ६७)। २ वि. खट्टा, अम्ल ; (पण्ण १—पत्र २७ ; जीव १)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] खट्टे जल की वर्षा; (भग ७, ६)।

खट्टंग न [**दे**] छाया, आतप का अभाव ; (दे २, ६८)।

खट्टंग न [**खट्वाङ्ग**] १ शिव का एक आयुध; (कुमा)। २ चारपाई का पाया या पाटी ; ३ प्रायश्चित्तात्मक भिक्षा माँगने का एक पात्र ; ४ तान्त्रिक मुद्रा-विशेष ;

"हत्थट्ठियं कवालं, न मुयइ नूणं खणंपि खट्टंगं।
सा तुह विरहे वालय, बाला कावालिणी जाया"
(वज्जा ८८)।

खट्टक्खड पुं [**खट्वाक्षक**] रत्नप्रभा-नामक पृथिवी का एक नरकावास ; "कालं काऊण रयणप्पभाए पुढवीए खट्टक्खडाभिहाणे नरए पलिओवमाऊ चेव नारगा उववन्नोत्ति" (स ८६)।

खट्टा स्त्री [**खट्वा**] खाट, पलंग, चारपाई; (सुपा ३३७; हे १, १९५)। °**मल्ल** पुं [°**मल्ल**] बिमारी की प्रबलता से जो खाट से उठ न सकता हो वह ; (बृह १)।

खट्टिअ } [**दे. खट्टिक**] खटीक, शौनिक, कसाई; (गा ६८२ ; सुअ २, २ ; दे २, ७०)।
खट्टिक्क }

खड न [**दे**] तृण, घास ; (दे २, ६७ ; कुमा)।

खडइअ वि [**दे**] संकुचित, संकोच-प्राप्त ; (दे २, ७२)।

खडंग न [**षडङ्ग**] छः अंग, वेद के ये छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त। °**वि** वि [°**विद्**] छहों अंगों का जानकार ; (वि २६५)।

खडक्कय पुंन [**खटत्कृत**] आहट देना, ध्वनि के द्वारा सूचना, सिकली वगैरः का आवाज; 'वियडकवाडकडाणं खडक्कओ निसुणिओ तत्तो' (सुपा ४१४)।

खडक्कार पुं [**खटत्कार**] ऊपर देखो; (सुर ११, ११२; सिक्ख ६०)।

खडक्किआ } स्त्री [**दे**] खिडकी, छोटा द्वार ; (कप्पू ; महा ; दे २, ७१)।
खडक्की }

खडखड पुं [**खडखड**] देखो **खाडखड** ; (इक)।

खडखडग वि [**दे**] छोटा और लम्बा ; (राज)।

खडगा स्त्री [**दे**] गैया, गौ ; (गा ६३९ अ)।

खडहड पुं [**खटखट**] साँकल वगैरः का आवाज, खटत्कार ; (सुपा ५०२)।

खडहडी स्त्री [**दे**] जन्तु-विशेष, गिलहरी, गिल्ली; (दे २,७२)।

खडिअ देखो **खट्टिअ** ; (गा ६८२ अ)।

खडिअ देखो **खलिअ** ; (गा १९२ अ)।

खडिआ स्त्री [**खटिका**] खड़ी, लड़कों को लिखने की खड़ी; (कप्पू)।

खडी स्त्री [**खटी**] ऊपर देखो ; (प्रारु)।

खडुआ स्त्री [**दे**] मौक्तिक, मोती ; (दे २, ६८)।

खडुक्क अक [**आविस्+भू**] प्रकट होना, उत्पन्न होना। खडुक्कंति ; (वज्जा ४६)।

खड्ड सक [**मृद्**] मर्दन करना। खड्डइ ; (हे ४, १२६)।

खड्ड } न [**दे**] १ श्मश्रु, दाढी-मूँछ; (दे २, ६६ ; पाअ)। २ बड़ा, महान् ; (विसे २५७६ टी)। ३ गर्त के आकार वाला ; (उवा)।
खड्डग }

खड्डा स्त्री [**दे**] १ खानि, आकर ; (दे २, ६६)। २ पर्वत का खात, पर्वत का गर्त; (दे २, ६६)। ३ गर्त, गड़ा, खड्डा ; (सुर २, १०३ ; स १५२ ; सुपा १५ ; श्रा १६ ; महा ; उत्त ३ ; पंचा ७)।

खड्डिअ वि [**मृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह ; (कुमा)।

खड्डुआ स्त्री [**दे**] ठोकर, आघात ; "खड्डुया मे चवेडा मे" (उत्त १, ३८)।

खड्डोलय पुं [**दे**] खड्डा, गर्त, गढ़ा ; (स ३६३)।

खण सक [**खन्**] खोदना। खणइ ; (महा)। कर्म—खम्मइ, खणिज्जइ ; (हे ४, २४४)। वकृ—खणेमाण ; (सुर २, १०३)। संकृ —**खणेत्तु** ; (आचा)। कवकृ—**खन्नमाण** ; (पि ५४०)।

खण पुं [**क्षण**] काल-विशेष, बहुत थोड़ा समय ; (ठा २, ४ ; हे २, २० ; गउड; प्रासू १३४)। °**जोइ** वि [°**योगिन्**] क्षणमात्र रहने वाला ; (सूत्र १, १, १)। °**भंगुर** वि [°**भङ्गुर**] क्षण-विनश्वर, क्षणिक ; (पउम ८, १०५ ; गा ४२३ ; विवे ११४)। °**या** स्त्री [°**दा**] रात्रि, रात ; (उप ७६८ टी)।

खणक्खण } **खणखणखण** } अक [**खणखणाय्**] 'खण-खण' आवाज करना। खणखणंति ; (पउम ३६, ५३)। वकृ—**खणक्खणंत** ; (स ३८४)।

खणग वि [**खनक**] खोदने वाला ; (णाया १, १८)।

खणण न [**खनन**] खोदना ; (पउम ८६, ६०; उप पृ २२१)।

खणय देखो **खण**=क्षण ; (आचा; उवा)।

खणय वि[**खनक**] खोदने वाला ; (दे १, ८५)।

खणाविय वि [**खानित**] खुदाया हुआ; (सुपा ४५४; महा)।

खणि स्त्री [**खनि**] खान, आकर ; (सुपा ३५०)।

खणित्त न [**खनित्र**] खोदने का अस्त्र, खन्ती; (दे ४, ४)।

खणिय वि [**क्षणिक**] १ क्षण-विनश्वर, क्षण-भंगुर ; (विसे १६७२)। २ वि. फुरसद वाला, काम-धंधा से रहित ; "नो तुम्हे विव अम्हे खणिया इय वुत्तु नीहरिओ" (धम्म ८ टी)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] सर्व पदार्थ को क्षण-विनश्वर मानने वाला, बौद्धमत का अनुयायी ; (राज)।

खणिय वि [**खनित**] खुदा हुआ ; (सुपा २५६)।

खणी देखो **खणि** ; (पाअ)।

खणुसा स्त्री [**दे**] मन का दुःख, मानसिक पीड़ा; (दे २, ६८)।

खण्ण न [**दे**] खात, खोदा हुआ ; (दे २, ६६; बृह ३ ; वव १)।

खण्ण वि [**खन्य**] खोदने योग्य ; (दे २, ३६)।

खण्णु देखो **खाणु** ; (दे २, ६६ ; षड्)।

खण्णुअ पुं [**दे. स्थाणुक**] कीलक, खोंटी ; (दे २, ६८; गा ६४ ; ४२२ अ)।

खत्त न [**दे**] १ खात, खोदा हुआ ; (दे २, ६६ ; पाअ)। २ शस्त्र से तोड़ा हुआ ; (ओघ ३४०)। ३ सेंध, चोरी करने के लिए दीवाल में किया हुआ छेद ; (उप पृ ११६ ; णाया १, १८)। ४ खाद, गोबर ; (उप ५६७ टी)। °**खणग** पुं [°**खनक**] सेंध लगाकर चोरी करने वाला ; (णाया १,१८)। °**खणण** न [°**खनन**] सेंध लगाना; (णाया १, १८)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] करीष के समान रस वाला मेघ ; (भग ७, ६)।

खत्त पुं [**क्षत्र**] क्षत्रिय, मनुष्य-जाति-विशेष; (सुपा १६७; उत्त १२)।

खत्त वि [**क्षात्र**] १ क्षत्रिय-संबन्धी, क्षत्रिय का ; २ न. क्षत्रियत्व, क्षत्रियपन ; "अहह अखत्तं करेइ कोइ इमो" (धम्म ८ टी ; नाट)।

खत्तय पुं [**दे**] १ खेत खोदने वाला ; २ सेंध लगाकर चोरी करने वाला। ३ ग्रह-विशेष, राहु ; (भग १२, ६)।

खत्ति पुंस्त्री [**क्षत्रिन्**] नीचे देखो; "खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के" (सूत्र १, ६, २२)।

खत्तिअ पुंस्त्री [**क्षत्रिय**] मनुष्य की एक जाति, क्षत्री, राजन्य ; (पिंग ; कुमा ; हे २, १८५ ; प्रासू ८०)। °**कुंडग्गाम** पुं [°**कुण्डग्राम**] नगर-विशेष, जहां श्रीमहावीर देव का जन्म हुआ था ; (भग ६, ३३)। °**कुंडपुर** न [°**कुण्डपुर**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (आचा २, १५, ४)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] धनुर्विद्या ; (सूत्र २, २)।

खत्तिणी } **खत्तियाणी** } स्त्री [**क्षत्रियाणी**] क्षत्रिय जाति की स्त्री; (पिंग ; कप्प)।

खद्ध वि [**दे**] १ भुक्त, भक्षित ; (दे २, ६७ ; सुपा ६१० ; उप पृ २५२ ; सण ; भवि)। २ प्रचुर, बहुत ; "खद्धे भवदुक्खजले तरइ विणा नेय सुगुरुतरिं" (सार्ध ११४ ; दे २, ६७ ; पव २ ; बृह ४)। ३ विशाल, बड़ा ; (ओघ ३०७; ठा ३, ४)। ४ अ. शीघ्र, जल्दी ; (आचा २, १, ६)। °**दाणिअ** वि [°**दानिक**] समृद्ध, ऋद्धि-संपन्न ; (ओघ ८६)।

खन्न [**दे**] देखो **खण्ण** ; (पाअ)।

खन्नमाण देखो **खण**=खन्।

खन्नुअ [**दे**] देखो **खण्णुअ** ; (पाअ)।

खपुसा स्त्री [**दे**] एक प्रकार का जूता ; (बृह ३)।

खप्पर पुं [**कर्पर**] १ मनुष्य-जाति-विशेष ; "पत्ते तम्मि दसण्णगेसु पवलं जं खप्पराणं बलं" (रंभा)। २ भिक्षा-पात्र, कपाल ; (सुपा ४६५)। ३ खोपड़ी, कपाल ; (हे १, १८१)। ४ घट वगैरः का टुकड़ा ; (पउम २०, १६६)।

खप्पर } वि [**दे**] रूक्ष, रूखा, निष्ठुर ; (दे २, ६६ ;
खप्पुर } पात्र) ।

खम सक [**क्षम्**] १ क्षमा करना, माफ करना । २ सहन करना । खमइ ; (उवर ८३; महा)। कर्म—खमिज्जइ ; (भवि)। कृ—**खमियव्व**; (सुपा ३०७; उप ७२८ टी; सुर ४, १६७)। प्रयो—खमावइ ; (भवि)। संकृ—**खमावइत्ता, खमावित्ता** ; (पडि ; काल)। कृ—**खमावियव्व** ; (कप्प)।

खम वि [**क्षम**] १ उचित, योग्य ; "सच्चित्तो आहारो न खमो मणसा वि पत्थेउं" (पच्च ५४ ; पात्र)। २ समर्थ, शक्तिमान् ; (दे १, १७ ; उप ६५० ; सुपा ३)।

खमग पुं [**क्षमक, क्षपक**] तपस्वी जैन साधु ; (उप पृ ३६२ ; ओघ १४० ; भत्त ४४)।

खमण न [**क्षपण, क्षमण**] १ उपवास ; (बृह १ ; निचू २०)। २ पुं. तपस्वी जैन साधु ; (ठा १०—पत्र ५१४)।

खमय देखो **खमग** ; (ओघ ५६४; उप ४८६; भत्त ४०)।

खमा स्त्री [**क्षमा**] १ पृथिवी, भूमि ; "उव्वूढखमाभारो" (सुपा ३४८)। २ क्रोध का अभाव, क्षान्ति ; (हे २, १८)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा, नृप, भूपति ; (धर्म १६)। °**समण** पुं [°**श्रमण**] साधु, ऋषि, मुनि ; (पडि)। °**हर** पुं [°**धर**] १ पर्वत, पहाड़ ; २ साधु, मुनि ; (सुपा ६२६)।

खमावणया } स्त्री [**क्षमणा**] खमाना, माफी माँगना ;
खमावणा } (भग १७, ३ ; राज)।

खमाविय वि [**क्षमित**] माफ किया हुआ ; (हे ३, १५२ ; सुपा ३६४)।

खम्मक्खम पुं [**दे**] १ संग्राम, लड़ाई ; २ मन का दुःख ; ३ पश्चात्ताप का नीसास ; (दे २, ७६)।

खय देखो **खच** । खअइ ; (षड्)।

खय अक [**क्षि**] क्षय पाना, नष्ट होना । खअइ ; (षड्)।

खय देखो **खग** ; (पात्र)। ३ आकाश तक ऊँचा पहुँचा हुआ; (से ६, ४२)। °**राय** पुं [°**राज**] पक्षि-ओं का राजा ; गरुड़-पक्षी; (पात्र)। °**वइ** पुं [°**पति**] गरुड़-पक्षी ; (से १५, ५०)।

खय न [**क्षत**] १ व्रण, घाव ; "खारक्खेवं व खए" (उप ७२८ टी)। २ अर्पित, घवाया हुआ; "सुणओव्व कीडखओ" (श्रा १४ ; सुपा ३४६ ; सुर १२, ६१)। °**यार** पुंस्त्री [°**चार**] शिथिलाचारी साधु या साध्वी ; (वव ३)।

खय वि [**खात**] खोदा हुआ ; (पउम ६१, ४२)।

खय पुं [**क्षय**] १ क्षय, प्रलय, विनाश ; (भग ११, ११)। २ रोग-विशेष, राज-यक्ष्मा ; (लहुअ १५)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] नाश-कारक ; (सुपा ६५५)। °**काल**, °**गाल** पुं [°**काल**] प्रलय-काल ; (भवि; हे ४, ३७७)। °**ग्गि** पुं [°**ाग्नि**] प्रलय-काल की आग ; (से १२, ८१)। °**नाणि** पुं [°**ज्ञानिन्**] केवलज्ञानी, परिपूर्ण ज्ञान वाला, सर्वज्ञ ; (विसे ५१८)। °**समय** पुं [°**समय**] प्रलय-काल ; (लहुअ २)।

खयंकर वि [**क्षयकर**] नाश-कारक ; (पउम ७, ८१ ; ६६, ३४ ; पुप्फ ८२)।

खयंतकर वि [**क्षयान्तकर**] नाश-कारक ; (पउम ७, १७०)।

खयर पुंस्त्री [**खचर**] १ आकाश में चलने वाला, पक्षी; (जी २०)। २ विद्याधर, विद्या बल से आकाश में चलने वाला मनुष्य; (सुर ३, ८८; सुपा २४०)। °**राय** पुं [°**राज**] विद्याधरों का राजा ; (सुपा १३४)।

खयर देखो **खइर**=खदिर ; (अंत १२ ; सुपा ५६३)।

खयाल पुंन [**दे**] वंश-जाल, बाँस का वन ; (भवि)।

खर अक [**क्षर्**] १ झरना, टपकना । २ नष्ट होना । खरइ ; (विसे ४५५)।

खर वि [**खर**] १ निष्ठुर, रुखा, परुष, कठोर; (सुर २, ६ ; दे २, ७८ ; पात्र)। २ पुंस्त्री. गर्दभ, गधा ; (पण्ह १, १ ; पउम ५६, ४४)। ३ पुं. छन्द-विशेष ; (पिंग)। ४ न. तिल का तैल ; (ओघ ४०६)। °**कंट** न [°**कण्ट**] बबूल वगैरः की शाखा ; (ठा ३, ४)। °**कंड** न [°**काण्ड**] रत्नप्रभा पृथिवी का प्रथम काण्ड—अंश-विशेष; (जीव ३)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] जिसमें अनेक जीवों की हानि होती हो ऐसा काम, निष्ठुर धंधा ; (सुपा ५०५)। °**कम्मिअ** वि [°**कर्मिन्**] १ निष्ठुर कर्म करने वाला ; २ कोटवाल, दाण्डपाशिक ; (ओघ २१८)। °**किरण** पुं [°**किरण**] सूर्य, सूरज ; (पिंग ; सण)। °**दूसण** पुं [°**दूषण**] इस नाम का एक विद्याधर राजा, जो रावण का बनोई था ; (पउम १०, १७)। °**नहर** पुं [°**नखर**] श्वापद जन्तु, हिंसक प्राणी ; (सुपा १३६; ४७४)। °**निस्सण** पुं [°**निःस्वन**] इस नाम का रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३०)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ अनार्य देश-विशेष

का निवासी ; (पराह १, ४) । °मुही स्त्री [°मुखी] १ वाद्य-विशेष; (पउम ५७, २३; सुपा ५०; ओप) । २ नपुंसक दासी ; (वव ६) । °यर वि [°तर] १ विशेष कठोर ; (सुपा ६०६) । २ पुं. इस नाम का एक जैन गच्छ; (राज) । °संन्नय न [°संज्ञक] तिल का तैल ; (ओघ ४०६) । °साविआ स्त्री [°शाविका] लिपि-विशेष ; (सम ३५) । °स्सर पुं [°स्वर] परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २६) ।

खर वि [क्षर] विनश्वर, अस्थायी ; (विसे ४५७) ।

खरंट सक [खरण्टय्] १ धूत्कारना, निर्भर्त्सना करना । २ लेप करना । खरंडए ; (सूक्त ४६) ।

खरंट वि [खरण्ट] १ धूत्कारने वाला, तिरस्कारक ; २ उपलिप्त करने वाला ; ३ अशुचि पदार्थ ; (ठा ४, १ ; सूक्त ४६) ।

खरंटण न [खरण्टन] १ निर्भर्त्सन, परुष भाषण; (वव १) । २ प्रेरणा ; (ओघ ४० भा) ।

खरंटणा स्त्री [खरण्टना] ऊपर देखो ; (ओघ ७५) ।

खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना । संकृ—खरडिवि; (सुपा ४१५)

खरड पुं [खरट] एक जघन्य मनुष्य-जाति ; "अह केणइ खरडेणं किणिउं हट्टम्मि वरुणवणियस्स" (सुपा ३६२) ।

खरडिअ वि [दे] १ रूक्ष, रुखा ; २ भग्न, नष्ट ; (दे २, ७६) ।

खरडिअ वि [लिप्त] जिसको लेप किया गया हो वह, पोता हुआ ; (ओघ ३७३ टी) ।

खरण न [दे] बबूल वगैरः की कण्टक-मय डाली ; (ठा४,३) ।

खरय पुं [दे] १ कर्मकर, नौकर ; (ओघ ४३८) । २ राहु; (भग १२, ६) ।

खरहर अक [खरखराय्] 'खर-खर' आवाज करना । वकृ—खरहरंत ; (गउड) ।

खरहिअ पुं [दे] पौत, पोता, पुत्र का पुत्र ; (दे २, ७२) ।

खरा स्त्री [खरा] जन्तु-विशेष, नकुल की तरह भुज से चलने वाला जन्तु-विशेष ; (जीव°२) ।

खरिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित ; (दे २, ६७ ; भवि) ।

खरिआ स्त्री [दे] नौकरानी, दासी ; (ओघ ४३८) ।

खरिंसुअ पुं [दे. खरिंशुक] कन्द-विशेष ; (श्रा २०) ।

खरुट्ठी स्त्री [खरोष्ट्री] देखो खरोट्ठिआ ; (पराण १) ।

खरुल्ल वि [दे] १ कठिन, कठोर ; २ स्थपुट, विषम और ऊँचा ; (दे २, ७८) ।

खरोट्ठिआ स्त्री [खरोष्ट्रिका] लिपि-विशेष ; (सम ३५) ।

खल अक [स्खल्] १ पड़ना, गिरना । २ भूलना । ३ रुकना । खलइ ; (प्राप्र) । वकृ—खलंत, खलमाण ; (से २, २७ ; गा ५४६ ; सुपा ६४१) ।

खल वि [खल] १ दुर्जन, अधम मनुष्य ; (सुर १, १६) । २ न. धान साफ करने का स्थान ; (विपा १, ८; श्रा १४) । °पू वि [°पू] खले को साफ करने वाला ; (कुमा ; षड् ; प्रामा) ।

खलइअ वि [दे] रिक्त, खाली ; (दे २, ७१) ।

खलक्खल अक [खलखलाय्] 'खल-खल' आवाज करना । खोलक्खलेइ ; (पि ५५८) ।

खलगंडिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त ; (दे २, ६७) ।

खलण न [स्खलन] १ नीचे देखो ; (आचा ; से ८, ५५ ; गा ४६६; वज्जा २६) ।

खलणा स्त्री [स्खलना] १ गिर जाना, निपतन ; (दे २, ६४) । २ विराधना, भञ्जन ; (ओघ ७८८) । ३ अटकायत, रुकावट ; "होज्जा गुणो, ण खलणं करेमि जइ अस्स वसणस्स" (उप ३३६ टी) ।

खलभलिय वि [दे] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त ; (भवि) ।

खलहर } पुं [खलखल] नदी के प्रवाह का आवाज; "वह-
खलहल } माणवाहिणीणं दिसिदिसिसुव्वंतखलहरासद्दो" (सुर ३, ११ ; २, ७५) ।

खला अक [दे] खराब करना, नुकसान करना । "ताणवि खलो खलाइ य" (पउम ३७, ६३) ।

खलिअ वि [स्खलित] १ रुका हुआ; २ गिरा हुआ, पतित; (हे २, ७७ ; पाअ) । ३ न. अपराध, गुनाह ; ४ भूल ; (से १, ६) ।

खलिअ वि [खलिक] खल से व्याप्त, खलि-खचित ; (दे ४, १०) ।

खलिण [खलिन] १ लगाम ; (पाअ) । २ कायोत्सर्ग का एक दोष ; (पव ५) ।

खलिया स्त्री [खलिका] तिल वगैरः का तैल-रहित चूर्ण; (सुपा ४१४) ।

खलियार सक [खली+कृ] १ तिरस्कार करना, धूत्कारना । २ ठगना । ३ उपद्रव करना । खलियारसि, खलियारेंति ; (सुपा २३७ ; स ४६८) ।

खलियार पुं [**खलिकार**] तिरस्कार, निर्भर्त्सना ; (पउम ३६, ११६)।
खलियारण न [**खलीकरण**] तिरस्कार ; (पउम ३६,८४)।
खलियारणा स्त्री [**खलीकरणा**] वञ्चना, ठगाई; (स २८)।
खलियारिअ वि [**खलीकृत**] १ तिरस्कृत ; (पउम ६६, २)। २ वञ्चित, ठगा हुआ ; (स २८)।
खलिर वि [**स्खलितृ**] स्खलना करने वाला ; (वज्जा ५८ ; सण)।
खली स्त्री [**दे. खली**] तिल-पिण्डिका, तिल वगैरः का स्नेह-रहित चूर्ण ; (दे २, ६६ ; सुपा ४१५ ; ४१६)।
खलीकय देखो **खलियारिअ** ; (चउ ४४)।
खलीकर देखो **खलियार**=खली+कृ । खलीकरेइ ; (स २७)। कर्म—खलीकरीयइ, खलीकिज्जइ; (स २८ ; सण)।
खलीण न [**खलीन**] देखो **खलिण**; (सुपा ७७ ; स ५७४)। २ नदी का किनारा; "खलीणमट्टियं खणमाणे" (विपा १,१—पत्र—१६)।
खलु अ [**खलु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ अव-धारण, निश्चय ; (जी ७)। २ पुनः, फिर ; (आचा)। ३ पादपूर्त्ति और वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है; (आचा ; निचू १०)। °**खित्त** न [°**क्षेत्र**] जहां पर जरूरी चीज मिले वह क्षेत्र ; (वव ८)।
खलुंक पुं [**दे**] १ गली बैल, अविनीत बैल; (ठा ४, ३—पत्र २४८)। २ अविनीत शिष्य, कुशिष्य ; (उत्त २७)।
खलुंकिज्ज वि [**दे**] १ गली बैल संबन्धी; २ उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक अध्ययन ; (उत्त २७)।
खलुय न [**खलुक**] गुल्फ, पाँव का मणि-बन्ध ; (विपा १, ६)।
खल्ल न [**दे**] १ बाड़ का छिद्र ; २ विलास ; (दे २, ७७)। ३ खाली, रिक्त; "जाया खल्लकवोला परिसोसियमंससोणिया धणियं" (उप ७२८ टी ; दे १, ३८)।
खल्लइअ वि [**दे**] १ संकुचित, संकोच-युक्त; २ प्रहृष्ट, हर्ष-युक्त ; (दे २, ७६ ; गउड)।
खल्लग } पुंन [**दे**] १ पाँव का रक्षण करने वाला चमड़ा,
खल्लय } एक प्रकार का जूता ; (धर्म ३)। २ थैला ; (उप १०३१ टी)।
खल्ला स्त्री [**दे**] चर्म, चमड़ा, खाल ; (दे २, ६६ ; पाअ)।
खल्लाड देखो **खल्लीड** ; (निचू २०)।
खल्लिरा स्त्री [**दे**] संकेत ; (दे २, ७०)।
खल्लिहड (अप) देखो **खल्लीड** ; (हे ४, ३८६)।
खल्ली स्त्री [**दे**] सिर का वह चमड़ा, जिसमें केश पैदा न होता हो ; (आवम)।
खल्लीड पुं [**खल्वाट**] जिसके सिर पर बाल न हो, गञ्जा, चंदला ; (हे १, ७४ ; कुमा)।
खल्लूड पुं [**खल्लूट**] कन्द-विशेष; (पराण १—पत्र ३६)।
खव सक [**क्षपय्**] १ नाश करना । २ डालना, प्रक्षेप करना। ३ उल्लंघन करना। खवेइ ; (उव)। खव-यंति ; (भग १८, ७)। कर्म—खविज्जंति ; (भग)। वकृ—**खवेमाण** ; (णाया १, १८)। संकृ—**खवइत्ता**, **खवित्तु**, **खवेत्ता**; (भग १५ ; सम्य १६ ; औप)।
खव पुं [**दे**] १ वाम हस्त, बायाँ हाथ ; २ गर्दभ, रासभ ; (दे २, ७७)।
खवग वि [**क्षपक**] १ नाश करने वाला, क्षय करने वाला; २ पुं. तपस्वी जैन मुनि ; (उव ; भाव ८)। ३ क्षपक-श्रेणि में आरूढ; (कम्म ५)। °**सेढि** स्त्री [°**श्रेणि**] क्षपण-क्रम, कर्मों के नाश की परिपाटी ; (भग ६, ११ ; उवर ११४)।
खवडिअ वि [**दे**] स्खलित, स्खलना-प्राप्त ; (दे २, ७१)।
खवण } न [**क्षपण**] १ क्षय, नाश; (जीत)। २
खवणय } डालना, प्रक्षेप ; (कम्म ४, ७५)। ३ पुं. जैन मुनि ; (विसे २५८५ ; मुद्रा ७८)।
खवय पुं [**दे**] स्कन्ध, कंधा ; (दे २, ६७)।
खवय देखो **खवग** ; (सम २६ ; आरा १३ ; आचा)।
खवलिअ वि [**दे**] कुपित, क्रुद्ध ; (दे २, ७२)।
खवल्ल पुं [**खवल्ल**] मत्स्य-विशेष ; (विपा १, ८—पत्र ८३ टी)।
खवा स्त्री [**क्षपा**] रात्रि, रात। °**जल** न [°**जल**] अवश्याय, हिम ; (ठा ४, ४)।
खविअ वि [**क्षपित**] १ विनाशित, नष्ट किया हुआ; (सुर ४, ५७ ; प्राप)। २ उद्वेजित ; (गा १३४)।
खव्व पुं [**दे**] १ वाम कर, बाँया हाथ ; २ रासभ, गधा ; (दे २, ७७)।
खव्व वि [**खर्व**] वामन, कुब्ज ; (पाअ)।

खव्वुर देखो **कव्वुर**; (विक्र २८)।

खव्वुल न [**दे**] मुख, मुँह ; (दे २, ६८)।

खस अक [**दे**] खिसकना, गिर पड़ना। खसइ ; (पिंग)।

खस पुं.ब [**खस**] १ अनार्य देश-विशेष, हिन्दुस्थान की उत्तर में स्थित इस नाम का एक पहाड़ी मुलक ; (पउम ६८ ६६)। २ पुंस्त्री. खस देश में रहने वाला मनुष्य; (पण्ह १— पत्र १४; इक)।

खसखस पुं [**खसखस**] पोस्ता का दाना, उशीर, खस; (सं ६६)।

खसफस अक [**दे**] खसना, खिसकना, गिर पड़ना। वकृ—**खसफसेमाण** ; (सुर २, १५)।

खसफसि वि [**दे**] व्याकुल, अधीर। °**हूअ** वि [°**भूत**] व्याकुल बना हुआ ; (हे ४, ४२२)।

खसर देखो **कसर**=दे.कसर ; (जं २ ; स ४८०)।

खसिअ देखो **खइअ**=खचित ; (हे १, १६३)।

खसिअ न [**कसित**] रोग-विशेष, खाँसी; (हे १, १८१)।

खसिअ वि [**दे**] खिसका हुआ ; (सुपा २८१)।

खसु पुं [**दे**] रोग-विशेष, पामा ; गुजराती में 'खस'; (सण)।

खह देखो **ख** ; (ठा ३, १)।

खहयर देखो **खयर** ; (औप ; विपा १, १)।

खहयरी स्त्री [**खचरी**] १ पक्षिणी, मादा पक्षी। २ विद्याधरी, विद्याधर की स्त्री ; (ठा ३, १)।

खा } सक [**खाद्**] खाना, भोजन करना, भक्षण करना। खाइ,
खाअ } खाअइ ; खाउ ; (हे ४, २२८)। खंति ; (सुपा ३७० ; महा)। भवि—खाहिइ ; (हे ४, २२८)। कर्म—खज्जइ ; (उव)। वकृ—**खंत, खायंत, खायमाण** ; (कुरु १४ ; पउम २२, ७५ ; विपा १, १)। "खंता पिअंता इह जे मरंति, पुणोवि ते खंति पिअंति रायं !" (कुरु १४)। कवकृ—**खज्जंत, खज्जमाण** ; (पउम २२, ४३; गा २४८; पउम १७, ८१; ८२, ४०)। हेकृ—**खाइउं** ; (पि ५७३)।

खाअ वि [**ख्यात**] प्रसिद्ध, विश्रुत ; (उप ३२६ ; ६२३; नव २७ ; हे २, ६०)। °**कित्तीय** वि [°**कीर्त्तिक**] यशस्वी, कीर्तिमान् ; (पउम ७, ४८)। °**जस** वि [°**यशस्**] वही अर्थ ; (पउम ५, ८)।

खाअ वि [**खादित**] भुक्त, भक्षित; "खाउग्गिरण—" (गा ६६८ ; भवि)।

खाअ वि [**खात**] १ खुदा हुआ; २ न. खुदा हुआ जलाशय ; "खाओदगाइं" (कप्प)। ३ ऊपर में विस्तार वाली और नीचे में संकट ऐसी परिखा ; ४ ऊपर और नीचे समान रूप मे खुदी हुई परिखा ; (औप)। ५ खाई, परिखा ; (पाअ)।

खाइ स्त्री [**खाति**] खाई, परिखा ; (सुपा २३४)।

खाइ स्त्री [**ख्याति**] प्रसिद्धि, कीर्ति ; (सुपा ५२६ ; ठा ३, ४)।

खाइ [**दे**] देखो **खाइं**; (औप)।

खाइअ देखो **खइअ**=क्षायिक ; (विमे ४६ ; २१७५ ; सत्त ६७ टी)।

खाइअ वि [**खादित**] खाया हुआ, भुक्त, भक्षित ; (प्राप; निर १, १)।

खाइआ स्त्री [**दे. खातिका**] खाई, परिखा; (दे २, ७३ ; पाअ ; सुपा ५२६ ; भग ५, ७ ; पण्ह २, ५)।

खाइं अ [**दे**] १—२ वाक्य की शोभा और पुनः शब्द के अर्थ का सूचक अव्यय ; (भग ५, ४ ; औप)।

खाइग देखो **खाइअ**=क्षायिक ; (सुपा ५५१)।

खाइम न [**खादिम**] अन्न-वर्जित फल, औषध वगैरः खाद्य चीज; (सम ३६; ठा ४२; औप)।

खाइर वि [**खादिर**] खदिर-वृक्ष-संबन्धी; (हे १,६७)।

खाओवसम } देखो **खओवसमिय** ; (सुपा ५५१ ;
खाओवसमिअ } ६४८ ; सम्य २३)।

खाडइअ वि [**दे**] प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित ; (दे २, ७३)।

खाडखड पुं [**खाडखड**] चौथी नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६)।

खाडहिला स्त्री [**दे**] एक प्रकार का जानवर, गिलहरी, गिल्ली ; (पण्ह १, १; उप पृ २०५ ; विमे ३०४ टी)।

खाण न [**खादन**] भोजन, भक्षण ; "खाणेण अ पाणेण अ तह गहिओ मंडलो अडअणाए" (गा ६६२ ; पउम १४, १३६)।

खाण न [**ख्यान**] कथन, उक्ति ; (राज)।

खाणि स्त्री [**खानि**] खान, आकर ; (दे २, ६६ ; कुमा ; सुपा ३४८)।

खाणिअ वि [**खानित**] खुदवाया हुआ ; (हे ३, ५७)।

खाणी देखो **खाणि** ; (पाअ)।

खाणु } पुं [**स्थाणु**] स्थाणु, ठूठा वृक्ष; (पराह २, ५; **खाणुय** } हे २, ७; कस)।

खाम सक [**क्षमय्**] खमाना, माफी माँगना। खामेइ; (भग)। कर्म—खामिज्जइ, खामीअइ; (हे ३, १५३)। संकृ—**खामेत्ता**; (भग)।

खाम वि [**क्षाम**] १ कृश, दुर्बल; "खामपंडुकवोलं" (उप ९८६ टी; पाअ)। २ क्षीण, अशक्त; (दे ६, ४६)।

खामणा स्त्री [**क्षमणा**] क्षमापना, माफी माँगना, क्षमा-याचना; (सुपा ५६४; विवे ७९)।

खामिय वि [**क्षमित**] १ जिसके पास क्षमा माँगी गई हो वह, खमाया हुआ; (विसे २३८८; हे ३, १५२)। २ सहन किया हुआ; ३ विलम्बित, विलम्ब किया हुआ; "तिण्णि अहोरत्ता पुण न खामिया मे कयंतेण" (पउम ४३, ३१; हे ३, १५३)।

खार पुं [**क्षार**] १ क्षरण, झरना, संचलन; (ठा ८)। २ भस्म, खाक; (णाया १, १२)। ३ खार, क्षार; लवण-विशेष; (सुअ १, ७)। ४ लवण, नोन; (बृह ४)। ५ जानवर-विशेष; (पराण १)। ६ सर्जिका, सज्जी; (सुअ १, ४, २)। ७ वि कटुक स्वाद वाला, कटुक चीज; (पराण १७—पत्र ५३०)। ८ खारी चीज, लवण स्वाद वाली वस्तु; (भग ७, ६; सूअ १, ७)। °**तउसी** स्त्री [°**त्रपुषी**] कटु त्रपुषी, वनस्पति-विशेष; (पराण १७)। °**तिल्ल** न [°**तैल**] खारे से संस्कृत तैल; (पराह २, ५)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] क्षार रस वाले पानी की वर्षा; (भग ७, ६)। °**वत्तिय** वि [°**पात्रिक**] क्षार-पात्र में जिमाया हुआ; २ क्षार-पात्र का आधार-भूत; (औप)। °**वत्तिय** वि [°**वृत्तिक**] खार में फेंका हुआ, खारसे सिञ्चा हुआ; (औप; दसा ६)। °**वावी** स्त्री [°**वापी**] क्षार से भरी हुई वापी; (पराह १, १)।

खारंफिडी स्त्री [**दे**] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष; (दे २, ७३)।

खारदूसण वि [**खारदूषण**] खरदूषण का, खरदूषण-संबन्धी; (पउम ४५, १५)।

खारय न [**दे**] मुकुल, कली; (दे २,७३)।

खारायण पुं [**क्षारायण**] १ ऋषि-विशेष; २ माण्डव्य गोत्र की शाखाभूत एक गोत्र; (ठा ७)।

खारि स्त्री [**खारि**] एक प्रकार का नाप; (गा ८१२)।

खारिंभरी स्त्री [**खारिम्भरी**] खारी-परिमित वस्तु जिसमें अट सके ऐसा पात्र भर कर दूध देने वाली; (गा ८१२)।

खारिय वि [**क्षरित**] १ स्रावित, झराया हुआ; (वव ६)। २ पानी में घिसा हुआ; (भवि)।

खारी देखो **खारि**; (गा ८१२; जो १)।

खारुगणिय पुं [**क्षारुगणिक**] १ म्लेच्छ देश-विशेष; २ उसमें रहने वाली म्लेच्छ जाति; (भग १२, २)।

खारोदा स्त्री [**क्षारोदा**] नदी-विशेष; (राज)।

खाल सक [**क्षालय्**] धोना, पखारना, पानी से साफ करना। कृ—**खालणिज्ज**; (उप ३२६)।

खाल स्त्रीन [**दे**] नाला, मोरी, अशुचि निकलने का मार्ग; (ठा २, ३)। स्त्री—**खाला**; (कुमा)।

खालण न [**क्षालन**] प्रक्षालन, पखारना; (सुपा ३२८)।

खालिअ वि [**क्षालित**] धौत, धोया हुआ; (ती १३)।

खावणा स्त्री [**ख्यापना**] प्रसिद्धि, प्रकथन; "अक्खाणं खावणाभिहाणं वा" (विसे)।

खावियंत वि [**खाद्यमान**] जिसको खिलाया जाता हो वह; "कागणिमंसाइं खावियंतं" (विपा १, २—पत्र २४)।

खावियग वि [**खादितक**] जिसको खिलाया गया हो वह; "कागणिमंसखावियगा" (औप)।

खावेंत वि [**ख्यापयत्**] प्रख्याति करता हुआ, प्रसिद्धि करता; (उप ८३३ टी)।

खास पुं [**कास**] रोग-विशेष, खाँसी की बिमारी, खाँसी; (विपा १,१; सुपा ४०४; सण)।

खासि वि [**कासिन्**] खाँसी का रोग वाला; (सुपा ५७६)।

खासिअ न [**कासित**] खाँसी, खाँसना; (हे १,१८१)।

खासिअ पुं [**खासिक**] १ म्लेच्छ देश-विशेष; २ उसमें रहने वाली म्लेच्छ-जाति; (पराह १, १—पत्र १४; इक; सूअ १, ५, १)।

खिइ स्त्री [**क्षिति**] पृथिवी, धरा; (पउम २०, १५९; स ४१६)। °**गोयर** पुं [°**गोचर**] मनुष्य, मानुष, आदमी; (पउम ५३, ४३)। °**पइट्ठ** न [°**प्रतिष्ठ**] नगर-विशेष; (स ६)। °**पइठ्ठिय** न [°**प्रतिष्ठित**] १ इस नाम का एक नगर; (उप ३२० टी; स ७)। २ राजगृह नाम का नगर, जो आजकल बिहार में 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है; (ती १०)। °**सार** पुं [°**सार**] इस नाम का एक दुर्ग; (पउम ८०, ३)।

खिंखिणिया स्त्री [**किङ्किणिका**] क्षुद्र घण्टिका; (उवा)।

खिंखिणी स्त्री [**किङ्किणी**] ऊपर देखो ; (ठा १० ; णाया १, १ ; अजि २७)।

खिंखिणी स्त्री [**दे**] शृगाली, स्त्री-सियार; (दे २, ७४)।

खिंग पुं [**खिङ्ग**] रंडीबाज, व्यभिचारी ; "अणेगखिंगज-णउव्वासियरसणे" (रंभा)।

खिंस सक [**खिंस्**] निन्दा करना, गर्हा करना, तुच्छ करना। खिंसए; (आचा)। कर्म—खिंसिज्जइ; (बृह १)। कवकृ—**खिंसिज्जंत** ; (उप ५८८)। कृ—**खिंसणिज्ज**; (णाया १,३)।

खिंसण न [**खिंसन**] अवर्णवाद, निन्दा, गर्हा ; (औप)।

खिंसणा स्त्री [**खिंसना**] निन्दा, गर्हा ; (औप ; उप १३४ टी)।

खिंसा स्त्री [**खिंसा**] ऊपर देखो ; (ओघ ६० ; द्र ४२)।

खिंसिय वि [**खिंसित**] निन्दित, गर्हित ; (ठा ६)।

खिक्खिंड पुं [**दे**] कृकलास, गिरगिट, सरट; (दे २,७४)।

खक्खियंत वि [**खिखीयमान**] 'खि-खि' आवाज करता ; (पण्ह १,३—पत्र ४६)।

खिक्खिरी स्त्री [**दे**] डोम वगैरः की स्पर्श रोकने की लकड़ी ; (दे २, ७३)।

खिच्च पुंन [**दे**] खीचड़ी, कृसरा ; (दे १, १३४)।

खिज्ज अक [**खिद्**] १ खेद करना, अफसोस करना। २ उद्विग्न होना, थक जाना। खिज्जइ, खिज्जए ; (स ३४ ; गउड; पि ४५७)। कृ—**खिज्जियव्व** ; (महा ; गा ५१३)।

खिज्जणिया स्त्री [**खेदनिका**] खेद-क्रिया, अफसोस, मन का उद्वेग ; (णाया १, १६—पत्र २०२)।

खिज्जिअ न [**दे**] उपालम्भ, उलहना ; (दे २, ७४)।

खिज्जिअ वि [**खिन्न**] १ खेद-प्राप्त ; २ न. खेद ; (स ५५५)। ३ प्रणय-जन्य रोष ; (णाया १,६—पत्र १६५)।

खिज्जिअय न [**खेदितक**] छन्द-विशेष ; (अजि ७)।

खिज्जिर वि [**खेदितृ**] खेद करने वाला, खिन्न होने की आदत वाला ; (कुमा ७, ६०)।

खिड्ड न [**खेल**] खेल, क्रीड़ा, मजाक ; "खिड्डेण मए भणियं एयं" (सुपा ३०२)। "बालत्तणं खिड्डपरो गमेइ" (सत्त ६८)। °**कर** वि [°**कर**] खेल करने वाला, मजाक करने वाला ; (सुपा ७८)।

खिण्ण वि [**खिन्न**] १ खिन्न, खेद-प्राप्त ; २ श्रान्त, थका हुआ ; (दे १, १२४ ; गा २६६)।

खिण्ण देखो **खीण** ; (प्राप)।

खित्त वि [**क्षिप्त**] १ फेंका हुआ (सुर ३, १०२ ; सुपा ३५७)। २ प्रेरित ; (दे १, ६३)। **इत्त**, °**चित्त** वि [°**चित्त**] भ्रान्त-चित्त, विक्षिप्त-मनस्क, पागल ; (ठा ५, २ ; ओघ ४६७ ; ठा ५, १)। °**मण** वि [°**मनस्**] चित्त-भ्रम वाला ; (महा)।

खित्त देखो **खेत्त** ; (अणु ; प्रासू ; पडि)। °**देवया** स्त्री [°**देवता**] क्षेत्र का अधिष्ठायक देव ; (श्रा ४७)। °**वाल** पुं [°**पाल**] देव-विशेष, क्षेत्र-रक्षक देव ; (सुपा १५२)।

खित्तय न [**क्षिप्तक**] छन्द-विशेष ; (अजि २४ ; २५)।

खित्तय न [**दे**] १ अनर्थ, नुकसान ; २ वि. दीप्त, प्रज्वलित ; (दे २, ७६)।

खित्तिअ वि [**क्षैत्रिक**] १ क्षेत्र-संबन्धी ; २ पुं. व्याधि-विशेष ; "तालुपुडं गरलाणं जह बहुवाहीण खित्तिओ वाही" (श्रा १२)।

खिन्न देखो **खिण्ण**=खिन्न ; (पाअ ; महा)।

खिप्प वि [**क्षिप्र**] शीघ्र, त्वरा-युक्त। °**गइ** वि [°**गति**] १ शीघ्र गति वाला। २ पुं. अमितगति इन्द्र का एक लोक-पाल ; (ठा ४, १)।

खिप्पं अ [**क्षिप्रम्**] तुरन्त, शीघ्र, जल्दी ; (प्रासू ३७ ; पडि)।

खिप्पंत देखो **खिव**।

खिप्पामेव अ [**क्षिप्रमेव**] शीघ्र ही, तुरन्त ही; (जं ३ ; महा)।

खिर अक [**क्षर्**] १ गिरना, गिर पड़ना। २ टपकना, झरना। खिरइ; (हे ४, १७३)। वकृ—**खिरंत**; (पउम १०, ३२)।

खिरिय वि [**क्षरित**] १ टपका हुआ ; २ गिरा हुआ ; (पाअ)।

खिल न [**खिल**] अकृष्ट-भूमि, ऊषर जमीन; (पण्ह १, २—पत्र २६)।

खिलीकरण न [**खिलीकरण**] खाली करना, शून्य करना; "जुवजणधीरखिलीकरणकवाडओ वेसवाडओ" (मै ८)।

खिल्ल सक [**कीलय्**] रोकना, रुकावट डालना। "भणइ इमाणं बन्धव ! गमणं खिल्लेमि कड्ढिउं रेहं" (सुपा १३७)।

खिल्ल अक [**खेल्**] क्रीड़ा करना, खेल करना, तमाशा करना। वकृ—**खिल्लंत** ; (सुपा ३६६)।

खिल्लण न [**खेलन**] खिलौना, खेलनक ; (सुर १५,२०८)।

खिल्लहड } पुं [**दे. खिल्लहड**]। कन्द-विशेष; (श्रा २० ; **खिल्लहल** } धर्म २)।

खिव सक [**क्षिप्**] १ फेंकना। २ प्रेरना। ३ डालना। खिवइ, खिवेइ ; (महा)। वकृ—**खिवेमाण** ; (गाथा १, २)। कवकृ—**खिप्पंत**; (काल)। संकृ—**खिविय** ; (कम्म ४, ७४)। कृ—**खिवियव्व**; (सुपा १५०)।

खिवण न [**क्षेपण**] १ फेंकना, क्षेपण ; (से १२,३६)। २ प्रेरण, इधर उधर चलाना ; (से ५, ३)।

खिविय वि [**क्षिप्त**] १ क्षिप्त, फेंका हुआ ; २ प्रेरित ; (सुपा २)।

खिव्व देखो **खिव**। संकृ—"अह **खिव्विऊण** सव्वं, पोए ते पत्थिया रयणभूमिं" (धम्म १२ टी)।

खिस अक [**दे**] सरकना, खिसकना। संकृ—"नियगामे गच्छंतस्स **खिसिऊण** वाहणाहिंतो पडियं" (सुपा ५२७ ; ५२८)।

खीण देखो **खिण्ण**=खिन्न ; "कोवेत्थ सुरयखीणो" (पउम ३२, ३)।

खीण वि [**क्षीण**] १ क्षय-प्राप्त, नष्ट, विच्छिन्न ; (सम्म ६० ; हे २, ३)। २ दुर्बल, कृश ; (भग २, ५)। °**दुह** वि [°**दुःख**] दुःख-रहित; (सम १५३)। °**मोह** वि [°**मोह**] १ जिसका मोह नष्ट हो गया हो वह; (ठा ३, ४)। २ वि. बारहवाँ गुण-स्थानक ; (सम २६)। °**राग** वि [°**राग**] १ वीतराग, राग-रहित ; २ पुं. जिन-देव, तीर्थंकर देव ; (गच्छ १)।

खीयमाण वि [**क्षीयमाण**] जिसका क्षय होता जाता हो वह ; (गा ६८६ टी)।

खीर न [**क्षीर**) १ दुग्ध, दूध ; (हे २, १७ ; प्रासू १३ ; १६८)। २ पानी, जल ; (हे २, १७)। ३ पुं. क्षीरवर समुद्र का अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। ४ समुद्र-विशेष, क्षीर-समुद्र ; (पउम ६६, १८)। °**कयंब** पुं [°**कदम्ब**] इस नाम का एक ब्राह्मण-उपाध्याय ; (पउम ११, ६)। °**काओली** स्त्री [°**काकोली**] वनस्पति-विशेष, खीरविदारी; (पराण १)। °**जल** पुं [°**जल**] क्षीर-समुद्र, समुद्र-विशेष; (दीव)। °**जलनिहि** पुं [°**जलनिधि**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सुपा २६५)। °**दुम, °द्दुम** पुं [°**द्रुम**] दूध वाला पेड़, जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति ; (ओघ ३४६ ; निचू १)। °**धाई** स्त्री [**धात्री**] दूध पिलाने वाली दाई ; (णाया १,१)। °**पूर** पुं [°**पूर**] उबलता हुआ दूध ; (पराण १७)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] क्षीरवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] दूध-समान स्वाद वाले पानी की वर्षा; (तित्थ)। °**वई** स्त्री [°**वती**] प्रभूत दूध देने वाली ; (बृह ३)। °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष ; (जीव ३)। °**वारि** न [°**वारि**] क्षीर समुद्र का जल ; (पउम ६६, १८)। °**हर** पुं [°**गृह**, °**धर**] क्षीर-सागर; (वज्जा २४)। °**ासव** पुं [°**ाश्रव**] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से वचन दूध की तरह मधुर मालूम हो; २ ऐसी लब्धि वाला जीव; (पराह २,१ ; औप)।

खीरइय वि [**क्षीरकित**] संजात-क्षीर, जिसमें दूध उत्पन्न हुआ हो वह ; "तए णं साली पत्तिया वत्तिआ गब्भिया पसूया आगयगन्धा खीरा(?र)इया बद्धफला" (णाया १, ७)।

खीरि वि [**क्षीरिन्**] १ दूध वाला ; २ पुं. जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति ; (उप १०३१ टी)।

खीरिज्जमाण वि [**क्षीर्यमाण**] जिसका दोहन किया जाता हो वह ; (आचा २, १, ४)।

खीरिणी स्त्री [**क्षीरिणी**] १ दूध वाली ; (आचा २, १, ४)। २ वृक्ष-विशेष ; (पराण १—पत्र ३१)।

खीरी स्त्री [**क्षैरेयी**] खीर, पक्वान्न-विशेष ; (सुपा ६३६ ; पाअ)।

खीरोअ पुं [**क्षीरोद**] समुद्र-विशेष, क्षीर-सागर ; (हे २, १८२ ; गा ११७ ; गउड ; उप ५३० टी ; स ३४४)।

खीरोआ स्त्री [**क्षीरोदा**] इस नाम की एक नदी ; (इक ; ठा २, ३)।

खीरोद देखो **खीरोअ** ; (ठा ७)।

खीरोदक, **खीरोदय** पुं [**क्षीरोदक**] क्षीर-सागर; (णाया १, ८ ; औप)।

खीरोदा देखो **खीरोआ** ; (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

खील, **खीलग**, **खीलय** पुं [**कील**, °**क**] खीला, खूँट, खूँटो ; (स १०६ ; सूअ १, ११ ; हे १, १८१ ; कुमा)। °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] मार्ग-विशेष, जहां धूली ज्यादः रहने से खूँटे के निशान बनाये गये हों ; (सूअ १, ११)।

खीलावण न [**क्रीडन**] खेल कराना, क्रीड़ा कराना। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] खेल-कूद कराने वाली दाई; (णाया १, १—पत्र ३७)।

खीलिया स्त्री [**कीलिका**] छोटी खूँटी; (आवम)।

खीव पुं [**क्षीब**] मद-प्राप्त, मदोन्मत्त ; (दे ८, ६६)।

खु अ [**खलु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय, अवधारण ; २ वितर्क, विचार ; ३ संशय, संदेह ; ४ संभा-

वना ; ५ विस्मय, आश्चर्य ; (हे २, १६८ ; षड् ; गा ६ ; १४२ ; ४०१ ; स्वप्न ६ ; कुमा) ।

खु° देखो **खुहा** ; (पण्ह २, ४ ; सुपा १६८ ; णाया १, १३) ।

खुइ स्त्री [**क्षुति**] १ छीक ; २ छीक का निशान ; (णाया १, १६ ; भग ३, १) ।

खुंखुणय पुं [**दे**] नाक का छिद्र ; (दे २, ७६ ; पाअ) ।

खुंखुणी स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला ; (दे २, ७६) ।

खुंट पुं [**दे**] खूँट, खूँटी । °**मोडय** वि [°**मोटक**] १ खूँटे को मोड़ने वाला, उससे छूटकर भाग जाने वाला; २ पुं. इस नाम का एक हाथी ; (नाट—मृच्छ ८४) ।

खुंडय वि [**दे**] स्खलित; स्खलना-प्राप्त ; (दे २, ७१) ।

खुंपा स्त्री [**दे**] वृष्टि को रोकने के लिए बनाया जाता एक तृणमय उपकरण ; (दे २, ७५) ।

खुंभण वि [**क्षोभण**] क्षोभ उपजाने वाला ; (पण्ह १, १—पत्र २३) ।

खुज्ज } **खुज्जय** } वि [**कुब्ज**] १ कूबड़ा; २ वामन; (हे १, १८१; गा ५३४) । ३ वक्र, टेढ़ा ; (ओघ) । ४ एक पार्श्व से हीन ; (पव ११०) । ५ न. संस्थान-विशेष, शरीर का वामन आकार ; (ठा ६ ; सम १४६ ; औप) । स्त्री—**खुज्जा**; (णाया १, १) ।

खुज्जिय वि [**कुब्जिन्**] कूबड़ा ; (आचा) ।

खुट्ट सक [**तुड्**] १ तोड़ना, खण्डित करना, टुकड़ा करना । २ अक. खूटना, क्षीण होना । ३ तूटना, त्रुटित होना । खुट्टइ ; (नाट—साहित्य २२६ ; हे ४, ११६)। खुट्टंति; (उव) ।

खुट्ट वि [**दे**] त्रुटित, खण्डित, छिन्न ; (हे २, ७४ ; भवि) ।

खुड देखो **खुट्ट=तुड्** । खुडइ ; (हे ४, ११६) । खुडेंति; (से ८, ४८) । वकृ—" पवंगभिन्नमत्थया **खुडंत**दित्तमोत्तिया " (पउम ५३, ११२ ; स ४४८) । संकृ—**खुडिऊण** ; (स ११३) ।

खुडक्किअ [**दे**] देखो **खुडुक्किअ** ; (गा २२६) ।

खुडिअ वि [**खण्डित**] त्रुटित, खण्डित, विच्छिन्न ; (हे १, ५३ ; षड्) ।

खुडुक्क अक [**दे**] १ नीचे उतरना । २ स्खलित होना । ३ शल्य की तरह चुभना । ४ गुस्सा से मौन रहना । खुडुक्कइ ; (हे ४, ३९५) । वकृ—**खुडुक्कंत** ; (कुमा) ।

खुडुक्किअ वि [**दे**] १ शल्य की तरह चुभा हुआ, खटका हुआ ; (उप ३५५) । २ रोष-मूक, गुस्सा से मौन धारण करने वाला । स्त्री—°**आ** ; (गा २२६ अ) ।

खुड्ड } **खुड्डग** } वि [**दे. क्षुद्र, क्षुल्लक**] १ लघु, छोटा; (दे २, ७४ ; कप्प ; दस ३ ; आचा २,२,३ ; उत्त १) । २ नीच, अधम, दुष्ट ; (पुप्फ ४४१) । ३ पुं. छोटा साधु, लघु शिष्य ; (सूअ १, ३, २) । ४ पुंन. अंगुलीय-विशेष, एक प्रकार की अंगूठी ; (औप ; उप २०४) ।

खुड्डमड्डा अ [**दे**] १ बहु, अत्यन्त ; २ फिर फिर ; (निचू २०) ।

खुड्डय देखो **खुड्ड** ; (हे २, १७४; षड् ; कप्प; सम ३५ ; णाया १, १) ।

खुड्डाग } **खुड्डाय** } देखो **खुड्डग** ; (औप ; पण्ण ३६ ; णाया १, ७ ; कप्प) । °**णियंठ** न [°**नैर्ग्रन्थ**] उत्तराध्ययन सूत्र का छठवाँ अध्ययन ; (उत्त ६) ।

खुड्डिअ न [**दे**] सुरत, मैथुन, संभोग ; (दे २, ७५)।

खुड्डिआ स्त्री [**दे. क्षुद्रिका**] १ छोटी, लघु; (ठा २, ३; आचा २, २, ३)। २ डबरा, नहीं खुदा हुआ छोटा तलाव; (जं १ ; पण्ह २, ५) ।

खुणुक्खुडिआ स्त्री [**दे**] घ्राण, नाक, नासिका ; (दे २, ७६) ।

खुण्ण वि [**क्षुण्ण**] १ मर्दित ; (गा ४४५; निचू १) । २ चूर्णित ; (दे ५, ४५) । ३ मग्न, लीन ; " अजरामरपहखुण्णा साहू सरणं सुकयपुण्णा " (चउ ३८ ; संथा)।

खुण्ण वि [**दे**] परिवेष्टित ; (दे २, ७५) ।

खुत्त वि [**दे**] निमग्न, डूबा हुआ ; (दे २, ७४ ; णाया १, १ ; गा २७६ ; ३२४ ; संथा ; गउड) ।

°**खुत्तो** अ [**कृत्वस्**] वार, दफा; (उव; सुर १४, ६१)।

खुद्द वि [**क्षुद्र**] तुच्छ, नीच, दुष्ट, अधम ; (पण्ह १, १ ; ठा ६) ।

खुद्द न [**क्षौद्र्य**] क्षुद्रता, तुच्छता, नीचता; (उप ६१५) ।

खुद्दिमा स्त्री [**क्षुद्रिमा**] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७—पत्र ३६३) ।

खुद्ध वि [**क्षुब्ध**] क्षोभ-प्राप्त, घबड़ाया हुआ ; (सुपा ३२५) ।

खुधिय वि [**क्षुधित**] क्षुधातुर, भूखा; (सूअ १, ३,१) ।

खुन्न देखो खुण्ण = क्षुराण ; (वि ५६८) ।

खुन्न देखो खुण्ण = (दे) ; (पाञ्र) ।

खुप्प अक [मस्ज्] डूबना, निमग्न होना । खुप्पइ ; (हे ४, १०१) । वकृ—खुप्पंत ; (गउड ; कुमा ; ओघ २३ ; से १३, ६७) । हेकृ—खुप्पिउं; (तंदु) ।

खुप्पिवासा स्त्री [क्षुत्पिपासा] भूख और प्यास ; (पि ३१८) ।

खुब्भ अक [क्षुभ्] १ क्षोभ पाना, क्षुभित होना । २ नीचे डूबना । वकृ—खुब्भंत ; (ठा ७—पत्र ३८३) ।

खुब्भण न [क्षोभण] क्षोभ, घबड़ाहट ; (राज) ।

खुभ अक [क्षुभ्] डरना, घबड़ाना । खुभइ ; (रयण १८) । कृ—खुभियव्व; (पराह २, ३) ।

खुभिअ वि [क्षुभित] १ क्षोभ-युक्त, घबड़ाया हुआ ; (पराह १, ३) । २ न. क्षोभ, घबड़ाहट ; (ओघ) । ३ कलह, झगड़ा ; (बृह ३) ।

खुम्मिय वि [दे] नमित, नमाया हुआ; (णाया १,१—पत्र ४७) ।

खुर पुं [खुर] जानवर के पाँव का नख; (सुर १, २४८ ; गउड ; प्रासू १७१) ।

खुर पुं [क्षुर] छूरा, अस्तूरा ; (णाया १, ८ ; कुमा ; प्रयौ १०७) । °पत्त न [°पत्र] अस्तूरा, छूरा ; (विपा १, ६) ।

खुरप्प पुं [क्षुरप्र] १ घास काटने का अस्त्र-विशेष, खुरपा; (सम १३४) । २ शर-विशेष, एक प्रकार का बाण ; (वेणी ११७) ।

खुरसाण पुं [खुरशान] १ देश-विशेष ; (पिंग) । २ खुरशान देश का राजा ; (पिंग) ।

खुरहखुडी स्त्री [दे] प्रणय-कोप ; (षड्) ।

खुरासाण देखो खुरसाण ; (पिंग) ।

खुरि वि [खुरिन्] खुर वाला जानवर ; (आव ३) ।

खुरु पुं [खुरु] प्रहरण-विशेष, आयुध-विशेष ; (सुर १३, १६३) ।

खुरुडुक्खुडी स्त्री [दे] प्रणय-कोप ; (दे २, ७६) ।

खुरुप्प देखो खुरप्प ; (पउम ५६, १६; स ३८४) ।

खुलिअ देखो खुडिअ ; (पिंग) ।

खुलुह पुं [दे] गुल्फ, पैर की गाँठ, फीली ; (दे २, ७५ ; पाञ्र) ।

खुल्ल न [दे] कुटी, कुटीर ; (दे २, ७४) ।

खुल्ल, खुल्लग वि [क्षुल्ल, °क] १ छोटा, लघु, क्षुद्र; (पराग १) । २ पुं द्वीन्द्रिय जीव-विशेष ; (जीव १) ।

खुल्लण (अप) देखो खुड्ड ; (पिंग) ।

खुल्लय वि [क्षुल्लक] १ लघु, क्षुद्र, छोटा ; (भवि) । २ कपर्दक-विशेष, एक प्रकार की कौड़ी ; (णाया १, १८—पत्र २३५) ।

खुल्लिरी स्त्री [दे] संकेत ; (दे २, ७०) ।

खुव पुं [क्षुप] जिसकी शाखा और मूल छोटे होते हैं ऐसा एक वृक्ष ; (णाया १, १—पत्र ६५) ।

खुवय पुं [दे] तृण-विशेष, कराटकि-तृण; (दे २, ७५) ।

खुव्व देखो खुभ । खुव्वइ; (षड्) ।

खुव्वय न [दे] पत्ते का पुड़वा ; (वव २) ।

खुह देखो खुभ । कृ—खुहियव्व ; (सुपा ६१६) ।

खुहा स्त्री [क्षुध्] भूख, बुभुक्षा ; (महा ; प्रासू १७३) । °परिसह, °परीसह पुं [°परिषह, °परीषह] भूख की वेदना को शान्ति से सहन करना ; (उत्त २ ; पंचा १) ।

खुहिअ वि [क्षुभित] १ क्षोभ-प्राप्त ; (से १, ४६ ; सुपा २४१) । २ क्षोभ, संत्रास ; (ओघ ७) ।

खूण न [क्षूण] नुकसान, हानि; (सुर ४, ११३ ; महा) । २ अपराध, गुनाह ; (महा) । ३ न्यूनता, कमी ; (सुपा ७ ; ४३०) ।

खेअ सक [खेदय्] खिन्न करना, खेद उपजाना । खेएइ ; (विसे १४७२ ; महा) ।

खेअ पुं [खेद] १ खेद, उद्वेग, शोक; (उप ७२८ टी) । २ तकलीफ, परिश्रम ; (स ३१५) । ३ संयम, विरति ; (उत्त १५) । ४ थकावट, श्रान्ति; (आचा) । °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] निपुण, कुशल, चतुर, जानकार ; (उप ६०८ ; ओघ ६४७) ।

खेअ देखो खेत्त ; (सुअ १, ६ ; आचा) ।

खेअ पुं [क्षेप] त्याग, मोचन ; (से १२, ४८) ।

खेअण न [खेदन] १ खेद, उद्वेग । २ वि. खेद उपजाने वाला; (कुमा) ।

खेअर देखो खयर ; (कुमा ; सुर २, ६) । °ाहिव पुं [°ाधिप] विद्याधरों का राजा ; (पउम २८, ५७) । °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] विद्याधरों का राजा ; (पउम २८, ४४) ।

खेअरिंद पुं [खेचरेन्द्र] खेचरों का राजा ; (पउम ६, ५३) ।

खेअरी देखो खहयरी ; (कुमा) ।

खेआलु वि [दे] १ निःसह, मन्द, आलसी ; २ अ-सहिष्णु, ईर्ष्यालु ; (दे २, ७७) ।
खेइय वि [**खेदित**] खिन्न किया हुआ; (स ६३४) ।
खेचर देखो **खेअर** ; (ठा ३, १) ।
खेज्जणा स्त्री [**खेदना**] खेद—सूचक वाणी, खेद ; (णाया १, १८) ।
खेड सक [**कृष्**] खेती करना, चास करना । खेडइ ; (सुपा २७६) । "अह अन्नया य दुन्निवि हलाइं खेडंति अप्प-च्छन्देव" (सुपा २३७) ।
खेड न [**खेट**] १ धूली का प्राकार वाला नगर ; (औप ; पराह १, २) । २ नदी और पर्वतों से वेष्टित नगर ; (सुअ २, २) । ३ पुं. मृगया, शिकार ; (भवि) ।
खेडग न [**खेटक**] फलक, ढाल ; (पराह १, ३) ।
खेडण न [**कर्षण**] खेती करना ; (सुपा २३७) ।
खेडण न [**खेटन**] खदेड़ना, पीछे हटाना; (उप २२६) ।
खेडणअ न [**खेलनक**] खिलौना; (नाट—रत्ना ६२) ।
खेडय पुं [**क्ष्वेटक**] १ विष, जहर ; (हे २, ६) । २ ज्वर-विशेष ; (कुमा) ।
खेडय वि [**स्फेटक**] नाशक, नाश करने वाला ; (हे २, ६; कुमा) ।
खेडय न [**खेटक**] छोटा गाँव ; (पाअ ; सुर २, १६२) ।
खेडावग वि [**खेलक**] खेल करने वाला, तमासगिर (उप पृ १८८) ।
खेडिअ वि [**कृष्ट**] हल से विदारित ; (दे १, १३६) ।
खेडिअ पुं [**स्फेटिक**] १ नाश वाला, नश्वर ; २ अना-दर वाला ; (हे २, ६) ।
खेड्ड अक [**रम्**] क्रीड़ा करना, खेल करना । खेड्डइ ; (हे ४, १६८)। खेड्डंति ; (कुमा) ।
खेड्ड, **खेड्डय** न [**खेल**] १ क्रीड़ा, खेल, तमाशा, मजाक ; (हे ४, १५४ ; महा; सुपा २७८ ; स ५०६) । २ बहाना, छल ; "मयखेड्डयं विहेऊण" (सुपा ५२३) ।
खेड्डा स्त्री [**क्रीडा**] क्रीड़ा, खेल, तमाशा ; (औप ; पउम ८, ३७ ; गच्छ २) ।
खेड्डिया स्त्री [**दे**] बारी, दफा ; " भद्दे! पच्छिमा खेड्डिया" (स ४८५) ।
खेत्त पुंन [**क्षेत्र**] १ आकाश ; (विसे २०८८) । २ कृषि-भूमि, खेत ; (बृह १) । ३ जमीन, भूमि ; ४ देश, गाँव, नगर वगैरः स्थान ; (कप्प ; पंचू ; विसे) । ५ भार्या, स्त्री ; (ठा १०) । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ देश का रिवाज ; (बृह ६) । २ क्षेत्र-संबन्धी अनुष्ठान ; ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें क्षेत्र-विषयक आचार का प्रतिपादन हो; (पंचू)। °**पलिओवम** न [°**पल्योपम**] काल का नाप-विशेष ; (अणु) । °**ारिय** पुं [°**ार्य**] आर्य भूमि में उत्पन्न मनुष्य ; (पराण १) । देखो **खित्त=**क्षेत्र।
खेत्ति वि [**क्षेत्रिन्**] क्षेत्र वाला, क्षेत्र का स्वामी ; (विसे १४६२) ।
खेम न [**क्षेम**] १ कुशल, कल्याण, हित ; (पउम ६५, १७ ; गा ४६६ ; भत्त ३६ ; रयण ६) । २ प्राप्त वस्तु का परिपालन ; (णाया १, ५) । ३ वि. कुशलता-युक्त, हित-कर, उपद्रव-रहित ; (णाया १, १ ; दस ७) । ४ पुं. पाटलिपुत्र के राजा जितशत्रु का एक अमात्य ; (आचू १) । °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] १ नगरी-विशेष; (पउम २०, ७)। २ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३) ।
खेमंकर पुं [**क्षेमङ्कर**] १ कुलकर पुरुष-विशेष ; (पउम ३, ५२) । २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ कुलकर-पुरुष ; (सम १५३) । ३ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि; (पउम २१, ८०)। ५ वि. कल्याण-कारक, हित-जनक ; (उप २११ टी) ।
खेमंधर पुं [**क्षेमन्धर**] १ कुलकर पुरुष-विशेष; (पउम ३, ५२) । २ ऐरवत क्षेत्र का पाँचवाँ कुलकर पुरुष-विशेष ; (सम १५३) । ३ वि. क्षेम-धारक, उपद्रव-रहित ; (राज)।
खेमय पुं [**क्षेमक**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक अन्तकृद् जैन मुनि ; (अंत) ।
खेमलिज्जिया स्त्री [**क्षेमलिया**] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प) ।
खेमा स्त्री [**क्षेमा**] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३) । २ क्षेमपुरी-नामक नगरी-विशेष; (पउम २०, १०) ।
खेरि स्त्री [**दे**] १ परिशाटन, नाश ; "धरणखेरिं वा" (बृह. २) । २ खेद, उद्वेग ; ३ उत्कण्ठा, उत्सुकता ; (भवि) ।
खेल अक [**खेल्**] खेलना, क्रीड़ा करना, तमाशा करना । खेलइ ; (कप्पू) । खेलउ ; (गा १०६) । वकृ—**खेलंत** ; (पि २०६) ।
खेल पुं [**श्लेष्मन्**] श्लेष्मा, कफ, निष्ठीवन, थूथू ; (सम १० ; औप ; कप्प ; पडि) ।
खेलण, **खेलणय** न [**खेलन**, °**क**] १ क्रीड़ा, खेल । २ खिलौना ; (आक ; स १२७) ।

खेलोसहि स्त्री [**श्लेष्मौषधि**] १ लब्धि-विशेष, जिससे श्लेष्म ओषधि का काम देने लगे ; (पण्ह २, १ ; संति ३)। २ वि. ऐसी लब्धि वाला ; (आवम ; पव २७०)।

खेल्ल देखो **खेल**=खेल् । खेल्लइ ; (पि २०६) । वकृ—**खेल्लमाण** ; (स ४४)। प्रयो, संकृ—**खेल्लावेऊण** ; पि २०६)।

खेल्ल देखो **खेल**=श्लेष्मन ; (राज) ।

खेल्लण देखो **खेलण** ; (स २६५)।

खेल्लावण } न [**खेलनक**] १ खेल कराना, क्रीड़ा कराना। **खेल्लावणय** } २ न. खिलौना ; (उप १४२ टी)। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] खेल कराने वाली दाई ; (राज) ।

खेल्लिअ न [**दे**] हसित, हँसी, ठट्ठा ; (दे २, ७६)।

खेल्लुड देखो **खल्लूड** ; (राज) ।

खेव पुं [**क्षेप**] १ क्षेपण, फेंकना, (उप ७२८ टी) । २ न्यास, स्थापना ; (विसे ६१२) । ३ संख्या-विशेष ; (कम्म ४, ८१ ; ८४) ।

खेव पुं [**खेद**] उद्वेग, खेद, क्लेश ; "न हु कोइ गुरू खेवं वच्चइ सीसेसु सत्तिसुमहेसु (?); (पउम ६७, २३)।

खेवण न [**क्षेपण**] प्रेरण ; (णाया १, २)।

खेवय वि [**क्षेपक**] फेंकने वाला ; (गा २४२) ।

खेविय वि [**खेदित**] खिन्न किया हुआ ; (भवि) ।

खेह पुंन [**दे**] धूली, रज ; "वग्गिरतुरंगखरखुरुक्खयखेहा-इन्नरिक्खपहं" (सुर ११, १७१) ।

खोंटग } पुं [**दे**] खूँटी, खूँटा ; (उप २७८ ; स २६३)। **खोंटय** }

खोक्ख अक [**खोख्**] वानर का बोलना, बन्दर का आवाज करना। खोक्खइ ; (गा १७१ अ) ।

खोक्खा } स्त्री [**खोखा**] वानर की आवाज ; (गा ५३२)। **खोखा** }

खोखुब्भ अक [**चोक्षुभ्य्**] अत्यन्त भयभीत होना, विशेष व्याकुल होना। वकृ—**खोखुब्भमाण** ; (औप; पण्ह १,३)।

खोट्ट सक [**दे**] खटखटाना, ठकठकाना, ठोकना । कवकृ—**खोट्टिज्जंत** ; (ओघ ५६७ टी) । संकृ—**खोट्टेउं** ; (ओघ ५६७ टी) ।

खोट्टी स्त्री [**दे**] दासी, चाकरानी ; (दे २, ७७) ।

खोड पुं [**दे**] १ सीमा-निर्धारक काष्ठ, खूँटा ; २ वि. धार्मिक, धर्मिष्ठ ; (दे २, ८०) । ३ खञ्ज, लंगड़ा ; (दे २, ८० ; पिंग)। ४ शृगाल, सियार; (मृच्छ १८३)। ५ प्रदेश, जगह ; "सिंगक्खोडे कलहो" (ओघ ७६ भा) । ६ प्रस्फोटन, प्रमार्जन ; (ओघ २६५) । ७ न. राजकुल में देने योग्य सुवर्ण वगैरः द्रव्य ; (वव १) ।

खोडपज्जालि पुं [**दे**] स्थूल काष्ठ की अग्नि; (दे २,७०)।

खोडय पुं [**क्ष्वोटक**] नख से चर्म का निष्पीड़न ; (हे २, ६)।

खोडय पुं [**स्फोटक**] फोड़ा, फुनसी ; (हे २, ६) ।

खोडिय पुं [**खोटिक**] गिरनार पर्वत का क्षेत्रपाल देवता ; (ती २) ।

खोडी स्त्री [**दे**] १ बड़ा काष्ठ ; (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। २ काष्ठ की एक प्रकार की पेटी ; (महा) ।

खोणि स्त्री [**क्षोणि**] पृथिवी, धरणी ; (सण) । °**वइ** पुं [°**पति**] राजा, भूपति ; (उप ७६८ टी) ।

खोणिंद पुं [**क्षोणीन्द्र**] राजा, भूमि-पति ; (सण) ।

खोणी देखो **खोणि** ; (सुर १२, ६१; सुपा २३८; रंभा)।

खोद पुं [**क्षोद**] १ चूर्णन, विदारण ; (भग १७, ६) । २ इक्षु-रस; ऊख का रस; (सुअ १,६) । °**रस** पुं [°**रस**] समुद्र-विशेष ; (दीव) । °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष; (जीव ३) ।

खोदोअ } पुं [**क्षोदोद**] १ समुद्र-विशेष, जिसका पानी **खोदोद** } इक्षु-रस के तुल्य मधुर है ; (जीव ३ ; इक) । २ मधुर पानी वाली वापी ; (जीव ३) । ३ न. मधुर पानी, इक्षु-रस के समान मिष्ट जल; (पण्ण १) ।

खोद्द न [**क्षौद्र**] मधु, शहद; (भग ७, ६) ।

खोभ सक [**क्षोभय्**] १ विचलित करना, धैर्य से च्युत करना। २ आश्चर्य उपजाना । ३ रंज पैदा करना । खोभेइ; (महा) । वकृ—**खोभंत** ; (पउम ३, ६६ ; सुपा ४६३)। हेकृ—**खोभित्तए, खोभइउं** ; (उवा ; पि ३१६) ।

खोभ पुं [**क्षोभ**] १ विचलता, संभ्रम ; (आव ५) । २ इस नाम का रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३२) ।

खोभण न [**क्षोभण**] क्षोभ उपजाना, विचलित करना; "तेलोक्कखोभणकरं" (पउम २, ८२ ; महा) ।

खोभिय वि [**क्षोभित**] विचलित किया हुआ ; (पउम ११७, ३१) ।

खोम } न [**क्षौम**] १ कार्पासिक वस्त्र, कपास का बना **खोमग** } हुआ वस्त्र ; (णाया १, १—पत्र ४३ टी ; उवा १) । २ सन का बना हुआ वस्त्र ; (सम १२३ ; भग ११,११ ; पण्ह २,४)। ३ रेशमी वस्त्र; (उप१४६; स २००)। ४ वि. अतसी-संबंधी, सन-संबन्धी , (ठा १० ; भग १,१

११)। °पसिण न [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे वस्त्र में देवता का आह्वान किया जाता है ; (ठा १०)।

खोमिय न [क्षौमिक] १ कपास का बना हुआ वस्त्र (ठा ३, ३)। २ सन का बना हुआ वस्त्र ; (कप्प)।

खोय देखो **खोद** ; (सम १५१ ; इक)।

खोर } न [दे] पात्र-विशेष, कचोलक ; (उप पृ ३१५ ;
खोरय } णंदि)।

खोल पुं [दे] १ छोटा गधा ; (दे २, ८०)। २ वस्त्र का एक देश ; (दे २, ८० ; ५, ३० ; बृह १)। ३ मद्य का नीचला कीट-कर्दम ; (आचा २, १, ८ ; बृह १)।

खोल्ल न [दे] कोटर, गह्वर " खोल्लं कोत्थरं " (निचू १५)।

खोसलय वि [दे] दन्तुर, लम्बे और बाहर निकले हुए दाँत वाला ; (दे २,७७)।

खोह देखो **खोभ**=क्षोभय्। खोहइ ; (भवि)। वकृ—**खोहेंत** ; (से १५, ३३)। कवकृ—**खोहिज्जंत** ; (से २, ३)।

खोह देखो **खोभ**=क्षोभ ; (पण्ह १, ४ ; कुमा ; सुपा ३६७)।

खोहण देखो **खोभण** ; (श्रा १२ ; सुपा ५०२)।

खोहिय देखो **खोभिय** ; (सण)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवे** खआराइसद्दसंकलणो
एआरहमो तरंगो समत्तो।



ग

ग पुं [**ग**] व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है; (प्रामा; प्राप)।

ग वि [°**ग**] १ जाने वाला; २ प्राप्त होने वाला; जैसे—पारग, वसग; (आचा ; महा)।

गइ स्त्री [**गति**] १ ज्ञान, अवबोध ; (विसे २५०२)। २ प्रकार. भेद ; (से १, ११)। ३ गमन, चलन, देशान्तर-प्राप्ति ; (कुमा)। ४ जन्मान्तर-प्राप्ति, भवान्तर-गमन ; (ठा १, १ ; दं)। ५ देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, नरक और मुक्त जीव की अवस्था, देवादि-योनि ; (ठा ५, ३)। °**तस** पुं [°**त्रस**] अग्नि और वायु के जीव ; (कम्म ३, १३ ; ४, १६)। °**नाम** न [°**नामन्**] देवादि-गति का कारण-भूत कर्म ; (सम ६७)। °**प्पवाय** पुं [°**प्रपात**] १ गति की नियतता ; (पगण १६)। २ ग्रन्थांश-विशेष ; (भग ८, ७)।

गइंद पुं [**गजेन्द्र**] १ ऐरावण हाथी, इन्द्र-हस्ती ; २ श्रेष्ठ हाथी ; (गउड ; कुमा)। °**पय** न [°**पद**] गिरनार पर्वत पर का एक जल-तीर्थ ; (ती ३)।

गउ } पुं [**गो**] बैल, वृषभ, साँढ़ ; (हे १, १५८)।
गउअ } °**पुच्छ** पुंन [°**पुच्छ**] १ बैल का पूँछ ; २ बाण-विशेष ; (कुमा)।

गउअ पुं [**गवय**] गो-तुल्य आकृति वाला जंगली पशु-विशेष ; (कुमा)।

गउआ स्त्री [**गो**] गैया, गौ ; (हे १, १५८)।

गउड पुं [**गौड**] १ स्वनाम-ख्यात देश, बंगाल का पूर्वी भाग ; (हे १, २०२ ; सुपा ३८६)। २ गौड देश का निवासी ; (हे १, २०२)। ३ गौड़ देश का राजा ; (गउड ; कुमा)। °**वह** पुं [°**वध**] वाक्पतिराज का बनाया हुआ प्राकृत-भाषा का एक काव्य-ग्रन्थ ; (गउड)।

गउण वि [**गौण**] अ-प्रधान, अ-मुख्य ; (दे १, ३)।

गउणी स्त्री [**गौणी**] शक्ति-विशेष, शब्द की एक शक्ति ; (दे १, ३)।

गउरव देखो **गारव** ; (कुमा; हे १, १६३)।

गउरविय वि [**गौरवित**] गौरव-युक्त किया हुआ, जिसका आदर—सम्मान किया गया हो वह; "तज्जणयाइं तत्थागयाइं थेवेहिं चेव दियहेहिं, गउरवियाइं रयणायरेण" (सुपा ३५६ ; ३६०)।

गउरी स्त्री [**गौरी**] १ पार्वती, शिव-पत्नी; (सुपा १०६)। २ गौर वर्ण वाली स्त्री ; ३ स्त्री-विशेष ; (कुमा)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] पार्वती का पुत्र, स्कन्द, कार्तिकेय; (सुपा ४०१)।

गंअ देखो **गय** = गत ; " भीया जहागयगइं पडिवज्ज गंए " (रंभा)।

गंग पुं [**गङ्ग**] मुनि-विशेष, द्विक्रिय मत का प्रवर्तक आचार्य; (ठा ७ ; विसे २४२५)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक जैन मुनि, जो षष्ठ वासुदेव के पूर्व-जन्म के गुरु थे; (स १५३)। २ नववें वासुदेव के पूर्वजन्म का नाम ; (पउम २०, १७१)। ३ इस नाम का एक जैन श्रेष्ठी ; (भग १६, ५)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] एक सार्थवाह की स्त्री का नाम ; (विपा १, ७)।

गंग° देखो **गंगा**। °**प्पवाय** पुं [°**प्रपात**] हिमाचल पर्वत पर का एक महान् ह्रद, जहां से गंगा निकलती है; (ठा २, ३)। °**सोअ** पुं [°**स्रोतस्**] गंगा नदी का प्रवाह ; (पि ८५)।

गंगली स्त्री [**दे**] मौन, चुप्पी ; (सुपा २७८ ; ४८७)।

गंगा स्त्री [**गङ्गा**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध नदी ; (कस ; सम २७ ; कप्प)। २ स्त्री-विशेष ; (कुमा)। ३ गोशालक के मत से काल-परिमाण-विशेष ; (भग १५)। ४ गंगा नदी की अधिष्ठायिका देवी; (आवम)। ५ भीष्मपितामह की माता का नाम ; (णाया १, १६)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] हिमाचल पर्वत पर स्थित ह्रद-विशेष, जहां से गंगा निकलती है ; (ठा ८)। °**कूड** न [°**कूट**] हिमाचल पर्वत का एक शिखर ; (ठा २, ३)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष, जहां गंगा-देवी का भवन है; (ठा २, ३)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] गंगा की अधिष्ठायिका देवी, देवी-विशेष; (इक)। °**वत्त** पुं [°**वर्त्त**] आवर्त-विशेष ; (कप्प)। °**सय** न [°**शत**] गोशालक के मत में एक प्रकार का काल-परिमाण ; (भग १५)। °**सागर** पुं [°**सागर**] प्रसिद्ध तीर्थ-विशेष, जहां गंगा समुद्र में मिलती है; (उत्त १८)।

गंगेअ पुं [**गाङ्गेय**] १ गंगा का पुत्र, भीष्मपितामह ; (णाया १, १६; वेणी १०४)। २ द्वैक्रिय मत का प्रवर्तक आचार्य ; (आचू १)। ३ एक जैन मुनि, जो भगवान् पार्श्वनाथ के वंश के थे ; (भग ६, ३२)।

गंछ } पुं [**दे**] वरुड, इस नाम की एक म्लेच्छ जाति ;
गंछय } (दे २, ८४)।

गंज पुं [**दे**] याल ; (दे २, ८१)।
गंज पुं [**गञ्ज**] भोज्य-विशेष, एक प्रकार की खाद्य वस्तु ; (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] तृण, लकड़ी वगैरः इन्धन रखने का स्थान ; (निचू १५)।
गंजण न [**गञ्जन**] १ अपमान, तिरस्कार; (सुपा ४८०)।
"वत्तिणवि रायुप्पन्ना, बज्झंति गया न चेव केसरिणो।
संभाविज्जइ मरणं, न गंजणं धीरपुरिसाणं" (वज्जा ४२)।
२ कलंक, दाग ; "गंजणरहिओ जम्मो" (वज्जा १८)।
गंजा स्त्री [**गञ्जा**] सुरा-गृह, मद्य की दुकान ; (दे २, ८५ टी)।
गंजिअ पुं [**गाञ्जिक**] कल्य-पाल, दारू बेचने वाला, कलाल; (दे २, ८५ टी)।
गंजिअ वि [**गञ्जित**] १ पराजित, अभिभूत ; "तग्गरिम-गंजिओ इव" (उप ९८६ टी)। २ हत, मारा हुआ, विनाशित ; (पिंग)। ३ पीड़ित ; (हे ४, ४०९)।
गंजिल्ल वि [**दे**] १ वियोग-प्राप्त, वियुक्त ; २ भ्रान्त-चित्त, पागल ; (दे २, ८३)।
गंजोल वि [**दे**] समाकुल, व्याकुल ; (षड्)।
गंजोल्लिअ वि [**दे**] १ रोमाञ्चित, जिसके रोम खड़े हुए हों वह ; (दे २, १०० ; भवि)। २ न. हसाने के लिए किया जाता अंग-स्पर्श, गुदगुदी, गुदगुदाहट ; (दे २, १००)।
गंठ सक [**ग्रन्थ्**] १ गठना, गूँथना। २ रचना, बनाना। गंठइ ; (हे ४, १२० ; षड्)।
गंठ देखो **गंथ** ; (राय ; सुअ २, ५ ; धर्म २)।
गंठि पुंस्त्री [**ग्रन्थि**] १ गाँठ, जोड़ ; २ बाँस आदि की गिरह, पर्व ; (हे १, ३५ ; ४, १२०)। ३ गठरी, गाँठ; (णाया १, १ ; औप)। ४ रोग-विशेष ; (लहुअ १५)। ५ राग-द्वेष का निबिड़ परिणाम-विशेष ; (उप २५३),
"गंठित्ति सुदुब्भेओ कक्खडघणरूढगूढगंठि व्व।
जीवस्स कम्मजणिओ घणरागद्दोसपरिणामो" (विसे ११९५)।
°**छेअ** पुं [°**च्छेद**] गाँठ तोड़ने वाला, चोर-विशेष, पाकेट-मार ; (दे २, ८६)। °**भेय** पुं [°**भेद**] ग्रन्थि का भेदन ; (धर्म १)। °**भेयग** वि [°**भेदक**] १ ग्रन्थि को भेदने वाला ; २ पुं. चोर-विशेष; (णाया १, १८; पण्ह १, ३)। °**वण्ण** पुं [°**पर्ण**] सुगन्धि गाछ विशेष ; (कप्पू)। °**सहिय** वि [°**सहित**] १ गाँठ-युक्त; २ न. प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष ; (धर्म २; पडि)।
गंठिम न [**ग्रन्थिम**] १ ग्रन्थन से बनी हुई माला वगैरः (पण्ह २, ५ ; भग ९, ३३)। २ गुल्म-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३२)।
गंठिय वि [**ग्रथित**] गूँथा हुआ, गठा हुआ ; (कुमा)।
गंठिय वि [**ग्रन्थिक**] गाँठ वाला ; (सूअ २, ५)।
गंठिल्ल वि [**ग्रन्थिमत्**] ग्रन्थि-युक्त, गाँठ वाला; (राज)।
गंड पुं [**दे**] १ वन, जंगल ; २ दाण्डपाशिक, कोटवाल ; ३ छोटा मृग ; (दे २, ९९)। ४ नापित, नाई ; (दे २, ९९; आचा २, १,२)। ५ न. गुच्छ, समूह ; "कुसुमदामगंडमुब्बद्धियं" (महा)।
गंड पुंन [**गण्ड**] १ गाल, कपोल ; (भग ; सुपा ८)। २ रोग-विशेष, गण्डमाला ; "ता मा करेह बोयं गंडोवरि-फोडियातुल्लं" (उप ७६८ टी ; आचा)। ३ हाथी का कुम्भस्थल ; (पव २९)। ४ कुच, स्तन ; (उत्त ८)। ५ ऊख का जत्था, इक्षु-समूह ; (उप पृ ३५९)। ६ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ७ फोड़ा, स्फोटक ; (उत्त १०)। ८ गाँठ, ग्रन्थि ; (अवि १७ ; अभि १८४)।
°**भेअ**, °**भेअअ** पुं [°**भेदक**] चोर-विशेष, पाकेटमार ; (अवि १७; अभि १८४)। °**माणिया** स्त्री [°**माणिका**] धान्य का एक प्रकार का नाप ; (राय)। °**माला** स्त्री [°**माला**] रोग-विशेष, जिसमें ग्रीवा फूल जाती है; (सण)। °**यल** न [°**तल**] कपोल-तल; (सुर ४, १२७)। °**लेहा** स्त्री [°**लेखा**] कपोल-पाली, गाल पर लगाई हुई कस्तूरी वगैरः की छटा; (निर १, १; गउड)। °**वच्छा** स्त्री [°**वक्षस्का**] पीन स्तनों से युक्त छाती वाली स्त्री ; (उत्त ८)। °**वाणिया** स्त्री [°**पाणिका**] बाँस का पात्र-विशेष; जो डाला से छोटा होता है; (भग ७, ८)। °**वास** पुं [°**पार्श्व**] गाल का पार्श्व-भाग ; (गउड)।
गंडइया स्त्री [**गण्डकिका**] नदी-विशेष ; (आवम)।
गंडय पुं [**गण्डक**] १ गेंडा, जानवर-विशेष ; (पाअ ; दे ७, ५७)। २ उद्घोषणा करने वाला पुरुष, ढेंरा लगाने वाला पुरुष ; (ओघ ६४४)।
गंडली स्त्री [**दे**] गंडेरी, ऊख का टुकड़ा; (उप पृ १०९)।
गंडि पुं [**गण्डि**] जन्तु-विशेष ; (उत्त १)।
गंडि वि [**गण्डिन्**] १ गण्डमाला का रोग वाला; (आचा)। २ गण्ड रोग वाला; (पण्ह २, ५)।
गंडिया स्त्री [**गण्डिका**] १ गंडेरी, ऊख का टुकड़ा ; (महा)। २ सोनार का एक उपकरण ; (ठा ४, ४)।

३ एक अर्थ के अधिकार वाली ग्रन्थ-पद्धति ; (सम १२६)।
गंडिल देखो **गंधिल** ; (इक)।
गंडिलावई देखो **गंधिलावई** ; (इक)।
गंडी स्त्री [**गण्डी**] १ सोनार का एक उपकरण ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। २ कमल की कर्णिका; (उत्त ३६)। °**तिंदुग** न [°**तिन्दुक**] यक्ष-विशेष; (ती ३८)। °**पय** पुं [°**पद**] हाथी वगैरः चतुष्पद जानवर ; (ठा ४, ४)। °**पोत्थय** पुंन [°**पुस्तक**] पुस्तक-विशेष ; (ठा ४, २)।
गंडीरी स्त्री [**दे**] गण्डेरी; ऊख का टुकड़ा ; (दे २, ८२)।
गंडीव न [**गाण्डीव**] १ अर्जन का धनुष; (वेणी ११२)।
गंडीव न [**दे. गाण्डीव**] धनुष, कार्मुक; (दे २, ८४ ; महा ; पात्र)।
गंडीवि पुं [**गाण्डीविन्**] अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (वेणी ६८)।
गंडुअ न [**गण्डु**] ओसीसा, सिरहना; (महा)।
गंडुअ न [**गण्डुत्**] तृण-विशेष ; (दे २, ७५)।
गंडुल पुं [**गण्डोल**] कृमि-विशेष, जो पेट में पैदा होता है ; (जी १५)।
गंडूपय पुं [**गण्डूपद**] जन्तु-विशेष ; (राज)।
गंडूल देखो **गंडुल** ; (पण्ह १, १—पत्र २३)।
गंडूस पुं [**गण्डूष**] पानी का कुल्ला ; (गा २७० ; सुपा ४४६), "वहुमइरागंडूसपाणं" (उप ९८६ टी)।
गंत देखो **गा**।
गंतव्व } देखो **गम** = गम्।
गंता }
गंतिय न [**गन्तृक**] तृण-विशेष; (पराण १—पत्र ३३)।
गंती स्त्री [**गन्त्री**] गाड़ी, शकट ; (धम्म १२ टी; सुपा २७७)।
गंतुं देखो **गम** = गम्।
गंतुंपच्चागया स्त्री [**गत्वाप्रत्यागता**] भिक्षा-चर्या-विशेष, जैन मुनिओं की भिक्षा का एक प्रकार ; (ठा ६)।
गंतुकाम वि [**गन्तुकाम**] जाने की इच्छा वाला ; (श्रा १४)।
°**तुमण** वि [**गन्तुमनस्**] ऊपर देखो ; (वसु)।
गंतूण } देखो **गम**=गम्।
°**तूणं** }
गंथ देखो **गंठ**—ग्रन्थ्। गंथइ ; (पि ३३३)। कर्म—गंथीअंति ; (पि ५४८)।
गंथ पुं [**ग्रन्थ**] १ शास्त्र, सूत्र, पुस्तक ; (विसे ८९४ ; १३८३)। २ धन-धान्य वगैरः बाह्य और मिथ्यात्व, क्रोध, मान आदि आभ्यन्तर उपधि, परिग्रह ; (ठा २, १ ; बृह १ ; विसे २५७३)। ३ धन, पैसा ; (स २३६)। ४ स्वजन, संबन्धी लोग ; (पण्ह २, ४)। °**ाईअ** पुं [°**ातीत**] जैन साधु ; (सूअ १, ६)।
गंथि देखो **गंठि** ; (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।
गंथिम देखो **गंठिम** ; (णाया १, १३)।
गंदिला स्त्री [**गन्दिला**] देखो **गंधिल** ; (इक)।
गंदीणी स्त्री [**दे**] क्रीड़ा—विशेष, जिसमें आँख बंद की जाती है ; (दे २, ८३)।
गंदुअ देखो **गेंदुअ** ; (षड्)।
गंध पुं [**गन्ध**] १ गन्ध, नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों की वास, महक ; (औप; भग ; हे १, १७७)। २ लव, लेश ; (से ६, ३)। ३ चूर्ण-विशेष ; (पण्ह १, १)। ४ वानव्यन्तर देवों की एक जाति ; (इक)। ५ न. देव-विमान-विशेष; (निर १, ४)। ६ वि. गन्ध-युक्त पदार्थ ; (सूअ १, ६)। °**उडी** स्त्री [°**कुटी**] गन्ध-द्रव्य का घर ; (गउड; हे १, ८)। °**कासाइया** स्त्री [°**काषायिका**] सुगन्धि कषाय रंग की साड़ी; (उवा; भग ९, ३३)। °**गुण** पुं [°**गुण**] गन्धरूप गुण ; (भग)। °**ट्टय** न [°**ाट्टक**] गन्ध-द्रव्य का चूर्ण ; (ठा ३, १—पत्र ११७)। °**ड्ड** वि [°**ाढ्य**] गन्ध-पूर्ण, सुगन्ध-पूर्ण ; (पंचा २)। °**णाम** न [°**नामन्**] गन्ध का हेतुभूत कर्म-विशेष ; (अणु)। °**तेल्ल** न [°**तैल**] सुगन्धित तैल ; (कप्पू)। °**दव्व** न [°**द्रव्य**] सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य ; (उत्त १)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] देवी-विशेष, सौधर्म देवलोक की एक देवी ; (निर १, ४)। °**द्धणि** स्त्री [°**घ्राणि**] गन्ध-तृप्ति; (णाया १, १—पत्र २५; औप)। °**नाम** देखो °**णाम** ; (सम ६७)। °**मय** पुं [°**मृग**] कस्तूरी-मृग, कस्तुरिया हरिन ; (सुपा २)। °**मंत** वि [°**मत्**] १ सुगन्धित, सुगन्ध-युक्त ; २ अतिशय गन्ध वाला, विशेष गन्ध से युक्त ; (ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °**मादण**, °**मायण** पुं [°**मादन**] १ पर्वत-विशेष, इस नाम का एक पहाड़ ; (सम १०३ ; पण्ह २, २ ; ठा २, ३—पत्र ६९)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर ; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ नगर-विशेष ; (इक)। °**वई**

स्त्री [°वती] भूतानन्द-नामक नागेन्द्र का आवास-स्थान ; (दीव)। °वट्टय न [°वर्तक] सुगन्धित लेप-द्रव्य ; (विपा १, ६) । °वट्टि स्त्री [°वर्ति] गन्ध-द्रव्य की बनाई हुई गोली ; (णाया १,१ ; औप) । °वह पुं [°वह] पवन, वायु ; (कुमा ; गा ५४२) । °वास पुं [°वास] १ सुगन्धित वस्तु का पुट ; २ चूर्ण-विशेष ; (सुपा ६७)। °समिद्ध वि [°समृद्ध] १ सुगन्धित, सुगन्ध-पूर्ण ; २ न. नगर-विशेष ; (आवम ; इक) । °सालि पुं [°शालि] सुगन्धित व्रीहि ; (आवम) । °हत्थि पुं [°हस्तिन्] उत्तम हस्ती, जिसकी गन्ध से दूसरे हाथी भाग जाते हैं ; (सम १ ; पडि) । °हरिण पुं [°हरिण] कस्तुरिया हरन ; (कप्पू) । °हारग पुं [°हारक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश ; २ गन्धहारक देश का निवासी ; (पराह १, १ —पत्र १४) ।

गंधपिसाय पुं [दे] गन्धिक, पसारी ; (दे २, ८७) ।

गंधय देखो **गंध** ; (महा) ।

गंधलया स्त्री [दे] नासिका, घ्राण ; (दे २, ८५) ।

गंधव्व पुं [गन्धर्व] १ देव-गायन, स्वर्ग-गायक ; (उत्त १; सुण) । २ एक प्रकार की देव-जाति, व्यंतर देवों की एक जाति; (पराह १, ४; औप) । ३ यक्ष-विशेष, भगवान् कुन्थुनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष ; (संति ८) । ४ न. मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१) । ५ नृत्य-युक्त गीत, गान ; (विपा १, २) । °कंठ न [°कण्ठ] रत्न की एक जाति; (राय) । °घर न [°गृह] संगीत-गृह, संगीतालय, संगीत का अभ्यास-स्थान; (जं १) । °णगर, °नगर न [°नगर] असत्य-नगर, संध्या के समय में आकाश में दिखाता मिथ्या-नगर, जो भावि उत्पात का सूचक है ; (अणु ; पव १६८) । °पुर न [°पुर] देखो °णगर ; (गउड) । °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष ; (सम ३५) । °विवाह पुं [°विवाह] उत्सव-रहित विवाह, स्त्री-पुरुष की इच्छा के अनुसार विवाह ; (सुण) । °साला स्त्री [°शाला] गान-शाला, संगीत-गृह, संगीतालय; (वव १०) ।

गंधव्व वि [गान्धर्व] १ गंधर्व-संबंधी, गंधर्व से संबन्ध रखने वाला ; (जं १ ; अभि ११५) । २ पुं. उत्सव-हीन विवाह, विवाह-विशेष; "गंधव्वेण विवाहेण सयमेव विवाहिया" (आवम) । ३ न. गीत, गान ; (पाअ) ।

गंधव्विअ वि [गान्धर्विक] १ गंधर्व-विद्या में कुशल ; (सुपा १६६) ।

गंधा स्त्री [गन्धा] नगरी-विशेष ; (इक) ।

गंधाण न [गन्धान] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

गंधार पुं [गन्धार] देश-विशेष, कन्धार ; (स ३८) । २ पर्वत-विशेष ; (स ३६) । ३ नगर-विशेष ; (स ३८) ।

गंधार पुं [गान्धार] स्वर-विशेष, रागिनी-विशेष; (ठा ७)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] १ सती-विशेष, कृष्ण वासुदेव की एक स्त्री ; (पडि ; अंत १५) । २ विद्या-देवी-विशेष ; (संति ६) । ३ भगवान् नमिनाथ की शासन-देवी ; (संति १०)।

गंधावइ } पुं [गन्धापातिन्] स्वनाम-प्रसिद्ध एक वृत्त
गंधावाइ } वैताढ्य पर्वत; (इक ; ठा २, ३—पत्र ६६; ८० ; ठा ४, २—पत्र २२३) ।

गंधि वि [गन्धिन्] गंध-युक्त, गंध वाला ; (कप्प ; गउड) ।

गंधिअ वि [दे] दुर्गन्ध, खराब गन्ध वाला; (दे २, ८३) ।

गंधिअ पुं [गान्धिक] गन्ध-द्रव्य बेचने वाला, पसारी ; (दे २, ८७) ।

गंधिअ वि [गन्धिक] गंध-युक्त; "सुगन्धवरगन्धगन्धिए" (औप) । °साला स्त्री [°शाला] दारू वगैरः गन्ध वाली चीज की दुकान ; (वव ६) ।

गंधिअ वि [गन्धित] गन्ध-युक्त, गन्ध वाला; (स ३७२; गा ५४५ ; ८७२) ।

गंधिल पुं [गन्धिल] वर्ष-विशेष, विजय-क्षेत्र विशेष ; (ठा २, ३ ; इक) ।

गंधिलावई स्त्री [गन्धिलावती] १ क्षेत्र-विशेष, विजय-वर्ष-विशेष ; (ठा २, ३ ; इक) २ नगरी-विशेष; (इ ६१) । °कूड न [°कूट] १ गन्धमादन पर्वत का एक शिखर; (जं ४)। २ वैताढ्य पर्वत का शिखर-विशेष ; (ठा ६) ।

गंधिल्ली स्त्री [दे] छाया, छाँहो ; (उप १०३१ टी) ।

गंधुत्तमा स्त्री [गन्धोत्तमा] मदिरा, सुरा ; (दे २,८६) ।

गंधेल्ली स्त्री [दे] १ छाया, छाँही ; २ मधु-मक्षिका ; (दे २, १००) ।

गंधोदग } न [गन्धोदक] सुगन्धित जल, सुगन्ध-वासित
गंधोदय } पानी ; (औप ; विपा १, ६) ।

गंधोल्ली स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा ; २ रजनी, रात ; (दे २, ६६) ।

गंप्पि } देखो **गम**=गम् ।
गंप्पिणु }

गंभीर वि [गम्भीर] १ गम्भीर, अस्ताघ, अ-तुच्छ, गहरा; (औप ; से ६, ४४ ; कप्प) । २ पुंन. गहन-स्थान, गहन

प्रदेश, जहां प्रतिशब्द उत्थित हो ; (विसे ३४०४ ; बृह १) ३ पुं. रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३) । ४ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र ; (अंत ३) । ५ न. समुद्र के किनारे पर स्थित इस नाम का एक नगर; (सुर १३,३०) । °**पोय** न [°**पोत**] नगर-विशेष ; (णाया १, १७) । °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] महाविदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३) ।

गंभीरा स्त्री [**गम्भीरा**] १ गंभीर-हृदया स्त्री ; (वव ५)। २ मात्रा-छन्द का एक भेद ; (पिंग) । ३ क्षुद्र जंतु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष ; (पराण १) ।

गंभीरिअ न [**गाम्भीर्य**] गम्भीरता, गम्भीरपन ; (हे २, १०७) ।

गंभीरिम पुंस्त्री [**गाम्भीर्य**] ऊपर देखो ; (सण) ।

गगण न [**गगन**] आकाश, अम्बर ; (कप्प ; स ३४८) । °**णंदण** न [°**नन्दन**] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर ; (इक) । °**वल्लभ,** °**वल्लह** न [°**वल्लभ**] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर ; (राज ; इक) ।

गगणंग पुंन [**गगनाङ्ग**] छन्द-विशेष; (पिंग) ।

गग्ग पुं [**गर्ग**] १ ऋषि-विशेष ; २ गोत्र-विशेष, जो गौतम गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७) ।

गग्ग पुं [**गार्ग्य**] गर्ग गोत्र में उत्पन्न ऋषि-विशेष; (उत्त २६)।

गग्गर वि [**गद्गद**] १ गद्गद आवाज वाला; अति अस्पष्ट वक्ता; (प्राप्र) । २ आनंद या दुःख से अव्यक्त कथन; (हे १, २१९ ; कुमा) ।

गग्गरी स्त्री [**गर्गरी**] गगरी, छोटा घड़ा; (दे २, ८९; सुपा ३३९) ।

गग्गिर देखो **गग्गर**; "रुज्जगग्गिरं गेअं" (गा ८४३; सण) ।

√**गच्छ** सक [**गम्**] १ जाना, गमन करना । २ जानना । ३ प्राप्त करना । गच्छइ ; (प्राप्र ; षड्) । भवि— गच्छं ; (हे ३, १७१ ; प्राप्र) । वकृ—**गच्छंत, गच्छमाण** ; (सुर ३, ६६ ; भग १२, ६) । संकृ—**गच्छिअ** ; (कुमा)। हेकृ—**गच्छित्तए** ; (पि ५९८) ।

गच्छ पुंन [**गच्छ**] १ समूह, सार्थ, संघात ; (स १४८) । २ एक आचार्य का परिवार; (औप; सं ४७) । ३ गुरु-परिवार; "गुरुपरिवारो गच्छो, तत्थ वसंताण णिज्जरा विउला" (पंचव; धर्म ३) । °**वास** पुं [°**वास**] गुरु-कुल में रहना, गच्छ-परिवार के साथ निवास; (धर्म ३) । °**विहार** पुं [°**विहार**] गच्छ की समाचारी, गच्छ का आचार; (वव १) । °**सारणा** स्त्री [°**सारणा**] गच्छ का रक्षण ; (राज) ।

गच्छागच्छिं अ. गच्छ २ से होकर (औप) ।

गच्छिल्ल वि [**गच्छवत्**] गच्छ वाला, गच्छ में रहने वाला ; (बृह १) ।

गज देखो **गय**=गज ; (षड् ; प्रासू १७१; इक) । °**सार** पुं [°**सार**] एक जैन मुनि, दण्डक-ग्रन्थ का कर्ता; (दं ४७) ।

गज्ज पुं [**दे**] जव, यव, अन्न-विशेष ; (दे २, ८१ ; पाअ)।

गज्ज न [**गद्य**] छन्द-रहित वाक्य, प्रबन्ध ; (ठा ४, ४—पत्र २८७) ।

√**गज्ज** अक [**गर्ज्**] गरजना, घड़घड़ाना । गज्जइ ; (हे ४, ९८) । वकृ—**गज्जंत, गज्जयंत** ; (सुर २, ७५ ; रयण ५८) ।

गज्जण न [**गर्जन**] १ गर्जन, भयानक ध्वनि, मेघ या सिंह का नाद । २ नगर-विशेष ; (उप ७६५) ।

गज्जणसद्द पुं [**दे. गर्जनशब्द**] पशु और हाथी का आवाज; (दे २, ८८) ।

गज्जभ पुं [**गर्जभ**] पश्चिमोत्तर दिशा का पवन ; (आवम) ।

गज्जर पुं [**दे**] कन्द-विशेष, गाजर, गजरा, इसका खाना धर्म-शास्त्र में निषिद्ध है ; (श्रा १६ ; जी ९) ।

गज्जल वि [**गर्जल**] गर्जन करने वाला ; (निचू ७) ।

गज्जह देखो **गज्जभ** ; (आवम) ।

गज्जि स्त्री [**गर्जि**] गर्जन, हाथी वगैरः की आवाज; (कुमा सुपा ८९ ; उप पृ ११७) ।

गज्जिअ वि [**गर्जित**] १ जिसने गर्जन किया हो वह, स्तनित ; (पाअ) । २ न. गर्जन, मेघ वगैरः की आवाज ; (पण्ह १, ३) ।

गज्जित्तु, **गज्जिर** वि. [**गर्जितृ**] गर्जन करने वाला, गरजने वाला; (ठा ४,४—पत्र २६९ ; गा ५५) ।

गज्जिलिअ न [**दे**] १ गुदगुदी, गुदगुदाहट ; २ अंग-स्पर्श से होने वाला रोमांच, पुलक ; (षड्) ।

गज्झ वि [**ग्राह्य**] ग्रहण-योग्य ; (स १४० ; विसे १७०७)।

गट्टण पुं [**गट्टन**] धरणेंद्र की नाट्य-सेना का अधिपति ; (राज) ।

गड्डिआ स्त्री [**दे**] गठिया, गुटली; "अंबगड्डिया" (निचू १५)।

गड न [**गड**] १ विस्तीर्ण शिला, मोटा पत्थर ; (दे २, ११०) । २ गर्त, खाई ; (सुर १३, ४१) ।

गड (मा) देखो **गय**=गत ; (प्राप्र) ।

गडयड पुंन [दे] गर्जन, भयानक ध्वनि, हाथी वगैरः की आवाज ; "ता गडयडं कुणंतो, समागओ गयवरो तत्थ", "इत्थंतरे सयं चिय, सो जक्खो गडयडं पकुव्वंतो" (सुपा २८१ ; ५४२) ।

गडयड अक [दे] गर्जन करना, भयानक आवाज करना। वकृ—**गडयडंत** ; (सुपा १९४) ।

गडयडी स्त्री [दे] वज्र-निर्घोष, गड़गड़ आवाज, मेघ-ध्वनि ; (दे २, ८५ ; सण) ।

गडवड न [दे] गड़बड़, गोलमाल ; (सुपा ५४१) ।

गडिअ } देखो **गम**=गम् ।
गडुअ }

गडुल न [दे] चावल वगैरः का धावन-जल ; (धर्म २) ।

ड्डु पुंस्त्री [**गर्त्त**] गड़हा, गडा ; (हे २, ३२ ; प्राप्र ; सुपा ११४) । स्त्री—**गड्डा** ; (हे १, ३५) ।

गड्डरिगा } स्त्री [दे] भेडी, मेषी, ऊर्णायु; "गड्डरिगपवाहेणं
गड्डरिया } गयाणुगइयं जणं वियाणंतो" (धम्म ; सुअ १, ३, ४) ।

गड्डरी स्त्री [**दे**] १ छागी, अजा, बकरी; (दे २, ८४) । २ भेडी, मेषी ; (सट्टि ३८) ।

गड्डह पुंस्त्री [**गर्दभ**] गदहा, गधा, खर ; (हे २, ३७) । °**वाहण** पुं [°**वाहन**] रावण, दशानन ; (कुमा) ।

गड्डिआ } स्त्री [**दे**] गाड़ी, शकट ; (ओघ ३८६ टी ;
गड्डी } दे २, ८१ ; सुपा २५२) ।

गड्ड न [**दे**] शय्या, बिछौना ; (दे २, ८१)।

गढ देखो **घड**=घट् । गढइ ; (हे ४, ११२) ।

गढ पुंस्त्री [**दे**] गढ, दुर्ग, किला, कोट ; (दे २, ८१ ; सुपा २५ ; १०५) । स्त्री—**गढा** ; (कुमा) ।

गढिअ वि [**घटित**] गढ़ा हुआ, जटित ; (कुमा) ।

गढिअ वि [**ग्रथित**] १ गूँथा हुआ, निबद्ध ; "नेहनिगड-गढियाणं" (उप ९८६ टी ; पराह १, ४) । २ रचित, गुम्फित, निर्मित ; (ठा ३, १) । ३ गृद्ध, आसक्त ; (आचा २, २, २ ; पराह १, २) ।

√**गण** सक [**गणय्**] १ गिनना, गिनती करना । २ आदर करना । ३ अभ्यास करना, आवृत्ति करना । ४ पर्यालोचन करना । गणइ, गणेइ ; (कुमा ; महा) । वकृ—**गणंत**, **गणेंत** ; (पंचा ४ ; से ४, १५) । कृ—**गणेयव्व** ; (उप ५५५) ।

गण पुं [**गण**] १ समूह, समुदाय, यूथ, थोक ; (जी ३४ ; कुमा ; प्रासू ४ ; ७५ ; १५१) । २ गच्छ, समान आचार व्यवहार वाले साधुओं का समूह; (कप्प) । ३ छन्दः-शास्त्र प्रसिद्ध मात्रा-समूह ; (पिंग) । ४ शिव का अनुचर; (पाअ ; कुमा) । ५ मल्लों का समुदाय ; (अणु) । °**ओ** अ [°**तस्**] अनेकशः , बहुशः; (सुअ २, ६) । °**नायग** पुं [°**नायक**] गण का मुखिया ; (णाया १, १) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया ; (सुपा २, १०) । २ गणधर, जिन-देव का प्रधान शिष्य ; (पउम १२, ६) । ३ आचार्य, सूरि ; (सार्ध २३) । °**भाव** पुं [°**भाव**] विवेक-विशेष ; (गउड)। °**राय** पुं [°**राज**] १ सामन्त राजा ; (भग ७, ६) । २ सेनापति ; (आव ३ ; कप्प) । °**वइ** पुं [°**पति**] १ गण का स्वामी ; २ गणेश, गजानन, शिव-पुत्र; (गा ३७२ ; गउड) । ३ जिन देव का मुख्य शिष्य; गणधर ; (सिग्व २) । °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] गण का मुखिया, गण-धर ; (उप २८० टी) । °**हर** पुं [°**धर**] १ जिन-देव का प्रधान शिष्य ; (सम ११३) । २ अनुपम ज्ञानादि-गुण-समूह का धारण करने वाला जैन साधु, आचार्य वगैरः ; "सेज्जंभवं गणहरं" (आवम ; पव २७६) । °**हरिंद** पुं [°**धरेन्द्र**] गणधरों में श्रेष्ठ, प्रधान गणधर ; (पउम ३, ४३ ; ५८, १) । °**हारि** पुं [°**धारिन्**] देखो °**हर** ; (गण २३; सार्ध १) । °**ाजीव** पुं [°**ाजीव**] गण के नाम से निर्वाह करने वाला; (ठा ५, १) । °**ावच्छेइय**, °**ावच्छेदय**, °**ावच्छेयय** पुं [°**ावच्छेदक**] साधु-गण के कार्य की चिन्ता करने वाला साधु ; (आचा २, १, १० ; ठा ३, ३ ; कप्प) । °**ाहिवइ** पुं [°**ाधिपति**] १ शिव-पुत्र, गजानन, गणेश ; (गा ४०३ ; पाअ) । २ जिन-देव का प्रधान शिष्य ; (पउम २६, ४) ।

गणग पुं [**गणक**] १ ज्योतिषी, जोशी, ज्योतिष-शास्त्र का जानकार ; (णाया १, १) । २ भंडारी, भाण्डागारिक ; (णाया १, १—पत्र १९)।

गणण न [**गणन**] गिनती, संख्यान ; (वव १) ।

गणणा स्त्री [**गणना**] गिनती, संख्या, संख्यान ; (सुर २, १३२ ; प्रासू १०० ; सुअ २, २) ।

गणणाइआ स्त्री [दे. गण-नायिका] पार्वती, चण्डी, शिव-पत्नी ; (दे २, ८७)।
गणय देखो **गणग** ; (औप ; सुपा २०३)।
गणसम वि [दे] गोष्ठी-रत, गाढ में लीन ; (दे २, ८६)।
गणायमह पुं [दे] विवाह-गणक ; (दे २, ८६)।
गणाविअ वि [गणित] गिनती कराया हुआ; (स ६२९)।
गणि त्रि [गणिन्] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया। स्त्री—**गणिणी**; (सुपा ६०२)। २ पुं. आचार्य, गच्छ-नायक, साधु-समुदाय का नायक ; (ठा ८)। ३ जिन-देव का प्रधान साधु-शिष्य ; (पउम ६१, १०)। ४ परिच्छेद, निश्चय, सिद्धान्त ; (णंदि)। °**पिडग** न [°**पिटक**] १ बारह मुख्य जैन आगम ग्रन्थ, द्वादशाङ्गी ; (सम १ ; १०६)। २ निर्युक्ति वगैरः से युक्त जैन आगम; (औप)। ३ पुं. यक्ष-विशेष, जिन-शासन का अधि-ष्ठायक देव ; (संति ४)। ४ निश्चय-समूह, सिद्धान्त-समूह; (णंदि)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] १ शास्त्र-विशेष ; २ ज्योतिष और निमित्त शास्त्र का ज्ञान ; (णंदि)।
गणिम न [**गणिम**] गिनती से बेची जाती वस्तु, संख्या पर जिसका भाव हो वह ; (श्रा १८ ; णाया १, ८)।
गणिय वि [**गणित**] १ गिना हुआ; २ न. गिनती, संख्या; (ठा ६ ; जं २)। ३ जैन साधुओं का एक कुल ; (कप्प)। ४ अंक-गणित, गणित-शास्त्र ; (णंदि ; अणु)। °**लिवि** स्त्री [°**लिपि**] लिपि-विशेष, अंक-लिपि ; (सम ३५)।
गणिय पुं [**गणिक**] गणित-शास्त्र का ज्ञाता ; "गणियं जाणइ गणिओ" (अणु)।
गणिया स्त्री [**गणिका**] वेश्या, गणिका ; (श्रा १२ ; विपा १, २)।
गणिर वि [**गणयितृ**] गिनती करने वाला; (गा २०८)।
गणेत्तिआ } स्त्री [**दे**] १ रुद्राक्ष का बना हुआ हाथ का
गणेत्ती } आभूषण-विशेष ; (णाया १, १६—पत्र २१३; औप ; भग ; महा)। २ अक्ष-माला ; (दे २, ८१)।
गणेसर पुं [**गणेश्वर**] १ गणों का नायक। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।
गत्त न [**गात्र**] देह, शरीर ; (औप ; पाअ ; सुर २, १०१)।
गत्त देखो **गड्ड** ; (भग १५)। स्त्री—**गत्ता** ; (सुपा २१४)।
गत्त न [**दे**] १ ईषा, चौपाई की लकड़ी विशेष ; २ पंक, कर्दम ; (दे २, ९९)। ३ वि. गत, गया हुआ; (षड्)।
गत्ताडी } स्त्री [**दे**] १ गवादनी, वनस्पति-विशेष ; (दे
गत्तांडी } २, ८२)। २ गायिका, गाने वाली स्त्री; (षड् ; दे २, ८२)।
गत्थ वि [**ग्रस्त**] कवलित, ग्रास किया हुआ ; "अइमहच्छ-लोभगच्छा (? त्था)" (पण्ह १, ३—पत्र ४४ ; नाट—चैत १४६)।
गद सक [**गद्**] बोलना, कहना। वकृ—**गदंत**; (नाट—चैत ४५)।
गद्दतोय पुं [**गर्दतोय**] लोकान्तिक देवों की एक जाति ; (सम ८५ ; णाया १, ८)।
गद्दभ पुं [**दे**] कटु-ध्वनि, कर्ण-कटु आवाज ; (दे २, ८२ ; पाअ ; स १११ ; ४२०)।
गद्दभ देखो **गद्दह**=गर्दभ ; (आक)।
गद्दभय देखो **गद्दहय** ; (आचा २, ३, १ ; आवम)।
गद्दभाल पुं [**गर्दभाल**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक परिव्राजक ; (भग)।
गद्दभालि पुं [**गर्दभालि**] एक जैन मुनि; (ती २५)।
गद्दभिल्ल पुं [**गर्दभिल्ल**] उज्जयिनी का एक राजा ; (निचू १० ; पि २९१ ; ४००)।
गद्दभी स्त्री [**गर्दभी**] १ गधी, गदही ; (पि २९१)। २ विद्या-विशेष ; (काल)।
गद्दह पुं [**गर्दभ**] १ गदहा, गधा, खर ; (सम ५० ; दे २, ८० ; पाअ ; हे २, ३७)। २ इस नाम का एक मन्त्रि-पुत्र ; (बृह १)।
गद्दह न [**दे**] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल ; (दे २,८३)।
गद्दहय पुं [**गर्दभक**] १ क्षुद्र जन्तु-विशेष, जो गो-शाला वगैरः में उत्पन्न होता है; (जी १७)। २ देखो **गद्दह** ; (नाट)।
गद्दही देखा **गद्दभी** ; (नाट—मृच्छ ५८ ; निचू १०)।
गद्दिअ वि [**दे**] गर्वित, गर्व-युक्त ; (दे २, ८३)।
गद्ध पुं [**गृध्र**] पक्षि-विशेष, गीध, गिद्ध ; (औप)।
गन्न वि [**गण्य**] १ माननीय, आदरास्पद; " हियमप्पणो करेंतो, कस्स न होइ गरुओ गुरुगन्नो", "सव्वो गुणेहि गन्नो" (उव)। २ न. गणना, गिनती ; " मुल्लस्स कुणइ गन्नं" (सुपा २५३)।

गब्भ पुं [**गर्भ**] १ कुक्षि, पेट, उदर ; (ठा ५, १)। २ उत्पत्ति-स्थान, जन्म-स्थान ; (ठा २, ३)। ३ भ्रूण, अन्तरापत्य ; (कप्प)। ४ मध्य, अन्तर, भीतर का ; (णाया १, ८)। °**करा** स्त्री [°**करी**] गर्भाधान करने वाली विद्या-विशेष (सूअ २, २)। °**घर** न [°**गृह**] भीतर का घर, घर का भीतरी भाग ; (णाया १, ८)। °**ज** वि [°**ज**] गर्भ में उत्पन्न होने वाला प्राणी, मनुष्य, पशु वगैरः (पउम १०२, ६७)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ गर्भ में रहने वाला ; २ गर्भ से उत्पन्न होने वाला मनुष्य वगैरः ; (ठा २, ३)। °**मास** पुं [°**मास**] कार्तिक से लेकर माघ तक का महीना ; (वव ७)। °**य** देखो °**ज** ; (जी २३)। °**वई** स्त्री [°**वती**] गर्भिणी स्त्री ; (सुपा २७६)। °**वक्कंति** स्त्री [°**व्युत्क्रान्ति**] १ गर्भाशय में उत्पत्ति; (ठा २, ३)। °**वक्कंतिअ** वि [°**व्युत्क्रान्तिक**] गर्भाशय में जिसकी उत्पत्ति होती है वह ; (सम २ ; २५)। °**हर** देखो **घर** ; (सुर ६, २१ ; सुपा १८२)।

गब्भर न [**गह्वर**] १ कोटर, गुहा; २ गहन, विषम स्थान; (आव ४ ; पि ३३२)।

गब्भिज्ज पुं [**दे. गर्भज**] जहाज का निम्न-श्रेणिस्थ नौकर ; " कुच्छिधारकन्नधारगब्भिज(? ज्ज)संजत्ताणावावाणियगा " (णाया १, ८—पत्र १३३ ; राज)।

गब्भिण } वि [**गर्भित**] १ जिसको गर्भ पैदा हुआ हो
गब्भिय } वह, गर्भ-युक्त ; (हे १, १०८ ; प्राप्र ; णाया १, ७)। २ युक्त, सहित ; " वेडिसदलनीलभित्तिगब्भिणयं " (कुमा ; षड्)।

गब्भिल्ल देखो **गब्भिज्ज** ; (णाया १, १७—पत्र २२८)।

गम सक [**गम्**] १ जाना, गति करना, चलना। २ जानना, समझना। ३ प्राप्त करना। भूका—गमिही; (कुमा)। कर्म—गम्मइ, गमिज्जइ; (हे ४,२४६)। कवकृ—**गम्ममाण**; (स ३४०)। संकृ—**गंतुं, गमिअ, गंता, गंतूण, गंतूणं**; (कुमा ; षड् ; प्राप्र ; औप ; कस ;), **गडुअ, गडिअ, गदुअ** (शौ) ; (हे ४, २७२; पि ५८१; नाट—मालती ४०), **गमेप्पि, गमेप्पिणु, गंप्पि, गंप्पिणु** (अप) ; (कुमा)। हेकृ—**गंतुं** ; (कस; श्रा १४)। कृ—**गंतव्व, गमणिज्ज, गमणीअ**; (णाया १, १; गा २४६ ; उव; भग ; नाट)।

गम सक [**गमय्**] १ ले जाना। २ व्यतीत करना, पसार करना, गुजारना। गमेंति ; (गउड)। "मुद्दा ! मुहा मा दियहे गमेह" (सत ४)। कर्म—गमिज्जंति; (गउड)। वकृ—**गमंत** ; (सुपा २०२)। संकृ—**गमिऊण**; (पि) हेकृ—**गमित्तए** ; (पि ५७८)।

गम पुं [**गम**] १ गमन, गति, चाल ; (उप २२० टी)। २ प्रवेश ; (पउम १, २६)। ३ शास्त्र का तुल्य पाठ, एक तरह का पाठ, जिसका तात्पर्य भिन्न हो; (दे १, १; विसे ५४६ ; भग)। ४ व्याख्या, टीका ; (विसे ६१३)। ५ बोध, ज्ञान, समझ ; (अणु ; णंदि)। ६ मार्ग, रास्ता ; (ठा ७)।

गमग वि [**गमक**] बोधक, निश्चायक ; (विसे ३१५)।

गमण न [**गमन**] गमन, गति ; (भग ; प्रासू १३२)। २ वेदन, बोध ; (णंदि)। ३ व्याख्यान, टीका ; ४ पुष्य वगैरः नव नक्षत्र ; (राज)।

गमणया } स्त्री [**गमन**] गमन, गति ; "लोगंतगमणयाए"
गमणा } (ठा ४, ३)। "पायत्रंदए पहारेत्थ गमणाए" (णाया १, १—पत्र २६)।

गमणिज्ज देखो **गम**=गम्।

गमणिया स्त्री [**गमनिका**] १ संक्षिप्त व्याख्यान, दिग्-दर्शन ; (राज)। २ गुजारना, अतिक्रमण ; "कालगमणिया एत्थ उवाओ" (उप ७२८ टी)

गमणी स्त्री [**गमनी**] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है ; (णाया १, १६—पत्र २१३)। २ जूता; "सव्वोवि जणो जलं विगाहिंतो उत्तारइ गमणीओ चरणाहिंतो" (सुपा ६१०)।

गमणीअ देखो **गम** = गम्।

गमय देखो **गमग** ; (विसे २६७३)।

गमाव देखो **गम** = गमय्। गमावइ ; (सण)।

गमिद वि [**दे**] १ अपूर्ण ; २ गूढ़ ; ३ स्खलित ; (षड्)।

गमिय वि [**गमित**] १ गुजारा हुआ, अतिक्रांत ; (गउड)। २ ज्ञापित, बोधित, निवेदित ; (विसे ५५६)।

गमिय न [**गमिक**] शास्त्र-विशेष, सदृश पाठ वाला शास्त्र; "भंग-गणियाइं गमियं सरिसगमं च कारणवसेण" (विसे ५४६ ; ५५४)।

गमिर वि [**गन्तृ**] जाने वाला; (हे २, १४५)।

गमेप्पि } देखो **गम**=गम्।
गमेप्पिणु }

गमेस देखो **गवेस**। गमेसइ ; (हे ४, १८६)। गमेसि ; (कुमा)।

गम्म वि [गम्य] १ जानने योग्य ; २ जो जाना जा सके ; (उवर १७० ; सुपा ४२६) ३ हराने योग्य, आक्रमणीय ; (सुर २, १२६ ; १२, १४४)। ४ जाने योग्य ; ५ भोगने योग्य स्वपत्नी वगैरः ; (सुर १२, ५२)।

गम्ममाण देखो **गम=गम्**।

गय वि [दे] १ घूर्णित, भ्रमित, घुमाया गया ; (दे २, ८६ ; षड्)। २ मृत, मरा हुआ, निर्जीव ; (दे २, ८६)।

गय वि [गत] १ गया हुआ ; (सुपा ३३४)। २ अतिक्रान्त, गुजरा हुआ ; (दे १, ५६)। ३ विज्ञात, जाना हुआ ; (गउड)। ४ नष्ट, हत ; (उप ७२८ टी)। ५ प्राप्त ; "आवईगयंपि सुहए" (प्रासू ८३ ; १०७)। ६ स्थित, रहा हुआ ; "मणगयं" (उत्त १)। ७ प्रविष्ट, जिसने प्रवेश किया हो ; (ठा ४, १)। ८ प्रवृत्त ; (सूअ १, १, १)। ९ व्यवस्थित ; (औप)। १० न. गति, गमन ; "उसभो गइंदमयगलजुललियगयविक्कमो भयवं" (वसु; सुपा ५७८; आचा)। °**पाण** वि [°प्राण] मृत, मरा हुआ ; (श्रा २७)। °**राय** वि [°राग] राग-रहित, वीतराग, निरीह ; (उप ७२८ टी)। °**वइया**, °**वई** स्त्री [°पतिका] १ विधवा, रांड़ ; (औप ; पउम २६, ४२)। २ जिसका पति विदेश गया हो वह स्त्री ; प्रोषित-भर्तृका ; (गा ३३२ ; पउम २६, ४२)। °**वय** वि [°वयस्] वृद्ध, बुड्ढा ; (पाअ)। °**णुगइअ** वि [°ानुगतिक] अंध-परम्परा का अनुयायी, अंध-श्रद्धालु ; (उवर ४६

गय पुं [गज] १ हाथी, हस्ती, कुन्जर ; (अणु ; औप ; प्रासू १५४ ; सुपा ३३४)। २ एक अंतकृत् जैन मुनि, गज-सुकुमाल मुनि ; (अंत ३)। ३ इस नाम का एक शेठ ; (उप ७६८ टी)। ४ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, २)। °**उर** न [°पुर] नगर-विशेष, कुरु देश का प्रधान नगर, हस्तिनापुर; (उप १०१४ ; महा ; सण)। °**कण्ण**, °**कन्न** पुं [°कर्ण] १ द्वीप-विशेष ; २ उसमें रहने वाला ; (जीव ३; ठा ४, २)। °**कलभ** पुं [°कलभ] हाथी का बच्चा ; (राय)। °**गय** वि [°गत] हाथी ऊपर आरूढ; (औप)। °**ग्गपय** पुं [°ाग्रपद] पर्वत-विशेष ; (आक)। °**त्थ** वि [°स्थ] हाथी ऊपर स्थित ; (पउम ८, ८६)। °**पुर** देखो °**उर** ; (सूअ १, ५, १)। °**बंधय** पुं [°बन्धक] हाथी को पकड़ने वाली जाति ; (सुपा ६४२)। °**मारिणी** स्त्री [°मारिणी] वनस्पति, विशेष-गुच्छ विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३२)। °**मुह** पुं [°मुख] १ गणेश, गणपति, शिव-पुत्र ; (पाअ)। २ यक्ष-विशेष ; (गण ११)। °**राय** पुं [°राज] प्रधान हाथी, श्रेष्ठ हस्ती ; (सुपा ३८६)। °**वइ** पुं [°पति] गजेंद्र, श्रेष्ठ हस्ती; (णाया १ १६ ; सुपा २८६)। °**वर** पुं [°वर] प्रधान हाथी। °**वरारि** पुं [°वरारि] सिंह, शार्दूल, वनराज ; (पउम १७, ७६)। °**वहू** स्त्री [°वधू] हथिनी, हस्तिनी ; (पाअ)। °**वीही** स्त्री [°वीथी] शुक्र वगैरः महा-ग्रहों का चार-क्षेत्र-विशेष; (ठा ६)। °**ससण** पुं [°श्वसन] हाथी की सूँढ ; (औप)। °**सुकुमाल** पुं [°सुकुमाल] एक प्रसिद्ध जैन मुनि, उसी भव में मुक्ति-गत जैन साधु-विशेष ; (अंत, पडि)। °**ारि** पुं [°ारि] सिंह, पञ्चानन; (भवि)। °**ारोह** पुं [°ारोह] हस्तिपक, महावत ; (पाअ)।

गय पुं [गद] रोग, बिमारी ; (औप ; सुपा ५७८)।

गयंक पुं [गजाङ्क] देवों की एक जाति, दिक्कुमार देव; (औप)।

गयंद पुं [गजेन्द्र] श्रेष्ठ हाथी ; (गउड)।

गयण न [गगन] गगन, आकाश, अम्बर ; (हे २, १६४ ; गउड)। °**गइ** पुं [°गति] एक राज-कुमार, (दंस)। °**चर** वि [°चर] आकाश में चलने वाला, पक्षी, विद्याधर वगैरः (सुपा २५०)। °**मंडल** पुं [°मण्डल] एक राजा ; (दंस)।

गयणरइ पुं [दे] मेघ, मेह, बादल ; (दे २, ८८)।

गयणिंदु पुं [गगनेन्दु] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४५)।

गयसाउल, **गयसाउल्ल** वि [दे] विरक्त, वैरागी (दे २, ८७ ; षड्)

गया स्त्री [गदा] लोहे का या पाषाण का अस्त्र-विशेष, लोहे का मुग्दर या लाठी ; (राय)। °**हर** पुं [°धर] वासुदेव ; (उत्त ११)।

गया स्त्री [गया] स्वनाम-प्रसिद्ध नगर-विशेष ; (उप २५१)।

°**गर** वि [°कर] करने वाला, कर्ता; (सण)।

गर पुं [गर] १ विष-विशेष, एक प्रकार का जहर; (निचू१)। २ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध बवादि करणों में से एक ; (विसे ३३४८)

°**गरण** देखो **करण** ; (रयण ६३)।

गरल न [गरल] १ विष, जहर ; (पाअ प्रासू ३६)। २ रहस्य ; ३ वि. अव्यक्त, अस्पष्ट; "अ-गरलाए अ-मम्मणाए"; (औप)।

गरलिगावद्ध वि [**गरलिकावद्ध**] निक्षिप्त, उपन्यस्त ; (निचू १)।

गरह सक [**गर्ह्**] निन्दा करना, घृणा करना। गरहइ; गरहह; (भग)। वकृ—**गरहंत**; (द १५)। कवकृ—**गरहिज्जमाण**; (णाया १, ८)। संकृ—**गरहित्ता**; (आचा २, १५)। हेकृ-**गरहित्तए** ; (कस; ठा २, १)। कृ—**गरहणिज्ज, गरह-णीय, गरहियव्व** ; (सुपा १८४ ; ३७६ ; पण्ह २, १)।

गरहण न [**गर्हण**] निन्दा, घृणा ; (पि १३२)।

गरहणया, **गरहणा** स्त्री [**गर्हणा**] निन्दा, घृणा ; (भग १७, ३; औप ; पण्ह २, १)।

गरहा स्त्री [**गर्हा**] निन्दा, घृणा ; (भग)।

गरहिअ वि [**गर्हित**] निन्दित, घृणित ; (सं ६३ ; द ३३ ; सण)।

°**गरिअ** वि [**कृत**] किया हुआ, निर्मित ; (दे ७, ११)।

गरिट्ठ वि [**गरिष्ठ**] अति गुरु, बड़ा भारी ; (सुपा १० ; १२८ ; प्रासू १५४)।

गरिम पुंस्त्री [**गरिमन्**] गुरुता, गुरुत्व, गौरव ; (हे १, ३५ ; सुपा २३ ; १०६)।

गरिह देखो **गरह**। गरिहइ , गरिहामि; (महा ; पडि)।

गरिह पुं [**गर्ह**] निन्दा, गर्हा ; (प्राप्र)।

गरिहा स्त्री [**गर्हा**] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा ; (ओघ ७६१ ; स १६०)।

गरु देखो **गुरु** ; "गरुयरगत्ताए खिविऊण" (सुपा २१४)।

गरुअ वि [**गुरुक**] गुरु, बड़ा, महान् ; (हे १, १०६ ; प्राप्र ; प्रासू ३६)।

गरुअ सक [**गुरुकाय्**] गुरु करना, बड़ा बनाना। गरुएइ ; (पि १२३)।

"हंसाण सरेहिं सिरी, सारिज्जइ अह सराण हंसेहिं।
अगणोगणं चिअ एए, अप्पाणं णवर गरुअंति"
(हेका २५५)।

गरुआ, **गरुआअ** अक [**गुरुकाय्**] १ बडा बनना। २ बड़े की तरह आचरण करना। गरुआइ, गरुआअइ; (हे ३, १३८)।

गरुइअ वि [**गुरुकित**] बड़ा किया हुआ ; (से ६, २० ; गउड)

गरुई, **गरुवी** स्त्री [**गुर्वी**] बड़ी, ज्येष्ठा, महती ; (हे १,१०७; प्राप्र ; निचू १)।

गरुक्क देखो **गरुअ** ; "णवजोव्वणरूवगुणाहिया सिंगारगुणगरु-क्कंकण" (प्राप)।

गरुड देखो **गरुल** ; (संति १ ; स२६५; पिंग)। छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**त्थ** न [°**ास्त्र**] अस्त्र-विशेष, उरगास्त्र का प्रति-पक्षी अस्त्र ; (पउम १२, १३० ; ७१, ६६)। °**द्धय** पुं [°**ध्वज**] विष्णु, वासुदेव ; (पउम ६१, ५७)। °**वूह** पुं [°**व्यूह**] सेना की एक प्रकार की रचना ; (महा ; पि २४०)।

गरुडंक पुं [**गरुडाङ्क**] १ विष्णु, वासुदेव ; २ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ७)।

गरुल पुं [**गरुड**] १ पक्षि-राज, पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)। २ यक्ष-विशेष, भगवान् शान्तिनाथ का शासन-यक्ष ; (संति ८)। ३ भवनपति देवों की एक जाति, सुपर्णकुमार देव; (पण्ह १, ४)। ४ सुपर्णकुमार देवों का इन्द्र , (सूअ १, ६)। °**केउ** पुं [°**केतु**] देखो °**ज्झय** ; (राज)। °**ज्झय**, °**द्धय** पुं [°**ध्वज**] १ गरुड़ पक्षी के चित्र वाली ध्वजा ; (राय)। २ वासुदेव कृष्ण ; ३ देव-जाति विशेष ; सुपर्णकुमार देव ; (आवम; सम ; पि)। °**व्वूह** देखो **गरुड-वूह** ; (जं २) ; °**सत्थ** न [°**शस्त्र**] गरुड़ास्त्र, अस्त्र-विशेष ; (महा)। °**ासण** न [°**ासन**] आसन-विशेष ; (राय)। °**ोववाय** न [°**ोपपात**] शास्त्र-विशेष, जिसका याद करने से गरुड़ देव प्रत्यक्ष होता है ; (ठा १०)। देखो **गरुड**।

गरुवी देखो **गरुई** ; (कुमा)।

गल अक [**गल्**] १ गल जाना, सड़ना। २ खतम होना, समाप्त होना। ३ झरना, टपकना, गिरना। ४ पिघलना, नरम होना। ५ सक. गिराना, टपकाना। "जाव रत्ती गलइ" (महा)। वकृ—" नवेण रस-सोएहिं **गलंतम्** असुइरसं " (महा ; सुर ४, ६८ ; सुपा २०४)। **गलिंत** ; (पण्ह १, ३; प्रासू ७२)। प्रयो, वकृ—**गलावेमाण**; (णाया १, १२)।

गल, **गलअ** पुं [**गल**] १ गला, ग्रीवा, कण्ठ ; (सुपा ३३ ; पाअ)। २ बडिश, मच्छी पकड़ने का काँटा ; (उप १८८; विपा १, ८ ; सुर ८, १४०)। °**गज्जि** स्त्री [°**गर्जि**] गले की गर्जना ; (महा)। °**गज्जिय** न [°**गर्जित**] गल-गर्जन; (महा)। °**लाय** वि [°**लात** गले में लगाया हुआ, कण्ठ न्यस्त ; (औप)।

गलई स्त्री [**गलकी**] वनस्पति-विशेष ; (राज)।

गलग देखो **गलअ** ; (पगह १, १)।

गलत्थ देखो **खिव**। गलत्थइ ; (हे ४, १४३ ; भवि)।

गलत्थण न [**क्षेपण**] १ क्षेपण, फेंकना ; २ प्रेरण ; (से ५, ५३ ; सुपा २८)।

गलत्थलिअ वि [**दे**] १ क्षिप्त, फेंका हुआ ; २ प्रेरित ; (दे २, ८७)।

गलत्थल्ल पुं [**दे**] गलहस्त, हाथ से गला पकड़ना; (णाया १, ६ ; पगह १, ३—पत्र ५३)।

गलत्थल्लिअ [**दे**] देखो **गलत्थलिअ** ; (से ५, ४३ ; ८, ६१)।

गलत्था स्त्री [**दे**] प्रेरणा ;

"गरुआणं चिंय भुवणम्मि आवया न उण हुंति लहुआणं।
गहकल्लोलगलत्था, ससिसूराणं न ताराणं"
(उप ७२८ टी)।

गलत्थिअ वि [**क्षिप्त**] १ प्रेरित ; (सुपा ६३५)। २ फेंका हुआ ; (दे २, ८७; कुमा)। ३ बाहर निकाला हुआ; (पाअ)।

गलद्धअ पुं [**दे**] प्रेरित, क्षिप्त ; (षड्)।

गलाण देखो **गिलाण** ; (नाट—चैत ३४)।

गलि } वि [**गलि, °क**] दुर्विनीत, दुर्दम ; (श्रा १२ ;
गलिअ } सुपा २७६)। **°गद्दह** पुं [**°गर्दभ**] अविनीत गदहा ; (उत्त २७)। **°वइल्ल** पुं [**°बलीवर्द**] दुर्विनीत बैल ; (कप्पू)। **°स्स** पुं [**°श्व**] दुर्दम घोड़ा ; (उत्त १)।

गलिअ वि [**गलित**] १ गला हुआ, पिघला हुआ ; (कप्प)। २ क्षालित; प्रक्षालित; (कुमा)। ३ स्खलित, पतित ; (से १, २)। ४ नष्ट, नाश-प्राप्त; (सुपा २४३; सण)।

गलिअ वि [**दे**] स्मृत, याद किया हुआ ; (दे २, ८१)।

गलिंत देखो **गल**=गल्।

गलिर वि [**गलितृ**] निरन्तर पिघलता, टपकता; "बहुसोगगलिरनयणेण" (श्रा १४)।

गलुल देखो **गरुल**; (अच्चु १; षड्)।

गलोई } स्त्री [**गडूची**] वल्ली-विशेष, गिलोय , गुरच ;
गलोया } (हे १, १२४ ; जी १०)।

गल्ल पुं [**गल्ल**] १ गाल, कपोल ; (दे २, ८१ ; उवा)। २ हाथी का गण्ड-स्थल, कुम्भ-स्थल ; (षड्)। **°मसूरिया** स्त्री [**°मसूरिका**] गाल का उपधान ; (जीत)।

गल्लक्क पुंन [**दे**] १ स्फटिक मणि ; (प्राप ; पि २९६)।

गल्लत्थ देखो **गलत्थ**। गल्लत्थइ ; (षड्)।

गल्लप्फोड पुं [**दे**] डमरुक, वाद्य-विशेष ; (दे २, ८६)।

गल्लोल्ल न [**दे**] गडुक, पात्र-विशेष ; (निचू १)।

गव पुंस्त्री [**गो**] पशु, जानवर ; (सूअ १, २, ३)।

गवक्ख पुं [**गवाक्ष**] १ गवाक्ष, वातायन ; (औप ; पगह २, ४)। २ गवाक्ष के आकृति का रत्न-विशेष ; (जीव ३)। **°जाल** न [**°जाल**] १ रत्न-विशेष का ढग ; (जीव ३ ; राय)। २ जाली वाला वातायन ; (औप)।

गवच्छ पुं [**दे**] आच्छादन, ढकना ; (राय)।

गवच्छिय वि [**दे**] आच्छादित, ढका हुआ ; (राय; जीव ३)।

गवत्त न [**दे**] घास, तृण ; (दे २, ८५)।

गवय पुं [**गवय**] गो की आकृति का जङ्गली पशु-विशेष ; (पगह १, १)।

गवर पुं [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पगण १—पत्र ३४)।

गवल पुं [**गवल**] १ जङ्गली पशु-विशेष ; जंगली महिष; (पउम ८८, ६)। २ न. महिष का सिंग ; (पगण १७ ; सुपा ६२)।

गवा स्त्री [**गो**] गैया, गाय ; (पउम ८०, १३)।

गवायणी स्त्री [**गवादनी**] इन्द्रवारुणी, वनस्पति-विशेष ; (दे २, ८२)।

गवार वि [**दे**] गँवार, छोटे गाँव का निवासी; (वज्जा ४)।

गवालिय न [**गवालीक**] गौ के विषय में अनृत भाषण; (पगह १, २)।

गविअ वि [**दे**] अवधृत, निश्चित ; (षड्)।

गविट्ठ वि [**गवेषित**] खोजा हुआ ; (सुपा १५४ ; ६४०; स ४८४ ; पाअ)।

गविल न [**दे**] जात्य चीनी, शुद्ध मिस्री ; (उर ५, ६)।

गवेधुआ स्त्री [**गवेधुका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प)।

गवेलग पुंस्त्री [**गवेलक**] १ मेष, भेड़ ; (णाया १, १ ; औप)। २ गौ और भेड़; (ठा ७)।

गवेस सक [**गवेषय्**] गवेषणा करना, खोजना, तलास करना। गवेसइ ; (महा ; षड्)। भूका—गवेसित्था ; (आचा)। वकृ—**गवेसंत, गवेसयंत, गवेसमाण** ; (श्रा १२ ;

सुपा ४१० ; सुर १, २०२ ; णाया १, ४)। हेकृ—**गवेसित्तए** ; (कप्प)।

गवेसइत्तु वि [**गवेषयितृ**] खोज करने वाला, गवेषक ; (ठा ४, २)।

गवेसग वि [**गवेषक**] ऊपर देखो ; (उप पृ ३३)।

गवेसण न [**गवेषण**] खोज, अन्वेषण ; (औप ; सुर ४, १४३)।

गवेसणया, **गवेसणा** स्त्री [**गवेषणा**] १ खोज, अन्वेषण; (औप; सुपा २३३)। २ शुद्ध भिक्षा की याचना; (ओघ ३)। ३ भिक्षा का ग्रहण ; (ठा ३, ४)।

गवेसय देखो **गवेसग**; (भवि)।

गवेसाविय वि [**गवेषित**] १ दूसरे से खोजवाया हुआ, दूसरे द्वारा खोज किया गया ; (स २०७ ; ओघ ६२२ टी)। २ गवेषित, अन्वेषित, खोजा हुआ ; (स ६८)।

गवेसि वि [**गवेषिन्**] खोज करने वाला, गवेषक; (पुप्फ ४४०)।

गवेसिअ वि [**गवेषित**] अन्वेषित, खोजा हुआ ; (सुर १५, १२६)।

गव्व पुं [**गर्व**] मान, अहंकार, अभिमान ; (भग १५ ; पव २१६)।

गव्वर न [**गह्वर**] कोटर, गुहा ; (स ३६३)।

गव्वि वि [**गर्विन्**] अभिमानी, गर्व-युक्त ; (श्रा १२ ; दे ७, ६१)।

गव्विट्ठ वि [**गर्विष्ठ**] विशेष अभिमानी, गर्व करने वाला ; (दे १, १२८)।

गव्विय वि [**गर्वित**] गर्व-युक्त, जिसको अभिमान उत्पन्न हुआ हो वह ; (पाअ ; सुपा २७०)।

गव्विर वि [**गर्विन्**] अहंकारी, अभिमानी; (हे २, १५९ ; हेका ४५)। स्त्री—°**री** ; (हेका ४५)।

गस सक [**ग्रस्**] खाना, निगलना, भक्षण करना। गसइ; (हे ४, २०४ ; षड्)। वकृ—**गसंत**; (उप ३२० टी)।

गसण न [**ग्रसन**] भक्षण, निगलना; (स ३५७)।

गसिअ वि [**ग्रस्त**] भक्षित, निगलित ; (कुमा ; सुर ६, ६० ; सुपा ४८६)।

गह सक [**ग्रह्**] १ ग्रहण करना, लेना। २ जानना। गहेइ; (सण)। वकृ—**गहंत** ; (श्रा २७)। संकृ—**गहाय**, **गहिअ**, **गहिऊण**, **गहिया**, **गहेउं** ; (पि ५९१ ; नाट; पि ५८६; सूअ १, ४, १; १, ५, २)। कृ—**गहोअव्व**, **गहेअव्व** ; (रयण ७० ; भग)।

गह पुं [**ग्रह**] १ ग्रहण, आदान, स्वीकार ; (विसे ३७१ ; सुर ३, ६२)। २ सूर्य, चन्द्र वगैरः ज्योतिष्क देव ; (गउड ; पण्ह १, २)। ३ कर्म का बन्ध ; (दस ४)। ४ भूत वगैरः का आक्रमण, आवेश ; (कुमा ; सुर २, १४४)। ५ गृद्धि, आसक्ति, तल्लीनता ; (आचा)। ६ संगीत का रस-विशेष ; (दस २)। °**खोभ** पुं [°**क्षोभ**] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंकेश ; (पउम ५, २६६)। °**गज्जिय** न [°**गर्जित**] ग्रहों के संचार से होने वाली आवाज; (जीव ३)। °**गहिय** वि [°**गृहीत**] भूतादि से आक्रान्त, पागल ; (कुमा ; सुर २, १४४)। °**चरिय** न [°**चरित**] १ ज्योतिष-शास्त्र ; (वव ४)। २ ज्योतिष-शास्त्र का परिज्ञान ; (सम ८३)। °**दंड** पुं [°**दण्ड**] दण्डाकार ग्रह-पंक्ति; (भग ३, ७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] १ सूर्य, सूरज ; (श्रा २८)। २ चन्द्र, चन्द्रमा ; (उप ७२८ टी)। °**मुसल** न [°**मुशल**] मुशलाकार ग्रह-पंक्ति ; (जीव ३)। °**सिंघाडग** न [°**शृङ्गाटक**] १ पानी-फल के आकार वाली ग्रह-पङ्क्ति ; (भग ३, ७)। २ ग्रह-युग्म, ग्रह की जोड़ी; (जीव ३)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] सूर्य, सूरज ; (श्रा २८)।

गह° न [**गृह**] घर, मकान। °**वइ** पुं [°**पति**] गृहस्थ, गृही, संसारी ; (पउम २०, ११६ ; प्राप्र ; पाअ)। °**वइणी** स्त्री [°**पत्नी**] गृहिणी, स्त्री ; (सुपा २२६)।

गहकल्लोल पुं [**दे. ग्रहकल्लोल**] राहु, ग्रह-विशेष; (दे २, ८६ ; पाअ)।

गहगह अक [**दे**] हर्ष से भर जाना, आनन्द-पूर्ण होना। गहगहइ ; (भवि)।

गहण न [**ग्रहण**] १ आदान, स्वीकार; (से ४, ३३ ; प्रासू १४)। २ आदर, सम्मान ; ३ ज्ञान, अवबोध ; (से ४, ३३)। ४ शब्द, आवाज; (आचा २, ३, ३; आवम)। ५ ग्रहण करने वाला; ६ **इन्द्रिय** ; (विसे १७०७)। ७ चन्द्र-सूर्य का उपराग; (भग १२, ६)। ८ ग्राह्य, जिसका ग्रहण किया जाय वह; (उत्त ३२)। ९ शिक्षा-विशेष; (आव)।

गहण न [**ग्राहण**] ग्रहण कराना, अंगीकार कराना ; "जो आसि बंभचेरग्गहणगुरू" (कुमा)।

गहण वि [**गहन**] १ निबिड, दुर्भेद्य, दुर्गम ; "काले अणाइणिहणे जोणीगहणम्मि भीसणे इत्थ" (जी ४६);

"कलसारखलिलिगहणा" (गउड)। २ वन, झाड़ी, घना कानन ; (पाअ ; भग)। ३ वृक्ष-गह्वर, वृक्ष का कोटर; (विपा १, ३—पत्र ४६)।

गहण न [**दे**] १ निर्जल स्थान, जल-रहित प्रदेश; (दे २, ८२ ; आचा २, ३, ३)। २ बन्धक, धरोहर, गिरों ; (सुपा ५४८)।

गहणय न [**दे**] गहना, आभूषण ; (सुपा १५४)।

गहणया स्त्री [**ग्रहण**] ग्रहण, स्वीकार, उपादान; (औप)।

गहणी स्त्री [**ग्रहणी**] गुदाशय, गाँड़ ; (पराह १, ४ ; औप)।

गहणी स्त्री [**दे**] जबरदस्ती हरण की हुई स्त्री, बाँदी ; (दे २, ८४ ; से ६, ४७)।

गहत्थि पुं [**गभस्ति**] किरण, त्विषा ; (पाअ)।

गहर पुं [**दे**] गृध्र, गीध पक्षी ; (दे २, ८४ ; पाअ)।

गहवइ पुं [**दे**] १ ग्रामीण, गाँव का रहने वाला ; (दे २, १००)। २ चन्द्रमा, चाँद ; (दे २, १०० ; पाअ ; वाअ १५)।

गहिअ वि [**दे**] वक्रित, मोड़ा हुआ, टेढ़ा किया हुआ ; (दे २, ८५)।

गहिअ वि [**गृहीत**] १ उपात्त, स्वीकृत ; (औप ; ठा ४, ४)। २ पकड़ा हुआ ; (पराह १, ३)। ३ ज्ञात, उपलब्ध, विदित ; (उत्त २ ; षड्)।

गहिअ वि [**गृद्ध**] आसक्त, तल्लीन ; (आचा)।

गहिआ स्त्री [**दे**] १ काम-भोग के लिए जिसकी प्रार्थना की जाती हो वह स्त्री ; (दे २, ८५)। २ ग्रहण करने योग्य स्त्री; (षड्)।

गहिर वि [**गभीर**] गहरा, गम्भीर, अ-स्ताघ ; (दे १, १०१ ; काप्र ६२५ ; कप्प ; गउड ; औप ; प्राप्र)।

गहिल वि [**ग्रहिल**] भूतादि से आविष्ट, पागल ; (श्रा १४)।

गहिलिय } वि [**दे. ग्रहिल**] आवेश-युक्त, पागल, भ्रान्त-
गहिल्ल } चित्त ; (पउम ११३, ४३ ; षड् ; श्रा १२ ; उप ५६७ टी ; भवि)।

गहीअ देखो **गहिअ=गृहीत** ; (श्रा १२ ; रयण ६८)।

गहीर देखो **गभीर** ; (प्रासू ६)।

गहीरिअ न [**गाभीर्य**] गहराई, गम्भीरपन ; (हे २,

गहीरिम पुंस्त्री [**गभीरिमन्**] गहराई, गम्भीरता ; (हे ४, ४१६)।

गहेअव्व } देखो **गह=ग्रह्**।
गहेउं }

गहृण (अप) देखो **गह=ग्रह्**। गहृणइ ; (षड्)।

गा } सक [**गै**] १ गाना, आलापना। २ वर्णन करना।
गाअ } ३ श्लाघा करना। गाइ, गाअइ; (हे ४,६)। वकृ—**गंत, गाअंत, गायमाण**; (गा ५४६ ; पि ४७६ ; पउम ६४,२४)। कवकृ—**गिज्जंत** ; (गउड ; गा ६४२ ; सुपा २१ ; सुर ३, ७६)। संकृ—**गाइउं** ; (महा)।

गाअ पुं [**गो**] बैल, वृषभ, साँड़ ; (हे १, १५८)।

गाअ न [**गात्र**] १ शरीर, देह ; (सम ६०)। २ शरीर का अवयव ; (औप)।

गाअ वि [**गायक**] गाने वाला ; (कुमा)।

गाअंक पुं [**गवाङ्क**] महादेव, शिव ; (कुमा)।

गाअण वि [**गायन**] गाने वाला, गवैया; (सुपा ५५ ; सण)।

गाइअ वि [**गीत**] १ गाया हुआ ; "किन्नरेण तो गाइयं गीयं" (सुपा १६)। २ न. गीत, गान, गाना ; (आव ४)।

गाइआ स्त्री [**गायिका**] गाने वाली स्त्री ; (गा ६४४)।

गाइर वि [**गाथक**] गाने वाला, गवैया ; (सुपा ५४)।

गाई स्त्री [**गो**] गैया, गौ ; (हे १, १५८ ; दे ४, १८ ; गा २७१ ; सुर ७, ६५)।

गाउ }
गाउअ } न [**गव्यूत**] १ कोस, क्रोश, दो हजार धनुष-प्रमाण जमीन; (पि २५४ ; औप ; इक ; जी १८;
गाऊअ } विसे ८२ टी)। २ दो कोस, क्रोश-युग्म (ओघ १२)।

गागर पुं [**दे**] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष, घघरा ; गुजराती में 'घाघरो' ; (पराह १,४)। २ मत्स्य-विशेष; (पराण १)।

गागरी [**दे**] देखो **गायरी** ; (पि ६२)।

गागलि पुं [**गागलि**] एक जैन मुनि ; (उत्त १०)।

गागेज्ज वि [**दे**] मथित, आलोड़ित ; (दे २, ८८)।

गागेज्जा स्त्री [**दे**] नवोढ़ा, दुलहिन ; (दे २, ८८)।

गाडिअ वि [**दे**] विधुर, वियुक्त ; (दे २,८३)।

गाढ वि [**गाढ**] १ गाढ, निबिड़, सान्द्र ; (पाअ ; सुर १४, ४८)। २ मजबूत, दृढ़ ; (सुर ४,२३७)। ३ क्रिवि. अत्यन्त, अतिशय ; (कप्प)।

गाण न [**गान**] गीत, गाना ; (हे ४,६)।

गाणंगणिअ पुं [**गाणङ्गणिक**] छ ही मास के भीतर एक साधु-गण से दूसरे गण में जाने वाला साधु ; (बृह १)।

गाणी स्त्री [**दे**] गवादनी, वनस्पति-विशेष, इन्द्रवारुणी ; (दे २, ८२)।

गाथा देखो **गाहा** ; (भग ; पिंग)।

गाध वि [**गाध**] स्ताघ, अ-गहरा ; (दे ५, २४)।

गाम पुं [**ग्राम**] १ समूह, निकर ; "चवलो इंदियगामो" (सुर २, १३८)। २ प्राणि-समूह, जन्तु-निकर ; (विसे २८६६)। ३ गाँव, वसति, ग्राम; (कप्प; णाया १,१८; औप)। ४ इन्द्रिय-समूह ; (भग; औप)। °**कंडग,** °**कंडय** पुं [°**कण्टक**] १ इन्द्रिय-समूह रूप काँटा ; (भग ; औप) । २ दुर्जनों का रूक्ष आलाप, गाली ; (आचा)। °**घायग** वि [°**घातक**] गाँव का नाश करने वाला ; (पण्ह १,३)। °**णिद्धमण** न [°**निर्धमन**] गाँव का पानी जाने का रास्ता, नाला ; (कप्प)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] १ विषयाभिलाष, विषय की वाञ्छा ; (ठा १०)। २ इन्द्रियों का स्वभाव ; ३ विषय-प्रवृत्ति ; (आचा)। ४ मैथुन ; (सूअ १, २,२)। ५ शब्द, रूप वगैरः इन्द्रियों का विषय; (पण्ह १,४)। ६ गाँव का धर्म, गाँव का कर्तव्य ; (ठा १०)। °**द्ध** पुंन [°**र्ध**] आधा गाँव। २ उत्तर भारत, भारत का उत्तर प्रदेश ; (निचू १२)। °**मारी** स्त्री [°**मारी**] गाँव भर में फैली हुई बिमारी-विशेष ; (जीव ३)। °**रोग** पुं [°**रोग**] ग्राम-व्यापक बिमारी; (जं २)। °**वइ** पुं [°**पति**] गाँव का मुखिया ; (पाअ)। °**णुग्गाम** न [°**ानुग्राम**] एक गाँव से दूसरे गाँव ; (औप)। °**ायार** पुं [°**ाचार**] विषय ; (आवम)।

गामउड } पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २, ८६ ;
गामऊड } बृह ३)।

गामंतिय न [**ग्रामान्तिक**] १ गाँव की सीमा ; (आचा)। २ वि. गाँव की सीमा में रहने वाला ; (दसा १)। ३ पुं. जैनेतर दार्शनिक विशेष ; (सूअ २,२)।

गामगोह पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २, ८६)।

गामड पुं [**ग्रामक**] गाँव, छोटा गाँव ; (श्रा १६)।

गामण न [**दे. गमन**] भूमि में गमन, भू-सर्पण ; (भग ११, ११)।

गामणह न [**दे**] ग्राम-स्थान, ग्राम-प्रदेश ; (षड्)।

गामणि देखो **गामणी** ; (दे २, ८६; षड्)।

गामणिसुअ पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २,८६)।

गामणी पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २,८६ ; प्रामा)।

गामणी वि [**ग्रामणी**] १ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक ; (से ७, ६० ; धण १ ; गा ४४६ ; षड्)। २ पुं. तृण-विशेष ; (दे २, ११२)।

गामपिंडोलग पुं [**दे**] भीख से पेट भरने के लिए गाँव का आश्रय लेने वाला भीखारी ; (आचा)।

गामरोड पुं [**दे**] छल से गाँव का मुखिया बन बैठने वाला ; गाँव के लोगों में फूट उत्पन्न कर गाँव का मालिक होने वाला; (दे २, ६०)।

गामहण न [**दे**] १ ग्राम-स्थान, गाँव का प्रदेश; (दे २,६०)। २ छोटा गाँव ; (पाअ)।

गामाग पुं [**ग्रामाक**] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक सन्नि-वेश ; (आवम)।

गामार वि [**दे. ग्रामीण**] ग्रामीण, छोटे गाँव का रहने वाला ; (वज्जा ४)।

गामि वि [**गामिन्**] जाने वाला ; (गा १६७ ; आचा)। स्त्री—°**णी**; (कप्प)।

गामिअ वि [**ग्रैमिक**] १ देखो **गामिल्ल**; (दे २, १००)। २ ग्राम का मुखिया ; (निचू २)। ३ विषयाभिलाषी ; (आचा)।

गामिणिआ स्त्री [**गामिनिका**] गमन करने वाली स्त्री ; "ललिअहंसबहुगामिणिआहिं" (अजि २६)।

गामिल्ल } वि [**ग्रामीण**] गाँव का निवासी, गँवार ;
गामिल्लुअ } (पउम ७७, १०८; विसे १ टी; दे ८, ४७)।
गामीण } स्त्री— °**ल्ली** ; (कुमा)।

गामुअ वि [**गामुक**] जाने वाला ; (स १७५)।

गामेइआ स्त्री [**ग्रामेयिका**] गाँव की रहने वाली स्त्री, गँवार स्त्री ; (गउड)।

गामेणी स्त्री [**दे**] छागी, अजा, बकरी ; (दे २, ८४)।

गामेयग वि [**ग्रामेयक**] गाँव का निवासी, गँवार; (बृह १)।

गामेरुड [**दे**] देखो **गामरोड**; (षड्)।

गामेलुअ } देखो **गामिल्ल** ; (मृच्छ २७५ ; विपा १,१ ;
गामेल्ल } विसे १४११)।

गामेस पुं [**ग्रामेश**] गाँव का अधिपति; (दे २,३७)।

गायरी स्त्री [**दे**] गर्गरी, कलशी, छोटा घड़ा; (दे २,८६)।

°**गार** वि [°**कार**] कारक, कर्त्ता; (भवि)।

गार पुं [**दे. ग्रावन्**] पत्थर, पाषाण, कङ्कर; (वव ४)।

गार न [**अगार**] गृह, घर, मकान; (ठा ६)। °**त्थ** पुंस्त्री [°**स्थ**] गृहस्थ, गृही; (निचू१)। °**त्थिय** पुंस्त्री [°**स्थित**]

गृहस्थ, गृही, संसारी; "गारत्थियजणउचियं भासासमिओ न भासिज्जा" (पुप्फ १८१; ठा ६)।

°**गारय** वि [**कारक**] कर्ता, करने वाला; (स १५१)।

गारव पुंन [**गौरव**] १ अभिमान, अहंकार; २ अभिलाष, लालसा; "तओ गारवा पणत्ता" (ठा ३,४ ; श्रा ३५; सम ८)। ३ महत्व, गुरुत्व, प्रभाव ; (कुमा)। ४ आदर, सम्मान ; (षड् ; प्राप्र)।

गारविय वि [**गौरवित**] १ गौरवान्वित, महत्वशाली। २ गर्व-युक्त, अभिमानी ; ३ लालसा वाला, अभिलाषी ; (सूत्र १,१,१)।

गारविल्ल वि [**गौरववत्**] ऊपर देखो ; (कम्म१,५६)।

गारि पुंस्त्री [**अगारिन्**] गृही, संसारी, गृहस्थ; (उत्त ५,१६)।

गारिहत्थिय स्त्रीन [**गार्हस्थ्य**] गृहस्थ-संबन्धी, संसारि-संबन्धी। स्त्री—°**या** ; (पव २३५)।

गारुड } वि [**गारुड**] १ गरुड़-संबन्धी ; २ सर्प के विष
गारुल } को उतारने वाला, सर्प-विष को दूर करने वाला ; ३ पुं. सर्प-विष को दूर करने वाला मन्त्र ; (उप ६८६ टी ; से १४, ५७)। ४ न. शास्त्र-विशेष, मन्त्र-शास्त्र-विशेष, सर्प-विष-नाशक मन्त्र का जिसमें वर्णन हो वह शास्त्र ; (ठा ६)। °**मंत** पुं [°**मन्त्र**] सर्प-विष का नाशक मन्त्र ; (सुपा २१६)। °**विउ** वि [°**वित्**] गारुड मन्त्र का जानकार, गारुड शास्त्र का जानकार ; (उप ६८६ टी)।

गाल सक [**गालय्**] १ गालना, छानना। २ नाश करना। ३ उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना। गालयइ ; (विसे ६४)। वकृ—**गालेमाण** : (भग ६,३३)। कवकृ—**गालिज्जंत** ; (सुपा १७३)। प्रयो—गालावेइ ; (गाया १, १२)।

गालण न [**गालन**] छानना, गालना; (पराह १, १ ; उप पृ ३७६)।

गालणा स्त्री [**गालना**] १ गालना, छानना ; २ गिरवाना; ३ पिघलवाना ; (विपा १,१)।

गालवाहिया स्त्री [**दे**] छोटी नौका, डोंगी ; "एत्थंतरम्मि समागया गालवाहियाए निज्जामया" (स ३५१)।

गालि स्त्री [**गालि**] गाली, अपशब्द, असभ्य वचन; (सुपा ३७०)।

गालिय वि [**गालित**] १ छाना हुआ। २ अतिक्रान्त। ३ विनाशित; ४ क्षिप्त ; "गालियमिंठो निरंकुसो वियरिओ राय-हत्थी" (महा)।

गाली स्त्री [**गाली**] देखो **गालि** ; (पव ३८)।

गाव (अप) देखो **गा**। गावइ ; (पिंग)। वकृ—**गावंत** ; (पि २५४)।

गाव (अप) देखो **गव्व** ; (भवि)।

गाव वि [**दे**] गत, गया हुआ, गुजरा हुआ ; (षड्)।

गाव } पुं [**ग्रावन्**] १ पत्थर, पाषाण; (पाअ)। २
गावाण } पहाड़, गिरि ; (हे ३, ५६)।

गावि (अप) देखो **गव्विय** ; (भवि)।

गावी स्त्री [**गो**] गौ, गैया ; (हे २, १७४ ; विपा १, २ ; महा)।

गास पुं [**ग्रास**] ग्रास, कवल ; (सुपा ४८८)।

गाह देखो **गह**=ग्रह्। कर्म—गाहिज्जइ ; (प्राप्र)।

गाह सक [**ग्राहय्**] ग्रहण कराना। गाहेइ ; (औप)।

गाह सक [**गाह्**] १ गाहना, ढूँढ़ना। २ पढ़ना, अभ्यास करना। ३ अनुभव करना। ४ टोह लगाना। गाहदि (शौ) ; (मृच्छ ७२)। कवकृ—**गाहिज्जंत** ; (वज्जा ४)।

गाह पुं [**गाध**] स्ताघ, थाह ; (ठा ४, ४)।

गाह पुं [**ग्राह**] १ गाह, कुंभीर, नक्र, जल-जन्तु विशेष ; (दे २, ८६ ; गाया १, ४ ; जी २०)। २ आग्रह, हठ ; (विसे २५८६; पउम १६, १२)। ३ ग्रहण, आदान; (निचू १)। ४ गारुड़िक, सर्प को पकड़ने वाली मनुष्य-जाति ; (बृह १)। °**वई** स्त्री [°**वती**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ८०)।

गाहग वि [**ग्राहक**] १ ग्रहण करने वाला, लेने वाला; (सुपा ११)। २ समझने वाला, जानने वाला; (सुपा ३४३)। ३ समझाने वाला, शिक्षक, आचार्य, गुरू ; (औप)। ४ ज्ञापक, बोधक। स्त्री —**गाहिगा** ; (औप)।

गाहण न [**ग्राहण**] १ ग्रहण कराना ; २ ग्रहण, आदान ; "गाहण तवचरियस्सा गहणं चिय गाहणा होंति" (पंचभा)। ३ शास्त्र, सिद्धान्त ; (वव ४)। ४ बोधक वचन, शिक्षा, उपदेश ; (पराह २, २)।

गाहणया } स्त्री [**ग्राहणा**] ऊपर देखो ; (उप पृ ३१४ ;
गाहणा } आचा ; गच्छ १)।

गाहय देखो **गाहग** ; (विसे ८३१ ; स ४६८)।

गाहा स्त्री [**गाथा**] १ छन्द-विशेष, आर्या, गीति ; (ठा ५, ३ ; अजि ३७ ; ३८)। २ प्रतिष्ठा ; ३ निश्चय ; "संसपयाए य गाहा" (आव ४)। ४ सूत्रकृतांग सूत्र का सोलहवाँ अध्ययन ; (सूअ १, १, १)।

गाहा स्त्री [दे] गृह, घर, मकान ; "गाहा घरं गिहमिति एगट्ठा" (वव ८)। °**वइ** पुंस्त्री [°**पति**] १ गृहस्थ, गृही, संसारी; (ठा ४,४ ; सुपा २२६)। २ धनी, धनाढ्य; (उत्त १)। ३ भंडारी, भाण्डागारिक ; (सम २७)। स्त्री—°**णी**; (णाया १, ५ ; उवा)।

गाहाल पुं [**ग्राहाल**] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु विशेष ; (जीव १)।

गाहावई स्त्री [**ग्राहावती**] १ नदी-विशेष ; २ द्वीप-विशेष; ३ ह्रद-विशेष, जहां से ग्राहावती नदी निकलती है; (जं ४)।

गाहाविय वि [**ग्राहित**] जिसको ग्रहण कराया गया हो वह ; (सुर ११, १८३)।

गाहिणी स्त्री [**गाहिनी**] १ गाहने वाली स्त्री। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

गाहिपुर न [**गाधिपुर**] नगर-विशेष ; (गउड)।

गाहिय वि [**ग्राहित**] १ जिसको ग्रहण कराया गया हो वह ; २ आमित, ऊकसाया हुआ ; (सूत्र १, २, १)।

गाहीकय वि [**गाथीकृत**] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ ; (सूत्र १, १६)।

गाहु स्त्री [**गाहु**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

गाहुलि पुंस्त्री [**दे**] ग्राह, नक्र, कूर जल-जन्तु विशेष ; (दे २, ८६)।

गाहुलिया देखो **गाहा**=गाथा ; (सुपा २६४)।

गिंठि स्त्री [**गृष्टि**] १ एक बार व्यायी हुई ; २ एक बार व्यायी हुई गौ ; (हे १, २६)।

गिंधुअ [**दे**] देखो **गेंदुअ**; (पाअ)।

गिंधुल्ल [**दे**] देखो **गेंदुल्ल** ; (पाअ)।

गिंभ (अप) देखो **गिम्ह** ; (हे ४, ४४२)।

गिंह देखो **गिम्ह** ; (षड्)।

गिज्जंत देखो **गा**।

गिज्झ अक [**गृध्**] आसक्त होना, लम्पट होना। गिज्झइ ; (हे ४, २१७)। गिज्झइ ;(णाया १, ८)। वकृ—**गिज्झंत**; (औप)। कृ—**गिज्झियव्व**; (पण्ह २, ५)।

गिज्झ वि [**गृह्य, ग्राह्य**] १ ग्रहण करने योग्य ; २ अपनी तरफ में किया जा सके ऐसा ; (ठा ३, २)।

गिट्ठि देखो **गिंठि** ; " वारेंतस्सवि बला दिट्ठी गिट्ठिव्व जवसम्मि" (उप ७२८ टी ; पाअ ; गा ६४०)।

गिड्डिया स्त्री [**दे**] गेड़ी, गेंद खेलने की लकड़ी ; (पव ३८)।

गिण देखो **गण**=गणय्। गिणंति ; (सद्दि ६७)।

गिण्ह देखो **गह**=ग्रह्। गिण्हइ ; (कप्प)। वकृ—**गिण्हंत, गिण्हमाण**; (सुपा ६१६ ; णाया १, १)। संकृ—**गिण्हिउं, गिण्हिऊण, गिण्हित्ता**; (पि ५७४ ; ५८५ ; ५८२)। हेकृ—**गिण्हित्तए** ; (कप्प)। कृ—**गिण्हियव्व, गिण्हेयव्व**; (अणु; सुपा ५१३)।

गिण्हणा स्त्री [**ग्रहण**] उपादान, आदान ; (उत्त १६, २७)।

गिद्ध पुं [**गृध्र**] पक्षि-विशेष, गीध; (पाअ ; णाया १,१६)।

गिद्ध वि [**गृद्ध**] आसक्त, लम्पट, लोलुप ; (पण्ह १, २ ; आचू ३)।

गिद्धि स्त्री [**गृद्धि**] आसक्ति, लम्पटता, गार्ध्य ; (सूअ १, ६)।

गिम्ह पुं [**ग्रीष्म**] ऋतु-विशेष, गरमी की मौसिम ; (हे २, ७४ ; प्राप्र)।

गिर सक [**गॄ**] १ बोलना, उच्चारण करना। २ गिलना, निगलना। गिरइ ; (षड्)।

गिरा स्त्री [**गिर्**] वाणी, भाषा, वाक् ; (हे १, १६)।

गिरि पुं [**गिरि**] १ पहाड़, पर्वत ; (गउड ; हे १, २३)। °**अडी** स्त्री [°**तटी**] पर्वतीय नदी; (गउड)। °**कण्णई**, °**कण्णी** स्त्री [°**कर्णी**] वल्ली-विशेष, लता-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३३ ; श्रा २०)। °**कूड** न [°**कूट**] १ पर्वत का शिखर। २ पुं. रामचन्द्र का महल ; (पउम ८०, ४)। °**जण्ण** पुं [°**यज्ञ**] कोंकण देश में वर्षा-काल में किया जाता एक प्रकार का उत्सव ; (बृह १)। °**णई** स्त्री [°**नदी**] पर्वतीय नदी; (पि ३८५)। °**णाल** पुं [°**नार**] प्रसिद्ध पर्वत-विशेष, जो काठियावाड़ में आज-कल भी "गिरनार" के नाम से विख्यात है ; (ती ३)। °**दारिणी** स्त्री [°**दारिणी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३६)। °**नई** देखो °**णई** ; (सुपा ६३५)। °**पक्खंदण** न [°**प्रस्कन्दन**] पहाड़ पर से गिरना ; (निचू ११)। °**यडय** न [°**कटक**] पर्वत-नितम्ब ; (गउड)। °**पब्भार** पुं [°**प्राग्भार**] पर्वत-नितम्ब ; (संथा)। °**राय** पुं [°**राज**] मेरु पर्वत ; (इक)। °**वर** पुं [°**वर**] प्रधान पर्वत, उत्तम पहाड़ ; (सुपा १७६)। °**वरिंद** पुं [°**वरेन्द्र**] मेरु पर्वत ; (श्रा २७)। °**सुआ** स्त्री [°**सुता**] पार्वती, गौरी ; (पिंग)।

गिरि पुं [**दे**] बीज-कोश ; (दे ६, १४८)।

गिरिंद पुं [**गिरीन्द्र**] १ श्रेष्ठ पर्वत; २ मेरु पर्वत; ३ हिमाचल; (कप्पू)।

गिरिडी स्त्री [**दे**] पशुओं के दाँत को बाँधने का उपकरण-विशेष; "दंतगिरिडिं पवंधइ" (सुपा २३७)।

गिरिस पुं [**गिरिश**] महादेव, शिव; (पाअ; दे ६,१२१)। °**वास** पुं [°**वास**] कैलाश पर्वत; (से ६, ७५)।

गिरीस पुं [**गिरीश**] १ हिमाचल पर्वत; २ महादेव, शिव; (पिंग)।

गिल सक [**गॄ**] गिलना, निगलना, भक्षण करना। संकृ—**गिलिऊण**; (नाट)।

गिलण न [**गरण**] निगरण, भक्षण; (हे ४,४४५)।

गिला } **गिलाअ** } अक [**ग्लै**] १ ग्लान होना, बिमार होना। २ खिन्न होना, थक जाना। ३ उदासीन होना। गिलाइ, गिलायइ, गिलाएमि; (भग; कस; आचा)। वकृ—**गिलायमाण**; (ठा ३,३)।

गिला स्त्री [**ग्लानि**] १ बिमारी, रोग; २ खेद, थाक; (ठा ८)।

गिलाण वि [**ग्लान**] १ बिमार, रोगी; (सूअ १, ३,३)। २ अशक्त, असमर्थ, थका हुआ; (ठा ३,४)। ३ उदासीन, हर्ष-रहित; (णाया १, १३; हे २, १०६)।

गिलाणि स्त्री [**ग्लानि**] ग्लानि, खेद, थकावट; (ठा ५,१)।

गिलायय वि [**ग्लायक**] ग्लानि-युक्त, ग्लान; (औप)।

गिलासि पुंस्त्री [**ग्रासिन्**] व्याधि-विशेष, भस्मक रोग; (आचा)। स्त्री—°**णी**; (आचा)।

गिलिअ वि [**गिलित**] निगला हुआ, भक्षित; (सुपा ३, २०९; सुपा ६४०)।

गिलिअवंत वि [**गिलितवत्**] जिसने भक्षण किया हो वह; (पि ५६९)।

गिलोइया } **गिलोई** } स्त्री [**दे**] गृह-गोधा, छिपकली; (सुपा ६४०; पुप्फ २६७)।

गिल्लि स्त्री [**दे**] १ हाथी की पीठ पर कसा जाता होदा, हौदा; (णाया १,१—पत्र ४३ टी; औप)। २ डोली, दो आदमी से उठाई जाती एक प्रकार की शिबिका; (सूअ २,२; दसा ६)।

गिव्वाण पुं [**गीर्वाण**] देव, सुर, त्रिदश; (उप ५३० टी)।

गिह न [**गृह**] घर, मकान; (आचा; श्रा २३; स्वप्न ६४)। °**त्थ** पुंस्त्री [**स्थ**] गृहस्थ, गृही, संसारी; (कप्प; द्र ५)। स्त्री—°**त्था**; (पउम ४६, ३३)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] घर का मालिक; (श्रा २८)। °**लिंगि** पुंस्त्री [°**लिङ्गिन्**] गृहस्थ, गृही, संसारी; (दंस)। °**वइ** पुंस्त्री [°**पति**] गृहस्थ, गृही, घर का मालिक; (ठा ५, ३; सुपा २३४)। °**वास** पुं [°**वास**] १ घर में निवास; २ द्वितीयाश्रम, संसारिपन; "गिहवासं पासं पिव मन्नंतो वसइ दुक्खिओ तम्मि" (धम्म; सूअ १,९)। °**ावट्ट** पुं [°**ावर्त्त**] द्वितीय आश्रम, संसारिपन; (सूअ १,४,१)। °**ासम** पुं [°**ाश्रम**] घरवास, द्वितीयाश्रम; (स १४८)।

गिहि पुं [**गृहिन्**] गृही, संसारी, गृहस्थ; (ओघ १७ भा; नव ४३)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] गृहस्थ-धर्म, श्रावक-धर्म; (राज)। °**लिंग** न [°**लिङ्ग**] गृहस्थ का वेष; (बृह १)।

गिहिणी स्त्री [**गृहिणी**] गृहिणी, भार्या, स्त्री; (सुपा ८३; श्रा १६)।

गिहीअ वि [**गृहीत**] आत्त, उपात्त, ग्रहण किया हुआ; (स ४२८)।

गिहेलुय पुं [**गृहैलुक**] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी; (निचू १३)।

गी स्त्री [**गिर्**] वाणी, भाषा, वाक्; "थिरमुज्जलं च छाया-घणं च गीविलसियं जस्स" (गउड)।

गीआ स्त्री [**गीता**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

गीइ स्त्री [**गीति**] १ छन्द-विशेष, आर्या-वृत्त का एक भेद; २ गान, गीत; (ठा ७; उप १३० टी)।

गीइया स्त्री [**गीतिका**] ऊपर देखो; (औप; णाया १,१)।

गीय वि [**गीत**] १ पद्य-मय वाक्य, गेय, जो गाया जाय वह; (पण्ह २,५; अणु)। २ कथित, प्रतिपादित; (णाया १,१)। ३ प्रसिद्ध, विख्यात; (संथा)। ४ न. गान, ताल और बाजे के अनुसार गाना; (जं२; उत्त१)। ५ संगीत-कला, गान-कला, संगीत-शास्त्र का परिज्ञान; (णाया १,१)। ६ पुं. गीतार्थ, उत्सर्ग-अपवाद वगैरः का जानकार जैन साधु, विद्वान् जैन मुनि; (उप७७३)। °**जस** पुं [°**यशस्**] इन्द्र-विशेष, गन्धर्व देवों का एक इन्द्र; (ठा२,३; इक)। °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] १ विद्वान् जैन मुनि; (उप ८३३ टी; वव ४; सुपा १२७)। २ संगीत-रहस्य; (मै१४)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम ५५,५३)। °**रइ** स्त्री [°**रति**] १ संगीत-क्रीड़ा; (औप)। २ पुं. गन्धर्व देवों का एक इन्द्र; (इक; भग३,८)। ३ गन्धर्व-सेना का अधिपति देव-विशेष; (ठा ७)। ४ त्रि. संगीत-प्रिय, गान-प्रिय; (विपा१,२)।

गीवा स्त्री [**ग्रीवा**] कण्ठ, डोक; (पाअ)।

गुंछ देखो **गुच्छ** ; (हे १,२६) ।

गुंछा स्त्री [**दे**] १ बिन्दु ; २ दाढ़ी-मूँछ ; ३ अधम, नीच ; (दे २,१०१) ।

गुंज अक [**हस्**] हसना, हास्य करना । गुंजइ; (हे ४,१९६) ।

गुंज अक [**गुञ्ज्**] १ गुन गुन करना, भ्रमर आदि का आवाज करना । २ गर्जना, सिंह वगैरः का आवाज करना । "गुंजंति सीहा" (महा)। वकृ— **गुंजंत**; (गाया १,१—पत्र ५; रंभा)।

गुंज पुं [**गुञ्ज**] १ गुञ्जारव करता वायु; (पउम १३,४३)। २ पर्वत-विशेष; " गुंजवरपव्वयं ते" (पउम ८,६० ; ६४) ।

गुंजा स्त्री [**गुञ्जा**] १ लता- विशेष; (सुर २,६) । २ फल-विशेष, घुङ्गची ; (गाया १,१; गा३१०) । ३ भम्भा, वाद्य-विशेष ; (आचा) । ४ परिमाण-विशेष; (ठा४,१))। ५ गुञ्जा-रव, गुञ्जन, गुन गुन आवाज; "गुंजाचक्ककुहरोवगूढं" (राय)। ६ वायु-विशेष, गुञ्जारव करता वायु; (जीव१; जी७) । °**फल**, °**हल** न [°**फल**] फल-विशेष, घुङ्गची; (सुर२,६;सुपा२६१) ।

गुंजालिया स्त्री [**गुञ्जालिका**] वक्र-सारिणी, टेढ़ी कियारी; (गाया १,१)। २ गोल पुष्करिणी ; (निचू १२)। ३ वक्र नदी; (पगण ११) ।

गुंजाविअ वि [**हासित**] हसाया हुआ ; (कुमा ७,४१) ।

गुंजिअ न [**गुञ्जित**] गुन गुन आवाज, भ्रमर वगैरः का शब्द ; (कुमा) ।

गुंजिर वि [**गुञ्जितृ**] गुन गुन आवाज करने वाला; (उप १०३१ टी) ।

गुंजुल्ल देखो **गुंजोल्ल** । गुंजुल्लइ ; (हे ४,२०२) ।

गुंजेल्लिअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ; (दे२,९२)।

गुंजोल्ल अक [**उत्+लस्**] उल्लास पाना, विकसित होना । गुंजोल्लइ ; (हे ४, २०२) ।

गुंजोल्लिअ वि [**उल्लसित**]उल्लसित, विकसित; (कुमा) ।

गुंठ सक [**उद्+धूलय्, गुण्ठ्**] धूल वाला करना, धूली के रङ्ग का करना, धूसरित करना। गुंठइ; (हे४,२९) । वकृ— **गुंठंत** ; (कुमा) ।

गुंठ पुं [**दे**] १ अधम अश्व, दुष्ट घोड़ा; (दे२,९१; स ४५४) । २ वि. मायावी, कपटी ; (वव३) ।

गुंठा स्त्री [**दे**] माया, दम्भ, छल ; (वव ३) ।

गुंठिअ वि [**गुण्ठित**] १ धूसरित; २ व्याप्त; ३ आच्छादित; (दे १, ८५) ।

गुंठी स्त्री [**दे**] नीरंगी, स्त्री का वस्त्र-विशेष ; (दे२,९०) ।

गुंड न [**दे**] मुस्ता से उत्पन्न होने वाला तृण-विशेष; (दे २, ९१) ।

गुंडण न [**गुण्डन**] धूलि का लेप, धूल का शरीर में लगाना ; "रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्मं सहसि" (गाया १, १—पत्र ७१) ।

गुंडिअ वि [**गुण्डित**] १ धूलि-लिप्त, धूलि-युक्त; (पाअ)। २ लिप्त, पोता हुआ; "कुणगुंडिअगातं" (विपा १, २—पत्र २४) । ३ घिरा हुआ ; "सउणी जह पंसुगुंडिया" (सूअ १, २, १) । ४ आच्छादित, प्रावृत ; (आचा) । ५ प्रेरित ; (पगह १, ३)।

गुंथण न [**ग्रन्थन**] गूँथना, गठना ; (रयण १८) ।

गुंद पुं [**गुन्द्र**] वृक्ष-विशेष ; (पाअ) ।

गुंदल न [**दे, गुन्दल**] १ आनन्द-ध्वनि, खुशी का आवाज, हर्ष का तुमुल-ध्वनि ; "मत्तवरकामिणीसंकयगुंदलं" (सुर ३, ११५) । "करिणीहिं कलहेहिं य खणमेक्कं हरिसगुंदलं काउं" (सुपा १३७) । २ हर्ष-भर, आनन्द-संदोह, खुशी की वृद्धि ; "अमंदआणंदगुंदलपुरव्वं", "आणंदगुंदलेणं ललइ लीलावईहिं परिकलिओ" (सुपा २२; १३६) । ३ वि. आनन्द-मग्न, खुशी में लीन ; "तं तह दट्ठुं आणंदगुंदलं" (सुपा १३४) ।

गुंदवडय न [**दे**] एक जात की मीठाई, गुजराती में जिसको 'गुंदवडा' कहते हैं ; (सुपा ४८५) ।

गुंदा } स्त्री [**दे**] १ बिन्दु, २ अधम, नीच ; (दे २, **गुंपा** } १०१) ।

गुंफ सक [**गुम्फ्**] गूँथना, गठना । गुंफइ ; (षड्) । वकृ—**गुंफंत** ; (कुमा) ।

गुंफ पुं [**गुम्फ्**] १ रचना, गूँथना, ग्रन्थन; (उप १०३१ टी ; दे १, १५० ; ६, १४२) ।

गुंफ पुं [**दे**] गुप्ति, कारागार, जेल ; (दे २, ९०) ।

गुंफण न [**दे**] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष ; "गुंफणफेरणसुंकारएहिं" (सुर २, ८) ।

गुंफी स्त्री [**दे**] शतपदी, क्षुद्र कीट-विशेष, गोजर, कनखजूरा; (दे २, ९१) ।

गुग्गुल पुं [**गुग्गुल**] सुगन्धित द्रव्य-विशेष, गूगल ; (सुपा १५१) ।

गुग्गुली स्त्री [**गुग्गुल**] गूगल का पेड़ ; (जी १०) ।

गुग्गुलु देखो **गुग्गुल** ; (स ४३६) ।

गिरिंद पुं [**गिरीन्द्र**] १ श्रेष्ठ पर्वत; २ मेरु पर्वत; ३ हिमाचल; (कप्पू)।

गिरिडी स्त्री [**दे**] पशुओं के दाँत को बाँधने का उपकरण-विशेष; "दंतगिरिडिं पबंधइ" (सुपा २३७)।

गिरिस पुं [**गिरिश**] महादेव, शिव; (पात्र ; दे ६,१२१)। °**वास** पुं [°**वास**] कैलाश पर्वत; (से ६, ७५)।

गिरीस पुं [**गिरीश**] १ हिमाचल पर्वत; २ महादेव, शिव ; (पिंग)।

√**गिल** सक [**गॄ**] गिलना, निगलना, भक्षण करना। संकृ—**गिलिऊण** ; (नाट)।

गिलण न [**गरण**] निगरण, भक्षण ; (हे ४,४४५)।

गिला } अक [**ग्लै**] १ ग्लान होना, बिमार होना। २
√**गिलाअ** } खिन्न होना, थक जाना। ३ उदासीन होना। गिलाइ, गिलायइ, गिलाएमि ; (भग ; कस ; आचा)। वकृ—**गिलायमाण** ; (ठा ३,३)।

गिला स्त्री [**ग्लानि**] १ बिमारी, रोग ; २ खेद, थाक ; (ठा ८)।

गिलाण वि [**ग्लान**] १ बिमार, रोगी ; (सूअ १, ३,३)। २ अशक्त, असमर्थ, थका हुआ ; (ठा ३,४)। ३ उदासीन, हर्ष-रहित ; (णाया १, १३ ; हे २, १०६)।

गिलाणि स्त्री [**ग्लानि**] ग्लानि, खेद, थकावट ; (ठा ५,१)।

गिलायय वि [**ग्लायक**] ग्लानि-युक्त, ग्लान ; (औप)।

गिलासि पुंस्त्री [**ग्रासिन्**] व्याधि-विशेष, भस्मक रोग ; (आचा)। स्त्री—°**णी** ; (आचा)।

गिलिअ वि [**गिलित**] निगला हुआ, भक्षित ; (सुपा ३, २०६ ; सुपा ६४०)।

गिलिअवंत वि [**गिलितवत्**] जिसने भक्षण किया हो वह ; (पि ५६६)।

गिलोइया } स्त्री [**दे**] गृह-गोधा, छिपकली ; (सुपा
गिलोई } ६४० ; पुप्फ २६७)।

गिल्लि स्त्री [**दे**] १ हाथी की पीठ पर कसा जाता होदा, हौदा ; (णाया १,१—पत्र ४३ टी ; औप)। २ डोली, दो आदमी से उठाई जाती एक प्रकार की शिबिका ; (सूअ २,२; दसा ६)।

गिव्वाण पुं [**गीर्वाण**] देव, सुर, त्रिदश ; (उप ५३० टी)।

गिह न [**गृह**] घर, मकान ; (आचा ; श्रा २३; स्वप्न ६४)। °**त्थ** पुंस्त्री [**स्थ**] गृहस्थ, गृही, संसारी ; (कप्प ; द ५)। स्त्री—°**त्था** ; (पउम ४६, ३३)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] घर का मालिक ; (श्रा २८)। °**लिंगि** पुंस्त्री [°**लिङ्गिन्**] गृहस्थ, गृही, संसारी; (दंस)। °**वइ** पुंस्त्री [°**पति**] गृहस्थ, गृही, घर का मालिक; (ठा ५, ३; सुपा २३४)। °**वास** पुं [°**वास**] १ घर में निवास ; २ द्वितीयाश्रम, संसारिपन ; "गिहवासं पासं पिव मन्नंतो वसइ दुक्खिओ तम्मि" (धम्म ; सूअ १,६)। °**ावट्ट** पुं [°**ावर्त्त**] द्वितीय आश्रम, संसारिपन ; (सूअ १,४,१)। °**ासम** पुं [°**ाश्रम**] घरवास, द्वितीयाश्रम ; (स १४८)।

गिहि पुं [**गृहिन्**] गृही, संसारी, गृहस्थ ; (ओघ १७ भा ; नव ४३)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] गृहस्थ-धर्म, श्रावक-धर्म ; (राज)। °**लिंग** न [°**लिङ्ग**] गृहस्थ का वेष ; (बृह १)।

गिहिणी स्त्री [**गृहिणी**] गृहिणी, भार्या, स्त्री ; (सुपा ८३; श्रा १६)।

गिहीअ वि [**गृहीत**] आत्त, उपात्त, ग्रहण किया हुआ ; (स ४२८)।

गिहेलुय पुं [**गृहैलुक**] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी ; (निचू १३)।

गी स्त्री [**गिर्**] वाणी, भाषा, वाक् ; "थिरमुज्जलं च छाया-घणं च गोविलसियं जस्स" (गउड)।

गीआ स्त्री [**गीता**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

गीइ स्त्री [**गीति**] १ छन्द-विशेष, आर्या-वृत्त का एक भेद ; २ गान, गीत ; (ठा ७ ; उप १३० टी)।

गीइया स्त्री [**गीतिका**] ऊपर देखो ; (औप ; णाया १,१)।

गीय वि [**गीत**] १ पद्य-मय वाक्य, गेय, जो गाया जाय वह; (पण्ह २,५ ; अणु)। २ कथित, प्रतिपादित; (णाया १,१)। ३ प्रसिद्ध, विख्यात; (संथा)। ४ न गान, ताल और बाजे के अनुसार गाना ; (जं२; उत्त१)। ५ संगीत-कला, गान-कला, संगीत-शास्त्र का परिज्ञान ; (णाया १,१)। ६ पुं गीतार्थ, उत्सर्ग-अपवाद वगैरः का जानकार जैन साधु, विद्वान् जैन मुनि; (उप७७३)। °**जस** पुं [°**यशस्**] इन्द्र-विशेष, गन्धर्व देवों का एक इन्द्र ; (ठा२,३ ; इक)। °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] १ विद्वान् जैन मुनि ; (उप ८३३ टी; वव ४; सुपा १२७)। २ संगीत-रहस्य ; (मै१४)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (पउम ५५,५३)। °**रइ** स्त्री [°**रति**] १ संगीत-क्रीड़ा ; (औप)। २ पुं गन्धर्व देवों का एक इन्द्र ; (इक; भग३,८)। ३ गन्धर्व-सेना का अधिपति देव-विशेष; (ठा ७)। ४ त्रि संगीत-प्रिय, गान-प्रिय ; (विपा१,२)।

गीवा स्त्री [**ग्रीवा**] कण्ठ, डोक ; (पात्र)।

गुंछ देखो **गुच्छ** ; (हे १,२६)।
गुंछा स्त्री [**दे**] १ बिन्दु ; २ दाढ़ी-मूँछ ; ३ अधम, नीच ; (दे २,१०१)।
गुंज अक [**हस्**] हसना, हास्य करना। गुंजइ; (हे ४,१९६)।
गुंज अक [**गुञ्ज्**] १ गुन गुन करना, भ्रमर आदि का आवाज करना। २ गर्जना, सिंह वगैरः का आवाज करना। "गुंजंति सीहा" (महा)। वकृ— **गुंजंत**; (णाया १,१—पत्र ५; रंभा)।
गुंज पुं [**गुञ्ज**] १ गुन्जारव करता वायु; (पउम १३,४३)। २ पर्वत-विशेष; " गुंजवरपव्वयं ते" (पउम ८,६०; ६४)।
गुंजा स्त्री [**गुञ्जा**] १ लता- विशेष; (सुर २,६)। २ फल-विशेष, घुङ्गची ; (णाया १,१; गा३१०)। ३ भम्भा, वाद्य-विशेष ; (आचा)। ४ परिमाण-विशेष; (ठा४,१))। ५ गुन्जारव, गुन्जन, गुन गुन आवाज; "गुंजाचक्ककुहरोवगूढं" (राय)। ६ वायु-विशेष, गुन्जारव करता वायु; (जीव१; जी७)। °**फल**, °**हल** न [°**फल**] फल-विशेष, घुङ्गची; (सुर२,६;सुपा२६१)।
गुंजालिया स्त्री [**गुञ्जालिका**] वक्र-सारिणी, टेढ़ी कियारी; (णाया १,१)। २ गोल पुष्करिणी ; (निचू १२)। ३ वक्र नदी; (पण्ण ११)।
गुंजाविअ वि [**हासित**] हसाया हुआ ; (कुमा ७,४१)।
गुंजिअ न [**गुञ्जित**] गुन गुन आवाज, भ्रमर वगैरः का शब्द ; (कुमा)।
गुंजिर वि [**गुञ्जितृ**] गुन गुन आवाज करने वाला; (उप १०३१ टी)।
गुंजुल्ल देखो **गुंजोल्ल**। गुंजुल्लइ ; (हे ४,२०२)।
गुंजेल्लिअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ; (दे२,९२)।
गुंजोल्ल अक [**उत्+लस्**] उल्लास पाना, विकसित होना। गुंजोल्लइ ; (हे ४, २०२)।
गुंजोल्लिअ वि [**उल्लसित**] उल्लसित, विकसित; (कुमा)।
गुंठ सक [**उद्+धूलय्, गुण्ठ्**] धूल वाला करना, धूलों के रङ्ग का करना, धूसरित करना। गुंठइ; (हे४,२९)। वकृ— **गुंठंत** ; (कुमा)।
गुंठ पुं [**दे**] १ अधम अश्व, दुष्ट घोड़ा; (दे२,९१; स ४५४)। २ वि. मायावी, कपटी ; (वव३)।
गुंठा स्त्री [**दे**] माया, दम्भ, छल ; (वव ३)।
गुंठिअ वि [**गुण्ठित**] १ धूसरित; २ व्याप्त; ३ आच्छादित; (दे १, ८५)।
गुंठी स्त्री [**दे**] नीरंगी, स्त्री का वस्त्र-विशेष ; (दे२,९०)।
गुंड न [**दे**] मुस्ता से उत्पन्न होने वाला तृण-विशेष; (दे २, ९१)।
गुंडण न [**गुण्डन**] धूलि का लेप, धूल का शरीर में लगाना : "रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्मं सहंति" (णाया १, १—पत्र ७१)।
गुंडिअ वि [**गुण्डित**] १ धूलि-लिप्त, धूलि-युक्त; (पाअ)। २ लिप्त, पोता हुआ; "चुण्णगुंडियगाते" (विपा १, २—पत्र २४)। ३ घिरा हुआ ; "सउणी जह पसुगुंडिया" (सूअ १, २, १)। ४ आच्छादित, प्रावृत ; (आचा)। ५ प्रेरित ; (पण्ह १, ३)।
गुंथण न [**ग्रन्थन**] गूँथना, गठना ; (रयण १८)।
गुंद पुं [**गुन्द्र**] वृक्ष-विशेष ; (पाअ)।
गुंदल न [**दे. गुन्दल**] १ आनन्द-ध्वनि, खुशी का आवाज, हर्ष का तुमुल-ध्वनि ; "मत्तवरकामिणीलंबकयगुंदलं" (सुर ३, ११५)। "करिणीहिं कलहेहिं य खणमेक्कं हरिसगुंदलं काउं" (सुपा १३७)। २ हर्ष-भर, आनन्द-संदोह, खुशी की वृद्धि ; "अमंदआणंदगुंदलपुरुव्वं", "आणंदगुंदलेणं ललइ लीलावईहिं परिकलिओ" (सुपा २२; १३६)। ३ वि. आनन्द-मग्न, खुशी में लीन : "तं तह दट्ठुं आणंदगुंदलं" (सुपा १३४)।
गुंदवडय न [**दे**] एक जात की मीठाई, गुजराती में जिसको 'गुंदवडा' कहते हैं ; (सुपा ४८५)।
गुंदा, **गुंपा** स्त्री [**दे**] १ बिन्दु, २ अधम, नीच ; (दे २, १०१)।
गुंफ सक [**गुम्फ्**] गूँथना, गठना। गुंफइ ; (षड्)। वकृ—**गुंफंत** ; (कुमा)।
गुंफ पुं [**गुम्फ**] १ रचना, गूँथना, ग्रन्थन; (उप १०३१ टी ; दे १, १५० ; ६, १४२)।
गुंफ पुं [**दे**] गुप्ति, कारागार, जेल ; (दे २, ९०)।
गुंफण न [**दे**] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष ; "गुंफणफेरणसंकारएहिं" (सुर २, ८)।
गुंफी स्त्री [**दे**] शतपदी, क्षुद्र कीट-विशेष, गोजर, कनखजूरा; (दे २, ९१)।
गुग्गुल पुं [**गुग्गुल**] सुगन्धित द्रव्य-विशेष, गूगल ; (सुपा १५१)।
गुग्गुली स्त्री [**गुग्गुल**] गूगल का पेड़ ; (जी १०)।
गुग्गुलु देखो **गुग्गुल** ; (स ४३६)।

गुच्छ } पुं [**गुच्छ**] १ गुच्छा, गुच्छक, स्तबक; (उत्त २;
गुच्छय } स्वप्न ७२)। २ वृक्षों की एक जाति ; (पण्ण १)। ३ पत्ती का समूह ; (जं १)।

गुच्छय देखो **गोच्छय** ; (ओघ ६६८)।

गुच्छिय वि [**गुच्छित**] गुच्छा वाला, गुच्छ-युक्त ; "निच्चं गुच्छिया" (राय)।

गुज्ज देखो **गोज्ज** ; (सुपा २८१)।

गुज्जर पु [**गूर्जर**] १ भारत का एक प्रान्त, गुजरात देश ; (पिंग)। २ वि. गुजरात का निवासी। स्त्री—°री; (नाट)।

गुज्जरत्ता स्त्री [**गूर्जरत्रा**] गुजरात देश ; (सार्ध ६८)।

गुज्झलिअ वि [**दे**] संघटित ; (षड्)।

गुज्झ } वि [**गुह्य**] १ गोपनीय, छिपाने योग्य ; (णाया
गुज्झअ } १, १ ; हे २, १२४)। २ न. गुप्त बात, रहस्य; "सिमंतिणिहिययगयं गुज्झं पिव तक्खणा फुट्टं" (उप ७२८ टी)। ३ लिंग, पुरुष-चिन्ह ; ४ योनि, स्त्री-चिन्ह ; (धर्म २)। ५ मैथुन, संभोग ; (पण्ह १, ४)। °**हर** वि [°**धर**] गुप्त बात को प्रकट नहीं करने वाला ; (दे २, ४३)। °**हर** वि [°**हर**] रहस्य-भेदी, गुप्त बात को प्रसिद्ध करने वाला ; (दे २, ६३)।

गुज्झअ } पुं [**गुह्यक**] देवों की एक जाति; (ठा ४, ३)।
गुज्झग }

गुट्ठ न [**दे**] स्तम्ब, तृण-काण्ड; "अज्जुणगुट्ठं व तस्स जाणूइं" (उवा)।

गुट्ठ देखो **गोट्ठ** ; (पाअ ; भत्त १६२)।

गुट्ठी देखो **गोट्ठी** ; (सुक्त ५८)।

गुड सक [**गुड्**] १ हाथी को कवच वगैरः से सजाना। २ लड़ाई के लिए तय्यार करना, सजाना। "गुडह गइंदे पउणीकरेह रहवक्कपाइक्के" (सुपा २८८)। कवकृ— "गुडिअगुडिज्जंतभडं" (से १२, ८७)।

गुड पुं [**गुड**] १ गुड़, ईख का विकार, लाल शक्कर; (हे १, २०२; प्रासू १५१)। २ एक प्रकार का कवच; (राज)। °**सत्थ** न [°**सार्थ**] नगर-विशेष ; (आक)।

गुडदालिअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ; (दे २, ६२)।

गुडा स्त्री [**गुडा**] १ हाथी का कवच ; २ अश्व का कवच ; (विपा १, २)।

गुडिअ वि [**गुडित**] कवचित, वर्मित, कृत-संनाह ; (से १२, ७३ ; ८७ ; विपा १, २)।

गुडिआ स्त्री [**गुटिका**] गोली ; (गा १७७)।

गुडोलद्धिआ स्त्री [**दे**] चुम्बन ; (दे २, ६१)।

गुण सक [**गुणय्**] १ गिनना। २ आवृत्ति करना, याद करना। गुणइ ; (सुक्त ५१ ; हे ४, ४२२)। गुणेइ ; (उव)। वकृ—**गुणमाण** ; (उप पृ ३६६)।

गुण पुंन [**गुण**] १ गुण, पर्याय, स्वभाव, धर्म ; (ठा ५, ३)। २ ज्ञान, सुख वगैरः एक ही साथ रहने वाला धर्म ; (सम्म १०७ ; १०६)। ३ ज्ञान, विनय, दान, शौर्य, सदाचार वगैरः दोष-प्रतिपक्षी पदार्थ ; (कुमा ; उत्त १६ ; अणु ; ठा ४, ३ ; से १, ४)। ४ लाभ, फायदा ; "विहवेहिं गुणाइं मग्गंति" (हे १, ३४ ; सुपा १०३)। ५ प्रशस्तता, प्रशंसा ; (णाया १, १)। ६ रज्जू , डोरा, धागा ; (से १, ४)। ७ व्याकरण-प्रसिद्ध ए, ओ और अर् रूप स्वर-विकार ; (सुपा १०३)। ८ जैन गृहस्थ को पालने का व्रत-विशेष , गुण-व्रत ; (पंचव ३)। ९ रूप, रस, गन्ध वगैरः द्रव्याश्रित धर्म ; "गुण-पच्चक्खत्तणओ गुणीवि जाओ घडोव्व पच्चक्खो" (ठा१,१; उत्त २८)। १० प्रत्यञ्चा, धनुष का रोदा; (कुमा)। ११ कार्य, प्रयोजन; (भग २,१०)। १२ अप्रधान, अ-मुख्य, गौण; (हे १,३४)। १३ अंश, विभाग; (अणु)। १४ उपकार, हित ; (पंचा ५)। °**कर** वि [°**कर**] १ लाभ-कारक ; २ उपकार-कारक; (पंचा ५)। °**कार** पुं [°**कार**] गुना करना, अभ्यास-राशि; (सम ६०)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ एक राज-कुमार ; (आवम)। २ एक जैन मुनि और ग्रन्थकार; ३ श्रेष्ठि-विशेष ; (राज)। °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] गुणों का स्वरूप-विशेष, मिथ्यादृष्टि वगैरः चउदह गुण-स्थानक ; (कम्म ४; पव ६०)। °**ट्ठिअ** पुं [°**ार्थिक**] गुण को प्रधान मानने वाला मत, नय-विशेष; (सम्म १०७)। °**ड्ढ** वि [°**ाढ्य**] गुणी, गुणवान् ; (सुर ३, २०; १३०)। °**ण्ण** °**ण्णु**, °**न्न**, °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] गुण का जानकार ; (गउड ; उवर ८६ ; उप ५३० टी; सुपा १२१)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] गुणी पुरुष; (सुअ १, ४)। °**मंत** वि [°**वत्**] गुणी, गुण-युक्त ; (आचा २, १, ६)। °**रयणसंवच्छर** न [°**रत्नसंवत्सर**] तपश्चर्या-विशेष ; (भग)। °**व**, °**वंत** वि [°**वत्**] गुणी, गुण-युक्त; (श्रा ३६; उप ८७५)। °**व्वय** न [°**व्रत**] जैन गृहस्थ को पालने योग्य व्रत-विशेष; (पडि)। °**सिलय** न [°**शिलक**] राजगृह नगर का एक चैत्य ; (णाया १, १)। °**सेढि** स्त्री [°**श्रेणि**] कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष ; (पंच)।

°सेण पुं [°सेन] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा; (स ६)। °हर वि [°धर] १ गुणों को धारण करने वाला, गुणी; २ तन्तु-धारक; स्त्री— °रा ; (सुपा ३२७)। °यर पुं [°कर] गुणों की खान, अनेक गुण वाला, गुणी; (पउम १५,६८; प्रासू १३४)।

गुण देखो **पगुण** । "गुणसट्ठि अपमत्ते सुराउबंधं तु जइ इहागच्छे" (कम्म २,८; ४, ५४; ५६; श्रा ४४)।

°**गुण** वि [°गुण] गुना, आवृत्त; "वीसगुणो तीसगुणो" (कुमा; प्रासू २६)।

गुणा स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष; (भवि)।

गुणाविय वि [गुणित] पढाया हुआ, पाठित; "तत्थ सो अज्जएण सयलाओ धणुव्वेयाइयाओ महत्थविज्जाओ गुणाविओ" (महा)।

गुणि वि [गुणिन्] गुण-युक्त, गुण वाला; (उप ५६७ टी; गउड; प्रासू २६)।

गुणिअ वि [गुणित] १ गुना हुआ, जिसका गुणा किया गया हो वह; (श्रा ६)। २ चिन्तित, याद किया हुआ; (से ११, ३१)। ३ पठित, अधीत; (ओघ ६२)। ४ जिस पाठ की आवृत्ति की गई हो वह, परावर्त्तित; (वव ३)।

गुणिल्ल वि [गुणवत्] गुणी, गुण-युक्त; (पि ५६५)।

गुत्त वि [गुप्त] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ; (णाया १,४; सुर ७, २३४)। २ रक्षित; (उत्त १५)। ३ स्व-पर की रक्षा करने वाला, गुप्ति-युक्त, मन वगैरः की निर्दोष प्रवृत्ति वाला; (उप ६०४)। ४ एक स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य; (आक)।

गुत्त देखो **गोत्त**; (पाअ; भग; आवम)।

गुत्तण्हाण न [दे] पितृ-तर्पण; (दे २, ६३)।

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] १ कैदखाना, जेल; (सुर १,७३; सुपा ६३)। २ कठघरा; (सुपा ६३)। ३ मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्ति का रोकना; ४ मन वगैरः की निर्दोष प्रवृत्ति; (ठा २, १; सम ८)। °गुत्त वि [°गुप्त] मन वगैरः की निर्दोष प्रवृत्ति वाला, संयत; (पण्ह २,४)। °पाल पुं [°पाल] जेल का रक्षक, कैदखाना का अध्यक्ष; (सुपा ४६७)। °सेण पुं [°सेन] ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव; (सम १५३)।

गुत्ति स्त्री [दे] १ बन्धन; (दे २,१०१; भवि)। २ इच्छा, अभिलाषा; ३ वचन, आवाज; ४ लता, वल्ली; ५ सिर पर पहनी जाती फूल की माला; (दे २, १०१)।

गुत्तिंदिय वि [गुप्तेन्द्रिय] इंद्रिय-निग्रह करने वाला, संयतेंद्रिय; (भग; णाया १,४)।

गुत्तिय वि [गौप्तिक] रक्षक, रक्षण करने वाला; "नगरगुत्तिए सद्दावेइ" (कप्प)।

गुत्थ वि [ग्रथित] गुम्फित, गूँथा हुआ; (स ३०३; पाअ; गा ६३; कप्पू)।

गुत्थंड पुं [दे] भास-पक्षी, पक्षि-विशेष; (दे २, ६२)।

गुद पुंस्त्री [गुद] गाँड़, गुदा; (दे ६, ४६)।

गुप्प अक [गुप्] व्याकुल होना। गुप्पइ; (हे ४,१५०; षड्)। वकृ—**गुप्पंत, गुप्पमाण**; (कुमा ६, १०२; कप्प; औप)।

गुप्प वि [गोप्य] १ छिपाने योग्य। २ न. एकान्त, विजन; (ठा ४,१)।

गुप्पई स्त्री [गोष्पदी] गौ का पैर डूबे उतना गहरा; "को उत्तरिउं जलहिं, निव्वुड्डए गुप्पईनीरे" (धम्म १२ टी)।

गुप्पंत न [दे] १ शयनीय, शय्या; २ वि. गोपित, रक्षित; (दे २,१०२)। ३ संमूढ़, मुग्ध, घबड़ाया हुआ, व्याकुल; (दे २, १०२; से १,२; २,४)।

गुप्पय देखो **गो-पय**; (सुक्त ११)।

गुप्फ पुं [गुल्फ] फीली, पैर की गाँठ; (स ३३; हे २,६०)।

गुफगुमिअ वि [दे] सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त; (दे २, ६३)।

गुब्भ देखो **गुप्फ**; (षड्)।

गुभ सक [गुफ्] गूँथना, गठना। गुभइ; (हे १,२३६)।

गुम सक [भ्रम्] घूमना, पर्यटन करना, भ्रमण करना। गुमइ; (हे ४, १६१)।

गुमगुम, **गुमगुमाअ** अक [गुमगुमाय्] १ गुम गुम आवाज करना। २ मधुर अव्यक्त ध्वनि करना। वकृ—**गुमगुमंत, गुमगुमिंत, गुमगुमायंत**; (औप; णाया १, १; कप्प; पउम ३३, ६)।

गुमगुमाइय वि [गुमगुमायित] जिसने गुम-गुम आवाज किया हो वह; (औप)।

गुमिअ वि [भ्रमित] भ्रमित, घुमाया हुआ; (कुमा)।

गुमिल वि [दे] १ मूढ़, मुग्ध; २ गहन, गहरा; ३ प्रस्खलित; ४ आपूर्ण, भरपूर; (दे २, १०२)।

गुमुगुमुगुम देखो **गुमगुम**। वकृ—**गुमुगुमुगुमंत, गुमुगुमुगुमेंत**; (पउम २, ४०; ६२, ६)।

गुम्म अक [मुह्] मुग्ध होना, घबड़ाना, व्याकुल होना। गुम्मइ; (हे ४, २०७)।

गुम्म पुंन [गुल्म] १ लता, वल्ली, वनस्पति-विशेष; (पण्ण १)। २ झाड़ी, वृक्ष-घटा; (पाअ)। ३ सेना-विशेष, जिसमें

२७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़ा और १३५ प्यादा हो ऐसी सेना ; (पउम ५६,५)। ४ वृन्द, समूह ; (औप ; सुअ २, २)। ५ गच्छ का एक हिस्सा, जैन मुनि-समाज का एक अंश ; (औप)। ६ स्थान, जगह ; (ओघ १६३)।

गुम्मइअ वि [दे] १ मूढ़, मूर्ख ; (दे २, १०३ ; ओघ १३६ ; पाअ ; षड्)। २ अपूरित, पूर्ण नहीं किया हुआ ; (षड्)। ३ पूरित, पूर्ण किया हुआ ; (दे २,१०३)। ४ स्खलित ; ५ संचलित, मूल से उच्चलित ; ६ विघटित, वियुक्त ; (दे २, १०३ ; षड्)।

गुम्मड देखो **गुम्म**। गुम्मडइ ; (हे ४, २०७)।

गुम्मडिअ वि [**मोहित**] मोह-युक्त, मुग्ध किया हुआ ; (कुमा ७, ४७)।

गुम्मागुम्मि अ. जत्थाबन्ध होकर ; (औप)।

गुम्मिअ वि [**मुग्ध**] १ मोह-प्राप्त, मूढ़ ; (कुमा ७,४७)। २ घूर्णित, मद से घूमता हुआ ; (बृह १)।

गुम्मिअ पुं [**गौल्मिक**] कोटवाल, नगर-रक्षक ; (ओघ १६३ ; ७६६)।

गुम्मिअ वि [दे] मूल से उखाड़ा हुआ, उन्मूलित ; (दे २, ६२)।

गुम्मी स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाषा ; (दे २,६०)।

गुम्ह सक [**गुम्फ्**] गूँथना, गढ़ना। गुम्हदु (शौ) ; (स्वप्न ५३)।

गुय्ह देखो **गुज्झ** ; (हे २, १२४)।

गुरव देखो **गुरु** ; "जो गुरवे साहीणे धम्मं साहेइ पोढबुद्धिओ" (पउम ६, ११४)।

गुरु } पुं [**गुरु**] १ शिक्षक, विद्या-दाता, पढ़ाने वाला ;
गुरुअ } (वव १; अणु)। २ धर्मोपदेशक, धर्माचार्य ; (विसे ६३०)। ३ माता, पिता वगैरः पूज्य लोग ; (ठा १०)। ४ बृहस्पति, ग्रह-विशेष ; (पउम १७, १०८ ; कुमा)। ५ स्वर-विशेष, दो मात्रा वाला आ, ई वगैरः स्वर, जिसके पीछे अनुस्वार या संयुक्त व्यञ्जन हो ऐसा भी स्वर-वर्ण ; (पिंग)। ६ वि. बड़ा, महान् ; (उवा; से ३, ३८)। ७ भारी, बोझैल ; (ठा १, १ ; कम्म १)। ८ उत्कृष्ट, उत्तम ; (कम्म ४, ७२ ; ७६)। °**कम्म** वि [°**कर्मन्**] कर्मों का बोझ वाला, पापी ; (सुपा २६५)। °**कुल** न [°**कुल**] १ धर्माचार्य का सामीप्य; (पंचा ११)। २ गुरु-परिवार ; (उप ६७७)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] गति-विशेष, भारीपन से ऊँचा,-नीचा गमन ; (ठा ८)। °**लाघव** न [°**लाघव**] सारासार, अच्छा और बुरापन; (वव ४)। °**सज्झिल्लग** पुं [°**सहाध्यायिक**] गुरु के भाई ; (बृह ४)।

गुरुई देखो **गरुई** ; (णाया १,१)।

गुरुणी स्त्री [**गुर्वी**] १ गुरु-स्थानीय स्त्री; (सुर ११, २११)। २ धर्मोपदेशिका, साध्वी ; (उप ७२८ टी)।

गुरेड न [**गुरेट**] तृण-विशेष ; (दे १, ५४)।

गुल देखो **गुड**=गुड ; (ठा ३, १ ; ६ ; णाया १, ८ ; गा ५५४ ; औप)।

गुल न [दे] चुम्बन ; (दे २, ६१)।

गुलगुंछ सक [**उत्+क्षिप्**] ऊँचा फेंकना। गुलगुंछइ ; (हे ४, १४४)। संकृ—**गुलगुंछिऊण** ; (कुमा)।

गुलगुंछ देखो **गुलुगुंछ**=उद्+नमय्। गुलगुंछइ; (हे ४,३६)।

गुलगुल अक [**गुलगुलाय्**] गुलगुल आवाज करना, हाथी का हर्ष से गरजना। वकृ—**गुलगुलंत, गुलगुलेंत** ; (उप १०३१ टी ; उवा ; पउम ८, १७१ ; १०२,२०)।

गुलगुलाइय } न [**गुलगुलायित**] हाथी की गर्जना ;
गुलगुलिय } (जं ५ ; सुपा १३७)।

गुलल सक [**चाटौ कृ**] खुशामद करना। गुललइ; (हे ४, ७३)। वकृ—**गुललंत** ; (कुमा)।

गुलिअ वि [दे] मथित, विलोड़ित ; (दे २, १०३ ; षड्)। २ पुं. गेंद, कन्दुक ; "कंदुओ गुलिओ" (पाअ)।

गुलिआ स्त्री [दे] १ बुसिका ; २ गेंद, कन्दुक ; ३ स्तबक, गुच्छा ; (दे २, १०३)।

गुलिआ स्त्री [**गुलिका**] १ गोली, गुटिका ; (महा ; णाया १, १३ ; सुपा २६२)। २ वर्णक द्रव्य-विशेष, सुगन्धित द्रव्य-विशेष ; (औप ; णाया १,१—पत्र २४)।

गुलुइय वि [दे] गुल्मित, गुल्म वाला, लता समूह वाला ; (औप ; भग)।

गुलुंछ पुं [**गुलुञ्छ**] गुच्छ, गुच्छा ; (दे २, ६२)।

गुलुगुंछ देखो **गुलगुंछ**=उत्+क्षिप्। गुलुगुंछइ; (हे ४,१४४)।

गुलुगुंछ सक [**उत्+नमय्**] ऊँचा करना, उन्नत करना। गुलुगुंछइ ; (हे ४,३६)।

गुलुगुंछिअ वि [**उन्नमित**] ऊँचा किया हुआ, उन्नामित ; (दे २, ६३ ; कुमा)।

गुलुगुंछिअ वि [दे] बाड़ से अन्तरित ; (दे २, ६३)।

गुलुगुल देखो **गुलगुल**। गुलुगुलंति ; (भवि)। वकृ—**गुलुगुलेंत** ; (पि ५५८)।

गुलुगुलाइय } देखो **गुलगुलाइअ** ; (औप ; पण्ह १, ३ ;
गुलुगुलिय } स ३६६)।

गुलुच्छ वि [दे] भ्रमित, घुमाया हुआ, फिराया हुआ ; (दे २, ९२)।

गुलुच्छ पुं [गुलुच्छ] गुच्छा, स्तवक ; (पात्र)।

गुल्लइय वि [गुल्मवत्] लता-समूह वाला, गुल्म-युक्त ; (णाया १,१—पत्र ५) ।

गुव देखो **गुप्प**=गुप्। गुवंति; (भग १५)।

°**गुवलय** देखो **कुवलय**। "मुद्दियगुवलयनिहाणं" (णंदि)।

गुवालिया [दे] देखो **गोआलिआ** ; (जी १७)।

गुविअ वि [**गुप्त**] व्याकुल, क्षुब्ध ; (ठा ३,४—पत्र १६१)।

गुविल वि [**गुपिल**] १ गहन, गहरा, गाढ़, निविड़ ; (सुर ६, ६९; उप पृ ३० ; पगह १, ३)। २ न. भाड़ी, जंगल ; (उप ८३३ टी) ;

"इक्को करेइ कम्मं, इक्को अणुहवइ दुक्कयविभारं।
इक्को संसरइ जिओ, जरमरणचउग्गइगुविलं" (पच्च ४४)।

गुविल वि [दे] चीनी का बना हुआ, मिश्री वाला (मिष्टान्न) ; (उर ५, १०)।

गुव्विणी स्त्री [**गुर्विणी**] गर्भवती स्त्री ; (सुपा २७७)।

गुह देखो **गुभ**। गुहइ ; (हे १, २३६)।

गुह पुं [**गुह**] कार्तिकेय, एक शिव-पुत्र ; (पात्र)।

गुहा स्त्री [**गुहा**] गुफा, कन्दरा ; (पात्र ; ठा २, ३ ; प्रासू २७१)।

गुहिर वि [दे] गम्भीर, गहरा ; (पात्र ; कप्प)।

गूढ वि [**गूढ**] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ ; (पगह १, ४ ; जी १०)। °**दंत** पुं [°**दन्त**] १ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष ; २ द्वीप-विशेष का निवासी ; (ठा ४, २)। ३ एक जैन मुनि; ४ अनुत्तरोपपातिक दशा सूत्र का एक अध्ययन; (अनु २)। ५ भरत क्षेत्र का एक भावी चक्रवर्ती राजा ; (सम १५४)।

गूह सक [**गुह्**] छिपाना, गुप्त रखना। वकृ—**गूहंत** ; (स ६१०)।

गूह न [**गूथ**] गू, विष्ठा; (तंदु)।

गूहण न [**गूहन**] छिपाना ; (सम ७१)।

गूहिय वि[**गूहित**] छिपाया हुआ ; (स १८९)।

गृण्ह } (अप) देखो **गिण्ह**। गृन्हइ ; (कुमा)। संकृ—
गृन्ह } **गृण्हेप्पिणु** ; (हे ४, ३९४)।

गेअ वि [**गेय**] १ गाने योग्य, गाने लायक, गीत ; (ठा ४, ४—पत्र २८७ ; वज्जा ४४)। २ न. गीत, गान ; "मणहरगेयभुणीए" (सुर ३, ६९ ; गा ३३४)।

गेंठुअ न [दे] स्तनों के ऊपर की वस्त्र-ग्रन्थि ; (दे २, ९३)।

गेंठुल्ल न [दे] कन्चुक, चोली ; (दे २, ९४)।

गेंड न [दे] देखो **गेंठुअ** ; (दे २, ९३)।

गेंडुई स्त्री [दे] क्रीड़ा, खेल, गम्मत ; (दे २, ९४)।

गेंदुअ पुं [**कन्दुक**] गेंद, गेंदा, खेलने की एक वस्तु ; (हे १, ५७ ; १८२ ; सुर १, १२१)।

गेज्ज वि [दे] मथित, विलोड़ित ; (दे २, ८८)।

गेज्जल न [दे] ग्रीवा का आभरण ; (दे २, ९४)।

गेज्झ वि [**ग्राह्य**] ग्रहण-योग्य ; (हे १, ७८)।

गेडण न [दे] १ फेंकना, क्षेपण ; २ दे देना; "ततुंबगेड-णकाए ससंभमा आसमाउ लहुं" (उप ६४८ टी)।

गेड्डु न [दे] १ पङ्क, कीच, कादा ; २ यव, अन्न-विशेष ; (दे २, १०४)।

गेड्डी स्त्री [दे] गेड़ी, गेंद खेलने की लकड़ी ; (कुमा)।

गेण्ह देखो **गिण्ह**। गेगहइ ; (हे ४, २०९; उव ; महा)। भूका— गेगहीअ ; (कुमा)। भवि—गेगिहस्सइ; (महा)। वकृ—**गेण्हंत, गेण्हमाण**; (सुर ३, ७४; विपा १, १)। संकृ—**गेण्हित्ता, गेण्हिऊण, गेण्हिअ**; (भग; पि ५८६; कुमा)। कृ—**गेण्हियव्व** ; (उत्त १)।

गेण्हण न [**ग्रहण**] आदान, उपादान, लेना; (उप ३३६; स ३७५)।

गेण्हणया स्त्री [**ग्रहणा**] ग्रहण, आदान ; (उप ५२९)।

गेण्हाविय वि [**ग्राहित**] ग्रहण कराया हुआ; (स ५२९; महा)।

गेण्हिअ न [दे] उरः-सूत्र, स्तनाच्छादक वस्त्र ; (दे २, ९४)।

गेद्ध देखो **गिद्ध**; (औप)।

गेरिअ } पुंन [**गैरिक**] १ गेरु, लाल रङ्ग की मिट्टी ;
गेरुअ } (स २२३ ; पि ६०; ११८)। २ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति ; (पगण १—पत्र २६)। ३ वि. गेरु रंग का ; (कप्पू)। ४ पुं. त्रिदण्डी साधु, सांख्य मत का अनुयायी परिव्राजक ; (पव ९४)।

गेलण्ण } न [**ग्लान्य**] रोग, बिमारी, ग्लानि ; (विसे
गेलन्न } ५४० ; उप ४९६ ; ओघ ७७ ; २२१)।

गेविज्ज } न [**ग्रैवेयक**] १ ग्रीवा का आभूषण, गले का
गेवेज्ज } गहना; (औप; णाया १, २)। २ ग्रैवेयक
गेवेज्जय } देवों का विमान ; (ठा ९)। ३ पुं. उत्तम

श्रेणी के देवों की एक जाति ; (कप्प ; औप; भग; जी ३३ ; इक)।

गेह न [**गेह**] गृह, घर, मकान; (स्वप्न १६ ; गउड)। °**जामाउय** पुं [°**जामातृक**] घरजमाई, सर्वदा ससुर के घर में रहने वाला जामाता ; (उप पृ ३६६)। °**ागार** वि [°**ाकार**] १ घर के आकार वाला ; २ पुं. कल्पवृक्ष की एक जाति ; (सम १७)। °**ालु** वि [°**वत्**] घर वाला, गृही, संसारी ; (षड्)। °**ासम** पुं [°**ाश्रम**] गृहस्थाश्रम ; (पउम ३१, ८३)।

गेहि वि [**गृद्ध**] लोलुप, अत्यासक्त ; (ओघ ८७)।

गेहि स्त्री [**गृद्धि**] आसक्ति, गार्ध्य, लालच ; (स ११२; पण्ह १, ३)।

गेहि वि [**गेहिन्**] नीचे देखो; (णाया १, १४)।

गेहिअ वि [**गेहिक**] १ घर वाला, गृही। २ पुं. भर्त्ता, धनी, पति ; (उत्त २)।

गेहिअ वि [**गृद्धिक**] अत्यासक्त, लोलुप, लालची ; (पण्ह १, ३)।

गेहिणी स्त्री [**गेहिनी**] गृहिणी, स्त्री ; (सुपा ३४१ ; कुमा ; कप्पू)।

गो पुं [**गो**] १ रश्मि, किरण ; (गउड)। २ स्वर्ग, देव-भूमि ; (सुपा १४२)। ३ बैल, बलीवर्द ; ४ पशु, जानवर ; ५ स्त्री. गैया ; " अपरप्पेरियतिरियानियमिय-दिग्गमणओखिलो गोव्व " (विसे १७५८ ; पउम १०३, ५०; सुपा २७५)। ६ वाणी, वाग् ; (सूअ १, १३)। ७ भूमि ; " जं महइ विंझवणगोयराण लोओ पुलिंदाण " (गउड; सुपा १४२)। °**आल** देखो °**वाल** ; (पुप्फ २१६)। °**इल्ल** वि [°**मत्**] गो-युक्त, जिसके पास अनेक गौ हों वह; (दे २, ६८)। °**उल** न [°**कुल**] १ गौओं का समूह ; (आव ३)। २ गोष्ठ, गो-बाड़ा ; " सामी गोउलगओ " (आवम)। °**उलिय** वि [°**कुलिक**] गो-कुल वाला, गो-कुल का मालिक, गोवाला ; (महा)। °**किलंजय** न [°**किलञ्जक**] पात्र-विशेष, जिसमें गौ को खाना दिया जाता है ; (भग ७, ८)। °**कीड** पुं [°**कीट**]: पशुओं की मक्खी, बघी, (जी १६)। °**क्खीर, °खीर** न [°**क्षीर**] गैया का दूध ; (सम ६०; णाया १, १)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] गौ की चोरी, गौ को छीनना ; (पण्ह १, ३)। °**ग्गहण** न [°**ग्रहण**] गो-ग्रह ; (णाया १, १८)। °**णिसज्जा** स्त्री [°**निषद्या**] आसन-विशेष, गौ की तरह बैठना ; (ठा १, १)। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] १ गौओं का तालाव आदि में उतरने का रास्ता ; क्रम से नीची जमीन; (जीव ३)। २ लवण समुद्र वगैरः की एक जगह ; (ठा १०)। °**त्तास** वि [°**त्रास**] १ गौओं का त्रास देने वाला ; २ पुं. एक कूट-ग्राह का पुत्र; (विपा १, २)। °**दास** पुं [°**दास**] १ एक जैन मुनि, भद्रबाहु स्वामी का प्रथम शिष्य ; २ एक जैन मुनि-गण ; (कप्प ; ठा ६)। °**दोहिया** स्त्री [°**दोहिका**] १ गौ का दोहन ; २ आसन-विशेष, गौ दोहने के समय जिस तरह बैठा जाता है उस तरह का उपवेशन ; (ठा ५, १)। °**दुह** वि [°**दुह्**] गौ को दोहने वाला ; (षड्)। °**धूलिआ** स्त्री [°**धूलिका**] लग्न-विशेष, गौओं को चरा कर पीछे घुमने का समय, सायंकाल ; "वेलव्व गोधूलिया" (रंभा)। °**पय, °प्पय** न [°**ष्पद**] १ गौ का पैर डूबे उतना गहरा; "लद्धम्मि जम्मि जीवाण जायइ गोपयं व भव-जलही" (आप ६६)। २ गो-पद-परिमित भूमि; (अणु)। ३ गौ का पैर ; (ठा ४, ४)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] श्रेष्ठि-विशेष, शालिभद्र के पिता का नाम ; (ठा १०)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] गौओं को चरने की जगह ; (आवम)। °**म** वि [°**मत्**] गौ वाला ; (विसे १४६८)। °**मड** न [°**मृत**] गौ का शव; (णाया १, ११—पत्र १७३)। °**मय** न [°**मय**] गोबर, गौ का मल, गो-विष्ठा ; (क्षग ५, २)। °**मुत्तिया** स्त्री [°**मूत्रिका**] १ गौ का मूत्र, गो-मूत्र; (ओघ ६४ भा)। २ गो-मूत्र के आकार वाली गृह-पंक्ति; (पंचव २)। °**मुहिअ** न [°**मुखित**] गौ के मुख का आकार वाली ढ़ाल; (णाया १, १८)। °**रहग** पुं [°**रथक**] तीन वर्ष का बैल ; (सूअ १, ४, २)। °**रोयण** स्त्रीन [°**रोचन**] स्वनाम-ख्यात पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष, गोमस्तक-स्थित शुष्क पित्त; (सुर १, १३७) ; स्त्री—°**णा**; (पंचा ४)। °**लेहणिया** स्त्री [°**लेहनिका**] ऊषर भूमि ; (निचू ३)। °**लोम** पुं [°**लोम**] १ गौ का रोम, बाल; २ द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जीव १)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ इन्द्र ; २ सूर्य ; ३ राजा ; (सुपा १४२)। ४ महा-देव ; ५ बैल; (हे १, २३१)। °**वइय** पुं [°**व्रतिक**] गौओं की चर्या का अनुकरण करने वाला एक प्रकार का तपस्वी; (णाया १, १५)। °**वय** देखो °**पय**; (राज)। °**वाड** पुं [°**वाट**] गौओं का वाड़ा ; (दे १, १४६)। °**व्वइय** देखो °**वइय** ; (औप)। °**साला** स्त्री [°**शाला**]

गौओं का वाड़ा ; (निचू ८) । °हण न [°धन] गौओं का समूह ; (गा ६०९ ; सुर १, ४९) ।

गोअ देखो **गोव**=गोपय् । कृ—**गोअणिज्ज**; (नाट—मालती १२१) ।

गोअंट पुं [दे] १ गौ का चरण ; २ स्थल-शृङ्गाट, स्थल में होने वाला शृङ्गाट का पेड़ ; (दे २, ९८) ।

गोअग्गा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला ; (दे २, ९६) ।

गोअल्ला स्त्री [दे] दूध बेचने वाली स्त्री ; (दे २, ९८) ।

गोआ स्त्री [**गोदा**] नदी-विशेष, गोदावरी नदी ; "गोआण-इकच्छकुडंगवासिणा दरिअसीहेण" (गा १७५) ।

गोआ स्त्री [दे] गर्गरी, कलशी, छोटा घड़ा; (दे २, ८९)।

गोआअरी स्त्री [**गोदावरी**] नदी-विशेष, गोदावरी ; (गा ३५५) ।

गोआलिआ स्त्री [दे] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष ; (दे २, ९८) ।

गोआवरी देखो **गोआअरी** ; (हे २, १७४) ।

गोउर न [**गोपुर**] नगर का दरवाजा ; (सम १३७ ; सुर १, ५६) ।

गोंजी, **गोंठी** स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ९५) ।

गोंड देखो **कोंड**=कौण्ड ; (इक) ।

गोंड न [दे] कानन, बन, जंगल ; (दे २, ९४) ।

गोंडी स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ९५) ।

गोंदल देखो **गुंदल**; (भवि) ।

गोंदीण न [दे] मयूर-पित्त, मोर का पित्त ; (दे २, ९७)।

गोंफ पुं [**गुल्फ**] पाद-ग्रन्थि, पैर की गाँठ ; (पण्ह १, ४) ।

गोकण्ण, **गोकन्न** पुं [**गोकर्ण**] १ गौ का कान। २ दो खुर वाला चतुष्पद-विशेष ; (पण्ह १, १) । ३ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष ; ४ गोकर्ण-द्वीप का निवासी मनुष्य ; (ठा ४, २) ।

गोक्खुरय पुं [**गोक्षुरक**] एक ओषधि का नाम, गोखरू ; (स २५६) ।

गोच्चय पुं [दे] प्राजन-दण्ड, कोड़ा ; (दे २, ९७) ।

गोच्छ देखो **गुच्छ** ; (से ६, ४७ ; गा ५३२) ।

गोच्छअ, **गोच्छग** पुंन [**गोच्छक**] पात्र वगैरः साफ करने का वस्त्र-खण्ड ; (कस ; पण्ह २, ५) ।

गोच्छड न [दे] गोमय, गो-विष्ठा ; (मृच्छ ३४) ।

गोच्छा स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ९५) ।

गोच्छिय देखो **गुच्छिय** ; (औप ; णाया १, १) ।

गोछड देखो **गोच्छड**; (नाट—मृच्छ ४१) ।

गोजलोया स्त्री [**गोजलौका**] क्षुद्र कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (पण्ण १५) ।

गोज्ज पुं [दे] १ शारीरिक दोष वाला बैल; (सुपा २८१); २ गाने वाला, गवैया, गायक ;

"वीणावंसरवाहं, गीयं नडनट्टछत्तगोज्जेहिं ।
वंदिजणेण सहरिसं, जयसद्दालायणं च कयं "
(पउम ८५, १९) ।

गोट्ठ पुं [**गोष्ठ**] गोवाड़ा, गौओं के रहने का स्थान ; (महा ; पउम १०३, ४० ; गा ४४७) ।

गोट्ठामाहिल पुं [**गोष्ठामाहिल**] कर्म-पुद्गलों को जीव प्रदेश से अबद्ध मानने वाला एक जैनाभास आचार्य ; (ठा ७) ।

गोट्ठि देखो **गोट्ठी** ; (आवम) ।

गोट्ठिल, **गोट्ठिल्लग**, **गोट्ठिल्लय** पुं [**गौष्ठिक**] एक मण्डली के सदस्य, समान-वयस्क दोस्त ; (णाया १, १६—पत्र २०५ ; विपा १, २—पत्र ३७) ।

गोट्ठी स्त्री [**गोष्ठी**] १ मण्डली, समान वय वालों की सभा ; (प्राप; दसनि १ ; णाया १, १६) । २ वार्तालाप, परामर्श ; (कुमा) ।

गोड पुं [**गौड**] १ देश-विशेष; (स २८६) । २ वि. गौड़ देश का निवासी ; (पण्ह १, १) ।

गोड पुं [दे] गोड़, पाद, पैर ; (नाट—मृच्छ १५८) ।

गोडा स्त्री [**गोला**] नदी-विशेष, गोदावरी ; (गा ५८ ; १०३) ।

गोडी स्त्री [**गौडी**] गुड़ की बनी हुई मदिरा, गुड़ का दारू ; (बृह २) ।

गोड्ड वि [**गौड**] १ गुड़ का बना हुआ ; २ मधुर, मिष्ट ; (भग १८, ६) ।

गोड्ड [दे] देखो **गोड** ; (मृच्छ १२०) ।

गोण पुं [दे] १ साक्षी ; (दे २, १०४) । २ बैल, वृषभ, बलीवर्द ; (दे २, १०४ ; कुमा ; हे २, १७४ ; सुपा ५४७ ; औप ; दस ५, १ ; आचा २, ३, ३ ; उप ९०४ ; विपा १, १) । °इन्न वि [°वत्] गौं वाला, गौओं का मालिक ; (सुपा ५४७) । °वइ पुंस्त्री [°पति] गौओं का मालिक, गौ वाला ; (सुपा ५४७) ।

श्रेणी के देवों की एक जाति ; (कप्प ; औप; भग; जी ३३ ; इक)।

गेह न [**गेह**] गृह, घर, मकान; (स्वप्न १६ ; गउड)। °**जामाउय** पुं [°**जामातृक**] घरजमाई, सर्वदा ससुर के घर में रहने वाला जामाता ; (उत्त पृ ३६६)। °**गार** वि [°**ाकार**] १ घर के आकार वाला ; २ पुं. कल्पवृक्ष की एक जाति ; (सम १७)। °**ालु** वि [°**वत्**] घर वाला, गृही, संसारी ; (षड्)। °**ासम** पुं [°**ाश्रम**] गृहस्थाश्रम ; (पउम ३१, ८२)।

गेहि वि [**गृद्ध**] लोलुप, अत्यासक्त ; (ओघ ८७)।

गेहि स्त्री [**गृद्धि**] आसक्ति, गार्ध्य, लालच ; (स ११३; पण्ह १, ३)।

गेहि वि [**गेहिन्**] नीचे देखो; (णाया १, १४)।

गेहिअ वि [**गेहिक**] १ घर वाला, गृही। २ पुं. भर्ता, धनी, पति ; (उत्त २)।

गेहिअ वि [**गृद्धिक**] अत्यासक्त, लोलुप, लालची ; (पण्ह १, ३)।

गेहिणी स्त्री [**गेहिनी**] गृहिणी, स्त्री ; (सुपा ३४१ ; कुमा ; कप्पू)।

गो पुं [**गो**] १ रश्मि, किरण ; (गउड)। २ स्वर्ग, देव-भूमि ; (सुपा १४२)। ३ बैल, बलीवर्द ; ४ पशु, जानवर ; ५ स्त्री. गैया ; " अपरप्पेरियतिरियानियमिय-दिग्गमणओणिलो गोव्व " (विसे १७५८ ; पउम १०३, ५०; सुपा २७५)। ६ वाणी, वाग् ; (सूअ १, १३)। ७ भूमि ; " जं महइ विंभवणगोयराण लोआ पुलिंदाण " (गउड; सुपा १४२)। °**आल** देखो °**वाल** ; (पुप्फ २१६)। °**इल्ल** वि [°**मत्**] गो-युक्त, जिसके पास अनेक गौ हों वह; (दे २, ६८)। °**उल** न [°**कुल**] १ गौओं का समूह ; (आव ३)। २ गोष्ठ, गो-बाड़ा; " सामी गोउलगओ " (आवम)। °**उलिय** वि [°**कुलिक**] गो-कुल वाला, गो-कुल का मालिक, गोबाला ; (महा)। °**किलंजय** न [°**किलञ्जक**] पात्र-विशेष, जिसमें गौ को खाना दिया जाता है ; (भग ७, ८)। °**कीड** पुं [°**कीट**] पशुओं की मक्खी, बघी, (जी १६)। °**क्खीर,** °**खीर** न [°**क्षीर**] गैया का दूध ; (सम ६०; णाया १, १)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] गौ की चोरी, गौ को छीनना ; (पण्ह १, ३)। °**ग्गहण** न [°**ग्रहण**] गो-ग्रह ; (णाया १, १८)। °**णिसज्जा** स्त्री [°**निषद्या**] आसन-विशेष, गौ की तरह बैठना ; (ठा १, १)। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] १ गौओं का तालाव आदि में उतरने का रास्ता ; क्रम से नीची जमीन; (जीव ३)। २ लवण समुद्र वगैरः की एक जगह ; (ठा १०)। °**त्तास** वि [°**त्रास**] १ गौओं का त्रास देने वाला ; २ पुं. एक कूट-ग्राह का पुत्र; (विपा १, २)। °**दास** पुं [°**दास**] १ एक जैन मुनि, भद्रबाहु स्वामी का प्रथम शिष्य ; २ एक जैन मुनि-गण ; (कप्प ; ठा ६)। °**दोहिया** स्त्री [°**दोहिका**] १ गौ का दोहन ; २ आसन-विशेष, गो दोहने के समय जिस तरह बैठा जाता है उस तरह का उपवेशन ; (ठा ५, १)। °**दुह** वि [°**दुह्**] गौ को दोहने वाला ; (षड्)। °**धूलिआ** स्त्री [°**धूलिका**] लग्न-विशेष, गौओं को चरा कर पीछे घुमने का समय, सायंकाल ; "वेलव्व गोधूलिया" (रंभा)। °**पय,** °**प्पय** न [°**ष्पद**] १ गौ का पैर डूबे उतना गहरा; "लद्धम्मि जम्मि जीवाण जायइ गोपयं व भव-जलही" (आप ६६)। २ गो-पद-परिमित भूमि; (अणु)। ३ गौ का पैर ; (ठा ४, ४)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] श्रेष्ठि-विशेष, शालिभद्र के पिता का नाम ; (ठा १०)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] गौओं को चरने की जगह ; (आवम)। °**म** वि [°**मत्**] गौ वाला ; (विसे १४६८)। °**मड** न [°**मृत**] गौ का शव; (णाया १, ११—पत्र १७३)। °**मय** न [°**मय**] गोबर, गौ का मल, गो-विष्ठा ; (श्रग ५, २)। °**मुत्तिया** स्त्री [°**मूत्रिका**] १ गौ का मूत्र, गो-मूत्र; (ओघ ६४ भा)। २ गो-मूत्र के आकार वाली गृह-पंक्ति; (पंचव २)। °**मुहिअ** न [°**मुखित**] गौ के मुख का आकार वाली ढ़ाल; (णाया १, १८)। °**रहग** पुं [°**रथक**] तीन वर्ष का बैल ; (सूअ १, ४, २)। °**रोयण** स्त्रीन [°**रोचन**] स्वनाम-ख्यात पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष, गोमस्तक-स्थित शुष्क पित्त; (सुर १, १३७) ; स्त्री—°**णा**; (पंचा ४)। °**लेहणिया** स्त्री [°**लेहनिका**] ऊषर भूमि ; (निचू ३)। °**लोम** पुं [°**लोम**] १ गौ का रोम, वाल; २ द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जीव १)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ इन्द्र ; २ सूर्य ; ३ राजा ; (सुपा १४२)। ४ महा-देव ; ५ बैल; (हे १, २३१)। °**वइय** पुं [°**व्रतिक**] गौओं की चर्या का अनुकरण करने वाला एक प्रकार का तपस्वी; (णाया १, १५)। °**वय** देखो °**पय**; (राज)। °**वाड** पुं [°**वाट**] गौओं का वाड़ा ; (दे १, १४६)। °**व्वइय** देखो °**वइय** ; (औप)। °**साला** स्त्री [°**शाला**]

गौओं का वाड़ा ; (निचू ८) । °हण न [°धन] गौओं का समूह ; (गा ६०६ ; सुर १, ४६) ।

गोअ देखो **गोव**=गोपय् । कृ—**गोअणिज्ज**; (नाट—मालती १२१) ।

गोअंट पुं [**दे**] १ गौ का चरण ; २ स्थल-शृङ्गाट, स्थल में होने वाला शृङ्गाट का पेड़ ; (दे २, ६८) ।

गोअग्गा स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला ; (दे २, ६६) ।

गोअल्ला स्त्री [**दे**] दूध बेचने वाली स्त्री ; (दे २, ६८)।

गोआ स्त्री [**गोदा**] नदी-विशेष, गोदावरी नदी ; "गोआणइकच्छकुडंगवासिणा दरिअसीहेण" (गा १७५) ।

गोआ स्त्री [**दे**] गर्गरी, कलशो, छोटा घड़ा; (दे २, ८६)।

गोआअरी स्त्री [**गोदावरी**] नदी-विशेष, गोदावरी ; (गा ३५५) ।

गोआलिआ स्त्री [**दे**] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष ; (दे २, ६८) ।

गोआवरी देखो **गोआअरी** ; (हे २, १७४) ।

गोउर न [**गोपुर**] नगर का दरवाजा ; (सम १३७ ; सुर १, ५६) ।

गोंजी } स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ६५) ।
गोंठी }

गोंड देखो **कोंड**=कौण्ड ; (इक) ।

गोंड न [**दे**] कानन, बन, जंगल ; (दे २, ६४) ।

गोंडी स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ६५) ।

गोंदल देखो **गुंदल**; (भवि) ।

गोंदीण न [**दे**] मयूर-पित्त, मोर का पित्त ; (दे २, ६७)।

गोंफ पुं [**गुल्फ**] पाद-ग्रन्थि, पैर की गाँठ ; (पण्ह १, ४) ।

गोकण्ण } पुं [**गोकर्ण**] १ गौ का कान । २ दो खुर
गोकन्न } वाला चतुष्पद-विशेष ; (पण्ह १, १) । ३ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष ; ४ गोकर्ण-द्वीप का निवासी मनुष्य ; (ठा ४, २) ।

गोक्खुरय पुं [**गोक्षुरक**] एक ओषधि का नाम, गोखरू ; (स २५६) ।

गोच्चय पुं [**दे**] प्राजन-दण्ड, कोड़ा ; (दे २, ६७) ।

गोच्छ देखो **गुच्छ** ; (से ६, ४७ ; गा ५३२) ।

गोच्छअ } पुंन [**गोच्छक**] पात्र वगैरः साफ करने का
गोच्छग } वस्त्र-खण्ड ; (कस ; पण्ह २, ५) ।

गोच्छड न [**दे**] गोमय, गो-विष्ठा ; (मृच्छ ३४) ।

गोच्छा स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ६५) ।

गोच्छिय देखो **गुच्छिय** ; (औप ; णाया १, १) ।

गोछड देखो **गोच्छड**; (नाट—मृच्छ ४१) ।

गोजलोया स्त्री [**गोजलौका**] क्षुद्र कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (पण्ण १५) ।

गोज्ज पुं [**दे**] १ शारीरिक दोष वाला बैल; (सुपा २८१)। २ गाने वाला, गवैया, गायक ;

" वीणावंसखणाहं, गीयं नडनट्टछत्तगोज्जेहिं ।
बंदिजणेण सहरिसं, जयसद्दालायणं च कयं "
(पउम ८५, १६) ।

गोट्ठ पुं [**गोष्ठ**] गोवाड़ा, गौओं के रहने का स्थान ; (महा ; पउम १०३, ४० ; गा ४४७) ।

गोट्ठामाहिल पुं [**गोष्ठामाहिल**] कर्म-पुद्गलों को जीव प्रदेश से अबद्ध मानने वाला एक जैनाभास आचार्य ; (ठा ७) ।

गोट्ठि देखो **गोट्ठी** ; (आवम) ।

गोट्ठिल्ल } पुं [**गौष्ठिक**] एक मण्डली के सदस्य,
गोट्ठिल्लग } समान-वयस्क दोस्त ; (णाया १, १६—पत्र
गोट्ठिल्लय } २०५ ; विपा १, २—पत्र ३७) ।

गोट्ठी स्त्री [**गोष्ठी**] १ मण्डली, समान वय वालों की सभा ; (प्राप; दसनि १ ; णाया १, १६) । २ वार्तालाप, परामर्श ; (कुमा) ।

गोड पुं [**गौड**] १ देश-विशेष; (स २८६) । २ वि. गौड़ देश का निवासी ; (पण्ह १, १) ।

गोड पुं [**दे**] गोड़, पाद, पैर ; (नाट—मृच्छ १५८) ।

गोडा स्त्री [**गोला**] नदी-विशेष, गोदावरी ; (गा ५८ ; १०३) ।

गोडी स्त्री [**गौडी**] गुड़ की बनी हुई मदिरा, गुड़ का दारू ; (बृह २) ।

गोड्ड वि [**गौड**] १ गुड़ का बना हुआ ; २ मधुर, मिष्ट ; (भग १८, ६) ।

गोड्ड [**दे**] देखो **गोड** ; (मृच्छ १२०) ।

गोण पुं [**दे**] १ साक्षी ; (दे २, १०४) । २ बैल, वृषभ, बलीवर्द ; (दे २, १०४ ; कुमा ; हे २, १७४ ; सुपा ५४७ ; औप ; दस ५, १ ; आचा २, ३, ३ ; उप ६०४ ; विपा १, १) । °इल्ल वि [°वत्] गौ वाला, गौओं का मालिक ; (सुपा ५४७) । °वइ पुंस्त्री [°पति] गौओं का मालिक, गौ वाला ; (सुपा ५४७) ।

गोण वि [**गौण**] १ गुण-निष्पन्न, गुण-युक्त, यथार्थ ; (विसे १,२ ; औप)। २ अ-प्रधान, अ-मुख्य ; (औप)।

गोणंगणा स्त्री [**गवाङ्गना**] गैया, गौ ; (सुपा ४६५)।

गोणत्त } पुंन [**दे**] वैद्य का औजार रखने का थैला ;
गोणत्तय } (उप ३१७ ; स ४८४)।

गोणस पुं [**गोनस**] सर्प की एक जाति, फण-रहित साँप की एक जाति ; (पण्ह १,१ ; उप पृ ४०३)।

गोणा स्त्री [**दे**] गौ, गैया ; (षड्)।

गोणिक्क पुं [**दे**] गो-समूह, गौओं का समूह ; (दे २,९७; पाअ)।

गोणिय वि [**दे**] गौओं का व्यापारी ; (वव ६)।

गोणी स्त्री [**दे**] गौ, गैया ; (ओघ २३ भा)।

गोण्ण देखो **गोण=**गौण ; (कप्प ; णाया १,१—पत्र ३७)।

गोत्त पुं [**गोत्र**] १ पर्वत, पहाड़; (श्रा १४)। २ न. नाम, अभिधान, आख्या ; (से १५, १०)। ३ कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से प्राणी उच्च या नीच जाति का कहलाता है ; (ठा २, ४)। ४ पुंन. गोत, वंश, कुल, जाति ; "सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता" (ठा ७)। °**क्खलिय** न [°**स्खलित**] नाम-विपर्यास, एक के बदले दूसरे के नाम का उच्चारण; (से ११,१७)। °**देवया** स्त्री [°**देवता**] कुल-देवी; (श्रा १४)। °**फुस्सिया** स्त्री [°**स्पर्शिका**] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १)।

गोत्ति वि [**गोत्रिन्**] समान गोत्र वाला, कुटुम्बी, स्वजन ; (सुपा १०६)।

गोत्ति देखो **गुत्ति** ; (स २४२)।

गोत्तिअ वि [**गोत्रिक**] समान गोत्र वाला, स्वजन; (श्रा २७)।

गोत्थुभ देखो **गोथुभ** ; (इक)।

गोत्थूभा देखो **गोथूभा** ; (इक)।

गोथुभ } पुं [**गोस्तूप**] १ ग्यारहवें जिन-देव का प्रथम
गोथूभ } शिष्य ; (सम १५२ ; पि २०८)। २ वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत ; (सम ९६)। ३ न. मानुषोत्तर पर्वत का एक शिखर ; (दीव)।

गोथूभा स्त्री [**गोस्तूपा**] १ वापी-विशेष, अञ्जन पर्वत पर की एक वापी ; (ठा ३, ३)। २ शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी की राजधानी ; (ठा ४,२)।

गोदा स्त्री [**दे. गोदा**] नदी-विशेष, गोदावरी; (षड्; गा ९५५)।

गोध पुं [**गोध**] १ म्लेच्छ देश ; २ गाध देश का निवासी मनुष्य ; (राज)।

गोधा स्त्री [**गोधा**] गोह, हाथ से चलने वाली एक साँप की जाति; (पण्ह १,१ ; णाया १, ८)।

गोन्न देखो **गोण्ण** ; (णाया १,१६—पत्र २००)।

गोपुर देखो **गोउर** ; (उत्त ९ ; अभि १८५)।

गोफणा स्त्री [**दे**] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष; (राज)।

गोमट्टा स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला ; (दे २, ९६)।

गोमाअ } पुं [**गोमायु**] शृगाल, गीदड़ ; (नाट—मृच्छ
गोमाउ } ३२०; पि १६५; णाया १,४ ; स २२६; पाअ)।

गोमाणसिया स्त्री [**गोमानसिका**] शय्याकार स्थान विशेष; (जीव ३)।

गोमाणसी स्त्री [**गोमानसी**] ऊपर देखो ; (जीव ३)।

गोमि } वि [**गोमिन्**] जिसके पास अनेक गौ हों वह,
गोमिअ } (अणु; निचू २)।

गोमिअ देखो **गोम्मिअ** ; (राज)।

गोमी स्त्री [**दे**] कनखजूरा, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जी १६)।

गोमुह पुं [**गोमुख**] १ यक्ष-विशेष, भगवान् ऋषभदेव का शासन-यक्ष ; (संति ७)। २ एक अन्तर्द्वीप द्वीप-विशेष ; ३ गोमुख-द्वीप का निवासी मनुष्य; (ठा ४,२)। ४ न. उपलेपन; (दे २, ९८)।

गोमुही स्त्री [**गोमुखी**] वाद्य-विशेष; (अणु ; राय)।

गोमेअ } पुं [**गोमेद**] रत्न की एक जाति ; (कुमा
गोमेज्ज } ७० ; उत्त २)।

गोमेह पुं [**गोमेध**] १ यक्ष-विशेष, भगवान् नेमिनाथ का शासन-देव ; (सं ८)। २ यज्ञ-विशेष, जिसमें गौ का वध किया जाता है ; (पउम ११,४१)।

गोम्मिअ पुं [**गौल्मिक**] कोटवाल, नगर-रक्षक; (पण्ह १,२)।

गोम्ही देखो **गोमी** ; (राज)।

गोय देखो **गोत्त** ; (सम ३३ ; कम्म १)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] अपने कुल को उत्तम मानने वाला, वंशाभिमानी ; (आचा)।

गोय न [**दे**] उदुम्बर वगैरः का फल ; (आव ६)।

गोयम पुं [**गोतम**] १ ऋषि-विशेष ; (ठा ७)। २ छोटा बैल ; (औप)। ३ न. गोत्र-विशेष ; (कप्प ; ठा ७)।

गोयम वि [**गौतम**] १ गोतम गोत्र में उत्पन्न, गोतमगोत्रीय ; "जे गोयमा ते सत्तविहा पण्णत्ता" (ठा ७ ; भग ; जं १)। २ पुं. भगवान् महावीर का प्रधान शिष्य ; (भग १४, ७ ; उवा)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार, राजा

अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर्वत पर मुक्त हुआ था; (अंत २)। ४ एक मनुष्य-जाति, जो बैल द्वारा भिक्षा माँग कर अपना निर्वाह चलाती है; (णाया १, १४)। ५ एक ब्राह्मण; (उप ६१७)। ६ द्वीप-विशेष; (सम ८०; उप ५६७ टी)। °**केसिज्ज** न [°**केशीय**] उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन, जिसमें गौतमस्वामी और केशिमुनि का संवाद है; (उत्त २३)। °**सगुत्त** वि [°**सगोत्र**] गोतम-गोत्रीय; (भग; आवम)। °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] भगवान् महावीर के सर्व-प्रधान शिष्य का नाम; (विपा १,१—पत्र २)।

गोयमज्जिया } **गोयमेज्जिया** } स्त्री [**गौतमार्यिका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (राज; कप्प)।

गोयर पुं [**गोचर**] १ गौओं को चरने की जगह; "णो गोयरे णो वणगाणियाणं" (बृह ३)। २ विषय; "अंबुरुहगोयरं णमह...सयंभुं" (गउड)। ३ इन्द्रिय का विषय, प्रत्यक्ष; "इअ राया उज्जाणं तं कासी नयणगोअरं सव्वं" (कुमा)। ४ भिक्षाटन, भिक्षा के लिए भ्रमण; (ओघ ६६ भा; दस ५,१)। ५ भिक्षा, माधुकरी; (उप २०४)। ६ वि. भूमि में विचरने वाला, "विंझवणगोयराण पुलिंदाण" (गउड)। °**चरिआ** स्त्री [°**चर्या**] भिक्षा के लिए भ्रमण; (उप १३७ टी; पउम ४, ३)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] १ पशुओं को चरने की जगह; (दे ३, ४०)। २ भिक्षा-भ्रमण की जगह; (ठा ६)। °**वत्ति** वि [°**वर्त्तिन्**] भिक्षा के लिए भ्रमण करने वाला; (गा २०४)।

गोयरी स्त्री [**गौचरी**] भिक्षा, माधुकरी; (सुपा २६६)।

गोर पुं [**गौर**] १ शुक्ल वर्ण, सफेद रंग; २ वि. गौर वर्ण वाला, शुक्ल; (गउड; कुमा)। ३ अवदात, निर्मल; (णाया १,८)। °**खर** पुं [°**खर**] गर्दभ की एक जाति; (पराण१)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष, हिमाचल; (निचू १)। °**मिग** पुं [°**मृग**] १ हरिण की एक जाति; २ न. उस हरिण के चमड़े का बना हुआ वस्त्र; (आचा २, ५, १)।

गोरअ देखो **गोरव**; (गा ८६)।

गोरंग वि [**गौराङ्ग**] शुक्ल शरीर वाला; (कप्पू)।

गोरंफिडी स्त्री [**दे**] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष; (दे२,६८)।

गोरडित वि [**दे**] त्रस्त, ध्वस्त; (षड्)।

गोरव न [**गौरव**] १ महत्त्व, गुरुत्व; (प्रासू ३०)। २ आदर, सम्मान, बहुमान; (विसे ३४७३; रयण ५३)। ३ गमन, गति; (ठा ६)।

गोरविअ वि [**गौरवित**] सम्मानित, जिसका आदर किया गया हो वह; (दे ४,५)।

गोरस पुंन [**गोरस**] गोरस, दूध, दही, मठा वगैरः; (णाया १,८; ठा ४,१)।

गोरा स्त्री [**दे**] १ लाङ्गल-पद्धति, हल-रेखा; २ चक्षु, आँख; ३ ग्रीवा, डोक; (दे २, १०४)।

गोरि° देखो **गोरी**; (हे १, ४)।

गोरिअ न [**गौरिक**] विद्याधर का नगर-विशेष; (इक)।

गोरी स्त्री [**गौरी**] १ शुक्ल-वर्णा स्त्री; (हे ३,२८)। २ पार्वती, शिव-पत्नी; (कुमा; सुपा २४०; गा १)। ३ श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम; (अंत १५)। ४ इस नाम की एक विद्या-देवी; (संति ६)। °**कूड** न [°**कूट**] विद्याधर-नगर-विशेष; (इक)।

गोल पुं [**दे**] १ साक्षी; (दे २,६५)। २ पुरुष का निन्दा-गर्भ आमन्त्रण; (णाया १, ६)। ३ निष्ठुरता, कठोरता; (दस ७)।

गोल पुं [**गोल**] १ वृक्ष-विशेष; "कदम्बगोलणिहकंटअंतणिअंगे" (अच्चु ५८)। २ गोलाकार, वृत्ताकार, मण्डलाकार वस्तु; (ठा ४,४; अनु ५)। ३ गोलक, कुंडा; (सुपा२७०)। ४ गेंद, कन्दुक; (सूअ १,४)।

गोलग } **गोलय** } पुं [**गोलक**] ऊपर देखो; (सूअ २,२; उप पृ ३६२ काल)।

गोला स्त्री [**दे**] गौ, गैया; (दे २, १०४; पाअ)। २ नदी, कोई भी नदी; ३ सखी, सहेली, संगिनी; (दे २, १०४)। ४ गोदावरी नदी; (दे २,१०४; गा ५८; १७५; हेका २६७; पि ८५; १६४; पाअ; षड्)।

गोलिय पुं [**गौडिक**] गुड़ बनाने वाला; (वव ६)।

गोलिया स्त्री [**दे**] १ गोली, गुटिका; (राय; अणु)। २ गेंद, लड़कों के खेलने की एक चोज; "तीए दासीए घडो गोलियाए भिन्नो" (दसनि २)। ३ बड़ा कुंडा, बड़ी थाली; (ठा ८)। °**लिंछ**, °**लिच्छ** न [°**लिञ्छ**, °**लिच्छ**] १ चुल्ली, चुल्हा; २ अग्नि-विशेष; (ठा ८—पत्र ४१७)।

गोलियायण न [**गोलिकायन**] १ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है; २ वि. गोलिकायन-गोत्रीय; (ठा७)।

गोली स्त्री [**दे**] मथनी, मथनिया, दही मथने की लकड़ी; (दे २, ६५)।

गोल्ल न [**दे**] बिम्बी-फल, कुन्दरुन का फल; (णाया१,८; कुमा)।

गोल्ल पुं [**गौल्य**] १ देश-विशेष ; (आवम)। २ न. गोत्र-विशेष, जो काश्यप गोत्र की शाखा है ; ३ वि. गौल्य गोत्र में उत्पन्न ; (ठा ७)।

गोल्हा स्त्री [**दे**] बिम्बी, वल्ली-विशेष, कुन्दरुन का पेड़ ; (दे २, ९५ ; आवम ; पात्र)।

गोव सक [**गोपय्**] १ छिपाना। २ रक्षण करना। गोवए, गोवेइ; (सुपा ३४६; महा)। कवकृ—**गोविज्जंत**; (सुपा ३३७ ; सुर ११, १६२ ; प्रासू ६५)।

गोव) पुं [**गोप**] गौओं का रक्षक, ग्वाला, गो-पाल ; **गवअ**) (ठवा ७ ; दे २, ५८ ; कप्पू)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष ; "गोवगिरिसिहरसंठियचरमजिणा-ययणदारमवरुद्धं" (मुणि १०८९७)।

गोवड्डुण देखो **गोवद्धण** ; (पि २९१)।

गोवण न [**गोपन**] १ रक्षण ; २ छिपाना ; (श्रा २८ ; उप ५९७ टी)।

गोवद्धण पुं [**गोवर्धन**] १ पर्वत-विशेष ; (पि २९१)। २ ग्राम-विशेष; (पउम २०, ११५)।

गोवर पुंन [**दे**] गोवर, गोमय, गो-विष्ठा ; (दे २, ९६ ; उप ५९७ टी)।

गोवर पुं [**गोवर**] १ मगध देश का एक गाँव, गौतम-स्वामी की जन्म-भूमि ; (आक)। २ वणिग्-विशेष ; (उप ५९७ टी)।

गोवल न [**गोवल**] गोधन, गोकुल, गौओं का समूह ; ...रिंति गोवलाइं" (सुपा ४३३)। २ गोत्र-विशेष ; (सुज्ज १०)।

गोवलायण देखो **गोवल्लायण**; (सुज्ज १०)।

गोवलिय पुं [**गोवालक**] ग्वाला, अहीर; (सुपा ४३३)।

गोवल्लायण वि [**गोवलायन**] १ गोवल गोत्र में उत्पन्न; २ न. नक्षत्र-विशेष ; (इक)।

गोवा पुं [**गोपा**] गौओं का पालन करने वाला, ग्वाला ; (प्रामा)।

गोवाय सक [**गोपाय्**] १ छिपाना ; २ रक्षण करना। वकृ—**गोवायंत** ; (उप ३५७)।

गोवाल पुं [**गोपाल**] गौ पालने वाला, ग्वाला, अहीर; (दे २, २८)। °**गुज्जरी** स्त्री [°**गुर्जरी**] भैरव राग वाली भाषा-विशेष, गुजरात के अहीरों का गीत ; (कुमा)।

गोवालय पुं [**गोपालक**] ऊपर देखो; (पउम ५, ९६)।

गोवालि पुं [**गोपालिन्**] ग्वाला, गोप, अहीर; (सुपा ४३२; ४३३)।

गोवालिणी स्त्री [**गोपालिनी**] गोप-स्त्री, अहीरिन; (सुपा ४३२)।

गोवालिय पुं [**गोपालिक**] गोप, अहीर, ग्वाला ; (सुपा ४३३)।

गोवालिया स्त्री [**गोपालिका**] गोप-स्त्री, गोपी, अहीरिन ; (णाया १, १६)।

गोवाली स्त्री [**गोपाली**] वल्ली-विशेष ; (पगण १)।

गोविअ वि [**दे**] अ-जल्पाक, नहीं बोलने वाला; (दे २,९७)।

गोविअ वि [**गोपित**] १ छिपाया हुआ ; २ रक्षित ; (सुर १, ८८ ; निर १, ३)।

गोविआ स्त्री [**गोपिका**] गोपांगना, अहीरिन ; (कुमा ; गा ११४)।

गोविंद पुं [**गोपेन्द्र**] १ स्वनाम-ख्यात एक योग-विषयक ग्रन्थ-कार ; २ एक जैन मुनि ; (पंचव ; णंदि)।

गोविंद पुं [**गोविन्द**] १ विष्णु, कृष्ण ; २ एक जैन मुनि; (ठा १०)। °**णिज्जुत्ति** स्त्री [°**निर्युक्ति**] इस नाम का एक जैन दार्शनिक ग्रन्थ ; (निचू ११)।

गोविल्ल न [**दे**] कञ्चुक, चोली; (दे २, ९४)।

गोवी स्त्री [**दे**] बाला, कन्या, कुमारी, लड़की ; (दे २, ९६)।

गोवी स्त्री [**गोपी**] गोपाङ्गना, अहीरिन; (सुपा ४३५)।

गोव्वर [**दे**] देखो **गोवर** ; (उप ५६३ ; ५९७ टी)।

गोस पुंन [**दे**] प्रभात, सुबह, प्रातः-काल ; (दे २, ९६ ; सण ; गउड ; वव ६ ; पंचव २ ; पात्र ; षड् ; पव ४)।

गोसंधिय पुं [**गोसंधित**] गोपाल, अहीर ; (राज)।

गोसग्ग पुंन [**दे. गोसर्ग**] प्रातः-काल, प्रभात ; (दे २, ९६ ; पात्र)।

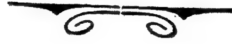
गोसण्ण [**दे**] मूर्ख, बेवकूफ; (दे २, ९७; षड्)।

गोसाल) पुं. व. [**गोशाल**] १ देश-विशेष ; (पउम **गोसालग**) ९८, ६५)। २ पुं. भगवान् महावीर का एक शिष्य, जिसने पीछे अपना आजीविक मत चलाया था; (भग १५)।

गोसाविआ स्त्री [**दे**] १ वेश्या, वाराङ्गना; (मृच्छ ५५)। २ मूर्ख-जननी ; (नाट—मृच्छ ७०)।

गोसिय वि [दे] प्राभातिक, प्रातःकाल-संबन्धी; (सण) ।
गोसीस न [**गोशीर्ष**] चन्दन-विशेष, सुगन्धित काष्ठ-विशेष ; (पण्ह २, ४ ; ५; कप्प ; सुर ४, १४ ; सण)।
गोह पुं [**दे**] १ गाँव का मुखिया; (दे २,८६) । २ भट, सुभट, योद्धा; (दे २, ८६ ; महा) । ३ जार, उपपति; (उप पृ २१५) । ४ सिपाही, पुलिस ; (उप पृ ३३५)। ५ पुरुष, आदमी, मनुष्य ; (मृच्छ ५७) ।
गोहा देखो **गोधा** ; (दे २, ७३ ; भग ८,३) ।
गोहिया स्त्री [**गोधिका**] १ गोधा, गोह, जलजन्तु-विशेष ; (सुर १०, १८६) । २ साँप की एक जाति ; (जीव २) । ३ वाद्य-विशेष ; (अनु) ।
गोहुर न [**दे**] गोमय, गो-विष्ठा ; (दे २, ९६) ।
गोहूम पुं [**गोधूम**] अन्न-विशेष, गेहूँ ; (कस) ।
गोहेर, **गोहेरय** पुं [**गोधेर**] जन्तु-विशेष, साँप की तरह का जनावर ; (पउम ४८, ९२ ; ९१) ।
°ग्गह देखो **गह**=ग्रह ; (गउड) ।
°ग्गहण देखो **गहण**=ग्रहण ; (अभि ५६) ।
°ग्गहण देखो **गहण**=ग्राहण ; (कुमा) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे गआराइसद्दसंकलणो
बारहमो तरंगो समत्तो ।



घ

घ पुं [**घ**] कण्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप ; प्रामा) ।

घअंद न [**दे**] मुकुर, दर्पण ; (षड्) ।

घइं (अप) अ. पाद-पूरक और अनर्थक अव्यय ; (हे ४, ४२४ ; कुमा) ।

घओअ } पुं [**घृतोद**] १ समुद्र-विशेष, जिसका पानी
घओद } घी के तुल्य स्वादिष्ठ है ; (इक ; ठा ७) । २ मेघ-विशेष ; (तित्थ) ३ वि. जिसका पानी घी के समान मधुर हो ऐसा जलाशय । स्त्री—°**आ**, °**दा** ; (जीव ३; राय) ।

घंघ पुं [**दे**] गृह, मकान, घर; (दे २, १०५) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] अनाथ-मण्डप, भिक्षुकों का आश्रय-स्थान ; (ओघ ६३६ ; वव ७ ; आचा) ।

घंघल (अप) न [**झकट**] १ झगड़ा, कलह ; (हे ४, ४२२) । २ मोह, घबराहट ; (कुमा) ।

घंघोर वि [**दे**] भ्रमण-शील, भटकने वाला; (दे २, १०६) ।

घंचिय पुं [**दे**] तेली, तेल निकालने वाला ; गुजराती में 'घांची' ; (सुर १६, १६०) ।

घंट पुंस्त्री [**घण्ट**] घण्टा, कांस्य-निर्मित वाद्य-विशेष ; (ओघ ८६ भा) । स्त्री—°**टा**; (हे १, १९५ ; राय) ।

घंटिय पुं [**घाण्टिक**] घण्टा बजाने वाला ; (कप्प) ।

घंटिया स्त्री [**घण्टिका**] १ छोटा घण्टा ; (प्रामा) । २ किंकिणी ; (सुर १, २४८ ; जं २) । ३ आभरण-विशेष ; (णाया १, ९) ।

घंस पुं [**घर्ष**] घर्षण, घिसन ; (णाया १, १—पत्र ६३) ।

घंसण न [**घर्षण**] घिसन, रगड़ ; (स ४७) ।

घंसिय वि [**घर्षित**] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ; (औप) ।

घक्कूण देखो **घे** ।

घग्घर न [**दे**] घघरा, लहँगा, स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र ; (दे २, १०७) ।

घग्घर पुं [**घर्घर**] १ शब्द-विशेष ; (गा ८००) । २ खोखला गला ; "घग्घरगलम्मि" (दे ६, १७) । ३ खोखला आवाज; "रुयमाणी घग्घरेण सद्देण" (सुर २, ११२) । ४ न. शाड्वल, शैवाल वगैरः का समूह ; (गउड) ।

घट्ट सक [**घट्ट्**] १ स्पर्श करना, छूना । २ हलना, चलना । ३ संघर्ष करना । ४ आहत करना । घट्टइ ; (सुपा ११६) । वकृ—**घट्टंत**, (ठा ७) । कवकृ—**घट्टिज्जंत**; (से २, ७) ।

घट्ट अक [**भ्रंश्**] भ्रष्ट होना । घट्टइ ; (षड्) ।

घट्ट पुं [**दे**] १ कुसुम्भ रंग से रँगा हुआ वस्त्र ; २ नदी का घाट ; ३ वेणु, वंश ; (दे २, १११) ।

घट्ट पुं [**घट्ट**] १ शर्कराप्रभा-नामक नरक-भूमि का एक नरकावास; (इक)। २ पुंन. जमाव; (श्रा २८) । ३ समूह, जत्था ; "हयघट्टाइं" (सुपा २५६)। ४ वि. गाढा, निबिड़ ; "मूल-घट्टकररुहओ" (सुपा ११) ।

घट्टंसुअ न [**दे.घट्टांशुक**] वस्त्र-विशेष, बूटेदार कौसुम्भ वस्त्र ; (कुमा) ।

घट्टण न [**घट्टन**] १ छूना, स्पर्श करना । २ चलाना, हिलना ; (दस ४) ।

घट्टणग पुं [**घट्टनक**] पात्र वगैरः को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता एक प्रकार का पत्थर ; (बृह ३) ।

घट्टणया } स्त्री [**घट्टना**] १ आघात, आहनन ; (औप ;
घट्टणा } ठा ४, ४) । २ चलन, हिलन ; (ओघ ६) । ३ विचार ; ४ पृच्छा ; (बृह ४) । ५ कदर्थना, पीड़ा ; (आचा) । ६ स्पर्श, छूना ; (पण्ण १६) ।

घट्टय देखो **घट्ट** ; (महा) ।

घट्टिय वि [**घट्टित**] १ आहत, संघर्ष-युक्त ; (जं १) । २ प्रेरित, चालित ; (पण्ह १, ३) । ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ ; (जं १ ; राय) ।

घट्ठ वि [**घृष्ट**] १ घिसा हुआ; (हे २, १७४; औप ; सम १३७) ।

घड सक [**घट्**] १ चेष्टा करना । २ करना, बनाना । ३ अक. परिश्रम करना । ४ संगत होना, मिलना । घडइ ; (हे १, १९५) वकृ—**घडंत**, **घडमाण**; (से १, ५ ; निचू १) । कृ—**घडियव्व** ; (णाया १, १—पत्र ६०) ।

घड सक [**घटय्**] १ मिलाना, जोड़ना, संयुक्त करना । २ बनाना, निर्माण करना । ३ संचालन करना । घडेइ ; (हे ४, ५०) । भवि— घडिस्सामि; (स ३६४) । । वकृ— **घडंत** ; (सुपा २५५) । संकृ— **घडिअ** ; (दस ५, १) ।

घड पुं [**घट**] घड़ा, कुम्भ, कलश ; (हे १, १९५) । °**कार** पुं [°**कार**] कुम्भकार, मिट्टी का बरतन बनाने वाला ; (उप पृ ४१५) । °**चेडिया** स्त्री [°**चेटिका**] पानी भरने वाली दासी, पनिहारी ; (सुपा ४६०) । °**दास** पुं [°**दास**] पानी भरने वाला नौकर ; (आचा) । °**दासी** स्त्री [°**दासी**] पानी भरने वाली, पनिहारी ; (सूअ १, १५) ।

घड वि [दे] सूत्रीकृत, बनाया हुआ ; (षड्) ।
घडइअ वि [दे] संकुचित ; (षड्) ।
घडग पुं [**घटक**] छोटा घड़ा ; (जं २ ; अणु) ।
घडण न [**घटन**] १ घड़ना, कृति, निर्माण ; (से ७,७१) । २ यत्न, चेष्टा, परिश्रम ; (अणु ४ ; पण्ह २,१) ।
घडणा स्त्री [**घटना**] मिलान, मेल, संयोग ; (सुअ १,१,१)।
घडय देखो **घडग** ; (जं २) ।
घडा स्त्री [**घटा**] समूह, जत्था ; (गउड) ।
घडाघडी स्त्री [दे] गोष्ठी, सभा, मण्डली ; (षड्) ।
घडाव सक [**घटय्**] १ बनाना । २ बनवाना । ३ संयुक्त करना, मिलाना । घडावइ ; (हे ४,३४०) । संकृ— **घडावित्ता** ; (आवम) ।
घडि° स्त्री [**घटी**] देखो **घडिआ**=घटिका ; (प्रासू ५५) । °**मंतय,** °**मत्तय** न [°**मात्रक**] छोटे घड़े के आकार का पात्र-विशेष ; (राज ; कस) । °**जंत** न [°**यन्त्र**] रेंट, पानी निकालने की कल ; (पाअ) ।
घडिअ वि [**घटित**] १ कृत, निर्मित; (पाअ) । २ संसक्त संबद्ध, श्लिष्ट, मिला हुआ ; (पाअ ; स १९४ ; औप; महा)।
घडिअघडा स्त्री [दे] गोष्ठी, मण्डली ; (दे २, १०५) ।
घडिआ स्त्री [**घटिका**] १ छोटा घड़ा, कलशी; (गा ४९०; श्रा २७) । २ घड़ी, मुहूर्त ; (सुपा १०८) । ३ समय बताने वाला यन्त्र, घटी-यन्त्र ; (पाअ) । °**लय** न [°**लय**] घण्टा-गृह, घण्टा बजाने का स्थान ; (सुर ७, १७) ।
घडिआ, **घडी** } स्त्री [दे] गोष्ठी, मण्डली ; (षड् ; दे२,१०५) ।
घडी स्त्री [**घटी**] देखो **घडिआ** ; (स २३८ ; प्रारू) ।
घडुक्कय पुं [**घटोत्कच**] भीम का पुत्र; (हे ४,२९९) ।
घडुब्भव वि [**घटोद्भव**] १ घट से उत्पन्न ; २ पुं. ऋषि-विशेष, अगस्त्य मुनि ; (प्रारू) ।
घढ न [दे] थूहा, टीला, स्तूप ; (पाअ) ।
घण पुं [**घन**] १ मेघ, बादल ; (सुर १३, ४५ ; प्रासू ७२) । २ हथौड़ा; (दे ६,११) । ३ गणित-विशेष, तीन अंकों का पूरण करना, जैसे दो का घन आठ होता है; (ठा १०—पत्र ४९६ ; विसे ३५४०) । ४ वाद्य का शब्द-विशेष, कांस्य-ताल वगैरः ; (ठा २,३) । ५ वि. दृढ़, ठोस ; (औप) । ६ अविरल, निबिड़, निश्छिद्र, सान्द्र ; (कुमा ; औप) । ७ गाढ़, प्रगाढ़ ; "जाया पीई घणा तेसिं" (उप ५९७ टी) । ८ अतिशय, अधिक, अत्यन्त ; (राय) । ९ कठिन, तरलता-रहित, स्त्यान ; (जी ७; ठा ३, ४) । १० न. देव-विमान-विशेष ; (सम ३७) । ११ पिण्ड ; (सूअ १,१,१) । १२ वाद्य-विशेष ; (सुज्ज १२) । °**उदहि** देखो **घणोदहि** ; (भग) । °**णिचिय** त्रि [°**निचित**] अत्यन्त निबिड़ ; (भग ७, ८; औप) । °**तव** न [°**तपस्**] तपश्चर्या-विशेष; (उत्त ३) । °**दंत** पुं [°**दन्त**] १ इस नाम का एक अन्त-र्द्वीप ; २ उसका निवासी मनुष्य ; (ठा ४,२) । °**माल** न [°**माल**] वैताढ्य पर्वत पर स्थित विद्याधर-नगर-विशेष ; (इक) । °**मुइंग** पुं [**मृदङ्ग**] मेघ की तरह गंभीर आवाज वाला वाद्य-विशेष ; (औप) । °**रह** पुं [°**रथ**] एक जैन मुनि ; (पउम २०, १९) । °**वाउ** पुं [°**वायु**] स्त्यान वायु, जो नरक-पृथ्वी के नीचे है ; (उत्त ३६) । °**वाय** पुं [°**वात**] देखो °**वाउ**; (भग; जी ७) । °**वाहण** पुं [°**वाहन**] विद्याधरों के एक राजा का नाम; (पउम ५,७७) । °**विज्जुआ** स्त्री [°**विद्युता**] देवी-विशेष, एक दिक्कुमारी देवी का नाम ; (इक) । °**समय** पुं [°**समय**] वर्षा-काल, वर्षा ऋतु ; (कुमा ; पाअ) ।
घणघणाइय न [**घनघनायित**] रथ का चीत्कार, अव्यक्त शब्द-विशेष ; (पण्ह १,३) ।
घणवाहि पुं [दे] इन्द्र, स्वर्ग-पति ; (दे २, १०७) ।
घणसार पुं [**घनसार**] कपूर ; (पाअ; भवि) । °**मंजरी** स्त्री [°**मञ्जरी**] एक स्त्री का नाम ; (कप्पू) ।
घणा स्त्री [**घना**] धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (णाया २,१—पत्र २५१) ।
घणा स्त्री [**घृणा**] घृणा, जुगुप्सा, गर्हा ; (प्राप्र) ।
घणिय न [**घनित**] गर्जना, गर्जन ; (सुज्ज २०) ।
घणोदहि पुं [**घनोदधि**] पत्थर की तरह कठिन जल-समूह ; (सम ३७) । °**वलय** न [°**वलय**] वलयाकार कठिन जल-समूह ; (पण्ण २) ।
घण्ण पुं [दे] १ उर, वक्षस्, छाती ; २ वि. रक्त, रंगा हुआ ; (दे २, १०५) ।
घत्त सक [**क्षिप्**] १ फेंकना, डालना । २ प्रेरना । घत्तइ ; (हे ४,१४३) । संकृ—"अंकाओ **घत्तिऊण** वरत्तीणं" (पउम ७८,२० ; स ३५१) ।
घत्त सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना । भवि—घत्तिस्सं ; (प्रयौ३३) ।
घत्त सक [**गवेषय्**] खोजना, ढूँढना । घत्तइ; (हे ४,१८९) । संकृ—**घत्तिअ** ; (कुमा) ।

घत्त वि [**घात्य**] १ मार डालने योग्य ; २ जो मारा जा सके ; (पि २८१ ; सूत्र १, ७, ६ ; ८) ।
घत्तण न [**क्षेपण**] फेंकना ; (कुमा) ।
घत्ता स्त्री [**घत्ता**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
घत्ताणंद न [**घत्तानन्द**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
घत्तिय वि [**क्षिप्त**] प्रेरित ; (स २०७) ।
घत्थ वि [**ग्रस्त**] १ भक्षित, निगला हुआ, कवलित ; (पउम ७१,५१ ; पण्ह १, ५) । २ आक्रान्त, अभिभूत ; (सुपा ३५२ ; महा) ।
घम्म पुं [**घर्म**] घाम, गरमी, संताप ; (दे १, ८७ ; गा ४१४) । २ पसीना, स्वेद ; (हे ४,३२७) ।
घम्मा स्त्री [**घर्मा**] पहली नरक-पृथिवी ; (ठा ७) ।
घम्मोई स्त्री [**दे**] तृण-विशेष ; (दे २, १०६) ।
घम्मोडी स्त्री [**दे**] १ मध्याह्न काल ; २ मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; ३ ग्रामणी-नामक तृण; (दे २, ११२) ।
घय न [**घृत**] घी, घृत ; (हे १, १२६ ; सुर १६, ६३) । °**आसव** पुं [°**आश्रव**] जिसका वचन घी की तरह मधुर लगे ऐसा लब्धिमान् पुरुष ; (आवम) । °**किट्ट** न [°**किट्ट**] घी का मैल (धर्म २) । °**किट्टिया** स्त्री [°**किट्टिका**] घी का मैल ; (पव ४) । °**गोल** न [°**गौल**] घी और गुड़ की बनी हुई एक प्रकार की मीठाई, मिष्टान्न-विशेष; (सुपा ६३३) । °**घट्ट** पुं [°**घट्ट**] घी का मैल; (बृह १) । °**पुन्न** पुं [°**पूर्ण**] घेवर, मिष्टान्न-विशेष ; (उप १४२ टी) । °**पूर** पुं [°**पूर**] घेवर, मिष्टान्न-विशेष ; (सुपा ११) । °**पूसमित्त** पुं [°**पुष्यमित्र**] एक जैन मुनि, आर्यरक्षित सुरि का एक शिष्य; (आचू १) । °**मंड** पुं [°**मण्ड**] ऊपर का घी, घृतसार ; (जीव ३) । °**मिल्लिया** स्त्री [°**इलिका**] घी का कीट, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (जो १६) । °**मेह** पुं [°**मेघ**] घी के तुल्य पानी बरसने वाली वर्षा ; (जं ३) । °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष ; (इक) । °**सागर** पुं [°**सागर**] समुद्र-विशेष ; (दीव) ।
घयण पुं [**दे**] भाण्ड, भडवा ; (उप पृ २०४ ; २७५ ; पंचव ४) ।
घर पुंन [**गृह**] घर, मकान, गृह ; (हे २, १४४ ; ठा ५, १ ; प्रासू ४५) । °**कुडी** स्त्री [°**कुटी**] १ घर के बाहर की कोटरी ; २ चौक के भीतर की कुटिया ; (ओघ १०५) । ३ स्त्री का शरीर; (तंदु) । °**कोइला**, °**कोइलिआ** स्त्री [°**कोकिला**] गृहगोधा, छिपकली ; (पिंड; सुपा ६४०) । °**गोली** स्त्री [°**गोली**] गृहगोधा, छिपकली ; (दे २, १०५) । °**गोहिआ** स्त्री [°**गोधिका**] छिपकली, जन्तु-विशेष ; (दे २, १६) । °**जामाउय** पुं [°**जामातृक**] घर-जमाई, ससुर-घर में ही हमेशा रहने वाला जामाता ; (गाया १, १६) । °**त्थ** पुं [°**स्थ**] गृही, संसारी, घरबारी ; (प्रासू १३१) । °**नाम** न [°**नामन्**] असली नाम, वास्तविक नाम; (महा) । °**वाडय** न [°**पाटक**] ढकी हुई जमीन वाला घर; (पाअ) । °**वार** न [°**द्वार**] घर का दरवाजा ; (काप्र १६५) । °**सउणि** पुं [°**शकुनि**] पालतू जानवर ; (वव २) । °**समुदाणिय** पुं [°**समुदानिक**] आजीविक मत का अनुयायी साधु ; (औप) । °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] घर का मालिक ; (हे २, १४४) । °**सामिणी** स्त्री [°**स्वामिनी**] गृहिणी, स्त्री ; (पि ९२) । °**सूर** [°**शूर**] अलीक शूर, झूठा शूर, घर में ही बहादुरी दखाने वाला ; (दे) ।
घरंगण न [**गृहाङ्गण**] घर का आँगन, चौक; (गा ४४०) ।
घरग देखो **घर** ; (जीव ३) ।
घरघंट पुं [**दे**] चटक, गौरैया पक्षी ; (दे २, १०७ ; पाअ) ।
घरघरग पुं [**दे**] ग्रीवा का आभूषण-विशेष ; (जं १) ।
घरट्ट पुं [**घरट्ट**] अन्न पीसने का पाषाण यन्त्र; (गा ८००; सण) ।
घरट्ट पुं [**दे**] अरघट्ट, अरहट, पानी का चरखा; (निचू १)।
घरट्टी स्त्री [**घरट्टी**] शतघ्नी, तोप ; (दे ३, १०) ।
घरणी देखो **घरिणी** ; "तं वरघरणिं वरणिं व" ७२८ टी ; प्रासू ४५) ।
घरयंद पुं [**दे**] आदर्श, दर्पण, शीशा ; (दे २, १०७) ।
घरस पुं [दे, **गृहवास**] गृहाश्रम, गृहस्थाश्रम ; (बृह ३) ।
घरसण देखो **घंसण** ; (सण) ।
घरिणी स्त्री [**गृहिणी**] घरवाली, स्त्री, भार्या, पत्नी ; (उप ७२८ टी ; से २, ३८ ; सुर २, १०० ; कुमा) ।
घरिल्ल पुं [**गृहिन्**] गृही, संसारी, घरबारी; (गा ७३६) ।
घरिल्ला स्त्री [**गृहिणी**] घरवाली, स्त्री, पत्नी ; (कुमा) ।
घरिल्ली स्त्री [**दे**] गृहिणी, पत्नी; (दे २, १०६) ।
घरिस पुं [**घर्ष**] घर्षण, रगड़ ; (गाया १, १६) ।
घरिसण न [**घर्षण**] घर्षण, रगड़ ; सण) ।
घरोइला स्त्री [**दे**] गृहगोधा, छिपकली ; (पि १६८) ।

घरोल न [**दे**] गृह-भोजन-विशेष ; (दे २, १०६) ।
घरोलिया } स्त्री [**दे**] गृहगोधिका, छिपकली ; गुजराती में
घरोली } 'घरोली' ; (पराह १, १; दे २, १०५) ।
घलघल पुं [**घलघल**] 'घल घल' आवाज, ध्वनि-विशेष ; (विपा १, ६) ।
घल्ल सक [**क्षिप्**] फेंकना, डालना, घालना । घल्लइ ; घल्लति ; (भवि; हे ४, ३३४ ; ४२२) ।
घल्ल वि [**दे**] अनुरक्त, प्रेमी ; (दे २, १०५) ।
घल्लिअ वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ, डाला हुआ ; (भवि) ।
घल्लिअ वि [**दे**] घटित, निर्मित, किया हुआ; "अइरुद्देणं तेणवि घल्लिओ तिक्खखग्गगुरुघाओ" (सुपा २४६) ।
घस सक [**घृष्**] १ घिसना, रगड़ना । २ मार्जन करना, सफा करना । घसइ ; (महा ; षड्) । संकृ—"**घसिऊण** अरणिकट्ठं अग्गी पज्जालिओ मए पच्छा" (सुर ७, १८६) ।
घसण देखो **घंसण** ; (सुपा १४ ; दे १, १६६) ।
घसणिअ वि [**दे**] अन्विष्ट, गवेषित ; (षड्) ।
घसणी स्त्री [**घर्षणी**] सर्प-रेखा, वक्र लकीर; (स ३५७) ।
घसा स्त्री [**दे**] १ पोली जमीन; २ भूमि-रेखा , लकीर ; (राज) ।
घसिय वि [**घृष्ट**] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ ; (दसा ५) ।
घसिर वि [**ग्रसितृ**] बहु-भक्षक, बहुत खाने वाला; (ओघ १३३ भा) ।
घसी स्त्री [**दे**] १ भूमि-राजि, लकीर ; २ नीचे उतरना, अवतरण ; (राज) ।
घाइ वि [**घातिन्**] घातक, नाशक, हिंसक ; (गा ४३७ ; विसे १२३८ ; भग) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] कर्म-विशेष ; ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म ; (अंत) °**चउक्क** न [°**चतुष्क**] पूर्वोक्त चार कर्म ; (प्राकृ) ।
घाइअ वि [**घातित**] १ मारित, विनाशित; (णाया १, ८; उव) । २ घवाया हुआ, जो शक्ति-शून्य हुआ हो, सामर्थ्य-रहित ; "करणाइं घाइयाइं जाया अह वेयणा मंदा" (सुर ४, २३६) ।
घाइआ स्त्री [**घातिका**] १ विनाश करने वाली स्त्री, मारने वाली स्त्री ; (जं २) । २ घात, हत्या; ३ घाव करना ; (सुर १६, १५०) ।
घाइज्जमाण } देखो **घाय=हन्** ।
घाइज्जंत }
घाइयव्व देखो **घाय** = घातय् ।
घाइर वि [**घ्रायिन्**] सूँघने वाला ; (गा ८८६) ।
घाउकाम वि [**हन्तुकाम**] मारने की इच्छा वाला; (णाया १, १८) ।
घाएंत देखो **घाय=हन्**
घाड अक [**भ्रंश्**] भ्रष्ट होना, च्युत होना । घाडइ ; (षड्) ।
घाड पुं [**घाट**] १ मित्रता, सौहार्द ; (बृह. णाया १, २) । २ मस्तक के नीचे का भाग ; (णाया १, ८—पत्र १३३) ।
घाडिय वि [**घाटिक**] वयस्य, मित्र ; (णाया १, २ ; बृह १) ।
घाडेरुय पुं [**दे**] खरगोश की एक जाति (?)

"जे तुह संगसुहासारज्जुनिबद्धा दुहं मए रुद्धा ।
घाडेरुयससया इव अबंधणा ते पलायंति "
(उप ७२८ टी) ।

घाण पुं [**दे**] १ घानी, कोल्हू, तिल-पीड़न-यन्त्र ; (पिंड) । २ घान, चक्की आदि में एक वार डालने का परिमाण ; (सुपा १४) ।
घाण पुंन [**घ्राण**] नाक, नासिका ; " दो घाणा" (पराण १५ ; उप ६४८ टी ; दे २, ७६) । °**रिस** पुंन [°**र्शस्**] नासिका में होने वाला रोग-विशेष ; (ओघ १८४ भा) ।
घाणिंदिय न [**घ्राणेन्द्रिय**] नासिका, नाक; (उत्त २६) ।
घाय सक [**हन्**] मारना, मार डालना, विनाश करना। वकृ—**घाएह** ; (उव) । वकृ—"**घाएंत** रिउभड बहवे " (पउम ६०, १७) । **घायंत** ; (पउम २४ २६ ; विसे १७६३) कवकृ—" से धरणे चिलाएणं चोरसेणावइणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं हृ **घाइज्जमाण** पासइ " (णाया १, १८) । वकृ—**घाइयव्व** ; (पउम ६६, ३४) ।
घाय सक [**घातय्**] मरवाना, दूसरे द्वारा मार डालना, विनाश करवाना । वकृ—**घायमाण**; (सूअ २, १) । कृ—**घाइयव्व** ; (पउम ६६, ३४) ।
घाय पुं [**घात**] १ प्रहार, चोट, वार ; (पउम ५६, २५) । २ नरक ; (सूअ १, ५, १) । ३ हत्या विनाश, हिंसा , (सूअ १, १, २) । ४ संसार ; (सूअ १, ७)

घायग वि [**घातक**] मार डालने वाला, विनाशक ; (स २६४; सुपा २०७)।

घायण न [**हनन**] १ हत्या, नाश, हिंसा; (सुपा ३४६; द्र २६)। २ वि. हिंसक, मार डालने वाला; (स १०८)।

घायण पुं [**दे**] गायक, गवैया; (दे २, १०८; हे २, १७४; षड्)।

घायणा स्त्री [**हनन**] मारना, हिंसा, वध; (पण्ह १, १)।

घायय देखो **घायग**; (विसे १७६३; स २६७)।

घायावणा स्त्री [**घातना**] १ मरवाना, दूसरे द्वारा मारना; २ लुटपाट मचवाना; "बहुग्गामघायावणाहिं ताविया" (विपा १, ३)।

घार अक [**घारय्**] १ विष का फैलना, विष की असर से बेचैन होना। २ सक. विष से बेचैन करना। ३ विष से मारना। कर्म—"घारिज्जंतो य तओ विसेण" (स १८६) हेकृ— **घारिज्जिउं** ; (स १८६)।

घार पुं [**दे**] प्राकार, किला, दुर्ग; (दे २, १०८)।

घारंत पुं [**दे**] घृतपूर, घेवर, एक जात की मीठाई; (दे २, १०८)।

घारण न [**घारण**] विष की असर से होने वाली बेचैनी; (सुपा १२४)।

घारिय वि [**घारित**] जो विष की असर से बेचैन हुआ हो; "तत्तओ भोगो। सव्वत्थ तदुवघाया विसघारियभोगतुल्लोत्ति" (उप ४४२)। "विसवा(? घा)रियस्स जह वा घणचन्दणकामिणीसंगो" (उवर ६७)। "विसघारिओ सि धत्तूरिओ सि मोहेण किंव ठगिओ सि" (सुपा १२४ ; ४४७)।

घारिया स्त्री [**दे**] मिष्टान्न-विशेष, गुजराती में जिसे 'घारी' कहते हैं ; (भवि)।

घारी स्त्री [**दे**] १ शकुनिका, पक्षि-विशेष ; (दे २,१०७; पाअ)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

घास पुं [**घास**] तृण, पशुओं को खाने का तृण ; (दे २, ८५ ; औप)।

घास पुं [**ग्रास**] १ कवल, कौर ; (औप ; उत्त २)। २ आहार, भोजन ; (आचा ; ओघ ३३०)।

घास पुं [**घर्ष**] घर्षण, रगड़ ; "जो मे उवज्जिओ इह कररुहक्खेण चरणघासेण" (सुपा १४)।

घासेसणा स्त्री [**ग्रासैषणा**] आहार-विषयक शुद्धि अशुद्धि का पर्यालोचन ; (ओघ ३३८)।

घि देखो **घे**। भवि—घिच्छिइ;(विसे१०२३)। कर्म—घिप्पंति; (प्रास् ४)। संकृ—**घित्तूण** ; (कुमा ७, ४६)। हेकृ—**घित्तुं** ; (सुपा २०६)। कृ—**घित्तव्व** ; (सुर १४,७७)।

घिअ न [**घृत**] घी, घीव, आज्य ; (गा २२)।

घिअ वि [**दे**] भर्त्सित, तिरस्कृत, अवधीरित; (दे २,१०८)।

घिं } पुं [**ग्रीष्म**] १ गरमी की ऋतु, ग्रीष्म काल ;
घिंसु } "घिंसिसिरवासे" (ओघ ३१० भा ; उत्त २, ८ ; पि ६; १०१)। २ गरमी, अभिताप ; (सूअ १, ४, २)।

घिट्ठ वि [**दे**] कुब्ज, कूबड़ा ; (दे २, १०८)।

घिट्ठ वि [**घृष्ट**] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ ; (सुपा २७८ ; गा ६२६ अ)।

घिणा स्त्री [**घृणा**] १ जुगुप्सा ; २ दया, अनुकम्पा ; (हे १, १२८)।

घित्त (अप) वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ, डाला हुआ ; (भवि)।

घित्तुमण वि [**ग्रहीतुमनस्**] ग्रहण करने की इच्छा वाला; (सुपा २०६)।

घित्तूण } देखो **घि**।
घिप्पं }

घिस सक [**ग्रस्**] ग्रसना, निगलना, भक्षण करना। घिसइ ; (हे ४, २०४)।

घिसरा स्त्री [**दे**] मछली पकड़ने की जाल-विशेष ; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

घिसिअ वि [**ग्रस्त**] कवलित, निगला हुआ, भक्षित ; (कुमा ७, ४६)।

घुंघुरुड पुं [**दे**] उत्कर, ढ़ग, समूह ; (दे २, १०६)।

घुंट पुं [**दे**] घूँट, एक बार में पीने योग्य पानी आदि ; (हे ४, ४२३)।

घुग्घ } (अप) पुंन [**घुग्घिका**] कपि-चेष्टा, बन्दर की
घुग्घिअ } चेष्टा ; (हे ४, ४२३ ; कुमा)।

घुग्घुच्छण न [**दे**] खेद, तकलीफ, परिश्रम; (दे २,११०)।

घुग्घुरि पुं [**दे**] मण्डूक, भेक, मेढ़क ; (दे२,१०६)।

घुग्घुस्सुअ वि [**दे**] निःशंक होकर गया हुआ ; (षड्)।

घुग्घुस्सुसय न [**दे**] साशंक वचन, आशंका-युक्त वाणी ; (दे २, १०६)।

घुघुघुघुघुघ अक [**घुघुघुघाय्**] 'घुघु' आवाज करना, घूक का बोलना। वकृ—**घुघुघुघुघुघुघंत** ; (पउम १०५,५६)।

घुघुय अक [**घुघूय्**] ऊपर देखो। वकृ—**घुघुयंत** ; (णाया १, ८—पत्र १३३)।

घुट्टघुणिअ न [**दे**] पहाड़ की बड़ी शिला ; (दे २, ११०)।
घुट्ट वि [**घुष्ट**] घोषित, ऊँची आवाज से जाहिर किया हुआ ; (पउम ३, ११८ ; भवि)।
घुडुक्क अक [**गर्ज्**] गरजना, गर्जारव करना। घुडुक्कइ ; (हे ४, ३९५)।
घुण पुं [**घुण**] काष्ठ-भक्षक कीट ; (ठा ४, १ ; विसे १२३६)।
घुणघुणिआ } स्त्री [**दे**] कर्णोपकर्णिका, कानाकानी ; (दे
घुणाहुणी } २, ११० ; महा)।
घुणिय वि [**घुणित**] घुणों से विद्ध ; (बृह १)।
घुण्ण देखो **घुम्म**। वकृ—**घुण्णंत** (नाट)।
घुण्णिअ वि [**घूर्णित**] १ घुमा हुआ ; २ भ्रान्त, भटका हुआ ; (दे ८, ४६)।
घुत्तिअ वि [**दे**] गवेषित, अन्वेषित ; (दे २, १०९)।
घुन्न } देखो **घुम्म**। घुमइ ; (पिंग)। वकृ—**घुन्नंत** ;
घुम } (पराह १, ३)।
घुमघुमिय वि [**घुमघुमित**] १ जिसने 'घुम घुम' आवाज किया हो वह ; २ न. 'घुम घुम' ध्वनि ; "महुरगंभीरघुमघुमियवरसद्दलं" (सुपा ५०)।
घुम्म अक [**घुर्ण्**] घूमना, चक्राकार फिरना। घुम्मइ ; (हे ४, ११७ ; षड्)। वकृ—**घुम्मंत, घुम्ममाण** ; (हेका ३३ ; गाया १, ६)। संकृ—**घुम्मिऊण** ; (महा)।
घुम्मण न [**घूर्णन**] चक्राकार भ्रमण ; (कुमा)।
घुम्मिय वि [**घूर्णित**] घुमा हुआ, चक्र की तरह फिरा हुआ; (सुपा ६४)।
घुम्मिर वि [**घूर्णितृ**] घुमने वाला, फिरने वाला, चक्राकार घूमने वाला ; (उप पृ ६२; गा १८०; गउड)।
घुयग पुं [**दे**] एक तरह का पत्थर, जो पात्र वगैरः को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता है ; (पिंड)।
घुरहुर देखो **घुरुघुर**। वकृ—**घुरहुरंत** ; (श्रा१२)।
घुरुक्क अक [**दे**] घुरकना, घुड़कना, गरजना। "घुरुक्कंति वग्घा" (महा)।
घुरुघुर अक [**घुरुघुराय्**] घुरघुराना, 'घुर घुर' आवाज करना, व्याघ्र वगैरः का बोलना। घुरुघुरंति; (पि ५५८)। वकृ—**घुरुघुरायंत** ; (सुपा ५०५)।
घुरुघुरि पुं [**दे**] मण्डूक, मेढक, भेक; (दे २,१०६)।
घुरुघुरु } देखो **घुरुघुर**। घुरुघुरइ ; (महा)। वकृ—
घुरुहुर } **घुरुघुरुमाण** ; (महा)।
घुल देखो **घुम्म**। घुलइ ; (हे ४,११७)।
घुलकि स्त्री [**दे**] हाथी की आवाज, करि-शब्द; (पिंग)
घुलघुल अक [**घुलघुलाय्**] 'घुल घुल' आवाज करना। वकृ—**घुलघुलाअमाण** ; (पि ५५८)।
घुलिअ वि [**घूर्णित**] चक्राकार घुमा हुआ ; (कुमा)।
घुल्ला स्त्री [**दे**] कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (पराण १)।
घुसण देखो **घुसिण** ; (कुमा)।
घुसल सक [**मथ्**] मथना, विलोड़न करना। घुसलइ (हे ४, १२१)।
घुसलिअ वि [**मथित**] मथित, विलोड़ित ; (कुमा)।
घुसिण न [**घुसृण**] कुङ्कुम, सुगन्धित द्रव्य-विशेष, केसर ; (हे १, १२८)।
घुसिणल्ल वि [**घुसृणवत्**] कुङ्कुम वाला, कुङ्कुम-युक्त ; (कुमा)।
घुसिणिअ वि [**दे**] गवेषित, अन्विष्ट ; (दे २, १०९)।
घुसिम न [**दे**] घुसृण, कुङ्कुम ; (षड्)।
घुसिरसार न [**दे**] अवस्नान, विवाह के अवसर में स्नान के पहले लगाया जाता मसूरादि का पिसान ; (हे २, ११०)।
घूअ पुंस्त्री [**घूक**] उलूक, उल्लू, पक्षि-विशेष ; (गाया १, ८ ; पउम १०५, ५६)। स्त्री—**घूई** ; (विपा १, ३)। °**रि** पुं [°**रि**] काक, कौआ, वायस ; (तंदु)।
घूणाग पुं [**घूणाक**] स्वनाम-ख्यात सन्निवेश-विशेष, विशेष ; (आचू १)।
घूरा स्त्री [**दे**] १ जङ्घा, जाँघ ; २ खलका, शरीर का अवयव विशेष ; "गद्दभाए वा घूराओ कप्पेंति" (सूअ २, २, ४५)।
घे देखो **गह**=ग्रह्। घेइ ; (षड्)। भवि—घेच्छं ; (विसे ११२७)। कर्म—घेप्पइ ; (हे ४, २५६)। कवकृ—**घेप्पंत, घेप्पमाण** ; (गा ८८१; भग ; स १५२)। संकृ—**घेऊण, घक्कूण, घेक्कूण, घेत्तुआण, घेत्तुआणं, घेत्तूण, घेत्तूणं** ; (नाट—मालती ७१ ; पि ५८४ ; हे ४, २१० ; पि ; उव ; प्राप्र)। हेकृ—**घेत्तुं, घेत्तूण**; (हे ४, २१० ; पउम ११८, २४)। कृ—**घेत्तव्व** ; (हे ४, २१० ; प्राप्र)।

घेउर पुंन [दे] घेवर, घृतपूर, मिष्टान्न-विशेष ; " सा भणइ निवगेहेवि हु घयघेउरभोयणं समाकुणइ " (सुपा १३)।

घेत्तूण देखो घे।

घेत्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहण करने की इच्छा वाला; (पउम १११, १६)।

घेप्प°, घेप्पंत, घेप्पमाण } देखो घे।

घेवर [दे] देखो घेउर ; (दे २, १०८)।

घोट्ट, घोट्टय } सक [पा] पीना, पान करना। घोट्टइ; (हे ४, १०)। वकृ—घोट्टयंत ; (स २५७)। हेकृ—घोट्टिउं ; (कुमा)।

घोड देखो घुम्म । घोडइ ; (से ५, १०)।

घोड, घोडग, घोडय } पुंस्त्री [घोट,°क] घोड़ा, अश्व, हय ; (दे २, १११ ; पंच ५२ ; उवा ; उप २०८)। २ पुं. कायोत्सर्ग का एक दोष ; (पव ५)। °रक्खग पुं [°रक्षक] अश्वपाल ; (उप ५६७ टी)। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] अश्वग्रीव-नामक प्रतिवासुदेव, नृप-विशेष ; (आवम)। °मुह न [°मुख] जैनेतर शास्त्र-विशेष ; (अणु)।

घोडिय पुं [दे] मित्र, वयस्य ; (बृह ५)।

घोडी स्त्री [घोटी] १ घोड़ी ; २ वृक्ष-विशेष ; "सीयल्लि-घोडिवब्बूलकयरखइराइसंकिण्णे " (स २५६)।

घोण न [घोण] घोड़े का नाक ; (सण)।

घोणस पुं [घोनस] एक जात का साँप ; (पउम ३६, १७)।

घोणा स्त्री [घोणा] १ नाक, नासिका ; (पाअ)। २ घोड़े का नाक; ३ सूअर का मुख-प्रदेश ; (से २, ६४ ; गउड)।

घोर अक [घुर्] निद्रा में घुर् घुर् आवाज करना। घोरंति ; (गा ८००)। वकृ—घोरंत ; (स ४२४ ; उप १०३१ टी)।

घोर वि [दे] १ नाशित, विनाशित ; २ पुं. गीध, पक्षि-विशेष; (दे २, ११२)।

घोर वि [घोर] भयंकर, भयानक, विकट ; (सूअ १, ५, १ ; सुपा ३४५ ; सुर २, २४३ ; प्रासू १३६)। २ निर्दय, निष्ठुर ; (पाअ)।

घोरि पुं [दे] शलभ-पशु की एक जाति ; (दे २, १११)।

घोल देखो घुम्म । घोलइ; (हे ४,११७)। वकृ—घोलंत; (कप्प ; गा ३७१ ; कुमा)।

घोल सक [घोलय्] १ घिसना, रगड़ना ; २ मिलाना ; (विसे २०४४ ; से ४, ५२)।

घोल न [दे] कपड़े से छाना हुआ दही ; (पभा ३३)।

घोलण न [घोलन] घर्षण, रगड़ ; (विसे २०४४)।

घोलणा स्त्री [घोलना] पत्थर वगैरः का पानी की रगड़ से गोलाकार होना ; (स ४७)।

घोलवड, घोलवडय } न [दे] एक प्रकार का खाद्य द्रव्य, दहीवड़ा ; (पभा ३३ ; श्रा २० ; सुपा ४६५)।

घोलाविअ वि [घोलित] मिश्रित किया हुआ, मिलाया हुआ ; (से ४, ५२)।

घोलिअ न [दे] १ शिलातल ; २ हठ-कृत, बलात्कार ; (दे २, ११२)।

घोलिअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ ; (पाअ)।

घोलिअ वि [घोलित] रगड़ा हुआ, मर्दित ; (औप)।

घोलिर वि [घूर्णितृ] घुमने वाला, चक्राकार फिरने वाला ; (गा ३३८ ; स ५७८ ; गउड)।

घोस सक [घोषय्] १ घोषण करना, ऊँचे आवाज से जाहिर करना। २ घोखना, ऊँचे आवाज से अध्ययन करना। घोसइ ; (हे १,२६० ; प्रामा)। प्रयो—घोसावेइ ; (भग)।

घोस पुं [घोष] १ ऊँचा आवाज ; (स १०७ ; कुमा; गा ५४)। २ आभीर-पल्ली, अहीरों का महल्ला ; (हे १, २६०)। ३ गोष्ठ, गौओं का वाड़ा; (ठा २,४-पत्र ८६; पाअ)। ४ स्तनितकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २,३)। ५ उदात्त आदि स्वर-विशेष ; (वव १०)। ६ अनुनाद ; (भग ६,१)। ७ न.देव-विमान-विशेष (सम १२, १७)। °सेण पुं [°सेन] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्म का धर्म-गुरु, एक जैन मुनि; (पउम २०, १७६)।

घोसण न [घोषण] १ ऊँची आवाज; (निचू १)। २ घोषणा, ढिंढ़ोरा पिटवा कर जाहिर करना ; (राय)।

घोसणा स्त्री [घोषणा] ऊपर देखो ; (णाया १, १३; गा ५२४)।

घोसय न [दे] दर्पण का घरा, दर्पण रखने का उपकरण-विशेष ; (अंत)।

घोसाडई स्त्री [घोषातकी] लता-विशेष ; (पण्ण १७—पत्र ५३०)।

घोसालई } स्त्री [**दे**] शरद् ऋतु में होने वाली लता-विशेष;
घोसाली } (दे २, १११ ; पण्ण १ —पत्र ३३)।
घोसावण न [**घोषण**) घोषणा, डोंडी पिटवा कर जाहिर करना ; (उप २११ टी)।
घोसिअ वि [**घोषित**] जाहिर किया हुआ; (उव)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** घआराइसद्दसंकलणो
तेरहमो तरंगो समत्तो।

च

च पुं [**च**] तालु-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण-विशेष; (प्राप; प्रामा)।
च अ [**च**] इन अर्थों में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ;—१ और, तथा ; (कुमा; हे २,:२१७) । २ पुनः, फिर; (कम्म ४, २३ ; ६६ ; प्रासू ५)। ३ अवधारण, निश्चय; (पंच १३)। ४ भेद, विशेष; (निचू १)। ५ अतिशय, आधिक्य ; (आचा ; निचू ४)। ६ अनुमति, सम्मति (निचू १)। ७ पाद-पूर्ति, पाद-पूरण ; (निचू १)।
चआ स्त्री [**त्वक्**] चमड़ी, त्वचा; (षड्)।
चइअ वि [**शकित**] जो समर्थ हुआ हो, शक्त; (से ६, ५१)।
चइअ देखो **चविअ** ; (पउम १०३, ११६)।
चइअ वि [**त्यक्त**] मुक्त, परित्यक्त ; (कुमा ३,४६)।
चइअ वि [**त्याजित**] छुड़वाया हुआ, मुक्त कराया हुआ ; (ओघ ११५)।
चइअ देखो **चय**=त्यज्।
चइअ देखो **चु**।
चइइअ देखो **चेइअ**; (षड्)।
चइउं } देखो **चय**=त्यज्।
चइऊण }
चइऊण देखो **चु**।
चइत्त देखो **चेइअ**; (हे २, १३ ; कुमा)।
चइत्त पुं [**चैत्र**] मास-विशेष, चैत्र मास ; (हे १,१५२)।
चइत्ता देखो **चु**।
चइत्ताणं } देखो **चय**=त्यज्।
चइयव्व }
चइद (शौ) वि [**चकित**] भीत, शंकित ; (अभि २१३)।
चइयव्व देखो **चु**।
चउ वि [**चतुर्**] चार, संख्या-विशेष ; (उवा ; कम्म ४,२ ; जी ३३)। °**आलीस** स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] चौआलीस, ४४ ; (पि ७५ ; १६६)। °**कट्ठ** न [°**काष्ठ**] चारों दिशा ; (कुमा)। °**कट्ठी** स्त्री [°**काष्ठी**] चौकठा, चौखटा, द्वार के चारों ओर का काठ, द्वार का ढाँचा ; (निचू १)। °**क्कोण** वि [°**कोण**] चार कोण वाला, चतुरस्र ; (णाया १,१३)। °**ग** न देखो **चउक्क**=चतुष्क ; (दं ३०)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] नरक, तिर्यग्, मनुष्य और देव की योनि; (कम्म ४, ६६)। °**गइअ** वि [°**गतिक**] चारों गति में भ्रमण करने वाला; (श्रा ६)। °**गमण** न [°**गमन**] चारों दिशाएं; (कप्प)। °**गुण**, °**ग्गुण** वि [°**गुण**] चौगुना; (हे १,१७१ ; षड्)। °**चत्ता** स्त्री [°**चत्वारिंशत्**] संख्या-विशेष, चौआलीस; (भग)। °**चरण** पुं [°**चरण**] चौपाया, चार पैर के जन्तु, पशु ; (उप ७६८ टी ; सुपा ४०६)। °**चूड** पुं [°**चूड**] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४५)। °**ट्ठ** देखो °**त्थ** ; (हे २, ३३)। °**ट्ठाणवडिअ** वि [°**स्थानपतित**] चार प्रकार का ; (भग)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] संख्या-विशेष, चौराणवे, ६४; (पि ४४६)। °**णउय** वि [°**नवत**] चौराणहवाँ, ६४ वाँ ; (पउम ६४, १०६)। °**णवइ** देखो °**णउइ** ; (सम ६७ ; श्रा ४४)। °**ण्ण** (अप) देखो °**पन्न** ; (पिंग)। °**तिस**, °**तीस** न [°**त्रिंशत्**] चौतीस, ३४; (भग; औप)। °**तीसइम** देखो °**त्तीसइम** ; (पउम ३४, ६१)। °**तीसा** स्त्री. देखो °**तीस** (प्रारू)। °**त्तालीस** वि [°**चत्वारिंश**] चौआलीसवाँ, ४४ वाँ ; (पउम ४४, ६८)। °**त्तीसइम** वि [°**त्रिंश**] १ चौतीसवाँ, ३४ वाँ; (कप्प)। २ न. सोलह दिनों का लगातार उपवास; (णाया १,१—पत्र ७२)। °**त्थ** वि [°**थ**] १ चौथा ; (हे १,१७१)। २ पुंन. उपवास ; (भग)।
°**त्थचउत्थ** पुंन [°**थचतुर्थ**] एक एक उपवास ; (भग)।
°**त्थभत्त** न [°**थभक्त**] एक दिन का उपवास ; (भग)।
°**त्थभत्तिय** वि [°**थभक्तिक**] जिसमें एक उपवास किया हो वह ; (पण्ह २, १)। °**त्थिमंगल** न [°**थीमङ्गल**] वधू-वर के समागम का चतुर्थ दिन, जिसके बाद जामाता अकेला अपने घर जाता है ; (गा ६४६ अ)। °**त्थी** स्त्री [°**थी**] १ चौथी । २ संप्रदान-विभक्ति, चौथी विभक्ति ; (ठा ८)। ३ तिथि-विशेष; (सम ६)। °**दंत** देखो °**द्दंत**; (राज)। °**दस** त्रि. ब. [°**दशन्**] संख्या-विशेष, चौदह; (नव २; जी ४७)। °**दसपुव्वि** पुं [°**दशपूर्विन्**] चौदह पूर्व ग्रन्थों का ज्ञान वाला मुनि; (ओघ २)। °**दसम** वि. देखो °**द्दसम** ;

(णाया १, १४)। °द्दसहा अ [°दशधा] चौदह प्रकारों से ; (नव ५) । °द्दसी स्त्री [°दशी] तिथि-विशेष, चतुर्दशी ; (रयण ७१) । °द्दंत पुं [°दन्त] ऐरावत, इन्द्र का हाथी ; (कप्प) । °द्दस देखा °दस ; (भग) । °द्दसपुव्वि देखो °दसपुव्वि ; (भग ५, ४) । °द्दसम वि [°दश] १ चौदहवाँ, १४ वाँ ; (पउम १४, १५८) । २ लगातार छ दिनों का उपवास ; (भग) । °द्दसी देखो °दसी ; (कप्प) । °द्दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ चौदहवाँ, ११४ वाँ ; (पउम ११४,३५) । °द्दह देखो °दस ; (पि १६६; ४४३) । °द्दही देखो °दसो ; (प्राप्र) । °द्दिसं °द्दिसिं अ [°दिश्] चारों दिशाओं की तरफ, चारों दिशाओं में ; (भग ; महा ; ठा ४, २) । °द्धा अ [°धा] चार प्रकार से ; (उव) । °नाण न [°ज्ञान] मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यव ज्ञान ; (भग; महा) । °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति वगैरः चार ज्ञान वाला ; (सुपा ८३ ; ३२०) । °पण्ण देखो °पन्न । °पण्णइम वि [°पञ्चाश] १ चौपनवाँ, ५४ वाँ ; २ न. लगातार छव्वीस दिनों का उपवास ; (णाया २—पत्र २५१) । °पन्न, °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, ५४; (पउम २०, १७; सम ७२; कप्प) °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] चौवनवाँ, ५४ वाँ ; (पउम ५४, ४८) । °पय देखो °प्पय; (णाया १, ८; जी २१) । °पाल न [°पाल] सूर्याभ देव का प्रहरण-कोश ; (राय) । °पइया, °प्पइया स्त्री [°पदिका] १ छन्द-विशेष ; (पिंग) । २ जन्तु-विशेष की एक जाति ; (जीव २) । °प्पई स्त्री [°पदी] देखो °पइया ; (सुपा १६०) । °प्पन्न देखो °पन्न; (सम ७२) । °प्पय पुंस्त्री [°पद] १ चौपाया प्राणी, पशु ; (जी ३१) । २ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण ; (विसे ३३५०) । °प्पह पुं [°पथ] चौहट्टा, चौराहा, चौरास्ता ; (प्रयौ १००) । °प्पुड वि [°पुट] चार पुट वाला, चौसर, चौपड़ ; (विपा १,१) । °प्फाल वि [°फाल] देखो °प्पुड; (णाया १, १—पत्र ५३) । °ब्बाहु वि [°बाहु] १ चार हाथ वाला; २ पुं. चतुर्भुज, श्रीकृष्ण ; (नाट) । °ब्भुअ [°भुज] देखो °बाहु ; (नाट ; सुअ १, ३, १) । °भंग पुंन [°भङ्ग] चार प्रकार, चार विभाग ; (ठा ४, १) । °भंगी स्त्री [°भङ्गी] चार प्रकार, चार विभाग ; (भग) । °भाइया स्त्री [°भागिका] चौसठ पल का एक नाप; (अणु) । °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] कपड़े के साथ कूटी हुई मिट्टी ; (निचू १८) । °मंडलग न [°मण्डलक] लग्न-मण्डप, विवाह-मण्डप ; (सुपा ६३) । °मासिअ देखो चाउम्मासिअ; (श्रा ४७) । °मुह °म्मुह, पुं [°मुख] १ ब्रह्मा, विधाता ; (पउम ११,७२ ; २८,४८) । २ वि. चार मुँह वाला, चार द्वार वाला ; (औप ; सण) । °वग्ग पुंन [°वर्ग] चार - वस्तुओं का समुदाय; (निचू १५) । °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, पचास और चार, ५४ ; (पि २६५ ; २७३ ; सम ७२) । °वार वि [°द्वार] चार दरवाजे वाला ; (गृह); (कुमा) । °विह वि [°विध] चार प्रकार का ; (दं ३२ ; नव ३) । °वीस स्त्रीन [°विंशति] चौवीस, वीस और चार ; २४ ; (सम ४३ ; दं १ ; पि ३४) । °वीसइ (अप) स्त्री [°विंशति] वीस और चार, चौवीस; (पि ४४५) । °वीसइम वि [°विंशतितम] १ चौवीसवाँ ; (पउम २४, ४०) । २ न. ग्यारह दिनों का लगातार उपवास ; (भग) । °व्वग्ग देखो °वग्ग ; (आचा २,२) । °व्वार पुंन [°वार] चार वार, चार दफा ; (हे १, १७१ ; कुमा) । °व्विह देखो °विह ; (ठा ४,२) । °व्वीस देखो °वीस ; (सम ४३) । °व्वीसइम देखो °वीसइम ; (णाया १, १) । °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौसठ, साठ और चार ; (सम ७७ ; कप्प) । °सट्ठिम वि [°षष्टितम] चौसठवाँ ; (पउम ६४, ४७) । °स्सट्ठि देखो °सट्ठि ; (कप्पू) । °स्साल स्त्री [°शाल] चार शालाओं से युक्त घर ; (स्वप्न ५१) । °हट्ट, °हट्टय पुंन [°हट्ट, °क] चौहट्टा, बाजार ; (महा ; श्रा २७ ; सुपा ४५५) । °हत्तर वि [°सप्तत] चौहत्तरवाँ, ७४ वाँ ; (पउम ७४ , ४३) । °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] चौहत्तर, सत्तर और चार ; (पि २४५; २६४) । °हा अ [°धा] चार प्रकार से ; (ठा ३,१ ; जी १६) । देखो चो° ।

चउक्क न [**चतुष्क**] चौकड़ी, चार वस्तुओं का समूह ; (सम ४० ; सुर १४, ७८ ; सुपा १४) । "कणयचउक्केण" (श्रा २३) ।

चउक्क [**दे. चतुष्क**] चौक, चौराहा, जहां चार रास्ता मिलता हो वह स्थान ; (दे ३, २ ; षड् ; णाया १, १; औप ; कप्प; अणु ; बृह १ ; जीव १ ; सुर १,६३ ; भग) । २ आँगन, प्राङ्गण ; (सुर ३, ७२) ।

चउक्कर पुं [**दे**] कार्तिकेय, शिव का एक पुत्र; (दे ३, ५) ।

चउक्कर वि [**चतुष्कर**] चार हाथ वाला, चतुर्भुज; (उत्त ८) ।

चउक्किआ स्त्री [दे. चतुष्किका] आँगन, छोटा चौक ; (सुर ३, ७२)।

चउज्झाइया स्त्री [दे] नाप-विशेष ; (भग ७, ८)।

चउबोल स्त्रीन [चौबोल] छन्द-विशेष; (पिंग)। स्त्री-°**ला** ; (पिंग)।

चउर वि [चतुर] १ निपुण, दक्ष, हुशियार ; (पाअ ; वेणी ६६)। २ क्रिवि. निपुणता से, हुशियारी से ; "केसी गायइ चउरं" (ठा ७)।

चउरंग वि [चतुरङ्ग] १ चार अंग वाला, चार विभाग वाला; (सैन्य वगैरः) ; (सण)। २ न. चार अंग, चार प्रकार ; (उत्त ३)।

चउरंगि वि [चतुरङ्गिन्] चार विभाग वाला, (सैन्य वगैरः); स्त्री—°**णी** ; (सुपा ४५६)।

चउरंत वि [चतुरन्त] १ चार पर्यन्त वाला, चार सीमाएं वाला ; २ पुं. संसार; (औप)। स्त्री—°**ता** [°ता] पृथिवी, धरणी ; (ठा ४, १)।

चउरंस वि [चतुरस्र] चतुष्कोण, चार कोण वाला ; (भग ; आचा ; दं १२)।

चउरंसा स्त्री [चतुरंसा] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

चउरय पुं [दे] चौरा, चबूतरा, गाँव का सभा-स्थान ; (सम १३८ टी)।

चउरस्स देखो **चउरंस** ; (विसे २७६७)।

चउरचिंध पुं [दे] सातवाहन, राजा शालिवाहन ; (दे ३, ७)।

चउराणण वि [चतुरानन] १ चार मुँह वाला। २ पुं. ब्रह्मा, विधाता ; (गउड)।

चउरासी } स्त्री [चतुरशीति] संख्या-विशेष, चौरासी,
चउरासीइ } ८४; (जी ४५; सण ; उवा; पउम २०,१०३ ; सम ६०; कप्प)।

चउरासीइम वि [चतुरशीतितम] चौरासीवाँ, ८४ वाँ ; (पउम ८४,१२ ; कप्प)।

चउरासीय स्त्रीन [चतुरशीति] चौरासी ; "चउरासीयं तु गणहरा तस्स उप्पन्ना" (पउम ४, ३५)।

चउरिंदिय वि [चतुरिन्द्रिय] त्वक्, जिह्वा, नाक और चक्षु इन चार इन्द्रिय वाला; (जन्तु); (भग; ठा १, १; जी १८)।

चउरिमा स्त्री [चतुरिमन्] चतुरता, चातुर्य, निपुणता ; (सट्टि १६)।

चउरिया } स्त्री [दे] लग्न-मण्डप, विवाह-मण्डप ; गुजराती
चउरी } में 'चोरी' ; (रंभा ; सुपा ५५२)।

चउरुत्तरसय वि [चतुरुत्तरशततम] एकसौ चारवाँ,१०४ वाँ ; (पउम१०४,३५)।

चउसर वि [दे] चौसर, चार सरा वाला (हारादि); (सुपा ५१० ; ५१२)।

चउहार पुं [चतुराहार] चार प्रकार का आहार, अशन, पान, खादिम और स्वादिम ; "कंतासिज्जंपि न संछवेमि चउहारपरिहारो" (सुपा५७३)।

चओर पुंन [दे] पात्र-विशेष; "भुत्तावसाणे य आयमणवेलाए अवणीएसु चओरेसु" (स २५२)।

चओर } पुंस्त्री [चकोर] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १;
चओरग } सुपा ३७)।

चओवचइय वि [चयोपचयिक] वृद्धि-हानि वाला; (उप २५८ टी; आचा)।

चंकम अक [चङ्क्रम्] १ वार वार चलना। २ इधर उधर घूमना। ३ बहुत भटकना। ४ टेढ़ा चलना। ५ चलना-फिरना। वकृ—**चंकमंत**; (उप१३०टी; ६८६टी)। हेकृ—**चंकमिउं**; (स ३५६)। कृ—**चंकमियव्व** ; (पि ५५६)।

चंकमण न [चङ्क्रमण] १ इधर उधर भ्रमण ; २ बहुत चलना; ३ वारंवार चलना; ४ टेढ़ा चलना; ५ चलना, फिरना; (सम१०६ ; णाया१,१)।

चंकमिय वि [चंक्रमित] १ जिसने चंक्रमण किया हो वह। २-६ ऊपर देखो ; (उप ७२८ टी; निचू१)।

चंकमिर वि [चंक्रमितृ] चंकमण करने वाला ; (सण)।

चंकम्म अक [चंक्रम्य] देखो **चंकम**। वकृ—**चंकम्मंत, चंकम्ममाण**; (गा ४६३ ; ६२३ ; उप पृ २३६; पण्ह २, ५; कप्प)।

चंकम्मण देखो **चंकमण**; (णाया १, १—पत्र ३८)।

चंकम्मिअ देखो **चंकमिअ** ; (से ११, ६६)।

चंकार पुं [चकार] च-वर्ण, 'च' अक्षर ; (ठा १०)।

चंग वि [दे. चङ्ग] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य; (दे ३,१; उप पृ १२६; सुपा१०६ ; करु ३५ ; धम्म ६ टी ; कप्पू ; प्राप ; सण ; भवि)।

चंगवेर पुं [दे] काष्ठ-पात्री, काठ का बना हुआ छोटा पात्र-विशेष ; "पीढए चंगवेरे य" (दस७)।

चंगिम पुंस्त्री [दे.चङ्गिमन्] सुन्दरता, सौन्दर्य, श्रेष्ठता, चारुपन;

(नाट)। स्त्री—°मा; (विवे१००; उप पृ१८१; सुपा ५; १२३; २६३)।

चंगेरी स्त्री [दे] टोकरी, कठारी, तृण आदि का बना पात्र-विशेष; (विसे ७१०; पण्ह १,१)।

चंच पुं [चञ्च] १ पङ्कप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास; (इक)। २ न. देव-विमान-विशेष; (इक)।

चंचपुड पुं [दे] आघात, अभिघात; "खुरवलयचंचपुडेहिं धरणिअलं अभिहणमाणं" (जं ३)।

चंचप्पर न [दे] असत्य, झूठ, अनृत; "चंचप्परं न भणिमो" (दे ३, ४)।

चंचरीअ पुं [चञ्चरीक] भ्रमर, भमरा; (दे ३,६)।

चंचल वि [चञ्चल] १ चपल, चञ्चल; (कप्प; चारु १)। २ पुं. रावण के एक सुभट का नाम; (पउम ५६, ३६)।

चंचला स्त्री [चञ्चला] १ चञ्चल स्त्री। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

चंचलिअ वि [चञ्चलित] चञ्चल किया हुआ; "मणया-णिलचंचे(? च)ल्लिअकेसराइं" (विक २६)।

चंचा स्त्री [चञ्चा] १ नरकट की चटाई। २ चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-नगरी-विशेष; (दीव)।

चंचाल (अप) देखो **चंचल**; (सण)।

चंचु स्त्री [चञ्चु] चोंच, पक्षी का ठोंठ; (दे ३,२३)।

चंचुच्चिय न [दे. चञ्चुरित, चञ्चूचित] कुटिल गमन, टेढ़ी चाल; (औप)।

चंचुमालइय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित; (कप्प; औप)।

चंचुय पुं [चञ्चुक] १ अनार्य देस-विशेष; २ उस देश का निवासी मनुष्य; (पण्ह१,१)।

चंचुर वि [चञ्चुर] चपल, चंचल; (कप्पू)।

चंछ सक [तक्ष्] छिलना। चंछइ; (षड्)।

चंड सक [पिष्] पीसना। चंडइ; (षड्)।

चंड देखो **चंद**; (इक)।

चंड वि [चण्ड] १ प्रबल, उग्र, प्रखर, तीव्र; (कप्प)। २ भयानक, डरावना; (उत्त २६; औप)। ३ अति क्रोधी, क्रोध-स्वभावी; (उत्त १; १०; पिंग; णाया १,१८)। ४ तेजस्वी, तेजिल; (उप पृ ३२१)। ५ पुं. राक्षस वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५,२६४)। ६ क्रोध, कोप; (उत्त १)। °**किरण** पुं [°किरण] सूर्य, रवि; (उप पृ ३२१)। °**कोसिय** पुं [°कौशिक] एक सर्प, जिसने भगवान् महावीर को सताया था; (कप्प)। °**दीव** पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष; (इक)। °**पज्जोअ** पुं [°प्रद्योत] उज्जयिनी के एक प्राचीन राजा का नाम; (आवम)। °**भाणु** पुं [°भानु] सूर्य, सूरज; (कुम्मा १३)। °**रुद्द** पुं [°रुद्र] प्रकृति-क्रोधी एक जैन आचार्य; (भाव१७)। °**वडिंसय** पुं [°ावतंसक] नृप-विशेष; (महा)। °**वाल** पुं [°पाल] नृप-विशेष; (कप्पू)। °**सेण** पुं [°सेन] एक राजा का नाम; (कप्पू)। °**ालिय** न [°ालीक] क्रोध-वश कहा हुआ झूठ; (उत्त १)।

चंडंसु पुं [चण्डांशु] सूर्य, सूरज, रवि; (कप्पू)।

चंडमा पुं [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाँद; (पिंग)।

चंडा स्त्री [चण्डा] १ चमरादि इन्द्रों की मध्यम परिषद्; (ठा ३,२; भग ४,१)। २ भगवान् वासुपूज्य की शासन-देवी; (संति१०)।

चंडातक न [चण्डातक] स्त्री का पहनने का वस्त्र, चोली, लहँगा; (दे ३,१३)।

चंडार पुंन [दे] भण्डार, भाण्डागार; (कुमा)।

चंडाल पुं [चण्डाल] १ वर्णसंकर जाति-विशेष, शूद्र और ब्राह्मणी से उत्पन्न; (आचा; सूअ १, ८)। २ डोम; (उत्त १; अणु)।

चंडालिय वि [चण्डालिक] चण्डाल-संबन्धी, चण्डाल जाति में उत्पन्न; (उत्त १)।

चंडाली स्त्री [चण्डाली] १ चण्डाल-जातीय स्त्री। २ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२)।

चंडिअ वि [दे] कृत्त, छिन्न, काटा हुआ; (दे ३, ३)।

चंडिक्क पुंन [दे. चाण्डिक्य] रोष, गुस्सा, क्रोध, रौद्रता; (दे ३, २; षड्; सम ७१)।

चंडिक्किअ वि [दे. चाण्डिक्यित] १ रोष-युक्त, रौद्राकार वाला, भयंकर; (णाया १, १; पण्ह २, २; भग ७, ८; उवा)।

चंडिज्ज पुं [दे] कोप, क्रोध, गुस्सा; २ वि. पिशुन, खल, दुर्जन; (दे ३, २०)।

चंडिम पुंस्त्री [चण्डिमन्] चण्डता, प्रचण्डता; (सुपा ६६)।

चंडिया स्त्री [चण्डिका] देखो **चंडी**; (स २६२; नाट)।

चंडिल वि [दे] पीन, पुष्ट; (दे ३, ३)।

चंडिल पुं [चण्डिल] हजाम, नापित; (दे ३, २; पाअ; गा २६१ अ)।

चंडी स्त्री [**चण्डी**] १ क्रोध-युक्त स्त्री; (गा ६०८) । २ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी ; (पाअ) । ३ वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १) । °**देवग** वि [°**देवक**] चण्डी का भक्त ; (सुअ १, ७) ।

चंद पुं [**चन्द्र**] १ चन्द्र, चन्द्रमा, चाँद ; (ठा २, ३; प्रासू १३ ; ५५ ; पाअ) । २ नृप-विशेष ; (उप ७२८ टी) । ३ रामचन्द्र, दाशरथी राम; (से १, ३४) । ४ राम के एक सुभट का नाम ; (पउम ५६, ३८) । ५ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, २) । ६ राशि-विशेष ; (भवि) । ७ आह्लादक वस्तु ; ८ कपूर ; ९ स्वर्ण, सोना ; १० पानी, जल; (हे २, १६४) । ११ एक जैन आचार्य; (गच्छ ४)। १२ एक द्वीप का नाम, द्वीप-विशेष; (जीव ३) । १३ राधावेध की पुतली का वाम नयन, आँख का गोला ; (णंदि) । १४ न. देव-विमान-विशेष ; (सम ८) । १५ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (दीव) । °**अंत** देखो °**कंत** ; (विक १३६) । °**उत्त** देखो °**गुत्त**; (मुद्रा १६८) । °**कंत** पुं [°**कान्त**] १ मणि-विशेष ; (स ३६०) । २ न. देव-विमान विशेष ; (सम ८) । ३ वि. चन्द्र की तरह आह्लादक ; (आवम) । °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] १ नगरी-विशेष ; (उप ६७३) । २ एक कुलकर-पुरुष की पत्नी ; (सम १५०) । °**कूड** न [°**कूट**] १ देव-विमान-विशेष ; (सम ८) । २ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८) । °**गुत्त** पुं [°**गुप्त**] मौर्यवंश का एक स्वनाम-विख्यात राजा ; (विसे ८६२) । °**चार** पुं [°**चार**] चन्द्र की गति ; (चंद १०) । °**चूड**, °**चूल** पुं [°**चूड**] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा ; (पउम ५, ४५ ; दंस) । °**च्छाय** पुं [°**च्छाय**] अंग देश का एक राजा, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी ; (णाया १, ८) । °**जसा** स्त्री [°**यशस्**] एक कुलकर पुरुष की पत्नी; (सम १५०)। °**ज्झय** न [°**ध्वज**] देव-विमान-विशेष ; (सम ८) । °**णक्खा** स्त्री [°**नखा**] रावण की बहिन का नाम; (पउम १०, १८) । °**णह** पुं [°**नख**] रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३१) । °**णही** देखो °**णक्खा**; (पउम ७, ६८) । °**णागरी** स्त्री [°**नागरी**] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (कप्प)। °**दरिसणिया** स्त्री [°**दर्शनिका**] उत्सव-विशेष, बच्चे के पहली बार के चन्द्र-दर्शन के उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव ; (राज) । °**दिण** न [°**दिन**] प्रतिपदादि तिथि; (पंच५)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष;(जीव ३)। °**द्ध** न [°**ार्ध**] आधा चन्द्र, अष्टमी तिथि का चन्द्र; (जीव ३) । °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] तप-विशेष ; (ठा २, ३) । °**पन्नत्ति** स्त्री [°**प्रज्ञप्ति**] एक जैन उपाङ्ग ग्रन्थ; (ठा २, १—पत्र १२६) । °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] वक्ष-स्कार पर्वत-विशेष; (ठा २,३) । °**पुर** न [°**पुर**] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] नगरी-विशेष, भगवान् चन्द्रप्रभ की जन्म-भूमि ; (पउम २०, ३४) । °**प्पभ** वि [°**प्रभ**] १ चन्द्र के तुल्य कान्ति वाला; २ पुं. आठवें जिन-देव का नाम ; (धर्म २) । ३ चन्द्रकान्त, मणि-विशेष ; (पण्ण १) । ४ एक जैन मुनि ; (दंस) । ५ न. देव-विमान-विशेष ; (सम ८) । ६ चन्द्र का सिंहासन ; (णाया २, १) । °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] १ चन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १) । २ मदिरा-विशेष, एक जात का दारू; (जीव३)। ३ इस नाम की एक राज-कन्या; (उप १०३१ टी) । ४ इस नाम की एक शिबिका, जिसमें बैठ कर भगवान् शीतलनाथ और महावीर-स्वामी दीक्षा के लिए बाहर निकले थे ; (आवम) । °**प्पह** देखो °**प्पभ** ; (कप्प ; सम ४३) । °**भागा** स्त्री [°**भागा**] एक नदी; (ठा ५, ३) । °**मंडल** पुंन [°**मण्डल**] १ चन्द्र का मण्डल, चन्द्र का विमान ; (जं ७ ; भग) । २ चन्द्र का बिम्ब ; (पण्ह १,४) । °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] १ चन्द्र का मण्डल-गति से परिभ्रमण ; २ चन्द्र का मण्डल ; (सुज्ज ११) । °**मणि** पुं [°**मणि**] चन्द्रकान्त, मणि-विशेष ; (विक १२६) । °**माला** स्त्री [°**माला**] १ चन्द्राकार हार ; २ छन्द-विशेष ; (पिंग) । °**मालिया** स्त्री [°**मालिका**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (औप) । °**मुही** स्त्री [°**मुखी**] १ चन्द्र के समान आह्लादक मुख वाली स्त्री; २ सीता-पुत्र कुश की पत्नी; (पउम १०६, १२) । °**रह** पुं [°**रथ**] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, १५ ; ४४) । °**रिसि** पुं [°**ऋषि**] एक जैन ग्रन्थकार मुनि; (पंच ५) । °**लेस** न [°**लेश्य**] देव-विमान-विशेष; (सम ८) । °**लेहा** स्त्री [°**लेखा**] १ चन्द्र की रेखा, चन्द्र-कला । २ एक राज-पत्नी; (ती १०)। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] १ चन्द्र के विमान का नाम; (चंद १८)। २ देखो **चंड-वडिंसग**; (उत्त १३)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] एक देव-विमान; (सम ८)। °**वयण** वि [°**वदन**] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद-जनक मुँह वाला; २ पुं. राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६६)। °**विकंप** पुंन [°**विकम्प**] चन्द्र का

विकम्प-क्षेत्र ; (जो १०)। °विमाण न [°विमान] चंद्र का विमान ; (जं ७)। °विलासि वि [°विलासिन्] चन्द्र के तुल्य मनोहर; (राय)। °वेग पुं [°वेग] एक विद्याधर-नरेश ; (महा)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष, चान्द्र मासों से निष्पन्न संवत्सर ; (चंद १०)। °साला स्त्री [°शाला] अट्टालिका, कटारी ; (दे ३, ६)। °सालिया स्त्री [°शालिका] अट्टालिका ; (णाया १,१)। °सिंग न [°शृङ्ग] देव-विमान-विशेष ; (सम ८)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देव-विमान ; (सम ८)। °सिरी स्त्री [°श्री] द्वितीय कुलकर पुरुष की माँ का नाम ; (आचू १)। °सिहर पुं [°शिखर] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४३)। °सूरदंसावणिया, °सूरपासणिया स्त्री [°सूरदर्शनिका] बालक का जन्म होने पर तीसरे दिन उसको कराया जाता चन्द्र और सूर्य का दर्शन, और उसके उपलक्ष में किया जाता उत्सव ; (भग ११,११; विपा १,२)। °सूरि पुं [°सूरि] स्वनाम-विख्यात एक जैन आचार्य ; (सण)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र ; २ एक विद्याधर राज-कुमार; (महा)। °सेहर पुं [°शेखर] १ भूप-विशेष ; (ती ३८) । २ महादेव, शिव ; (पि ३६५)। °हास पुं [°हास] खड्ग-विशेष ; (से १४, ५२ ; गउड)।

चंद वि [**चान्द्र**] चन्द्र-संबन्धी ; (चंद १२)। °कुल न [°कुल] जैन मुनियों का एक कुल; (गच्छ ४)।

चंदअ देखो **चंद**=चन्द्र ; (हे २, १६४)।

चंदइल्ल पुं [**दे**] मयूर, मोर; (दे ३, ५)।

चंदंक पुं [**चन्द्राङ्क**] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा ; (पउम ५, ४३)।

चंदग [**चन्द्रक**] देखो **चंद**। °विज्झ, °वेज्झ न [°वेध्य] राधावेध ; "चंदगविज्झं लद्धं, केवलसरिसं समाउपरिहीणं" (संथा १२२ ; निचू ११)।

चंदट्ठिआ स्त्री [**दे**] १ भुज, सिखर, कन्धा ; २ गुच्छा, स्तबक ; (दे ३, ६)।

चंदण पुंन [**चन्दन**] १ सुगन्धित वृक्ष-विशेष, चन्दन का पेड़ ; (प्रासू ६)। २ न सुगन्धित काष्ठ-विशेष, चन्दन की लकड़ी ; (भग ११, ११ ; हे २,१८२)। ३ घिसा हुआ चन्दन ; (कुमा)। ४ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (जं)। °कलस पुं [°कलश] चन्दन-चर्चित कुम्भ, माङ्गलिक घट ; (औप)। °घड पुं [°घट] मंगल-कारक घड़ा; (जीव ३)। °बाला स्त्री [°बाला] एक साध्वी स्त्री, भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या ; (पडि)। °वइ पुं [°पति] स्वनाम-ख्यात एक राजा; (उप ६८६टी)।

चंदणग पुंन [**चन्दनक**] १ ऊपर देखो। २ पुं द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, जिसके कलेवर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं ; (पराह १,१ ; जी १५)।

चंदणा स्त्री [**चन्दना**] भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या, चन्दनबाला; (सम १५२ ; कप्प)।

चंदणी स्त्री [**दे**] चन्द्र की पत्नी, रोहिणी ; "चंदो विय चंदणीजोगो" (महा)।

चंदम पुं [**चन्द्रमस्**] चन्द्रमा, चाँद ; (भग)।

चंदवडाया स्त्री [**दे**] जिसका आधा शरीर ढका और आधा नंगा हो ऐसी स्त्री ; (दे ३,७)।

चंदा स्त्री [**चन्द्रा**] चन्द्र-द्वीप की राजधानी ; (जीव ३)।

चंदाअव पुं [**चन्द्रातप**] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, चन्द्र की प्रभा ; (से १, २७)। देखो **चंदायय**।

चंदाणण पुं [**चन्द्रानन**] ऐरवत क्षेत्र के प्रथम जिन-देव ; (सम १५३)।

चंदाणणा स्त्री [**चन्द्रानना**] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद उत्पन्न करने वाली; २ शाश्वती जिन-प्रतिमा-विशेष; (ठा१,१)।

चंदाभ वि [**चन्द्राभ**] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद-जनक। २ पुं आठवाँ जिनदेव, चन्द्रप्रभ स्वामी ; (आचू २)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार ; (पउम ३, ५५)। ४ न एक देव-विमान; (सम १४)।

चंदायण न [**चान्द्रायण**] तप-विशेष ; (पंचा १६)।

चंदायण न [**चन्द्रायण**] चन्द्र का छ छ मास पर दक्षिण और उत्तर दिशा में गमन ; (जो ११)।

चंदायय देखो **चंदाअव**। २ आच्छादन-विशेष, वितान, चँदवा ; (सुर ३, ७२)।

चंदालग न [**दे**] ताम्र का भाजन-विशेष ; (सुअ १,४,२)।

चंदावत्त न [**चन्द्रावर्त्त**] एक देव-विमान ; (सम ८)।

चंदाविज्झय देखो **चंदग-विज्झ** ; (णंदि)।

चंदिआ स्त्री [**चन्द्रिका**] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना ; (से ५, २ ; गा ७७)।

चंदिण न [**दे**] चन्द्रिका, चन्द्रप्रभा ;

"मेहाण दाणं चंदाण, चंदिणं तरुवराण फलनिवहो।
सप्पुरिसाण विढत्तं, सामन्नं सयललोआणं ॥" (आ१०)।

चंदिम देखो **चंदम** ; (औप ; कप्प) । २ एक जैन मुनि ; (अनु २) ।
चंदिमा स्त्री [**चन्द्रिका**] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना ; (हे १, १८५) ।
चंदिमाइय न [**चान्द्रिक**] 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन ; (राज) ।
चंदिल पुं [**चन्दिल**] नापित, हजाम; (गा ३६१; दे ३,२) ।
चंदुत्तरवडिंसग न [**चन्द्रोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान ; (सम ८) ।
चंदेरी स्त्री [**दे**] नगरी-विशेष ; (ती ४५) ।
चंदोज्ज } न [**दे**] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल ;
चंदोज्जय } (दे ३, ४) ।
चंदोत्तरण न [**चन्द्रोत्तरण**] कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान ; (विपा १, ५—पत्र ६०) ।
चंदोयर पुं [**चन्द्रोदर**] एक राज-कुमार ; (धम्म) ।
चंदोवग न [**चन्द्रोपक**] संन्यासी का एक उपकरण ; (ठा ४, २) ।
चंदोवराग पुं [**चन्द्रोपराग**] चन्द्र-ग्रहण, चन्द्रमा का ग्रहण, राहु-ग्रास ; (ठा १० ; भग ३, ६) ।
चंद्र देखो **चंद** ; (हे २, ८० ; कुमा) ।
चंप सक [**दे**] चाँपना, दाबना, दबाना । चंपइ; (आरा २५)। कर्म—चंपिज्जइ ; (हे ४, ३६५) ।
चंप सक [**चर्च्**] चर्चा करना । चंपइ ; (प्राप्र) । संकृ—**चंपिऊण** ; (वज्जा ६४) ।
चंपग देखो **चंपय** ; "असुइट्ठाणे पडिया, चंपगमाला न कीरइ सीसे" (आव ३) ।
चंपडण न [**दे**] प्रहार, आघात ; "सरभसचलंतविग्गडगुडिअ-गंधसिंधुरणिवहचलणचंपडणसमुप्पइआ ...... धूलीजालोली " (विक्र ८४) ।
चंपण न [**दे**] चाँपना, दबाना ; (उप १३७ टी) ।
चंपय पुं [**चम्पक**] १ वृक्ष-विशेष, चम्पा का पेड़ ; (स १५२ ; भग) । २ देव-विशेष ; (जीव ३) । ३ न. चम्पा का फूल ; (कुमा) । °**माला** स्त्री [°**माला**] १ छन्द-विशेष ; (पिंग) । २ चम्पा के फूलों का हार ; (आव ३) । °**लया** स्त्री [°**लता**] १ लताकार चम्पक वृक्ष ; २ चम्पक वृक्ष की शाखा ; (जं १ ; औप) । °**वण** न [°**वन**] चम्पक वृक्षों की प्रधानता वाला वन ; (भग) ।
चंपा स्त्री [**चम्पा**] अंग देश की राजधानी, नगरी-विशेष,-जिसको आजकल 'भागलपुर' कहते हैं ; (विपा १, १ ; कप्प) °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] वही अर्थ ; (पउम ८, १५६) ।
चंपा स्त्री. देखो **चंपय** । °**कुसुम** न [°**कुसुम**] चम्पा का फूल ; (राय)। °**वण्ण** वि [°**वर्ण**] चम्पा के फूल के तुल्य रंग वाला, सुवर्ण-वर्ण । स्त्री—°**ण्णी** (अप) ; (हे ४, ३३०) ।
चंपारण (अप) पुं [**चम्पारण्य**] १ देश-विशेष, चंपारन, भागलपुर का प्रदेश ; २ चंपारन का निवासी ; (पिंग) ।
चंपिअ वि [**दे**] चाँपा हुआ, दबाया हुआ, मर्दित ; (सुपा १३७ ; १३८) ।
चंपिज्जिया स्त्री [**चम्पीया**] जैन मुनि गण की एक शाखा; (कप्प) ।
चंभ पुं [**दे**] हल से विदारित भूमि-रेखा ; (दे ३, १) ।
चकप्पा स्त्री [**दे**] त्वक्, त्वचा, चमड़ी ; (दे ३,३) ।
चकिंद देखो **चइंद** ; (कुमा) ।
चकोर पुंस्त्री [**चकोर**] पक्षि-विशेष, चकोर पक्षी ; (सुपा ४५७) । स्त्री—°**री** ; (रयण ४६) ।
चक्क पुं [**चक्र**] १ पक्षि-विशेष, चक्रवाक पक्षी ; (पाअ ; कुमा ; सण) । "तो हरिसपुलइयंगो चक्को इव दिट्ठउग्गयपयंगो" (उप ७२८ टी) । २ न. गाड़ी का पहिया ; (पण्ह १,१) । ३ समूह ; (सुपा १५० ; कुमा) । ४ अस्त्र-विशेष ; (पउम ७२, ३१ ; कुमा) । ५ चक्राकार आभूषण, मस्तक का आभरण-विशेष ; (औप) । ६ व्यूह-विशेष, सैन्य की चक्राकार रचना-विशेष; (णाया १, १ ; औप) । °**कंत** पुं [°**कान्त**] देव-विशेष, स्वयंभूरमण समुद्र का अधिष्ठाता देव; (दीव) । °**जोहि** पुं [°**योधिन्**] १ चक्र से लड़ने वाला योद्धा ; (ठा ६) । २ वासुदेव, तीन खंड पृथिवी का राजा ; (आव १) । °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] चक्र के निशान वाली ध्वजा ; (जं १) । °**पहु** पुं [°**प्रभु**] चक्रवर्ती राजा ; (सण) । °**पाणि** पुं [°**पाणि**] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् । २ वासुदेव, अर्ध-चक्रवर्ती राजा ; (पउम ७३, ३) । °**पुरा,** °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] विदेह वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३ ; इक) । °**प्पहु** देखो °**पहु** ; (सण) । °**यर** पुं [°**चर**] भिक्षुक, भीखमंगा ; (उप ६१७) । °**रयण** न [°**रत्न**] अस्त्र-विशेष, चक्रवर्ती राजा का मुख्य आयुध ; (पण्ह १,४) । °**वइ** पुं [°**पति**] सम्राट् ; (पिंग) । °**वइ,** °**वट्टि** पुं [°**वर्तिन्**] छ खण्ड भूमि का अधिपति राजा, सम्राट् ; (पिंग ; सण ; ठा ३,१ ; पडि ; प्रासू १७५) । °**वट्टित्त** न [°**वर्तित्व**] सम्राट्पन, साम्राज्य ; (सुर ४, ६१) ।

°वत्ति देखो °वट्टि; (पि २८६)। °विजय पुं [°विजय] चक्रवर्ती राजा से जीतने योग्य क्षेत्र-विशेष; (ठा ८)। °साला स्त्री [°शाला] वह मकान, जहाँ तिल पीला जाता हो, तैलिक-गृह ; (वव १०)। °सुह पुं [°शुभ, °सुख] देव-विशेष, मानुषोत्तर पर्वत का अधिपति देव ; (दीव)। °सेण पुं [°सेन] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (दंस)। °हर पुं [°धर] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् ; (सम १२६ ; पउम २, ८५ ; ४, ३६ ; कप्प)। २ वासुदेव, अर्ध-चक्री राजा ; (राज)।

चक्कआअ देखो **चक्कवाय** ; (पि ८२)।

चक्कंग पुं [**चक्राङ्ग**] पक्षि-विशेष ; (सुपा ३४)।

चक्कणभय न [**दे**] नारंगी का फल ; (दे ३, ७)।

चक्कणाहय न [**दे**] ऊर्मि, तरङ्ग, कल्लोल ; (दे ३,६)।

चक्कम } **चक्कम्म** } अक [**भ्रम्**] घूमना, भटकना, भ्रमण करना। चक्कमइ ; (दे २, ६)। चक्कम्मइ ; (हे ४, १६१)। वकृ—**चक्कमंत**; (स ६१०)।

चक्कम्मविअ वि [**भ्रमित**] घुमाया हुआ, फिराया हुआ ; (कुमा)।

चक्कय देखो **चक्क** ; (पराण १)।

चक्कल न [**दे**] कुण्डल, कर्ण का आभूषण ; २ दोला-फलक, हिंडोला का पटिया ; (दे ३, २०)। ३ वि. वर्तुल, गोलाकार पदार्थ ; (दे ३, २० ; भवि ; वज्जा ६४ ; आवम; षड्)। ४ विशाल, विस्तीर्ण; (दे ३,२०;भवि)।

चक्कलिअ वि [**दे**] चक्राकार किया हुआ; (से ११, ६८ ; स ३८४ ; गउड)। °भिण्ण वि [°भिन्न] गोलाकार खण्ड, गोल टुकड़ा ; (बृह १)।

चक्कवाई स्त्री [**चक्रवाकी**] चक्रवाक-पक्षी की मादा ; (रंभा)।

चक्कवाग } **चक्कवाय** } पुं [**चक्रवाक**] पक्षि-विशेष ; (गाया १, १ ; पराह १, १ ; स ३३७ ; कप्पू ; स्वप्न ५१)।

चक्कवाल न [**चक्रवाल**] १ चक्राकार भ्रमण " रीइज्ज न चक्कवालेण" (पुष्फ १७८)। २ मण्डल, चक्राकार पदार्थ, गोल वस्तु ; (पराण ३६ ; औप ; गाया १, १६)। ३ गोल जलाशय ; "संसारचक्कवाले" (पच्च ५२)। ४ गोल जल-समूह, जल-राशि ; "जह खुहियचक्कवाले पोयं रयणभरियं समुद्दम्मि। निज्जामगा धरिंती" (पच्च ७६)। ५ आवश्यक कार्य, नित्य-कर्म ; (पंचव ४)। ६ समूह, राशि, ढग ; (आउ)। ७ पुं. पर्वत विशेष; (ठा १०)। °विक्खंभ पुं [°विष्कम्भ] चक्राकार घेरा, गोल परिधि; (भग ; ठा २, ३)। °सामायारी स्त्री [°सामाचारी] नित्य-कर्म-विशेष; (पंचव ४)।

चक्कवाला स्त्री [**चक्रवाला**] गोल पंक्ति; चक्राकार श्रेणी ; (ठा ७)।

चक्काअ देखो **चक्कवाय**; (हे १, ८)।

चक्काग न [**चक्रक**] चक्राकार वस्तु ; "चक्कागं भंजमाणस्स समो भंगो य दीसइ" (पराण १ ; पि १६७)।

चक्कार पुं [**चक्रार**] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६३)। °बद्ध न [°बद्ध] शकट, गाड़ी ; (दस ५, १)।

चक्काह पुं [**चक्राभ**] सोलहवें जिन-देव का प्रथम शिष्य ; (सम १५२)।

चक्काहिव पुं [**चक्राधिप**] चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; (सण)।

चक्काहिवइ पुं [**चक्राधिपति**] ऊपर देखो ; (सण)।

चक्कि } **चक्किय** } वि [**चक्रिन्, चक्रिक**] १ चक्र वाला, चक्र वि-शिष्ट। २ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् ; (सण)। ३ तेली ; ४ कुम्भार ; (कप्प ; औप ; गाया १,१)। °साला स्त्री [°शाला] तेल बेचने की दुकान ; (वव ६)।

चक्किय वि [**चकित**] भयभीत ; "समुद्दगंभीरसमा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहंसिया" (उत्त ११)।

चक्किय पुं [**चाक्रिक**] १ चक्र से लड़ने वाला योद्धा ; २ भिक्षुक की एक जाति ; (औप ; गाया १, १)।

चक्किया क्रि [**शक्नुयात्**] सके, कर सके, समर्थ हो सके ; (कप्प ; कस ; पि ४६५)।

चक्की स्त्री [**चक्री**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

चक्कुलंडा स्त्री [**दे**] सर्प की एक जाति ; (दे ३, ५)।

चक्केसर पुं [**चक्रेश्वर**] १ चक्रवर्ती राजा ; (भवि)। २ विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन ग्रन्थकार मुनि ; (राज)।

चक्केसरी स्त्री [**चक्रेश्वरी**] १ भगवान् आदिनाथ की शासन-देवी ; (संति ६)। २ एक विद्या-देवी ; (संति ५)।

चक्कोडा स्त्री [**दे**] अग्नि-भेद, अग्नि-विशेष; (दे ३,२)।

चक्ख सक [**आ + स्वादय्**] चखना, चीखना, स्वाद लेना। चक्खइ ; (पि २०२)। वकृ—**चक्खंत** ; (गा १७१)। कवकृ—**चक्खिज्जंत, चक्खीअंत** ; (पि२०२)। संकृ—

चक्खिऊण ; (से १३, ३६)। हेकृ—**चक्खिउं** ; (वज्जा ४६)।
चक्खडिअ न [**दे**] जीवितव्य, जीवन ; (दे ३, ६)।
चक्खण न [**आस्वादन**] आस्वादन, चीखना ; (उप पृ २५२)।
चक्खिअ वि [**आस्वादित**] आस्वादित, चीखा हुआ ; (हे ४, २५८ ; गा ६०३ ; वज्जा ४६)।
चक्खिंदिय न [**चक्षुरिन्द्रिय**] नयनेन्द्रिय, आँख, चक्षु ; (उत्त २६, ६३)।
चक्खु पुंन [**चक्षुष्**] १ आँख, नेत्र, चक्षु ; (हे १, ३३ ; सुर ३, १५३ ; सम १)। २ पुं. इस नाम का एक कुलकर पुरुष; (पउम ३, ५३)। ३ न. देखो नीचे °**दंसण**; (कम्म ३, १७ ; ४, ६)। ४ ज्ञान, बोध ; (ठा ३, ४)। ५ दर्शन, अवलोकन ; (आचा)। °**कंत** पुं [°**कान्त**] देव-विशेष, कुण्डलोद समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] एक कुलकर पुरुष की पत्नी ; (सम १५०)। °**दंसण** न [°**दर्शन**] चक्षु से वस्तु का सामान्य ज्ञान ; (सम १५)। °**दंसणवडिया** स्त्री [°**दर्शनप्रतिज्ञा**] आँख से देखने का नियम, नयनेन्द्रिय का संयम ; (निचू ६ ; आचा २, २)। °**दय** वि [°**दय**] ज्ञान-दाता ; (सम १ ; पडि)। °**पडिलेहा** स्त्री [°**प्रतिलेखा**] आँख से देखना ; (निचू १)। °**परिन्नाण** न [°**परिज्ञान**] रूप-विषयक ज्ञान, आँख से होने वाला ज्ञान; (आचा)। °**पह** पुं [°**पथ**] नेत्र-मार्ग, नयन-गोचर; (पण्ह १, ३)। °**फास** पुं [°**स्पर्श**] दर्शन, अवलोकन ; (औप)। °**भीय** वि [°**भीत**] अवलोकन मात्र से ही डरा हुआ ; (आचा)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] १ लोचन-युक्त, आँख वाला ; (विसे)। २ पुं. एक कुलकर पुरुष का नाम ; (सम १५०)। °**लोल** वि [°**लोल**] देखने का शौकीन, जिसकी नयनेन्द्रिय संयत न हो वह ; (कस)। °**लोलुय** वि [°**लोलुप**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (कस)। °**ल्लोयणलेस्स** वि [°**लोकनलेश्य**] सुरूप, सुन्दर रूप वाला; (राय; जीव ३)। °**वित्तिहय** वि [**वृत्तिहत**] दृष्टि से अपरिचित ; (वव ८)। °**स्सव** पुं [°**श्रवस्**] सर्प, साँप ; (स ३३४)।
चक्खुड्डुण न [**दे**] प्रेक्षणक, तमाशा ; (दे २, ४)।
चक्खुय देखो **चक्खुस** ; (आवम)।
चक्खुरक्खणी स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम ; (दे ३, ७)।

चक्खुस वि [**चाक्षुष**] आँख से देखने योग्य वस्तु, नयन-ग्राह्य ; (पण्ह १, १; विसे ३३११)।
चंगोर देखो **चओर** ; (प्राकृ)।
चच्च पुं [**चर्च**] समालम्भन, चन्दन वगैरः का शरीर में उपलेप ; (दे ६, ७६)।
चच्चर न [**चत्वर**] चौहट्टा, चौरास्ता, चौक ; (णाया १, १ ; पण्ह १, ३ ; सुर १, ६२; हे २, १२; कुमा)।
चच्चरिअ पुं [**दे. चञ्चरीक**] भ्रमर, भमरा; (षड्)।
चच्चरिया स्त्री [**चर्चरिका**] १ नृत्य-विशेष ; (रंभा)। २ देखो **चचरी** ; (स ३०७)।
चच्चरी स्त्री [**चर्चरी**] १ गीत-विशेष, एक प्रकार का गान; "वित्थरियचच्चरीरवमुहरियउज्जाणभूभागे" (सुर ३, ५४); "पारंभियचच्चरीगीया" (सुपा ५५)। २ गाने वाली टोली, गाने वालों का यूथ ; "पवत्ते मयणमहूसवे निग्गयासु विचित्तवेसासु नयरचच्चरीसु" , "कहं नीयचचरी अम्हाण चच्चरीए समासन्नं परिव्वयइ" (स ४२)। ३ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ४ हाथ की ताली का आवाज; (आव १)।
चच्चसा स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष; "अट्ठसयं चच्चसाणं, अट्ठसयं चच्चसावायगाणं" (राय)।
चच्चा स्त्री [**दे**] १ शरीर पर सुगन्धि पदार्थ का लगाना, विलेपन ; (दे ३, १६ ; पाअ ; जं १ ; णाया १, १ ; राय)। २ तल-प्रहार, हाथ की ताली ; (दे ३,१६; षड्)।
चच्चार सक [**उपा+लभ्**] उपालम्भ देना, उलहना देना। चच्चारइ ; (षड्)।
चच्चिक्क वि [**दे**] १ मण्डित, विभूषित; "चंदुज्जयचच्चिक्का दिसाउ" (दे ३,४)। "तणुप्पहापडलचच्चिक्को" (धम्म ६टी) ; "साहू गुणरयणचच्चिक्का" (चउ ३६)। २ पुंन. विलेपन, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का शरीर पर मसलना; (हे २,७४) ; "चच्चिक्को" (षड्); "कुकुंमचच्चिक्कछुरियंगो" (पउम २८,२८); "पेच्छइ सुवन्नकलसं सुरचंदणपंकचच्चिक्कं" (उप ७६८ टी); "घणलेहिदपंकचच्चिक्को" (मृच्छ११०)।
चच्चुप्प सक [**अर्पय्**] अर्पण करना, देना। चच्चुप्पइ ; (हे ४,३६)।
चच्छ सक [**तक्ष्**] छिलना, काटना। चच्छइ; (हे ४,१६४)।
चच्छिअ वि [**तष्ट**] छिला हुआ ; (कुमा)।
चज्ज सक [**दृश्**] देखना, अवलोकन करना। चज्जइ ; (दे ३, ४ ; षड्)।
चज्जा स्त्री [**चर्या**] १ आचरण, वर्तन; २ चलन, गमन।

३ परिभाषा, संकेत; (विसे २०४४)।

चज्जिय वि [**दृष्ट**] अवलोकित, देखा हुआ; (महा)।

चट्टुअ देखो **चट्टुअ**; (गा१६२)।

चट्ट सक [दे] चाटना, अवलेह करना। "न य अलोणिअं सिलं कोइ चट्टेइ" (महा)।

चट्ट पुंन [**दे**] १ भूख, बुभुक्षा; "जीवंति उदहिपडिआ, चट्टुच्छिन्ना न जीवंति" (सुक्त ७०)। २ पुं. चट्टा, विद्यार्थी। °**साला** स्त्री [°**शाला**] चटशाला, छोटे बालकों की पाठशाला; (बृह १)।

चट्टि वि [**चट्टिन्**] चाटने वाला; (कप्पू)।

चट्टु, **चट्टुअ**, **चट्टुल** पुं [**दे**] दारु-हस्त, काठ की कलछी, परोसने का पात्र-विशेष; (दे३,१; गा१६२अ)।

चड सक [**आ+रुह्**] चढ़ना, ऊपर बैठना, आरूढ़ होना। चडइ; (हे ४,२०६)। संकृ—**चडिउं**,**चडिऊण**; (सुपा ११४; कुमा)।

चड पुं [**दे**] शिखा, चोटी; (दे ३,१)।

चडक्क पुंन [**दे**] १ चटत्कार, चटका; (हे ४,४०६; भवि)। २ शस्त्र-विशेष; (पउम ७,२६)।

चडक्कारि वि [**चटत्कारिन्**] 'चटत्' शब्द करने वाला (पवन आदि); (गउड)।

चडग देखो **चडय** (पण्ण १)।

चडगर पुं [**दे**] १ समूह, यूथ, जत्था; (पउम ६०, १५; णाया १, १—पत्र ४६)। २ आडम्बर, आटोप; "महया चडगरत्तणेणं अत्थकहा हणइ" (दस ३)।

चडचड पुं [**चडचड**] 'चड-चड' आवाज; (विपा १, ६)।

चडचडचड अक [**चडचडाय्**] 'चड-चड' आवाज करना। चडचडचडेंति; (विपा १, ६)।

चडड पुं [**चटट**] ध्वनि-विशेष, बिजली के गिरने का आवाज; (सुर २, ११०)।

चडण न [**आरोहण**] चढ़ना, ऊपर बैठना; (श्रा १४; प्रासु १०१; उप ७२८ टी; आघ ३०; सढि १४२; वज्जा ५४)।

चडय पुंस्त्री [**चटक**] पक्षि-विशेष, गौरैया पक्षी; (दे २, १०७)। स्त्री—°**या**; (दे ८, ३६)।

चडवेला स्त्री देखो **चवेडा**; (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

चडावण न [**आरोहण**] चढ़ाना; (उप १५२)।

चडाविय वि [**आरोहित**] चढ़ाया हुआ, ऊपर स्थापित; "रणखंभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा" (मुणि १०६०१; सुर १३, ३६; महा)।

चडाविय वि [**दे**] प्रेषित, भेजा हुआ; "चाउद्दिसिंपि तेणं चडावियं साहणं तआ सोवि" (सुपा ३६५)।

चडिअ वि [**आरूढ**] चढ़ा हुआ, आरूढ़; (सुपा १३७; १५३; १५६; हे ४, ४४५)।

चडिआर पुं [**दे**] आटोप, आडम्बर; (दे ३, ५)।

चडु पुं [**चटु**] १ प्रिय वचन, प्रिय वाक्य; २ व्रती का एक आसन; ३ उदर, पेट; ४ पुंन. प्रिय संभाषण, खुशामद; (हे १, ६७; प्राप्र)। °**आर** वि [°**कार**] खुशामद करने वाला, खुशामदी; (पण्ह १, ३)। °**आरअ** वि [°**कारक**] खुशामदी; (गा ६०५)।

चडुल वि [**चटुल**] १ चंचल, चपल; (से २, ४५; पउम ४२, १६)। २ कंप वाला, हिलता हुआ; (से १, ५२)।

चडुला स्त्री [**दे**] रत्न-तिलक, सोने की मेखला में लटकता हुआ रत्न-निर्मित तिलक; (दे ३, ८)।

चडुलातिलय न [**दे**] ऊपर देखो; (दे ३, ८)।

चडुलिया स्त्री [**दे**] अन्त भाग में जला हुआ घास का पूला, घास की अंटिया; (णंदि)।

चड्ड सक [**मृद्**] मर्दन करना, मसलना। चड्डइ; (हे ४, १२६)। प्रयो—चड्डावए; (सुपा ३३१)।

चड्ड सक [**पिष्**] पीसना। चड्डइ; (हे ४, १८५)।

चड्ड सक [**भुज्**] भोजन करना, खाना। चड्डइ; (हे ४, ११०)।

चड्डु न [**दे**] तैल-पात्र, जिसमें दीपक किया जाता है; गुजराती में 'चाडुं'; (सुपा ६३८; बृह १)।

चड्डण न [**भोजन**] १ भोजन, खाना। २ खाने की वस्तु, खाद्य-सामग्री; (कुमा)।

चड्डावल्ली स्त्री [**चड्डावल्ली**] इस नाम की एक नगरी, जहां श्रीधनेश्वर मुनि ने विक्रम की ग्यारहवीं सदी में 'सुरसुंदरीचरिअ' नामक प्राकृत काव्य रचा था; (सुर १६, २४९)।

चड्डिअ वि [**मृदित**] मसला हुआ, जिसका मर्दन किया गया हो वह; (कुमा)।

चड्डिअ वि [**पिष्ट**] पीसा हुआ; (कुमा)।

चण, **चणअ** पुं [**चणक**] चना, अन्न-विशेष; (जं ३; कुमा; गा ५५७; दे १, २१)।

चणइया स्त्री [**चणकिका**] मसूर, अन्न-विशेष; (ठा ५,३)।
चणग देखो **चणअ** ; (सुपा ६३१ ; सुर ३, १४८)।
°**गाम** पुं [°**ग्राम**] ग्राम-विशेष, गौड़ देश का एक ग्राम ; (राज)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष, राजगृह-नगर का असली नाम ; (राज)।
चत्त पुंन [**दे**] तर्कु, तकुआ, सूत बनाने का यन्त्र ; (दे ३, १ ; धर्म ३)।
चत्त वि [**त्यक्त**] छोड़ा हुआ, परित्यक्त ; (पण्ह २, १ ; कुमा १, १६)।
चत्तर देखो **चच्चर** ; (पि २६६ ; नाट)।
चत्ता देखो **चत्तालीसा** ; (उवा)।
चत्ताल वि [**चत्वारिंश**] चालीसवाँ; (पउम ४०, १७)।
चत्तालीस न [**चत्वारिंशत्**] १ चालीस, ४० ; "चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता" (सम ६६ ; कप्प)। २ चालीस वर्ष की उम्र वाला; "चत्तालीसस्स विन्नाणं" (तंदु)।
चत्तालीसा स्त्री [**चत्वारिंशत्**] चालीस, ४० ; "तीसा चत्तालीसा" (पण्ण २)।
चत्थरि पुंस्त्री [**दे. चस्तरि**] हास, हास्य; (दे ३, २)।
चपेटा स्त्री [**दे. चपेटा**] कराघात, थप्पड़, तमाचा; (षड्)।
चप्प सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना, दबाना। संकृ—**चप्पिवि** ; (भवि)।
चप्पडग न [**दे**] काष्ठ-यन्त्र-विशेष; (पण्ह १,३—पत्र ५३)।
चप्पलअ वि [**दे**] १ असत्य, झूठा ; (कुमा ८, ७६)। २ बहुमिथ्यावादी, बहुत झूठ बोलने वाला ; (षड्)।
चप्पिय वि [**आक्रान्त**] आक्रान्त, दबाया हुआ; (भवि)।
चप्पुडिया, **चप्पुडी** स्त्री [**चप्पुटिका**] चपटी, अंगुष्ठ के साथ अंगुली की ताली ; (णाया १, ३—पत्र ६५ ; दे ८, ४३)।
चप्फल, **चप्फलय** न [**दे**] १ शेखर-विशेष, एक तरह का शिरो-भूषण; २ वि. असत्य, झूठा, मिथ्याभाषी; (दे ३, २० ; हे ३, ३८ ; कुमा ८, २५)।
चमक्क पुं [**चमत्कार**] विस्मय, आश्चर्य ; "संजणियजणचमक्को" (धम्म ६ टी; उप ७६८ टी)। °**यर** वि [°**कर**] विस्मय-जनक ; (सण)।
चमक्क, **चमक्कर** सक [**चमत्+कृ**] विस्मित करना, आश्चर्यान्वित करना। चमक्केइ, चमक्कंति ; (विवे ४३ ; ४८)। वकृ—**चमक्करंत** ; (विक ६६)।
चमक्कार पुं [**चमत्कार**] आश्चर्य, विस्मय ; (सुर १०, ८ ; वज्जा २४)।
चमक्किअ वि [**चमत्कृत**] विस्मित, आश्चर्यान्वित ; (सुपा १२२)।
चमड, **चमढ** सक [**भुज्**] भोजन करना, खाना। चमडइ ; (षड्)। चमढइ ; (हे ४, ११०)।
चमढ सक [**दे**] १ मर्दन करना, मसलना। २ प्रहार करना। ३ कदर्थन करना, पीड़ना। ४ निन्दा करना। ५ आक्रमण करना। ६ उद्विग्न करना, खिन्न करना। कवकृ—**चमढिज्जंत** ; (ओघ १२८ भा ; बृह १)।
चमढण न [**भोजन**] भोजन, खाना ; (कुमा)।
चमढण न [**दे**] १ मर्दन, अवमर्दन ; (ओघ १८७ भा ; स २२)। २ आक्रमण ; (स ५७६)। ३ कदर्थन, पीड़न ; ४ प्रहार ; (आव १६३)। ५ निन्दा, गर्हण ; (ओघ ७६)। ६ वि. जिसकी कदर्थना की जाय वह ; (ओघ २३७)।
चमढणा स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (बृह १)।
चमढिअ वि [**दे**] मर्दित, विनाशित ; (वव २)।
चमर पुं [**चमर**] पशु-विशेष, जिसके बालों का चामर बनता है; "वराहरुरुचमरसेविए रण्णे" (पउम ६४, १०५ ; पण्ह १, १)। २ पुं. पाँचवें जिनदेव का प्रथम शिष्य; (सम १५२)। ३ दक्षिण दिशा के असुरकुमारों का इन्द्र ; (ठा २, ३)। °**चंच** पुं [°**चञ्च**] चमरेन्द्र का आवास-पर्वत ; (भग १३, ६)। °**चंचा** स्त्री [°**चञ्चा**] चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-पुरी विशेष ; (णाया २)। °**पुर** न [°**पुर**] विद्याधरों का नगर-विशेष ; (इक)।
चमर पुंन [**चामर**] चँवर, चामर, बाल-व्यजन ; (हे १, ६७)। °**धारी**, °**हारी** स्त्री [°**धारिणी**] चामर बीजने वाली स्त्री ; (सुपा ३३६; सुर १०, १५७)।
चमरी स्त्री [**चमरी**] चमर-पशु की मादा ; (से ७, ४८ ; स ४४१ ; औप ; महा)।
चमस पुंन [**चमस**] चमचा, कलछी, दर्वी ; (औप)।
चमुक्कार पुं [**चमत्कार**] १ आश्चर्य, विस्मय ; "पेच्छागयसुरकिन्नरचित्तचमुक्कारकारयं" (सुर १३, ६७)। २ विजली का प्रकाश ; "ताव य विज्जुचमक्कारणंतरं चंडचडडसंसद्दो" (सुर २, ११०)।
चमू स्त्री [**चमू**] १ सेना, सैन्य, लश्कर ; (आवम) । २ सेना-विशेष, जिसमें ७२० ...

घोड़े और ३६४५ पैदल हो ऐसा लश्कर; (पउम ५६, ६)।

चम्म न [**चर्मन्**] छाल, त्वक्, चाम, खाल; (हे १, ३२; स्वप्न ७०; प्रासू १७१)। °**किड** वि [°**किट**] चमड़े से सीआ हुआ; (भग १३, ६)। °**कोस**, °**कोसय** पुं [°**कोश**, °**क**] १ चमड़े का बना हुआ थैला; २ एक तरह का चमड़े का जूता; (ओघ ७२८; आचा २, २, ३; वव ८)। °**कोसिया** स्त्री [°**कोशिका**] चमड़े की बनी हुई थैली; (सूअ २, २)। °**खंडिय** वि [°**खण्डिक**) १ चमड़े का परिधान वाला; २ सब उपकरण चमड़े का ही रखने वाला; (णाया १, १५)। °**ग** वि [°**क**] चमड़े का बना हुआ, चर्ममय; (सूअ २, २)। °**पक्खि** पुं [°**पक्षिन्**] चमड़े की पाँख वाला पक्षी; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] चमड़े का पट्टा, वर्ध्र; (विपा १, ६)। °**पाय** न [°**पात्र**] चमड़े का पात्र; (आचा २,६, १)। °**यर** पुं [°**कर**] मोची, चमार; (स २८६; दे २, ३७)। °**रयण** न [°**रत्न**] चक्रवर्ती का रत्न-विशेष, जिससे सुबह में बोये हुए शालि वगैरः उसी दिन पक कर खाने योग्य हो जाते हैं; (पव २१२)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] वृक्ष-विशेष; (भग ८, ३)।

चम्मट्ठि स्त्री [**चर्मयष्टि**] चर्म-मय यष्टि, चर्म-दण्ड; (कप्पू)।

चम्मट्ठिअ अक [**चर्मयष्टीय्**] चर्म-यष्टि की तरह आचरण करना। वकृ—**चम्मट्ठिअंत**; (कप्पू)।

चम्मट्ठिल पुं [**चर्मास्थिल**] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १)।

चम्मार पुं [**चर्मकार**] चमार, मोची; (विसे २६८८)।

चम्मारय पुं [**चर्मकारक**] ऊपर देखो; (प्राप)।

चम्मिय वि [**चर्मित**] चर्म से बँधा हुआ, चर्म-वेष्टित; (औप)।

चम्मेट्ठ पुं [**चर्मेष्ट**] प्रहरण-विशेष, चमड़े से वेष्टित पाषाण वाला आयुध; (पण्ह १, १)।

चय सक [**त्यज्**] छोड़ना, त्याग करना। **चयइ**; (षाअ; हे ४, ८६)। कर्म—चइज्जइ; (उव)। वकृ—**चयंत**; (सुपा ३८८)। संकृ—**चइअ, चइउं, चिच्चा, चइऊण, चइत्ता, चइत्ताणं, चइत्तु**; (कुमा; उत्त १८; महा; उवा; उत्त १)। कृ—**चइयव्व**; (सुपा ११६; ४०५; ५३१)।

चय सक [**शक्**] सकना, समर्थ होना। चयइ; (हे ४, ८६)। वकृ—**चयंत**; (सूअ १, ३, ३; से ६, ५०)।

चय अक [**च्यु**] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। चयइ; (भवि)। चयंति; (भग)। वकृ—**चयमाण**; (कप्प)।

चय पुं [**चय**] १ शरीर, देह; (विपा १, १; उवा)। २ समूह, राशि, ढग; (विसे २२१६; सुपा ५७१; कुमा)। ३ इकट्ठा होना; (अणु)। ४ वृद्धि; (आचा)।

चय पुं [**च्यव**] च्यव, जन्मान्तर-गमन; (ठा ८; कप्प)।

चयण न [**चयन**] १ इकट्ठा करना; (पव २)। २ ग्रहण, उपादान; (ठा २, ४)।

चयण न [**त्यजन**] त्याग, परित्याग; (सट्ठि ३६)।

चयण न [**च्यवन**] १ मरण, जन्मान्तर-गमन; (ठा १—पत्र १६)। २ पतन, गिर जाना। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ पतन-प्रकार, चारित्र वगैरः से गिरने का प्रकार; २ शिथिल साधुओं का विहार; (गच्छ १; पंचभा)।

चर सक [**चर्**] १ गमन करना, चलना, जाना। २ भक्षण करना। ३ सेवना। ४ जानना। चरइ; (उव; महा)। भूका—चरिंसु; (गउड)। भवि—चरिस्सं; (पि १७३)। वकृ—**चरंत, चरमाण**; (उत्त २; भग; विपा १, १)। संकृ—**चरिअ, चरिऊण**; (नाट—मृच्छ १०; आवम)। हेकृ—**चरिउं,चारए**; (ओघ ६५; कस)। कृ—**चरियव्व**; (भग ६, ३३)। प्रयो, कृ—**चारियव्व**; (णाया १७—पत्र ४६७)।

चर पुं [**चर**] १ गमन, गति; २ वर्तन; (दंस; आवम)। ३ दूत, जासूस; (पाअ; भवि)।

°**चर** वि [°**चर**] चलने वाला; (आचा)।

चरंती स्त्री [**चरन्ती**] जिस दिशा में भगवान् जिनदेव वगैरः ज्ञानी पुरुष विचरते हों वह; (वव १)।

चरग पुं [**चरक**] १ देखो **चर**=चर। २ संन्यासिओं का झुंड विशेष, यूथबंध घूमने वाले त्रिदण्डिओं की एक जाति; (भग; गच्छ २)। ३ भिक्षुकों की एक जाति; (पण्ण २०)। ४ दंश-मशकादि जन्तु; (राज)।

चरचरा स्त्री [**चरचरा**] 'चर चर' आवाज; (स २५७)।

चरड पुं [**चरट**] लुटेरे की एक जाति; (धम्म १२ टी; सुपा २३२; ३३३)।

चरण न [**चरण**] १ संयम, चारित्र, व्रत, नियम; (ठा ३, १; ओघ २; विसे १)। २ चरना, पशुओं का तृणादि-

भक्षण ; (सुर २, ३)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा; (पिंग)। ४ गमन, विहार ; (णंदि ; सूत्र १, १०, २)। ५ सेवन, आदर ; (जीव २)। ६ पाद, पाँव ; (३,७)। °करण न [°करण] संयम का मूल और उत्तर गुण ; सूत्र१,१ सम्म १६४)। °करणाणुओग पुं [°करणानुयोग] संयम के मूल और उत्तर गुणों की व्याख्या ; (निचू १५)। °कुसील पुं [°कुशील] चारित्र को मलिन करने वाला साधु, शिथिलाचारी साधु ; (पव २)। °णय [°न क्रिया को मुख्य मानने वाला मत ; (आचा)। °मोह पुंन [°मोह] चारित्र का आवारक कर्म-विशेष ; (कम्म १)।

चरम वि [**चरम**] १ अन्तिम, अन्त का, पर्यन्तवर्ती ;(ठा २, ४ ; भग ८,३ ; कम्म ३, १७ ; ४, १६ ; १७)। २ अनन्तर भव में मुक्ति पाने वाला ; ३ जिसका विद्यमान भव अन्तिम हो वह; (ठा २, २)। °**काल** पुं [°**काल**] मरण-समय ;(पंचव ४)। °**जलहि** पुं [°**जलधि**] अन्तिम समुद्र, स्वयंभूरमण समुद्र ; (लहुअ २)।

चरमंत पुं [**चरमान्त**] सब से अन्तिम, सब से प्रान्त-वर्ती; (सम ६६)।

चरय देखो **चरग** ; (औप ; णाया १, १५)।

चरिगा देखो **चरिया**=चरिका ; (राज)।

चरित्त न [**चरित्र**] १ चरित, आचरण ; २ व्यवहार; (भवि ; प्रासू ४०)। ३ स्वभाव, प्रकृति ; (कुमा)।

चरित्त न [**चारित्र**] संयम, विरति, व्रत, नियम ; (ठा २, ४ ; ४,४ ; भग)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] संयमानुष्ठान का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (पंचभा)। °**मोह** पुंन [°**मोह**] कर्म-विशेष, संयम का आवारक कर्म ; (भग)। °**मोहणिज्ज** न [°**मोहनीय**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा २, ४)। °**चरित्त** न [°**चारित्र**] आंशिक संयम, श्रावक-धर्म ; (पडि ; भग ८,२)। °**यार** पुं [°**चार**] संयम का अनुष्ठान; (पडि)। °**रिय** पुं [°**र्य**] चारित्र से आर्य, विशुद्ध चारित्र वाला, साधु, मुनि ; (पगण १)।

चरित्ति पुंस्त्री [**चारित्रिन्**] संयम वाला, साधु, मुनि ; (उप ६६६ ; पंचव १)।

चरिम देखो **चरम** ; (सुर १,१३; औप ; भग ; ठा २, ४)।

चरिय पुं [**चरक**] चर-पुरुष, जासूस, दूत ; (सुपा ५२८)।

चरिय न [**चरित**] १ चेष्टित, आचरण ; (औप ; प्रासू ८६)। २ जीवनी, जीवन-चरित ; (सुपा २)। ३ चरित्र-ग्रन्थ ; (सुपा ६५८)। ४ सेवित, आश्रित ; (पराह १,३)।

चरिया स्त्री [**चरिका**] १ परिव्राजिका, संन्यासिनी ; (ओघ ५६८)। २ किला और नगर के बीच का मार्ग ; (सम १३७ ; पगण १,१)।

चरिया स्त्री [**चर्या**] १ आचरण, अनुष्ठान ; "दुक्करचरिया मुणिवराणं" (पउम १४, १५२)। २ गमन, गति, विहार; (सूत्र १, १, ४)।

चरु पुं [**चरु**] स्थाली-विशेष, पात्र-विशेष ; (औप; भवि)।

चरुगिणय देखो **चारुइणय** ; (इक)।

चरुल्लेव न [**दे**] नाम, आख्या ; (दे ३, ६)।

चल सक [**चल्**] १ चलना, गमन करना। २ अक. काँपना, हिलना। चलइ ; (महा ; गउड)। वकृ—**चलंत, चलमाण** ; (गा ३५६ ; सुर ३,४० ; भग)। हेकृ—**चलिउं**; (गा ४८४)। प्रयो, संकृ—**चलइत्ता** ; (दस ५, १)।

चल वि [**चल**] १ चंचल, अस्थिर ; (स ४२० ; वज्जा ६६)। २ पुं. रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३६)।

चलचल वि [**चलचल**] १ चंचल, अस्थिर ; "चलचलयकोडिमोडणकराइं नयणाइं तरुणीणं" (वज्जा ६०)। २ पुं. घी में तलाती चीज का पहला तीन घान ; (निचू ४)।

चलण पुं [**चरण**] पाँव, पैर, पाद ; (औप ; से ६,१३)। °**मालिया** स्त्री [°**मालिका**] पैर का आभूषण-विशेष ; (पराह २, ५ ; औप)। °**वंदण** न [°**वन्दन**] पैर पर सिर झुका कर प्रणाम, प्रणाम-विशेष ; (पउम ८, २०६)।

चलण न [**चलन**] चलना, गति, चाल ; (से ६, १३)।

चलणा स्त्री [**चलना**] १ चलन, गति ; २ कम्प, हिलन ; (भग १६, ६)।

चलणाउह पुं [**चरणायुध**] कुक्कुट, मुर्गा ; (दे ३, ७)।

चलणाओह पुं [**दे. चरणायुध**] ऊपर देखो ; (षड्)।

चलणिया स्त्री [**चलनिका**] नीचे देखो ; (ओघ ६७६)।

चलणी स्त्री [**चलनी**] १ साध्वीओं का एक उपकरण ; (ओघ ३१५ भा)। २ पैर तक का कीच ; (जीव ३; भग ७, ६)।

चलवलण न [**दे**] चटपटाई, चंचलता ; (पउम १०२,६)।

चलाचल वि [**चलाचल**] चंचल, अस्थिर ; (पउम ११२,६)।

चलिंदिय वि [**चलेन्द्रिय**] इन्द्रिय-निग्रह करने में असमर्थ, जिसकी इन्द्रियाँ काबू में न हों वह ; (आचा २, ५, १)।

चलिअ न [**चलित**] १ विकलता, अ-स्थैर्य, चंचलता ; (पाअ)। २ चला हुआ, कम्पित; (आवम)। ३ प्रवृत्त ; (पाअ ; औप)। ४ विनष्ट ; (धम्म २)।

चलिर वि [**चलितृ**] चलने वाला, अस्थिर, चपल, चंचल ; "चलिरभमराली" (उप ६८६; सुपा ७६ ; २५७ ; स ४१)।

चल्ल देखो **चल**=चल्। चल्लइ ; (हे ४, २३१ ; षड्)।

चल्लणग न [**दे**] जघनांशुक, कटी-वस्त्र ; (पड्)।

चल्लि स्त्री [**दे**] नाचते समय की एक प्रकार की गति ; (कप्पू)।

चल्लिअ देखो **चलिअ** ; (सुर २, ६१ ; उप पृ ५०)।

चव सक [**कथय्**] कहना, बोलना। चवइ ; (हे ४,२)। कर्म—चविज्जइ ; (कुमा)। वकृ—**चवंत** ; (भवि)।

चव अक [**च्यु**] मरना, जन्मान्तर में जाना। चवइ ; (हे ४, २३३)। संकृ—**चविऊण** ; (प्रारू)। कृ—**चवियव्व** ; (ठा ३, ३)।

चव पुं [**च्यव**] मरण, मौत ; "मन्नंता अपुणच्चवं ; (उत्त ३, १४)।

चवचव पुं [**चवचव**] 'चव-चव' आवाज, ध्वनि-विशेष ; (ओघ २८६ भा)।

चवण न [**च्यवन**] १ मरण, जन्मान्तर-प्राप्ति ; (सुर २, १३६; ७, ८; दं ४)। २ पतन, गिर जाना; (बृह १)।

चवल वि [**चपल**] १ चंचल, अस्थिर ; (सुर १२, १३८; प्रासू १०३)। २ आकुल, व्याकुल ; (औप)। ३ पुं. रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३६)।

चवल पुं [**दे**] चावल, तण्डुल ; (श्रा १८)।

चवला स्त्री [**चपला**] विद्युत्, बिजली ; (जीव ३)।

चविअ वि [**च्युत**] मृत, जन्मान्तर-प्राप्त ; (कुमा २,२६)।

चविअ वि [**कथित**] उक्त, कहा हुआ ; (भवि)।

चविआ स्त्री [**चविका**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १७—पत्र ५३१)।

चविडा, **चविला**, **चवेला** स्त्री [**चपेटा**] तमाचा, थप्पड़ ; (हे १, १४६ ; कुमा)।

चवेडी स्त्री [**दे**] १ श्लिष्ट कर-संपुट ; २ संपुट, समुद्ग, डिब्बा ; (दे ३, ३)।

चवेण न [**दे**] वचनीय, लोकापवाद ; (दे ३, ३)।

चवेला देखो **चवेडा** ; (प्रारू)।

चव्वक्किअ वि [**दे**] धवलित, चूने से पोता हुआ ; "चव्वक्किआ य चुन्नेण नासिया" (सुपा ४५५)।

चव्वाइ देखो **चव्वागि** ; (राज)।

चव्वाक, **चव्वाग** पुं [**चार्वाक**] नास्तिक, बृहस्पति का शिष्य, लोकायतिक ; (प्रबो ७८ ; राज)।

चव्वागि वि [**चार्वाकिन्**] १ चबाने वाला ; २ दुर्व्यवहारी ; (वव ३)।

चव्विय वि [**चर्वित**] चबाया हुआ ; (सुर १३, १२३)।

चस सक [**चष्**] चखना, आस्वाद लेना। वकृ—**चसंद** (शौ) ; (रंभा)। हेकृ—**चसिदुं** (शौ) ; (रंभा)।

चसग, **चसय** पुं [**चषक**] १ दारू पीने का प्याला ; (जं ५ ; पात्र)। २ पान-पात्र, प्याला ; (सुर २, ११ ; पउम ११३, १०)। ३ पक्षि-विशेष ; (दे ६, १४५)।

चहुंतिया स्त्री [**दे**] चुटकी, चुटकीभर ; "जोगचुण्णचहुंतियामेत्तपक्खेवेण" (काल)।

चहुट्ट वि [**दे**] १ निमग्न, लीन; (दे ३, २ ; वज्जा ३८)। "मण-भमरो पुण तीए मुहारविंदे च्चिय चहुट्टो" (उप ७२८ टी)।

चहोड पुं [**दे**] एक मनुष्य-जाति ; (भवि)।

चाइ वि [**त्यागिन्**] १ त्याग करने वाला, छोड़ने वाला ; २ दानी, दान देने वाला, उदार ; (सुर १, २१७ ; ४, ११८)। ३ निःसंग, निरीह, संयमी ; (आचा)।

चाइय वि [**शकित**] जो समर्थ हुआ हो ; (पउम ७, १२१ ; सूअ १, १४)। "सव्वोवाएहिं जया घेत्तूण न चाइया सुरिंदेणं। ताहे ते नेरइया" (पउम ११८, २४)।

चाउंड पुं [**चामुण्ड**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लङ्का-पति ; (पउम ५, २६३)।

चाउक्काल न [**चतुष्काल**] चार बख्त, चार समय ; (विसे २५७६)।

चाउक्कोण वि [**चतुष्कोण**] चार कोना वाला, चतुरस्र; (जीव ३)।

चाउग्घंट, **चाउघंट** वि [**चतुर्घण्ट**] चार घंटा वाला, चार घण्टाओं से युक्त; (णाया १, १; भग ६, ३३; निर १)।

चाउज्जाम न [**चातुर्याम**] चार महाव्रत, साधु-धर्म, अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अ-परिग्रह ये चार साधु-व्रत ; (णाया १, ७ ; ठा ४, १)।

चाउज्जाय न [**चातुर्जात**] दालचीनी, तमालपत्र, इलाची और नागकेसर ; (उप पृ १०६ ; महा)।

चाउत्थिय पुं [**चातुर्थिक**] रोग-विशेष, चौथे चौथे दिन पर होने वाला ज्वर, चौथिया बुखार ; (जीव ३)।

चाउद्दसिया स्त्री [**चतुर्दशिका**] तिथि-विशेष, चतुर्दशी, चौदस ; "होणपुराणचाउद्दसिया" (उवा)।

चाउद्दसी स्त्री [**चतुर्दशी**] ऊपर देखो ; (भग ; जो ३)।

चाउद्दाह (अप) त्रि. ब. [**चतुर्दशन्**] चौदह, १४; (पिंग)।

चाउद्दिसिं देखो **चउ-द्दिसिं**; (महा ; सुपा ३६५)।

चाउमास } पुंन [**चातुर्मास**] १ चौमासा, जैसे आषाढ़
चाउम्मास } से लेकर कार्तिक तक के चार महीने ; (उप पृ ३६०; पंचा १७)। २ आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी ; "पक्खिए चाउमासे" (लहुअ १६)।

चाउम्मासिअ वि [**चातुर्मासिक**] १ चार मास संबन्धी, जैसे आषाढ़ से लेकर कार्तिक तक के चार महीने से संबंध रखने वाला ; (णाया १, ५ ; सुर १४, २२८)। २ न. आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि, पर्व-विशेष ; (श्रा ४७ ; अजि ३८)।

चाउम्मासी स्त्री [**चतुर्मासी**] चार मास, चौमासा, आषाढ़ से कार्तिक, कार्तिक से फाल्गुन और फाल्गुन से आषाढ़ तक के चार महीने ; (पउम ११८, ५८)।

चाउम्मासी स्त्री [**चातुर्मासी**] देखो **चाउम्मासिअ** ; (धर्म २ ; आव)।

चाउरंग देखो **चउरंग** ; (पउम २, ७५)।

चाउरंगि देखो **चउरंगि** ; (भग; णाया १, १—पत्र ३२)।

चाउरंगिज्ज वि [**चतुरङ्गीय**] १ चार अंगो से संबन्ध रखने वाला ; २ न. उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन ; (उत्त ४)।

चाउरंत देखो **चउरंत**; (सम १ ; ठा ३, १; हे १, ४४)।

चाउरंत पुं [**चातुरन्त**] १ चक्रवती राजा, सम्राट् ; (पण्ह १, ४)। २ न. लग्न-मण्डप, चौरी ; (स ७८)।

चाउरक्क वि [**चातुरक्य**] चार वार परिणत। °**गोखीर** न [°**गोक्षीर**] चार वार परिणत किया हुआ गो-दुग्ध, जैसे कतिपय गौओं का दूध दूसरी गौओं को पिलाया जाय, फिर उनका अन्य गौओं को, इस तरह चार वार परिणत किया हुआ गो-दुग्ध ; (जीव ३)

चाउल पुं [**दे**] चावल, तण्डुल; (दे ३, ८; आचा २, १, ३ ; ६ ; ८ ; उप पृ २३१ ; ओघ ३४४ ; सुपा ६३६ ; रयण ६० ; कप्प)।

चाउल्लग न [**दे**] पुरुष का पुतला—, कृत्रिम पुरुष; (निचू १)।

चाउवन्न } वि [**चातुर्वर्ण**] १ चार वर्ण वाला, चार
चाउव्वण्ण } प्रकार वाला; २ पुं. साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय ; (ठा ५, २—पत्र ३२१); "चाउव्वणस्स समणसंघस्स" (पउम २०, १२०)। ३ न. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार मनुष्य-जाति ; (भग १५)।

चाउव्वेज्ज न [**चातुर्वैद्य**] १ चार प्रकार की विद्या—न्याय, व्याकरण, साहित्य और धर्म-शास्त्र। २ पुं. चौबे, ब्राह्मणों की एक अल्ल; "पउरचाउव्वेज्जलोएण" (महा)।

चाएंत देखो **चाय=**शक्।

चाँउंडा स्त्री [**चामुण्डा**] स्वनाम-ख्यात देवी ; (हे १, १७४)। °**काउअ** पुं [°**कामुक**] महादेव, शिव ; (कुमा)।

चाग देखो **चाय=**त्याग; (पंचव १)।

चागि देखो **चाइ** ; (उप पृ १०५)।

चाड वि [**दे**] मायावी, कपटी ; (दे ३, ८)।

चाडु पुंन [**चाटु**] १ प्रिय वाक्य ; २ खुशामद ; (हे १, ६७ ; प्राप्र)। °**यार** वि [°**कार**] खुशामदी ; (पण्ह १, २)।

चाडुअ न [**चाटुक**] ऊपर देखो ; कुमा)।

चाणक्क पुं [**चाणक्य**] १ राजा गुप्त का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री ; (मुद्रा १४४)। २ एक मनुष्य-जाति; (भवि):

चाणक्की स्त्री [**चाणक्यी**] लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी)

चाणिक्क देखो **चाणक्क** ; (आक)

चाणूर पुं [**चाणूर**] मल्ल-विशेष, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ; (पण्ह १, ४ ; पिंग)।

चामर पुंन [**चामर**] चँवर, बाल-व्यजन; (हे १, ६७)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**गाहि** वि [°**ग्राहिन्**] चामर बीजने वाला नौकर। स्त्री—°**णी** ; (भवि)। °**च्छायण** न [°**च्छायन**] स्वाति नक्षत्र का गोत्र; (इक)। °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] चामर-युक्त पताका ; (औप)। °**धार** वि [°**धार**] चामर बीजने वाला; (पउम ८०, ३८)।

चामरा स्त्री. ऊपर देखो; (औप; वसु ; भग ९, ३३)।

चामीअर न [**चामीकर**] सुवर्ण, सोना ; (पात्र ; सुपा ७७ ; णाया १, ४)।

चामुंडा देखो **चाँउंडा** ; (विसे ; पि)।

चाय देखो **चय**=शक्। वकृ—**चायंत, चाएंत**; सूत्र १, ३, १ ; वव ३)।

चाय देखो **चाव** ; (सुपा ५३० ; से १४, १५ ; पिंग)।

चाय पुं [**त्याग**] १ छोड़ना, परित्याग ; (प्रासू ८ ; पंचव १)। २ दान ; (सुर १, ६५)।

चायग, चायय पुं [**चातक**] पक्षि-विशेष, चातक-पक्षी; (सण ; पात्र ; दे ६, ६०)।

चार पुं [**चार**] १ गति, गमन ; "पायचारेण" (महा ; उप पृ १२३ ; रयण १५)। २ भ्रमण, परिभ्रमण ; (स १६)। ३ चर-पुरुष, जासूस ; (विपा १, ३ ; महा ; भवि)। ४ कारागार, कैदखाना ; (भवि)। ५ संचार, संचरण ; (औप)। ६ अनुष्ठान, आचरण ; (आचानि ४५ ; महा)। ७ ज्योतिष-क्षेत्र, आकाश; (ठा २, २)।

चार पुं [**दे**] १ वृक्ष-विशेष, पियाल वृक्ष, चिरौंजी का पेड़ ; (दे ३, २१ ; अणु ; पण्ण १६)। २ बन्धन-स्थान ; (दे ३, २१)। ३ इच्छा, अभिलाष ; (दे ३, २१; भवि ; सुपा ५११)। ४ न. फल-विशेष, मेवा विशेष ; (पण्ण १६)। °**क्कय** पुं [°**क्रय**] बेचने वाले की इच्छानुसार दाम देकर खरीदना ; (सुपा ५११)।

चारए देखो **चर**=चर्।

चारग दे [**चारक**] देखो **चार** ; (औप ; णाया १, १ ; पण्ह १, ३ ; उप ३५७ टी)। °**पाल** पुं [°**पाल**] जेलखाना का अध्यक्ष ; (विपा १, ६—पत्र ६५)। °**पालग** पुं [°**पालक**] कैदखाना का अध्यक्ष; जेलर ; (उप पृ ३३७)। °**भंड** न [°**भाण्ड**] कैदी को शिक्षा करने का उपकरण ; (विपा १, ६)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] कैदखाना का अध्यक्ष, जेलर ; (उप पृ ३३७)।

चारण पुं [**दे**] ग्रन्थि-च्छेदक, पाकेटमार, चोर-विशेष ; (दे ३, ६)।

चारण पुं [**चारण**] १ आकाश में गमन करने की शक्ति रखने वाले जैन मुनिओं की एक जाति ; (औप ; सुर ३, १५ ; अजि १६)। २ मनुष्य-जाति-विशेष, स्तुति करने वाली जाति, भाट ; (उप ७६८ टी ; प्रामा)। ३ एक जैन मुनि-गण ; (ठा ६)।

चारणिआ स्त्री [**चारणिका**] गणित-विशेष; (ओघ २१ टी)।

चारभड पुं [**चारभट**] शूर पुरुष, लड़वैया, सैनिक; (पण्ह १, २ ; १, ३ ; बृह १)।

चारय देखो **चारग** ; (सुपा २०७ ; स १५)।

चारवाय पुं [**दे**] ग्रीष्म ऋतु का पवन ; (दे ३, ६)।

चारहड देखो **चारभड** ; (धम्म १२ टी ; भवि)।

चारहडी स्त्री [**चारभटी**] शौर्यवृत्ति, सैनिक-वृत्ति ; (सुपा ४४१ ; ४४२ ; हे ४, ३६६)।

चारागार न [**चारागार**] कैदखाना, जेलखाना ; (सुर १६, १७)।

चारि स्त्री [**चारि**] चारा, पशुओं के खाने की चीज, घास आदि ; (ओघ २३८)।

चारि वि [**चारिन्**] १ प्रवृत्ति करने वाला ; (विसे २४३ टी ; उव ; आचा)। २ चलने वाला, गमन-शील ; (औप ; कप्पू)।

चारिअ वि [**चारित**] १ जिसको खिलाया गया हो वह ; (से २, २७)। २ विज्ञापित, जताया हुआ ; (पण्ण १७ —पत्र ४६७)।

चारिअ पुं [**चारिक**] १ चर पुरुष, जासूस ; (पण्ह १, २ ; पउम २६, ६५)। "चोरुत्ति चारिउत्ति य होइ जओ परदारगामित्ति" (विसे २३७३)। २ पंचायत का मुखिया पुरुष, समुदाय का अगुआ ; (स ४०६)।

चारित्त देखो **चरित्त**=चारित्र ; (ओघ ६ भा ; उप ६७७ टी)।

चारित्ति देखो **चरित्ति** ; (पुप्फ १५४)।

चारियव्व देखो **चर**=चर्।

चारी स्त्री [**चारी**] देखो **चारि**=चारि; (स ४८७; ओघ २३८ टी)।

चारु वि [**चारु**] १ सुन्दर, शोभन, प्रवर ; (उवा ; औप)। २ पुं. तीसरे जिनदेव का प्रथम शिष्य; (सम १५२)। ३ न. प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष ; (जीव १ ; राय)।

चारुइणय पुं [**चारुकिनक**] १ देश-विशेष; २ वि. उस देश का निवासी; (औप; अंत)। स्त्री—°**णिया** ; (औप)।

चारुणय पुं [**चारुनक**] ऊपर देखो ; (औप)। स्त्री—°**णिया** ; (औप ; णाया १, १)।

चारुवच्छि पुं. ब. [**चारुवत्सि**] देश-विशेष ; (पउम ६८, ६४)।

चारुसेणी स्त्री [**चारुसेनी**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

चाल सक [**चालय्**] १ चलाना, हिलाना, कँपाना। २ विनाश करना। चालेइ ; (उव; स ४७४; महा)। कर्म— चालिज्जइ ; (उव)। वकृ—**चालंत, चालेमाण** ; (सुपा २२४ ; जीव ३)। कवकृ— **चालिज्जमाण** ; (णाया १, १)। हेकृ—**चालित्तए** ; (उवा)।

चालण न [**चालन**] १ चलाना, हिलाना ; (रंभा)। २ विचार ; (विसे १००७)।

चालणा स्त्री [**चालना**] शङ्का, पूर्वपक्ष, आक्षेप ; (अणु ; बृह १)।

चालणिया स्त्री [**चालनिका**] नीचे देखो; (उप १३४ टी)।

चालणी स्त्री [**चालनी**] आखा, छानने का पात्र ; (आवम)।

चालवास पुं [**दे**] सिर का भूषण-विशेष ; (दे ३, ८)।

चालिय वि [**चालित**] चलाया हुआ, हिलाया हुआ ; "पुप्फवईए चालियाए सियसंकेयपडागाए" (महा)।

चालिर वि [**चालयितृ**] १ चलाने वाला। २ चलने वाला ; "खरपवणचाडुचालिरदवग्गिसरिसेण पेम्मेण" (वज्जा ७०)।

चाली स्त्री [**चत्वारिंशत्**] चालीस, ४० ; (उवा)।

चालीस स्त्रीन [**चत्वारिंशत्**] चालीस, ४० ; (महा ; पिंग)। स्त्री— °**सा** ; (ति ५)।

चालुक्क पुंस्त्री [**चौलुक्य**] १ चालुक्य वंश में उत्पन्न; २ पुं. गुजरात का प्रसिद्ध राजा कुमारपाल ; (कुमा)।

चाव सक [**चर्व्**] चबाना। कृ—**चावेयव्व** ; (उत्त १६, ३८)।

चाव पुं [**चाप**] धनुष, कार्मुक ; (स्वप्न ५५)।

चावल न [**चापल**] चपलता, चंचलता; (अभि २४१)।

चावल्ल न [**चापल्य**] ऊपर देखो ; (स ५२६)।

चावाली स्त्री [**चावाली**] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक गाँव ; (आवम)।

चाविय वि [**व्यावित**] मरवाया हुआ ; (पण्ह २, १)।

चावेडी स्त्री [**चापेटी**] विद्या-विशेष, जिससे दूसरे को तमाचा मारने पर बिमार आदमी का रोग चला जाता है; (वव ५)।

चावेयव्व देखो **चाव**=चर्व्।

चावोण्णय न [**चापोन्नत**] विमान-विशेष, एक देव-विमान ; (सम ३६)।

चास पुं [**चाष**] पक्षि-विशेष, स्वर्ण-चातक, लहटोरवा ; (पण्ह १, १ ; पगण १७ ; णाया १, १; ओघ ८४ भा ; उर १, १४)।

चास पुं [**दे**] चास, हल-विदारित भूमि-रेखा, खेती ; (दे ३, १)।

चाह सक [**वाञ्छ्**] १ चाहना, वाँछना। २ अपेक्षा करना। ३ याचना। चाहइ, चाहसि ; (भवि ; पिंग)।

चाहिय वि [**वाञ्छित**] १ वाञ्छित, अभिलषित ; २ अपेक्षित ; ३ याचित ; (भवि)।

चाहुआण पुं [**चाहुयान**] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश ; चौहान वंश; २ पुंस्त्री चौहान वंश में उत्पन्न; (सुपा ५५६)।

चि देखो **चिण**। कर्म—चिव्वइ, चिम्मइ, चिज्जंति ; (हे ४, २४३ ; भग)।

चिअ अ [**एव**] निश्चय को बतलाने वाला अव्यय ; "अणुबद्धं तं चिअ कामिणीणं" (हे २, १८४ ; कुमा ; गा १६, ४६ ; दं १)।

चिअ अ [**इव**] १—२ उपमा और उत्प्रेक्षा का सूचक अव्यय ; (प्राप)।

चिअ वि [**चित**] १ इकट्ठा किया हुआ ; (भग)। २ व्याप्त ; (सुपा २४१)। ३ पुष्ट, मांसल ; (उप ८७५ टी)।

चिआ स्त्री [**त्विष्**] कान्ति, तेज, प्रभा ; (षड्)।

चिआ देखो **चियगा** ; (सुपा २४१ ; महा)।

चिइ स्त्री [**चिति**] १ उपचय, पुष्टि, वृद्धि ; (पव २)। २ इकट्ठा करना ; (उत ६)। ३ बुद्धि, मेधा ; (पाअ)। ४ भींत वगैरः बनाना ; ५ चिता; (पण्ह १, १—पत्र ८)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] वन्दन, प्रणाम-विशेष ; (आव ३)।

चिइ देखो **चेइअ** ; (उप ५६७ ; चैत्य १२ ; पंचा १)।

चिइगा देखो **चियगा** ; (जं १)।

चिइच्छ सक [**चिकित्स्**] १ दवा करना, इलाज करना। २ शङ्का करना, संशय करना। चिइच्छइ ; (हे २, २१; ४, २४०)।

चिइच्छअ वि [**चिकित्सक**] १ दवा करने वाला, इलाज करने वाला ; २ पुं. वैद्य ; (मा ३३)।

चिइय देखो **चिंतिय** ; "जेण एस सुचरियतवोवि सुचिइयजिणिंदवयणोवि" (महा)।

चिउर पुं [**चिकुर**] १ केश, बाल ; (गा १८८)। २ पीत रङ्ग का गन्ध-द्रव्य-विशेष ; (पगण १७—पत्र ५२८ ; राय)।

चिंच) सक [**मण्डय्**] विभूषित करना, अलंकृत करना।
चिंचअ) चिंचइ, चिंचअइ ; (हे ४, ११५ ; षड्)।

चिंचइअ वि [**मण्डित**] शोभित, विभूषित, अलंकृत; (पउम १५, १३ ; सुपा ८८; महा ; पाअ; प्राप ; कुमा)।

चिंचइअ वि [**दे**] चलित, चला हुआ ; (दे ३, १३)।

चिंचणिआ) स्त्री [**दे**] देखो **चिंचिणी**; (कुमा; सुपा १२ ;
चिंचणिगा) ५८३)।
चिंचणी)

चिंचणी स्त्री [**दे**] घरट्टिका, अन्न पीसने की चक्की ; (दे ३, १०)।

चिंचा स्त्री [**चञ्चा**] १ तृण की बनाई हुई चटाई वगैरः। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] तृण का मनुष्य, जो पशु, पक्षी आदि को डराने के लिए खेतों में गाड़ा जाता है; (सुपा १२४)।

चिंचा स्त्री [**दे. चिञ्चा**] इम्ली का पेड़; (दे ३, १० ; पाअ ; विपा १, ६ ; सुपा १२४ ; ५८२ ; ५८३)।

चिंचिअ वि [**मण्डित**] भूषित, अलंकृत ; (कुमा)।

चिंचिणिआ) स्त्री [**दे**] इम्ली का पेड़; (ओघ २६ ;
चिंचिणिचिंचा) दे ३, १० ; सुपा ५८४ ; पाअ)।
चिंचिणी)

चिंचिल्ल सक [**मण्डय्**] विभूषित करना, अलंकृत करना। चिंचिल्लइ ; (हे ४, ११५ ; षड्)।

चिंचिल्लिअ वि [**मण्डित**] विभूषित, अलंकृत ; (पाअ; कुमा)।

चिंत सक [**चिन्तय्**] १ चिन्ता करना, विचार करना। २ याद करना। ३ ध्यान करना। ४ फीकिर करना, अफसोस करना। चिंतेइ, चिंतेमि ; (उव ; कुमा)। वकृ—**चिंतंत, चिंतेंत, चिंतिंत, चिंतयंत, चिंतयमाण, चिंतेमाण** ; (कुमा ; उव ; पउम १०, ४ ; अभि ५७ ; हे ४, ३२२ ; ३१०; सुर ४, २३)। कवकृ—**चिंतिज्जंत** ; (गा ६५१)। संकृ—**चिंतिउं, चिंतिऊण**; (महा; गा ३५८)। कृ—**चिंतणीय, चिंतियव्व, चिंतेयव्व** ; (उप ७३२; पंचा २; पउम ३१, ७७ ; सुपा ४४५)।

चिंत वि [**चिन्त्य**] चिन्तनीय, विचारणीय, विचार-योग्य; (उप ६८५)।

चिंतग वि [**चिन्तक**] चिन्ता करने वाला, विचारक ; (उप पृ ३३३ ; ३३६ टी)।

चिंतण न [**चिन्तन**] १ विचार, पर्यालोचन ; (महा)। २ स्मरण, स्मृति ; (उत्त ३२ ; महा)।

चिंतणा स्त्री [**चिन्तना**] ऊपर देखो ; (उप ९८६ टी)।

चिंतणिया स्त्री [**चिन्तनिका**] याद करना, चिन्तन करना; (ठा ५, ३)।

चिंतय वि [**चिन्तक**] चिन्ता करने वाला ; (स ५९५; निर १, १)।

चिंतव देखो **चिंत**=चिंतय्। चिंतवइ ; (कुमा ; भवि)।

चिंतविय वि [**चिन्तित**] जिसकी चिंता की गई हो वह ; (भवि)।

चिंता स्त्री [**चिन्ता**] १ विचार, पर्यालोचन ; (पाअ ; कुमा)। २ अफसोस, शोक, दिलगीरी ; (सुर २, १६१ ; सूअ २, १ ; प्रासू ६१)। ३ ध्यान ; (आव ४)। ४ स्मृति, स्मरण; (णंदि)। ५ इष्ट-प्राप्ति का संदेह ; (कुमा)। °**उर** वि [°**तुर**] शोक से व्याकुल ; (सुर ६, ११९)। °**दिट्ठ** वि [°**दृष्ट**] विचार-पूर्वक देखा हुआ ; (पाअ)। °**मइअ** वि [°**मय**] चिन्ता-युक्त ; "सअणे चिंतामइअं काऊण पिअं" (गा१३३)। °**मणि** पुं [°**मणि**] १ मनोवाञ्छित अर्थ को देनेवाला रत्न-विशेष, दिव्य मणि ; (महा)। २ वीतशोक नगरी का एक राजा ; (पउम २०, १४२)। °**वर** वि [°**पर**] चिन्ता-मग्न ; (पउम १०, १३)।

चिंतायग) वि [**चिन्तक**] चिन्ता करने वाला; (आवम)।
चिंतावग) स्त्री—°**गा** ; (सुपा २१)।

चिंतिय वि [**चिन्तित**] १ विचारित, पर्यालोचित ; (महा)। २ याद किया हुआ, स्मृत ; (गाया १, १ ; षड्)। ३ जिसको चिन्ता उत्पन्न हुई हो वह ; (जीव ३ ; औप)। ४ न. स्मरण, स्मृति ; (भग ६, ३३ ; औप)।

चिंतिर वि [**चिन्तयितृ**] चिन्ता-शील, चिन्ता करने वाला ; (श्रा २७; सण)।

चिंध न [**चिह्न**] १ चिन्ह, लाञ्छन, निशानी; (हे २,५० ; प्राप्र ; गाया १, १६)। २ ध्वजा, पताका ; (पाअ)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] निशानी रूप वस्त्र-खण्ड; (गाया १, १)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] १ दाढ़ी-मूँछ वगैरः पुरुष की निशानी वाला नपुंसक ; २ पुरुष का वेष धारण करने वाली स्त्री वगैरः; (ठा ३, १)।

चिंधाल वि [**चिह्नवत्**) चिह्न-युक्त, निशानी वाला; (पउम १०६, ७)।

चिंधाल वि [दे] १ रम्य, सुन्दर, मनोहर; २ मुख्य, प्रधान, प्रवर ; (दे ३, २२)।

चिंधिय वि [चिह्नित] चिह्न-युक्त ; (पि २६७)।

चिंफुल्लणी स्त्री [दे] स्त्री का पहनने का वस्त्र-विशेष, लहँगा; (दे ३, १३)।

चिकिच्छ देखो **चिइच्छ**। चिकिच्छामि ; (स ४८५)। कृ—**चिकिच्छिअव्व** ; (अभि १९७)।

चिकुर देखो **चिउर** ; (पि ५०६)।

चिक्क वि [दे] १ स्तोक, थोड़ा, अल्प; २ न. क्षुत्, छींक ; (षड्)।

चिक्कण वि [चिक्कण] चिकना, स्निग्ध ; (पण्ह १, १; सुपा ११)। २ निबिड, घना; "जं पावं चिक्कणं तए बद्धं" (सुर १४, २०६)। ३ दुर्भेद्य, दुःख से छूटने योग्य ; (पण्ह १,१)।

चिक्का स्त्री [दे] १ थोड़ी चीज; २ हलकी मेघ-वृष्टि, सूक्ष्म छींटा ; (दे ३, २१)।

चिक्कार पुं [चीत्कार] चिल्ला, हटचिंघाड़ ; (सण)।

चिक्किण देखो **चिक्कण** ; (कुमा)।

चिक्खअण वि [दे] सहिष्णु, सहन करने वाला ; (षड्)।

चिक्खल्ल पुं [दे] कर्दम, पंक, कीच; (दे ३, ११; हे ३, १४२ ; पण्ह १, १)।

चिक्खल्लय न [चिक्खल्लक] काठियावाड़ का एक नगर; (ती २)।

चिक्खिल्ल, **चिखल्ल**, **चिखिल्ल** [दे] देखो **चिक्खल्ल**; (गा ६७; ३२४; ४४५ ; ६८४ ; औप)।

चिगिचिगाय अक [चकचिकाय्] चकचकाट करना, चमकना। वकृ—**चिगिचिगायंत** ; (सुर २, ८६)।

चिगिच्छग देखो **चिइच्छअ** ; (विवे ३०)।

चिगिच्छण न [चिकित्सन] चिकित्सा, इलाज ; (उप १३५ टी)।

चिगिच्छय देखो **चिइच्छअ** ; (स २७८; णाया १, ५—पत्र १११)।

चिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] दवा, प्रतीकार, इलाज ; (स १७)। °**संहिया** स्त्री (°**संहिता**) चिकित्सा-शास्त्र, वैद्यक-शास्त्र ; (स १७)।

चिच्च वि [दे] १ चिपिट नासिका वाला, बैठी हुई नाक वाला; (दे ३, ६)। २ न. रमण, संभोग, रति; (दे ३, १०)।

चिच्च वि [त्याज्य] छोड़ने योग्य, परिहरणीय ; " खर-कम्माइं पि चिचाइं " (सुपा ४६८)।

चिच्चर वि [दे] चिपिट नासिका वाला ; (दे ३, ६)।

चिच्चा देखो **चय**=त्यज्।

चिच्चि पुं [चिच्चि] चीत्कार, चिल्लाहट, भयंकर आवाज; "चिचीसर—" (विपा १, २—पत्र २६)।

चिच्चि पुं [दे] हुताशन, अग्नि ; (दे ३, १०)।

चिट्ठ अक [स्था] बैठना, स्थिति करना। चिट्ठइ ; (हे १, १६)। भूका—चिट्ठिंसु ; (आचा)। वकृ—**चिट्ठंत, चिट्ठमाण** ; (कुमा ; भग)। संकृ—**चिट्ठिउं, चिट्ठिऊण, चिट्ठिण, चिट्ठित्ता, चिट्ठित्ताण** ; (कप्प ; हे ४, १६ ; राज ; पि)। हेकृ—**चिट्ठित्तए** ; (कप्प)। कृ—**चिट्ठणिज्ज, चिट्ठिअव्व** ; (उप २६४ टी ; भग)।

चिट्ठ देखो **चेट्ठ**। वकृ—**चिट्ठमाण** ; (पंचा २)।

चिट्ठइत्तु वि [स्थातृ] बैठने वाला ; (भग ११, ११ ; दसा ३)।

चिट्ठणा स्त्री [स्थान] स्थिति, बैठना, अवस्थान ; (बृह ६)।

चिट्ठा देखो **चेट्ठा** ; (सुर ४, २४५ ; प्रासू १२५)।

चिट्ठिय वि [चेष्टित] १ जिसने चेष्टा की हो वह ; (पण्ह १, ३ ; णाया १, १)। २ न. चेष्टा, प्रयत्न ; (पण्ह २, ४)।

चिट्ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित, रहा हुआ। २ न. अवस्थान, स्थिति ; (चंद २०)।

चिडिग पुं [चिटिक] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १)।

चिण सक [चि] १ इकट्ठा करना। २ फूल वगैरः तोड़ कर इकट्ठा करना। चिणइ ; (हे ४, २३८)। भूका—चिणिंसु ; (भग)। भवि—चिणिहिइ ; (हे ४, २४३)। कर्म—चिणिज्जइ ; (हे ४, २४२)। संकृ—**चिणिऊण, चिणेऊण** ; (षड्)।

चिण देखो **चण** ; (श्रा १८)।

चिणिअ वि [चित] इकट्ठा किया हुआ ; (सुपा ३२३ ; कुमा)।

चिणोट्ठी स्त्री [दे] गुंजा, घुंगची, लाल रत्ती, गुजराती में 'चणोठी' ; (दे ३, १२)।

चिण्ण वि [चीर्ण] १ आचरित, अनुष्ठित ; (उत्त १३)। २ अंगीकृत, आदृत ; (उत्त ३१)। ३ विहित, कृत ; (उत्त १३)।

चिण्ह न [**चिह्न**] निशानी, लांछन ; (हे २, ५० ; गउड) ।

चित्त सक [**चित्रय्**] चित्र बनाना, तसवीर खींचना । चित्तेइ; (महा) । कवकृ— **चित्तिज्जंत** ; (उप पृ ३४१) ।

चित्त न [**चित्त**] १ मन, अन्तःकरण, हृदय ; (ठा ४, १ ; प्रासू ६१ ; १५५) । २ ज्ञान, चेतना ; (आचा) । ३ बुद्धि, मति; (आव ४) । ४ अभिप्राय, आशय ; (आचा)। ५ उपयोग, ख्याल ; (अणु) । °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] दिल का जानकार; (उप पृ १७६) । °**निवाइ** वि [°**निपातिन्**] अभिप्राय के अनुसार बरतने वाला ; (आचा) । °**मंत** वि [°**वत्**] सजीव वस्तु ; (सम ३६ ; आचा) ।

चित्त देखो **चइत्त**=चैत्र ; (रंभा ; जं २ ; कप्प) ।

चित्त न [**चित्र**] १ छवि, आलेख्य, तसवीर ; (सुर १, ८६ ; स्वप्न १३१) । २ आश्चर्य, विस्मय ; (उत्त १३) । ३ काष्ठ-विशेष ; (अनु ५) । ४ वि. विलक्षण, विचित्र ; (गा ६१२ ; प्रासू ४२) । ५ अनेक प्रकार का, विविध, नानाविध ; (ठा १०) । ६ अद्भुत, आश्चर्य-जनक ; (विपा १, ६ ; कप्प) । ७ कबरा, चितकबरा ; (णाया १, ८) । ८ पुं. एक लोकपाल ; (ठा ४, १—पत्र १६७) । ९ पर्वत-विशेष ; (पण्ह १, ५—पत्र ६४)। १० चित्रक, चित्ता, श्वापद-विशेष ; (णाया १, १—पत्र ६५) । ११ नक्षत्र-विशेष, चित्रा नक्षत्र, "हत्थो चित्तो य तहा, दस बुद्धिकराइं नाणस्स" (सम १७) । °**उत्त** पुं [°**गुप्त**] भरतक्षेत्र के एक भावी जिन-देव ; (सम १५४) । °**कणगा** स्त्री [°**कनका**] देवी-विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी ; (ठा ४, १) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] आलेख्य, छवि, तसवीर ; (गा ६१२) । °**कर** देखो °**गर** ; (अणु) । °**कह** वि [°**कथ**] नाना प्रकार की कथाएं कहने वाला ; (उत्त ३) । °**कूड** पुं [°**कूट**] १ सीतानदी के उत्तर किनारे पर स्थित एक वक्षस्कार-पर्वत ; (जं ४) । २ पर्वत-विशेष ; (पउम ३३, ६) । ३ न. नगर-विशेष, जो आजकल मेवाड़ में "चितौड़" नाम से प्रसिद्ध है ; (रयण ६४) । ४ शिखर-विशेष ; (ठा २, ३) । °**क्खरा** स्त्री [°**ाक्षरा**] छन्द-विशेष ; (अजि २७) । °**गर** पुं [°**कर**] चित्रकार, चितेरा ; (सुर १, १०४; णाया १, ८) । °**गुत्ता** स्त्री [°**गुप्ता**] १ देवी-विशेष, सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १)। २ दक्षिण रुचक पर्वत पर बसने वाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष ; (ठा ८) । °**पक्ख** पुं [°**पक्ष**] १ वेणु-देव-नामक इन्द्र का एक लोकपाल, देव-विशेष ; (ठा ४, १)। २ क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष ; (जीव १) । °**फल**, °**फलग**, °**फलय** न [°**फलक**] तसवीर वाला तख्ता ; (महा ; भग १५ ; पि ५१६) । °**भित्ति** स्त्री [°**भित्ति**] १ चित्र वाली भींत; २ स्त्री की तसवीर ; (दस ८) । °**यर** देखो °**गर**; (णाया १, ८) । °**रस** पुं [°**रस**] भोजन देने वाले कल्पवृक्षों की एक जाति ; (सम १७ ; पउम १०२, १२२) । °**लेहा** स्त्री [°**लेखा**] छन्द-विशेष ; (अजि १३) । °**संभूइय** न [°**संभूतीय**] चित्र और संभूत नामक चाण्डाल-विशेष के वृत्तान्त वाला उत्तराध्ययनसूत्र का एक अध्ययन ; (उत्त १३) । °**सभा** स्त्री [°**सभा**] तसवीर वाला गृह ; (णाया १, ८) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] चित्र-गृह ; (हेका ३३२) ।

चित्तंग पुं [**चित्राङ्ग**] पुष्प देने वाले कल्प-वृक्षों की एक जाति ; (सम १७) ।

चित्तग देखो **चित्त**=चित्र ; (उप पृ ३०) ।

चित्तट्ठिअ वि [**दे**] परितोषित, खुश किया हुआ ; (दे ३, १२) ।

चित्तदाउ पुं [**दे**] मधु-पटल, मधपुड़ा ; (दे ३, १२) ।

चित्तपरिच्छेय वि [**दे**] लघु, छोटा ; (भग ७, ६) ।

चित्तय देखो **चित्त**=चित्र ; (पाअ) ।

चित्तल वि [**दे**] १ मण्डित, विभूषित ; २ रमणीय, सुन्दर ; (दे ३, ४) ।

चित्तल वि [**चित्रल**] १ चितला, कबरा, चितकबरा ; (पाअ) । २ जंगली पशु-विशेष, हरिण के आकार वाला द्विखुरा पशु-विशेष ; (जीव १ ; पण्ह १, १) ।

चित्तलि पुंस्त्री [**चित्रलिन्**] साँप की एक जाति; (पण्ण १)।

चित्तलिअ वि [**चित्रलित, चित्रित**] चित्र-युक्त किया हुआ; "पढम व्विअ दिअहद्धे कुड्डो रेहाहिं चित्तलिओ" (गा २०८)।

चित्तविअअ वि [**दे**] परितोषित ; (षड्) ।

चित्ता स्त्री [**चित्रा**] १ नक्षत्र-विशेष; (सम २)। २ देवी-विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी; (ठा ४, १)। ३ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की स्त्री, देवी-विशेष ; (ठा ४, १—पत्र २०४) । ४ ओषधि-विशेष ; (सुर १०, २२३ ; पण्ण १७) ।

चित्ति पुं [**चित्रिन्**] चित्रकार, चितेरा; (कम्म १, २३)।
चित्तिअ वि [**चित्रित**] चित्र-युक्त किया हुआ ; (औप ; कप्प; उप ३६१ टी ; दे १, ७५)।
चित्तिया स्त्री [**चित्रिका**] स्त्री-चिता, श्वापद-विशेष की मादा; (पराग ११)।
चित्ती स्त्री [**चैत्री**] चैत्र मास की पूर्णिमा; (इक)।
चिद्दविअ } वि [**दे**] निर्णाशित, विनाशित (दे ३,
चिद्दाविअ } १३ ; पाअ ; भवि)।
चिन्न देखो **चिण्ण** ; (सुपा ४; सण ; भवि)।
चिप्पिडय पुं [**दे**] अन्न-विशेष ; (दसा ६)।
चिप्पिण पुं [**दे**] १ केदार, क्यारी ; २ क्यारी वाला प्रदेश; ३ किनारे का प्रदेश, तट-प्रदेश ; (भग ५, ७)।
चिबुअ न [**चिबुक**] होठ के नीचे का अवयव; (कुमा)।
चिब्भड न [**चिर्भिट**] खीरा, ककड़ी फल-विशेष; गुजराती में " चीभडुं "; (दे ६, १४८)।
चिब्भडिया स्त्री [**चिर्भिटिका**] १ वल्ली-विशेष, ककड़ी का गाछ। २ मत्स्य की एक जाति ; (जीव १)।
चिब्भिड देखो **चिब्भड** ; (सुपा ६३० ; पाअ)।
चिमिट्ठ } वि [**चिपिट**] चपटा, बैठा हुआ (नाक);
चिमिढ } (णाया १, ८; पि २०७; २४८)।
चिमिण वि [**दे**] रोमश, रोमाञ्चित, पुलकित; (दे ३, ११; षड्)।
चियका } स्त्री [**चिता**] मुर्दे को फूंकने के लिए चुनी हुई
चियगा } लकड़ियों का ढेर; (पराह १,३—पत्र ४५ ; सुपा ६५७ ; स ४१६)।
चियत्त देखो **चत्त** ; (भग २, ५ ; १०, २ ; कप्प ; निचू १)।
चियत्त वि [**दे**] १ अभिमत, सम्मत ; (ठा ३, ३)। २ प्रीतिकर, राग-जनक ; (औप)। ३ न. प्रीति, रुचि; ४ अप्रीति का अभाव ; (ठा ३, ३—पत्र १४७)।
चियया देखो **चियगा** ; (पउम ६२, २३)।
चियाग } देखो **चाय**=त्याग ; (ठा ५, १; सम १६)।
चियाय }
चिर न [**चिर**] १ दीर्घ काल, बहुत काल ; (स्वप्न ८३ ; गा १४७)। २ विलम्ब, देरी ; (गा ३४)। ३ वि. दीर्घ काल तक रहने वाला ; " हियइच्छियपियलंभा चिरा सया कस्स जायंति " (वज्जा ५२)। °**आरअ** वि [°**कारक**] विलम्ब करने वाला; (गा ३४)। °**जीवि** वि [°**जीविन्**] दीर्घ काल तक जीने वाला; (पि ५६७)। °**जीविअ** वि [°**जीवित**] दीर्घ काल तक जीता हुआ, वृद्ध; (वाअ २, ३४)। °**ट्ठिइ**, °**ट्ठिइय**, °**ट्ठिईय** वि [°**स्थितिक**] लम्बा आयुष्य वाला, दीर्घ काल तक रहने वाला ; (भग ; सूअ १, ५, १)। " एयाइँ फासाइँ फुसंति बालं, निरंतरं तत्थ चरट्ठिईयं " (सूअ १, ५, २)। °**राअ** पुं [°**रात्र**] बहु काल, दीर्घ काल ; (आचा)।
चिर अक [**चिरय्**] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। चिरअदि (शौ); (पि ४६०)।
चिरं अ [**चिरम्**] दीर्घ काल तक, अनेक समय तक ; (स्वप्न २६ ; जी ४६)। °**तण** वि [°**तन**] पुराना, बहुत काल का ; (महा)।
चिरडी स्त्री [**दे**] वर्ण-माला, अक्षरावली ; " चिरडिंपि अयाणंता लोआ लोएहिं गोरवब्भहिआ " (दे १, ६१)।
चिरड्डिहिल्ल [**दे**] देखो **चिरिड्डिहिल्ल** ; (पाअ)।
चिरया स्त्री [**दे**] कुटी, झोपड़ी ; (दे ३, ११)।
चिरस्स अ [**चिरस्य**] बहुत काल तक ; (उत्तर १७६ ; कुमा)।
चिराअ देखो **चिर**=चिरय्। चिरायइ ; (स १२६)। चिराअसि ; (मै ६२)। भवि—चिराइस्सं; (गा २०)। वकृ—**चिराअमाण** ; (नाट—मालती २७)।
चिराइय वि [**चिरादिक**] पुराना, प्राचीन ; (णाया १, १ ; औप)।
चिराईय वि [**चिरातीत**] पुराना, प्राचीन; (विपा १,१)।
चिराणय (अप) वि [**चिरन्तन**] पुरातन, प्राचीन; (भवि)।
चिरादण वि [**चिरन्तन**] ऊपर देखो; (बृह ३)।
चिराव अक [**चिरय्**] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। ३ सक. विलम्ब कराना, रोक रखना चिरावइ; (भवि)। चिरावेह; (काल)। " मा णे चिरावेहि" (पउम ३, १२६)।
चिराविय वि [**चिरायित**] १ जिसने विलम्ब किया हो वह; २ विलम्बित, रोका गया। ३ न. विलम्ब, देरी ; "भणिओ चंदाभाए किं अज्ज चिरावियं सामि ! " (पउम १०५, १०१)।
चिरिंचिरा स्त्री [**दे**] जलधारा, वृष्टि ; (दे ३, १३)।
चिरिक्का स्त्री [**दे**] १ पानी भरने का चर्म-भाजन, मशक; २ अल्प वृष्टि ; ३ प्रातः-काल, सुबह ; (दे ३, २१)।
चिरिचिरा [**दे**] देखो **चिरिंचिरा** ; (दे ३, १३)।

चिरिडी देखो **चिरडी** ; (गा १६१ अ) ।

चिरिंड्डिहिल्ल न [**दे**] दधि, दही ; (दे ३, १४) ।

चिरिहिट्टी स्त्री [**दे**] गुञ्जा; घुंगची, लाल रत्ती ; (दे ३, १२) ।

चिलाअ पुं [**किरात**] १ अनार्य देश-विशेष; २ किरात देश में रहने वाली म्लेच्छ-जाति, भिल्ल, पुलिंद; (हे १, १८३ ; २५४ ; पण्ह १, १ ; औप ; कुमा) । ३ धन सार्थवाह का एक दास—नौकर; (णाया १, १८) ।

चिलाइया स्त्री [**किरातिका**] किरात देश की रहने वाली स्त्री ; (णाया १, १) ।

चिलाई स्त्री [**किराती**] ऊपर देखो ; (इक) । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] एक दासी-पुत्र और जैन-महर्षि ; (पडि ; णाया १, १८) ।

चिलिचिलिआ स्त्री [**दे**] धारा, वृष्टि; (षड्) ।

चिलिचिल्ल, **चिलिच्चिल**, **चिलिच्चील** वि [**दे**] आर्द्र, गिला; (पण्ह १, ३—पत्र ४५ ; दे ३, १२) ।

चिलिण [**दे**] देखो **चिलीण** ; "छक्कायसंजमम्मि अ चिलिणे सेहन्नहाभावो" (ओघ १६५) ।

चिलिमिणी, **चिलिमिलिगा**, **चिलिमिलिया**, **चिलिमिली** स्त्री [**दे**] यवनिका, परदा, आच्छादन-पट; (ओघ ६४ भा ; सूअ २, २, ४८; कस ; ओघ ७८ ; ८०) ।

चिलीण न [**दे**] अशुचि, मैला, मल-मूत्र ; "सज्जंति चिलीणे मच्छियाओ घणचंदणं मोत्तुं" (उप १०३१ टी) ।

चिल्ल पुं [**दे**] १ बाल, बच्चा, लड़का ; (दे ३, १०) । २ चेला, शिष्य ; (आवम) ।

चिल्ल पुं [**चिल्ल**] १ वृक्ष-विशेष ; (राज) । २ न. पुष्प-विशेष ;

"पूयं कुणंति देवा, कंचणकुसुमेसु जिणवरिंदाणं।
इह पुण चिल्लदलेसुं, नरेण पूया विरइयव्वा"
(पउम ६६, १६) ।

चिल्लअ न [**दे**] देदीप्यमान, चमकता ; "मंडणोड्डण-प्पगारएहिं केहिं केहिंवि अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं" (अजि २८ ; औप) ।

चिल्लग [**दे**] देखो **चिल्लिय** ; (पण्ह १, ४—पत्र ७१ टी) ।

चिल्लड [**दे**] देखो **चिल्लल** (दे); (आचा २, ३, ३) ।

चिल्लणा स्त्री [**चिल्लणा**] एक सती स्त्री, राजा श्रेणिक की पत्नी ; (पडि) ।

चिल्लल पुं [**चिल्वल**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ उस देश का निवासी ; (इक) ।

चिल्लल पुंस्त्री [**दे**] १ श्वापद पशु-विशेष, चित्ता ; (पण्ह १, १—पत्र ७ ; णाया १, १—पत्र ६५) । स्त्री—°**लिया**; (पण्ण ११) । २ न. कादा वाला जलाशय, छोटा तलाव आदि; (णाया १, १—पत्र ६३) । ३ देदीप्यमान, चमकता ; (णाया १, १६—पत्र २११) ।

चिल्ला स्त्री [**दे**] चील, पक्षि-विशेष, शकुनिका ; (दे ३, ६ ; ८, ८ ; पाअ) ।

चिल्लिय वि [**दे**] १ लीन, आसक्त; (णाया १, १)। २ देदीप्यमान ; (णाया १, १ ; औप ; कप्प) ।

चिल्लिरि पुं [**दे**] मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (दे ३, ११) ।

चिल्लूर न [**दे**] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते है ; (दे ३, ११) ।

चिल्हय पुं [**दे**] चक्र-मार्ग, पहिये की लकीर, गुजराती में 'चीलो'; (सुपा २८०) ।

चिविट्ट, **चिविड** वि [**चिपिट**] चिपटा, बैठा या धँसा हुआ (नाक) ; "चिविडनासा" (पि २४८ ; पउम २७, ३२; गउड) ।

चिविडा स्त्री [**चिपिटा**] गन्ध-द्रव्य-विशेष ; (दे ३, ७१) ।

चिविढ देखो **चिविड** ; (सुर १३, १८१) ।

चिहुर पुं [**चिकुर**] केश, बाल ; (पाअ ; सुपा २८१) ।

ची, **चीअ** देखो **चेइअ** ; (हे १, १५१ ; सार्ध ५७ ; ६३) ।

चीअ न [**चिता**] मुर्दे को फूँकने के लिए चुनी हुई लकडियों का ढेर ; "चीए बंधुस्स व अट्ठिआइं रुअई समुच्चिणइ" (गा १०४) ।

चीइ देखो **चेइअ**; (सुर ३, ७५) ।

चीण वि [**चीन**] १ छोटा, लघु; "चीणचिमिढवंकभग्गणासं" (णाया १, ८—पत्र १३३) । २ पुं. म्लेच्छ देश-विशेष, चीन देश ; (पण्ह १, १ ; स ४४३) । ३ चीन देश का निवासी, चीना ; (पण्ह १, १) । ४ धान्य-विशेष,

व्रीहि का एक भेद ; (सरा)। "चीणाकूरं छलियातक्केण दिन्नं" (महा)। °पट्ट पुं [°पट्ट] चीन देश में होने वाला वस्त्र-विशेष ; (पराह १, ४)। °पिट्ठ न [°पिष्ट] सिन्दूर-विशेष ; (राय ; पराण १७)।

चीणंसु } पुं [**चीनांशु °क**] १ कीट-विशेष, जिसके
चीणंसुय } तन्तुओं से वस्त्र बनता है ; (बृह १)। २ चीन देश का वस्त्र-विशेष ; "चीणंसुसमूसियधयविराइयं" (सुपा ३४ ; अणु ; जं २)।

चीया स्त्री. देखो **चीअ** = चिता ; "चीयाए पक्खिविउं तत्तो उद्दीविओ जलणो" (सुर ६, ८८)।

चीर न [**चीर**] वस्त्र-खराड, कपड़े का टुकड़ा ; (ओघ ६३ भा ; श्रा १२ ; सुपा ३६१)। °**कंडूसगपट्ट** पुं [°**कण्डूसकपट्ट**] जैन साधुओं का एक उपकरण, रजोहरण का बन्धन-विशेष (निचू ५)।

चीरग पुं [**चीरक**] नीचे देखो ; (गच्छ २)।

चीरिय पुं [**चीरिक**] १ रास्ता में पड़े हुए चीथड़ों को पहनने वाला भिक्षुक; २ फटा-टूटा कपड़ा पहनने वाली एक साधु-जाति ; (णाया १, १५—पत्र १६३)।

चीरिया स्त्री [**चीरिका**] नीचे देखो ; (सुर ८, १८८)।

चीरी स्त्री [**चीरी**] १ वस्त्र-खराड, वस्त्र का टुकड़ा ; "तो तेण नियवत्थंचलाउ चीरीउ करेऊण" (सुपा ५८४)। २ क्षुद्र कीट-विशेष, झींगुर ; (कुमा ; दे १, २६)।

चीवट्टी स्त्री [**दे**] भल्ली, भाला, शस्त्र-विशेष ; (दे ३, १४)।

चीवर न [**चीवर**] वस्त्र, कपडा ; (सुर ८, १८८ ; ठा ५, २)।

चीहाडी स्त्री [**दे**] चीत्कार, चिल्लाहट, पुकार, हाथी की गर्जना ; (सुर १०, १८२)।

चीही स्त्री [**दे**] मुस्ता का तृण-विशेष ; (दे ३, १४ ; ६२)।

चु अक [**च्यु**] १ मरना, जन्मान्तर में जाना। २ गिरना। भवि—चइस्सामि; (कप्प)। संकृ—**चइऊण, चइत्ता, चइअ** ; (उत्त ६; ठा ८ ; भग)। कृ—**चइयव्व** ; (ठा ३, ३)।

चुअ अक [**श्चुत्**] झरना, टपकना। **चुअइ** ; (हे २, ७७)।

चुअ वि [**च्युत**] १ च्युत, मृत, एक जन्म से दूसरे जन्म में अवतीर्ण ; (भग ; महा ; ठा ३, १)। २ विनष्ट, "चुअकलिकलुसं" (अजि १८)। ३ भ्रष्ट, पतित ; (णाया १, ३)।

चुइ स्त्री [**च्युति**] च्यवन, मरण ; (राज)।

चुंचुअ पुं [**दे**] शेखर, अवतंस, मस्तक का भूषण ; (दे ३, १६)।

चुंचुअ पुं [**चुञ्चुक**] १ म्लेच्छ देश विशेष ; २ उस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति ; (इक)।

चुंचुण पुं [**चुञ्चन**] इभ्य जाति-विशेष, एक वैश्य-जाति ; (ठा ६—पत्र ३५८)।

चुंचुणिअ वि [**दे**] १ चलित, गत ; २ च्युत, नष्ट ; (दे ३, २३)।

चुंचुणिआ स्त्री [**दे**] १ गोष्ठी का प्रतिध्वनि ; २ रमण, रति, संभोग ; ३ इम्ली का पेड़ ; ४ द्यूत-विशेष, मुष्टि-द्यूत; ५ यूका, क्षुद्र कीट-विशेष ; (दे ३, २३)।

चुंचुमालि वि [**दे**] १ अलस, आलसी, दीर्घसूत्री ; (दे ३, १८)।

चुंचुलि पुं [**दे**] १ चञ्चु, चोंच ; २ चुलुक, पसर, एक हाथ का संपुटाकार ; (दे ३, २३)।

चुंचुलिअ वि [**दे**] १ अवधारित, निश्चित ; २ न. तृष्णा, सस्पृहता; (दे ३, २३)।

चुंचुलिपूर पुं [**दे**] चुलुक, चुल्लू, पसर ; (दे ३, १८)।

चुंछ वि [**दे**] परिशोषित, सुखाया हुआ ; (दे ३, १५)।

चुंछिअ वि [**दे**] सूखा हुआ, परिशोषित ; "चुंछियगल्लं एयं, सा भत्तारं हला कुणसु" (सुपा ३४६)।

चुंट सक [**चि**] फूल वगैरः को तोड़ कर इकट्ठा करना। वकृ—**चुंटंत** ; (सुपा ३३२)।

चुंढी स्त्री [**दे**] थोड़ा पानी वाला अ-खात जलाशय ; (णाया १, १—पत्र ३३)।

चुंपालय [**दे**] देखो **चुप्पालय** ;

"ताव य सेज्जासु ठिओ, चंदगइखेयरो निसासमए।
चुंपालएण पेच्छइ, निवडंतं रयणपज्जलियं"
(पउम २६, ८०)।

चुंब सक [**चुम्ब्**] चुम्बन करना। चुंबइ ; (हे ४, २३९)। वकृ—**चुंबंत** ; (गा १७६ ; ५१६)। कवकृ—**चुंबिज्जंत** ; (से १, ३२)। संकृ—**चुंबिवि** (अप) ; (हे ४, ४३९)। कृ—**चुंबिअव्व** ; (गा ४६५)।

चुंबण न [**चुम्बन**] चुम्बन, चुम्बा, चूमा ; (गा २१३; कप्पू)।

चुंबिअ वि [**चुम्बित**] १ चुम्बा लिया हुआ, कृत-चुम्बन; २ न. चुम्बन, चुम्बा; (दे ६, ६८)।

चुंबिर वि [**चुम्बितृ**] चुम्बन करने वाला; (भवि)।

चुंभल पुं [**दे**] शेखर, अवतंस, शिरो-भूषण; (दे ३, १६)।

चुक्क अक [**भ्रंश्**] १ चूकना, भूल करना। २ भ्रष्ट होना, रहित होना, वञ्चित होना। ३ सक. नष्ट करना, खण्डन करना। चुक्कइ; (हे ४, १७७; षड्)। "सो सव्वविरइवाई, चुक्कइ देसं च सव्वं च" (विसे २६८४)।

चुक्क वि [**भ्रष्ट**] १ चूका हुआ, भूला हुआ, विस्मृत; "चुक्कसंकेआ", "चुक्कविणअम्मि" (गा ३१८; १६५)। २ भ्रष्ट, वञ्चित, रहित; "दंसणमेत्तपसण्णे चुक्का सि सुहाण बहुआणं" (गा ४६५; चउ ३६; सुपा ८७)। ३ अनवहित, वे-ख्याल; (से १, ६)।

चुक्क पुं [**दे**] मुष्टि, मुट्ठी; (दे ३, १४)।

चुक्कार पुं [**दे**] आवाज, शब्द; (से १३, २५)।

चुक्कुड पुं [**दे**] छाग, बकरा, अज; (दे ३, १६)।

चुक्ख [**दे**] देखो **चोक्ख**; (सुक्त ४६)।

चुचुय } न [**चुचुक**] स्तन का अग्र भाग, थन का वृन्त;
चुच्चुय } (पण्ह १, ४; राय)।

चुच्छ वि [**तुच्छ**] १ अल्प, थोड़ा, हलका; २ हीन, जघन्य, नगण्य; (हे १, २०४; षड्)।

चुज्ज न [**दे**] आश्चर्य; (दे ३, १४; सट्टि ८३)।

चुडण न [**दे**] जीर्णता, सड़ जाना; (ओघ ३४६)।

चुडलिअ न [**दे**] गुरु-वन्दन का एक दोष, रजोहरण को अलात की तरह खड़ा रख कर वन्दन करना; (गुभा २५)।

चुडली [**दे**] देखो **चुडुली**; (पव २)।

चुडुप्प न [**दे**] १ खाल उतारना; (दे ३, ३)। २ घाव, घात; (गउड)। ३ चमड़ी, त्वचा; (पाअ)।

चुडुप्पा स्त्री [**दे**] त्वचा, चमड़ी, खाल; (दे ३, ३)।

चुडुली स्त्री [**दे**] उल्का, अलात, उल्मुक; (दे ३, १५; पाअ; सुर १३, १५६; स २४२)।

चुण सक [**चि**] चुनना, पक्षीओं का खाना। चुणइ; (हे ४,२३८)। "काओ लिंबोहलिं चुणइ" (सुक्त ८६)।

चुणअ पुं [**दे**] १ चाण्डाल; २ बाल, बच्चा; ३ छन्द, इच्छा; ४ अरुचि, भोजन की अप्रीति; ५ व्यतिकर, सम्बन्ध; ६ वि. अल्प, थोड़ा; ७ मुक्त, त्यक्त; ८ आघ्रात, सूँघा हुआ; (दे ३, २२)।

चुणिअ वि [**दे**] विधारित, धारण किया हुआ; (दे ३,१५)।

चुण्ण सक [**चूर्णय्**] चूरना, टुकड़े टुकड़ा करना। संकृ—**चुण्णिय**; (राज)।

चुण्ण पुंन [**चूर्ण**] १ चूर्ण, चूर, बुकनी, बारीक खण्ड; (बृह १; हे १, ८४; आचा)। २ आटा, पिसान; (आचा २, २, १)। ३ धूली, रज, रेणु; (दे ३,१७)। ४ गन्ध-द्रव्य की रज, बुकनी; (भग ३, ७)। ५ चूना; (हे १, ८४; विपा १,२)। ६ वशीकरणादि के लिए किया जाता द्रव्य-मिलान; (णाया १, १४)। °**कोसय** न [°**कोशक**] भक्ष्य-विशेष; (पण्ह २, ५)।

चुण्ण न [**चौर्ण**] पद-विशेष, गंभीरार्थक पद, महार्थक शब्द; (दसनि २)।

चुण्णइअ वि [**दे**] चूर्णाहत, चूरन से आहत; जिस पर चूर्ण फेंका गया हो वह; (दे ३, १७; पाअ)।

चुण्णा स्त्री [**चूर्णा**] छन्द-विशेष, वृत्त-विशेष; (पिंग)।

चुण्णाआ स्त्री [**दे**] कला, विज्ञान; (दे ३, १६)।

चुण्णासी स्त्री [**दे**] दासी, नौकरानी; (दे ३, १६)।

चुण्णि स्त्री [**चूर्णि**] ग्रन्थ की टीका-विशेष; (निचू)।

चुण्णिअ वि [**चूर्णित**] १ चूर चूर किया हुआ; (पाअ)। २ धूली से व्याप्त; (दे ३, १७)।

चुण्णिआ स्त्री [**चूर्णिका**] भेद-विशेष, एक तरह का पृथग्भाव, जैसे पिसान का अवयव अलग २ होता है; (पण्ण ११)।

चुद्दस देखो **चउ-द्दस**; (सुर ८, ११८)।

चुन्न देखो **चुण्ण**; (कुमा; ठा ३, ४; प्रासू १८; भाव २; पभा ३१)।

चुन्निअ देखो **चुण्णिअ**; (पण्ह २, ४)।

चुन्निआ देखो **चुण्णिआ**; (भास ७)।

चुप्प वि [**दे**] स-स्नेह, स्निग्ध; (दे ३, १५)।

चुप्पल पुं [**दे**] शेखर, अवतंस; (दे ३, १६)।

चुप्पलिअ न [**दे**] नया रंगा हुआ कपड़ा; (दे ३, १७)।

चुप्पालय पुं [**दे**] गवाक्ष, वातायन; (दे ३, १७)।

चुरिम न [**दे**] खाद्य-विशेष; (पव ४)।

चुलचुल अक [**चुलचुलाय्**] उत्कण्ठित होना, उत्सुक होना। वकृ—**चुलचुलंत**; (गा ४८१)।

चुलणी स्त्री [**चुलनी**] १ द्रुपद राजा की स्त्री; (णाया १, १६; उप ६४८ टी)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की माता;

(महा)। °पिय पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक मुख्य उपासक ; (उवा)।

चुलसी स्त्री [**चतुरशीति**] चौरासी, अस्सी और चार, ८४ ; (महा ; जी ४७)। "चुलसीए नागकुमारावाससयसहस्सेसु" (भग)।

चुलसीइ देखो **चुलसी** ; (पउम २०, १०२ ; जं २)।

चुलिआला स्त्री [**चुलियाला**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

चुलुअ पुंन [**चुलुक**] चुल्लु, पसर, एक हाथ का संपुटाकार ; (दे ३, १८ ; सुपा २१६ ; प्रासू ५७)।

चुलुचुल अक [**स्पन्द्**] फरकना, थोड़ा हिलना। चुलुचुलइ ; (हे ४, १२७)।

चुलुचुलिअ वि [**स्पन्दित**] १ फरका हुआ, कुछ हिला हुआ ; २ न. स्फुरण, स्पन्दन ; (पाअ)।

चुलुप्प पुं [**दे**] छाग, अज, बकरा ; (दे ३, १६)।

चुल्ल पुं [**दे**] १ शिशु, बालक ; २ दास, नौकर ; (दे ३, २२)। ३ वि. छोटा लघु ; (ठा २, ३)। °**ताय** पुं [°**तात**] पिता का छोटा भाई, चाचा ; (पि ३२५)। °**पिउ** पुं [°**पितृ**] चाचा, पिता का छोटा भाई ; (विपा १, ३)। °**माउया** स्त्री [°**मातृ**] १ छोटी माँ, माता की छोटी सपत्नी, विमाता-विशेष ; (उप २६४ टी ; णाया १, १ ; विपा १, ३)। २ चाची, पिता के छोटे भाई की स्त्री ; (विपा १, ३—पत्र ४०)। °**सयग**, °**सयय** पुं [°**शतक**] भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासकों में से एक ; (उवा)। °**हिमवंत** पुं [°**हिमवत्**] छोटा हिमवान् पर्वत, पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम १२ ; इक)। °**हिमवंतकूड** न [°**हिमवत्कूट**] १ क्षुद्र हिमवान् पर्वत का शिखर-विशेष; २ पुं. उसका अधिपति देव-विशेष; (जं४)। °**हिमवंतगिरिकुमार** पुं [°**हिमवद्गिरिकुमार**] देव-विशेष, जो क्षुद्र हिमवत्कूट का अधिष्ठायक है ; (जं ४)।

चुल्लग [**दे**] देखो **चोल्लक** ; (आक)।

चुल्लि } स्त्री [**चुल्लि, °ल्ली**] चूल्हा, जिसमें आग रख कर
चुल्ली } रसोई की जाती है वह; (दे १,८७; सुर २,१०३)।

चुल्ली स्त्री [**दे**] शिला, पाषाण-खण्ड ; (दे ३, १५)।

चुल्लोडय पुं [**दे**] बड़ा भाई; (दे ३, १७)।

चूअ पुं [**दे**] स्तन-शिखा, थन का अग्र भाग ; (दे३,१८)।

चूअ पुं [**चूत**] १ वृक्ष-विशेष, आम्र, आम का गाछ ; (गउड ; भग; सुर ३, ४८)। २ देव-विशेष ; (जीव ३)। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] विमान का अवतंस-विशेष ; (राय)। °**वडिंसा** स्त्री [°**ावतंसा**] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (इक ; जीव ३)।

चूआ स्त्री [**चूता**] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (इक ; ठा ४, २)।

चूड पुं [**दे**] चूड़ा, बाहु-भूषण, वलयावली ; (दे ३, १८ ; ७, ५२ ; ५६ ; पाअ)।

चूडा देखो **चूला**; (सुर २, २४२ ; गउड ; णाया १,१ ; सुपा १०४)।

चूडुल्लअ (अप) देखो **चूड** ; (हे ४, ३६५)।

चूर सक [**चूरय्, चूर्णय्**] खण्ड करना, तोड़ना, टुकड़े टुकड़ा करना। चूरेमि ; (धम्म ६ टी)। भवि—चूरइस्सं ; (पि ५२८)। वकृ—**चूरंत**; (सुपा २६१ ; ५६०)।

चूर (अप) पुंन [**चूर्ण**] चूर, भुरभुर ; "जिह गिरिसिंगहु पडिअ सिल, अन्नुवि चूरु करेइ" (हे ४, ३३७)।

चूरिअ वि [**चूर्ण, चूर्णित**] चूर चूर किया हुआ, टुकड़े टुकड़ा किया हुआ ; (भवि)।

चूल° देखो **चूला**। °**मणि** न [°**मणि**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)।

चूलअ [**दे**] देखो **चूड** ; (नाट)।

चूला स्त्री [**चूडा**] १ चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा ; (पाअ)। २ शिखर, टोंच; "अवि चलइ मेरुचूला" (उप ७२८ टी)। ३ मयूर-शिखा ; ४ कुक्कुट-शिखा ; ५ शेर की केसरा ; ६ कुंत वगैरः का अग्र भाग ; ७ विभूषण, अलंकार ;

"तिविहा य दव्वचूला, सच्चित्ता मीसगा य अच्चित्ता।
कुक्कुड सीह मोरसिहा, चूलामणि अग्गकुंतादी ॥
चूला विभूसणंति य, सिहरंति य होंति एगट्ठा" (निचू१)।

८ अधिक मास ; ६ अधिक वर्ष ; १० ग्रन्थ का परिशिष्ट ; (दसचू १)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] संस्कार-विशेष, मुण्डन ; (आवम)। °**मणि** पुंस्त्री [°**मणि**] १ सिर का सर्वोत्तम आभूषण विशेष, मुकुट-रत्न, शिरो-मणि ; (औप ; राय)। २ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ ; "तिलोयचूलामणि नमो ते" (धण १)।

चूलिय पुं [**चूलिक**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ उस देश का निवासी ; (पण्ह १, १)। ३ स्त्रीन. संख्या विशेष, चूलिकांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २, ४) स्त्री—°**या** ; (राज)।

चूलियंग न [**चूलिकाङ्ग**] संख्या-विशेष, प्रयुत को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; जीव ३) ।

चूलिया देखो **चूला** ; (सम ६६ ; सुर ३, १२ ; णंदि ; निचू १ ; ठा ४, ४) ।

चूव (अप) देखो **चूअ** ; (भवि) ।

चूह सक [**क्षिप्**] फेंकना, डालना, प्रेरना । चूहइ ; (षड्) ।

चे अ [**चेत्**] यदि, जो ; (उत्त १६) । "एवं च कओ तित्थं, न चइचेलोति को गाहो ?" (विसे २५८६) ।

चे देखो **चय**=त्यज् । चेइ ; (आचा) । संकृ --**चेच्चा** ; (कप्प ; औप) ।

चे } देखो **चि** । चेइ, चेअइ, चेए, चेअए ; (षड्) ।
चेअ }

चेअ अक [**चित्**] १ चेतना, सावधान होना, ख्याल रखना । २ सुध आना, स्मरण करना, याद आना । चेयइ ; (स ५३८) । ३ सक. जानना; ४ अनुभव करना । चेयए ; (आवम) ।

चेअ सक [**चेतय्**] १ ऊपर देखो । २ देना, अर्पण करना, वितरण करना । ३ करना, बनाना । "जो अंतरायं चेएइ" (सम ५१) । चेएइ, चेएसि, चेएमि ; (आचा) । वकृ —**चेते[ए]माण** ; (ठा ५, २—पत्र ३१४ ; सम ३६) ।

चेअ अ [**एव**] अवधारण-सूचक अव्यय, निश्चय बताने वाला अव्यय ; (हे २, १८४) ।

चेअ न [**चेतस्**] १ चेत, चेतना, ज्ञान , चैतन्य ; (विसे १६६१ ; भग १६) । २ मन, चित्त, अन्तःकरण ; (दस ५, १ ; ठा ६, २) ।

चेइ पुं [**चेदि**] देश-विशेष; (इक ; सत ६७ टी) । °**वइ** पुं [°**पति**] चेदि देश का राजा; (पिंग) ।

चेइ° } पुंन [**चैत्य**] १ चिता पर बनाया हुआ स्मारक, **चेइअ** } स्तूप, कबर वगैरः स्मृति चिह्न ; "मडयदाहेसु वा मडयथूभियासु वा मडयचेइएसु वा" (आचा २, २, ३) । २ व्यन्तर का स्थान, व्यन्तरायतन ; (भग ; उवा ; राय ; निर १, १ ; विपा १, १; २) । ३ जिन-मन्दिर, जिन-गृह, अर्हन्मन्दिर ; (ठा ४, २—पत्र ४३० ; पंचभा ; पंचा १२ ; महा ; द्र ४; २७) , "पडिमं कासी य चेइए रम्मे" (पव ७६) । ४ इष्ट देव की मूर्ति, अभीष्ट देवता की प्रतिमा ; "कल्लाणं मंगलं चेइयं पज्जुवासामो" (औप ; भग) । ५ अर्हत्प्रतिमा, जिन-देव की मूर्ति ; (ठा ३, १; उवा; पण्ह २, ३ ; आव २ ; पडि) , "बिइएणं उप्पाएणं नंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ, तहिं चेइयाइं वंदइ" (भग २०, ६), "जिणबिंबे मंगल-चेइयंति समयन्नुणो बिंति" (पव ७६) । ६ उद्यान, बगीचा ; "मिहिलाए चेइए वच्छे सीअच्छाए मणोरमे" (उत्त ६, ६) । ७ सभा-वृक्ष, सभा-गृह के पास का वृक्ष; ८ चबूतरा वाला वृक्ष ; ६ देवों का चिह्न भूत वृक्ष ; १० वह वृक्ष जहां जिनदेव को केवलज्ञान उत्पन्न होता है ; (ठा ८ ; सम १३; १५६) । ११ वृक्ष, पेड़ ; "वाएण हीरमाणम्मि चेइयम्मि मणोरमे" (उत्त ६, १०) । १२ यज्ञ स्थान ; १३ मनुष्यों का विश्राम स्थान ; (षड् ; हे २, १०७) । °**खंभ** पुं [°**स्तम्भ**] स्तूप, थूभ ; (सम ६३ ; राय ; सुज्ज १८) । °**घर** न [°**गृह**] जिन-मन्दिर, अर्हन्मन्दिर ; (पउम २, १२ ; ६४, २६) । °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] जिन-प्रतिमा-संबन्धी महोत्सव-विशेष; (धर्म ३) । °**थूभ** पुं [°**स्तूप**] जिन-मन्दिर के समीप का स्तूप ; (ठा ४, २; ज १) । °**दव्व** न [°**द्रव्य**] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-संबन्धी स्थावर या जंगम मिल्कत ; (वव ६ ; पंचभा ; उप ४०७ ; द्र ४) । °**परिवाडी** स्त्री [°**परिपाटी**] क्रम से जिन मन्दिरों की यात्रा ; (धर्म २) । °**मह** पुं [°**मह**] चैत्य-सबन्धी उत्सव; (आचा २, १, २) । °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] १ चबूतरा वाला वृक्ष, जिसके नीचे चौतरा बाँधा हो ऐसा वृक्ष ; २ जिन-देव को जिसके नीचे केवलज्ञान उत्पन्न होता है वह वृक्ष; ३ देवताओं का चिह्न भूत वृक्ष ; ४ देव-सभा के पास का वृक्ष ; (सम १३; १५६ ; ठा ८) । °**वंदण** न [°**वन्दन**] जिन-प्रतिमा की मन, वचन और काया से स्तुति; (पव १; संघ १; ३)। °**वंदणा** स्त्री [°**वन्दना**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (संघ १) । °**वास** पुं [°**वास**] जिन-मन्दिर में यतिओं का निवास ; (दंस) । °**हर** देखो °**घर**; (जीव १ ; पउम ६५ , ६२ ; सुपा १३ ; द्र ६५ ; उवर १६०) ।

चेइअ वि [**चेतित**] कृत; विहित ; "तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं चेइआइं भवंति" (आचा २, १, २, २), "चेइअं कडमेगट्ठं" (बृह २; कस) ।

चेंध देखो **चिंध** ; (प्राप्र) ।

चेच्चा देखो **चे**=त्यज् ।

चेट्ठ अक [**चेष्ट्**] प्रयत्न करना, आचरण करना। वकृ—**चेट्ठमाण** ; (काल)।

चेट्ठ देखो **चिट्ठ**=स्था ; (दे १, १७४)।

चेट्ठण न [**स्थान**] स्थिति, अवस्थान ; (वव ४)।

चेट्ठा स्त्री [**चेष्टा**] प्रयत्न, आचरण; (ठा ३, १ ; सुर २, १०६)।

चेट्ठिय देखो **चिट्ठिय**=चेष्टित ; (औप ; महा)।

चेड पुं [**दे**] बाल, कुमार, शिशु ; (दे ३, १० ; गाया १, २ ; बृह १)।

चेड } **चेडग** } **चेडय** } पुं [**चेट, °क**] १ दास, नौकर ; (औप ; कप्प)। २ नृप-विशेष, वैशालिका नगरी का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा; (आचू १; भग ७, ६; महा)। ३ मैला देवता, देव की एक जघन्य जाति ; (सुपा २१७)।

चेडिआ स्त्री [**चेटिका**] दासी, नौकरानी; (भग ६, ३३ ; कप्पू)।

चेडी स्त्री [**चेटी**] ऊपर देखो ; (आवम)।

चेडी स्त्री [**दे**] कुमारी, बाला, लड़की; (पाअ)।

चेत्त न [**चैत्य**] चैत्य-विशेष ; (षड्)।

चेत्त पुं [**चैत्र**] १ मास-विशेष, चैत मास ; (सम २६ ; हे १, १५२)। २ जैन मुनिओं का एक गच्छ ; (बृह ६)।

चेदि देखो **चेइ** ; (सण)।

चेदीस पुं [**चेदीश**] चेदि देश का राजा ; (सण)।

चेयग वि [**चेतक**] दाता, देने वाला ; (उप ६५७)।

चेयण पुं [**चेतन**] १ आत्मा, जीव, प्राणी ; (ठा ४, ४)। २ वि. चेतना वाला, ज्ञान वाला ; "भुवि चेयणं च किमरूवं" (विसे १८४५)।

चेयणा स्त्री [**चेतना**] ज्ञान, चेत, चैतन्य, सुध, ख्याल; (आव ६ ; सुर ४, २४५)।

चेयण्ण } **चेयन्न** } न [**चैतन्य**] ऊपर देखो ; (विसे ४७५ ; सुपा २० ; सुर १४, ८)।

चेयस देखो **चेअ**=चेतस् ;

"ईआदासेण आविट्ठे, कलुसाविलचेयसे।
जे अंतरायं चेएइ, महामोहं पकुव्वइ" (सम ५१)।

चेया देखो **चेयणा** ; "पत्तेयमभावाओ, न रेणुतेल्लं व समुदए चेया" (विसे १६५२)।

चेल } **चेलय** } न [**चेल**] वस्त्र, कपड़ा ; (आचा ; औप)। **°कण्ण** न [**°कर्ण**] व्यजन विशेष, एक तरह का पंखा ; (स ५४६)। **°गोल** न [**°गोल**] वस्त्र का गेंद, कन्दुक ; (सूअ १, ४, २)। **°हर** न [**°गृह**] तम्बू, पट-मण्डप, रावटी ; (स ५३७)।

चेलय न [**दे**] तुला-पात्र; "दिट्ठीतुलाए भुवणं, तुलंति जे चित्तचेलए निहियं" (वज्जा ५६)।

चेलिय देखो **चेल**; "रयणकंचणचेलियबहुधन्नभरभरिया" (पउम ६६, २५ ; आचा)।

चेलुंप न [**दे**] मुशल, मूषल ; (दे ३, ११)।

चेल्ल } **चेल्लअ** } [**दे**] देखो **चिल्ल** (दे) ; (पउम ६७, १३; १६ ; स ४६६ ; दसनि १ ; उप २६८)।

चेल्लग } **चेल्लय** } [**दे**] देखो **चिल्लग** ; (पण्ह १, ४—पत्र ६८; ती ३३)।

चेव अ [**एव, चैव**] १ अवधारण-सूचक अव्यय, निश्चय-दर्शक शब्द ; "जो कुणइ परस्स दुहं पावइ तं चेव सो अणंत-गुणं" (प्रासू २६ ; महा)। "अवहारणे चेव-सद्दो यं" (विसे ३५६५)। २ पाद-पूरक अव्यय ; (पउम ८, ८८)।

चेव अ [**इव**] सादृश्य-द्योतक अव्यय ; "पेच्छइ गणहर-वसहं सरयरविं चेव तेएणं" (पउम ३, ४; उत्त १६, ३)।

चो° देखो **चउ** ; (हे १, १७१ ; कुमा ; सम ६० ; औप ; भग ; गाया १, १ ; १४ ; विपा १, १ ; सुर १४, ६७)। **°आला** स्त्री [**°चत्वारिंशत्**] चालीस और चार, ४४ ; (विसे २३०४)। **°वट्ठि** स्त्री [**°षष्टि**] चौसठ, ६४ ; (कप्प)। **°वत्तरि** स्त्री [**°सप्तति**] सतर और चार, ७४ ; (सम ८४)।

चोअ सक [**चोदय्**] १ प्रेरणा करना। २ कहना। चोएइ; (उव ; स १५)। कवकृ—**चोइज्जंत, चोइज्जमाण**; (सुर २, १० ; गाया १, १६)। संकृ—**चोइऊण** ; (महा)।

चोअअ वि [**चोदक**] प्रेरक, प्रश्न-कर्ता, पूर्व-पक्षी ; (अणु)।

चोअण न [**चोदन**] प्रेरण, प्रेरणा ; (भत्त ३६ ; उत्त २८)।

चोइअ वि [**चोदित**] प्रेरित; (स १५ ; सुपा १५० ; औप; महा)।

चोक्क [**दे**] देखो **चुक्क**=(दे) ; (महा)।

चोक्ख वि [**दे**] चोखा, शुद्ध, शुचि, पवित्र ; (णाया १, १ ; उप १४२ टी ; बृह १ ; भग ६, ३३ ; राय ; औप)।
चोक्खा स्त्री [**चोक्षा**] परिव्राजिका-विशेष, इस नाम की एक संन्यासिनी ; (णाया १, ८)।
चोज्ज न [**दे**] आश्चर्य, विस्मय ; (दे ३, १४ ; सुर ३, ४ ; सुपा १०३ ; सद्दि १५६ ; महा)।
चोज्ज न [**चौर्य**] चोरी, चोर-कर्म ; "तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबंभसेवणं " (उत्त ३५, ३ ; णाया १, १८)।
चोज्ज न [**चोद्य**] १ प्रश्न, पृच्छा ; २ आश्चर्य, अद्भुत; ३ वि. प्रेरणा-योग्य ; (गा ४०६)।
चोट्टी स्त्री [**दे**] चोटी, शिखा ; (दे ३, १)।
चोड्ड न [**दे**] वृन्त, फल और पत्ती का बन्धन ; (विक २८)।
चोढ पुं [**दे**] बिल्व, वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़; (दे ३, १६)।
चोण्ण न [**दे**] १ कलह, झगड़ा ; (निचू २०)। २ काष्ठानयन आदि जघन्य कर्म ; (सूअ २, २)।
चोत्त } पुंन [**दे**] प्रतोद, प्राजन-दण्ड; (दे ३, १६; पाअ)।
चोत्तअ }
चोद [**दे**] देखो **चोय** ; (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।
चोदग देखो **चोअअ** ; (ओघ ४ भा)।
चोप्पड सक [**म्रक्ष्**] स्निग्ध करना, घी-तेल वगैरः लगाना। चोप्पडइ; (हे ४, १६१)। वकृ—**चोप्पडमाण** ; (कुमा)।
चोप्पड न [**म्रक्षण**] घी, तैल वगैरः स्निग्ध वस्तु ; "गेह-व्वयस्स जोग्गं किंचिवि कणचोप्पडाईयं " (सुपा ४३०)।
चोप्पाल न [**दे**] मत्तवारण, वरण्डा; (जं २)।
चोप्फुच्च वि [**दे**] स्निग्ध, स्नेह वाला, प्रेम-युक्त; (दे ३, १५)।
चोय } न [**दे**] त्वचा, छाल; (पण्ह २, ५—पत्र १५० टी)। २ आम वगैरः का रुंछा ; (निचू १५ ; आचा २, १, १०)। ३ गन्ध-द्रव्य विशेष ; (अणु ; जीव १ ; राय)।
चोयग }
चोयग देखो **चोअअ** ; (णंदि)।
चोयणा स्त्री [**चोदना**] प्रेरणा ; (स १५ ; उप ६४८ टी)।
चोर पुं [**चोर**] तस्कर, दूसरे का धन चुराने वाला; (हे ३, १३४ ; पण्ह १, ३)। °**कीड** पुं [°**कीट**] विष्ठा में उत्पन्न होता कीट ; (जी १७)।

चोरंकार पुं [**चौर्यकार**] चोर, तस्कर ; " चोरंकारकरं जं थूलमदत्तं तयं वज्जे " (सुपा ३३४)।
चोरग वि [**चोरक**] १ चुराने वाला। २ पुंन. वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।
चोरण न [**चोरण**] १ चोरी, चुराना ; (सुर ८, १२२)। २ वि. चोर, चोरी करने वाला ; (भवि)।
चोरली स्त्री [**दे**] श्रावण मास की कृष्ण चतुर्दशी ; (दे ३, १६)।
चोराग पुं [**चोराक**] संनिवेश-विशेष, इस नाम का एक छोटा गाँव ; (आवम)।
चोरासी } देखो **चउरासी** ; (पि ४३६ ; ४४६)।
चोरासीइ }
चोरिअ न [**चौर्य**] चोरी, अपहरण; (हे २, १०७ ; ठा १, १ ; प्रासू ६५ ; सुपा ३७६)।
चोरिअ वि [**चौरिक**] १ चोरी करने वाला ; (पव ४१)। २ पुं. चर, जासूस ; (पण्ह १, १)।
चोरिअ वि [**चोरित**] चुराया हुआ ; (विसे ८५७)।
चोरिआ स्त्री [**चौर्य,चौरिका**] चोरी, अपहरण; (गा २०६; षड् ; हे १, ३५ ; सुर ६ , १७८)।
चोरिक्क न [**चौरिक्य**] ऊपर देखो ; (पण्ह १, ३)।
चोरी स्त्री [**चौरी**] चोरी, अपहरण ; (श्रा २७)।
चोल वि [**दे**] १ वामन, कुब्ज ; (दे ३, १८)। २ पुं. पुरुष-चिह्न, लिङ्ग ; (पव ६१)। ३ न. गन्ध-द्रव्य विशेष ; मञ्जिष्ठा ; (उर ६, ४)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] जैन मुनि का कटी-वस्त्र ; (ओघ ३४)। °**य** पुं [°**ज**] मजीठ का रंग ; (उर ६, ४)।
चोल पुं [**चोल**] देश-विशेष, द्रविड़ और कलिङ्ग के बीच का देश ; (पिंग ; सण)।
चोलअ न [**दे**] कवच, वर्म ; (नाट)।
चोलअ } न [**चौल**, °**क**] संस्कार-विशेष, मुण्डन; "विहिणा चूलाकम्मं बालाणं चोलयं नाम " (आवम ; पण्ह १, २)।
चोलग }
चोलुक्क देखो **चालुक्क** ; (ती ५)।
चोलोयणग } न [**चूलापनयन**] १ चूलोपनयन, संस्कार-विशेष, मुण्डन; (णाया १, १—पत्र ३८)। २ शिखा-धारण, चूड़ा-धारण; (भग ११, ११—पत्र ५४४ ; औप)।
चोलोवणय }
चोलोवणयण }
चोल्लक [**दे**] देखो **चोलग** ; (पण्ह २, ४)।

चोल्लक } **चोल्लग** } पुंन [**दे**] १ भोजन ; (उप पृ १२ ; आवम; उत्त ३) । २ वि. क्षुद्रक, छोटा, लघु ; (उप पृ ३१) ।

चोल्लय पुंन [**दे**] थैला, बोरा, गोन ; “ परं मम समक्खं तंलेह चल्लए “राइणा उक्केल्लावियाइं चोल्लयाइं” (महा)।

चोव्वड देखो **चोप्पड**=म्रक्ष् । चोव्वडइ; (षड्) ।

च्च अ [**एव**] अवधारण-सूचक अव्यय ; (हे २, १८४; कुमा ; षड्) ।

च्चिअ देखो **चिअ**=एव ; (हे २, १८४ ; कुमा) ।

च्चेअ } **च्चेव** } देखो **चेव**=एव; (पि ९२ ; जी ३२) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** चयाराइसद्दसंकलणो चउद्दसमो तरंगो समत्तो।



छ

छ पुं [**छ**] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप; प्रामा) । २ आच्छादन, ढकना ; “ छ ति य दोसाण छायणे होइ” (आवम) ।

छ त्रि. ब. [**षष्**] संख्या-विशेष; छह, “छ छंडिआओ जिण-सासणम्मि” (श्रा ६; जी ३२; भग १, ८)। °**उत्तरसय** वि [°**उत्तरशततम**] एक सौ और छठवाँ ; (पउम १०६, ४६) । °**क्कम्म** न [°**कर्मन्**] छः प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्त्तव्य हैं, यथा—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह ; (निचू १३) । °**क्काय** न [°**काय**] छः प्रकार के जीव, पृथिवी, अग्नि, पानी, वायु, वनस्पति और त्रस जीव ; (श्रा ७ ; पंचा १५) । °**गुण**, °**ग्गुण** वि [°**गुण**] छगुना ; (ठा ६ ; पि २७०) । °**च्चरण** पुं [°**चरण**] भ्रमर, भमरा; (कुमा) । °**ज्जीव-निकाय** पुं [°**जीवनिकाय**] देखो °**क्काय**; (आचा) । °**णउइ**, °**णवइ** स्त्री [°**णवति**] संख्या-विशेष, छानवे, ९६ ; (सम ९८; अजि १०) । °**त्तीस** स्त्रीन [°**त्रिंशत्**] संख्या-विशेष, छत्तीस, ३६ ; (कप्प) । °**त्तीसइम** वि [°**त्रिंशत्तम**] छत्तीसवाँ; (पउम ३६, ४३; पण्ण ३६) । °**द्दस** त्रि. ब. [**षोडशन्**] षोडश, सोलह । °**द्दसहा** अ [**षोडशधा**] सोलह प्रकार का ; (वव ४) । °**द्दिसि** न [°**दिश्**] छः दिशाएं—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा ; (भग) । °**द्धा** अ [°**धा**] छह प्रकार का; (कम्म १, ३८) । °**नवइ**, °**नुवइ**, °**न्नउइ** देखो °**णउइ**; (कम्म ३, ४ ; १२ ; सम ७०)। °**न्नउय** वि [°**णवत**] छानहवाँ, ९६ वाँ ; (पउम ९६, ५०) । °**प्पण्ण**, °**प्पन्न** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] छप्पन, ५६ ; (राज ; सम ७३) । °**प्पन्न** वि [°**पञ्चाश**] छप्पनवाँ ; (पउम ५६, ४८) । °**ब्भाय** पुं [°**भाग**] छठवाँ हिस्सा ; (पि २७०) । °**ब्भासा** स्त्री [°**भाषा**] प्राकृत, संस्कृत, मागधी, शौरसेनी, पैशाचिका और अपभ्रंश ये छः भाषाएं ; (रंभा) । °**मासिय**, °**म्मासिय** वि [**षाण्मासिक**] छह मास में होने वाला, छह मास संबन्धी ; (सम २१ ; औप) । °**वरिस** वि [°**वार्षिक**] छह वर्ष की उम्र वाला; (सार्ध २६) । °**वीस** देखो °**व्वीस**; (पिंग) । °**व्विह** वि [°**विध**] छह प्रकार का ; (कस ; नव ३)। °**व्वीस** स्त्रीन [°**विंशति**] छव्वीस, वीस और छह ; (सम ४५)। °**व्वीसइम** वि [°**विंशतितम**] १ छव्वीसवाँ, २६ वाँ; (पउम २६, १०३)। २ लगातार बारह दिनों का उपवास ; (णाया १, १) । °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] संख्या-विशेष, साठ और छह ; (कम्म २, १८)। °**स्सयरि** स्त्री [°**सप्तति**] छिहत्तर; (कम्म २, १७) । °**हा** देखो °**द्धा** ; (कम्म १, ५ ; ८) ।

छइ देखो **छवि**=छवि ; (वा १२) ।

छइअ वि [**स्थगित**] आवृत, आच्छादित, तिरोहित; (हे २, १७ ; षड्) ।

छइल } **छइल्ल** } वि [**दे**] विदग्ध, चतुर, हुशियार ; (पिंग ; दे ३, २४ ; गा ७२० ; वज्जा ४ ; पाअ ; कुमा) ।

छउअ वि [**दे**] तनु, कृश, पतला ; (दे ३, २५) ।

छउम पुंन [**छद्मन्**] १ कपट, शठता, माया ; (सम १ ; षड्) । २ छल, बहाना ; (हे २, ११२ ; षड्) । ३ आवरण, आच्छादन; (सम १ ; ठा २, १) ।

छउमत्थ वि [**छद्मस्थ**] १ अ-सर्वज्ञ, संपूर्ण ज्ञान से वञ्चित ; २ राग-सहित, सराग ; (ठा ४, १ ; ६ ; ७) ।

छउलूअ देखो **छलूअ** ; (राज ; विसे २५०८ ।

छंकुई स्त्री [**दे**] कपिकच्छू, वृक्ष-विशेष, केवाँच ; (दे ३, २४) ।

छंट पुं [**दे**] छींटा, जल का छींटा, जल-च्छटा; २ वि. शीघ्र, जल्दी करने वाला; (दे ३, ३३)।

छंट सक [**सिच्**] सींचना। छंटसु ; (सुपा २६८)।

छंटण न [**सेचन**] सिंचन, सिंचना; (सुपा १३६ ; कुमा)।

छंटा स्त्री [**दे**] देखो **छंट** ; (पात्र)।

छंटिअ वि [**सिक्त**] सींचा हुआ ; (सुपा १३८)।

छंड देखो **छड्ड=मुच्**। छंडइ ; (आरा ३२ ; भवि)।

छंडिअ वि [**दे**] छन्न, गुप्त ; (षड्)।

छंडिअ वि [**मुक्त**] परित्यक्त, छाडा हुआ ; (आरा ; भवि)।

छंद सक [**छन्दय्**] १ चाहना, वाञ्छना। २ अनुज्ञा देना, संमति देना। ३ निमन्त्रण देना। कवकृ—

" अंतेउरपुरबलवाहणेहि वरसिरिघरेहि मुणिवसभा।
कामेहि बहुविहेहि य **छंदिज्जंतावि** नेच्छंति " (उव)।

संकृ—**छंदिअ** ; (दस १०)।

छंद पुंन [**छन्द**] १ इच्छा, मरजी, अभिलाषा ; (आचा ; गा २०२; स २३६; उव; प्रासू ११)। २ अभिप्राय, आशय; (आचा; भग)। ३ वशता, अधीनता; (उत्त ४; हे १, ३३)। °**चारि** वि [°**चारिन्**] स्वच्छन्दी, स्वैरी; (उप ७६८ टी)। °**इत्त** वि [°**वत्**] स्वैरी ; (भवि)। °**णुवत्तण** न [°**नुवर्तन**] मरजी के अनुसार बरतना ; (प्रासू १४)। °**णुवत्तय** वि [°**नुवर्त्तक**] मरजी का अनुसरण करने वाला; (गाया १, ३)।

छंद पुंन [**छन्दस्**] १ स्वच्छन्दता, स्वैरिता ; (उत्त ४)। २ अभिलाष, इच्छा ; ३ आशय, अभिप्राय ; (सूअ १, २, २ ; आचा ; हे १,३३)। ४ छन्दः-शास्त्र ; (सुपा २८७ ; औप)। ५ वृत्त, छन्द ; (वज्जा ४)। °**ण्णुय** वि [°**ज्ञ**] छन्द का जानकार ; (गउड)।

छंदण न [**वन्दन**] वन्दन, प्रणाम, नमस्कार; (गुभा ४)।

छंदणा स्त्री [**छन्दना**] १ निमन्त्रण ; (पंचा १२)। २ प्रार्थना ; (बृह १)।

छंदा स्त्री [**छन्दा**] दीक्षा का एक भेद, अपने या दूसरे के अभिप्राय-विशेष से लिया हुआ संन्यास ; (ठा २, २ ; पंचभा)।

छंदिअ वि [**छन्दित**] अनुज्ञात, अनुमत ; (ओघ ३८०)। २ निमन्त्रित ; (निचू २)।

छंदो° देखो **छंद=छन्दस्** ; (आचा ; अभि १२६)।

छक्क वि [**षट्क**] छक्का, छः का समूह; " अंतररिउछक्का-अक्कंता " (सुपा ५१६ ; सम ३५)।

छग देखो **छ=षष्** ; (कम्म ४)।

छग न [**दे**] पुरीष, विष्ठा ; (पण्ह १, ३—पत्र ५४ ; ओघ ७२)।

छगण न [**दे**] गोमय, गोबर ; (उप ५६७ टी , पंचा १३; निचू १२)।

छगणिया स्त्री [**दे**] गोइंठा, कंडा ; (अनु ५)।

छगल पुंस्त्री [**छगल**] छाग, अज ; (पण्ह १, १ ; औप)। स्त्री—°**ली** ; (दे २, ८४)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (ठा १०)।

छग्ग देखो **छक्क** ; (दं ११)।

छग्गुरु पुं [**षड्गुरु**] १ एक सौ और अस्सी दिनों का उपवास ; २ तीन दिनों का उपवास ; (ठा २, १)।

छच्छुंदर पुंन [**दे**] छछुन्दर, मूसे की एक जाति ; (सं १६)।

छज्ज अक [**राज्**] शोभना, चमकना। छज्जइ; (हे ४,१००)।

छज्जिअ वि [**राजित**] शोभित, अलंकृत ; (कुमा)।

छज्जिआ स्त्री [**दे**] पुष्प-पात्र, चंगेरी ; (स ३३४)।

छट्टा [**दे**] देखो **छंटा** ; (षड्)।

छट्ठ वि [**षष्ठ**] १ छठवाँ ; (सम १०४ ; हे १, २६५)। २ न. लगातार दो दिनों का उपवास ; (सुर ४, ५५)। °**क्खमण** न [°**क्षमण**, °**क्षपण**] लगातार दो दिनों का उपवास ; (अंत ६ ; उप पृ ३४३)। °**क्खमय** पुं [°**क्षमक**, °**क्षपक**] दो दो दिनों का बराबर उपवास करने वाला तपस्वी ; (उप ६२२)। °**भत्त** न [°**भक्त**] लगातार दो दिनों का उपवास ; (धर्म ३)। °**भत्तिय** वि [°**भक्तिक**] लगातार दो दिनों का उपवास करने वाला ; (पण्ह १,१)।

छट्ठी स्त्री [**षष्ठी**] १ तिथि-विशेष ; (सम २६)। २ विभक्ति-विशेष, संबन्ध-विभक्ति ; (णंदि ; हे १, २६५)। ३ जन्म के बाद किया जाता उत्सव-विशेष ; (सुपा ५७८)।

छड सक [**आ+रुह्**] आरूढ़ होना, चढ़ना। छडइ ; (षड्)।

छडक्खर पुं [**दे**] स्कन्द, कार्त्तिकेय ; (दे ३, २६)।

छडछडा स्त्री [**छटच्छटा**] सूर्य वगैरः से अन्न को झाड़ते समय होता एक प्रकार का अव्यक्त आवाज; (णाया १, ७—पत्र ११६)।

छडा स्त्री [**दे**] विद्युत, विजली ; (दे ३, २४)।

छडा स्त्री [**छटा**] १ समूह, परम्परा ; (सुर ४, २४३ ; वा १२)। २ छींटा, पानी का बुंद ; (पाअ)।

छडाल वि [**छटावत्**] छटा वाला ; (पउम ३५,१८)।

छड्ड सक [**छर्दय्, मुच्**] १ वमन करना। २ छोड़ना, त्याग करना। ३ डालना, गिराना। छड्डइ ; (हे २, ३६ ; ४, ६१ ; महा ; उव)। कर्म—छड्डिज्जइ ; (पि २६१)। वकृ—छड्डंत ; (भग)। संकृ—**छड्डेउं** भूमीए खीरं जह पियइ दुट्ठमज्जारो" (विसे १४७१), **छड्डित्तु** ; (वव २)।

छड्डण न [**छर्दन, मोचन**] १ परित्याग, विमोचन ; (उप १७६ ; ओघ ८६)। २ वमन, वान्ति ; (विपा १, ८)।

छड्डवण न [**छर्दन, मोचन**] १ छुड़वाना, मुक्त करवाना। २ वमन कराना। ३ वमन कराने वाला ; ४ छुडाने वाला ; (कुमा)।

छड्डवय वि [**छर्दक, मोचक**] त्याग कराने वाला, त्याजक; (दे २, ६२)।

छड्डावण देखा **छड्डवण** ; (सुपा ४१७)।

छड्डाविय वि [**छर्दित, मोचित**] १ वमन कराया हुआ ; २ छुड़वाया हुआ ; (आवम; बृह १)।

छड्डि स्त्री [**छर्दि**] वमन का रोग ; (षड् ; हे २, ३६)।

छड्डि स्त्री [**छर्दिस्**] छिद्र, दूषण ; 'जो जग्गइ परछड्डिं, सो नियछड्डीए किं सुयइ' (महा)।

छड्डिय } वि [**छर्दित, मुक्त**] १ वान्त, वमन
छड्डियल्लिय } किया हुआ। २ त्यक्त, मुक्त ; (विसे २६०६ ; दे १, ४६ ; औप)।

छण सक [**क्षण्**] हिंसा करना। छणे; (आचा)। प्रयो— छणावेइ ; (पि ३१८)।

छण पुं [**क्षण**] १ उत्सव, मह ; (हे २, २०)। २ हिंसा ; (आचा)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] शरद ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा ; (स ३७१)। °**ससि** पुं [°**शशिन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सुपा ३०६)।

छणण न [**क्षणन**] हिंसन, हिंसा ; (आचा)।

छणिंदु पुं [**क्षणेन्दु**] शरद् ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्र ; (सुपा ३३ ; ४०४)।

छण्ण वि [**छन्न**] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपाया हुआ ; (बृह १ ; प्राप)। २ आच्छादित, ढ़का हुआ ; (गा ५८०)। ३ न. माया, कपट; (सुअ १, २, २)। ४ निर्जन, विजन, रहस् ; ५ क्रिवि. गुप्त रीति से, प्रच्छन्न रूप से ;

"जं छण्णं आयरियं, तइया जणणीए जोव्वणमएण।
तं पडिव(? यडि)ज्जइ इण्हिं सुएहिं सीलं चयंतेहिं"
(उप ७२८ टी)।

छण्णालय न [**दे. षण्णालक**] त्रिकाष्ठिक, तिपाई, संन्यासीओं का एक उपकरण ; (भग ; औप ; णाया १, ५)।

छत्त न [**छत्र**] छाता, आतपत्र ; (णाया १, ५ ; प्रासू ५२)। °**धार** पुं [°**धार**] छाता धारण करने वाला नौकर ; (जीव ३)। °**पडागा** स्त्री [°**पताका**] १ छत्र-युक्त ध्वज ; २ छत्र के ऊपर की पताका ; (औप)। °**पलासय** न [°**पलाशक**] कृतमंगला नगरी का एक चैत्य ; (भग)। °**भंग** पुं [°**भङ्ग**] राज-नाश, नृप-मरण ; (राज)। °**हार** देखो °**धार** ; (आवम)। °**इच्छत्त** न [°**तिच्छत्र**] १ छत्र के ऊपर का छाता ; (सम १३७)। २ पुं. ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध योग-विशेष ; (सुज्ज १२)।

छत्त पुं [**छात्र**] विद्यार्थी, अभ्यासी ; (उप पृ ३३१; १६६ टी)।

छत्तंतिया स्त्री [**छत्रान्तिका**] परिषद्-विशेष, सभा-विशेष ; (बृह १)।

छत्तच्छय (अप) पुं [**सप्तच्छद**] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन ; (सण)।

छत्तधन्न न [**दे**] घास, तृण ; (पाअ)।

छत्तवण्ण देखो **छत्तिवण्ण** ; (प्राप्र)।

छत्ता स्त्री [**छत्रा**] नगरी-विशेष ; (आवम)।

छत्तार पुं [**छत्रकार**] छाता बनाने वाला कारीगर ; (पण्ण१)।

छत्ताह पुं [**छत्राभ**] वृक्ष-विशेष ; "णग्गाहसत्तिवण्णे, साले पियए पियंगुछत्ताहे" (सम १५२)।

छत्ति वि [**छत्रिन्**] छत्र-युक्त, छाता वाला ; (भास ३३)।

छत्तिवण्ण पुं [**सप्तपर्ण**] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन, (हे १, २६५ ; कुमा)।

छत्तोय पुं [**छत्रौक**] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३५)।

छत्तोव पुं [**छत्रोप**] वृक्ष-विशेष ; (औप ; अंत)।

छत्तोह पुं [**छत्रौघ**] वृक्ष-विशेष ; (औप ; पण्ण १— पत्र ३१ ; भग)।

छद्दवण देखो **छड्डवण** ; (राज)।

छद्दी स्त्री [**दे**] शय्या, बिछौना ; (दे ३, २४)।

छन्न देखो **छण्ण** ; (कप्प ; उप ६४८ टी ; प्रासू ८२)।

छप्पइगिल्ल वि [**षट्पदिकावत्**] यूका-युक्त, यूका वाला; (बृह ३)।

छप्पइया स्त्री [**षट्पदिका**] यूका, जू; (ओघ ७२४)।

छप्पंती स्त्री [**दे**] नियम-विशेष, जिसमें पद्म लिखा जाता है; (दे ३, २५)।

छप्पण्ण } वि [**दे. षट्प्रज्ञक**] विदग्ध, चतुर, चालाक;
छप्पण्णय } (दे ३, २४ ; पात्र ; वज्जा ५८)।

छप्पत्तिआ स्त्री [**दे**] १ चपत, थप्पड़, तमाचा ; २ चपाती, रोटी, फुलका ;

"छप्पत्तिआवि खज्जइ, निप्पत्तं पुत्ति ! एत्थ को देसो ? ।
निअपुरिसेवि रमिज्जइ, परपुरिसविवज्जिए गामे "
(गा ८८७)।

छप्पन्न [**दे**] देखो **छप्पण्ण** ; (जय ६)।

छप्पय पुं [**षट्पद**] १ भ्रमर, भमरा; (हे १, २६५ ; जीव ३)। २ वि. छः स्थान वाला ; ३ छः प्रकार का ; (विसे २८६१)। ४ न. छन्द-विशेष ; (पिंग)।

छब्बय न [**दे**] वंश-पिटक, घी वगैरः को छानने का उपकरण-विशेष ; " मुइंगाईमक्कोडएहिं संसत्तगं च नाऊणं । गालेज्ज छब्वएणं " (ओघ ५५८)।

छब्भामरी स्त्री [**षड्भ्रामरी**] एक प्रकार की वीणा ; (णाया १, १७—पत्र २२६)।

छमच्छम अक [**छमच्छमाय्**] 'छम् छम्' आवाज करना, गरम चीज पर दिया जाता पानी का आवाज। छमच्छमइ ; (वज्जा ८८)।

छम° देखो **छमा**। **°रुह** पुं [**°रुह**] वृक्ष, पेड़, दरख्त; (कुमा)।

छमलय पुं [**दे**] सप्तच्छद, वृक्ष-विशेष, सतौना ; (दे ३, २५)।

छमा स्त्री [**क्षमा, क्ष्मा**] पृथिवी, धरिणी, भूमि ; (हे २, १८)। **°हर** पुं [**°धर**] पर्वत, पहाड़; (षड्)। देखो **छम°**।

छमी स्त्री [**शमी**] वृक्ष-विशेष, अग्नि-गर्भ वृक्ष; (हे१, २६५)।

छम्म देखो **छउम**; (हे २, ११२; षड् ; पउम ४०, ५; सण)।

छम्मुह पुं [**षण्मुख**] १ स्कन्द, कार्तिकेय ; (हे१,२६५)। २ भगवान् विमलनाथ का अधिष्ठायक देव ; (संति ८)।

छय न [**छद**] १ पर्ण, पत्ती, पत्र ; (औप)। २ आवरण, आच्छादन ; (से ६, ४७)।

छय न [**क्षत**] १ व्रण, घाव; (हे २, १७)। २ पीड़ित, व्यथित ; (सूअ १, २, २)।

छयल्ल [**दे**] देखो **छइल्ल** ; (रंभा)।

छरु पुं [**त्सरु**] खड्ग-मुष्टि, तलवार का हाथा ; (पण्ह १, ४)। **°प्पवाय** न [**°प्रवाद**] खड्ग-शिक्षा-शास्त्र ; (जं २)।

छल सक [**छलय्**] ठगना, वञ्चना। छलिज्जेज्जा ; (स २१३)। संकृ—**छलिउं, छलिऊण**; (महा)। कृ—**छलि-अव्व**; (श्रा १४)।

छल न [**छल**] १ कपट, माया ; (उव)। २ व्याज, बहाना ; (पात्र ; प्रासू ११४)। ३ अर्थ-विघात, वचन-विघात, एक तरह का वचन-युद्ध; (सूअ १, १२)। **°ायय़ण** न [**°ायतन**] छल, वचन-विघात; (सूअ १, १२)।

छलंस वि [**षडस्र**] षट्-कोण, छह कोण वाला; (ठा ८)।

छलण न [**छलन**] ठगाई, वञ्चना ; (सुर ६, १८१)।

छलणा स्त्री [**छलना**] १ ठगाई, वञ्चना ; (ओघ ७८५ ; उप ७७६)। २ छल, माया, कपट ; (विसे २५४५)।

छलत्थ वि [**षडर्थ**] छह अर्थ वाला ; (विसे ६०१)।

छलसीअ स्त्रीन [**षडशीति**] संख्या-विशेष, अस्सी और छह, ८६ ; (भग)।

छलसीइ स्त्री. ऊपर देखो; (सम ६२)।

छलिअ वि [**छलित**] १ वञ्चित, विप्रतारित, ठगा हुआ ; (भवि ; महा)। २ शृङ्गार-काव्य ; ३ चोर का इसारा, तस्कर-संज्ञा ; (राज)।

छलिअ वि [**दे**] विदग्ध, चालाक, चतुर ; (दे ३, २४ ; पात्र)।

छलिअ न [**छलिक**] नाट्य-विशेष ; (मा ४)।

छलिअ वि [**स्खलित**] स्खलना-प्राप्त ; (ओघ ७८६)।

छलिया देखो **छालिया** ; " चीणाकूरं छलियातक्केण दिन्नं " (महा)।

छलुअ }
छलुग } पुं [**षडुलूक**] वैशेषिक मत-प्रवर्तक कणाद ऋषि; (कप्प ; ठा ७; विसे २३०२); " दव्वाइछ-
छलूअ } प्पयत्थोवएसणाओ छलूउत्ति " (विसे २५०८ ; २४५५)।

छल्ली स्त्री [**दे**] त्वचा, वल्कल, छाल ; (दे ३, २४ ; जी १३ ; गा ११५ ; ठा ४, १ ; णाया १, १३)।

छल्लुय देखो **छलुअ** ; (पि १४८)।

छव देखो **छिव**। छवेमि ; (सुपा ५७३)।

छवडी स्त्री [**दे**] चर्म, चाम, चमड़ा; (दे ३, २५)।

छवि स्त्री [**छवि**] १ कान्ति, तेज ; (कुमा ; पाअ)। २ अंग, शरीर ; (पराह १, १)। ३ चर्म, चमड़ी; (पाअ; जीव ३)। ४ अवयव ; (पडि)। ५ अंगी, शरीरी; (ठा ४, १)। ६ अलङ्कार-विशेष ; (अणु)। °**च्छेअ** पुं [°**च्छेद**] अङ्ग का विच्छेद, अवयव-कर्तन ; (पडि)। °**च्छेयण** न [°**च्छेदन**] अंग-च्छेद ; (पराह १, १)। °**त्ताण** न [°**त्राण**] चमड़ी का आच्छादन, कवच, वर्म ; (उत २)।

छविअ वि [**स्पृष्ट**] छूआ हुआ ; (श्रा २७)।

छव्वग [**दे**] देखो **छव्वय** ; (राज)।

छव्विअ वि [**दे**] पिहित, आच्छादित ; (गउड)।

छह (अप) देखो **छ**=षष् ; (पि ४४१)।

छहत्तर वि [**षट्सप्तत**] छहतरवाँ, ७६ वाँ ; (पउम ७६, २७)।

छाइअ वि [**छादित**] आच्छादित, ढ़का हुआ ; (पउम ११३, ५४ ; कुमा)।

छाइल्ल वि [**छायावत्**] छाया वाला, कान्ति-युक्त ; (हे २, १५९ ; षड्)।

छाइल्ल पुं [**दे**] १ प्रदीप, दीपक; "जोइक्खं तह छाइल्लयं च दोवं मुणेज्जाहि" (वव ७ ; दे ३, ३५)। २ वि. सदृश, समान, तुल्य ; ३ ऊन, अपूरा ; (दे ३, ३५)। ४ सुरूप, सुडौल, रूपवान् ; (दे ३, ३५ ; षड्)।

छाई देखो **छाया** ; (षड्)।

छाई स्त्री [**दे**] माता, देवी, देवता ; (दे ३, २६)।

छाउमत्थिय वि [**छाद्मस्थिक**] केवलज्ञान उत्पन्न होने के पहले की अवस्था में उत्पन्न, सर्वज्ञता को पूर्वावस्था से संबन्ध रखने वाला ; (सम ११ ; परण ३६)।

छाओवग वि [**छायोपग**] १ छाया-युक्त, छाया वाला ; (वृक्षादि) ; २ पुं. सेवनीय पुरुष, माननीय पुरुष ; (ठा ४,३)।

छागल वि [**छागल**] १ अज-संबन्धी ; (ठा ५, ३)। २ पुं. अज, बकरा ; स्त्री— °**ली** ; (पि २३१)।

छागलिय पुं [**छागलिक**] छागों से आजीविका करने वाला, अजा-पालक ; (विपा १, ४)।

छाण न [**दे**] १ धान्य वगैरः का मलना ; (दे ३, ३४)। २ गोमय, गोबर ; (दे ३, ३४ ; सुर १२, १७ ; णाया १, ७ ; जीव १)। ३ वस्त्र, कपड़ा ; (दे ३,३४ ; जीव३)।

छाणण न [**दे**] छानना, गालन ; "भूमोपेहणजलछाणणाइं जयणाओ होइ न्हाणाइं" (सढि ४५ टी)।

छाणवइ (अप) देखो **छण्णवइ** ; (पिंग)।

छाणी स्त्री [**दे**] १ धान्य वगैरः का मलन ; २ वस्त्र, कपड़ा ; (दे ३,३४)। ३ गोमय, गोबर ; (दे ३, ३४ ; धर्म २)।

छाय सक [**छादय्**] आच्छादन करना, ढ़कना। छायइ ; (हे ४, २१)। वकृ—**छायंत** ; (पउम ७, १४)।

छाय वि [**दे**] १ बुभुक्षित, भूखा; (दे ३, ३३ ; पाअ उप ७६८ टी ; ओघ २६० भा)। २ कृश, दुर्बल ; (दे ३, ३३ ; पाअ)।

छायंसि वि [**छायावत्**] कान्तिमान्, तेजस्वी ; (सम १५२)।

छायण न [**छादन**] आच्छादन, ढ़कना ; (पिंग ; महा ; सं ११)।

छायणिया } स्त्री [**दे**] डेरा, पड़ाव, छावनी ; "तो तत्थेव
छायणी } ठिओ एसो कुणिता गिहछायणिं" (श्रा १२ ; महा)।

छाया स्त्री [**छाया**] १ आतप का अभाव; छाँही; (पाअ)। २ कान्ति, प्रभा, दीप्ति; (हे १, २४९ ; औप ; पाअ)। ३ शोभा; (औप)। ४ प्रतिबिम्ब, परछाईं; (प्रासू ११४ ; उत २)। ५ धूप-रहित स्थान, अनातप देश ; (ठा २, ४)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] १ छाया के अनुसार गमन ; २ छाया के अवलम्बन से गति ; (पराण १६)। °**पास** पुं [°**पार्श्व**] हिमाचल पर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्त्ति ; (ती ४५)।

छाया स्त्री [**दे**] १ कीर्त्ति, यश, ख्याति ; २ भ्रमरी, भमरी ; (दे ३, ३४)।

छायाइत्तय वि [**छायावत्**] छाया-वाला, छाया-युक्त। स्त्री—°**इत्तिआ** ; (हे २, २०३)।

छायाला स्त्री [**षट्चत्वारिंशत्**] छियालीस, चालीस और छह, ४६ ; (भग)।

छायालीस स्त्रीन. ऊपर देखो; (सम ६९ ; कप्प)।

छायालीस वि [**षट्चत्वारिंश**] छियालीसवाँ, ४६वाँ; (पउम ४६, ९९)।

छार त्रि [**क्षार**] १ पिघलने वाला, झरने वाला ; २ खारा, लवण-रस वाला; ३ पुं. लवण, नोन,-निमक; ४ सज्जी, सज्जी-खार ; ५ गुड़; (हे २, १७ ; प्राप्र)। ६ भस्म, भूति; (विसे १२५६; स ४४; प्रासू १४५; णाया १,२)। ७ मात्सर्य, असहिष्णुता; (जीव ३)।

छार पुं [दे] अच्छभल्ल, भालूक ; (दे ३, २६) ।
छारय देखो **छार**; (श्रा २७) ।
छारय न [दे] १ इक्षु शल्क, ऊख की छाल; (दे ३,३४)। २ मुकुल, कली ; (दे ३, ३४; पाअ) ।
छाल पुं [**छाग**] अज, बकरा ; (हे १, १९१) ।
छालिया स्त्री [**छागिका**] अजा, छागी ; (सुर ७,३०; सण)।
छाली स्त्री [**छागी**] ऊपर देखो ; (प्रामा) ।
छाव पुं [**शाव**] बालक, बच्चा, शिशु ; (हे १, २६५ ; प्राप्र ; वव १) ।
छावण देखो **छायण** ; (वृह १) ।
छावट्ठि स्त्री [**षट्षष्टि**] छाछठ, छियासठ, ६६ ; (सम ७८ ; विसे २७६१) ।
छावत्तरि स्त्री [**षट्सप्तति**] छिहत्तर, सत्तर और छ, ७६ ; (पउम १०२,८६ ; सम ८५) । °**म** वि [°**तम**] छिहत्तरवाँ ; (भग) ।
छावलिय वि [**षडावलिक**] छः आवलिका-परिमित समय वाला ; (विसे ५३१) ।
छासट्ठ वि [**षट्षष्ट**] छियासठवाँ ; (पउम ६६, ३७) ।
छासी स्त्री [**दे**] छाछ, तक्र, मठा ; (दे ३, २६) ।
छासीइ स्त्री [**षडशीति**] छियासी, अस्सी और छ । °**म** वि [°**तम**] छियासीवाँ, ८६ वाँ ; (पउम ८६, ७४) ।
छाहत्तरि (अप) देखो **छावत्तरि** ; (पि २४५) ।
छाहा, **छाहिया**, **छाही** } स्त्री [**छाया**] १ छाँही, आतप का अभाव ; २ प्रतिबिम्ब, परछाई ; (षड् ; प्राप ; सुर २, २४७ ; ६, ६५ ; हे १, २४९ ; गा ३४) ।
छाही स्त्री [**दे**] गगन, आकाश । °**मणि** पुं [°**मणि**] सूर्य, सूरज ; (दे ३, २६) ।
छिअ देखो **छीअ** ; (दे ८, ७२ ; प्रामा) ।
छिंछई स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; (हे २, १७४ ; गा ३०१ ; ३५० ; पाअ) ।
छिंछटरमण न [**दे**] क्रीड़ा-विशेष, चक्षु-स्थगन की क्रीड़ा; (दे ३, ३०) ।
छिंछय पुं [**दे**] १ देह, शरीर ; २ जार, उपपति ; ३ न. फल-विशेष, शलाटु-फल ; (दे ३, ३६) ।
छिंछोली स्त्री [**दे**] छोटा जल-प्रवाह ; (दे ३, २७ ; पाअ) ।
छिंड न [**दे**] १ चूड़ा, चोटी ; (दे ३, ३५ ; पाअ) । २ छत्र, छाता ; ३ धूप-यन्त्र ; (दे ३, ३५) ।
छिंडिआ स्त्री [**दे**] १ बाड़ का छिद्र ; २ अपवाद ; "छिंडिआओ जिणसासणम्मि" (पत्र १४८ ; श्रा ६) ।
छिंडी स्त्री [**दे**] बाड़ का छिद्र; (णाया १, २—पत्र ७९)।
छिंद सक [**छिद्**] छेदना, विच्छेद करना । छिंदइ ; (प्राप्र; महा) । भवि—छेच्छं ; (हे ३, १७१) । कर्म—छिज्जइ; (महा)। वकृ —**छिंदमाण**; (णाया १, १)। कवकृ—**छिज्जंत**, **छिज्जमाण**; (श्रा ६ ; विपा १, २) । संकृ— **छिंदिऊण**, **छिंदित्ता**, **छिंदित्तु**, **छिंदिय**, **छेत्तूण**; (पि ५८५; भग १४, ८; पि ५०६ ; ठा ३, २ ; महा) । कृ— **छिंदियव्व** ; (पण्ह २, १) । हेकृ—**छेत्तुं**; (आचा) ।
छिंदण न [**छेदन**] छेद, खण्डन, कर्तन; (ओघ १५४ भा) ।
छिंदावण न [**छेदन**] कटवाना, दूसरे द्वारा छेदन कराना ; (महानि ७) ।
छिंदाविय वि [**छेदित**] विच्छिन्न कराया गया; (स २२९) ।
छिंपय पुं [**छिंम्पक**] कपड़ा छापने का काम करने वाला; (दे १, ९८ ; पाअ) ।
छिक्क न [**दे**] क्षुत, छींक ; (दे ३, ३६ ; कुमा) ।
छिक्क वि [**दे**. **छुप्त**] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (दे ३, ३६ ; हे २, १३८ ; से ३, ४६ ; स ४४४) । °**परोइया** स्त्री [°**प्ररोदिका**] वनस्पति-विशेष ; (विसे १७५४) ।
छिक्क वि [**छीत्कृत**] छी छी आवाज से आहूत; "पुव्विंपि वीरसुणिआ छिक्काछिक्का पहावए तुरियं" (ओघ १२४ भा)।
छिक्कंत वि [**दे**] छींक करता हुआ ; (सुपा ११९) ।
छिक्का स्त्री [**दे**] छिक्का, छींक ; (स ३२२) ।
छिक्कारिअ वि [**छीत्कारित**] छी छी आवाज से आहूत, अव्यक्त आवाज से बुलाया हुआ; (ओघ १२४ भा. टी) ।
छिक्किय न [**दे**] छींकना, छींक करना ; (स ३२४) ।
छिक्कोअण वि [**दे**] असहन, असहिष्णु ; (दे ३, २९)।
छिक्कोट्टली स्त्री [**दे**] १ पैर का आवाज ; २ पाँव से धान्य का मलना ; ३ गोइठा का टुकड़ा, गोबर-खण्ड ; (दे ३, ३७) ।
छिक्कोलिअ वि [**दे**] तनु, पतला, कृश ; (दे ३, २५) ।
छिक्कोवण [**दे**] देखो **छिक्कोअण**; (ठा ६—पत्र ३७२) ।
छिच्चोलय पुं [**दे**] देखो **छिव्वोल्ल** ; (पाअ) ।
छिच्छई देखो **छिंछई** ; (षड्) ।
छिच्छय देखो **छिंछय** ; (षड्) ।

छिछि अ [दे. धिक्धिक्] छी छी, धिक् धिक्, अनेक धिक्कार ; (हे २, १७४ ; षड्)।

छिज्ज वि [छेद्य] १ जो खण्डित किया जा सके ; २ छेदने योग्य ; (सूत्र २, ५)। ३ न. छेद, विच्छेद, द्विधाकरण; " पावंति:बंधवहरोहछिज्जमरणावसाणाइं " (ओघ ४६ भा ; पुप्फ १८६)।

छिज्जंत वि [क्षीयमाण] क्षय पाता, दुर्बल होता ; "छिज्जंतेहिं अणुदिणं, पच्चक्खम्मिवि तुमम्मि अंगेहिं" (गा ३४७)।

छिज्जंत } देखो **छिंद**।
छिज्जमाण }

छिड्ड न [छिद्र] १ छिद्र, विवर; (पउम २०, १६२ ; अनु ६ ; उप पृ १३८)। २ अवकाश, अवसर ; (पण्ह १, ३)। ३ दूषण, दोष ; (सुपा ३६०)। °**पाणि** पुं [°**पाणि**] एक प्रकार का जैन साधु; (आचा २,१, ३)।

छिण्ण देखो **छिन्न** ; (णाया १, १८ ; सूत्र १, ८)।

छिण्ण पुं [दे] जार, उपपति ; (दे ३, २७ ; षड्)।

छिण्णच्छोडण न [दे] शीघ्र, तुरंत, जल्दी ; (दे ३,२६)।

छिण्णयड वि [दे] टंक से छिन्न ; (पाअ)।

छिण्णा स्त्री [दे] असती, कुलटा ; (दे ३, २७)।

छिण्णाल पुं [दे] जार, उपपति ; (दे ३, २७ ; षड् ; उत्त २७)।

छिण्णालिआ } स्त्री [दे] असती, कुलटा, पुंश्चली ;
छिण्णाली } (मृच्छ ५५ ; दे ३, २७)।

छिण्णोब्भवा स्त्री [दे] दूर्वा, दाभ ; (दे ३, २६)।

छित्त देखो **खित्त**=क्षेत्र ; (औप ; उप ८३३ टी ; हेका ३०)।

छित्त वि [दे] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (दे ३, २७; गा १३ ; सुपा ५०४ ; पाअ)।

छित्तर [दे] देखो **छेत्तर**; (स ८; २२३ ; उप पृ ११७ ; ५३० टी)।

छित्ति स्त्री [छित्ति] छेद, विच्छेद, खण्डन ; (विसे १४५८ ; अजि ५)।

छिद्द देखो **छिड्ड** ; (णाया १,२ ; ठा ५,१ ; पउम ६४,६)।

छिद्द पुं [दे] छोटी मछली; (दे ३, २६)।

छिद्दिय वि [छिद्रित] छिद्र-युक्त, छिद्र वाला ; (गउड)।

छिन्न वि [छिन्न] १ खण्डित, त्रुटित, छेद-युक्त ; (भग ; प्रासू १४६)। २ निर्धारित, निश्चित; (बृह १)। ३ न. छेद, खण्डन; (उत्त १५)। °**गंथ** वि [°**ग्रन्थ**] स्नेह-रहित, स्नेह-मुक्त ; (पण्ह २, ५)। २ पुं. त्यागी, साधु, मुनि, निर्ग्रन्थ ; (ठा ६)। °**च्छेय** पुं [°**च्छेद**] नय-विशेष, प्रत्येक सूत्र को दूसरे सूत्र की अपेक्षा से रहित मानने वाला मत ; (णंदि)। °**द्धाणंतर** वि [°**ध्वान्तर**] मार्ग-विशेष, जहाँ गाँव, नगर वगैरः कुछ भी न हो ऐसा रास्ता; (बृह १)। °**मडंब** वि [°**मडम्ब**] जिस गाँव या शहर के समीप में दूसरा गाँव वगैरः न हो ; (निचू १०)। °**रुह** वि [°**रुह**] काट कर बोने पर भी पैदा होने वाली वनस्पति ; (जीव १० ; पण्ण ३६)।

छिप्प न [क्षिप्र] जल्दी, शीघ्र। °**तूर** न [°**तूर्य**] शीघ्र २ बजाया जाता वाद्य ; (विपा १, ३ ; णाया १, १८)।

छिप्प न [दे] १ भिक्षा, भीख; (दे ३,३६ ; सुपा ११५)। २ पुच्छ, लाङ्गूल ; (दे ३, ३६ ; पाअ)।

छिप्पंत देखो **छिव**=स्पृश्।

छिप्पंती स्त्री [दे] १ व्रत-विशेष ; २ उत्सव-विशेष ; (दे ३, ३७)।

छिप्पंदूर न [दे] १ गोमय-खण्ड, गोबर-खण्ड ; २ वि. विषम, कठिन ; (दे ३, ३८)।

छिप्पाल पुं [दे] सस्यासक्त बैल, खाने में लगा हुआ बैल ; (दे ३, २८)।

छिप्पालुअ न [दे] पूँछ, लाङ्गूल ; (दे ३, २६)।

छिप्पिंडी स्त्री [दे] १ व्रत-विशेष ; २ उत्सव-विशेष ; ३ पिष्ट, पिसान ; (दे ३, ३७)।

छिप्पिअ वि [दे] क्षरित, झरा हुआ, टपका हुआ; (पाअ)।

छिप्पोर न [दे] पलाल, तृण ; (दे ३, २८)।

छिप्पोल्ली स्त्री [दे] अजादि की विष्ठा ; (निचू १)।

छिमिछिमिछिम अक [छिमिछिमाय्] छिम छिम आवाज करना। वकृ— **छिमिछिमिछिमंत** ; (पउम २६, ४८)।

छिरा स्त्री [शिरा] नस, नाडी, रग ; (ठा २, १ ; हे १,२६६)।

छिरि पुं [दे] भालूक का आवाज; (पउम ६४, ४५)।

छिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर ; (दे ३, ३५ ; षड्)। २ कुटी, कुटिया, छोटा घर; ३ बाड़ का छिद्र; (दे ३,३५)। ४ पलाश का पेड़ ; (ती ६)।

छिल्लर न [दे] पल्वल, छोटा तलाव ; (दे ३, २८ ; सुर ४, २२६)।

छिल्ली स्त्री [दे] शिखा, चोटी ; (दे ३, २७)।

छिव सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। छिवइ ; (हे ४, १८२)। कर्म— छिप्पइ, छिविज्जइ ; (हे ४, २५७)।

वकृ—**छिवंत**; (गा २६६)। कवकृ—**छिप्पंत, छिविज्जमाण**; (कुमा; गा ४४३; स ६३२; श्रा १२)।

छिवट्ठ [दे] देखो **छेवट्ठ**; (कम्म २, ४)।

छिवण न [**स्पर्शन**] स्पर्श, छूना; (उप १८७ टी; ६७७)।

छिवा स्त्री [दे] श्लदण कश, चीकना चाबुक; "छिवापहारे य" (णाया १, २—पत्र ८६; पगह १, ३; विपा १,६)।

छिवाडिआ, **छिवाडी** स्त्री [दे] १ वल्ल वगैरः की फली, सीम; (जं १)। २ पुस्तक विशेष, पतले पन्ने वाला ऊँचा पुस्तक, जिसके पन्ने विशेष लंबे और कम चौड़े हों ऐसा पुस्तक; (ठा ४, २; पत्र ८०)।

छिविअ वि [**स्पृष्ट**] १ छूआ हुआ; (दे ३, २७)। २ न. स्पर्श, छूना; (से २, ८)।

छिविअ न [दे] ईख का टुकड़ा; (दे ३, २७)।

छिवोल्लअ [दे] देखो **छिव्वोल्ल**; (गा ६०५ अ)।

छिव्व वि [दे] कृत्रिम, बनावटी; (दे ३, २७)।

छिव्वोल्ल न [दे] १ निन्दार्थक मुख-विकूणन, अरुचि-प्रकाशक मुख-विकार-विशेष; २ विकूणित मुख; (दे ३, २८)।

छिह सक [**स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना। छिहइ; (हे ४, १८२)।

छिहंड न [**शिखण्ड**] मयूर की शिखा; (णाया १, १—पत्र ५७ टी)।

छिहंडअ पुं [दे] दही का बना हुआ मिष्टान्न, दधिसर; गुजराती में जिसे 'सिखंड' कहते हैं; (दे ३, २६)।

छिहंडि पुं [**शिखण्डिन्**] १ मयूर, मोर। २ वि. मयूर-पिच्छ को धारण करने वाला; (णाया १,१—पत्र ५७टी)।

छिहली स्त्री [दे] शिखा, चोटी; (बृह ४)।

छिहा स्त्री [**स्पृहा**] स्पृहा, अभिलाष; (कुमा; हे १,१२८; षड्)।

छिहिंडिभिल्ल न [दे] दधि, दही; (दे ३, ३०)।

छिहिअ वि [**स्पृष्ट**] छूआ हुआ; (कुमा)।

छीअ स्त्रीन [**क्षुत**] छिक्का, छींक; (हे १, ११२; २, १७; ओघ ६४३; पडि)। स्त्री—°**आ**; (श्रा २७)।

छीअमाण वि [**क्षुवत्**] छींक करता; (आचा २,२,३)।

छीण वि [**क्षीण**] क्षय-प्राप्त, कृश, दुर्बल; (हे २, ३; गा ८४)।

छीर न [**क्षीर**] १ जल, पानी; २ दुग्ध, दूध; (हे २, १७; गा ५६७)। °**बिराली** स्त्री [°**बिडाली**] वनस्पति-विशेष, भूमि-कूष्माण्ड; (पगण १—पत्र ३५)।

छीरल पुं [**क्षीरल**] हाथ से चलने वाला एक तरह का जन्तु, साँप की एक जाति; (पगह १, १)।

छीवोल्लअ [दे] देखो **छिव्वोल्ल**; (गा ६०३)।

छु सक [**क्षुद्**] १ पीसना। २ पीलना। कर्म—छुज्जइ; (उव)। कवकृ—**छुज्जमाण**; (संथा ६०)।

छुअ देखो **छीअ**; (प्राप्र)।

छुई स्त्री [दे] बलाका, बक-पङ्क्ति; (दे ३, ३०)।

छुंछुई स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच का पेड़; (दे ३, ३४)।

छुंछुमुसय न [दे] रणरणक, उत्सुकता, उत्कण्ठा; (दे ३, ३१)।

छुंद सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना। छुंदइ; (हे ४, १६०; षड्)।

छुंद वि [दे] बहु, प्रभूत; (दे ३, ३०)।

छुक्कारण न [**धिक्कारण**] धिक्कारना, निंदा; (बृह २)।

छुच्छ वि [**तुच्छ**] तुच्छ, क्षुद्र, हलका; (हे १, २०४)।

छुच्छुक्कर सक [**छुच्छु+कृ**] 'छु छु' आवाज करना, श्वानादि को बुलाने को आवाज करना। छुच्छुक्करेंति; (आचा)।

छुज्जमाण देखो **छु**।

छुट्ट अक [**छुट्**] छूटना, बन्धन-मुक्त होना। छुट्टइ; (भवि)। छुट्टह; (धम्म ६ टी)।

छुट्ट वि [**छुटित**] छुटा हुआ, बन्धन-मुक्त; (सुपा ४०७; सूक्त ८६)।

छुट्ट वि [दे] छोटा, लघु; (पाअ)।

छुट्टण न [**छोटन**] छुटकारा, मुक्ति; (श्रा २७)।

छुड वि [दे] १ लिप्त; २ क्षिप्त, फेंका हुआ; (भवि)।

छुडु अ [दे] १ यदि, जो; (हे ४, ३८५; ४२२)। २ शीघ्र, तुरन्त; (हे ४, ४०१)।

छुड्ड वि [**क्षुद्र**] क्षुद्र, तुच्छ, हलका, लघु; (औप)।

छुड्डिया स्त्री [**क्षुद्रिका**] आभरण-विशेष; (पगह २, ५—पत्र १५६ टी)।

छुण्ण वि [**क्षुण्ण**] १ चूर्णित, चूर २ किया हुआ; २ विहत, विनाशित; ३ अभ्यस्त; (हे २, १७; प्राप्र)।

छुत्त वि [**छुप्त**] स्पृष्ट, छूआ हुआ; (हे २, १३८; कुमा)।

छुत्ति स्त्री [दे] छूत, अशौच; (सूक्त ८६)।

छुद्दहीर पुं [दे] १ शिशु, बच्चा, बालक; २ शशी, चन्द्रमा; (दे ३, ३८)।

छुद्दिया देखो **छुड्डिया**; (पगह २, ५—पत्र १४६)।

छुद्द देखो **खुद्द** ; (प्राप्र) ।

छुद्द वि [**दे**] क्षिप्त, प्रेरित ; (सण) ।

छुन्न देखो **छुण्ण** ; "जंतम्मि पावमइणा छुन्ना छन्नेण कम्मेण" (संथा ५६) ।

छुप्पंत देखो **छुव** ।

छुब्भ अक [**क्षुभ्**] क्षुब्ध होना, विचलित होना । छुब्भंति ; (पि ६६) ।

छुब्भत्थ [**दे**] देखो **छोब्भत्थ** ; (दे ३, ३३) ।

छुभ देखो **छुह** । छुभइ, छुभेइ ; (महा ; रयण २०) । संकृ—**छुभित्ता** ; (पि ६६) ।

छुमा देखो **छमा** ; (दसचू १) ।

छुर सक [**छुर्**] १ लेप करना, लीपना । २ छेदन करना, छेदना । ३ व्याप्त करना ; (वा १२ ; पउम २८,२८) ।

छुर पुं [**क्षुर**] १ छुरा, नापित का अस्त्र ; २ पशु का नख, खुर ; ३ वृक्ष-विशेष, गोखरू ; ४ बाण, शर, तीर ; (हे २, १७ ; प्राप्र) । ५ न. तृण-विशेष; (पराण १) । °**घरय** न [°**गृहक**] नापित की छुरा वगैरः रखने की थैली; (निचू १)।

छुरण न [**क्षुरण**] अवलेपन ; (कप्पू) ।

छुरमड्डि पुं [**दे**] नापित, हजाम ; (दे ३, ३१) ।

छुरहत्थ पुं [**दे. क्षुरहस्त**] नापित, हजाम; (दे ३,३१) ।

छुरिआ स्त्री [**दे**] मृत्तिका, मिट्टी ; (दे ३, ३१) ।

छुरिआ } स्त्री [**क्षुरिका**] छुरी, चाकू ; (महा ; सुपा
छुरिगा } ३८१ ; स १४७) ।

छुरिय वि [**छुरित**] १ व्याप्त ; २ लिप्त ; (पउम २८,२८)।

छुरी स्त्री [**क्षुरी**] छुरी, चाकू ; (दे २, ४ ; प्रासू ६५)।

छुल्ल देखो **छुड्ड** ; (सुपा १५६) ।

छुव सक [**छुप्**] स्पर्श करना, छूना । कर्म—छुप्पइ, छुविज्जइ ; (हे ४, २४६) । कवकृ—**छुप्पंत** ; (उप ३३६ ; ७२८ टी) ।

छुह सक [**क्षिप्**] फेंकना, डालना । छुहइ ; (उव; हे ४, १४३) । संकृ—**छोढूण, छोढूणं**; (स ८५; विसे ३०१) ।

छुहा स्त्री [**सुधा**] १ अमृत, पीयूष ; (हे १, २६५ ; कुमा) । २ खड़ी, मकान पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष, चूना ; (दे १, ७८ ; कुमा) । °**अर** पुं [°**कर**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (षड्) ।

छुहा स्त्री [**क्षुध्**] क्षुधा, भूख, बुभुक्षा ; (हे १, १७ ; दे २, ४२) ।

छुहाइअ वि [**क्षुधित**] भूखा, बुभुक्षित ; (पाअ) ।

छुहाउल वि [**क्षुदाकुल**] ऊपर देखो ; (गा ५८१) ।

छुहालु वि [**क्षुधालु**] ऊपर देखो; (उप पृ १६०; १५० टी)।

छुहिअ वि [**क्षुधित**] ऊपर देखो ; (उव ; उप ७२८ टी ; प्रासू १८०) ।

छुहिअ वि [**दे**] लिप्त, पोता हुआ ; (दे ३, ३०) ।

छूढ वि [**क्षिप्त**] क्षिप्त, प्रेरित ; (हे २, ९२ ; १२७ ; कुमा) ।

छूहिअ न [**दे**] पार्श्व का परिवर्तन ; (षड्) ।

छेअ सक [**छेदय्**] १ छिन्न करना । २ तोड़वाना, छेदवाना । कर्म—छेइज्जंति; (पि ५४३) । संकृ—**छेएत्ता**; (महा) ।

छेअ पुं [**दे**] १ अन्त, प्रान्त, पर्यन्त ; (दे ३, ३८ ; पाअ; से ७, ४८ ; कम्म १, ३६)। २ देवर, पति का छोटा भाई; (दे ३, ३८) । ३ एक देश, एक भाग ; (से १, ७) । ४ निर्विभाग अंश ; (कम्म ४, ८२) ।

छेअ वि [**छेक**] निपुण, चतुर, हुशियार ; (पाअ ; प्रासू १७२ ; औप ; णाया १, १) । °**यरिय** पुं [°**चार्य**] शिल्पाचार्य, कलाचार्य ; (भग ७, ६) ।

छेअ पुं [**छेद**] १ नाश, विनाश ; "विज्जाच्छेओ कओ भइ" (सुर ५, १६४) । २ खण्ड, विभाग ; (से १, ७) । ३ छेदन, कर्तन ; "जीहाछेअं" (गा १५३; से ७, ४८) । ४ छः जैन आगम-ग्रन्थ, वे ये हैं ;—निशीथसुत्र, महानिशीथसूत्र, दशा-श्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहारसूत्र, पञ्चकल्पसूत्र; (विसे २२६५) । ५ छिन्न विभाग, अलग किया हुआ अंश; (से ७, ४८) । ६ कमी, न्यूनता ; (पंचा १६) । ७ प्रायश्चित विशेष ; (ठा ४,१) । ८ शुद्धि-परीक्षा का एक अंग, धर्म-शुद्धि जानने का एक लक्षण, निर्दोष बाह्य आचरण ; "सो छेएण सुद्धोत्ति" (पंचव ३) । °**रिह** न [°**र्ह**] प्रायश्चित्त-विशेष ; (ठा १०) ।

छेअअ } वि [**छेदक**] छेदन करने वाला, काटने वाला;
छेअग } (नाट ; विसे ५१३) ।

छेअण न [**छेदन**] १ खण्डन, कर्तन, द्विधा करण; (सम ३६; प्रासू १४०) । २ कमी, न्यूनता, ह्रास ; (आचा) । ३ शस्त्र, हथियार; (सूअ २, ३)। ४ निश्चायक वचन; (बृह १) ५ सूक्ष्म अवयव; (बृह १)। ६ जल-जीव विशेष ; (सूअ २, ३) ।

छेओवट्ठावण न [**छेदोपस्थापन**] जैन संयम-विशेष, बड़ी दीक्षा ; (नव २६ ; पंचा ११) ।

छेओवट्ठावणिय न [**छेदोपस्थापनीय**] ऊपर देखो ; (सक)।

छेंछई [दे] देखो **छिंछई** ; (गा ३०१)।
छेंड [दे] देखो **छिंड** ; (दे ३, ३५)।
छेंडा स्त्री [दे] १ शिखा, चोटी; २ नवमालिका, लता-विशेष; (दे ३, ३६)।
छेंडी स्त्री [दे] छोटी गली, छोटा रास्ता ; (दे ३, ३१)।
छेग देखो **छेअ**=छेक ; (दे ३, ४७)।
छेज्ज देखो **छिज्ज** ; (दस २ ; महा)।
छेण पुं [दे] स्तेन, चोर ; (षड्)।
छेत्त देखो **खेत्त** ; (गा ६ ; उप ३५७टी ; स १६४ ; भवि)।
छेत्तर न [दे] शूर्प वगैरः पुराना गृहोपकरण; (दे ३, ३२)।
छेत्तसोवणय न [दे] खेत में जागना ; (दे ३, ३२)।
छेत्तु वि [छेत्त] छेदने वाला, काटने वाला ; (आचा)।
छेद देखो **छेअ**=छेदय्। कर्म—छेदीअंति ; (पि ५४३)। संकृ—**छेदिऊण, छेद्देत्ता** ; (पि ५८६ ; भग)।
छेद देखो **छेअ**=छेद ; (पउम ४४, ६७ ; औप ; वव १)।
छेदअ वि [छेदक] छेदने वाला ; (पि २३३)।
छेदोवट्ठावणिय देखो **छेओवट्ठावणिय** ; (ठा ३, ४)।
छेध पुं [दे] १ स्थासक, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का विलेपन ; २ चोर, चोरी करने वाला ; (दे ३, ३६)।
छेप्प न [दे.शेप] पुच्छ, लाङ्गूल ; (गा ६२ ; विपा १, २ ; गउड)।
छेभय पुं [दे] चन्दन आदि का विलेपन, स्थासक ; (दे ३,३२)।
छेल, छेलग, छेलय पुंस्त्री [दे] अज, छाग, बकरा ; (दे ३, ३२ ; स १५०)। स्त्री—°**लिआ**, °**ली** ; (पि २३१ ; पण्ह १, १—पत्र १४)।
छेलावण न [दे] १ उत्कृष्ट हर्ष-ध्वनि ; २ बाल-क्रीडन ; ३ चीत्कार, ध्वनि-विशेष ; "छेलावणमुक्किट्ठाइ बालकीलावणं च सेंटाइ" (आवम)।
छेलिय न [दे] सेण्टित, चीत्कार करना, अव्यक्त ध्वनि-विशेष; (पण्ह १, ३ ; विसे ५०१)।
छेली स्त्री [दे] थोड़े फूल वाली माला ; (दे ३, ३१)।
छेवग न [दे] मारी वगैरः फैली हुई बिमारी ; (वव ५ ; निचू १)।
छेवट्ट, छेवट्ठ न [दे. सेवार्त्त, छेदवृत्त] १ संहनन-विशेष, शरीर-रचना-विशेष, जिसमें मर्कट-बन्ध, बेठन, और खीला न हो कर यों ही हड्डियाँ आपस में जुडी हों ऐसी शरीर-रचना ; (सम ४४ ; १४६ ; भग ; कम्म १, ३६)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पूर्वोक्त संहनन की प्राप्ति होती है वह कर्म ; (कम्म १, ३६)।
छेवाडी [दे] देखो **छिवाडी** ; (पत्र ८० ; निचू १२ ; जीव ३)।
छेह पुं [दे.क्षेप] प्रेरण, क्षेपण ; "तो वअपरिणामोणअभुमआवलिरुब्भमाणदिट्ठिच्छेहो" (से ४, १७)।
छेहत्तरि (अप) देखो **छाहत्तरि** ; (पिंग)।
छोइअ पुं [दे] दास, नौकर ; (दे ३, ३३)।
छोइआ स्त्री [दे] छिलका, ईख वगैरः की छाल; (उप ७६८ टी), "उच्छुखंडे पत्थिए छोइयं पणामेइ" (महा)।
छोड सक [छोटय्] छोड़ना, बन्धन से मुक्त करना। छोडइ, छोडेइ ; (भवि ; महा)। संकृ—**छोडिवि**; (सुपा २४६)।
छोडाविय वि [छोटित] छुड़वाया हुआ, बन्धन-मुक्त कराया हुआ ; (स ६२)।
छोडि स्त्री [दे] छोटी, लघु, क्षुद्र ; (पिंग)।
छोडिअ वि [छोटित] १ छोड़ा हुआ, बन्धन-मुक्त किया हुआ; "वत्थाओ छोडिओ गंठी" (सुपा ५०४; स ४३१)। २ घट्टित, आहत ; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।
छोडिअ देखो **फोडिअ** ; (औप)।
छोढूण, छोढूणं देखो **छुह**।
छोब्भ पुं [दे] पिशुन, खल, दुर्जन ; (दे ३, ३३)। देखो **छोभ**।
छोब्भ वि [क्षोभ्य] क्षोभ-योग्य, क्षोभणीय , "होंति सत्तपरिवज्जिया य छोभा(? ब्भा) सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया" (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।
छोब्भत्थ वि [दे] अप्रिय, अनिष्ट ; (दे ३, ३३)।
छोब्भाइत्ती स्त्री [दे] १ अस्पृश्या, छूने को अयोग्या ; २ द्वेष्या, अप्रीतिकर स्त्री ; (दे ३, ३६)।
छोभ [दे] देखो **छोब्भ** ; (दे ३, ३३ टि)। २ निस्सहाय, दीन ; (पण्ह १, ३—पत्र ५५)। ३ न. अभ्याख्यान, कलंक-आरोपण, दोषारोप ; (बृह १ ; वव २)। ४ न. वन्दन-विशेष, दो खमासमण-रूप वन्दन ; (गुभा १)। ५ आघात; "कोवेण धमधमंतो दंतच्छोभे य देइ सो तम्मि" (महा)।
छोम देखो **छउम** ; (णाया १, ६—पत्र १५७)।
छोयर पुं [दे] छोरा, लड़का, छोकरा ; (उप पृ २१५)।
छोलिअ देखो **छोडिअ**=छोटित ; (पिंग)।

छोल्ल सक [**तक्ष्**] छीलना, छाल उतारना। छोल्लइ; (षड्)। कर्म—छोल्लिज्जंतु ; (हे ४, ३६५)।
छोल्लण न [**तक्षण**] छीलना, निस्तुषीकरण, छिलका उतारना ; (गाया १, ७)।
छोल्लिय वि [**तष्ट**] छिलका उतारा हुआ, तुष-रहित किया हुआ ; (उप १७५)।
छोह पुं [**दे**] १ समूह, यूथ, जत्था ; २ विक्षेप ; (दे ३, ३३)। ३ आघात ; "ताव य सो मायंगो छोहं जा देइ उत्तरिज्जम्मि" (महा)।
छोह पुं [**क्षेप**] १ क्षेपण, फेंकना ; "नियदिट्ठिच्छोहअमय-धाराहिं" (सुपा २६८)।
छोहर [**दे**] देखो **छोयर** ; (सुपा ५५२)।
छोहिय वि [**क्षोभित**] क्षोभ-प्राप्त, घबड़ाया हुआ, व्याकुल किया गया ; (उप १३७ टी)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** छआराइसद्दसंकलणो पंचदसमो तरंगो समत्तो।

ज

ज पुं [**ज**] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा ; प्राप)।
ज स [**यत्**] जो, जो कोई ; (ठा ३, १ ; जी ८ ; कुमा ; गा १०६)।
°**ज** वि [°**ज**] उत्पन्न ; "आसाइयरसवेओ होइ विसेसेण णेहजो दहणो" (गा ७६६)। "आरंभज"— (आचा)।
जअड अक [**त्वर्**] त्वरा करना, शीघ्रता करना। जअडइ; (हे ४, १७० ; षड्)। वकृ—**जअडंत** ; (हे ४, १७०)। प्रयो— जअडावंति ; (कुमा)।
जअल वि [**दे**] छन्न, आच्छादित ; (षड्)।
जइ पुं [**यति**] १ साधु, जितेन्द्रिय, संन्यासी ; (औप ; सुपा ४४४)। २ छन्द-शास्त्र में प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, कविता का विश्राम-स्थान ; (धम्म १ टी)।
जइ अ [**यदा**] जिस समय, जिस वख्त ; (प्राप्र)।
जइ अ [**यदि**] यदि, जो ; (सम १५५; विपा १,१)। °**वि** अ [°**अपि**] जो भी ; (महा)।
जइ अ [**यत्र**] जहां, जिस स्थान में ; (षड्)।
जइ वि [**जयिन्**] जीतने वाला, विजयी ; (कुमा)।
जइआ अ [**यदा**] जिस समय, जिस वख्त ; (उव ; हे ३, ६५)।
जइच्छा स्त्री [**यदृच्छा**] १ स्वतन्त्रता ; २ स्वेच्छाचार ; (राज)।
जइण वि [**जैन**] १ जिन-देव का भक्त, जिन-धर्मी; २ जिन भगवान् का, जिन-देव से संबन्ध रखने वाला; (विसे ३८३ ; धम्म ६ टी; सुर ८, ६४)। स्त्री—°**णी**; (पंचा ३)।
जइण वि [**जयिन्**] जीतने वाला; "मणपवणजइणवेगं" (उवा ; णाया १, १—पत्र ३१)।
जइण वि [**जविन्**] वेग वाला, वेग-युक्त, त्वरा-युक्त; "उवइयउप्पइयचवलजइणसिग्घवेगाहिं" (औप)।
जइत्त वि [**जैत्र**] १ जीतने वाला, विजयी ; (ठा ६)। २ पुं. नृप-विशेष; (रंभा)।
जइत्ता देखो **जय**=जि।
जइय वि [**जयिक**] जयावह, विजयी; (णाया १, ८—पत्र १३३)
जइय वि [**यष्टृ**] याग करने वाला; "तुब्भे जइया जन्नाणं" (उत्त २५, ३८)।
जइयव्व देखो **जय**=यत्।
जइवा अ [**यदिवा**] अथवा, या; (वव १)।
जइस (अप) वि [**यादृश**] जैसा, जिस तरह का; (षड्)।
जउ न [**जतु**] लाक्षा, लाख ; (ठा ४,४ ; उप पृ २४)।
जउ पुं [**यदु**] १ स्वनाम-ख्यात एक राजा ; २ सुप्रसिद्ध क्षत्रिय वंश ; (उव)। °**णंदण** पुं [°**नन्दन**] १ यदु-वंशीय, यदुवंश में उत्पन्न। २ कृष्ण ; (उव)।
जउ पुं [**यजुष्**] वेद-विशेष, यजुर्वेद , (अणु)।
जउण पुं [**यमुन**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ; (उप ४५७)।
जउणा, **जउणा°**, **जउणा** } स्त्री [**यमुना**] भारत को एक प्रसिद्ध नदी ; (ठा १, २ ; हे १, ४ ; १७८)।
जओ अ [**यतः**] १ क्योंकि, कारण कि ; (श्रा २८)। २ जिससे, जहां से; (प्रासू ८३, १४८)।
जं अ [**यत्**] १ क्योंकि, कारण कि ; २ वाक्यान्तर का संबन्ध-सुचक अव्यय ; (हे १, २४ ; महा)। °**किंचि** अ [°**किञ्चित्**] १ जो कुछ, जो कोई; (पडि ; पण्ह १, ३)। २ असंबद्ध, अयुक्त, तुच्छ, नगण्य; (पंचव४)।

जंकयसुकय वि [दे] अल्प सुकृत से ग्राह्य, थोड़े उपकार से अधीन होने वाला ; (दे ३, ४५)।

जंगम वि [जंगम] १ चलने वाला, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में जा सकता हो वह ; (ठा ६ ; भवि)। २ छन्द विशेष ; (पिंग)।

जंगल पुं [जङ्गल] १ देश-विशेष, सपादलक्ष देश ; (कुमा ; सत्त ६७ टी)। २ निर्जल प्रदेश ; (बृह १)। ३ न. मांस; "गयकुंभवियारियमोत्तिएहि जं जंगलं किणइ" (वज्जा ४२)।

जंगा स्त्री [दे] गोचर-भूमि, पशुओं को चरने की जगह ; (दे ३, ४०)।

जंगिअ वि [जाङ्गमिक] १ जंगम वस्तु से संबन्ध रखने वाला, जंगम-संबन्धी। २ न. जंगम जीवों के रोम का बना हुआ कपड़ा; (ठा ३, ३ ; ५, ३ ; कस)।

जंगुलि स्त्री [जाङ्गलि] विष उतारने का मन्त्र, विष-विद्या ; (ती ४५)।

जंगुलिय पुं [जाङ्गुलिक] गारुड़िक, विष-मन्त्र का जानकार ; (पउम १०५, ५७)।

जंगोल स्त्रीन [जाङ्गुल] विष-विघातक तन्त्व, विष-विद्या, आयुर्वेद का एक विभाग जिसमें विष की चिकित्सा का प्रतिपादन है; (विपा १, ७—पत्र ७५)। स्त्री—°**ली** ; (ठा ८)।

जंघा स्त्री [जङ्घा] जाँघ, जानु के नीचे का भाग ; (आचा ; कप्प)। °**चर** वि [°चर] पाद्चारी, पैर से चलने वाला ; (अणु)। °**चारण** पुं [°चारण] एक प्रकार के जैन मुनि, जो अपने तपोबल से आकाश में गमन कर सकते हैं ; (भग २०, ८ ; पव ६७)। °**संतारिम** वि [°संतार्य] जाँघ तक पानी वाला जलाशय ; (आचा २, ३, २)।

जंघाच्छेअ पुं [दे] चत्वर, चौक ; (दे ३, ४३)।

जंघामय } **जंघालुअ** } वि [दे] जंघाल, द्रुत-गामी, वेग से जाने वाला ; (दे ३, ४२ ; षड्)।

जंत सक [यन्त्र्] १ वश करना, काबू में करना। २ जकड़ना, बाँधना ; (उप पृ १३१)।

जंत न [यन्त्र] १ कल, युक्ति-पूर्वक शिल्प आदि कर्म करने के लिए पदार्थ-विशेष, तिल-यन्त्र, जल-यन्त्र आदि; (जीव ३; गा ५५४; पडि; महा; कुमा)। २ वशीकरण, रक्षा वगैरः के लिए किया जाता लेख-प्रयोग; (पण्ह १, २)। ३ संयमन, नियन्त्रण ; (राय)। °**पत्थर** पुं [°प्रस्तर] गोफण का पत्थर ; (पण्ह १, २)। °**पिल्लणकम्म** न [°पीडनकर्मन्] यन्त्र द्वारा तिल, ईख आदि पीलने का धंधा ; (पडि)। °**पुरिस** पुं [°पुरुष] यन्त्र-निर्मित पुरुष, यन्त्र से पुरुष की चेष्टा करने वाला पुतला ; (आवम)। °**वाडचुल्ली** स्त्री [°पाटचुल्ली] इक्षु-रस पकाने का चुल्हा ; (ठा ८—पत्र ४१७)। °**हर** न [°गृह] धारा-गृह, पानी का फवारा वाला स्थान ; (कुमा)।

जंत देखो **जा** = या।

जंतण न [यन्त्रण] १ नियन्त्रण, संयमन, काबू। २ रोकने वाला, प्रतिरोधक , (से ४, ४६)।

जंतिअ पुं [यान्त्रिक] यन्त्र-कर्म करने वाला, कल चलाने वाला ; (गा ५५४)।

जंतिअ वि [यन्त्रित] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ ; (पउम ५३, १४५)।

जंतु पुं [जन्तु] जीव, प्राणी ; (उत्त ३ ; सण)।

जंतुग न [जन्तुक] जलाशय में होने वाला तृण-विशेष ; (पण्ह २, ३— पत्र १२३)।

✓**जंप** सक [जल्प्] बोलना, कहना। जंपइ ; (प्राप्र)। वकृ—**जंपंत, जंपमाण** ; (महा ; गा १९८ ; सुर ४, २)। संकृ—**जंपिऊण, जंपिऊणं, जंपिय** ; (प्राकृ ; महा)। हेकृ—**जंपिउं** ; (महा)। कृ—**जंपिअव्व** ; (गा २४२)।

जंपण न [जल्पन] उक्ति, कथन ; (श्रा १२ ; गउड)।

जंपण न [दे] १ अकीर्ति, अपयश ; २ मुख, मुँह ; (दे ३, ५१ ; भवि)।

जंपय वि [जल्पक] बोलने वाला, भाषक ; (पण्ह १, ३)।

जंपाण न [जम्पान] १ वाहन-विशेष, सुखासन, शिबिका-विशेष ; (ठा ४, ३ ; औप ; सुपा ३६३ ; उप ९५६)। २ मृतक-यान, शव-यान ; (सुपा २१६)।

जंपिच्छय वि [दे] जिसको देखे उसी को चाहने वाला ; (दे ३, ४४ ; पाअ)।

जंपिय वि [जल्पित] कथित, उक्त ; (प्रासु १३०)।

जंपिय देखो **जंप**।

जंपिर वि [जल्पितृ] १ जल्पाक, वाचाट ; (दे २, ९७)। २ बोलने वाला, भाषक ; (हे २, १४५ ; श्रा २७ ; गा १९२ ; सुपा ४०२)।

जंपेक्खिरमग्गिर } **जंपेच्छिरमग्गिर** } वि [दे] जिसको देखे उसीकी याचना करने वाला ; (षड् ; दे ३, ४४)।

जंबवई स्त्री [**जाम्बवती**] श्रीकृष्ण की एक पत्नी ; (अंत १४; आचू १) ।

जंबाल न [**दे**] १ जंबाल, सैवाल, जलमल, सिवार ; (दे ३, ४२ ; पाअ) ।

जंबाल पुंन [**जम्बाल**] १ कर्दम, कादा, पंक ; (पाअ ; ठा ३, ३) । २ जरायु, गर्भ-वेष्टन चर्म ; (सूअ १, ७)।

जंबीरिय (अप) न [**जम्बीर**] नींबु, फल-विशेष ; (सण)॥

जंबु पुं [**जम्बु**] १ जम्बुक, सियार ; “ उद्धमुहुन्नइयजंबुयक्कं” (पउम १०५, ५७) । २ एक प्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी के शिष्य, अन्तिम केवली ; (कप्प ; वसु ; विपा १, १) । ३ न. जम्बू वृक्ष का फल ; (श्रा ३६)।

जंबु° देखो **जंबू** ; (कप्प ; कुमा ; इक ; पउम ५६, २२ ; से १३, ८६) ।

जंबुअ पुं[**दे**] १ वेतस वृक्ष; २ पश्चिम दिक्पाल; (दे ३, ५२)।

जंबुअ } पुं [**जम्बुक**] १ सियार, गीदड़ ; (प्रासू १७१;
जंबुग } उप ७६८ टी ; पउम १०५, ६४) । २ जम्बू-वृक्ष का फल, जामुन ; (सुपा २२६) ।

जंबुल पुं [**दे**] १ वानीर वृक्ष ; २ न. मद्य-भाजन, सुरा-पात्र ; (दे ३, ४१) ।

जंबुल्ल वि [**दे**] जल्पाक, वाचाट , बकवादी ; (:पाअ) ।

जंबुवई देखो **जंबवई** ; (अंत ; पडि) ।

जंबू स्त्री [**जम्बू**] १ वृक्ष-विशेष, जामुन का पेड़ ; (णाया १, १ ; औप) । २ जंबू वृक्ष के आकार का एक रत्न-मय शाश्वत पदार्थ, सुदर्शना, जिसके कारण यह द्वीप जंबूद्वीप कहलाता है ; (जं १) । ३ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी का मुख्य शिष्य ; (जं १) । **°दीव** पुं [**°द्वीप**] भूखण्ड विशेष, द्वीप-विशेष,:सब द्वीप और समुद्रों के बीच का:द्वीप, जिसमें यह भारत आदि क्षेत्र वर्तमान हैं ; (जं १; इक) । **°दीवग** वि [**°द्वीपक**] जम्बू-द्वीप-संबन्धी, जम्बूद्वीप में उत्पन्न ; (ठा ४, २; ६) । **°दीवपण्णत्ति** स्त्री [**°द्वीपप्रज्ञप्ति**] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष, जिसमें जंबूद्वीप का वर्णन है; (जं १) । **°पीढ, °पेढ** न [**°पीठ**] सुदर्शना-जम्बू का अधिष्ठान-प्रदेश; (जं ४; इक) । **°पुर** न [**°पुर**] नगर-विशेष ; (इक)। **°मालि** पुं [**°मालिन्**] रावण का एक पुत्र , रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, २२ ; से १३ , ८६) । **°मेघपुर** न [**°मेघपुर**] विद्याधर-नगर विशेष ; (इक) । **°संड** पुं [**°षण्ड**] ग्राम-विशेष ; (आवम) । **°सामि** पुं [**°स्वामिन्**] सुप्रसिद्ध जैन मुनि-विशेष ; (आवम) ।

जंबूअ पुं [**जम्बूक**] सियार, गीदड़ ; (ओघ ८४ भा) ।

जंबूणय न [**जाम्बूनद**] १ सुवर्ण, सोना ; (सम ६५ ; पउम ५, १२६) । २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ; (पउम ४८, ६८) ।

जंबूलय पुंन [**जम्बूलक**] उदक-भाजन विशेष; (उवा)।

जंभ पुं [**दे**] तुष, धान्य वगैरः का छिलका ; (दे ३,४०)।

जंभंत देखो **जंभा**=जृम्भ् ।

जंभग वि [**जृम्भक**] १ जँभाई लेने वाला । २ पुं. व्यन्तर-देवों की एक जाति ; (कप्प ; सुपा ४०) ।

जंभणंभण } वि [**दे**] स्वच्छन्द-भाषी, जो मरजी में आवे
जंभणभण } वह बोलने वाला ; (षड् ; दे ३, ४४) ।
जंभणय }

जंभणी स्त्री [**जृम्भणी**] तन्त्र-प्रसिद्ध विद्या-विशेष ; (सूअ २, २ ; पउम ७, १४४) ।

जंभय देखो **जंभग**; (णाया १, १ ; अंत; भग १४, ८)।

जंभल पुं [**दे**] जड़, सुस्त, मन्द ; (दे ३, ४१) ।

जंभा स्त्री [**जृम्भा**] जँभाई, जृम्भण ; (विपा १, ८) ।

जंभा } अक [**जृम्भ्**] जँभाई लेना । जंभाइ, जंभाअइ;
जंभाअ } (हे ४, १५७ ; २४० ; प्राप्र ; षड्) । वकृ—**जंभंत, जंभाअंत** ; (गा ५४६ ; से ७, ६५ ; कप्प) ।

जंभाइअ न [**जृम्भित**] जँभाई, जृम्भा ; (पडि) ।

जंभिय न [**जृम्भित**] १ जँभाई, जृम्भा । २ पुं. ग्राम-विशेष, जहां भगवान् महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था ; यह गाँव पारसनाथ पहाड़ के पास की ऋजुवालिका नदी के किनारे पर था ; (कप्प) ।

जक्ख पुं [**यक्ष**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १, ४ ; औप) । २ धनेश, कुबेर, यक्षाधिपति ; (प्राप्र)। ३ एक विद्याधर-राजा, जो रावण का मौसेरा भाई था ; (पउम ८, १०२) । ४ द्वीप-विशेष ; ५ समुद्र-विशेष; (चंद २०) । ६ श्वान, कुत्ता ; “ अह आयविराहणया जक्खुल्लिहणे पवयणम्मि ” (ओघ १६३ भा) । **°कद्दम** पुं [**°कर्दम**] १ केसर, अगर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी का समभाग मिश्रण ; (भवि) । २ द्वीप-विशेष ; ३ समुद्र-विशेष; (चंद २०)। **°ग्गह** पुं [**°ग्रह**] यक्षावेश, यक्ष-कृत उपद्रव; (जीव ३; जं २) । **°णायग** पुं [**°नायक**]

यक्षों का अधिपति, कुबेर ; (अणु)। °दित्त न [°दीप्त] देखो नीचे °ादित्तय ; (पव २६)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] महर्षि स्थूलभद्र की बहिन, एक जैन साध्वी ; (पडि)। °भद्द पुं [°भद्र] यक्षद्वीप का अधिपति देव-विशेष; (चंद २०)। °मंडलपविभत्ति स्त्री [°मण्डलप्रविभक्ति] एक तरह का नाट्य ; (राय)। °मह पुं [°मह] यक्ष के लिए किया जाता महोत्सव ; (आचा २, १, २)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] यक्ष द्वीप का अधिपति देव ; (चंद २०)। °महावर पुं [°महावर] यक्ष समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष; (चंद २०)। °राय पुं [°राज] १ यक्षों का राजा, कुबेर। २ प्रधान यक्ष ; (सुपा ४६२)। ३ एक विद्याधर राजा ; (पउम ८, १२४)। °वर पुं [°वर] यक्ष-समुद्र का अधिपति देव-विशेष ; (चंद २०)। °ाइट्ठ वि [°ाविष्ट] यक्ष का आवेश वाला, यक्षाधिष्ठित ; (ठा ५, १ ; वव २)। °ादित्तय, °ालित्तय न [°ादीप्तक] १ कभी २ किसी दिशा में बिजली के समान जो प्रकाश होता है वह, आकाश में व्यन्तर-कृत अग्नि-दीपन ; (भग ३, ६ ; वव ७)। २ आकाश में दिखाता अग्नि-युक्त पिशाच ; (जीव ३)। °ावेस पुं [°ावेश] यक्ष-कृत आवेश, यक्ष का मनुष्य-शरीर में प्रवेश; (ठा २, १)। °ाहिव पुं [°ाधिप] १ वैश्रमण, कुबेर, यक्ष-राज। २ एक विद्याधर राजा ; (पउम ८, ११३)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (पाअ ; पउम ८, ११६)।

जक्खरत्ति स्त्री [दे. यक्षरात्रि] दीपालिका, दीवाली, कार्तिक वदि अमास का पर्व ; (दे ३, ४३)।

जक्खा स्त्री [यक्षा] एक प्रसिद्ध जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूल-भद्र की बहिन थी ; (पडि)।

जक्खिंद पुं [यक्षेन्द्र] १ यक्षों का स्वामी, यक्षों का राजा ; (ठा ४, १)। २ भगवान् अरनाथ का शासनाधिष्ठायक देव ; (पव २६ ; संति ८)।

जक्खिणी स्त्री [यक्षिणी] १ यक्ष-योनिक स्त्री, देवीओं की एक जाति ; (आवम)। २ भगवान् श्रीनेमिनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२)।

जक्खी स्त्री [याक्षी] लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी)।

जक्खुत्तम पुं [यक्षोत्तम] यक्ष-देवों की एक अवान्तर जाति ; (पण्ण १)।

जक्खेस पुं [यक्षेश] १ यक्षों का स्वामी। २ भगवान् अभिनन्दन का शासन-यक्ष ; (संति ७)।

जग न [यकृत्] पेट की दक्षिण-ग्रन्थि ; (पण्ह १, १)।

जग पुं [दे] जन्तु, जीव, प्राणी ; "पुढो जगा परिसंखाय भिक्खू" (सूअ १, ७, २०)।

जग न [जगत्] जग, संसार, दुनियाँ ; (स २४६ ; सुर २, १३१)। °गुरु पुं [°गुरु] १ जगत् में सर्व-श्रेष्ठ पुरुष ; २ जगत् का पूज्य ; ३ जिन-देव, तीर्थंकर ; (स २१ ; पंचा ४)। °जीवण वि [°जीवन] १ जगत् को जीलाने वाला ; २ पुं. जिन-देव ; (राज)। °णाह पुं [°नाथ] जगत् का पालक, परमेश्वर, जिन-देव ; (णंदि)। °पियामह पुं [°पितामह] १ ब्रह्मा, विधाता। २ जिन-देव ; (णंदि)। °प्पगास वि [°प्रकाश] जगत् का प्रकाश करने वाला, जगत्प्रकाशक ; (पउम २२, ४७)। °प्पहाण न [°प्रधान] जगत् में श्रेष्ठ ; (गउड)।

जगई स्त्री [जगती] १ प्राकार, किला, दुर्ग ; (सम १३ ; चेइय ६१)। २ पृथिवी ; (उत्त १)।

जगजग अक [चकास्] चमकना, दीपना। वकृ—**जग-जगंत, जगजगेंत** ; (पउम ७७, २३ ; १४, १३४)।

जगड सक [दे] १ झगड़ना, झगड़ा करना, कलह करना। २ कदर्थन करना, पीड़ना। ३ उठाना, जागृत करना। वकृ—**जगडंत** ; (भवि)। कवकृ—**जगडिज्जंत**; (पउम ८२, ६ ; राज)।

जगडण न [दे] नीचे देखो ; (उव)।

जगडणा स्त्री [दे] १ झगड़ा, कलह। २ कदर्थन, पीड़न "सेण च्चिय वम्महणायगस्स जगजगडणापसत्तस्स" (उप ५३० टी)।

जगडिअ वि [दे] विद्रावित, कदर्थित ; (दे ३, ४४ ; साध ६७ ; उव)।

जगर पुं [जगर] संनाह, कवच, वर्म ; (दे ३, ४१)।

जगल न [दे] १ पङ्क वाली मदिरा, मदिरा का नीचला भाग ; (दे ३, ४१)। २ ईख की मदिरा का नीचला भाग ; (दे ३, ४१ ; पाअ)।

जगार पुं [दे] राब, यवागू ; (पत्र ४)।

जगार पुं [जकार] 'ज' अक्षर, 'ज' वर्ण ; (निचू १)

जगार पुं [यत्कार] 'यत्' शब्द ; "जगारुद्दिट्ठाण तगारेण निद्देसो कीरइ" (निचू १)।

जगारी स्त्री [**जगारी**] अन्न-विशेष, एक प्रकार का क्षुद्र अन्न ; "अवरां ओयणखत्तुगमुग्गजगारीइ" (पंचा ५) ।
जगुत्तम वि [**जगदुत्तम**] जगत्-श्रेष्ठ, जगत् में प्रधान ; (पराह २, ४) ।
जग्ग अक [**जागृ**] १ जागना, नींद से उठना। २ सचेत होना, सावधान होना। जग्गइ, जग्गि ; (हे ४, ८० ; षड् ; प्रासू ६८) । वकृ—**जग्गंत** ; (सुपा १८५) । प्रयो—जग्गावइ ; (पि ५५६) ।
जग्गण न [**जागरण**] जागना, निद्रा-त्याग; (ओघ १०६)।
जग्गविअ वि [**जागरित**] जगाया हुआ, नींद से उठाया हुआ ; (सुपा ३३१) ।
जग्गह पुं [**यद्ग्रह**] जो प्राप्त हो उसे ग्रहण करने की राजाज्ञा ; "रराणा जग्गहो घोसिओ" (आवम) ।
जग्गाविअ देखो **जग्गविअ** ; (से १०, ५६) ।
जग्गाह देखो **जग्गह** ; (आक) ।
जग्गिअ वि [**जागृत**] जगा हुआ, त्यक्त-निद्र ; (गा ३८५; कुमा ; सुपा ५६३) ।
जग्गिर वि [**जागरितृ**] १ जागने वाला ; २ सावचेत रहने वाला ; (सुपा २१८) ।
जघण न [**जघन**] कमर के नीचे का भाग, ऊरु-स्थल ; (कप्प ; औप) ।
जच्च पुं [**दे**] पुरुष, मरद, आदमी ; (दे ३, ४०) ।
जच्च वि [**जात्य**] १ उत्तम जात वाला, कुलीन, श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दर ; (णाया १, १; श्रा १२ ; सुपा ७७; कप्प) । २ स्वाभाविक, अकृत्रिम ; (तंदु) । ३ सजातीय, विजाति-मिश्रण से रहित, शुद्ध ; (जीव ३) ।
जच्चंजण न [**जात्याञ्जन**] १ श्रेष्ठ अञ्जन ; (णाया १, १) । २ मर्दित अञ्जन, तैल वगैरः से मर्दित अञ्जन ; (कप्प) ।
जच्चंदण न [**दे**] १ अगरु, सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है ; २ कुंकुम, केसर ; (दे ३, ५२) ।
जच्चंध वि [**जात्यन्ध**] जन्म से अन्धा; (सुपा ३६५)।
जच्चण्णिय } वि [**जात्यन्वित**] सुकुल में उत्पन्न, श्रेष्ठ
जच्चन्निय } जाति का; (सूअ १, १० ; बृह ३) ।
जच्चास पुं [**जात्यश्व, जात्याश्व**] उत्तम जाति का घोड़ा; (पउम ५४, २६) ।
जच्चिय (अप) वि [**ज्ञातीय**] समान जाति का ; (सण) ।
जच्चिर न [**यच्चिर**]जहाँ तक, जितने समय तक ; (वव ७)।
जच्छ सक [**यम्**] १ उपरम करना, विराम करना। २ देना, दान करना। जच्छइ ; (हे ४, २१५ ; कुमा) ।
जच्छंद वि [**दे**] स्वच्छन्द, स्वैर ; (दे ३, ४३ ; षड्) ।
जज देखो **जय**=यज् । वकृ—**जजमाण**; (नाट—शकु ७२)।
जज्जु देखो **जउ**=यजुष् ; (णाया १, ५ ; भग) ।
जज्ज वि [**जय्य**] जो जीता जा सके वह, जीतने को शक्य; (हे २, २४) ।
जज्जर वि [**जर्जर**] जीर्ण, सच्छिद्र, खोखला, जाँजर ; (णा १०१ ; सुर ३, १३६) ।
जज्जर सक [**जर्जरय्**] जीर्ण करना, खोखला करना । कवकृ—**जज्जरिज्जंत, जज्जरिज्जमाण** ; (नाट—चैत ३३ ; सुपा ६४) ।
जज्जरिय वि [**जर्जरित**] जीर्ण किया गया, छिद्रित, खोखला किया हुआ ; (ठा ४, ४ ; सुर ३, १६५ ; कस) ।
जट्ट पुं [**जर्त**] १ देश-विशेष ; (भवि) । २ उस देश का निवासी ; (हे २, ३०) ।
जट्ठ वि [**इष्ट**] यजन किया हुआ, याग किया हुआ ; (स ५५) ।
जट्ठि स्त्री [**यष्टि**] लकड़ी ; "जट्ठिमुट्ठिलउडपहारेहिं" (महा; प्राप्र) ।
जड वि [**जड**] १ अचेतन, जीव-रहित पदार्थ ; २ मूर्ख, आलसी, विवेक-शून्य ; (पाअ ; प्रासू ७१) । ३ शिशिर, जाड़े से ठंडा होकर चलने को अशक्त; (पाअ) ।
जड देखो **जढ** ; (षड्) ।
जड° } स्त्री [**जटा**] सटे हुए बाल, मिले हुए बाल ; (हेका
जडा } २५७ ; सुपा २५१) । °**धर** वि [°**धर**] १ जटा को धारण करने वाला । २ पुं. जटा-धारी तापस, संन्यासी ; (पउम ३६, ७५) । °**धारि** पुं [°**धारिन्**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (पउम ३३, १) ।
जडाउ } पुं [**जटायु**] स्वनाम-प्रसिद्ध गृध्र पक्षि-विशेष ;
जडाउण } (पउम ४४, ५५ ; ४०) ।
जडागि पुं [**जटाकिन्**] ऊपर देखो ; (पउम ४१, ६५) ।
जडाल वि [**जटावत्**] जटा-युक्त, जटा-धारी ; (हे २, १५६) ।
जडासुर पुं [**जटासुर**] असुर-विशेष ; (वेणी १७७) ।
जडि वि [**जटिन्**] १ जटा वाला, जटा-युक्त; २ पुं जटाधारी तापस ; (औप ; भत्त १००)।

जडिअ वि [**दे. जटित**] जड़ित, जड़ा हुआ, खचित, संलग्न; (दे ३, ४१ ; महा ; पाअ) ।

जडिम पुंस्त्री [**जडिमन्**] जड़ता, जड़पन, जाड्य; (सुपा ६) ।

जडियाइलग } पुं [**दे. जटिकादिलक**] ग्रह-विशेष, ग्रहा-
जडियाइलय } धिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३; चंद २०) ।

जडिल वि [**जटिल**] १ जटा-वाला, जटा-युक्त ; (उवा ; कुमा २, ३५) । २ व्याप्त, खचित; "उल्लसियबहलजालोलिजडिले जलणे पवेसो वा" (सुपा ४६५) । ३ पुं. सिंह, केसरी ; ४ जटाधारी तापस ; (हे १, १९४ ; भग १५ ; पव ६४) ।

जडिलय पुं [**दे**] राहु, ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २०) ।

जडिलिय } वि [**जटिलित**] जटिल किया हुआ, जटा-
जडिलिल्ल } युक्त किया हुआ; (सुपा १२५ ; ३६६) ।

जड्ड न [**जाड्य**] जड़ता, जड़पन ; (उप ३२० टी ; सार्ध १३०) ।

जड्ड देखो **जड** ; (पव १०७ ; पंचभा) ।

जड्ड पुं [**दे**] हाथी, हस्ती; (ओघ २३८ ; बृह १) ।

जड्डा स्त्री [**दे**] जाड़ा, शीत ; (सुर १३, २१५; पिंग) ।

जढ वि [**त्यक्त**] परित्यक्त, मुक्त, वर्जित ; (हे ४, २५८; ओघ ६०) "जइवि न सम्मत्तजढो" (सत्त ७१ टी) ।

जढर } न [**जठर**] पेट, उदर ; (हे १, २५४ ; प्राप्र ;
जढल } षड्) ।

√**जण** सक [**जनय्**] उत्पन्न करना, पैदा करना । जणेइ, जणंति ; (प्रासू १५ ; १०८ ; महा) । जणयंति ; (आचा) । वकृ—**जणंत, जणेमाण** ; (सुर १३, २१ ; द ३६ ; उव) ।

जण पुं [**जन**] १ मनुष्य, मानव, आदमी, लोग, व्यक्ति ; (औप ; आचा ; कुमा ; प्रासू ६ ; ६५ ; स्वप्न १६) । २ देहाती मनुष्य ; (सूअ १, १, २) । ३ समुदाय, वर्ग, लोक ; (कुमा ; पंचव ४) । ४ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ; "जेण सुहज्झप्पजणं" (विसे ६६०) । °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] जन-समागम, जन-संगति ; "जणजत्तारहियाणं होइ जइत्तं जईण सया" (दंस ४) । °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] १ दण्डकारण्य, दक्षिण का एक जंगल ; २ नगर-विशेष, नासिक ; (ती २८) । °**वइ** पुं [°**पति**] लोगों का मुखिया ; (औप) । °**वय** पुं [°**व्रज**] मनुष्य-समूह ; (पउम ४, ५) । °**वाय** पुं [°**वाद**] १ जन-श्रुति, किंवदन्ती ; (सुपा ३००) । २ मनुष्यों की आपस में चर्चा; (औप) । ३ लोकापवाद, लोक में निन्दा ; "जणवायभएणं" (आव १) । °**स्सुइ** स्त्री [°**श्रुति**] किंवदन्ती । °**ावाय** पुं [°**ापवाद**] लोक में निन्दा ;(गा ४८४) ।

जणइ स्त्री [**जनिका**] उत्पादिका, उत्पन्न करने वाली ; (कुमा) ।

जणइउ } पुं [**जनयितृ**] १ जनक, पिता; (राज) ।
जणइत्तु } २ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ; (ठा ४,४) ।

जणउत्त पुं [**दे**] ग्राम का प्रधान पुरुष, गाँव का मुखिया ; (दे ३,५२ ; षड्) । २ विट, भाण्ड; (दे ३, ५२) ।

जणंगम पुं [**जनङ्गम**] चाण्डाल, "रायाणो हुंति रंका य बंभणा य जणंगमा" (उप १०३१ टी ; पाअ) ।

जणग देखो **जणय** ; (भग; उप पृ २१६ ; सुर २, २३७)।

जणण न [**जनन**] १ जन्म देना, उत्पन्न करना, पैदा करना ; (सुपा ५६७ ; सुर ३, ६ ; द ५७) । २ वि. उत्पादक, जनक ; (उर ६, ६ ; कुमा ; भवि), "जण-मणपसायजणणा" (वसु) ।

जणणि } स्त्री [**जननि,** °**नी**] १ माता, अम्बा ; (सुर
जणणी } ३, २५ ; महा ; पाअ) । २ उत्पन्न करने वाली स्त्री, उत्पादिका ; (कुमा) ।

जणद्दण पुं [**जनार्दन**] श्रीकृष्ण, विष्णु ; (उप ६४८ टी; पिंग) ।

जणमेअअ पुं [**जनमेजय**] स्वनाम-प्रसिद्ध नृप-विशेष ; चारु १२) ।

जणय वि [**जनक**] १ उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ; "दिट्ठिविसं पिसुणाणं सव्वं सव्वस्स भयजणयं" (प्रासू १६)। २ पुं. पिता, बाप; (पाअ ; सुर ३, २५ ; प्रासू ७७) । ३ देखो **जण**=जन ; (सूअ १, ६) । ४ मिथिला का एक राजा, राजा जनक, सीता का पिता; (पउम २१,३३)। ५ पुंन. ब. माता-पिता, मा-बाप; "जं किंपि कोई साहइ, तज्जणयाइं कुणंति तं सव्वं" (सुपा ३५६ ; ५६८) । °**तणआ** स्त्री [°**तनया**] राजा जनक की पुत्री, राजा रामचन्द्र की पत्नी, सीता, जानकी ; (से १, ३७) । °**दुहिया,** °**धूआ** (°**दुहितृ**) वही अर्थ ; (पउम २३, ११ ; ४८, ४) । °**नंदण** पुं [°**नन्दन**] राजा जनक

का पुत्र, भामण्डल ; (पउम ६५, २५)। °नंदणी स्त्री [°नन्दनी] सीता, राम-पत्नी, जानकी; (पउम ६४, ४६)। °णंदिणी स्त्री [°नन्दिनी] वही अर्थ; (पउम ४५, १८)। °निवतणया स्त्री [°नृपतनया] राजा जनक की पुत्री, सीता ; (पउम ४८, ६०)। °पुत्ती स्त्री [°पुत्री] वही अर्थ ; (रयण ७८)। °सुअ पुं [°सुत] जनक राजा का पुत्र, भामण्डल ; (पउम ६५, २८)। °सुआ स्त्री [°सुता] जानकी, सीता ; (पउम ३७, ६३ ; से २, ३८ ; १०, ३)।

जणयंगया स्त्री [जनकाङ्गजा] जानकी, सीता, राजा रामचन्द्र की पत्नी ; (पउम ४१, ७८)।

जणवय पुं [**जनपद**] १ देश, राष्ट्र, जन-स्थान, लोकालय ; (औप)। २ देश-निवासी जन-समूह ; (पराह १, ३ ; आचा)।

जणवय वि [**जानपद**] देश में उत्पन्न, देश का निवासी; (आचा)।

जणि (अप) अ [**इव**] तरह, माफिक, जैसा ; (हे ४, ४४४ ; षड्)।

जणिअ वि [**जनित**] उत्पादित, उत्पन्न किया हुआ ; (पाअ)।

जणी स्त्री [**जनी**] स्त्री, नारी, महिला ; (गाया २—पत्र २५३ ; पउम १५, ७३)।

जणु देखो **जणि** ; (हे ४, ४४४; कुमा ; षड्)।

जणुक्कलिआ स्त्री [**जनोत्कलिका**] मनुष्यों का छोटा समूह ; (भग)।

जणुम्मि स्त्री [**जनोर्मि**] तरंग की तरह मनुष्यों की भीड़ ; (भग)।

जणेमाण देखो **जण**=जनय्।

जणेर (अप) वि [**जनक**] १ उत्पादक, पैदा करने वाला ; २ पुं. पिता, बाप ; (भवि)।

जणेरि (अप) स्त्री [**जननी**] माता, माँ; (भवि)।

जण्ण पुं [**यज्ञ**] १ यज्ञ, याग, मख, क्रतु ; (प्राप्र ; गा २२७)। २ देव-पूजा ; ३ श्राद्ध ; (जीव ३)। °इ, °जाइ वि [°याजिन्] यज्ञ करने वाला ; (औप ; निवू १)। °इज्ज वि [°ीय] १ यज्ञ-संबन्धी, यज्ञ का ; २ न. 'उत्तराध्ययन सूत्र' का एक प्रकरण ; (उत्त २५)। °ट्ठाण न [°स्थान] १ यज्ञ का स्थान ; २ नगर-विशेष, नासिक; (ती २०)। °मुह न [°मुख] यज्ञ का उपाय ; (उत्त २५)। °वाड पुं [°वाट] यज्ञ-स्थान; (गा २२७)। °सेट्ठ पुं [°श्रेष्ठ] श्रेष्ठ यज्ञ, उत्तम याग ; (उत्त १२)।

जण्णय देखो **जणय** ; (प्राप्र)।

जण्णयत्ता स्त्री [**दे.यज्ञयात्रा**] बरात, विवाह की यात्रा, वर के साथिओं का गमन ; (उप ६५४)।

जण्णसेणी स्त्री [**याज्ञसेनी**] द्रौपदी, पाण्डव-पत्नी ; वेणी ३७)।

जण्णहर पुं [**दे**] नर-राक्षस, दुष्ट मनुष्य ; (षड्)।

जण्णिय पुं [**याज्ञिक**] याजक, यज्ञ करने वाला; (आवम)।

जण्णोवईय) न [**यज्ञोपवीत**] यज्ञ-सूत्र, जनेऊ ; (उत्त **जण्णोववीय**) २ ; आवम)।

जण्णोहण पुं [**दे**] राक्षस, पिशाच ; (दे ३, ४३)।

जण्ह न [**दे**] १ छोटी स्थाली; २ वि.कृष्ण, काले रंग का; (दे ३, ५१)।

जण्हई स्त्री [**जाह्नवी**] गंगा नदी, भागीरथी ; (अच्चु ६)।

जण्हली स्त्री [**दे**] नीवी, नारा, इजारबन्द ; (दे ३, ४०)।

जण्हवी स्त्री [**जाह्नवी**] १ सगर चक्रवर्ती की एक पत्नी, भगीरथ की जननी ; (पउम ५, २०१)। २ गङ्गा नदी, भागीरथी ; (पउम ४१, ५१; कुमा)।

जण्हु पुं [**जह्नु**] भरत-वंशीय एक राजा ; (प्राप्र; हे २, ७५)। °सुआ स्त्री [°सुता] गङ्गा नदी, भागीरथी; (पाअ)।

जण्हुआ स्त्री [**दे**] जानु, घुटना ; (पाअ)।

जत्त देखो **जय**=यत्। भवि—जत्तिहामि ; (निर १, १)।

जत्त पुं [**यत्न**] उद्योग, उद्यम, चेष्टा ; (उप पृ ५८)।

जत्ता स्त्री [**यात्रा**] १ देशान्तर-गमन, देशाटन ; (ठा ४, १ ; औप)। २ गमन, गति ; "जत्तत्ति होइ गमणं" (पंचभा ; औप)। ३ देव-पूजा के निमित्त किया जाता उत्सव-विशेष, अष्टाहिका, रथयात्रा आदि; "हुं नायं पारद्धा सिद्धाययणेसु जत्ताओ" (सुर ३, ३८)। ४ तीर्थ-गमन, तीर्थ-भ्रमण ; (धर्म २)। ५ शुभ प्रवृत्ति ; (भग १८, १०)।

जत्ति स्त्री [**दे**] १ चिन्ता ; २ सेवा, सुश्रूषा ; "अजाणणाए तज्जत्ती न कया तम्मि केणवि" (श्रा २८)।

जत्तिय वि [**यावत्**] जितना ; (प्रासू १५६; आवम)।

जत्तो देखो **जओ** (हे २, १६०)।

जत्थ अ [**यत्र**] जहां, जिसमें ; (हे २, १६१ ; प्रासू ७६) ।
जदि देखो **जइ**=यदि; (निवृ २) ।
जदिच्छा देखो **जइच्छा** ; (बृह ३ ; मा १२) ।
जदु देखो **जउ**=यदु ; (कुमा ; ठा ८) ।
जधा देखो **जहा** ; (ठा २, ३ ; ३, १) ।
जन्न देखो **जण्ण** ; (पगह १, २ ; ४ ; पउम ११, ४६) ।
जन्नत्ता } स्त्री [**दे**] बरात ; गुजराती में 'जान' ; (सुपा
जन्ना } ३६६ ; उप ७६८ टी) ।
जन्नु देखो **जाणु** ; (पउम ६८, १०) ।
जन्नोवईय देखो **जण्णोवईय**; (णाया १, १६ —पत्र २१३)।
जन्हवी देखो **जण्हवी** ; (ठा ६, ६) ।
जप देखो **जव**=जप् ; (षड्) ।
जपिर वि [**जपितृ**] जाप करने वाला; (षड्) ।
जप्प देखो **जंप** । जप्पइ; (षड्) । जप्पंति ; (पि २९६) ।
जप्प पुं [**जल्प**] १ उक्ति, कथन । २ छल का उपालम्भ रूप भाषण ; (राज) ।
जप्प वि [**याप्य**] गमन कराने योग्य । °**जाण** न [°**यान**] वाहन-विशेष, शिबिका ; (दे ६, १२२) ।
जप्पभिइ } अ [**यत्प्रभृति**] जब से, जहां से लेकर ;
जप्पभिइं } (णाया १, १; कप्प) ।
जप्पिअ वि [**जल्पित**] १ उक्त, कथित ; (प्राप) । २ न. उक्ति, वचन ; (अच्चु २) ।
जम सक [**यमय्**] १ काबू में रखना, नियंत्रण करना। २ जमाना, स्थिर करना । जमेइ; (से १०, ७०) । संकृ— **जमइत्ता** ; (औप) ।
जम पुं [**यम**] १ अहिंसादि पाँच महाव्रत, साधु का व्रत ; (णाया १, ५ ; ठा २, ३) । २ दक्षिण दिशा का एक लोकपाल, देव-विशेष, जम-देवता, जमराज; (पगह १,१; पाअ; हे १, २४५) । ३ भरणी नक्षत्र का अधिपति देव ; (सुज्ज १०) । ४ किष्किन्धा नगरी का एक राजा ; (पउम ७, ४६) । ५ तापस-विशेष ; (आवम) । ६ मृत्यु, मौत ; (आव ४ ; महा) । ७ संयमन, नियन्त्रण ; (आवम) । °**काइय** पुं [°**कायिक**] असुर-विशेष, परमाधार्मिक देव, जो नारकी के जीवों को दुःख देते हैं; (पगह १, १) । °**घोस** पुं [°**घोष**] ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव ; (पव ७) । °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] जम की नगरी, मौत का स्थान ; "को जमपुरीसमाणे समसाणे एवमुल्लवइ ?" (सुपा ४६२) । °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] यमदेव का उत्पात-पर्वत, पर्वत-विशेष; (ठा १०) । °**भड** पुं [°**भट**] यमराज का सुभट ; (महा) । °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] यमराज का घर, मृत्यु-स्थान ; (महा) । °**ालय** न [°**ालय**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (पउम ४५, १०) ।
जमग पुं [**यमक**] १ पक्षि-विशेष ; २ देव-विशेष ; (जीव ३) । ३ पर्वत-विशेष; (जीव ३ ; सम ११४ ; इक) । ४ द्रह विशेष ; (जीव ३ ; इक) । देखो **जमय** ।
जमगं } अ [**दे**] एक साथ, एक ही समय में,
जमगसमगं } युगपत् ; (धम्म ११ टी ; णाया १,४ ; औप ; विपा १, १) ।
जमणिया स्त्री [**जमनिका**] जैन साधु का उपकरण-विशेष; (राज) ।
जमदग्गि पुं [**यमदग्नि**] तापस-विशेष, इस नाम का एक संन्यासी, परसुराम का पिता ; (पि २३७) ।
जमय देखो **जमग** । ५ न. अलंकार-शास्त्र में प्रसिद्ध अनुप्रास-विशेष ; ६ छन्द-विशेष; (पिंग) ।
जमल न [**यमल**] १ जोड़ा, युग्म, युगल ; (णाया १, १ ; हे २, १७३ ; से ५, ५६) । २ समान श्रेणि में स्थित, तुल्य पंक्ति वाला ; (राय) । ३ सहवर्ती, सहचारी; (भग १५) । ४ समान, तुल्य ; (राय ; औप) । °**ज्जुणभंजग** पुं [°**ार्जुनभञ्जक**] श्रीकृष्ण वासुदेव ; (पगह १, ४) । °**पद**, °**पय** न [°**पद**] १ प्रायश्चित्त-विशेष ; (निचू १) । २ आठ अंकों की संख्या ; (पगण १२) । °**पाणि** पुं [°**पाणि**] मुष्टि, मुट्ठी; (भग १६,३)।
जमलिय वि [**यमलित**] १ युग्म रूप से स्थित ; (राय)। २ सम-श्रेणि रूप से अवस्थित ; (णाया १, १ ; औप) ।
जमलोइय वि [**यमलौकिक**] १ यमलोक-संबन्धी, यम-लोक से संबन्ध रखने वाला ; २ परमाधार्मिक देव, असुरों की एक जाति ; (सुअ १, १२) ।
जमा स्त्री [**यामी**] दक्षिण दिशा ; (ठा १०—पत्र ४७८)।
जमालि पुं [**जमालि**] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार, जो भगवान् महावीर का जामाता था, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी और पीछे से अपना अलग पन्थ निकाला था ; (णाया १, ८ ; ठा ७) ।
जमावण न [**यमन**] १ नियन्त्रण करना ; २ विषम वस्तु को सम करना ; (निचू १) ।

जमिअ वि [**यमित**] नियन्त्रित, संयमित, काबू में किया हुआ ; (से ११, ४१ ; सुपा ३)।
जमुणा देखो **जँउणा**; (पि १७६ ; २५१)।
जमू स्त्री [**जम्बू**] ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी का नाम ; (इक)।
जम्म अक [**जन्**] उत्पन्न होना। जम्मइ ; (हे ४, १३६ ; षड्)। वकृ—**जम्मंत** ; (कुमा), "जम्मंतीए सोगो, वड्ढंतीए य वड्ढए चिंता" (सूक्त ८८)।
जम्म सक [**जम्**] खाना, भक्षण करना। जम्मइ ; (षड्)।
जम्म पुंन [**जन्मन्**]जन्म, उत्पत्ति; (ठा ६ ; महा; प्रासू ६०)।
जम्मण न [**जन्मन्**] जन्म, उत्पत्ति, उत्पाद ; (हे २, १७४; गाया १, १ ; सुर १, ६)।
जम्मा स्त्री [**याम्या**] दक्षिण दिशा ; (उप पृ ३७५)।
जय सक [**जि**] १ जीतना। २ अक. उत्कृष्टपन से बरतना। जयइ ; (महा)। जयंति ; (स ३६)। संकृ—**जइत्ता**; (ठा ६)।
जय सक [**यज्**] १ पूजा करना। २ याग करना। जयइ ; (उत्त २५, ४)। वकृ—**जअमाण** ; (अभि १२५)।
जय अक [**यत्**] १ यत्न करना, चेष्टा करना। २ ख्याल करना, उपयोग करना। जयइ ; (उव)। भवि—**जइस्समि**; (महा)। वकृ—**जयंत**; **जयमाण** ; (स २६० ; श्रा २६ ; ओघ १२४ ; पुप्फ २४१)। कृ—**जइयव्व** ; (उव ; सुर १, ३४)।
जय न [**जगत्**] जगत्, दुनियाँ, संसार ; (प्रासू १५५ ; से ६, १)। °**त्तय** न [°**त्रय**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (सुपा ७६ ; ६५)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] परमेश्वर, परमात्मा ; (पउम ८६, ६५)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] परमेश्वर ; (सुपा २८ ; ८६)। °**ाणंद** वि [°**ानन्द**] जगत् को आनन्द देने वाला ; (पउम ११७, ६)।
जय वि [**यत**] १ संयत, जितेन्द्रिय ; (भास ६५)। २ उपयोग रखने वाला, ख्याल रखने वाला ; (उत्त १ ; आव ४)। ३ न. छठवाँ गुण-स्थानक ; (कम्म ४, ४८)। ४ ख्याल, उपयोग, सावधानता ; (गाया १, १—पत्र ३३), "जयं चरे जयं चिट्ठे" (दस ४)।
जय पुं [**जव**] वेग, शीघ्र-गमन, दौड़ ; (पाअ)।
जय पुं [**जय**] १ जय, जीत, शत्रु का पराभव ; (औप ; कुमा)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक चक्रवर्ती राजा ; (सम १५२)। °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (स ६)। °**कम्मा** स्त्री [°**कर्मा**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३६)। °**घोस** पुं [°**घोष**] १ जय-ध्वनि ; २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि; (उत्त २५)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का एक कन्नौज का अन्तिम राजा। २ पन्नरहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य ; (रयण ६४)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**]शत्रु पर चढ़ाई ; (सुपा ५४१)। °**पडाया** स्त्री [°**पताका**] विजय का झंडा ; (श्रा १२)। °**पुर** देखो °**उर** ; (वसु)। °**मंगला** स्त्री [°**मङ्गला**] एक राज-कुमारी ; (दंस ३)। °**लच्छी** स्त्री [°**लक्ष्मी**] जय-लक्ष्मी, विजय-श्री ; (से ४, ३१ ; काप्र ७४३)। °**वंत** वि [°**वत्**] जय-प्राप्त, विजयी ; (पउम ६६,४६)। °**वल्लह** पुं [°**वल्लभ**] नृप-विशेष ; (दंस १)। °**संध** पुं [°**सन्ध**] पुण्डरीक-नामक राजा का एक मन्त्री ; (आचू ४)। °**संधि** पुं [°**सन्धि**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (आव ४)। °**सद्द** पुं [°**शब्द**] विजय-सूचक आवाज; (औप)। °**सिंह** पुं [°**सिंह**] १ सिंहल द्वीप का एक राजा ; (रयण ४४)। २ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा, जिसका दूसरा नाम 'सिद्धराज' था ; "जेण जयसिंहदेवो राया भणिऊण सयलदेसम्मि" (मुणि १०६००)। ३ स्वनाम-ख्यात जैनाचार्य विशेष ; (सुपा ६५८), "सिरिजयसिंहो सूरी सयंभरीमण्डलम्मि सुप्रसिद्धो" (मुणि १०८७२)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] विजय-श्री, जय-लक्ष्मी ; (आवम)। °**सेण** पुं [°**सेन**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ; (महा)। °**ावह** वि [°**ावह**] १ जय को वहन करने वाला, विजयी ; (पउम ७०, ७ ; सुपा २३४)। २ विद्याधर-नगर विशेष ; (इक)। °**ावहपुर** न [°**ावह-पुर**] एक विद्याधर-नगर ; (इक)। °**ावास** न [°**ावास**] विद्याधरों का एक स्वनाम-ख्यात नगर ; (इक)।
जय पुंस्त्री [**जया**] तिथि-विशेष— तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि ; (जं १)।
जय° देखो **जया**=यदा। °**प्पभिइ** अ [°**प्रभृति**] जब से, जिस समय से ; (स ३१६)।
जयंत पुं [**जयन्त**] १ इन्द्र का पुत्र; (पाअ)। २ एक भावी बलदेव ; (सम १५४)। ३ एक जैन मुनि, जो वज्रसेन मुनि के तृतीय शिष्य थे ; (कप्प)। ४ इस नाम के देव-विमान में रहने वाली एक उत्तम देव-जाति ; (सम ५६)। ५ जंबूद्वीप की जगती के पश्चिम द्वार का एक अधिष्ठाता देव ; (ठा ४, २)। ६ न. देव-विमान विशेष ; (सम ५६)।

७ जम्बूद्वीप की जगती का पश्चिम द्वार ; (ठा ४, २)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ४)।

जयंती स्त्री [**जयन्ती**] १ वल्ली-विशेष ; (पण्ण १)। २ सप्तम बलदेव की माता ; (सम १५२)। ३ विदेह वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३)। ४ अंगारक-नामक ग्रह की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४,१)। ५ जम्बूद्वीप के मेरु से पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)। ६ भगवान् महावीर की एक उपासिका ; (भग १२, २)। ७ भगवान् महावीर के आठवें गणधर की माता ; (आवम)। ८ अञ्जनक पर्वत की एक वापी ; (ती २४)। ६ नवमी तिथि ; (जं ७)। १० जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।

जयण न [**यजन**] १ याग, पूजा ; २ अभय-दान ; (पण्ह २, १)।

जयण न [**यतन**] १ यत्न, प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम ; "जयण-घडण-जोग-चरितं" (अनु)। २ यतना, प्राणी की रक्षा ; (पण्ह २, १)।

जयण वि [**जवन**] वेग वाला, वेग-युक्त ; (कप्प)।

जयण न [**जयन**] १ जीत, विजय ; (मुद्रा २६८ ; कप्पू)। २ वि. जीतने वाला ; (कप्प)।

जयण न [**दे**] घोड़े का बख्तर, हय-संनाह ; (दे ३,४०)।

जयणा स्त्री [**यतना**] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश ; (निचू १)। २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग ; (दस ४)। ३ उपयोग, किसी जीव को दुःख न हो इस तरह प्रवृत्ति करने का ख्याल ; (निचू १ ; सं ६७ ; औप)।

जयद्दह पुं [**जयद्रथ**] सिन्धु देश का स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था ; (गाया १, १६)।

जया अ [**यदा**] जिस समय, जिस वख्त ; (कप्प ; काल)।

जया स्त्री [**जया**] १ विद्या-विशेष ; (पउम ७, १४१)। २ चतुर्थ चक्रवर्ती राजा की अग्र-महिषी ; (सम १५२)। ३ भगवान् वासुपूज्य की स्वनाम-ख्यात माता ; (सम १५१)। ४ तिथि-विशेष—तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि ; (सुज्ज १०)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी ; (ती ६)। ६ ओषधि-विशेष ; (राज)।

जयिण देखो **जइण**=जयिन् ; (पण्ह १, ४)।

जर अक [**जॄ**] जीर्ण होना, पुराना होना, बूढ़ा होना। जरइ ; (हे ४, २३४)। कर्म—जीरइ, जरिज्जइ ; (हे ४, २५०)। वकृ—**जरंत** ; (अच्चु ७६)।

जर पुं [**ज्वर**] रोग-विशेष, बुखार ; (कुमा)।

जर पुं [**जर**] १ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६,३)। २ वि. जीर्ण, पुराना ; (दे ३, ५६)।

जर वि [**जरत्**] जीर्ण, पुराना, वृद्ध, बूढ़ा ; (कुमा ; सुर २, ६६ ; १०४)। स्त्री—**°ई** ; (कुमा ; गा ४७२ अ)। **°ग्गव** पुं [**°गव**] बूढ़ा बैल ; (बृह १ ; अनु ४)। **°ग्गवी** स्त्री [**°गवी**] बूढ़ी गौ ; (गा ४६२)। **°ग्गु** पुं [**°गु**] १ बूढ़ा बैल ; २ स्त्री. बूढ़ी गौ ; "जिण्णा य जरग्गवो पडिया" (पउम ३३, १६)।

जर° देखो **जरा** ; (कुमा ; अंत १६ ; वव ७)।

जरंड वि [**दे**] वृद्ध, बूढ़ा ; (दे ३,४०)।

जरग्ग वि [**जरत्क**] जीर्ण, पुराना ; (अनु ५)।

जरठ वि [**जरठ**] १ कठिन, परुष ; २ जीर्ण, पुराना ; (णाया १, १—पत्र ५)। देखो—**जरढ**।

जरड वि [**दे**] वृद्ध, बूढ़ा ; (दे ३, ४०)।

जरढ देखो **जरठ** ; (पि १६८ ; से १०, ३८)। ३ प्रौढ, मजबूत ; (से १, ४३)।

जरय पुं [**जरक**] रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६— पत्र ३६५)। **°मज्झ** पुं [**°मध्य**] नरकावास-विशेष ; (ठा ६)। **°वत्त** पुं [**°वर्त**] नरकावास-विशेष ; (ठा ६)। **°वसिट्ठ** पुं [**°वशिष्ट**] नरकावास-विशेष ; (ठा ६)।

जरलद्दिअ / **जरलविअ** } वि [**दे**] ग्रामीण, ग्राम्य ; (दे ३, ४४)।

जरा स्त्री [**जरा**] बुढ़ापा, वृद्धत्व ; (आचा ; कस ; प्रासू १३४)। **°कुमार** पुं [**°कुमार**] श्रीकृष्ण का एक भाई ; (अंत)। **°संध** पुं [**°सन्ध**] राजगृह नगर का एक राजा, नववाँ प्रतिवासुदेव, जिसको श्री कृष्ण वासुदेव ने मारा था ; (सम १५३)। **°सिंध** पुं [**°सिन्ध**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। **°सिंधु** पुं [**°सिन्धु**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (णाया १, १६—पत्र २०६ ; पउम ५, १५६)।

जराहिरण (अप) देखो **जल-हरण** ; (पिंग)।

जरि वि [**ज्वरिन्**] बुखार वाला, ज्वर से पीड़ित ; (सुपा २४३)।

जरि वि [**जरिन्**] जरा-युक्त, वृद्ध, बूढ़ा ; (दे ३, ५७ ; उर ३, १)।

जरिअ वि [**ज्वरित**] ज्वर-युक्त, बुखार वाला ; (गा २५६ ; सुपा २८६)।

जल अक [**ज्वल्**] १ जलना, दग्ध होना । २ चमकना । जलइ; (महा) । वकृ—**जलंत** ; (उवा; गा २६४) । हेकृ— **जलिउं**; (महा) । प्रयो, वकृ—**जलिंत** ; (महानि ७) ।

जल देखो **जड** ; (श्रा १२ ; आव ४) ।

जल न [**जाड्य**] जड़ता, मन्दता ; " जलधोयजललेवा" (सार्ध ७३ ; से १, २४) ।

जल पुं [**ज्वल**] देदीप्यमान, चमकीला ; (सूत्र १, ५, १)।

जल न [**जल**] १ पानी, उदक ; (सूत्र १, ५, २ ; जी २) । २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १) । °**कंत** पुं [°**कान्त**] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति ; (पराग १ ; कुम्मा १५) । २ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३) । ३ जलकान्त इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १) । °**करप्फाल** पुं [°**करास्फाल**] हाथ से आहत पानी ; (पाअ) । °**करि** पुंस्त्री [°**करिन्**] पानी का हाथी, जल-जन्तु विशेष ; (महा) । °**कलंब** पुं [°**कदम्ब**] कदम्ब वृक्ष की एक जाति; (गउड) । °**कीडा**, °**कोला** स्त्री [°**क्रीडा**] पानी में की जाती क्रीड़ा, जल-केलि; (णाया १, २)। °**केलि** स्त्री [°**केलि**] जल-क्रीड़ा ; (कुमा)। °**चर** देखो °**यर** ; (कप्प ; हे १,१७७) । °**चार** पुं [°**चार**] पानी में चलना, (आचा २,५, १) । °**चारण** पुं [°**चारण**] जिसके प्रभाव से पानी में भी भूमि की तरह चला जा सके ऐसी अलौकिक शक्ति रखने वाला मुनि ; (गच्छ २) । °**चारि** पुं [°**चारिन्**] पानी में रहने वाला जंतु; (जी २०) । °**चारिया** स्त्री [°**चारिका**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति; (राज) । °**जंत** न [°**यन्त्र**] पानी का यन्त्र, पानी का फवारा; (कुमा) । °**णाह** पुं [°**नाथ**] समुद्र, सागर ; (उप ७२८ टी) । °**णिहि** पुं [°**निधि**] समुद्र, सागर ; (गउड) । °**णोली** स्त्री [°**नीली**] शैवाल ; (दे ३, ४२) । °**तुसार** पुं [°**तुषार**] पानी का बिन्दु ; (पाअ) । °**थंभिणी** स्त्री [°**स्तम्भिनी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३६) । °**द** पुं [°**द**] मेघ, अभ्र ; (मुद्रा २६२ ; पव १८) । °**द्दा** स्त्री [°**आर्द्रा**] पानी से भींजाया हुआ पंखा ; (सुपा ४१३) । °**निहि** देखो °**णिहि** ; (प्रासू १२७) । °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] १ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३) । २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १) । °**य** न [°**ज**] कमल, पद्म ; (पउम १२, ३७ ; औप ; पराग १) । °**य** देखो °**द** ; (काल ; गउड ; से १, २४) । °**यर** पुंस्त्री [°**चर**] जल में रहने वाला ग्रहादि जन्तु; (जी २०) ; स्त्री—°**री** ; (जीव २) । °**रंकु** पुं [°**रङ्कु**] पक्षि-विशेष, ढेंक-पक्षी; (गा ५७८; गउड) । °**रक्खस** पुं [°**राक्षस**] राक्षस की एक जाति ; (पराग १) । °**रमण** न [°**रमण**] जल-क्रीड़ा, जल-केलि ; (णाया १, १३) । °**रय** पुं [°**रय**] जलप्रभ-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १) । °**रासि** पुं [°**राशि**] समुद्र, सागर ; (सुपा १६५ ; उप २६४ टी) । °**रुह** पुंन [°**रुह**] पानी में पैदा होने वाली वनस्पति ; (पराग १) । °**रूव** पुं [°**रूप**] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (भग ३, ८) । °**लिलिर** न [°**लिलिर**] पानी में उत्पन्न होने वाली वस्तु-विशेष ; (दंस १) । °**वायस** पुंस्त्री [°**वायस**] जलकौआ, पक्षि-विशेष ; (कुमा) । °**वासि** वि [°**वासिन्**] १ पानी में रहने वाला ; २ पुं. तापसों की एक जाति, जो पानी में ही निमग्न रहते हैं ; (औप) । °**वाह** पुं [°**वाह**] १ मेघ, अभ्र ; (उप पृ ३२ ; सुपा ८६) । २ जन्तु-विशेष ; (पउम ८८, ७) । °**विच्छुय** पुं [°**वृश्चिक**] पानी का बिच्छी, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पराग १) । °**वीरिय** पुं [°**वीर्य**] १ इक्ष्वाकु वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा ; (ठा ८) । २ क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (जीव१)। °**सय** न [°**शय**] कमल, पद्म ; (उप १०३१ टी) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] प्रपा, पानी पिलाने का स्थान ; (श्रा१२)। °**सूग** न [°**शूक**] १ शैवाल । २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १) । °**सेल** पुं [°**शैल**] समुद्र के भीतर का पर्वत ; (उप ५६७ टी) । °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] जल-हस्ती, पानी का एक जन्तु; (पाअ) । °**हर** पुं [°**धर**] १ मेघ, अभ्र ; (सुर २, १०४ ; से १, ५६) । २ एक विद्याधर सुभट ; (पउम १२, ६५) । °**हर** पुं [°**भर**] जल-समूह ; (गउड) । °**हर** न [°**गृह**] समुद्र, सागर ; (से १, ५६) । °**हरण** न [°**हरण**] १ पानी की क्यारी ; (पाअ) । २ छन्द-विशेष ; (पिंग) । °**हि** पुं [°**धि**] १ समुद्र, सागर ; (महा ; सुपा २२३) । २ चार की संख्या ; (विवे १४४) °**ासय** पुंन [°**ाशय**] सरोवर, तलाव; (सुर ३, १)।

जलइय पुं [**जलकित**] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोक-पाल ; (ठा ४, १—पत्र १६८) ।
जलंजलि पुं [**जलाञ्जलि**] तर्पण, दोनों हाथों में लिया हुआ जल ; (सुर ३, ५१ ; कप्पू) ।
जलग पुं [**ज्वलक**] अग्नि, आग ; (पिंड) ।
जलजलिंत वि [**जाज्वल्यमान**] देदीप्यमान, चमकता ; (कप्प) ।
जलण पुं [**ज्वलन**] १ अग्नि, वह्नि ; (उप ६४८ टी) । २ देवों की एक जाति, अग्निकुमार-नामक देव-जाति ; (पण्ह १, ४)। ३ वि. जलता हुआ; ४ चमकता, देदीप्यमान ; "एईए जलणजलणोवमाए" (उव ६४८ टी) । ५ जलाने वाला ; (सुअ १, १, ४) । ६ न. अग्नि सुलगाना; (पण्ह १, ३) । ७ जलाना, भस्म करना ; (गच्छ २) । °**जडि** पुं [°**जटिन्**]विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४६) । °**मित्त** पुं [°**मित्र**] स्वनाम-ख्यात एक प्राचीन कवि ; (गउड) ।
जलावण न [**ज्वालन**] जलाना, दग्ध करना; (पण्ह १, १)।
जलिअ वि [**ज्वलित**] १ जला हुआ, प्रदीप्त ; (सूअ १, ५, १) । २ उज्ज्वल, कान्ति-युक्त ; (पण्ह २, ५) ।
जलूगा, **जलूया** स्त्री [**जलौकस्**] १ जन्तु-विशेष, जोंक, जलिका, जल का कीड़ा ; (पउम १, २४ ; पण्ह १, १) । २ पक्षि-विशेष ; (जीव १) ।
जलूसग पुं [**दे**] रोग-विशेष ; (उप पृ ३३२) ।
जलोयर न [**जलोदर**] रोग-विशेष, जलन्धर, जठराम ; (सण) ।
जलोयरि वि [**जलोदरिन्**] जलन्धर रोग से पीड़ित; (राज)।
जलोया देखो **जलूया** ; (जी १५) ।
जल्ल पुं [**दे. जल्ल**] १ शरीर का मैल, सूखा पसीना ; (सम १० ; ४०; औप) । २ नट की एक जाति, रस्सी पर खेल करने वाला नट ; (पण्ह २, ४ ; औप ; णाया १, १) । ३ बन्दी, बिरुद-पाठक ; (णाया १, १) । ४ एक म्लेच्छ देश ; ५ उस देश में रहने वाली म्लेच्छ जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४) ।
जल्लार पुं [**जल्लार**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक अनार्य देश; २ जल्लार देश का निवासी; (इक) ।
जल्लिय न [**दे.जल्लक**] शरीर का मैल ; (उत्त २४) ।
जल्लोसहि स्त्री [**दे. जल्लौषधि**] एक तरह की आध्यात्मिक शक्ति, जिसके प्रभाव से शरीर के मैल से रोग का नाश होता है ; (पण्ह २, १ ; विसे ७७६) ।
जव सक [**यापय्**] १ गमन करवाना, भेजना । २ व्यवस्था करना । जवइ ; (हे ४, ४०) । हेकृ— **जवित्तए**; (सूअ १, ३, २) । कृ— **जवणिज्ज, जवणीय**; (णाया १, ५ ; हे १, २४८) ।
जव सक [**जप्**] जाप करना, बार बार मन ही मन देवता का नाम स्मरण करना, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण करना। जवइ ; (रंभा) । "तप्पंति तवमणेगे जवंति मंते तहा सुविज्जाओ" (सुपा २०२) । वकृ—**जवंत**; (नाट) । कवकृ— **जविज्जंत** ; (सुर १३, १८६) ।
जव पुं [**जप**] जाप, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण, बार बार मन ही मन देवता का नाम-स्मरण ; (पण्ह २, २ ; सुपा १२०) ।
जव पुं [**यव**] १ अन्न-विशेष ; (णाया १, १ ; पण्ह १, ४) । २ परिमाण-विशेष, आठ यूका का नाप ; (ठा ८)। °**णाली** स्त्री [°**नाली**] वह नाली जिसमें यव बोए जाते हों; (आचू १) । °**मज्झ** न [°**मध्य**] १ तप-विशेष ; (पउम २२, २४) । २ आठ यूका का एक नाप ; (पव २५) । °**मज्झा** स्त्री [°**मध्या**] व्रत-विशेष, प्रतिमा-विशेष; (ठा ४, १) । °**राय** पुं [°**राज**] नृप-विशेष; (बृह १) । °**वंसा** स्त्री [°**वंशा**] वनस्पति-विशेष ; (पणण १) ।
जव पुं [**जव**] वेग, दौड़, शीघ्र गति ; (कुमा) ।
जवजव पुं [**यवयव**] अन्न-विशेष, एक तरह का यव-धान्य; (ठा ३, १) ।
जवण न [**दे**] हल की शिखा, हल की चोटी ; (दे ३, ४१) ।
जवण न [**जपन**] जाप, पुनः पुनः मन्त्र का उच्चारण ; " अहिणा दट्ठस्स जए को कालो मंत-जवणम्मि" (पउम ८६, ६० ; स ६) ।
जवण वि [**जवन**] १ वेग से जाने वाला; (उप ७६८ टी) । २ पुं. वेग, शीघ्र गति ; (आवम) ।
जवण पुं [**यवन**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; (पउम ६८, ६४) । २ उस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति ; (पण्ह १, १) । ३ यवन देश का राजा ; (कुमा) ।
जवण न [**यापन**] निर्वाह, गुजारा ; (उत्त ८) ।
जवणा स्त्री [**यापना**] ऊपर देखो ; (पव २) ।

जवणाणिया स्त्री [**यवनानिका**] लिपि-विशेष ; (राज)।
जवणालिया स्त्री [**यवनालिका**] कन्या का कञ्चुक; (आवम) ।
जवणिआ स्त्री [**यवनिका**] परदा ; (दे ४, १ ; सण; कप्पू) ।
जवणिज्ज देखो **जव** = यापय् ।
जवणी स्त्री [**यवनी**] १ परदा, आच्छादक पट; (दे २, २५)। २ संचारिका, दूती ; (अभि ५७)।
जवणी स्त्री [**यावनी**] १ यवन की स्त्री। २ यवन की लिपि ; (सम ३५ ; विसे ४६४ टी) ।
जवणीअ देखो **जव** = यापय् ।
जवपच्चमाण पुं [**दे**] जात्य अश्व का वायु-विशेष, प्राण-वायु ; (गउड) ।
जवय } पुं [**दे**] यव का अङ्कुर; (दे ३,४२) ।
जवरय }
जवली स्त्री [**दे**] जव, वेग ; "गच्छंति गरुयनेहेण पवरतुरयाहिरूढा जवलीए" (सुपा २७६) ।
जववारय [**दे**] देखो **जवरय** ; (पंचा ८) ।
जवस न [**यवस**] १ तृण, घास ; "गिद्धिव्व जवसम्मि" (उप ७२८ टी ; उप पृ ८४) । २ गेहूँ वगैरः धान्य; (आचा २, ३, २) ।
जवा स्त्री [**जपा**] १ वल्ली-विशेष, जवा-पुष्प का वृक्ष; २ गुड़हल का फूल ; (कुमा) ।
जवास पुं [**यवास**] वृक्ष-विशेष, रक्त पुष्प वाला वृक्ष-विशेष ; "पाउसि जवासो" (श्रा २३ ; पगण १)। "जवासाकुसुमे इ वा" (पगण १७) ।
जवि } वि [**जविन्**] १ वेग वाला, वेग-युक्त; (सुपा
जविण } ११२) । २ अश्व, घोड़ा ; (राज) ।
जविय वि [**यापित**] १ गमित, गुजारा हुआ ; २ नाशित; (कुमा) ।
जस पुं [**यशस्**] १ कीर्त्ति, इज्जत, सुख्याति ; (औप ; कुमा)। २ संयम, त्याग, विरति ; (वव १ : दस ५, २)। ३ विनय ; (उत्त ३)। ४ भगवान अनन्तनाथ का प्रथम शिष्य ; (सम १५२) । ५ भगवान् पार्श्वनाथ का आठवाँ प्रधान शिष्य ; (कप्प) । °**कित्ति** स्त्री [°**कीर्त्ति**] सुख्याति, सुप्रसिद्धि; (सूअ १, ६; अच् १) । °**भद्द** पुं [°**भद्र**] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य; (कप्प ; सार्ध १३)। °**म, मंत** वि [°**वत्**] १ यशस्वी, इज्जतदार, कीर्त्ति वाला ; (पगह १, ४) । २ पुं स्वनाम-प्रसिद्ध एक कुलकर पुरुष ; (सम १५०) । °**वई** स्त्री [°**वती**] १ द्वितीय चक्रवर्ती सगर-राज की माता ; (सम १५२) । २ तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी की रात्रि ; (चंद १०) । °**वम्म** पुं [°**वर्मन्**] स्वनाम-ख्यात नृप-विशेष; (गउड) । °**वाय** पुं [°**वाद**] साधु-वाद, यशोगान, प्रशंसा ; (उप ६८६ टी) । °**विजय** पुं [°**विजय**] विक्रम की अठारहवीं शताब्दी का एक जैन सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार, न्यायाचार्य श्रीमान् यशोविजय उपाध्याय; (राज) । °**हर** पुं [°**धर**] १ भारतवर्ष का भूत कालिक अठारहवाँ जिन-देव ; (पव ८) । २ भारत वर्ष के एक भावी जिन-देव ; (पव ४६) । ३ एक राज-कुमार ; (धम्म) । ४ पक्ष का पाँचवाँ दिन ; (जं ७)। ५ वि. यश को धारण करने वाला, यशस्वी ; (जीव ३)। देखो **जसो**° ।
जसद पुं [**जसद**] धातु-विशेष, जस्ता; (राज) ।
जसा स्त्री [**यशा**] कपिलमुनि की माता; (उत्त ८) ।
जसो° देखो **जस** । °**आ** स्त्री [°**दा**] १ नन्द-नामक गोप की पत्नी ; (गा ११२; ६५७) । २ भगवान् महावीर की पत्नी; (कप्प) । °**कामि** वि [°**कामिन्**] यश चाहने वाला; (दस २) । °**कित्तिनाम** न [°**कीर्त्तिनामन्**] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से सुयश फैलता है ; (सम ६७)। °**धर** पुं [°**धर**] १ धरणेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १) । २ न. ग्रैवेयक देवलोक का प्रस्तट ; (इक) । °**हरा** स्त्री [°**धरा**] १ दक्षिण रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिशा-कुमारी देवी ; (ठा ८) । २ जम्बू-वृक्ष विशेष, सुदर्शना; (जीव ३) । ३ पक्ष की चौथी रात्रि; (जो ४) ।
जह सक [**हा**] त्याग देना, छोड़ देना। जहइ ; (पि ६७) । वकृ—**जहंत**; (वव ३) । कृ—**जहणिज्ज**; (राज) । संकृ —**जहित्ता**; (पि ५८२)।
जह अ [**यत्र**] जहां, जिसमें ; (हे २, १६१) ।
जह अ [**यथा**] जिस तरह से, जैसे ; (ठा ३, १ ; स्वप्न २०) । °**क्कम** न [°**क्रम**] क्रम के अनुसार, अनुक्रम ; (पंचा ६) । °**क्खाय** देखा **अह-क्खाय**; (आवम) । °**ट्ठिय** वि [°**स्थित**] वास्तविक, सत्य; (सुर १, १६२ ; सुपा ५७) । °**त्थ** वि [°**र्थ**] वास्तविक, सत्य ; (पंचा १५) । °**त्थनाम** वि [°**र्थनामन्**] नाम के अनुसार

गुण वाला, अन्वर्थ ; (श्रा १६)। °त्थवाइ वि [°र्थवादिन्] सत्य-वक्ता ; (सुर १४, १६)। °प्प न [याथात्म्य] वास्तविकता, सत्यता ; (राज)। °रिह न [°र्ह] उचितता के अनुसार ; (सुपा १६२)। °वट्टिय वि [°वृत्त] सत्य, यथार्थ; (सुपा ५२६)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] विधि के अनुसार ; "नहगामिणिपमुहाओ जहविहिणा साहियव्वाओ" (सुर ३, २८)। °संख न [°संख्य] संख्या के क्रम से, क्रमानुसार ; (नाट)। देखो **जहा**=यथा।

जहण न [**जघन**] कमर के नीचे का भाग ; (गा १६६ ; गाया १, ८)।

जहणरोह पुं [**दे**] ऊरु, जंघा, जाँघ ; (दे ३, ४४)।

जहणूसव } न [**दे**] अर्धोरुक, जघनांशुक, स्त्री को
जहणूसुअ } पहनने का वस्त्र-विशेष ; (दे ३,४५; षड्)।

जहण्ण } वि [**जघन्य**] निकृष्ट, हीन, अधम, नीच; (सम ८;
जहन्न } भग ; ठा १, १ ; जी ३८ ; दं ६)।

जहा देखो **जह**=हा। जहाइ ; (पि ३५०)। संकृ—**जहाइत्ता, जहाय** ; (सूअ १, २, १; पि ५६१)।

जहा देखो **जह**=यथा ; (हे १, ६७ ; कुमा) °**जुत्त** वि [°**युक्त**] यथोचित, योग्य; (सुर २, २०१)। °**जेट्ठ** न [°**ज्येष्ठ**] ज्येष्ठता के क्रम से; (अणु)। °**णामय** वि [°**नामक**] जिसका नाम न कहा गया हो, अनिर्दिष्ट-नामा, कोई; (जीव ३)। °**तच्च** न [°**तथ्य**] सत्य, वास्तविक; (आचा)। °**तह** न [°**तथ**] सत्य, वास्तविक ; (राज)। °**तह** न [**याथातथ्य**] १ वास्तविकता, सत्यता; "जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं" (सूअ १, ६)। २ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन ; (सूअ १, १३)। °**पवत्तकरण** न [**प्रवृत्तकरण**] आत्मा का परिणाम-विशेष; (आचा)। °**भूय** वि [°**भूत**] सच्चा, वास्तविक; (गाया १, १)। °**राइणिया** स्त्री [°**रात्निकता**] ज्येष्ठता के क्रम से, बड़प्पन के अनुसार; (कस)। °**रुह** देखो **जह-रिह**; (स ४६३)। °**वित्त** न [°**वृत्त**] जैसा हुआ हो वैसा, यथार्थ ; (स २४)। °**सत्ति** स्त्रीन [°**शक्ति**] शक्ति के अनुसार; (पंचा ३)।

जहाजाय वि [**दे. यथाजात**] जड़, मूर्ख, बेवकूफ ; (दे ३, ४१ ; पण्ह १, ३)।

जहि } देखो **जह**=यत्र; (हे २, १६१ ; गा १३१ ;
जहिं } प्रासू ५६)।

जहिच्छ न [**यथेच्छ**] इच्छा के अनुसार ; (सुपा १६ ; पिंग)।

जहिच्छिय न [**यथेप्सित**] इच्छानुकूल, इच्छानुसार ; (पंचा १)।

जहिच्छिया स्त्री [**यदृच्छा**] मरजी, स्वेच्छा, स्वच्छन्दता ; (गा ४५३ ; विसे ३१६ ; स ३३२)।

जहिट्ठिल पुं [**युधिष्ठिर**] पाण्डु-राज का ज्येष्ठ पुत्र, ज्येष्ठ पाण्डव ; (हे १, १०७ ; प्राप्र)।

जहिमा स्त्री [**दे**] विदग्ध पुरुष की बनाई हुई गाथा ; (दे ३, ४२)।

जहुट्ठिल देखो **जहिट्ठिल** ; (हे १, ६६ ; १०७)।

जहुत्त न [**यथोक्त**] कथनानुसार ; (पडि)।

जहेअ अ [**यथैव**] जैसे ही ; (से ६, १६)।

जहेच्छ देखो **जहिच्छ**; (गा ८८२)।

जहोइय न [**यथोदित**] कथितानुसार ; (धर्म ३)।

जहोइय } न [**यथोचित**] योग्यता के अनुसार ; (से
जहोचिय } ८, ५ ; सुपा ४७१)।

जा अक [**जन्**] उत्पन्न होना। जाअइ; (हे ४, १३६)। वकृ—**जायंत** ; (कुमा)। संकृ—"एक्केक्के च्चिय निच्चिण्णा पुणो पुणो **जाइउं** च मरिउं च" (स १३०)।

जा सक [**या**] १ जाना, गमन करना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। जाइ; (सुपा ३०१)। जंति ; (महा)। वकृ—**जंत**; (सुर ३, १४३; १०, ११७)। कवकृ—**जाइज्जमाण**; (पण्ह १, ४)।

जा देखो **जाव**=यावत् ; (हे १, २७१; कुमा ; सुर १५, १३८)।

जाअर देखो **जागर** ; (मुद्रा १८७)।

जाइ स्त्री [**जाति**] १ पुष्प-विशेष, मालती; (कुमा)। २ सामान्य नैयायिकों के मत से एक धर्म-विशेष, जो व्यापक हो, जैसे मनुष्य का मनुष्यत्व, गो का गोत्व; (विसे १६०१)। ३ जात, कुल, गोत्र, वंश, ज्ञाति; (ठा ४, २; सूअ ६, १३; कुमा)। ४ उत्पत्ति, जन्म ; (उत्त ३; पडि)। ५ क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति ; (उत्त ३)। ६ पुष्प-प्रधान वृक्ष, जाई का पेड़ ; (पण्ण १)। ७ मद्य-विशेष ; (विपा १, २)। °**आजीव** पुं [°**आजीव**] जाति की समानता बतला कर भिक्षा प्राप्त करने वाला साधु; (ठा ५, १)। °**थेर** पुं [°**स्थविर**] साठ वर्ष की उम्र का मुनि; (ठा ३,

२) । °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष; (सम ६७) । °**प्पसण्णा** स्त्री [**प्रसन्ना**] जाति के पुष्पों से वासित मदिरा ; (जीव ३) । °**फल** न [°**फल**] १ वृक्ष-विशेष; २ फल-विशेष, जायफल, एक गर्म मसाला; (सुर १३,३३; सण) । °**मंत** वि [°**मत्**] उच्च जाति का; (आचा २, ४, २)। °**मय** पुं [°**मद**] जाति का अभिमान; (ठा १०) । °**वत्तिया** स्त्री [°**पत्रिका**] १ सुगन्धि फल वाला वृक्ष-विशेष ; २ फल-विशेष, एक गर्म मसाला ; (सण) । °**सर** पुं [°**स्मर**] १ पूर्व जन्म की स्मृति ; २ वि. पूर्व जन्म का स्मरण करने वाला, पूर्व-जन्म का ज्ञान वाला; " जाइसराइं मन्ने इमाइं नयणाइं सयललोयस्स " (सुर ४, २०८) । °**सरण** न [°**स्मरण**] पूर्व जन्म की स्मृति; (उत्त १६) । °**स्सर** देखो °**सर**; (कप्प; विसे १६७१; उप २२० टी) ।

जाइ देखो **जाया** ; (षड्) ।

जाइ स्त्री [**दे**] १ मदिरा, सुरा, दारू; (दे ३, ४५) । २ मदिरा-विशेष; (विपा १, २) ।

जाइ वि [**यायिन्**] जाने वाला; (ठा ४, ३) ।

जाइअ वि [**याचित**] प्रार्थित, माँगा हुआ; (विसे २५०४; गा १६५) ।

जाइच्छिय वि [**यादृच्छिक**] स्वेच्छा-निर्मित ; (विसे २५) ।

जाइज्जंत देखो **जाय**=यातय् ।

जाइज्जंत } देखो **जाय**=याच् ।
जाइज्जमाण }

जाइणी स्त्री [**याकिनी**] एक जैन साध्वी, जिसको सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्री हरिभद्रसूरि अपनी धर्म-माता समझते थे ; (उप १०३६) ।

जाउ अ [**जातु**] किसी तरह ; (उप ५४७) । °**कण्ण** पुं [°**कर्ण**] पूर्वभद्रपदा नक्षत्र का गोत्र ; (इक) ।

जाउया स्त्री [**यातृका**] देवर-पत्नी, पति के छोटे भाई की स्त्री ; (गाया १, १६) ।

जाउर पुं [**दे**] कपित्थ वृक्ष ; (दे ३, ४५) ।

जाउल पुं [**जातुल**] वल्ली-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३२)।

जाउहाण पुं [**यातुधान**] राक्षस : (उप १०३१ टी ; पाअ) ।

जाग पुं [**याग**] १ यज्ञ, अध्वर,होम, हवन ; (पउम १४, ४७ ; स १७१) । २ देव-पूजा ; (गाया १,१) ।

जागर अक [**जागृ**] जागना, निद्रा-त्याग करना । जागरइ; (षड्) । वकृ—**जागरमाण** ; (विसे २७१६)। हेकृ—**जागरित्तए, जागरेत्तए** ; (कप्प ; कस) ।

जागर वि [**जागर**] १ जागने वाला, जागता ; (आचा ; कप्प ; श्रा २५) । २ पुं. जागरण, निद्रा-त्याग ; (सुपा १८७; भग १२, २ ; सुर १३, ६७) ।

जागरइत्तु वि [**जागरितृ**] जागने वाला ; (श्रा २३) ।

जागरिअ वि [**जागृत**] जागा हुआ, निद्रा-रहित, प्रबुद्ध ; (गाया १, १६ ; श्रा २५) ।

जागरिअ वि [**जागरिक**] निद्रा-रहित ; (भग १२,२) ।

जागरिया स्त्री [**जागरिका, जागर्या**] जागरण, निद्रा-त्याग; (गाया १, १ ; औप) ।

जाडी स्त्री [**दे**] गुल्म; लता-प्रतान ; (दे ३, ४५) ।

जाण सक [**ज्ञा**] जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना । जाणइ; (हे ४, ७) । वकृ—**जाणंत, जाणमाण**; (कप्प; विपा १, १) । संकृ—**जाणिऊण, जाणित्ता, जाणितु**; (पि ५८६; महा; भग) । हेकृ—**जाणिउं**; (पि ५७६) । कृ—**जाणियव्व** ; (भग ; अंत १२)।

जाण पुंन [**यान**] १ रथादि वाहन, सवारी ; (औप ; पण्ह २, ५ ; ठा ४, ३) । २ यान-पात्र, नौका, जहाज ; "नाणं संसारसमुद्दतारणे बंधुरं जाणं" (पुष्फ ३७) । ३ गमन, गति ; (राज) । °**पत्त**, °**वत्त** न [°**पात्र**] जहाज, नौका; (नमि ५ ; सुर १३, ३१)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] १ तबेला; २ वाहन बनाने का कारखाना; (औप; आचा २,२,२)।

जाण न [**ज्ञान**] ज्ञान, बोध, समझ ; (भग ; कुमा) ।

जाण° वि [**जानत्**] जानता हुआ ; "जाणं काएण णाउट्टी" (सूअ १, ५, १) । "आसुपण्णेण जाणया" (आचा) ।

जाणई स्त्री [**जानकी**] सीता, राम-पत्नी ; (पउम १०६, १८ ; से ६, ६) ।

जाणग वि [**ज्ञायक**] जानकार, ज्ञानी, जानने वाला; (सूअ १, १, १ ; महा ; सुर १०, ६५) ।

जाणगी देखो **जाणई** ; (पउम ११७, १८) ।

जाणण न [**दे**] बरात, गुजरातीमें " जान" ; "जो तदवत्थाए समुचिओति जाणणाइओ" (उप ५६७ टी) ।

जाणण न [**ज्ञान**] जानना, जानकारी, समझ, बोध; (हे ४, ७; उप पृ २३; सुपा४१६; सुर १०, ७१; रयण१४; महा)।

जाणणया } स्त्री. ऊपर देखो; (उप ५१६ ; विसे २१४८; अणु ; आवू ३) ।
जाणणा }

जाणय देखो **जाणग** ; (भग ; महा) ।

जाणय वि [**ज्ञापक**] जनाने वाला, समझाने-वाला; (औप) ।

जाणया स्त्री [**ज्ञान**] ज्ञान, समझ, जानकारी ; "एएसिं पयाणं जाणयाए सवणयाए" (भग) ।

जाणवय वि [**जानपद**] १ देश में उत्पन्न, देश-संबन्धी; (भग ; णाया १, १—पत्र १) ।

जाणाव सक [**ज्ञापय्**] ज्ञान कराना, जनाना । जाणावइ, जाणावेइ ; (कुमा ; महा) । हेकृ—**जाणाविउं, जाणावेउं** ; (पि ५५१) । कृ—**जाणावेयव्व** ; (उप पृ २२) ।

जाणावण न [**ज्ञापन**] ज्ञापन, बोधन ; (पउम ११, ८८; सुपा ६०६) ।

जाणावणा } स्त्री [**ज्ञापनी**] विद्या-विशेष ; (उप पृ
जाणावणी } ४२ ; महा) ।

जाणाविय वि [**ज्ञापित**] जनाया, विज्ञापित, मालूम कराया, निवेदित ; (सुपा ३५६ ; आवम) ।

जाणि वि [**ज्ञानिन्**] ज्ञाता, जानकार ; (कुमा) ।

जाणिअ वि [**ज्ञात**] जाना हुआ, विदित ; (सुर ४, २१४; ७, २६) ।

जाणु न [**जानु**] १ घोंट्ठ, घुटना ; २ ऊरु और जंघा का मध्य भाग; (तंदु; निर १, ३ ; णाया १, २) ।

जाणु } वि [**ज्ञायक**] जानने वाला, ज्ञाता, जानकार ;
जाणुअ } (ठा ३, ४ ; णाया १, १३) ।

जाणे अ [**जाने**] उत्प्रेक्षा-सूचक अव्यय, मानो ; (अभि १५०) ।

जाम सक [**मृज्**] मार्जन करना, सफा करना । जामइ ; (नाट—प्राप्र ८० टी) ।

जाम पुं [**याम**] १ प्रहर, तीन घण्टा का समय ; (सम ४४; सुर ३, २४२) । २ यम, अहिंसा आदि पाँच व्रत ; ३ उम्र विशेष, आठ से बत्तीस, बत्तीस से साठ और साठ से अधिक वर्ष की उम्र ; (आचा) । ४ वि. यम-संबन्धी, जमराज का ; (सुपा ४०५) । °**इल्ल** वि [°**वत्**] १ प्रहर वाला; (हे २, १५६) । २ पुं. प्राहरिक, पहेरेदार, यामिक; (सुपा ५) । °**दिसा** स्त्री [°**दिश्**] दक्षिण दिशा ; (सुपा ४०५) । °**वई** स्त्री [°**वती**] रात्रि, रात ; (गउड) ।

जाम देखो **जाव**=यावत् ; (आरा ३३) ।

जामाउ } पुं [**जामातृ,°क**] जामाता, लड़की का पति ;
जामाउय } (पउम ८६, ४ ; हे १, १३१ ; गा ६८३) ।

जामि स्त्री [**जामि, यामि**] बहिन, भगिनी ; (राज) ।

जामिग पुं [**यामिक**] प्राहरिक, पहेरेदार; (उप ८३३) ।

जामिणी स्त्री [**यामिनी**] रात्रि, रात ; (उप ७२८ टी) ।

जामिल्ल देखो **जामिग** ; (सुपा १४६ ; २६६) ।

जाय सक [**याच्**] प्रार्थना करना, माँगना । वकृ—**जायंत**; (पण्ह १, ३) । कवकृ—**जाइज्जंत**; (पउम ५, ६८) ।

जाय सक [**यातय्**] पीड़ना, यन्त्रणा करना । जाएइ ; (उव) । कवकृ—**जाइज्जंत**; (पण्ह १, १) ।

जाय देखो **जाग** ; (णाया १, १) ।

जाय वि [**जात**] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो; (ठा ६) । २ न. समूह, संघात; (दंस ४) । ३ भेद, प्रकार ; (ठा १०; निचू १६) । ४ वि. प्रवृत्त; (औप) । ५ पुं. लड़का, पुत्र; (भग ६, ३३ ; सुपा २७६) । ६ न. बच्चा, संतान ; "जायं तीए जइ कहवि जायए पुन्नजोगेण" (सुपा ५६८) । ७ जन्म, उत्पत्ति; (णाया १, १) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ प्रसूति-कर्म ; (णाया १, १) । २ संस्कार-विशेष ; (वसु) । °**तेय** पुं [°**तेजस्**] अग्नि, वह्नि; (सम ५०) । °**निदुया** स्त्री [°**निद्रुता**] मृत-वत्सा स्त्री ; (विपा १, २) । °**मूय** वि [°**मूक**] जन्म से मूक; (विपा १, १) । °**रूव** न [°**रूप**] १ सुवर्ण, सोना; (औप) । २ रूप्य, चाँदी; (उत ३५) । ३ सुवर्ण-निर्मित ; (सम ६५) । °**वेय** पुं [°**वेदस्**] अग्नि, वह्नि ; (उत २२) ।

जाय वि [**यात**] गत, गया हुआ ; (सूअ १, ३, १) । २ प्राप्त ; (सूअ १, १०) । ३ न. गमन, गति; (आचा) ।

जायग वि [**याचक**] १ माँगने वाला ; २ पुं. भिक्षुक ; (श्रा २३ ; सुपा ४१०) ।

जायग वि [**याजक**] यज्ञ करने वाला ; (उत्त २५, ६) ।

जायण न [**याचन**] याचना, प्रार्थना ; (श्रा १४ ; प्रति ६१) ।

जायण न [**यातन**] कदर्थन, पीड़न ; (पण्ह १, २) ।

जायणया } स्त्री [**याचना**] याचना, प्रार्थना, माँगना ;
जायणा } (उप पृ ३०२ ; सम ४० ; स २६१) ।

जायणा स्त्री [**यातना**] कदर्थना, पीड़ा; (पण्ह १, १) ।

जायणी स्त्री [**याचनी**] प्रार्थना की भाषा ; (ठा ४, १) ।

जायव पुंस्त्री [**यादव**] यदुवंश में उत्पन्न, यदुवंशीय ; (णाया १, १६ ; पउम २०, ५६) ।

जाया स्त्री [**जाया**] स्त्री, औरत; (गा ६; सुपा ३८६) ।

जाया देखो **जत्ता** ; (पण्हसू २, ४ ; अ १, ५) ।

जाया स्त्री [**जाता**] चमरन्द्र आदि इन्द्रों की बाह्य परिषत्; (भग ; ठा ३, २)।

जायाइ पुं [**यायाजिन्**] यज्ञ-कर्ता, याजक ; (उत्त २५, १)।

जार पुं [**जार**] १ उपपति ; (हे १, १७७)। २ मणि का लक्षण-विशेष ; (जीव ३)।

जारिच्छ वि [**यादृक्ष**] ऊपर देखो ; (प्रामा)।

जारिस वि [**यादृश**] जैसा, जिस तरह का; (हे १,१४२)।

जारेकण्ह न [**जारेकृष्ण**] गोत्र-विशेष, जो वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७)।

जाल सक [**ज्वालय्**] जलाना, दग्ध करना। "तो जलियजलणजालावलीसु जालेमि नियदेहं" (महा)। संकृ—**जालेवि** ; (महा)।

जाल न [**जाल**] १ समूह, संघात ; (सुर ४, १३५ ; स ४४३)। २ माला का समूह, दाम-निकर ; (राय)। ३ कारीगरी वाले छिद्रों से युक्त गृहांश, गवाक्ष-विशेष; (औप; णाया १, १)। ४ मछली वगैरः पकड़ने की जाल, पाश-विशेष; (पण्ह १, १ ; ४)। ५ पैर का आभूषण-विशेष ; (औप)। °**कडग** पुं [°**कटक**] १ सच्छिद्र गवाक्षों का समूह ; २ सच्छिद्र गवाक्ष-समूह से अलंकृत प्रदेश ; (जीव ३)। °**घरग** न [°**गृहक**] सच्छिद्र गवाक्ष वाला मकान ; (राय ; णाया १, २)। °**पंजर** न [°**पञ्जर**] गवाक्ष ; (जीव ३)। °**हरग** देखो °**घरग** ; (औप)।

जाल पुं [**ज्वाल**] ज्वाला, अग्नि-शिखा ; (सुर ३, १८८ ; जी ६)।

जालंतर न [**जालान्तर**] सच्छिद्र गवाक्ष का मध्यभाग ; (सम १३७)।

जालंधर पुं [**जालन्धर**] १ पंजाब का एक स्वनाम-ख्यात शहर ; (भवि)। २ न. गोत्र-विशेष ; (कप्प)।

जालंधरायण न [**जालन्धरायण**] गोत्र-विशेष ; (आचा २, ३)।

जालग देखो **जाल**=जाल ; (पण्ह १, १ ; ५ ; औप ; णाया १, १)।

जालघडिआ स्त्री [**दे**] चन्द्रशाला, अट्टालिका; (दे ३,४६)।

जालय देखो **जाल**=जाल ; (गउड)।

जाला स्त्री [**ज्वाला**] १ अग्नि की शिखा ; (आचा ; सुर २, २४६)। २ नवमें चक्रवर्ती की माता ; (सम १५२)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभ की शासन-देवी ; (संति ९)।

जाला अ [**यदा**] जिस समय, जिस काल में ; "ताला जाअंति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घेप्पंति" (हे ३,६५)।

जालाउ पुं [**जालायुष्**] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (राज)।

जालाव सक [**ज्वालय्**] जलाना, दाह देना। वकृ—**जालावंत** ; (महानि ७)।

जालाविअ वि [**ज्वालित**] जलाया हुआ ; (सुपा १८९)।

जालि पुं [**जालि**] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (अनु १)। २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र, जिसने दीक्षा ले कर शत्रुंजय पर्वत पर मुक्ति पाई थी ; (अंत १४)।

जालिय पुं [**जालिक**] जाल-जीवि, वागुरिक ; (गउड)।

जालिय वि [**ज्वालित**] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ ; (उव ; उप ५९७ टी)।

जालिया स्त्री [**जालिका**] १ कञ्चुक ; (पण्ह १, ३—पत्र ४४ ; गउड)। २ वृन्त ; (राज)।

जालुग्गाल पुं [**जालोद्गाल**] मछली पकड़ने का साधन-विशेष; (अभि १८३)।

जाव सक [**यापय्**] १ गमन करना, गुजारना। २ बरतना। ३ शरीर का प्रतिपालन करना। जावइ ; (आचा)। जावेइ ; (हे ४, ४०)। जावए ; (सूअ १, १, ३)।

जाव अ [**यावत्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ; — १ परिमाण ; २ मर्यादा ; ३ अवधारण, निश्चय ; "जावदयं परिमाणे मज्जायाएऽवधारणे चेइ" (विसे ३५१६ ; णाया १, ७)। °**ज्जीव** स्त्री न [°**ज्जीव**] जीवन पर्यन्त ; (आचा)। स्त्री—°**वा** ; (विसे ३५१८ ; औप)। °**ज्जीविय** वि [°**ज्जीविक**] यावज्जीव-संबन्धी; (स ४४१)। देखो **जावं**।

जाव पुं [**जाप**] मन ही मन वार वार देवता का स्मरण, मन्त्र का उच्चारण ; (सुर ६, १७४; सुपा १७१)।

जावइ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष ; (पगण १—पत्र ३४)।

जावइअ वि [**यावत्**] जितना ; "जावइया वयणपहा" (सम्म १४४ ; भत्त ९४)।

जावं देखो **जाव**; (पउम ६८, ५०)। °**ताव** अ [**तावत्**] १ गणित-विशेष ; २ गुणाकार ; (ठा १०)।

जावंत देखो **जावइअ** ; (भग १, १)।

जावग देखो **जावय**=यापक ; (दसनि १)।

जावण न [**यापन**] १ बीताना, गुजारना ; २ दूर करना, हटाना ; (उप ३२० टी)।

जावणा स्त्री [**यापना**] ऊपर देखो ; (उप ७२८ टी)।

जावणिज्ज वि [**यापनीय**] १ जो बीताया जाय, गुजारने योग्य। २ शक्ति-युक्त ; " जावणिज्जाए णिसीहिआए " (पडि)। °**तंत** न [°**तन्त्र**] ग्रन्थ-विशेष ; (धर्म २)।

जावय वि [**यापक**] १ बीताने वाला। २ पुं. तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध काल-क्षेपक हेतु ; (ठा ४, ३)।

जावय वि [**जापक**] जीताने वाला; "जिणाणं जावयाणं" (पडि)।

जावय पुं [**यावक**] अलक्तक, अलता, लाख का रंग ; (गउड ; सुपा ६६)।

जावसिय वि [**यावसिक**] १ धान्य से गुजारा करने वाला; (बृह १)। २ घास-वाहक ; (ओघ २३८)।

जाविय वि [**यापित**] बीताया हुआ ; (गाया १, १७)।

जास पुं [**जाष**] पिशाच-विशेष ; (राज)।

जासुमण } पुं [**जपासुमनस्**] १ जपा का वृक्ष, पुष्प-
जासुमिण } प्रधान वृक्ष ; (पराण १ ; गाया १, १)। २
जासुयण } न. जपा का फूल ; (गाया १, १ ; कप्प)।

जाहग पुं [**जाहक**] जन्तु-विशेष, जिसके शरीर में काँटे होते हैं, साही ; (पराह १, १ ; विसे १४५४)।

जाहत्थ न [**याथार्थ्य**] सत्यपन, वास्तविकता ; (विसे १२७६)।

जाहासंख देखो **जहा-संख**; " जाहासंखमिमीणं नियकज्जं साहुवाओ य " (उप १७६)।

जाहे अ [**यदा**] जिस समय, जब; (हे ३, ६५ ; महा ; गा ६८)।

जि (अप) देखो **एव**=एव ; (हे ४, ४२० ; कुमा ; वज्जा १४)।

√**जिअ** अक [**जीव्**] जीना, प्राण-धारण करना। जिअइ, जिअउ; (हे १, १०१)। वकृ—**जिअंत**; (गा ६१७)।

जिअ पुं [**जीव**] आत्मा, प्राणी, चेतन ; (सुर २, ११३ ; जी ६ ; प्रासू ११४; १३०)। °**लोअ** पुं [°**लोक**] संसार, दुनियाँ ; (सुर १२, १४३)।

जिअ वि [**जित**] १ जीता हुआ, पराभूत, अभिभूत ; (कुमा; सुर ३, ३२)। २ परिचित ; (विसे १४७२)। °**प्प** पुं [°**त्मन्**] जितेन्द्रिय, संयमी; (सुपा २७६)। °**भाणु** पुं [°**भानु**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति ; (पउम ५, २५६)। °**सत्तु** पुं [°**शत्रु**] १ भगवान् अजितनाथ का पिता ; (सम १५०)। २ नृप-विशेष ; (महा; विपा १, ५)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ जैन आचार्य-विशेष ; २ नृप-विशेष ; ३ एक चक्रवर्ती राजा; ४ स्वनाम-ख्यात एक कुलकर; (राज)। °**ारि** पुं [°**ारि**] भगवान् संभवनाथजी का पिता; (सम १५०)।

जिअंती स्त्री [**जीवन्ती**] वल्ली-विशेष; (पराण १)।

जिअव वि [**जीतवत्**] जय-प्राप्त; (पराह १,१)।

जिइंदिय } वि [**जितेन्द्रिय**] इन्द्रियों को वश में रखने
जिएंदिय } वाला, संयमी; (पउम १४, ३६ ; हे ४, २८७)।

√**जिंघ** सक [**घ्रा**] सूँघना, गन्ध लेना। कृ—**जिंघणिज्ज** ; (कप्प)।

जिंघण न [**घ्राण**] सूँघना, गन्ध-ग्रहण ; (स ५७७)।

जिंघणा स्त्री [**घ्राण**] ऊपर देखो ; (ओघ ३७६)।

जिंघिअ वि [**घ्रात**] सूँघा हुआ ; (पाअ)।

जिंडह पुंन [**दे**] कन्दुक, गेंद; " जिंडहगेड्डिआइरमणं—"; (पव ३८ ; धर्म २)।

√**जिंभ** } देखो **जंभाय**। जिंभ; (अभि २४१)। वकृ—
जिंभाअ } **जिंभाअंत**; (से ११, ३०)।

जिंभिया स्त्री [**जृम्भा**] जम्भाई, जृम्भण, मुख-विकाश ; (सुपा ५८३)।

√**जिग्घ** देखो **जिंघ**। जिग्घइ; (निचू १)।

जिग्घिअ वि [**दे**] घ्रात, सूँघा हुआ; (दे ३, ४६)।

जिच्च } देखो **जिण**=जि।
जिच्चमाण }

जिट्ठ वि [**ज्येष्ठ**] १ महान्, वृद्ध, बड़ा; (सुपा २३४ ; कम्म ४, ८६)। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ पुं. बड़ा भाई ; " जिट्ठं व कणिट्ठं पि हु " (धर्म २)। °**भूइ** पुं [°**भूति**] जैन साधु-विशेष ; (ती १७)। °**मूली** स्त्री [°**मूली**] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा ; (इक)।

जिट्ठ पुं [**ज्येष्ठ**] मास-विशेष ; (राज)।

जिट्ठा स्त्री [**ज्येष्ठा**] १ भगवान् महावीर की पुत्री ; २ भगवान् महावीर की भगिनी ; (विसे २३०७)। ३ नक्षत्र-विशेष ; (जं १)। देखो **जेट्ठा**।

जिट्ठाणी स्त्री [**ज्येष्ठा**] बड़े भाई की पत्नी ; (सुपा ४८७)।

जिण सक [**जि**] जीतना, वश करना। जिणइ ; (हे ४, २४१ ; महा)। कर्म—जिणिज्जइ, जिव्वइ ; (हे ४, २४२)। वकृ—**जिणंत, जिणयंत**; (पि ४७३ ; पउम १११, १७)। कवकृ—**जिव्वमाण** ; (उत्त ७, २२)। संकृ—**जिणित्ता, जिणिऊण, जिणेऊण, जेऊण, जेउआण**; (पि ; हे ४, २४१ ; षड् ; कुमा)। हेकृ—**जिणिउं, जेउं**; (सुर १, १३० ; रंभा)। कृ—**जिच्च, जिणेयव्व, जेयव्व** ; (उत्त ७, २२ ; पउम १६, १६ ; सुर १४, ७६)।

जिण पुं [**जिन**] १ राग आदि अन्तरङ्ग शत्रुओं को जीतने वाला, अर्हन् देव, तीर्थकर; (सम १; ठा ४, १ ; सम्म १)। २ बुद्ध देव, बुद्ध भगवान् ; (दे १, ५)। ३ केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ; (पण्ण १)। ४ चौदह पूर्व ग्रन्थों का जानकार; (उत्त ५)। ५ जैन साधु-विशेष, जिनकल्पी मुनि ; ६ अवधि-ज्ञान आदि अतीन्द्रिय ज्ञान वाला ; (पंचा ४ ; ठा ३, ४)। ७ वि. जीतने वाला; (पंचा ३, २०)। °**इंद** पुं [°**इन्द्र**] अर्हन् देव ; (सुर ४, ८१)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] एक प्रकार के जैन मुनिओं का आचार, चारित्र-विशेष; (ठा ३, ४ ; बृह १)। °**कप्पिय** पुं [°**कल्पिक**] एक प्रकार का जैन मुनि; (ओघ ६६६)। °**किरिया** स्त्री [°**क्रिया**] जिन-देव का बतलाया हुआ धर्मानुष्ठान; (पंचव १)। °**घर** न [°**गृह**] जिन-मन्दिर ; (भग २, ८ ; णाया १, १६—पत्र २१०)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ जिन-देव, अर्हन् देव ; (कम्म ३, १; अजि २६)। २ स्व-नाम-ख्यात जैन आचार्य-विशेष ; (गु १२ ; सण)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] अर्हन् देव की पूजा के उपलक्ष में किया जाता उत्सव विशेष, रथ-यात्रा ; (पंचा ७)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से जीव तीर्थंकर होता है ; (राज)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य-विशेष; (गण २६ ; सार्ध १५०)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन श्रेष्ठी; (पउम २०, ११६)। °**दव्व** न [°**द्रव्य**] जिन-मन्दिर-सम्बन्धी धनादि वस्तु ; "वड्ढंतो जिणदव्वं तित्थगरत्तं लहइ जीवो " (उप ४१८ ; दंस १)। °**दास** पुं [°**दास**] १ स्व-नाम-प्रसिद्ध एक जैन उपासक; (आचू ६)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि और ग्रन्थकार, निशीथ-सूत्र का चूर्णिकार ; (निचू २०)। °**देव** पुं [°**देव**] १ अर्हन् देव; (गु ७) । २ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य; (आक)। ३ एक जैन उपासक; (आचू ४)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] जिनदेव का उपदिष्ट धर्म ; जैन धर्म; (ठा ५, २ ; हे १, १८७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] जिन-देव, अर्हन् देव; (सुपा २३५)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] अर्हन् देव की मूर्ति; (णाया १, १६—पत्र २१०; राय; जीव ३)। "जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं " (दसचू २)। °**पवयण** न [°**प्रवचन**]जैन आगम, जिनदेव-प्रणीत शास्त्र ; (विसे १३५०)। °**पसत्थ** वि [°**प्रशस्त**] तीर्थंकर-भाषित, जिनदेव-कथित ; (पण्ह २, ५)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] जिन-देव, अर्हन् देव ; (उप ३२० टी)। °**पाडिहेर** न [°**प्रातिहार्य**] जिन-देव की अर्हत्ता-सूचक देव-कृत अशोक वृक्ष आदि आठ बाह्य विभूतियाँ, वे ये हैं;—१ अशोक वृक्ष, २ सुर-कृत पुष्प-वृष्टि, ३ दिव्य-ध्वनि, ४ चामर, ५ सिंहासन, ६ भामण्डल, ७ दुन्दुभि-नाद, ८ छत्र; (दंस १)। °**पालिय** पुं [°**पालित**] चम्पा नगरी का निवासी एक श्रेष्ठि-पुत्र; (णाया १, ६)। °**बिंब** न [°**बिम्ब**] जिन-मूर्ति, जिन-देव की प्रतिमा ; (पडि ; पंचा ७)। °**भड** पुं [°**भट**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य, जो सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्रीहरिभद्र सूरि के गुरु थे ; (सार्ध ५८)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] स्वनाम-प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थ-कार ; (आव ४)। °**भवण** न [°**भवन**] अर्हन् मन्दिर; (पंचव ४)। °**मय** न [°**मत**] जैन दर्शन ; (पंचा ४)। °**माया** स्त्री [°**मातृ**] जिन-देव की जननी ; (सम १५१)। °**मुद्दा** स्त्री [°**मुद्रा**) जिन-देव जिस तरह से कायोत्सर्ग में रहते हैं उस तरह शरीर का विन्यास, आसन-विशेष; (पंचा ३)। °**यंद** देखो °**चंद**; (सुर १, १० ; सुपा ७६)। °**रक्खिय** पुं [°**रक्षित**] स्वनाम-ख्यात एक सार्थवाह-पुत्र (णाया १, ६)। °**वइ** पुं [°**पति**] जिन-देव, अर्हन्-देव; (सुपा ८६)। °**वई** स्त्री [°**वाच्**] जिन-देव की वाणी; (बृह १)। °**वयण** न [°**वचन**] जिन-देव की वाणी; (ठा ६)। °**वयण** न [°**वदन**] जिनदेव का मुख ; (औप)। °**वर** पुं [°**वर**] अर्हन् देव ; (पउम ११, ४ ; अजि १)। °**वरिंद** पुं [°**वरेन्द्र**] अर्हन् देव; (उप ७७६) । °**वल्लह** पुं [°**वल्लभ**] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य और प्रसिद्ध स्तोत्र-कार ; (लहुअ १७)। °**वसह** पुं [°**वृषभ**] अर्हन् देव ; (राज)। °**सकहा** स्त्री [°**सक्थि**] जिन-देव की अस्थि; (भग १०, ५)। °**सासण** न [°**शासन**] जैन दर्शन ; (उत्त १८ ; सुअ १, ३, ४)। °**हंस** पुं [°**हंस**]

एक जैन आचार्य ; (दं ४७)। °हर देखो °धर; (पउम ११, ३ ; सुपा ३६१ ; महा)। °हरिस पुं [°हर्ष] एक जैन मुनि; (रयण ६४)। °ायपण न [°ायतन] जिन-देव का मन्दिर ; (पंचव ४)।

जिणंद देखो **जिणिंद** "सव्वे जियंदा सुरविंदवंदा" (पडि; जी ४८)।

जिणण न [**जयन**] जय, जीत ; (सण)।

जिणिंद पुं [**जिनेन्द्र**] जिन भगवान्, अर्हन् देव ; (प्रासू ५२)। °**गिह** न [°**गृह**] जिन-मन्दिर ; (सुर ३, ७२)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] जिन-देव ; (पउम ६५, ३६)।

जिणिय वि [**जित**] पराभूत, वशीकृत ; (सुपा ५२२ ; रयण २७)।

जिणिस्सर देखो **जिणेसर**; (पंचा १६)।

जिणुत्तम पुं [**जिनोत्तम**] जिन-देव ; (अजि ४)।

जिणेस पुं [**जिनेश**] जिन भगवान्, अर्हन् देव; (सुपा २६०)।

जिणेसर पुं [**जिनेश्वर**] १ जिन देव, अर्हन् देव ; (पउम १, २३)। २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (सुर १६, २३६ ; सार्ध ७६ ; गु ११)।

जिण्ण वि [**जीर्ण**] १ पुराना, जर्जर ; (हे १, १०२ ; चारु ४६ ; प्रासू ७६)। २ पचा हुआ, "जिण्णे भोअणमत्ते" (हे १, १०२)। ३ वृद्ध, बूढ़ा; (बृह १)। °**सेट्ठि** पुं [°**श्रेष्ठिन्**] १ पुराना शेठ ; २ श्रेष्ठि पद से च्युत ; (आव ४)।

जिण्ण (अप) देखो **जिअ**=जित ; (पिंग)।

जिण्णासा स्त्री [**जिज्ञासा**] जानने की इच्छा; (पंचा ४)।

जिण्णिअ } (अप) देखो **जिणिय** ; (पिंग)।
जिण्णाअ }

जिण्णोब्भवा स्त्री [**दे**] दूर्वा, दूब ; (दे ३, ४६)।

जिण्हु वि [**जिष्णु**] १ जित्वर, जीतने वाला, विजयी ; (प्रामा)। २ पुं. अर्जुन, मध्यम पाण्डव; (गउड)। ३ विष्णु, श्रीकृष्ण ; ४ सूर्य, रवि; ५ इन्द्र, देव-नायक ; (हे२,७५)।

जित्त देखो **जिअ**=जित ; (महा ; सुपा ३६५; ६४३)।

जित्तिअ } वि [**यावत्**] जितना ; (हे २, १५६; षड्)।
जित्तिल }

जित्तुल (अप) ऊपर देखो; (कुमा)।

जिध (अप) अ [**यथा**] जैसे, जिस तरह से ; (हे ४, ४०१)।

जिन्न देखो **जिण्ण** ; (सुपा ६)।

जिन्नासिय वि [**जिज्ञासित**] जानने के लिए इष्ट, जानने के लिए चाहा हुआ ; (भास ७५)।

जिन्नुद्धार पुं [**जीर्णोद्धार**] पुराने और टूटे-फूटे मन्दिर आदि को सुधारना ; (सुपा ३०६)।

जिब्भा स्त्री [**जिह्वा**] जीभ, रसना ; (पण्ह २, ५ ; उप ६८६ टी)।

जिब्भिंदिय न [**जिह्वेन्द्रिय**] रसनेन्द्रिय, जीभ ; (ठा४,२)।

जिब्भिया स्त्री [**जिह्विका**] १ जीभ ; २ जीभ के आकार वाली चीज ; (जं ४)।

जिम सक [**जिम्, भुज्**] जीमना, भोजन करना, खाना। जिमइ ; (हे ४, ११० ; षड्)।

जिम (अप) देखो **जिध** ; (षड् ; भवि)।

जिमण न [**जेमन, भोजन**] जीमन, भोजन ; (श्रा १६ ; चैत्य ५६)।

जिमिअ वि [**जिमित, भुक्त**] १ जिसने भोजन किया हुआ हो वह ; (पउम २०, १२७ ; पुप्फ ३५ ; महा)। २ जो खाया गया हो वह, भक्षित ; (दे ३, ४६)।

जिम्म देखो **जिम**=जिम्। जिम्मइ ; (हे ४, २३०)।

जिम्ह पुं [**जिह्म**] १ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से प्रायः एक वर्ष तक जमीन में चिकनापन रहता है ; (ठा ४, ४—पत्र २७०)। २ वि. कुटिल, कपटी, मायावी ; (सम ७१)। ३ मन्द, अलस ; (जं २)। ४ न. माया, कपट ; (वव३)।

जिम्हइ न [**जैम्ह्य**] कुटिलता, वक्रता, माया, कपट ; (सम ७१)।

जिवँ } (अप) देखो **जिध** ; (कुमा ; षड् ; हे ४,३३७)।
जिह }

जिहा देखो **जीहा** ; (षड्)।

जीअ देखो **जीव**=जीव्। जीअइ ; (गा १२४ ; हे १, १०१)। वकृ—**जीअंत** ; (स ३, १२ ; गा ८१६)।

जीअ देखो **जीव**=जीव ; (गउड)। ५ पानी, जल ; (से २, ७)।

जीअ देखो **जीविअ** ; (हे १, २७१; प्राप्र; सुर २,२३०)।

जीअ न [**जीत**] १ आचार, रीवाज, रूढ़ि ; (औप ; राय; सुपा ४३)। २ प्रायश्चित से सम्बन्ध रखने वाला एक तरह का रीवाज, जैन सूत्रों में उक्त रीति से भिन्न तरह के प्राय-

श्चितों का परम्परागत आचार ; (ठा ५, २) । ३ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (ठा ५, २ ; वव १) । ४ मर्यादा, स्थिति, व्यवस्था ; (णंदि) । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ परम्परा से आगत आचार ; २ परम्परागत आचार का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (पंचा ६ ; जीत) । °**कप्पिय** वि [°**कल्पिक**] जीत-कल्प वाला ; (ठा १०) । °**धर** वि [°**धर**] १ आचार-विशेष का जानकार ; २ स्वनाम-ख्यात एक जैनाचार्य ; (णंदि) । °**ववहार** पुं [°**व्यवहार**] परम्परा के अनुसार व्यवहार ; (धर्म २ ; पंचा १६) ।

जीअण देखो **जीवण** ; (नाट—चैत २५८) ।

जीअव वि [**जीवितवत्**] जीवित वाला, श्रेष्ठ जीवन वाला ; (पराह १, १) ।

जीआ स्त्री [**ज्या**] १ धनुष की डोर ; (कुमा) । २ पृथिवी, भूमि; ३ माता, जननी; (हे २, ११५ ; षड्) ।

जीमूअ पुं [**जीमूत**] १ मेघ, वर्षा ; (पात्र ; गउड) । २ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से जमीन दश वर्ष तक चिकनी रहती है ; (ठा ४, ४) ।

जीर देखो **जर**=जृ ।

जीरय न [**जीरक**] जीरा, मसाला-विशेष ; (सुर १,२२) ।

जीव अक [**जीव्**] १ जीना, प्राण धारण करना । २ सक. आश्रय करना । जीवइ ; (कुमा) । वकृ—**जीवंत, जीवमाण** ; (विपा १, ५ ; उप ७२८ टी) । हेकृ—**जीविउं** ; (आचा) । संकृ—**जीविअ** ; (नाट) । कृ—**जीविअव्व, जीवणिज्ज** ; (सूअ १, ७) । प्रयो—जीवावेहि ; (पि ५५२) ।

जीव पुंन [**जीव**] १ आत्मा, चेतन, प्राणी; (ठा १, १ ; जी १ ; सुपा २३५) । "जीवाइं" (पि ३६७) । २ जीवन, प्राण-धारण ; "जीओ त्ति जीवणं पाणधारणं जीवियंति पज्जाया" (विसे ३५०८ ; सम १) । ३ बृहस्पति, सुर-गुरु ; (सुपा १०८) । ४ बल, पराक्रम ; (भग २, १) । ५ देखो **जीअ**=जीव । °**काय** पुं [°**काय**] जीव-राशि, जीव-समूह ; (सूअ १, ११) । °**ग्गाह** न [°**ग्राह**] जिन्दे को पकड़ना; (णाया १,२) । °**णिकाय** पुं [°**निकाय**] जीव-राशि ; (ठा ६) । °**त्थिकाय** पुं [°**स्तिकाय**] जीव-समूह, जीव-राशि ; (भग १३, ४ ; अणु) । °**दय** वि [°**दय**] जीवित देने वाला ; (सम १) । °**दया** स्त्री [°**दया**] प्राणि-दया, दुःखी जीव का दुःख से रक्षण ; (महानि २) । °**देव** पुं [°**देव**] स्वनाम-ख्यात प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (सुपा १) । °**पएस** पुं [**प्रदेशजीव**] अन्तिम प्रदेश में ही जीव की स्थिति को मानने वाला एक जैनाभास दार्शनिक ; (राज) । °**पएसिय** पुं [°**प्रादेशिक**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ७) । °**लोग**, °**लोय** पुं [°**लोक**] १ जीव-जाति, प्राणि-लोक, जीव-समूह ; (महा) । °**विजय** न [°**विचय**] जीव के स्वरूप का चिन्तन ; (राज) । °**विभत्ति** स्त्री [°**विभक्ति**] जीव का भेद ; (उत्त ३६) । °**वुड्ढिय** न [°**वृद्धिक**] अनुज्ञा, संमति, अनुमति ; (णंदि) ।

जीवंजीव पुं [**जीवजीव**] १ जीव-बल, आत्म-पराक्रम ; (भग २, १) । २ चकोर-पक्षी ; (राज) ।

जीवंत देखो **जीव**=जीव् । °**मुक्क** पुं [°**मुक्त**] जीवन्मुक्त, जीवन-दशा ही में संसार-बन्धन से मुक्त महात्मा ; (अच्चु ४७) ।

जीवग पुं [**जीवक**] १ पक्षि-विशेष ; (उप ५८०) । २ नृप-विशेष ; (तित्थ) ।

जीवजीवग पुं [**जीवजीवक**] चकोर पक्षी ; (पराह १, १—पत्र ८) ।

जीवण न [**जीवन**] १ जीना, जिन्दगी ; (विसे ३५२१ ; पउम ८, २५०) । २ जीविका, आजीविका ; (स २२७ ; ३१०) । ३ वि. जिलाने वाला ; (राज) । °**वित्ति** स्त्री [°**वृत्ति**] आजीविका ; (उप २६४ टी) ।

जीवमजीव पुं [**जीवाजीव**] चेतन और जड़ पदार्थ ; (आवम) ।

जीवम्मुत्त देखो **जीवंत-मुक्क** ; (उवर १६१) ।

जीवयमई स्त्री [**दे**] मृगों के आकर्षण के साधन-भूत व्याध-मृगी; (दे ३, ४६) ।

जीवा स्त्री [**जीवा**] १ धनुष की डोरी ; (स ३८४) । २ जीवन, जीना; (विसे ३५२१) । ३ क्षेत्र का विभाग-विशेष; (सम १०४) ।

जीवाउ पुं [**जीवातु**] जिलाने वाला औषध, जीवनौषध ; (कुमा) ।

जीवाविय वि [**जीवित**] जिलाया हुआ ; (उप ७६८ टी) ।

जीवि वि [**जीविन्**] जीने वाला ; (गा ८४७) ।

जीविअ वि [**जीवित**] १ जो जिन्दा हो ; २ न. जीवित, जीवन, जिन्दगी; (हे १, २७१; प्राप्र) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] प्राण-पति ; (सुपा ३१५) । °**रसिका** स्त्री [°**रसिका**] वनस्पति-विशेष ; (पराण १— पत्र ३६) ।

जीविआ स्त्री [**जीविका**] १ आजीविका, निर्वाह-साधक वृत्ति ; (ठा ४, २ ; स २१८ ; णाया १, १)।

जीविओसविय वि [**जीवितोत्सविक**] जीवन में उत्सव के तुल्य, जीवनोत्सव के समान ; (भग ६, ३३ ; राय)।

जीविओसासिय वि [**जीवितोच्छ्वासिक**] जीवन को बढ़ाने वाला ; (भग ६, ३३)।

जीविगा देखो **जीविआ** ; (स २१८)।

जीह अक [**लस्ज्**] लज्जा करना, शरमाना। जीहइ ; (हे ४, १०३ ; षड्)।

जीहा स्त्री [**जिह्वा**] जीभ, रसना ; (आचा ; स्वप्न ७८)। °ल वि [°**वत्**] लम्बी जीभ वाला ; (पउम ७, १२० ; नमि ८ ; सुर २, ६२)।

जीहाविअ वि [**लज्जित**] लज्जा-युक्त किया गया, लजाया गया ; (कुमा)।

जु देखो **जुंज** (कुमा)। कवकृ — **जुज्जंत** ; (सम्म १०७ ; से १२, ८७)।

जु° स्त्री [**युध्**] लड़ाई, युद्ध ; " जुवि दातिभए घेप्पइ " (विसे ३०१६)।

जुअ देखो **जुग** ; (से १२, ६० ; इक ; पगह १, १)। ६ युग्म, जोड़ा, उभय; (पिंग; सुर २,१०२; सुपा १६०)।

जुअ वि [**युत**] युक्त, संलग्न, सहित ; (दे १, ८१ ; सुर ४, ६४)।

जुअ देखो **जुव** ; (गा २२८ ; कुमा ; सुर २, १७७)।

जुअइ स्त्री [**युवति**] तरुणी, जवान स्त्री ; (गउड ; कुमा)।

जुअंजुअ (अप) अ [**युतयुत**] जुदा जुदा, अलग अलग, भिन्न भिन्न ; (हे ४, ४२२)।

जुअण [**दे**] देखो **जुअल**=(दे) ; (षड्)।

जुअय न [**युतक**] जुदा, पृथक् ; (दे ७, ७३)।

जुअरज्ज न [**यौवराज्य**] युवराजपन ; (स २६८)।

जुअल न [**युगल**] १ युग्म, जोड़ा, उभय ; (पाअ)। २ वे दो पद्य जिनका अर्थ एक दूसरे से सापेक्ष हो ; (श्रा १४)।

जुअल पुं [**दे**] युवा, तरुण, जवान ; (दे ३, ४७)।

जुअलिअ वि [**दे**] द्विगुणित ; (दे ३, ४७)।

जुअलिय देखो **जुगलिय** ; (णाया १, १)।

जुआण देखो **जुवाण** ; (गा ५७ ; २४६)।

जुआरि स्त्री [**दे**] जुआरि, अन्न-विशेष ; (सुपा ५४६ ; सुर १, ७१)।

जुइ स्त्री [**द्युति**] कान्ति, तेज, प्रकाश, चमक ; (औप ; जीव ३)। °म, °मंत वि [°**मत्**] तेजस्वी, प्रकाश-शाली ; (स ६४१ ; पउम १०२, १५६)।

जुइ स्त्री [**युति**] संयोग, युक्तता ; (ठा ३, ३)।

जुइ पुं [**युगिन्**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (पउम ३२, ५७)।

जुउच्छ सक [**जुगुप्स्**] घृणा करना, निन्दा करना। जुउच्छइ ; (हे ४, ४ ; षड् ; से ५, ५)।

जुउच्छिय वि [**जुगुप्सित**] निन्दित ; (निचू ४)।

जुंगिय वि [**दे**] जाति, कर्म या शरीर से हीन, जिसको संन्यास देने का जैन शास्त्रों में निषेध है ; (पुप्फ १२५)।

जुंज सक [**युज्**] जोड़ना, युक्त करना। जुंजइ ; (हे ४, १०६)। वकृ— **जुंजंत** ; (ओघ ३२६)।

जुंजण न [**योजन**] जोड़ना, युक्त करना, किसी कार्य में लगाना ; (सम १०६)।

जुंजणया } स्त्री [**योजना**] १ ऊपर देखो; (औप ; ठा ७)।
जुंजणा } २ करण-विशेष—मन, वचन और शरीर का व्यापार ; " मणवयणकायकिरिया पन्नरसविहाउ जुंजणा-करणं " (विसे ३३६०)।

जुंजम [**दे**] देखो **जुंजुमय**; (उप ३१८)।

जुंजिअ वि [**दे**] बुभुक्षित, भूखा; (णाया १, १—पत्र ६६; ६८ टी)।

जुंजुमय न [**दे**] हरा तृण विशेष, एक प्रकार का हरा घास, जिसको पशु चाव से खाते हैं ; (स ४८७)।

जुंजुरुड वि [**दे**] परिग्रह-रहित ; (दे ३, ४७)।

जुग पुं [**युग**] १ काल-विशेष—सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि ये चार युग ; (कुमा)। २ पाँच वर्ष का काल ; (ठा २, ४—पत्र ८६; सम ७५)। ३ न. चार हाथ का यूप; (औप ; पगह १, ४)। ४ शकट का एक अंग, धुर, गाड़ी या हल खींचने के समय जो बैलों के कन्धे पर रक्खे जाते हैं; (उप पृ १३६ ; उत्त २)। ५ चार हाथ का परिमाण ; (अणु)। ६ देखो **जुअ**=युग। °प्पवर वि [°**प्रवर**]युग-श्रेष्ठ ; (भग)। °प्पहाण वि [°**प्रधान**] १ युग-श्रेष्ठ ; (रंभा)। २ पुं. युग-श्रेष्ठ जैन आचार्य, जैन आचार्य की एक उपाधि; (पव २६४; गुरु १)। °**बाहु** पुं [°**बाहु**] १ विदेह वर्ष में उत्पन्न स्वनाम-प्रसिद्ध एक जिन-देव; (विपा २, १)। २ विदेह वर्ष का एक त्रि-खण्डाधिपति राजा ; (आचू ४)। ३ मिथिला का एक राजा ; (तित्थ)।

४ वि. यूप की तरह लम्बा हाथ वाला, दीर्घ-बाहु ; (ठा ६)। °मच्छ पुं [°मत्स्य] मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८— पत्र ८४ टी) । °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष ; (ठा ५, ३) ।

जुगंतर न [**युगान्तर**] यूप-परिमित भूमि-भाग, चार हाथ जमीन ; (पगह २, १) । °**पलोयणा** स्त्री [**प्रलोकना**] चलते समय चार हाथ जमीन तक दृष्टि रखना ; (भग) ।

जुगंधर न [**युगन्धर**] १ गाड़ी का काष्ठ-विशेष, शकट का एक अवयव ; (जं १) । २ पुं. विदेह वर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव ; (आचू १) । ३ एक जैन मुनि ; (पउम २०, १८) । ४ एक जैन आचार्य ; (आवम) ।

जुगल न [**युगल**] युग्म, जोड़ा, उभय ; (अणु ; राय) ।

जुगलि वि [**युगलिन्**] स्त्री-पुरुष के युग्म रूप से उत्पन्न होने वाला ; (रयण २२) ।

जुगलिय वि [**युगलित**] १ युग्म-युक्त, द्वन्द्व-सहित ; (जीव ३) । २ युग्म रूप से स्थित ; (राज) ।

जुगव वि [**युगवत्**] समय के उपद्रव से वर्जित ; (अणु ; राय) ।

जुगव } अ [**युगपत्**] एक ही साथ, एक ही समय में ;
जुगवं } "कारणकज्जविभागो दीवपगासाण जुगवजम्मेवि" (विसे ५३६ टी ; औप) ।

जुगुच्छ देखो **जुउच्छ** । जुगुच्छइ ; (हे ४, ४) ।

जुगुच्छणया } स्त्री [**जुगुप्सा**] घृणा, तिरस्कार ; (स
जुगुच्छा } १६७ ; प्राप्र) ।

जुगुच्छिय वि [**जुगुप्सित**] घृणित, निन्दित ; (कुमा) ।

जुग्ग न [**युग्य**] १ वाहन, गाड़ी वगैरः यान ; (आचा) । २ शिबिका, पुरुष-यान ; (सूअ २, २ ; जं २) । ३ गोल्ल देश में प्रसिद्ध दो हाथ का लम्बा-चौड़ा यान-विशेष, शिबिका-विशेष ; (गाया १, १ ; औप) । ४ वि. यान-वाहक अश्व आदि ; ५ भार-वाहक ; (ठा ४, ३) । °**यरिया**, °**रिया** स्त्री [°**चर्या**] वाहन की गति; (ठा ४, ३—पत्र २३६) ।

जुग्ग वि [**योग्य**] लायक, उचित ; (विसे २६६२ ; सं ३१ ; प्रासू ५६ ; कुमा) ।

जुग्ग न [**युग्म**] युगल, द्वन्द्व, उभय; (कुमा ; प्राप्र ; प्राप) ।

जुज्ज देखो **जुंज** । जुज्जइ ; (हे ४, १०६ ; षड्) ।

जुज्जंत देखो **जु** ।

जुज्झ अक [**युध्**] लड़ाई करना, लड़ना । जुज्झइ ; (हे ४, २१७ ; षड्) । वकृ—**जुज्झंत, जुज्झमाण** ; (सुर ६, २२२ ; २, ५१) । संकृ—**जुज्झित्ता** ; (ठा ३, २) । प्रयो—जुज्झावेइ ; (महा) । वकृ —**जुज्झावेंत** ; (महा) । कृ—**जुज्झावेयव्व** ; (उप पृ २३५) ।

जुज्झ न [**युद्ध**] लड़ाई, संग्राम, समर ; (गाया १, ८ ; कुमा ; कप्पू ; गा ६८४) । °**इजुद्ध** न [°**तियुद्ध**] महायुद्ध, पुरुषों की बहत्तर कलाओं में एक कला; (औप) ।

जुज्झण न [**योधन**] युद्ध, लड़ाई ; (सुपा ५२७) ।

जुज्झिअ वि [**युद्ध**] १ लड़ा हुआ, जिसने संग्राम किया हो वह ; (से १५, ३७) । २ न. युद्ध, लड़ाई, संग्राम ; (स १२६) ।

जुट्ठ वि [**जुष्ट**] सेवित ; (प्रामा) ।

जुडिअ वि [**दे**] आपस में जुटा हुआ, लड़ने के लिए एक दूसरे से भीड़ा हुआ ; "सुहडेहिं समं सुहडा जुडिया तह साइ-णोवि साईहिं" (उप ७२८ टी) ।

जुण्ण वि [**दे**] विदग्ध, निपुण, दक्ष ; (दे ३, ४७) ।

जुण्ण वि [**जीर्ण**] जूना, पुराना; (हे १,१०२; गा ५३४) ।

जुण्हा स्त्री [**ज्योत्स्ना**] चाँदनी, चन्द्रिका, चन्द्र का प्रकाश ; (सुपा १२१ ; सण) ।

जुत्त वि [**युक्त**] १ संगत, उचित, योग्य; (गाया १, १६; चंद २०)। २ संयुक्त, जोड़ा हुआ, मिला हुआ, संबद्ध; (सूअ १,१, १;आचू)। ३ उद्युक्त, किसी कार्य में लगा हुआ; (पव ६४)। ४ सहित, समन्वित ; (सूअ १, १,३ ; आचा) । °**संखिज्ज** न [°**संख्येय**] संख्या-विशेष ; (कम्म ४, ७८) ।

जुत्ति स्त्री [**युक्ति**] १ योग, योजन, जोड़, संयोग ; (औप; गाया १, १०) । २ न्याय, उपपत्ति; (उप ६५० ; प्रासू ६३) । ३ साधन, हेतु ; (सूअ १, ३, ३) । °**ण्ण** वि [°**ज्ञ**] युक्ति का जानकार ; (औप) । °**सार** वि [°**सार**] युक्ति-प्रधान, युक्त, न्याय-संगत, प्रमाण-युक्त ; (उप ७२८ टी) । °**सुवण्ण** न [°**सुवर्ण**] बनावटी सोना ; (दस १०, ३६) । °**सेण** पुं [°**षेण**] ऐरवत वर्ष के अष्टम जिन-देव ; (सम १५३) ।

जुत्तिय वि [**यौक्तिक**] गाड़ी वगैरः में जो जोता जाय ; "जुत्तियतुरंगमाणं" (सुपा ७७) ।

जुद्ध देखो **जुज्झ**=युद्ध ; (कुमा) ।

जुन्न देखो **जुण्ण** ; (सुर १, २४४) ।

जुन्हा देखो **जुण्हा** ; (सुपा १५७) ।

जुप्प देखो **जुंज** । जुप्पइ; (हे ४, १०६) । जुप्पसि; (कुमा)।

जुम्म न [**युग्म**] १ युगल, दोनों, उभय ; (हे २, ६२ ; कुमा) । २ पुं. सम राशि ; (ओघ ४०७ ; ठा ४, ३—पत्र

२३२)। °पएसिय वि [प्रादेशिक] सम-संख्य प्रदेशों से निष्पन्न ; (भग २५, ४)।

जुम्ह स [युष्मत्] द्वितीय पुरुष का वाचक सर्वनाम ; "जुम्हदम्हपयरणं" (हे १, २४६)।

जुरुमिल्ल वि [दे] गहन, निबिड़, सान्द्र ; "दुहजुरुमिल्ला-वत्थं" (दे ३, ४७)।

जुव पुं [युवन्] जवान, तरुण ; (कुमा)। °राअ पुं [°राज] गद्दी का वारिस राज-कुमार, भावी राजा; (सुर २, १७५ ; अभि ८२)।

जुवइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री ; (हे १, ४ ; औप ; गउड ; प्रासू ६३ ; कुमा)।

जुवंगव पुं [युवगव] तरुण बैल ; (आचा २, ४, २)।

जुवरज्ज न [यौवराज्य] १ युवराजपन ; (उप २११ टी ; सुर १६, १२७)। २ राजा के मरने पर जबतक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तबतक का राज्य ; (आचा २, ३, १)। ३ राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जबतक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तबतक का राज्य ; (बृह १)।

जुवल देखो जुगल ; (स ४७८ ; पउम ६५, २३)।

जुवलिय देखो जुगलिय ; (भग ; औप)।

जुवाण देखो जुव ; (पउम ३,१४६ ; णाया १,१; कुमा)।

जुवाणी देखो जुवई ; (पउम ८, १८४)।

जुव्वण } देखो जोव्वण; (प्रासू ४६ ; ११६)। "पढमं
जुव्वणत्त } चिय वालत्तं, तत्तो कुमरत्तजुव्वणत्ताइं" (सुपा २४३)।

जुसिअ वि [जुष्ट] सेवित ; "पाएण देइ लोगो उवगारिसु परिचिए व जुसिए वा" (ठा ४, ४)।

जुहिट्ठिर }
जुहिट्ठिल } देखो जहिट्ठिल ; (पिंग ; उप ६४८ टी ; णाया १, १६—पत्र २०८; २२६)।
जुहिट्ठिल्ल }

√जुहु सक [हु] १ देना, अर्पण करना। २ हवन करना, होम करना। जुहुणामि ; (ठा ७—पत्र ३८१ ; पि ५०१)।

जूअ न [द्यूत] जूआ, द्यूत ; (पाअ)। °कर वि [°कर] जूआरी, जूए का खिलाड़ी ; (सुपा ५२२)। °कार वि [°कार] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (णाया १, १८)। °कारि वि [°कारिन्] जूआरी ; (महा)। °केलि स्त्री [°केलि] द्यूत-क्रीड़ा ; (रयण ४८)। °खलय न [°खलक] जूआ खेलने का स्थान ; (राज)। °केलि देखो °केलि ; (रयण ४७)।

जूअ पुं [यूप] १ जूआ, धुर, गाड़ी का अवयव-विशेष जो बैलों के कन्धे पर डाला जाता है ; (उप पृ १३६)। २ स्तम्भ-विशेष, "जूअसहस्सं मुसल-सहस्सं च उस्सवेह" (कप्प)। ३ यज्ञ-स्तम्भ ; (जं ३)। ४ एक महापाताल-कलश ; (पव २७२)।

जूअअ पुं [दे] चातक पक्षी ; (दे ३, ४७)।

जूअग पुं [यूपक] देखो जूअ=यूप ; (सम ७१)।

जूअग पुं [दे] सन्ध्या की प्रभा और चन्द्र की प्रभा का मिश्रण ; (ठा १०)।

जूआ स्त्री [यूका] १ जूँ, चीलड़, क्षुद्र कीट-विशेष ; (जी १६)। २ परिमाण-विशेष, आठ लिक्षा का एक नाप ; (ठा ६ ; इक)। °सेज्जायर वि [°शय्यातर] यूकाओं को स्थान देने वाला ; (भग १५)।

जूआर वि [द्यूतकार] जूआरी, जूए का खेलाड़ी ; (रंभा; भवि ; सुपा ४००)।

जूआरि } वि [द्यूतकारिन्] जूआ खेलने वाला, जूए का
जूआरिय } खेलाड़ी ; (द्र ४३ ; सुपा ४०० ; ४८८ ; स १५०)।

जूड पुं [जूट] कुन्तल, केश-कलाप ; (दे ४, २४ ; भवि)।

जूर अक [क्रुध्] क्रोध करना, गुस्सा करना। जूरइ ; (हे ४, १३५ ; षड्)।

√जूर अक [खिद्] खेद करना, अफसोस करना। जूरइ ; (हे ४, १३२ ; षड्)। जूर ; (कुमा)। भवि—जूरिहिइ ; (हे ३, १६३)। वकृ—जूरंत ; (हे ३, १६३)।

√जूर अक [जूर्] १ झुरना, सूखना ; २ सक. वध करना, हिंसा करना ; (राज)।

जूरण न [जूरण] १ सूखना, झुरना ; २ निन्दा, गर्हण ; (राज)।

जूरव सक [वञ्च्] ठगना, वंचना। जूरवइ ; (हे ४, ९३)।

जूरवण वि [वञ्चन] ठगने वाला ; (कुमा)।

जूरावण न [जूरण] झुराना, शोषण ; (भग ३, २)।

जूराविअ वि [क्रोधित] क्रुद्ध किया हुआ, कोपित ; (कुमा)।

जूरिअ वि [खिन्न] खेद-प्राप्त ; (पाअ)।

जूरुम्मिलय वि [दे] गहन, निबिड, सान्द्र ; (दे ३, ४७)।

√जूल देखो जूर=क्रुध्। जूल ; (गा ३५४)।

जूव देखो **जूअ**=द्यूत ; (णाया १, २—पत्र ७६) ।
जूव } देखो **जूअ**=यूप ; (इक ; ठा ४, २) ।
जूवय }
जूस देखो **झूस** ; (ठा २, १ ; कप्प) ।
जूस पुंन [**यूष**] जूस, मूँग वगैरः का क्वाथ, कढ़ी ; (ओघ १४७ ; ठा ३, १) ।
जूसअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (षड्) ।
जूसणा स्त्री [**जोषणा**] सेवा ; (कप्प) ।
जूसिय वि [**जुष्ट**] १ सेवित ; (ठा २, १) । २ क्षपित, क्षीण ; (कप्प) ।
जूह न [**यूथ**] समूह, जत्था ; (ठा १० ; गा ५४८) । °**वइ** पुं [°**पति**] समूह का अधिपति, यूथ का नायक ; (से ६, ६८ ; णाया १, १ ; सुपा १३७) । °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (गा ५४८) । °**ाहिवइ** पुं [°**ाधिपति**] यूथ-नायक ; (उत्त ११) ।
जूहिय वि [**यूथिक**] यूथ में उत्पन्न ; (आचा २, २) ।
जूहिया स्त्री [**यूथिका**] लता-विशेष, जूही का पेड़ ;(पराण १ ; पउम ५३, ७६) ।
जूही स्त्री [**यूथी**] लता-विशेष, माधवी लता ; (कुमा) ।
जे अ. १ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (हे २,२१७); २ अवधारण-सूचक अव्यय ; (उव) ।
जेउ वि [**जेतृ**] जीतने वाला, विजेता ; (भग २०, २) ।
जेउआण }
जेउं } देखो **जिण**=जि ।
जेऊण }
जेक्कार पुं [**जयकार**] 'जय जय' आवाज, स्तुति ; "हुंति देवाण जेक्कारा" (गा ३३२) ।
जेट्ठ देखो **जिट्ठ**=ज्येष्ठ ; (हे २, १७२ ; महा ; उवा) ।
जेट्ठ देखो **जिट्ठ** =ज्यैष्ठ ; (महा) ।
जेट्ठा देखो **जिट्ठा**; (सम ८ ; आचू ४)। °**मूल** पुं [°**मूल**] जेठ मास ; (औप ; णाया १, १३)। °**मूली** स्त्री [°**मूली**] जेठ मास की पूर्णिमा ; (सुज्ज १०) ।
जेण अ [**येन**] लक्षण-सूचक अव्यय; "भमरुअं जेण कमलवणं" (हे २, १८३ ; कुमा) ।
जेत्त देखो **जइत्त** ; (पि ६१) ।
जेत्तिअ } वि [**यावत्**] जितना ; (हे २, १५७ ; गा ७१;
जेत्तिल } गउड) ।
जेत्तुल } (अप) ऊपर देखो ; (हे ४, ४३५) ।
जेत्तुल्ल }
जेद्दह देखो **जेत्तिअ**; (हे २, १५७ ; प्राप्र) ।
जेम सक [**जिम्, भुज्**] भोजन करना । जेमइ; (हे ४, ११०; षड्) । वकृ—**जेमंत**; (पउम १०३, ८५) ।
जेम (अप) अ [**यथा**] जैसे, जिस तरह से ; (सुपा ३८३ ; भवि) ।
जेमण } न [**जेमन**] जीमन, भोजन ; (ओघ ८८
जेमणग } औप) ।
जेमणय न [**दे**] दक्षिण अंग , गुजराती में 'जमणुं'; (दे; ३, ४८) ।
जेमावण न [**जेमन**] भोजन कराना, खिलाना ; (भग ११, ११) ।
जेमाविय वि [**जेमित**] भोजित, जिसको भोजन कराया गया हो वह ; (उप १३६ टी) ।
जेमिय वि [**जेमित**] जीमा हुआ, जिसने भोजन किया हो वह ; (णाया १, १—पत्र ४१ टी) ।
जेयव्व देखो **जिण**=जि ।
जेव देखो **एव**=एव ; (रंभा ; कप्पू) ।
जेवँ (अप) देखो **जिवँ** ; (हे ४, ३९७) ।
जेवड (अप) देखो **जेत्तिअ** ; (हे ४, ४०७) ।
जेव्व देखो **एव** =एव; (पि ; नाट) ।
जेह (अप) वि [**यादृश**] जैसा; (हे ४,४०२; षड्) ।
जेहिल पुं [**जेहिल**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (कप्प)।
जो } सक [**दृश्**] देखना । जोइ; (सण) । "एसा हु
जोअ } वंकवंकं , जोयइ तुह संमुहं जण" (सुर ३, १२६) । जोयंति ; (स ३६१) । कर्म— जोइज्जइ; (रयण ३२) । वकृ— **जोअंत** ; (धम्म ११ टी; महा ; सुर १०, २४४) । कवकृ—**जोइज्जंत**; (सुपा ५७) ।
जोअ अक [**द्युत्**] प्रकाशित होना, चमकना । जोइ ; (कुमा) । भूका—जोइंसु ; (भग) । वकृ—**जोअंत**; (कुमा ; महा) ।
जोअ सक [**द्योतय्**] प्रकाशित करना । जोअइ ; (सुअ १, ६, १, १३) । "तस्सवि य गिहं पुण बालपंडिया जोयए दुहिया" (सुपा ६११) । जोएज्जा ; (विसे ६१२) ।
जोअ सक [**योजय्**] जोड़ना, युक्त करना । जोएइ ; (महा) । वकृ—**जोइयव्व, जोएअव्व, जोयणिय, जोयणिज्ज**; (उप ५६८ ; स ५६८ ; औप ; निचू १) ।

जोअ पुं [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा ; (दे ३, ४८)। २ युगल, युग्म ; (गाया १, १ टी—पत्र ४३)।

जोअ देखो **जोग** ; (अवि २५ ; स ३३१ ; कुमा)। °**वडय** न [°**वटक**] चूर्ण-विशेष, पाचक चूर्ण, हाजमा ; (स २५२)।

जोअंगण [दे] देखो **जोइंगण** ; (भवि)।

जोअग वि [**द्योतक**] १ प्रकाशने वाला। २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध निपात वगैरः पद ; (विसे १००३)।

जोअड पुं [दे] खद्योत, कीट-विशेष ; (षड्)।

जोअण न [दे] लोचन, नेत्र, चक्षु ; (दे ३, ५०)।

जोअण न [**योजन**] १ परिमाण-विशेष, चार कोश ; (भग; इक)। २ संबन्ध, संयोग, जोड़ना ; (पराह १, १)।

जोअण न [**यौवन**] युवावस्था, तरुणता; (उप १४२ टी; गा १६७)।

जोअणा स्त्री [**योजना**] जोड़ना, संयोग करना ; (उप पृ २२१)।

जोआ स्त्री [**द्यो**] १ स्वर्ग ; २ आकाश ; (षड्)।

जोआवइत्तु वि [**योजयितृ**] जोड़ने वाला, संयुक्त करने वाला ; (ठा ४, ३)।

जोइ वि [**योगिन्**] १ युक्त, संयोग वाला। २ चित्त-निरोध करने वाला, समाधि लगाने वाला ; ३ पुं. मुनि, यति, साधु ; (सुपा २१६ ; २१७)। ४ रामचन्द्र का स्वनाम-ख्यात एक सुभट ; (पउम ६७, १०)।

जोइ पुं [**ज्योतिस्**] १ प्रकाश, तेज; (भग ; ठा ४, ३)। २ अग्नि, वह्नि ; "सप्पिं जहा पडियं जोइमज्झे" (सूत्र १, १३)। ३ प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु ; "जहा हि अंधे सह जोइणावि" (सूत्र १, १२)। ४ अग्नि का काम करने वाला कल्पवृक्ष ; (सम १७)। ५ ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाशक पदार्थ ; (चंद १)। ६ ज्ञान ; ७ ज्ञान-युक्त ; ८ प्रसिद्धि-युक्त ; ९ सत्कर्म-कारक ; (ठा ४, ३)। १० स्वर्ग ; ११ ग्रह वगैरः का विमान ; (राज)। १२ ज्योतिष-शास्त्र ; (निर ३, ३)। °**अंग** पुं [°**अङ्ग**] अग्नि का काम करने वाला कल्प-वृक्ष विशेष ; (ठा १०)। °**रस** न [°**रस**] रत्न की एक जाति ; (णाया १, १)। देखो **जोइस**=ज्योतिस्।

जोइअ पुं [दे] कीट-विशेष, खद्योत ; (दे ३, ५०)।

जोइअ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ, विलोकित; (सुर ३, १७३ ; महा ; भवि)।

जोइअ वि [**योजित**] जोड़ा हुआ ; (स २६४)।

जोइअ देखो **जोगिय** ; (राज)।

जोइंगण पुं [दे] कीट-विशेष, इन्द्र-गोप ; (दे ३, ५०)।

जोइक्क पुंन [**ज्योतिष्क**] प्रदीप आदि प्रकाशक पदार्थ, "किं सूरस्स दंसणाहिगमे जोइक्कंतरं गवेसीयदि" (रंभा)।

जोइक्ख पुं [दे. **ज्योतिष्क**] १ प्रदीप, दीपक ; (दे ३, ४९ ; पव ४ ; वव ७)। २ प्रदीप आदि का प्रकाश ; (ओघ ६५३)।

जोइणी स्त्री [**योगिनी**] १ योगिनी, संन्यासिनी। २ एक प्रकार की देवी, ये चौसठ हैं ; (संति ११)।

जोइर वि [दे] स्खलित ; (दे ३, ४९)।

जोइस न [दे] नक्षत्र ; (दे ३, ४९)।

जोइस देखो **जोइ**=ज्योतिस् ; (चंद १ ; कप्प ; विसे १८७० ; जो १ ; ठा ६)। °**राय** पुं [°**राज**] १ सूर्य ; २ चन्द्र ; (चंद १)। °**लय** पुं [°**लय**] सूर्य आदि देव ; (उत ३६)।

जोइस पुं [**ज्योतिष**] १ देवों की एक जाति, सूर्य, चन्द्र, ग्रह आदि ; (कप्प; औप; दंड २७)। २ न. सूर्य आदि का विमान ; (ति १२ ; जो १)। ३ शास्त्र-विशेष, ज्योतिष-शास्त्र ; (उत २)। ४ सूर्य आदि का चक्र ; ५ सूर्य आदि का मार्ग, आकाश ; "जे गहा जोइसम्मि चारं चरंति" (पराण ३)।

जोइस पुं [**ज्यौतिष**] १ सूर्य, चन्द्र आदि देवों की एक जाति; (कप्प; पंचा २)। २ वि. ज्योतिष शास्त्र का जानकार, जोतिषी; (सुपा १५६)।

जोइसिअ वि [**ज्यौतिषिक**] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, दैवज्ञ, जोतिषी; (स २२ ; सुर ४, १०० ; सुपा २०३)। २ सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देव ; (औप ; जी २४ ; पराण २)। °**राय** पुं [°**राज**] १ सूर्य, रवि ; २ चन्द्रमा ; (पराण २)।

जोइसिंद पुं [**ज्योतिरिन्द्र**] १ सूर्य, रवि ; २ चन्द्र, चन्द्रमा ; (ठा ६)।

जोइसिण पुं [**ज्यौत्स्न**] शुक्ल पक्ष ; (जो ४)।

जोइसिणा स्त्री [**ज्योत्स्ना**] चन्द्र की प्रभा, चन्द्रिका ; (ठा २, ४)। °**पक्ख** पुं [°**पक्ष**] शुक्ल पक्ष ; (चंद १५)। °**भा** स्त्री [°**भा**] चन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (भग १०, ५)।

जोइसिणी स्त्री [**ज्यौतिषी**] देवी-विशेष ; (पण्ण १७—पत्र ४६६)।

जोई स्त्री [**दे**] विद्युत्, बिजली ; (दे ३, ४६ ; षड्)।

जोईरस देखो **जोइ-रस** ; (कप्प ; जीव ३)।

जोईस पुं [**योगीश**] योगीन्द्र, योगि-राज ; (स १)।

जोईसर पुं [**योगीश्वर**] ऊपर देखो ; (सुपा ८३ ; रयण६)।

जोक्कार देखो **जेक्कार** ; (गा ३३२ अ)।

जोक्ख वि [**दे**] मलिन, अ-पवित्र ; (दे ३, ४८)।

जोग पुं [**योग**] १ व्यापार, मन, वचन और शरीर की चेष्टा ; (ठा ४, १ ; सम १० ; स ४७०)। २ चित्त-निरोध, मनः-प्रणिधान, समाधि ; (पउम ६८, २३ ; उत १)। ३ वश करने के लिए या पागल आदि बनाने के लिए फेंका जाता चूर्ण-विशेष ; 'जोगो सइमोहकरा सीसे खित्तो इमाण सुताण" (सुर ८, २०१)। ४ संबन्ध, संयोग, मेलन ; (ठा १०)। ५ ईप्सित वस्तु का लाभ ; (णाया १, ५)। ६ शब्द का अवयवार्थ-संबन्ध ; (भास २४)। ७ बल, वीर्य, पराक्रम ; (कम्म ५)। °**क्खेम** न [°**क्षेम**] ईप्सित वस्तु का लाभ और उसका संरक्षण ; (णाया १, ५)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] योग-निष्ठ, ध्यान-लीन ; (पउम ६८, २३)। °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] शब्द के अवयवों का अर्थ, व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ ; (भास २४)। °**दिट्ठि** स्त्री [°**दृष्टि**] चित्त-निरोध से उत्पन्न होने वाला ज्ञान-विशेष; (राज)। °**धर** [°**धर**] समाधि में कुशल, योगी ; (पउम ११६, १७)। °**परिव्वाइया** स्त्री [°**परिव्राजिका**] समाधि-प्रधान व्रतिनी-विशेष ; (णाया १, ८)। °**पिंड** पुं [°**पिण्ड**] वशीकरण आदि के योग से प्राप्त की हुई भिक्षा ; (पंचा १३ ; निचू १३)। °**मुद्दा** स्त्री [°**मुद्रा**] हाथ का विन्यास-विशेष ; (पंचा ३)। °**व** वि [°**वत्**] १ शुभ प्रवृत्ति वाला ; (सूअ १, २, १)। २ योगी, समाधि करने वाला ; (उत ११)। °**वाहि** वि [°**वाहिन्**] १ शास्त्र-ज्ञान की आराधना के लिए शास्त्रोक्त तपश्चर्या को करने वाला ; २ समाधि में रहने वाला ; (ठा ३, १ —पत्र १२०)। °**विहि** पुंस्त्री [°**विधि**] शास्त्रों की आराधना के लिए शास्त्र-निर्दिष्ट अनुष्ठान, तपश्चर्या-विशेष ; "इय वुत्तो जोग-विही", "एसा जोगविही" (अंग)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] चित्त-निरोध का प्रतिपादक शास्त्र ; (उवर १६०)।

जोग देखो **जोग्ग** ; " इय सो न एत्थ जोगो, जोगो पुण होइ अक्कूरो" (धम्म १२; सुर २, २०५ ; महा ; सुपा २०८)।

जोगि देखो **जोइ** = योगिन् ; (कुमा)।

जोगिंद पुं [**योगीन्द्र**] महान् योगी, योगीश्वर ; (रयण २६)।

जोगिणी देखो **जोइणी** ; (सुर ३, १८६)।

जोगिय वि [**यौगिक**] दो पदों के बन्ध से बना हुआ शब्द, जैसे—उप-करोति, अभि-षेणयति ; (पण्ह २, २—पत्र ११४)। २ द्रव्य-प्रयोग से बना हुआ ; (उप पृ ६४)।

जोगीसर देखो **जोईसर** ; (स २०१)।

जोगेसरी स्त्री [**योगेश्वरी**] देवी-विशेष ; (सण)।

जोगेसी स्त्री [**योगेशी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १४२)।

जोग्ग वि [**योग्य**] योग्य, उचित, लायक ; (ठा ३,१ ; सुपा २८)। २ प्रभु, समर्थ, शक्तिमान् ; (निचू २०)।

जोग्गा स्त्री [**दे**] चाटु, खुशामद ; (दे ३, ४८)।

जोग्गा स्त्री [**योग्या**] १ शास्त्र का अभ्यास ; (भग ११, ११ ; जं ३)। २ गर्भ-धारण में समर्थ योनि ; (तंदु)।

जोड सक [**योजय्**] जोड़ना, संयुक्त करना । वकृ—**जोडेंत** ; (सुर ४, १६)। संकृ—**जोडिऊण** ; (महा)।

जोड पुंन [**दे**] १ नक्षत्र ; (दे ३, ४६ ; वि ६)। २ रोग-विशेष ; (सण)।

जोडिअ पुं [**दे**] व्याध, बहेलिया ; (दे ३, ४६)।

जोडिअ वि [**योजित**] जोड़ा हुआ, संयुक्त किया हुआ; (सुपा १४६ ; ३५१)।

जोण पुं [**योन**,**यवन**] म्लेच्छ देश-विशेष ; (णाया १,१)।

जोणि स्त्री [**योनि**] १ उत्पत्ति-स्थान ; (भग ; सं ८२ ; प्रासू ११५)। २ कारण, हेतु, उपाय ; (ठा ३, ३ ; पंचा ४)। ३ जीव का उत्पत्ति-स्थान; (ठा ७)। ४ स्त्री-चिन्ह, भग ; (अणु)। °**विहाण** न [°**विधान**] उत्पत्ति-शास्त्र ; (विसे १७७५)। °**सूल** न [°**शूल**] योनि का एक रोग ; (णाया १, १६)।

जोणिय वि [**योनिक**,**यवनिक**] अनार्य देश-विशेष में उत्पन्न। स्त्री—°**या** ; (इक ; औप ; णाया १,१ —पत्र ३७)।

जोण्णलिआ स्त्री [**दे**] अन्न-विशेष, जुआरि, जोन्हरी ; (दे ३, ५०)।

जोण्ह वि [**ज्यौत्स्न**] १ शुक्र, श्वेत ; "कालो वा जोण्हो वा केणणुभावेण चंदस्स" (सुज्ज १६)। २ पुं. शुक्ल पक्ष ; (जो ४)।

जोण्हा स्त्री [**ज्योत्स्ना**] चन्द्र-प्रकाश ; (षड् ; काप्र १६७)।

जोण्हाल वि [**ज्योत्स्नावत्**] ज्योत्स्ना वाला, चन्द्रिका-युक्त ; (हे २, १५६) ।
जोत्त } न [**योक्त्र,°क**] जोत, रस्सी या चमड़े का तस्मा,
जोत्तय } जिससे बैल या घोड़ा, गाड़ी या हल में जोता जाता है ; (पराह २, ५ ; गा ६६२) ।
जोव देखो **जोअ**=दृश् । जोवइ; (महा; भवि) ।
जोव पुं [**दे**] १ बिन्दु ; २ वि. स्तोक, थोड़ा ; (दे ३, ५२) ।
जोवण न [**दे**] १ यन्त्र, कल; 'आउज्जोवण' (ओघ ६० भा) । २ धान्य का मर्दन, अन्न-मलन ; (ओघ ६० भा) ।
जोवारि स्त्री [**दे**] अन्न-विशेष, जुआरि ; (दे ३, ५०) ।
जोविय वि [**दृष्ट**] विलोकित ; (स १४७) ।
जोव्वण न [**यौवन**] १ तारुण्य, जवानी ; (प्राप्र ; कप्प)। २ मध्य भाग ; (से २, १) ।
जोव्वणणीर } न [**दे**] वयः-परिणाम, वृद्धत्व, बुढ़ापा ;
जोव्वणवेअ } "जोव्वणणीरं तरुणत्तणे वि विजिएंदिया-ण पुरिसाण" (दे ३, ५१) ।
जोव्वणिया स्त्री [**यौवनिका**] यौवन, जवानी ; (राय) ।
जोव्वणोवय न [**दे**] बुढ़ापा, वृद्धत्व, जरा ; (दे ३, ५१)।
जोस देखो **जुस**=जुष् । वकृ—**जोसंत**; (राज) । प्रयो—संकृ—**जोसियाण** ; (वव ७) ।
जोसिअ वि [**जुष्ट**] सेवित ; (सूअ १, २, ३) ।
जोसिआ स्त्री [**योषित्**] स्त्री, महिला, नारी ; (षड् ; धर्म २) ।
जोसिणी देखो **जोण्हा** ; (अभि ३१) ।
जोह अक [**युध्**] लड़ना । जोहइ ; (भवि) ।
जोह पुं [**योध**] सुभट, योद्धा ; (औप ; कुमा) । °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] सुभटों का युद्ध-कालीन शरीर-विन्यास, अंग-रचना-विशेष ; (ठा १ ; निचू २०) ।
जोहणा देखो **जोण्हा** ; (मै ७१) ।
जोहि वि [**योधिन्**] लड़ने वाला, लड़वैया ; (औप) ।
जोहिया स्त्री [**योधिका**] जन्तु-विशेष, हाथ से चलने वाली एक प्रकार की सर्प-जाति ; (जीव २) ।
°**ज्जेव** } देखो **एव**=एव ; (वि २३; ८५) ।
°**ज्जेव्व** }
ज्झड देखो **झड** । ज्झडइ ; (हे ४, १३० टि) ।
ज्झहुराविअ वि [**दे**] निवासित, निवास-प्राप्त ; (षड्) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** जआराइसद्द-संकलणो सोलहमो तरंगो समत्तो ।

झ

झ पुं [**झ**] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा ; प्राप) । २ ध्यान ; (विसे ३१६८) ।
झंकार पुं [**झङ्कार**] नूपुर वगैरः का आवाज ; (सुर ३, १८ ; पडि ; सण) ।
झंकारिअ न [**दे**] अवचयन, फूल वगैरः का आदान ; (दे ३, ५६) ।
झंख अक [**सं+तप्**] संतप्त होना, संताप करना । झंखइ ; (हे ४, १४०) ।
झंख अक [**वि+लप्**] विलाप करना, बकवाद करना । झंखइ ; (हे ४, १४८) । वकृ—**झंखंत** ; (कुमा) । "धणनासाओ गहिलीभूओ झंखइ नरेस ! एस धुवं । सोमोवि भणइ झंखसि तुमेव बहुलोहगहगहिओ" (श्रा १४) ।
झंख सक [**उपा + लभ्**] उपालंभ देना, उलहना देना । झंखइ; (हे ४, १५६) ।
झंख अक [**निर्+श्वस्**] निःश्वास लेना । झंखइ ; (हे ४, २०१) ।
झंख वि [**दे**] तुष्ट, संतुष्ट, खुश ; (दे ३, ५३) ।
झंखण न [**उपालम्भ**] उपालम्भ, उलहना ; (कुमा) ।
झंखर पुं [**दे**] शुष्क तरु, सूखा पेड़ ; (दे ३, ५४) ।
झंखरिअ [**दे**] देखो **झंकारिअ** ; (दे ३, ५६) ।
झंखावण वि [**संतापक**] संताप करने वाला ; (कुमा) ।
झंखिर वि [**निःश्वसितृ**] निःश्वास लेने वाला ; (कुमा ७, ४४) ।
झंझ पुं [**झंझ**] कलह, झगड़ा ; (सम ५०) । °**कर** वि [°**कर**] कलहकारी, फूट कराने वाला ; (सम ३७) । °**पत्त** वि [°**प्राप्त**] क्लेश-प्राप्त ; (सूअ १, १३) ।
झंझण } अक [**झंझणाय्**] झन झन शब्द करना ।
झंझणक्क } झंझणइ ; (गा ५७५ अ) । झंझणक्कइ; (पिंग) ।

झंझणा स्त्री [**झञ्झना**] झन झन शब्द ; (गउड) ।

झंझा स्त्री [**झञ्झा**] १ प्रचण्ड वायु-विशेष ; (गा १७० ; सण) । २ कलह, क्लेश, झगड़ा ; (उव ; बृह ३) । ३ माया, कपट ; ४ क्रोध, गुस्सा ; (सूअ १, १३) । ५ तृष्णा, लोभ ; (सूअ २, २, २) । ६ व्याकुलता, व्यग्रता ; (आचा) ।

झंझिअ वि [**झञ्झित**] बुभुक्षित, भूखा ; (णाया १,१) ।

झंट सक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना । झंटइ ; (हे ४, १६१) ।

झंट अक [**गुञ्ज्**] गुञ्जारव करना । वकृ—"**झंटंत**भमिरभमरउलमालियं मालियं गहिउं" (सुपा ५२६) ।

झंटण न [**भ्रमण**] पर्यटन, परिभ्रमण ; (कुमा) ।

झंटलिआ स्त्री [**दे**] चंक्रमण, कुटिल गमन ; (दे ३, ५५) ।

झंटिअ वि [**दे**] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, प्रहत ; (दे ३, ५५) ।

झंटी स्त्री [**दे**] छोटा किन्तु ऊँचा केश-कलाप; (दे ३, ५३) ।

झंडली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; (दे ३, ५४) ।

झंडुअ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड़ ; (दे ३, ५३) ।

झंडुली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; २ क्रीड़ा, खेल ; (दे ३, ६१) ।

झंदिय वि [**दे**] प्रद्रुत, पलायित ; (षड्) ।

झंप सक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना । झंपइ ; (हे ४,१६१) ।

झंप सक [**आ+च्छादय्**] झाँपना, आच्छादन करना, ढकना । झंपइ ; (पिंग) । संकृ—**झंपिऊण, झंपिवि** ; (कुमा ; भवि) ।

झंपण न [**भ्रमण**] परिभ्रमण, पर्यटन ; (कुमा) ।

झंपणी स्त्री [**दे**] पक्ष्म, आँख के बाल; (दे ३, ५४; पाअ) ।

झंपा स्त्री [**झम्पा**] एकदम कूदना, झम्पा-पात; (सुपा १६८) ।

झंपिअ वि [**दे**] १ त्रुटित, टूटा हुआ; २ घट्टित, आहत ; (दे ३, ६१) ।

झंपिअ वि [**आच्छादित**] ढका हुआ, बंद किया हुआ ; (पिंग) । "पईवओ झंपिओ झत्ति" (महा), "तओ एवं भणमाणस्स सहत्थेणं झंपिअं मुहकुहरं सुमइस्स णाइलेणं" (महानि ४) ।

झक्किअ न [**दे**] वचनीय, लोक-निन्दा; (दे ३, ५५; भवि) ।

झंख देखो **झंख**=वि+लप् । वकृ—**झखंत** ; (जय २३) ।

झगड पुं [**दे**] झगड़ा, कलह ; (सुपा ५४६ ; ५४७) ।

झग्गुली स्त्री [**दे**] अभिसारिका ; (विक्र १०१) ।

झज्झर पुं [**झर्झर**] १ वाद्य-विशेष, झाँझ ; २ पटह, ढोल; ३ कलि-युग ; ४ नद-विशेष ; (पि २१४) ।

झज्झरिय वि [**झर्झरित**] वाद्य-विशेष के शब्द से युक्त ; (ठा १०) ।

झज्झरी स्त्री [**दे**] दूसरे के स्पर्श को रोकने के लिए चांडाल-लोक जो लकड़ी अपने पास रखते हैं वह ; (दे ३, ५४) ।

झड अक [**शद्**] १ झड़ना, पत्र फल आदि का गिरना, टपकना । २ हीन होना । ३ सक. झपट मारना, गिराना । झडइ ; (हे ४, १३०) । वकृ—**झडंत** ; (कुमा) । कवकृ—"वासासु सीयवाएहिं झडिज्जंतो" (आव १)। संकृ—"**झडिऊण** पल्लवेल्ला, पुणोवि जायंति तरुवरा तुरियं । धीराणवि धणरिद्धी, गयावि न हु दुल्लहा एवं" (उप ७२८ टी) ।

झडत्ति अ [**झटिति**] शीघ्र, जल्दी, तुरंत ; (उप ७२८ टी ; महा) ।

झडप्प अ [**दे**] शीघ्रता, जल्दी ; (उप पृ ११० ; रंभा) ।

झडप्प सक [**आ + छिद्**] झपटना, झपट मारना, छीनना । झडप्पमि ; (भवि) । संकृ—**झडप्पिवि** ; (भवि) ।

झडप्पड न [**दे**] झटपट, झटिति, शीघ्र ; (हे ४, ३८८) ।

झडप्पिअ वि [**आच्छिन्न**] छीना हुआ ; (भवि) ।

झडि अ [**झटिति**] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ; "झडि आपल्लवइ पुणो" (गा ६१३) ।

झडिअ वि [**दे**] १ शिथिल, ढीला, सुस्त ; (गा २३०) । २ श्रान्त, खिन्न ; (षड्) । ३ झड़ा हुआ, गिरा हुआ, "करच्छडाझडियपक्खिउले" (पउम ६६, १५) ।

झडित्ति देखो **झडत्ति** ; (सुर २, ४) ।

झडिल देखो **जडिल** ; (हे १, १९४) ।

झडी स्त्री [**दे**] निरन्तर वृष्टि; गुजराती में 'झडी'; (दे ३, ५३) ।

झण सक [**जुगुप्स्**] घृणा करना । झणइ ; (षड्) ।

झणज्झण अक [**झणझणाय्**] 'झन झन' आवाज करना । वकृ—**झणज्झणंत** ; (प्राप) ।

झणज्झणिअ वि [**झणझणित**] झन झन आवाज वाला; (पिंग) ।

झणझण देखो **झणज्झण** । झणझणइ ; (वज्जा ६६) ।

झणझणारव पुं [**झणझणारव**] 'झन झन' आवाज ; (महा) ।

झणझणिय देखो **झणज्झणिअ** ; (सुपा ५०) ।

झणि देखो **झुणि** ; (रंभा) ।

झत्ति देखो **झडत्ति**; (हे १,४२ ; षड् ; महा ; सुर २, ६) ।

झत्थ वि [**दे**] गत, गया हुआ ; २ नष्ट ; (दे ३, ६१) ।

झपिअ वि [दे] पर्यस्त, उत्क्षिप्त ; (षड्) ।
झप्प देखो **झंप** । झप्पइ ; (षड्) ।
झमाल न [दे] इन्द्रजाल, माया-जाल; (दे ३, ५३) ।
झय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वजा, पताका ; (हे २, २७ ; औप) । स्त्री—°**या** ; (औप) ।
झर अक [क्षर्] झरना, टपकना, चूना, गिरना । झरइ ; (हे ४, १७३) । वकृ—**झरंत** ; (कुमा ; सुर ३, १०) ।
झर सक [स्मृ] याद करना । झरइ ; (हे ४, ७४ ; षड्)। कृ—**झरेयव्व** ; (बृह ५) ।
झरंक } पुं [दे] तृण का बनाया हुआ पुरुष, चञ्चा ; (दे
झरंत } ३, ५५) ।
झरग वि [स्मारक] चिन्तन करने वाला, ध्यान करने वाला; "भरणगं करगं झरगं पभावगं णाणदंसणगुणाणं" (तंदु) ।
झरझर पुं [झरझर] निर्झर आदि का 'झर झर' आवाज; (सुर ३, १०) ।
झरण न [क्षरण] झरना, टपकना, पतन ; (वव १) ।
झरणा स्त्री [क्षरणा] ऊपर देखो ; (आवम) ।
झरय पुं [दे] सुवर्णकार; (दे ३, ५४) ।
झरिय वि [क्षरित] टपका हुआ, गिरा हुआ, पतित ; (उव ; ओघ ७६०) ।
झरुअ पुं [दे] मशक, मच्छड़ ; (दे ३, ५४) ।
झलक्किअ वि [दग्ध] जला हुआ, भस्मीभूत ; "जयगुरुगुरु-विरहानलजालोलिझलक्कियं हियय" (सुपा ६५७ ; हे ४, ३९५) ।
झलझल अक [जाज्वल्] झलकना, चमकना, दीपना । वकृ—**झलझलंत** ; (भवि) ।
झलझलिआ स्त्री [दे] झोली, कोथली, थैली ; (दे ३,५६)।
झलहल देखो **झलझल** । झलहलइ ; (सुपा १८६) । वकृ—**झलहलंत** ; (श्रा २८) ।
झला स्त्री [दे] मृगतृष्णा, धूप में जल-ज्ञान, व्यर्थ तृष्णा ; (दे ३, ५३ ; पाअ) ।
झलुंकिअ } वि [दे] दग्ध, जला हुआ ; (दे ३,५६)।
झलुसिअ }
झल्लरी स्त्री [झल्लरी] वलयाकार वाद्य-विशेष, झालर ; (ठा १ ; औप ; सुर ३, ६६ ; सुपा ५० ; कप्प) ।
झल्लोज [झल्लज] वि [दे] संपूर्ण, परिपूर्ण, भरपूर ; (भवि)।
झवणा स्त्री [क्षपणा] १ नाश, विनाश ; (विसे ९६१)। २ अध्ययन, पठन ; (विसे ९५८) ।

झस पुं [झष] १ मत्स्य, मछली ; (पण्ह १, १) । २ °**चिंधय** पुं [°चिह्नक] कामदेव, स्मर ; (कुमा) ।
झस पुं [दे] १ अयश, अपकीर्ति ; २ तट, किनारा ; ३ वि. तटस्थ, मध्यस्थ ; ४ दीर्घ-गंभीर, लम्बा और गंभीर ; (दे ३, ६०) । ५ टंक से छिन्न ; (दे ३, ६० ; पाअ) ।
झसय पुं [झषक] छोटा मत्स्य ; (दे २, ५७) ।
झसर पुंन [दे] शस्त्र विशेष, आयुध-विशेष, "सरझसरसत्ति-सव्वल--" (पउम ८, ६५) ।
झसिअ वि [दे] १ पर्यस्त, उत्क्षिप्त ; २ आकृष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह ; (दे ३, ६२) ।
झसिंध पुं [झषचिह्न] काम, स्मर ; (कुमा) ।
झसुर न [दे] १ ताम्बूल, पान ; (दे ३, ६१ ; गउड) । २ अर्थ ; (दे ३, ६१) ।
झा सक [ध्यै] चिन्ता करना, ध्यान करना । झाइ, झाअइ ; (हे ४, ६) । वकृ—**झायंत, झायमाण** ; (प्रारू ; महा) । संकृ—**झाऊणं** ; (आरा ११२) । हेकृ—**झाइत्तए** ; (कस) । कृ—**झायव्व, झेय, झाइयव्व, झाएयव्व** ; (कुमा ; आरा ७८ ; आव ४ ; ति १० ; सुर १४, ८४) ।
झाइ वि [ध्यायिन्] चिन्तन करने वाला, ध्यान करने वाला ; (आचा) ।
झाउ वि [ध्यातृ] ध्यान करने वाला, चिन्तक ; (आव४) ।
झाड न [दे. झाट] १ लता-गहन, निकुञ्ज, झाडी ; (दे ३, ५७ ; ७, ८४ ; पाअ ; सुर ७, २४३) । २ वृक्ष, पेड़ ; "आअल्लो झाडमेअम्मि" (दे १, ६१) , "दिट्ठो य तए पोमाडज्झाडयस्स इमम्मि पएसे विणिग्गओ पायओ" (स १४४) ।
झाडण न [झाटन] १ क्षोभ, क्षय, क्षीणता; २ प्रस्फोटन, झाड़ना ; (राज) ।
झाडल न [दे] कर्पास-फल, कर्पास ; (दे ३, ५७) ।
झाडावण स्त्रीन [झाटन] झड़वाना, सफा कराना, मार्जन कराना । स्त्री—°**णी** ; (सुपा ३७३) ।
झाण पुंन [ध्यान] १ चिन्ता, विचार, उत्कण्ठा-पूर्वक स्मरण, सोच ; (आव ४ ; ठा ४, १, हे २, २६) । २ एक ही वस्तु में मन की स्थिरता, लौ लगाना ; (ठा ४, १) । ३ मन आदि की चेष्टा का निरोध ; ४ दृढ़ प्रयत्न से मन वगैरः का व्यापार ; (विसे ३०७१ ; ठा ४, १।)

झाणंतरिया स्त्री [**ध्यानान्तरिका**] १ दो ध्यानों का मध्य भाग, वह समय जिसमें प्रथम ध्यान की समाप्ति हुई हो और दूसरे का आरम्भ जबतक न किया गया हो और अन्य अनेक ध्यान करने के बाकी हों ; (ठा ६ ; भग ५, ४) । २ एक ध्यान समाप्त होने पर शेष ध्यानों में किसी एक को प्रथम प्रारंभ करने का विमर्श ; (बृह १) ।

झाणि वि [**ध्यानिन्**] ध्यान करने वाला ; (आरा ८६) ।

झाम सक [**दह्**] जलाना, दाह देना, दग्ध करना । झामेइ ; (सुअ २, २, ४४) । वकृ—**झामंत** ; (सुअ २, २, ४४) । प्रयो—झामावेइ ; (सुअ २, २, ४४) ।

झाम वि [**दे**] दग्ध, जला हुआ ; (आचा २, १, १) । °**थंडिल** न [°**स्थण्डिल**] दग्ध भूमि ; (आचा २,१,१) ।

झाम वि [**ध्याम**] अनुज्ज्वल ; (पण्ह १,२—पत्र ४०)।

झामण न [**दे**] जलाना, आग लगाना प्रदीपनक; (वव २)।

झामर वि [**दे**] वृद्ध, बूढ़ा ; (दे ३, ५७) ।

झामल न [**दे**] १ आँख का एक प्रकार का रोग, गुजराती में "झामरो" । २ वि. झामर रोग वाला ; (उप ७६८ टी ; धा १२) ।

झामिअ वि [**दे**] दग्ध, प्रज्वलित ; (दे ३, ५६ ; वव ७ ; आवम) । २ श्यामलित, काला किया हुआ; ३ कलङ्कित ; "वणदवडपयंगाएवि जीए जा झामिओ नेय" (सार्ध१६)।

झाय वि [**ध्मात**] भस्मीकृत, दग्ध ; (णंदि) ।

झायव्व देखो **झा** ।

झारुआ स्त्री [**दे**] चीरी, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (दे ३,५७)।

झावण न [**ध्मापन**] देखो **झामण**; (राज) ।

झावणा न [**ध्मापना**] दाह, जलाना , अग्नि-संस्कार ; (आवम) ।

झिंखण न [**दे**] गुस्सा करना ; (उप १४३ टी) ।

झिंखिअ न [**दे**] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा ; (दे ३, ५५) ।

झिंगिर ⎫ पुं [**दे**] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की
झिंगिरड ⎭ एक जाति ; (जीव १) ।

झिंझिअ वि [**दे**] बुभुक्षित, भूखा; (बृह ६) ।

झिंझिणी ⎫ स्त्री [**दे**] एक प्रकार का पेड़, लता-विशेष; (उप
झिंझिरी ⎭ १०३१ टी ; आचा २, १, ८ ; बृह १) ।

झिज्जंत ⎫ वि [**क्षीयमाण**] जो क्षय को प्राप्त होता
झिज्जमाण ⎭ हो, कृश होता हुआ ; (से ५,५८; उप ७२८ टी ; कुमा) ।

झिण्ण देखो **झीण** ; (से १, ३५ ; कुमा) ।

झिमिय ⎫ न [**दे**] शरीर के अवयवों की जड़ता; (आचा)।
झिम्मिय ⎭

झिया देखो **झा** । झियाइ, झियायइ ; (उवा ; भग; कस ; पि ४७९) । वकृ—**झियायमाण** ; (णाया १,१—पत्र २८ ; ६०) ।

झिरिड न [**दे**] जीर्ण कूप, पुराना इनारा ; (दे ३, ५७) ।

झिलिअ वि [**दे**] झीला हुआ, पकड़ी हुई वह वस्तु जो ऊपर से गिरती हो; (सुपा १७८) ।

झिल्ल अक [**स्ना**] झीलना, स्नान करना । झिल्लइ ; (कुमा) ।

झिल्लिआ स्त्री [**झिल्लिका**] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति ; (पाअ ; पण्ण १) ।

झिल्लिरिआ स्त्री [**दे**] १ चीही-नामक तृण ; २ मशक, मच्छड़ ; (दे ३, ६२) ।

झिल्लिरी स्त्री [**दे**] मछली पकड़ने की एक तरह की जाल ; (विपा १, ८—पत्र ८५) ।

झिल्ली स्त्री [**दे**] लहरी, तरंग ; (गउड) ।

झिल्ली स्त्री [**झिल्ली**] १ वनस्पति-विशेष; (पणण १ ; उप १०३१ टी) । २ कीट-विशेष ; (गा ४६४) ।

झीण वि [**क्षीण**] दुर्बल, कृश ; (हे २, ३ ; पाअ) ।

झीण न [**दे**] १ अंग, शरीर ; २ कीट, कीड़ा ; (दे ३, ६२) ।

झीरा स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम ; (दे ३, ५७) ।

झुंख पुं [**दे**] तुणय-नामक वाद्य ; (दे ३, ५८) ।

झुंझिय वि [**दे**] १ बुभुक्षित, भूखा ; (पण्ह १, ३—पत्र ४६) । २ झुरा हुआ, मुरझा हुआ ; (भग १६, ४) ।

झुंझुमुसय न [**दे**] मन का दुःख ; (दे ३, ५८) ।

झुंटण न [**दे**] १ प्रवाह , (दे ३,५८) । २ पशु-विशेष, जो मनुष्य के शरीर की गरमी से जीता है और जिसका रोम कपड़े के लिये बहु-मूल्य है ; (उप ५५१) ।

झुंपडा स्त्री [**दे**] झोपड़ा, तृण-कुटीर, तृण-निर्मित घर; (हे ४, ४१६ ; ४१८) ।

झुंबणग न [**दे**] प्रालम्ब ; (णाया १, १) ।

झुज्झ देखो **जुज्झ**=युध् । झुज्झइ ; (पि २१४) । वकृ—**झुज्झंत** ; (हे ४, ३७६) ।

झुड वि [**दे**] झूठ, अलीक, असत्य ; (दे ३, ५८) ।

झुण सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना । झुणइ ; (हे ४, ४ ; सुपा ३१८) ।
झुणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज ; (हे १, ५२ ; षड् ; कुमा) ।
झुणिअ वि [जुगुप्सित] निन्दित, घृणित ; (कुमा) ।
झुत्ती स्त्री [दे] छेद, विच्छेद ; (दे ३, ५८) ।
झुमुझुमुसय न [दे] मन का दुःख ; (दे ३, ५८) ।
झुल्ल अक [अन्दोल्] झूलना, डोलना, लटकना । वकृ—**झुल्लंत** ; (सुपा ३१७) ।
झुल्लण स्त्रीन [दे] छन्द-विशेष । स्त्री—°**णा** ; (पिंग) ।
झुल्लुरी स्त्री [दे] गुल्म, लता, गाछ ; (दे ६, ५८) ।
झुस देखो **झूस** । संकृ—**झुसित्ता** ; (पि २०६) ।
झुसणा देखो **झूसणा** ; (राज) ।
झुसिय देखो **झूसिय** ; (बृह २) ।
झुसिर न [शुषिर] १ रन्ध्र, विवर, पोल , खाली जगह ; (णाया १, ८ ; सुपा ६२०) । २ वि. पोला, छूँछा ; (ठा २, ३ ; णाया १, २ ; पगह १, २) ।
झूर सक [स्मृ] याद करना, चिन्तन करना । झूरइ ; (हे ४, ७४) । वकृ—**झूरंत** ; (कुमा) ।
झूर सक [जुगुप्स्] निन्दा करना , घृणा करना । "निरुवमसोहग्गमइं, दिट्ठूणं तस्स रूवगुणरिद्धिं । इंदो वि देवराया, झूरइ नियमेण नियहवं" (रयण ४) ।
झूर अक [क्षि] झुरना, क्षीण होना, सूखना । वकृ—**झूरंत, झूरमाण** ; (सण ; उप पृ २७) ।
झूर वि [दे] कुटिल, वक्र, टेढ़ा ; (दे ३, ५६) ।
झूरिय वि [स्मृत] चिन्तित, याद किया हुआ ; (भवि) ।
झूस सक [जुष्] १ सेवा करना । २ प्रीति करना । ३ क्षीण करना, खपाना । वकृ—**झूसमाण** ; (आचा) । संकृ—**झूसित्ता, झूसित्ताणं, झूसेत्ता** ; (औप ; पि ५८३ ; अंत २७) ।
झूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा, आराधना ; (उवा ; अंत ; औप ; णाया १, १) ।
झूसरिअ वि [दे] १ असर्थ, अत्यन्त ; २ स्वच्छ, निर्मल ; (दे ३, ६२) ।
झूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित , आराधित ; (णाया १, १ ; औप) । २ क्षपित, क्षित, परित्यक्त ; (उवा ; ठा २, २) ।
झेडुअ पुं [दे] कैन्दुक, गेंद ; (दे ३, ५६) ।
झेय देखो **झा** ।
झेर पुं [दे] पुराना घण्टा ; (दे ३, ५६) ।
झोंडलिआ स्त्री [दे] रासक के समान एक प्रकार की क्रीड़ा ; (दे ३, ६०) ।
झोट्टी स्त्री [दे] अर्ध-महिषी, भैंस की एक जाति ; (दे ३, ५६) ।
झोड सक [शाटय्] पेड़ आदि से पत्र वगैरः को गिराना । झोडइ ; (पि ३२६) ।
झोड न [दे] १ पेड़ आदि से पत्र आदि का गिराना ; २ जीर्ण वृक्ष ; (णाया १, ११—पत्र १७१) ।
झोडण न [शाटन] पातन, गिराना ; (पगह १, १—पत्र २३) ।
झोडप्प पुं [दे] १ चना, अन्न-विशेष ; २ सूखे चने का शाक ; (दे ३, ५६) ।
झोडिअ पुं [दे] व्याध, शिकारी, बहेलिया ; (दे ३, ६०) ।
झोलिआ, झोल्लिआ स्त्री [दे. **झोलिका**] झोली, थैली, कोथली ; (दे ३, ५६ ; सूअ २, ४) ।
झोस देखो **झूस** । झोसेइ ; (आचा) । वकृ—**झोसमाण, झोसेमाण** ; (सुपा २६ ; आचा) । संकृ—"संलेहणाए सम्मं झोसित्ता निययदेहं तु" (सुर ६, २४६) ।
झोस सक (**गवेषय्**) खोजना, अन्वेषण करना । झोसहि ; (बृह ३) ।
झोस पुं [दे] झाड़ना, दूर करना ; (ठा ५, २) ।
झोसण न [दे] गवेषण, मार्गण ; "आभोगणं ति वा मग्गणं ति वा झोसणं ति वा एगट्ठं" (वव २) ।
झोसणा देखो **झूसणा** ; (सम ११६ ; भग) ।
झोसिअ देखो **झूसिय** ; (आचा ; हे ४, २५८) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** झआराइसद्दसंकलणो सत्तरहमो तरंगो समत्तो ।

ट

ट पुं [ट] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा; प्राप) ।
टंक पुं [टङ्क] १ तलवार आदि का अग्र भाग ; (पगह १, १—पत्र १८) । २ एक प्रकार का सिक्का ; (श्रा १२ ; सुपा ५१३) । ३ एक दिशा में छिन्न पर्वत ; (णाया १,१—

पत्र ६३) । ४ पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी, छेनी ; (से ५, ३५ ; उप पृ ३१५) । ५ परिमाण-विशेष, चार मासे की तौल ; (पिंग) । ६ पक्षि-विशेष ; (जीव १) ।

°क पुं [दे] १ तलवार, खड्ग ; २ खात, खुदा हुआ जलाशय ; ३ जङ्घा, जाँघ ; ४ भित्ति, भींत ; ५ तट, किनारा ; (दे ४, ४) । ६ खनित्र, कुदाल ; (दे ४, ४ ; से ५, ३५)। ७ वि. छिन्न, छेदा हुआ, काटा हुआ ; (दे ४, ४) ।

टंकण पुं [**टङ्कन**] म्लेच्छ की एक जाति ; (विसे १४४४)।

टंकवत्थुल पुं [**दे**] कन्द-विशेष, एक जाति की तरकारी ; (श्रा २०) ।

टंका स्त्री [**दे**] १ जंघा, जाँघ ; (पाअ) । २ स्वनाम-ख्यात एक तीर्थ ; (ती ४३) ।

टंकार पुं [**टङ्कार**] धनुष का शब्द ; (भवि) ।

टंकार पुं [**दे**] ओजस्, तेज ; (गउड) ।

टंकिअ वि [**दे**] प्रसृत, फैला हुआ ; (दे ४, १) ।

टंकिअ वि [**टङ्कित**] टाँकी से काटा हुआ ; (दे ४, ५०) ।

टंबरय वि [**दे**] भार वाला, गुरु, भारी ; (दे ४, २) ।

टक्क पुं [**टक्क**] देश-विशेष ; (हे १, १६५) ।

टक्कर पुं [**दे**] ठोकर, अंग से अंग का आघात ; (सुर १२, ६७ ; वव १) ।

टक्कारी स्त्री [**दे**] अरणि-वृक्ष का फूल ; (दे ४, २) ।

टगर पुं [**तगर**] १ वृक्ष-विशेष, तगर का वृक्ष ; २ सुगन्धित काष्ठ-विशेष ; (हे १, २०५ ; कुमा) ।

टट्टइआ स्त्री [**दे**] जवनिका, पर्दा ; (दे ४, १) ।

टप्पर वि [**दे**] विकराल कर्ण वाला, भयंकर कान वाला ; (दे ४, २ ; सुपा ५२० ; कप्पू) ।

टमर पुं [**दे**] केश-चय, बाल-समूह ; (दे ४, १) ।

टयर देखो **टगर** ; (कुमा) ।

टलटल अक [**टलटलाय्**] 'टल टल' आवाज करना । वकृ—**टलटलंत** ; (प्रासू १६३) ।

टलटलिय वि [**टलटलित**] 'टल टल' आवाज वाला; (उप ६४८ टी) ।

टसर न [**दे**] विसंटन, मोड़नी ; (दे ४, १) ।

टसर पुं [**त्रसर**] टसर, एक प्रकार का सूता ; (हे १, २०५ ; कुमा) ।

टसरोट्ट न [**दे**] शेखर, अवतंस ; (दे ४, १) ।

टार पुं [**दे**] अधम अश्व, हठी घोड़ा ; (दे ४, २) । "अइनिच्चिअं वि न मुअइ, अणवं टारव्व टारत्तं" (श्रा २७)। २ टट्टू, छोटा घोड़ा ; (उप १५५) ।

टाल न [**दे**] कोमल फल, गुठली उत्पन्न होने के पहले की अवस्था वाला फल ; (बृह ७) ।

टिंट) [**दे**] देखो **टेंटा** ; (भवि) । °**साला** स्त्री
टिंटा) [°**शाला**] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा ; (सुपा ४६५) ।

टिंबरु) पुंन [**दे**] वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड़ ; (दे ४,
टिंबरुअ) ३ ; उप १०३१ टी ; पाअ) ।

टिंबरुणी स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (पि २१८) ।

टिक्क न [**दे**] १ टीका, तिलक ; २ सिर का स्तबक, मस्तक पर रखा जाता गुच्छा ; (दे ४, ३) ।

टिक्किद (शौ) वि [**दे**] तिलक-विभूषित ; (कप्पू) ।

टिग्घर वि [**दे**] स्थविर, वृद्ध, बूढ़ा ; (दे ४, ३) ।

टिट्टिभ पुं [**टिट्टिभ**] १ पक्षि-विशेष । २ जल-जन्तु विशेष ; (सुर १०, १८५) । स्त्री— °**भी** ; (विपा १,३)।

टिट्टियाव सक [**दे**] चलने की प्रेरणा करना, 'टि टि' आवाज करने को सिखलाना । टिट्टियावेइ ; (णाया १, ३) । कवकृ—**टिट्टियाविज्जमाण** ; (णाया १, ३—पत्र ६४) ।

टिप्पणय न [**टिप्पनक**] विवरण, छोटी टीका; (सुपा ३२४)।

टिप्पी स्त्री [**दे**] तिलक, टीका ; (दे ४, ३) ।

टिरिटिल्ल सक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना, चलना । टिरिटिल्लइ ; (हे ४, १६१) । वकृ—**टिरिटिल्लंत**; (कुमा) ।

टिविडिक्क सक [**मण्डय्**] मण्डित करना, विभूषित करना । टिविडिक्कइ ; (हे ४, ११५ ; कुमा) । वकृ—**टिविडिक्कंत** ; (सुपा २८) ।

टिविडिक्किअ वि [**मण्डित**] विभूषित, अलंकृत ; (पाअ) ।

टुंट वि [**दे**] छिन्न-हस्त, जिसका हाथ कटा हुआ हो वह ; (दे ४, ३ ; प्रासू १४२ ; १४३) ।

टुंटुण्ण अक [**टुण्टुणाय्**] 'टुन टुन' आवाज करना । वकृ—**टुंटुण्णंत** ; (गा ६८५ ; काप्र ६६५) ।

टुंबय पुं [**दे**] आघात-विशेष; गुजराती में 'ठुंबो'; (सुर १२,६७) ।

टुट्ट अक [**त्रुट्**] टूटना, कट जाना । टुट्टइ ; (पिंग) । वकृ—**टुट्टंत** ; (से ६, ६३) ।

टूवर पुं [**तूवर**] १ जिसको दाढ़ी-मूँछ न उगी हो ऐसा चपरासी; २ जिसने दाढ़ी मूँछ कटवा दी हो ऐसा प्रतिहार ; (हे १, २०५ ; कुमा) ।

टेंटा स्त्री [**दे**] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा ; (दे ४,३)।

टेक्कर न [दे] स्थल, प्रदेश ; (दे ४,३) ।
टोक्कण } न [दे] दारू नापने का बरतन ; (दे ४,४) ।
टोक्कणखंड }
टोपिआ स्त्री [दे] टोपी, सिर पर रखने का सिया हुआ एक प्रकार का वस्त्र ; (सुपा २६३) ।
टोप्प पुं [दे] श्रेष्ठि-विशेष ; (स ४५१) ।
टोप्पर पुंन [दे] शिरस्त्राण-विशेष, टोपा ; (पिंग) ।
टोल पुं [दे] १ शलभ, जन्तु-विशेष ; २ पिशाच ; (दे ४, ४ ; प्राप्र १६२) । °**गइ** स्त्री [°**गति**] गुरु-वन्दन का एक दोष ; (पव २) । °**गइ** वि [°**कृति**] प्रशस्त आकार वाला ; (राज) ।
टोलंब पुं [दे] मधूक, वृक्ष-विशेष, महुआ का पेड़ ; (दे४,४)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** ठयाराइसद्दसंकलणो अट्ठारहमो तरंगो समत्तो ।

ठ

ठ पुं [**ठ**] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा ; प्राप)।
ठइअ वि [दे] १ उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ ; २ पुं. अवकाश ; (दे ४, ५) ।
ठइअ वि [**स्थगित**] १ आच्छादित, ढका हुआ ; २ बन्द किया हुआ, रुका हुआ ; (स १७३) ।
ठइअ देखो **ठविअ** ; (पिंग) ।
ठंडिल्ल देखो **थंडिल्ल** ; (उव) ।
ठंभ देखो **थंभ**=स्तम्भ। कर्म—ठंभिज्जइ ; (हे २, ६) ।
ठंभ देखो **थंभ**=स्तम्भ् ; (हे २, ६ ; षड्) ।
ठकुर } पुं [**ठक्कुर**] १ ठाकुर, क्षत्रिय, राजपूत ; (स
ठक्कुर } ५४८ ; सुपा ४१२ ; सट्ठि ६८) । २ ग्राम वगैरः का स्वामी, नायक, मुखिया ; (आवम) ।
ठग पुं [**ठक**] ठग, धूर्त, वञ्चक ; (दे २, ५८ ; कुमा) ।
ठगिय वि [दे] वञ्चित, ठगा हुआ, विप्रतारित ; (सुपा१२४)।
ठगिय देखो **ठइय**=स्थगित ; (उप पृ ३८८) ।
ठट्ठार पुं [दे] ताम्र, पितल आदि धातु के वर्तन बनाकर जीविका चलाने वाला ; (धर्म २) ।

ठड्ड वि [**स्तब्ध**] हक्काबक्का, कुण्ठित, जड़ ; (हे २, ३९ ; वज्जा ६२) ।
ठप्प वि [**स्थाप्य**] स्थापनीय, स्थापन करने योग्य ; (ओघ ६) ।
ठय सक [**स्थग्**] बन्द करना, रोकना । ठएंति ; (स १५६)।
ठयण [**स्थगन**] १ रुकाव, अटकाव । २ वि. रोकने वाला । स्त्री—°**णी** ; (उप ६६६) ।
ठरिअ वि [दे] १ गौरवित; २ ऊर्ध्व-स्थित ; (दे ४, ६) ।
ठलिय वि[दे] खाली, शून्य, रिक्त किया गया; (सुपा २३७)।
ठल्ल वि [दे] निर्धन, धन-रहित, दरिद्र ; (दे ४, ५) ।
ठव सक [**स्थापय्**] स्थापन करना । ठवइ, ठवेइ ; (पिंग; कप्प ; महा) । ठवें ; (भग) । वकृ—**ठवंत** ; (रयण ६३) । संकृ—**ठविउं**, **ठविऊण**, **ठवित्ता**, **ठवित्तु**, **ठवेत्ता**; (पि ५७६; ५८६; ५८२ ; प्रासू २७; पि ५८२) ।
ठवण न [**स्थापन**] स्थापन, संस्थापन ; (गुर २, १७७)।
ठवणा स्त्री [**स्थापना**] १ प्रतिकृति, चित्र, मूर्ति, आकार ; (ठा २, ४ ; १० ; अणु) । २ स्थापन, न्यास ; (ठा ४, ३) । ३ सांकेतिक वस्तु, मुख्य वस्तु के अभाव या अनुपस्थिति में जिस किसी चीज में उसका संकेत किया जाय वह वस्तु ; (विसे २६२७) । ४ जैन साधुओं को भिक्षा का एक दोष, साधु को भिक्षा में देने के लिए रखी हुई वस्तु ; (ठा ३, ४—पत्र १५६) । ५ अनुज्ञा, संमति ; (णंदि) । ६ पर्युषणा, आठ दिनों का जैन पर्व-विशेष ; (निचू १०) । °**कुल** पुंन [°**कुल**] भिक्षा के लिए प्रतिषिद्ध कुल ; (निचू ४) । °**णय** पुं [°**नय**] स्थापना को ही प्रधान मानने वाला मत ; (राज) । °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] पुरुष की मूर्ति या चित्र ; (ठा ३, १ ; सूअ १, ४, १) । °**यरिय** पुं [°**चार्य**] जिस वस्तु में आचार्य का संकेत किया जाय वह वस्तु ; (धर्म २) । °**सच्च** न [°**सत्य**] स्थापना-विषयक सत्य, जैसे जिन भगवान् की मूर्ति को जिन कहना यह स्थापना-सत्य है ; (ठा १० ; पण्ण ११) ।
ठवणी स्त्री [**स्थापनी**] न्यास, न्यास रूप से रखा हुआ द्रव्य ; (श्रा १४) । °**मोस** पुं [°**मोष**] न्यास की चोरी, न्यास का अपलाप ; " दोहेसु मित्तदोहो, ठवणीमोसो असेसमोसेसु" (श्रा १४) ।
ठविअ वि [**स्थापित**] रखा हुआ, संस्थापित ; (षड् ; पि ५६४ ; ठा ५, २) ।

ठविआ स्त्री [**दे**] प्रतिमा, मूर्त्ति, प्रतिकृति ; (दे ४, ५) ।
ठविर देखो **थविर** ; (पि १६६) ।
ठा अक [**स्था**] बैठना, स्थिर होना, रहना, गति का रुकाव करना । ठाइ, ठाअइ ; (हे ४, १६ ; षड्) । वकृ—**ठायमाण** ; (उप १३० टी) । संकृ—**ठाइऊण, ठाऊण** ; (पि ३०६ ; पंचा १८) । हेकृ—**ठाइत्तए, ठाउं** ; (कस ; आव ५)। कृ—**ठाणिज्ज, ठायव्व, ठाएयव्व** ; (णाया १, १४ ; सुपा ३०२ ; सुर ६, ३३) ।
ठाइ वि [**स्थायिन्**] रहने वाला, स्थिर होने वाला ; (औप ; कप्प) ।
ठाएयव्व देखो **ठा** ।
ठाएयव्व देखो **ठाव** ।
ठाण पुं [**दे**] मान, गर्व, अभिमान ; (दे ४, ५) ।
ठाण पुंन [**स्थान**] १ स्थिति, अवस्थान, गति की निवृत्ति ; (सूअ १, ५, १ ; बृह १) । २ स्वरूप-प्राप्ति ; (सम्म १) । ३ निवास, रहना ; (सूअ १, ११ ; निचू १) । ४ कारण, निमित, हेतु ; (सूअ १, १, २ ; ठा २, ४) । ५ पर्यङ्क आदि आसन; (राज) । ६ प्रकार, भेद; (ठा १०; आचू ४) । ७ पद, जगह ; (ठा १०) । ८ गुण, पर्याय, धर्म ; (ठा ५, ३ ; आव ४) । ६ आश्रय, आधार, वसति, मकान, घर ; (ठा ४, ३) । १० तृतीय जैन अङ्ग-ग्रन्थ, 'ठाणांग' सूत्र ; (ठा १) । ११ 'ठाणांग' सूत्र का अध्ययन, परिच्छेद ; (ठा १ ; २ ; ३ ; ४ ; ५) । १२ कायोत्सर्ग ; (औप) । °**भट्ठ** वि [°**भ्रष्ट**] १ अपनी जगह से च्युत; (णाया १,६) । २ चारित्र से पतित ; (तंदु)। °**इय** वि [°**तिग**] कायोत्सर्ग करने वाला ; (औप) । °**यय** न [°**यत**] ऊँचा स्थान ; (बृह ५) ।
ठाणि वि [**स्थानिन्**] स्थान वाला, स्थान-युक्त ; (सूअ १, २; उव) ।
ठाणिज्ज देखो **ठा** ।
ठाणिज्ज वि [**दे**] १ गौरवित, सम्मानित; (दे ४, ५) । २ न. गौरव ; (षड्) ।
ठाणुक्कडिय, **ठाणुक्कुडुय** वि [**स्थानोत्कटुक**] १ उत्कटुक आसन वाला; (पराह २, १; भग) । २ न. आसन-विशेष ; (इक) ।
ठाणु देखो **खाणु** । °**खंड** न [°**खण्ड**] १ स्थाणु का अवयव; २ वि. स्थाणु की तरह ऊँचा और स्थिर रहा हुआ, स्तम्भित शरीर वाला ; (णाया १, १—पत्र ६६) ।
ठाम, **ठाय** (अप) देखो **ठाण** ; (पिंग ; सण) ।
ठाव सक [**स्थापय्**] स्थापन करना, रखना । ठावइ, ठावेइ; (पि ५५३ ; कप्प; महा) । वकृ—**ठावंत, ठाविंत** ; (पउ २० ; सुपा ८८) । संकृ—**ठावइत्ता, ठावेत्ता** ; (कप्प ; महा) । कृ—**ठाएयव्व** ; (सुपा ५४५) ।
ठावण न [**स्थापन**] स्थापन, धारण; (पंचा १३) ।
ठावणया, **ठावणा** देखो **ठवणा** ; (उप ६८६ टी; ठा १ ; बृह ५)।
ठावय वि [**स्थापक**] स्थापन करने वाला; (णाया १, १८; सुपा २३४) ।
ठावर वि [**स्थावर**] रहने वाला, स्थायी ; (अच्चु १३) ।
ठाविअ वि [**स्थापित**] स्थापित, रखा हुआ ; (ठा ३, १ ; श्रा १२; महा) ।
ठावितु वि [**स्थापयितृ**] ऊपर देखो ; (ठा ३, १) ।
ठिअअ न [**दे**] ऊर्ध्व, ऊँचा ; (दे ४, ६) ।
ठिइ स्त्री [**स्थिति**] १ व्यवस्था, क्रम, मर्यादा, नियम ; " जयट्ठिई एसा " (ठा ४, १ ; उप ७२८ टी) । २ स्थान, अवस्थान ; (सम २) । ३ अवस्था, दशा ; (जो ४८) । ४ आयु, उम्र, काल-मर्यादा ; (भग १४, ५ ; नव ३१; पराण ४ ; औप) । °**क्खय** पुं [°**क्षय**] आयु का नाश, मरण ; (विपा २, १) । °**पडिया** देखो °**वडिया**; (कप्प) । °**बंध** पुं [°**बन्ध**] कर्म-बन्ध की काल-मर्यादा ; (कम्म ४, ८२) । °**वडिया** स्त्री [°**पतिता**] पुत्र-जन्म-संबन्धी उत्सव-विशेष ; (णाया १, १) ।
ठिक्क न [**दे**] पुरुष-चिह्न ; (दे ४, ५) ।
ठिक्करिआ स्त्री [**दे**] ठिकरी, घड़ा का टुकड़ा ; (श्रा १४) ।
ठिय वि [**स्थित**] १ अवस्थित; (ठा २, ४) । २ व्यवस्थित, नियमित ; (सूअ १, ६) । ३ खड़ा ; (भग ६,३३) । ४ निषण्ण, बैठा हुआ ; (निचू १ ; प्राप्र ; कुमा) ।
ठिर देखो **थिर** ; (अच्चु १ ; गा १३१ अ) ।
ठिविअ न [**दे**] १ ऊर्ध्व, ऊँचा; २ निकट, समीप ; ३ हिक्का, हिचकी ; (दे ४, ६) ।
ठिव्व सक [**वि+घुट्**] मोड़ना । संकृ—**ठिव्विऊण** ; (सुपा १६) ।
ठीण वि [**स्त्यान**] १ जमा हुआ (घृत आदि) ; (कुमा)। २ ध्वनि-कारक, आवाज करने वाला ; ३ न. जमाव ; ४ आलस्य ; ५ प्रतिध्वनि ; (हे १, ७४ ; २, ३३) ।

ठुंठ पुंन [**दे**] ठुँठा, स्थाणु ; (जं १)।

ठेर पुंस्त्री [**स्थविर**] वृद्ध, बूढ़ा ; (गा ८८३ अ ; पि१६६), "पउरजुवाणो गामो, महुमासो जोव्वणं पई ठेरो। जुण्णसुरा साहीणा, असई मा होउ किं मरउ ?" (गा १६७)। स्त्री—°**री** ; (गा ६५४ अ)।

ठोड पुं[**दे**] १ जोतिषी, दैवज्ञ ; २ पुरोहित; (सुपा ५५२)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ठयाराइसद्द-
संकलणो एगूणवीसइमो तरंगो समत्तो ।

ड

ड पुं [**ड**] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा ; प्राप)।

डओयर न [**दकोदर**] पेट का रोग-विशेष, जलोदर; (निचू १)।

डंक पुं [**दे**] १ डंक, वृश्चिक आदि का काँटा ; (पण्ह १,१)। २ दंश-स्थान, जहाँ पर वृश्चिक आदि डसा हो ; " जह सव्व-सरीरगयंविसं निरंभितु डंकमाणिंति " (सुपा ६०६)।

डंगा स्त्री [**दे**] डाँग, लाठी, यष्टि ; (सुपा २३८ ; ३८८; ५४६)।

डंड देखो **दंड** ; (हे १, १२७ ; प्राप्र)।

डंड न [**दे**] वस्त्र के सीए हुए टुकड़े ; (दे ४, ७)।

डंडय पुं [**दे**] रथ्या, महल्ला ; (दे ४, ८)।

डंडारण्ण न [**दण्डारण्य**] दक्षिण का एक प्रसिद्ध जंगल, दण्डकारण्य ; (पउम ६८, ४२)।

डंडि, **डंडी** स्त्री [**दे**] सीए हुए वस्त्र-खण्ड ; (दे ४, ७ ; पण्ह १, ३)।

डंबर पुं [**दे**] घर्म, गरमी, प्रस्वेद ; (दे ४, ८)।

डंबर पुं [**डम्बर**] आडम्बर, आटोप ; (उप १४२ टी; पिंग)।

डंभ देखो **दंभ** ; (हे १, २१७)।

डंभण न [**दम्भन**] दागने का शस्त्र-विशेष ; (विपा १, ६)।

डंभणया, **डंभणा** स्त्री [**दम्भना**] १ दागना। २ माया, कपट, दम्भ, वञ्चना ; (उप पृ ३१५ ; पण्ह २,१)।

डंभिअ पुं [**दे**] जूआरी, जूए का खेलाडी ; (दे ४,८)।

डंभिअ वि [**दाम्भिक**] वञ्चक, मायावी, कपटी ; (कुमा ; षड्)।

डंस सक [**दंश्**] डसना, काटना। डंसइ, डंसए; (षड्)।

डंस पुं [**दंश**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, डाँस ; (जी १८)।

डक्क वि [**दष्ट**] डसा हुआ, दाँत से काटा हुआ ; (हे २, २ ; गा ५३१)।

डक्क वि [**दे**] दन्त-गृहीत, दाँत से उपात्त ; (दे ४,६)।

डक्क स्त्रीन [**डक्क**] वाद्य-विशेष ; (सुपा १६५)।

डगण न [**दे**] यान-विशेष ; (राज)।

डगमग अक [**दे**] चलित होना, हिलना, काँपना। डगमगीति; (पिंग)।

डगल न [**दे**] १ फल का टुकड़ा ; (निचू १५)। २ ईंट, पाषाण वगैरः का टुकड़ा ; (ओघ ३५६ ; ७८ भा)।

डग्गल पुं [**दे**] घर के ऊपर का भूमि-तल ; (दे ४,८)।

डज्झ, **डज्झंत**, **डज्झमाण** देखो **डह**।

डट्ठ देखो **डक्क=दष्ट** ; (हे १, २१७)।

डड्ढ वि [**दग्ध**] प्रज्वलित, जला हुआ ; (हे १, २१७ ; गा १४६)।

डड्ढाडी स्त्री [**दे**] दव-मार्ग, आग का रास्ता ; (दे ४,८)।

डप्फ न [**दे**] सेल्ल, कुन्त, आयुध-विशेष ; (दे ४, ७)।

डब्भ पुं [**दर्भ**] डाभ, कुश, तृण-विशेष ; (हे १, २१७)।

डमडम अक [**डमडमाय्**] 'डम डम' आवाज करना, डमरुक आदि का आवाज होना। वकृ—**डमडमंत**; (सुपा १६३)।

डमडमिय वि [**डमडमायित**] जिसने 'डम डम' आवाज किया हो वह ; (सुपा १५१ ; ३३८)।

डमर पुंन [**डमर**] १ राष्ट्र का भीतरी या बाह्य विप्लव, बाहरी या भीतरी उपद्रव ; (णाया १, १ ; जं २ ; पत्र ४ ; औप)। २ कलह, लड़ाई, विग्रह ; (पण्ह १,२ ; दे ८,३२)।

डमरुअ, **डमरुग** पुंन [**डमरुक**] वाद्य-विशेष, कापालिक योगिओं के बजाने का बाजा ; (दे २, ८६ ; पउम ५७, २३ ; सुपा ३०६ ; षड्)।

डर अक [**त्रस्**] डरना, भय-भीत होना। डरइ; (हे ४;१९८)।

डर पुं [**दर**] डर, भय, भीति ; (हे १, २१७ ; सण)।

डरिअ वि [**त्रस्त**] भय-भीत, डरा हुआ ; (कुमा ; सुपा ६५५ ; सण)।

डल पुं [**दे**] लोष्ट, ढेला ; (दे ४, ७)।

डल्ल सक [**पा**] पीना। डल्लइ ; (हे ४,१०)।

डल्ल } न [**दे**] पिटिका, डाली, डालो, बाँस का बना हुआ
डल्लग } फल-फूल रखने का पात्र ; (दे ४, ७ ; आवम)।
डल्लिर वि [**पातृ**] पीने वाला ; (कुमा)।
डव सक [**आ+रभ्**] आरम्भ करना, शुरू करना। डवइ ; (षड्)।
डव्व पुं [**दे**] वाम हस्त, बायाँ हाथ ; गुजराती में 'डाबो' ; (दे ४, ६)।
डस देखो **डंस**। डसइ ; (हे १, २१८ ; पि २२२)। हेकृ—**डसिउं** ; (सुर २, २४३)।
डसण न [**दशन**] १ दंश, दाँत से काटना ; (हे १, २१७)। २ दाँत ; (कुमा)।
डसिअ वि [**दष्ट**] डसा हुआ, काटा हुआ ; (सुपा ४४६ ; सुर ६, १८५)।
डह सक [**दह्**] जलाना, दग्ध करना। डहइ, डहए ; (हे १, २१८ ; षड् ; महा ; उव)। भवि—डहिहिइ ; (हे ४, २४६)। कवकृ—**डज्झंत, डज्झमाण** ; (सम १३७ ; उप पृ ३३ ; सुपा ८५)। हेकृ—**डहिउं** ; (पउम ३१, १७)। कृ—**डज्झ** ; (ठा ३, २ ; दस १०)।
डहण न [**दहन**] १ जलाना, भस्म करना ; (बृह १)। २ पुं. अग्नि, वह्नि ; (कुमा)। ३ वि. जलाने वाला ; "तस्स सुहासुहडहणो अप्पा जलणो पयासेइ" (आरा ८४)।
डहर पुं [**दे**] १ शिशु, बालक, बच्चा ; (दे ४,८ ; पाअ ; वव ३; दस ६, १; सूअ १, २, १; २, ३, २१; २२; २३)। २ वि. लघु, छोटा, क्षुद्र; (ओघ १७८; २६० भा)। °**ग्गाम** पुं [°**ग्राम**] छोटा गाँव; (वव ७)।
डहरिया स्त्री [**दे**] जन्म से अठारह वर्ष तक की लड़की ; (वव ४)।
डहरी स्त्री [**दे**] अलिञ्जर, मिट्टी का घड़ा ; (दे ४, ७)।
डाअल न [**दे**] लोचन, आँख, नेत्र ; (दे ४, ६)।
डाइणी स्त्री [**डाकिनी**] १ डाकिन, डायन, चुड़ैल, प्रेतिनी; २ जंतर-मंतर जानने वाली स्त्री ; (पण्ह १,३ ; सुपा ५०५; स ३०७ ; महा)।
डाउ पुं [**दे**] १ फलिहंसक वृक्ष, एक जाति का पेड़ ; २ गणपति की एक तरह की प्रतिमा ; (दे ४, १२)।
डाग पुंन [**दे**] भाजी, पत्राकार तरकारी ; (भग ७, १० ; दसा १ ; पव २)।
डागिणी देखो **डाइणी**; (सूअ १, ३, ४)।
डामर वि [**डामर**] भयंकर ; "डमडमियडमरुयाडोवडामरो" (सुपा १५१)। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (पउम २०, २१)।
डामरिय वि [**डामरिक**] लड़ाई करने वाला, विग्रह-कारक; (पण्ह १, २)।
डाय [**दे**] देखो **डाग** ; (राज)।
डायाल न [**दे**] हर्म्य-तल, प्रासाद-भूमि ; (आचा २, २,१)।
डाल स्त्रीन [**दे**] १ डाल, शाखा, टहनी ; (सुपा १४० ; पंचा १६ ; भवि ; हे ४, ४४५)। २ शाखा का एक देश; (आचा २, १, १०)। स्त्री—°**ला** ; (महा ; पाअ ; वज्जा २६), °**ली** ; (दे ४,६ ; पच्च १० ; सण; निचू १)।
डाव पुं [**दे**] वाम हस्त, बायाँ हाथ ; गुजराती में 'डाबो' (दे ४, ६)।
डाह देखो **दाह** ; (हे १,२१७ ; गा २२६ ; ५३५ ; कुमा)।
डाहर पुं [**दे**] देश-विशेष ; (पिंग)।
डाहाल पुं [**दे**] देश-विशेष ; (सुपा २६३)।
डाहिण देखो **दाहिण**; (गा ७७७ ; पिंग)।
डिअली स्त्री [**दे**] स्थूणा, खंभा, खूँटा ; (दे ४, ६)।
डिंडव वि [**दे**] जल में पतित ; (षड्)।
डिंडिम न [**डिण्डिम**] डुगडुगी, डुग्गी, वाद्य-विशेष ; (सुर ६,१८१)।
डिंडिलिअ न [**दे**] १ खलि-खचित वस्त्र, तैल-किट्ट से व्याप्त कपड़ा ; २ स्खलित हस्त ; (दे ४, १०)।
डिंडी स्त्री [**दे**] सीए हुए वस्त्र खंड ; (दे ४, ७)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] गर्भ-संभव ; (निचू ११)।
डिंडीर पुंन [**डिण्डीर**] समुद्र का फेन, समुद्र-कफ ; (उप ७२८ टी ; सुपा २२२)।
डिंफिअ वि [**दे**] जल-पतित, पानी में गिरा हुआ ; (दे ४, ६)।
डिंब पुंन [**डिम्ब**] १ भय, डर ; (से २, १६)। २ विघ्न, अन्तराय ; (गाया १, १—पत्र ६ ; औप)। ३ विप्लव, डमर ; (जं २)।
डिंभ अक [**स्रंस्**] १ नीचे गिरना। २ ध्वस्त होना, नष्ट होना। डिंभइ ; (हे ४, १६७ ; षड्)। वकृ—**डिंभंत** ; (कुमा ७, ४२)।
डिंभ पुंन [**डिम्भ**] बालक, बच्चा, शिशु ; (पाअ ; हे १, २०२ ; महा ; सुपा १६)। "अह दुक्खियाइं तह भुक्खियाइं जह चिंतियाइं डिंभाइं" (विवे १११)।

डिंभिया स्त्री [**डिम्भिका**] छोटी लड़की ; (णाया १,१८)।

डिक्क अक [**गर्ज्**] साँड का गरजना। डिक्कइ ; (षड्)।

डिडुर पुं [**दे**] भेक, मण्डूक, मेढ़क ; (दे ४, ६)।

डित्थ पुं [**डित्थ**] १ काष्ठ का बना हुआ हाथी ; २ पुरुष-विशेष, जो श्याम, विद्वान्, सुन्दर, युवा और देखने में प्रिय हो ऐसा पुरुष ; (भास ७७)।

डिप्प अक [**दीप्**] दीपना, चमकना। डिप्पइ, डिप्पए ; (षड्)।

डिप्प अक [**वि+गल्**] १ गल जाना, सड़ जाना। २ गिर पड़ना। डिप्पइ, डिप्पए ; (षड्)।

डिमिल न [**दे**] वाद्य-विशेष ; (विक्र ८७)।

डिल्ली स्त्री [**दे**] जल-जन्तु -विशेष ; (जीव १)।

डीण वि [**दे**] अवतीर्ण ; (दे ४, १०)।

डीणोवय न [**दे**] उपरि, ऊपर ; (दे ४, १०)।

डीर न [**दे**] कन्दल, नवीन अंकुर ; (दे ४, १०)।

डुंगर पुं [**दे**] शैल, पर्वत, गुजराती में 'डुंगर' ; (दे ४, ११ ; हे ४, ४४५ ; जं २)।

डुंघ पुं [**दे**] नारियर का बना हुआ पात्र-विशेष, जो पानी निकालने के काम में आता है ; (दे ४, ११)।

डुंडुअ पुं [**दे**] १ पुराना घण्टा ; (दे ४, ११)। २ बड़ा घण्टा ; (गा १७२)।

डुंडुक्का स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष ; (विक्र ८७)।

डुंडुल्ल अक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। डुंडुल्लइ ; (षड्)।

डुंब पुं [**दे**] डोम, चाण्डाल, श्व-पच ; (दे ४, ११ ; २, ७३ ; ७, ७६)। देखो **डोंब** ; (पव ६)।

डुज्जय न [**दे**] कपड़े का छोटा गट्ठा, वस्त्र-खण्ड ; "खिविउं वयणम्मि डुज्जयं अइयं, बद्धा रक्खस्स थुंडे" (सुपा ३६६)।

डुल अक[**दोलय्**] डोलना, काँपना, हिलना। डुलइ ; (पिंग)।

डुलि पुं [**दे**] कच्छप, कछुआ ; (उप पृ १३६)।

डुहुडुहुडुहु अक [**डुहडुहाय्**] 'डुह डुह' आवाज करना, नदी के वेग का खलखलाना। वकृ —**डुहुडुहुडुहुंत**नइसलिलं" (पउम ६४, ४३)।

डेकुण पुं [**दे**] मत्कुण, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष ; (षड्)।

डेडुर पुं [**दे**] दर्दुर, भेक, मण्डूक, मेढक; (षड्)।

डेर वि [**दे**] केकराक्ष, नीची ऊँची आँख वाला ; (पिंग)।

डेव सक [**उत्+लंघ्**] उल्लंघन करना, कूद जाना, अतिक्रमण करना। वकृ—**डेवमाण** ; (राज)।

डेवण न [**उल्लङ्घन**] उल्लंघन, अतिक्रमण ; (ओघ ३६)।

डोअ पुं [**दे**] काष्ठ का हाथा, दाल, शाक आदि परोसने का काष्ठ-पात्र-विशेष ; गुजराती में 'डोयो' ; (दे ४,११; महा)।

डोअण न [**दे**] लोचन, आँख ; (दे ४, ६)।

डोंगिली स्त्री [**दे**] १ ताम्बूल रखने का भाजन-विशेष ; २ ताम्बूलिनी, पान बेचने वाले की स्त्री ; (दे ४, १२)।

डोंगी स्त्री [**दे**] १ हस्तबिम्ब, स्थासक; २ पान रखने का भाजन-विशेष ; (दे ४, १३)।

डोंब पुं [**दे**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ एक म्लेच्छ-जाति; (पगह १, १ ; इक ; पव ६)। ३ देखो **डुंब** ; (पाअ)।

डोंबिलग) पुं [**दे**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ एक अनार्य
डोंबिलय) जाति ; (पगह १, १ ; इक)। ३ डोम, चाण्डाल; (स २८६)।

डोड्ड पुं [**दे**] एक जघन्य मनुष्य-जाति; " दिट्ठो तक्खणजिमिओ निग्गच्छंतो बहिं डोड्डो ; तो तस्सुदरं फालिअ" (उप १३६ टी)।

डोर पुं [**दे**] डोर, गुण, रस्सी ; (गा२११ ; वज्जा६६)।

डोल अक [**दोलय्**] १ डोलना, हिलना, झूलना। २ संशयित होना, सन्देह करना। वकृ—**डोलंत** ; (अच्चु ६०)।

डोल पुं [**दे**] १ लोचन, आँख, नयन ; गुजराती में-'डोलो' ; (दे ४, ६)। २ जन्तु-विशेष ; (बृह १)। ३ फल विशेष ; (पंचव २)।

डोला स्त्री [**दोला**] हिंडोला, झूलना ; (हे १, २१७; पाअ)।

डोला स्त्री [**दे**] डोली, शिबिका, पालकी ; (दे ४, ११)।

डोलाअंत वि [**दोलायमान**] संशय करने वाला, डँवाडोल; (अच्चु ७)।

डोलाइअ वि [**दोलायित**] संशयित, डँवाडोल ; "भडस्स डोलाइअं हिअअं" (गा ६६६)।

डोलायमाण देखो **डोलाअंत** ; (निचू १०)।

डोलाविय वि [**दोलित**] कम्पित, हिलाया हुआ ; (पउम ३१, १२४)।

डोलिअ पुं [**दे**] कृष्णसार, काला हिरन ; (दे ४, १२)।

डोलिर वि [**दोलावत्**] डोलने वाला, काँपने वाला ; "दरडोलिरसीसं" (कुमा)।

डोल्लणग पुं [**दे**] पानी में होने वाला जन्तु-विशेष ; (सुअ २, ३)।

डोव [**दे**] देखो **डोअ** ; (णंदि ; उप पृ २१०)। स्त्री—°**वा** ; (पभा २७)।

डोसिणी स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश ; (षड्) ।
डोहल पुं [**दोहद**] १ गर्भिणी स्त्री का अभिलाष; २ मनोरथ, लालसा ; (हे १, २१७ ; कुमा) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** डआराइसद्द-
संकलणो वीसइमो तरंगो समत्तो ।

ढ

ढ पुं [ढ] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, यह मूर्धन्य है, क्योंकि इसका उच्चारण मूर्धा से होता है ; (प्रामा ; प्राप) ।
ढंक पुं [**दे**] काक, वायस, कौआ ; (दे ४, १३ ; जं २ ; प्राप ; सण ; भवि ; पाअ) । °**वत्थुल** न [°**वास्तुल**] शाक-विशेष, एक तरह की भाजी ; (धर्म २) ।
ढंक पुं [**ढङ्क**] कुम्भकार-जातीय एक जैन उपासक ; (विसे २३०७) ।
ढंक देखो **ढक्क** । भवि—ढंकिस्सं ; (पि २२१) ।
ढंकण न [**दे.छादन**] १ ढकना, पिधान ; (प्रासू ६० ; अणु) ।
ढंकण देखो **ढिंकुण** ; (राज) ।
ढंकणी स्त्री [**दे.छादनी**] ढकनी, पिधानिका, ढकने का पात्र-विशेष ; (दे ४, १४) ।
ढंकुण पुं [**दे**] मत्कुण, खटमल ; (दे ४, १४) ।
ढंख देखो **ढंक**=(दे) ; (पि २१३ ; २२३) ।
ढंखर पुंन [**दे**] फल-पत्र से रहित डाल ; " ढंखरसेसोवि हु महुअरेण मुक्को ण मालई-विडवो " (गा ७५५ ; वज्जा ५२) ।
ढंखरी स्त्री [**दे**] वीणा-विशेष, एक प्रकार की वीणा ; (दे ४, १४) ।
ढंढ पुं [**दे**] १ पंक, कीच, कर्दम ; (दे ४, १६) । २ वि. निरर्थक, निकम्मा ; (दे ४, १६ ; भवि) ।
ढंढण पुं [**ढण्ढन**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (विंव ३२; पडि) ।
ढंढणी स्त्री [**दे**] कपिकच्छु, केवाँच, वृक्ष-विशेष ; (दे ४, १३) ।
ढंढर पुं [**दे**] १ पिशाच ; २ ईर्ष्या ; (दे ४, १६) ।
ढंढरिअ पुं [**दे**] कर्दम, पंक, कादा ; (दे ४, १५) ।
ढंढल्ल सक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना, भ्रमण करना । ढंढल्लइ ;(हे ४, १६१) ।
ढंढल्लिअ वि [**भ्रान्त**] भ्रान्त, घूमा हुआ ; (कुमा) ।
ढंढसिअ पुं [**दे**] १ ग्राम का यक्ष ; २ गाँव का वृक्ष ; (दे ४, १५) ।
ढंढुल्ल देखो **ढंढल्ल** । ढंढुल्लइ ; (सण) ।
ढंढोल सक [**गवेषय्**] खोजना, अन्वेषण करना । ढंढोलइ ; (हे ४, १८९) । संकृ—**ढंढोलिअ** ; (कुमा) ।
ढंढोल्ल देखो **ढंढुल्ल** । संकृ—**ढंढोल्लिवि** ; (सण) ।
ढंस अक [**वि+वृत्**] धसना, धसकर रहना, गिर पड़ना । ढंसइ ; (हे ४, ११८) । वकृ—**ढंसमाण** ; (कुमा) ।
ढंसय न [**दे**] अयश, अपकीर्ति ; (दे ४, १४) ।
ढक्क सक[**छादय्**] १ ढकना, आच्छादन करना, बन्द करना । ढक्कइ ; (हे ४,२१) । भवि—ढक्किस्सं ; (गा३१४) । कर्म--"ढक्किज्जउ कूवाई" (सुर १२, १०२) । संकृ—"तत्थ **ढक्किउं** दारं", **ढक्किऊण, ढक्केऊण** ; (सुपा ६४० ; महा ; पि २२१) । कृ—**ढक्केयव्व**; (दस २) ।
ढक्क पुं [**ढक्क**] १ देश-विशेष, २ देश-विशेष में रहने वाली एक जाति ; (भवि) । ३ भाट की एक जाति ; (उप पृ११२) ।
ढक्कय न [**दे**] तिलक ; (दे ४, १४) ।
ढक्करि वि [**दे**] अद्भुत, आश्चर्य-जनक ; (हे ४, ४२२) ।
ढक्का स्त्री [**ढक्का**] वाद्य-विशेष ; (गा ५२६ ; कुमा ; सुपा २४२) ।
ढक्किअ वि [**छादित**] बन्द किया हुआ, आच्छादित ; (स ४६६ ; कुमा) ।
ढग्गढग्गा स्त्री [**दे**] 'ढग ढग' आवाज, पानी वगैरः पीने की आवाज ; "सोणियं ढगढग्गाए घोट्टयंतो" (स २५७) ।
ढज्जंत देखो **डज्झंत** ; (पि २१२ ; २१८) ।
ढड्ड पुं [**दे**] भेरी, वाद्य-विशेष ; (दे ४, १३) ।
ढड्डर पुं [**दे**] १ बड़ी आवाज, महान् ध्वनि; (ओघ १५६) । २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, बड़े स्वर से प्रणाम करना ; (गुभा २५) । ३ वि. वृद्ध, बूढ़ा ; "ढड्ढरसड्ढाण मग्गेणं" ; (सार्ध ३८) ।
ढणिय वि [**ध्वनित**] शब्दित, ध्वनित ; (सुर १३, ८४) ।
ढमर न [**दे**] १ पिठर , स्थाली ; (दे ४, १७ ;पाअ) । २ गरम पानी, उष्ण जल ; (दे ४, १७) ।

ढयर पुं [दे] पिशाच ; (दे ४, १६ ; पात्र) । २ ईर्ष्या, द्वेष ; (दे ४, १६) ।

ढल अक [दे] १ टपकना, नीचे पड़ना, गिरना । २ झुकना । वकृ—**ढलंत** ; (कुमा), "ढलंतसेयचामरुप्पीलो" (उप ६८६ टी) ।

ढलिय वि [दे] झुका हुआ ; (उप पृ ११८) ।

ढाल सक [दे] १ ढालना, नीचे गिराना । २ झूकाना, चामर वगैरः का वीजना । ढालए ; (सुपा ४७) ।

ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ ; "सीसाओ ढालिओ सुरो" (सुर ३, २२८) ।

ढाव पुं [दे] आग्रह, निर्बन्ध ; (कुमा) ।

ढिंक पुं [ढिङ्क] पक्षि-विशेष ; (पराह १, १—पत्र ८) ।

ढिंकण } पुं [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, गौ आदि को लगने **ढिंकुण** } वाला कीट-विशेष ; (राज ; जी १८) ।

ढिंग देखो **ढिंक** ; (राज) ।

ढिंढय वि [दे] जल में पतित ; (दे ४, १५) ।

ढिक्क अक [गर्ज्] साँढ़ का गरजना । ढिक्कइ ; (हे ४, ६६) । वकृ—**ढिक्कमाण** ; (कुमा) ।

ढिक्कय न [दे] नित्य, हमेशा, सदा ; (दे ४, १५) ।

ढिक्किय न [गर्जन] साँढ़ की गर्जना ; (महा) ।

ढिङ्क्सि न [ढिङ्क्सि] देव-विमान विशेष ; (इक) ।

ढिल्ल स्त्री [दे] ढीला, शिथिल ; (पि १५०) ।

ढिल्ली स्त्री [ढिल्ली] भारतवर्ष की प्राचीन और अद्यतन राज-धानी, दिल्ली शहर ; (पिंग) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] दिल्ली का राजा ; (कुमा) ।

ढुंढुल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना । ढुंढुल्लइ ; (हे ४, १६१) । ढुंढुल्लन्ति ; (कुमा) ।

ढुंढुल्ल सक [गवेषय्] ढूँढ़ना, खोजना, अन्वेषण करना । ढुंढुल्लइ ; (हे ४, १८६) ।

ढुंढुल्लण न [गवेषण] खोज, अन्वेषण ; (कुमा) ।

ढुंढुल्लिअ वि [गवेषित] अन्वेषित, ढूँढा हुआ ; (पात्र) ।

ढुक्क सक [ढौक्]१ भेंट करना, अर्पण करना । २ उपस्थित करना । ३ अक. लगना, प्रवृत्ति करना । ४ मिलना । वकृ—**ढुक्कंत** ; (पिंग) । कवकृ—**ढुक्कंत** ; (उप ६८६ टी ; पिंग) ।

ढुक्क वि [दे ढौकित] १ उपस्थित ; (स २५१) । २ मिलित ; (पिंग) । ३ प्रवृत्त ; " चिंतिउं ढुक्को " (श्रा २७ ; सण ; भवि) ।

ढुक्किअ वि [ढौकित] ऊपर देखो ; (पिंग) ।

ढुम } सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना । ढुमइ ; ढुसइ ; **ढुस** } (हे ४, १६१ ; कुमा) ।

ढेंक पुं [ढेङ्क] पक्षि-विशेष ; (दज्जा ३४) ।

ढेंका स्त्री [दे] १ हर्ष, खुशी ; २ ढेंकुआ, ढेंकली, कूप-तुला ; (दे ४, १७) ।

ढेंकिय देखो **ढिक्किय** ; (राज) ।

ढेंकी स्त्री [दे] बलाका, बक-पङ्क्ति; (दे ४,१५) ।

ढेंकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल ; (दे ४, १४) ।

ढेंढिअ वि [दे] धूपित, धूप दिया हुआ ; (दे ४, १६) ।

ढेणियालग } पुंस्त्री [**ढेणिकालक**] पक्षि-विशेष ; (पराह **ढेणियालय** } १, १) । स्त्री—°**लिया** ; (अनु ४) ।

ढेल्ल वि [दे] निर्धन, दरिद्र ; (दे ४, १६) ।

ढोअ देखो **ढुक्क** =ढौक् । ढोएज्जह ; (महा) ।

ढोइय वि [**ढौकित**] १ भेंट किया हुआ ; २ उपस्थित किया हुआ ; (महा ; सुपा १६८ ; भवि) ।

ढोंघर वि [दे] भ्रमण-शील, घूमने वाला ; (दे ४, १५) ।

ढढोल्ल पुं [दे] १ ढोल, पटह ; २ देश-विशेष, जिसकी राज-धानी धौलपुर है ; (पिंग) ।

ढोवण } न [**ढौकन, °क**] १ भेंट करना, अर्पण करना; **ढोवणय** } (कुमा) । २ उपहार, भेंट ; (सुपा २८०) ।

ढोविय वि [**ढौकित**] उपस्थापित, उपस्थित किया हुआ ; (स ५०८) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि ढयाराइसद्द**-संकलणो एक्कवीसइमो तरंगो समत्तो ।

ण तथा न

ण पुं [**ण, न**] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है ; इससे यह मूर्धन्य कहाता है ; (प्राप ; प्रामा) ।

ण अ [**न**] निषेधार्थक अव्यय, नहीं, मत ; (कुमा ; गा २ ; प्रासू १५६) । °**उण**, °**उणा**, °**उणाइ**, °**उणो** अ [°**पुनः**] न तु, नहीं कि ; (हे १, ६५ ; षड्) । °**संति-परलोगवाइ** वि [°**शान्तिपरलोकवादिन्**] मोक्ष और परलोक नहीं है ऐसा मानने वाला ; (ठा ८) ।

ण स [**तत्**] वह ; (हे ३, ७० ; कुमा) ।

ण स [**इदम्**] यह, इस ; (हे ३, ७७ ; उप ६६० ; गा १३१ ; १६६) ।

ण वि [**ज्ञ**] जानकार, पण्डित, विचक्षण ; (कुमा २,८८) ।

णअ देखो **णव**=नव ; (गा १००० ; नाट-चैत ४२) । °**दीअ** पुं [°**द्वीप**] बङ्गाल का एक विख्यात नगर, जो न्याय-शास्त्र का केन्द्र गिना जाता है, जिसको आजकल 'नदिया' कहते हैं ; (नाट—चैत १२६) ।

णइ अ. १ निश्चय-सूचक अव्यय ; "गईए णइ" (हे २, १८४ ; षड्) । २ निषेधार्थक अव्यय ; "नइ माया नेय पिया" (सुर २, २०६) ।

णइ° देखो **णई** ; (गउड ; हे २,६७; गा १६७; सुर १३,३५) ।

णइअ वि [**नयिक**] नय-युक्त, अभिप्राय-विशेष वाला ; (सम ४०) ।

णइअ देखो **णी**=नी ।

णइमासय न [**दे**] पानी में होने वाला फल-विशेष ; (दे ४, २३) ।

णई स्त्री [**नदी**] नदी, पर्वत आदि से निकला वह स्रोत जो समुद्र या बड़ी नदी में जाकर मिले ; (हे १, २२६ ; पात्र) । °**कच्छ** पुं [°**कच्छ**] नदी के किनारे पर की झाड़ी ; (णाया १, १) । °**गाम** पुं [°**ग्राम**] नदी के किनारे पर स्थित गाँव ; (प्राप्र) । °**णाह** पुं [°**नाथ**] समुद्र, सागर ; (उप ७२८ टी) । °**वइ** पुं [°**पति**] समुद्र, सागर; (पण्ह १, ३) । °**संतार** पुं [°**संतार**] नदी उतरना, जहाज आदि से नदी पार जाना ; (राज) । °**सोत्त** पुं [°**स्रोतस्**] नदी का प्रवाह; (प्राप्र ; हे १, ४) ।

णउ (अप) देखो **इव** ; (कुमा) ।

णउअ न [**नयुत**] 'नयुतांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक) ।

णउअंग न [**नयुताङ्ग**] 'प्रयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक) ।

णउइ स्त्री [**नवति**] संख्या-विशेष, नब्बे, ६० ; (सम ६४) ।

णउइय वि [**नवत**] ६० वाँ ; (पउम ६०, ३१) ।

णउल पुं [**नकुल**] १ न्यौला, (पण्ह १, १ , जी २२) । २ पाँचवाँ पाण्डव ; (णाया १, १६) ।

णउली स्त्री [**नकुली**] विद्या-विशेष, सर्प-विद्या की प्रतिपक्ष विद्या ; (राज) ।

णं अ. १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (हे ४, २८३ ; उवा ; पडि) । २ प्रश्न-सूचक अव्यय ; ३ स्वीकार-द्योतक अव्यय ; (राज) ।

णं (शौ) देखो **णणु** ; (हे ४, २८३) ।

णं (अप) देखो **इव** ; (हे ४, ४४४ ; भवि ; सण ; पडि) ।

णंगअ वि [**दे**] रुद्ध, रोका हुआ ; (षड्) ।

णंगर पुं [**दे**] लंगर, जहाज को जल-स्थान में थामने के लिए पानी में जो रस्सी आदि डाली जाती है वह; (उप ७२८ टी ; सुर १३, १६३ ; स २०२) ।

णंगर } न [**लाङ्गल**] हल, जिससे खेत जोता और बोया
णंगल } जाता है ; (पउम ७२, ७३ ; पण्ह १,४; पात्र) ।

णंगल पुंन [**दे**] चञ्चु, चाँच ; "जडाउणो रुट्ठो । नहणंगलेसु पहरइ, दसाणणं विउलवच्छयले" (पउम ४४, ४०) ।

णंगलि पुं [**लाङ्गलिन्**] बलभद्र, हली ; (कुमा) ।

णंगलिय पुं [**लाङ्गलिक**] हल के आकार वाले शस्त्र-विशेष को धारण करने वाला सुभट ; (कप्प ; औप) ।

णंगूल न [**लाङ्गूल**] पुच्छ, पूँछ; (ठा ४,२; हे १,२५६) ।

णंगूलि वि [**लाङ्गूलिन्**] १ लम्बा पूँछ वाला; २ पुं. वानर, बन्दर ; (कुमा) ।

णंगोल देखो **णंगूल** ; (णाया १, ३ ; पि १२७) ।

णंगोलि } पुं [**लाङ्गूलिन्, °क**] १ अन्तर्द्वीप-विशेष; २
णंगोलिय } उसका निवासी मनुष्य ; (पि १२७ ; ठा ४,२) ।

णंतग न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (कस ; आव ५) ।

णंद अक [**नन्द्**] १ खुश होना, आनन्दित होना । २ समृद्ध होना । णंदइ, णंदए ; (षड्) । कवकृ—**णंदिज्जमाण** ; (औप) । कृ—**णंदिअव्व, णंदेअव्व** ; (षड्) ।

णंद पुं [**नन्द**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पाटलिपुत्र नगर का एक राजा ; (मुद्रा १६८ ; णंदि) । २ भरत क्षेत्र के भावी प्रथम वासुदेव ; (सम १५४) । ३ भरत क्षेत्र में होने वाले नववें तीर्थंकर का पूर्व-भवीय नाम ; (सम १५४) । ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि ; (पउम २०, २०) । ५ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी ; (सुपा ६३८) । ६ न. देव-विमान विशेष ; (सम २६) । ७ लोहे का एक प्रकार का वृत्त आसन ; (णाया १, १—पत्र ४३ टी) । ८ वि. समृद्ध होने वाला; (औप) । °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान विशेष; (सम २६) । °**कूड** न [°**कूट**] एक देव-विमान ; (सम २६) । °**ज्झय** न [°**ध्वज**] एक देव-विमान; (सम २६) । °**प्पभ** न [°**प्रभ**] देव-विमान विशेष ; (सम २६) । °**मई** स्त्री [°**मती**] एक अन्त-

कृत् साध्वी ; (अन्त २५ ; राज) । °मित्त पुं [°मित्र] भरतक्षेत्र में होने वाला द्वितीय वासुदेव ; (सम १५४) । °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान ; (सम २६) । °वई स्त्री [°वती] १ सातवेँ वासुदेव की माता ; (पउम २०, १८६) । २ रतिकर पर्वत पर स्थित एक देव-नगरी; (दीव) । °वण्ण न [°वर्ण] देव-विमान विशेष ; (सम २६) । °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान ; (सम २६) । °सिट्ठ न [°सृष्ट] देव-विमान विशेष ; (सम २६) । °सिरी स्त्री [°श्री] स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-कन्या; (ती ३७) । °सेणिया स्त्री [°सेनिका] एक जैन साध्वी ; (अंत २५) ।

णंद न [**दे**] १ ऊख पीलने का काण्ड ; २ कुण्डा, पात्र-विशेष ; (दे ४, ४५) ।

णंदग पुं [**नन्दक**] वासुदेव का खड्ग ; (पण्ह १, ४) ।

णंदण पुं [**नन्दन**] १ पुत्र, लड़का ; (गा ६०२) । २ राम का एक स्वनाम-ख्यात सुभट ; (पउम ६७, १०) । ३ स्वनाम-ख्यात एक बलदेव ; (सम ६३) । ४ भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव ; (सम १५४) । ५ स्वनाम-प्रसिद्ध एक श्रेष्ठी ; (उप ५५०) । ६ श्रेणिक राजा का एक पुत्र ; (निर १, २) । ७ मेरु पर्वत पर स्थित एक प्रसिद्ध वन ; (ठा २, ३ ; इक) । ८ एक चैत्य; (भग ३, १) । ९ वृद्धि ; (पण्ह १, ४) । १० नगर-विशेष ; (उप ७२८ टी) । °कर वि [°कर] वृद्धि-कारक ; °कूड न [°कूट] नन्दन वन का शिखर ; (राज) । °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि ; (कप्प) । °वण न [°वन] १ स्वनाम-ख्यात एक वन जो मेरु पर्वत पर स्थित है ; (सम ६२) । २ उद्यान-विशेष ; (निर १, ५) ।

णंदण पुं [**दे**] भृत्य, नौकर, दास ; (दे ४, १६) ।

णंदणा स्त्री [**नन्दना**] लड़की, पुत्री ; (पाअ) ।

णंदमाणग पुं [**नन्दमानक**] पक्षी की एक जाति; (पण्ह १, १) ।

णंदा स्त्री [**नन्दा**] १ भगवान् ऋषभदेव की एक पत्नी; (पउम ३,११६)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी और अभयकुमार की माता; (णाया १, १) । ३ भगवान् श्रीशीतलनाथ की माता ; (सम १५१) । ४ भगवान् महावीर के अचलभ्रातृ-नामक गणधर की माता ; (आवम) । ५ रावण की एक पत्नी ; (पउम ७४, १०)। ६ पश्चिम रुचक-पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८) । ७ ईशानेन्द्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी ; (ठा ४, २) । ८ स्वनाम-ख्यात एक पुष्करिणी ; (ठा ४, ३) । ९ ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध तिथि-विशेष—प्रथमा, षष्ठी और एकादशी तिथि; (चंद१०)।

णंदा स्त्री [**दे**] गो, गैया; (दे ४, १८) ।

णंदावत्त पुं [**नन्द्यावर्त्त**] १ एक प्रकार का स्वस्तिक ; (सुपा ५२) । २ क्षुद्र जन्तु की एक जाति ; (जीव १) । ३ न. देव-विमान विशेष ; (सम २६) ।

णंदि पुंस्त्री [**नन्दि**] १ बारह प्रकार के वाद्यों का एक ही साथ आवाज ; (पण्ह २, ५ ; णंदि) । २ प्रमोद, हर्ष ; (ठा ५, २) । ३ मतिज्ञान आदि पाँचों ज्ञान ; (णंदि) । ४ वाञ्छित अर्थ की प्राप्ति; ५ मंगल; (बृह १; अजि ३८) । ६ समृद्धि ; (अणु) । ७ जैन आगम ग्रन्थ-विशेष ; (णंदि) । ८ वाञ्छा, अभिलाष, चाह ; (सम७१) । ९ गान्धार ग्राम की एक मूर्छना ; (ठा ७) । १० पुं स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार ; (विपा १, १) । ११ एक जैन मुनि, जो आगे आगामी भव में द्वितीय बलदेव होगा ; (पउम २०, १६०) । १२ वृक्ष-विशेष; (पउम २०, ४२) । °आवत्त देखो °यावत्त; (इक) । °उड्ढ पुं [°वृद्ध] एक प्राचीन कवि का नाम ; (कप्पू) । °कर, °गर वि [°कर] मङ्गल-कारक ; (कप्प ; णाया १, १) । °गाम पुं [°ग्राम] ग्राम विशेष ; (उप ६१७; आचू १) । °घोस पुं [°घोष] १ बारह प्रकार के वाद्यों का आवाज ; (णंदि) । २ न. देव-विमान विशेष ; (सम १७) । °चुण्णग न [°चूर्णक] होठ पर लगाने का एक प्रकार का चूर्ण ; (सूअ १, ४, २) । °तूर न [°तूर्य] एक साथ बजाया जाता बारह तरह का वाद्य ; (बृह १) । °पुर न [°पुर] शाण्डिल्य देश का एक नगर ; (उप १०३१ टी) । °फल पुं [°फल] वृक्ष-विशेष ; (णाया १, ८; १५) । °भाण न [°भाजन] उपकरण-विशेष ; (बृह १) °मित्त पुं [°मित्र] १ देखो णंद-मित्त ; (राज) । २ एक राज-कुमार, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी ; (णाया १, ८) । °मुइंग पुं [°मृदङ्ग] एक प्रकार का मृदङ्ग, वाद्य-विशेष ; (राय) । °मुह न [°मुख] पक्षि-विशेष; (राज) । °यर देखो °कर; (पउम ११८, ११७) । °यावत्त पुं [°आवर्त्त] १ स्वस्तिक-विशेष ; (औप ; पण्ह १, ४) । २ एक लोकपाल देव ; (ठा ४, १) । ३ क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (पण्ण १) । ४ न. देव-विमान विशेष ; (राज) । °राय पुं [°राज]

पाण्डवों का समान-कालीन एक राजा ; (णाया १, १६—पत्र २०८)। °राय पुं [°राग] समृद्धि में हर्ष; (भग २, ५)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष ; (पगण १)। °वड्डणा देखा °वद्धणा; (इक)। °वद्धण पुं [°वर्धन] १ भगवान् महावीर का जेष्ठ भ्राता ; (कप्प)। २ पक्ष-विशेष ; (कप्प)। ३ एक राज-कुमार ; (विपा १, ६)। ४ न. नगर-विशेष ; (सुपा ८८)। °वद्धणा स्त्री [°वर्धना] १ एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)। २ एक पुष्करिणी ; (ठा ४, २)। °सेण पुं [°षेण] १ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चतुर्थ जिन-देव ; (सम १५३)। २ एक जैन कवि ; (अजि ३८)। ३ एक राज-कुमार ; (ठा १०)। ४ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (उव)। ५ देव-विशेष ; (राज)। °सेणा स्त्री [°षेणा] १ पुष्करिणी-विशेष ; (जीव ३)। २ एक दिक्कुमारी देवी ; (दीव)। °सेणिया स्त्री [°षेणिका] राजा श्रेणिक की एक पत्नी ; (अंत)। °स्सर पुं [°स्वर] १ देखो णंदीसर ; (राज)। २ बारह प्रकार के वाद्यों का एक ही साथ आवाज ; (जीव ३)।

णंदिअ न [दे] सिंह की चिल्लाहट ; (दे ४, १६)।

णंदिअ वि [नन्दित] १ समृद्ध; (ओप)। २ जैन मुनि-विशेष ; (कप्प)।

णंदिक्ख पुं [दे] सिंह, मृगेन्द्र ; (दे ४, १६)।

णंदिज्ज न [नन्दीय] जैन मुनिओं का एक कुल ; (कप्प)।

णंदिणी स्त्री [नन्दिनी] पुत्री, लड़की ; (पउम ४६,२)। °पिउ पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक स्वनाम-ख्यात गृहस्थ उपासक ; (उवा)।

णंदिणी स्त्री [दे] गौ, गैया ; (दे ४, १८ ; पाअ)।

णंदी देखो **णंदि** ; (महा ; ओघ ३२१ भा ; पगह १, १ ; औप ; सम १५२ ; णंदि)।

णंदो स्त्री [दे] गौ, गैया; (दे ४, १८ ; पाअ)।

णंदीसर पुं [नन्दीश्वर] स्वनाम प्रसिद्ध एक द्वीप ; (णाया १, ८ ; महा)। °वर पुं [°वर] नन्दीश्वर द्वीप ; (ठा ४, ३)। °वरोद पुं [°वरोद] समुद्र-विशेष ; (जीव ३)।

णंदुत्तर पुं [नन्दोत्तर] देव-विशेष, नागकुमार के भूतानन्द-नामक इन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति देव ; (ठा ५, १ ; इक) °वडिंसग न [°ावतंसक] एक देव-विमान ; (सम २६)।

णंदुत्तरा स्त्री [नन्दोत्तरा] १ पश्चिम रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८ ; इक)। २ कृष्णा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (जीव ३)। ३ पुष्करिणी-विशेष ; (ठा ४, २)। ४ राजा श्रेणिक की एक पत्नी ; (अंत ७)।

णकार पुं [णकार, नकार] 'ण' या 'न' अक्षर ; (विसे २८६७)।

णक्क पुं [नक्र] १ जलजन्तु-विशेष, ग्राह, नाका ; (पगह १, १ ; कुमा)। २ रावण का एक स्वनाम-ख्यात सुभट ; (पउम ५६, २८)।

णक्क पुं [दे] १ नाक, नासिका ; (दे ४, ४६ ; विपा १, १ ; औप)। २ वि. मूक, वाचा-शक्ति से रहित ; (दे ४, ४६)। °सिरा स्त्री [°सिरा] नाक का छिद्र; (पाअ)।

णक्कंचर पुं [नक्तञ्चर] १ राक्षस; २ चार ; ३ बिड़ाल; ४ वि. रात्रि में चलने फिरने वाला ; (हे १, १७७)।

णक्ख पुं [नख] नख, नाखून ; (हे २, ६६ ; प्राप्र)। °अ वि [°ज] नख से उत्पन्न ; (गा ६७१)। °आउह पुं [°आयुध] सिंह, मृगारि (कुमा)।

णक्खत्त पुंन [नक्षत्र] कृत्तिका, अश्विनी, भरणी आदि ज्योतिष्क-विशेष ; (पाअ ; कप्प ; इक ; सुज्ज १०)। °दमण पुं [°दमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश; (पउम ५, २६६)। °मास पुं [°मास] ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध समय-मान विशेष ; (वव १)। °मुह न [°मुख] चन्द्र, चाँद ; (राज)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध वर्ष-विशेष ; ठा ६)।

णक्खत्त वि [नाक्षत्र] नक्षत्र-संबन्धो ; (जं ७)।

णक्खत्तणेमि पुं [दे. नक्षत्रनेमि] विष्णु, नारायण ; (दे ४, २२)।

णक्खहरण न [दे] नख और कण्टक निकालने का शस्त्र-विशेष ; (बृह १)।

णक्खि वि [नखिन्] सुन्दर नख वाला; (बृह १)।

णग देखो **णय**=नग ; (पगह १, ४; उप ३५६ टी ; सुर ३, ३४)। °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत; (ठा ६)। [°वर] पुं [°वर] श्रेष्ठ पर्वत; (णाया १, १)। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] मेरु पर्वत; (पउम ३, ७६)।

णगर न [नकर, नगर] शहर, पुर ; (बृह १ ; कप्प ; सुर ३, २०)। °गुत्तिय, °गोत्तिय पुं [°गुप्तिक] नगर

रक्षक, कोटवाल, दरोगा ; (णाया १, १८ ; औप ; पराह १, ३ ; णाया १, २)। °घाय पुं [°घात] शहर में लूट-पाट ; (णाया १, १८)। °णिद्धमण न [°निर्ध्मन] नगर का पानी जाने का रास्ता, मोरी, खाल ; (णाया १, २)। °रक्खिय पुं [°रक्षिक] देखो °गुत्तिय ; (निचू ४)। °वास पुं [°वास] राज-धानी, पाट-नगर ; (जं १—पत्र ७४)।

णगरी देखो **णयरी** ; (राज)।

णगाणिआ स्त्री [**नगाणिका**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

णगिंद पुं [**नगेन्द्र**] १ श्रेष्ठ पर्वत ; (पउम ६७, २७)। २ मेरु पर्वत ; (सुअ १, ६)।

णगिण वि [**नग्न**] नंगा, वस्त्र-रहित; (आचा; उप पृ ३६३)।

णग्ग वि [**नग्न**] नंगा, वस्त्र रहित, (प्राप्र ; दे ४, २८)। °इ पुं [°जित्] गन्धार देश का एक स्वनाम-ख्यात राजा; (औप ; महा)।

णग्गठ वि [**दे**] निर्गत, बाहर निकला हुआ; (षड्—पृष्ठ१८१)।

णग्गोह पुं [**न्यग्रोध**] वृक्ष-विशेष, वड़ का पेड़ ; (पाअ ; सुर १, २०५)। °परिमंडल न [°परिमण्डल] संस्थान-विशेष, शरीर का आकार-विशेष ; (ठा ६)।

णघुस पुं [**नघुष**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (पउम २२, ५५)।

णचिरा देखो **अइरा**=अचिरात् ; (पि ३६५)।

णच्च अक [**नृत्**] नाचना, नृत्य करना। णच्चइ ; (षड्)। वकृ—**णच्चंत, णच्चमाण**; (सुर ३, ७५ ; ३, ७७)। हेकृ—**णच्चिउं**; (गा ३६१)। कृ—**णच्चियव्व**; (पउम ८०, ३२)। प्रयो, कवकृ—**णच्चाविज्जंत**; (स २६)।

णच्च न [**ज्ञत्व**] जानकारी, पंडिताई ; (कुमा)।

णच्च न [**नृत्य**] नाच, नृत्य ; (दे ५, ८)।

णच्चग वि [**नर्तक**] १ नाचने वाला। २ पुं. नट, नचवैया; (वव ६)।

णच्चण न [**नर्तन**] नाच, नृत्य ; (कप्पू)।

णच्चणी स्त्री [**नर्तनी**] नाचने वाली स्त्री ; (कुमा ; कप्पू ; सुपा १६६)।

णच्चा } देखो **णा**=ज्ञा।
णच्चाण }

णच्चाविअ वि [**नर्तित**] नचाया हुआ ; (ओघ २६५ ; ठा ६)।

णच्चासन्न न [**नात्यासन्न**] अति समीप में नहीं ; (णाया १, १)।

णच्चिर वि [**नर्तितृ**] नचवैया, नाचने वाला, नर्तन-शील ; (गा ४२० ; सुपा ५४ ; कुमा)।

णच्चिर वि [**दे**] रमण-शील ; (दे ४, १८)।

णच्चुण्ह वि [**नात्युष्ण**] जो अति गरम न हो; (ठा ५,३)।

णज्ज सक [**ज्ञा**] जानना। णज्जइ ; (प्राप्र)।

णज्जंत } देखो **णा**=ज्ञा।
णज्जमाण }

णज्जर वि [**दे**] मलिन, मैला; (दे ४, १६)।

णज्झर वि [**दे**] विमल, निर्मल; (दे ४, १६)।

णट्ट अक [**नट्**] १ नाचना। २ सक. हिंसा करना। णट्टइ ; (हे ४, २३०)।

णट्ट पुं [**नट**] नर्तकों की एक जाति ; "णच्चंति णट्टा पभणंति विप्पा " (रंभा ; सण ; कप्प)।

णट्ट न [**नाट्य**] नृत्य, गीत और वाद्य; नट-कर्म ; (णाया १, ३; सम ८३)। °पाल पुं [°पाल] नाट्य-स्वामी, सूत्र-धार ; (आचू १)। °मालय पुं [°मालक] देव-विशेष, खण्डप्रपात गुहा का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३)। °आरिअ पुं [°चार्य] सूत्रधार ; (मा ४)।

णट्ट न [**नृत्य**] नाच, नृत्य ; (से १, ८ ; कप्पू)।

णट्टअ न [**नाट्यक**] देखो **णट्ट**=नाट्य ; (मा ४)।

णट्टअ } वि [**नर्तक**]नाचने वाला, नचवैया ; (प्राप्र ; **णट्टग** } णाया १, १ ; औप)। स्त्री—°ई ; (प्राप्र; हे २, ३० ; कुमा)।

णट्टार पुं [**नाट्यकार**] नाट्य करने वाला ; (सण)।

णट्टावअ वि [**नर्त्तक**] नचाने वाला ; (कप्पू)।

णट्टिया स्त्री [**नर्तिका**] नटी, नर्तकी, नाचने वाली स्त्री; (महा)।

णट्टुमत्त पुं [**नर्तुमत्त**] स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर; (महा)।

णट्ठ वि [**नष्ट**] १ नष्ट, अपगत, नाश-प्राप्त; (सुअ १, ३, ३ ; प्रासू ८६)। २ अहोरात्र का सतरहवाँ मुहूर्त ; (राज)। °सुइअ वि [°श्रुतिक] १ जो बधिर हुआ हो ; (णाया १, १—पत्र ६३)। २ शास्त्र के वास्तविक ज्ञान से रहित ; (राज)।

णट्ठव वि [**नष्टवत्**] १ नाश-प्राप्त। २ न. अहोरात्र का एक मुहूर्त ; (राज)।

णड अक [**गुप्**] १ व्याकुल होना। २ सक. खिन्न करना। णडइ, णडंति; (हे ४, १५०; कुमा)। कर्म—णडिज्जइ; (गा ७७)। कवकृ—**णडिज्जंत**; (सुपा ३३८)।

णड देखो **णल**=नड; (हे २, १०२)।

णड पुं [**नट**] १ नर्तकों की एक जाति, नट; (हे १, १९५; प्राप्र)। °**खाइया** स्त्री [°**खादिता**] दीक्षा-विशेष, नट की तरह कृत्रिम साधुपन; (ठा ४, ४)।

णडाल न [**ललाट**] भाल, कपाल; (हे १, ४७; २५७; गउड)।

णडालिआ स्त्री [**ललाटिका**] ललाट-शोभा, कपाल में चन्दन आदि का विलेपन; (कुमा)।

णडाविअ वि [**गोपित**] १ व्याकुल किया हुआ; २ खिन्न किया हुआ; (सुपा ३२५)।

णडिअ वि [**गुपित**] व्याकुल; (से १०, ७०; सण)।

णडिअ वि [**दे**] १ वञ्चित, विप्रतारित; (दे ४, १६)। २ खेदित, खिन्न किया हुआ; (दे ४,१६; पाअ; णाया १,६)।

णडी स्त्री [**नटी**] १ नट की स्त्री; (गा ६; ठा ६)। २ लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)। ३ नाचने वाली स्त्री; (बृह ३)।

णडुली स्त्री [**दे**] कच्छप, कछुआ; (दे ४, २०)।

णडुरी स्त्री [**दे**] भेक, मेंढक; (दे ४, २०)।

णडुल न [**दे**] १ रत, मैथुन; २ दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस; (दे ४, ४७)।

णड्डुली देखो **णडुली**; (दे ४, २०)।

णणंदा स्त्री [**ननान्दृ**] पति की बहिन; (षड्; हे ३,३५)।

णणु अ [**ननु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अवधारण, निश्चय; (प्रासू १६१; निचू १)। २ आशंका; ३ वितर्क; ४ प्रश्न; (उव; सण; प्रति ५५)।

णण्ण पुं [**दे**] १ कूप, कुआँ; २ दुर्जन, खल; ३ बड़ा भाई; (दे ४, ४६)।

णत्त न [**नक्त**] रात्रि, रात; (चंद १०)।

णत्त देखो **णत्तु**; "अंकनिवेसियनियनियपुत्तपडिपुत्तनत्तपुत्तीयं" (सुपा ६)।

णत्तंचर देखो **णक्कंचर**; (कुमा; पि २७०)।

णत्तण न [**नर्तन**] नाच, नृत्य; (नाट—शकु ८०)।

णत्तिअ पुं [**नप्तृक**] १ पौत्र, पुत्र का पुत्र; २ दौहित्र, पुत्री का पुत्र; (हे १, १३७; कुमा)।

णत्तिआ } स्त्री [**नप्त्री**] १ पुत्र की पुत्री; (कुमा)।
णत्ती } २ पुत्री की पुत्री; (राज)।

णत्तु } पुं [**नप्तृ**, °**क**] देखो **णत्तिअ**; (निर २, १;
णत्तुअ } हे १, १३७; सुपा १९२; विपा १, ३)।

णत्तुआ देखो **णत्तिआ**; (बृह १; विपा १, ३)।

णत्तुइणी स्त्री [**नप्तृकिनी**] १ पौत्र की स्त्री; २ दौहित्र की स्त्री; (विपा १, ३)।

णत्तुई देखो **णत्ती**; (विपा १, ३; कप्प)।

णत्तुणिआ देखो **णत्तिआ**; (दस ७, १५)।

णत्थ वि [**न्यस्त**] स्थापित, निहित; (णाया १, १; ३; विसे ९१६)।

णत्थण न [**दे**] नाक में छिद्र करना; (सुर १४, ४१)।

णत्था स्त्री [**दे**] नासा-रज्जु; (दे ४, १७; उवा)।

णत्थि अ [**नास्ति**] अभाव-सूचक अव्यय; (कप्प; उवा; सम्म ३६)।

णत्थिअ वि [**नास्तिक**] १ परलोक आदि नहीं मानने वाला; (प्रारू)। २ पुं. नास्तिक-मत का प्रवर्तक, चार्वाक। °**वाय** पुं [°**वाद**] नास्तिक-दर्शन; (उप १३२ टी)।

णद सक [**नद्**] नाद करना, आवाज करना। वकृ—**णदंत**; (सम ५०; नाट—मृच्छ १५५)।

णद पुं [**नद**] नाद, आवाज, शब्द; "गद्दहेव्व गवां मज्झे विस्सरं नयई नदं" (सम ५०)।

णदी देखो **णई**; (से ६, ६५; पण्ण ११)।

णद्दिअ वि [**दे**] दुःखित; (दे ४, २०)।

णद्दिअ न [**नर्दित**] घोष, आवाज, शब्द; (राज)।

णद्ध वि [**नद्ध**] १ परिहित; (गा ५२०; पउम ७, ६२; सुपा ३५५)। २ नियन्त्रित; (सुपा ३५५)।

णद्ध वि [**दे**] आरूढ; (दे ४, १८)।

णद्धंववय न [**दे**] १ अ-घृणा, घृणा का अभाव; २ निन्दा; (दे ४, ४७)।

णपहुत्त त्रि [**अप्रभूत**] अ-पर्याप्त; (गउड)।

णपहुप्पंत वि [**अप्रभवत्**] अपर्याप्त होता; (गउड)।

णपुंस } पुंन [**नपुंसक**] नपुंसक, क्लीव, नामर्द; (ओघ
णपुंसग } २१; श्रा १६; ठा ३, १; सम ३७; म-
णपुंसय } हा)। °**वेय** पुं [°**वेद**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों के स्पर्श की वाञ्छा होती है; (ठा६)।

णप्प सक [**ज्ञा**] जानना। णप्पइ; (प्राप्र)।

णभ देखो **णह**=नभस्; (हे १, १८७; कुमा; बसु)।

णम सक [**नम्**] नमन करना, प्रणाम करना। णमामि; (भग)। वकृ—**णमंत, णममाण**; (पि ३९७; आचा)। कवकृ—**णमिज्जंत**; (से ६, ३५)। संकृ—**णमिऊण, णमिऊणं,, णमेऊण**; (जी १; पि ५८५; महा)। कृ—**णमणिज्ज, णमियव्व**; (रयण ४६; उप २११ टी; पउम ६६, २१)। संकृ—**णमिअ**; (कम्म ४,१)।

णमंस सक [**नमस्य्**] नमन करना, नमस्कार करना। णमंसइ; (भग)। वकृ—**णमंसमाण**; (णाया १, १; भग)। संकृ—**णमंसित्ता**; (ठा ३, १; भग)। हेकृ—**णमंसित्तए**; (उवा)। कृ—**णमंसणिज्ज णमंसियव्व**; (औप; सुपा ६३८; पउम ३५, ४६)।

णमंसण न [**नमस्यन**] नमन, नमस्कार; (अजि ५; भग)।

णमंसणया } स्त्री [**नमस्यना**] प्रणाम, नमस्कार;
णमंसणा } (भग; सुपा ६०)।

णमंसिय वि [**नमस्यित**] जिसको नमन किया गया हो वह; (पण्ह २, ४)।

णमक्कार देखो **णमोक्कार**; (गउड; पि ३०६)।

णमण न [**नमन**] प्रणति, नमना; (दे ७, १६; रयण ४६)।

णमसिअ न [**दे**] उपयाचितक, मनौती; (दे ४, २२)।

णमि पुं [**नमि**] १ स्वनाम-ख्यात एकोसवाँ जिन-देव; (सम ४३)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध राजर्षि; (उत्त ३९)। भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र; (धण १४)।

णमिअ वि [**नत**] प्रणत, जिसने नमन किया हो वह; "पडिवक्खरायाणो तस्स राइणो नमिया" (महा)।

णमिअ वि [**नमित**] नमाया हुआ; (गा ६६०)।

णमिअ देखो **णम**।

णमिआ स्त्री [**नमिता**] १ स्वनाम-ख्यात एक स्त्री; २ 'ज्ञाताधर्मकथासूत्र' का एक अध्ययन; (णाया २)।

णमिर वि [**नम्र**] नमन करने वाला; (कुमा; सुपा २७; सण)।

णमुइ पुं [**नमुचि**] स्वनाम-ख्यात एक मन्त्री; (महा)।

णमुदय पुं [**नमुदय**] आजीविक मत का एक उपासक; (भग ७, १०)।

णमेरु पुं [**नमेरु**] वृक्ष-विशेष; (सुर ७, १९; स ६३३)।

णमो अ [**नमस्**] नमस्कार, नमन; (भग; कुमा)।

णमोक्कार पुं [**नमस्कार**] १ नमन प्रणाम, (हे १, ६२; २, ४)। २ जैन शास्त्र में प्रसिद्ध एक सूत्र—मन्त्र-विशेष; (विसे २८०५)। °**सहिय** न [°**सहित**] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष; (पडि)।

णम्म पुंन [**नर्मन्**] १ हाँसी, उपहास; २ क्रीड़ा, केलि; (हे १, ३२; श्रा १४; दे २, ६४; पाअ)।

णम्मया स्त्री [**नर्मदा**] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी; (सुपा ३८०)। २ स्वनाम-ख्यात एक राज-पत्नी; (स ५)।

णय देखो **णइ**=नद्। 'विज्जरं नयई नई' (सम ५०)।

णय पुं [**नग**] १ पहाड़, पर्वत; (उप पृ २५६; सुपा ३४८)। २ वृक्ष, पेड़; (हे १, १७७)। देखो **णग**।

णय अ [**नच**] नहीं; (उप ७६८ टी)।

णय वि [**नत**] १ नमा हुआ, प्रणत, नम्र; (णाया १, १)। २ जिसको नमस्कार किया गया हो वह; "नोनसविय़डपडिवक्खनयक्कमा विक्कमा राया" (सुपा ५६६)। ३ न. देव-विमान विशेष; (सम ३७)। °**सच्च** पुं [**सत्य**] श्रीकृष्ण, नारायण; (अच्चु ७)।

णय पुं [**नय**] १ न्याय, नीति; (विसे ३३९५; सुपा ३४८; स ५०१)। २ युक्ति; (उप ७६८)। ३ प्रकार, रीति; "जत्तणा वि घेप्पई पत्तणा भुयगा य केणइ नएण" (स ४५४)। ४ वस्तु के अनेक धर्मों में किसी एक को मुख्य रूप से स्वीकार कर अन्य धर्मों की उपेक्षा करने वाला मत, एकांश-ग्राहक बोध; (सम्म २१; विसे ९१४; ठा ३, ३)। ५ विधि; (विसे ३३९५)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार; (रंभा)। °**त्थि** वि [°**र्थिन्**] न्याय चाहने वाला; (श्रा १४)। °**व, °वंत** वि [°**वत्**] नीति वाला, न्याय-परायण; (सम ५०; सुपा ५४२)। °**विजय** पुं [°**विजय**] विक्रम की सत्तरहवीं शताब्दी के एक जैन मुनि, जो सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री यशोविजयजी के गुरु थे; (उवर २०२)।

णयण न [**नयन**] १ ले जाना, प्रापण; (उप १३४)। २ जानना, ज्ञान; ३ निश्चय; (विसे ९१४)। ४ वि. ले जाने वाला; "वयणाइं सुपइनयणाइं" (सुपा ३७७)। ५ पुंन. आँख, नेत्र, लोचन; (हे १, ३३; पाअ)। °**जल** न [°**जल**] अश्रु, आँसू; (पाअ)।

णयय पुं [**दे. नवत**] ऊन का बना हुआ आस्तरण-विशेष; (णाया १, १—पत्र १३)।

णयर देखो **णगर** ; (हे १, १७७ ; सुर ३, २० ; आरा ; भग) ।

णयरंगणा स्त्री [**नगराङ्गना**] वेश्या, गणिका ;(श्रा २७)।

णयरी स्त्री [**नगरी**] शहर, पुरी ; (उवा ; पउम ३६, १००) ।

णर पुं [**नर**] १ मनुष्य, मानुष, पुरुष; (हे १,२२६; सुत्र १, १, ३) । २ अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (कुमा) । °**उसभ** पुं [°**वृषभ**] श्रेष्ठ मनुष्य, अङ्गीकृत कार्य का निर्वाहक पुरुष ; (ओघ) । °**कंतप्पवाय** पुं [°**कान्तप्रपात**] ह्रद-विशेष ; (ठा २, ३) । °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम २७) । °**कंताकूड** न [°**कान्ताकूट**] रुक्मि पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८) । °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] १ मुनि-सुव्रत भगवान् को शासन-देवी; (राज) । २ विद्या-देवी विशेष ; (संति ५) । °**देव** पुं [°**देव**] चक्रवर्ती राजा ; (ठा ५, १) । °**नायग** पुं [°**नायक**] राजा, नरपति ; (उप २११ टी) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] राजा, भूपाल; (सुपा ६ ; सुर १,६१) । °**पहु** पुं [°**प्रभु**] राजा, नरेश; (उप ७२८ टी; सुर २, ८४)। °**पोहवि** पुं [°**पोहविन्**] राज-विशेष ; (उप ७२८ टी)। °**लोअ** पुं [°**लोक**] मनुष्य लोक ; (जी २२ ; सुपा ४१३) । °**वइ** पुं [°**पति**] नरेश, राजा; (सुर १, १०४) । °**वर** पुं [°**वर**] १ राजा, नरेश ; (सुर १ १३१ ; १५, १४) । २ उत्तम पुरुष ; (उप ७२८ टी) । °**वरिंद** पुं [°**वरेन्द्र**] राजा, भूमि-पति; (सुपा ५६ ; सुर २, १७६) । °**वरीसर** पुं [°**वरेश्वर**] श्रेष्ठ राजा ; (उत्त १८) । °**वसभ, °वसह** पुं [°**वृषभ**] १ देखो °**उसभ**; (पण्ह १, ४ ; सम १५३) । २ राजा, नृपति ; (पउम ३, १४)। ३ पुं. हरिवंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा; (पउम २२, ६७) । °**वाल** पुं [°**पाल**] राजा, भूपाल; (सुपा २७३)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (आक १ ; सण) । °**वेय** पुं [°**वेद**] पुरुष वेद, पुरुष का स्त्री के स्पर्श की अभिलाषा; (कम्म ४) । °**सिंघ, °सिंह, °सीह** पुं [°**सिंह**] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य; (सम १५३; पउम १००, १६) । २ अर्ध भाग में पुरुष का और अर्ध भाग में सिंह का आकार वाला, श्रीकृष्ण, नारायण ; (खाया १, १६) । °**सुंदर** पुं [°**सुन्दर**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (धम्म) । °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] राजा, नरेश; (गा ३६४; सुपा २५) ।

णरग } **णरय** } पुं [**नरक**] नारक जीवों का स्थान; (विपा १, १; पउम १४, १६ ; श्रा ३ ; प्रासू २६; उव) । °**वाल, °वालय** पुं [°**पाल, °क**] परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवों को यातना करते हैं ; (पउम २६, ५१ ; ८, २३७) ।

णराअ } **णराच** } पुंन [**नाराच**] १ लोहमय बाण ; २ संहनन-विशेष, शरीर को रचना का एक प्रकार ; (हे१, ६७) । ३ छन्द विशेष ; (पिंग) ।

णरायण पुं [**नारायण**] श्रीकृष्ण, विष्णु ; (पिंग) ।

णरिंद पुं [**नरेन्द्र**] १ राजा, नरेश ; (सम १५३ ; प्रासू १०७; कप्प) । २ गारुडिक, सर्प के विष का उतारने वाला; (स २१६) । °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान विशेष ; (सम २२) । °**पह** पुं [°**पथ**] राज-मार्ग, महापथ ; (पउम ७६, ८) । °**वसह** पुं [°**वृषभ**] श्रेष्ठ राजा ; (उत्त ६) ।

णरिंदुत्तरवडिंसग न [**नरेन्द्रोत्तरावतंसक**] देव-विमान-विशेष ; (सम २२) ।

णरीस पुं [**नरेश**] राजा, नर-पति ; "सो भरहद्धनरीसो होही पुरिसो न संदेहो " (सुर १२, ८०) ।

णरीसर पुं [**नरेश्वर**] राजा, नर-पति ; (अजि ११) ।

णरुत्तम पुं [**नरोत्तम**] उत्तम पुरुष; (पउम ४८, ७५) ।

णरेंद देखो **णरिंद** ; (पि १५६ ; पिंग) ।

णरेसर देखो **णरीसर** ; (उप७२८ टी; सुपा५५ ; ६६१)।

णल न [**नड**] तृण-विशेष, भीतर से पोला शराकार तृण ; (हे २, २०२ ; ठा ८) ।

णल न [**नल**] १ ऊपर देखो ; (पण्ण १ ; उप १०३१ टी ; प्रासू ३३) । २ पुं. राजा रामचन्द्र का एक सुभट ; (से ८, १८) । ३ वैश्रमण का एक स्वनाम-ख्यात पुत्र ; (अंत ५)। °**कुब्बर, °कूबर** पुं [°**कूबर**] १ दुर्लंघपुर का एक स्वनाम-ख्यात राजा ; (पउम १२ ७२) । २ वैश्रमण का एक पुत्र ; (आवम) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] चण्डप्रद्योत राजा का एक स्वनाम-ख्यात हाथी; (महा)

णलय न [**दे**] उशीर, खस का तृण; (दे ४, १६; पात्र) ।

णलाड देखो **णडाल** ; (हे २, १२३ ; कुमा) ।

णलाडंतव वि [**ललाटन्तप**] ललाट को तपाने वाला ; (कुमा) ।

णलिअ न [**दे**] गृह, घर, मकान ; (दे ४, २० ; षड्) ।

णलिण न [**नलिन**] १ रक्त कमल ; (राय ; चंद १० ; पात्र)। २ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष; (ठा २, ३)। ३ 'नलिनाङ्ग' का चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक)। ४ देव-विमान विशेष ; (सम ३३ ; ३५)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (दीव)। °**कूड** पुं [°**कूट**] वक्षस्कार-पर्वत विशेष; (ठा २, ३)। °**गुम्म** न [°**गुल्म**] १ देव विमान-विशेष ; (सम ३५)। २ वृत्त-विशेष ; (ठा ८)। ३ अध्ययन-विशेष ; (आव ४)। ४ राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (राज)। °**वई** स्त्री [°**वती**] विदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश विशेष; (ठा २, ३)।

णलिणंग न [**नलिनाङ्ग**] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक)।

णलिणि, **णलिणी** स्त्री [**नलिनी**] कमलिनी, पद्मिनी ; (पात्र; गाया १, १)। °**गुम्म** देखो **णलिण-गुम्म**; (निर २, १ ; विसे)। °**वण** न [°**वन**] उद्यान-विशेष ; (गाया २)।

णलिणोदग पुं [**नलिनोदक**] समुद्र-विशेष ; (दीव)।

णल्लय न [**दे**] १ वृत्ति-छिद्र, वाड़ का छिद्र ; २ प्रयोजन ; ३ निमित्त, कारण ; ४ वि. कर्दमित, कीच वाला ; (दे ४ ४६)।

णव देखो **णम**। गवइ ; (षड् ; हे ४, १५८ ; २२६)।

णव वि [**नव**] नया, नूतन, नवीन; (गउड; प्रासू ७१)। °**वहुया**, °**वहू** स्त्री [°**वधू**] नवोढ़ा, दुलहिन; (हेका ५१; सुर ३, ५२)।

णव त्रि. ब. [**नवन्**] संख्या-विशेष, नव, ६ ; (ठा ६)। °**इ** स्त्री [°**ति**] संख्या-विशेष नव्वे, ६०; (सण)। °**ग** न [°**क**] नव का समुदाय ; (दं ३८)। । °**जोयणिय** वि [°**योजनिक**] नव योजन का परिमाण वाला ; (ठा ६)। °**णउइ**, °**नउइ** स्त्री [°**नवति**] संख्या-विशेष, निन्यानवे, ६६ ; (सम ६६; १००)। °**नउय** वि [°**नवत**] ६६ वाँ ; (पउम ६६, ७५)। °**नवइ** देखो °**णउइ**; (कम्म २, ३०)। °**नवमिया** स्त्री [°**नवमिका**] जैन साधु का व्रत-विशेष; (सम ८८)। °**म** वि [°**म**] नववाँ ; (उवा)। °**मी** स्त्री [°**मी**] तिथि-विशेष; पक्ष का नववाँ दिवस ; (सम २६)। °**मीपक्ख** पुं [°**मीपक्ष**] आठवाँ दिन, अष्टमी ; (जं ३)।

णवकार देखो **णमोक्कार**; (सड्ढि १; चेइय ३० ; सण)।

णवख (अप) वि [**नव**] अनोखा, नूतन, नया ; (हे ४, ४२२)। स्त्री—°**खी**; (हे ४, ४२०)।

णवणीअ पुंन [**नवनीत**] मक्खन, मसका ; (कप्प ; औप ; प्रासा)। " अणलहअोव्व नवणीओ " (पउम ११८, २३)।

णवणीइया स्त्री [**नवनीतिका**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण१)।

णवमालिया स्त्री [**नवमालिका**] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष, नेवार ; (कप्प)।

णवमिया स्त्री [**नवमिका**] १ रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)। २ सत्पुरुष-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १)। ३ शक्रेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ८)।

णवय देखो **णयय** ; (गाया १, १७)।

णवयार देखो **णवकार** ; (पंचा १; पि ३०६)।

णवर, **णवरं** अ. १ केवल, फक्त ; (हे २, १८७ ; कुमा ; षड् ; उवा ; सुपा ८ ; जो २७ ; गा १५)। २ अनन्तर, बाद में ; (हे २, १८८ ; प्राप्र)।

णवरंग, **णवरंगय** पुं [**नवरङ्ग**, °**क**] १ नूतन रङ्ग, नया वर्ण; (सुर ३, ५२)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ३ कौसुम्भ रङ्ग का वस्त्र ; (गउड; गा २४१; सुर ३, ५२ ; पात्र)।

णवरि, **णवरिअ** देखो **णवर** ; (हे २, १८८ ; से १, ३६ ; प्रासा ; सुर, २६ ; षड् ; गा १७२)।

णवरिअ न [**दे**] सहसा, जल्दी, तुरन्त ; (दे ४, २२ ; पात्र)।

णवलया स्त्री [**दे**] वह व्रत, जिसमें पति का नाम पूछने पर उसे नहीं बताने वाली स्त्री पलाश की लता से ताड़ित की जाती है ; (दे ४, २१)।

णवल्ल देखो **णव** = नव ; (हे २, १६५; कुमा ; उप ७२८ टी)।

णवसिअ न [**दे**] उपयाचितक, मनौती ; (दे ४, २२ ; पात्र ; वज्जा ८६)।

णवा स्त्री [**नवा**] १ नवोढ़ा, दुलहिन; २ युवति स्त्री; (सुअ १, ३, २)। ३ जिसको दीक्षा लिए तीन वर्ष हुए हों ऐसी साध्वी; (वव ४)। ४ अ. प्रश्नार्थक अव्यय, अथवा नहीं ? (रयण ६७)।

णवि अ. १ वैपरीत्य-सूचक अव्यय, "णवि हा वणे" (हे २, १७८; कुमा) । २ निषेधार्थक अव्यय ; (गउड) ।
णविअ देखो **णमिअ**=नत ; (हे ३, १५६ ; भवि) ।
णविअ वि [**नव्य**] नूतन, नया ; (आचा २, २, ३) ।
णवुत्तरसय वि [**नवोत्तरशततम**] एकसौ नववाँ ; (पउम १०६, २७) ।
णवुल्लडय (अप) देखो **णव**=नव ; (कुमा) ।
णवोढा स्त्री [**नवोढा**] नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन ; (काप्र १६७) ।
णवोद्धरण न [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा ; (दे ४, २३) ।
णव्व पुं [**दे**] आयुक्त, गाँव का मुखिया ; (दे ४, १७) ।
णव्व वि [**नव्य**] नूतन, नया, नवीन ; (श्रा २७) ।
णव्व° देखो **णा**=ज्ञा ।
णव्वाउत्त पुं [**दे**] १ ईश्वर, धनाढ्य, भोगी; २ नियोगी का पुत्र, सूबा का लड़का ; (दे ४, २२) ।
णस सक [**नि+अस्**] स्थापन करना । नसेज्ज; (विसे ६४३)। कर्म—नस्सए; (विसे ६७०) । संकृ—**नसिऊण** (स ६०८) ।
णस अक [**नश्**] भागना, पलायन करना । णसइ; (पिंग)।
णसण न [**न्यसन**] न्यास, स्थापन; (जीव १) ।
णसा स्त्री [**दे**] नस, नाड़ी ; "असुईरसनिज्झरणे हड्डुक्कर-डम्मि चम्मनसनद्धे" (सुपा ३५५) ।
णसिअ वि [**नष्ट**] नाश-प्राप्त ; (कुमा) ।
णस्स देखो **नस**=नश् । णस्सइ, णस्सए; (षड् ; कुमा) । वकृ—**नस्संत, नस्समाण** ; (श्रा १६ ; सुपा २१५) ।
णस्सर वि [**नश्वर**] विनश्वर, भंगुर, नाश पाने वाला; "खण-नस्सराइं रूवाइं" (सुपा २४३) ।
णस्सा स्त्री [**नासा**]नासिका, घ्राणेन्द्रिय; (नाट-मृच्छ ६२) ।
णह देखो **णक्ख** ; (सम ६० ; कुमा) ।
णह न [**नभस्**] १ आकाश, गगन ; (प्राप्र; हे १, ३२)। २ पुं. श्रावण मास ; (दे ३, १६) । **°अर** वि [**°चर**] १ आकाश में विचरने वाला ; (से १४, ३८) । २ पुं. विद्याधर, आकाश-विहारी मनुष्य ; (सुर ६, १८६) । **°केउमंडिय** न [**°केतुमण्डित**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक) । **°गमा** स्त्री [**°गमा**] आकाश-गामिनी विद्या ; (सुर १३, १८६) । **°गामिणी** स्त्री [**°गामिनी**] आकाश-गामिनी विद्या ; (सुर ३, २८) । **°च्चर** देखो **°अर**; (उप ५६७ टी) । **°च्छेदणय** न [**°च्छेदनक**] नख उतारने का शस्त्र ; (आचा २, १, ७, १) । **°तिलय** न [**°तिलक**] १ नगर-विशेष; २ सुभट-विशेष ; (पउम ५५, १७) । **°वाहण** पुं [**°वाहन**] नृप-विशेष ; (सुर ६, २६)। **°सिर** न [**°शिरस्**] नख का अग्र भाग; (भग ५, ४) । **°सिहा** स्त्री [**°शिखा**] नख का अग्र भाग; (कप्प) । **°सेण** पुं [**°सेन**] राजा उग्रसेन का एक पुत्र; (राज) । **°हरणी** स्त्री [**°हरणी**] नख उतारने का शस्त्र ; (बृह ३) ।
णहमुह पुं [**दे**] घूक, उल्लू ; (दे ४, २०) ।
णहर पुं [**नखर**] नख, नाखून ; (सुपा ११ ; ६०६) ।
णहरण पुं [**दे**] नखी, नखवाला जन्तु, श्वापद; (वज्जा १२)।
णहरणी स्त्री [**दे**] नहरनी, नख उतारने का शस्त्र; (पंचव ३)।
णहराल पुं [**नखरिन्**] नख वाला श्वापद जन्तु; (उप ५३० टी) ।
णहरी स्त्री [**दे**] छुरिका, छुरी ; (दे ४, २०) ।
णहवल्ली स्त्री [**दे**] विद्युत्, बिजली; (दे ४, २२) ।
णहि पुं [**नखिन्**] नख-प्रधान जन्तु, श्वापद जन्तु; (अणु)।
णहि अ [**नहि**] निषेधार्थक अव्यय, नहीं; (स्वप्न ४१; पिंग; सण) ।
णहु अ [**नखलु**] ऊपर देखो; (नाट—मृच्छ २६१; गाया १, ६) ।
णा सक [**ज्ञा**] जानना, समझना । भवि—णाहिइ ; (विसे १०१३) । णाहिसि; (पि ५३४) । कर्म—णव्वइ, णज्जइ; हे ४, २५२) । कवकृ—**णज्जंत, णज्जमाण** ; (से १३, ११; उप १००१ टी) । संकृ—**णाउं, णाऊण, णाऊणं, णच्चा, णच्चाणं** ; (महा ; पि ५८६ ; औप; सुअ १, २, ३; पि ५८७) । कृ—**णायव्व, णेअ**; (भग; जी ६ ; सुर ४, ७० ; दं २ ; हे २, १६३ ; नव ३१) ।
णा अ [**न**] निषेध-सूचक अव्यय; (गउड) ।
णाअक्क (अप) देखो **णायग**; (पिंग) ।
णाइ पुं [**ज्ञाति**] इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न क्षत्रिय-विशेष । **°पुत्त** पुं [**°पुत्र**] भगवान् श्री महावीर ; (आचा) । **°सुय** पुं [**°सुत**] भगवान् श्री महावीर ; (आचा) ।
णाइ स्त्री [**ज्ञाति**] १ नात, समान जाति ; (पउम १००, ११ ; औप ; उवा) । २ माता-पिता आदि स्वजन, सगा ; (णाया १, १) । ३ ज्ञान, बोध ; (आचा ; ठा ५, ३) ।
णाइ (अप) देखो **इव**; (कुमा) ।
णाइ (अप) नीचे देखो ; (भवि) ।
णाइं देखो **ण**=न ; (हे २, १६० ; उवा) ।
णाइणी (अप) स्त्री [**नागी**] नागिन, सर्पिणी; (भवि)।

णाइत्त } पुं [**दे**] जहाज द्वारा व्यापार करने वाला सौदा-
णाइत्तग } गर ; उप पृ १०१ ; उप ५६२)।

णाइय वि [**नादित**] १ उक्त, कथित, पुकारा हुआ ; (णाया १, १; औप)। २ न आवाज, शब्द; (णाया १, १)। ३ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि ; (राय)।

णाइल पुं [**नागिल**] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (कप्प)। २ जैन मुनिओं का एक वंश; (पउम ११८, ११७)। ३ एक श्रेष्ठी; (महानि ४)।

णाइला } स्त्री [**नागिला**] जैन मुनिओं की एक शाखा ;
णाइली } (कप्प) ।

णाइव वि [**ज्ञातिमत्**] स्वजन-युक्त; (उत्त ४)।

णाउ वि [**ज्ञातृ**] जानकार, जानने वाला; (द्र ६)।

णाउड्ड पुं [**दे**] १ सद्भाव, सन्निष्ठा; २ अभिप्राय; ३ मनो-रथ, वाञ्छा ; (दे ४, ४७)।

णाउल्ल वि [**दे**] गोमान्, जिसके पास अनेक गैया हों; (दे ४, २३)।

णाउं
णाऊण } देखो **णा**=ज्ञा ।
णाऊणं

णाग पुंन [**नाक**] स्वर्ग, देवलोक ; (उप ७१२)।

णाग पुं [**नाग**] १ सर्प, साँप ; (पउम ८, १७८)। २ भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, नाग-कुमार देव ; (णंदि)। ३ हस्ती, हाथी ; (औ)। ४ वृक्ष-विशेष ; (कप्प)। ५ स्वनाम-ख्यात एक गृहस्थ ; (अंत ४)। ६ एक प्रसिद्ध वंश ; ७ नाग-वंश में उत्पन्न ; (राज)। ८ एक जैन आचार्य ; (कप्प)। ९ स्वनाम-ख्यात एक द्वीप ; १० एक समुद्र ; (सुज्ज १९)। ११ वक्षस्कार-पर्वत विशेष ; (ठा २, ३)। १२ न ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण ; (विसे ३३५०)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति ; (सम ६६)। °**केसर** पुं [°**केसर**] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष ; (राज)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] नाग देवता के आवेश से उत्पन्न ज्वर आदि ; (जीव ३)। °**जण्ण,** °**जन्न** पुं [°**यज्ञ**] नाग पूजा, नाग देवता का उत्सव ; (णाया १, ८)। °**ज्जुण** पुं [°**र्जुन**] एक स्वनाम-ख्यात जैन आचार्य ; (णंदि)। °**दंत** पुं [°**दन्त**] खूँटी ; (जीव ३)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक स्वनाम-ख्यात राज-पुत्र ; (ठा ३, ४ ; सुपा ५३५)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र ; (आक)। °**पइ** पुं [°**पति**] नागकुमार देवों का राजा, नागेन्द्र ; (औप)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (पउम २०, १०)। °**बाण** पुं [°**बाण**] दिव्य अस्त्र-विशेष ; (जीव ३)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] नाग-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (सुज्ज १९)। °**भूय** न [°**भूत**] जैन मुनिओं का एक कुल; (कप्प)। °**महाभद्द** पुं [**महाभद्र**] नागद्वीप का एक अधिष्ठायक देव; (सुज्ज १९)। °**महावर** पुं [°**महावर**] नाग समुद्र का अधिपति देव ; (सुज्ज १९ ; इक)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि जो आर्य महागिरि के शिष्य थे ; (कप्प)। °**राय** पुं [°**राज**] नागकुमार देवों का स्वामी, इन्द्र-विशेष ; (पउम ३, १४७)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] वृक्ष-विशेष ; (ठा ८)। °**लया** स्त्री [°**लता**] वल्ली-विशेष, ताम्बूली लता ; (पण्ण १)। °**वर** पुं [°**वर**] १ श्रेष्ठ सर्प ; २ उत्तम हाथी ; (औप)। ३ नाग समुद्र का अधिपति देव ; (सुज्ज १९)। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] लता-विशेष ; (सण)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] द्रौपदी के पूर्व जन्म का नाम; (उप ६४८ टी)। °**सुहुम** न [°**सूक्ष्म**] एक जैनेतर शास्त्र ; (अणु)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक स्वनाम ख्यात गृहस्थ ; (आवम)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] एक प्राचीन जैन ऋषि ; (णंदि)।

णागणिय न [**नाग्न्य**] नग्नता, नंगापन ; (सूअ १,७)।

णागर वि [**नागर**] १ नगर-संबन्धी; २ नगर का निवासी, नागरिक ; (सुर ३, ६६ ; महा)।

णागरिअ पुं [**नागरिक**] नगर का रहने वाला ; (रंभा)।

णागरिआ स्त्री [**नागरिका**] नगर में रहने वाली स्त्री ; महा)।

णागरी स्त्री [**नागरी**] १ नगर में रहने वाली स्त्री। २ लिपि विशेष, हिन्दी लिपि ; (विसे ४६४ टी)।

णागिंद पुं [**नागेन्द्र**] १ नाग देवों का इन्द्र ; २ शेष नाग ; (सुपा ७७ ; ६३६)।

णागिल देखो **णाइल** ; (राज)।

णागी स्त्री [**नागी**] नागिन, सर्पिणी ; (आव ४)।

णागेंद देखो **णागिंद** ; (णाया १, ८)।

णाड देखो **णट्ट**=नाट्य ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

णाडइज्ज वि [**नाटकीय**] नाटक-संबन्धी, नाटक में भाग लेने वाला पात्र; (णाया १, १ ; कप्प)।

णाडइणी स्त्री [**नाटकिनी**] १ नर्तकी, नाचने वाली स्त्री; (बृह ३)।

णाडग } न [**नाटक**] १ नाटक, अभिनय, नाट्य-क्रिया ; **णाडय** } (बृह १ ; सुपा १ ; ३५६ ; सार्ध ६५) । २ रंग-शाला में खेलने में उपयुक्त काव्य ; (हे ४, २७०) ।

णाडाल देखो **णडाल** ; (गउड) ।

णाडि स्त्री [**नाडि**] १ रज्जु, वरत्रा ; २ नाड़ी, नस, सिरा ; (कुमा) ।

णाडी स्त्री [**नाडी**] ऊपर देखो ; (हे १, २०२) ।

णाडीअ पुं [**नाडीक**] वनस्पति-विशेष ; (भग १०, ७) ।

णाण न [**ज्ञान**] ज्ञान, बोध, चेतन्य, बुद्धि ; (भग ८,२ ; हे २, ४२ ; कुमा ; प्रासू २८) । °**धर** वि [°**धर**] ज्ञानो, जानकार, विद्वान् ; (सुपा ५०८) । °**प्पवाय** न [°**प्रवाद**] जैन ग्रन्थांश-विशेष, पाँचवाँ पूर्व ; (सम २६) । °**मायार** देखो °**ायार** ; (पडि) । °**व, वंत** वि [°**वत्**] ज्ञानी, विद्वान् ; (पि ३४८ ; आचा ; अच्चु ४६) । °**वि** वि [°**वित्**] ज्ञान-वेत्ता ; (आचा) । °**ायार** पुं [°**ाचार**] ज्ञान-विषयक शास्त्रोक्त विधि; (राज) । °**ावरण** न [°**ावरण**] ज्ञान का आच्छादक कर्म ; (धण ४४) । °**ावरणिज्ज** न [°**ावरणीय**] अनन्तर उक्त अर्थ ; (सम ६६ ; औप) ।

णाणक } न [**दे**] सिक्का, मुद्रा ; (मृच्छ १७ ; राज)। **णाणग** }

णाणत्त न [**नानात्व**] भेद, विशेष, अन्तर; (आव ६१८)।

णाणत्ता स्त्री [**नानाता**] ऊपर देखो ; (विसे २१६१) ।

णाणा अ [**नाना**] अनेक, जुदा जुदा ; (उवा ; भग ; सुर १, ८६) । °**विह** वि [°**विध**] अनेक प्रकार का, विविध ; (जीव ३ ; सुर ४, २४५ ; दं१३) ।

णाणि वि [**ज्ञानिन्**] ज्ञानी, जानकार, विद्वान् ; (आचा ; उत्त) ।

णादिय देखो **णाइय** ; (कप्प) ।

णाभि पुं [**नाभि**] १ स्वनाम-ख्यात एक कुलकर पुरुष, भगवान् ऋषभदेव का पिता ; (सम १५०) । २ पेट का मध्य भाग; ३ गाड़ी का एक अवयव ; (दस ७) । °**नंदण** पुं [°**नन्दन**] भगवान् ऋषभदेव ; (पउम ४, ६८) ।

णाम सक [**नमय्**] १ नमाना, नीचा करना । २ उपस्थित करना । ३ अर्पण करना । णामेइ ; (हेका ४६) । वकृ--**णामयंत** ; (विसे २६६०) । संकृ—**णामित्ता** ; (निचू १) ।

णाम पुं [**नाम**] १ परिणाम, भाव ; (भग २५, ५) । २ नमन ; (विसे २१७६) ।

णाम अ [**नाम**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ संभावना ; (से ५, ४) । २ आमन्त्रण, संबोधन ; (बृह ३ ; जं १) । ३ प्रसिद्धि, ख्याति ; (कप्प) । ४ अनुज्ञा, अनुमति ; (विसे) । ५—६ वाक्यालंकार और पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (ठा ४, १ ; राज) ।

णाम न [**नामन्**] नाम, आख्या, अभिधान ; (विपा१, १ ; विसे २५) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] कर्म-विशेष, विचित्र परिणाम का कारण-भूत कर्म; (स ६७) । °**धिज्ज,** °**धेज्ज,** °**धेय** न [°**धेय**] नाम, आख्या ; (कप्प ; सम ७१ ; पउम ४, ८०) । °**पुर** न [°**पुर**] एक विद्याधर-नगर ; (इक) । °**मुद्दा** स्त्री [°**मुद्रा**] नाम से अङ्कित मुद्रा ; (पउम ५, ३२) । °**सच्च** वि [°**सत्य**]नाम-मात्र से सच्चा, नामधारी ; (ठा १०) । °**हेअ** देखो °**धेय**; (पउम २०, १७६ ; स्वप्न ४३) ।

णामण न [**नमन**] नमाना, नीचा करना ; (विसे३००८) ।

णाममंतक्ख पुं [**दे**] अपराध, गुनाह ; (गउड) ।

णामिअ वि [**नमित**] नमाया हुआ ; (सार्ध ८०) ।

णामिय न [**नामिक**] वाचक शब्द, पद; (विसे१००३) ।

णामुक्कसिअ } न [**दे**] कार्य, काम, काज ; (हे २, **णामोक्कसिअ** } १७४ ; दे ४, ३५) ।

णाय वि [**दे**] गर्विष्ठ , अभिमानी ; (दे ४, २३) ।

णाय देखो **णाग**; (काप्र ७७७ ; कप्पू; औप ; गउड ; वज्जा १४ ; सुपा ६३६; पउम २१, ४६) ।

णाय पुं [**नाद**] शब्द, आवाज, ध्वनि ; (औप ; पउम२२, ३८ ; स २१३) ।

णाय पुं [**न्याय**] १ न्याय, नीति; (औप ; स १५६; आचा) । २ उपपत्ति, प्रमाण ; (पंचा ४; विसे) । °**कारि** वि [°**कारिन्**] न्याय-कर्ता ; (आचू१) । °**गर** वि [°**कर**] १ न्याय-कर्ता । २ पुं न्यायाधीश; (श्रा १४) । °**ण्ण** वि [°**ज्ञ**] न्याय का जानकार; (उप ३४६) ।

णाय पुं [**नाक**] स्वर्ग, देव-लोक ; (पाअ) ।

णाय वि [**ज्ञात**] १ जाना हुआ, विदित ; (उव ; सुर ३, ३६) । २ ज्ञाति-संबन्धी, सगा, एक बिरादरी का ; (कप्प ; आउ ६) । ३ वंश-विशेष में उत्पन्न ; (औप) । ४ पुं वंश-विशेष ; (ठा ६) । ५ क्षत्रिय-विशेष; (सुअ१, ६ ; कप्प) । ६ न उदाहरण, दृष्टान्त; (उव; सुपा१२८)।

°कुमार पुं [°कुमार] ज्ञात-वंशीय राज-पुत्र ; (णाया १, ८) । °कुल न [°कुल] वंश-विशेष ; (पराह १, ३) । °कुलचंद पुं [°कुलचन्द्र] भगवान् श्रीमहावीर ; (आचा) । °कुलनंदण पुं [°कुलनन्दन] भगवान् श्रीमहावीर ; (पराह १, १) । °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्रीमहावीर ; (आचा) । °मुणि पुं [°मुनि] भगवान् श्रीमहावीर ; (पराह २, १) । °विहि पुंस्त्री [°विधि] माता या पिता के द्वारा संबन्ध, संबन्धि-स्वजन ; (वव ६) । °संड न [°षण्ड] उद्यान-विशेष, जहां भगवान् श्रीमहावीर देव ने दीक्षा ली थी ; (आचा २, ३, १) । °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्रीमहावीर । °सुय न [°श्रुत] ज्ञाताधर्मकथा नामक जैन आगम-ग्रन्थ ; (णाया २, १) । °धम्मकहा स्त्री [°धर्मकथा] जैन आगम-ग्रन्थ विशेष ; (सम १)।

णायग पुं [**नायक**] नेता, मुखिया, अगुआ ; (उप ६४८ टी ; कप्प ; सम १ ; सुपा २२) ।

णायत्त पुं [**दे**] समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला वणिक् ; "पवहणवाणिज्जपरा सुहंकरा आसि नाम नायत्ता" (उप५९७ टी)

णायर देखो **णागर** ; (महा ; सुपा १८८) ।

णायरिय देखो **णागरिय** ; (सुर १४, १३३) । स्त्री—°या ; (भवि) ।

णायरी देखो **णागरी** ; (भवि) ।

णायव्व देखो **णा**=ज्ञा ।

णार पुं [**नार**] चतुर्थ नरक-पृथिवी का एक प्रस्तट; (इक)।

णारइअ वि [**नारकिक**] १ नरक-पृथिवी में उत्पन्न ; २ पुं. नरक का जीव ; (हे १, ७९) ।

णारंग पुं [**नारङ्ग**] १ वृक्ष-विशेष, शंतरे का वृक्ष ; २ न. फल-विशेष, कमला नीबू, शंतरा ; (पउम ४१, ९ ; सुपा २३० ; ५६३ ; गउड; कुमा) ।

णारग देखो **णारय**=नारक ; (विसे १९००) ।

णारद देखो **णारय** ; (प्रयौ ५१) ।

णारदीअ वि [**नारदीय**] नारद-संबन्धी ; (प्रयौ ५१) ।

णारय पुं [**नारद**] १ मुनि-विशेष, नारद ऋषि ; (सम १५४, उप ६४८ टी) । २ गन्धर्व सैन्य का अधिपति देव-विशेष ; (ठा ७) ।

णारय वि [**नारक**] १ नरक में उत्पन्न, नरक-संबन्धी; "जायए नारयं दुक्खं" (सुपा १६२) । २ पुं. नरक में उत्पन्न प्राणी, नरक का जीव ; (भग) ।

णारसिंह वि [**नारसिंह**] नरसिंह-संबन्धी ; (उप ६४८ टी) ।

णाराय देखो **णराअ** ; (हे १, ६७ ; उवा ; सम १४९ ; अजि १४) । °वज्ज न [°वज्र] संहनन-विशेष ; (पउम ३, १०९) ।

णारायण पुं [**नारायण**] १ विष्णु, श्रीकृष्ण ; (कुमा ; स ६२२) । २ अर्ध-चक्रवर्ती राजा ; (पउम ५, १२२ ; ७३, २०) ।

णारायणी स्त्री [**नारायणी**] देवी-विशेष, गौरी, दुर्गा ; (गउड) ।

णारि° देखो **णारी**; (कप्प ; राज) । °कंता स्त्री [°कान्ता] नदी-विशेष ; (सम २७; ठा २, ३) ।

णारिएर } पुं [**नालिकेर**] १ नारियर का पेड़; २ न. नलि-
णारिएल } यर का फल ; (अभि १२७ ; पि १२८) । देखो **णालिअर** ।

णारिंग न [**नारिङ्ग**] नारंगी का फल, मीठा नीबू, कमला नीबू ; (कप्पू) ।

णारी स्त्री [**नारी**] १ स्त्री, औरत, जनाना, महिला ; (हेका २२८ ; प्रासू ६२ ; १५६) । २ नदी-विशेष ; (इक) । °कंतप्पवाय पुं [°कान्ताप्रपात] द्रह-विशेष ; (ठा २, ३) । देखो **णारि°** ।

णारुट्ट पुं [**दे**] कूआर, गर्ताकार स्थान ; (पाअ) ।

णारोट्ट पुं [**दे**] १ बिल, साँप आदि का रहने का स्थान, विवर ; २ कूआर, गर्ताकार स्थान ; (दे ४, २३) ।

णाल न [**नाल**] १ कमल-दण्ड ; (से १, २८) । २ गर्भ का आवरण ; (उप ९७४) ।

णालंदइज्ज वि [**नालन्दीय**] १ नालन्दा-संबन्धी । २ न. नालंदा के समीप में प्रतिपादित अध्ययन-विशेष, 'सूत्रकृतांग' सूत्र का सातवाँ अध्ययन ; (सूअ २, ७) ।

णालंदा स्त्री [**नालन्दा**] राजगृह नगर का एक महल्ला ; (कप्प ; सूअ २, ७) ।

णालंपिअ न [**दे**] आक्रन्दित, आक्रन्द-ध्वनि ; (दे ४,२४)।

णालंबि पुं [**दे**] कुन्तल, केश-कलाप ; (दे ४, २४) ।

णाला } स्त्री [**नाडि**] नाड़ी, नस, सिरा ; (से ९, २८ ;
णालि } कुमा) ।

णालि वि [**दे**] स्रस्त, गिरा हुआ ; (षड्) ।

णालिअ वि [**दे**] मूढ़, मूर्ख, अज्ञान ; (हे ४, ४२२) ।

णालिअर देखो **णारिएर** ; (दे २, १० ; पउम १, २०)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष ; (कप्प १, १६)।

णालिआ स्त्री [**नालिका**] १ वल्ली विशेष ; (दे २,३)। २ घटिका, घड़ी, काल नापने का एक तरह का यन्त्र ; (पात्र; विसे ६२७)। ३ अपने शरीर से चार अंगुल लम्बी लाठी ; (ओघ ३६)। ४ द्यूत-विशेष, एक तरह का जूआ ; (औप ; भग ६, ७)। °**खेड्डा** स्त्री [°**क्रीडा**] एक तरह का द्यूत-क्रीड़ा ; (औप)।

णालिएर देखो **णारिएर**; (णाया १, ६)।

णालिएरी स्त्री [**नालिकेरी**] नलियर का गाछ ; (गउड ; पि १२६)।

णाली स्त्री [**नाली**] १ वनस्पति-विशेष, एक लता ; (पण्ण १)। २ घटिका, घड़ी ; (जीव ३)।

णाली स्त्री [**नाडी**] नाड़ी, नस, सिरा ; (विपा १, १)।

णालीय वि [**नालीय**] नाल-संबन्धी ; (आचा)।

णावइ (अप) देखो **इव** ; (हे ४, ४४४ ; भवि)।

णावण न [**दे**] दान, वितरण ; (पण्ह १,३—पत्र ५३)।

णावा स्त्री [**नौ**] नौका, जहाज ; (भग ; उवा)। °**वाणिय** पुं [°**वाणिज**] समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला वणिक् ; (णाया १, ८)।

णावापूरय पुं [**दे**] चुलुक, चुल्लू ; "तिहिं णावापूरएहिं आयामइ" (बृह १)।

णाविअ पुं [**नापित**] नाई, हजाम ; (हे १, २३० ; कुमा ; षड्)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] नाइओं का अड्डा ; (श्रा १२)।

णाविअ पुं [**नाविक**] जहाज चलाने वाला, नौका हाँकने वाला ; (णाया १, ६ ; सुर १३, ३१)।

णास देखो **णस्स**। णासइ ; (षड् ; महा)। वकृ—णासंत ; (सुर१, २०२ ; २, २५)। कृ—**णासियव्व**; (सुर ७, १२६)।

णास सक [**नाशय्**] नाश करना। णासइ ; (हे ४, ३१)। णासेइ ; (महा ; उव)।

णास पुं [**नाश**] नाश, ध्वंस ; (प्रासू १५३ ; पात्र)। °**यर** वि [°**कर**] नाश-कारक ; (सुर १२, १६४)।

णास पुं [**न्यास**] १ स्थापन ; (गा ६६ ; उप ३०२)। २ धरोहर, रखने योग्य धन आदि ; (उप ७६८ टी ; धर्म २)।

णासग वि [**नाशक**] नाश करने वाला ; (सुर२, ५८)।

णासण न [**नाशन**] १ पलायन, अपक्रमण ; (धर्म २)। २ वि. नाश करने वाला ; (से ३, २७ ; गच्छ २)। स्त्री—°**णी** ; (से ३, २७)।

णासण न [**न्यासन**] स्थापन, व्यवस्थापन ; (अणु)।

णासणा स्त्री [**नाशना**] विनाश ; (विसे ६३६)।

णासव सक [**नाशय्**] नाश करना। णासवइ ; (हे ४, ३१)।

णासविय वि [**नाशित**] नष्ट किया हुआ, भगाया हुआ ; (उप ३५७ टी ; कुमा)।

णासा स्त्री [**नासा**] नाक, घ्राणेन्द्रिय ; (गा २२ ; आचा ; उवा)।

णासि वि [**नाशिन्**] विनश्वर, नष्ट होने वाला ; (विसे १६८१)।

णासिक्क न [**नासिक्य**] दक्षिण भारत का एक स्वनाम-प्रसिद्ध नगर, जो आज कल भी 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है ; (उप पृ २१३ ; १४१ टी)।

णासिगा स्त्री [**नासिका**] नाक, घ्राणेन्द्रिय ; (महा)।

णासिय वि [**नाशित**] नष्ट किया हुआ ; (महा)।

णासियव्व देखो **णास**=नश्।

णासिर वि [**नशितृ**] नष्ट होने वाला, विनश्वर ; (कुमा)।

णासीकय वि [**न्यासीकृत**] धरोहर रूप से रखा हुआ ; (श्रा १४)।

णासेक्क देखो **णासिक्क** ; (उप १४१)।

णाह पुं [**नाथ**] स्वामी, मालिक ; (कुमा ; प्रासू १२ ; ६६)।

णाहल पुं [**लाहल**] म्लेच्छ की एक जाति; (हे १, २५६ ; कुमा)।

णाहि देखो **णाभि** ; (कुमा ; कप्पू)। °**रुह** पुं [°**रुह**] ब्रह्मा, चतुर्मुख ; (अच्चु ३६)।

णाहिं (अप) अ [**नहि**] नहीं, नाहीं ; (हे ४, ४१६ ; कुमा ; भवि)।

णाहिणाम न [**दे**] वितान के बीच की रस्सी ; (दे ४, २४)।

णाहिय वि [**नास्तिक**] १ परलोक आदि को नहीं मानने वाला ; २ पुं. नास्तिक मत का प्रवर्तक । °**वाइ**, °**वादि** वि [°**वादिन्**] नास्तिक मत का अनुयायी ; (सुर ६, २० ; स १६४)। °**वाय** पुं [°**वाद**] नास्तिक दर्शन ; (गच्छ २)।

णाहिविच्छेअ } पुं [**दे**] जघन, कटी के नीचे का भाग; **णाहीए-विच्छेअ** } (हे ४,२४)।

णि अ [**नि**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय ; (उत्त १)। २ नियतपन, नियम ; (ठा १०)। ३ आधिक्य, अतिशय ; (उत्त १ ; विपा १, ६)। ४ अधो-भाग, नीचे ; (सण)। ५ नित्यपन ; ६ संशय ; ७ आदर ; ८ उपरम, विराम ; ९ अन्तर्भाव, समावेश ; १० समीपता, निकटता ; ११ क्षेप, निन्दा ; १२ बन्धन ; १३ निषेध ; १४ दान ; १५ राशि, समूह ; १६ मुक्ति, मोक्ष ; (हे २, २१७ ; २१८)। १७ अभिमुखता, संमुखता ; (सुअ १,६)। १८ अल्पता, लघुता ; (पण्ह १, ४)।

णि अ [**निर्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय ; (उत्त ६)। २ आधिक्य, अतिशय ; (उत्त १)। ३ प्रति-षेध, निषेध ; (सम १३७ ; सुपा १६८)। ४ बहिर्भाव ; ५ निर्गमन, निष्क्रमण ; (ठा ३, १; सुपा १३)।

णिअ सक [**दृश्**] देखना। णिअइ ; (षड् ; हे ४,१८१)। वकृ—**णिअंत** ; (कुमा ; महा ; सुपा २६६)। संकृ—**णिएउं** ; (भवि)।

णिअ वि [**निज**] आत्मीय, स्वकीय ; (गा १५० ; कुमा ; सुपा ११)।

णिअ वि [**नीत**] ले जाया गया ; (से ५, ६ ; सण)।

णिअ वि [**नीच**] नीच, जघन्य, निकृष्ट ; (कम्म ३, ३)।

णिअइ स्त्री [**निकृति**] माया, कपट ; (पण्ह १, २)।

णिअइ स्त्री [**नियति**] १ नियतपन, भवितव्यता, नियमितता; (सुअ १, १, ३)। २ अवश्यं-भाविता ; (ठा ४, ४ ; सुअ १, १, २)। °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] पर्वत-विशेष ; (जीव ३)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] 'सब कुछ भवितव्यता के अनुसार ही हुआ करता है, प्रयत्न वगैरः अकिञ्चित्कर है' ऐसा मानने वाला; (राज)।

णिअंटिय वि [**नियन्त्रित**] १ बँधा हुआ, जकड़ा हुआ। २ न आश्रय-कर्तव्य नियम-विशेष ; (ठा १०)।

णिअंठ वि [**निर्ग्रन्थ**] १ धन रहित। २ पुं. जैन मुनि, संयत, यति ; (भग ; ठा ३, १ ; ५, ३)। ३ जिन भग-वान् ; (सुअ १, ६)।

णिअंठि° देखो **णिग्गंथी**। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] १ एक विद्याधर-पुत्र, जिसका दूसरा नाम सत्यकि था ; (ठा १०)। २ एक जैन मुनि, जो भगवान् महावीर का शिष्य था ; (भग ५, ८)।

णिअंठिय वि [**नैर्ग्रन्थिक**] १ निर्ग्रन्थ-संबन्धी ; २ जिन देव-संबन्धी। स्त्री—°**या**; "एसा आणा णियंठिया" (सुअ१,६)।

णिअंठी देखो **णिग्गंथी** ; (ठा ६)।

णिअंतिय वि [**नियन्त्रित**] संयमित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ ; (महा ; सण)।

णिअंधण न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ४, २८)।

णिअंब पुं [**नितम्ब**] १ पर्वत का एक भाग, पर्वत का वस-ति-स्थान; (ओघ ४०)। २ स्त्री की कमर का पीछला भाग, कमर के नीचे का भाग ; (कुमा ; गउड)। ३ मूल भाग ; (से ८, १०१)। ४ कटी-प्रदेश, कमर ; (जं ४)।

णिअंबिणी स्त्री [**नितम्बिनी**] १ सुन्दर नितम्ब वाली स्त्री ; २ स्त्री, महिला ; (कप्पू ; पाअ ; सुपा ५३८)।

णिअंस सक [**नि+वस्**] पहनना। णियंसइ ; (महा)। संकृ—**णियंसित्ता** ; (जीव ३ ; पि ७४)। प्रयो—णियंसावेइ ; (पि ७४)।

णिअंसण न [**दे. निवसन**] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ४, ३८; गा ३५१ ; पाअ ; गउड ; पण्ह १, ३ ; सुपा १५१ ; हेका ३१)।

णिअक्क सक [**दृश्**] देखना। णिअक्कइ ; (प्राप्र)।

णिअक्कल वि [**दे**] वर्तुल, गोलाकार पदार्थ ; (दे ४, ३६ ; पाअ)।

णिअग वि [**निजक**] आत्मीय, स्वकीय ; (उवा)।

णिअच्छ सक [**दृश्**] देखना। णिअच्छइ ; (हे ४,१८१)। वकृ—**णिअच्छंत, णिअच्छमाण** ; (गा २३८ ; गउड ; गा ५००)। संकृ—**णिअच्छिऊण, णिअच्छिअ** ; (सुर १, १५७ ; कुमा)। कृ—**णिअच्छियव्व** ; (गउड)।

णिअच्छ सक [**नि+यम्**] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना। २ अवश्य प्राप्त करना। ३ जकड़ना। संकृ—**णिअ-च्छइत्ता** ; (सूअ १, १, १ ; २)।

णिअच्छिअ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ ; (पाअ)।

णिअट्ट अक [**नि+वृत्**] निवृत्त होना, पीछे हटना, रुकना। णियट्टइ ; (सण)। वकृ—**णियट्टमाण** ; (आचा)।

णिअट्ट सक [**निर्+वृत्**] बनाना, रचना, निर्माण करना ; (औप)।

णिअट्ट सक [**नि+अर्द्**] अनुसरण करना; (औप)।

णिअट्ट पुं [**निवर्त**] आवर्तन, निवृत्ति ; "अणियट्टगामीणं" (आचा)।

णिअट्ट वि [**निवृत्त**] व्यावृत्त, पीछे हटा हुआ ; (धर्म १ १

णिअट्टि स्त्री [**निवृत्ति**] १ निवर्तन, पीछे हटना ; (आचू १)। २ अध्यवसाय-विशेष ; (सम २६)। ३ मोह-रहित अवस्था ; (सूअ १, ११)। °**बायर** न [°**बादर**] १ गुण-स्थानक विशेष ; (सम २६)। २ पुं. गुण-स्थानक विशेष में वर्तमान जीव ; (आव ४)।

णिअट्टिय वि [**निवर्त्तित**] व्यावर्तित, पीछे हटाया हुआ ; (औप)।

णिअट्टिय वि [**निर्वर्तित**] रचित, निर्मित, बनाया हुआ; (औप)।

णिअट्टिय वि [**न्यर्दित**] अनुगत, अनुसृत ; (औप)।

णिअड न [**निकट**] १ निकट, समीप, पास ; (गा ४०२; पाअ ; सुपा ३५२)। २ वि. पास का, समीप का ; (पाअ)।

णिअडि स्त्री [**दे. निकृति**] माया, कपट ; (दे ४, २६ ; पगह १, २ ; सम ५१ ; भग १२, ५ ; सूअ २, २ ; णाया १, १८ ; आव ५)।

णिअडिअ वि [**निगडित**] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ ; (गा ५५६ ; उप पृ ५२ ; सुपा ६३)।

णिअडिअ वि [**निकटिक**] समीप-वर्ती, पार्श्व में स्थित ; (कप्पू)।

णिअडिल्ल वि [**निकृतिमत्**] कपटी, मायावी ; (ठा ४, ४ ; औप ; भग ८, ६)।

णिअत्त देखो **णिअट्ट**=नि+वृत्। णिअत्तइ; (महा ; पि २८६)। वकृ—**णिअत्तंत, णिअत्तमाण** ; (गा ७६ ; ५३७ ; से ५, ६७ ; नाट)। प्रयो—णिअत्तावेहि ; (पि २८६)।

णिअत्त देखो **णिअट्ट**=निवृत्त ; (पउम २२, ६२ ; गा ६५८ ; सुपा ३१७)।

णिअत्तण न [**निवर्तन**] १ भूमि का एक नाप ; (उवा)। २ निवृत्ति, व्यावर्तन ; (आव ४)।

णिअत्तणिअ वि [**निवर्तनिक**] निवर्तन परिमाण वाला ; (भग ३, १)।

णिअत्ति देखो **णिअट्टि** ; (उत्त ३१)।

णिअत्थ वि [**दे**] १ परिहित, पहना हुआ ; (दे ४, ३३ ; भवम ; भवि)। २ परिधापित, जिसको वस्त्र आदि पहनाया गया हो वह ; "णियत्था तो गणियाए" (विसे २६०७)।

णिअद सक [**नि+गद**] कहना, बोलना। णिअदि (शौ) ; (नाट—चैत ४५)। वकृ—**णिअदंत**; (नाट)।

णिअद्दिय देखो **णिअट्टिय**=न्यर्दित; (राज)।

णिअद्धण न [**दे**] परिधान, पहनने का वस्त्र ; (षड्)।

णिअम सक [**नि+यमय्**] नियन्त्रित करना, नियम में रखना। संकृ—**णिअमेऊण** ; (पि ५८६)।

णिअम पुं [**नियम**] १ निश्चय; (जी १४)। २ ली हुई प्रतिज्ञा, व्रत ; "परिवाविज्जइ णिअमा णिअमसमत्ती तुमे मज्झ" (उप ७२८ टी)। ३ प्रायोपवेशन, संकल्प-पूर्वक अनशन-मरण के लिए उद्यम ; (से ५, २)। °**सा** अ [°**सात्**] नियम से ; (औप)। °**सो** अ [°**शस्**] निश्चय से; (श्रा १४)।

णिअमण न [**नियमन**] नियन्त्रण, संयमन; (विसे ११५८)।

णिअमिय वि [**नियमित**] नियम में रखा हुआ, नियन्त्रित ; (से ४, ३७)।

णिअय न [**दे**] १रत, मैथुन; २ शयनीय, शय्या; ३घट, घड़ा, कलश ; (दे ४, ४८)। ४ वि. शाश्वत, नित्य ; (दे ४, ४८; पाअ ; सूअ १, ८ ; राय)।

णिअय वि [**निजक**] निजका, स्वकीय, आत्मीय; (पाअ)।

णिअय वि [**नियत**] नियम-बद्ध, नियमानुसारी ; (उवा)।

णिअया स्त्री [**नियता**] जम्बू-वृक्ष विशेष,जिससे यह जम्बू-द्वीप कहलाता है ; (इक)।

णिअर पुं [**निकर**] राशि, समूह, जत्था; (गा ५६६ ; पाअ; गउड)।

णिअरण न [**दे**] दगड, शिक्षा ; (सु ४५६)।

णिअरिअ वि [**दे**] राशि रूप से स्थित ; (दे ४, ३८)।

णिअल न [**दे**] नूपुर, स्त्री का पादाभरण-विशेष ; (दे ४, २८)।

णिअल पुं [**निगड**] बेड़ी, साँकल ; (से ३, ८; विपा १, ६)। देखो **णिगल**।

णिअलइअ, **णिअलाविअ**, **णिअलिअ** } वि. [**निगडित**] साँकल से नियन्त्रित, जकड़ा हुआ; (गा ४५४ ; ५०० ; पाअ; गउड ; से ५, ४८)।

णिअल्ल पुं [**दे. नियल्ल**] महाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)।

णिअल्ल वि [**निज**] स्वकीय, आत्मीय ; (महा)।

णिअस देखो **णिअंस**। नियसइ ; (सुपा ६२)।

णिअसण देखो **णिअंसण**; (हेका ५६ ; काप्र २०१)।

णिअसिय वि [**निवसित**] परिहित, पहना हुआ ; (सुपा १५३)।

णिअह देखो **णिवह** ; (नाट—मालती १३८)।

णिआ° देखो **णिअय**=(दे)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] नित्य-वादी, पदार्थ को नित्य मानने वाला ; (ठा ८)।

णिआइय देखो **णिकाइय** ; (सूअ १, ६)।

णिआग पुं [**नियाग**] १ नियत योग ; २ निश्चित पूजा ; ३ मोक्ष, मुक्ति; (आचा ; सूअ १, १, २)। ४ न. आमन्त्रण दे कर जो भिक्षा दी जाय वह; (दस ३)।

णिआग देखो **णाय**=न्याय ; (आचा)।

णिआण न [**निदान**] १ कारण, हेतु; "अहो अप्पं नियाणं महंतो विवाओ" (स ३६० ; पाअ ; णाया १, १३)। २ किसी व्रतानुष्ठान को फल-प्राप्ति का अभिलाष, संकल्प-विशेष; (श्रा ३३ ; ठा १०)। ३ मूल कारण ; (आचा)। °**कड** वि [°**कृत**] जिसने अपने शुभानुष्ठान के फल का अभिलाष किया हो वह ; (सम १५३)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] वही अनन्तर उक्त अर्थ; (ठा ६)।

णिआण न [**निपान**] कूप या तलाव के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, आहाव, हौदी ; "पइभवणं पइहट्टं पइमग्गं पइसहं पइनियाणं" (उप ७२८ टी)।

णिआणिआ स्त्री [**दे**] खराब तृणों का उन्मूलन ; (दे ४, ३५)।

णिआम देखो **णिअम**=नियमय्। संकृ—उवसग्गा **णियामित्ता** आमोक्खाए परिव्वए" (सूअ १, ३, ३)।

णिआमग } वि [**नियामक**] नियम-कर्ता, नियन्ता ; (सुपा
णिआमय } ३१६)। २ निश्चायक, विनिगमक ; (विसे ३४७० ; स १७०)।

णिआमिअ वि [**नियमित**] नियम में रखा हुआ, नियन्त्रित ; (स २६३)।

णिआर सक [**काणेक्षित कृ**] कानी नजर से देखना। णिआरइ ; (हे ४, ६६)।

णिआरिअ वि [**काणेक्षितीकृत**] १ कानी नजर से देखा हुआ, आधी नजर से देखा हुआ। २ न. आधी नजर से निरीक्षण ; (कुमा)।

णिआह पुं [**निदाघ**] १ ग्रीष्म काल, ग्रीष्म ऋतु ; २ उष्ण, घम, गरमी ; (गउड)।

णिइग } वि [**दे. नित्य , नैत्यिक**] नित्य, शाश्वत, अविनश्वर;
णिइय } (पराह २, ४—पत्र १४१ ; सूअ १, १, ४ ; २, ४ ; णंदि ; आचा ; सम १३२)।

णिउअ वि [**निवृत**] परिवेष्टित, परिक्षिप्त ; (हे १,१३१)।

णिउअ वि [**नियुत**] सुसंगत, सुश्लिष्ट ; (णाया १, १८)।

णिउंचिअ वि [**निकुञ्चित**] संकुचित, सकुचा हुआ, थोड़ा मुड़ा हुआ ; (गा ५६३ ; से ६, १६ ; पाअ ; स ३३५)।

णिउंज सक [**नि+युज्**] जोड़ना, संयुक्त करना, किसी कार्य में लगाना। कर्म—णिउंजीअसि ; (पि ५४६)। वकृ—**णिउंजमाण** ; (सूअ १, १०)। संकृ—**णिउंजिऊण, निउंजिय** ; (स १०४ ; महा)। कृ—**णिउंजियव्व, णिउत्तव्व** ; (उप पृ १० ; कुमा)।

णिउंज पुं [**निकुञ्ज**] १ गहन, लता आदि से निबिड़ स्थान; (कुमा ; गा २१७)। २ गह्वर ; (दे ६, १२३)।

णिउंभ पुं [**निकुम्भ**] कुम्भकर्ण का एक पुत्र ; (से १२,६२)।

णिउंभिला स्त्री [**निकुम्भिला**] यज्ञ-स्थान ; (से १५,३६)।

णिउक्क वि [**दे**] तूष्णीक, मौन रहने वाला ; (दे ४, २७ ; पाअ)।

णिउक्कण पुं [**दे**] १ वायस, काक, कौआ ; २ वि. मूक, वाक्-शक्ति से हीन ; (दे ४, ५१)।

णिउज्जम वि [**निरुद्यम**] उद्यम-रहित, आलसी ; (सुअ २, २)।

णिउड्ड अक [**मस्ज् , नि+ब्रुड्**] मज्जन करना, डूबना। णिउड्डइ ; (हे १,१०१)। वकृ—**णिउड्डमाण** ; (कुमा)।

णिउड्ड वि [**मग्न , निब्रुडित**] डूबा हुआ, निमग्न ; (से १०, १५ ; १५, ७४)।

णिउण वि [**निपुण**] १ दक्ष, चतुर, कुशल ; (पाअ ; स्वप्न ५३ ; प्रासू ११ ; जी ६)। २ सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके ; (जो २ ; राय)। ३ क्रिवि. दक्षता से, चतुराई से, कुशलता से ; (जीव ३)।

णिउण वि [**निगुण**] १ नियत गुण वाला ; २ निश्चित गुण से युक्त ; (राज)। ३ सुनिश्चित, विनिर्णीत ; (पंचा४)।

णिउणिय वि [**नैपुणिक**] निपुण, दक्ष, चतुर ; (ठा ६)।

णिउत्त वि [**नियुक्त**] १ व्यापारित, कार्य में लगाया हुआ ; (पंचा ८)। २ निबद्ध ; (विसे ३८८)।

णिउत्त वि [**निर्वृत्त**] निष्पन्न, सिद्ध ; (उत्तर १०४)।

णिउत्तव्व देखो **णिउंज**=नि+युज्।

णिउद्ध न [**नियुद्ध**] बाहु-युद्ध, कुश्ती ; (उप २६२)।

णिउर पुं [**निकुर**] वृक्ष-विशेष ; (णाया १,६—पत्र १६०)।

णिउर न [**नूपुर**] स्त्री के पाँव का एक आभरण ; (हे १, १२३ ; कुमा)।

णिउर वि [**दे**] १ छिन्न, काटा हुआ; २ जीर्ण, पुराना; (षड्)।

णिउरंब न [**निकुरम्ब**] समूह, जत्था; (पात्र; सुर ३, ६१; गा ४६५; सुपा ४५४)।

णिउरुंब न [**निकुरुम्ब**] समूह, जत्था; (स ४३७; गा ४६५ अ; पि १७७)।

णिउल पुं [**दे**] गाँठ, गठरी; "एवं बहु भणिऊणं समप्पिओ दविणनिउलोत्ति" (महा)।

णिऊढ वि [**निगूढ**] गुप्त, प्रच्छन्न; (अच्चु ४५)।

णिएल्ल देखो **णिअल्ल**=निज; (आवम)।

णिओअ सक [**नि+योजय्**] किसी कार्य में लगाना। णिओएदि (शौ); (नाट—विक्र ५)।

णिओअ देखो **णिओग**; (से ८, २६; अभि २७; सण; से ३४८)। १० आज्ञा, आदेश; (स २१४)।

णिओइअ वि [**नियोजित**] नियुक्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ; (स ४४२; अभि ६६)।

णिओग पुं [**नियोग**] १ नियम, आवश्यक कर्तव्य; (विसे १८७६; पंचव ४)। २ सम्बन्ध, नियोजन; (बृह १)। ३ अनुयोग, सूत्र की व्याख्या; (विसे)। ४ व्यापार, कार्य; (वव २)। ५ अधिकार-प्रेरण; (महा)। ६ राजा, नृप, आज्ञा-विधाता; (जीत)। ७ गाँव, ग्राम; ८ क्षेत्र, भूमि; (बृह १)। ९ संयम, त्याग; (सूअ १,१६)। देखो **णिओअ**। °**पुर** न [°**पुर**] १ राजधानी; २ देश, राष्ट्र; ३ राज्य; (जीत)।

णिओगि वि [**नियोगिन्**] नियोग-विशिष्ट, नियुक्त, आज्ञा-प्राप्त, अधिकारी; (सुपा ३७१)।

णिओजिय देखो **णिओइअ**; (आवम)।

णिंत } देखो **णी**=गम्।
णिंतूण }

√**णिंद** सक [**निन्द्**] निन्दा करना, जुगुप्सा करना। णिंदामि; (पडि)। वकृ—**णिंदंत**; (श्रा ३६)। कवकृ—**णिंदिज्जंत**; (सुपा ३६३)। संकृ—**णिंदित्ता**, **णिंदिअ**; (आचा २, ३, १; श्रा ४०)। हेकृ—**णिंदिउं**, **णिंदित्तए**; (महा; ठा २, १)। कृ—**णिंदियव्व**, **णिंदणिज्ज**; (पण्ह २, १; उप १०३१ टी; णाया १, ३)।

णिंद वि [**निन्द्य**] निन्दा-योग्य, निन्दनीय; (आवू १)।

णिंद (अप) स्त्री [**निद्रा**] निंद, निद्रा; (भवि)।

णिंदण न [**निन्दन**] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा; (उप ४४६; ७२८ टी)।

णिंदणा स्त्री [**निन्दना**] निन्दा, जुगुप्सा; (औप; ओघ ७६१; पण्ह २, १)।

णिंदय वि [**निन्दक**] निन्दा करने वाला; (पउम ६०, २१)।

णिंदा स्त्री [**निन्दा**] घृणा, जुगुप्सा; (आव ४)।

णिंदिअ वि [**निन्दित**] जिसकी निन्दा की गई हो वह; (गा २६७; प्रासू १५८)।

णिंदिणी स्त्री [**दे**] कुत्सित तृणों का उन्मूलन; (दे ४, ३५)।

णिंदु स्त्री [**निन्दु**] मृत-वत्सा स्त्री, जिसके बच्चे जीवित न रहते हों ऐसी स्त्री; (अंत ७; श्रा १६)।

णिंब पुं [**निम्ब**] नीम का पेड़; (हे १, २३०; प्रासू २६)।

णिंबोलिया स्त्री [**निम्बगुलिका**] नीम का फल; (णाया १, १६)।

णिकर पुं [**निकर**] समूह, जत्था, राशि; (कप्पू)।

णिकरण न [**निकरण**] १ निश्चय, निर्णय; २ निकार, दुःख-उत्पादन; (आचा)।

णिकरिय वि [**निकरित**] सारीकृत, सर्वथा संशोधित; (औप)।

णिकाइय वि [**निकाचित**] १ व्यवस्थापित, नियमित; (णंदि)। २ अत्यन्त निविड रूप से बँधा हुआ (कर्म); (उत्त; सुपा ५७६)। ३ न. कर्मों का निविड रूप से बन्धन; (ठा ४, २)।

णिकाम न [**निकाम**] १ निश्चय, निर्णय; २ अत्यन्त, अतिशय; (सूअ १, १०)।

णिकाय सक [**नि+काचय्**] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना। २ निबिड रूपसे बाँधना। ३ निमन्त्रण देना। णिकाइंति; (भग)। भूका—णिकाइंसु; (भग; सुअ २,१)। भवि—णिकाइस्संति; (भग)। संकृ—**णिकाय**; (आचा)।

णिकाय पुं [**निकाय**] १ समूह, जत्था, यूथ, वर्ग, राशि; (ओघ ४०७; विसे ६००; दं २८)। २ मोक्ष, मुक्ति; (आचा)। ३ आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष; (अणु)। °**काय** पुं [°**काय**] जीव-राशि, छओं प्रकार के जीवों का समूह; (दस ४)।

णिआ° देखो **णिअय**=(दे)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] नित्य-वादी, पदार्थ को नित्य मानने वाला; (ठा ८)।
णिआइय देखो **णिकाइय**; (सूअ १, ६)।
णिआग पुं [**नियाग**] १ नियत योग; २ निश्चित पूजा; ३ मोक्ष, मुक्ति; (आचा; सूअ १, १, २)। ४ न. आमन्त्रण दे कर जो भिक्षा दी जाय वह; (दस ३)।
णिआग देखो **णाय**=न्याय; (आचा)।
णिआण न [**निदान**] १ कारण, हेतु; "अहो अप्पं नियाणं महंतो विवाओ" (स ३६०; पाअ; णाया १, १३)। २ किसी व्रतानुष्ठान को फल-प्राप्ति का अभिलाष, संकल्प-विशेष; (श्रा ३३; ठा १०)। ३ मूल कारण; (आचा)। °**कड** वि [°**कृत**] जिसने अपने शुभानुष्ठान के फल का अभिलाष किया हो वह; (सम १५३)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] वही अनन्तर उक्त अर्थ; (ठा ६)।
णिआण न [**निपान**] कूप या तलाव के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, आहाव, हौदी; "पइभवणं पइहट्टं पइमग्गं पइसहं पइनियाणं" (उप ७२८ टी)।
णिआणिआ स्त्री [**दे**] खराब तृणों का उन्मूलन; (दे ४, ३५)।
णिआम देखो **णिअम**=नियमय्। संकृ—उवसग्गा **णियामित्ता** आमोक्खाए परिव्वए" (सूअ १, ३, ३)।
णिआमग, **णिआमय** वि [**नियामक**] नियम-कर्ता, नियन्ता; (सुपा ३१६)। २ निश्चायक, विनिगमक; (विसे ३४७०; स १७०)।
णिआमिअ वि [**नियमित**] नियम में रखा हुआ, नियन्त्रित; (स २६३)।
णिआर सक [**काणेक्षित कृ**] कानी नजर से देखना। णिआरइ; (हे ४, ६६)।
णिआरिअ वि [**काणेक्षितकृत**] १ कानी नजर से देखा हुआ, आधी नजर से देखा हुआ। २ न. आधी नजर से निरीक्षण; (कुमा)।
णिआह पुं [**निदाघ**] १ ग्रीष्म काल, ग्रीष्म ऋतु; २ उष्ण, घर्म, गरमी; (गउड)।
णिइग, **णिइय** वि [**दे. नित्य, नैत्यिक**] नित्य, शाश्वत, अविनश्वर; (पण्ह २, ४—पत्र १४१; सूअ १, १, ४; २, ४; णंदि; आचा; सम १३२)।

णिउअ वि [**निवृत**] परिवेष्टित, परिक्षिप्त; (हे १,१३१)।
णिउअ वि [**नियुत**] सुसंगत, सुश्लिष्ट; (णाया १, १८)।
णिउंचिअ वि [**निकुञ्चित**] संकुचित, सकुचा हुआ, थोड़ा मुड़ा हुआ; (गा ५६३; से ६, १६; पाअ; स ३३५)।
णिउंज सक [**नि+युज्**] जोड़ना, संयुक्त करना, किसी कार्य में लगाना। कर्म—णिउंजोअसि; (पि ५४६)। वकृ—**णिउंजमाण**; (सूअ १, १०)। संकृ—**निउंजिऊण, निउंजिय**; (स १०४; महा)। कृ—**णिउंजियव्व, णिउत्तव्व**; (उप पृ १०; कुमा)।
णिउंज पुं [**निकुञ्ज**] १ गहन, लता आदि से निबिड़ स्थान; (कुमा; गा २१७)। २ गह्वर; (दे ६, १२३)।
णिउंभ पुं [**निकुम्भ**] कुम्भकर्ण का एक पुत्र; (से १२,६२)।
णिउंभिला स्त्री [**निकुम्भिला**] यज्ञ-स्थान; (से १५,३६)।
णिउक्क वि [**दे**] तूष्णीक, मौन रहने वाला; (दे ४, २७; पाअ)।
णिउक्कण पुं [**दे**] १ वायस, काक, कौआ; २ वि. मूक, वाक्-शक्ति से हीन; (दे ४, ५१)।
णिउज्जम वि [**निरुद्यम**] उद्यम-रहित, आलसी; (सूअ २, २)।
णिउड्ड अक [**मस्ज्, नि+ब्रुड्**] मज्जन करना, डूबना। णिउड्डइ; (हे १,१०१)। वकृ—**णिउड्डमाण**; (कुमा)।
णिउड्ड वि [**मग्न, निब्रुडित**] डूबा हुआ, निमग्न; (से १०, १५; १५, ७४)।
णिउण वि [**निपुण**] १ दक्ष, चतुर, कुशल; (पाअ; स्वप्न ५३; प्रासू ११; जी ६)। २ सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके; (जो २; राय)। ३ क्रिवि. दक्षता से, चतुराई से, कुशलता से; (जीव ३)।
णिउण वि [**निगुण**] १ नियत गुण वाला; २ निश्चित गुण से युक्त; (राज)। ३ सुनिश्चित, विनिर्णीत; (पंचा४)।
णिउणिय वि [**नैपुणिक**] निपुण, दक्ष, चतुर; (ठा ६)।
णिउत्त वि [**नियुक्त**] १ व्यापारित, कार्य में लगाया हुआ; (पंचा ८)। २ निबद्ध; (विसे ३८८८)।
णिउत्त वि [**निर्वृत्त**] निष्पन्न, सिद्ध; (उत्तर १०४)।
णिउत्तव्व देखो **णिउंज**=नि+युज्।
णिउद्ध न [**नियुद्ध**] बाहु-युद्ध, कुश्ती; (उप २६२)।
णिउर पुं [**निकुर**] वृक्ष-विशेष; (णाया १,६—पत्र १६०)।
णिउर न [**नूपुर**] स्त्री के पाँव का एक आभरण; (हे १, १२३; कुमा)।

णिउर वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ ; २ जीर्ण, पुराना; (षड्) ।

णिउरंब न [**निकुरम्ब**] समूह, जत्था ; (पाअ ; सुर ३, ६१ ; गा ४६५ ; सुपा ४५४) ।

णिउरुंब न [**निकुरुम्ब**] समूह, जत्था ; (स ४३७ ; गा ४६५ अ ; पि १७७) ।

णिउल पुं [दे] गाँठ, गठरी ; "एवं बहु भणिऊणं समप्पिओ दविणनिउलोत्ति" (महा) ।

णिऊढ वि [**निगूढ**] गुप्त, प्रच्छन्न ; (अच्चु ४५) ।

णिएल्ल देखो **णिअल्ल**=निज ; (आवम) ।

णिओअ सक [**नि+योजय्**] किसी कार्य में लगाना । णिओएदि (शौ) ; (नाट—विक्र ५) ।

णिओअ देखो **णिओग** ; (से ८, २६ ; अभि २७ ; सण; से ३४८) । १० आज्ञा, आदेश ; (स २१४) ।

णिओइअ वि [**नियोजित**] नियुक्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ ; (स ४४२ ; अभि ६६) ।

णिओग पुं [**नियोग**] १ नियम, आवश्यक कर्तव्य ; (विसे १८७६ ; पंचव ४) । २ सम्बन्ध, नियोजन ; (बृह १) । ३ अनुयोग, सूत्र की व्याख्या; (विसे) । ४ व्यापार, कार्य ; (वव २) । ५ अधिकार-प्रेरण ; (महा) । ६ राजा, नृप, आज्ञा-विधाता ; (जीत) । ७ गाँव, ग्राम ; ८ क्षेत्र, भूमि ; (बृह १) । ९ संयम, त्याग ; (सूअ १,१६) । देखो **णिओअ** । °**पुर** न [°**पुर**] १ राजधानी ; २ देश, राष्ट्र ; ३ राज्य; (जीत) ।

णिओगि वि [**नियोगिन्**] नियोग-विशिष्ट, नियुक्त, आज्ञा-प्राप्त, अधिकारी ; (सुपा ३७१) ।

णिओजिय देखो **णिओइअ** ; (आवम) ।

णिंत } देखो **णी**=गम् ।
णिंतूण }

णिंद सक [**निन्द्**] निन्दा करना, जुगुप्सा करना । णिंदामि; (पडि) । वक्र—**णिंदंत** ; (श्रा ३६) । कवकृ—**णिंदिज्जंत** ; (सुपा ३६३) । संकृ—**णिंदित्ता, णिंदिअ**; (आचा २, ३, १ ; श्रा ४०) । हेकृ—**णिंदिउं, णिंदित्तए** ; (महा ; ठा २, १) । कृ—**णिंदियव्व, णिंदणिज्ज** ; (पण्ह २, १ ; उप १०३१ टी ; णाया १, ३) ।

णिंद वि [**निन्द्य**] निन्दा-योग्य, निन्दनीय ; (आवू १) ।

णिंद (अप) स्त्री [**नाद्र**] निंद, निद्रा ; (भवि) ।

णिंदण न [**निन्दन**] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा; (उप ४४६; ७२८ टी) ।

णिंदणा स्त्री [**निन्दना**] निन्दा, जुगुप्सा ; (औप ; ओघ ७६१ ; पण्ह २, १) ।

णिंदय वि [**निन्दक**] निन्दा करने वाला ; (पउम ६०, २१) ।

णिंदा स्त्री [**निन्दा**] घृणा, जुगुप्सा ; (आव ४) ।

णिंदिअ वि [**निन्दित**] जिसकी निन्दा की गई हो वह ; (गा २६७ ; प्रासू १५८) ।

णिंदिणी स्त्री [दे] कुत्सित तृणों का उन्मूलन ; (दे ४, ३५) ।

णिंदु स्त्री [**निन्दु**] मृत-वत्सा स्त्री, जिसके बच्चे जीवित न रहते हों ऐसी स्त्री ; (अंत ७ ; श्रा १६) ।

णिंब पुं [**निम्ब**] नीम का पेड़ ; (हे १, २३० ; प्रासू २६) ।

णिंबोलिया स्त्री [**निम्बगुलिका**] नीम का फल ; (णाया १, १६) ।

णिकर पुं [**निकर**] समूह, जत्था, राशि ; (कप्पू) ।

णिकरण न [**निकरण**] १ निश्चय, निर्णय ; २ निकार, दुःख-उत्पादन ; (आचा) ।

णिकरिय वि [**निकरित**] सारीकृत, सर्वथा संशोधित ; (औप) ।

णिकाइय वि [**निकाचित**] १ व्यवस्थापित, नियमित ; (ठांदि) । २ अत्यन्त निविड़ रूप से बँधा हुआ (कर्म) ; (उव ; सुपा ५७६) । ३ न. कर्मों का निविड़ रूप से बन्धन; (ठा ४, २) ।

णिकाम न [**निकाम**] १ निश्चय, निर्णय ; २ अत्यन्त, अतिशय ; (सूअ १, १०) ।

णिकाय सक [**नि+काचय्**] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना । २ निविड़ रूप से बाँधना। ३ निमन्त्रण देना । णिकाइंति ; (भग) । भूका—णिकाइंसु ; (भग ; सुअ २,१)। भवि—णिकाइस्संति ; (भग) । संकृ—**णिकाय** ; (आचा) ।

णिकाय पुं [**निकाय**] १ समूह, जत्था, यूथ, वर्ग, राशि ; (ओघ ४०७ ; विसे ६०० ; दं २८) । २ मोक्ष, मुक्ति ; (आचा) । ३ आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष ; (अणु) । °**काय** पुं [°**काय**] जीव-राशि, छओं प्रकार के जीवों का समूह ; (दस ४) ।

णिकाय पुं [**निकाच**] निमन्त्रण, न्यौता ; (सम २१) ।
णिकायणा स्त्री [**निकाचना**] १ करण-विशेष, जिससे कर्मों का निविड़ बन्ध होता है ; (विसे २५१५ टी ; भग)। २ निविड़ बन्धन ; ३ दापन, दिलाना ; (राज) ।
णिकिंत सक [**नि+कृत्**] काटना, छेदना । णिकिंतइ ; (पुष्फ ३३७ ; उव), णिकिंतए ; (उव ; काल) ।
णिकिंतय वि [**निकर्तक**] काट डालने वाला; (काल) ।
णिकुट्ट सक [**नि+कुट्ट्**] १ कूटना । २ काटना । णिकुट्टेइ, णिकुट्टेमि ; (उवा) ।
णिकूणिय वि [**निकूणित**] टेढ़ा किया हुआ, वक्र किया हुआ; (दे १, ८८) ।
णिकेय पुं [**निकेत**] गृह, आश्रय, निवास-स्थान ; (गाया १, १६ ; उत्त २ ; आचा) ।
णिकेयण न [**निकेतन**] ऊपर देखो ; (सुर १३, २१ ; महा) ।
णिकोय पुं [**निकोच**] संकोच, सिमट ; (दे ७, १५) ।
णिक्क वि [**दे**] सुनिर्मल, सर्वथा मल-रहित; (णाया १,१)।
णिक्कइअव वि [**निष्कैतव**] १ कपट-रहित, निर्माय ; (कुमा) । २ कपट का अभाव, निष्कपटपन ; (गा ८५) ।
णिक्कंकड वि [**निष्कङ्कट**] १ आवरण-रहित ; (औप) । २ उपघात-रहित ; (सम १३७) ।
णिक्कंखिय न [**निष्काङ्क्षित**] १ आकाङ्क्षा का अभाव ; २ दर्शनान्तर की अनिच्छा ; (उत्त २ ; पडि) ।
णिक्कंखिय वि [**निष्काङ्क्षित, °क**] १ आकाङ्क्षा-रहित; २ दर्शनान्तर के पक्षपात से रहित ; (सूत्र २, ७ ; औप ; राय) ।
णिक्कंचण वि [**निष्काञ्चन**] सुवर्ण-रहित, धन-रहित ; निःस्व ; (सुपा १६८) ।
णिक्कंटय वि [**निष्कण्टक**] कण्टक-रहित, शत्रु-रहित ; (सुपा २०८) ।
णिक्कंड वि [**निष्काण्ड**] १ काण्ड-रहित, स्कन्ध-वर्जित; २ अवसर-रहित ; (गा ४६८) ।
णिक्कंत वि [**निष्क्रान्त**] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ ; (से १, ५६) । २ जिसने दीक्षा ली हो वह, गृहस्थाश्रम से निर्गत ; (आचा) ।
णिक्कंतार वि [**निष्कान्तार**] अरण्य से निर्गत ; (ठा ३, १) ।
णिक्कंतु वि [**निष्क्रमितृ**] बाहर निकालने वाला ; (ठा ३, १) ।
णिक्कंप वि [**निष्कम्प**] कम्प-रहित, स्थिर; (हे २, ४ ; अभि २०१) ।
णिक्कज्ज वि [**दे**] अनवस्थित, चंचल; (दे ४, ३३ ; पात्र) ।
णिक्कट्ठ वि [**निष्कृष्ट**] कृश, दुर्बल, क्षीण ; (ठा ४, ४—पत्र २७१) ।
णिक्कड वि [**दे**] १ कठिन; (दे ४, २६) । २ पुं. निश्चय, निर्णय ; (षड्) ।
णिक्कड्डिय वि [**निष्कृष्ट, निष्कर्षित**] बाहर खींचा हुआ, बाहर निकाला हुआ ; (स ६०; ३१५) ।
णिक्कण वि [**निष्कण**] धान्य-कण-रहित, अत्यन्त गरीब ; (विपा १, ३) ।
णिक्कम अक [**निर्+क्रम्**] १ बाहर निकलना । २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना । णिक्कमामि ; (पि ४८१) । वक्र—**णिक्कमंत** ; (हेका ३३२ ; मुद्रा ८२) ।
णिक्कम पुं [**निष्क्रम**] नीचे देखो ; (नाट—मुद्रा २२४) ।
णिक्कमण न [**निष्क्रमण**] १ निर्गमन, बाहर निकलना ; (मुद्रा २२४) । २ दीक्षा, संन्यास ; (आचा) ।
णिक्कम्म वि [**निष्कर्मन्**] १ कार्य-रहित, निकम्मा ; (गा १६६) । २ मोक्ष, मुक्ति; ३ संवर, कर्मों का निरोध ; (आचा) ।
णिक्कय पुं [**निष्क्रय**] १ बदला, उऋणपन ; (सुपा ३४१ ; पउम ७ ; १२६) । २ भृति, वेतन, मजूरी ; (हे २, ४) ।
णिक्करुण वि [**निष्करुण**] करुणा-रहित, दया वर्जित ; (नाट—मालती ३२) ।
णिक्कल वि [**निष्कल**] कला-रहित ; (सुपा १) ।
णिक्कल वि [**दे**] पोलापन से रहित; (सुपा १ ; भग१५) ।
णिक्कलंक वि [**निष्कलङ्क**] कलङ्क-रहित, बेदाग ; (स ४१८ ; महा ; सुपा २५३) ।
णिक्कलुण देखा **णिक्करुण** ; (पराह १, १) ।
णिक्कलुस वि [**निष्कलुष**] १ निर्दोष, निर्मल ; २ निरुपद्रव, उपद्रव-रहित ; (से १२, ३४) ।
णिक्कवड वि [**निष्कपट**] कपट-रहित; (उप पृ १६०) ।
णिक्कवय वि [**निष्कवच**] कवच-रहित, वर्म-वर्जित ; (ठा ४, २) ।
णिक्कस सक [**निर्+कस्**] निकासना, बाहर निकालना । कवकृ—**णिक्कसिज्जंत** ; (उत्त १) ।
णिक्कसण न [**निष्कसन**] निर्गमन ; (सूत्र १, १४) ।

णिक्कसाय वि [**निष्कषाय**] १ कषाय-रहित, क्रोधादि-वर्जित ; (आउ)। २ पुं. भरत-क्षेत्र के एक भावी तीर्थ-कर-देव ; (सम १५३)।

णिक्का स्त्री [**नीका**] वाम नासिका ; (कुमा)।

णिक्काम वि [**निष्काम**] अभिलाषा-रहित ; (बृह १)।

णिक्कारण वि [**निष्कारण**] १ कारण-रहित, अ-हेतुक ; (सुर २, ३६)। २ क्रिवि. विना कारण ; (आव ६)।

णिक्कारणिय वि [**निष्कारणिक**] कारण-रहित, हेतु-शून्य ; (ओघ ५)।

णिक्काल सक [**निर् + कालय्**] बाहर निकालना। संकृ— **निक्कालेउं** ; (सुपा १३)।

णिक्कासिय वि [**निष्कासित**] बाहर निकाला हुआ; (राज)।

णिक्किंचण वि [**निष्किञ्चन**] निर्धन, धन-रहित, निःस्व ; (आवम)।

णिक्किट्ठ वि [**निकृष्ट**] अधम, नीच, हीन, जघन्य; "अइनि-क्किट्ठपाविट्ठियावि अहो" (श्रा १४ ; २७ ; सुपा ५७१ ; सट्ठि १५८)।

णिक्किण सक [**निर् + क्री**] निष्क्रय करना, खरीदना। णिक्किणासि ; (मृच्छ ६१)।

णिक्कित्तिम वि [**निष्कृत्रिम**] अ-कृत्रिम, असली, स्वाभा-विक ; (उप ६८६ टी)।

णिक्किरिय वि [**निष्क्रिय**] क्रिया-रहित, अ-क्रिय ; (पण्ह१,२)।

णिक्किव वि [**निष्कृप**] कृपा-रहित, निर्दय ; (पाअ ; गा ३० ; सुपा ४०६)।

णिक्कीलिय वि [**निष्क्रीडित**] गमन, गति ; (पव २७१)।

णिक्कुड पुं [**निष्कुट**] तापन, तपाना ; (राज)।

णिक्कूइल स्त्री [**दे**] जाता हुआ, विनिर्जित ; (दे १, ४)।

णिक्कोडण न [**निष्कोटन**] बन्धन-विशेष; (पण्ह १, ३— पत्त ५३)।

णिक्कोर सक [**निर् + कोरय्**] १ दूर करना। २ पात्र वगैरः के मुँह का बन्द करना। ३ पात्र आदि का तक्षण करना। णिक्कोरेइ ; (बृह १)।

णिक्कोरण न [**निष्कोरण**] १ पात्र आदि के मुँह का बन्द करना ; २ पात्र आदि का तक्षण ; (बृह १)।

णिक्ख पुं [**दे**] १ चोर; २ सुवर्ण, काञ्चन; (दे २, ४७)।

णिक्ख पुंन [**निष्क**] दीनार, मोहर, मुद्रा, रुपया ; (हे२,४)।

णिक्खंत देखा **णिक्कंत** ; (सुअ१, ८ ; सम १५१; कस)।

णिक्खंध वि [**निःस्कन्ध**] स्कन्ध-रहित ; (गा४६८अ)।

णिक्खत्त वि [**निःक्षत्र**] क्षत्र-रहित, क्षत्रिय-रहित ; (पि ३१६)।

णिक्खम अक [**निर् + क्रम्**] १ बाहर निकलना। २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना। णिक्खमइ ; (भग)। णिक्खमंति ; (कप्प)। भूका—णिक्खमिंसु ; (कप्प)। भवि—णिक्खमिस्संति; (कप्प)। वकृ—**णिक्खममाण**; (णाया १, ५ ; पउम २२, १७)। संकृ—**णिक्खम्म**; (कप्प)। हेकृ—**णिक्खमित्तए** ; (कप्प ; कस)।

णिक्खम पुंन [**निष्क्रम**] १ निर्गमन ; २ दीक्षा-ग्रहण ; (ठा १० ; दस १०)।

णिक्खमण न [**निष्क्रमण**] ऊपर देखो ; (सुज्ज १३ ; णाया १, १६ ; पउम २३, ४)।

णिक्खय वि [**दे. निक्षत**] निहत, मारा हुआ ; (दे ४, ३२ ; पाअ)।

णिक्खविअ वि [**निक्षपित**] नष्ट किया हुआ, विनाशित ; (अच्चु ३१)।

णिक्खसरिअ वि [**दे**] मुषित, जो लूट लिया गया हो, अपहृत-सार ; (दे ४, ४१)।

णिक्खाविअ वि [**दे**] शान्त, उपशम-प्राप्त ; (षड्)।

णिक्खित्त वि [**निक्षिप्त**] १ न्यस्त, स्थापित ; (पाअ ; पण्ह १, ३)। २ मुक्त, परित्यक्त ; (णाया १, १ ; वव २)। ३ पाक-भाजन में स्थित ; (पण्ह २, १)। °**चर** वि [°**चर**] पाक-भाजन में स्थित वस्तु का भिक्षा के लिए खोजने वाला ; (पण्ह २, १ ; औप)।

णिक्खिप्पमाण नीचे देखो।

णिक्खिव सक [**नि + क्षिप्**] १ स्थापन करना, स्व-स्थान में रखना। २ परित्याग करना। णिक्खिवइ ; (महा)। **णिक्खिवंत** ; (निचू १६)। कवकृ— **णिक्खिप्पमाण** ; (आचा)। संकृ—**णिक्खिवित्ता**, **णिक्खिविअ**, **णिक्खिविउं** ; (कस ; पि ३१६ ; नाट— विक्र १०३ ; वव १)। कृ—**णिक्खिविअव्व**, **णिक्खे-त्तव्व** ; (पण्ह १, १; विसे ६१७)।

णिक्खिव पुं [**निक्षेप**] १ स्थापन। २ न्यास-स्थापन, धरो-हर, धन आदि जमा रखना ; (श्रा १४)।

णिक्खिवण न [**निक्षेपण**] १ स्थापन ; २ डालना ; (सुपा ६२६ ; पडि)।

णिक्खुड वि [**दे**] अकम्प, स्थिर ; (दे ४, २८)।

णिक्खुड पुं [**निष्कुट**] पर्वत-विशेष ; (विसे १५३८)।

णिक्खुत्त न [दे] निश्चित, नक्की, चोक्कस, अवश्य; "एते विणासकाले नासइ बुद्धी नराण निक्खुत्तं" (पउम ५३, १३८); 'वत्ता दाहामि निक्खुत्तं' (पउम १०,८५)।

णिक्खुरिअ वि [दे] अ-दृढ़, अ-स्थिर; (दे ४, ४०)।

णिक्खेड पुं [निष्खेट] अधमता, नीचता, दुष्टता; (सुपा २७६)।

णिक्खेत्तव्व देखो **णिक्खिव**=नि+क्षिप्।

णिक्खेव पुं [निक्षेप] १ न्यास, स्थापन; (अणु)। २ परित्याग, मोचन; (आचा २, १, १, १)। ३ धरोहर, धन आदि जमा रखना; (पउम ६२, ६)।

णिक्खेवण न [निक्षेपण] १ निक्षेप, स्थापन; (पत्र ६)। २ व्यवस्थापन, नियमन; (विसे ६१२)।

णिक्खेवणया } स्त्री [निक्षेपणा] स्थापना, विन्यास;
णिक्खेवणा } (उवा; कप्प)।

णिक्खेवय पुं [निक्षेपक] निगमन, उपसंहार; (बृह १)।

णिक्खेविय वि [निक्षिप्त] १ न्यस्त, स्थापित; २ मुक्त, परित्यक्त; (सण)।

णिक्खेविय वि [निक्षेपित] ऊपर देखो; (भवि)।

णिक्खोभ } पुं [निःक्षोभ] क्षोभ-रहित, निष्कम्प; (सम
णिक्खोह } १०६; चउ ४७)।

णिखव्व न [निखर्व] संख्या-विशेष, सौ खर्व; (राज)।

णिखिल वि [निखिल] सर्व, सकल, सब; (अणु; नाट—महावीर ६७)।

णिगंठ देखो **णिअंठ**; (विसे १३३२)।

णिगढ पुं [दे] घर्म, घाम, गरमी; (दे ४, २७)।

णिगद सक [नि+गद्] १ कहना। २ पढ़ना, अभ्यास करना। वकृ—**णिगदमाण**; (विसे ८५०)।

णिगम पुं [निगम] १ प्रकृष्ट बोध; (विसे २१८७)। २ व्यापार-प्रधान स्थान, जहां व्यापारी, विशेष संख्या में रहते हों ऐसा शहर आदि; (पराह १,३; औप; आचा)। ३ व्यापारि-समूह; (सम ५१)।

णिगमण न [निगमन] अनुमान प्रमाण का एक अवयव, उपसंहार; (दसनि १)।

णिगमिअ वि [दे] निवासित; (षड्)।

णिगर पुं [निकर] समूह, राशि, जत्था; (विपा १, ६; उवा)।

णिगरण न [निकरण] कारण, हेतु; (भग ७,७)।

णिगरिय वि [निकरित] सर्वथा शोधित; (पराह १,४)।

णिगल देखो **णिअल**। २ बेड़ी के आकार का सौवर्ण आभूषण-विशेष; (औप)।

णिगलिय देखो **णिगरिय**; (जं २)।

णिगाम न [निकाम] अत्यन्त, अतिशय; (ठा ५, २; श्रा १६)।

णिगास पुं [निकर्ष] परस्पर संयोजन; मिलाना, जोड; (भग २५, ७)।

णिगिज्झिय देखो **णिगिण्ह**।

णिगिट्ठ देखो **णिक्किट्ठ**; (सुपा १८३)।

णिगिण वि [नग्न] नग्न, नंगा; (आचा २, २, ३; २, ७, १; पि १३३)।

णिगिण्ह सक [नि+ग्रह्] १ निग्रह करना, दण्ड करना, शिक्षा करना। २ रोकना। ३ अक बैठना, स्थिति करना। संकृ—**णिगिज्झिय, णिग्घेत्तुं**; (ठा ७; कप्प; राज)। कृ—**णिगिण्हियव्व**; (उप पृ २३)।

णिगुंज अक [नि+गुञ्ज्] १ गूँजना, अव्यक्त शब्द करना। २ नीचे नमना। वकृ—**णिगुंजमाण**; (णाया १, ६—पत्र १५७)।

णिगुंज देखो **णिउञ्ज**=निकुञ्ज; (आवम)।

णिगुण वि [निर्गुण] गुण-रहित; (पराह १, २)।

णिगुरंब देखो **णिउरंब**; (पराह १, ४)।

णिगूढ वि [निगूढ] १ गुप्त, प्रच्छन्न; (कप्प)। २ मौनी, मौन रहने वाला; (राज)।

णिगूह सक [नि+गुह्] छिपाना, गोपन करना। णिगूहइ; (उव; महा)। णिगूहंति; (सट्ठि ३२)। संकृ—**णिगूहिऊण**; (स ३३५)।

णिगूहण न [निगूहन] गोपन, छिपाना; (पंचा १५)।

णिगूहिअ वि [निगूहित] छिपाया हुआ, गोपित; (सुपा ५१८)।

णिगोअ पुं [निगोद] अनन्त जीवों का एक साधारण शरीर-विशेष; (भग; पराण १)। °**जीव** पुं [°**जीव**] निगोद का जीव; (भग २५, ६; कम्म ४, ८५)।

णिग्ग देखो **णिग्गम**=निर्+गम्। वकृ—**णिग्गंत**; (भवि)।

णिग्गंठिद (शौ) वि [निग्रथित] गुम्फित, ग्रथित; (पि ५१२)।

णिग्गंतुं } देखो **णिग्गम**=निर्+गम्।
णिग्गंतूण }

णिग्गंथ देखो **णिअंठ** ; (औप ; ओघ ३२८ ; प्रासु १३६ ; ठा ५, ३)।

णिग्गंथ वि [**नैर्ग्रन्थ**] निर्ग्रन्थ-संबन्धी ; (णाया १, १३ ; उवा)।

णिग्गंथी स्त्री [**निर्ग्रन्थी**] जैन साध्वी ; (णाया १, १; १४ ; उवा ; कप्प ; औप)।

णिग्गच्छ, **णिग्गम** } अक [**निर् + गम्**] बाहर निकलना। णिग्गच्छइ ; (उवा ; कप्पू)। वकृ—**णिग्गच्छंत, णिग्गच्छमाण, णिग्गममाण** ; (सुपा ३३० ; णाया १, १ ; सुपा ३५६)। संकृ—**णिग्गच्छित्ता, णिग्गंतूण**; (कप्प ; स १७)। हेकृ—**णिग्गंतुं** ; (उप ७२८ टी)।

णिग्गम पुं [**निर्गम**] १ उत्पत्ति, जन्म ; (विसे १५३६)। २ बाहर निकलना ; (से ६, ३६; उप पृ ३३२)। ३ द्वार, दरवाजा ; (से २, २)। ४ बाहर जाने का रास्ता; (से ८, ३३)। ५ प्रस्थान, प्रयाण ; (बृह १)।

णिग्गमण न [**निर्गमन**] १ निःसरण, बाहर निकलना ; (णाया १, २; सुपा ३३२; भग)। २ पलायन, भाग जाना; ३ अपक्रमण ; (वव १)।

णिग्गमिअ वि [**निर्गमित**] बाहर निकाला हुआ, निस्सारित ; (श्रा १६)।

णिग्गय वि [**निर्गत**] निःसृत, बाहर निकला हुआ ; (विसे १५४० ; उवा)। °**जस** वि [°**यशस्**] जिसका यश बाहर में फैला हो ; (णाया १, १८)। °**मोअ** वि [°**मोद**] जिसकी सुगन्ध खूब फैली हो ; (पाअ)।

णिग्गय वि [**निर्गज**] हाथी-रहित ; (भवि)।

णिग्गह देखो **णिगिण्ह**। कृ—**णिग्गहियव्व** ; (सुपा ५८०)।

णिग्गह पुं [**निग्रह**] १ दण्ड, शिक्षा ; (प्रासू १७० ; आव ६)। २ निरोध, अवरोध, रुकावट ; (भग ७, ६)। ३ वश करना, काबू में रखना, नियमन; (प्रासू ४८)। °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध प्रतिज्ञा-हानि आदि पराजय-स्थान ; (ठा १; सूअ १, १२)।

णिग्गहण न [**निग्रहण**] १ निग्रह, शिक्षा, दण्ड ; (सुर १६, ७)। २ दमन, नियमन, नियन्त्रण ; (प्रासू १३२)।

णिग्गहिय वि [**निगृहीत**] १ जिसका निग्रह किया गया हो वह ; (सं ११५)। २ पराजित, पराभूत ; (आवम)।

णिग्गा स्त्री [**दे**] हरिद्रा, हलदी ; (दे ४, २५)।

णिग्गालिय वि [**निर्गालित**] गलाया हुआ; (उप पृ ८४)।

णिग्गाहि वि [**निग्राहिन्**] निग्रह करने वाला ; (उत्त २५, २)।

णिग्गिण्ण वि [**दे. निर्गीर्ण**] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ ; (दे ४, ३६ ; पाअ)। २ वान्त, वमन किया हुआ ; (से ५, २६)।

णिग्गिण्ह देखो **णिगिण्ह**। णिग्गिण्हामि; (विसे २४८२)।

णिग्गिलिय वि [**निर्गलित**] वान्त, वमन किया हुआ; (स ३५८)।

णिग्गुंडी स्त्री [**निर्गुण्डी**] औषधि-विशेष, वनस्पति संभालु ; (पण्ण १)।

णिग्गुण वि [**निर्गुण**] गुण-रहित, गुण-हीन ; (गा २०३ ; उव ; पण्ह १, २ ; उप ७२८ टी)।

णिग्गुण्ण, **णिग्गुन्न** } न [**नैर्गुण्य**] गुण-रहितपन, गुण-हीनता, निर्गुणत्व ; (वसु ; भत्त १४)।

णिग्गूढ वि [**निर्गूढ**] स्थिर रूप से स्थापित ; (सूअ २, ७)।

णिग्गोह पुं [**न्यग्रोध**] वृक्ष-विशेष, बड़ का पेड़ ; (पउम २०, ३६ ; षड्)। °**परिमंडल** न [°**परिमण्डल**] शरीर-संस्थान विशेष, वटाकार शरीर का आकार ; (सम १४६ ; ठा ६)।

णिग्घंट, **णिग्घंटु** } देखो **णिघंटु** ; (कप्प)।

णिग्घट्ट वि [**दे**] कुशल, निपुण, चतुर ; (दे ४, ३४)।

णिग्घण देखो **णिग्घिण** ; (विक्र १०२)।

णिग्घत्तिअ वि [**दे**] क्षिप्त, फेंका हुआ ; (पाअ)।

णिग्घाइय वि [**निर्घातित**] १ आघात-प्राप्त, आहत ; २ व्यापादित, विनाशित ; (णाया १, १३)।

णिग्घाय पुं [**निर्घात**] १ आघात, "रंगिरतुंगतुरंगमखुरग्गनिग्घायविद्दुरियं धरणिं" (सुपा ३)। २ बिजली का गिरना ; (स ३७५ ; जीव १)। ३ व्यन्तर-कृत गर्जना ; (ठा १०)। ४ विनाश; (सुअ १, १५)।

णिग्घायण न [**निर्घातन**] नाश, विनाश, उच्छेदन ; (पडि ; सुपा ५०३)।

णिग्घिण वि [**निर्घृण**] निर्दय, करुणा-रहित; (गा ४५२; पण्ह १, १ ; सुर २, ६१)।

णिग्घेउं देखो **णिगिण्ह**।

णिग्घोर वि [**दे**] निर्दय, दया-हीन ; (दे ४, ३७)।

णिग्घोस पुं [**निर्घोष**] महान् अव्यक्त शब्द ; (पण्ह १, १ ; सम १५३)।

णिग्गंथ देखो **णिअंठ** ; (औप ; ओघ ३२८ ; प्रासू १३६ ; ठा ५, ३)।

णिग्गंथ वि [**नैर्ग्रन्थ**] निर्ग्रन्थ-संबन्धी ; (णाया १, १३ ; उवा)।

णिग्गंथी स्त्री [**निर्ग्रन्थी**] जैन साध्वी ; (णाया १, १; १४ ; उवा ; कप्प ; औप)।

णिग्गच्छ } अक [**निर्+गम्**] बाहर निकलना। णिग्ग-
णिग्गम } च्छइ ; (उवा ; कप्पू)। वकृ—**णिग्गच्छंत, णिग्गच्छमाण, णिग्गममाण** ; (सुपा ३३० ; णाया १, १ ; सुपा ३५६)। संकृ—**णिग्गच्छित्ता, णिग्गंतूण**; (कप्प ; स १७)। हेकृ—**णिग्गंतुं** ; (उप ७२८ टी)।

णिग्गम पुं [**निर्गम**] १ उत्पत्ति, जन्म ; (विसे १५३६)। २ बाहर निकलना ; (से ६, ३६; उप पृ ३३२)। ३ द्वार, दरवाजा ; (से २, २)। ४ बाहर जाने का रास्ता; (से ८, ३३)। ५ प्रस्थान, प्रयाण ; (बृह १)।

णिग्गमण न [**निर्गमन**] १ निःसरण, बाहर निकलना ; (णाया १, २; सुपा ३३२; भग)। २ पलायन, भाग जाना; ३ अपक्रमण ; (वव १)।

णिग्गमिअ वि [**निर्गमित**] बाहर निकाला हुआ, निस्सारित ; (श्रा १६)।

णिग्गय वि [**निर्गत**] निःसृत, बाहर निकला हुआ ; (विसे १५४० ; उवा)। °**जस** वि [°**यशस्**] जिसका यश बाहर में फैला हो ; (णाया १, १८)। °**मोअ** वि [°**मोद**] जिसको सुगन्ध खूब फैली हो ; (पाअ)।

णिग्गय वि [**निर्गज**] हाथी-रहित ; (भवि)।

णिग्गह देखो **णिगिण्ह**। कृ—**णिग्गहियव्व** ; (सुपा ५८०)।

णिग्गह पुं [**निग्रह**] १ दण्ड, शिक्षा ; (प्रासू १७० ; आव ६)। २ निरोध, अवरोध, रुकावट ; (भग ७, ६)। ३ वश करना, काबू में रखना, नियमन; (प्रासू ४८)। °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध प्रतिज्ञा-हानि आदि पराजय-स्थान ; (ठा १; सूअ १, १२)।

णिग्गहण न [**निग्रहण**] १ निग्रह, शिक्षा, दण्ड ; (सुर १६, ७)। २ दमन, नियमन, नियन्त्रण ; (प्रासू १२२)।

णिग्गहिय वि [**निगृहीत**] १ जिसका निग्रह किया गया हो वह ; (सं ११५)। २ पराजित, पराभूत ; (आवम)।

णिग्गा स्त्री [**दे**] हरिद्रा, हलदी ; (दे ४, २५)।

णिग्गालिय वि [**निर्गालित**] गलाया हुआ; (उप पृ ८४)।

णिग्गाहि वि [**निग्राहिन्**] निग्रह करने वाला ; (उत्त २५, २)।

णिग्गिण्ण वि [**दे. निर्गीर्ण**] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ ; (दे ४, ३६ ; पाअ)। २ वान्त, वमन किया हुआ ; (से ५, २६)।

णिग्गिण्ह देखो **णिगिण्ह**। णिग्गिण्हामि; (विसे २४८२)।

णिग्गिलिय वि [**निर्गलित**] वान्त, वमन किया हुआ; (स ३५८)।

णिग्गुंडी स्त्री [**निर्गुण्डी**] ओषधि-विशेष, वनस्पति संभालु ; (पण्ण १)।

णिग्गुण वि [**निर्गुण**] गुण-रहित, गुण-हीन ; (गा२०३ ; उव ; पण्ह १, २ ; उप ७२८ टी)।

णिग्गुण्ण } न [**नैर्गुण्य**] गुण-रहितपन, गुण-हीनता,
णिग्गुन्न } निर्गुणत्व ; (वसु ; भत्त १४)।

णिग्गूढ वि [**निर्गूढ**] स्थिर रूप से स्थापित ; (सूअ२,७)।

णिग्गोह पुं [**न्यग्रोध**] वृक्ष-विशेष, वड़ का पेड़ ; (पउम २०, ३६ ; षड्)। °**परिमंडल** न [°**परिमण्डल**] शरीर-संस्थान विशेष, वटाकार शरीर का आकार ; (सम १४६ ; ठा ६)।

णिग्घंट } देखो **णिघंटु** ; (कप्प)।
णिग्घंटु }

णिग्घट्ट वि [**दे**] कुशल, निपुण, चतुर ; (दे ४, ३४)।

णिग्घण देखो **णिग्घिण** ; (विक्र १०२)।

णिग्घत्तिअ वि [**दे**] क्षिप्त, फेंका हुआ ; (पाअ)।

णिग्घाइय वि [**निर्घातित**] १ आघात-प्राप्त, आहत ; २ व्यापादित, विनाशित ; (णाया १, १३)।

णिग्घाय पुं [**निर्घात**] १ आघात, "रंगिरतुंगतुरंगमखुरग्गनिग्घायविहुरियं धरणिं" (सुपा ३)। २ बिजली का गिरना ; (स ३७५ ; जीव १)। ३ व्यन्तर-कृत गर्जना ; (ठा १०)। ४ विनाश; (सुअ १, १५)।

णिग्घायण न [**निर्घातन**] नाश, विनाश, उच्छेदन ; (पडि ; सुपा ५०३)।

णिग्घिण वि [**निर्घृण**] निर्दय, करुणा-रहित; (गा ४५२; पण्ह १, १ ; सुर २, ६१)।

णिग्घेउं देखो **णिगिण्ह**।

णिग्घोर वि [**दे**] निर्दय, दया-हीन ; (दे ४, ३७)।

णिग्घोस पुं [**निर्घोष**] महान् अव्यक्त शब्द ; (पण्ह १, १ ; सम १५३)।

णिघंटु पुं [**निघण्टु**] शब्द-कोश, नाम संग्रह; (औप; भग)।
णिघस पुं [**निकष**] १ कसौटी का पत्थर ; (अणु)। २ कसौटी पर की जाती सुवर्ण की रेखा ; (सुपा ३६१)।
णिचय पुं [**निचय**] १ समूह, राशि ; २ उपचय, पुष्टि ; (ओघ ४०७ ; स ३६६ ; आचा ; महा)।
णिचिअ वि [**निचित**] १ व्याप्त, भरपूर ; (अजि ५)। २ निबिड, पुष्ट ; (भग)।
णिचुल पुं [**निचुल**] वृक्ष-विशेष, वंजुल वृक्ष ; (स १११; कुमा)।
णिच्च वि [**नित्य**] १ अ-विनश्वर, शाश्वत ; (आचा ; औप)। २ न. निरन्तर, सर्वदा, हमेशा ; (महा ; प्रासू १४ ; १०१)। °**च्छणिय** वि [°**क्षणिक**] निरन्तर उत्सव वाला ; (णाया १, ४)। °**मंडिया** स्त्री [°**मण्डिता**] जम्बू वृक्ष विशेष ; (इक)। °**वाय** पुं [°**वाद**] पदार्थों को नित्य मानने वाला मत ; "सुहदुक्खसंपओगो न जुज्जइ निच्चवायपक्खम्मि" (सम १८)। °**सो** अ [°**शस्**] सदा, सर्वदा, निरन्तर ; (महा)। °**लोअ**, °**लोग**, °**लोव** पुं [°**लोक**] १ एक विद्याधर-राजा ; (पउम ६, ५२)। २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। ३ न. नगर-विशेष ; (पउम ६, ५२ ; इक)। ४ वि. सर्वदा प्रकाश वाला ; (कप्प)।
णिच्च देखो **णीय**=नीच; (सम ५५)।
णिच्चक्खु वि [**निश्चक्षुस्**] चक्षु-रहित, नेत्र-हीन, अन्धा ; (पउम ८२, ५१)।
णिच्चट्ट (अप) वि [**गाढ़**] गाढ़, निबिड ;(हे४, ४२२)।
णिच्चय देखो **णिच्छय** ; (प्रयौ २१ ; पि ३०१)।
णिच्चर देखो **णिच्छर**। णिच्चरइ ; (हे ४, ३ टि)।
णिच्चल सक [**क्षर्**] झरना, टपकना, चूना। णिच्चलइ ; (हे ४, १७३)। प्रयो—णिच्चलावेइ ; (कुमा)।
णिच्चल सक [**मुच्**] दुःख को छोड़ना, दुःख का त्याग करना। णिच्चलइ ; (हे ४,९२ टि)। भूका—णिच्चलीअ; (कुमा)।
णिच्चल वि [**निश्चल**] स्थिर, दृढ़, अचल ; (हे २, २१; ७७)। °**पय** न [°**पद**] मुक्ति, मोक्ष ; (पंचव ; ४)।
णिच्चिंत वि [**निश्चिन्त**] चिन्ता-रहित, बेफीकर ; (विक्र ४३ ; प्रासू २७ ; सुपा २२५)।
णिच्चिट्ठ वि [**निश्चेष्ट**] चेष्टा-रहित ; (सुपा १४)।
णिच्चिद (शौ) देखो **णिच्छिय** ; (पि ३०१)।
णिच्चुज्जोअ } वि [**नित्योद्द्योत**] १ सदा प्रकाश-
णिच्चुज्जोव } युक्त। २ पुं. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष, ; (ठा २, ३)। ३ न. एक विद्याधर-नगर ; (इक)।
णिच्चुड्ड वि [**दे**] १ उद्वृत्त, बाहर निकला हुआ ; (षड्)। २ निर्दय, दया-हीन ; (पाअ)।
णिच्चुव्विग्ग वि [**नित्योद्विग्न**] सदा खिन्न ; (दस ५, २)।
णिच्चेट्ठ देखो **णिच्चिट्ठ** ; (णाया १, २ ; सुर ३,१७२)।
णिच्चेयण वि [**निश्चेतन**] चेतना-रहित; (महा)।
णिच्चोउया स्त्री [**नित्यर्तुका**] हमेशा रजस्वला रहने वाली स्त्री ; (ठा ५, २)।
णिच्चोरिक्क न [**निश्चौर्य**] १ चोरी का अभाव। २ वि. चोरी-रहित ; (उप १३९ टी)।
णिच्छइय वि [**नैश्चयिक**] १ निश्चय-संबन्धी। २ पुं. निश्चय नय, द्रव्यार्थिक नय, परिणाम-वाद ; (विसे)।
णिच्छउम वि [**निश्छद्मन्**] १ कपट-रहित, माया-वर्जित; (गण ८ ; सुपा ३५०)। २ क्रिवि. विना कपट ; (सार्ध ५१)।
णिच्छक्क वि [**दे**] १ निर्लज्ज, बेशरम, धृष्ट ; (बृह १ ; वव ५)। २ अवसर को नहीं जानने वाला, अ-समयज्ञ ; (राज)।
णिच्छम्म देखो **णिच्छउम** ; (उव ; सार्ध १४५)।
णिच्छय सक [**निर्+चि**] निश्चय करना, निर्णय करना। वकृ—**णिच्छयमाण** ; (उप ७२८ टी)।
णिच्छय पुं [**निश्चय**] १ निश्चय, निर्णय ; (भग ; प्रासू १७७)। २ नियम, अविनाभाव ; (राज)। ३ नय-विशेष, द्रव्यार्थिक नय, वास्तविक पदार्थ को ही मानने वाला मत, परिणाम-वाद ; (बृह ४ ; पंचा १३)। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] अपवाद ; (निचू ५)।
णिच्छल्ल सक [**छिद्**] छेदना, काटना। णिच्छल्लइ ; (हे ४, १२४)।
णिच्छल्लिअ वि [**छिन्न**] काटा हुआ; (कुमा ; स २५८; गउड)।
णिच्छाय वि [**निश्छाय**] कान्ति-रहित, शोभा-हीन ;(पण्ह १, २)।
णिच्छारय वि [**निस्सारक**] सार-रहित ; " निच्छारयछारयधूलीण " (श्रा २७)।

णिच्छिड्डु वि [**निश्छिद्र**] छिद्र-रहित ; (णाया १, ६ ; उप २११ टी) ।

णिच्छिण्ण वि [**निच्छिन्न**] पृथक्-कृत, अलग किया हुआ, काटा हुआ ; (विसे २७३) ।

णिच्छिद्द देखो **णिच्छिड्डु** ; (स ३५०) ।

णिच्छिन्न देखो **णिच्छिण्ण** ; (पुप्फ ४६३ ; महा) ।

णिच्छिय वि [**निश्चित**] निश्चित, निर्णीत, अ-संदिग्ध ; (णाया १, १ ; महा) ।

णिच्छीर वि [**निःक्षीर**] क्षीर-रहित, दुग्ध-वर्जित; (पण्ण १)।

णिच्छुंड वि [**दे**] निर्दय, करुणा-रहित ; (दे ४, ३२) ।

णिच्छुट्ट वि [**निश्छुटित**] निर्मुक्त, छूटा हुआ ; (सुर ६, ७२) ।

णिच्छुभ सक [**नि+क्षिप्**] १ बाहर निकालना । २ फेंकना । णिच्छुभइ ; (भग) । कर्म—णिच्छुब्भइ ; (पि ६६) । कवकृ—**णिच्छुब्भमाण** ; (विपा १,२) । संकृ—**णिच्छुभित्ता, णिच्छुभिउं**; (भग ; निर १,१) । प्रयो—णिच्छुभावेइ ; (णाया १, ८) ।

णिच्छुभण न [**निक्षेपण**] निःसारण, निष्काशन ; (निचू १) ।

णिच्छुभाविय वि [**निक्षेपित**] निस्सारित, बाहर निकाला हुआ ; (णाया १, ८) ।

णिच्छुहणा स्त्री [**निक्षेपणा**] बाहर निकलने की आज्ञा, निर्भर्त्सना ; (णाया १, १६ टी—पत्र २००) ।

णिच्छूढ वि [**निक्षिप्त**] १ उद्वृत्त, निर्गत ; (हे ४, २५८) । २ फेंका हुआ, निक्षिप्त ; (प्रामा) । ३ निस्सारित, निष्कासित; (णाया १,८—पत्र १४६; १,१६—पत्र १६६)।

णिच्छूढ न [**निष्ठ्यूत**] थूक, खखार; (विसे ५०१) ।

णिच्छोड सक [**निर्+छोटय्**] १ बाहर निकलने के लिए धमकाना । २ निर्भर्त्सन करना । ३ छुड़वाना । णिच्छोडेइ ; णिच्छोडेंति ; (णाया १, १६ ; १८) । णिच्छोडेज्जा ; (उवा) । संकृ—**णिच्छोडइत्ता** ; (भग १५) ।

णिच्छोडण न [**निश्छोटन**] निर्भर्त्सन, बाहर निकालने की धमकी ; (उव) ।

णिच्छोडणा स्त्री [**निश्छोटना**] ऊपर देखो ; (णाया १, १६—पत्र १६६) ।

णिच्छोल सक [**निर्+तक्ष्**] छीलना, छाल उतारना । णिच्छोलेइ ; (निचू १) । वकृ—**णिच्छोलंत** ; (निचू १) । संकृ—**णिच्छोलिऊण** ; (महा) ।

णिजंतिय वि [**नियन्त्रित**] नियमित, अंकुशित ; (सुर ३, ४) ।

णिजिण्ण देखो **णिज्जिण्ण** ; (ठा ४, १) ।

णिजुद्ध देखो **णिउद्ध** ; (निच १२) ।

णिजोजण न [**नियोजन**] नियुक्ति, कार्य में लगाना, भार-अर्पण ; (उप १७६ टी) ।

णिजोजिय देखो **णिओइय** ; (उप १७६ टी) ।

णिज्ज वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ ; (दे ४, २५ ; षड्) ।

णिज्जंत देखो **णी**=नी ।

णिज्जण वि [**निर्जन**] १ विजन, मनुष्य-रहित; २ न. एकान्त-स्थान; (गउड) ।

णिज्जप्प वि [**निर्याप्य**] १ निर्वाह-कारक, २ निर्बल, बल को नहीं बढ़ाने वाला ; "अरसविरससीयलुक्खणिज्जप्प-पाणभोयणाइ" (पण्ह २, ५) ।

णिज्जर सक [**निर्+जॄ**] १ क्षय करना, नाश करना । २ कर्म-पुद्गलों को आत्मा से अलग करना । णिज्जरेइ, णिज्जरए, णिज्जरेंति ; (भग ; ठा ४,१) । भूका—णिज्जरिंसु, णिज्ज-रेंसु ; (पि ५७६ ; भग) । भवि—णिज्जरिस्संति ; (ठा ४, १) । वकृ—**णिज्जरमाण** ; (भग १८, ३) । कवकृ—**णिज्जरिज्जमाण** ; (ठा १० ; भग) ।

णिज्जरण न [**निर्जरण**] नीचे देखो ; (औप) ।

णिज्जरणा स्त्री [**निर्जरणा**] १ नाश, क्षय; २ कर्म-क्षय, कर्म-नाश ; ३ जिससे कर्मों का विनाश हो ऐसा तप ; (नव १; सुर १४, ६५) ।

णिज्जरा स्त्री [**निर्जरा**] कर्म-क्षय, कर्म-विनाश; (आचा ; नव २४) ।

णिज्जरिय वि [**निर्जीर्ण**] क्षीण, विनाश-प्राप्त ; (तंदु) ।

णिज्जवग वि [**निर्यापक**] १ निर्वाह करने वाला । २ आरा-धक, आराधन करने वाला ; (ओघ २८ भा) । ३ पुं. जैन मुनि-विशेष, जो शिष्य के भारी प्रायश्चित का भी ऐसी तरह से विभाग कर दे कि जिससे वह उसे निवाह सके ; (ठा ८ ; भग २५, ७) ।

णिज्जवणा स्त्री [**निर्यापना**] १ निगमन, दर्शित अर्थ का प्रत्युच्चारण ; (विसे२६३२) । २ हिंसा ; (पण्ह१, १)।

णिज्जवय देखो **णिज्जवग** ; (ओघ २८ भा टी ; द्र ४६)।

णिज्जा अक [**निर्+या**] बाहर निकलना । णिज्जायंति ; (भग) । भवि—णिज्जाइस्सामि ; (औप) । वकृ—**णिज्जायमाण** ; (ठा ५, ३) ।

णिज्जाण न [**निर्याण**] १ बाहर निकलना, निर्गम ; (ठा ५,३) । २ आवृत्ति-रहित गमन ; (औप) । ३ मोक्ष, मुक्ति ; (आव ४) ।

णिज्जाणिय त्रि [**नैर्याणिक**] निर्याण-संबन्धी, निर्गम-संबन्धी ; (भग १३, ६ ; निचू ८) ।

णिज्जामग) पुं [**निर्यामक**] कर्णधार, जहाज का नियन्ता ; (विसे २६५६ ; णाया १, १७ ; औप ; सुर १३, ४८) ।
णिज्जामय)

णिज्जामिय वि [**निर्यामित**] पार पहुँचाया हुआ, तारित; (महा) ।

णिज्जाय पुं [**दे**] उपकार ; (दे ४, ३४) ।

णिज्जाय वि [**निर्यात**] निर्गत, निःसृत ; (वसु ; उप पृ २८६) ।

णिज्जायण न [**निर्यातन**] वैर-शुद्धि, बदला ; (महा) ।

णिज्जायणा स्त्री [**निर्यातना**] ऊपर देखो ; (उप ४३१टी) ।

णिज्जावय देखो **णिज्जामय** ; (भवि) ।

णिज्जास पुं [**निर्यास**] वृक्षों का रस, गोंद ; (सूअ२,१) ।

णिज्जिअ वि [**निर्जित**] जीता हुआ, पराभूत ; (ओघ १८ भा टी ; सुर ६, ३६ ; औप) ।

णिज्जिण सक [**निर्+जि**] जीतना, पराभव करना । निज्जिणइ ; (भवि) । संकृ—**निज्जिणिऊण** ; (महा) ।

णिज्जिणिय देखो **णिज्जिअ** ; (सुपा २६) ।

णिज्जिण्ण) वि [**निर्जीर्ण**] नाश-प्राप्त, क्षीण ; (भग ; ठा ४, १) ।
णिज्जिन्न)

णिज्जीव वि [**निर्जीव**] जीव-रहित, चैतन्य-वर्जित ; (औप ; श्रा २० ; महा) ।

णिज्जुत्त वि [**निर्युक्त**] १ संबद्ध, संयुक्त ; (विसे १०८५ ; ओघ १ भा) । २ खचित, जड़ित ; (औप) । ३ प्ररूपित, प्रतिपादित ; (आवम) ।

णिज्जुत्ति स्त्री [**निर्युक्ति**] व्याख्या, विवरण, टीका ; (विसे ६६५ ; ओघ २ ; सम १०७) ।

णिज्जुद्ध देखो **णिउद्ध** ; (स ४७०) ।

णिज्जूढ वि [**निर्यूढ**] १ निस्सारित, निष्कासित ; (णाया १,१—पत्र ६४) २ अ-मनोज्ञ, अ-सुन्दर; (ओघ ५४८) । ३ उद्धृत, ग्रन्थान्तर से अवतारित ; (दसनि १) ।

णिज्जूह सक [**निर्+यूह्**] १ परित्याग करना । २ रचना, निर्माण करना । कर्म—णिज्जूहिज्जइ ; (पि २२१)। हेकृ—**णिज्जूहित्तए** ; (वव ३) । कृ—**णिज्जूहियव्व** ; (कप्प) ।

णिज्जूह पुं [**दे. निर्यूह**] १ नीव्र, छदि, गृहाच्छादन, पाटन; (दे ४, २८ ; स १०६) । २ गवाक्ष, गोख ; "इय जाव चिंतए मंती निज्जूहट्ठिओ" (धम्म ६ टी ; वव १) । ३ द्वार के पास का काष्ठ-विशेष ; (णाया १, १—पत्र १२; पराह १, १) । ४ द्वार, दरवाजा ; (सुर २, ८३) ।

णिज्जूहणया) स्त्री [**निर्यूहणा**] १ निस्सारण, बाहर निकालना ; (वव १) । २ परित्याग ; (ठा ४, २) । ३ विरचना, निर्माण ; (विसे ५५१) ।
णिज्जूहणा)

णिज्जोअ पुं [**दे**] १ प्रकर, राशि ; २ पुष्पों का अवकर ; (दे ४, ३३) ।

णिज्जोअ) पुं [**दे. निर्योग**] परिकर, सामग्री ; "पायणिज्जोगो" (ओघ ६६८ ; णाया १,१—पत्र ५४)।
णिज्जोग)

णिज्जोमि पुं [**दे**] रज्जू, रस्सी ; (दे ४, ३१) ।

णिज्झर अक [**क्षि**] क्षीण होना । णिज्झरइ ; (हे ४, २० ; षड्) । वकृ—**णिज्झरंत**; (कुमा ६, १३) ।

णिज्झर वि [**दे**] जीर्ण, पुराना ; (दे ४, २६) ।

णिज्झर पुं [**निर्झर**] झरना, पहाड़ से गिरता पानी का प्रवाह ; (हे १, ६८ ; २, ६०) ।

णिज्झरण न [**निर्झरण**] ऊपर देखो ; (पउम ६४, ५२; सुर ६, ६४ ; सुपा ३५५) ।

णिज्झरणी स्त्री [**निर्झरिणी**] नदी, तरंगिणी ; (कुमा) ।

णिज्झा सक [**नि+ध्यै**] देखना, निरीक्षण करना । णिज्झाइ, णिज्झाअइ ; (हे ४, ६) । वकृ—**णिज्झाअंत, णिज्झाएमाण** ; (मा ४ ; आचा २, ३,१) । संकृ—**णिज्झाइऊण, णिज्झाइत्ता** ; (महा ; आचा) ।

णिज्झा सक [**निर्+ध्यै**] विशेष चिन्तन करना । संकृ—**णिज्झाइत्ता** ; (आचा) ।

णिज्झाइ वि [**निध्यायिन्**] देखने वाला ; (आचा) ।

णिज्झाइत्तु वि [**निध्यातृ**] देखने वाला, निरीक्षक ; (उत्त १६ ; सम १५) ।

णिज्झाइत्तु वि [**निर्ध्यातृ**] अतिशय चिन्तन करने वाला; (ठा ६) ।

णिज्झाइय वि [**निध्यात**] १ दृष्ट, विलोकित ; (स ३५१; धण ४५) । २ न. दर्शन, निरीक्षण ; (महा—पृष्ठ ५८) ।

णिज्झाडिय वि [**निर्झाटित**] विनाशित ; (उप ६४८ टी) ।

णिज्झाय वि [**दे**] निर्दय, दया-रहित ; (दे ४, ३७) ।

णिज्झाय वि [**निध्यात**] दृष्ट, विलोकित ; (सुर ६, १८८ ; सुपा ४४८) ।

णिज्झूर वि [**दे**] जीर्ण, पुराना ; (दे ४, २६) ।

णिज्झोड सक [**छिद्**] छेदना, काटना। णिज्झोडइ ; (हे ४, १२४) ।

णिज्झोडण न [**छेदन**] छेदन, कर्तन ; (कुमा) ।

णिज्झोसइत्तु वि [**निर्झोषयितृ**] क्षय करने वाला, कर्मों का नाश करने वाला ; (आचा) ।

णिट्टंक वि [**दे**] १ टङ्क-च्छिन्न ; २ विषम, अ-समान ; (दे ४, ५०) ।

णिट्टंकिय वि [**निष्टङ्कित**] निश्चित, अवधारित ; (सुपा २६०) ।

णिट्टुअ अक [**क्षर्**] टपकना, चूना। णिट्टुअइ ; (हे ४, १७३) ।

णिट्टुइअ वि [**क्षरित**] टपका हुआ ; (पाअ) ।

णिट्टुह अक [**वि+गल्**] गल जाना, नष्ट होना। णिट्टुहइ ; (हे ४, १७५) ।

णिट्ठ देखो **णिट्ठा**=नि+स्था। निट्ठइ ; (भवि) ।

णिट्ठय } सक [**नि+स्थापय्**] १ समाप्त करना, पूर्ण करना। **णिट्ठव** } २ अन्त करना, खतम करना। ३ विशेष रूप से स्थापन करना, स्थिर करना। भूका—णिट्ठवंसु ; (भग २६, १) । संकृ—**णिट्ठविअ** ; (पिंग) । कृ—**णिट्ठयणिज्ज** ; (उप ५६७ टी) ।

णिट्ठवण न [**निष्ठापन**] १ अन्त करना, समाप्ति। २ वि. नाश-कारक, खतम करने वाला ; (सुपा १६१; गउड) । ३ समाप्त करने वाला ; (जा ५) ।

णिट्ठवय वि [**निष्ठापक**] समाप्त करने वाला ; (आव ६) ।

णिट्ठविअ वि [**निष्ठापित**] १ समाप्त किया हुआ ; (पंचव २) । २ विनाशित ; (से ६, १) ।

णिट्ठा अक [**नि+स्था**] खतम होना, समाप्त होना। णिट्ठाइ ; (विसे ६२७) ।

णिट्ठा स्त्री [**निष्ठा**] १ अन्त, अवसान, समाप्ति ; (विसे २८३३ ; सुपा १३) । २ सद्भाव ; (आचू १) । °**भासि** वि [°**भाषिन्**] निष्ठा-पूर्वक बोलने वाला, निश्चय-पूर्वक भाषण करने वाला ; (आचा) ।

णिट्ठाण न [**निष्ठान**] १ दही वगैरः व्यञ्जन ; (ठा ४, २; पराह २, ५) । २ समाप्ति ; (नि १) । °**कहा** स्त्री [°**कथा**] भक्त-कथा विशेष, दही वगैरः व्यञ्जन की बातचीत; (ठा ४, २) ।

णिट्ठावण देखो **णिट्ठवण** ; (सुपा ३५७) ।

णिट्ठिय वि [**निष्ठित**] १ समाप्त किया हुआ, पूर्ण किया हुआ; (उप १०३१ टी; कम्म ४, ७४) । २ नष्ट किया हुआ, विनाशित ; (सुपा ४४६) । ३ स्थिर ; (से ५, ७) । ४ निष्पन्न, सिद्ध ; (आचा २, १, ६) । ५ पुं. मोक्ष, मुक्ति ; (आचा) । °**ट्ठ** वि [°**ार्थ**] कृतकृत्य ; (पराह ३६) । °**ट्ठि** वि [°**ार्थिन्**] मुमुक्षु, मोक्ष का इच्छुक ; (आचा) ।

णिट्ठिय वि [**नैष्ठिक**] निष्ठा-युक्त, निष्ठा वाला ; (पराह २, ३) ।

णिट्ठीव पुं [**निष्ठीव**] थूक, मुँह का पानी; (रंभा) ।

णिट्ठुभय वि [**निष्ठीवक**] थूकने वाला ; (पराह २, १ ; आप) ।

णिट्ठुर } वि [**निष्ठुर**] निष्ठुर, परुष, कठिन ; (प्राप्र ; हे **णिट्ठुल** } १, २५४ ; पाअ ; गउड) ।

णिट्ठुवण न [**निष्ठीवन**] १ थूक, खखार ; (क्व १) । २ वि. थूकने वाला; (ठा ५, १) ।

णिट्ठुह अक [**नि+स्तम्भ्**] निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना ; स्तब्ध होना। णिट्ठुहइ; (हे ४, ६७; षड्) ।

णिट्ठुह वि [**दे**] स्तब्ध, निश्चेष्ट ; (दे ४, ३३)।

णिट्ठुहण न [**दे.निष्ठीवन**] थूक, मुँह का पानी, खखार ; (महा) ।

णिट्ठुहावण वि [**निष्टम्भक**] निश्चेष्ट करने वाला, स्तब्ध करने वाला ; (कुमा) ।

णिट्ठुहिअ न [**दे**] थूक, निष्ठीवन, खखार; (दे ४, ४१) ।

णिड पुं [**दे**] पिशाच, राक्षस ; (दे ४, २५) ।

णिडल } न [**ललाट**] भाल, ललाट ; (पि २६० ; **डाल** } पउम १००, ५७ ; सुपा २८) ।

णिड्ड न [**नीड**] पक्षि-गृह ; (पाअ) ।

णिड्डहण न [**निर्दहन**] जला देना ; (उप ५६३ टी) ।

णिड्डुह देखो **णिट्ठुअ** । णिड्डुहइ ; (कुमा ; षड्) ।

णिणाय पुं [**निनाद**] शब्द, आवाज, ध्वनि ; (गाया १, १ ; पउम २, १०३ ; से ६, ३०) ।

णिण्ण वि [**निम्न**] १ नीचा, अधस्तन ; (उत्त १२ ; उव १०३१ टी)। २ क्रिवि. नीचे, अधः; (हे २, ४२)।
णिण्णक्खु क्रि [**निःसारयति**] बाहर निकालता है ; "ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु" (आचा २,२,१)।
णिण्णगा स्त्री [**निम्नगा**] नदी, स्रोतस्विनी ; (पण्ण १; पण्ह २, ४)।
णिण्णट्ठ वि [**निर्नष्ट**] नाश-प्राप्त ; (सुर ६, ६२)।
णिण्णय पुं [**निर्णय**] १ निश्चय, अवधारण ; (हे १, ६३)। २ फैसला ; (सुपा ६६)।
णिण्णया देखो **णिण्णगा** ; (पात्र)।
णिण्णार वि [**निर्नगर**] नगर से निर्गत ; (भग १५)।
णिण्णाला स्त्री [**दे**] चञ्चु, चोंच ; (दे ४, ३६)।
णिण्णास सक [**निर्+नाशय्**] विनाश करना । वकृ— **निन्नासिंत** ; (सुपा ६५४)।
णिण्णास पुं [**निर्णाश**] विनाश ; (भवि)।
णिण्णासिय वि [**निर्णाशित**] विनाशित ; (सुर ३, २३१ ; भवि)।
णिण्णिद्द वि [**निर्निद्र**] निद्रा-रहित ; (गा ६५६)।
णिण्णिमेस वि [**निर्निमेष**] १ निमेष-रहित ; २ चेष्टा-रहित ; ३ अनुपयोगी ; (ठा ५, २)।
णिण्णीअ वि [**निर्णीत**] निश्चित, नक्की किया हुआ ; (श्रा १२)।
णिण्णुण्णअ वि [**निम्नोन्नत**] ऊँचा-नीचा, विषम ; (अभि २०६)।
णिण्णेह वि [**निःस्नेह**] स्नेह-रहित ; (हे ४, ३६७ ; सुर ३, २२२ ; महा)।
णिण्हइया स्त्री [**निह्नविका**] लिपि-विशेष ; (सम ३५)।
णिण्हग, **णिण्हय**, **णिण्हव** पुं [**निह्नव**] १ सत्य का अपलाप करने वाला, मिथ्यावादी ; (ओघ ४० भा ; ठा ७ ; औप)। २ अपलाप ; (सार्ध ४१)।
णिण्हव सक [**नि+ह्नु**] अपलाप करना। णिण्हवइ ; (विसे २२६६ ; हे ४, २३६)। कर्म—णिण्हवीअदि (शौ) ; (नाट—रत्ना ३६)। वकृ—**णिण्हवंत**, **णिण्हवेमाण** ; (उप २११ टी ; सुर ३, २०१)।
णिण्हवग वि [**निह्नावक**] अपलाप करने वाला ; (ओघ ४८ भा)।
णिण्हवण न [**निह्नवन**] अपलाप; (विपा १, २ ; उव)।
णिण्हविद देखो **णिण्हुविद**; (नाट—शकु १२६)।
णिण्हुय वि [**निह्नुत**] अपलपित ; (सुपा २६८)।
णिण्हुव देखो **णिण्हव**=नि+ह्नु । कर्म—णिण्हुविज्जंति ; (पि ३३०)।
णिण्हुविद (शौ) वि [**नि+ह्नुत**] अपलपित; (पि ३३०)।
णितिय देखो **णिच्च**; (आचा ; ठा १०)।
णितुडिअ वि [**नितुडित**] टूटा हुआ, छिन्न ; (अच्चु५४)।
णित्त देखो **णेत्त** ; (पात्र ; सुपा २६१ ; लहुअ १४)।
णित्तम वि [**निस्तमस्**] १ अन्धकार-रहित ; २ अज्ञान-रहित ; (अजि ८)।
णित्तल वि [**दे**] अ-निवृत्त; (भग १५)।
णित्ति (अप) देखो **णीइ** ; (भवि)।
णित्तिंस वि [**निस्त्रिंश**] निर्दय, करुणा-हीन ; (सुपा ३१५)।
णित्तिड वि [**दे**] निरन्तर, अ-व्यवहित; (दे ४, ४०)।
णित्तिरडिअ वि [**दे**] त्रुटित, टूटा हुआ ; (दे ४, ४१)।
णित्तुप्प वि [**दे**] स्नेह-रहित, घृत आदि से वर्जित; (बृह १)।
णित्तुल वि [**निस्तुल**] १ निरुपम, असाधारण ; (उप पृ ५३)। २ क्रिवि. असाधारण रूप से ; "अणगहा नित्तुलं मरसि" (सुपा ३४५)।
णित्तुस वि [**निस्तुष**] तुष-रहित, विशुद्ध ; (पण्ह २, ४ ; उप १७६ टी)।
णित्तेय वि [**निस्तेजस्**] तेज-रहित ; (णाया १,१)।
णित्थणण न [**निस्तनन**] विजय-सूचक ध्वनि ; (सुर २, २३३)।
णित्थर सक [**निर्+तॄ**] पार करना, पार उतरना । णित्थरेइ ; (सुपा ४४६)। "णित्थरंति खलु कायरावि पायनिज्जामयगुणेण महण्णवं" (स १६३)। कवकृ—**णित्थरिज्जंत** ; (राज)। कृ—**णित्थरियव्व** ; (णाया १, ३ ; सुपा १२६)।
णित्थरण न [**निस्तरण**] पार-गमन, पार-प्राप्ति ; (ठा ४, ४ ; उप १३४ टी)।
णित्थरिअ देखो **णित्थिण्ण**; (उप १३४ टी)।
णित्थाण वि [**निःस्थान**] स्थान-रहित, स्थान-भ्रष्ट ; (णाया १, १८)।
णित्थाम वि [**निःस्थामन्**] निर्बल, मन्द; (पात्र; गउड; सुपा ४८६)।
णित्थार सक [**निर्+तारय्**] १ पार उतारना, तारना। २ बचाना, छुटकारा देना। णित्थारसु ; (काल)।

णित्थार पुं [**निस्तार**] १ छुटकारा, मुक्ति; २ बचाव, रक्षा; ३ उद्धार; (गाया १, ६ टी—पत्र १६६ ; सुर ३, ५१; ७, २०१ ; सुपा २६६) ।

णित्थारग वि [**निस्तारक**] पार जाने वाला, पार उतरने वाला ; (स १८३) ।

णित्थारणा स्त्री [**निस्तारणा**] पार-प्रापण, पार पहुँचाना; (जं ३) ।

णित्थारिय वि [**निस्तारित**] बचाया हुआ, रक्षित, उद्धृत ; (भग ; सुपा ४४६) ।

णित्थिण्ण } व [**निस्तीर्ण**] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त ; **णित्थिन्न** } "णित्थिण्णो समुद्दं " (स ३६७) । २ जिसको पार किया हो वह, "णित्थिन्ना आवया गरुई" (सुर ८, ८६)। "नित्थिण्णभवसमुद्दो" (स १३६) ।

णिदंस सक [**नि+दर्शय्**] १ उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना । २ दिखाना । णिदंसेइ; (पिंग) । वकृ—**णिदं-** (सुपा ८६) ।

णिदंसण न [**निदर्शन**] १ उदाहरण, दृष्टान्त ; (अभि २०३) । २ दिखाना ; (ठा १०) ।

णिदंसिअ वि [**निदर्शित**] प्रदर्शित, दिखाया हुआ ; "एवं विचिंतिऊणं निदंसिओ नियकरो मए तीए" (सुर ६, ८२ ; उप ६६७ ; सार्ध ४०) ।

णिदरिसण देखो **णिदंसण** ; (उव ; उप ३८४) ।

णिदा स्त्री [**दे**] १ वेदना-विशेष, ज्ञान-युक्त वेदना ; (भग १६, ५) । २ जानते हुए भी की जाती प्राणि-हिंसा ; (पिंड) ।

णिदाण देखो **णिआण** ; (विपा १, १; अंत १५; नाट—वेणी ३३) ।

णिदाया देखो **णिदा** ; (पण्ण ३५) ।

णिदाह पुं [**निदाघ**] १ घर्म, घाम, उष्ण । २ ग्रीष्म-काल, गरमी की मौसिम । ३ जेठ मास ; (आव ५) ।

णिदाह पुं [**निदाह**] असाधारण दाह; (आव ५) ।

णिदेसिअ वि [**निदेशित**] १ प्रदर्शित ; २ उक्त, कथित; (पउम ५, १४५) ।

णिद्दंझाण न [**निद्राध्यान**] निद्रा में होता ध्यान, दुर्ध्यान-विशेष; (आउ) ।

णिद्दंद वि [**निर्द्वन्द्व**] द्वन्द्व-रहित, क्लेश-वर्जित ; (सुपा ४५५) ।

णिद्दंभ वि [**निर्दम्भ**] दम्भ-रहित, कपट-रहित ; (सुपा १४७) ।

णिद्दडी (अप) देखो **णिद्दा** = निद्रा ; (पि ५६६) ।

णिद्दड्ढ वि [**निर्दग्ध**] १ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ ; (सुर १४, २६ ; अंत १५) । २ पुं. नृप-विशेष; (पउम ३२, २२) । ३ रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६) । °**मज्झ** पुं [°**मध्य**] नरकावास-विशेष, एक नरक-प्रदेश ; (ठा ६) । °**ावत्त** पुं [°**ावर्त**] नरकावास-विशेष ; (ठा ६) । °**ावसिट्ठ** पुं [°**ावशिष्ट**] नरक-प्रदेश विशेष ; (ठा ६) ।

णिद्दय वि [**निर्दय**] दया-हीन, करुणा-रहित, निष्ठुर ; (पण्ह १, १ ; गउड) ।

णिद्दलण न [**निर्दलन**] १ मर्दन, विदारण; (आचा) । २ वि. मर्दन करने वाला ; (वज्जा ४२) ।

णिद्दलिअ वि [**निर्दलित**] मर्दित, विदारित ; (पाअ ; सुर ५, २२२ ; सार्ध ७६) ।

णिद्दह सक [**निर् + दह्**] जला देना, भस्म करना । निद्दहइ ; (महा ; उव) । णिद्दहेज्जा ; (पि २२२) ।

णिद्दा अक [**नि + द्रा**] निद्रा लेना, नींद करना । णिद्दाइ; (षड्) । वकृ—**णिद्दाअंत** ; (से १, ५६) ।

णिद्दा स्त्री [**निद्रा**] १ निद्रा, नींद ; (स्वप्न ५६ ; कप्पू)। २ निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें एकाध आवाज देने पर ही आदमी जाग उठे; (कम्म १, ११) । °**अंत** वि [°**वत्**] निद्रा-युक्त, निद्रित ; (से १, ५६) । °**करी** स्त्री [°**करी**] लता-विशेष; (दे ७, ३४) । °**णिद्दा** स्त्री [°**निद्रा**] निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें बड़ी कठिनाई से आदमी उठाया जा सके ; (कम्म १, ११ ; सम १५) । °**ल**, °**लु** वि [°**वत्**] निद्रा वाला; (संक्षि २० ; पि ५६५; प्राप्र)। °**वअ** वि [°**प्रद**] निद्रा देने वाला ; (से ६, ४३) ।

णिद्दाअ वि [**निद्रात**] जो नींद में हो ; (से १, ५६) ।

णिद्दाअ वि [**निर्दाव**] अग्नि-रहित ; (से १, ५६) ।

णिद्दाअ वि [**निर्दाय**] दाय-रहित, पैतृक धन से वर्जित ; (से १, ५६) ।

णिद्दाइअ वि [**निद्रित**] निद्रा-युक्त ; (महा) ।

णिद्दाणी स्त्री [**निद्राणी**] विद्यादेवी-विशेष; (पउम ७,१४४)।

णिद्दाया देखो **णिदा**; (पण्ण ३५) ।

णिद्दारिअ वि [**निर्दारित**] खण्डित, विदारित ; (से ५, ८३ ; १३, ६५) ।

णिद्दाव वि [**निर्दाव**] १ दावानल-रहित; २ जंगल-रहित ; (से ६, ४३)।

णिद्दिट्ठ वि [**निर्दिष्ट**] १ कथित, उक्त ; (भग) । २ प्रतिपादित, निरूपित ; (पंचा ३; दंस)।

णिद्दिट्ठु वि [**निर्देष्टृ**] निर्देश करने वाला; (विसे १५०४; विक्र ६४)।

णिद्दिस सक [**निर्+दिश्**] १ उच्चारण करना, कथन करना। २ प्रतिपादन करना, निरूपण करना। निद्दिसइ ; (विसे १५२६)। कर्म—णिद्दिसइ ; (नाट—मालवि ५३) । हेकृ—**निद्दट्ठुं**; (पि ५७६) । कृ—**णिद्दिस्स**, **णिद्देस** ; (विसे १५२३)।

णिद्दुक्ख वि [**निर्दुःख**] दुःख-रहित, सुखी; (सुपा ५३७)।

णिद्दुर पुं [**दे.नेत्तर**] देश-विशेष; (इक)।

णिद्देस पुं [**निर्देश**] १ लिङ्ग या अर्थ-मात्र का कथन ; (ठा ८—पत्र ४२७)। २ विशेष का अभिधान ; " अविसेसियमुद्देसो विसेसिग्रो होइ निद्देसो " (विसे १४६७ ; १५०३)। ३ निश्चय-पूर्वक कथन ; (विसे १५२६)। ४ प्रतिपादन, निरूपण ; (उत १ ; णंदि)। ५ आज्ञा, हुकुम ; (पात्र ; दस ६, २)। ६ वि. जिसको देश-निकाले की आज्ञा हुई हो वह ; (पउम ४, ८२)।

णिद्देसग } वि [**निर्देशक**] निर्देश करने वाला ; (विसे
णिद्देसय } १५०८ ; १५००)।

णिद्दोत्थ न [**निर्दौःस्थ्य**] १ दुःस्थता का अभाव; (वव ४)। २ वि. स्वस्थ, दुःस्थता-रहित ; (वव ७)।

णिद्दोस वि [**निर्दोष**] दोष-रहित, दूषण-वर्जित, विशुद्ध ; (गउड ; सुर १, ७३)।

णिद्ध न [**स्निग्ध**] स्नेह, रस-विशेष ; (ठा १ ; अणु)। २ स्नेह-युक्त, चिकना ; (हे २, १०९ ; उव ; षड्) । ३ कान्ति-युक्त, तेजस्वी ; (बृह ३)।

णिद्धंत वि [**निध्मात**] अग्नि-संयोग से विशोधित, मल-रहित ; (पराह १, ४ ; औप)।

णिद्धंधस वि [**दे**] १ निर्दय, निष्ठुर ; (दे ४, ३७ ; ओघ ४४५ ; पात्र ; पुप्फ ४५४ ; सहि २६ ; सुपा २४५ ; श्रा ३६)। २ निर्लज्ज, वेशरम ; (विवे १२८)।

णिद्धण वि [**निर्धन**] धन-रहित, अकिंचन ; (हे २, ९० ; णाया १, १८ ; दे ४, ५ ; उप ७६ टी ; महा)।

णिद्धण्ण वि [**निर्धान्य**] धान्य-रहित ; (तंदु)।

णिद्धम वि [**दे**] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहने वाला ; (दे ४, ३८)।

णिद्धमण न [**दे**] खाल, मोरी, पानी जाने का रास्ता ; (दे ४, ३९ ; उर २, १० ; ठा ५, १ ; आवम; तंदु ; उव ; णाया १, २)।

णिद्धमण न [**निर्ध्मान**-] १ तिरस्कार, अवहेलना ; (उप पृ ३४६)। २ पुं. यक्ष-विशेष ; (आव ४)।

णिद्धमाय वि [**दे**] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहने वाला ; (दे ४, ३८)।

णिद्धम्म वि [**दे**] एकमुख-यायी, एक ही तरफ जाने वाला; (दे ४, ३५)।

णिद्धम्म वि [**निर्धर्मन्**] धर्म-रहित, अधर्मी ; (श्रा २७)।

णिद्धय वि [**दे**] देखो **णिद्धम** ; (दे ४, ३८)।

णिद्धाइऊण देखो **णिद्धाव** ।

णिद्धाडण न [**निर्धाटन**] निस्सारण, निष्कासन, बाहर निकालना ; (पराह १, १)।

णिद्धाडाविय वि [**निर्धाटित**] अन्य द्वारा बाहर निकलवाया हुआ, अन्य द्वारा निस्सारित; (महा)।

णिद्धाडिय वि [**निर्धाटित**] निस्सारित, निष्कासित ; (पात्र ; भवि)।

णिद्धारण न [**निर्धारण**] १ गुण या जाति आदि को लेकर समुदाय से एक भाग का पृथक्करण ; २ निश्चय, अवधारण ; (विसे ११६८)।

णिद्धाव सक [**निर्+धाव्**] दौड़ना। संकृ—**णिद्धाइऊण**; (महा)।

णिद्धाविय वि [**निर्धावित**] दौड़ा हुआ, धावित ; (महा)।

णिद्धुण सक [**निर्+धू**] १ विनाश करना। २ दूर करना। संकृ—**निद्धुणे**, **णिधूय**; (दस ७, ५७ ; सूत्र १, ७)।

णिद्धुणिय } वि [**निर्धूत**] १ विनाशित,नष्ट किया हुआ;
णिद्धुय } २ अपनीत; (सुपा ५९६; औप)।

णिद्धूम वि [**निर्धूम**] १ धूम-रहित ; (कप्प ; पउम ५३, १०)। २ एक तरह का अपलक्षण ; (वव २)।

णिद्धूय देखो **णिद्धुय**; (जीव ३)।

णिद्धोअ वि [**निर्धौत**] १ धोया हुआ ; (गा ६३६; से १४, १६; स १६१)। २ निर्मल, स्वच्छ; "निद्धोयउदयकंखिर—" (वज्जा १५८)।

णिद्धोभास वि [**स्निग्धावभास**] चमकीला, स्निग्धपन से चमकता; (णाया १,१—पत्र ४)।

णिधण न [**निधन**] विनाश,मौत; (नाट—मृच्छ १५२)।

णिधत्त न [**निधत्त**] १ कर्मों का एक तरह का अवस्थान; बंधे हुए कर्मों का तप्त सूची-समूह की तरह अवस्थान; २ वि. निबिड़ भाव को प्राप्त कर्म-पुद्गल; (ठा ४,२)।

णिधत्ति स्त्री [**निधत्ति**] करण-विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल निबिड़ रूप से व्यवस्थापित होता है; (पंच ५)।

णिधम्म देखो **णिद्धम्म** = निर्धर्मन्; (ओघ ३७ भा)।

णिधाण देखो **णिहाण**; (नाट—महावीर १२०)।

णिधूय देखो **णिद्धुण**।

णिपडिय वि [**निपतित**] नीचे गिरा हुआ; (सण)।

णिपाइ वि [**निपातिन्**] १ नीचे गिरने वाला। २ सामने गिरने वाला; (सूअ १, ६)।

णिप्पअंप देखो **णिप्पकंप**; (से ६,७८)।

णिप्पएस वि [**निष्प्रदेश**] १ प्रदेश-रहित। २ पुं. परमाणु; (विसे)।

णिप्पंक वि [**निष्पङ्क**] कर्दम-रहित; (सम १३७; भग)।

णिप्पंकिय वि [**निष्पङ्किन्**] पङ्क-रहित; (भवि)।

णिप्पंख सक [**निर्+पक्षय्**] पक्ष-रहित करना, पंख तोड़ना। णिप्पंखेंति; (विपा १,८)।

णिप्पंद वि [**निष्पन्द**] चलन-रहित, स्थिर; (से २,४२)।

णिप्पकंप वि [**निष्प्रकम्प**] कम्प-रहित, स्थिर; (सम १०६; पराह २,४)।

णिप्पक्ख वि [**निष्पक्ष**] पक्ष-रहित; (गउड)।

णिप्पगल वि [**निष्प्रगल**] टपकने वाला, झरने वाला, चूने वाला; (ओघ ३५; ओघ ३४ भा)।

णिप्पच्चवाय वि [**निष्प्रत्यवाय**] १ प्रत्यवाय-रहित, निर्विघ्न; (ओघ २४ टी)। २ निर्दोष, विशुद्ध, पवित्र; "णिप्पच्चवाय-चरणा कज्जं साहंति" (सार्ध ११७)।

णिप्पच्छिम वि [**निष्पश्चिम**] १ अन्तिम, अन्त का; (से १२, २१)। २ परिशिष्ट, अवशिष्ट, बाकी का; "णिप्पच्छिमाइं असई दुक्खालोआइं महुअपुप्फाइं" (गा १०४)।

णिप्पट्ठ वि [**दे**] अधिक; (दे ४,३१)।

णिप्पट्ठ वि [**निःस्पष्ट**] अस्पष्ट, अव्यक्त। °**पसिणवागरण** वि [°**प्रश्नव्याकरण**] निरुत्तर किया हुआ; (भग १५; णाया १,५; उवा)।

णिप्पट्ठ वि [**निःस्पृष्ट**] नहीं छूआ हुआ। °**पसिणवागरण** वि [°**प्रश्नव्याकरण**] निरुत्तर किया हुआ; (भग १५)।

णिप्पडिकम्म वि [**निष्प्रतिकर्मन्**] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, मलिन; (सम ५७; सुपा ४८५)।

णिप्पडियार वि [**निष्प्रतिकार**] निरुपाय, प्रतिकार-वर्जित; (पण्ह २,४)।

णिप्पणिअ वि [**दे**] जल-धौत, पानी से धोया हुआ; (षड्)।

णिप्पण्ण देखो **णिप्फण्ण**; (गा ६८६)।

णिप्पण्ण वि [**निष्प्रज्ञ**] बुद्धि-रहित, प्रज्ञा-शून्य; (उप १७६ टी)।

णिप्पत्त वि [**निष्पत्र**] पत्र-रहित; (गा ८८७; वव १)।

णिप्पत्ति } देखो **णिप्फत्ति**; (पंचा १८; संक्षि ६)।
णिप्पद्दि }

णिप्पभ वि [**निष्प्रभ**] निस्तेज, फीका; (महा)।

णिप्परिग्गह वि [**निष्परिग्रह**] परिग्रह-रहित; (उत्त १४)।

णिप्पलिवयण वि [**निष्प्रतिवचन**] निरुत्तर, उत्तर देने में असमर्थ; (सम ६०)।

णिप्पसर वि [**निष्प्रसर**] प्रसर-रहित, जिसका फैलाव न हो; (पि ३०५)।

णिप्पह देखो **णिप्पभ**; (से १०,१२; हे २,५३)।

णिप्पाण वि [**निष्प्राण**] प्राण-रहित, निर्जीव; (णाया १,२)।

णिप्पाव देखो **णिप्फाव**; (पि ३०५)।

णिप्पिच्छ वि [**दे**] १ ऋजु, सरल; २ दृढ़, मजबूत; (दे ४, ४६)।

णिप्पिट्ठ वि [**निष्पिष्ट**] पीसा हुआ; (दे ८,२०; सण)।

णिप्पिवास वि [**निष्पिपास**] पिपासा-रहित, तृष्णा-वर्जित, निःस्पृह; (पराह १,१; णाया १,१; सुर १,१३)।

णिप्पिह वि [**निःस्पृह**] स्पृहा-रहित, निर्मम; (हे २,२३; उप ३२० टी)।

णिप्पीडिअ वि [**निष्पीडित**] दबाया हुआ; (से ५, २५)।

णिप्पीलण न [**निष्पीडन**] दबाव, दबाना; (आचा)।

णिप्पीलिय देखो **णिप्पीडिअ**। २ निचोड़ा हुआ; "निप्पीलियाइं पोत्ताइं" (स ३३२)।

णिप्पुंसण न [**निष्पुंसन**] १ पोंछना, मार्जन; २ अभिमर्दन; (हे २, ५३)।

णिप्पुन्नग वि [**निष्पुण्यक**] १ पुण्य-रहित। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक कुलपुत्र; (सुपा ५४५)।

णिप्पुलाय पुं [**निष्पुलाक**] आगामी चौविसी में होने वाले एक स्वनाम-ख्यात जिन-देव; (सम १५३)।

णिप्फंद देखो **णिप्पंद**; (हे २, २११; णाया १, २; सुर ३, १७२)।

णिप्फंस वि [**दे**] निस्त्रिंश, निर्दय; (षड्)।

णिप्फज्ज अक [**निर्+पद्**] नीपजना, सिद्ध होना । णिप्फज्जइ ; (स ६१६) । वकृ—**णिप्फज्जमाण** ; (पण्ह १, ४) ।

णिप्फडिअ वि [**निस्फटित**] १ विशीर्ण ; २ जिसका मिजाज ठिकाने पर न हो ; ३ अङ्कुर-रहित ; (उप १२८ टी) ।

णिप्फण्ण वि [**निष्पन्न**] नीपजा हुआ, बना हुआ, सिद्ध ; (से २,१२ ; महा) ।

णिप्फत्ति स्त्री [**निष्पत्ति**] निष्पादन, सिद्धि ; (उव ; उप २८० टी ; सार्ध १०६) ।

णिप्फन्न देखो **णिप्फण्ण** ; (कप्प ; णाया १, १६) ।

णिप्फरिस वि [**दे**] निर्दय, दया-हीन ; (दे ४, ३७) ।

णिप्फल वि [**निष्फल**] फल-रहित, निरर्थक ; (से १४, २६ ; गा १३६) ।

णिप्फाअ देखो **णिप्फाव** ; (प्राप्र) ।

णिप्फाइऊण देखो **णिप्फाय** ।

णिप्फाइय वि [**निष्पादित**] नीपजाया हुआ, बनाया हुआ, सिद्ध किया हुआ ; (विसे ७ टी; उप २११ टी ; महा) ।

णिप्फाय सक [**निर्+पादय्**] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना । संकृ—**णिप्फाइऊण** ; (पंचा ७) ।

णिप्फायग वि [**निष्पादक**] नीपजाने वाला, बनाने वाला, सिद्ध करने वाला ; (विसे ४८३ ; ठा ६ ; उप ८२८) ।

णिप्फायण न [**निष्पादन**] नीपजाना, निर्माण, कृति ; (आव ४) ।

णिप्फाव पुं [**निष्पाव**] धान्य-विशेष, वल्ल ; (हे २, ५३; पण्ण १ ; ठा ५, ३ ; श्रा १८) ।

णिप्फिड अक [**नि+स्फिट्**] बाहर निकलना । वकृ—**णिप्फिडंत** ; (स ५७४) ।

णिप्फिडिअ वि [**निस्फिटित**] निर्गत, बाहर निकला हुआ ; (पउम ६, २२७ ; ८०, ६०) ।

णिप्फुर पुं [**निस्फुर**] प्रभा, तेज ; (गउड) ।

णिप्फेड पुं [**निस्फेट**] निर्गमन, बाहर निकलना; (उप पृ २५२) ।

णिप्फेडिय वि [**निस्फेटित**] १ निस्सारित, निष्कासित ; (सूअ २, २) । २ भगाया हुआ, नसाया हुआ ; (पुप्फ १२५) । ३ अपहृत, छीना हुआ ; (ठा ३, ४) ।

णिप्फेस पुं [**दे**] शब्द-निर्गम, आवाज निकलना ; (दे ४, ३६) ।

णिप्फेस पुं [**निष्पेष**] १ पेषण, पीसना ; २ संघर्ष ; (हे २, ५३) ।

णिबंध सक [**नि+बन्ध्**] १ बाँधना । २ करना । निबंधइ; (भग) ।

णिबंध पुंन [**निबन्ध**] १ संबन्ध, संयोग ; (विसे ६६८) । २ आग्रह, हठ ; (महा) । "णिबन्धाणि" (पि ३५८) ।

णिबंधण न [**निबन्धन**] कारण, प्रयोजन, निमित्त ; (पाअ; प्रासू ६६) ।

णिबद्ध वि [**निबद्ध**] १ बँधा हुआ ; (महा) । २ संयुक्त, संबद्ध; (से ६, ४४) ।

णिबिड वि [**निबिड**] सान्द्र, घना, गाढ़ ; (गउड ; कुमा) ।

णिबिडिय वि [**निबिडित**] निबिड़ किया हुआ ; (गउड) ।

णिबुक्क [**दे**] देखो **णिब्बुक्क** ; (पण्ह १, ३—पत्र ४६) ।

णिबुड्ड अक [**नि+मस्ज्**] निमज्जन करना, डूबना । वकृ—**णिबुड्डिज्जंत, णिबुड्डमाण**; (अच्चु ६३ ; उवा) ।

णिबुड्ड वि [**निमग्न**] डूबा हुआ, निमग्न ; (गा ३७ ; सुर ३, ५१ ; ४, ८०) ।

णिबुड्डण न [**निमज्जन**] डूबना, निमज्जन ; (पउम १०, ४३) ।

णिबोल देखो **णिबुड्ड**=नि+मस्ज् । वकृ—**णिबोलिज्जमाण**; (राज) ।

णिबोह पुं [**निबोध**] १ प्रकृष्ट बोध, उत्तम ज्ञान ; २ अनेक प्रकार का बोध ; (विसे २१८७) ।

णिबोहण न [**निबोधन**] प्रबोध, समझाना ; (पउम १०२, ६२) ।

णिब्बंध पुं [**निर्बन्ध**] आग्रह ; (गा ६७५ ; महा ; सुर ३, ८) ।

णिब्बंधण न [**निर्बन्धन**] निबन्धन, हेतु, कारण ; "सारीरियखेयनिब्बंधणं धणं" (काल) ।

णिब्बल वि [**निर्बल**] बल-रहित, दुर्बल ; (आचा) ।

णिब्बहिं अ [**निर्बहिस्**] अत्यन्त बाहर; (ठा ६—पत्र ३५२)

णिब्बाहिर वि [**निर्बाह्य**] बाहर का, बाहर गया हुआ; "संजमनिब्बाहिरा जाया" (उव) ।

णिब्बुक्क वि [**दे**] १ निर्मूल, मूल-रहित । २ क्रिवि. मूल से; "णिब्बुक्कछिण्णधय—" (पण्ह १, ३—पत्र ४५) ।

णिब्बुड्ड देखो **णिबुड्ड**= निमग्न ; (स ३६० ; गउड) ।

णिब्भंछण देखो **णिब्भच्छण** ; (उव ३०३) ।

णिब्भंजण न [**दे**] पक्वान्न के पकाने पर जो शेष घृत रहता है वह ; (पभा ३३) ।
णिब्भंत वि [**निर्भ्रान्त**] निःसंदेह, संशय-रहित ; (ति१४)।
णिब्भग्ग न [**दे**] उद्यान, बगीचा ; (दे ४, ३४) ।
णिब्भग्ग वि [**निर्भाग्य**] भाग्य-रहित, कम-नसीब ; (उप ७२८ टी ; सुपा ३८५) ।
णिब्भच्छ सक [**निर्+भर्त्स्**] १ तिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना, आक्रोश-पूर्वक अपमान करना । णिब्भच्छेइ, णिब्भच्छेज्जा ; (णाया १, १८ ; उवा) । संकृ—**णिब्भच्छिअ** ; (नाट—मालती १७१) ।
णिब्भच्छण न [**निर्भर्त्सन**] तिरस्कार, अपमान, परुष वचन से अवहेलना ; (पण्ह १, ३ ; गउड) ।
णिब्भच्छणा स्त्री [**निर्भर्त्सना**] ऊपर देखो ; (भग १५ ; णाया १, १६) ।
णिब्भच्छिअ वि [**निर्भर्त्सित**] अपमानित, अवहेलित ; (गा ८६८ ; सुपा ४०७) ।
णिब्भय वि [**निर्भय**] भय-रहित, निडर ; (णाया १, ४ ; महा) ।
णिब्भर सक [**निर्+भृ**] भरना, पूर्ण करना । कवकृ—**णिब्भरंत** ; (से १५, ७४) ।
णिब्भर वि [**निर्भर**] १ पूर्ण, भरपूर ; (से१०, १७) । २ व्यापक, फैलने वाला ; (कुमा) । ३ क्रिवि. पूर्ण रूप से ; "मेघो य णिब्भरं वरिसइ" (आवम) ।
णब्भिंद सक [**निर्+भिद्**] तोड़ना, विदारण करना । कवकृ—**णिब्भिज्जंत, णिब्भिज्जमाण** ; (से १४, २६ ; भग १८, २ ; जीव ३) ।
णिब्भिच्च वि [**नर्भीक**] भय-रहित, निडर ; (सुपा १४३ ; २४६ ; २७५) ।
णिब्भिज्जंत, **णिब्भिज्जमाण** देखो **णिब्भिंद** ।
णिब्भिट्ट वि [**दे**] आक्रान्त ; (भवि) ।
णिब्भिण्ण वि [**निर्भिन्न**] १ विदारित, तोड़ा हुआ ; (पाअ) । २ विद्ध; (से ५, ३४) ।
णिब्भीअ वि [**निर्भीक**] भय-रहित ; (से १३, ७०) ।
णिब्भुग्ग वि [**दे**] भग्न, खण्डित ; (दे ४, ३२) ।
णिब्भेय पुं [**निर्भेद**] भेदन, विदारण ; (सुपा ३२७) ।
णिब्भेयण न [**निर्भेदन**] ऊपर देखो ; (सुर २, ६६) ।
णिभ देखो **णिह**=निभ ; (उव ; जं ३) ।
णिभंग पुं [**निभङ्ग**] भञ्जन, खण्डन, त्रोटन ; (राज) ।
णिभाल सक [**नि+भालय्**] देखना, निरीक्षण करना । णिभालेहि ; (आवम) । वकृ—**णिभालयंत**; (उप पृ ५३) । कवकृ—**णिभालिज्जंत** ; (उप ६८६ टी) ।
णिभालिय वि [**निभालित**] दृष्ट, निरीक्षित; (उप पृ ५८) ।
णिभिअ, **णिभुअ** देखो **णिहुअ** ; (पण्ह २, ३ ; गा ८००) ।
णिभेल सक [**निर्+भेलय्**] बाहर करना । कवकृ—**णिभेल्लंत** ; (पण्ह १,३—पत्र ४५) ।
णिभेलण न [**दे**] गृह, घर, स्थान ; (कप्प) ।
णिम सक [**नि+अस्**] स्थापन करना । णिमइ ; (हे४, १९९ ; षड्) । णिमेइ ; (पि ११८) । वकृ—**णिमेंत** ; (से १, ४१) ।
णिमंत सक [**नि+मन्त्रय्**] निमन्त्रण देना, न्यौता देना । णिमंतेइ ; (महा) । वकृ—**णिमंतेमाण** ; (आचा २, २, ३) । संकृ—**णिमंतिऊण** ; (महा) ।
णिमंतण न [**निमन्त्रण**] निमन्त्रण, न्यौता ; (उप पृ११३) ।
णिमंतणा स्त्री [**निमन्त्रणा**] ऊपर देखो ; (पंचा १२) ।
णिमंतिय वि [**निमन्त्रित**] जिसको न्यौता दिया गया हो वह ; (महा) ।
णिमग्ग वि [**निमग्न**] डूबा हुआ ; (पउम १०९, ४ ; औप) । °**जला** स्त्री [°**जला**] नदी-विशेष ; (जं ३) ।
णिमज्ज अक [**नि+मस्ज्**] डूबना, निमज्जन करना । णिमज्जइ ; (पि ११८) । वकृ—**णिमज्जंत** ; (गा ६०६ ; सुपा ६४) ।
णिमज्जग वि [**निमज्जक**] १ निमज्जन करने वाला । पुं. वानप्रस्थाश्रमी तापस-विशेष, जो स्नान के लिए थोड़े समय तक जलाशय में निमग्न रहते हैं ; (औप) ।
णिमज्जण न [**निमज्जन**] डूबना, जल-प्रवेश ; (सुपा ३५४) ।
णिमाणिअ देखो **णिम्माणिअ**=निर्मानित ; (भवि) ।
णिमिअ वि [**न्यस्त**]स्थापित, निहित ; (कुमा ; से १,४२; स ६ ; ७६०; सण) ।
णिमिअ वि [**दे**] आघ्रात, सूँघा हुआ ; (षड्) ।
णिमिण देखो **णिम्माण**=निर्माण; (कम्म १, २५) ।
णिमित्त न [**निमित्त**] १ कारण, हेतु ; (प्रासू १०४) । २ कारण-विशेष, सहकारि-कारण ; (सुअ २, २) । ३ शास्त्र-विशेष, भविष्य आदि जानने का एक शास्त्र ; (ओघ १६ भा;

ठा ८) । ४ अतीन्द्रिय ज्ञान में कारण-भूत पदार्थ; (ठा ८) । ५ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष; (ठा ३, ४) । °पिंड पुं [°पिण्ड] भविष्य आदि बतला कर प्राप्त की हुई भिक्षा; (आचा २, १, ६) ।

णिमित्तिअ देखो **णेमित्तिअ**; (सुपा ४०२) ।

णिमिल्ल अक [**नि+मील्**] आँख मूँदना, आँख मींचना। णिमिल्लइ; (हे ४, २३२) ।

णिमिल्ल वि [**निमीलित**] जिसने नेत्र बंद किया हो, मुद्रित-नेत्र; (से ६, ६१; ११, ५०) ।

णिमिल्लण देखो **णिमीलण**; (राज) ।

णिमिस पुं [**निमिष**] नेत्र-संकोच, अक्षि-मीलन; (गा ३८५; सुपा २१६; गउड) ।

णिमीलण न [**निमीलन**] अक्षि-संकोच; (गा ३६७; सूअ १, ५, १, १२ टी) ।

णिमीलिअ वि [**निमीलित**] मुद्रित-(नेत्र); (गा १३३; से ६, ८६; महा) ।

णिमोस न [**निमिश्र**] एक विद्याधर-नगर; (इक) ।

णिमे सक [**नि+मा**] स्थापन करना। णिमेसि; (गउड) ।

णिमेण न [**दे**] स्थान, जगह; (दे ४, ३७) ।

णिमेल स्त्रीन [**दे**] दन्त-मांस; (दे ४, ३०) । स्त्री—°**ला**; (दे ४, ३०) ।

णिमेस पुं [**निमेष**] निमीलन, अक्षि-संकोच; (श्रा १६; उव) ।

णिमेसि देखो **णिमे**।

णिमेसि वि [**निमेषिन्**] आंख मूँदने वाला; (सुपा ४४) ।

णिम्म सक [**निर्+मा**] बनाना, निर्माण करना। णिम्मइ; (षड्) । णिम्मेइ; (धम्म १२ टी) । कवकृ—**णिम्माअंत**; (नाट—मालती ५४) ।

णिम्मइअ वि [**निर्मित**] रचित, कृत; (गा ५००; ६०० अ) ।

णिम्मंथण न [**निर्मथन**] १ विनाश। २ वि. विनाशक; "तह य पयट्टसु सिग्घं अणत्थनिम्मंथणं तित्थं" (सुपा ७१) ।

णिम्मंस वि [**निर्मांस**] मांस-रहित, शुष्क; (णाया १, १; भग) ।

णिम्मंसा स्त्री [**दे**] देवी-विशेष, चामुण्डा; (दे ४,३५) ।

णिम्मंसु वि [**दे**, **निःश्मश्रु**] तरुण, जवान, युवा; (दे ४, ३२) ।

णिम्मक्खिअ देखो **णिम्मच्छिअ** = निर्मक्षिक; (नाट) ।

णिम्मच्छ सक [**नि+म्रक्ष**] विलेपन करना। णिम्मच्छइ; (भवि) ।

णिम्मच्छण न [**निम्रक्षण**] विलेपन; (भवि) ।

णिम्मच्छर वि [**निर्मात्सर्य**] मात्सर्य-रहित, ईर्ष्या-शून्य; (उप पृ ८४) ।

णिम्मच्छिअ वि [**निम्रक्षित**] विलिप्त; (भवि) ।

णिम्मच्छिअ न [**निर्मक्षिक**] १ मक्षिका का अभाव। २ विजन, निर्जनता; (अभि ६८) ।

णिम्मज्जाय वि [**निर्मर्याद**] मर्यादा-रहित; (दे १, १३३) ।

णिम्मज्जिय वि [**निर्मार्जित**] उपलिप्त; (स ७५) ।

णिम्मणुय वि [**निर्मनुज**] मनुष्य-रहित; (सण) ।

णिम्मद्दग वि [**निर्मर्दक**] १ निरन्तर मर्दन करने वाला। २ पुं. चोरों की एक जाति; (पण्ह १, ३) ।

णिम्मद्दिय वि [**निर्मर्दित**] जिसका मर्दन किया गया हो; (पण्ह १, ३) ।

णिम्मम वि [**निर्मम**] १ ममता-रहित, निःस्पृह; (अच्चु ६६; सुपा १४०) । २ पुं. भारत-वर्ष के एक भावी जिन-देव; (सम १५४) ।

णिम्मय वि [**दे**] गत, गया हुआ; (दे ४, ३४) ।

णिम्मल वि [**निर्मल**] मल-रहित, विशुद्ध; (स्वप्न ७०; प्रासू १३१) । २ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट; (ठा६) ।

णिम्मल्ल न [**निर्माल्य**] देव का उच्छिष्ट द्रव्य; (हे१, ३८; षड्) ।

णिम्मव सक [**निर्+मा**] बनाना, रचना, करना। णिम्मवइ; (हे ४, १६; षड्) । कर्म—निम्मविज्जंति; (वज्जा १२२) ।

णिम्मव सक [**निर्+मापय्**] बनवाना, कराना; (ठा ४, ४; कुमा) ।

णिम्मवइत्तु वि [**निर्मापयितृ**] बनवाने वाला; (ठा ४, ४) ।

णिम्मवण न [**निर्माण**] रचना, कृति; (उप ६४८ टी; सुपा २३, ६५; ३०५) ।

णिम्मवण न [**निर्मापण**] बनवाना, कराना; (कप्पू) ।

णिम्मविअ वि [**निर्मित**] बनाया हुआ, रचित; (कुमा; गा १०१; सुर १६, ११) ।

णिम्मविअ वि [**निर्मापित**] बनवाया हुआ; (कुमा) ।

णिम्मह सक [**गम्**] १ जाना, गमन करना। २ अक. फैलना। णिम्महइ; (हे ४, १६२) । वकृ—**णिम्महंत, णिम्महमाण**; (से ७, ६२; १५, ५३; स १२६) ।

णिम्मह पुं [**निर्मथ**] १ विनाश ; २ वि. विनाशक ; (भवि)।
णिम्महण न [**निर्मथन**] १ विनाश ; २ वि. विनाश-कारक; (सुपा ७५)। स्त्री—°**णी** ; (सुर १६, १८४)।
णिम्महिअ वि [**गत**] गया हुआ ; (कुमा)।
णिम्महिअ वि [**निर्मथित**] विनाशित ; (हेका ५०)।
णिम्माअंत देखो **णिम्म**।
णिम्माइअ देखो **णिम्माय** ; (पि ५६१)।
णिम्माण सक [**निर्+मा**] बनाना, करना, रचना। णिम्माणइ; (हे ४, १६; षड्; प्राप्र)।
णिम्माण न [**निर्माण**] १ रचना, बनावट, कृति ; २ कर्म-विशेष, शरीर के अङ्गोपाङ्ग के निर्माण में नियामक कर्म-विशेष ; (सम ६७)।
णिम्माण वि [**निर्मान**] मान-रहित ; (से ३, ४५)।
णिम्माणअ वि [**निर्मायक**] निर्माण-कर्ता, बनाने वाला ; (से ३, ४५)।
णिम्माणिअ वि [**निर्मित**] रचित, बनाया हुआ ; (कुमा)।
णिम्माणिअ वि [**निर्मानित**] अपमानित, तिरस्कृत ; (भवि)।
णिम्माणुस वि [**निर्मानुष**] मनुष्य-रहित; (सुपा ४४४)। स्त्री—°**सी** ; (महा)।
णिम्माय वि [**निर्मात**] १ रचित, विहित, कृत ; (उव ; पाअ ; वज्जा ३४)। २ निपुण, अभ्यस्त, कुशल ; (औप; कप्प)। "नाहियसत्थेसु निम्माया परिवाइया" (सुर १२,४२)।
णिम्माव सक [**निर्+मापय्**] बनवाना, करवाना। णिम्मावइ; (सण)। कृ—**णिम्मावित्त**; (सुअ २,१,२२)।
णिम्माविय वि [**निर्मापित**] बनवाया हुआ, कारित ; (सुपा २६७)।
णिम्मिअ वि [**निर्मित**] रचित, बनाया हुआ ; (ठा ८; प्रासू १२७)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] जगत् को ईश्वरादि-कृत मानने वाला ; (ठा ८)।
णिम्मिस्स वि [**निर्मिश्र**] १ मिला हुआ, मिश्रित। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] अत्यन्त नजदीक का स्वजन, जैसे माता, पिता, भाई, भगिनी, पुत्र और पुत्री ; (वव १०)।
णिम्मीसुअ वि [**दे**] श्मश्रु-रहित, दाढ़ी-मूँछ वर्जित; (षड्)।
णिम्मुक्क वि [**निर्मुक्त**] मुक्त किया गया ; (सुपा १७३)।
णिम्मुक्ख पुं [**निर्मोक्ष**] मुक्ति, छुटकारा ; (विसे २४६८)।
णिम्मूल वि [**निर्मूल**] मूल-रहित, जिसका मूल काटा गया हो वह ; (सुपा ५३५)।
णिम्मेर वि [**निर्मर्याद**] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज ; (ठा ३, १ ; औप ; सुपा ६)।
णिम्मोअ पुं [**निर्मोक**] कञ्चुक, सर्प की त्वचा ; (हे २, १८२; भत्त ११०; से १, ६०)।
णिम्मोअणी स्त्री [**निर्मोचनी**] कञ्चुक, निर्मोक ; (उत्त १४, ३४)।
णिम्मोडण न [**निर्मोटन**] विनाश ; (मै ६१)।
णिम्मोल्ल वि [**निर्मूल्य**] मूल्य-रहित ; (कुमा)।
णिम्मोह वि [**निर्मोह**] मोह-रहित; (कुमा ; श्रा १२)।
णिरइ स्त्री [**निर्ऋति**] मूला-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)।
णिरइयार वि [**निरतिचार**] अतिचार-रहित, दूषण-वर्जित ; (सुपा १००)।
णिरइसय वि [**निरतिशय**] अत्यन्त, सर्वाधिक ; (काल)।
णिरईआर देखो **णिरइयार** ; (सुपा १०० ; रयण १८)।
णिरंकुस वि [**निरङ्कुश**] अंकुश-रहित, स्वच्छन्दी ; (कुमा; श्रा २८)।
णिरंगण वि [**निरङ्गण**] निर्लेप, लेप-रहित ; (औप ; उव ; णाया १, ११—पत्र १७१)।
णिरंगी स्त्री [**दे**] सिर का अवगुण्ठन, घूँघट ; (दे ४, ३१ ; २, २०)।
णिरंजण वि [**निरञ्जन**] निर्लेप, लेप-रहित ; (स ५८२; कप्प)।
णिरंतय वि [**निरन्तक**] अन्त-रहित ; (उप १०३१ टी)।
णिरंतर वि [**निरन्तर**] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित ; (गउड ; हे १, १४)।
णिरंतराय वि [**निरन्तराय**] १ निर्विघ्न, निर्बाध ; २ व्यवधान-रहित, सतत ; "धम्मं करेह विमलं च निरन्तरायं" (पउम ४४, ६७)।
णिरंतरिय वि [**निरन्तरित**] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित; (जीव ३)।
णिरंध वि [**नीरन्ध्र**] छिद्र-रहित ; (विक्र ६७)।
णिरंबर वि [**निरम्बर**] वस्त्र-रहित, नग्न ; (आवम)।
णिरंभा स्त्री [**निरम्भा**] एक इन्द्राणी, वैरोचन इन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ५, १ ; इक)।
णिरंस वि [**निरंश**] अंश-रहित, अखण्ड, संपूर्ण ; (विसे)।
णिरक्क पुं [**दे**] १ चोर, स्तेन ; २ पृष्ठ, पीठ ; ३ वि. स्थित ; (दे ४, ४६)।
णिरक्किय वि [**निराकृत**] अपाकृत, निरस्त ; (उत्त ६,५६)।
णिरक्ख सक [**निर्+ईक्ष्**] निरीक्षण करना, देखना।

णिरक्खइ ; (हे ४, ४१८)। "तोवि ताव दिट्ठीए णिरक्खिज्जा" (महा)।
णिरक्खर वि [**निरक्षर**] मूर्ख, ज्ञान-रहित ; (कप्पू ; वज्जा १५८)।
णिरग्गल वि [**निरर्गल**] १ रुकावट से रहित ; (सुपा १६२ ; ४७१)। २ स्वच्छन्दी, स्वैरी, निरंकुश; (पाअ)।
णिरच्चण वि [**निरर्चन**] अर्चन-रहित ; (उव)।
णिरट्ठ } वि [**निरर्थ, °क**] १ निरर्थक, निष्प्रयोजन,
णिरट्ठग } निकम्मा ; (उत्त २०)। २ न. प्रयोजन का अभाव; "णिरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो" (उत्त २,४२)।
णिरण वि [**निर्ऋण**] ऋण-रहित, करज से मुक्त ; (सुपा ५६३ ; ५६६)।
णिरणास देखो **णिरिणास**=नश्। णिरणासइ ; (हे ४,१७८)
णिरणुकंप वि [**निरनुकम्प**] अनुकम्पा-रहित, निर्दय ; (णाया १, २ ; बृह १)।
णिरणुक्कोस वि [**निरनुक्रोश**] निर्दय, दया-शून्य ; (णाया १, २ ; प्रासु ६८)।
णिरणुताव वि [**निरनुताप**] पश्चात्ताप-रहित ; (णाया १,२)।
णिरणुतावि वि [**निरनुतापिन्**] पश्चात्ताप-वर्जित ; (पव २७४)।
णिरत्थ वि [**निरस्त**] अपास्त, निराकृत ; (वव ८)।
णिरत्थ } वि [**निरर्थ, °क**] अपार्थक, निकम्मा, निष्प्र-
णिरत्थग } योजन ; (दे ४, १६ ; पउम ६५, ४ ; पण्ह
णिरत्थय } १, २ ; उव ; सं ४१)।
णिरप्प अक [**स्था**] बैठना। णिरप्पइ ; (हे ४, १६)।
भूका—णिरप्पीअ ; (कुमा)।
णिरप्प पुं [**दे**] १ पृष्ठ, पीठ; २ वि. उद्वेष्टित; (दे ४,४६)।
णिरभिग्गह वि [**निरभिग्रह**] अभिग्रह-रहित ;(आ ६)।
णिरभिराम वि [**निरभिराम**] असुन्दर, अचारु; (पण्ह १,३)।
णिरभिलप्प वि [**निरभिलाप्य**] अनिर्वचनीय, वाणी से बतलाने को अशक्य ; (विसे ४८८)।
णिरभिस्संग वि [**निरभिष्वङ्ग**] आसक्ति-रहित, निःस्पृह; (पंचा २, ६)।
णिरय पुं [**निरय**] १ नरक, पाप-भोग-स्थान ; (ठा ४, १; आचा ; सुपा १४०)। २ नरक-स्थित जीव, नारक; (ठा १०)। °**पाल** पुं [°**पाल**] देव-विशेष; (ठा ४,१)। °**ावलिया** स्त्री [°**ावलिका**] १ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष; (निर १, १)। २ नरक-विशेष; (पण्ण२)। ३ नरक जीवों को दुःख देने वाले देवों की एक जाति, परमाधार्मिक देव ; (पण्ह १, १)।
णिरय वि [**निरत**] आसक्त, तत्पर, तल्लीन; (उप ६७६; उव ; सुपा २६)।
णिरय वि [**नीरजस्**] रजो-रहित, निर्मल ; (भग ; गा ८७८)।
णिरव सक [**बुभुक्ष्**] खाने की इच्छा करना। णिरवइ; (षड्)।
णिरव सक [**आ + क्षिप्**] आक्षेप करना। णिरवइ; (षड्)।
णिरवइक्ख वि [**निरपेक्ष**] अपेक्षा-रहित, निरीह, निःस्पृह; (विसे ७ टी)।
णिरवकंख वि [**निरवकाङ्क्ष**] स्पृहा-रहित, निःस्पृह; (औप)।
णिरवकंखि वि [**निरवकाङ्क्षिन्**] निःस्पृह; (णाया १,६)।
णिरवगाह वि [**निरवगाह**] अवगाहन-रहित; (षड्)।
णिरवग्गह वि [**निरवग्रह**] निरंकुश, स्वच्छन्दी, स्वैरी ; (पाअ)।
णिरवच्च वि [**निरपत्य**] अपत्य-रहित, निःसंतान; (भग; सम १५०)।
णिरवज्ज वि [**निरवद्य**] निर्दोष, विशुद्ध; (दस ५, १ ; सुर ८, १८३)।
णिरवणाम देखो **णिरोणाम**; (उव)।
णिरवयक्ख देखो **णिरवइक्ख** ; (णाया १, ६; पउम २, ६३)।
णिरवयव वि [**निरवयव**] अवयव-रहित, निरंश ; (विसे)।
णिरवयास वि [**निरवकाश**] अवकाश-रहित; (गउड)।
णिरवराह वि [**निरपराध**] अपराध-रहित, बेगुनाह ; (महा)।
णिरवराहि वि [**निरपराधिन्**] ऊपर देखो ; (आव ६)।
णिरवलंब वि [**निरवलम्ब**] सहारा रहित; (पण्ह १,३)।
णिरवलाव वि [**निरपलाप**] १ अपलाप-रहित ; २ गुप्त बात को प्रकट नहीं करने वाला, दूसरे को नहीं कहने वाला ; (सम ५७)।
णिरवसंक वि [**निरपशङ्क**] दुःशङ्का-वर्जित ; (भवि)।
णिरवसर वि [**निरवसर**] अवसर-रहित ; (गउड)।
णिरवसाण वि [**निरवसान**] अन्त-रहित ; (गउड)।
णिरवसेस वि [**निरवसेस**] सब, सकल ; (हे १, १४ ; षड् ; से १, ३७)।
णिरवाय वि [**निरपाय**] १ उपद्रव-रहित, विघ्न-वर्जित; २ निर्दोष, विशुद्ध ; (श्रा १६ ; सुपा २७५)।

णिरविक्ख }
णिरवेक्ख } देखो **णिरवइक्ख**; (श्रा ६ ; उव ; पि ३४१ ; से ६, ७५; सुअ १, ६ ; पंचा ४;
णिरवेच्छ } निचू २० ; नाट—चैत २५७)।

णिरस सक [**निर्+अस्**] अपास्त करना। णिरसइ; (सण)।

णिरसण वि [**निरशन**] आहार-रहित, उपोषित ; (उव ; सुपा १८१)।

णिरसि वि [**निरसि**] खड्ग-रहित ; (गउड)।

णिरसिअ वि [**निरस्त**] परास्त, अपास्त ; (दे ५, ५६)।

णिरहंकार वि [**निरहंकार**] गर्व-रहित ; (उव)।

णिरहारि वि [**निराहारिन्**] आहार-रहित, उपोषित; "हवउ व वक्कलधारी, निरहारी बंभचेरवयधारी" (सुपा २५२)।

णिरहिगरण वि [**निरधिकरण**] अधिकरण-रहित, हिंसा-रहित, निर्दोष ; (पंचा १६)।

णिरहिगरणि वि [**निरधिकरणिन्**] ऊपर देखो ; (भग १६, १)।

णिरहिलास वि [**निरभिलाष**] इच्छा-रहित, निरीह; (गउड)।

णिराइअ वि [**निरायत**] लम्बा किया हुआ, विस्तारित; (से ४, ५२ ; ७, ३६)।

णिराउह वि [**निरायुध**] आयुध-वर्जित, निःशस्त्र ; (महा)।

णिराकर }
णिरागर } सक [**निरा+कृ**] १ निषेध करना। २ दूर करना, हटाना। ३ विवाद का फैसला करना। निराकरिसों ; (कुप्र २१५)। संकृ—**णिराकिच्च**; (सुअ १,१, १; १, ३, ३; १, ११)।

णिरागरण न [**निराकरण**] १ निषेध, प्रतिषेध। २ फैसला, निपटारा ; (स ४०६)।

णिरागरिय वि [**निराकृत**] हटाया हुआ, दूर किया हुआ; (पउम ४६, ५१ ; ६१, ५६)।

णिरागस वि [**निराकर्ष**] निर्धन, रङ्क ; (निचू २)।

णिरागार वि [**निराकार**] १ आकृति-रहित। २ अपवाद-रहित ; (धर्म २)।

णिराणंद वि [**निरानन्द**] आनन्द-रहित, शोकातुर (महा)।

णिराणिउ (अप) अ. निश्चित, नक्की ; (कुमा)।

णिराणुकंप देखो **णिरणुकंप** ; "णिक्किवणिराणुकंपो आसुरियं भावणं कुणइ" (ठा ४, ४), "अह सो णिराणुकंपो" (संथा ८४ ; पउम २६, २५)।

णिराणुवत्ति वि [**निरनुवर्तिन्**] १ अनुसरण नहीं करने वाला ; २ सेवा नहीं करने वाला ; (उव)।

णिराद वि [**दे**] नष्ट, विनाश-प्राप्त ; (दे ४, ३०)।

णिराबाध }
णिरावाह } वि [**निराबाध**] आबाधा-रहित, हरकत-रहित ; (अभि १११ ; सुपा२५३ ; ठा १० ; आव ४)।

णिरामगंध वि [**निरामगन्ध**] दूषण-रहित, निर्दोष चारित्र वाला ; (आचा ; सुअ १, ६)।

णिरामय वि [**निरामय**] रोग-रहित, नीरोग ; (सुपा५७५)।

णिरामिस वि [**निरामिष**] आसक्ति हीन, निरीह, निरभिष्वङ्ग; "आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो णिरामिसा" (उत्त १४, ४६)।

णिराय वि [**दे**] १ ऋजु, सरल ; (दे ४, ५० ; पात्र)। २ प्रकट, खुला ; ३ पुं. रिपु, शत्रु ; (दे ४, ५०)। ४ वि. लम्बा किया हुआ ; (से २, ४०)।

णिरायंक वि [**निरातङ्क**] आतङ्क-रहित, नीरोग ; (औप)।

णिरायरिय देखो **णिरागरिय** ; (पउम ६१, ४६)।

णिरायव वि [**निरातप**] आतप-रहित ; (गउड)।

णिरायार देखो **णिरागार** ; (पउम ६, ११८)।

णिरायास वि [**निरायास**] परिश्रम-रहित ; (पण्ह २, ४)।

णिरारंभ वि [**निरारम्भ**] आरम्भ-वर्जित; (सुपा १४०; गउड)।

णिरालंब वि [**निरालम्ब**] आलम्बन-रहित ; (गा ६५ ; आरा ८)।

णिरालंबण वि [**निरालम्बन**] आलम्बन-रहित ; (औप; णाया १, ६)।

णिरालय वि [**निरालय**] स्थान-रहित, एकत्र स्थिति नहीं करने वाला ; (औप)।

णिरालोय वि [**निरालोक**] प्रकाश-रहित ; (निर१, १)।

णिरावकंखि वि [**निरवकाङ्क्षिन्**] आकाङ्क्षा-रहित, निःस्पृह; (सुअ १, १०)।

णिरावयक्ख वि [**निरपेक्ष**] अपेक्षा-रहित, निरीह ; (णाया १, १ ; ६ ; भत १४८)।

णिरावरण वि [**निरावरण**] १ प्रतिबन्धक-रहित ; (औप)। २ नम्र ; (सुर १४, १७८)।

णिरावराह वि [**निरपराध**] अपराध-रहित ; (सुपा४२३)।

णिराविक्ख }
णिरावेक्ख } देखो **णिरावयक्ख** ; "विसएसु णिराविक्खा तरंति संसार-कंतारं" (भत ४६ ; पउम ६, ८ ; १००, ११)।

णिरास वि [**निराश**] १ आशा-रहित, हताश ; (पउम ४४, ५६ ; दे ४, ४८ ; संक्षि १६)। २ न. आशा का अभाव; (पण्ह १, ३)।

णिरास वि [दे] नृशंस, क्रूर ; (षड्)।
णिरासंस वि [निराशंस] आकाङ्क्षा-रहित, निरीह ; (सुपा ६२१)।
णिरासय वि [निराश्रय] निराधार; (वज्जा १५२)।
णिरासव वि [निराश्रव] आश्रव-रहित, कर्म-बन्धन के कारणों से रहित ; (पराह २, ३)।
णिराह वि [दे] निर्दय, निष्करुण ; (दे ४, ३७)।
णिरिअ वि [दे] अवशेषित, बाकी रखा हुआ ; (दे ४, २८)।
णिरिंक वि [दे] नत, नमा हुआ ; (दे ४, ३०)।
णिरिंगी [दे] देखो **णीरंगी** ; (गउड)।
णिरिंधण वि [निरिन्धन] इन्धन-रहित ;(भग ७, १)।
णिरिक्ख सक [निर्+ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना। णिरिक्खइ, णिरिक्खए ; (सण ; महा)। वकृ—**णिरिक्खंत, णिरिक्खमाण** ;(सण ; उप २११ टी)। संकृ—**णिरिक्खिऊण** ; (सण)। कृ—**णिरिक्खणिज्ज** ; (कप्पू)।
णिरिक्खण न [निरीक्षण] अवलोकन ; (गा १५०)।
णिरिक्खणा स्त्री [निरीक्षणा] अवलोकन, प्रतिलेखना ; (ओघ ३)।
णिरिक्खिअ वि [निरीक्षित] आलोकित, दृष्ट ; (कप्पू ; पउम ४८, ४८)।
णिरिग्घ सक [नि+ली] १ आश्लेष करना। २ अक. छिपना। णिरिग्घइ ; (हे ४, ५५)।
णिरिग्घिअ वि [निलीन] आश्लिष्ट, आलिङ्गित; (कुमा)।
णिरिण वि [निर्ऋण] ऋण-मुक्त, उऋण ; (ठा ३, १ टी—पत्र १२०)।
णिरिणास सक [गम्] गमन करना। णिरिणासइ ; (हे ४, १६२)।
णिरिणास सक [पिष्] पीसना। णिरिणासइ; (हे४, १८५)।
णिरिण्णास अक [नश्] पलायन करना, भागना। णिरिणासइ; (हे ४, १७८ ; कुमा)।
णिरिणासिअ वि [गत] गया हुआ, यात ; (कुमा)।
णिरिणासिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ ; (कुमा)।
णिरिणिज्ज सक [पिष्] पीसना। णिरिणिज्जइ ; (हे ४, १८५)।
णिरिणिज्जिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ ; (कुमा)।
णिरिति स्त्री [निरिति] एक रात्रि का नाम ; (कप्प)।
णिरीह वि [निरीह] निष्काम, निःस्पृह ; (कुमा ; सुपा ४२१)।

णिरु (अप) अ. निश्चित, नक्की ; (हे ४, ३४४ ; सुपा ८६; सण ; भवि)।
णिरुअ देखो **णिरुज** ; (विसे १५८५ ; सुपा ४४६)।
णिरुईकय वि [निरुजीकृत] नीरोग किया गया ; (उप ५९७ टी)।
णिरुंभ सक [नि+रुध्] निरोध करना, रोकना। णिरुंभइ; (औप)। कवकृ—**णिरुंभमाण, णिरुब्भंत**; (स ५३१ ; महा) संकृ—**णिरुंभइत्ता** ; (सूअ १, ४, २)। कृ—**णिरुंभियव्व, णिरुद्धव्व**; (सुपा ४०४; विसे ३०८१)।
णिरुंभण न [निरोधन] अटकाव, रुकावट ; (सूअ १, ५ ; भवि)।
णिरुक्कंठ वि [निरुत्कण्ठ] उत्कण्ठा-रहित, निरुत्साह ; (नाट)।
णिरुग्घ देखो **णिरिग्घ** । णिरुग्घइ ; (षड्)।
णिरुच्चार वि [निरुच्चार] १ उच्चार—पुरीषोत्सर्ग के लिए लोगों के निर्गमन से वर्जित; (णाया१,८—पत्र १४६)। २ पाखाना जाने से जो रोका गया हो ; (पराह १, ३)।
णिरुच्छव वि [निरुत्सव] उत्सव-रहित ; (अभि१८६)।
णिरुच्छाह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन ; (से१४, ३५)।
णिरुज वि [निरुज] १ रोग-रहित। २ न. रोग का अभाव। °**सिख** न [°शिख] एक प्रकार की तपश्चर्या ; (पव२७१)।
णिरुज्जम वि [निरुद्यम] उद्यम-रहित, आलसी ; (उव ; स ३१० ; सुपा ३८४)।
णिरुट्ठाइ वि [निरुत्थायिन्] नहीं उठने वाला ; (उत्त १ ; ३)।
निरुत्त वि [निरुक्त] १ उक्त, कथित ; (सत्त ७१)। २ न. निश्चित उक्ति ; (अणु)। ३ व्युत्पत्ति ; (विसे २ ; ९९३)। ४ वेदाङ्ग शास्त्र-विशेष ; (औप)।
णिरुत्त क्रिवि [दे] १ निश्चित, नक्की, चोक्कस ; (दे ४, ३० ; पउम ३५, ३२ ; कुमा ; सण; भवि), "तहवि हु मरइ निरुत्तं पुरिसो संपत्थिए काले" (पउम११, ६१)। २ वि. निश्चिन्त, चिन्ता-रहित; (कुमा)।
णिरुत्तत्त वि [निरुत्तप्त] विशेष ताप-युक्त, संतप्त ; (उव)।
णिरुत्तम वि [निरुत्तम] अत्यन्त श्रेष्ठ; (काल)।
णिरुत्तर वि [निरुत्तर] उत्तर-रहित किया हुआ, परास्त ; (सुर १२, ६६)।
णिरुत्ति स्त्री [निरुक्ति] व्युत्पत्ति ; (विसे ९९२)।

णिरुत्तिअ वि [**नैरुक्तिक**] व्युत्पत्ति के अनुसार जिसका अर्थ किया जाय वह शब्द ; (अणु)।

णिरुद्दर वि [**निरुदर**] छोटा पेट वाला, अनुदर। स्त्री—°**रा**; (पण्ह १, ४)।

णिरुद्ध वि [**निरुद्ध**] १ रोका हुआ ; (णाया१, १)। २ आवृत, आच्छादित ; (सुअ १, २, ३)। ३ पुं. मत्स्य की एक जाति ; (कप्प)।

णिरुद्धव } देखो **णिरुंभ**।
णिरुब्भंत }

णिरुलि पुंस्त्री [**दे**] कुम्भीर की आकृति वाला एक जन्तु ; (दे ४, २७)।

णिरुवकिट्ठ देखो **णिरुवक्किट्ठ** ; (भग)।

णिरुवक्कम वि [**निरुपक्रम**] १ जो कम न किया जा सके वह (आयुष्य); (सुर २, १३२; सुपा २०४)। २ विघ्न-रहित, अ-बाध ; "नियनिरुवक्कमविक्कमअक्कंतसमग्गरिउचक्को" (सुपा ३६)।

णिरुवक्कय वि [**दे**] अ-कृत, नहीं किया हुआ; (दे ४, ४१)।

णिरुवक्किट्ठ वि [**निरुपक्लिष्ट**] क्लेश-वर्जित, दुःख-रहित; (भग २५, ७)।

णिरुवक्केस वि [**निरुपक्लेश**] शोक आदि क्लेशों से रहित; (ठा ७)।

णिरुवगारि वि [**निरुपकारिन्**] उपकार को नहीं मानने वाला, प्रत्युपकार नहीं करने वाला; (आवम)।

णिरुवग्गह वि [**निरुपग्रह**] उपकार नही करने वाला; (ठा ४, ३)।

णिरुवट्ठाणि वि [**निरुपस्थानिन्**] निरुद्यमी, आलसी; (आचा)।

णिरुवद्दव वि [**निरुपद्रव**] उपद्रव-रहित, आबाधा-वर्जित ; (औप)।

णिरुवम वि [**निरुपम**] अ-समान, अ-साधारण ; (औप ; महा)।

णिरुवयरिय वि [**निरुपचरित**] वास्तविक, तथ्य; (णाया १, ५)।

णिरुवयार वि [**निरुपकार**] उपकार-रहित; (उव)।

णिरुवलेव वि [**निरुपलेप**] लेप-वर्जित, अ-लिप्त; (कप्प)। "रयणमिव णिरुवलेवा" (पउम १४, ६४)।

णिरुवसग्ग वि [**निरुपसर्ग**] १ उपसर्ग-रहित, उपद्रव-वर्जित; (सुपा २८७)। २ पुं. मोक्ष, मुक्ति; (पडि ; धर्म २)। ३ न. उपसर्ग का अभाव ; (वव ३)।

णिरुवहय वि [**निरुपहत**] १ उपघात-रहित, अक्षत ; (भग ७, १)। २ रुकावट से शून्य, अ-प्रतिहत; (सुपा २६८)।

णिरुवहि वि [**निरुपधि**] माया-रहित, निष्कपट; (दसनि १)।

णिरुवार सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना। णिरुवारइ ; (हे ४, २०९)।

णिरुवारिअ वि [**गृहीत**] उपात्त, गृहीत; (कुमा)।

णिरुवालंभ वि [**निरुपालम्भ**] उपालम्भ-शून्य ; (गउड)।

णिरुव्विग्ग वि [**निरुद्विग्न**] उद्वेग-रहित ; (णाया १, १—पत्र ६)।

णिरुस्साह वि [**निरुत्साह**] उत्साह-हीन; (सुअ १,४,१)।

णिरूव सक [**नि+रूपय्**] १ विचार कर कहना। २ विवेचन करना। ३ देखना। ४ दिखलाना। ५ तलाश करना। निरूवेइ; (महा)। वकृ—**णिरूविंत, निरूवमाण**; (सुर १५, २०५ ; कुप्र २७५)। संकृ—**णिरूविऊण**; (पंचा ८)। कृ—**णिरूवियव्व**; (पंचा ११)। हेकृ—**निरूविउं** ; (कुप्र २०८)।

णिरूवण न [**निरूपण**] १ विलोकन, निरीक्षण ; (उप ३३७)। २ वि. दिखलाने वाला। स्त्री—°**णी** ; (पउम ११, २२)।

णिरूवणया स्त्री [**निरूपणा**] निरूपण ; (उप ६३०)।

णिरूवाविअ वि [**निरूपित**] गवेषित, जिस की खोज कराई गई हो वह ; (स ५३६; ७४२)।

णिरूविअ वि [**निरूपित**] १ देखा हुआ ; (से १३, १३; सुपा ५२३)। २ आलोचना कर कहा हुआ ; ३ विवेचित, प्रतिपादित; (हे २, ४०)। ४ दिखलाया हुआ; ५ गवेषित; (प्रासू)।

णिरूसुअ वि [**निरुत्सुक**] उत्कण्ठा-रहित ; (गउड)।

णिरूह पुं [**निरूह**] अनुवासना-विशेष, एक तरह का विरेचन; (णाया १, १३)।

णिरेय वि [**निरेजस्**] निष्कम्प, स्थिर; (भग २५, ४)।

णिरेयण वि [**निरेजन**] निश्चल, स्थिर ; (कप्प ; औप)।

णिरोणाम पुं [**निरवनाम**] नम्रता-रहित, गर्वित, उद्धत;(उव)।

णिरोय वि [**नीरोग**] रोग-रहित ; (औप; णाया १, १)।

णिरोव पुं [**दे**] आदेश, आज्ञा, रक्का ; (सुपा २२४)।

णिरोवयार वि [**निरुपकार**] उपकार को नहीं मानने वाला; (ओघ ११३ भा)।

णिरोवयारि वि [**निरुपकारिन्**] ऊपर देखो ; (उव)।

णिरोविअ देखो **णिरूविअ** ; (सुपा ४५६ ; महा)।

णिरोह पुं [**निरोध**] रुकावट, रोकना; (ठा ४, १; औप; पाअ)।
णिरोहग वि [**निरोधक**] रोकने वाला ; (रंभा)।
णिरोहण न [**निरोधन**] रुकावट ; (पराह १, १)।
णिलंक पुं [**दे**] पतद्ग्रह,पिकदान, ष्ठीवन-पात्र; (दे ४,३१)।
णिलय पुं [**निलय**] घर, स्थान, आश्रय ; (से २, २ ; गा ४२१ ; पाअ)।
णिलयण न [**निलयन**] वसति, स्थान ; (विसे)।
णिलाड न [**ललाट**] भाल, कपाल ; (कुमा)।
णिलिअ देखो **णिलीअ** । णिलिअइ ; (षड्)।
णिलिंत नीचे देखो ।
णिलिज्ज, **णिलीअ** सक [**नि+ली**] १ आश्लेष करना, भेटना। २ दूर करना। ३ अक. छिप जाना । णिलिज्जइ, णिलीअइ ; (हे ४, ५५)। णिलिज्जिज्जा ; (कप्प)। वकृ—**णिलिंत, णिलिज्जमाण; णिलीअंत, णिलीअमाण** (कप्प ; सुअ २, २ ; कुमा ; पि ४७४)।
णिलीइर वि [**निलेतृ**] आश्लेष करने वाला, भेटने वाला ; (कुमा)।
णिलुक्क देखो **णिलीअ** । णिलुक्कइ; (हे ४, ५५ , षड्)। वकृ—**णिलुक्कंत** ; (कुमा)।
णिलुक्क सक [**तुड्**] तोड़ना । णिलुक्कइ; (हे ४, ११६)।
णिलुक्क वि [**दे. निलीन**] १ निलीन, खूब छिपा हुआ, प्रच्छन्न, गुप्त, तिरोहित ; (णाया १, ८ ; से १५, २ ; गा ६४ ; सुर ६, ५ ; उव ; सुपा ६४०)। २ लीन, आसक्त ; (विवे ६०)।
णिलुक्कण न [**निलयन**] छिपना; (कुप्र २५२)।
णिल्लंक [**दे**] देखो **णिलंक** ; (दे ४, ३१)।
णिल्लंछण न [**निर्लाञ्छन**] शरीर के किसी अवयव का छेदन; (उवा ; पडि)।
णिल्लच्छ देखो **णेल्लच्छ** ; (पि ६६)।
णिल्लच्छण वि [**निर्लक्षण**] १ मूर्ख, बेवकूफ; (उप ७६७ टी)। २ अपलक्षण वाला, खराब ; (श्रा १२)।
णिल्लज्ज वि [**निर्लज्ज**] लज्जा-रहित ; (हे २,१९७; २००)
णिल्लज्जिम पुंस्त्री [**निर्लज्जिमन्**] निर्लज्जपन, बेशरमी ; (हे १, ३५)। स्त्री—°**मा** ; (हे १, ३५)।
णिल्लस अक [**उत्+लस्**] उल्लसना, विकसना । णिल्लसइ ; (हे ४, २०२)।
णिल्लसिअ वि [**उल्लसित**] उल्लास-युक्त, विकसित ; (कुमा)।
णिल्लसिअ वि [**दे**] निर्गत, निःसृत, निर्यात; (दे ४,३६)।
णिल्लालिअ वि [**निर्लोलित**] निःसारित, बाहर निकाला हुआ ; (णाया १, १ ; ८—पत्र १३३ ; सुर १२, २३५ ; महा)।
णिल्लुंछ सक [**मुच्**] छोड़ना, त्याग करना । णिल्लुंछइ; (हे ४, ९१)।
णिल्लुंछिअ वि [**मुक्त**] त्यक्त, छोड़ा हुआ ; (कुमा)।
णिल्लुत्त वि [**निर्लुप्त**] विनाशित ; (विक २५)।
णिल्लूर सक [**छिद्**] छेदन करना, काटना । णिल्लूरइ : (हे ४, १२४)। णिल्लूरह; (आरा ६८)।
णिल्लूरण न [**छेदन**] छेद, विच्छेद ; (कुमा)।
णिल्लूरिय वि [**छिन्न**] काटा हुआ, विच्छिन्न; "आवत्त-विद्दुमाहयनिल्लूरियदवियसंखउलं" (पउम ८, २५८)।
णिल्लेव वि [**निर्लेप**] लेप-रहित ; (विसे ३०८३)।
णिल्लेवग पुं [**निर्लेपक**] रजक, धोबी ; (आचू ४)।
णिल्लेवण न [**निर्लेपन**] १ मल को दूर करना ; (वव १)। २ वि. निर्लेप, लेप-रहित; (ओघ १९ भा)। °**काल** पुं [°**काल**] वह काल, जिस समय नरक में एक भी नारक जीव न हो ; (भग)।
णिल्लेविअ वि [**निर्लेपित**] १ लेप-रहित किया हुआ ; २ बिलकुल खूट गया हुआ ; (भग)।
णिल्लेहण न [**निर्लेखन**] उद्वर्त्तन, पोंछना ; (आचा २, ३, २)।
णिल्लोभ, **णिल्लोह** वि [**निर्लोभ**] लोभ-रहित, अ-लुब्ध ; (सुपा ३६१ ; श्रा १२ ; भवि)।
णिव पुं [**नृप**] राजा, नरेश ; (कुमा ; रयण ४७)। °**तणय** वि [°**संबन्धिन्**] राज-संबन्धी, राजकीय ; (सुपा ५३९)।
णिवइ पुं [**नृपति**] ऊपर देखो ; (ठा ३, १ ; पउम ३०, ९)। °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] राज-मार्ग, जाहिर रास्ता ; (पउम ७९, १९)।
णिवइअ वि [**निपतित**] १ नीचे गिरा हुआ ; (णाया १, ७)। २ एक प्रकार का विष ; (ठा ४, ४)।
णिवइत्तु वि [**निपतितृ**] नीचे गिरने वाला ; (ठा ४,४)।
णिवच्छण न [**दे**] अवतारण, उतारना ; (दे ४, ४०)।
णिवज्ज अक [**निर्+पद्**] निष्पन्न होना, नीपजना, बनना । णिवज्जइ ; (षड्)।

णिवज्ज अक [**नि+सद्**] बैठना । णिवज्जसु ; (स ५०६)। वकृ—**णिवज्जमाण**; (स ५०३) । प्रयो—णिवज्जावेइ ; (निर १, १) ।

णिवट्ट अक [**नि+वृत्**] १ निवृत्त होना, लौटना, हटना । २ रुकना । वकृ—**णिवट्टंत** ; (सुपा १६२) ।

णिवट्ट वि [**निवृत्त**] १ निवृत्त, हटा हुआ, प्रवृत्ति-विमुख । २ न, निवृत्ति ; (हे ४, ३३२) ।

णिवट्टण न [**निवर्तन**] १ निवृत्ति, प्रवृत्ति-निरोध । २ जहां रास्ता बन्द होता हो वह स्थान ; (णाया १, २—पत्र ७६) ।

णिवड अक [**नि+पत्**] नीचे पड़ना, नीचे गिरना । णिवडइ ; (उव ; षड् ; महा) । वकृ—**णिवडंत, णिवडमाण** ; (गा ३४ ; सुर ३, १२७) । संकृ—**णिवडिऊण, णिवडिअ** ; (दंस ३ ; महा) ।

णिवडण न [**निपतन**] अधः-पतन ; (राज) ।

णिवडिअ वि [**निपतित**] नीचे गिरा हुआ ; (से १४, ३४ ; गा २३४ ; उप पृ २६) ।

णिवडिर वि [**निपतितृ**] नीचे गिरने वाला ; (सुपा ४६ ; सण) ।

णिवण्ण वि [**निषण्ण**] १ बैठा हुआ ; (महा ; संथा ६५ ; ७३) । २ पुं. कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म आदि किसी प्रकार का ध्यान न किया जाता हो वह कायोत्सर्ग ; (आव ५) । °**णिवण्ण** पुं [°**निषण्ण**] जिसमें आर्त और रौद्र ध्यान किया जाय वह कायोत्सर्ग ; (आव ५) ।

णिवण्णुस्सिय पुं [**निषण्णोत्सृत**] कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान किया जाता हो वह कायोत्सर्ग ; (आव ५) ।

णिवत्त देखो **णिवट्ट**=नि+वृत् । वकृ—**णिवत्तमाण** ; (वेव १) । कृ—**णिवत्तणीअ**; (नाट—शकु १०८) । प्रयो—णिवत्तावेमि ; (पि ५५२) ।

णिवत्त देखो **णिवट्ट**=निवृत्त ; (षड् ; कप्प) ।

णिवत्तण देखो **णिवट्टण** ; (महा ; हे २, ३० ; कुमा) ।

णिवत्तय वि [**निवर्तक**] १ वापिस आने वाला, लौटने वाला । २ लौटाने वाला, वापिस करने वाला ; (हे २, ३० ; प्राप्र) ।

णिवत्ति स्त्री [**निवृत्ति**] निवर्तन ; (उव) ।

णिवत्तिअ वि [**निवर्त्तित**] रोका हुआ, प्रतिषिद्ध ; (स ३६४) ।

णिवत्तिअ वि [**निर्वर्तित**] निष्पादित ; "निवत्तिया सव्वभूया" (स ७६३) ।

णिवद्दि देखो **णिवत्ति** ; (संक्षि ६) ।

णिवन्न देखो **णिवण्ण** ; (स ७६०) ।

णिवय देखो **णिवड** । णिवइज्जा, णिवएज्जा ; (कप्प ; ठा ३, ४) । वकृ—**णिवयंत, णिवयमाण**; (उप १४२ टी; सुर ४, ६५ ; कप्प) ।

णिवय पुं [**निपात**] नीचे गिरना, अधः-पतन; (सुर १३, १६७) ।

णिवरुण पुं [**निवरुण**] वृक्ष-विशेष; (उप १०३१ टी) ।

णिवस अक [**नि+वस्**] निवास करना, रहना । णिवसइ ; (महा) । वकृ—**णिवसंत**; (सुपा २२५) । हेकृ—**णिवसिउं** ; (सुपा ४६३) ।

णिवसण न [**निवसन**] वस्त्र, कपड़ा ; (अभि १३६ ; महा ; सुपा २००) ।

णिवसिय वि [**निवसित**] जिसने निवास किया हो वह ; (महा) ।

णिवसिर वि [**निवसितृ**] निवास करने वाला ; (गउड)।

णिवह सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णिवहइ ; (हे ४, १६२) ।

णिवह अक [**नश**] भागना, पलायन करना । णिवहइ ; (हे ४, १७८) ।

णिवह सक [**पिष्**] पीसना । णिवहइ ; (हे ४, १८५ ; षड्) ।

णिवह पुंन [**निवह**] समूह, राशि, जत्था ; (से २, ४२ ; सुर ३, ३५; प्रासु १४४), "अच्छउ ता फलनिवहं" (वज्जा १५२) ।

णिवह पुं [**दे**] समृद्धि, वैभव; (दे ४, २६) ।

णिवहिअ वि [**नष्ट**] नाश-प्राप्त ; (कुमा) ।

णिवहिअ वि [**पिष्ट**] पीसा हुआ; (कुमा) ।

णिवाइ वि [**निपातिन्**] गिरने वाला ; (आचा) ।

णिवाड सक [**नि+पातय्**]नीचे गिराना । निवाडेइ ; (स ६६०) । वकृ— **निवाडयंत**, (स ६८६) । संकृ—**णिवाडेइत्ता** ; (जीव ३) ।

णिवाडिय वि [**निपातित**] नीचे गिराया हुआ; (महा)।

णिवाडिर वि [**निपातयितृ**] नीचे गिराने वाला; (सण)।

णिवाण न [**निपान**] कूप या तालाव के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड ; (स ३१२)।

°साला स्त्री [°शाला] पशुओं का पानी पीलाने का स्थान; (महा)।

णिवाय देखो **णिवाड**। णिवायइ; (कुमा)। णिवाएज्जा; (पि १३१)।

णिवाय पुं [दे] स्वेद, पसीना ; (दे ४, ३४; सुर १२,८)।

णिवाय पुं [**निपात**] १ पतन, अधः-पतन, गिरना ; (गा २२२ ; सुपा १०३)। २ संयोग, संबन्ध; "दिट्ठिणिवाश्रो ससिमुहीए" (गा १४८ ; उत २ ; गउड)। ३ च, प्र आदि व्याकरण-प्रसिद्ध अव्यय ; (पराह२, २ ; सुपा २०३)। ४ विनाश ; (पिंड)।

णिवाय वि [**निवात**] पवन-रहित, स्थिर ; (परह २, ३ ; स ४०३ ; ७४३)।

णिवायण न [**निपातन**] १ गिराना, निपातन, ढाहना ; (परह १, २)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द-सिद्धि , प्रकृति आदि के बिना ही विभाग किये अखरड शब्द की निष्पत्ति ; (विसे २३)।

णिवार सक [**नि+वारय्**] निवारण करना, निषेध करना, रोकना। णिवारेइ; (उव ; महा)। वकृ—**णिवारेंत** ; (महा)। कवकृ—**णिवारीअंत, णिवारिज्जमाण** ; (नाट—मृच्छ १५४ ; १३५)। कृ—**णिवारियव्व, णिवारेयव्व** ; (सुपा ४८२ ; महा)।

णिवारग वि [**निवारक**] निषेध करने वाला, रोकने वाला ; (सुर १, १२६ ; सुपा ६३६)।

णिवारण न [**निवारण**] १ निषेध, रुकावट; (भग ६,३३)। २ शीत आदि को रोकने वाला, गृह, वस्त्र आदि ; "न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जइ" (उत्त २, ७)। ३ वि. निवारण करने वाला, रोकने वाला ; "उवसग्गनिवारणो एसो" (अजि ३८)।

णिवारय देखो **णिवारग** ; (उप ५३० टी)।

णिवारि वि [**निवारिन्**] निवारक, प्रतिषेधक। स्त्री—°**रिणी** ; (महा)।

णिवारिय वि [**निवारित**] रोका हुआ, निषिद्ध ; (भग ; प्रासू १६६)।

णिवास पुं [**निवास**] १ निवसन, रहना ; २ वास-स्थान, डेरा ; (कुमा ; महा)।

णिवासि वि [**निवासिन्**] निवास करने वाला, रहने वाला ; (महा)।

णिविअ देखो **णिमिअ**=न्यस्त ; (से १२, ३०)।

णिविट्ट देखो **णिवट्ट**=निवृत्त ; (सण)।

णिविट्ठ वि [**निविष्ट**] १ स्थित, बैठा हुआ ; (महा)। २ आसक्त, लीन ; (राज)।

णिविट्ठ वि [**निर्विष्ट**] लब्ध, उपात्त, गृहीत ; (ठा५, २)। °**कप्पट्ठिइ** स्त्री [°**कल्पस्थिति**] जैन साधुओं को एक तरह का आचार ; (ठा ५, २)।

णिविड देखो **णिबिड** ; (षड् ; हे १, २४०)।

णिविडिअ देखो **णिबिडिय** ; (गउड ; पि २४०)।

णिवित्ति स्त्री [**निवृत्ति**] १ निवर्तन, उपरम, प्रवृत्ति का अभाव; (विसे २७६८ ; स १५४)। २ वापिस लौटना, प्रत्यावर्तन; (सुपा ३३२)।

णिविद्ध वि [**दे**] १ सो कर उठा हुआ; २ निराश, हताश ; ३ उद्भट; ४ नृशंस, निर्दय ; (दे ४, ४८)।

णिविस अक [**नि+विश्**] बैठना। वकृ— **णिविसंत**; (१२)।

णिविस (अप) देखो **णिमिस** ; (भवि)।

णिविसिर वि [**निवेष्टृ**] बैठने वाला ; (सण)।

णिवुड्ढ सक [**नि+वर्धय्**] १ त्याग करना, छोड़ना। २ हानि करना। वकृ—**णिवुड्ढेमाण**; (सुज्ज २)। संकृ—**णिवुड्ढित्ता**; (सुज्ज १)।

णिवुड्ढि स्त्री [**निवृद्धि**] १ वृद्धि का अभाव ; (ठा २, ३)। २ दिन की छोटाई ; (भग)।

णिवुण देखो **णिउण** ; (अच्चु ६६)।

णिवुत्त देखो **णिवट्ट**=निवृत्त ; स ५८८)।

णिवेअ सक [**नि+वेदय्**] १ सम्मान-पूर्वक ज्ञापन करना। २ अर्पण करना। ३ मालूम करना। कर्म—णिवेइज्जइ; (निचू१)। संकृ—**णिवेइऊण**; (स ५६६)। हेकृ—**णिवेएउं**; (पंचा १५)। कृ—**णिवेयणीअ** ; (स १२०)।

णिवेअग वि [**निवेदक**] सम्मान-पूर्वक ज्ञापन करने वाला ; (सुपा २६८)।

णिवेअण } न [**निवेदन**] १ सम्मान-पूर्वक ज्ञापन ;
णिवेअणय } (पंचा १ ; निचू ११)। २ नैवेद्य, देवता को अर्पित अन्न आदि ; (पउम ३२, ८३)।

णिवेअणा स्त्री [**निवेदना**] ऊपर देखो; (णाया १,)। °**पिंड** पुं [°**पिण्ड**] देवता को अर्पित अन्न आदि, नैवेद्य ; (निचू ११)।

णिवेअय देखो **णिवेअग** ; (सुपा २२५ ; स ५१६)।

णिवेइय वि [**निवेदित**] सम्मान-पूर्वक ज्ञापित; (महा; भवि)।

णिवेदइत्तअ वि [**निवेदयितृ**] निवेदन करने वाला ; (अभि १३६) ।

णिवेस सक [**नि+वेशय्**] स्थापन करना, बैठाना । णिवेसइ, णिवेसेइ ; (सख ; कप्प) । संकृ—**णिवेसइत्ता, णिवेसिउं, णिवेसिऊण, णिवेसित्ता, णिवेसिय** ; (उत्त ३२ ; महा ; सख ; कप्प; महा) । कृ—**णिवेसियव्व**; (सुपा ३६४)

णिवेस पुं [**निवेश**] १ स्थापन, आधान; (ठा ६; उप पृ ३३०) २ प्रवेश; (निचू ४) । ३ आवास-स्थान, डेरा; (बृह १) ।

णिवेस पुं [**नृपेश**] १ महान् राजा, चक्रवर्ती राजा ; (सुपा ४६३) ।

णिवेसण न [**निवेशन**] १ स्थान, बैठना ; (आचा) । २ एक ही दरवाजे वाले अनेक गृह ; (आव ४) ।

णिवेसाविय वि [**निवेशित**] बैठाया हुआ ; (महा) ।

णिव्व न [**नीव्र**] छदि, पटल-प्रान्त ; (दे ४, ४८ ; पाअ)।

णिव्व न [**दे**] १ ककुद, चिह्न; २ व्याज, बहाना; (दे ४, ४८)।

णिव्वक्कर वि [**दे**] परिहास-रहित, सत्य; (कुप्र १६७)।

णिव्वक्कल वि [**निर्वल्कल**] वल्कल-रहित; (पि ६२)।

णिव्वट्ट देखो **णिव्वत्त**=निर्+वर्तय् । संकृ—**णिव्वट्टित्ता** ; (ठा २, ४) ।

णिव्वट्ट (अप) देखो **णिच्चट्ट** ; (हे ४, ४२२ टि) ।

णिव्वट्टग वि [**निर्वर्तक**] बनाने वाला, कर्ता ; (आव४) ।

णिव्वट्टिय वि [**निर्वर्तित**] निष्पादित, बनाया हुआ ; (आचा २, ४, २) ।

णिव्वड सक [**मुच्**] दुःख को छोड़ना । णिव्वडइ ; (षड्) ।

णिव्वड अक [**भू**] १ पृथक् होना, जुदा होना । २ स्पष्ट होना । णिव्वडइ ; (हे ४, ६२) ।

णिव्वड देखो **णिव्वल**=निर्+पद् ; (सुपा १२२) ।

णिव्वडिअ वि [**भूत**] १ पृथग्-भूत, जो जुदा हुआ हो ; (से ६, ८८) । २ स्पष्टीभूत, जा व्यक्त हुआ हो ; (सुर ७, १०४) ।

णिव्वडिअ वि [**निष्पन्न**] सिद्ध, कृत, निर्वृत्त ; (पाअ); "सुकुलुप्पत्ती य गुणन्नुया य सम्मं इमीए णिव्वडिया" (सुपा १२२) ।

णिव्वढ वि [**दे**] नग्न, नंगा ; (दे ४, २८) ।

णिव्वण वि [**निर्व्रण**] व्रण-रहित, क्षत-वर्जित ; (णाया १, ३ ; औप) ।

णिव्वण्ण सक [**निर्+वर्णय्**] १ श्लाघा करना, प्रशंसा करना । २ देखना । वकृ—**णिव्वण्णंत** ; (से ३, ४४ ; उप १०३१ टी ; महा) ।

णिव्वत्त सक [**निर्+वर्तय्**] बनाना, करना, सिद्ध करना । णिव्वत्तेइ ; (महा) । संकृ—**णिव्वत्तिऊण, णिव्वत्तेऊण** ; (महा) ।

णिव्वत्त सक [**निर्+वृत्तय्**] गोल बनाना, वर्तुल करना । कवकृ—**णिव्वत्तिज्जमाण** ; (भग) ।

णिव्वत्त वि [**निर्वृत्त**] निष्पन्न, रचित, निर्मित ; (महा ; औप) ।

णिव्वत्तण न [**निर्वर्तन**] निष्पत्ति, रचना, बनावट ; (उप पृ १८६) । °धिकरणिया, °हिगरणिया स्त्री [°धिकरणिकी] शस्त्र बनाने की क्रिया ; (ठा२, १ ; भग३,३)।

णिव्वत्तणया, **णिव्वत्तणा** स्त्री [**निर्वर्तना**] ऊपर देखो ; (पराण ३४ ; उत्त ३) ।

णिव्वत्तय वि [**निर्वर्तक**] निष्पन्न करने वाला, बनाने वाला; (विसे ११४२ ; स ५६३ ; हे २, ३०) ।

णिव्वत्ति स्त्री [**निर्वृत्ति**] निष्पत्ति, विनिर्माण ; (विसे ३००२) । देखो **णिव्वित्ति** ।

णिव्वत्तिय वि [**निर्वर्तित**] निष्पादित, बनाया हुआ ; (स ३३६ ; सुर १५, २२१; संक्षि १०) ।

णिव्वत्तिय वि [**निर्वृत्तित**] गोलाकार किया हुआ; (भग)।

णिव्वमिअ वि [**दे**] परिभुक्त ; (दे ४, ३६) ।

णिव्वय अक [**निर्+वृ**] शान्त होना, उपशान्त होना । कृ—**णिव्वयणिज्ज** ; (स ३०१) ।

णिव्वय वि [**निर्वृत**] १ उपशान्त, शम-प्राप्त ; (सूअ १, ४, २) । २ परिणत, परिणाम-प्राप्त ; (दसनि १) ।

णिव्वय वि [**निर्व्रत**] व्रत-रहित, नियम-रहित ; (पउम २, ८८ ; उप २६४ टी) ।

णिव्वयण न [**निर्वचन**] १ निरुक्ति, शब्दार्थ-कथन ; (आवम) । २ उत्तर, जवाब ; (ठा १०) । ३ वि. निरुक्ति करने वाला, निर्वाचक; "जाव दविओवओगो, अपच्छिमविअप्पनिव्वयणो" (सम्म ८) ।

णिव्वयणिज्ज देखो **णिव्वय**=निर्+वृ ।

णिव्वर सक [**कथय्**] दुःख कहना । णिव्वरइ ; (हे ४, ३) । भूका—णिव्वरही ; (कुमा) । कर्म—

"कह तम्मि निव्वरिज्जइ, दुक्खं कंडुज्जुएण हिअएण ।

अद्दाए पडिबिंबं व, जम्मि दुक्खं न संकमइ ; (स ३०६) ।

णिव्वर सक [**छिद्**] छेदन करना, काटना। णिव्वरइ ; (हे ४, १२४)।
णिव्वरण न [**कथन**] दुःख-निवेदन ; (गा २५५)।
णिव्वरिअ वि [**छिन्न**] काटा हुआ, खण्डित ; (कुमा)।
णिव्वल सक [**मुच्**] दुःख को छोड़ना। णिव्वलेइ ; (हे ४, ९२)।
णिव्वल अक [**निर्+पद्**] निष्पन्न होना, सिद्ध होना, बनना। णिव्वलइ ; (हे ४, १२८)।
णिव्वल देखो **णिच्चल=क्षर्**। णिव्वलइ; (हे ४,१७३टि)।
णिव्वल देखो **णिव्वड=भू**। वकृ—**णिव्वलंत, णिव्वलमाण** ; (से १, ३६ ; ७, ४३)।
णिव्वलिअ वि [**दे**] १ जल-धौत, पानी से धोया हुआ ; २ प्रविगणित ; ३ विघटित, वियुक्त ; (दे ४, ५१)।
णिव्वव सक [**निर्+वापय्**] ठंढ़ा करना, बुझाना। णिव्ववेहि ; (स ४५५)। णिव्ववसु ; (काल)। वकृ—**णिव्ववंत** ; (सुपा २२५)। कृ—**णिव्ववियव्व** ; (सुपा २९०)।
णिव्ववण न [**निर्वापण**] १ बुझाना, शान्त करना ; २ वि. शान्त करने वाला, ताप को बुझाने वाला; (सुर ३,२३७)।
णिव्वविअ वि [**निर्वापित**] बुझाया हुआ, ठंढा किया हुआ ; (गा ३१७ ; सुर २, ७४)।
णिव्वह अक [**निर्+वह्**] १ निभना, निर्वाह करना, पार पड़ना। २ आजीविका चलाना। णिव्वहइ ; (स १०५; वज्जा ६)। कर्म—णिव्वुब्भइ ; (पि ५४१)। वकृ—**णिव्वहंत** ; (श्रा १२; कुप्र ३३)। कृ—**निव्वहियव्व**; (कुप्र ३७५)।
णिव्वह सक [**उद्+वह्**] १ धारण करना। २ ऊपर उठाना। णिव्वहइ ; (षड्)।
णिव्वहण न [**निर्वहण**] निर्वाह; (सुपा १७५; कुप्र ३७५)।
णिव्वहण न [**दे**] विवाह, सादी ; (दे ४, ३६)।
णिव्वा अक [**वि+श्रम्**] विश्राम करना। णिव्वाइ ; (हे ४, १५९))। वकृ—**णिव्वाअंत**; (से ८, ८)।
णिव्वाघाइम वि [**निर्व्याघातिम**] व्याघात-रहित, स्खलना-रहित ; (औप)।
णिव्वाघाय वि [**निर्व्याघात**] १ व्याघात-वर्जित ; (णाया १, १ ; भग ; कप्प)। २ न. व्याघात का अभाव ; (पण्ण २)।
णिव्वाघाया स्त्री [**निर्व्याघाता**] एक विद्या-देवी; (पउम ७, १४५)।
णिव्वाण न [**निर्वाण**] १ मुक्ति, मोक्ष, निर्वृति ; (विसे १९७५)। २ सुख, चैन, शान्ति, दुःख-निवृत्ति ; "निउणमणो निव्वाणं सुंदरि निस्संसयं कुणइ" (उप ७२८ टी ; पउम ४६, १६)। ३ बुझाना, विध्यापन; (आव ४)। ४ वि. बुझा हुआ ; " जह दीवो णिव्वाणो" (विसे १९९१; कुप्र ५१)। ५ पुं. ऐरवत वर्ष में होने वाले एक जिन-देव का नाम; (सम १५४)।
णिव्वाण न [**दे**] दुःख-कथन ; (दे ४, ३३)।
णिव्वाणि पुं [**निर्वाणिन्**] भरतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में संजात एक जिन-देव ; (पव ७)।
णिव्वाणी स्त्री [**निर्वाणी**] भगवान् श्री शान्तिनाथ की शासन-देवी ; (संति १ ; १०)।
णिव्वाय वि [**निर्वाण**] बीता हुआ, व्यतीत ; (से १४, १४)।
णिव्वाय वि [**विश्रान्त**] १ जिसने विश्राम किया हो वह ; (कुमा)। २ सुखित, निर्वृत ; (से १३, २३)।
णिव्वाय वि [**निर्वात**] वायु-रहित ; (णाया १, १ ; औप)।
णिव्वालिय वि [**भावित**] पृथक् किया हुआ ; (से १४, ५४)।
णिव्वाव देखो **णिव्वव**। णिव्वावेमि ; (स ३५२)। संकृ—**णिव्वाविऊण** ; (निचू १)।
णिव्वाव पुं [**निर्वाप**] घी, शाक आदि का परिमाण ; (निचू १)। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] एक तरह की भोजन-कथा ; (ठा ४, २)।
णिव्वावइत्तअ (शौ) वि [**निर्वापयितृक**] ठंढा करने वाला ; (पि ६००)।
णिव्वावण न [**निर्वापण**] बुझाना, विध्यापन ; (दस४)।
णिव्वावणा स्त्री [**निर्वापणा**] बुझाना, ठंढा करना, उपशान्ति ; ; (गउड)।
णिव्वाविय वि [**निर्वापित**] ठंडा किया हुआ; (णाया १, १ ; दस ५, १)।
णिव्वासण न [**निर्वासन**] देश-निकाला ; (स ५३४; कुप्र ३४३)।
णिव्वासणा स्त्री [**निर्वासना**] ऊपर देखा ; (पउम ६६ ४१)।

णिव्वाह पुं [**निर्वाह**] १ निभाना, पार-प्राप्ति। २ आजीविका, जीवन-सामग्री ; "निव्वाहं किंपि दाउं च" (सुपा ४८८)।

णिव्वाहग वि [**निर्वाहक**] निर्वाह करने वाला ; (रंभा)।

णिव्वाहण न [**निर्वाहण**] १ निर्वाह, निभाना ; (सुपा ३६४)। २ निस्सार करना; (राज)।

णिव्वाहिअ वि [**निर्वाहित**] अतिवाहित, बिताया हुआ, गुजारा हुआ ; (से ६, ४२)।

णिव्वाहिअ वि [**निर्व्याधिक**] व्याधि-रहित, नीरोग ; (से ६, ४२)।

णिव्विअप्प देखो **णिव्विगप्प** ; (सम्म ३३)।

णिव्विआर वि [**निर्विकार**] विकार-रहित ; (गा ५०६)।

णिव्विइअ वि [**निर्विकृतिक**] १ घृत आदि विकृति-जनक पदार्थों से रहित ; (औप)। २ प्रत्याख्यान-विशेष, जिसमें घृत आदि विकृतिओं का त्याग किया जाता है; (पव ४ ; पंचा ५)।

णिव्विइगिच्छ वि [**निर्विचिकित्स**] फल-प्राप्ति में शङ्का-रहित ; (कस ; धर्म २)।

णिव्विइगिच्छ न [**निर्विचिकित्स्य**] फल-प्राप्ति में संदेह का अभाव ; (उत्त २८)।

णिव्विइगिच्छा स्त्री [**निर्विचिकित्सा**] फल-प्राप्ति में शङ्का का अभाव ; (औप ; पडि)।

णिव्विकप्प } वि [**निर्विकल्प**] १ संदेह-रहित, निःसंशय;
णिव्विगप्प } (कुमा ; गच्छ २)। २ भेद-रहित ; (सम्म ३३)।

णिव्विगिअ देखो **णिव्विइअ** ; (पा २)।

णिव्विग्घ वि [**निर्विघ्न**] विघ्न-रहित, बाधा-वर्जित ; (सुपा १८७ ; सण)।

णिव्विचिंत वि [**निर्विचिन्त**] चिन्ता-रहित, निश्चिन्त ; (सुर ७, १२३)।

णिव्विज्ज अक [**निर्+विद्**] निर्वेद पाना, विरक्त होना। णिव्विज्जेज्जा ; (उव)।

णिव्विट्ठ वि [**दे**] उचित, योग्य; (दे ४, ३४)।

णिव्विट्ठ वि [**निर्विष्ट**] उपभुक्त, आसेवित, परिपालित ; (पाअ ; अणु)। °**काइय** न [°**कायिक**] जैन शास्त्र में प्रतिपादित एक तरह का चारित्र ; (अणु ; इक)।

णिव्विण्ण वि [**निर्विण्ण**] निर्वेद-प्राप्त, खिन्न ; (महा)।

णिव्वित्त वि [**दे**] सो कर उठा हुआ ; (दे ४, ३२)।

णिव्वित्ति देखो **णिव्वत्ति**। २ इन्द्रिय का आकार, द्रव्ये-न्द्रिय-विशेष ; (विसे २९९४)।

णिव्विदुगुंछ वि [**निर्विजुगुप्स**] घृणा-रहित; (धर्म १)।

णिव्विन्न देखो **णिव्विण्ण** ; (उव)।

णिव्विभाग वि [**निर्विभाग**] विभाग-रहित ; (दंस ५)।

णिव्वियण वि [**निर्विजन**] १ मनुष्य-रहित; २ न. एकान्त स्थल ; (सुर ६, ४२)।

णिव्विर वि [**दे**] चिपिट, बैठा हुआ ; "अइणिव्विरनासाए" (गा ७२८ टि)।

णिव्विराम वि [**निर्विराम**] विराम-रहित; (उप पृ १८३)।

णिव्विलंबि वि [**निर्विलम्ब**] विलम्ब-रहित, शीघ्र; (सुपा २५५ ; कुप्र ५२)।

णिव्विवेअ वि [**निर्विवेक**] विवेक-शून्य ; (सुपा ३२३ ; ५०० ; गउड ; सुर ८, १८१)।

णिव्विस सक [**निर्+विश्**] त्याग करना। निव्विसेज्जा ; (कस)। वकृ —**णिव्विसंत** ; (राज)।

णिव्विस वि [**निर्विष**] विष-रहित ; (औप)।

णिव्विसंक वि [**निर्विशङ्क**] शङ्का-रहित, निर्भय ; (सुर १२, १६)।

णिव्विसमाण न [**निर्विशमान**] १ चारित्र-विशेष ; (ठा ३, ४)। २ वि. उस चारित्र का पालने वाला ; (ठा६)। °**कप्पट्ठिइ** स्त्री [°**कल्पस्थिति**] चारित्र-विशेष की मर्यादा ; (कस)।

णिव्विसय वि [**निर्विषय**] १ विषयों की अभिलाषा से रहित ; (उत्त १४)। २ अनर्थक, निरर्थक ; (पंचा१२ ; उप ६२५)। ३ देश से बाहर किया हुआ, जिसको देश-निकाले की सजा हुई हो वह; (सुर ६, ३६ ; सुपा५६६)।

णिव्विसिट्ठ वि [**निर्विशिष्ट**] विशेष-रहित, समान, तुल्य ; (उप ५३० टी)।

णिव्विसी स्त्री [**निर्विषी**] एक महौषधि; (ती ५)।

णिव्विसेस वि [**निर्विशेष**] १ विशेष-रहित, समान, साधारण ; (स २३ ; सम्म ६६ ; प्रासू ८८)। २ अभिन्न, जो जुदा न हो ; (से १५, ६५)।

णिव्वुअ वि [**निर्वृत**] निर्वृति-प्राप्त ; (स ५६३; कप्प)।

णिव्वुइ स्त्री [**निर्वृति**] १ निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति ; (कुमा ; प्रासू १६४)। २ मन की स्वस्थता, निश्चिन्तता ; (सुर ४, ८६)। ३ सुख, दुःख-निवृति ; (आव ४)। ४ जैन साधुओं की एक शाखा ; (कप्प)। ५ एक राज-कन्या ; (उप ६३६)। °**कर** वि [°**कर**] निर्वृति-जनक ; (पगह १)। °**जणय** वि [°**जनक**] निर्वृति का उत्पादक ; (गा ४२१)।

णिव्वुड देखो **णिव्वुअ** ; (कुमा ; आचा)।

णिव्वुड्ड देखो **णिवुड्ड**= नि+मस्ज्। वकृ—**णिव्वुड्डमाण** ; (राज)।

णिव्वुड्ढ वि [**निर्व्यूढ**] निर्वाहित, निभाया हुआ; (गा३२)।

णिव्वुत्त देखो **णिवुत्त** ; (गा १५५)।

णिव्वुत्त देखो **णिव्वत्त**=निर्वृत्त ; (पिंग)।

णिव्वुत्ति देखो **णिव्वत्ति** ; (गा ८२८)।

णिव्वुद देखो **णिव्वुअ** ; (संक्षि ६)।

णिव्वुब्भ° देखो **णिव्वह**=निर्+वह्।

णिव्वूढ वि [**निर्व्यूढ**] १ जिसका निर्वाह किया गया हो वह; २ कृत, विहित, निर्मित ; (गा २५५; से १, ४६)। ३ जिसने निर्वाह किया हो वह, पार-प्राप्त ; (विवे ४४)। ४ त्यक्त, परिमुक्त; (से ५, ६२)। ५ बाहर निकाला हुआ, निस्सारित; "निव्वूढा य पएसा तत्तो गाढप्पओसमावन्ना" (उप १३१ टी)।

णिव्वूढ वि [**दे**] १ स्तब्ध; (दे ४, ३३)। २ न. घर का पश्चिम आँगन ; (दे ४, २६)।

णिव्वेअ पुं [**निर्वेद**] १ खेद, विरक्ति ; (कुमा; द्र ६२)। २ संसार की निर्गुणता का अवधारण ; (उप ६८६)।

णिव्वेअण न [**निर्वेदन**] १ खेद, वैराग्य। २ वि. वैराग्य-जनक। स्त्री—°**णी** ; (ठा ४, २)।

णिव्वेढ सक [**निर्+वेष्टय्**] १ नाश करना, क्षय करना। २ घेरना। ३ बाँधना। वकृ—**णिव्वेढंत** ; (विसे २७४५ ; आचा २, ३, २)।

णिव्वेढ सक [**निर्+वेष्टय्**] मजबूताई से वेष्टन करना। णिव्वेढिज्ज, णिव्वेढेज्ज ; (आचा२, ३,२, २ ; पि३०४)।

णिव्वेढ वि [**दे**] नग्न, नंगा ; (दे ४, २८)।

णिव्वेर वि [**निर्वैर**] वैर-रहित ; (अच्चु ५६)।

णिव्वेरिस वि [**दे**] १ निर्दय, निष्करुण ; २ अत्यन्त, अधिक ; (दे ४, ३७)।

णिव्वेल्ल अक [**निर्+वेल्ल्**] फुरना। णिव्वेल्लइ; (पि १०७)।

णिव्वेल्लिअ वि [**निर्वेल्लित**] प्रस्फुरित, स्फूर्ति-युक्त ; (से ११, १६)।

णिव्वेस वि [**निर्द्वेष**] द्वेष-रहित ; (से १५, ६५)।

णिव्वेस पुं [**निर्वेश**] १ लाभ, प्राप्ति ; (ठा ५, २)। २ व्यवस्था ; "कम्माण कप्पिआणं काही कप्पंतरेसु को णिव्वेसं" (अच्चु १८)।

णिव्वोढव्व वि [**निर्वोढव्य**] निर्वाह-योग्य; (आव ४)।

णिव्वोल सक [**कृ**] क्रोध से होठ को मलिन करना। णिव्वोलइ ; (हे ४, ६६)।

णिव्वोलण न [**करण**] क्रोध से होठ को मलिन करना ; (कुमा)।

णिस° देखो **णिसा** ; (कुमा ; पउम १२, ६५)।

णिस सक [**नि+अस्**] स्थापन करना। णिसेइ ; (ओप)।

णिसंत वि [**निशान्त**] १ श्रुत, सुना हुआ ; (णाया १, १; ४; उवा)। २ अत्यन्त ठंडा; (आवम)। ३ रात्रि का अवसान, प्रभात; "जहा णिसंते तवणच्चिमाली, पभासई केवल-भारहं तु" (दस ६, १, १४)।

णिसंस वि [**नृशंस**] क्रूर, निर्दय ; (सुपा ४०६)।

णिसग्ग पुं [**निसर्ग**] १ स्वभाव, प्रकृति ; (ठा २, १ ; कुप्र १४८)। २ निसर्जन, त्याग; (विसे)।

णिसग्ग वि [**नैसर्ग**] स्वभाव से होने वाला, स्वाभाविक ; (सुपा ६४८)।

णिसग्गिय वि [**नैसर्गिक**] स्वाभाविक ; (सण)।

णिसज्जा स्त्री [**निषद्या**] १ आसन ; (दस ६)। २ उपवेशन, बैठना ; (वव ४)। देखो **णिसिज्जा**।

णिसट्ठ वि [**निसृष्ट**] १ निकाला हुआ, त्यक्त ; (सुअ १, १६)। २ दत्त, दिया हुआ ; (णाया १, १—पत्र ७१)।

णिसट्ठ वि [**दे**] प्रचुर, बहुत ; (आोघ ८७)।

णिसट्ठ (अप) वि [**निषण्ण**] बैठा हुआ ; (सण)।

णिसढ पुं [**निषध**] १ हरिवर्ष क्षेत्र से उत्तर में स्थित एक पर्वत ; (ठा २, ३)। २ स्वनाम-ख्यात एक वानर, राम-सैनिक ; (से ४, १०)। ३ बैल, साँढ़ ; (सुज्ज ४)। ४ बलदेव का एक पुत्र; (निर १, ५; कुप्र ३७२)। ५ देश-विशेष ; ६ निषध देश का राजा ; (कुमा)। ७ स्वर-विशेष ; (हे १, २२६ ; प्राप्र)। °**कूड** न [°**कूट**]

निषध पर्वत का एक शिखर ; (ठा २, ३) । °दह पुं [°द्रह] द्रह-विशेष ; (जं ४) ।

णिसण्ण वि [**निषण्ण**] १ उपविष्ट, स्थित; (गा १०८ ; ११६ ; उत २०) । २ कायोत्सर्ग का एक भेद; (आव ५) ।

णिसण्ण वि [**निःसंज्ञ**] संज्ञा-रहित ; (से ६, ३८) ।

णिसत्त वि [**दे**] संतुष्ट, संताप-युक्त ; (दे ४, ३०) ।

णिसन्न देखो **णिसण्ण** ; (उत्र ; णाया १, १) ।

णिसम सक [**नि+शमय्**] सुनना । वकृ—**णिसमेंत**; (आवम) । कवकृ—**णिसम्मंत** ; (गउड) । संकृ—**णिसमिअ, णिसम्म** ; (नाट—वेणी ६८; उवा ; आचा)।

णिसमण न [**निशमन**] श्रवण, आकर्णन ; (हे १, २६९; गउड) ।

णिसर देखो **णिसिर** । कवकृ—**निसरिज्जमाण**; (भग)।

णिसल्ल देखो **णिस्सल्ल** ; (श्रा ४०) ।

णिसह देखो **णिसढ** ; (इक) ।

णिसह देखो **णिस्सह** ; (षड्) ।

णिसा स्त्री [**निशा**] १ रात्रि, रात ; (कुमा ; प्रासू ५५) २ पीसने का पत्थर, शिलौट; (उवा) । °अर पुं [°**कर**] चन्द्र, चाँद ; (हे १, ८ ; षड्) । °अर पुं [°**चर**] राक्षस ; (कप्पू ; से १२, ६६) । °अरेंद पुं [°**चरेन्द्र**] राक्षसों का नायक, राक्षस-पति ; (से ७, ५६) । °नाह पुं [°**नाथ**] चन्द्रमा ; (सुपा ४१६) । °लोढ न [°**लोष्ट**] शिला-पुत्रक, पीसने का पत्थर, लोढ़ा ; (उवा) । °वइ पुं [°**पति**] चन्द्र, चाँद ; (गउड) । देखो **णिसि°** ।

णिसाण सक [**नि+शाणय्**] शान पर चढ़ाना, पैनाना, तीक्ष्ण करना । संकृ—**निसाणिऊण** ; (स १४३) ।

णिसाण न [**निशाण**] शान, एक प्रकार का पत्थर, जिस पर हथियार तेज किया जाता है ; (गउड ; सुपा २८) ।

णिसाणिय वि [**निशाणित**] शान दिया हुआ, पैनाया हुआ, तीक्ष्ण किया हुआ ; (सुपा ५६) ।

णिसाम देखो **णिसम** । णिसामेइ ; (महा) । वकृ—**णिसामेंत** ; (सुर ३, ७८) । संकृ—**णिसामिऊण, णिसामित्ता** ; (महा ; उत २) ।

णिसाम वि [**निःश्याम**] मालिन्य-रहित, निर्मल ; (से ६, ४७) ।

णिसामण देखो **णिसमण** ; (सुपा २३) ।

णिसामिअ वि [**दे. निशमित**] १ श्रुत, आकर्णित ; (दे ४, २७ ; पाअ ; गा २६) । २ उपशमित, दबाया हुआ; ३ सिमटाया हुआ, संकोचित ; "निसामिओ फणाभोओ" (स ३५८) ।

णिसामिर वि [**निशमयितृ**] सुनने वाला; (सण) ।

णिसाय वि [**दे**] प्रसुप्त ; (दे ४, ३५) ।

णिसाय वि [**निशात**] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण; (पाअ)।

णिसाय पुं [**निषाद**] १ चाण्डाल ; (दे ४, ३५) । २ स्वर-विशेष ; (ठा ७) ।

णिसायंत वि [**निशातान्त**] तीक्ष्ण धार वाला ; (पाअ)।

णिसास सक [**निर्+श्वासय्**] निःश्वास डालना । वकृ—**णिस्सासयंत**; (पउम ६१, ७३) ।

णिसास देखो **णीसास** ; (पिंग) ।

णिसि° देखो **णिसा** ; (हे १, ८ ; ७२ ; षड् ; महा ; सुर १, २७) । °**पालअ** पुं [°**पालक**] छन्द-विशेष ; (पिंग) । °**भत** न [°**भक्त**] रात्रि-भोजन ; (ओघ ७८७) । °**भुत्त** न [°**भुक्त**] रात्रि-भोजन ; (सुपा ४६१) ।

णिसिअ देखो **णिसीअ** । णिसिअइ ; (सण ; कप्प) । संकृ—णिसिइता ; (कप्प) ।

णिसिअ वि [**निशित**] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण ; (से ५, ४६ ; महा ; हे ४, ३३०) ।

णिसिक्क सक [**नि+सिच्**] प्रक्षेप करना, डालना । संकृ—**णिसिक्किय** ; (आचा) ।

णिसिज्जा देखो **णिसज्जा**; (कप्प ; सम ३५ ; ठा ५,१) । ३ उपाश्रय, साधुओं का स्थान; (पंच ४) ।

णिसिज्झमाण देखो **णिसेह्**=नि+षिध् ।

णिसिट्ठ वि [**निसृष्ट**] १ बाहर निकाला हुआ; (भास १०) । २ दत्त, प्रदत्त ; (आचा) । ३ अनुज्ञात ; (बृह २) । ४ बनाया हुआ । क्रिवि. "आमयहराइं ...पउमो निहा निसिट्ठ उवणमेइ" (उप ६८६ टी) ।

णिसिद्ध वि [**निषिद्ध**] प्रतिषिद्ध, निवारित ; (पंचा १२)।

णिसिर सक [**नि+सृज्**] १ बाहर निकालना । २ देना, त्याग करना । ३ करना । णिसिरइ ; (भास ५ ; भग) । "णिरवराहाण । निसिरंति जे न दंडं, तेवि हु पाविंति निव्वाणं" (सुर १५, २३४) । कर्म—निसिरिज्जइ, निसिरिज्जए ; (विसे ३५७) । वकृ—**निसिरंत** ; (पि २३५) । कवकृ—**निसिरिज्जमाण** ; (पि २३५) । संकृ—**णिसिरित्ता** ; (पि २३५) । प्रया—निसिरावेंति; (पि २३५) ।

णिसिरण न [निसर्जन] १ निस्सारण; (भास २)। २ त्याग; (णाया १, १६)।

णिसिरणया } स्त्री [निसर्जना] १ त्याग, दान; (आचा **णिसिरणा** } २, १, १०)। २ निस्सारण, निष्कासन; (भग)।

णिसीअ अक [नि + षद्] बैठना। णिसीअइ; (भग)। वकृ—**णिसीअंत, णिसीअमाण**; (भग १३, ६; सूअ १, १, २)। संकृ—**णिसीइत्ता**; (कप्प)। हेकृ—**णिसीइत्तए**; (कस)। कृ—**णिसीइयव्व**; (णाया १, १; भग)।

णिसीअण न [निषदन] उपवेशन, बैठना; (उप २६४ टी; स १८०)।

णिसीआवण न [निषादन] बैठाना; (कस ४, २६ टी)।

णिसीढ देखो **णिसीह**=निशीथ; (हे १, २१६; कुमा)।

णिसीदण देखो **णिसीअण**; (औप)।

णिसीह पुंन [निशीथ] १ मध्य रात्रि; (हे १, २१६; कुमा)। २ प्रकाश का अभाव; (निचू ३)। ३ न. जैन आगम-ग्रन्थ विशेष; (णंदि)।

णिसीह पुं [नृसिंह] उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य; (कुमा)।

णिसीहिआ स्त्री [निशीथिका] १ स्वाध्याय-भूमि, अध्ययन-स्थान; (आचा २, २, २)। २ थोड़े समय के लिए उपात्त स्थान; (भग १४, १०)। ३ आचाराङ्ग सूत्र का एक अध्ययन; (आचा २, २, २)।

णिसीहिआ स्त्री [नैषेधिकी] १ स्वाध्याय-भूमि; (सम ४०)। २ पाप-क्रिया का त्याग; (पडि; कुमा)। ३ व्यापारान्तर के निषेध रूप आचार; (ठा १०)। देखो **णिसेहिया**।

णिसीहिणी स्त्री [निशीथिनी] रात्रि, रात; (उप पृ १२७)। °**णाह** पुं [°नाथ] चन्द्रमा; (कुमा)।

णिसुअ वि [दे. निश्रुत] श्रुत, आकर्णित; (दे ४, २७; सुर १, १६६; २, २२६; महा; पाअ)।

णिसुंद पुं [निसुन्द] रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २६)।

णिसुंभ सक [नि + शुम्भ्] मार डालना, व्यापादन करना। कवकृ—**णिसुंभंत, णिसुभंत**; (से ५, ६६; १४, ३; पि ५३५)।

णिसुंभ पुं [निशुम्भ] १ स्वनाम-ख्यात एक राजा, एक प्रतिवासुदेव; (पउम ५, १५६; पव २११)। २ दैत्य-विशेष; (पिंग)।

णिसुंभण न [निशुम्भन] १ मर्दन, व्यापादन, विनाश; २ वि. मार डालने वाला; (सूअ १, ५, १)।

णिसुंभा स्त्री [निशुम्भा] स्वनाम-ख्यात एक इन्द्राणी; (णाया २; इक)।

णिसुंभिअ वि [निशुम्भित] निपातित, व्यापादित; (सुपा ४६०)।

णिसुट्ट } वि [दे] ऊपर देखो; (हे ४, २५८; से १०, ३६)। **णिसुट्टिअ** }

णिसुड देखो **णिसुढ**=नम्। निसुडइ; (षड्)।

णिसुड्ड देखो **णिसुट्ट**; (हे ४, २५८ टि)।

णिसुढ अक [नम्] भार से आक्रान्त होकर नीचे नमना। णिसुढइ; (हे ४, १५८)।

णिसुढ सक [नि + शुम्भ्] मारना, मार कर गिराना। कवकृ—**णिसुढिज्जंत**; (से ३, ५७)।

णिसुढिअ वि [नत] भार से नमा हुआ; (पाअ)।

णिसुढिअ वि [निशुम्भित] निपातित; (से १२, ६१)।

णिसुढिर वि [नम्र] भार से नमा हुआ; (कुमा)।

णिसुण सक [नि + श्रु] सुनना, श्रवण करना। निसुणइ, णिसुणेइ, णिसुणेमि; (सण; महा; सट्टि १२८)। वकृ—**निसुणंत, निसुणमाण**; (सुपा १०६; सुर १२, १७४)। कवकृ—**निसुणिज्जंत**; (सुपा ४५; रयण ६४)। संकृ—**निसुणिउं, निसुणिऊण, निसुणिऊणं**; (सुपा १४; महा; पि ५८५)।

णिसुद्ध वि [दे] १ पातित, गिराया हुआ; (दे ४, ३६; पाअ; से ५, ६८)।

णिसुब्भंत देखो **णिसुंभ**=नि + शुम्भ्।

णिसूग देखो **णिस्सूग**; (सुपा ३७०)।

णिसूड देखो **णिसुढ**=नि+शुभ्। हेकृ—**निसूडिउं**; (सुपा ३६६)।

णिसेज्जा देखो **णिसज्जा**; (उव; पव ६७)।

णिसेणि देखो **णिस्सेणि**; (सुर १३, १६०)।

णिसेय पुं [निषेक] १ कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष; (ठा ६)। २ सेचन, सींचना; "ता संपइ जिणवरबिंबदंसणामयनिसेएण पोणिज्जउ नियदिट्ठि" (सुपा २६६)। "कआवि कुणंति सिरिखंडरसनिसेयं" (सुपा २०)।

णिसेव सक [नि+सेव्] १ सेवा करना, आदर करना। २ आश्रय करना। निवसेइ, निसेवए; (महा; उव)। वकृ—**णिसेव-**

माण ; (महा)। कवकृ—णिसेविज्जंत; (ओघ ५६)। कृ—निसेवणिज्ज ; (सुपा ३७)।

णिसेवय वि [निषेवक] १ सेवा करने वाला ; २ आश्रय करने वाला ; (पुप्फ २५१)।

णिसेवि वि [निषेविन्] ऊपर देखो; (स १०)।

णिसेविअ वि [निषेवित] १ सेवित, आदृत ; (आवम)। २ आश्रित ; (उत्त २०)।

णिसेह सक [नि+षिध्] निषेध करना, निवारण करना। निसेहइ ; (हे ४, १३४)। कवकृ—निसिज्झमाण ; (सुपा ५७२)। हेकृ—निसेहिउं ; (स १६८)। कृ—"निसेहियव्वा सययंपि माया" (सत ३५)।

णिसेह पुं [निषेध] १ प्रतिषेध, निवारण ; (उव ; प्रासू १८१)। २ अपवाद ; (आव ५५)।

णिसेहण न [निषेधन] निवारण ; (आवम)।

णिसेहणा स्त्री [निषेधना] निवारण ; (आव १)।

णिसेहिया देखो णिसीहिआ=नैषेधिकी। १ मुक्ति, मोक्ष; २ श्मशान-भूमि ; ३ बैठने का स्थान ; ४ नितम्ब, द्वार के समीप का भाग ; (राज)।

णिस्स वि [निःस्व] निर्धन, धन-रहित ; (पाअ)। °यर वि [°कर] १ निर्धन-कारक। २ कर्म का दूर करने वाला; (आचा २, ४, १)।

णिस्संक पुं [दे] निर्भर ; (दे ४, ३२)।

णिस्संक वि [निःशङ्क] १ शङ्का-रहित; (सुअ २, ७ ; महा)। २ न. शङ्का का अभाव ; (पंचा ६)।

णिस्संकिअ वि [निःशङ्कित] १ शङ्का-रहित ; (ओघ ५६ भा ; णाया १,३)। २ न. शङ्का का अभाव ; (उत्त २८)।

णिस्संग वि [निःसङ्ग] सङ्ग-रहित ; (सुपा १४०)।

णिस्संचार वि [निःसंचार] संचार-रहित, गमनागमन-वर्जित ; (णाया १, ८)।

णिस्संजम वि [निस्संयम] संयम-रहित ; (पउम २७,५)।

णिस्संत वि [निःशान्त] प्रशान्त, अतिशय शान्त ; (राय)।

णिस्संद देखो णीसंद ; (पण्ह १, १; नाट—मालती ५१)।

णिस्संदेह वि [निस्संदेह] संदेह-रहित, निःसंशय ;(काल)।

णिस्संधि वि [निस्सन्धि] सन्धि-रहित, साँधा से रहित ; (पण्ह १, १)।

णिस्संस वि [नृशंस] क्रूर, निर्दय ; (महा)।

णिस्संस वि [निःशंस] श्लाघा-रहित ; (पण्ह १, १)।

णिस्संसय वि [निःसंशय] १ संशय-रहित। २ क्रिवि. निःसंदेह, निश्चय ; (अभि १८४ ; आवम)।

णिस्सण पुं [निःस्वन] शब्द, आवाज ; (कुप्र २७)।

णिस्सण्ण वि [निःसंज्ञ] संज्ञा-रहित ; (सुअ १,५,१)।

णिस्सत्त वि [निःसत्त्व] धैर्य-रहित, सत्त्व-हीन; (सुपा३५६)।

णिस्सन्न देखो णिसण्ण ; (रयण ५)।

णिस्सम्म अक [निर्+श्रम्] बैठना। वकृ—णिस्सम्मंत; (से ६, ३८)।

णिस्सर अक [निर्+सृ] बाहर निकलना। णिस्सरइ ; (कप्प)। वकृ—णिस्सरंत ; (नाट—चैत ३८)।

णिस्सरण न [निःसरण] निर्गमन, बाहर निकलना ; (ठा ४, २)।

णिस्सरण वि [निःशरण] शरण-रहित, त्राण-वर्जित ; (पउम ७३, ३२)।

णिस्सरिअ वि [दे] स्रस्त, खिसका हुआ ; (दे ४, ४०)।

णिस्सल्ल वि [निःशल्य] शल्य-रहित ; (उप ३२० टी ; द ५७)।

णिस्सस अक [निर्+श्वस्] निःश्वास लेना। निस्ससइ, णिस्ससंति ; (भग)। वकृ—णिस्ससिज्जमाण; (ठा१०)।

णिस्सह वि [निःसह] मन्द, अशक्त ; (हे १, १३ ; ९३ ; कुमा)।

णिस्सा स्त्री [निश्रा] १ आलम्बन, आश्रय, सहारा ; (ठा ५, ३)। २ अधीनता ; (उप १३० टी)। ३ पक्षपात ; (वव ३)।

णिस्साण न [निश्राण] निश्रा, अवलम्बन ; (पण्ह १,३)। °पय न [°पद] अपवाद ; (बृह १)।

णिस्सार सक [निर्+सारय्] बाहर निकालना। निस्सारइ ; (कुप्र १५४)।

णिस्सार } वि [निःसार] १ सार-हीन, निरर्थक ; (अणु ;
णिस्सारग } सुअ १,७; आचा)। २ जीर्ण, पुराना; (आचा)।

णिस्सारय वि [निःसारक] निकालने वाला ; (उप २८०टी)।

णिस्सारिय वि [निःसारित] १ निकाला हुआ ; २ च्यावित, भ्रष्ट किया हुआ ; (सुअ १, १४)।

णिस्सास पुं [निःश्वास] निःश्वास, नीचा श्वास ; (भग)। २ काल-मान विशेष ; (इक)। ३ प्राण-वायु, प्रश्वास ;(प्राप्र)।

णिस्साहार वि [निःस्वाधार] निराधार, आलम्बन-रहित; (सण)।

णिस्सिंग वि [**निःशृङ्ग**] शृङ्ग-रहित ; (सुपा ३१३) ।
णिस्सिंघिय न [**निःसिङ्घित**] अव्यक्त शब्द-विशेष ; (विसे ५०१) ।
णिस्सिंच सक [**निर्+सिच्**] प्रक्षेप करना, डालना, फेंकना । वकृ—**णिस्सिंचमाण**; (राज) । संकृ—**णिस्सिंचिय** ; (दस ५, १) ।
णिस्सिणेह वि [**निःस्नेह**] स्नेह-रहित ; (पि १४०) ।
णिस्सिय वि [**निश्रित**] १ आश्रित, अवलम्बित ; (ठा १० ; भास ३८) । २ आसक्त, अनुरक्त, तल्लीन ; (सुअ १, १, १ ; ठा ५, २) । ३ न. राग, आसक्ति ; (ठा ५, २) ।
णिस्सिय वि [**निःसृत**] निर्गत, निर्यात ; (भास ३८) ।
णिस्सील वि [**निःशील**] सदाचार-रहित, दुःशील ; (पउम २, ८८ ; ठा ३, २) ।
णिस्सूग वि [**निःशूक**] निर्दय, निष्करुण ; (श्रा १२) ।
णिस्सेणि स्त्री [**निःश्रेणि**] सीढ़ी ; (पण्ह १, १; पाअ) ।
णिस्सेयस न [**निःश्रेयस**] १ कल्याण, मंगल, क्षेम ; (ठा ४, ४ ; णाया १, ८) । २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण ; (औप ; णंदि) । ३ अभ्युदय, उन्नति ; (उत्त ८) ।
णिस्सेयसिय वि [**नैःश्रेयसिक**] मुमुक्षु, मोक्षार्थी ; (भग १५) ।
णिस्सेस वि [**निःशेष**] सर्व, सब, सकल ; (उप २००) ।
णिह वि [**निभ**] १ समान, तुल्य, सदृश ; (से १, ५८ ; गा ११४ ; दे १, ५१) । २ न. बहाना व्याज, छल ; (पाअ) ।
णिह वि [**निह**] १ मायावी, कपटी ; (सुअ १, ६) । २ पीड़ित ; (सूअ १, २, १) । ३ न. आवात-स्थान ; (सूअ १, ५ , २) ।
णिह वि [**स्निह**] रागी, राग-युक्त ; (आचा) ।
णिहंतव्व देखो **णिहण**=नि + हन् ।
णिहंस पुं [**निवर्ष**] घर्षण ; (गउड) ।
णिहंसण न [**निघर्षण**] घर्षण ; (से ५, ४६ ; गउड) ।
णिहट्टु अ. १ जुदा कर, पृथक् करके ; (आचा) । २ स्थापन कर ; (णाया १, १६) ।
णिहट्ठ वि [**निघृष्ट**] घिसा हुआ ; (हे २, १७४) ।
णिहण सक [**नि+हन्**] १ निहत करना, मारना । २ फेंकना । णिहणामि ; (कुप्र २६२)। णिहणाहि ; (कप्प) । भूका—णिहणिंसु; (आचा) । वकृ—**णिहणंत**; (सण) । संकृ—**णिहणित्ता**; (पि ५८२) । कृ—**णिहंतव्व**; (पउम ६,१७) ।
णिहण सक [**नि + खन्**] गाड़ना । "निहणंति धण धरणीयलम्मि" (वज्जा ११८)। हेकृ—"चोरो दव्वं **निहणि-उं** आरद्धो" (महा) ।
णिहण न [**दे**] कूल, तीर, किनारा ; (दे ४, २७) ।
णिहण न [**निधन**] १ मरण, विनाश ; (पाअ ; जी ४६)। २ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३२) ।
णिहणण न [**निहनन**] निहति, मारना; (महा ; स १६३)।
णिहणिअ वि [**निहत**] मारा हुआ; (सुपा १५८ ; सण)।
णिहत्त सक [**निधत्तय्**] कर्म को निबिड़ रूप से बाँधना । भूका—णिहत्तिंसु ; (भग) । भवि—णिहत्तेस्संति ; (भग)।
णिहत्त देखो **णिधत्त**; (भग) ।
णिहत्तण न [**निधत्तन**] कर्म का निबिड़ बन्धन ; (भग)।
णिहत्ति देखो **णिधत्ति**; (राज) ।
णिहम्म सक [**नि+हम्म्**] जाना, गमन करना । णिहम्मइ ; (हे ४, १६२)
णिहय वि [**निहत**] मारा हुआ; (गा ११८ ; सुर ३,४६)।
णिहय वि [**निखात**] गाड़ा हुआ ; (स ७५६) ।
णिहर अक [**नि + हृ**] पाखाना जाना; (प्रामा)
णिहर अक [**आ + क्रन्द्**] चिल्लाना । णिहरइ ; (षड्) ।
णिहर अक [**निर्+सृ**] बाहर निकलना । णिहरइ ; (षड्) ।
णिहरण देखो **णीहरण** ; (णाया १, २—पत्र ८६) ।
णिहव देखो **णिहुव** । णिहवइ ; (नाट; पि ४१३) ।
णिहव वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ ; (षड्) ।
णिहव पुं [**निवह**] समूह ; (षड्) ।
णिहस सक [**नि+घृष्**] घिसना । संकृ—**णिहसिऊण**; (उव) ।
णिहस पुं [**निकष**] १ कषपट्टक, कसौटी का पत्थर ; (पाअ) । २ कसौटी पर की जाती रेखा ; (हे १, १८६ ; २६० ; प्राप्र) ।
णिहस पुं [**निघर्ष**] घर्षण, रगड़; (से ६, ३३) ।
णिहस पुं [**दे**] वल्मीक, सर्प आदि का बिल ; (दे ४,२५)।
णिहसण न [**निघर्षण**] घर्षण , रगड़; (से ६, १० ; गा १२१; गउड ; वज्जा ११८) ।
णिहसिय वि [**निघर्षित**] घिसा हुआ ; (वज्जा १५०) ।
णिहा स्त्री [**निहा**] माया, कपट ; (सूअ १, ८) ।

णिहा सक [**नि+धा**] स्थापन करना । निहेइ; (स ७३८)। कवकृ—**णिहिप्पंत** ; (से ८, ९७) । संकृ—**णिहाय** ; (सूअ १,७) ।

णिहा सक [**नि+हा**] त्याग करना । संकृ—**णिहाय** ; (सूअ १, १३) ।

णिहा, **णिहाआ** सक [**दूश्**] देखना । णिहाइ, णिहाआइ ; (षड्) ।

णिहाण न [**निधान**] वह स्थान जहां पर धन आदि गाड़ा गया हो, खजाना, भण्डार ; (उवा ; गा ३१८ ; गउड) ।

णिहाय पुं [**दे**] १ स्वेद, पसीना ; (दे ४, ४९) । २ समूह, जत्था ; (दे ४, ४९; से ४, ३८; स ४४९ ; भवि; पाअ; गउड ; सुर ३, २३१) ।

णिहाय पुं [**निघात**] आघात, आस्फालन ; (से १५,७०; महा) ।

णिहाय देखो **णिहा**=नि+धा, नि+हा ।

णिहार पुं [**निहार**] निर्गम ; (पण्ह १, ५ ; ठा ८) ।

णिहारिम न [**निर्हारिम**] जिसके मृतक शरीर को बाहर निकाल कर संस्कार किया जाय उसका मरण ; (भग) । २ वि. दूर जाने वाला, दूर तक फैलने वाला ; (पण्ह २,५) ।

णिहाल देखो **णिभाल** । णिहालेहि ; (स १००) । वकृ—**णिहालंत, णिहालयंत** ; (उप ६४८ टी ; ९८६ टी) । संकृ—**णिहालेउं** ; (गच्छ १) । कृ—**णिहालेयव्व** ; (उप १००७) ।

णिहालण न [**निभालन**] निरीक्षण, अवलोकन ; (उप पृ ७२ ; सुर ११, १२ ; सुपा २३) ।

णिहालिअ वि [**निभालित**] निरीक्षित; (पाअ; स १००) ।

णिहि त्रि [**निधि**] १ खजाना, भंडार; (पाया १, १३) । २ धन आदि से भरा हुआ पात्र ; (हे १, ३५ ; ३, १९ ; ठा ५, ३) । "अच्छेरंव णिहिं विअ सग्गे रज्जं व अमअपाणं व" (गा १२५) । ३ चक्रवर्ती राजा की संपति-विशेष, नैसर्प आदि नव निधि ; (ठा ९) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] कुबेर, धनेश ; (पाअ) ।

णिहिअ वि [**निहित**] स्थापित ; (हे २, ९९ ; प्राप्र) ।

णिहिण्ण वि [**निर्भिन्न**] विदारित ; (अच्चु १९) ।

णिहित्त देखो **णिहिअ** ; (गा ५६५ ; काप्र ६०६; प्राप्र) ।

णिहिप्पंत देखो **णिहा**=नि+धा ।

णिहिल वि [**निखिल**] सब, सकल; (अच्चु ६; आरा ५५) ।

णिही स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (राज) ।

णिहीण वि [**निहीन**] तुच्छ, खराब, हलका, क्षुद्र ; "अत्थि णिहीणे देहे किं रागनिबंधणं तुज्झ ?" (उप ७२८ टी) ।

णिहु स्त्री [**स्निहु**] औषधि-विशेष ; (जीव १) ।

णिहुअ वि [**निभृत**] १ गुप्त, प्रच्छन्न ; (से १३, १५ ; महा) । २ विनीत, अनुद्धत ; (से ४, ५६) । ३ मन्द, धीमा ; (पाअ ; महा) । ४ निश्चल, स्थिर ; (उत्त १६) । ५ अ-संभ्रान्त, संभ्रम-रहित ; (दस ६) । ६ धृत, धारण किया हुआ ; ७ निर्जन, एकान्त ; ८ अस्त होने के लिए उपस्थित ; (हे १, १३१) । ९ उपशान्त ; (पण्ह २, ५) ।

णिहुअ वि [**दे**] १ व्यापार-रहित, अनुद्युक्त, निश्चेष्ट ; (दे ४, ५० ; से ४, १ ; सूअ १, ८ ; बृह ३) । २ तूष्णीक, मौन ; (दे ४, ५० ; सुर ११, ८४) । ३ न. सुरत, मैथुन ; (दे ४, ५० ; षड्) ।

णिहुअण देखो **णिहुवण** ; (गा ४८३) ।

णिहुआ स्त्री [**दे**] कामिता, संभोग के लिए प्रार्थित स्त्री ; (दे ४, २६) ।

णिहुण न [**दे**] व्यापार, धन्धा ; (दे ४, २६) ।

णिहुत्त वि [**दे**] निमग्न, डूबा हुआ ; (पउम १०२,१६७)।

णिहुत्थिभगा स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पराण १—पत्र ३५) ।

णिहुव सक [**कामय्**] संभोग का अभिलाष करना । णिहुवइ ; (हे ४, ४४) ।

णिहुवण न [**निधुवन**] सुरत, संभोग ; (कप्पू ; काप्र १९४), "णिहुवणचुंबिअणाहिकुविआ" (मै ४२) ।

णिहूअ न [**दे**] १ सुरत, मैथुन , (दे ४, २६) । २ अकिञ्चित्कर ; (विसे २६१७) । देखो **णीहूय** ।

णिहेलण न [**दे**] १ गृह, घर, मकान ; (दे ४, ५१ ; हे २, १७४; कुमा; उप ७२८ टी; स १८०; पाअ; भवि) । २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग; (दे ४, ५१) ।

णिहोड सक [**नि+वारय्**] निवारण करना, निषेध करना । णिहोडइ ; (हे ४, २२) । वकृ—**णिहोडंत** ; (कुमा) ।

णिहोड सक [**पातय्**] १ गिराना; २ नाश करना । णिहोडइ ; (हे ४, २२) ।

णिहोडिय वि [**पातित**] १ गिराया हुआ ; (दंस ३) । २ विनाशित ; (उप ५९७ टी) ।

णी सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णीइ; (हे ४, १६२; गा ४९ अ) । भवि—णीहिसि; (गा ७४९) । वकृ—**णिंत**,

णेंत ; (से ३, २ ; गउड ; गा ३३४ ; उप २६४ टी ; गा ४२०) । संकृ—**णिंतूण, नीउं**; (गउड; विसे २२२) ।

णी सक [**नी**] १ ले जाना । २ जानना । ३ ज्ञान कराना, बतलाना । णेइ,णयइ; (हे ४, ३३७; विसे ६१४)। वकृ—**णेंत**; (गा ५० ; कुमा) । कवकृ—**णिज्जंत, णीअमाण** ; (गा ६८२ अ ; से ६, ८१ ; सुपा ४७६) । संकृ—**णइअ, णेउं, णेउआण, णेऊण**; (नाट—मृच्छ २६४; कुमा; षड्; गा १७२) । हेकृ—**णेउं**; (गा ४६७; कुमा) । कृ—**णेअ, णेअव्व**; (पउम ११६, १७; गा ३३६) । प्रयो—णेयावइ; (सण) ।

णीअ वि [**दे**] समीचीन, सुन्दर ; (पिंग) ।

णीआरण न [**दे**] बलि-घटी, बलि रखने का छोटा कलश; (दे ४, ४३) ।

णीइ स्त्री [**नीति**] १ न्याय, उचित व्यवहार, न्याय्य व्यवहार; (उप १८६; महा) । २ नय, वस्तु के एक धर्म को मुख्य-तया मानने वाला मत ; (ठा ७) । °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] नीति-प्रतिपादक शास्त्र ; (सुर ६, ६५ ; सुपा ३४० ; महा)।

णीका स्त्री [**नीका**] कुल्या, सारणि; (कुमा) ।

णीचअ न [**नीचस्**] १ नीचे, अधः ; (हे १, १५४) । २ वि. नीचा, अधः-स्थित ; (कुमा) ।

णीछूढ देखो **णिच्छूढ**; ; (णंदि) ।

णीजूह देखो **णिज्जूह**=दे. निर्यूह; (राज) ।

णीड देखो **णिड्ड** ; (गा १०२ ; हे १, १०६) ।

णीण सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णीणइ ; (हे ४, १६२) । णीणंति ; (कुमा) ।

णीण सक [**नी**] १ ले जाना । २ बाहर ले जाना, बाहर निकालना । "सारभंडाणि णीणेइ, असारं अवउज्झइ" (उत्त १६, २२) । भवि—नीणेहिइ; (महा) । वकृ—**णीणेमाण**; कवकृ—**नीणिज्जंत, णीणिज्जमाण** ; (पि ६२; आचा) । संकृ—**णीणेऊण, णीणेत्ता**; (महा ; उवा) ।

णीणाविय वि [**नायित**] दूसरे द्वारा ले जाया गया, अन्य द्वारा आनीत ; (उप १३६ टी) ।

णीणिअ वि [**गत**] गया हुआ ; (पाअ) ।

णीणिअ वि [**नीत**] १ ले जाया गया ; (उप ५९७ टी ; सुपा २६१) । २ बाहर निकाला हुआ ; (णाया १, ४) । " उयरप्पविट्ठछुरिआए नीणिओ अंतपब्भारो "(सुपा ३८१)।

णीणिआ स्त्री [**नीनिका**] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (जीव १) ।

णीम पुं [**नीप**] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़; (पण्ण १ ; औप ; हे १, २३४) ।

णीमी देखो **णीवी** ; (कुमा ; षड्) ।

णीय वि [**नीच**] १ नीच, अधम, जघन्य ; (उवा ; सुपा १०७) । २ वि. अधस्तन ; (सुपा ६००) । °**गोय** न [°**गोत्र**] १ क्षुद्र गोत्र ; २ कर्म-विशेष, जो क्षुद्र जाति में जन्म होने का कारण है; (ठा २, ४; आचा) । ३ वि. नीच गोत्र में उत्पन्न ; (सूअ २, १) ।

णीय वि [**नीत**] ले जाया गया ; (आचा; उत्त; सुपा ६)।

णीय देखो **णिच्च**=नित्य ; (उव) ।

णीयंगम वि [**नीचंगम**] नीचे जाने वाला; (पुप्फ ४४३)।

णीयंगमा स्त्री [**नीचंगमा**] नदी, तरंगिणी ;(भत ११६)।

णीर न [**नीर**] जल, पानी; (कुमा ; प्रासू ६७) । °**निहि** पुं [°**निधि**] समुद्र, सागर ; (सुपा २०१) । °**रुह** न [°**रुह**] कमल; (ती ३) । °**वाह** पुं [°**वाह**] मेघ, अभ्र ; (उप पृ ६२) । °**हर** पुं [°**गृह**] समुद्र, सागर; (उप पृ ११६) । °**हि** पुं [°**धि**] समुद्र ; (उप ९८६ टी) । °**ाकर** पुं [°**ाकर**] समुद्र (उप ५३० टी) ।

णीरंगी स्त्री [**दे**] सिर का अवगुण्ठन, शिरोवस्त्र, घूँघट; (दे ४, ३१ ; पाअ) ।

णीरंज सक [**भञ्ज्**] तोड़ना, भाँगना । णीरंजइ ; (हे ४, १०६) ।

णीरंजिअ वि [**भग्न**] तोड़ा हुआ, छिन्न; (कुमा) ।

णीरंध वि [**नीरन्ध्र**] निश्छिद्र ; (कप्पू) ।

णीरण न [**दे**] वास-चारा ; " विमलो पंजलमग्गं नीरिंध-णनीरणाइसंजुत्तं " (सुपा ५०१) ।

णीरय वि [**नीरजस्**] १ रजो-रहित, निर्मल, शुद्ध ;" सिद्धिं गच्छइ णीरओ " (गुरु १६ ; पण्ण ३६ ; सम १३७ ; पउम १०३, १३४ ; सार्ध ११२) । २ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट ; (ठा ६) ।

णीरव सक [**आ+क्षिप्**] आक्षेप करना । णीरवइ ; (हे ४, १४५) ।

णीरव सक [**बुभुक्ष्**] खाने को चाहना । णीरवइ ; (हे ४, ५) । भूका—णीरवीअ; (कुमा) ।

णीरव वि [**आक्षेपक**] आक्षेप करने वाला ; (कुमा) ।

णीरस वि [**नीरस**] रस-रहित, शुष्क ; (गउड ; महा) ।

णीराग } **णीराय** } वि [**नीराग**] राग-रहित, वीतराग ; (गउड ; कुप्र १२५; कुमा) ।

णीरेणु वि [**नीरेणु**] रजो-रहित ; (गउड) ।

णीरोग वि [**नीरोग**] रोग-रहित, तंदुरुस्त ; (जीव ३) ।

णील अक [**निर् + सृ**] बाहर निकलना । णीलइ; (हे४,७६)।

णील पुं [**नील**] १ हरा वर्ण, नीला रङ्ग ; (ठा १) । २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३) । ३ रामचन्द्र का एक सुभट, वानर-विशेष ; (से ४, ५) । ४ छन्द-विशेष ; (पिंग) । ५ पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३) । ६ न. रत्न की एक जाति, नीलम; (णाया१,१) । ७ वि. हरा वर्ण वाला ; (पण्ण १ ; राय) । °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] १ शक्रेन्द्र का एक सेनापति,शक्रेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति देव-विशेष ; (ठा ५, १ ; इक) । २ मयूर, मोर ; (पाअ ; कुप्र २४७)। ३ महादेव, शिव ; (कुप्र २४७) । °**कणवीर** पुं [°**करवीर**] हरे रङ्ग के फूलों वाला कनेर का पेड़ ; (राय) । °**गुफा** स्त्री [°**गुफा**] उद्यान-विशेष ; (आवम) । °**मणि** पुंस्त्री [°**मणि**] रत्न-विशेष, नीलम,मरकत ; (कुमा) । °**लेस** वि [°**लेश्य**] नील लेश्या वाला ; (पण्ण १७) । °**लेसा** स्त्री [°**लेश्या**] अशुभ अध्यवसाय-विशेष ; (सम११ ; ठा १) । °**लेस्स** देखो °**लेस** ; (पण्ण १७) । °**लेस्सा** देखो °**लेसा** ; (राज) । °**वंत** पुं [°**वत्**] १ पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम १२) । २ द्रह-विशेष ; (ठा५, २) । ३ न. शिखर-विशेष ; (ठा २, ३) ।

णीलकंठी स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष, बाण-वृक्ष; (दे४, ४२) ।

णीला स्त्री [**नीला**] १ लेश्या-विशेष, एक तरह का आत्मा का अशुभ परिणाम ; (कम्म४, १३ ; भग) । २ नील वर्ण वाली स्त्री; (षड्)

णीलिअ वि [**निःसृत**] निर्गत, निर्यात ; (कुमा) ।

णीलिअ वि [**नीलित**] नील वर्ण का ; (उप पृ ३२) ।

णीलिआ देखो **णीला** ; (भग) ।

णीलिम पुंस्त्री [**नीलिमन्**] नीलत्व, नीलापन, हरापन ; (सुपा १३७) ।

णीली स्त्री [**नीली**] १ वनस्पति-विशेष, नील ; (पण्ण१ ; उर ६, ५) । २ नील वर्ण वाली स्त्री; (षड्) । ३ आँख का रोग ; (कुप्र २१३) ।

णीलुंछ सक [**कृ**] १ निष्पतन करना । २ आच्छोटन करना । णीलुंछइ ; (हे ४,७१ ; षड्) । वकृ—**णीलुंछंत**; (कुमा)।

णीलुक्क सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णीलुक्कइ ; (हे ४, १६२) ।

णीलुप्पल न [**नीलोत्पल**] नील रङ्ग का कमल ; (हे १, ८४ ; कुमा) ।

णीलोभास पुं [**नीलावभास**] १ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३) । २ वि. नील-च्छाय, जो नीला मालूम देता हो ; (णाया १, १) ।

णीव पुं [**नीप**] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़ ; (हे१, २३४ ; कप्प ; णाया १, ६) ।

णीवार पुं [**नीवार**]वृक्ष-विशेष, तिनी का पेड़ ; (गउड) ।

णीवी स्त्री [**नीवी**] मूल-धन, पूँजी ; २ नारा, इजारबन्द ; (षड् ; कुमा) ।

णीसंक देखो **णिस्संक**=निःशङ्क ; (गा३४५ ; कुमा) ।

णीसंक पुं [**दे**] वृष, बैल ; (षड्) ।

णीसंकिअ देखो **णिस्संकिअ** ; (विसे१६२ ; सुर ७,१५५) ।

णीसंख वि [**निःसंख्य**] संख्या-रहित, असंख्य ; (सुपा ३५५) ।

णीसंचार देखो **णिस्संचार** ; (पउम ३२, १) ।

णीसंद पुं [**निःष्यन्द**] रस-स्रुति, रस का झरन ; (गउड) ।

णीसंदिअ वि [**निःष्यन्दित**] झरा हुआ, टपका हुआ ; (पाअ) ।

णीसंदिर वि [**निःष्यन्दितृ**] झरने वाला, टपकने वाला; (सुपा ५६) ।

णीसंपाय वि [**दे**] जहां जनपद परिश्रान्त हुआ हो वह ; (दे ४, ४२) ।

णीसट्ठ वि [**निःसृष्ट**]१ विमुक्त; (पण्ह१, १—पत्र१८) । २ प्रदत्त ; (बृह २) । ३ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त; "णीसट्ठमचेयणो ण वा झरइ" (उव) ।

णीसण पुं [**निःस्वन**] आवाज, शब्द, ध्वनि ; (सुर १३, १८२ ; कुप्र ५६) ।

णीसणिआ, **णीसणी** स्त्री [**दे**] निःश्रेणि, सीढ़ी; (दे ४, ४३) ।

णीसत्त वि [**निःसत्त्व**] सत्त्व-हीन, बल-रहित; (पउम २१, ७५ ; कुमा) ।

णीसद्द वि [**निःशब्द**] शब्द-रहित ; (दे७, २८ ; भवि) ।

णीसर अक [**रम्**] क्रीड़ा करना, रमण करना । णीसरइ ; (हे ४, १६८) । कृ—**णीसरणिज्ज** ; (कुमा) ।

णीसर अक [**निर् + सृ**] बाहर निकलना । णीसरइ ; (हे ४, ७६) । वकृ—**णीसरंत** ; (ओघ ४५८ टी) ।

णीसरण न [**निःसरण**] निर्गमन ; (से ६, १८) ।
णीसरिअ वि [**निःसृत**] निर्गत, निर्यात ; (सुपा २४७) ।
णीसल वि [**निःशल**] १ निश्चल, स्थिर ; २ वक्रता-रहित, उत्तान, सपाट ; "नीसलतड्डियचंदायएहिं मंडियचउक्कियादेसं" (सुर ३, ७२) ।
णीसल्ल वि [**निःशल्य**] शल्य-रहित ; (भवि) ।
णीसव सक [**नि+श्रावय्**] निर्जरा करना, क्षय करना । वकृ—**नीसवमाण**; (विसे २७४६) ।
णीसवग देखो **णीसवय** ; (आवम) ।
णीसवत्त वि [**निःसपत्न**] शत्रु-रहित, विपक्ष-रहित ; (मृच्छ ८; पि २७६) ।
णीसवय वि [**निश्रावक**] निर्जरा करने वाला; (विसे २७४६) ।
णीसस अक [**निर्+श्वस्**] नीसास लेना, श्वास को नीचा करना । णीससइ ; (षड्) । वकृ—**णीससंत, णीससमाण**; (गा ३३ ; कुप्र ४३ ; आचा २,२,३) । संकृ—**णीससिअ, णीससिऊण** ; (नाट ; महा) ।
णीससण न [**निःश्वसन**] निःश्वास; (कुमा) ।
णीससिअ न [**निःश्वसित**] निःश्वास ; (से १, ३८) ।
णीसह वि [**निःसह**] मन्द, अशक्त ; (हे १,१३; कुमा) ।
णीसह वि [**निःशाख**] शाखा-रहित ; (गा २३०) ।
णीसा स्त्री [**दे**] पीसने का पत्थर ; (दस ५, १) ।
णीसा देखो **णिस्सा** ; (कप्प) ।
णीसामण्ण, **णीसामन्न** वि [**निःसामान्य**] १ असाधारण ; (गउड; सुपा ६१ ; हे २, २१२) । २ गुरु, ; (पाअ) ।
णीसार सक [**निर्+सारय्**] बाहर निकालना । णीसारइ ; (भवि) । कर्म—नीसारिज्जइ ; (कुप्र १४०) ।
णीसार पुं [**दे**] मण्डप ; (दे ४, ४१) ।
णीसार वि [**निःसार**] सार-रहित, फल्गु ; (से ३,४८) ।
णीसारण न [**निःसारण**] निष्कासन, बाहर निकालना ; (सुर १५ , २०३) ।
णीसारय वि [**निःसारक**] बाहर निकालने वाला ; (से ३, ४८) ।
णीसारिय वि [**निःसारित**] निष्कासित ; (सुर ५,१८८) ।
णीसास देखो **णिस्सास** ; (हे १, ९३ ; कुमा ; प्राप्र) ।
णीसास, **णीसासय** वि [**निःश्वास, °क**] निःश्वास लेने वाला ; (विसे २७१५ ; २७१४) ।

णीसाहार देखो **णिस्साहार** ; "नीसाहारा य पडइ भूमीए" (सुर ७, २३) ।
णिसित्त वि [**निषिक्त**] अत्यन्त सिक्त ; (षड्) ।
णीसीमिअ वि [**दे**] निर्वासित, देश-बाहर किया हुआ ; (दे ४, ४२) ।
णीसेयस देखो **णिस्सेयस** ; (जीव ३) ।
णीसेणि स्त्री [**निःश्रेणि**] सीढ़ी ; (सुर १३, १५७) ।
णीसेस देखो **णिस्सेस** ; (गउड ; उव) ।
णीहट्टु अ [ ] निकाल कर; (आचा २, ६, २) ।
णीहड वि [**निर्हृत**] १ निर्गत, निर्यात ; (आचा २, १, १) । २ बाहर निकाला हुआ ; (बृह १; कस) ।
णीहडिया स्त्री [**निर्हृतिका**] अन्य स्थान में ले जाया जाता द्रव्य; (बृह २) ।
णीहम्म अक [**निर्+हम्म्**] निकलना । णीहम्मइ ; (हे ४, १६२) ।
णीहम्मिअ वि [**निर्हम्मित**] निर्गत, निःसृत ; (दे ४, ४३) ।
णीहर अक [**निर्+सृ**] १ बाहर निकलना । णीहरइ ; (हे ४, ७९) । वकृ—**नीहरंत** ; (सुपा ४८२) । संकृ—**णीहरिअ** ; (निचू ६) । कृ—**णीहरियव्व** ; (सुपा ५६०) ।
णीहर अक [**आ+क्रन्द्**] आक्रन्द करना, चिल्लाना । णीहरइ ; (हे ४, १३१) ।
णीहर अक [**निर्+ह्राद्**] प्रतिध्वनि करना । वकृ—**णीहरंत, णीहरिअंत** ; (से ५, ११ ; २, ३१) ।
णीहर सक [**निर्+सारय्**] बाहर निकालना । हेकृ—**णीह-रित्तए** ; (भग ५, ४) । कृ—**णीहरियव्व** ; (सुपा ४८२) ।
णीहर अक [**निर्+हृ**] पाखाना जाना, पुरीषोत्सर्ग करना । नीहरइ ; (हे ४, २५६) ।
णीहरण न [**निस्सरण, निर्हरण**] १ निर्गमन, निर्गम, बाहर निकालना ; (विपा १,३ ; णाया १, १४) । २ परित्याग; (निचू १) । ३ अपनयन ; (सूअ २, २) ।
णीहरिअ देखो **णीहर**=निर्+सृ ।
णीहरिअ वि (निःसृत) निर्गत, निर्यात ; (सुर १, १५५; ३, ७५ ; पाअ) ।
णीहरिअ वि [**निर्ह्रादित**] प्रतिध्वनित ; (से ११, १२२) ।

णीहरिअ न [**दे**] शब्द, आवाज, ध्वनि ; (दे ४, ४२) ।
णीहरिअंत देखो **णीहर=**निर् + हृ ।
णीहार पुं [**नीहार**] १ हिम, तुषार ; (अच्चु ७२ ; स्वप्न ५२ ; कुमा) । २ विष्ठा या मुत्र का उत्सर्ग ; (सम ६०) ।
णीहारण न [**निस्सारण**] निष्कासन ; (ठा २, ४) ।
णीहारि वि [**निर्हारिन्**] १ निकलने वाला ; २ फैलने वाला ; "जोयणणीहारिणा सरेण" (आवम ; सम ६०) ।
णीहारि वि [**निर्ह्रादिन्**] घोष करने वाला, गुंजने वाला ; (ठा १० ; पि ४०५) ।
णीहारिम देखो **णिहारिम** ; (ठा २,४; औप; णाया १,१)।
णीहूय वि [**दे**] अकिञ्चित्कर, कुछ भी नहीं कर सकने वाला ; "पवयणणीहूयाणं" (आवनि ७८७) । देखो— **णिहुअ** ।
णु अ [**नु**] इन अर्थों का सुचक अव्यय ;—१ व्यंग्य ध्वनि; २ वक्रोक्ति ; (स ३४६) ।३ वितर्क ; (सण) । ४ प्रश्न ; ५ विकल्प ; ६ अनुनय ; ७ हेतु, प्रयोजन ; ८ अपमान; ६ अनुताप, अनुराग ; १० अपदेश, वहाना; (गउड; हे २, २१७ ; २१८) ।
°**णुअ** वि [**ज्ञक**] जानकार ; (गा ४०५) ।
णुक्कार पुं [**नुक्कार**] 'नुक्' ऐसा आवाज ; (राय) ।
णुज्जिय वि [**दे**] बन्द किया हुआ, मुद्रित ; "कड्डिया गेण छुरिया, णुज्जियं से वयणं, छिन्ना य हत्था" (स ५८६) ।
णुत्त वि [**नुत्त**] १ प्रेरित ; २ क्षिप्त, फेंका हुआ ; (से ३, १५) ।
णुम सक [**नि+अस्**] स्थापन करना । णुमइ ; (हे ४, १६६) ।
णुम सक [**छादय्**] ढ़कना, आच्छादन करना । णुमइ ; (हे ४, २१) ।
णुमज्ज अक [**नि + सद्**] बैठना । णुमज्जइ ; (षड्) ।
णुमज्ज अक [**नि+मस्ज्**] डूबना । णुमज्जइ ; (हे १,६४) ।
णुमज्जण न [**निमज्जन**] डूबना ; (राज) ।
णुमण्ण वि [**निषण्ण**] बैठा हुआ, उपविष्ट ; (षड् ; हे १, १७४) ।
णुमण्ण, **णुमन्न** वि [**निमग्न**] डूबा हुआ, लीन ; (हे १, ६४ ; १७४) ।
णुमिअ वि [**न्यस्त**] स्थापित ; (कुमा) ।
णुमिअ वि [**छादित**] ढका हुआ ; (कुमा) ।
णुल्ल देखो **णोल्ल** । णुल्लइ ; (पि २४४) ।
णुवण्ण वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ ; (दे ४, २५)।
णुवण्ण वि [**निषण्ण**] बैठा हुआ, उपविष्ट ; (गउड ; णाया १,५; स २४२)। "पासम्मि नुवण्णा" (उप ६४८ टी)।
णुव्व सक [**प्र + काशय्**] प्रकाशित करना । णुव्वइ ; (हे ४, ४५) । वकृ—**णुव्वंत** ; (कुमा) ।
णुसा स्त्री [**स्नुषा**] पुत्र-वधू, पुत्र की भार्या ; (प्रयौ १०५)।
णूउर देखो **णिउर=**नूपुर ; (षड् ; हे १, १२३) ।
णूण वि [**न्यून**] कम, ऊन ; (उप पृ ११६) ।
णूण, **णूणं** अ [**नूनम्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय, अवधारण; २ तर्क, विचार; ३ हेतु ; प्रयोजन; ४ उपमान ; ५ प्रश्न ; (हे १, २६ ; प्राप्र ; कुमा ; भग ; प्रासु १२ ; वृह १ ; श्रा १२) ।
णूपुर देखो **णूउर** ; (चारु ११) ।
णूम सक [**छादय्**] १ ढ़कना, छिपाना । णूमइ ; (हे ४, २१) । णूमंति ; (णाया १, १६) । वकृ—**णूमंत** ; (गा ८५६) ।
णूम न [**छादन**] १ प्रच्छादन, छिपाना ; २ असत्य, झूठ ; (पण्ह १, २) । ३ माया, कपट ; (सम ७१) । ४ प्रच्छन्न स्थान, गुफा वगैरः ; (सुअ १, ३,३ ; भग १२, ५) । ५ अन्धकार, गाढ अन्धकार ; (राज) ।
णूमिअ वि [**छादित**] ढका हुआ, छिपाया हुआ ; (से १, ३२ ; पाअ ; कुमा) ।
णूमिअ वि [**दे**] पोला किया हुआ; (उप पृ ३६३) ।
णूला स्त्री [**दे**] शाखा, डाल ; (दे ४, ४३) ।
णे अ. पाद-पूर्त्ति में प्रयुक्त होता अव्यय ; (राज) ।
णेअ देखो **णा=**ज्ञा ।
णेअ देखो **णी**=नी ।
नैक] अनेक, बहुत ; (पउम ६४, ५१) ।
°**विह** वि [°**विध**] अनेक प्रकार का ; (पउम ११३, ५२) ।
णेअ अ [**नैव**] नहीं ही, कदापि नहीं ; (से ४, ३० ; गा १३६ ; गउड ; सुर २, १८६ ; सण) ।
णेअव्व देखो **णी**=नी ।
णेआइअ, **णेआउअ** वि [**नैयायिक, न्याय्य**] न्याय से अ-बाधित, न्यायानुगत, न्यायोचित ; " णेआइअस्स मग्गस्स दुट्ठे अवयरई बहु " (सम ५१ ; औप ; पण्ह २, १) ।

णेआवण न [**नायन**] अन्य-द्वारा नयन, पहुँचाना ; (उप ७४६)।

णेआविअ वि [**नायित**] अन्य द्वारा ले जाया गया, पहुँचाया हुआ ; (स ४२; कुप्र २०७) ।

णेउ वि [**नेतृ**] नेता, नायक ; (पउम १४, ६२ ; सूअ १, ३, १) ।

णेउआण, **णेउं** देखो **णी**=नी ।

णेउड्ड पुं [**दे**] सद्भाव, शिष्टता ; (दे ४, ४४) ।

णेउण न [**नैपुण**] निपुणता, चतुराई ; (अभि १३२) ।

णेउणिअ वि [**नैपुणिक**] १ निपुण, चतुर ; (ठा ६)। २ न. अनुप्रवाद-नामक पूर्व-ग्रन्थ की एक वस्तु ; (विसे २३६०) ।

णेउण्ण, **णेउन्न** न [**नैपुण्य**] निपुणता, चतुराई ; (दस ६, २ ; सुपा २६३) ।

णेउर न [**नूपुर**] स्त्री के पाँव का एक आभूषण ; (हे १, १२३ ; गा १८८) ।

णेउरिल्ल वि [**नूपुरवत्**] नूपुर वाला ; (पि १२६ ;गउड) ।

णेऊण, **णेंत** देखो **णी**=नी ।

णेंत देखो **णी**=गम् ।

णेक्कंत देखो **णिक्कंत** ; (गा ११) ।

णेग देखो **णेअ**=नैक ; (कुमा ; पराह १, ३) ।

णेगम पुं [**नैगम**] १ वस्तु के एक अंश को स्वीकारने वाला पक्ष-विशेष, नय-विशेष ; (ठा ७) । २ वणिक्, व्यापारी; "जिणधम्मभाविएणं, न केवलं धम्मओ धणओवि । नेगमअडहियसहसो, जेण कओ अप्पणो सरिसो" (श्रा २७) । ३ न. व्यापार का स्थान ; (आचा २, १, २) ।

णेगुण्ण न [**नैर्गुण्य**] निर्गुणता, निःसारता ; (भत्त १६३)।

णेचइय पुं [**नैचयिक**] धान्य का व्यापारी ; (वव ४) ।

णेच्छइअ वि [**नैश्चयिक**] निश्चयनय-सम्मत, निरुपचरित, शुद्ध; (विसे २८२) ।

णेच्छंत वि [**नेच्छत्**] नहीं चाहता हुआ ; (हेका ३०६) ।

णेच्छिय वि [**नैच्छित**] इच्छा का अविषय, अनभिलषित ; (जीव ३) ।

णेट्ठिअ वि [**नैष्ठिक**] पर्यन्त-वर्ती ; (पराह २, ३) ।

णेड देखो **णिड्ड** ; (कुमा ; हे १, १०६) ।

णेडाली स्त्री [**दे**] सिर का भूषण-विशेष ; (दे ४,४३) ।

णेड्ड देखो **णिड्ड** ; (हे २,६६ ; प्राप्र ; षड्) ।

णेड्डुरिआ स्त्री [**दे**] भाद्रपद मास की शुक्ल दशमी का एक उत्सव ; (दे ४, ४५) ।

णेत्त पुंन [**नेत्र**] नयन, आँख, चक्षु ; (हे १,३३ ; आचा)।

णेद्दा देखो **णिद्दा** ; (पि १६२ ; नाट) ।

णेपाल देखो **णेवाल** ; (उप पृ ३६७) ।

णेम स [**नेम**] १ अर्ध, आधा ; (प्रामा) । २ न. मूल, जड़ ; (पराह १, ३ ; भग) ।

णेम न [**दे**] कार्य, काज ; (राज) ।

णेम देखो **णेम्म**=दे ; (पराह २, ४ टी—पत्र १३३) ।

णेमाल पुं.ब. [**नेपाल**] एक भारतीय देश, नेपाल; (पउम ६८, ६४) ।

णेमि पुं [**नेमि**] १ स्वनाम-ख्यात एक जिन-देव, बाइसवें तीर्थंकर ; (सम ४३ ; कप्प) । २ चक्र की धारा ; (ठा ३, ३ ; सम ४३) । ३ चक्र परिधि, चक्के का घेरा ; (जीव ३) । ४ आचार्य हेमचन्द्र के मातुल का नाम ; (कुप्र २०) । °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक जैनाचार्य ; (सार्ध ६२) ।

णेमित्त देखो **णिमित्त** ; (आवम) ।

णेमित्ति वि [**निमित्तिन्**] निमित्त-शास्त्र का जानकार ; (सुर १, १४४ ; सुपा १५४) ।

णेमित्तिअ, **णेमित्तिग** वि [**नैमित्तिक**] १ निमित्त-शास्त्र से संबन्ध रखने वाला ; (सुर ६, १७७) । २ कारणिक, निमित्त से होने वाला, कारण से किया जाता, कादाचित्क ; "उववासो णेमित्तिगमो जओ भणिओ" (उप ६८३ ; उत्तर १०७) । ३ निमित शास्त्र का जानकार; (सुर १, २३८) । ४ न. निमित शास्त्र ; (ठा ६) ।

णेमी स्त्री [**नेमी**] चक्र-धारा ; (दे १, १०६) ।

णेम्म वि [**दे. निभ**] तुल्य, सदृश, समान ; (पराह २,४—पत्र १३०) ।

णेम्म देखो **णेम**=नेम ; (पराह १, ५—पत्र ६४) ।

णेरइअ वि [**नैरयिक**] १ नरक-संबन्धी, नरक में उत्पन्न ; (हे १, ७६) । २ पुं. नरक का जीव, नरक में उत्पन्न प्राणी ; (सम २ ; विपा १, १०) ।

णेरई स्त्री [**नैर्ऋती**] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा ; (सुपा ६८ ; ठा १०) ।

णेरुत न [**नैरुक्त**] १ व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ का वाचक शब्द; (अणु) । २ वि. निरुक्त शास्त्र का जानकार ; (विसे २४) ।

णेरुत्तिय वि [**नैरुक्तिक**] व्युत्पत्ति-निष्पन्न; (विसे ३०३७)।
णेरुत्ती स्त्री [**नैरुक्तिो**] व्युत्पत्ति; (विसे २१८२)।
णेल वि [**नैल**] नील का विकार ; (भग ; औप)
णेलंछण देखो **णिल्लंछण** ; (स ६६६)।
णेलच्छ पुं [**दे**] नपुंसक, षण्ड ; (दे ४, ४४ ; पाअ ; हे २, १७४)। २ वृषभ, बैल ; (दे ४, ४४)।
णेलिच्छी स्त्री [**दे**] कूपतुला, ढेंकवा ; (दे ४, ४४)।
णेल्लच्छ देखो **णेलच्छ** ; (पि ६६)।
णेव देखो **णेअ**=नैव ; (उत ; पि १७०)।
णेवच्छ देखो **णेवत्थ** ; (से १२, ६७ ; प्रति ६ ; औप ; कुमा ; पि २८०)।
णेवच्छण न [**दे**] अवतारण, नीचे उतारना ; (दे ४, ४०)।
णेवच्छिय देखो **णेवत्थिय** ; (पि २८०)।
णेवत्थ न [**नेपथ्य**] १ वस्त्र आदि की रचना, वेष की सजावट ; (णाया १, १)। २ वेष ; (विसे २५८७ ; सुर ३, ६२ ; सण ; सुपा १५३)।
णेवत्थण न [**दे**] निरुंछन, उत्तरीय वस्त्र का अञ्चल; (कुमा)।
णेवत्थिय वि [**नेपथ्यित**] जिसने वेष-भूषा की हो वह ; "पुरिसनेवत्थिया" (विपा १, ३)।
णेवाइय वि [**नैपातिक**] निपात-निष्पन्न नाम, अव्यय आदि ; (विसे २८४० ; भग)।
णेवाल पुं [**नेपाल**] १ एक भारतीय देश, नेपाल ; (उप पृ ३६३ ; कुप्र ४५८)। २ वि. नेपाल-देशीय ; (पउम ६६, ५५)।
णेविज्ज } न [**नैवेद्य**] देवता के आगे धरा हुआ अन्न
णेवेज्ज } आदि; (सं १२२ ; श्रा १६)।
णेव्वाण देखो **णिव्वाण**=निर्वाण ; (आचा ; सुर ६, २०; स ७४४)।
णेव्वुअ देखो **णिव्वुअ** ; (उप ७३० टी)।
णेव्वुइ देखो **णिव्वुइ** ; (उप ७६८ टी)।
णेसग्गिय देखो **णिसग्गिय** ; (सुपा ६)।
णेसज्ज वि [**नैषद्य**] आसन-विशेष से उपविष्ट ; (पव ६७; पंचा १८)।
णेसज्जिअ वि [**नैषद्यिक**] ऊपर देखो ; (ठा ५, १ ; औप ; पण्ह २, १ ; कस)।
णेसत्थि पुं [**दे**] वणिग् मन्त्री, वणिक् प्रधान; (दे ४,४४)।
णेसत्थिया } स्त्री [**नैसृष्टिकी, नैशस्त्रिकी**] १ निसर्जन,
णेसत्थी } निक्षेपण; २ निसर्जन से होने वाला कर्म-बन्ध; (ठा २, १ ; नव १८)।
णेसप्प पुं [**नैसर्प**] निधि-विशेष, चक्रवर्ती राजा का एक देवाधिष्ठित निधान ; (ठा ६ ; उप ६८६ टी)।
णेसर पुं [**दे**] रवि, सूर्य ; (दे ४, ४४)।
णेसाय देखो **णिसाय**=निषाद; (राज)।
णेसु पुंन [**दे**] १ ओष्ठ, होठ; २ पाँव; 'तह निक्खिवंतमंता कुव्वन्ति निहिं णेसुजुगं'' (उप ३१० टी)।
णेह पुं [**स्नेह**] १ राग, अनुराग, प्रेम ; (पाअ)। तैल आदि चिकना रस-पदार्थ ; ३ चिकनाई, चिकनाहट ; (हे २, ७७ ; ४, ४०६ ; प्रासू)।
णेहर देखो **णेहुर** ; (पण्ह १, १)।
णेहल पुं [**स्नेहल**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
णेहालु वि [**स्नेहवत्**] स्नेह युक्त, स्निग्ध ; (हे २,१५६)।
णेहुर पुं [**नेहुर**] १ देश-विशेष, एक अनार्य देश ; २ उसमें बसने वाली अनार्य जाति ; (पण्ह १, १—पत्र १४)।
णो अ [**नो**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ निषेध, प्रतिषेध, अभाव ; (ठा ६ ; कस ; गउड)। २ मिश्रण, मिश्रता ; 'नोलद्धो मिस्सभावम्मि'' (विसे ५०)। ३ देश, भाग, अंश, हिस्सा ; (विसे ८८८)। ४ अवधारण, निश्चय ; (राज)। °**आगम** पुं [°**आगम**] १ आगम का अभाव ; २ आगम के साथ मिश्रण ; ३ आगम का एक अंश ; (आवम ; विसे ४६ ; ५० ; ५१)। ४ पदार्थ का अ-परिज्ञान ; (णंदि)। °**इंदिय** न [°**इन्द्रिय**] मन, अन्तःकरण, चित्त ; (ठा ६ ; सम ११ ; उप ५६७ टी)। °**कसाय** पुं [°**कषाय**] कषाय के उद्दीपक हास्य वगैरः नव पदार्थ, वे ये हैं ;—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद; (कम्म १, १७ ; ठा ६)। °**केवलनाण** न [°**केवलज्ञान**] अवधि और मनःपर्यव ज्ञान ; (ठा २, १)। °**गार** पुं [°**कार**] 'नो' शब्द ; (राज)। °**गुण** वि [°**गुण**]अ-यथार्थ, अ-वास्तविक; (अणु)। °**जीव** पुं [°**जीव**] १ जीव और अजीव से भिन्न पदार्थ, अ-वस्तु ; २ अजीव, निर्जीव ; ३ जीव का प्रदेश; (विसे)। °**तह** वि [°**तथ**] जो वैसा ही न हो ; (ठा ४, २)।
णोक्ख वि [**दे**] अनोखा, अपूर्व ; (पिंग)।
णोदिअ देखो **णोल्लिअ** ; (राज)।

णोमल्लिआ स्त्री [**नवमल्लिका**] सुगन्धि फूल वाला वृत्त-विशेष, नेवारी, वासंती ; (नाट ; पि १५४)।

णोमालिआ स्त्री [**नवमालिका**] ऊपर देखो ; (हे१, १७० ; गा २८१ ; षड् ; कुमा; अभि २६)।

णोमि पुं [**दे**] रस्सी, रज्जु ; (दे ४, ३१)।

णोलइआ, **णोलच्छा** } स्त्री [**दे**] चञ्चु, चाँच ; (दे ४, ३६)।

णोल्ल सक [**क्षिप्, नुद्**] १ फेंकना। २ प्रेरणा करना। णोल्लइ; (हे ४, १४३ ; षड्)। णोल्लेइ; (गा ८७५)। कवकृ—**णोल्लिज्जंत** ; (सुर १३, १६६)।

णोल्लिअ वि [**नोदित**] प्रेरित; (से६, २२ ; णाया१, ६ ; पण्ह १, ३ ; स ३४०)।

णोव्व पुं [**दे**] आयुक्त, सूबा, राज-प्रतिनिधि ; (दे४,१७)।

णोहल पुं [**लोहल**] अव्यक्त शब्द-विशेष ; (षड् ; पि २६०; संक्षि ११)।

णोहलिआ स्त्री [**नवफलिका**] १ ताजी फली, नवोत्पन्न फली ; (हे १, १७०)। २ नूतन फल वाली ; (कुमा)। ३ नूतन फल का उद्‌गम ; "णोहलिअमप्पणो किं ण मग्गसे, मग्गसे कुरवअस्स" (गा ६)।

णोहा स्त्री [**स्नुषा**] पुत्र की भार्या ; (पि १४८ ; संक्षि १५)।

°**ण्णअ** वि [**ज्ञक**] जानकार ; (गा २०३)।

°**ण्णास** देखो **णास**= न्यास ; (स्वप्न १३४)।

°**ण्णुअ** देखो °**ण्णअ** ; (गा ४०५)।

ण्हं अ. १-२ वाक्यालंकार और पादपूर्त्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (कप्प ; कस)।

ण्हव सक [**स्नपय्**] नहलाना, स्नान कराना। ण्हवेइ ; (कुप्र ११७)। कवकृ—**ण्हविज्जंत** ; (सुपा ३३)। संकृ—**ण्हविऊण**; (पि ३१३)।

ण्हवण न [**स्नपन**] स्नान कराना, नहलाना ; (कुमा)।

ण्हविअ वि [**स्नपित**] जिसको स्नान कराया गया हो वह ; (सुर २, ५८ ; भवि)।

ण्हा, **ण्हाण** } अक [**स्ना**] स्नान करना, नहाना। ण्हाइ ; (हे४, १४)। ण्हाएइ, ण्हायंति ; (पि ३१३)। भवि—ण्हाइस्सं ; (पि ३१३)। वकृ—**ण्हायमाण** ; (णाया १, १३)। संकृ—**ण्हाइत्ता**, **ण्हाणित्ता** ; (पि ३१३)।

ण्हाण न [**स्नान**] नहाना, नहान ; (कप्प ; प्राप्र)। °**पीढ** पुंन [°**पीठ**] स्नान करने का पट्टा ; (णाया १, १)।

ण्हाणिआ स्त्री [**स्नानिका**] स्नान-क्रिया; (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

ण्हाय वि [**स्नात**] जिसने स्नान किया हो वह, नहाया हुआ ; (कप्प ; औप)।

ण्हायमाण देखो **ण्हा**।

ण्हारु न [**स्नायु**] अस्थि-बन्धनी सिरा, नस, धमनी ; (सम १४६ ; पण्ह १, १ ; ठा २, १ ; आचा)।

ण्हाव देखो **ण्हव**। ण्हावइ, ण्हावेइ ; (भवि ; पि ३१३)। वकृ—**ण्हावअंत** ; (पि३१३)। संकृ—**ण्हाविऊण**; (महा)।

ण्हाविअ वि [**स्नपित**] नहलाया हुआ, जिसको स्नान कराया गया हो वह ; (महा ; भवि)।

ण्हाविअ पुं [**नापित**] हजाम, नाई ; (हे १, २३० ; कुमा), "घेत्तूण ण्हावियं आगएण मुंडाविओ कुमरो" (उप ६ टी)। °**पसेवय** पुं [°**प्रसेवक**] नाई की अपने उप-करण रखने की थैली ; (उत्त २)।

ण्हुसा स्त्री [**स्नुषा**] पुत्र-वधू ; पुत्र की भार्या ; (आवम ; पि ३१३)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवे** णआराइसद्दसंकलणो, अइएसो नआराइसद्दसंकलणो अ बाईसइमो तरंगो समत्तो।

त

त पुं [**त**] दन्त-स्थानीय व्यन्जन वर्ण-विशेष; (प्राप; प्रामा)। स [**तत्**] वह ; (ठा ३, १ ; हे १, ७ ; कप्प ; कुमा)।

त° स [**त्वत्°**] तू। °**क्कय** त्रि °**कृत**] तेरा किया हुआ; (स ६८०)।

तइ (अप) अ [**तत्र**] वहाँ, उसमें ; (षड्)।

तइ अ [**तदा**] उस समय ; (प्राप्र)।

तइअ वि [**तृतीय**] तीसरा ; (हे १, १०१ ; कुमा)।

तइअ (अप) वि [**त्वदीय**] तुम्हारा ; (भवि)।

तइअ अ [**तदा**] उस समय ;

"भणिओ रन्ना मंती, मइसागर तइय पव्वयंतेण।
ताएण अहं भणिओ, भगिणी ठाणम्मि दायव्वा"
(सुर १,१२३)।

तइअहा (अप) अ [**तदा**] उस समय ; (भवि ; सण)।

तइआ अ [**तदा**] उस समय ; (हे ३, ६५ ; गा ६२)।

तइआ स्त्री [**तृतीया**] तिथि-विशेष, तीज ; (सम २६)।

तइल देखो **तेल्ल** ; (उप ६२६)।

तइलोई स्त्री [**त्रिलोकी**] तीन लोक—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल; (सुपा ६८)।

तइलोक्क, **तइलोय** न [**त्रैलोक्य**] ऊपर देखो ; (पउम ३, १०५ ; ८, २०२ ; स ५७१ ; सुर ३, २० ; सुपा २८२ ; ३५ ; ४४८)।

तइस (अप) वि [**तादृश**] वैसा, उस तरह का ; (हे ४, ४०३ ; षड्)।

तई स्त्री [**त्रयी**] तीन का समुदाय ; (सुपा ५८)।

तईअ देखो **तइअ**=तृतीय ; (गा ४११ ; भग)।

तउ, **तउअ** न [**त्रपु**] धातु-विशेष, सीसा, राँगा ; (सम १२५ ; औप ; उप ६८६ टी; महा)। °**वट्टिआ** स्त्री [°**पट्टिका**] कान का आभूषण-विशेष ; (दे ५,२३)।

तउस न [**त्रपुष**] देखो **तउसी** ; (राज)। °**मिंजिया** स्त्री [°**मिञ्जिका**] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (जीव १)।

तउसी स्त्री [**त्रपुषी**] कर्कटी-वृक्ष, खीरा का गाछ; (गा ५३४)।

तए अ [**ततस्**] उससे, उस कारण से ; २ बाद में; (उत्त १ ; विपा १, १)।

तएयारिस वि [**त्वादृश**] तुम जैसा, तुम्हारी तरह का ; (स ५२)।

तओ देखो **तए** ; (ठा ३, १ ; प्रासू ७८)।

तं अ [**तत्**] इन अर्थों को बतलाने वाला अव्यय : — १ कारण, हेतु ; (भग १५)। २ वाक्य-उपन्यास ; "तं तिअसबंदिमोक्खं" (हे २, १७६ ; षड्)। "तं मरणमणारंभे वि होइ, लच्छी उण न होइ" (गा ४२)। °**जहा** अ [°**यथा**] उदाहरण-प्रदर्शक अव्यय ; (आचा ; अणु)।

तंआ देखो **तया**=तदा ; (गउड)।

तंट न [**दे**] पृष्ठ, पीठ ; (दे ५, १)।

तंड न [**दे**] लगाम में लगी हुई लार ; २ वि. मस्तक-रहित; ३ स्वर से अधिक ; (दे ५, १६)।

तंडव (अप) देखो **तड्डव**। तंडवहु ; (भवि)।

✓**तंडव** सक [**ताण्डवय्**] नृत्य करना। तंडवेंति ; (आवम)।

तंडव न [**ताण्डव**] १ नृत्य, उद्धत नाच ; (पाअ ; जीव ३ ; सुपा ८६)। २ उद्धताई ; "पासंडितुंडअइचंडतंडवाडंबरेहिं किं मुद्ध" (धम्म ८ टी)।

तंडविय वि [**ताण्डवित**] नचाया हुआ, नर्तित; (गउड)।

तंडविय (अप) देखो **तड्डविअ**; (भवि)।

तंडुल पुं [**तण्डुल**] चावल; (गा ६६१)। देखो **तंदुल**।

तंत न [**तन्त्र**] १ देश, राष्ट्र ; (सुर १६, ४८)। २ शास्त्र, सिद्धान्त ; (उवर ५) ३ दर्शन, मत ; (उप ६२२)। ४ स्वदेश-चिन्ता ; ५ विष का औषध विशेष ; (मुद्रा १०८)। ६ सूत्र, ग्रन्थांश-विशेष ; "सुत्तं भणियं तंतं भणिज्जए तम्मि व जमत्थो" (विसे)। ७ विद्या-विशेष; (सुपा ४६६)। °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] तन्त्र का जानकार ; (सुपा ५७६)। °**वाइ** पुं [°**वादिन्**] विद्या-विशेष से रोग आदि को मिटाने वाला ; (सुपा ४६६)।

तंत वि [**तान्त**] खिन्न, क्लान्त ; (णाया १,४ ; विपा१,१)।

तंतडी स्त्री [**दे**] करम्ब, दही और चावल का बना भोजन-विशेष ; (

तंतिय पुं [**तान्त्रिक**] वीणा बजाने वाला ; (अणु)।

तंती स्त्री [**तन्त्री**] १ वीणा, वाद्य-विशेष ; (कप्प ; औप ; सुर १६, ४८)। २ वीणा-विशेष ; (पण्ह २, ५)। ३ ताँत, चमड़े की रस्सी ; (विपा १, ६ ; सुर ३, १३७)।

तंती स्त्री [**दे**] चिन्ता ; "कामस्स तत्ततंतिं कुणंति" (गा २)।

तंतु पुं [**तन्तु**] सूत, तागा, धागा ; (पउम १, १३)। °**अ**, °**ग** पुं [°**क**] जलजन्तु-विशेष; (पउम १४,१७ ; कुप्र २०६)। °**ज**, °**य** न [°**ज**] सूती कपड़ा ; (उत्त २,३५)। °**वाय** पुं [°**वाय**] कपड़ा बुनने वाला, जुलहा ;

(श्रा २३)। °साला स्त्री [°शाला] कपड़ा बुनने का घर, ताँत-घर ; (भग १५) ।
तंतुक्खोडी स्त्री [दे] तन्तुवाय का एक उपकरण ; (दे ५,७)।
तंदुल देखो **तंडुल** ; (पउम १२, १३८) । २ मत्स्य-विशेष ; (जीव १) । °वेयालिय न [°वैचारिक] जैन ग्रन्थ-विशेष ; (णंदि) ।
तंदुलेज्जग पुं [**तन्दुलीयक**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)।
तंदूसय देखो **तिंदूसय** ; (सुर १३, १९७) ।
तंब पुं [**स्तम्ब**] तृणादि का गुच्छा ; (हे २, ४५ ; कुमा)।
तंब न [**ताम्र**] १ धातु-विशेष, ताँबा ; (विपा १, ६ ; हे २, ४५) । २ पुं. वर्ण-विशेष ; ३ वि. अरुण वर्ण वाला; (पण्ण १७ ; औप) । °**चूल** पुं [°**चूड**] कुक्कुट, मुर्गा; (सुर ३, ६१) । °**वण्णी** स्त्री [°**पर्णी**] एक नदी का नाम ; (कप्पू) । °**सिह** पुं [°**शिख**] कुक्कुट, मुर्गा; (पाअ) ।
तंबकरोड पुंन [दे] ताम्र वर्ण वाला द्रव्य-विशेष; (पण्ण १७)।
तंबकिमि पुं [दे] कीट-विशेष, इन्द्रगोप; (दे ५, ६; षड्)।
तंबकुसुम पुंन [दे] वृक्ष-विशेष, कुरुबक, कटसरैया ; (दे ५, ६ ; षड्) । २ कुरण्टक वृक्ष ; (षड्) ।
तंबक्क न [दे] वाद्य-विशेष ; अणाहयतंबक्केसु वज्जंतेसु (ती १५) ।
तंबच्छिवाडिया स्त्री [दे] ताम्र वर्ण का द्रव्य-विशेष ; (पण्ण १७) ।
तंबटक्कारी स्त्री [दे] शेफालिका, पुष्प-प्रधान लता-विशेष ; (दे ५, ४) ।
तंबरत्ती स्त्री [दे] गेहूँ में कुंकुम की छाया ; (दे ५, ५) ।
तंबा स्त्री [दे] गौ, धेनु, गैया ; (दे ५, १ ; गा ४६० ; पाअ ; वज्जा ३४) ।
तंबाय पुं [**तामाक**] भारतीय ग्राम-विशेष ; (राज) ।
तंबिम पुंस्त्री [**ताम्रत्व**] अरुणता, ईषद् रक्तता ; (गउड) ।
तंबिय न [**ताम्रिक**] परित्राजक का पहनने का एक उपकरण ; (औप) ।
तंबिर वि [दे] ताम्र वर्ण वाला ; (हे २,५६; गउड; भवि)।
तंबिरा [दे] देखो **तंबरत्ती** ; (दे ५, ५) ।
तंबुक्क न [दे] वाद्य-विशेष; "बुक्कतंबुक्कसद्दुक्कडं" (सुपा ५०)।
तंबेरम पुं [**स्तम्बेरम**] हस्ती, हाथी ; (उप पृ ११७) ।
तंबेही स्त्री [दे] पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष, शेफालिका ; (दे ५, ४) ।
तंबोल न [**ताम्बूल**] पान; (हे १, १२४ ; कुमा) ।
तंबोलिअ पुं [**ताम्बूलिक**] तमोली, पान बेचने वाला ; (श्रा १२) ।
तंबोली स्त्री [**ताम्बूली**] पान का गाछ ; (षड् ; जीव ३) ।
तंभ देखो **थंभ** ; (षड्) ।
तंस वि [**त्र्यस्र**] त्रि-कोण, तीन कोन वाला ; (हे १, २६ ; गउड ; ठा १ ; गा १० ; प्राप्र ; आचा) ।
तक्क सक [**तर्क्**] तर्क करना, अनुमान करना, अटकल करना । तक्कमि; (मै १३) । संकृ—**तक्कियाणं**; (आचा)।
तक्क न [**तक्र**] मठा, छाँछ ; (ओघ ८७ ; सुपा ५८३ ; उप पृ ११६) ।
तक्क पुं [**तर्क**] १ विमर्श, विचार, अटकल-ज्ञान ; (श्रा १२ ; ठा ६) । २ न्याय-शास्त्र ; (सुपा २८७) ।
तक्कणा स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाष ; (दे ५, ४) ।
तक्कय वि [**तर्कक**] तर्क करने वाला ; (पण्ह १, ३) ।
तक्कर पुं [**तस्कर**] चोर ; (हे २, ४ ; औप) ।
तक्कलि } स्त्री [दे] वलयाकार वृक्ष-विशेष; (पण्ण १)।
तक्कली }
तक्का स्त्री [**तर्क**] देखो **तक्क**=तर्क; (ठा १ ; सूअ १, १३; आचा) ।
तक्काल क्रिवि [**तत्काल**] उसी समय ; (कुमा) ।
तक्किअ वि [**तार्किक**] तर्क-शास्त्र का जानकार ; (अच्चु १०१) ।
तक्कियाणं देखो **तक्क**=तर्क् ।
तक्कु पुं [**तर्कु**] सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, तकला ; (दे ३, १) ।
तक्कुय पुं [दे] स्वजन-वर्ग ; "सम्माणिया सामंता, अहिणंदिया नायरया, परिओसिआ तक्कुयजणा त्ति" (स५२०) ।
तक्ख सक [**तक्ष्**] छिलना, काटना । तक्खइ ; (षड् ; हे ४, १९४) । कर्म —तक्खिज्जइ ; (कुप्र १७) । वकृ—**तक्खमाण** ; (अणु) ।
तक्ख पुं [**तार्क्ष्य**] गरुड़ पक्षी; (पाअ) ।
तक्ख पुं [**तक्षन्**] १ लकड़ी काटने वाला, बढ़ई; २ विश्वकर्मा , शिल्पी विशेष, (हे ३, ५६ ; षड्) । °**सिला** स्त्री [°**शिला**] प्राचीन ऐतिहासिक नगर, जो पहले बाहुबलि की राजधानी थी, यह नगर पंजाब में है ; (पउम ४, ३८; कुप्र ५३) ।
तक्खग पुं [**तक्षक**] १-२ ऊपर देखो । ३ स्वनाम-प्रसिद्ध सर्प-राज ; (उप ६२५) ।

तक्खण न [**तत्क्षण**] १ तत्काल, उसी समय ; (ठा ४, ४)। २ क्रिवि. शीघ्र, तुरन्त ; (पाअ)।
तक्खय देखो **तक्खग** ; (स २०९ ; कुप्र १३९)।
तक्खाण देखो **तक्ख=तक्षन्** ; (हे ३, ५६; षड्)।
तगर देखो **टगर** ; (पराह २, ५)।
तगरा स्त्री [**तगरा**] संनिवेश-विशेष; (स ४६८)।
तग्ग न [**दे**] सूत्र-कङ्कण, धागे का कंकण ; (दे ५, १; गउड)।
तग्गंधिय वि [**तद्गन्धिक**] उसके समान गंध वाला ; (प्रासू ३४)।
तच्च वि [**तृतीय**] तीसरा; (सम ८ ; उवा)।
तच्च न [**तत्त्व**] सार, परमार्थ ; (आचा ; आरा ११५)। °**वाय** पुं [°**वाद**] १ तत्त्व-वाद, परमार्थ-चर्चा। २ दृष्टि-वाद, जैन अङ्ग-ग्रन्थ विशेष; (ठा १०)।
तच्च न [**तथ्य**] १ सत्य, सचाई ; (हे २, २१ ; उत्त २८)। २ वि. वास्तविक, सत्य ; (उत ३)। °**त्थ** पुं [°**र्थ**] सत्य हकीकत ; (पउम ३, १३)। °**वाय** पुं [°**वाद**] देखा ऊपर °**वाय** ; (ठा १०)।
तच्चं अ [**त्रिः**] तीन वार ; (भग ; सुर २, २६)।
तच्चित्त वि [**तच्चित्त**] उसी में जिसका मन लगा हो वह, तल्लीन ; (विपा १, २)।
तच्छ सक [**तक्ष्**] छिलना, काटना। तच्छइ ; (हे ४, १९४; षड्)। संकृ—**तच्छिय**; (सूअ १, ४,१)। कवकृ—**तच्छिज्जंत** ; (सुर १, २८)।
तच्छण स्त्रीन [**तक्षण**] छिलना, कर्तन ; (पराह १, १)। स्त्री—**णा** ; (गाया १, १३)।
तच्छिंड वि [**दे**] कराल, भयंकर ; (दे ५, ३)।
तच्छिज्जंत देखो **तच्छ**।
तच्छिल वि [**दे**] तत्पर ; (षड्)।
तजा देखा **तया=त्वच्** ; (दे १, १११)।
तज्ज सक [**तर्जय्**] तर्जन करना, भर्त्सन करना। तज्जइ ; (भवि)। तज्जेइ ; (गाया १, १८)। वकृ—**तज्जंत**, **तज्जिंत तज्जयंत, तज्जमाण, तज्जेमाण**; (भवि; सुर १२, २३३; गाया १, ८; राज; विपा १, १—पत्र ११)। कवकृ—**तज्जिज्जंत** ; (उप पृ १३४ ; उप १४६ टी)।
तज्जण न [**तर्जन**] भर्त्सन, तिरस्कार ; (औप; उव ; पउम ६५, ५३)।

तज्जणा स्त्री [**तर्जना**] ऊपर देखो; (पराह २,१ ; सुपा १)।
तज्जणी स्त्री [**तर्जनी**] प्रथम अंगुली ; (सुपा १ ; कुमा)।
तज्जाय वि [**तज्जात**] समान जाति वाला, तुल्य-जातीय ; (आव ४)।
तज्जाविअ } वि [**तर्जित**] तर्जित, भर्त्सित ;(स १२२;
तज्जिअ } सुपा २६३ ; भवि)।
तज्जिंत }
तज्जिज्जंत } देखो **तज्ज**।
तज्जेमाण }
तट्टवट्ट न [**दे**] आभरण, आभूषण ;
"सगियं सगियं बालतणाओ नगुयाइं तट्टवट्टाइं।
अवहरिवि नियघराओ हारेइ रहम्मि खिल्लंतो"
(सुपा ३९९)।
तट्टी स्त्री [**दे**] वृति, वाड़ ; (दे ५, १)।
तट्ठ वि [**त्रस्त**] १ डरा हुआ, भीत ; (हे २, १३६ ; कुमा)। २ न. मुहूर्त-विशेष, ; (सम ५१)।
तट्ठ वि [**तष्ट**] छिला हुआ ;(सूअ १, ७)।
तट्ठव न [**त्रस्तप**] मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१)।
तट्ठि } पुं [**त्वष्टृ**] १ तक्षक, विश्वकर्मा ; (गउड)। २
तट्ठु } नक्षत्र-विशेष का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)।
तड सक [**तन्**] १ विस्तार करना। २ करना। तडइ ; (हे ४, १३७)।
तड पुंन [**तट**] किनारा, तीर ; (पाअ ; कुमा)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ मध्यस्थ, पक्षपात-हीन ; २ समीप स्थित; (कुमा; दे ३, ६०)।
तडउडा [**दे**] देखो **तडवडा** ; (जीव ३; जं १)।
तडकडिअ वि[**दे**] अनवस्थित ; (षड्)।
तडक्कार पुं [**तटत्कार**] चमत्कार; "तडितडक्कारो "(सुपा १३३)।
तडतडा अक [**तडतडाय्**] तड तड आवाज करना। वकृ—**तडतडंत, तडतडेंत, तडयडंत** ; (राज ; गाया १, ६ ; सुपा १७६)।
तडतडा स्त्री [**तडतडा**] तड़ तड़ आवाज; (स २५७)।
तडप्फड } अक [**दे**] तड़फना, तड़फड़ाना, व्याकुल होना।
तडफड } तडप्फडइ ; (कुमा ; हे ४, ३६६ ; विवे १०२)। तडफडसि ; (सुर ३, १४८)। वकृ—**तडप्फडंत, तडफडंत** ; (उप ७६८ टी ; सुर १२, १६४ ; सुपा १७६ ; कुप्र २९)।

तडफडिअ वि [दे] १ सब तरफ से चलित, तडफड़ाया हुआ, व्याकुल ; (दे ५, ६ ; स ५८६)।
तडमड वि [दे] चुभित, क्षोभ-प्राप्त; (दे ५, ७)।
तडयड वि [दे] क्रिया-शील, सदाचार-युक्त ; (सद्दि१०७)।
तडयडंत देखो **तडतडा**।
तडवडा स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, आउली का पेड़; (दे ५,५)।
तडाअ) न [**तडाग**] तालाव, सरोवर ; (गा ११० ;
तडाग) पि २३१ ; २४०)।
तडि स्त्री [**तडित्**] बीजली; (पाअ)। °**डंड** पुं [°**दण्ड**] विद्युद्दंड ; (म्हा)। °**केस** पुं [°**केश**] राक्षस-वंशीय एक राजा, एक लंका-पति ; (पउम ६, ६६)। °**वेअ** पुं [°**वेग**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, १८)।
तडिअ वि [**तत**] विस्तृत, फैला हुआ ; (पाअ ; णाया १, ८—पत्र १३३)।
तडिआ स्त्री [**तडित्**] बीजली ; (प्रामा)।
तडिण वि [दे] विरल, अल्प ; (से १३, ५०)।
तडिणी स्त्री [**तटिनी**] नदी, तरङ्गिणी ; (सण)।
तडिम न [**तडिम**] १ भित्ति, भींत ; २ कुट्टिम, पाषाण आदि से बँधा हुआ भूमि-तल ; (से २, २)। ३ द्वार के ऊपर का भाग ; (से १२, ६०)।
तडी स्त्री [**तटी**] तट, किनारा ; (विपा १, १; अनु ६)।
तड्ड) सक [**तन्**] १ विस्तार करना। २ करना। तड्डइ,
तड्डव) तड्डवइ ; (हे ४, १३७)। भूका—तड्डवीअ ; (कुमा)।
तड्डविअ) वि [**तत**] विस्तीर्ण, फैला हुआ ; (पाअ ;
तड्डिअ) महा ; कुमा ; सुर ३, ७२)।
तण सक [**तन्**] १ विस्तार करना। २ करना। तणइ, तणए ; (षड्)। कर्म—तणिज्जए ; (विसे१३८३)।
तण न [**दे**] उत्पल, कमल; (दे ५, १)।
तण न [**तृण**] तृण, घास ; (प्राप्र ; उव)। °**इल्ल** वि [°**वत्**] तृण वाला; (गउड)। °**जीवि** वि [°**जीविन्**] घास खाकर जीने वाला ; (सुपा ३७०)। °**राय** पुं [°**राज**] तालवृक्ष, ताड़ का पेड़ ; (गउड)। °**विंटय**, °**वेंटय** पुं [°**वृन्तक**] एक क्षुद्र जंतु-जाति, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (राज)।
तणय पुं [**तनय**] पुत्र, लड़का ; (सुपा २४७ ; ४२४)।
तणय वि [**दे**] संबन्धी ; "मह तणए" (सुर ३, ८७ ; हे ४, ३६१)।
तणयमुद्दिआ स्त्री [**दे**] अंगुलीयक, अंगुठी; (दे ५, ६)।
तणया स्त्री [**तनया**] लड़की, पुत्री ; (कुमा)।
तणरासि) वि [दे] प्रसारित, फैलाया हुआ ; (दे ५, ६)।
तणरासिअ)
तणवरंडी स्त्री [**दे**] उडुप, डोंगी, छोटी नौका ; (दे ५, ७)।
तणसोल्लि) स्त्री [**दे**] १ मल्लिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-
तणसोल्लिया) विशेष; (दे ५, ६ ; णाया १, १६)। २ वि. तृण-शून्य ; (षड्)।
तणिअ वि [**तत**] विस्तीर्ण ; (कुमा)।
तणु वि [**तनु**] १ पतला ; (जी ७)। २ कृश, दुर्बल ; (पंचा १६)। ३ अल्प, थोड़ा ; (दे३, ५१)। ४ लघु, छोटा ; (जीव ३)। ५ सूक्ष्म; (कप्प)। ६ स्त्री. शरीर, काय; (दे२, ५६ ; जी ८)। °**तणुई, तणू** स्त्री [°**तन्वी**] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथ्वी; (ठा ८ ; इक)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] उत्पन्न होते समय जीव ने ग्रहण किए हुए पुद्गलों को शरीर रूप से परिणत करने की शक्ति ; (कम्म ३, १२)। °**ब्भव** वि [°**उद्भव**] १ शरीर से उत्पन्न; २ पुं. लड़का ; (भवि)। °**ब्भवा** स्त्री [°**उद्भवा**] लड़की ; (भवि)। °**भू** पुंस्त्री [°**भू**] १ लड़का ; २ लड़की ; (आक)। °**य** वि [°**ज**] देखो °**ब्भव** ; (उत्त १४)। °**रुह** पुंन [°**रुह**] १ केश, बाल ; (रंभा)। २ पुं. पुत्र, लड़का; (भवि)। °**वाय** पुं [°**वात**] सूक्ष्म वायु-विशेष ; (ठा ३, ४)।
तणुअ वि [**तनुक**] ऊपर देखो ; (पउम १६, ७ ; आव ५ ; भग १५ ; पाअ)।
तणुअ सक [**तनय्**] १ पतला करना। २ कृश करना; दुर्बल करना। तणुएइ ; (गा ६१ ; काप्र १७४)।
तणुआ) अक [**तनुकाय्**] दुर्बल होना, कृश होना।
तणुआअ) तणुआइ, तणुआअइ, तणुआअए ; (गा ३० ; २६२ ; ५६)। वकृ—**तणुआअंत** ; (गा २६८)।
तणुआअरअ वि [**तनुत्वकारक**] कृशता उपजाने वाला, दौर्बल्य-जनक ; (गा ३४८)।
तणुइअ वि [**तनूकृत**] दुर्बल किया हुआ, कृश किया हुआ; (गा १२२ ; पउम १६, ४)।
तणुई स्त्री [**तन्वी**] १ पृथ्वी-विशेष, सिद्ध-शिला; (सम२२)। २ पतला शरीर वाली स्त्री ; (षड्)।

तणुईकय वि [**तनूकृत**] पतला किया हुआ ; (पात्र)।

तणुग देखो **तणुअ** ; (जं २ ; ३)।

तणुवी } देखो **तणुई** ; (हे २, ११३ ; कुमा)।
तणुवीआ }

तणू स्त्री [**तनू**] शरीर, काया; (गा ७४८; पात्र ; दं ५)। २ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी; (ठा ८)। °**अ** वि [°**ज**] १ शरीर से उत्पन्न ; २ पुं. लड़का, पुत्र; (उप ६८६)। °**अतरा** स्त्री [°**कतरा**] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, जिस पर मुक्त जीव रहते हैं, सिद्ध-शिला ; (सम २२)। °**रुह** पुंन [°**रुह**] केश, रोम ; (उप ५६७ टी)।

तणूइय देखो **तणुइअ** ; (गउड)।

तणेण (अप) अ. लिए, वास्ते ; (हे ४,४२५; कुमा)।

तणेसि पुं [**दे**] तृण-राशि ; (दे ५, ३ ; षड्)।

तण्णय पुं [**तर्णक**] वत्स, बछड़ा ; (पात्र ; गा १६ ; गउड)।

तण्णाय वि [**दे**] आर्द्र, गिला ; (दे ५, २; पात्र ; गउड; से १, ३१ ; ११, १२६)।

तण्हा स्त्री [**तृष्णा**] १ प्यास, पिपासा ; (पात्र)। २ स्पृहा, वाञ्छा; (ठा २, ३; औप)। °**लु**, °**लुअ** वि [°**वत्**] तृष्णा वाला, प्यासा; "समरतण्हालू"(पउम ८,८७; ८, ४७)।

तत देखो **तय**=तत ; (ठा ४, ४)।

तत्त न [**तत्त्व**] सत्य स्वरूप, तथ्य, परमार्थ ; (उप ७२८ टी ; पुप्फ ३२०)। °**ओ** अ [°**तस्**] वस्तुतः ; (उप ६८६)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] तत्व का जानकार ; (पंचा १)।

तत्त वि [**तप्त**] गरम किया हुआ ; (सम १२५ ; विपा १, ६ ; दे १, १०५)। °**जला** स्त्री [°**जला**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३)।

तत्त अ [**तत्र**] वहां। °**भव**, °**होंत** वि [°**भवत्**] पूज्य ऐसे आप ; (पि २६३ ; अभि ५६)।

तत्ति स्त्री [**तृप्ति**] तृप्ति, संतोष; (कुमा ; कप्प २६)। °**ल्ल** वि [°**मत्**] तृप्ति-युक्त ; (राज)।

तत्ति स्त्री [**दे**] १ आदेश, हुकुम ; (दे ५,२० ; सण)। २ तत्परता ; (दे ५, २०)। ३ चिन्ता, विचार ; (गा २; ५१ ; २७३ अ ; सुपा २३७ ; २८०)। ४ वार्ता, बात; (गा २ ; वज्जा २)। ५ कार्य, प्रयोजन ; (पण्ह १, २ ; वव १)।

तत्तिय वि [**तावत्**] उतना; (प्रासू १५६)।

तत्तिल } वि [**दे**] तत्पर; (षड्; दे ५, ३; गा ५५७; प्रासू
तत्तिल्ल } ५६)।

तत्तु (अप) देखो **तत्थ**=तत्र; (हे ४, ४०४; कुमा)।

तत्तुडिल्ल न [**दे**] सुरत, संभोग ; (दे ५, ६)।

तत्तुरिअ वि [**दे**] रञ्जित ; (षड्)।

तत्तो देखो **तओ** ; (कुमा ; जी २६)। °**मुह** वि [°**मुख**] जिसका मुँह उस तरफ हो वह ; (सुर २, २३४)।

तत्तोहुत्त न [**दे**] तदभिमुख, उसके सामने ; (गउड)।

तत्थ अ [**तत्र**] वहाँ, उसमें ; (हे २, १६१)। °**भव** वि [°**भवत्**] पूज्य ऐसे आप ; (पि २६३)। °**य** वि [°**त्य**] वहाँ का रहने वाला ; (उप ५६७ टी)।

तत्थ वि [**त्रस्त**] भीत ; (हे २, १३६ ; कुमा)।

तत्थरि पुं [**त्रस्तरि**] नय-विशेष ; "तत्थरिनएण ठविआ सोहउ मज्झ थुई" (अच्चु ४)।

तदा देखो **तया**=तदा ; (गा ६६६)।

तदीय वि [**त्वदीय**] तुम्हारा ; (महा)।

तदो देखो **तओ** ; (हे २, १६०)।

तद्दिअच्चय न [**दे**] नृत्य, नाच ; (दे ५, ८)।

तद्दिअस } न [**दे**] प्रतिदिन, अनुदिन, हररोज; (दे
तद्दिअसिअ } ५, ८ ; गउड; पात्र)।
तद्दिअह }

तद्धिय पुं [**तद्धित**] १ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष ; (पण्ह २, २ ; विसे १००३)। २ तद्धित प्रत्यय की प्राप्ति का कारण-भूत अर्थ ; (अणु)।

तधा देखो **तहा** ; (ठा ३, १ ; ७)।

तन्नय देखो **तण्णय** ; (सुर १४, १७४)।

तन्हा देखो **तण्हा**; (सुर १, २०३ ; कुमा)।

तप्प सक [**तप्**] १ तप करना। २ अक. गरम होना। तप्पइ, तप्पंति ; (पिंग ; प्रासू ५३)।

तप्प सक [**तर्पय्**] तृप्त करना। वकृ—**तप्पमाण** ; (सुर १६, १६)। हेकृ—"न इमो जोवो सक्को तप्पेउं कामभोगेहिं" (आउ ५०)। कृ—**तप्पेयव्व** ; (सुपा २३२)।

तप्प न [**तल्प**] शय्या, बिछौना ; (पात्र)। °**अ** वि [°**ग**] शय्या पर जाने वाला, सोने वाला ; (पण्ह १, २)।

तप्प पुंन [**तप्र**] डोंगी, छोटी नौका ; (पण्ह १, १ ; विसे ७०६)।

तप्पक्खिअ वि [**तत्पाक्षिक**] उस पक्ष का ; (श्रा १२)।

तप्पज्ज न [**तात्पर्य**] तात्पर्य ; (राज)।

तप्पण न [**तर्पण**] १ सक्तु, सतुआ ; (पराह २, ५) । २ स्नेह. तृप्ति-करण, प्रीणन ; (सुपा ११३) । ३ स्निग्ध वस्तु से शरीर की मालिश ; (गाया १, १३) ।

तप्पभिइं अ [**तत्प्रभृति**] तबसे, तबसे लेकर ; (कप्प ; गाया १, १) ।

तप्पमाण देखो **तप्प**=तर्पय् ।

तप्पर वि [**तत्पर**] आसक्त ; (दे ५, २०) ।

तप्पुरिस पुं [**तत्पुरुष**] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष; (अणु) ।

तप्पेयव्व देखो **तप्प**=तर्पय् ।

तब्भत्तिय वि [**तद्भक्तिक**] उस का सेवक ; (भग ५,७)।

तब्भव पुं [**तद्भव**] वही जन्म, इस जन्म के समान पर-जन्म । °**मरण** न [°**मरण**] वह मरण जिससे इस जन्म के समान हो परलोक में भी जन्म हो, यहां मनुष्य होनेसे आगामी जन्म में भी जिससे मनुष्य हो ऐसा मरण; (भग २१, १) ।

तब्भारिय पुं [**तद्भार्य**] दास, नौकर, कर्मचारी, कर्मकर ; (भग ३, ७) ।

तब्भारिय पुं [**तद्भारिक**] ऊपर देखो ; (भग ३,७) ।

तब्भूम वि [**तद्भौम**] उसी भूमि में उत्पन्न ; (बृह १) ।

तम पुं [**दे**] शोक, अफसोस ; (दे ५, १) ।

तम पुंन [**तमस्**] १ अन्धकार ; २ अज्ञान ; (हे १,३२ ; पि ४०९ ; औप ; धर्म २) । °**तम** पुं [°**तम**] सातवीं नरक-पृथिवी का जीव ; (कम्म ५; पंच ५) । °**तमप्पभा** स्त्री [°**तमप्रभा**] सातवीं नरक-पृथिवी ; (अणु) । °**तमा** स्त्री [°**तमा**] सातवीं नरक-पृथिवी ; (सम ६६ ; ठा ७)। °**तिमिर** न [°**तिमिर**] १ अन्धकार ; (बृह ४) । २ अज्ञान ; (पडि) । ३ अन्धकार-समूह ; (बृह ४) । °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] छठवीं नरक-पृथिवी ; (पराण १) ।

तमंग पुं [**तमङ्ग**] मत्तवारण, घर का वरण्डा ; (सुर १३, १५९) ।

तमंधयार पुं [**तमोन्धकार**] प्रबल अन्धकार; (पउम १७, १०) ।

तमण न [**दे**] चुल्हा, जिसमें आग रख कर रसोई की जाती है वह ; (दे ५, २) ।

तमणि पुंस्त्री [**दे**] १ भुज, हाथ ; २ भूर्ज, वृक्ष-विशेष की छाल ; (दे २, २०) ।

तमस न [**तमस्**] अन्धकार ; "तमसाउ मे दिसाय" (पउम ३६, ८) ।

तमस्सई स्त्री [**तमस्वती**] घोर अन्धकार वाली रात; (बृह १) ।

तमा स्त्री [**तमा**] १ छठवीं नरक-पृथिवी; (सम ६६ ; ठा ७) । २ अधोदिशा ; (ठा १०) ।

तमाड सक [**भ्रमय्**] घुमाना, फिराना । तमाडइ ; (हे ४, ३०) । वकृ—**तमाडंत**; (कुमा) ।

तमाल पुं [**तमाल**] १ वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी ; भत्त४२) । २ न. तमाल वृक्ष का फूल ; (से १,६३) ।

तमिस न [**तमिस्र**] १ अन्धकार ; (सूअ १, ५, १)। °**गुहा** स्त्री [°**गुहा**] गुफा-विशेष; (इक) ।

तमिसंधयार पुं [**तमिस्रान्धकार**] प्रबल अन्धकार ; (सूअ १, ५, १) ।

तमिस्स देखो **तमिस** ; (दे २, २६) ।

तमी स्त्री [**तमी**] रात्रि, रात ; (गउड) ।

तमुक्काय पुं [**तमस्काय**] अंधकार-प्रचय ; (ठा ४,२)।

तमुय वि [**तमस्**] १ जन्मान्ध, जात्यन्ध ; २ अत्यन्त अज्ञानी ; (सूअ २, २) ।

तमोकसिय त्रि [**तमःकाषिक**] प्रच्छन्न क्रिया करने वाला; (सूअ २, २) ।

तम्म अक [**तम्**] खेद करना । तम्मइ ; (गा ४८३) ।

तम्मण वि [**तन्मनस्**] तल्लीन, तच्चित्त ; (विपा १, २) ।

तम्मय वि [**तन्मय**] १ तल्लीन, तत्पर । २ उसका विकार; (पराह १, १) ।

तम्मि न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (गउड) ।

तम्मिर वि [**तमितृ**] खेद करने वाला ; (गा ५८९) ।

तय वि [**तत**] विस्तार-युक्त ; (दे १, ४९ ; से २, ३१ ; महा) । २ न. वाद्य-विशेष ; (ठा २, २) ।

तय न [**त्रय**] तीन का समूह, त्रिक ; "कालत्तए वि न मयं" (चउ ४५ ; श्रा २८) ।

तय° देखो **तया**=तदा । °**प्पभिइ** अ [°**प्रभृति**] तब से ; (स ३१६) ।

तय° देखो **तया**=त्वच् । °**क्खाय** वि [°**खाद**] त्वचा को खाने वाला; (ठा ४, १) ।

तया अ [**तदा**] उस समय ; (कुमा) ।

तया स्त्री [**त्वच्**] १ त्वचा, छाल, चमड़ी ; (सम ३९) । २ दालचीनी ; (भत्त ४१) । °**मंत** वि [°**मत्**] त्वचा

वाला; (णाया १, १)। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति; (जीव १)।
तयाणंतर न [तदनन्तर] उसके बाद; (औप)।
तयाणि } अ [तदानीम्] उस समय; (पि ३५८; हे १,
तयाणिं } १०१)।
तयाणुग वि [तदनुग] उसका अनुसरण करने वाला; (सूअ १, १, ४)।
तर अक [त्वर्] त्वरा करना। तर; (विसे २६०१)।
तर अक [शक्] समर्थ होना, सकना। तरइ; (हे ४, ८६)। वकृ—**तरंत**; (ओघ ३२४)।
तर सक [तॄ] तैरना। तरइ; (हे ४,८६)। कर्म—तरिज्जइ, तीरइ; (हे ४, २५०; गा ७१)। वकृ—**तरंत, तरमाण**; (पाअ; सुपा १८२)। हेकृ—**तरिउं, तरीउं**; (णाया १,१४; हे २,१६८)। कृ—**तरिअव्व**; (श्रा १२; सुपा २७६)।
तर न [तरस्] १ वेग; २ बल, पराक्रम। °मल्लि वि [°मल्लि] १ वेग वाला। २ बल वाला। °मल्लिहायण वि [°मल्लिहायन] तरुण, युवा; (औप)।
तरंग पुं [तरङ्ग] १ कल्लोल, वीचि; (पण्ह १, ३; औप)। °णंदण न [°नन्दन] नृप-विशेष; (दंस ३)। °मालि पुं [°मालिन्] समुद्र, सागर; (पाअ)। °वई स्त्री [°वती] १ एक नायिका; २ कथा-ग्रन्थ विशेष; (दंस ३)।
तरंगि वि [तरङ्गिन्] तरंग-युक्त; (गउड; कप्पू)।
तरंगिअ वि [तरङ्गित] तरंग-युक्त; (गउड; से ८,११; सुपा १५७)। °नाह पुं [°नाथ] समुद्र, सागर; (वज्जा १५६)।
तरंगिणी स्त्री [तरङ्गिणी] नदी, सरिता; (प्रासू ६६; गउड; सुपा ५३८)।
तरंड } पुंन [तरण्ड, °क] डोंगी, नौका; (सुपा २७२;
तरंडय } ५००; सुर ८, १०६; पुप्फ १०५)।
तरग वि [तर, °क] तैरने वाला; (ठा ४, ४)।
तरच्छ पुंस्त्री [तरक्ष] श्वापद जन्तु-विशेष, व्याघ्र की एक जाति; (पण्ह १, १; णाया १,१; स २५७)। स्त्री—°च्छी; (पि १२३)। °भल्ल पुंस्त्री [°भल्ल] श्वापद जन्तु-विशेष; (पउम ४२, १२)।
तरट्टा } स्त्री [दे] प्रगल्भ स्त्री; "झाएेग्ग टुट्ठदि चिरं तरुणी
तरट्टी } तरट्टी" (कप्पू; काप्र ५६६)। "अट्ठेव आगयाओ तरुणतरट्टाओ एयाओ" (सुपा ४२)।
तरण न [तरण] १ तैरना; (श्रा १४; स ३५६; सुपा २६२)। २ जहाज, नौका; (विसे १०२७)।
तरणि पुं [तरणि] १ सूर्य, रवि; (कुमा)। २ जहाज, नौका; ३ घृतकुमारी का पेड़; ४ अर्क वृक्ष, अकवन वृक्ष; (हे १, ३१)।
तरतम वि [तरतम] न्यूनाधिक, "तरतमजोगजुत्तेहिं" (कप्प)।
तरमाण देखो **तर=तॄ**।
तरल वि [तरल] चंचल, चपल; (गउड; पाअ; कप्पू; प्रासू ६६; सुपा २०४; सुर २, ८६)।
तरल सक [तरलय्] चंचल करना, चलित करना। तरलेइ; (गउड)। वकृ—**तरलंत**; (सुपा ४७०)।
तरलण न [तरलन] तरल करना, हिलाना; "कणयाडीणं कुणंता कुरलतरलणं" (कप्पू)।
तरलाविअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ, चलायमान किया हुआ; (गउड; भवि)।
तरलि वि [तरलिन्] हिलाने वाला; (कप्पू)।
तरलिअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ; (गा ७८; उप पृ ३३; सार्ध ११५)।
तरवट्ट पुं [दे] वृक्ष-विशेष, चकवड, पमाड, पवार; (दे ५, ५; पाअ)।
तरस न [दे] मांस; (दे ५, ४)।
तरसा अ [तरसा] शीघ्र, जल्दी; (सुपा ५८२)।
तरा स्त्री [त्वरा] जल्दी, शीघ्रता; (पाअ)।
तरिअव्व देखो **तर=तॄ**।
तरिअव्व न [दे] उडुप, एक तरह की छोटी नौका; (दे ५,७)।
तरिउ वि [तरीतृ] तैरने वाला; (विसे १०२७)।
तरिउं देखो **तर=तॄ**।
तरिया स्त्री [दे] दूध आदि का सार, मलाई; (प्रभा ३३)।
तरिहि अ [तर्हि] तो, तब; (सुर १,१३२; ११,७१)।
तरी स्त्री [तरी] नौका, डोंगी; (सुपा १११; दे ६, ११०; प्रासू १४६)।
तरु पुं [तरु] वृक्ष, पेड़, गाछ; (जी १४; प्रासू २६)।
तरुण वि [तरुण] जवान, मध्य वय वाला; (पउम ५,१६८)।
तरुणग } वि [तरुणक] बालक, किशोर; (सूअ १, ३,
तरुणय } ४)। २ नवीन, नया; (भग १५)। स्त्री—°णिगा, °णिया; (आचा २, १)।
तरुणरहस पुंन [दे] रोग, बिमारी; (ओघ १३६)।
तरुणिम पुंस्त्री [तरुणिमन्] यौवन, जवानी; (कप्पू)

तरुणी स्त्री [**तरुणी**] युवति स्त्री; (गउड; स्वप्न ८२; महा)।

तल सक [**तल्**] तलना, भूनना, तेल आदि में भूनना। तलेज्जा; (पि ४६०)। वकृ—**तलेंत**; (विपा १, ३)। हेकृ—**तलिज्जिउं**; (स २५८)।

तल न [**दे**] १ शय्या, बिछौना; (दे ५, १६; षड्)। २ पुं. ग्रामेश, गाँव का मुखिया; (दे ५, १६)।

तल पुं [**तल**] १ वृक्ष-विशेष, ताड़ का पेड़; (णाया १, १ टी—पत्र ४३; पउम ५३, ७६)। २ न. स्वरूप; "धरणितलंसि" (कप्प), "कासवितलम्मि" (कुमा)। ३ हथेली; (जं १)। ४ तला, भूमिका; "सत्ततले पासाए" (सुर २, ८१)। ५ अधोभाग, नीचे; (णाया १, १)। ६ हाथ, हस्त; (कप्प; पराह २,५)। ७ मध्य खण्ड; (ठा ८)। ८ तलवा, पानी के नीचे का भाग; (पराह १, ३)। °**ताल** पुंन [°**ताल**] १ हस्त-ताल, ताली; २ वाद्य-विशेष; (कप्प)। °**प्पहार** पुं [°**प्रहार**] तमाचा, चपेटा; (दे)। °**भंगय** न [°**भङ्गक**] हाथ का आभूषण-विशेष; (औप)। °**वट्ट** न [°**पट्ट**] बिछौने की चद्दर; (वज्जा १०४)। °**वट्ट** न [°**पत्र**] ताड़ वृक्ष की पत्ती; (वज्जा १०४)।

तलअंट सक [**भ्रम्**] भ्रमण करना, फिरना। तलअंटइ; (हे ४, १६१)।

तलआगत्ति पुं [**दे**] कूप, इनारा; (दे ५, ८)।

तलओडा स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष; (पराण १)।

तलण न [**तलन**] तलना, भर्जन; (पराह १, १)।

तलप्प अक [**तप्**] तपना, गरम होना। तलप्पइ; (पिंग)।

तलप्फल पुं [**दे**] शालि, व्रीहि; (दे ५, ७)।

तलवत्त पुं [**दे**] १ कान का आभूषण-विशेष; (दे ५, २१; पाअ)। २ वरांग, उत्तमांग; (दे ५, २१)।

तलवर पुं [**दे.तलवर**] नगर-रक्षक, कोटवाल; (णाया १, १; सुपा ३; ७३; औप; महा; ठा ६; कप्प; राय; अणु; उवा)।

तलविंट, **तलवेंट**, **तलवोंट** न [**तालवृन्त**] व्यजन, पंखा; (हे १, ६७; प्राप्र)।

तलसारिअ वि [**दे**] १ गालित; २ मुग्ध, मूर्ख; (दे ५, ६)।

तलहट्ट सक [**सिच्**] सींचना। तलहट्टइ, तलहट्टए; (सुपा ३६३)। वकृ—**तलहट्टंत**; (सुपा ३६३)।

तलाई स्त्री [**तड़ागिका**] छोटा तालाव; (कुमा)।

तलाग, **तलाय** न [**तड़ाग**] तालाव, सरोवर; (औप; हे १, २०३; प्राप्र; णाया १, ८; उव)।

तलार पुं [**दे**] नगर-रक्षक, कोटवाल; (दे ५, ३; सुपा २३३; ३६१; षड्; कुप्र १५५)।

तलारक्ख पुं [**दे.तलारक्ष**] ऊपर देखो; (श्रा १२)।

तलाव देखो **तलाग**; (उवा; पि २३१)।

तलिअ वि [**तलित**] भूना हुआ, तला हुआ; (विपा १,२)।

तलिआ, **तलिगा** न [**दे**] उपानह, जूता; (ओघ ३६; ६८; बृह १)।

तलिण वि [**तलिन**] १ प्रतल, सूक्ष्म, बारीक; (पराह १, ४; औप; दे ५, ६)। २ तुच्छ, क्षुद्र; (से १०,७)। ३ दुर्बल; (पाअ)।

तलिम पुंन [**दे**] १ शय्या, बिछौना; (दे ५, २०; पाअ; णाया १,१६—पत्र २०१; २०२; गउड)। २ कुट्टिम, फरस-बन्द जमीन; (दे ५, २०; पाअ)। ३ घर के ऊपर की भूमि; ४ वास-भवन, शय्या-गृह; ५ भ्राष्ट्र, भूनने का भाजन; (दे ५, २०)।

तलिमा स्त्री [**तलिमा**] वाद्य-विशेष; (विसे ७८ टी; गांदि)।

तलुण देखो **तरुण**; (णाया १, १६; राय; ना १५)।

तलेर [**दे**] देखो **तलार**; (भवि)।

तल्ल न [**दे**] १ पल्वल, छोटा तालाव; (दे ५, १६)। २ तृण-विशेष, बरू; (दे ५, १६; पराह २, ३)। ३ शय्या, बिछौना; (दे ५, १६; षड्)।

तल्लक पुं [**तल्लक**] सुरा-विशेष; (राज)।

तल्लड न [**दे**] शय्या, बिछौना; (दे ५, २)।

तल्लिच्छ वि [**दे**] तत्पर, तल्लीन; (दे ५, ३; सुर १, १३; पाअ)।

तल्लेस, **तल्लेस्स** वि [**तल्लेश्य**] उसी में जिसका अध्यवसाय हो, तल्लीन, तदासक्त; (विपा १, २; राज)।

तल्लोविल्लि स्त्री [**दे**] तडफडना, तडफना, व्याकुल होना; "थोडइ जलि जिम मच्छलिया तल्लोविल्लि करंत" (कुप्र ८६)।

तव अक [**तप्**] १ तपना, गरम होना। २ सक. तपश्चर्या करना। तवइ; (हे १, १३१; गा २२४)। भूका—तविंसु; (भग)। वकृ—**तवमाण**; (श्रा २७)।

तव सक [**तपय्**] गरम करना। तवेइ; (भग)।

तव पुंन [**तपस्**] तपस्या, तपश्चर्या ; (सम ११ ; नव २६ ; प्रासु २८)। °**गच्छ** पुं [°**गच्छ**] जैन मुनिओं की एक शाखा, गण-विशेष ; (संति १४)। °**गण** पुं [°**गण**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (द्र ७०)। °**चरण**, °**च्चरण** न [°**चरण**] १ तपश्चर्या, तपः-करण ; (सुअ १, ५, १ ; उप पृ ३६० ; अभि १४७)। २ तप का फल, स्वर्ग का भोग ; (गाया १, ६)। °**चरणि** वि [°**चरणिन्**] तपस्या करने वाला ; (ठा ५, ३)। देखो **तवो**°।

तव देखो **थव** ; (हे २, ४६ ; षड्)।

तवग्ग पुं [**तवर्ग**] 'त' से लेकर 'न' तक के पाँच अक्षर। °**पविभत्ति** न [°**प्रविभक्ति**] नाट्य-विशेष; (राय)।

तवण पुं [**तपन**] १ सूर्य, सूरज ; (उप १०३१ टी; कुप्र २१५)। २ रावण का एक प्रधान सुभट ; (से १३, ८५)। ३ न. शिखर-विशेष ; (दीव)।

तवणा स्त्री [**तपना**] आतापना ; (सुपा ४१३)।

तवणिज्ज न [**तपनीय**] सुवर्ण, सोना ; (पराह १, ४ ; सुपा ३६)।

तवणी स्त्री [**दे**] १ भक्ष्य, भक्षण-योग्य कण आदि ; (दे ५, १ ; सुपा ५४८ ; वज्जा ६२)। २ धान्य को क्षेत्र से काट कर भक्षण योग्य बनाने की किया ; (सुपा ५४६)। ३ तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र ; (दे २, ५६)।

तवणीय देखो **तवणिज्ज** ; (सुपा ४८)।

तवमाण देखो **तव**=तप्।

तवय वि [**दे**] व्यापृत, किसी कार्य में लगा हुआ ; (दे ५, २)।

तवय पुं [**तपक**] तवा, भूनने का भाजन ; (विपा १, ३ ; सुपा ११८ ; पाअ)।

तवस्सि वि [**तपस्विन्**] १ तपस्या करने वाला ; (सम ५१; उप ८३३ टी)। २ पुं. साधु, मुनि, ऋषि ; (स्वप्न१८)।

तविअ वि [**तप्त**] तपा हुआ, गरम ; (हे २, १०५; पाअ)।

तविअ वि [**तापित**] १ गरम किया हुआ ; २ संतापित ; "एयाए को न तविओ, जयम्मि लच्छीए सच्छंदं" (सुपा २०४ ; महा ; पिंग)।

तविआ स्त्री [**तापिका**] तवा का हाथा; (दे १, १६३)।

तवु देखो **तउ** ; (पउम ११८, ८)।

तवो देखो **तओ** ; (रंभा)।

तवो° देखो **तव**=तपस्। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] तपः-करण; (सम ११)। °**धण** पुं [°**धन**] ऋषि, मुनि; (प्राकृ)। °**धर** पुं [°**धर**] तपस्वी, मुनि ; (पउम२०, १६५ ; १०३, १०८)। °**वण** न [°**वन**] ऋषि का आश्रम ; (उप ७४५ ; स्वप्न १६)।

तव्वणिय वि [**दे**] सौगत, बौद्ध, बुद्ध-दर्शन का अनुयायी ; "तव्वणियाण वियं विसयसुहकुसत्थभावणाधणियं" (विसे १०४१)।

तव्वन्निग वि [**दे. तृतीयवर्णिक**] तृतीय आश्रम में स्थित; (उप पृ २६८)।

तव्विह वि [**तद्विध**] उसी प्रकार का ; (भग)।

तस अक [**त्रस्**] डरना, त्रास पाना। तसइ ; (हे४, १६८)। कृ—**तसियव्व** ; (उप ३३६ टी)।

तस पुं [**त्रस**] १ स्पर्श-इन्द्रिय से अधिक इन्द्रिय वाला जीव, द्वीन्द्रिय आदि प्राणी ; (जीव १ ; जी २)। २ एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने आने की शक्ति वाला प्राणी ; (निचू १२)। °**काइय** पुं [°**कायिक**] जंगम प्राणी, द्वीन्द्रियादि जीव ; (पराह१, १)। °**काय** पुं [°**काय**] १ त्रस-समूह ; (ठा२, १)। २ जंगम प्राणी ; (आचा)। °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव त्रस-काय में उत्पन्न होता है ; (कम्म १ ; सम ६७)। °**रेणु** पुं [°**रेणु**] परिमाण-विशेष, बत्तीस हजार सात सौ अठसठ परमाणुओं का एक परिमाण ; (अणु ; पव२५४)। °**वाइया** स्त्री [°**पादिका**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जीव १)।

तसण न [**त्रसन**] १ स्पन्दन, चलन, हिलन ; (राज)। २ पलायन ; (सूअ १, ७)।

तसर देखो **टसर** ; (कप्पू)।

तसिअ वि [**दे**] शुष्क, सूखा ; (दे ५, २)।

तसिअ वि [**तृषित**] तृषातुर, पिपासित ; (रयण ८४)।

तसिअ वि [**त्रस्त**] भीत, डरा हुआ ; (जीव ३ ; महा)।

तसियव्व देखो **तस**=त्रस्।

तसेयर वि [**त्रसेतर**] एकेन्द्रिय जीव, स्थावर प्राणी; (सुपा १६८)।

तह अ [**तथा**] १ उसी तरह ; (कुमा ; प्रासू१६ ; स्वप्न१०)। २ और, तथा ; (हे १, ६७)। ३ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (निचू १)। °**क्कार** पुं [°**कार**] 'तथा' शब्द का उच्चारण ; (उत्त २६)। °**णाण** वि

[°ज्ञान] प्रश्न के उत्तर को जानने वाला ; (ठा ६) । २ न. सत्य ज्ञान ; (ठा १०) । °त्ति अ [इति] स्वीकार-द्योतक अव्यय, वैसा ही (जैसा आप फरमाते हैं) ; (णाया १, १) । °य अ [°च] १ उक्त अर्थ की दृढ़ता-सूचक अव्यय ; २ समुच्चय-सूचक अव्यय ; (पंचा २) । °वि अ [°पि] तो भी ; (गउड) । °विह त्रि [°विध] उस प्रकार का ; (सुपा ४५६) । देखो **तहा** ।

तह वि [**तथ्य**] तथ्य, सत्य, सच्चा; (सूअ १, १३) ।

तह पुं [**तथ**] आज्ञा-कारक, दास, नौकर ; (ठा४, २—पत्र २१३) ।

तहं देखो **तह**=तथा ; (औप) ।

तहरी स्त्री [**दे**] पङ्क वाली सुरा ; (दे ५, २) ।

तहल्लिआ स्त्री [**दे**] गो-वाट, गौओं का बाडा ; (दे५, ८)।

तहा देखो **तह**=तथा ; (कुमा ; गउड ; आचा ; सुर ३, २७)।

°**गय** पुं [°**गत**] १ मुक्त आत्मा ; २ सर्वज्ञ ; (आचा) । °**भूय** वि [°**भूत**] उस प्रकार का ; (पउम २२, ६५) । °**रूव** वि [°**रूप**] उस प्रकार का; (भग १५) । °**वि** वि [°**वित्**] १ निपुण, चतुर; २ पुं. सर्वज्ञ ; (सूअ१, ४,१)। °**हि** अ [°**हि**] वह इस प्रकार ; (उप ६८६ टी) ।

तहि देखो **तह**=तथा ;(गा ८७८ ; उत्त ६) ।

तहि, **तहिं** अ [**तत्र**] वहां, उसमें , (गा २०६ ; प्राप्र ; गा २३४ , ऊरु १०५) ।

तहिय वि [**तथ्य**] सत्य, सच्चा, वास्तविक ; (णाया१, १२)।

तहियं अ [**तत्र**] वहां, उसमें ; (विसे २७८) ।

तहेय, **तहेव** अ [**तथैव**] उसी तरह, उसी प्रकार ; (कुमा ; षड्) ।

ता अ [**तद्**] उससे, उस कारण से ; (हे ४, २७८ ; गा ४६ ; ६७ ; उव) ।

ता देखो **ताव**=तावत् ; (हे १, २७१ ; गा१४१ ; २०१)।

ता अ [**तदा**] तब, उस समय ; (रंभा ; कुमा ; सण) ।

ता अ [**तर्हि**] तो, तब; (रंभा; कुमा) ।

ता स्त्री [**ता**] लक्ष्मी ; (सुर १६, ४८) ।

ता° स [**तद्**] वह । °**गंध** पुं [°**गन्ध**] १ उसका गन्ध ; २ उसके गन्ध के समान गन्ध; (पराण१७) । °**फास** पुं [°**स्पर्श**] १ उसका स्पर्श ; २ वैसा स्पर्श ; (पराण १७) । °**रस** पुं [°**रस**] १ वह स्पर्श; २ वैसा स्पर्श; (पराण१७)। °**रूव** न [°**रूप**] १ वह रूप; २ वैसा रूप ; (पराण १७— पत्र ५२२) ।

ताअ देखो **ताव**=ताप ; (गा ७६७ ; ८१४ ; हेका५०) ।

ताअ पुं [**तात**] १ तात, पिता, बाप ; (सुर १, १२३ ; उत्त १४) । २ पुत्र, वत्स ; (सूअ १, ३, २) ।

ताअ सक [**त्रै**] रक्षण करना । कृ—**तायव्व** ; (श्रा१२) ।

ताइ वि [**त्यागिन्**] त्याग करने वाला ; (गा २३०) ।

ताइ वि [**तायिन्**] रक्षक, परिपालक ; (उत्त ८) ।

ताइ वि [**तापिन्**] ताप-युक्त ; (सूअ १, १५) ।

ताइ वि [**त्रायिन्**] रक्षक, रक्षण करने वाला ; (उत्त २१, २२) ।

ताइअ वि [**त्रात**] रक्षित ; (उव) ।

ताउं (अप) देखो **ताव**=तावत् ; (कुमा) ।

ताठा (चूपै) देखो **दाढा** ; (हे ४, ३२५) ।

ताड सक [**ताडय्**] १ ताड़न करना, पीटना । २ प्रेरणा करना, आघात करना । ३ गुणाकर करना । ताडइ ; (हे ४, २७) । भवि—ताडइस्सं; (पि २४०) । वकृ—**ताडिंत**; (काल) । कवकृ—**ताडिज्जमाण**, **ताडीअंत**, **ताडोअमाण** ; (सुपा २६ ; पि २४० ; अभि १५१) । हेकृ—**ताडिउं** ; (कप्पू) । संकृ—**ताडिअ** ; (उत्त१६) ।

ताड पुं [**ताल**] ताड़ का पेड़ ; (स २५६) ।

ताडंक पुं [**ताडङ्क**] कान का आभूषण-विशेष, कुण्डल ; (दे ६, ६३ ; कप्पू ; कुमा) ।

ताडण न [**ताडन**] १ ताड़न, पीटना ; (उप ६८६ टी ; गा ५४६) । २ प्रेरणा, आघात ; (से १२, ८३) ।

ताडाविय वि [**ताडित**] पीटवाया गया ; (सुपा २८८)।

ताडिअ देखो **ताड**=ताडय् ।

ताडिअ त्रि [**ताडित**] १ जिसका ताडन किया गया हो वह, पीटा हुआ ; (पाअ) । २ जिसका गुणाकार किया गया हो वह; "इक्कासीई सा करणकारणाणुमइताडिआ होइ" (श्रा६) ।

ताडिअय न [**दे**] रोदन, रोना ; (दे ५,१०) ।

ताडिज्जमाण देखो **ताड** = ताडय् ।

ताडी स्त्री [**ताडी**] वृक्ष-विशेष ; (गउड) ।

ताडीअंत, **ताडीअमाण** देखो **ताड**=ताडय् ।

ताण न [**त्राण**] १ शरण, रक्षण कर्ता ; (सुपा ५७४) । २ रक्षण ; (सम ५१) ।

ताण पुं [**तान**] संगीत-प्रसिद्ध स्वर-विशेष; "ताणा एगूणपराणासं" (अणु) ।

ताणिअ वि [**तानित**] ताना हुआ ; (ती १५)।
तादिस देखो **तारिस** ; (गा ७३८ ; प्रासू ३४)।
ताम देखो **तम्म**=तम्। तामइ ; (गा ८६३)।
ताम (अप) देखो **ताव**=तावत् ; (हे४, ४०६ ; भवि)।
तामइ वि [**दे**] रम्य, सुन्दर ; (दे ५, १० ; पाअ)।
तामरस न [**तामरस**] कमल, पद्म; (दे ५, १०; पाअ)।
तामरस न [**दे**] पानी में उत्पन्न होने वाला पुष्प; (दे५,१०)।
तामलि पुं [**तामलि**] स्वनाम-ख्यात एक तापस ; (भग ३, १ ; आ ६)।
तामलित्ति स्त्री [**ताम्रलिप्ति**] एक प्राचीन नगरी, वंग देश की प्राचीन राजधानी ; (उप ६८८ ; भग ३, १ ; पराण१)।
तामलित्तिया स्त्री [**ताम्रलिप्तिका**] जैन मुनि-वंश की एक शाखा ; (कप्प)।
तामस वि [**तामस**] तमोगुण वाला ; (पउम ८, ५० ; कुप्र ४२८)। °**त्थ** न [°**ास्त्र**] कृष्ण वर्ण का अस्त्र-विशेष; (पउम ८,५०)।
तामहि } (अप) देखो **ताव**=तावत् ; (षड् ; भवि ; पि
तामहिं } २६१ ; हे ४, ४०६)।
तायत्तीसग पुं [**त्रायस्त्रिंशक**] गुरु-स्थानीय देव-जाति ; (ठा ३, १ ; कप्प)।
तायत्तीसा स्त्री [**त्रयस्त्रिंशत्**] १ संख्या-विशेष, तेत्तीस ; २ तेत्तीस संख्या वाला, तेत्तीस; "तायत्तीसा लोगपाला" (ठा; पि ४४७ ; कप्प)।
तायव्व देखो **ताअ**=त्रै।
तार वि [**तार**] १ निर्मल, स्वच्छ ; (से ६, ४२) । २ चमकता, देदीप्यमान ; (पाअ)। ३ अति ऊँचा ; (से ६, ४)। ४ अति ऊँचा स्वर ; (राय ; गा ४६४)। ५ न. चाँदी ; (ती २)। ६ पुं. वानर-विशेष ; (से १, ३४)। °**वई** स्त्री [°**वती**] राज-कन्या ; (आचू ४)।
तारंग न [**तारङ्ग**] तरंग-समूह ; (से ६, ४२)।
तारग वि [**तारक**] तारने वाला, पार उतारने वाला ; (उप पृ ३२)। २ पुं. नृप-विशेष, द्वितीय प्रतिवासुदेव ; (पउम ५, १५६)।३ सूर्य आदि नव ग्रह ; (ठा६)। देखो **तारय**।
तारगा स्त्री [**तारका**] १ नक्षत्र ; (सूअ २, ६)। २ एक इन्द्राणी, पूर्णभद्र-नामक इन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ४, १)। देखो **तारया**।
तारण न [**तारण**] १ पार उतारना ; (सुपा २५७)। २ वि. तारने वाला ; (सुपा ४१७)।

तारत्तर पुं [**दे**] मुहूर्त ; (दे ५, १०)।
तारय देखो **तारग** ; (सम १; प्रासू १०१)। ४ न. छन्द-विशेष ; (पिंग)।
तारया देखो **तारगा**। ३ आँख की तारा ; (गउड ; गा १४८ ; २५४)।
तारा स्त्री [**तारा**] १ आँख की पुतली ; (गा ४११ ; ४३५)। २ नक्षत्र ; (ठा ५, १ ; से १,३४)। ३ सुग्रीव की स्त्री ; (से१, ३४)। ४ सुभूम चक्रवर्ती की माता ; (सम १५२)। ५ नदी-विशेष ; (ठा १०)। ६ बौद्धों की शासन-देवी ; (कुप्र ४४२)। °**उर** न [°**पुर**] तारंगा-स्थान; (कुप्र ४४२)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक राज-कुमार ; (धम्म ७२ टी)। °**तणय** पुं [°**तनय**] वानर-विशेष, अङ्गद ; (से१३, ६७)। °**पह** पुं [°**पथ**] आकाश, गगन ; (अणु)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] चन्द्रमा ; (उप ३२० टी)। °**मेत्ती** स्त्री [°**मैत्री**] निःस्वार्थ मित्रता ; (कप्पू)। °**यण** न [°**यन**] कनीनिका का चलना, आँख की पुतली का हिलन, "भग्गं तारायणं नियइ" (सुपा १८७)। °**वइ** पुं [°**पति**] चन्द्रमा; (गउड)।
तारिम वि [**तारिम**] तरणीय, तैरने योग्य ; (भास ६३)।
तारिय वि [**तारित**] पार उतारा हुआ ; (भवि)।
तारिया स्त्री [**तारिका**] तारा के आकार की एक प्रकार की विभूषा, टिकली, टिकिया ; "विचित्तलंबंततारियाइन्नं" (सुर ३, ७१)।
तारिस वि [**तादृश**] वैसा, उस तरह का ; (कप्प ; प्राप्र ; कुमा)। स्त्री—°**सी** ; (प्रासू १२५)।
तारुण्ण } न [**तारुण्य**] तरुणता, यौवन ; (गउड ; कप्पू;
तारुन्न } कुमा ; सुपा ३१६)।
ताल देखो **ताड**=ताडय्। तालेइ ; (पि २४०)। वकृ—**तालेमाण** ; (विपा १, १)। कवकृ—**तालिज्जंत, तालिज्जमाण** ; (पउम ११८, १० ; पि २४०)।
ताल सक [**तालय्**] ताला लगाना, बन्द करना। संकृ—**तालेवि** ; (सुपा ४२८)।
ताल पुं [**ताल**] १ वृक्ष-विशेष ; (पण्ह १, ४)। २ वाद्य-विशेष, कंसिका ; (पण्ह २, ५)। ३ ताली ; (दस २)। ४ चपेटा, तमाचा ; (से ६, ५६)। ५ वाद्य-समूह ; (राज)। ६ आजीवक मत का एक उपासक ; (भग ८, ५)। ७ न. ताला, द्वार बन्द करने की कल ; (उप ३३३)। ८ ताल वृक्ष का फल ; (दे ६, १०२)।

°उड न [°पुट] तत्काल प्राण-नाशक विष-विशेष ; (णाया १, १४ ; सुपा १३७ ; ३१६)। °जंघ पुं [°जङ्घ] १ नृप-विशेष ; (धर्म १)। २ वि. ताल की तरह लम्बी जाँघ वाला ; (णाया १, ८)। °ज्झय पुं [°ध्वज] १ बलदेव ; (आवम)। २ नृप-विशेष ; (दंस १)। ३ शत्रुञ्जय पहाड़ ; (ती १)। °पलंब पुं [°प्रलम्ब] गोशालक का एक उपासक ; (भग ८, ५)। °पिसाय पुं [°पिशाच] दीर्घ-काय राक्षस ; (पगण १)। °पुड देखो °उड ; (श्रा १२)। °यर पुं [°चर] एक मनुष्य-जाति, चारण ; (ओघ ७६६)। °विंट, °विंत, °वेंट, °वोंट न [°वृन्त] व्यजन, पंखा; (पि ५३; नाट—वेणी १०४; हे १, ६७ ; प्राप्र)। °संवुड पुं [°संपुट] ताल के पत्रों का संपुट, ताल-पत्र-संचय ; (सूअ १, ५, १)। °सम वि [°सम] ताल के अनुसार स्वर, स्वर-विशेष ; (ठा ७)।

तालंक पुं [**ताडङ्क**] १ कुण्डल, कान का आभूषण-विशेष। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

तालंकि पुंस्त्री [**तालङ्किन्**] छन्द-विशेष । स्त्री—°णी ; (पिंग)।

तालग न [**तालक**] ताला, द्वार बन्द करने का यन्त्र ; (उप ३३६ टी)।

तालण देखो **ताडण** ; (औप)।

तालणा स्त्री [**ताडना**] चपेटा आदि का प्रहार; (पण्ह २, १ ; औप)।

तालप्फली स्त्री [**दे**] दासी, नौकरानी ; (दे ५, ११)।

तालय देखो **तालग** ; (सुपा ४१४ ; कुप्र २५२)।

तालहल पुं [**दे**] शालि, व्रीहि ; (दे ५, ७)।

ताला अ [**तदा**] उस समय, "ताला जाअंति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घिप्पंति" (हे ३, ६५ ; काप्र ५२१)।

ताला स्त्री [**दे**] लाजा, खोई, धान का लावा ; (दे ५,१०)।

तालाचर पुं [**तालचर**] ताल (वाद्य) बजाने वाला ; (निचू १५)।

तालाचर } पुं [**तालाचर**] १ प्रेक्षक-विशेष, ताल देने **तालायर** } वाला प्रेक्षक ; (णाया १, १)। २ नट, नर्तक आदि मनुष्य-जाति ; (बृह ३)।

तालिअ वि [**ताडित**] आहत, पीटा हुआ ; (णाया १,५)।

तालिअंट सक [**भ्रमय्**] घुमाना, फिराना। तालिअंटइ ; (हे ४, ३०)।

तालिअंट न [**तालवृन्त**] व्यजन, पंखा ; (सं ३०८)।

तालिअंटिर वि [**भ्रमयितृ**] घुमाने वाला ; (कुमा)।

तालिज्जंत देखो **ताल**=ताडय्।

ताली स्त्री [**ताली**] १ वृक्ष-विशेष ; (चारु ६३)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। °पत्त न [°पत्र] ताल-वृक्ष की पत्ती का बना हुआ पंखा ; (चारु ६३)।

तालु } न [**तालु,°क**] तालू, मुँह के ऊपर का भाग, **तालुअ** } तलुआ ; (सत्त ४६ ; णाया १, १६)।

तालुग्घाडणी स्त्री [**तालोद्घाटनी**] विद्या-विशेष, ताला खोलने की विद्या ; (वसु)।

तालुर पुं [**दे**] १ फेन, फीण ; २ कपित्थ वृक्ष ; (दे ५, २१)। ३ पानी का आवर्त ; (दे ५, २१ ; गा ३७ ; पाअ)। ४ पुं. पुष्प का सत्व ; (विक्र ३२)।

तालेवि देखो **ताल**=तालय्।

ताव सक [**तापय्**] १ तपाना, गरम करना। २ संताप करना, दुःख उपजाना। तावेंति ; (गा ८५०)। कर्म—ताविज्जंति ; (गा ७)। कृ—**तावणिज्ज** ; (भग१५)।

ताव पुं [**ताप**] १ गरमी, ताप ; (सुपा ३८६ ; कप्पू)। २ संताप, दुःख ; (आव ४)। ३ सूर्य, रवि। °दिसा स्त्री [°दिश्] सूर्य-तापित दिशा; (राज)।

ताव अ [**तावत्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ तब-तक ; (पउम ६८, ५०)। २ प्रस्तुत अर्थ ; (आवम)। ३ अवधारण ; ४ अवधि, हद ; ५ पक्षान्तर ; ६ प्रशंसा ; ७ वाक्य-भूषा ; ८ मान ; ९ साकल्य, संपूर्णता ; १० तब, उस समय ; (हे १, ११)।

तावअ वि [**तावक**] त्वदीय, तुम्हारा; (अच्चु ५३)।

तावइअ वि [**तावत्**] उतना ; (सम १४४ ; भग)।

तावं देखो **ताव**=तावत् ; (भग १५)।

तावँ } (अप) देखो **ताव**=तावत् ; (कुमा)। **तवँहिं** }

तावण न [**तापन**] १ गरम करना, तपाना ; (निचू १)। २ पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा ; (पउम ५, ५)।

तावणिज्ज देखो **ताव**=तापय्।

तावत्तीस } **तावत्तीसग** } देखो **तायत्तीसय** ; (औप ; पि ४४५ ; **तावत्तीसय** } ४३८ ; काल)।

तावत्तीसा देखो **तायत्तीसा** ; (पि ४३८)।

तावस पुं [**तापस**] १ तपस्वी, योगी, संन्यासि-विशेष ; (औप)। २ एक जैन मुनि ; (कप्प)। °गेह न [°गेह]

तापसों का मठ ; (पाअ) ।

तावसा स्त्री [**तापसा**] जैन मुनिओं की एक शाखा; (कप्प)।

तावसी स्त्री [**तापसी**] तपस्विनी, योगिनी ; (गउड) ।

ताविअ वि [**तापित**] तपाया हुआ, गरम किया हुआ; (गा ५३ ; विपा १, ३ ; सुर ३, २२०) ।

ताविआ स्त्री [**तापिका**] तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र; (दे २, ५६) । २ कड़ाही, छोटा कड़ाह ; (आवम) ।

ताविच्छ पुंन [**तापिच्छ**] वृत्त-विशेष, तमाल का पेड़ ; (कुमा ; दे १, ३७ ; सुपा ५८) ।

तावी स्त्री [**तापी**] नदी-विशेष; (पउम ३५, १; गा २३६)।

तास पुं [**त्रास**] १ भय, डर ; (उप पृ ३५) । २ उद्वेग, संताप ; (पराह १, १) ।

तासण वि [**त्रासन**] त्रास उपजाने वाला ; (पराह १,१)।

तासि वि [**त्रासिन्**] १ त्रास-युक्त, त्रस्त : २ त्रास-जनक ; (ठा ४, २ ; कप्पू) ।

तासिअ वि [**त्रासित**] जिसको त्रास उपजाया गया हो वह ; (भवि) ।

ताहे अ [**तदा**] उस समय, तब ; (हे ३, ६५) ।

ति अ [**त्रिः**] तीन वार; (ओघ ५४२) ।

ति देखो **तइअ**=तृतीय ; (कम्म २,१६) । °**भाग**, °**भाय**, °**हाअ** पुं [°**भाग**] तृतीय भाग, तीसरा हिस्सा ; (कम्म २; णाया १, १६—पत्र २१८ ; कप्पू) ।

ति देखो **थी** ; "उलूजु गायंति भुणिं सभत्तिउत्ता तिओ चच्च-रियाउ दिंति " (रंभा) ।

ति त्रि.ब. [**त्रि**] तीन, दो और एक ; (नव ४ ; महा) । °**अणुअ** न [°**अणुक**] तीन, परमाणुओं से बना हुआ द्रव्य, "अणुअतएहिं आरद्धदव्वे तिअणुअं ति निद्देसो" (सम्म १३६) । °**उण** वि [°**गुण**] १ तीनगुना । २ सत्व, रजस् और तमस् गुण वाला ; (अच्चु ३०) । °**उणिय** वि [°**गुणित**] तीनगुना ; (भवि) । °**उत्तरसय** वि [°**उत्तरशततम**] एक सौ तीसरा, १०३ वाँ ; (पउम १०३, १७६) । °**उल** वि [°**तुल**] १ तीन को जीतने वाला ; २ तीन को तौलने वाला ; (णाया १, १—पत्र ६४) । °**ओय** न [°**ओजस्**] विषम राशि-विशेष ; (ठा ४, ३) । °**कंड**, °**कंडग** वि [°**काण्ड**,°**क**] तीन काण्ड वाला, तीन भाग वाला ; (कप्पू; सुअ १, ६) । °**कडुअ** न [°**कटुक**] सूँठ, मरीच और पीपल ;(अणु) । °**करण** देखो °**गरण** ; (राज) । °**काल** न [°**काल**] भूत, भविष्य और वर्तमान काल; (भग; सुपा ८८) । °**क्काल** देखो °**काल** ; (सुपा १६६)। °**खंड** वि [°**खण्ड**] तीन खण्ड वाला ; (उप ६८६ टी)। °**खंडाहिवइ** पुं [°**खण्डाधिपति**] अर्ध चक्रवर्ती राजा, वासुदेव ; (पउम ६१,२६) । °**गडु**, °**गडुअ** देखो °**कडुअ** ; (स २५८ ; २६३) । °**गरण** न [°**करण**] मन, वचन और काया ; (द्र २०) । °**गुण** देखो °**उण** ; (अणु) । °**गुत्त** वि [°**गुप्त**] मनोगुप्ति आदि तीन गुप्ति वाला, संयमी ; (सं ८) । °**गोण** वि [°**कोण**] तीन कोने वाला ; (राज) । °**चत्ता** स्त्री [°**चत्वारिंशत्**] तेतालीस ; (कम्म ४, ५५) । °**जय** न [°**जगत्**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (ति १) । °**णयण** पुं [°**नयन**] महादेव, शिव ; (से १५, ५८ ; सुपा १३८ ; ५६६ ; गउड) । °**तुल** देखो °**उल** ; (णाया १, १टी—पत्र ६७)। °**तिस** (अप) देखो °**त्तीस**। °**त्तीस** स्त्रीन [**त्रय-स्त्रिंशत्**] १ संख्या-विशेष, ३३ ; २ तेतीस संख्या वाला, तेतीस ; (कप्प ; जी ३६ ; सुर १२,१३६ ; दं २७) । °**दंड** न [°**दण्ड**]१ हथियार रखने का एक उपकरण ;(महा)। २ तीन दण्ड ; (औप) । °**दंडि** पुं [°**दण्डिन्**] संन्यासी, सांख्य मत का अनुयायी साधु; (उप १३६ टी; सुपा ४३६ ; महा) । °**नवइ** स्त्री [°**नवति**] १ संख्या-विशेष, तिराणवे; २ तिराणवे संख्या वाला ; (कम्म १,३१) । °**पंच** त्रि.ब. [°**पञ्चन्**] पंद्रह; (ओघ१४)। °**पंचासइम** वि [°**पञ्चाश**] त्रेपनवाँ ; (पउम ५३, १५०) । °**पह** न [°**पथ**] जहां तीन रास्ते एकत्रित होते हों वह स्थान ; (राज) । °**पायण** न [°**पातन**] १ शरीर, इन्द्रिय और प्राण इन तीनों का नाश; २ मन, वचन और काया का विनाश ; (पिंड) । °**पुंड** न [°**पुण्ड्र**] तिलक-विशेष, ; (स ६) । °**पुर** पुं [°**पुर**] १ दानव-विशेष, ; २ न. तीन नगर ; (राज) । °**पुरा** स्त्री [°**पुरा**] विद्या-विशेष; (सुपा ३६७) । °**भंगी** स्त्री [°**भङ्गी**] छन्द-विशेष, ; (पिंग) । °**महुर** न [°**मधुर**] घी, सक्कर और मधु;(अणु)। °**मासिआ** स्त्री [**त्रैमासिकी**] जिसकी अवधि तीन मास की है ऐसी एक प्रतिमा, व्रत-विशेष ; (सम २१) । °**मुह** वि [°**मुख**] १ तीन मुख वाला ; (राज) । २ पुं. भगवान् संभवनाथजी का शासन-देव ; (संति ७) । °**रत्त** न [°**रात्र**] तीन रात; (स ३४२), "धम्मपरस्स मुहुत्तोवि दुल्लहो किंपुण तिरत्तं" (कुप्र ११८)। °**रासि** न [°**राशि**]जीव, अजीव और नोजीव रूप तीन राशियाँ; (राज)। °**लोअ** न [°**लोकी**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक;

(कुमा ; प्रासू ८६ ; सं १)। °लोअण पुं [°लोचन] महादेव, शिव ; (श्रा २८ ; पउम ५, १२२ ; पिंग)। °लोअपुज्ज पुं [°लोकपूज्य] धातकीषण्ड के विदेह में उत्पन्न एक जिनदेव ; (पउम ७५, ३१)। °लोई स्त्री [°लोकी] देखो °लोअ ; (गउड ; भत्त १५२)। °लोग देखो °लोअ; (उप पृ ३)। °वई स्त्री [°पदी] १ तीन पदों का समूह। २ भूमि में तीन वार पाँव का न्यास ; (औप)। ३ गति-विशेष ; (अंत १६)। °वग्ग पुं [°वर्ग] १ धर्म, अर्थ और काम ये तीन पुरुषार्थ ; (ठा ४, ४—पत्र २८३ ; स ७०३ ; उप पृ २०७)। २ लोक, वेद और समय इन तीन का वर्ग ; ३ सूत्र, अर्थ और उन दोनों का समूह ; (आचू १ ; आवम)। °वण्ण पुं [°पर्ण] पलाश वृक्ष ; (कुमा)। °वरिस वि [°वर्ष] तीन वर्ष की अवस्था वाला ; (वव ३)। °वलि स्त्री [°वलि] चमड़ी की तीन रेखाएं ; (कप्पू)। °वलिय वि [°वलिक] तीन रेखा वाला ; (राय)। °वली देखो °वलि ; (गा २७८ ; औप)। °वट्ठ पुं [°पृष्ठ] भरतक्षेत्र के भावी नवम वासुदेव ; (सम १५४)। °वय न [°पद] तीन पाँव वाला ; (दे ८, १)। °वहआ स्त्री [°पथगा] गंगा नदी ; (से ६, ८ ; अच्चु ३)। °वायणा स्त्री [°पातना] देखो °पायण ; (पण्ह १, १)। °विट्ठ, °विट्ठु पुं [°पृष्ठ, °विष्टु] भरतक्षेत्र में उत्पन्न प्रथम अर्ध-चक्रवर्ती राजा का नाम ; (सम ८८ ; पउम ५, १५५)। °विह वि [°विध] तीन प्रकार का ; (उवा ; जी २० ; नव ३)। °विहार पुं [°विहार] राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ पाटण का एक जैन मन्दिर ; (कुप्र १४४)। °संकु पुं [°शङ्कु] सूर्यवंशीय एक राजा ; (अभि ८२)। °संझ न [°सन्ध्य] प्रभात, मध्याह्न और सायंकाल का समय ; (सुर ११, १०६)। °सट्ठ वि [°षष्ट] तेसठवाँ, ६३ वाँ ; (पउम ६३, ७३)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] तेसठ, ६३ ; (भवि)। °सत्त त्रि. ब. [°सप्तन्] एक्कीस ; (श्रा ६)। °सत्तखुत्तो अ [°सप्तकृत्वस्] एक्कीस वार ; (णाया १, ६ ; सुपा ४४६)। °समइय वि [°सामयिक] तीन समय में उत्पन्न होने वाला, तीन समय की अवधि वाला ; (ठा ३, ४)। °सरय न [°सरक] तीन सरा वाला हार ; (णाया १, १ ; औप ; महा)। २ वाद्य-विशेष ; (पउम ६६, ४४)। °सरा स्त्री [°सरा] मच्छी पकड़ने की जाल-विशेष ; (विपा १, ८)। °सरिय न [°सरिक] १ तीन सरा वाला हार ; (कप्प)। २ वाद्य-विशेष ; (पउम ११३, ११)। ३ वि. वाद्य-विशेष-संबन्धी, (पउम १०२, १२३)। °सीस पुं [°शीर्ष] देव-विशेष ; (दीव)। °सूल न [°शूल] शस्त्र-विशेष ; (पउम १२, ३४ ; स ६६६)। °सूलपाणि पुं [°शूलपाणि] १ महादेव, शिव। २ त्रिशूल को हाथ में रखने वाला सुभट ; (पउम ५६, ३५)। °सूलिया स्त्री [°शूलिका] छोटा त्रिशूल ; (सूअ १, ५, १)। °हत्तर वि [°सप्तत] तिहत्तरवाँ, ७३ वाँ; (पउम ७३, ३६)। °हा अ [°धा] तीन प्रकार से ; (पि ४५१ ; अणु)। °हुअण, °हुण, °हुवण न [°भुवन] १ तीन जगत, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (कुमा ; सुर १, ८ ; प्रासू ४६ ; अच्चु १६)। २ राजा कुमारपाल के पिता का नाम ; (कुप्र १४४)। °हुअणपाल पुं [°भुवनपाल] राजा कुमारपाल का पिता ; (कुप्र १४४)। °हुअणालंकार पुं [°भुवनालंकार] रावण के पट्टहस्ती का नाम ; (पउम ८२, १२२)। °हुणविहार पुं [°भुवनविहार] गुजरात पाटण में राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ एक जैन मन्दिर ; (कुप्र १४४)। देखो ते°।

°ति देखो इअ = इति ; (कुमा ; कम्म २, १२ ; २३)।

तिअ न [त्रिक] १ तीन का समुदाय ; (श्रा १ ; उप ७२८ टी)। २ वह जगह जहाँ तीन रास्ते मिलते हों ; (सुर १, ६३)। °संजअ पुं [°संयत] एक राजर्षि ; (पउम ५, ५१)। देखो तिग।

तिअ वि [त्रिज] तीन से उत्पन्न होने वाला ; (राज)।

तिअंकर पुं [त्रिकंकर] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (राज)।

तिअग न [त्रिकक] तीन का समुदाय ; (विसे २६४३)।

तिअडा स्त्री [त्रिजटा] स्वनाम-ख्यात एक राक्षसी ; (से ११, ८७)।

तिअभंगी स्त्री [त्रिभङ्गी] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

तिअय न [त्रितय] तीन का समूह ; (विसे १४३२)।

तिअलुक्क, तिअलोय } न [त्रैलोक्य] तीन जगत्—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (धर्मा ६०; लहुअ ६)।

तिअस पुं [त्रिदश] देव, देवता ; (कुमा ; सुर १, ६)। °गअ पुं [°गज]। ऐरावण हाथी, इन्द्र का हाथी; (से ६, ६१)। °नाह पुं [°नाथ] इन्द्र ; (उप ६८६ टी; सुपा ४४)। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र, देव-नायक ; (सुपा

४७;१७६)। °रिसि पुं [°ऋषि] नारद मुनि;(कुप्र ३७३)। °लोग पुं [°लोक] स्वर्ग ; (उप १०१६) । °विलया स्त्री [°वनिता] देवी, स्त्री देवता ; (सुपा २६७) । °सरि स्त्री [°सरित्] गंगा नदी; (कुप्र ५)। °सेल पुं [°शैल] मेरु पर्वत ; (सुपा ४८) । °लय पुंन [°लय] स्वर्ग ; (कुप्र १६ ; उप ७२८ टी ; सुर १, १७२) । °हिव पुं [°धिप] इन्द्र ; (सुपा ३४) । °हिवइ पुं [°धिपति] इन्द्र ; (सुपा ७६) ।

तिअसिंद पुं [त्रिदशेन्द्र] इन्द्र, देव-पति; (वज्जा १५४)।

तिअसीस पुं [त्रिदशेश] इन्द्र, देव-नायक ; (हे १, १०) ।

तिआमा स्त्री [त्रियामा] रात्रि, रात ; (अच्चु ४६) ।

तिइक्ख सक [तितिक्ष्] सहन करना । तिइक्खए ; (आचा)। वकृ—तिइक्खमाण ; (आचा) ।

तिइक्खा स्त्री [तितिक्षा] क्षमा, सहिष्णुता ; (आचा) ।

तिइज्ज, तिइय वि [तृतीय] तीसरा ; (पि ४४६ ; संक्षि २०)।

तिउट्ट अक [त्रुट्] १ टूटना । २ मुक्त होना । "सव्व-दुक्खा तिउट्टइ" (सूअ १, १५, ५) ।

तिउट्ट वि [त्रुट्ट, त्रुटित] १ टूटा हुआ; २ अपसृत;(आचा)।

तिउड पुं [दे] कलाप, मोर-पिच्छ ; (पाअ) ।

तिउडय न [दे] मालव देश में प्रसिद्ध धान्य-विशेष; (श्रा ११)।

तिउर न [त्रिपुर] एक विद्याधर-नगर ; (इक) ।

तिउरी स्त्री [त्रिपुरी] नगरी-विशेष, चेदि देश की राजधानी; (कुमा) ।

तिउल वि [दे] मन, वचन और काया को पीड़ा पहुँचाने वाला, दुःख-हेतु ; (उत्त २) ।

तिऊड देखो **तिकूड**; (से ८, ८३ ; ११, ६८) ।

तिंगिआ स्त्री [दे] कमल-रज ; (दे ५, १२) ।

तिंगिच्छ देखो **तिगिच्छ** ; (इक) ।

तिंगिच्छायण न [चिकित्सायन] नक्षत्र-गोत्र विशेष; (इक)।

तिंगिच्छि स्त्री [दे] कमल-रज, पद्म की रज ; (दे ५, १२ ; गउड ; हे २, १७४ ; जं ४) ।

तिंत वि [तीमित] भींजा हुआ ; (स ३३२ ; हे ४,४३१) ।

तिंतिण, तिंतिणिय वि [दे] बड़बड़ करने वाला, बड़बड़ाने वाला; वाञ्छित लाभ न होने पर खेद से मन में आवे सो बोलने वाला ; (वव १ ; ठा ६—पत्र ३७१ ; कस) ।

तिंतिणी स्त्री [तिन्तिणी] १ चिंचा, इम्ली का पेड़ ; (अभि ७१) ।

तिंतिणी स्त्री [दे] बड़बड़ाना ; (वव ३) ।

तिंदुइणी स्त्री [तिन्दुकिनी] वृक्ष विशेष; (कुप्र १०२) ।

तिंदुग, तिंदुय पुं [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड़ ; (पाअ ; पउम २०, ३७ ; सम १५२ ; पण्ण १७) । २ न. फल-विशेष ; (पण्ण १७) । ३ श्रावस्ती नगरी का एक उद्यान ; (विसे २३०७) ।

तिंदूस, तिंदूसग, तिंदूसय पुंन [तिन्दूस, °क] १ वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १) । २ कन्दुक, गेंद ; (णाया १, १८ ; सुपा ५३) । ३ क्रीड़ा-विशेष ; (आवम) ।

तिकल्ल न [त्रै काल्य] तीनों काल का विषय ; (पण्ह२,२)।

तिकूड पुं [त्रिकूट] १ लंका के समीप का एक पहाड़, सुवेल पर्वत ; (पउम ५, १२७) । २ शीता महानदी के दक्षिण किनारे पर स्थित पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ८०) । °सामिय पुं [°स्वामिन्] सुवेल पर्वत का स्वामी, रावण ; (पउम ६५, २१) ।

तिक्ख वि [तीक्ष्ण] १ तेज, तीखा, पैना ; (महा ; गा ५०४) । २ सूक्ष्म ; ३ चोखा, शुद्ध ; (कुमा) । ४ परुष, निष्ठुर ; (भग १६, ३) । ५ वेग-युक्त, क्षिप्र-कारी; (जं २) । ६ क्रोधी, गरम प्रकृति वाला ; ७ तीता, कडुआ; ८ उत्साही ; ६ आलस्य-रहित ; १० चतुर, दक्ष ; ११ न. विष, जहर ; १२ लोहा ; १३ युद्ध, संग्राम ; १४ शस्त्र, हथियार ; १५ समुद्र का नोन ; १६ यवक्षार ; १७ श्वेत कुष्ठ; १८ ज्योतिष-प्रसिद्ध तीक्ष्ण गण, यथा अश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र ; (हे २, ७५ ; ८२) ।

तिक्ख सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना । तिक्खेइ ; (हे ४, ३४४) ।

तिक्खण न [तीक्ष्णन] तेज-करण, उत्तेजन ; (कुमा) ।

तिक्खाल सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना । कर्म—तिक्खालिज्जंति ; (सुर १२, १०६) ।

तिक्खालिअ वि [दे] तीक्ष्ण किया हुआ; (दे ५, १३; पाअ)।

तिक्खुत्तो अ [दे] तीन वार ; (विपा १, १ ; कप्प ; औप ; राय) ।

तिग देखो **तिअ**=त्रिक ; (जी ३२ ; सुपा ३१; णाया १, १) । °वस्सि वि [°वशिन्] मन, वचन और शरीर को काबू में रखने वाला ; " नरस्स तिगवस्सिस्स विसं तालउडं जहा " (सुपा १६७) ।

तिगिंछ पुं [तिगिञ्छ] द्रह-विशेष; (इक) ।

तिगिंछि पुं [तिगिञ्छि] १ पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र

७० ; इक ; सम ३३)। २ द्रह-विशेष, निषध पर्वत पर स्थित एक ह्रद ; (ठा २,३—पत्र ७२)।

तिगिच्छ सक [**चिकित्स्**] प्रतिकार करना, ईलाज करना । तिगिच्छइ ; (उत्त १६, ७६ ; पि २१५ ; ५५५)।

तिगिच्छ पुं [**चिकित्स**] वैद्य, हकीम ; (वव ५)।

तिगिच्छ पुं [**तिगिच्छ**] १ द्रह विशेष; निषध पर्वत पर स्थित एक द्रह ; (इक) ।२ न. देव-विमान विशेष; (सम ३८) ।

तिगिच्छग } वि [**चिकित्सक**] प्रतीकार करने वाला ;
तिगिच्छय } २ पुं. वैद्य, हकीम; (ठा ४, ४; पि २१५;३२७)।

तिगिच्छय न [**चैकित्स्य**] चिकित्सा-कर्म; (ठा ६—पत्र४५१)

तिगिच्छा स्त्री [**चिकित्सा**] प्रतीकार, ईलाज ; (ठा ३,४)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] आयुर्वेद, वैद्यक शास्त्र ;(राज) ।

तिगिंच्छि देखो **तिगिंछि** ; (ठा २,३—पत्र ८० ; सम ८४; १०४ ; पि ३५४) ।

तिगिच्छिय पुं [**चैकित्सिक**] वैद्य, चिकित्सक ; (पउम ८, १२४)।

तिग्ग वि [**तिग्म**] तीक्ष्ण, तेज ; (हे २, ६२) ।

तिग्घ वि [**त्रिघ्न**] तिगुना, तीन-गुना ; (राज) ।

तिचूड पुं [**त्रिचूड**] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४५) ।

तिजड पुं [**त्रिजट**] १ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम १०, २०) । २ राक्षस वंश का एक राजा ; (पउम ५, २६२) ।

तिजामा } स्त्री [**त्रियामा**] रात्रि, रात; (कुप्र २४७; रंभा) ।
तिजामी }

तिज्ज वि [**तार्य**] तैरने योग्य ; (भास ६३) ।

तिड्ड पुंस्त्री [**दे**] अन्न-नाश करने वाला कीट, टिड्डी ; (जी १८) । स्त्री—°**ड्डी**; (सुपा ५४६) ।

तिण न [**तृण**] तृण, घास ; (सुपा २३३ , अभि १७५ ; स १७६) । °**सूय** न [°**शूक**] तृण का अग्र भाग ; (भग १५) । °**हत्थय** पुं [°**हस्तक**] घास का पूला ; (भग ३, ३) ।

तिणिस पुं [**तिनिश**] वृक्ष-विशेष, बेंत ; (ठा ४, २; कम्म १, १६ ; औप) ।

तिणिस न [**दे**] मधु-पाल, मधपुड़ा; (दे ५, ११; ३, १२)।

तिणीकय वि [**तृणीकृत**] तृण-तुल्य माना हुआ; (कुप्र ५)।

तिण्ण वि [**तीर्ण**] १ पार पहुँचा हुआ ; (औप) । २ शक्त, समर्थ ; (से ११, २१) ।

तिण्ण न [**स्तैन्य**] चोरी; " तिलतिण्णतप्परो " (उप ५६७ टी) ।

तिण्ण° देखो **ति**=त्रि । °**भंग** वि [°**भङ्ग**] त्रि-खण्ड, तीन खण्ड वाला; (अभि २२४) । °**विह** वि [°**विध**] तीन प्रकार का ; (नाट—चैत ४३) ।

तिण्णिअ पुं [**तिन्निक**] देखो **तित्तिअ**=तित्तिक ; (इक) ।

तिण्ह देखो **तिक्ख**; (हे २, ७५ ; ८२ ; पि ३१२) ।

तिण्हा देखो **तण्हा**; (राज ; वज्जा ६०) ।

तितउ पुं [**तितउ**] चालनी, आखा, छानने का पात्र; (प्रामा)।

तितिक्ख देखो **तिइक्ख** । तितिक्खइ, तितिक्खए ; (कप्प ; पि ४५७) । वकृ—**तितिक्खमाण**; (राज) ।

तितिक्खण न [**तितिक्षण**] सहन करना ; (ठा ६)।

तितिक्खा देखो **तिइक्खा**; (सम ५७) ।

तित्त वि [**तृप्त**] तृप्त, संतुष्ट ; (विसे २४०६; औप ; दे १, १६ ; सुपा १६३)।

तित्त वि [**तिक्त**] १ तीता, कडुआ ; (णाया १, १६) । २ पुं. तीता रस ; (ठा १) ।

तित्ति स्त्री [**तृप्ति**] तृप्ति, संतोष ; (उप ५६७ टी; दे १, ११७; सुपा ३७५; प्रासू १४०) ।

तित्ति [**दे**] तात्पर्य, सार; (दे ५,११ ; षड्) ।

तित्तिअ वि [**तावत्**] उतना ; (हे २, १५६) ।

तित्तिअ पुं [**तित्तिक**] १ म्लेच्छ देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली म्लेच्छ जाति; (पण्ह १,१) । देखो **तिण्णिअ** ।

तित्तिर } पुं [**तित्तिरि**] पक्षि-विशेष, तीतर ; (हे
तित्तिरि } १,६०; कुप्र ४२७) ।

तित्तिरिअ वि [**दे**] स्नान से आर्द्र ; (दे ५, १२) ।

तित्तिल वि [**तावत्**] उतना; (षड्) ।

तित्तिल्ल पुं [**दे**] द्वारपाल, प्रतीहार; (गा ५५६) ।

तित्तुअ वि [**दे**] गुरु, भारी ; (दे ५, १२) ।

तित्तुल (अप) देखो **तित्तिल** ; (हे ४, ४३५) ।

तित्थ पुं [**त्रिस्थ**] साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय, जैन संघ ; (विसे १०३५) ।

तित्थ पुं [**त्र्यर्थ**] ऊपर देखो ; (विसे १०३६) ।

तित्थ न [**तीर्थ**] १ ऊपर देखो ; (विसे१०३३ ; ठा१) । २ दर्शन, मत ; (सम्म ८ ; विसे१०४०) । ३ यात्रा-स्थान, पवित्र जगह ; (धर्म २ ; राय ; अभि १२७) । ४ प्रवचन,

शासन, जिन-देव प्रणीत द्वादशाङ्गी; (धर्म ३)। ५ पुंन. अवतार, घाट, नदी वगैरः में उतरने का रास्ता; (विसे १०२६; विक्र ३२; प्रति ८२; प्रासू ६०)। °कर, °गर देखो °यर; (सम ६७; कप्प; पउम २०, ८; हे १, १७७)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] तीर्थ-गमन; (धर्म २)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] जिन-देव; (स ७६१; उप पृ ३५०; सुपा ६५६; सार्ध ४३; सं ३५)। °यर वि [°कर] १ तीर्थ का प्रवर्तक, २ पुं. जिन-देव, जिन भगवान्; (णाया १, ८; हे १, १७७; सं १०१); स्त्री—°री; (णंदि)। °यर-णाम न [°करनामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव तीर्थ-कर होता है; (ठा ६)। °राय पुं [°राज] जिन-देव; (उप पृ ४००)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] तीर्थ-प्रवृति होने पर जो मुक्ति प्राप्त करे वह जीव; (ठा १, १)। °हिनायग पुं [°धिनायक] जिन-देव; (उप ६८६ टी)। °हिव पुं [°धिप] संघ-नायक, जिन-देव; (उप १४२ टी)। °हिवइ पुं [°धिपति] जिन-देव, जिन भगवान्; (पाम्र)।

तित्थि वि [**तीर्थिन्**] १ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का विद्वान्; २ किसी दर्शन का अनुयायी; (गु ३)।

तित्थिअ वि [**तीर्थिक**] ऊपर देखो; (प्रवो ७४)।

तित्थीय वि [**तीर्थीय**] ऊपर देखो; (विसे ३१६६)।

तित्थेसर पुं [**तीर्थेश्वर**] जिन-देव, जिन भगवान्; (सुपा ५१; ८६; २६०)।

तिदस देखो **तिअस**; (नाट—विक्र २८)।

तिदिव न [**त्रिदिव**] स्वर्ग, देव-लोक; (सुपा १४२; कुप्र ३२०)।

तिध (अप) देखो **तहा**; (हे ४, ४०१; कुमा)।

तिन्न देखो **तिण्ण**; (सम १)।

तिन्न वि [**दे**] स्तीमित, आर्द्र, गीला; (णाया १, ६)।

तिप्प सक [**तर्पय्**] तृप्त करना। हेक्ट—"न इमो जीवो सक्को **तिप्पेउं** कामभोगेहिं" (पच्च ५५)। कृ—**तिप्पियव्व**; (पउम ११, ७३)।

तिप्प अक [**तिप्**] १ झरना, चूना। २ अफसोस करना। ३ रोना। ४ सक. सुख-च्युत करना। तिप्पामि, तिप्पंति; (सूअ २, १; २, २, ५५)। वकृ—**तिप्पमाण**; (णाया १, १—पत्र ४७)। प्रयो. वकृ—**तिप्पयंत**; (सम ५१)।

तिप्प वि [**तृप्त**] संतुष्ट; (हे १, १२८)।

तिप्पणया स्त्री [**तेपनता**] अश्रु-विमोचन, रोदन; (ठा ४, १; औप)।

तिम (अप) देखो **तहा**; (हे ४, ४०१; भवि; कम्म १)।

तिमि पुं [**तिमि**] मत्स्य की एक जाति; (पण्ह १, १)।

तिमिंगिल पुं [**दे**] मत्स्य, मछली; (दे ५, १३)।

तिमिंगिल पुं [**तिमिङ्गिल**] मत्स्य की एक जाति; (दे ५, १३; से ७, ८; पण्ह १, १)। °**गिल** पुं [°**गिल**] एक प्रकार का महान् मत्स्य; (सूअ २, ६)।

तिमिंगिलि पुं [**तिमिङ्गिलि**] मत्स्य की एक जाति; (पउम २२, ८३)।

तिमिगिल देखो **तिमिंगिल=**तिमिङ्गिल; (उप ५१७)।

तिमिच्छय } पुं [**दे**] पथिक, मुसाफिर; (दे ५, १३)।
तिमिच्छाह }

तिमिण न [**दे**] गीला काष्ठ; (दे ५, ११)।

तिमिर न [**तिमिर**] १ अन्धकार, अँधेरा; (पडि; कप्प)। २ निकाचित कर्म; (धर्म २)। ३ अल्प ज्ञान; ४ अज्ञान; (आचू ५)। ५ पुं. वृक्ष-विशेष; (स २०६)।

तिमिरिच्छ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, करंज का पेड़; (दे ५, १३)।

तिमिरिस पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)।

तिमिल स्त्रीन [**तिमिल**] वाद्य-विशेष; (पउम ५७, २२)। स्त्री—°**ला**; (राज)।

तिमिस पुं [**तिमिष**] एक प्रकार का पौधा, पेठा, कुम्हड़ा; (कप्पू)।

तिमिसा } स्त्री [**तिमिस्रा**] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा;
तिमिस्सा } (ठा २, ३; पण्ह १, १—पत्र १४)।

तिम्म अक [**स्तीम्**] भींजना, आर्द्र होना। वकृ—**तिम्म-माण**; (पउम ३५, २०)।

तिम्म देखो **तिग्ग**; (हे २, ६२)।

तिम्मिअ वि [**स्तीमित**] आर्द्र, गीला; (दे १, ३७)।

तिरक्कर सक [**तिरस्+कृ**] तिरस्कार करना, अवधीरणा करना। कृ—**तिरक्करणोअ**; (नाट)।

तिरक्कार पुं [**तिरस्कार**] तिरस्कार, अपमान, अवहेलना; (प्रवो ४१; सुपा १४४)।

तिरक्करिणी } स्त्री [**तिरस्करिणो**] यवनिका, परदा;
तिरक्खरिणी } (पि ३०६; अभि १८६)।

तिरिअ } वि [**तिर्यच्**] १ वक्र, कुटिल, बाँका; (चंद २;
तिरिअंच } उप पृ ३६६; सुर १३, १६३)। २ पुं. पशु,
तिरिक्ख } पक्षी आदि प्राणी; देव, नारक और मनुष्य से
तिरिच्छ } भिन्न योनि में उत्पन्न जन्तु; (धण ४४; हे २, १४३; सूअ १, ३, १; उप पृ १८६; प्रासू १७६; महा; आरा ४६; पउम २, ५६; जी २०)। ३ मर्त्य-लोक, मध्य लोक; (ठा ३, २)। ४ न. मध्य, बीच;

(अणु ; भग १४, ५), "तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेण जेणेव जंबुद्दीवे दीवे" (कप्प)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] १ तिर्यग्-योनि; (ठा ५, ३)। २ वक्र गति, टेढ़ी चाल, कुटिल गमन ; (चंद २)। °**जंभग** पुं [°**जृम्भक**] देवों की एक जाति ; (कप्प)। °**जोणि** स्त्री [°**योनि**] पशु, पक्षी आदि का उत्पत्ति-स्थान ; (महा)। °**जोणिअ** वि [°**योनिक**] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न ; (सम २ ; भग ; जीव १ ; ठा ३, १)। °**जोणिणी** स्त्री [°**योनिका**) तिर्यग्-योनि में उत्पन्न स्त्री जन्तु, तिर्यक् स्त्री ; (पएण १७—पत्र ५०३)। °**दिसा** °**दिसि** स्त्री [°**दिश्**] पूर्व आदि दिशा; (आवम; उवा)। °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] बीच में पड़ता पहाड़, मार्गावरोधक पर्वत ; (भग १४, ५)। °**भित्ति** स्त्री [°**भित्ति**] बीच की भींत ; (आचा)। °**लोग** पुं [°**लोक**] मर्त्य लोक, मध्य लोक ; (ठा ५, ३)। °**वसइ** स्त्री [°**वसति**] तिर्यग्-योनि ; (पराह १, १)।

तिरिच्छ वि [**तिरश्चीन**] १ तिर्यग् गत ; (राज)। २ तिर्यक्-संबन्धी ; (उत्त २१, १६)।

तिरिच्छि देखो **तिरिअ** ; (हे २, १४३ ; षड्)।

तिरिच्छी स्त्री [**तिरश्ची**] तिर्यक्-स्त्री ; (कुमा)।

तिरिड पुं [**दे**] एक जाति का पेड़, तिमिर वृक्ष; (दे ५, ११)।

तिरिडिअ वि [**दे**] १ तिमिर-युक्त ; २ विचित; (दे ५, २१)।

तिरिड्डि पुं [**दे**] उष्ण वात, गरम पवन ; (दे ५, १२)।

तिरिश्चि (मा) देखो **तिरिच्छि** ; (हे ४, २९५)।

तिरीड पुंन [**किरीट**] मुकुट, सिर का आभूषण ; (पराह १, ४ ; सम १५३)।

तिरीड पुं [**तिरीट**] वृक्ष-विशेष ; (बृह २)। °**पट्टय** न [°**पट्टक**] वृक्ष-विशेष की छाल का बना हुआ कपड़ा ; (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

तिरीडि वि [**किरीटिन्**] मुकुट-युक्त, मुकुट-विभूषित ; (उत्त ९, ६०)।

तिरोभाव पुं [**तिरोभाव**] लय, अन्तर्धान ; (विसे २६६६)।

तिरोवइ वि [**दे**] वृति से अन्तर्हित, बाड से व्यवहित ; (दे ५, १३)।

तिरोहिअ वि [**तिरोहित**] अन्तर्हित, आच्छादित ; (राज)।

तिल पुं [**तिल**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध अन्न-विशेष ; (गा ६६५ ; णाया १, १ ; प्रासू ३४; १०८)। २ ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °**कुट्टी** स्त्री [°**कुट्टी**] तिल की बनी हुई एक भोज्य वस्तु ; (धर्म २)। °**पप्पडिया** स्त्री [°**पर्पटिका**] तिल की बनी हुई एक खाद्य चीज ; (पएण १)। °**पुप्फवण्ण** पुं [°**पुष्पवर्ण**] ज्योतिष्क देव-विशेष ; ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °**मल्ली** स्त्री [°**मल्ली**] एक खाद्य वस्तु ; (धर्म २)। °**संगलिया** स्त्री [°**संगलिका**] तिल की फली ; (भग १५)। °**सक्कुलिया** स्त्री [°**शष्कुलिका**] तिल की बनी हुई खाद्य वस्तु-विशेष ; (राज)।

तिलइअ वि [**तिलकित**] तिलक की तरह आचरित, विभूषित ; " जयजयसद्दतिलइओ मंगलज्झुणी " (धर्मा ६)।

तिलंग पुं [**तिलङ्ग**] देश-विशेष, एक भारतीय दक्षिण देश; (कुमा ; इक)।

तिलग, **तिलय** पुं [**तिलक**] १ वृक्ष-विशेष ; (सम १५२ ; औप ; कप्प ; णाया १, ९ ; उप ९८६ टी ; गा १६)। २ एक प्रतिवासुदेव राजा, भरतक्षेत्र में उत्पन्न पहला प्रतिवासुदेव ; (सम १५४)। ३ द्वीप-विशेष ; ४ समुद्र-विशेष ; (राज)। ५ न पुष्प-विशेष; (कुमा)। ६ टीका, ललाट में किया जाता चन्दन आदि का चिह्न; (कुमा धर्मा ६)। ७ एक विद्याधर-नगर; (इक)।

तिलितिलय पुं [**दे**] जल-जन्तु विशेष; (कप्प)।

तिलिम स्त्रीन [**दे**] वाद्य-विशेष; (सुपा २४२ ; सण)। स्त्री —°**मा**; (सुर ३, ६८)।

तिलुक्क न [**त्रैलोक्य**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक; (दं २३)।

तिलेल्ल न [**तिलतैल**] तिल का तेल ; (कुमा)।

तिलोक्क देखो **तिलुक्क** ; (सुर १, ९२)।

तिलोत्तमा स्त्री [**तिलोत्तमा**] एक स्वर्गीय अप्सरा ; (उप ७६८ टी ; महा)।

तिलोदग, **तिलोदय** न [**तिलोदक**] तिल का धौन ; (आचा; कप्प)।

तिल्ल न [**तैल**] तैल, तेल ; (सूक्त ३५; कुप्र २४०)।

तिल्ल न [**तिल्ल**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

तिल्लग वि [**तैलक**] तेल बेचने वाला ; (बृह १)।

तिल्लोदा स्त्री [**तैलोदा**] नदी-विशेष ; (निचू १)।

तिवँ (अप) देखो **तहा** ; (हे ४, ३९७)।

तिवण्णी स्त्री [**त्रिवर्णी**] एक महौषधि; (ती ५)।

तिविडा स्त्री [**दे**] सूची, सूई ; (दे ५, १२)।

तिविडी स्त्री [**दे**] पुटिका, छोटा पुड़वा ; (दे ५, १२)।

तिव्व वि [**तीव्र**] १ प्रबल, प्रचण्ड, उत्कट ; (भग १५ ; आचा) । २ रौद्र, भयानक ; (सुअ १, ५, १) । ३ गाढ़, निविड़ ; (पण्ह १, १) । ४ तिक्त, कडुआ ; (भग ६, ३४) । ५ प्रकृष्ट, प्रकर्ष-युक्त ; (णाया १,१—पत्र ४) ।

तिव्व वि [**दे. तीव्र**] १ दुःसह, जो कठिनता से सहन हो सके ; (दे ५,११; सुअ १,३,३ ; १, ५, १; २,६; आचा)। २ अत्यन्त अधिक, अत्यर्थ ; (दे ५, ११; धर्म २ ; औप ; पण्ह १, ३, पंचा १५ ; आव ६ ; उवा)।

तिसला स्त्री [**त्रिशला**] भगवान् महावीर की माता का नाम; (सम १५१) । °**सुअ** पुं [°**सुत**] भगवान् महावीर ; (पउम १, ३३) ।

तिसा स्त्री [**तृषा**] प्यास, पिपासा ; (सुर ६, २०६ ; पात्र) ।

तिसाइय } वि [**तृषित**] तृषातुर, प्यासा ; (महा ; उव ;
तिसिय } पण्ह १, ४ ; सुर १, १६६) ।

तिसिर पुं. ब. [**त्रिशिरस्**] १ देश-विशेष ; (पउम ६८, ६५) । २ पुं. नृप-विशेष ; (पउम ६६,४६) । ३ रावण का एक पुत्र ; (से १२, ५६) ।

तिस्सगुत्त देखो **तीसगुत्त** ; (राज) ।

तिह (अप) देखो **तहा** ; (कुमा) ।

तिहि पुंस्त्री [**तिथि**] पंचदश चन्द्र-कला से युक्त काल, दिन, तारीख ; (चंद १० ; पि १८०) ।

तीअ वि [**तृतीय**] तीसरा ; (सम १५०; संक्षि २०) ।

तीअ वि [**अतीत**] १ गुजरा हुआ, बीता हुआ; (सुपा ४४६; भग) । २ पुं. भूत काल ; (ठा ३, ४) ।

तीइल पुं [**तैतिल**] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-विशेष ; (विसे ३३४८) ।

तीमण न [**तीमन**] कढ़ी, खाद्य-विशेष ; (दे२, ३५ ;सण)।

तीमिअ वि [**तीमित**] आर्द्र, गीला ; (कुप्र ३७३) ।

तीर अक [**शक्**] समर्थ होना । तीरइ ; (हे४, ८६) ।

तीर सक [**तीरय्**] समाप्त करना, परिपूर्ण करना । तीरइ, तीरेइ ; (हे४, ८६ ; भग) । संकृ—**तीरित्ता** ; (कप्प) ।

तीर पुंन [**तीर**] किनारा, तट, पार ; (स्वप्न ११६ ; प्रासू ६० ; ठा ४, १ ; कप्प) ।

तीरंगम वि [**तीरंगम**] पार-गामी ; (आचा) ।

तीरिय वि [**तीरित**] समापित, परिपूर्ण किया हुआ ; (पव ५) ।

तीरिया स्त्री [**दे**] शर रखने का थैला, बाणधि (?) ; "गहियमणेण पासत्थं धणुवरं, संधिओ तीरियासरो" (स२६७)।

तीस न [**त्रिंशत्**] १ संख्या विशेष, तीस ; २ तीस-संख्या वाला ; (महा ; भवि) ।

तीसआ } स्त्री [**त्रिंशत्**] ऊपर देखो ; (संक्षि २१) ।

तीसइ } °**वरिस** वि [°**वर्ष**] तीस वर्ष की उम्र का ; (पउम २, २८) ।

तीसइम वि [**त्रिंश**] १ तीसवाँ ; (पउम ३०, ६८) । २ लगातार चौदह दिनों का उपवास ; (णाया १, १) ।

तीसगुत्त पुं [**तिष्यगुप्त**] एक प्राचीन आचार्य-विशेष, जिसने अन्तिम प्रदेश में जीव की सत्ता का पन्थ चलाया था; (ठा७)।

तीसभद्द पुं [**तिष्यभद्र**] एक जैन मुनि ; (कप्प) ।

तीसम वि [**त्रिंश**] तीसवाँ ; (भवि) ।

तीसा स्त्री. देखो **तीस** ; (हे १, ६२) ।

तीसिया स्त्री [**त्रिंशिका**] तीस वर्ष के उम्र की स्त्री; (वव७)।

तु अ [**तु**] इन अर्थों का सूचक अव्ययः—१ भिन्नता, भेद, विशेषण ; (श्रा २७ ; विसे ३०३५) । २ अवधारण, निश्चय ; (सुअ १, २, २) । ३ समुच्चय ; (सुअ १, १, १) । ४ कारण, हेतु ; (निचू १) । ५ पाद-पूरक अव्यय ; (विसे ३०३५ ; पंचा ४) ।

तुअ सक [**तुद्**] व्यथा करना, पीड़ा करना । तुअइ ; (षड्) । प्रयो. संकृ—**तुयावइत्ता** ; (ठा ३, २) ।

तुअर पुं [**तुवर**] धान्य-विशेष, रहर ; (जं १) ।

तुअर अक [**त्वर्**] त्वरा करना । तुअर ; (गा ६०६) ।

तुंग वि [**तुङ्ग**] १ ऊँचा, उच्च ; (गा २५६ ; औप) । २ पुं. छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

तुंगार पुं [**तुङ्गार**] अग्नि कोण का पवन ; (आवम) ।

तुंगिम पुंस्त्री [**तुङ्गिमन्**] ऊँचाई, उच्चत्व ; (सुपा १२४; वज्जा १५० ; कप्पू ; सण) ।

तुंगिय पुं [**तुङ्गिक**] १ ग्राम-विशेष ; (आवम) । २ पर्वत-विशेष, "तुंगे तुंगियसिहरे गंतुं तिव्वं तवं तवइ" (कुप्र १०२) । ३ पुंस्त्री. गोत्र-विशेष में उत्पन्न ; "जसभद्दं तुंगियं चेव" (णंदि) ।

तुंगिया स्त्री [**तुङ्गिका**] नगरी-विशेष ; (भग) ।

तुंगियायण न [**तुङ्गिकायन**] एक गोत्र का नाम ; (कप्प)।

तुंगी स्त्री [**दे**] १ रात्रि, रात ; (दे ५, १४) । २ आयुध-विशेष ; "असिपरसुकुंततुंगीसंघट्ट—" (काल) ।

तुंगीय पुं [**तुङ्गीय**] पर्वत-विशेष ; (सुर १, २००) ।

तुंड स्त्रीन [**तुण्ड**] १ मुख, मुँह ; (गा ४०२) । २ अग्र-भाग ; (निचू १) । स्त्री—°**डी** ; "किं कोवि जीवियत्थी कंडुयइ अहिस्स तुंडीए" (सुपा ३२२) ।

तुंडीर न [**दे**] मधुर बिम्बी-फल ; (दे ५, १४) ।

तुंडूअ पुं [**दे**] जीर्ण घट, पुराना घड़ा ; (दे ५, १५) ।

तुंतुक्खुडिअ वि [**दे**] त्वरा-युक्त ; (दे ५, १६) ।

तुंद न [**तुन्द**] उदर, पेट ; (दे ५, १४ ; उप ७२८टी) ।

तुंदिल } वि [**तुन्दिल**] बड़ा पेट वाला ; (कप्पू ; पि **तुंदिल्ल** } ५९५ ; उत्त ७) ।

तुंब न [**तुम्ब**] तुम्बी, अलाबु ; (पउम २६, ३४ ; ओघ ३८; कुप्र १३६)। २ गाड़ी की नाभि; "न हि तुंबम्मि विणट्ठे अरया साहारया हुंति" (आवम) । ३ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन ; (सम) । °**वण** न [°**वन**] संनिवेश-विशेष, एक गाँव का नाम ; (सार्ध २५) । °**वीण** वि [°**वीण**] वीणा-विशेष का बजाने वाला ; (जीव ३) । °**वीणिय** वि [°**वीणिक**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (औप ; पण्ह २, ४ ; णाया १, १) ।

तुंबरु देखो **तुंबुरु** ; (इक) ।

तुंबा स्त्री [**तुम्बा**] लोकपाल देवों की एक अभ्यन्तर परिषद्; (ठा ३, २) ।

तुंबिणी स्त्री [**तुम्बिनी**] वल्ली-विशेष ; (हे ४, ४२७ ; राज) ।

तुंबिल्ली स्त्री [**दे**] १ मधु-पटल, मधपुड़ा ; २ उदूखल, ऊखल; (दे ५, २३) ।

तुंबी स्त्री [**तुम्बी**] १ तुम्बी, अलाबू ; (दे ५, १४) । २ जैन साधुओं का एक पात्र, तरपनी ; (सुपा ६४१) ।

तुंबुरु पुं [**तुम्बुरु**] १ वृक्ष-विशेष, टिंबरू का पेड़ ; (दे ४, ३) । २ गन्धर्व देवों की एक जाति ; (पराण १ ; सुपा २६४) । ३ भगवान् सुमतिनाथ का शासनाधिष्ठायक देव ; (संति ७) । ४ शक्रेन्द्र के गन्धर्व-सैन्य का अधिपति देव-विशेष ; (ठा ७) ।

तुक्खार पुं [**दे**] एक उत्तम जाति का अश्व ; "अन्नं च तत्थ पत्ता तुक्खारतुरंगमा बहुविहीया" (सुर ११, ४६ ; भवि) । देखो **तोक्खार** ।

तुच्छ वि [**दे**] अवशुष्क, सूख गया हुआ ; (दे ५, १४)।

तुच्छ वि [**तुच्छ**] १ हलका, जघन्य, निकृष्ट, हीन ; (णाया १, ५ ; प्रासू ६६) । २ अल्प, थोड़ा ; (भग ६, ३३) । ३ शून्य, रिक्त ; (आचा) । ४ असार, निःसार ; (भग १८, ३) । ५ अपूर्ण ; (ठा ४, ४) ।

तुच्छइअ } वि [**दे**] रञ्जित, अनुराग-प्राप्त ; (दे ५, १५)। **तुच्छय** }

तुच्छिम पुंस्त्री [**तुच्छत्व**] तुच्छता ; (वज्जा १५६) ।

तुज्ज न [**तूर्य**] वाद्य, बाजा ; (सुज्ज १०) ।

तुट्ट अक [**त्रुट्, तुड्**] १ टूटना, छिन्न होना, खण्डित होना । २ खूटना, तुट्टइ ; (महा ; सण ; हे ४, ११६) । "अणवरयं देंतस्सवि तुट्टंति न सायरे रयणाइं" (वज्जा १५६) । वकृ—**तुट्टंत**; (सण) ।

तुट्ट वि [**त्रुटित**] टूटा हुआ, छिन्न, खण्डित ; (स ७१८; सूक्त १७ ; दे १, ६२) ।

तुट्टण न [**त्रोटन**] विच्छेद, पृथक्करण ; (सूअ १, १, १; वज्जा ११६) ।

तुट्टिअ वि [**त्रुटित, तुडित**] छिन्न, खण्डित ; (कुमा) ।

तुट्टिर वि [**त्रुटितृ**] टूटने वाला ; (कुमा ; सण) ।

तुट्ठ वि [**तुष्ट**] तोष-प्राप्त, संतुष्ट ; (सुर ३, ४१ ; उवा) ।

तुट्ठि स्त्री [**तुष्टि**]१ खुशी, आनन्द, संतोष; (स २००; सुर ३, २५; सुपा २४६; निर १,१)। २ कृपा, महरबानी; (कुप्र १)।

तुड अक [**तुड्**] टूटना, अलग होना । तुडइ; (हे ४,११६)।

तुडि स्त्री [**त्रुटि**] १ न्यूनता, कमी ; २ दोष, दूषण ; (हे ४, ३६०) । ३ संशय, संदेह ; (सुर ३, १६१) ।

तुडिअ वि [**त्रुटित**] टूटा हुआ, विच्छिन्न; (अच्चु ३३ ; दे १,१५६; सुपा ८५) ।

तुडिअ न [**दे.त्रुटित**] १ वाद्य, वादित्र, बाजा ; (औप ; राय ; जं ३; पण्ह २, ५) ।२ बाहु-रक्षक, हाथ का आभरण-विशेष ; (औप ; ठा ८ ; पउम ८२,१०४; राय) । ३ संख्या-विशेष, 'तुडिअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २,४) । ४ साँधा, फटे हुए वस्त्र आदि में लगायी जाती पट्टी ; (निचू २) ।

तुडिअंग न [**दे.त्रुटिताङ्ग**] १ संख्या-विशेष, 'पूर्व' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २, ४) । २ पुं. वाद्य देने वाला कल्प-वृक्ष ; (ठा१० ; सम १७ ; पउम १०२, १२३) ।

तुडिआ स्त्री [**तुडिता**] लोकपाल देवों के अग्र-महिषिओं की मध्यम परिषत् ; (ठा ३, २) ।

तुडिआ स्त्री [**दे.तुटिका**] बाहु-रक्षिका, हाथ का आभरण-विशेष ; (पण्ह १, ४ ; णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

तुणय पुं [**दे**] वाद्य-विशेष ; (दे ५, १६)।

तुण्णग देखो **तुण्णाग** ; (राज)।

तुण्णण न [**तुन्नन**] फटे हुए वस्त्र का सन्धान ; (उप पृ ४१३)।

तुण्णाग } **तुण्णाय** } पुं [**तुन्नवाय**] वस्त्र को साँधने वाला, रफू करने वाला ; (णंदि ; उप पृ२१० ; महा)।

तुण्णिय वि [**तुन्नित**] रफू किया हुआ, साँधा हुआ; (बृह१)।

तुण्हि अ [**तूष्णीम्**] मौन, चुपकी ; (भवि)।

तुण्हि पुं [**दे**] सूकर, सूअर ; (दे ५, १४)।

तुण्हिअ } **तुण्हिक्क** } वि [**तूष्णीक**] मौन रहा हुआ ; (प्राप्र ; गा ३५४ ; सुर ४, १४८)।

तुण्हिक्क वि [**दे**] मृदु-निश्चल ; (दे ५, १५)।

तुण्हीअ देखो **तुण्हिअ** ; (स्वप्न ४२)।

तुत्त देखो **तोत्त** ; (सुपा २३७)।

तुद देखो **तुअ** । तुदए ; (षड्)। वकृ—**तुदं** ; (विसे १४७०)।

तुप्प पुं [**दे**] १ कौतुक ; २ विवाह, शादी ; ३ सर्षप, सरसों, धान्य-विशेष; ४ कुतुप, घी आदि भरने का चर्म-पात्र ; (दे५, २२)। ५ वि. म्रक्षित, चुपड़ा हुआ, घी आदि से लिप्त; (दे५, २२ ; कप्प ; गा २२ ; २८६ ; हे १, २००)। ६ स्निग्ध, स्नेह-युक्त ; (दे ५, २२ ; ओघ ३०७ भा)। ७ न. घृत, घी ; (से १५, ३८ ; सुपा६३४ ; कुमा)।

तुप्पइअ } **तुप्पलिअ** } **तुप्पविअ** } वि [**दे**] घी से लिप्त ; (गा ५२० अ)।

तुमंतुम पुं [**दे**] क्रोध-कृत मनो-विकार विशेष ; (ठा ८—पत्र ४४१)।

तुमुल पुं [**तुमुल**] १ लोम-हर्षण युद्ध, भयानक संग्राम ; (गउड)। २ न. शोरगुल ; (पाअ)।

तुम्ह स [**युष्मत्**] तुम, आप ; (हे१, २४६)।

तुम्हकेर वि [**त्वदीय**] तुम्हारा ; (कुमा)।

तुम्हकेर वि [**युष्मदीय**] आपका, तुम्हारा ; (हे १,२४६ ; २, १४७)।

तुम्हार (अप) ऊपर देखो ; (भवि)।

तुम्हारिस वि [**युष्मादृश**] आप के जैसा, तुम्हारे जैसा ; (हे १, १४२ ; गउड ; महा)।

तुम्हेच्चय वि [**यौष्माक**] आपका, तुम्हारा; (हे २,१४६; कुमा ; षड्)।

तुयट्ट अक [**त्वग्+वृत्**] पार्श्व को घुमाना, करवट फिराना । तुयट्टइ ; (कप्प ; भग)। तुयट्टेज्ज, तुयट्टेज्जा ; (भग ; औप)। हेकृ—**तुयट्टित्तए** ; (आचा)। कृ—**तुयट्टियव्व** ; (णाया १, १ ; भग; औप)।

तुयट्टण न [**त्वग्वर्तन**] पार्श्व-परिवर्तन, करवट फिराना; (ओघ १५२ भा ; औप)।

तुयट्टावण न [**त्वग्वर्तन**] करवट बदलवाना । (आचा)।

तुयावइत्ता देखो **तुअ** ।

तुर अक [**त्वर्**] त्वरा करना, शीघ्रता करना । वकृ—**तुरंत, तुरंत, तुरमाण, तुरेमाण**; (हे ४,१७२; प्रासू ५८; षड्)।

तुरंग पुं [**तुरङ्ग**] अश्व, घोड़ा ; (कुमा ; प्रासू ११७)। २ रामचन्द्र का एक सुभट ; (पउम ५६, ३८)।

तुरंगम पुं [**तुरङ्गम**] अश्व, घोड़ा ; (पाअ ; पिंग)।

तुरंगिआ स्त्री [**तुरङ्गिका**] घोड़ी ; (पाअ)।

तुरंत देखो **तुर** ।

तुरक्क पुं [**दे. तुरुष्क**] १ देश-विशेष, तुर्किस्तान ; २ अनार्य जाति-विशेष, तुर्क ; (ती १४)।

तुरग देखो **तुरय** ; (भग११,११ ; राय)। °**मुह** पुं [°**मुख**] अनार्य देश-विशेष ; (सूअ २,१)। °**मेढ़ग** पुं [°**मेढ्रक**] अनार्य देश-विशेष ; (सूअ १, ५, १)।

तुरमाण देखो **तुर** ।

तुरय पुं [**तुरग**] १ अश्व, घोड़ा ; (पण्ह १, ४)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**देहपिंजरण** न [°**देहापञ्जरण**] अश्व को सिंगारना ; (पाअ)। देखो **तुरग** ।

तुर } **तुरा** } स्त्री [**त्वरा**] शीघ्रता, जल्दी ; (दे ५, १६)। °**वंत** वि [°**वत्**] त्वरा-युक्त ; त्वरा वाला ; (से ४, ३०)।

तुरिअ वि [**त्वरित**] १ त्वरा-युक्त, उतावला ; (पाअ ; हे ४,१७२ ; औप ; प्राप्र)। २ क्रिवि. शीघ्र, जल्दी ; (सुपा ४६४ ; भवि)। °**गइ** वि [°**गति**] १ शीघ्र गति वाला। २ पुं. अमितगति-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)।

तुरिअ वि [**तुर्य**] चौथा, चतुर्थ ; (सुर ४, २५० ; कम्म ४, ६६ ; सुपा ४६४)। °**निद्दा** स्त्री [°**निद्रा**] मरण-दशा ; (उप पृ १४३)।

तुरिअ न [**तूर्य**] वाद्य, वादित्र ; "तुरियाणं संनिनाएण, दिव्वेणं गगणं फुसे" (उत्त २२, १२)।

तुरिमिणी देखो **तुरुमणी** ; (राज)।

तुरी स्त्री [**दे**] १ पीन, पुष्ट; २ शय्या का उपकरण; (दे५,२२)।

तुरु न [दे] वाद्य-विशेष ; (विक ८७) ।

तुरुक्क न [**तुरुष्क**] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप करने में काम आता है, सिल्हक ; (सम १३७ ; णाया १, १ ; पउम २, ११ ; औप) ।

तुरुक्की स्त्री [**तुरुष्की**] लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी) ।

तुरुमणी स्त्री [दे] नगरी-विशेष (भत्त ६२) ।

तुरंत } देखो **तुर** ।
तुरेमाण }

तुल सक [**तोलय्**] १ तौलना । २ उठाना । ३ ठीक २ निश्चय करना । तुलइ, तुलेइ ; (हे ४, २५ ; उव ; वज्जा १५८)। वकृ—**तुलंत** ; (पिंग) । संकृ—**तुलेऊण** ; (बृह १) । कृ—**तुलेअव्व** ; (से ६, २६) ।

तुल° देखो **तुला** ; (सुपा ३६) ।

तुलंगा देखो **तुलग्गा** ; (अच्चु ८०) ।

तुलग्ग न [दे] काकतालीय न्याय ; (दे ५, १५ ; से ४, २७) ।

तुलग्गा स्त्री [दे] यदृच्छा, स्वैरिता, स्वेच्छा ; (विक ३५)।

तुलण न [**तुलन**] तौलना, तोलन ; (कप्पू ; वज्जा १५७)।

तुलणा स्त्री [**तुलना**] तौलना, तोलन ; (उप पृ २७४ ; स ६६२) ।

तुलय वि [**तोलक**] तौलने वाला ; (सुपा १६७) ।

तुलसिआ स्त्री [**तुलसिका**] नीचे देखो ; (कुमा) ।

तुलसी स्त्री [दे.**तुलसी**] लता-विशेष, तुलसी ; (दे ५, १४ ; पराण १ ; ठा ८ ; पाअ) ।

तुला स्त्री [**तुला**] १ राशि-विशेष ; (सुपा ३६) । २ तराजू, तौलने का साधन ; (सुपा ३६० ; गा १६१) । ३ उपमा, सादृश्य ; (सूअ २, २) । °**सम** वि [°**सम**] राग-द्वेष से रहित, मध्यस्थ ; (बृह ६) ।

तुलिअ वि [**तुलित**] १ उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ ; (से ६, २०) । २ तौला हुआ; (पाअ) । ३ गुना हुआ; (राज) ।

तुलेअव्व देखो **तुल** ।

तुल्ल वि [**तुल्य**] समान, सरीखा ; (भग ; प्रासू १२ ; १४६) ।

तुवर अक [**त्वर्**] त्वरा करना, शीघ्रता करना । तुवरइ ; हे ४,१७०)। वकृ—**तुवरंत**; (हे ४,१७०) । प्रयो. वकृ—**तुवराअंत** ; (नाट—मालती ५०) ।

तुवर पुंन [**तुवर**] १ रस-विशेष, कषाय रस ; (दे ५, १६) । २ वि. कषाय रस वाला, कसैला ; (से ८, ५५) ।

तुवरा देखो **तुरा** ; (नाट—महावीर २७) ।

तुवरी स्त्री [**तुवरी**] अन्न-विशेष, अरहर ; (श्रा १८ ; गा ३५८) ।

तुस पुं [**तुष**] १ कोद्रव आदि तुच्छ धान्य ; (ठा ८) । २ धान्य का छिलका, भूसी ; (दे २, ३६) ।

तुसली स्त्री [दे] धान्य-विशेष ; " तं तत्थवि तो तुसलिं वावइ सो किंचिवि वरबीयं " (सुपा ५४५), " देवगिहे जंतीए तुज्झ तुसली अणुरणाया " (सुपा १३ टि) ।

तुसार न [**तुषार**] हिम, बर्फ ; (पाअ) । °**कर** पुं [°**कर**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (सुपा ३३) ।

तुसिणिय } वि [**तुष्णीक**] मौनी, चुप, वचन-रहित ;
तुसिणीय } (णाया १, १—पत्र २८ ; ठा ३, ३) ।

तुसिय पुं [**तुषित**] लोकान्तिक देवों की एक जाति ; (णाया १, ८ ; सम ८५) ।

तुसेअजंभ न [दे] दारु, लकड़ी, काष्ठ ; (दे ५, १६) ।

तुसोदग } न [**तुषोदक**] व्रीहि आदि का धौन-जल ;
तुसोदय } (राज ; कप्प) ।

तुस्स देखो **तूस**=तुष् । तुस्सइ ; (विसे ६३२) ।

तुह° स [**त्वत्°**] तुम । °**तणय** वि [°**संबन्धिन्**]तुम्हारा, तुमसे संबन्ध रखने वाला; (सुपा ५५३) ।

तुहार (अप) वि [**त्वदीय**] तुम्हारा ; (हे ४, ४३४) ।

तुहिण न [**तुहिन**] हिम, तुषार ; (पाअ) । °**इरि** पुं [°**गिरि**] हिमाचल पर्वत ; (गउड) । °**कर** पुं [°**कर**] चन्द्रमा ; (कप्पू) । °**गिरि** देखो °**इरि** ; (सुपा ६५८)। °**ालय** पुं [°**ालय**] हिमालय पर्वत ; (सुपा ८८) ।

तूअ पुं [दे] ईख का काम करने वाला ; (दे ५, १६) ।

तूण पुंन [**तूण**] इषुधि, भाथा, तरकस ; (हे १, १२५ ; षड् ; कुमा) ।

तूणइल्ल पुं [**तूणावत्**] तूणा-नामक वाद्य बजाने वाला ; (परह २, ४ ; औप ; कप्प) ।

तूणा } स्त्री [**तूणा**] १ वाद्य-विशेष ; (राय ; अणु) । २
तूणि° } इषुधि, भाथा ; (जं ३ ; पि १२७) ।

तूर देखो **तुरव** । तूरइ ; (हे ४, १७१ ; षड्) । वकृ—**तूरंत, तूरेंत, तूरमाण, तूरेमाण**; (हे ४, १७१ ; सुपा २६१ ; षड्) ।

तूर पुंन [**तूर्य**] वाद्य, बाजा ; (हे २, ६३ ; षड् ; प्राप्र)। °**वइ** पुं [°**पति**] नटों का मुखिया ; (बृह १) ।

तूरंत } देखो **तूर**=तुरव।
तूरमाण }
तूरविअ वि [**त्वरित**] जिसको शीघ्रता कराई गई हो वह ; (से १२, ८३)।
तूरिय पुं [**तौर्यिक**] वाद्य बजाने वाला ; (स ७०५)।
तूरी स्त्री [**दे**] एक प्रकार की मिट्टी ; (जी ४)।
तूरेंत } देखो **तूर**=तुरव।
तूरेमाण }
तूल न [**तूल**] रुई, रुआ, बीज-रहित कपास ; (औप ; पाअ ; भवि)।
तूलिअ न. नीचे देखो। "नणु विखासिज्जइ महग्घियं तूलियं गंडुयमाइयं" (महा)।
तूलिआ स्त्री [**तूलिका**] १ रुई से भरा मोटा बिछौना, गद्दा ; (दे ५, २२)। २ तसवीर बनाने की कलम ; (णाया १, ८)।
तूलिणी स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष, शाल्मली का पेड़ ; (दे ५, १७)।
तूलिल्ल वि [**तूलिकावत्**] तसवीर बनाने की कलम वाला, कूर्चिका-युक्त ; (गउड)।
तूली स्त्री [**तूली**] देखो **तूलिआ** ; (सुर २, ८२ ; पउम ३५, २४ ; सुपा २६२)।
तूवर देखो **तुवर**; (विपा १, १—पत्र १६)।
तूस अक [**तुष्**] खुश होना। तूसइ, तूसए ; (हे ४, २३६ ; संक्षि ३६; षड्)। कृ—**तूसियव्व** ; (पण्ह २,५)।
तूह देखो **तित्थ** ; (हे १,१०४; २,७२; कुमा; दे ५,१६)।
तूहण पुं [**दे**] पुरुष, आदमी ; (दे ५, १७)।
ते° देखो **ति**=त्रि। **°आलीस** स्त्रीन [**°चत्वारिंशत्**] १ संख्या-विशेष, चालीस और तीन की संख्या ; २ तेआलीस की संख्या वाला ; (सम ६८)। **°आलीसइम** वि [**°चत्वारिंश**] तेआलीसवाँ ; (पउम ४३, ४६)। **°आसी** स्त्री [**°अशीति**] १ संख्या-विशेष, अस्सी और तीन ; २ तिरासी की संख्या वाला ; (पि ४४६)। **°आसीइम** वि [**°अशीतितम**] तिरासीवाँ ; (सम ८६ ; पउम ८३, १४)। **°इंदिय** पुं [**°इन्द्रिय**] स्पर्श, जीभ और नाक इन तीन इन्द्रिय वाला प्राणी ; (ठा २, ४ ; जी १७)। **°ओय** पुं [**°ओजस्**] विषम राशि-विशेष ; (ठा ४, ३)। **°णउइ** स्त्री [**°नवति**] तिरानवे, नब्बे और तीन, ६३ ; (सम ६७)। **°णउय** वि [**°नवत**] तिरानवाँ, ६३ वाँ; (कप्प ; पउम ६३, ४०)। **°णवइ** देखो **°णउइ** ; (सुपा ६५४)। **°तीस**, **°त्तीस** स्त्रीन [**त्रयस्त्रिंशत्**] तेतीस, तीस और तीन; (भग ; सम ५८)। स्त्री—**°सा** ; (हे १, १६५ ; पि ४४७)। **°त्तीसइम** वि [**त्रयस्त्रिंश**] तेतीसवाँ ; (पउम ३३, १४८)। **°वट्ठि** स्त्री [**°षष्टि**] तिरसठ, साठ और तीन ; (पि २६५)। **°वण्ण**, **°वन्न** स्त्रीन [**°पञ्चाशत्**] त्रेपन, पचास और तीन ; (हे २, १७४ ; षड् ; सम ७२)। **°वत्तरि** स्त्री [**°सप्तति**] तिहत्तर ; (पि २६५)। **°वीस** स्त्रीन [**त्रयोविंशति**] तेईस, बीस और तीन; (सम ४२ ; हे १, १६५)। **°वीस**, **°वीसइम** वि [**त्रयोविंश**] तेईसवाँ ; (पउम २०, ८२ ; २३, २६ ; ठा ६)। **°संभ** न [**°सन्ध्य**] प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल का समय ; (पउम ६६, ११)। **°सट्ठि** स्त्री [**°षष्टि**] देखो **°वट्ठि** ; (सम ७७)। **°सीइ** स्त्री [**°अशीति**] तिरासी, अस्सी और तीन ; (सम ८६ ; कप्प)। **°सीइम** वि [**°अशीत**] तिरासीवाँ ; (कप्प)।
तेअ सक [**तेजय्**] तेज करना, पैनाना, तीक्ष्ण करना। तेअइ ; (षड्)।
तेअ देखो **तइअ**=तृतीय ; (रंभा)।
तेअ पुं [**तेजस्**] १ कान्ति, दीप्ति, प्रकाश, प्रभा ; (उवा ; भग ; कुमा ; ठा ८)। २ ताप, अभिताप ; (कुमा ; सूअ १, ५,१)। ३ प्रताप ; ४ माहात्म्य, प्रभाव; ५ बल, पराक्रम; (कुमा)। **°मंत** वि [**°विन्**] तेज वाला, प्रभा-युक्त; (पण्ह २, ४)। **°वीरिय** पुं [**°वीर्य**] भरत चक्रवर्ती के प्रपौत्र का पौत्र, जिसको आदर्श-भवन में केवलज्ञान हुआ था; (ठा ८)।
तेअ न [**स्तेय**] चोरी ; (भग २ ७)।
तेअ देखो **तेअय** ; (भग)।
तेअंसि वि [**तेजस्विन्**] तेज-वाला, तेज-युक्त ; (औप ; रयण ४ ; भग ; महा ; सम १५२ ; पउम १०२, १४१)।
तेअग देखो **तेअय** ; (जीव १)।
तेअण न [**तेजन**] १ तेज करना, पैनाना ; २ उत्तेजन ; (हे ४, १०४)। ३ वि. उत्तेजित करने वाला ; (कुमा)।
तेअय न [**तैजस**] शरीर-सहचारी सूक्ष्म शरीर-विशेष ; (ठा २, १ ; ५, १ ; भग)।
तेअलि पुं [**तेतलिन्**] १ मनुष्य जाति-विशेष ; (जं १ ; इक)। २ एक मन्त्री के पिता का नाम ; (णाया १, १४)। **°पुत्त** पुं [**°पुत्र**] राजा कनकरथ का एक मन्त्री ; (णाया

१, १४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष ; (णाया १, १४)। °सुय पुं [°सुत] देखो °पुत्त ; (राज)। देखो तेतलि।

तेअव अक [प्र+दीप्] १ दीपना, चमकना। २ जलना। तेअवइ ; (हे ४, १५२ ; षड्)।

तेअविअ वि [प्रदीप्त] जला हुआ ; (कुमा)। २ चमका हुआ, उद्दीप्त ; (पाअ)।

तेअविअ वि [तेजित] तेज किया हुआ ; (दे ८,१३)।

तेअस्सि पुं [तेजस्विन्] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ५)।

तेआ स्त्री [तेजस्] त्रयोदशी तिथि ; (जो ४ ; जं ७)।

तेआ स्त्री [त्रेता] युग-विशेष, दूसरा युग ; "तेआजुगे य दासरही रामो सीयालक्खणसंजुओवि" (ती २६)।

तेआ° देखो तेअय ; (सम १४२ ; पि ६४)।

तेआलि पुं [दे] वृक्ष-विशेष ; (पगण १, १—पत्र ३४)।

तेइच्छ न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार ; (दस३)।

तेइच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज ; (आचा ; णाया १, १३)।

तेइच्छिय देखो तेगिच्छिय ; (विपा १, १)।

तेइच्छी स्त्री [चिकित्सा, चैकित्सी] प्रतीकार, इलाज ; (कप्प)।

तेइल्ल देखो तेअंसि ; (सुर ७, २१७ ; सुपा ३३)।

तेउ पुं [तेजस्] १ आग, अग्नि ; (भग ; दं १३)। २ लेश्या-विशेष, तेजो-लेश्या ; (भग ; कम्म ४, ५०)। ३ अग्निशिख-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा४, १)। ४ताप, अभिताप ; (सूअ १, १, १)। ५ प्रकाश, , उद्द्योत ; (सूअ२, १)। °आय देखो °काय; (भग)। °कंत पुं [°कान्त] लोकपाल देव-विशेष ; (ठा४, १)। °काइय पुं [°कायिक] अग्नि का जीव ; (ठा३, १)। °काय पुं [°काय] अग्नि का जीव ; (पि३५५)। °क्काइय देखो °काइय ; (पगण १ ; जीव १)। °प्पभ पुं [°प्रभ] अग्निशिख-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। °प्फास पुं [°स्पर्श] उष्ण स्पर्श ; (आचा)। °लेस वि [°लेश्य] तेजो-लेश्या वाला; (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] तप-विशेष के प्रभाव से होने वाली शक्ति-विशेष से उत्पन्न होती तेज की ज्वाला ; (ठा ३, १ ; सम ११)। °लेस्स देखो °लेस; (पगण १७)। °लेस्सा देखो °लेसा; (ठा ३,३)। °सिह पुं [°शिख] एक लोकपाल; (ठा४, १)। °सोय न [°शौच] भस्म आदि से किया जाता शौच ; (ठा ५, ३)।

तेउ देखो तेअय ; (पव २३१)।

तेंडुअ न [दे] वृक्ष विशेष, टींबरू का पेड़ ; (दे ५, १७)।

तेंदु, **तेंदुअ**, **तेंदुग** पुं [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदु का पेड़ ; (पगण १ ; ठा ८; पउम ४२, ७)। २ गेंद, कन्दुक ; (पउम १५, १३)।

तेंदुसय पुं [दे] कन्दुक, गेंद ; (णाया१, ८)।

तेंबरु पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (जीव १)।

तेगिच्छ देखो तेइच्छ ; (सुर १२, २११)।

तेगिच्छग वि [चिकित्सक] १ चिचित्सा करने वाला ; २ पुं. वैद्य, हकीम ; (उप ५६४)।

तेगिच्छा देखो तेइच्छा ; (सुर १२, २११)।

तेगिच्छायण देखो तिंगिच्छायण ; (राज)।

तेगिच्छि देखो तिगिंछि ; (राज)।

तेगिच्छिय वि [चैकित्सिक] १ चिकित्सा करने वाला ; २ पुं, वैद्य, हकीम ; ३ न. चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार-करण। °साला स्त्री [°शाला] दवाखाना, चिकित्सालय ; (णाया १, १३ – पत्र १७६)।

तेजंसि देखो तेअंसि ; (पि ७४)।

तेजपाल पुं [तेजपाल] गुजरात के राजा वीरधवल का एक यशस्वी मंत्री; (ती २)।

तेजलपुर न [तेजलपुर] गिरनार पर्वत के पास, मंत्री तेजपाल का बसाया हुआ एक नगर; (ती २)।

तेजस्सि देखो तेअंसि ; (वव १)।

तेज्ज (अप) देखो चय=त्यज्। तेज्जइ ; (पिंग)। संकृ— तेज्जिअ ; (पिंग)।

तेज्जिअ (अप) वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ ; (पिंग)।

तेड्ड पुं [दे] १ शलभ, अन्न-नाशक कीट, टिड्ड ; २ पिशाच, राक्षस ; (दे ५, २३)।

तेण अ [तेन] १ लक्षण-सूचक अव्यय, "भमररुअं तेण कमलवणं" (हे २, १८३ ; कुमा)। २ उस तरफ ;(भग)।

तेण, **तेणग**, **णयते** पुं [स्तेन] चोर, तस्कर ; (ओघ ११; कस ; गच्छ ३ ; ओघ ४०२)। °प्पओग पुं [°प्रयोग] १ चोर को चोरी करने के लिए प्रेरणा करना ; २ चोरी के साधनों का दान या विक्रय ; (धर्म २)।

तेणिअ, **तेणिक्क** न [स्तैन्य] चोरी, अदत्त वस्तु का ग्रहण ; (श्रा १४ ; ओघ ५६६ ; पगह १, ३)।

तेणिस वि [**तैनिश**] तिनिशवृक्ष-संबन्धी, बेंत का; (भग ७, ६)।
तेण्ण न [**स्तैन्य**] चोरी, पर-द्रव्य का अपहरण ; (निचू १)।
तेण्हाइअ वि [**तृष्णित**] तृष्णा-युक्त, प्यासा ; (से १३, ३६)।
तेतलि पुं [**तेतलिन्**] १ वरुणेन्द्र के गन्धर्व-सेना का नायक; (इक)। २ देखो **तेअलि** ; (णाया १, १४—पत्र १६०)।
तेतिल देखो **तीइल्ल** ; (जं ७)।
तेत्तिअ वि [**तावत्**] उतना ; (प्राप्र ; गउड ; गा ७१ ; कुमा)।
तेत्तिर देखो **तित्तिर** ; (जीव १)।
तेत्तिल वि [**तावत्**] उतना ; (हे २, १५७ ; कुमा)।
तेत्तुल } (अप) ऊपर देखो ; (हे ४, ४०७ ; कुमा ; हे
तेत्रुल्ल } ४, ४३५ टि)।
तेत्थु (अप) देखो **तत्थ**=तत्र ; (हे ४, ४०४ ; कुमा)।
तेद्दह देखो **तेत्तिल** ; (हे २, १५७ ; प्राप्र ; षड् ; कुमा)।
तेन्न देखो **तेण्ण** ; (कस)।
तेम (अप) देखो **तह**=तथा ; (पिंग)।
तेमासिअ वि [**त्रैमासिक**] १ तीन मास में होने वाला ; (भग)। २ तीन मास-संबन्धी ; (सुर ६, २११ ; १४, २२८)।
तेम्व देखो **तेम** ; (हे ४, ४१८)।
तेर } त्रि.ब. [**त्रयोदशन्**] तेरह, दस और तीन ; (श्रा
तेरस } ४४ ; दं २१ ; कम्म २, २६ ; ३३)।
तेरसम वि [**त्रयोदश**] तेरहवाँ ; (सम २५ ; णाया १, १—पत्र ७२)।
तेरसया स्त्री [**दे**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।
तेरसी स्त्री [**त्रयोदशी**] १ तेरहवीं । २ तिथि-विशेष, तेरस ; (सम २६ ; सुर ३, १०५)।
तेरसुत्तरसय वि [**त्रयोदशोत्तरशततम**] एक सौ तेरहवाँ, ११३ वाँ ; (पउम ११३, ७२)।
तेरह देखो **तेरस** ; (हे १, १६५ ; प्राप्र)।
तेरासिअ वि [**त्रैराशिक**] १ मत-विशेष का अनुयायी, त्रैराशिक मत—जीव, अजीव और नोजीव इन तीन राशिओं को मानने वाला; (औप; ठा ७)। २ न. मत-विशेष; (सम ४०; विसे २४५१ ; ठा ७)।
तेरिच्छ देखो **तिरिच्छ**=तिरश्चीन। "दिव्वं व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहिअएणं" (आप २१)।
तेरिच्छ न [**तिर्यक्त्व**] तिर्यचपन, पशु-पक्षिपन ; (उप १०३१ टी)।
तेरिच्छिअ वि [**तैरश्चिक**] तिर्यक्-संबन्धी ; (ओघ २६६ ; भग)।
तेल न [**तैल**] १ गोत्र विशेष, जो माराडव्य गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७)। २ तिल का विकार, तेल ; (संचि १७)।
तेलंग पुं.ब. [**तैलङ्ग**] १ देश-विशेष; २ पुंस्त्री. देश-विशेष का निवासी मनुष्य ; (पिंग)।
तेलाडी स्त्री [**तैलाटी**] कीट-विशेष, गंधोली ; (दे ७, ८४)।
तेलुक्क } न [**त्रैलोक्य**] तीन जगत—स्वर्ग, मर्त्य और
तेलोअ } पाताल लोक ; (प्रासू ६७ ; प्राप्र ; णाया १,
तेलोक्क } ४ ; पउम ८, ७६ ; हे १, १४८ ; २, ६७ ; षड् ; संचि १७)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] सर्वज्ञ, सर्वदर्शी; (ओघ ५६६)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] तीनों जगत् का स्वामी, परमेश्वर ; (षड्)। °**मंडण** न [°**मण्डन**] १ तीनों जगत् का भूषण। २ पुं. रावण का पट्ट-हस्ती ; (पउम ८०, ६०)।
तेल्ल न [**तैल**] तेल, तिल का विकार, स्निग्ध द्रव्य-विशेष ; (हे २, ६८ ; अणु ; पव ४)। °**केला** स्त्री [°**केला**] मिट्टी का भाजन-विशेष; (राज)। °**पल्ल** न [°**पल्य**] तैल रखने का मिट्टी का भाजन-विशेष ; (दसा १०)। °**पाइया** स्त्री [°**पायिका**] क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (आवम)।
तेल्लग न [**तैलक**] सुरा-विशेष ; (जीव ३)।
तेल्लिअ पुं [**तैलिक**] तेल बेचने वाला ; (वव ६)।
तेल्लोअ } देखो **तेलुक्क** ; (पि १६६ ; प्राप्र)।
तेल्लोक्क }
तेवँ } (अप) देखो **तह**=तथा ; (हे ४, ३६७ ; कुमा)।
तेवँइ }
तेवट्ठ वि [**त्रैषष्ट**] तिरसठ की संख्या वाला, जिसमें तिरसठ अधिक हो ऐसी संख्या ; "तिन्नि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं" (पि २६५)।
तेवड (अप) वि [**तावत्**] उतना ; (हे ४, ४०७; कुमा)।
तेह (अप) वि [**तादृश्**] उसके जैसा, वैसा ; (हे ४, ४०२; षड्)।
तेहिं (अप) अ. वास्ते, लिए; (हे ४, ४२५; कुमा) ।
तो देखो **तओ** ; (आचा ; कुमा)।
तो अ [**तदा**] तब, उस समय ; (कुमा)।

तोअय पुं [**दे**] चातक पक्षी ; (दे ५, १८) ।
तोंड देखो **तुंड** ; (हे १, ११६ ; प्राप्र) ।
तोंतडि स्त्री [**दे**] करम्ब, दही-भात की बनी हुई एक खाद्य वस्तु ; (दे ५, ४) ।
तोक्कय वि [**दे**] बिना ही कारण तत्पर होने वाला ; (दे ५, १८) ।
तोक्खार देखो **तुक्खार** ; "खरखुरखयखोणीयलअसंखतोक्खारलक्खजुओ" (सुर १२, ६१) ।
तोटअ न [**त्रोटक**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
तोड सक [**तुड्**] १ तोड़ना, भेदन करना । २ अक टूटना । तोडइ ; (हे४, ११६) । वकृ—**तोडंत** ; (भवि) । संकृ—**तोडिउं** ; (भवि) , **तोडित्ता** ; (ती ७) ।
तोड पुं [**त्रोट**] त्रुटि ; (उप पृ १८) ।
तोडण वि [**दे**] असहन, असहिष्णु ; (दे५, १८) ।
तोडण न [**तोदन**] व्यथा, पीड़ा-करण ; (राज) ।
तोडहिआ स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष ; (आचा २, ११) ।
तोडिअ वि [**त्रोटित**] तोड़ा हुआ ; (महा ; सण) ।
तोड्ड पुं [**दे**] क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति ; (राज)
तोण पुंन [**तूण**] शरधि, भाथा; (पाअ ; औप ; हे१, १२५; विपा १, ३) ।
तोणीर पुंन [**तूणीर**] शरधि, भाथा ; (पाअ ; हे१, १२४; भवि) ।
तोत्त न [**तोत्र**] प्रतोद, बैल को मारने का बाँस का आयुध-विशेष ; (पाअ ; दे३, १६ ; सुपा २३७ ; सुर१४, ५१) ।
तोत्तडि [**दे**] देखो **तोंतडि** ; (पाअ) ।
तोदग वि [**तोदक**] व्यथा उपजाने वाला, पीड़ा-कारक ; (उत्त २०) ।
तोमर पुं [**तोमर**] १ बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण ; (पराह १, १ ; सुर २, २८ ; औप) । २ न. छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
तोमरिअ पुं [**दे**] १ शस्त्र का प्रमार्जन करने वाला ; (दे ५, १८) । २ शस्त्र-मार्जन ; (षड्) ।
तोमरिगुंडी स्त्री [**दे**] वल्ली विशेष ; (पाअ) ।
तोमरी स्त्री [**दे**] वल्ली, लता ; (दे५, १७) ।
तोम्हार (अप) देखो **तुम्हार** ; (पि ४३४) ।
तोय न [**तोय**] पानी, जल ; (पराह १, ३ ; वज्जा १४ ; दे २, ४७) । °**धरा,** °**धारा** स्त्री [°**धारा**] एक दिक्कुमारी देवी ; (इक ; ठा ८) । °**पट्ठ,** °**पिट्ठ** न [°**पृष्ठ**] पानी का उपरि-भाग ; (पराह १, ३ ; औप) ।
तोय पुं [**तोद**] व्यथा, पीड़ा ; (ठा ४, ४) ।
तोरण न [**तोरण**] १ द्वार का अवयव-विशेष, बहिर्द्वार ; (गा २६२) । २ बन्दन-वार, फूल या पत्तों की माला जो उत्सव में लटकाई जाती है ; (औप) । °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (महा) ।
तोरविअ वि [**दे**] उत्तेजित ; (पाअ ; कुप्र १६२) ।
तोरामदा स्त्री [**दे**] नेत्र का रोग-विशेष ; (महानि ३) ।
तोल देखो **तुल=**तोलय् । तोलइ, तोलेइ ; (पिंग ; महा) । वकृ—**तोलंत** ; (वज्जा१५८) । कवकृ—**तोलिज्जमाण**; (सुर १५, ६४) । कृ—**तोलियव्व**; (स १६२) ।
तोल पुंन [**दे**] मगध-देश प्रसिद्ध पल, परिमाण-विशेष ; (तंदु)।
तोलण पुं [**दे**] पुरुष, आदमी ; (दे ५, १७) ।
तोलण न [**तोलन**] तौल करना, तौलना, नाप करना;(राज)।
तोलिय वि [**तोलित**] तौला हुआ ; (महा) ।
तोल्ल न [**तौल्य, तौल**] तौल, वजन; (कुप्र १४६) ।
तोवट्ट पुं [**दे**] १ कान का आभूषण-विशेष ; २ कमल की कर्णिका ; (दे ५, २३) ।
तोस सक [**तोषय्**] खुशी करना, सन्तुष्ट करना । तोसइ ; (उव) । कर्म—तोसिज्जइ ; (गा ५०८) ।
तोस पुं [**तोष**] खुशी, आनन्द, संतोष ; (पाअ ; सुपा २७५) । °**यर** वि [°**कर**] संतोष-कारक ; (काल) ।
तोस न [**दे**] धन, दौलत ; (दे ५, १७) ।
तोसलि पुं [**तोसलिन**] १ ग्राम-विशेष ; २ देश-विशेष ; ३ एक जैन आचार्य ; (राज) । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य ; (आवम) ।
तोसलिय पुं [**तोसलिक**] तोसलि-ग्राम का अधीश क्षत्रिय; (आवम) ।
तोसविअ } वि [**तोषित**] खुश किया हुआ, संतोषित ;
तोसिअ } (हे ३, १५० ; पउम ७७, ८८)
तोहार (अप) देखो **तुहार** ; (पिंग ; पि ४३४) ।
°**त्त** वि [°**त्र**] त्राण-कर्ता, रक्षक ; " सकलत्तं संतुट्ठो सकज्जत्तो सो नरो होइ " (सुपा ३६६) ।
°**त्तण** देखो **तण** ; (से १, ६१) ।
°**त्ति** देखो **इअ=इति** ; (कप्प ; स्वप्न १० ; सण) ।
°**त्थ** देखो **पत्थ** ; (गा १३२) ।
°**त्थ** वि [°**स्थ**] स्थित, रहा हुआ ; (आचा) ।

°त्थ देखो अत्थ ; (काप्र १५) ।
त्थअ देखो थय=स्तृत ; (से १, १) ।
°त्थउड देखो थउड ; (गउड) ।
°त्थंव देखो थंव ; (चारु २०) ।
°त्थंभ देखो थंभ ; (कुमा) ।
°त्थंभण देखो थंभण ; (था १०) ।
°त्थरु देखो थरु ; (पि ३२७) ।
°त्थल देखो थल ; (काप्र ८७) ।
°त्थली देखो थली ; (पि ३८७) ।
°त्थव देखो थव=स्तु । वकृ—°त्थवंत ; (नाट) ।
°त्थवअ देखो थवय ; (से १, ४० ; नाट) ।
°त्थाण देखो थाण ; (नाट) ।
°त्थाल देखो थाल ; (कुमा) ।
°त्थिअ देखो थिअ ; (गा ४२१) ।
°त्थिर देखो थिर ; (कुमा) ।
°त्थोअ देखो थोअ ; (नाट—वेणी २४) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि तयाराइसद्दसंकलणो
तेवीसइमो तरंगो समत्तो ।

थ

थ पुं [**थ**] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन-विशेष ; (प्राप ; प्रामा) ।
थ अ. १-२ वाक्यालंकार और पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; "किं थ तयं पम्हुट्ठं जं थ तया भो जयंत पवरम्मि" (णाया १, १—पत्र १४८ ; पंचा ११) ।
°**थ** देखो **एत्थ** ; (गा १३१ ; १३२ ; कस) ।
थइअ वि [**स्थगित**] आच्छादित, ढका हुआ ; (से ५, ४३ ; गा ५७०) ।
थइअ°, **थइआ** स्त्री [**स्थगिका**] पानदानी, पान रखने का पात्र ; (महा) । °**इत्त** पुं [°**वत्**] ताम्बूल-पात्र-वाहक नौकर; (कुप्र ७१)। °**धर** पुं [°**धर**] ताम्बूल-पात्र का वाहक नौकर ; (सुपा १०७) । °**वाहग** पुं [°**वाहक**] पानदानी का वाहक नौकर ; (सुपा १०७) । देखो **थगिय°** ।
थइआ स्त्री [**दे**] थैली, कोथली ; "संवलथइआसणाहो" "दंसिया संवलत्थई (? इ) या" (कुप्र १२ ; ८०) ।
थइउं देखो **थय**=स्थगय् ।

थउड न [**स्थपुट**] १ विषम और उन्नत प्रदेश ; (दे २, ७८) । २ वि. नीचा-ऊँचा ; (गउड) ।
थउडिअ वि [**स्थपुटित**] १ विषम और उन्नत प्रदेश वाला । २ नीचा-ऊँचा प्रदेश वाला ; (गउड) ।
थउड्ड न [**दे**] भल्लातक, वृक्ष-विशेष, भिलावा; (दे ५,२६)।
थंडिल न [**स्थण्डिल**] १ शुद्ध भूमि, जन्तु-रहित प्रदेश ; (कस ; निचू ४) । २ क्रोध, गुस्सा ; (सूअ १, ६) ।
थंडिल्ल न [**स्थण्डिल**] शुद्ध भूमि ; (सुपा ५५८ ; आचा)।
थंडिल्ल न [**दे**] मण्डल, वृत्त प्रदेश ; (दे ५, २५) ।
थंत देखो **था** ।
थंव वि [**दे**] विषम, अ-सम ; (दे ५, २४) ।
थंव पुं [**स्तम्ब**] तृण आदि का गुच्छ ; (दे ८, ४६ ; ओघ ७७१ ; कुप्र २२३) ।
थंभ अक [**स्तम्भ्**] १ रुकना, स्तब्ध होना, स्थिर होना, निश्चल होना । २ सक. क्रिया-निरोध करना, अटकाना ; रोकना, निश्चल करना । थंभइ ; (भवि) । कर्म—थंभिज्जइ; (हे २, ६) । संकृ—**थंभिउं** ; (कुप्र ३८५) ।
थंभ पुं [**स्तम्भ**] १ स्तम्भ, थम्भा ; (हे २, ६ ; कुमा ; प्रासू ३३) । २ अभिमान, गर्व, अहंकार ; (सूअ १, १३; उत्त ११) । °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] स्तब्ध करने की विद्या ; (सुपा ४६३) ।
थंभण न [**स्तम्भन**] १ स्तब्ध-करण, थमाँना ; (विसे ३००७ ; सुपा ५६६) । २ स्तब्ध करने का मन्त्र ; (सुपा ५६६) । ३ गुजरात का एक नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम मे प्रसिद्ध है ; (ती ५१) । °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष, खंभात ; (सिग्घ १) ।
थंभणया स्त्री [**स्तम्भना**] स्तब्ध-करण; (ठा ४, ४) ।
थंभणी स्त्री [**स्तम्भनी**] स्तम्भन करने वाली विद्या-विशेष ; (णाया १, १६) ।
थंभय देखो **थंभ**=स्तम्भ ; (कुमा) ।
थंभिय वि [**स्तम्भित**] १ स्तब्ध किया हुआ, थमाया हुआ; (कुप्र १४१; कुमा; कप्प ; औप) । २ जो स्तब्ध हुआ हो, अवष्टब्ध; (स ४६४) ।
थक्क अक [**स्था**] रहना, बैठना, स्थिर होना । थक्कइ ; (हे ४, १६ ; पिंग) । भवि—थक्किस्सइ ; (पि ३०६)।
थक्क अक [**फक्क्**] नीचे जाना । थक्कइ; (हे ४,८७) ।
✓**थक्क** अक [**श्रम्**] थकना, श्रान्त होना । थक्कंति; (पिंग)।

थक्क वि [**स्थित**] रहा हुआ ; (कुमा ; वज्जा ३८ ; सुपा २३७ ; आरा ७७ ; सट्ठि ६)।

थक्क पुं [**दे**] १ अवसर, प्रस्ताव, समय ; (दे ५, २४ ; ववं ६ ; महा ; विसे २०६३)। २ थका हुआ, श्रान्त ; "थक्कं सव्वसरीरं हियए सूलं सुदूसहं एइ" (सुर ७, १८५ ; ४, १६५)।

थक्किअ वि [**श्रान्त**] थका हुआ, (पिंग)।

थग देखो **थय**=स्थगय्। भवि—थगइस्सं ; (पि २२१)।

थगण न [**स्थगन**] पिधान, संवरण, आच्छादन ; (दे २, ८३ ; ठा ४, ४)।

थगथग अक [**थगथगाय्**] धड़कना, काँपना। वकृ—**थगथगिंत** ; (महा)।

थगिय वि [**स्थगित**] पिहित, आच्छादित, आवृत ; (दस ५, १ ; आवम)।

थगिय° देखो **थइअ°**। **°ग्गाहि** पुं [**°ग्राहिन्**] ताम्बूल-वाहक नौकर ; (सुपा ३३६)।

थग्गया स्त्री [**दे**] चंचु, चोंच ; (दे ५, २६)।

थग्घ पुं [**दे**] थाह, तला, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त ; (दे ५, २४)।

थग्घा स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (पाअ)।

थट्ट पुंन [**दे**] १ ठठ, समूह, यूथ, जत्था ; "दुद्धरतुरंगथट्टा" (सुपा २८८), "विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठदोघट्टथट्ट" (लहुअ ४)। २ ठाठ, सजधज, आडम्बर ; (भवि)।

थट्टि स्त्री [**दे**] पशु, जानवर ; (दे ५, २४)।

थड पुंन [**दे**] ठठ, यूथ, समूह ; (भवि)।

थड्ड वि [**स्तब्ध**] १ निश्चल ; २ अभिमानी, गर्विष्ठ ; (सुपा ४३७ ; ५८२)।

थड्डिअ वि [**स्तम्भित**] १ स्तब्ध किया हुआ। २ स्तब्ध, निश्चल। ३ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, अकड़ रह कर गुरु को किया जाता प्रणाम ; (गुभा २३)।

थण अक [**स्तन्**] १ गरजना। २ आक्रन्द करना, चिल्लाना। ३ आक्रोश करना। ४ जोर से नीसास लेना। वकृ—**थणंत** ; (गा २६०)।

थण पुं [**स्तन**] थन, कुच, पयोधर ; (आचा ; कुमा ; काप्र १६१)। **°जीवि** वि [**°जीविन्**] स्तन-पान पर निभने वाला बालक ; (श्रा १४)। **°वई** स्त्री [**°वती**] बड़े स्तन वाली ; (गउड)। **°विसारि** वि [**°विसारिन्**]। स्तन पर फैलने वाला ; (गउड)। **°सुत्त** न [**°सूत्र**] उरः-सूत्र ; (दे)। **°हर** पुं [**°भर**] स्तन का बोझ ; (हे १, १८९)।

थणंधय पुं [**स्तनन्धय**] स्तन-पान करने वाला बालक ; छोटा बच्चा ; "नियय थणं धयंतं थणंधयं हंदि पिच्छंति" (सुर १०, ३७ ; अच्चु ६३)।

थणण न [**स्तनन**] १ गर्जन, गरजना ; (सूअ १, ५, २)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट ; (सूअ १, ५, १)। ३ आक्रोश, अभिशाप ; (राज)। ४ आवाज वाला नीसास ; (सूअ १, २, ३)।

थणिय न [**स्तनित**] १ मेघ का गर्जन ; (वज्जा १२ ; दे ५, २७)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट ; (सम १५३)। ३ पुं. भवनपति देवों की एक जाति ; (औप ; पण्ह १, ४)। **°कुमार** पुं [**°कुमार**] भवनपति देवों की एक जाति ; (ठा १, १)।

थणिल्ल वि [**स्तनवत्**] स्तन वाला ; (कप्पू)।

थणुल्लअ पुं [**स्तनक**] छोटा स्तन ; (गउड)।

थण्णु देखो **थाणु** ; (गा ४२२)।

थत्तिअ न [**दे**] विश्राम ; (दे ५, २६)।

थद्ध देखो **थड्ड** ; (सम ५१ ; गा ३०४ ; वज्जा १०)।

थन्न न [**स्तन्य**] स्तन का दूध। **°जीवि** वि [**°जीविन्**] छोटा बच्चा ; (सुपा ६१६)।

थप्पण न [**स्थापन**] न्यास, न्यसन ; (कुप्र ११७)।

थप्पिअ वि [**स्थापित**] रक्खा हुआ, न्यस्त ; (पिंग)।

थब्भर पुं [**दे**] अयोध्या नगरी के समीप का एक ह्रद ; (ती ११)।

थमिअ वि [**दे**] विस्मृत ; (दे ५, २५)।

थय सक [**स्थगय्**] आच्छादन करना, आवृत करना, ढकना। थएइ, थएसु ; (पि ३०९ ; गा ६०५)। भवि—**थइस्सं** ; (गा ३१४)। हेकृ—**थइउं** ; (गा ३६४)।

थय वि [**स्तृत**] व्याप्त, भरपूर ; (से १, १)।

थय पुं [**स्तव**] स्तुति, स्तवन, गुण-कीर्तन ; (अजि ३९ ; सं ४४)।

थयण न [**स्तवन**] ऊपर देखो ; " थुइथयणवंदणनमंसणाणि एगट्ठिआणि एयाइं " (आव २)।

थर पुं [**दे**] दही की तर, दही ऊपर की मलाई ; (दे ५, २४)।

थरत्थर, **थरथर**, **थरहर** अक [**दे**] थरथरना, काँपना। थरत्थरइ, थरथरेइ, थरहरइ ; (सट्ठि ६९ ; पि २०७ ; सुर ७, ६ ; गा १६५)। वकृ—**थरथरंत, थरथ-**

राअंत, थरथराअमाण, थरथरेंत ; (ओघ ४७० ; पि ५५८ ; नाट—मालती ५५ ; पउम ३१, ४४)।

थरहरिअ वि [दे] कम्पित ; (दे ५, २७ ; भवि ; सुर १, ७; सुपा २१ ; जय १०)।

थरु पुं [दे. त्सरु] खड्ग-मुष्टि ; (दे ५, २४)।

थरुगिण पुं [थरुकिन] १ देश-विशेष; २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी। स्त्री —°**गिणिआ**; (इक)।

थल न [**स्थल**] १ भूमि, जगह, सूखी जमीन ; (कुमा ; उप ६८६ टी)। २ ग्रास लेते समय खुले हुए मुँह को फाँक, खुले हुए मुँह की खाली जगह; (वव ७)। °**इल्ल** वि [°**वत्**] स्थल-युक्त ; (गउड)। °**कुक्कुडियंड** न [°**कुक्कुट्यण्ड**] कवल-प्रक्षेप के लिए खुला हुआ मुख; (वव ७)। °**चार** पुं[°**चार**] जमीन में चलना; (आचा)। °**नलिणो** स्त्री [°**नलिनी**]जमीन में होने वाला कमल का गाछ; (कुमा)। °**य** वि [°**ज**] जमीन में उत्पन्न होने वाला ; (पण्ण १; पउम १२, ३७)। °**यर** वि [°**चर**] १ जमीन पर चलने वाला ; २ जमीन पर चलने वाला पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्राणी; (जीव ३; जी २०; औप)। स्त्री—°**री**; (जीव ३)।

थलय पुं [दे] मंडप, तृणादि-निर्मित गृह; (दे ५, २५)।

थलहिगा, **थलहिया** स्त्री [दे] मृतक-स्मारक, शव को गाड़ कर उस पर किया जाता एक प्रकार का चबूतरा; (स ७५६ ; ७५७)।

थली स्त्री [**स्थली**] जल-शून्य भू-भाग; (कुमा ; पाअ)। °**घोडय** पुं [°**घोटक**] पशु-विशेष; (वव ७)।

थलिया स्त्री [दे. **स्थालिका**] थलिया, छोटा थाल, भोजन करने का बरतन ; (पउम २०, १६६)।

थव सक [**स्तु**] स्तुति करना। वक्र—**थवंत**; (नाट)।

थव देखो **थय**=स्तव; (हे २, ४६ ; सुपा ४४६)।

थव पुं [दे] पशु, जानवर ; (दे ५, २४)।

थवइ पुं [**स्थपति**] वर्धकि, बढ़ई ; (दे २, २२)।

थवइय वि [**स्तबकित**] स्तबक वाला, गुच्छ-युक्त; (णाया १, १; औप)।

थवइल्ल वि [दे] जाँघ फैला कर बैठा हुआ ; (दे ५,२६)।

थवक्क पुं [दे] थोक, समूह, जत्था; " लब्भइ कुलवहुसुरए थवक्कओ सयलसोक्खाणं" (वज्जा ६६)।

थवण देखो **थयण** ; (आव २)।

थवणिया स्त्री [**स्थापनिका**] न्यास, जमा रखी हुई वस्तु; "कन्नगोभूमालियथवणियअवहारकूडसक्खिज्जं" (सुपा २७५)।

थवय पुं [**स्तवक**] फूल आदि का गुच्छ ; (दे२, १०३ ; पाअ)।

थविआ स्त्री [दे] प्रसेविका, वीणा के अन्त में लगाया जाता छोटा काष्ठ-विशेष ; (दे २, २५)।

थविय वि [**स्थापित**] न्यस्त, निहित ; (भवि)।

थविय वि [**स्तुत**] जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित ; (सुपा ३४३)।

थवी [दे] देखो **थविआ** ; (दे २, २५)।

थस, **थसल** वि [दे] विस्तीर्ण ; (दे ५, २५)।

थह पुं [दे] निलय, आश्रय, स्थान; (दे ५, २५)।

था देखो **ठा**। थाइ; (भवि)। भवि—थाहिइ; (पि५२४)। वकृ—**थंत** ; (पउम१४, १३४ ; भवि)। संकृ—**थाऊण** ; (हे४, १६)।

थाइ वि [**स्थायिन्**] रहने वाला। °**णी** स्त्री [°**नी**] वर्ष वर्ष पर प्रसव करने वाली घोड़ी ; (राज)।

थाण देखो **ठाण** ; (हे४, १६ ; विसे१८५६ ; उप पृ३३२)।

थाणय न [**स्थानक**] आलवाल, कियारी ; (दे५,२७)।

थाणय न [दे] १ चौकी, पहरा ; "भयाणया अडवि त्ति निविट्ठाइं थाणयाइं", "तओ बहुवालियाए रयणीए थाणयनिविट्ठा तुरियतुरियमागया सवरपुरिसा" (स ५३७ ; ५४६)। २ पुं. चौकीदार, चौकी करने वाला आदमी; "पहायसमए य विसंसरिएसुं थाणएसुं" (स ५३७)।

थाणिज्ज वि [दे] गौरवित, सम्मानित ; (दे ४ ५)।

थाणीय वि [**स्थानीय**] स्थानापन्न; (स ६६७)।

थाणु पुं [**स्थाणु**] १ महादेव, शिव ; (हे २, ७ ;कुमा ; पाअ)। २ ठूठा वृक्ष ; (गा २३२; पाअ), "दवदड्ढथाणुसरिसं" (कुप्र १०२)। ३ खीला ; ४ स्तम्भ ; (राज)।

थाणेसर न [**स्थानेश्वर**] समुद्र के किनारे पर का एक शहर; (उप ७२८ टी ; स १४८)।

थाम वि [दे] विस्तीर्ण ; (दे ५, २५)।

थाम न [**स्थामन्**] १ बल, वीर्य, पराक्रम ; (हे४, २६७ ; ठा ३, १)। २ वि. बल-युक्त ; (निचू ११)। °**व** वि [°**वत्**] बलवान् ; (उत्त २)।

थाम न [दे. **ठाण**] स्थान, जगह ; (संक्षि ४७ ; स ४६ ; ७४३)। 'सेवालियभूमितले फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि" (सुर २, १०५)।

थार पुं [दे] घन, मेघ ; (दे ५, २७)।

थारुणय वि [**थारुकिन**] देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री—°**णिया** ; (औप) । देखो **थरुगिण** ।

थाल पुंन [**स्थाल**] बड़ी थलिया, भोजन करने का पात्र ; (दे ६, १२ ; अंत ५ ; उप पृ २५७) ।

थालइ वि [**स्थालकिन्**] १ थाल वाला । २ पुं. वानप्रस्थ का एक भेद ; (औप) ।

थाला स्त्री [दे] धारा ; (षड्) ।

थाली स्त्री [**स्थाली**] पाक-पात्र, हाँड़ी, बटलोही ; (ठा ३, १ ; सुपा ४८७) । °**पाग** वि [°**पाक**] हाँडी में पकाया हुआ ; (ठा ३, १) ।

थावच्चा स्त्री [**स्थापत्या**] द्वारका-निवासी एक गृहस्थ स्त्री ; (णाया १, ५) । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] स्थापत्या का पुत्र, एक जैन मुनि ; (णाया १, ५ ; अंत) ।

थावण न [**स्थापन**] न्यास, आधान ; (स २१३) ।

थावय पुं [**स्थापक**] समर्थ हेतु, स्वपक्ष-साधक हेतु ; (ठा ४, ३—पत्र २५४) ।

थावर वि [**स्थावर**] १ स्थिर रहने वाला । २ पुं. एकेन्द्रिय प्राणी, केवल स्पर्शेन्द्रिय वाला पृथिवी, पानी और वनस्पति आदि का जीव ; (ठा३, २ ; जी २) । ३ एक विशेष-नाम, एक नौकर का नाम ; (उप ५६७ टी) । °**काय** पुं [°**काय**] एकेन्द्रिय जीव; (ठा २, १) । °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, स्थावरत्व-प्राप्ति का कारण-भूत कर्म; (पंच ३; सम ६७) ।

थासग, **थासय** पुं [**स्थासक**] १ दर्पण, आदर्श, शीशा; (विपा १,२—पत्र २४) । २ दर्पण के आकार का पात्र-विशेष ; (औप ; अनु ; णाया १, १ टी) । ३ अश्व का आभरण-विशेष ; (राज) ।

थाह पुं [दे] १ स्थान, जगह ; २ वि. अस्ताघ, गंभीर जल-वाला ; ३ विस्तीर्ण; ४ दीर्घ, लम्बा ; (दे५, ३०) ।

थाह पुं [**स्थाघ**] थाह, तला, गहराई का अन्त ; (पाअ ; विसे १३३२ ; णाया १, ६ ; १४ ; से ८, ४०) ।

थाहिअ पुं [दे] आलाप, स्वर-विशेष; (सुपा१६) ।

थिअ वि [**स्थित**] रहा हुआ; (स२७०; विसे १०३५; भवि)।

थिइ देखो **ठिइ** ; (से २, १८ ; गउड) ।

थिंप अक [**तृप्**] तृप्त होना, संतुष्ट होना । थिंपइ ; (प्राप्र)। भवि—थिंपिहिंति; (प्राप्र ८, २२ टी) । संकृ—**थिंपिअ** ; (प्राप्र ८, २२ टी) ।

थिग्गल न [दे] १ भित्ति-द्वार, भींत में किया हुआ दरवाजा; (दस ५, १, १५) । २ फटे-फुटे वस्त्र में किया जाता संधान, वस्त्र आदि के खंडित भाग में लगाई जाती जोड़ ; (पराण १७ ; विसे १४३६ टी) ।

थिण्ण वि [**स्त्यान**] कठिन, जमा हुआ ; (हे १, ७४ ; २ ६६ ; से २, ३०) । देखो **थीण** ।

थिण्ण वि [दे] १ स्नेह-रहित दया वाला ; २ अभिमानी, गर्व-युक्त ; (दे ५, ३०) ।

थिन्न वि [दे] गर्वित, अभिमानी ; (पाअ) ।

थिप्प देखो **थिंप** । थिप्पइ; (हे ४, १३८) ।

थिप्प अक [**वि+गल्**] गल जाना । थिप्पइ ; (हे ४, १७५) ।

थिम सक [**स्तिम्**] आर्द्र करना, गीला करना । हेकृ—**थिमिउं** ; (राज) ।

थिमिअ वि [दे. **स्तिमित**] स्थिर, निश्चल; (दे ५, २७; से २, ४३ ; ८, ६१; णाया १, १ ; विपा १, १; पराह १, ४; २, ५; औप ; सुज्ज १; सूअ १, ३, ४) । २ मन्थर, धीमा ; (पाअ) ।

थिमिअ पुं [**स्तिमित**] राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम ; (अंत ३) ।

थिर वि [**स्थिर**] १ निश्चल, निष्कम्प ; (विपा १, १ ; सम ११६ ; णाया १, ८) । २ निष्पन्न, संपन्न, (दस ७, ३५) । °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दन्त, हड्डी आदि अवयवों की स्थिरता होती है; (कम्म १, ४६; सम ६७) । °**वलिया** स्त्री [°**वलिका**] जन्तु-विशेष, सर्प की एक जाति ; (जीव २) ।

थिरणाम वि [दे]चल-चित्त, चंचल-मनस्क ; (दे ५, २७)।

थिरण्णेस वि [दे] अस्थिर, चंचल ; (षड्) ।

थिरसीस वि [दे] १ निर्भीक, निडर ; २ निर्भर; ३ जिसने सिर पर कवच बाँधा हो वह ; (दे ५, ३१) ।

थिरिम पुंस्त्री [**स्थैर्य**] स्थिरता ; (सण) ।

थिरीकरण न [**स्थिरीकरण**] स्थिर करना, दृढ़ करना, जमाना ; (श्रा ६ ; रयण ६६) ।

थिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष; —१ दो घोड़े की बग्घी; २ दो खच्चर आदि से वाह्य यान ; (सूअ २, २, ६२; णाया १, १ टी—पत्र ४३ ; औप) ।

थिविथिव अक [**थिवथिवाय्**] थिव थिव आवाज करना । वकृ—**थिविथिवंत** ; (विपा १, ७) ।

थिवुग) पुं [**स्तिवुक**] जल-विन्दु ; (विसे ७०४ ;
थिवुय) ७०५ ; सम १४६) । °**संकम** पुं [°**संक्रम**] कर्म-प्रकृतिओं का आपस में संक्रमण-विशेष; (पंचा ५) ।

थिहु पुं [**स्तिभु**] वनस्पति-विशेष ; (राज) ।

थी स्त्री [**स्त्री**] स्त्री, महिला, नारी ; (हे २, १३० ; कुमा ; प्रासु ६५) ।

थीण देखो **थिण्ण** ; हे१,७४ ; दे१, ८१ ; कुमा ; गाअ)। °**गिद्धि** स्त्री [°**गृद्धि**] निकृष्ट निद्रा-विशेष ; (ठा ६ ; विसे २३४ ; उत्त ३३, ५) । °**द्धि** स्त्री [°**र्द्धि**] अधम निद्रा-विशेष ; (सम१५) । °**द्धिय** वि [°**र्द्धिक**] स्त्यानर्द्धि निद्रा वाला ; (विसे २३५) ।

थु अ. तिरस्कार-सूचक अव्यय ; (प्रति ८१) ।

थुअ वि [**स्तुत**] जिसकी स्तुति की गई हो वह, प्रशंसित ; (दे ८, २७ ; धण ५० ; अजि १८) ।

थुइ स्त्री [**स्तुति**] स्तव, गुण-कीर्तन ; (कुमा ; चैत्य १ ; सुर १०, १०३) ।

थुक्क अक [**थूत्+कृ**] १ थूकना । २ सक. तिरस्कार करना, थुतकारना, अनादर के साथ निकालना । थुक्कइ; (वज्जा ४६) । संकृ—**थुक्किऊण** ; (सुपा ३४६) ।

थुक्क न [**थूत्कृत**] थूक, कफ, खखार ; (दे ४, ४१) ।

थुक्कार पुं [**थूत्कार**] तिरस्कार ; (राय) ।

थुक्कार सक [**थूत्कारय्**] तिरस्कार करना । कवकृ—**थुक्कारिज्जमाण** ; (पि ५६३) ।

थुक्किअ वि [**दे**] उन्नत, ऊँचा ; (दे ५, २८) ।

थुक्किअ वि [**थूत्कृत**] थूका हुआ ; (दे ५, २८ ; सुपा ३४६) ।

थुड न [**दे, स्थुड**] वृक्ष का स्कन्ध; "चोरोउ करेऊण बद्धा ताण थुडेसु" (सुपा ५८४ ; ३६६) ।

थुडंकिअय न [**दे**] रोष-युक्त वचन ; (पाअ) ।

थुडुंकिअ न [**दे**] १ अल्प-कुपित मुँह का संकोच, थोड़ा गुस्सा होने से होता मुँह का संकोच ; २ मौन, चुपकी; (दे ५, ३१) ।

थुडुहीर न [**दे**] चामर ; (दे ५, २८) ।

थुण सक [**स्तु**] स्तुति करना, गुण-वर्णन करना । थुणइ ; (हे ४, २४१) । कर्म—थुव्वइ, थुणिज्जइ; (हे ४, २४२)। वकृ—**थुणंत** ; (भवि) । कवकृ—**थुव्वंत, थुव्वमाण** ; (सुपा ८८ ; सुर४, ६६ ; स ७०१) । संकृ —**थोऊण** , (काल) । हेकृ—**थोत्तुं** ; (सुपा१०८०५) । कृ—**थुव्व**, **थोअव्व** ; (भवि ; चैत्य ३५ ; स ११०) ।

थुणण न [**स्तवन**] गुण-कीर्तन, स्तुति; (सुपा ३७) ।

थुणिर वि [**स्तोतृ**] स्तुति करने वाला ; (काल) ।

थुण्ण वि [**दे**] दृप्त, अभिमानी ; (दे ५, २७) ।

थुत्त न [**स्तोत्र**] स्तुति, स्तुति-पाठ; (भवि) ।

थुत्थुक्कारिय वि [**थुथुत्कारित**] थुतकारा हुआ, तिरस्कृत, अपमानित ; (भवि) ।

थुथूकार पुं [**थुथूत्कार**] तिरस्कार ; (प्रयौ ८१) ।

थुरुगुल्लणय न [**दे**] शय्या, विछौना ; (दे ५, २८) ।

थुलम पुं [**दे**] पट-कुटी, तंबू, वस्त्र-गृह, कपड़-कोट ; (दे ५, २८) ।

थुल्ल वि [**दे**] परिवर्तित, बदला हुआ ; (दे ५, २७) ।

थुल्ल वि [**स्थूल**] मोटा ; (हे २, ९९ ; प्रामा) ।

थुवअ वि [**स्तावक**] स्तुति करने वाला; (हे १, ७५) ।

थुवण न [**स्तवन**] स्तुति, स्तव ; (कुप्र ३५१) ।

थुव्व) देखो **थुण** ।
थुव्वंत)

थू अ. निन्दा-सूचक अव्यय ; "थू निल्लज्जो लोओ" (हे २, २०० ; कुमा) ।

थूण पुं [**दे**] अश्व, घोड़ा ; (दे ५, २९) ।

थूण देखो **तेण=स्तेन** ; (हे २, १४७) ।

थूणा स्त्री [**स्थूणा**] खम्भा, खूँटी; (षड् ; पण्ण१५) ।

थूणाग पुं [**स्थूणाक**] सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष ; (आवम) ।

थूभ पुं [**स्तूप**] थूहा, टीला, ढूह, स्मृति-स्तम्भ ; (विसे६६८; सुपा २०६; कुप्र १६५; आचा २, १, २) ।

थूभिया) स्त्री [**स्तूपिका**] १ छोटा स्तूप ; (ओप४३९ ;
थूभियागा) औप) । २ छोटा शिखर ; (सम१३७) ।

थूरी स्त्री [**दे**] तन्तुवाय का एक उपकरण ; (दे५, २८) ।

थूल देखो **थुल्ल** ; (पाअ ; पउम १४, ११३ ; उवा) । °**भद्द** पुं [°**भद्र**] एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि ; (हे१, २५५ ; पडि) ।

थूलघोण पुं [**दे**] सूकर, वराह ; (दे५, २९) ।

थूव) देखो **थूभ** ; (दे ७, ४० ; सुर १, ५८) ।
थूह)

थूह पुं [**दे**] १ प्रासाद का शिखर ; (दे ५, ३२ ; पाअ)। २ चातक पक्षी ; ३ वल्मीक ; (दे ५, ३२) ।

थेअ वि [**स्थेय**] १ रहने योग्य ; २ जो रह सकता हो ; ३ पुं. फैसला करने वाला, न्यायाधीश ; (हे ४, २६७) ।
थेग पुं [**दे**] कन्द-विशेष ; (श्रा २० ; जी ६) ।
थेज्ज न [**स्थैर्य**] स्थिरता ; (विसे १४) ।
थेज्ज देखो **थेअ** ; (वव ३) ।
थेण पुं [**स्तेन**] चोर, तस्कर ; (हे १, १४७) ।
थेणिल्लिअ वि [**दे**] १ हृत, छीना हुआ ; २ भीत, डरा हुआ ; (दे ५, ३२) ।
थेप्प देखो **थिप्प** । थेप्पइ ; (पि २०७ ; संक्षि ३४) ।
थेर वि [**स्थविर**] १ वृद्ध, बूढ़ा ; (हे १, १६६ ; २, ८९ ; भग ६, ३३) । २ पुं. जैन साधु ; (ओघ १७ ; कप्प) । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ जैन मुनिओं का आचार-विशेष, गच्छ में रहने वाले जैन मुनिओं का अनुष्ठान ; २ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (ठा ३, ४ ; ओघ ६७०) । °**कप्पिय** पुं [°**कल्पिक**] आचार-विशेष का आश्रय करने वाला, गच्छ में रहने वाला जैन मुनि ; (पव ७०) । °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] स्थविर का पद ; (ठा ३, २) । °**ावलि** पुं [°**ावलि**] १ जैन मुनिओं का समूह ; २ क्रम से जैन मुनि-गण के चरित्र का प्रतिपादक ग्रन्थ-विशेष ; (णंदि ; कप्प) ।
थेर पुं [**दे. स्थविर**] ब्रह्मा, विधाता ; (दे ५, २९ ; पाअ) ।
थेरासण न [**दे**] पद्म, कमल ; (दे ५, २९) ।
थेरिअ न [**स्थैर्य**] स्थिरता ; (कुमा) ।
थेरिया } स्त्री [**स्थविरा**] १ वृद्धा, बूढ़िया ; (पाअ ;
थेरी } ओघ २१ टी) । २ जैन साध्वी ; (कप्प) ।
थेरोसण न [**दे**] अम्बुज, कमल, पद्म ; (षड्) ।
थेव पुं [**दे**] बिन्दु ; (दे ५, २९ ; पाअ ; षड्) ।
थेव देखो **थोव** ; (हे २, १२५ ; पाअ ; सुर १, १८१) । °**कालिय** वि [°**कालिक**] अल्प काल तक रहने वाला ; (सुपा ३७५) ।
थेवरिअ न [**दे**] जन्म-समय में बजाया जाता वाद्य ; (दे ५, २९) ।
थोअ देखो **थोव** ; (हे २, १२५ ; गा ४९ ; गउड ; संक्षि १) ।
थोअ पुं [**दे**] १ रजक, धावी ; २ मूलक, मूला, कन्द-विशेष ; (दे ५, ३२) ।
थोअव्व } देखो **थुण** ।
थोऊण }
थोक्क } देखो **थोव** ; (हे २, १२५ ; जो १) ।
थोग }
थोडेरुय देखो **धाडेरुय** ; (उप ७२८ टी) ।
थोणा देखो **थूणा** ; (हे १, १२५) ।
थोत्त न [**स्तोत्र**] स्तुति, स्तव ; (हे २, ४५ ; सुपा २६६) ।
थोत्तुं देखो **थुण** ।
थोभ } पुं [**स्तोभ**, °**क**] 'च', 'वै' आदि निरर्थक अव्यय का
थोभय } प्रयोग ; "उय-वइकारा हत्ति य अकारणा थोभया हुंति" (बृह १ ; विसे ९९९ टी) ।
थोर देखो **थुल्ल** ; (हे १, २५५ ; २, ९९ ; पउम २, १६ ; से १०, ४२) ।
थोर वि [**दे**] क्रम से विस्तीर्ण अथ च गोल ; (दे ५, ३० ; वज्जा ३६) ।
थोल पुं [**दे**] वस्त्र का एक देश ; (दे ५, ३०) ।
थोव } वि [**स्तोक**] १ अल्प, थोड़ा ; (हे २, १२५ ;
थोवाग } उव ; श्रा २७ ; ओघ २५९ ; विसे ३०३०) । २ पुं. समय का एक परिमाण ; (ठा २, ३ ; भग) ।
थोह न [**दे**] बल, पराक्रम ; (दे ५, ३०) ।
थोहर पुंस्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष, थूहर का पेड़, सेहुंड ; (सुपा २०३) । स्त्री—°**री** ; (उप १०३१ टी ; जी १० ; धर्म ३) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि थयाराइसद्दसंकलणो** चउव्वीसइमो तरंगो समत्तो ।

—— ० ——

द

द पुं [**दे**] दन्त स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष ; (प्राप ; प्रामा) ।
दअच्छर पुं [**दे**] ग्राम स्वामी, गाँव का अधिपति ; (दे ५, ३६) ।
दअरी स्त्री [**दे**] सुरा, मदिरा, दारू ; (दे ५, ३४) ।
दइ स्त्री [**दृति**] मसक, चर्म-निर्मित जल-पात्र ; (ओघ ३८) ।
दइअ वि [**दे**] रक्षित ; (दे ५, ३५) ।
दइअ वि [**दयित**] १ प्रिय, प्रेम-पात्र ; "जाओ वरकामिणी-दइओ" (सुर १, १८३) । २ अभीष्ट, वाञ्छित ; "अम्हाण मणादइयं दंसणमवि दुल्लहं मन्ने" (सुर ३, २३८) । ३ पुं. पति, स्वामी, भर्ता ; (पाअ ; कुमा) । °**यम** वि [°**तम**]

१ अत्यन्त प्रिय ; २ पुं. पति, भर्ता ; (पउम ७७. ६२)।

दइआ स्त्री [**दयिता**] स्त्री, प्रिया, पत्नी ; (कुमा ; महा ; सुर ४, १२६)।

दइच्च पुं [**दैत्य**] दानव, असुर ; (हे १, १५१ ; कुमा ; पाअ)। °**गुरु** पुं [°**गुरु**] शुक्र ; (पाअ)।

दइन्न न [**दैन्य**] दीनता, गरीबपन ; (हे १, १५१)।

दइव पुंन [**दैव**] दैव भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, पूर्व-कृत कर्म ; (हे १, १५३ ; कुमा ; महा ; पउम २८,६०)। "अहवा कुविओ दइवो पुरिसं किं हणइ लउडेण" (सुर ८, ३४)। °**ज्ज**, °**ण्णु** पुं [°**ज्ञ**] ज्योतिषी, ज्योतिःशास्त्र का विद्वान ; (हे २, ८३ ; षड्)। देखो **देव**=दैव।

दइवय न [**दैवत**] देव, देवता; (पराह२,१ ; हे १, १५१ ; कुमा)।

दइविग वि [**दैविक**] देव-संबन्धी, दिव्य ; (स५०६)।

दइव्व देखो **दइव** ; (हे १, १५३ ; २, ६६ ; कुमा ; पउम ६३, ४)।

दउदर } न [**दकोदर**] रोग-विशेष, जलोदर, पानी से पेट का
ओदर } फूलना ; (णाया१, १३ ; विपा १, १)।

ओभास पुं [**दकावभास**] लवण-समुद्र में स्थित वेलंधर-नागराज का एक आवास-पर्वत ; (इक)।

ढा देखो **दाढा** ; (नाट—मालती ५६)।

ठे वि [**दंष्ट्रिन्**] बड़े दाँत वाला, हिंसक जन्तु; (नाट—वेणी २४)।

ड सक [**दण्डय्**] सजा करना, निग्रह करना। कवकृ —**दंडिज्जंत**; (प्रासू ६६)।

ड पुं [**दण्ड**] १ जीव-हिंसा, प्राण-नाश ; (सम१ ; णाया १, १; ठा१)। २ अपराधी को अपराध के अनुसार शारीरिक या आर्थिक दण्ड, सजा, निग्रह, दमन; (ठा ३,३; प्रासू ६३; हे १, १२७)। ३ लाठी, यष्टि ; (उप ५३० टी ; प्रासू ७४)। ४ दुःख-जनक, परिताप-जनक ; (आचा)। ५ मन, वचन और शरीर का अशुभ व्यापार ; (उत्त १६ ; दं ४६)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। ७ एक जैन उपासक का नाम; (संथा ६१)। ८ परिमाण-विशेष, १६२ अंगुल का एक नाप; (इक)। ६ आज्ञा ; (ठा ५, ३)। १० पुंन. सैन्य, लश्कर ; (पराह १, ४ ; ठा ५, ३)। °**अल** पुं [°**कल**] छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**जुज्झ** न [°**युद्ध**] यष्टि-युद्ध ; (आचा)। °**णायग** पुं [°**नायक**] १ दण्ड-दाता, अपराध-विचार-कर्ता। २ सेनापति, सेनानी, प्रतिनियत सैन्य का नायक; (पराह १, ४ ; औप ; कप्प ; णाया १, १)। °**णीइ** स्त्री [°**नीति**] नीति-विशेष, अनुशासन ; (ठा ६)। °**पह** पुं [°**पथ**] मार्ग-विशेष, सीधा मार्ग ; (सुअ १, १३)। °**पासि** पुं [°**पार्श्विन्**, °**पाशिन्**] १ दण्ड-दाता; २ कोतवाल ; (राज ; श्रा २७)। °**पुंछणय** न [**प्रोञ्छनक**] दण्डाकार झाड़ू ; (जं ५)। °**भी** वि [°**भी**] दण्ड से डरने वाला, दण्ड-भीरु ; (आचा)। °**लत्तिय** वि [°**लात**] दण्ड लेने वाला ; (वव १)। °**वइ** पुं [°**पति**] सेनानी, सेना-पति; (सुपा ३२३)। °**वासिग**, °**वासिय** पुं [**दण्डपाशिक**] कोतवाल; (कुप्र १५५; स २६५; उप १०३१ टी)। °**वीरिय** पुं [**वीर्य**] राजा भरत के वंश का एक राजा, जिसको आदर्श-गृह में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था; (ठा ८)। °**रास** पुं [**रास**] एक प्रकार का नाच; (कप्पू)। °**ाइय** वि [°**ायत**] दण्ड की तरह लम्बा; (कस; औप)। °**ायइय** वि [°**ायतिक**] पैर को दण्ड की तरह लम्बा फैलाने वाला; (औप; कस; ठा ५, १)। °**ारक्खिग** पुं [°**आरक्षिक**] दण्ड-धारी प्रतीहार ; (निचू ६)। °**ारण्ण** न [°**ारण्य**] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल ; (पउम ४१, १ ; ७६, ५)। °**ासणिय** वि [°**ासनिक**] दण्ड की तरह पैर फैला कर बैठने वाला ; (कस)। देखो **दंडग**, **दंडय**।

दंडग } पुं [**दण्डक**] १ कर्ण-कुण्डल नगर का एक राजा;
दंडय } (पउम १. ६६)। २ दण्डाकार वाक्य-पद्धति, ग्रन्थांश-विशेष; (राज)। ३ भवनपति आदि चौवीस दण्डक, पद-विशेष ; (दं १)। ४ न. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल ; (पउम ३१, २५)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष (पउम ४२, १४)। देखो **दंड** ; (उप ८६१ ; बृह १ ; सुअ २, २ ; पउम ४०, १३)।

दंडावण न [**दण्डन**] सजा कराना, निग्रह कराना ; (श्रा १४)।

दंडाविअ वि [**दण्डित**] जिसको दण्ड दिलाया गया हो वह ; (ओघ ५६७ टी)।

दंडि वि [**दण्डिन्**] १ दण्ड-युक्त। २ पुं. दण्डधारी प्रतीहार; (कुमा; जं ३)।

°**दंडि** देखो **दंडी**; (कुप्र ४४)।

दंडिअ वि [**दण्डित**] जिसको सजा दी गई हो वह ; (सुपा ४६२)।

दंडिअ वि [**दण्डक**] १ दण्ड वाला। २ पुं. राजा, नृप ;

(वव ४)। ३ दण्ड-दाता, अपराध-विचार-कर्ता; (वव १)।

दंडिआ स्त्री [**दे**] लेख पर लगाई जाती राज-मुद्रा; (बृह १)।

दंडिक्किअ वि [**दे**] अपमानित; "दंडिक्किओ समाणो तमवद्दारेण नीणेइ" (उप ६४८ टी)।

दंडिम वि [**दण्डिम**] १ दण्ड से निर्वृत्त; २ न. सजा करके वसूल किया हुआ द्रव्य; (णाया १, १—पत्र ३७)।

दंडी स्त्री [**दे**] १ सूत्र-कनक; २ साँधा हुआ वस्त्र-युग्म; (दे ५, ३३)। ३ साँधा हुआ जीर्ण वस्त्र; (णाया १, १६—पत्र १६६; पराह १, ३—पत्र ५३)।

दंत पुं [**दे**] पर्वत का एक देश; (दे ५, ३३)।

दंत वि [**दान्त**] १ जिसका दमन किया गया हो वह, वश में किया हुआ; "दंतेण चित्तेण चरंति धीरा" (प्रासू १६५)। २ जितेन्द्रिय; (णाया १, १४; दस १०)।

दंत पुं [**दन्त**] दाँत, दशन; (कुमा; कप्पू)। °**कुडी** स्त्री [°**कुटी**] दंष्ट्रा, दाढ; (तंदु)। °**च्छअ** पुं [°**च्छद**] ओष्ठ, होठ; (पाअ)। °**धावण** न [°**धावन**]। १ दाँत साफ करना; २ दाँत साफ करने का काष्ठ, दतवन; (पराह २, ४; निचू ३)। °**पक्खालण** न [°**प्रक्षालन**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (सुअ १, ४, २)। °**पाय** न [°**पात्र**] दाँत का बना हुआ पात्र; (आचा २, ६, १)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (वव १)। °**प्पहावण** न [°**प्रधावन**] देखो °**धावण**; (दस ३)। °**माल** पुं [°**माल**] वृक्ष-विशेष; (जं २)। °**वक्क** पुं [°**वक्र**] दन्तपुर नगर का एक राजा; (वव १)। °**वलहिया** स्त्री [°**वलभिका**] उद्यान-विशेष; (स७०)। °**वाणिज्ज** न [°**वाणिज्य**] हाथी-दाँत वगैरह दाँत का व्यापार; (धर्म २)। °**ार** पुं [°**कार**] दाँत का काम करने वाला शिल्पी; (पराण १)।

दंतवण न [**दे**] १ दन्त-शुद्धि; २ दतवन, दाँत साफ करने का काष्ठ; (दे २, १२; ठा ६—पत्र ४६०; उवा; पव४)।

दंताल पुंस्त्री [**दे**] शस्त्र-विशेष, घास काटने का हथियार; (सुपा ५२६)। स्त्री—°**ली**; (कम्म १, ३६)।

दंति पुं [**दन्तिन्**] १ हस्ती, हाथी; (पाअ)। २ पर्वत-विशेष; (पउम १५, ६)।

दंतिअ पुं [**दे**] शशक, खरगोश, खरहा; (दे५, ३४)।

दंतिंदिअ वि [**दान्तेन्द्रिय**] जितेन्द्रिय, इन्द्रिय-निग्रही; (ओघ ४६ भा)

दंतिक्क न [**दे**] चावल का आटा; (बृह १)।

दंतिया स्त्री [**दन्तिका**] वृक्ष-विशेष, बडी सतावर; (पराण १—पत्र ३२)।

दंती स्त्री [**दन्ती**] स्वनाम-ख्यात वृक्ष; (पराण१—पत्र३६)।

दंतुक्खलिय पुं [**दन्तोलूखलिक**] तापस-विशेष, जो दाँतों से ही व्रीहि वगैरः को निस्तुष कर खाते है; (निर १, ३)।

दंतुर वि [**दन्तुर**] उन्नत दाँत वाला, जिसके दाँत उभड़-खाभड़ हो; २ ऊँचा-नीचा स्थान; विषम स्थान; (दे २, ७७)। ३ आगे आया हुआ, आगे निकल आया हुआ; (कप्पू)।

दंतुरिय वि [**दन्तुरित**] ऊपर देखो; "विचित्तपासायपंति-दंतुरियं" (उप १०३१ टी; सुपा २००)।

दंद पुं [**द्वन्द्व**] १ व्याकरण-प्रसिद्ध उभय-पद-प्रधान समास; (अणु)। २ न. परस्पर-विरुद्ध शीत-उष्ण, सुख-दुःख आदि युग्म; ३ कलह, क्लेश; ४ युद्ध, संग्राम; (सुपा १४७; कुमा)।

दंभ पुं [**दम्भ**] १ माया, कपट; (हे १, १२७)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ ठगाई, वञ्चना; (पव २)।

दंभोलि पुं [**दम्भोलि**] वज्र; (कुप्र २७०)।

दंस सक [**दर्शय्**] दिखलाना, बतलाना। दंसइ; (हे ४, ३२; महा)। वकृ—**दंसंत, दंसिंत, दंसअंत**; (भग; सुपा ६२; अभि १८४)। कवकृ—**दंसिज्जंत**; (सुर २, १६६)। संकृ—**दंसिअ**; (नाट)। कृ-**दंसियव्व**; (सुपा ४५४)।

दंस सक [**दंश्**] काटना, दाँत से काटना। दंसइ; (नाट—साहित्य ७३)। दंसंतु; (आचा)। वकृ—**दंसमाण**; (आचा)।

दंस पुं [**दंश**] १ डाँस, बड़ा मच्छड़; (भग; आचा)। २ दन्त-क्षत, सर्प या अन्य किसी विषैले कीड़े का काटा हुआ घाव; (हे १, २६० टि)।

दंस पुं [**दर्श**] सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा; (आवम)।

दंसग वि [**दर्शक**] दिखलाने वाला; (स४८१)।

दंसण पुंन [**दर्शन**] १ अवलोकन, निरीक्षण; (पुप्फ १२४; स्वप्न २६)। २ चक्षु, नेत्र, आँख; (से १, १७)। ३ सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा; (ठा १; ५, ३)। ४ सामान्य ज्ञान; "जं सामन्नग्गहणं दंसणमेअं" (सम्म ५५)। ५ मत, धर्म; ६ शास्त्र-विशेष; (ठा ७; ८; पंचा १२)। °**मोह** न [°**मोह**] तत्त्व-श्रद्धा का प्रतिबन्धक कर्म-विशेष; (कम्म१, १४)। °**मोहणिज्ज** न [°**मोहनीय**] कर्म-विशेष; (ठा २, ४; भग)। °**ावरण** न [°**ावरण**]

कर्म-विशेष, सामान्य-ज्ञान का आवारक कर्म ; (अ ६)। °वरणिज्ज न [°वरणीय] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (सम १५)। देखो—दरिसण।

दंसण न [दंशन] दाँत से काटना ; (से १, १७)।

दंसणि वि [दर्शनिन्] १ किसी धर्म का अनुयायी ; (सुपा ४६६)। २ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का जानकार ; (कुप्र २६; कुम्मा २१)। ३ तत्त्व-श्रद्धालु ; (अणु)।

दंसणिआ स्त्री [दर्शनिका] दर्शन, अवलोकन ; "चंदसुर-दंसणिया" (औप ; णाया १, १)।

दंसणिज्ज } वि [दर्शनीय] देखने योग्य, दर्शन-योग्य ;
दंसणीअ } (सूअ २, ७ ; अभि ६८ ; महा)।

दंसावण न [दर्शन] दिखाना ; (उप २११ टी)।

दंसाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ; (सुपा ३८६)।

दंसि वि [दर्शिन्] देखने वाला; (आचा; कुप्र ४१; दं २३)।

दंसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ; (पाअ)।

दंसिअ
दंसिंत
दंसिज्जंत
दंसियव्व } देखो **दंस**=दर्शय्।

दक्क वि [दष्ट] जो दाँत से काटा गया हो वह ; (षड्)।

दक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। दक्खामि, दक्खिमो ; (अभि ११६ ; विक्र २७)। प्रयो—दक्खावइ ; (पि ५५४)। कर्म—दीसइ; (उव)। कवकृ—**दिस्समाण, दीसंत, दीसमाण** ; (आव ५; गा ७३ ; नाट—चैत ७१)। संकृ—**दक्खु, दट्टु, दट्ठुआण, दट्ठुं, दट्ठूण, दट्ठूणं, दिस्स, दिस्सं, दिस्सा**; (कप्प ; षड् ; कुमा ; महा ; पि ५८५ ; सूअ १, ३, २, १ ; पि ३३४)। हेकृ—**दट्ठुं**; (कुमा)। कृ—**दट्ठव्व, दिट्ठव्व**; (महा; उत्तर १०७)।

दक्ख सक [दर्शय्] दिखलाना, "सोवि हु दक्खइ बहुकोउय-मंततंताइं" (सुपा २३२)।

दक्ख वि [दक्ष] १ निपुण, चतुर ; (कप्प ; सुपा २८६ ; श्रा २८)। २ पुं भूतानन्द-नामक इन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव ; (ठा ५, १ ; इक)। ३ भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी का एक पौत्र ; (पउम २१, २७)।

दक्ख° देखो **दक्खा** ; (पउम ५३, ७९ ; कुमा)।

दक्खउज्ज पुं [दे] गृध्र, गीध, पक्षि-विशेष ; (दे ५, ३४)।

दक्खण न [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण। २ वि देखने वाला; निरीक्षक ; (कुमा)।

दक्खव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दक्खवइ ; (हे ४, ३२)।

दक्खविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ ; (पाअ ; कुमा)।

दक्खा स्त्री [द्राक्षा] १ वल्ली-विशेष, दाख का पेड ; २ फल-विशेष, दाख, अंगूर ; (कप्पू ; सुपा २६७; ५३६)।

दक्खायणी स्त्री [दाक्षायणी] गौरी, शिव-पत्नी ; (पाअ)।

दक्खिण वि [दक्षिण] १ दक्षिण दिशा में स्थित; (सुर ३, १८ ; गउड)। २ निपुण, चतुर ; (प्रामा)। ३ हितकर, अनुकूल ; ४ अपसव्य, वामेतर, दाहिना ; (कुमा ; औप)। °पच्छिमा स्त्री [°पश्चिमा] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा, नैर्ऋत कोण ; (आवम)। °पुव्वा स्त्री [°पूर्वा] अग्नि-कोण ; (चंद १)। देखो **दाहिण**।

दक्खिणत्त वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न ; (राज)।

दक्खिणा स्त्री [दक्षिणा] १ दक्षिण दिशा ; (जो १)। २ दक्षिण देश; (कप्पू)। ३ धर्म-कर्म का पारितोषिक, दान, भेंट ; (कप्पू ; सूअ २, ५)। °कंखि वि [°काङ्क्षिन्] दक्षिणा का अभिलाषी ; (पउम ३०, ६३)। °यण न [°यन] १ सूर्य का दक्षिण दिशा में गमन; २ कर्क की संक्रान्ति से धन की संक्रान्ति तक के छः मास का काल ; (जो१)। °वत्र, °वह पुं [°पथ] दक्षिण देश; (कप्पू ; उप१४२टी)।

दक्खिणिल्ल वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न या स्थित ; (सम १०० ; पउम ६, १५६)।

दक्खिणेय वि [दाक्षिणेय] जिसको दक्षिणा दी जाती हो वह; (विसे३२७१)।

दक्खिण्ण } न [दाक्षिण्य] १ मुलायजा, "दक्खिण्णेण
दक्खिन्न } वि एंतो सुहअ सुहावेसि अम्ह हिअआइं" (गा८५ ; स्वप्न६८)। २ उदारता, औदार्य ; ३ सरलता, मार्दव ; (सुर १, ६५ ; २, ६२ ; प्रासू ८)। ४ अनुकूलता ; (दंस २)।

दक्खिय वि [दर्शित] दिखलाया हुआ ; (भवि)।

दक्खु देखो **दक्ख**=दृश्।

दक्खु देखो **दक्ख**=दक्ष ; (सूअ १, २, ३)।

दक्खु वि [पश्य, द्रष्टृ] १ देखने वाला ; २ पुं सर्वज्ञ, जिन-देव ; (सूअ १, २, ३)।

दक्खु वि [दृष्ट] १ विलोकित ; २ पुं सर्वज्ञ, जिन-देव ; (सूअ १, २, ३)।

दग न [**दक**] १ पानी, जल ; (सं ५१ ; दं ३४ ; कप्प)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। ३ लवण-समुद्र में स्थित एक आवास-पर्वत ; (सम ६८)। °**गब्भ** पुं [°**गर्भ**] अभ्र, बादल; (ठा ४, ४)। °**तुंड** पुं [°**तुण्ड**] पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)। °**पंचवन्न** पुं [°**पञ्चवर्ण**] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक ग्रह का नाम; (ठा २, ३)। °**पासाय** पुं [°**प्रासाद**] स्फटिक रत्न का बना हुआ महल; (जं १)। °**पिप्पली** स्त्री [°**पिप्पली**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)। °**भास** पुं [°**भास**] वेलन्धर नागराज का एक आवास -पर्वत; (सम ७३)। °**मंचग** पुं [°**मञ्चक**] स्फटिक रत्न का मञ्च ; (जं १)। °**मंडव** पुं [°**मण्डप**]। १ मण्डप-विशेष, जिसमें पानी टपकता हो ; (पण्ह २, ५)। २ स्फटिक रत्न का बनाया हुआ मण्डप; (जं १)। °**मट्टिया**, °**मट्टी** स्त्री [°**मृत्तिका**] १ पानी वाली मिट्टी ; (बृह ४ ; पडि)। २ कला-विशेष ; (जं २)। °**रक्खस** पुं [°**राक्षस**] जल-मानुष के के आकार का जंतु-विशेष ; (सूअ १, ७)। °**रय** पुंन [°**रजस्**] उदक-बिन्दु, जल-कणिका; (कप्प)। °**वण्ण** पुं [°**वर्ण**] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २०)। °**वारग**, °**वारय** पुं [°**वारक**] पानी का छोटा घड़ा ; (राय ; णाया १, २)। °**सीम** पुं [°**सीमन्**] वेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत ; (राज)।

दच्चा देखो **दा**।

दच्छ देखो **दक्ख**=दृश्। भवि—दच्छं, दच्छसि, दच्छिहिसि; (प्राप्र; उत्त २२, ४४; गा ८१६)।

दच्छ देखो **दक्ख**=दक्ष ; "रोगसमदच्छं ओसहं" (उप ७२८ टी ; पण्ह २, ३—पत्र ४५ ; हे २, १७) ;

दच्छ वि [**दे**] तीक्ष्ण, तेज ; (दे ५, ३३)।

दज्झंत, **दज्झमाण** } देखो **दह**=दह्।

दट्ठ वि [**दष्ट**] जिसको दाँत से काटा गया हो वह ; (षड् ; महा)।

दट्ठ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ, विलोकित ; (राज)।

दट्ठंतिय वि [**दार्ष्टान्तिक**] जिस पर दृष्टान्त दिया गया हो वह अर्थ ; (उप पृ १४३)।

दट्ठव्व, **दट्ठु** } देखो **दक्ख**=दृश्।

दट्ठु वि [**द्रष्टृ**] देखने वाला, प्रेक्षक; (विसे १८६५)।

दट्ठुआण, **दट्ठुं**, **दट्ठूण**, **दट्ठूणं** } देखो **दक्ख**=दृश्।

दडवड पुं [**दे**] १ धाटी, अवस्कन्द ; (दे ५, ३५ ; हे ४, ४२२ ; भवि)। २ शीघ्र, जल्दी ; (चंड)।

दडि स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष ; (भवि)।

दड्ढ वि [**दग्ध**] जला हुआ ; (हे १, २१७ ; भग)।

दड्ढालि स्त्री [**दे**] दव-मार्ग ; (षड्)।

दढ वि [**दृढ**] १ मजबूत, बलवान्, पोढ़ा ; (औप ; से ८, ६०)। २ निश्चल, स्थिर, निष्कम्प ; (सूअ १, ४, १ ; श्रा २८)। ३ समर्थ, क्षम ; (सूअ १, ३, १)। ४ अति-निबिड, प्रगाढ; (राय)। ५ कठोर, कठिन ; (पंचा ४)। ६ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त ; (पंचा १ ; ७)। °**केउ** पुं [°**केतु**] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव का नाम ; (पव ७)। °**णेमि** देखो °**नेमि** ; (राज)। °**धणु** पुं [°**धनुष्**] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम ; (सम १५३)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम ; (राज)। °**धम्म** वि [°**धर्मन्**] १ जो धर्म में निश्चल हो ; (बृह १) । २ देव-विशेष का नाम; (आवम)। °**धिईय** वि (°**धृतिक**]। अतिशय धैर्य वाला ; (पउम २६, २२)। °**नेमि** पुं [°**नेमि**] राजा समुद्रविजय का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ली थी और सिद्धाचल पर्वत पर मुक्ति पाई थी; (अंत १४)। °**पइण्ण** वि [°**प्रतिज्ञ**] १ स्थिर-प्रतिज्ञ, सत्य-प्रतिज्ञ; २ पुं. सूर्याभ देव का आगामी जन्म में होने वाला नाम ; (राय)। °**प्पहारि** वि [°**प्रहारिन्**] १ मजबूत प्रहार करने वाला ; २ पुं. जैन मुनि-विशेष, जो पहले चोरों का नायक था और पीछे से दीक्षा लेकर मुक्त हुआ था; (णाया १, १८ ; महा) । °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] एक गाँव का नाम ; (आवम)। °**मूढ** वि [°**मूढ**] नितान्त मूर्ख ; (दे १, ४)। °**रह** पुं [°**रथ**] १ एक कुलकर पुरुष का नाम ; (सम १५०) । २ भगवान् श्री शीतलनाथजी के पिता का नाम ; (सम १५१)। °**रहा** स्त्री [°**रथा**] लोकपाल आदि देवों के अग्र-महिषिओं की बाह्य परिषद् ; (ठा ३, १—पत्र १२७)। °**ाउ** पुं [°**ायुष्**] भगवान् महावीर के समय में तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जन करने

वाला एक मनुष्य ; (ठा ६—पत्र ४५५)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष का नाम ; (सम १५४)।

दढिअ वि [**दृढित**] दृढ़ किया हुआ ; (कुमा)।

दणु } पुं [**दनुज**] दैत्य, दानव; (हे १, २६७ ; कुमा ; **दणुअ** } षड्)। °**इंद**, °**एंद** पुं [°**इन्द्र**] १ दानवों का अधिपति; (गउड ; से १, २)। २ रावण, लङ्का-पति ; (पउम ६६, १०)। °**वइ** पुं [°**पति**] देखो °**इंद**; (पउम १, १ ; ७२, ६० ; सुपा ४५)।

दत्त वि [**दत्त**] १ दिया हुआ, दान किया हुआ, वितीर्ण ; (हे १,४६)। २ न्यस्त, स्थापित ; (जं १)। ३ पुं. स्व-नाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-पुत्र ; (उप ५६२ ; ७६८ टी)। ४ भरत-वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष; (सम १५३)। ५ चतुर्थ बलदेव के पुर्व-जन्म का नाम ; (सम १५३)। ६ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न एक अर्ध-चक्रवर्ती राजा, एक वासुदेव ; (सम ६३)। ७ भरत-क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न एक जिन-देव ; (पव ७)। ८ एक जैन मुनि ; (आक)। ६ नृप-विशेष; (विपा १, ७)। १० एक जैन आचार्य ; (कुप्र ६)। ११ न. दान, उत्सर्ग ; (उत्त १)।

दत्त न [**दात्र**] दाँती; घास काटने का हँसिया ; (दे १, १४)।

दत्ति स्त्री [**दत्ति**] एक वार में जितना दान दिया जाय वह, अ-विच्छिन्न रूप से जितनी भिक्षा दी जाय वह; (ठा ५, १; पंचा १८)।

दत्तिय पुंस्त्री [**दत्तिका**] ऊपर देखो ; " संखा दत्तियस्स " (वव ६)।

दत्तिय पुं [**दत्रिक**] वायु-पूर्ण चर्म ; (राज)।

दत्तिया स्त्री [**दात्रिका**] १ छोटी दाँती, घास काटने का शस्त्र-विशेष ; (राज)। २ देने वाली स्त्री, दान करने वाली स्त्री; (चारु २)।

दत्थर पुं [**दे**] हस्त-शाटक, कर-शाटक; (दे ५, ३४)।

ददंत देखो **दा**।

दद्दर वि [**दे. दर्दर**] १ घना, प्रचुर, अत्यन्त; "गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितला" (सम १३७)। २ पुं. चपेटा, हस्त-तल का आघात ; (सम १३७ ; औप ; णाया १, ८)। ३ आघात, प्रहार; " पायदद्दरएणं कंपयंतेव मेइणितलं " (णाया १, १)। ४ वचनाटोप ; (पण्ह १, ३—पत्र ४४)। ५ सोपान-वीथी, सीढ़ी ; (सम १३७)। ६ वाद्य-विशेष ; (जं २)।

दद्दरिया स्त्री [**दे. दर्दरिका**] १ प्रहार, आघात ; (णाया १, १६)। २ वाद्य-विशेष ; (राय)।

दद्द पुं [**दद्रु**] दाद, क्षुद्र कुष्ठ-रोग ; (भग ७, ६)।

दद्दुर पुं [**दर्दुर**] १ भेक, मेढक ; (सुर १०, १८७ ; प्रासू ४५)। २ चमड़े से अवनद्ध मुँह वाला कलश; (पण्ह २, ५)। ३ देव-विशेष ; (णाया १, १३)। ४ राहु, ग्रह-विशेष ; (सुज्ज १६)। ५ पर्वत-विशेष; (णाया १, १६)। ६ वाद्य-विशेष; (दे ७, ६१; गउड)। ७ न. दर्दर देव का सिंहासन ; (णाया १,१३)। °**वडिंसय** न [°**वतंसक**] देव-विमान विशेष, सौधर्म देवलोक का एक विमान ; (णाया १, १३)।

दद्दुरी स्त्री [**दर्दुरी**] स्त्री-मेढक, भेकी ; (णाया १, १३)।

दधि देखो **दहि** ; (सम ७७ ; पि ३७६)।

दद्ध देखो **दड्ढ**; (सुर २, ११२; पि २२२)।

दप्प पुं [**दर्प**] १ अहंकार, अभिमान, गर्व ; (प्रासू १३२)। २ बल, पराक्रम, जोर ; (से ४, ३)। ३ धृष्टता, धिठाई ; (भग १२, ५)। ४ अरुचि से काम का आसेवन; (निचू १)।

दप्पण पुं [**दर्पण**] १ काच, शीशा, आदर्श; (णाया १,१; प्रासू १६१)। २ वि. दर्प-जनक; (पण्ह २, ४)।

दप्पणिज्ज वि [**दर्पणीय**] बल-जनक, पुष्टि-कारक ; (णाया १, १ ; पण्ण १७ ; औप ; कप्प)।

दप्पि वि [**दर्पिन्**] अभिमानी, गर्विष्ठ ; (कप्पू)।

दप्पिअ वि [**दर्पिक**] दर्प-जनित ; (उवर १३१)।

दप्पिअ वि [**दर्पित**] अभिमानी, गर्वित ; (सुर ७,२०० ; पण्ह १, ४)।

दप्पिट्ठ वि [**दर्पिष्ठ**] अत्यन्त अहंकारी ; (सुपा २२)।

दप्पुल्ल वि [**दर्पवत्**] अहंकार वाला; (हे २,१५६; षड्)।

दब्भ पुं [**दर्भ**] तृण-विशेष, डाभ, काश, कुशा ; (हे१, २१७)। °**पुप्फ** पुं [°**पुष्प**] साँप की एक जाति ; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

दब्भायण } न [**दार्भायन, दार्भ्यायन**] चित्रा-नक्षत्र **दब्भियायण** } का गोत्र ; (इक ; सुज्ज १०)।

दम सक [**दमय्**] निग्रह करना। दमेइ ; (स २८६)। कर्म—दम्मइ ; (उव)। कवकृ—**दम्मंत** ; (उव)।

संकृ—**दमिऊण** ; (कुप्र ३६३) । कृ—**दमियव्व, दम्म, दमेयव्व** ; (काल ; आचा२, ४, २; उव) ।
दम पुं [**दम**] १ दमन, निग्रह; २ इन्द्रिय-निग्रह, बाह्य वृत्ति का निरोध ; (पण्ह २, ४ ; सुपा) । °**घोस** पुं [°**घोष**] चेदि देश के एक राजा का नाम; (णाया १, १६)। °**दंत** पुं [°**दन्त**] १ हस्तिशीर्षक नगर के एक राजा का नाम ; (उप ६४८ टी) । २ एक जैन मुनि ; (विसे २७६६) । °**धर** पुं [°**धर**] एक जैन मुनि का नाम ; (पउम २०, १६३) ।
दमग देखो **दमय**; (णाया १, १६ ; सुपा ३८५ ; वव ३ ; निचू १५ ; बृह १ ; उव) ।
दमग वि [**दमक**] दमन करने वाला ; (निचू ६) ।
दमण न [**दमन**] १ निग्रह, दान्ति; २ वश में करना, काबू में करना ; "पंचिंदियदमणपरा" (आप४०) । ३ उपताप, पीड़ा ; (पण्ह १, ३) । ४ पशुओं को दी जाती शिक्षा ; (पउम १०३, ७१) ।
दमणक, दमणग, दमणय पुंन [**दमनक**] १ दौना, सुगन्धित पत्र वाली वनस्पति-विशेष ; (पण्ह २, ५ ; पण्ण १ ; गउड) । २ छन्द-विशेष , (पिंग) । ३ गन्ध-द्रव्य-विशेष ; (राज) ।
दमदमा अक [**दमदमाय्**] आडम्बर करना । दमदमाइ, दमदमाअइ ; (हे ३, १३८) ।
दमय वि [**दे. द्रमक**] दरिद्र, रङ्क, गरीब ; (दे५, ३४ ; विसे २८४५) ।
दमयंती स्त्री [**दमयन्ती**] राजा नल की पत्नी का नाम; (पडि; कुप्र ५४; ५६) ।
दमि वि [**दमिन्**] जितेन्द्रिय ; (उत्त२२) ।
दमिअ वि [**दमित**] निगृहीत; (गा ८२३; कुप्र ४८) ।
दमिल पुं [**द्रविड**] १ एक भारतीय देश ; २ पुंस्त्री. उसके निवासी मनुष्य; (कुप्र १७२; इक; औप) । स्त्री—°**ली** ; (णाया १, १ ; इक ; औप) ।
दमेयव्व, दम्म देखो **दम=दमय्** ।
दम्म पुं [**द्रम्म**] सोने का सिक्का, सोना-मोहर; (उप पृ ३८७; हे ४, ४२२) ।
दम्मंत देखो **दम=दमय्** ।
दय सक [**दय्**] १ रक्षण करना । २ कृपा करना । ३ चाहना । ४ देना । दयइ ; (आचा) । वकृ—**दअंत, दअमाण** ; (से १२, ६४ ; ३, १२ ; अभि १२) ।
दय न [**दे. दक**] जल, पानी ; (दे ५, ३३ ; बृह १) । °**सीम** पुं [°**सीमन्**] लवण-समुद्र में स्थित एक आवास-पर्वत ; सम ६८) ।
दय न [**दे**] शोक, अफसोस, दिलगीरी ; (दे ५, ३३) ।
दय देखो **दव=द्रव** ; (से १, ५१ ; १२, ६५) ।
°**दय** वि [°**दय**] देने वाला; (कप्प ; पडि) ।
दया स्त्री [**दया**] करुणा, अनुकम्पा, कृपा; (दस ६, १) । °**वर** वि [°**पर**] दयालु ; (पउम२६, ४० ; उप पृ१६१) ।
दयाइअ वि [**दे**] रक्षित ; (दे ५, ३५) ।
दयालु वि [**दयालु**] दया वाला, करुण ; (हे १, १७७ ; १८० ; पउम १६, ३१ ; सुपा ३४० ; श्रा १६) ।
दयावण, दयावन्न वि [**दे**] दीन, गरीब, रंक ; (दे ५, ३५ ; भवि ; पउम ३३, ८६) ।
दर सक [**दृ**] आदर करना । दरइ ; (षड्) ।
दर पुंन [**दर**] भय, डर; (कुमा) । २ अ. ईषत् , थोड़ा, अल्प ; (हे २, २१५) ।
दर न [**दे**] अर्द्ध, आधा ; (दे५, ३३; भवि ; हे २, २१५; बृह ३) ।
दरंदर पुं [**दे**] उल्लास ; (दे५, ३७) ।
दरमत्ता स्त्री [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे ५, ३७) ।
दरमल सक [**मर्दय्**] १ चूर्ण करना, विदारना । २ आघात करना । दरमलइ ; (भवि) । वकृ—**दरमलंत** ; (भवि) ।
दरमलिय वि [**मर्दित**] आहत, चूर्णित ; (भवि) ।
दरवलिअ वि [**दे**] उपभुक्त ; (कुमा) ।
दरवल्ल पुं [**दे**] ग्राम-स्वामी, गाँव का मुखिया ; (दे५, ३६) । °**णिहेल्लण** न [**दे**] शून्य गृह, खाली घर; (दे५, ३७)। °**वल्लह** पुं [**दे**] १ दयित, प्रिय; (दे ५, ३७) । २ कातर, डरपोक; (षड्) । °**विंदर** वि [**दे**] १ दीर्घ, लम्बा ; २ विरल ; (दे ५, ५२) ।
दरि° देखो **दरी** । °**अर** पुं [°**चर**] किंनर; (से ६, ४४)।
दरिअ वि [**दृप्त**] गर्विष्ठ, अभिमानी ; (हे १, १४४ ; पाअ)।
दरिअ वि [**दीर्ण**] १ डरा हुआ, भीत ; (कुमा ; सुपा ६४५) । २ फाड़ा हुआ, विदारित ; (अंत ७) ।
दरिअ (अप) पुं [**दरिद्र**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
दरिआ स्त्री [**दरिका**] कन्दरा, गुफा; (नाट—विक्र ८४)।
दरिद्द वि [**दरिद्र**] १ निर्धन, निःस्व, धन-रहित ; २ दीन, गरीब ; (पाअ ; प्रासू २३ ; कप्पू) ।

दरिद्दि } वि [दरिद्रिन्, °क] ऊपर देखा; "अन्हे
दरिद्दिअ } दरिद्दिणो, कहं विवाहमंगलं रन्नो य पुयं कोमा?" (महा; सण; पि २५७)।
दरिद्दिय वि [दरिद्रित] दुःखित, जो धन-रहित हुआ हो; (महा; पि २५७)।
दरिद्दीहूय वि [दरिद्रीभूत] जो निर्धन हुआ हो; (ठा ३, १)।
दरिस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दरिसइ, दरिसेइ; (हे ४, ३२; कुमा; महा)। वकृ—**दरिसंत**; (सुपा २४)। कृ—**दरिसणिज्ज, दरिसणीय**; (औप; पि १३५; सुर १०, ६)।
दरिसण देखो **दंसण**=दर्शन; (हे २, १०५)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष; (इक)। °**आवरणी** स्त्री [°वरणी] विद्या-विशेष; (पउम ५६, ४०)।
दरिसणिज्ज } देखो **दरिस**। २ न. भेट, उपहार; "गहिऊण
दरिसणीय } दरिसणीयं संपत्तो राइणो मूलं" (सुर १०,६)।
दरिसाव देखो **दरिस**। वकृ—**दरिसावंत**; (उप पृ १८८)।
दरिसाव पुं [दर्शन] दर्शन, साक्षात्कार; "एसो य महप्पा कइवयघरेसु दरिसावं दाऊण पडिनियत्तइ" (महा), "पईव इव दाउं खणनेगं दरिसावं पुणोवि अदंसणीहोइ" (सुपा ११५)।
दरिसावण न [दर्शन] १ दर्शन, साक्षात्कार; (आव १)। २ वि. दर्शक, दिखलाने वाला; (भवि)।
दरिसि वि [दर्शिन्] देखने वाला; (उवा; पि १३५; स ७२७)।
दरिसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ; (कुमा; उव)।
दरी स्त्री [दरी] गुफा, कन्दरा; (णाया १, १; से ६, ४४; उप पृ २६८; स ४१३)।
दरुम्मिल्ल वि [दे] घन, निबिड; (दे ५, ३७)।
दल सक [दा] देना, दान करना, अर्पण करना। दलइ; (कप्प; कस)। "जं तस्स मोल्लं तमहं दलामि" (उप २११ टी)। वकृ—**दलमाण, दलेमाण**; (कप्प; णाया १, १६;—पत्र २०४; ठा ४, २—पत्र २१६)। संकृ—**दलित्ता**; (कप्प)।
दल अक [दल्] १ विकसना। २ फटना, खण्डित होना, द्विधा होना। "अहिमअरकिरणणिउरंबचुंबिअं दलइ कमलवणं" (गा ४६५), "कुड्डयं दलइ" (कुमा)। वकृ—**दलंत**; (से १, ५८)।
दल सक [दलय्] चूर्ण करना, टुकड़े २ करना, विदारना। वकृ—"निम्मूलं **दलमाणो** सयलंतरसत्तुसिन्नबलं" (सुपा ८५)। कवकृ—**दलिज्जंत**; (से ६, ६२)। संकृ—**दलिऊण**; (कुमा)।
दल न [दल] १ सैन्य, लश्कर; (कुमा)। २ पत्र, पत्ती; "तुहवल्लहस्स गोसम्मि आसि अहरो मिलाणकमलदलं" (हेका ५१; गा ५; १८०; २५७; ३६६; ५६२; ५६१; सुपा ६३८)। ३ धन, सम्पत्ति; ४ समूह, समुदाय; (सुपा ६३८)। ५ खण्ड, भाग, अंश; (से ६, ६२)
दलण न [दलन] १ पीसना, चूर्णन; (सुपा१४; ६१६)। २ वि. चूर्ण करने वाला; (सुपा२३४; ४६७; कुप्र १३२;३८३)।
दलमाण देखो **दल**=दा
दलमाण देखो **दल**=दलय्।
दलमल देखो **दरमल**। वकृ—**दलमलंत**; (भवि)।
दलय देखो **दल**=दा। दलयइ; (औप)। भवि—दलइस्संति; (औप)। वकृ—**दलयमाण**; (णाया१, १—पत्र ३७; ठा ३, १—पत्र ११७)। संकृ—**दलइत्ता**; (औप)।
दलय सक [दापय्] दिलाना। दलयइ; (कप्प)।
दलवट्ट देखो **दरमल**। दलवट्टइ; (भवि)।
दलवट्टिय देखो **दलमलिय**; (भवि)।
दलाव सक [दापय्] दिलाना। दलावेइ; (पि ५५२)। वकृ—**दलावेमाण**; (ठा ४, २)।
दलिअ वि [दलित] १ विकसित; (से १२, १)। २ पीसा हुआ; (पाअ)। "दलिअन्नसालितंडुलधवलमिअंकासु राईसु" (गा ६६१)। ३ विदारित, खण्डित; (दे१,१५६; सुर ४, १५२)।
दलिअ न [दलिक] चीज, वस्तु, द्रव्य; (ओघ ५५), "जह जोग्गम्मिवि दलिए सव्वम्मि न कीरए पडिमा" (विसे १६३४)।
दलिअ वि [दे] १ निकूणिताक्ष, जिसने टेढ़ी नजर की हो वह; २ न. उंगली; (दे ५, ५२)। ३ काष्ठ, लकड़ी; (दे ५, ५२;पाअ)
दलिज्जंत देखो **दल**=दलय्।
दलिद्द देखो **दरिद्द**; (हे १, २५४; गा२३०)।
दलिद्दा अक [दरिद्रा] दुर्गत होना, दरिद्र होना। दलिद्दाइ; (हे १, २५४)। भूका—दलिद्दाईअ; (संक्षि ३२)।
दलिल्ल वि [दलवत्] दल-युक्त, दल वाला; (सण)।
दलेमाण देखो **दल**=दा।

दव सक [द्रु] १ गति करना। २ छोड़ना। दवए ; (विसे २८)।

दव पुं [दव] १ जंगल का अग्नि, वन का वह्नि ; (दे ५, ३३)। २ वन, जंगल। °**ग्गि** पुं [°ाग्नि] जंगल का अग्नि; (हे १, १७७ ; प्राप्र)।

दव पुं [द्रव] १ परिहास ; (दे ५, ३३)। २ पानी, जल ; (पंचव २)। ३ पनीली वस्तु, रसीली चीज ; (विसे १७०७)। ४ वेग ; "दवदववारी" (सम३७)। ५ संयम, विरति ; (आचा)। °**कर** वि [°कर] परिहास-कारक ; (भग६, ३३)। °**कारी, °गारी** स्त्री [°कारी] एक प्रकार की दासी, जिसका काम परिहास-जनक बातें कर जी बहलाना होता है ; (भग ११, ११ ; णाया१, १ टी—पत्र ४३)।

दवण न [दवन] यान, वाहन ; (सुअ १, १)।

दवणय देखो **दमणय** ; (भवि)।

दवदवा स्त्री [द्रवद्रवा] वेग वाली गति ; "नाऊण गयं खुहियं नयरजणो धाविओ दवदवाए" (पउम ८, १७३)।

दवर पुं [दे] १ तन्तु, डोरा, धागा ; (दे५, ३५ ; आवम)। २ रज्जु, रस्सी ; (णाया १, ८)।

दवरिया स्त्री [दे] छोटी रस्सी ; (विसे)।

दवहुत्त न [दे] ग्रीष्म-मुख, ग्रीष्म काल का प्रारम्भ ; (दे ५, ३६)।

दवाव सक [दापय्] दिलाना। दवावेइ ; (महा)। वकृ—**दवावेमाण** ; (णाया१, १४)। संकृ—**दवावेऊण**; (महा)। हेकृ—**दवावेत्तए** ; (कस)।

दवावण न [दापन] दिलाना ; (निचू २)।

दवाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ ; (सुपा १३० ; स १६३ ; महा ; उप पृ ३८५ ; ७२८ टी)।

दविअ पुंन [द्रव्य] १ अन्वयी वस्तु, जीव आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु ; (सम्म६ ; विसे २०३१)। २ वस्तु, गुणाधार पदार्थ; (ओघ५, आचा ; कप्प)। ३ वि. भव्य, मुक्ति के योग्य ; (सूअ १, २, १)। ४ भव्य, सुन्दर, शुद्ध ; (सूअ १, १६)। ५ राग-द्वेष से विरहित, वीतराग ; (सूअ १, ८)। °**णुओग** पुं [°ानुयोग] पदार्थ-विचार, वस्तु की मीमांसा ; (ठा १०)। देखो **दव्व**।

दविअ वि [द्रविक] संयम वाला, संयम-युक्त ; (आचा)।

दविअ वि [द्रवित] द्रव-युक्त, पनीली वस्तु; (ओघ)।

दविड देखो **दविल** ; (सुपा ५८०)।

दविडी स्त्री [द्राविडी] लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी)।

दविण न [द्रविण] धन, पैसा, संपत्ति ; (पाअ ; कप्प)।

दविल पुं [द्रविड] १ देश-विशेष, दक्षिण देश-विशेष ; २ पुंस्त्री. द्रविड़ देश का निवासी मनुष्य ; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

दव्व देखो **दविअ**=द्रव्य ; (सम्म १२ ; भग ; विसे २८ ; अणु ; उत्त २८)। ६ धन, पैसा, संपत्ति ; (पाअ ; प्रासु १३१)। ७ भूत या भविष्य पदार्थ का कारण ; (विसे २८; पंचा ६)। ८ गौण, अ-प्रधान ; ९ बाह्य, अ-तथ्य; (पंचा ४ ; ६)। °**ट्ठिय** पुं [°ार्थिक, °स्थित, °ास्तिक] द्रव्य को ही प्रधान मानने वाला पक्ष, नय-विशेष; "दव्वट्ठियस्स सव्वं सया अणुप्पन्नमविणट्ठं" (सम्म ११ ; विसे ४५७)। °**लिंग** न [°लिङ्ग] बाह्य वेष; (पंचा ४)। °**लिंगि** वि [°लिङ्गिन्] भेष-धारी साधु ; (गु १०)। °**लेस्सा** स्त्री [°लेश्या] शरीर आदि पौद्गलिक वस्तु का रंग, रूप; (भग)। °**वेय** पुं [°वेद] पुरुष आदि का बाह्य आकार ; (राज)। °**ायरिय** पुं [°ाचार्य] अ-प्रधान आचार्य, आचार्य के गुणों से रहित आचार्य; (पंचा ६)।

दव्वहलिया स्त्री [द्रव्यहलिका] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३५)।

दव्वि° देखो **दव्वी** ; (षड्)।

दव्विंदिअ न [द्रव्येन्द्रिय] स्थूल इन्द्रिय ; (भग)।

दव्वी स्त्री [दर्वी] १ कंछी, चमची, डोई ; (पाअ)। २ साँप की फन ; (दे ५, ३७)। °**अर, °कर** पुं [°कर] साँप, सर्प ; (दे ५, ३७ ; पण्ण १)।

दव्वी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।

दस त्रि.ब. [दशन्] दस, नव और एक ; (हे १, १६२ ; ठा ३, १—पत्र ११६ ; सुपा २६७)। °**उर** न [°पुर] नगर-विशेष ; (विसे २३०३)। °**कंठ** पुं [°कण्ठ] रावण, एक लंका-पति; (से १५, ६१)। °**कंधर** पुं [°कन्धर] राजा रावण ; (गउड)। °**कालिय** न [°कालिक] एक जैन आगम-ग्रन्थ ; (दसनि १)। °**ग** न [°क] दश का समूह ; (दं ३८ ; नव १२)। °**गुण** वि [°गुण] दस-गुना ; (ठा १०)। °**गुणिअ** वि [°गुणित] दस-गुना ; (भग ; श्रा १०)। °**ग्गीव** पुं [°ग्रीव] रावण ; (पउम ७३, ८)। °**दसमिया** स्त्री [°दशमिका]जैन साधु का

एक धार्मिक अनुष्ठान, प्रतिमा-विशेष ; (सम १००)। °**दिवसिय** वि [°**दिवसिक**] दस दिन का ; (णाया १, १—पत्र ३७)। °**द्ध** पुंन [°**र्ध**] पाँच, ५ ; (सम ६० ; णाया १, १)। °**धणु** पुं [°**धनुष्**] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष ; (सम १५३)। °**पएसिय** वि [°**प्रदेशिक**] दस अवयव वाला ; (ठा १०)। °**पुर** देखो °**उर** ; (महा)। °**पुव्वि** वि [°**पूर्विन्**] दस पूर्व-ग्रन्थों का अभ्यासी ; (ओघ १)। °**बल** पुं [°**बल**] भगवान् बुद्ध ; (पाअ ; हे १, २६२)। °**म** वि [°**म**] १ दसवाँ ; (राज)। २ चार दिनों का लगातार उपवास ; (आचा ; णाया १, १ ; सुर ४, ५५)। °**मभत्तिय** वि [°**मभक्तिक**] चार दिनों का लगातार उपवास करने वाला ; (पण्ह २, ३)। °**मासिअ** वि [°**माषिक**] दस मासे का तौल वाला, दस मासे का परिमाण वाला ; (कप्पू)। °**मी** स्त्री [°**मी**] १ दसवीं ; २ तिथि-विशेष ; (सम २६)। °**मुद्दियाणंतग** न [°**मुद्रिकानन्तक**] हाथ के उंगलिओं की दस अंगूठियाँ ; (औप)। °**मुह** पुं [°**मुख**] रावण, राक्षस-पति ; (हे १, २६२ ; प्राप्र ; हेका ३३४)। °**मुहसुअ** पुं [°**मुखसुत**] रावण का पुत्र, मेघनाद आदि ; (से १३, ६०)। °**य** देखो °**ग** ; (ठा १०)। °**रत्त** न [°**रात्र**] दस रात ; (विपा १, ३)। °**रह** पुं [°**रथ**] १ रामचन्द्रजी के पिता का नाम ; (सम १५२ ; पउम २०, १८३)। २ अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष ; (ठा ६—पत्र ४४७)। °**रहसुय** पुं [°**रथसुत**] राजा दशरथ का पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ; (पउम ५६, ८७)। °**वअण** पुं [°**वदन**] राजा रावण ; (से १०, ५)। °**वल** देखो °**बल** ; (प्राप्र)। °**विह** वि [°**विध**] दस प्रकार का ; (कुमा)। °**वेआलिय** न [°**वैकालिक**] जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, ; (दसनि १ ; णंदि)। °**हा** अ [°**धा**] दस प्रकार से ; (जी २४)। °**ाणण** पुं [°**ानन**] राक्षसेश्वर रावण ; (से ३, ६३)। °**ाहिया** स्त्री [°**ाहिका**] पुत्र-जन्म के उपलक्ष्य में किया जाता दस दिनों का एक उत्सव ; (कप्प)।

दसण पुं [**दशन**] १ दाँत, दन्त ; (भग ; कुमा)। २ न. दंश, काटना ; (पव ३८)। °**च्छय** पुं [°**च्छद**] होठ, अधर ; (सुर १२, २३४)।

दसण्ण पुं [**दशार्ण**] देश-विशेष ; (उप २११ टी ; कुमा)। °**कूड** न [°**कूट**] शिखर-विशेष ; (आवम)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (ठा १०)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] दशार्णपुर का एक विख्यात राजा, जो अद्वितीय आडम्बर से भगवान् महावीर को वन्दन करने गया था और जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (पडि)। °**वइ** पुं [°**पति**] दशार्ण देश का राजा ; (कुमा)।

दसतीण न [**दे**] धान्य-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।

दसन्न देखो **दसण्ण** ; (सत्त ६७ टी)।

दसा स्त्री [**दशा**] १ स्थिति, अवस्था ; (गा२२७ ; २८४ ; प्रासू११०)। २ सौ वर्ष के प्राणी की दस २ वर्ष की अवस्था ; (दसनि१)। ३ सुता या ऊन का छोटा और पतला धागा ; (ओघ७२५)। ४ ब. जैन आगम-ग्रन्थ विशेष ; (अणु)।

दसार पुं [**दशार्ह**] १ समुद्रविजय आदि दश यादव ; (सम १२६ ; हे २, ८५ ; अंत २ ; णाया १, ४—पत्र ६६)। २ वासुदेव, श्रीकृष्ण ; (णाया १, १६)। ३ बलदेव ; (आवम)। ४ वासुदेव की संतति ; (राज)। °**णेउ** पुं [°**नेतृ**] श्रीकृष्ण ; (उव)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] श्रीकृष्ण ; (पाअ)। °**वइ** पुं [°**पति**] श्रीकृष्ण ; (कुमा)।

दसिया देखो **दसा** ; (सुपा ६४१)।

दसु पुं [**दे**] शोक, दिलगीरी ; (दे ५, ३४)।

दसुत्तरसय न [**दशोत्तरशत**] १ एक सौ दश। २ वि. एक सौ दसवाँ, ११० वाँ ; (पउम ११०, ४५)।

दसेर पुं [**दे**] सूत्र-कनक ; (दे ५, ३३)।

दस्स देखो **दंस**=दर्शय्। कृ—**दस्सणीअ** ; (स्वप्न६५)।

दस्सण देखो **दंसण** ; (मै २१)।

दस्सु पुं [**दस्यु**] चोर, तस्कर ; (श्रा २७)।

दह सक [**दह्**] जलना, भस्म करना। दहइ ; (महा)। कर्म—दहिज्जइ ; (हे४, २४६), दज्झइ ; (आचा)। वकृ—दहंत ; (श्रा२८)। कवकृ—**दज्झंत, दज्झमाण** ; (नाट—मालती ३० ; पि २२२)।

दह पुं [**द्रह**] ह्रद, बड़ा जलाशय, झील, सरोवर ; (भग ; उवा ; णाया १, ४—पत्र ६६ ; सुपा १३७)। °**फुल्लिया** स्त्री [°**फुल्लिका**] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १)। °**वई**, °**ावई** स्त्री [°**वती**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ८० ; जं ४)।

दह देखो **दस** ; (हे १, २६२ ; दे १२ ; पि २६२ ; पउम ७८, २५ ; से १३, ६४ ; प्राप्र ; से १४, १६ ; २, ११ ; १०, ४ ; पउम ८, ४४ ; प्राप्र)।

दहण न [**दहन**] १ दाह, भस्मीकरण ; २ पुं. अग्नि, वह्नि ; (पराह १, १ ; उप पृ २२ ; सुपा ४७४ ; श्रा २८)।
दहणी स्त्री [**दहनी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७ १३८)।
दहबोल्ली स्त्री [**दे**] स्थाली, थलिया ; (दे ५, ३६)।
दहावण वि [**दाहक**] जलाने वाला ; (सण)।
दहि न [**दधि**] दही, दूध का विकार ; (ठा ३, ३ ; गाया १, १ ; प्राप्र)। °**घण** पुं [°**घन**] दधि-पिण्ड, अतिशय जमा हुआ दही; (पराण १७—पत्र ५२६)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ द्वीप-विशेष; (पउम ५१, १)। २ एक नगर ; (पउम ५१, २)। ३ पर्वत-विशेष ; (राज)। °**वण्ण**, °**वन्न** पुं [°**पर्ण**] १ एक राजा, नृप-विशेष ; (कुप्र ६६) । २ वृक्ष-विशेष ; (औप ; सम १५२ ; पराण १—पत्र ३१)। °**वासुया** स्त्री [°**वासुका**] वनस्पति-विशेष ; (जीव ३)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] नृप-विशेष ; (महा)। °**सर** पुं [°**सर**] खाद्य-द्रव्य-विशेष ; (दे ३, २६ ; ५, ३६)।
दहिउप्फ न [**दे**] नवनीत, मक्खन ; (दे ५, ३५)।
दहिट्ठ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, कपित्थ ; (दे ५, ३५)।
दहिण देखो **दाहिण** ; (नाट—वेणी ६७)।
दहित्थर } पुं [**दे**] दधिसर, खाद्य-विशेष; (दे ५, ३६)।
दहित्थार }
दहिमुह पुं [**दे**] कपि, वानर ; (दे ५, ४४)।
दहिय पुं [**दे**] पक्षि-विशेष; "जं लावयतितिरिदहियमोरं मारंति अद्दोस वि के वि घोरं" (कुप्र ४२७)।
दा सक [**दा**] देना, उत्सर्ग करना। दाइ, देइ ; (भवि ; हे २, २०६ ; आचा; महा ; कस)। भवि—**दाहं**, दाहामि, दाहिमि; (हे ३, १७० ; आचा)। कर्म—दिज्जइ ; (हे ४, ४३८)। वकृ—**दिंत, दंत, ददंत, देयमाण**; (सुर १, २१२ ; गा २३ ; ४६४ ; हे ४, ३७६ ; बृह १ ; णाया १, १४—पत्र १८६)। कवकृ—**दिज्जंत, दिज्जमाण, दीअमाण** ; (गा १०१ ; सुर ३, ७६ ; १०,५; सम ३६; सुपा ५०२ ; मा ३३)। संकृ—**दच्चा, दाउं, दाऊण** ; (विपा १, १ ; पि ५८७ ; कुमा ; उव)। हेकृ—**दाउं** ; (उवा)। कृ—**दायव्व, देय** ; (सुर १, ११० ; सुपा २३३; ४४४ ; ५३२)। हेकृ—**देवं** (अप); (हे ४, ४४१)।
[**दा**] देखो **ता**=तावत् ; (से ३, १०)।
[**दा**]**अ** देखो **दाव**=दर्शय्। दाएइ; (विसे ८४४)। कर्म—दाइज्जइ ; (विसे ४६०)। कवकृ—**दाइज्जमाण**; (कप्प)।
दाअ पुं [**दे**] प्रतिभू, जामीनदार; (दे ५, ३८)।
दाअ पुं [**दाय**] दान, उत्सर्ग ; (णाया १, १—पत्र ३७)।
दाइ वि [**दायिन्**] दाता, देने वाला ; (उप पृ १६२)।
दाइअ वि [**दर्शित**] दिखलाया हुआ; (विसे १०१२)।
दाइअ पुं [**दायिक**] १ पैतृक संपत्ति का हिस्सेदार; (उप पृ ४७; महा)। २ गोत्रिक, समान-गोत्रीय; (कप्प)।
दाइज्जमाण देखो **दाअ**=दर्शय्।
दाउ वि [**दातृ**] दाता, देने वाला; (महा; सं १; सुपा १६१)।
दाउं देखो **दा**=दा।
दाओयरिय वि [**दाकोदरिक**] जलोदर रोग वाला ; (विपा १, ७)।
दाघ देखो **दाह** ; (हे १, २६४)।
दाडिम न [**दाडिम**] फल-विशेष; अनार ; (महा)।
दाडिमी स्त्री [**दाडिमी**] अनार का पेड़ ; (पि २४०)।
दाढा स्त्री [**दंष्ट्रा**] बड़ा दाँत, दन्त-विशेष ; (हे २, १३० ; गउड)।
दाढि वि [**दंष्ट्रिन्**] १ दाढ़ा वाला ; २ पुं. हिंसक पशु ; (वेणी ४६)। ३ सूअर, वराह ; "किं दाढीभयभीओ निययं गुहं केसरी रियइ" (पउम ७, १८)।
दाढिआ स्त्री [**दे**] दाढ़ी, मुख के नीचे का भाग, श्मश्रु, ठुड्डी के नीचे के बाल ; (दे २, १०१)।
दाढिआलि } स्त्री [**दंष्ट्रिकावलि**] १ दाढ़ी की पंक्ति। **दाढिगालि** } २ वस्त्र-विशेष ; (बृह ३ ; जीत)।
दाण पुंन [**दान**] १ दान, उत्सर्ग, त्याग ; "एए हवंति दाणा" (पउम १४, ५४; कप्प ; प्रासू ४८ ; ६७ ; १७२)। २ हाथी का मद ; (पाअ ; षड् ; गउड)। ३ जो दिया जाय वह ; (गउड)। °**विरय** पुं [°**विरत**] एक राजा; (सुपा १००)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] सत्रागार ; (तीन)।
दाणंतराय न [**दानान्तराय**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दान देने की इच्छा नहीं होती है ; (राय)।
दाणव पुं [**दानव**] दैत्य, असुर, दनुज ; (दे १, १७७ ; अच्चु ४१ ; प्रासू ८६)।
दाणविंद पुं [**दानवेन्द्र**] असुरों का स्वामी ; (णाया १, ८ ; पउम ६२, ३६ ; प्रासू १०७)।
दाणि स्त्री [**दे**] शुल्क, चुंगी ; (सुपा ३६० ; ५४८)।
दाणि } अ [**इदानीम्**] इस समय, अभी; (प्रति ३६ ;
दाणिं } स्वप्न २० ; हे १, २६ ; ४, २७७ ; अभि ३७ ;
दाणीं } स्वप्न ३३)।

दाथ वि [**द्वाःस्थ**] १ द्वार पर स्थित। २ पुं. प्रतीहार, चपरासी ; (दे ६, ७२)।

दादलिआ स्त्री [**दे**] अंगुली, उंगली ; (दे ५, ३८)।

दापण न [**दापन**] दिलाना ; "अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं" (सत्त २६ टी)।

दाम न [**दामन्**] १ माला, स्रज् ; (पगह १, ४ ; कुमा)। २ रज्जु, रस्सी ; (गा १७२ ; हे १, ३२)। ३ पुं. वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत; (राज)। °**वंत** वि [°**वत्**] माला वाला ; (कुमा)।

दामड्ढि पुं [**दामस्थि**] सौधर्म देवलोक के इन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति देव ; (इक)।

दामड्ढि पुं [**दामर्द्धि**] ऊपर देखो; (ठा ५,१—पत्र ३०३)।

दामण न [**दे**] बन्धन, पशुओं का रस्सी से नियन्त्रण ; (पत्र ३८)।

दामणी स्त्री [**दामनी**] १ पशुओं को बाँधने की रस्सी; (भग १६, ६)। २ भगवान् कुन्थुनाथ की मुख्य शिष्या; (तित्थ)। ३ स्त्री और पुरुष का रज्जु के आकार वाला एक शुभ लक्षण ; (पगह २,४ टी—पत्र ८४; पगह २, ४—पत्र ६८; ७६; जं २)।

दामणा स्त्री [**दे**] १ प्रसव, प्रसूति ; २ नयन, आँख ; (दे ५, ५२)।

दामिय वि [**दामित**] संयमित, नियन्त्रित; (सण)।

दामिली स्त्री [**द्राविडी**] द्रविड़ देश की लिपि में निबद्ध एक मन्त्र-विद्या ; (सुम २, २)।

दामी स्त्री [**दामी**] लिपि-विशेष ; (सम ३५)।

दामोअर पुं [**दामोदर**] १ श्रीकृष्ण वासुदेव; (ती ४)। २ अतीत उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में उत्पन्न नववाँ जिनदेव ; (पव ७)।

दायग वि [**दायक**] दाता, देने वाला ; (उप ७२८ टी ; महा ; सुर २, ४४ ; सुपा ३७८)।

दायण न [**दान**] देना; "दायणे अ निकाए अ अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे" (सम २१)। "तवाविहाणं तह दाणदाप (? य) णं" (सत्त २६)।

दायणा स्त्री [**दापना**] पृष्ट अर्थ की व्याख्या ; (विसे २६३२)।

दायय देखो **दायग** ; "अजिअसंतिपायया हुंतु मे सिवसुहाण दायया" (अजि ३४)।

दायव्व देखो **दा**=दा।

दायाद पुं [**दायाद**] पैतृक संपत्ति का भागीदार ; (आचा)।

दायार वि [**दायार**] याचक, प्रार्थी ; (कप्प)।

दार सक [**दारय्**] विदारना, तोड़ना, चूर्ण करना। वकृ—**दारंत** ; (कुमा)।

दार पुं [**दे**] कटी-सूत्र, काँची ; (दे ५, ३८)।

दार पुंन [**दार**] कलत्र, स्त्री, महिला; (सम ५० ; स १३७ ; सुर ७, २०१; प्रासु ६५), "दव्वेण अप्पकालं गहिया वेसावि होइ परदारं" (सुपा २८०)।

दार न [**द्वार**] दरवाजा, निकलने का मार्ग ; (औप ; सुपा ३६७)। °**ग्गला** स्त्री [°**र्गला**] दरवाजे का आगल ; (गा ३२२)। °**ट्ठ**, °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ द्वार में स्थित। २ पुं. दरवान, प्रतीहार; (बृह १ ; दे २, ५२)। °**पाल**, °**वाल** पुं [°**पाल**] दरवान, द्वार-रक्षक ; (उप ५३० टी ; सुर १०, १३६; महा)। °**वालय**, °**वालिय** पुं. [°**पालक**, °**पालिक**] दरवान, प्रतीहार ; (पउम १७, १६; सुपा ४६६)।

दार } पुं [**दारक**] शिशु, बालक, बच्चा; (उप पृ ३०८;
दारग } सुर १५, १२६ ; कप्प)। देखो **दारय**।

दारद्धंता स्त्री [**दे**] पेटा, संदूक ; (दे ५, ३८)।

दारय वि [**दारक**] १ विदारण करने वाला, विध्वंसक ; (कुप्र १३०)। २ देखो **दारग** ; (कप्प)।

दारिअ वि [**दारित**] विदारित, फाड़ा हुआ; (पाअ)।

दारिआ स्त्री [**दारिका**] लड़की ; (स्वप्न १५ ; णाया १, १६ ; महा)।

दारिआ स्त्री [**दे**] वेश्या, वारांगना; (दे ५, ३८)।

दारिद्द न [**दारिद्र्य**] १ निर्धनता ; २ दीनता ; (गा६७१ ; महा ; प्रासु १७३)। ३ आलस्य ; (प्रामा)।

दारिद्दिय वि [**दारिद्रित**] दरिद्रता-प्राप्त, दरिद्र ; (पउम ५५, २५)।

दारु न [**दारु**] काष्ठ, लकड़ी; (सम ३६; कुप्र १०४; स्वप्न ७०)। °**ग्गाम** पुं [°**ग्राम**] ग्राम-विशेष; (पउम ३०, ६०)। °**दंडय** पुंन [°**दण्डक**] काष्ठ-दण्ड, साधुओं का एक उपकरण; (कस)। °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] पर्वत-विशेष ; (जीव३)। °**पाय** न [°**पात्र**] काष्ठ का बना हुआ भाजन ; (ठा३, ३)। °**पुत्तय** पुं [°**पुत्रक**] कठपुतला ; (अच्चु ८२)। °**मड** पुं [°**मड**] भरत-क्षेत्र के एक भावी जिन-देव के पूर्व जन्म

का नाम ; (सम१५४)। °संकम पुं [°संकम] काष्ठ का बना हुआ पूल, सेतु ; (आचा)।

दारुअ पुं [**दारुक**] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर उत्तम गति प्राप्त की थी ; (अंत ३)। २ श्रीकृष्ण का एक सारथि ; (णाया १, १६)। ३ न. काष्ठ, लकड़ी ; (पउम २६, ६)।

दारुण वि [**दारुण**] १ विषम, भयंकर, भीषण ; (णाया १, २ ; पाअ ; गउड)। २ क्रोध-युक्त, रौद्र ; (वव१)। ३ न. कष्ट, दुःख ; (स ३२२)। ४ दुर्भिक्ष, अकाल ; (उप १३६ टी)।

दारुणी स्त्री [**दारुणी**] विद्या-देवी विशेष; (पउम ७, १४०)।

दालण न [**दारण**] विदारण, खण्डन ; (पण्ह १, १)।

दालि स्त्री [**दे.दालि**] १ दाल, दला हुआ चना, अरहर, मूँग आदि अन्न ; (सुपा ११ ; सण)। २ राजि, रेखा ; (ओघ ३२३)।

दालिअ न [**दे**] नेत्र, आँख ; (दे ५, ३८)।

दालिद्द देखो **दारिद्द** ; (हे १, २५४ ; प्रासू ७०)।

दालिद्दिय देखो **दारिद्दिय** ; (सुर१३, ११६ ; वज्जा१३८)।

दालिम देखो **दाडिम** ; (प्राप्र)।

°**दालियंब** न [**दालिकाम्ल**] दाल का बना हुआ खाद्य-विशेष; (पण्ह २, ५)।

दालिया स्त्री [**दालिका**] देखो **दालि** ; (उवा)।

दाली देखो **दालि** ; (ओघ ३२३)।

दाव सक [**दर्शय्**] दिखलाना, बतलाना। दावइ, दावेइ ; (हे४, ३२ ; गा३१५)। वकृ—**दावंत**; (गा ६२०)।

दाव सक [**दापय्**] दिलाना, दान करवाना । दावेइ ; (कस)। वकृ—**दावेंत** ; (पउम११७, २६; सुपा ६१८)। हेकृ—**दावेत्तए** ; (कप्प)।

दाव देखो **ताव**=तावत ; (से३, २६ ; स्वप्न१२ ; अभि३६)।

दाव पुं [**दाव**] १ वन, जंगल ; २ देव, देवता ; (से ६, ४३)। ३ जंगल का अग्नि ; (पाअ)। °ग्गि पुं [°ग्नि] जंगल की आग ; (हे१, ६७)। °णल, °नल पुं [°नल] जंगल की आग ; (सण ; सुपा१६७ ; पडि)।

दावण न [**दे**] छान, पशुओं को पैर में बाँधने की रस्सी; (कुप्र ४३६)।

दावण न [**दापन**] दिलाना ; (सुपा ४६६)।

दावणया स्त्री [**दापना**] दिलाना ; (स ५१ ; पडि)।

दावद्दव पुं [**दावद्रव**] वृक्ष-विशेष ; (णाया १, ११—पत्र १७१)।

दावर पुं [**द्वापर**] १ युग-विशेष, तीसरा युग। २ न. द्विक, दो; "नो तियं नो चेव दावरं" (सुअ१, २, २, २३)। °**जुम्म** पुं [°**युग्म**] राशि-विशेष ; (ठा ४, ३—पत्र २३७)।

दावाव सक [**दापय्**] दिलाना। संकृ—**दावावेउं** ; (महा)।

दाविअ वि [**दर्शित**] दिखलाया हुआ, प्रदर्शित ; (पाअ ; से १, ५३ ; ५, ८०)।

दाविअ वि [**दापित**] दिलाया हुआ ; (सुपा २४१)।

दाविअ वि [**द्रावित**] १ झराया हुआ, टपकाया हुआ ; २ नरम किया हुआ ; (अच्चु ८८)।

दावेंत देखो **दाव**=दापय्।

दास पुं [**दर्श**] दर्शन, अवलोकन ; (षड्)।

दास पुं [**दास**] १ नौकर, कर्मकर; (हे २, २०६ ; सुपा १२२ ; प्रासू १७५ ; सं१८; कप्पू)। २ धीवर, "केवट्टो धीवरो दासो" (पाअ)। °**चेड**, °**चेडग** पुं [°**चेट**] १ छोटी उम्र का नौकर ; २ नौकर का लड़का ; (महा ; णाया १, २)। °**सच्च** पुं [°**सत्य**] श्रीकृष्ण ; (अच्चु १७)।

दासरहि पुं [**दाशरथि**] राजा दशरथ का पुत्र, रामचन्द्र ; (से १, १४)।

दासी स्त्री [**दासी**] नौकरानी ; (औप ; महा)।

दासीखब्बडिया स्त्री [**दासीकर्बटिका**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।

दाह पुं [**दाह**] १ ताप, जलन, गरमी ; २ दहन, भस्मीकरण; (हे १, २६४ ; प्रासू१८)। ३ रोग-विशेष ; (विपा१,१)। °**ज्जर** पुं [°**ज्वर**] ज्वर-विशेष; (सुपा३११)। °**वक्कंतिय** वि [°**व्युत्क्रान्तिक**] जिसको दाह उत्पन्न हुआ हो वह ; (णाया १, १—पत्र ६४)।

दाहं देखो **दा**=दा।

दाहग वि [**दाहक**] जलाने वाला ; (उवर ८१)।

दाहण न [**दाहन**] जलाना, भस्म कराना ; (पउम १०२, १६१)।

दाहिण देखो **दक्खिण**; (भग; कस ; हे १, ४५; २, ७२; गा ४३३ ; ८१६)। °**दारिय** वि [°**द्वारिक**] दक्षिण दिशा में जिसका द्वार हो वह। २ न. अश्विनी-प्रमुख सात नक्षत्र ; (ठा ७)। °**पच्चत्थिम** वि [°**पश्चिमीय**] दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच का भाग, नैर्ऋत कोण ; (भग)। °**पह** पुं [°**पथ**] १ दक्षिण देश की ओर का

रास्ता ; २ दक्षिण देश ; " गच्छामि दाहिणपहं " (पउम ३२, १३) । °पुरत्थिम वि [°पूर्वीय] दक्षिण और पूर्व दिशा के बीच का भाग, अग्नि-कोण ; (भग) । °वत्त वि [°वर्त] दक्षिण में आवर्त वाला (शंख आदि) ; (ठा ४, २—पत्र २१६) ।

दाहिणा देखो **दक्खिणा** ; (ठा ६ ; सुज्ज १०) ।

दाहिणिल्ल देखो **दक्खिणिल्ल** ; (पउम ७, १५ ; विपा १, ७) ।

दाहिणी स्त्री [**दक्षिणा**] दक्षिण दिशा ; (कुमा) ।

दि त्रि.व. (**द्वि**) दो, दो की संख्या वाला ; (हे १, ९४; से ६, ४३) ।

दि° देखो **दिसा** ; (गा ८६६) । °**क्करि** पुं [°**करिन्**] दिग्-हस्ती ; (कुमा) । °**ग्गइंद** पुं [°**गजेन्द्र**] दिग्-हस्ती ; (गउड) । °**ग्गय** पुं [°**गज**] दिग्-हस्ती ; (स ११३) । °**चक्कसार** न [°**चक्रसार**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक) । °**म्मोह** पुं [°**मोह**] दिशा-भ्रम ; (गा ८८६) । देखो **दिसा** ।

दिअ पुं न [**दे**] दिवस, दिन ; (दे ५, ३९), " राइंदिआइं " (कप्प) ।

दिअ पुं [**द्विज**] १ ब्राह्मण, विप्र ; (कुमा ; पाअ ; उप ७६८ टी) । २ दन्त, दाँत ; ३ ब्राह्मण आदि तीन वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ; ४ अण्डज, अण्डे से उत्पन्न होने वाला प्राणी ; ५ पक्षी ; ६ वृक्ष-विशेष, टिंबरू का पेड़ ; (हे १, ९४) । °**राय** पुं [°**राज**] १ उत्तम द्विज ; २ चन्द्रमा ; (सुपा ४१२ ; कुप्र १९) ।

दिअ पुं [**द्विक**] काक, कौआ ; (उप ७६८ टी) ।

दिअ पुं [**द्विप**] हस्ती, हाथी ; (हे २, ७९) ।

दिअ न [**दिव**] स्वर्ग, देवलोक, (पिंग) । °**लोअ**, °**लोग** पुं [°**लोक**] स्वर्ग, देवलोक ; (पउम २२, ४५ ; सुर ७, १) ।

दिअ वि [**द्रुत**] हत, मार डाला हुआ ; "चंदेण व दियराएण जेण आणंदियं भुवणं" (कुप्र १९) ।

दिअंत पुं [**दिगन्त**] दिशा का प्रान्त भाग ; (महा) ।

दिअंबर वि [**दिगम्बर**] १ नग्न, वस्त्र-रहित ; २ पुं. एक जैन संप्रदाय ; (भवि ; उवर १२२ ; कुप्र ४४३) ।

दिअज्झ पुं [**दे**] सुवर्णकार, सोनार ; (दे ५, ३९) ।

दिअधुत्त पुं [**दे**] काक, कौआ ; (दे ५, ४१) ।

दिअर पुं [**देवर**] पति का छोटा भाई ; (गा ३५ ; प्राप्र ; पाअ ; हे १, १४६ ; सुपा ४८७) ।

दिअलिअ वि [**दे**] मूर्ख, अज्ञानी ; (दे ५, ३९) ।

दिअली स्त्री [**दे**] स्थूणा, खंभा, खूँटी ; (पाअ) ।

दिअस पुंन [**दिवस**] दिन, दिवस ; (गउड ; पि २६४) । °**कर** पुं [°**कर**] सूर्य, रवि ; (स १, ५३) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] सूर्य, सूरज ; (पउम १४, ८३) । °**यर** देखो °**कर** ; (पाअ) । देखो **दिवस** ।

दिअसिअ न [**दे**] १ सदा-भोजन ; (दे ५, ४०) । २ अनुदिन, प्रतिदिन ; (दे ५, ४० ; पाअ) ।

दिअह देखो **दिअस** ; (प्राप्र ; पाअ) ।

दिअहुत्त न [**दे**] पूर्वाह्न का भोजन, दुपहर का भोजन ; (दे ५, ४०) ।

दिआ अ [**दिवा**] दिन, दिवस ; (पाअ ; गा ६६ ; सम १९ ; पउम २६, २६) । °**णिस** न [°**निश**] दिन-रात, सदा ; (पिंग) । °**राअ** न [°**रात्र**] दिन-रात, सर्वदा ; (सुपा ३१८) । देखो **दिवा** ।

दिआहम पुं [**दे**] भास पक्षी ; (दे ५, ३९) ।

दिआइ देखो **दुआइ** ; (पाअ) ।

दिइ स्त्री [**दृति**] मसक, चमड़े का जल-पात्र ; (अनु ५ ; कुप्र १४९) ।

दिउण वि [**द्विगुण**] दूना, दुगुना ; (पि २९८) ।

दिंत देखो **दा**=दा ।

दिक्काण पुं [**द्रेष्काण**] मेष आदि लग्नों का दसवाँ हिस्सा ; (राज) ।

दिक्ख सक [**दीक्ष्**] दीक्षा देना, प्रव्रज्या देना, संन्यास देना, शिष्य करना । दिक्खे ; (उत्त) । वकृ—**दिक्खंत** ; (सुपा ५२६) ।

दिक्ख देखो **देक्ख** । दिक्खइ ; (पि ६६) ।

दिक्खा स्त्री [**दीक्षा**] १ प्रव्रज्या देना, दीक्षण ; (ओघ ७ भा) । २ प्रव्रज्या, संन्यास ; (धर्म २) ।

दिक्खिअ वि [**दीक्षित**] जिसको प्रव्रज्या दी गई हो वह, जो साधु बनाया गया हो वह ; (उव) ।

दिगंछा देखो **दिगिंछा** ; (पि ७४) ।

दिगंबर देखो **दिअंबर** ; (इक ; आवम) ।

दिगिंछा स्त्री [**जिघत्सा**] बुभुक्षा, भूख ; (सम ४० ; विसे २५९४ ; उत्त २ ; आचू) ।

दिगिच्छ सक [**जिघत्स्**] खाने को चाहना। वकृ—**दिगिच्छंत**; (आचा; पि ५५५)।
दिगु पुं [**द्विगु**] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास; (अणु; पि २६८)।
दिग्घ देखो **दीह**; (हे २, ६१; प्राप्र; संक्षि १७; स्वप्न ६८; विसे ३४६७)। °**णंगूल**, °**लंगूल** वि [°**लाङ्गूल**] १ लम्बी पूँछ वाला; २ पुं. वानर; (षड्)।
दिग्घिआ स्त्री [**दीर्घिका**] वापी, सीढ़ी वाला कूप-विशेष; (स्वप्न ५६; विक्र १३६)।
दिच्छा स्त्री [**दित्सा**] देने की इच्छा; (कुप्र २६६)।
दिज देखो **दिअ**=द्विज; (कुमा)।
दिज्ज वि [**देय**] १ देने योग्य; २ जो दिया जा सके; ३ पुंन. कर-विशेष; (विपा १, १)।
दिज्जंत } देखो **दा**=दा।
दिज्जमाण }
दिट्ठ वि [**दिष्ट**] कथित, प्रतिपादित; (उप ७६८ टी)।
दिट्ठ वि [**दृष्ट**] १ देखा हुआ, विलोकित; (ठा ४, ४; स्वप्न २८; प्रासू १११)। २ अभिमत; (अणु)। ३ ज्ञात, प्रमाण से जाना हुआ; (उप ८८२; बृह १)। ४ न. दर्शन, विलोकन; (ठा २, १)। °**पाढि** वि [°**पाठिन्**] चरक-सुश्रुतादि का जानकार; (ओघ ७४)। °**लाभिय** पुं [°**लाभिक**] दृष्ट वस्तु को ही ग्रहण करने वाला जैन साधु; (पराह २, १)।
दिट्ठंत पुं [**दृष्टान्त**] उदाहरण, निदर्शन; (ठा ४, ४; महा)।
दिट्ठंतिअ वि [**दार्ष्टान्तिक**] १ जिस पर उदाहरण दिया गया हो वह; (विसे १००५ टी)। २ न. अभिनय-विशेष; (ठा ४, ४—पत्त २८५)।
दिट्ठव्व देखो **दक्ख**=दृश्।
दिट्ठि स्त्री [**दृष्टि**] १ नेत्र, आँख, नजर; (ठा ३, १; प्रासू १६; कुमा)। २ दर्शन, मत; (पराण १६; ठा ४, १)। ३ दर्शन, अवलोकन, निरीक्षण; (अणु)। ४ बुद्धि, मति; (सम २५; उत्त २)। ५ विवेक, विचार; (सूअ २, २)। °**कीव** पुं [°**क्लीब**] नपुंसक-विशेष; (निचू ४)। °**जुद्ध** न [°**युद्ध**] युद्ध-विशेष, आँख की स्थिरता की लड़ाई; (पउम ४, ४४)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] नजर बाँधना; (उप ७२८ टी)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] प्रशस्त दृष्टि वाला, सम्यग्-दर्शी; (सूअ १, ४, १; आचा)। °**राय** पुं [°**राग**] १ दर्शन-राग, अपने धर्म पर अनुराग; (धर्म २)। २ चाक्षुष स्नेह; (अभि ७४)। °**ल्ल** वि [°**मत्**] प्रशस्त दृष्टि वाला; (पउम २८, २२)। °**वाय** पुं [°**पात**] १ नजर डालना; (से १०, ५)। २ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (ठा १०—पत्र ४६१)। °**वाय** पुं [°**वाद**] बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (ठा १०; सम १)। °**विपरिआसिआ** स्त्री [°**विपर्यासिका**, °**सिता**] मति-भ्रम; (सम २५)। °**विस** पुं [°**विष**] जिसकी दृष्टि में विष हो ऐसा सर्प; (से ४, ५०)। °**सूल** न [°**शूल**] नेत्र का रोग-विशेष; (गाया १, १३—पत्र १८१)।
दिट्ठिआ अ [**दिष्ट्या**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ मंगल; २ हर्ष, आनन्द, खुशी; ३ भाग्य से; (हे २, १०४; स्वप्न १६; अभि ६५; कुप्र ६५)।
दिट्ठिआ स्त्री [**दृष्टिका**, °**जा**] १ क्रिया-विशेष—दर्शन के लिए गमन; २ दर्शन से कर्म का उदय होना; (ठा २, १—पत्र ४०)।
दिट्ठीआ स्त्री [**दृष्टीया**] ऊपर देखो; (नव १८)।
दिट्ठीवाओवएसिआ स्त्री [**दृष्टिवादोपदेशिकी**] संज्ञा-विशेष; (दं ३३)।
दिट्ठेल्लय वि [**दृष्ट**] देखा हुआ, निरीक्षित; (आवम)।
दिड्ड } देखो **दढ**; (नाट—मालती १७; से १, १४;
दिढ } स्वप्न २०५; प्रासू ६२)।
दिण पुंन [**दिन**] दिवस; (सुपा ५६; दं २७; जी ३५; प्रासू ६५)। °**इंद** पुं [°**इन्द्र**] सूर्य, रवि; (सण)। °**कय** पुं [°**कृत्**] सूर्य, रवि; (राज)। °**कर** पुं [°**कर**] सूर्य, सूरज; (सुपा ३१२)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] सूर्य, रवि; (महा)। °**बंधु** पुं [°**बन्धु**] सूर्य, रवि; (पुप्फ ३७)। °**मणि** पुं [°**मणि**] सूर्य, दिवाकर; (पाअ; से १, १८; सुपा २३)। °**मुह** न [°**मुख**] प्रभात, प्रातः-काल; (पाअ)। °**यर** देखो °**कर**; (गउड; भवि)। °**रयणिकरी** स्त्री [°**रजनिकरी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३८)। °**वइ** पुं [°**पति**] सूर्य, रवि; (पि ३७६)।
दिणिंद पुं [**दिनेन्द्र**] सूर्य, रवि; (सुपा २४०)।
दिणेस पुं [**दिनेश**] १ सूर्य, सूरज; (कप्पू)। बारह की संख्या; (विवे १४४)।
दिण्ण वि [**दत्त**] १ दिया हुआ, वितीर्ण; (हे १, ४६; प्राप्र; स्वप्न; प्रासू १६४)। २ निवेशित, स्थापित; (पराह १, १)। ३ पुं. भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम गण-

धर ; (सम १५२)। ४ भगवान् श्रेयांसनाथ का पूर्व-जन्मीय नाम ; (सम १५१)। ५ भगवान् चन्द्रप्रभ का प्रथम गणधर ; (सम १५२)। ६ भगवान् नमिनाथ को प्रथम भिक्षा देने वाला एक गृहस्थ ; (सम १५१)। देखो **दिन्न**।

दिण्ण देखो **दइन्न** ; (राज)।

दिण्णेल्लय वि [**दत्त**] दिया हुआ; (ओघ २२ भा. टी)।

दित्त वि [**दीप्त**] १ ज्वलित, प्रकाशित ; (सम १५३ ; अजि १४; लहुअ ११)। २ कान्ति-युक्त, भास्वर, तेजस्वी; (पउम ६४, ३५ ; सम १२२)। ३ तीक्ष्णीभूत, निशित; (सम १५३ ; लहुअ ११)। ४ उज्ज्वल, चमकीला ; (णंदि)। ५ पुष्ट, परिवृद्ध ; (उत्त ३४)। ६ प्रसिद्ध ; (भग २६, ३)। ७ मारने वाला ; (ओघ ३०२)। °**चित्त** वि [°**चित्त**] हर्ष के अतिरेक से जिसको चित्त-भ्रम हो गया हो वह; (बृह ३)।

दित्त वि [**दृप्त**] १ गर्वित, गर्व-युक्त ; (औप)। २ मारने वाला; ३ हानि-कारक ; (ओघ ३०२)। °**इत्त** वि [°**चित्त**] १ जिसके मन में गर्व हो वह ; २ हर्ष के अतिरेक से जो पागल हो गया हो वह ; (ठा ५, ३—पत्र ३२७)।

दित्ति स्त्री [**दीप्ति**] कान्ति, तेज, प्रकाश ; (पाअ ; सुर ३, ३२ ; १०, ४६ ; सुपा ३७८)। °**म** वि [°**मत्**] कान्ति-युक्त ; (गच्छ १)।

दिदिक्खा } स्त्री [**दिदृक्षा**] देखने की इच्छा ; (राज;
दिदिच्छा } सुपा २६४)।

दिद्ध वि [**दिग्ध**] लिप्त ; (निचू १)।

दिन्न देखो **दिण्ण** ; (महा ; प्रासू ५७)। ७ श्री गौतम-स्वामी के पास पाँच सौ तापसों के साथ जैन दीक्षा लेने वाला एक तापस ; (उप १४२ टी; कुप्र २६३)। ८ एक जैन आचार्य; (कप्प)।

दिन्नय पुं [**दत्तक**] गोद लिया हुआ पुत्र ; (ठा १०—पत्र ५१६)।

दिप्प अक [**दीप्**] १ चमकना। २ तेज होना। ३ जलना। दिप्पइ ; (हे १, २२३)। वकृ—**दिप्पंत**, **दिप्पमाण** ; (से ४, ८ ; सुर १४, ५६ ; महा ; पराह १, ४; सुपा २४०), "दिप्पमाणे तवतेएणं" (स ६७५)।

दिप्प अक [**तृप्**] तृप्त होना, सन्तुष्ट होना। दिप्पइ; (षड्)।

दिप्प वि [**दीप्र**] चमकने वाला, तेजस्वी ; (से १, ६१)।

दिप्प (अप) पुं [**दीप**] १ दीपक। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

दिप्पंत पुं [**दे**] अनर्थ ; (दे ५, ३६)।

दिप्पंत } देखो **दिप्प**=दीप्।
दिप्पमाण }

दिप्पिर देखो **दिप्प**=दीप्र; (कुमा)।

दिरय पुं [**द्विरद**] हस्ती, हाथी ; (हे १, ६४)।

दिलंदिलिअ [**दे**] देखो **दिल्लिंदिलिअ** ; (गा ७४१)।

दिलिदिल अक [**दिलदिलाय्**] 'दिल् दिल्' आवाज करना। वकृ—**दिलिदिलंत** ; (पउम १०२, २१)।

दिलिवेढय पुं [**दिलिवेष्टक**] एक प्रकार का ग्राह, जल-जन्तु की एक जाति ; (पराह १, १)।

दिल्लिंदिलिअ पुं [**दे**] बालक, शिशु, लड़का ; (दे ५, ४०)। स्त्री—°**आ** ; बाला, लड़की ; (गा ७४१)।

दिव उभ [**दिव्**] १ क्रीड़ा करना। २ जीतने की इच्छा करना। ३ लेन-देन करना। ४ चाहना, वांछना। ५ आज्ञा करना। दिवइ, दिवए ; (षड्)।

दिव न [**दिव्**] स्वर्ग, देव-लोक ; (कुप्र ४३६; भवि)।

दिवड्ढ वि [**द्व्यर्ध**] डेढ़, एक और आधा ; (विसे ६६३ ; स ५५ ; सुर १०, २०८ ; सुपा ५८० ; भवि ; सम ६६ ; सुज्ज १ ; १० ; ठा ६)।

दिवस } देखो **दिअस** ; (हे १, २६३ ; उव ; प्रासू १२ ;
दिवह } सुपा ३०७ ; वेणी ४७)। °**पुहुत्त** न [°**पृथक्त्व**] दो से लेकर नव दिन तक का समय ; (भग)।

दिवा देखो **दिआ** ; (णाया १, ४ ; प्रासू ६०)। °**इत्ति** पुं [°**कीर्त्ति**] चाण्डाल, भंगी ; (दे ५, ४१)। °**कर** पुं [°**कर**] सूर्य, सूरज; (उत्त ११)। °**कित्ति** पुं [°**कीर्ति**]नापित, हजाम; (कुप्र२८८)। °**गर** देखो °**कर**; (णाया १, १; कुप्र४१५)। °**मुह** न [°**मुख**] प्रभात; (गउड)। °**यर** देखो °**कर**; (सुपा ३६; ३१४)। °**यरत्थ** न [°**करास्त्र**] प्रकाश-कारक अस्त्र-विशेष ; (पउम ६१, ४४)।

दिवि देखो **देव**। "दिविणावि काणपुरिसेणव्व एसा दासी अहं च विप्पवरो एगया दिट्ठीए दिस्सामो" (रंभा)।

दिविअ पुं [**द्विविद**] वानर-विशेष ; (से ४, ८; १३,८२)।

दिविज वि [**दिविज**] १ स्वर्ग में उत्पन्न ; २ पुं. देव, देवता ; (अजि ७)।

दिविट्ठ देखो **दुविट्ठ** ; (राज)।

दिवे (अप) देखो **दिवा** ; (हे ४, ४१६ ; कुमा)।

दिव्व वि [**दिव्य**] १ स्वर्ग-संबन्धी, स्वर्गीय ; (स २ ; ठा ३, ३)। २ उत्तम, सुन्दर, मनोहर ; (पउम ८, २६१ ; सुर २, २४२ ; प्रासू१२८)। ३ प्रधान, मुख्य ; (औप)। ४ देव-सम्बन्धी ; (ठा४, ४ ; सूत्र १, २, २)। ५ न. शपथ-विशेष, आराप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि; (उप ८०४)। ६ प्राचीन काल में, अपुत्रक राजा की मृत्यु हो जाने पर जिस चमत्कार-जनक घटना से राज-गद्दी के लिए किसी मनुष्य का निर्वाचन होता था वह हस्ति-गर्जन, अश्व-हेषा आदि अलौकिक प्रमाण; (उप१०३१टी)। °**माणुस** न [°**मानुष**] देव और मनुष्य संबन्धी हकीकतों का जिसमें वर्णन हो ऐसी कथा-वस्तु ; (स २)।

दिव्व देखो **दइव** ; (सुपा १६१)।

दिव्व देखो **देव**; "अमोहं दिव्वदंसणं ति" (कुप्र ११२)।

दिव्वाग पुं [**दिव्याक**] सर्प की एक जाति ; (पराग १)।

दिव्वासा स्त्री [**दे**] चामुण्डा, देवी-विशेष ; (दे५, ३८)।

दिस सक [**दिश्**] १ कहना। २ प्रतिपादन करना। दिसइ : (भवि)। कक्—**दिस्समाण** ; (राज)।

दिस वि [**दिश्य**] दिशा में उत्पन्न; (से ६, ५०)।

दिसआ स्त्री [**दृषद्**] पत्थर, पाषाण ; (षड्)।

दिसा, **दिसि**, **दिसी°** स्त्री [**दिश्**] १ दिशा, पूर्व आदि दश दिशाएँ ; (गउड ; प्रासू ११३ ; महा ; सुपा २६७ ; पराह १, ४ ; दं३१ ; भग)। २ प्रौढ़ा स्त्री ; (से १, १६)। °**अक्क** न [°**चक्र**] दिशाओं का समूह; (गा ५३०)। °**कुमरी** स्त्री [°**कुमारी**] देवी-विशेष ; (सुपा ४०)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] भवनपति देवों की एक जाति ; (पराग२ ; औप)। °**कुमारी** देखो °**कुमरी**; (महा ; सुपा ४१)। °**गअ** पुं [°**गज**] दिग्-हस्ती ; (से २, ३ ; १०, ४६)। °**गइंद** पुं [°**गजेन्द्र**] दिग्-हस्ती ; (पि १३६)। °**चक्क** देखो °**अक्क** ; (सुपा ५२३; महा)। °**चक्कवाल** न [°**चक्रवाल**] १ दिशाओं का समूह ; २ तप-विशेष ; (निर१, ३)। °**चर** पुं [°**चर**] देशाटन करने वाला भक्त ; (भग १५)। °**जत्ता** देखो °**यत्ता** ; (उप ७६८टी)। °**जत्तिय** देखो °**यत्तिय** ; (उवा)। °**डाह** पुं [°**दाह**] दिशाओं में होने वाला एक तरह का प्रकाश, जिसमें नीचे अन्धकार और ऊपर प्रकाश दीखता है; यह भावी उपद्रवों का सूचक है ; (भग ३, ७)। °**णुवाय** पुं [°**अनुपात**] दिशा का अनुसरण; (पराग ३)। °**दंति** पुं [°**दन्तिन्**] दिग्-हस्ती ; (सुपा४८)। °**दाह** देखो °**डाह** ; (भग ३, ७)। °**दि** पुं [°**आदि**] मेरु पर्वत; (सुज्ज५)। °**देवया** स्त्री [°**देवता**] दिशा की अधिष्ठात्री देवी; (रंभा)। °**पोक्खि** पुं [°**प्रोक्षिन्**] एक प्रकार का वानप्रस्थ ; (औप)। °**भाअ** पुं [°**भाग**] दिग्-भाग ; (भग; औप ; कप्पू ; विपा १, १)। °**मत्त** न [°**मात्र**] अत्यल्प, संक्षिप्त ; (उप ४७६)। °**मोह** पुं [°**मोह**] दिशा का भ्रम ; (निचू १६)। °**यत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] देशाटन, मुसाफिरी ; (स १६५) । °**यत्तिय** वि [°**यात्रिक**] दिशाओं में फिरने वाला ; (उवा)। °**लोय** पुं [°**आलोक**] दिशा का प्रकाश ; (विपा १, ६)। °**वह** पुं [°**पथ**] दिशा-रूप मार्ग ; (पउम २, १००)। °**वाल** पुं [°**पाल**] दिक्पाल, दिशा का अधिपति ; (स ३६६)। °**वेरमण** न [°**विरमण**] जैन गृहस्थ को पालने का एक नियम—दिशा में जाने आने का परिमाण करना ; (धर्म्म २)। °**व्वय** न [°**व्रत**] देखो °**वेरमण**; (औप)। °**सोत्थिय** पुं [°**स्वस्तिक**]स्वस्तिक-विशेष ; (औप) । **सोवत्थिय** पुं [°**सौवस्तिक**] १ स्वस्तिक-विशेष दक्षिणावर्त स्वस्तिक ; (पराह १, ४)। २ न. एक देव-विमान ; (सम ३८)। ३ रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ८)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] दिग्गज, दिशाओं में स्थित ऐरवत आदि आठ हस्ती। °**हत्थिकूड** पुंन [°**हस्तिकूट**] दिशा में स्थित हस्ती के आकार वाला शिखर-विशेष, वे आठ हैं—पद्मोत्तर, नीलवन्त, सुहस्ती, अञ्जनगिरि, कुमुद, पलाश, अवतंस और रोचनगिरि ; (जं ४)।

दिसेभ पुं [**दिगिभ**] दिग्गज, दिग्-हस्ती; (गउड)।

दिस्स, **दिस्सं**, **दिस्समाण** देखो **दक्ख** = दृश् ।

दिस्समाण देखो **दिस** ।

दिस्सा देखो **दक्ख**=दृश् ।

दिहा अ [**द्विधा**] दो प्रकार ; (हे १, ९७)।

दिहि स्त्री [**धृति**] धैर्य, धीरज ; (हे २, १३१ ; कुमा)। °**म** वि [°**मत्**] धैर्य-शाली, धीर ; (कुमा)।

दीअ देखो **दीव** = दीप ; (गा १३५ ; ५४७)।

दीअअ देखो **दीवय** ; (गा १३५)।

दीअमाण देखो **दा**=दा ।

दीण वि [**दीन**] १ रंक, गरीब ; (प्रासू २३)। २ दुःखित, दुःस्थ ; (गाया १, १)। ३ हीन, न्यून ;

(ठा ४, २)। ४ शोक-ग्रस्त, शोकातुर; (विपा १, ३; मग)।

दीणार पुं [**दीनार**] सोने का एक सिक्का ; (कप्प; उप पृ ६४ ; ३६७ टी)।

दीपक } (अप) पुंन [**दीपक**] छन्द-विशेष ;
दीपक्क } (पिंग)।

दीव देखो **दिव=दिव्**। वकृ—"अक्खेहिं कुसलेहिं **दीवयं** ; (सुअ १, २, २,२३)।

दीव सक [**दीपय्**] १ दीपाना, शोभाना ; २ जलाना। ३ तेज करना। ४ प्रकट करना। ५ निवेदन करना। दीवइ ; (ओघ ४३४)। दीवेइ ; (महा)। वकृ—**दीवयंत** ; (कप्प)। संकृ—**दीवेत्ता** ; (ओघ ४३४ ; कस)। कृ—**दीवणिज्ज** ; (कप्प)।

दीव पुं [**दीप**] १ प्रदीप, दिया, आलोक ; (चारु १६ ; णाया १, १)। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, प्रदीप का कार्य करने वाला कल्पवृक्ष ; (सम१७)। °**चंपय** न [°**चम्पक**] दिया का ढ़कना, दीप-पिधान; (भग ८, ६)। °**ाली** स्त्री [°**ाली**] १ दीप-पङ्क्ति ; २ दीवाली, पर्व-विशेष, कार्तिक वदि अमास ; (दे ३, ४३)। °**ावली** स्त्री [°**ावली**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (ती १६)।

दीव पुं [**द्वीप**] १ जिसके चारों ओर जल भरा हो ऐसा भूमि-भाग ; (सम ५१ ; ठा१०)। २ भवनपति देवों की एक जाति, द्वीपकुमार देव ; (पण्ह १, ४ ; औप)। ३ व्याघ्र ; (जीव१)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक देव-जाति ; (भग १६, १३)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] द्वीप के मार्ग का जानकार ; (उप ५६५)। °**सागरपन्नत्ति** स्त्री [°**सागरप्रज्ञप्ति**] जैन-ग्रन्थ-विशेष, जिसमें द्वीपों और समुद्रों का वर्णन है ; (ठा ३, २—पत्र १२६)।

दीवअ पुं [**दे**] कृकलास, गिरगिट ; (दे ५, ४१)।

दीवअ पुं [**दीपक**] १ प्रदीप, दिया, आलोक ; (गा२२२ ; महा)। २ वि. दीपक, प्रकाशक, शोभा-कारक ; (कुमा)। ३ न. छन्द-विशेष ; (अजि २६)।

दीवंग पुं [**दीपाङ्ग**] प्रदीप का काम देने वाले कल्पवृक्ष की एक जाति ; (ठा १०)।

दीवग देखो **दीवअ**=दीपक ; (श्रा ६ ; आवम)।

दीवड पुं [**दे**] जल-जन्तु विशेष; "फुरंतसिप्पिसंपुडं भमंत-भीमदीवडं" (सुर १०, १८८)।

दीवण न [**दीपन**] प्रकाशन ; (ओघ ७४)।

दीवणा स्त्री [**दीपना**] प्रकाश ; "धुव्वो संतगुणदीवणाहिं" (स ६७५)।

दीवणिज्ज वि [**दीपनीय**] १ जठराग्नि को बढ़ाने वाला ; (णाया १, १—पत्र१६)। २ शोभायमान, देदीप्यमान ; (कप्प १७)।

दीवयं देखो **दीव=दिव्**।

दीवयंत देखो **दीव=दीपय्**।

दीवायण पुं [**द्वीपायन, द्वैपायन**] एक प्राचीन ऋषि, जिसने द्वारका नगरी जलाने का निदान किया था, और जो आगामी उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में एक तीर्थंकर होगा; (अंत १५ ; सम १५४; कुप्र ६३)।

दीवि } पुं [**द्वीपिन्**] व्याघ्र की एक जाति, चिता ; (गा
दीविअ } ७६१ ; णाया १, १—पत्र६५ ; पण्ह १, १)।

दीविअ वि [**दीपित**] १ जलाया हुआ; (पउम २२, १७)। २ प्रकाशित ; (ओघ)।

दीविअंग पुं [**दीपिकाङ्ग**] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो अन्धकार को दूर करता है ; (पउम १०२, १२५)।

दीविआ स्त्री [**दे**] १ उपदेहिका, क्षुद्र कीट-विशेष ; २ व्याध की हरिणी, जो दूसरे हरिणों के आकर्षण करने के लिए रखी जाती है ; (दे ५, ५३)। ३ व्याध-सम्बन्धी पिंजड़े में रखा हुआ तित्तिर पक्षी ; (णाया १, १७—पत्र २३२)।

दीविआ स्त्री [**दीपिका**] छोटा दिया, लघु प्रदीप; (जीव३

दीविच्चग वि [**द्वैप्य**] द्वीप में उत्पन्न ; (णाया १, ११—पत्र १७१)।

दीवी (अप) देखो **देवी** ; (रंभा)।

दीवी स्त्री [**दीपिका**] लघु प्रदीप ; "दीवि व्व तीइ बुद्धी" (श्रा १६)।

दीवूसव पुं [**दीपोत्सव**] कार्तिक वदि अमावस, दीवाली ; (ती १६)।

दीसंत } देखो **दक्ख=दृश्**।
दीसमाण }

दीह वि [**दीर्घ**] १ आयत, लम्बा ; (ठा ४, २ ; प्राप्र ; कुमा)। २ पुं. दो मात्रा वाला स्वर-वर्ण ; (पिंग)। ३ कोशल देश का एक राजा; (उप पृ ५८)। °**कालिगी** स्त्री [°**कालिकी**] संज्ञा-विशेष, बुद्धि-विशेष, जिससे सुदीर्घ भूतकाल की बातों का स्मरण और सुदीर्घ भविष्य का विचार किया जा सकता है ; (दं ३२; विसे ५०८)। °**कालिय** वि [°**कालिक**] १ दीर्घ काल से उत्पन्न, चिरंतन ; "दीहका-

लिएणं रोगातंकेणं" (ठा ३, १) । २ दीर्घकाल-संबन्धी ; (आवम) । °जत्ता स्त्री [°यात्रा] १ लंबी सफर; २ मरण, मौत; (स ७२६) । °डक्क वि [°दष्ट] जिस-को साँप ने काटा हो वह; (निचू१) । °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] मरण, मौत ; (राज) । °दंत पुं [°दन्त] १ भारतवर्ष के एक भावी चक्रवर्ती राजा ; (सम १५४) । २ एक जैन मुनि ; (अंत) । °दंसि वि [°दर्शिन्] दूरदर्शी, दूरन्देशी ; (सुर ३,३; सं ३२) । °दसा स्त्री.व. [°दशा] जैन ग्रन्थ-विशेष ; (ठा १०) । °दिट्ठि वि [°दृष्टि] १ दूरदर्शी, दूरन्देशी । २ स्त्री. दीर्घ-दर्शिता; (धर्म१) । °पट्ठ पुं [°पृष्ठ] १ सर्प, साँप; (उप पृ २२) । २ यवराज का एक मन्त्री; (बृह१) । °पास पुं [°पार्श्व] ऐरवत क्षेत्र के सोलहवें भावी जिन-देव; (पव ७) । °पेहि वि [°प्रेक्षिन्] दूर-दर्शी ; (पउम २६, २२ ; ३१, १०६) । °बाहु पुं [°बाहु] १ भरत-क्षेत्र में होने वाला तीसरा वासुदेव ; (सम १५४) । २ भगवान् चन्द्रप्रभ का पूर्व-जन्मीय नाम ; (सम १५१) । °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि ; (कप्प)। °मद्ध वि [°ाध्व] लम्बा रास्ता वाला ; (गाया १, १८; ठा २, १; ५, २—पत्र २४०) । °मद्ध वि [°ाद्ध] दीर्घ काल से गम्य; (ठा ५,२—पत्र २४०)। °माउ न [°ायुष्] लम्बा आयुष्य; (ठा १०) । °रत्त, °राय पुंन [°रात्र] १ लम्बी रात; २ बहु रात्रि वाला चिर-काल ; (संक्षि १७ ; राज) । °राय पुं [°राज] एक राजा; (महा) । °लोग पुं [°लोक] वनस्पति का जीव ; (आचा) । °लोगसत्थ न [°लोकशस्त्र] अग्नि, वह्नि ; (आचा) । °वेयड्ढ पुं [°वैताढ्य] स्वनाम-ख्यात पर्वत; (ठा २, ३—पत्र ६६)। °सुत्त न [°सूत्र] १ बड़ा सूता ; (निचू ५) । २ आलस्य, "मा कुणसु दीहसुत्तं परकज्जं सीयलं परिगणंतो" (पउम३०,६) । °सेण पुं [°सेन] १ अनुत्तर-देवलोक-गामी मुनि-विशेष; (अनु २) ।२ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न ऐरवत क्षेत्र के आठवें जिन-देव ; (पव ७) । °ाउ, °ाउय वि [°ायुष्, °ायुष्क] लम्बी उम्र वाला, बड़ी आयु वाला, चिर-जीवी ; (हे १, २०; ठा ३, १ ; पउम १४, ३०) । °ासण न [°ासन] शय्या ; (जं १)।

दीह देखो **दिअह** ; (कुमा) ।

दीहंध वि [**दिवसान्ध**] दिन को देखने में असमर्थ; "रत्तिं-धा दीहंधा " (प्रासू १७६) ।

दीहजीह पुं [**दे**] शंख ; (दे ५, ४१) ।

दीहर देखो **दीह**=दीर्घ ; (हे २, १७१ ; सुर २, २१८ ; प्रासू ११३) । °च्छ वि [°ाक्ष] लम्बी आँख वाला, बड़े नेत्र वाला ; (सुपा १४७) ।

दीहरिय वि [**दीर्घित**] लम्बा किया हुआ ; (गउड) ।

दीहिया स्त्री [**दीर्घिका**] वापी, जलाशय-विशेष ; (सुर १, ६३ ; कप्पू) ।

दीहीकर सक [**दीर्घी+कृ**] लम्बा करना । दीहीकरेंति; (भग)।

दु देखो **दव**=द्रु । कर्म—दुयए ; (विसे २८) ।

दु वि.ब. [**द्वि**] दो, संख्या-विशेष वाला; (हे १, ६४; कम्म १ ; उवा) ।

दु पुं [**द्रु**] १ वृक्ष, पेड़, गाछ ; (उर ५) । २ सत्ता, सामान्य ; (विसे २८) ।

दु अ [**द्विस्**] दो वार, दो दफा; (सुर १६,५५) ।

दु अ [**दुर्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ अभाव ; २ दुष्टता, खराबी; ३ मुश्किली, कठिनाई; ४ निन्दा; (हे २, २१७ ; प्रासू १५८ ; सुपा १४३ ; गाया १, १ ; उवा) ।

दुअ न [**द्विक**] युग्म, युगल ; (स ६२१) ।

दुअ वि [**द्रुत**] १ पीड़ित, हैरान किया हुआ ; (उप ३२० टी) । २ वेग-युक्त; ३ क्रिवि. शीघ्र, जल्दी; (सुर १०,१०१; अणु) । °विलंबिअ न [°विलम्बित] १ छन्द-विशेष । २ अभिनय-विशेष ; (राय) ।

दुअक्खर पुं [**दे**] षण्ड, नपुंसक ; (दे ५, ४७) ।

दुअक्खर वि [**द्व्यक्षर**] १ अज्ञान, मूर्ख, अल्पज्ञ; (उप १२६ टी) । २ पुंस्त्री. दास, नौकर ; (पिंड) । स्त्री—°रिया; (आवम) ।

दुअणुअ पुं [**द्व्यणुक**] दो परमाणुओं का स्कन्ध ; (विसे २१६२) ।

दुअल्ल न [**दुकूल**] १ वस्त्र, कपड़ा ; २ महिन वस्त्र, सूक्ष्म वस्त्र ; (हे १, ११६; प्राप्र) । देखो **दुकूल** ।

दुआइ पुं [**द्विजाति**] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण ; (हे १, ६४ ; २, ७६) ।

दुआइक्ख वि [**दुराख्येय**] दुःख से कहने योग्य, (ठा ५, १—पत्र २६६) ।

दुआर न [**द्वार**] दरवाजा, प्रवेश-मार्ग; (हे १,७६) ।

दुआराह वि [**दुराराध**] जिसका आराधन कठिनाई से हो सके वह; (पराह १,४) ।

दुआरिआ स्त्री [**द्वारिका**] १ छोटा द्वार ; २ गुप्त द्वार, अपद्वार ; (गाया १, २) ।

दुआवत्त न [**द्व्यावर्त**] दृष्टिवाद का एक सूत्र ; (सम १४७)।

दुइअ } वि [**द्वितीय**] दूसरा; (हे १,१०१; २०६; कुमा; (कम्म ; रयण ४)।
दुइज्ज
दुईअ

दुउंछ } सक [**जुगुप्स्**] निन्दा करना, घृणा करना। दुउंछइ, दुउच्छइ ; (हे ४, ४)।
दुउच्छ

दुउण वि [**द्विगुण**] दूना, दुगुना ; (दे ५, ५५ ; हे १, ९४)। °**यर** वि [°**तर**] दूने से भी विशेष, अत्यन्त; (से ११, ४७)।

दुउणिअ वि [**द्विगुणित**] ऊपर देखो; (कुमा)।

दुऊल देखो **दुअल्ल**; (प्राप्र; गा ५६६ ; षड्)।

दुंदुह } पुं [**दुन्दुभ**] १ सर्प की एक जाति ;(दे ७, ५१)। २ ज्योतिष्क-विशेष, एक महाग्रह ;(ठा २, ३--पत्र ७८)।
दुंदुभ

दुंदुभि देखो **दुंदुहि** ; (भग ६, ३३)।

दुंदुमिअ न [**दे**] गले की आवाज; (दे ५, ४५ ; षड्)।

दुंदुमिणी स्त्री [**दे**] रूप वाली स्त्री ; (दे ५, ४५)।

दुंदुहि पुंस्त्री [**दुन्दुभि**] वाद्य-विशेष; (कप्प; सुर ३,६८; गउड ; कुप्र ११८)।

दुंबवती स्त्री [**दे**] सरित्, नदी; (दे ५, ४८)।

दुकड देखो **दुक्कड** ; (द्र ४७)।

दुकप्प देखो **दुक्कप्प** ; (पंचू)।

दुकम्म न [**दुष्कर्मन्**] पाप, निन्दित काज ; (श्रा २७ ; भवि)।

दुकिय देखो **दुक्कय** ; (भवि)।

दुकूल पुं [**दुकूल**] १ वृक्ष-विशेष ; २ वि. दुकूल वृक्ष की छाल से बना हुआ वस्त्र आदि ; (णाया १, १ टी--पत्र ४३)।

दुक्कंदिर वि [**दुष्कन्दिन्**] अत्यन्त आक्रन्द करने वाला; (भवि)।

दुक्कड न [**दुष्कृत**] पाप-कर्म, निन्द्य आचरण ; (सम १२५ ; हे १, २०६; पडि)।

दुक्कडि } वि [**दुष्कृतिन्,** °**क**] दुष्कृत करने वाला, पापी; (सूत्र १, ५, १ ; पि २१९)।
दुक्कडिय

दुक्कप्प पुं [**दुष्कल्प**] शिथिल साधु का आचरण , पतित साधु का आचार ; (पंचभा)।

दुक्कम्म न [**दुष्कर्मन्**] दुष्ट कर्म, असदाचरण ; (सुपा २८; १२० ; ५००)।

दुक्कय न [**दुष्कृत**] पाप-कर्म ; (पण्ह १, १ ; पि ४९)।

दुक्कर वि [**दुष्कर**] जो दुःख से किया जा सके, मुश्किल, कष्ट-साध्य ; (हे ४, ४१४ ; पंचा १३)। °**आरअ** वि [°**कारक**] मुश्किल कार्य को करने वाला ; (गा १७६; हे २, १०४)। °**करण** न [°**करण**] कठिन कार्य को करना ; (द्र ३७)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] देखो °**आरअ** ; (उप पृ १३०)।

दुक्कर न [**दे**] माघ मास में रात्रि के चारों प्रहर में किया जाता स्नान; (दे ५, ४२)।

दुक्करुह वि [**दे**] अरुचि वाला, अरोचकी ; (सुर १, ३६ ; जय २७)।

दुक्काल पुं [**दुष्काल**] अकाल, दुर्भिक्ष ; (सार्ध ३०)।

दुक्किय देखो **दुक्कय** ; (भवि)।

दुक्कुक्कणिआ स्त्री [**दे**] पीकदान,पीकदानी ; (दे ५, ४८)।

दुक्कुल न [**दुष्कुल**] निन्दित कुल ; (धर्म १)।

दुक्कुह वि [**दे**] १ असहन, असहिष्णु ; २ रुचि-रहित ; (दे ५, ४४)।

दुक्ख पुंन [**दुःख**] १ अ-सुख, कष्ट, पीड़ा, क्लेश, मन का क्षोभ ; (हे १, ३३), "दुक्खा सारीरा माणसा व संसारे" (संथा१०१; आचा ; भग; स्वप्न ५१ ; ५८; प्रासु ६६ ; १५२; १८२)। २ क्रिवि. कष्ट से, मुश्किली से, कठिनाई से; (वसु)। ३ वि.दुःख वाला, दुःखित, दुःख-युक्त; (वै ३३) । स्त्री--°**क्खा**; (भग)। °**कर** वि [°**कर**] दुःख-जनक ; (सुपा १६५)। °**त्त** वि [°**र्त**] दुःख से पीड़ित; (सुपा १६१ ; स ६४२; प्रासू १४४)। °**त्तगवेसण** न [°**र्तगवेषण**] दुःख से पीड़ित की सेवा, आर्त-शुश्रूषा ; (पंचा १६)। °**मज्जिय** वि [**अर्जितदुःख**] जिसने दुःख उपार्जन किया हो वह; (उत्त ६)। °**राह** वि [°**राध्य**] दुःख से आराधन-योग्य; (वज्जा ११२)। °**वह** वि [°**वह**] दुःख-प्रद ; (पउम १५, १००)। °**ासिया** स्त्री [°**ासिका**] वेदना, पीड़ा ; (ठा ३, ४)। देखो **दुह**=दुःख।

दुक्ख न [**दे**] जघन, स्त्री के कमर के पीछे का भाग ; (दे ५, ४२)।

दुक्ख अक [**दुःखाय्**] १ दुखना, दर्द करना। २ सक. दुःखी करना। "सिरं में दुक्खेइ" (स ३०४)। दुक्खामि ; (से ११, १२७)। दुक्खंति ; (सूत्र २, २, ५५)।

दुक्खड देखो **दुक्कर** ; (चारु २३)।

दुक्खण न [**दुःखन**] दुखना, दर्द होना ; (उप ७५१; सूत्र २, २, ५५)।

दुक्खम वि [**दुःक्षम**] १ असमर्थ ; २ अशक्य ; (उत्त २०, ३१)।

दुक्खर देखो **दुक्कर** ; (स्वप्न ६६)।

दुक्खरिय पुं [**दुष्करिक**] दास, नौकर ; (निचू १६)।

दुक्खरिया स्त्री [**दुष्करिका**] १ दासी, नौकरानी ; (निचू १६)। २ वेश्या, वरांगना ; (निचू १)।

दुक्खल्लिय (अप) वि [**दुःखित**] दुःख-युक्त; (भवि)।

दुक्खविअ वि [**दुःखित**] दुःखी किया हुआ ; (उप ६३४ ; भवि)।

दुक्खाव सक [**दुःखय्**] दुःख उपजाना, दुःखी करना। दुक्खावेइ ; (पि ५५६)। वकृ—**दुक्खावेंत** ; (पउम ५८, १८)। कवकृ—**दुक्खाविज्जंत** ; (आवम)।

दुक्खावणया स्त्री [**दुःखना**] दुःखी करना, दर्द उपजाना ; (भग ३, ३)।

दुक्खि वि [**दुःखिन्**] दुःखी, दुःख-युक्त ; (आचा)।

दुक्खिअ वि [**दुःखित**] दुःख-युक्त, दुखिया ; (हे २, ७२ ; प्राप्र ; प्रासू ६३ ; महा ; सुर ३, १६१)।

दुक्खुत्तर वि [**दुःखोत्तार**] जो दुःख से पार किया जाय, जिसको पार करने में कठिनाई हो ; (पराह १, १)।

दुक्खुत्तो अ [**द्विस्**] दो वार, दो दफा ; (ठा ५, २— पत्र ३०८)।

दुक्खुर देखो **दुखुर** ; (पि ४३६)।

दुक्खुल देखो **दुक्कुल**; (अवि २१)।

दुक्खोह पुं [**दुःखौघ**] दुःख-राशि ; (पउम १०३,१५५; सुपा १६१)।

दुक्खोह वि [**दुःक्षोभ**] कष्ट-क्षोभ्य, सुस्थिर ; (सुपा १६१; ६३६)।

दुखंड वि [**द्विखण्ड**] दो टुकड़े वाला ; (उप ६८६ टी; भवि)।

दुखुत्तो देखो **दुक्खुत्तो** ; (कस)।

दुखुर पुं [**द्विखुर**] दो खुरे वाला प्राणी, गौ, भैंस आदि; (पराण १)।

दुग न [**द्विक**] दो, युग्म, युगल ; (नव १० ; सुर ३, १७ ; जी ३३)।

दुगंछ देखो **दुगुंछ**। वकृ—**दुगंछमाण** ; (उत्त ४, १३)। कृ—**दुगंछणिज्ज** ; (उत्त १३, १६ ; पि ७४)।

दुगंछणा स्त्री [**जुगुप्सना**] घृणा, निन्दा ; (पउम ६५, ६५)।

दुगंछा स्त्री [**जुगुप्सा**] घृणा, निन्दा ; (पाअ ; कुप्र४०७)। देखो **दुगुंछा**।

दुगंध देखो **दुग्गंध** ; (पउम ४१, १७)।

दुगच्छ } सक [**जुगुप्स्**] घृणा करना, निन्दा करना।
दुगुंछ } दुगच्छइ, दुगुंछइ ; (षड् ; हे ४, ४)। वकृ—**दुगुंछंत, दुगुंछमाण** ; (कुमा ; पि ७४ ; २१५)। संकृ—**दुगुंछिउं**; (धर्म २)। कृ—**दुगुंछणीय** ; (पउम ४६, ६२)।

दुगुंछग वि [**जुगुप्सक**] घृणा करने वाला; (आव ३)।

दुगुंछण न [**जुगुप्सन**] घृणा, निन्दा ; (पि ७४)।

दुगुंछणा देखो **दुगंछणा** ; (आचा)।

दुगुंछा देखो **दुगंछा** ; (भग)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] देखो पीछे का अर्थ ; (ठा १०)। °**मोहणीय** न [°**मोहनीय**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव को अशुभ वस्तु पर घृणा होती है ; (कम्म १)।

दुगुंछिय वि [**जुगुप्सित**] घृणित, निन्दित; (ओघ३०२)।

दुगुंदुग पुं [**दौगुन्दुक**] एक समृद्धि-शाली देव ; (सुपा ३२८)।

दुगुच्छ देखो **दुगुंछ**। दुगुच्छइ ; (हे ४, ४ ; षड्)। वकृ—**दुगुच्छंत** ; (पउम १०५, ७५)। कृ—**दुगुच्छणीय** ; (पउम ८०, २०)।

दुगुण देखो **दुउण** ; (ठा २, ४ ; णाया १, १ ; दं ६ ; सुर ३, २१६)।

दुगुण सक [**द्विगुणय्**] दुगुना करना। दुगुणेइ ; (कुप्र २८५)।

दुगुणिअ देखो **दुउणिअ** ; (कुमा)।

दुगुल्ल } देखो **दुअल्ल** ; (हे १, ११६ ; कुमा ; सुर २,
दुगूल } ८० ; जं २)।

दुगोत्ता स्त्री [**द्विगोत्रा**] वल्ली-विशेष ; (पराण १)।

दुग्ग न [**दे**] १ दुःख, कष्ट; (दे ५, ५३; पड् ; पराह १, ३)। २ कटी, कमर ; (दे ५, ५३)। ३ रण, संग्राम, युद्ध, "आउत्तं च लेखिन' दुग्गं" (स ६३६)।

दुग्ग वि [**दुर्ग**] १ जहां दुःख से प्रवेश किया जा सके वह, दुर्गम स्थान ; (भग ७, ६ ; विपा १, ३)। २ जो दुःख से जाना जा सके ; (सुग्र १, ५, १)। ३ पुंन. किला, गढ़, कोट ; (कुमा; सुपा १४८)। °**नायग** पुं [°**नायक**] किले का मालिक; (सुपा ४६०)।

दुग्गइ स्त्री [**दुर्गति**] १ कुगति, नरक आदि कुत्सित योनि; (ठा ३, ३; ५, १; उत्त ७, १८; आचा)। २ विपत्ति, दुःख; ३ दुर्दशा, बुरी अवस्था; ४ कंगालियत, दरिद्रता; (पराह १, १ ; महा ; ठा ३, ४ ; गच्छ २)।

दुग्गंठि स्त्री [**दुर्ग्रन्थि**] दुष्ट ग्रन्थि ; (पि ३३३)।

दुग्गंध पुं [**दुर्गन्ध**] १ खराब गन्ध ; २ वि. खराब गन्ध वाला, दुर्गन्धि ; (ठा ८—पत्र ४१८ ; सुपा ४१ ; महा)।

दुग्गंधि वि [**दुर्गन्धिन्**] दुर्गन्ध वाला ; (सुपा ४८७)।

दुग्गम } **दुग्गम्म** } वि [**दुर्गम**] १ जहां दुःख से प्रवेश किया जा सके वह ; (पउम ४०, १३ ; ओघ ७५ भा)। "पडिवक्खनरिंददुग्गम्मं" (सुर ६, १३५)। २ न. कठिनाई, मुश्किली ; (ठा ५, १)।

दुग्गय वि [**दुर्गत**] १ दरिद्र, धन-हीन ; (ठा ३, ३ ; गा १८)। २ दुःखी, विपत्ति-ग्रस्त ; (पाअ ; ठा ४,१—पत्र २०२)।

दुग्गह वि [**दुर्ग्रह**] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह ; (उप पृ ३६०)।

दुग्गा स्त्री [**दुर्गा**] १ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी ; (पाअ; सुपा १४८)। २ देवी-विशेष; (चंड)। ३ पक्षि-विशेष; (श्रा १६)।

दुग्गाई } **दुग्गाएवी** } **दुग्गादेई** } **दुग्गावी** } स्त्री [**दुर्गादेवी**] १ पार्वती, शिव-पत्नी, गौरी ; २ देवी-विशेष ; (षड् ; हे १,२७०; कुमा)। °**रमण** पुं [°**रमण**] महादेव, शिव ; (षड्)।

दुग्गिज्झ वि [**दुर्ग्राह्य,दुर्ग्रह**] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह ; (सुपा २५५)।

दुग्गूढ वि [**दुर्गूढ**] अत्यन्त गुप्त, अति प्रच्छन्न ; (वव ७)।

दुग्गेज्झ देखो **दुग्गिज्झ** ; (से १, ३)।

दुग्घट्ट वि [**दुर्घट्ट**] जिसका आच्छादन दुःख से हो सके वह, "पारद्धसीउग्हतराहवेअग्णदुग्घट्टघट्टिया" (पराह १,३—पत्र ५४)।

दुग्घड वि [**दुर्घट**] जो दुःख से हो सके वह, कष्ट-साध्य ; (सुपा ६३ ; ३६५)।

दुग्घडिअ वि [**दुर्घटित**] १ दुःख से संयुक्त। २ खराब रीति से बना हुआ; "दुग्घडिअमंचअस्स व खणे खणे पाअपड-णेण" (गा ६१०)।

दुग्घर न [**दुर्गृह**] दुष्ट घर ; (भवि)।

दुग्घास पुं [**दुर्ग्रास**] दुर्भिक्ष, अकाल ; (वृह ३)।

दुग्घुट्ट } **दुग्घोट्ट** } पुं [**दे**] हस्ती, हाथी, करी ; (दे ५, ४४ ; पड् ; भवि)।

दुघण पुं [**दुघण**] एक प्रकार का मुद्‌गर, मोंगरी, मुँगरा ; (पराह १, ३—पत्र ४४)।

दुचक्क न [**द्विचक्र**] गाड़ी, शकट ; (ओघ ३८३ भा)। °**वइ** पुं [°**पति**] गाड़ी का अधिपति ; (ओघ ३८३भा)।

दुचिण्ण देखो **दुच्चिण्ण** ; (पि ३४० ; औप)।

दुच्च न [**दौत्य**] दूत-कर्म, समाचार पहुँचाने का कार्य ; (पाअ)।

दुच्च देखो **दोच्च**=द्वितीय , द्विस् ; (कप्प)।

दुच्चंडिअ वि [**दे**] १ दुर्ललित ; २ दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित ; (दे ५, ५५ ; पाअ)।

दुच्चंबाल वि [**दे**] १ कलह-निरत, झगड़ाखोर ; २ दुश्चरित, दुष्ट आचरण वाला ; ३ परुष-भाषी ; (दे ५,५४)।

दुच्चज्ज } **दुच्चय** } वि [**दुस्त्यज**] दुःख से त्यागने योग्य; (कुमा; उप ७६८ टी)।

दुच्चर } **दुच्चरिअ** } वि [**दुश्चर**] १ जिसमें दुःख से जाया जाय वह; (आचा)। २ दुःख से जो किया जाय वह ; (उप ६४८ टी ; पउम २२, २०)। °**लाढ** पुं [°**लाढ**] ऐसा ग्राम या देश जिसमें दुःख से जाया जा सके ; (आचा)।

दुच्चरिअ न [**दुश्चरित**] १ खराब आचरण, दुष्ट वर्तन ; (पउम ३८, १२ ; उप पृ १११)। २ वि. दुराचारी ; (दे ५, ४५)।

दुच्चार वि [**दुश्चार**] दुराचारी ; (भवि)।

दुच्चारि वि [**दुश्चारिन्**] दुराचारी, दुष्ट आचरण वाला; (स५०३)। स्त्री—°**णी** ; (महा)।

दुच्चिंतिय वि [**दुश्चिन्तित**] १ दुष्ट चिन्तित ; (पउम ११८,६७)। २ न. खराब चिन्तन ; (पडि)।

दुच्चिगिच्छ वि [**दुश्चिकित्स**] जिसका प्रतीकार मुश्किली से हो वह ; (स ७६१)।

दुच्चिण्ण न [**दुश्चीर्ण**] १ दुष्ट आचरण, दुश्चरित ; २ दुष्ट कर्म—हिंसा आदि; ३ वि. दुष्ट संचित, एकत्रित की हुई दुष्ट वस्तु ; (विपा १, १ ; णाया १,१६) ।

दुच्चेट्ठिय न [**दुश्चेष्टित**] खराब चेष्टा; शारीरिक दुष्ट आचरण ; (पडि; सुर ६, २३२) ।

दुच्छक्क वि [**द्विषट्क**] बारह प्रकार का ;
"मूलं दारं पइट्ठाणं, आहारो भायणं निही।
दुच्छक्कस्सावि धम्मस्स, सम्मत्तं परिकित्तियं" (श्रा ६) ।

दुच्छेज्ज वि [**दुश्छेद**] जिसका छेदन दुःख से हो सके वह; (पउम ३१, ५६) ।

दुछक्क देखो **दुच्छक्क** ; (धर्म २) ।

दुजडि पुं [**द्विजटिन्**] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह; (ठा २, ३) ।

दुजय देखो **दुज्जय** ; (महा) ।

दुजीह पुं [**द्विजिह्व**] १ सर्प, साँप ; २ दुर्जन, खल पुरुष ; (सट्ठि ६३ ; कुमा) ।

दुज्जंत देखो **दुज्जिंत** ; (राज) ।

दुज्जण पुं [**दुर्जन**] खल, दुष्ट मनुष्य; (प्रासू २० ; ४०; कुमा) ।

दुज्जय वि [**दुर्जय**] जो कष्ट से जीता जा सके ; (उप १०३१ टी ; सुर १२, १३८ ; सुपा २६) ।

दुज्जाय न [**दे**] व्यसन, कष्ट, दुःख, उपद्रव ; (दे ५, ४४ ; से १२, ६३ ; पाअ) ।

दुज्जाय वि [**दुर्जात**] दुःख से निकलने योग्य ; (से १२, ६३) ।

दुज्जाय न [**दुर्यात**] दुष्ट गमन, कुत्सित गति; (आचा) ।

दुज्जिंत पुं [**दुर्यन्त**] एक प्राचीन जैन मुनि ; (कप्प) ।

दुज्जीव न [**दुर्जीव**] आजीविका का भय; (विसे ३४५२)।

दुज्जीह देखो **दुजीह** ; (वज्जा १५०) ।

दुज्जेअ वि [**दुर्जेय**] दुःख से जीतने योग्य; (सुपा २४८; महा) ।

दुज्जोहण पुं [**दुर्योधन**] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र ; (ठा ४, २) ।

दुज्झ वि [**दोह्य**] दोहने योग्य ; (दे १, ७) ।

दुज्झाण न [**दुर्ध्यान**] दुष्ट चिन्तन ; (धर्म २) ।

दुज्झाय वि [**दुर्ध्यात**] जिसके विषय में दुष्ट चिन्तन किया गया हो वह; (धर्म २) ।

दुज्झोसय वि [**दुर्जोष**] जिसकी सेवा कष्ट से हो सके ऐसा; (आचा) ।

दुज्झोसय वि [**दुःक्षप**] जिसका नाश कष्ट-साध्य हो वह; (आचा) ।

दुज्झोसिअ वि [**दुर्जोषित**] दुःख से सेवित ; (आचा) ।

दुज्झोसिअ वि [**दुःक्षपित**] कष्ट से नाशित; (आचा) ।

दुट्ठ वि [**दुष्ट**] दोष-युक्त, दूषित; (आव १६२; पाअ; कुमा) ।
°**प्प** पुं [°**त्मन्**] दुष्ट जीव, पापी प्राणी ; (पउम ६, १३६ ; ७५, १२) ।

दुट्ठ वि [**दे. द्विष्ट**] द्वेष-युक्त; (ओघ ७५७ ; कस), "अरत्तदुट्ठस्स" (कुप्र ३७१) ।

दुट्ठाण न [**दुःस्थान**] दुष्ट जगह ; (भग १६, २) ।

दुट्ठु अ [**दुष्ठु**] खराब, अ-सुन्दर ; (उप ३२० टी ; निर १, १ ; सुपा ३१८; हे ४, ४०१) ।

दुण्णय देखो **दुन्नय** ; (विक्र ३७ ; आवम) ।

दुण्णाम न [**दुर्नामन्**] १ अपकीर्ति, अपयश । २ दुष्ट नाम, खराब आख्या । ३ एक प्रकार का गर्व ; (भग १२, ५) ।

दुण्णिअ वि [**दून**] पीड़ित, दुःखित ; (गा ११) ।

दुण्णिअ देखो **दुन्निय** ; (राज) ।

दुण्णिअत्थ न [**दे**] १ जघन पर स्थित वस्त्र ; २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग ; (दे ५, ५३) ।

दुण्णिक्क वि [**दे**] दुश्चरित, दुराचारी; (दे ५, ४५) ।

दुण्णिक्कम वि [**दुर्निष्क्रम**] जहां से निकलना कष्ट-साध्य हो वह ; (भग ७, ६) ।

दुण्णिक्खित्त वि [**दे**] १ दुराचारी; २ कष्ट से जो देखा जा सके; (दे ५, ४५) ।

दुण्णिक्खेव वि [**दुर्निक्षेप**] दुःख से स्थापन करने योग्य ; (गा १५४) ।

दुण्णिबोह देखो **दुन्निबोह**; (राज) ।

दुण्णिमिअ वि [**दुर्नियोजित**] दुःख से जोड़ा हुआ ; (से १२, १६) ।

दुण्णिमित्त न [**दुर्निमित्त**] खराब शकुन, अपशकुन; (पउम ७०, ५) ।

दुण्णिविट्ठ वि [**दुर्निविष्ट**] दुराग्रही ; (निचू ११) ।

दुण्णिसीहिया स्त्री [**दुर्निषद्या**] कष्ट-जनक स्वाध्याय-स्थान; (पण्ह २, ५) ।

दुण्णेय वि [**दुर्ज्ञेय**) जिसका ज्ञान कष्ट-साध्य हो वह ; (उवर १२८ ; उप ३२८) ।

दुतितिक्ख वि [**दुस्तितिक्ष**] दुस्सह, जो दुःख से सहन किया जा सके वह ; (ठा ५, १) ।
दुत्तर वि [**दुस्तर**] दुस्तरणीय, दुर्लङ्घ्य ; (सुपा ४७ ; ११५ ; सार्ध ६१) ।
दुत्तडी स्त्री [**दुस्तटी**] खराब किनारा ; (धम्म१२टी) ।
दुत्तव वि [**दुस्तप**] कष्ट से तपने योग्य, दुःख से करने योग्य (तप) ; (धर्म १७) ।
दुत्तार वि [**दुस्तार**] दुःख से पार करने योग्य, दुस्तर ; (से ३, २५ ; ६, १०) ।
दुत्ति अ [**दे**] शीघ्र, जल्दी ; (दे५, ४१ ; पाअ) ।
दुत्तिइक्ख / **दुत्तितिक्ख** } देखो **दुतितिक्ख** ; (आचा ; राज) ।
दुत्तुंड पुं [**दुस्तुण्ड**] दुर्मुख, दुर्जन ; (सुपा २७८) ।
दुत्तोस वि [**दुस्तोष**] जिसको संतुष्ट करना कठिन हो वह ; (दस ५) ।
दुत्थ न [**दे**] जघन, स्त्री की कमर के नीचे का भाग ; (दे ५, ४२) ।
दुत्थ वि [**दुःस्थ**] दुर्गत, दुःस्थित ; (ठा ३, ३ ; भवि) ।
दुत्थ न [**दौःस्थ्य**] दुर्गति, दुःस्थता ; (सुपा २४४) । "नहि विधुरसहावा हुंति दुत्थेवि धीरा" (कुप्र ५४) ।
दुत्थिअ वि [**दुःस्थित**] १ दुर्गत, विपत्ति-ग्रस्त ; (रयण७५ ; भवि ; सण) । २ निर्धन, गरीब; (कुप्र १४६) ।
दुत्थुरुहंड पुंस्त्री [**दे**] झगड़ाखोर, कलह-शील ; (दे ५, ४७) । स्त्री—°**डा** ; (दे ५, ४७) ।
दुत्थोअ पुं [**दे**] दुर्भग, अभागा ; (दे ५, ४३) ।
दुद्दंत वि [**दुर्दान्त**] उद्धत, दमन करने को अशक्य, दुर्दम ; "विसयपसत्ता दुद्दंतइंदिया देहिणो वहवे" (सुर ८, १३८ ; गाया १, ५ ; सुपा ३८० ; महा) ।
दुद्दंस वि [**दुर्दर्श**] दुरालोक, जो कठिनाई से देखा जा सके ; (उत्तर १४१) ।
दुद्दंसण वि [**दुर्दर्शन**] जिसका दर्शन दुर्लभ हो वह ; (गा ३०) ।
दुद्दम वि [**दुर्दम**] १ दुर्जय, दुर्निवार ; (सुपा २४) । "दुद्दमकद्दमे" (श्रा १२) । २ पुं. राजा अश्वग्रीव का एक दूत ; (आक) ।
दुद्दम पुं [**दे**] देवर, पति का छोटा भाई ; (दे ५, ४४) ।
दुद्दिट्ठ वि [**दुर्दृष्ट**] १ बुरी तरह से देखा हुआ । २ वि. दुष्ट दर्शन वाला ; (पराह १, २—पत्र २६) ।
दुद्दिण न [**दुर्दिन**] बादलों से व्याप्त दिवस ; (ओघ३६०) ।
दुद्देय वि [**दुर्देय**] दुःख से देने योग्य ; (उप ६२४)
दुद्दोलना स्त्री [**दे**] गौ, गैया; (षड्) ।
दुद्दोली स्त्री [**दे**] वृक्ष-पंक्ति ; (दे५, ४३ ; पाअ) ।
दुद्ध न [**दुग्ध**] दूध, क्षीर ; (विपा १, ७) । °**जाइ** स्त्री [°**जाति**] मदिरा-विशेष, जिसका स्वाद दूध के जैसा होता है ; (जीव ३) । °**समुद्द** पुं [°**समुद्र**] क्षीर-समुद्र, जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ट है ; (गा ३८८) ।
दुद्धंस वि [**दुर्ध्वंस**] जिसका नाश मुश्किली से हो ; (सुर १, १२) ।
दुद्धगंधिअमुह पुं [**दे**] बाल,शिशु, छोटा लड़का; (दे५,४०)।
दुद्धगंधिअमुही स्त्री [**दे**] छोटी लड़की; (पाअ) ।
दुद्धट्टी / **दुद्धट्ठी** } स्त्री [**दे**] १ प्रसूति के बाद तीन दिन तक का गो-दुग्ध ; (पभा ३२) । २ खट्टी छाछ से मिश्रित दूध ; (पव ४—गा २२८) ।
दुद्धर वि [**दुर्धर**] १ दुर्वह, जिसका निर्वाह मुश्किली से हो सके वह ; (पराण १—पत्र ४ ; सुर१२, ५१) । २ गहन, विषम ; (ठा ६ ; भवि) । ३ दुर्जय ; (कुमा) । ४ पुं. रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३०) ।
दुद्धरिस वि [**दुर्धर्ष**] १ जिसका सामना कठिनता से हो सके, जीतने को अशक्य ; (पराह २, ५ ; कप्प) ।
दुद्धवलेही स्त्री [**दे**] चावल का आटा डाल कर पकाया जाता दूध ; (पव ४—गाथा २२८) ।
दुद्धसाडी स्त्री [**दे**] द्राक्षा मिला कर पकाया जाता दूध ; (पव ४—गाथा २२८) ।
दुद्धिअ न [**दे**] कद्दू, लौकी; गुजराती में 'दूधी'; (पाअ) ।
दुद्धिणिआ / **दुद्धिणी** } स्त्री [**दे**] १ तैल आदि रखने का भाजन ; २ तुम्बी; (दे ५, ५४) ।
दुद्धोअहि / **दुद्धोदहि** } पुं [**दुग्धोदधि**] समुद्र-विशेष, जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ट है, क्षीर-समुद्र ; (गा ४७५; उप २११ टी) ।
दुद्धोलणी स्त्री [**दे**] गो-विशेष, जिसको एक वार दोहने पर फिर भी दोहन किया जा सके ऐसी गाय; (दे ५, ४६) ।
दुधा देखो **दुहा** ; (अभि १६१) ।
दुनिमित्त देखो **दुण्णिमित्त** ; (श्रा २७) ।
दुन्नय पुं [**दुर्नय**] १ दुष्ट नीति, कुनीति । २ अनेक धर्म वाली वस्तु में किसी एक ही धर्म को मान कर अन्य धर्म का प्रतिवाद करने वाला पक्ष (सम्म१५) । ३ वि. दुष्ट नीति;

दुप्पडिलेह वि [**दुष्प्रतिलेख**] जो ठीक २ न देखा जा सके वह; (पव ८४)।

दुप्पडिलेहण न [**दुष्प्रतिलेखन**] ठीक २ नहीं देखना ; (आव ४)।

वाला, अन्याय-कारी ; (उप ७६८ टी)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] अन्याय करने वाला ; (सुपा ३४६)।

दुन्निग्गह त्रि [**दुर्निग्रह**] जिसका निग्रह दुःख से हो सके वह, अनिवार्य ; (उप पृ १५३)।

दुन्निबोह वि [**दुर्निबोध**] १ दुःख से जानने-योग्य ; २ दुर्लभ ; (सूअ १, १५, २५)।

दुन्निमित्त देखो **दुण्णिमित्त**; (श्रा २७)।

दुन्निय न [**दुर्नीत**] दुष्ट कर्म, दुष्कृत; "बंधंति वेदंति य दुन्नियाणि" (सूअ १, ७, ४)।

दुन्नियत्थ वि [**दे**] विट का भेष वाला, निन्दनीय वेष को धारण करने वाला, केवल जघन पर ही वस्त्र-पहिना हुआ ; "लोए वि कुसंसग्गीपियं जणं दुन्नियत्थमइवसणं निंदइ" (उव)।

दुन्निरिक्ख वि [**दुर्निरीक्ष**] जो कठिनाई से देखा जा सके वह; (कप्प ; भवि)।

दुन्निवार वि [**दुर्निवार**] रोकने के लिए अशक्य, जिसका निवारण मुश्किली से हो सके वह; (सुपा १२३ ; महा)।

दुन्निवारणीअ वि [**दुर्निवारणीय, दुर्निवार**] ऊपर देखो; (स ३४३ ; ७४१)।

दुन्निसण्ण त्रि [**दुर्निषण्ण**] खराब रीति से बैठा हुआ ; (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुप देखो **दिअ**=द्विप ; (राज)

दुपएस वि [**द्विप्रदेश**] १ दो अवयव वाला ; २ पुं. द्व्यणुक ; (उत्त १)।

दुपएसिय वि [**द्विप्रदेशिक**] दो प्रदेश वाला ; (भग ५, ७)।

दुपक्ख पुं [**दुष्पक्ष**] दुष्ट पक्ष ; (सूअ १, ३, ३)।

दुपक्ख न [**द्विपक्ष**] १ दो पक्ष ; (सूअ १, २, ३)। २ वि. दो पक्ष वाला ; (सूअ १, १२, ५)।

दुपडिग्गह न [**द्विप्रतिग्रह**] दृष्टिवाद का एक सूत्र; (सम १५७)।

दुपडोआर वि [**द्विपदावतार**] दो स्थानों में जिसका समावेश हो सके वह ; (ठा २, १)।

दुपडोआर वि [**द्विप्रत्यवतार**] ऊपर देखो; (ठा २, १)।

दुपमज्जिय देखो **दुप्पमज्जिय** ; (सुपा ६२०)।

दुपय वि [**द्विपद**] १ दो पैर वाला; २ पुं. मनुष्य; (गाया १, ८; सुपा ४०६)। ३ न. गाड़ी, शकट; (ओघ २०५ भा)।

दुपय पुं [**द्रुपद**] कांपिल्यपुर का एक राजा; (गाया १,१६)।

दुपरिच्चय वि [**दुष्परित्यज**] दुस्त्यज, दुःख से छोड़ने योग्य ; (उप ७६८ टी ; रयण ३४)।

दुपरिच्चयणीय वि [**दुष्परित्यजनीय, दुष्परित्यज**] ऊपर देखो ; (काल)।

दुपस्स देखो **दुप्पस्स** ; (ठा ५, १—पत्र २६६)।

दुपुत्त पुं [**दुष्पुत्र**] कुपुत्र, कपूत ; (पउम २६, २३)।

दुपेच्छ वि [**दुष्प्रेक्ष**] दुर्दर्श, अदर्शनीय ; (भवि)।

दुप्पइ पुं [**दुष्पति**] दुष्ट स्वामी ; (भवि)।

दुप्पउत्त वि [**दुष्प्रयुक्त**] १ दुरुपयोग करने वाला; (ठा २, १—पत्र ३६)। २ जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह ; (भग ३, १)।

दुप्पउलिय, **दुप्पउल्ल** वि [**दुष्प्रज्वलित**] ठीक २ नहीं पका हुआ, अधपका ; (उवा ; पंचा १)।

दुप्पओग पुं [**दुष्प्रयोग**] दुरुपयोग ; (दस ४)।

दुप्पओगि वि [**दुष्प्रयोगिन्**] दुरुपयोग करने वाला ; (पण्ह १, १—पत्र ७)।

दुप्पक्क वि [**दुष्पक्व**] देखो **दुप्पउल्ल**; (सुपा ४७२)।

दुप्पक्खाल वि [**दुष्प्रक्षाल**] जिसका प्रक्षालन कष्ट-साध्य हो वह ; (सुपा ६०८)।

दुप्पच्चुप्पेक्खिय वि [**दुष्प्रत्युत्प्रेक्षित**] ठीक २ नहीं देखा हुआ ; (पव ६)।

दुप्पजीवि वि [**दुष्प्रजीविन्**] दुःख से जीने वाला; (दसचू१)।

दुप्पडिक्कंत वि [**दुष्प्रतिक्रान्त**] जिसका प्रायश्चित्त ठीक २ न किया गया हो वह ; (विपा १, १)।

दुप्पडिगर वि [**दुष्प्रतिकर**] जिसका प्रतीकार दुःख से किया जा सके ; (बृह ३)।

दुप्पडिपूर वि [**दुष्प्रतिपूर**] पूरने के लिए अशक्य ;(तंदु)।

दुप्पडियाणंद वि [**दुष्प्रत्यानन्द**] १ जो किसी तरह संतुष्ट न किया जा सके ; २ अति कष्ट से तोषणीय ; (विपा १, १—पत्र ११ ; ठा ४, ३)।

दुप्पडियार वि [**दुष्प्रतिकार**] जिसका प्रतीकार दुःख से हो सके वह; (ठा ३,१—पत्र ११७; ११६; स १८४; उव)।

दुप्पडिलेहिय वि [**दुष्प्रतिलेखित**] ठीक से नहीं देखा हुआ ; (सुपा ६१७) ।

दुप्पडिवूह वि [**दुष्प्रतिबृंह**] १ बढ़ाने को अशक्य ; २ पालने को अशक्य ; (आचा) ।

दुप्पडिवूहण वि [**दुष्प्रतिबृंहण**] ऊपर देखो; (आचा) ।

दुप्पणिहाण न [**दुष्प्रणिधान**] दुष्प्रयोग, अशुभ प्रयोग, दुरुपयोग; (ठा ३, १; सुपा २४०) ।

दुप्पणिहिय वि [**दुष्प्रणिहित**] दुष्प्रयुक्त, जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह ; (सुपा ५५८) ।

दुप्पणीहाण देखो **दुप्पणिहाण**; "कयसामइअोवि दुप्पणी-हाणं" (सुपा ५५३) ।

दुप्पणोल्लिय वि [**दुष्प्रणोद्य**] दुस्त्यज; (सुअ १,३,१)।

दुप्पण्णवणिज्ज वि [**दुष्प्रज्ञापनीय**] कष्ट से प्रबोधनीय; (आचा २, ३, १) ।

दुप्पतर वि [**दुष्प्रतर**] दुस्तर ; (सूअ १, ५, १) ।

दुप्पधंस वि [**दुष्प्रधर्ष**] दुर्धर्ष, दुर्जय; (उत्त ९; पि ३०५)।

दुप्पमज्जण न [**दुष्प्रमार्जन**] ठीक २ सफा नहीं करना ; (धर्म ३) ।

दुप्पमज्जिय वि [**दुष्प्रमार्जित**] अच्छी तरह से सफा नहीं किया हुआ ; (सुपा ६१७) ।

दुप्पय देखो **दुपय**=द्विपद ; (सम ६०) ।

दुप्पयार वि [**दुष्प्रचार**] जिसका प्रचार दुष्ट माना जाता है वह, अन्याय-युक्त ; (कप्प) ।

दुप्परक्कंत वि [**दुष्पराक्रान्त**] बुरी तरह से आक्रान्त ; (आचा) ।

दुप्परिअल्ल वि [**दे**] १ अशक्य ; (दे ५, ५५ ; पाअ ; से ४, २६ ; ६, १८ ; गा १२२) । २ द्विगुण, दुगुना ; ३ अनभ्यस्त, अभ्यास-रहित ; (दे ५, ५५) ।

दुप्परिइअ वि [**दुष्परिचित**]अपरिचित ; (से१३, १३)।

दुप्परिच्चय देखो **दुपरिच्चय** ; (उत्त ८) ।

दुप्परिणाम वि [**दुष्परिणाम**] जिसका परिणाम खराब हो, दुर्विपाक ; (भवि) ।

दुप्परिमास वि [**दुष्परिमर्ष**] कष्ट-साध्य स्पर्श वाला ; (से ६, २४) ।

दुप्परियत्तण देखो **दुप्परिवत्तण** ; (तंदु) ।

दुप्परिल्ल वि [**दे**] दुराकर्ष; " आलिहिअ दुप्परिल्लंपि णेइ रणं धणुं वाहो" (गा १२२) ।

दुप्परिवत्तण वि [**दुष्परिवर्त्तन**] १ जिसका परिवर्तन दुःख से हो सके वह । २ न. दुःख से पीछे लौटना ; (तंदु) ।

दुप्पवंच पुं [**दुष्प्रपञ्च**] दुष्ट प्रपंच ; (भवि) ।

दुप्पवण पुं [**दुष्पवन**] दुष्ट वायु ; (भवि) ।

दुप्पवेस वि [**दुष्प्रवेश**] जहाँ कष्ट से प्रवेश हो सके वह ; (णाया १, १ ; पउम ४३, १२ स २५६ ; सुपा४५५) । °**तर** वि [°**तर**] प्रवेश करने को अशक्य ; (पण्ह१, ३—पत्र ४५) ।

दुप्पसह पुं [**दुष्प्रसह**] पंचम आरे के अन्त में होने वाला एक जैन आचार्य, एक भावी जैन मुनि ; (उप ८०६) ।

दुप्पस्स वि [**दुर्दर्श**] जो मुश्किली से दिखलाया जा सके वह ; (ठा ५, १ टी—पत्र ३३६) ।

दुप्पहंस वि [**दुष्प्रध्वंस्य**] जिसका नाश कठिनाई से हो सके वह ; (णाया १, १८—पत्र २३६) ।

दुप्पहंस वि [**दुष्प्रधृष्य**] अजेय, दुर्जय ; (णाया१, १८)।

दुप्पिउ पुं [**दुष्पितृ**] दुष्ट पिता ; (सुपा ३८७ ; भवि) ।

दुप्पिच्छ देखो **दुपेच्छ** ; (सुर २, ५ ; सुपा ९२) ।

दुप्पिय वि [**दुष्प्रिय**] अप्रिय । °**भासि** वि [°**भाषिन्**] अप्रिय-वक्ता ; (सुपा ३१४) ।

दुप्पुत्त देखो **दुपुत्त**; (पउम १०५, ७२; भवि; कुप्र ४०५)।

दुप्पूर वि [**दुष्पूर**] जो कठिनाई से पूरा किया जा सके ; (स १२३) ।

दुप्पेक्ख देखो **दुपेच्छ** ; (सण) ।

दुप्पेक्खणिज्ज वि [**दुष्प्रेक्षणीय**] कष्ट से दर्शनीय; (नाट—वेणी २५) ।

दुप्पेच्छ देखो **दुपेच्छ**; (महा) ।

दुप्पोलिय देखो **दुप्पउलिअ** ; (श्रा २०) ।

दुप्फरिस, **दुप्फास**, **दुफास** वि [**दुःस्पर्श**] जिसका स्पर्श खराब हो वह ; (पउम २६, ४६ ; १०१, ७१ ; ठा ८ ; भग) ।

दुफास वि [**द्विस्पर्श**] स्निग्ध और शीत आदि अविरुद्ध दो स्पर्शों से युक्त ; (भग) ।

दुब्बद्ध वि [**दुर्बद्ध**] खराब रीति से बँधा हुआ ; (आचा २, ६, ३) ।

दुब्बल वि [**दुर्बल**] निर्बल, बल-हीन; (विपा १, ७; सुपा ६०३; प्रासू २३)। °**पच्चवमित्त** पुंन [°**प्रत्यवमित्र**] दुर्बल को मदद करने वाला; (ठा ६)।

दुब्बलिय वि [**दुर्बलिक**] दुर्बल, निर्बल; (भग १२, २)। °**पूसमित्त** पुं [°**पुष्यमित्र**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य; (ठा ७; ती ७)।

दुब्बुद्धि वि [**दुर्बुद्धि**] १ दुष्ट बुद्धि वाला, खराब नियत वाला; (उप ७२८; सुपा ४४; ३७६)। २ स्त्री. खराब बुद्धि, दुष्ट नियत; (श्रा १४)।

दुब्बोल्ल पुं [**दे**] उपालम्भ, उलहना; (दे ५, ४२)।

दुब्भ° देखो **दुह**=दुह्।

दुब्भग वि [**दुर्भग**] १ कमनसीब, अभागा; २ अप्रिय, अनिष्ट; (पण्ह १, २; प्रासू १४३)। °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से उपकार करने वाला भी लोगों को अप्रिय होता है; (कम्म १; सम ६७)। °**करा** स्त्री [°**करा**] दुर्भग बनाने वाली विद्या-विशेष; (सुअ २, २)।

दुब्भरणि स्त्री [**दुर्भरणि**] दुःख से निर्वाह; "होउ अजणणी तेसिं दुब्भरणी पडउ तदुदरस्साधि" (सुपा ३७०)।

दुब्भाव पुं [**दुर्भाव**] १ हेय पदार्थ; (पउम ८६, ६६)। २ असद्-भाव, खराब असर; "पिसुणेण व जेण कओ दुब्भावो" (सुर ३, १६)।

दुब्भाव पुं [**द्विभाव**] विभाग, जूदाई; (सुर ३, १६)।

दुब्भासिय न [**दुर्भाषित**] खराब वचन; (पउम ११८, ६७; पडि)।

दुब्भि पुंन [**दुरभि**] १ खराब गन्ध; (सम ४१)। २ अशुभ, खराब, अ-सुन्दर; (ठा १)। ३ वि. खराब गन्ध वाला, दुर्गन्धि; (आचा)। °**गंध** [°**गन्ध**] पूर्वोक्त ही अर्थ; (ठा १; आचा; णाया १, १२)। °**सद्द** पुं [°**शब्द**] खराब शब्द; (णाया १, १२)।

दुब्भिक्ख पुंन [**दुर्भिक्ष**] १ दुष्काल, अकाल, वृष्टि का अभाव; (सम ६०; सुपा ३५८);

"आसन्ने रणरंगे, मूढे खेते तहेव दुब्भिक्खे।
जस्स मुहं जोइज्जइ, सो पुरिसो महीयले विरलो" (रयण ३२)।

२ भिक्षा का अभाव; (ठा ५, २)। ३ वि. जहां पर भिक्षा न मिल सके वह देश आदि; (ठा ३, १—पत्र ११८)।

दुब्भिज्ज देखो **दुब्भेज्ज**; (पउम ८०, ६)।

दुब्भूइ स्त्री [**दुर्भूति**] अ-शिव, अ-मंगल; (बृह ३)।

दुब्भूय पुंन [**दुर्भूत**] १ नुकशान करने वाला जन्तु—टिड्डी वगैरः; (भग ३, २)। २ न. अशिव, अमंगल; (जीव३)।

दुब्भेज्ज वि [**दुर्भेद्य**] तोड़ने को अशक्य; (पि ८४; २८७; नाट—मृच्छ १३३)।

दुब्भेय वि [**दुर्भेद**] ऊपर देखो; (राय)।

दुभग देखो **दुब्भग**; (नव १५)।

दुभव न [**द्विभव**] वर्तमान और आगामी जन्म; "दुभवहइ-सज्जो" (श्रा २७)।

दुभाग पुं [**द्विभाग**] आधा, अर्ध; (भग ७, १)।

दुम सक [**धवलय्**] १ सफेद करना। २ चूना आदि से पोतना। दुमइ; (हे ४, २४)। दुमसु; (गा७४७)। वकृ—**दुमंत**; (कुमा)।

दुम पुं[**द्रुम**] १ वृक्ष, पेड़, गाछ; (कुमा; प्रासू ६; १४६)। २ चमरेन्द्र के पदाति-सैन्य का एक अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले अनुत्तर देवलोक की गति प्राप्त की थी; (अनु२)। ४ न. एक देव-विमान; (सम ३५)। °**कंत** न [°**कान्त**] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**पत्त** न [°**पत्र**] १ वृक्ष की पत्ती; २ उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन; (उत्त १०)। °**पुप्फिया** स्त्री [°**पुष्पिका**] दशवैकालिक सूत्र का पहला अध्ययन; (दस १)। °**राय** पुं [°**राज**] उत्तम वृक्ष; (ठा४, ४)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में गति प्राप्त की थी; (अनु२)। २ नववें बलदेव और वासुदेव के पूर्व-जन्म के धर्म-गुरु; (सम १५३; पउम२०, १७७)।

दुमंतय पुं [**दे**] केश-बन्ध, धम्मिल्ल; (दे ५, ४७)।

दुमण न [**धवलन**] चूना आदि से लेपन, सफेद करना; (पण्ह २, ३)।

दुमणी स्त्री [**दे**] सुधा, मकान आदि पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष; (दे ५, ४४)।

दुमत्त वि [**द्विमात्र**] दो मात्रा वाला स्वर-वर्ण; (हे१,६४)।

दुमासिय वि [**द्वैमासिक**] दो मास का, दो मास संबन्धी; (सण)।

दुमिअ वि [**धवलित**] चूना आदि से पोता हुआ, सफेद किया हुआ; (गा ७४७; सुज्ज २०)।

दुमिल देखो **दुम्मिल**; (पिंग)।

दुमुह पुं [**द्विमुख**] एक राजर्षि; (उत्त ६)।

दुमुह देखो **दुम्मुह**=दुर्मुख ; (पि ३४०) ।

दुमुहुत्त पुंन [**दुर्मुहूर्त**] खराब मुहूर्त, दुष्ट समय ; (कुप्र २३७) ।

दुमोक्ख वि [**दुर्मोक्ष**] जो दुःख से छोड़ा जा सके ; (सूअ १, १२) ।

दुम्म देखो **दूम**=दावय् । दुम्मइ ; (भवि) । दुम्मेंति, दुम्मेसि ; (गा १७७ ; ३४०) । कर्म—दुम्मिज्जइ ; (गा ३२०) ।

दुम्मइ वि [**दुर्मति**] दुर्बुद्धि, दुष्ट बुद्धि वाला ; (श्रा२७ ; सुपा २६१) ।

दुम्मइणी स्त्री [**दे**] झगड़ाखोर स्त्री ; (दे५, ४७ ; षड्) ।

दुम्मण वि [**दुर्मनस्**] १ दुर्मना, खिन्न-मनस्क, उद्विग्न-चित्त, उदास ; (विपा१, १; सुर ३, १४७) । २ दीन, दीनता-युक्त ; ३ द्विष्ट, द्वेष-युक्त ; (ठा ३, २—पत्र १३०) ।

दुम्मण अक [**दुर्मनाय्**] उद्विग्न होना, उदास होना । वकृ—**दुम्मणाअंत**, **दुम्मणायमाण** ; (नाट—महावी ६६, मालती १२८ ; रयण ७६) ।

दुम्मणिअ न [**दौर्मनस्य**] उदासी, उद्वेग; (दस ६, ३) ।

दुम्महिला स्त्री [**दुर्महिला**] दुष्ट स्त्री; (ओघ ४६४ टी) ।

दुम्माण पुं [**दुर्मान**] झूठा अभिमान, निन्दित गर्व ; (अच्चु ५४) ।

दुम्मार पुं [**दुर्मार**] विषम मार, भयङ्कर ताड़न ; "दुम्मारेण मओ सावि" (श्रा १२) ।

दुम्मारुय पुं [**दुर्मारुत**] दुष्ट पवन ; (भवि) ।

दुम्मिअ वि [**दून**] उपतापित, पीड़ित ; (गा७४ ; २२४ ; ४२३ ; भवि ; काप्र ३०) ।

दुम्मिल स्त्रीन [**दुर्मिल**] छन्द-विशेष । स्त्री—°**ला** ; (पिंग) ।

दुम्मुह देखो **दुमुह**=द्विमुख ; (महा) ।

दुम्मुह पुं [**दुर्मुख**] बलदेव का धारणी-देवी से उत्पन्न एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी , (अंत ३ ; पण्ह१, ४) ।

दुम्मुह पुं [**दे**] मर्कट, वानर, बन्दर ; (दे ५, ४४) ।

दुम्मेह वि [**दुर्मेधस्**] दुर्बुद्धि, दुर्मति ; (पण्ह १, ३) ।

दुम्मोअ वि [**दुर्मोक**] दुःख से छोड़ाने योग्य ; (अभि २४४) ।

दुरइक्कम वि [**दुरतिक्रम**] दुर्लंघ्य, जिसका उल्लंघन दुःख-साध्य हो वह ; (आचा) ।

दुरइक्कमणिज्ज वि [**दुरतिक्रमणीय**] ऊपर देखो; (णाया १, ५) ।

दुरंत वि [**दुरन्त**] १ जिसका परिणाम—विपाक खराब हो वह, जिसका पर्यन्त दुष्ट हो वह ; (णाया १, ८ ; पण्ह १, ४—पत्र ६५ ; स ७५० ; उवा) । २ जिसका विनाश कष्ट-साध्य हो वह ; (तंदु) ।

दुरंदर वि [**दे**] दुःख से उत्तीर्ण ; (दे ५, ४६) ।

दुरक्ख वि [**दूरक्ष**] जिसकी रक्षा करना कठिन हो वह ; (सुपा १४३) ।

दुरक्खर वि [**दुरक्षर**] परुष, कठोर (वचन) ; (भवि) ।

दुरग्गह पुं [**दुराग्रह**] कदाग्रह ; (कुप्र ३७६) ।

दुरज्झवसिय न [**दुरध्यवसित**] दुष्ट चिन्तन ; (सुपा ३७७) ।

दुरणुचर वि [**दुरनुचर**] जिसका अनुष्ठान कठिनता से हो सके वह, दुष्कर ; "एसो जईण धम्मो दुरणुचरो मंदसत्ताण" (सुर १४, ७५ ; ठा ५, १—पत्र २९६ ; णाया १, १) ।

दुरणुपाल वि [**दुरनुपाल**] जिसका पालन कष्ट-साध्य हो वह ; (उत्त २३) ।

दुरप्प पुं [**दुरात्मन्**] दुष्ट आत्मा, दुर्जन ; (उत्र ; महा) ।

दुरब्भास पुं [**दुरभ्यास**] खराब आदत ; (सुपा १६७) ।

दुरभि देखो **दुब्भि** ; (अणु ; पउम ३६,१०; १०२, ४४ ; पण्ह २, ५ ; आचा) ।

दुरभिगम वि [**दुरभिगम**] १ जहां दुःख से गमन हो सके वह , कष्ट-गम्य ; (ठा ३, ४) । २ दुर्बोध, कष्ट से जो जाना जा सके ; (राज) ।

दुरमच्च पुं [**दुरमात्य**] दुष्ट मंत्री ; (कुप्र २६१) ।

दुरवगम वि [**दुरवगम**] दुर्बोध ; (कुप्र ४८) ।

दुरवगाह वि [**दुरवगाह**] दुष्प्रवेश, जहां प्रवेश करना कठिन हो वह ; (हे १, २६ ; सम १४५) ।

दुरस वि [**दूरस**] खराब स्वाद वाला ; (भग ; णाया १, १२ ; ठा ८) ।

दुरसण पुं [**द्विरसन**] १ सर्प, साँप ; २ दुर्जन, दुष्ट मनुष्य ; (सुपा ५६७) ।

दुरहि देखो **दुरभि** ; (उप ७२८ टी ; तंदु) ।

दुरहिगम देखो **दुरभिगम** ; (सम १४५; विसे ९०६) ।

दुरहिगम्म वि [**दुरभिगम्य**] दुःख से जानने योग्य, दुर्बोध; "अत्थगई वि अ नयवायगहणलीणा दुरहिगम्मा" (सम्म १६१)।

दुरहियास वि [**दुरध्यास, दुरधिसह**] दुस्सह, जो कष्ट से सहन किया जा सके ; (गाया १, १ ; आचा ; उप १०३१ टी ; स ६५७)।

दुराणण पुं [**दुरानन**] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४५)।

दुराणुवत्त वि [**दुरनुवर्त**] जिसका अनुवर्तन कष्ट-साध्य हो वह ; (वव ३)।

दुराय न [**द्विरात्र**] दो रात ; (ठा ५, २ ; कस)।

दुरायार वि [**दुराचार**] १ दुराचारी, दुष्ट आचरण वाला ; (सुर २, १६३ ; १२, २२६ ; वेणी १७१)। २ पुं. दुष्ट आचरण ; (भवि)।

दुरायारि वि [**दुराचारिन्**] ऊपर देखो ; (भवि)।

दुराराह वि [**दुराराध**] जिसका आराधन दुःख से हो सके वह; (कप्प)।

दुरारोह वि [**दुरारोह**] जिस पर दुःख से चढ़ा जा सके वह, दुरध्यास ; (उत्त २३ ; गा ४६८)।

दुरालोअ पुं [**दे**] तिमिर, अन्धकार ; (दे ५, ४६)।

दुरालोअ वि [**दुरालोक**] जो दुःख से देखा जा सके, देखने को अशक्य ; (से ४, ८ ; कुमा)।

दुरालोयण वि [**दुरालोकन**] ऊपर देखो ; "दुरालोयणो दुम्मुहो रत्तनेत्तो" (भवि)।

दुरावह वि [**दुरावह**] दुर्धर, दुर्वह ; (पउम ६८, ६)।

दुरास वि [**दुराश**] १ दुष्ट आशा वाला ; २ खराब इच्छा वाला; (भवि ; संक्षि १६)।

दुरासय वि [**दुराशय**] दुष्ट आशय वाला ; (सुपा १३१)।

दुरासय वि [**दुराश्रय**] दुःख से जिसका आश्रय किया जा सके वह, आश्रय करने को अशक्य ; (पराह १, ३ ; उत्त १)।

दुरासय वि [**दुरासद**] १ दुष्प्राप, दुर्लभ ; २ दुर्जय ; ३ दुःसह ; (दस २, ६ ; राज)।

दुरिअ न [**दुरित**] पाप ; (पाअ ; सुपा २४३)।

दुरिअ न [**दे**] द्रुत, शीघ्र, जल्दी ; (षड्)।

दुरिआरि स्त्री [**दुरितारि**] भगवान् संभवनाथ की शासन-देवी ; (संति ६)।

दुरिक्ख वि [**दुरीक्ष**] देखने को अशक्य ; (कुमा)।

दुरुक्क वि [**दे**] थोड़ा पीसा हुआ, ठीक २ नहीं पीसा हुआ ; (आचा २, १, ८)।

दुरुढुल्ल सक [**भ्रम्**] १ भ्रमण करना, घूमना। २ गँवाई हुई चीज की खोज में घूमना। वकृ— **दुरुढुल्लंत**; (सुर १५, २१२)।

दुरुत्त न [**दुरुक्त**] दुष्टोक्ति, दुष्ट वचन ; (सार्ध १०१)।

दुरुत्त वि [**द्विरुक्त**] १ दो बार कहा हुआ, पुनरुक्त ; २ दो बार कहने योग्य ; (रंभा)।

दुरुत्तर वि [**दुरुत्तर**] १ दुस्तर, दुर्लंघ्य ; (सूअ १, ३, २)। २ दुष्ट उत्तर, अयोग्य जवाब ; (हे १, १४)।

दुरुत्तर वि [**द्वि-उत्तर**] दो से अधिक। °**सय** वि [°**शततम**] एक सौ दो वाँ, १०२ वाँ; (पउम १०२,२०४)।

दुरुत्तार वि [**दुरुत्तार**] दुःख से पार करने योग्य ; (सुपा २६७)।

दुरुद्धर वि [**दुरुद्धर**] जिसका उद्धार कठिनाई से हो वह ; (सूअ १, २, २)।

दुरुवणीय वि [**दुरुपनीत**] जिसका उपनय दूषित हो ऐसा (उदाहरण) ; (दसनि १)।

दुरुवयार वि [**दुरुपचार**] जिसका उपचार कष्ट-साध्य हो वह ; (तंदु)।

दुरुव्वा स्त्री [**दूर्वा**] तृण-विशेष, दूब ; (स १२४ ; उप ३१८)।

दुरुह सक [**आ+रुह्**] आरूढ़ होना, चढ़ना। दुरुहइ ; (पि ११८ ; १३६)। वकृ—**दुरुहमाण** ; (आचा २, ३, १)। संकृ—**दुरुहित्ता, दुरुहित्ताणं, दुरुहेत्ता**; (भग ; महा ; पि ५८३ ; ४८२)।

दुरूढ वि [**आरूढ**] अधिरूढ़, ऊपर चढ़ा हुआ ; (गाया १, १ ; २, १; औप)।

दुरूव वि [**दूरूप**] खराब रूप वाला, कुडौल ; (ठा ८; श्रा १६)।

दुरूह देखो **दुरुह**। संकृ—**दुरूहित्तु, दुरूहिया** ; (सूअ १, ५,२,१५), "जहा आसाविणिं नावं जाइअंधो दुरूहिया" (सूअ १, ११, ३०)।

दुरूहण न [**आरोहण**] अधिरोहण, ऊपर चढ़ बैठना ; (स ५१)।

दुरेह पुं [**द्विरेफ**] भ्रमर , भमरा ; (पाअ ; हे १, ६४)।

दुरोअर न [**दुरोदर**] जूआ, द्यूत ; (पाअ)।

दुलंघ देखो **दुल्लंघ** ; (भवि)।

दुलंभ देखो **दुल्लंभ** ; (भवि)।

दुल्ह वि [**दुर्लभ**] १ जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह ; (कुमा ; गउड ; प्रासू १३४)। २ पुं. एक वणिक्-पुत्र ; (सुपा ६१७)। देखो **दुल्लह**।

दुलि पुंस्त्री [**दे**] कच्छप, कछुआ ; (दे ५, ४२ ; उप पृ १३५)।

दुल्ल न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ५, ४१)।

दुल्लंघ वि [**दुर्लङ्घ**] जिसका उल्लंघन कठिनाई से हो सके वह, अ-लंघनीय ; (पउम १२, ३८ ; ४१ ; हेका ३१ ; सुर २, ७८)।

दुल्लंभ वि [**दुर्लभ**] दुराप, दुष्प्राप्य ; (उप पृ १३६ ; सुपा १६३ ; सण)।

दुल्लक्ख वि [**दुर्लक्ष**] १ दुर्विज्ञेय, जो दुःख से जाना जा सके, अलक्ष्य ; (से ८, ५ ; स ६६ ; वज्जा १३६ ; श्रा २८)। २ जो कठिनाई से देखा जा सके ; (कप्पू)।

दुल्लग्ग वि [**दे**] अ-घटमान, अ-युक्त ; (दे ५, ४३)।

दुल्लग्ग न [**दुर्लग्न**] दुष्ट लग्न, दुष्ट मुहूर्त ; (मुद्रा २१५)।

दुल्लब्भ } देखो **दुल्लह** ; "किं दुल्लब्भं जणो गुणग्गाही"
दुल्लभ } (गा ६७५ ; निचू ११)।

दुल्ललिअ वि [**दुर्ललित**] १ दुष्ट आदत वाला ; २ दुष्ट इच्छा वाला ; "विलसइ वेसाण गिहे विविहविलासेहिं दुल्ललिओ", "कीलइ दुल्ललियबालकीलाए" (सुपा ४८५ ; ३२८)। ३ व्यसनी, आदत वाला ;
"धन्ना सा पुन्नुक्करिसनिम्मिया तिहुयणेवि तुह जणणी।
जीइ पसूओ सि तुमं दीणुद्धरणिक्कदुल्ललिओ" (सुपा २१६)।
४ दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित ; (पाअ)। ५ न. दुराशा, दुर्लभ वस्तु की अभिलाषा ; (महानि ६)।

दुल्लसिआ स्त्री [**दे**] दासी, नौकरानी ; (दे ५, ४६)।

दुल्लह वि [**दुर्लभ**] १ दुराप, जिसकी प्राप्ति कठिनाई से हो वह ; (स्वप्न ४६ ; कुमा ; जी ५० ; प्रासू ११ ; ४६ ; ४७)। २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा ; (गु १०)। °**राय** पुं [°**राज**] वही अर्थ ; (सार्ध ६६; कुप्र ४)। °**लंभ** वि [°**लम्भ**] जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह ; (पउम ३५, ४७ ; सुर ४, २२६; वै ६८)।

दुवई स्त्री [**द्रुपदी**] छन्द-विशेष ; (स ७१)।

दुवण न [**दावन**] उपताप, पीड़न ; (पण्ह १, ३)।

दुवण्ण } वि [**दुर्वर्ण**] खराब रूप वाला ; (भग; ठा ८)।
दुवन्न }

दुवय पुं [**द्रुपद**] एक राजा, द्रौपदी का पिता ; (णाया १, १६; उप ६४८ टी)। °**सुया** स्त्री [°**सुता**] पाण्डव-पत्नी, द्रौपदी ; (उप ६४८ टी)।

दुवयंगया स्त्री [**द्रुपदाङ्गजा**] राजा द्रुपद की लड़की, द्रौपदी, पाण्डवों की पत्नी ; (उप ६४८ टी)।

दुवयंगरुहा स्त्री [**द्रुपदाङ्गरुहा**] ऊपर देखो; (उप ६४८ टी)।

दुवयण न [**दुर्वचन**] खराब वचन, दुष्ट उक्ति; (पउम ३५, ११)।

दुवयण न [**द्विवचन**] दो का बोधक व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय, दो संख्या की वाचक विभक्ति ; (हे १, ६४; ठा ३, ४—पत्र १५८)।

दुवार } देखो **दुआर** ; (हे २, ११२ ; प्रति ४१ ; सुपा
दुवाराय } ४८७)। " एगदुवाराए " (कस)। °**पाल** पुं [°**पाल**] दरवान, प्रतीहार ; (सुर १, १३४ ; २, १४८)। °**वाहा** स्त्री [°**वाहा**] द्वार-भाग; (आचा २, १, ५)।

दुवारि वि [**द्वारिन्**] १ द्वार वाला। २ पुं. दरवान, प्रतीहार; " बहुपरिवारो पत्तो रायदुवारी तहिं वरुणो " (सुपा २६५)।

दुवारिअ वि [**द्वारिक**] दरवाजा वाला; " अवंगुयदुवारिए" (कस)।

दुवारिअ पुं [**दौवारिक**] दरवान, द्वारपाल; (हे १, १६०; संक्षि ६ ; सुपा २६०)।

दुवालस त्रि.ब. [**द्वादशन्**] बारह, १२; (कप्प ; कुमा)। °**मुहुत्तिअ** वि [°**मुहूर्तिक**] बारह मुहूर्तों का परिमाण वाला; (सम २२)। °**विह** वि [°**विध**] बारह प्रकार का ; (सम ३१)। °**हा** अ [°**धा**] बारह प्रकार ; (सुर १४, ६१)। °**वत्त** न [°**वर्त**] बारह आवर्त वाला वन्दन, प्रणाम-विशेष ; (सम २१)।

दुवालसंग स्त्रीन [**द्वादशाङ्गी**] बारह जैन आगम-ग्रन्थ, आचारांग आदि बारह सूत्र-ग्रन्थ ; (सम १; हे १, २५४)। स्त्री—°**गी** ; (राज)।

दुवालसंगि वि [**द्वादशाङ्गिन्**] बारह अंग-ग्रन्थों का जानकार; (कप्प)।

दुवालसम वि [**द्वादश**] १ बारहवाँ ; २ लगातार पाँच दिनों का उपवास ; (आचा ; णाया १, १; ठा ६; सण)। स्त्री—°**मी**; (णाया १, ६)।

दुविट्ठ } पुं [**द्विपृष्ठ, द्विविष्टप**] १ भरत-क्षेत्र में इस
दुविट्ठु } अवसर्पिणी काल में उत्पन्न द्वितीय अर्ध-चक्री राजा; (सम १५८ टी; पउम ५, १५५)। २ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न होने वाला आठवाँ अर्ध-चक्री राजा, एक वासुदेव; (सम १५४)।

दुविभज्ज वि [**दुर्विभज**] जिसका विभाग करना कठिन हो वह ; (ठा ५, १—पत्र २९६)।

दुविभव्व देखो **दुव्विभव्व** ; (ठा ५,१ टी)।

दुवियड्ढ वि [**दुर्विदग्ध**] दुःशिक्षित, जानकारी का भूठा अभिमान करने वाला ; (उप ८३३ टी)।

दुवियप्प पुं [**दुर्विकल्प**] दुष्ट वितर्क ; (भवि)।

दुविलय पुं [**दुविलक**] एक अनार्य देश ; " दुं (? दु) विलय-लउसबुक्कस—" (पव २७४)।

दुविह वि [**द्विविध**] दो प्रकार का; (हे १, ९४; नव ३)।

दुवीस स्त्रीन [**द्वाविंशति**] बाईस, २२; (नव २०; षड्)।

दुव्वण्ण } देखो **दुवण्ण**; (पउम ४१, १७ ; पण्ह १, ४)।
दुव्वन्न }

दुव्वय न [**दुर्व्रत**] १ दुष्ट नियम। २ वि. दुष्ट व्रत करने वाला ; ३ व्रत-रहित, नियम-वर्जित; (ठा ४, ३; विपा १,१)।

दुव्वयण न [**दुर्वचन**] दुष्ट उक्ति, खराब वचन ; (पउम ३३, १०६ ; विसे ५२० ; उव ; गा २९०)।

दुव्वल देखो **दुब्बल** ; (महा)।

दुव्वसण न [**दुर्व्यसन**] खराब आदत, बुरी आदत ; (सुपा १८४ ; ४८९ ; भवि)।

दुव्वसु वि [**दुर्वसु**] अभव्य, खराब द्रव्य ; (आचा)। °**मुणि** पुं [°**मुनि**] मुक्ति के लिए अयोग्य साधु; (आचा)।

दुव्वह वि [**दुर्वह**] दुर्धर, जिसका वहन कठिनाई से हो सके वह ; (स १६२ ; सुर १, १४)।

दुव्वा देखो **दुरुव्वा** ; (कुमा ; सुर १, १३८)।

दुव्वाइ वि [**दुर्वादिन्**] अप्रिय-वक्ता ; (दसनि २)।

दुव्वाय पुं [**दुर्वाक्**] दुर्वचन, दुष्ट उक्ति ; "वयणेणवि दुव्वाओ न य कायव्वा परस्स पीडयरा" (पउम १०३, १४३)।

दुव्वाय पुं [**दुर्वात**] दुष्ट पवन ; (णमि ४)।

दुव्वार वि [**दुर्वार**] दुःख से रोकने योग्य, अवार्य ; (से १२, ६३; उप ९८६ टी; सुपा १९७; ४७१; अभि ११६)।

दुव्वारिअ देखो **दुवारिअ**=दौवारिक ; (प्राप्र)।

दुव्वाली स्त्री [**दे**] वृक्ष-पंक्ति ; (पाअ)।

दुव्वास पुं [**दुर्वासस्**] एक ऋषि; (अभि ११८)।

दुव्विअड वि [**दुर्विवृत**] परिधान-वर्जित, नग्न ; (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुव्विअड्ढ } वि [**दुर्विदग्ध**] ज्ञान का भूठा अभिमान करने
दुव्विअद्ध } वाला, दुःशिक्षित; (पाअ ; गा ६५)।

दुव्विजाणय वि [**दुर्विज्ञेय**] दुःख से जानने को योग्य ; जानने को अशक्य ; "अकुसलपरिणाममंदबुद्धिजणदुव्विजाणए" (पण्ह १, १)।

दुव्विढप्प वि [**दुरर्ज**] दुःख से अर्जन करने योग्य, कठिनाई से कमाने योग्य ; (कुप्र २३८)।

दुव्विणीअ वि [**दुर्विनीत**] अविनीत, उद्धत ; (पउम ६६, ३५; काल)।

दुव्विण्णाय वि [**दुर्विज्ञात**] असत्य रीति से जाना हुआ ; (आचा)।

दुव्विभज देखो **दुविभज्ज** ; (राज)।

दुव्विभव्व वि [**दुर्विभाव्य**] दुर्लक्ष्य, दुःख से जिसकी आलोचना हो सके वह ; (ठा ५, १ टी—पत्र २९६)।

दुव्विभाव वि [**दुर्विभाव**] ऊपर देखो ; (विसे)।

दुव्विलसिय न [**दुर्विलसित**] १ स्वच्छन्दी विलास ; २ निकृष्ट कार्य्य , जघन्य काम ; (उप १३९ टी)।

दुव्विसह वि [**दुर्विषह**] अत्यन्त दुःसह, असह्य ; (गा १४८ ; सुर ३, १४४ ; १४, २१०)।

दुव्विसोज्झ वि [**दुर्विशोध्य**] शुद्ध करने को अशक्य ; (पंचा १९)।

दुव्विहिय वि [**दुर्विहित**] १ खराब रीति से किया हुआ ; "दुव्विहियविलासियं विहिणो" (सुर ४, १५; ११, १४३)। २ अ-सुविहित, अ-यशस्वी ; (आव ३)।

दुव्वोज्झ वि [**दुर्वाह्य**] दुर्वह, दुःख से ढ़ोने योग्य ; (से ३, ५ ; ४ ,४४ ; १३, ६३ ; वज्जा ३८)।

दुव्वोज्झ वि [**दे**] दुर्घात्य, दुःख से मारने योग्य; (से ३, ५)।

दुसंकड न [**दुःसंकट**] विषम विपत्ति ; (भवि)।

दुसंचर देखो **दुस्संचर**; (भवि)।

दुसन्नप्प वि [**दुःसंज्ञाप्य**] दुर्बोध्य ; (ठा ३, ४—पत्र १६५)।

दुसमदुसमा देखो **दुस्समदुस्समा** ; (भग ६, ७)।

दुसमसुसमा देखो **दुस्समसुसमा** ; (ठा १)।

दुसमा देखो **दुस्समा**; (भग ६, ७; भवि)।

दुसह देखो **दुस्सह**; (हे १, ११५ ; सुर १२, १३० ; १३६) ।
दुसाह वि [**दुःसाध**] दुःसाध्य, कष्ट-साध्य ; (पउम ८६, २२) ।
दुसिक्खिअ वि [**दुःशिक्षित**] दुर्विदग्ध ; (पउम २५, २१) ।
दुसुमिण देखो **दुस्सुमिण**; (पडि)।
दुसुरुल्लय न [**दे**] गले का आभूषण-विशेष; (स ७६) ।
दुस्स सक [**द्विष्**] द्वेष करना । वकृ—**दुस्समाण** ; (सुअ १, १२, २२) ।
दुस्सउण न [**दुःशकुन**] अपशकुन ; (धर्मि २०) ।
दुस्संचर वि [**दुस्संचर**] जहाँ दुःख से जाया जा सके, दुर्गम; (स २३१ ; संक्षि १७) ।
दुस्संचार वि [**दुस्संचार**] ऊपर देखो; (सुर १, ६६)।
दुस्संत पुं [**दुष्यन्त**] चन्द्रवंशीय एक राजा, शकुन्तला का पति ; (पि ३२९) ।
दुस्संबोह वि [**दुस्संबोध्य**] दुर्बोध्य; (आचा) ।
दुस्सज्झ वि [**दुस्साध्य**] दुष्कर ; (सुपा ८ ; ५६६)।
दुस्सण्णप्प देखो **दुसन्नप्प** ; (बृह ४) ।
दुस्सत्त वि [**दुःसत्त्व**] दुरात्मा, दुष्ट जीव ;(पउम ८७, ६) ।
दुस्सन्नप्प देखो **दुसन्नप्प** ; (कस) ।
दुस्समदुस्समा स्त्री [**दुष्षमदुष्षमा**] काल-विशेष, सर्वाधम काल , अवसर्पिणी काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी काल का पहला आरा, इसमें सब पदार्थों के गुणों की सर्वोत्कृष्ट हानि होती है, इसका परिमाण एक्कीस हजार वर्षों का है; (ठा १; ६; इक) ।
दुस्समसुसमा स्त्री [**दुष्षमसुषमा**] बेयालीस हजार कम एक कोटाकोटि सागरोपम का परिमाण वाला काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का चतुर्थ और उत्सर्पिणी काल का तीसरा आरा ; (कप्प ; इक) ।
दुस्समा स्त्री [**दुष्षमा**] १ दुष्ट काल । २ एक्कीस हजार वर्षों के परिमाण वाला काल-विशेष, अवसर्पिणी-काल का पाँचवाँ और उत्सर्पिणी काल का दूसरा आरा; (उप६४८; इक)।
दुस्समाण देखो **दुस्स** ।
दुस्सर पुं [**दुःस्वर**] १ खराब आवाज, कुत्सित कण्ठ ; २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्वर कर्ण-कटु होता है ; (कम्म १, २७; नव १५) । °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] दुःस्वर का कारण-भूत कर्म ; (पंच ; सम ६७) ।
दुस्सल वि [**दुःशल**] दुर्विनीत, अविनीत ; (बृह १) ।
दुस्सह वि [**दुस्सह**] जो दुःख से सहन हो सके, असह्य ; (स्वप्न ७३ ;हे १, १३; ११५ ; षड्) ।
दुस्सहिय वि [**दुस्सोढ**] दुःख से सहन किया हुआ ; (सुअ १,३, १) ।
दुस्सासण पुं [**दुःशासन**] दुर्योधन का एक छोटा भाई, कौरव-विशेष ; (चारु १२; वेणी १०७) ।
दुस्साहड वि [**दुस्संहत**] दुःख से एकत्रित किया हुआ ; "दुस्साहडं धणं हिच्चा बहु संचिणिया रयं" (उत्त ७, ८) ।
दुस्साहिअ वि [**दौःसाधिक**] दुःसाध्य कार्य को करने वाला ; (पि ८४) ।
दुस्सिक्ख वि [**दुःशिक्ष**] दुष्ट शिक्षा वाला, दुःशिक्षित, दुर्विदग्ध; (उप १४६ टी ; कुप्र २८३) ।
दुस्सिक्खिअ वि [**दुःशिक्षित**] ऊपर देखो; (गा ६०३)।
दुस्सिज्जा स्त्री [**दुःशय्या**] खराब शय्या ; (दस ८) ।
दुस्सिलिट्ठ वि [**दुःश्लिष्ट**] कुत्सित श्लेष वाला; (पि १३६)।
दुस्सील वि [**दुःशील**] १ दुष्ट स्वभाव वाला ; २ व्यभिचारी ; (पण्ह १, १ ; सुपा ११०) । स्त्री—°**ला** ; (पाअ) ।
दुस्सुमिण पुंन [**दुःस्वप्न**] दुष्ट स्वप्न, खराब स्वप्न ; (पण्ह १, २) ।
दुस्सुय न [**दुःश्रुत**] १ दुष्ट शास्त्र । २ वि. श्रुति-कटु ; (पण्ह १, २) ।
दुस्सेज्जा देखो **दुस्सिज्जा** ; (उव) ।
दुह सक [**दुह्**] दूहना, दूध निकालना । दुहेज्जह ; (महा) । कर्म—दुहिज्जइ, दुब्भइ; (हे ४, २४५) ; भवि—दुहिहिइ, दुब्भिहिइ; (हे ४, २४५) ।
दुह देखो **दोह**=दोह ; (राज) ।
दुह देखो **दुक्ख**=दुःख ; (हे २, ७२ ; प्रासू २६ ; २८; १६२) । °**अ** वि [°**द**] दुःख देने वाला, दुःख-जनक ; (सुपा ४३४) । °**ट्ट** वि [°**र्त**] दुःख से पीड़ित ; (विपा १, १ ; सुपा ३३८) । °**ट्टिय** वि [°**र्तित**] दुःख से पीड़ित ; (औप) । °**ट्ठ** पुं [°**र्थ**] नरक-स्थान ; (सुअ १, ५, १) । °**त्त** देखो °**ट्ट**; (उप पृ ७६ ; ७२८ टी) । °**फास** पुं [°**स्पर्श**] दुःख-जनक स्पर्श; (गाया १, १२) । °**भागि** वि [°**भागिन्**] दुःख में भागीदार; (सुपा ४३१)।

°मच्चु पुं [°मृत्यु] अपमृत्यु, अकाल मौत; (सुर ८, ५३)। °विवाग पुं [°विपाक] दुःख रूप कर्म-फल ; (विपा १, १)। °सिज्जा, °सेज्जा स्त्री [°शय्या] दुःख-जनक शय्या ; (ठा ४, ३)। °ावह वि [°ावह] दुःख-जनक ; (पउम ८२, ६१ ; सुर ८, १६२ ; प्रासू १६६)।

दुह° देखो दुहा; (भग ८, ८)।

दुहअ वि [दे] चूर्णित, चूर चूर किया हुआ ; (दे ५, ४५)।

दुहअ वि [दुर्हत] खराब रीति से मारा हुआ; (आचा)।

दुहअ वि [द्विहत] दो से मारा हुआ ; (आचा)।

दुहअ देखो दुब्भग ; (षड्)।

दुहओ अ [द्विधातस्] दोनों तरफ से, उभय प्रकार से ; (आचा ; ठा ५, ३ ; कस; भग; पुप्फ ४७० ; श्रा २७)।

दुहंड वि [द्विखण्ड] दो टुकड़े वाला ; "किच्चेव बिंबं (? णो) दुहंडं" (रंभा)।

दुहग देखो दुब्भग ; (कम्म ३, ३)।

दुहट्ट वि [दुर्घट्ट] दुर्निरोध, दुर्वार ; (गाथा १, ८)।

दुहण देखो दुघण; (पण्ह १, १—पत्र १८)।

दुहण पुं [द्रुहण] प्रहरण विशेष, "चम्मेट्ठदुघणमोट्ठियमोग्गरवर-फलिहजंतपत्थरदुहणतोणकुवेणी—" (पण्ह १, ३—पत्र ४४

दुहण न [दोहन] दोह, दोहना; (पण्ह १, २)।

दुहव देखो दूहव ; (पि ३४० ; हे १, ११५ टी)। स्त्री— °वी ; (पि २३१)।

दुहा अ [द्विधा] दो प्रकार, दो तरफ, उभयथा ; (जी ८ ; प्रासू १४४)। °इअ वि [°कृत] जिसके दो खण्ड किये गये हों वह ; (प्राप्र ; कुमा)।

दुहाकर सक [द्विधा+कृ] दो खण्ड करना। कर्म— दुहाइज्जइ, दुहाकिज्जइ ; (प्राप्र ; हे १, ६७)। वकृ— °कज्जमाण, °किज्जमाण ; (पि ५४७ ; ४३६)। संकृ— °काउं ; (महा)।

दुहाव सक [छिद्] छेदना, छेदा करना, खण्डित करना। दुहावइ ; (हे ४, १२४)।

दुहाव सक [दुःखय्] दुःखी करना, दुभाना ; (प्रामा)।

दुहावण वि [दुःखन] दुःखी करने वाला ; (सण)।

दुहाविअ वि [छिन्न] खण्डित ; (पाअ ; कुमा)।

दुहाविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ ; (गउड)।

दुहि वि [दुःखिन्] दुःखी, व्यथित, पीड़ित ; (उप ६८६ टी)। स्त्री— °णी ; (कुमा)।

दुहिअ वि [दुःखित] पीड़ित, दुःख-युक्त ; (हे २, १६४; कुमा ; महा)।

दुहिअ वि [दुग्ध] जिसका दोहन किया गया हो वह ; (दे १, ७)। °दुज्झ वि [°दोह्य] एक वार दोहने पर फिर भी दोहने योग्य ; फिर फिर दोहने योग्य ; (दे १, ७ ; ५, ४६)।

दुहिआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री ; (सुपा १७६ ; हे ३, ३५)। °दइअ पुं [°दयित] जामाता ; (सुपा ४५७)

दुहिण पुं [द्रुहिण] ब्रह्मा, चतुर्मुख ; "अवि दुहिणप्पमुहेहिं आणती तुह अलंघणिज्जपहावा" (अच्चु १६)।

दुहित्त पुं [दौहित्र] लड़की का लड़का; (उप पृ ७४)।

दुहित्तिया स्त्री [दौहित्रिका] लड़की की लड़की ; (उप पृ ७४)।

दुहिल वि [द्रुहिल] द्रोही, द्रोह करने वाला ; (विसे ६६६ टी)।

दू सक [दू] १ उपताप करना। २ काटना। कर्म— "दुज्जंतु उच्छू " (पण्ह १,२)।

दूअ पुं [दूत] दूत, संदेश-हारक ; (पाअ ; पउम ५३, ४३; ४६)।

दूआ देखो धूआ ; (षड्)।

दूइ° देखो दूई। °पलासय न [°पलाशक] एक चैत्य ; (उवा)।

दूइज्ज सक [द्रु] गमन करना, विहरना, जाना। दूइज्जइ ; (आचा)। वकृ—दूइज्जंत, दूइज्जमाण ; (औप; णाया १, १; भग ; आचा; महा)। हेकृ— दूइज्जित्तए; (कप्प)।

दूइत्त न [दूतीत्व] दूती का कार्य, दूतीपन ; (पउम ५३, ४५)।

दूई स्त्री [दूती] १ दूत के काम में नियुक्त की हुई स्त्री, समाचार-हारिणी, कुटनी ; (हे४, ३६७)। २ जैन साधुओं के लिये भिक्षा का एक दोष ; (ठा ३, ४—पत्र १६६)। °पिंड पुं [°पिण्ड] समाचार पहुँचाने से मिली हुई भिक्षा; (आचा २, १, ६)। देखो दूइ°।

दूण वि [दून] हैरान किया हुआ; "हा पियवयंस दूढो (? णो) मए तुमं" (स ७६३)।

दूण पुं [**दे**] हस्ती, हाथी ; (दे ५, ४४ ; षड्) ।
दूण (अप) देखो **दुउण** ; (पिंग) ।
दूणावेढ वि [**दे**] १ अशक्य ; २ तड़ाग, तलाव ; (दे ५, ५६) ।
दूभ अक [**दुःखय्**] दूभना, दुःखित होना । "तम्हा पुत्तोवि दूभिज्जा पहसिज्ज व दुज्जणो" (श्रा १२) ।
दूभग देखो **दुब्भग** ; (णाया १, १६—पत्र १६६) ।
दूभग्ग न [**दौर्भाग्य**] दुष्ट भाग्य, खराब नसीब ; (उत्त ३१) ।
दूम सक [**दू**, **दावय्**] परिताप करना, संताप करना । दूमइ, दूमेइ ; (सुपा ८ ; प्राप्र; हे ४, २३) । कर्म—दूमिज्जइ ; (भवि) । वकृ—**दूमेंत**; (से१०, ६३) । कवकृ—**दूमिज्जंत** ; (सुपा २६६) ।
दूम देखो **दुम**=धवलय् ; (हे ४, २४) ।
दूमक } वि [**दावक**] उपताप-जनक, पीड़ा-जनक ; (पराह **दूमग** } १, ३ ; राज) ।
दूमण न [**दवन, दावन**] परिताप, पीड़न; (पगह१, १) ।
दूमण न [**धवलन**] सफेद करना ; (वव ४) ।
दूमण देखो **दुम्मण**=दुर्मनस् ; (सूअ १, २, २) ।
दूमणाइअ वि [**दुर्मनायित**] जो उदास हुआ हो, उद्विग्न-मनस्क ; (नाट—मालती ६६) ।
दूमिअ वि [**दून, दावित**] संतापित, पीड़ित; (सुपा १० ; १३३ ; २३०) ।
दूमिअ वि [**धवलित**] सफेद किया हुआ ; (हे ४, २४ ; कप्प) ।
दूयाकार न [**दे**] कला विशेष ; (स ६०३) ।
दूर न [**दूर**] १ अ-निकट, अ-समीप; "एसेव जस्स कित्ती गया दूरं" (कुमा) । २ अतिशय, अत्यन्त ; "दूरमहरं डसंते" (कुमा) । ३ वि. दूर-स्थित, असमीप-वर्ती; (सूअ१, २, २) । ४ व्यवहित, अन्तरित; (गउड) । °**ग** वि [°**ग**] दूर-वर्ती, अ-समीपस्थ; (उप ६४८ टी; कुमा) । °**गइ**, °**गइअ** वि [°**गतिक**] १ दूर जाने वाला ; २ सौधर्म आदि देवलोक में उत्पन्न होने वाला ; (ठा ८) । °**तराग** वि [°**तर**] अत्यन्त दूर ; (पराग १७) । °**त्थ** वि [°**स्थ**] दूर-स्थित, दूरवर्ती ; (कुमा) । °**भविय** पुं [°**भव्य**] दीर्घ काल में मुक्ति को प्राप्त करने की योग्यता वाला जीव ; (उप ७२८ टी) । °**य** देखो °**ग**; (सूअ १, ५, २) । °**वत्ति** वि [°**वर्तिन्**] दूर में रहने वाला; (पि ६४) । °**लइय** वि [°**लयिक**] मुक्ति-गामी; (आचा) °**लय** पुं [°**लय**] १ दूर-स्थित आश्रय; २ मोक्ष; ३ मुक्ति का मार्ग; (आचा) ।
दूरंगइअ देखो **दूर-गइअ** ; (औप) ।
दूरंतरिअ वि [**दूरान्तरित**] अत्यन्त-व्यवहित; (गा६५८) ।
दूराय सक [**दूराय्**] दूर-स्थित की तरह मालूम होना, दूरवर्ती मालूम पड़ना । वकृ—**दूरायमाण** ; (गउड) ।
दूरीकय वि [**दूरीकृत**] दूर किया हुआ; (श्रा २८) ।
दूरीहूअ वि [**दूरीभूत**] जो दूर हुआ हो; (पा १५८) ।
दूरुल्ल वि [**दूरवत्**] दूर-स्थित, दूर-वर्ती; (आव ४) ।
दूलह देखो **दुल्लह** ; (संचि १७) ।
दूस अक [**दुष्**] दूषित होना, विकृत होना । दूसइ; (हे ४, २३६; संचि ३६) ।
दूस सक [**दूषय्**] दोषित करना, दूषण लगाना । दूसइ; (भवि), दूसेइ ; (बृह ४) ।
दूस न [**दूष्य**] १ वस्त्र, कपड़ा; (सम १५१ ; कप्प) । २ तंबू, पट-कुटी; (दे५, २८) । °**गणि** पुं [°**गणिन्**] एक जैन आचार्य ; (णंदि) । °**मित्त** पुं [°**मित्र**] मौर्यवंश के नाश होने पर पाटलिपुत्र में अभिषिक्त एक राजा; (राज) । °**हर** न [°**गृह**] तंबू, पट-कुटी; (स २६७) ।
दूसअ वि [**दूषक**] दोष प्रकट करने वाला; (वज्जा ६८) ।
दूसग वि [**दूषक**] दूषित करने वाला; (सुपा२७५; सं१२४) ।
दूसण न [**दूषण**] १ दोष, अपराध; २ कलङ्क, दाग; (तंदु) । ३ पुं. रावण की मौसी का लड़का ; (पउम१६, २५) । ४ वि. दूषित करने वाला ; (स ५२८) ।
दूसम वि [**दुःषम**] १ खराब, दुष्ट; २ पुं. काल-विशेष, पाँचवाँ आरा ; "दूसमे काले" (सट्ठि १५६) । °**दूसमा** देखो **दुस्समदुस्समा** ; (सम ३६ ; ठा १ ; ६) । °**सुसमा** देखो **दुस्समसुसमा** ; (ठा २, ३ ; सम ६४) ।
दूसमा देखो **दुस्समा** ; (सम३६ ; उप८३३टी ; सं३४) ।
दूसर देखो **दुस्सर** ; (राज) ।
दूसल वि [**दे**] दुर्भग, अभागा; (दे ५, ४३; षड्) ।
दूसह देखो **दुस्सह** ; (हे १, १३ ; ११५) ।
दूसहणीअ वि [**दुस्सहनीय**] दुःसह, असह्य ; (पि५७१) ।
दूसासण देखो **दुस्सासण** ; (हे १, ४३) ।
दूसि पुं [**दूषिन्**] नपुंसक का एक भेद; "दोसुवि वेएसु सज्जए दूसी" (बृह ४) ।

दूसिअ वि [**दूषित**] १ दूषण-युक्त, कलङ्क-युक्त; (महा; भवि)। २ पुं. एक प्रकार का नपुंसक ; (बृह ४)।

दूसिआ स्त्री [**दूषिका**] आँख का मैल ; (कुमा)।

दूसुमिण देखो **दुस्सुमिण** ; (कुमा)।

दूहअ वि [**दुःखक**] दुःख-जनक ; "असईणं दूहओ चंदो" (वज्जा ६८)।

दूहट्ठ वि [**दे**] लज्जा से उद्विग्न ; (दे ५, ४८)।

दूहल वि [**दे**] दुर्भग, मन्द-भाग्य ; (दे ५, ४३)।

दूहव देखो **दुब्भग** ; (हे १, ११५ ; १६२ ; कुमा ; सुपा ५६७ ; भवि)।

दूहविअ वि [**दुःखित**] दुःखी किया हुआ, दूभाया हुआ ; "किं केणवि दूहविया" (कुम्मा १२)।

दूहिअ वि [**दुःखित**] दुःख-युक्त ; (हे १, १३ ; संक्षि १७)।

दे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय ; १ संमुख-करण ; २ सखी को आमन्त्रण ; (हे २, १९६)।

देअ देखो **देव** ; (मुद्रा १६१; चंड)।

देअर देखो **दिअर** ; (कुमा ; काप्र २२४ ; महा)।

देअराणी स्त्री [**देवरपत्नी**] देवरानी , पति के छोटे भाई की बहू ; (दे १, ५१)।

देई देखो **देवी** ; (नाट—उत्त १८)।

देउल न [**देवकुल**] देव-मन्दिर ; (हे १, २७१ ; कुमा)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] मन्दिर का स्वामी ; (षड्)। °**वाडय** पुंन [°**पाटक**) मेवाड़ का एक गाँव ; "देउलवाडयपत्तं तुट्टणसीलं च अइमहग्घं" (वज्जा ११६)।

देउलिअ वि [**दैवकुलिक**] देव स्थान का परिपालक ; (ओघ ४० भा)।

देउलिआ स्त्री [**देवकुलिका**] छोटा देव-स्थान ; (उप पृ ३६६ ; ३२० टी)।

देंत देखो **दा**=दा।

देक्ख सक [**दृश्**] देखना, अवलोकन करना। देक्खइ ; (हे ४, १८१)। वकृ—**देक्खंत** ; (अभि १४१)। संकृ—**देक्खिअ** ; (अभि १६६)।

देक्खालिअ वि [**दर्शित**] दिखाया हुआ, बतलाया हुआ ; (सुर १, १५२)।

देख (अप) देखो **देक्ख**। देखइ ; (भवि)।

देट्ठ देखो **दिट्ठ**=दृष्ट ; (प्रति ४०)।

देण्ण देखो **दइण्ण** ; (णाया १, १—पत्र ३३)।

देपाल पुं [**देवपाल**] एक मंत्री का नाम ; (ती २)।

देप्प देखो **दिप्प**=दीप्। वकृ—**देप्पमाण**; (कुप्र ३४४)।

देय } देखो **दा**=दा।
देयमाण }

देर देखो **दार**=द्वार ; (हे १, ७९ ; २, १७२ ; दे ६, ११०)।

देव उभ [**दिव्**] १ जीतने की इच्छा करना। २ प्रण करना। ३ व्यवहार करना। ४ चाहना। ५ आज्ञा करना। ६ अव्यक्त शब्द करना। ७ हिंसा करना। देवइ ; (संक्षि ३३)।

देव पुंन [**देव**] १ अमर, सुर, देवता; "देवाणि, देवा" (हे १, ३४ ; जी १९ ; प्रासू ८६)। २ मेघ ; ३ आकाश; ४ राजा, नरपति ; "तहेव मेहं व नहं व माणवं न देव देवत्ति गिरं वएजा" (दस ७, ५२ ; भास ६६)। ५ पुं. परमेश्वर, देवाधिदेव ; (भग १२, ६ ; दंस ५ ; सुपा १३)। ६ साधु, मुनि, ऋषि ; (भग १२, ९)। ७ द्वीप-विशेष ; ८ समुद्र-विशेष ; (पण्ण १५)। ९ स्वामी, नायक ; (आचू ५)। १० पूज्य, पूजनीय ; (पंचा १)। °**उत्त** वि [°**उप्त**] देव से बोया हुआ ; २ देव-कृत ; "देवउत्ते अयं लोए" (सूअ १, १, ३)। °**उत्त** वि [°**गुप्त**] १ देव से रक्षित; (सूअ १, १, ३)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव ; (स १५४)। °**उत्त** पुं [°**पुत्र**] देव-पुत्र ; (सूअ १, १, ३)। °**उल** न [°**कुल**] देव-गृह, देव-मन्दिर ; (हे १, २७१; सुपा २०१)। °**उलिया** स्त्री [°**कुलिका**] देहरी, छोटा देव-मन्दिर ; (कुप्र १४४)। °**कन्ना** स्त्री [°**कन्या**] देव-पुत्री; (णाया १,८)। °**कहकहय** पुं [°**कहकहक**] देवताओं का कोलाहल; (जीव ३)। °**किब्बिस** पुं [°**किल्बिष**] चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति ; (ठा ४, ४)। °**किब्बिसिय** पुं [°**किल्बिषिक**] एक अधम देव-जाति ; (भग ९, ३३)। °**किब्बिसीया** स्त्री [°**किल्बिषीया**] देखो **देवकिब्बिसिया** ; (बृह १)। °**कुरा** स्त्री [°**कुरा**] क्षेत्र-विशेष, वर्ष-विशेष ; (इक)। °**कुरु** पुं [°**कुरु**] वही अर्थ ; (पण्ह १, ४ ; सम ७० ; इक)। °**कुल** देखो °**उल** ; (पि १६८ ; कप्प)। °**कुलिय** पुं [°**कुलिक**] पूजारी ; (आवम)। °**कुलिया** देखो °**उलिआ** ; (कुप्र १४४)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] देव-योनि ; (ठा ५, ३)। °**गणिया** स्त्री [°**गणिका**] देव-वेश्या, अप्सरा ; (णाया १, १६)। °**गिह** न [°**गृह**]

देव-मन्दिर ; (सुपा १३ ; ३४८) । °गुत्त पुं [°गुप्त] १ एक परिव्राजक का नाम ; (ओैप) । २ एक भावी जिनदेव ; (तित्थ) । °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम ; (सुपा ६३२) । २ सुप्रसिद्ध श्री हेम-चन्द्राचार्य के गुरु का नाम ; (कुप्र १६) । °च्चय वि [°र्चक] १ देव की पूजा करने वाला; २ पुं. मन्दिर का पुजारी ; (कुप्र ४४१ ; ती १५) । °च्छंदग न [°च्छन्दक] जिनदेव का आसन ; (जीव ३ ; राय) । °जस पुं [°यशस्] एक जैन मुनि ; (अंत ३ ; सुपा ३४२) । °जाण न [°यान] देव का वाहन ; (पंचा २) । °जिण पुं [°जिन] एक भावी जिनदेव का नाम ; (पव ७) । °ड्ढि देखो देविड्ढि ; (ठा ३, ३ ; राज) । °णाअअ पुं [°नायक] वही अर्थ ; (अच्चु ३७) । °णाह पुं [°नाथ] १ इन्द्र । २ परमेश्वर, परमात्मा ; (अच्चु ६७) । °तम न [°तमस्] एक प्रकार का अन्धकार ; (ठा ४, २) । °त्थुइ, °थुइ स्त्री [°स्तुति] देव का गुणानुवाद; (प्राप्र) । °दत्त पुं [°दत्त] व्यक्ति-वाचक नाम ; (उत्त ९ ; पिंड ; पि ५६६) । °दत्ता स्त्री [°दत्ता] व्यक्ति-वाचक नाम ; (विपा १,१; ठा १०) । °दव्व न [°द्रव्य] देव-संबन्धी द्रव्य ; (कम्म १, ५६) । °दार न [°द्वार] देव-गृह विशेष का पूर्वीय द्वार, सिद्धा-यतन का एक द्वार ; (ठा ४, २) । °दारु पुं [°दारु] वृक्ष-विशेष, देवदार का पेड़ ; (पउम ५३, ७९) । °दाली स्त्री [°दाली] वनस्पति-विशेष, रोहिणी ; (पण्ण १७—पत्र ५३०) । °दिण्ण, °दिन्न पुं [°दत्त] व्यक्ति-वाचक नाम, एक सार्थवाह-पुत्र; (राज; णाया १,२ — पत्र ८३) । °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष ; (जीव ३) । °दूस न [°दूष्य] देवता का वस्त्र, दिव्य वस्त्र ; (जीव ३) । °देव पुं [°देव] १ परमेश्वर, परमात्मा ; (सुपा ५००) । २ इन्द्र, देवों का स्वामी ; (आचू ५) । °नट्टिआ स्त्री [°नर्तिका] नाचने वाली देवी, देव-नटी ; (अजि ३१) । °नयरी स्त्री [°नगरी] अमरावती, स्वर्ग-पुरी; (पउम ३२,३५)। °पडिक्खोभ पुं [°प्रतिक्षोभ] तमस्काय, अन्धकार; (भग ६, ५) । °पलिक्खोभ देखो °पडिक्खोभ; (भग ६,५) । °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष; (ठा २,३—पत्र ८०) । °प्पसाय पुं [°प्रसाद] राजा कुमारपाल के पितामह का नाम; (कुप्र ५) । °फलिह पुं [°परिघ] तमस्काय, अन्धकार ; (भग ६, ५) । °भद्द पुं [°भद्र] १ देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (सार्ध ८३) । °भूमि स्त्री [°भूमि] १ स्वर्ग, देवलोक ; २ मरण; मृत्यु ; " अह अन्नया य सिट्ठी पिउदेवो देवभूमिमणुपत्तो " (सुपा ५८२)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव; (जीव ३) । °महावर पुं [°महावर] देव-नामक समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष ; (जीव ३ ; इक) । °रइ पुं [°रति] एक राजा ; (भत्त १२२) । °रक्ख पुं [°रक्ष] राक्षस-वंशीय एक राज-कुमार; (पउम ५, १६६) । °रण्ण न [°रण्य]तमःकाय, अन्धकार; (ठा ४,२)। °रमण न [°रमण] १ सौभाञ्जनी नगरी का एक उद्यान; (विपा १, ४) । २ रावण का एक उद्यान; (पउम ४६,१५) । °राय पुं [°राज] इन्द्र ; (पउम २, ३८; ४९, ३६) । °रिसि पुं [°ऋषि] नारद मुनि ; (पउम ११, ६८ ; ७८, १०) । °लोअ, °लोग पुं [°लोक] १ स्वर्ग; (भग ; णाया १, ४ ; सुपा ६१५ ; श्रा १६) । २ देव-जाति ; "कइविहा णं भंते देवलोगा पण्णत्ता ? गोयमा चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया" (भग ५, ९) । °लोगगमण न [°लोकगमन] स्वर्ग में उत्पत्ति; "पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाया पुणो बोहिलाभा " (सम १४२) । °वर पुं [°वर] देव-नामक समुद्र का अधिष्ठायक एक देव ; (जीव ३) । °वहू स्त्री [°वधू] देवाङ्गना, देवी ; (अजि ३०) । °संणत्ति स्त्री [°संज्ञप्ति] १ देव-कृत प्रतिबोध; २ देवता के प्रतिबो-ध से ली हुई दीक्षा; (ठा १०—पत्र ४७३) । °संणिवाय पुं [°सन्निपात] १ देव-समागम ; (ठा ३, १) । २ देव-समूह ; ३ देवों की भीड़ ; (राय) । °सम्म पुं [°श-र्मन्] १ इस नाम का एक ब्राह्मण ; (महा) । २ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव; (सम १५३) । °साल न [°शाल] एक नगर का नाम; (उप ७६८ टी) । °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] देवाङ्गना, देवी ; (अजि २८) । °सुय देखो °स्सुय ; (पव ७) । °सेण पुं [°सेन] १ शत-द्वार नगर का एक राजा जिसका दूसरा नाम महापद्म था ; (ठा ९—पत्र ४५९) । २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव ; (पव ७) । ३ भरत-क्षेत्र के एक भावी जिनदेव के पूर्वभव का नाम ; (ती १९) । ४ भगवान् नेमिनाथ का एक शिष्य एक अन्तकृद् मुनि;(अंत)। °स्स न [°स्व]देव-द्रव्य,जिनमन्दिर-संबन्धी धन ; (पंचा ५) । °स्सुय पुं [°श्रुत] भरतक्षेत्र

के छठवें भावी जिन-देव ; (सम १५३)। °हर न [°गृह] देव-मन्दिर ; (उप ४११)। °इदेव पुं [°तिदेव] अर्हन् देव, जिन भगवान् ; (भग १२, ६)। °णंद पुं [°नन्द] ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न होने वाले चौबीसवें जिनदेव ; (सम १५४)। °णंदा स्त्री [°नन्दा] १ भगवान् महावीर की प्रथम माता ; (आचा २, १५, १)। २ पक्ष की पनरहवीं रात्रि का नाम ; (कप्प)। °णुप्पिय पुं [°नुप्रिय] भद्र, महाशय, महानुभाव, सरल-प्रकृति; (औप; विपा १,१; महा)। °यरिअ पुं [°चार्य] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य; (गु ७)। °रण्ण देखो °रण्ग ; (भग ६, ५)। २ देवों का क्रीड़ा-स्थान ; (जं ६)। °लय पुंन [°लय] स्वर्ग; (उप २६४ टी)। °हिदेव पुं [°धिदेव] परमेश्वर, परमात्मा, जिनदेव ; (सम ४३; सं ५)। °हिवइ पुं [°धिपति] इन्द्र, देव-नायक ;(सुग्र १, ६)।

देव देखो **दइव** ; (उप ३५६ टी ; महा; हे १, १५३ टि)। °न्नु वि [°ज्ञ] ज्योतिष-शास्त्र का जानकार; (सुपा २०१)। °पर वि [°पर] भाग्य पर ही श्रद्धा रखने वाला ; (षड्)।

देवई स्त्री [**देवकी**] श्रीकृष्ण की माता, आगामी उत्सर्पिणी काल में होने वाले एक तीर्थकर-देव का पूर्व भव ; (पउम २०, १८५ ; सम १५२ ; १५४)। देखो **देवकी**।

देवउप्फ न [दे] पक्व पुष्प, पका हुआ फूल ; (दे ५, ४६)।

देवं देखो **दा**=दा।

देवंग न [दे, **दिव्याङ्ग**] देवदूष्य वस्त्र ; (उप ७३८)।

देवंधगार पुं [**देवान्धकार**] तिमिर-निचय ; (ठा ४,२)।

देवकिब्बिस पुं [**देवकिल्बिष**] एक अधम देव-जाति; (ठा ४, ४—पत्र २७४)।

देवकिब्बिसिया स्त्री [**देवकिल्बिषिकी**] भावना-विशेष, जो अधम देव-योनि में उत्पत्ति का कारण है ; (ठा ४, ४)।

देवकी देखो **देवई**। °णंदण पुं [°नन्दन] श्रीकृष्ण; (विचा १८३)।

देवत्त न [**दैवत**] देव, देवता ; (सुपा १५७)।

देवय देखो **देव**=देव ; (महा; णाया १, १८)।

देवया स्त्री [**देवता**] १ देव, अमर; (अभि ११७ ; अणु)। २ परमेश्वर, परमात्मा ; (पंचा १)।

देवर देखो **दिअर**; (हे १, १८६ ; सुपा ४८५)।

देवराणी देखो **देअराणी**; (दे १, ५१)।

देवसिअ वि [**दैवसिक**] दिवस-संबन्धी; (ओघ ६२६ ; ६३६ ; सुपा ४१६)।

देवसिआ स्त्री [**देवसिका**] एक पतिव्रता स्त्री, जिसका दूसरा नाम देवसेना था ; (पुप्फ ६७)।

देविंद पुं [**देवेन्द्र**] १ देवों का स्वामी, इन्द्र ; (हे ३, १६२ ; णाया १, ८ ; प्रासू १०७)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार; (भाव २१)। °सूरि पुं [°सूरि] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार ; (कम्म ३, २४)।

देविड्ढि स्त्री [**देवर्द्धि**] १ देव का वैभव; २ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (कप्प)।

देविय वि [**दैविक**] देव-संबन्धी ; (सुर ४, २३६)।

देवी स्त्री [**देवी**] १ देव-स्त्री ; (पंचा २)। २ रानी, राज-पत्नी ; (विपा १, १ ; ५)। ३ दुर्गा, पार्वती ; (कप्पू)। ४ सातवें चक्रवर्ती और अठारहवें जिन-देव की माता ; (सम १५१ ; १५२)। ५ दशवें चक्रवर्ती की अग्र-महिषी ; (सम १५२)। ६ एक विद्याधर-कन्या ; (पउम ६, ४)।

देवीकय वि [**देवीकृत**] देव बनाया हुआ; "अणिमिसणअ-णो सअलो जीए देवीकओ लोओ" (गा ५६२)।

देवुक्कलिआ स्त्री [**देवोत्कलिका**] देवों की ठठ, देवों की भीड़ ; (ठा ४, ३)।

देवेसर पुं [**देवेश्वर**] इन्द्र, देवों का राजा ; (कुमा)।

देवोद पुं [**देवोद**] समुद्र-विशेष ; (जीव ३ ; इक)।

देवोववाय पुं [**देवोपपात**] भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल में होने वाले तेईसवें जिन-देव ; (सम १५४)।

देव्व देखो **दिव्व**=दिव्य ; (उप ६८६ टी)।

देव्व देखो **दइव** ; (गा १३२ ; महा ; सुर ११, ४ ; अभि ११७), "एसो य देव्वो णाम अणाराहणीओ विणएण" (स १२८)। °ज्ज, °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] जोतिषी, ज्योतिष-शास्त्र को जानने वाला ; (षड् ; कप्पू)।

देस सक [**देशय्**] १ कहना, उपदेश देना। २ बतलाना। वकृ—**देसयंत** ; (सुपा ४८५ ; सुर १५, २४८)। संकृ—**देसित्ता** ; (हे १, ८८)।

देस पुं [**देश**] १ अंश, भाग ; (ठा २, २ ; कप्प)। २ देश, जनपद ; (ठा ५, ३ ; कप्प ; प्रासू ४२)। ३ अवसर ; (विसे २०६३)। ४ स्थान, जगह ; (ठा ३, ३)। °कहा स्त्री [°कथा] जनपद-वार्ता ; (ठा ४, २)। °काल देखो °याल ; (विसे २०६३)। °जइ पुं

[°यति] श्रावक, उपासक, जैन गृहस्थ ; (कम्म २ टी; श्राउ)। °ण्णु वि [°ज्ञ] देश की स्थिति को जानने वाला ; (उप १७६ टी)। °भासा स्त्री [°भाषा] देश की बोली ; (बृह ६)। °भूसण पुं [°भूषण] एक केवल-ज्ञानी महर्षि; (पउम ३६, १२२)। °याल पुं [°काल] प्रसंग, अवसर, योग्य समय; (पउम ११, ६३)। °राय वि [°राज] देश का राजा; (सुपा ३५२)। °वगासिय देखो °ावगासिय ; (सुपा ५६६)। °विरइ स्त्री [°विरति] श्रावक धर्म, जैन गृहस्थ का व्रत, अणुव्रत, हिंसा आदि का आंशिक त्याग ; (पंचा १०)। °विरय वि [°विरत] श्रावक, उपासक; २ न. पाँचवाँ गुण-स्थानक : (पव २२)। °विराहय वि [°विराधक] व्रत आदि में आंशिक दूषण लगाने वाला; (भग ८, ६)। °विराहि वि [°विराधिन्] वही अर्थ ; (णाया १, ११—पत्र १७१)। °ावगास न [°ावकाश] श्रावक का एक व्रत ; (सुपा ५६२)। °ावगासिय न [°ावकाशिक] वही अर्थ ; (औप ; सुपा ५६६)। °ाहिव पुं [°ाधिप] राजा ; (पउम ६६, ५३)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] राजा ; (बृह ४)।

देसंतरिअ वि [देशान्तरिक] भिन्न देश का, विदेशी ; (उप १०३१ टी; कुप्र ४१३)।

देसग देखो देसय ; (द्र २६)।

देसण न [देशन] कथन, उपदेश, प्ररूपण ; (दं १)। २ वि. उपदेशक, प्ररूपक। स्त्री—°णी ; (दस ७)।

देसणा स्त्री [देशना] उपदेश, प्ररूपण; (राज)।

देसय वि [देशक] १ उपदेशक, प्ररूपक ; (सम १)। २ दिखलाने वाला, बतलाने वाला ; (सुपा १८६)।

देसि वि [द्वेषिन्] द्वेष करने वाला ; (रयण ३६)।

देसि } वि [देशिन्] १ अंशी, आंशिक, भाग वाला ;
देसिअ } (विसे २२४७)। २ दिखलाने वाला; ३ उपदेशक; (विसे १०२५ ; भास २८)।

देसिअ वि [देश्य, दैशिक] देश में उत्पन्न, देश-संबन्धी; (उप ७६८ टी ; अच्चु ६)। °सद्द पुं [°शब्द] देशी-भाषा का शब्द ; (वज्जा ६)।

देसिअ वि [देशित] १ कथित, उपदिष्ट ; २ उपदर्शित ; (दं २२ ; प्रासू ५२ ; १३३ ; भवि)।

देसिअ वि [देशिक] १ पथिक, मुसाफिर; (पउम २४, १६; उप पृ ११५)। २ उपदेष्टा, गुरु; (वसे १४२५)। ३ प्रोषित, प्रवास में गया हुआ; (सुर १०, १६२)। °सहा स्त्री [°सभा] धर्मशाला; (उप पृ ११५)।

देसिअ देखो देसिअ। "पडिक्कमे देसिअं सव्वं" (पडि ; श्रा ६)।

देसिलग देखो देसिअ = देश्य ; (बृह ३)।

देसी स्त्री [देशी] भाषा विशेष, अत्यन्त प्राचीन प्राकृत भाषा का एक भेद ; (दे १, ४)। °भासा स्त्री [°भाषा] वही अर्थ; (णाया १, १; औप)।

देसूण वि [देशोन] कुछ कम, अंश की कमी वाला ; (सम १, १०३; दं २८)।

देस्स वि [द्रश्य] १ देखने योग्य ; २ देखने को शक्य; (स १६६)।

देह देखो देक्ख। देहइ, देहए ; (उत्त १६, ६; पि ६६)। वकृ—देहमाण ; (भग ६, ३३)।

देह पुंन [देह] १ शरीर, काय ; (जी २८; कुप्र १५३; प्रासू ६५)। २ पिशाच-विशेष; (इक; पण्ण १)। °रय न [°रत] मैथुन ; (वज्जा १०८)।

देहंबलिया स्त्री [देहबलिका] भिक्षा-वृत्ति, भीख की आजीविका ; (णाया १, १६—पत्र १६६)।

देहणी स्त्री [दे] पंक, कर्दम, कादा ; (दे ५, ४८)।

देहरय (अप) न [देवगृहक] देव-मन्दिर; (वज्जा १०८)।

देहली स्त्री [देहली] चौखट, द्वार के नीचे की लकड़ी ; (गा ५२५ ; दे १, ६५; कुप्र १८३)।

देहि पुं [देहिन्] आत्मा, जीव ; (स १६५)।

देहुर (अप) न [देवकुल] देव-स्थान, मन्दिर ; (भवि)।

दो अ [द्विधा] दो प्रकार से, दो तरह ; (सुपा २३३ ; ३१२)।

दो त्रि.ब. [द्वि] दो, उभय, युग्म ; (हे १, ६४)।

दो पुं [दोस्] हाथ, बाहु ; (विक ११३ ; रंभा; कप्पू)।

दोअई स्त्री [द्विपदी] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

दोआल पुं [दे] वृषभ, बैल ; (दे ५, ४६)।

दोइ देखो दो=द्विधा ; (बृह ३)।

दोंबुर [दे] देखो दोबुर ; (षड्)।

दोकिरिय वि [द्विक्रिय] एक ही समय में दो क्रियाओं के अनुभव को मानने वाला ; (ठा ७)।

दोक्कर देखो दुक्कर ; (भवि)।

दोक्खर पुं [द्वि-अक्षर] षण्ड, नपुंसक ; (बृह ४)।

दोखंड देखो **दुखंड** ; (भवि)।
दोखंडिअ वि [**द्विखण्डित**] जिसके दो टुकड़े किये गये हों वह ; (भवि)।
दोगंछि वि [**जुगुप्सिन्**] घृणा करने वाला ; (पि ७४)।
दोगच्च न [**दौर्गत्य**] १ दुर्गति, दुर्दशा ; (पंचव ४)। २ दारिद्र्य, निर्धनता ; (सुपा २३०)।
दोगुंछि देखो **दोगंछि** ; (पि २१५)।
दोगुंदुय पुं [**दौगुन्दुक**] उत्तम-जातीय देव-विशेष ; (सुपा ३३)।
दोग्ग न [**दे**] युग्म, युगल ; (दे ५, ४६ ; षड्)।
दोग्गइ देखो **दुग्गइ** ; (सुर ८, १११)। °**कर** वि [°**कर**] दुर्गति-जनक ; (पउम ७३, १०)।
दोग्गच्च देखो **दोगच्च** ; (गा ७६)।
दोग्घट्ट, **दोग्घोट्ट**, **दोघट्ट** पुं [**दे**] हाथी, हस्ती ; (पि ४३६ ; षड् ; पाअ ; महा ; लहुअ ४; स १६१)।
दोचूड पुं [**द्विचूड**] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४५)।
दोच्च वि [**द्वितीय**] दूसरा ; (सम २, ८ ; विपा १,२)।
दोच्च न [**दौत्य**] दूतपन, दूत-कर्म ; (णाया १, ८; गा ८४)।
दोच्चं अ [**द्विस्**] दो वार, दो बख्त; "एवं च निसामिता दोच्चं तच्चं समुल्लवंतस्स" (सुर २, २६)।
दोच्चंग न [**द्वितीयाङ्ग**] १ दूसरा अङ्ग। २ पकाया हुआ शाक; (बृह १)। ३ तीमन, कढ़ी ; (ओघ २६७ भा)।
दोजीह पुं [**द्विजिह्व**] १ दुर्जन; २ साँप; (सुर १,२०)।
दोज्झ वि [**दोह्य**] दोहने योग्य ; (आचा २, ४, २)।
दोण पुं [**द्रोण**] १ धनुर्वेद के एक सुप्रसिद्ध आचार्य, जो पाण्डव और कौरवों के गुरू थे ; (णाया १, १६ ; वेणी १०४)। २ एक प्रकार का परिमाण ; (जो २)। °**मुह** न [°**मुख**] नगर, जल और स्थल के मार्ग वाला शहर ; (पण्ह १, ३ ; कप्प ; औप)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] मेघ-विशेष, जिसकी धारा से बड़ी कलशी भर जाय वह वर्षा ; विसे १४५८)। °**सुया** स्त्री [°**सुता**] लक्ष्मण की स्त्री का नाम, विशल्या; (पउम ६४, ४४)।
दोणअ पुं [**दे**] १ आयुक्त, गाँव का मुखिया ; २ हालिक, लवाह, हल जोतने वाला ; (दे ५, ५१)।
दोणक्का स्त्री [**दे**] सरघा, मधुमक्खी (दे ५, ५१)।
दोणी स्त्री [**द्रोणी**] १ नौका, छोटा जहाज ; (पण्ह १, १ ; दे २, ४७; धम्म १२ टी)। २ पानी का बड़ा कुँडा; (अणु ; कुप्र ४४१)।
दोत्तडी स्त्री (**दुस्तटी**] दुष्ट नदी ; "एगत्तो सद्दूलो अन्नत्तो दोत्तडी वियडा" (उप ५३० टी ; सुपा ४६३)।
दोत्थ न [**दौःस्थ्य**] दुःस्थता, दुर्दशा, दुर्गति ; (वव ४ ; ७)।
दोद्दाण वि [**दुर्दान**] दुःख से देने योग्य; (संक्षि ४)।
दोद्दिअ पुं [**दे**] चर्म-कूप, चमड़े का बना हुआ भाजन-विशेष ; (दे ५, ४६)।
दोधअ, **दोधक** न [**दोधक**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
दोधार पुं [**द्विधाकार**] द्विधाकरण, दो भाग करना ; (ठा ५, ३—पत्र ३४६)।
दोबुर पुं [**दे**] तुम्बुरु, स्वर्ग-गायक; (षड्)।
दोब्बल्ल न [**दौर्बल्य**] दुर्बलता ; (पि २८७ ; काप्र ८५)।
दोभाय वि [**द्विभाग**] दो भाग वाला, दो खण्ड वाला ; (उप १४७ टी)।
दोमणंसिय वि [**दौर्मनस्यिक**] खिन्न, शोक-ग्रस्त ; (ठा ५, २—पत्र ३१३)।
दोमासिअ वि [**द्वैमासिक**] दो मास का ; (भग ; सुर १४, २२८)। स्त्री—°**आ**; (सम २१)।
दोमिय (अप) देखो **दूमिअ**=दावित ; (भवि)।
दोमिली स्त्री [**दोमिली**] लिपि-विशेष ; (राज)।
दोमुह वि [**द्विमुख**] १ दो मुँह वाला; २ पुं. नृप-विशेष ; (महा)। ३ दुर्जन ; (गा २५३)।
दोर पुं. [**दे**] १ डोरा, धागा, सूत; (पउम ४,५०; कुप्र २२६; सुर ३, १४१)। २ छोटी रस्सी; (ओघ२३२; ६४ भा)। ३ कटी-सूत्र ; (दे ५, ३८)।
दोरी स्त्री [**दे**] छोटी रस्सी ; (श्रा १६)।
दोल अक [**दोलय्**] १ हिलना ; २ झूलना। दोलइ ; (हे ४, ४८)। दोलंति; (कप्पू)।
दोलणय न [**दोलनक**] झूलन, अन्दोलन; (दे ८, ४३)।
दोलया, **दोला** स्त्री [**दोला**] झूला, हिंडोला ; (सुपा २८६ ; कुमा)।

दोलाइय वि [**दोलायित**] १ हिला हुआ ; २ संशयित; (नेका ११६)।
दोलायमाण वि [**दोलायमान**] १ हिलता हुआ; २ संशय करता हुआ ; (सुपा ११७ ; गउड)।
दोलिया देखो **दोला** ; (सुर ३, ११६)।
दोलिर वि [**दोलयितृ**] झूलने वाला ; (कुमा)।
दोव पुं [**दोव**] एक अनार्य जाति ; (राज)।
दोवई स्त्री [**द्रौपदी**] राजा द्रुपद की कन्या, पाण्डव-पत्नी ; (णाया १, १६ ; उप ६४८ टी ; पडि)।
दोवयण देखो **दुवयण** = द्विवचन ; (हे १, ६४ ; कुमा)।
दोवार (अप) देखो **दुवार**; (सण)।
दोवारिज्ज } पुं [**दौवारिक**] द्वार-पाल, दरवान, प्रतीहार;
दोवारिय } (निचू ६ ; णाया १, १ ; भग ६, ५ ; सुपा ४२६)।
दोविह देखो **दुविह** ; (उत्त २ ; नव ३)।
दोवेली स्त्री [**दे**] सायं-काल का भोजन ; (दे ५,५०)।
दोव्वल देखो **दोब्बल** ; (से ४, ४२ ; ८, ८७)।
दोस देखो **दूस** = दूष्य ; (औप ; उप ७६८ टी)।
दोस पुं [**दोष**] दूषण, दुर्गुण, ऐब ; (औप ; सुर१, ७३ ; स्वप्न ६० ; प्रासू १३)। °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] दोष का जानकार, विद्वान् ; (पि १०५)। °**ह** वि [°**घ**] दोष-नाशक ; "कुव्वंति पोसहं दोसहं सुद्धं" (सुपा ६२१)।
दोस पुं [**दे**] १ अर्ध, आधा; (दे ५, ५६) । २ कोप, क्रोध; (दे ५, ५६ ; षड्) । ३ द्वेष, द्रोह ; (औप ; कप्प ; ठा १ ; उत्त ६ ; सूअ १, १६ ; पण्ण२३ ; सुर१, ३३ ; सण ; भवि ; कुप्र ३७१)।
दोस पुं [**दोस्**] हाथ, हस्त, बाहु ; (से २, १)।
दोसणिज्जंत पुं [**दे**] चन्द्र, चन्द्रमा; (दे ५, ५१)।
दोसा स्त्री [**दोषा**] रात्रि, रात ; (सुर १, २१)।
दोसाकरण न [**दे**] कोप, क्रोध ; (दे ५, ५१)।
दोसाणिअ वि [**दे**] निर्मल किया हुआ ; (दे ५, ५१)।
दोसायर पुं [**दोषाकर**] १ चन्द्र, चाँद; (उप ७२८ टी ; सुपा २७५)। २ दोषों की खान, दुष्ट ; (सुपा २७५)।
दोसारअण पुं [**दे.दोषारत्न**] चन्द्र, चाँद ; (षड्)।
दोसासय पुं [**दोषाश्रय**] दोष-युक्त, दुष्ट; (पउम११७,४१)।
दोसि त्रि [**दोषिन्**] दोष वाला, दोषी; (कुप्र ४३८)।
दोसिअ पुं [**दौष्यिक**] वस्त्र का व्यापारी ; (श्रा १२ ; वज्जा १६२)।
दोसिण [**दे**] देखो **दोसीण** ; (पण्ह २, ५)।
दोसिणा [**दे**] नीचे देखो ; (ठा २,४—पत्र ८६)। °**भा** स्त्री [°**भा**] चन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ४, १ ; इक ; णाया २)।
दोसिणी स्त्री [**दे. दोषिणी**] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश; (दे५, ५०)। "ससिसुगहा दोसिणी जत्थ" (कुप्र ४३८)।
दोसियण्ण न [**दोषिकान्न**] बासी अन्न ; (राज)।
दोसिल्ल वि [**दोषवत्**] दोष-युक्त ; (धम्म ११ टी)।
दोसिल्ल वि [**दे**] द्वेष-युक्त, द्वेषी ; (विसे१११०)।
दोसीण न [**दे**] रात-बासी अन्न ; (पण्ह २, ५ ; ओघ १४५)।
दोसोलह त्रि. ब. [**द्विषोडशन्**] बत्तीस; (कप्प)।
दोह पुं [**दोह**] दोहन ; (दे २, ६४)।
दोह वि [**दोह्य**] दोहने योग्य ; (भास ८६)।
दोह पुं [**द्रोह**] ईर्ष्या, द्वेष ; (प्राप्र ; भवि)।
दोहग्ग न [**दौर्भाग्य**] दुष्ट भाग्य, दुरदृष्ट, कमनसीबी ; (पण्ह १, ४ ; सुर ३, १७४ ; गा २१२)।
दोहग्गि वि [**दौर्भागिन्**] दुष्ट भाग्य वाला, कमनसीब, मन्द-भाग्य ; (श्रा १६)।
दोहण न [**दोहन**] दोहना, दूध निकालना ; (पण्ह१, १)। °**वाडण** न [°**पाटन**] दोहन-स्थान; (निचू २)।
दोहणहारी स्त्री [**दे**] १ दोहने वाली स्त्री ; (दे१, १०८ ; ५, ५६)। २ पनिहारी, पानी भरने वाली स्त्री ; (दे ५, ५६)।
दोहणी स्त्री [**दे**] पंक, कादा, कर्दम ; (दे ५, ४८)।
दोहय वि [**दोहक**] दोहने वाला ; (गा ४६२)।
दोहय वि [**द्रोहक**] द्रोह करने वाला, ईर्ष्यालु; (उप ३५७ टी ; भवि)।
दोहल पुं [**दोहद**] गर्भिणी स्त्री का मनोरथ ; (हे१, २१७; २२१ ; कप्प)।
दोहा अ [**द्विधा**] दो प्रकार ; (हे १, ९७)।
दोहाइअ वि [**द्विधाकृत**] जिसका दो खण्ड किया गया हो वह ; (हे १, ९७ ; कुमा)।
दोहासल न [**दे**] कटी-तट, कमर ; (दे ५, ५०)।
दोहि वि [**दोहिन्**] झरने वाला, टपकने वाला; (गा ६३९)।
दोहि वि [**द्रोहिन्**] द्रोह करने वाला ; (भवि)।
दोहित्त पुं [**दौहित्र**] लड़की का लड़का ; (दे६, १०९ ; सुपा ३९४)

दोहित्ती स्त्री [दौहित्री] लड़की की लड़की ; (महा)।
दोहूअ पुं [दे] शव, मृतक, मुरदा ; (दे ५, ४६)।
°द्दोस देखो दोस=(दे) ; "वज्जियरागद्दोसो" (कुप्र ३०)।
द्रवक्क (अप) न [दे. भय] भय, डर, भीति; (हे ४, ४२२)।
द्रह पुं [ह्रद] बड़ा जलाशय ; (हे २, ८० ; कुमा)।
द्रेहि (अप) स्त्री [दृष्टि] नजर ; (हे ४, ४२२)।
द्रोह देखो दोह=द्रोह ; (पि २६८)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि दआराइसद्दसंकलणो पंचवीसइमो तरंगो समत्तो।

——०——

ध

ध पुं [ध] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप ; प्रामा)।
धअ देखो धव ; (गा २०)।
धंख पुं [ध्वाङ्क्ष] काक, कौआ ; (उप ८२३ ; पंचा १२)।
धंग पुं [दे] भ्रमर, भमरा; (दे ५, ५७)।
धंत न [ध्वान्त] अन्धकार ; (सुर १, १२ ; करु ११)।
धंत न [दे] अति, अतिशय, अत्यन्त ; "धंतंपि सुअसमिद्धा" (पव २६ ; विसे ३०१६ ; बृह १)।
धंत वि [ध्मात] १ अग्नि में तपाया हुआ ; (णाया १, १ ; औप ; पण्ण १ ; १७ ; विसे ३०२६ ; अजि १४)। २ शब्द-युक्त, शब्दित ; (पिंड)।
धंधा स्त्री [दे] लज्जा, शरम ; (दे ५, ५७)।
धंधुक्कय न [धन्धुक्कय] गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'धंधूका' नाम से प्रसिद्ध है; (सुपा ६५८; कुप्र २०)।
धंधोलिय (अप) वि [भ्रमित] घुमाया हुआ ; (सण)।
धंस अक [ध्वंस्] नष्ट होना। धंसइ, धंसए ; (षड्)।
धंस सक [ध्वंसय्] १ नाश करना। २ दूर करना। धंसइ ; (सुअ १, २, १)। धंसेइ ; (सम ५०)।
धंसाड सक [मुच्] त्याग करना, छोड़ना। धंसाडइ ; (हे ४, ६१)।

धंसाडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त ; (कुमा)।
धंसाडिअ वि [दे] व्यपगत, नष्ट ; (दे ५, ५६)।
धगधग अक [धगधगाय्] १ धग् धग् आवाज करना। २ जलना, अतिशय जलना। वकृ—धगधगंत ; (णाया १, १ ; पउम १२, ५१ ; भवि)।
धगधगाइअ वि [धगधगायित] धग् धग् आवाज वाला; (कप्प)।
धगधग्ग देखो धगधग। वकृ—धगधगगअमाण ; (पि ५५८)।
धग्गोकय वि [दे] जलाया हुआ, अत्यन्त प्रदीपित ; "अग्गी धग्गोकओ व्व पवणेणं" श्रा १४)।
धज देखो धय=ध्वज; (कुमा)।
धट्ठ देखो धिट्ठ ; (हे १, १३० ; पउम ४६, २६ ; कुमा १, ८२)
धट्ठज्जुण } पुं [धृष्टद्युम्न] राजा द्रुपद का एक पुत्र;
धट्ठज्जुण्ण } (हे २, ६४ ; णाया १, १६ ; कुमा ; षड् ; पि २७८)।
धड न [दे] धड़, गले के नीचे का शरीर; (सुपा २४१)।
धडहडिय न [दे] गर्जना, गर्जारव ; (सुपा १७६)।
धण न [धन] १ वित्त, विभव, स्थावर-जंगम सम्पत्ति; (उत्त ६; सुअ २, १ ; प्रासू ५१ ; ७६ ; कुमा)। २ गणिम, धरिम, मेय, या परिच्छेद्य द्रव्य--गिनती से और नाप आदि से क्रय-विक्रय-योग्य पदार्थ; (कप्प)। ३ पुं. कुबेर, धन-पति; "सुअ णो सिद्धो धणोव्व धणकलिओ" (सुपा ३१०)। ४ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी; (उप ५५२)। ५ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र; (णाया १, १८)। °इत्त, °इल्ल वि [°वत्] धनी, धन वाला; (कुप्र २४५; पि ५६५; संक्षि ३०)। °गिरि पुं [°गिरि] एक जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के पिता थे ; (कप्प; उप १४२ टी)। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक जैन मुनि ; (आवम)। °गोव पुं [°गोप] धन्य-सार्थवाह का एक पुत्र ; (णाया १, १८)। °ड्ढ पुं [°ाढ्य] एक जैन मुनि; (कप्प)। °णंदि पुंस्त्री [°नन्दि] दुगुना देव-द्रव्य; " देवदव्वं दुगुणं धणणंदी भण्णइ " (दंस १)। °णिहि पुं[°निधि] खजाना, भण्डार; (ठा ५, ३)। °त्थि वि [°र्थिन्] धन का अभिलाषी; (रयण ३८)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक सार्थवाह; २ तृतीय वासुदेव के पूर्व जन्म का नाम ; (सम १५३ ; णंदि ; आवम)। °देव पुं[°देव]१ एक सार्थवाह, मण्डिक-गणधर का पिता ; (आवम ; आवू

१)। २ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र ; (णाया १, १८)। °पइ देखो °वइ; (विपा २, १)। °पवर पुं [°प्रवर] एक श्रेष्ठी ; (महा)। °पाल पुं [°पाल] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र; (णाया १, १८)। देखो °वाल। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] कुण्डलवर द्वीप की राजधानी; (दीव)। °मंत, °मण वि [°वत्] धनी, धनवान्; (पिंग; हे २, १५६; चंड)। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैन मुनि; (पउम २०,१७१)। °य पुं [°द] १ एक सार्थवाह; (सुपा ५०६)। २ एक विद्याधर राजा, जो राजा रावण की मौसी का लड़का था ; (पउम ८, १२४)। ३ कुबेर; (महा)। ४ वि. धन देने वाला; "धणग्रो धणत्थिआणं" (रयण ३८)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र; (णाया १, १८)। °वइ पुं [°पति] १ कुबेर; (णाया १, ४—पत्र ६६ ; उप पृ १८०; सुपा ३८)। २ एक राज-कुमार; (विपा २, ६)। °वई स्त्री [°वती] एक सार्थवाह-पुत्री; (दंस १)। °वंत, °वत्त देखो °मंत; (हे २, १५६; चंड)। °वह पुं [°वह] १ एक श्रेष्ठी; (दंस १)। २ एक राजा; (विपा २,२)। °वाल देखो °पाल। २ राजा भोज के समकालिक एक जैन महाकवि ; (धण ५०)। °संचया स्त्री [°संचया] एक वणिग्-महिला; (महा)। °सम्म पुं [°शर्मन्] एक वणिक्; (गच्छ २)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक वणिग्-महिला ; (आव ४)। °सेण पुं [°सेन] एक राजा ; (दंस ४)। °ल वि [°वत्] धनी ; (प्राप्र) । °वह वि [°वह] १ धन को धारण करने वाला, धनी। २ पुं. एक श्रेष्ठी; (दंस ४)। ३ एक राजा ; (विपा २, २)।

धणंजय पुं [धनञ्जय] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव, (वेणी ११०)। २ वह्नि, अग्नि; ३ सर्प-विशेष ; ४ वायु-विशेष, शरीर-व्यापी पवन ; ५ वृक्ष-विशेष; (हे १, १७७; २,१८५; षड्)। ६ उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र ; (इक)। ७ पक्ष का नववाँ दिन ; (जो ४)। ८ श्रेष्ठि-विशेष; (आव ४)। ९ एक राजा ; (आवम)।

धणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज ; (विसे १५०)।

धणि स्त्री [घ्राणि] १ तृप्ति, सन्तोष ; (औप)। २ अतृप्ति उत्पन्न करने की शक्ति ; "भमिधणिवितण्हयाई" (विसे १६५३)।

धणि वि [धनिन्] धनिक, धनवान् ; (हे २, १५६)।

धणिअ वि [धनिक] १ पैसादार, धनी ; (दे १, १४८)। २ पुं. मालिक, स्वामी ; (श्रा १४)।

धणिअ न [दे] अत्यन्त, गाढ़, अतिशय ; (दे ५, ५८; औप; भग ; महा; कप्प ; सुर १, १७५ ; मत्त ७३; पच्च ८२ ; जीव ३; उत्त १; वव २ ; स ६६७)।

धणिअ वि [धन्य] धन्यवाद के योग्य, प्रशंसनीय, स्तुति-पात्र ; " जाण धणियस्स पुरओ निवडंति रणम्मि अविवाया " (पउम ५६, २५ ; अच्चु ४२)।

धणिआ स्त्री [दे] १ प्रिया, भार्या, पत्नी ; (दे ५, ५८; गा ५८२ ; भवि)। २ धन्या, स्तुति-पात्र स्त्री; (षड्)।

धणिट्ठा स्त्री [धनिष्ठा] नक्षत्र-विशेष ; (सम १० ; १३; सुर १६ २४६ ; इक)।

धणी स्त्री [दे] १ भार्या, पत्नी ; २ पर्याप्ति; ३ जो बँधा हुआ होने पर भी भय-रहित हो वह ; (दे ५, ६२), " सयमेव मंकणीए धणीए तं कंकणी बद्धा" (कुप्र १८५)।

धणु पुंन [धनुष्] १ धनुष, चाप, कार्मक ; (षड् ; हे १, २२)। २ चार हाथ का परिमाण; (अणु ; जी २६)। ३ पुं. परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २६)। °कुडिल न [कुटिलधनुष्] वक्र धनुष ; (राय)। °ग्गह पुं [°ग्रह] वायु-विशेष ; (वृह ३)। °द्धय पुं [°ध्वज] नृप-विशेष ; ठा ८)। °द्धर वि [°धर] धनुर्विद्या में निपुण, धानुष्क ; (राज ; पउम ६, ८७)। °पिट्ठ न [°पृष्ठ] १ धनुष का पृष्ठ-भाग ; २ धनुष के पीठ के आकार वाला क्षेत्र; (सम ७३)। °पुहत्तिया स्त्री [°पृथक्त्विका] कोस, गव्यूत ; (पराण १) । °वेअ, °व्वेअ पुं [°वेद] धनुर्विद्या-बोधक शास्त्र, इषु-शास्त्र ; (उप ६८६ टी ; सुपा २७० ; जं २)। °हर देखो °धर ; (भवि)।

धणुक्क
धणुह } ऊपर देखो ; (बंदि; अणु; हे १, २२ ; कुमा)।

धणुही स्त्री [धनुष्] कार्मक; 'विसाओ व धणुहीओ गुणबद्धाओवि पयइकुडिलाओ" (कुप्र२७४; स ३८१)।

धणेसर पुं [धनेश्वर] एक प्रसिद्ध जैन मुनि और ग्रन्थकार; (सुर १, २४६ ; १६, २५०)।

धण्ण पुं [धन्य] १ एक जैन मुनि; २ 'अनुत्तरोपपातिकदसा' सूत्र का एक अध्ययन ; (अनु २)। ३ यक्ष-विशेष ; (विपा २, २)। ४ वि. कृतार्थ; ५ धन-लाभ के योग्य ; ६ स्तुति-पात्र, प्रशंसनीय, ७ भाग्यशाली, भाग्यवान्; (णाया १, १; कप्प ; औप)।

धण्ण देखो धन्न=धान्य ; (श्रा १८ ; ठा ५, ३ ; वव १)।

धण्णंतरि पुं [**धन्वन्तरि**] १ राजा कनकरथ का एक स्व-नाम-ख्यात वैद्य ; (विपा १, ८) । २ देव वैद्य; (जय २) ।

धण्णाउस वि [**दे**] १ जिसको आशीर्वाद दिया जाता हो वह ; २ पुं. आशीर्वाद ; (दे ५, ५८) ।

धत्त वि [**दे**] १ निहित, स्थापित ; (आवम) । २ पुं. वनस्पति-विशेष ; (जीव १) ।

धत्त वि [**धात्त**] निहित, स्थापित ; (राज) ।

धत्तरट्ठग पुं [**धार्तराष्ट्रक**] हंस की एक जाति, जिसके मुँह और पाँव काले होते हैं ; (पण्ह १, १) ।

धत्ती स्त्री [**धात्री**] १ धाई, उपमाता ; (स्वप्न १२२) । २ पृथिवी, भूमि ; ३ आमलकी-वृक्ष ; (हे २, ८१) । देखो **धाई** ।

धत्तूर पुं [**धत्तूर**] १ वृक्ष-विशेष, धतूरा ; २ न. धतूरा का पुष्प ; (सुपा १२४) ।

धत्तूरिअ वि [**धात्तूरिक**] जिसने धतूरा का नशा किया हो वह ; (सुपा १२४ ; १७६) ।

धत्थ वि [**ध्वस्त**] ध्वंस-प्राप्त, नष्ट ; (हे २, ७९ ; सण) ।

धन्न देखो **धण्ण**=धन्य ; (कुमा ; प्रासू ५३ ; ८४; १५५ ; उवा) ।

धन्न न [**धान्य**] १ धान, अनाज, अन्न ; (उवा ; सुर १, ४६) । २ धान्य-विशेष; "कुलत्थ तह धन्नय कलाया" (पव १५६) । ३ धनिया ; (दसनि ६) । °**कीड** पुं [°**कीट**] नाज में होने वाला कीट, कीट-विशेष ; (जी १७) । °**णिहि** पुंस्त्री [°**निधि**] धान रखने का घर, कोष्ठागार ; (ठा ५, ३) । °**पत्थय** पुं [°**प्रस्थक**] धान का एक नाप ; (वव १) । °**पिडग** न [°**पिटक**] नाज का एक नाप ; (वव १) । °**पुंजिय** न [**पुञ्जित-धान्य**] इकट्ठा किया हुआ अनाज; (ठा ४, ४) । °**विक्खित्त** न [**विक्षिप्तधान्य**] विकीर्ण अनाज ; (ठा ४, ४) । °**विरल्लिय** न [**विरल्लितधान्य**] वायु से इकट्ठा हुआ अनाज; (ठा ४, ४) । °**संकड्ढिय** न [**संकर्षितधान्य**] खेत से काट कर खले में लाया गया धान्य ; (ठा ४, ४)। °**गार** न [°**गार**] कोष्ठागार, धान रखने का गृह ; (निचू ८) ।

धन्ना स्त्री [**धान्य**] अन्न, अनाज ; "सालिजवाईयाओ धन्नाओ सव्वजाईओ" (उप ६८६ टी) ।

धन्ना स्त्री [**धन्या**] एक स्त्री का नाम ; (उवा) ।

धम सक [**ध्मा**] १ धमना, आग में तपाना । २ शब्द करना । ३ वायु पूरना । धमइ; (महा) । धमेइ ; (कुप्र १४६) । वकृ—**धमंत**; (निचू १) । कवकृ—**धम्ममाण**; (उवा; गाया १, ६) ।

धमग वि [**ध्मायक**] धमने वाला ; (औप) ।

धमण न [**ध्मान**] १ आग में तपाना ; (आचानि १, १, ७) । २ वायु-पूरण ; (पगह १, १) । ३ वि. भस्त्रा, धमनी ; (राज) ।

धमणि } स्त्री [**धमनि, °नी**] १ भस्त्रा, धमनी ; २ नाड़ी,
धमणी } सिरा; (विपा १, १, उवा ; अंत २७) ।

धमधम अक [**धमधमाय्**] धम् धम् आवाज करना । "धमधमइ सिरं धणियं जायइ सूलंपि भज्जए दिट्ठी" (सुपा ६०३) । वकृ—**धमधमंत, धमधमाअंत, धमधमेंत**; (सुपा ११४; नाट—मालती ११६; गाया १,८)।

धमास पुं [**धमास**] वृक्ष-विशेष ; (पगण १७) ।

धमिअ वि [**ध्मात**] जसमें वायु भर दिया गया हो वह ; "धमिओ संखो" (कुप्र १४६) ।

धम्म पुंन [**धर्म**] १ शुभ कर्म, कुशल-जनक अनुष्ठान, सदाचार; (ठा १; सम १;२; आचा; सुअ १,६, प्रासू ५२; ११४; सं ५७) । २ पुण्य, सुकृत; (सुर १,५४; आव ४)। ३ स्वभाव, प्रकृति; (निचू २०) । ४ गुण, पर्याय; (ठा २,१) । ५ एक अरूपी पदार्थ, जो जीव को गति-क्रिया में सहायता पहुँचाता है ; (नव ५) । ६ वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पनरहवें जिन-देव ; (सम ४३; पडि) । ७ एक वणिक् ; (उप ७२८ टी) । ८ स्थिति, मर्यादा; (आचू २) । ९ धनुष, कार्मुक ; (सुर १, ५४ ; पाअ) । १० एक जैन मुनि ; (कप्प) । ११ 'सूत्रकृताङ्ग" सूत्र का एक अध्ययन; (सम ४२) । १२ आचार, रीति, व्यवहार ; (कप्प) । °**उत्त** पुं [°**पुत्र**] शिष्य; (प्रारू) । °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (दंस १) । °**कंखिअ** वि [°**काङ्क्षित**] धर्म की चाह वाला; (भग) । °**कहा** स्त्री [°**कथा**] धर्म-सम्बन्धी बात ; (भग ; सम १२० ; गाया २) । °**कहि** वि [°**कथिन्**] धर्म-कथा कहने वाला, धर्म का उपदेशक ; (ओघ ११५ भा ; श्रा ६) । °**कामय** वि [°**कामक**] धर्म की चाह वाला; (भग) । °**काय** पुं [°**काय**] धर्म का साधन-भूत शरीर ; (पंचा १८) । °**क्खाइ** वि [°**ख्यायिन्**] धर्म-प्रतिपादक; (औप) । °**क्खाइ** वि

[°ख्याति] धर्म से ख्याति वाला, धर्मात्मा; (औप)। °गुरु पुं [°गुरु] धर्म-दर्शक गुरु, धर्माचार्य ; (इ १)। °गुत्त वि [°गुप्त] धर्म-रक्षक ; (पउ)। °घोस पुं [°घोष] कईएक जैन मुनि और आचार्यों का नाम ; (आचू १ ; नं ७ ; आव ४ ; भग ११, ११)। °चक्क न [°चक्र] जिनदेव का धर्म-प्रकाशक चक्र ; (पव ४० ; सुपा ८२)। °चक्कवट्टि पुं [°चक्रवर्तिन्] जिन-देव ; (आचू १)। °चक्कि पुं [°चक्रिन्] जिन भगवान् ; (कुम्मा ३०)। °जणणी स्त्री [°जननी] धर्म की प्राप्ति कराने वाली स्त्री, धर्म-देशिका ; (वंचा १६)। °जस पुं [°यशस्] जैन मुनि-विशेष का नाम; (आव ४)। °जागरिया स्त्री [°जागर्या] १ धर्म-चिन्तन के लिए किया जाता जागरण; (भग १२, १)। २ जन्म से छठवें दिन में किया जाता एक उत्सव ; (कप्प)। °ज्झय पुं [°ध्वज] १ धर्म-द्योतक ध्वज, इन्द्र-ध्वज; (राय)। २ ऐरवत क्षेत्र के पांचवें भावी जिन-देव ; (सम १५४)। °ज्झाण न [°ध्यान] धर्म-चिन्तन, शुभ ध्यान-विशेष ; (सम ८)। °ज्झाणि वि [°ध्यानिन्] धर्म ध्यान से युक्त ; (आव ४)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] धर्म का अभिलाषी ; (सुअ १, २, २)। °णायग वि [°नायक] १ धर्म का नेता; (सम १ ; पडि)। °ण्णु वि [°ज्ञ] धर्म का ज्ञाता ; (दंस ४)। °तित्थयर पुं [°तीर्थकर] जिन भगवान् ; (उत्त २३ ; पडि)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष, एक प्रकार का हथियार; (पउम ७१, ६३)। °त्थि देखो °ट्ठि ; (पंचव ४)। °त्थिकाय पुं [°ास्तिकाय] गति-क्रिया में सहायता पहुँचाने वाला एक अरूपी पदार्थ; (भग)। °दय वि [°दय] धर्म की प्राप्ति कराने वाला, धर्म-देशक ; (भग)। °दार न [°द्वार] धर्म का उपाय ; (ठा ४,४)। °दार पुं.ब. [°दार] धर्म-पत्नी; (कप्पू)। °दास पुं [°दास] भगवान् महावीर का एक शिष्य, और उपदेशमाला का कर्ता ; (उव)। °देव पुं [°देव] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य ; (सार्ध ७८)। °देसग, °देसय वि [°देशक] धर्म का उपदेश करने वाला ; (राज ; भग ; पडि)। °धुरा स्त्री [°धुरा] धर्म रूप धुरा ; (णाया १, ८) °नायग देखो °णायग; (भग)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] १ धर्म की प्रतिज्ञा ; २ धर्म का साधन-भूत शरीर ; (ठा १)। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] धर्म की प्ररूपणा ; (उवा)। °पदिणी (शौ) स्त्री [°पत्नी] धर्म-पत्नी, स्त्री, भार्या (अभि २२२)। °पिवासय वि [°पिपासक] धर्म के लिए प्यासा ; (भग)। °पिवासिय वि [°पिपासित] धर्म की प्यास वाला; (तंदु)। °पुरिस पुं [°पुरुष] धर्म-प्रवर्तक पुरुष ; (ठा ३, १)। °पलज्जण वि [°प्ररञ्जन] धर्म में आसक्त ; (णाया १, १८)। °प्पवाइ वि [°प्रवादिन्] धर्मोपदेशक ; (आचानि १, ४, २)। °प्पह पुं [°प्रभ] एक जैन आचार्य ; (रयण ४८)। °प्पावाउय वि [°प्रावादुक] धर्म-प्रवाद; धर्मोपदेशक ; (आचानि १, १४, १)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] धार्मिक, धर्म-मति ; २ पुं. एक राजा का नाम ; (उप ७२८ टी)। °मित्त पुं [°मित्र] भगवान् पद्मप्रभ का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५१)। °य वि [°द] धर्म-दाता, धर्म-देशक ; (सम १)। °रुइ स्त्री [°रुचि] १धर्म-प्रीति; (धर्म २)। २ वि. धर्म में रुचि वाला ; (ठा १०)। ३ पुं. एक जैन मुनि; (विपा १, १; उप ६४८ टी)। ४ वाराणसी का एक राजा; (आवम)। °लाभ पुं [°लाभ] १ धर्म की प्राप्ति ; २ जैन साधु द्वारा दिया जाता आशीर्वाद ; (सुर ८, १०६)। °लाभिअ वि [°लाभित] जिसको 'धर्मलाभ' रूप आशीर्वाद दिया गया हो वह; (स ८६)। °लाह देखो °लाभ; (स ३८)। °लाहण न [°लाभन] धर्मलाभ-रूप आशीर्वाद देना; "कयं धम्मलाहणं" (स ४६८)। °लाहिअ देखो लाभिअ ; (स १४८)। °वंत वि [°वत्] धर्म वाला; (आचा)। °वय पुं [°व्यय] धर्मार्थ दान, धर्मादा; (सुपा ६१७)। °वि, °विउ वि [°वित्] धर्म का जानकार ; (आचा)। °विज्ज पुं [°वैद्य] धर्माचार्य ; (पंचव १)। °व्वय देखो °वय ; (सुपा ६१७)। °सद्धा स्त्री [°श्रद्धा] धर्म-विश्वास; (उत्त २९)। °सण्णा देखो °सन्ना; (भग ७, ६)। °सत्थ न [°शास्त्र] धर्म-प्रतिपादक शास्त्र ; (दंस ४)। °सन्ना स्त्री [°संज्ञा] १ धर्म-विश्वास ; २ धर्म-बुद्धि ; (पण्ह १, ३)। °सारहि पुं [°सारथि] धर्मरथ का प्रवर्तक, धर्म-देशक; (धण २७; पडि)। °साला स्त्री [°शाला] धर्म-स्थान; (करु ३३)। °सील वि [°शील] धार्मिक, (सुअ २, २)। °सीह पुं [°सिंह] १ भगवान् अभिनन्दन का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५१)। २ एक जैन मुनि ; (संथा ६६)। °सेण पुं [°सेन] एक बलदेव का पूर्वभवीय नाम; (सम १५३)। °इगर वि [°ादिकर] धर्म का प्रथम प्रवर्तक; २ पुं. जिन-देव; (धर्म २)। °णुट्ठाण

न [°नुष्ठान] धर्म का आचरण; (धर्म १)। °णुण्ण वि [°नुज्ञ] धर्म का अनुमोदन करने वाला ; (सूत्र २, २ ; णाया १, १८)। °णुय वि [°नुग] धर्म का अनुसरण करने वाला ; (औप)। °यरिय पुं [°चार्य] धर्म-दाता गुरु; (सम १२०)। °वाय पुं [°वाद] १ धर्म-चर्चा; २ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद; (ठा १०)। °हिगरणिय पुं [°धिकरणिक] न्यायाधीश, न्याय-कर्त्ता; (सुपा ११७)। °हिगारि वि [°धिकारिन्] धर्म-ग्रहण के योग्य; (धर्म १)।

धम्म वि [**धर्म्य**] धर्म-युक्त धर्म-संगत ; " जं पुण तुमं कहेसि तमेव धम्मं " (महानि ४ ; द्र ४१)।

धम्ममण पुं [दे] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी ; पउम ४२, ६)।

धम्ममाण देखो **धम** ।

धम्मय पुं [दे] १ चार अंगुल का हस्त-व्रण; २ चण्डी देवी का नर-बलि ; (दे ५, ६३)।

धम्मि वि [**धर्मिन्**] १ धर्म-युक्त, द्रव्य, पदार्थ । २ धार्मिक, धर्म-परायण ; (सुपा २६; ३३६ ; ५०६ ; वज्जा १०६)।

धम्मिअ } **धम्मिग** } वि [**धार्मिक**] १ धर्म-तत्पर, धर्म-परायण; (गा १६७ ; उप ८६२ ; पण्ह २, ४)। २ धर्म-सम्बन्धी ; (उप २६४; पंचा ६) । ३ धार्मिक-संबन्धी ;(ठा ३, ४)।

धम्मिट्ठ वि [**धर्मिष्ठ**] अतिशय धार्मिक ; (औप ; सुपा १४०)।

धम्मिट्ठ वि [**धर्मेष्ट**] धर्म-प्रिय; (औप)।

धम्मिट्ठ वि [**धर्मीष्ट**] धार्मिक जन को प्रिय ; (औप)।

धम्मिल्ल } **धम्मेल्ल** } पुंन [**धम्मिल्ल**] १ संयत केश, बँधा हुआ केश; (प्राप्र; षड्; संचि ३) । २ पुं. एक जैन मुनि ; (आव ६)।

धम्मोसर पुं [**धर्मेश्वर**] अतीत उत्सर्पिणी-काल में भरत-वर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव ; (पव ७)।

धम्मुत्तर वि [**धर्मोत्तर**] १ गुणी, गुणों से श्रेष्ठ ; (आचू ५)। २ न. धर्म का प्राधान्य; "धम्मुत्तरं वड्ढउ" (पडि)।

धम्मोवएसग } **धम्मोवएसय** } वि [**धर्मोपदेशक**] धर्म का उपदेश देने वाला; (णाया १,१६; सुपा १७२; धर्म२)।

धय सक [**धे**] पान करना, स्तन-पान करना। वकृ—**धयंत**; (सुर १०, ३७)।

धय पुंस्त्री [**ध्वज**] ध्वजा, पताका; (हे २, २७; णाया १, १६ ; पण्ह १, ४; गा ३४) । स्त्री—°**या** ; (पिंग)। °**वड** पुं [°**पट**] ध्वजा का वस्त्र ; (कुमा)।

धय पुं [दे] नर, पुरुष; (दे ५, ५७)।

धयण न [दे] गृह, घर ; (दे ५,५७)।

धयरट्ठ पुं [**धृतराष्ट्र**] हंस पक्षी; (पाअ)।

धर सक [**धृ**] १ धारण करना । २ पकड़ना । धरइ, धरेइ; (हे ४, २३४; ३३६) । कर्म—धरिज्जइ; (पि ५३७) । वकृ—**धरंत, धरमाण**; (सण; भवि; गा ७६१) । कवकृ—**धरंत, धरेंत, धरिज्जंत, धरिज्जमाण**; (से ११, १२७ ; १४, ८१; राज ; पण्ह १, ४ ; औप) । संकृ—**धरिउं**; (कुप्र ७)। कृ—**धरियव्व** ; (सुपा २७३)।

धर सक [**धरय्**] पृथिवी का पालन करना । वकृ—**धरंत**; (सुर २, १३०)।

धर न [दे] तूल, रूई ; (दे ५, ५७)।

धर पुं [**धर**] १ भगवान् पद्मप्रभ का पिता; (सम १५०)। २ मथुरा नगरी का एक राजा ; (णाया १, १६)। ३ पर्वत, पहाड़ ; (से ८, ६३ ; पाअ)।

°**धर** वि [°**धर**] धारण करने वाला ; (कप्प)।

धरग पुं [दे] कपास ; (दे ५, ५८)।

धरण पुं [**धरण**] १ नाग-कुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३ ; औप)। २ यदुवंशीय राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र ; (अंत ३)। ३ श्रेष्ठि-विशेष ; (उप ७२८ टी ; सुपा ५५६)। ४ न. धारण करना ; (से ३, ३ ; सार्ध ६ ; वज्जा ४८)। ५ सोलह तोले का एक परिमाण ; (जो २)। ६ धरना देना, लङ्घन-पूर्वक उपवेशन ; (पव ३८)। ७ तोलने का साधन ; (जा २)। ८ वि. धारण करने वाला ; (कुमा)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] धरणेन्द्र का उत्पात-पर्वत ; (ठा १०)।

धरणा स्त्री [**धरणा**] देखो **धारणा**; (णंदि)।

धरणि स्त्री [**धरणि**] १ भूमि, पृथिवी; (औप; कुमा)। २ भगवान् अरनाथ की शासन-देवी ; (संति १०)। ३ भग-वान् वासुपूज्य की प्रथम शिष्या ; (सम १५२ ; पव ६)। °**खील** पुं [°**कील**] मेरु पर्वत ; (सुज्ज ५)। °**चर** पुं [°**चर**] मनुष्य ; (पउम १०१, ४७)। °**धर** पुं [°**धर**] १ पर्वत, पहाड़ ; (अजि १७)। २ अयोध्या नगरी का एक सूर्य-वंशीय राजा ; (पउम ५, ५०)। °**धरप्पवर** पुं [°**धरप्रवर**] मेरु पर्वत ; (अजि १५)।

°धरवइ पुं [°धरपति] मेरु पर्वत ; (अजि १५) । °धरा स्त्री [°धरा] भगवान् विमलनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२) । °यल न [°तल] भूमि-तल, भू-तल ; (णाया १, २) । °वइ पुं [°पति] भू-पति, राजा ; (सुपा ३३४) । °वट्ठ न [°पृष्ठ] मही-पीठ, भूमि-तल; (महा) । °हर देखो °धर ; (से ६, ३६) ।

धरणिंद पुं [**धरणेन्द्र**] नाग-कुमारों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र ; (पउम ५, ३८) ।

धरणी देखो **धरणि**; (प्रासू २३ ; पि ५३ ; से २, २४; कुप्र २२) ।

धरा स्त्री [**धरा**] पृथिवी, भूमि ; (गउड ; सुपा २०१) । °**धर, °हर** पुं [°**धर**] पर्वत, पहाड ; (से६, ७६ ; ३८ ; स २६६ ; ७०३ ; उप ७६८ टी) ।

धराविअ वि [**धारित**] पकड़ा हुआ ; (स २०६ ; सुपा ३२५ ; संक्षि ३४) । २ स्थापित; " धराविअं मडयं " (कुप्र १४०) ।

धरिअ वि [**धृत**] १ धारण किया हुआ; (गा१०१ ; सुपा १२२) । २ रोका हुआ ; (स २०६) ।

धरिज्जंत } देखो **धर**=धृ ।
धरिज्जमाण }

धरिणी स्त्री [**धरिणी**] पृथिवी, भूमि; (पात्र) ।

धरिम न [**धरिम**] १ जो तराजू में तौल कर बेचा जाय वह ; (श्रा १८ ; णाया १, ८) । २ ऋण, करजा; (णाया १, १) । ३ एक तरह का नाप, तौल; (जो २) ।

धरियव्व देखो **धर**=धृ ।

धरिस अक [**धृष्**]१ संहत होना, एकत्रित होना । २ प्रगल्भता करना, धीठाई करना । ३ मिलना, संबद्ध होना । ४ सक. हिंसा करना, मारना । ५ अमर्ष करना, सहन नहीं करना । धरिसइ; (राज) ।

धरिसण न [**धर्षण**] १ परिभव, अभिभव; २ संहति, समूह; ३ अमर्ष, असहिष्णुता; ४ हिंसा ; ५ बन्धन, योजन; (निचू १ ; राज) । ६ प्रगल्भता, धृष्टता, धीठाई ; (औप) ।

धरंत देखो **धर**=धृ ।

धव पुं [**धव**] १ पति, स्वामी ; (णाया १, १ ; वव७)। २ वृक्ष-विशेष ; (पराण १ ; उप १०३१ टी ; औप) ।

धवक्क अक [**दे**] धड़कना, भय से व्याकुल होना, धुकधुकाना । धवक्कइ ; (सण) ।

धवक्किय वि [**दे**] धड़का हुआ, भयसे व्याकुल बना हुआ;(सण)।

धवण न [**धावन**] धौत, चावल आदि का धावन-जल ; (सूक्त ८६) ।

धवल पुं [**दे**] स्व-जाति में उत्तम ; (दे ५, ५७) ।

धवल वि [**धवल**] १ सफेद, श्वेत ; (पात्र ; सुपा २८५)। २ पुं. उत्तम बैल; (गा ६३८)। ३ पुंन. छन्द-विशेष; (पिंग)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] कैलास पर्वत ; (ती ४६) । °**गेह** न [°**गेह**] प्रासाद, महल ; (कुमा) । °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक जैन मुनि ; (दं ४७) । °**रव** पुं [°**रव**] मंगल-गीत; (सुपा २८५) । °**हर** न [°**गृह**] प्रासाद, महल ; (श्रा १२ ; महा) ।

धवल सक [**धवलय्**] सफेद करना । धवलइ; (पि ५५७) । कवकृ—**धवलिज्जंत**; (गउड) ।

धवलक्क न [**धवलार्क**] ग्राम-विशेष, जो आजकल 'धोलका' नाम से गुजरात में प्रसिद्ध है ; (ती ३) ।

धवलण न [**धवलन**] सफेद करना, श्वेती-करण ; (कुमा)।

धवलसउण पुं [**दे**] हंस ; (दे ५, ५९ ; पात्र) ।

धवला स्त्री [**धवला**] गौ, गैया ; (गा ६३८) ।

धवलाअ अक [**धवलाय्**] सफेद होना । वकृ—**धवलाअंत**; (गा ९) ।

धवलाइअ वि [**धवलायित**] १ उत्तम बैल की तरह जिसने कार्य किया हो वह ; २ न. उत्तम वृषभ की तरह आचरण ; (सार्ध ६) ।

धवलिम पुंस्त्री [**धवलिमन्**] सफेदपन, शुक्लता ; (सुपा ७४) ।

धवलिय वि [**धवलित**] सफेद किया हुआ ; (भवि) ।

धवली स्त्री [**धवली**] उत्तम गौ, श्रेष्ठ गैया; (गउड) ।

धव्व पुं [**दे**] वेग ; (दे ५, ५७) ।

धस अक [**धस्**] १ धसना । २ नीचे जाना । ३ प्रवेश करना । धसइ, धसउ ; (पिंग) ।

धस पुं [**धस्**] 'धस्' ऐसा आवाज, गिरने का आवाज; " धसति महिमंडले पडिओ " (महा ; णाया १, १—पत्र ४७) ।

धसक्क पुं [**दे**] हृदय की घबराहट का आवाज, गुजराती में 'धासको'; "तो जायहिअधसक्का" (श्रा १४; कुप्र४३५) ।

धसक्किअ वि [**दे**] खूब घबड़ाया हुआ; (श्रा १४) ।

धसल वि [**दे**] विस्तीर्ण ; (दे ५, ५८) ।

धा सक [**धा**] धारण करना । धाइ, धाअइ, धाअए ; (षड्) । कर्म—धीयए ; (पिंड) ।

धा सक [ध्यै] ध्यान करना, चिन्तन करना। धाअंति; (संक्षि ७६)।

धा सक [धाव्] १ दौड़ना। २ शुद्ध करना, धाना। धाइ, धाअइ; (हे ४, २४०)। भवि—धाहिइ; (षड्)।

धाइअ वि [धावित] दौड़ा हुआ; (से ८, ६८; भवि)।

धाइअसंड देखो **धायइ-संड**; (महा)।

धाई देखो **धत्ती**; (हे २, ८१; पव ६७)। ४ धाई का काम करने से प्राप्त की हुई भिक्षा; (ठा ३, ४)। ५ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**पिंड** पुं [°**पिण्ड**] धाई का काम कर प्राप्त की हुई भिक्षा; (पव ६७)।

धाई देखो **धायई**; (उप ६४८ टी)।

धाउ पुं [**धातु**] १ सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, राँगा, सीसा और जस्ता ये सात वस्तु; (जी ३)। २ गेरु, मनसिल आदि पदार्थ; (से४, ४; पण्ह १,२)। ३ शरीर-धारक वस्तु—कफ, वात, पित्त, रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र; (औप; कुप्र १५८)। ४ पृथिवी, जल, तेज और वायु ये चार महाभूत; (सूत्र १,१,१)। ५ व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द-योनि, 'भू' 'पच्' आदि; (अणु)। ६ स्वभाव, प्रकृति; (स २४१)। ७ नाट्य-शास्त्र-प्रसिद्ध आलप्तिका-विशेष; (कुमा २, ६६)। °**य** वि [°**ज**] १ धातु से उत्पन्न; २ वस्त्र-विशेष; (पंचभा)। ३ नाम, शब्द; (अणु)। °**वाइअ** वि [°**वादिक**] ओषधि आदि के योग से ताम्र आदि का सोना वगैरः बनाने वाला, किमियागर; (कुप्र ३६७)।

धाउ पुं [**धातृ**] पणपन्नि-नामक व्यन्तर-देवों का एक इन्द्र; (ठा २, ३)।

धाड अक [**निर्+सृ**] बाहर निकलना। धाडइ; (हे ४, ७६)।

धाड सक [**निर्+सारय्**] बाहर निकालना। संकृ—**धाडिऊण**; (कुप्र ८३)। कवकृ—**धाडिज्जंत**; (पउम १७, २८; ३१, ११६)।

धाड सक [**धाड्**] प्रेरणा करना। २ नाश करना। धाडेंति; (सूअ १, ४, २)। कवकृ—**धाडीयंत**; (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

धाडण न [**धाडन**] १ प्रेरणा, २ नाश; (औप)।

धाडाविअ वि [**निस्सारित**] बाहर निकाला हुआ, निर्वासित; (पउम २२, ८)।

धाडि वि [**दे**] निरस्त, निराकृत; (दे ५, ५६)।

धाडिअ वि [**निःसृत**] बाहर निकला हुआ; (कुमा)।

धाडिअ पुं [**दे**] आराम, बगीचा; (दे ५, ५६)।

धाडिअ वि [**निस्सारित**] निर्वासित, बाहर निकाला हुआ; (पउम १०१, ६०; स २६८; उप ७२८ टी)।

धाडी स्त्री [**धाटी**]। १ डाकुओं का दल; (सुर २, ४; प्राकृ)। २ हमला, आक्रमण, धावा; (कप्पू)।

धाण देखो **धण्ण**=धन्य; (वज्जा ६०)।

धाणा स्त्री [**धाना**] धनिया, एक जात का मसाला; (दे ७, ६६; प्राकृ)।

धाणुक्क वि [**धानुष्क**] धनुर्धर, धनुर्विद्या में निपुण; (उप पृ ८६; सुर १३, १६२; वेणी ११४; कुप्र ४५२)।

धाणूरिअ न [**दे**] फल-भेद; (दे ५, ६०)।

धाम न [**धामन्**] बल, पराक्रम; (आरा ६३; सण)।

धाय वि [**ध्रात**] १ तृप्त, संतुष्ट; (ओघ ७७ भा; सुर २, ६७)। २ न. सुभिक्ष, सुकाल; (बृह ५)।

धायइ°, **धायई** स्त्री [**धातकी**] वृक्ष-विशेष, धाय का पेड़; (पण्ण १; पउम ५३,७६; ठा २,३; सम १५२)। °**खंड** पुं [°**खण्ड**] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप; (ठा २, ३; अणु)। °**संड** पुं [°**षण्ड**] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप; (जीव ३; ठा ८; इक)।

धार सक [**धारय्**] १ धारण करना। २ करजा रखना। धारेइ; (महा)। वकृ—**धारंत, धारअंत, धारेमाण, धारयमाण, धारिंत**; (सुर ३, १८६; नाट—विक्र १०६; भग; सुपा २५४; २६४)। हेकृ—**धारिउं, धारेत्तए, धारित्तए**; (पि ५७३; कस; ठा ५,३)। कृ—**धारणिज्ज, धारणीय, धारेयव्व**; (णाया १, १; भग ७, ६; सुर १४,७७; सुपा ४८२)।

धार न [**धार**] १ धारा-संबन्धी जल; २ वि. धारण करने वाला; (राज)।

धार वि [**दे**] लघु, छोटा; (दे ५,५६)।

धारग वि [**धारक**] धारण करने वाला; (कप्प; उप पृ ७५; सुपा २५४)।

धारण न [**धारण**] १ धारने की अवस्था; २ ग्रहण; ३ रक्षण, रखना; ४ परिधान करना; ५ अवलम्बन; (औप; ठा ३, ३)।

धारणा स्त्री [**धारणा**] १ मर्यादा, स्थिति ; (आवम) । २ विषय ग्रहण करने वाली बुद्धि ; (ठा ८, दंस ५) । ३ ज्ञात विषय का अ-विस्मरण; (विसे २९१) । ४ अवधारण, निश्चय; (आवम) । ५ मन की स्थिरता । ६ घर का एक अवयव; (भग ८, २) । °ववहार पुं [°व्यवहार] व्यवहार-विशेष; (ठा ५, २) ।

धारणिज्ज देखो **धार**=धारय् ।

धारणी स्त्री [**धारणी**] १ धारण करने वाली ; (औप) । २ ग्यारहवें जिनदेव की प्रथम शिष्या ; (सम १५२) । ३ वसुदेव आदि अनेक राजाओं की रानी का नाम; (अंत; आचू; १ ; विपा २, १ ; णाया १, १) ।

धारणीय देखो **धार**=धारय् ।

धारय देखो **धारग** ; (ओव १ ; भवि) ।

धारयमाण देखो **धार**=धारय् ।

धारा स्त्री [**दे**] रण-मुख, रण-भूमि का अग्रभाग; (दे ५,५९) ।

धारा स्त्री [**धारा**] १ अस्त्र के आगे का भाग, धार; (गउड; प्रासू ६२) । २ प्रवाह, पाली ; (महा) । ३ अश्व की गति-विशेष ; (कुमा ; महा) । ४ जल-धारा, पानी की धारा; ५ वर्षा, वृष्टि; ६ द्रव पदार्थों का प्रवाह रूप से पतन ; (गउड) । ७ एक राज-पत्नी ; (आवम) । °कयंब पुं [°कदम्ब] कदम्ब की एक जाति, जो वर्षा से फलती-फूलती है (कुमा) । °धर पुं [°धर] मेघ; (सुपा २०१) । °वारि न [°वारि] धारा से गिरता जल ; (भग १३, ६) । °वारिय वि [°वारिक] जहाँ धारा से पानी गिरता हो वह ; (भग १३, ६) । °हय वि [°हत] वर्षा से सिक्त ; (कप्प) । °हर देखो °धर ; (सुर १३, १९५) ।

धारावास पुं [**दे**] १ भेक, मेढ़क ; (दे ५, ६३ ; षड्) । २ मेघ ; (दे ५, ६३) ।

धारि वि [**धारिन्**] धारण करने वाला ; (औप ; कप्प) ।

धारिंत देखो **धार**=धारय् ।

धारिणी देखो **धारणी** ; (औप) ।

धारित्तए देखो **धार**=धारय् ।

धारिय वि [**धारित**] धारण किया हुआ ; (भवि ; आचा) ।

धारी देखो **धत्ती** ; (हे २, ८१) ।

धारी देखो **धारा** ; (कुमा) ।

धारेत्तए } देखो **धार**=धारय् ।
धारेयव्व }

धाव सक [**धाव्**] १ दौड़ना । २ शुद्ध करना, धोना । धावइ ; (हे ४, २२८ ; २३८) । वकृ—**धावंत, धावमाण**; (प्रासू ८४; महा; कप्प) । संकृ—**धाविऊण**; (महा) ।

धावण न [**धावन**] १ वेग से गमन, दौड़ना ; (सुअ १, ७) । २ प्रक्षालन, धोना; (कुप्र १६४) ।

धावणय पुं [**धावनक**] दौड़ते हुए समाचार पहुँचाने का काम करने वाला, हरकारा, संदेसिया ; (सुपा १०५ ; २९५) ।

धावणया स्त्री [**धान**] स्तन-पान करना ; (उप ८३३) ।

धावमाण देखो **धाव** ।

धाविअ वि [**धावित**] दौड़ा हुआ ; (भवि) ।

धाविर वि [**धाविन्**] दौड़ने वाला ; (सण ; सुपा ५४) ।

धावी देखो **धाई**=धात्री ; (उप १३९ टी ; स ६६ ; सुर २, ११२ ; १६, ९८) ।

धाहा स्त्री [**दे**] धाह, पुकार, चिल्लाहट ; (पउम ५३, ८८; सुपा ३१७ ; ३४०) ।

धाहाविय न [**दे**] धाह, पुकार, चिल्लाहट ; (स ३७० ; सुपा ३८० ; ४९६ ; महा) ।

धाहिय वि [**दे**] पलायित, भागा हुआ ; (धम्म ११ टी) ।

धि अ [**धिक्**] धिक्कार, छीः ; (रंभा) ।

धिइ स्त्री [**धृति**] १ धैर्य, धीरज ; (सुअ १, ८ ; षड्) । २ धारण; (आवम) । ३ धारणा, ज्ञात विषय का अ-विस्मरण; (विसे) । ४ धरण, अवस्थान ; (सुअ १, ११) । ५ अहिंसा; (पण्ह २, १) । ६ धैर्य की अधिष्ठायिका देवी ; ७ देवी की प्रतिमा-विशेष ; (राज ; णाया १, १ टी—पत्र ४३) । ८ तिगिंछि-द्रह की अधिष्ठायिका देवी ; (इक ; ठा २३) । °कूड न [°कूट] धृति-देवी का अधिष्ठित शिखर-विशेष; (जं ४) । °धर पुं [°धर] १ एक अन्तकृद् महर्षि; २ 'अंतगड-दसा' सूत्र का एक अध्ययन; (अंत १८) । °म, °मंत वि [°मत्] धीरज वाला ; (ठा ८ ; पण्ह२, ४) ।

धिक्कय वि [**धिक्कृत**] १ धिक्कारा हुआ ; (वव १) । २ न. धिक्कार, तिरस्कार; (बृह ६) ।

धिक्करण न [**धिक्करण**] तिरस्कार, धिक्कार ; (णाया १, १६) ।

धिक्करिअ वि [**धिक्कृत**] धिक्कारा हुआ; (कुप्र १५७) ।

घिक्कार पुं [**घिक्कार**] १ धिक्कार, तिरस्कार ; (पण्ह १, ३; द्र २६) । २ युगलिक मनुष्यों के समय की एक दण्ड-नीति ; (ठा ७—पत्र ३६८) ।

घिक्कार सक [**घिक्+कारय्**] धिक्कारना, तिरस्कार करना। कवकृ—**घिक्कारिज्जमाण** ; (पि ५६३) ।

घिज्ज न [**धैर्य**] धीरज, धृति ; (हे २, ६४) ।

घिज्ज वि [**धेय**] धारण करने योग्य ; (णाया १, १) ।

घिज्ज वि [**ध्येय**] ध्यान-योग्य, चिन्तनीय ;(णाया१, १) ।

घिज्जाइ पुंस्त्री [**द्विजाति, धिग्जाति**] ब्राह्मण, विप्र । स्त्री—"तत्थ भद्दा नाम **धिज्जाइणी**" (आवम) ।

घिज्जाइय, **घिज्जाईय** पुंस्त्री [**द्विजातिक, धिग्जातीय**] ब्राह्मण, विप्र ; (महा ; उप १२६ ; आव ३) ।

घिज्जीविय न [**धिग्जीवित**] निन्दनीय जीवन ; (सूत्र २, २) ।

घिट्ठ वि [**धृष्ट**] धीठ, प्रगल्भ ; २ निर्लज्ज, बेशरम ; (हे १, १३० ; सुर २, ६ ; गा ६२७ ; श्रा १४) ।

घिट्ठज्जुण्ण देखो **धट्ठज्जुण्ण** ; (पि २७८) ।

घिट्ठिम पुंस्त्री [**धृष्टत्व**] धृष्टता, धीठाई ; (सुपा १२०) ।

घिद्धी, **घिधी** अ [**घिक् घिक्**] छीः छीः; (उव; वै ६१; रंभा) ।

घिप्प अक [**दीप्**] दीपना, चमकना। घिप्पइ ; (हे १, २२३) ।

घिप्पिर वि [**दीप्र**] देदीप्यमान, चमकीला ; (कुमा) ।

घिय अ [**घिक्**] धिक्कार, छीः ; "वेइ गिरं धिय मुंडिय" (उप ६३४) ।

घिरत्थु अ [**घिगस्तु**] धिक्कार हो ; (णाया १, १६ ; महा; प्रारू) ।

घिसण पुं [**धिषण**] बृहस्पति, सुर-गुरु ; (पाअ) ।

घिसि अ [**धिक्**] धिक्कार, छीः; (सुपा ३६५ ; सण) ।

धी स्त्री [**धी**] बुद्धि, मति; (पाअ; णाया १,१६; कुप्र ११६; २४७; प्रासू २०) । °**धण** वि [°**धन**] १ बुद्धिमान्, विद्वान् ; २ पुं. एक मन्त्री का नाम; (उप ७६८ टी) । °**म, °मंत** वि [°**मत्**] बुद्धिशाली, विद्वान् ; (उप७२८ टी; कप्प; राज) ।

धी अ [**धिक्**] धिक्कार, छीः ; (उव; वै ५५) ।

धीआ स्त्री [**दुहितृ**] लड़की, पुत्री ; (मृच्छ १०६ ; पि ३६२ ; महा ; भवि ; पच्च ४२) ।

धीउल्लिया स्त्री [**दे**] पुतली ; (स ७३७) ।

धीर अक [**धीरय्**] १ धीरज धरना । २ सक. धीरज देना, आश्वासन देना । धीरेंति ; (गउड) ।

धीर वि [**धीर**] १ धैर्य वाला, सुस्थिर, अ-चञ्चल ; (से ४, ३० ; गा ३६७ ; ठा ४, २) । २ बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान् ; (उप ७६८ टी ; धर्म २) । ३ विवेकी, शिष्ट ; (सूत्र १, ७) । ४ सहिष्णु; (सूत्र १, ३, ४) । ५ पुं. परमेश्वर, परमात्मा, जिन-देव; ६ गणधर-देव; (आचा; आव ४) ।

धीर न [**धैर्य**] धीरज, धीरता ; (हे २, ६४; कुमा) ।

धीरव सक [**धीरय्**] सान्त्वन करना, दिलासा देना । कर्म—धीरविज्जंति ; (कुप्र २७३) ।

धीरवण न [**धीरण**] धीरज देना, सान्त्वन ; (वव १) ।

धीरविय वि [**धीरित**] जिसको सान्त्वन दिया गया हो वह, आश्वासित ; (स ६०४) ।

धीराअ अक [**धीराय्**] धीर होना, धीरज धरना । वकृ—**धीराअंत** ; (से १२, ७०) ।

धीराविअ देखो **धीरविय** ; (पि ५५६) ।

धीरिअ देखो **धीर=धैर्य** ; (हे २, १०७) ।

धीरिअ देखो **धीरविय** ; (भवि) ।

धीरिम पुंस्त्री [**धीरत्व**] धैर्य, धीरज; (उप पृ ६२; सुपा १०६ ; भवि; कुप्र १५०) ।

धीवर पुं [**धीवर**] १ मच्छीमार, जालजीवी; (कुमा; कुप्र २४७)। २ वि. उत्तम बुद्धि वाला; (उप ७६८ टी ; कुप्र २४७) ।

धुअ देखो **धुव=धाव्** । धुअइ; (गा १३०) ।

धुअ सक [**धु**] १ कँपाना । २ फेंकना । ३त्याग करना । वकृ—**धुअमाण** ; (से १४, ६६) ।

धुअ देखो **धुव = ध्रुव**; (भवि) । छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

धुअ वि [**धुत**] १ कम्पित ; (गा ७८ ; दे १, १७३) । २ त्यक्त ; (औप) । ३ उच्छलित ; (से ४, ४) । ४ न. कर्म ; (सूत्र २, २) । ५ मोक्ष, मुक्ति; (सूत्र १, ७) । ६ त्याग, संग-त्याग, संयम ; (सूत्र १, २, २ ; आचा) । °**वाय** पुं [°**वाद**] कर्म-नाश का उपदेश ; (आचा) ।

धुअगाय पुं [**दे**] भ्रमर, भमरा ; (दे ५, ५७ ; पाअ) ।

धुअराय पुं [**दे**] ऊपर देखो ; (षड्) ।

धुंधुमार पुं [**धुन्धुमार**] नृप-विशेष ; (कुप्र २६३) ।

धुंधुमारा स्त्री [**दे**] इन्द्राणी, शची ; (दे ५, ६०) ।

धुक्काधुक्क अक [**कम्प्**] काँपना, धुक् धुक् होना । धुक्काधुक्कइ ; (गा ५८३) ।

धुक्कुड्धुअ } वि [दे] उल्लसित, उल्लास-युक्त ; (दे
धुक्कुड्धुगिअ } ५, ६०)।
धुक्कुधुअ देखो धुक्काधुक्क। वकृ—**धुक्कुधुअंत** ; (भवि)।
धुक्कोडिअ न [दे] संशय, संदेह ; (वज्जा ६०)।
धुगुधुग अक [धुगधुगाय्] धुग् धुग् आवाज करना। वकृ—**धुगुधुगंत** ; (पराह १, ३—पत्र४५)।
धुट्ठुअ देखो **धुड्धुअ**। धुट्ठुअइ ; (हे ४, ३६५)।
धुण सक [धू] १ कँपाना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ नाश करना। धुणइ, धुणाइ ; (हे ४, ५६ ; आचा ; वि १२०)। कर्म—धुव्वइ, धुणिज्जइ ; (हे४, २४२)। वकृ—**धुणंत** ; (सुपा १८५)। संकृ—**धुणिऊण, धुणिया, धुणेऊण** ; (षड् ; दस ६, ३)। हेकृ—**धुणित्तए** ; (सूअ १, २, २)। कृ—**धुणेज्ज** ; (आचू १)।
धुणण न [धूनन] १ अपनयन ; २ परित्याग ; (राज)।
धुणणा स्त्री [धूनन] कम्पन ; (ओघ १६५ भा)।
धुणाव सक [धूनय्] कँपाना, हिलाना। धुणावइ; (वज्जा६)।
धुणाविअ वि [धूनित] कँपाया हुआ ; (उप ७६८ टी)।
धुणि देखो **झुणि** ; (षड्)।
धुणिऊण } देखो **धुण**।
धुणित्तए }
धुणिय वि [धूत] कम्पित, हिलाया हुआ ; "मत्थयं धुणियं" (सुपा ३२० ; २०१)।
धुणिया } देखो **धुण**।
धुणेज्ज }
धुण्ण वि [धाव्य] १ दूर करने योग्य ; २ न. पाप ; ३ कर्म ; (दस ६, १ ; दसा ६)।
धुत्त वि [धूर्त] १ ठग, वञ्चक, प्रतारक ; (प्रासू ४० ; श्रा १२)। २ जूआ खेलने वाला; ३ पुं. धतूरे का पेड़ ; ४ लोहे का काट; ५ लवण-विशेष, एक प्रकार का नोन ; (हे २, ३०)।
धुत्त वि [दे] १ विस्तीर्ण ; (दे ५, ५८)। २ आक्रान्त; (षड्)।
धुत्त } सक [धूर्तय्] ठगना। धुत्तारसि ; (सुपा११४)।
धुत्तार } वकृ—**धुत्तयंत** ; (श्रा १२)।
धुत्तारिअ वि [धूर्तित] ठगा हुआ, वञ्चित; (उप७२८टी)।
धुत्ति स्त्री [धूर्त्ति] जरा, बुढ़ापा ; (राज)।
धुत्तिअ वि [धूर्तित] वञ्चित, प्रतारित ; (सुपा ३२४ ; श्रा १२)।
धुत्तिम पुंस्त्री [धूर्तत्व] धूर्तता, धूर्तपन, ठगाई ; (हे१, ३५; कुमा ; श्रा १२)।
धुत्ती स्त्री [धूर्ता] धूर्त स्त्री; (वज्जा १०६)।
धुत्तोरय न [धत्तूरक] धतूरे का पुष्प; (वज्जा १०६)।
धुद्धुअ (अप) अक [शब्दाय्] आवाज करना। धुद्धुअइ; (हे ४, ३६५)।
धुम्म पुं [धूम्र] १ धूम, धूँआ। २ वर्ण-विशेष, कपोत-वर्ण; ३ वि. कपोत वर्ण वाला। °क्ख पुं [°ाक्ष] एक राक्षस ; (से १२, ६०)।
धुर न. देखो **धुरा** ; (उप पृ ६३)।
धुर पुं [धुर] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। २ कर्जदार, ऋणी; "जस्स कलसम्मि वहिदालखंडाइं तस्स धुरवणं लब्भं, पुणरवि देउं धुराणं" (सुपा ४२६)।
धुरंधर वि [धुरन्धर] १ भार को वहन करने में समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान्, भार-वाहक; (से ३, ३६)। २ नेता, मुखिया, अगुआ ; (सण ; उत्तर२०)। ३ पुं. गाड़ी, हल आदि खींचने वाला बैल ; (दे ८, ४४)।
धुरा स्त्री [धुर्] १ गाड़ी वगैरः का अग्र भाग, धुरी ; (उव)। २ भार, बोझा ; ३ चिन्ता ; (हे १, १६)। °**धार** वि [°धार] धुरा को वहन करने वाला, धुरन्धर ; (पउम ७, १७१)।
धुरी स्त्री [धुरी] अक्ष, धुरा, गाड़ी का जूआ ; (अणु)।
धुव सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना। धुवइ, धुवंति ; (हे ४, २३८ ; गा ४३३ ; पिंड२८)। वकृ—**धुवंत** ; (से ८, १०२)। कवकृ—**धुव्वंत, धुव्वमाण** ; (गा ५६३ ; से ६, ४५ ; वज्जा २४ ; पि ५३८)।
धुव सक [धू] कँपाना, हिलाना। धुवइ ; (हे४, ५६ ; षड्)। कर्म—**धुव्वइ**; (कुमा)। कवकृ—**धुव्वंत**; (कुमा)।
धुव वि [ध्रुव] १ निश्चल, स्थिर ; (जीव३) । २ नित्य, शाश्वत, सर्वदा-स्थायी ; (ठा५, ३; सूअ२, ४)। ३ अवश्य-भावी ; (सूअ २, १)। ४ निश्चित, नियत ; (आचा)। ५ पुं. अश्व के शरीर का आवर्त ; (कुमा)। ६ मोक्ष, मुक्ति ; ७ संयम, इन्द्रियादि-निग्रह; (सूअ १, ४, १)। ८ संसार; (अणु)। ६ न. मुक्ति का कारण, मोक्ष-मार्ग ; (आचा)। १० कर्म ; (अणु)। ११ अत्यन्त, अतिशय; "धुवमोगिराहइ"

(ठा६)। °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी; (वव१)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी; (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष; (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग; (सूअ १, ४, १)। °राहु पुं [°राहु] राहु-विशेष; (सम २६)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ संयम; २ मोक्ष, मुक्ति; ३ शाश्वत यश; (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव।

धुवण न [**धावन**] १ प्रक्षालन; (ओघ ७२; ३४७; स २७२)। २ वि. कँपाने वाला, हिलाने वाला। स्त्री—°णी; (कुमा)।

धुव्व देखो **धुव**=धाव्। धुव्वइ; (संक्षि ३६)।

धुव्वंत देखो **धव**=धू।

धुव्वंत, **धुव्वमाण** } देखो **धुव**=धाव्।

धुहअ वि [**दे**] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

धूअ वि [**धूत**] देखो **धुअ**=धुत; (आचा; दस ३,१३; पि ३१२; ३६२; सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो **धूव**=धूप; (सुपा ६५७)।

धूआ स्त्री [**दुहितृ**] लड़की, पुत्री; (हे २, १२६; प्रासू ६४)।

धूण पुं [**दे**] गज, हाथी; (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [**धूनित**] कम्पित; (कुप्र ६८)।

धूम पुं [**धूम**] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह; (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति; (पण्ह २, १)। °इंगाल पुं. ब. [°ङ्गार] द्वेष और राग; (ओघ २८८ भा)। °केउ पुं [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३; पण्ह १, ५; औप)। २ वन्हि, अग्नि, आग; (उत्त २२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज; (गउड)। °चारण पुं [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि-विशेष; (गच्छ २)। °जोणि पुं [°योनि] बादल, मेघ; (पाअ)। °ज्झय देखो °द्धय; (राज)। °दोस पुं [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना; (आचा २, १, ३)। °द्धय पुं [°ध्वज] वह्नि, अग्नि; (पाअ; उप १०३१ टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवीं नरक-पृथिवी; (ठा ७; प्रारू)। °ल वि [°ल] धूँआ वाला; (उप २६४ टी)। °वडल पुंन [°पटल] धूम-समूह; (हे २, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] पाण्डुर वर्ण वाला; (णाया १, १७)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का अग्र भाग; (ठा४, २)।

धूमंग पुं [**दे**] भ्रमर, भमरा; (दे ५, ५७)।

धूमण न [**धूमन**] धूम-पान; (सूअ २, १)।

धूमद्दार न [**दे**] गवाक्ष, वातायन; (दे ५, ६१)।

धूमद्धय पुं [**दे**] १ तड़ाग, तलाव; २ महिष, भैंसा; (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री.ब. [**दे**] कृत्तिका नक्षत्र; (दे ५, ६२)।

धूमपलियाम वि [**दे**] गर्त में डाल कर आग लगाने पर भी जो कच्चा रह जाय वह; (निचू १५)।

धूममहिसी स्त्री [**दे**] नीहार, कुहरा, कुहासा; (दे ५, ६१; पाअ)।

धूमरी स्त्री [**दे**] १ नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१)। २ तुहिन, हिम; (षड्)।

धूमसिहा, **धूमा** } स्त्री [**दे**] नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१; ठा १०)।

धूमाअ अक [**धूमाय्**] १ धूँआ करना। २ जलाना। ३ धूम की तरह आचरना। धूमाअंति; (से ८, १६; गउड)। वकृ—**धूमायंत**; (गउड; से १, ८)।

धूमाभा स्त्री [**धूमाभा**] पाँचवीं नरक-पृथिवी; (पउम ७५, ४७)।

धूमिअ वि [**धूमित**] १ धूम-युक्त; (पिंड)। २ छौंका हुआ (शाक आदि); (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [**दे**] नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१; पाअ; ठा १०; भग ३, ७; अणु)।

धूरिअ वि [**दे**] दीर्घ, लम्बा; (दे ५, ६२)।

धूरिअवट्ट पुं [**दे**] अश्व, घोड़ा; (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो **धूलि**; (हे ४, ४३२)।

धूलि, **धूली** } स्त्री [**धूलि, °ली**] धूल, रज, रेणु; (गउड; प्रासू २८; ८४)। °कंब, °कलंब पुं [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु में विकसने वाला कदम्ब-वृक्ष; (कुमा)। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह; (वव १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से लिप्त; (गा ७७४; ८२६)। °धोअ वि [°धोतृ] धूल को साफ करने वाला; (सुपा ३३६)। °पंथ पुं [°पथ] धूलि-

बहुल मार्ग ; (ओघ २४ टी) । °वरिस्न पुं [°वर्ष] धूल की वर्षा ; (आवम) । °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु में लड़के लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह; (उप ४६० टी) ।

धूलीवट्ट पुं [दे] अश्व, घोड़ा ; (दे ५, ६१) ।

धूव सक [धूपय्] धूप करना । धूवेज्जा ; (आचा २, १३) । वकृ—**धूवेंत** ; (सि ३३७) ।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है ; (णाया १, १ ; कुप्र ३, ६४) । °घडी स्त्री [°घटी] धूप-पात्र, धूप से भरी हुई कलशी ; (जं १) । °जंत न [°यन्त्र] धूप-पात्र ; (दे ३, ३४) ।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना; २ धूम-पान, रोग की निवृत्ति के लिए किया जाता धूम का पान; "धूवणे त्ति वमणे य वत्थी-कम्मविरेयणे" (दस ३, ६) । °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई वर्त्तिका, अगरबत्ती ; (कप्पू) ।

धूविअ वि [धूपित] १ तापित, गरम किया हुआ ; २ हिंग आदि से छोंका हुआ ; (चारु ६) । ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; गच्छ १) ।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण; २ वि. धूसर रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्रासू ८४ ; गा ७७४ ; से ६, ८२) ।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला ; (पाअ ; भवि) ।

धे सक [धा] धारण करना । धेइ ; (संक्षि ३३) । "धेहि धीरत्तं" (कुप्र १००) ।

धेअ } वि [ध्येय] ध्यान-योग्य ; (अजि १४ ; णाया
धेज्ज } १, १) ।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य ; (णाया १, १) ।

धेज्ज न [धैर्य] धीरज, धीरता ; (पउड २, २) ।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ ; २ सवत्सा गौ ; ३ दुधार गाय ; (हे ३, २६; चंड) ।

धेर देखो **धीर**=धैर्य ; (कि १७) ।

धेवय पुं [धैवत] स्वर-विशेष ; "धेवयस्सरसंपण्णा भवंति कलहप्पिया" (ठा ७—पत्र ३९३) ।

धोअ सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना, पखारना । धोएज्जा ; (आचा) । वकृ—**धोयंत** ; (सुपा ८५) ।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित ; (से १, २५; ७, ३० ; गा ३३६) ।

धोअग वि [धावक] १ धोने वाला ; २ पुं. धोबी ; (उप पृ ३३३)

धोअण वि [धावन] धोना, प्रक्षालन ; (श्रा २० ; स्वप्न १८ ; उप ३४७) ।

धोइअ देखो **धोअ**=धौत ; (गा १८) ।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरंधर, भार-वाहक ; २ अगुआ, नेता, मुखिया ; (बृह १) ।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य ; (औप) ।

धोरणि } स्त्री [धोरणि, °णी] पङ्क्ति, कतार ; (सुपा
धोरणी } ४५ ; भवि ; पड्) ।

धोरिय देखो **धोज्ज** ; (सुपा २८२) ।

धोरुगिणी स्त्री [धोरुकिनिका] देश-विशेष में उत्पन्न स्त्री; (णाया १, १—पत्र ३७) ।

धोरेय वि [धौरेय] देखो **धोज्ज**; (सुपा ६५०) ।

धोव देखो **धोअ**=धाव् । धोवइ ; (स १२७ ; सि ७८) । धोविज्जा ; (आचा) । वकृ—**धोवंत**; (भवि) । कवकृ—**धोव्वंत, धोव्वमाण**; (पउम १०, ४४ ; णाया १, ८) । कृ—**धोवणिय** ; (णाया १, १६) ।

धोवग देखो **धोअग** ; (दे ८, ३६) ।

ध्रुवु (अप) अ [ध्रुवम्] अवश्य, निश्चय; (हे ४,४१८) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि धआराइ-
सद्दसंकलणो छव्वीसइमो तरंगो समत्तो ।

—— o ——

न, देखो ण[1] ।

१ प्राकृत भाषा में नकारादि सब शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के नकार के स्थान में नित्य वा विकल्प से 'ण' होनेका व्याकरणों का सामान्य नियम है ; (प्राप्र २,४२ ; दे ५, ६३ टी ; हे १, २२९ ; षड् १, ३, ५३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में दोनों तरह के प्रयोग पाये जाते हैं । इससे ऐसे सब शब्द णकार के प्रकरण में आ जाने से यहाँ पर पुनरावृत्ति कर ग्रन्थ में पुस्तक का कलेवर बढ़ाना उचित नहीं समझा गया है । पाठक-गण णकार के प्रकरण में आदि के 'ण' के स्थान में सर्वत्र 'न' समझ लें । यही कारण है कि नकारादि शब्दों के भी प्रमाण णकारादि शब्दों में ही दिये गये हैं ।

प

प पुं [**प**] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप)। २ पाप-त्याग ; " पत्ति य पावववज्जणे " (आवम)।

प अ [**प्र**] इन अर्थों का सूचक अव्यय :—१ प्रकर्ष ; जैसे—'पमास' (से २, ११)। २ प्रारम्भ ; जैसे—'पग्गमिश्र', 'पकरेइ' (जं १ ; भग १,१)। ३ उत्पत्ति ; ४ ख्याति, प्रसिद्धि ; ५ व्यवहार ; ६ चारों ओर से ; (निचू १ ; हे २, २१७)। ७ प्रत्रवण, मूत्र ; (विसे ७८१)। ८ फिर फिर ; (निचू ३ ; १७)। ९ गुजरा हुआ, विनष्ट ; जैसे—'पासुम' ; (ठा ४, २—पत्र २१३ टी)।

प° वि [**प्राच्**] पूर्व तर्फ स्थित ; (भवि)।

पअंगम पुं [**प्लवङ्गम**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

पअंघ पुं [**प्रजङ्घ**] राक्षस-विशेष ; (से १२, ८३)।

पइ पुं [**पति**] १ धव, भर्ता ; (पाअ ; गा १५९ ; कप्प)। २ मालिक ; ३ रक्षक ; जैसे—'भूवई', 'तिअसगणवई' 'नरवइ' (सुपा ३६ ; अजि १७ ; १९)। ४ श्रेष्ठ, उत्तम ; जैसे—'धरणिधरवई' (अजि १७)। **°घर** न [**°गृह**] ससुराल ; (षड्)। **°वया, °व्वया** स्त्री [**°व्रता**] पति-सेवा-परायण स्त्री, कुलवती स्त्री ; (गा ४१७ ; सुर ६, ९७)। **°हर** देखो **°घर** ; (हे १, ४)।

पइ देखो **पडि** ; (ठा २, ० ; काल ; उवर २१)।

पइअ वि [**दे**] १ भर्त्सित, तिरस्कृत ; २ न. पहिया, रथ-चक्र ; (दे ६, ६४)।

पइइ देखो **पगइ**=प्रकृति ; (से २, ४५)।

पइउं देखो **पय**=पच्।

पइउवचरण न [**प्रत्युपचरण**] प्रत्युपचार, प्रति-सेवा; (रंभा)।

पइऊल देखो **पडिकूल** ; (नाट—विक्र ४५)।

पइंवया देखो **पइ-वया** ; (गाया १, १६—पत्र २०४)।

पइक (अप) देखो **पाइक्क** ; (पिंग)।

पइकिदि देखो **पडिकिदि** ; (नाट—शकु ११६)।

पइक्क देखो **पाइक्क** ; (पिंग ; पि १९४)।

पइगिइ देखो **पडिकिदि** ; (स ६२५)।

पइच्छन्न पुं [**प्रतिच्छन्न**] भूत-विशेष ; (राज)।

पइज्ज (अप) वि [**पतित**] गिरा हुआ, (पिंग)।

पइज्ज (अप) वि [**प्राप्त**] मिला हुआ, लब्ध ; (पिंग)।

पइज्जा देखो **पइण्णा** ; (भवि ; सण)।

पइट्ठ वि [**दे**] १ जिसने रस को जाना हो वह ; २ विरल ; ३ पुं. मार्ग, रास्ता ; (दे ६, ६६)।

पइट्ठ पुं [**प्रतिष्ठ**] भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम ; (सम १५०)।

पइट्ठ वि [**प्रविष्ट**] जिसने प्रवेश किया हो वह ; (स४२६)।

पइट्ठवण देखो **पइट्ठावण** ; (राज)।

पइट्ठा स्त्री [**प्रतिष्ठा**] १ आदर, सम्मान ; २ कीर्ति, यश ; ३ व्यवस्था ; (हे १, २०६)। ४ स्थापना, संस्थापन ; (णंदि)। ५ अवस्थान, स्थिति ; (पंचा ८)। ६ मूर्ति में ईश्वर के गुणों का आरोपण ; " जिणबिंबाण पइट्ठं कइया वि हु आइसंतस्स " (सुर १६, १३)। ७ आश्रय, आधार ; (औप)।

पइट्ठाण न [**प्रतिष्ठान**] १ स्थिति, अवस्थान ; " काऊण पइट्ठाणं रमणिज्जे एत्थ अच्छामो " (पउम ४२, २७ ; ठा ९)। २ आधार, आश्रय ; (भग)। ३ महल आदि की नींव ; (पव १४८)। ४ नगर-विशेष; (आक २१)।

पइट्ठाण न [**दे**] नगर, शहर ; (दे ६, २९)।

पइट्ठावक } **पइट्ठावग** } देखो **पइट्ठावय** ; (णाया १, १६; राज)।

पइट्ठावण न [**प्रतिष्ठापन**] १ संस्थापन ; (पंचा ८)। २ व्यवस्थापन ; (पंचा ७)।

पइट्ठावय वि [**प्रतिष्ठापक**] प्रतिष्ठा करने वाला ; (औप ; पि २२०)।

पइट्ठाविय वि [**प्रतिष्ठापित**] संस्थापित; (स ६१ ; ३०५)।

पइट्ठिय वि [**प्रतिष्ठित**] १ स्थित, अवस्थित ; (उवा)। २ आश्रित ; " रयणायरतीरपइट्ठियाण पुरिसाण जं च दालिद्दं " (प्रासू ३०)। ३ व्यवस्थित ; (आचा २, १, ७)। ४ गौरवान्वित ; (हे १, ३८)।

पइण्ण वि [**दे**] विपुल, विस्तृत ; (दे ६, ७)।

पइण्ण वि [**प्रतीर्ण**] प्रकर्ष से तीर्ण ; (आचा)।

पइण्ण } **पइण्णग** } वि [**प्रकीर्ण, °क**] १ विक्षिप्त, फेंका हुआ ; " सत्थापइण्णगणग्रणुप्पला तुमं मा पडिच्छाग गंते " (गा १४०)। २ अनेक प्रकार से मिश्रित ; (पंचु)। ३ बिखरा हुआ ; (ठा ३)। ४ विस्तारित ; (बृह १)। ५ न. ग्रन्थ-विशेष, तीर्थंकर-देव के सामान्य शिष्य ने बनाया हुआ ग्रन्थ ; (णंदि)। **°कहा** स्त्री [**कथा**] उत्सर्ग, सामान्य नियम ; " उस्सग्गो पइण्णकहा भण्णइ अववादो

निच्छयकहा भगणइ " (निचू ५)। तव पुं [तपस्] तपश्चर्या-विशेष ; (पंचा १६)।

पइण्णा स्त्री [**प्रतिज्ञा**] १ प्रण, शपथ ; (नाट—मालती १०६)। २ नियम ; (औप ; पंचा १८)। ३ तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य वचन का निर्देश ; (दसनि १)।

पइण्णाद (शौ) वि [**प्रतिज्ञात**] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह ; (मा १५)।

पइत्त देखो **पउत्त**=प्रवृत्त ; (भवि)।

पइत्त वि [**प्रदीप्त**] जला हुआ, प्रज्वलित; (से १५, ७३)।

पइत्त देखो **पवित्त**=पवित्र ; (सुपा ७४)।

पइदि (शौ) देखो **पगइ** ; (नाट—शकु ६१)।

पइदिण न [**प्रतिदिन**] हर रोज ; (काल)।

पइदिद्ध वि [**प्रतिदिग्ध**] विलिप्त ; (सूअ १, ५, १)।

पइदियह न [**प्रतिदिवस**] प्रतिदिन, हर रोज ; (सुर १, ५०)।

पइनियय वि [**प्रतिनियत**] मुकर्रर किया हुआ, नियुक्त किया हुआ ; (आवम)।

पइन्न } देखो **पइण्ण** ; (उव ; भवि ; श्रा ६)।
पइन्नग }

पइन्ना देखो **पइण्णा** ; (सुर १, १)।

पइप्प देखो **पलिप्प**। वकृ—**पइप्पमाण** ; (गा ४१६)।

पइप्पईय न [**प्रतिप्रतीक**] प्रत्यंग, हर अंग ; (रंभा)।

पइभय वि [**प्रतिभय**] प्रत्येक प्राणी को भय उपजाने वाला ; (णाया १, २ ; पगह १, १ ; औप)।

पइभा स्त्री [**प्रतिभा**] बुद्धि-विशेष, प्रत्युत्पन्न-मतित्व ; (पुप्फ ३३१)।

पइमुह वि [**प्रतिमुख**] संमुख ; (उप ७४४)।

पइरिक्क वि [**दे. प्रतिरिक्त**] १ शून्य, रहित ; (दे ६, ७१ ; से २, १५)। २ विशाल, विस्तीर्ण ; (दे ६, ७१)। ३ तुच्छ, हलका ; (से १, ५८)। ४ प्रचुर, विपुल ; (ओघ २४६—पत्र १०३)। ५ नितान्त, अत्यन्त ; " पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए " (कप्प)। ६ न. एकान्त स्थान, विजन स्थान, निर्जन जगह ; (दे ६, ७१ ; स २३५ ; ७५५ ; गा ८८ ; उप २६३)।

पइल (अप) देखो **पढम** ; (पि ४४६)।

पइलाइया स्त्री [**प्रतिलादिका**] हाथ के बल चलने वाली सर्प की एक जाति ; (राज)।

पइल्ल पुं [**दे. पदिक**] १ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। २ रोग-विशेष, श्लीपद ; (पगह २, ५)।

पइव पुं [**प्रतिव**] एक यादव का नाम ; (राज)।

पइवरिस न [**प्रतिवर्ष**] हरएक वर्ष ; (पि २२०)।

पइवाइ वि [**प्रतिवादिन्**] प्रतिवादी, प्रतिपक्षी ; (विसे २४८८)।

पइविसिट्ठ वि [**प्रतिविशिष्ट**] विशेष-युक्त, विशिष्ट ; (उवा)।

पइविसेस पुं [**प्रतिविशेष**] विशेष, भेद, भिन्नता ; (विसे ५२)।

पइस देखो **पविस**। **पइसइ** ; (भवि)। पइसंति ; (दे १, ६४ टि) कर्म—**पइसिउजइ** ; (भवि)। वकृ—**पइसंत** ; (भवि)। कृ—**पइसियव्व** ; (स २३४)।

पइसमय न [**प्रतिसमय**] हर समय, प्रतिक्षण ; (पि २२०)।

पइसर देखो **पविस**। पइसरइ ; (भवि)।

पइसार सक [**प्र+वेशय्**] प्रवेश कराना। पइसारइ ; (भवि)।

पइसारिय वि [**प्रवेशित**] जिसका प्रवेश कराया गया हो वह ; " पइसारिओ य नयरिं " (महा ; भवि)।

पइहंत पुं [**दे**] जयन्त, इन्द्र का एक पुत्र ; (दे ६, १६)।

पइहा सक [**प्रति+हा**] त्याग करना। संकृ—**पइहिऊण** ; (उव)।

पई° देखो **पइ**=पति ; (षड् ; हे १, ४ ; सुर १, १७६)।

पईअ वि [**प्रतीत**] १ विज्ञात। २ विश्वस्त। ३ प्रसिद्ध, विख्यात ; (विसे ७०६)।

पईअ न [**प्रतीक**] अंग, अवयव ; (रंभा)।

पईइ स्त्री [**प्रतीति**] १ विश्वास। २ प्रसिद्धि ; (राज)।

पईव देखो **पलीव**। पईवेइ ; (कस)।

पईव पुं [**प्रदीप**] दीपक, दिया ; (पाअ ; जी १)।

पईव वि [**प्रतीप**] १ प्रतिकूल ; (हे १, २०६)। २ पुं. शत्रु, दुश्मन ; (उप ६४८ टी ; हे १, २३१)।

पईस (अप) देखो **पइस**। पईसइ ; (भवि)।

पउ (अप) वि [**पतित**] गिरा हुआ ; (पिंग)।

पउअ पुं [**दे**] दिन, दिवस ; (दे ६, ५)।
पउअ न [**प्रयुत**] संख्या-विशेष, 'प्रयुताङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक : ठा २, ४)।
पउअंग न [**प्रयुताङ्ग**] संख्या-विशेष ; 'अयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४)।
पउंज सक [**प्र+युज्**] १ जोड़ना, युक्त करना। २ उच्चारण करना। ३ प्रश्न करना। ४ प्रेरणा करना। ५ व्यवहार करना। ६ करना। पउंजइ ; (महा ; भवि ; पि ५०७)। पउंजंति ; (कप्प)। वकृ— **पउंजंत, पउंजमाण** ; (औप ; पउम ३५, ३६)। कवकृ—**पउज्जमाण** ; (प्रयौ २३)। कृ —**पउंजिअव्व, पउज्ज**; (पण्ह २, ३ ; उप ७६८ टी ; विसे ३३८४), **पउद्दव्व** (अप) ; (कुमा)।
पउंजग वि [**प्रयोजक**] प्रेरक, प्रेरणा करने वाला ; (पंचव १)।
पउंजण वि [**प्रयोजन**] प्रयोग करने वाला ; (पउम १४, २०)। देखो **पओअण**।
पउंजणया } स्त्री [**प्रयोजना**] प्रयोग ; (ओघ ११४),
पउंजणा } "दुक्खं कीरइ कव्वं, कव्वम्मि कए पउंजणा दुक्खं" (वज्जा २)।
पउंजिअ वि [**प्रयुक्त**] जिसका प्रयोग किया गया हो वह ; (सुपा १५० ; ४४७)।
पउंजित्तु वि [**प्रयोक्तृ**] प्रवृत्ति करने वाला ; (ठा ५,१)।
पउंजित्तु वि [**प्रयोजयितृ**] प्रवृत्ति कराने वाला ; (ठा ५, १)।
पउज्ज } देखो **पउंज**।
पउज्जमाण }
पउट्ट अ [**परिवृत्य**] मर कर। °**परिहार** पुं [°**परिहार**] मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर उस शरीर का परिभोग करना ; "एवं खलु गोसाला ! वणस्सइ-काइ-याओ पउट्टपरिहारं परिहरंति" (भग १५—पत्र ६६७)।
पउट्ट वि [**परिवर्त**] १ परिवर्त, मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होना ; २ परिवर्त-वाद ; "एस णं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स पउट्टे" (भग १५—पत्र ६६७)।
पउट्ठ वि [**प्रवृष्ट**] बरसा हुआ ; (हे १,१३१)।
पउट्ठ पुं [**प्रकोष्ठ**] हाथ का पहुँचा, कलाई और केहुनी के बीच का भाग ; (पण्ह १, ४—पत्र ७८ ; कप्प; कुमा)।
पउट्ठ वि [**प्रजुष्ट**] १ विशेष सेवित ; २ न. अति उच्छिष्ट ; (चंड)।
पउट्ठ वि [**प्रद्विष्ट**] द्वेष-युक्त ; "न य पउट्ठचित्तो" (सुपा ४५५)।
पउढ न [**दे**] १ गृह, घर ; २ पुं. घर का पश्चिम प्रदेश ; (दे ६, ४)।
पउण पुं [**दे**] १ व्रण-प्रगाह ; २ नियम-विशेष ; (दे ६, ६५)।
पउण वि [**प्रगुण**] १ पटु, निर्दोष ; "कह नवचरणविहाणं जायइ पउणिंदियाणंपि" (सुपा ८७२ ; महा) ; २ तय्यार ; (हंस ३)।
पउणाड पुं [**प्रपुनाट**] वृक्ष-विशेष, पमाड का पेड़, चकवड़ ; (दे ५, ५ टि)।
पउत्त अक [**प्र+वृत्**] प्रवृत्ति करना। कृ—**पउत्तिदव्व** (शौ) ; (नाट—शकु ८७)।
पउत्त वि [**प्रयुक्त**] जिसका प्रयोग किया गया हो वह (महा ; भवि)। २ न. प्रयोग ; (गाया १, १)।
पउत्त न [**प्रतोत्र**] प्रतोद, प्राजन, पैना ; (दसा १०)।
पउत्त वि [**प्रवृत्त**] जिसने प्रवृत्ति की हो वह ; (उवा)।
पउत्ति स्त्री [**प्रवृत्ति**] १ प्रवर्तन ; (भग १५) २ समाचार, वृत्तान्त ; (पाअ ; सुर २, ४८ ; ३, ८४)। ३ कार्य, काज। °**वाउय** वि [°**व्यापृत**] कार्य में लगा हुआ ; (औप)।
पउत्ति स्त्री [**प्रयुक्ति**] बात, हकीकत ; (उप पृ २२८ गाज)।
पउत्तिदव्व देखो **पउत्त**=प्र+वृत्।
पउत्थ न [**दे**] १ गृह, घर ; (दे ६, ६६)। २ प्रोषित, प्रवास में गया हुआ ; "गहिइ सोवि पउत्थो अहं कुप्पेज्ज सोवि अणुणेज्ज" (गा १७ ; ६६७ ; हेका ३० पउम १७, ३ ; वज्जा ७६ ; विवे १३२ ; उवा ; दे ६६ ; भवि)। °**वइया** स्त्री [°**पतिका**] जिसका पति देशान्तर गया हो वह स्त्री ; (ओघ ४१३ ; सुपा ५०८)।
पउद्दव्व देखो **पउंज**।
पउप्पय देखो **पओप्पय** ; (भग ११, ११ टी)।
पउप्पय देखो **पओप्पय**=प्रपौत्रिक ; (भग ११,११ टी)
पउम न [**पद्म**] १ सूर्य-विकासी कमल ; (हे २, ११ पण्ह १, ३ ; कप्प ; औप ; प्रासू ११३)। २ विमान विशेष ; (सम ३३ ; ३५)। ३ संख्या-वि

'पद्मांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक)। ४ गन्ध-द्रव्य-विशेष ; (औप ; जीव ३)। ५ सुधर्मा सभा का एक सिंहासन ; (णाया २)। ६ दिन का नववाँ मुहूर्त ; (जो २)। ७ दक्षिण-रुचक-पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८)। ८ राजा रामचन्द्र, सीता-पति ; (पउम १, ५; २५, ८)। ९ आठवाँ बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ; १० इस अवसर्पिणीकाल में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा, राजा पद्मोत्तर का पुत्र ; (पउम ५, १५३ ; १५४)। ११ एक राजा का नाम ; (उप ६४८ टी)। १२ माल्यवन्नामक पर्वत का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३)। १३ भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में उत्पन्न होने वाला आठवाँ चक्रवर्ती राजा ; (सम १५४)। १४ भरतक्षेत्र का भावी आठवाँ बलदेव ; (सम १५४)। १५ चक्रवर्ती राजा का निधि, जो रोग-नाशक सुन्दर वस्त्रों की पूर्ति करता है ; (उप ९८६ टी)। १६ राजा श्रेणिक का एक पौत्र ; (निर २, १)। १७ एक जैन मुनि का नाम ; (कप्प)। १८ एक ह्रद ; (कप्प)। १९ पद्म-वृक्ष का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३)। २० महापद्म-नामक जिन-देव के पास दीक्षा लेने वाला एक राजा, एक भावी राजर्षि ; (ठा ८)। **°गुम्म** न [**°गुल्म**] १ आठवें देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम ; (सम ३५)। २ प्रथम देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम ; (महा)। ३ पुं. राजा श्रेणिक का एक पौत्र ; (निर २, १)। ४ एक भावी राजर्षि, महापद्म-नामक जिन-देव के पास दीक्षा लेने वाला एक राजा ; (ठा ८)। **°चरिय** न [**°चरित**] १ राजा रामचन्द्र की जीवनी—चरित्र ; २ प्राकृत भाषा का एक प्राचीन ग्रन्थ, जैन रामायण ; (पउम ११८, १२१)। **°णाभ** पुं [**°नाभ**] १ वासुदेव, विष्णु ; (पउम ४०, १)। २ आगामी उत्सर्पिणी-काल में भरतक्षेत्र में होने वाले प्रथम जिन-देव का नाम ; (पव ४६)। ३ कपिल-वासुदेव के एक माण्डलिक राजा का नाम ; (णाया १, १६—पत्र २१३)। **°दल** न [**°दल**] कमल-पत्र ; (प्रारू)। **°द्दह** पुं [**°द्रह**] विविध प्रकार के कमलों से परिपूर्ण एक महान् ह्रद का नाम ; (सम १०४ ; कप्प ; पउम १०२, ३०)। **°द्धय** पुं [**°ध्वज**] एक भावी राजर्षि, जो महापद्म-नामक जिन-देव के पास दीक्षा लेगा ; (ठा ८)। **°नाह** देखो **°णाभ** ; (उप ६४८ टी)। **°पुर** न [**°पुर**] एक दाक्षिणात्य नगर, जो आजकल 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है ; (गज)। **°प्पभ** पुं [**°प्रभ**] इस अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न षष्ठ जिन-देव का नाम ; (कप्प)। **°प्पभा** स्त्री [**°प्रभा**] एक पुष्करिणी का नाम ; (इक)। **°प्पह** देखो **°प्पभ** ; (ठा ५, १ ; सम ४३ ; पडि)। **°भद्द** पुं [**°भद्र**] राजा श्रेणिक का एक पौत्र ; (निर २, १)। **°मालि** पुं [**°मालिन्**] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४२)। **°मुह** देखो **पउमाणण** ; (षड्)। **°रह** पुं [**°रथ**] १ विद्याधर-वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४३)। २ मथुरा नगरी के राजा जयसेन का पुत्र ; (महा)। **°राय** पुं [**°राग**] रक्त-वर्ण मणि-विशेष ; (पि १३९ ; १६६)। **°राय** पुं [**°राज**] धातकीखण्ड की अपरकंका नगरी का एक राजा, जिसने द्रौपदी का अपहरण किया था; (ठा १०)। **°रुक्ख** पुं [**°वृक्ष**] १ उत्तर-कुरु क्षेत्र में स्थित एक वृक्ष ; (ठा २, ३)। २ वृक्ष-सदृश बड़ा कमल ; (जीव ३)। **°लया** स्त्री [**°लता**] १ कमलिनी, पद्मिनी ; (जीव ३ ; भग ; कप्प) । २ कमल के आकार वाली वल्ली ; (णाया १,१)। **°वडिंसय, °वडेंसय** न [**°वतंसक**] पद्मावती-देवी का सौधर्म-नामक देवलोक में स्थित एक विमान ; (राज ; णाया २—पत्र २५३)। **°वरवेइया** स्त्री [**°वरवेदिका**] १ कमलों की श्रेष्ठ वेदिका ; (भग)। २ जम्बूद्वीप की जगती के ऊपर रही हुई देवों की एक भोग-भूमि ; (जीव ३)। **°वूह** पुं [**°व्यूह**] सैन्य की पद्माकार रचना ; (पराह १, ३)। **°सर** पुं [**°सरस्**] कमलों से युक्त सरोवर ; (णाया १, १ ; कप्प ; महा)। **°सिरी** स्त्री [**°श्री**] १ अष्टम चक्रवर्ती सुभूमि-राज की पटरानी; (सम १५२)। २ एक स्त्री का नाम ; (कुमा)। **°सेण** पुं [**°सेन**] १ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (निर १, २)। २ नागकुमार-जातीय एक देव का नाम ; (दीव)। **°सेहर** पुं [**°शेखर**] पृथ्वीपुर नगर के एक राजा का नाम ; (धम्म ७)। **°गर** पुं [**°कर**] १ कमलों का समूह ; २ सरोवर ; (उप १३३ टी)। **°सण** न [**°सन**] पद्माकार आसन ; (जं १)।

पउमा स्त्री [**पद्मा**] १ वीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम ; (सम १५१)। २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक पटरानी का नाम ; (ठा ८—पत्र ४२९ ; पउम १०२, १५९)। ३ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ४,

१—पत्र २०४) । ४ एक विद्याधर कन्या का नाम ; (पउम ६,२९) । ५ रावण की एक पत्नी ; (पउम ७४, १०) । ६ लक्ष्मी ; (राज) । ७ वनस्पति-विशेष ; (पराण १ — पत्र ३६) । ८ चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ की मुख्य शिष्या का नाम ; (पव ६) । ९ सुदर्शना-जम्बू की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी ; (इक) । १० दूसरे बलदेव और वासुदेव की माता का नाम ; ११ लेश्या-विशेष ; (राज) ।

पउमाड पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, पमाड का पेड़, चकवड़ ; (दे ५, ५) ।

पउमाणण पुं [**पद्मानन**] एक राजा का नाम ; (उप १०३१ टी) ।

पउमाभ पुं [**पद्माभ**] षष्ठ तीर्थंकर का नाम ; (पउम १,२) ।

पउमार [**दे**] देखो **पउमाड** ; (दे ५, ५ टि) ।

पउमावई स्त्री [**पद्मावती**] १ जम्बूद्वीप के सुमेरु पर्वत के पूर्व तरफ के रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी-देवी ; (ठा ८) । २ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी, जो नागराज धरणेन्द्र की पटरानी है ; (संति १०) । ३ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम ; (अंत १५) । ४ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी ; (भग १०, ५) । ५ शक्रेन्द्र की एक पटरानी ; (णाया २ —पत्र २५३) । ६ चम्पेश्वर राजा दधिवाहन की एक स्त्री का नाम ; (आव ४) । ७ राजा कूणिक की एक पत्नी ; (भग ७, ६) । ८ अयोध्या के राजा हरिसिंह की एक पत्नी ; (धम्म ८) । ९ तेतलिपुर के राजा कनककेतु की पत्नी ; (दंस १) । १० कौशाम्बी नगरी के राजा शतानीक के पुत्र उदयन की पत्नी ; (विपा १, ५) । ११ शैलकपुर के राजा शैलक की पत्नी ; (णाया १, ५) । १२ राजा कूणिक के पुत्र काल-कुमार की भार्या का नाम ; १३ राजा महाबल की भार्या का नाम ; (निर १, १; ५ ; पि १३६) । १४ बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रत-स्वामी की माता का नाम ; (पव ११) । १५ पुण्डरीकिणी नगरी के राजा महापद्म की पटरानी ; (आवृ १) । १६ रम्य-नामक विजय की राजधानी ; (जं ४) ।

पउमावत्ती (अप) स्त्री [**पद्मावती**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

पउमिणी स्त्री [**पद्मिनी**] १ कमलिनी, कमल-लता; (कप्पू ; सुपा १५५) । २ एक श्रेष्ठी की स्त्री का नाम ; (उप ७२८ टी) ।

पउमुत्तर पुं [**पद्मोत्तर**] १ नववें चक्रवर्ती श्रीमहापद्म-राज के पिता का नाम ; (सम १५२) । २ मन्दर पर्वत के भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती पर्वत ; (इक) ।

पउमुत्तरा स्त्री [**पद्मोत्तरा**] एक प्रकार की शक्कर ; (णाया १, १७ —पत्र २२९ ; पराण १७) ।

पउर वि [**प्रचुर**] प्रभूत, बहुत ; (हे १, १८० ; कुमा ; सुर ४, ७४) ।

पउर वि [**पौर**] १ पुर-संबन्धी, नगर से संबन्ध रखने वाला ; २ नगर में रहने वाला ; (हे १, १६२) ।

पउरव पुं [**पौरव**] पुरु-नामक चन्द्र-वंशीय नृप का पुत्र; (संक्षि ६) ।

पउराण (अप) देखो **पुराण** ; (भवि) ।

पउरिस } पुंन [**पौरुष**] पुरुषत्व, पुरुषार्थ ; (हे १, १११ ;
पउरुस } १६२) । " पउरुसं " (प्राप्र), " पउरुसं " (संक्षि ६) ।

पउल सक [**पच्**] पकाना । पउलइ ; (हे ४, ९० ; दे ६, २६) ।

पउलण न [**पचन**] पकाना, पाक ; (पराह १, १) ।

पउलिअ वि [**पक्व**] पका हुआ ; (पाअ) ।

पउलिअ वि [**प्रज्वलित**] दग्ध, जला हुआ ; (उवा) ।

पउल्ल देखो **पउल** । पउल्लइ ; (षड् ; हे ४, ९० टि) ।

पउल्ल वि [**पक्व**] पका हुआ; (पंचा १) ।

पउविय वि [**प्रकुपित**] विशेष कुपित, क्रुद्ध ; (महा) ।

पउस सक [**प्र + द्विष्**] द्वेष करना । पउसेज्जा; (ओघ २५ भा)।

पउसय वि [**दे**] देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री—**°सिया** ; (औप) ।

पउस्स देखो **पउस** । पउस्सति ; (कुप्र ३७७) । वकृ— **पउस्संत, पउस्समाण** ; (राज ; अंत २२) । संकृ— **पउस्सिऊण** ; (स ५१३) ।

पउहण (अप) देखो **पवहण** ; (भवि) ।

पऊढ न [**दे**] गृह, घर ; (दे ६, ४) ।

पए अ [**प्राक्**] पहले, पूर्व ; " तित्थयरवयणकरणे आयरि-आणं कयं पए होइ " (ओघ ४७ भा), " जइ पुण वियाल-पत्ता पए व पत्ता उवस्सयं न लभे " (ओघ १६८) ।

पएणियार पुं [**प्रैणीचार**] व्याध की एक जाति, जो हरिणों को पकड़ने के लिए हरिणी-समूह को चराते एवं पालते हैं ; (पराह १, १—पत्र १४) ।

पएर पुं [**दे**] १ वृति-विवर, बाड़ का छिद्र ; २ मार्ग, रास्ता; ३ कंठदीनार-नामक भूषण-विशेष ; ४ गले का छिद्र ; ५ दीन-नाद, आर्त-स्वर ; ६ वि. दुःशील, दुराचारी ; (दे ६, ६७)।

पएस पुं [**दे**] प्रातिवेश्मिक, पड़ौसी ; (दे ६, ३)।

पएस पुं [**प्रदेश**] १ जिसका विभाग न हो सके ऐसा सूक्ष्म अवयव ; (ठा १, १)। २ कर्म-दल का संचय ; (नव ३१)। ३ स्थान, जगह ; (कुमा ६, ५६)। ४ देश का एक भाग, प्रान्त ; (कुमा ६)। ५ परिमाण-विशेष, निरंश-अवयव-परिमित माप ; ६ छोटा भाग ; ७ परमाणु ; ८ द्व्यणुक ; ९ त्र्यणुक, तीन परमाणुओं का समूह ; (राज)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] कर्म-विशेष, प्रदेश-रूप कर्म ; (भग)। °**ग्ग** न [°**ग्र**] कर्मों के दलिकों का परिमाण ; (भग)। °**घण** वि [°**घन**] निबिड प्रदेश ; (औप)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष ; (ठा ६)। °**णाम** पुं [°**नाम**] कर्म-द्रव्यों का परिणाम ; (ठा ६)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] कर्म-दलों का आत्म-प्रदेशों के साथ संबन्धन ; (सम ६)। °**संकम** पुं [°**संक्रम**] कर्म-द्रव्यों को भिन्न स्वभाव-वाले कर्मों के रूप में परिणत करना ; (ठा ४, २)।

पएसण न [**प्रदेशन**] उपदेश ; " पएसणयं णाम उवएसो " (आचू १)।

पएसय वि [**प्रदेशक**] उपदेशक, प्रदर्शक ; " सिद्धिपहपए-सए वंदे" (विसे १०२५)।

पएसि पुं [**प्रदेशिन्**] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जो श्री पार्श्वनाथ भगवान् के केशि-नामक गणधर से प्रबुद्ध हुआ था ; (राय ; कुप्र १४५ ; श्रा ६)।

पएसिणी स्त्री [**दे**] पड़ौस में रहने वाली स्त्री ; (दे ६, ३ टी)।

पएसिणी स्त्री [**प्रदेशिनी**] अंगुष्ठ के पास की उंगली, तर्जनी ; (ओघ ३६०)।

पएसिय देखो **पदेसिय** ; (राज)।

पओअ देखो **पओग** ; (हे १, २४५ ; अभि ६ ; सण ; पि ८५)।

पओअण न [**प्रयोजन**] १ हेतु, निमित्त, कारण ; (सूत्र १, १२)। २ कार्य, काम ; ३ मतलब ; (महा ; उत्त २३ ; स्वप्न ४८)।

पओइद (शौ) वि [**प्रयोजित**] जिसका प्रयोग कराया गया हो वह ; (नाट—विक्र १०३)।

पओग पुं [**प्रयोग**] १ शब्द-योजना ; (भास ६३)। २ जीव का व्यापार, चेतन का प्रयत्न ; "उप्पाओ दुविगप्पो पओ-गजणिओ य विस्ससा चेव" (सम्म २५ ; ठा ३, १ ; सम्म १२६ ; स ५२४)। ३ प्रेरणा ; (श्रा १४)। ४ उपाय ; (आचू १)। ५ जीव के प्रयत्न में कारण-भूत मन आदि ; (ठा ३, ३)। ६ वाद-विवाद, शास्त्रार्थ ; (दसा ४)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] मन आदि की चेष्टा से आत्म-प्रदेशों के साथ बँधने वाला कर्म ; (राज)। °**करण** न [°**करण**] जीव के व्यापार द्वारा होने वाला किसी वस्तु का निर्माण ; " होइ उ एगो जीवव्वावारो तेण जं विणिम्माणं पओगकरणं तयं बहुहा" (विसे)। °**किरिया** स्त्री [°**क्रिया**] मन आदि की चेष्टा ; (ठा ३, ३)। °**फड्डय** न [°**स्पर्धक**] मन आदि के व्यापार-स्थान की वृद्धि-द्वारा कर्म-परमाणुओं में बढ़ने वाला रस; (कम्मप २३)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] जीव-प्रयत्न द्वारा होने वाला बन्धन ; (भग १८, ३)। °**मइ** स्त्री [°**मति**] वाद-विषयक परिज्ञान ; (दसा ४)। °**संपया** स्त्री [°**संपत्**] आचार्य का वाद-विषयक सामर्थ्य ; (ठा ८)। °**सा** अ [**प्रयोगेण**] जीव-प्रयत्न से ; (पि ३६४)।

पओट्ठ देखो **पउट्ठ** = प्रकोष्ठ ; (प्राप्र ; औप ; पि ८४)।

पओत्त न [**प्रतोत्र**] प्रतोद, प्राजन-यष्टि, पैना। °**धर** पुं [°**धर**] बैल गाड़ी हाँकने वाला, बहलवान ; (णाया १, १)।

पओद पुं [**प्रतोद**] ऊपर देखो ; (औप)।

पओप्पय पुं [**प्रपौत्रक**] १ प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र ; २ प्रशिष्य का शिष्य ; " तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे " (भग ११, ११—पत्र ५४८)।

पओप्पय पुं [**दे. प्रपौत्रिक**] १ वंश-परम्परा ; २ शिष्य-संतति, शिष्य-संतान ; (भग ११, ११—पत्र ५४८ टी)।

पओल पुं [**पटोल**] पटोल, परवर, परोरा ; (पण्ण १)।

पओली स्त्री [**प्रतोली**] १ नगर के भीतर का रास्ता ; (अणु)। २ नगर का दरवाजा ; " गोउरं पओली य " (पाअ ; सुपा२६१ ; श्रा १२ ; उप पृ ८५ ; भवि)।

पओवट्ठाव देखो **पज्जवत्थाव**। पओवट्ठावेहि ; (पि २८४)।

पओवाह पुं [**पयोवाह**] मेघ, बादल ; (पउम ८, ४६ ; से १, २४ ; सुर २, ८५)।

पओस पुं [**दे. प्रद्वेष**] प्रद्वेष, प्रकृष्ट द्वेष ; (ठा १० ; अंत ; राय ; आव ४ ; सुर १५, ५८ ; पुप्फ ४६५ ; कम्म १ ; महानि ४ ; कुप्र १० ; स ६६६)।

पओस पुंन [**प्रदोष**] १ सन्ध्याकाल, दिन और रात्रि का सन्धि-काल ; (से १, ३४ ; कुमा)। २ वि. प्रभूत दोषों से युक्त ; (से २, ११)।

पओहग (अप) देखो **पवहग** ; (भवि)।

पओहर पुं [**पयोधर**] १ स्तन, थन ; (पाअ ; से १, २४ ; गउड ; सुर २, ८५)। २ मेघ, बादल ; (वज्जा १००)। ३ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

पंक पुंन [**पङ्क**] १ कर्दम, कादा, कीच ; "धम्ममिन्तमि तो लग्गं पंकंव गयणंगणे" (श्रा २८ ; हे १, ३० ; ४, ३५७ ; प्रासू २५), "मुनइ व पंकं" (वज्जा १३४)। २ पाप ; (सुअ २, २)। ३ असंयम, इन्द्रिय वगैरः का अ-निग्रह ; (निचू १)। °**आवलिआ** स्त्री [°**ावलिका**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] चौथी नरक-भूमि ; (ठा ७ ; इक)। °**बहुल** वि [°**बहुल**] १ कर्दम-प्रचुर ; (सम ६०)। २ पाप-प्रचुर ; (सुअ २, २)। ३ रत्नप्रभा-नामक नरक-भूमि का प्रथम काण्ड ; (जीव ३)। °**य** न [°**ज**] कमल, पद्म ; (हे ३, २६ ; गउड ; कुमा)। °**वई** स्त्री [°**वती**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पंका स्त्री [**पङ्का**] चतुर्थ नरक-भूमि ; (इक ; कम्म ३, ५)।

पंकावई स्त्री [**पङ्कावती**] पुष्कल-नामक विजय के पश्चिम तरफ की एक नदी ; (इक ; जं ४)।

पंकिय वि [**पङ्कित**] पंक-युक्त, कीच वाला; (भग ६, ३ ; भवि)।

पंकिल वि [**पङ्किल**] कर्दम वाला ; (श्रा २८ ; गा ९६६ ; कप्पू ; कुप्र १८७)।

पंकेरुह न [**पङ्केरुह**] कमल, पद्म ; (कप्पू ; कुप्र १४१)।

पंख पुंस्त्री [**पक्ष**] १ पंख, पाँखि, पत्त ; (पि ७४ ; गय ; पउम ११, ११८ ; श्रा १४)। २ पनरह दिन, पखवाड़ा ; (गज)। °**ासण** न [°**ासन**] आसन-विशेष ; (गय)।

पंखि पुंस्त्री [**पक्षिन्**] पंखी, चिड़िया, पत्नी ; (श्रा १४)। स्त्री—°**णी** ; (पि ७४)।

पंखुडिआ / **पंखुडी** } स्त्री [**दे**] पंख, पत्र ; (कुप्र २६; दे ६, ८)।

°**पंग** सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना। पंगइ ; (हे ४, २०६)।

पंगण न [**प्राङ्गण**] आँगन ; (कुप्र २५०)।

पंगु वि [**पङ्गु**] पाद-विकल, लञ्ज, लाड़ा ; (पाअ ; पि ३८०; पिंग)।

पंगुर सक [**प्रा + वृ**] ढकना, आच्छादन करना। पंगुरइ ; (भवि)। संकृ —**पंगुरिवि** ; (भवि)।

पंगुरण न [**प्रावरण**] वस्त्र, कपड़ा ; (हे १, १७५ ; कुमा ; गा ७८२)।

पंगुल वि [**पङ्गुल**] देखो **पंगु**; (विपा १, १; से ५५;पाअ)।

पंच त्रि. ब. [**पञ्चन्**] पाँच, ५ ; (हे ३, १२३ ; कप्प ; कुमा)। °**उल** न [°**कुल**] पंचायत ; (स २२२)। °**उलिय** पुं [°**कुलिक**] पंचायत में बैठ कर विचार करने वाला ; (स २२२)। °**कत्तिय** पुं [°**कृत्तिक**] भगवान् कुन्थुनाथ, जिनके पाँचों कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र में हुए थे ; (ठा ५, १)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] श्रीभद्रबाहुस्वामि-कृत एक प्राचीन ग्रन्थ का नाम ; (पंचभा)। °**कल्लाणय** न [**कल्याणक**] १ तीर्थंकर का च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण ; २ काम्पिल्यपुर, जहाँ तेरहवें जिन-देव श्रीविमलनाथ के पाँचों कल्याणक हुए थे ; (ती २४)। ३ तप-विशेष ; (जीत)। °**कोट्ठग** वि [°**कोष्ठक**] १ पाँच कोष्ठों से युक्त ; २ पुं. पुरुष ; (तंदु)। °**गव्व** न [°**गव्य**] गौ के ये पाँच पदार्थ—दही, दूध, घृत, गोमय और मूत्र, पंचगव्य ; (कप्पू)। °**गाह** न [°**गाथ**] गाथा-छन्द-वाले पाँच पद्य ; (कस)। °**गुण** वि [°**गुण**] पाँच-गुना ; (ठा ५, ३)। °**चित्त** पुं [°**चित्र**] षष्ठ जिन-देव श्रीपद्मप्रभ, जिनके पाँचों कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुए थे ; (ठा ५, १ ; कप्प)। °**जाम** न [°**याम**] १ अहिंसा, सत्य, अ-चौर्य, ब्रह्मचर्य और त्याग ये पाँच महाव्रत ; २ वि. जिसमें इन पाँच महाव्रतों का निरूपण हो वह ; (ठा ६)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] पंचानवे, ९५ ; (काल)। °**णउय** वि [°**नवत**] ९५ वाँ ; (काल)। °**तालीस** (अप) स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] पैंतालीस, ४५ ; (पिंग ; पि ४४५)। °**तित्थी** स्त्री [°**तीर्थी**] पाँच तीर्थों का समुदाय ; (धर्म २)। °**तीसइम** वि [°**त्रिंशत्तम**] पैंतीसवाँ, ३५ वाँ (पण्ण ३५)। °**दस** त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, १५ (कप्पू)। °**दसम** वि [°**दशम**] पनरहवाँ, १५ वाँ (गाया १, १)। °**दसी** स्त्री [°**दशी**] १ पनरहवीं, १५ वीं (विसे ५७६)। २ पूर्णिमा ; ३ अमावास्या ; (सुज १०)। °**दसुत्तरसय** वि [°**दशोत्तरशततम**] एक सौ पनरहवाँ, ११५ वाँ ; (पउम ११५, २४)। °**नउइ** देखो °**णउइ** ; (पि ४४७)। °**नाणि** पुं [°**ज्ञानिन्**] मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव और

केवल इन पाँचों ज्ञानों से युक्त, सर्वज्ञ; (सम्म ६६)। °पव्वी स्त्री [°पर्वी] मास की दो अष्टमी, दो चतुर्दशी और शुक्ल पंचमी ये पाँच तिथियाँ ; (रयण २६)। °पुव्वासाढ पुं [°पूर्वाषाढ] दसवें जिन-देव श्रीशीतलनाथ, जिनके पाँचों कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र में हुए थे ; (ठा ५, १)। °पूस पुं [°पुष्य] पनरहवें जिन-देव श्रीधर्मनाथ ; (ठा ५, १)। °बाण पुं [°बाण] काम-देव ; (सुर ४, २४६ ; कुमा)। °भूय न [°भूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ ; (सूअ १, १, १)। °भूयवाइ वि [°भूतवादिन्] आत्म आदि पदार्थों को न मान कर केवल पाँच भूतों को ही मानने वाला, नास्तिक ; (सूअ १, १, १)। °महव्वइय वि [°महाव्रतिक] पाँच महाव्रतों वाला ; (सूअ २, ७)। °महव्वय न [°महाव्रत] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन, और परिग्रह का सर्वथा परित्याग ; (पराह २, ५)। °महाभूय न [°महाभूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ ; (विसे)। °मुट्ठिय वि [°मुष्टिक] पाँच मुष्टिओं का, पाँच मुष्टिओं से पूर्ण किया जाता (लोच) ; (गाया १, १; कप्प ; महा)। °मुह पुं [°मुख] सिंह, पंचानन; (उप १०३१ टी)। °यसो देखो °दसी ; (पउम ६६, १४)। °रत्त, °राय पुं [°रात्र] पाँच रात ; (मा ४३ ; पराह २, ५—पत्र १४६)। °रासिय न [°राशिक] गणित-विशेष ; (ठा ४, ३)। °रूविय वि [°रूपिक] पाँच प्रकार के वर्ण वाला ; (ठा ४, ४)। °वत्थुग न [°वस्तुक] आचार्य हरिभद्रसूरि-रचित ग्रन्थ-विशेष ; (पंचव १, १)। °वरिस वि [°वर्ष] पाँच वर्ष की अवस्था वाला ; (सुर २, ७३)। °विह वि [°विध] पाँच प्रकार का ; (अणु)। °वीसइम वि [°विंशतितम] पचीसवाँ ; (पउम २५, २६)। °संगह पुं [°संग्रह] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ ; (पंच १)। °संवच्छरिय वि [°सांवत्सरिक] पाँच वर्ष परिमाण वाला, पाँच वर्ष की आयु वाला ; (सम ७५)। °सट्ठ वि [°षष्ट] पैंसठवाँ, ६५वाँ ; (पउम ६५, ५१)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पैंसठ, ६५ ; (कप्प)। °समिय वि [°समित] पाँच समितिओं का पालन करने वाला ; (सं ८)। °सर पुं [°शर] काम-देव ; (पाअ ; सुर २, ६३ ; सुपा ६० ; रंभा)। °सीस पुं [°शीर्ष] देव-विशेष ; (दीव)। °सुण्ण न [°शून्य] पाँच प्राणि-वध-स्थान ; (सूअ १, १, ४)। °सुत्तग न [°सूत्रक] आचार्य-श्रीहरिभद्रसूरि निर्मित एक जैन ग्रन्थ ; (पंसू १)। °सेल, °सेलग, °सेलय पुं [°शैल, °क] लवणोदधि में स्थित और पाँच पर्वतों से विभूषित एक छोटा द्वीप ; (महा ; बृह ४)। °सोगंधिअ वि [°सौगन्धिक] इलायची, लवंग, कपूर, कक्कोल और जातिफल इन पाँच सुगन्धित वस्तुओं से संस्कृत ; "नन्नत्थ पंचसोगंधिएणं तंबोलेणं, अवसेस-मुह-वासविहिं पच्चक्खामि" (उवा)। °हत्तर वि [°सप्तत] पचहत्तरवाँ, ७५ वाँ ; (पउम ७५, ८६)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] १ संख्या-विशेष, ७५ ; २ जिनकी संख्या पचहत्तर हो वे ; (पि २६४ ; कप्प)। °हत्थुत्तर पुं [°हस्तोत्तर] भगवान् महावीर, जिनके पाँचों कल्याणक उत्तरफाल्गुनी-नक्षत्र में हुए थे ; (कप्प)। °उह पुं [°युध] कामदेव ; (सण)। °णउइ स्त्री [°नवति] १ संख्या-विशेष, पंचानवे, ६५ ; २ जिनकी संख्या पंचानवे हो वे ; (सम ६७ ; पउम २०, १०३ ; पि ४४०)। °णउय वि [°नवत] पंचानवाँ, ६५ वाँ; (पउम ६५, ६६)। °णण पुं [°नन] सिंह, गजेन्द्र ; (सुपा १७६ ; भवि)। °णुव्वइय वि [°णुव्रतिक] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह का आंशिक त्याग वाला ; (उवा ; औप ; गाया १, १२)। °याम देखो °जाम ; (बृह ६)। °स स्त्रीन [°शत्] १ संख्या-विशेष, पचास, ५० ; २ जिनकी संख्या पचास हो वे ; "पंचासं अज्जियासा-हस्सीओ" (सम ७०)। °सग न [°शक] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ ; (पंचा)। °सीइ स्त्री [°शीति] १ संख्या-विशेष, अस्सी और पाँच, ८५ ; २ जिनकी संख्या पचासी हो वे ; (सम ६२ ; पि ४४६)। °सीइम वि [°शीतितम] पचासीवाँ, ८५ वाँ ; (पउम ८५, ३१ ; कप्प ; पि ४४६)।

पंचंअण्ण देखो **पंचजण्ण** ; (गउड)।

पंचंग न [**पञ्चाङ्ग**] १ दो हाथ, दो जानू और मस्तक ये पाँच शरीरावयव ; २ वि. पूर्वोक्त पाँच अंग वाला ; (प्रणाम आदि) "पंचंगं करिय ताहे पणिवायं" (सुर ४, ६८)।

पंचंगुलि पुं [**दे**] एरगड-वृक्ष, रेंडी का गाछ ; (दे ६, १७)।

पंचंगुलि पुं [**पञ्चाङ्गुलि**] हस्त, हाथ ; (गाया १, १ ; कप्प)।

पंचंगुलिआ स्त्री [**पञ्चाङ्गुलिका**] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३३)।

पंचग न [**पञ्चक**] पाँच का समूह ; (आचा)।

पंचजण्ण पुं [**पाञ्चजन्य**] श्रीकृष्ण का शंख ; (काल ८६२ ; गा ६७४)।

पंचत्त) न [**पञ्चत्व**] १ पाँचपन, पञ्चरूपता ; (सुर १, **पंचत्तण**) ५)। २ मरण, मौत ; (सुर १, ५ ; सण ; उप पृ १२४)।

पंचपुल पुंन [**दे**] मत्स्य-बन्धन विशेष, मछली पकड़ने की जाल-विशेष ; (विपा १, ८—पत्र ८५ टि)।

पंचम वि [**पञ्चम**] १ पाँचवाँ ; (उवा)। २ स्वर-विशेष ; (ठा ७)। °**धारा** स्त्री [°**धारा**] अश्व की एक तरह की गति ; (महा)।

पंचमासिअ वि [**पाञ्चमासिक**] १ पाँच मास की उम्र का ; २ पाँच मास में पूर्ण होने वाला (अभिग्रह आदि) ; स्त्री —°**आ** ; (सम २१)।

पंचमिय वि [**पाञ्चमिक**] पाँचवाँ, पंचम ; (ओघ ६१)।

पंचमी स्त्री [**पञ्चमी**] १ पाँचवीं ; (प्रामा)। २ तिथि-विशेष, पंचमी तिथि ; (सम २६ ; श्रा २८)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध अपादान विभक्ति ; (अणु)।

पंचयन्न देखो **पञ्चजण्ण** ; (गाथा १, १६ ; सुपा २६४)।

पंचलोइया स्त्री [**पञ्चलौकिका**] भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलने वाले सर्प-जातीय प्राणी की एक जाति ; (जीव २)।

पंचवडी स्त्री [**पञ्चवटी**] पाँच वट-वृक्ष वाला एक स्थान, जहां श्रीरामचन्द्रजी ने अपने वनवास के समय आवास किया था, इस स्थान का अस्तित्व कई लोग 'नासिक' नगर के पास गोदावरी नदी के किनारे मानते हैं, जब कि आधुनिक गवेषक लोग बस्तर रजवाड़े के दक्षिणी छोर पर, गोदावरी के किनारे, इसका होना सिद्ध करते हैं ; (उत्तर ८१)।

पंचाल पुं. ब. [**पञ्चाल**, **पाञ्चाल**] १ देश-विशेष, पञ्जाब देश ; (गाया १, ८ ; महा ; पगण १)। २ पुं. पञ्जाब देश का राजा ; (भवि)। ३ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

पंचालिआ स्त्री [**पञ्चालिका**] पुतली, काष्ठादि-निर्मित छोटी प्रतिमा ; (कप्पू)।

पंचालिआ स्त्री [**पाञ्चालिका**] १ द्रुपद-राज की कन्या, द्रौपदी ; (वेणी १५८)। २ गान का एक भेद ; (कप्पू)।

पंचावण्ण) स्त्रीन [**दे. पञ्चपञ्चाशत्**] १ संख्या-विशेष, **पंचावन्न**) पचपन, ५५ ; २ जिनकी संख्या पचपन हो वे ; (हे २, १७४ ; हे २, २५ ; हे २, २१ टि)।

पंचावन्न वि [**दे. पञ्चपञ्चाश**] पचपनवाँ ; (पउम ५५, ६१)।

पंचिंदिय) वि [**पञ्चेन्द्रिय**] १ वह जीव जिसको त्वचा, **पंचिंद्रिय**) जीभ, नाक, आँख और कान ये पाँचों इन्द्रियाँ हों ; (पगण १ ; कप्प ; जीव १ ; भवि)। २ न. त्वचा आदि पाँच इन्द्रियाँ ; (धर्म ३)।

पंचुंबर स्त्रीन [**पञ्चोदुम्बर**] वट, पीपल, उदुम्बर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी का फल ; (भवि)। स्त्री —°**री** ; (श्रा २०)।

पंचुत्तरसय वि [**पञ्चोत्तरशततम**] एक सौ पाँचवाँ, १०५वाँ ; (पउम १०५, ११५)।

पंचेडिय वि [**दे**] विनाशित ; "जेण लावण्ण लोहिल्लणं फेडियं दुरुकंदप्पदप्पं च पंचेडियं" (भवि)।

पंचेसु पुं [**पञ्चेषु**] कामदेव, कंदर्प ; (कप्पू ; रंभा)।

पंछि पुं [**पक्षिन्**] पच्छी, पक्षी, पखेरू, चिड़िया ; (उप १०३१ टी)।

पंजर न [**पञ्जर**] पिंजरा, पिंजड़ा ; (गउड ; कप्पू ; अच्चु २)।

पंजरिय वि [**पञ्जरित**] पिंजरे में बँद किया हुआ ; (गउड)।

पंजल वि [**प्राञ्जल**] सरल, सीधा, ऋजु ; (सुपा ३६४ ; वज्जा ३०)।

पंजलि पुंस्त्री [**प्राञ्जलि**] प्रणाम करने के लिए जोड़ा हुआ कर-संपुट, हस्त-न्यास-विशेष, संयुक्त कर-द्वय ; (उवा)। °**उड** पुं [°**पुट**] अञ्जलि-पुट, संयुक्त कर-द्वय ; (सम १५१, ओप)। °**उड**, °**कड** वि [**कृतप्राञ्जलि**] जिसने प्रणाम के लिए हाथ जोड़ा हो वह ; (सण ; ओप)।

पंड वि [**पाण्ड्य**] देश-विशेष में उत्पन्न। स्त्री—°**डी** ; "पंडीणं गंडवालीपुलअणच्चवला" (कप्पू)।

पंड) पुं [**पण्ड**, °**क**] १ नपुंसक, क्लीब ; (ओघ ५६७ ; **पंडग**) सम १५ ; पाअ)। २ न. मेरु पर्वत का एक वन ; **पंडय**) (ठा २, ३ ; इक)।

पंडय देखो **पंडव** ; (हे १, ७०)।

पंडर पुं [**पाण्डर**] १ क्षीरवर-नामक द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (राज)। २ श्वेत वर्ण, सफेद रंग ; ३ वि. श्वेत-

वर्ण वाला, संकर ; (कप्प)। °भिक्खु पुं [°भिक्षु] श्वेताम्बर जैन संप्रदाय का मुनि ; (न ५५२)।

पंडर देखो **पंडुर** ; (स्वप्न ७१)।

पंडरंग पुं [**दे**] रुद्र, महादेव, शिव ; (दे ६, २३)।

पंडरंगु पुं [**दे**] ग्रामेश, गाँव का अधिपति ; (षड्)।

पंडरिय देखो **पंडुरिअ** ; (भवि)।

पंडव पुं [**पाण्डव**] राजा पाण्डु का पुत्र—१ युधिष्ठिर, २ भीम, ३ अर्जुन, ४ सहदेव और ५ नकुल ; (णाया १, १६ ; उप ६४८ टी)।

पंडविअ वि [**दे**] जलार्द्र, पानी से भीजा हुआ ; (दे ६, २०)।

पंडिअ वि [**पण्डित**] १ विद्वान्, शास्त्रों के मर्म को जानने वाला, बुद्धिमान्, तत्वज्ञ ; "कामज्झया णामं गणिया होत्था बावत्तरीकलापंडिया" (विपा १, २ ; प्रासू ७४ ; १२६)। २ संयत, साधु ; (सूअ १, ८, ६)। °**मरण** न [°**मरण**] साधु का मरण, शुभ मरण-विशेष ; (भग ; पच्च ४६)। °**माण** वि [°**म्मन्य**] विद्याभिमानी, निज को पण्डित मानने वाला, दुर्विदग्ध ; (ओघ २७ भा)। °**माणि** वि [°**मानिन्**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (पउम १०५, २१ ; उप १३४ टी)। °**वीरिअ** न [°**वीर्य**] संयत का आत्म-बल ; (भग)।

पंडिच्च } न [**पाण्डित्य**] पण्डिताई, विद्वत्ता, वैदुष्य ;
पंडित्त } (उव ; सुर १२, ६८ ; सुपा २६ ; रंभा ; सं ५७)।

पंडी देखो **पंड**=पाण्ड्य।

पंडीअ (अप) देखो **पंडिअ** ; (पिंग)।

पंडु पुं [**पाण्डु**] १ नृप-विशेष, पाण्डवों का पिता ; (उप ६४८ टी ; सुपा २७०)। २ रोग-विशेष, पाण्डु-रोग ; (जं १)। ३ वर्ण-विशेष, शुक्ल और पीत वर्ण ; ४ श्वेत वर्ण ; ५ वि. शुक्ल और पीत वर्ण वाला ; (कप्पू ; गउड)। ६ सफेद, श्वेत ; "सेअं सिअं वलक्खं अवदायं पंडु धवलं च" (पाअ ; गउड)। ७ शिला-विशेष, पाण्डु-कम्बला-नामक शिला ; (जं ४ ; इक)। °**कंबलसिला** स्त्री [°**कम्बलशिला**] मेरु पर्वत के पाण्डक वन के दक्षिण छोर पर स्थित एक शिला, जिस पर जिन-देवों का जन्माभिषेक किया जाता है ; (जं ४)। °**कंबला** स्त्री [°**कम्बला**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा २, ३)। °**तणय** पुं [°**तनय**] पाण्डुराज का पुत्र, पाण्डव ; (गउड ४८५)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] एक जैन मुनि, जो आर्य संभूतिविजय के शिष्य थे ; (कप्प)। °**मट्टिया**, °**मत्तिया** स्त्री [°**मृत्तिका**] एक प्रकार की सफेद मिट्टी ; (जीव १ ; पण्ण १—पत्र २५)। °**महुरा** स्त्री [°**मथुरा**] स्वनाम-ख्यात एक नगरी, पाण्डवों ने बनाई हुई भारतवर्ष के दक्षिण तरफ की एक नगरी का नाम ; (णाया १, १६—पत्र २२५ ; अंत)। °**राय** पुं [°**राज**] राजा पाण्डु, पाण्डवों का पिता ; (णाया १, १६)। °**सुय** पुं [°**सुत**] पाण्डव ; (उप ६४८ टी)। °**सेण** पुं [°**सेन**] पाण्डवों का द्रौपदी से उत्पन्न एक पुत्र ; (णाया १, १६ ; उप ६४८ टी)।

पंडुइय वि [**पाण्डुकित**] १ श्वेत रंग का किया हुआ ; (णाया १, १—पत्र २८)।

पंडुग } पुं [**पाण्डुक**] १ चक्रवर्ती का धान्यों की पूर्ति
पंडुय } करने वाला एक निधि ; (राज ; ठा २, १—पत्र ४४ ; उप ९८६ टी)। २ सर्प की एक जाति ; (आवू १)। ३ न. मेरु पर्वत पर स्थित एक वन, पाण्डक-वन ; (सम ६६)।

पंडुर पुं [**पाण्डुर**] १ श्वेत वर्ण, सफेद रंग ; २ पीत-मिश्रित श्वेत वर्ण ; ३ वि. सफेद वर्ण वाला ; ४ श्वेत-मिश्रित पीत वर्ण वाला ; (कप्प ; उव ; से ८, ४६)। °**ज्जा** स्त्री [°**र्या**] एक जैन साध्वी का नाम ; (आवम)। °**ट्ठिय** पुं [°**ास्थिक**] एक गाँव का नाम ; (आचू १)।

पंडुरग } पुं [**पाण्डुरक**] १ शिव-भक्त संन्यासिओं की
पंडुरय } एक जाति ; (णाया १, १५—पत्र १६३)। २ देखो **पंडुर** ; "केसा पंडुरया हवंति ते" (उत्त ३)।

पंडुरिअ } वि [**पाण्डुरित**] पाण्डुर वर्ण वाला बना
पंडुलइय } हुआ ; (गा ३८८ ; विपा १, २—पत्र २७)।

पंत वि [**प्रान्त**] १ अन्त-वर्ती, अन्तिम ; (भग ६, ३३)। २ अशोभन, असुन्दर ; (आचा ; ओघ १७ भा)। ३ इन्द्रियों का अननुकूल, इन्द्रिय-प्रतिकूल ; (पण्ह २, ५)। ४ अभद्र, असभ्य, अशिष्ट ; (ओघ ३६ टी)। ५ अपशद, नीच, दुष्ट ; (णाया १, ८)। ६ दरिद्र, निर्धन ; (ओघ ६१)। ७ जीर्ण, फटा-टूटा ; "पंतवत्थ—" (बृह २)। ८ व्यापन्न, विनष्ट ; "णिप्फावचणगमाई अंतं, पंतं च होइ वावन्नं" (बृह १ ; आचा)। ९ नीरस, सूखा ; (उत्त ८)। १० भुक्तावशिष्ट, खा लेने पर बचा हुआ ; ११ पर्युषित, वासी ; (णाया १, ५—पत्र १११)। °**कुल** न [°**कुल**] नीच कुल, जघन्य जाति ;

(ठा ८)। °चर वि [°चर] नीरस आहार की खोज करने वाला तपस्वी ; (पगह २, १)। °जीवि वि [°जीविन्] नीरस आहार से शरीर-निर्वाह करने वाला ; (ठा ५, १)। °हार वि [°हार] लूखा-सूखा आहार करने वाला ; (ठा ५, १)।

पंति स्त्री [पङ्क्ति] १ पंक्ति, श्रेणी ; (हे १, २५ ; कुमा ; कप्प)। २ सेना-विशेष, जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पाँच पदाती हों ऐसी सेना ; (पउम ५६, ४)।

पंति स्त्री [दे] वेणी, केश-रचना ; (दे ६, २)।

पंतिय स्त्रीन [पङ्क्ति] पंक्ति, श्रेणी ; " नगाणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा " (आचा २, ३, ३, २)। स्त्री—" पंतियाओ " (अणु)।

पंथ पुं [पन्थ, पथिन्] मार्ग, रास्ता ; " पंथं किर देसित्ता " (हे १, ८८), " पंथम्मि पहपरिब्भट्ठे " (सुपा ५५० ; हेका ५४ ; प्रासू १७३)।

पंथ पुं [पान्थ] पथिक, मुसाफिर ; (हे १, ३० ; अच्चु ७४)। °कुट्टण न [°कुट्टन] मार-पीट कर मुसाफिरों को लूटना ; (णाया १, १८)। °कोट्ट पुं [°कुट्ट] वही अर्थ ; (विपा १, १—पत्र ११)। °कोट्टि स्त्री [°कुट्टि] वही अर्थ ; "से चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चति " (णाया १, १८)।

पंथग पुं [पान्थक] एक जैन मुनि ; (णाया १, ५ ; धम्म ६ टी)।

पंथाण देखो **पंथ**=पन्थ, पथिन् ; " पंथभाणे पंथाणंभाणे " (आउ ११)।

पंथिअ पुं [पन्थिक, पथिक] मुसाफिर, पान्थ ; " पंथिअ गां एत्थ संथर " (काप्र १५८ ; महा ; कुमा ; णाया १, ८ ; वज्जा ६० ; १५८)।

पंथुच्छुहणी स्त्री [दे] श्वशुर-गृह से पहली वार आनीत स्त्री ; (दे ६, ३५)।

पंपुअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा ; (दे ६, १२)।

पंफुल्ल वि [प्रफुल्ल] विकसित ; (पिंग)।

पंफुल्लिअ वि [दे] गवेषित, जिसकी खोज की गई हो वह ; (दे ६, १७)।

पंस सक [पांसय्] मलिन करना। पंसेई ; (विसे ३०५२)।

पंसण वि [पांसन] कलङ्कित करने वाला, दूषण लगाने वाला ; (हे १, ७० ; सुपा ३४५)।

पंसु पुं [पांसु, पांशु] धूली, रज, रेणु ; (हे १, २६; पाअ ; आचा)। °कीलिय, °क्कीलिय वि [क्रीडित] जिसके साथ बचपन में पांशु-क्रीडा की गई हो वह, बचपन का दोस्त ; (महा ; सण)। °पिसाय पुंस्त्री [°पिशाच] जो रेणु-लिप्त होने के कारण पिशाच के तुल्य मालूम पड़ता हो वह ; (उत्त १२)। °मूलिय पुं [°मूलिक] विद्याधर, मनुष्य-विशेष ; (राज)।

पंसु पुं [पशु] कुठार ; (हे १, २६)।

पंसु देखो **पसु** ; (षड्)।

पंसुल पुं [दे] १ कोकिल, कोयल ; २ जार, उपपति ; (दे ६, ६६)। ३ वि. रुद्ध, रोका हुआ ; (षड्)।

पंसुल पुं [पांसुल] १ पुंश्चल, परस्त्री-लम्पट ; (गा ५१० ; ५६६)। २ वि. धूलि-युक्त ; (गउड)।

पंसुला स्त्री [पांसुला] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (कुमा)।

पंसुलिअ वि [पांसुलित] धूलि-युक्त किया हुआ ; " पंसुलिअकरेणा " (गउड)।

पंसुलिआ स्त्री [दे. पांशुलिका] पार्श्व की हड्डी ; (पत्र २५३)।

पंसुली स्त्री [पांसुली] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (पाअ ; सुर १५, २ ; हे २, १७६)।

पकंथ देखो **पगंथ** ; (आचा १, ६, २)।

पकंथग पुं [प्रकन्थक] अश्व-विशेष ; (ठा ४, ३—पत्र २४८)।

पकंप पुं [प्रकम्प] कम्प, काँपना ; (आव ४)।

पकंपण न [प्रकम्पन] ऊपर देखो ; (सुपा ६५१)।

पकंपिअ वि [प्रकम्पित] प्रकम्प-युक्त, काँपा हुआ ; (आव २)।

पकंपिर वि [प्रकम्पितृ] काँपने वाला ; (उप पृ १३२)। स्त्री—°री ; (रंभा)।

पकड्ढ देखो **पगड्ढ**। कवकृ—**पकड्ढिज्जमाण** ; (औप)।

पकड्ढ वि [प्रकृष्ट] १ प्रकर्ष-युक्त ; २ खींचा हुआ ; (औप)।

पकड्ढण न [प्रकर्षण] आकर्षण, खींचाव; (निचू २०)।

पकत्थ सक [प्र+कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसा करना। पकत्थइ ; (सूअ १, ४, १, १६ ; पि ५४३)।

पकप्प अक [**प्र + क्लृप्**] १ काम में आना, उपयोग में आना। २ काटना, छेदना। कृ—**पकप्प** ; (ठा ५, १—पत्र ३००)। देखो **पगप्प**=प्र + क्लृप्।

पकप्प सक [**प्र + कल्पय्**] १ करना, बनाना। २ संकल्प करना। "वासं वयं वित्ति पकप्पयामो" (सूम २, ६, ५२)।

पकप्प पुं [**प्रकल्प**] १ उत्कृष्ट आचार, उत्तम आचरण ; (ठा ४, ३)। २ अपवाद, बाधक नियम ; (उप ६७७ टी ; निचू १)। ३ अध्ययन-विशेष 'आचारांग' सूत्र का एक अध्ययन ; ४ व्यवस्थापन ; "अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे" (सम २८)। ५ कल्पना ; ६ प्ररूपणा ; ७ विच्छेद, प्रकृष्ट छेदन ; (निचू १)। ८ जैन साधुओं का एक प्रकार का आचार, स्थविर-कल्प ; (पंचभा)। ९ एक महाग्रह, ज्यौतिष देव-विशेष ; (सुज्ज २०)। °**गंथ** पुं [°**ग्रन्थ**] एक जैन प्राचीन ग्रन्थ, 'निशीथ' सूत्र ; (जीव १)। °**जइ** पुं [°**यति**] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार साधु ; "धम्मो जिणपन्नत्तो पकप्पजइणा कहेयव्वो" (धर्म १)। °**धर** वि [°**धर**] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार ; (निचू २०)। देखो **पगप्प**=प्रकल्प।

पकप्पणा स्त्री [**प्रकल्पना**] प्ररूपणा, व्याख्या ; "परूवण त्ति वा पकप्पण त्ति वा एगट्ठा" (निचू १)।

पकप्पिअ वि [**प्रकल्पित**] १ संकल्पित ; (द्र २)। २ निर्मित ; (महा)। ३ न. पूर्वोपार्जित द्रव्य ; "ण णो अत्थि पकप्पियं" (सूम १, ३, ३, ४)। देखो **पगप्पिअ**।

पकय वि [**प्रकृत**] प्रवृत्त, कार्य में लगा हुआ ; (उप ६२०)।

पकर सक [**प्र + कृ**] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकरेइ, पकरेंति, पकरेंति ; (भग ; पि ५०६)। वकृ—**पकरेमाण** ; (भग)। संकृ—**पकरित्ता** ; (भग)।

पकर देखो **पयर**=प्रकर ; (नाट—वेणी ७२)।

पकरणया स्त्री [**प्रकरणता**] करण, कृति ; (भग)।

पकहिअ वि [**प्रकथित**] जिसने कहने का प्रारम्भ किया हो वह ; (उप १०३१ टी ; वसु)।

पकाम न [**प्रकाम**] १ अत्यर्थ, अत्यन्त ; (गाया १, १ ; महा ; नाट—शकु २७)। २ पुं. प्रकृष्ट अभिलाष ; (भग ७, ७)।

पकाव (अप) सक [**पच्**] पकाना। पकावउ ; (पिंग ; पि ४५४)।

पकास देखो **पयास**=प्रकाश ; (पिंग)।

पकिट्ठ देखो **पगिट्ठ** ; (राज)।

पकिण्ण वि [**प्रकीर्ण**] १ उप्त, बोया हुआ ; २ दत्त, दिया हुआ ; "जहिं पकिण्णा (न्ना) विरुहंति पुण्णा" (उत्त १२, १३)। देखो **पइण्ण**=प्रकीर्ण।

पकिदि (शौ) देखो **पइइ**=प्रकृति ; (स्वप्न ६० ; अभि ६५)।

पकिन्न देखो **पकिण्ण** ; (उत्त १२, १३)।

पकुण देखो **पकर**=प्र + कृ। पकुणइ ; (कम्म १, ६०)।

पकुप्प अक [**प्र + कुप्**] क्रोध करना। पकुप्पंति ; (महानि ४)।

पकुप्पित (चूपै) वि [**प्रकुपित**] क्रुद्ध, कुपित ; (हे ४, ३२६)।

पकुविअ ऊपर देखो ; (महानि ४)।

पकुव्व सक [**प्र + कृ, प्र + कुर्व्**] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकुव्वइ ; (पि ५०८)। वकृ—**पकुव्वमाण** ; (सुर १६, २४ ; पि ५०८)।

पकुव्वि वि [**प्रकारिन्, प्रकुर्विन्**] १ करने वाला, कर्ता। २ पुं. प्रायश्चित्त देकर शुद्धि कराने में समर्थ गुरु ; (द्र ४६ ; ठा ८ ; पुप्फ ३५६)।

पकूविअ वि [**प्रकूजित**] ऊँचे स्वर से चिल्लाया हुआ ; (उप पृ ३३२)।

पकोट्ठ देखो **पओट्ठ** ; (राज)।

पकोव पुं [**प्रकोप**] गुस्सा, क्रोध ; (श्रा १४)।

पक्क वि [**पक्व**] पका हुआ ; (हे १, ४७ ; २, ७९ ; पाअ)।

पक्क वि [**दे**] १ दृप्त, गर्वित ; २ समर्थ, पक्का, पहुँचा हुआ ; (दे ६, ६४ ; पाअ)।

पक्कंत वि [**प्रक्रान्त**] प्रस्तुत, प्रकृत ; (कुमा २७)।

पक्कग्गाह पुं [**दे**] १ मकर, मगरमच्छ ; (दे ६, २३)। २ पानी में बसने वाला सिंहाकार जल-जन्तु ; (से ५, ५७)।

पक्कण वि [**दे**] १ अ-सहन, अ-सहिष्णु ; २ समर्थ, शक्त ; (दे ६, ६६) । ३ पुं. चाण्डाल ; (से ६३) । ४ एक अनार्य देश; ५ पुंस्त्री. अनार्य देश-विशेष में रहने वाली एक मनुष्य-जाति ; (ओप ; राज); स्त्री—°णी ; (णाया १, १ ; ओप ; इक) । ६ पुं. एक नीच जाति का घर, शबर-गृह ; (पंग ५२) । °उल न [°कुल] १ चाण्डाल का घर ; (वृह ३) । २ एक गर्हित कुल ; "पक्कणउले वसंतो सउणी इयरोवि गरहिओ होइ" (आव ३) ।

पक्कणि वि [**दे**] १ अतिशय शोभमान, खूब शोभता हुआ ; २ भग्न, भाँगा हुआ ; ३ प्रियंवद, प्रिय-भाषी ; (दे ६, ६५) ।

पक्कणिय पुंस्त्री [**दे**] एक अनार्य देश में रहने वाली मनुष्य-जाति ; (पगह १, १—पत्र १४ ; इक) ।

पक्कन्न न [**पक्वान्न**] केवल घी में बनी हुई वस्तु, मिठाई आदि ; (सुपा ३८७) ।

पक्कम सक [**प्र + क्रम्**] प्रकर्ष से समर्थ होना । पक्कमइ ; (भग १५—पत्र ६७८) ।

पक्कम पुं [**प्रक्रम**] प्रस्ताव, प्रसंग ; (सुपा ३७४) ।

पक्कल वि [**दे**] १ समर्थ, शक्त ; (हे २, १७४ ; पाअ ; सुर ११, १०४ ; वज्जा ३४) । २ दर्प-युक्त, गर्वित ; (सुर ११, १०४ ; गा ११८) । ३ प्रौढ ; "चत्तारि पक्कल-बइल्ला" (गा ८१२ ; पि ४३६) ।

पक्कस देखो **वक्कस** ; (आचा) ।

पक्कसावअ पुं [**दे**] १ शरभ ; २ व्याघ्र ; (दे ६, ७५) ।

पक्काइय वि [**पक्वीकृत**] पकाया हुआ ; "पक्काइयमाउलिंगसारिच्छा" (वज्जा ६२) ।

पक्किर सक [**प्र + कॄ**] फेंकना । वकृ—"छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं **पक्किरमाणा**" (णाया १, २) ।

पक्कीलिय वि [**प्रक्रीडित**] जिसने क्रीड़ा का प्रारम्भ किया हो वह ; (णाया १, १ ; कप्प) ।

पक्केल्लय वि [**पक्व**] पका हुआ ; (उवा) ।

पक्ख पुं [**पक्ष**] १ पाख, पखवारा, आधा महीना, पन्द्रह दिन-रात ; (ठा २, ४—पत्र ८६ ; कुमा) । २ शुक्ल और कृष्ण पक्ष, उजेला और अँधेरा पाख ; (जीव २ ; हे २, १०६) । ३ पार्श्व, पाँजर, कन्धा के नीचे का भाग ; ४ पक्षियों का अवयव-विशेष, पंख, पर, पतत्र ; (कुमा) । ५ तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य वाली वस्तु ; (विसे २८२४) । ६ तरफ, ओर ; ७ जत्था, दल, टोली ; ८ मित्र, सखा ; ९ शरीर का आधा भाग ; १० तरफदार ; ११ तीर का पंख ; (हे २, १४७) । १२ तरफदारी ; (वव १) । °ग वि [°ग] पक्ष-गामी, पक्ष-पर्यन्त स्थायी ; (कम्म १, १८) । °पिंड पुंन [°पिण्ड] आसन-विशेष—१ जानु और जाँघ पर वस्त्र बाँध कर बैठना ; २ दोनों हाथों से शरीर का बन्धन कर बैठना ; (उत १, १६) । °य पुं [°क] पंखा, तालवृन्त ; (कप्प) । °वंत वि [°वत्] तरफदारी वाला ; (वव १) । °वाइल्ल त्रि [°पातिन्] पक्षपात करने वाला, तरफदारी करने वाला ; (उप ७२८ टी ; धम्म १ टी) । °वाद पुं [°पात] तरफदारी ; (उप ६७० ; स्वप्न ४५) । °वादि (शौ) देखो °वाइल्ल ; (नाट—विक्र २ ; मालती ६५) । °वाय देखो °वाद ; (सुपा २०६ ; ३६३) । °वाय पुं [°वाद] पक्ष-संबन्धी विवाद ; (उप पृ ३१२) । °वाह पुं [°वाह] वेदिका का एक देश-विशेष ; (जं १) । °विडिअ वि [°पतित] पक्षपाती ; (हे ४, ४०१) । °वाइया स्त्री [°वापिका] होम-विशेष ; (स ७५७) ।

पक्खंत न [**पक्षान्त**] अन्यतर इन्द्रिय-जात ; "अन्नयरं इंदियजायं पक्खंतं भगणइ" (निचू ६) ।

पक्खंतर न [**पक्षान्तर**] अन्य पक्ष, भिन्न पक्ष, दूसरा पक्ष ; (नाट—महावी २५) ।

पक्खंद सक [**प्र + स्कन्द्**] १ आक्रमण करना । २ दौड़ कर गिरना । ३ अध्यवसाय करना । "पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं" (राज) । "अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा" (उत्त १२, २७) ।

पक्खंदण न [**प्रस्कन्दन**] १ आक्रमण ; २ अध्यवसाय । ३ दौड़ कर गिरना ; (निचू ११) ।

पक्खज्जमाण वि [**प्रखाद्यमान**] जो खाया जाता हो वह ; (सूअ १, ५, २) ।

पक्खडिअ वि [**दे**] प्रस्फुरित, विजृम्भित, समुत्पन्न ; "पक्खडिए सिहिपडिल्थिरे विरहे" (दे ६, २०) ।

पक्खर सक [**सं + नाहय्**] संनद्ध करना, अश्व को कवच से सज्जित करना । पक्खरेह ; (सुपा २८८) । संकृ—**पक्खरिअ** ; (पिंग) ।

पक्खर न [**दे**] पाखर, अश्व-संनाह, घोड़े का कवच; (कुप्र ४४६; पिंग)।

पक्खरा स्त्री [**दे**] पाखर, अश्व-संनाह; (दे ६, १०)। "ओसारिअपक्खरे" (विपा १, २)।

पक्खरिअ वि [**संनद्ध**] कवचित, संनद्ध, कवच से सज्जित, (अश्व); (सुपा ५०२; कुप्र १२०; भवि)।

पक्खल अक [**प्र+स्खल्**] गिरना, पड़ना, स्खलित होना। पक्खलइ; (कस)। वकृ— **पक्खलंत, पक्खलमाण**; (दस ५, १; पि ३०६; नाट—मृच्छ १७; बृह ६)।

पक्खाउज्ज न [**पक्षातोद्य**] पखाउज, पखावज, एक प्रकार का बाजा; (कप्प)।

पक्खाय वि [**प्रख्यात**] प्रसिद्ध, विश्रुत; (प्राकृ)।

पक्खारिण पुं [**प्रक्षारिण**] १ अनार्य-देश विशेष; २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी मनुष्य; स्त्री— °**णी**; (राय)।

पक्खाल सक [**प्र+क्षालय्**] पखारना, शुद्ध करना, धोना। कवकृ—**पक्खालिज्जमाण**; (णाया १, ५)। संकृ— **पक्खालिअ, पक्खालिऊण**; (नाट—चैत ४०; महा)।

पक्खालण न [**प्रक्षालन**] पखारना, धोना; (स ५२; औप)।

पक्खालिअ वि [**प्रक्षालित**] पखारा हुआ, धोया हुआ; (औप; भवि)।

पक्खासण न [**पक्ष्यासन**] आसन-विशेष, जिसके नीचे अनेक प्रकार के पक्षिओं का चिह्न हो ऐसा आसन; (जीव ३)।

पक्खि पुंस्त्री [**पक्षिन्**] पाखी, पक्षी; (ठा ४, ४; आचा; सुपा ५६२)। स्त्री— °**णी**; (श्रा १४)। °**बिराल** पुंस्त्री [°**बिराल**] पक्षि-विशेष; (भग १३, ६)। स्त्री— °**ली**; (जीव १)। °**राय** पुं [°**राज**] गरुड़; (सुपा २१०)। नीचे देखो।

पक्खिअ पुंस्त्री [**पक्षिक**] १ ऊपर देखो; (श्रा २८)। २ वि. पक्षपाती, तरफदारी करने वाला; "तप्पक्खिओ पुणो अण्णो" (श्रा १२)।

पक्खिअ वि [**पाक्षिक**] १ पाख में होने वाला; २ पक्ष से संबन्ध रखने वाला, अर्ध मास-संबन्धी; (कप्प; धर्म २)। ३ न. पर्व-विशेष, चतुर्दशी; (लहुअ १६; द्र ४५)। °**अपक्खिअ** पुं [°**अपक्षिक**] नपुंसक-विशेष, जिसको एक पाख में तीव्र विषयाभिलाष होता हो और एक पक्ष में अल्प, ऐसा नपुंसक; (पुप्फ १२७)।

पक्खिकायण न [**पाक्षिकायन**] गोत्र-विशेष जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है; (ठा ७)।

पक्खिण देखो **पक्खि**; "जह पक्खिणाण गरुडो" (पउम १४, १०४)।

पक्खिणी देखो **पक्खि**।

पक्खित्त वि [**प्रक्षिप्त**] फेंका हुआ; (महा; पि १८१)।

पक्खिप्प
पक्खिप्पमाण } देखो **पक्खिव**।

पक्खिव सक [**प्र+क्षिप्**] १ फेंकना, फेंक देना। २ छोड़ना, त्यागना। ३ डालना। पक्खिवइ; (महा; कप्प)। पक्खिवह, पक्खिवेज्जा; (आचा २, ३, २, ३)। कवकृ — **पक्खिप्पमाण**; (णाया १, ८ — पत्र १२६; १४७)। संकृ—**पक्खिविऊण, पक्खिप्प**; (महा; सूअ १, ५, १; पि ३१६) कृ—**पक्खिवेयव्व**; (उप ६४८ टी)। प्रयो—वकृ—**पक्खिवावेमाण**; (णाया १, १२)।

पक्खीण वि [**प्रक्षीण**] अत्यन्त क्षीण; "अहं पक्खीणविभवो" (महा)।

पक्खुडिअ वि [**प्रखण्डित**] खण्डित, अ-संपूर्ण; (सुपा ११६)।

पक्खुब्भ अक [**प्र+क्षुभ्**] १ क्षोभ पाना; २ वृद्ध होना, बढ़ना। वकृ—**पक्खुब्भंत**; (से २, २४)।

पक्खुब्भंत देखो **पक्खोभ**।

पक्खुभिय वि [**प्रक्षुभित**] क्षोभ-प्राप्त; प्रक्षुब्ध; (औप)।

पक्खेव
पक्खेवग } पुं [**प्रक्षेप, °क**] १ क्षेपण, फेंकना; "बहिया पोग्गलपक्खेवे" (उवा)। २ पूर्ति करने वाला द्रव्य, पूर्ति के लिये पीछे से डाली जाती वस्तु; "अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ" (णाया १, १५— पत्र १६३)।

पक्खेवण न [**प्रक्षेपण**] क्षेपण, प्रक्षेप; (औप)।

पक्खेवय देखो **पक्खेवग**; (बृह १)।

पक्खोड सक [**वि+कोशय्**] १ खोलना। २ फैलाना। पक्खोडइ; (हे ४, ४२)। संकृ—**पक्खोडिऊण**; (सुपा ३३८)।

पक्खोड सक [**शद्**] १ कँपाना; २ झाड़ कर गिराना। पक्खोडइ; (हे ४, १३०)। संकृ—**पक्खोडिय**; (उप ५८४)।

पक्खोड सक [**प्र + छादय्**] ढकना, आच्छादन करना। संकृ—**पक्खोडिय**; (उप ६=४)।
पक्खोडण न [**शदन**] भ्रंस्न, कँपाना; (कुमा)।
पक्खोडिअ वि [**शदित**] निर्झाटित, भाड़ कर गिराया हुआ; (दे ६, २७; पाअ)।
पक्खोडिय देखो **पक्खोड** = शद्, प्र + छादय्।
पक्खोभ सक [**प्र + क्षोभय्**] क्षुब्ध करना, चोभ उत्पन्न कर हिला देना। कवकृ—**पक्खुब्भंत**; (से २, २४)।
पक्खोलण न [**शदन**] १ स्वलित होने वाला; २ रुष्ट होने वाला; (राज)।
पखल वि [**प्रखर**] प्रचण्ड, तीव्र; (प्राप्र)।
पगइ स्त्री [**प्रकृति**] १ प्रकृति, स्वभाव; (भग; कम्म १, २; सुर १४, ६६; सुपा ११०)। २ प्रकृत अर्थ, प्रस्तुत अर्थ; "पडिसेहदुगं पगइं गमेइ" (विसे २५०२)। ३ प्राकृत लोक, साधारण जन-समूह; "दिन्नमुद्धारे बहुदव्वं पगईणं" (सुपा ५६७)। ४ कुम्भकार आदि अठारह मनुष्य-जातियाँ: "अट्ठारसपगइब्भंतरगओ को सो न जो। एइ" (आक १२)। ५ कर्मों का भेद; (सम ६)। ६ सत्व, रज और तम की साम्यावस्था; ७ बलदेव के एक पुत्र का नाम; (राज)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] कर्म-पुद्गलों में भिन्न भिन्न शक्तिओं का पैदा होना; (कम्म १, २)। देखो **पगडि**।
पगंठ पुं [**प्रकण्ठ**] १ पीठ-विशेष; २ अन्त का अवनत प्रदेश; (जीव ३)।
पगंथ सक [**प्र + कथय्**] निन्दा करना। "अलियं पगं-(कं)थे अदुवा पगं(कं)थे" (आचा)।
पगड वि [**प्रकट**] व्यक्त, खुला; (पि २१६)
पगड वि [**प्रकृत**] प्रविहित, विनिर्मित; (उत्त १३)।
पगडण न [**प्रकटन**] प्रकाश करना, खुला करना; (णंदि)।
पगडि स्त्री [**प्रकृति**] १ भेद, प्रकार; (भग)। २—देखो **पगइ**; (सम ४६; सुर १४, ६८)।
पगडीकय वि [**प्रकटीकृत**] व्यक्त किया हुआ; (सुपा १८१)।
पगड्ढ सक [**प्र + कृष्**] खींचना। कवकृ—**पगड्ढिज्जमाण**; (विपा १, १)।
पगप्प देखो **पकप्प** = प्र + कल्पय्। संकृ—**पगप्पएत्ता**; (सूअ २, ६, ३७)।
पगप्प देखो **पकप्प** = प्र + कल्प्; (सूअ १, ८, ५)।
पगप्प पुं [**प्रकल्प**] १ उत्पन्न होने वाला, प्रादुर्भूत होने वाला; "बहुगुणप्पगप्पाइं कुज्जा अत्तसमाहिए" (सूअ १, ३, ३, १६)। देखो **पकप्प**=प्रकल्प; (आचा)।
पगप्पिअ वि [**प्रकल्पित**] प्ररूपित, कथित; "गा उ एयाहिं दिट्ठीहिं पुव्वमासि पगप्पियं" (सूअ १, ३, ३,१६)। देखो **पकप्पिअ**।
पगप्पित्तु वि [**प्रकल्पयितृ, प्रकर्तयितृ**] काटने वाला, कतरने वाला; "हंता छेत्ता पगिब्भ, इत्ति लोगा आय-सायाणुगामिणो" (सूअ १, ८, ५)।
पगब्भ अक [**प्र + गल्भ्**] १ धृष्टता करना, धृष्ट होना; २ समर्थ होना। पगब्भइ, पगब्भई; (आचा; सूअ १, २, २, २१; १, २, ३, १०; उत्त ५, ७)।
पगब्भ वि [**प्रगल्भ**] धृष्ट, धीठ; (पउम ३३, ६६)। २ समर्थ; (उप २६४ टी)।
पगब्भ न [**प्रागल्भ्य**] धृष्टता, धीठाई; "पगब्भि पाणे बहुणांतिवाती" (सूअ १, ७, ८)।
पगब्भा स्त्री [**प्रगल्भा**] भगवान् पार्श्वनाथ की एक शिष्या; (आवम)।
पगब्भिअ वि [**प्रगल्भित**] धृष्टता-युक्त; (सूअ १, १, १, १३; १, २, ३, ४)।
पगय वि [**प्रकृत**] प्रस्तुत, अधिकृत; (विसे ८३३; उप ४७६)।
पगय वि [**प्रगत**] १ प्राप्त; (राज)। २ जिसने गमन करने का प्रारम्भ किया हो वह; "मुणिणोवि जहाभि-मयं पगया पगएण कज्जेण" (सुपा २३५)। ३ न. प्रस्ताव, अधिकार; (सूअ १, ११; १५)।
पगय न [**दे**] पग, पाँव, पैर; "एत्थंतरम्मि लग्गो चंड-मारुओ। तेण भग्गो तुरयपगयमग्गो" (महा)।
पगर पुं [**प्रकर**] समूह, राशि; (सुपा ६५५)।
पगरण न [**प्रकरण**] १ अधिकार, प्रस्ताव; २ ग्रन्थ-खण्ड-विशेष, ग्रन्थांश-विशेष; (विसे १११५)। ३ किसी एक विषय को लेकर बनाया हुआ छोटा ग्रन्थ; (उव)।
पगरिस पुं [**प्रकर्ष**] १ उत्कर्ष, श्रेष्ठता; (सुपा १०६)। २ आधिक्य, अतिशय; (सुर ४, १६६)।
पगरिसण न [**प्रकर्षण**] ऊपर देखो; (यति १६)।
पगल अक [**प्र + गल्**] झरना, टपकना। वकृ—**पगलंत**; (विपा १, ७; महा)।

पगहिय वि [**प्रगृहीत**] ग्रहण किया हुआ, उपात्त ; (सुर ३, १६९) ।

पगाइय वि [**प्रगीत**] जिसने गाने का प्रारम्भ किया हो वह ; " पगाइयाइं मंगलमंतेउराइं " (स ७३६) ।

पगाढ वि [**प्रगाढ**] अत्यन्त गाढ ; (विपा १, १ ; सुपा ५३०) ।

पगाम देखो **पकाम** ; (आचा ; श्रा १४ ; सुर ३, ८७ ; कुप्र ३१५) ।

पगार पुं [**प्रकार**] १ भेद ; (आचू १) । २ रीति ; " एएण पगारेण सव्वं दव्वं दवाविओ " (महा) । ३ आदि, वगैरः, प्रभृति ; (सूअ १, १३) ।

पगास देखो **पयास**=प्र+काशय् । वकृ—**पगासेंत** ; (महा) ।

पगास पुं [**प्रकाश**] १ प्रभा, दीप्ति, चमक ; (णाया १, १), " एगं महं नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं असिं सुरधारं गहाय " (उवा) । २ प्रसिद्धि, ख्याति ; (सूअ १, ६) । ३ आविर्भाव, प्रादुर्भाव ; ४ उद्योत, आतप ; (राज) । ५ क्रोध, गुस्सा ; " छन्नं च पसंस णो करे न य उक्कोस पगास माहणे " (सूअ १, २, २६) । ६ वि प्रकट, व्यक्त ; (निचू १) ।

पगासग देखो **पगासय** ; (राज) ।

पगासण देखो **पयासण** ; (औप) ।

पगासणया स्त्री [**प्रकाशनता**] प्रकाश, आलोक ; (ओघ ५५०) ।

पगासय वि [**प्रकाशक**] प्रकाश करने वाला ; (विसे ११५५) ।

पगासिय वि [**प्रकाशित**] उद्योतित, दीप्त ; "से सूरियस्स अब्भुग्गमेणं मग्गं वियाणाइ पगासियंसि " (सूअ १, १४, १३) ।

पगिज्झिय देखो **पगिण्ह** ; (कस ; औप ; पि ५९१) ।

पगिट्ठ वि [**प्रकृष्ट**] १ प्रधान, मुख्य ; (सुपा ७७) । २ उत्तम, श्रेष्ठ ; (कुप्र २० ; सुपा २२६) ।

पगिण्ह सक [**प्र+ग्रह्**] १ ग्रहण करना । २ उठाना । ३ धारण करना । ४ करना । संकृ—**पगिण्हित्ता, पगिण्हित्ताणं, पगिज्झिय** ; (पि ५८२ ; ५८३ ; औप ; आचा २,३,४, १; कस) ।

पगीअ वि [**प्रगीत**] १ गाया हुआ ; (पउम ३७, ४८) । २ जिसका गीत गाया गया हो वह ; (उप २११ टी) ।

पगुण देखो **पउण** ; (सूअ १, १, २) ।

पगुणीकर सक [**प्रगुणी+कृ**] प्रगुण करना, तय्यार करना, सज्ज करना । कवकृ—**पगुणीकीरंत**; (सुर १३, ३१) ।

पगे अ [**प्रगे**] सुबह, प्रभात काल ; (सुर ७,७८ ; कुप्र १५५) ।

पग्ग सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना । पग्गइ ; (षड्) ।

पग्गह पुं [**प्रग्रह**] १ उपधि, उपकरण ; (ओघ ६६६) । २ लगाम ; (से ६, २७ ; १२, ८६) । ३ पशुओं को नाक में लगाई जाती डोरी, नाक की रस्सी, नाथ ; ४ पशुओं को बाँधने की डोरी, रस्सी ; (णाया १, ३ ; उवा) । ५ नायक, मुखिया ; (ठा १) । ६ ग्रहण, उपादान ; ७ योजन, जोड़ना ; " अंजलिपग्गहेणं " (भग) ।

पग्गहिअ वि [**प्रगृहीत**] १ अभ्युपगत, सम्यक् स्वीकृत ; (अनु ३) । २ प्रकर्ष से गृहीत ; (भग ; औप) । ३ उठाया हुआ ; (धर्म ३ ; ठा ६) ।

पग्गहिय वि [**प्रग्रहिक**] ऊपर देखो ; (उवा) ।

पग्गिम } (अप) अ [**प्रायस्**] प्रायः, बहुधा ; (षड् ;
पग्गिम्व } हे ४, ४१४ ; कुमा) ।

पग्गेज्ज पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे ६, १५) ।

पघंस सक [**प्र+घृष्**] फिर फिर घिसना । पघंसेज्ज ; (निचू १७) । प्रयो—वकृ—**पघंसावंत** ; (निचू १७) ।

पघंसण न [**प्रघर्षण**] पुनः पुनः घर्षण ; " एक्कं दिणं आघंसणं, दिणे दिणे पघंसणं " (निचू ३) ।

पघोल अक [**प्र+घूर्णय्**] मिलना, संगत होना । वकृ— " कंठपघोलंतपंचमुग्गारो " (कुप्र २२६) ।

पघोस पुं [**प्रघोष**] उच्चैः शब्द-प्रकाश, उद्घोषणा ; (भवि) ।

पघोसिय वि [**प्रघोषित**] घोषित किया हुआ, उच्च स्वर से प्रकाशित किया हुआ ; (भवि) ।

पच सक [**पच्**] पकाना । पचइ, पचए, पचंति ; पचसि, पचसे, पचह, पचत्थ ; पचामि, पचामो, पचामु, पचाम, पचिमो, पचिमु ; (संक्षि ३० ; पि ४३६ ; ४५५) । कवकृ—**पच्चमाण** ; "नरए नेरइयाणं अहोनिसिं पच्चमाणाणं " (सुर १४, ४६ ; सुपा ३२८) ।

पच (अप) देखो **पंच** । °**आलीस,** °**तालीस** स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] १ संख्या-विशेष, पैंतालीस , ४५ ; २ पैंतालीस संख्या जिनकी हो वे ; (पि २७३ ; ४४५ ; पिंग) ।

पच्चंकमणग न [**प्रचङ्क्रमण, °क**] पाँव से चलना ; (औप)।

पच्चंकमावण न [**प्रचङ्क्रमण**] पाँव से संचारण, पाँव से चलाना ; (औप १०५ टि)।

पच्चंड देखो **पयंड** ; (वव ८)।

पचलिय देखो **पयलिय**=प्रचलित ; (औप)।

पचाल सक [**प्र + चालय्**] अतिशय चलाना, खूब चलाना। वकृ—**पचालेमाण** ; (भग १५, १)।

पचिय वि [**प्रचित**] समृद्ध ; (स्वप्न ६६)।

पचीस (अप) स्त्रीन [**पञ्चविंशति**] १ पचीस, संख्या-विशेष, बीस और पाँच, २५ ; २ जिनकी संख्या पचीस हो वे ; (पिंग ; पि २७३)।

पचुन्निय वि [**प्रचूर्णित**] चूर चूर किया हुआ ; (सुर २, ८७)।

पचेलिम वि [**पचेलिम**] पक्व, पका हुआ ; " सइमहुर-पचेलिमफलेहिं " (सुपा ८३)।

पचोइअ वि [**प्रचोदित**] प्रेरित ; (सूअ १, २, ३)।

पच्चइय वि [**प्रत्ययिक**] १ विश्वासी, विश्वास वाला ; (गाया १, १२)। २ ज्ञान वाला, प्रत्यय वाला ;—३ न. श्रुत-ज्ञान, आगम-ज्ञान ; (विसे २१३६)।

पच्चइय वि [**प्रत्ययित**] विश्वास वाला, विश्वस्त ; (महा ; सुर १६, १६६)।

पच्चइय वि [**प्रात्ययिक**] प्रत्यय से उत्पन्न, प्रतीति से संजात ; (ठा ३, ३—पत्र १५१)।

पच्चंग न [**प्रत्यङ्ग**] हर एक अवयव ; (गुण १५; कप्पू)।

पच्चंगिरा स्त्री [**प्रत्यङ्गिरा**] विद्या-देवी विशेष; " इसिविय-संतवयणा पभणइ पच्चंगिरा अहं विज्जा " (सुपा ३०६)।

पच्चंत पुं [**प्रत्यन्त**] १ अनार्य देश ; (प्रयौ १६)। २ वि. समीपस्थ देश, संनिकृष्ट प्रान्त भाग ; (सुर २, २००)।

पच्चंतिय वि [**प्रत्यन्तिक**] समीप-देश में स्थित ; (उप २११ टी)।

पच्चंतिय वि [**प्रात्यन्तिक**] प्रत्यन्त देश से आया हुआ ; (धम्म ६ टी.)।

पच्चक्ख न [**प्रत्यक्ष**] १ इन्द्रिय आदि की सहायता के विना ही उत्पन्न होने वाला ज्ञान ; (विसे ८६)। २ इन्द्रियों से उत्पन्न होने वाला ज्ञान ; (ठा ४, ३)। ३ वि. प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय ; " पच्चक्खाओ अम्ह, तुमं महप्प महासामी " (सुर ३, १५३)।

पच्चक्ख । सक [**प्रत्या + ख्या**] त्याग करना, त्याग **पच्चक्खा** । करने का नियम करना। पच्चक्खाइ ; (भग)। वकृ—**पच्चक्खमाण, पच्चक्खाएमाण** ; (पि ५६१; उवा)। संकृ—**पच्चक्खाइत्ता** ; (पि ५८२)। कृ—**पच्चक्खेय** ; (आव ६)।

पच्चक्खाण न [**प्रत्याख्यान**] १ परित्याग करने की प्रतिज्ञा ; (भग ; उवा)। २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, नववाँ पूर्व-ग्रन्थ ; (सम २६)। ३ सर्व सावद्य कर्मों से निवृत्ति ; (कम्म १, १७)। °**वरण** पुं [°**वरण**] कषाय-विशेष, सावद्य-विरति का प्रतिबन्धक क्रोध-आदि ; (कम्म १, १७)।

पच्चक्खाणि वि [**प्रत्याख्यानिन्**] त्याग की प्रतिज्ञा करने वाला ; (भग ६, ४)।

पच्चक्खाणी स्त्री [**प्रत्याख्यानी**] भाषा-विशेष, प्रतिषेध-वचन ; (भग १०, ३)।

पच्चक्खाय वि [**प्रत्याख्यात**] त्यक्त, छोड़ दिया हुआ; (णाया १, १ ; भग ; कप्प)।

पच्चक्खायय वि [**प्रत्याख्यायक**] त्याग करने वाला, " अपच्चक्खायए " (भग १४, ९)।

पच्चक्खाव सक [**प्रत्या + ख्यापय्**] त्याग कराना, किसी विषय का त्याग करने की प्रतिज्ञा कराना। वकृ—**पच्चक्खावित** ; (आव ६)।

पच्चक्खि वि [**प्रत्यक्षिन्**] प्रत्यक्ष ज्ञान वाला ; (वव १)।

पच्चक्खिय देखो **पच्चक्खाय** ; (सुपा ६२४)।

पच्चक्खीकर सक [**प्रत्यक्षी + कृ**] प्रत्यक्ष करना, साक्षात् करना। भवि—**पच्चक्खीकरिस्सं** ; (अभि १८८)।

पच्चक्खीकिद (शौ) वि [**प्रत्यक्षीकृत**] प्रत्यक्ष किया हुआ, साक्षात् जाना हुआ ; (पि ४९)।

पच्चक्खीभू अक [**प्रत्यक्षी + भू**] प्रत्यक्ष होना, साक्षात् होना। संकृ—**पच्चक्खीभूय** ; (आचम)।

पच्चक्खेय देखो **पच्चक्खा**।

पच्चग्ग वि [**प्रत्यग्र**] १ प्रधान, मुख्य ; (से २, ४)। २ श्रेष्ठ, सुन्दर ; (उप ५८६ टी ; सुर १०, १५२)। ३ नवीन, नया ; (पाअ)।

पच्चच्छिम देखो **पच्चत्थिम** ; (राज ; ठा २, ३—पत्र ७६)।

पच्चच्छिमा देखो **पच्चत्थिमा** ; (राज)।

पच्चच्छिमिल्ल वि [**पाश्चात्य**] पश्चिम दिशा में उत्पन्न, पश्चिम-दिशा-सम्बन्धी ; (सम ६६ ; पि ३६५)।

पच्चच्छिमुत्तरा देखो **पच्चत्थिमुत्तरा** ; (राज)।

पच्चड अक [**क्षर्**] झरना, टपकना। पच्चडइ; (हे ४, १७३)। वकृ—**पच्चडमाण** ; (कुमा)।

पच्चड्ड सक [**गम्**] जाना, गमन करना। पच्चड्डइ ; (हे ४, १६२)।

पच्चड्डिअ वि [**क्षरित**] झरा हुआ, टपका हुआ ; (हे २, १७४)।

पच्चड्डिया स्त्री [**दे. प्रत्यड्डिका**] मल्लों का एक प्रकार का करण ; (विसे ३३५७)।

पच्चणीय वि [**प्रत्यनीक**] विरोधी, प्रतिपक्षी, दुश्मन ; (उप १४६ टी ; सुपा ३०७)।

पच्चणुभव सक [**प्रत्यनु + भू**] अनुभव करना। वकृ—**पच्चणुभवमाण** ; (गाया १, २)।

पच्चत्त वि [**प्रत्यक्त**] जिसका त्याग करने का प्रारम्भ किया गया हो वह ; (उप ८२८)।

पच्चत्तर न [**दे**] चाटु, खुशामद ; (दे ६, २१)।

पच्चत्थरण न [**प्रत्यास्तरण**] बिछौना ; (पि २८५)। देखो **पल्हत्थरण**।

पच्चत्थि वि [**प्रत्यर्थिन्**] प्रतिपक्षी, विरोधी, दुश्मन ; (उप १०३१ टी ; पाअ ; कुप्र १४१)।

पच्चत्थिम वि [**पाश्चात्य, पश्चिम**] १ पश्चिम दिशा तरफ का ; २ न. पश्चिम दिशा ; "पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ, पासइ ; एवं दक्खिणेणं, पच्चत्थिमेणं" (उवा ; भग ; आचा ; ठा २, ३)।

पच्चत्थिमा स्त्री [**पश्चिमा**] पश्चिम दिशा; (ठा १०—पत्र ४७८ ; आचा)।

पच्चत्थिमिल्ल वि [**पाश्चात्य**] पश्चिम दिशा का ; (विपा १, ७ ; पि ५६५ ; ६०२)।

पच्चत्थिमुत्तरा स्त्री [**पश्चिमोत्तरा**] पश्चिमोत्तर दिशा, वायव्य कोण ; (ठा १०—पत्र ४७८)।

पच्चत्थुय वि [**प्रत्यास्तृत**] आच्छादित, ढका हुआ ; (पउम ६४, ६६; जीव ३)। २ बिछाया हुआ; (उप ६४८ टी)।

पच्चद्ध न [**पश्चार्ध**] पिछला आधा, उत्तरार्ध; (गउड)।

पच्चद्धचक्कवट्टि पुं [**प्रत्यर्धचक्रवर्तिन्**] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव ; (ती ३)।

पच्चप्पण न [**प्रत्यर्पण**] वापिस देना ; (विसे ३०५७)।

पच्चप्पिण सक [**प्रति + अर्पय्**] १ वापिस देना, लौटाना। २ सौंपे हुए कार्य को करके निवेदन करना। पच्चप्पिणइ ; (कप्प)। कर्म—पच्चप्पिणिज्जइ ; (पि ५५७)। वकृ—**पच्चप्पिणमाण** ; (ठा ५, २—पत्र ३११)। संकृ—**पच्चप्पिणित्ता** ; (पि ५५७)।

पच्चबलोक्क वि [**दे**] आसक्त-चित्त, तल्लीन-मनस्क ; (दे ६, ३४)।

पच्चब्भास पुं [**प्रत्याभास**] निगमन, प्रत्युच्चारण ; (विसे २६३२)।

पच्चभिआण देखो **पच्चभिजाण**। पच्चभिआणादि (शौ); (पि १७० ; ५१०)।

पच्चभिआणिद (शौ) देखो **पच्चभिजाणिअ**; (पि ५६५)।

पच्चभिजाण सक [**प्रत्यभि + ज्ञा**] पहिचानना, पहिचान लेना। पच्चभिजाणइ ; (महा)। वकृ—**पच्चभिजाणमाण** ; (गाया १, १६)। संकृ—**पच्चभिजाणिऊण**; (महा)।

पच्चभिजाणिअ वि [**प्रत्यभिज्ञात**] पहिचाना हुआ ; (स ३६०)।

पच्चभिणाण न [**प्रत्यभिज्ञान**] पहिचान; (स २१२ ; नाट—शकु ८४)।

पच्चभिन्नाय देखो **पच्चभिजाणिअ** ; (स १०० ; सुर ६, ७६ ; महा)।

पच्चमाण देखो **पच**=पच्।

पच्चय पुं [**प्रत्यय**] १ प्रतीति, ज्ञान, बोध ; (उव ; ठा १; विसे २१४०)। २ निर्णय, निश्चय ; (विसे २१३२)। ३ हेतु, कारण ; (ठा २, ४)। ४ शपथ, विश्वास उत्पन्न करने के लिए किया या कराया जाता तप्त-माष आदि का चर्वण वगैरः ; (विसे २१३१)। ५ ज्ञान का कारण ; ६ ज्ञान का विषय, ज्ञेय पदार्थ ; (राज)। ७ प्रत्यय-जनक, प्रतीति का उत्पादक ; (विसे २१३१ ; आवम)। ८ विश्वास, श्रद्धा ; ९ शब्द, आवाज ; १० छिद्र, विवर ; ११ आधार, आश्रय ; १२ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रकृति में लगता शब्द-विशेष ; (हे २, १३)।

पच्चल वि [**दे**] १ पक्का, समर्थ, पहुँचा हुआ ; (दे ६, ६९ ; सुपा ३४ ; सुर १, १४ ; कुप्र ६६ ; पाअ)। २ अ-सहन, अ-सहिष्णु ; (दे ६, ६९)।

पच्चलिउ } (अप) अ [**प्रत्युत**] वैपरीत्य, वरञ्च,
पच्चल्लिउ } वरन् ; (हे ४, ४२०)।

पच्चवणद (शौ) वि [प्रत्यवनत] नमा हुआ ; "ण मं कोवि पच्चवणदसिरोहरं उच्छुं विअ णिप्पण भंगं करेदि" (अभि २२४)।

पच्चवत्थय वि [प्रत्यवस्तृत] १ बिछाया हुआ ; २ आच्छादित ; (आवम)।

पच्चवत्थाण न [प्रत्यवस्थान] १ शङ्का-परिहार, समाधान ; (विसे १००७)। २ प्रतिवचन, खगडन ; (बृह १)।

पच्चवर न [दे] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं ; (दे ६, १५)।

पच्चवाय पुं [प्रत्यवाय] १ बाधा, विघ्न, व्याघात; (गाया १, ६ ; महा ; स २०६)। २ दोष, दूषण ; (पउम ६५, १२ ; अच्चु ७० ; ओघ २४)। ३ पाप ; "बहुपच्चवायभरिओ गिहवासो" (सुपा १६२)। ४ दुःख, पीड़ा ; (कुप्र ५५२)।

पच्चवेक्खिद (शौ) वि [प्रत्यवेक्षित] निरीक्षित ; (नाट—शकु १३०)।

पच्चह न [प्रत्यह] हररोज, प्रतिदिन ; (अभि ६०)।

पच्चहिजाण } देखो **पच्चभिजाण**। पच्चहिजाणेदि ; (पि
पच्चहियाण } ५१०)। पच्चहियाणइ ; (स ४२)। संकृ—**पच्चहियाणिऊण** ; (स ४४०)।

पच्चा स्त्री [दे] तृण-विशेष, बल्वज ; (ठा ५, ३)। °**पिच्चियय** न [दे] बल्वज तृण की कूटी हुई छाल का बना हुआ रजोहरण—जैन साधु का एक उपकरण ; (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

पच्चा देखो **पच्छा** ; (प्रयौ ३६ ; नाट—रत्ना ५)।

पच्चाअच्छ सक [प्रत्या + गम्] पीछे लौटना, वापिस आना। पच्चाअच्छइ ; (षड्)।

पच्चाअद (शौ) देखो **पच्चागय** ; (प्रयौ २५)।

पच्चाइक्ख देखो **पच्चक्ख**=प्रत्या + ख्या। पच्चाइक्खामि; (आचा २, १५, ५, १)। भवि—पच्चाइक्खिस्सामि; (पि ५२६)। वकृ—**पच्चाइक्खमाण** ; (पि ४६२)।

पच्चाएस पुंन [प्रत्यादेश] दृष्टान्त, निदर्शन, उदाहरण ; "पच्चाएसोव्व धम्मनिरयाणं" (स ३५ ; उव ; कुप्र ५०)। "पच्चाएसं दिट्ठंतं" (पाअ)। देखो **पच्चादेस**।

पच्चागय वि [प्रत्यागत] १ वापिस आया हुआ ; (गा ६३३ ; दे १, ३१ ; महा)। २ न. प्रत्यागमन ; (ठा ६—पत्र ३६५)।

पच्चाचक्ख सक [प्रत्या + चक्ष्] परित्याग करना। हेकृ—**पच्चाचक्खिदुं** (शौ) ; (पि ४६६ ; ५७४)।

पच्चाणयण न [प्रत्यानयन] वापिस ले आना; (मुद्रा २७०)।

पच्चाणि } सक [प्रत्या + णी] वापिस ले आना। कवकृ—
पच्चाणी } **पच्चाणिज्जंत** ; (से ११, १३५)।

पच्चाणीद (शौ) वि [प्रत्यानीत] वापिस लाया हुआ ; (पि ८१ ; नाट—विक्र १०)।

पच्चाथरण न [प्रत्यास्तरण] सामने होकर लड़ना; (राज)।

पच्चादिट्ठ वि [प्रत्यादिष्ट] निरस्त, निराकृत; (पि १४५; मृच्छ ६)।

पच्चादेस पुं [प्रत्यादेश] निराकरण ; (अभि ७२ ; १७८ ; नाट—विक्र ३)। देखो **पच्चाएस**।

पच्चापड अक [प्रत्या + पत्] वापिस आना, लौट कर आ पड़ना। वकृ—"अरगपडिहयपुणरविपच्चापडंतचंचलमिरिइकवयं ; (औप)।

पच्चामित्त पुंन [प्रत्यमित्र] अमित्र, दुश्मन ; (गाया १, २—पत्र ८७ ; औप)।

पच्चाय सक [प्रति + आयय्] १ प्रतीति कराना। २ विश्वास कराना। पच्चाअइ ; (गा ७१२)। पच्चाएमो ; (स ३२४)।

पच्चाय° देखो **पच्चाया**।

पच्चायण न [प्रत्यायन] ज्ञान कराना, प्रतीति-जनन ; (विसे २१३६)।

पच्चायय वि [प्रत्यायक] १ निर्णय-जनक ; २ विश्वास-जनक ; (विक्र ११३)।

पच्चाया अक [प्रत्या + जन्] उत्पन्न होना, जन्म लेना। पच्चायंति; (औप)। भवि—पच्चायाहिइ ; (औप; पि ५२७)।

पच्चाया अक [प्रत्या + या] ऊपर देखो। पच्चायंति ; (पि ५२७)।

पच्चायाइ स्त्री [प्रत्याजाति, प्रत्यायाति] उत्पत्ति, जन्म-ग्रहण ; (ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पच्चायाय वि [प्रत्यायात] उत्पन्न ; (भग)।

पच्चार सक [उपा + लम्भ्] उपालम्भ देना, उलहना देना पच्चारइ, पच्चारंति ; (हे ४, १५६ ; कुमा)।

पच्चारण न [उपालम्भन] प्रतिभेद ; (पाअ)।

पच्चारिय वि [उपालब्ध] जिसको उलहना दिया गया है वह ; (भवि)।

पच्चालिय वि [दे. प्रत्यार्दित] आर्द्र किया हुआ, गीला किया हुआ ; "पच्चालियां य से अहियियरं बाहसलिलेण दिट्ठी" (स ३०८)।

पच्चालीढ न [प्रत्यालीढ] वाम पांव को पीछे हटा कर और दक्षिण पाँव को आगे रख कर खड़े रहने वाले धानुष्क की स्थिति ; (वव १)।

पच्चावरण्ह पुं [प्रत्यपराह्ण] मध्याह्न के बाद का समय, तीसरा पहर ; (विपा १, ३ टि ; पि ३३०)।

पच्चासण्ण वि [प्रत्यासन्न] समीप में स्थित ; (विसे २६३१)।

पच्चासत्ति स्त्री [प्रत्यासत्ति] समीपता, सामीप्य ; (मुद्रा १६१)।

पच्चासन्न देखो **पच्चासण्ण** "निच्चं पच्चासन्नो परिसक्कइ सव्वओ मच्चू" (उप ६ टी)।

पच्चासा स्त्री [प्रत्याशा] १ आकाङ्क्षा, वाञ्छा, अभिलाषा ; २ निराशा के बाद की आशा ; (स ३६८)। ३ लोभ, लालच ; (उप पृ ७६)।

पच्चासि वि [प्रत्याशिन्] वान्त वस्तु का भक्षण करने वाला ; (आचा)।

पच्चिम देखो **पच्छिम** ; (पिंग ; पि ३०१)।

पच्चुअ (दे) देखो **पच्चुहिअ** ; (दे ६, २५)।

पच्चुअआर देखो **पच्चुवयार**; (चारु ३६; नाट—मृच्छ५७)।

पच्चुग्गच्छणया स्त्री [प्रत्युद्गमनता] अभिमुख गमन ; (भग १४, ३)।

पच्चुच्चार पुं [प्रत्युच्चार] अनुवाद, अनुभाषण ; (स १८४)।

पच्चुच्छुहणी स्त्री [दे] नूतन सुरा, ताजा दारू; (दे २,३५)।

पच्चुज्जीविअ वि [प्रत्युज्जीवित] पुनर्जीवित ; (गा ६३१ ; कुप्र ३१)।

पच्चुट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो सामने खड़ा हुआ हो वह ; (सुर १, १३४)।

पच्चुण्णम अक [प्रत्युद् + नम्] थोड़ा ऊँचा होना। पच्चुण्णमइ ; (कप्प)। संकृ—पच्चुण्णमित्ता ; (कप्प ; औप)।

पच्चुत्त वि [प्रत्युप्त] फिर से बोया हुआ ; (दे ७, ७७; गा ६१८)।

पच्चुत्तर सक [प्रत्यव + तॄ] नीचे आना। पच्चुत्तरइ ; (पिं ४४७)। संकृ—**पच्चुत्तरित्ता** ; (राज)।

पच्चुत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर ; (श्रा १२ ; सुपा २१ ; १०४)।

पच्चुत्थ वि [दे] प्रत्युप्त, फिर से बोया हुआ ; (दे ६,१३)।

पच्चुत्थय } वि [प्रत्यवस्तृत] आच्छादित ; (णाया १, **पच्चुत्थुय** } १—पत्र १३, २० ; कप्प)।

पच्चुद्धरिअ वि [दे] संमुखागत, सामने आया हुआ ; (दे ६, २४)।

पच्चुद्धार पुं [दे] संमुख आगमन ; (दे ६, २४)।

पच्चुप्पण्ण } वि [प्रत्युत्पन्न] वर्तमान-काल-संबन्धी ; **पच्चुप्पन्न** } (पि ५१६ ; भग ; णाया १, ८ ; सम्म १०३)। °**नय** पुं [°**नय**] वर्तमान वस्तु को ही सत्य मानने वाला पक्ष, निश्चय नय ; (विसे ३१६१)।

पच्चुप्फलिअ वि [प्रत्युत्फलित] वापिस आया हुआ ; (से १४, ८१)।

पच्चुरस न [प्रत्युरस] हृदय के सामने ; (राज)।

पच्चुवकार देखो **पच्चुवयार** ; (नाट—मृच्छ २५५)।

पच्चुवगच्छ सक [प्रत्युप + गम्] सामने जाना। पच्चुवगच्छइ ; (भग)।

पच्चुवगार } पुं [प्रत्युपकार] उपकार के बदले उपकार; **पच्चुवयार** } (ठा ४, ४ ; पउम ४६, ३६ ; स ४४० ; प्रारू)।

पच्चुवयारि वि [प्रत्युपकारिन्] प्रत्युपकार करने वाला ; (सुपा ५६५)।

पच्चुवेक्ख सक [प्रत्युप + ईक्ष्] निरीक्षण करना। पच्चुवेक्खइ ; (औप)। संकृ—**पच्चुवेक्खित्ता** ; (औप)।

पच्चुवेक्खिय वि [प्रत्युपेक्षित] अवलोकित, निरीक्षित ; (स ४४१)।

पच्चुहिअ वि [दे] प्रस्नुत, प्रक्षरित ; (दे ६, २५)।

पच्चूढ न [दे] थाल, थार, भोजन करने का पात्र, बड़ी थाली ; (दे ६, १२)।

पच्चूस [दे] देखो **पच्चूह**=(दे) ; "किइएहिं पयत्तेणवि छाइज्जइ कह णु पच्चूसो ?" (सुर ३, १३४)।

पच्चूस } पुं [प्रत्यूष] प्रभात काल ; (हे २, १४ ; **पच्चूह** } णाया १, १ ; गा ६०४)।

पच्चूह पुंन [प्रत्यूह] विघ्न, अन्तराय; (पाअ; कुप्र ५२)।

पच्चूह पुं [दे] सूर्य, रवि ; (दे ६, ५ ; गा ६०४ ; पाअ)।

पच्चेअ न [प्रत्येक] प्रत्येक, हर एक ; (षड्)।

पच्चेड न [**दे**] मुसल ; (दे ६, १४) ।

पच्चेल्लिउ (अप) देखो **पच्चल्लिउ** ; (भवि) ।

पच्चोगिल सक [**प्रत्यव + गिल्**] आस्वादन करना । वकृ—**पच्चोगिलमाण** ; (कस ४, १०) ।

पच्चोणामिणी स्त्री [**प्रत्यवनामिनी**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वृत्त आदि फल देने के लिए स्वयं नीचे नमते हैं ; (उप पृ १५५) ।

पच्चोणियत्त वि [**प्रत्यवनिवृत्त**] ऊँचा उछल कर नीचे गिरा हुआ ; (पगह १, ३ — पत्र ४५) ।

पच्चोणिवय अक [**प्रत्यवनि + पत्**] उछल कर नीचे गिरना । वकृ—**पच्चोणिवयंत** ; (औप) ।

पच्चोणी [**दे**] देखो **पच्चोवणी** ; (स २१४ ; ३०२ ; सुपा ६१ ; २२४ ; २७६) ।

पच्चोयड न [**दे**] १ तट के समीप का ऊँचा प्रदेश ; (जीव ३) । २ आच्छादित ; (राय) ।

पच्चोयर सक [**प्रत्यव + तृ**] नीचे उतरना । पच्चोयरइ ; (आचा २, १५, २८) । संकृ—**पच्चोयरित्ता** ; (आचा २, १५, २८) ।

पच्चोरुभ } सक [**प्रत्यव + रुह्**] नीचे उतरना । पच्चोरुभइ; (णाया १, १) । पच्चोरुहइ; (कप्प) । संकृ—**पच्चोरुहित्ता** ; (कप्प) ।
पच्चोरुह }

पच्चोवणिअ वि [**दे**] संमुख आया हुआ ; (दे ६, २४) ।

पच्चोवणी स्त्री [**दे**] संमुख आगमन ; (दे ६, २४) ।

पच्चोसक्क अक [**प्रत्यव + ष्वष्क्**] १ नीचे उतरना । २ पीछे हटना । पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कंति ; (उवा ; पि ३०२ ; भग) । संकृ—**पच्चोसक्कित्ता** ; (उवा ; भग) ।

पच्छ सक [**प्र + अर्थय्**] प्रार्थना करना । कवकृ—**पच्छिज्जमाण** ; (कप्प ; औप) ।

पच्छ वि [**पथ्य**] १ रोगी का हितकारी आहार ; (हे २, २१ ; प्राप्र ; कुमा ; स ७२४ ; सुपा ५७६) । २ हित-कारक, हितकारी ; "पच्छा वाया" (णाया १, ११ — पत्र १७१) ।

पच्छ न [**पश्चात्**] १ चरम, शेष ; (चंद १) । २ पीछे, पृष्ठ भाग ; ३ पश्चिम दिशा ; "पुव्वेण ससं पच्छेण वंजुला दाहिणेण वडविडवा" (वज्जा ६६) । **°ओ** अ [**तस्**] पीछे, पृष्ठ की ओर ; "हत्थी वेगेण पच्छओ लग्गो" (महा), "वहइ व महीअलभरिओ णोल्लेइ व पच्छओ धरेइ व पुरओ" (से १०, ३०), "तो चेडयाओ नवजणमाणविऊण पच्छओ बाहं वहं दंसइ" (सुपा २२१) । **°कम्म** न [**°कर्मन्**] १ अनन्तर का कर्म, बाद की क्रिया ; २ यतिओं की भिक्षा का एक दोष, दातृ-कर्तृक दान देने के बाद की पात्र को साफ करने आदि क्रिया ; (ओघ ४१६) । **°त्ताअ** पुं [**°ताप**] अनुताप ; (वज्जा १४२) । **°द्ध** न [**°अर्ध**] पीछला आधा, उत्तरार्ध ; (गउड ; महा) । **°वत्थुक्क** न [**°वास्तुक**] पीछला घर, घर का पीछला हिस्सा ; (पगह २, ४ — पत्र १३१) । **°याव** पुं [**°ताप**] पश्चात्ताप, अनुताप ; (आवम) । देखो **पच्छा=पश्चात्** ।

पच्छइ (अप) अ [**पश्चात्**] ऊपर देखो ; (हे ४,४२० ; पच्छए (षड् ; भवि) । **°ताव** पुं [**°ताप**] अनुताप, अनुशय ; (कुमा) ।

पच्छंद सक [**गम्**] जाना, गमन करना । पच्छंदइ ; (हे ४, १६२) ।

पच्छंदि वि [**गन्तृ**] गमन करने वाला ; (कुमा) ।

पच्छंभाग पुं [**पश्चाद्भाग**] १ दिवस का पीछला भाग ; (राज) । २ पुंन. नक्षत्र-विशेष, चन्द्र पृष्ठ देकर जिसका भोग करता है वह नक्षत्र ; (ठा ६) ।

पच्छण स्त्रीन [**प्रतक्षण**] त्वक् का बारीक विदारण, चाकू आदि से पतली छाल निकालना; "तच्छणेहि य पच्छणेहि य" (विपा १, १), "तच्छणाहि य पच्छणाहि य" (णाया १, १३) ।

पच्छण्ण वि [**प्रच्छन्न**] गुप्त, अप्रकट ; (गा १८३); **°पइ** पुं [**°पति**] जार, उपपति ; (सुम १, ४, १) ।

पच्छद देखो **पच्छय** ; (औप) ।

पच्छदण न [**प्रच्छदन**] आस्तरण, शय्या के ऊपर का आच्छादन-वस्त्र ; "सुप्पच्छयणाए सय्याए णिद्दं ण लभामि" (स्वप्न ६०) ।

पच्छन्न देखो **पच्छण्ण** ; (उव ; सुर २, १८४) ।

पच्छय पुं [**प्रच्छद**] वस्त्र-विशेष, दुपट्टा, पिछौरी ; (णाया १, १६) ।

पच्छलिउ (अप) देखो **पच्चलिउ** ; (षड्) ।

पच्छा अ [**पश्चात्**] १ अनन्तर, बाद, पीछे ; (सुर २, २४४; पाअ; प्रासू ५७), "पच्छा तस्स विवागे रुअंति कलुणं महादुक्खा" (प्रासू १२६) । २ परलोक, परजन्म ; "पच्छा कडुअविवागा" (राज) । ३ पीछला भाग, पृष्ठ ; ४ चरम, शेष ; (हे २, २१) । ५ पश्चिम दिशा ;

(गाया १, ११)। °उत्त वि [°आयुक्त] जिसका आयोजन पीछे से किया गया हो वह ; (कप्प)। °कड पुं [°कृत] साधुपन को छोड़कर फिर गृहस्थ बना हुआ ; (द ५० ; बृह १)। °कम्म देखो पच्छ-कम्म ; (पि ११२)। °णिवाइ देखो °निवाइ ; (राज)। °णुताव पुं [°अनुताप] पश्चात्ताप, अनुताप ; "पच्छाणुतावेण सुभज्झवसाणेण" (आवम)। °णुपुव्वी स्त्री [°आनुपूर्वी] उलटा क्रम ; (अणु ; कम्म ४, ४३)। °ताव पुं [°ताप] अनुताप ; (आव ४)। °ताविय वि [°तापिक] पश्चात्ताप वाला ; (पगह २, ३)। °निवाइ वि [°निपातिन्] १ पीछे से गिर जाने वाला ; २ चारित्र ग्रहण कर बाद में उससे च्युत होने वाला ; (आचा)। °भाग पुं [°भाग] पीछला हिस्सा ; (गाया १, १)। °मुह वि [°मुख] पराङ्मुख, जिसने मुँह पीछे की तरफ फेर लिया हो वह ; (श्रा १२)। °यव, °याव देखो °ताव ; (पउम ६५, ६६ ; सुर १५, १४५ ; सुपा १२१ ; महा)। °यावि वि [°तापिन्] पश्चात्ताप करने वाला ; (उप ७२८ टी)। °वाय पुं [°वात] पश्चिम दिशा का पवन ; २ पीछे का पवन ; (गाया १, ११)। °संखडि स्त्री [दे. संस्कृति] १ पीछला संस्कार ; २ मरण के उपलक्ष्य में ज्ञाति वगैरः प्रभूत मनुष्यों के लिए पकायी जाती रसोई ; (आचा २, १, ३, २)। °संथव पुं [°संस्तव] १ पीछला संबन्ध, स्त्री, पुत्री वगैरः का संबन्ध ; २ जैन मुनिओं के लिए भिक्षा का एक दोष, श्वशुर आदि पक्ष में अच्छी भिक्षा मिलने की लालच से पहले भिक्षार्थ जाना ; (ठा ३, ४)। °संथुय वि [°संस्तुत] पीछले संबन्ध से परिचित ; (आचा २, १, ४, ५)। °हुत्त वि [दे] पीछे की तरफ का ; "थलमत्थयम्मि पच्छाहुत्ताइं पयाइंतीए दट्ठूण" (सुपा २८१)।

पच्छा स्त्री [**पथ्या**] हर्रे, हरीतकी ; (हे २, २१)।

पच्छाअ सक [**प्र+छादय्**] १ ढकना। २ छिपाना। वकृ—**पच्छाअंत** ; (से ६, ४६ ; ११,६)। कृ—**पच्छाइज्ज** ; (वसु)।

पच्छाअ वि [**प्रच्छाय**] प्रचुर छाया वाला ; (अभि ३६)।

पच्छाइअ वि [**प्रच्छादित**] १ ढका हुआ, आच्छादित ; २ छिपाया हुआ ; (पाअ ; भवि)।

पच्छाइज्ज देखो **पच्छाअ**=प्र+छादय्।

पच्छाग पुं [**प्रच्छादक**] पात्र बाँधने का कपड़ा ; (ओघ २६५ भा)।

पच्छाडिद (शौ) वि [**प्रक्षालित**] धोया हुआ ; (नाट—मृच्छ २५५)।

पच्छाणिअ (दे) देखो **पच्चोवणिअ** ; (षड्)।

पच्छादो (शौ) देखो **पच्छा**=पश्चात् ; (पि ६६)।

पच्छायण न [**पथ्यदन**] पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन; "वहणं कारियं पच्छायणस्स भारियं" (महा)।

पच्छायण न [**प्रच्छादन**] १ आच्छादन, ढकना ; २ वि. आच्छादन करने वाला। °या स्त्री [°ता] आच्छादन ; "परगुणपच्छायणया" (उव)।

पच्छाल देखो **पक्खाल**। पच्छालेइ ; (काल)।

पच्छि स्त्री [**दे**] पिटिका, पटारी, वेत्रादि-रचित भाजन-विशेष ; (दे ६, १)। °पिडय न [°पिटक] 'पच्छी' रूप पिटारी ; (भग ७, ८ टी—पत्र ३१३)।

पच्छि (अप) देखो **पच्छइ** ; (हे ४, ३८८)।

पच्छिज्जमाण देखो **पच्छ**=प्र+अर्थय्।

पच्छित्त न [**प्रायश्चित्त**] १ पाप की शुद्धि करने वाला कर्म, पाप का क्षय करने वाला कर्म ; (उव ; सुपा ३६६ ; द्र ५२)। २ मन को शुद्ध करने वाला कर्म ; (पंचा १६, ३)।

पच्छित्ति वि [**प्रायश्चित्तिन्**] प्रायश्चित्त का भागी, दोषी ; (उप ३७६)।

पच्छिम न [**पश्चिम**] १ पश्चिम दिशा ; (उवा ७४ टि)। २ वि. पश्चिम दिशा का, पाश्चात्य ; (महा ; हे २, २१ ; प्राप्र)। ३ पीछला, बाद का ; "दियसस्स पच्छिमे भाए" (कप्प)। ४ अन्तिम, चरम ; "पुरिमपच्छिमगाणं तित्थगराणं" (सम ४४)। °द्ध न [°र्ध] उत्तरार्ध, उत्तरी आधा हिस्सा ; (महा ; ठा २, ३—पत्र ८१)। °सेल पुं [°शैल] अस्ताचल पर्वत ; (गउड)।

पच्छिमा स्त्री [**पश्चिमा**] पश्चिम दिशा ; (कुमा ; महा)।

पच्छिमिल्ल वि [**पाश्चात्य**] पीछे से उत्पन्न, पीछे का ; (विसे १७६५)।

पच्छिल (अप) देखो **पच्छिम** ; (भवि)।

पच्छिल्ल, **पच्छिल्लय** } वि [**पश्चिम, पाश्चात्य**] १ पश्चिम दिशा का ; २ पीछला, पृष्ठ-वर्ती ; (पि ५६५ ; ५६५ टि ४)।

पच्छुत्ताविअ (अप) वि [**पश्चात्तापित**] जिसका पश्चात्ताप हुआ हो वह ; (भवि)।

पच्छेकम्म देखो **पच्छ-कम्म** ; (हे १, ७६)।

पच्छेणय न [**दे**] पाथेय, रास्ते में निर्वाह करने की भोजन-सामग्री ; (दे ६, २४)।

पच्छोववण्णग } वि [**पश्चादुपपन्न**] पीछेसे उत्पन्न ;
पच्छोववन्नक } (भग)।

पजंप सक [**प्र+जल्प्**] बोलना, कहना। पजंपइ ; (पि २९६)।

पजंपावण न [**प्रजल्पन**] बोलाना, कथन कराना ; (औप ; पि २९६)।

पजंपिअ वि [**प्रजल्पित**] कथित, उक्त ; (गा ६४६)।

पजणण न [**प्रजनन**] लिङ्ग, पुरुष-चिन्ह ; (विस २५७६ टी ; आघ ७२२)।

पजल अक [**प्र+ज्वल्**] १ विशेष जलना, अतिशय दग्ध होना। २ चमकना। वकृ—**पजलंत** ; (भवि)।

पजलिर वि [**प्रज्वलितृ**] अत्यन्त जलने वाला ; "सिय-ज्झाणानलपजलिरकम्मकंतारधूमलइउव्व" (सुपा १)।

पजह सक [**प्र+हा**] त्याग करना। पजहामि ; (पि ५००)। कृ—**पजहियव्व** ; (आचा)।

पजाला स्त्री [**प्रज्वाला**] अग्नि-शिखा ; (कुप्र ११७)।

पजुत्त देखो **पउत्त=प्रयुक्त** ; (चंड)।

पज्ज सक [**पायय्**] पिलाना, पान कराना। पज्जेइ ; (विपा १, ६)। कवकृ—"तणहाइया ते तउ तंब तत्तं **पज्जिज्जमाणा**ट्टतरं रसंति" (सूअ १, ५, १, २५)। कृ—**पज्जेयव्व** ; (भत्त ४०)।

पज्ज न [**पद्य**] छन्दो-बद्ध वाक्य ; (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

पज्ज न [**पाद्य**] पाद-प्रक्षालन जल; "अग्घं च पज्जं च गहाय" (णाया १, १६ —पत्र २०६)।

पज्ज देखो **पज्जत्त** ; (दं ३३ ; कम्म ३, ७)।

पज्जंत पुं [**पर्यन्त**] अन्त सीमा, प्रान्त भाग ; (हे १, ५८ ; २, ६५ ; सुर ४, २१६)।

पज्जण न [**दे**] पान, पीना ; (दे ६, ११)।

पज्जण न [**पायन**] पिलाना, पान कराना ; (भग १४, ७)।

पज्जण्ण पुं [**पर्जन्य**] मेघ, बादल ; (भग १४, २ ; नाट—मृच्छ १७५)। देखो **पज्जन्न**।

पज्जतर वि [**दे**] दलित, विदारित ; (षड्)।

पज्जत्त वि [**पर्याप्त**] १ 'पर्याप्ति' से युक्त, 'पर्याप्ति' वाला ; (ठा २, १ ; पण्ह १, १ ; कम्म १, ४६)। २ समर्थ, शक्तिमान ; ३ लब्ध, प्राप्त ; ४ काफी, यथेष्ट, उतना जितने से काम चल जाय ; ५ न. तृप्ति; ६ सामर्थ्य ; ७ निवारण ; ८ योग्यता ; (हे २, २४ ; प्राप्र)। ६ कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपनी २ 'पर्याप्तियों' से युक्त होता है वह कर्म ; (कम्म १, २६)। °**णाम, °नाम** न [°**नामन्**] अनन्तर उक्त कर्म-विशेष ; (राज ; सम ६७)।

पज्जत्तर [**दे**] देखो **पज्जतर** ; (षड्—पत्र २१०)।

पज्जत्ति स्त्री [**पर्याप्ति**] १ शक्ति, सामर्थ्य ; (सूअ १, १, ४)। २ जीव की वह शक्ति, जिसके द्वारा पुद्गलों का ग्रहण करने तथा उनको आहार, शरीर आदि के रूप में बदल देने का काम होता है, जीव की पुद्गलों का ग्रहण करने तथा परिणमाने की शक्ति ; (भग ; कम्म १, ४६ ; नव ४ ; दं ४)। ३ प्राप्ति, पूर्ण प्राप्ति ; (दे ५, ६२)। ४ तृप्ति ; "पियदंस-णाइणाजीवियाण का लहइ पज्जत्तिं ?" (उप ७६८ टी)।

पज्जन्न पुं [**पर्जन्य**] मेघ-विशेष, जिसके एक बार बरसने से भूमि में एक हजार वर्ष तक चिक्कनता रहती है ; "पज्जु-(ज्ज)न्ने णं महामेहे एगे णं वासेणं दस वाससयाइं भावेति" (ठा ४, ४—पत्र २७०)।

पज्जय पुं [**दे, प्रार्यक**] प्रपितामह, पितामह का पिता; (भग ६, ३; दस ७ ; सुर १, १७४ ; २२०)।

पज्जय पुं [**पर्यय**] १ श्रुत-ज्ञान का एक भेद, उत्पत्ति के प्रथम समय में सूक्ष्म-निगोद के लब्धि-अपर्याप्त जीव को जो कुश्रुत का अंश होता है उससे दूसरे समय में ज्ञान का जितना अंश बढ़ता है वह श्रुतज्ञान ; (कम्म १, ७)। २—देखो **पज्जाय** ; (सम्म १०३ ; णंदि ; विसे ४७८ ; ४८८ ; ४६० ; ४६१)। °**समास** पुं [°**समास**] श्रुतज्ञान का एक भेद, अनन्तर उक्त पर्यय-श्रुत का समुदाय; (कम्म १,७)।

पज्जयण न [**पर्ययन**] निश्चय, अवधारण ; (विसे ८३)।

पज्जर सक [**कथय्**] कहना, बोलना। पज्जरइ, पज्जर; (हे ४, २ ; दे ६, २६ ; कुमा)।

पज्जरय पुं [**प्रजरक**] रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६—पत्र ३६५)। °**मज्झ** पुं [°**मध्य**] एक नरकावास ; (ठा ६—पत्र ३६७ टी)। °**वट्ट** पुं [°**वर्त**] नरकावास-विशेष ; (ठा ६)। °**वसिट्ठ** पुं [°**विशिष्ट**] एक नरकावास, नरक-स्थान-विशेष ; (ठा ६)।

पज्जल देखो **पजल** । पज्जलेइ ; (महा) । वकृ—**पज्जलंत ;** (कप्प) ।

पज्जलण वि [**प्रज्वलन**] जलाने वाला ; (ठा ४, १) ।

पज्जलिय वि [**प्रज्वलित**] १ जलाया हुआ, दग्ध ; (महा)। २ खूब चमकने वाला, देदीप्यमान ; (गच्छ २) ।

पज्जलिर वि [**प्रज्वलितृ**] १ जलने वाला ; २ खूब चमकने वाला ; (सुपा ६३८ ; सण) ।

पज्जव पुं [**पर्यव**] १ परिच्छेद, निर्णय; (विसे ८३; आवम)। २ देखो **पज्जाय** ; (आचा ; भग ; विसे २७५२ ; सम्म ३२) । °**कसिण** न [°**कृत्स्न**] चतुर्दश पूर्व-ग्रन्थ तक का ज्ञान, श्रुतज्ञान-विशेष ; (पंचभा)। °**जाय** वि [°**जात**] १ भिन्न अवस्था को प्राप्त ; (पराह २, ५) । २ ज्ञान आदि गुणों वाला ; (ठा १) । ३ न. विषयोप-भोग का अनुष्ठान ; (आचा) । °**जाय** वि [°**यात**] ज्ञान-प्राप्त ; (ठा १);। °**ट्ठिय** पुं [°**स्थित**, °**र्थिक**, °**स्तिक**] नय-विशेष, द्रव्य को छोड़ कर केवल पर्यायों को ही मुख्य मानने वाला पक्ष ; (सम्म ६) । °**णय**, °**नय** पुं [°**नय**] वही अनन्तर उक्त अर्थ ; (राज ; विसे ७५), " उप्पज्जंति वयंति अ भावा नियमेण पज्जवनयस्स " (सम्म ११) ।

पज्जवण न [**पर्यवन**] परिच्छेद, निश्चय ; (विसे ८३) ।

पज्जवत्थाव सक [**पर्यव + स्थापय्**] १ अच्छी अवस्था में रखना । २ विरोध करना । ३ प्रतिपक्ष के साथ वाद करना । पज्जवत्थावेदु (शौ) ; (मा ३६) । पज्जवत्था-वेहि ; (पि ५५१) ।

पज्जवसाण न [**पर्यवसान**] अन्त, अवसान ; (भग) ।

पज्जवसिअ न [**पर्यवसित**] अवसान, अन्त ; " अपज्ज-वसिए लोए " (आचा) ।

पज्जा देखो **पण्णा** ; (हे २, ८३) ।

पज्जा स्त्री [**पद्या**] मार्ग, रास्ता ; " मेत्रं च पडुच्च समा भावाणं पन्नवणपज्जा " (सम्म १५७ ; दे ६, १ ; कुप्र १७६) ।

पज्जा स्त्री [**दे**] निःश्रेणि, सीढ़ी ; (दे ६, १) ।

पज्जा स्त्री [**पर्याय**] अधिकार, प्रबन्ध-भेद ; (दे ६, १ ; पाअ) ।

पज्जा देखो **पण्णा** ; " अगणिज्जंति नासे विज्जा दंडिज्जंती नासे पज्जा " (प्रासू ६६) ।

पज्जाअर पुं [**प्रजागर**] जागरण, निद्रा का अभाव ; (अभि ६६) ।

पज्जाउल वि [**पर्याकुल**] विशेष आकुल, व्याकुल ; (स ७२ ; ६७३ ; हे ४, २६६) ।

पज्जाभाय सक [**पर्या + भाजय्**] भाग करना । संकृ—**पज्जाभाइत्ता ;** (राज) ।

पज्जाय पुं [**पर्याय**] १ समान अर्थ का वाचक शब्द ; (विसे २५) । २ पूर्ण प्राप्ति ; (विसे ८३) । ३ पदार्थ-धर्म, वस्तु-गुण; ४ पदार्थ का सूक्ष्म या स्थूल रूपान्तर; (विसे ३२१ ; ४७६ ; ४८० ; ४८१ ; ४८२ ; ४८३ ; ठा १ ; १०) । ५ क्रम, परिपाटी ; (गाया १, १) । ६ प्रकार, भेद ; (आवम) । ७ अवसर ; ८ निर्माण ; (हे २, २४) । देखो **पज्जय** तथा **पज्जव** ।

पज्जाल सक [**प्र + ज्वालय्**] जलाना, सुलगाना । पज्जालइ ; (भवि) । संकृ —**पज्जालिअ, पज्जालिऊण** ; (दस ५, १ ; महा) ।

पज्जालण न [**प्रज्वालन**] सुलगाना ; (उप ५६७ टी) ।

पज्जालिअ वि [**प्रज्वालित**] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ; (सुपा १५१ ; प्रासू १८) ।

पज्जिआ स्त्री [**दे. प्रार्यिका**] १ माता की मातामही ; २ पीता की मातामही ; (दस ७ ; हे ३, ४१) ।

पज्जिज्जमाण देखो **पज्ज**=पायय् ।

पज्जुट्ठ वि [**पर्युष्ट**] फड़फड़ाया हुआ (?); " भिउडी णं कआ, कडुअं णालविअं, अहरअं ण पज्जुट्ठं " (गा ६२१)।

पज्जुच्छुअ वि [**पर्युत्सुक**] अति उत्सुक ; (नाट) ।

पज्जुणसर न [**दे**] ऊख के तुल्य एक प्रकार का तृण ; (दे ६, ३२) ।

पज्जुण्ण पुं [**प्रद्युम्न**] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ; (अंत)। २ कामदेव ; (कुमा) । ३ वैष्णव शास्त्र में प्रतिपादित चतुर्व्यूह रूप विष्णु का एक अंश ; (हे २,४२)। ४ एक जैन मुनि ; (निचू १) । देखो **पज्जुन्न** ।

पज्जुत्त वि [**प्रयुक्त**] जटित, खचित ; " माणिक्कपज्जुत्त-कणयकडयसणाहेहिं " (स ३१२), " दिव्वखग्गचामरपज्जुत्त-कुडंतरालाइं " (स ५६ ; भवि) । देखो **पउत्त** ।

पज्जुदास पुं [**पर्युदास**] निषेध, प्रतिषेध ; (विसे १८३)।

पज्जुन्न देखो **पज्जुण्ण** ; (णाया १, ५; अंत १४; कुप्र १८; सुपा ३२)। ५ वि. धनी, श्रीमन्त, प्रभूत धन वाला ; " पज्जुन्नओवि पडिपुन्नसयलंगो " (सुपा ३२) ।

पज्जुवट्ठा सक [**पर्यु प + स्था**] उपस्थित होना। हेकृ—**पज्जुवट्ठाउं** (सौ ; नाट—वेणी २५)।

पज्जुवट्ठिय वि [**पर्यु पस्थित**] उपस्थित, तत्पर ; (उत्त १८, ४५)।

पज्जुवास सक [**पर्यु प + आस्**] सेवा करना, भक्ति करना। पज्जुवासइ, पज्जुवासंति ; (उव ; भग)। वकृ—**पज्जुवासमाण** ; (णाया १, १ ; २)। कवकृ—**पज्जुवासिज्जमाण**; (सुपा ३७८)। संकृ—**पज्जुवासित्ता** ; (भग)। कृ—**पज्जुवासणिज्ज** ; (णाया १, १ ; औप)।

पज्जुवासण न [**पर्यु पासन**] सेवा, भक्ति, उपासना ; (भग ; स ११६ ; उत ३५७ टी ; अभि ३८)।

पज्जुवासणया } स्त्री [**पर्यु पासना**] ऊपर देखो ; (ठा **पज्जुवासणा** } ३, ३ ; भग ; णाया १, १३ ; औप)।

पज्जुवासय वि [**पर्यु पासक**] सेवा करने वाला ; (काल)।

पज्जुसणा स्त्री [**पर्यु षणा**] देखो **पज्जोसवणा** : "परिवसणा पज्जुसणा पज्जोसवणा य वासवासो य" (निचू १०)।

पज्जुस्सुअ } वि [**पर्यु त्सुक**] अति उत्सुक, विशेष **पज्जूसुअ** } उत्कण्ठित ; (अभि १०६ ; वि ३२७ ए)।

पज्जोअ पुं [**प्रद्योत**] १ प्रकाश, उद्योत। २ उज्जयिनी नगरी का एक राजा ; (उव)। °**गर** वि [°**कर**] प्रकाश-कर्ता ; (सम १ ; कप्प ; औप)।

पज्जोइय वि [**प्रद्योतित**] प्रकाशित ; (उप ७२८ टी)।

पज्जोयण पुं [**प्रद्योतन**] एक जैन आचार्य ; (राज)।

पज्जोसव अक [**परि + वस्**] १ वास करना, रहना। २ जैनागम-प्रोक्त पर्युषणा-पर्व मनाना। पज्जोसवेइ, पज्जोसविंति, पज्जोसवेंति ; (कप्प)। वकृ—**पज्जोसवंत, पज्जोसवेमाण** ; (निचू १० ; कप्प)। हेकृ—**पज्जोसवित्तए, पज्जोसवेत्तए** ; (कप्प ; कस)।

पज्जोसवणा स्त्री [**पर्यु षणा**] १ एक ही स्थान में वर्षा-काल व्यतीत करना ; (ठा १० ; कप्प)। २ वर्षा-काल ; (निचू १०)। ३ पर्व-विशेष, भाद्रपद के आठ दिनों का एक प्रसिद्ध जैन पर्व ; "काराविय अमारिं पज्जोसवणाईसु दिवहेसु" (सुपा १०६०० ; सुर १६, १६१)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] पर्यूषणा में करने योग्य शास्त्र-विहित आचार, वर्षाकल्प ; (ठा५,२)।

पज्जोसवणा स्त्री [**पर्योसवना, पर्यु पशमना**] ऊपर देखो ; (ठा १०—पत्र ५०६)।

पज्जोसविय वि [**पर्यु षित**] स्थित, रहा हुआ ; (कप्प)।

पज्झंझ अक [**प + झञ्झ्**] शब्द करना, आवाज करना। वकृ—**पज्झंझमाण** ; (राज)।

पज्झट्टिआ स्त्री [**पज्झट्टिका**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

पज्झर अक [**क्षर्, प्र + क्षर्**] भरना, टपकना। पज्झरइ ; (हे ४, १७३)।

पज्झर पुं [**प्रक्षर**] प्रवाह-विशेष ; (पणण २)।

पज्झरण न [**प्रक्षरण**] टपकना ; (वज्जा १०८)।

पज्झरिअ वि [**प्रक्षरित**] टपका हुआ ; (पाअ ; कुमा ; महा ; संक्षि १५)।

पज्झल देखो **पज्झर**=क्षर्। पज्झलइ ; (पिंग)।

पज्झलिआ देखो **पज्झट्टिआ** ; (पिंग)।

पज्झाय वि [**प्रध्यात**] चिन्तित ; (अणु)।

पज्झुत्त वि [**दे**] खचित, जड़ित, जड़ा हुआ ; (पाअ)। देखो **पज्जुत्त**।

पटउडी स्त्री [**पटकुटी**] तंबू, वस्त्र-गृह, कपड़कोट ; (सुर १३, ६)।

पटल देखो **पडल**=पटल ; (कुमा)।

पटह देखो **पडह** ; (प्रति १०)।

पटिमा (पै. चूपै) देखो **पडिमा** ; (पड् ; पि १६१)।

पट्ट सक [**पा**] पीना, पान करना। पट्टइ ; (हे ४, १०)। भूका—**पट्टीअ** ; (कुमा)।

पट्ट पुं [**पट्ट**] १ पहनने का कपड़ा ; "पट्टो वि होइ इक्को देहपमाणेण सो य भइयव्वो" (बृह ३ ; ओघ ३४)। २ रथ्या, मुहल्ला ; "नगरे मालियपट्टे गंतूण करेइ कया माला" (सुपा ३७३)। ३ पाषाण आदि का तख्ता, फलक ; "मणिसिलापट्टअसणाहो माहवीमंडवो" (अभि २००), "पिअंगुसिलापट्टए उवविट्ठा" (स्वप्न ५२), "पट्टसंठियपसत्थविच्छिण्णपिहुलसोणीआ" (जीव ३)। ४ ललाट पर से बँधी जाती एक प्रकार की पगड़ी ; "नरवसिइं पट्टबद्धा रायाणो जाया पुव्वं मउडबद्धा आसी" (महा)। ५ पट्टा, चकनामा, किसी प्रकार का अधिकार-पत्र ; (कुप्र ११ ; जं ३)। ६ रेशम ; ७ पाट, सन ; (गा ५२० ; कप्पू)। ८ रेशमी कपड़ा ; ६ सन का कपड़ा ; (कप्प ; औप)। १० सिंहासन, गद्दी, पाट ; (कुप्र २८ ; सुपा २८५)। ११ कलावत् ; (राज)। १२ पट्टी, फोड़ा आदि पर बाँधा जाता लम्बा वस्त्रांश, पाटा ; "चउरंगुलपमाणपट्टबंधेण सिरिवच्छालंकियं छाइयं वच्छत्थलं" (महा ; विपा १, १)। १३ शाक-विशेष ; (सुज्ज २०)।

°इल्ल पुं [°वत्] पटेल, गाँव का मुखी ; (जं ३) °उडी स्त्री [°कुटी] तंबू, वस्त्र-गृह ; (सुर १३, १५७)। °करि पुं [°करिन्] प्रधान हस्ती ; (सुपा ३७३)। °कार पुं [°कार] तन्तुवाय, वस्त्र बुनने वाला ; (पगण १)। °वासिआ स्त्री [°वासिता] एक शिरो-भूषण ; (दे ४, ४३)। °साला स्त्री [°शाला] उपाश्रय, जैन मुनि को रहने का स्थान ; (सुपा २८५)। °सुत्त न [°सूत्र] रेशमी सूता; (आयम)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] प्रधान हाथी ; (सुपा ३७२)।

पट्टइल } पुं [दे] पटेल, गाँव का मुखिया ; (सुपा २७३;
पट्टइल्ल } ३६१)।

पट्टंसुअ न [**पट्टांशुक**] १ रेशमी वस्त्र ; २ सन का वस्त्र ; (गा ५२० ; कप्पू)।

पट्टग देखो **पट्ट** ; (कस)।

पट्टण न [**पत्तन**] नगर, शहर ; (भग ; औप ; प्राप्र; कुमा)।

पट्टय देखो **पट्ट**; (उवा ; णाया १, १६)।

पट्टाढा स्त्री [**दे**] पट्टा, घोड़े की पेटी, कसन ; "छोडिया पट्टाढा, ऊसारियं पल्लाणं" (महा ; सुख १८, ३७)।

पट्टिय वि [**पट्टिक**] पट्टे पर दिया जाता गाँव वगैरः ; "पुव्विं पट्टियगामम्मि तुट्ठदव्वत्थं पट्टइलो नरवालो पुव्विं जो आसि गुत्तीए खित्तो" (सुपा २७३)।

पट्टिया स्त्री [**पट्टिका**] १ छोटा तख्ता, पाटी ; "चित्तप-ट्टिया" (सुर १, ८८)। २—देखो **पट्टी**; "सरासणपट्टिआ" (राज—जं ३)।

पट्टिस पुं [**दे. पट्टिश**] प्रहरण-विशेष, एक प्रकार का हथि-यार ; (पगह १, १ ; पउम ८, ४५)।

पट्टी स्त्री [**पट्टी**] १ धनुर्यष्टि ; २ हस्तपट्टिका, हाथ पर की पट्टी ; "उप्पीडियसरासणपट्टिए" (विपा १, १—पत्र २४)।

पट्टुया स्त्री [**दे**] पाद-प्रहार, लात ; गुजराती में 'पाटु' ; "सिरिवच्छो गोणेणं तहाहओ पट्टुयाए हिययम्मि" (सुपा २३७)। देखो—**पड्डुआ**।

पट्टुहिअ न [**दे**] कलुषित जल; "पट्टुहियं जाण कलुसजलं" (पाअ)।

पट्ठ वि [**प्रष्ठ**] १ अग्र-गामी, अग्रसर ; (णाया १, १—पत्र १६)। २ कुशल, निपुण ; ३ प्रधान, मुखिया ; (औप ; राज)।

पट्ठ वि [**स्पृष्ट**] जिसका स्पर्श किया गया हो वह ; (औप)।

पट्ठ न [**पृष्ठ**] १ पीठ, शरीर के पीछे का भाग ; (णाया १, ६ ; कुमा)। २ तल, ऊपर का भाग ; "तलिमं पट्ठं च तलं" (पाअ)। °चर वि [°चर] अनुयायी, अनुगामी ; (कुमा)।

पट्ठ वि [**पृष्ट**] १ जिसको पूछा गया हो वह। २ न. प्रश्न, सवाल ; 'छव्विहे पट्ठे पगणत्ते" (ठा ६—पत्र ३७५)।

पट्ठव सक [**प्र+स्थापय्**] १ प्रस्थान कराना, भेजना। २ प्रवृत्ति कराना। ३ प्रारम्भ करना। ४ प्रकर्ष से स्थापन करना। ५ प्रायश्चित देना। पट्ठवइ ; (हे ४, ३७)। भूका—पट्ठवइंसु ; (कप्प)। कृ—**पट्ठवियव्व** ; (कस; सुपा ६२७)।

पट्ठवण न [**प्रस्थापन**] १ प्रकृष्ट स्थापन ; २ प्रारम्भ ; "इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च" (अणु)।

पट्ठवणा स्त्री [**प्रस्थापना**] १ प्रकृष्ट स्थापना। २ प्रायश्चित्त-प्रदान ; "दुविहा पट्ठवणा खलु" (वव १)।

पट्ठवय वि [**प्रस्थापक**] १ प्रवर्तक, प्रवृत्ति कराने वाला; (णाया १, १—पत्र ६३)। २ प्रारम्भ करने वाला ; (विसे ६२७)।

पट्ठविअ वि [**प्रस्थापित**] भेजा हुआ; (पाअ ; कुमा)। २ प्रवर्तित ; (निचू २०)। ३ स्थिर किया हुआ ; (भग १२, ४)। ४ प्रकर्ष से स्थापित, व्यवस्थापित; (पगण २१)।

पट्ठविइया } स्त्री [**प्रस्थापिता**] प्रायश्चित-विशेष, अनेक
पट्ठविया } प्रायश्चित्तों में जिसका पहले प्रारम्भ किया जाय वह ; (ठा ५, २ ; निचू २०)।

पट्ठाअ देखो **पट्ठाव**। वकृ—**पट्ठाएंत** ; (गा ४४०)।

पट्ठाण न [**प्रस्थान**] प्रयाण ; (सुपा १४२)।

पट्ठाव देखो **पट्ठव**। पट्ठावइ ; (हे ४, ३७)। पट्ठावेइ ; (पि ५५३)।

पट्ठाविअ देखो **पट्ठविअ** ; (हे ४, १६ ; कुमा ; पि ३०६)।

पट्ठि स्त्री देखो **पट्ठ**=पृष्ठ ; (गउड ; सण)। °**मंस** न [°**मांस**] पीठ का मांस ; (पगह १, २)।

पट्ठिअ वि [**प्रस्थित**] जिसने प्रस्थान किया हो वह, प्रयात ; (दे ४, १६ ; ओघ ८१ भा ; सुपा ७८)।

पट्ठिअ वि [**दे**] अलंकृत, विभूषित ; (षड्)।

पट्ठिउकाम वि [**प्रस्थातुकाम**] प्रयाण का इच्छुक ; (श्रा १४)।

पट्ठिसंग न [**दे**] ककुद, बैल के कंधे का कुव्वड़ ; (दे ६, २३)।

पट्ठी देखो **पट्ठि** ; (महा ; काल)।

पठ देखो **पढ**। पठदि (शौ) ; (नाट—मृच्छ १६०) ; पठंति ; (पिंग)। कर्म —पठिज्जइ ; (पि ३०६ ; ५४१) ।

पठग देखो **पाढग** ; (कप्प)।

पड अक [**पत्**] पड़ना, गिरना। पडइ ; (उव ; नि २१८ ; २४४)। वकृ—**पडंत, पडमाण**; (गा २६४ ; महा ; भवि ; वृह ६)। संकृ—**पडिअ** ; (नाट—शकु ६७)। कृ—**पडणीअ** ; (काल)।

पड पुं [**पट**] वस्त्र, कपड़ा ; (औप ; उव ; स्वप्न ८५ ; स ३२६ ; गा १८)। °**कार** देखो °**गार** ; (राज)। °**कुडी** स्त्री [°**कुटी**] तंबू, वस्त्र-गृह ; (दे ६, ६ ; सी ३)। °**गार** पुं [°**कार**] तन्तुवाय, कपड़ा बुनने वाला ; (पगह १, २—पत्र २८)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] प्रभूत सूत्रार्थों को ग्रहण करने में समर्थ बुद्धि वाला ; (औप)। °**मंडव** पुं [°**मण्डप**] तंबू, वस्त्र-मगडप ; (आक)। °**मा** वि [°**वत्**] पट वाला, वस्त्र वाला ; (षड्)। °**वास** पुं [°**वास**] वस्त्र में डाला जाता कुंकुम-चूर्ण आदि सुगन्धित पदार्थ ; (गउड ; स ७३८)। °**साडय** पुं [°**शाटक**] १ वस्त्र, कपड़ा ; २ धोती, पहनने का लम्बा वस्त्र ; (भग ६, ३३)। ३ धोती और दुपट्टा ; (णाया १, १—पत्र ५३)।

पडंचा स्त्री [**दे** **प्रत्यञ्चा**] ज्या, धनुष का चिल्ला ; (दे ६, १४ ; पाअ)।

पडंसुअ देखो **पडिंसुद** ; (पि ११५)।

पडंसुआ स्त्री [**प्रतिश्रुत्**] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि ; (हे १, ८८)। २ प्रतिज्ञा ; (कुमा)।

पडंसुआ स्त्री [**दे**] ज्या, धनुष का चिल्ला ; (दे ६, १४)।

पडच्चर पुं [**दे**] साला जैसा विदूषक आदि; (दे ६,२५)।

पडच्चर पुं [**पटच्चर**] चोर, तस्कर; (नाट—मृच्छ १३८)।

पडज्झमाण देखो **पडह**=प्र+दह्।

पडण न [**पतन**] पात, गिरना ; (णाया १, १ ; प्रासू१०१)।

पडणोअ वि [**प्रत्यनोक**] विरोधी, प्रतिपक्षी, वैरी ; (स ४६६)।

पडणीअ देखो **पड**=पत्।

पडम देखो **पढम** ; (पि १०४ ; नाट—शकु ९८)।

पडल न [**पटल**] १ समूह, संघात, वृन्द ; (कुमा)। २ जैन साधुओं का एक उपकरण, भिक्षा के समय पात्र पर ढका जाता वस्त्र-खगड ; (पगह २, ५—पत्र १४८)।

पडल न [**दे**] नीव्र, नरिया, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा जिससे मकान छाये जाते हैं ; (दे ६, ५ ; पाअ)।

पडलग } न [**दे** **पटलक**] गठरी, पोट ; गुजराती में **पडलय** } 'पाटलु' 'पोटली' ; "पुप्फपडलगहत्थाओ" (णाया १, ८)। स्त्री —°**लिगा,** °**लिया** ; (स २१३ ; सुपा ६)।

पडवा स्त्री [**दे**] पट-कुटी, पट-मगडप, वस्त्र-गृह; (दे ६, ६)।

पडह सक [**प्र+दह्**] जलाना, दग्ध करना। कवकृ—**पडज्झमाण** ; (पगह १, २)।

पडह पुं [**पटह**] वाद्य-विशेष, ढोल ; (औप ; णंदि ; महा)।

पडहत्थ वि [**दे**] पूर्ण, भरा हुआ ; (स १८०)।

पडहिय पुं [**पाटहिक**] ढोल बजाने वाला, ढोली ; (पउम ४८, ८६)।

पडहिया स्त्री [**पटहिका**] छोटा ढोल ; (सुर ३, ११५)।

पडाअ देखो **पलाय**=परा+अय्। कृ—**पडाइअव्व** ; (से १४, १२)।

पडाइअ वि [**पलायित**] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ ; (से १५, १५)।

पडाइअव्व देखो **पडाअ**।

पडाइया स्त्री [**पताकिका**] छोटी पताका, अन्तर-पताका ; (कुप्र १४५)।

पडाग पुं [**पटाक, पताक**] पताका, ध्वजा ; (कप्प ; औप)।

पडागा } स्त्री [**पताका**] ध्वजा, ध्वज ; (महा ; पाअ ; **पडाया** } हे १, २०६ ; प्राप्र ; गउड)। °**इपडाग** पुं [°**तिपताक**] १ मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ पताका के ऊपर की पताका ; (औप)। °**हरण** न [°**हरण**] विजय-प्राप्ति ; (सुपा)।

पडायाण देखो **पल्लाण** ; (हे १, २५२)।

पडायाणिय वि [**पर्याणित**] जिस पर पर्याण बाँधा गया हो वह ; (कुमा २, ६३)।

पडाली स्त्री [**दे**] १ पङ्क्ति, श्रेणी ; (दे ६, ८)। २ घर के ऊपर की चटाई आदि की कच्ची छत ; (वव ७)।

पडास देखो **पलास** ; (नाट—मृच्छ २४३)।

पडि अ [**प्रति**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ विरोध, जैसे—'पडिवक्ख', 'पडिवासुदेव' (गउड; पउम २०, २०२)। २ विशेष, विशिष्टता ; जैसे—'पडिमंजरिवडिंसय' (औप)। ३ वीप्सा, व्याप्ति ; जैसे—'पडिदुवार', 'पडिपेल्लण' ; (पगह

१, ३; से ६, ३२)। ४ वापिस, पीछे; जैसे—'पडिगय' (विपा १, १ ; भग ; सुर १, १४६) । ५ आभिमुख्य, संमुखता; जैसे—'पडिविरइ', 'पडिबद्ध' (पराह २, २ ; गउड) । ६ प्रतिदान, बदला ; जैसे—'पडिदइ' (विसे ३२४१) । ७ फिर से ; जैसे—'पडियडिय', 'पडिवंविय' (साधं ६४ ; दे ६, १३) । ८ प्रतिनिधिपन ; जैसे—'पडिच्छंद' (उप ७२८ टी) । ९ प्रतिषेध, निषेध ; जैसे—'पडियाइक्खिय' (भग ; सम ५६) । १० प्रतिकूलता, विपरीतपन ; जैसे—'पडिवंथ' (स २, ४६) । ११ स्वभाव ; जैसे—'पडिवाइ' (ठा २, १) । १२ सामीप्य, निकटता ; जैसे—'पडिवेसिअ' (सुपा ५५२) । १३ आधिक्य, अतिशय ; जैसे—'पडियाणंद' (औप) । १४ सादृश्य, तुल्यता ; जैसे—'पडिइंद' (पउम १०५, १११) । १५ लघुता, छोटाई; जैसे—'पडिदुवार' (कप्प ; पराण २) । १६ प्रशस्तता, श्लाघा ; जैसे—'पडिरूव' (जीव ३) । १७ सांप्रतिकता, वर्तमानता ; (ठा ३, ४—पत्र १५८) । १८ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, जैसे—'पडिइंद' (पउम १०५, ६), 'पडिउच्चारेयव्व' (भग) ।

पडि देखो **परि** ; (से ४, ५० ; ५, १६ ; ६६ ; अंत ७) ।

पडिअ वि [**दे**] विघटित, वियुक्त ; (दे ६, १२) ।

पडिअ वि [**पतित**] १ गिरा हुआ ; (गा ११ ; प्रासू ५ ; १०१) । २ जिसने चलने का प्रारम्भ किया हो वह ; "आगयमग्गेण य पडिओ" (वसु) ।

पडिअ देखो **पड**=पत् ।

पडिअंकिअ वि [**प्रत्यङ्कित**] १ विभूषित ; २ उपलित ; "बहुवराणघुसिणपंकि पडियंकिओ " (भवि) ।

पडिअंतअ पुं [**दे**] कर्मकर, नौकर ; (दे ६, ३२) ।

पडिअग्ग सक [**अनु+व्रज्**] अनुसरण करना, पीछे जाना । पडिअग्गइ ; (हे ४, १०७ ; षड्) ।

पडिअग्ग सक [**प्रति+जागृ**] १ सम्हालना । २ सेवा करना, भक्ति करना । ३ शुश्रूषा करना । "वच्छ ! पडियग्गेहि मणिमोत्तियाइयं सारदव्वं" (स २८८), पडियग्गह; (स ५४८) ।

पडिअग्गिअ वि [**दे**] १ परिभुक्त, जिसका परिभोग किया गया हो वह ; २ जिसको बधाई दी गई हो वह ; ३ पालित, रक्षित ; (दे ६, ७४) ।

पडिअग्गिअ वि [**अनुव्रजित**] अनुसृत ; (दे ६, ७४) ।

पडिअग्गिअ वि [**प्रतिजागृत**] भक्ति से आदृत; (स २१)।

पडिअग्गिर वि [**अनुव्रजित**] अनुसरण करने को आदत वाला ; (कुमा) ।

पडिअज्झअ पुं [**दे**] उपाध्याय, विद्या-दाता गुरु ; (दे ६, ३१) ।

पडिअट्टलिअ वि [**दे**] घृष्ट, घिसा हुआ ; (से ६, ३१) ।

पडिअत्त देखो **परि+वत्त**=परि+वृत् । संकृ—**पडिअत्तिअ** ; (नाट) ।

पडिअत्तण न [**परिवर्तन**] फेरफार ; (से ५, ६६) ।

पडिअमित्त पुं [**प्रत्यमित्र**] मित्र-शत्रु, मित्र होकर पीछे से जो शत्रु हुआ हो वह ; (राज) ।

पडिअम्मिय वि [**प्रतिकर्मित**] मण्डित, विभूषित ; (दे ६, ३५) ।

पडिअर सक [**प्रति+चर्**] १ बिमार की सेवा करना । २ आदर करना । ३ निरीक्षण करना । ४ परिहार करना । संकृ—**पडियरिऊण** ; (निचू १) ।

पडिअर सक [**प्रति+कृ**] १ बदला चुकाना । २ इलाज करना । ३ स्वीकार करना । हेकृ—**पडिकाउं**; (गा ३२०)। संकृ—"तहत्ति **पडिकाऊण** ठाविओ एसो" (कुप्र ४०) ।

पडिअर पुं [**दे**] चुल्ली-मूल, चुल्हे का मूल भाग ; (दे ६, १७) ।

पडिअर पुं [**परिकर**] परिवार ; "पडियरि(? र)त्थो पुरिसो व्व नियत्तो तेहिं चेव पएहिं नलो" (कुप्र ५७) ।

पडिअरग वि [**प्रतिचारक**] सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (निचू १ ; वव १) ।

पडिअरण न [**प्रतिचरण**] सेवा, शुश्रूषा ; (ओघ ३६ भा; श्रा १ ; सुपा २६) ।

पडिअरणा स्त्री [**प्रतिचरणा**] १ बिमार की सेवा-शुश्रूषा ; (ओघ ८३) । २ भक्ति, आदर, सत्कार ; (उप १३६ टी) । ३ आलोचना, निरीक्षण ; (ओघ ८३) । ४ प्रतिक्रमण; पाप-कर्म से निवृत्ति ; ५ सत्-कार्य में प्रवृत्ति ; (आव ४)।

पडिअलि वि [**दे**] त्वरित, वेग-युक्त ; (दे ६, २८) ।

पडिआगय वि [**प्रत्यागत**] १ वापिस आया हुआ, लौटा हुआ; (पउम १६, २६) । २ न. प्रत्यागमन, वापिस आना ; (आचू १) ।

पडिआर पुं [**प्रतिकार**] १ चिकित्सा, उपाय, इलाज ; (आव ४; कुमा) । २ बदला, शोध ; (आचा) । ३ पूर्वाचरित कर्म का अनुभव ; (सूअ १, ३, १, ६) ।

पडिआर पुं [**प्रत्याकार**] तलवार की म्यान ; (दे २, ८ ; स २१२)। "न नवरम्मि पडिआरे हुन्ति कुवालाइं मायंमि" (महा)।

पडिआर पुं [**प्रतिचार**] सेवा-शुश्रूषा ; (णाया १, १३—पत्र १७६)।

पडिआरय वि [**प्रतिचारक**] सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (णाया १, १३ टी—पत्र १८१)। स्त्री—**रिया** ; (णाया १, १—पत्र २८)।

पडिआरि वि [**प्रतिचारिन्**] ऊपर देखो ; (वव १)।

पडिइ सक [**प्रति+इ**] पीछे लौटना, वापिस आना। वकृ—**पडिइंत** ; (उत्त ५२० टी)। हेकृ—**पडिएत्तए** ; (कस)।

पडिइ स्त्री [**पतिति**] पतन, पात ; (वव ४)।

पडिइंद पुं [**प्रतीन्द्र**] १ इन्द्र, देव-राज ; (पउम १०२, ६)। २ इन्द्र का सामानिक-देव, इन्द्र के तुल्य वैभव वाला देव ; (पउम १०५, १११)। ३ वानर-वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ६, १५२)।

पडिइंधण न [**प्रतीन्धन**] अस्त्र-विशेष, इन्धनास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र ; (पउम ७१, ६४)।

पडिइक्क देखो **पडिक्क** ; (आचा)।

पडिउंचण न [**दे**] अपकार का बदला ; (पउम ११, ३८ ; ४४, १६)।

पडिउंबण न [**परिचुम्बन**] संगम, संयोग ; (से २, २७)।

पडिउच्चार सक [**प्रत्युत्+चारय्**] उच्चारण करना, बोलना ; (भग ; उवा)।

पडिउट्ठिअ वि [**प्रत्युत्थित**] जो फिर से खड़ा हुआ हो वह ; (से १५, ८० ; पउम ६१, ४०)।

पडिउण्ण देखो **परिपुण्ण** ; (से ५, १६)।

पडिउत्तर न [**प्रत्युत्तर**] जवाब, उत्तर ; (सुर २, १५८ ; भवि)।

पडिउत्तरण न [**प्रत्युत्तरण**] पार जाना, पार उतरना ; (निचू १)।

पडिउत्ति स्त्री [**दे**] खबर, समाचार ; "अम्मापिअरस्स कुसलपडिउत्ती सविसेसं परिपुट्ठा" (महा)।

पडिउत्थ वि [**पर्युषित**] संपूर्ण रूप से अवस्थित ; (से ४, ५०)।

पडिउद्ध वि [**प्रतिबुद्ध**] १ जागृत, जगा हुआ ; (से १२, ३३)। २ प्रकाश-युक्त ; "जलणनिहित्तपडिउद्धं आअमणाअहिड्डिअं विअसइ व धणु" (से ५, २७)।

पडिउवयार पुं [**प्रत्युपकार**] उपकार का बदला, प्रतिफल ; (पउम ४८, ७२ ; सुपा ११५)।

पडिउस्सस अक [**प्रत्युत्+श्वस्**] पुनर्जीवित होना, फिर से जीना। वकृ—**पडिउस्ससंत** ; (से ६, १२)।

पडिऊल देखो **पडिकूल** ; (अच्चु ८० ; से ३, ३५)।

पडिएत्तए देखो **पडिइ**।

पडिएल्लिअ वि [**दे**] कृतार्थ, कृत-कृत्य ; (दे ६, ३२)।

पडिंसुआ देखो **पडंसुआ**=प्रतिश्रुत् ; (औप)।

पडिंसुद वि [**प्रतिश्रुत**] अंगीकृत, स्वीकृत ; (नाट ; पि ११५)।

पडिकंटय वि [**प्रतिकण्टक**] प्रतिस्पर्धी ; (सुपा)।

पडिकंत देखो **पडिक्कंत** ; (उप २२० टी)।

पडिकत्तु वि [**प्रतिकर्तृ**] इलाज करने वाला ; (ठा ४, ४)।

पडिकप्प सक [**प्रति+कृप्**] १ सजाना, सजावट करना। "खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कूणिअस्स रन्नो भिंभिसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि" (औप), पडिकप्पेइ ; (औप)।

पडिकप्पिअ वि [**प्रतिक्लृप्त**] सजाया हुआ ; (विपा १, २—पत्र २३ ; महा ; औप)।

पडिकम देखो **पडिक्कम**। कृ—"पडिकमणं पडिकमओ पडिकमिअव्वं च आणुपुव्वीए" (आनि ४)।

पडिकमय देखो **पडिक्कमय** ; (आनि ४)।

पडिकम्म न [**प्रतिकर्मन्, परिकर्मन्**] देखो **परिकम्म** ; (औप ; सण)।

पडिकय वि [**प्रतिकृत**] १ जिसका बदला चुकाया गया हो वह ; २ न. प्रतिकार, बदला ; (ठा ४, ४)।

पडिकाउं } देखो **पडिअर**=प्रति+कृ।
पडिकाऊण }

पडिकामणा देखो **पडिक्कामणा** ; (आवमा ३६ टी)।

पडिकिदि स्त्री [**प्रतिकृति**] १ प्रतिकार, इलाज ; २ बदला ; (दे ६, १६)। ३ प्रतिबिम्ब, मूर्ति ; (अभि १६६)।

पडिकिरिया स्त्री [**प्रतिक्रिया**] प्रतीकार, बदला ; "कयपडिकिरिया" (औप)।

पडिकुट्ठ } वि [**प्रतिक्रुष्ट**] १ निषिद्ध, प्रतिषिद्ध ;
पडिकुट्ठिल्लग } (ओघ ४०३ ; पच्च ८ ; सुपा २०७) । " पडिकुट्ठिल्लगदिवसे वज्जेज्जा अट्ठमिं च नवमिं च " (वव १) । २ प्रतिकूल ; (स २७०) । " अन्नोन्नं पडिकुट्ठा दोन्निवि एए असव्वाया " (सम्म १५३) ।

पडिकूड देखो **पडिकूल**=प्रतिकूल ; (सुर ११, २०१) ।

पडिकूल सक [**प्रतिकूलय्**] प्रतिकूल आचरण करना । वकृ—" पडिकूलंतस्स मज्झ जिण-वयणं " (सुपा २०७ ; २०६) । कृ—**पडिकूलेयव्व** ; (कुप्र २४२) ।

पडिकूल वि [**प्रतिकूल**] १ विपरीत, उलटा ; (उत १२) । २ अनिष्ट, अनभिमत ; (आचा) । ३ विरोधी, विपक्ष ; (हे २, ६७) ।

पडिकूलिय वि [**प्रतिकूलित**] प्रतिकूल किया हुआ ; (गज) ।

पडिकूवग पुं [**प्रतिकूपक**] कूप के समीप का छोटा कूप ; (स १००) ।

पडिकेसव पुं [**प्रतिकेशव**] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव ; (पउम २०, २०४) ।

पडिक्क न [**प्रत्येक**] प्रत्येक, हरएक ; (आचा) ।

पडिक्कंत वि [**प्रतिक्रान्त**] पीछे हटा हुआ, निवृत्त; (उवा ; पगह २, १ ; श्रा ४३ ; सं १०६) ।

पडिक्कम अक [**प्रति+क्रम्**] निवृत्त होना, पीछे हटना । पडिक्कमइ ; (उव ; महा) । पडिक्कमे ; (श्रा ३ ; ५ ; पच्च १२) । हेकृ—**पडिक्कमिउं, पडिक्कमित्तए** ; (धर्म २ ; कस ; ठा २, १) । संकृ—**पडिक्कमित्ता** ; (आचा २, १५) । कृ—**पडिक्कंतव्व, पडिक्कमियव्व** ; (आवम ; ओघ ८००) ।

पडिक्कमण न [**प्रतिक्रमण**] १ निवृत्ति, व्यावर्तन ; २ प्रमाद-वश शुभ योग से गिर कर अशुभ योग को प्राप्त करने के बाद फिर से शुभ योग को प्राप्त करना ; ३ अशुभ व्यापार से निवृत्त होकर उत्तरोत्तर शुद्ध योग में वर्तन ; (पगह २, १ ; औप ; चउ ५ ; पडि) । ४ मिथ्या-दुष्कृत-प्रदान, किए हुए पाप का पश्चात्ताप ; (ठा १०) । ५ जैन साधु और गृहस्थों का सुबह और शाम को करने का एक आवश्यक अनुष्ठान ; (श्रा ४८) ।

पडिक्कमय वि [**प्रतिक्रामक**] प्रतिक्रमण करने वाला ; "जीवो उ पडिक्कमओ असुहाणं पावकम्मजोगाणं" (आनि ४)।

पडिक्कमिउं देखो **पडिक्कम** । °**काम** वि [°**काम**] प्रतिक्रमण करने की इच्छा वाला ; (णाया १, ५) ।

पडिक्कय पुं [**दे**] प्रतिक्रिया, प्रतीकार ; (दे ६, १६) ।

पडिक्कमणा स्त्री [**प्रतिक्रमणा**] देखो **पडिक्कमण** ; (ओघ ३६ भा) ।

पडिक्कूल देखो **पडिकूल** ; (हे २, ६७ ; षड्) ।

पडिक्ख सक [**प्रति+ईक्ष्**] १ प्रतीक्षा करना, बाट देखना, बाट जोहना । २ अक. स्थिति करना । पडिक्खइ ; (षड् ; महा) । वकृ—**पडिक्खंत** ; (पउम ५, ७२) ।

पडिक्खअ वि [**प्रतीक्षक**] प्रतीक्षा करने वाला, बाट जोहने वाला ; (गा ५५७ अ) ।

पडिक्खंभ पुं [**प्रतिस्तम्भ**] अर्गला, आगल ; (से ६, ३३) ।

पडिक्खण न [**प्रतीक्षण**] प्रतीक्षा, बाट ; (दे १,३४;कुमा) ।

पडिक्खर वि [**दे**] १ क्रूर, निर्दय ; (दे ६, २५) । २ प्रतिकूल ; (षड्) ।

पडिक्खल अक [**प्रति+स्खल्**] १ हटना । २ गिरना । ३ रुकना । ४ सक. रोकना । वकृ.—**पडिक्खलंत** ; (भवि) ।

पडिक्खलण न [**प्रतिस्खलन**] १ पतन ; २ अवरोध ; (आवम) ।

पडिक्खलिअ वि [**प्रतिस्खलित**] १ परावृत्त, पीछे हटा हुआ ; (से १, ७) । २ रुका हुआ ; (से १, ७ ; भवि) । देखो **पडिखलिअ** ।

पडिक्खाविअ वि [**प्रतीक्षित**] १ स्थापित ; २ कृत ; "विरमालिअ संसारे जेण पडिक्खाविआ समयसत्था" (कुमा) ।

पडिक्खिअ वि [**प्रतीक्षित**] जिसको प्रतीक्षा की गई हो वह ; (दे ८, १३) ।

पडिक्खित्त वि [**परिक्षिप्त**] विस्तारित ; (अंत ७) ।

पडिखंध न [**दे**] १ जल-वहन, जल भरने का दृति आदि पात्र ; २ जलवाह, मेघ ; (दे ६, २८) ।

पडिखंधी स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (दे ६, २८) ।

पडिखद्ध वि [**दे**] हत, मारा हुआ(?); "किमेइणा सुगहपाएण पडिखद्धेण" (महा) ।

पडिखल देखो **पडिक्खल** ; (भवि) । कर्म—पडिखलियइ ; (कुप्र २०५) ।

पडिखलिअ वि [**प्रतिस्खलित**] १ रुका हुआ ; (भवि) । २ रोका हुआ ; "सहसा ततो पडिखलिओ अंगरक्खेण" (सुपा ५२७) । देखो **पडिक्खलिअ** ।

पडिखिज्ज अक [परि + खिद्] खिन्न होना, क्लान्त होना पडिखिज्जदि (शौ) ; (नाट—मालती ३१)।

पडिगमण न [**प्रतिगमन**] व्यावर्तन, पीछे लौटना ; (वव १०)।

पडिगय पुं [**प्रतिगज**] प्रतिपक्षी हाथी ; (गउड)।

पडिगय पुं [**प्रतिगत**] पीछे लौटा हुआ, वापिस गया हुआ ; (विपा १, १ ; भग ; औप ; महा ; सुर १, १४६)।

पडिगह देखो **पडिग्गह** ; (दे ४, ३१)।

पडिगाह सक [**प्रति + ग्रह्**] ग्रहण करना, स्वीकार करना। पडिगाहइ ; (भवि)। पडिगाह, पडिगाहेहि ; (कप्प)। संकृ—**पडिगाहिया, पडिगाहित्ता, पडिगाहेत्ता**; (कप्प; आचा २, १, ३, ३)। हेकृ—**पडिगाहित्तए** ; (कप्प)।

पडिगाहग वि [**प्रतिग्राहक**] ग्रहण करने वाला ; (गाया १, १—पत्र ५३ ; उप पृ २६३)।

पडिगाहिय वि [**प्रतिगृहीत**] लिया हुआ, उपात्त ; (सुपा १४३)।

पडिग्गह पुं [**पतद्ग्रह, प्रतिग्रह**] १ पात्र, भाजन ; (पण्ह २, ५ ; औप ; ओघ ३६ ; २५१ ; दे ५, ४८ ; कप्प)। २ कर्म-प्रकृति विशेष, वह प्रकृति जिसमें दूसरी प्रकृति का कर्म-दल परिणत होता है ; (कम्मप)। °**धारि** वि [°**धारिन्**] पात्र रखने वाला ; (कप्प)।

पडिग्गहिअ वि [**प्रतिग्रहिन्, पतद्ग्रहिन्**] पात्र वाला ; "समणे भगवं महावीरे संवच्छरं साहियं मासं जाव चीवरधारी होत्था, तेण परं अचेलए पाणिपडिग्गहिए" (कप्प)।

पडिग्गहिद (शौ) वि [**प्रतिगृहीत, परिगृहीत**] स्वीकृत ; (नाट—मृच्छ ११० ; रत्ना १२)।

पडिग्गाह देखो **पडिगाह**। पडिग्गाहेइ ; (उवा)। संकृ—**पडिग्गाहेत्ता** ; (उवा)। हेकृ—**पडिग्गाहेत्तए** ; (कप्प ; औप)।

पडिग्गाह सक [**प्रति + ग्राहय्**] ग्रहण कराना। कृ—**पडिग्गाहिदव्व** (शौ) ; (नाट)।

पडिग्गाहय वि [**प्रतिग्राहक**] प्रत्यादाता, वापिस लेने वाला ; (दे ७, ५६)।

पडिघाय पुं [**प्रतिघात**] १ नाश, विनाश ; २ निराकरण, निरसन ; "दुक्खपडिघायहेउं" (आचा ; सुर ७, २३४)।

पडिघायग वि [**प्रतिघातक**] प्रतिघात करने वाला ; (उप २६४ टी)।

पडिघोलिर वि [**प्रतिघूर्णित्**] डोलने वाला, हिलने वाला ; (से ६, ३१)।

पडिचंद पुं [**प्रतिचन्द्र**] द्वितीय चन्द्र, जो उत्पात आदि का सूचक है ; (अणु)।

पडिचक्क न [**प्रतिचक्र**] अनुरूप चक्र—समुदाय ; (राज)। देखो **पडियक्क=प्रतिचक्र**।

पडिचर देखो **पडिअर=प्रति+चर्**। संकृ—**पडिचरिय**; (दस ६, ३)। कृ—"संजमो **पडिचरियव्वो**" (आव ४)।

पडिचरग पुं [**प्रतिचरक**] जासूस, चर पुरुष; (बृह १)।

पडिचरणा देखो **पडिअरणा** ; (राज)।

पडिचार पुं [**प्रतिचार**] कला-विशेष ;—१ ग्रह आदि की गति का परिज्ञान ; २ रोगी की सेवा-शुश्रूषा का ज्ञान ; (जं २ ; औप ; स ६०३)।

पडिचारय पुंस्त्री [**प्रतिचारक**] नौकर, कर्मकर। स्त्री—°**रिया** ; (सुपा ३०८)।

पडिचोइज्जमाण देखो **पडिचोय**।

पडिचोइय वि [**प्रतिचोदित**] १ प्रेरित ; (उप पृ ३६४)। २ प्रतिभणित, जिसको उत्तर दिया गया हो वह ; (पउम ४४, ४६)।

पडिचोएत्तु वि [**प्रतिचोदयितृ**] प्रेरक ; (ठा ३, ३)।

पडिचोय सक [**प्रति + चोदय्**] प्रेरणा करना। पडिचोएंति ; (भग १५)। कवकृ—**पडिचोइज्जमाण** ; (भग १५—पत्र ६७६)।

पडिचोयणा स्त्री [**प्रतिचोदना**] प्रेरणा ; (ठा ३, ३ ; भग १५—पत्र ६७६)।

पडिच्चारग देखो **पडिचारय** ; (उप ९८६ टी)।

पडिच्छ देखो **पडिक्ख**। वकृ—**पडिच्छंत,** "अहिसेयदिणं **पडिच्छमाणो** चिट्ठइ" (उप ; स १३५ ; महा)। कृ—**पडिच्छियव्व** ; (महा)।

पडिच्छ सक [**प्रति + इष्**] ग्रहण करना। पडिच्छइ, पडिच्छंति ; (कप्प ; सुपा ३६)। वकृ—**पडिच्छमाण, पडिच्छेमाण** ; (औप; कप्प ; गाया १, १)। संकृ—**पडिच्छइत्ता, पडिच्छिअ, पडिच्छिउं, पडिच्छिऊण;** (कप्प ; अभि १८५ ; सुपा ८९ ; निचू २०)। हेकृ—**पडिच्छिउं** ; (सुपा ९२)। कृ—**पडिच्छियव्व** ; (सुपा ; १२५ ; सुर ४, १८६)। प्रयो—कर्म—**पडिच्छावीअदि** (शौ) ; (पि ५५२ ; नाट) ; वकृ—**पडिच्छावेमाण** ; (कप्प)।

पडिच्छंद पुंन [**प्रतिच्छन्द**] १ मूर्त्ति, प्रतिबिम्ब ; (उप ७२८ टी ; स १६१ ; ६०६)। २ तुल्य, समान ; (से ८, ४६)। °**किय** वि [°**कृत**] समान किया हुआ ; (कुमा)।

पडिच्छंद पुं [**दे**] मुख, मुँह ; (दे ६, २४)।

पडिच्छग वि [**प्रत्येषक**] ग्रहण करने वाला ; (निचू ११)।

पडिच्छण न [**प्रतीक्षण**] प्रतीक्षा, बाट ; (उप ३७८)।

पडिच्छण न [**प्रत्येषण**] १ ग्रहण, आदान ; २ उत्सारण, विनिवारण ; "कुलिसपडिच्छणजोग्गा पच्छा कइया महिहराण" (गउड)।

पडिच्छणा [**त्येषणा**] ग्रहण, आदान ; (निचू १६)।

पडिच्छण्ण } वि [**प्रतिच्छन्न**] आच्छादित, ढका हुआ ;
पडिच्छन्न } (णाया १, १—पत्र १३ ; कप्प)।

पडिच्छय पुं [**दे**] समय, काल ; (दे ६, १६)।

पडिच्छय देखो **पडिच्छग** ; (औप)।

पडिच्छयण न [**प्रतिच्छदन**] देखो **पडिच्छायण**; (राज)।

पडिच्छा स्त्री [**प्रतीच्छा**] ग्रहण, अंगीकार ; (द्र ३३ ; सण)।

पडिच्छायण न [**प्रतिच्छादन**] आच्छादन वस्त्र, प्रच्छादन-पट ; "हिरिपडिच्छायणं च नो संचाएमि अहियासित्तए" (आचा; णाया १, १—पत्र १५ टी)।

पडिच्छाया स्त्री [**प्रतिच्छाया**] प्रतिबिम्ब; (उप ५६३ टी)।

पडिच्छावेमाण देखो **पडिच्छ**=प्रति + इष्।

पडिच्छिअ वि [**प्रतीष्ट, प्रतीप्सित**] १ गृहीत, स्वीकृत ; (से ७, ५४ ; उवा ; औप ; सुपा ८४)। २ विशेष रूप से वाञ्छित ; (भग)।

पडिच्छिअ देखो **पडिच्छ**=प्रति + इष्।

पडिच्छिआ स्त्री [**दे**] १ प्रतिहारी ; २ चिरकाल से व्यायी हुई भैंस ; (दे ६, २१)।

पडिच्छिउं
पडिच्छिऊण } देखो **पडिच्छ**=प्रति + इष्।
पडिच्छियव्व

पडिच्छिर वि [**प्रतीक्षितृ**] प्रतीक्षा करने वाला ; (वज्जा ३६)।

पडिच्छिर वि [**दे**] सदृश, समान ; (हे २, १७४)।

पडिछंद देखो **पडिच्छंद** ; "वडियं नियपडिछंदं" (उप ७२८ टी)।

पडिछा स्त्री [**प्रतीक्षा**] प्रतीक्षण, बाट ; (ओघ १७५)।

पडिजंप सक [**प्रति + जल्प्**] उत्तर देना। पडिजंपइ ; (भवि)।

पडिजग्ग देखो **पडिजागर**=प्रति + जागृ। पडिजग्गइ ; (बृह ३)।

पडिजग्गय वि [**प्रतिजागरक**] सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (उप ७६८ टी)।

पडिजग्गिय वि [**प्रतिजागृत**] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह ; (सुर ११, २४)।

पडिजागर सक [**प्रति + जागृ**] १ सेवा-शुश्रूषा करना। २ गवेषणा करना। पडिजागरंति ; (कप्प)। वकृ— **पडिजागरमाण** ; (विपा १, १ ; उवा ; महा)।

पडिजागर पुं [**प्रतिजागर**] १ सेवा-शुश्रूषा ; २ चिकित्सा; "भणिओ सिट्ठी आणसु विज्जं पडिजागरट्ठाए" (सुपा ५७६)।

पडिजागरण न [**प्रतिजागरण**] ऊपर देखो ; (वव ६)।

पडिजागरिय देखो **पडिजग्गिय** ; (दे १, ४१)।

पडिजुवइ स्त्री [**प्रतियुवति**] १ स्व-समान अन्य युवति ; २ सपत्नी ; (कुप्र ४)।

पडिजोग पुं [**प्रतियोग**] कार्मण आदि योग का प्रतिघातक योग, चूर्ण-विशेष ; (सुर ८, २०४)।

पडिट्ठ वि [**पटिष्ठः**] अत्यन्त निपुण ; (सुर १, १३५ ; १३, ८६)।

पडिट्ठविअ वि [**परिस्थापित**] संस्थापित ; (से ५, ५२)।

पडिट्ठविअ वि [**प्रतिष्ठापित**] जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो वह ; (अच्चु ६४)।

पडिट्ठा देखो **पइट्ठा** ; (नाट—मालती ७०)।

पडिट्ठाव सक [**प्रति + स्थापय्**] प्रतिष्ठित करना। पडिट्ठावेहि ; (पि २२० ; ५५१)।

पडिट्ठावअ देखो **पइट्ठावय** ; (नाट—वेणी ११२)।

पडिट्ठाविद (शौ) देखो **पइट्ठाविय** ; (अभि १८७)।

पडिट्ठिअ देखो **पइट्ठिय** ; (षड् ; पि २२०)।

पडिण देखो **पडीण** ; (पि ८२ ; ६६)।

पडिणव वि [**प्रतिनव**] नया, नूतन ; "तुरअपडिणवखुरवाद खिरंतरखंडिदं" (विक्र २६)।

पडिणिअंसण न [**दे**] रात में पहनने का वस्त्र; (दे ६, ३६)।

पडिणिअत्त अक [**प्रतिनि + वृत्**] पीछे लौटना, पीछे वापिस जाना। पडिणियत्तई ; (औप)। वकृ—**पडिणिअत्तंत, पडिणिअत्तमाण** ; (से १३, ७५; नाट—मालती ३०)। संकृ—**पडिणियत्तित्ता** ; (औप)।

पडिणिअत्त } वि [**प्रतिनिवृत्त**] पीछे लौटा हुआ ; (गा
पडिणिउत्त } ६८ अ ; विपा १, ७ ; उवा ; से १, ३६ ; अभि १२४) ।

पडिणिक्खम अक [**प्रतिनिर्+क्रम्**] बाहर निकलना । पडिणिक्खमइ ; (उवा) । संकृ—**पडिणिक्खमित्ता** ; (उवा) ।

पडिणिग्गच्छ अक [**प्रतिनिर्+गम्**] बाहर निकलना । पडिणिग्गच्छइ ; (उवा) । संकृ—**पडिणिग्गच्छित्ता** ; (उवा) ।

पडिणिभ वि [**प्रतिनिभ**] १ सदृश, तुल्य ; २ हेतु-विशेष, वादी की प्रतिज्ञा का खंडन करने के लिए प्रतिवादी की तरफ से प्रयुक्त समान हेतु—युक्ति ; (ठा ४, ३) ।

पडिणिवत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि+वृत् । वकृ—**पडिणिवत्तमाण** ; (नाट—रत्ना ५४) ।

पडिणिवत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनिवृत्त ; (काल) ।

पडिणिविट्ठ वि [**प्रतिनिविष्ट**] द्विष्ट, द्वेष-युक्त ; (पगह १, १—पत्र ७) ।

पडिणिवुत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि+वृत् । वकृ—**पडिणिवुत्तमाण** ; (वेणी २३) ।

पडिणिवुत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनिवृत्त ; (अभि ११८) ।

पडिणिवेस देखो **पडिनिवेस** ; (राज) ।

पडिणिव्वत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि+वृत् । वकृ—**पडिणिव्वत्तंत** ; (हेका ३३२) ।

पडिणिसंत वि [**प्रतिनिश्रान्त**] १ विश्रान्त ; २ निर्लीन ; (गाया १, ४—पत्र ६७) ।

पडिणीय न [**प्रत्यनीक**] १ प्रतिसैन्य, प्रतिपक्ष की सेना ; (भग ८, ८) । २ वि. प्रतिकूल, विपक्षी, विपरीत आचरण करने वाला ; (भग ८, ८; णाया १, २ ; सम्म १६३ ; औप ; ओघ ६३; द ३३) ।

पडिण्णत्त वि [**प्रतिज्ञप्त**] उक्त, कथित ; " जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पे ; अहं च खलु पडिण्ण(न्न)त्तो अपडिण्ण(न्न)त्तेहिं " (आचा १, ८, ५, ४) ।

पडिण्णा देखो **पइण्णा**; (स्वप्न २०७ ; सुअ १,२,२,२०)।

पडिण्णाद देखो **पइण्णाद** ; (पि २७६; ५६५ ; नाट—मालवि १२) ।

पडितंत वि [**प्रतितन्त्र**] स्व-शास्त्र ही में प्रसिद्ध अर्थ ; " जो खलु सतंतसिद्धो न य परतंतेसु सो उ पडितंतो " (बृह१) ।

पडितप्प सक [**प्रतितर्पय्**] भोजनादि से तृप्त करना । पडितप्पह ; (ओघ ५३५) ।

पडितप्पिय वि [**प्रतितर्पित**] भोजन आदि से तृप्त किया हुआ ; (बव १) ।

पडितुट्ठ देखो **परितुट्ठ**; (नाट—मृच्छ ८१) ।

पडितुल्ल वि [**प्रतितुल्य**] समान, सदृश ; (पउम ५, १६६) ।

पडित्त देखो **पलित्त**=प्रदीप्त ; (से १, ५ ; ५, ८७) ।

पडित्ताण देखो **परित्ताण**; (नाट—शकु १४) ।

पडित्थिर वि [**दे**] समान, सदृश ; (दे ६, २०) ।

पडित्थिर वि [**परिस्थिर**] स्थिर ; " गुप्पंतपडित्थिरे " (से २, ४) ।

पडिदंड पुं [**प्रतिदण्ड**] मुख्य दण्ड के समान दूसरा दण्ड ; " सपडिदंडाणं धरिज्जमाणेणं आयवत्तेणं विरायंते " (औप)।

पडिदंस सक [**प्रति+दर्शय्**] दिखलाना । पडिदंसइ ; (भग ; उवा) । संकृ—**पडिदंसेत्ता** ; (उवा) ।

पडिदा सक [**प्रति+दा**] पीछे देना, दान का बदला देना । **पडिदेइ** ; (विसे ३२४१) । कृ—**पडिदायव्व**; (कस) ।

पडिदाण न [**प्रतिदान**] दान के बदले में दान ; " दाणपडिदाणउचियं " (उप ५६७ टी) ।

पडिदिसा } स्त्री [**प्रतिदिश्**] विदिशा, विदिक् ; (राज;
पडिदिसि } पि ४१३) ।

पडिदुगंछि वि [**प्रतिजुगुप्सिन्**] १ निन्दा करने वाला ; २ परिहार करने वाला ; " सीओदगपडिदुगंछिणो " (सुअ १, २, २, २०) ।

पडिदुवार न [**प्रतिद्वार**] १ हर एक द्वार ; (पगह १,३)। २ छोटा द्वार ; (कप्प ; पगण २) ।

पडिनमुक्कार पुं [**प्रतिनमस्कार**] नमस्कार के बदले में नमस्कार—प्रणाम ; (रंभा) ।

पडिनिक्खंत वि [**प्रतिनिष्क्रान्त**] बाहर निकला हुआ ; (गाया १, १३) ।

पडिनिक्खम देखो **पडिणिक्खम** । पडिनिक्खमइ ; (कप्प)। संकृ—**पडिनिक्खमित्ता** ; (कप्प ; भग) ।

पडिनिग्गच्छ देखो **पडिणिग्गच्छ** । पडिनिग्गच्छइ ; (उवा) । पडिनिग्गच्छंति ; (भग) । संकृ—**पडिनिग्गच्छित्ता** ; (उवा ; पि ५८२) ।

पडिनिभ देखो **पडिणिभ** ; (दसनि १) ।

पडिनियत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि + वृत्। पडिनियत्तइ ; (महा) । हेकृ—**पडिनियत्तए**; (कप्प) ।

पडिनियत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनिवृत्त ; (णाया १,१४ ; महा) ।

पडिनिवेस पुं [**प्रतिनिवेश**] १ आग्रह, कदाग्रह ; (पच्च ६) । २ गाढ़ अनुशय ; (विसे २२६६) ।

पडिनिसिद्ध वि [**प्रतिनिषिद्ध**] निवारित ; (उप पृ ३३३) ।

पडिन्नत्त देखो **पडिण्णत्त** ; (आचा १, ८, ५, ४) ।

पडिन्नव सक [**प्रति + ज्ञपय्**] कहना । संकृ—**पडिन्नवित्ता** ; (कप्प) ।

पडिन्ना देखो **पडिण्णा** ; (आचा) ।

पडिपंथ पुं [**प्रतिपथ**] १ उलटा मार्ग, विपरीत मार्ग ; २ प्रतिकूलता ; (सूअ १, ३, १, ६) ।

पडिपंथि वि [**प्रतिपन्थिन्**] प्रतिकूल, विरोधी ; "अप्पेगे पडिभासंति पडिपंथियमागता" (सूअ १, ३, १, ६) ।

पडिपक्ख देखो **पडिवक्ख** ; (आघ १३) ।

पडिपडिय वि [**प्रतिपतित**] फिर से गिरा हुआ ; "सत्था सिवत्थिणो चालियावि पडिपडिया भवारण्णे" (सार्ध ६४) ।

पडिपत्ति } देखो **पडिवत्ति** ; (नाट—चैत ३४ ; संक्षि
पडिपद्दि } ६)

पडिपह पुं [**प्रतिपथ**] १ उन्मार्ग, विपरीत रास्ता ; (स १४७ ; पि ३६६ ए) । २ न. अभिमुख, संमुख ; (सूअ २, २, ३१ टी) ।

पडिपहिअ वि [**प्रातिपथिक**] संमुख आने वाला ; (सूअ २, २, २८) ।

पडिपाअ सक [**प्रति + पादय्**] प्रतिपादन करना, कथन करना । कृ—**पडिपाअणीअ** ; (नाट—शकु ६५) ।

पडिपाय पुं [**प्रतिपाद**] मुख्य पाद को सहायता पहुँचाने वाला पाद ; (राय) ।

पडिपाहुड न [**प्रतिप्राभृत**] बदले की भेंट; (सुपा १४५) ।

पडिपिंडिअ वि [**दे**] प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ ; (दे ६, ३४) ।

पडिपिल्ल सक [**प्रति + क्षिप्, प्रतिप्र + ईरय्**] प्रेरणा करना । पडिपिल्लइ ; (भवि) ।

पडिपिल्लण न [**प्रतिप्रेरण**] १ प्रेरणा ; (सुर १५, १४१) । २ ढक्कन, पिधान ; ३ वि. प्रेरणा करने वाला ; "दीवसिहापडिपिल्लणमल्ले मिल्लंति नीसासे" (कुप्र १३१) ।

पडिपिहा देखो **पडिपेहा** । संकृ—**पडिपिहित्ता**; (पि ५८२) ।

पडिपीलण न [**प्रतिपीडन**] विशेष पीडन, अधिक दबाव ; (गउड) ।

पडिपुच्छ सक [**प्रति + प्रच्छ्**] १ पृच्छा करना, पूछना । २ फिर से पूछना । ३ प्रश्न का जवाब देना । पडिपुच्छइ ; (उव) । वकृ—**पडिपुच्छमाण** ; (कप्प) । कृ—**पडिपुच्छणिज्ज, पडिपुच्छणीय** ; (उवा ; णाया १, १; राय) ।

पडिपुच्छण न [**प्रतिप्रच्छन**] नीचे देखो ; (भग ; उवा) ।

पडिपुच्छणया } स्त्री [**प्रतिप्रच्छना**] १ पूछना, पृच्छा ;
पडिपुच्छणा } २ फिर से पृच्छा; (उत्त २६, २० ; औप) । ३ उत्तर, प्रश्न का जवाब ; (बृह ४ ; उप पृ ३६८) ।

पडिपुच्छणिज्ज } देखो **पडिपुच्छ** ।
पडिपुच्छणीय }

पडिपुच्छा स्त्री [**प्रतिपृच्छा**] देखो **पडिपुच्छणा**; (पंचा २ ; वव २ ; बृह १) ।

पडिपुच्छिअ वि [**प्रतिपृष्ट**] जिससे प्रश्न किया गया हो वह ; (गा २८६) ।

पडिपुज्जिय वि [**प्रतिपूजित**] पूजित, अर्चित ; "वंदणवरकणगकलससुविणिम्मियपडिपुंजि(? पुज्जि, पूइ) यसरसपउमसोहंतदारभाए" (णाया १, १—पत्र १२) ।

पडिपुण्ण देखो **पडिपुन्न** ; (उवा ; पि २१८) ।

पडिपुत्त पुं [**प्रतिपुत्र**] प्रपुत्र, पुत्र का पुत्र ; "अंकनिवेसियनियनियपुत्तयपडिपुत्तनत्तपुत्तीयं" (सुपा ६) । देखो **पडिपोत्तय** ।

पडिपुन्न वि [**प्रतिपूर्ण**] परिपूर्ण, संपूर्ण ; (णाया १, १ ; सुर ३, १८ ; ११४) ।

पडिपूइय देखो **पडिपुज्जिय** ; (राज) ।

पडिपूयग } वि [**प्रतिपूजक**] पूजा करने वाला ; (राज;
पडिपूयय } सम ५१) ।

पडिपूरिय वि [**प्रतिपूरित**] पूर्ण किया हुआ ; (पउम १००, ५० ; ११५, ७) ।

पडिपेल्लण देखो **पडिपिल्लण** ; (गउड ; से ६, ३२) ।

पडिपेल्लण न [**परिप्रेरण**] देखो **पडिपिल्लण**; (से २, २४) ।

पडिपेल्लिय वि [**प्रतिप्रेरित**] प्रेरित, जिसको प्रेरणा की गई हो वह ; (सुर १५, १८० ; महा) ।

पडिपेहा सक [**प्रतिपि + धा**] ढकना, आच्छादन करना । संकृ—**पडिपेहित्ता** ; (सूअ २, २, ५१) ।

पडिपोत्तय पुं [**प्रतिपुत्रक**] नता, कन्या का पुत्र, लड़की का लड़का ; (सुपा १६२) । देखो **पडिपुत्तय** ।

पडिप्पह देखो **पडिपह** ; (उत्त ७२८ टी) ।

पडिप्फद्धि वि [**प्रतिस्पर्धिन्**] स्पर्धा करने वाला ; (हे १, ४४ ; २, ५३ ; प्राप्र ; सण्णि ११) ।

पडिप्फलणा स्त्री [**प्रतिफलना**] १ स्खलना ; २ संक्रमण ; "पडिसद्दपडिप्फलणापडिजन्तमिसमुप्पयंते" (सुपा ८७) ।

पडिप्फलिअ } वि [**प्रतिफलित**] १ प्रतिबिम्बित, संक्रान्त ;
पडिफलिअ } (से १५, ३१ ; हे १, २७) । २ स्खलित ; (पाअ) ।

पडिबंध सक [**प्रति + बन्ध्**] रोकना, अटकाना । पडिबंधइ ; (पि ५१३) । कृ—**पडिबंधेयव्व** ; (वव) ।

पडिबंध पुं [**प्रतिबन्ध**] १ रुकावट ; (उवा ; कप्प) । २ विघ्न, अन्तराय ; (उप ८८७) । ३ आदर, बहुमान ; (उप ७७६ ; उवर १४६) । ४ स्नेह, प्रीति, राग ; (ठा ६ ; पंचा १७) । ५ आसक्ति, अभिष्वङ्ग ; (गाया १, ५ ; कप्प) । ६ वेष्टन ; (सुअ १, ३, २) ।

पडिबंधअ } वि [**प्रतिबन्धक**] प्रतिबन्ध करने वाला,
पडिबंधग } रोकने वाला ; (अभि २५३ ; उप ६४५) ।

पडिबंधण न [**प्रतिबन्धन**] प्रतिबन्ध, रुकावट ; (पि २१८) ।

पडिबंधेयव्व देखो **पडिबंध**=प्रति+बन्ध् ।

पडिबद्ध वि [**प्रतिबद्ध**] १ रोका हुआ, संरुद्ध ; "वायुरिव अप्पडिबद्धे" (कप्प ; पराह १, ३) । २ उपजनित, उत्पादित ; (गउड १८२) । ३ संसक्त, संबद्ध, संलग्न ; "सरिआण तरंगियपंकवडलपडिबद्धवालुयामसिणा......... पुलिणवित्थारा" (गउड ; कुप्र ११५ ; उवा) । ४ सामने बँधा हुआ ; "पडिबद्धं नवर तुमे नरिंदचक्कं पयावविसरंपि" (गउड) । ५ व्यवस्थित ; (पंचा १३) । ६ वेष्टित ; (गउड) । ७ समीप में स्थित ; "तं चेव य नागरिगं जस्स अदूरे स पडिबद्धो" (बृह १) ।

पडिबाह सक [**प्रति + बाध्**] रोकना । हेकृ—**पडिबाहिदुं** (शौ) ; (नाट—महावी ६६) ।

पडिबाहिर वि [**प्रतिबाह्य**] अनधिकारी, अयोग्य ; (सम ५०) ।

पडिबिंब न [**प्रतिबिम्ब**] १ परछाँही, प्रतिच्छाया ; (सुपा २६६) । २ प्रतिमा, प्रतिमूर्ति ; (पाअ ; प्रामा) ।

पडिबिंबिअ वि [**प्रतिबिम्बित**] जिसका प्रतिबिम्ब पड़ा हो वह ; (कुमा) ।

पडिबुज्झ अक [**प्रति + बुध्**] १ बोध पाना । २ जागृत होना । पडिबुज्झइ ; (उवा) । वकृ—**पडिबुज्झंत**, **पडिबुज्झमाण** ; (कप्प) ।

पडिबुज्झणया } स्त्री [**प्रतिबोधना**] १ बोध, समझ ;
पडिबुज्झणा } २ जागृति ; (स १५६ ; ओघ) ।

पडिबुद्ध वि [**प्रतिबुद्ध**] १ बोध-प्राप्त ; (जीव १३५ ; उव) । २ जागृत ; (गाया १, १) । ३ न. प्रतिबोध ; (आचा) । ४ पुं. एक राजा का नाम ; (गाया १, ८) ।

पडिबूहणया स्त्री [**प्रतिबृंहणा**] उपचय, पुष्टि ; (सुअ २, २, ८) ।

पडिबोध देखो **पडिबोह**=प्रतिबोध ; (नाट—मालती ५६) ।

पडिबोधिअ देखो **पडिबोहिय** ; (अभि ७६) ।

पडिबोह सक [**प्रति + बोधय्**] १ जगाना । २ बोध देना, समझाना, ज्ञान प्राप्त कराना । पडिबोहइ ; (कप्प ; महा) । कवकृ—**पडिबोहिज्जंत** ; (अभि ५६) । संकृ—**पडिबोहिअ** ; (नाट—मालती १३६) । हेकृ—**पडिबोहिउं** ; (महा) । कृ—**पडिबोहियव्व** ; (स ७०७) ।

पडिबोह पुं [**प्रतिबोध**] १ बोध, समझ ; २ जागृति, जागरण ; (गउड ; पि १७१) ।

पडिबोहग वि [**प्रतिबोधक**] १ बोध देने वाला ; २ जगाने वाला ; (विसे २४७ टी) ।

पडिबोहण न [**प्रतिबोधन**] देखो **पडिबोह**=प्रतिबोध ; (काल ; स ७०८) ।

पडिबोहि वि [**प्रतिबोधिन्**] प्रतिबोध प्राप्त करने वाला ; (आचा २, ३, १, ८) ।

पडिबोहिय वि [**प्रतिबोधित**] जिसको प्रतिबोध किया गया हो वह ; (गाया १, १ ; काल) ।

पडिभंग पुं [**प्रतिभङ्ग**] भङ्ग, विनाश ; (से ५, १६) ।

पडिभंज अक [**प्रति + भञ्ज्**] भाँगना, टूटना । हेकृ—**पडिभंजिउं** ; (वव ४) ।

पडिभंड न [**प्रतिभाण्ड**] एक वस्तु को बेच कर उसके बदले में खरीदी जाती चीज ; (स २०५ ; सुर ६, १५८) ।

पडिभंस सक [**प्रति + भ्रंशय्**] भ्रष्ट करना, च्युत करना । "पथाओ य पडिभंसइ" (स ३६३) ।

पडिभग्ग वि [**प्रतिभग्न**] भागा हुआ, पलायित ; (ओघ ५३३) ।

पडिभड पुं [**प्रतिभट**] प्रतिपक्षी योद्धा ; (से १३, ७२ ; आरा ५६ ; भवि) ।

पडिभण सक [**प्रति+भण्**] उत्तर देना, जवाब देना । पडिभणइ ; (महा ; उवा ; सुपा २१५), पडिभणामि; (महानि ४) ।

पडिभणिअ वि [**प्रतिभणित**] प्रत्युत्तरित, जिसका उत्तर दिया गया हो वह ; (महा ; सुपा ६०) ।

पडिभम सक [**प्रति, परि+भ्रम्**] घूमना, पर्यटन करना । संकृ—" कत्थइ कडुआविय गयह पंति **पडिभमिय** सुहडलीसइँ दलंति " (भवि) ।

पडिभमिय वि [**प्रतिभ्रान्त, परिभ्रान्त**] घूमा हुआ ; (भवि) ।

पडिभय न [**प्रतिभय**] भय, डर ; (पउम ७३, १२) ।

पडिभा अक [**प्रतिभा**] मालूम होना । पडिभादि (शौ); (नाट—रत्ना ३) ।

पडिभाग पुं [**प्रतिभाग**] १ अंश, भाग; (भग २५, ७)। २ प्रतिबिम्ब ; (राज) ।

पडिभास अक [**प्रति+भास्**] मालूम होना । पडिभासदि (शौ); (नाट—मृच्छ १४१) ।

पडिभास सक [**प्रति+भाष्**] १ उत्तर देना । २ बोलना, कहना । " अप्पेगे पडिभासंति " (सूअ १, ३, १, ६) ।

पडिभिण्ण वि [**प्रतिभिन्न**] संबद्ध, संलग्न ; (से ४, ५)।

पडिभू पुं [**प्रतिभू**] जामिनदार, मनौतिया ; (नाट—चैत ७५) ।

पडिभेअ पुं [**दे. प्रतिभेद**] उपालम्भ ; " पडिभेओ पच्चारणं " (पाअ) ।

पडिभोइ वि [**प्रतिभोगिन्**] परिभोग करने वाला; "अकालपडिभोईणि " (आचा २, ३, १, ८ ; पि ४०५) ।

पडिम° देखो **पडिमा** । °**ट्ठाइ** वि [°**स्थायिन्**] १ कायोत्सर्ग में रहने वाला ; २ नियम-विशेष में स्थित ; (पगह २, १—पत्र १०० ; ठा ५, १—पत्र २९६) ।

पडिमल्ल पुं [**प्रतिमल्ल**] प्रतिपक्षी मल्ल ; (भवि) ।

पडिमा स्त्री [**प्रतिमा**] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब ; " जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं " (दसनि १ ; पाअ ; गा १ ; ११४)। २ कायोत्सर्ग ; ३ जैन-शास्त्रोक्त नियम-विशेष ; (पगह २,१; सम १९ ; ठा २, ३; ५, १) । °**गिह** न [°**गृह**] मन्दिर ; (निचू १२) । देखो **पडिम°** ।

पडिमाण न [**प्रतिमान**] जिससे सुवर्ण आदि का तौल किया जाता है वह रत्ती, मासा आदि परिमाण ; (अणु) ।

पडिमि } सक [**प्रति+मा**] १ तौल करना, माप करना। **पडिमिण** } २ गिनती करना । कर्म—पडिमिणिज्जइ; (अणु)। कवकृ—**पडिमिज्जमाण** ; (राज) ।

पडिमुंच सक [**प्रति+मुच्**] छोड़ना । हेकृ—**पडिमुंचिउं**; (से १४, २) ।

पडिमुंडणा स्त्री [**प्रतिमुण्डना**] निषेध, निवारण ; (बृह १) ।

पडिमुक्क वि [**प्रतिमुक्त**] छोड़ा हुआ ; (से ३, १२) ।

पडिमोअणा स्त्री [**प्रतिमोचना**] छुटकारा ; (से १,४६)।

पडिमोक्खण न [**प्रतिमोचन**] छुटकारा ; (स ४१) ।

पडिमोयग वि [**प्रतिमोचक**] छुटकारा करने वाला ; (राज) ।

पडिमोयण देखो **पडिमोक्खण** ; (औप) ।

पडियक्क देखो **पडिक्क** ; (आचा) ।

पडियक्क न [**प्रतिचक्र**] युद्ध-कला विशेष ; " तेण पुत्तो विव निप्फाइतो ईसत्थे पडियक्के जन्तमुक्के य अन्नासुवि कलासु " (महा) ।

पडियच्च देखो **पत्तिअ**=प्रति+इ ।

पडिया स्त्री [**प्रतिज्ञा**] १ उद्देश ; " पिंडवायपडियाए " (कस ; आचा) । २ अभिप्राय; (ठा ५, २—पत्र ३१४)।

पडिया स्त्री [**पटिका**] वस्त्र-विशेष ;
" सुपमाणा य सुसुत्ता, बहुरूवा तह य कोमला सिसिरे ।
कत्तो पुराणेहि विणा, वेसा पडियव्व संपडइ " (वज्जा ११६) ।

पडियाइक्ख सक [**प्रत्या+ख्या**] त्याग करना । पडियाइक्खे ; (पि १६६) ।

पडियाइक्खिय वि [**प्रत्याख्यात**] त्यक्त, परित्यक्त ; (ठा २, १ ; भग ; उवा ; कस ; विपा १, १ ; औप) ।

पडियाणय न [**दे. पर्याणक**] पर्याण के नीचे दिया जाता चर्म आदि का एक उपकरण ; (णाया १, १७—पत्र २३०)।

पडियाणंद पुं [**प्रत्यानन्द**] विशेष आनन्द, प्रभूत आह्लाद; (औप) ।

पडियाणय न [**दे. पटतानक, पर्याणक**] पर्याण के नीचे रखा जाता वस्त्र आदि का एक घुड़सवारी का उपकरण ; (णाया १, १७—पत्र २३२ टी) ।

पडिर वि [**पतितृ**] गिरने वाला ; (कुमा) ।

पडिरअ देखो **पडिरव** ; (गा ५५ अ ; से ७, १६) ।

पडिरंजिअ वि [**दे**] भग्न, टूटा हुआ ; (दे ६, ३२)।

पडिरक्खिय वि [**प्रतिरक्षित**] जिसकी रक्षा की गई हो वह ; (भवि)

पडिरव पुं [**प्रतिरव**] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द ; (गउड ; गा ५५ ; सुर १, २४४)।

पडिराय पुं [**प्रतिराग**] लाली, रक्तपन ;
" उव्वहइ दइयगहियाहरोट्ठझिज्जंतरोसपडिरायं ।
पाणोसरंतमइरं व फलिहचसयं इमा वयणं " (गउड)।

पडिरिग्गअ [**दे**] देखो **पडिरंजिअ** ; (षड्)।

पडिरु अक [**प्रति + रु**] प्रतिध्वनि करना, प्रतिशब्द करना। वकृ—**पडिरुअंत** ; (से १२, ६ ; पि ४७३)।

पडिरुंध } सक [**प्रति + रुध्**] १ रोकना, अटकाना।
पडिरुंभ } २ व्याप्त करना। पडिरुंभइ ; (से ८, ३६)। वकृ—**पडिरुंधंत** ; (से ११, ५)।

पडिरुद्ध वि [**प्रतिरुद्ध**] रोका हुआ, अटकाया हुआ ; (सुपा ८५ ; वज्जा ५०)।

पडिरूअ } वि [**प्रतिरूप**] १ रम्य, सुन्दर, चारु, मनोहर ;
पडिरूव } (सम १३७ ; उवा ; औप)। २ रूपवान्, प्रशस्त रूप वाला, श्रेष्ठ आकृति वाला ; (औप)। ३ असाधारण रूप वाला ; ४ नूतन रूप वाला ; (जीव ३)। ५ योग्य, उचित ; (स ८७ ; भग १५ ; दस ६, १)। ६ सदृश, समान ; (गाया १, १—पत्र ६१)। ७ समान रूप वाला, सदृश आकार वाला ; (उत्त २६, ४२)। ८ न. प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति ; " कइयावि चित्तफलए कइया वि पडम्मि तस्स पडिरूवं लिहिऊण " (सुर ११, २३८ ; गाय)। ९ समान रूप, समान आकृति ; " तुम्हपडिरूवधारिं पासइ विज्जाहरसुदाढं " (सुपा २६८)। १० पुं. इन्द्र-विशेष, भूत-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ११ विनय का एक भेद ; (वव १)।

पडिरूवा स्त्री [**प्रतिरूपा**] एक कुलकर पुरुष की पत्नी का नाम ; (सम १५०)।

पडिरोव पुं [**प्रतिरोप**] पुनरारोपण ; (कुप्र ५५)।

पडिरोह पुं [**प्रतिरोध**] रुकावट ; (गउड ; गा ७२४)।

पडिरोहि वि [**प्रतिरोधिन्**] रोकने वाला ; (गउड)।

पडिलंभ सक [**प्रति + लभ्**] प्राप्त करना। संकृ—**पडिलंभिय** ; (सूअ १, १३)।

पडिलंभ पुं [**प्रतिलम्भ**] प्राप्ति, लाभ ; (सूअ २, ५)।

पडिलग्ग वि [**प्रतिलग्न**] लगा हुआ, संबद्ध ; (से ६, ८६)।

पडिलग्गल न [**दे**] वल्मीक, कीट-विशेष-कृत मृत्तिका-स्तूप ; (दे ६, ३३)।

पडिलाभ } सक [**प्रति + लाभय्, लम्भय्**] साधु आदि
पडिलाह } को दान देना। पडिलाहेज्जह ; (काल)। वकृ—**पडिलाभेमाण** ; (णाया १, ५ ; भग ; उवा)। संकृ—**पडिलाभित्ता** ; (भग ८, ५)।

पडिलाहण न [**प्रतिलाभन**] दान, देना ; (पंचा)।

पडिलिहिअ वि [**प्रतिलिखित**] लिखा हुआ ; "तस्स मंतं दुवारे पडिलिहियं" (सि १४)।

पडिलेह सक [**प्रति + लेखय्**] १ निरीक्षण करना, देखना। २ विचार करना। पडिलेहइ ; (उव ; कप्प ; भग)। "पडेहि जाणे पडिलेह सायं, तेण कालेण य आव-हेउं" (सूअ १, ८, २)। संकृ—"सुएहिं जाणं पडिलेह सायं" (सूअ १, ७, १६), **पडिलेहित्ता** ; (भग)। हेकृ—**पडिलेहित्तए, पडिलेहेत्तए** ; (कप्प)। कृ—**पडिलेहियव्व** ; (ओघ ४ ; कप्प)।

पडिलेहग देखो **पडिलेहय** ; (राज)।

पडिलेहण न [**प्रतिलेखन**] निरीक्षण ; (ओघ ३ भा ; औप)।

पडिलेहणा स्त्री [**प्रतिलेखना**] निरीक्षण, निरूपण ; (भग)।

पडिलेहय वि [**प्रतिलेखक**] निरीक्षक, देखने वाला ; (ओघ ४)।

पडिलेहा स्त्री [**प्रतिलेखा**] निरीक्षण, अवलोकन ; (ओघ ३ ; ठा ५, ३ ; कप्प)।

पडिलेहिय वि [**प्रतिलेखित**] निरीक्षित ; (उवा)।

पडिलेहियव्व देखो **पडिलेह**।

पडिलोम वि [**प्रतिलोम**] १ प्रतिकूल ; (भग)। २ विपरीत, उल्टा ; (आचा २, २, २)। ३ न. पश्चानुपूर्वी, उल्टा क्रम ; "अन्नं दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ सव्वे वत्थं" (सुर १६, ४८ ; निचू १)। ४ उदाहरण का एक दोष ; (दसनि १)। ५ अपवाद ; (राज)।

पडिलोमइत्ता अ [**प्रतिलोमयित्वा**] वाद-विशेष, वाद-सभा के सदस्य या प्रतिवादी को प्रतिकूल बनाकर किया जाता वाद—शास्त्रार्थ ; (ठा ६)।

पडिल्ली स्त्री [**दे**] १ वृति, वाड़ ; २ यवनिका, परदा ; (दे ६, ६५)।

पडिव देखो **पलीव**=प्र + दीपय्। पडिवेइ ; (से ५, ६९)।

पडिवइर न [**प्रतिवैर**] वैर का बदला ; (भवि)।

पडिवंचण न [**प्रतिवञ्चन**] बदला ; "वेरपडिवंचणट्ठ" (पउम २६, ७३)।

पडिवंथ देखो **पडिपंथ** ; (से २, ४६)।

पडिवंध देखो **पडिवंध** ; (भवि)।

पडिवंस पुं [**प्रतिवंश**] छोटा बाँस ; (राय)।

पडिवक्क सक [**प्रति+वच्**] प्रत्युत्तर देना, जवाब देना। पडिवक्कइ ; (भवि)।

पडिवक्ख पुं [**प्रतिपक्ष**] १ रिपु, दुश्मन, विरोधी ; (पाअ ; गा १५२ ; सुर १, ५६ ; २, १२६ ; से ३, १५)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ३ विपर्यय, वैपरीत्य ; (सण)।

पडिवक्खिय वि [**प्रतिपक्षिक**] विरुद्ध पक्ष वाला, विरोधी, (सण)।

पडिवच्च सक [**प्रति+व्रज्**] वापिस जाना। पडिवच्चइ ; (पि ५६०)।

पडिवच्छ देखो **पडिवक्ख** ; "अह णवरमस्स दोसो पडिवच्छेहिंपि पडिवण्णो" (गा ६७६)।

पडिवज्ज सक [**प्रति+पद्**] स्वीकार करना, अंगीकार करना। पडिवज्जइ, पडिवज्जए ; (उव ; महा ; प्रासू १४१)। भवि—पडिवज्जिस्सामि, पडिवज्जिस्सामो ; (पि ५२७ ; औप)। वकृ—**पडिवज्जमाण** ; (पि ५६२)। संकृ—**पडिवज्जिऊण, पडिवज्जित्ताणं, पडिवज्जिय** ; (पि ५८६ ; ५८३ ; महा; रंभा)। हेकृ—**पडिवज्जिउं, पडिवज्जित्तए, पडिवत्तुं** ; (पंचा १८; ठा २, १; कस ; रंभा)। कृ—**पडिवज्जियव्व, पडिवज्जेयव्व** ; (उत्त ३२ ; उप ६८४ ; १००१)।

पडिवज्जण न [**प्रतिपदन**] स्वीकार, अंगीकार ; (कुप्र १४७)।

पडिवज्जण न [**प्रतिपादन**] अंगीकारण, स्वीकार करवाना ; (कुप्र १४७ ; ३८६)।

पडिवज्जय वि [**प्रतिपादक**] स्वीकार करने वाला ; "एस ताव कसणधवलपडिवज्जओ त्ति" (स ५०५)।

पडिवज्जावण न [**प्रतिपादन**] स्वीकारण, स्वीकार कराना ; (कुप्र ६६)।

पडिवज्जाविय वि [**प्रतिपादित**] स्वीकार कराया हुआ ; (महा)।

पडिवज्जिय वि [**प्रतिपन्न**] स्वीकृत ; (भवि)।

पडिवट्टय न [**प्रतिपट्टक**] एक जात का रेशमी कपड़ा ;(कप्पू)।

पडिवड्डावअ वि [**प्रतिवर्धापक**] १ बधाई देने पर उसे स्वीकार कर धन्यवाद देने वाला ; २ बधाई के बदले में बधाई देने वाला। स्त्री—°**विआ** ; (कप्पू)।

पडिवण्ण वि [**प्रतिपन्न**] १ प्राप्त ; (भग)। २ स्वीकृत, अंगीकृत ; (षड्)। ३ आश्रित ; (औप ; ठा ७)। ४ जिसने स्वीकार किया हो वह ; (ठा ४, १)।

पडिवत्त पुं [**परिवर्त**] परिवर्तन ; (नाट—मृच्छ ३१८)।

पडिवत्तण देखो **पडिअत्तण** ; (नाट)।

पडिवत्ति स्त्री [**प्रतिपत्ति**] १ परिच्छित्ति ; २ प्रकृति, प्रकार ; (विसे ५७८)। ३ प्रवृत्ति, खबर ; (पउम ४७, ३० ; ३१)। ४ ज्ञान ; (सुर १४, ७४)। ५ आदर, गौरव ; (महा)। ६ स्वीकार, अंगीकार ; (णंदि)। ७ लाभ, प्राप्ति ; "धम्मपडिवत्तिहेउत्तणेण" (महा)। ८ मतान्तर ; ९ अभिग्रह-विशेष ; (सम १०६)। १० भक्ति, सेवा ; (कुमा ; महा)। ११ परिपाटी, क्रम ; (आव ४)। १२ श्रुत-विशेष, गति, इन्द्रिय आदि द्वारों में से किसी एक द्वार के जरिये समस्त संसार के जीवों को जानना ; (कम्म २, ७)। °**समास** पुं [°**समास**] श्रुत-ज्ञान विशेष—गति आदि दो चार द्वारों के जरिये जीवों का ज्ञान ; (कम्म १, ७)।

पडिवत्तुं देखो **पडिवज्ज**।

पडिवद्दि देखो **पडिवत्ति** ; (प्राप्र)।

पडिवद्धावअ देखो **पडिवड्डावअ**। स्त्री—°**विआ** ; (रंभा)।

पडिवन्न देखो **पडिवण्ण** ; "पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं होइ तं होउ" (प्रासू ३ ; णाया १, ५ ; उवा ; सुर ४, ५७ ; स ६५६ ; हे २, २०६ ; पाअ)।

पडिवन्निय (अप) देखो **पडिवण्ण** ; (भवि)।

पडिवय अक [**प्रति+पत्**] ऊँचे जाकर गिरना। वकृ—**पडिवयमाण** ; (आचा)।

पडिवयण न [**प्रतिवचन**] १ प्रत्युत्तर, जवाब ; (गा ४१६ ; सुर २, १२३ ; सुपा १४३ ; भवि)। २ आदेश, आज्ञा ; "देहि मे पडिवयणं" (आवम)। ३ पुं. हरिवंश के एक राजा का नाम ; (पउम २२, ९७)।

पडिवया स्त्री [**प्रतिपत्**] पडवा, पक्ष की पहली तिथि ; (हे १, ४४ ; २०६ ; षड्)।

पडिवविय वि [**प्रत्युप्त**] फिर से बोया हुआ ; (दे ६, १३)।

पडिवस अक [**प्रति + वस्**] निवास करना। वकृ—**पडिवसंत** ; (पि ३९७ ; नाट—मृच्छ ३२१)।

पडिवह सक [**प्रति + वह्**] वहन करना, ढोना। कवकृ—**पडिवुज्झमाण** ; (कप्प)।

पडिवह देखो **पडिपह** ; (से ३, २४ ; ८, ३३ ; पउम ७३, २४)।

पडिवह पुं [**प्रतिवध, परिवध**] वध, हत्या ; (पउम ७३, २४)।

पडिवाइ वि [**प्रतिवादिन्**] प्रतिवाद करने वाला, वादी का विपक्षी ; (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [**प्रतिपादिन्**] प्रतिपादन करने वाला ; (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [**प्रतिपातिन्**] १ विनश्वर, नष्ट होने के स्वभाव वाला ; (ठा २, १ ; ओघ ५३२ ; उप पृ ३५८)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, फूंक से दीपक के प्रकाश के समान यकायक नष्ट होने वाला अवधिज्ञान ; (ठा ६ ; कम्म १, ८)।

पडिवाइअ वि [**प्रतिपातित**] १ फिर से गिराया हुआ ; २ नष्ट किया हुआ ; (भवि)।

पडिवाइअ वि [**प्रतिपादित**] जिसका प्रतिपादन किया गया हो वह, निरूपित ; (अच्चु ५ ; स ४६ ; ५४३)।

पडिवाइअ वि [**प्रतिवाचित**] १ लिखने के बाद पढ़ा हुआ ; २ फिर से बाँचा हुआ ; (कुप्र १६७)।

पडिवाइऊण } देखो **पडिवाय**=प्रति + वाचय्।
पडिवाइयव्व }

पडिवाडि देखो **परिवाडि** ; (गा ५३०)।

पडिवाद (शौ) सक [**प्रति + पादय्**] प्रतिपादन करना, निरूपण करना। पडिवादेदि ; (नाट—रत्ना ५७)। कृ—**पडिवादणिज्ज** ; (अभि ११७)।

पडिवादय वि [**प्रतिपादक**] प्रतिपादन करने वाला। स्त्री—°**दिआ** ; (नाट—चैत ३४)।

पडिवाय सक [**प्रति + वाचय्**] १ लिखने के बाद उसे पढ़ लेना। २ फिर से पढ़ लेना। संकृ—**पडिवाइऊण** ; कुप्र १६७)। कृ—**पडिवाइयव्व** ; (कुप्र १६७)।

पडिवाय पुं [**प्रतिपात**] १ पुनः-पतन, फिर से गिरना ; (नव ३६)। २ नाश, ध्वंस ; (विसे ५७७)।

पडिवाय पुं [**प्रतिवाद**] विरोध ; (भवि)।

पडिवाय पुं [**प्रतिवात**] प्रतिकूल पवन ; (आवम)।

पडिवायण न [**प्रतिपादन**] निरूपण ; (कुप्र ११६)।

पडिवारय देखो **परिवार** ; "पडिवारयपरियरिओ" (महा)।

पडिवाल सक [**प्रति + पालय्**] १ प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। २ रक्षण करना। पडिवालेइ ; (हे ४, २५९)। पडिवालेदु (शौ) ; (स्वप्न १००)। पडिवालह ; (अभि १८५)। वकृ—**पडिवालअंत, पडिवालेमाण** ; (नाट—रत्ना ४८ ; गाया १, ३)।

पडिवालण न [**प्रतिपालन**] १ रक्षण ; २ प्रतीक्षा, बाट ; (नाट—महा ११८ ; उप ६९९)।

पडिवालिअ वि [**प्रतिपालित**] १ रक्षित। २ प्रतीक्षित, जिसकी बाट देखी गई हो वह ; (महा)।

पडिवास पुं [**प्रतिवास**] औषध आदि को विशेष उत्कट बनाने वाला चूर्ण आदि ; (उप ८, ५ ; सुपा ६७)।

पडिवासर न [**प्रतिवासर**] प्रतिदिन, हर रोज ; (गउड)।

पडिवासुदेव पुं [**प्रतिवासुदेव**] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा ; (पउम २०, २०२)।

पडिविक्किण सक [**प्रतिवि + क्री**] बेचना। पडिविक्किणइ ; (आक ३३ ; पि ५११)।

पडिवित्थर पुं [**प्रतिविस्तर**] परिकर, विस्तार ; (सूअ २, २, ६२ टी ; राज)।

पडिविद्धंसण न [**प्रतिविध्वंसन**] विनाश, ध्वंस ; (राज)।

पडिविप्पिय न [**प्रतिविप्रिय**] अपकार का बदला, बदले के रूप में किया जाता अनिष्ट ; (महा)।

पडिविरइ स्त्री [**प्रतिविरति**] निवृत्ति ; (पण्ह २, ३)।

पडिविरय वि [**प्रतिविरत**] निवृत्त ; (सम ५१ ; सूअ २, २, ७५ ; औप ; उव)।

पडिविसज्ज सक [**प्रतिवि + सर्जय्**] विसर्जन करना, विदाय करना। पडिविसज्जेइ ; (कप्प ; औप)। भवि—पडिविसज्जेहिंति ; (औप)।

पडिविसज्जिय वि [**प्रतिविसर्जित**] विदाय किया हुआ, विसर्जित ; (गाया १, १—पत्र ३०)।

पडिविहाण न [**प्रतिविधान**] प्रतीकार ; (स ५६७)।

पडिवुज्झमाण देखो **पडिवह**=प्रति + वह्।

पडिवुत्त वि [**प्रत्युक्त**] १ जिसका उत्तर दिया गया हो वह ; (अनु ३ ; उप ७२८ टी)। २ न. प्रत्युत्तर ; (उप ७२८ टी)।

पडिवुद (शौ) वि [**परिवृत**] परिकरित ; (अभि ५७ ; नाट—मृच्छ २०५) ।
पडिवूह पुं [**प्रतिव्यूह**] व्यूह का प्रतिपक्षी व्यूह, सैन्य-रचना-विशेष ; (औप) ।
पडिवूहण वि [**प्रतिबृंहण**] १ बढ़ने वाला ; (आचा १, २, ५, ५) । २ न. वृद्धि, पुष्टि ; (आचा १, २, ५, ४) ।
पडिवेस पुं [**दे**] विक्षेप, फेंकना ; (दे ६, २१) ।
पडिवेसिअ वि [**प्रातिवेश्मिक**] पड़ोसी, पड़ोस में रहने वाला ; (दे ६, ३ ; सुपा ५५२) ।
पडिवोह देखो **पडिबोह** ; (सण) ।
पडिसंका स्त्री [**प्रतिशङ्का**] भय, शंका; (पउम ६७,१५)।
पडिसंखा सक [**प्रतिसं+ख्या**] व्यवहार करना, व्यपदेश करना। पडिसंखाए ; (आचा) ।
पडिसंखिव सक [**प्रतिसं+क्षिप्**] संक्षेप करना। संकृ—**पडिसंखिविय** ; (भग १४, ७) ।
पडिसंचिक्ख सक [**प्रतिसम्+ईक्ष्**] चिन्तन करना। पडिसंचिक्खे ; (उत्त २, ३०) ।
पडिसंजल सक [**प्रतिसं+ज्वालय्**] उद्दीपित करना। पडिसंजलेज्जासि ; (आचा) ।
पडिसंत वि [**परिशान्त**] शान्त, उपशान्त ; (से ६, ६१) ।
पडिसंत वि [**प्रतिश्रान्त**] विश्रान्त ; (बृह १) ।
पडिसंत वि [**दे**] १ प्रतिकूल ; २ अस्तमित, अस्त-प्राप्त ; (दे ६, १६) ।
पडिसंध } सक [**प्रतिसं+धा**] १ आदर करना। **पडिसंधा** } २ स्वीकार करना। पडिसंधए ; (पच्च ७) । संकृ—**पडिसंधाय** ; (सूअ २, २, ३१ ; ३२ ; ३३ ; ३४; ३५) ।
पडिसंमुह न [**प्रतिसंमुख**] संमुख, सामने ; "गओ पडिसंमुहं पज्जोयस्स" (महा) ।
पडिसंलाव पुं [**प्रतिसंलाप**] प्रत्युत्तर, जवाब ; (से १, २६ ; ११, ३४) ।
पडिसंलीण वि [**प्रतिसंलीन**] १ सम्यक् लीन, अच्छी तरह लीन ; २ निरोध करने वाला ; (ठा ४, २ ; औप) । °**पडिया** स्त्री [°**प्रतिमा**] क्रोध आदि के निरोध करने की प्रतिज्ञा ; (औप) ।
पडिसंवेद } सक [**प्रतिसं+वेदय्**] अनुभव करना। **पडिसंवेय** } पडिसंवेदेइ, पडिसंवेयंति ; (भग ; पि ४६०) ।

पडिसंसाहणया स्त्री [**प्रतिसंसाधना**] अनुव्रजन, अनुगमन ; (औप ; भग १४, ३ ; २५, ७) ।
पडिसंहर सक [**प्रतिसं+हृ**] १ निवृत्त करना ; २ निरोध करना। पडिसंहरेज्जा ; (सूअ १, ७, २०) ।
पडिसक्क देखो **परिसक्क**। पडिसक्कइ ; (भवि) ।
पडिसडण न [**प्रतिशदन, परिशदन**] १ सड़ जाना ; २ विनाश; "निरन्तरपडिसडणसीलाणि आउदलाणि" (काल) ।
पडिसत्तु पुं [**प्रतिशत्रु**] प्रतिपक्षी, दुश्मन, वैरी ; (सम १५३ ; पउम ५, १५६) ।
पडिसत्थ पुं [**प्रतिसार्थ**] प्रतिकूल यूथ ; (निचू ११) ।
पडिसद्द पुं [**प्रतिशब्द**] १ प्रतिध्वनि ; (पउम १६, ५३ ;भवि) । २ उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब ; (पउम ८, ३५) ।
पडिसम अक [**प्रति+शम्**] विरत होना। पडिसमइ ; (से ६, ४४) ।
पडिसर पुं [**प्रतिसर**] १ सैन्य का पश्चाद्भाग ; (प्राप्र) । २ हस्त-सूत्र, कंकण ; (धर्म २) ।
पडिसलागा स्त्री [**प्रतिशलाका**] पल्य-विशेष; (कम्म ४, ७३)।
पडिसव सक [**प्रति+शप्**] शाप के बदले में शाप देना। "अहमाहओ त्ति न य पडिहणंति सत्तावि न य पडिसवंति" (उव) ।
पडिसव सक [**प्रति+श्रु**] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। ३ आदर करना। कृ—**पडिसवणीय** ; (सण) ।
पडिसा अक [**शम्**] शान्त होना। पडिसाइ; (हे ४, १६७)।
पडिसा अक [**नश्**] भागना, पलायन करना। पडिसाइ, पडिसंति ; (हे ४, १७८ ; कुमा) ।
पडिसाइल्ल वि [**दे**] जिसका गला बैठ गया हो, घर्घर कण्ठ वाला ; (दे ६, १७) ।
पडिसाड सक [**प्रति+शादय्, परिशाटय्**] १ सड़ाना। २ पलटाना। ३ नाश करना। पडिसाडेंति ; (आचा २, १५, १८) । संकृ—**पडिसाडित्ता**; (आचा २,१५, १८)।
पडिसाडणा स्त्री [**परिशाटना**] च्युत करना, भ्रष्ट करना ; (वव १) ।
पडिसाम अक [**शम्**] शान्त होना। पडिसामइ ; (हे ४, १६७ ; षड्) ।
पडिसाय वि [**शान्त**] शान्त, शम-प्राप्त ; (कुमा) ।
पडिसाय पुं [**दे**] घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला ; (दे ६, १७) ।

पडिसार सक [**प्रतिस्मारय्**] याद दिलाना। पडिसारेइ ; (भग १५)।

पडिसार सक [**प्रति+सारय्**] सजाना, सजावट करना। पडिसारेदि (शौ)। कर्म—पडिसारीअदि (शौ); (कप्पू)।

पडिसार पुं [**दे**] १ पटुता; २ वि. निपुण, पटु; (दे ६, १६)।

पडिसार पुं [**प्रतिसार**] १ सजावट; २ अपसरण; ३ विनाश; ४ पराङ्मुखता; (हे १, २०६; दे ६, ७६)।

पडिसारणा स्त्री [**प्रतिस्मारणा**] संस्मारण; (भग १५)।

पडिसारिअ वि [**दे**] स्मृत, याद किया हुआ; (दे ६, ३३)।

पडिसारिअ वि [**प्रतिसारित**] १ दूर किया हुआ, अपसारित; (से ११, १)। २ विनाशित; (से १४, ५८)। ३ पराङ्मुख; (से ११, ३२)।

पडिसारी स्त्री [**दे**] जवनिका, परदा; (दे ६, २२)।

पडिसाह सक [**प्रति+कथ्**] उत्तर देना। पडिसाहिज्जा ; (सूअ १, ११, ४)।

पडिसाहर सक [**प्रतिसं+हृ**] १ संकलना, समेटना। २ वापिस ले लेना। ३ ऊँचे ले जाना। पडिसाहरइ ; (औप; णाया १, १—पत्र ३३)। संकृ—**पडिसाहरित्ता**, **पडिसाहरिय** ; (णाया १, १ ; भग १४, ७)।

पडिसाहरणा न [**प्रतिसंहरण**] १ समेट, संकोच; २ विनाश; “सीयतेयलेस्सापडिसाहरणट्टयाए” (भग १५—पत्र ६६६)।

पडिसिद्ध वि [**दे**] १ भीत, डरा हुआ ; २ भग्न, त्रुटित ; (दे ६, ७१)।

पडिसिद्ध वि [**प्रतिषिद्ध**] निषिद्ध, निवारित; (पाअ; उव ; ओघ १ टी ; सुपा)।

पडिसिद्धि स्त्री [**दे**] प्रतिस्पर्धा ; (षड्)।

पडिसिद्धि स्त्री [**प्रतिसिद्धि**] १ अनुरूप सिद्धि ; २ प्रतिकूल सिद्धि ; (हे १, ४४ ; षड्)।

पडिसिद्धि देखो **पडिप्फद्धि** ; (नंदि १६)।

पडिसिविणअ पुं [**प्रतिस्वप्नक**] एक स्वप्न का विरोधी स्वप्न, स्वप्न का प्रतिकूल स्वप्न ; (कप्पू)।

पडिसीसअ } न [**प्रतिशीर्षक**] १ कृत्रिम मुँह, मुँह का **पडिसीसक** } परदा ; (कप्पू)। २ सिर के प्रतिरूप सिर, पिष्ठान आदि का बनाया हुआ सिर; (पण्ह १, २—पत्र ३०)।

पडिसुइ पुं [**प्रतिश्रुति**] १ ऐरवत वर्ष के एक भावी कुलकर; (सम १५३)। २ भरतक्षेत्र में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम ; (पउम ३, ५०)।

पडिसुण सक [**प्रति+श्रु**] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। पडिसुणइ, पडिसुणेइ ; (औप; कप्प; उवा)। वकृ—**पडिसुणमाण** ; (वव १ ; वि ५०३)। संकृ—**पडिसुणित्ता**, **पडिसुणेत्ता**; (आव ४ ; कप्प)। हेकृ—**पडिसुणेत्तए** ; (पि ५७८)।

पडिसुणण न [**प्रतिश्रवण**] अंगीकार; (उप ६६३)।

पडिसुणणा स्त्री [**प्रतिश्रवण**] १ अंगीकार, स्वीकार ; २ गुरु-भिक्षा का एक दोष, आधाकर्म-दोष वाली भिक्षा लाने पर उसका स्वीकार और अनुमोदन ; (धर्म ३)।

पडिसुण्ण वि [**प्रतिशून्य**] खाली, रिक्त, शून्य ; “नय निरत्थ निव्वडिसुण्णा” (ठा १ टी—पत्र २६)।

पडिसुत्त वि [**दे**] प्रतिकूल ; (दे ६, १८)।

पडिसुय वि [**प्रतिश्रुत**] १ स्वीकृत, अंगीकृत ; (उप पृ १२४)। २ न. अंगीकार, स्वीकार; (उत्त २६)। देखो **पडिस्सुय**।

पडिसुया देखो **पइंसुआ**=प्रतिश्रुत ; (पण्ह १, १—पत्र १८)।

पडिसुया स्त्री [**प्रतिश्रुता**] प्रव्रज्या-विशेष, एक प्रकार की दीक्षा; (ठा १० टी—पत्र ४७४)।

पडिसुहड पुं [**प्रतिसुभट**] प्रतिपक्षी योद्धा ; (काल)।

पडिसूयग पुं [**प्रतिसूचक**] गुप्त चरों की एक श्रेणी, नगर-द्वार पर रहने वाला जासूस ; (वव १)।

पडिसूर वि [**दे**] प्रतिकूल ; (दे ६, १६ ; भवि)।

पडिसूर पुं [**प्रतिसूर्य**] इन्द्र-धनुष ; (राज)।

पडिसेज्जा स्त्री [**प्रतिशय्या**] शय्या-विशेष, उत्तर-शय्या ; (भग ११, ११ ; वि १०१)।

पडिसेव सक [**प्रति+सेव्**] १ प्रतिकूल सेवा करना, निषिद्ध वस्तु की सेवा करना। २ सहन करना। ३ सेवा करना। पडिसेवइ, पडिसेवए, पडिसेवंति ; (कस ; वव ३ ; उव)। वकृ—**पडिसेवंत**, **पडिसेवमाण** ; (पंचू ५ ; सम ३६ ; पि १९१, “पडिसेवमाणे फरुसाइं अचले भगवं रीइत्था” (आचा))। कृ—**पडिसेवियव्व** ; (वव १)।

पडिसेवग देखो **पडिसेवय** ; (निचू १)।

पडिसेवण न [**प्रतिषेवण**] निषिद्ध वस्तु का सेवन; (कस)।

पडिसेवणा स्त्री [**प्रतिषेवणा**] ऊपर देखो ; (भग २५, ७ ; उव ; ओघ २)।

पडिसेवय वि [**प्रतिषेवक**] प्रतिकूल सेवा करने वाला, निषिद्ध वस्तु का सेवन करने वाला ; (भग २५, ७)।

पडिसेवा स्त्री [**प्रतिषेवा**] १ निषिद्ध वस्तु का आसेवन ; (उप ८०१)। २ सेवा ; (कुप्र ५२)।
पडिसेवि वि [**प्रतिषेविन्**] शास्त्र-प्रतिषिद्ध वस्तु का सेवन करने वाला; (उव; पउम ५, २८)।
पडिसेविअ वि [**प्रतिषेवित**] जिस निषिद्ध वस्तु का आसेवन किया गया हो वह ; (कप्प ; औप)।
पडिसेवेत्तु वि [**प्रतिषेवितृ**] प्रतिषिद्ध वस्तु की सेवा करने वाला ; (ठा ७)।
पडिसेह सक [**प्रति+सिध्**] निषेध करना, निवारण करना। कृ—**पडिसेहेअव्व** ; (भग)।
पडिसेह पुं [**प्रतिषेध**] निषेध, निवारण, रोक ; (ओघ ६ भा ; पंचा ६)।
पडिसेहण न [**प्रतिषेधन**] ऊपर देखो; (विसे २७५१ ; श्रा २७)।
पडिसेहिय वि [**प्रतिषेधित**] जिसका प्रतिषेध किया गया हो वह, निवारित ; (विपा १, ३)।
पडिसेहेअव्व देखो **पडिसेह**=प्रति+सिध्।
पडिसोअ } पुं [**प्रतिस्रोतस्**] प्रतिकूल प्रवाह, उलटा
पडिसोत्त } प्रवाह ; (ठा ४, ४; हे २, ६८; उप २५२; पि ६१)।
पडिसोत्त वि [**दे**] प्रतिकूल ; (षड्)।
पडिस्संत देखो **परिस्संत** ; (नाट—मृच्छ १८८)।
पडिस्संति स्त्री [**परिश्रान्ति**] परिश्रम ; (नाट—मृच्छ ३२१)।
पडिस्सय पुं [**प्रतिश्रय**] जैन साधुओं को रहने का स्थान, उपाश्रय ; (ओघ ८७ भा ; उप ५७१ ; स ६८७)।
पडिस्साव सक [**प्रति+श्रावय्**] १ प्रतिज्ञा कराना। २ स्वीकार कराना। वकृ—**पडिस्सावअन्त**; (नाट—वेणी १८)।
पडिस्साविं वि [**प्रतिस्राविन्**] झरने वाला, टपकने वाला ; (राज)।
पडिस्सुय वि [**प्रतिश्रुत**] १ प्रतिज्ञात ; २ स्वीकृत ; (महा ; ठा १०)। देखो **पडिसुय**।
पडिस्सुया देखो **पडंसुआ** ; (गाया १, ५)।
पडिस्सुया देखो **पडिसुया**=प्रतिश्रुता ; (ठा १०—पत्र ४७३)।
पडिहच्छ वि [**दे**] पूर्ण; (सण)। देखो **पडिहत्थ**।
पडिहट्टु अ [**प्रतिहृत्य**] अर्पण करके; (कस ; बृह ३)।
पडिहड पुं [**प्रतिभट**] प्रतिपक्षी योद्धा ; (से ३, ५३)।
पडिहण सक [**प्रति+हन्**] प्रतिघात करना, प्रतिहिंसा करना। पडिहणंति ; (उव)।
पडिहणण न [**प्रतिहनन**] १ प्रतिघात। २ वि. प्रतिघातक ; (कुप्र ३७)।
पडिहणणा स्त्री [**प्रतिहनन**] प्रतिघात ; (ओघ ११०)।
पडिहणिय देखो **पडिहय** ; (सुपा २३)।
पडिहत्थ वि [**दे**] १ पूर्ण, भरा हुआ ; (दे ६, २८ ; पात्र ; कुप्र ३४; वज्जा १२६ ; उप पृ १८१; सुर ४, २३६; सुपा ४८८), "पडिहत्थबिंबगहवइवअणे ता वज्ज उज्जाणं" (वाअ १५)। २ प्रतिक्रिया, प्रतिकार ; ३ वचन, वाणी ; (दे ६, १६)। ४ अतिप्रभूत ; (जीव ३)। ५ अपूर्व, अद्वितीय ; (षड्)।
पडिहत्थ सक [**दे**] प्रत्युपकार करना, उपकार का बदला चुकाना। पडिहत्थेइ ; (से १२, ६६)।
पडिहत्थ वि [**प्रतिहस्त**] तिरस्कृत ; (चंड)।
पडिहत्थी स्त्री [**दे**] वृद्धि ; (दे ६, १७)।
पडिहम्म देखो **पडिहण**। पडिहम्मउज्जा ; (पि ५४०)। भवि—पडिहम्मिहिइ ; (पि ५४६)।
पडिहय वि [**प्रतिहत**] प्रतिघात-प्राप्त ; (औप; कुमा ; महा; सण)।
पडिहर सक [**प्रति+हृ**] फिर से पूर्ण करना। पडिहरइ ; (हे ४, २५६)।
पडिहा अक [**प्रति+भा**] मालूम होना, लगना। पडिहाइ ; (वज्जा १६२ ; पि ४८७)।
पडिहा स्त्री [**प्रतिभा**] बुद्धि-विशेष, नूतन २ उल्लेख करने में समर्थ बुद्धि ; (कुमा)।
पडिहा देखो **पडिहाय**=प्रतिघात ; "पंचविहा पडिहा पन्नत्ता, तं जहा, गतिपडिहा" (ठा ५, १—पत्र ३०३)।
पडिहाण देखो **पणिहाण**; " मणदुप्पडिहाणे" (उवा)।
पडिहाण न [**प्रतिभान**] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष। °**व** वि [°**वत्**] प्रतिभा वाला; (सूअ १, १३ ; १४)।
पडिहाय देखो **पडिहा**=प्रति+भा। पडिहायइ ; (स ४६१ ; स ७५६)।
पडिहाय पुं [**प्रतिघात**] १ प्रतिहनन, घात का बदला ; २ निरोध, अटकायत, रोक ; (पउम ६, ५३)।
पडिहार पुंस्त्री [**प्रतिहार**] द्वारपाल, दरवान ; (हे १, २०६ ; गाया १, ५; स्वप्न २२८; अभि ७७)। स्त्री—°**री**; (बृह १)।

पडिहारिय देखो **पाडिहारिय** ; (कस ; आचा २, २, ३, १७ ; १८)।

पडिहारिय वि [**प्रतिहारिन्**] अवरुद्ध, रोका हुआ; (स ५४६)।

पडिहास अक [**प्रति+भास्**] मालूम होना, लगना। पडिहासेदि (शौ) ; (नाट)।

पडिहास पुं [**प्रतिभास**] प्रतिभास, प्रतिभान ; (हे १, २०६ ; षड्)।

पडिहासिय वि [**प्रतिभासित**] जिसका प्रतिभास हुआ हो वह ; (उप ९८६ टी)।

पडिहुअ } पुं [**प्रतिभू**] जामीन, जामीनदार, मनौतिया ;
पडिहू } (पाअ ; दे ६, ३८)।

पडिहू अक [**परि+भू**] पराभव करना, हराना। कवकृ— **पडिहूअमाण**; (अभि ३६)।

पडी स्त्री [**पटी**] वस्त्र, कपड़ा ; (गउड ; सुर ३, ४१)।

पडीआर पुं [**प्रतीकार**] देखो **पडिआर**=प्रतिकार ; (वेणी १७७ ; कुप्र ६१)।

पडीकर सक [**प्रति+कृ**] प्रतिकार करना। पडीकरेमि ; (मै ६६)।

पडीकार देखो **पडिआर** ; (पगह १, १)।

पडीछ देखो **पडिच्छ**=प्रति+इष्। पडीछंति ; (पि २७५)।

पडीण वि [**प्रतीचीन**] पश्चिम दिशा से संबन्ध रखने वाला ; (आचा ; औप ; ठा ५, ३)। °**वाय** पुं [°**वात**] पश्चिम का वायु ; (ठा ७)।

पडीणा स्त्री [**प्रतीची**] पश्चिम दिशा ; (ठा ६—पत्र ३५९ ; सूअ २, २, ५८)।

पडीर पुं [**दे**] चोर-समूह, चोरों का यूथ ; (दे ६, ८)।

पडीव वि [**प्रतीप**] प्रतिकूल, प्रतिपक्षी, विरोधी ; (भवि)।

पडु वि [**पटु**] निपुण, चतुर, कुशल ; (औप ; कुमा ; सुर २, १४५)।

पडु (अप) देखो **पडिअ**=पतित ; (पिंग)।

पडुआलिअ वि [**दे**] १ निपुण बनाया हुआ ; २ ताड़ित, पिटा हुआ ; ३ धारित ; (दे ६, ७३)।

पडुक्खेव पुं [**प्रत्युत्क्षेप, प्रतिक्षेप**] १ वाद्य-ध्वनि ; २ क्षेपण, फेंकना; "समतालपडुक्खेवं" (ठा ७—पत्र ३९४)।

पडुच्च अ [**प्रतीत्य**] १ आश्रय करके ; (आचा ; सूअ १, ७ ; सम ३६ ; नव ३६)। २ अपेक्षा करके ; (भग)। ३ अधिकार करके ; " पडुच्च त्ति वा पप्प त्ति वा अहिकिच्च त्ति वा एगट्ठा " (आचू १ ; अणु)। °**करण** न [°**करण**] किसी की अपेक्षा से जो कुछ करना, आपेक्षिक कृति ; (बृह १)। °**भाव** पुं [°**भाव**] सप्रतियोगिक पदार्थ, आपेक्षिक वस्तु ; (भास २८)। °**वयण** न [°**वचन**] आपेक्षिक वचन; (सम्म १००)। °**सच्चा** स्त्री [°**सत्या**] सत्य भाषा का एक भेद, अपेक्षा-कृत सत्य वचन ; (पण्ण ११)।

पडुच्चा ऊपर देखो ; " जे हिंसंति आयसुहं पडुच्चा " (सूअ १, ५, १, ४)।

पडुजुवइ स्त्री [**दे**] युवति, तरुणी; (दे ६, ३१)।

पडुत्तिया स्त्री [**प्रत्युक्ति**] प्रत्युत्तर, जवाब ; (भवि)।

पडुप्पण्ण } पुं [**प्रत्युत्पन्न**] १ वर्तमान काल ; (ठा
पडुप्पन्न } ३, ४)। २ वि. वार्तमानिक, वर्तमान काल में विद्यमान ; (ठा १० ; भग ८, ५; सम १३२ ; उवा)। ३ प्राप्त, लब्ध ; (ठा ४, २), " न पडुप्पन्नो य से जहोचिओ आहारो " (स २६१)। ४ उत्पन्न, जात ; (ठा ४, २), "होंति य पडुप्पन्नविणासणम्मि गंधव्विया उदाहरणं " (दसनि १)।

पडुल्ल न [**दे**] १ लघु पिठर, छोटी थाली ; २ वि. चिर-प्रसूत ; (दे ६, ६८)।

पडुवइअ वि [**दे**] तीक्ष्ण, तेज ; (दे ६, १४)।

पडुवत्ती स्त्री [**दे**] जवनिका, परदा ; (दे ६, २२)।

पडुह देखो **पड्डुह**। पडुहइ ; (हे ४, १५४ टि)।

पडोअ वि [**दे**] बाल, लघु, छोटा ; (दे ६, ६)।

पडोच्छन्न वि [**प्रत्यवच्छन्न**] आच्छादित, आवृत ; " अट्ठविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने " (उवा)।

पडोयार सक [**प्रत्युप+चारय्**] प्रतिकूल उपचार करना। पडोयारेंति, पडोयारेह ; (भग १५—पत्र ६७९)। पडोयारेउ; (भग १५—पत्र ६७१)। पडोयारे; (पि १५५)। कवकृ—**पडोय(ा या)रिज्जमाण, पडोयारेज्जमाण**; (पि १६३ ; भग १५—पत्र ६७९)।

पडोयार पुं [**प्रत्युपचार**] प्रतिकूल उपचार; (भग १५—पत्र ६७१ ; ६७९)।

पडोयार पुं [**प्रत्यवतार**] १ अवतरण ; २ आविर्भाव ; " भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे होत्था " (भग ६, ७—पत्र २७६ ; ७, ६—पत्र ३०५; औप)।

पडोयार पुं [**पदावतार**] किसी वस्तु का पदों में विचार के लिए अवतरण ; (ठा ४, १—पत्र १८८)।

पडोयार पुं [**प्रत्युपकार**] उपकार का उपकार ; (राज)।

पडोयार पुं [**दे**] परिकर ; " पायस्स पडोयारं " (ओघ ३५२) ।

पडोल पुंस्त्री [**पटोल**] लता-विशेष, परवल का गाछ ; (पराग १—पत्र ३२) ।

पडोहर न [**दे**] घर का पीछला आँगन ; (दे ६, ३२ ; गा ३१३ ; काप्र २२४) ।

पड्ड वि [**दे**] धवल, सफेद ; (दे ६, १) ।

पड्डंस पुं [**दे**] गिरि-गुहा, पहाड़ की गुफा ; (दे ६, २) ।

पड्डच्छी स्त्री [**दे**] भैंस ; " पड्डच्छिखीर " (ओघ ८७) ।

पड्डत्थी स्त्री [**दे**] १ बहुत दूध वाली ; २ दोहने वाली ; (दे ६, ७०) ।

पड्डय पुं [**दे**] भैंसा, गुजराती में ' पाडो ' ; " सो चेव इमो वसभो पड्डयपरिहट्टणं सहइ " (महा) ।

पड्डला स्त्री [**दे**] चरण-घात, पाद-प्रहार ; (दे ६, ८) ।

पड्डस वि [**दे**] सुसंयमित, अच्छी तरह से संयमित ; (दे ६, ६) ।

पड्डाविअ वि [**दे**] समापित, समाप्त कराया हुआ ; (षड्) ।

पड्डिया स्त्री [**दे**] १ छोटी भैंस ; २ छोटी गौ, वछिया ; (विपा १, २—पत्र २६) । ३ प्रथम-प्रसूता गौ ; ४ नव-प्रसूता महिषी ; (वव ३) ।

पड्डी स्त्री [**दे**] प्रथम-प्रसूता ; (दे ६, १) ।

पड्डुआ स्त्री [**दे**] चरण-घात, पाद-प्रहार ; (दे ६, ८) ।

पड्डुह अक [**क्षुभ्**] क्षुब्ध होना । पड्डुहइ ; (हे ४, १५४ ; कुमा) ।

पढ सक [**पठ्**] १ पढ़ना, अभ्यास करना । २ बोलना, कहना । पढइ ; (हे १, १९९ ; २३१) । कर्म—पढीअइ, पढिज्जइ ; (हे ३, १६०) । वकृ—**पढंत** ; (सुर १०, १०३) । कवकृ—**पढिज्जंत, पढिज्जमाण** ; (सुपा २६७ ; उप ५३० टी) । संकृ—**पढित्ता** ; (हे ४, २७१ ; षड्), **पढिअ, पढिदूण** (शौ) ; (हे ४, २७१), **पढि** (अप) ; (पिंग) । हेकृ—**पढिउं** ; (गा २ ; कुमा) । कृ—**पढियव्व, पढेयव्व** ; (पंसू १ ; वज्जा ६) । प्रयो—पढावइ ; (कुप्र १८२) ।

पढ पुं [**पढ**] भारतीय देश-विशेष ; (इक) ।

पढग वि [**पाठक**] पढ़ने वाला ; (कप्प) ।

पढण न [**पठन**] पाठ, अभ्यास ; (विसे १३८४ ; कप्पू) ।

पढम वि [**प्रथम**] १ पहला, आद्य ; (हे १, ५५ ; कप्प ; उवा ; भग ; कुमा ; प्रासू ४८ ; ६८) । २ नूतन, नया ; (दे) । ३ प्रधान, मुख्य ; (कप्प) । °**करण** न [°**करण**] आत्मा का परिणाम-विशेष ; (पंचा ३) । °**कसाय** पुं [°**कषाय**] कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धी कषाय ; (कम्मप) । °**ट्ठाणि, °ठाणि** वि [°**स्थानिन्**] अव्युत्पन्न-बुद्धि, अनिष्णात ; (पंचा १९) । °**पाउस** पुं [°**प्रावृष्**] आषाढ मास ; (निचू १०) । °**समोसरण** न [°**समवसरण**] वर्षा-काल ; " बिइयसमोसरणं उडुबद्धं तं पडुच्च वासावासोग्गहो पढमसमोसरणं भगणइ " (निचू १) । °**सरय** पुं [°**शरत्**] मार्गशीर्ष मास ; (भग १५) । °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] नया दारू ; (दे) ।

पढमा स्त्री [**प्रथमा**] १ प्रतिपदा तिथि, पड़वा ; (सम २९) । २ व्याकरण-प्रसिद्ध पहली विभक्ति ; "णिद्दे से पढमा होइ " (अणु) ।

पढमालिआ स्त्री [**दे. प्रथमालिका**] प्रथम भोजन ; (ओघ ४७ भा ; धर्म ३) ।

पढमिल्ल, पढमिल्लुअ, पढमिल्लुग, पढमुल्लअ, पढमेल्लुय वि [**प्रथम**] पहला, आद्य ; (भग ; आ २८ ; सुपा ५७ ; पि ४४९ ; ५९५ ; विसे १२२६ ; णाया १, ६—पत्र १४४ ; बृह १ ; पउम ६२, ११ ; धण १९ ; सण) ।

पढाइद [**शौ**] नीचे देखो ; (नाट—चैत ८९) ।

पढावण न [**पाठन**] पढ़ाना ; (कुप्र ९०) ।

पढाविअ वि [**पाठित**] पढ़ाया हुआ ; (सुपा ४५३ ; कुप्र ९१) ।

पढि, पढिअ देखो **पढ**=पठ् ।

पढिअ वि [**पठित**] पढ़ा हुआ ; (कुमा ; प्रासू १३८) ।

पढिज्जंत, पढिज्जमाण देखो **पढ**=पठ् ।

पढिर वि [**पठितृ**] पढ़ने वाला ; (सण) ।

पढुक्क वि [**प्रढौकित**] भेंट के लिए उपस्थापित ; (भवि) ।

पढुम देखो **पढम** ; (हे १, ५५ ; नाट—विक्र २९) ।

पढेयव्व देखो **पढ**=पठ् ।

पण देखो **पंच** ; (सुपा १ ; नव १० ; कम्म २, ६ ; २९ ; ३१) । °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] पचानवे, नव्वे

और पाँच ; (पि ४४३)। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] पैंतीस, तीस और पाँच ; (औप ; कम्म ४, ७३ ; पि २७३ ; ४४४)। °नुवइ देखो °णउइ ; (सुपा ६७)। °रस वि.ब. [°दशन्] पनरह ; (सण)। °वन्निय वि [°वर्णिक] पाँच रंग का ; (सुपा ४०२)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] पचीस, बीस और पाँच ; (सम ४४ ; नव १३ ; कम्म २)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] वही अर्थ ; (पि ४४५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पैंसठ, साठ और पाँच; (सम ७८ ; पि २७३)। °सय न [°शत] पाँच सौ; (दं ६)। °सीइ स्त्री [°शीति] पचासी, अस्सी और पाँच ; (कम्म २)। °सुन्न न [°शून] पाँच हिंसा-स्थान ; (राज)।

पण पुं [**पण**] १ शर्त, होड़ ; "जकक्करपेण जुज्झावेंस्सनि" (महा)। २ प्रतिज्ञा ; (आक)। ३ धन ; ४ विक्रेय वस्तु, क्रयाणक ; "तत्थ विढप्पिअ पणगणं" (नी ३)।

पण पुं [**प्रण**] पन, प्रतिज्ञा ; (नाट—मालती १२४)।

पणअत्तिअ वि [**दे**] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ ; (दे ६, ३०)।

पणअन्न देखो **पणपन्न** ; (हे २, १७४ टि ; राज)।

पणइ स्त्री [**प्रणति**] प्रणाम, नमस्कार ; (पउम ६६, ३६ ; सुर १२, १३३ ; कुमा)।

पणइ वि [**प्रणयिन्**] १ प्रणय वाला, स्नेही, प्रेमी ; २ पुं. पति, स्वामी ; (पाअ ; गउड ८३७)। ३ याचक, अर्थी, प्रार्थी ; (गउड २४६ ; २४१ ; सुर १, १०८)। ४ भृत्य, दास ; "बप्पइराओत्ति पणइलवो" (गउड ७९७)।

पणइणी स्त्री [**प्रणयिनी**] पत्नी, भार्या ; (सुपा २१६)।

पणइय वि [**प्रणयिक, प्रणयिन्**] देखो **पणइ**=प्रणयिन् ; (सण)।

पणंगणा स्त्री [**पणाङ्गना**] वेश्या, वारांगना ; (उप १०३१ टी ; सुपा ४६०; कुप्र ५)।

पणग न [**पञ्चक**] पाँच का समूह ; (सुर ६, ११२ ; सुपा ६३६ ; जी ६ ; दं ३१; कम्म २, ११)।

पणग पुं [**दे. पनक**] १ शैवाल, सिंवाल, तृण-विशेष जो जल में उत्पन्न होता है ; (वृह ४ ; दस ८ ; पणण १ ; गांदि)। २ काई, वर्षा-काल में भूमि, काष्ठ आदि में उत्पन्न होता एक प्रकार का जल-मैल ; (आचा ; पडि ; ठा ८—पत्र ४२६ ; कप्प)। ३ कर्दम-विशेष, सूक्ष्म पंक ; (वृह ६ ; भग ७, ६)। देखो **पणय** (३)। °मट्टिया, °मत्तिया स्त्री [°मृत्तिका] नदी आदि के पूर के खतम होने पर रह जाती कोमल चिकनी मिट्टी ; (जीव १ ; पणण १ —पत्र २५)।

पणच्च अक [**प्र+नृत्**] नाचना, नृत्य करना। वकृ—**पणच्चमाण**; (णाया १, ८—पत्र १३३ ; सुपा ४७२), स्त्री—°**णी** ; (सुपा २४२)।

पणच्चण न [**प्रनर्तन**] नृत्य, नाच ; (सुपा १५४)।

पणच्चिअ वि [**प्रनृत्तित**] नाचा हुआ, जिसका नाच हुआ हो वह ; (णाया १, १—पत्र २५)।

पणच्चिअ वि [**प्रनृत्त**] नाचा हुआ ; "अन्नया रायपुरओ पणच्चिया देवदत्ता" (महा ; कुप्र १०)।

पणच्चिअ वि [**प्रनर्तित**] नचाया हुआ ; (भवि)।

पणट्ठ वि [**प्रनष्ट**] प्रकर्ष से नाश को प्राप्त ; (सूअ १, १, २ ; से ७, ८ ; सुर २, २४७ ; ३, ६६ ; भवि ; उव)।

पणड्ढ वि [**प्रणद्ध**] परिगत ; (औप)।

पणपण्ण देखो **पणपन्न** ; (कप्प १४७ टि)।

पणपण्णइम देखो **पणपन्नइम** ; (कप्प १७४ टि; पि २७३)।

पणपन्न स्त्रीन [**दे. पञ्चपञ्चाशत्**] पचपन, पचास और पाँच ; (हे २, १७४ ; कप्प ; सम ७२ ; कम्म ४, ५४ ; ५५ ; ति ५)।

पणपन्नइम वि [**दे. पञ्चपञ्चाश**] पचपनवाँ, ५५वाँ ; (कप्प)।

पणपन्निय देखो **पणवन्निय** ; (इक)।

पणम सक [**प्र+नम्**] प्रणाम करना, नमन करना। पणमइ, पणमए ; (स ३४४ ; भग)। वकृ—**पणमंत** ; (सण)। कवकृ—**पणमिज्जंत**; (सुपा ८८)। संकृ—**पणमिअ, पणमिऊण, पणमिऊणं, पणमित्ता, पणमित्तु**; (अभि ११८ ; प्राह ; पि ५८० ; भग ; काल)।

पणमण न [**प्रणमन**] प्रणाम, नमस्कार ; (उव ; सुपा २७ ; ५६१)।

पणमिअ देखो **पणम**।

पणमिअ वि [**प्रणत**] १ नमा हुआ ; (भग ; औप)। २ जिसने नमने का प्रारम्भ किया हो वह ; (णाया १, १—पत्र ५)। ३ जिसको नमन किया गया हो वह; "पणमिओ अणेण राया" (स ७३०)।

पणमिअ वि [**प्रणमित**] नमाया हुआ ; (भवि)

पणमिर वि [**प्रणम्**] प्रणाम करने वाला, नमने वाला ; (कुमा ; कुप्र ३५० ; सण) ।

पणय सक [**प्र+णी**] १ स्नेह करना, प्रेम करना । २ प्रार्थना करना । वकृ—**पणअंत** ; (से २, ६) ।

पणय वि [**प्रणत**] १ जिसको प्रणाम किया गया हो वह ; "नरनाहपणयपयकमलं " (सुपा २४०) । २ जिसने नमस्कार किया हो वह ; "पणयपडिवक्खं " (सुर १, ११२; सुपा ३६१) । ३ प्राप्त ; (सूअ १, ४, १) । ४ निम्न, नीचा ; (जीव ३ ; राय) ।

पणय पुं [**प्रणय**] १ स्नेह, प्रेम ; (गाया १, ६ ; महा ; गा २७) । २ प्रार्थना ; (गउड) । °**वंत** वि [°**वत्**] स्नेह वाला, प्रेमी ; (उप १३१) ।

पणय पुं [**दे**] पंक, कर्दम ; (दे ६, ७) ।

पणय पुं [**दे. पनक**] १ शैवाल, सिंवाल, तृण-विशेष ; २ काई, जल-मैल ; (ओघ ३४६) । ३ सूक्ष्म कर्दम ; (पगह १, ४) ।

पणयाल वि [**दे. पञ्चचत्वारिंश**] पैंतालीसवाँ, ४५वाँ ; (पउम ४५, ४६) ।

पणयाल, **पणयालीस** स्त्रीन [**दे. पञ्चचत्वारिंशत्**] पैंतालीस, चालीस और पाँच, ४५ ; (सम ६६ ; कम्म २, २७ ; ति ३ ; भग ; सम ६८ ; औप ; पि ४४५) ।

पणव देखो **पणम** । पणवइ ; (भवि) । पणवह ; (हे २, १९५) । वकृ—**पणवंत** ; (भवि) ।

पणव पुं [**पणव**] पटह, ढोल, वाद्य-विशेष ; (औप ; कप्प ; अंत) ।

पणवणिय देखो **पणवन्निय** ; (औप) ।

पणवण्ण, **पणवन्न** देखो **पणपन्न** ; (पि २६५ ; २७३ ; भग ; हे २, १७४ टि) ।

पणवन्निय पुं [**पणपन्निक**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पगह १, ४) ।

पणविय देखो **पणमिय**=प्रणत ; (भवि) ।

पणस पुं [**पनस**] वृक्ष-विशेष, कटहल ; (पि २०८ ; नाट—मृच्छ २१८) ।

पणाम सक [**अर्पय्**] अर्पण करना, देने के लिए उपस्थित करना । पणामइ ; (हे ४, ३९), "वंदिओ य पणयाण कल्लाणाइं पणामइ " (सुपा ३६३) ।

पणाम सक [**प्र+नमय्**] नमाना । पणामेइ ; (महा) ।

पणाम पुं [**प्रणाम**] नमस्कार, नमन ; (दे ७, ६ ; भवि)।

पणामणिआ स्त्री [**दे**] स्त्री-विषयक प्रणय; (दे ६, ३०) ।

पणामय वि [**अर्पक**] देने वाला ; (सूअ १, २, २) ।

पणामिअ वि [**अर्पित**] समर्पित, देने के लिए धरा हुआ ; (पाअ ; कुमा) । "अपणामियंपि गहिअं कुसुमसरेण महुमासलच्छीए मुहं " (हेका ५०) ।

पणामिअ वि [**प्रणमित**] नमाया हुआ ; (से ४, ३१ ; गा २२) ।

पणामिअ वि [**प्रणामित**] नत, नमा हुआ ; "पणामिया सायरं " (स ३१६) ।

पणायक, **पणायग** वि [**प्रणायक**] ले जाने वाला ; "निव्वाण-गमणसग्गप्पणायकाइं " (पगह २, १ ; पगह २, १ टी ; वव १) ।

पणाल पुं [**प्रणाल**] मोरी, पानी आदि जाने का रास्ता ; (से १३, ५४ ; उर १, ५ ; ६) ।

पणालिआ स्त्री [**प्रणालिका**] १ परम्परा ; (सूअ १, १३) । २ पानी जाने का रास्ता ; (कुमा) ।

पणाली स्त्री [**प्रणाली**] मोरी, पानी जाने का रास्ता ; (गउड) ।

पणाली स्त्री [**प्रनाली**] शरीर-प्रमाण लम्बी लाठी ; (पगह १, ३—पत्र ५४) ।

पणास सक [**प्र+नाशय्**] विनाश करना । पणासेइ, पणासए ; (महा) ।

पणास पुं [**प्रणाश**] विनाश, उच्छेदन ; (आवम) ।

पणासण वि [**प्रणाशन**] विनाश करने वाला ; "सव्वपा-वप्पणासणो " (पडि ; कप्प) । स्त्री—°**णी**; (श्रा ४६)।

पणासिय वि [**प्रणाशित**] जिसका विनाश किया गया हो वह ; (कप्प ; भवि) ।

पणिअ वि [**दे**] प्रकट, व्यक्त ; (दे ६, ७) ।

पणिअ न [**पणित**] १ बेचने योग्य वस्तु ; (दे १, ७४ ; ६, ७ ; णाया १, १) । २ व्यवहार, लेन-देन, क्रय-विक्रय ; (भग १५ ; णाया १, ३—पत्र ६५) । ३ शर्त, होड़, एक तरह का जूआ ; (भास ६२) । °**भूमि**, °**भूमी** स्त्री [°**भूमि**, °**भूमी**] १ अनार्य देश-विशेष, जहां भगवान् महावीर ने एक चौमासा बिताया था ; (राज ; कप्प) । २ विक्रेय वस्तु रखने का स्थान ; (भग १५)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] हाट, दुकान ; (बृह २ ; निचू १६) ।

पणिअ न [**पण्य**] विक्रेय वस्तु ; (सुपा २७५ ; औप ; आचा)। °**गिह**, °**घर** न [°**गृह**] दुकान, हाट ; (निचू १२ ; आचा २, २, २)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] हाट, दुकान; (आचा)। °**वण** पुं [°**पण**] दुकान, हाट ; (आचा)।

पणिअ वि [**प्रणीत**] सुन्दर, मनोहर। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] मनोज्ञ भूमि ; (भग १५)।

पणिआ स्त्री [**दे**] करोटिका, सिर की हड्डी ; (दे ६, ३)।

पणिंदि) वि [**पञ्चेन्द्रिय**] त्वक्, जीभ, नाक, आँख और
पणिंदिय) कान इन पाँचों इन्द्रियों वाला प्राणी ; (कम्म २ ; ४, १० ; १८ ; १९)।

पणिधाण देखो **पडिहाण** ; (अभि १८९ ; नाट—विक्र ७२)।

पणिधि पुंस्त्री [**प्रणिधि**] माया, छल; "पुणो पुणो पणिधि (? धी)ए हरित्ता उवहसे जणं " (सम ५०)। देखो **पणिहि**।

पणियत्थ वि [**प्रणिवसित**] पहना हुआ ; (औप)।

पणिलिअ वि [**दे**] हत, मारा हुआ ; (षड्)।

पणिवइअ वि [**प्रणिपतित**] नत, नमा हुआ ; "पणिव-इयवच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा " (णाया १, १६—पत्र २१६ ; स ११ ; उप ७६८ टी)।

पणिवय सक [**प्रणि + पत्**] नमन करना, वन्दन करना। पणिवयामि ; (कप्प ; सार्ध ६१)।

पणिवाय पुं [**प्रणिपात**] वन्दन, नमस्कार ; (सुर ४, ६८ ; सुपा २८ ; २२२ ; महा)।

पणिहा सक [**प्रणि + धा**] १ एकाग्र चिन्तन करना, ध्यान करना। २ अपेक्षा करना। ३ अभिलाषा करना। ४ चेष्टा करना, प्रयत्न करना। संकृ—**पणिहाय** ; (गाया १, १० ; भग १५)।

पणिहाण न [**प्रणिधान**] १ एकाग्र ध्यान, मनो-नियोग, अवधान ; (उत्त १६, १४ ; स ८७ ; प्रामा)। २ प्रयोग, व्यापार, चेष्टा ; " तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते ; तं जहा—मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे" (ठा ३, १ ; ४, १ ; भग १८ ; उवा)। ३ अभिलाष, कामना ; " संकाथाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणवं " (उत्त १६, १४)।

पणिहाय देखो **पणिहा**।

पणिहि पुंस्त्री [**प्रणिधि**] १ एकाग्रता, अवधान ; (पणह २, ५)। २ कामना, अभिलाष ; (स ८७)। ३ पुं. चर पुरुष, दूत ; (पणह १, ३ ; पाअ ; सुर ३, ४ ; सुपा ९६२)। ४ चेष्टा, व्यापार ; (दसनि १)। ५ माया, कपट; (आव ४)। ६ व्यवस्थापन ; (राज)।

पणिहिय वि [**प्रणिहित**] १ प्रयुक्त, व्यापृत ; (दसनि ८)। २ व्यवस्थित ; (आव ४)।

पणीय वि [**प्रणीत**] १ निर्मित, कृत, रचित ; " वइसेसियं पणीयं " (विसे २५०७ ; सुर १२, ६२ ; सुपा २८ ; ३६७)। २ स्निग्ध, घृत आदि स्नेह की प्रचुरता वाला ; " विभूसा इत्थीसंसग्गी पणीयरसभोयणं " (दस ८, ५७ ; उत्त १६, ७ ; ओघ १५० भा ; औप ; बृह ५)। ३ निरूपित, प्ररूपित, आख्यात ; (अणु ; आव ३)। ४ मनोज्ञ, सुन्दर ; (भग ५, ४)। ५ सम्यग् आचरित; (सूअ १, ११)।

पणुल्ल देखो **पणोल्ल**। वकृ—**पणुल्लेमाण** ; (पि २२४)।

पणुल्लिअ देखो **पणोल्लिअ** ; (पाअ ; सुपा २४ ; प्रासू १३६)।

पणुवीस स्त्रीन [**पञ्चविंशति**] संख्या-विशेष, पचीस, बीस और पाँच ; २ जिनकी संख्या पचीस हो वे ; (स १०६ ; पि १०४ ; २७३)।

पणुवीसइम वि [**पञ्चविंशतितम**] पचीसवाँ, २५ वाँ ; (विसे ३१२०)।

पणोल्ल सक [**प्र + णुद्**] १ प्रेरणा करना। २ फेंकना। ३ नाश करना। पणोल्लइ ; (प्राप्र)। " पावाइं कम्माइं पणोल्लयामो " (उत्त १२, ४०)। कवकृ—**पणोल्लिज्जमाण** ; (णाया १, १ ; पणह १, ३)। संकृ—**पणोल्ल** ; (सूअ १, ८)।

पणोल्लण न [**प्रणोदन**] प्रेरणा ; (ठा ८ ; उप पृ ३४१)।

पणोल्लय वि [**प्रणोदक**] प्रेरक ; (आचा)।

पणोल्लि वि [**प्रणोदिन्**] १ प्रेरणा करने वाला ; २ पुं. प्राजन दण्ड, बैल इत्यादि हाँकने की लकड़ी; (पणह १, ३—पत्र ५४)।

पणोल्लिअ वि [**प्रणोदित**] प्रेरित ; (औप ; पि २४४)।

पण्ण वि [**प्रज्ञ**] जानकार, दक्ष, निपुण ; (उत्त १, ८ ; सूअ १, ६)।

पण्ण वि [**प्राज्ञ**] १ प्रज्ञा वाला, बुद्धिमान्, दक्ष ; (हे १, ५६ ; उप ६२३)। २ वि. प्राज्ञ-संबन्धी ; (सूअ २, १)।

पण्ण न [**पर्ण**] पत्र, पत्ती ; (कुमा)।

पण्ण देखो **पणिअ**=पण्य ; (नाट)।

पण्ण स्त्रीन [**दे**] पचास, ५० । स्त्री—°**ण्णा** ; (षड्) ।

पण्ण देखो **पंच, पण** ; (पि २७३ ; ४४० ; ४४५) । °**रस** त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, १५ ; (सम २६ ; उवा) । °**रसम** वि [°**दश**] पनरहवाँ ; (उवा) °**रसी** स्त्री [°**दशी**] १ पनरहवीँ ; २ तिथि-विशेष ; (पि २७३ ; कप्प) । °**रह** देखो °**रस** ; (प्राप्र) । °**रह** वि [°**दश**] पनरहवाँ, १५ वाँ ; (प्राप्र) । देखो **पन्न**=पंच ।

पण्ण वि [**पार्ण**] पर्ण-संबन्धी, पत्ती से संबन्ध रखने वाला ; (राज) ।

पण्ण° देखो **पण्णा**° । °**व** वि [°**वत्**] प्रज्ञा वाला, प्राज्ञ ; (उप ६१२ टी) ।

पण्णई स्त्री [**पन्नगी**] भगवान् धर्मनाथ की शासन-देवी ; (पव २७) ।

पण्णग पुं [**पन्नग**] सर्प, साँप ; (उप ७२८ टी) । °**ासन** पुं [°**ाशन**] गरुड पक्षी ; (पिंग) । देखो **पन्नय** ।

पण्णग वि [**दे. पन्नक**] दुर्गन्धी । °**तिल** पुं [°**तिल**] दुर्गन्धी तिल ; (राज) ।

पण्णट्ठि स्त्री [**पञ्चषष्टि**] पैंसठ, साठ और पाँच, ६५; (कप्प)।

पण्णत्त वि [**प्रज्ञप्त**] निरूपित, उपदिष्ट, कथित ; (औप; उवा ; ठा ३, १ ; ४, १ ; २ ; विपा १, १ ; प्रासू १२१)। २ प्रणीत, रचित ; (आवम ; चंद २० ; भग ११, ११ ; औप) ।

पण्णत्ति स्त्री [**प्रज्ञप्ति**] १ विद्यादेवी-विशेष ; (जं १) । २ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, सूर्यप्रज्ञप्ति आदि उपांग-ग्रन्थ; (ठा ३, १; ४, १)। ३ विद्या-विशेष; (आचू १)। ४ प्ररूपणा, प्रतिपादन ; (उवा ; वव ३) । °**खेवणी** स्त्री [°**क्षेपणी**] कथा का एक भेद ; (ठा ४, २) । °**पक्खेवणी** स्त्री [°**प्रक्षेपणी**] कथा का एक भेद ; (राज) ।

पण्णपण्णिय पुं [**पण्णपर्णि**] व्यन्तर देवों की एक जाति; (इक) ।

पण्णय देखो **पण्णग** ; (से ४, ४) ।

पण्णव सक [**प्र+ज्ञापय्**] प्ररूपण करना, उपदेश करना, प्रतिपादन करना । पण्णवेइ, पण्णवेंति ; (उवा ; भग) । वकृ—**पण्णवयंत, पण्णवेमाण** ; (भग ; पि ५५१) । कृ—**पण्णवणिज्ज**; (द ७) ।

पण्णवग वि [**प्रज्ञापक**] प्ररूपक, प्रतिपादक ; (विसे ५४६) ।

पण्णवण न [**प्रज्ञापन**] १ प्ररूपणा, प्रतिपादन ; २ शास्त्र, सिद्धान्त ; (विसे ८६४) ।

पण्णवणा स्त्री [**प्रज्ञापना**] १ प्ररूपणा, प्रतिपादन ; (णाया १, ६ ; उवा) । २ एक जैन आगम-ग्रन्थ, प्रज्ञापना सूत्र ; (भग) ।

पण्णवणिज्ज देखो **पण्णव** ।

पण्णवणी स्त्री [**प्रज्ञापनी**] भाषा-विशेष, अर्थ-बोधक भाषा ; (भग १०, ३) ।

पण्णवण्ण स्त्रीन [**दे. पञ्चपञ्चाशत्**] पचपन, पचास और पाँच ; (दे ६, २७ ; षड्) ।

पण्णवय देखो **पण्णवग** ; (विसे ५४७) ।

पण्णवयंत देखो **पण्णव** ।

पण्णविय वि [**प्रज्ञापित**] प्रतिपादित, प्ररूपित ; (अणु ; उत्त २६) ।

पण्णवेत्तु वि [**प्रज्ञापयितृ**] प्रतिपादक, प्ररूपण करने वाला ; (ठा ७) ।

पण्णवेमाण देखो **पण्णव** ।

पण्णा सक [**प्र+ज्ञा**] १ प्रकर्ष से जानना । २ अच्छी तरह जानना । कर्म—पण्णायंति ; (भग) ।

पण्णा देखो **पण्ण**(दे) ।

पण्णा स्त्री [**प्रज्ञा**] १ बुद्धि, मति ; (उप १५४ ; ७२८ टी ; निचू १) । २ ज्ञान ; (सुअ १, १२) । °**परिसह,** °**परीसह** पुं [°**परिषह,** °**परीषह**] १ बुद्धि का गर्व न करना ; २ बुद्धि के अभाव में खेद न करना ; (भग ८, ८ ; पव ८६) । °**मय** पुं [°**मद**] बुद्धि का अभिमान ; (सुअ १, १३) । °**वंत** वि [°**वत्**] ज्ञानवान् ; (राज) ।

पण्णाड देखो **पन्नाड** । पण्णाडइ ; (दे ६, २६) ।

पण्णाण न [**प्रज्ञान**] १ प्रकृष्ट ज्ञान ; २ सम्यग् ज्ञान ; (सम ५१) । ३ आगम, शास्त्र ; (आचा) । °**व** वि [°**वत्**] १ ज्ञानवान् ; २ शास्त्र-ज्ञ ; (आचा) ।

पण्णारह (अप) त्रि. ब. [**पञ्चदशन्**] पनरह ; (पिंग)।

पण्णावीसा स्त्री [**पञ्चविंशति**] पचीस, बीस और पाँच ; (षड्) ।

पण्णास स्त्रीन [**दे. पञ्चाशत्**] पचास, ५० ; (दे ६, २७ ; षड् ; पि २७३ ; ४४५ ; कुमा) । देखो **पन्नास** ।

पण्णुवीस देखो **पणुवीस** ; (स १४६) ।

पण्ह पुंस्त्री [**प्रश्न**] प्रश्न, पृच्छा ; (हे १, ३५ ; कुमा) । स्त्री— °ण्हा ; (हे १, ३५) । °**वाहण** न [°**वाहन**] जैन मुनि-गण का एक कुल ; (नंदी ३८) । °**वागरण** न [**व्याकरण**] ग्यारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ ; (पण्ह २, ५ ; ठा १० ; विपा १, १ ; सम १) । देखो **पसिण** ।

पण्हअ अक [**प्र + स्नु**] झरना, टपकना । "एक्को पण्हअइ थणो" (गा ४०६ ; ४६२ अ) ।

पण्हअ) पुं [**दे. प्रस्नव**] १ स्तन-धारा, स्तन से दूध का
पण्हव) झरना ; (दे ६, ३ ; पि २३१ ; गउड ; अंत ७ ; षड्) । २ झरन, टपकना ; "दिट्ठिपण्हव—" (पिंड ४८७) ।

पण्हव पुं [**पह्लव**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ वि. उस देश का निवासी ; (पण्ह १, १—पत्र १४) ।

पण्हवण न [**प्रस्नवन**] चरण, झरना ; (विपा १, २) ।

पण्हविअ देखो **पण्हुअ** ; (दे ६, २५) ।

पण्हा देखो **पण्ह** ।

पण्हि पुंस्त्री [**पार्ष्णि**] फीली का अधोभाग, गुल्फ का नीचला हिस्सा ; (पण्ह १, ३ ; दे ७, ६२) ।

पण्हिया स्त्री [**प्रष्णिका**] एड़ी, गुल्फ का अधोभाग ; "मंलित्तु पण्हियाओ चरणे विन्नासिऊण बाहिरओ" (चेइय ४८६) ।

पण्हुअ वि [**प्रस्नुत**] १ क्षरित, झरा हुआ ; २ जिसने झरने का प्रारम्भ किया हो वह ; "पण्हुयपयोहराओ" (पउम ७६, २० ; हे २, ७५) ।

पण्हुइर वि [**प्रस्नोतृ**] झरने वाला ;
"हत्थप्फंसेण जरग्गवीवि पण्हअइ दोहअगुणेण ।
अवलोअणपण्हुइरिं पुत्तअ पुण्णेहिँ पाविहिसि" (गा ४६२) ।

पण्होत्तर न [**प्रश्नोत्तर**] सवाल-जवाब ; (सुर १६, ४१ ; कप्पू) ।

पतणु देखो **पयणु** ; (राज) ।

पतार सक [**प्र + तारय्**] ठगना । संकृ—**पतारिअ** ; (अभि १७१) ।

पतारग वि [**प्रतारक**] वञ्चक, ठग ; (धर्मसं १४७) ।

पतिण्ण) वि [**प्रतीर्ण**] पार पहुँचा हुआ, निस्तीर्ण ;
पतिन्न) (राज ; पण्ह २, १—पत्र ६६) ।

पतुण्ण) न [**प्रतुन्न**] वल्कल का बना हुआ वस्त्र ; (आ-
पतुन्न) चा २, ५, १, ६) ।

पतेरस) वि [**प्रत्रयोदश**] प्रकृष्ट तेरहवाँ । °**वास** न [°**व-
पतेलस**) **र्ष**] १ प्रकृष्ट तेरहवाँ वर्ष ; २ प्रकृत तेरहवाँ वर्ष ; ३ प्रस्थित तेरहवाँ वर्ष ; (आचा) ।

पत्त वि [**प्राप्त**] मिला हुआ, पाया हुआ ; (कप्प ; सुर ४, ५० ; सुपा ३५९ ; जी ४४ ; दं ४६ ; प्रासू ३१ ; १६२ ; १८२ ; गा २४१) । °**काल,** °**याल** न [°**काल**] १ काल-विशेष ; (राज) । २ वि. अवसरोचित ; (स ४६०) ।

पत्त न [**पत्र**] १ पत्ती, दल, पर्ण ; (कप्प ; सुर १, ७२ ; जी १० ; प्रासू ६२) । २ पक्ष, पंख, पाँख ; (णाया १, १—पत्र २४) । ३ जिस पर लिखा जाता है वह, कागज, पन्ना ; (स ६२ ; सुर १, ७२ ; हे २, १७३) । °**च्छेज्ज** न [°**च्छेद्य**] कला-विशेष ; (औप ; स ६५) । °**मंत** वि [°**वत्**] पत्र वाला ; (णाया १, १) । °**रह** पुं [°**रथ**] पक्षी ; (पाअ) । °**लेहा** स्त्री [°**लेखा**] चन्दनादि से पत्र के आकृति वाली रचना-विशेष, भूषा का एक प्रकार ; (अजि २८) । °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] १ पत्र वाली लता ; २ मुँह पर चन्दन आदि से की जाती पत्र-श्रेणी-तुल्य रचना ; (कुप्र ३६५) । °**विंट** न [°**वृन्त**] पत्र का बन्धन ; (पि ५३) । °**विंटिय** वि [°**वृन्तक,** °**वृन्तीय**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, पत्र वृन्त में उत्पन्न होता एक प्रकार का त्रीन्द्रिय जन्तु ; (पणण १—पत्र ४५) । °**विच्छुय** पुं [°**वृश्चिक**] जीव-विशेष, एक तरह का वृश्चिक, चतुरिन्द्रिय जीवों की एक जाति ; (जीव १) । °**वेंट** देखो °**विंट** ; (पि ५३) । °**सगडिआ** स्त्री [°**शकटिका**] पत्तों से भरी हुई गाड़ी ; (भग) । °**समिद्ध** वि [°**समृद्ध**] प्रभूत पत्तों वाला ; (पाअ) । °**हार** पुं [°**हार**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (पणण १—पत्र ४५ ; उत्त ३६, १३८) । °**हार** पुं [°**ाहार**] पत्तों पर निर्वाह करने वाला वानप्रस्थ ; (औप) ।

पत्त न [**पात्र**] १ भाजन ; (कुमा ; प्रासू ३६) । २ आधार, आश्रय, स्थान ; (कुमा) । ३ दान देने योग्य गुणी लोक ; (उप ६४८ टी ; महा) । ४ लगातार बत्तीस उपवास ; (संबोध ५८) । °**बंध** पुं [°**बन्ध**] पात्रों को बाँधने का कपड़ा ; (ओघ ६६८) । देखो **पाय** = पात्र ।

पत्त वि [**प्रात्त**] प्रसारित ; (कप्प) ।

पत्तइअ वि [**प्रत्ययित**] विश्वस्त ; (भग) ।

पत्तइअ वि [**पत्रकित**] १ अल्प पत्र वाला ; २ कुत्सित पत्र वाला ; (णाया १, ७—पत्र ११६) ।

पत्तउर पुं [**दे**] वनस्पति-विशेष, एक जात का गाछ ; (पणण १—पत्र ३१) ।

पत्तट्ठ वि [दे. प्राप्तार्थ] १ बहु-शिक्षित, विद्वान्, अति कुशल ; (दे ६, ६८ ; सुर १, ८१ ; सुपा १२६ ; भग १४, १ ; पाअ) । २ समर्थ ; (जीवस २८५) ।

पत्तट्ठ वि [दे] सुन्दर, मनोहर ; (दे ६, ६८) ।

पत्तण देखो **पट्टण** ; (राज) ।

पत्तण न [दे. पत्त्रण] १ इषु-फलक, बाण का फल ; २ पुंख, बाण का मूल भाग ; (दे ६, ६४ ; गा १०००) ।

पत्तणा स्त्री [दे.पत्त्रणा] १—२ ऊपर देखो ; (गउड ; से १५, ७३) । ३ पुंख में की जाती रचना-विशेष ; (से ७, ५२) ।

पत्तणा स्त्री [प्रापणा] प्राप्ति ; (पंचू ४) ।

पत्तपसाइआ स्त्री [दे] पत्तिओं की एक तरह की पगड़ी, जिसे भील लोग पहनते हैं ; (दे ६, २) ।

पत्तपिसालस न [दे] ऊपर देखो ; (दे ६, २) ।

पत्तय न [पत्रक] एक प्रकार का गेय ; (ठा ४, ४) ।

पत्तय देखो **पत्त** ; (महा) ।

पत्तरक न [दे. प्रतरक] आभूषण-विशेष ; (पण्ह २, ५—पत्र १४९) ।

पत्तल वि [दे] १ तीक्ष्ण, तेज ; (दे ६, १४),
"नयणाइं समाणियपत्तलाइं परपुरिसजीवहरणाइं ।
असियसियाइं व मुद्धे खग्गा इव कं न मारंति ?"
(वज्जा ६०) । २ पतला, कृश; (दे ६, १४; वज्जा ४६) ।

पत्तल वि [पत्रल] १ पत्र-समृद्ध, बहुत पत्ती वाला ; (पाअ ; से १, ६२ ; गा ५३२ ; ६३५ ; दे ६, १४) । २ पक्ष्म वाला ; (औप ; जं २) ।

पत्तल न [पत्र] पत्ती, पर्ण ; (हे २, १७३ ; प्रामा ; सण; हे ४, ३८७) ।

पत्तलण न [पत्रलन] पत्र-समृद्ध होना, पत्र-बहुल होना ; "वाउलिआपरिसोसणकुडंगपत्तलणसुलहसंकेअ" (गा ६२६) ।

पत्तली स्त्री [दे] कर-विशेष, एक प्रकार का राज-देय ; "गिण्हह तद्देसपत्तलिं झत्ति" (सुपा ४६३) ।

पत्ताण सक [दे] पताना, मिटाना । "पुच्छउ अन्नु कोवि जो जाणइ सो तुम्हह विवाउ पत्ताणइ" (भवि), पत्ताणहि ; (भवि) ।

पत्तामोड पुंन [आमोटपत्र] तोड़ा हुआ पत्र ; "दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेण्हइ" (अंत ११) ।

पत्ति स्त्री [प्राप्ति] लाभ ; (दे १, ४२ ; उप २२६ ; चेइय ८६४) ।

पत्ति पुं [पत्ति] १ सेना-विशेष जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों ; २ पैदल चलने वाली सेना ; (उप ७२८ टी) ।

पत्ति, **पत्तिअ** सक [प्रति + इ] १ जानना । २ विश्वास करना । ३ आश्रय करना । पत्तिअइ, पत्तियंति, पत्तिअसि, पत्तिआमि ; (से १३, ४४ ; पि ४८७ ; से ११, ६० ; भग) । पत्तिएज्जा, पत्तिअ, पत्तिहि, पत्तिसु ; (राय ; गा २१६ ; ६६६ ; पि ४८७) । वकृ—**पत्तिअंत, पत्तियमाण** ; (गा २१६, ६७८ ; आचा २, २, २, १०) । संकृ—**पडियच्च, पत्तियाइत्ता** ; (सूअ १, ६, २७; उत्त २६, १) ।

पत्तिअ वि [पत्रित] संजात-पत्र, जिसमें पत्र उत्पन्न हुए हों वह ; (णाया १, ७ ; ११—पत्र १७१) ।

पत्तिअ वि [प्रतीति, प्रत्ययित] प्रतीति वाला, विश्वस्त ; (ठा ६—पत्र ३५५ ; कप्प ; कस) ।

पत्तिअ न [प्रीतिक] प्रीति, स्नेह ; (ठा ४, ३ ; ठा ६—पत्र ३५५) ।

पत्तिअ पुंन [प्रत्यय] प्रत्यय, विश्वास ; (ठा ४, ३—पत्र २३५ ; धर्म २) ।

पत्तिअ न [पत्रिक] मरकत-पत्र ; (कप्प) ।

पत्तिआ स्त्री [पत्रिका] पत्र, पर्ण, पत्ती ; (कुमा) ।

पत्तिआअ देखो **पत्तिअ**=प्रति + **इ** । पत्तिआअइ ; (प्राकृ ७५), पत्तिआअंति; (पि ४८७) ।

पत्तिआव सक [प्रति + आयय्] विश्वास कराना, प्रतीति कराना । पत्तिआवेइ; (भास २३) ।

पत्तिग देखो **पत्तिअ**=प्रीतिक ; (पंचा ७, १०) ।

पत्तिज्ज देखो **पत्तिअ**=प्रति + **इ** । पत्तिज्जसि, पत्तिज्जामि; (पि ४८७) ।

पत्तिज्जाव देखो **पत्तिआव** । पत्तिज्जावइ ; (सुपा ३०२), पत्तिज्जावेमि ; (धर्मवि १३४) ।

पत्तिसमिद्ध वि [दे] तीक्ष्ण ; (दे ६, १४) ।

पत्ती स्त्री [दे] पत्तों की बनी हुई एक तरह की पगड़ी जिसे भील लोग सिर पर पहनते हैं ; (दे ६, २) ।

पत्ती स्त्री [पत्नी] स्त्री, भार्या; (उप पृ १६३ ; आप ६६ ; महा ; पाअ) ।

पत्ती स्त्री [**पात्री**] भाजन, पात्र ; (उप ६२२ ; महा ; धर्मवि १२८) ।

पत्तुं देखो **पाव**=प्र + आप् ।

पत्तुवगद (शौ) वि [**प्रत्युपगत**] १ सामने आया हुआ ; २ वापिस गया हुआ ; (नाट—विक्र २३) ।

पत्तेअ } न [**प्रत्येक**] १ हरएक, एक एक ; (हे २,
पत्तेग } २१० ; कुमा ; निचू १ ; पि ३४८) । २ एक की तरफ, एक के सामने ; "पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ" (जीव ३) । ३ न. कर्म-विशेष जिसके उदय से एक जीव का एक अलग शरीर होता है ; "पत्तेयतणु पत्ते-उदएणं" (कम्म १, ५०) । ४ पृथग् पृथग्, अलग अलग ; (कम्म १, ५०) । ५ पुं. वह जीव जिसका शरीर अलग हो, एक स्वतंत्र शरीर वाला जीव; "साहारणपत्तेआ वणस्सइजीवा दुहा सुए भणिया" (जी ८) । °**णाम** न [°**नामन्**] देखो ऊपर का ३रा अर्थ ; (राज) । °**निगोयय** पुं [°**निगोदक**] जीव-विशेष ; (कम्म ४, ८२) । °**बुद्ध** पुं [°**बुद्ध**] अनित्यतादि भावना के कारणभूत किसी एक वस्तु से परमार्थ का ज्ञान जिसको उत्पन्न हुआ हो ऐसा जैन मुनि ; (महा; नव ४३) । °**बुद्धसिद्ध** पुं [°**बुद्ध-सिद्ध**] प्रत्येकबुद्ध होकर मुक्ति को प्राप्त जीव ; (धर्म २) । °**रस** वि [°**रस**] विभिन्न रस वाला ; (ठा ४, ४,) । °**सरीर** वि [°**शरीर**] १ विभिन्न शरीर वाला ; "पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया" (पंच ३) । २ न. कर्म-विशेष जिसके उदय से एक जीव का एक विभिन्न शरीर होता है ; (पराह १, १) । °**सरीरनाम** न [°**शरीरनामन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सम ६७) ।

पत्थ सक [**प्र+अर्थय्**] १ प्रार्थना करना । २ अभिलाषा करना । ३ अटकाना, रोकना । पत्थेइ, पत्थेंति ; (उव ; औप) । कर्म—पत्थिज्जसि ; (महा) । वकृ—**पत्थंत**, **पत्थिंत**, **पत्थेअमाण** ; (नाट—मालवि २५ ; सुपा २१३ ; प्रासू १२०), "कामे **पत्थेमाणा** अकामा जंति दुग्गइं" (उप ३५७ टी) । कवकृ—**पत्थिज्जंत**, **पत्थि-ज्जमाण** ; (गा ४०० ; सुर १, २० ; से ३, ३३ ; कप्प) । कृ—**पत्थ**, **पत्थणिज्ज**, **पत्थेयव्व** ; (सुपा ३७० ; सुर १, ११६ ; सुपा १४८ ; पराह २, ४) ।

पत्थ पुं [**पार्थ**] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (स ६१२ ; वेणी १२६ ; कुमा) । २ पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम ; (पउम ३७, ८) । ३ भद्दिलपुर नगर का एक राजा ; (सुपा ६३३) ।

पत्थ पुं [**प्रार्थ**] १ प्रार्थन, प्रार्थना ; (राज) । २ जिन का उपवास ; (संबोध ५८) ।

पत्थ देखो **पच्छ**=पथ्य ; (गा ८१४ ; पउम १५, ६४ ; राज) ।

पत्थ देखो **पत्थ**=प्र + अर्थय् ।

पत्थ पुं [**प्रस्थ**] १ कुडव का एक परिमाण; (बृह ३ ; जीवस ८८ ; तदु २६) । २ सेतिका, एक कुडव का परिमाण ; (उप पृ ८६), "पत्थगा उ जे पुरा आसी हीणमाणा उ तंकुणा" (वव १) ।

पत्थंत देखो **पत्थ**=प्र + अर्थय् ।

पत्थंत देखो **पत्था** ।

पत्थग देखो **पत्थय** ; (राज) ।

पत्थड पुं [**प्रस्तर**] १ रचना-विशेष वाला समूह ; (ठा ३, ४,—पत्र १५८) । २ भवनों के बीच का अन्तराल भाग ; (पराण २; सम ३५) ।

पत्थड वि [**प्रस्तृत**] १ बिछाया हुआ ; २ फैला हुआ ; (भग ६, ८) ।

पत्थण न [**प्रार्थन**] प्रार्थना ; (महा ; भवि) ।

पत्थणया } स्त्री [**प्रार्थना**] १ अभिलाषा, वाञ्छा;
पत्थणा } (आव ४) । २ याचना, माँग ; ३ विज्ञप्ति, निवेदन ; (भग १२, ५ ; सुर १, २ ; सुपा २६६ ; प्रासू २१) ।

पत्थय देखो **पत्थ**=पथ्य ; (गाया १, १) ।

पत्थय वि [**प्रार्थक**] अभिलाषा करने वाला ; (सुअ १, १, २, १६ ; स २५३) ।

पत्थय देखो **पत्थ**=प्रस्थ; (उप १७८ टी; औप) ।

पत्थयण न [**पथ्यदन**] शम्बल, पाथेय, मार्ग में खाने का खुराक ; (गाया १, १५ ; स १३० ; उर ८, ७ ; सुपा ६२४) ।

पत्थर सक [**प्र+स्तृ**] १ बिछाना । २ फैलाना । संकृ—पत्थरेत्ता ; (कस; ठा ६) ।

पत्थर पुं [**प्रस्तर**] पत्थर, पाषाण ; (औप ; उव ; पउम १७, २६ ; सिरि ३३२),

"पत्थरेणाहओ कीवो पत्थरं डक्कुमिच्छई ।
मिगारिओ सरं पप्प सरुप्पत्तिं विमग्गई" (सुर ६, २०७) ।

पत्थर न [**दे**] पाद-ताडन, लात ; (षड्) ।

पत्तट्ठ वि [दे. आप्तार्थ] १ बहु-शिक्षित, विद्वान्, अति कुशल ; (दे ६, ६८ ; सुर १, ८१ ; सुपा १२६ ; भग १४, १ ; पाअ) । २ समर्थ ; (जीवस २८५) ।

पत्तट्ठ वि [दे] सुन्दर, मनोहर ; (दे ६, ६८) ।

पत्तण देखो **पट्टण** ; (राज) ।

पत्तण न [दे. पत्त्रण] १ इषु-फलक, बाण का फल ; २ पुंख, बाण का मूल भाग ; (दे ६, ६४ ; गा १०००) ।

पत्तणा स्त्री [दे. पत्त्रणा] १—२ ऊपर देखो ; (गउड ; से १५, ७३) । ३ पुंख में की जाती रचना-विशेष ; (से ७, ५२) ।

पत्तणा स्त्री [प्रापणा] प्राप्ति ; (पंचू ४) ।

पत्तपसाइआ स्त्री [दे] पत्तिओं की एक तरह की पगड़ी, जिसे भील लोग पहनते हैं ; (दे ६, २) ।

पत्तपिसालस न [दे] ऊपर देखो ; (दे ६, २) ।

पत्तय न [पत्रक] एक प्रकार का गेय ; (ठा ४, ४) ।

पत्तय देखो **पत्त** ; (महा) ।

पत्तरक न [दे. प्रतरक] आभूषण-विशेष ; (पण्ह २, ५—पत्र १४९) ।

पत्तल वि [दे] १ तीक्ष्ण, तेज ; (दे ६, १४),

"नयणाइं समाणियपत्तलाइं परपुरिसजीवहरणाइं ।
असियसियाइं व मुद्धे खग्गा इव कं न मारंति ?"

(वज्जा ६०) । २ पतला, कृश ; (दे ६, १४ ; वज्जा ४६) ।

पत्तल वि [पत्रल] १ पत्र-समृद्ध, बहुत पत्ती वाला ; (पाअ ; से १, ६२ ; गा ५३२ ; ६३५ ; दे ६, १४) । २ पद्म वाला ; (औप ; जं २) ।

पत्तल न [पत्र] पत्ती, पर्ण ; (हे २, १७३ ; प्रामा ; सण ; हे ४, ३८७) ।

पत्तलण न [पत्रलन] पत्र-समृद्ध होना, पत्र-बहुल होना ; "वाउलिआपरिसोसणकुडंगपत्तलणसुलहसंकेअ" (गा ६२६) ।

पत्तली स्त्री [दे] कर-विशेष, एक प्रकार का राज-देय ; "गिण्हह तद्दे सपत्तलिं झत्ति" (सुपा ४६३) ।

पत्ताण सक [दे] पताना, मिटाना । "पुच्छउ अन्नु कोवि जो जाणइ सो तुम्हह विवाउ पत्ताणइ" (भवि), पत्ताणहि ; (भवि) ।

पत्तामोड पुंन [आमोटपत्र] तोड़ा हुआ पत्र ; "दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेण्हइ" (अंत ११) ।

पत्ति स्त्री [प्राप्ति] लाभ ; (दे १, ४२ ; उप २२६ ; चेइय ८६४) ।

पत्ति पुं [पत्ति] १ सेना-विशेष जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों ; २ पैदल चलने वाली सेना ; (उप ७२८ टी) ।

पत्ति } सक [प्रति + इ] १ जानना । २ विश्वास करना । ३ आश्रय करना । पत्तिअइ, पत्तियंति, पत्तिअसि, पत्तिआमि ; (से १३, ४४ ; पि ४८७ ; से ११, ६० ; भग) । पत्तिएज्जा, पत्तिअ, पत्तिहि, पत्तिसु ; (राय ; गा २१६ ; ६६६ ; पि ४८७) । वकृ—**पत्तिअंत, पत्तियमाण** ; (गा २१६, ६७८ ; आचा २, २, २, १०) । संकृ—**पडियच्च, पत्तियाइत्ता** ; (सूअ १, ६, २७; उत्त २६, १) ।
पत्तिअ } (same entry)

पत्तिअ वि [पत्रित] संजात-पत्र, जिसमें पत्र उत्पन्न हुए हों वह ; (णाया १, ७ ; ११—पत्र १७१) ।

पत्तिअ वि [प्रतीति, प्रत्ययित] प्रतीति वाला, विश्वस्त ; (ठा ६—पत्र ३५५ ; कप्प ; कस) ।

पत्तिअ न [प्रीतिक] प्रीति, स्नेह ; (ठा ४, ३ ; ठा ६—पत्र ३५५) ।

पत्तिअ पुंन [प्रत्यय] प्रत्यय, विश्वास ; (ठा ४, ३—पत्र २३५ ; धर्म २) ।

पत्तिअ न [पत्रिक] मरकत-पत्र ; (कप्प) ।

पत्तिआ स्त्री [पत्रिका] पत्र, पर्ण, पत्ती ; (कुमा) ।

पत्तिआअ देखो **पत्तिअ**=प्रति + इ । पत्तिआअइ ; (प्राकृ ७५), पत्तिआअंति ; (पि ४८७) ।

पत्तिआव सक [प्रति + आयय्] विश्वास कराना, प्रतीति कराना । पत्तिआवेइ ; (भास २३) ।

पत्तिग देखो **पत्तिअ**=प्रीतिक ; (पंचा ७, १०) ।

पत्तिज्ज देखो **पत्तिअ**=प्रति + इ । पत्तिज्जसि, पत्तिज्जामि ; (पि ४८७) ।

पत्तिज्जाव देखो **पत्तिआव** । पत्तिज्जावइ ; (सुपा ३०१), पत्तिज्जावेमि ; (धर्मवि १३४) ।

पत्तिसमिद्ध वि [दे] तीक्ष्ण ; (दे ६, १४) ।

पत्ती स्त्री [दे] पत्तों की बनी हुई एक तरह की पगड़ी जिसे भील लोग सिर पर पहनते हैं ; (दे ६, २) ।

पत्ती स्त्री [पत्नी] स्त्री, भार्या ; (उप पृ १६३ ; आप ६६ ; महा ; पाअ) ।

पत्ती स्त्री [**पात्री**] भाजन, पात्र ; (उप ६२२ ; महा ; धर्मवि १२६) ।

पत्तुं देखो **पाव**=प्र+आप् ।

पत्तुवगद (शौ) वि [**प्रत्युपगत**] १ सामने गया हुआ ; २ वापिस गया हुआ ; (नाट—विक २३) ।

पत्तेअ) न [**प्रत्येक**] १ हरएक, एक एक ; (हे २, **पत्तेग**) १० ; कुमा ; निचू १ ; पि ३४६) । २ एक की तरफ, एक के सामने ; "पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ" (जीव ३) । ३ न. कर्म-विशेष जिसके उदय से एक जीव का एक अलग शरीर होता है ; "पत्तेयतणू पत्तेउदएणं" (कम्म १, ५०) । ४ पृथग् पृथग्, अलग अलग; (कम्म १, ५०) । ५ पुं. वह जीव जिसका शरीर अलग हो, एक स्वतंत्र शरीर वाला जीव; "साहारणपत्तेआ वणस्सइजीवा दुहा सुए भणिया" (जी ८) । °**णाम** न [°**नामन्**] देखो ऊपर का ३रा अर्थ ; (राज) । °**निगोयय** पुं [°**निगोदक**] जीव-विशेष ; (कम्म ४, ८२) । °**बुद्ध** पुं [°**बुद्ध**] अनित्यतादि भावना के कारणभूत किसी एक वस्तु से परमार्थ का ज्ञान जिसको उत्पन्न हुआ हो ऐसा जैन मुनि ; (महा; नव ४३) । °**बुद्धसिद्ध** पुं [°**बुद्धसिद्ध**] प्रत्येकबुद्ध होकर मुक्ति को प्राप्त जीव ; (धर्म २) । °**रस** वि [°**रस**] विभिन्न रस वाला ; (ठा ४, ४,) । °**सरीर** वि [°**शरीर**] १ विभिन्न शरीर वाला ; "पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया" (पंच ३) । २ न. कर्म-विशेष जिसके उदय से एक जीव का एक विभिन्न शरीर होता है ; (पराह १, १) । °**सरीरनाम** न [°**शरीरनामन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सम ६७) ।

पत्थ सक [**प्र+अर्थय्**] १ प्रार्थना करना । २ अभिलाषा करना । ३ अटकाना, रोकना । पत्थेइ, पत्थेंति ; (उव ; औप) । कर्म—पत्थिज्जसि ; (महा) । वकृ—**पत्थंत, पत्थिंत, पत्थेअमाण** ; (नाट—मालवि २५ ; सुपा २१३ ; प्रासू १२०), "कामे **पत्थेमाणा** अकामा जंति दुग्गइं" (उप ३५७ टी) । कवकृ—**पत्थिज्जंत, पत्थिज्जमाण** ; (गा ४०० ; सुर १, २० ; से ३, ३३ ; कप्प) । कृ—**पत्थ, पत्थणिज्ज, पत्थेयव्व** ; (सुपा ३७० ; सुर १, ११६ ; सुपा १४८ ; पराह २, ४) ।

पत्थ पुं [**पार्थ**] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (स ६१२ ; वेणी १२६ ; कुमा) । २ पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम ; (पउम ३७, ८) । ३ अंबुदपुर नगर का एक राजा ; (सुपा ६२२)

पत्थ पुं [**प्रार्थ**] १ प्रार्थन, प्रार्थना ; (राज) । २ दो दिन का उपवास ; (संबोध ५८) ।

पत्थ देखो **पच्छ**=पथ्य ; (गा ८१४ ; पउम १४, १४ ; राज) ।

पत्थ देखो **पत्थ**=प्र+अर्थय् ।

पत्थ पुं [**प्रस्थ**] १ कुडव का एक परिमाण; (बृह ३; जीवस ८८ ; तंदु २९) । २ सेतिका, एक कुडव का परिमाण ; (उप पृ ८६), "पत्थया उ जे पुरा आसी हीणमाणा उ तेवुणा" (वव १) ।

पत्थंत देखो **पत्थ**=प्र+अर्थय् ।

पत्थंत देखो **पत्था** ।

पत्थग देखो **पत्थय** ; (राज) ।

पत्थड पुं [**प्रस्तर**] १ रचना-विशेष वाला समूह ; (ठा ३, ४, —पत्र १७८) । २ भवनों के बीच का अन्तराल भाग ; (पराण २; सम २५) ।

पत्थड वि [**प्रस्तृत**] १ बिछाया हुआ ; २ फैला हुआ ; (भग ६, ८) ।

पत्थण न [**प्रार्थन**] प्रार्थना ; (महा ; भवि) ।

पत्थणया) स्त्री [**प्रार्थना**] १ अभिलाषा, वाञ्छा; **पत्थणा**) (आव ४) । २ याचना, माँग ; ३ विज्ञप्ति, निवेदन ; (भग १२, ५ ; सुर १, २ ; सुपा २६६ ; प्रासू २१) ।

पत्थय देखो **पत्थ**=पथ्य ; (गाया १, १) ।

पत्थय वि [**प्रार्थक**] अभिलाषा करने वाला ; (सूअ १, १, २, १६ ; स २५३) ।

पत्थय देखो **पत्थ**=प्रस्थ; (उप १७९ टी; औप) ।

पत्थयण न [**पथ्यदन**] शम्बल, पाथेय, मार्ग में खाने का खुराक ; (गाया १, १५ ; स १३० ; उर ८, ५ ; सुपा ६२४) ।

पत्थर सक [**प्र+स्तृ**] १ बिछाना । २ फैलाना । संकृ—पत्थरेत्ता ; (कस; ठा ६) ।

पत्थर पुं [**प्रस्तर**] पत्थर, पाषाण ; (औप ; उव ; पउम १७, २६ ; सिरि ३३२),

"पत्थरेणाहओ कीवो पत्थरं डक्कुमिच्छई ।
मिगारिओ सरं पप्प सरुप्पत्तिं विमग्गई" (सुर ६, २०७) ।

पत्थर न [**दे**] पाद-ताडन, लात ; (षड्) ।

पत्थर देखो **पत्थार** ; (प्राप्र ; संक्षि २)।

पत्थरण न [**प्रस्तरण**] बिछौना ; "खट्टापत्थरणयं तहा एगं" (धर्मवि १४७)।

पत्थरभल्लिअ न [**दे**] कोलाहल करना ; (दे ६, ३६)।

पत्थरा स्त्री [**दे**] चरण-घात, लात ; (दे ६, ८)।

पत्थरिअ पुं [**दे**] पल्लव ; (दे ६, २०)।

पत्थरिअ वि [**प्रस्तृत**] बिछाया हुआ ; "पत्थरिअं अत्थुअं" (पाअ)।

पत्थव देखो **पत्थाव** ; (हे १, ६८ ; कुमा ; पउम ५, २१६)।

पत्था अक [**प्र+स्था**] प्रस्थान करना, प्रवास करना। वकृ—**पत्थंत** ; (से ३, ५७)।

पत्थाण न [**प्रस्थान**] प्रयाण, गमन ; (अभि ८१ ; अजि ६)।

पत्थार पुं [**प्रस्तार**] १ विस्तार ; (उवर ६६)। २ तृण-वन ; ३ पल्लवादि-निर्मित शय्या ; ४ पिंगल-प्रसिद्ध प्रक्रिया-विशेष ; (प्राप्र)। ५ प्रायश्चित्त की रचना-विशेष ; (ठा ६—पत्र ३७१ ; कस)। ६ विनाश ; (पिंड ५०१ ; ५११)।

पत्थारी स्त्री [**दे**] १ निकर, समूह ; (दे ६, ६६)। २ शय्या, बिछौना, गुजराती में 'पथारी' ; (दे ६, ६६ ; पाअ ; सुपा ३२०)।

पत्थाव सक [**प्र+स्तावय्**] प्रारंभ करना। वकृ—**पत्थावअंत** ; (हास्य १२२)।

पत्थाव पुं [**प्रस्ताव**] १ अवसर ; २ प्रसङ्ग, प्रकरण ; (हे १, ६८ ; कुमा)।

पत्थिअ वि [**प्रस्थित**] १ जिसने प्रयाण किया हो वह; (से २, १६ ; सुर ४, १६८)। २ न. प्रस्थान, गति, चाल ; (अजि ६)।

पत्थिअ वि [**प्रार्थित**] १ जिसके पास प्रार्थना की गई हो वह ; २ जिस चीज की प्रार्थना की गई हो वह ; (भग ; सुर ६, १८ ; १६, ६ ; उव)।

पत्थिअ वि [**दे**] शीघ्र, जल्दी करने वाला ; (दे ६, १०)।

पत्थिअ वि [**प्रार्थिक**] प्रार्थी, प्रार्थना करने वाला ; (उव)।

पत्थिअ वि [**प्रास्थित**] विशेष आस्था वाला, प्रकृष्ट श्रद्धा वाला ; (उव)।

पत्थिअ° } स्त्री [**दे**] बाँस का बना हुआ भाजन-विशेष ;
पत्थिआ } (ओघ ४७६)। **°पिडग, °पिडय** न [**°पिटक**] बाँस का बना हुआ भाजन-विशेष ; (विपा १,३)।

पत्थिद देखो **पत्थिअ**=प्रस्थित, प्रार्थित ; (प्राकृ ३५)।

पत्थिव पुं [**पार्थिव**] १ राजा, नरेश ; (गाया १, १६ ; पाअ)। २ वि. पृथिवी का विकार ; (राज)।

पत्थी स्त्री [**दे; पात्री**] पात्र, भाजन ; "अंधकरबोरपत्थिं व माउआ मह पइं विलुंपंति" (गा २४० अ)।

पत्थीण न [**दे**] १ स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा ; २ वि. स्थूल, मोटा ; (दे ६, ११)।

पत्थुय वि [**प्रस्तुत**] १ प्रकरण-प्राप्त, प्राकरणिक; (सुर ३, १६६ ; महा)। २ प्राप्त, लब्ध ; (सूअ १,४, १,१७)।

पत्थुर देखो **पत्थर**=प्र+स्तृ। संकृ—**पत्थुरेत्ता** ; (कस)।

पत्थेअमाण
पत्थेंत
पत्थेमाण
पत्थेयव्व } देखो **पत्थ**=प्र+अर्थय्।

पत्थोउ वि [**प्रस्तोतृ**] १ प्रस्ताव करने वाला ; २ प्रवर्तक। स्त्री—**°त्थोई** ; (पगह १, ३—पत्र ४२)।

पथम (**पै**) देखो **पढम** ; (पि १६०)।

पद देखो **पय**=पद ; (भग ; स्वप्न १५ ; हे ४, २७० ; पगह २, १ ; नाट—शकु ८१)।

पदअ सक [**गम्**] जाना, गमन करना। पदअइ ; (हे ४, १६२)। पदअंति ; (कुमा)।

पदंसिअ वि [**प्रदर्शित**] दिखलाया हुआ, बतलाया हुआ ; (श्रा ३०)।

पदक्खिण वि [**प्रदक्षिण**] १ जिसने दक्षिण की तरफ से लेकर मण्डलाकार भ्रमण किया हो वह ; २ न. दक्षिणावर्त्त भ्रमण ; "पदक्खिणीकरअंतो भट्टारं" (प्रयौ ३५)। देखो **पदाहिण**।

पदक्खिण सक [**प्रदक्षिणय्**] प्रदक्षिणा करना, दक्षिण से लेकर मण्डलाकार भ्रमण करना। हेकृ—**पदक्खिणेउं** ; (पउम ४८, १११)।

पदक्खिणा स्त्री [**प्रदक्षिणा**] दक्षिण की ओर से मण्डलाकार भ्रमण ; (नाट—चैत ३८)।

पदण न [**पदन**] प्रत्यायन, प्रतीति कराना ; (उप ८८३)।

पदण (**शौ**) न [**पतन**] गिरना ; (नाट—मालती ३७)।

पदम (**शौ**) देखो **पउम** ; (नाट—मृच्छ १३६)।

पदय देखो **पयय**=पदग, पदक, पतग, पतंग ; (इक)।

पदरिसिय देखो **पदंसिअ** ; (भवि)।

पदहण न [**प्रदहन**] संताप, गरमी ; (कुमा)।

पदाइ वि [**प्रदायिन्**] देने वाला ; (नाट—विक्र ८)।

पदाण [**प्रदान**] दान, वितरण ; (औप ; अभि ४५)।

पदादि (शौ) पुं [**पदाति**] पैदल चलने वाला सैनिक ; (प्रयौ १५ ; नाट—वेणी ६१) ।

पदायग वि [**प्रदायक**] देने वाला ; (विसे ३२००) ।

पदाव देखो **पयाव** ; (सा ३२६) ।

पदाहिण वि [**प्रदक्षिण**] प्रकृष्ट दक्षिण, प्रकर्ष से दक्षिण दिशा में स्थित ; (जीव ३) । देखो **पदक्खिण** ।

पदिकिदि (शौ) देखो **पडिकिदि** ; (मा १० ; नाट—विक २१) ।

पदित्त देखो **पलित्त** ; (राज) ।

पदिस स्त्री [**प्रदिश्**] विदिशा, ईशान आदि कोण ; "संसंति पाणा पदिसो दिसासु य" (आचा) ।

पदिस्सा देखो **पदेक्ख** ।

पदीव सक [**प्र+दीपय्**] १ जलाना । २ प्रकाश करना । पदीवेसि ; (पि २४४) । वकृ—**पदीवेंत** ; (पउम १०२, १०) ।

पदीव देखो **पईव**=प्रदीप ; (नाट—मृच्छ ३०) ।

पदीविआ स्त्री [**प्रदीपिका**] छोटा दिया ; (नाट—मृच्छ ५१) ।

पदुट्ठ वि [**प्रद्विष्ट, प्रदुष्ट**] विशेष द्वेष को प्राप्त; (उत्त ३२ ; बृह ३) ।

पदुब्भेइय न [**पदोद्भेदक**] पद-विभाग और शब्दार्थ मात्र का पारायण ; (राज) ।

पदूमिय वि [**प्रदावित, प्रदून**] अत्यन्त पीड़ित; (बृह ३) ।

पदूस सक [**प्र+द्विष्**] द्वेष करना । पदूसंति ; (पंचा २, ३५) ।

पदूसणया स्त्री [**प्रद्वेषणा, प्रदूषणा**] द्वेष, मात्सर्य ; (उप ४८६) ।

पदेक्ख सक [**प्र+दृश्**] प्रकर्ष से देखना । पदेक्खइ ; (भवि) । संकृ—"**पदिस्सा** य दिस्सा वयमाणा" (भग १८,८ ; पि ३३४) ।

पदेस देखो **पएस**=प्रदेश ; (भग) ।

पदेस पुं [**प्रद्वेष**] द्वेष ; (धर्मसं ६७) ।

पदेसिअ वि [**प्रदेशित**] प्ररूपित, प्रतिपादित ; (आचा) ।

पदोस देखो **पओस**=दे. प्रद्वेष ; (अंत १३ ; निचू १) ।

पदोस देखो **पओस**=प्रदोष ; (राज) ।

पद्द न [**दे**] १ ग्राम-स्थान ; (दे ६, १) । २ छोटा गाँव; (पाअ) ।

पद्द न [**पद्य**] श्लोक, वृत्त, काव्य ; (प्राकृ २१) ।

पद्दोस देखो **पदेस**=प्रद्वेष ; (सूअ १, १६, ३) ।

पद्धइ स्त्री [**पद्धति**] १ मार्ग, रास्ता ; (सुपा १८६) । २ पङ्क्ति, श्रेणी ; (दा २, ४) । ३ परिपाटी, क्रम ; (आवम) । ४ प्रक्रिया, प्रकरण ; (वज्जा २) ।

पद्धंस पुं [**प्रध्वंस**] ध्वंस, नाश । °**भाव** पुं [°**भाव**] अभाव-विशेष, वस्तु के नाश होने पर उसका जो अभाव होता है वह ; (विसे १८३७) ।

पद्धर वि [**दे**] ऋजु, सरल, सीधा ; (दे ६, १०) । २ शीघ्र ; गुजराती में 'पाधरु' ; "पद्धरपएहिं सुहंइ पयाणेइ" (सिरि ४३४) ।

पद्धल वि [**दे**] दोनों पार्श्वों में अ-प्रवृत्त ; (षड्) ।

पद्धार वि [**दे**] जिसका पूँछ कट गया हो वह, पूँछ-कटा ; (दे ६, १३) ।

पधाइय देखो **पधाविय** ; (भवि) ।

पधाण देखो **पहाण** ; (नाट—मृच्छ २०५) ।

पधार देखो **पहार**=प्र+धारय् । भूका—पधारित्थ ; (औप ; गाया १, २—पत्र ८८) ।

पधाव सक [**प्र+धाव्**] दौड़ना, अधिक वेग से जाना । संकृ—**पधाविअ** ; (नाट) ।

पधावण न [**प्रधावन**] १ दौड़, वेग से गमन ; २ कार्य की शीघ्र सिद्धि ; (श्रा १) । ३ प्रक्षालन; (धर्मसं १०७८) ।

पधाविअ वि [**प्रधावित**] १ दौड़ा हुआ ; (महा ; पण्ह १, ४) । २ गति-रहित ; (राज) ।

पधाविर वि [**प्रधावितृ**] दौड़ने वाला ; (श्रा २८) ।

पधूवण न [**प्रधूपन**] १ धूप देना । २ एक प्रकार का आलेपन द्रव्य ; (कस) ।

पधूविय वि [**प्रधूपित**] जिसको धूप दिया गया हो वह ; (राज) ।

पधोअ सक [**प्र+धाव्**] धोना । संकृ—**पधोइत्ता** ; (आचा २, १, ६, ३) ।

पधोअ वि [**प्रधौत**] धोया हुआ ; (औप) ।

पधोव सक [**प्र+धाव्**] धोना । पधोवेंति ; (पि ४८२) ।

पन देखो **पंच** । °**र**, °**रस** त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, दस और पाँच, १५ ; (कम्म १ ; ४, ५२ ; ६८ ; जी २५) ।

पनय (पै. चूपै) देखो **पणय**=प्रणय ; (हे ४, ३२६) ।

पन्न देखो **पण्ण**=पर्ण ; (सुपा ३३६ ; कुप्र ४०८) ।

पन्न देखो **पण्ण**=दे ; (भग ; कम्म ४, ५४) ।

पन्न देखो **पण्ण**=प्रज्ञ ; (आचा ; कुप्र ४०८) ।

पन्न वि [**प्राज्ञ**] १ पंडित, जानकार, विद्वान् ; (ठा ७; उप १५१ ; धर्मसं ४५२) । २ वि. प्रज्ञ-संबन्धी ; (सूअ २, १, ५६) ।

पन्न देखो **पंच** । °र, °रस लि. ब. [°**दशन्**] पनरह, १५; (दं २२ ; सम २६ ; भग ; सण) । °**रस**, °**रसम** वि [°**दश**] पनरहवाँ, १५वाँ ; (सुर १५, २५० ; पउम १५, १००) । °**रसी** स्त्री [°**दशी**] १ पनरहवीं ; २ पनरहवीं तिथि ; (कप्प) ।

पन्न देखो **पणिअ** = पराय ; (उप १०३१ टी) ।

पन्नंगणा स्त्री [**पण्याङ्गना**] वेश्या, वाराङ्गना ; (उप १०३१ टी) ।

पन्नग देखो **पण्णग** = पन्नग ; (विपा १, ७ ; सुर २, २३८) ।

पन्नट्ठि देखो **पण्णट्ठि** ; (कप्प) ।

पन्नत्त देखो **पण्णत्त** ; (गाया १, १ ; भग ; सम १) ।

पन्नत्तरि स्त्री [**पञ्चसप्तति**] पचहत्तर, ७५ ; (सम ८५ ; ति ३) ।

पन्नत्ति देखो **पण्णत्ति** ; (सुपा १५३ ; संति ५ ; महा) । ५ प्रकृष्ट ज्ञान ; ६ जिससे प्ररूपण किया जाय वह ; (तंदु ५४) । ७ पाँचवाँ अंग-ग्रन्थ, भगवतीसूत्र ; (श्रावक ३३३) ।

पन्नत्तु वि [**प्रज्ञापयितृ**] आख्याता, प्रतिपादक ; (पि ३६०) ।

पन्नपत्तिया स्त्री [**प्रज्ञप्रत्यया**] देखो **पुन्नपत्तिया**; (कप्प) ।

पन्नपन्नइम देखो **पणपन्नइम** ; (पि ४४६) ।

पन्नय देखो **पण्णग** ; (पाअ) । °**रिउ** पुं [°**रिपु**] गरुड़ पक्षी ; (पाअ) ।

पन्नया स्त्री [**पन्नगा**] भगवान् धर्मनाथजी की शासन-देवी ; संति १०) ।

पन्नव देखो **पण्णव** । पन्नवेइ ; (उव) । कर्म—पन्नविज्जइ; (उव) । वकृ—**पन्नवयंत** ; (सम्म १३४) । संकृ—**पन्नवेऊणं** ; (पि ५८५) ।

पन्नवग वि [**प्रज्ञापक**] प्रतिपादक, प्ररूपक; (कम्म ५, ८५ टी) ।

पन्नवण देखो **पण्णवण** ; (सुपा २६६) ।

पन्नवणा देखो **पण्णवणा** ; (भग ; पराण १ ; ठा ३, ४) ।

पन्नवय देखो **पण्णवग** ; (सम्म १६) ।

पन्नवयंत देखो **पन्नव** ।

पन्ना देखो **पण्णा**=प्रज्ञा ; (आचा ; ठा ४, ३ ; १०) ।

पन्ना देखो **पण्णा**=दे; (पव ५०) ।

पन्नाड सक [**मृद्**] मर्दन करना । पन्नाडइ ; (हे ४, १२६) ।

पन्नाडिअ वि [**मृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह ; (पाअ ; कुमा) ।

पन्नाण देखो **पण्णाण** ; (आचा ; पि ६०१) ।

पन्नारस (अप) लि. ब. [**पञ्चदशन्**] पनरह, १५ ; (भवि) ।

पन्नास देखो **पण्णास** ; (सम ७० ; कुमा) । स्त्री—°**सा** ; (कप्प) । °**इम** वि [°**तम**] पचासवाँ, ५० वाँ; (पउम ५०, २३) ।

पन्ह देखो **पण्ह** ; (कप्प) ।

पन्हु (अप) देखो **पण्हअ** = दे. प्रस्नव ; (भवि) ।

पपंच देखो **पवंच** ; (सुपा २३५) ।

पपलीण वि [**प्रपलायित**] भागा हुआ ; (पि ३४६ ; ३६७ ; नाट—मृच्छ ५८) ।

पपिआमह पुं [**प्रपितामह**] १ ब्रह्मा, विधाता ; (राज) । २ पितामह का पिता ; (धर्मसं १४६) ।

पपुत्त पुं [**प्रपुत्र**] पौत्र, पुत्र का पुत्र ; (सुपा ४०७) ।

पपुत्त } पुं [**प्रपौत्र**] पौत्र का पुत्र ; पोते का पुत्र ;
पपोत्त } (विसे ८६२ ; राज) ।

पप्प सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना । पप्पोइ, पप्पोति ; (पि ५०४ ; उत्त १४, १४) । पप्पोदि (शौ) ; (पि ५०४) । संकृ— **पप्प** ; (पराण १७ ; ओघ ५५ ; विसे ५५१) । कृ—**पप्प** ; (विसे २६८७) ।

पप्पग न [**दे. पर्पक**] वनस्पति-विशेष ; (सूअ २, २, ६) ।

पप्पड } पुंस्त्री [**पर्पट**] १ पापड़, मूँग या उर्द की बहुत
पप्पडग } पतली एक प्रकार की रोटी; (पव ३७ ; भवि) । २ पापड़ के आकार वाला शुष्क मृत्खण्ड ; (निचू १) । °**पायय** पुं [°**पाचक**] नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ३०) । °**मोदय** पुं [°**मोदक**] एक प्रकार की मिष्ट वस्तु ; (पराण १७—पत्र ५३३) ।

पप्पडिया स्त्री [**पर्पटिका**] तिल आदि की बनी हुई एक प्रकार की खाद्य वस्तु ; (पराण १ ; पिंड ५५६) ।

पप्पल देखो **पप्पड** ; (नाट—विक्र २१) ।

पप्पीअ पुं [**दे**] चातक पक्षी ; (दे ६, १२) ।

पप्पुअ वि [**प्रप्लुत**] १ जलार्द्र, पानी से भीजा हुआ ; (पराह १, १ ; गाया १, ८)। २ व्याप्त ; "बवपप्पुय-वंजणाइं च" (पव ४ टी)। ३ न. कूदना, लाँघना ; (गउड १२८)।

पप्पोइ } देखो **पप्प**।
पप्पोत्ति }

पप्फंदण न [**प्रस्पन्दन**] प्रचलन, फरकना ; (राज)।

पप्फाड पुं [**दे**] अग्नि-विशेष ; (दे ६, ८)।

पप्फिडिअ वि [**दे**] प्रतिफलित ; (दे ६, २२)।

पप्फुअ वि [**दे**] १ दीर्घ, लम्बा ; २ उड्डीयमान, उड़ता ; (दे ६, ६४)।

पप्फुट्ट अक [**प्र+स्फुट्**] १ खिलना ; २ फूटना। पप्फुट्टइ; (प्राकृ ७४)।

पप्फुडिअ पुं [**प्रस्फुटित**] नरकावास-विशेष ; (देवेन्द्र २८)।

पप्फुय देखो **पप्पुअ**; "वाहपप्फुयच्छो" (सुख २, २८)।

पप्फुर अक [**प्र+स्फुर्**] १ फरकना, हिलना। २ काँपना। पप्फुरइ ; (से १५, ७७ ; गा ६४७)।

पप्फुरिअ वि [**प्रस्फुरित**] फरका हुआ ; (दे ६, १६)।

पप्फुल्ल अक [**प्र+फुल्ल्**] विकसना। वकृ—**पप्फुल्लंत**; (रंभा)।

पप्फुल्ल वि [**प्रफुल्ल**] विकसित, खिला हुआ ; (गाया १, १३ ; उप पृ ११४; पउम ३, ६६ ; सुर २, ७६ ; षड्, गा ६३६ ; ६७०), "इअ भणिएण णअंगी पप्फुल्लविलोअणा जाआ" (काप्र १६१)।

पप्फुल्लिअ वि [**प्रफुल्लित**] ऊपर देखो ; (सम्मत्त १८६; भवि)।

पप्फुल्लिआ स्त्री [**प्रफुल्लिका**] देखो **उप्फुल्लिआ**; (गा १६६ अ)।

पप्फोड देखो **पप्फुट्ट**। पप्फोडइ, पप्फोडए ; (धात्वा १४३)।

पप्फोड सक [**प्र+स्फोटय्**] १ झाड़ना, झाड़ कर गिराना। २ आस्फालन करना। ३ प्रक्षेपण करना। पप्फोडइ ; (गा ४३३)। पप्फोडे; (उत्त २६, २४)। वकृ—**पप्फोडंत, पप्फोडयंत, पप्फोडेमाण** ; (गा १४५, पि ४६१; ठा ६)। संकृ—"**पप्फोडेऊण** सेसयं कम्मं" (आउ ६७)।

पप्फोडण न [**प्रस्फोटन**] १ झाड़ना, प्रकृष्ट धूनन ; (ओघ भा १६३)। २ आस्फोटन, आस्फालन ; (पराह २, ५—पत्त १४८ ; पिंड २६३)।

पप्फोडणा स्त्री [**प्रस्फोटना**] ऊपर देखो ; (ओघ २६६; उत्त २६, २६)।

पप्फोडिअ वि [**दे. प्रस्फोटित**] निर्झाटित, झाड़ कर गिराया हुआ; (दे ६, २९; पाअ), "पप्फोडिअमोहजालस्स" (पडि)। २ फाड़ा हुआ, तोड़ा हुआ ; "पप्फोडिअसउणि-अंडगं व ते होंति निस्सारा" (संबोध १७)।

पप्फोडेमाण देखो **पप्फोड**=प्र+स्फोटय्।

पफुल्ल देखो **पप्फुल्ल**; (षड्)।

पफुल्लिअ देखो **पप्फुल्लिअ** ; हे ४, ३६६ ; पिंग)।

पबंध पुं [**प्रबन्ध**] १ सन्दर्भ, ग्रन्थ, परस्पर अन्वित वाक्य-समूह, (रंभा ८)। २ अ-विच्छेद, निरन्तरता; (उत्त ११, ७)।

पबंधण न [**प्रबन्धन**] प्रबन्ध, संदर्भ, अन्वित वाक्य-समूह की रचना; "कहाए य पबंधणे " (सम २१)।

पबल वि [**प्रबल**] बलिष्ठ, प्रचण्ड, प्रखर; (कुमा)।

पबाहा स्त्री [**प्रबाधा**] प्रकृष्ट बाधा, विशेष पीड़ा; (गाया १, ४)।

पबुद्ध वि [**प्रबुद्ध**] १ प्रवीण, निपुण; (से १२, ३४)। २ जागा हुआ; (सुर ५, २२६)। ३ जिसने अच्छी तरह जानकारी प्राप्त की हो वह; (आचा)।

पबोध सक [**प्र+बोधय्**] १ जागृत करना। २ ज्ञान कराना। कर्म— पबोधीआमि: (पि ५४३)।

पबोधण न [**प्रबोधन**] प्रकृष्ट बोधन; (राज)।

पबोह देखो **पबोध**। कृ—**पबोहणीय**; (पउम १०, २८)।

पबोह पुं [**प्रबोध**] १ जागरण ; २ ज्ञान, समझ ; (चारु ५४ ; पि १६०)।

पबोहण देखो **पबोधण** ; (राज)।

पबोहय वि [**प्रबोधक**] प्रबोध-कर्ता ; (विसे १७३)।

पबोहिअ वि [**प्रबोधित**] १ जगाया हुआ ; २ जिसको ज्ञान कराया गया हो वह ; (सुपा ३१३)।

पब्बल देखो **पबल** ; (से ४, २५ ; ६, ३३)।

पब्बाल देखो **पव्वाल**=छादय्। पब्बालइ ; (हे ४, २१)।

पब्बाल देखो **पव्वाल**=प्लावय्। पब्बालइ ; (हे ४, ४१)।

पब्बुद्ध देखो **पबुद्ध** ; (पि १६६)।

पब्भ वि [**प्रह्व**] नम्र ; (औप ; प्राकृ २४)।

पब्भट्ठ } वि [**प्रभ्रष्ट**] १ परिभ्रष्ट, प्रस्खलित, चूका हुआ ; (पराह १, ३ ; अभि ११६; गा ३१८; सुर ३, १२३ ; गा ३३ ; ६५)। २ विस्मृत ; (से १४,
पब्भसिअ }

४२)। ३ पुं. नरकावास-विशेष ; (देवेन्द्र २८)।

पब्भार पुं [**दे. प्राग्भार**] १ संघात, समूह ; जत्था; (दे ६, ६६ ; से ४, २० ; सुर १, २२३ ; कप्पू ; गउड ; कुलक २१)।

पब्भार पुं [**दे**] गिरि-गुफा, पर्वत-कन्दरा ; (दे ६, ६६), "पब्भारकंदरगया साहंती अप्पणो अट्ठं" (पच्च ८१)।

पब्भार पुं [**प्राग्भार**] १ प्रकृष्ट भार ; "कुमेरे संकमियरज्जपब्भारो" (धम्म ८ टी)। २ ऊपर का भाग; (से ४, २०)। ३ थोड़ा नमा हुआ पर्वत का भाग; (णाया १, १—पत्र ६३; भग ५, ७)। ४ एक देश, एक भाग ; (से १, ५८)। ५ उत्कर्ष, परभाग ; (गउड)। ६ पुंन. पर्वत के ऊपर का भाग ; (णांदि)। ७ वि. थोड़ा नमा हुआ, ईषदवनत ; (अंत ११ ; ठा १०)।

पब्भारा स्त्री [**प्राग्भारा**] दशा-विशेष, पुरुष की सत्तर से अस्सी वर्ष तक की अवस्था ; (ठा १०—पत्र ५१६ ; तंदु १६)।

पब्भूअ वि [**प्रभूत**] उत्पन्न; "मंडुक्कीए गब्भे, पब्भूओ दद्दुरत्तेण" (धर्मवि ३५)।

पब्भोअ पुं [**दे. प्रभोग**] भोग, विलास ; (दे ६, १०)।

पभ पुं [**प्रभ**] १ हरिकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १ ; इक)। २ द्वीप-विशेष और समुद्र-विशेष का अधिपति देव ; (राज)।

°**पभ** वि [**प्रभ**] सदृश, तुल्य ; (कप्प ; उवा)।

°**पभइ** देखो °**पभिइ**; "चंडाणं चंडरुद्दपभईणं" (अज्झ १४१)।

पभंकर पुं [**प्रभङ्कर**] १ ग्रह-विशेष, ज्योतिष-देव-विशेष ; (ठा २, ३)। २ पुंन. देव-विमान-विशेष; (सम ८; १४ ; पव २६७)।

पभंकर वि [**प्रभाकर**] प्रकाशक ; "सव्वलोयपभंकरो" (उत्त २३, ७६)।

पभंकरा स्त्री [**प्रभङ्करा**] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी का नाम ; (ठा २, ३)। २ चन्द्र की एक अग्र-महिषी का नाम; (ठा ४, १)। ३ सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम ; (भग १०, ५)।

पभंकरावई स्त्री [**प्रभङ्करावती**] विदेह वर्ष की एक नगरी; (आचू १)।

पभंगुर वि [**प्रभङ्गुर**] अति विनश्वर ; (आचा)।

पभंजण पुं [**प्रभञ्जन**] १ वायुकुमार-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३ ; ४, १ ; सम ६६)। २ लवण-समुद्र के एक पातालकलश का अधिष्ठायक देव; (ठा ४, २)। ३ वायु, पवन ; (से १४, ६६)। ४ मानुषोत्तर पर्वत के एक शिखर का अधिपति देव; (राज)। °**तणअ** पुं [°**तनय**] हनूमान् ; (से १४, ६६)।

पभंसण न [**प्रभ्रंशन**] स्खलना ; (धर्मसं १०७६)।

पभकंत पुं [**प्रभकान्त**] १—२ विद्युत्कुमार देवों के हरिकान्त और हरिस्सह-नामक दोनों इन्द्रों के लोकपालों के नाम ; (ठा ४, १—पत्र १६७ ; इक)।

पभण सक [**प्र + भण्**] कहना, बोलना। पभणइ ; (महा; सण)।

पभणिय वि [**प्रभणित**] उक्त, कथित ; (सण)।

पभम सक [**प्र + भ्रम्**] भ्रमण करना, भटकना। पभमेसि ; (श्रु १५३)।

पभव अक [**प्र + भू**] १ समर्थ होना, पहुँचना। २ होना, उत्पन्न होना। पभवइ ; (पि ४७५)। वकृ—**पभवंत** ; (सुपा ८६ ; नाट—विक्र ४५)।

पभव पुं [**प्रभव**] १ उत्पत्ति, प्रसूति ; (ठा ६ ; वसु)। २ प्रथम उत्पत्ति-कारण ; (णंदि)। ३ एक जैन मुनि, जम्बुस्वामी का शिष्य ; (कप्प ; वसु ; णंदि)।

पभवा स्त्री [**प्रभवा**] तृतीय वासुदेव की पटरानी ; (पउम २०, १८६)।

पभविय वि [**प्रभूत**] जो समर्थ हुआ हो ; "सा विज्जा सिद्धसुए उदग्गपुन्नम्मि पभविया नेव" (धर्मवि १२३)।

पभा स्त्री [**प्रभा**] १ कान्ति, तेज; (महा ; धर्मसं १३३३)। २ प्रभाव; "निच्चुज्जोया रम्मा,सयंपभा ते विरायंति" (देवेन्द्र ३२०)।

पभाइअ } **पभाय** } पुंन [**प्रभात**] १ प्रातः काल, सुबह; (पउम ७०, ५६; सुर ३, ६६; महा; स २४४)। २ वि. प्रकाशित ; "रयणीए पभायाए" (उप ६४८ टी)। °**तणय** वि [°**संबन्धिन्**] प्राभातिक, प्रभात-संबन्धी; (सुर ३, २४८)।

पभार पुं [**प्रभार**] प्रकृष्ट भार ; (सम १५३)।

पभाव देखो **पहाव**=प्र + भावय्। पभावेइ, पभावंति ; (उव; पव १४८)। वकृ—**पभाविंत** ; (सुपा ३७६)।

पभाव देखो **पहाव**—प्रभाव ; (स्वप्न ६८)।

पभावई स्त्री [**प्रभावती**] १ उन्नीसवें जिन-देव की माता का नाम; (सम १५१)। २ रावण की एक पत्नी का नाम; (पउम ७४, ११)। ३ उदायन राजर्षि की पटरानी और

चेड़ा नरेश की पुत्री का नाम; (पडि)। ४ बलदेव के पुत्र निषध की भार्या ; (आवृ१) । ५ राजा बल की पत्नी; (भग ११, ११)।

पभावग वि [**प्रभावक**] प्रभाव बढ़ाने वाला, शोभा की वृद्धि करने वाला; (श्रा ६; द्र २३)। २ उन्नति-कारक; ३ गौरव-जनक; (कुप्र १६८)।

पभावण न [**प्रभावन**] नीचे देखो ; (श्रु ५)।

पभावणा स्त्री [**प्रभावना**] १ माहात्म्य, गौरव; २ प्रसिद्धि, प्रख्याति; (गाया १, १६—पत्र १२२; श्रा ६ : महा)।

पभावय वि [**प्रभावक**] गौरव बढ़ाने वाला ; (संबोध ३१)।

पभावाल पुं [**प्रभावाल**] वृक्ष-विशेष ; (राज)।

पभाविंत देखो **पभाव**=प्र+भावय्।

पभास सक [**प्र+भाष्**] बोलना, भाषण करना। पभासंति ; (विसे ४६६ टी)। वकृ—**पभासंत, पभासयंत, पभासमाण**; (उप पृ २३ ; पउम ५५, १८ ; ८६, १०)।

पभास अक [**प्र+भास्**] प्रकाशित होना। पभासिंति ; (सुज्ज १६)। भूका—पभासिंसु ; (भग ; सुज्ज १६)। भवि—पभासिस्संति ; (सुज्ज १६)। वकृ—**पभासमाण**; (कप्प)।

पभास सक [**प्र+भासय्**] प्रकाशित करना। पभासेइ ; (भग)। पभासंति ; (सुज्ज ३—पत्र ६४)। वकृ—**पभासयंत, पभासेमाण**; (पउम १०८, ३३ ; स्यण ७५; कप्प; उवा; औप; भग)।

पभास पुं [**प्रभास**] १ भगवान् महावीर के एक गणधर का नाम; (सम १६ ; कप्प)। २ एक विकटापाती पर्वत का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३—पत्र ६६)। ३ एक जैन मुनि का नाम; (धर्म ३)। ४ एक चित्रकार का नाम ; (धम्म ३१ टी)। ५ न. तीर्थ-विशेष; (जं ३; महा)। ६ देव-विमान विशेष; (सम १३; ४१)। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] तीर्थ-विशेष, भारतवर्ष की पश्चिम दिशा में स्थित एक तीर्थ; (इक)।

पभासा स्त्री [**प्रभासा**] अहिंसा, दया ; (पण्ह २, १)।

पभासिय वि [**प्रभाषित**] उक्त, कथित; (सूअ १, १, १, १६)।

पभासेमाण देखो **पभास**=प्र+भासय्।

पभिइ देखो **पभिइं**; (व्र ५५)।

पभिइ वि. ब. [**प्रभृति**] इत्यादि, वगैरह; (भग; उवा ; महा)।

पभिइं, **पभिई**, **पभीइ**, **पभीइं** अ [**प्रभृति**] प्रारम्भ कर, (वहां से) शुरू कर, लेकर ; "बालभावाओ पभिइं" (सुर ४,१६४; कप्प; महा; स ७३६; २७५ टि)।

पभीय वि [**प्रभीत**] अति भीत, अत्यन्त डरा हुआ ; (उत्त ५, ११)।

पभु पुं [**प्रभु**] १ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ७)। २ स्वामी, मालिक ; (पउम ३३, २६; बृह २)। ३ राजा, नृप ; "पभू राया अणुप्पभू जुवराया" (निचू २)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान् ; (श्रा २७; भग १५; उवा, ठा ४, ४)। ५ योग्य, लायक ; "पभुत्ति वा जोग्गोत्ति वा एगट्ठा" (निचू २०)।

पभुंज सक [**प्र+भुज्**] भोग करना। पभुंजदि (शौ); (द्रव्य ६)।

पभुति (पै) देखो **पभिइं** ; (कुमा)।

पभुत्त वि [**प्रभुक्त**] १ जिसने खाने का प्रारम्भ किया हो वह; (सुर १०, ५८)। २ जिसने भोजन किया हो वह; (स १०४)।

पभूइ, **पभूइं** देखो **पभिइं** ; (पउम ३, ७६ ; स २७५)।

पभूय वि [**प्रभूत**] प्रचुर, बहुत ; (भग ; पउम ५, ५ ; गाया १, १ ; सुर ३, ८१ ; महा)।

पभोय (अप) देखो **उवभोग**; "भोय-पभोयमाणु जं किज्जइ" (भवि)।

पमइल वि [**प्रमलिन**] अति मलिन ; (गाया १, १)।

पमक्खण न [**प्रम्रक्षण**] १ अभ्यञ्जन, विलेपन ; २ विवाह के समय किया जाता एक तरह का उबटन; (स ७४)।

पमक्खिअ वि [**प्रम्रक्षित**] १ विलिप्त ; २ विवाह के समय जिसको उबटन किया गया हो वह ; (वसु ; स ७५)।

पमज्ज सक [**प्र+मृज्, मार्ज्**] मार्जन करना, साफ-सुथरा करना, झाड़ आदि से धूलि वगैरः को दूर करना। पमज्जइ; (उव ; उवा)। पमज्जिया ; (आचा)। वकृ—**पमज्जेमाण**; (ठा ७)। संकृ—**पमज्जित्ता**; (भग ; उवा)। हेकृ—**पमज्जित्तु**; (पि ५७७)।

पमज्जण न [**प्रमार्जन**] मार्जन, भूमि-शुद्धि; (अंत)।

पमज्जणिया } स्त्री [**प्रमार्जनी**] झाडू, भूमि साफ करने
पमज्जणी } का उपकरण; (णाया १, ७; धर्म ३)।

पमज्जय वि [**प्रमार्जक**] प्रमार्जन करने वाला ; (दे ५, १८)।

पमज्जिअ वि [**प्रमृष्ट, प्रमार्जित**] साफ किया हुआ ; (उवा; महा)।

पमत्त वि [**प्रमत्त**] १ प्रमाद-युक्त, असावधान, प्रमादी, बेदरकार; (उव ; अभि १८५ ; प्रासू ६८)। २ न. छठवाँ गुण-स्थानक; (कम्म ४, ४७; ५६)। ३ प्रमाद ; (कम्म २)। °**जोग** पुं [°**योग**] प्रमाद-युक्त चेष्टा ; (भग)। °**संजय** पुं [°**संयत**] प्रमादी साधु, प्रमाद-युक्त मुनि ; (भग ३,३)।

पमद देखो **पमय**; (स्वप्न ५१; कप्पू)।

पमदा देखो **पमया**; (नाट—शकु २)।

पमद्द सक [**प्र+मृद्**] १ मर्दन करना। २ विनाश करना। ३ कम करना। ४ चूर्ण करना। ५ रुई की पूणी बनाना। वकृ—**पमद्दमाण** ; (पिंड ५७४)।

पमद्द पुं [**प्रमर्द**] १ ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध एक योग; (सम १३; सुज्ज १०, ११)। २ संघर्ष, संमर्द ; (राज)। ३ वि. मर्दन करने वाला; ४ विनाशक ; "सारं मरणाइ सव्वं पच्चक्खाणं खु भवदुहपमद्दं" (संबोध ३७)।

पमद्दण न [**प्रमर्दन**] १ चूरना, चूर्ण करना; (राय)। २ नाश करना। ३ कम करना; (सम १२२)। ४ रुई की पूणी करना ; (पिंड ६०३)। ५ वि. विनाश करने वाला ; (पंचा १४, ४२)।

पमद्दि वि [**प्रमर्दिन्**] प्रमर्दन करने वाला; (औप; पि २६१)।

पमय पुं [**प्रमद**] १ आनन्द, हर्ष ; (काल ; श्रा २७)। २ न. धतूरे का फल। °**च्छी** स्त्री [°**ाक्षी**] स्त्री, महिला; (सुपा २३०)। °**वण** न [°**वन**] राजा का अन्तःपुर-स्थित वन ; (से ११, ३७ ; णाया १, ८; १३)।

पमया स्त्री [**प्रमदा**] उत्तम स्त्री, श्रेष्ठ महिला; (उव; बृह ४)।

पमह पुं [**प्रमथ**] शिव का अनुचर ; (पात्र)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] महादेव ; (समु १५०)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] शिव; महादेव ; (गा ४४८)।

पमा सक [**प्र+मा**] सत्य सत्य ज्ञान करना। कर्म—पमीयए; (विसे ९४६)।

पमा स्त्री [**प्रमा**] १ प्रमाण, परिमाण; "पीअलधाउविणिम्मिअ-विहत्थिपममाहुलिंगआहरणं" (कुमा)। २ प्रमाण, न्याय; "अतिप्पसंगो पमासिद्धो" (धर्मसं ६८१)।

पमा° देखो **पमाय**=प्रमाद; (वव १)।

पमाइ वि [**प्रमादिन्**] प्रमादी, बेदरकार; (सुपा ५४३; उव; आचा)।

पमाइअव्व देखो **पमाय**=प्र+मद्।

पमाइल्ल देखो **पमाइ**; "धम्मपमाइल्ले" (उप ७२८ टी)।

पमाण सक [**प्र+मानय्**] विशेष रीति से मानना, आदर करना। कृ—**पमाणणिज्ज** ; (श्रा २७)।

पमाण न [**प्रमाण**] १ यथार्थ ज्ञान; सत्य ज्ञान; २ जिससे वस्तु का सत्य सत्य ज्ञान हो वह, सत्य ज्ञान का साधन; (अणु)। ३ जिससे नाप किया जाय वह; "अणुप्पमाणंपि" (श्रा २७; भग ; अणु)। ४ नाप, माप, परिमाण; (विचार ५४४; ठा ५, ३ ; जीवस ६४ ; भग ; विपा १, २)। ५ संख्या ; (अणु ; जी २६)। ६ प्रमाण-शास्त्र, न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र; "लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ" (सुपा १०३)। ७ पुंन. सत्य रूप से जिसका स्वीकार किया जाय वह ; ८ माननीय, आदरणीय ; ९ सच्चा, सही, ठीक ठीक, यथार्थ; "कमागओ जो य जेसिं किल धम्मो सो य पमाणो तेसिं" (सुपा ११०; श्रा १४),
"सुचिरंपि अच्छमाणो नलथंभो पिच्छ इच्छुवाडम्मि।
कीस न जायइ महुरो जइ संसग्गी पमाणं ते" (प्रासू ३३)।
°**वाय** पुं [°**वाद**] न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र; (सम्मत्त ११७)। °**संवच्छर** पुं [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष; (सुज्ज १०, २०)।

पमाण सक [**प्रमाणय्**] प्रमाण रूप से स्वीकार करना। पमाण, पमाणह; (पिंग)। वकृ—**पमाणंत** ; (उवर १८९)। कृ—**पमाणियव्व** ; (सिरि ६१)।

पमाणिअ वि [**प्रमाणित**] प्रमाण रूप से स्वीकृत ; (सुपा ११० ; श्रा १२)।

पमाणिआ } स्त्री [**प्रमाणिका, प्रमाणी**] छन्द-विशेष;
पमाणी } (पिंग)।

पमाणीकर सक [**प्रमाणी+कृ**] प्रमाण करना, सत्य रूप से स्वीकार करना। कर्म—पमाणीकरीअदि (शौ) ; (पि ३२४)। संकृ—**पमाणीकिअ**; (नाट—मालवि ४०)।

पमाद देखो **पमाय**=प्र+मद्। कृ—**पमादेयव्व**; (णाया १,१—पत्र ६०)।

पमाद देखो **पमाय**=प्रमाद; (भग; औप; स्वप्न १०६)।

पमाय अक [**प्र+मद्**] प्रमाद करना, बेदरकारी करना पमायइ, पमायए; (उत्त; पि ४६०) । वकृ—**पमायंत**; (सुपा १०) । कृ—**पमाइअव्व**; (भग) ।

पमाय पुं [**प्रमाद**] १ कर्तव्य कार्य में अप्रवृत्ति और अकर्तव्य में प्रवृत्ति रूप अ-सावधानता, बेदरकारी ; (आचा; उत्त ४, ३२ ; महा; प्रासू ३८; १३४) । २ दुःख, कष्ट; "समग्ग-लोयाण वि जा विसयासमा समुप्पाइयसुमणमाया" (सम्म ३५) ।

पमार पुं [**प्रमार**] १ मरण का प्रारम्भ; (भग १५) । २ बुरी तरह मारना ; (ठा ५, १) ।

पमारणा स्त्री [**प्रमारणा**] बुरी तरह मारना; (वव ३) ।

पमिय वि [**प्रमीत**] परिमित, नापा हुआ; "अंगुलमूलासंखियभागप्पमिया उ होंति सेढीओ" (पंच २, २०) ।

पमिलाण वि [**प्रम्लान**] अतिशय मुरझाया हुआ; (ठा ३, १; धर्मवि ५५) ।

पमिलाय अक [**प्र+म्लै**] मुरझाना । "पणपन्नाय परेणं जोणी पमिलायए महिलियाणं" (तंदु ४) ।

पमिल्ल अक [**प्र+मील्**] विशेष संकोच करना, सकुचना । पमिल्लइ; (हे ४, २३२; प्राप्र) ।

पमीय देखो **पमा=प्र+मा** ।

पमील देखो **पमिल्ल** । पमीलइ; (हे ४, २३२) ।

पमुइअ वि [**प्रमुदित**] हर्ष-प्राप्त, हर्षित; (औप; जीव ३) ।

पमुंच सक [**प्र+मुच्**] छोड़ना, परित्याग करना । पमुंचंति; (उव) । कर्म—पमुच्चइ; (पि५४२) । भवि—पमोक्खसि; (आचा) । वकृ—**पमुंचमाण**; (राज) ।

पमुक्क वि [**प्रमुक्त**] परित्यक्त ; (हे २, ९७ ; षड्) ।

°**पमुक्ख** देखो °**पमुह**; (सुपा १०; गु ११; जी १०) ।

पमुच्छिअ पुं [**प्रमूर्च्छित**] नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २७) ।

पमुत्त देखो **पमुक्क**; (पि ५६६) ।

पमुदिय देखो **पमुइअ**; (सुर ३, २०) ।

पमुद्ध वि [**प्रमुग्ध**] अत्यन्त मुग्ध; (नाट—मालती ४४) ।

पमुह वि [**प्रमुख**] १ तल्लीन दृष्टि वाला; "एगप्पमुहे" (आचा) । २ पुं. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३) । ३ न. प्रकृष्ट आरम्भ, आदि, आपात; "किंपाग-फलसरिच्छा भोगा पमुहे हवंति गुणमहुरा" (पउम १०८, ३१ ; पात्र) ।

°**पमुह** वि. ब. [°**प्रमुख**] १ वगैरह, आदि; २ प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य; (औप; प्रासू १६६) ।

पमुहर वि [**प्रमुखर**] वाचाल, बकवादी; (उत्त १७, ११) ।

पमेइल वि [**प्रमेदस्विन**] जिसके शरीर में चर्बी बहुत हो वह "थूले पमेइले वज्झे पाइमेत्ति य नो वए" (दस ७, २२) ।

पमेय वि [**प्रमेय**] प्रमाण-विषय, सत्य पदार्थ; (धर्मसं ११८०) ।

पमेह पुं [**प्रमेह**] रोग-विशेष, मेह रोग, मूत्र-दोष, बहुमूत्रता; (निचू १) ।

पमोअ पुं [**प्रमोद**] १ आनन्द, खुशी, हर्ष; (सुर १, ७८; महा; सांदि) । २ राक्षस-वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति ; (पउम ५, २६३) ।

पमोक्ख देखो **पमुंच** ।

पमोक्ख पुंन [**प्रमोक्ष**] १ मुक्ति, निर्वाण ; (सूअ १, १०, १२) । २ प्रत्युत्तर, जवाब; "नो संचाएइ......किंचिवि पमोक्खमक्खाइउ" (भग) ।

पमोक्खण न [**प्रमोचन**] परित्याग; "कंठाकंठियं अवयासिय वाहपमोक्खणं करेइ" (णाया १, २—पत्र ८८) ।

पमोयणा स्त्री [**प्रमोदना**] प्रमोदन, प्रमोद, आह्लाद; (चेइय ४११) ।

पम्मलाअ अक [**प्र+म्लै**] अधिक म्लान होना । पम्मलाअदि (शौ); (पि १३६; नाट—मालती ५३) ।

पम्माअ ⎫ वि [**प्रम्लान**] १ विशेष म्लान, अत्यन्त मुरझा-
पम्माइअ ⎭ या हुआ; "पम्माअसिरीसाइं व । जह से जायाइं अंगाइं" (गा ५६; गा ५६ टि) । २ शुष्क; "वसहा य जायथामा, गामा पम्मायचिक्खल्ला" (धर्मवि ५३) ।

पम्मि पुं [**दे**] पाणि, हाथ, कर; (षड्) ।

पम्मुक्क देखो **पमुक्क** ; (हे २, ९७; षड्; कुमा) ।

पम्मुह वि [**प्राङ्मुख**] पूर्व की ओर जिसका मुँह हो वह; (भवि; वज्जा १६४) ।

पम्ह पुंन [**पक्ष्मन्**] १ अक्षि-लोम, बरवनी, आँख के बाल; (पाअ) । २ पद्म आदि का केसर, किंजल्क ; (उवा; भग; विपा १, १) । ३ सूत्र आदि का अत्यल्प भाग; ४ पँख, पाँख; (हे २, ७४; प्राप्र) । ५ केश का अग्र-भाग; (से ६, २०) । ६ अग्र-भाग; "णाअणहुआसणपइत्तपत्तणपम्हं" (से १५, ७३) । ७ महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रदेश; (ठा २, ३; इक) । ८ न. एक देव-विमान; (सम १५) । °**कंत** न [°**कान्त**] एक देव-विमान का नाम; (सम १५) ।

°**कूड** पुं [°**कूट**] १ पर्वत-विशेष; (राज)। २ न. ब्रह्मलोक-नामक देवलोक का एक देव-विमान; (सम १५)। ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (ठा २, ३; ६)। °**ज्झय** न [°**ध्वज**] देव-विमान-विशेष; (सम १५)। °**प्पभ** न [°**प्रभ**] ब्रह्मलोक का एक देव-विमान; (सम १५)। °**लेस**, °**लेस्स** न [°**लेश्य**] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान; (सम १५; राज)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (सम १५)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] वही अर्थ; (सम १५)। °**सिट्ठ** न [°**सृष्ट**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (सम १५)। °**ावत्त** न [°**ावर्त्त**] वही अर्थ; (सम १५)।

पम्ह देखो **पउम**; (पण्ह १, ४—पत्र ६७; ७८; जीव ३)। °**गंध** वि [°**गन्ध**] १ कमल की गन्ध। २ वि. कमल के समान गन्ध वाला; (भग ६, ७)। °**लेस** वि [°**लेश्य**] पद्म-नामक लेश्या वाला; (भग)। °**लेसा** स्त्री [°**लेश्या**] लेश्या-विशेष, पाँचवीं लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष; (ठा ३, १; सम ११)। °**लेस्स** देखो °**लेस**; (पण्ण १७—पत्र ५११)।

पम्हअ सक [**प्र+स्मृ**] भूल जाना, विस्मरण होना। पम्हअइ; (प्राकृ ६१)।

पम्हगावई स्त्री [**पक्ष्मकावती**] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष; (ठा २, ३; इक)।

पम्हट्ठ वि [**प्रस्मृत**] १ विस्मृत; (से ४, ४२)। २ जिसको विस्मरण हुआ हो वह; "किं पम्हट्ठ म्हि अहं तुह चल-णुप्पणाणतिवहआपडिउणणं" (से ६, १२)।

पम्हट्ठ वि [**दे**] १ प्रभ्रष्ट, विलुप्त; (से ४, ४२)। २ फेंका हुआ, प्रक्षिप्त; "पम्हट्ठं वा परिट्ठवियं ति वा एगट्ठं" (वव १)।

पम्हय वि [**पक्ष्मज**] १ पक्ष्म से उत्पन्न। २ न. एक प्रकार का सूता; (पंचभा)।

पम्हर पुं [**दे**] अपमृत्यु, अकाल-मरण; (दे ६, ३)।

पम्हल वि [**पक्ष्मल**] पक्ष्म-युक्त, सुन्दर अक्षि-लोम वाला; (हे २, ७४; कुमा; षड्; औप; गउड; सुर ३, १३९; पाअ)।

पम्हल पुं [**दे**] किंजल्क, पद्म आदि का केसर; (दे ६, १३; षड्)।

पम्हलिय वि [**दे, पक्ष्मलित**] धवलित, सफेद किया हुआ; "लायण्णजोण्हापवाहपम्हलियचउद्दिसाभोओ" (स ३६)।

पम्हस सक [**वि+स्मृ**] विस्मरण करना, भूल जाना। पम्हसइ; (षड्), पम्हसिज्जासु; (गा ३४८)।

पम्हसाविय वि [**विस्मारित**] भूलाया हुआ, विस्मृत कराया हुआ; (सुख २, ५)।

पम्हा स्त्री [**पद्मा**] १ लेश्या-विशेष, पद्म-लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष; (कम्म ३, २२; श्रा २६)। २ विजय-क्षेत्र विशेष; (राज)।

पम्हार पुं [**दे**] अपमृत्यु, अनमौत मरण; (दे ६, ३)।

पम्हावई स्त्री [**पक्ष्मावती**] १ विजय-विशेष की एक नगरी; (ठा २, ३; इक)। २ पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पम्हुट्ठ वि [**दे**] १ नष्ट, नाश-प्राप्त; (हे ४, २५८)। २ विस्मृत; "पम्हुट्ठं विम्हरिअं" (पाअ), "किं थ तयं पम्हुट्ठं" (गाया १, ८—पत्र १४८; विचार २३८)।

पम्हुत्तरवडिंसग न [**पक्ष्मोत्तरावतंसक**] ब्रह्मलोक में स्थित एक देव-विमान; (सम १५)।

पम्हुस सक [**वि+स्मृ**] भूलना, विस्मरण करना। पम्हुसइ; (हे ४, ७५)।

पम्हुस सक [**प्र+मृश्**] स्पर्श करना। पम्हुसइ, पम्हुस; (हे ४, १८४; कुमा ७, २९)।

पम्हुस सक [**प्र+मुष्**] चोरना, चोरी करना। पम्हुसइ; पम्हुसेइ; पम्हुसंति; (हे ४, १८४; सुपा १३७; कुमा ७, २९)।

पम्हुसण न [**विस्मरण**] विस्मृति; (पंचा १५, ११)।

पम्हुसिअ वि [**विस्मृत**] जिसका विस्मरण हुआ हो वह; (कुमा; उप ७६८ टी)।

पम्हुह सक [**स्मृ**] स्मरण करना। पम्हुहइ; (हे ४, ७४)।

पम्हुहण वि [**स्मर्तृ**] स्मरण करने वाला; (कुमा)।

पय सक [**पच्**] पकाना, पाक करना। पयइ; (हे ४, ९०)। वकृ—**पयंत**; (कप्प)। संकृ—**पइउं**; (कुप्र २६६)।

पय सक [**पद्**] १ जाना। २ जानना। ३ विचारना। पयइ; (विसे ४०८)।

पय पुंन [**पयस्**] १ क्षीर, दूध; "पओ"; (हे १, ३२; ओघ १२; पाअ)। २ पानी, जल; (सुपा १३६; पाअ)। °**हर** देखो **पओहर**; (पिंग)।

पय पुं [**प्रज**] प्राणी, जन्तु; (आचा)।

पय पुंन [**पद**] १ विभक्ति के साथ का शब्द; "नमस्थवावरणं जोयणं च तं नामियाइं पंचविहं" (विसे १००३ ; सम्म १३८; श्रा २३) । २ शब्द-समूह, वाक्य; "उवागयावा इवं समक्खाया" (उप १०३८; श्रा २३) । ३ पैर, पाँव, चरण ; "जाणं च नज्जणानज्जणाइ लक्खं ठवेमि मंदपए, कव्वरहे बाला इव", "जाव न लग्गइ पए पच्चाहुत्तं नियत्तो सि" (सुपा १ ; धर्मवि ५४; सुर ३, १०७; श्रा २३) । ४ पाद-चिन्ह, पदाङ्क; (सुर २, २३२ ; सुपा ३५४; श्रा २३ ; प्रासू ५०) । ५ पद्य का चौथा हिस्सा; (अणु) ६ निमित्त, कारण; (आचा) । ७ स्थान; "अवमाणपयं हि सेव त्ति" (सुर २, १६७; श्रा २३) । ८ पदवी, अधिकार; "जुवरायपए किं नवि अहिसिच्चइ देव मे पुत्तो?" (सुर २, १७५ ; महा) । ९ त्राण, शरण; १० प्रदेश; ११ व्यवसाय ; (श्रा २३) । १२ कूट, जाल-विशेष; (सूत्र १, १, २, ८) । °**खेम** न [°**क्षेम**] शिव, कल्याण ; "कुव्वइ अ सो पयखेममप्पणो" (दस ६, ४, ६) । °**त्थ** पुं [°**स्थ**] पदाति, प्यादा ; "तुरएण सह तुरंगो पाइक्को सह पयत्थेण" (पउम ६, १८२) । °**पास** पुं [°**पाश**] वागुरा, जाल आदि बन्धन; (सूत्र १, १, २, ८; ६) । °**रक्ख** पुं [°**रक्ष**] पदाति, प्यादा; (भवि; हे ४, ४१८) । °**विग्गह** पुं [°**विग्रह**] पद-विच्छेद ; (विसे १००६) । °**विभाग** पुं [°**विभाग**] उत्सर्ग और अपवाद का यथा-स्थान निवेश, सामाचारी-विशेष ; (आव १) । °**वीढ** देखो **पाय-वीढ** ; (पव ४०; सुपा ६५६) । °**समास** पुं [°**समास**] पदों का समुदाय; (कम्म १, ७) । °**णुसारि** वि [°**ानुसारिन्**] एक पद से अनेक अनुक्त पदों का भी अनुसंधान करने की शक्ति वाला; (औप; बृह १) । °**णुसारिणी** स्त्री [°**ानुसारिणी**] बुद्धि-विशेष, एक पद के श्रवण से दूसरे अ-श्रुत पदों का स्वयं पता लगाने वाली बुद्धि ; (पण्ण २१) ।

पय (अप) देखो **पत्त**=प्राप्त; (पिंग) ।

पय देखो **पया**=प्रजा । °**पाल** वि [°**पाल**] १ प्रजा का पालक ; २ पुं. नृप-विशेष ; (सिरि ४५) ।

पयइ देखो **पगइ**; (गा ३१७; गउड; महा; नव ३१ ; भत्त ११४ ; कप्पू; कुप्र ३४६)।

पयइंद पुं [**पतगेन्द्र, पदकेन्द्र**] वानव्यन्तर—जातीय देवों का इन्द्र; (ठा २, ३) ।

पयई देखो **पयवी** ; (गउड) ।

पयंग पुं [**पतङ्ग**] १ सूर्य, रवि; (पाअ), "तो हरिसपुलइयंगो चक्को इव दिट्ठउग्गयपयंगो" (उप ७२८ टी) । २ वंश-विशेष, रञ्जन-द्रव्य-विशेष; (उप ६, ८; सिरि १०५९) । ३ शलभ, फतिंगा, उड़ने वाला छोटा कीट ; (गाया १, १७; पाअ) । ४—७ देखो **पयय**=पतग, पदक, पदग ; (पण्ह १, ४; पव ६८; राज) । °**वीहिया** स्त्री [°**वीथिका**] १ शलभ का उड़ना; २ भिक्षा के लिए पतंग की तरह चलना, बीच में दो चार घरों को छोड़ते हुए भिक्षा लेना; (उत्त ३०, १९) । °**वीही** स्त्री [°**वीथी**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (उत्त ३०, १९) ।

पयंचुल पुंन [**प्रपञ्चुल**] मत्स्य-बन्धन-विशेष,मच्छी पकड़ने का एक प्रकार का जाल; (विपा १, ८—पत्र ८५) ।

पयंड वि [**प्रचण्ड**] १ अत्युग्र, तीव्र, प्रखर; २ भयानक, भयंकर, (पण्ह १, १; ३; ४; उव) ।

पयंड वि [**प्रकाण्ड**] अत्युग्र, उत्कट; (पण्ह १, ४) ।

पयंत देखो **पय** =पच् ।

पयंप अक [**प्र + कम्प्**] अतिशय काँपना । वकृ—**पयंप-माण** ; (स ५६६) ।

पयंप सक [**प्र + जल्प्**] १ कहना, बोलना । २ बकवाद करना । पयंपए; (महा) । संकृ—**पयंपिऊण,पयंपिऊणं**; (महा; पि ५८५) । कृ—**पयंपिअव्व**; (गा ४५०; सुपा ५५२) ।

पयंपण न [**प्रजल्पन**] कथन, उक्ति; (उप पृ २१७) ।

पयंपिय वि [**प्रकम्पित**] अति काँपा हुआ ; (स ३७७)।

पयंपिय वि [**प्रजल्पित**] १ कथित, उक्त ; २ न. कथन, उक्ति; ३ बकवाद, व्यर्थ जल्पन; (विपा १, ७) ।

पयंपिर वि [**प्रजल्पितृ**] १ बोलने वाला; २ वाचाट, बक-वादी ; (सुर १६, ५८ ; सुपा ४१५ ; श्रा २७) ।

पयंस सक [**प्र + दर्शय्**] दिखलाना । पयंसेति ; (विसे ६३२) ।

पयंसण न [**प्रदर्शन**] दिखलाना; (स ६१३) ।

पयंसिअ वि [**प्रदर्शित**] दिखलाया हुआ ; (सुर १, १०१; १२, ३२) ।

पयक्ख सक [**प्रत्या + ख्या**] प्रत्याख्यान करना, प्रतिज्ञा करना । पयक्खेइ; (विचार ७५५) ।

पयक्खिण देखो **पदक्खिण**—प्रदक्षिण; (गाया १, १६) ।

पयक्खिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिणय् । संकृ—**पयक्खिणिऊण** ; (सुर ८, १०५) ।

पयक्खिणा देखो **पदक्खिणा** ; (उप १४२ टी ; सुर १४, ३०) ।

पयग देखो **पयय**=पतग, पदक, पदग ; (राज ; पव १६४)।

पयच्छ सक [**प्र+यम्**] देना, अर्पण करना। पयच्छइ ; (महा) । संकृ—**पयच्छिऊण** ; (राज) ।

पयच्छण न [**प्रदान**] १ दान, अर्पण ; (सुर २, १५१)। २ वि. देने वाला ; (सण) ।

पयट्ट अक [**प्र+वृत्**] प्रवृत्ति करना। पयट्टइ ; (हे २, ३० ; ४, ३४७; महा) । कृ—**पयट्टिअव्व**; (सुपा १२६) । प्रयो—पयट्टावेह; (स २२); संकृ—**पयट्टाविउं**; (स ७१५) ।

पयट्ट वि [**प्रवृत्त**] १ जिसने प्रवृत्ति की हो वह; (हे २, २६ ; महा) । २ चलित ; "पयट्टयं चलियं" (पात्र) ।

पयट्टय वि [**प्रवर्तक**] प्रवृत्ति करने वाला; (पण्ह १, १)।

पयट्टावअ वि [**प्रवर्तक**] प्रवृत्ति कराने वाला; (कप्पू) ।

पयट्टाविअ वि [**प्रवर्तित**] प्रवृत्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ ; (महा) ।

पयट्टिअ वि [**दे. प्रवर्तित**] ऊपर देखो; (दे ६, २६) ।

पयट्टिअ वि [**प्रवृत्त**] प्रवृत्ति-युक्त; (उत्त ४, २; सुख ४, २) ।

पयट्ठाण देखो **पइट्ठाण**; (काल; पि २२०) ।

पयड सक [**प्र+कटय्**] प्रकट करना, व्यक्त करना। पयडइ, पयडेइ; (सण ; महा) । वकृ—**पयडंत**; (सुपा १; गा ४०६; भवि) । हेकृ—**पयडित्तु**; (पि ५७७) । प्रयो—पयडावइ; (भवि) ।

पयड वि [**प्रकट**] १ व्यक्त, खुला; (कुमा; महा) । २ विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध; "विक्खाओ विस्सुओ पयडो" (पात्र)।

पयडण न [**प्रकटन**] १ व्यक्त करना, खुला करना; (सण) । २ वि. प्रकट करने वाला; "जे तुज्झ गुणा बहुनेह-पयडणा" (धर्मवि ६६) ।

पयडावण न [**प्रकटन**] प्रकट कराना; (भवि) ।

पयडाविय वि [**प्रकटित**] प्रकट कराया हुआ; (काल; भवि) ।

पयडि देखो **पगइ**; (पण्ण २३; पि २१६) ।

पयडि स्त्री [**दे**] मार्ग, रास्ता; "जे पुण सम्मद्दिट्ठी तेसिं मणो चडणपयडीए" (सट्ठि १४२) ।

पयडिय वि [**प्रकटित**] प्रकट किया हुआ; (सुर ३, ४८; श्रा २) ।

पयडिय वि [**प्रपतित**] गिरा हुआ; (णाया १, ८—पत्र १३३) ।

पयडीकय वि [**प्रकटीकृत**] प्रकट किया हुआ; (महा) ।

पयडीकर सक [**प्रकटी+कृ**] प्रकट करना। प्रयो—पयडीकरावेमि; (महा) ।

पयडीभूअ } वि [**प्रकटीभूत**] जो प्रकट हुआ हो;
पयडीहूअ } (सुर ६, १८४; श्रा १६; महा; सण) ।

पयड्डणी स्त्री [**दे**] १ प्रतीहारी; २ आकृष्टि, आकर्षण; ३ महिषी; (दे ६, ७२) ।

पयण देखो **पवण**; (गा ७७७) ।

पयण देखो **पडण**; (विसे १८५६) ।

पयण } न [**पचन**, °**क**] १ पाक, पकाना; (औप;
पयणग } कुमा) । २ पात्र-विशेष, पकाने का पात्र; (सूअनि ८०; जीव ३) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] पाक-स्थान; (बृह २) ।

पयणु } वि [**प्रतनु**] १ कृश, पतला; २ सूक्ष्म, बारीक;
पयणुअ } ३ अल्प, थोड़ा; (स २४६; सुर ८, १६५; भग ३, ४; जं २; पउम ३०, ६६; से ११, ५६; गा ६८२; गउड) ।

पयण्णय देखो **पइण्णग**; (तंदु १) ।

पयत्त अक [**प्र+यत्**] प्रयत्न करना। पअत्तध (शौ) ; (पि ४७१) ।

पयत्त देखो **पयट्ट**=प्र+वृत्; (काल) ।

पयत्त पुं [**प्रयत्न**] चेष्टा, उद्यम, उद्योग; (सुपा ; उव ; सुर १, ६ ; २, १८२; ४, ८१) ।

पयत्त वि [**प्रदत्त, प्रत्त**] १ दिया हुआ; (भग) । २ अनुज्ञात, संमत; (अनु ३) ।

पयत्त देखो **पयट्ट**=प्रवृत्त; (सुर २, १५६; ३, २४८; से ३, २४; ८, ३; गा ४३६) ।

पयत्ताविअ वि [**प्रवर्तित**] प्रवृत्त किया हुआ; (काल) ।

पयत्थ पुं [**पदार्थ**] १ शब्द का प्रतिपाद्य, पद का अर्थ; (विसे १००३; चेइअ २७१) । २ तत्व; (सम १०६; सुपा २०५) । ३ वस्तु, चीज; (पात्र) ।

पयन्न देखो **पइण्ण**=प्रकीर्ण; (भवि) ।

पयन्ना देखो **पइण्णा** ; (उप १४२ टी) ।

पयप्पण न [**प्रकल्पन**] कल्पना, विचार; (धर्मसं ३०७)।

पयय देखो **पायय**=प्राकृत; (हे १, ६७; गउड) ।

पयय वि [**प्रयत**] प्रयत्न-शील, सतत प्रयत्न वाला;

ओप; पउम ३; ६५; सुर १, ४; उव), "इच्छिज्ज न इच्छिज्ज व तहवि पयओ निमंतए साहू" (पुष्फ ४२६; पडि)।

पयय पुं [**पतग, पदक, पदग**] १ वानव्यन्तर देवों की एक जाति; (ठा २, ३; पण्ण १; इक)। २ पतग देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३)। °**वइ** पुं [°**पति**] पतग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)।

पयय न [**दे**] अनिश, निरन्तर; (दे ६, ६)।

पयर सक [**स्मृ**] स्मरण करना। पयरेइ; (हे ४, ७४)। वकृ—**पयरंत**; (कुमा)।

पयर अक [**प्र+चर्**] प्रचार होना। "रन्ना सुयारा भणिया जं लोए पयरइ तं सव्वं सव्वे रंधह" (श्रावक ७३ टी)।

पयर पुं [**प्रकर**] समूह, सार्थ, जत्था; "पयरो पिवीलियाणं भीमंपि भुयंगमं डसइ" (स ४२१; पाअ; कप्प)।

पयर पुं [**प्रदर**] १ योनि का रोग-विशेष; २ विदारण, भंग; ३ शर, वाण; (दे ६, १४)।

पयर देखो **पयार**=प्रकार; (हे १, ६८; षड्)।

पयर देखो **पयार**=प्रचार; (हे १, ६८)।

पयर पुंन [**प्रतर**] १ पत्रक, पत्रा, पतरा; "कणगपयरलंबमाणमुत्तासमुज्जलं............वरविमाणपुंडरीयं" (कप्प; जीव ३; आचू १)। २ वृत्त पत्राकार आभूषण-विशेष, एक प्रकार का गहना; (औप; णाया १, १)। ३ गणित-विशेष, सूची से गुणी हुई सूची; (कम्म ५, ९७; जीवस ९२; १०२)। ४ भेद-विशेष, बाँस आदि की तरह पदार्थ का पृथग्भाव; (भास ७)। °**तव** पुंन [°**तपस्**] तप-विशेष; °**वट्ट** न [°**वृत्त**] संस्थान-विशेष; (राज)।

पयरण न [**प्रकरण**] १ प्रस्ताव, प्रसंग; २ एकार्थ-प्रतिपादक ग्रन्थ। ३ एकार्थ-प्रतिपादक ग्रन्थांश; "जुम्हदम्हपयरणं" (हे १, २४६)।

पयरण न [**प्रतरण**] प्रथम दातव्य भिक्षा; (राज)।

पयरिस देखो **पयंस**। वकृ—**पयरिसंत**; (पउम ६, ६४)।

पयरिस देखो **पगरिस**; (महा)।

पयल अक [**प्र+चल्**] १ चलना। २ स्खलित होना। पयलेज्ज; (आचा २, २, ३, ३)। वकृ—**पयलेमाण**; (आचा २, २, ३, ३)।

पयल देखो **पयड**=प्र+कटय्। पअल; (पिंग)। संकृ—**पअलि**; (अप); (पिंग)।

पयल देखो **पयड**=प्रकट; (पिंग)।

पयल (अप) सक [**प्र+चालय्**] १ चलाना। २ गिराना। पअल; (पिंग)।

पयल वि [**प्रचल**] चलायमान, चलने वाला; (पउम १००, ६)।

पयल पुं [**दे**] नीड़, पक्षि-गृह; (दे ६, ७)।

पयल } स्त्री [**दे. प्रचला**] १ निद्रा, नींद; (दे ६, ६)। **पयला** } २ निद्रा-विशेष, बैठे बैठे और खड़े खड़े जो नींद आती है वह; ३ जिसके उदय से बैठे २ और खड़े २ नींद आती है वह कर्म; (सम १५; कम्म १, ११)। **पयला** स्त्री [**दे. प्रचला**] १ कर्म-विशेष, जिसके उदय से चलते २ निद्रा आती है वह कर्म; २ चलते २ आने वाली नींद; (कम्म १, ११; ठा ९; निचू ११)।

पयला अक [**प्रचलाय्**] निद्रा लेना, नींद करना। पयलाइ; (पाअ)। हेकृ—**पयलाइत्तए**; (कस)।

पयलाइअ न [**प्रचलायित**] १ नींद, निद्रा; २ घूर्णन, नींद के कारण बैठे २ सिर का डोलना; (से १२, ४२)।

पयलाइया स्त्री [**दे**] हाथ से चलने वाले जन्तु की एक जाति; (सूअ २, ३, २५)।

पयलाय देखो **पयला**=प्रचलाय्। पयलायइ; (जीव ३)। वकृ—**पयलायंत**; (गउ)।

पयलाय पुं [**दे**] १ हर, महादेव; (दे ६, ७२)। २ सर्प, साँप; (दे ६, ७२; षड्)।

पयलायण न [**प्रचलायन**] देखो **पयलाइअ**; (बृह ३)।

पयलायभत्त पुं [**दे**] मयूर, मोर; (दे ६, ३६)।

पयलिअ देखो **पयडिअ**; (पिंग; पि २३८)।

पयलिय वि [**प्रचलित**] १ स्खलित, गिरा हुआ; (राय; आउ)। २ हिला हुआ; (पउम ९८, ७३; णाया १, ८; कप्प; औप)।

पयलिय वि [**प्रदलित**] भाँगा हुआ, तोड़ा हुआ; (कप्प)।

पयल्ल अक [**प्र+सृ**] पसरना, फैलना। पयल्लइ; (हे ४, ७७; प्राकृ ७६)।

पयल्ल अक [**कृ**] १ शिथिलता करना, ढीला होना। २ लटकना। पयल्लइ; (हे ४, ७०)।

पयल्ल वि [**प्रसृत**] फैला हुआ; (पाअ)।

पयल्ल पुं [**प्रकल्प**] महाग्रह-विशेष; (सुज्ज २०)।

पयल्लिर वि [**प्रसृमर**] फैलने वाला; (कुमा)।

पयल्लिर वि [**शैथिल्यकृत्**] शिथिल होने वाला, ढीला होने वाला; (कुमा ६, ४३)।

पयल्लिर वि [**लम्बनकृत्**] लटकने वाला; (कुमा ६, ४३)।

पयव सक [**प्र+तप्, तापय्**] तपाना, गरम करना। पअ- वेज्ज; (से ४, २८)। वकृ—**पअविज्जंत**; (से २, २४)।

पयव सक [**पा**] पीना, पान करना। कवकृ—"धीरअं सइमुहल घणपअविज्जंतअं" (से २, २४)।

पयवई स्त्री [**दे**] सेना, लश्कर; (दे ६, १६)।

पयवि स्त्री [**पदवि**] देखो **पयवी**; (चेइय ८७२)।

पयविअ वि [**प्रतप्त, प्रतापित**] गरम किया हुआ, तपाया हुआ; (गा १८५; से २, २५)।

पयवी स्त्री [**पदवी**] १ मार्ग, रास्ता; (पाअ; गा १०७; सुपा ३७८)। २ बिरुद, पदवी; (उप पृ ३८६)।

पयह सक [**प्र+हा**] त्याग करना, छोड़ना। पयहे, पयहिज्ज, पयहेज्ज; (सूअ १, १०, १५; १, २, २, ११; १, २, ३, ६; उत्त ४, १२; स १३६)। संकृ—**पयहिय**; (पउम ६३, १६; गच्छ १, २४)। कृ—**पयहियव्व**; (स ७१४)।

पयहिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिण; (भवि)।

पया सक [**प्र+जनय्**) प्रसव करना, जन्म देना। पयामि; (विपा १, ७)। पयाएज्जासि; (विपा १, ७)। भवि—प- याहिति, पयाहिंति, पयाहिसि; (कप्प; पि ७६; कप्प)।

पया सक [**प्र+या**] प्रयाण करना, प्रस्थान करना। पयाइ; (उत्त १३, २४)।

पया स्त्री [**दे**] चुल्ली, चुल्हा; (राज)।

पया स्त्री. ब. [**प्रजा**] १ वश-वर्ती मनुष्य, रैयत; "जह य पयाण नरिंदो" (उव; विपा १, १)। २ लोक, जन-समूह; (सिरि ४२; पंचा७, ३७)। ३ जन्तु-समूह ; "निव्विगण- चारी अरए पयासु" (आचा; सूअ १, ५, २, ६)। ४ संतान वाली स्त्री; "निव्विंद नंदिं अरए पयासु अमोहदंसी" (आचा; सूअ १, १०, १५)। ५ संतान, संतति; (सिरि ४२)। °**णंद** पुं [°**नन्द**] एक कुलकर पुरुष का नाम; (प- उम ३, ५३)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] राजा, नरेश; (सुपा ५७५)। °**पाल** पुं [°**पाल**] एक जैन मुनि जो पाँचवें बलदेव के पूर्वजन्म में गुरू थे; (पउम २०, १६२)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ ब्रह्मा, विधाता; (पाअ; सुपा ३०५)। २ प्रथम वासुदेव के पिता का नाम; (पउम २०, १८२; सम १५२)। ३ नक्षत्र-देव विशेष, रोहिणी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२)। ४ दक्ष, कश्यप आदि ऋषि; ५ राजा, नरेश; ६ सूर्य, रवि; ७ वह्नि, अग्नि; ८ त्वष्टा; ९ पिता, जनक; १० कीट-विशेष; ११ जामा- ता; (हे १, १७७; १८०)। १२ अहोरात्र का उन्नीसवाँ मुहूर्त्त; (सुज्ज १०, १३)।

पयाइ पुं [**पदाति**] प्यादा, पाँव से चलने वाला सैनिक; (हे २, १३८; षड्; कुमा; महा)।

पयाग पुंन [**प्रयाग**] तीर्थ-विशेष जहाँ गंगा और यमुना का संगम है; (पउम ८२, ८१ ; हे १, १७७)।

पयाण न [**प्रदान**] दान, वितरण; (उवा; उप ५६७ टी; सुर ४, २१०; सुपा ४६२)।

पयाण न [**प्रतान**] विस्तार; (भग १६, ६)।

पयाण न [**प्रयाण**] प्रस्थान, गमन; (णाया १, ३; पगह २, १; पउम ५४, २८; महा)।

पयाम देखो **पकाम**; (स ६५६)।

पयाम न [**दे**] अनुपूर्व, क्रमानुसार; (दे ६, ६; पाअ)।

पयाय देखो **पयाग**; (कुमा)।

पयाय वि [**प्रयात**] जिसने प्रयाण किया हो वह; (उप २११ टी; महा; औप)।

पयाय वि [**प्रजात**] उत्पन्न, संजात; "पयायसाला विडिमा" (दस ७, ३१)।

पयाय वि [**प्रजात, प्रजनित**] प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह; "दारगं पयाया" (विपा १, १; २; कप्प; णाया १, १—पत्र ३३)। "पयाया पुत्तं" (वसु)।

पयाय देखो **पयाव**=प्रताप; (गा ३२६; से ४, ३०)।

पयार सक [**प्र+चारय्**] प्रचार करना। पयारइ; (सण)। संकृ—**पयारिवि** (अप); (सण)।

पयार सक [**प्र+तारय्**] प्रतारण करना, ठगना। पयारइ, पयारसि; (सण)।

पयार पुं [**प्रकार**] १ भेद, किस्म; २ ढंग, रीति, तरह; (हे १, ६८; कुमा)।

पयार पुं [**प्राकार**] किला, दुर्ग; (पउम ३०,४६)।

पयार पुं [**प्रचार**] १ संचार, संचरण; (सुपा २४)। २ प्रसार, फैलाव; (हे १,६८)।

पयारण न [**प्रतारण**] वञ्चना, ठगाई; (सुर १२, ६१)।

पयारिअ वि [**प्रतारित**] ठगा हुआ, वञ्चित; (पाअ; सुर ४, १५५)।

पयाल पुं [**पाताल**] भगवान् अनन्तनाथजी का शासन-यक्ष; "छम्मुह पयाल किन्नर" (संति ८) ।

पयाव सक [**प + तापय्**] तपाना, गरम करना । वकृ—**पयावेमाण**; (पि ५५२) । हेकृ— **पयावित्तए**; (कस) ।

पयाव पुं [**प्रताप**] १ तेज, प्रखरता; (कुमा; सण) । २ प्रकृष्ट ताप, प्रखर ऊष्मा; (पव ४) ।

पयावण न [**पाचन**] पकवाना, पाक कराना; (पराह १, १; श्रा ८) ।

पयावण न [**प्रतापन**] १ गरम करना, तपाना; (श्रोघ १८० भा; पिंड ३४; आचा) । २ अग्नि; (कुप्र ३८६) ।

पयावि वि [**प्रतापिन्**] १ प्रताप-शाली; २ पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५. ५) ।

पयास सक [**प + काशय्**] १ व्यक्त करना । २ चमकाना । ३ प्रसिद्ध करना । पयासेइ; (हे ४, ४५) । वकृ—**पयासंत, पयासेंत, पआसअंत**; (सण; गा ४०३; उप ८३३ टी; पि ३६७) । कृ—**पयासणिज्ज, पयासियव्व**; (उप ५९७ टी; उप पृ ५५) ।

पयास देखो **पगास**=प्रकाश; (पाअ; कुमा) ।

पयास पुं [**प्रयास**] प्रयत्न, उद्यम; (चेइय २६०) ।

पयास (अप) नीचे देखो; (भवि) ।

पयासग वि [**प्रकाशक**] प्रकाश करने वाला; (सं ७८) ।

पयासण न [**प्रकाशन**] १ प्रकाश-करण; (आचा; सुपा ४१६) । २ वि. प्रकाशक, प्रकाश करने वाला; "परमत्थ-पयासणं वीरं" (पुप्फ १) ।

पयासय देखो **पयासग**; (विसे ११३०; सं १; पव ८६) ।

पयासि वि [**प्रकाशिन्**] प्रकाश करने वाला; (सण; हम्मीर १४) ।

पयासिय देखो **पगासिय**; (भवि) ।

पयासिर वि [**प्रकाशितृ**] प्रकाश करने वाला; (भवि) ।

पयासेंत देखो **पयास**=प + काशय् ।

पयाहिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिण; (उवा; औप; भवि; पि ६५) ।

पयाहिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिणय् । पयाहिणइ; (भवि)। पयाहिणंति; (कुप्र २६३) ।

पयाहिणा देखो **पदक्खिणा**; (सुपा ४७) ।

पय्यवत्थाण (शौ) न [**पर्यवस्थान**] प्रकृति में अवस्थान; (स्वप्न ४८) ।

पर सक [**भ्रम्**] भ्रमण करना, घूमना । परइ; (हे ४, १६१; कुमा) ।

पर देखो **प**=प्र; (तंदु ४६) ।

पर वि [**पर**] १ अन्य, भिन्न, इतर; (गा ३८४; महा; प्रासू ८; १५७) । २ तत्पर, तल्लीन; "कोऊहलपरा" (महा; कुमा) । ३ श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान; (आचा; रयण १५) । ४ प्रकर्ष-प्राप्त, प्रकृष्ट; (आचा; श्रा २३) । ५ उत्तर-वर्ती बाद का; "परलोग—" (महा) । ६ दूरवर्ती; (सुअ १, ८; निचू १) । ७ अनात्मीय, अ-स्वीय; (उत्त १; निचू २) । ८ पुं. शत्रु, दुश्मन, रिपु; (सुर १२, ६२; कुमा; प्रासू ६) । ९ न. केवल, फक्त; (कुमा; भवि) । °**उट्ठ** वि [°**पुष्ट**] अन्य से पालित; २ पुं. कोकिल पक्षी; (हे १, १७९) । °**उत्थिय** वि [°**तीर्थिक**] भिन्न दर्शन वाला; (भग) । °**एस** पुं [°**देश**] विदेश, भिन्न देश, अन्य देश; (भवि) । °**ओ** अ [°**तस्**] १ बाद में, पिछली तर्फ; "अडवीए परओ" (महा) । २ भिन्न में, इतर में; (कुमा) । ३ इतर से, अन्य से; (सुअ १, १२) । °**गणिच्चय** वि [°**गणीय**] भिन्न गण से संबन्ध रखने वाला; स्त्री— °**च्चिया**; (निचू ८) । °**गरिहंझाण** न [°**गर्हाध्यान**] इतर की निन्दा का विचार; (आउ) । °**घाय** पुं [°**घात**] १ दूसरे को आघात पहुँचाना । २ पुंन. कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अन्य बलवानों की भी दृष्टि में अजेय समझा जाता है वह कर्म; "परघाउदया पाणी परेसिं बलीणंपि होइ दुद्धरिसो" (कम्म १, ४४) । °**चित्तण्णु** वि [°**चित्तज्ञ**] अन्य के मन के भाव को जानने वाला; (उप १७६ टी) । °**च्छंद, °छंद** पुं [°**च्छन्द**] १ पर का अभिप्राय, अन्य का आशय; (ठा ४, ४; भग २५, ७) । २ पराधीन, परतन्त्र; (राज; पाअ) । °**जाणुअ** वि [°**ज्ञ**]१ पर को जानने वाला; २ प्रकृष्ट जानकार; (प्राकृ १८) । °**ट्ठ** पुं [°**र्थ**] परोपकार; (राज) । °**ट्ठा** स्त्री [°**र्थ**] दूसरे के लिए; "कडं परट्ठाए" (आचा) । °**णिंदंझाण** न [°**निन्दाध्यान**] अन्य की निन्दा का चिन्तन; (आउ) । °**ण्णुअ** देखो °**जाणुअ**; (प्राकृ १८) । °**तंत** वि [°**तन्त्र**] पराधीन, परायत्त; (सुपा २३३) । °**तित्थिअ** देखो °**उत्थिय**; (भग; सम्म ८५) । °**तीर** न [°**तीर**] सामने वाला किनारा; (पाअ)। °**त्त** न [°**त्व**] १ भिन्नत्व; पार्थक्य; २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध गुण-विशेष; (विसे २४६१) । °**त्त** अ [°**त्र**] १ जन्मान्तर में, परलोक में; (सुपा

५०८)। २ न. जन्मान्तर; "ते इहअंपि परत्ते नरयगइं जंति नियमेण" (सुपा ५२१), "इह लोए च्चिय दीसइ सग्गो नरओ य किं परत्तेण" (वज्जा १३८)। °त्थ अ [°त्र] जन्मातर में, "इहं परत्थावि य जं विरुद्धं न किज्जए तंपि सया निसिद्धं" (सत्त ३७; सुर १४, ३३; उव)। °त्थ देखो °ट्ठ; (सुर ४, ७३)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] परकीय स्त्री; (प्रासू १५५)। °दार पुंन [°दार] परकीय स्त्री; (पडि), "जो वज्जइ परदारं सो सेवइ नो कयाइ परदारं" (सुपा ३६९), "दव्वेण अप्पकालं गहिया वेसावि होइ परदारं" (सुपा३८०)। °दारि वि [°दारिन्] परस्त्री-लम्पट; "ता एस वसुमईए कएण परदारियाए आयाओ" (सुर ६, १७९)। °पक्ख वि [°पक्ष] वैधर्मिक, भिन्न धर्म का अनुयायी; (द्र १७)। °परिवाइय वि [°परिवादिक] इतर के दोषों को बोलने वाला, पर-निन्दक; (औप)। °परिवाय पुं [°परिवाद] १ पर के गुण-दोषों का विप्रकीर्ण वचन; (औप; कप्प)। २ पर-निन्दा, इतर के दोषों का परिकीर्त्तन; (ठा १; ४, ४)। ३ अन्य के सद्गुणों का अपलाप; (पंचू)। °परिवाय पुं [°परिपात] अन्य का पातन, दोषोद्घाटन-द्वारा दूसरे को गिराना; (भग १२, ५)। °पुट्ठ देखो °उट्ठ; (पराण १७; स ४१९)। °भव पुं [°भव] आगामी जन्म; (औप; पगह १, १)। °भविअ वि [°भविक] आगामी जन्म से संबन्ध रखने वाला; (भग; ठा ६)। °भाग पुं [°भाग] १ श्रेष्ठ अंश; २ अन्य का हिस्सा; ३ अत्यन्त उत्कर्ष; (उप पृ ६७)। °महेला स्त्री [°महेला] १ उत्तम स्त्री; २ परकीय स्त्री; (सुपा ४७०)। °यत्त देखो °ायत्त; "परयत्तो परछंदो" (पाअ)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] १ इतर जन, स्वजन से भिन्न; (उप ९८६ टी)। २ जन्मान्तर; (पगह १, १; विसे १९५१; महा; प्रासू ७५; सण)। °वस वि [°वश] पराधीन, परतन्त्र; (कुमा; सुपा २३७)। °वाइ पुं [°वादिन्] इतर दार्शनिक; (औप)। °वाय पुं [°वाद] १ इतर दर्शन, भिन्न मत; (औप)। २ श्रेष्ठ वादी; (श्रा२३)। °वाय पुं [°वाच्] १ सज्जन, सुजन; २ वि. श्रेष्ठ वाणी वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाज] १ श्रेष्ठ गति वाला; २ पुं. श्रेष्ठ अश्व; (श्रा २३)। °वाय वि [°ावाय] जानकार, ज्ञानी; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाक] १ सुन्दर रसोई बनाने वाला; २ पुं. रसोइया; (श्रा २३)। °वायपुं [°पात]१ जुआड़ी, जूए का खेलाड़ी; २ अशुभ समय; (श्रा २३)। °वाय पुं [°व्याद] ब्राह्मण, विप्र; (श्रा२३)। °वाय पुं [°ावाय] धनी जुलाहा; धनाढ्य तन्तुवाय; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्रात] १ प्रकृष्ट समूह वाला; २ न. सुभिक्ष समय का धान्य; (श्रा २३)। °वाय पुं [°वात] ग्रीष्म समय का जलधि-तट; (श्रा २३)। °वाय पुं [°व्याच] धूर्त, ठग; (श्रा २३)। °वाय वि [°ापाय] अनीति वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाक] वेद-ज्ञ, वेद-वित्; (श्रा २३)। °वाय वि [°पातृ] १ दयालु, कारुणिक; २ खूब पान करने वाला; ३ खूब सूखने वाला; ४ पुं. प्रावृट् काल का यवास वृक्ष; ५ मद्य-व्यसनी; (श्रा २३)। °वाय वि [°बाद] सुस्थिर; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यातृ] १ श्रेष्ठ आच्छादक; २ पुं. वस्त्र, कपड़ा; (श्रा २३)। °वाय वि [°वातृ] १ प्रकृष्ट वहन करने वाला; २ पुं. श्रेष्ठ तन्तुवाय, उत्तम जुलाहा; ३ महान् पवन; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यागस्] १ अति बड़ा अपराधी, गुरुतर अपराधी; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याप] प्रकृष्ट विस्तार वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°बाक] १ जहाँ पर प्रकृष्ट बक-समूह हो वह स्थान; २ न. मत्स्य-परिपूर्ण सरोवर; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याय] १ श्रेष्ठ वायु वाला; २ जहाँ पर पक्षिओं का विशेष आगमन होता हो वह; ३ पुं. अनुकूल पवन से चलता जहाज; ४ सुन्दर घर; ५ वनोद्देश, वन-प्रदेश; (श्रा २३)। °वाय वि [°ावाय] १ जहाँ पानी का प्रकृष्ट आगमन हो वह; २ न. जलधि-मुख, समुद्र का मुँह; ३ पुं. महा-समुद्र, महा-सागर; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याज] अन्य के पास विशेष गमन करने वाला; २ प्रार्थना-परायण; (श्रा २३)। °वाय वि [°ापाय] १ अत्यन्त हीन-भाग्य; २ नित्य-दरिद्र; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाप] १ प्रकृष्ट वपन वाला; २ पुं. कृषक; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाप] १ महा-पापी; २ हत्या करने वाला; (श्रा २३)। °वाय पुं [°ापाक] १ कुम्भकार, कुम्हार; २ मुक्त जीव; ३ पहली तीन नरक-भूमि; (श्रा २३)। °वाय वि [°ापाग] वृक्ष-रहित, वृक्ष-वर्जित; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाज्] शत्रु-नाशक; (श्रा २३)। °वाय पुं [°पाद] महान् वृक्ष, बड़ा पेड़; (श्रा २३)। वाय वि [°पात्] प्रकृष्ट पैर वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाच] फलित शालि; (श्रा २३)। °वाय वि [°ावाप] १ विशेष भाव से शत्रु की चिन्ता करने वाला; २ पुं. मन्त्री, अमात्य; ३ सुभट, योद्धा; (श्रा २३)। °वाय वि [°ापात] आपात-सुन्दर जो प्रारम्भ में ही सुन्दर हो वह; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्राय] श्रेष्ठ विवाह वाला;

(श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] श्रेष्ठ रक्षा वाला, जिसकी रक्षा का उत्तम प्रबन्ध हो वह; २ अत्यन्त प्यासा; ३ पुं. राजा, नरेश; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यात] १ इतर के पास विशेष वमन करने वाला; २ पुं. भिक्षुक, याचक; (श्रा २३)। °वाय वि [°पायस्] १ दूसरे की रक्षा के लिये हथियार रखने वाला; २ पुं. सुभट, योद्धा; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्याजा] वेश्या, वारांगना; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यागस्] असती, कुलटा; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यापा] अन्तिम समुद्र की स्थिति; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पाता] धूर्त-मैत्री; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°त्राया] नृप-कन्या; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पागा] मरु-भूमि; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाच्] कश्मीर-भूमि; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाज्] नृप-स्थिति; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पात्] शतपदी, जन्तु-विशेष (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यावा] भेरी, वाद्य-विशेष; (श्रा २३)। °विएस पुं [°विदेश] परदेश, विदेश; (पउम ३२, ३६)। °व्वस देखो °वस; (षड्; गा २६५; भवि)। °संतिग वि [°सत्क] पर-संबन्धी, परकीय; (पण्ह १, ३)। °समय पुं [°समय] इतर दर्शन का सिद्धान्त; "जावइया नयवाया तावइया चेव परसमया" (सम्म १४४)। °हुअ वि [°भृत] १ दूसरे से पुष्ट, अन्य से पालित; (प्राप्र)। २ पुंस्त्री. कोयल, पिक पक्षी; (कप्प), स्त्री—°आ; (सुर ३, ५४; पाअ)। °ाधाय देखो °घाय; (प्रासू १०४; सम ६७)। °ाधीण देखो °ाहीण; (धर्मवि १३६)। °ायत्त वि [°ायत्त] पराधीन, परतन्त्र; (पउम ६४, ३४; उप पृ १८२; महा)। °ाहीण वि [°ाधीन] परतन्त्र, परायत्त; (नाट—मालवि २०)।

पर° देखो **परा**=अ; (श्रा २३; पउम ६१, ८)।

परं अ [**परम्**] १ परन्तु, किन्तु; "जं तुमं आणवेसित्ति, परं तुह दूरे नयरं" (महा)। २ उपरान्त; "नो से कप्पइ एत्तो बाहिं; तेण परं, जत्थ नाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पंति त्ति बेमि" (कस १, ५१; २, ४—७; ४, १२—२६)। ३ केवल, फक्त; "एस मह संतावो, परं माणससरमज्जणेण जइ अवगच्छइत्ति" ([illegible])।

परं अ [**परुत्**] आगामी वर्ष; "अज्जं कल्लं परं परारिं" (वै २), "अज्जं परं परारिं पुरिसा चिंतंति अत्थसंपत्तिं" (प्रासू ११०)।

परंग सक [**परि+अङ्ग्**] चलना, गति करना। कवकृ—**परंगिज्जमाण**; (औप)।

परंगमण न [**पर्यङ्गन**] पाँव से चलना, चंक्रमण; (औप)।

परंगामण न [**पर्यङ्गन**] चलाना, चंक्रमण कराना; (भग ११, ११—पत्र ५४४)।

परंतम वि [**परतम**] अन्य को हैरान करने वाला; (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परंतम वि [**परतमस्**] १ अन्य पर क्रोध करने वाला; २ अन्य-विषयक अज्ञान रखने वाला; (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परंतु अ [**परन्तु**] किन्तु; (सुपा ४६८)।

परंदम वि [**परन्दम**] १ अन्य को पीड़ा पहुँचाने वाला; (उत्त ७, ६)। २ अन्य को शान्त करने वाला; ३ अश्व आदि को सीखाने वाला; (ठा ४, २—पत्र २१३)।

परंपर, **परंपरग**, **परंपरय** वि [**परम्पर**] १ भिन्न भिन्न; (णंदि)। २ व्यवहित; "परंपर-सिद्ध—" (पण्ण १; ठा २, १; १०)। ३ पुंन. परम्परा, अविच्छिन्न धारा; (उव ७३३), "पुरिसपरंपरएण तेहिं इढगा आणिया" "एस दव्वपरंपरगो" (आव १), "परंपरेणं" (कप्प; धर्मसं ५३१; १३०६)।

परंपरा स्त्री [**परम्परा**] १ अनुक्रम, परिपाटी; (भग; औप; पाअ)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह; (णाया १, १)। ३ निरन्तरता, अ-व्यवधान; (भग ६, १)। ४ व्यवधान, अन्तर; "अणंतरोववण्णगा चेव परंपरोववण्णगा चेव" (ठा २, २; भग १३, १)।

परंभरि वि [**परम्भरि**] दूसरे का पेट भरने वाला; (ठा ४, ३—पत्र २४७)।

परंमुह वि [**पराङ्मुख**] मुँह-फिरा, विमुख; (पि २६७)।

परकीअ, **परकेर**, **परक्क** वि [**परकीय**] अन्य-संबन्धी, इतर से संबन्ध रखने वाला; (विसे ४१; सुपा ३४६; अभि १५१; षड्; स्वप्न ४०; स २०७; षड्), "न से-वियव्वा पमया परक्का" (गोय १३)।

परक्क न [**दे**] छोटा प्रवाह; (दे ६, ८)।

परक्कंत वि [**पराक्रान्त**] १ जिसने पराक्रम किया हो वह; २ अन्य से आक्रान्त; "गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जायं दुप्परक्कंतं भवइ" (आचा)। ३ न. पराक्रम, बल; ४ उद्यम, प्रयत्न; ५ अनुष्ठान; "जे अबुद्धा महाभागा वीरा असम्मत्तदंसिणो, असुद्धं तेसि परक्कंतं" (सूअ १, ८, २२)।

परक्कम अक [परा + क्रम्] पराक्रम करना । परक्कमे, परक्कमेज्जा, परक्कमेज्जासि ; (आचा) । वकृ—**परक्कमंत, परक्कममाण** (आचा)। कृ —**परक्कमियव्व, परक्कम्म**; ([illegible] १, १ ; [illegible] १, १, १) ।

परक्कम पुंन [पराक्रम] १ वीर्य, बल, शक्ति, सामर्थ्य ; (विसे १०४६ ; ठा ३, १ ; कुमा), "तस्स परक्कमं गीयमाणं न तए सुयं" (सम्मत्त१७६) । २ उत्साह ; ३ चेष्टा, प्रयत्न ; (आचू १; प्रासू ६३ ; आचा) । ४ शत्रु का नाश करने की शक्ति ; (जं ३) । ५ पर-आक्रमण, पर-पराजय ; (ठा ४ , १ ; आवम) । ६ गमन, गति ; (सूअ २, १, ६) ।

परक्कमि वि [**पराक्रमिन्**] पराक्रम-संपन्न ; (धर्मवि १९ ; १२०) ।

परग न [**दे, परक**] १ तृण-विशेष, जिससे फूल गूँथे जाते हैं ; (आचा २, २, ३, २० ; सूअ २, २, ७) । २ धान्य-विशेष ; (सूअ २, २, ११) ।

परगासय वि [**प्रकाशक**] प्रकाश करने वाला; (तंदु ४६)।

परज्ज (अप) सक [**परा + जि**] पराजय करना, हराना । परज्जइ ; (भवि) ।

परज्जिय (अप) वि [**पराजित**] पराजय-प्राप्त, हराया हुआ ; (भवि) ।

परज्झ वि [**दे**] १ पर-वश, पराधीन, परतन्त्र ; "जेसंखया; तुच्छपरप्पवाई ते पेज्जदोसाणुगया परज्झा" (उत्त ४, १३ बृह ४) । २ पुंन परतन्त्रता, पराधीनता ; (ठा १०—पत्र ५०५ ; भग ७, ८—पत्र ३१४) ।

परट्ट देखो **परिअट्ट**=परिवर्त ; (जीवस २५२ ; पव १६२ ; कम्म ५, ५९) ।

परडा स्त्री [**दे**] सर्प-विशेष ; (दे ६, ५), "उवारं कुणमाणो अपाणदेसम्मि गरुयपरडाए, दट्ठो पीडाए मओ" (सुपा ६२०) ।

परदारिअ पुं [**पारदारिक**] परस्त्री-लम्पट ; (पउम १०५, १०७) ।

परद्ध वि [**दे**] १ पीडित, दुःखित ; (दे ६, ७०; पाअ; सुर ७, ४ ; १६, १४४ ; उप पृ २२० ; महा) । २ पतित; ३ भीरु, डरपोक ; (दे ६, ७०) । ४ व्याप्त; "जीव परद्धा जीवा न दोसगुणदंसिणो होंति" (धम्मो १४)।

परप्पर देखो **परोप्पर**; (पि ३११; नाट—मालती १६८) ।

परब्भवमाण देखो **पराभव** ॥ परा + भू ।

परभत्त वि [**दे**] भीरु, डरपोक ; (षड्) ।

परभाअ पुं [**दे**] सुरत, मैथुन ; (दे ६, २७) ।

परम वि [**परम**] १ उत्कृष्ट, सर्वाधिक ; (सूअ १, ६ ; जी ३७) । २ उत्तम, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ ; (पंचव ४ ; धर्म ३ ; कुमा) । ३ अत्यर्थ, अत्यन्त ; (पण्ह १, ३ ; भग ; औप) । ४ प्रधान, मुख्य; (आचा; दस ९, ३) । ५ पुं. मोक्ष, मुक्ति; ६ संयम, चारित्र ; (आचा ; सूअ १, ९) । ७ न. सुख ; (दस ४) । ८ लगातार पाँच दिनों का उपवास; (संबोध ५८) । °**ट्ठ** पुं [°**ार्थ**] १ सत्य पदार्थ, वास्तविक चीज ; "अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" (भग; धर्म १) । २ मोक्ष, मुक्ति ; (उत्त १८ ; पण्ह १, ३) । ३ संयम, चारित्र ; (सूअ १, ९) । ४ पुंन देखो नीचे °**त्थ**=ार्थ ; "परमट्ठनिट्ठिअट्ठा" (पडि ; धर्म २) । °**ण्ण** देखो °**न्न** ; (सम १५१) । °**त्थ** पुंन [°**ार्थ**] १ तत्त्व, सत्य; "तत्तं परमत्थं " (पाअ), "परमत्थदो" (अभि ९१) । २—४ देखो °**ट्ठ** ; (सुपा २४ ; ११० ; सण ; प्रासू १६४; महा)। °**त्थ** न [°**ास्त्र**] सर्वोत्तम हथियार, अमोघ अस्त्र ; (से १, १) । °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] १ मोक्ष देखने वाला ; २ मोक्ष-मार्ग का जानकार ; (आचा) । °**न्न** न [°**न्न**] १ खीर, दुग्ध-प्रधान मिष्ट भोजन ; (सुपा ३६०) । २ एक दिन का उपवास ; (संबोध ५८) । °**पय** न [°**पद**] मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति ; (पाअ; भवि ; अजि ४० ; पंचा १४) । °**प्प** पुं [°**ात्मन्**] सर्वोत्तम आत्मा, परमेश्वर ; (कुमा ; सुपा ८३ ; रयण४३)। °**प्पय** देखो °**पय** ; (सुपा १२७) । °**प्पय** देखो °**प्प** ; (भवि)। °**प्पया** स्त्री [°**ात्मता**] मुक्ति, मोक्ष ; "सेलेसिं आरुहिउं अरिकेसरिसूरी परमप्पयं पत्तो" (सुपा १२७)। °**बोधिसत्त** पुं [°**बोधिसत्त्व**] परमार्हत, अर्हन् देव का परम भक्त ; (मोह ३) । °**संखिज्ज** न [°**संख्येय**] संख्या-विशेष ; (कम्म ४, ७१) । °**सोमणस्सिय** वि [°**सौमनस्यित**] सर्वोत्तम मन वाला, संतुष्ट मन वाला; (औप; कप्प) । °**सोमणस्सिय** वि [°**सौमनस्यिक**] वही अर्थ ; (औप ; कप्प) । °**हेला** स्त्री [°**हेला**] उत्कृष्ट तिरस्कार ; (सुपा ४७०) । °**ाउ** न [°**ायुस्**] १ लम्बा आयुष्य, बड़ी उमर ; (पउम १०, ७) । २ जीवित-काल, उमर; (विपा १, १) । °**ाणु** पुं [°**ाणु**] सर्व-सूक्ष्म वस्तु; (भग; गउड) । °**ाहम्मिअ** पुं [°**ाधार्मिक**] असुर-विशेष, नारक जीवों को दुःख देने वाले

देवों की एक जाति; (सम २८) । °होहिअ वि [°ावधिक] अवधिज्ञान-विशेष वाला, ज्ञानि-विशेष; (भग) ।

परमिट्ठि पुं [**परमेष्ठिन्**] १ ब्रह्मा, चतुरानन; (पाअ; सम्मत्त ७८) । २ अर्हन्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि; (सुपा ६५; आप ६८; गण ६; निसा २०) ।

परमुक्क वि [**परामुक्त**] परित्यक्त; (पउम ७१, २६) ।

परमुवगारि) वि [**परमोपकारिन्**] बड़ा उपकार करने
परमुवयारि) वाला; (सुर २, ४२; २, ३७) ।

परमुह देखो **परम्मुह**; (से २, १६) ।

परमेट्ठि देखो **परमिट्ठि**; (कुमा; भवि; चेइय ४६६) ।

परमेसर पुं [**परमेश्वर**] सर्वैश्वर्य-संपन्न, परमात्मा; (सम्मत्त १४४; भवि) ।

परम्मुह वि [**पराङ्मुख**] विमुख, मुँह-फिरा; (गाया १, २; काप्र ७२३; गा ६८८) ।

परय न [**परक**] आधिक्य, अतिशय; (उत्त ३४, १४) ।

परलोइअ वि [**पारलोकिक**] जन्मान्तर-संबन्धी; (आचा; सम ११६ ; पराह १, ५) ।

परवाय वि [**प्रवाज**] १ प्रकृष्ट शब्द से प्रेरणा करने वाला; २ पुं. सारथि, रथ हाँकने वाला; (श्रा २३) ।

परवाय वि [**प्ररवाय**] १ श्रेष्ठ गाना गाने वाला; २ पुं. उत्तम गवैया; (श्रा २३) ।

परवाय पुं [**प्रपाज**] नाज भरने का कोठा, वह घर जहाँ नाज संग्रहीत किया जाता है; (श्रा २३) ।

परवाया स्त्री [**प्रवाप्**] गिरि-नदी, पहाड़ी नदी; (श्रा २३)।

परस (अप) देखो **फास**=स्पर्श; (पिंग; भवि) । °**मणि** पुं [°**मणि**] रत्न-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण होता है; (पिंग) ।

परसण्ण (अप) देखो **पसण्ण**; (पिंग) ।

परसु पुं [**परशु**] अस्त्र-विशेष, परश्वध, कुठार, कुल्हाड़ी; (भग ६, ३३; प्रासू ६; ६२; काल)। °**राम** पुं [°**राम**] जमदग्नि ऋषि का पुत्र, जिसने इक्कीस वार निःक्षत्रिय पृथिवी की थी; (कुमा; पि २०८) ।

परसुहत्त पुं [**दे**] वृक्ष, पेड़, दरख्त; (दे ६, २६) ।

परस्सर पुंस्त्री [**दे. पराशर**] गेंडा, पशु-विशेष; (परण १; राज) । स्त्री—°री; (पगण ११) ।

परहुत्त वि [**पराभूत**] पराजित, हराया गया; (पउम ६१, ८) ।

परा अ [**परा**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ आभिमुख्य, संमुखता; २ त्याग; ३ धर्षण; ४ प्राधान्य, मुख्यता; ५ विक्रम; ६ गति, गमन; ७ भङ्ग; ८ अनादर; ९ तिरस्कार; १० प्रत्यावर्तन; (हे २, २१७) । ११ भृश, अत्यन्त; (ठा ३, २; श्रा २३) ।

परा स्त्री [**दे. परा**] तृण-विशेष; (पगह २, ३—पत्र १२३) ।

पराइ सक [**परा + जि**] हराना, पराजय करना । संकृ—**पराइत्ता** : (सुअनि १६६) ।

पराइअ वि [**पराजित**] पराभव-प्राप्त; (पउम २, ८६; औप; स ६३४; सुर ६, २५; १३, १७१; उत्त ३२, १२) ।

पराइअ (अप) वि [**परागत**] गया हुआ; (भवि) ।

पराइण देखो **पराजिण** । पराइणइ; (पि ४७३; भग) ।

पराई स्त्री [**परकीया**] इतर से संबन्ध रखने वाली; (हे ४, ३५०; ३६७) । देखो **पराय**=परकीय ।

पराकम देखो **परक्कम**; (सूअ २, १, ६) ।

पराकय वि [**पराकृत**] निराकृत, निरस्त; (अज्झ ३०) ।

पराकर सक [**परा + कृ**] निराकरण करना । पराकरोदि (शौ); (नाट—चैत ३५) ।

पराजय पुं [**पराजय**] परिभव, अभिभव; (राज) ।

पराजय) सक [**परा + जि**] पराजय करना, हराना ।
पराजिण) भूका—पराजयित्था; (पि ५१७) । भवि—पराजिणिस्सइ; (पि ५२१) । संकृ—**पराजिणित्ता**; (ठा ४, २) । हेकृ— **पराजिणित्तए**; (भग ७, ६) ।

पराजिणिअ) देखो **पराइअ**=पराजित; (उप पृ ५२; महा)।
पराजिय)

पराण देखो **पाण**=प्राण; (नाट—चैत ५४; पि १३२) ।

पराणग वि [**परकीय**] अन्य का, दूसरे का; "जत्थ हिरण्णसुवण्णं हत्थेण पराणगंपि नो छिप्पे" (गच्छ २, ५०) ।

पराणिय वि [**पराणीत**] पहुँचा हुआ; (भवि) ।

पराणी सक [**परा + णी**] पहुँचाना । पराणए; (भवि) । पराणेमि; (स २३४), "जइ भणसि ता निमिसमित्तेण तुमं तायमंदिरं पराणेमि" (कुप्र ६०) ।

परानयण न [**पराणयन**] पहुँचाना; "नियभगिणीपरानयणे का लज्जा, अवि य ऊसवो एस" (उप ७२८ टी) ।

पराभव सक [**परा + भू**] हराना । कवकृ—**पराभविज्जंत, परब्भवमाण**; (उप ३२० टी; गाया १, २; १८) ।

पराभव पुं [**पराभव**] पराजय; (विपा १, १) ।

पराभविअ वि [**पराभूत**] अभिभूत, हराया हुआ; (धर्मवि ६८)।

परामट्ठ देखो **परामुट्ठ**; (पउम ६८, ७३)।

परामरिस सक [**परा+मृश्**] १ विचार करना, विवेचन करना। २ स्पर्श करना। परामरिसइ; (भवि)। वकृ—**परामरिसंत**; (भवि)। संकृ—**परामरिसिअ**; (नाट—मृच्छ ८७)।

परामरिस पुं [**परामर्श**] १ विवेचन, विचार; (प्रामा)। २ युक्ति, उपपत्ति; ३ स्पर्श; ४ न्याय-शास्त्रोक्त व्याप्ति-विशिष्ट रूप से पक्ष का ज्ञान; (हे २, १०५)।

परामिट्ठ } वि [**परामृष्ट**] १ विचारित, विवेचित; २ स्पृष्ट, **परामुट्ठ** } छुआ हुआ; (नाट—मृच्छ ३३; हे १, १३१; स १००; कुप्र ५१)।

परामुस सक [**परा+मृश्**] १ स्पर्श करना, छूना। २ विचार करना, विवेचन करना। ३ आच्छादित करना। ४ पोंछना। ५ लोप करना। परामुसइ; (कस)। कर्म—"सूरो परामुसिज्जइ णाभिमुहुक्खित्तधूलिहिं" (उवर १२३)। वकृ—"नियउत्तरिज्जेण नयणाइं **परामुसंतेण** भणियं" (कुप्र ६६)। कवकृ—**परामुसिज्जमाण**; (स ३४६)।

परामुसिय देखो **परामुट्ठ**; (महा; पाअ)।

पराय अक [**प्र+राज्**] विशेष शोभना। वकृ—**परायंत**; (कप्प)।

पराय पुं [**पराग**] १ धूली, रज; "रेणू पंसू रओ पराओ य" (पाअ)। २ पुष्प-रज; (कुमा; गउड)।

पराय } वि [**परकीय**] पर-संबन्धी, इतर से संबन्ध रखने **परायग** } वाला; "नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि हुंति सुद्धाणं" (सद्वि १०५; हे ४, ३७६; भग ८, ५)।

परायण वि [**परायण**] तत्पर; (कम्म १, ६१)।

परारिं अ [**परारि**] आगामी तीसरा वर्ष; (प्रासू ११०; वै २)।

पराल देखो **पलाल**; (प्रासू १३८)।

पराव (अप) सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना। परावहिं; (हे ४, ४४२)।

परावत्त अक [**परा+वृत्**] १ बदलना, पलटना। २ पीछे लौटना। परावत्तइ; (उवर ८८)। वकृ—**परावत्तमाण**; (राज)।

परावत्त सक [**परा+वर्तय्**] १ फिराना। २ आवृत्ति करना। परावत्तंति; (पव ७१), परावत्तेसि; (मोह ४७)। संकृ—"तो सागरेण भणियं अरे **परावत्तिऊण** नियघरहं" (कुप्र ३७८)।

परावत्त पुं [**परावर्त**] परिवर्तन, हेराफेरी; (स ६२; उप पृ २७; महा)।

परावत्ति वि [**परावर्तिन्**] परिवर्तन कराने वाला; "वेस-परावत्तिणी गुलिया" (महा)।

परावत्ति स्त्री [**परावृत्ति**] परिवर्तन, हेराफेरी; (उप १०३१ टी)।

परावत्तिय वि [**परावर्तित**] परिवर्तित, बदला हुआ; (महा)।

परासर पुं [**पराशर**] १ पशु-विशेष; (राज)। २ ऋषि-विशेष; (औप; गा ८६२)।

परासु वि [**परासु**] प्राण-रहित, मृत; (श्रा १४; धर्मसं ६७)।

पराहव देखो **पराभव**=पराभव; (गुण ६)।

पराहुत्त वि [**दे. पराङ्मुख**] विमुख, मुँह-फिरा; (ग २४५; से १०, ६४; उप पृ ३८८; ओघ ५१४; वज्जा २६), "महविणयपराहुत्तो" (पउम ३३, ७४; सुख २, १७)।

पराहुत्त } वि [**पराभूत**] अभिभूत, हराया हुआ; (उप **पराहूअ** } ६४८ टी; पाअ)।

परि अ [**परि**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ सर्वतो-भाव, समंतात, चारों ओर; (गा २२; सुअ १, ६)। २ परिपाटी, क्रम; (पिंग)। ३ पुनः पुनः; फिर फिर; (पगह १, १; श्रावक २८४)। ४ सामीप्य, समीपता; (गउड ७७६)। ५ विनिमय, बदला; जैसे—'परियाण'=परिदान; (भवि)। ६ अतिशय, विशेष; (स ७३४)। ७ संपूर्णता; जैसे—'परिट्ठिअ'; (पव ६६)। ८ बाहरपन; (श्रावक २८४)। ९ ऊपर; (हे २, २११; सुपा २६६)। १० शेष, बाकी; ११ पूजा; १२ व्यापकता; १३ उपरम, निवृत्ति; १४ शोक; १५ किसी प्रकार की प्राप्ति; १६ आख्यान; १७ संतोष-भाषण; १८ भूषण, अलंकरण; १९ आलिंगन; २० नियम; २१ वर्जन, प्रतिषेध; (हे २, २१७; भवि; गउड)। २२ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है; (गउड १०; सण)।

परि देखो **पडि**=प्रति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; पगण १६—पत्र ७७४; ७८१)।

परि स्त्री [**दे**] गीति, गीत; (कुमा)।

परि सक [**क्षिप्**] फेंकना। परिइ; (षड्)।

परिअंज सक [**परि + भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना । परिअं-जइ; (धात्वा १४३) ।

परिअंत सक [**श्लिष्**] १ आलिंगन करना । २ संसर्ग करना । परिअंतइ; (हे ४, १९०) ।

परिअंत देखो **पज्जंत**; (पण्ह १, ३; पउम ६५, १६; सुअ २, १, १५) ।

परिअंतणा स्त्री [**परियन्त्रणा**] अतिशय यन्त्रणा; (नाट—मालती २८) ।

परिअंतिअ वि [**श्लिष्ट**] आलिंगित; (कुमा) ।

परिअंभिअ वि [**परिजृम्भित**] विकसित; (से २, २०) ।

परिअट्ट अक [**परि + वृत्**] पलटना, बदलना । वकृ—"दिट्ठो अपरिअट्टंतीए सहयारच्छायाए एसो" (कुम ४५; महा), **परियट्टमाण**; (महा) ।

परिअट्ट सक [**परि + वर्तय्**] १ पलटाना, बदलाना । २ आवृत्ति करना, पठित पाठ को याद करना । ३ फिराना, घुमाना । परियट्टइ, परियट्टेइ; (भवि; उव) । हेकृ—"परि-यट्टिउमाढत्तो नलिणीगुम्मं ति अज्झयणं" (कुम १७३) ।

परिअट्ट सक [**परि + अट्**] परिभ्रमण करना, घूमना । परिअट्टइ; (हे ४, २३०) । संकृ—**परियट्टिवि** (अप); (भवि) ।

परिअट्ट पुं [**दे**] रजक, धोबी; (दे ६, १५) ।

परिअट्ट पुं [**परिवर्त**] १ पलटाव, बदला; २ समय का परिमाण-विशेष, अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल; (विपा १, १; सुर १६, १४५; पव १६२) ।

परिअट्टग वि [**परिवर्तक**] परिवर्तन करने वाला; (निचू १०) ।

परिअट्टण न [**परिवर्तन**] १ पलटाव, बदला करना; (पिंड ३२४; वै ६७) । २ द्विगुण, त्रिगुण आदि उपकरण; (आचा १, २, १, १) ।

परिअट्टणा स्त्री [**परिवर्तना**] १ फिर फिर होना; (पण्ह १, १) । २ आवृत्ति, पठित पाठ का आवर्तन; (आचा २, १, ४, २; उत्त २९, १; ३०, ३४;औप; ठा ५, ३) । ३ द्विगुण आदि उपकरण; (पि २८९) । ४ बदला करना; (पिंड ३२५) ।

परिअट्टय वि [**पर्यटक**] परिभ्रमण करने वाला; "मेरुगिरिस-ययपरियट्टयं" (कप्प ३९) ।

परिअट्टलिअ वि [**दे**] परिच्छिन्न; (दे ६, ३६) ।

परिअट्टविअ वि [**दे**] परिच्छन्न; (षड्) ।

परिअट्टिय वि [**परिवर्तित**] बदलाया हुआ; (ठा ३,४; पिं-ड ३२३; पंचा १३, १२) । देखो **परिअत्तिअ** ।

परिअड सक [**परि + अट्**] परिभ्रमण करना । परिअडंति; (आवक १३३) । वकृ—**परियडंत**; (सुर २, २) ।

परिअडण न [**पर्यटन**] परिभ्रमण; (स ११४) ।

परिअडि स्त्री [**दे**] १ वृति बाड; २ वि. मूर्ख, बेवकूफ; (दे ६, ७३) ।

परिअडिअ वि [**पर्यटित**] परिभ्रान्त, भटका हुआ; (सिक्खा १७) ।

परिअड्डिअ वि [**दे**] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ; (षड्) ।

परिअड्ढ अक [**परि + वृध्**] बढ़ना । "परिअड्ढइ लायण्णं" (हे ८, २२०) ।

परिअड्ढ सक [**परि + वर्धय्**] बढ़ाना; (हे ४, २२०) ।

परिअड्ढि स्त्री [**परिवृद्धि**] विशेष वृद्धि; (प्राकृ २१) ।

परिअड्ढिअ वि [**परिवर्धिन्** **क**] बढ़ाने वाला; "समणगण-वंदपरियड्ढिए" (औप) ।

परिअड्ढिअ वि [**पर्याढ्यक**] परिपूर्ण; (औप) ।

परिअड्ढिअ वि [**परिकर्षिन्, °क**] खींचने वाला,आकर्षक; (औप) ।

परिअड्ढिअ वि [**परिकृष्ट**] खींचा हुआ, आकृष्ट; "जस्स समरेसु रेहइ हयगयमयमिलियपरिमलुग्गारा । दउपरियड्ढियजयसिरिकेसकलावो व्व खग्गलया" (सुपा ३१)।

परिअण पुं [**परिजन**] १ परिवार, कुटुम्ब, पुत्र-कलत्र आदि पालनीय वर्ग; २ अनुचर, अनुगामी; (गा २८३; गउड; वि ३५०) ।

परिअत्त देखो **परिअंत**=श्लिष् । परिअंतइ; (हे ४, १९० टि) ।

परिअत्त देखो **परिअट्ट**=परि + वृत् । परियत्तइ; (भवि) । "नडुव्व परिअत्तए जीवो" (वै ६०), परियत्तए; (उवा) । वकृ—**परियत्तमाण**; (महा) ।

परिअत्त देखो **परिअट्ट**=परि + वर्तय् । संकृ—**परियत्तेउ**; (तंदु ३८) ।

परिअत्त देखो **परिअट्ट**=परिवर्त; (औप) ।

परिअत्त वि [**दे**] प्रसृत, फैला हुआ; "सव्वासणरिउसंभवहो करपरिअत्ता तावँ" (हे ४, ३९५) ।

परिअत्त वि [**परिवृत्त**] पलटा हुआ; (भवि) ।

परिअत्तण देखो **परिअट्टण**; (गउड), "चाइत्तणकरपरंपरपरियत्तणखेयवसपरिस्संता ।

अत्था किविणघरत्था सुत्थावत्था सुयंति व्व " (सुपा ६३३)।

परिअत्तणा देखो **परिअट्टणा** ; (राज)।

परिअत्तमाण देखो **परिअत्त**।

परिअत्तमाणी स्त्री [**परिवर्तमाना**] कर्म-प्रकृति-विशेष, वह कर्म-प्रकृति जो अन्य प्रकृति के बन्ध या उदय को रोक कर स्वयं बन्ध या उदय को प्राप्त होती है ; (पंच ३, १४; ३, ४३ ; कम्म ५, १ टी)।

परिअत्ता स्त्री [**परिवर्ता**] ऊपर देखो ; (कम्म ५, १)।

परिअत्तिअ वि [**परिवर्तित**] १ मोड़ा हुआ ; " वालिअयं परिअत्तिअं " (पाअ)। २ देखो **परिअट्टिय** ; (भवि)।

परिअर सक [**परि+चर्**] सेवा करना। वकृ—**परिअरंत**; (नाट—शकु १५८)।

परिअर वि [**दे**] लीन, निमग्न ; (दे ६, २४)।

परिअर पुं [**परिकर**] १ कटि-बन्धन ; " सन्नद्धबद्धपरियर-भडेहि " (भवि)। २ परिवार ; " किरणकिलामियपरि-यरभुयंगविसजलणधूमतिमिरेहिं " (गउड ; चेइय ६४)।

परिअर पुं [**परिचर**] सेवक, भृत्य ; " अणुणिज्जंतं रक्खा-परिअरधुअधवलचामरणिहेण " (गउड)।

परिअरण न [**परिचरण**] सेवा ; (संबोध ३६)।

परिअरणा स्त्री [**परिचरणा**] सेवा; (सम्मत्त २१५)।

परिअरिय वि [**परिकरित, परिवृत**] १ परिवार-युक्त ; "हय-गयरहजोहसुहडपरियरिओ " (महा ; भवि ; सण)। २ परिवेष्टित ; " तओ तं समायण्णिऊण सुइसुहं ताण गेयं समंतओ परियरिया सव्वलोगेणं " (महा ; सिरि १२८२)।

परिअल सक [**गम्**] जाना, गमन करना। परिअलइ ; (हे ४, १६२)।

परिअल } पुंस्त्री [**दे**] थाल, थलिया, भोजन-पात्र ; (भवि ;
परिअलि } दे ६, १२)।

परिअलिअ वि [**गत**] गया हुआ ; (कुमा)।

परिअल्ल देखो **परिअल**। परिअल्लइ ; (हे ४, १६२)। संकृ—**परिअल्लिऊण** ; (कुमा)।

परिआरअ वि [**परिचारक**] सेवक, भृत्य ; (चारु ५३)। स्त्री—°**रिआ** ; (अभि १६६)।

परिआल सक [**वेष्टय्**] वेष्टन करना, लपेटना। परिआलेइ; (हे ४, ५१)।

परिआल वि [**दे**] परिवृत, परिवेष्टित;
"सो जयइ जामइल्लायमाणमुहलालिवलयपरिआलं।
लच्छिनिवेसंतेउरवइं व जो वहइ वणमालं" (गउड)।

परिआल देखो **परिवार**; (णाया १, ८; ठा ४, २; औप)।

परिआलिअ वि [**वेष्टित**] लपेटा हुआ, वेढ़ा हुआ; (कुमा; पाअ)।

परिआविअ सक [**पर्या+पा**] पीना। परिआविएज्जा; (सूअ २, १, ४६)।

परिआसमंत (अप) अ [**पर्यासमन्तात्**] चारों ओर से; (भवि)।

परिइ सक [**परि+इ**] पर्यटन करना। परियंति; (उत्त २७, १३)।

परिइण्ण वि [**परिकीर्ण**] व्याप्त; (सम्मत्त १५६)।

परिइद (शौ) वि [**परिचित**] परिचय-विशिष्ट, ज्ञात, पहचाना हुआ; (अभि २४५)।

परिउंब सक [**परि+चुम्ब्**] चुम्बन करना। परिउंबइ; (भवि)।

परिउंबण न [**परिचुम्बन**] सर्वतः चुम्बन; (गा २२; हास्य १३४)।

परिउंबणा स्त्री [**परिचुम्बना**] ऊपर देखो; "गंडपरिउंबणा-पुलइअंग ण पुणो चिराइस्सं" (गा २०)।

परिउज्झिय वि [**पर्युज्झित**] सर्वथा त्यक्त; (सण)।

परिउट्ठ वि [**परितुष्ट**] विशेष तुष्ट; (स ७३४)।

परिउत्थ वि [**दे**] प्रोषित, प्रवास में गया हुआ; (दे ६, १३)।

परिउसिअ वि [**पर्युषित**] वासी, ठराढा, भाफ निकला (भो-जन); (दे १, ३७)।

परिऊढ वि [**दे, परिगूढ**] क्षाम, कृश, पतला;
"उप्फुल्लिआइ खेल्लउ मा णं वारेहि होउ परिऊढा।
मा जहणभारगरुई पुरिसाअंती किलिम्मिहिइ" (गा१६६)।

परिऊरण न [**परिपूरण**] परिपूर्ति; (नाट— शकु ८)।

परिएस देखो **परिवेस**=परि+विष्। कवकृ—**परिएसिज्ज-माण**; (आचा २, १, २, १)।

परिएस देखो **परिवेस**=परिवेश; (स ३१२)।

परिओस सक [**परि+तोषय्**] संतुष्ट करना, खुशी करना। परिओसइ; (भवि; सण)।

परिओस पुं [**परितोष**] आनन्द, संतोष, खुशी; (से ११, ३; गा ६८; २०६; स ६; सुपा ३७०)।

परिओस पुं [**दे, परिद्वेष**] विशेष द्वेष; (भवि)।

परिओसिय वि [**परितोषित**] संतुष्ट किया हुआ; (से १३, २५; भवि)।

परिंत देखो **परी**=परि+इ ।

परिकंख सक [परि+काङ्क्ष्] १ विशेष अभिलाषा करना । २ प्रतीक्षा करना । परिकंखइ; (उत ५, २) ।

परिकंद पुं [परिकन्द] आक्रन्द, चिल्लाहट; (हम्मीर ३०) ।

परिकंपि वि [परिकम्पिन्] अतिशय काँपने वाला; (गउड) ।

परिकंपिर वि [परिकम्पितृ] विशेष काँपने वाला; (सण) ।

परिकच्छिय वि [परिकक्षित] परिगृहीत; (राय) ।

परिकट्टलिअ वि [दे] एकत्र पिण्डीकृत; (पिंड २३८) ।

परिकड्ढ सक [परि+कृष्] १ पार्श्व भाग में खींचना । २ प्रारम्भ करना । वकृ—**परिकड्ढमाण**; (राज) । संकृ—**परिकड्ढिऊण**; (पंचव २) ।

परिकढिण वि [परिकठिन] अत्यन्त कठिन; (गउड) ।

परिकप्प सक [परि+कल्पय्] १ निष्पादन करना । २ कल्पना करना । परिकप्पयंति; (सुअ १, ७, १३) । संकृ—**परिकप्पिऊण**; (चेइय १४) ।

परिकप्पिय वि [परिकल्पित] छिन्न, काटा हुआ; (पण्ह १, ३) । देखो **परिगप्पिय** ।

परिकब्बुर वि [परिकर्बुर] विशेष कबरा; (गउड) ।

परिकम्म } न [परिकर्मन्] १ गुण-विशेष का आधान,

परिकम्मण } संस्कार-करण; "परिकम्मं किरियाए वत्थूणं गुणविसेसपरिणामो" (विसे ९२३; सुर १३, १२४), "तैवि पयट्टा काउं सरीरपरिकम्मणं एवं" (कुप्र २७१; कप्प; उत्त) । २ संस्कार का कारण-भूत शास्त्र; (णंदि) । ३ गणित-विशेष; ४ संख्यान-विशेष, एक तरह की गणना; (ठा १०—पत्र ४९६) । ५ निष्पादन; (पव १३३) ।

परिकम्मणा स्त्री. ऊपर देखो; "खेत्तमरूवं निच्चं न तस्स परिम्मणा नय विणासो" (विसे ९२४; सम्म ५४; संबोध ५३; उपपं ३४) ।

परिकम्मिय वि [परिकर्मित] परिकर्म-विशिष्ट, संस्कारित; (कप्प) ।

परिकर देखो **परिअर**=परिकर; (पिंग) ।

परिकलण न [परिकलन] उपभोग; "भमरपरिकलणकमलसुंदियरा " (सुपा ३) ।

परिकलिअ वि [परिकलित] १ युक्त, सहित; (सिरि ३८१) । २ व्याप्त; (सम्मत्त २१५) । ३ प्राप्त; "अंजलिपरिकलियजलं व गलइ इह जीयं " (धर्मवि २५) ।

परिकवलणा स्त्री [परिकवलना] भक्षण; "हरियपरिकवलणासुहसंकुल" (सुपा ३) ।

परिकविल वि [परिकपिल] सर्वतोभाव से कपिल वर्ण वाला; (गउड) ।

परिकविस वि [परिकपिश] अतिशय कपिश रंग वाला; (गउड) ।

परिकसण न [परिकर्षण] खींचाव; (गउड) ।

परिकह सक [परि+कथय्] प्ररूपण करना, कहना । परिकहेइ; (उवा), परिकहेंतु; (कप्प) । कर्म—परिकहिज्जइ (सि ४४३) । हेकृ—**परिकहेउं**; (औप) ।

परिकहण न [परिकथन] आख्यान, प्ररूपण; (सुपा २) ।

परिकहणा स्त्री [परिकथना] ऊपर देखो; (आवम) ।

परिकहा स्त्री [परिकथा] १ वार्तालाप; २ वर्णन; (पिंड १२६) ।

परिकहिय वि [परिकथित] प्ररूपित, आख्यात; (महा) ।

परिकिण्ण देखो **परिकिन्न** " वेडियाचक्कवालपरिकिण्णा " (उवा) ।

परिकित्तिअ वि [परिकीर्तित] श्लाघित, श्लाघित; (श्रु ११०) ।

परिकिन्न वि [परिकीर्ण] १ परिवृत, वेष्टित " नियपरियणपरिकिन्नो " (धर्मवि ५४) । २ व्याप्त; (सुर १, ५६) ।

परिकिलंत वि [परिक्लान्त] विशेष खिन्न; (उप २६४ टी) ।

परिकिलेस सक [परि+क्लेशय्] दुःखी करना, हैरान करना । परिकिलेसंति; (भग) । संकृ—**परिकिलेसित्ता**; (भग) ।

परिकिलेस पुं [परिक्लेश] दुःख, बाधा, हैरानी; (सुअ २, ७, ५५; औप; स ६७५; धर्मसं १००४) ।

परिकीलिर वि [परिक्रीडितृ] अतिशय क्रीड़ा करने वाला; (सण) ।

परिकुंठिय वि [परिकुण्ठित] जडीभूत; (विसे १८३) ।

परिकुडिल वि [परिकुटिल] विशेष वक्र; (सुर १, १) ।

परिकुद्ध वि [परिक्रुद्ध] अत्यन्त कुपित; (धर्मवि १२४) ।

परिकुविय वि [परिकुपित] अतिशय क्रुद्ध; (णाया १, ८; उवा; सण) ।

परिकोमल वि [परिकोमल] सर्वथा कोमल; (गउड) ।

परिक्कंत वि [पराक्रान्त] पराक्रम-युक्त; (सुअ १, ३, ४, १५) ।

परिक्कम सक [परि+क्रम्] १ पाँव से चलना। २ समीप में जाना। ३ पराभव करना। ४ अक. पराक्रम करना। परिक्कमदि; (रुक्मि ४६)। परिक्कमसि; (रुक्मि ५५)। परिक्कमेध (शौ); (पि ४८१)। वकृ—**परिक्कमंत**; (नाट)। कृ—**परिक्कमियव्व**; (णाया १, ५—पत्र १०३)। संकृ—**परिक्कम्म**; (सूअ १, ४, १, २)।

परिक्कम देखो **परक्कम**=पराक्रम; (णाया १, १; सण; उत्त १८, २४)।

परिक्कहिअ देखो **परिकहिय**; (सुपा २०८)।

परिक्काम देखो **परिक्कम**=परि+क्रम्। परिक्कामदि; (पि ४८१; ति ८७)।

परिक्ख सक [परि+ईक्ष्] परखना, परीक्षा करना। परिक्खइ, परिक्खए, परिक्खंति, परिक्खउ; (भवि; महा; वज्जा १५८; स ४५७)। वकृ—**परिक्खंत**, **परिक्खमाण**; (श्रा २० भा; श्रा १४)। संकृ—**परिक्खिय**; (उव)। कृ—**परिक्खियव्व**; (काल)।

परिक्खअ वि [परीक्षक] परीक्षा करने वाला; (सुपा ४२७; श्रा १४)।

परिक्खअ वि [परिक्षत] आहत, जिसको घाव हुआ हो वह; (से ८, ७३)।

परिक्खअ पुं [परिक्षय] १ क्रमशः हानि; "बहुलपक्खचंदस्स जोण्हापरिक्खओ विअ" (चारु ८)। २ क्षय, नाश; (गउड)।

परिक्खण न [परीक्षण] परीक्षा; (स ४६६; कप्पू; सुपा ४४६; णाया १ ७ भवि)।

परिक्खणा स्त्री [परीक्षणा] परीक्षा; (पउम ६१, ३३)।

परिक्खमाण देखो **परिक्ख**।

परिक्खल अक [परि+स्खल्] स्खलित होना। वकृ—**परिक्खलंत**; (से ४, १७)।

परिक्खलिअ वि [परिस्खलित] स्खलना-प्राप्त; (पि ३०६)।

परिक्खा स्त्री [परीक्षा] परख, जाँच; (नाट— मालवि २२)।

परिक्खाइअ वि [दे] परिक्षीण; (षड्)।

परिक्खाम वि [परिक्षाम] अतिशय कृश; (उत्तर ७२; नाट—रत्ना ३)।

परिक्खि वि [परीक्षिन्] परखने वाला, परीक्षक; (श्रा१४)।

परिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] १ वेष्टित, घेरा हुआ; (औप; पाअ; से १, ५३; वसु)। २ सर्वथा क्षिप्त; (आवम)। ३ चारों ओर से व्याप्त; (राय)।

परिक्खिय वि [परीक्षित] जिसकी परीक्षा की गई हो वह; (प्रासू १५)।

परिक्खिव सक [परि+क्षिप्] १ वेष्टन करना। २ तिरस्कार करना। ३ व्याप्त करना। ४ फेंकना। "एयं खु जरामरणं परिक्खिवइ वग्गुरा व मयजूहं" (तंदु ३३; जीवस १८६)। कर्म —परिक्खिवीआमो; (पि ३१६)।

परिक्खिविय वि [परिक्षिप्त] फेंका हुआ; (हम्मीर ३२)।

परिक्खेव पुं [परिक्षेप] घेरा, परिधि; (भग; सम ५६; कस; औप)।

परिक्खेवि वि [परिक्षेपिन्] तिरस्कार करने वाला; (उत्त ११, ८)।

परिखंध पुं [दे] काहार, कहार, जलादि-वाहक नौकर; (दे २, २७)।

परिखज्ज सक [परि+खर्ज्] खजवाना। कवकृ—"परिखज्जमाणमत्थयदेसो" (उप ६८६ टी)।

परिखण न [परीक्षण] परीक्षा-करण; (पव ३८)।

परिखविय वि [परिक्षपित] परिक्षीण; "गुरुअट्टज्झाणपरिखवियसरीरो" (महा)।

परिखाम वि [परिक्षाम] अति दुर्बल, विशेष कृश; (गा १६६)।

परिखित्त देखो **परिक्खित्त**; (सण)।

परिखिव देखो **परिक्खिव**। परिखिवइ; (भवि), "राया तं परिखिवई दोहग्गवईण मज्झम्मि" (सम्मत्त २१७; चेइय ६५५)।

परिखिविय देखो **परिखित्त**; (सण)।

परिखुहिय वि [परिक्षुब्ध] अतिशय क्षोभ को प्राप्त; (भवि)।

परिखेइय वि [परिखेदित] विशेष खिन्न किया हुआ; (सण)।

परिखेद (शौ) पुं [परिखेद] विशेष खेद; (स्वप्न १०; ८०)।

परिखेय सक [परि+खेदय्] अतिशय खिन्न करना। परिखेयइ; (सण)। संकृ—**परिखेइवि** (अप); (सण)।

परिखेविय (अप) देखो **परिखिविय**; (सण)।

परिगंतु देखो **परिगम**।

परिगण सक [परि+गणय्] १ गणना करना। २ चिन्तन करना, विचार करना। वकृ— "एस थक्को मम गमणस्स ति परिगणंतेण विष्णविओ राया" (महा)।

परिगप्पण न [परिकल्पन] कल्पना; (धर्मसं ६८१)।

परिगप्पणा स्त्री [परिकल्पना] ऊपर देखो; (धर्मसं ३०५)।

परिगप्पिय वि [परिकल्पित] जिसकी कल्पना की गई हो वह; (उ ११३; धर्मसं ६६६)। देखो **परिकप्पिय**।

परिगम सक [परि+गम्] १ जाना, गमन करना। २ चारों ओर से वेष्टन करना। ३ व्याप्त करना। संकृ—**परिगन्तु**; (सण)।

परिगमण न [परिगमन] १ गुण, पर्याय; "परिगमणं पज्जाओ अणेगकरणं गुणंति एगत्था" (सम्म १०६)। २ समन्ताद् गमन; (निचू ३)।

परिगमिर वि [परिगन्तृ] जाने वाला; (सण)।

परिगय वि [परिगत] १ परिवेष्टित; "मणुस्सवग्गुरापरिगए" (उवा; गा ६६), "बहुपरियणपरिगया" (सम्मत ११७)। २ व्याप्त; "वित्तपरिगयाहिं दाढाहिं" (उवा)।

परिगर पुं [परिकर] परिवार; "नेताण तु हरिवत्थं परिगरविहवकालमादीणि णाउ" (धर्मसं ९२६)।

परिगरिय वि [परिकरित] देखो **परिअरिय**; (सुपा १२७)।

परिगल अक [परि+गल्] १ गल जाना, क्षीण होना। २ झरना टपकना। परिगलइ; (काल)। वकृ—**परिगलंत**; (पउम ११२, १५; तंदु ४४)।

परिगलिय वि [परिगलित] गला हुआ, परिक्षीण; (कुप्र ७; महा; सुपा ८७; ३६२)।

परिगलिर वि [परिगलितृ] गल जाने वाला, क्षीण होने वाला; (सण)।

परिगह देखो **परिगेण्ह**। संकृ—**परिगहिअ**; (मा ४८)।

परिगह देखो **परिग्गह**; (कुमा)।

परिगहिय देखो **परिग्गहिय**; (बृह १)।

परिगा सक [परि+गै] गान करना। कवकृ—**परिगिज्जमाण**; (णाया १, १)।

परिगालण न [परिगालन] गालन, छानन; (पण्ह १, १)।

परिगिज्जमाण देखो **परिगा**।

परिगिज्झ }
परिगिज्झिय } देखो **परिगेण्ह**।

परिगिण्ह देखो **परिगेण्ह**। परिगिण्हइ: (भाव १)। वकृ—**परिगिण्हंत, परिगिण्हमाण**; (सूअ २, १, ४४; ठा ७—पत्र ३८३)।

परिगिला अक [परि+ग्लै] ग्लान होना। वकृ—**परिगिलायमाण**; (आचा)।

परिगुण सक [परि+गुणय्] परिगणन करना, गिनती करना। परिगुणइ (अप); (पिंग)।

परिगुणण न [परिगुणन] स्वाध्याय; (ओघ ६२)।

परिगुव अक [परि+गुप] १ व्याकुल होना। २ सक. सतत भ्रमण करना। वकृ—**परिगुवंत**; (राज)।

परिगुव सक [परि+गु] शब्द करना। वकृ—**परिगुवंत**; (राज)।

परिगेण्ह सक [परि+ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना;
परिग्गह } (प्रामा)। वकृ—**परिगहमाण**; (आचा १, ८, ३, १)। संकृ—**परिगिज्झिय, परिघेत्तूण**; (राज; पि ५८६)। हेकृ—**परिघेत्तुं**; (पि ५७६)। कृ— **परिगिज्झ, परिघेतव्व, परिघेत्तव्व**; (उत्त १, ४३; सुपा ३३; सूअ २, १, ४८; पि ५७०)।

परिग्गह पुं [परिग्रह] १ ग्रहण, स्वीकार; २ धन आदि का संग्रह; (पण्ह १, ५; औप)। ३ ममत्व, मूर्छा; (ठा १)। ४ ममत्व पूर्वक जिसका संग्रह किया जाय वह; (आचा; ठा ३, १; धर्म २)। °**वेरमण** न [°विरमण] परिग्रह से निवृत्ति; (ठा १; पण्ह २, ५)। °**वंत** वि [°वत्] परिग्रह-युक्त; (आचा; पि ३६६)।

परिग्गहि वि [परिग्रहिन्] परिग्रह युक्त; (सूअ १, ६)।

परिग्गहिय वि [परिगृहीत] स्वीकृत; (उवा; औप)।

परिग्गहिया स्त्री [पारिग्रहिकी] परिग्रह-संबन्धी क्रिया; (ठा २, १; नव १७)।

परिघघर वि [परिघर्घर] बैठा हुआ (आवाज); "हरिणो जयइ चिरं विहयलहुपरिघग्घरा वाणी" (गउड)।

परिघट्ट सक [परि+घट्ट्] आघात करना। कवकृ—**परिघट्टिज्जंत**; (महा)।

परिघट्टण न [परिघट्टन] आघात; (वज्जा ३८)।

परिघट्टण न [परिघटन] निर्माण, रचना; (निचू १)।

परिघट्टिय वि [परिघट्टित] आहत, ताडित; (जीव ३)।

परिघट्ठ वि [परिघृष्ट] १ जिसका घर्षण किया गया हो वह, घिसा हुआ; "मंदरयडपरिघट्ठ" (हे २, १७४)।

परिघाय देखो **परीघाय**; (राज)।

परिघास सक [परि+घासय्] जिमाना, भोजन कराना। हेकृ—**परिघासेउं**; (आचा)।

परिघासिय वि [परिघर्षित] परिघर्ष-युक्त; "रयसा वा परिघासियपुव्वं भवति" (आचा २, १०, ३, ५)।

परिघुम्मिर वि [परिघूर्णितृ] शनैः शनैः काँपता, हिलता,

डोलता; (पउम ८, २८३; गा १४८)।

परिघेतव्व
परिघेत्तव्व
परिघेत्तुं
परिघेत्तूण } देखो **परिगेण्ह**।

परिघोल सक [परि+घूर्ण्] १ डोलना। २ परिभ्रमण करना। वकृ—**परिघोलंत, परिघोलेमाण**; (से १, ३३; औप; णाया १, ४—पत्न ९७)।

परिघोलण न [दे. परिघोलन] विचार; (ठा ४, ४—पत्न २८३)।

परिघोलिर वि [परिघूर्णितृ] डोलने वाला; (गउड)।

परिचअ देखो **परियय**=परिचय; (नाट—शकु ७७)।

परिचअ देखो **परिच्चअ**। संकृ— **परिचइऊण, परिचइय**; (महा)।

परिचंचल वि [परिचञ्चल] अतिशय चपल; (वै १४)।

परिचत्त देखो **परिच्चत्त**; (महा; औप)।

परिचरणा स्त्री [परिचरणा] सेवा, भक्ति; (सुपा १५९)।

परिचल सक [परि+चल्] विशेष चलना। परिचलइ; (पिंग)।

परिचलिअ वि [परिचलित] विशेष चला हुआ; (दे ५, ६)।

परिचारअ वि [परिचारक] सेवा करने वाला, सेवक; (नाट—मालवि ६)। स्त्री—°**रिआ**; (नाट)।

परिचारणा स्त्री [परिचारणा] मैथुन-प्रवृत्ति; (ठा ५, १)।

परिचिंत सक [परि+चिन्तय्] चिन्तन करना, विचार करना। परिचिंतइ, परिचिंतेइ; (सण; उव)। कर्म—परिचिंतियइ (अप); (सण)। वकृ—**परिचिंतंत, परिचिंतयंत**; (सण; पउम ६६, ४)।

परिचिंतिय वि [परिचिन्तित] जिसका चिन्तन किया गया हो वह; (सण)।

परिचिंतिर वि [परिचिन्तयितृ] चिन्तन करने वाला; (सण)।

परिचिट्ठ अक [परि+स्था] रहना, स्थिति करना। परिचिट्ठइ; (सण)।

परिचिय वि [परिचित] ज्ञात, जाना हुआ, चिन्हा हुआ; (औप)।

परिचुंब देखो **परिउंब**। कवकृ—**परिचुंबिज्जमाण**; (औप)। संकृ—**परिचुंबिअ**; (अभि १५०)।

परिचुंबण देखो **परिउंबण**; (पउम १६, ७६)।

परिचुंबिय वि [परिचुम्बित] जिसका चुम्बन किया गया हो वह; "परिचुंबियनहग्गं" (उप ५९७ टी)।

परिच्चअ सक [परि+त्यज्] परित्याग करना, छोड़ देना। परिच्चयइ, परिच्चअइ; (महा; अभि १७७)। वकृ—**परिच्चअंत**; (अभि १३७)। संकृ—**परिच्चइअ, परिच्चज्ज, परिच्चइऊण**; (पि ५९०; उत्त ३५, २; राज)। हेकृ—**परिच्चइत्तए, परिच्चत्तुं**; (उवा; नाट)।

परिच्चत्त वि [परित्यक्त] जिसका परित्याग किया गया हो वह; (से ८, २०; सुर २; १२०; सुपा ४१८; नाट—शकु १३२)।

परिच्चयण न [परित्यजन] परित्याग; (स ३३)।

परिच्चाइ वि [परित्यागिन्] परित्याग करने वाला; (औप; अभि १४०)।

परिच्चाग
परिच्चाय } पुं [परित्याग] त्याग, मोचन; (पंचा ११, १४; उप ७९२; औप; भग)।

परिच्चाय वि [परित्याज्य] त्याग करने लायक; "अण्णे-वि असुहजोगा सोहिपयाणे परिच्चाया" (संबोध ५४)।

परिच्चिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ; (षड्)।

परिच्चिअ देखो **परिचिय**; (उप १४२ टी)।

परिच्छ देखो **परिक्ख**। "मणवयणकायगुत्तो सज्जो मरणे परिच्छिज्जा" (पञ्च ६८; पिंड ३०), परिच्छंति; (पिंड ३१)।

परिच्छग वि [परीक्षक] परीक्षा-कर्ता; (धर्मसं ५१६)।

परिच्छण्ण
परिच्छन्न } वि [परिच्छन्न] १ आच्छादित, ढका हुआ; (महा)। २ परिच्छद-युक्त, परिवार-सहित; (वव ४)।

परिच्छय वि [परीक्षक] परीक्षा करने वाला; (सम्म १५६)।

परिच्छा स्त्री [परीक्षा] परख, जाँच; (ओघ ३१ भा; भि ८४८; उप पृ १०८)।

परिच्छिअ देखो **परिक्खिय**; (श्रा १६)।

परिच्छिंद सक [परि+छिद्] १ निश्चय करना, निर्णय करना। २ काटना, काट डालना। परिच्छिंदइ; (धर्मसं ३७१)। संकृ—"**परिच्छिंदिय** बाहिरगं च सयं निक्कम्मदंसी इह मच्चिएहिं" (आचा—टि;पि ५०६; ५९१)।

परिच्छिण्ण वि [परिच्छिन्न] १ काटा हुआ; "नय सुहतण्हा परिच्छिण्णा" (पञ्च ६५)। २ निर्णीत, निश्चित; (आव ४)।

परिच्छित्ति स्त्री [परिच्छित्ति] १ परिच्छेद, निर्णय; २ परीक्षा, जाँच; (उप ८६५)।

परिच्छिन्न देखो **परिच्छिण्ण**; (स ६६६; सम्मत्त १४१)।

परिच्छूढ वि [**दे. परिक्षिप्त**] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (दे ६, २५; नमि ६)। २ परित्यक्त; (से १३, १०)।

परिच्छेअ पुं [**परिच्छेद**] निर्णय, निश्चय; (विसे २३४४; स ६६७)।

परिच्छेअ वि [**दे. परिच्छेक**] लघु, छोटा; (औप)।

परिच्छेअग वि [**परिच्छेदक**] निश्चय करने वाला; (उप ८४३ टी)।

परिच्छेज्ज वि [**परिच्छेद्य**] वह वस्तु जिसका क्रय-विक्रय परिच्छेद पर निर्भर रहता है—रत्न, वस्त्र आदि द्रव्य; (श्रा १८)।

परिच्छेद देखो **परिच्छेअ**=परिच्छेद; (धर्मसं ११३१)।

परिच्छेदग देखो **परिच्छेअग**; (धर्मसं ५०)।

परिच्छोय वि [**परिस्तोक**] थोड़ा, अल्प; (औप)।

परिछेज्ज देखो **परिच्छेज्ज**; (श्रा १८)।

परिजंपिय वि [**परिजल्पित**] उक्त, कथित; (सुपा ३६४)।

परिजज्जर वि [**परिजर्जर**] अतिजीर्ण; (उप २६४ टी; ६८६ टी)।

परिजडिल वि [**परिजटिल**] अतिशय जटिल; (गउड)।

परिजण देखो **परिअण**; (उवा)।

परिजव सक [**परि+विच्**] पृथक् करना, अलग करना। संकृ—**परिजविय**; (सुअ २, २, ४०)।

परिजव सक [**परि+जप्**] १ जाप करना। २ बहुत बोलना, बकवाद करना। संकृ—"से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं **परिजविया** २ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा" (आचा २, ३, २, ८)।

परिजवण न [**परिजपन**] जाप, जपन, मन्त्र आदि का पुनः पुनः उच्चारण; (विसे ११४०; सुर १२, २०१)।

परिजाइय वि [**परियाचित**] माँगा हुआ; (धर्मसं १०४५)।

परिजाण सक [**परि+ज्ञा**] अच्छी तरह जानना। परिजाणइ; (उवा)। वकृ—**परिजाणमाण**; (कुमा)। कवकृ—**परिजाणिज्जमाण**; (णाया १, १; कुमा)। संकृ—**परिजाणिया**; (सुअ १, १, १, १; १, ६, ६; १, ६, १०)। कृ—**परिजाणियव्व**; (आचा; पि ५७०)।

परिजिअ वि [**परिजित**] सर्वथा जित, जिसपर पूरा काबू किया गया हो वह; (विसे ८५१)।

परिजुण्ण वि [**परिजीर्ण**] १ फटा टूटा, अत्यन्त जीर्ण; (आचा)। २ दुर्बल; (उत्त २, १२)। ३ दरिद्र, निर्धन; "परिजुण्णो उ दरिद्दो" (वव ४)।

परिजुण्णा देखो **परिजुन्ना**; (ठा १०—पत्र ४७४ टी)।

परिजुत्त वि [**परियुक्त**] सहित; (संबोध १)।

परिजुन्न देखो **परिजुण्ण**; (उप २६४ टी)।

परिजुन्ना स्त्री [**परिजीर्णा, परिद्यूना**] प्रव्रज्या-विशेष, दरिद्रता के कारण ली हुई दीक्षा; (ठा १०—पत्र ४७३)।

परिजुसिय देखो **परिझुसिय**; (ठा ४, १—पत्र १८७; औप)।

परिजुसिय न [**पर्युषित**] रात्रि-परिवसन, रात-वासी रहना; (ठा ४, २—पत्र २१६)। देखो **परिउसिअ**।

परिजूर अक [**परि+जॄ**] सर्वथा जीर्ण होना। "परिजूरइ ते सरीरयं" (उत्त १०, २६)।

परिजूरिय वि [**परिजीर्ण**] अतिजीर्ण; (अणु)।

परिज्जय पुं [**दे**] कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०)।

परिज्झामिय वि [**परिध्यामित**] श्याम किया हुआ; (निचू १)।

परिज्झुसिय) **परिझुसिय** } **परिझूसिय**) वि [**परिजुष्ट**] १ सेवित; २ प्रीत; "परिझुसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते" (भग २५, ७—पत्र ६२३; ६२५ टी)। ३ परिक्षीण; (ठा ४, १—पत्र १८८ टी; पि २०६)।

परिट्ठव सक [**परि+स्थापय्**] १ परित्याग करना। २ संस्थापन करना। परिट्ठवेइ; परिट्ठवेज्जा; (आचा २, १, ६, ५; उवा)। संकृ—**परिट्ठवेऊण, परिट्ठवेत्ता**; (बृह ४; कस)। हेकृ—**परिट्ठवेत्तए**; (कस)। वकृ—**परिट्ठवंत**; (निचू २)। कृ—**परिट्ठप्प, परिट्ठवेयव्व**; (उत्त १४, ६; कस)।

परिट्ठवण न [**प्रतिष्ठापन**] प्रतिष्ठा कराना; (चेइय ७७६)।

परिट्ठवण न [**परिस्थापन**] परित्याग; (उप; पत्र १६२)।

परिट्ठवणा स्त्री [**परिस्थापना**] ऊपर देखो; "अविहिपरिट्ठवणाए काउस्सग्गो य गुरुसमीवम्मि" (बृह ४)।

परिट्ठवणा स्त्री [**प्रतिष्ठापना**] प्रतिष्ठा कराना; "वंदावच्चं जिणगिहकरणपरिट्ठवणाइजिणकिच्चं" (चेइय ७७६)।

परिट्ठविय स्त्री [**प्रतिष्ठापित**] संस्थापित; (भवि)।

परिट्ठा देखो **पइट्ठा**; (हे १, ३८)।

परिट्ठाइ वि [**परिस्थायिन्**] परित्यागी; (नाट—साहि १६२)।

परिट्ठाण न [**परिस्थान**] परित्याग; (नाट)।

परिट्ठाव देखो **परिट्ठव**। हेकृ—**परिट्ठावित्तए**; (कप्प; पि ५७८)।

परिट्ठावअ वि [**परिस्थापक**] परित्याग करने वाला; (नाट)।

परिट्ठिअ वि [**परिस्थित**] संपूर्ण रूप से स्थित; (पत्र ६६)।

परिट्ठिअ देखो **पइट्ठिय**; (हे १, ३८; २, २११; षड्; महा; सुर ३, १३)।

परिठव देखो **परिट्ठव**। परिठवहु (अप); (पिंग)।

परिठवण देखो **परिट्ठवण**=परिष्ठापन; (पत्र—गाथा २४)।

परिण देखो **परिणी**। "परिणइ बहुयाउ खयरकन्नाओ" (धर्मवि ८२)। वक्ृ—**परिणंत**; (भवि)। संकृ—**परिणिऊण**; (महा; कुप्र ७६; १२७)।

परिणइ स्त्री [**परिणति**] परिणाम; (गा ५६८; धर्मसं ६२३)।

परिणंत देखो **परिण**।

परिणंतु वि [**परिणन्तृ**] परिणाम को प्राप्त होने वाला, परिणत होने वाला; (विसे ३५३४)।

परिणंद सक [**परि+नन्द्**] वर्णन करना, श्लाघा करना। "ताणं **परिणंदंता** (? ति)" (तंदु ४०)।

परिणद्ध वि [**परिणद्ध**] १ परिगत, वेष्टित; "उंदुरमालापरिणद्धसुकयचिंधे" (उवा; णाया १, ८—पत्र १३३)। २ न. वेष्टन ; (णाया १, ८)।

परिणम सक [**परि+णम्**] १ प्राप्त करना। २ अक. रूपान्तर को प्राप्त करना। ३ पूर्ण होना, पूरा होना। "किण्हलेसं तु परिणमे" (उत्त ३४, २२), "परिणमइ अप्पमाओ" (स ६८४; भग १२, ५)। वकृ—**परिणमंत, परिणममाण**; (ठा ७; णाया १, १—पत्र ३१)।

परिणमण न [**परिणमन**] परिणाम; (धर्मसं ४७२; उप ८६८)।

परिणमिअ } वि [**परिणत**] १ परिपक्व; (पाअ)। २ **परिणय** } वृद्धि-प्राप्त; "तह परिणमिओ धम्मो जह तं खोभंति न सुरावि" (धर्मवि ८)। ३ अवस्थान्तर को प्राप्त; (ठा २, १—पत्र ५३; पिंड २६५)। °**वय** वि [°**वयस्**] १ वृद्ध, बूढ़ा; (णाया १, १—पत्र ४८)।

परिणयण न [**परिणयन**] विवाह; (उप १०१४; सुपा २७१)।

परिणयणा स्त्री. ऊपर देखो; (धर्मवि १२६)।

परिणव देखो **परिणम**। परिणवइ; (आरा ३१; महा)।

परिणाइ पुं [**परिज्ञाति**] परिचय; "कह तुज्झ तेण समयं परिणाई तक्खणेण उप्पन्नो" (पउम ५३, २५)।

परिणाम सक [**परि+णमय्**] परिणत करना। परिणामेइ; (ठा २, २)। कवकृ—**परिणामिज्जमाण, परिणामेज्जमाण**; (भग; ठा १०)। हेकृ—**परिणामित्तए**; (भग ३, ४)।

परिणाम पुं [**परिणाम**] १ अवस्थान्तर-प्राप्ति, रूपान्तर-लाभ; (धर्मसं ४७२)। २ दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होने वाला आत्म-धर्म विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८३)। ३ स्वभाव, धर्म; (ठा ६)। ४ अध्यवसाय, मनो-भाव; (निचू २०)। ५ वि. परिणत करने वाला; "हिंता परिणामे" (वव १०; बृह १)।

परिणामणया } स्त्री [**परिणामना**] परिणामना, रूपान्तर-**परिणामणा** } करण; (पण्ण ३४—पत्र ७७४; विसे २२७८)।

परिणामय वि [**परिणामक**] परिणत करने वाला; (बृह १)।

परिणामि वि [**परिणामिन्**] परिणत होने वाला; (दे १, १; श्रावक १८३)। °**कारण** न [°**कारण**] कार्य-रूप में परिणत होने वाला कारण, उपादान कारण; (उत्र २७)।

परिणामिअ वि [**पारिणामिक**] १ परिणाम-जन्य, परिणाम से उत्पन्न; २ परिणाम-संबन्धी; ३ पुं. परिणाम; ४ भाव-विशेष; "सव्वदव्वपरिणइरूवो परिणामिओ सव्वो" (विसे २१७६; ३४९५)।

परिणामिअ वि [**परिणमित**] परिणत किया हुआ; (पिंड ६१२; भग)।

परिणामिआ स्त्री [**पारिणामिकी**] बुद्धि-विशेष, दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होने वाली बुद्धि; (ठा ४, ४)।

परिणाय वि [**परिज्ञात**] जाना हुआ, परिचित; (पउम ११, २७)।

परिणाव सक [**परि+णायय्**] विवाह कराना। परिणावमु; (कुप्र ११६)। कृ—**परिणावियव्व, परिणावेयव्व**; (कुप्र ३३०; १५४)।

परिणावण न [**परिणायन**] विवाह कराना; (सुपा ३९८)।

परिणाविअ वि [**परिणायित**] जिसका विवाह कराया गया हो वह; (सुपा १९५; धर्मवि १३६; कुप्र १४)।

परिणाह पुं [**परिणाह**] १ लम्बाई, विस्तार; (पाअ; से ११, १२)। २ परिधि; (स ३१२; ठा २, २)।

परिणिऊण देखो **परिण**।

परिणिंत देखो **परिणी**=परि+गम्।

परिणिज्जंत देखो **परिणी**=परि+णी।

परिणिज्जरा स्त्री [**परिनिर्जरा**] विनाश, क्षय; (पउम ३१, ६)।

परिणिज्जिअ वि [परिनिर्जित] पराभूत, पराजय-प्राप्त; (पउम ५२, २१)।

परिणिट्ठा स्त्री [परिनिष्ठा] संपूर्णता, समाप्ति; (उप १२५)।

परिणिट्ठाण न [परिनिष्ठान] अवसान, अन्त; (विसे१२६)।

परिणिट्ठिअ वि [परिनिष्ठित] १ पूर्ण किया हुआ, समाप्त किया हुआ; (रयण २५)। २ पार-प्राप्त; (णाया १, ८; भास ६८; पंचा १२, १४)। ३ परिज्ञात; (वव १०)।

परिणिट्ठिया स्त्री [परिनिष्ठिता] १ कृषि-विशेष, जिसमें दो या तीन वार तृण-शोधन किया गया हो वह कृषि; २ दीक्षा-विशेष, जिसमें बारंबार अतिचारों की आलोचना की जाती हो वह दीक्षा; (राज)।

परिणिअ वि [परिणीत] जिसका विवाह हुआ हो वह; (सण; भवि)।

परिणिव्वव सक [परिनिर् + वापय्] सर्व प्रकार से अतिशय परिशान्त करना। संकृ—**परिणिव्वविय**; (कस)।

परिणिव्वा अक [परिनिर् + वा] १ शान्त होना। २ मुक्ति पाना, मोक्ष को प्राप्त करना। परिणिव्वायंति; (भग)। भूका—परिणिव्वाइंसु; (पि ३१६)। भवि—परिणिव्वाहिंति; (भग)।

परिणिव्वाण न [परिनिर्वाण] मुक्ति, मोक्ष; (आचा; कप्प)।

परिणिव्वुइ स्त्री [परिनिर्वृति] ऊपर देखो; (राज)।

परिणिव्वुअ देखो **परिनिव्वुअ**; (औप)।

परिणी सक [परि + णी] १ विवाह करना। २ ले जाना। कवकृ—**परिणिज्जंत, परिणीयमाण** (कुप्र१२७; आचा)।

परिणी अक [परि + गम्] बाहर निकलना। वकृ—**परिणिंत**; (स ६६१)।

परिणीअ वि [परिणीत] जिसका विवाह किया गया हो वह; (महा; प्रासू ६३; सण)।

परिणील वि [परिनील] सर्वथा हरा रंग का; (गउड)।

परिणे देखो **परिणी**। परिणेइ; (महा; पि ४७४)। हेकृ—**परिणेउं**; (कुप्र ५०)। कृ—**परिणेयव्व**; (सुपा ४५५; कुप्र १३८)।

परिणेविय (अप) वि [परिणायित] जिसका विवाह कराया गया हो वह; (सण)।

परिणेव्वुअ देखो **परिनिव्वुअ**; (उत्त १८, ३५)।

परिण्ण वि [परिज्ञ] ज्ञाता, जानकार; (आचा १, ५, ६, ४)।

परिण्ण देखो **परिण्णा**; (आचा १, २, ६, ५)।

परिण्णा सक [परि + ज्ञा] जानना। संकृ—**परिण्णाय**; (आचा; भग)। हेकृ—**परिण्णादुं** (शौ); (अभि १८६)।

परिण्णा स्त्री [परिज्ञा] १ ज्ञान, जानकारी; (आचा; वव; पंचा ६, २५)। २ विवेक; (आचा)। ३ पर्यालोचन, विचार; (सूअ १, १, १)। ४ ज्ञान-पूर्वक प्रत्याख्यान; (ठा ५, २)।

परिण्णाण न [परिज्ञान] ज्ञान, जानकारी; (धर्मसं १२५३; उप पृ २७४)।

परिण्णाय देखो **परिण्णा**=परि + ज्ञा।

परिण्णाय वि [परिज्ञात] विदित, जाना हुआ; (सम १६; आचा)।

परिण्णि वि [परिज्ञिन्] परिज्ञा-युक्त; "गोयमुओ उ परिण्णी तह जिणइ परीसहाणीयं" (वव १)।

परितंत वि [परितान्त] सर्वथा खिन्न, निर्विण्ण; (णाया १, ४—पत्र ६७; विपा १, १; उव)।

परितंबिर वि [परिताम्र] विशेष ताम्र—अरुण—वर्ण वाला; (गउड)।

परितज्ज सक [परि + तर्जय्] तिरस्कार करना। वकृ—**परितज्जयंत**; (पउम ४८, १०)।

परितड्डविय वि [परितत] खूब फैलाया हुआ; (सण)।

परितणु वि [परितनु] अत्यन्त पतला; (सुपा ५८)।

परितप्प अक [परि + तप्] संतप्त होना, गरम होना। २ पश्चात्ताप करना। ३ दुःखी होना। परितप्पइ; (महा; उव)। परितप्पंति; (सूअ २, १, ५५), "ता लोहभारवाहगनरव्व परितप्पसे पच्छा" (धर्मवि ६)। संकृ—**परितप्पिऊण**; (महा)।

परितप्प सक [परि + तापय्] परिताप उपजाना। परितप्पंति; (सूअ २, २, ५५)।

परितप्पण न [परितपन] परितप्त होना; (सूअ २, २, ५५)।

परितप्पण न [परितापन] परिताप उपजाना, (सूअ २, २, ५५)।

परितलिअ वि [परितलित] तला हुआ; (ओघ ८८)।

परितविय वि [परितप्त] परिताप युक्त; (सण)।

परित्ताण न [परित्राण] १ रक्षण; २ वागुरादि बन्धन; (सूअ १, १, २, ६)।

परिताव देखो **परितप्प**=परि + तापय्। कृ—**परितावेयव्व**; (पि ५७०)।

परिताव पुं [**परिताप**] १ संताप, दाह; २ पश्चात्ताप; ३ दुःख, पीड़ा; (महा; औप)। °**यर** वि [°**कर**] दुःखोत्पादक; (पउम ११०, ६)।

परितावण देखो **परितप्पण**=परितापन; (औप)।

परिताविअ वि [**परितापित**] १ संतापित; (औप)। २ तला हुआ; (ओघ १४७)।

परितास पुं [**परित्रास**] अकस्मात् होने वाला भय; (गाया १, १—पत्र ३३)।

परितुट्टिर वि [**परित्रुटितृ**] टूटने वाला; (सण)।

परितुट्ठ वि [**परितुष्ट**] तोष-प्राप्त, संतुष्ट; (उव; चेइय ७०१)।

परितुलिय वि [**परितुलित**] तौला हुआ; (सण)।

परितेज्जि देखो **परित्तज**।

परितोल सक [**परि+तोलय्**] उठाना। वकृ—"जुगवं परितोलंता खग्गं समरंगणम्मि तो दोवि" (सुपा ५७२)।

परितोस सक [**परि+तोषय्**] संतुष्ट करना। भवि—परितोसइस्सं; (कर्पूर ३२)।

परितोस पुं [**परितोष**] आनन्द, खुशी; (नाट—मालवि ३३)।

परितोसिय वि [**परितोषित**] संतुष्ट किया हुआ; (सण)।

परित्त वि [**परीत**] १ व्याप्त; (सिरि १८३)। २ प्रभ्रष्ट; (सूत्र २, ६, १८)। ३ संख्येय, जिसकी गिनती हो सके ऐसा; (सम १०६)। ४ परिमित, नियत परिमाण वाला; (उप ४१७)। ५ लघु, छोटा; ६ तुच्छ, हलका; (उप२७०; ६६४)। ७ एक से लेकर असंख्येय जीवों का आश्रय, एक से लेकर असंख्येय जीव वाला; (ओघ ४१)। ८ एक जीव वाला; (पण्ण १)। °**करण** न [°**करण**] लघूकरण; (उप २७०)। °**जीव** पुं [°**जीव**] एक शरीर में एकाकी रहने वाला जीव; (पण्ण १)। °**णंत** न [°**ानन्त**] संख्या-विशेष; (कम्म ४, ७१; ८३)। °**संसारिअ** वि [°**संसारिक**] परिमित संसार वाला; (उप ४१७)। °**ासंख** न [°**ासंख्यात**] संख्या-विशेष; (कम्म ४, ७१; ७८)।

परित्तज देखो **परिच्चय**। संकृ—**परित्तजिअ**; (स्वप्न ५१), **परितेज्जि** (अप); (पिंग)।

परित्ता } सक [**परि+त्रै**] रक्षण करना। परित्ताइ, परि-
परित्ताअ } त्ताअसु, परित्ताहि, परित्तायह; (प्राकृ ७०; पि ४७६; हे ४, २६८)।

परित्ताइ वि [**परित्रायिन्**] रक्षण-कर्ता; (सुपा ४०५)।

परित्ताण न [**परित्राण**] रक्षण; (से १४,३५; सुपा ७१; आत्मानु ८; सण)।

परित्तास देखो **परितास**; (कप्प)।

परित्तीकय वि [**परीतीकृत**] संक्षिप्त किया हुआ, लघूकृत; (गाया १, १—पत्र ६६)।

परित्तीकर सक [**परीती+कृ**] लघु करना, छोटा करना। परित्तीकरेंति; (भग)।

परित्थिमिअ न [**परिस्तोम**] १ मस्तक; २ वि. वक्र; "चित्तपरित्थिमिपच्छई" (औप)।

परिथंभिअ वि [**परिस्तम्भित**] स्तब्ध किया हुआ; (सुपा ४७५)।

परिथु सक [**परि+स्तु**] स्तुति करना। कवकृ—**परिथुव्वंत**; (सुपा ६०७)।

परिथूर } वि [**परिस्थूर**] विशेष स्थूल, खूब मोटा;
परिथूल } (धर्मसं ८३८; चेइय ८५४; श्रा ११)।

परिदा सक [**परि+दा**] देना। कर्म—परिदिज्जउ (अप); (पिंग)।

परिदाह पुं [**परिदाह**] संताप; (उत्त २, ८; भग)।

परिदिण्ण वि [**परित्त**] दिया हुआ; (अभि १२५)।

परिदिद्ध वि [**परिदिग्ध**] उपलिप्त; (सुख २, ३७)।

परिदिन्न देखो **परिदिण्ण**; (सुपा २२)।

परिदेव अक [**परि+देव्**] विलाप करना। **परिदेवए**; (उत्त २, १३)। वकृ—**परिदेवंत**; (पउम २६, ६२; ४५, ३६)।

परिदेवण न [**परिदेवन**] विलाप; "तस्स कंदणसोयणपरिदेवणताडणाइं लिंगाइं" (संबोध ४६; संवे ८)।

परिदेवणया स्त्री [**परिदेवना**] ऊपर देखो; (ठा ४, १—पत्र १८८)।

परिदेवि वि [**परिदेविन्**] विलाप करने वाला; (नाट—शकु १०१)।

परिदेविअ न [**परिदेवित**] विलाप; (पाअ; से ११, ६६; सुर २, २४१)।

परिदो अ [**परितस्**] चारों ओर से; (गा ५५४ अ)।

परिधम्म पुं [**परिधर्म**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

परिधवलिय वि [**परिधवलित**] खूब सफेद किया हुआ; (सण)।

परिधाम पुंन [**परिधामन्**] स्थान; (सुपा ४६३)।

परिधाविअ वि [**परिधावित**] दौड़ा हुआ ; (हम्मीर ३२)।
परिधाविर वि [**परिधावितृ**] दौड़ने वाला ; (सण)।
परिधूणिय वि [**परिधूनित**] अत्यन्त कँपाया हुआ; (सम्मत १३६)।
परिधूसर वि [**परिधूसर**] धूसर वर्ण वाला ; (वज्जा १२८ ; गउड)।
परिनट्ठ वि [**परिनष्ट**] विनष्ट ; (महा)।
परिनिक्खम देखो **पडिनिक्खम**। परिनिक्खमइ ; (कप्प)।
परिनिट्ठिय देखो **परिणिट्ठिअ** ; (कप्प ; रंभा ३०)।
परिनिय सक [**परि+दृश्**] देखना, अवलोकन करना। वकृ—**परिनियंत** ; (सुपा ५२२)।
परिनिविट्ठ वि [**परिनिविष्ट**] ऊपर बैठा हुआ ; (सुपा २६६)।
परिनिविड वि [**परिनिविड**] विशेष निविड ; (महा)।
परिनिव्वा देखो **परिणिव्वा**। परिनिव्वाइ ; (भग), परिनिव्वाइंति ; (कप्प)। भवि—परिनिव्वाइस्संति ; (भग)।
परिनिव्वाण देखो **परिणिव्वाण** ; (गाया १, ८ ; ठा १, १ ; भग ; कप्प ; पव १३८ टी)।
परिनिव्वुअ } **परिनिव्वुड** } वि [**परिनिवृत**] १ मुक्त, मोक्ष को प्राप्त ; (ठा १, १ ; पउम २०, ८४ ; कप्प)। २ शान्त, ठंढ़ा ; (सूअ १, ३, ३, २१)। ३ स्वस्थ ; (सुपा १८३)।
परिन्न देखो **परिण्ण** ; (आचा)।
परिन्न° देखो **परिण्ण**°; (आचा)।
परिन्ना देखो **परिण्णा** ; (उप ५२५)।
परिन्नाण देखो **परिण्णाण** ; (आचा)।
परिन्नाय देखो **परिण्णाय**=परिज्ञात ; (सुपा २६२)।
परिन्नाय वि [**प्रतिज्ञात**] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह ; (पिंड २८१)।
परिपंडुर } **परिपंडुल** } वि [**परिपाण्डुर**] विशेष पाण्डुर—धूसर वर्ण वाला ; (सुपा २५६ ; कप्प ; गउड ; से १०, ३३)।
परिपंथग वि [**प्रतिपथक**] दुश्मन, विरोधी, प्रतिकूल ; (स १०५)।
परिपंथिअ } **परिपंथिग** } वि [**परिपन्थिक**] ऊपर देखो ; (स ७४६ ; उप ६३६)।

परिपक्क वि [**परिपक्व**] पका हुआ ; (पव ४ ; भवि)।
परिपडिअ (अप) वि [**परिपतित**] गिरा हुआ ; (पिंग)।
परिपाग पुं [**परिपाक**] विपाक, फल ; "पुव्वभवविहिअसुचरिअपरिपागो एस उदयसंपत्तो" (रयण ५२ ; आचा)।
परिपाडल वि [**परिपाटल**] सामान्य लाल रंग वाला, गुलाबी रँग का ; (गउड)।
परिपाडिअ वि [**परिपाटित**] फाड़ा हुआ, विदारित ; (वे ५, ६१)।
परिपाल सक [**परि+पालय्**] रक्षण करना। परिपालइ ; (भवि)। कृ—**परिपालणीअ** ; (स्वप्न २६)। संकृ—**परिपालिउं** ; (सुपा ३४२)।
परिपालण न [**परिपालन**] रक्षण ; (कुप्र २२६ ; सुपा ३०८)।
परिपालिय वि [**परिपालित**] रक्षित ; (भवि)।
परिपासय [**दे**] देखो **परिवास** (दे); (पाअ)।
परिपिअ सक [**परि+पा**] पीना, पान करना। कवकृ—**परिपिज्जंत** ; (नाट—चैत ४०)।
परिपिंजर वि [**परिपिञ्जर**] विशेष पीत-रक्त वर्ण वाला ; (गउड)।
परिपिंडिय वि [**परिपिण्डित**] १ एकत्र समुदित, इकट्ठा किया हुआ ; (पिंड ४६७)। २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष ; (धर्म २)।
परिपिक्क देखो **परिपक्क** ; (पि १०१)।
परिपिज्जंत देखो **परिपिअ**।
परिपिरिया स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष ; (भग ५, ४—पत्र २१६)।
परिपिल्ल सक [**परिप्र+ईरय्**] प्रेरना। परिपिल्लइ ; (सुपा ६४)।
परिपिहा सक [**परिपि+धा**] ढकना, आच्छादन करना। संकृ—**परिपिहित्ता, परिपिहेत्ता** ; (कप्प ; पि ५८२)।
परिपीडिय वि [**परिपीडित**] जिसको पीडा पहुँचाई गई हो वह ; (भवि)।
परिपील सक [**परि+पीडय्**] १ पीड़ना। २ पीलना, दबाना। परिपीलिज्जा ; (पि २४०)। संकृ—**परिपीलइत्ता, परिपीलिय, परिपीलियाण** ; (भग ; राज ; आचा २, १, ८, १)।
परिपीलिअ देखो **परिपीडिअ** ; (राज)।

परिपुंगल वि [**दे**] श्रेष्ठ, उत्तम; (?) "जंपइ भविसयत्तु परिपुंगलु होसइ रिद्धिविद्धिसुहमंगलु" (भवि)।

परिपुच्छ सक [**परि+प्रच्छ्**] प्रश्न करना। परिपुच्छइ; (भवि)।

परिपुच्छण न [**परिप्रच्छन**] प्रश्न, पृच्छा; (भवि)।

परिपुच्छिअ } **परिपुट्ठ** } वि (**परिपृष्ट**) पूछा हुआ, जिज्ञासित; (गा ६२३; भवि; सुपा ३८७)।

परिपुण्ण } **परिपुन्न** } वि [**परिपूर्ण**] संपूर्ण; (भग; भवि)।

परिपुस सक [**परि+स्पृश्**] संस्पर्श करना। परिपुसइ; (से ४, ५)।

परिपूज सक [**परि+पूजय्**] पूजना। परिपूजउ (अप); (पिंग)।

परिपूणग पुं [**दे. परिपूणक**] पक्षि-विशेष का नीड, सुघरी-नामक पक्षी का घोंसला; (विसे १४५४; १४६५)।

परिपूय वि [**परिपूत**] छाना हुआ; (कप्प; तंदु ३२)।

परिपूर सक [**परि+पूरय्**] पूर्ण करना, भरपूर करना। वकृ—**परिपूरंत**; (पि ५३७)। संकृ—**परिपूरिअ**; (नाट—मालवि १५)।

परिपूरिय वि [**परिपूरित**] भरपूर, व्याप्त; (सुर २, ११)।

परिपेच्छ सक [**परिप्र+ईक्ष्**] देखना। वकृ—**परिपेच्छंत**; (अच्चु ६३)।

परिपेरंत पुं [**परिपर्यन्त**] प्रान्त भाग; (णाया १, ४; १३; सुर १५, २०२)।

परिपेरिय वि [**परिप्रेरित**] जिसको प्रेरणा की गई हो वह; (सुपा १८६)।

परिपेलव वि [**परिपेलव**] १ सुकर, सहल; (से ३, १३)। २ अदृढ; ३ निःसार; ४ वराक, दीन; (राज)।

परिपेल्लिअ देखो **परिपेरिय**; (गा ५७७)।

परिपेस सक [**परिप्र+इष्**] भेजना। परिपेसइ; (भवि)।

परिपेसण न [**परिप्रेषण**] भेजना; (भवि)।

परिपेसल वि [**परिपेशल**] सुन्दर, मनोहर; (सुपा १०६)।

परिपेसिय वि [**परिप्रेषित**] भेजा हुआ; (भवि)।

परिपोस सक [**परि+पोषय्**] पुष्ट करना। कवकृ—**परिपोसिज्जंत**; (राज)।

परिप्पमाण न [**परिप्रमाण**] परिमाण; (भवि)।

परिप्पव सक [**परि+प्लु**] तैरना, गोता लगाना। वकृ—**परिप्पवंत**; (से २, २८; १०, १३; पाअ)।

परिप्पुय वि [**परिप्लुत**] आप्लुत, व्याप्त; (राज)।

परिप्पुया स्त्री [**परिप्लुता**] दीक्षा-विशेष; (राज)।

परिप्फंद पुं [**परिस्पन्द**] १ रचना-विशेष; "जयइ वाया-परिप्फंदो" (गउड)। २ समन्तात् चलन; (चारु ४५)। ३ चेष्टा, प्रयत्न;

"थोयारंभवि विहिम्मि आयसग्गे व्व खंडणमुवेंति।
स-परिप्फंदेणं चिय णीआ भमिदारुसयलं व" (गउड)।

परिप्फुड वि [**परिस्फुट**] अत्यन्त स्पष्ट; (से ११, ६०; सुर ४, २१४; भवि)।

परिप्फुड पुं [**परिस्फोट**] १ स्फोटन, भेदन; २ वि. फोड़ने वाला, विभेदक; "तमपडलपरिप्फुडं चेव तेअसा पज्जलंतरूवं" (कप्प)।

परिप्फुर अक [**परि+स्फुर्**] चलना। परिप्फुरदि (शौ); (नाट—उत्तर २८)।

परिप्फुरण न [**परिस्फुरण**] हिलन, चलन; (सण)।

परिप्फुरिअ वि [**परिस्फुरित**] स्फूर्ति-युक्त; "वयणु परिप्फुरिउ" (भवि)।

परिफंस पुं [**परिस्पर्श**] स्पर्श, छूना; (पि ७४; ३११)।

परिफंसण न [**परिस्पर्शन**] ऊपर देखो; (उप ६८६ टी)।

परिफग्गु वि [**परिफल्गु**] निस्सार, असार; (धर्मसं ६५३)।

परिफासिय वि [**परिस्पृष्ट**] व्याप्त; (दस ५, १, ७२)।

परिफुड देखो **परिप्फुड**=परिस्फुट; (पउम ३, ८; प्रासू ११६)।

परिफुडिय वि [**परिस्फुटित**] फूटा हुआ, भग्न; (पउम ६८, १०)।

परिफुर देखो **परिप्फुर**। परिप्फुरइ; (सण)। वकृ—**परिफुरंत**; (सण)।

परिफुरिअ देखो **परिप्फुरिय**; (सण)।

परिफुल्लिअ वि [**परिफुल्लित**] फूला हुआ, कुसुमित; (पिंग)।

परिफुस सक [**परि+स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना। वकृ—**परिफुसंत**; (धर्मवि १२६; १३६)।

परिफुसिय वि [**परिप्रोञ्छित**] पोंछा हुआ; (उप पृ ६४)।

परिफोसिय वि [**परिस्पृष्ट**] छुआ हुआ; "उदगपरि-फोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति" (णाया १, १६; उप ६४८ टी)।

परिबूहण न [**परिबृंहण**] वृद्धि, उपचय; (सूअ २, २, ६)।

परिब्भंत वि [दे] १ निषिद्ध, निवारित; २ भीरु, डरपोक; (दे ६, ७२)।

परिब्भंसिद (शौ) नीचे देखो; (नाट ५०)।

परिब्भट्ठ वि [**परिभ्रष्ट**] पतित, स्खलित; (गाया १, १३; सुपा ५०६; अभि १४४)।

परिब्भम सक [**परि + भ्रम्**] पर्यटन करना, भटकना। परिब्भमइ; (प्राकृ ७६; भवि; उत्र)। वकृ—**परिब्भमंत**; (सुर २, ८७; ३, ४; ४, ७१; भवि)।

परिब्भमण न [**परिभ्रमण**] पर्यटन; (महा)।

परिब्भमिअ वि [**परिभ्रान्त**] भटका हुआ; (वै ६३; सण; भवि)।

परिब्भीअ वि [**परिभीत**] भय-प्राप्त; (पउम ५३, ३६)।

परिब्भूअ वि [**परिभूत**] पराभव-प्राप्त; (सुपा २५८)।

परिभग्ग वि [**परिभग्न**] भाँगा हुआ; (आत्मानु १४)।

परिभट्ठ देखो **परिब्भट्ठ**; (महा; पि ८५)।

परिभणिर वि [**परि + भणितृ**] कहने वाला; (सण)।

परिभम देखो **परिब्भम**। परिभमइ; (महा)। वकृ—**परिभमंत**, **परिभममाण**; (महा; सण; भवि; संवेग १४)। संकृ—**परिभमिऊणं**; (पि ५८५)। हेकृ—**परिभमिउं**; (महा)।

परिभमिअ देखो **परिब्भमिअ**; (भवि)।

परिभमिर वि [**परिभ्रमितृ**] पर्यटन करने वाला; (सुपा २६६)।

परिभव सक [**परि+भू**] पराजय करना, तिरस्कारना। परिभवइ; (उव)। कर्म—परिभविज्जामि; (मोह १०८)। कृ—**परिभवणिज्ज**; (गाया १, ३)।

परिभव पुं [**परिभव**] पराभव, तिरस्कार; (औप; स्वप्न १०; प्रासू १७३)।

परिभवण न [**परिभवन**] ऊपर देखो; (राज)।

परिभवणा स्त्री [**परिभवन**] ऊपर देखो ; (औप)।

परिभविअ वि [**परिभूत**] अभिभुत ; (धर्मवि ३६)।

परिभाअ सक [**परि + भाजय्**] बाँटना, विभाग करना। परिभाएइ ; (कप्प)। वकृ—**परिभाइंत**, **परिभायंत**, **परिभाएमाण** ; (आचा २, ११, १८ ; गाया १, ७—पत्र ११७; १, १ ; कप्प)। कवकृ— **परिभाइज्जमाण**; (राज) । संकृ—**परिभाइत्ता**, **परिभायइत्ता** ; (कप्प ; औप)। हेकृ—**परिभाएउं** ; (पि ५७३)।

परिभाइय वि [**परिभाजित**] विभक्त किया हुआ; (आचा २, २, ३, २)।

परिभायंत देखो **परिभाअ**।

परिभायण न [**परिभाजन**] बँटवा देना ; (पिंड १६३)।

परिभाव सक [**परि + भावय्**] १ पर्यालोचन करना। २ उन्नत करना। परिभावइ ; (महा)। संकृ—**परिभाविऊण**; (महा)। कृ—**परिभावणीय**; (राज)।

परिभावइत्तु वि [**परिभावयितृ**] प्रभावक, उन्नति-कर्ता ; (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

परिभावि वि [**परिभाविन्**] परिभव करने वाला ; (अभि ७१)।

परिभास सक [**परि + भाष्**] १ प्रतिपादन करना, कहना। २ निन्दा करना। परिभासइ, परिभासंति, परिभासेइ, परिभासए ; (उत्त १८, २० ; सूअ १, ३, ३, ८ ; २, ७, ३६ ; विसे १४४३)। वकृ—**परिभासमाण** ; (पउम ५३, ६७)।

परिभासा स्त्री [**परिभाषा**] १ संकेत ; (संबोध ५८ ; भास १६)। २ तिरस्कार ; ३ चूर्णि, टीका-विशेष ; (राज)।

परिभासि वि [**परिभाषिन्**] परिभव-कर्ता ; "राइणियपरिभासी" (सम ३७) ।

परिभासिय वि [**परिभाषित**] प्रतिपादित ; (सूअनि ८८ ; भास २१)।

परिभिंद सक [**परि + भिद्**] भेदन करना। कवकृ—**परिभिज्जमाण**; (उप पृ ६७)।

परिभीय वि [**परिभीत**] डरा हुआ ; (उत्र)।

परिभुंज सक [**परि + भुञ्ज्**] १ खाना, भोजन करना। सेवन करना, सेवना। ३ बारंबार उपभोग में लेना। कर्म—परिभुंजिज्जइ, परिभुज्जइ ; (पि ५४६ ; गच्छ २, ५१)। वकृ—**परिभुंजंत, परिभुंजमाण** ; (निचू १ ; गाया १, १ ; कप्प)। कवकृ—**परिभुज्जमाण** ; (औप ; उप पृ ६७ ; गाया १, १—पत्र ३७)। हेकृ—**परिभोत्तु**; (दस ५, १)। कृ—**परिभोग, परिभोत्तव्व** ; (पिंड ३४ ; कस)।

परिभुंजण न [**परिभोजन**] परिभोग ; (उप १३४ टी)।

परिभुंजणया स्त्री [**परिभोजना**] ऊपर देखो ; (सम ४४)।

परिभुत्त वि [**परिभुक्त**] जिसका परिभोग किया गया हो वह ; (सुपा ३००)।

परिभूअ वि [**परिभूत**] अभिभूत, तिरस्कृत ; (सूअ २, ७, २ ; सुर १६, १२६ ; चेइय ७१४ ; महा)।

परिभोअ देखो **परिभोग** ; (अभि १११) ।
परिभोइ वि [**परिभोगिन्**] परिभोग करने वाला ; (पि ४०५ ; नाट—शकु ३५) ।
परिभोग पुं [**परिभोग**] १ बा र भोग ; (ठा ५, ३ टी ; आव ६) । २ जिसका ब. ार भोग किया जाय वह वस्त्र आदि ; (औप) । ३ जिसका एक ही वार भोग किया जाय—जो एक ही वार काम में लाया जाय वह—आहार, पान आदि ; (उवा) । ४ बाह्य वस्तुओं का भोग ; (आव ६) । ५ आसेवन ; (पराह १, ३) ।
परिभोग
परिभोत्तव्व } देखो **परिभुंज** ।
परिभोत्तु
परिमइल सक [**परि+मृज्**] मार्जन करना ; (संक्षि ३५) ।
परिमउअ वि [**परिमृदुक**] १ विशेष कोमल ; २ अत्यन्त सुकर, सरल ; (धर्मसं ७६१ ; ७६२) । स्त्री—°**उई**; (विसे ११६६) ।
परिमउलिअ वि [**परिमुकुलित**] चारों ओर से संकुचित; (सण) ।
परिमंडण न [**परिमण्डन**] अलंकरण, विभूषा ; (उत्त १६, ६) ।
परिमंडल वि [**परिमण्डल**] वृत्त, गोलाकार; (सूअ २, १, १५; उत्त ३६, २२; स ३१२; पाअ; औप; पराण १; ठा १, १) ।
परिमंडिय वि [**परिमण्डित**] विभूषित, सुशोभित; (कप्प; औप; सुर ३, १२) ।
परिमंथर वि [**परिमन्थर**] मन्द, धीमा; (गउड; स ७१६)।
परिमंथिअ वि [**परिमथित**] अत्यन्त आलोडित; (सम्मत्त २२६) ।
परिमंद वि [**परिमन्द**] मन्द, अशक्त; (सुर ४, २४०) ।
परिमग्ग सक [**परि+मार्गय्**] १ अन्वेषण करना, खोजना । २ माँगना, प्रार्थना करना । वकृ—**परिमग्गमाण**; (नाट—विक्र ३०) । संकृ—**परिमग्गेउं**; (महा) ।
परिमग्गि वि [**परिमार्गिन्**] खोज करने वाला; (गा२६१)।
परिमज्जिर वि [**परिमज्जितृ**] डूबने वाला; (सुपा ६) ।
परिमट्ठ वि [**परिमृष्ट**] १ घिसा हुआ; (से ६,२; ८, ४३)। २ प्रक्षालित; "परिमट्ठमेरुसिहरो" (से ४, ३७) । ३ मार्जित, शोधित; (कप्प) ।

परिमद्द सक [**परि+मर्दय्**] मर्दन करना । वकृ—**परिमद्द**-
य १२, १७२) ।
परिमद्द [**परिमर्दन**] मर्दन, मालिश; (कप्प; औप)।
परिमद्दा स्त्री [**परिमर्दा**] संबाधन, दबाना, पैचप्पी आदि; (निचू ३) ।
परिमन्न सक [**परि+मन्**] आदर करना । परिमन्नइ; (भवि)।
परिमल सक [**परि+मल्, मृद्**] १ घिसना । २ मर्दन करना। "जो मरणयालि परिमलइ हत्थु" (कुप्र ४५२),
"णलिणीसु भमसि परिमलसि सत्तलं मालइं पि णो मुअसि ।
तरलत्तणं तुह अहो महुअर जइ पाडला हरइ ॥"
(गा ६१९) ।
परिमल पुं [**परिमल**] १ कुंकुम-चन्दनादि-मर्दन; (से १, ६४) । २ सुगन्ध; (कुमा; पाअ) ।
परिमलण न [**परिमलन**] १ परिमर्दन; २ विचार; (गा ४२८ ; गउड) ।
परिमलिअ वि [**परिमलित, परिमृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह; (गा ६३७; से ७, ६२; महा; वज्जा ११८) ।
परिमहिय वि [**परिमहित**] पूजित; (पउम १, १) ।
परिमा (अप) देखो **पडिमा**; (भवि) ।
परिमाइ स्त्री [**परिमाति**] परिमाण; "जिणसासणि छज्जीवदयाइ व पंडियमरणि सुगइपरिमाइ व" (भवि) ।
परिमाण न [**परिमाण**] मान, माप, नाप; (औप; स्वप्न ४२; प्रासू ८७) ।
परिमास पुं [**परिमर्श**] स्पर्श; (णाया १, ६; गउड; से ६, ४८; ६, ७६) ।
परिमास पुं [**दे**] नौका का काष्ठ-विशेष; (णाया १, ६—पत्र १५७) ।
परिमासि वि [**परिमर्शिन्**] स्पर्श करने वाला; (पि ६३)।
परिमिज्ज नीचे देखो ।
परिमिण सक [**परि+मा**] नापना, तौलना । वकृ—**परिमिणंत**; (सुपा ७७) । कृ—**परिमिज्ज, परिमेय**; (पञ्च ५६; पउम ४६, २२) ।
परिमिअ वि [**परिमित**] परिमाण-युक्त; (कप्प; ठा ५, १; औप; पराह २, १) ।
परिमिअ वि [**परिवृत**] परिकिरित, वेष्टित; (पउम १०१, भवि) ।

परिमिला अक [**परि+म्लै**] म्लान होना। परिमिलादि (शौ); (पि १३६; ४७६)।

परिमिलाण वि [**परिम्लान**] म्लान, विच्छाय, निस्तेज; (महा)।

परिमिल्लिर वि [**परिमोक्तृ**] परित्याग करने वाला; (सण)।

परिमुअ सक [**परि+मुच्**] परित्याग करना। परिमुअइ; (सण)।

परिमुक्क वि [**परिमुक्त**] परित्यक्त; (सुपा २५२; महा; सण)।

परिमुट्ठ वि [**परिमृष्ट**] स्पृष्ट; (गा ४४)।

परिमुण सक [**परि+ज्ञा**] जानना। परिमुणसि; (वज्जा १०४)।

परिमुणिअ वि [**परिज्ञात**] जाना हुआ; (पउम १६, ६१; सण)।

परिमुस सक [**परि+मुष्**] चोरी करना। वकृ—**परिमुसंत**; (श्रा २७)। संकृ—**परिमुसिऊण**; (कर्पूर २८)।

परिमुस सक [**परि+मृश्**] स्पर्श करना, छूना। परिमुसइ; (भवि)।

परिमुसण न [**परिमोषण**] १ चोरी; २ वञ्चना, ठगाई; (गा २६)।

परिमुसिअ वि [**परिमृष्ट**] स्पृष्ट; (महानि ४; भवि)।

परिमूसण देखो **परिमुसण**; (गा २६)।

परिमेय देखो **परिमिण**।

परिमोक्कल वि [**दे. परिमुक्त**] स्वैर, स्वच्छन्दी; (भवि)।

परिमोक्ख पुं [**परिमोक्ष**] १ मोक्ष, मुक्ति; (आचा)। २ परित्याग; (सूअ १, १२, १०)।

परिमोय सक [**परि+मोचय्**] छोड़ाना, छुटकारा कराना। परिमोयह; (सूअ २, १, ३८)।

परिमोयण न [**परिमोचन**] मोक्ष, छुटकारा; (सुर ४, २५० ; औप)।

परिमोस पुं [**परिमोष**] चोरी; (महा)।

परियंच सक [**परि+अञ्च्**] १ पास में जाना। २ स्पर्श करना। ३ विभूषित करना। संकृ—**परिअंचिवि** (अप); (भवि)।

परियंच सक [**परि+अर्च्**] पूजना। संकृ—**परिअंचिवि** (अप); (भवि)।

परियंचण न [**पर्यञ्चन**] स्पर्श करना; (सुख ३, १)। देखो **पलियंचण**।

परियंचिअ वि [**पर्यञ्चित**] विभूषित; "पवरगामगाम-परियंचिउ" (भवि)।

परियंचिअ वि [**पर्यर्चित**] पूजित; (भवि)।

परियंद सक [**परि+वन्द्**] वन्दन करना, स्तुति करना। कवकृ—**परियंदिज्जमाण**; (औप)।

परियंदण न [**परिवन्दन**] वन्दन, स्तुति; (आचा)।

परियच्छ सक [**दृश्**] १ देखना। २ जानना। परियच्छइ; (भवि; उव), परियच्छंति; (उव)।

परियच्छिय देखो **परिकच्छिय**; (राज)।

परियत्थि स्त्री [**पर्यस्ति**] देखो **पल्हत्थिया**; "जत्तो वावइ पवणो परियत्थी दिज्जए तत्तो" (चेइय १३०)।

परियप्प सक [**परि+कल्पय्**] कल्पना करना, चिन्तन करना। वकृ—**परियप्पमाण**; (आचा १, २, १, २)।

परियप्पण न [**परिकल्पन**] कल्पना; (धर्मसं १२०८)।

परियय पुं [**परिचय**] जान-पहचान, विशेष रूप से ज्ञान; (गउड; से १५, ६६; अभि १३१)।

परियय वि [**परिगत**] अन्वित, युक्त; (से २२)।

परियाइ सक [**पर्या+दा**] १ समन्तात् ग्रहण करना। २ विभाग से ग्रहण करना। परियाइयह; (सूअ २, १, ३७)। संकृ—**परियाइत्ता**; (ठा ७)।

परियाइअ वि [**पर्यात्त**] संपूर्ण रूप से गृहीत; (ठा २, ३—पत्र ६३)।

परियाइअ देखो **परियाईय**; (ठा २, ३—पत्र ६३)।

परियाइणया स्त्री [**पर्यादान**] समन्तात् ग्रहण; (पण्ण ३४—पत्र ७७४)।

परियाइत्त वि [**पर्याप्त**] काफी; (राज)।

परियाईय वि [**पर्यायातीत**] पर्याय को अतिक्रान्त; (राज)।

परियाग देखो **पज्जाय**; (औप; उवा; महा; कप्प)।

परियागय वि [**पर्यागत**] १ पर्याय से आगत; (उत्त ५, २१; सुख ५, २१; णाया १, ३)। २ सर्वथा निष्पन्न; (णाया १, ७—पत्र ११६)।

परियाण सक [**परि+ज्ञा**] जानना। परियाणइ, परियाणाइ; (पि १७०; उवा)।

परियाण न [**परित्राण**] रक्षण; (सूअ १, १, २, ६; ७)।

परियाण न [**पर्यादान**] १ विनिमय, बदला, लेनदेन; २ समन्तात् दान; (भवि)।

परियाण न [**परियान**] १ गमन; (ठा १०)। २ वाहन, यान; (ठा ८)। ३ अवतरण; (ठा ३, ३)।

परियाणण न [**परिज्ञान**] जानकारी ; (स १३) ।
परियाणिअ वि [**परित्राणित**] परित्राण-युक्त ; (सूअ १, १, २, ७) ।
परियाणिअ वि [**परिज्ञात**] जाना हुआ, विदित ; (पउम ८८, ३३ ; रत्न १८ ; भवि) ।
परियाणिअ पुंन [**परियानिक**] १ यान, वाहन ; २ विमान-विशेष ; (ठा ८) ।
परियादि देखो **परियाइ**। परियादियति ; (कप्प) । संकृ—**परियादित्ता** ; (कप्प) ।
परियाय देखो **पज्जाय** ; (ठा ४, ४ ; सुपा १६ ; विसे २७६१; औप ; आचा ; उवा) । ६ अभिप्राय, मत; "सएहिं परियाएहिं लोयं बूया कडेति य" (सूअ १, १, ३, ६) । १० प्रव्रज्या, दीक्षा ; (ठा ३, २—पत्र १२६) । ११ ब्रह्मचर्य ; (आव ४) । १२ जिन-देव के केवल-ज्ञान की उत्पत्ति का समय ; (णाया १, ८) । °**थेर** पुं [°**स्थविर**] दीक्षा की अपेक्षा से वृद्ध ; (ठा ३, २) ।
परियायंतकरभूमि स्त्री [**पर्यायान्तकृद्भूमि**] जिन-देव के केवल ज्ञान की उत्पत्ति के समय से लेकर तदनन्तर सर्व-प्रथम मुक्ति पाने वाले के बीच के समय का अान्तर ; (णाया १, ८—पत्र १५४) ।
परियार सक [**परि+चारय्**] १ सेवा-शुश्रूषा करना । २ संभोग करना, विषय-सेवन करना । परियारेइ ; (ठा ३, १ ; भग) । वकृ— **परियारेमाण** ; (राज) । कवकृ—**परियारिज्जमाण** ; (ठा १०) ।
परियार पुं [**परिचार**] मैथुन, विषय-सेवन ; (पण्ण ३४—पत्र ७८० ; ठा ३, १) ।
परियारग वि [**परिचारक**] १ विषय-सेवन करने वाला ; (पण्ण २ ; ठा २, ४) । २ सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (विपा १, १) ।
परियारण न [**परिचारण**] १ सेवा-शुश्रूषा ; (सुज्ज १८—पत्र २६५) । २ काम-भोग ; (पण्ण ३४) ।
परियारणया, **परियारणा** स्त्री [**परिचारणा**] ऊपर देखो ; (पण्ण ३४ ; ठा ५, १) । °**सद्द** पुं [°**शब्द**] विषय-सेवन के समय का स्त्री का शब्द ; (निचू १)।
परियालोयण न [**पर्यालोचन**] विचार, चिन्तन; (सुपा ५००) ।
परियाव देखो **परिताव**=परिताप; (आचा; ओघ १५४) ।
परियावज्ज अक [**पर्या+पद्**] १ पीडित होना । २ रूपान्तर में परिणत होना । ३ सक. सेवना । परियावज्जइ, परियावज्जंति; (कप्प; आचा) ।
परियावज्जण न [**पर्यापादन**] रूपान्तर-प्राप्ति; (पिंड २८०) ।
परियावज्जणा स्त्री [**पर्यापादन**] आसेवन; (ठा ३, ४—पत्र १७४) ।
परियावण देखो **परितावण**; (सूअ २, २, ६२) ।
परियावणा स्त्री [**परितापना**] परिताप, संताप; (औप) ।
परियावणिया स्त्री [**परियापनिका**] कालान्तर तक अवस्थान, स्थिति; (णाया १, १४—पत्र १८६) ।
परियावण्ण, **परियावन्न** वि [**पर्यापन्न**] स्थित, अवस्थित; (आचा २, १, ११, ७; ८; भग ३४, २; कस) ।
परियावस सक [**पर्या+वासय्**] आवास कराना । परियावसे; (उत्त १८, ५४; सुख १८, ५४) ।
परियावसह पुं [**पर्यावसथ**] मठ, संन्यासी का स्थान; (आचा २, १, ८, २) ।
परियाविय वि [**परितापित**] पीडित; (पडि) ।
परियासिय वि [**परिवासित**] बासी रखा हुआ; (कस) ।
परिरंज सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना । परिरंजइ; (प्राकृ ७४) ।
परिरंभ सक [**परि+रभ्**] आलिंगन करना । परिरंभस्सु (शौ); (पि ४६७) । संकृ—**परिरंभिउं**; (कुप्र २४२)।
परिरंभण न [**परिरम्भन**] आलिङ्गन; (पाअ; गा ८३५; सुपा २; ३६६) ।
परिरक्ख सक [**परि+रक्ष्**] परिपालन करना । परिरक्खइ; (भवि) । कृ—**परिरक्खणीअ**; (सिक्खा ३१) ।
परिरक्खण न [**परिरक्षण**] परिपालन; (गा ६०१; भवि) ।
परिरक्खा स्त्री [**परिरक्षा**] ऊपर देखो; (पउम ५६, ५३; धर्मवि ५३; गउड) ।
परिरक्खिय वि [**परिरक्षित**] परिपालित; (भवि) ।
परिरद्ध वि [**परिरब्ध**] आलिङ्गित; (गा ३६८) ।
परिरय पुं [**परिरय**] १ परिधि, परिक्षेप; (उत्त ३६, ५६; पउम ८६, ६१; पव १५८; औप) । २ पर्याय, समानार्थक शब्द; "एगपरिरय त्ति वा एगपज्जाय त्ति वा एगणामभेद त्ति वा एगट्ठा" (आचू १) । ३ परिभ्रमण, फिर कर जाना; "अहवा थेरो, तस्स य अंतरा गड्डा डोंगरा वा, जे समत्था ते उज्जुएण

वच्चंति, जो असमत्थो सो परिरएणं—भमाडेण वच्चइ" (ओ- घभा २० टी)।

परिराय अक [परि+राज्] बिराजना, शोभना। वकृ— **परिरायमाण**; (कप्प)।

परिरिंख सक [परि+रिङ्ख्] चलना, फरकना, हिलना। वकृ—**परिरिंखमाण**; (उत्त ३३० टी)।

परिरुंभ सक [परि+रुध्] रोकना, अटकायत करना। कर्म—परिरुब्भइ; (गउड ४३४)। संकृ—**परिरंभिऊण**; (उवकु १)।

परिलंघि वि [**परिलङ्घिन्**] लङ्घन करने वाला; (गउड)।

परिलंबि वि [**परिलम्बिन्**] लटकने वाला; (गउड)।

परिलंभिअ वि [**परिलम्भित**] प्राप्त कराया हुआ; "सो ग- यवरो मुणीणं (मुणीहिं) वयाणि परिलंभिओ पसन्नप्पा" (पउम ८४, १)।

परिलग्ग वि [**परिलग्न**] लगा हुआ, ब्यासक्त; (उत्त ३५६ टी)।

परिलिअ वि [**दे**] लीन, तन्मय; (दे ६, २४)।

परिली अक [**परि+ली**] लीन होना। वकृ—**परिलिंत**, **परिलेंत**, **परिलीयमाण**; (णाया १, १—पत्र ५; औप; से ६, ४८; पण्ह १, ३; राय)।

परिली स्त्री [**दे**] आतोद्य-विशेष, एक तरह का बाजा; (राज)।

परिलीण वि [**परिलीन**] निलीन; (पाअ)।

परिलुंप सक [**परि+लुप्**] लुप्त करना, अ-दृष्ट करना। कवकृ—**परिलुप्पमाण**; (महा)।

परिलेंत देखो **परिली**=परि+ली।

परिलोयण न [**परिलोचन**, **परिलोकन**] अवलोकन, निरीक्षण; २ वि. देखने वाला; "जुगंतरपरिलोयणाए दिट्ठीए" (उवा)।

परिल्ल देखो **पर**=पर; (से ६, १७)।

परिल्लवास वि [**दे**] अज्ञात-गति; (दे ६, ३३)।

परिल्ली देखो **परिली**। वकृ—**परिल्लिंत**, **परिल्लेंत**; (औप)।

परिल्हस अक [**परि+स्रंस्**] गिर पडना, सरक जाना। परिल्हसइ; (हे ४, १९७)।

परिवइत्तु वि [**परिव्रजितृ**] गमन करने में समर्थ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

परिवंकड (अप) वि [**परिवक्र**] सर्वथा टेढ़ा; (भवि)।

परिवंच सक [**परि+वञ्चय्**] ठगना। संकृ—**परिवंचिऊण**; (सम्मत्त ११८)।

परिवंचिअ वि [**परिवञ्चित**] जो ठगा गया हो; (दे ४, १८)।

परिवंथि वि [**परिपन्थिन्**] विरोधी, दुश्मन; (पि १०५; नाट—विक ७)।

परिवंदण न [**परिवन्दन**] स्तुति, प्रशंसा; (आचा)।

परिवंदिय वि [**परिवन्दित**] स्तुत, पूजित; (पउम १, ६)।

परिवक्खिय देखो **परिवच्छिय**; (औप)।

परिवग्ग पुं [**परिवर्ग**] परिजन-वर्ग; (पउम २३, २४)।

परिवच्छिय देखो **परिकच्छिय**; "उज्जलनेवत्थहव्वपरिवच्छियं" (णाया १, १६ टी—पत्र २२१; औप)। देखो **परि- वत्थिय**।

परिवज्ज सक [**प्रति+पद्**] स्वीकार करना। परिवज्जइ; (भवि)।

परिवज्ज सक [**परि+वर्जय्**] परिहार करना, परित्याग करना। परिवज्जइ; (भवि)। संकृ—**परिवज्जिय**, **परिवज्जियाण**; (आचा; पि ५९२)।

परिवज्जण न [**परिवर्जन**] परित्याग; (धर्मसं ११२०)।

परिवज्जणा स्त्री [**परिवर्जना**] ऊपर देखो; (उव)।

परिवज्जिय वि [**परिवर्जित**] परित्यक्त; (उवा; भग; भवि)।

परिवट्ट देखो **परिवत्त**=परि+वर्तय्। परिवट्टइ; (भवि)। संकृ—**परिवट्टिवि** (अप); (भवि)।

परिवट्टण न [**परिवर्तन**] आवर्तन, आवृत्ति; "आगमपरिवट्टणं" (संबोध ३६)।

परिवट्टि देखो **परिवत्ति**; (मा ४२)।

परिवट्टिय देखो **परिवत्तिय**; (भवि)।

परिवट्टुल वि [**परिवर्तुल**] गोलाकार; (स ६८)।

परिवड अक [**परि+पत्**] पड़ना। वकृ—**परिवडंत**, **परि- वडमाण**; (पंच ५, ६२; ६७; उव पृ ३)।

परिवडिअ वि [**परिपतित**] गिरा हुआ; (सुपा ३६०; वसु; सति २३; हम्मीर ३०; पंचा ३, २४)।

परिवड्ढ अक [**परि+वृध्**] बढ़ना। परिवड्ढइ; (महा; भवि)। भवि—परिवड्ढिस्सइ; (औप)। कृ—**परिवड्ढंत**, **परिवड्ढमाण**, **परिवड्ढ माण**; (गा ३४६; णाया १, १३; महा; णाया १, १०)।

परिवड्ढण न [**परिवर्धन**] परिवृद्धि, बढ़ाव; (गउड; धर्मसं ८७५)।

परिवड्ढि स्त्री [**परिवृद्धि**] ऊपर देखो; (से ५, २)।

परिवड्ढिअ देखो **परिअड्ढिअ**=परिवर्धिन्; (औप १६ टि)।

परिवड्ढिअ वि [**परिवर्धित**] बढ़ाया हुआ ; (गा १४२ ; ४३१) ।

परिवड्ढेमाण देखो **परिवड्ढ** ।

परिवण्ण सक [**परि+वर्णय्**] वर्णन करना । कृ—**परिवण्णेअव्व** ; (भग) ।

परिवण्णिअ वि [**परिवर्णित**] जिसका वर्णन किया गया हो वह ; (आत्म ७) ।

परिवत्त देखो **परिअट्ट**=परि+वृत् । परिवत्तई ; (उत्त ३३, १) । परिवत्तसु ; (गा ८०७) । वकृ—**परिवत्तंत** ; (गा २८३) ।

परिवत्त देखो **परिअट्ट**=परि+वर्तय् । वकृ—**परिवत्तेंत, परिवत्तयंत** ; (स ६ ; सूअ १, ५, १, १५) । संकृ—**परिवत्तिऊण**; (काल) ।

परिवत्त देखो **परिअट्ट**=परिवर्त ; "विहियरूवपरिवत्तो" (कुप्र १३४) । २ संचरण, भ्रमण ; (राज) ।

परिवत्त देखो **परिअत्त**=परिवृत्त ; (काल) ।

परिवत्तण देखो **पडिअत्तण**; (पि २८६; नाट—विक्र ८३) ।

परिवत्तर (अप) वि [**परिपक्त्रिम**] पकाया गया, गरम किया गया; "अंगु मलेवि सुअंधामोएं निमज्जिउ परिवत्तरतोएं" (भवि) ।

परिवत्ति वि [**परिवर्तिन्**] बदलाने वाला; "रूवपरिवत्तिणी विज्जा" (कुप्र १२६; महा) ।

परिवत्तिय देखो **परिअट्टिय**; (सुपा २६२) ।

परिवत्थ न [**परिवस्त्र**] वस्त्र, कपड़ा; (भवि) ।

परिवत्थिय वि [**परिवस्त्रित**] आच्छादित; "उज्जलनेवच्छहत्थ(?व्व)परिवत्थियं" (औप) । देखो **परिवच्छिय** ।

परिवद्ध देखो **परिवड्ढ** । वकृ—**परिवद्धमाण**; (राज) ।

परिवन्न देखो **पडिवन्न**; (उप १३६ टी) ।

परिवय सक [**परि+वद्**] निन्दा करना । परिवएज्जा, परिवयंति; (आचा) । वकृ—**परिवयंत**; (पण्ह १, ३) ।

परिवरिअ वि [**परिवृत**] परिकरित, वेष्टित; (सुपा १२५) ।

परिवलइअ वि [**परिवलयित**] वेष्टित; (सुख १०, १) ।

परिवस अक [**परि+वस्**] वसना, रहना । परिवसइ, परिवसंति; (भग ; महा; पि ४१७) ।

परिवसण न [**परिवसन**] आवास; (राज) ।

परिवसणा स्त्री [**परिवसना**] पर्युषणा-पर्व; (निचू १०) ।

परिवसिअ वि [**पर्युषित**] रहा हुआ, वास किया हुआ; (सण) ।

परिवह सक [**परि+वह्**] वहन करना, ढोना । २ अक. चालू रहना । परिवहइ; (कप्प) । परिवहंति; (गउड) । वकृ—**परिवहंत**; (पिंड ३५६) ।

परिवहण न [**परिवहन**] ढोना; (राज) ।

परिवा अक [**परि+वा**] सूखना । परिवायइ ; (गउड) ।

परिवाइ वि [**परिवादिन्**] निन्दा करने वाला; (उव) ।

परिवाइय वि [**परिवाचित**] पढ़ा हुआ; (पउम ३७, १५) ।

परिवाई स्त्री [**परिवाद**] कलङ्क-वार्ता; "दइयस्स ताव वत्ता जणपरिवाई लहुं पत्ता" (पउम ६५, ४१) ।

परिवाड सक [**घटय्**] १ घटाना, संगत करना । २ रचना, निर्माण करना । परिवाडेइ; (हे ४, ५०) ।

परिवाडल देखो **परिपाडल**; (गउड) ।

परिवाडि स्त्री [**परिपाटि**] १ पद्धति, रीति; (विसे १०८५)। २ पंक्ति, श्रेणि; (उत्त १, ३२) । ३ क्रम, परंपरा; (संवे ६) । ४ सूत्रार्थ-वाचना, अध्यापन; "थिरपरिवाडी गहियवक्को" (धर्मवि ३६), "एगत्थीहिं वत्तिं न करे परिवाडिदाणमवि तासिं" (कुलक ११) ।

परिवाडिअ वि [**घटित**] रचित; (कुमा) ।

परिवाडी देखो **परिवाडि**; "परिवाडीआगयं हवइ रज्जं" (पउम ३१, १०६; पाअ) ।

परिवाद पुं [**परिवाद**] निन्दा, दोष-कीर्तन; (धर्मसं ६५४)।

परिवादिणी स्त्री [**परिवादिनी**] वीणा-विशेष; (राज) ।

परिवाय देखो **परिवाद**; (कप्प; औप; पउम ६५, ६०; गाया १, १; स ३२; आत्महि १५) ।

परिवायग, **परिवायय** पुं [**परिव्राजक**] संन्यासी, बावा; (सण; सुर १५, ५) ।

परिवार सक [**परि+वारय्**] १ वेष्टन करना । २ कुटुम्ब करना । वकृ—**परिवारयंत**; (उत्त १३, १४) । संकृ—**परिवारिया**; (सूअ १, ३, २, २) ।

परिवार पुं [**परिवार**] गृह-लोक, घर के मनुष्य; (औप; महा; कुमा) । २ न. म्यान; (पाअ) ।

परिवारण न [**परिवारण**] १ निराकरण; (पण्ह १, १—पत्र १६) । २ आच्छादन, ढकना ; (दे १, ८६) ।

परिवारिअ वि [**दे**] घटित, रचित ; (दे ६,३०) ।

परिवारिअ वि [**परिवारित**] १ परिवार-संपन्न; २ वेष्टित; "जहा से उडुवई चंदे नक्खत्तपरिवारिए" (उत्त ११, २५; काल) ।

परिवाल देखो **परिआल**। परिवालइ; (दे ६, ३२ टी)।

परिवाल सक [**परि+पालय्**] पालन करना। परिवालइ, परिवालेइ; (भवि; महा)। वकृ—**परिवालयंत**; (सुर १, १७१)। संकृ—**परिवालिय**; (राज)।

परिवाल देखो **परिवार**=परिवार; (णाया १, ८—पत्र १३१)।

परिवाविय वि [**परिवापित**] उखाड़ कर फिर बोया हुआ; (ठा ४, ४)।

परिवाविया स्त्री [**परिवापिता**] दीक्षा-विशेष, फिर से महाव्रतों का आरोपण; (ठा ४, ४)।

परिवास पुं [**दे**] खेत में सोने वाला पुरुष; (दे ६, २६)।

परिवास न [**परिवासस्**] वस्त्र, कपड़ा; "जंघोरुवरगुज्झंतरपासइँ सुनियत्थइँ मि भोगपरिवासइँ" (भवि)।

परिवासि वि [**परिवासिन्**] बसने वाला; (सुपा ४२)।

परिवासिय वि [**परिवासित**] सुवासित, सुगन्ध-युक्त; "मयपरिमलपरिवासियदूरें" (भवि)।

परिवाह सक [**परि+वाहय्**] १ वहन कराना। २ अश्वादि खेलाना, अश्वादि-क्रीडा करना; "तिवग्गीयसिक्खतुरयं परिवाहइ वाहियालीए" (महा)।

परिवाह पुं [**परिवाह**] जल का उछाल, बहाव; "भरिउच्चरंतपसरिअपिअसंभरणपिसुणो वराईए।
परिवाहो विअ दुक्खस्स वहइ णअणट्ठिओ वाहो" (गा ३७७)।

परिवाह पुं [**दे**] दुर्विनय, अ-विनय; (दे ६, २३)।

परिवाहण न [**परिवाहन**] अश्वादि-खेलन; "आसपरिवाहणनिमित्तं गएण" (स ८१; महा)।

परिविआल सक [**परि+विश्**] वेष्टन करना। परिविआलइ; (प्राकृ ७५; धात्वा १४४)।

परिविचिट्ठ अक [**परिवि+स्था**] १ उत्पन्न होना। २ रहना। परिविचिट्ठइ; (आचा १, ४, २, २; पि ४८३)।

परिविच्छय वि [**परिविक्षत**] सर्वथा छिन्न—हत; (सूअ १, ३, १, २)।

परिविट्ठ वि [**परिविष्ट**] परोसा हुआ; (स १८९; सुपा ६२३)।

परिवित्तस अक [**परिवि+त्रस्**] डरना। परिवित्तसंति; परिवित्तसेज्जा; (आचा १, ६, ५, ५)।

परिवित्ति स्त्री [**परिवृत्ति**] परिवर्तन; (सुपा ५८७)।

परिविद्ध वि [**परिविद्ध**] जो बिंधा गया हो वह; (सुपा २७०)।

परिविद्धंस सक [**परिवि+ध्वंसय्**] १ विनाश करना। २ परित्याग उड़ जाना। संकृ—**परिविद्धंसित्ता**; (भग)।

परिविद्धत्थ वि [**परिविध्वस्त**] १ विनष्ट; २ परितापित; (सूअ २, ३, १)।

परिविप्फुरिय वि [**परिविस्फुरित**] स्फूर्ति-युक्त; (सण)।

परिवियलिय वि [**परिविगलित**] चुआ हुआ, टपका हुआ; (सण)।

परिवियलिर वि [**परिविगलितृ**] झरने वाला, चूने वाला; (सण)।

परिविरल वि [**परिविरल**] विशेष विरल; (गउड; गा ३२६)।

परिविलसिर वि [**परिविलसितृ**] विलासी; (सण)।

परिविस सक [**परि+विश्**] वेष्टन करना। परिविसइ; (प्राकृ ७५)।

परिविस सक [**परि+विष्**] परोसना, खिलाना। संकृ—**परिविस्स**; (उत्त १४, ६)।

परिविसाय पुं [**परिविषाद**] समन्तात् खेद; (धर्मवि १२६)।

परिविहुरिय वि [**परिविधुरित**] अति पीड़ित; "नरसिंसुदेविकरपरिविहुरिओ गयं मोत्तुं" (सुर १५, १५)।

परिवीअ सक [**परि+वीजय्**] पँखा करना, हवा करना। परिवीएमि; (स ६७)।

परिवीइअ वि [**परिवीजित**] जिसको हवा की गई हो वह; (उत्त २११ टी)।

परिवीढ न [**परिपीठ**] आसन-विशेष; (भवि)।

परिवुड वि [**परिवृत**] परिकरित, वेष्टित; (णाया १, १४; धर्मवि २४; औप; महा)।

परिवुत्थ वि [**पर्युषित**] १ रहा हुआ; २ न. वास, निवास; (गउड ५४०)। देखो **परिवुसिअ**।

परिवुद देखो **परिवुड**; (प्राकृ १२)।

परिवुदि स्त्री [**परिवृति**] वेष्टन; (प्राकृ १२)।

परिवुसिअ वि [**पर्युषित**] स्थित, रहा हुआ; "जे भिक्खू अचेले परिवुसिए" (आचा १, ८, ७, १; १, ६, २, २)। देखो **परिवुत्थ**।

परिवूढ वि [**परिवृढ**] समर्थ; (उत्त ७, २)।

परिवूढ वि [**परिवृद्ध**] स्थूल; (भास ८९; उत्त ७, ६)।

परिवूढ वि [**पर्युद्व्यूढ**] वहन किया हुआ, ढोया हुआ; "न चइस्सामि अहं पुण चिरपरिवूढं इमं लोहं" (धर्मवि ७)।

परिवूहण देखो **परिवूहण**; (राज)।

परिवेढ सक [परि+वेष्ट्] बेढना, लपेटना। परिवेढइ ; (भवि)। संकृ—**परिवेढिय** ; (निचू १)।
परिवेढ पुं [परिवेष्ट] वेष्टन, घेरा; "जा जग्गइ तो पिच्छइ सेवापरसुहडपरिवेढं" (सिरि ६३८)।
परिवेढाविय वि [परिवेष्टित] वेष्टित कराया हुआ ; (पि ३०४)।
परिवेढिय वि [परिवेष्टित] बेढ़ा हुआ, घेरा हुआ, लपेटा हुआ; (उप ७६८ टी; धरण २० ; पि ३०४)।
परिवेय अक [परि+वेप्] काँपना। "कायरवरिणि परिवेयइ" (भवि)।
परिवेल्लिर वि [परिवेल्लितृ] कम्पन-शील; (गउड)।
परिवेव अक [परि+वेप्] काँपना। वकृ—**परिवेवमाण** ; (आचा)।
परिवेस सक [परि+विष्] परोसना। परिवेसइ ; (सुपा ३८६)। कर्म—परिवेसिज्जइ ; (गाया १, ८)। वकृ—**परिवेसंत, परिवेसयंत**; (पिंड १२० ; सुपा ११; गाया १, ७)।
परिवेस पुं [परिवेश, °ष] १ वेष्टन ; (गउड)। २ मंडल, मेघादि से सूर्य-चंद्र का वेष्टनाकार मंडल; "परिवेसो अंबरे फरुसवयणो" (पउम ६६, ४७; स ३१२ टी; गउड)।
परिवेसण न [परिवेषण] परोसना ; (स १८७ ; पिंड ११६)।
परिवेसणा स्त्री [परिवेषणा] ऊपर देखो; (पिंड ४४५)।
परिवेसि [परिवेशिन्] समीप में रहने वाला ; (गउड)।
परिव्वअ सक [परि+व्रज्] १ समन्ताद् गमन करना। २ दीक्षा लेना। परिव्वए; परिव्वएज्जासि ; (सूअ १, १, ४, ३; पि ४६०)।
परिव्वअ वि [परिवृत] परिवेष्टित ; "तारापरिव्वओ विव सरयपुरिणमाचंदो" (वसु)।
परिव्वअ वि [परिव्यय] विशेष व्यय; (नाट—मृच्छ ७)।
परिव्वह सक [परि+वह्] वहन करना, धारण करना। परिव्वहइ; (संबोध २२)।
परिव्वाइया स्त्री [परिव्राजिका] संन्यासिनी ; (गाया १, ८; महा)।
परिव्वाज (शौ) पुं [परि+व्राज्] संन्यासी; (चारु ४६)।
परिव्वाजअ (शौ) पुं [परिव्राजक] संन्यासी ; (पि २८७ ; नाट—मृच्छ ८५)।
परिव्वाजिआ (शौ) देखो **परिव्वाइया**; (मा २०)।
परिव्वाय देखो **परिव्वाज**; (सूअनि ११२; औप)।
परिव्वायग, **परिव्वायय** पुं [परिव्राजक] संन्यासी, साधु; (भग)।
परिव्वायय वि [पारिव्राजक] परिव्राजक-संबन्धी; (कप्प)।
परिस देखो **फरिस**=स्पर्श; (गउड; चारु ४२)।
परिसंक अक [परि+शङ्क्] भय करना, डरना। वकृ—**परिसंकमाण**; (सुअ १, १०, २०)।
परिसंकिय वि [परिशङ्कित] भीत; (परह १, ३)।
परिसंखा सक [परिसं+ख्या] १ अच्छी तरह जानना। २ गिनती करना। संकृ—**परिसंखाय**; (दस ७, १)।
परिसंखा स्त्री [परिसंख्या] संख्या, गिनती; (पउम २, ४६; जीवस ४०; पव—गाथा १३; तंदु ४; सरण)।
परिसंग पुं [परिषङ्ग] संग, सोहबत; (हम्मीर १६)।
परिसंग पुं [परिष्वङ्ग] आलिङ्गन; (पउम २१, ५२)।
परिसंगय वि [परिसंगत] युक्त, सहित; (धर्मवि १३)।
परिसंठव सक [परिसं+स्थापय्] संस्थापन करना। परिसंठवहु (अप); (पिंग)। वकृ—**परिसंठविंत**; (उपपं ४३)।
परिसंठविय वि [परिसंस्थापित] संस्थापित; (तंदु ३८)।
परिसंठिय वि [परिसंस्थित] स्थित, रहा हुआ; (महा)।
परिसंत वि [परिश्रान्त] थका हुआ; (महा)।
परिसंथविय वि [परिसंस्थापित] आश्वासित; (स ५६६)।
परिसक्क सक [परि+ष्वष्क्] चलना, गमन करना, इधर-उधर घूमना। परिसक्कइ; (उप ६ टी; कुप्र १७५)। वकृ—**परिसक्कंत, परिसक्कमाण**; (काप्र ६१७; स ४१; १३६)। संकृ—**परिसक्किऊण**; (सुपा ३१३)। कृ—**परिसक्कियव्व**; (स १६२)।
परिसक्कण न [परिष्वष्कण] परिभ्रमण; (से ५, ५५; १३, ५६; सुपा २०१)।
परिसक्किअ वि [परिष्वष्कित] १ गत; (भवि)। २ न. परिक्रमण, परिभ्रमण; (गा ६०६)।
परिसक्किर वि [परिष्वष्कितृ] गमन करने वाला; (गाया १, १; पि ५६६)।
परिसज्जिअ (अप) वि [परिष्वक्त] आलिंगित; (सण)।
परिसडिय वि [परिशटित] सड़ा हुआ, विनष्ट; (गाया १, २; औप)।

परिसण्ह वि [**परिश्लक्ष्ण**] सूक्ष्म, छोटा; (से १, १)।
परिसन्न वि [**परिषण्ण**] जो खिन्न हुआ हो, पीडित; (पउम १७, ३०)।
परिसप्प सक [**परि + सृप्**] चलना। परिसप्पइ; (नाट—विक्र ६१)।
परिसप्पि वि [**परिसर्पिन्**] १ चलने वाला; (कप्प)। २ पुंस्त्री. हाथ और पैर से चलने वाली जन्तु-जाति—नकुल, सर्प आदि प्राणि-गण। स्त्री—**°णी**; (जीव २)।
परिसम देखो **परिस्सम**; (महा)।
परिसमत्त वि [**परिसमाप्त**] संपूर्ण, जो पूरा हुआ हो वह; (से १५, ६५; सुर १५, २५०)।
परिसमत्ति स्त्री [**परिसमाप्ति**] समाप्ति, पूर्णता; (उप ३५७; स ५२)।
परिसमापिय वि [**परिसमापित**] जो समाप्त किया गया हो, पूरा किया हुआ; (विसे ३६०२)।
परिसमाव सक [**परिसम् + आप्**] पूर्ण करना। संकृ—**परिसमाविअ**; (अभि ११६)।
परिसर पुं [**परिसर**] नगर आदि के समीप का स्थान; (औप; सुपा १३०; मोह ७६)।
परिसल्लिय वि [**परिशल्यित**] शल्य-युक्त; (सण)।
परिसव सक [**परि + स्रु**] झरना, टपकना। वकृ—**परिसवंत**; (तंदु ३६; ४१)।
परिसह पुं [**परिषह**] देखो **परीसह**; (भग)।
परिसा स्त्री [**परिषद्**] १ सभा, पर्षद्; (पाअ; औप; उवा; विपा १, १)। २ परिवार; (ठा ३, २—पत्र १२७)।
परिसाइ देखो **परिस्साइ**; (राज)।
परिसाइयाण देखो **परिसाव**।
परिसाड सक [**परि+शाटय्**] १ त्याग करना। २ अलग करना। परिसाडेइ; (कप्प; भग)। संकृ—**परिसाडइत्ता**; (भग)।
परिसाडणा स्त्री [**परिशाटना**] पृथक्करण; (सुअनि ७; २०)।
परिसाडि वि [**परिशाटिन्**] परिशाटन-युक्त; (ओघ ३१)।
परिसाडि स्त्री [**परिशाटि**] परिशाटन, पृथक्करण; (पिंड ५५२)।
परिसाम अक [**शम्**] शान्त होना। परिसामइ; (हे ४, १६७)।
परिसाम वि [**परिश्याम**] नीचे देखो; (गउड)।
परिसामल वि [**परिश्यामल**] कृष्ण, काला; (गउड)।
परिसामिअ वि [**शान्त**] शान्त, शम-युक्त; (कुमा)।
परिसामिअ वि [**परिश्यामित**] कृष्ण किया हुआ; (गाया १, १)।
परिसाव सक [**परि+स्रावय्**] १ निचोड़ना। २ गालना। संकृ—**परिसाइयाण**; (आचा २, १, ८, १)।
परिसावि देखो **परिस्सावि**; (बृह १)।
परिसाहिय वि [**परिकथित**] प्रतिपादित, उक्त; (सण)।
परिसिंच सक [**परि + सिच्**] सींचना। परिसिंचिज्जा; (उत्त २, ६)। वकृ—**परिसिंचमाण**; (णाया १, १)। कवकृ—**परिसिच्चमाण**; (कप्प; पि ५४२)।
परिसिट्ठ वि [**परिशिष्ट**] अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ; (आचा १, २, ३, ५)।
परिसिढिल वि [**परिशिथिल**] विशेष शिथिल, ढीला; (गउड)।
परिसित्त वि [**परिषिक्त**] १ सींचा हुआ; (गा १८५; सण)। २ न. परिषेक, सेचन; (पण्ह-१, १)।
परिसिल्ल वि [**पर्षद्वत्**] परिषद् वाला; (बृह ३)।
परिसील सक [**परि+शीलय्**] अभ्यास करना, आदत डालना। संकृ—**परिसीलिवि** (अप); (सण)।
परिसीलण न [**परिशीलन**] अभ्यास, आदत; (रंभा; सण)।
परिसीलिय वि [**परिशीलित**] अभ्यस्त; (सण)।
परिसीसग देखो **पडिसीसअ**; (राज)।
परिसुक्क वि [**परिशुष्क**] खूब सूखा हुआ; (विपा १, २; गउड)।
परिसुण्ण वि [**परिशून्य**] खाली, रिक्त, सुन्न; (से ११, ८७)।
परिसुत्त वि [**परिसुप्त**] सर्वथा सोया हुआ; (नाट—उत्तर २३)।
परिसुद्ध वि [**परिशुद्ध**] निर्मल, निर्दोष; (उव; गउड)।
परिसुद्धि स्त्री [**परिशुद्धि**] विशुद्धि, निर्मलता; (गउड; द ६५)।
परिसुन्न देखो **परिसुण्ण**; (विसे २८५०; सण)।
परिसुस (अप) सक [**परि+शोषय्**] सुखाना। संकृ—**परिसुसिवि** (अप); (सण)।
परिसूअणा स्त्री [**परिसूचना**] सूचना; (सुपा ३०)।
परिसेय पुं [**परिषेक**] सेचन; (ओघ ३४७)।

परिसेस पुं [**परिशेष**] १ बाकी बचा हुआ, अवशिष्ट; (से १०, २३; पउम ३५, ४०; गा ८८; कम्म ६, ६०)। २ अनुमान-प्रमाण का एक भेद, पारिशेष्य-अनुमान; (धर्मसं ६८; ६६)।

परिसेसिअ वि [**परिशेषित**] १ बाकी बचा हुआ; (भग)। २ परिच्छिन्न, निर्णीत ;

"डज्झसि डज्झसु कड्ढसि
कड्ढसु अह फुडसि हिअअ ता फुडसु।
तहवि परिसेसिओ च्चिअ
सो हु मए गलिअसब्भावो" (गा ४०१)।

परिसेह पुं [**परिषेध**] प्रतिषेध, निवारण; "पावट्ठाणाण जो उ परिसेहो, भाणज्झयणाईणं जो य विही, एस धम्मकसो" (काल)।

परिसोण वि [**परिशोण**] लाल रँग का; (गउड)।

परिसोसण न [**परिशोषण**] सुखाना; (गा ६२८)।

परिसोसिअ वि [**परिशोषित**] सुखाया हुआ; (सण)।

परिसोह सक [**परि+शोधय्**] शुद्ध करना। कवकृ— **परिसोहिज्जंत**; (सण)।

परिस्सअ सक [**परि+स्वञ्ज्**] आलिंगन करना। परिस्सअदि (शौ); (पि ३१५)। संकृ—**परिस्सइअ**; (पि ३१५; नाट—शकु ७२)।

परिस्संत देखो **परिसंत**; (णाया १, १ ; स्वप्न ४०; अभि २१०)।

परिस्सज (शौ) देखो **परिस्सअ**। परिस्सजह; (उत्तर १७६)। वकृ—**परिस्सजंत**; (अभि १३३)। संकृ—**परिस्सजिअ**; (अभि १२५)।

परिस्सम पुं [**परिश्रम**] मेहनत; (धर्मसं ७८८, स्वप्न १०; अभि ३६)।

परिस्सम अक [**परि+श्रम्**] १ मेहनत करना। २ विश्राम लेना। परिस्सम्मइ; (विसे ११६७; धर्मसं ७८६)।

परिस्सव सक [**परि+स्रु**] चूना, झरना, टपकना। वकृ— **परिस्सवमाण**; (विपा १, १)।

परिस्सव पुं [**परिस्रव**] आस्रव, कर्म-बन्ध का कारण; (आचा)।

परिस्सह देखो **परीसह**; (आचा)।

परिस्साइ देखो **परिस्सावि**=परिस्राविन्; (ठा ४, ४— पत्र २७१)।

परिस्साव देखो **परिसाव**। संकृ—**परिस्सावियाण**; (पि ५६२)।

परिस्सावि वि [**परिस्राविन्**] १ कर्म-बन्ध करने वाला; (भग २५, ६)। २ चूने वाला, टपकने वाला; ३ गुह्य बात को प्रकट कर देने वाला ; (गच्छ १, २२; पंचा १५, १४)।

परिस्सावि वि [**परिश्राविन्**] सुनाने वाला ; (द्रव्य ४६)।

परिह सक [**परि+धा**] पहिरना। परिहइ; (धर्मवि १५०; भवि), " सव्वंगीणेवि परिहए जंबू रयणमयालंकारे " (धर्मवि १४६)।

परिह पुं [**दे**] रोष, गुस्सा; (दे ६, ७)।

परिह पुं [**परिघ**] अर्गला, आगल ; (अणु)।

परिहच्छ वि [**दे**] १ पटु, दक्ष, निपुण; (दे ६, ७६; भवि)। २ पुं. मन्यु, रोष, गुस्सा; (दे ६, ७१)। देखो **परिहत्थ**।

परिहच्छ देखो **पडिहच्छ**; (औप)।

परिहट्ट सक [**मृद्, परि+घट्टय्**] मर्दन करना, चूर करना, कचड़ना। परिहट्टइ; (हे ४, १२६; नाट—साहित्य ११६)।

परिहट्ट सक [**वि+लुल्**] १ मारना, मार कर गिरा देना। २ सामना करना। ३ लूट लेना। ४ अक. जमीन पर लोटना। परिहट्टइ; (प्राकृ ७३)।

परिहट्टण न [**परिघट्टन**] १ अभिघात, आघात; (से १०, ४१)। २ घर्षण, घिसना; (से ८, ४३)।

परिहट्टि स्त्री [**दे**] आकृष्टि, आकर्षण, खींचाव; (दे ६, २१)।

परिहट्टिअ वि [**मृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह; " परिहट्टिओ माणो " (कुमा; पाअ)।

परिहण न [**दे, परिधान**] वस्त्र, कपड़ा; (दे ६, २१; पाअ; हे ४, ३४१; सुर १, २५; भवि)।

परिहत्थ पुं [**दे**] १ जलजन्तु-विशेष; "परिहत्थमच्छपुंछच्छड-अच्छोडणपोच्छलंतसलिलोहं" (सुर १३, ४१), "पोक्ख-रिणी....... परिहत्थभमंतमच्छछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविय-रियसद्दुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया" (णाया १, १३— पत्र १७६)। २ वि. दक्ष, निपुण; "अन्ने रणपरिहत्था सूरा" (पउम ६१, १; पण्ह १, ३—पत्र ५५; पाअ; आव ४)। ३ परिपूर्ण; (औप; कप्प)। देखो **परिहच्छ, पडिहत्थ**।

परिहर सक [**परि+धृ**] धारण करना। संकृ—**परि-हरिअ**; (उत्त १२, ६)।

परिहर सक [**परि+हृ**] १ त्याग करना, छोड़ना । २ करना । ३ परिभोग करना, आसेवन करना । परिहरइ; (हे ४, २५९; उव; महा) । परिहरंति; (भग १५—पत्र ६६७) । वकृ—**परिहरंत**, **परिहरमाण**; (गा ११६; राज) । संकृ—**परिहरिअ**; (पिंग) । हेकृ—**परिहरित्तए**, **परिहरिउं**; (ठा ५, ३; काप्र ४०८) । कृ—**परिहरणीअ**, **परिहरिअव्व**; (पि ५७१; गा २२७; ओघ ५६; सुर १४, ८३; सुपा ३३६; ५८८; कप्प २, ५) ।

परिहरण न [**परिहरण**] १ परित्याग, वर्जन; (महा) । २ आसेवन, परिभोग; (ठा १०) ।

परिहरणा स्त्री [**परिहरणा**] ऊपर देखो; (पिंड १६७), " परिहरणा होइ परिभोगो " (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८) ।

परिहरिअ वि [**परिहृत**] परित्यक्त, वर्जित; (महा; सण; भवि) ।

परिहरिअ देखो **परिहर**=परि+धृ, हृ ।

परिहरिअ वि [**परिधृत**] धारण किया हुआ;

" परिहरिअकणअकुंडलगंडत्थलमणहरेसु सवणेसु ।
अगणुअ ! समअवसेणं परिहिज्जइ तालवेंटजुअं ॥"
(गा ३६८ अ) ।

परिहलाविअ पुं [**दे**] जल-निर्गम, मोरी, पनाला; (दे ६, २६) ।

परिहव सक [**परि+भू**] पराभव करना । वकृ—**परिहवंत**; (वव १) । कृ—**परिहवियव्व**; (उप १०३६) ।

परिहव पुं [**परिभव**] पराभव, तिरस्कार; (से १३, ४६; गा ३६६; हे ३, १८०) ।

परिहवण न [**परिभवन**] ऊपर देखो; (स ५७२) ।

परिहविय वि [**परिभूत**] पराजित, तिरस्कृत; (उप पृ १८०) ।

परिहस सक [**परि+हस्**] उपहास करना, हँसी करना । परिहसइ; (नाट) । कर्म—परिहसीअदि (शौ); (नाट—शकु २) ।

परिहस्स वि [**परिह्रस्व**] अत्यन्त लघु; (स ८) ।

परिहा अक [**परि+हा**] हीन होना, कम होना । परिहाइ, परिहायइ; (उव; सुख २, ३०) । भवि—परिहाइस्सदि (शौ); (अभि ६) । कवकृ—**परिहायंत**; **परिहायमाण**; (सुर १०, ६; १२, १४; णाया १, १३; औप; ठा ३, ३), **परिहीअमाण**; (पि ५४५) ।

परिहा सक [**परि+धा**] पहिरना । भवि—परिहिस्सामि; (प्राचा २, ६, ३, २) । संकृ—**परिहिऊण**, **परिहित्ता**; (कुप्र ७२; सूत्र १, ४, २, २५) । कृ—**परिहियव्व**; (स ३१५) ।

परिहा स्त्री [**परिखा**] खाई; (उर ८, २; पाअ) ।

परिहाइअ वि [**दे**] परिक्षीण; (षड्) ।

परिहाइवि देखो **परिहाव**=परि+धापय् ।

परिहाण न [**परिधान**] १ वस्त्र, कपड़ा; (कुप्र ५६; सुर ५५) । २ वि. पहिरने वाला; " नहविलया सलिलवल्कलपरिहाणा " (पउम ११, ११६) ।

परिहाणि स्त्री [**परिहाणि**] ह्रास, नुकसान, हानि; (सम ६७; उत ३२६; जी ३३; प्रासू ३६) ।

परिहाय वि [**दे**] क्षीण, दुर्बल; (दे ६, २५; पाअ) ।

परिहायंत }
परिहायमाण } देखो **परिहा**=परि+हा ।

परिहार पुं [**परिहार**] १ परित्याग, वर्जन; (गउड) । २ परिभोग, आसेवन; "एवं खलु गोसाला ! वणस्सइकाइयाओ पउट्टपरिहारं परिहरंति" (भग १५) । ३ परिहार-विशुद्धि-नामक संयम-विशेष; (कम्म ४, १२; २१) । ४ विषय; (वव १) । ५ तप-विशेष; (ठा ५, २; वव १) । °**विसुद्धिअ**, °**विसुद्धीअ** न [°**विशुद्धिक**] चारित्र-विशेष, संयम-विशेष; (ठा ५, २; नव २६) ।

परिहारि वि [**परिहारिन्**] परिहार करने वाला; (बृह ४) ।

परिहारिणी स्त्री [**दे**] देर से व्याई हुई भैंस; (दे ६, ३१) ।

परिहारिय वि [**पारिहारिक**] १ परित्याग के योग्य; (बृह २) । २ परिहार-नामक तप का पालक; (पव ६६) ।

परिहाल पुं [**दे**] जल-निर्गम, मोरी; (दे ६, २६) ।

परिहाव सक [**परि+धापय्**] पहिराना । संकृ—**परिहाइवि** (अप); (भवि) ।

परिहाव सक [**परि+हापय्**] ह्रास करना, कम करना, हीन करना । वकृ—**परिहावेमाण**; (णाया १, १—पत्र २८) ।

परिहाविअ वि [**परिहापित**] हीन किया हुआ; (वव ४) ।

परिहाविअ वि [**परिधापित**] पहिराया हुआ; (महा; सुर १०, १७; स ५२६; कुप्र ६) ।

परिहास पुं [**परिहास**] उपहास, हँसी; (गा ७७१; पाअ) ।

परिहासणा स्त्री [**परिभाषणा**] उपालम्भ; (आव १) ।

परिहि पुंस्त्री [**परिधि**] १ परिवेष; "ससिबिंबं व परिहिणा रुद्धं सिन्नेण तस्स रायगिहं" (पव २५५) । २ परिणाह, विस्तार; (राज) ।

परिहिअ वि [**परिहित**] पहिरा हुआ; (उवा; भग; कप्प; औप; पाअ; सुर २, ८०) ।

परिहिऊण देखो **परिहा**=परि+धा ।

परिहिंड सक [**परि+हिण्ड्**] परिभ्रमण करना । परिहिंडए; (ठा ४, १ टी—पत्र १६२) । वकृ—**परिहिंडंत, परिहिंडमाण**; (पउम ८, १६८; ६०, ५; ८, १५५; औप) ।

परिहिंडिय वि [**परिहिण्डित**] परिभ्रान्त, भटका हुआ; (पउम ६, १३१) ।

परिहित्ता } देखो **परिहा**=परि+धा ।
परिहियव्व }

परिहीअमाण देखो **परिहा**=परि+हा ।

परिहीण वि [**परिहीन**] १ कम, न्यून; (औप) । २ क्षीण, विनष्ट; (सुज्ज १) । ३ रहित, वर्जित; (उव) । ४ न. ह्रास, अपचय; (राय) ।

परिहुत्त वि [**परिभुक्त**] जिसका भोग किया गया हो वह; (से १, ६४; दे ४, ३६) ।

परिहूअ वि [**परिभूत**] पराजित, अभिभूत; (गा १३४; पउम ३, ६; स २८) ।

परिहेरग न [**दे. परिहार्यक**] आभूषण-विशेष; (औप) ।

परिहो सक [**परि+भू**] पराभव करना । परिहोइ; (भवि) ।

परिहोअ देखो **परिभोग**; (गउड) ।

परिहल्लस (अप) अक [**परि+ह्रस्**] कम होना । परिहुल्लसइ; (पिंग) ।

परी सक [**परि+इ**] जाना, गमन करना । परिंति; (पि ४६३) । वकृ—**परिंत**; (पि ४६३) ।

परी सक [**क्षिप्**] फेंकना । परीइ; (हे ४, १४३) । परीसि; (कुमा) ।

परी सक [**भ्रम्**] भ्रमण करना, घूमना । परीइ; (हे ४, १६१) । परेंति; (पण्ह १, ३—पत्र ४६) ।

परीघाय पुं [**परिघात**] निर्घातन, विनाश; (पव ६४) ।

परीणम देखो **परिणम**=परि+णम्; "संसग्गओ पणणवणा-गुणाओ लोगुत्तरत्तेण परीणमंति" (उपपं ३५) ।

परीभोग देखो **परिभोग**; (सुपा ४६७; श्रावक २८४; पंचा ८, ६) ।

परीमाण देखो **परिमाण**; (जीवस १२३; १३२; पव १५६) ।

परीय देखो **परित्त**; (राज) ।

परीयल्ल पुं [**दे. परिवर्त**] वेष्टन; "तिपरीयल्लमणिस्सट्ठं रयहरणं धारए एगं" (ओघ ७०६) ।

परीरंभ पुं [**परीरम्भ**] आलिंगन; (कुमा) ।

परीवज्ज वि [**परिवर्ज्य**] वर्जनीय ; (कम्म ६, ६ टी) ।

परीवाय देखो **परिवाय**=परिवाद ; (पउम १०१, ३; पव २३७) ।

परीवार देखो **परिवार**=परिवार; (कुमा; चेइय ४८) ।

परीसण न [**परिवेषण**] परोसना; (दे २, १४) ।

परीसम देखो **परिस्सम**; (भवि) ।

परीसह पुं [**परीषह**] भूख आदि से होने वाली पीड़ा; (आचा; औप; उव) ।

परुइय वि [**प्ररुदित**] जो रोने लगा हो वह; (स ७५५) ।

परुक्ख देखो **परोक्ख** ; (विसे १४०३ टी; सुपा १३३; श्रा १; कुप्र २५) ।

परुण्ण } देखो **परुइय**; (से १, ३५; १०, ६४; गा
परुन्न } ३५४; ८३८; महा; स २०४) ।

परुप्पर देखो **परोप्पर**; (कुप्र ५) ।

परुभासिद (शौ) वि [**प्रोद्भासित**] प्रकाशित; (प्रयौ २०) ।

परुस वि [**परुष**] कठोर; (गा ३४४) ।

परूढ वि [**प्ररूढ**] १ उत्पन्न; (धर्मवि १२१) । २ बढ़ा हुआ; (औप; पि ४०२) ।

परूव सक [**प्र+रूपय्**] प्रतिपादन करना । परूवेइ, परूवेंति; (औप; कप्प; भग) । संकृ—**परूवइत्ता**; (ठा ३, १) ।

परूवग वि [**प्ररूपक**] प्रतिपादक; (उव; कुप्र १८१) ।

परूवण न [**प्ररूपण**] प्रतिपादन; (अणु) ।

परूवणा स्त्री [**प्ररूपणा**] ऊपर देखो; (आचू १) ।

परूविअ वि [**प्ररूपित**] १ प्रतिपादित, निरूपित; (पण्ह २, १) । २ प्रकाशित; "उत्तमकंचणरयणपरूविअभासुर-भूसणभासुरिअंगा" (अजि २३) ।

परेअ पुं [**दे**] पिशाच; (दे ६, १२; पाअ; षड्) ।

परेण अ [**परेण**] बाद, अनन्तर; (महा) ।

परेयम्मण देखो **परिकम्मण**; (कप्प) ।

परेवय न [**दे**] पाद-पतन; (दे ६, १६) ।

परेव्व वि [**परेद्युस्तन**] परसों का, परसों होने वाला; (पिंड २४१) ।

परो° अ [**पर**] उत्कृष्ट ; "परोसंतेहिं तच्चेहिं" (उवा) ।

परोइय देखो **परुइय**; (उप ७६८ टी) ।

परोक्ख न [**परोक्ष**] १ प्रत्यक्ष-भिन्न प्रमाण; "पच्चक्ख-परोक्खाइं दुन्नेव जओ पमाणाइं" (सुर १२, ६० ; णंदि)। २ वि. परोक्ष-प्रमाण का विषय, अ-प्रत्यक्ष; (सुपा ६४७; हे ४, ४१८)। ३ न. पीछे, आँखों की ओट में; "मम परोक्खे किं तए अणुभूयं ?" (महा)।

परोट्ट देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (षड्)।

परोप्पर } वि [**परस्पर**] आपस में; (हे १, ६२; **परोप्फर** } कुमा; कप्पू; षड्)।

परोवआर पुं [**परोपकार**] दूसरे की भलाई; (नाट—मृच्छ १६८)।

परोवयारि वि [**परोपकारिन्**] दूसरे की भलाई करने वाला; (पउम ५०, १)।

परोवर देखो **परोप्पर**; (प्राकृ २६; ३०)।

परोविय देखो **परुइय**; (उप ७२८ टी; स ४८०)।

परोह अक [**प्र+रुह्**] १ उत्पन्न होना। २ बढ़ना। परोहदि (शौ); (नाट)।

परोह पुं [**प्ररोह**] १ उत्पत्ति; (कुमा)। २ वृद्धि; ३ अंकुर, बीजोद्भेद; (हे १, ४४)। "पुन्नलयाए परोह रेहइ आवालपंतिव्व" (धर्मवि १६८)।

परोहड न [**दे**] घर का पिछला आँगन, घर के पीछे का भाग; (ओघ ४१७; पाअ; गा ६८५ अ; वज्जा १०६; १०८)।

पल अक [**पल्**] १ जीना। २ खाना। पलइ; (षड्)। देखो **वल**=बल्।

पल (अप) अक [**पत्**] पड़ना, गिरना। पलइ; (पिंग)। वकृ—**पलंत**; (पिंग)।

पल (अप) सक [**प्र+कटय्**] प्रकट करना। पल; (पिंग)।

पल अक [**परा+अय्**] भागना।

"चोराण कामुयाण य पामरपहियाण कुक्कुडो रडइ।
रे पलह रमह वाहयह, वहह तणुइज्जए रयणी" (वज्जा १३४)।

पल न [**दे**] स्वेद, पसीना; (दे ६, १)।

पल न [**पल**] १ एक बहुत छोटी तौल, चार तोला; (ठा ३, १; सुपा ४३७; वज्जा ६८; कुप्र ४१६)। २ मांस; (कुप्र १८६)।

पलंघ सक [**प्र+लङ्घ्**] अतिक्रमण करना। पलंघ्जा (औप)।

पलंघण न [**प्रलङ्घन**] उल्लंघन; (औप)।

पलंड पुं [**पलगण्ड**] राज, चूना पोतने का काम करने वाला कारीगर; "पलगंडे पलंडो" (प्राकृ ३०)।

पलंडु पुं [**पलाण्डु**] प्याज; (उत्त ३६, ६८)।

पलंब अक [**प्र+लम्ब्**] लटकना। पलंबए; (पि ४५७)। वकृ—**पलंबमाण**; (औप; महा)।

पलंब वि [**प्रलम्ब**] १ लटकने वाला, लटकता; (पण्ह १, ४; राय)। २ लम्बा, दीर्घ; (से १२, ५८; कुमा)। ३ पुं. ग्रह-विशेष, एक महाग्रह; (ठा २, ३)। ४ मुहूर्त-विशेष, अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त; (सम ५१)। ५ पुंन. आभरण-विशेष; (औप)। ६ एक तरह का धान का कोठा; (बृह २)। ७ मूल; (कस; बृह १)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ८—पत्र ४३६)। ९ न. फल; (बृह १; ठा ४, १—पत्र १८५)। ९ देव-विमान-विशेष; (सम ३८)।

पलंबिअ वि [**प्रलम्बित**] लटका हुआ; (कप्प; भवि; स्वप्न १०)।

पलंबिर वि [**प्रलम्बितृ**] लटकने वाला, लटकता; (सुपा ११; सुर १, २४८)।

पलक्क वि [**दे**] लम्पट; "इय विसयपलक्कओ" (कुप्र ४२७; नाट)।

पलक्ख पुं [**प्लक्ष**] बड़ का पेड़; (कुमा; पि १३२)।

पलज्जण वि [**प्ररञ्जन**] रागी, अनुराग वाला; "अधम्म-पलज्जण—" (णाया १, १८; औप)।

पलट्ट अक [**परि+अस्**] १ पलटना, बदलना। २ सक. पल-टाना, बदलाना। पलट्टइ; (पिंग)। "कोहाइकारणेवि हु नो वयणसिरिं पलट्टंति" (संबोध १८)। संकृ—पलट्टि (अप); (पिंग)। देखो **पल्लट्ट**।

पलत्त वि [**प्रलपित**] १ कथित, उक्त, प्रलाप-युक्त; (सुपा ११४; से ११, ७८)। २ न. प्रलाप, कथन; (औप)।

पलय पुं [**प्रलय**] १ युगान्त, कल्पान्त-काल; २ जगत् का अपने कारण में लय; (से २, २; पउम ७२, ३१)। ३ विनाश; "जायवजाइपलए" (ती ३)। ४ चेष्टा-क्षय; ५ छिपना; (हे १, १८७)। °क्क पुं [°र्क] प्रलय-काल का सूर्य; (पउम ७२, ३१)। °घण पुं [°घन] प्रलय का मेघ; (सण)। °ानल पुं [°ानल] प्रलय काल की आग; (सण)।

पलल न [**पलल**] १ तिल-चूर्ण, तिल-चोद; (पण्ह २, ५; पिंड १६५)। २ मांस; (कुप्र १८७)।

पललिअ न [**प्रललित**] १ प्रक्रीडित; (णाया १, १—पत्र ६२)। २ अंग-विन्यास; (पराह २, ४)।

पलव सक [**प्र+लप्**] प्रलाप करना, बकवाद करना। पलवदि (शौ); (नाट—वेणी १७)। वकृ—**पलवंत, पलवमाण**; (काल; सुर २, १२५; सुपा २५०; ६४१)।

पलवण न [**प्लवन**] उछलना, उच्छलन; "संपाइमवाउवहो पलवण आऊवघाओ य" (ओघ ३४८)।

पलविअ) वि [**प्रलपित**] १ अनर्थक कहा हुआ; २ न. **पलवित** } अनर्थक भाषण; (चंड; पराह १, २)।

पलविर वि [**प्रलपितृ**] बकवादी; (दे ७, ५६)।

पलस न [**दे**] १ कर्पास-फल; २ स्वेद, पसीना; (दे ६, ७०)।

पलस (अप) न [**पलाश**] पत्र, पत्ती; (भवि)।

पलसु स्त्री [**दे**] सेवा, पूजा, भक्ति; (दे ६, ३)।

पलहि पुंस्त्री [**दे**] कपास; (दे ६, ४; पात्र; वज्जा १८६; हे २, १७४)।

पलहिअ वि [**दे**] १ विषम, असम; २ पुंन. आवृत जमीन का वास्तु; (दे ६, १५)।

पलहिअअ वि [**दे. उपलहृदय**] मूर्ख, पाषाण-हृदय; (षड्)।

पलहुअ वि [**प्रलघुक**] १ स्वल्प, थोड़ा; २ छोटा; (से ११, ३३; गउड)।

पला देखो **पलाय**=परा+अय्। "जं जं भणामि अहयं सयलं पि बहिं पलाइ तं तुज्झ" (आत्मानु २३), पलासि, पलामि; (पि ५६७)।

पलाअंत) देखो **पलाय**=परा+अय्।
पलाइअ }

पलाइअ) वि [**पलायित**] १ भागा हुआ, नष्ट; "पला- **पलाण** } इए हलिए" (गा ३६०), "रिउणो सिन्नं जह पलाणं" (धर्मवि ५६; ५१; पउम ५३, ८४; ओघ ४६७; उप १३६ टी; सुपा २२; ५०३; ती १५; सण; महा)। २ न. पलायन; (दस ४, ३)।

पलाण न [**पलायन**] भागना; (सुपा ४६४)।

पलाणिअ वि [**पलायनित**] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ; "तेणवि आगच्छंतो विन्नाओ तो पलाणिओ दूरं" (सुपा ४६४)।

पलात वि [**प्रलात**] गृहीत; (चंड)।

पलाय अक [**परा+अय्**] भाग जाना, नासना। पलायइ, पलाअसि; (महा; पि ५६७)। भवि—पलाइस्सं; (पि ५६७)। वकृ—**पलाअंत, पलायमाण**; (गा २६१; णाया १, १८; आक १८; उप पृ २६)। संकृ—**पलाइअ**; (नाट; पि ५६७)। हेकृ—**पलाइउं**; (आक १६; सुपा ४६४)। कृ—**पलाइअव्व**; (पि ५६७)।

पलाय पुं [**दे**] चोर, तस्कर; (दे ६, ८)।

पलाय देखो **पलाइअ**=पलायित; (णाया १, ३; स १३१; उप पृ २५७; धण ४८)।

पलायण न [**पलायन**] भागना; (ओघ २६; सुर २, १४)।

पलायणया स्त्री. ऊपर देखो; (चेइय ४४६)।

पलायमाण देखो **पलाय**=परा+अय्।

पलाल न [**पलाल**] तृण-विशेष, पुआल; (पराह २, ३; पात्र; आचा)। °**पीढय** न [°**पीठक**] पलाल का आसन; (निचू १२)।

पलाव सक [**नाशय्**] भगाना, नष्ट करना। पलावइ; (हे ४, ३१)।

पलाव पुं [**प्लाव**] पानी की बाढ़; (तंदु ५० टी)।

पलाव पुं [**प्रलाप**] अनर्थक भाषण, बकवाद; (महा)।

पलावण न [**नाशन**] नष्ट करना, भगाना; (कुमा)।

पलावि वि [**प्रलापिन्**] बकवादी; "असंबद्धपलाविणी एसा" (कुप्र २२२; संबोध ४७; अभि ४६)।

पलाविअ वि [**प्लावित**] डुबोया हुआ, भिगाया हुआ; (सुर १३, २०४; कुप्र ६०; ६७; सण)।

पलाविअ वि [**प्रलापित**] अनर्थक घोषित करवाया हुआ; "मंछुड्ड किं दुच्चरिउ पलाविउ सज्जणजणहो नाउं लज्जाविउ" (भवि)।

पलाविर वि [**प्रलपितृ**] बकबाद करने वाला; "अहह असंबद्धपलाविरस्स बडुयस्स पेच्छ मह पुरओ" (सुपा २०१), "दिव्वनाणीव जंपेइ, एसो एवं पलाविरो" (सुपा २७७)।

पलास पुं [**पलाश**] १ वृक्ष-विशेष, किंशुक वृक्ष, ढाँक; (वज्जा १५२; गा ३११)। २ राक्षस; (वज्जा १३०; गा ३११)। ३ पुंन. पत्र, पत्ता; (पात्र; वज्जा १५२)। ४ भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती कूट; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)।

पलासि स्त्री [**दे**] भल्ली, छोटा भाला, शस्त्र-विशेष; (दे ६, १४)।

पलासिया स्त्री [**दे. पलाशिका**] त्वक्काष्ठिका, छाल की बनी हुई लकड़ी; (सूअ १, ४, २, ७)।

पलाह देखो **पलास**; (संक्षि १६; पि २६२)।

पलि देखो **परि**; (सुअ १, ६, ११ ; २, ७, ३६; उत्त २६, ३४; पि २५७)।

पलिअ न [**पलित**] १ वृद्ध अवस्था के कारण बालों का पकना, केशों की श्वेतता; २ वदन की झुर्रियाँ ; (हे १, २१२)। ३ कर्म, कर्म-पुद्गल; "जे कइ सत्ता पलियं चयंति" (आचा १, ४, ३, १)। ४ घृणित अनुष्ठान; "से आकुट्ठे वा हए वा लुंचिए वा पलियं पकंथे" (आचा १, ६, २, २)। ५ कर्म, काम; (आचा १, ६, २, २)। ६ ताप; ७ पंक, कादा; ८ वि. शिथिल; ९ वृद्ध, बूढा; (हे १, २१२)। १० पका हुआ, पक्व; (धर्म २; निचू १५)। ११ जरा-ग्रस्त; "न हि दिज्जइ आहरणं पलियत्तयकरणहत्थस्स" (राज)। °**ट्ठाण**, °**ठाण** न [°**स्थान**] कर्म-स्थान, कारखाना; (आचा १, ६, २, २)।

पलिअ न [**पल**] चार कर्ष या तीन सौ बीस गुञ्जा का नाप; (तंदु २६)।

पलिअ देखो **पल्ल**=पल्य; (पव १५८; भग; जी २६; नव ६; दं २७)।

पलिअ (अप) देखो **पडिअ**; (पिंग)।

पलिअंक पुं [**पर्यङ्क**] पलँग, खाट; (हे २, ६८; सम ३५; औप)। °**आसण** न [°**आसन**] आसन-विशेष; (सुपा ६५५)।

पलिअंका स्त्री [**पर्यङ्का**] पद्मासन, आसन-विशेष; (ठा ५, १—पत्र ३००)।

पलिउंच सक [**परि + कुञ्च्**] १ अपलाप करना। २ ठगना। ३ छिपाना, गोपन करना। पलिउंचंति, पलिउंचयंति; (उत्त २७, १३; सुअ १, १३, ४)। संकृ—**पलिउंचिय**; (आचा २, १, ११, १)। वकृ—**पलिउंचमाण**; (आचा १, ७, ४, १; २, ५, २, १)।

पलिउंचण न [**परिकुञ्चन**] माया, कपट; (सुअ १, ६, ११)।

पलिउंचणा स्त्री [**परिकुञ्चना**] १ सच्ची बात को छिपाना; २ माया; (ठा ४, १ टी—पत्र २००)। ३ प्रायश्चित्त-विशेष; (ठा ४, १)।

पलिउंचि वि [**परिकुञ्चिन्**] मायावी, कपटी; (वव १)।

पलिउंचिय वि [**परिकुञ्चित**] १ वञ्चित; २ न. माया, कुटिलता; (वव १)। ३ गुरु-वन्दन का एक दोष, पूरा वन्दन न करके ही गुरु के साथ बातें करने लग जाना; (पव २)।

पलिउंजिय देखो **परिउज्जिय**; (भग)।

पलिउच्छन्न देखो **पलिओच्छन्न**; (आचा १, ५, १, ३)।

पलिउच्छूढ देखो **पलिओच्छूढ**; (औप —पृ ३० टि)।

पलिउज्जिय वि [**परियोगिक**] परिज्ञानी, जानकार; (भग २, ५)।

पलिऊल देखो **पडिऊल**; (नाट—विक १८)।

पलिओच्छन्न वि [**पलितावच्छन्न**] कर्मावष्टब्ध, कुकर्मी; (आचा १, ५, १, ३)।

पलिओच्छिन्न वि [**पर्यवच्छिन्न**] ऊपर देखो; (आचा; पि २५७)।

पलिओच्छूढ वि [**पर्यवक्षिप्त**] प्रसारित; (औप)।

पलिओवम पुंन [**पल्योपम**] समय-मान विशेष, काल का एक दीर्घ परिमाण; (ठा २, ४; भग; महा)।

पलिंचा (शौ) देखो **पडिण्णा**; (पि २७६)।

पलिकुंचणया देखो **पलिउंचणा**; (सम ७१)।

पलिक्खीण वि [**परिक्षीण**] क्षय-प्राप्त; (सुअ २, ७, ११; औप)।

पलिगोव पुं [**परिगोप**] १ पङ्क, कादा; २ आसक्ति; (सुअ १, २, २, ११)।

पलिच्छण्ण } वि [**परिच्छन्न**] १ समन्तात् व्याप्त; (आचा १, २—पत्र ७८; १, ४)। २ निरुद्ध, रोका हुआ; "णेत्तेहिं पलिच्छन्नेहिं" (आचा १, ४, ४, २)।
पलिच्छन्न }

पलिच्छाअ सक [**परि+छादय्**] ढकना, आच्छादन करना। पलिच्छाएइ; (आचा २, १, १०, ६)।

पलिच्छिंद सक [**परि + छिद्**] छेदन करना, काटना। संकृ— **पलिच्छिंदिय**, **पलिच्छिंदियाणं**; (आचा १, ४, ४, ३; १, ३, २, १)।

पलिच्छिन्न वि [**परिच्छिन्न**] विच्छिन्न, काटा हुआ; (सुअ १, १६, ५; उप ५८५; सुर ६, २०६)।

पलित्त वि [**प्रदीप्त**] ज्वलित; (कुप्र ११६; सं ७७; भग)।

पलिपाग देखो **परिपाग**; (सुअ २, ३, २१; आचा)।

पलिप्प अक [**प्र + दीप्**] जलना। पलिप्पइ; (षड्; प्राकृ १२)। वकृ— **पलिप्पमाण**; (पि २४४)।

पलिबाहर } वि [**परिबाह्य**] हमेशा बाहर होने वाला; (आचा)।
पलिबाहिर }

पलिभाग पुं [**परिभाग**, **प्रतिभाग**] १ निर्विभागी अंश; (कम्म ४, ८२)। २ प्रतिनियत अंश; (जीवस १५४)। ३ सादृश्य, समानता; (राज)।

पलिभिंद सक [**परि + भिद्**] १ जानना। २ बोलना। ३

भेदन करना, तोड़ना। संकृ—**पलिभिंदियाणं**; (सूत्र १, ४, २, २)।

पलिभेय पुं [**परिभेद**] चूरना; (निचू ५)।

पलिमंथ सक [**परि+मन्थ्**] बाँधना। पलिमंथए; (उत्त ६, २२)।

पलिमंथ पुं [**परिमन्थ**] १ विनाश; (सूत्र २, ७, २६; विसे १४५७)। २ स्वाध्याय-व्याघात; (उत्त २६, ३४; धर्मसं १०१७)। ३ विघ्न, बाधा; (सूत्र १, २, २, ११ टी)। ४ मुधा व्यापार, व्यर्थ क्रिया; (श्रावक १०६; ११२)।

पलिमंथग पुं [**परिमन्थक**] १ धान्य-विशेष, काला चना; (सूत्र २, २, ६३)। २ गोल चना; ३ विलंब; (राज)।

पलिमंथु वि [**परिमन्थु**] सर्वथा घातक; (ठा ६—पत्र ३७१; कस)।

पलिमद्द देखो **परिमद्द**। परिमद्देज्जा; (पि २५७)।

पलिमद्द वि [**परिमर्द**] मालिश करने वाला; (निचू ६)।

पलिमोक्ख देखो **परिमोक्ख**; (आचा)।

पलियंचण न [**पर्यञ्चन**] परिभ्रमण; (सुर ७, २४३)। देखो **परियंचण**।

पलियंत पुं [**पर्यन्त**] १ अन्त भाग; (सूत्र १, ३, १, १५)। २ वि. अवसान वाला, अन्त वाला; "पलियंतं मणुयाण जीवियं" (सूत्र १, २, १, १०)।

पलियंत न [**पल्यान्तर्**] पल्योपम के भीतर; (सूत्र १, २, १, १०)।

पलियस्स न [**परिपार्श्व**] समीप, पास, निकट; (भग ६, ५—पत्र २६८)।

पलिल देखो **पलिअ**=पलित; (हे १, २१२)।

पलिव देखो **पलीव**। पलिवेइ; (पि २४४)।

पलिवग देखो **पलीवग**; (राज)।

पलिविअ वि [**प्रदीपित**] जलाया हुआ; (षड्; हे १, १०१)।

पलिसय } सक [**परि+स्वञ्ज्**] आलिंगन करना, स्पर्श
पलिस्सय } करना, छूना। पलिस्सएज्जा; (बृह ४)। "वकृ—**पलिसयमाणे** गुरुणा दो लहुगा आणमाईणि" (बृह ४)। हेकृ—**पलिस्सइउं**; (बृह ४)।

पलिह देखो **परिह**=परिघ; (राज)।

पलिहअ वि [**दे**] मूर्ख, बेवकूफ; (दे ६, २०)।

पलिहइ स्त्री [**दे**] खेत, खेत; "नियपलिहईइ दोहिवि किसि-कम्मं काउमाढत्तं" (सुर १५, २०१)।

पलिहस्स न [**दे**] ऊर्ध्व दारु, काष्ठ-विशेष; (दे ६, १६)।

पलिहाय पुं [**दे**] ऊपर देखो; (दे ६, १६)।

पली सक [**परि+इ**] पर्यटन करना, भ्रमण करना। **पलेइ**; (सूत्र १, १३, ६), पलिंति; (सूत्र १, १, ४, ६)।

पली अक [**प्र+ली**] लीन होना, आसक्ति करना। पलिंति; (सूत्र १, २, २, २२)। वकृ—**पलेमाण**; (आचा १, ४, १, ३)।

पलीण वि [**प्रलीन**] १ अति लीन; (भग २५, ७)। २ संबद्ध; (सूत्र १, १, ४, २)। ३ प्रलय-प्राप्त, नष्ट; (सुर ४, १५४)। ४ छिपा हुआ, निलीन; (सुर ६, २८)।

पलीमंथ देखो **पलिमंथ**; (सूत्र १, ६, १२)।

पलीव अक [**प्र+दीप्**] जलना। पलीवइ; (हे ४, १५२; षड्)।

पलीव सक [**प्र+दीपय्**] जलाना, सुलगाना। **पलीवइ**, पलीवेइ; (महा; हे १, २२१)। संकृ—**पलीविऊण**, **पलीविअ**; (कुप्र १६०; गा ३३)।

पलीव पुं [**प्रदीप**] दीपक, दिआ; (प्राकृ १२; षड्)।

पलीवग वि [**प्रदीपक**] आग लगाने वाला; (पण्ह १, १)।

पलीवण न [**प्रदीपन**] आग लगाना; (श्रा २८; कुप्र २६)।

पलीवणया स्त्री. ऊपर देखो; (निचू १६)।

पलीविअ देखो **पलीव**=प्र+दीपय्।

पलीविअ वि [**प्रदीप्त**] प्रज्वलित; (पाअ)।

पलीविअ वि [**प्रदीपित**] जलाया हुआ; (उव)।

पलुंपण न [**प्रलोपन**] प्रलोप; (औप)।

पलुट्ट वि [**प्रलुठित**] लेटा हुआ; (दे १, ११६)।

पलिुट्ट देखो **पलोट्ट**= पर्यस्त; (हे ४, ४२२)।

पलुट्टिअ देखो **पलोट्टिअ**=पर्यस्त; (कुमा ४, ७५)।

पलुट्ठ वि [**प्लुष्ट**] दग्ध, जला हुआ; (सुर ६, २०६; सुपा ४)।

पलेमाण देखो **पली**=प्र+ली।

पलेव पुं [**प्रलेप**] एक जाति का पत्थर, पाषाण-विशेष; (जी ३)।

पलोअ सक [**प्र+लोक्, लोकय्**] देखना, निरीक्षण करना। पलोयइ, पलोअए, पलोएइ; (सण; महा)। कर्म—पलोइज्जइ; (कप्प)। वकृ—**पलोअंत**, **पलोअअंत**, **पलोएंत**, **पलोएमाण**, **पलोयमाण**; (रयण १४; नाट—मालती ३२; महा; पि २६३; सुपा ४४; ३५१)।

पलोअण न [**प्रलोकन**] अवलोकन; (से १४, ३४; गा ३२२)।

पलोअणा स्त्री [**प्रलोकना**] निरीक्षण; (ओघ ३)।

पलोइ वि [**प्रलोकिन्**] प्रेक्षक; (औप)।

पलोइअ वि [**प्रलोकित**] देखा हुआ; (गा ११८; महा)।

पलोइर वि [**प्रलोकितृ**] प्रेक्षक; (गा १८०; भवि)।

पलोएंत } देखो **पलोअ**।
पलोएमाण }

पलोघर [**दे**] देखो **परोहड**; (गा ३१३ अ)।

पलोट्ट सक [**प्रत्या + गम्**] लौटना, वापिस आना। पलोट्टइ; (हे ४, १६६)।

पलोट्ट सक [**परि + अस्**] १ फेंकना। २ मार गिराना। ३ अक. पलटना, विपरीत होना। ४ प्रवृत्ति करना। ५ गिरना। पलोट्टइ, पलोट्टेइ; (हे ४, २००; भग; कुमा)। वकृ—**पलोट्टंत**; (वज्जा ६६; गा २२२)।

पलोट्ट अक [**प्र + लुठ्**] जमीन पर लोटना। वकृ—**पलोट्टंत**; (से ५, ५८)।

पलोट्ट वि [**पर्यस्त**] १ क्षिप्त, फेंका हुआ; २ हत; ३ विक्षिप्त; (हे ४, २५८)। ४ पतित, गिरा हुआ; (गा १७०)। ५ प्रवृत्त; "रेल्लंता वणभागा तओ पलोट्टा जवा जलाणोघा" (कुमा)।

पलोट्टजीह वि [**दे**] रहस्य-भेदी, गुह्य बात को प्रकट करने वाला; (दे ६, ३५)।

पलोट्टण न [**प्रलोठन**] ढुलकाना, गिराना; (उप पृ ११०)।

पलोट्टिअ देखो **पलोट्ट=पर्यस्त**; (कुमा)।

पलोभ सक [**प्र + लोभय्**] लुभाना, लालच देना। पलोभेदि (शौ); (नाट—मृच्छ ३१३)।

पलोभविअ वि [**प्रलोभित**] लुभाया हुआ; (धर्मवि ११२)।

पलोभि वि [**प्रलोभिन्**] विशेष लोभी; (धर्मवि ७)।

पलोभिअ देखो **पलोभविअ**; (सुपा ३४३)।

पलोव (अप) देखो **पलोअ**। पलोवइ; (भवि)।

पलोहर [**दे**] देखो **परोहड**; (गा ६८५ अ)।

पलोहिद (शौ) देखो **पलोभिअ**; (नाट)।

पल्ल पुंन [**पल्य**] १ गोल आकार का एक धान्य रखने का पात्र; (पव १५८; ठा ३, १)। २ काल-परिमाण विशेष, पल्योपम; (पउम २०, ६७; दं २७)। ३ संस्थान-विशेष, पल्यंक संस्थान; "पल्लासंठाणसंठिया" (सम ७७)।

पल्ल पुं [**पल्ल**] धान्य भरने का बड़ा कोठा; "बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति" (णाया १, ७—पत्र ११५)।

पल्लंक देखो **पलिअंक**; (हे २, ६८; षड्)।

पल्लंक पुं [**पल्यङ्क**] शाक-विशेष, कन्द-विशेष; (श्रा २०; जी ६; पव ४; संबोध ४४)।

पल्लंघण न [**प्रलङ्घन**] १ अतिक्रमण; (ठा ७)। २ गमन, गति; (उत्त २४, ४)।

पल्लग देखो **पल्ल=पल्ल**; (विसे ७०६)।

पल्लट्ट देखो **पलट्ट=परि + अस्**। पल्लट्टइ; (हे ४, २००; भवि)। संकृ—**पल्लट्टिउं**; (पंचा १३, १२)।

पल्लट्ट पुं [**दे**] पर्वत-विशेष; (पण्ह १, ४)।

पल्लट्ट पुं [**दे. परिवर्त**] काल-विशेष, अनन्त काल चक्रों का समय; (धण ४१)।

पल्लट्ट } देखो **पलोट्ट=पर्यस्त**; (हे २, ४७; ६८)।
पल्लत्थ }

पल्लत्थि स्त्री [**पर्यस्ति**] आसन-विशेष;

"पायपसारणं पल्लत्थिबंधणं बिंबपट्ठिदाणं च।
उच्चासणसेवणया जिणपुरओ भन्नइ अवन्ना॥"

(चेइय ६०)। देखो **पल्हत्थिया**।

पल्लल न [**पल्वल**] छोटा तलाव; (प्राकृ १७; णाया १, १; सुपा ६४६; स ४२०)।

पल्लव पुं [**पल्लव**] १ किशलय, अंकुर; (पाअ; औप)। २ पत्र, पत्ता; (से २, २६)। ३ देश-विशेष; (भवि)। ४ विस्तार; (कप्पू)।

पल्लव देखो **पज्जव**; (सम ११३)।

पल्लवाय न [**दे**] क्षेत्र, खेत; (दे ६, २६)।

पल्लविअ वि [**दे**] लाक्षा-रक्त; (दे ६, १६; पाअ)।

पल्लविअ वि [**पल्लवित**] १ पल्लवाकार; (दे ६, १६)। २ अंकुरित, प्रादुर्भूत, उत्पन्न; (दे १, २)। ३ पल्लव-युक्त; (रंभा)।

पल्लविल्ल वि [**पल्लववत्**] पल्लव-युक्त; (सुपा ५; धण २४)।

पल्लविल्ल देखो **पल्लव**; (हे २, १६४)।

पल्लस्स देखो **पल्लोट्ट=परि+अस्**। पल्लस्सइ; (प्राकृ ७२)।

पल्लाण न [**पर्याण**] अश्व आदि का साज; "किं करिणो पल्लाणं उव्वाढुं रासभो तरइ" (प्रवि १७; प्राप्र)।

पल्लाण सक [**पर्याणय्**] अश्व आदि को सजाना। पल्लाणेह; (स २२)।

पल्लाणिअ वि [**पर्याणित**] पर्याण-युक्त; (कुमा)।

पल्लि स्त्री [**पल्लि**] १ छोटा गाँव। २ चोरों के निवास का गहन स्थान; (उप ७२८ टी)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] पल्ली का स्वामी; (सुपा ३५१; सुर २, ३३)। °**वइ** पुं [°**पति**] वही अर्थ; (सुर १, १६१ ; सुपा ३५१)।

पल्लिअ वि [**दे**] १ आक्रान्त; (निचू २)। २ ग्रस्त; (निचू १)। ३ प्रेरित; "पल्लट्टा पल्लिआरहट्टव्व" (धरा ४७)।

पल्लित्त वि [**दे**] पर्यस्त; (षड्)।

पल्ली देखो **पल्लि**; (गउड; पंचा १०, ३६; सुर २, २०४)।

पल्लीण वि [**प्रलीन**] विशेष लीन; "गुत्तिंदिए अल्लीणे पल्लीणे चिट्ठइ" (भग २५, ७; कप्प)।

पल्लोट्टजीह [**दे**] देखो **पलोट्टजीह**; (षड्)।

पल्लत्थ देखो **पलोट्ट+**परि + अस्। पल्हत्थइ; (हे ४, २००)। वकृ—**पल्हत्थंत**; (से १०, १०; ३,५)। कवकृ—**पल्हत्थंत**; (से ८, ८३; ११, ६६)।

पल्हत्थ सक [**वि** + **रेचय्**] बाहर निकालना। पल्हत्थइ; (हे ४, २६)।

पल्हत्थ देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; "करतलपल्हत्थमुहे" (सूअ २, २, १६; हे ४, २५८)।

पल्हत्थण न [**पर्यसन**] फेंक देना, प्रक्षेपण; "अन्नदा भुवण-पल्हत्थणपवणो समुट्ठिदो दुट्ठपवणो" (मोह ६२)।

पल्हत्थरण देखो **पच्चत्थरण**; (से ११, १०८)।

पल्हत्थाविअ वि [**विरेचित**] बाहर निकलवाया हुआ; (कुमा)।

पल्हत्थिअ देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (से ७, २०; गाया १, ४६—पत्र २१६; सुपा ७६)।

पल्हत्थिया स्त्री [**पर्यस्तिका**] आसन-विशेष;—१ दो जानू खड़ा कर पीठ के साथ चादर लपेट कर बैठना; (पव ३८), २ जंघा पर वस्त्र लपेट कर बैठना; ३ जंघा पर पाँव रख कर बैठना; (उत्त १, १६)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] योग-पट्टे; (राज)।

पल्हय } पुं [**पह्लव**] १ अनार्य देश-विशेष; (कस; कुप्र
पल्हव } ६७)। २ पुंस्त्री. पह्लव देश का निवासी; भग ३, २—पत्र १७०; अंत)। स्त्री—°**वी**, **विया**; (पि ३३०; औप; गाया १, १—पत्र ३७; इक)।

पल्हवि पुंस्त्री [**दे. पह्लवि**] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता एक तरह का कपड़ा ; "पल्हवि हत्थत्थरणं" (पव ८४)।

पल्हविया } देखो **पल्हव**।
पल्हवी }

पल्हाय सक [**प्र+ह्लादय्**] आनन्दित करना, करना। पल्हायइ; (संबोध १२)। वकृ—**पल्हायंत**; (उव; सुर ३, १२१)। कृ—देखो **पल्हायणिज्ज**।

पल्हाय पुं [**प्रह्लाद**] १ आनन्द, खुशी; (कुमा)। २ हिरण्यकशिपु-नामक दैत्य का पुत्र; (हे २, ७६)। ३ आठवाँ प्रतिवासुदेव राजा; (पउम ५, १५६)। ४ एक विद्याधर नरेश; (पउम १५, ५)।

पल्हायण न [**प्रह्लादन**] १ चित्त-प्रसन्नता, खुशी; (उत्त २६, १७)। २ वि. आनन्द-दायक; (सुपा ५०७)। ३ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३६)।

पल्हायणिज्ज वि [**प्रह्लादनीय**] आनन्द-जनक; (गाया १, १—पत्र १३)।

पल्हीय पुं. ब. [**प्रह्लीक**] देश-विशेष; (पउम ६८, ६६)।

पव अक [**प्लु**] १ फरकना। २ सक. उछल कर जाना। ३ तैरना। पवेज्ज; (सूअ १, १, २, ८)। वकृ—**पवंत**, **पवमाण**; (से ५, ३७; आचा २, ३, २, ४)। हेकृ—**पविउं**; (सूअ १, १, ४, २)।

पव पुं [**प्लव**] १ पूर; (कुमा)। २ उच्छलन, कूदना; ३ तरण, तैरना; ४ भेक, मेढ़क; ५ वानर, बन्दर; ६ चाण्डाल, डोम; ७ जल-काक; ८ पाकुड़ का पेड़; ६ कारण्डव पक्षी; १० शब्द, आवाज; ११ रिपु, दुश्मन; १२ मेष, मेंढ़ा; १३ जल-कुक्कुट; १४ जल, पानी; १५ जलचर पक्षी; १६ नौका, नाव; (हे २, १०६)।

पवंग पुं [**प्लवङ्ग**] १ बानर; (से २, ४६; ५, ४७)। २ बानर-वंशीय मनुष्य। °**नाह** पुं [°**नाथ**] बानर-वंशीय राजा, बाली; (पउम ६, २६)। °**वइ** पुं [°**पति**] बानर-राज; (पि ३७६)।

पवंगम पुं [**प्लवंगम**] १ बानर; (पाअ; से ६, १६)। छन्द-विशेष; (पिंग)।

पवंच पुं [**प्रपञ्च**] १ विस्तार; (उप ५३० टी; औप)। २ संसार; (सूअ १, ७; उव)। ३ प्रतारण, ठगाई; (उव)।

पवंचण न [**प्रपञ्चन**] विप्रतारण, वञ्चना, ठगाई; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पवंचा स्त्री [**प्रपञ्चा**] मनुष्य की दश दशाओं में सातवीं दशा—६० से ७० वर्ष की अवस्था; (ठा १०; तंदु १६)।

पवंचिअ वि [**प्रपञ्चित**] विस्तारित; (श्रा १४; कुप्र ११८)।

पवंछ सक [**प्र+वाञ्छ्**] वाञ्छना, अभिलाषा करना। वकृ—**पवंछमाण**; (उप पृ १८०)।

पवंत देखो **पव**=प्लु।

पवंपुल पुंन [**दे**] मच्छी पकड़ने का जाल-विशेष; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पवक वि [**प्लवक**] १ उछल-कूद करने वाला; २ तैरने वाला; (पण्ह १, १ टी—पत्र २)। ३ पुं. पक्षी; ४ देव-जाति विशेष, सुवर्णकुमार-नामक देव-जाति; (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

पवक्खमाण देखो **पवय**=प्र+वच्।

पवग देखो **पवक**; (पण्ह २, ४; कप्प; औप)।

पवज्ज सक [**प्र+पद्**] स्वीकार करना। पवज्जइ, पवज्जिज्जा; (भवि; हित २०)। भवि—पवज्जिहिसि; (गा ६६१)। वकृ—**पवज्जंत**; (श्रा २७)। संकृ—**पवज्जिय**; (मोह १०)। कृ—**पवज्जियव्व**; (पंचा १६)।

पवज्जण न [**प्रपदन**] स्वीकार, अंगीकार; (स २७१; पंचा १४, ८; श्रावक १११)।

पवज्जा देखो **पव्वज्जा**; (महानि ४)।

पवज्जिय वि [**प्रपन्न**] स्वीकृत, अंगीकृत; (धर्मवि ५३; कुप्र २६५; सुपा ४०७)।

पवज्जिय वि [**प्रवादित**] जो बजने लगा हो; (स ७५६)।

पवज्जिय देखो **पवज्ज**।

पवट्ट अक [**प्र+वृत्**] प्रवृत्ति करना। पवट्टइ; (महा)।

पवट्ट वि [**प्रवृत्त**] जिसने प्रवृत्ति की हो वह; (षड्; हे २, २६ टि)।

पवट्टय वि [**प्रवर्तक**] प्रवृत्ति कराने वाला; (राज)।

पवट्टि स्त्री [**प्रवृत्ति**] प्रवर्तन; (हम्मीर १५)।

पवट्टिअ वि [**प्रवर्तित**] प्रवृत्त किया हुआ; (भवि; दे)।

पवट्ठ देखो **पउट्ठ**=प्रकोष्ठ; (हे १, १५६)।

पवड अक [**प्र+पत्**] पड़ना, गिरना। पवडइ, पवडिज्ज, पवडेज्ज; (भग; कप्प; आचा २, २, ३, ३)। वकृ—**पवडंत, पवडेमाण**; (णाया १, १; सिरि ६८६; आचा २, २, ३, ३)।

पवडण न [**प्रपतन**] अधःपात; (बृह ६)।

पवडणया } स्त्री [**प्रपतना**] ऊपर देखो; (ठा ४, ४—
पवडणा } पत्र २८०; राज)।

पवडेमाण देखो **पवड**।

पवड्ड अक [**दे**] पतन, गीला। "जाव गाढा पवड्डइ ताव कोई किंचि अरमणीयं " (सुपा ८, १)।

पवड्ड अक [**प्र+वृध्**] बढ़ना। पवड्डइ; (उव)। वकृ—**पवड्डमाण**; (कप्प; सुर ९, १८१; कु १२४)।

पवड्ड वि [**प्रवृद्ध**] बढ़ा हुआ; (अच्चु ७०)।

पवड्डण न [**प्रवर्धन**] १ बढ़ाव, वृद्धि; (संबोध ११) २ वि. बढ़ाने वाला; "संसारस्स पवड्डणं" (सूअ १, १, २, २४)।

पवड्डिय वि [**प्रवर्धित**] बढ़ाया हुआ; (भवि)।

पवण वि [**प्रवण**] १ तत्पर; (कुप्र १३४)। २ तंदुरस्त, सुस्थ; "पडिवरिओ तह, पवणो पुव्वं व जहा न नेजामो" (उप ५६७ टी; कुप्र ४१८)।

पवण न [**प्लवन**] १ उछल कर गमन; (जीव ३)। २ तरण; "तरिउकामस्स पवहणं(? वण)किच्चं" (णाया १, १४—पत्र १६१)। °**किच्च** पुं [°**कृत्य**] नौका, नाव, डोंगी; (णाया १, १४)।

पवण पुं [**पवन**] १ पवन, वायु; (पाअ; प्रासू १०२)। २ देव-जाति विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, पवनकुमार; (औप; पण्ह १, ४)। ३ हनुमान का पिता; (से १, ४८)। °**गइ** पुं [°**गति**] हनुमान का पिता; (पउम १५, ३७), वानरद्वीप के राजा मन्दर का पुत्र; (पउम ६, ६८)। °**चंड** पुं [°**चण्ड**] व्यक्ति-वाचक नाम; (महा)। °**तणअ** पुं [°**तनय**] हनुमान; (से १, ४८)। °**नंदण** पुं [°**नन्दन**] हनुमान; (पउम १६, २७; सम्मत्त १२३)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] हनुमान; (पउम ५२, २८)। °**वेग** पुं [°**वेग**] १ हनुमान का पिता; (पउम १५, ६५)। २ एक जैन मुनि; (पउम २०, १६०)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] हनुमान; (पउम ४६, १३; से ४, १३; ७, ४६)। °**णंद** पुं [°**नन्द**] हनुमान; (पउम ५२, १)।

पवणंजअ पुं [**पवनञ्जय**] १ हनुमान का पिता; (पउम १५, ६)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र; (कुप्र ३७७)।

पवणिय वि [**प्रवणित**] सुस्थ किया हुआ, तंदुरस्त किया हुआ; (उप ७६८ टी)।

पवण्ण देखो **पवन्न**; (नाट)।

पवत्त देखो **पवट्ट**=प्र+वृत्। पवत्तइ, पवत्तए; (पव २४७; उव)।

पवत्त सक [प्र+वर्तय्] प्रवृत्त करना। पवत्तेइ, पवत्तेहि; (वव १; कप्प)।

पवत्त देखो **पवट्ट**=प्रवृत्त; (पउम ३२, ७०; स ३७६; रंभा)।

पवत्तग वि [**प्रवर्त्तक**] प्रवृत्ति कराने वाला; (उप ३३६ टी; धर्मवि १३२)।

पवत्तण न [**प्रवर्तन**] १ प्रवृत्ति; (हे २, ३०; उत्त ३१, २)। २ वि. प्रवृत्ति कराने वाला; (उत्त ३१, ३; पण्ह १, ५)।

पवत्तय वि [**प्रवर्तक**] १ प्रवृत्ति करने वाला; (हे २, ३०)। वि. प्रवृत्त कराने वाला; "तित्थवरप्पवत्तयं" (अजि १८; गच्छ १, १०)।

पवत्ति स्त्री [**प्रवृत्ति**] प्रवर्तन। °**वाउय** वि [°**व्यापृत**] प्रवृत्ति में लगा हुआ; (औप)।

पवत्ति वि [**प्रवर्तिन्**] प्रवृत्ति कराने वाला; (ठा ३, ३; कस; कप्प)।

पवत्तिणी स्त्री [**प्रवर्तिनी**] साध्वीओं की अध्यक्षा, मुख्य जैन साध्वी; (सुर १, ४१; महा)।

पवत्तिय देखो **पवट्टिअ**; (काल)।

पवत्तिया स्त्री [**दे**] संन्यासी का एक उपकरण; (कुप्र ३७२)।

पवद देखो **पवय**=प्र+वद्। वकृ—**पवदमाण**; (आचा)।

पवदि स्त्री [**प्रवृति**] ढकना, आच्छादन; (संक्षि ६)।

पवद्ध देखो **पवड्ढ**=प्र+वृध्। वकृ—**पवद्धमाण**; (चेइय ६१६)।

पवद्ध पुं [**दे**] घन, हथौड़ा; (दे ६, ११)।

पवद्धिय देखो **पवड्ढिय**; (महा)।

पवन्न वि [**प्रपन्न**] १ स्वीकृत, अंगीकृत; (चेइय ११२; प्रासू २१)। २ प्राप्त; "गुरुयणगुरुविणयपवन्नमाणसो" (महा)।

पवमाण देखो **पव**=प्लु।

पवमाण पुं [**पवमान**] पवन, वायु; (कुप्र ४४४; सुपा ८६)।

पवय सक [**प्र+वद्**] १ बकवाद करना। २ वाद-विवाद करना। वकृ—**पवयमाण**; (आचा १, ५, १, ३; आचा)।

पवय सक [**प्र+वच्**] बोलना, कहना। भवि—कवकृ—**पवक्खमाण**; (धर्मसं ६१)। कर्म—पवुच्चइ, पवुच्चई, पवुच्चति; (कप्प; पि ५४४; भग)।

पवय देखो **पवक**=प्लवक; (उप पृ २१०)।

पवय पुं [**प्लवग**] वानर, कपि; (पउम ६५, ५०; हे ४, २२०; पाअ; से २, ३७; १५, १७)। °**वइ** पुं [°**पति**] वानरों का राजा, सुग्रीव; (से २, ३६)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (से २, ४०; १२, ७०)।

पवयण पुं [**प्राजन**] कोड़ा, चाबुक; (दे २, ६७)।

पवयण न [**प्रवचन**] १ जिनदेव-प्रणीत सिद्धान्त, जैन शास्त्र; (भग २०, ८; प्रासू १८१)। २ जैन संघ; "गुणसमुदाओ संघो पवयण तित्थं ति होइ एगट्ठा" (पंचा ८, ३६; विसे ११११२; उप ४२३ टी; औप)। ३ आगम-ज्ञान; (विसे १११२)। °**माया** स्त्री [°**माता**] पाँच समिति और तीन गुप्ति रूप धर्म; (सम १३)।

पवर वि [**प्रवर**] श्रेष्ठ, उत्तम; (उवा; सुपा ३१६; ३४१; प्रासू १२६; १५४)।

पवरंग न [**दे. प्रवराङ्ग**] सिर, मस्तक; (दे ६, २८)।

पवरा स्त्री [**प्रवरा**] भगवान् वासुपूज्य की शासन-देवी; (पव २७)।

पवरिस सक [**प्र+वृष्**] बरसना, वृष्टि करना। पवरिसइ; (भवि)।

पवल देखो **पबल**; (कप्पू; कुप्र २४७)।

पवस अक [**प्र+वस्**] प्रयाण करना, विदेश जाना। वकृ—**पवसंत**; (से १, २४; गा ६४)।

पवसण न [**प्रवसन**] प्रवास, विदेश-यात्रा, मुसाफिरी; (स १६६; उप १०३१ टी)।

पवसिअ वि [**प्रोषित**] प्रवास में गया हुआ; (गा ४५; ८४०; सुर ५, २११; सुपा ४७३)।

पवह अक [**प्र+वह्**] १ बहना। २ सक. टपकना, झरना। पवहइ; (भवि; पिंग)। वकृ—**पवहंत**; (सुर २, ७५)। संकृ—**पवहित्ता**; (सम ८४)।

पवह सक [**प्र+हन्**] मार डालना। वकृ—"पिच्छउ **पवहंतं** मज्झ करयल कलियकरवाल" (सुपा ५७२)।

पवह वि [**प्रवह**] १ बहने वाला; २ टपकने वाला, चूने वाला; "अट्ठ णालीओ अब्भंतरप्पवहाओ" (विपा १, १— पत्र १६)।

पवह पुं [**प्रवाह**] १ स्रोत, बहाव, जल-धारा; (गा ३६६; ५४१; कुमा)। २ प्रवृत्ति; ३ व्यवहार; ४ उत्तम अश्व; (हे १, ६८)। ५ प्रभाव; (राज)।

पवहण पुंन [**प्रवहण**] १ नौका, जहाज; (णाया १, ३; पि ३५७)। २ गाड़ी आदि वाहन; "जुग्गगया गिल्लिगया थिल्लिगया पवहणगया" (औप; वसु; चारु ७०)।

पवहाइअ वि [**दे**] प्रवृत्त; (दे ६, ३४)।
पवहाविय वि [**प्रवाहित**] बहाया हुआ; (भवि)।
पवा स्त्री [**प्रपा**] जलदान-स्थान, पानी-शाला, प्याऊ; (औप; पगह १, ३; महा)।
पवाइ वि [**प्रवादिन्**] १ वाद करने वाला, वादी; २ दार्शनिक; (सूत्र १, १, १; चउ ४७)।
पवाइअ वि [**प्रवात**] बहा हुआ (वायु); "पवाइया कलंबवाया" (स ६८६; पउम ५७, २७; गाया १, ८; स ३६)।
पवाइअ वि [**प्रवादित**] बजाया हुआ; (कप्प; औप)।
पवाण (अप) देखो **पमाण**=प्रमाण; (कुमा; पि २५१; भवि)।
पवाड सक [**प्र+पातय्**] गिराना। वकृ—**पवाडेमाण**; (भग १७, १—पत्र ७२०)।
पवादि देखो **पवाइ**; (धर्मसं १३३)।
पवाय अक [**प्र+वा**] १ सुख पाना। २ बहना (हवा का)। ३ सक. गमन करना। ४ हिंसा करना। पवाअइ; (प्राकृ ७६)। वकृ—**पवायंत**; (आचा)।
पवाय पुं [**प्रवाद**] १ किंवदन्ती, जन-श्रुति; (सुपा ३००; उप पृ २६)। २ परंपरा-प्राप्त उपदेश; ३ मत, दर्शन; "पवाएण पवायं जाणेज्जा" (आचा)।
पवाय पुं [**प्रपात**] १ गर्त, गढ़ा; (णाया १, १४—पत्र १६१; दे १, १२)। २ ऊँचे स्थान से गिरता जल-समूह; (सम ८४)। ३ तट-रहित निराधार पर्वत-स्थान; ४ रात में पड़ने वाली धाड़; (राज)। ५ पतन; (ठा २, ३)। °**द्दह** पुं [°**द्रह**] वह कुण्ड, जहां पर्वत पर से नदी गिरती हो; (ठा २, ३—पत्र ७३)।
पवाय पुं [**प्रवात**] १ प्रकृष्ट पवन; (पगह २, ३)। २ वि. बहा हुआ (पवन); (संचि ७)। ३ पवन-रहित; (बृह १)।
पवायग वि [**प्रवाचक**] पाठक, अध्यापक; (विसे १०६२)।
पवायण न [**प्रवाचन**] प्रपठन, अध्ययन; (सम्मत्त ११७)।
पवायणा स्त्री [**प्रवाचना**] ऊपर देखो; (विसे २८३५)।
पवायय देखो **पवायग**; (विसे १०६२)।
पवाल पुंन [**प्रवाल**] १ नवांकुर, किसलय; (पाअ ३४१; णाया १, १; सुपा १२६)। २ मूँगा, विद्रुम; (पाअ; कप्प)। °**मंत**, °**वंत** वि [°**वत्**] प्रवाल वाला; (णाया १, १; औप)।
पवालिअ वि [**प्रपालित**] जो पालने लगा हो वह; (उप ७२८ टी)।
पवास पुं [**प्रवास**] विदेश-गमन, परदेश-यात्रा; (सुपा ६६७; हेका ३७; सिरि ३५६)।
पवासि } वि [**प्रवासिन्**] मुसाफिर; (गा ६८; षड्;
पवासु } पि ११८; हे ४, ३६५)।
पवाह सक [**प्र+वाहय्**] बहाना, चलाना। पवाहइ; (भवि)। भवि—पवाहेहिति; (विसे २४६ टी)।
पवाह देखो **पवह**=प्रवह; (हे १, ६८; ८२; कुमा; गाया १, १४)।
पवाह पुं [**प्रवाध**] प्रकृष्ट पीड़ा; (विपा १, ६—पत्र ६०)।
पवाहण न [**प्रवाहन**] १ जल, पानी; (आवम)। २ बहाना, बहन कराना; (चेइय ५२३)।
पवि पुं [**पवि**] वज्र, इन्द्र का अस्त्र-विशेष. (उप २११ टी; सुपा ४६७; कुमा; धर्मवि ८०)।
पविअंभिअ वि [**प्रविजृम्भित**] प्रोल्लसित, समुत्पन्न; (गा ५३६ अ)।
पविआ स्त्री [**दे**] पक्षी का पान-पात्र; (दे ६, ४; ८, ३२; पाअ)।
पविइण्ण वि [**प्रवितीर्ण**] दिया हुआ; (औप)।
पविइण्ण } वि [**प्रविकीर्ण**] १ व्याप्त; (औप; णाया
पविइन्न } १, १ टी—पत्र ३)। २ विक्षिप्त, निरस्त; (णाया १, १)।
पविकत्थ सक [**प्रवि+कत्थ्**] आत्म-श्लाघा करना। पविकत्थई; (सम ५१)।
पविकसिय वि [**प्रविकसित**] प्रकर्ष से विकसित; (राज)।
पविकिर सक [**प्रवि+कॄ**] फेंकना। वकृ—**पविकिरमाण**; (ठा ८)।
पविक्खिअ वि [**प्रवीक्षित**] निरीक्षित, अवलोकित; (स ७४६)।
पविक्खिर देखो **पविकिर**। "नाविअजणे य भंडं पविक्खिरंते समुद्दम्मि" (सुर १३, २०६)।
पविग्घ वि [**दे**] विस्मृत; (षड्)।
पविचरिय वि [**प्रविचरित**] गमन-द्वारा सर्वत्र व्याप्त;(राय)।
पविज्जल वि [**प्रविज्वल**] १ प्रज्वलित; (सूत्र १, ५, २, ५)। २ रुधिरादि से पिच्छिल—व्याप्त; (सूत्र १, ५, २, १६; २१)।
पविट्ठ वि [**प्रविष्ट**] घुसा हुआ; (उवा; सुर ३, १३६)।
पविणी सक [**प्रवि+णी**] दूर करना। पविणेन्ति; (भग)।
पवित्त पुं [**पवित्र**] १ दर्भ, तृण-विशेष; (दे ६, १४)।

२ वि. निर्दोष, निष्कलङ्क, शुद्ध, स्वच्छ; (कुमा; भग; उत्तर ४५)।

पवित्त देखो **पवट्ट**=प्रवृत्त; (से ६, ५७)।

पवित्त सक [**पवित्रय्**] पवित्र करना। वकृ—**पवित्तयंत**; (सुपा ८५)। कृ—**पवित्तियव्व**; (सुपा ५८४)।

पवित्तय न [**पवित्रक**] अंगूठी, अंगुलीयक; (णाया १, ५; औप)।

पवित्ताविय वि [**प्रवर्तित**] प्रवृत्त किया हुआ; (भवि)।

पवित्ति देखो **पवत्ति**=प्रवृत्ति; (सुपा २; ओघ ६३; औप)।

पवित्तिणी देखो **पवत्तिणी**; (कस)।

पवित्थर अक [**प्रवि+स्तृ**] फैलाना। वकृ—**पवित्थरमाण**; (पव २५५)।

पवित्थर पुं [**प्रविस्तर**] विस्तार; (उवा; सूअ २, २, ६२)।

पवित्थरिअ वि [**प्रविस्तृत**] विस्तीर्ण; (स ७५२)।

पवित्थरिल्ल वि [**प्रविस्तरिन्**] विस्तार वाला; (राज— पण्ह १, ५)। देखो **पविरल्लिय**।

पवित्थारि वि [**प्रविस्तारिन्**] फैलने वाला; (गउड)।

पविद्ध देखो **पव्विद्ध**; (पव २)।

पविद्धत्थ वि [**प्रविध्वस्त**] विनष्ट; (जीव ३)।

पविभत्ति स्त्री [**प्रविभक्ति**] पृथग् २ विभाग; (उत्त २, १)।

पविभाग पुं [**प्रविभाग**] ऊपर देखो; (विसे १६४२)।

पविमुक्क वि [**प्रविमुक्त**] परित्यक्त; (सुर ३, १३६)।

पविमोयण न [**प्रविमोचन**] परित्याग; (औप)।

पविय वि [**प्राप्त**] प्राप्त; "भुवि उवहासं पविया दुक्खाण हुंति ते खिलया" (आरा ४४)।

पवियंभिर वि [**प्रविजृम्भितृ**] १ उल्लसित होने वाला; २ उत्पन्न होने वाला; (सण)।

पवियक्किय न [**प्रवितर्कित**] विकल्प, वितर्क; (उत्त २३, १४)।

पवियक्खण वि [**प्रविचक्षण**] विशेष प्रवीण; (उत्त ६, ६३)।

पवियार पुं [**प्रवीचार**] १ काया और बचन की चेष्टा-विशेष; (उप ६०२)। २ काम-क्रीडा, मैथुन; (देवेन्द्र ३४७; पव २६६)।

पवियारण न [**प्रविचारण**] संचार; "वाउपवियारणट्ठा छब्भायं ऊणयं कुज्जा" (पिंड ६५०)।

पवियारणा स्त्री [**प्रविचारणा**] काम-क्रीडा, मैथुन; (देवेन्द्र ३४७)।

पवियास सक [**प्रवि+काशय्**] फाड़ना, खोलना; "पवियासइ नियवयणं" (धर्मवि १२४)।

पवियासिय वि [**प्रविकासित**] विकसित किया हुआ; "पवियासियकमलवणं खणं निहालेइ दिणनाहं" (सुपा ३४)।

पविरइअ वि [**दे**] त्वरित, शीघ्रता-युक्त; (दे ६, २८)।

पविरंज सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोडना। पविरंजइ; (हे ४, १०६)।

पविरंजव वि [**दे**] स्निग्ध, स्नेह-युक्त; (षड्)।

पविरंजिअ वि [**भग्न**] भाँगा हुआ; (कुमा; दे ६, ७४)।

पविरंजिअ वि [**दे**] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त; २ कृत-निषेध, निवारित; (दे ६, ७४)।

पविरल वि [**प्रविरल**] १ अ-निबिड; २ विच्छिन्न; (गउड)। ३ अत्यन्त थोड़ा, बहुत ही कम; "परकज्जकरणरसिया दीसंति महीए पविरलनरिंदा" (सुपा २४०)।

पविरल्लिय वि [**दे**] विस्तार वाला; (पण्ह १, ५—पत्र ६१)। देखो **पवित्थरिल्ल**।

पविरिक्क वि [**प्रविरिक्त**] एकदम शून्य, बिलकुल खाली; (गउड ६८५)।

पविरेल्लिय [**दे**] देखो **पविरल्लिय**; (पण्ह १, ५ टी—पत्र ६२)।

पविलुंप सक [**प्रवि+लुप्**] बिलकुल नष्ट करना। कवकृ—**पविलुप्पमाण**; (महा)।

पविलुत्त वि [**प्रविलुप्त**] बिलकुल नष्ट; (उप ५६७ टी)।

पविलुप्पमाण देखो **पविलुंप**।

पविस सक [**प्र+विश्**] प्रवेश करना, घुसना। पविसइ; (उव; महा)। भवि—पविसिस्सामि, पविसिहिइ; (पि ५२६)। वकृ—**पविसंत, पविसमाण**; (पउम ७६, १६; सुपा ४४८; विपा १, ५; कप्प)। संकृ—**पविसित्ता, पविसित्तु, पविसिअ, पविसिऊण**; (कप्प; महा; अभि ११६; काल)। हेकृ—**पविसित्तए, पवेट्ठुं**; (कस; कप्प; पि ३०३)। कृ—**पविसिअव्व**; (ओघ ६१; सुपा ३८१)।

पविसण न [**प्रवेशन**] प्रवेश, पैठ; (पिंड ३१७)।

पविसु सक [**प्रवि+सू**] उत्पन्न करना। संकृ— **पविसुइत्ता**; (सूअ २, २, ६५)।

पविस्स देखो **पविस**। पविस्सइ; (महा) । वकृ—**पविस्समाण**; (भवि) ।

पविहर सक [**प्रवि + हृ**] विहार करना, विचरना । पविहरंति; (उत्र) ।

पविहस अक [**प्रवि + हस्**] हसना, हास्य करना । वकृ—**पविहसंत**; (पउम ६६, ११) ।

पवीइय वि [**प्रवीजित**] हवा के लिए चलाया हुआ; (औप) ।

पवीण वि [**प्रवीण**] निपुण, दक्ष; (उप ६८६ टी) ।

पवीणी देखो **पविणी** । पवीणेइ; (औप) ।

पवील सक [**प्र+पीडय्**] पीड़ना, दमन करना । पवीलए; (आचा १, ४, ४, १) ।

पवुच्च° देखो **पवय=प्र+वच्** ।

पवुट्ठ वि [**प्रवृष्ट**] १ खूब बरसा हुआ, जिसने प्रभूत वृष्टि की हो वह; (आचा २, ४, १, १३) । २ न. प्रभूत वृष्टि, वर्षण; "काले पवुट्ठं विअ अहिणंदिदं देवन्न सासणं" (अभि २२०) ।

पवुड्ढ वि [**प्रवृद्ध**] बड़ा हुआ, विशेष वृद्ध; (दे १, ६) ।

पवुड्ढि स्त्री [**प्रवृद्धि**] बढ़ाव; (पंच ५, ३३) ।

पवुत्त वि [**प्रोक्त**] १ जो कहने लगा हो, जिसने बोलना आरम्भ किया हो वह; (पउम २७, १६; ६४, २१) । २ उक्त, कथित; (धर्मवि ८२) ।

पवुत्थ [**दे**] देखो **पउत्थ**; "पुत्तुं पुत्त वेत्तु गामे पवुत्था" (श्राक २३; २६) ।

पवुद वि [**प्रवृत**] प्रकर्ष से आच्छादित; (प्राकृ १२) ।

पवूढ वि [**प्रव्यूढ**] १ धारण किया हुआ; (स ६११) । २ निर्गत; (राज) ।

पवेइय वि [**प्रवेदित**] १ निवेदित, प्रतिपादित; "तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं" (उप ३७४ टी; भग) । २ विज्ञात, विदित; (राज) । ३ भेंट किया हुआ; (उत्त १३, १३; सुख १३, १३) ।

पवेइय वि [**प्रवेपित**] कम्पित; (पउम ५, ७८) ।

पवेज्ज सक [**प्र+वेदय्**] १ विदित करना । २ भेंट करना । ३ अनुभव करना । पवेज्जए; (सुअ १, ८, २४) ।

पवेढिय वि [**प्रवेष्टित**] वेढ़ा हुआ; (सुर १२, १०४) ।

पवेय देखो **पवेज्ज** । पवेयंति; (आचा १, ६, २, १२) । हेकृ—**पवेइत्तए**; (कस) ।

पवेयण न [**प्रवेदन**] १ प्ररूपण, प्रतिपादन; २ ज्ञान, निर्णय; ३ अनुभावन; (राज) ।

पवेविय वि [**प्रवेपित**] प्रकम्पित; (णाया १, १—पत्र ४२; उप २२, ३६) ।

पवेविर वि [**प्रवेपितृ**] काँपने वाला; (पउम ८०, ६४) ।

पवेस सक [**प्र + वेशय्**] घुसाना । पवेसेइ; (महा) । पवेसआमि; (पि ४९०) ।

पवेस पुं [**प्रवेश**] १ पैठ, घुसना; (कुमा; गउड; श्रावू २२) । २ नाटक का एक हिस्सा; (कप्पू) ।

पवेस पुं [**प्रद्वेष**] अधिक द्वेष; (भवि) ।

पवेसण, **पवेसणग**, **पवेसणय** पुंन [**प्रवेशन, °क**] १ प्रवेश, पैठ; (पण्ह १, ३; राज ३८; द्रव्य ३२) । २ विजातीय उत्पादक में उत्पत्ति, विजातीय योनि में प्रवेश; (भग ६, ३२) ।

पवेसि वि [**प्रवेशिन्**] प्रवेश करने वाला; (औप) ।

पवेसिय वि [**प्रवेशित**] घुसाया हुआ; (लण) ।

पवोत्त पुं [**प्रपौत्र**] पौत्र का पुत्र; (श्राक ८) ।

पव्व पुंन [**पर्वन्**] १ ग्रन्थि, गाँठ; (ओघ ४८६; जी १२; सुपा ४०५) । २ उत्सव, त्यौहार; (सुपा ४०३; श्रा २८) । ३ पूर्णिमा और अमावास्या तिथि; ४ पूर्णिमा और अमावास्या वाला पक्ष; (टा ६—पत्र ३७०; सुज्ज १०) । ५ अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावास्या का दिन; "अट्ठमी चउद्दसी पुण्णिमा य तहमावसा हवइ पव्वं । मासम्मि पव्वछक्कं तिन्नि य पव्वाइं पक्खम्मि" (धर्म २) । ६ मेखला, गिरिमेखला; ७ इन्द्रा-पर्वत; (सुअ १, ६, १२) । ८ संख्या-विशेष, (इक) । °**बीय** पुं [°**बीज**] इक्षु-आदि वन, जिसका पर्व—ग्रन्थि—ही उत्पत्ति का कारण होता है; (राज) । °**राहु** पुं [°**राहु**] राहु-विशेष, जो पूर्णिमा और अमावास्या में क्रमशः चन्द्र और सूर्य का ग्रहण करता है; (सुज्ज १६) ।

पव्वइ न [**पर्वतिन्**] १ गोत्र-विशेष, काश्यप गोत्र की एक शाखा; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (राज) । देखो **पव्वपेच्छइ** ।

पव्वइ देखो **पव्वई**; (स ४५५) ।

पव्वइअ वि [**प्रव्रजित**] १ दीक्षित, संन्यस्त; (औप; उत्तनि ३—गाथा १६६) । २ गत, प्राप्त; "अनगारओ अणगारियं पव्वइआ" (औप; सम; कप्प) । ३ न. दीक्षा, संन्यास; (वव १) ।

पव्वइंद पुं [**पर्वतेन्द्र**] मेरु पर्वत; (सुअ ६ टी) ।

पव्वइग देखो **पव्वइअ**; (उप पृ ३३५)। स्त्री—°**गा**; (उप पृ ५४)।

पव्वइसेल्ल न [**दे**] बाल-मय कंडक—तावीज; (दे ६, ३१)।

पव्वई स्त्री [**पार्वती**] गौरी, शिव-पत्नी; (पात्र)।

पव्वंग पुंन [**पर्वाङ्ग**] संख्या-विशेष; (इक)।

पव्वक } पुंन [**पर्वक**] १ वाद्य-विशेष; (पराह २, ५—पत्र **पव्वग** } १४९)। २ ईख जैसी ग्रन्थि वाली वनस्पति; (पराण १)। ३ तृण-विशेष; (निचू १)।

पव्वज्ज पुं [**दे**] १ नख; २ शर, बाण; ३ बाल-मृग; (दे ६, ६९)।

पव्वज्जा स्त्री [**प्रव्रज्या**] १ गमन, गति; २ दीक्षा, संन्यास; (ठा ३, २; ४, ४; प्रासू १६७)।

पव्वणी स्त्री [**पर्वणी**] कार्तिकी आदि पर्व-तिथि; (णाया १, १—पत्र ५३)।

पव्वपेच्छइ न [**पर्वप्रेक्षकिन्**] देखो **पव्वइ**; (ठा ७—पत्र ३९०)।

पव्वय सक [**प्र+व्रज्**] १ जाना, गति करना। २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना। पव्वयइ; (महा)। भवि—पव्वइस्सामो, पव्वइहिंति; (औप)। वकृ—**पव्वयंत, पव्वयमाण**; (सुर १, १२३; ठा ३, १)। हेकृ—**पव्वइत्तए, पव्वइउं**; (औप; भग; सुपा २०९)।

पव्वय देखो **पव्वग**; (पराण १—पत्र ३३)।

पव्वय देखो **पव्वइअ**; "अगारमावसंतावि अरराणा वावि पव्वया" (सूअ १, १, १, १९)।

पव्वय } पुंन [**पर्वत, °क**] १ गिरि, पहाड़; (ठा ३, ४; **पव्वयय** } प्रासू १५४; उवा), "पव्वयाणि वणाणि य" (दस ७, २६; ३०)। २ पुं. द्वितीय वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम; (सम १५३; पउम २०, १७१)। ३ एक ब्राह्मण-पुत्र का नाम; (पउम ११, ९)। ४ एक राजा; (भवि)। ५ एक राज-कुमार; (उप ९३७)। °**राय** पुं [°**राज**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। °**विदुग्ग** पुंन [°**विदुर्ग**] पर्वतीय देश, पहाड़ वाला प्रदेश; (भग)।

पव्वह सक [**प्र+व्यथ्**] पीड़ना, दुःख देना। पव्वहेज्जा; (सूअ १, १, ४, ९)। कवकृ—**पव्वहिज्जमाण**; (णाया १, १६—पत्र १९९)।

पव्वहणा स्त्री [**प्रव्यथना**] व्यथा, पीडा; (औप)।

पव्वहिय वि [**प्रव्यथित**] अति दुःखित; (आचा १, ३, ६, १)।

पव्वा स्त्री [**पर्वा**] लोकपालों की एक बाह्य परिषद्; (ठा ३, २—पत्र १२७)।

पव्वाअंत देखो **पव्वाय=म्लै**।

पव्वाइअ वि [**प्रव्राजित**] १ जिसको दीक्षा दी गई हो वह; (सुपा ५६६)। २ न. दीक्षा देना; (राज)।

पव्वाइअ वि [**म्लान**] विच्छाय, शुष्क; (कुमा ६, १२)।

पव्वाइआ स्त्री [**प्रव्राजिका**] परिव्राजिका, संन्यासिनी; (महा)।

पव्वाडिअ देखो **पव्वालिअ=**प्लावित; (से ५, ४१)।

पव्वाण वि [**म्लान**] शुष्क, सूखा; (ओघ ४८८)।

पव्वाय देखो **पवाय=**प्र+वा। पव्वाअइ; (प्राकृ ७६)।

पव्वाय सक [**प्र+व्राजय्**] दीक्षित करना; (सुपा ५६६)।

पव्वाय अक [**म्लै**] सूखना। पव्वायइ; (हे ४, १८)। वकृ—**पव्वाअंत**; (से ७, ६७)।

पव्वाय वि [**म्लान, प्रवाण**] शुष्क, सूखा हुआ; (पाअ; ओघ ३६३; स २०३; से ३, ४८; ९, ६३; पिंड ४४)।

पव्वाय पुं [**प्रवात**] प्रकृष्ट पवन; (गा ६२३)।

पव्वाल सक [**छादय्**] ढकना, आच्छादन करना। पव्वालइ; (हे ४, २१)।

पव्वाल सक [**प्लावय्**] खूब भिजाना, तराबोर करना। पव्वालइ; (हे ४, ४१)।

पव्वालण न [**प्लावन**] तराबोर करना; (से ६, १५)।

पव्वालिअ वि [**प्लावित**] जल-व्याप्त, सराबोर किया हुआ; (पाअ; कुमा; से ९, १०)।

पव्वालिअ वि [**छादित**] ढका हुआ; (कुमा)।

पव्वाव सक [**प्र+व्राजय्**] दीक्षित करना, संन्यास देना। पव्वावेइ; (भग)। संकृ—**पव्वावेऊण**; (पंचव २)। हेकृ—**पव्वावित्तए, पव्वावेत्तए, पव्वावेउं**; (ठा २, १; कस; पंचभा)।

पव्वावण न [**प्रव्राजन**] दीक्षा देना; (उव; ओघ ४४२ टी)।

पव्वावण न [**दे**] प्रयोजन; (पिंड ५१)।

पव्वावणा स्त्री [**प्रव्राजना**] दीक्षा देना; (ओघ ४४३; पव २५; सूअनि १२७)।

पव्वाविय वि [**प्रव्राजित**] दीक्षित, साधु बनाया हुआ; (णाया १, १—पत्र ६०)।

पव्वाह सक [**प्र+वाहय्**] बहाना, प्रवाह में डालना। वकृ—**पव्वाहमाण**; (भग ५, ४)।

पव्विद्ध वि [**दे**] प्रेरित; (दे ६, ११)।

पव्विद्ध वि [**प्रवृद्ध**] महान्, बड़ा; (से १४, ४२)।

पव्विद्ध न [**प्रविद्ध**] गुरु-वन्दन का एक दोष, वन्दन को बिना ही समाप्त किये भागना; (पव २)।

पव्वीसग न [**दे. पव्वीसग**] वाद्य-विशेष; (राय १, ४—पत्र ६८)।

पसइ स्त्री [**प्रसृति**] १ नाप-विशेष, दो असति का एक परिमाण; (तंदु २६)। २ पूर्ण अञ्जलि, दो हस्त-तल मिला कर भरी हुई चीज; (कुप्र ३७४)।

पसंग पुंन [**प्रसङ्ग**] १ परिचय उपलम्भ; (स३०५)। २ संगति, संबन्ध; "लोए पलीवणं पिव पसत्तदुव्वसणमेणा" (ठा ४, ४; कुप्र २६),

"वरं दिट्ठिविसो सप्पो वरं हालाहलं विसं।

हीणायारागीयत्थवयणपसंगं खु णो भद्दं" (संबोध ३६)।

३ आपत्ति, अनिष्ट-प्राप्ति; (स ६७४)। ४ मैथुन, काम-क्रीडा; (पण्ह १, ४)। ५ आसक्ति; ६ प्रस्ताव, अधिकार; (गउड; भवि; पंचा ६, २६)।

पसंगि वि [**प्रसङ्गिन्**] प्रसंग करने वाला, आसक्त; "जुअप्पसंगी" (महा; णाया १, २)।

पसंज अक [**प्र+सञ्ज्**] १ आसक्ति करना। २ आपत्ति होना, अनिष्ट-प्राप्ति होना। पसज्जइ; (उव)। "अपिच्छे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसि" (उत्त १८, ११; १२)। पसज्जेज्जा; (विसे २६६)।

पसंडि न [**दे**] कनक, सुवर्ण; (दे ६, १०)।

पसंत वि [**प्रशान्त**] १ प्रकृष्ट शान्त, शम-प्राप्त; (कप्प; स ४०३; कुमा)। २ साहित्यशास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष, शान्त रस; (अणु)।

पसंति स्त्री [**प्रशान्ति**] नाश, विनाश; "सव्वदुक्खप्पसंतीणं" (अजि ३)।

पसंधण न [**प्रसन्धान**] सतत प्रवर्तन; (पिंड ४६०)।

पसंस सक [**प्रशंस्**] श्लाघा करना। पसंसइ; (महा; भवि)। वकृ—**पसंसंत, पसंसमाण**; (पउम २८, १५; २२, ६८)। कवकृ—**पसंसिज्जमाण**; (वसु)। संकृ—**पसंसिऊण**; (महा)। कृ—**पसंसणिज्ज, पसस्स, पसंसियव्व**; (सुपा ४७; ६४५; सुर १, २१६; पउम ७५, ८), देखो **पसंस**।

पसंस वि [**प्रशस्य**] १ प्रशंसा-योग्य; २ पुं. लोभ; (सूअ १, २, २, २६)।

पसंसण न [**प्रशंसन**] प्रशंसा, श्लाघा; (उप ३८२ टी; सुपा २०६; उप पृ ३०)।

पसंसय वि [**प्रशंसक**] प्रशंसा करने वाला; (श्रा ६; भवि)।

पसंसा स्त्री [**प्रशंसा**] श्लाघा, स्तुति, वर्णन; (प्रासू १६७; कुमा)।

पसंसिअ वि [**प्रशंसित**] श्लाघित; (उत्त १४, ३८)।

पसज्ज देखो **पसंज**।

पसज्झ | अ [**प्रसह्य**] १ खुले तौर से, प्रकट रीति से;
पसज्झं | (सूअ १, २, २, १६)। २ हठात्, बलात्कार से; (स ३१)।

पसढ वि [**प्रशठ**] अत्यन्त शठ; (सूअ २, ४, ३)।

पसढं देखो **पसज्झ**; (उत्त ५, ६, ११)।

पसढिल वि [**प्रशिथिल**] विशेष ढीला; (हे १, ८६)।

पसण्ण वि [**प्रसन्न**] १ खुश, स्वस्थ; (से ५, ४१; गा ४६५)। २ स्वच्छ, निर्मल; (औप; ओघ ३४५)। °चंद पुं [°चन्द्र] भगवान् महावीर के समय का एक राजर्षि; (उव; पडि)।

पसण्णा स्त्री [**प्रसन्ना**] मदिरा, दारू; (णाया १, १६; विपा १, २)।

पसत्त वि [**प्रसक्त**] १ चिपका हुआ; (गउड ५१)। २ आसक्त; (गउड ५३१; उव)। ३ आपत्ति-ग्रस्त, अनिष्ट-प्राप्ति के दोष से युक्त; (विसे १८५६)।

पसत्ति स्त्री [**प्रसक्ति**] १ आसक्ति, अभिष्वङ्ग; (उप १३१)। २ आपत्ति-दोष; (अज्झ ११६)।

पसत्थ वि [**प्रशस्त**] १ प्रशंसनीय, श्लाघनीय; २ श्रेष्ठ, अच्छा; (हे २, ४५; कुमा)।

पसत्थि स्त्री [**प्रशस्ति**] वंशोत्कीर्तन, वंश-वर्णन; (गउड; सम्मत्त ८३)।

पसत्थु पुं [**प्रशास्तृ**] १ लेखाचार्य, गणित का अध्यापक; (ठा ३, १)। २ धर्म-शास्त्र का पाठक; (ठा ३, १; औप)। ३ मन्त्री, अमात्य; (सूअ २, १, १३)।

पसन्न देखो **पसण्ण**; (महा; भवि; सुपा ६१४)।

पसन्ना देखो **पसण्णा**; (पाअ; पउम १०२, १२२; सुख २, २६)।

पसप्प पुं [**प्रसर्प**] विस्तार, फैलाव; (द्रव्य १०)।

पसप्पग वि [**प्रसर्पक**] १ प्रकर्ष से जाने वाला, मुसाफिरी करने वाला; २ विस्तार को प्राप्त करने वाला; (ठा ४, ४—पत्र २६४)।

पसम अक [प्र + शम्] अच्छी तरह शान्त होना। पसमंति; (आक १६)।

पसम पुं [प्रशम] १ प्रशान्ति, शान्ति; (कुमा)। २ लगा तार दो उपवास; (संबोध ५८)।

पसम पुं [प्रश्रम] विशेष मेहनत—खेद; (आव ४)।

पसमण न [प्रशमन] १ प्रकृष्ट शमन; (पिंड ६६३; सुर १, २४६)। २ वि. प्रशान्त करने वाला; (स ६६५)। स्त्री—°णी; (कुमा)।

पसमाविअ वि [प्रशमित] प्रशान्त किया हुआ; (स ६२)।

पसमिक्ख सक [प्रसम् + ईक्ष्] प्रकर्ष से देखना। संकृ—**पसमिक्ख**; (उत्त १४, ११)।

पसमिण वि [प्रशमिन्] प्रशान्त करने वाला, नाश करने वाला; "पावंति, पावपसमिण पासजिण तुह प्पभावेण" (णमि १७)।

पसम्म देखो **पसम**=प्र + शम्। पसम्मइ; (गउड)। वकृ—**पसम्मंत**; (से १०, २२; गउड)।

पसय पुं [दे] १ मृग-विशेष; (दे ६, ४; पणह १, १; भवि; सण; महा)। २ मृग-शिशु; (विपा १, ४)।

पसय वि [प्रसृत] फैला हुआ; "पसयच्छि!" (वज्जा ११२; १४४)। देखो **पसिअ**=प्रसृत।

पसर अक [प्र + सृ] फैलना। पसरइ; (पि ४७७; भवि)। वकृ—**पसरंत**; (सुर १, ८६; भवि)।

पसर पुं [प्रसर] विस्तार, फैलाव; (हे ४, १५७; कुमा)।

पसरण न [प्रसरण] ऊपर देखो; (कप्पू)।

पसरिअ वि [प्रसृत] फैला हुआ, विस्तृत; (औप; गा ४; भवि; णाया १, १)।

पसरेह पुं [दे] किंजल्क; (दे ६, १३)।

पसल्लिअ वि [दे] प्रेरित; (षड्)।

पसव सक [प्र + सू] जन्म देना, उत्पन्न करना। पसवइ; (हे ४, २३३)। पसवंति; (उव)। वकृ—**पसवमाण**; (सुपा ४३४)।

पसव (अप) सक [प्र + विश्] प्रवेश करना। पसवइ; (प्राकृ ११९)।

पसव पुं [प्रसव] १ जन्म, उत्पत्ति; (कुमा)। २ न. पुष्प, फूल; "कुसुमं पसवं पसूअं च" (पाअ), "पुप्फाणि अ कुसुमाणि अ फुल्लाणि तहेव होंति पसवाणि" (दसनि १, ३६)।

पसव [दे] देखो **पसय**। "पसवा हवंति एए" (पउम ११, ७७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] मृगराज, सिंह; (स ६५७)। °**राय** पुं [°**राज**] सिंह; (स ६५७)।

पसवडक्क न [दे] विलोकन; (दे ६, ३०)।

पसवण न [प्रसवन] प्रसूति, जन्म-दान; (भग; उप ७४४; सुर ६, २४८)।

पसवि वि [प्रसविन्] जन्म देने वाला; (नाट—शकु ७४)।

पसविय वि [प्रसूत] जो जन्म देने लगा हो, जिसने जन्म दिया हो वह; "सयमेव पसविया हं महाकिलेसेण नरनाह" (सुर १०, २३०; सुपा ३९)। देखो **पसूअ**=प्रसूत।

पसविर वि [प्रसवितृ] जन्म देने वाला; (नाट)।

पसस्स देखो **पसंस**।

पसस्स वि [प्रशस्य] प्रभूत शस्य वाला; (सुपा ६४५)।

पसाइअ वि [प्रसादित] १ प्रसन्न किया हुआ; (स ३८६; ५७६)। २ प्रसन्न होने के कारण दिया हुआ; "अंगविलग्गमसेसं पसाइयं कडयवत्थाइं" (सुर १, १६३)।

पसाइआ स्त्री [दे] भिल्ल के सिर पर का पर्ण-पुट, भिल्लों की पगडी; (दे ६, २)।

पसाइयव्व देखो **पसाय**=प्र+सादय्।

पसाम वि [प्रशाम्] शान्त होने वाला; (षड्)।

पसाय सक [प्र+सादय्] प्रसन्न करना, खुश करना। पसाअंति, पसाएसि; (गा ९१; सिक्खा ६१)। वकृ—**पसाअमाण**; (गा ७४५)। हेकृ—**पसाइउं, पसाएउं**; (महा; गा ५२४)। कृ—**पसाइयव्व**; (सुपा ३६५)।

पसाय पुं [प्रसाद] १ प्रसत्ति, प्रसन्नता, खुशी; "जणमणपसायजणणो" (वसु)। २ कृपा, मह्रबानी; (कुमा)। ३ प्रणय; (गा ७१)।

पसायण न. [प्रसादन] प्रसन्न करना; "देवपसायणपहाणमणो" (कुप्र ५; सुपा ७; महा)।

पसार सक [प्र + सारय्] पसारना, फैलाना। पसारेइ; (महा)। वकृ—**पसारेमाण**; (णाया १, १; आचा)। संकृ—**पसारिअ**; (नाट—मृच्छ २५५)।

पसार पुं [प्रसार] विस्तार, फैलाव; (कप्पू)।

पसारण न [प्रसारण] ऊपर देखो; (सुपा ५८३)।

पसारिअ वि [प्रसारित] १ फैलाया हुआ; (सण; नाट—वेणी २३)। २ न. प्रसारण; (सम्मत्त १२३; दस ४, ३)।

पसास सक [**प्र + शासय्**] १ शासन करना, हुकूमत करना । २ शिक्षा देना । ३ पालन करना । वकृ— "रज्जं **पसासेमाणे** विहरइ " (णाया १, १ टी—पत्र ६; १, १४—पत्र १८६; औप; महा) ।

पसाह सक [**प्र + साधय्**] १ वश में करना । २ सिद्ध करना । पसाहेइ; (नाट; भवि) । वकृ—**पसाहेमाण**; (औप) ।

पसाहग वि [**प्रसाधक**] साधक, सिद्ध करने वाला; (धर्मसं २३) । °**तम** वि [°**तम**] १ उत्कृष्ट साधक; २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष, करण-कारक; (विसे २११२) । देखो **पसाहय** ।

पसाहण न [**प्रसाधन**] १ सिद्ध करना, साधना; " विज्जा-पसाहणुज्जयविज्जाहरसंनिरुद्धगयणंगे" (सुर ३, १२) । २ उत्कृष्ट साधन; "सव्वुत्तमं माणुसत्तं दुल्लहं भवसमुद्दे पसाहणं नेव्वाणस्स न निउंजेंति धम्मे " (स ७४४) । ३ अलंकार, भूषण; (णाया १, ३; से ३, ४४) । ४ भूषण आदि की सजावट; "भूसणपसाहणाडंबरेहिं" (वज्जा ११४; सुपा ६६) ।

पसाहय देखो **पसाहग**; (काल) २ सजाने वाला; (भग ११, ११) ।

पसाहा स्त्री [**प्रशाखा**] शाखा की शाखा, छोटी शाखा; (णाया १, १; औप महा) ।

पसाहाविय वि [**प्रसाधित**] विभूषित कराया गया, सजवाया हुआ; (भवि) ।

पसाहि वि [**प्रसाधिन्**] सिद्ध करने वाला; "अब्भुदयपसा-हिणी" (संबोध ८; ५४) ।

पसाहिअ वि [**प्रसाधित**] अलंकृत किया हुआ, सजाया हुआ; (से ४, ६१; पात्र) ।

पसाहिल्ल वि [**प्रशाखिन्**] प्रशाखा-युक्त; (सुर ८, १०८) ।

पसिअ अक [**प्र + सद्**] प्रसन्न होना । पसिअ; (गा ३८४; ४६६; हे १, १०१) । पसियइ; (सण) । संकृ—**पसिऊण, पसिऊणं**; (सण; सुपा ७) ।

पसिअ वि [**प्रसृत**] फैला हुआ, विस्तीर्ण; "पसिअच्छि!" (गा ६२०; ६२३) ।

पसिअ न [**दे**] पूग-फल, सुपारी; (दे ६, ६) ।

पसिंच सक [**प्र + सिच्**] सेचन करना । वकृ—**पसिंच-माण**; (सुर १२, १७२) ।

पसिंडि (दे) देखो **पसंडि**; (पात्र) ।

पसिक्खअ वि [**प्रशिक्षक**] सीखने वाला; (गा ६२६ अ) ।

पसिज्जण न [**प्रसदन**] प्रसन्न होना; "अणुरूवकरणा-णुग्गहियं पसियणुण्णयविजंते" (गा ६७५) ।

पसिढिल देखो **पसढिल**; (हे १, ८९; गा ३३३; गउड) ।

पसिण पुं [**प्रश्न**] १ पृच्छा, प्रश्न; (सुपा ११; ४५३) । २ दर्पण आदि में देवता का आह्वान, मन्त्रविद्या-विशेष; (सम १२३; वृह १) । °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] मन्त्रविद्या-विशेष; (ठा १०) । °**पसिण** न [°**प्रश्न**] मन्त्रविद्या के बल से स्वप्न आदि में देवता के आह्वान द्वारा जाना हुआ शुभाशुभ फल का कथन; (वव ५; वृह १) ।

पसिणिय वि [**प्रश्नित**] पूछा हुआ; (सुपा १६; ६२५) ।

पसिद्ध वि [**प्रसिद्ध**] १ विख्यात, विश्रुत; (महा) । २ प्रकर्ष से मुक्ति को प्राप्त, मुक्त; (सिरि ५६६) ।

पसिद्धि स्त्री [**प्रसिद्धि**] १ ख्याति; (हे १, ४४) । २ शंका का समाधान, आक्षेप का परिहार; (अणु; चेइय ४६)।

पसिस्स देखो **पसीस**; (विसे ३४) ।

पसीअ देखो **पसिअ**=प्र+सद् । पसीअइ, पसीअउ; (कुत्र १)। संकृ—**पसीऊण**; (सण) ।

पसीस पुं [**प्रशिष्य**] शिष्य का शिष्य; (पउम ४, ८६) ।

पसु पुं [**पशु**] १ जन्तु-विशेष, सींग पूँछ वाला प्राणी, चतुष्पाद प्राणि-मात्र; (कुमा; औप) । २ अज, बकरा; (अणु)। °**भूय** वि [°**भूत**] पशु-तुल्य; (सूत्र १, ४, २) । °**मेह** पुं [°**मेध**] जिसमें पशु का भोग दिया जाता हो वह यज्ञ; (पउम ११, १२) । °**वइ** पुं [°**पति**] महादेव, शिव; (गा १; सुपा ३१) ।

पसुत्त वि [**प्रसुप्त**] सोया हुआ; (हे १, ४४; प्राप्र; णाया १, १६) ।

पसुत्ति स्त्री [**प्रसुप्ति**] कुष्ट रोग विशेष, नखादि-विदारण होने पर भी अचेतनता; (राज) । देखो **पसूइ** ।

पसुव (अप) देखो **पसु**; (भवि) ।

पसुहत्त पुं [**दे**] वृक्ष, पेड़; (दे ६, २६) ।

पसू सक [**प्र + सू**] जन्म देना, प्रसव करना । वकृ—**पसू-अमाण**; (गा १२३) । संकृ — **पसूइत्ता**; (राज) ।

पसू वि [**प्रसू**] प्रसव-कर्त्री, जन्म-दाता; (मोह २६) ।

पसूअ न [**दे**] पुष्प, फूल; (दे ६, ८; पात्र; भवि) ।

पसूअ वि [**प्रसूत**] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो; (णाया १, ७; उवः प्रासू १५६) । २ देखो **पसविय**; (महा) ।

पसूअण न [**प्रसवन**] जन्म-दान; (सुपा ४०३) ।

पसूइ स्त्री [**प्रसूति**] १ प्रसव, जन्म, उत्पत्ति; (पउम २१,

३४; प्रासू १२८) । २ एक जात का कुष्ठ रोग, नखादि से विदारण करने पर भी दुःख का अ-संवेदन, चमड़ी का मर जाना; (पिंड ६००)। °रोग पुं [°रोग] रोग-विशेष; (सम्मत्त ५८)।

पसूइय पुं [**प्रसूतिक**] वातरोग-विशेष; (सिरि ११७)।

पसूण न [**प्रसून**] फूल, पुष्प; (कुमा; सण)।

पसेअ पुं [**प्रस्वेद**] पसीना; (दे ६, १)।

पसेढि स्त्री [**प्रश्रेणि**] अवान्तर श्रेणि—पंक्ति; (पि ६६; राय)।

पसेण पुं [**प्रसेन**] भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम श्रावक का नाम; (विचार ३७८)।

पसेणइ पुं [**प्रसेनजित्**] १ कुलकर-पुरुष-विशेष; (पउम ३, ५५; सम १५०)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र; (अंत ३)।

पसेणि स्त्री [**प्रश्रेणि**] अवान्तर जाति; "अट्ठारससेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ" (णाया १, १—पत्र ३७)।

पसेयग देखो **पसेवय**; (राज)।

पसेव सक [**प्र+सेव्**] विशेष सेवा करना। वकृ—**पसेवमाण**; (श्रु ५५)।

पसेवय पुं [**प्रसेवक**] कोथला, थैला; "राहावियपसेवओ व्व उरंसि लंबंति दोवि तस्स थणया" (उवा)।

पसेविआ स्त्री [**प्रसेविका**] थैली, कोथली; (दे ५, २५)।

पस्स सक [**दृश्**] देखना। पस्सइ; (षड्; प्राकृ ७१)। वकृ—**पस्समाण**; (आचा; औप; वसु; विपा १, १)। कृ—**पस्स**; (ठा ४, ३)।

पस्स (शौ) देखो **पास**=पार्श्व; (अभि १८६; अवि २६; स्वप्न ३६)।

पस्स देखो **पस्स**=दृश्।

पस्सओहर वि [**पश्यतोहर**] देखते हुए चोरी करने वाला; "नणु एसो पस्सओहरो तेणो" (उप ७२८ टी)।

पस्सि वि [**दर्शिन्**] देखने वाला; (पराण ३०)।

पस्सेय देखो **पसेअ**; (सुख २, ८)।

पह वि [**प्रह्व**] १ नम्र; २ विनीत; ३ आसक्त; (प्राकृ २४)।

पह पुं [**पथिन्**] मार्ग, रास्ता; (हे १, ८८; पाअ; कुमा; श्रा २८; विसे १०५२; कप्प; औप)। °**देसय** वि [°**देशक**] मार्ग-दर्शक; (पउम ६८, १७)।

पहएल्ल पुं [**दे**] पूप, पूआ, खाद्य-विशेष; (दे ६, १८)।

पहंकर देखो **पभंकर**; (उत्त २३, ७६; सुख २३, ७६; इक)।

पहंकरा देखो **पभंकरा**; (इक)।

पहंजण पुं [**प्रभञ्जन**] १ वायु, पवन; (पाअ)। २ देव-जाति-विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति; (सुपा ४०)। ३ एक राजा; (भवि)।

पहकर [**दे**] देखो **पहयर**; (णाया १, १; कप्प; औप; उप पृ ४७; विपा १, १; राय; भग ६, ३३)।

पहट्ठ वि [**दे**] १ दृप्त, उद्धत; (दे ६, ६; षड्)। २ अचिरतर दृष्ट, थोड़े ही समय के पूर्व देखा हुआ; (षड्)।

पहट्ठ वि [**प्रहृष्ट**] आनन्दित, हर्ष-प्राप्त; (औप; भग)।

पहण सक [**प्र+हन्**] मार डालना। पहणइ, पहणे; (महा; उत्त १८, ४६)। कर्म—पहणिज्जइ; (महा)। वकृ—**पहणंत**; (पउम १०५, ६५)। कवकृ—**पहम्मंत**, **पहम्ममाण**; (पि ५४०; सुर २, १४)। हेकृ—**पहणिउं**, **पहणेउं**; (कुप्र २५; महा)।

पहण न [**दे**] कुल, वंश; (दे ६, ५)।

पहणि स्त्री [**दे**] संमुखागत का निरोध; सामने आए हुए का अटकाव; (दे ६, ५)।

पहणिय देखो **पहय**=प्रहत; (सुपा ४)।

पहत्थ पुं [**प्रहस्त**] रावण का मामा; (से १२, ५५)।

पहद वि [**दे**] सदा दृष्ट; (दे ६, १०)।

पहम्म सक [**प्र+हम्म्**] प्रकर्ष से गति करना। पहम्मइ; (हे ४, १६२)।

पहम्म न [**दे**] १ सुर-खात, देव-कुण्ड; (दे ६, ११)। २ खात-जल, कुण्ड; ३ विवर, छिद्र; (से ६, ४३)।

पहम्मंत, **पहम्ममाण** } देखो **पहण**=प्र+हन्।

पहय वि [**प्रहत**] १ घृष्ट, घिसा हुआ; (से १, ५८; बृह १)। २ मार डाला गया, निहत; (महा)।

पहय वि [**प्रहत**] जिस पर प्रहार किया गया हो वह; "पहया अहिमंतियजलेण" (महा)।

पहयर पुं [**दे**] निकर, समूह, यूथ; (दे ६, १५; जय १३; पाअ)।

पहर सक [**प्र+हृ**] प्रहार करना। पहरइ; (उव)। वकृ—**पहरंत**; (महा)। संकृ—**पहरिऊण**; (महा)। हेकृ—**पहरिउं**; (महा)।

पहर पुं [**प्रहार**] १ मार, प्रहार; (हे १, ६८; षड्; प्राप्र; संक्षि २)। २ जहां पर प्रहार किया गया हो वह स्थान; (से ३, ४)।

पहर पुं [**प्रहर**] तीन घंटे का समय; (गा २८; ३१; पात्र)।

पहरण न [**प्रहरण**] १ अस्त्र, आयुध; (आचा; औप; विपा १, ९; गउड)। २ प्रहार-क्रिया; (से ३, ३८)।

पहराइया देखो **पहाराइया**; (पराण १—पत्र ६४)।

पहराय पुं [**प्रभराज**] भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव; (सम १५४)।

पहरिअ वि [**प्रहृत**] १ प्रहार करने के लिए उद्यत; (सुर ८, १२६)। २ जिस पर प्रहार किया गया हो वह; (भवि)।

पहरिस पुं [**प्रहर्ष**] आनन्द, खुशी; "आमोओ पहरिसो तोसो" (पात्र; सुर ३, ४०)।

पहलादिद (शौ) वि [**प्रह्लादित**] आनन्दित; (स्वप्न १०६)।

पहल्ल अक [**घूर्ण्**] घुमना, काँपना, डोलना, हिलना। पहल्लइ; (हे ४, ११७; षड्)। वकृ—**पहल्लंत**; (सुर १, ६६)।

पहल्लिर वि [**प्रघूर्णित**] घूमने वाला, डोलता; (कुमा; सुपा २०४)।

पहव अक [**प्र+भू**] १ उत्पन्न होना। २ समर्थ होना। पहवइ; (पंचा १०, १०; स ७०; संक्षि ३६)। भवि—पहविस्सं; (पि ५२१)। वकृ— **पहवंत**; (नाट—मालवि ७२)।

पहव पुं [**प्रभव**] उत्पत्ति-स्थान; (अभि ४१)।

पहव देखो **पहाव**=प्रभाव; (स ६३७)।

पहव देखो **पह**=प्रह्व; (विसे ३००८)।

पहव पुं [**प्रभव**] एक जैन महर्षि; (कुमा)।

पहविय वि [**प्रभूत**] जो समर्थ हुआ हो; "मणिकुंडलाणुभावा सत्थं नो पहवियं नरिंदस्स" (सुपा ६१५)।

पहस अक [**प्र+हस्**] १ हसना। २ उपहास करना। पहसइ; (भवि; सण)। वकृ—**पहसंत**; (सण)।

पहसण न [**प्रहसन**] १ उपहास, परिहास; २ नाटक का एक भेद, रूपक-विशेष; "पहसणप्पायं कामसत्थवयणं" (स ७१३; १७७; हास्य ११६)।

पहसिय वि [**प्रहसित**] १ जो हसने लगा हो; (भग)। २ जिसका उपहास किया गया हो वह; (भवि)। ३ न. हास्य; (बुह ३)। ४ पुं. पवनञ्जय का एक विद्याधर-मित्र; (पउम १५, ५६)।

पहा सक [**प्र+हा**] १ त्याग करना। २ अक. कम होना, क्षीण होना। "पहेज्ज लोहं" (उत्त ४, १२; पि ५६६)। वकृ—**पहिज्जमाण, पहेज्जमाण**; (भग; राज)। संकृ—**पहाय, पहिऊण**; (आचा १, ६, १, १; वव ३)।

पहा स्त्री [**प्रथा**] १ रीति, व्यवहार; २ ख्याति, प्रसिद्धि; (षड्)

पहा स्त्री [**प्रभा**] कान्ति, तेज, आलोक, दीप्ति; (औप; पात्र; सुर १, २३४; कुमा; चेइय ५१४)। °**मंडल** देखो **भामंडल**; (पउम ३०, ३२)। °**यर** पुं [°**कर**] १ सूर्य, रवि; २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेने वाला एक राजर्षि; (पउम ८५, ५)। °**वई** स्त्री [°**वती**] आठवें वासुदेव की पटरानी; (पउम २०, १८७)।

पहाड सक [**प्र+घाटय्**] इधर उधर भमाना, घुमाना। पहाडेंति; (सूअनि ७० टी)।

पहाण वि [**प्रधान**] १ नायक, मुखिया, मुख्य; "अवगन्नइ सव्वेवि हु पुरपहाणेवि" (सुपा ३०८), "तत्थत्थि वणियपहाणो सेट्ठी वेसमणनामओ" (सुपा ६१७)। २ उत्तम, प्रशस्त, श्रेष्ठ, शोभन; (सुर १, ४८; महा; कुमा; पंचा ६, १२)। ३ स्त्रीन. प्रकृति—सत्त्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था; "ईसरेण कडे लोए पहाणाइ तहावरे" (सूअ १, १, ३, ६)। ४ पुं. सचिव, मन्त्री; (भवि)।

पहाण न [**प्रहाण**] अपगम, विनाश; (धर्मसं ८७५)।

पहाणि स्त्री [**प्रहाणि**] ऊपर देखो; (उत्त ३, ७; उप ६८६ टी)।

पहाम सक [**प्र+भ्रमय्**] फिराना, घुमाना। कवकृ—**पहामिज्जंत**; (से ७, ६६)।

पहाय देखो **पहा**=प्र+हा।

पहाय न [**प्रभात**] १ प्रातःकाल, सवेरा; (गउड; सुपा ३६; ६०२)। २ वि. प्रभा-युक्त; (से ६, ४४)।

पहाय देखो **पहाव**=प्रभाव; (हे ४, ३४१; हास्य १३२; भवि)।

पहाया देखो **वाहाया**; (अनु)।

पहार सक [**प्र+धारय्**] १ चिन्तन करना, विचार करना। २ निश्चय करना। भूका—पहारेत्थ, पहारेत्था, पहारिंसु; (सूअ २, ७, ३६; औप; पि ५१७; सूअ २, १, २०)। वकृ—**पहारेमाण** (सूअ २, ४, ४)।

पहार देखो **पहर**=प्रहार; (पात्र; हे १, ६८)।

पहाराइया स्त्री [**प्रहारातिगा**] लिपि-विशेष; (सम ३५)।

पहारि वि [**प्रहारिन्**] प्रहार करने वाला; (सुपा २१५; प्रासू ६८)।

पहारिय वि [**प्रहारित**] जिस पर प्रहार किया गया हो वह; (स ५६८)।

पहारिय वि [**प्रधारित**] विकल्पित, चिन्तित; (राज)।

पहारेत्तु वि [**प्रधारयितृ**] चिन्तन करने वाला; " अहाकम्मे अणवज्जेत्ति मणं पहारेत्ता भवति " (भग ५, ६)।

पहाव सक [**प्र+भावय्**] प्रभाव-युक्त करना; गौरवित करना। पहावइ; (सण)। संकृ—**पहाविऊण**; (सण)।

पहाव (अप) अक [**प्र+भू**] समर्थ होना। पहावइ; (भवि)।

पहाव पुं [**प्रभाव**] १ शक्ति, सामर्थ्य; "तुमं च तेतलिपुत्तस्स पहावेण" (णाया १, १४; अभि ३८)। २ कोष और दण्ड का तेज; ३ माहात्म्य; "तायपहावओ चेव मे अविग्घं भविस्सइ त्ति" (स २६०; गउड)।

पहावणा देखो **पभावणा**; (कुप्र २८४)।

पहाविअ वि [**प्रधावित**] दौड़ा हुआ; (स ५८४; गा ५३५; गउड)।

पहाविर वि [**प्रधावितृ**] दौड़ने वाला; (वज्जा ६२; गा २०२)।

पहास सक [**प्र+भाष्**] बोलना। पहासई; (सुख ४, ६), "नाऊण चुन्नियं तं पहिट्ठहियया पहासई पात्रा" (महा)।

पहास अक [**प्र+भास्**] चमकना, प्रकाशना। वकृ—**पहासंत**; (सार्ध ५६)।

पहासा स्त्री [**प्रहासा**] देवी-विशेष; (महा)।

पहिअ वि [**पान्थ, पथिक**] मुसाफिर; (हे २, १५२; कुमा; षड्; उव; गउड)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] मुसाफिर-खाना, धर्मशाला; (धर्मवि ७०; महा)।

पहिअ वि [**प्रथित**] १ विस्तृत; २ प्रसिद्ध, विख्यात; (औप)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५; २६२)।

पहिअ वि [**प्रहित**] भेजा हुआ, प्रेषित; (उप पृ ४५; ७६८ टी; धम्म ६ टी)।

पहिअ वि [**दे**] मथित, विलोडित; (दे ६, ६)।

पहिऊण देखो **पहा**=प्र+हा।

पहिंसय वि [**प्रहिंसक**] हिंसा करने वाला; (ओघ ७५३)।

पहिज्जमाण देखो **पहा**=प्र+हा।

पहिट्ठ देखो **पहट्ठ**=प्रहृष्ट; (औप; सुर ३, २४८; सुपा ६३; ४३७)।

पहिर सक [**परि+धा**] पहिरना, पहनना। पहिरइ, पहिरंति; (भवि; धर्मवि ७)। कर्म—पहिरिज्जइ; (संबोध १४)। वकृ—**पहिरंत**; (सिरि ६८)। संकृ—**पहिरिउं**; (धर्मवि १५)। प्रयो—संकृ—**पहिरावेऊण, पहिराविऊण**; (सिरि ४५६; ७७०)।

पहिरावण न [**परिधापन**] १ पहिराना; २ पहिरावन, भेंट में—इनाम में—दिया जाता वस्त्रादि; गुजराती में—'पहिरामणी' (श्रा २८)।

पहिराविय वि [**परिधापित**] पहिराया हुआ; (महा; भवि)।

पहिरिय वि [**परिहित**] पहिरा हुआ, पहना हुआ; (सम्मत्त २१८)।

पहिल वि [**दे**] पहला, प्रथम; (संक्षि ४७; भवि; पि ४४६)। स्त्री—°**ली**; (पि ४४६)।

पहिल्ल अक [**दे**] पहल करना, आगे करना। पहिल्लइ; (पिंग)। संकृ—**पहिल्लिअ**; (पिंग)।

पहिल्लिर वि [**प्रघूर्णितृ**] खूब हिलने वाला, अत्यन्त हिलता; (सम्मत्त १८७)।

पहिवी देखो **पुहवी**=पृथिवी; (नाट)।

पहीण वि [**प्रहीण**] १ परिक्षीण; (पिंड ६३१; भग)। २ भ्रष्ट, स्खलित; (सूअ २, १, ६)।

पहु पुं [**प्रभु**] १ परमेश्वर, परमात्मा; (कुमा)। २ एक राज-पुत्र, जयपुर के विन्ध्यराज का एक पुत्र; (वसु)। ३ स्वामी, मालिक; (सुर ४, १५६)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान्; " दाणं दरिद्दस्स पहुस्स खंती " (प्रासू ४८)। ५ अधि-पति, मुखिया, नायक; (हे ३, ३८)।

°**पहुइ** देखो °**पभिइ**; (कप्पू)।

पहुई देखो **पुहुवी**; (षड्)।

पहुंक पुं [**पृथुक**] खाद्य पदार्थ-विशेष, चिउड़ा; (दे ६, ४४)।

पहुच्च अक [**प्र+भू**] पहुँचना। पहुच्चइ; (हे ४, ३६०)। वकृ—**पहुच्चमाण**; (ओघ ५०५)।

पहुट्ट देखो **पप्फुट्ट**। पहुट्टइ; (कप्पू)।

पहुडि देखो **पभिइ**; (हे १, १३१; ती १०; षड्)।

पहुण पुं [**प्राघुण**] अतिथि, महमान; (उप ६०२)।

पहुणाइय न [**प्राघुण्य**] आतिथ्य, अतिथि-सत्कार; "न्हाण-भोयणवत्थाइयपहुणाइयमणुरूवं पि... दं संपडेइ" (रंभा)।

पहुत्त त्रि [**प्रभूत**] १ पर्याप्त, काफी; "पज्जत्तं च पहुत्तं" (पाअ; गउड; गा २३३)। २ समर्थ; (से २, ६)। ३ पहुँचा हुआ; (ती १५)।

पहुदि देखो **पभिइ**; (संक्षि ४; प्राकृ १२)।

पहुप्प } अक [**प्र+भू**] १ समर्थ होना, सकना। २ पहुँचना।
पहुव } पहुप्पइ; (हे ४, ६३; प्राकृ ६२), "एत्ताओ बालियाओ नियनियगेहेसु जह पहुप्पंति तह कुणह" (सुपा २५०), पहुप्पामो; (काल), पहुप्पिरे; (हे ३, १४२)। वकृ—"किं सहइ कोवि कस्सवि पायपहारं पहुप्पंतो", **पहुप्पमाण**; (गा ७; ओघ ५०५; किरात १६)। कवकृ—**पहुव्वंत**; (से १४, २५; वज्जा १०)। हेकृ—**पहुविउं**; (महा)।

पहुवी स्त्री [**पृथिवी**] भूमि, धरती; (नाट—मालती ७२)।

°**पहु** पुं [°**प्रभु**] राजा; (हम्मीर १७)। °**वइ** पुं [°**पति**] वही अर्थ; (हम्मीर १६)।

पहुव्वंत देखो **पहुव**।

पहूअ वि [**प्रभूत**] १ बहुत, प्रचुर; (स ४५६)। २ उद्गत; ३ भूत; ४ उन्नत; (प्राकृ ६२)।

पहेज्जमाण देखो **पहा**=प्र+हा।

पहेण } न [**दे**] १ भोजनोपायन, खाद्य वस्तु की भेंट;
पहेणग } (आचा; सूअ २, १, ५६; गा ३२८; ६०३;
पहेणय } पिंड ३३५; पाअ; दे ६, ७३)। २ उत्सव; (दे ६, ७३)।

पहेरक न [**प्रहेरक**] आभरण-विशेष; (पणह २, ५—पत्र १४६)।

पहेलिया स्त्री [**प्रहेलिका**] गूढ़ आशय वाली कविता; (सुपा १५५; औप)।

पहोअ सक [**प्र+धाव्**] प्रक्षालन करना, धोना। पहोएज्ज; (आचा २, २, १, ११)।

पहोइअ वि [**दे**] १ प्रवर्तित; २ प्रभुत्व; (दे ६, २६)।

पहोड सक [**वि+लुल्**] हिलोरना, आन्दोलना। पहोडइ; (धात्वा १४४)।

पहोलिर वि [**प्रघूर्णितृ**] हिलने वाला, डोलता; (गा ७८; ६६६; से ३, ४६; पाअ)।

पहोव देखो **पधोव**। पहोवाहि; (आचा २, १, ६, ३)।

पा सक [**पा**] पीना, पान करना। भवि—पाहिमि, पाहामि, पाहामो; (कप्प; पि ३१५; कस)। कर्म—पिज्जइ; (उव), पीअंति; (पि ५३६)। कवकृ—**पिज्जंत**; (गउड; कुप्र १२०), **पीयमाण**, (स ३८२), **पेंत** (अव); (सण)। संकृ—**पाऊण, पाऊणं**; (नाट—मुद्रा ३६; गउड; कुप्र ६२)। हेकृ—**पाउं, पायए**; (आचा)। कृ—**पायव्व, पिज्ज**; (सुपा ४३८; कप्पू १, २; कुमा २, ६), **पेअ, पेयव्व**; (कुमा; स्वप्न ६०), **पेज्ज**; (गाया १, १; १७; उवा)।

पा सक [**पा**] रक्षण करना। पाइ, पाअइ; (विसे ३०२५; हे ४, २४०), पाउ; (पिंग)।

पा सक [**घ्रा**] सूँघना, गन्ध लेना। पाइ, पाअइ; (प्राप्र ८, २०)।

पाइ वि [**पातिन्**] गिरने वाला; (पंचा ५, २०)।

पाइ वि [**पायिन्**] पीने वाला; (गा ५६७; हि ६)।

पाइअ न [**दे**] वदन-विस्तार, मुँह का फैलाव; (दे ६, ३६)।

पाइअ देखो **पागय**=प्राकृत; (दे १, ४; प्राकृ ८; प्रासू १; वज्जा ८; पाअ; पि ५३), "अह पाइआओ भासाओ" (कुमा १, १)।

पाइअ वि [**पायित**] पिलाया हुआ, पान कराया हुआ; (कुप्र ७६; सुपा १३०; स ४५४)।

पाइंत देखो **पाय**=पायय्।

पाइक्क पुं [**पदाति**] प्यादा, पैर से चलने वाला सैनिक; (हे २, १३८; कुमा)।

पाइण देखो **पाईण**; (पि २१५ टि)।

पाइत्ता (अप) स्त्री [**पवित्रा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पाइद [**शौ**] वि [**पाचित**] पकवाया हुआ; (नाट—चैत १२६)।

पाइभ न [**प्रातिभ**] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष; (कुप्र १५५)।

पाइम वि [**पाक्य**] १ पकाने योग्य; २ काल-प्राप्त, मृत; (दस ७, २२)।

पाइम वि [**पात्य**] गिराने योग्य; (आचा २, ४, २, ७)।

पाई स्त्री [**पात्री**] १ भाजन-विशेष; (गाया १, १ टी)। २ छोटा पात्र; (सूअ २, २, ७०)।

पाईण वि [**प्राचीन**] १ पूर्वदिशा-संबन्धी; "ववहारपाइणाइं, दिग्गइं" (विसे ३६; कप्प; सम १०४)। २ न. गोत्र-विशेष; ३ पुं स्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; "थेरे अज्जभद्दबाहू पाईणसगोत्ते" (कप्प)।

पाईणा स्त्री [**प्राचीना**] पूर्व दिशा; (सूअ २, २, ५८; ठा ६—पत्र ३५६) ।

पाउ देखो **पाउं**=प्रादुस्; (सूअ २, ६, ११; उवा) ।

पाउ पुं [**पायु**] गुदा, गाँड; (ठा ६—पत्र ४५० ; सण) ।

पाउ पुंस्त्री [**दे**] १ भक्त, भात, भोजन; २ इक्षु, ऊख; (दे ६, ७५) ।

पाउअ न [**दे**] १ हिम, अवश्याय; (दे ६, ३८) । २ भक्त; ३ इक्षु; (दे ६, ७५) ।

पाउअ देखो **पाउड**=प्रावृत; (गा ५२०; स ३५०; औप; सुर ६, ८; पाअ; हे १, १३१) ।

पाउअ देखो **पागय**; (गा २; ६६८; प्राप्र; कप्पू; पिंग) ।

पाउआ स्त्री [**पादुका**] १ खड़ाऊँ, काष्ठ का जूता; (भग; सुख २, २६; पिंड ५७२) । २ जूता, पगरखी; (सुपा २५४; औप) ।

पाउं देखो **पा**=पा ।

पाउं अ [**प्रादुस्**] प्रकट, व्यक्त; " संतिं असंतिं करिस्सामि पाउं " (सूअ १, १, ३, १) ।

पाउंछण } न [**पादप्रोञ्छन**, °क] जैन मुनि का एक **पाउंछणग** } उपकरण, रजोहरण; (पव ११२ टी; ओघ ६३०; पंचा १७, १२) ।

पाउकर सक [**प्रादुस्+कृ**] प्रकट करना । भवि—पाउकरिस्सामि; (उत ११, १) ।

पाउकर वि [**प्रादुष्कर**] प्रादुर्भावक; (सूअ १, १५, २५)।

पाउकरण न [**प्रादुष्करण**] १ प्रादुर्भाव; २ वि. जो प्रकाशित किया जाय वह; ३ जैन मुनि के लिए एक भिक्षा-दोष, प्रकाश कर दी हुई भिक्षा; " पकिरणपाउकरणपामिच्चं " (पण्ह २, ५—पत्र १४८) ।

पाउकाम वि [**पातुकाम**] पीने की इच्छा वाला; " तं जो णं खवियाए माउया एदुद्धं पाउकामे से णं निग्गच्छउ" (णाया १, १८) ।

पाउक्क वि [**दे**] मार्गीकृत, मार्गित; (दे ६, ४१) ।

पाउक्करण देखो **पाउकरण**; (राज) ।

पाउक्खालय न [**दे, पायुक्षालक**] १ पाखाना, टट्टी, मलोत्सर्ग-स्थान; "ठाइ चेव एसो पाउक्खालयम्मि रयणीए " (स २०५; भत्त ११२) । २ मलोत्सर्ग-क्रिया; " रयणीए पाउक्खालयनिमित्तमुट्ठिओ " (स २०५) ।

पाउग्ग वि [**दे**] सभ्य, सभासद; (दे ६, ४१; सण) ।

पाउग्ग वि [**प्रायोग्य**] उचित, लायक; (सुर १५, २३३)।

पाउग्गिअ वि [**दे**] १ जूआ खेलाने वाला; २ सोढ, सहन किया हुआ; (दे ६, ४२; पाअ) ।

पाउड देखो **पागय**; (प्राकृ १२; मुद्रा १२०) ।

पाउड वि [**प्रावृत**] १ आच्छादित, ढका हुआ; (सूअ १, २, २, २२) । २ न. वस्त्र, कपड़ा; (ठा ५, १) ।

पाउण सक [**प्रा+वृ**] आच्छादित करना, पहिरना । पाउणइ; (पिंड ३१) । संकृ—"पडं **पाउणिऊण** रत्तिं णिग्गओ" (महा) ।

पाउण सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना । पाउणइ; (भग) । पाउणंति; (औप; सूअ १, ११, २१) । पाउणेज्जा; (आचा २, ३, १, ११) । भवि—पाउणिस्सामि, पाउणिहिइ; (पि ५३१; उवा) । संकृ—**पाउणित्ता**; (औप; णाया १, १; विपा २, १; कप्प; उवा) । हेकृ—**पाउणित्तए**; (आचा २, ३, २, ११) ।

पाउण (अप) देखो **पावण**=पावन; (पिंग) ।

पाउत्त देखो **पउत्त**=प्रयुक्त; (औप) ।

पाउप्पभाय वि [**प्रादुष्प्रभात**] प्रभा-युक्त, प्रकाश-युक्त; " कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए " (णाया १, १; भग) ।

पाउब्भव अक [**प्रादुस्+भू**] प्रकट होना । पाउब्भवइ; (पव ४०) । भूका—पाउब्भवित्था; (उवा) । वकृ—**पाउब्भवंत, पाउब्भवमाण**; (सुपा ६; कुप्र २६; णाया १, ५) । संकृ—**पाउब्भवित्ताणं**; (उवा; औप) । हेकृ—**पाउब्भवित्तए**; (पि ५७८) ।

पाउब्भव वि [**पापोद्भव**] पाप से उत्पन्न; (उप ७६८ टी)।

पाउब्भवणा स्त्री [**प्रादुर्भवन**] प्रादुर्भाव; (भग ३, १) ।

पाउब्भुय (अप) नीचे देखो; (सण) ।

पाउब्भूय वि [**प्रादुर्भूत**] १ उत्पन्न, संजात; २ प्रकटित; (औप; भग; उवा; विपा १, १) ।

पाउरण न [**प्रावरण**] वस्त्र, कपड़ा; (सूअनि ८६; हे १, १७५; पंचा ५, १०; पव ४; षड्) ।

पाउरण न [**दे**] कवच, वर्म; (षड्) ।

पाउरणी स्त्री [**दे**] कवच, वर्म; (दे ६, ४३) ।

पाउरिअ देखो **पाउड**=प्रावृत; (कुप्र ४५२) ।

पाउल वि [**पापकुल**] हलके कुल का, जघन्य कुल में उत्पन्न; " दवावियं पाउलाण दविणजायं " (स ६२६), "कलसद्द-पउरपाउलमंगलसंगीयपवरपेक्खणयं" (सुर १०, ५) ।

पाउल्ल न. देखो **पाउआ**; " पाउल्लाइं संकमट्ठाए " (सूअ १, ४, २, १५) ।

पाउव न [**पादोद**] पाद-प्रक्षालन-जल; "पाउवदाइं च महाणुवदाइं च" (गाया १, ७—पत्र ११७)।

पाउस पुं [**प्रावृष्**] वर्षा ऋतु; (हे १, १६; प्राप्र; महा)। °**कीड** पुं [°**कीट**] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष; (दे)। °**गम** पुं [°**गम**] वर्षा-प्रारम्भ, (पाम)।

पाउसिअ वि [**प्रावृषिक**] वर्षा-संबन्धी; (गउ)।

पाउसिअ वि [**प्रोषित, प्रवासिन्**] प्रवास में गया हुआ; "तह मेहागमतंमिहआगमणाए पईए मुद्धाओ। मग्गमवलोयमाणीउ निहइ पाउसिदइयाओ॥" (सुपा ७०)।

पाउसिआ स्त्री [**प्राद्वेषिकी**] द्वेष—मत्सर—से होने वाला कर्म-बन्ध; (सम १०; ठा २, १; भग; नव १७)।

पाउहारी स्त्री [**दे. पाकहारी**] भक्त को लाने वाली, भात-पानी ले आने वाली; (गा ६६४ अ)।

पाए अ [**दे**] प्रभृति, (वहाँ से) शुरू करके; (ओघ १६६; बृह १)।

पाए सक [**पायय्**] पिलाना। पाएइ; (हे ३, १४६)। पाएज्जाह; (महा)। वकृ— **पाइंत, पाययंत**; (सुर १३, १३४; १२, १७१)। संकृ— **पाएत्ता**; (आक ३०)।

पाए सक [**पादय्**] गति कराना। पाएइ; (हे ३, १४६)।

पाए सक [**पाचय्**] पकवाना। पाएइ; (हे ३, १४६)। कर्म—पाइज्जइ; (श्रावक २००)।

पाएण } **पाएणं** } अ [**प्रायेण**] बहुत करके, प्रायः; (विसे ११६६; काल; कप्प; प्रासू ४३)।

पाओ अ [**प्रायस्**] ऊपर देखो; (श्रा २७)।

पाओ अ [**प्रातस्**] प्रातःकाल, प्रभात; (सुज्ज १, ६; कप्प)।

पाओकरण देखो **पाउकरण**; (पिंड २६८)।

पाओग देखो **पाउग्ग**; (सुमनि ६५)।

पाओगिय वि [**प्रायोगिक**] प्रयत्न-जनित, अ-स्वाभाविक; (चेइय ३५३)।

पाओग्ग देखो **पाउग्ग**; (भास १०; धर्मसं ११८०)।

पाओपगम न [**पादपोपगम**] देखो **पाओवगमण**; (वव १०)।

पाओयर पुं [**प्रादुष्कार**] देखो **पाउकरण**; (ठा ३, ४; पंचा १३, ५)।

पाओवगमण न [**पादपोपगमन**] अनशन-विशेष, मरण-विशेष; (सम ३३; औप; कप्प; भग)।

पाओवगय वि [**पादपोपगत**] अनशन-विशेष से मृत; (औप; कप्प; अंत)।

पाओस पुं [**दे. प्रद्वेष**] मत्सर, द्वेष; (ठा ४, ४—पत्र २८०)।

पाओसिय देखो **पाउसिय**; (ओघ ६६२)।

पाओसिया देखो **पाउसिआ**; (धर्म ३)।

पांडविअ वि [**दे**] जलार्द्र, पानी से गीला; (दे ६, २०)।

पांडु देखो **पंडु**; (पत्र २४७)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] अमित्य का एक भेद; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

पाक देखो **पाग**; (कप्प)।

पाकम्म न [**प्राकाम्य**] योग की आठ सिद्धियों में एक सिद्धि; "पाकम्मगुणेण मुणी भुवि व्व नीरे जलि व्व भुवि चरइ" (कुम २७७)।

पाकार पुं [**प्राकार**] किला, दुर्ग; (उप पृ ८४)।

पाकिद (शौ) देखो **पागय**; (प्रयौ २४; नाट—वेणी ३८; पि ५३; ८२)।

पाखंड देखो **पासंड**; (पि २६५)।

पाग पुं [**पाक**] १ पचन-क्रिया; (औप; उवा; सुपा ३७४)। २ दैत्य-विशेष; (गउड)। ३ विपाक, परिणाम; (धर्मसं ६६५)। ४ बलवान् दुश्मन; (आवम)। °**सासण** पुं [°**शासन**] इन्द्र, देव-पति; (हे ४, २६५; गउड; पि २०२)। °**सासणी** स्त्री [°**शासनी**] इन्द्रजाल-विद्या; (सुअ २, २, २७)।

पागइअ वि [**प्राकृतिक**] १ स्वाभाविक; २ पुं. साधारण मनुष्य, प्राकृत लोक; (पव ६१)।

पागड सक [**प्र+कटय्**] प्रकट करना, खुला करना, व्यक्त करना। वकृ—**पागडेमाण**; (ठा ३, ४—पत्र १७१)।

पागड वि [**प्रकट**] व्यक्त, खुला; (उत्त ३६, ४२; औप; उव)।

पागडण न [**प्रकटन**] १ प्रकट करना। २ वि. प्रकट करने वाला; (धर्मसं ८२६)।

पागडिअ वि [**प्रकटित**] व्यक्त किया हुआ; (उव; औप)।

पागड्ढि } **पागड्ढिक** } वि [**प्राकर्षिन्, °क**] १ अग्रगामी; "पागड्ढी (? ड्ढी) पहअए जूहवई" (गाया १, १)। २ प्रवर्तक, प्रवृत्ति कराने वाला; (पराह १, ३—पत्र ४५)।

पागब्भ न [**प्रागल्भ्य**] धृष्टता, धिठाई; (सुअ १, ५, १, ५)।

पागब्भि } वि [**प्रागल्भिन्**, °**क**] धृष्टता वाला, धृष्ट;
पागब्भिय } (सूत्र १, ५, १, ५; २, १, १८)।

पागय वि [**प्राकृत**] १ स्वाभाविक, स्वभाव-सिद्ध; २ आर्यावर्त की प्राचीन लोक-भाषा; "सक्कया पागया चेव" (ठा ७—पत्र ३६३; विसे १४६६ टी; रयण ६४; सुपा १)। ३ पुं. साधारण बुद्धि वाला मनुष्य, सामान्य लोग; "जेसिं णामा-गोत्तं न पागता पण्णवेहिंति" (सुज्ज १६), "किंतु महामइ-गम्मो दुरवगम्मो पागयजणस्स" (चेइय २५६; सुर २, १३०)। °**भासा** स्त्री [°**भाषा**] प्राकृत भाषा; (श्रा २३)। °**वागरण** न [°**व्याकरण**] प्राकृत भाषा का व्याकरण; (विसे ३४५५)।

पागार पुं [**प्राकार**] किला, दुर्ग; (उत्र; सुर ३, ११४)।

पाजावच्च पुं [**प्राजापत्य**] १ वनस्पति का अधिष्ठाता देव; २ वनस्पति; (ठा ५, १—पत्र २६२)।

पाटप [**चूपै**] देखो **वाडव**; (षड्)।

पाठीण देखो **पाढीण**; (पण्ह १, १—पत्र ७)।

पाड देखो **फाड**=पाटय्। "असिपत्तधणूहि पाडंति" (सूअनि ७६)।

पाड सक [**पातय्**] गिराना। पाडेइ; (उव)। संकृ—**पाडिअ**, **पाडिऊण**; (काप्र १६६; कुप्र ४६)। कवकृ—**पाडिज्जंत**; (उप ३२० टी)।

पाड देखो **पाडय**=पाटक; "तो सो दिट्ठाणे सयं गओ वेसपाडम्मि" (सुपा ५३०)।

पाडच्चर वि [**दे**] आसक्त चित्त वाला; (दे ६, ३४)।

पाडच्चर पुं [**पाटच्चर**] चोर, तस्कर; (पाअ; दे ६, ३४)।

पाडण न [**पाटन**] विदारण; (आव ६)।

पाडण न [**पातन**] १ गिराना, पाड़ना; (सूअनि ७२)। २ परिभ्रमण, इधर-उधर घूमना; "लहुजढरपिढरपडियारपाडण-त्ताण कयकीलो" (कुमा २, ३७)।

पाडणा स्त्री [**पातना**] ऊपर देखो; (विपा १, १—पत्र १६)।

पाडय पुं [**पाटक**] महल्ला, रथ्या; "चंडालपाडए गंतुं" (धर्मवि १३८; विपा १, ८; महा)।

पाडय वि [**पातक**] गिराने वाला। स्त्री—°**डिआ**; (मृच्छ २४५)।

पाडल पुं [**पाटल**] १ वर्ण-विशेष, श्वेत और रक्त वर्ण, गुलाबी रंग; २ वि. श्वेत-रक्त वर्ण वाला; (पाअ)। ३ न. पाटलिका-पुष्प, गुलाब का फूल; (गा ४६६; सुर ३, ५२; कुमा)। ४ पाटला वृक्ष का पुष्प, पाढल का फूल; (गा ३०)।

पाडल पुं [**दे**] १ हंस, पक्षि-विशेष; २ वृषभ बैल; ३ कमल; (दे ६, ७६)।

पाडलसउण पुं [**दे**] हंस, पक्षि-विशेष; (दे ६, ४६)।

पाडला स्त्री [**पाटला**] वृक्ष-विशेष, पाढल का पेड़, पाडरि; (गा ४५६; सुर ३, ५२; सम १५२), "चंपा य पाडलरुक्खो जया य वसुपुज्जपत्थिवो होइ" (पउम २०, ३८)।

पाडलि स्त्री [**पाटलि**] ऊपर देखो; (गा ४६८)। °**उत्त**, °**पुत्त** न [°**पुत्र**] नगर-विशेष, पटना, जो आजकल विहार प्रदेश का प्रधान नगर है; (हे २, १५०; महा; पि २६२; चारु ३६)। °**पुत्त** वि [°**पुत्र**] पाटलिपुत्र-संबन्धी, पटना का; (पत्र १११)। °**संड** न [°**षण्ड**] नगर-विशेष; (विपा १, ७; सुपा ८३)। देखो **पाडली**।

पाडलिय वि [**पाटलित**] श्वेत-रक्त वर्ण वाला किया हुआ; (गउड)।

पाडली देखो **पाडलि**; (उप पृ ३६०)। °**पुर** न [°**पुर**] पटना नगर; (धर्मवि ४२)। °**वुत्त** न [°**पुत्र**] पटना नगर; (षड्)।

पाडव न [**पाटव**] पटुता, निपुणता; (धम्म १० टी)।

पाडवण न [**दे**] पाद-पतन, पैर में गिरना, प्रणाम-विशेष; (दे ६, १८)।

पाडहिग } वि [**पाटहिक**] ढोल बजाने वाला, ढोली; (स
पाडहिय } २१६)।

पाडहुक वि [**दे**] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार; (षड्)।

पाडिअ वि [**पाटित**] फाड़ा हुआ, विदारित; (स ६६६)।

पाडिअ वि [**पातित**] गिराया हुआ; (पाअ; प्रासू २; भवि)।

पाडिअग्ग पुं [**दे**] विश्राम; (दे ६, ४४)।

पाडिअज्झ पुं [**दे**] पिता के घर से वधू को पति के घर ले जाने वाला; (दे ६, ४३)।

पाडिआ देखो **पाडय**=पातक।

पाडिएक्क } न [**प्रत्येक**] हर एक; (हे २, २१०; कप्प;
पाडिक्क } पाअ; णाया १, १६; २, १; सूअनि १२१ टी; कुमा), " एगे जीवे पाडिक्कएणं सरीरएणं " (ठा १—पत्र १६)।

पाडिच्चरण न [**प्रतिचरण**] सेवा, उपासना; (उप पृ ३४६)।

पाडिच्छय वि [**प्रतीप्सक**] ग्रहण करने वाला; (सूअ २, १३)।

पाडिज्जंत देखो **पाड**=पातय्।

पाडिपह न [**प्रतिपथ**] अभिमुख, सामने; (सूअ २, २, ३१)।

पाडिपहिअ देखो **पडिपहिअ**; (सूअ २, २, ३१)।

पाडिपिद्धि स्त्री [**दे**] प्रतिस्पर्धा; (षड्)।

पाडिप्पवग पुं [**पारिप्लवक**] पक्षि-विशेष; (पउम १४, १८)।

पाडिप्फद्धि वि [**प्रतिस्पर्धिन्**] स्पर्धा करने वाला; (हे १, ४४; २०६)।

पाडियंतिय न [**प्रात्यन्तिक**] अभिनय-विशेष; (राज)।

पाडियक्क देखो **पाडिएक्क**; (औप)।

पाडिवय वि [**प्रातिपद**] १ प्रतिपत्-संबन्धी, पडवा तिथि का; "जह चंदो पाडिवओ पडिपुन्नो सुक्कपक्खम्मि" (उवर ६०)। २ पुं. एक भावी जैन आचार्य; (विचार ५०६)।

पाडिवया स्त्री [**प्रतिपत्**] तिथि-विशेष, पक्ष की पहली तिथि, पडवा; (सम २६; णाया १, १०; हे १, १५; ४४)।

पाडिवेसिय वि [**प्रातिवेश्मिक**] पड़ोसी। स्त्री—**या**; (सुपा ३६४)।

पाडिसार पुं [**दे**] १ पटुता, निपुणता; २ वि. पटु, निपुण; (दे ६, १६)।

पाडिसिद्धि देखो **पडिसिद्धि**=प्रतिसिद्धि; (हे १, ४४; प्राप्र)।

पाडिसिद्धि स्त्री [**दे**] १ स्पर्धा; (दे ६, ७७; कप्पू; कुप्र ४६)। २ समुदाचार; ३ वि. सदृश, तुल्य; (दे ६, ७७)।

पाडिसिरा स्त्री [दे] खलीन-युक्ता; (दे ६, ४२)।

पाडिस्सुइय न [**प्रातिश्रुतिक**] अभिनय का एक भेद; (राज)।

पाडिहच्छी } स्त्री [**दे**] शिरो-माल्य, मस्तक-स्थित पुष्प-
पाडिहत्थी } माला; (दे ६, ४२; राज)।

पाडिहारिय वि [**प्रातिहारिक**] वापिस देने योग्य वस्तु; (विसे ३०५७; औप; उवा)।

पाडिहेर न [**प्रातिहार्य**] १ देवता-कृत प्रतीहार-कर्म, देव-कृत पूजा-विशेष; (औप; पव ३६), "इय सामइए भावा इहइंपि नागदत्तनरनाहो। जाओ सपाडिहेरो" (सुपा ५४४)। २ देव-सान्निध्य; (भत्त ६६), "बहूणं सुरेहिं कयं पाडिहेरं" (श्रु ६४; महा)।

पाडी स्त्री [**दे**] भैंस की बछिया, गुजराती में 'पाडी'; (गा ६५)।

पाडुंकी स्त्री [**दे**] भद्री—नगम दो—की पालकी; (दे ६, ३६)।

पाडुंगोरि वि [**दे**] १ विधुर, सुख-रहित; २ मद में आसक्त; ३ स्त्री. मजबूत वेष्टन वाली आड़; "पाडुंगोरी व्व वसिहीवं ... विकडं वलिसि" (दे ६, ७८)।

पाडुक्क पुं [**दे**] चन्दन-लेप, चन्दन आदि का शरीर में उपलेप; २ वि. पटु, निपुण; (दे ६, ७६)।

पाडुच्चिय वि [**प्रातीतिक**] किसी के आश्रय से होने वाला, आपेक्षिक। स्त्री—**या**; (ठा २, १; नव १८)।

पाडुच्चो स्त्री [**दे**] तुरग-मण्डन, घोड़े का सिंगार; (दे ६, ३६; पाअ)।

पाडुहुअ वि [**दे**] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार; (दे ६, ४२)।

पाडेक्क देखो **पाडिक्क**; (सम्म ५५)।

पाडोसिअ वि [**दे**] पड़ोसी; (सिरि ३१२; श्रा २७; सुपा ५५२)।

पाढ सक [**पाठय्**] पढ़ाना, अध्ययन कराना। **पाढइ, पाढेइ**; (प्राकृ ६०; प्राप्र)। कर्म—**पाढिज्जइ**; (प्राप्र)। संकृ—**पाढिऊण, पाढेऊण**; (प्राकृ ६१)। हेकृ—**पाढिउं, पाढेउं**; (प्राकृ ६१)। कृ—**पाढणिज्ज, पाढिअव्व, पाढेअव्व**; (प्राकृ ६१)।

पाढ पुं [**पाठ**] १ अध्ययन, पठन; (ओघभा ३१; विसे १३८४; सम्मत्त १४०)। २ शास्त्र, आगम; ३ शास्त्र का उल्लेख; "पाढो त्ति वा सत्थं ति वा एगट्ठा" (आचू १)। ४ अध्यापन, शिक्षा; (उप पृ ३०८; विसे १३८४)।

पाढ देखो **पाडय**=पाटक; (श्रा ६३ टी)।

पाढंतर न [**पाठान्तर**] भिन्न पाठ; (आवक ३११)।

पाढग वि [**पाठक**] १ उच्चारण करने वाला; "पढियं मंगल-पाढगेहिं" (कुप्र ३२)। २ अभ्यासी, अध्ययन करने वाला; ३ अध्यापन करने वाला, अध्यापक; "वत्थुपाढगा", "सुमिण-पाढगाणं", लक्खणसुमिणपाढगाणं" (धर्मवि ३३; णाया १, १; कप्प)।

पाढण न [**पाठन**] अध्यापन; (उप पृ १२८; प्राकृ ६१; सम्मत्त १४२)।

पाढणया स्त्री [**पाठना**] ऊपर देखो; (पंचभा ४)

पाढय देखो **पाढग**; (कप्प; स ७; णाया १, १—पत्र २०; (महा) ।

पाढव वि [**पार्थिव**] पृथिवी का विकार, पृथिवी का; "पाढवं सरीरं हिच्चा" (उत्त ३, १३) ।

पाढा स्त्री [**पाठा**] वनस्पति-विशेष, पाढ, पाठ का गाछ; (पण्ण १७) ।

पाढाव सक [**पाठय्**] पढ़ाना, अध्यापन करना। पाढावेइ; (प्राप्र) । संकृ—**पाढाविऊण, पाढावेऊण**,; (प्राकृ ६१) । हेकृ—**पाढाविउं, पाढावेउं**; (प्राकृ ६१) । कृ—**पाढावणिज्ज, पाढाविअव्व**; (प्राकृ ६१) ।

पाढावअ वि [**पाठक**] अध्यापक; (प्राकृ ६०) ।

पाढावण न [**पाठन**] अध्यापन; (प्राकृ ६१) ।

पाढाविअ वि [**पाठित**] अध्यापित; (प्राकृ ६१) ।

पाढाविअवंत वि [**पाठितवत्**] जिसने पढ़ाया हो वह; (प्राकृ ६१) ।

पाढाविउ } वि [**पाठयितृ**] पढ़ाने वाला; (प्राकृ ६१; **पाढाविर** } ६०) ।

पाढिअ वि [**पाठित**] पढ़ाया हुआ, अध्यापित; (प्राप्र) ।

पाढिअवंत देखो **पाढाविअवंत**; (प्राकृ ६१) ।

पाढिआ स्त्री [**पाठिका**] पढ़ने वाली स्त्री; (कप्पू) ।

पाढिउ } वि [**पाठयितृ**] अध्यापक, पढ़ाने वाला; (प्राकृ **पाढिर** } ६१) ।

पाढीण पुं [**पाठीन**] मत्स्य-विशेष, मत्स्य की एक जाति; (गा ४१४; विक्र ३२) ।

पाण सक [**प्र+आनय्**] जिलाना। वकृ— **पाणअंत**; (नाट—मालती ५) ।

पाण पुं स्त्री [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, ३८; उप पृ १५४; महा; प्राप्र; ठा ४, ४; वव १)। स्त्री—°**णी**; (सुख ६, १; महा) । °**उडी** स्त्री [°**कुटी**] चाण्डाल की झोंपड़ी; (गा २२७) । °**विलया** स्त्री [°**वनिता**] चाण्डाली; (उप ७६८ टी) । °**डंबर** पुं [°**डम्बर**] यक्ष-विशेष; (वव ७) । °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] चाण्डाल-नायक; (महा) ।

पाण न [**पान**] १ पीना, पीने की क्रिया; (सुर ३, १०) । २ पीने की चीज, पानी आदि; (सुज्ज २० टी; पडि; महा; आचा) । ३ पुं. गुच्छ-विशेष; "सणपाणकासमद्दगअग्घाडगसामसिंदुवारे य" (पण्ण १) । °**पत्त** न [°**पात्र**] पीने का भोजन, प्याला; (दे) । °**गार** न [°**गार**] मद्य-गृह; (णाया १, २; महा) । °**हार** पुं [°**हार**] एकाशन तप; (संबोध ५८) ।

पाण पुंन [**प्राण**] १ जीवन के आधार-भूत ये दश पदार्थ;—पाँच इन्द्रियाँ, मन, वचन और शरीर का बल, उच्छ्वास तथा निःश्वास; (जी २६; पण्ण १; महा; ठा १; ६) । २ समय-परिमाण विशेष, उच्छ्वास-निःश्वास-परिमित काल; (इक; अणु)। ३ जन्तु, प्राणी, जीव; "पाणाणि चेवं विणिहंति मंदा" (सूअ १, ७, १६; ठा ९; आचा; कप्प) । ४ जीवित, जीवन; (सुपा २९३; ५६३; कप्पू) । °**इत्त** वि [°**वत्**] प्राण वाला, प्राणी; (पि ६००) । °**च्चय** पुं [°**त्यय**] प्राण-नाश; (सुपा २९८; ६१६) । °**च्चाय** पुं [°**त्याग**] मरण, मौत; (सुर ४, १७०) । °**जाइय** वि [°**जातिक**] प्राणी, जीव, जन्तु; (आचा १, ९, १, १) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] प्राणनाथ, पति, स्वामी; (रंभा) । °**प्पिया** स्त्री [°**प्रिया**] स्त्री, पत्नी; (सुर १, १०८) । °**वह** पुं [°**वध**] हिंसा; (पण्ह १, १) । °**वित्ति** स्त्री [°**वृत्ति**] जीवन-निर्वाह; (महा) । °**सम** पुं [°**सम**] पति, स्वामी; (पाअ) । °**सुहुम** न [°**सूक्ष्म**] सूक्ष्म जन्तु; (कप्प) । °**हिय** वि [°**हृत्**] प्राण-नाशक; (रंभा) । °**इंत** वि [°**वत्**] प्राण वाला, प्राणी; (प्राप्र) । °**इवाइया** स्त्री [°**तिपातिकी**] क्रिया-विशेष, हिंसा से होने वाला कर्म-बन्ध; (नव १७) । °**इवाय** पुं [°**तिपात**] हिंसा; (उवा) । °**उ** पुं न [°**युस्**] ग्रन्थांश-विशेष, बारहवाँ पूर्व; (सम २५; २६) । °**पाण**, °**पाणु** पुंन [°**पान**] उच्छ्वास और निःश्वास; (धर्मसं १०८; ६८) । °**याम** पुं [°**याम**] योगाङ्ग-विशेष—रेचक, कुम्भक और पूरक-नामक प्राणों को दमने का उपाय; (गउड) ।

पाणंतकर वि [**प्राणान्तकर**] प्राण-नाशक; (सुपा ६१४) ।

पाणंतिय वि [**प्राणान्तिक**] प्राण-नाश वाला; "पाणंतियावई पहु !" (सुपा ४५२) ।

पाणग पुंन [**पानक**] १ पेय-द्रव्य-विशेष; (पंचभा १; सुज्ज २० टी; कप्प) । २ वि. पान करने वाला (?) "ण पाणगो जं ततो अण्णो" (धर्मसं ८२; ७८) ।

पाणद्धि स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला; (दे ६, ३९) ।

पाणम अक [**प्र+अण्**] निःश्वास लेना, नीचे साँसना। पाणमंति; (सम २; भग) ।

पाणय न [**पानक**] देखो **पाण**=पान; (विसे २५७८) ।

पाणय पुं [**प्राणत**] स्वर्ग-विशेष, दशवाँ देव-लोक; (सम ३७; भग; कप्प) । २ विमानेन्द्रक, देव-विमान विशेष; (देवेन्द्र १३५) । ३ प्राणत स्वर्ग का इन्द्र; (ठा ४, ४); ४ प्राणत देवलोक में रहने वाला देव; (अणु) ।

पाणहा स्त्री [**उपानह्**] जूता; "पाणहाओ य छत्तं च णालीयं बालवीयणं" (सूअ १, ६, १८) ।

पाणाअअ पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, ३८) ।

पाणाम पुं [**प्राण**] निःश्वास; (भग) ।

पाणामा स्त्री [**प्राणामी**] दीक्षा-विशेष; (भग ३, १) ।

पाणाली स्त्री [**दे**] दो हाथों का प्रहार; (दे ६, ४०) ।

पाणि पुं [**प्राणिन्**] जीव, आत्मा, चेतन; (आचा; प्रासू १३९; १४४) ।

पाणि पुं [**पाणि**] हस्त, हाथ; (कुमा; स्वप्न ५३; प्रासू ६०) । °**गहण** देखो °**ग्गहण**; (भवि) । °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] विवाह; (सुपा ३७३; धर्मवि १२३) । °**ग्गहण** न [°**ग्रहण**] विवाह, सादी; (विपा १, ९; स्वप्न ६३; भवि)।

पाणिअ न [**पानीय**] पानी, जल; (हे १, १०१; प्राप्र; पण्ह १, ३; कुमा) । °**धरिया** स्त्री [°**धरिका**] पनिहारी; "जियसत्तुस्स रगणो पाणियघ(? घ)रियं सद्दावेइ" (णाया १, १२—पत्र १७५) । °**हारी** स्त्री [°**हारी**] पनिहारी; (दे ६, ५६; भवि) । देखो **पाणीअ** ।

पाणिणि पुं [**पाणिनि**] एक प्रसिद्ध व्याकरण-कार ऋषि; (हे २, १४७) ।

पाणिणीअ वि [**पाणिनीय**] पाणिनि-संबन्धी, पाणिनि का; (हे २, १४७) ।

पाणी देखो **पाण**=(दे) ।

पाणी स्त्री [**पानी**] वल्ली-विशेष; "पाणी नामावल्ली गुंजावल्ली य वत्थाणी" (पण्ण १—पत्र ३३) ।

पाणीअ देखो **पाणिअ**; (हे १, १०१; प्रासू १०५) । °**धरी** स्त्री [°**धरी**] पनिहारी; (णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

पाणु पुंन [**प्राण**] १ प्राण वायु; २ श्वासोच्छ्वास; (कम्म ५, ४०; औप; कप्प) । ३ समय-परिमाण-विशेष; "एगे ऊसासनीसासे एस पाणुत्ति वुच्चइ । सत्त पाणूणि से थोवे" (तंदु ३२) ।

पात } देखो **पाय**=पात्र; (सूअ १, ४, २; पण्ह २, ५—
पाद } पत्र १४८) । °**बंधण** न [°**बन्धन**] पात्र बाँधने का वस्त्र-खण्ड, जैन मुनि का एक उपकरण; (पण्ह २, ५) ।

पाद देखो **पाय**=पाद; (विपा १, ३) । °**सम** वि [°**सम**] गेय-विशेष; (ठा ७—पत्र ३९४) । °**द्दुरय** न [°**ष्ठुरद**] दृष्टिवाद-नामक बारहवें जैन आगम-ग्रन्थ का एक प्रतिपाद्य विषय; (सम १२८) ।

पादु देखो **पाउ**=प्रादुस् । पादुरेसए; (पि ३४१) । पादुरकासि; (सूअ १, २, २, ७) ।

पादो देखो **पाओ**=प्रातर्; (सुज्ज १, ९) ।

पादोसिय वि [**प्रादोषिक**] प्रदोष-काल का, प्रदोष-संबन्धी; (ओघ ६५८) ।

पाद्दव देखो **पायव**; (गा ५३७ अ) ।

पाधन्न देखो **पाहन्न**; (धर्मसं ७८६)।

पाधार सक [**स्वा + गम्, पाद + धारय्**] पधारना । "पाधारह निअगेहे" (श्रा १६) ।

पाबद्ध वि [**प्राबद्ध**] विशेष बँधा हुआ, पाशित; (निचू १६)।

पाभाइय } वि [**प्राभातिक**] प्रभात-संबन्धी; (ओघभा
पाभातिय } ३११; अनु ६; धर्मवि ५८) ।

पाम सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना; गुजराती में 'पामवुं' । "कारावेइ पडिमं जिणाण जिअरागदोसमोहाणं । सो अन्नभवे पामइ भवमहणं धम्मवररयणं ॥" (रयण१२)। कर्म—पामिज्जइ; (सम्मत्त १४२) ।

पामण्ण न [**प्रामाण्य**] प्रमाणता, प्रमाणपन; (धर्मसं ७५)।

पामद्दा स्त्री [**दे**] दोनों पैर से धान्य-मर्दन; (दे ६, ४०)।

पामन्न देखो **पामण्ण**; (विसे १४६६; चेइय १२४) ।

पामर पुं [**पामर**] कृषीवल, कर्षक, खेती का काम करने वाला गृहस्थ; "पामरगहवइसंभासणकासथा दोणया हलिआ" (पाअ; वज्जा १३४; गउड; दे ६, ४१; सुर १६, ५३) । २ हलकी जाति का मनुष्य; (कप्पू ; गा २३८) । ३ मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी; (गा १६४), "को नाम पामरं मुत्तुं वच्चइ दुद्दमकद्दमे" (श्रा १२) ।

पामा स्त्री [**पामा**] रोग-विशेष, खुजली, खाज; (सुपा २२७) ।

पामाड पुं [**प्रपुन्नाट**] पमाड़, पमार, पवाड, चकवड, वृक्ष-विशेष; (पाअ) ।

पामिच्च न [**दे. अपमित्य**] १ धार लेना, वापिस देने का वादा कर ग्रहण करना; २ वि. जो धार लिया जाय वह; (पिंड ९२; ३१३; आचा; ठा ३, ४; ९; औप; पण्ह २, ५; पव १२५; पंचा १३, ५; सुपा ६४३) ।

पामुक्क वि [**प्रमुक्त**] परित्यक्त; (पाअ; स ६५७) ।

पामूल न [**पादमूल**] पैर का मूल भाग, पाँव का अग्र भाग; (पउम ३, ६; सुर ८, १६६; पिंड ३२८)। देखो **पाय-मूल**=पादमूल।

पामोक्ख देखो **पमुह**=प्रमुख; (गाया १, ५; ८; महा)।

पामोक्ख पुं [**प्रमोक्ष**] मुक्ति, छुटकारा; (उप ६४८ टी)।

पाय पुं [**दे**] १ रथ-चक्र, रथ का पहिया; (दे ६, ३७)। २ फणी, साँप; (षड्)।

पाय पुं [**पाक**] १ पचन-क्रिया; २ रसोई; (प्राकृ १६; उप ७२८ टी)।

पाय देखो **पाव**; (चंड)।

पाय पुं [**पात**] १ पतन; (पंचा २, २५; से १, १६)। २ संबन्ध; "पुणो पुणो तरलदिट्ठिपाएहिं" (सुर ३, १३८)।

पाय पुं [**पाय**] पान, पीने की क्रिया; (श्रा २३)।

पाय पुं [**पाद**] १ गमन, गति; (श्रा २३)। २ पैर, चरण, पाँव; "चलणा कमा य पाया" (पाअ; गाया १, १)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा; (हे ३, १३४; पिंग)। ४ किरण, "अंसू रस्सी पाया" (पाअ; अजि २८)। ५ सानु, पर्वत का कटक; (पाअ)। ६ एकाशन तप; (संबोध ५८)। ७ छः अंगुलों का एक नाप; (इक)। °**कंच-णिया** स्त्री [°**काञ्चनिका**] पैर प्रक्षालन का एक सुवर्ण-पात्र; (राज)। °**कंबल** पुंन [°**कम्बल**] पैर पोंछने का वस्त्र-खण्ड; (उत्त १७, ७)। °**कुक्कुड** पुं [°**कुक्कुट**] कुक्कुट-विशेष; (गाया १, १७ टी—पत्र २३०)। °**घाय** पुं [°**घात**] चरण-प्रहार; (पिंग)। °**चार** पुं [°**चार**] पैर से गमन; (गाया १, १)। °**चारि** वि [°**चारिन्**] पैर से यातायात करने वाला, पाद-विहारी; (पउम ६१, १६)। °**जाल**, °**जालग** न [°**जाल**, °**क**] पैर का आभूषण-विशेष; (औप; अजि ३१; पण्ह २, ५)। °**त्ताण** न [°**त्राण**] जूता, पगरखी; (दे १, ३३)। °**पलंब** पुं [°**प्रलम्ब**] पैर तक लटकने वाला एक आभूषण; (गाया १, १—पत्र ५३)। °**पीढ** देखो °**वीढ**; (गाया १, १; महा)। °**पुंछण** न [°**प्रोञ्छन**] रजोहरण, जैन साधु का एक उपकरण; (आचा; ओघ ५११; ७०६; भग; उवा)। °**प्पडण** न [°**पतन**] पैर में गिरना, प्रणाम-विशेष; (पउम ६३, १८)। °**मूल** न [°**मूल**] १ देखो **पामूल**;(कस)। २ मनुष्यों की एक साधारण जाति, नर्तकों की एक जाति; "समागयाइं पायमूलाइं", "पुलइज्जमाणो पायमूलेहिं पत्तो रहसमीवे", "पणच्चियाइं पायमूलाइं", "सद्दावियाइं पायमूलाइं", "पणच्चंतेहिं पायमूलेहिं" (स ७२१; ७२२; ७३४)। °**लेहणिआ** स्त्री [°**लेखनिका**] पैर पोंछने का जैन साधु का एक काष्ठ-मय उपकरण; (ओघ ३६)। °**वंदय** वि [°**वन्दक**] पैर पर गिर कर प्रणाम करने वाला; (गाया १, १३)। °**वडण** न [°**पतन**] पैर में गिरना, प्रणाम-विशेष;(हे १, २७०; कुमा; सुर २, १०६)। °**वडिया** स्त्री [°**वृत्ति**] पाद-पतन, पैर छूना, प्रणाम-विशेष; "पायवडियाए खेमकुसलं पुच्छंति" (गाया १, २; सुपा २५)। °**विहार** पुं [°**विहार**] पैर से गति; (भग)। °**वीढ** न [°**पीठ**] पैर रखने का आसन; (हे १, २७०; कुमा; सुपा ६८)। °**सीसग** न [°**शीर्षक**] पैर के ऊपर का भाग; (राय)। °**उलअ** न [°**आकुलक**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पाय देखो **पत्त**=पात्र; (आचा; औप; ओघभा ३६; १७४)। °**केसरिआ** स्त्री [°**केसरिका**] जैन साधुओं का एक उपकरण, पात्र-प्रमार्जन का कपड़ा; (ओघ ६६८; विसे २५५२ टी)। °**ट्ठवण**, °**ठवण** न [°**स्थापन**] जैन मुनिओं का एक उपकरण, पात्र रखने का वस्त्र-खण्ड; (विसे २५५२ टी; ओघ ६६८)। °**णिज्जोग**, °**निज्जोग** पुं [°**निर्योग**] जैन साधु का यह उपकरण-समूह;—पात्र, पात्रबन्ध, पात्रस्थापन, पात्र-केशरिका, पटल, रजस्त्राण और गुच्छक; (पिंड २६; बृह ३; विसे २५५२ टी)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] पात्र-संबन्धी अभिग्रह—प्रतिज्ञा-विशेष; (ठा ४, ३)। देखो **पाद**=पात्र।

पाय (अप) देखो **पत्त**=प्राप्त; (पिंग)।

पाय° अ [**प्रायस्**] प्रायः, बहुत कर के; "पायप्पाणं वणेइ त्ति" (पिंड ४४३)।

°**पाय** पुं.ब. [°**पाद**] पूज्य; "संथुआ अजिअसंतिपायया" (अजि ३४)।

पायए देखो **पा**=पा।

पायं देखो **पाय**°; (स ७६१; सुपा २८; ५६६; श्रावक ७३)।

पायं अ [**प्रातस्**] प्रभात; (सूअ १, ७, १४)।

पायंगुट्ठ पुं [**पादाङ्गुष्ठ**] पैर का अंगूठा; (गाया १, ८)।

पायंदुय पुं [**पादान्दुक**] पैर बाँधने का काष्ठमय उपकरण; (विपा १, ६—पत्र ६६)।

पायक देखो **पाइक**; (सम्मत्त १७६)।

पायक्खिणण न [**प्रादक्षिण्य**] प्रदक्षिणा; (पउम ३२, ६२)।

पायग न [**पातक**] पाप; (श्रावक २४८)।

पायच्छित्त पुंन [**प्रायश्चित्त**] पाप-नाशक कर्म, पाप-क्षय करने वाला कर्म; "पायच्छित्तो नाम पायच्छित्तो संवुत्तो" (सम्मत्त १४४; उवा; औप; नव २६)।

पायड देखो **पागड**=प्र+कटय्। पायडइ; (भवि)। वकृ—**पायडंत**; (सुपा २५६)। कवकृ—**पायडिज्जंत**; (गा ६=५)। हेकृ—**पायडिउं**; (कुप्र ५)।

पायड न [**दे**] अंगण, आँगन; (दे ६, ४८)।

पायड देखो **पागड**=प्रकट; (हे १, ४४; प्राप्र; औप ७३; जी २२; प्रासू ६४)।

पायड देखो **पागड**=प्राकृत; "अहंपि दाव दिअसे णअरं परिब्भमिअ अलद्धभोअो पाअडणाडिअो विअ रत्तिं पसत्तो **भइद्** अअच्छामि" (अवि २६)।

पायड वि [**प्रावृत**] आच्छादित; (विसे २५२६ टी)।

पायडिअ वि [**प्रकटित**] व्यक्त किया हुआ; (कुप्र ४; से १, ५३; गा १६६; २६०; गउड; स ६६८)।

पायडिल्ल वि [**प्रकट**] खुला; (वज्जा १०८)।

पायण न [**पायन**] पिलाना, पान कराना; (गाया १, ७)।

पायत्त न [**पादात**] पदाति-समूह, प्यादों का लश्कर; (उत्त १८, २; औप; कप्प)। °**णिय** न [°**नीक**] पदाति-सैन्य; (पि ८०)।

पायप्पहण पुं [**दे**] कुक्कुट, मुर्गा; (दे ६, ४२)।

पायय न [**पातक**] पाप; (अच्चु ४३)।

पायय देखो **पाव**=पाप; (प्राप्र)।

पायय देखो **पागड**; (हे १, ६७)।

पायय देखो **पायव**; (से ६, ७)।

पायय देखो **पावय**=पावक; (अभि १२५)।

पायय देखो **पाय**=पाद; (कप्प)।

पायरास पुं [**प्रातराश**] प्रातःकाल का भोजन, जल-पान, जलखवा; (आचा; णाया १, ८)।

पायल न [**दे**] चक्षु, आँख; (दे ६, ३८)।

पायव पुं [**पादप**] वृक्ष, पेड़; (प्राप्र)।

पायव्व देखो **पा**=पा।

पायस पुंन [**पायस**] दूध का मिष्टान्न, खीर; "पायसो खीरी" (पात्र; सुपा ४३८)।

पायसो अ [**प्रायशस्**] प्रायः, बहुत कर; (उप ४४६; पंचा ३, २९)।

पायार पुं [**प्राकार**] किला, कोट, दुर्ग; (प्राप्र; हे १, २६८; कुमा)।

पायाल न [**पाताल**] रसा-तल, अधो भुवन; (हे १, १८०; प्राप्र)। °**कलश** पुं [°**कलश**] समुद्र के मध्य में स्थित कलशाकार वस्तु; (मनु)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम ६५, ३६)। °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] पाताल-स्थित गृह; (महा)। °**हर** न [°**गृह**] वही अर्थ; (महा)।

पायालंकारपुर न [**पातालल‍ङ्कापुर**] पाताल-लंका, रावण की राजधानी; "पायालंकारपुरं सिग्घं पत्ता भउव्विग्गा" (पउम ६, २०१)।

पायावच्च न [**प्राजापत्य**] अहोरात्र का चौदहवाँ मुहूर्त; (सम ५१)।

पायाविय वि [**पायित**] पिलाया हुआ; (पउम ११, ४१)।

पायाहिण न [**प्रादक्षिण्य**] १ वेष्टन; (सम ६१)। २ दक्षिण की ओर; "पायाहिणेण तिहिं पंतिआहिं भमाएह तद्दियए" (सिरि १६६)।

पायाहिणा देखो **पयाहिणा**; "पायाहिणं करिंतो" (उत्त ९, ५६; सुपा ६, ५६)।

पार अक [**शक्**] सकना, करने में समर्थ होना। पारइ, पारेइ; (हे ४, ८६; प्राप्र)। वकृ—**पारंत**; (कुमा)।

पार सक [**पारय्**] पार पहुँचना, पूर्ण करना। पारेइ; (हे ४, ८६; प्राप्र)। हेकृ—**पारित्तए**; (भग १२, १)।

पार पुंन [**पार**] १ तट, किनारा; (आचा)। २ पर्ला किनारा; "परतीरं पारं" (पात्र), "किह मइ होही भव-जलहिपारं" (निसा ५)। ३ परलोक, आगामी जन्म; ४ मनुष्य-लोक-भिन्न नरक आदि; (सुअ १, ६, २८)। ५ मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण; "पारं पुणणुत्तरं बुहा विंति" (बृह ४)। °**ग** वि [°**ग**] पार जाने वाला; (औप; सुपा २५४)। °**गय** वि [°**गत**] १ पार-प्राप्त; (भग; औप)। २ पुं. जिन-देव, भगवान् अर्हन्; (उप १३२ टी)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] पार पहुँचने वाला; (आचा; कप्प; औप)। °**पाणग** न [°**पानक**] पेय द्रव्य-विशेष; (णाया १, १७)। °**विउ** वि [°**विद्**] पार को जानने वाला; (सुअ २, १, ६०)। °**भोय** वि [°**भोग**] पार-प्रापक; (कप्प)।

पार देखो **पायार**; (हे १, २६८; कुमा)।

पारंक न [**दे**] मदिरा नापने का पात्र; (दे ६, ४१)।

पारंगम वि [**पारगम**] १ पार जाने वाला; २ पार-गमन; (आचा)।

पारंगय वि [**पारंगत**] पार-प्राप्त; (कुप्र २१)।

पारंचि वि [**पाराञ्चि**] सर्वोत्कृष्ट—दशम—प्रायश्चित्त करने वाला; " पारंचीणं दोण्हवि " (बृह ४)।

पारंचिय न [**पाराञ्चिक**] १ सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त, तप-विशेष से अतिचारों की पार-प्राप्ति; (ठा ३, ४—पत्र १६२; औप)। २ वि. सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त करने वाला; (ठा ३, ४)।

पारंचिय [**पाराञ्चित**] ऊपर देखो; (कस; बृह ४)।

पारंपज्ज न [**पारम्पर्य**] परम्परा; (रंभा १५)।

पारंपर पुं [**दे**] राक्षस; (दे ६, ४४)।

पारंपर, **पारंपरिय** न [**पारम्पर्य**] परम्परा; (पउम २१, ८०; आरा १६; धर्मसं १११८; १३१७), " आयरियपारंपर्यें (? रिए) ण आगयं " (सूअनि १२७—पृष्ठ ४८७)।

पारंपरिय वि [**पारम्परिक**] परंपरा से चला आता; (उप ७२८ टी)।

पारंभ सक [**प्रा + रभ्**] १ आरम्भ करना, शुरू करना। २ हिंसा करना, मारना। ३ पीड़ा करना। पारंभेमि; (कुप्र ७०)। कवकृ—" तण्हाए **पारब्भमाणा** " (औप)।

पारंभ पुं [**प्रारम्भ**] शुरू, उपक्रम; (विसे १०२०; पव १६६)।

पारंभिय वि [**प्रारब्ध**] आरब्ध, उपक्रान्त; (धर्मवि १४४; सुर २, ७७; १२, १५६; सुपा ५५)।

पारकेर, **पारक्क** वि [**परकीय**] पर का, अन्यदीय; (हे १, ४४; २, १४८; कुमा)।

पारब्भमाण देखो **पारंभ**=प्रा+रभ्।

पारण, **पारणग**, **पारणय** न [**पारण**, °**क**] व्रत के दूसरे दिन का भोजन, तप की समाप्ति के अनन्तर का भोजन; (सण; उवा; महा)।

पारणा स्त्री [**पारणा**] ऊपर देखो। °**इत्त** वि [°**वत्**] पारण वाला; (पंचा १२, ३५)।

पारतंत न [**पारतन्त्र्य**] परतन्त्रता, पराधीनता; (उप २५२; पंचा ६, ४१; ११, ७)।

पारत्त अ [**परत्र**] परलोक में, आगामी जन्म में; " पारत्त बिइज्जओ धम्मो " (पउम ५, १६३)।

पारत्त वि [**पारत्र**, **पारत्रिक**] पारलौकिक, आगामी जन्म से संबन्ध रखने वाला; "इत्तो पारत्तहियं ता कीरउ देव ! वंकचूलिस्स " (धर्मवि ६०; ओघ ६२; स २४६)।

पारत्ति स्त्री [**दे**] कुसुम-विशेष; (गउड; कुमा)।

पारत्तिय वि [**पारत्रिक**] देखो **पारत्त**=पारत्र; (स ७०७)।

पारदारिय वि [**पारदारिक**] परस्त्री-लम्पट; (णाया १, १८—पत्र २३६)।

पारद्ध वि [**प्रारब्ध**] १ जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह; " पारद्धा य विवाहनिमित्तं सयला सामग्गी " (महा)। २ जो प्रारम्भ करने लगा हो वह; " तओ अवरण्हसमए पारद्धो नच्चिउं " (महा)।

पारद्ध न [**दे**] पूर्व-कृत कर्म का परिणाम, प्रारब्ध; २ वि. आखेटक, शिकारी; ३ पीड़ित; (दे ६, ७७)।

पारद्धि स्त्री [**पापर्द्धि**] शिकार, मृगया; (हे १, २३५; कुमा; उप पृ २५७; सुपा २१६)।

पारद्धिअ वि [**पापर्द्धिक**] शिकारी, शिकार करने वाला; गुजराती में 'पारधी'; "मयणमहापारद्धियनिसायबाणावलीविद्धा" (सुपा ७१; मोह ७६)।

पारमिया स्त्री [**पारमिता**] बौद्ध-शास्त्र-परिभाषित प्राणातिपात-विरमणादि शिक्षा-व्रत, अहिंसा आदि व्रत; (धर्मसं ६८८)।

पारम्म न [**पारम्य**] परमता, उत्कृष्टता; (अज्झ ११४)।

पारय पुं [**पारद**] धातु-विशेष, पारा, रस-धातु। °**मद्दण** न [°**मर्दन**] आयुर्वेद-विहित रीति से पारा का मारण, रसायण-विशेष; "अंग-कडिणयाहेउं च सेवंति पारयमद्दणं" (स २८६)। २ वि. पार-प्रापक; (श्रु १०६)।

पारय न [**दे**] सुरा-भाण्ड, दारू रखने का पात्र; (दे ६, ३८)।

पारय देखो **पार-ग**; (कप्प; भग; अंत)।

पारय पुं [**प्रावारक**] १ पट, वस्त्र; २ वि. आच्छादक; (हे १, २७१; कुमा)।

पारलोइअ वि [**पारलौकिक**] परलोक-संबन्धी, आगामी जन्म से संबन्ध रखने वाला; (पण्ह १, ३; ४; सुअ २, ७, २३; कुप्र ३८१; सुपा ४६१)।

पारवस्स न [**पारवश्य**] परवशता, पराधीनता; (रयण ८१)।

पारस पुं [**पारस**] १ अनार्य देश-विशेष, फारस देश, ईरान; (इक)। २ मणि-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण हो जाता है; (संबोध ५३)। ३ पारस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १)। °**उल** न [°**कुल**] १ ईरान देश; "भरिऊण भंडस्स वहणाइं पत्तो पारसउलं", "इओ य सो अयलो पारसउले विढविय बहुयं दव्वं" (महा)। २ वि. पारस देश का, ईरान का निवासी; " मागहयपारसउला

कालिंगा नीलपाय मह्या (पउम ६६, ५५) । °कुल न [°कुल] ईरान का किनारा, ईरान देश की सीमा; (पउम)।

पारस्सिय वि [**पारसिक**] पारस देश का; "पारसिया गावीओ कुंडगरुवाणी जलवंतीओ", "पारस्सियवरसिंधुर" (सुपा २६५; ३३५) ।

पारस्सी स्त्री [**पारसी**] १ पारस देश की स्त्री; (औप; णाया १, १—पत्र ३७; इक) । २ लिपि-विशेष, फारसी लिपि; (विसे ४६४ टी) ।

पारसीअ वि [**पारसीक**] पारस देश का निवासी; (पउम)।

पाराई स्त्री [**दे**] लोह-कुशी-विशेष, लोहे की बनी हुई कोई वस्तु; "कट्ठकेलाबंधकवइयाउडं (?) दे (?) कलिकारणमावसंकेलसमा-रम्भवतालिसंगमंतां" (सम्र २, ३) ।

पाराय देखो **पारावय**; (प्राप्र) ।

पारायण न [**पारायण**] १ पार-प्राप्ति; (विसे ५६४) । २ पुराण-पाठ-विशेष; "अपीडं (?) य (?) वत्तनस्ससम्मा सावत्त-पाराओ जाओ" (सुख २, १३) ।

पारावय देखो **पारेवय**; (पाअ; प्राप्र; गा ६४; कप्प ५६ टि)।

पारावर पुं [**दे**] गवाक्ष, वातायन; (दे ६, ४३) ।

पारावार पुं [**पारावार**] समुद्र, सागर; (पाअ; कुप्र ३२०)।

पाराविअ वि [**पारित**] जिसको पारण कराया गया हो वह; (कुप्र २१२) ।

पारासर पुं [**पाराशर**] १ ऋषि-विशेष; (सूअ १, ३, ४, ३) । २ न. गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है; ३ वि. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३९०) ४ पुं. भिक्षुक; ५ कर्म-त्यागी संन्यासी; "अंतेवि पारासरा अत्थि" (सुख २, ३१) ।

पारिओसिय वि [**पारितोषिक**] तुष्टि-जनक दान, प्रसन्नता-सूचक दान, पुरस्कार; (सम्मत्त १२२; स १६३; सुर १६, १८२; विचार १७१) ।

पारिच्छा देखो **परिच्छा**; "वयपरिणामे चिंता सिहं समप्पेमि तासि पारिच्छा" (उप १७३; उप पृ २७५) ।

पारिच्छेज्ज देखो **परिच्छेज्ज**; (णाया १, ८—पत्र १३१)।

पारिजाय देखो **पारिय=पारिजात**; (कुमा) ।

पारिट्ठावणिया स्त्री [**पारिष्ठापनिकी**] समिति-विशेष, मल आदि के उत्सर्ग में सम्यक् प्रवृत्ति; (सम १०; औप; कप्प) ।

पारिडि स्त्री [**प्रावृति**] प्रावरण, वस्त्र, कपड़ा; "विक्किणइ माहमासम्मि पामरो पारिडिं वइल्लेण" (गा २३८) ।

पारिणामिअ देखो **परिणामिअ=** पारिणामिक; (अणु; कम्म ४, ६४) ।

पारिणामिआ देखो **परिणामिआ**; (आव १; णाया १, १—पत्र ११) ।

पारितावणिया स्त्री [**पारितापनिकी**] दूसरे को परिताप—दुःख—उपजाने से होने वाला कर्म-बन्ध; (नव १०) ।

पारितावणा स्त्री [**पारितापना**] ऊपर देखो; (नव १७) ।

पारितोसिअ देखो **पारिओसिय**; (नाट; सुपा २७; प्रासू) ।

पारित्त देखो **पारत्त=परत्र**; "पारित्त चिइआ धम्मा" (वेंद्र ५६) ।

पारिप्पव पुं [**पारिप्लव**] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

पारिभद्द पुं [**पारिभद्र**] वृक्ष-विशेष, फरहद का पेड़; (कप्पू) ।

पारिय वि [**पारित**] पूर्ण किया हुआ; (स्वप्न १९) ।

पारिय पुं [**पारिजात**] १ देव-वृक्ष विशेष, कल्प-वृक्ष विशेष; २ फरहद का पेड़, "कप्पूरपारिआण य अहिअअरो मालईगंधो" (कुमा ५, ५३) । ३ न. पुष्प-विशेष, फरहद का फूल जो रक्त वर्ण का और अत्यन्त शोभायमान होता है; "सुहिए य विडप्पइ पारियचिछ मुंडीरहे खंडइ वल्ल लच्छि" (भवि) ।

पारियत्त पुं [**पारियात्र**] देश-विशेष; "परिब्भमंतो पत्तो पारियत्तविसयं" (कुप्र २६६) ।

पारियाय देखो **पारिय=पारिजात**; (सुपा ७६; से ६, ४८; महा; स ७५६) ।

पारियावणिया देखो **पारितावणिया**; (ठा २, १—पत्र ३९) ।

पारियावणिया देखो **परियावणिया**; (स ५५१) ।

पारियासिय वि [**पर्यवासित**] बासी रखा हुआ; (कस) ।

पारिव्वज्ज न [**पारिव्राज्य**] संन्यासिपन, संन्यास; (पउम ८२, २४) ।

पारिव्वाई स्त्री [**पारिव्राजी, परिव्राजिका**] संन्यासिनी; (उप पृ २७९) ।

पारिव्वाय वि [**पारिव्राज**] संन्यासि-संबन्धी; (राज) ।

पारिसज्ज वि [**पारिषद्य**] सभ्य, सभासद; (धर्मवि ६) ।

पारिसाडणिया स्त्री [**पारिशाटनिकी**] परिशाटन—परि-त्याग—से होने वाला कर्म-बन्ध; (आव ४) ।

पारिहच्छी स्त्री [**दे**] माला; (दे ६, ४२) ।

पारिहट्टी स्त्री [**दे**] १ प्रतिहारी; २ आकृष्टि, आकर्षण; ३ चिर-प्रसूता महिषी, बहुत देर से ब्यायी हुई भैंस; (दे ६, ७२) ।

पारिहत्थिय वि [**पारिहस्तिक**] स्वभाव से निपुण; (ठा ६—पत्र ४५१) ।

पारिहारिय वि [**पारिहारिक**] तपस्वी विशेष, परिहार-नामक व्रत करने वाला; (कस) ।

पारिहासय न [**पारिहासक**] कुल-विशेष, जैन मुनिओं के एक कुल का नाम; (कप्प) ।

पारी स्त्री [**दे**] दोहन-भाण्ड, जिस में दोहन किया जाता है वह पात्र-विशेष; (दे ६, ३७; गउड ५७७) ।

पारीण वि [**पारीण**] पार-प्राप्त; " धीवरसत्थाण पारीणो " (धर्मवि १३; सिरि ४८६; सम्मत्त ७५) ।

पारुअग्ग पुं [**दे**] विश्राम; (दे ६, ४४) ।

पारुअल्ल पुं [**दे**] पृथुक, चिउड़ा; (दे ६, ४४) ।

पारुसिय देखो **फारुसिय**; (आचा १, ६, ४, १ टि) ।

पारुहल्ल वि [**दे**] मालीकृत, श्रेणी रूप से स्थापित; "पाली-बंधं च पारुहल्लोम्मिं " (दे ६, ४५) ।

पारेवई स्त्री [**पारापती**] कबूतरी, कबूतर की मादा; (विपा १, ३) ।

पारेवय पुं [**पारापत**] १ पक्षि-विशेष, कबूतर; (हे १, ८०; कुमा; सुपा ३२८) । २ वृक्ष-विशेष; ३ न. फल-विशेष; (पराण १७) ।

पारोक्ख वि [**पारोक्ष**] परोक्ष-विषयक, परोक्ष-संबन्धी; (धर्मसं ५०२) ।

पारोह देखो **परोह**; (हे १, ४४; गा ५७५; गउड) ।

पारोहि वि [**प्ररोहिन्**] प्ररोह वाला, अंकुर वाला; (गउड) ।

पाल सक [**पालय्**] पालन करना, रक्षण करना । पालेइ; (भग; महा) । वकृ—**पालयंत, पालंत, पालिंत, पाले-माण**; (सुर २, ७१; सं ४६; महा; औप; कप्प) । संकृ—**पालइत्ता, पालित्ता, पालेऊण**; (कप्प; महा), **पालेवि** (अप); (हे ४, ४४१) । कृ—**पालियव्व, पालेयव्व**; (सुपा ४३५; ३७६; महा) ।

पाल देखो **पार**=पारय् । संकृ—**पालइत्ता** ; (कप्प) ।

पाल पुं [**दे**] १ कलवार, शराब बेचने वाला; २ वि. जीर्ण, फटा-टूटा; (दे ६, ७५) ।

पाल पुंन [**पाल**] आभूषण-विशेष; " मुरविं वा पालं वा तिसरयं वा कडिसुत्तगं वा " (औप) । २ वि. पालक, पालन-कर्ता; " जो सयलसिंधुसायरहो पालु " (भवि) । स्त्री—**°ला**; (कुप्र ४) ।

पालंक न [**पालङ्क्य**] तरकारी-विशेष, पालक का शाक; (बृह १) ।

पालंगा स्त्री [**पालङ्क्या**] ऊपर देखो; (उत्त) ।

पालंत देखो **पाल**=पालय् ।

पालंब पुं [**प्रालम्ब**] १ अवलम्बन, सहारा; "पावइ तड-विडविपालंबं" (सुपा ६३५) । २ गले का आभूषण-विशेष; (औप; कप्प) । ३ दीर्घ, लम्बा; (औप; राय) । ४ पुंन. ध्वजा के नीचे लटकता वस्त्राञ्चल; " ओऊलं पालंबं " (पाअ) ।

पालक्का स्त्री [**पालक्या**] देखो **पालंगा**; " वत्थुलपोरग-मज्जारपोइवल्ली य पालक्का " (पराण १—पत्र ३४) ।

पालग देखो **पालय**; (कप्प; औप; विसे २८५६; संति १; सुर ११, १०८) ।

पालण न [**पालन**] १ रक्षण; (महा; प्रासू ३) । २ वि. रक्षण-कर्ता; "धम्मस्स पालणो चेव" (संबोध १६; सं ६७) ।

पालद्दुह पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष; (उप १०३१ टी) ।

पालप्प पुं [**दे**] १ प्रतिसार; २ वि. विप्लुत; (दे ६, ७६) ।

पालय वि [**पालक**] १ रक्षक, रक्षण-कर्ता; (सुपा २७६; सार्ध १०) । २ पुं. सौधर्मेन्द्र का एक आभियोगिक देव; (ठा ८) । ३ श्रीकृष्ण का एक पुत्र; (पव २) । ४ भगवान् महावीर के निर्वाण के दिन अभिषिक्त अवंती (उज्जैन) का एक राजा; (विचार ४९२) । ५ देव-विमान विशेष; (सम २) ।

पालास पुं [**पालाश**] पलाश-संबन्धी; २ न. पलाश वृक्ष का फल, किंशुक-फल; (गउड) ।

पालि स्त्री [**पालि**] १ तालाव आदि का बन्ध; (सुर १३, ३२; अंत १२; महा) । २ प्रान्त भाग; (गा ६४६) । देखो **पाली**=पाली ।

पालि स्त्री [**दे**] १ धान्य मापने का नाप; २ पल्योपम, समय का सुदीर्घ परिमाण-विशेष; (उत्त १८, २८; सुख १८, २८) ।

पालिआ स्त्री [**दे**] खड्ग-मुष्टि, तलवार की मूठ; (पाअ) ।

पालिआ देखो **पाली**=पाली; "उज्जाणपालियाहिं कविउत्तीहिं व बहुरसड्ढाहिं " (धर्मवि १३) ।

पालित्त पुं [**पादलिप्त**] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (पिंड ४६८; कुप्र १७८) ।

पालित्ताण न [**पादलिप्तीय**] सौराष्ट्र देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल भी 'पालिताणा' नाम से प्रसिद्ध है; (ती १७६)।

पालित्तिअ स्त्री [**दे**] १ राजवार्ता; २ मूल-नीवी; ३ भण्डार, निधि; ४ भंगी, प्रकार; (कप्पू)।

पालिय वि [**पालित**] रक्षित; (ठा १०; महा)।

पाली स्त्री [**पाली**] पंक्ति, श्रेणि; (गउड) । देखो **पालि** ।

पाली स्त्री [**दे**] दिशा; (दे ६, ३७)।

पालीबंध पुं [**दे**] तालाव, सरोवर; (दे ६, ४५)।

पालीहम्म न [**दे**] वृति, वाड; (दे ६, ४५)।

पालेव पुं [**पादलेप**] पैर में किया हुआ लेप; (पिंड ५०३)।

पाव सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना । पावइ; (हे ४, २३६)। भवि—पाविहिसि; (पि ५३१)। कर्म—पाविज्जइ; (उव)। वकृ—**पावंत, पावत**; (पिंग; पउम १४, ३७)। कवकृ—**पावियंत, पावेज्जमाण**; (पगह १, १; अंत २०)। संकृ—**पाविऊण**; (पि ५८६)। हेकृ—**पत्तुं, पावेउं**; (हास्य ११६; महा)। कृ—**पावणिज्ज, पाविअव्व**; (सुर ६, १४२; स ६८६)।

पाव देखो **पव्वाल**=प्लावय् । पावेइ; (हे ४, ४१)।

पाव पुंन [**पाप**] १ अशुभ कर्म-पुद्गल, कुकर्म; (आचा; कुमा; ठा १; प्रासू २५), "जम्मंतरकए पावे पाणी मुहुत्तेण निद्दहे" (गच्छ १, ६)। २ पापी, अधर्मी, कुकर्मी; (पगह १, १; कुमा ७, ६)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] अशुभ कर्म; (आचा)। °**कम्मि** वि [°**कर्मिन्**] कुकर्म करने वाला; (ठा ७)। °**दंड** पुं [°**दण्ड**] नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २६)। °**पगइ** स्त्री [°**प्रकृति**] अशुभ कर्म-प्रकृति; (राज)। °**यारि** वि [°**कारिन्**] दुराचारी; (पउम ६३, ४३; महा)। °**समण** पुं [°**श्रमण**] दुष्ट साधु; (उत्त १७, ३; ४)। °**सुमिण** पुंन [°**स्वप्न**] दुष्ट स्वप्न; (कप्प)। °**सुय** न [°**श्रुत**] दुष्ट शास्त्र; (ठा ६)।

पाव पुं [**दे**] सर्प, साँप; (दे ६, ३८)।

पाव (अप) देखो **पत्त**=प्राप्त; (पिंग)।

पावंस वि [**पापीयस्**] पापी, कुकर्मी; (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

पावक्खालय न [**दे. पापक्षालक**] देखो **पाउक्खालय**; (स ७४१)।

पावग वि [**पावक**] १ पवित्र करने वाला; (गज)। पुं. अग्नि, वह्नि; (सुपा १८२)।

पावग वि [**प्रापक**] पहुँचाने वाला; (सुपा ५००)।

पावग देखो **पाव**=पाप; (आचा; धर्मसं ५४३)

पावज्जा (अप) देखो **पव्वज्जा** ; (भवि)।

पावडण देखो **पाय-वडण**=पाद-पतन; (प्राप्; कुमा)।

पावड्ढि देखो **पारद्धि**; (सिरि ११०८; १११०)

पावण वि [**पावन**] पवित्र करने वाला; (अच्चु ४७; सनु १५०)।

पावण न [**प्लावन**] १ पानी का प्रवाह; २ सराबोर करना; (पिंड २४)।

पावण न [**प्रापण**] १ प्राप्ति, लाभ; (सुर ४, १११; उवर ७)। २ योग की एक सिद्धि; 'पावणसत्तीए छिवइ मेरुसिरमंगुलीए सुणी' (कुप्र २७७)।

पावद्धि देखो **पारद्धि**; (धर्मवि १४८)।

पावय देखो **पाव**=पाप; (प्रासू ७५)।

पावय वि [**प्रावृत**] आच्छादित, ढका हुआ; (सुअ २, ७, ३)।

पावय पुंन [**दे**] वाद्य-विशेष, गुजराती में ' पावो '; (पउम ५७, २३)।

पावय देखो **पावग**=पावक; (उप ७२८ टी; कुप्र २८३; सुपा ४; पाअ)।

पावयण देखो **पवयण**; (हे १, ४४; उवा; णाया १, १३)।

पावयणि वि [**प्रवचनिन्**] सिद्धान्त का जानकार, सैद्धान्तिक; (चेइय १२८)।

पावयणिय वि [**प्रावचनिक**] ऊपर देखो; (सम ६०)।

पावरअ देखो **पावारय**; (स्वप्न १०४)।

पावरण न [**प्रावरण**] वस्त्र, कपड़ा; (हे १, १७५)।

पावरिय वि [**प्रावृत**] आच्छादित; (कुप्र ३८)।

पावस देखो **पाउस**; (कुप्र ११७)।

पावा स्त्री [**पापा**] नगरी-विशेष, जो आजकल भी बिहार के पास पावापुरी के नाम से प्रसिद्ध है; (कप्प; ती ३; पंचा १६, १७; पव ३४; विचार ४६)।

पावाइ वि [**प्रवादिन्**] वाचाट, दार्शनिक; (सूअ २, ६, ११)।

पावाइअ वि [**प्राव्राजिक**] संन्यासी; (स्यण २२)।

पावाइअ वि [**प्रावादिक**] देखो **पावाइ**; (आचा)।

पावाइअ, **पावाडुय** वि [**प्रावादुक**] वाचाट, दार्शनिक; (सूअ १, १, ३, १३; २, २, ८०; पि २६५)।

पावार पुं [**प्रावार**] १ रुँछा वाला कपड़ा; २ मोटो कम्बल; (पव ८४)।

पावारय देखो **पारय**=प्रावारक; (हे १, २७१; कुमा)।

पावालिआ स्त्री [**प्रपापालिका**] प्रपा पर नियुक्त स्त्री; (गा १६१)।

पावासु } वि [**प्रवासिन्, °क**] प्रवास करने वाला; (पि
पावासुअ } १०५; हे १, ६५; कुमा)।

पाविअ वि [**प्राप्त**] लब्ध, मिला हुआ; (सुर ३, १६; स ६८६)।

पाविअ वि [**प्रापित**] प्राप्त करवाया हुआ; (सण; नाट—मृच्छ २७)।

पाविअ वि [**प्लावित**] सराबोर किया हुआ, खूब भिजाया हुआ; (कुमा)।

पाविट्ठ वि [**पापिष्ठ**] अत्यन्त पापी; (उव ७२८ टी; सुर १, २१३; २, २०५; सुपा १६६; श्रा १४)।

पावीढ देखो **पाय-वीढ**; (पउम ३, १; हे १, २७०; कुमा)।

पावीयंस देखो **पावंस**; (पि ४०६; ४१४)।

पावुअ वि [**प्रावृत**] आच्छादित; (संक्षि ४)।

पावेज्जमाण देखो **पाव**=प्र+आप्।

पावेस वि [**प्रावेश्य**] प्रवेशोचित, प्रवेश के लायक; (औप)।

पावेस पुं [**प्रावेश**] वस्त्र के दोनों तरफ लटकता रुँछा; (णाया १, १)।

पास सक [**दृश्**] १ देखना। २ जानना। पासइ, पासेइ; (कप्प)। पासिमं='पश्य'; (आचा १, ३, ३, ५)। कर्म—पासिज्जइ; (पि ७०)। वकृ—**पासंत, पासमाण**; (स ७५; कप्प)। संकृ—**पासिउं, पासित्ता, पासित्ताणं, पासिया**; (पि ४६५; कप्प; पि ५८३; महा)। हेकृ—**पासित्तए, पासिउं**; (पि ५७८; ५७७)। कृ—**पासियव्व**; (कप्प)।

पास पुं [**पार्श्व**] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल के तेईसवें जिन-देव; (सम १३; ४३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ का अधिष्ठायक यक्ष; (संति ८)। ३ न. कन्धा के नीचे का भाग, पाँजर; (णाया १, १६)। ४ समीप, निकट; (सुर ४, १७६)। **°ावच्चिज्ज** वि [**°ापत्यीय**] भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में संजात; (भग)।

पास पुं [**पाश**] फाँसा, बन्धन-रज्जू; (सुर ४, ३३७; औप; कुमा)।

पास न [**दे**] १ आँख; २ दाँत; ३ कुन्त, प्रास; ४ वि. विशोभ, कुडौल, शोभा-हीन; (दे ६, ७५)। ५ अन्य वस्तु का अल्प-मिश्रण; " निच्चुन्नो तंबोलो पासेण विणा न होइ जह रंगो " (भाव २)।

°पास वि [**°पाश**] अपसद, निकृष्ट, जघन्य, कुत्सित; "एस पासंडियपासो किं करिस्सइ" (सम्मत्त १०२)।

पासंगिअ वि [**प्रासङ्गिक**] प्रसंग-संबन्धी, आनुषंगिक; (कुम्मा २७)।

पासंड न [**पाखण्ड**] १ पाखण्ड, असत्य धर्म, धर्म का ढोंग; (ठा १०; णाया १, ८; उवा; आव ६)। २ व्रत; (अणु)।

पासंडि } वि [**पाखण्डिन्, °क**] १ पाखंडी, लोक में
पासंडिय } पूजा पाने के लिए धर्म का ढोंग रचने वाला; (महानि ४; कुप्र २७६; सुपा ६६; १०६; १६२)। २ पुं. व्रती, साधु, मुनि; "पव्वइए अणगारे पासंडे (? डी) चरग तावसे भिक्खू। परिवाइए य समणे" (दसनि २—गाथा १६४)।

पासंदण न [**प्रस्यन्दन**] झरन, टपकना; (बृह १)।

पासग वि [**दर्शक**] देखने वाला; (आचा)।

पासग पुं [**पाशक**] १ फाँसा, बन्धन-रज्जु; (उप पृ १३; सुर ४, २५०)। २ पासा, जुआ खेलने का उपकरण-विशेष; (जं ३)।

पासग न [**प्राशक**] कला-विशेष; (औप)।

पासण न [**दर्शन**] अवलोकन, निरीक्षण; (पिंड ४७५; उप ६७७; ओघ ५४; सुपा ३७)।

पासणया स्त्री. ऊपर देखो; (ओघ ६३; उप १४८; णाया १, १)।

पासणिअ वि [**दे**] साक्षी; (दे ६, ४१)।

पासणिअ वि [**प्राश्निक**] प्रश्न-कर्ता; (सूअ १, २, २, २८; आचा)।

पासत्थ वि [**पार्श्वस्थ**] १ पार्श्व में स्थित, निकट-स्थित; (पउम ६८, १८; स २६७; सूअ १, १, २, ५)। २ शिथिलाचारी साधु; (उप ८३३ टी; णाहा १, ५; ६;—पत्त २०६; सार्ध ८८)।

पासत्थ वि [**पाशस्थ**] पाश में फँसा हुआ, पाशित; (सूअ १, १, २, ५)।

पासल्ल न [**दे**] १ द्वार; (दे ६, ७६)। २ वि. तिर्यक्, वक्र; (दे ६, ७६; से ६, ६३; गउड)।

पासल्ल देखो **पास**=पार्श्व; (से ६, ३८; गउड)।

पासल्ल अक [**तिर्यञ्च्, पार्श्वाय्**] १ वक्र होना। २ पार्श्व घुमाना। "पासल्लंति महिहरा" (से ६, ४५)। वकृ— **पासल्लंत**· (से ६, ४१)।

पासल्लइअ देखो **पासल्लिअ**; (से ६, ५५)।

पासल्लि वि [**पार्श्विन्**] पार्श्व-शायिन्; "उत्ताणगपासल्ली नेसज्जी वावि ठाण ठाइत्ता" (पव ६७; पंचा १८, १५)।

पासल्लिअ वि [**पार्श्वित, तिर्यक्त**] १ पार्श्व में किया हुआ; २ टेढ़ा किया हुआ; (गउड; पि ५९५)।

पासवण न [**प्रस्रवण**] मूत्र, पेशाब; (सम १०; कस; कप्प; उवा; सुपा ६२०)।

पासाईय देखो **पासादीय**; (सम १३७; उवा)।

पासाकुसुम न [**पाशाकुसुम**] पुष्प-विशेष; "छम्मम्र गम्ममु सिसिरं पासाकुसुमेहिं ताव, मा मग्गु" (गा ८१६)।

पासाण पुं [**पाषाण**] पत्थर; (हे १, २६२; कुमा)।

पासाणिअ वि [**दे**] साक्षी; (दे ६, ४१)।

पासाद देखो **पासाय**; (औप; स्वप्न ५६)।

पासादिय वि [**प्रसादित**] १ प्रसन्न किया हुआ। २ न. प्रसन्न करना; (णाया १, ६—पत्र १६५)।

पासादीय वि [**प्रासादीय**] प्रसन्नता-जनक; (उवा; औप)।

पासादीय वि [**प्रासादित**] महल वाला, प्रासाद-युक्त; (सूअ २, ७, १ टी)।

पासाय पुंन [**प्रासाद**] महल, हर्म्य; (पाअ; पउम ८०, ४)। °**वडिंसय** पुं [°**वतंसक**] श्रेष्ठ महल; (भग; औप)।

पासासा स्त्री [**दे**] भल्ली, छोटा भाला; (दे ६, १४)।

पासाव } पुं [**दे**] गवाक्ष, वातायन; (षड्; दे ६,
पासावय } ४३)।

पासि वि [**पार्श्विन्**] पार्श्वस्थ, शिथिलाचारी साधु; "पासिसारिच्छो" (संबोध ३५)।

पासिद्धि देखो **पसिद्धि**; (हे १, ४४)।

पासिम वि [**द्रश्य**] दर्शनीय, ज्ञेय; (आचा)।

पासिमं देखो **पास**=दृश्।

पासिय वि [**पाशिक**] फाँसे में फँसाने वाला; (पण्ह १, २)।

पासिय वि [**स्पृष्ट**] छुआ हुआ; (आचा—पासिम)।

पासिय वि [**पाशित**] पाश-युक्त; (राज)।

पासिया स्त्री [**पाशिका**] छोटा पाश; (महा)।

पासिया देखो **पास**=दृश्।

पासिल्ल वि [**पार्श्विक**] १ पास में रहने वाला; २ पार्श्ववर्ती; (पव ५४; तंदु १३; भग)।

पासी स्त्री [**दे**] चूडा, चोटी; (दे ६, ३७)।

पासु देखो **पंसु**; (हे १, २६; ७०)।

पासुत्त देखो **पसुत्त**; (गा ३२४; सुर २, ८२; ६, १६८; हे १, ४४; कुप्र २४०)।

पासेइय वि [**प्रस्वेदित**] प्रस्वेद-युक्त; (भवि)।

पासेल्लिय वि [**पार्श्ववत्**] पार्श्व-स्थायी; (राज)।

पासोअल्ल देखो **पासल्ल**=तिर्यञ्च्। वकृ—**पासोअल्लंत**; (से ६, ४७)।

पाह (अप) सक [**प्र+अर्थय्**] प्रार्थना करना। पाहसि; (पि ३५६)।

पाहंड देखो **पासंड**; (पि २६५)।

पाहण देखो **पाहाण**; "महंतं पाहणं नयं" (श्रा १२), "चउकोणा समतीरा पाहणबद्धा य निम्मविया" (धर्मवि ३३; महा; भवि)।

पाहणा देखो **पाणहा**; "तेगिच्छं पाहणा पाए" (दस ३, ४)।

पाहण्ण } न [**प्राधान्य**] प्रधानता, प्रधानपन; (प्रासू ३२;
पाहन्न } श्रोघ ७७२)।

पाहर सक [**प्रा+हृ**] प्रकर्ष से लाना, ले आना। पाहराहि; (सूअ, ४, २, ६)।

पाहरिय वि [**प्राहरिक**] पहरेदार; (स ५२५; सुपा ३१२; ४५४)।

पाहाउय देखो **पाभाइय**; (सुपा ३५; ४४६)।

पाहाण पुं [**पाषाण**] पत्थर; (हे १, २६२; महा)

पाहिज्ज देखो **पाहेज्ज**; (पाअ)।

पाहुड न [**प्राभृत**] १ उपहार, भेंट; (हे १, १३१; २०६; विपा १, ३; कप्प २७; कप्पू; महा; कुमा)। २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, परिच्छेद, अध्ययन; (सुज्ज १; २; ३)। ३ प्राभृत का ज्ञान; (कम्म १, ७)। °**पाहुड** न [°**प्राभृत**] १ ग्रन्थांश-विशेष, प्राभृत का भी एक अंश; (सुज्ज १, १; २)। २ प्राभृतप्राभृत का ज्ञान; (कम्म १, ७)। **पाहुडसमास** पुंन [°**प्राभृतसमास**] अनेक प्राभृतप्राभृतों का ज्ञान; (कम्म १, ७)। °**समास** पुंन [**समास**] अनेक प्राभृतों का ज्ञान; (कम्म १, ७)।

पाहुडिआ स्त्री [**प्राभृतिका**] १ भेंट, उपहार; (पव ६७)। २ जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, विवक्षित समय से पहले—

मन में संकल्पित भिक्षा, उपहार रूप से दी जाती भिक्षा; (पंचा १३, ५; पव ६७; ठा ३, ४—पत्र १५६)।

पाहुण वि [**दे**] विक्रेय, बेचने की वस्तु; (दे ६, ४०)।

पाहुण, **पाहुणग**, **पाहुणय** पुं [**प्राघुण, °क**] अतिथि, महमान; (ओघभा ५३; सुर ३, ८५; महा; सुपा १३; कुप्र ४२; औप; काल)।

पाहुणिअ पुं [**प्राघुणिक**] अतिथि, महमान; (काप्र २२४)।

पाहुणिअ पुं [**प्राघुनिक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३)।

पाहुणिज्ज वि [**प्राहवनीय**] प्रकृष्ट संप्रदान, जिसको दान दिया जाय वह; (णाया १, १ टी—पत्र ४)।

पाहुण्ण, **पाहुण्णग**, **पाहुण्णय** न [**प्राघुण्य, °क**] आतिथ्य, अतिथि का सत्कार; "कयं मंजरीए पाहुण(? ण्ण)गं" (कुप्र ४२; उप १०३१ टी)।

पाहेअ न [**पाथेय**] रास्ते में व्यय करने की सामग्री, मुसाफिरी में खाने का भोजन; (उत्त १६, १८; महा; अभि ७६; स ६८; सुपा ४२४)।

पाहेज्ज न [**दे. पाथेय**] ऊपर देखो; (दे ६, २४)।

पाहेणग (दे) देखो **पहेणग**; (पिंड २८८)।

पि देखो **अवि**; (हे २, २१८; स्वप्न ३७; कुमा; भवि)।

पिअ सक [**पा**] पीना। पिअइ; (हे ४, १०; ४१६; गा १६१)। भूका—अपिइत्थ; (आचा)। वकृ—**पिअंत, पियमाण**; (गा १३ अ; २४६; से २, ५; विपा १, १)। संकृ—**पिच्चा, पेच्चा, पिएऊण**; (कप्प; उत्त १७, ३; धर्मवि २५), **पिएविणु** (अप); (सण)। प्रयो—पियावए; (दस १०, २)।

पिअ पुं [**प्रिय**] १ पति, कान्त, स्वामी; (कुमा)। २ इष्ट, प्रीति-जनक; (कुमा)। °**अम** पुं [°**तम**] पति, कान्त; (गा १६; कुमा)। °**अमा** स्त्री [°**तमा**] पत्नी, भार्या; (कुमा)। °**अर** वि [°**कर**] प्रीति-जनक; (नाट—पिंग)। °**कारिणी** स्त्री [°**कारिणी**] भगवान् महावीर की माता का नाम, त्रिशला देवी; (कप्प)। °**गंध** पुं [°**ग्रन्थ**] एक प्राचीन जैन मुनि, आचार्य सुस्थित और सुप्रतिबद्ध का एक शिष्य; (कप्प)। °**जाअ** वि [°**जाय**] जिसको पत्नी प्रिय हो वह; (गा ५१८)। °**जाआ** स्त्री [°**जाया**] प्रेम-पात्र पत्नी; (गा १६६)। °**दंसण** वि [°**दर्शन**] १ जिसका दर्शन प्रिय—प्रीतिकर—हो वह; (णाया १, १—पत्र १६; औप)। २ पुं. देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७६)। °**दंसणा** स्त्री [°**दर्शना**] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम; (आवम)। °**धम्म** वि [°**धर्मन्**] १ धर्म की श्रद्धा वाला; (णाया १, ८)। २ पुं. श्री रामचन्द्र के साथ जैन दीक्षा लेने वाला एक राजा; (पउम ८५, ५)। °**भाउग** पुं [°**भ्रातृ**] पति का भाई; (उप ६४८ टी)। °**भासि** वि [°**भासिन्**] प्रिय-वक्ता; (महा ५८)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] १ एक जैन मुनि, जो अपने पीछले भव में पाँचवाँ वासुदेव हुआ था; (पउम २०, १७१)। °**मेलय** वि [°**मेलक**] १ प्रिय का मेल—संयोग—कराने वाला; २ न. एक तीर्थ; (स ५५१)। °**उय** वि [°**युष्क**] जीवित-प्रिय; (आचा)। °**यग** वि [°**यत, °त्मक**] आत्म-प्रिय; (आचा)।

पिअ देखो **पीअ**; "पीआपीअं पिआपिअं" (प्राप्र; सण; भवि)।

पिअ° देखो **पिउ**; (प्रासू ७६; १०८)। °**हर** न [°**गृह**] पिता का घर, पोहर; (पउम १७, ७)।

पिअआ देखो **पिआ**; (श्रा १६)।

पिअइउ (अप) वि [**प्रीणयितृ**] प्रीति उपजाने वाला, खुश करने वाला; (भवि)।

पिअउल्लिय (अप) देखो **पिआ**; (भवि)।

पिअंकर वि [**प्रियंकर**] १ अभीष्ट-कर्ता, इष्ट-जनक; (उत्त ११, १४)। २ पुं. एक चक्रवर्ती राजा; (उप ६७२)। ३ रामचन्द्र के पुत्र लव का पूर्व जन्म का नाम; (पउम १०४, २६)।

पिअंगु पुं [**प्रियङ्गु**] १ वृक्ष-विशेष, प्रियंगु, ककूंदनी का पेड़; (पाअ; औप; सम १५२)। २ कंगु, मालकाँगनी का पेड़; "पियंगुणो कंगू" (पाअ)। ३ स्त्री. एक स्त्री का नाम; (विपा १, १०)। °**लइया** स्त्री [°**लतिका**] एक स्त्री का नाम; (महा)।

पिअंवय वि [**प्रियंवद**] मधुर-भाषी; (सुर १, ६५; ४, ११८; महा)।

पिअंवाइ वि [**प्रियवादिन्**] ऊपर देखो; (उत्त ११, १४; सुख ११, १४)।

पिअण न [**दे**] दुग्ध, दूध; (दे ६, ४८)।

पिअण न [**पान**] पीना; "तुहथन्नपियणनिरयं" (धर्मवि १२५; सुख ३, १; उप १३६ टी; स २६३; सुपा २४५; चेइय ५७०)।

पिअणा स्त्री [**पृतना**] सेना-विशेष, जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२६ घोड़े और १२१५ प्यादें हो वह लश्कर; (पउम ५६, ६)।

पिअमा स्त्री [**दे**] प्रियंगु वृक्ष; (दे ६, ४६; पाअ)।
पिअमाहवी स्त्री [**दे**] कोकिला, पिकी; (दे ६, ५१; पाअ)।
पिअय पुं [**प्रियक**] वृक्ष-विशेष, विजयसार का पेड़; (औप)।
पिअर पुंन [**पितृ**] १ माता-पिता, माँ-बाप; "सुणंतु निसुणय-मिमं पियरा", "पियराइं रुयंताइं" (धर्मवि १२२)। २ पुं. पिता, बाप; (प्राप्र)।
पिअरंज सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। पिअरंजइ; (प्राकृ ७४)।
पिअल (अप) देखो **पिअ**=प्रिय; (पिंग)।
पिआ स्त्री [**प्रिया**] पत्नी, कान्ता, भार्या; (कुमा; हेका ६६)।
पिआमह पुं [**पितामह**] १ ब्रह्मा, चतुराननः; (से १, १७; पाअ; उप ५६७ टी; स २३१)। २ पिता का पिता; (उव)। °**तणअ** पुं [°**तनय**] जाम्बवान्, वानर-विशेष; (से ४, ३७)। °**त्थ** न [°**स्त्र**] अस्त्र-विशेष, ब्रह्मास्त्र; (से १५, ३७)।
पिआमही स्त्री [**पितामही**] पिता की माता; (सुपा ४७२)।
पिआर (अप) वि [**प्रियतर**] प्यारा; (कुप्र ३२; भवि)।
पिआरी (अप) स्त्री [**प्रियतरा**] प्यारी, प्रिया, पत्नी; (पिंग)।
पिआल पुं [**प्रियाल**] वृक्ष-विशेष, पियाल, चिरौंजी का पेड़; (कुमा; पाअ; दे ३, २१; पण्ण १)।
पिआलु पुं [**प्रियालु**] वृक्ष-विशेष, खिन्नी, खिरनी का गाछ; (उर २, १३)।
पिइ देखो **पीइ**; "तिणं पिइए सिद्ध" (पउम ११, १४)।
पिइ पुं [**पितृ**] १ पिता, बाप; (उप ७२८ टी)। २ मघा-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव; (सुज्ज १०, १२; पि ३६१)। °**मेह** पुं [°**मेध**] यज्ञ-विशेष, जिसमें बाप का होम किया जाय वह यज्ञ; (पउम ११, ४२)। °**वण** न [°**वन**] श्मशान; (सुपा ३५६)। **°हर** न [°**गृह**] पिता का घर, पीहर; (पउम १८, ७; सुर ६, २३६)। देखो **पिउ**।
पिइज्ज पुं [**पितृव्य**] चाचा, बाप का भाई; "सुपासो वीर-जियपिइज्जो (? ज्जो)" (विचार ४७८)।
पिइय वि [**पैतृक**] पिता का, पितृ-संबन्धी; (भग)।
पिउ } पुं [**पितृ**] १ बाप, पिता; (सुर १, १७६;
पिउअ } औप; उव; हे १, १३१)। २ पुंन. माँबाप, माता-पिता; "भन्नया मह पिऊणि गामं पत्ताइं" (धर्मवि १४०; सुपा ३२६)। °**कम** पुं [°**क्रम**] पितृ-वंश, पितृ-कुल; (कुमा)। °**कुल** न [°**कुल**] पिता का वंश; (षड्)। °**घर** न [°**गृह**] पिता का घर, पीहर; (सुपा ६०१)। °**च्छा**, °**च्छी** स्त्री [°**ष्वसृ**] पिता की बहिन; (गा ११०; हे २, १४२; पाअ; गाथा १, १६), "कांतिं पिउच्छिं (? च्छि) सक्कारेइ" (गाथा १, १६—पत्र २१६)। °**पिंड** पुं [°**पिण्ड**] मृतक-भोजन, श्राद्ध में दिया जाता भोजन; (आचा २, १, २)। °**भगिणी** स्त्री [°**भगिनी**] फूफा, पिता की बहिन; (सुर ३, ८२)। °**वइ** पुं [°**पति**] यम, यमराज; (हे १, १३४)। °**वण** न [°**वन**] श्मशान; (पउम १०५, ५१; पाअ; हे १, १३४)। °**सिआ** स्त्री [°**ष्वसृ**] फूफा; (हे २, १४२; कुमा)। °**सेण-कण्हा** स्त्री [°**सेनकृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °**सिया** देखो °**सिआ**; (विपा १, ३—पत्र ४१)। °**हर** देखो °**घर**; (सुर १०, १६; भवि)।
पिउअ देखो **पिइय**; (राज)।
पिउच्चा स्त्री [**दे**. **पितृष्वसृ**] फूफा, पिता की बहिन; (षड्)।
पिउच्चा } स्त्री [**दे**] सखी, वयस्या; (षड् १७५;
पिउच्छा } २१०)।
पिउली स्त्री [**दे**] १ कपास, कपास; २ तूल-लतिका, रुई की पूनी; (दे ६, ७८)।
पिउल्ल देखो **पिउ**; (हे २, १६४)।
पिंकार पुं [**अपिकार**] १ 'अपि' शब्द; २ अपि शब्द की व्याख्या; (ठा १०—पत्र ४६५)।
पिंखा स्त्री [**प्रेङ्खा**] हिंडोला, डोला; (पाअ)।
पिंखोल सक [**प्रेङ्खोलय्**] झूलना। वकृ—**पिंखोलमाण**; (राज)।
पिंग देखो **पंग**=ग्रह्; (कुमा ७, ४६)।
पिंग पुं [**पिङ्ग**] १ कपिश वर्ण, पीत वर्ण; २ वि. पीला, पीत रँग का; (पाअ; कुमा; सामि १४)। ३ पुंस्त्री. कपिंजल पक्षी। स्त्री — °**गा**; (सूअ १, ३, ४, १२)।
पिंगंग पुं [**दे**] मर्कट, बन्दर; (दे ६, ४८)।
पिंगल पुं [**पिङ्गल**] १ नील-पीत वर्ण; २ वि. नील-मिश्रित पीत वर्ण वाला; (कुमा; ठा ४, २; औप)। ३ पुं. ग्रह-विशेष; (ठा २, ३)। ४ एक यक्ष; (सिरि ६६६)। ५ चक्रवर्ती का एक निधि, आभूषणों की पूर्ति करने वाला एक निधान; (ठा ६; उप ६८६ टी)। ६ कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०)। ७ प्राकृत-पिंगल का कर्ता एक कवि; (पिंग)। ८ एक जैन उपासक; (भग)। ९ न. प्राकृत का एक छन्द-ग्रन्थ; (पिंग)।

°**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक राजकुमार, जिसने भगवान् सुपार्श्वनाथ के समीप दीक्षा ली थी; (सुपा ६६)। °**क्ख** वि [°**ाक्ष**] १ नीली-पीली आँख वाला; (ठा ४, २—पत्र २०८)। २ पुं. पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १; औप)।

पिंगलायण न [**पिङ्गलायन**] १ गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७)।

पिंगलिअ वि [**पिङ्गलित**] नीला-पीला किया हुआ; (से ४, १८; गउड; सुपा ८०)।

पिंगलिअ वि [**पैङ्गलिक**] पिंगल-संबन्धी; (पिंग)।

पिंगा देखो **पिंग**।

पिंगायण न [**पिङ्गायन**] मघा-नक्षत्र का गोत्र; (इक)।

पिंगिअ वि [**गृहीत**] ग्रहण किया हुआ; (कुमा)।

पिंगिम पुंस्त्री [**पिङ्गिमन्**] पिंगता, पीलापन; (गउड)।

पिंगीकय वि [**पिङ्गीकृत**] पीला किया हुआ; "घणथणघुसिणिक्कुप्पंकपिंगीकय व्व" (लहुअ ७)।

पिंगुल पुं [**पिङ्गुल**] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

पिंचु पुंस्त्री [**दे**] पक्व करीर, पका करील; (दे ६, ४६)।

पिंछ } देखो **पिच्छ**; (आचा; गउड; सुपा ६४१)।
पिंछड }

पिंछी स्त्री [**पिच्छी**] साधु का एक उपकरण; "नवि लेइ जिणा पिंछीं (? छिं)" (विचार १२८)।

पिंछोली स्त्री [**दे**] मुँह के पवन से बजाया जाता तृण-मय वाद्य-विशेष; (दे ६, ४७)।

पिंज सक [**पिञ्ज्**] पीजना, रुई का धुनना। वकृ—**पिंजंत**; (पिंड ५७४; ओघ ४६८)।

पिंजण न [**पिञ्जन**] पीजना; (पिंड ६०३; दे ७, ६३)।

पिंजर पुं [**पिञ्जर**] १ पीत-रक्त वर्ण, रक्त-पीत मिश्रित रँग; २ वि. रक्त-पीत वर्ण वाला; (गउड; कुप्र ३०७)।

पिंजर सक [**पिञ्जरय्**] रक्त-मिश्रित पीत-वर्ण-युक्त करना। वकृ—**पिंजरंत**; (पउम ६२, ६)।

पिंजरण न [**पिञ्जरण**] रक्त-मिश्रित पीत वर्ण वाला करना; (सुण)।

पिंजरिअ वि [**पिञ्जरित**] पिञ्जर वर्ण वाला किया हुआ; (हम्मीर १२; गउड; सुपा ५२४)।

पिंजरुड पुं [**दे**] पक्षि-विशेष, भारुण्ड पक्षी, जिसके दो मुँह होते हैं; (दे ६, ५०)।

पिंजिअ वि [**पिञ्जित**] पीजा हुआ; (दे ७, ६४)।

पिंजिअ वि [**दे**] विधुत; (दे ६, ४६)।

पिंड सक [**पिण्डय्**] १ एकत्रित करना, संश्लिष्ट करना। २ अक. एकत्रित होना, मिलना। पिंडेइ, पिंडयए; (उव; पिंड ६६)। संकृ—**पिण्डिऊण**; (कुमा)।

पिंड पुं [**पिण्ड**] १ कठिन द्रव्यों का संश्लेष; (पिण्डभा २)। २ समूह, संघात; (ओघ ४०७; विसे ६००)। ३ गुड़ वगैरः की बनी हुई गोल वस्तु, वर्तुलाकार पदार्थ; (पण्ह २, ५)। ४ भिक्षा में मिलता आहार, भिक्षा; (उव; ठा ७)। ५ देह का एक देश; ६ देह, शरीर; ७ घर का एक देश; ८ अन्न का गोला जो पितरों के उद्देश से दिया जाता है; ९ गन्ध-द्रव्य विशेष, सिह्लक; १० जपा-पुष्प; ११ कवल, ग्रास; १२ गज-कुम्भ; १३ मदनक वृक्ष, दमनक का पेड़; १४ न. आजीविका; १५ लोहा; १६ श्राद्ध, पितरों को दिया जाता दान; १७ वि. संहत; १८ घन, निबिड़; (हे १, ८५)। °**कप्पिअ** वि [°**कल्पिक**] सर्वथा निर्दोष भिक्षा लेने वाला; (वव ३)। °**गुला** स्त्री [°**गुला**] गुड़-विशेष, इक्षुरस का विकार-विशेष, सक्कर बनने के पहले की अवस्था-विशेष; (पिंड २८३)। °**घर** न [°**गृह**] कर्दम से बना हुआ घर; (वव ४)। °**त्थ** पुं [°**स्थ**] जिन भगवान् की अवस्था-विशेष; "न पिंडत्थपयत्थावत्थंतरभावणा सम्मं" (संबोध २)। °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] समुदायार्थ; (राज)। °**दाण** न [°**दान**] पिण्ड देने की क्रिया, श्राद्ध; (धर्मवि २६)। °**पयडि** स्त्री [°**प्रकृति**] अवान्तर भेद वाली प्रकृति; (कम्म १, २५)। °**वद्धण** [°**वर्धन**] आहार-वृद्धि, कवल-वृद्धि, अन्न-प्राशन; (अंत)। °**वद्धावण** न [°**वर्धन**] आहार बढ़ाना; (औप)। °**वाय** पुं [°**पात**] भिक्षा-लाभ, आहार-प्राप्ति; (ठा ५, १; कस)। °**वास** पुं [°**वास**] सुहृज्जन; (भवि)। °**विसुद्धि**, °**विसोहि** स्त्री [°**विशुद्धि**] भिक्षा की निर्दोषता; (अंत; ओघभा ३)।

पिंडग पुं [**पिण्डक**] ऊपर देखो; (कस)।

पिंडण न [**पिण्डन**] १ द्रव्यों का एकत्र संश्लेष; (पिंडभा २)। २ ज्ञानावरणीयादि कर्म; (पिंड ६६)।

पिंडणा स्त्री [**पिण्डना**] १ समूह; (ओघ ४०७)। २ द्रव्यों का परस्पर संयोजन; (पिंड २)।

पिंडय देखो **पिंड**; (ओघभा ३३)।

पिंडरय न [**दे**] दाडिम, अनार; (दे ६, ४८)।

पिंडलइय वि [**दे**] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ; (दे ६, ५४; पाअ)।

पिंडलग न [**दे**] पटलक, पुष्प का भाजन; (ठा ७)।

पिंडवाइअ वि [**पिण्डपातिक, पैण्डपातिक**] भिक्षा-लाभ वाला, जिसको भिक्षा में आहार की प्राप्ति हो वह, (ठा ५, १; कस; औप; प्राकृ ६)।

पिंडार पुं [**पिण्डार**] गोप, ग्वाला; (गा ७३१)।

पिंडालु पुं [**पिण्डालु**] कन्द-विशेष; (श्रा २०)।

पिंडि देखो **पिंडी**; (भग; णाया १, १ टी—पत्र ५)।

पिंडिम वि [**पिण्डिम**] १ पिण्ड से बना हुआ, बहल; (पगह २, ५—पत्र १५०)। २ पुद्गल-समूहरूप, संघाताकार; (णाया १, १ टी—पत्र ५; औप)।

पिंडिय वि [**पिण्डित**] १ एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ; (सुअनि १४०; पंचा १४, ७; महा)। २ गुणित; (औप)।

पिंडिया स्त्री [**पिण्डिका**] १ पिंडी, पिंडली, जानु के नीचे का मांसल अवयव; (महा)। २ वर्तुलाकार वस्तु; (औप)। देखो **पिंडी**।

पिंडी स्त्री [**पिण्डी**] १ लुम्बी, गुच्छा; (औप; भग; णाया १, १; उप पृ ३६)। २ घर का आधार-भूत काष्ठ-विशेष, पीढ़ा; "विघडियपिंडीबंधसंधिपरिलंबिवालगिम्मोग्रा" (गउड)। ३ वर्तुलाकार वस्तु, गोला; "दिन्नागपिंडी" (सूअ २, ६, २६)। ४ खर्जूर-विशेष; (नाट—शकु ३५)। देखो **पिंडिया**।

पिंडी स्त्री [**दे**] मञ्जरी; (दे ६, ४७)।

पिंडीर न [**दे. पिण्डीर**] दाड़िम, अनार; (दे ६, ४८)।

पिंडेसणा स्त्री [**पिण्डैषणा**] भिक्षा ग्रहण करने की रीति; (ठा ७)।

पिंडेसिय वि [**पिण्डैषिक**] भिक्षा की खोज करने वाला; (भग ६, ३३)।

पिंडोलग, **पिंडोलगय**, **पिंडोलय** वि [**पिण्डावलगक**] भिक्षा से निर्वाह करने वाला, भिक्षा का प्रार्थी, भिक्षु; (आचा; उत्त ५, २२; सुख ५, २२; सूअ १, ३, १, १०)।

पिंध (अप) सक [**पि+धा**] ढकना। पिंधउ; (पिंग)। संकृ—**पिंधउ**; (पिंग)।

पिंधण (अप) न [**पिधान**] ढकना; (पिंग)।

पिंसुली स्त्री [**दे**] मुँह से पवन भर कर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य; (दे ६, ४७)।

पिक पुंस्त्री [**पिक**] कोकिल पक्षी; (पिंग)। स्त्री—°**की**; (दे ६, ५१)।

पिक्क देखो **पक्क**=पक्व; (हे १, ४७; पाअ; गा ६६५)।

पिक्ख सक [**प्र + ईक्ष्**] देखना। पिक्खइ; (भवि)। वकृ—**पिक्खंत**; (भवि)। कृ—**पिक्खेयव्व**; (सुर ११, १३३)।

पिक्खग वि [**प्रेक्षक**] निरीक्षक, द्रष्टा; (नाट १०; धर्मवि १५)।

पिक्खण न [**प्रेक्षण**] निरीक्षण; (राज)।

पिक्खिय वि [**प्रेक्षित**] दृष्ट; (पि ३६०)।

पिग देखो **पिक**; (कुमा)।

पिचु पुं [**पिचु**] कपास, रुई; (दे ६, ७८)। °**लया** स्त्री [°**लता**] पूनी, रुई की पूनी; (दे ६, ५६)।

पिचुमंद पुं [**पिचुमन्द**] निम्ब वृक्ष, नीम का पेड़; (मोह १०३)।

पिच्च, **पिच्चा** अ [**प्रेत्य**] पर-लोक, आगामी जन्म; (श्रा १४; सुपा ५०६; सूअ १, १, १, ११)। देखो **पेच्च**।

पिच्चा देखो **पिअ**=पा।

पिच्चिय वि [**दे. पिच्चित**] कूटी हुई छाल; (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

पिच्छ सक [**दृश्**, **प्र+ईक्ष्**] देखना। **पिच्छइ**, पिच्छंति, पिच्छ; (कप्प; प्रासू १६०; ३३)। वकृ—**पिच्छंत, पिच्छमाण**; (सुपा ३४६; भवि)। कवकृ—**पिच्छिज्जमाण**; (सुपा ६२)। संकृ—**पिच्छिउं, पिच्छिऊण**; (प्रासू ६१; भवि)। कृ—**पिच्छणिज्ज**; (कप्प; सुर १३, २२३; रयण ११)।

पिच्छ न [**पिच्छ**] १ पक्ष का अवयव, पंख का हिस्सा; (उवा; पाअ)। २ मयूर-पिच्छ, शिखण्ड; (णाया १, ३)। ३ पक्ष, पाँख; (उप ७६८ टी; गउड)। ४ पूँछ, लांगूल; (गउड)।

पिच्छण न [**प्रेक्षण**] १ दर्शन, अवलोकन; (श्रा १४; सुपा ५५)।

पिच्छण, **पिच्छणय** न [**प्रेक्षण**, °**क**] तमाशा, खेल, नाटक; "पारद्धं पिच्छणं तहिं ताव" (सुपा ४८५); "तो जवणियन्छिड्डेहिं पिच्छइ अंतेउरंपि पिच्छणयं" (सुपा २००)।

पिच्छल वि [**पिच्छल**] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त; २ मसृण; (सण)।

पिच्छा स्त्री [**प्रेक्षा**] निरीक्षण। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] रंग-मण्डप; (पाअ)।

पिच्छि वि [**पिच्छिन्**] पिच्छ वाला; (औप) ।
पिच्छिर वि [**प्रेक्षितृ**] प्रेक्षक, द्रष्टा; (सुपा ७८; कुमा) ।
पिच्छिल वि [**पिच्छिल**] १ स्नेह-युक्त, स्निग्ध; २ मसृण, चिकना; (गउड; हास्य १४०; दे ६, ४६) ।
पिच्छिली स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम; (दे ६, ४७) ।
पिच्छी स्त्री [**दे**] चूडा, चोटी; (दे ६, ३७) ।
पिच्छी स्त्री [**पिच्छिका**] पीछी; (गा ५७२) ।
पिच्छी स्त्री [**पृथ्वी**] १ पृथ्वी, धरित्री, धरती; (कुमा) । २ बड़ी इलायची; ३ पुनर्नवा; ४ कृष्ण जीरक; ५ हिंगुपत्री; (हे १, १२८) ।
पिज्ज सक [**पा**] पीना । पिज्जइ; (हे ४, १०) । कृ—**पिज्जणिज्ज**; (कुमा) ।
पज्ज पुंन [**प्रेमन्**] प्रेम, अनुराग; (सूअ १, १६, २; कप्प) ।
पिज्ज, **पिज्जंत** } देखो **पा**=पा ।
पिज्जा स्त्री [**पेया**] यवागू; (पिंड ६२४) ।
पिज्जाविअ वि [**पायित**] जिसको पान कराया गया हो वह; (सुख २, १७) ।
पिट्ट सक [**पीडय्**] पीडा करना । पिट्टंति; (सूअ २, २, ५५) ।
पिट्ट अक [**भ्रंश्**] नीचे गिरना । पिट्टइ; (षड्) ।
पिट्ट सक [**पिट्टय्**] पीटना, ताडन करना । पिट्टइ, पिट्टेइ; (आचा; पिंग; गा १७१; सिरि ६५५) । वकृ—**पिट्टंत**; (पिंग) ।
पिट्ट न [**दे**] पेट, उदर; (पंचा ३, १६; धर्मवि ६६; चेइय २३८; करु २६; सुपा ५६३; सं २१) ।
पिट्टण न [**पिट्टन**] ताडन, आघात; (सूअ २, २, ६२; पिंड ३४; पराह १, १; ओघ ५६६; उप ५०६) ।
पिट्टण न [**पीडन**] पीड़ा, क्लेश; (सूअ २, २, ५५) ।
पिट्टणा स्त्री [**पिट्टना**] ताडन; (ओघ ३५७) ।
पिट्टावणया स्त्री [**पिट्टना**] ताडन कराना; (भग ३, ३—पत्र १८२) ।
पिट्टिय वि [**पिट्टित**] पीटा हुआ, ताडित; (सुख २, १५) ।
पिट्ठ न [**पिष्ट**] तण्डुल आदि का आटा, चूर्ण; (णाया १, १; ३; दे १, ७८; गा ३८८) ।
पिट्ठ न [**पृष्ठ**] पीठ, शरीर के पीछे का हिस्सा; (औप; उव) । °**ओ** अ [°**तस्**] पीछे से, पृष्ठ भाग से; (उवा; विपा १, १; औप) । °**करंडग** न [°**करण्डक**] पृष्ठ-वंश, पीठ की बड़ी हड्डी; (तंदु ३५) । °**चर** वि [°**चर**] पृष्ठ-गामी, अनु-यायी; (कुमा) । देखो **पिट्ठि** ।
पिट्ठ वि [**स्पृष्ट**] १ छुआ हुआ । २ न. स्पर्श; (पव १५७) ।
पिट्ठ वि [**पृष्ट**] १ पूछा हुआ; २ न. प्रश्न, पृच्छा; "जंपसि विणअं ण जंपसे पिट्ठ" (गा ६४३) ।
पिट्ठंत न [**दे. पृष्ठान्त**] गुदा, गाँड; (दे ६, ४६) ।
पिट्ठखउरा स्त्री [**दे**] पङ्क-सुरा, कलुष मदिरा; (दे ६, ५०) ।
पिट्ठखउरिआ स्त्री [**दे**] मदिरा, दारू; (पाअ) ।
पिट्ठव्व वि [**प्रष्टव्य**] पूछने योग्य; "नियकरकीदीवि किंकरी किं पिट्ठि(?ट्ठ) व्वा" (रंभा) ।
पिट्ठायय पुंन [**पिष्टातक**] केसर आदि गन्ध-द्रव्य; (गउड; स ७३४) ।
पिट्ठि स्त्री [**पृष्ठ**] पीठ, शरीर के पीछे का भाग; (हे १, १२६; णाया १, ६; रंभा; कुमा; षड्) । °**ग** वि [°**ग**] पीछे चलने वाला; (श्रा १२) । °**चम्पा** स्त्री [°**चम्पा**] चम्पा नगरी के पास की एक नगरी; (कप्प) । °**मंस** न [°**मांस**] परोक्ष में अन्य के दोष का कीर्तन; "पिट्ठिमंसं न खाइज्जा" (दस ८, ४७) । °**मंसिय** वि [°**मांसिक**] परोक्ष में दोष बोलने वाला, पीछे निन्दा करने वाला; (सम ३७) । °**माइया** स्त्री [°**मातृका**] एक अनुत्तर-गामिनी स्त्री; "चंदिमा पिट्ठिमाइया" (अनु २) । देखो **पिट्ठ**=पृष्ठ ।
पिट्ठी स्त्री [**पैष्टी**] आटा की बनी हुई मदिरा; (बृह २) ।
पिड पुं [**पिट**] १ वंश-पत्र आदि का बना हुआ पात्र-विशेष; २ कब्जा, अधीनता; "जा ताव तेण भणियं रे रे रे बाल मह पिडे पडिओ" (सुपा १७६) ।
पिडग देखो **पिडय**=पिटक; (औप; उवा; सुज्ज १६) ।
पिडच्छा स्त्री [**दे**] सखी; (दे ६, ४६) ।
पिडय न [**पिटक**] १ वंशमय पात्र-विशेष; "भोयणपिं-(? पि)डयं करेंति" (णाया १, २—पत्र ८६) । २ दो चन्द्र और दो सूर्यों का समूह; (सुज्ज १६) ।
पिडय वि [**दे**] आविग्न; (षड्) ।
पिडव सक [**अर्ज्**] पैदा करना, उपार्जन करना । पिडवइ; (षड्) ।
पिडिआ स्त्री [**पिटिका**] १ वंश-मय भाजन-विशेष; (दे ४, ७; ६, १) । २ छोटी मन्जूषा, पेटी, पिटारी; (उप ५८७; ५६७ टी) ।

पिड्ड सक [**पीडय्**] पीड़ना। पिड्डइ; (आचा; पि २४८)।

पिड्ड अक [**भ्रंश्**] नीचे गिरना। पिड्डइ; (षड्)।

पिड्डइअ वि [**दे**] प्रशान्त; (षड्)।

पिढं अ [**पृथक्**] अलग, जुदा; (षड्)।

पिढर पुंन [**पिठर**] १ भाजन-विशेष, स्थाली; (पाअ; आचा; कुमा)। २ गृह-विशेष; ३ मुस्ता, मोथा; ४ मन्थान-दण्ड, मथनिया; (हे १, २०१; षड्)।

पिणद्ध सक [**पि+नह्, पिनि+धा**] १ ढकना। २ पहिनना। ३ पहिराना। ४ बाँधना। पिणद्धइ, पिणद्धेइ; (पि ४४६)। हेकृ—**पिणद्धुं, पिणद्धित्तए**; (अभि १८५; राज)।

पिणद्ध वि [**पिनद्ध**] १ पहना हुआ; (पाअ; औप; गा ३२८)। २ बद्ध, यन्त्रित; (राय)। ३ पहनाया हुआ; "नियमउडोवि पिणद्धो तस्स सिरे रयणचिंचइओ" (सुपा १२५)।

पिणद्धाविद (शौ) वि [**पिनिधापित**] पहनाया हुआ; (नाट—शकु ६८)।

पिणाइ पुं [**पिनाकिन्**] महादेव, शिव; (पाअ; गउड)।

पिणाई स्त्री [**दे**] आज्ञा, आदेश; (दे ६, ४८)।

पिणाग पुंन [**पिनाक**] १ शिव-धनुष; २ महादेव का शूलास्त्र; (धर्मवि ३१)।

पिणागि देखो **पिणाइ**; (धर्मवि ३१)।

पिणाय देखो **पिणाग**; (गउड)।

पिणाय पुं [**दे**] बलात्कार; (दे ६, ४६)।

पिणिद्ध वि [**पिनद्ध, पिनिहित**] देखो **पिणद्ध**=पिनद्ध; (पणह २, ४—पत्र १३०; कप्प; औप)।

पिणिधा सक [**पिनि+धा**] देखो **पिणद्ध**=पि+नह्। हेकृ—**पिणिधत्तए**; (औप; पि ५७८)।

पिण्णाग देखो **पिन्नाग**; (राज)।

पिण्ही स्त्री [**दे**] क्षामा, कृश स्त्री; (दे ६, ४६)।

पित्त पुंन [**पित्त**] शरीर-स्थित धातु-विशेष, तिक्त धातु; (भग; उव)। °**ज्जर** पुं [°**ज्वर**] पित्त से होता बुखार; (णाया १, १)। °**मुच्छा** स्त्री [°**मूर्च्छा**] पित्त की प्रबलता से होने वाली बेहोशी; (पडि)।

पित्तल न [**पित्तल**] धातु विशेष, पीतल; (कुप्र १४४)।

पित्तिज्ज } पुं [**पितृव्य**] चाचा, पिता का भाई; (कप्प;
पित्तिय } सम्मत्त १७२; सिरि २६३; धर्मवि १२७; स ४६५; सुपा ३३४)।

पित्तिय वि [**पैत्तिक**] पित्त का, पित्त-संबन्धी; (तंदु १६; णाया १, १; औप)।

पिधं अ [**पृथक्**] अलग, जुदा; (हे १, १८८; कुमा)।

पिधाण देखो **पिहाण**; (नाट—विक्र १०३)।

पिन्नाग } पुं [**पिण्याक**] खली, तिल आदि का तेल निकाल
पिन्नाय } लेने पर जो उसका भाग बचता है वह; (सूअ २, ६, २६; २, १, १६; २, ६, २८)।

पिपीलिअ पुं [**पिपीलक**] कीट-विशेष, चींऊँटा; (कप्प)।

पिपीलिआ } स्त्री [**पिपीलिका**] चींटी; (पणह १, १;
पिपीलिका } जी १६; णाया १, १६)।

पिप्पड सक [**दे**] बड़बड़ाना, जो मन में आवे सो बकना। पिप्पडइ; (दे ६, ५० टी)।

पिप्पडा स्त्री [**दे**] ऊर्णा-पिपीलिका; (दे ६, ४८)।

पिप्पडिअ वि [**दे**] १ जो बकड़ाया हो। २ न. बड़बड़ाना, निरर्थक उल्लाप, बकवाद; (दे ६, ५०)।

पिप्पय पुं [**दे**] १ मशक; (दे ६, ७८)। २ पिशाच, भूत; (पाअ)। ३ वि. उन्मत्त; (दे ६, ७८)।

पिप्पर पुं [**दे**] १ हंस; २ वृषभ; (दे ६, ७६)।

पिप्परी स्त्री [**पिप्पली**] पीपर का गाछ; (पणण १)।

पिप्पल पुंन [**पिप्पल**] १ पीपल वृक्ष, अश्वत्थ; (उप १०३१ टी; पाअ; हि १०)। २ छुरा, चुरक; (विपा १, ६—पत्र ६६; ओघ ३५६)।

पिप्पलि } स्त्री [**पिप्पलि, °ली**] ओषधि-विशेष, पीपर;
पिप्पली } "महुपिप्पलिसुंठाई अणेगहा साइमं होइ" (पंचा ५, ३०; पणण १७)।

पिप्पिपिडिअ देखो **पिप्पडिअ**; (षड्)।

पिप्पिया स्त्री [**दे**] दाँत का मैल; (षांदि)।

पिव देखो **पिअ**=पा। पिवामो; (पि ४८३)। संकृ—**पिवित्ता**; (आचा)।

पिव्व न [**दे**] जल, पानी; (दे ६, ४६)।

पिम्म पुंन [**प्रेमन्**] प्रेम, प्रीति, अनुराग; (पाअ; सुर २, १७२; रंभा)।

पियास (अप) स्त्री [**पिपासा**] प्यास; (भवि)।

पिरिडी स्त्री [**दे**] शकुनिका, चिड़िया; (दे ६, ४७)।

पिरिपिरिया देखो **परिपिरिया**; (राज)।

पिरिली स्त्री [**पिरिली**] १ गुच्छ-विशेष, वनस्पति-विशेष; (पणण १)। २ वाद्य-विशेष; (राज)।

पिल देखो **पील**। कर्म—पिलिज्जइ; (नाट)।

पिलंखु } पुं [**प्लक्ष**] १ वृक्ष-विशेष, पिलखन, पाकड़
पिलक्खु } का पेड़; (सम १५२; ओघ २६; पि ७४) । २ एक तरह का पीपल वृक्ष; "पिलक्खू पिप्पलभेदो" (निचू ३) ।

पिलण न [**दे**] पिच्छिल देश, चिकनी जगह; (दे ६, ४६) ।

पिला देखो **पीला**; (पि २२६) ।

पिलाग न [**पिटक**] फोड़ा, फुनसी; (सूअ १, ३, ४, १०) ।

पिलिंखु देखो **पिलंखु**; (विचार १४८) ।

पिलिहा स्त्री [**प्लीहा**] रोग-विशेष, पिलही, ताप-तिल्ली; (तंदु ३६) ।

पिलुअ न [**दे**] क्षुत, छींक; (षड्) ।

पिलुंक } देखो **पिलंखु**; (पि ७४; पराण १—पत्र
पिलुक्ख } ३१) ।

पिलुट्ठ वि [**प्लुष्ट**] दग्ध; (हे २, १०६) ।

पिलोस पुं [**प्लोष**] दाह, दहन; (हे २, १०६) ।

पिल्ल देखो **पेल्ल**=क्षिप् । पिल्लइ; (भवि) ।

पिल्लण न [**प्रेरण**] प्रेरणा; (जं ३) ।

पिल्लणा स्त्री [**प्रेरणा**] प्रेरणा; (कप्प) ।

पिल्लि स्त्री [**दे**] यान-विशेष; (दसा ६) ।

पिल्लिअ वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ; (पाअ; भवि; कुमा) ।

पिल्लिअ वि [**प्रेरित**] जिसको प्रेरणा की गई हो वह; (सुपा ३६१) ।

पिल्लिरी स्त्री [**दे**] १ तृण-विशेष, गण्डूत तृण; २ चीरी, कीट-विशेष; ३ घम, पसीना; (दे ६, ७६) ।

पिल्लुग (दे) देखो **पिलुअ**; (वव २) ।

पिल्ह न [**दे**] छोटा पक्षी; (दे ६, ४६) ।

पिव देखो **इव**; (हे २, १८२; कुमा; महा) ।

पिव सक [**पा**] पीना । पिवइ; (पिंग) । भूका—अपिवित्था; (आचा) । कर्म—पिवीअंति; (पि ५३९) । संकृ—**पिविअ, पिवइत्ता, पिवित्ता**; (नाट; ठा ३, ३; महा) । हेकृ—**पिविउं, पिवित्तए**; (आक ४३; औप) ।

पिवण देखो **पिअण**=(दे); (भवि) ।

पिवासय वि [**पिपासक**] पीने की इच्छा वाला; (भग—अत्थ°) ।

पिवासा स्त्री [**पिपासा**] प्यास, पीने की इच्छा; (भग; पाअ) ।

पिवासिय वि [**पिपासित**] तृषित; (उवा; वै

पिवीलिआ देखो **पिपीलिआ**; (उप; स ४२०; भा ४६) ।

पिव्व देखो **पिब्ब**; (षड्) ।

पिस सक [**पिष्**] पीसना । पिसइ; (षड्) ।

पिसंग पुं [**पिशङ्ग**] १ पिंगल वर्ण, मटियारा रँग; २ वि. पिंगल वर्ण वाला; (पाअ; कुप्र १०५; ३०६) ।

पिसंडि [**दे**] देखो **पसंडि**; (सुपा ६०७; कुप्र ६२; १४५)।

पिसल्ल पुं [**पिशाच**] पिशाच, व्यन्तर-योनिक देवों की एक जाति; (हे १, १९३; कुमा; पाअ; उप २६४टी; ७६८ टी)।

पिसाजि वि [**पिशाचिन्**] भूताविष्ट; (हे १, १७७; कुमा; षड्; चंड) ।

पिसाय देखो **पिसल्ल**; (हे १, १९३; पराह १, ४; महा; इक) ।

पिसिअ न [**पिशित**] मांस; (पाअ; महा) ।

पिसुअ पुंस्त्री [**पिशुक**] क्षुद्र कीट-विशेष। स्त्री—°या; (राज)।

पिसुण सक[**कथय्**]कहना। पिसुणइ, पिसुणेइ, पिसुणंति,पिसुणेंति, पिसुणसु; (हे ४, २; गा ६८५; सुर ९, १९३; गा ५५६;कुमा)।

पिसुण पुं [**पिशुन**] खल, दुर्जन, पर-निन्दक, चुगलीखोर; (सुर ३, १६; प्रासू १८; गा ३७७; पाअ) ।

पिसुणिअ वि [**कथित**] १ कहा हुआ; २ सूचित; (सुपा २३; पाअ; कुप्र २७८) ।

पिसुमय (पै) पुं [**विस्मय**] आश्चर्य; (प्राकृ १२४) ।

पिह सक [**स्पृह**] इच्छा करना, चाहना । पिहाइ; (भग ३, २—पत्र १७३) । संकृ—**पिहाइत्ता**; (भग ३, २) ।

पिह वि [**पृथक्**] भिन्न, जुदा; "पिहप्पिहाणं" (विसे ८४८)।

पिहं अ [**पृथक्**] अलग; (हे १, १३७; षड्) ।

पिहंड पुं [**दे**] १ वाद्य-विशेष; २ वि. विवर्ण; (दे ६, ७६)।

पिहड देखो **पिढर**; (हे १, २०१; कुमा; उवा) ।

पिहण न [**पिधान**] १ ढक्कन; (सुर १६, १६५) । २ ढकना, आच्छादन; (पंचा १, ३२; संबोध ४६; सुपा १२१)।

पिहणया स्त्री [**पिधान**] आच्छादन, ढकना; (स ५१) ।

पिहय देखो **पिह**=पृथक्; (कुमा) ।

पिहा सक [**पि+धा**] १ ढकना । २ बँद करना । पिहाइ (भग ३, २) । संकृ—**पिहाइत्ता, पिहिऊण**; (भग ३, २; महा) ।

पिहाण देखो **पिहण**; (ठा ४, ४; रत्न २५; कप्प) ।

पिहाणिआ स्त्री [**पिधानिका**] ढकनी; (पाअ) ।

पिहाणी स्त्री [**पिधानी**] ऊपर देखो; (दे) ।

पिहिअ वि [**पिहित**] १ ढका हुआ; २ बँद किया हुआ; (पाअ; कस; ठा २, ४—पत्र ६६; सुपा ६३०)। **°स्सव** वि [**°स्रव**] १ जिसने आस्रव को रोका हो; (दस ४)। २ पुं. एक जैन मुनि का नाम; (पउम २०, १८)।

पिहिण देखो **पिहण**, "आलावणे पेसवणे पिहिणे ववएस मच्छरे चेव" (श्रा ३०; पडि)।

पिहिमि° (अप) स्त्री [**पृथिवी**] भूमि, धरनी। **°पाल** पुं [**°पाल**] राजा; (भवि)।

पिहीकय वि [**पृथक्कृत**] अलग किया हुआ; (पिंड ३६१)।

पिहु वि [**पृथु**] १ विस्तीर्ण; (कुमा)। २ पुं. एक राजा का नाम; (पउम ६८, ३४)। **°रोम** पुं [**°रोम**] मीन, मत्स्य; (दे ६, ४० टी)।

पिहु देखो **पिह**=पृथक्; (सुर १३, ३६; सण)।

पिहु° देखो **पिहुय**; "पिहुखज्ज त्ति नो वए" (दस ७, ३४)।

पिहुंड न [**पिहुण्ड**] नगर-विशेष; (उत्त ३१, २)।

पिहुण [**दे**] देखो **पेहुण**; (आचा २, १, ७, ६)। **°हत्थ** पुं [**°हस्त**] मयूर-पिच्छ का किया हुआ पँखा; (आचा २, १, ७, ६)।

पिहुत्त देखो **पुहुत्त**; (तंदु ४)।

पिहुय पुंन [**पृथुक**] खाद्य-विशेष, चिऊड़ा; (आचा २, १, १, ३; ४)।

पिहुल वि [**पृथुल**] विस्तीर्ण; (पराह १, ४; औप; दे ६, १४३; कुमा)।

पिहुल न [**दे**] मुँह के वायु से बजाया जाता तृण-वाद्य; (दे ६, ४७)।

पिहे देखो **पिहा**। पिहेइ, पिहे; (उत्त २६, ११; सुम १, २, २, १३)। संकृ—**पिहेऊण**; (पि ५८६)।

पिहो अ [**पृथक्**] अलग, भिन्न; (विसे १०)।

पिहोअर वि [**दे**] तनु, कृश, दुर्बल; (दे ६, ५०)।

पी सक [**पी**] पान करना। वकृ—"तम्मुहससंककंतिपीऊस-पूरं **पीयमाणी**" (रयण ५१)।

पीअ पुं [**पीत**] १ पीत वर्ण, पीला रँग; २ वि. पीत वर्ण वाला, पीला; (हे २, १७३; कुमा; प्राप्र)। ३ जिसका पान किया गया हो वह; (से १, ४०; दे ६, १४४)। ४ जिसने पान किया हो वह; (प्राप्र)।

पीअ वि [**प्रीत**] प्रीति-युक्त, संतुष्ट; (औप)।

पीअर (अप) नीचे देखो; (पिंग)।

पीअल देखो **पीअ**=पीत; (हे २, १७३; प्राप्र)।

पीअसी स्त्री [**प्रेयसी**] प्रेम-पात्र स्त्री; (कुमा)।

पीइ पुं [**दे**] अश्व, घोड़ा; (दे ६, ५१)।

पीइ } स्त्री [**प्रीति**] १ प्रेम, अनुराग; (कप्प; महा)।
पीई° } २ रावण की एक पत्नी का नाम; (पउम ७४, ११)। **°कर** पुंन [**°कर**] एक विमानावास, आठवाँ ग्रैवेयक-विमान; (देवेन्द्र १३७; पव १९४)। **°गम** न [**°गम**] महाशुक्र देवेन्द्र का एक यान-विमान; (इक; औप)। **°दाण** न [**°दान**] हर्ष होने के कारण दिया जाता दान, पारितोषिक; (औप; सुर ४, ६३)। **°धम्मिय** न [**°धर्मिक**] जैन मुनिओं का एक कुल; (कप्प)। **°मण** वि [**°मनस्**] १ प्रीति-युक्त चित्त वाला; (भग)। २ पुं. महाशुक्र देवलोक का एक यान-विमान; (ठा ८—पत्र ४३७)। **°वद्धण** पुं [**°वर्धन**] कार्तिक मास का लोकोत्तर नाम; (सुज्ज १०, १६; कप्प)।

पीईय पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, गुल्म का एक भेद; "पीईयपाण-कणइरकुज्जय तह सिन्दुवारे य" (पराण १)।

पीऊस न [**पीयूष**] अमृत, सुधा; (पाअ)।

पीड सक [**पीडय्**] १ हैरान करना। २ दबाना। पीडइ पीडेंतु; (पिंग; हे ४, ३८५)। कर्म—पीडिज्जइ; (पिंग)। कवकृ—**पीडिज्जंत, पीडिज्जमाण**; (से ११, १०२; गा ५४१; सण)।

पीड° देखो **पीडा**। **°यर** वि [**°कर**] पीड़ा-कारक; (पउम १०३, १४३)।

पीडरइ स्त्री [**दे**] चोर की स्त्री; (दे ६, ५१)।

पीडा स्त्री [**पीडा**] पीड़न, हैरानी, वेदना; (पाअ)। **°कर** वि [**°कर**] पीडा-कारक;

"अलिअं न भासियव्वं अत्थि हु सच्चंपि जं न वत्तव्वं।
सच्चंपि तं न सच्चं जं परपीडाकरं वयणं"
(श्रा ११; प्रासू १५०)।

पीडिअ वि [**पीडित**] १ पीड़ा से अभिभूत, दुःखित; २ दबाया गया; (हे १, २०३; महा; पाअ)।

पीढ पुंन [**पीठ**] १ आसन, पीढ़ा; "पीढं विट्ठरं आसणं" (पाअ; रयण ६३)। २ आसन-विशेष, व्रती का आसन; (चंड; हे १, १०६; उवा; औप)। ३ तल; "चत्तण्ण नेडपीढं" (कुमा)। ४ पुं. एक जैन महर्षि; (सट्टि ८१ टी)। **°बंध** पुं [**°बन्ध**] ग्रन्थ की अवतरणिका, भूमिका; "नय पीढबन्ध-रहियं कहिज्जमाणंपि देइ भावत्थं" (पउम ३, १६)। **°मद्द, °मद्दअ** पुंस्त्री [**°मर्दक**] काम-पुरुषार्थ में सहायक नायक-समीप-वर्ती पुरुष, राजा आदि का वयस्य-विशेष;

(णाया १, १—पत्र १६; कप्प)। स्त्री—°**मद्दिआ**; (मा १६)। °**सप्पि** वि [°**सर्पिन्**] पंगु-विशेष; (आचा)।

पीढ न [**दे**] १ ईख पीलने का यन्त्र; (दे ६, ५१)। २ समूह, यूथ; "उद्दियं वणगइंदपीढं, पणट्ठा दिसो दिसो (?सिं) कप्पडिया" (स २३३)। ३ पीठ, शरीर के पीछे का भाग; "हत्थिपीढसमारूढो" (वि ६६)।

पीढग } न [**पीठक**] देखो **पीढ**=पीठ; (कस; गच्छ
पीढय } १, १०; दस ७, २८)।

पीढरखंड न [**पीठरखण्ड**] नर्मदा-तीर पर स्थित एक प्राचीन जैन तीर्थ; (पउम ७७, ६४)।

पीढाणिय न [**पीठानीक**] अश्व-सेना; (ठा ५, १—पत्र ३०२)।

पीढिआ स्त्री [**पीठिका**] आसन-विशेष, मञ्च; "आसंदी पीढिआ" (पाअ)। देखो **पेढिया**।

पीढी स्त्री [**दे. पीठिका**] काष्ठ-विशेष, घर का एक आधार-काष्ठ; गुजराती में "पीढिउं";
"तत्तो नियत्तिऊणं सत्तट्ठ पयाइं जाव पहरेइ।
ता उवरिपीढिखलणे खग्गेण खडक्कियं तत्थ" (धर्मवि ५६)।

पीण सक [**प्रीणय्**] खुश करना। कृ—देखो **पीणणिज्ज**।

पीण वि [**दे**] चतुरस्र, चतुष्कोण; (दे ६, ५१)।

पीण वि [**पीन**] पुष्ट, मांसल, उपचित; (हे २, १५४; पाअ; कुमा)।

पीणण न [**प्रीणन**] खुश करना; (धर्मवि १४८)।

पीणणिज्ज वि [**प्रीणनीय**] प्रीति-जनक; (औप; कप्प; पराण १७)।

पीणाइय वि [**दे. पैनायिक**] गर्व से निर्वृत्त, गर्व से किया हुआ; "पीणाइयविरसरडियसद्देणं फोडयंते व अंबरतलं" (णाया १, १—पत्र ६३)।

पीणाया स्त्री [**दे. पीनाया**] गर्व, अहंकार; (णाया १, १)।

पीणिअ वि [**प्रीणित**] १ तोषित; (सण)। २ उपचित, परिवृद्ध; (दस ७, २३)। ३ पुं. ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष, जो पहले सूर्य या चन्द्र का किसी ग्रह या नक्षत्र के साथ होकर बाद में दूसरे सूर्य आदि के साथ उपचय को प्राप्त हुआ हो वह योग; (सुज्ज १२)।

पीणिम पुंस्त्री [**पीनता**] पुष्टता, मांसलता; (हे २, १५४)।

पीयमाण देखो **पा**=पा।

पीयमाण देखो **पी**=पी।

पील सक [**पीडय्**] १ पीलना, दबाना। २ पीड़ा करना, हैरान करना। पीलइ, पीलेइ; (धात्वा १४५; पि २४०)। कवकृ—**पीलिज्जंत**; (श्रा ६)।

पीलण न [**पीलन**] दबाव, पीलन, पीलना; "मागांसिणीण माणो पीलणभीअ व्व हिअआहि" (काप्र १६६), "जंतपीलण-कम्मे" (उत्त)।

पीला देखो **पीडा**; (उप ४३६; सुपा ३५८)।

पीलावय वि [**पीडक**] १ पीलने वाला; २ पुं. तेली, यंत्र से तेल निकालने वाला; (वज्जा ११०)।

पीलिअ वि [**पीडित**] पीला हुआ; (औप; ठा ५, ३; उत्त)।

पीलु पुं [**पीलु**] १ वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड़; (पराण १; वज्जा ४६)। २ हाथी; (पाअ; स ७३५)। ३ न. दूध; "एगट्ठं बहुनामं दुद्ध पओ पीलु खीरं च" (पिंड १३१)।

पीलुअ पुं [**दे. पीलुक**] शावक, बच्चा; "तडसंठिअणीडेक्कंत-पीलुआरक्खणेक्कदिराणमणा" (गा १०२)।

पीलुट्ठ वि [**दे. प्लुष्ट**] देखो **पिलुट्ठ**; (दे ६, ५१)।

पीवर वि [**पीवर**] उपचित, पुष्ट; (णाया १, १; पाअ; सुपा २६१)। °**गब्भा** स्त्री [°**गर्भा**] जो निकट भविष्य में ही प्रसव करने वाली हो वह स्त्री; (ओघभा ८३)।

पीवल देखो **पीअ**=पीत; (हे १, २१३; २, १७३; कुमा)।

पीस सक [**पिष्**] पीसना। पीसइ; (पि ७६)। वकृ—**पीसंत**; (पिंड ५७४; णाया १, ७)। संकृ—**पीसिऊण**; (कुप्र ४५)।

पीसण न [**पेषण**] १ पीसना, दलना; (पराह १, १; उप पृ १४०; रयण १८)। २ वि. पीसने वाला; (सुअ १, २, १; १२)।

पीसय वि [**पेषक**] पीसने वाला; (सुपा ६३)।

पीह सक [**स्पृह्, प्र+ईह्**] अभिलाषा करना, चाहना। पीहंति, पीहेज्जा; (औप; ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पीहग पुं [**पीठक**] नवजात शिशु को पीलाइ जाती एक वस्तु; (उप ३११)।

°**पु** स्त्री [**पुर्**] शरीर; (विसे २०६५)।

पुअ न [**प्लुत**] १ तिर्यग् गति; २ झाँपना, झम्प-गति; "जुज्झा-मो पु(? पु)यघाएहिं" (विसे १४३६ टी)। °**जुद्ध** न [°**युद्ध**] अधम युद्ध का एक प्रकार; (विसे १४७७)।

पुअंड पुं [**दे**] तरुण, युवा; (दे ६, ५३; पाअ)।

पुआइ पुं [**दे**] १ तरुण, युवा; (दे ६, ८०)। २ उन्मत्त; (दे ६, ८०; षड्)। ३ पिशाच; (दे ६, ८०; पाअ; षड्)।

पुआइणी स्त्री [**दे**] १ पिशाच-गृहीत स्त्री, भूताविष्ट महिला; २ उन्मत्त स्त्री; ३ कुलटा, व्यभिचारिणी; (दे ६, ५४)।

पुआव सक [**प्लावय्**] ले जाना। संकृ—**पुयावइत्ता** (ठा ३, २)।

पुं° पुं [**पुंस्**] पुरुष, मर्द; (पि ४१२; धम्म १२ टी)। देखो **पुंगव, पुंनाग, पुंवड** आदि।

पुंख पुं [**पुङ्ख**] १ बाण का अग्र भाग; "तस्स य सरस्स पुंखं विंधइ अन्नेण निक्कवारेण" (धर्मवि ६७; उप पृ ३६५)। २ न. देव-विमान विशेष; (सम २२)।

पुंखणग न [**दे. प्रोङ्खणक**] चुमाना, विवाह की एक रीति, गुजराती में 'पोंखणुं'; (सुपा ६५)।

पुंखिअ वि [**पुङ्खित**] पुंख-युक्त किया हुआ; "धणुहे निक्खो सरो पुंखिओ" (कप्प)।

पुंगल पुं [**दे**] श्रेष्ठ, उत्तम; (भवि)।

पुंगव वि [**पुङ्गव**] श्रेष्ठ, उत्तम; (सुपा ५; ८०; श्रु ४१; गउड)।

पुंछ सक [**प्र+उञ्छ्**] पोंछना, सफा करना। पुंछइ; (प्राकृ ६७; हे ४, १०५)। कृ—**पुंछणीअ**; (पि १८२)।

पुंछ पुंन [**पुच्छ**] पूँछ, लांगूल; (प्राकृ १२; हे १, २६)।

पुंछण न [**प्रोञ्छन**] १ मार्जन; (कप्प; उवा; सुपा २६०)। २ रजोहरण, जैन मुनि का एक उपकरण; (बृह १)।

पुंछणी स्त्री [**प्रोञ्छनी**] पोंछने का एक छोटा तृणमय उपकरण; (राय)।

पुंछिअ वि [**प्रोञ्छित**] पोंछा हुआ, मृष्ट; (पाअ; कुमा; भवि)।

पुंज सक [**पुञ्ज्, पुञ्जय्**] १ इकट्ठा करना। २ फैलाना, विस्तार करना। पुंजइ; (हे ४, १०२; भवि)। कर्म—पुंजिज्जइ; (कप्पू)। कवकृ—**पुंजइज्जमाण**; (से १२, ८६)।

पुंज पुंन [**पुञ्ज**] ढग, राशि; (कप्प; कप; कुमा), "खारिक्क-पुंजयाइं ठावइ" (सिरि ११६६)।

पुंजइअ वि [**पुञ्जित**] १ एकत्रित; (से ६, ६३; पउम ८, २६१)। २ व्याप्त, भरपूर; (पउम ८, २६१)।

पुंजइज्जमाण देखो **पुंज**=पुञ्ज्।

पुंजक ⎫ वि [**पुञ्जक**] १ राशि रूप से स्थित; "न उगं
पुंजय ⎭ पुंजकपुंजका" (पिंड ८२)। २ देखो **पुंज**=पुञ्ज।

पुंजय पुंन [**दे**] कतवार; गुजराती में 'पूंजो';
"काओवि तहिं पुंजयपुंछणछउमेण निययपावरयं।
अवणिंतीओ इव मारविंति जिणमंदिरंगणयं" (सुपा २६०)।

पुंजाय वि [**दे**] पिण्डाकार किया हुआ; "पुंजायं पिंडलइयं" (पाअ)।

पुंजाविय वि [**पुञ्जित**] एकत्रित कराया हुआ; (काल)।

पुंजिअ वि [**पुञ्जित**] एकत्रित; (से ५, ७२; कुमा; कप्पू)।

पुंड पुं [**पुण्ड्र**] १ देश-विशेष, विन्ध्याचल के समीप का भू-भाग; (स २२५; भग १५)। २ इक्षु-विशेष; (पउम ४२, ११; गा ७४०)। ३ वि. पुण्ड्र-देशीय; (पउम ६६, ५५)। ४ धवल, श्वेत, सफेद; (णाया १, १७ टी—पत्र २३१)। ५ तिलक; (स ६; पिंडभा ४३; कुप्र २६४)। ६ देव-विमान-विशेष; (सम २२)। °**वद्धण** न [°**वर्धन**] नगर-विशेष; (स २२५)। देखो **पोंड**।

पुंडइअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ; (दे ६, ५४)।

पुंडरिक देखो **पुंडरीअ**; (सूअ २, १, १)।

पुंडरिकि वि [**पुण्डरीकिन्**] पुण्डरीक वाला; (सूअ २, १, १)।

पुंडरिगिणी स्त्री [**पुण्डरीकिणी**] पुष्कलावती विजय की एक नगरी; (णाया १, १६; इक; कुप्र २६५)।

पुंडरिय देखो **पुंडरीअ**=पुण्डरीक, पौण्डरीक; (उव; काल; पि ३५४)।

पुंडरीअ पुं [**पुण्डरीक**] १ ग्यारह रुद्र पुरुषों में सातवाँ रुद्र; (विचार ४७३)। २ एक राजा, महापद्म राजा का एक पुत्र; (कुप्र २६५; णाया १, १६)। ३ व्याघ्र, शार्दूल; (पाअ)। ४ पुंन. तप-विशेष; (पव २७१)। ५ श्वेत पद्म, सफेद कमल; (सूअनि १४५)। ६ कमल, पद्म; "अंबुरुहं सयवत्तं सरोरुहं पुंडरीअमरविंदं" (पाअ; सम १; कप्प)। ६ देव-विमान विशेष; (सम ३५)। ७ वि. श्वेत, सफेद; (संग १३२)। °**गुम्म** न [°**गुल्म**] देव-विमान-विशेष; (सम ३५)। °**द्दह,** °**दह** पुं [°**द्रह**] शिखरी पर्वत पर का एक महा-ह्रद; (ठा २, ३; सम १०४)।

पुंडरीअ वि [**पौण्डरीक**] १ श्वेत पद्म का, श्वेत-पद्म-संबन्धी; (सूअनि १४५)। २ प्रधान, मुख्य; ३ कान्त, श्रेष्ठ, उत्तम; (सूअनि १४७; १४८)। ४ न. सूत्रकृतांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध का पहला अध्ययन; (सूअनि १५७)। देखो **पोंडरीग**।

पुंडरीया स्त्री [**पुण्डरीका**] देखो **पोंडरी**; (राज)।

पुंडे अ [**दे**] जाओ; (दे ६, ५२)।

पुंढ देखो **पुंड**; (उप ७६५)।

पुंढ पुं [**दे**] गर्त, गड्ढा; (दे ६, ५२)।

पुंनाग पुं [**पुन्नाग**] १ वृक्ष-विशेष, पुष्प-प्रधान एक वृक्ष-जाति, पुन्नाग, पुलाक, सुलतान चम्पक, पाटल का गाछ; (उप पृ १८; ७६८ टी; सम्मत्त १७५)। २ श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम मर्द; (धम्म १२ टी; सम्मत्त १७५)। देखो **पुन्नाम**।

पुंपुअ पुं [**दे**] संगम; (दे ६, ५२)।

पुंभ पुंन [**दे**] नीरस, दाड़िम का छिलका(?), "मग्गइ अलत्तयं जा निपीलियं पुंभमप्पए ताव" (धर्मवि ६७)। ["अलत्तए मग्गिए नीरसं पणामेइ" (महा: ५६)]।

पुंवउ पुंन [**पुंवचस्**] व्याकरणोक्त संस्कार-युक्त शब्द-विशेष, पुंलिंग शब्द; (पएण ११—पत्र ३६३)।

पुंवेय पुं [**पुंवेद**] १ पुरुष को स्त्री-स्पर्श का अभिलाष; २ उसका कारण-भूत कर्म; (पि ४१२)।

पुंस सक [**पुंस्, मृज्**] मार्जन करना, पोंछना। पुंसइ; (हे ४, १०५)।

पुंस° देखो **पुं**°। °**कोइल**, °**कोइलग** पुं [°**कोकिल**] मरदाना कोयल, पिक; (ठा १०—पत्र ४६६; पि ४१२)।

पुंसण न [**पुंसन**] मार्जन; (कुमा)।

पुंसद्द पुं [**पुंशब्द**] 'पुरुष' ऐसा नाम; (कुमा)।

पुंसली स्त्री [**पुंश्चली**] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री; (वज्जा ६८; धर्मवि १३७)।

पुंसिअ वि [**पुंसित**] पोंछा हुआ; (दे १, ६६)।

पुक्क, **पुक्कर** सक [**पूत्+कृ**] पुकारना, डाँकना, आह्वान करना। पुक्करेइ; (धम्म ११ टी)। वकृ—**पुक्कंत, पुक्करंत**; (पण्ह १, ३—पत्र ४५; श्रा १२)। देखो **पोक्क**।

पुक्करिय वि [**पूत्कृत**] पुकारा हुआ; (सुपा ३८१)।

पुक्कल देखो **पुक्खल**; (पण्ह २, ५—पत्र १५१)।

पुक्का स्त्री. देखो **पुक्कार**=पूत्कार; (पाअ; सुपा ५१७)।

पुक्कार देखो **पुक्कर**। पुक्कारेंति; (राय)। वकृ—**पुक्कारंत, पुक्कारिंत, पुक्कारेमाण**; (सुपा ४१५; ३८१; २४८; गाया १, १८)।

पुक्कार पुं [**पूत्कार**] पुकार, डाँक, आह्वान; (सुपा ५१७; महा; सण)।

पुक्खर देखो **पोक्खर**=पुष्कर; (कप्प; महा; पि १२५)। °**कण्णिया** स्त्री [°**कर्णिका**] पद्म का बीज-कोश, कमल का मध्य भाग; (औप)। °**क्ख** पुं [°**ाक्ष**] १ विष्णु, श्रीकृष्ण। २ कश्मीर के एक राजा का नाम; (मुद्रा २४२)। °**गय** न [°**गत**] वाद्य-विशेष का ज्ञान, कला-विशेष; (औप)। °**द्ध** न [°**ार्ध**] पुष्करवर-नामक द्वीप का आधा हिस्सा; (सुज्ज १६)। °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष; (ठा २, ३; पडि)। °**संवट्टग** देखो **पुक्खल-संवट्टय**; (राज)। °**ावत्त** देखो **पुक्खलावट्टय**; (राज)।

पुक्खरिणी देखो **पोक्खरिणी**; (सूअ २, १, २, ३; औप; पाअ)।

पुक्खरोअ, **पुक्खरोद** पुं [**पुष्करोद**] समुद्र-विशेष; (इक; ठा ३, १; ७; सुज्ज १६)।

पुक्खल पुं [**पुष्कर**] १ एक विजय, प्रान्त-विशेष, जिसकी मुख्य नगरी का नाम ओषधि है; (इक)। २ पद्म, कमल; "भिसभिसमुणालपुक्खलत्ताए" (सूअ २, ३, १८)। ३ पद्म-केसर; (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °**विभंग** न [°**विभङ्ग**] पद्म-कन्द; (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °**संवट्ट, संवट्टय** पुं [**संवर्त, °क**] मेघ-विशेष, जिसके बरसने से दस हजार वर्ष तक पृथिवी वासित रहती है; (उर २, ६; ठा ४, ४—पत्र २७०)। देखो **पुक्खर**।

पुक्खल पुं [**पुष्कल**] १ एक विजय, प्रदेश-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ अनार्य देश-विशेष; ३ पुंस्त्री. उस देश में उत्पन्न, उसमें रहने वाला; "सिंघलीहिं पुलिंदीहिं पुक्खलीहिं (?)" (भग ६, ३३—पत्र ४५७)। ["सिंहलीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं (?)" (भग ६, ३३ टी—पत्र ४६०)]। ४ अत्यन्त, प्रभूत; (कुप्र ४१०)। ५ संपूर्ण, परिपूर्ण; (सूअ २, १, १)।

पुक्खलच्छिभग, **पुक्खलच्छिभय** पुंन [**दे**] जलरुह-विशेष, जल में होने वाली वनस्पति-विशेष; (सूअ २, ३, १८; १६)। देखो **पोक्खलच्छिलय**।

पुक्खलावई स्त्री [**पुष्करावती, पुष्कलावती**] महाविदेह वर्ष का विजय—प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३; इक; महा)। °**कूड** पुंन [°**कूट**] एकशैल पर्वत का एक शिखर; (इक)।

पुक्खलावट्टय पुं [**पुष्करावर्तक, पुष्कलावर्तक**] मेघ-विशेष; "पुक्खल(?ला)वट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससहस्साइं भावेति" (ठा ४, ४)।

पुक्खलावत्त पुं [**पुष्करावर्त, पुष्कलावर्त**] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त; (जं ४)। °**कूड** पुं [°**कूट**] एकशैल पर्वत का एक शिखर; (इक)।

पुग्ग पुंन [**दे**] वाद्य-विशेष; "सो पुरम्मि पुग्गाइं वाएइ" (कुप्र ४०३)।

पुग्गल देखो **पोग्गल**; (सिक्खा १५; नव ४२; पि १२५)। °**परट्ट**, °**परावत्त** पुं [°**परावर्त**] देखो **पोग्गल-परिअट्ट**; (कम्म ५, ८६; वै ५०; सिक्खा ८)।

पुच्चड देखो **पोच्चड**; "सेयमलपुच्च(? च्च)डम्मी" (तंदु ४०)।

पुच्छ सक [**प्रच्छ्**] पूछना, प्रश्न करना। पुच्छइ; (हे ४, ६७)। भूका—पुच्छिंसु, पुच्छीअ, पुच्छे; (पि ५१६; कुमा; भग)। कर्म—पुच्छिज्जइ; (भवि)। वकृ—**पुच्छंत**; (गा ४७; ३५७; कुमा)। कवकृ—**पुच्छिज्जंत**; (गा ३४७; सुर ३, १५१)। संकृ—**पुच्छित्ता**; (भग)। हेकृ—**पुच्छिउं**, **पुच्छित्तए**; (पि ५७३; भग)। कृ— **पुच्छणिज्ज**, **पुच्छणीअ**, **पुच्छियव्व**, **पुच्छेयव्व**; (भा १४; पि ५७१; उप ८६४; कप्प)।

पुच्छ देखो **पुंछ**=प्र + उञ्छ्। पुच्छइ; (षड्)।

पुच्छ देखो **पुंछ**=पुच्छ; (कप्प)।

पुच्छअ } वि [**प्रच्छक**] पूछने वाला, प्रश्न-कर्ता; (मोहमा **पुच्छग** } २८; सुर १०. ६५)। स्त्री—°**च्छिआ**; (अभि १२५)।

पुच्छण न [**प्रच्छन, प्रश्न**] पृच्छा; (सम्मनि १६३; धर्मवि ८; श्रावक ६३ टी)।

पुच्छणया } स्त्री [**प्रच्छना**] ऊपर देखो; (उप ४६६; **पुच्छणा** } औप)।

पुच्छणी स्त्री [**प्रच्छनी**] प्रश्न की भाषा; (ठा ४, १—पत्र १८२)।

पुच्छल (अप) देखो **पुट्ठ=पृष्ट** ; (पिंग)।

पुच्छा स्त्री [**प्रच्छा**] प्रश्न; (उवा; सुर ३, ३५)।

पुच्छिअ वि [**प्रष्ट**] पूछा हुआ; (औप; कुमा; भग; कप्प; सुर २, १६८)।

पुच्छिर वि [**प्रष्टृ**] प्रश्न-कर्ता; (गा ५६८)।

पुछल देखो **पुच्छल**; (पिंग)।

पुज्ज सक [**पूजय्**] पूजना, आदर करना। पुज्जइ; (कुप्र ४२३; भवि)। कर्म—पुज्जिज्जइ; (भवि)। वकृ—**पुज्जंत**; (कुप्र १२१)। कवकृ—**पुज्जिज्जंत**; (भवि)। संकृ—**पुज्जिउं**, **पुज्जिऊण**; (कुप्र १०२; भवि)। कृ—**पुज्जिअव्व**; (ती ७)। प्रयो—पुज्जावइ; (भवि)।

पुज्ज देखो **पूज**=पूजय्।

पुज्जंत देखो **पुज्ज**=पूजय्।

पुज्जंत देखो **पूर**=पूरय्।

पुज्जण न [**पूजन**] पूजा, अर्चा; (कुप्र १२१)।

पुज्जमाण देखो **पूर**=पूरय्।

पुज्जा स्त्री [**पूजा**] पूजा, अर्चा; (उप पृ ३४२)।

पुज्जिय वि [**पूजित**] सेवित, अर्चित; (भवि)।

पुट्ट सक [**प्र + उञ्छ्**] पोंछना। पुट्टइ; (प्राकृ ६७)।

पुट्ट न [**दे**] पेट, उदर, (भा २८; मोह ४१; पव १३५; सम्मत्त २२६; सिरि २६२; सण)।

पुट्टल } पुंन [**दे**] गठड़ी, गाँठ; गुजराती में 'पोटलुं'; **पुट्टलय** } "संबलपुट्टलयं च गहिउं" (सम्मत्त ६१)।

पुट्टलिया स्त्री [**दे**] छोटी गठड़ी; (सुपा ४३; ३४४)।

पुट्टिल पुं [**पोट्टिल**] १ भगवान् महावीर का एक शिष्य, जो भविष्य में तीर्थंकर होने वाला है; (विचार ४७८)। २ एक अनुत्तर-देवलोक-गामी जैन महर्षि; (अनु २)।

पुट्ठ वि [**स्पृष्ट**] १ छुआ हुआ; (भग; औप; हे १, १३१)। २ न. स्पर्श; (ठा २. १, नव १८)।

पुट्ठ वि [**पृष्ट**] १ पूछा हुआ; (औप; सण; हे २, ३४)। २ न. प्रश्न; (ठा २, १)। °**लाभिय** वि [°**लाभिक**] अभिग्रह-विशेष वाला (मुनि); (औप; पण्ह २, १)। °**सेणियापरिकम्म** पुंन [°**श्रेणिकापरिकर्मन्**] दृष्टिवाद का एक प्रतिपाद्य विषय; (सम १२८)।

पुट्ठ वि [**पुष्ट**] उपचित; (णाया १, ३; स ४१६)।

पुट्ठ देखो **पिट्ठ**=पृष्ठ; (प्राप्र; संक्षि १६)।

पुट्ठव वि [**स्पृष्टवत्**] जिसने स्पर्श किया हो वह; (आचा १, ७, ८, ८)।

पुट्ठवई देखो **पोट्ठवई**; (सुज्ज १०, ६)।

पुट्ठवया स्त्री [**प्रोष्ठपदा**] नक्षत्र-विशेष; (सुज्ज १०, ५)।

पुट्ठि स्त्री [**पुष्टि**] पोषण, उपचय; (सिरि २२१; चेइय ८)। २ अहिंसा, दया; (पण्ह २, १—पत्र ६६)। °**म** वि [°**मत्**] १ पुष्टि वाला। २ पुं. भगवान् महावीर का एक शिष्य; (अनु)।

पुट्ठि देखो **पिट्ठि**=पृष्ठ; "पाअपडिअस्स पइणो पुट्ठिं पुत्ते समारुहंतम्मि" (गा ११; ३३; ८७; प्राप्र; संक्षि १६)।

पुट्ठि स्त्री [**पृष्टि**] पृच्छा, प्रश्न। °**य** वि [°**ज**] प्रश्न-जनित; (ठा २, १—पत्र ४०)।

पुट्ठि स्त्री [**स्पृष्टि**] स्पर्श। °**य** वि [°**ज**] स्पर्श-जनित; (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [**पृष्टिका**] प्रश्न से होने वाली क्रिया—कर्म-बन्ध; (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [**स्पृष्टिका**] स्पर्श से होने वाली क्रिया—कर्म-बन्ध; (ठा २, १)।

पुट्टिल देखो **पोट्टिल**; (अनु २)।

पुट्ठीया स्त्री [**स्पृष्टीया**] देखो **पुट्ठिया**=स्पृष्टिका; (नव १८)।

पुट्ठीया स्त्री [**पृष्टीया**] पृच्छा से होने वाली क्रिया—कर्म-बन्ध; (नव १८)।

पुड पुंन [**पुट**] १ मिथः संबन्ध, परस्पर जोड़ान, मिलाव, मिलान; "अंजलिपुड—", "ताहे करयलपुडेण नीओ सो" (औप; महा)। २ खाल, ढोल आदि का चमड़ा; "हुरब्भपुडसंठाण-संठिया" (उवा ६४ टी; गउड; ११६७; कुमा)। ३ संबद्ध दल-द्वय, मिला हुआ दो दल; "सिप्पपुडसंठिया" (उवा; गउड ५७६)। ४ ओषधि पकाने का पात्र-विशेष; (णाया १, १३)। ५ पत्रादि-रचित पात्र, दोना; (रंभा)। ६ आच्छादन, ढक्कन; (उवा; गउड)। ७ कमल, पद्म; "पुडइणी" (विक २३)। °**भेयण** न [°**भेदन**] नगर, शहर; (कस)। °**वाय** पुं [°**पाक**] १ पुट-पात्रों से ओषधि का पाक-विशेष; २ पाक-निष्पन्न औषध-विशेष; "पुढ(? ड)-वाएहि" (णाया १, १३—पत्र १८१)।

पुड (शौ) देखो **पुत्त**=पुत्र; (पि २६२; प्राप्र)।

पुडइअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, एकत्रित; (दे ६, ५४)।

पुडइणी स्त्री [**दे. पुटकिनी**] नलिनी, कमलिनी; (दे ६, ५५; विक २३)।

पुडग पुंन [**पुटक**] देखो **पुट**= पुट; (उवा)।

पुडपुडी स्त्री [**दे**] मुँह से सीटी बजाना, एक प्रकार की अव्यक्त आवाज; (पव ३८)।

पुडम देखो **पुढम**; (प्रति ७१; पि १०४)।

पुडय देखो **पुडग**; (उवा; सुपा ६५६)।

पुडिंग न [**दे**] मुँह, वदन; २ बिन्दु; (दे ६, ८०)।

पुडिया स्त्री [**पुटिका**] पुड़ी, पुड़िया; (दे ५, १२)।

पुडु (शौ) देखो **पुत्त**=पुत्र; (प्राप्र)।

पुढं देखो **पिहं**; (षड्)।

पुढम वि [**प्रथम**] पहला; (हे १, ५५; कुमा; स्वप्न २३१)।

पुढवि° देखो **पुढवी**; (आचानि १, १, २; भग १६, ३; पि ५७)। °**काइय**, °**क्काइय** वि [°**कायिक**] पृथिवी शरीर वाला (जीव); (पराण १; भग १६, ३; ठा १; आचानि १, १, २)। °**क्काय** देखो **पुढवी-काय**; (आचानि १, १, २)।

पुढवी स्त्री [**पृथिवी**] १ पृथिवी, धरती, भूमि; (हे १, ८८; १३१; ठा ३, ४)। २ काठिन्यादि गुण वाला पदार्थ, द्रव्य-विशेष—मृत्तिका, पाषाण, धातु आदि; (पराण १)। ३ पृथिवीकाय का जीव; (जी २)। ४ ईशानेन्द्र के एक लोकपाल की अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ भगवान् सुपार्श्वनाथ की माता का नाम; (राज)। °**काइय** देखो **पुढवि-काइय**; (राज)। °**काय** वि [°**काय**] पृथिवी शरीर वाला (जीव); (आचानि १, १, २)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा; (ठा ७)। °**सत्थ** न [°**शस्त्र**] १ पृथिवी रूप शस्त्र; २ पृथिवी का शस्त्र, हल, कुद्दाल आदि; (आचा)। देखो **पुहई, पुहवी**।

पुढीभूय वि [**पृथग्भूत**] जो अलग हुआ हो; (सुपा २३६)।

पुढुम वि [**प्रथम**] पहला, आद्य; (हे १, ५५; कुमा)।

पुढो अ [**पृथग्**] अलग, भिन्न; (सुपा ३६२; रयण ३०; श्रावक ४०; आचा)। °**छंद** वि [°**छन्द**] विभिन्न अभिप्राय वाला; (आचा; पि ७८)। °**जण** पुं [°**जन**] प्राकृत मनुष्य, साधारण लोक; (सूअ १, ३, १, ६)। °**जिय** पुं [°**जीव**] विभिन्न प्राणी; (सूअ १, १, २, ३)। °**विमाय**, °**वेमाय** वि [°**विमात्र**] अनेक प्रकार का, बहुविध; (राज; ठा ४,४—पत्र २८०)।

पुढोजग वि [**दे. पृथग्जक**] पृथग्भूत, भिन्न व्यस्थित; "जमियं जगती पुढोजगा" (सूअ १, २, १, ४)।

पुढोवम वि [**पृथिव्युपम**] पृथिवी की तरह सब सहन करने वाला; (सूअ १, ६, २६)।

पुढोसिय वि [**पृथवीश्रित**] पृथिवी के आश्रय में रहा हुआ; (सूअ १, १२, १३; आचा)।

पुण सक [**पू**] १ पवित्र करना। २ धान्य आदि को तुष-रहित करना, साफ करना। पुणइ; (हे ४, २४१)। पुणंति; (णाया १, ७)। कर्म—पुणिज्जइ, पुव्वइ; (हे ४, २४२)।

पुण अ [**पुनर्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ भेद, विशेष; (विसे ८११)। २ अवधारण, निश्चय; ३ अधिकार, प्रस्ताव; ४ द्वितीय वार, वारान्तर; ५ पक्षान्तर; ६ समुच्चय; (पराह २, ३; गउड; कुमा; औप; जी ३७; प्रासू ६; ५२; १६८; स्वप्न ७२; पिंग)। ७ पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है; (निचू १)। °**करण** न

[°करण] फिर से बनाना; २ वि. जिसकी फिर से बनावट की जाय वह; "भिन्नं संखं न होइ पुणकरणं" (उव)। °णव वि [°नव] फिर से नया बना हुआ, ताजा; (उत्त ११८ टी; कप्पू)। °पुण अ [°पुनर्] फिर फिर, बारंबार। °पुणक्करण न [°पुनःकरण] फिर फिर बनाना, बारंबार निर्माण; (हे १, ३२)। °ब्भव पुं [°भव] फिर से उत्पत्ति, फिर से जन्म-ग्रहण; (चेइय ३४७; औप)। °ब्भू स्त्री [°भू] फिर से विवाहित स्त्री, जिसका पुनर्लग्न हुआ हो वह महिला; "अत्थि पुणब्भूकप्पो त्ति विवाहिया पच्छन्नं" (कुप्र २०८; २०६)। °रवि, °रावि अ [°अपि] फिर भी; (उवा; उत्त १०, १६; १६)। °रावित्ति स्त्री [°आवृत्ति] पुनः आवर्तन; (पडि)। °रुत्त वि [°उक्त] फिर से कहा हुआ; २ न. पुनरुक्ति; (चेइय ४३८)। °वि अ [°अपि] फिर भी; (संजि १६; प्राकृ ८१)। °व्वसु पुं [°वसु] १ नक्षत्र-विशेष; (सम १०; ६६)। २ आठवें वासुदेव के पूर्व जन्म का नाम; (सम १५३; पउम २०, १७२)।

पुण (अप) देखो **पुण्ण**=पुण्य। °**मंत** वि [°**मत्**] पुण्यशाली; (पिंग)।

पुणअ सक [**दृश्**] देखना। पुणअइ; (धात्वा १४५)।

पुणइ पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, ३८)।

पुणण वि [**पवन**] पवित्र करने वाला। स्त्री—°**णी**; (कुमा)।

पुणरुत्त } अ. कृत-करण, बारंबार, फिर फिर; "अइ सुप्पइ
पुणरुत्तं } पंसुलि णीसेहेहिँ अंगेहिँ पुणरुत्तं" (हे १, १७६; कुमा), "ण वि तह छेअरआइँवि हरंति पुणरुत्तराअरसिआइं" (गा २७४)।

पुणा }
पुणाइ } अ. देखो **पुण**=पुनर्; (पि ३४३; हे १, ६५;
पुणाइं } कुमा; पउम ६, ६७; उवा)।

पुणु (अप) देखो **पुण**=पुनर्; (कुमा; पि ३४२)।

पुणो देखो **पुण**=पुनर्; (औप; कुमा; प्राकृ ८७)।

पुणोत्त देखो **पुण-रुत्त, पुणरुत्त**; (प्राकृ ३०)।

पुणोल्ल सक [**प्र+नोदय्**] १ प्रेरणा करना। २ अत्यन्त दूर करना। पुणोल्लयामो; (उत्त १२, ४०)।

पुण्ण पुंन [**पुण्य**] १ शुभ कर्म, सुकृत; (औप; महा; प्रासू ७५; पात्र)। २ दो उपवास, बेला; "भद्दं पुण्णं (? ण्णा) सुही (? हि)यं छट्ठभत्तस्स एगट्ठा" (संबोध ५८)। ३ वि. पवित्र; "थाणुपियाजलपुण्णं" (कुमा)। **कलसा** स्त्री [°**कलशा**] लाट देश के एक गाँव का नाम; (राज)। °**घण** पुं [°**घन**] विद्याधरों का एक स्वनाम-ख्यात राजा; (पउम ५, ६५)। °**मंत**, °**मत्त** वि [°**वत्**] पुण्य वाला, भाग्यवान्; (हे २, १५६; चंड)। देखो **पुन्न**=पुण्य।

पुण्ण वि [**पूर्ण**] १ संपूर्ण, भरपूर, पूरा; (औप; स्वप्न; उवा)। २ पुं. ईशानकुमार देवों का दाक्षिणात्य इन्द्र; (इक)। ३ इक्षुवर समुद्र का अधिष्ठायक देव; (राज)। ४ तिथि-विशेष, पक्ष की पाँचवीं, दसवीं और पनरहवीं तिथि; (सुज्ज १०, १५)। ५ पुंन. शिखर-विशेष; (इक)। °**कलस** पुं [°**कलश**] संपूर्ण घट; (जं २)। °**घोस** पुं [°**घोष**] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिन-देव; (सम १५४)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ संपूर्ण चन्द्रमा। २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४४)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] इक्षुवर द्वीप का अधिपति देव; (राज)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] १ स्वनाम-ख्यात एक गृह-पति, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले मुक्ति पाई थी; (अंत)। २ यक्ष-निकाय का एक इन्द्र; (ठा ४, १)। ३ पुंन. अनेक कूट —शिखरों का नाम; (इक)। ४ यक्ष का चैत्य-विशेष; (औप; विपा १, १; उवा)। °**मासी** स्त्री [°**मासी**] पूर्णिमा तिथि; (दे)। °**सेण** पुं [°**सेन**] राजा श्रेणिक का पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अनु)। देखो **पुन्न**=पूर्ण।

पुण्णमासिणी स्त्री [**पौर्णमासी**] तिथि-विशेष, पूर्णिमा; (औप; भग)।

पुण्णवत्त न [**दे**] आनन्द से हृत वस्त्र; (दे ६, ५३; पात्र)।

पुण्णा स्त्री [**पूर्णा**] १ तिथि-विशेष, पक्ष की ५, १० और १५ वीं तिथि; (संबोध ५४; सुज्ज १०, १५)। २ पूर्णभद्र और माणिभद्र इन्द्र की एक महादेवी—अग्र-महिषी; (इक; णाया २), "पुण्णभद्दस्स णं जक्खिंदस्स जक्खरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुन्ना(? ण्णा) बहुपुत्तिआ उत्तमा तारगा, एवं माणिभद्दस्सवि" (ठा ४, १—पत्र २०४)।

पुण्णाग } देखो **पुन्नाग**; (पउम ४३, ३६; से ६, ४६;
पुण्णाम } हे १, १६०; पि २३१)।

पुण्णाली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा, पुंश्चली; (दे ६, ५३; षड्)।

पुण्णाह पुंन [**पुण्याह**] १ पुण्य दिन, शुभ दिवस; (गा १६५; गउड)। २ वाद्य-विशेष; "पुण्णाहतूरेण" (स ४०१; ७३४)।

पुण्णिमसी स्त्री [**पूर्णमासी**] पूर्णिमा; (संबोध ३६)।

पुण्णिमा स्त्री [**पूर्णिमा**] तिथि-विशेष, पूर्णमासी; (काप्र १६४)। °**यंद** पुं [°**चन्द्र**] पूर्णिमा का चन्द्र; (महा; हेका ४८)।

पुण्णिमासिणी देखो **पुण्णमासिणी**; (सम ६६; श्रा २६; सुज्ज १०, ६)।

पुत्त पुं [**पुत्र**] लड़का; (ठा १०; कुमा; सुपा ६६; ३३४; प्रासू २७; ७७; णाया १, २)। °**वई** स्त्री [°**वती**] लड़का वाली स्त्री; (सुपा २८१)।

पुत्तंजीवय पुं [**पुत्रंजीवक**] वृक्ष-विशेष, पुतजीया, जियापोता का पेड़; "पुत्तंजीवयरिट्ठे"(पण्ण १—पत्र ३१)। २ न. जियापोता का बीज; "पुत्तंजीवयमालालंकिएणं" (स ३३७)।

पुत्तय पुं [**पुत्रक**] देखो **पुत्त**; (महा)।

पुत्तरे पुंस्त्री [**दे**] योनि, उत्पत्ति-स्थान; "पुत्तरे योनौ" (संक्षि ४७)।

पुत्तलय पुं [**पुत्रक**] पूतला; (सिरि ८६१; ६२; ६४)।

पुत्तलिया, **पुत्तली** स्त्री [**पुत्रिका**] शालभञ्जिका, पूतली; (पाअ; कुम्मा ६; प्रवि १३; सुपा २६६; सिरि ८१५)।

पुत्तह देखो **पुत्त**; (प्राकृ ३५)।

पुत्ताणुपुत्तिय वि [**पौत्रानुपुत्रिक**] पुत्र-पौत्रादि के योग्य; "पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेति" (णाया १, १—पत्र ३७)।

पुत्तिआ स्त्री [**पुत्रिका**] १ पुत्री, लड़की; (अभि १७८)। २ पूतली; (दे ६, ६२; कुमा)।

पुत्तिल्ल देखो **पुत्त**; (प्राकृ ३५)।

पुत्ती स्त्री [**पुत्री**] लड़की; (कप्पू)।

पुत्ती स्त्री [**पोती**] १ वस्त्र-खण्ड, मुख-वस्त्रिका; (पव ६०; संबोध ५४)। २ साड़ी, कटी-वस्त्र; (धर्मवि १७)। देखो **पोत्ती**।

पुत्तुल्ल पुं [**पुत्र**] पुत्र, लड़का; (प्राकृ ३५)।

पुत्थ वि [**दे**] मृदु, कोमल; (दे ६, ५२)।

पुत्थ, **पुत्थय** पुंन [**पुस्त**, °**क**] १ लेप्यादि कर्म; (श्रा १)। २ पुस्तक, पोथी, किताब; "पुत्थए लिहावेइ" (कुप्र ३४८); "अवहरिओ पुत्थओ सहसा" (सम्मत्त ११८)। देखो **पोत्थ**।

पुथवी देखो **पुढवी**; (चंड)।

पुथुवी, **पुथुवी** (पै) देखो **पुढवी**; (प्राकृ १२४; पि १६०)। °**नाथ** (पै) पुं [°**नाथ**] राजा; (प्राकृ १२४)।

पुध देखो **पिह**=पृथक्; (ठा १०)।

पुधं देखो **पिधं**; (हे १, १८८)।

पुधम, **पुधुम** (पै) देखो **पुढम, पुढुम**; (पि १०४; हे ४, ३१६)।

पुन्न देखो **पुण्ण**=पुन्य; "कह मह इत्तियपुन्ना जं सो दीसिज्ज पच्चक्खं" (सुर १२, ११८; उप ७६८ टी; कुमा)। °**कंखिअ** वि [°**काङ्क्षित**, °**काङ्क्षिन्**] पुण्य की चाह वाला; (भग)। °**कलस** पुं [°**कलश**] एक राजा का नाम; (उप ७६८ टी)। °**जसा** स्त्री [°**यशस्**] एक स्त्री का नाम; (उप ७२८ टी)। °**पत्तिया** स्त्री [**प्रत्यया**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °**पिवासय** वि [°**पिपासक**] पुण्य का प्यासा, पुण्य की चाह वाला; (भग)। °**भागि** वि [°**भागिन्**] पुण्य का भागी, पुण्य-शाली; (सुपा ६४१)। °**सम्म** पुं [°**शर्मन्**] एक ब्राह्मण का नाम; (उप ७२८ टी)। °**सार** पुं [°**सार**] एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी; (उप ७२८ टी)।

पुन्न देखो **पुण्ण**=पूर्ण; (सुर २, ६७; उप ७६८ टी; ठा २, ३; अनु २)। °**तल्ल** पुं [°**तल**] एक जैन मुनि-गच्छ; (कुप्र ६)। °**पाय** वि [°**प्राय**] करीब-करीब संपूर्ण, कुछ-कम पूर्ण; (उप ७२८ टी)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] १ यक्ष-विशेष; (सिरि ६६६)। २ यक्ष-निकाय का एक इन्द्र; (ठा २, ३)। ३ एक अन्तकृद् मुनि; (अंत १८)। ४ एक जैन मुनि, आर्य श्रीसंभूतविजय का एक शिष्य; (कप्प)।

पुन्नयण पुं [**पुण्यजन**] यक्ष, एक देव-जाति; (पाअ)।

पुन्नाग, **पुन्नाम**, **पुन्नाय** देखो **पुंनाग**; (कप्प; कुमा; पउम २१, ४६; पाअ)। २ पुन्नाग का फूल; (कुमा; हे १, १६०)।

पुन्नालिया, **पुन्नाली** [**दे**] देखो **पुण्णाली**; (सुपा ५६६; ५६७)।

पुन्निमा देखो **पुण्णिमा**; (रंभा)।

पुप्पुअ वि [**दे**] पीन, पुष्ट, उपचित; (दे ६, ५२)।

पुप्फ न [**पुष्प**] १ फूल, कुसुम; (णाया १, १; कप्प; सुर ३, ६५; कुमा)। २ एक विमानावास, देव-विमान विशेष; (देवेन्द्र १३५; सम ३८)। ३ स्त्री का रज; ४ विकास; ५ आँख का एक रोग; ६ कुबेर का विमान; (हे १, २३६; २, ५३; ६०; १५४)। °**इरि** पुं [°**गिरि**] एक पर्वत का नाम; (पउम ७६, १०)। °**कंत** न [°**कान्त**] ए

देव-विमान; "पुप्फकंतं" (सम ३८)। °करंडय पुं [°करण्डक] हस्तिशीर्ष नगर का एक उद्यान; "पुप्फकरंडए उज्जाणे" (विपा २, १)। °केउ पुं [°केतु] १ ऐरवत क्षेत्र का सातवाँ भावी तीर्थंकर—जिनदेव; (सम १५४)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३)। °ग न [°क] १ मूल भाग; "भाणस्स पुप्फगं तो इमेहिं कज्जेहिं पडिलेहे" (ओघ २८६)। २ पुष्प, फूल; (कप्प)। ३ देखो नीचे °य; (ओप)। °चूला स्त्री [°चूडा] १ भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य शिष्या का नाम; (सम १५२; कप्प)। २ एक महासती, अन्निकाचार्य की सुयोग्य शिष्या; (पडि)। ३ सुबाहुकुमार की मुख्य पत्नी का नाम; (विपा २, १)। °चूलिया स्त्री [°चूलिका] एक जैन ग्रन्थ; (निर १, ४)। °च्चणिया स्त्री [°र्चनिका] पुष्पों से पूजा; (णाया १, २)। °चिच्चणिया स्त्री [°चायिनी] फूल बिनने वाली स्त्री; (पाअ)। °छज्जिया स्त्री [°छादिका] पुष्प-पात्र विशेष; (राज)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान; (सम ३८)। °णंदि पुं [°नन्दिन्] एक राजा का नाम; (ठा १०)। °णालिया देखो °नालिया; (तंदु)। °दंत पुं [°दन्त] १ नववाँ जिनदेव, श्री सुविधिनाथ; (सम ६२; ठा २, ४)। २ ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १; इक)। ३ देव-विशेष; (सिरि ६६७)। °दंती स्त्री [°दन्ती] दमयन्ती की माता का नाम, एक रानी; (कुप्र ४८)। °नालिया स्त्री [°नालिका] पुष्प का बेंट; (तंदु ४)। °निज्जास पुं [°निर्यास] पुष्प-रस; (जीव ३)। °पुर न [°पुर] पाटलिपुत्र, पटना शहर; (राज)। °पूरय पुं [°पूरक] पुष्प की रचना-विशेष; (णाया १, १६)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान; (सम ३८)। °बलि पुं [°बलि] उपचार, पुष्प-पूजा; (पाअ)। °बाण पुं [°बाण] कामदेव; (रंभा)। °भद्द न [°भद्र] नगर-विशेष, पटना शहर; (राज)। °मंत वि [°वत्] पुष्प वाला; (णाया १, १)। °माल न [°माल] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक नगर; (इक)। °माला स्त्री [°माला] ऊर्ध्व लोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। °य पुं [°क] १ फन, डिगडीर; (पाअ)। २ न. ईशानेन्द्र का एक पारियानिक विमान, देव-विमान-विशेष; (ठा ८; इक; पउम ७६, २८; ओप)। ३ पुष्प, फूल; (कप्प)। ४ ललाट का एक पुष्पाकार आभूषण; (जं २)। देखो ऊपर °ग। °लाई, °लावी स्त्री [°लावी] फूल बिनने वाली स्त्री; (पाअ; दे १, ६)। °लेस न [°लेश्य] एक देव विमान, (सम ३८)। °वई स्त्री [°वती] १ ऋतुमती स्त्री; (दे ६, ६४; गा ४८०)। २ सत्पुरुष-नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १; णाया २)। ३ बीसवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—प्रमुख साध्वी—का नाम; (सम १५२; पव ६)। ४ चैत्य-विशेष; (भग)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान; (सम ३८)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान; (सम ३८)। °सिद्ध न [°सिद्ध] देव-विमान विशेष; (सम ३८)। °सुय पुं [°शुक] व्यक्ति-वाचक नाम; (उप)। °वत्त न [°वर्त] एक देव विमान; (सम ३८)।

पुप्फस न [दे] फेफड़ा, शरीर का एक भीतरी अंग; (पउम १०५, ५५)।

पुप्फा स्त्री [दे] फूफी, पिता की बहिन; (दे ६, ५२)।

पुप्फिअ वि [पुष्पित] कुसुमित, संजात-पुष्प; (धर्मवि १४८; कुमा; णाया १, ११; सुपा ५८)।

पुप्फिआ [दे] देखो पुप्फा; (पाअ)।

पुप्फिआ स्त्री [पुष्पिता] एक जैन आगम-ग्रन्थ; (निर १, ३)।

पुप्फिम पुंस्त्री [पुष्पत्व] पुष्पपन; (हे २, १५४)।

पुप्फी [दे] देखो पुप्फा; (षड्)।

पुप्फुआ स्त्री [दे] करीष का अग्नि; "सुइज्जइ हेमंतम्मि दुग्गअ पुप्फुआसुअंधेण" (गा ३२६)।

पुप्फुत्तर न [पुष्पोत्तर] एक विमान; (कप्प)। °वडिंसग न [°ावतंसक] एक देव-विमान; (सम ३८)।

पुप्फुत्तरा, पुप्फोत्तरा स्त्री [पुष्पोत्तरा] शक्कर की एक जाति; (णाया १, १७—पत्र २२६; पण्ण १७—पत्र ५३३)।

पुप्फोदय न [पुष्पोदक] पुष्प-रस से मिश्रित जल; (णाया १, १—पत्र १६)।

पुप्फोवय, पुप्फोवा° वि [पुष्पोपग] पुष्प प्राप्त करने वाला, फूलने वाला (वृक्ष); (ठा ३, १—पत्र ११३)।

पुम पुं [पुंस्] १ पुरुष, नर; "थीअपुमाणं विमुज्झंता" (पंच ५, ७२), "पुमत्तमागम्म कुमार दोवि" (उत्त १४, ३; ठा ८; औप)। २ पुरुष-वेद; (कम्म ५, ६०)। °आणमणी स्त्री [°आज्ञापनी] पुरुष को आज्ञा देने वाली भाषा, भाषा-विशेष; (पण्ण ११)। °पन्नावणी स्त्री [°प्रज्ञापनी] भाषा-विशेष; पुरुष के लक्षणों का प्रतिपादन करने वाली भाषा; (पण्ण ११—पत्र ३६४)। °वयण न [°वचन] पुंलिंग शब्द का उच्चारण; (पण्ण ११—पत्र ३७०)।

पुम्म (अप) सक [**दृश्**] देखना। पुम्मइ; (प्राकृ ११९)।
पुयावइत्ता देखो **पुआव**।
पुर (अप) देखो **पूर**=पूरय्। पुरह; (पिंग)।
पुर न [**पुर**] १ नगर, शहर; (कुमा; कुप्र ४३८)। २ शरीर, देह; (कुप्र ४३८)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४४)। °**भेयण** वि [°**भेदन**] नगर का भेदन करने वाला। स्त्री—°**णी**; (उत्त २०, १८)। °**वइ** पुं [°**पति**] नगर का अधिपति; (भवि)। °**वर** न [°**वर**] श्रेष्ठ नगर; (उवा; पराह १, ४)। °**वरी** स्त्री [°**वरा**] श्रेष्ठ नगरी; (णाया १, ६; उवा; सुर २, १५२)। °**वाल** पुं [°**पाल**] नगर-रक्षक, राजा; (भवि)।
पुर देखो **पुरं**; "पुरकम्मम्मि य पुच्छा" (बृह १)।
पुरएअ } देखो **पुरदेव**; (भवि)।
पुरएव }
पुरओ अ [**पुरतस्**] १ अग्रतः, आगे; (सम १५१; ठा ४, २; गा ३५०; कुमा; औप)। २ पहले, पूर्व में; "पुरओ कयं जं तु तं पुरेकम्मं" (ओघ ४८६)।
पुरं अ [**पुरस्**] १ पहले, पूर्व में; २ समक्ष; "तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमितिसमन्नागते यावि विहरिज्जा" (ठा २, १—पत्र ११७)। ३ अग्रे, आगे। °**गम** वि [°**गम**] अग्र-गामी, पुरो-वर्ती; (सूअ १, ३, ३, ६)। देखो **पुरे**, **पुरो**।
पुरंजय पुं [**पुरञ्जय**] एक विद्याधर राजा। °**पुर** न [°**पुर**] एक विद्याधर-नगर; (इक)।
पुरंदर पुं [**पुरन्दर**] १ इन्द्र, देवराज; २ गन्ध-द्रव्य विशेष; (हे १, १७७)। ३ वृक्ष-विशेष, चव्य का पेड़; "पुरंदरकुसुमदामसुविणेण सूइया जाया" (उप ६८६ टी)। ४ एक राजर्षि; (पउम २१, ८०)। ५ मन्दरकुञ्ज नगर का एक विद्याधर राजा; (पउम ६, १७०)। °**जसा** स्त्री [°**यशस्**] एक राज-कन्या का नाम; (उप ६७३)। °**दिसि** स्त्री [°**दिश्**] पूर्व दिशा; (उप १४२ टी)।
पुरंधि } स्त्री [**पुरन्ध्री**] १ बहु कुटुम्ब वाली स्त्री; २ पति
पुरंधी } और पुत्र वाली स्त्री; (कुमा; कुप्र १०७; सुपा २६; पाअ)। ३ अनेक काल पहले व्याही हुई स्त्री; (कप्पू)।
पुरक्कड देखो **पुरक्खड**; (सूअ २, २, १८)।
पुरक्कार पुं [**पुरस्कार**] १ आगे करना, अग्रतः स्थापन; (अच्चु)। २ सम्मान, आदर; (सम ४०)।
पुरक्खड वि [**पुरस्कृत**] १ आगे किया हुआ; (श्रा ६)। २ पुरो-वर्ती, आगामी; "गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति" (भग १, १)।
पुरच्छा देखो **पुरत्था**; (राज)।
पुरच्छिम देखो **पुरत्थिम**; (ठा २, ३—पत्र ६७; सुज्ज २०—पत्र २८७; पि ५९५)। °**दाहिणा** स्त्री [°**दक्षिणा**] पूर्व-दक्षिण दिशा, अग्निकोण; (ठा १०—पत्र ४७८)।
पुरच्छिमा देखो **पुरत्थिमा**; (ठा १०—पत्र ४७८)।
पुरच्छिमिल्ल देखो **पुरत्थिमिल्ल**; (सम ६६)।
पुरत्थ वि [**पुरःस्थ**] आगे रहा हुआ; अग्र-वर्त्ती, पुरस्सर; "पुरत्थं होइ सहायं रणे समं तेण" (उप १०३१ टी), "जेण गहिएणत्था इत्थ परत्थावि हु पुरत्था" (श्रा १४)।
पुरत्थ } अ [**पुरस्तात्**] १ पहले, काल या देश की अपेक्षा
पुरत्थओ } से आगे; "तप्पुरपुरत्थभाए" (सुपा ३९०), "मोस-
पुरत्था } स्स पच्छा य पुरत्थओ य" (उत्त ३२, ३१), "आदीणियं दुक्कडियं पुरत्था" (सूअ १, ५, १, २)। २ पूर्वदिशा; "पुरत्थाभिमुहे" (कप्प; औप; भग; णाया १, १—पत्र १९)।
पुरत्थिम वि [**पौरस्त्य, पूर्व**] १ पूर्व की तरफ का; "उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए" (कप्प; औप)। २ न. पूर्व दिशा; "पुरतो पुरत्थिमेण" (णाया १, १—पत्र ५४; उत्रा)।
पुरत्थिमा स्त्री [**पूर्वा**] पूर्व दिशा; "पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ" (आचा; मृच्छ १५८ टि)।
पुरत्थिमिल्ल वि [**पौरस्त्य**] पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा में स्थित; (विपा १, ७; पि ५९५)।
पुरदेव पुं [**पुरादेव**] भगवान् आदिनाथ; "पुरदेवजिणस्स निव्वाणं" (पउम ४, ८७)।
पुरव देखो **पुव्व**; (गउड; हे ४, २७०; ३२३)।
पुरस्सर वि [**पुरस्सर**] अग्र-गामी; (कप्पू)।
पुरा स्त्री [**पुर्**] नगरी, शहर; (हे १, १६)।
पुरा देखो **पुरिल्ला**=पुरा; (सूअ १, १, २, २४; विपा १, १)। °**इय**, °**कय** वि [°**कृत**] पूर्व काल में किया हुआ; (भवि; कुप्र ३१९)। °**भव** पुं [°**भव**] पूर्व जन्म; (कुप्र ४०६)।
पुराअण वि [**पुरातन**] पुराना, प्राचीन। स्त्री—°**णी**; (नाट—चैत १३१)।
पुराकर सक [**पुरा+कृ**] आगे करना। पुराकरंति; (सूअ १, ५, २, ५)।

पुराण वि [**पुराण**] १ पुराना, पुरातन; (गउड; उत्त ८, १२)। २ न व्यासादि-मुनि-प्रणीत ग्रन्थ-विशेष, पुरातन इतिहास के द्वारा जिसमें धर्म-तत्त्व निरूपित किया जाता हो वह शास्त्र; (धर्मवि ३८; भवि)। **पुरिस** पुं [**पुरुष**] श्रीकृष्ण; (वज्जा १२२)।

पुरिकोवेर पुं. ब. [**पुरीकौवेर**] देश-विशेष; (पउम ६८, ६७)।

पुरित्थिमा देखो **पुरत्थिमा**; (सूअ २, ३, ६)।

पुरिम देखो **पुव्व=पूर्व**; (हे २, १३५; प्राकृ ३८; भग; कुमा), "पंचवण्णो खलु धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स" (पव ७४; पंचा १७, १)। °**ड्ढ** पुंन [°**र्ध**] १ पूर्वार्ध; २ प्रत्याख्यान-विशेष; (पंचा ५; पडि)। ३ तप-विशेष, निर्विकृतिक तप; (संबोध ५७)। °**ड्ढिय** वि [°**र्धिक**] 'पुरिमड्ढ' प्रत्याख्यान करने वाला; (पण्ह २, १; ठा ५, १)।

पुरिम वि [**पौरस्त्य**] अग्र-भव, अग्रेतन, आगे का; "इय पुव्वुत्तचउक्के भाणेसु पढमदुगि खु मिच्छत्तं। पुरिमदुगे सम्मत्तं" (संबोध ५२)।

पुरिम पुं [**दे**] प्रस्फोटन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष; "छ प्पुरिमा नव खोडा" (ओघ २६५)।

पुरिमताल न [**पुरिमताल**] नगर-विशेष; (विपा १, ३; औप)।

पुरिमिल्ल वि [**पूर्वीय**] पहले का, पुरातन, प्राचीन; "आसि नरा पुरिमिल्ला, ता किं अम्हेवि तह होमो" (चेइय ११५)।

पुरिल पुं [**दे**] दैत्य, दानव; (षड्)।

पुरिल्ल वि [**पुरातन**] पुरा-भव, पहले का, पूर्ववर्ती; (विसे १३२६; हे २, १६३)।

पुरिल्ल वि [**पौरस्त्य**] पुरो-भव, पुरो-वर्ती, अग्र-गामी; (से १३, २; हे २, १६३; प्राप्र; षड्)।

पुरिल्ल वि [**पौर**] पुर-भव, नागरिक; (प्राकृ ३५; हे २, १६३)।

पुरिल्ल वि [**दे**] प्रवर, श्रेष्ठ; (दे ६, ५३)।

पुरिल्ल देखो **पुरिल्ला=पुरा, पुरस्**; "पुरिल्लो" (हे २, १६४ टि; षड्)।

पुरिल्लदेव पुं [**दे**] असुर, दानव; (दे ६, ५५)।

पुरिल्लपहाणा स्त्री [**दे**] साँप की दाढ़; (दे ६, ५६)।

पुरिल्ला अ [**पुरा**] १ निरन्तर क्रिया-करण, विच्छेद-रहित क्रिया करना; २ प्राचीन, पुराना; ३ पुराने समय में; ४ भावी; ५ निकट, सन्निहित; ६ इतिहास, पुरावृत्त; (हे २, १६४)।

पुरिल्ला अ [**पुरस्**] आगे, अग्रतः; (हे २, १६४)।

पुरिस पुंन [**पुरुष**] १ पुमान्, नर, मर्द; (हे १, १२४; भग; कुमा; प्रासू १२६), "इत्थीणि वा पुरिसाणि वा" (आचा २, ११, १८)। २ जीव, जीवात्मा; (विसे २०६०; सूअ २, १, २३)। ३ ईश्वर; (सूअ २, १, २६)। ४ शङ्कु, छाया नापने का काष्ठादि-निर्मित कीलक; ५ पुरुष-शरीर; (णंदि)। °**कार**, °**क्कार**, °**गार** पुं [°**कार**] १ पौरुष, पुरुषत्व, पुरुष-चेष्टा, पुरुष-प्रयत्न; (प्रासू ४३; उवा; सुर २, ३५; उवर ४७)। २ पुरुषत्व का अभिमान; (औप)। °**जाय** पुं [°**जात**] १ पुरुष; २ पुरुष-जातीय; (सूअ २, १, ६; ७; ठा ३, १; २; ४, १)। °**जुग** न [°**युग**] क्रम-स्थित पुरुष; (सम ६८)। °**जेट्ठ** पुं [°**ज्येष्ठ**] प्रशस्त पुरुष; (पंचा १७, १०)। °**त्त**, °**त्तण** न [°**त्व**] पौरुष, पुरुषत्व; "नहि निवजुवइसत्तहिया पुरिसा पुरिसत्तणमुविंति" (सुर २, २४; महा; सुपा ८४)। °**त्थ** पुं [°**र्थ**] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुष-प्रयोजन; "सयलपुरिसत्थकारण-मइदुलहो माणुसो भवो एसो" (धर्मवि ८२; कुमा; सुपा १२६)। °**पुंडरीअ** पुं [°**पुण्डरीक**] इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न षष्ठ वासुदेव; (पव २१०)। °**प्पणीय** वि [°**प्रणीत**] १ ईश्वर-निर्मित; २ जीव-रचित; (सूअ २, १, २६)। °**मेह** पुं [°**मेध**] यज्ञ-विशेष, जिसमें पुरुष का होम किया जाय वह यज्ञ; (गज)। °**यार** देखो °**कार**; (गउड; सुर २, १६; सुपा २७१)। °**लक्खण** न [°**लक्षण**] कला-विशेष, पुरुष के शुभाशुभ चिह्न पहचानने की एक सामुद्रिक कला; (जं २)। °**लिंग** न [°**लिङ्ग**] पुरुष-चिह्न। °**लिंगसिद्ध** पुं [°**लिङ्ग-सिद्ध**] पुरुष-शरीर से जो मुक्त हुआ हो वह; (णंदि)। °**वयण** न [°**वचन**] पुंलिंग शब्द; (आचा २, ४, १, ३)। °**वर** पुं [°**वर**] श्रेष्ठ पुरुष; (औप)। °**वरगंधहत्थि** पुं [°**वरगन्धहस्तिन्**] १ पुरुषों में श्रेष्ठ गन्धहस्ती के तुल्य; २ जिन-देव; (भग; पडि)। °**वरपुंडरीय** पुं [°**वरपुण्ड-रीक**] १ पुरुषों में श्रेष्ठ पद्म के समान; २ जिन-देव, अर्हन्; (भग; पडि)। °**विजय** पुं [°**विचय**, °**विजय**] ज्ञान-विशेष; (सूअ २, २, २७)। °**वेय** पुं [°**वेद**] १ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पुरुष को स्त्री-संभोग की इच्छा होती है वह कर्म; २ पुरुष को स्त्री-भोग की अभिलाषा; (पण्ण २३; सम १५०)। °**सिंह**, °**सीह** पुं [°**सिंह**] १ पुरुषों में सिंह के समान, श्रेष्ठ पुरुष; २ पुं. जिनदेव, जिन भगवान्; (भग; पडि)। ३ भगवान् धर्मनाथ के प्रथम श्रावक का नाम;

(विचार ३७८)। ४ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पाँचवाँ वासुदेव; (सम १०५; पउम ५, १५५; पव २१०)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ले कर मोक्ष जाने वाला एक अन्तकृद् महर्षि, जो वसुदेव के अन्यतम पुत्र थे; (अंत १४)। २ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न होने वाले एक मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे; (अनु १)। °**ादाणिअ,** °**ादाणीय** पुं [°**आदानीय**] उपादेय पुरुष, आप्त पुरुष; (सम १३; कप्प)।

पुरिसाअ अक [**पुरुषाय्**] विपरीत मैथुन करना। वकृ—**पुरिसाअंत**; (गा १६६; ३६१)।

पुरिसाइअ न [**पुरुषायित**] विपरीत मैथुन; (दे १, ४२)।

पुरिसाइर वि [**पुरुषायितृ**] विपरीत रत करने वाला; "दर-पुरिसाइरि विसमिरि जाणसु पुरिसाण जं दुक्खं" (गा ५२; ४४६)।

पुरिसुत्तम } **पुरिसोत्तम** } पुं [**पुरुषोत्तम**] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ पुमान्; २ जिन-देव, अर्हन्; (सम १; भग; पडि)। ३ चौथा त्रिखण्डाधिपति, चतुर्थ वासुदेव; (सम ७०; पउम ५, १५५)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम श्रावक; (विचार ३७८)। ५ श्रीकृष्ण; (सम्मत्त २२६)।

पुरी स्त्री [**पुरी**] नगरी, शहर; (कुमा)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] नगरी का अधिपति, राजा; (उप ७२८ टी)।

पुरीस पुंन [**पुरीष**] विष्ठा; (णाया १, ८; उप १३६ टी; ३२० टी; पाअ), "मुत्तपुरीसे य पिक्खंति" (धर्मवि १६)।

पुरु पुं [**पुरु**] १ स्व-नाम-ख्यात एक राजा; (अभि १७६)। २ वि. प्रचुर, प्रभूत। स्त्री—**ई**; (प्राकृ २८)।

पुरुपुरिआ स्त्री [**दे**] उत्कण्ठा, उत्सुकता; (दे ६, ५)।

पुरुमिल्ल देखो **पुरिमिल्ल**; (गउड)।

पुरुव } **पुरुव्व** } देखो **पुव्व**=पूर्व; "ण ईरिसो दिट्ठपुरुवो" (स्वप्न ५५)। "अमंदआणंदगुंदलपुरुव्वं" (सुपा २२; नाट—मृच्छ १२१; पि १२५)।

पुरुस (शौ) देखो **पुरिस**; (प्राकृ ८३; स्वप्न २६; अवि ८५; प्रयौ ६६)।

पुरुसोत्तम (शौ) देखो **पुरिसोत्तम**; (पि १२४)।

पुरुहुअ पुं [**दे**] घूक, उल्लू; (दे ६, ५५)।

पुरुहूअ पुं [**पुरुहूत**] इन्द्र, देव-राज; (गउड)।

पुरूरव पुं [**पुरूरवस्**] एक चंद्र-वंशीय राजा; (पि ४०८; ४०६)।

पुरे देखो **पुरं**; "जस्स नत्थि पुरे पच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया" (आचा)। °**कड** वि [°**कृत**] आगे किया हुआ, पूर्व में किया हुआ; (औप; सूअ १, ५, २, १; उत्त १०, ३)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] पहले करने का काम, पूर्व में की जाती क्रिया; "पुरओ कयं जं तु तं पुरेकम्मं" (ओघ ४८६; हे १, ५७)। °**क्कार** पुं [°**कार**] सम्मान, आदर; (उत्त २६, ७; सुख २६, ७)। °**क्खड** देखो °**कड**; (पराण ३६—पत्र ७६६; पराह १, १)। °**वाय** पुं [°**वात**] १ सस्नेह वायु; २ पूर्व दिशा का पवन; (णाया १, ११—पत्र १७१)। °**संखडि** स्त्री [**दे. संस्कृति**] पहले ही किया जाता जिमनवार—भोजनोत्सव; (आचा २, १, २, ६; २, १, ४, १)। °**संथुय** वि [°**संस्तुत**] १ पूर्व-परिचित; २ स्व-पक्ष का सगा; (आचा २, १, ४, ५)।

पुरेस पुं [**पुरेश**] नगर-स्वामी; (भवि)।

पुरो देखो **पुरं**; (मोह ४६; कुमा)। °**अ,** °**ग** वि [°**ग**] अग्रगामी, अग्रेसर; (प्रति ४०; विसे २५४८)। °**गम** वि [°**गम**] वही अर्थ; (उप पृ ३५१)। °**भाइ** वि [°**भागिन्**] दोष को छोड़ कर गुण-मात्र को ग्रहण करने वाला; (नाट—विक्र ६७)।

पुरोकर सक [**पुरस्+कृ**] १ आगे करना। २ स्वीकार करना। ३ सम्मान करना। संकृ—**पुरोकरिअ, पुरोकाउं**; (मा १६; सूअ १, १, ३, १५)।

पुरोत्तमपुर न [**पुरोत्तमपुर**] एक विद्याधर-नगर का नाम; (इक)।

पुरोवग पुं [**पुरोपक**] वृक्ष-विशेष; (औप)।

पुरोह पुं [**पुरोधस्**] पुरोहित; (उप ७२८ टी; धर्मवि १४६)।

पुरोहड वि [**दे**] १ विषम, असम; २ पच्छोकड (?); (दे ६, १५)। ३ पुंन. आवृत भूमि का वास्तु; (दे ६, १५)। ४ अग्रद्वार, दरवाजा का अग्रभाग; (ओघ ६२२)। ५ बाडा, वाटक; "संझासमए पत्ते मज्झ बलद्दा पुरोहडस्संतो। मह दिट्ठीए दंसिवि ठाएयव्वा" (सुपा ५४५; बृह २)।

पुरोहिअ पुं [**पुरोहित**] पुरोधा, याजक, होम आदि से शान्ति-कर्म करने वाला ब्राह्मण; (कुमा; काल)।

पुल पुं [**दे. पुल**] छोटा फोड़ा, फुनसी; "ते पुला भिज्जंति" (ठा १०—पत्र ५२१)।

पुल वि [**पुल**] समुच्छ्रित, उन्नत; "पुलनिप्पुलाए" (दस १०, १६)।

पुल } सक [दृश्] देखना । पुलइ, पुलग्रइ; (प्राकृ
पुलअ } ७१; हे ४, १८१; प्राप्र ८, ६६) । पुलाइ; (गउड १०६३), पुलएमि; (गा ५३१) । वकृ—**पुलंत, पुलअंत, पुलएंत**; (कप्पू; नाट—मालवि ६; पउम ३, ७५; ८, १६०; सुर ११, १२०; १२, २०४; ७, २१२) । संकृ—**पुलइअ**; (स ६८६) ।

पुलअ पुं [**पुलक**] १ रोमाञ्च; (कुमा) । २ रत्न-विशेष, मणि की एक जाति; (पण्ण १; उत्त ३६, ७५; कप्प) । ३ जलचर जन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद; "सीमागारपुलु(? ल)-यसुंसुमार—" (पण्ह १, १—पत्र ७) । °**कंड** पुंन [°**कण्ड**] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक काण्ड; (ठा १०) ।

पुलअण वि [**दर्शन**] देखने वाला, प्रेक्षक; (कुमा) ।

पुलअण न [**पुलकन**] पुलकित होना; (कप्पू) ।

पुलआअ अक [**उत् + लस्**] उल्लसित होना, उल्लास पाना । पुलआअइ; (हे ४, २०२) । वकृ—**पुलआअमाण**; (कुमा) ।

पुलइअ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ; (गा ११८; सुर १४, ११; पाअ) ।

पुलइअ वि [**पुलकित**] रोमाञ्चित; (पाअ; कुमा ४, १६; कप्प; महा; गा २०) ।

पुलइज्ज अक [**पुलकाय्**] रोमाञ्चित होना । वकृ—**पुलइज्जंत**; (सण) ।

पुलइल्ल वि [**पुलकिन्**] रोमाञ्च-युक्त, रोमाञ्चित; (वज्जा १६४) ।

पुलएंत देखो **पुलअ**=दृश् ।

पुलंधअ पुं [**दे**] भ्रमर, भमरा; (षड्) ।

पुलंपुल न [**दे**] अनवरत, निरन्तर; (पण्ह १, ३—पत्र ४५; औप) ।

पुलक } देखो **पुलअ**=पुलक; (पि २०३ टि; णाया १,
पुलग } १; सम १०४; कप्प) ।

पुलाग } पुंन [**पुलाक**] १ असार अन्न; "धन्नमसारं भन्नइ
पुलाय } पुलायसद्देण" (संबोध २८; पव ६३), "निस्सारए होइ जहा पुलाए" (सूअ १, ७, २६) । २ चना आदि शुष्क अन्न; (उत्त ८, १२; सुख ८, १२) । ३ लहसुन आदि दुर्गन्ध द्रव्य; ४ दुष्ट रस वाला द्रव्य; "निविहं होइ पुलागं धणे गंधे य रसपुलाए य" (बृह ५) । ५ पुं. अपने संयम को निस्सार बनाने वाला मुनि, शिथिलाचारी साधुओं का एक भेद; (ठा ३, २; ५, ३; संबोध २८; पव ६३) ।

पुलासिअ पुं [**दे**] अग्नि-कण; (दे ६, ५५) ।

पुलिंद पुं [**पुलिन्द**] १ अनार्य देश-विशेष; (इक) । २ पुंस्त्री. उस देश में रहने वाला मनुष्य; (पण्ह १, १; औप; कप्पू; उत्त) । स्त्री—°**दी**; (णाया १, १; औप) ।

पुलिण न [**पुलिन**] तट, किनारा; "आइगणो नइपुलिणाओ" (पउम १०, ५४) । २ लगातार बाईस दिनों का उपवास; (संबोध ५८) ।

पुलिय न [**पुलित**] गति-विशेष; (औप) ।

पुलुट्ठ वि [**प्लुष्ट**] दग्ध; (पाअ) ।

पुलोअ सक [**दृश्, प्र + लोक्**] देखना । पुलोएइ; (हे ४, १८१; सुर १, ८६) । वकृ—**पुलोअंत, पुलोएंत**; (पि १०४; सुर ३, ११८) ।

पुलोअण न [**दर्शन, प्रलोकन**] विलोकन; (दे ६, ३०; गा ३३२) ।

पुलोइअ वि [**दृष्ट, प्रलोकित**] १ देखा हुआ; (सुर ३, १६४) । २ न. अवलोकन; (स ७, ५६) ।

पुलोएंत देखो **पुलोअ** ।

पुलोम पुं [**पुलोमन्**] दैत्य-विशेष । °**तणया** स्त्री [°**तनया**] शची, इन्द्राणी; (पाअ) ।

पुलोमी स्त्री [**पौलोमी**] इन्द्राणी; (प्राकृ १०; हे १, १६०)।

पुलोव देखो **पुलोअ** । पुलोविदि (शौ); (पि १०४) ।

पुलोस पुं [**प्लोष**] दाह, दहन; (गउड) ।

पुल्ल [**दे**] देखो **पोल्ल**; (सुज्ज ६, १) ।

पुल्लि पुंस्त्री [**दे**] १ व्याघ्र, शेर; (दे ६, ७६; पाअ) । २ सिंह, पञ्चानन, मृगेन्द्र; (दे ६, ७६) । स्त्री—को पियइ पयं च पुल्लीए" (सुपा ३१२) ।

पुव } सक [**प्लु**] गति करना, चलना । पुवंति; (पि
पुव्व } ४७३), पुव्वंति; (भग १५—पत्र ६७०; टी—पत्र ६७३) ।

पुव्व° देखो **पुण**=पू ।

पुव्व वि [**पूर्व**] १ दिशा, देश और काल की अपेक्षा से पहले का, आद्य, प्रथम; (ठा ४, ४; जी १; प्रासू १२२) । २ समस्त, सकल; ३ ज्येष्ठ भ्राता; (हे २, १३५; षड्) । ४ पुंन. काल-मान-विशेष, चौरासी लाख को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो उतने वर्ष; (ठा २, ४; सम ७४; जी ३७; इक) । ५ जैन ग्रन्थांश-विशेष, बारहवें अंग-ग्रन्थ का एक विशाल विभाग, अध्ययन, परिच्छेद; "चोद्दसपुव्वी" (विपा १, १) । ६ द्वन्द्व, वधू-वर आदि युग्म; "पुव्वट्ठा-

णाणि" (आचा २, ११, १३)। ७ पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान; (कम्म १, ७)। ८ कारण, हेतु; (णंदि)। °**कालिय** वि [°**कालिक**] पूर्व काल का, पूर्व काल से संबन्ध रखने वाला; (पणह १, २—पत्त २८)। °**गय** न [°**गत**] जैन शास्त्रांश-विशेष, बारहवें अंग का विभाग-विशेष; (ठा १०——पत्त ४६१)। °**ण्ह** पुं [°**ह्ण**] १ दिन का पूर्व भाग, सुबह से दो पहर तक का समय; (हे १, ६७)। २ तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप; (संबोध ५८)। °**तव** पुंन [°**तपस्**] वीतराग अवस्था के पहले का—सराग अवस्था का—तप; (भग)। °**दारिअ** वि [°**द्वारिक**] पूर्व दिशा में गमन करने में कल्याण-कारी (नक्षत्र); (सम १२)। °**द्ध** पुंन [°**ार्ध**] पहला आधा; (नाट)। °**धर** वि [°**धर**] पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान वाला; (पणह २, १)। °**पय** न [°**पद**] उत्सर्ग-स्थान; (निचू १)। °**पुट्ठवया** स्त्री [°**प्रोष्ठपदा**] नक्षत्र-विशेष; (सुज्ज १०, ५)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] पूर्वज, पुरखा; (सुर २, १६४)। °**प्पओग** पुं [°**प्रयोग**] पहले की क्रिया, पूर्व काल का प्रयत्न; (भग ८, ६)। °**फग्गुणी** स्त्री [°**फाल्गुनी**] नक्षत्र-विशेष; (राज)। °**भद्दवया** स्त्री [°**भाद्रपदा**] नक्षत्र-विशेष; (राज)। °**भव** पुं [°**भव**] गत जन्म, अतीत जन्म; (णाया १, १)। °**भविय** वि [°**भविक**] पूर्वजन्म-संबन्धी; (भवि)। °**य** पुं [°**ज**] पूर्व पुरुष, पुरखा; (सुपा २३२)। °**रत्त** पुं [°**रात्र**] रात्रि का पूर्व भाग; (भग; महा)। °**व** न [°**वत्**] अनुमान प्रमाण का एक भेद; (अणु)। °**विदेह** पुं [°**विदेह**] महाविदेह वर्ष का पूर्वीय हिस्सा; (ठा २, ३; इक)। °**समास** पुंन [°**समास**] एक से ज्यादः पूर्व-शास्त्रों का ज्ञान; (कम्म १, ७)। °**सुय** न [°**श्रुत**] पूर्व का ज्ञान; (राज)। °**सूरि** पुं [°**सूरि**] पूर्वाचार्य, प्राचीन आचार्य; (जीव १)। °**हर** देखो °**धर**; (पउम ११८, १२१)। °**ाणुपुव्वी** स्त्री [°**ानुपूर्वी**] क्रम, परिपाटी; (भग; विपा १, १; औप; महा)। °**ाण्ह** देखो °**ण्ह**; (हे १, ६७; षड्)। °**ाफग्गुणी** देखो °**फग्गुणी**; (सम ७; इक)। °**ाभद्दवया** देखो °**भद्दवया**; (सम ७)। °**ासाढा** स्त्री [°**ाषाढा**] नक्षत्र-विशेष; (सम ६)।

पुव्वंग पुंन [**पूर्वाङ्ग**] १ समय-परिमाण-विशेष, चौरासी लाख [illegible]; (ठा २, ४; इक)। २ पक्ष के पहले दिन का नाम, [illegible]; (सुज्ज १०, १४)।

[illegible] वि [**दे**] मुण्डित; (षड्)।

पुव्वा स्त्री [**पूर्वा**] पूर्व दिशा; (कुमा)।

पुव्वाड वि [**दे**] पीन, मांसल, पुष्ट; (दे ६, ५२)।

पुव्वामेव अ [**पूर्वमेव**] पहले ही; (कस)।

पुव्वावईणय न [**पूर्वावकीर्णक**] नगर-विशेष; (इक)।

पुव्वि वि [**पूर्विन्**] पूर्व-शास्त्र का जानकार; (विपा १, १; राज)।

पुव्वि, **पुव्विं** क्रिवि [**पूर्वम्**] पहिले, पूर्व में; (सण; उवा; सुर १, १६४; ४, १११; औप)। °**संथव** पुं [°**संस्तव**] पूर्व में की जाती श्लाघा, जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, भिक्षा-प्राप्ति के पहले दायक की स्तुति करना; (ठा ३, ४)।

पुव्विम पुंस्त्री [**पूर्वत्व**] पहिलापन, प्रथमता; (षड्)।

पुव्विल्ल वि [**पूर्व, पूर्वीय**] पहिले का, पूर्व का; "पुव्विल्ल-समं करणं" (चेइय ८८६), "पुव्विल्लए किंचिवि दुक्कम्मे" (निसा ४; सुपा ३४६; सण)।

पुव्वुत्त वि [**पूर्वोक्त**] पहले कहा हुआ, पूर्व में उक्त; (सुर २, २४८)।

पुव्वुत्तरा स्त्री [**पूर्वोत्तरा**] ईशान कोण; (राज)।

पुस सक [**प्र + उञ्छ्, मृज्**] साफ करना, शुद्ध करना, पोंछना। पुसइ; (प्राकृ ६६; हे ४, १०५; गा ४३३)। कवकृ— **पुसिज्जंत**; (गा २०६)।

पुस देखो **पुस्स**; (प्राकृ २६; प्राप्र)।

पुस पुं [**पौष**] मास-विशेष, पौष मास; "पुसो" (प्राकृ १०)।

पुसिअ वि [**प्रोञ्छित, मृष्ट**] पोंछा हुआ; (गउड; से १०, ४२; गा ५४)।

पुसिअ पुं [**पृषत**] मृग-विशेष; (गा ६२६)।

पुस्स पुं [**पुष्य**] १ नक्षत्र-विशेष, कृत्तिका से आठवाँ नक्षत्र; (प्राकृ २६; प्राप्र; सम ८; १७; ठा २, ३)। २ रेवती नक्षत्र का अधिपति देव; (सुज्ज १०, १२)। ३ ऋषि-विशेष; (राज)। °**माणअ**, °**माणव** पुं [°**मानव**] मागध, स्तुति-पाठक, भाट-चारण आदि; (णाया १, ८—पत्त १३३; टी—पत्त १३६)। देखो **पूस**=पुष्य।

पुस्सायण न [**पुष्यायण**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६)।

पुह, **पुहं** देखो **पिह**=पृथक्; (हे १, १८८)। °**ब्भूय** वि [°**भूत**] अलग, जो जुदा हुआ हो; (अज्झ ६०)।

पुहइ, **पुहई** स्त्री [**पृथिवी**] १ तृतीय वासुदेव की माता का नाम; (पउम २०, १८४)। २ एक नगरी का नाम; (पउम २०, १८८)। ३ भगवान् सुपार्श्वनाथ की

माता का नाम, (सुपा ३६)। ४—देखो **पुढवी, पुहवी**; (कुमा; हे १, ८८; १३१)। °**धर** पुं [°**धर**] राजा; (पउम ८५, ४)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] राजा; (सुपा १२२)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] राजा; (उप ७२८ टी)। °**पाल** पुं [°**पाल**] राजा; (सुर १, २४३)। °**राय** पुं [°**राज**] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का शाकम्भरी देश का एक राजा; "पुहईरायणा सयंभरीनरिंदेण" (मुणि १०८०१)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा; (सुपा २०१; २४८; ४१६)। °**वाल** देखो °**पाल**; (उप ६४८ टी)।

पुहईसर पुं [**पृथिवीश्वर**] राजा; (सुपा १०३; २४१)।

पुहत्त न [**पृथक्त्व**] १ भेद, पार्थक्य; (अणु)। २ विस्तार; (राज)। ३ बहुत्व; (भग १, २; ठा १०)। ४ वि. भिन्न, अलग; "अत्थपुहत्तस्स" (विसे १०६६)। **वियक्क** न [°**वितर्क**] शुक्ल ध्यान का एक भेद; (संबोध ५१)। देखो **पुहुत्त, पोहत्त**।

पुहत्तिय देखो **पोहत्तिय**; (भग)।

पुहय देखो **पिह**=पृथक्; "पुहय देवीणं" (कुमा)।

पुहवि° } देखो **पुढवी, पुहई**; (पि ३८६; श्रा १४; प्राप्र; **पुहवी** } प्रासू ५; ११३; सम १५१; स १५२)। ६ भगवान् श्रेयांसनाथ की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२६)। १० एक छन्द का नाम; (पिंग)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक राजा, (यति ५०)। °**पाल** पुं [°**पाल**] १ एक राज-कुमार; (उप ६८६ टी)। २ देखो **पुहई-पाल**; (सिरि ४५)। °**पुर** न [°**पुर**] एक नगर का नाम; (उप ८४४)।

पुहवीस पुं [**पृथिवीश**] राजा; (हे १, ६)।

पुहु वि [**पृथु**] विशाल, विस्तीर्ण। स्त्री—°**ई**; (प्राकृ २८)।

पुहुत्त न [**पृथक्त्व**] १ दो से नव तक की संख्या; (सम ४४; जी ३०; भग)। २—देखो **पुहत्त**; (ठा १०—पत्र ४७१; ४९५)।

पुहुवी देखो **पुहु-ई**; (हे २, ११३)।

पू° देखो **पुं°**। °**सुअ** पुं [°**शुक**] तोता, मर्द पिक-पक्षी; (गा ५६३ अ)।

पूअ सक [**पूजय्**] पूजा करना। पूएइ; (महा)। कर्म—पूइज्जसि; (गउड)। वकृ—**पूयंत**; (सुपा २२४)। कवकृ—**पूइज्जंत**; (पउम ३२, ६)। कृ—**पूअणीअ, पूएअव्व, पूअणिज्ज**; (नाट—मृच्छ १६५; उवर १६६; औप; णाया १, १ टी; पंचा २, ८; उप ३२० टी)। संकृ—**पूइऊण**; (महा)।

पूअ न [**दे**] दधि, दही; (दे ६, ५६)।

पूअ पुं [**पूग**] १ वृक्ष-विशेष, सुपारी का गाछ; (गउड)। २ न. फल-विशेष, सुपारी; (स ३४५)। देखो **पूग**। °**प्फली, °फली** स्त्री [°**फली**] सुपारी का पेड़; (पउम ५३, ७६; पण्ण १)।

पूअ न [**पूर्त**] तालाव, कुआँ आदि खुदवाना, अन्न-दान करना, देव-मन्दिर बनाना आदि जन-समूह के हित का कार्य; "परहियाणि इट्ठपुयाणि" (स ७१३)।

पूअ वि [**पूत**] १ पवित्र, शुद्ध; (णाया १, ५; औप)। २ न. लगातार छः दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ३ वि. सूर्प आदि से साफ—तुष-रहित किया हुआ; (णाया १, ७—पत्र ११६)।

पूअ न [**पूय**] पीब, दुर्गन्ध रक्त, व्रण से निकला हुआ गंदा सफेद बिगड़ा हुआ खून; (पण्ह १, १; णाया १, ८)।

पूअण न [**पूजन**] पूजा, सेवा; (कुमा; औप; सुपा ५८४; महा)।

पूअणा स्त्री [**पूजना**] १ ऊपर देखो; (पण्ह २, १; स ७६३; संबोध ६)। २ काम-विभूषा; (सूअ १, ३, ४, १७)।

पूअणा } स्त्री [**पूतना**] १ दुष्ट व्यन्तरी, डाइन, डाकिनी; **पूअणी** } (सूअ १, ३, ४, १३; पिंडभा ४१; सुपा २६; पण्ह १, ४)। २ गाडर, भेड़ी, मेषी; (सूअ १, ३, ४, १३)।

पूअय वि [**पूजक**] पूजा करने वाला; (सुर १३, १४३)।

पूअर देखो **पोर**=पूतर; (श्रा १४; जी १५)।

पूअल पुं [**पूप**] अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष; (दे ६, १८)।

पूअलिया स्त्री [**पूपिका**] ऊपर देखो; (पव ४)।

पूआ स्त्री [**दे**] पिशाच-गृहीता, भूताविष्ट स्त्री; (दे ६, ५४)।

पूआ स्त्री [**पूजा**] पूजन, अर्चा, सेवा; (कुमा)। °**भत्त** न [°**भक्त**] पूज्य के लिए निष्पादित भोजन; (बृह २)। °**मह** पुं [°**मह**] पूजोत्सव; (कुप्र ८५)। °**रह** [°**रथ**] राक्षस-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम, एक लंका-पति; (पउम ५, २५६)। °**रिह, °रुह** वि [°**र्ह**] पूजा-योग्य; (सुपा ४६१; अभि ११८)।

पूइ वि [**पूति**] १ दुर्गन्धी, दुर्गन्ध वाला; (पउम ४४, ५५; उप ७२८ टी; तंदु ४१)। २ अपवित्र; (पंचा १३, ५)। ३ स्त्री. दुर्गन्ध; ४ अपवित्रता; (तंदु ३८)। ५ भिक्षा का एक दोष, पूति-कर्म; (पिंड २६८)। ६ रोग-विशेष, एक नासिका-रोग, नासा-कोथ; (विसे २०८)। ७ पूय, पीब; "गलंतपूइनिवहं" (महा), "पूइवसरुहिरपुन्नं" (सुर १४, ४६), "जहा सुणी पूइकण्णी" (उत्त १, ४)। ८ वृक्ष-विशेष, एकास्थिक वृक्ष की एक जाति; "पूई य निंबकरए" (पण्ण १—पत्र ३१)। °**कम्म** पुंन [°**कर्मन्**] मुनि-भिक्षा का एक दोष, पवित्र वस्तु में अपवित्र वस्तु को मिला कर दी जाती भिक्षा का ग्रहण; (ठा ३, ४ टी; औप; पंचा १३ ५)। °**म** वि [°**मत्**] १ दुर्गन्धी; २ अपवित्र; (तंदु ३८)।

पूइआलुग न [**दे. पूत्यालुक**] जल में होने वाली वनस्पति-विशेष; (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)।

पूइज्जंत देखो **पूअ**=पूजय्।

पूय वि [**पूजित**] अर्चित, सेवित; (औप; उव)।

पूइय वि [**पूतिक**] १ अपवित्र, अशुद्ध, दूषित; (पराह २, ५; उप पृ २१०)। २ दुर्गन्धी, दुष्ट गन्ध वाला; (णाया १, ८; तंदु ४१)। ३ पूति-नामक भिक्षा-दोष से युक्त; (पिंड २६८)।

पूइय देखो **पोइअ**=(दे); "बलो गओ पूइयावणं" (सुख ३, २६; उप)।

पूएअव्व देखो **पूअ**=पूजय्।

पूंडरिअ न [**दे**] कार्य, काम, काज, प्रयोजन; (दे ६, ५७)।

पूग पुं [**पूग**] १ समूह, संघात; (मोह २८)। २ देखो **पूअ**=पूग; (स ७०; ७१)।

पूगी स्त्री [**पूगी**] सुपारी का पेड़। °**फल** न [°**फल**] सुपारी; (रयण ५५)।

पूज देखो **पूअ**=पूजय्। कर्म—पुज्जए; (उव)। वकृ—**पूजयंत**; (विसे २८८८)। कृ—**पूज्ज, पूज**; (पउम ११, ६७; सुपा १८०; सुर १, १७; उवर १६६; उव; उप ५६८)।

पूजग देखो **पूअय**; (पंचा ४, ४४)।

पूजण देखो **पूअण**; (पंचा ६, ३८)।

पूजा देखो **पूआ**=पूजा; (उप १०१६)।

पूजिय देखो **पूइय**=पूजित; (औप)।

पूण पुं [**दे**] हस्ती, हाथी; (दे ६, ५६)।

पूणिआ } **पूणी** } स्त्री [**दे**] पूणी, रुई को पहल; (दे ६, ७८; ६, ५६)।

पूप देखो **पूअल**; (पिंड ५५७)।

पूयंत देखो **पूअ**=पूजय्।

पूयावणा स्त्री [**पूजना**] पूजा कराना; (संबोध १५)।

पूर सक [**पूरय्**] पूर्ति करना, भरना। पूरइ, पूरए; (हे ४, १६९; औप; भग; महा; पि ४६२)। वकृ—**पूरंत, पूरयंत**; (कुमा; कप्प; औप)। कवकृ—**पुज्जंत, पुज्जमाण, पूरिज्जंत, पूरंत, पूरमाण**; (उप पृ १५४; सुपा ६८; उप १३९ टी; भवि; गा ११६; से ११, ६३; ६, ६७)। संकृ—**पूरित्ता**; (भग), **पूरि** (अप); (पिंग)। हेकृ—**पूरइत्तए**; (पि ५७८)। कृ—**पूरिअव्व**; (से ११, ४४)।

पूर पुं [**पूर**] १ जल-समूह, जल-प्रवाह, जल-धारा; (कुमा)। २ खाद्य-विशेष; "कप्पूरपूरसहिए तंबोले" (सुर २, ६०)। ३ वि. पूरा, पूर्ण; "पूराणि य से समं पणइमणोरहेहिं अज्जेव सत्त राइंदियाइं, भविस्सइ य सुए सामिणो विज्जासिद्धी" (स ३६३)।

पूरइत्तअ (शौ) वि [**पूरयितृ**] पूर्ण करने वाला; (मा ४३)।

पूरंतिया स्त्री [**पूरयन्तिका**] राजा की एक परिषत्—परिवार; (राज)।

पूरग वि [**पूरक**] पूर्ति करने वाला; (कप्प; औप; रयण ७७)।

पूरण न [**पूरण**] शूर्प, सूप, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है; (दे ६, ५६)।

पूरण न [**पूरण**] १ पूर्त्ति; "समस्सापूरणं" (सिरि ८६८)। २ पालन; (आचू ५)। ३ पुं. यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र; (अंत ३)। ४ एक गृह-पति का नाम; (उवा)। ५ वि. पूर्त्ति करने वाला; (राज)।

पूरमाण देखो **पूर**=पूरय्।

पूरय देखो **पूरग**; "बत्तीसं किर कवला आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ" (पिंड ६४२)।

पूरयंत } **पूरिअव्व** } देखो **पूर**=पूरय्।

पूरिगा स्त्री [**पूरिका**] मोटा कपड़ा; (राज)।

पूरिम वि [**पूरिम**] पूरने से—भरने से—होने वाला; (णाया १, १३; पराह २, ५; औप)।

पूरिमा स्त्री [**पूरिमा**] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३९३)।

पूरिय वि [**पूरित**] भरा हुआ; (गउड; सण; भवि)।
पूरी स्त्री [**पूरी**] तन्तुवाय का एक उपकरण; (दे ६, ५६)।
पूरेंत देखो **पूर**=पूरय् ।
पूरोट्टी स्त्री [**दे**] अवकर, कतवार, कूड़ा; (दे ६, ५७)।
पूल पुंन [**पूल**] पूला, घास की अँटिया; (उप ३२० टी; कुप्र २१५)।
पूव } देखो **पूअल**; (कस; दे ६, ११२; निचू १)।
पूवल }
पूवलिआ } देखो **पूअलिया**; (बृह १; निचू १६)।
पूविगा }
पूस अक [**पुष्**] पुष्ट होना। पूसइ; (हे ४, २३६; प्राकृ ६८)।
पूस देखो **पुस्स**=पुष्य; (णाया १, ८; हे १, ४३)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] एक जैन मुनि; (कप्प)। °**फली** स्त्री [**फली**] वल्ली-विशेष; (पराग १)। °**माण, °माणग** पुं [°**माण, °मानव**] मागध, मङ्गल-पाठक; "—वद्धमाणपूसमाणवंटियग-ऐहिं" (कप्प; औप)। °**माणग** पुं [°**मानक**] ज्योतिर्देवता-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३)। °**माणय** देखो °**माण**; (औप)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैन मुनि-त्रय—१ घृतपुष्यमित्र; २ वस्त्रपुष्यमित्र; ३ दुर्वलिकापुष्यमित्र, जो आर्य रक्षितसूरि के शिष्य थे; (विसे २५१०; २२८६)। २ एक राजा; (विचार ४९३)। °**मित्तिय** न [°**मित्रीय**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।
पूस पुं [**दे**] १ राजा सातवाहन; (दे ६, ८०)। २ शुक, तोता; (दे ६, ८०; गा २६३; वज्जा १३४; पाअ)।
पूस पुं [**पूषन्**] १ सूर्य, रवि; (हे ३, ५६)। २ मणि-विशेष; (पउम ६, ३६)।
पूसा स्त्री [**पुष्या**] व्यक्ति-वाचक नाम, कुण्डकोलिक श्रावक की पत्नी; (उवा)।
पूसाण देखो **पूस**=पूषन्; (हे ३, ५६)।
°**पूह** पुं [**अपोह**] विचार, मीमांसा; "ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स" (औप; पि १४२; २८६)। देखो **अपोह**=अपोह ।
पृथुम (पै) देखो **पढम**; "पृथुमसिनेहो" (प्राकृ १२४)।
पेअ पुं [**प्रेत**] १ व्यन्तर-भेद, एक देव-जाति; (सुपा ४६१; ४६२; जय २६)। २ मृतक; (पउम ५, ६०)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] अन्त्येष्टि क्रिया, मृत का दाहादि कार्य; (पउम २३, २४)। **करणिज्ज** न [°**करणीय**] अन्त्येष्टि क्रिया; (पउम ७५, १)। °**काइय** त्रि [°**कायिक**] प्रेत-योनि में उत्पन्न, व्यन्तर-विशेष; (भग ३, ७)। °**देवयकाइय** त्रि [°**देवताकायिक**] प्रेत देवता का, प्रेत-सम्बन्धी; (भग ३, ७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] यमराज, जम; (स ३१६)। °**भूमि, °भूमी** स्त्री [°**भूमि, °मी**] श्मशान; (सुपा २६५)। °**लोय** पुं [°**लोक**] श्मशान; (पउम ८६, ४३)। °**वइ** पुं [°**पति**] यम; (उप ७२८ टी)। °**वण** न [°**वन**] श्मशान; (पाअ; सुर १६, २०४; वज्जा २; सुपा ५१२)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] यम, जमराज; (पाअ)।
पेअ वि [**प्रेयस्**] अतिशय प्रिय। स्त्री—**सी**; (सम्मत्त १७५)
पेअ } देखो **पा**=पा।
पेअव्व }
पेआ स्त्री [**पेया**] यवागू, पीने की वस्तु-विशेष; (हे ९, २४८)।
पेआल न [**दे**] १ प्रमाण; (दे ६, ५७; विसे १६६ टी; णंदि; उव)। २ विचार; (विसे १३६१)। ३ सार, रहस्य; (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; उप पृ २०७)। ४ प्रधान, मुख्य; (उवा)।
पेआलणा स्त्री [**दे**] प्रमाण-करण; "पज्जव-पेयालणा पिंडो" (पिंड ६५)।
पेआलुय वि [**दे**] विचारित; (विसे १४८२)।
पेइअ वि [**पैतृक**] १ पिता से आया हुआ, पितृ-क्रम-प्राप्त; "पेइओ धम्मो" (पउम ८२, ३३; सिरि ३४८; स ५६६)। २ न. स्त्री के पिता का घर, पीहर, नैहर, मैका; "ना जा कुले कलंके नो पयडइ ताव पेइए एयं पेसेमि", "विसज्जेण तओ भणियं गच्छ पिए पेइयमियाणिं" (सुपा ६००)।
पेईहर न [**पितृगृह, पैतृकगृह**] पीहर, स्त्री के पिता का घर; "इय चिंतिऊण सिग्घं धणसिरिपेईहरम्मि संचलिओ" (सुपा ६०३)।
पेऊस न [**पीयूष**] अमृत, सुधा; (हे १, १०५; गा ६५; कप्पू)। °**ासण** पुं [°**ाशन**] देव, सुर; (कुमा)।
पेंखिअ वि [**प्रेङ्खित**] कम्पित; (कप्पू)।
पेंखोल अक [**प्रेङ्खोलय्**] झूलना, हिलना। वकृ—**पेंखोल-माण**; (णाया १, १—पत्र ३१)।
पेंड देखो **पिंड**=पिण्ड; (हे १, ८५; प्राकृ ५; प्राप्र; कुमा)।
पेंड न [**दे**] १ खण्ड, टुकड़ा; २ वलय; (दे ६, ८१)।
पेंडधव पुं [**दे**] खड्ग, तलवार; (दे ६, ५६)।

पेंडवाल वि [**दे**] देखो **पेंडलिअ**; (दे ६, ५४)।

पेंडय पुं [**दे**] १ तरुण, युवा; २ षण्ढ, नपुंसक; (दे ६, ५३)।

पेंडल पुं [**दे**] रस; (दे ६, ५८)।

पेंडलिअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ; (दे ६, ५४)।

पेंडव सक [**प्र+स्थापय्**] १ रखना, स्थापन करना। २ प्रस्थान कराना। पेंडवइ; (हे ४, ३७)।

पेंडविर वि [**प्रस्थापयितृ**] प्रस्थापन करने वाला; (कुमा)।

पेंडार पुं [**दे**] १ गोप, गो-पाल; २ महिषी-पाल; (दे ६, ५८)।

पेंडोली स्त्री [**दे**] क्रीड़ा; (दे ६, ५६)।

पेंढा स्त्री [**दे**] कलुष सुरा, पंक वाली मदिरा; (दे ६, ५०)।

पेंत देखो **पा**=पा।

पेक्ख सक [**प्र+ईक्ष्**] देखना, अवलोकन करना। पेक्खइ, पेक्खए; (सण; पिंग)। वकृ—**पेक्खंत**; (पि ३६७)। कवकृ—**पेक्खिज्जंत**; (से १५, ६३)। संकृ—**पेक्खिअ**, **पेक्खिऊण**; (अभि ४२; काप्र १५८)। कृ—**पेक्खणिज्ज**; (नाट—वेणी ७३)।

पेक्खअ } वि [**प्रेक्षक**] देखने वाला, निरीक्षक, द्रष्टा; (सुर
पेक्खग } ७, ८०; स ३७६; महा)।

पेक्खण न [**प्रेक्षण**] निरीक्षण, अवलोकन; (सुपा १६६; अभि ५३)।

पेक्खणग } न [**प्रेक्षणक**] खेल, तमाशा, नाटक; (सुर ७,
पेक्खणय } १८२; कुप्र ३०)।

पेक्खणा स्त्री [**प्रेक्षणा**] निरीक्षण, अवलोकन; (ओघ ३)।

पेक्खा स्त्री [**प्रेक्षा**] ऊपर देखो; (पउम ७२, २६)। देखो **पेच्छा**।

पेक्खिय देखो **पेच्छिअ**; (राज)।

पेखिल (अप) वि [**प्रेक्षित**] दृष्ट; (रंभा)।

पेच्च } अ [**प्रेत्य**] परलोक, आगामी जन्म; (भग; औप)।
पेच्चा } "संबोही खलु पेच्च दुल्लहा" (वै ७३)। °**भव** पुं [°**भव**] आगामी जन्म, पर लोक; (औप)। °**भाविअ** वि [°**भाविक**] जन्मान्तर-संबन्धी; (पगह २, २)।

पेच्चा देखो **पिअ**=पा।

पेच्छ सक [**दृश्**, **प्र+ईक्ष्**] देखना। पेच्छइ, पेच्छए; (हे ४, १८१, उव; महा; पि ४५७)। भवि—पेच्छिहिसि; (पि ५२५)। वकृ—**पेच्छंत**; (गा ३७३; महा)। संकृ—**पेच्छिऊण**; (पि ५८५)। हेकृ—**पेच्छिउं**, **पेच्छित्तए**; (उव ७२८ टी; औप)। कृ—**पेच्छणिज्ज**, **पेच्छिअव्व**; (गा ६६; औप; पगह १, ४; से ३, ३३)।

पेच्छ वि [**प्रेक्ष**] द्रष्टा, दर्शक; "अपरमत्थपेच्छो" (स ७१५)।

पेच्छग देखो **पेक्खग**; (भास ४७; धर्मसं ७४३)।

पेच्छण देखो **पेक्खण**; (सुपा ३७)।

पेच्छणग } देखो **पेक्खणग**; (पंचा ६, ११; महा)।
पेच्छणय }

पेच्छय वि [**प्रेक्षक**] द्रष्टा, निरीक्षक; (पउम ८६, ७१; स ३६१; गा ४६८)।

पेच्छय वि [**दे**] जो देखे उसीको चाहने वाला, दृष्ट-मात्र का अभिलाषी; (दे ६, ५८)।

पेच्छा स्त्री [**प्रेक्षा**] प्रेक्षणक, तमाशा, खेल, नाटक; "पेच्छाछणो सिरणविलोअणाण जहा सुचोक्खोवि न किंचिदेव" (उप ३७; सुर १३, ३७; औप)। देखो **पेक्खा**। °**घर** न [°**गृह**] देखो °**हर**; (ठा ४, २)। °**मंडव** पुं [°**मण्डप**] नाट्य-गृह, खेल आदि में प्रेक्षकों को बैठने का स्थान; (पव २६६)। °**हर** न [°**गृह**] नाटक-गृह, खेल-तमाशा का स्थान; (पउम ८०, ५)।

पेच्छि वि [**प्रेक्षिन्**] प्रेक्षक, द्रष्टा; (चेइय १०६; गा २१४)।

पेच्छिअ वि [**प्रेक्षित**] १ निरीक्षित, अवलोकित; (कुमा)। २ न. निरीक्षण, अवलोकन; (सुर १२, १८३; गा २२५)।

पेच्छिर वि [**प्रेक्षितृ**] निरीक्षक, द्रष्टा; (गा १७४; ३७१)।

पेज्ज देखो **पा**=पा।

पेज्ज पुंन [**प्रेमन्**] प्रेम अनुराग; (सूअ २,५, २२; आचा; भग; ठा १; चेइय ६३४)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] अनुरागी; (आचा)।

पेज्ज वि [**प्रेयस्**] अत्यन्त प्रिय; (औप)।

पेज्ज वि [**प्रेज्य**] पूज्य, पूजनीय; (राज)।

पेज्ज देखो **पेर**=प्र+ईरय्।

पेज्जल न [**दे**] प्रमाण; (दे ६, ५७)।

पेज्जलिअ वि [**दे**] संघटित; (षड्)।

पेज्जा देखो **पेआ**; (ओघ १४६; हे १, २४८)।

पेज्जाल वि [**दे**] विपुल, विशाल; (दे ६, ६)।

पेट } न [**दे**] पेट, उदर; (पिंग; पव १)।
पेट्ट }

पेट्ठ देखो **पिट्ठ**=पिष्ट; (संक्षि ३; प्राकृ ५; प्राप्र)।

पेड देखो **पेडय**; "नडपेडनिहा" (संबोध १८)।

पेडइअ पुं [**दे**] धान्य आदि बेचने वाला वणिक्; (दे ६, ५६)।

पेडग पुंन [**पेटक**] समूह, यूथ; "सहपंडकसंनिहा जाण" **पेडय** (... सूपा ५६६; सिरि ... महा)।

पेडा स्त्री [**पेटा**] १ मञ्जूषा, पेटी; (दे ४, ३७; महा)। २ पेटा के आकार की गृह-पंक्ति में भिक्षार्थ-भ्रमण; (उत ३०, १६)।

पेडाल पुं [**दे. पेटाल**] बड़ी मञ्जूषा, बड़ी पेटी; (सुपा ११०)।

पेडावइ पुं [**पेटकपति**] यूथ का नायक; (सुपा ५८६)।

पेडिआ स्त्री [**पेटिका**] मञ्जूषा; (सुपा २४०)।

पेड्डु पुं [**दे**] महिष, भैंसा; (दे ६, ८०)।

पेड्डा स्त्री [**दे**] १ भित्ति, भींत; २ द्वार, दरवाजा; ३ महिषी, भैंस; (दे ६, ८०)।

पेढ देखो **पीढ**=पीठ; (हे १, १०६; कुमा), "काऊण पेढं ठविया तत्थ एसा पडिमा" (कुप्र ११७)।

पेढाल वि [**दे**] १ विपुल; (दे ६, ६; गउड)। २ वर्तुल, गोलाकार; (दे ६, ६; गउड; पात्र)।

पेढाल वि [**पीठवत्**] पीठ-युक्त; (गउड)।

पेढाल पुं [**पेढाल**] १ भारत वर्ष का आठवाँ भावी जिन-देव; "पेढालं अट्ठमयं आणंदजियं नमंसामि" (पव ४६)। २ ग्यारह रुद्र पुरुषों में दसवाँ; (विचार ४७३)। ३ एक ग्राम, जहाँ भगवान् महावीर का विचरण हुआ था; "पेढालग्गाम-मागओ भयवं" (आवम)। ४ न. एक उद्यान; "तओ सामी दढभूमि गओ, तीसे बाहिं पेढालं नाम उज्जाणं" (आव १)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] १ भारतवर्ष का आठवाँ भावी जिन-देव; "उदए पेढालपुत्ते य" (सम १५३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ के संतान में उत्पन्न एक जैन मुनि; "अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिज्जे नियंठे मेयज्जे गोत्तेणं" (सूअ २, ७, ४; ८; ६)। ३ भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि; (अनु २)।

पेढिया देखो **पीढिआ**; "चत्तारि मणिपेढियाओ" (ठा ४, २—पत्र २३०), २ ग्रन्थ की भूमिका, प्रस्तावना; (वसु)।

पेढी देखो **पीढी**; (ओघ ३)।

पेणी स्त्री [**प्रैणी**] हरिणी का एक भेद; (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

पेदंड वि [**दे**] द्यूत-कारक, जुए में जो हार गया हो वह, जिसका दाव चला गया हो वह; (सुख ४८)।

पेम पुन [**प्रेमन्**] प्रेम, अनुराग, प्रीति, स्नेह; (उवा; औप; सं ५; सुपा २०४; रयण ४२)।

पेमालुअ वि [**प्रेमिन्**] प्रेमी, अनुरागी; (उप ७२८ टी)।

पेम्म देखो **पेम**; (हे २, ९८; ३, २५; कुमा; गा १२६; प्रासू ११२)।

पेम्मा स्त्री [**प्रेमा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पेर सक [**प्र + ईरय्**] १ पठाना, भेजना, प्रेरणा करना। २ धक्का लगाना, आघात करना। ३ आदेश करना। ४ किसी कार्य में जोड़ना —लगाना। ५ पूर्वपक्ष करना, प्रश्न करना, सिद्धान्त का विरोध करना। ६ गिराना। पेरइ; (धर्मसं ६६०; भवि)। वकृ—**पेरंत**; (कुप्र ४०; पिंग)। कवकृ—**पेरिज्जंत**; (सुपा २५१; महा)। कृ—**पेज्ज**; (राज)।

पेरंत देखो **पज्जंत**; (हे १, ५८; २, ६५; प्राप्र; औप; गउड)। °**चक्कवाल** न [°**चक्रवाल**] बाह्य परिधि, बाहर का घेराव; (पण्ह १, ३)। °**वच्च** न [°**वर्चस्**] मण्डप, तृणादि-निर्मित गृह; (राज)।

पेरग वि [**प्रेरक**] प्रेरणा करने वाला, पूर्वपक्षी; (धर्मसं ५८७)।

पेरण न [**दे**] १ ऊर्ध्व स्थान; (दे ६, ५६)। २ खेल, तमाशा; (स ७२३; ७२४)।

पेरण न [**प्रेरण**] प्रेरणा; (कुप्र ७०)।

पेरणा स्त्री [**प्रेरणा**] ऊपर देखो; (सम्मत्त १५७)।

पेरिअ वि [**प्रेरित**] जिसको प्रेरणा की गई हो वह; (उ ८, १२; भवि)।

पेरिज्ज न [**दे**] साहाय्य, सहायता, मदद; (दे ६, ५८)।

पेरिज्जंत देखो **पेर**=प्र + ईरय्।

पेरुल्लि वि [**दे**] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ; (दे ६, ५४)।

पेलव वि [**पेलव**] १ कोमल, सुकुमाल, मृदु; (पात्र; से २, २७; अभि २६; औप)। २ पतला, कृश; ३ सूक्ष्म, लघु; (गाया १,१—पत्र २५; हे १, २३८)।

पेलु स्त्री [**पेलु**] पूणी, रुई की पहल; "कत्तामि ताव पेलु" (पिंड ३५)। °**करण** न [°**करण**] पूणी बनाने का उप-करण, सलाका आदि; (विसे ३३०३)।

पेल्ल सक [**क्षिप्**] फेंकना। पेल्लइ; (हे ४, १४३)। कर्म—पेल्लिज्जइ; (उव)। वकृ—**पेल्लंत**; (कुमा)। संकृ—**पेल्लिऊण**; (महा)।

पेल्ल देखो **पेर**=प्र+ईरय्। पेल्लेइ; (प्राकृ ६०)। कवकृ—**पेल्लिज्जंत**; (से ६, २५)। संकृ—**पेल्लि** (अप), **पेल्लिअ**; (पिंग)। कृ—**पेल्लेयव्व**; (ओघभा १८ टी)।

पेल्ल सक [**पीडय्**] पीलना, दबाना, पोड़ना। पेल्लेसि, पेल्लिसि; (स ५७४ टि)।

पेल्ल सक [**पूरय्**] पूरना, भरना। कवकृ—**पेल्लिज्जंत**; (से ६, २५)।

पेल्ल, **पेल्लग** पुंन [**दे**] बच्चा, शिशु, बालक; (उप २१६), "बीयम्मि पेल्लगाइं" (उप २२० टी)।

पेल्लग देखो **पेरग**; (निचू १६)।

पेल्लण देखो **पेरण**; (पराह १,३; गउड)।

पेल्लण न [**क्षेपण**] फेंकना; (धर्म २)।

पेल्लय [**दे**] देखो **पेल्ल**=(दे); (विपा १,२—पत्न ३६), "सपेल्लियं सियालिं" (सुख २, ३३)।

पेल्लय देखो **पेरग**; (बृह १)।

पेल्लय पुं [**पेल्लक**] भगवान् महावीर के पास दिक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि; (अनु २)।

पेल्लव, **पेल्लाव** देखो **पेर**। पेल्लवइ, पेल्लावइ; (प्राकृ ६०)।

पेल्लिअ वि [**दे. पीडित**] पीडित; (दे ६, ५७), "वलियदाइयपेल्लिओ" (महा)।

पेल्लिअ देखो **पेरिअ**; (गा २२१; विपा १, १)।

पेल्लेयव्व देखो **पेल्ल**=प्र+ईरय्।

पेव्वे अ. आमन्त्रण-सूचक अव्यय; (षड्)।

पेस सक [**प्र+एषय्**] भेजना, पठाना। पेसइ, पसेइ; (भवि; महा)। वकृ—**पेसअंत**; (पि ४६०; रंभा)। संकृ—**पेसिअ, पेसिउं**; (मा ४०; महा)। कृ—**पेसइयव्व, पेसिअव्व; पेसेयव्व**; (सुपा ३००; २७८; ६३०; उप १३६ टी)।

पेस देखो **पीस**। वकृ—**पेसयंत**; (राज)।

पेस पुंस्त्री [**प्रेष्य**] १ कर्मकर, नौकर, दास, चाकर; (सम १९; सूअ १, २, २, ३; उवा)। २ वि. भेजने योग्य; (हे २, ९२)।

पेस पुं [**दे. पेश**] १ सिन्ध देश में होने वाली एक पशु-जाति; (आचा २, ५, १, ८)।

पेस वि [**दे. पैश**] पेश-नामक जानवर के चमड़े का बना हुआ (वस्त्र); (आचा २, ५, १, ८)।

पेसण न [**दे**] कार्य, काज, प्रयोजन; (दे ६, ५७; भवि; णाया १, ७—पत्न ११७; पउम १०३, ३६)।

पेसण न [**प्रेषण**] १ पठाना, भेजना; २ नियोजन, व्यापारण; (कुमा; गउड)। ३ आज्ञा, आदेश; (से ३, ५४)।

पेसणआरी, **पेसणआली** स्त्री [**दे**] दूती, दूत-कर्म करने वाली स्त्री; (दे ६, ५९; षड्)।

पेसणा स्त्री [**पेषण**] पीसना, पेषण; "सिलाए जवगोहुमपेसणाए हेऊए" (उप ५९७ टी)।

पेसल वि [**पेशल**] १ सुन्दर, मनोज्ञ; (आचा; गउड)। २ मधुर, मञ्जु; (पाअ)। ३ कोमल; (गउड)।

पेसल, **पेसलेस** न [**दे**] सिन्ध देश के पेश-नामक पशु के चर्म के सूक्ष्म पक्ष्म से निष्पन्न वस्त्र; "पेसाणि वा पेसलाणि वा" (२ आचा २, ५, १—सूत्र १४५), "पेसाणि वा पेसलेसाणि वा" (३ आचा २, ५, १, ८; राज)।

पेसव सक [**प्र+एषय्**] भेजवाना। कृ—**पेसवेयव्व**; (उप १३६ टी)।

पेसवण न [**प्रेषण**] भेजवाना, दूसरे के द्वारा प्रेषण; (उवा; पडि)।

पेसविअ वि [**प्रेषित**] भेजवाया हुआ; प्रस्थापित; (पाअ; उप पृ ५८)।

पेसाय वि [**पैशाच**] पिशाच-संबन्धी; (बृह २)।

पेसि स्त्री [**पेशि**] देखो **पेसी**; (सुपा ४८७)।

पेसिअ वि [**प्रेषित**] १ भेजा हुआ, प्रहित; (गा ११२; भवि; काल)। २ प्रेषण; (पउम ६, ३५)।

पेसिआ स्त्री [**पेशिका**] खण्ड, टुकड़ा, "अंबपेसिया ति वा अंबाडगपेसिया ति वा" (अनु ६; आचा २, ७, २, ७; ८; ९)।

पेसिआर पुं [**प्रेषितकार**] नौकर, भृत्य, कर्मकर; (पउम ६, ३५)।

पेसिदवंत (शौ) वि [**प्रेषितवत्**] जिसने भेजा हो वह; (पि ५६९)।

पेसी स्त्री [**पेशी**] मांस-खण्ड, मांस-पिण्ड; (तंदु ७)। देखो **पेसिआ**।

पेसुण्ण, **पेसुन्न** न [**पैशुन्य**] परोक्ष में दोष-कीर्तन, चुगली; (औप; सूअ १, १६, २; णाया १, १; भग; सुपा ४२१)।

पेसेयव्व देखो **पेस**=प्र+इषय्।

पेस्सिदवंत देखो **पेसिदवंत**; (पि ५६६)।

पेह सक [**प्र+ईक्ष्**] १ देखना, निरीक्षण करना, ध्यान-पूर्वक देखना। २ चिन्तन करना। पेहइ, पेहए; (पि ८४; उवा), पेहंति; (कुप्र १९२)। भवि—पेहिस्सामि; (पि ५३०)। वकृ—**पेहंत**, **पेहमाण**; (उप्र १५४; चेइय २५०; पि ३२३)। संकृ—**पेहाए**, **पेहिया**; (कस; पि ३२३)।

पेहण न [**प्रेक्षण**] निरीक्षण; (पंचा ४, ११)।

पेहा स्त्री [**प्रेक्षण**] १ निरीक्षण; (उवः नम ३२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग में बन्दर की तरह ओष्ठ-पुट को हिलाते रहना; (पव ५)। ३ पर्यालोचन, चिन्तन; (आव ४)। ४ बुद्धि, मति; (उत्त १, २७)।

पेहाविय वि [**प्रेक्षित**] दर्शित, दिखलाया हुआ; (उप पृ ३८८)।

पेहि वि [**प्रेक्षिन्**] निरीक्षक; (आचा; उव)। स्त्री—°णी; (पि ३२३)।

पेहिय वि [**प्रेक्षित**] निरीक्षित; (महा)।

पेहुण न [**दे**] १ पिच्छ, पँख; (दे ६, ५८; पाअ; गा १७३; ७६५; वज्जा ४४; भत्त १४१; गउड)। २ मयूर-पिच्छ, मयूर-पंख, शिखण्ड; (पराह १, १; २, ५; जं १; णाया १, ३)। देखो **पिहुण**।

पोअ सक [**प्र+वे**] पिरोना, गूँथना। पोअंति; (गच्छ ३, १८; सुअनि ७४)। वकृ—**पोयमाण**; (स ५१२)। संकृ—**पोइऊण**; (धर्मवि ६७)।

पोअ वि [**प्रोत**] पिरोया हुआ; (दे १, ७६)।

पोअ पुं [**पोत**] १ जहाज, प्रवहण, नौका; (पाअ; सुपा ८८; ३६६)। २ बालक, शिशु, बच्चा; (दे ६, ८१; पाअ; सुपा ३६६)। ३ न. वस्त्र, कपड़ा; (ठा ३, १—पत्र ११४)।

पोअ पुं [**दे**] १ भव वृक्ष, धाय, धौ का पेड़; २ छोटा साँप; (दे ६, ८१)।

पोअइआ स्त्री [**दे**] निद्राकरी लता, लता-विशेष; (दे ६, ६३; पाअ)।

पोअंड वि [**दे**] १ भय-रहित, निडर; २ षण्ड, नामर्द; (दे ६, ६१)।

पोअंत पुं [**दे**] शपथ, सौगन; (दे ६, ६२)।

पोअण न [**प्रवयन**, **प्रोतन**] पिरोना, गुम्फन; (आवम)।

पोअणपुर न [**पोतनपुर**] नगर-विशेष; (सुपा ५०६; भवि)।

पोअणा स्त्री [**प्रवयना**, **प्रोतना**] पिरोना; (उप ३५६)।

पोअय वि [**पोतज**] पोत से उत्पन्न होने वाला प्राणी—हस्ती आदि; (ठा ३, १)।

पोअय पुं [**पोतक**] देखो **पोअ**=पोत; (उवा; औप)।

पोअलय पुं [**दे**] १ आश्विन मास का एक उत्सव, जिसमें पत्नी के हाथ से ले कर पति अपूप को खाता है; २ एक प्रकार का अपूप—खाद्य-विशेष, पूआ; ३ बाल वसन्त; (दे ६, ८१)।

पोआई स्त्री [**पोताकी**] १ शकुनि को उत्पन्न करने वाली विद्या-विशेष; २ शकुनिका, पक्षि-विशेष; (विसे २४५३)।

पोआउय वि [**पोतायुज**, **पोतज**] देखो **पोअय**; (पउम १०२, ९७)।

पोआय पुं [**दे**] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया; (दे ६, ६०)।

पोआल पुं [**दे**] वृषभ, बलीवर्द; (दे ६, ६२)।

पोआल [**दे**, **पोतक**] बच्चा; शिशु, बालक; (ओघ ४४७)।

पोइअ पुं [**दे**] १ हलवाई, मिठाई बेचने वाला; २ खद्योत; (दे ६, ६३)। ३ निमग्न, डूबा हुआ; (ओघ १३६)। ४ स्पन्दित; (बृह १)।

पोइअ वि [**प्रोत**] पिरोया हुआ; (दे ७, ४४; उप पृ १०६; पाअ)।

पोइअल्लय देखो **पोइअ**=प्रोत; (ओघ ५३९ टी)।

पोइआ, **पोई** स्त्री [**दे**] निद्राकरी लता, वल्ली-विशेष; (दे ६, ६३; पराण १—पत्र ३४)।

पोउआ स्त्री [**दे**] करीष का अग्नि; (दे ६, ६१)।

पोंग पुं [**दे**] पाक, पकना; (स १८०)।

पोंगिल्ल वि [**दे**] पका हुआ, परिपक्व, परिपाक-युक्त; कच्छी भाषा में 'पोंगेल';

"अन्नेवि महंमहियलनिग्गीयगुप्पन्नकिणियपोंगिल्ला।
मलिणजरकप्पडोच्छइयविग्गहा कहवि हिंडंति ॥"
(स १८०)।

पोंड देखो **पुंड**। °**वद्धण** न [°**वर्धन**] नगर-विशेष; (महा)। °**वद्धणिया** स्त्री [°**वर्धनिका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (कप्प)।

पोंड } पुं [दे] १ यूथ का अधिपति; (दे ६, ६०)।
पोंडय } २ फल; (पगह १, ४—पत्र ७८)। ३ अ-विकसित अवस्था वाला कमल; (विसे १४२५)। ४ कपास का सूता; "दव्वं तु पोंडयादी भावे सुत्तमिह सूयगं नाणं" (सूअनि ३)।

पोंडरिगिणी देखो **पुंडरिगिणी**; (ठा २, ३)।

पोंडरिय देखो **पुंडरीअ**=पुण्डरीक; (स ४३६)।

पोंडरी स्त्री [**पौण्ड्री, पुण्डरीका**] जम्बूद्वीप के मेरु के उत्तर रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)।

पोंडरीअ देखो **पुंडरीअ**=पुण्डरीक; (औप; णाया १, ५; १६; सम ३३; देवेन्द्र ३१८; सूअनि १४६)।

पोंडरीअ } न [**पौण्डरीक**] १ गणित-विशेष, रज्जु-गणित;
पोंडरीग } (सूअनि १५४)। २ देखो **पुंडरीअ**=पौण्ड-रीक; (सूअ २, १, १; सूअनि १४६; १५१)।

पोक्क सक [**व्या+हृ, पूत्+कृ**] पुकारना, आह्वान करना। पोक्कइ; (हे ४, ७६)।

पोक्क वि [**दे**] आगे स्थूल और उन्नत तथा बीच में निम्न (नासिका); "पोक्कनासे" (उत्त १२, ६)।

पोक्कण पुं [**पोक्कण**] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में बसने वाली म्लेच्छ जाति; (पगह १, १)।

पोक्कण न [**व्याहरण, पूत्करण**] १ पुकार, आह्वान; २ वि. पुकारने वाला; (कुमा)।

पोक्कर देखो **पुक्कर**। पोक्करंति; (महा)। वकृ— **पोक्करंत**; (सुपा ३८०)।

पोक्करिय वि [**पूत्कृत**] १ पुकारा हुआ; (सुर ६, १६४)। २ न. पुकार; (दंस ३)।

पोक्कार देखो **पुक्कार**=पूत्कार; (उप पृ १८५)।

पोक्किअ देखो **पोक्करिय**; (उप १०३१ टी)।

पोक्खर न [**पुष्कर**] १ जल, पानी; २ पद्म, कमल; ३ पद्म-कोष; ४ एक तीर्थ, अजमेर-नगर के पास का एक जलाशय—तीर्थ; ५ हाथी की सूँढ़ का अग्र भाग; ६ वाद्य-भाण्ड; ७ आपण, दुकान; ८ असि-कोष, तलवार की म्यान; ९ मुख, मुँह; १० कुष्ठ रोग की ओषधि; ११ द्वीप-विशेष; १२ युद्ध, लडाई; १३ शर, बाण; १४ आकाश; "पोक्खरं" (हे १, ११६; २, ४; संक्षि ४)। १५ पुं. नाग-विशेष; १६ रोग-विशेष; १७ सारस पक्षी; १८ एक राजा का नाम; १९ पर्वत-विशेष; २० वरुण-पुत्र; "पोक्खरो" (प्राप्र)। देखो **पुक्खर**।

पोक्खर वि [**पौष्कर**] १ पुष्कर-संबन्धी। २ पद्माकार रचना वाला; "पोक्खरं पवहणं" (चारु ७०)।

पोक्खरिणी स्त्री [**पुष्करिणी**] १ जलाशय-विशेष, वर्तुल वापी; (णाया १, १—पत्र ६३)। २ पद्मिनी, कमलिनी, पद्म-लता; "जलेण वा पोक्खरिणीपलासं" (उत्त ३२, ६०)। ३ वापी; (कुमा)। ४ पद्म-समूह; ५ पुष्कर-मूल; (हे २, ४)। ६ चौकोना जलाशय, वापी; (पगह १, १; हे २, ४)।

पोक्खल देखो **पुक्खल**; (पगण १—पत्र ३५; आचा २, १, ८, ११)।

पोक्खलच्छिलय } देखो **पुक्खलच्छिभय**; (पगण १—
पोक्खलच्छिल्लय } पत्र ३५; राज)।

पोक्खलि पुंन [**पुष्कलिन्**] एक जैन उपासक, जिसका दूसरा नाम शतक था; (राज)।

पोग्गर } पुंन [**पुद्गल**] १ रूपादि-विशिष्ट द्रव्य, मूर्त
पोग्गल } द्रव्य, रूप वाला पदार्थ; "पोग्गला" (भग ८, १; ठा २, ४; ४, ४; ५, ३; ८), "पोग्गलाइं" (सुज्ज ९; पंच ३, ४६)। २ न. मांस; (पव २६८; हे १, ११६)। °**त्थिआय** पुं [°**अस्तिकाय**] पुद्गल-स्कन्ध, पुद्गल-राशि; (भग; ठा ५, ३)। °**परट्ट**, °**परियट्ट** पुं [°**परिवर्त**] १ समस्त पुद्गल-द्रव्यों के साथ एक २ परमाणु का संयोग-वियोग; २ समय का उत्कृष्टतम परिमाण-विशेष, अनन्त कालचक्र-परिमित समय; (कम्म५, ८६; भग १२, ४; ठा३, ४)।

पोग्गलि वि [**पुद्गलिन्**] पुद्गल वाला, पुद्गल-युक्त; (भग ८, १०—पत्र ४२३)।

पोग्गलिय वि [**पौद्गलिक**] पुद्गल-मय, पुद्गल-संबन्धी, पुद्गल का; (पिंडभा ३२४)।

पोच्च वि [**दे**] सुकुमार, कोमल; गुजराती में 'पोचुं'; (दे ६, ६०)।

पोच्चड वि [**दे**] १ असार, निस्सार; (णाया १, ३—पत्र ९४)। २ अतिनिबिड; (पगह १, १—पत्र १४)। ३ मलिन; (निचू ११)।

पोच्छल अक [**प्रोत्+शल्**] उछलना, ऊँचा जाना। वकृ— **पोच्छलंत**; (सुर १३, ४१)।

पोच्छाहण न [**प्रोत्साहन**] उत्तेजन; (वेणी १०५)।

पोच्छाहिअ वि [**प्रोत्साहित**] विशेष उत्साहित किया हुआ, उत्तेजित; (सुर १३, २९)।

पोट्ट न [**दे**] पेट, उदर; मराठी में 'पोट'; (दे ६, ६०; णाया १, १—पत्र ६१; ओधभा ७६; गा ८३; १७१;

२८६; स ३१२; ५३८; उवा; सुज १, १२; सुपा ४६३; प्राकृ ३५; पव १३३; जं २)। **साल्ल** पुं [**शाल्ल**] एक परिव्राजक का नाम; (विसे २४५२; ४५)। **सारणी** स्त्री [**सारणी**] अतीसार रोग; (आव ४)।

पोट्ट } न [**दे**] पोटला, गठर, गठरी; "कामिणिनियंबबिंबं
पोट्टल } कंदप्पविलासरायहाणिम्मि। न मुणइ असंजमकोट्ठं" (सुपा ३५५; दे २, २६; स १००)।

पोट्टलिगा स्त्री [**दे**] पोटली, गठरी; (सुख २, १५)।

पोट्टलिय वि [**दे**] पोटली उठाने वाला, गठरी-वाहक; (निचू १६)।

पोट्टलिया [**दे**] देखो **पोट्टलिगा**; (उप पृ ३८५; सुर १२, ११; सुख २, १५)।

पोट्टि स्त्री [**दे**] उदर-पेशी; (मृच्छ २००)।

पोट्टिल पुं [**पोट्टिल**] १ भारतवर्ष का भावी नववाँ तीर्थङ्कर—जिन-देव; (सम १५३)। २ भारतवर्ष के नौवें भावी जिन-देव का पूर्वभवीय नाम; (सम १५४)। ३ भगवान् महावीर का व्युत्क्रम से छट्ठवें भव का नाम; (सम १०५)। ४ एक जैन मुनि, जिसने भगवान् महावीर के समय में तीर्थकर-नामकर्म बँधा था; (ठा ६)। ५ एक जैन मुनि; (पउम २०, २१)। ६ देव-विशेष; (णाया १, १४)। ७ देखो **पोट्ठिल**; (राज)।

पोट्टिला स्त्री [**पोट्टिला**] व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम; (णाया १, १४)।

पोट्टिस पुं [**पोट्टिस**] एक कवि का नाम; (कप्पू)।

पोट्ठवई स्त्री [**प्रौष्ठपदी**] १ भाद्रपद मास की पूर्णिमा; २ भादों की अमावस्या; (सुज्ज १०, ६)।

पोट्ठिल पुं [**पुष्टिल**] भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर अनुत्तर-विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि; (अनु)।

पोडइल न [**दे**] तृण-विशेष; (पराण १—पत्र ३३)।

पोढ वि [**प्रौढ**] १ समर्थ; (पाअ)। २ निपुण, चतुर; ३ प्रगल्भ; ४ प्रवृद्ध, यौवन के बाद की अवस्था वाला; (उप पृ ८६; सुपा २२४; रंभा; नाट—मालती १३६)। °**वाय** पुं [°**वाद**] प्रतिज्ञा-पूर्वक प्रत्याख्यान; (गा ५२२)।

पोढा स्त्री [**प्रौढा**] १ तीस से पचपन वर्ष तक की स्त्री; (कुप्र १८५)। २ नायिका का एक भेद; (प्राकृ ३०)।

पोढिम पुंस्त्री [**प्रौढिमन्**] प्रौढ़ता, प्रौढ़पन; (मोह २)।

पोढी स्त्री [**प्रौढी**] ऊपर देखो; (कुप्र ४०९)।

पोणिअ वि [**दे**] पूर्ण; (दे ६, ५८)।

पोणिआ स्त्री [**दे**] सूत से भरा हुआ तकुआ; (दे ६, ६१)।

पोत देखो **पोअ**=पोत; (औप; बृह १; णाया १, ८)।

पोतणया देखो **पोअणा**; (उप पृ ४१२)।

पोत्त पुं [**पौत्र**] पुत्र का पुत्र, पोता; (दे २, ७२; श्रा १४)।

पोत्त न [**पोत्र**] प्रवहण, नौका; "वेलाउलम्मि ओयारियाणि सव्वाणि तेण पोत्ताणि" (उप ५६७ टी)।

पोत्त } न [**पोत**] १ वस्त्र, कापड़; (श्रा १२; औप
पोत्तग } १६८; कप्पू; स ३३२)। २ धोती, कटी-वस्त्र; (गच्छ ३, १८; कस; वव ८६; श्रावक ६३ टी; महा)। ३ वस्त्र-खण्ड; (पिंड ३०८)।

पोत्तय पुं [**दे**] पोता, वृषण, अण्डकोश; (दे ६, ६२)।

पोत्तिअ न [**पौतिक**] वस्त्र, सूती कपड़ा; (ठा ५, ३—पत्र ३३८; कस २, २६ टि)।

पोत्तिअ वि [**पोतिक**] १ वस्त्र-धारी; २ पुं. वानप्रस्थों का एक भेद; (औप)।

पोत्तिआ स्त्री [**पौत्रिका**] पुत्र की लड़की; (रंभा)।

पोत्तिआ स्त्री [**दे**] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (उत्त ३६, १४७)।

पोत्तिआ } स्त्री [**पोतिका, पोती**] १ धोती, पहनने का
पोत्ती } वस्त्र, साड़ी; (विसे २६०१)। २ छोटा वस्त्र, वस्त्र-खण्ड, "चउप्फालयाए पोत्तीए मुहं बंधत्ता" (णाया १, १—पत्र ५३; पिंडभा ६), "मुहपोत्तियाए" (विपा १, १)।

पोत्ती स्त्री [**दे**] काच, शीशा; (दे ६, ६०)।

पोत्तुल्लया देखो **पोत्तिआ**; (णाया १, १८—पत्र २३५)।

पोत्थ } पुंन [**पुस्त, °क**] १ वस्त्र, कपड़ा; (णाया १,
पोत्थग } १३—पत्र १७६)। २-३ देखो **पुत्थ**; "पोत्थ-
पोत्थय } कम्मजक्खा विव निच्चिट्ठा" (वसु; श्रा १२; सुपा २८६; विसे १४२५; बृह ३; प्राप्र; औप)।

पोत्था स्त्री [**प्रोत्था**] प्रोत्थान, मूलोत्पत्ति; (उत्त २०, १६)।

पोत्थार पुं [**पुस्तकार**] पोथी लिखने वाला, पोथी बनाने का काम करने वाला शिल्पी; (जीव ३)।

पोत्थिया स्त्री [**पुस्तिका**] पोथी, पुस्तक; "सरस्सइ व्व पोत्थियावलग्गहत्था" (काल)।

पोप्पय पुंन [**दे**] हस्त-परिमर्षण, हाथ फिराना; (उप पृ ३५३) ।

पोप्फल न [**पूगफल**] सुपारी; (हे १, १७०; कुमा) ।

पोप्फली स्त्री [**पूगफली**] सुपारी का पेड़; (हे १, १७०; कुमा) ।

पोम देखो **पउम**; "जहा पोमं जले जायं" (उत्त २५, २७; सुख २५, २७; पउम ५३, ७६) ।

पोमर न [**दे**] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र; (दे ६, ६३) ।

पोमाड पुं [**दे. पद्माट**] पमाड, पमार, चकवड़ का पेड़; (स १४४) । देखो **पउमाड** ।

पोमावई स्त्री [**पद्मावती**] छन्द-विशेष; (पिंग) ।

पोमिणी देखो **पउमिणी**; (सुपा ६४६; सम्मत्त १७१) ।

पोम्म देखो **पउम**; (हे १, ६१; २, ११२; गा ७५; कुमा; प्राकृ २८; कप्पू; पि १६६) ।

पोम्मा देखो **पउमा**; (प्राकृ २८; गा ४७१; पि १६६) ।

पोम्ह देखो **पम्ह=पक्ष्मन्**; "जह उ किर णालिगाए धणियं मिदुरूयपोम्हभरियाए" (धर्मसं ६८०) ।

पोर पुं [**पूतर**] जल में होने वाला क्षुद्र जन्तु; (हे १, १७०; कुमा) ।

पोर वि [**पौर**] पुर में—नगर में—उत्पन्न, नागरिक; (प्राकृ ३५) ।

पोर देखो **पुर=पुरस्** । °**कव्व** न [°**काव्य**] शीघ्रकवित्व; (राज) ।

पोर पुंन [**दे. पर्वन्**] ग्रन्थि, गाँठ; (ठा ४, १; अनु) । °**बीय** वि [°**बीज**] पर्व-बीज से उगने वाली वनस्पति, इक्षु आदि; (ठा ४, १) ।

पोरग पुंन [**पर्वक**] वनस्पति का एक भेद, पर्व वाली वनस्पति; (पराण १—पत्र ३३) ।

पोरच्छ पुं [**दे**] दुर्जन, खल; (दे ६, ६२; पाअ) ।

पोरच्छिम देखो **पुरच्छिम**; (सुपा ४१) ।

पोरत्थ वि [**दे**] मत्सरी, ईर्ष्यालु, द्वेषी; (षड्) ।

पोरय न [**दे**] खेत; (दे ६, २६) ।

पोरव पुं [**पौरव**] राजा पुरु की संतान; (अभि ६५) ।

पोरवाड पुं [**पौरवाट**] एक जैन श्रावक-कुल; (ती २) ।

पोराण देखो **पुराण**; (पराण २८; औप; भग; हे ४, २८७; उव; गा ३४०) ।

पोराण वि [**पौराण**] १ पुराण-संबन्धी; (राय) । २ पुराण शास्त्र का ज्ञाता; (राज) ।

पोराणिय वि [**पौराणिक**] पुराण-शास्त्र-संबन्धी; (स ३४४) ।

पोरिस न [**पौरुष**] १ पुरुषत्व, पुरुषार्थ; (प्रासू १७) । २ पराक्रम; (कुमा) ।

पोरिस वि [**पौरुषेय**] पुरुष-जन्य, पुरुष-प्रणीत; (धर्मसं ८६२ टी) ।

पोरिसिय देखो **पोरिसीय**; "अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयति" (णाया १, १४—पत्र १६०) ।

पोरिसी स्त्री [**पौरुषी**] १ पुरुष-शरीर-प्रमाण छाया; २ जो समय में पुरुष-परिमाण छाया हो वह काल, प्रहर; (उवा; विपा २, १; आचा; कप्प; पव ४) । ३ प्रथम प्रहर तक भोजन आदि का त्याग, प्रत्याख्यान-विशेष, तप-विशेष; (पव ४; संबोध ५७) ।

पोरिसीय वि [**पौरुषिक**] पुरुष-प्रमाण, पुरुष-परिमित; "कुंभी महंताहियपोरिसीया" (सूअ १, ५, १, २४) ।

पोरुस पुं [ ] अत्यन्त वृद्ध पुरुष; (सूअ १, ७, १०) ।

पोरुस देखो **पोरिस**; (स २०४; उप ७२८ टी; महा) ।

पोरेकच्च } **पोरेगच्च** } न [**पौरस्कृत्य**] पुरस्कार, कला-विशेष; (औप; राय; औप १०७ टि) ।

पोरेवच्च न [**पौरोवृत्य**] पुरोवर्तित्व, अग्रेसरता; (औप; सम ८६; विपा १, १; कप्प) ।

पोलंड सक [**प्रोत् + लङ्घ्**] विशेष उल्लंघन करना । पोलंडेइ; (णाया १, १—पत्र ६१) ।

पोलच्चा स्त्री [**दे**] खेटित भूमि, कृष्ट जमीन; (दे ६, ६३) ।

पोलास न [**पोलास**] १ नगर-विशेष, पोलासपुर; (उवा) । २ उद्यान-विशेष; (राज) । °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (उवा; अंत) ।

पोलासाढ न [**पोलाषाढ**] श्वेतविका नगरी का एक चैत्य; (विसे २३५७) ।

पोलिअ पुं [**दे**] सौनिक, कसाई; (दे ६, ६२) ।

पोलिआ स्त्री [**दे. पौलिका**] खाद्य-विशेष, पूरी(?); "सुणओ इव पोलियासत्तो" (उप ७२८ टी; राज) ।

पोली देखो **पओली**; "बद्धेसु पोलिदारेसु, गवेसंतो अ धुत्तयं" (श्रा १२; उप पृ ८४; धर्मवि ७७) ।

पोल्ल वि [**दे**] पोला, शुषिर, खाली, रिक्त; "पोल्लो व्व मुट्ठी जह से असारे" (उत्त २०, ४२; णाया १, १—पत्र ६३; पव ८१), "वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लया य दड्ढा य" (महा) ।

पोल्लड वि [**दे**] ऊपर देखो; "वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लडा य दड्ढा य" (ओघ ७३५; विचार ३३६)।

पोल्लर न [**दे**] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप; (संबोध ५८)।

पोस अक [**पुष्**] पुष्ट होना। पोसइ; (धात्वा १४५; भवि)।

पोस सक [**पोषय्**] १ पुष्ट करना। २ पालन करना। पोसेइ; (पंचा १०, १४)। "मायरं पियरं पोस" (सूअ १, ३, २, ४), पोसाहि; (सूअ १, २, १, १६)। कवकृ— **पोसिज्जंत**; (गा १३५)।

पोस वि [**पोष**] १ पोषक, पुष्टि-कारक, "अभिक्खणं पोसवत्थं परिहिंति" (सूअ १, ४, १, ३)। २ पुं. पोषण; पुष्टि; (संबोध ३६)।

पोस पुं [**पोस**] १ अपान-देश, गुदा; (पगह १, ४—पत्र ७८; ओघ ५५६; औप)। २ योनि; (निचू ६)। ३ लिंग, उपस्थ; "णवसोतपरिस्सवा बोंदी पगणत्ता, तं जहा; दो सोत्ता, दो णेत्ता, दो घाणा, मुहं, पोसे, पाऊ" (ठा ६—पत्र ४५०)।

पोस पुं [**पौष**] पौष मास; (सम ३५)।

पोसग वि [**पोषक**] १ पुष्टि-कारक; २ पालन-कर्ता; (पगह १, २)।

पोसण न [**पोषण**] १ पुष्टि; (पगह १, २)। २ पालन। ३ वि. पोषण-कर्ता; "लोग परं पि जहासिपोसणो" (सूअ १, २, १, १६)।

पोसण न [**पोसन**] अपान, गुदा; (जं ३)।

पोसणया स्त्री [**पोषणा**] १ पोषण, पुष्टि; २ भरण, पालन; (उवा)।

पोसय देखो **पोस**=पोस; "पोसाए त्ति" (ठा ६ टी—पत्र ४५०; बृह ४)।

पोसय देखो **पोसग**; (राज)।

पोसह पुं [**पोषध, पौषध**] १ अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व-तिथि में करने योग्य जैन श्रावक का व्रत-विशेष, आहार-आदि के त्याग-पूर्वक किया जाता अनुष्ठान-विशेष; (सम १६; उवा; औप; महा; सुपा ६१६; ६२०)। २ पर्व-दिवस—अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व-तिथि; "पोसहसद्दो रूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ" (सुपा ६१६)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] जैन श्रावक को करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, व्रत-विशेष; (पंचा १०, ३)। °**वय** न [°**व्रत**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (पडि)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] पौषध-व्रत करने का स्थान; (णाया १, १—पत्र ३१; अंत; महा)। °**ोववास** पुं [°**ोपवास**] पर्व-दिन में उपवास-पूर्वक किया जाता जैन श्रावक का अनुष्ठान-विशेष, जैन श्रावक का ग्यारहवाँ व्रत; (औप; सुपा ६१६)।

पोसहिय वि [**पौषधिक**] जिसने पोषध-व्रत किया हो वह, पौषध करने वाला; (णाया १, १—पत्र ३०; सुपा ६१६; धर्मवि २७)।

पोसिअ वि [**दे**] दुःस्थ, दरिद्र, दुःखी; (दे ६, ६१)।

पोसिअ वि [**पुष्ट**] पोषण-युक्त; (भवि)।

पोसिअ वि [**पोषित**] १ पुष्ट किया हुआ; २ पालित; (उत्त २७, १४)।

पोसिद (शौ) वि [**प्रोषित**] प्रवास में गया हुआ। °**भत्तुआ** स्त्री [°**भर्तृका**] जिसका पति प्रवास में गया हो वह स्त्री; (स्वप्न १३४)।

पोसी स्त्री [**पौषी**] १ पौष मास की पूर्णिमा; २ पौष मास की अमावस; (सुज्ज १०, ६; इक)।

पोह पुं [**दे**] बैल आदि की विष्ठा का ढग; कच्छी भाषा में 'पोह'; (पिंड २४५)।

पोह पुं [**प्रोथ**] अश्व के मुख का प्रान्त भाग; (गउड)।

पोहण पुं [**दे**] छोटी मछली; (दे ६, ६२)।

पोहत्त न [**पृथुत्व**] चौड़ाई; (भग)।

पोहत्त देखो **पुहत्त**; (पि ७८)।

पोहत्तिय वि [**पार्थक्त्विक**] पृथक्त्व-संबन्धी; (पगण २२—पत्र ६३६; ६४०; २३—पत्र ६६४)।

पोहल देखो **पोप्फल**; (षड्)।

°**प्प** देखो **प**=प्र; "विप्पोसहिपत्ताणं" (संनि २; गउड)।

°**प्पआस** देखो **पयास**=प्रयास; (अभि ११७)।

°**प्पउत्त** देखो **पउत्त**=प्रवृत्त; (मा ३)।

°**प्पच्चअ** देखो **पच्चय**; (अभि १७६)।

°**प्पडव** (मा) अक [**प्र+तप्**] गरम होना। प्पडवदि; (पि २१९)।

°**प्पडिआर** देखो **पडिआर**=प्रतिकार; (मा ४३)।

°**प्पडिहा** देखो **पडिहा**=प्रतिभा; (कुमा)।

°**प्पणइ** देखो **पणइ**=प्रणयिन्; (कुमा)।

°**प्पणाम** देखो **पणाम**=प्रणाम; (हे ३, १०५)।

°**प्पणास** देखो **पणास**=प्रणाश; (सुपा ६५७)।

°**प्पण्णा** देखो **पण्णा**=प्रज्ञा; (कुमा)।

°**प्पत्थाण** देखो **पत्थाण**; (अभि ८१)।

°**प्पदेस** देखो **पदेस**; (नाट—विक ४)।

°प्फुरिद (शौ) देखो **पप्फुरिअ**; (नाट—मालती ५४)।
°प्पबंध देखो **पबंध**; (रंभा)।
°प्पभिदि देखो **°पभिइ**; (रंभा)।
°प्पभूद (शौ) देखो **पभूय**; (नाट—वेणी ३६)।
°प्पमत्त देखो **पमत्त**; (अभि १८५)।
°प्पमाण देखो **पमाण**; (पि ३६६ ए)।
°प्पमुक्क देखो **पमुक्क**; (नाट—उत्तर ५६)।
°प्पमुह देखो **पमुह**; (गउड)।
°प्पयर देखो **पयर**; (कुमा)।
°प्पयाव देखो **पयाव**; (कुमा)।
°प्पयास देखो **पयास**=प्रकाश; (सुपा ६५७)।
°प्पलावि देखो **पलावि**; (अभि ४६)।
°प्पवत्तण देखो **पवत्तण**; "अजिअजिण सुहप्पवत्तणं" (अजि ४)।
°प्पवह देखो **पवह**; (कुमा)।
°प्पवेस देखो **पवेस**; (रंभा)।
°प्पवेसि देखो **पवेसि**; (अभि १७५)।
°प्पसर देखो **पसर**=प्र+सृ। वकृ—°प्पसरंत; (रंभा)।
°प्पसर देखो **पसर**=प्रसर।
°प्पसव देखो **पसव**; (नाट—मालवि ३७)।
°प्पसाय देखो **पसाय**=प्रसाद; (रंभा)।
°प्पसुत्त देखो **पसुत्त**; (रंभा)।
°प्पसूद (शौ) देखो **पसूअ**=प्रसूत; (अभि १४०)।
°प्पहर देखो **पहर**=प्रहार; (से २, ४; पि ३६७ ए)।
°प्पहा देखो **पहा**; (कुमा)।
°प्पहाण देखो **पहाण**; (रंभा)।
°प्पहाय देखो **पहाय**=प्रभाव; "प्पहाउ" (रंभा)।
°प्पहार देखो **पहार**; (रंभा)।
°प्पहाव देखो **पहाव**; (अभि ११६)।
°प्पहु देखो **पहु**; (रंभा)।
°प्पारंभ देखो **पारंभ**; (रंभा)।
°प्पिअ देखो **पिअ**=प्रिय; (अभि ११८; मा १८)।
°प्पिआ देखो **पिआ**; (कुमा)।
प्पिव देखो **इव**; (प्राकृ २६)।
°प्पेम देखो **पेम**; (पि ४०४)।
°प्पेम्म देखो **पेम्म**; (कुमा)।
°प्पोढ देखो **पोढ**; (रंभा)।
°प्फंस देखो **फंस**=स्पर्श; (काप्र ७४३; गा ४६२; ५५६)।
°प्फणा देखो **फणा**; (सुपा ५३५)।
°प्फद्दा देखो **फद्दा**; (कुमा)।
°प्फल देखो **फल**; (पि २००)।
√**प्फाल** सक [**स्फालय्**] १ आघात करना। २ पछाड़ना। प्फालउ; (विंग)।
°प्फालण न [**स्फालन**] आघात; (गउड; गा ५४६)।
°प्फुड देखो **फुड**; (कुमा; रंभा)।
°प्फोडण देखो **फोडण**; (गा ३८१)।
प्रस्स (अप) देखो **पस्स**=दृश्। प्रस्सदि; (हे ४, ३६३)।
प्राइम्व, **प्राइव**, **प्राउ** (अप) देखो **पाय**=प्रायस्; (हे ४, ४१४; कुमा)।
प्रिय (अप) देखो **पिअ**=प्रिय; (हे ४, ३६८; कुमा)।
प्रेक्किअ न [**दे**] वृष रटित, बैल की चिल्लाहट; (षड्)।
प्रेयंड वि [**दे**] धूर्त, ठग; (दे १, ४)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि पआराइसद्दसंकलणो
सत्तावीसइमो तरंगो परिसमत्तो।

फ

फ पुं [फ] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप्र)।

फंद अक [स्पन्द्] थोड़ा हिलना, फरकना । फंदइ, फंदंति; (हे ४, १२७; उत्त १४, ४५)। वकृ—फंदंत, फंदमाण; (सुम १, ४, १, ६; अ —पव ३=३; कप्प)।

फंद पुं [स्पन्द] किञ्चित् चलन; (पड्; सण)।

फंदण न [स्पन्दन] ऊपर देखो; (विसे १=४३; हे २, ५३; प्राप्र)।

फंदणा स्त्री [स्पन्दना] ऊपर देखो; (सूअनि = टी)।

फंदिअ वि [स्पन्दित] १ कुछ हिला हुआ, फरका हुआ; (पाअ)। २ हिलाया हुआ, ईषत् चालित; (जीव ३)।

फंफ (अप) अक [उद् + गम्] उछलना । फंफाइ; (पिंग १=४, ५)।

फंफसय पुं [दे] लता-भेद, वल्ली-विशेष; (दे ६, ८३)।

फंफाइ (अप) वि [कम्पायित, कम्पित] कँपाया हुआ, कम्प-प्राप्त; (पिंग)।

फंस अक [विसम् + वद्] असत्य प्रमाणित होना, प्रमाण-विरुद्ध होना, अप्रमाण साबित होना । फंसइ; (हे ४, १२६)। प्रयो, भूका—फंसाविही; (कुमा)।

फंस सक [स्पृश्] छूना । फंसइ, फंसेइ; (हे ४, १८२; प्राकृ २७)। कर्म—फंसिज्जइ; (कुमा)।

फंस पुं [स्पर्श] स्पर्श, छुआवट; (पाअ; प्राप्र; प्राकृ २७; गा २६६)।

फंसण न [स्पर्शन] छूना, स्पर्श करना; (उप ५३० टी; धर्मवि ४३; मोह २६)।

फंसण वि [पांसन] अपशद, अधम; "कुलफंसणो" (सुर २, ६; स १६८८; भवि)।

फंसण वि [दे] १ युक्त, संगत; २ मलिन, मैला; (दे ६, ८७)।

फंसुल वि [दे] मुक्त, त्यक्त; (दे ६, ८२)।

फंसुली स्त्री [दे] नवमालिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष; (दे ६, ८२)।

फक्किया स्त्री [फक्किका] ग्रन्थ का विषम स्थान, कठिन स्थान; (सुर १६, २४७)।

फग्गु वि [फल्गु] १ असार, निरर्थक, तुच्छ; (सुर ८, ३; संबोध १६; गा ३६६ अ)। २ स्त्री. भगवान् अजितनाथ की प्रथम शिष्या; (सम १५२)। °मित्त पुं [°मित्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (कप्प)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] एक जैन मुनि; (आव १)। °सिरी स्त्री [°श्री] इस अवसर्पिणी काल के पंचम आरे में होने वाली अन्तिम जैन साध्वी; (विचार ५३४)।

फग्गु पुं [दे. फल्गु] वसन्त का उत्सव; (दे ६, ८२)।

फग्गुण पुं [फाल्गुन] १ मास-विशेष, फागुन का महिना; पाअ; कप्प)। २ अर्जुन, मध्यम पाण्डु-पुत्र; (वज्जा १३०)।

फग्गुणी स्त्री [फाल्गुनी] १ फागुन मास की पूर्णिमा; (इक; सुज्ज १०, ६)। २ फागुन मास की अमावस्या; (सुज्ज १०, ६)। ३ एक गृहपति की स्त्री; (उवा)।

फग्गुणी स्त्री [फल्गुनी] नक्षत्र-विशेष; (ठा २, ३)।

फट्ट अक [स्फट्] फटना, टूटना । फट्टइ; (भवि)।

फड सक [स्फट्] १ खोदना । २ शोधना । वकृ—"गत्तं फडमाणीओ" (सुपा ६१३)। हेकृ—फडिउं; (सुपा ६१३)।

फड न [दे] साँप का सर्व शरीर; (दे ६, ८६)।

फड पुंन [दे. फट] साँप की फणा; (दे ६, ८६; कुप्र ४५२)

फडही [दे] देखो फलही; (गा ५५० अ)।

फडा स्त्री [फटा] साँप की फन, सर्प-फणा; (णाया १, ६; पउम ५२, ५; पाअ; औप)। °ल वि [°वत्] फन वाला; (हे २, १५६; चंड)।

फडिअ वि [स्फटित] खोदा हुआ; "तो थीवेसधरेहिं वेरेहिं फडिया झडत्ति सा गत्ता" (सुपा ६१३)।

फडिअ } देखो फलिह=स्फटिक; (नाट—रत्ना ८३),
फडिग } "फडिगपाहाणनिभा" (निचू ५)।

फडिल्ल देखो फडा—ल; (चंड)।

फडिह पुं [परिघ] १ अर्गला, आगल; (से १३, ३८)। २ कुठार; (से ५, ५४)।

फडिहा देखो फलिहा=परिखा; (से १२, ७५)।

फड्ड } पुंन [दे. स्पर्ध, °क] १ अंश, भाग, हिस्सा;
फड्डग } गुजराती में 'फाडिउं'; "कम्मिय कद्दममिस्सा चुल्ली
फड्ड } उक्खा य फड्डगजुया उ" (पिंड २५३)। २ ८८
फड्डुग } संपूर्ण गण के अधिष्ठाता के अधीनस्थ गण का एक लघुतर हिस्सा, समुदाय का एक अति छोटा विभाग, जो संपूर्ण

समुदाय के अध्ययन के अधीन हो; "गच्छागच्छिं गुम्मागुम्मिं फड्डाफड्डिं" (औप; बृह १)। ३ द्वार आदि का छोटा छिद्र, विवर; ४ अवधिज्ञान का निर्गम-स्थान; "फड्डा य असंखेज्जा", "फड्डा य आणुगामी" (विसे ७३८; ७३६)। ५ समुदाय; "तत्थ पत्र्यइयगा फड्डगेहिं एंति" (आवम; आचू १)। ६ समुदाय-विशेष, वर्गणा-समुदाय; "नेहप्पच्चयफड्डगमेगं अविभागवग्गणा णंता" (कम्मप २८; ४४; पंच ३, २८; ५, १८३; १८४; जीवस ७६), "तं इगिफड्डं संते", "तासिं खलु फड्डुगाइं तु" (पंच ५, १७६; १७१)। °वइ पुं [°पति] गण के अवान्तर विभाग का नायक; (बृह १)।

फण पुं [**फण**] फन, साँप की फणा; (से ६, ५५; पाअ; गा २४०; सुपा १; प्रासू ५१)।

फणग पुं [**दे. फनक**] कंघा, केश सवाँरने का उपकरण; (उत्त २२, ३०)।

फणज्जुय पुं [**दे**] वनस्पति-विशेष; "तुलसी कण्ह-ओराले फणज्जुए अज्जए य भूयणए" (पणण १—पत्र ३४)।

फणस पुं [**पनस**] कटहर का पेड़; (पणण १; हे १, २३२; प्राप्र)।

फणा स्त्री [**फणा**] फन; (सुर २, २३६)।

फणि पुं [**फणिन्**] १ साँप, सर्प, नाग; (उप ३५७ टी; पाअ; सुपा ५५६; महा; कुमा)। २ दो कला या एक गुरु अक्षर की संज्ञा; (पिंग)। ३ प्राकृत-पिंगल का कर्ता, पिंगलाचार्य; (पिंग)। °**चिंध** पुं [°**चिह्न**] भगवान् पार्श्वनाथ; (कुमा)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] १ नागकुमार देवों का एक स्वामी, धरणेन्द्र; (ती ३)। २ शेष नाग; (धर्मवि ५७)। °**राय** पुं [°**राज**] १ शेष नाग; (कुप्र २७२)। २ पिंगल-कर्ता; (पिंग)। °**लआ** स्त्री [°**लता**] नाग-लता, वल्ली-विशेष; (कप्पू)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ इन्द्र-विशेष, धरणेन्द्र; (सुपा ३१)। २ नाग-राज; (मोह २६)। ३ पिङ्गलकार; (पिंग)। °**सेहर** पुं [°**शेखर**] प्राकृत-पिङ्गल का कर्ता; (पिंग)।

फणिंद पुं [**फणीन्द्र**] १ नाग-राज, शेष नाग; (प्रासू ११३)। २ पिङ्गलकार; (पिंग)।

फणिल्ल सक [**चोरय्**] चोरी करना। फणिल्लइ; (धात्वा १४६)।

फणिह पुं [**दे. फणिह**] कंघा, केश सवाँरने का उपकरण; (सूअ १, ४, २, ११)।

फणीसर पुं [**फणीश्वर**] देखो **फणि-वइ**; (पिंग)।

फणुज्जय देखो **फणज्जुय**; (राज)।

फद्ध पुं [**स्पर्ध**] स्पर्धा, हिर्स; (कुमा)।

फद्धा स्त्री [**द्व स्पर्धा**] ऊपर देखो; (दे ८, १३; कुमा ३, १८)।

फद्धि वि [**स्पर्धिन्**] स्पर्धा करने वाला; (प्राकृ २३)।

फर } पुं [**दे. फल, °क**] १ काष्ठ आदि का तख्ता;
फरअ } २ ढाल; (दे १, ७६; ६, ८२; कप्पू; सुर २, ३१)। देखो **फल, फलग**।

फरअ पुंन [**दे. स्फरक**] अस्त्र-विशेष, "फरएहिं छाइऊण तेवि हु गिरहंति जीवंतं" (धर्मवि ८०)।

फरक्किद त्रि [**दे**] फरका हुआ, हिला हुआ, कम्पित; (कप्पू)।

फरस देखो **फरिस**=स्पर्श; (रंभा; नाट)।

फरसु पुं [**परशु**] कुठार, कुल्हाड़ा; (भवि; पि २०४)। °**राम** पुं [°**राम**] ब्राह्मण-विशेष, ऋषि जमदग्नि का पुत्र; (भत्त १५३)।

फरहर अक [**फरफराय्**] फरफर आवाज करना। वकृ—**फरहरंत**; (भवि)।

फरिह देखो **फलिह**=स्फटिक; (इक)।

फरिस सक [**स्पृश्**] छूना। फरिसइ; (षड्), फरिसइ; (प्राकृ २७)। कर्म—फरिसिज्जइ; (कुमा)। कवकृ—**फरिसिज्जंत**; (धर्मवि १३६)।

फरिस } पुंन [**स्पर्श, °क**] स्पर्श, छूना; (आचा; पण्ह
फरिसग } १, १; गा १३२; प्राप्र; पाअ; कप्प), "न य कीरइ तणुफरिसं" (गच्छ २, ४४)।

फरिसण न [**स्पर्शन**] इन्द्रिय-विशेष, त्वगिन्द्रिय; (कुप्र ४२४)।

फरिसिय वि [**स्पृष्ट**] छुआ हुआ; (कुप्र १६; ४२)।

फरिहा देखो **फलिहा**=परिखा; (णाया १, १२)।

फरुस वि [**परुष**] १ कर्कश, कठिन; (उवा; पाअ; हे १, २३२; प्राप्र)। २ न. कुवचन, निष्ठुर वाक्य; "ण यावि किंची फरुसं वदेज्जा" (सूअ १, १४, ७; २१)।

फरुस } पुं [**दे. परुष, °क**] कुम्भकार, कुंभार; "पोग्गल-
फरुसग } मोयगफरुसगदंते" (बृह ४)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] कुंभकार-गृह; (बृह ३)।

फरुसिया स्त्री [**परुषता, पारुष्य**] कर्कशता, निष्ठुरता; (आचा)।

फल अक [फल्] फलना, फलान्वित होना। फलइ; (गा १७; ८६४). फलंति; (सिरि १२८२)। वकृ—फलंत, (से ७, ५६)।

फल पुंन [फल] १ वृक्षादि का शस्य; (आचा; कप्प; कुमा; ठा ६; जी १०)। २ लाभ; "पुच्छइ ते मुणिचलणे पडति किमिह मह फलो होइ" (उप ८८६ टी)। ३ कार्य; "हेउ-फलभावओ होंति" (पंचव १; धम्म १)। ४ इष्टानिष्ट-कृत कर्म का शुभ या अशुभ फल—परिणाम; (सम ७२; हे ४, ३३५)। ५ उद्देश्य; ६ प्रयोजन; ७ त्रिफला; ८ जायफल; ९ बाण का अग्र भाग; १० फाल; ११ दान; १२ मुष्क, अण्डकोष; १३ ढाल; १४ ककोल, गन्ध-द्रव्य-विशेष; (हे १, २३)। १५ अग्र भाग; "अदु वा मुट्ठिणा अदु कुंताइफलेणं" (आचा १, ६, ३, १०)। °मंत, °व वि [°वत्] फल वाला; (णाया १, ४; पंचा ४)। °वड्डिय, °वद्धिय न [°वर्द्धिक] १ नगर-विशेष, फलोधि-नामक मरुदेशीय नगर; २ वहाँ का एक जैन मन्दिर; (ती ५२)।

फलअ } पुंन [फलक] १ काठ आदि का तख्ता; (आचा;
फलग } गा ६५६; तंदु २६; सुर १०, १६१; औप)। २ जुए का एक उपकरण; (औप; धण ३२)। ३ ढाल; "भरिएहिं फलएहिं" (विपा १, ३; कुमा; सार्ध १०१)। ४ देखो फल; (आचा)। °सेज्जा स्त्री [°शय्या] काठ का तख्ता जिस पर सोया जाय; (भग)।

फलण न [फलन] फलना; (सुपा ६)।

फलह } पुं [फलह, °क] फलक, काठ आदि का तख्ता;
फलहग } "अस्संजए भिक्खुपडियाए पीढं वा फलहगं वा णिस्सेणिं वा उदूहलं वा आहट्टु उस्सविय दुरुहेज्जा" (आचा २, १, ७, १), "भूमिसेज्जा फलहसेज्जा" (औप), "वरफलहे" (दे १, ८; पि २०६), "पेक्खइ मन्दिराइँ फलहद्दुवाडिय-जालगवक्खाइ ", " अह फलहंतरेण दरिसियगुज्झंतरदेसइ " (भवि)।

"पिहुपत्तासयमयलं गुणनियरनिबद्धफलहसंघायं।
संजमियसयलजोगं बोहित्थं मुणिवरसरिच्छं"
(सुर १३, ३६)।

फलहिआ } स्त्री [फलहिका, फलही] काठ आदि का
फलही } तख्ता; "सुरिए अत्थमिए फलहिअं घडेउमाढत्ता", "इत्थ पहाणफलही चिट्ठइ" (ती ११), "कलावईए रूवं लिहिवि आलिहसु चित्तफलहीए" (सुर १, १५१)।

फलही स्त्री [दे] १ कपास, कपास, (दे ६, ८२; गा १६५; ३४६)। २ कपास का गाछ; "उच्चुंटिअवेंटभारोणआइ हलिअस्स व फलहीए" (गा ३६०)।

फलाव सक [फलय्] फलवान् बनाना, सफल करना; "ततो-वि अ फलगस्स विमलजोगं फलावेंति" (सत्त २६)।

फलावह वि [फलावह] फलप्रद, फल को धारण करने वाला; (पउम १४, ४४)।

फलासव पुं [फलासव] मद्य-विशेष; (णाया १७)।

फलि पुं [दे] १ लिंग, चिह्न; २ वृषभ, बैल; (दे ६, ८६)।

फलिअ वि [फलित] १ फलित; "कुडिअं फलिअं च दलि-अमुद्देमं" (पाअ)। २ फल-युक्त, जिसको फल हुआ हो वह; (णाया १, ११)।

फलिअ न [दे] वायनक, भोजन आदि का बाँटा जाता उपहार; (ठा ३, ३—पत्र १४३)।

फलिआरी स्त्री [दे] दूर्वा, कुश तृण; (दे ६, ८३)।

फलिणी स्त्री [फलिनी] प्रियंगु वृक्ष; (दे १, ३२; ६, ४६; पाअ; कुमा; गा ६६३)।

फलिह पुं [परिघ] १ अर्गला, आगल; "अग्गला फलिहो" (पाअ; औप), "ऊसियफलिहा" (भग २, ५—पत्र १३४)। २ अस्त्र-विशेष, लोहे का मुद्गर आदि अस्त्र; ३ गृह, घर; ४ काच-घट; ५ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग; (हे १, २३२; प्राप्र)।

फलिह पुं [स्फटिक] १ मणि-विशेष, स्फटिक मणि; (जी ३; हे १, १६७; कप्पू)। २ एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३२; इक)। ३ रत्नप्रभा पृथिवी का एक स्फटिकमय काण्ड; (ठा १०)। ४ गन्धमादन पर्वत का एक कूट; (इक)। ५ कुण्डल पर्वत का एक कूट; ६ रुचक पर्वत का एक शिखर; (राज)। °गिरि पुं [°गिरि] कैलास पर्वत; (पाअ)।

फलिह पुं [फलिह] फलक, काठ आदि का तख्ता; "अंबसिखो फलिहा" (पाअ), "नाणामणिरयणमूयाओ कवलियाफलिहपुत्तिय-याईओ" (आप ८)।

फलिहंस पुं [फलिहंसक] वृक्ष-विशेष; (दे ४, १२)।

फलिहा स्त्री [परिखा] खाई, किले या नगर के चारों ओर की नहर; (औप; हे १, २३२; कुमा)।

फलिहि देखो परिहि; (प्राकृ १५)।

फली स्त्री [फली] काठ आदि की छोटी तख्ती; "तत्तो चंदण-फलीउ वणियदट्ठम्मि विक्किउं कइवि" (सुपा ३८५)।

फलोवय } वि [**फलोपग**] फल-प्राप्त, फल-सहित; (ठा
फलोवा° } ३, १ पत्र—११३) ।

फल्ल वि [**फल्य**] सूते का वस्त्र, सूती कपड़ा; (बृह १) ।

फव्वीह सक [**लभ्**] यथेष्ट लाभ प्राप्त करना; गुजराती में 'फाववुं' । फव्वीहामो; (बृह १) ।

फसल वि [**दे**] १ सार, चितकबरा; "फसलं सबलं सारं किरं चित्तलं च बोगिम्मील्लं" (पाअ; दे ६, ८७) । २ स्थासक; (दे ६, ८७) ।

फसलाणिअ } वि [**दे**] कृत-विभूष, जिसने विभूषा की
फसलिअ } हो वह, शृङ्गारित; (दे ६, ८३), "फसलियाणि कुंकुमराएण" (स ३६०) ।

फसुल वि [**दे**] मुक्त; (दे ६, ८२) ।

फाइ स्त्री [**स्फाति**] वृद्धि; (ओघ ४७) ।

फाईकय वि [**स्फीतीकृत**] १ फैलाया हुआ; २ प्रसिद्ध किया हुआ; "वइसेसियं पयीयं फाईकयमणमणएहिं" (विसे २५०७) ।

फागुण देखो **फग्गुण**; (पि ६२) ।

फाड सक [**पाटय्, स्फाटय्**] फाड़ना । फाडेइ; (हे १, १९८; २३२) । वकृ—**फाडंत**; (कुमा) ।

फाडिय वि [**पाटित, स्फाटित**] विदारित; (भवि) ।

फाणिअ पुंन [**फाणित**] १ गुड़; "फाणिओ गुडो भण्णति" (निचू ४) । २ गुड़ का विकार-विशेष, आर्द्र गुड़, पानी से द्रवित गुड़; (ओप; कस; पिंड २३६; ६२५; पव ४) । ३ क्वाथ; (पण्ण १७—पत्र ५३०) ।

फाय वि [**स्फीत**] १ वृद्ध; २ विस्तीर्ण; ३ ख्यात; (विसे २५०७) ।

फार वि [**स्फार**] १ प्रचुर, बहुत; "फारफलभारभज्जिरसाहासयसंकुलो महासाही" (धर्मवि ५५) । २ विशाल, विपुल; ३ विस्तृत, फैला हुआ; (सुर २, २३६; कप्र १७०; सुपा १६४; कुप्र ५१) ।

फारक्क वि [**दे. स्फारक**] स्फरकास्त्र को धारण करने वाला; "तं नासंतं दट्ठुं फारक्का नमुइवयणओ ढुक्का" (धर्मवि ८१) ।

फारुसिअ न [**पारुष्य**] परुषता, कर्कशता; "फारुसियं समाइयंति" (आचा) ।

फाल देखो **°प्फाल** ।

फाल देखो **फाड** । फालेइ; (हे १, १९८; २३२) । वकृ—**फालिज्जंत**, [illegible] (गा १५३; सम्मत्त १७४) । संकृ—**फालेऊण**; (गा ४८६) ।

फाल पुंन [**फाल**] १ लोहमय कुश, एक प्रकार की लोहे की लम्बी कील; (उवा) । २ फाल से की जाती एक प्रकार की दिव्य-परीक्षा, शपथ-विशेष; (सुपा १८६) । ३ फलाङ्ग, लाँफ; "दीविं व्व विहलफालो" (कुप्र १२) ।

फालण न [**पाटन, स्फाटन**] विदारण; "खोणी किं न सहेदि सीरमुहओ तं तारिसं फालणं" (रंभा; सम १२५) ।

फालण देखो **°प्फालण** ।

फाला स्त्री [**फाला**] फलाङ्ग, लाँफ; (कुप्र २७८; कुलक ३२) ।

फालि स्त्री [**दे. फालि**] १ फली, छीमी, फलियाँ; २ शाखा; "सिंबलिफालिव्व अग्गिणा दड्ढा" (संथा ८५) । ३ फाँक, टुकड़ा; "—नागवल्लीदलपूगीफलफालिपमुह—" (रयण ५५) ।

फालिअ वि [**पाटित, स्फाटित**] विदारित; (कुमा; पण्ह १, १—पत्र १८; पउम ८२, ३१; ओप) ।

फालिअ न [**दे. फालिक**] देश-विशेष में होता वस्त्र-विशेष; "अमिलाणि वा गज्जलाणि वा फालियाणि वा कायहाणि वा" (आचा २, ५, १, ७) ।

फालिअ } पुं [**स्फाटिक**] १ रत्न-विशेष; (कप्प) ।
फालिग } २ वि. स्फटिक-रत्न का; (पि २३६; उप १८६;
फालिह } सुपा ८८) ।

फालिहद्द पुं [**पारिभद्र**] १ फरहद का पेड़; २ देवदारु का पेड़; ३ निम्ब का पेड़; (हे १, २३२) ।

फास सक [**स्पृश्, स्पर्शय्**] १ स्पर्श करना, छूना; २ पालन करना । फासइ, फासेइ; (हे ४, १८२; सण) । कर्म—फासिज्जइ; (कुमा) । वकृ—**फासंत, फासयंत**; (पंचा १०, ३५; पण्ह २, ३—पत्र १२३) । कवकृ—**फासाइज्जमाण**; (भग—अ°) । संकृ—**फासइत्ता, फासित्ता**; (उत्त २६, १; सुख २६, १; कप्प; भग) ।

फास पुंन [**स्पर्श**] १ स्पर्श, छूना; (भग; प्रासू १०५) । २ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८) । ३ दुःख-विशेष; "एयाइं फासाइं फुसंति बालं" (सूअ १, ५, २, २२) । ४ शब्द आदि विषय; (उत्त ४, ११) । ५ स्पर्श इन्द्रिय, त्वचा; (भग) । ६ रोग; ७ [illegible], युद्ध, लड़ाई; ९ गुप्त चर, जासूस; १० वायु, पवन; ११ [illegible]; १२ 'क' से ले कर 'म' तक के अक्षर; १३ वि. स्पर्श करने वाला; (हे २, ९२) । **°कीव** पुं [**°क्लीब**] [illegible] का एक

मेद; (निचू ४)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, कर्कश आदि स्पर्श का कारण-भूत कर्म; (राज; सम ६७)। °मंत त्रि [°मत्] स्पर्श वाला; (ठा ५, ३; भग)। °मय वि [°मय] स्पर्श-मय; स्पर्श से निर्वृत्त; "फासामयाओ सोक्खाओ" (ठा १०)।

फासग त्रि [स्पर्शक] स्पर्श करने वाला; (अज्झ १०४)।

फासण न [स्पर्शन] १ स्पर्श-क्रिया; (आ १६)। २ स्पर्शेन्द्रिय, त्वचा; (पत्र ६७)।

फासणया } स्त्री [स्पर्शना] १ स्पर्श-क्रिया; (ठा ६; फासणा } सम १५६; जीवस १८१)। २ प्राप्ति; (राज)।

फासिअ त्रि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ; (नव ४१; विसे २७८३)। २ प्राप्त; "उचिए काले विहिणा पत्तं जं फासियं तयं भणियं" (पत्र ४)।

फासिअ वि [स्पर्शिक] स्पर्श करने वाला; (विसे १००१)।

फासिअ वि [स्पर्शित] १ स्पर्श-युक्त, स्पृष्ट; २ प्राप्त; (पत्र ४—गाथा २१२)।

फासिंदिय न [स्पर्शेन्द्रिय] त्वगिन्द्रिय; (भग; णाया १, १७)।

फासु } वि [प्रासु, °क] अ-चेतन, जीव-रहित, निर्जीव, फासुअ } अ-चित्त वस्तु; (भग; पंचा १०, ६; औप; उवा; फासुग } णाया १, ५; पउम ८२, ५)।

फिक्कर अक [फित् + कृ] प्रेत—पिशाच का चिल्लाना। "नह फिक्करंति पेया" (सुपा ४९२)।

फिक्कि पुंस्त्री [दे] हर्ष, खुशी; (दे ६, ८३)।

फिज्ज न [दे. स्फिच्] नितम्ब, चूतर, जंघा का उपरि-भाग; (सुख ८, १३)।

फिट्ट अक [भ्रंश्] १ नीचे गिरना। २ टूटना, भाँगना। ३ ध्वस्त होना। ४ पलायन करना, भागना। फिट्टइ; (हे ४, १७७; प्राकृ ७६; गा १८३; चेइय ५८७); फिट्टई; (उत्त २०, ३०), फिट्टंति; (सिरि १२९३)। भवि—फिट्टिहिइ, फिट्टिहिसि; (कुप्र १६५; गा ७१८)।

फिट्ट वि [भ्रष्ट] विनष्ट; "पाणिएण तवह विब्भ न फिट्टा" (पा ९३; भवि)।

फिट्टा स्त्री [दे] १ मार्ग, रास्ता; "ता फिट्टाए मिलियं कुट्टियनरपंडियं एगं" (सिरि २९९)। २ प्रणाम-विशेष, मार्ग में किया जाता प्रणाम; (गुभा १)। °मित्त पुंन [°मित्र] मार्ग में मिलने पर प्रणाम करने तक की अवधि वाली मित्रता वाला; (सुपा १८९)।

फिड देखो फिट्ट। फिडइ; (हे ४, १७७)।

फिडिअ वि [भ्रष्ट. स्फटित] १ अंतर-प्राप्त, नष्ट, च्युत; (महा ७; ११९; ११२; से ४, ५४, ६४)। २ अतिक्रान्त, उल्लंघित; (ओघभा १७४; औप)।

फिड्डु वि [दे] वामन; (दे ६, ८४)।

फिप्प वि [दे] कृत्रिम, बनावटी; (दे ६, ८३)।

फिप्फिस न [दे] अन्त्र-स्थित मांस-विशेष, फेफड़ा; (सुमनि ७२; पण्ह १, १)।

फिर सक [गम्] फिरना, चलना। वकृ—फिरंत; (धर्मवि ८१)।

फिरक्क पुंन [दे] खाली गाड़ी, भार ढोने वाली खाली गाड़ी; "कम्मचिता दुवि वसहा सगडं कड्ढंति उवलभरियंपि। अहवि निभिन्नचित्ता फिरक्कजुत्तावि नम्मंति" (सुपा ४२४)।

फिरिय वि [गत] गया हुआ;
"मणवालणाहेउं पुरिसा इह केवि अग्गओ फिरिया।
जं सुम्मइ आसन्नो सुन्नेवि हु एस संखरवो" (धर्मवि १३९)।

फिल्लिअ देखो फिडिअ; (से ८, ६८)।

फिल्लुस अक [दे] फिसलना, खिसकना, गिरना। वकृ—"सेवालियभुमितले फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि" (सुर २, १०५)। देखो फेल्लुस।

फीअ देखो फाय; (सुम २, ७, १)।

फीणिया स्त्री [दे] एक जात की मीठाई; गुजराती में 'फेणी'; (सम्मत्त ५७)।

फुंका स्त्री [दे] फूँक, मुँह से हवा निकालना; (मोह ६७)।

फुंकार पुं [फुङ्कार] फुत्कार, कुपित सर्प आदि का आवाज; (सुर २, २३७)।

फुंटा स्त्री [दे] केश-बन्ध; (दे ६, ८४)।

फुंद देखो फंद=स्पन्द। फुंदइ; (स १५, ७७)।

फुंफमा } स्त्री [दे] करीषाग्नि, गनकंडे की आग; (पाअ; फुंफुआ } दे ६, ८४; तंदु ४५; जीव ३; बृह १; कम्म फुंफुगा } १, २२)।

फुंफुमा स्त्री [दे] १ करीषाग्नि; "अहवा डज्झउ निहुयं निद्धूमं फुंफुम व्व चिरमेसा" (उप ७२८ टी)। २ कचवर-वह्नि, कूड़ा-करकट की आग; (सुख १, ८)।

फुंफुल } सक [दे] १ उत्पाटन करना। २ कहना।
फुंफुल्ल } फुंफुल्लइ; (हे २, १७४)।

फुंस सक [मृज्, प्र+उञ्छ्] पोंछना, साफ करना। फुंसदि, (प्राकृ ९३)।

फुंसण देखो **फासण**; (उप पृ ३४) ।

फुक अक [फूत् + कृ] १ फुफकारना, फूँ फूँ आवाज करना । २ सक. मुँह से हवा निकालना, फूँकना । फुक्कइ; (पिंग) । वकृ—**फुक्कंत**; (गा १७६), **फुक्किज्जंत** (अप); (हे ४, ४२२) ।

फुका स्त्री [दे] १ मिथ्या; (दे ६, ८३) । २ फूँक; (कुप्र १५०) ।

फुक्कार पुं [फूत्कार] फुफकार, फूँ फूँ का आवाज; (कुप्र ५८; सण) ।

फुक्किय वि [फूत्कृत] फुफकारा हुआ; (आव ४) ।

फुक्की स्त्री [दे] रजकी, धोबिन; (दे ६, ८४) ।

फुग स्त्रीन [दे. स्फिच्] शरीर का अवयव-विशेष, कटि-प्रोथ; (सुअनि ७६) ।

फुगफुग वि [दे] विकीर्ण रोम वाला, परस्पर असंबद्ध केश वाला; "तस्स भुमगाओ फुगफुगाओ" (उवा) ।

फुट, **फुट्ट** अक [स्फुट्, भ्रंश्] १ विकसना, खीलना । २ प्रकट होना । ३ फूटना, फटना, टूटना । ४ नष्ट होना । फुटइ, फुट्टइ, फुट्टेइ, फुट्टउ; (संक्षि ३६; प्राकृ ६६; हे ४, १७७; २३१; उव; भवि; पिंग; गा २२८) । भवि—"फुट्टिस्सइ बोहित्थं महिलाजणकहियमंतं वा" (धर्मवि १३), फुट्टिहिइ; (पि ५२६) । वकृ—**फुट्टंत**, **फुट्टमाण**; (पगह १, ३; गा २०४; सुर ४, १५१; णाया १, १—पत्र ३६) ।

फुट्ट वि [स्फुटित, भ्रष्ट] १ फूटा हुआ, टूटा हुआ, विदीर्ण; (उप ७२८ टी; सम्मत्त १४५; सुर २, ६०; ३, २४३; १३; २१०) । २ भ्रष्ट, पतित; (कुमा) । ३ विनष्ट; "फुट्टहडा-हडसीसं" (णाया १, १६; विपा १, १) ।

फुट्टण न [स्फुटन] १ फूटना, टूटना, (कुप्र ४१७) । २ वि. फूटने वाला, विदीर्ण होने वाला; (हे ४, ४२२) ।

फुट्टिअ वि [स्फुटित] विदारित; "फुट्टिअमोहो" (कुमा ७, ६४) ।

फुट्टिर वि [स्फुटितृ] फूटने वाला; (सण) ।

फुड्ड देखो **फुट्ठ**=स्पृष्ट; (पि ३११) ।

फुड देखो **फुट्ट**=स्फुट्, भ्रंश् । फुडइ; (हे ४, १७७; २३१; प्राकृ ६६), "फुडंति सव्वंगसंधीओ" (उप ७२८ टी) । वकृ—**फुडमाण**; (सुर ३, २४३) ।

फुड देखो **फुट्ठ**=स्पृष्ट; (पगण ३६; ठा ७—पत्र ३८३; उवा) ।

फुड वि [स्फुट] स्पष्ट, व्यक्त, विशद; (पाअ; हे ४, २५८;

फुडण न [स्फुटन] टूटना, खण्डित होना; (पगह १, १—पत्र २३) ।

फुडा स्त्री [स्फुटा] अतिकाय-नामक महोरगेन्द्र की एक पटरानी, इन्द्राणी-विशेष; (ठा ४, १; इक) ।

फुडा स्त्री [फटा] साँप की फन; "उक्कडफुडकुडिलजडिल-कक्कसवियडफुडाडोवकरणदच्छं" (उवा) ।

फुडिअ वि [स्फुटित] १ विकसित, खिला हुआ; (पाअ; गा ३६०) । २ फूटा हुआ, विदीर्ण; (स ३८१) । ३ विकृत; (पगह १, २—पत्र ४०) ।

फुडिअ (अप) देखो **फुरिअ**; (भवि) ।

फुडिआ स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोड़ा, फुनसी; (सुपा १३८) ।

फुड्ड देखो **फुट्ट** । फुड्डइ; (षड्) ।

फुण्ण वि [दे. स्पृष्ट] छूआ हुआ; (पव १५८ टी; कम्म ५, ८५ टी) ।

फुप्फुस न [दे] उदरवर्ती अन्त्र-विशेष, फेफड़ा; (सुअनि ७३; पउम २६, ५४) ।

फुम सक [भ्रम्] भ्रमण करना । फुमइ; (हे ४, १६१) । प्रयो—फुमावइ; (कुमा) ।

फुम सक [दे. फूत्+कृ] फूँक मारना, मुँह से हवा करना । फुमेज्जा; (दस ४, १०) । वकृ—**फुमंत**; (दस ४, १०) । प्रयो—फुमावेज्जा; (दस ४, १०) ।

फुर अक [स्फुर्] १ फरकना, हिलना । २ तड़फड़ना । ३ विकसना, खीलना । ४ प्रकाशित होना, प्रकट होना । "फुरइ अ सीताइ तक्खणं वामच्छं" (से १५, ७६; पिंग) । वकृ—**फुरंत**, **फुरमाण**; (गा १६२; सुर २, २११; महा; पिंग; से ६, २५; १२, २६) । संकृ—**फुरित्ता**; (ठा ७) ।

फुर सक [अप + हृ] अपहरण करना, छीनना । प्रयो—फुरा-विंति; (वव ३) ।

फुर पुं [स्फुर] शस्त्र-विशेष; "फुरफलगावरणगहिय—" (पगह १, ३—पत्र ४६) ।

फुर (अप) देखो **फुड**=स्फुट; (पिंग) ।

फुरण न [स्फुरण] १ फरकना, कुछ हिलना, ईषत् कम्पन; "जं पुण अच्छिप्फुरणं मह होही भारिया तेण" (सुर १३,

फुरफुर अक [**पोस्फुराय्**] खूब काँपना, थरथराना, तड़फड़ाना। फुरफुरेज्जा; (महानि १)। वकृ—**फुरफुरंत, फुरफुरेंत;** (सुर १४, २३३; स ६६३; २४६)।

फुरिअ वि [**स्फुरित**] १ कम्पित, हिला हुआ, फरका हुआ, चलित; (दे ६, ८४; सुर ४, २२६; गा १३०)। २ दीप्त; (दे ६, ८४)।

फुरिअ वि [**दे**] निन्दित; (दे ६, ८४)।

फुरुफुर देखो **फुरफुर**। वकृ—**फुरुफुरंत; फुरुफुरेंत;** (पराह १, ३; पिंड ४६०; सुर ७, २३१; णाया १, ८—पत्र १३३)।

फुल देखो **फुड=स्फुट्**। फुलइ; (नाट)। फुले (अप); (पिंग)।

फुल (अप) देखो **फुर=स्फुर्**। फुरइ; (पिंग)।

फुल (अप) देखो **फुड=स्फुट**; (पिंग)।

फुल (अप) देखो **फुल्ल=फुल्ल**; (पिंग)।

फुलिअ देखो **फुडिअ=स्फुटित**; (से ५, ३०)।

फुलिअ (अप) देखो **फुल्लिअ**; (पिंग)।

फुलिंग पुं [**स्फुलिङ्ग**] अग्नि-कण; (णाया १, १; दे ६, १३५; महा)।

फुल्ल अक [**फुल्ल्**] फूलना, पुष्प-युक्त होना, विकसना। फुल्लइ, फुल्लए, फुल्लेइ; (रंभा; सम्मत्त १४०), फुल्लंति; (हे २, २६)। भवि—फुल्लिहिसि; (गा ८०२)।

फुल्ल देखो **कम=क्रम्**। फुल्लइ; (धात्वा १४६)।

फुल्ल न [**फुल्ल**] १ फूल, पुष्प; (कुमा; धर्मवि २०; सम्मत्त १४३; दसनि १)। २ फूला हुआ, पुष्पित; (भग; णाया १, १—पत्र १८; कुमा)। °**मालिया** स्त्री [°**मालिका**] फूल बेचने वाली, मालाकार की स्त्री; (सुर ३, ७४)। °**वल्लि** स्त्री [°**वल्लि**] पुष्प-प्रधान लता; (णाया १, १)।

फुल्लंधय पुं [**फुल्लन्धय, पुष्पन्धय**] भ्रमर, भमरा; (उप ६८६ टी)।

फुल्लंधुअ पुं [**दे**] भ्रमर, भमरा; (दे ६, ८५; पाअ; कुमा)।

फुल्लग न [**फुल्लक**] पुष्प की आकृति वाला ललाट का आभूषण; (औप)।

फुल्लण न [**फुल्लन**] विकास; (वज्जा १५२)।

फुल्लया स्त्री [**फुल्ला, पुष्पा**] वल्ली-विशेष, पुष्पाह्वा, सतपुष्पा, सोंया का गाछ; "दहफुल्लयकोमलिमा(? मो)गली य तह अक्कबोंदीया" (पराण १—पत्र ३३)।

फुल्लवड न [**दे**] पुष्प-विशेष, मदिरा-वासक फूल; (कुप्र ४५३)।

फुल्लविय } वि [**फुल्लित**] फुलाया हुआ; (सम्मत्त
फुल्लाविय } १४०; विक्र २३)।

फुल्लिअ वि [**फुल्लित**] पुष्पित, विकसित; (अंत १२; स ३०३; सम्मत्त १४०; २२०)।

फुल्लिम पुंस्त्री [**फुल्लता**] विकास, फूलन;

"अच्छउ ता फलकाले फुल्लिमसमए वि कालिमा वयणे।
इय कलिउं व पलासा चत्ता पत्तेहिं किविणा व्व"
(सुर ३, ४४)।

फुल्लिर वि [**फुल्लितृ**] फूलने वाला, प्रफुल्ल; "हिययवणंतरगंतुग्गफुल्लिरफुल्लेहिं" (सम्मत्त २१४)।

फुस सक [**भ्रम्**] भ्रमण करना। फुसइ; (हे ४, १६१)।

फुस सक [**मृज्**] मार्जन करना, पोंछना, साफ करना। फुसइ; (हे ४, १०५; भवि)। कर्म—फुसिज्जइ, फुसिज्जउ; (कुमा; सुपा १२४)। वकृ—**फुसंत, फुसमाण**; (भवि; कुप्र २८५)। संकृ—**फुसिऊण**; (महा)।

फुस सक [**स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना। फुसइ; (भग; औप; उत्त २, ६), फुसंति; (सिरि २०२३), फुसंतु; (भग)। वकृ—**फुसंत, फुसमाण**; (औप ३८६; भग)। संकृ—**फुसिअ, फुसित्ता, फुसित्ताणं**; (पंच २, ३८; भग; औप; पि ५८३)। कृ—**फुस्स**; (ठा ३, ३)।

फुसण न [**स्पर्शन**] स्पर्श-क्रिया; (भग; सुपा ५)।

फुसणा स्त्री [**स्पर्शना**] ऊपर देखो; (विसे ४३२; नव ३२)।

फुसिअ देखो **फुस=स्पृश्**।

फुसिअ वि [**स्पृष्ट**] छुआ हुआ; (जीवस १६६)।

फुसिअ वि [**मृष्ट**] पोंछा हुआ; (उप पृ ३४५; सुपा २११; कुप्र २३१)।

फुसिअ पुंन [**पृषत**] १ बिन्दु, बुन्द; (आचा; कप्प)। २ बिन्दु-पात; (सम ६०)।

फुसिअ वि [**भ्रमित**] घुमाया हुआ; (कुमा ७, ४)।

फुसिआ स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष; "ससविंदुगोत्तफुसिया" (पराण १—पत्र ३३)।

फुस्स देखो **फुस=स्पृश्**।

फूअ पुं [**दे**] लोहकार, लोहार; (दे ६, ८५)।

फूम देखो **फुम**। वकृ—**फूमंत**; (राज)।

फूमिय वि [**फूत्कृत**] फूँका हुआ; (उप पृ १४१) ।
फूल देखो **फुल्ल**=फुल्ल; "फलफूलछल्लिकट्ठा मूलगपत्ताणि बीयाणि" (जी १३) ।
फेक्कार पुं [**फेत्कार**] १ शृगाल का आवाज; (सुर ६, २०४) । २ आवाज, चिल्लाहट; (कप्पू) ।
फेकारिय न [**फेत्कारित**] ऊपर देखो; (स ३७०) ।
फेड सक [**स्फेटय्**] १ विनाश करना । २ दूर हटाना । ३ परित्याग करना । ४ उद्घाटन करना । फेडइ, फेडेइ; फेडंति; (उव; हे ४, ३५८; संबोध ५४; स ४१४) । कर्म—फेडिज्जइ; (भवि) ।
फेडण न [**स्फेटन**] १ विनाश; २ अपनयन; (पव १३५)।
फेडणया स्त्री [**स्फेटना**] ऊपर देखो; (पिंड ३८७) ।
फेडावणिय न [**दे**] विवाह-समय की एक रीति, वधू को प्रथम वार लज्जा-परिहार के बख्त दिया जाता उपहार; (स ७८) ।
फेडिअ वि [**स्फेटित**] १ नष्ट किया हुआ, विनाशित; (पउम ३६, २२) । २ त्याजित; (सिरि ६५५) । ३ अपनीत; (ओघभा ४२) । ४ उद्घाटित; (स ७८) ।
फेण पुं [**फेण, फेन**] फेण, झाग, जल-मल, पानी आदि के ऊपर का बुद्बुदाकार पदार्थ; (पाअ; गाया १, १—पत्र ६२; कप्प) । °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] नदी-विशेष; (ठा २, ३; इक) ।
फेणबंध } **फेणवड** } पुं [**दे**] वरुण; (दे ६, ८५) ।
फेणाय अक [**फेणाय्, फेनाय्**] फेण का वमन करना, झाग निकालना । वकृ—**फेणायमाण**; (प्रयौ ७४) ।
फेप्फस } **फेफस** } न [**दे**] देखो **फिप्फिस**, **फुप्फुस**; (राज; तंदु ३६) ।
फेरण न [**दे**] फेरना, घुमाना; "गुंफणफेरणसुकारएहिं" (सुर २, ८) ।
फेल सक [**क्षिप्**] १ फेंकना । २ दूर करना । फलदि (शौ); (नाट) । संकृ—**फेलिअ**; (नाट) ।
फेला [**दे**] भूँठन-भाँठन, भोजन से बचा-खुचा, उच्छिष्ट;
"तस्स य अणुकंपाए देवी दासी य तम्मि कूवम्मि ।
निच्चं खिवंति फेलं तीए सो जियइ सुग्रहञ्च ॥"
दुग्गंधकूववासो गब्भो, जणणीइ चावियरसेहिं ।
जं पालणेसंपुणा तं फेलाहारसंकासं ॥" (धर्मवि १४६)।
फेल्ल पुं [**दे**] दरिद्र, निर्धन; (दे ६, ८५) ।
फेल्लुस सक [**दे**] फिसलना, खिसकना, खिसक कर गिरना । फेल्लुसइ; (दे ६, ८६) । संकृ—**फेल्लुसिऊण**; (दे ६, ८६; स ३५५) ।
फेल्लुसण न [**दे**] १ फिसलन, पतन, २ पिच्छिल जमीन, वह जगह जहाँ पाँव फिसल पड़े; (दे ६, ८६) ।
फेस पुं [**दे**] १ त्रास, डर; २ सद्भाव; (दे ६, ८७) ।
फोअ पुं [**दे**] उद्गम; (दे ६, ८६) ।
फोइअय वि [**दे**] १ मुक्त; २ विस्तारित; (दे ६, ८७) ।
फोंफा स्त्री [**दे**] डराने की आवाज, भयोत्पादक शब्द; (दे ६, ८६) ।
फोड सक [**स्फोटय्**] १ फोड़ना, विदारण करना । २ राई आदि से शाक आदि को बघारना । फोडिज्ज; (कुप्र ६७) । वकृ—**फोडंत**, **फोडेमाण**; (सुपा २०१; ५६३; औप) ।
फोड पुं [**स्फोट**] १ फोड़ा, व्रण-विशेष; (ठा १०—पत्र ५२०) । २ वर्ण-विशेष, शब्द-भेद; (राज) । ३ वि भक्षक; "बहुफोडो" (ओघभा १६१) ।
फोडअ (शौ) पुं [**स्फोटक**] ऊपर देखो; (प्राकृ ८६) ।
फोडण न [**स्फोटन**] १ विदारण; (पव ६ टी; गउड) । २ राई आदि से शाक आदि को बघारना; (पिंड २५०) । ३ राई आदि संस्कारक पदार्थ; (पिंड २५५) । ४ वि फोड़ने वाला, विदारण करने वाला; "कायरजणहिययफोडणं" (णाया १, ८), "अम्हे मग्रणसराहअहिअअव्वणफोडणं गीअं" (गा ३८१) ।
फोडव देखो **फोडअ**; (पउम ६३, २६) ।
फोडाव सक [**स्फोटय्**] १ फोड़वाना, तोड़वाना । २ खुलवाना । संकृ—**फोडाविऊण**; (स ४६०) ।
फोडाविय वि [**स्फोटित**] १ तोड़वाया हुआ; २ खुलवाया हुआ; "फोडाविया संपुडा" (स ४६०) ।
फोडि स्त्री [**स्फोटि**] विदारण, भेदन; "भाडीफोडीसु वज्जए कम्मं" (पडि) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ जमीन आदि का विदारण करने का काम, हल आदि से भूमि-दारण, कूप, तड़ाग आदि खोदने का काम; २ उक्त काम कर आजीविका चलाना; (पडि) ।
फोडिअ वि [**स्फोटित**] १ फोड़ा हुआ, विदारित; (णाया १, ७; स ४७२) । २ राई आदि से बघारा हुआ;

फोडिअय त्रि [**दे, स्फोटित, °क**] गड्डे में बघारा हुआ शाकादि; (दे ६, ८८)।

फोडिअय न [**दे**] रात के समय जंगल में सिंहादि से रक्षा का एक प्रकार; (दे ६, ८८)।

फोडिया स्त्री [**स्फोटिका**] छोटा फोड़ा; (उप ७६८ टी)।

फोडी स्त्री [**स्फोटी, स्फोटी**] देखो **फोडि**; (उवा; पव ६; पडि)।

फोप्फस न [**दे**] शरीर का अवयव-विशेष. 'कालिज्जय-अंतपित्तजरहियफोप्फसफेफ्फसपिलिहादर—" (तंदु ३६)।

फोफल न [**दे**] गन्ध-द्रव्य विशेष, एक जात की औषधि; "महुरविरियणमेसो कायव्वो फोफलाइदव्वेहिं" (भत्त ४२)।

फोफस देखो **फोप्फस**; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

फोरण न [**स्फोरण**] निरन्तर प्रवर्तन; "विसयम्मि अणंतेवि हु णियसत्तिप्फोरणेण फलसिद्धी" (उवर ७४)।

फोरविअ त्रि [**स्फोरित**] निरन्तर प्रवृत्त किया हुआ; "तेहिंवि नियनियसत्ती फोरविया" (सम्मत्त २२७; हम्मीर १४)।

फोस देखो **फुस=स्पृश्**। "सव्वं फोसंति जगं" (जीवस १६६)।

फोस पुं [**दे**] उद्गम; (दे ६, ८६)।

फोस पुं [**दे, पोस**] अपान-देश, गुदा; (तंदु २०)।

फोसणा स्त्री [**स्पर्शना**] स्पर्श-क्रिया; (जीवस १६६)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे फआराइसद्दसंकलणो अट्ठावीसइमो तरंगो समत्तो।

——:०:——

ब

ब पुं [**ब**] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप)।

बअर (शौ) न [**बदर**] १ फल-विशेष, बेर; २ कपास का बीज; (प्राकृ ८३)।

बइट्ठ (अप) वि [**उपविष्ट**] बैठा हुआ; (हे ४, ४४४; भवि)।

बइल्ल पुं [**दे**] बैल, बरध, वृषभ; (दे ६, ६१; गा २३८; प्राकृ ३८; हे २, १७४; धर्मवि ३; श्रावक २५८ टी; श्रु १५३; प्रासू ५५; कुप्र २०६; ती १५; वै ६; कप्पू)।

बइस (अप) अक [**उप + विश्**] बैठना; गुजराती में 'बेसवुं'। बइसइ; (भवि)।

बइसणय (अप) न [**उपवेशनक**] आसन; (ती ७)।

बइसार (अप) सक [**उप + वेशय्**] बैठाना। बइसारइ; (भवि)।

बइस्स देखो **बइस्प**; (पि ३००)।

बईस (अप) देखो **बइस**। बईसइ; (भवि)।

बईस (अप) न [**उपवेश**] बैठ, बैठन, बैठना; "जाणि मोहणा कराविआ मुहाए उब्बईसं" (हे ४, ४२३)।

बउणी स्त्री [**दे**] कार्पासी, कपास-वल्ली; (दे ३, ५७)।

बउल पुं [**बकुल**] १ वृक्ष-विशेष, मोलसरी का पेड़; (सम १५२; पाअ; णाया १, ६)। २ बकुल का पुष्प; (स १, ५६)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] १ बकुल का पेड़; २ बकुल का पुष्प; (श्रा १२)।

बउस पुं [**बकुश**] १ अनार्य देश-विशेष; २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी; (पण्ह १, १—पत्र १४)। स्त्री— °**सी**; (णाया १, १—पत्र ३७)। ३ वि. शबल, चितकबरा; ४ मलिन चारित्र वाला, शरीर के उपकरण और विभूषा आदि से संयम को मलिन करने वाला; (ठा ३, २; ५, ३; सुख ६, १), स्त्री —"तए णं सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि होत्था" (णाया १, १६)। ४ पुंन. मलिन संयम, शिथिल चारित्र-विशेष; (सुख ६, १)।

बउहारी स्त्री [**दे**] बुहारी, संमार्जनी, झाड़ू; (दे ६, ६७)

बंग पुं [**वङ्ग**] १ भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम; (ती १४)। २ देश-विशेष, बंगाल देश; (उप ७६५; ती १४)। ३ बंग देश का राजा; (पिंग)।

बंगल (अप) पुं [**वङ्ग**] वङ्ग देश का राजा; (पिंग)।

बंगाल पुं [**वङ्गाल**] बंगाल देश; "बंगालदेसवइणा तेणं तुह ससुरयस्स दिन्ना हं" (सुपा ३७७)।

बंभ देखो **बंभ**; (पि २६६)।

बंडि पुं [**दे**] देखो **बंदि=बन्दिन्**; (षड्)।

बंद न [**दे**] कैदी, कारा-बद्ध मनुष्य; "बंदंपि किंपि" (स ४२१), "बंदाइं गिन्हइ कयावि", "छलेण गिन्हंति बंदाइं" "बंदाणं मोयावणकए" (धर्मवि ३२), "एगत्थबंदग्गाहियपहियकीरंतकरुणक्कंदणरवं" (धर्मवि ५२)। °**ग्गाह** पुं [°**ग्रह**] कैदी रूप से पकड़ना; "परदोहवट्टवाडणबंदग्गहखत्तखणणपमुहाइं" (कुप्र ११३)।

बंदि स्त्री [**बन्दि**] देखो **बंदी**; (हे १, १४२; २, १७६)।

बंदि } पुं [**बन्दिन्**] स्तुति-पाठक, मंगल-पाठक, मागध;
बंदिण } "मंगलपाढयमागहचारणवेआलिआ बंदी" (पाअ; उप ७२८ टी; धर्मवि ३०), "उद्दामसद्दबंदिणवंद्रसमुग्घुट्ठनामाइं" (स ५७६)।

बंदिर न [दे] समुद्र-वाणिज्य-प्रधान नगर, बंदर; (सिरि ४३३)।

बंदी स्त्री [**बन्दी**] १ हठ-हृत स्त्री, बाँदी; (दे २, ८४; गउड १०५; ८४३)। २ कैद किया हुआ मनुष्य; (गउड ४२६; गा ११८)।

बंदीकय वि [**बन्दीकृत**] कैद किया हुआ, बाँध कर आनीत; (गउड)।

बंदुरा स्त्री [**बन्दुरा**] अश्व-शाला; "गच्छ निरुंवेहि बंदुराओ, भूसेहि तुरए" (स ७२५)।

बंध सक [**बन्ध्**] १ बाँधना, नियन्त्रण करना। २ कर्मों का जीव-प्रदेशों के साथ संयोग करना। बंधइ; (भग; महा; उव; हे १, १८७)। भूका—बंधिंसु; (पि ५१६)। कर्म—बंधिज्जइ, वज्झइ; (हे ४, २४७), भवि—बंधिहिइ, बज्झिहिइ; (हे ४, २४७)। वकृ—**बंधंत, बंधमाण**; (कम्म २, ८; पण्ण २२)। संकृ—**बंधइत्ता, बंधिउं, बंधिऊण, बंधिऊणं, बंधित्ता, बंधित्तु**; (भग; पि ५१३; ५८५; ५८२)। हेकृ—**बंधेउं**; (हे १, १८१)। कृ—**बंधियव्व**; (पंच १, ३)। कवकृ—**वज्झंत, वज्झमाण**; (सुपा १६८; कम्म १, ३५; औप)।

बंध पुं [दे] भृत्य, नौकर; (दे ६, ८८)।

बंध पुं [**बन्ध**] १ कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों के साथ दूध-पानी की तरह मिलना, जीव-कर्म-संयोग; (आचा; कम्म १, १५; ३२)। २ वन्धन, नियन्त्रण, संयमन; (श्रा १०; प्रासू १५३)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**सामि** वि [°**स्वामिन्**] कर्म-बन्ध करने वाला; (कम्म ३, १; २४)।

बंधई स्त्री [**बन्धकी**] पुंश्चली, असती स्त्री; (नाट—मालती १०६)।

बंधग वि [**बन्धक**] १ बाँधने वाला; २ कर्म-बन्ध करने वाला, आत्म-प्रदेश के साथ कर्म-पुद्गलों का संयोग करने वाला; (पंच ५, ८४; श्रावक ३०६; ३०७; पंचा १६, ४०; कम्म ६, ६)।

बंधण न [**बन्धन**] १ बाँधने का—संश्लेष का—साधन, जिससे बाँधा जाय वह स्निग्धतादि गुण; (भग ८, ६—पत्र ३६४)। २ जो बाँधा जाय वह; ३ कर्म, कर्म-पुद्गल; ४ कर्म-बन्ध का कारण; (सूअ १, १, १, १)। ५ संयमन, नियन्त्रण; (प्रासू ३)। ६ नियन्त्रण का साधन, रज्जु आदि; (उव)। ७ कर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से पूर्व-गृहीत कर्म-पुद्गलों के साथ गृह्यमाण कर्म-पुद्गलों का आपस में संबन्ध हो वह कर्म; (कम्म १, २४; ३१; ३५; ३६; ३७)।

बंधणया स्त्री [**बन्धन**] बन्धन; (भग)।

बंधणी स्त्री [**बन्धनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४१)।

बंधव पुं [**बान्धव**] १ भाई, भ्राता; २ मित्र, वयस्य, दोस्त; ३ नातीदार, नतैत; ४ माता; ५ पिता; ६ माता-पिता का संबन्धी मामा, चाचा आदि; (हे १, ३०; प्रासू ७६; उत्त १८, १४)।

बंधाव (अशो) सक [**बन्धय्**] बँधाना, बँधवाना। बंधापयति; (पि ७)।

बंधाविअ वि [**बन्धित**] बँधाया हुआ; (सुपा ३३५)।

बंधिअ देखो **बद्ध**; (सूअ १, २, १, १८; धर्मवि ३३)।

बंधु पुं [**बन्धु**] १ भाई, भ्राता; २ माता; ३ पिता; ४ मित्र, दोस्त; ५ स्वजन, नातीदार, नतैत; (कुमा; महा; प्रासू १०८; सुपा १६८; २४१) ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**जीव** पुं [°**जीव**] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़; (स्वप्न ६६; कुमा)। °**जीवग** पुं [°**जीवक**] वही अर्थ; (णाया १,१; कप्प; भग)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक श्रेष्ठी का नाम; (महा)। २ एक जैन मुनि का नाम; (राज)। °**मई, °वई** स्त्री [°**मती**] १ भगवान् मल्लिनाथ की मुख्य साध्वी का नाम; (णाया १, ८; पव ६; सम १५२)। २ स्वनाम-ख्यात स्त्री-विशेष; (महा; राज)। °**सिरि** स्त्री [°**श्री**] श्रीदाम राजा की पत्नी; (विपा १, ६)।

बंधुर वि [**बन्धुर**] १ सुन्दर, रम्य; (पाअ)। २ नम्र, अवनत; (गउड २०५)।

बंधुरिय वि [**बन्धुरित**] १ पिंडीकृत; (गउड ३८३)। २ नम्रीभूत, नमा हुआ; (गउड ५५६)। ३ मुकुटित, मुकुट-युक्त; ४ विभूषित; (गउड ५३३)।

बंधुल पुं [**बन्धुल**] वेश्या-पुत्र, असती-पुत्र; (मृच्छ २००)।

बंधूय पुं [**बन्धूक**] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़; (स ३१२)।

बंधोल्ल पुं [दे] मेलक, मेल, संगति; (दे ६, ८६; षड्)।

बंभ पुं [**ब्रह्मन्**] १ ब्रह्मा, विधाता; (उप १०३१ टी; दे ६, २२; कुप्र २०३)। २ भगवान् शान्तिनाथ का शासनाधिष्ठायक

यज्ञ; (संनि ७)। ३ अप्काय का अधिष्ठायक देव; (ठा ५, १—पत्र २६२)। ४ पाँचवें देवलोक का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ५ बारहवें चक्रवर्ती का पिता; (सम १५२)। ६ द्वितीय बलदेव और वासुदेव का पिता; (सम १५२; ठा ६—पत्र ४४७)। ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग; (पउम १७, १०७)। ८ ब्राह्मण, विप्र; (कुलक ३१)। ६ चक्रवर्ती राजा का एक देव-कृत प्रासाद; (उत्त १३, १३)। १० दिन का नववाँ मुहूर्त; (सम ५१)। ११ छन्द-विशेष; (पिंग)। १२ ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (सम २२)। १३ एक जैन मुनि का नाम; (कप्प)। १४ पुंन. एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३१; १३४; सम १६)। १५ मोक्ष, अपवर्ग; (सुअ २, ६, २०)। १६ ब्रह्मचर्य; (सम १८; ओघभा २)। १७ सत्य अनुष्ठान; (सुअ २, ५, १)। १८ निर्विकल्प सुख; (आचा १, ३, १, २)। १६ योगशास्त्र-प्रसिद्ध दशम द्वार; (कुमा)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान; (सम १६)। °कूड पुं [°कूट] १ महाविदेह वर्ष का एक वक्षस्कार पर्वत; (जं ४)। २ न. एक देव-विमान; (सम १६)। °चरण न [°चरण] ब्रह्मचर्य; (कुप्र ४६१)। °चारि वि [°चारिन्] १ ब्रह्मचर्य पालन करने वाला; (णाया १, १; उवा) २ पुं. भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर—प्रमुख मुनि; (ठा ८—पत्र ४२६)। °चेर, °च्चेर न [°चर्य] १ मैथुन-विरति; (आचा; पण्ह २, ४; हे २, ७४; कुमा; भग; सं ११; उप पृ ३४३) २ जिनेन्द्र-शासन, जिन-प्रवचन; (सुअ २, ५, १)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान, (सम १६)। °दत्त पुं [°दत्त] भारतवर्ष में उत्पन्न बारहवाँ चक्रवर्ती राजा; (ठा २, ४; सम १५२; उत्त)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष; (राज)। °दीविया स्त्री [°दीपिका] जैन-मुनि गण की एक शाखा; (कप्प)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान; (सम १६)। °भूइ पुं [°भूति] एक राजा, द्वितीय वासुदेव का पिता; (पउम २०, १८२)। °यारि देखो °चारि; (णाया १, १; सम १३; कप्प; सुपा २७१; महा; राज), स्त्री —°णी; (णाया १, १४)। °रुइ पुं [°रुचि] स्वनाम-प्रसिद्ध एक ब्राह्मण, नारद का पिता; (पउम ११, ५२)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान; (सम १६)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] एक स्वर्ग, पाँचवाँ देवलोक; (भग; अनु; सम १३)। °लोगवडिंसय न [°लोकावतंसक] एक देव-विमान; (सम १३)। °व, °वंत वि [°वत्] ब्रह्मचर्य वाला; (आचा)। °वडिंसय पुं [°ावतंसक] सिद्ध-शिला, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (सम २२)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान; (सम १६)। °वय न [°व्रत] ब्रह्मचर्य; (णाया १, १)। °वि वि [°वित्] ब्रह्म का जानकार; (आचा)। °व्वय देखो °वय; (सं ५६; प्रासू १५६)। °संति पुं [°शान्ति] भगवान् महावीर का शासन-यक्ष; (गण ११; ती १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान; (सम १६)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान; (सम १६)। °सुत्त न [°सूत्र] उपवीत, यज्ञोपवीत; (मोह ३०; सुख २, १३)। °हिअ पुं [°हित] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३४)। °ावत्त न [°ावर्त] एक देव-विमान; (सम १६)। देखो बंभाण, बम्ह।

बंभंड न [**ब्रह्माण्ड**] जगत, संसार; (गउड; कुप्र ४; सुपा ३६८; ५६३)।

बंभण पुं [**ब्राह्मण**] ब्राह्मण, विप्र; (स २६०; सुर २, १३०; सुपा १६८; हे ४, २८०; महा)।

बंभणिआ स्त्री [**ब्राह्मणिका**] पञ्चेन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पुप्फ २६७)।

बंभणिआ, **बंभणी** स्त्री [**दे. बंभणिका**] हलाहल, जहर; (दे ६, ६०; पाअ; दे ८, ६३; ७५)।

बंभण्ण, **बंभण्णय** स्त्री [**ब्रह्मण्य, ब्राह्मण्य, °क**] १ ब्राह्मण का हित; २ ब्राह्मण-संबन्धी; ३ न. ब्राह्मण-समूह; ४ ब्राह्मण-धर्म; "बंभणणकज्जेसु सज्जा" (सम्मत्त १४०; कप्प; औप; पि २५०)।

बंभलिज्ज न [**ब्रह्मलीय**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।

बंभहर न [**दे**] कमल, पद्म; (दे ६, ६१)।

बंभाण देखो बंभ; (पउम ५, १२२)। °गच्छ पुं [°गच्छ] एक जैन मुनि गच्छ; (ती २८)।

बंभि°, **बंभी** स्त्री [**ब्राह्मी**] १ भगवान् ऋषभदेव की एक पुत्री; (कप्प; पउम ५, १२०; ठा ५, २; सम ६०)। २ लिपि-विशेष; (सम ३५; भग)। ३ कन्द-विशेष; (सुपा ३२४)। ४ सरस्वती देवी; (सिरि ७६४)।

बंभुत्तर पुं [**ब्रह्मोत्तर**] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३४)। °वडिंसक न [°ावतंसक] एक देव-विमान; (सम १६)।

बंहि पुं [**बर्हिन्**] मयूर, मोर; (उत्तर २६)।

बंहिण (अप) ऊपर देखो; (पि ४०६)।

बक देखो **बय**; (पराह १, १—पत्र ८)।

बक्कर न [**दे. बर्कर**] परिहास; (दे ६, ८६; कुप्र १६७; कप्पू)।

बक्कस न [**दे**] अन्न-विशेष; "'बक्कसं' मुद्गमाषादिनषिका-निष्पन्नमन्नं" (सुख ८, १२; उत्त ८, १२)।

बग देखो **बय**; (दे २, ६; कुप्र ६६)।

बगदादि पुं [**बगदादि**] देश-विशेष; बगदाद देश; "बगदा-दिविसयवसुहाहिवस्स खलीपनामधेयस्स" (हम्मीर ३४)।

बगी स्त्री [**बकी**] बगुली, बगुले की मादा; (विपा १, ३; मोह ३७)।

बग्गड पुं [**दे**] देश-विशेष; (ती १५)।

बज्झ वि [**बाह्य**] बाहर का, बहिरङ्ग; (पराह १, ३; प्रासू १७२)। °**ओ** अ [°**तस्**] बाह्य से, बहिरंग से; "किं ते जुज्झेण बज्झओ" (आचा)।

बज्झ न [**बन्ध**] बन्धन, बाँधने का वागुरा आदि साधन; "अह तं पवेज्ज बज्झं, अहे बज्झस्स वा वए" (सूअ १, १, २, ८)।

बज्झ वि [**बद्ध**] १ बन्धनाकार व्यवस्थित; "अह तं पवेज्ज बज्झं" (सूअ १, १, २, ८)। २ बँधा हुआ; (प्रति १५)।

बज्झंत } देखो **बन्ध=बन्ध्**।
बज्झमाण }

बढर पुं [**बठर**] मूर्ख छात्र; (कुप्र १६)।

बड (अप) वि [**दे**] बड़ा, महान्; (पिंग)। देखो **वड्ड**।

बडबड अक [**वि+लप्**] विलाप करना, बड़बड़ाना। बडबडइ; (षड्)।

बडहिला स्त्री [**दे**] धुरा के मूल में दी जाती कील, कीलक-विशेष; (सढि ११६)।

बडिस देखो **बलिस**; (हे १, २०२)।

बडु } पुं [**बटु, °क**] लड़का, छोकड़ा; (उप ७१३;
बडुअ } सुपा २००)।

बडुवास [**दे**] देखो **वडुवास**; (दे ७, ४७)।

बतीस } (अप) देखो **बत्तीस**; (पिंग)।
बत्तिस }

बत्तीस स्त्रीन [**द्वात्रिंशत्**] १ संख्या-विशेष, बत्तीस, ३२; २ जिनकी संख्या बत्तीस हो वे; "बत्तीसं जोगसंगहा पन्नत्ता" (सम ५७; औप; उव; पिंग)। स्त्री—°**सा**; (सम ५७)।

बत्तीसइ° स्त्री. ऊपर देखो; (सम ५७)। °**बद्धय** न [°**बद्धक**] १ बत्तीस प्रकार की रचनाओं से युक्त, २ बत्तीस पात्रों से निबद्ध (नाटक); "बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं" (णाया १, १—पत्र ३६; विपा २, १ टी—पत्र १०४)। °**विह** वि [°**विध**] बत्तीस प्रकार का; (सम ५७)।

बत्तीसइम वि [**द्वात्रिंशत्तम**] १ बत्तीसवाँ, ३२ वाँ; (पउम ३२, ६७; पराण ३२)। २ न. पनरह दिनों का लगातार उपवास; (णाया १, १)।

बत्तीसा देखो **बत्तीस**।

बत्तीसिया स्त्री [**द्वात्रिंशिका**] १ बत्तीस पद्यों का निबन्ध—ग्रन्थ; (सम्मत्त १४४)। २ एक प्रकार का नाप; (अणु)।

बद्ध वि [**बद्ध**] १ बँधा हुआ, नियन्त्रित; "बद्धं संदाणिअं निअलिअं च" (पाअ)। २ संश्लिष्ट, संयुक्त; (भग; पाअ)। ३ निबद्ध, रचित; (आवम)। °**प्फल**, °**फल** पुं [°**फल**] १ करञ्ज का पेड़; (हे २, ६७)। २ वि. फल-युक्त, फल-संपन्न; (णाया १, ७—पत्र ११६)।

बद्धय पुं [**दे**] कान का एक आभूषण; (दे ६, ८६)।

बद्धेल्लग } देखो **बद्ध**; (अणु; महा)।
बद्धेल्लय }

बप्प पुं [**दे**] १ सुभट, योद्धा; (दे ६, ८८)। २ बाप, पिता; (दे ६, ८८; दस ७, १८; स ५८१; उप ३२० टी; सुर १, २२१; कुप्र ४३; जय; भवि; पिंग)।

बप्पहट्टि पुं [**बप्पभट्टि**] एक सुविख्यात जैन आचार्य; (विचार ५३३; ती ७)।

बप्पीह पुं [**दे**] पपीहा, चातक पत्नी; (दे ६, ६०; स ६८६; पाअ; हे ४, ३८३)।

बप्पुड वि [**दे**] विचारा, दीन, अनुकम्पनीय; गुजराती में 'वापडुं'; (हे ४, ३८७; पिंग)।

बप्फ पुंन [**बाष्प**] १ भाफ, ऊष्मा; "बप्फो" (हे २, ७०; षड्), "बप्फं" (प्राक्व २३; विसे १५३५)। २ नेत्र-जल, अश्रु; "बप्फं बाहो य नयणजलं" (पाअ), "बप्फपज्जाउल-लोअणाहिं" (स ५६१; स्वप्न ८५)।

बप्फाउल वि [**दे. बाष्पाकुल**] अतिशय उष्ण; (दे ६, ६२)।

बब्बर पुं [**बर्बर**] १ अनार्य देश-विशेष; (पउम ६८, ६५)। २ वि. बर्बर देश का निवासी; (पराह १, १; पउम

६६, ५५)। °कूल न [°कूल] बर्बर देश का किनारा; (सिरि ४३०)।

बब्बरी स्त्री [दे] केश-रचना; (दे ६, ६०)।

बब्बरी स्त्री [बर्बरी] बर्बर देश की स्त्री, (णाया १, १; औप; इक)।

बब्बूल पुं [बब्बूल] वृक्ष-विशेष, बबूल का पेड़; (उप ८३३ टी; महा)।

बब्भ पुं [दे] वर्ध, चर्म, चमड़े की रज्जु; 'बब्भो बद्धो' (दे ६, ८८), "वज्झो बद्धो=(? बब्भा बद्धा)" (पात्र)।

बब्भागम वि [बह्वागम] बहु-श्रुत, शास्त्रों का अच्छा जानकार; (कप्प)।

बब्भासा स्त्री [दे] नदी-भेद, वह नदी जिसके पूर से भावित पानी में धान्य आदि बोया जाता हो; (राज)।

बब्भिआयण न [बाभ्रव्यायन] गोत्र-विशेष; (इक)।

बमाल पुं [दे] कलकल, कोलाहल; (दे ६, ६०)।

बम्ह पुं [ब्रह्मन्] १ ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७७)। २—देखो बंभ; (हे २, ७४; कुमा; गा ८१६; अच्चु १३; वज्जा २६; सम्मत्त ७७; हे १, ५६; २, ६३; ३, ५६)। °चरिअ देखो बंभ-चेर; (हे २, ६३; १०७)। °तरु पुं [°तरु] पलाश का पेड़; (कुमा)। °धमणी स्त्री [°धमनी] ब्रह्मनाड़ी; (अच्चु ८४)।

बम्हज्ज (शौ) देखो बंभण्ण; (प्राकृ ८७)।

बम्हण देखो बंभण; (अच्चु १७; प्रयौ ३७)।

बम्हण्णय देखो बंभण्णय; (भग)।

बम्हहर [दे] देखो बंभहर; (षड्)।

बम्हाल पुं [दे] अपस्मार, वायु-रोग विशेष, मृगी रोग; (षड्)।

बय पुं [बक] १ पक्षि-विशेष, बगुला; २ कुबेर; ३ महादेव; ४ पुष्प-वृक्ष विशेष, मल्लिका का गाछ; (श्रा २३)। ५ राक्षस-विशेष; (श्रा २३)। ६ असुर-विशेष, बकासुर; (वेणी १७७)।

बयाला देखो बा-याला; (पव १६)।

बरठ पुं [दे] धान्य-विशेष; (पव १५४ टी)।

बरह न [बर्ह] १ मयूर-पिच्छ; (स ५००)। २ पत्र; ३ परिवार; (प्राकृ २८)। देखो बरिह।

बरहि } पुं [बर्हिन्] मयूर, मोर; (पात्र; प्राकृ २८; पउम २८, १२०; णाया १, १; पण्ह १, १; औप)।
बरहिण }

बरिह देखो बरह; (हे २, १०४)। °हर पुं [°धर] मयूर; (षड्; प्राकृ २८)।

बरिहि } देखो बरहि; (कप्पू; हे ४, ४२२)।
बरिहिण }

बरुअ न [दे] तृण-विशेष, इक्षु-सदृश तृण; (दे ६, ९६; ६, ६१; पात्र)।

बल अक [बल्] १ जीना। २ सक. खाना। बलइ; (हे ४, २५६)।

बल सक [ग्रह्] ग्रहण करना। बलइ; (षड्)। देखो बल=ग्रह्।

बल पुं [बल] १ बलदेव, हलधर, वासुदेव का बड़ा भाई; (पउम २०, ८४; पात्र) २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ एक क्षत्रिय परिव्राजक; (औप)। ४ न. सामर्थ्य, पराक्रम; (जी ४२; स्वप्न ४२; प्रासू ६३)। ५ शारीरिक पराक्रम; "बलवीरियाणं जओ भेओ" (अज्झ ६५)। ६ सैन्य, सेना; (उत्त ६, ४; कुमा)। ७ खाद्य-विशेष; "आसाढाहिं बलेहिं भोच्चा कज्जं साधेंति" (सुज्ज १०, १७)। ८ अष्टम तप, लगातार तीन दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ९ पर्वत-विशेष का एक कूट—शिखर; (ठा ९)। °च्छिउ वि [°च्छित्] १ बल का नाशक; २ न. जहर, विष; (से २, ११)। °ण्णु देखो °न्न; (राज)। °देव पुं [°देव] हली, वासुदेव का बड़ा भाई, राम (सम ७१; औप)। °न्न वि [°ज्ञ] बल को जानने वाला; (आचा)। °भद्द पुं [°भद्र] १ भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव; (सम १५४)। २ राजा भरत का एक प्रपौत्र; (पउम ५, ३)। ३ एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३३)। देखो °हद्द। °भाणु पुं [°भानु] राजा बलमित्र का भागिनेय; (काल)। °महणी स्त्री [°मथनी] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२)। °मित्त पुं [°मित्र] इस नाम का एक राजा; (विचार ४६४; काल)। °व वि [°वत्] १ बलवान्, बलिष्ठ; (विसे ७६८)। २ प्रभूत सैन्य वाला; (औप)। ३ पुं. अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। °वइ पुं [°पति] सेनापति, सेनाध्यक्ष; (महा)। °वंत, °वग देखो °व; (णाया १, १; औप; णाया १, ५)। °वत्त न [°वत्त्व] बलिष्ठता; (आघभा ६)। °वाउय वि [°व्यापृत] सैन्य में लगाया हुआ; (औप)। °हद्द पुं [°भद्र] १ बलदेव; २ छन्द-विशेष; (पिंग)। देखो °भद्द।

बलकार } पुं [**बलात्कार**] जबरदस्ती; (पउम ४६,
बलक्कार } २६; दे ६, ४६; अभि २१७; स्वप्न ७६)।

बलक्कारिद (शौ) वि [**बलात्कारित**] जिस पर बलात्कार किया गया हो वह; (नाट—मालती १२३)।

बलद्द पुं [**दे**] बलध, बैल; (सुपा ५४५; नाट—मृच्छ ६०)।

बलमड्डा स्त्री [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती; (दे ६, ६२)।

बलमोडि देखो **बलामोडि**; "मग्गिअलद्धे बलमोडिचुंबिए अप्पणेण उवणीदे" (गा ८२७)।

बलमोडिअ देखो **बलामोडिअ**; "केसेसु बलमोडिअ तेण समरम्मि जअस्सिरी गहिआ" (गा ६७७)।

बलय पुं [**दे**] बलध, बैल; (पउम ८०, १३)।

बलया देखो **बलाया**; (हे १, ६७)।

बलवट्टि स्त्री [**दे**] १ सखी; २ व्यायाम को सहन करने वाली स्त्री; (दे ६, ६१)।

बलहट्टुया स्त्री [**दे**] चने के रोटी; (वज्जा ११४)।

बला अ. स्त्री [**बलात्**] जबरदस्ती, बलात्कार; (से १०, ७८; ओघभा २०), "बलाए" (उप १०३१ टी)।

बला स्त्री [**बला**] १ मनुष्य की दश दशाओं में चौथी अवस्था, तीस से चालीस वर्ष तक की अवस्था; (तंदु १६)। २ दृष्टि-विशेष, योग की एक दृष्टि; ३ भगवान् कुन्थुनाथ की शासन-देवी, अच्युता; (राज)।

बलाका देखो **बलाया**; (पण्ह १, १—पत्न ८)।

बलाणय न [**दे**] १ उद्यान आदि में मनुष्य को बैठने के लिए बनाया जाता स्थान—बेंच आदि; (धर्मवि ३३; सिरि ५८६)। २ द्वार, दरवाजा; "पविसंतो चेव बलाणयम्मि कुज्जा निसीहिया तिन्नि" (चेइय १८८)।

बलामोडि स्त्री [**दे. बलामोटि**] बलात्कार; (दे ६, ६२)।

बलामोडिअ अ [**दे. बलादामोट्य**] बलात्कार से, जबरदस्ती से; "केसेसु बलामोडिअ तेण अ समरम्मि जयसिरी गहिआ" (काप्र १६७; उत्तर १०३; पि २३८)।

बलामोलि देखो **बलामोडि**; (से १०, ६४)।

बलाया स्त्री [**बलाका**] बक-विशेष, बिसकण्ठिका, बगुले की एक जाति; (हे १, ६७; उप १०३१ टी)।

बलाहग पुं [**बलाहक**] मेघ, जीमूत; "गलियजलबलाहग-पंडुरं" (सुपा)।

बलाहगा देखो **बलाहया**; (ठा ८)।

बलाहय देखो **बलाहग**; (णाया १, ५; कप्प; पाअ)।

बलाहया स्त्री [**बलाहका**] १ बक-विशेष, बलाका; (उप २६४)। २ देवी-विशेष, अनेक दिक्कुमारी देवियों का नाम; (इक—पत्न २३१; २३४)।

बलि पुं [**बलि**] १ असुरकुमारों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३; १०; इक)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा; (गा ४०६)। ३ सातवाँ प्रतिवासुदेव; (पउम ५, १५६)। ४ एक दानव, दैत्य-विशेष; (कुमा)। ५ पुंस्त्री. उपहार, भेंट; (पिंड १६५; दे १, ६६)। ६ पूजोपहार, देवता को धरा जाता नैवेद्य; "सुरहिविलेवणवरकुसुमदामबलिदीवणेहिं च" (पव १ टी), "वंदणपूयणबलिढोयणेसु" (चेइय ५२; पव १३३; सुर ३, ७८; कुप्र १७४)। ७ भूत आदि को दिया जाता भोग, बलिदान; "भूअबलिव्व" (वै ४६)। ८ पूजा, अर्चा, सपर्या; ९ राज-ग्राह्य भाग; १० चामर का दण्ड; ११ उपप्लव; (हे १, ३५)। १२ छन्द-विशेष; (पिंग)। °उट्ठ पुं [°पुष्ट] काक, कौआ; (पाअ)। °कम्म न [°कर्मन्] १ पूजन, पूजा की क्रिया; २ देवता को उपहार—नैवेद्य—धरने की क्रिया; (भग; सूअ २, २, ५५; णाया १, १; ८; कप्प; औप)। °चंचा स्त्री [°चञ्चा] बलीन्द्र की राजधानी; (णाया २; इक)। °मुह पुं [°मुख] बन्दर, कपि; (पाअ)। °यम्म देखो °कम्म; (पउम ३७, ४६)।

बलि वि [**बलिन्**] १ बलवान्, बलिष्ठ; (सुपा ४५१; कुप्र २७७)। २ पुं. रामचन्द्र का एक सुभट; (पउम ५६, ३८)।

बलिअ वि [**दे**] १ पीन, मांसल, स्थूल, मोटा; (दे ६, ८८; उप १४२ टी; बृह ३)। २ क्रिवि. गाढ, बाढ, अतिशय, अत्यर्थ; "गाढं बाढं बलिअं धणिअं दढमइसएण अच्चत्थं" (पाअ; णाया १, १—पत्न ६४; भग ६, ३३)।

बलिअ वि [**बलिन्, बलिक**] १ बलवान्, सबल, पराक्रमी; "कत्थवि जीवो बलिओ कत्थवि कम्माइं हुंति बलियाइं" (प्रासू १२३), "एस अम्ह ताओ बलियदाइयपेल्लिओ इमं विसमं पल्लिं समस्सिओ" (महा; पउम ४८, ११७; सुपा २७५; औप)। २ प्राण वाला; (ठा ४, ३—पत्न २४६)।

बलिअ वि [**बलित**] जिसको बल उत्पन्न हुआ हो, सबल; (कुप्र २७७)। २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)।

बलिअंक पुं [**बलिताङ्क**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

बलिआ स्त्री [**दे. बलिका**] सूर्प, अन्न को तुषादि-रहित करने का एक उपकरण; (आवम)।

बलिट्ठ वि [**बलिष्ठ**] बलवान्, सबल; (प्रास १६४)।
बलिद्द पुं [**दे. बलीवर्द**] बलद, वृषभ: "दो सारबलिद्दावि हु" (सुपा २३८)।
बलिमड्डा स्त्री [**दे**] बलात्कार: "अन्नह बलिमड्डाए गहिउमणो सोम ! एकलियं" (उप ७२८ टी)।
बलिवद्द देखो **बलीवद्द**; (पउम ३३, ११६)।
बलिस न [**बडिश**] मछली पकड़ने का काँटा; (हे १, २०२)।
बलिस्सह पुं [**बलिस्सह**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि, आर्य महागिरि का एक शिष्य; (कप्प)।
बलीअ वि [**बलीयस्**] अधिक बल वाला, बलिष्ठ; (अभि १०१)।
बलीवद्द पुं [**बलीवर्द**] बैल, वृषभ; (विपा १, २)।
बलुल्लड (अप) देखो **बल=बल**; (हे ४, ४३०)।
बले अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय:—१ निश्चय, निर्णय; २ निर्धारण; (हे २, १८५; कुमा)।
बल्ल न [**बाल्य**] बालत्व, बालकपन, शिशुता; (कुमा ३, ३५)। देखो **बाल=बाल्य**।
बव सक [**ब्रू**] बोलना, कहना। बवइ, बवए; (षड्)। देखो **बुव, बू**।
बव न [**बव**] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक करण; (विसे ३३४८; सुज्ज १; सुपा १०८)।
बव्वाड पुं [**दे**] दक्षिण हस्त; (दे ६, ८६)।
बहड वि [**बृहत्**] बड़ा, महान्। °**इच्च** न [°**आदित्य**] नगर-विशेष; (ती ३५)।
बहत्तरी देखो **बाहत्तरि**; (पव २०)।
बहप्पइ } **बहप्फइ** } देखो **बहस्सइ**; (हे १, १३८; २, ६६; १३७; षड्; कुमा; सम्मत १३७)।
बहरिय देखो **बहिरिय**; "तालरवबहरियदियंतरं" (महा)।
बहल न [**दे**] पंक, कर्दम, कादा; (दे ६, ८६)। °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] पंक वाली मदिरा; (दे ५, २)।
बहल वि [**बहल**] १ निबिड, सान्द्र, निरंतर, गाढ; (गउड; हे २, १७७)। २ स्थूल, मोटा; (ठा ४, २; गउड)। ३ पुष्कल, अत्यन्त; (कप्पू)।
बहलिम पुंस्त्री [**बहलता**] १ स्थूलता, मोटाई; २ सातत्य, निरंतरता; (वज्जा ५२; गा ७५५)।
बहली स्त्री [**बहली**] १ देश-विशेष, भारतवर्ष का एक उत्तरीय देश; "तक्खसिलाइ पुरीए बहलीविसयावयंसभूयाए" (कुप्र २१२)। २ बहली देश की स्त्री; (णाया १, १—पत्र ३७; औप; इक)।
बहलीय वि [**बहलीक**] देश-विशेष में—बहली देश में—रहने वाला; (पराह १, १—पत्र १४)।
बहव देखो **बहु**; "काले समइक्कंते अइबहवे" (पउम ४१, ३६), "मोहग्गकम्मनरवरगमुहत्ते सा कुणइ बहवे" (सम्मत्त २१७), "जायंति बहववेरग्गफल्लवुल्लासिणो भत्ति" (हि ५)।
बहस्सइ पुं [**बृहस्पति**] १ ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज २०—पत्र २६४)। २ सुराचार्य, देव-गुरु; (कुमा)। ३ पुष्य नक्षत्र का अधिष्ठाता देव; (सुज्ज १०, १२)। ४ राजनीति-प्रणेता एक ऋषि; ५ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक विद्वान्; (हे २, १३७)। ६ एक ब्राह्मण, पुरोहित-पुत्र; ७ विपाकसूत्र का एक अध्ययन; (विपा १, १)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] देखो अंत के दो अर्थ; (विपा १, ५)।
बहि अ [**बहिस्**] बाहर; "अबहिलेसे परिव्वए" (आचा), "गामबहिम्मि य तं ठाविऊण गामंतरे पविट्ठो सो" (उप ६ टी)। °**हुत्त** वि [°**दे**] बहिर्मुख; (गउड)।
बहिअ वि [**दे**] मथित, विलोडित; (षड्)।
बहिं देखो **बहि**; (आचा; उव)।
बहिणिआ } **बहिणी** } स्त्री [**भगिनी**] बहिन; (अभि १३७; कप्पू; प्राप्र; पउम ६, ६; हे २, १२६; कुमा)। २ सखी, वयस्या; (संचि ४७)। °**तणअ** पुं [°**तनय**] भगिनी-पुत्र; (दे)। °**वइ** पुं [°**पति**] बहनोई; (दे)। देखो **भइणी**।
बहित्ता अ [**बहिस्तात्**] बाहर; (सुज्ज ६)।
बहिद्धा अ [**दे**] १ बाहर; २ मैथुन, स्त्री-संभोग; (हे २, १७४; ठा ४, १—पत्र २०१)।
बहिया अ [**बहिस्, बहिस्तात्**] बाहर; (विपा १,१; आचा; उवा; औप)।
बहिर वि [**बाह्य**] बहिर्गत, बाहर का; (प्राकृ ३८)।
बहिर वि [**बधिर**] बहरा, जो सुन न सकता हो वह; (विपा १, १; हे १, १८७; प्रासू १४३)।
बहिरिय वि [**बधिरित**] बधिर किया हुआ; (सुर २, ७५)।
बहु वि [**बहु**] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक, अनल्प; (ठा ३, १; भग; प्रासू ४१; कुमा; धा २७)। स्त्री—°**हुई**; (षड्; प्राकृ २८)। २ क्रिवि. अत्यन्त, अतिशय; (कुमा ५, ६६;

काल)। °उदग पुं [°उदक] वानप्रस्थ का एक भेद; (औप)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४६)। °जंपिर वि [°जल्पितृ] वाचाट, बकवादी; (पाअ)। °जण पुं [°जन] अनेक लोग; (भग)। २ न. आलोचना का एक प्रकार; (ठा १०)। °णड देखो °नड; (राज)। °णाय न [°नाद] नगर-विशेष; (पउम ५५, ५३)। °देसिअ वि [°देश्य] कुछ ज्यादः, थोड़ा बहुत; (आचा २, ५, १, २२)। °नड पुं [°नट] नट की तरह अनेक भेष को धारण करने वाला; (आचा)। °पडिपुण्ण, °पडिपुन्न वि [°परिपूर्ण] पूरा पूरा; (ठा ६; भग)। °पढिय वि [°पठित] अति शिक्षित, अतिशय शिक्षित; (णाया १, १४)। °पलावि वि [°प्रलापिन्] बकवादी; (उप पृ ३३६)। °पुत्तिअ न [°पुत्रिक] बहुपुत्रिका देवी का सिंहासन; (निर १, ३)। °पुत्तिआ स्त्री [°पुत्रिका] १ पूर्णभद्र-नामक यक्षेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १; णाया २)। २ सौधर्म देवलोक की एक देवी; (निर १, ३)। °प्पएस वि [°प्रदेश] प्रचुर प्रदेश—कर्म-दल—वाला; (भग)। °फोड वि [°स्फोट] बहु-भक्षक; (ओघभा १६१)। °भंगिय न [°भङ्गिक] दृष्टिवाद का सूत्र-विशेष; (सम १२८)। °मय वि [°मत] १ अत्यन्त अभीष्ट; (जीव १)। २ अनुमोदित, संमत, अनुमत; (काप्र १७६; सुर ४, १८८)। °माइ वि [°मायिन्] अति कपटी; (आचा)। °माण पुं [°मान] अतिशय आदर; (आवम; पि ६००; नाट—विक्र ५)। °माय वि [°माय] अति कपटी; (आचा)। °मुल्ल, °मोल्ल वि [°मूल्य] मूल्यवान्, कीमती; (राज; षड्)। °रय वि [°रत] १ अत्यन्त आसक्त; (आचा)। २ जमालि का अनुयायी; ३ न. जमालि का चलाया हुआ एक मत—क्रिया की निष्पत्ति अनेक समयों में ही मानने वाला मत; (ठा १०; औप)। °रय न [°रजस्] खाद्य-विशेष, चिऊड़ा की तरह का एक प्रकार का खाद्य; (आचा २, १, १, ३)। °रव वि [°रव] १ प्रभूत यश वाला, यशस्वी; (सम ५१)। २ न. एक विद्याधर-नगर; (इक)। °रूवा स्त्री [°रूपा] सुरूप-नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १; णाया २)। °लेव पुं [°लेप] चावल आदि के चिकने माँड़ का लेप; (पडि)। °वयण न [°वचन] बहुत्व-बोधक प्रत्यय; (आचा २, ४, १, ३)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का, नानाविध; (कुमा; उव)। °विहीय वि [°विध, °विधिक] विविध, अनेक तरह का; (सूअनि ६४)। °संपत्त वि [°संप्राप्त] कुछ कम संप्राप्त; (भग)। °सच्च पुं [°सत्य] अहोरात्र का दशवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। °सो अ [°शस्] अनेक वार; (उव; श्रा २७; प्रासू ४२; १५६; स्वप्न ५६)। °स्सुय वि [°श्रुत] शास्त्र-ज्ञ, शास्त्रों का अच्छा जानकार, पण्डित; (भग; सम ५१; ठा ६—पत्र ३५२; सुपा ५६४)। °हा अ [°धा] अनेकधा; (उव; भवि)।

बहुअ, **बहुअय** वि [बहु, °क] ऊपर देखो; (हे २, १६४; कुमा; श्रा २७)।

बहुई देखो **बहु=ई**।

बहुग देखो **बहुअ**; (आचा)।

बहुजाण पुं [दे] १ चोर, तस्कर; २ धूर्त, ठग; ३ जार, उपपति; (षड्)।

बहुण पुं [दे] १ चोर, तस्कर; २ धूर्त; (दे ६, ६७)।

बहुणाय वि [बाहुनाद] बहुनाद-नगर का; (पउम ५५, ५३)।

बहुत्त वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर; (हे १, २३३)।

बहुमुह पुं [दे. बहुमुख] दुर्जन, खल; (दे ६, ६२)।

बहुराणा स्त्री [दे] खड्ग-धारा, तलवार की धार; (दे ६, ६१)।

बहुरावा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली; (दे ६, ६१)।

बहुरिया स्त्री [दे] बुहारी, झाड़ू; (बृह १)।

बहुल वि [बहुल] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक; (कुमा; श्रा २८)। २ बहुविध, अनेक प्रकार का; (आवम)। ३ व्याप्त; (सुपा ६३०)। ४ पुं. कृष्ण पक्ष; (पाअ)। ५ स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण; (भग १५)।

बहुला स्त्री [बहुला] १ गौ, गैया; (पाअ)। २ इस नाम की एक स्त्री; (उवा)। °वण न [°वन] मथुरा नगरी का एक प्राचीन बन; (ती ७)।

बहुलि पुं [बहुलिन्] स्वनाम-ख्यात एक राज-पुत्र; (उप ६३७)।

बहुली स्त्री [दे] माया, कपट, दम्भ; (सुपा ६३०)।

बहुल्लिआ स्त्री [दे] बड़े भाई की स्त्री; (षड्)।

बहुल्ली स्त्री [दे] क्रीड़ोचित शालभञ्जिका, खेलने की पुतली; (षड्)।

बहुवी देखो **बहुई**; (हे २, ११३)।

बहूअ वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर; (गउड)।

बहेडय पुं [**बिभीतक**] १ बहेड़ा का पेड़; (हे १, ८८; १०५; २०६)। २ न. बहेड़ा का फल; (कुमा)।

बा° वि. ब. [**द्वा°, द्वि**] दो, दो की संख्या वाला। °**इस** (अप) देखो °**वीस**; (पिंग)। °**ईस** देखो °**वीस**; (पिंग)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] बानबे, ६२; (सम ६६; कम्म ६, २६) °**णउय** वि [°**नवत**] ६२ वाँ; (पउम ६२, २६)। °**णुवइ** देखो °**णउइ**; (ग्यण ७२)। °**याल**, °**यालीस** स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] बेयालीस, चालीस और दो, ४२; (उव; नव २; भग; सम ६६; कप्प; औप), स्त्री—°**याला**; °**यालीसा**; (कम्म ६, ६; कप्प)। °**यालीसइम** वि [°**चत्वारिंशत्तम**] बेयालीसवाँ, ४२ वाँ; (पउम ४२, ३७)। °**र**, °**रस** वि. ब. [°**दशन्**] बारह, १२; "बारसभिक्खुपडिमधरं" (संबोध २२; कम्म ४, ५; १५; नव २०; दं ७; कप्प; जी २८; उवा)। °**रस** वि [°**दश**] बारहवाँ, १२ वाँ; (सुख २, १७)। °**रसंग** स्त्रीन [°**दशाङ्ग**] बारह जैन अंग-ग्रन्थ; (पि ४११), स्त्री—°**गी**; (राज)। °**रसम** वि [°**दश**] बारहवाँ; (सुअ २, २, २१; पव ४६; महा)। °**रसमासिय** वि [°**दशमासिक**] बारह मास का, बारह-मास-संबंधी; (कुप्र १४१)। °**रसय** न [°**दशक**] बारह का समूह; (अोघभा १५)। °**रसवरिसिय** वि [°**दशवार्षिक**] बारह वर्ष का; (मोह १०२; कुप्र ६०)। °**रसविह** वि [°**दशविध**] बारह प्रकार का; (नव ३०)। °**रसाह** न [°**दशाह**, °**दशाख्य**] १ बारहवाँ दिन; २ जन्म के बारहवें दिन किया जाता उत्सव; (णाया १, १; कप्प; औप; सुर ३, २५)। °**रसी** स्त्री [°**दशी**] बारहवीं तिथि, द्वादशी; (सम २६; पउम ११७, ३२; ती ७)। °**रसुत्तरसय** वि [°**दशोत्तरशत**] एक सौ बारहवाँ; (पउम ११२, २३)। °**रह** देखो °**रस**=दशन्; (हे १, २१६)। °**वट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] बासठ, ६२; (सम ७५; पंच ५, १८; सुर १३, २३८; देवेन्द्र १३७)। °**वण** (अप) देखो °**वन्न**; (पिंग)। °**वण्ण** देखो °**वन्न** ; (कुमा)। °**वत्तर** वि [°**सप्तत**] बहत्तरवाँ, ७२ वाँ; (पउम ७२, ३८)। °**वत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] बहत्तर, ७२; (सम ८३; भग; औप; प्रासू १२६)। °**वन्न** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] बावन, पचास और दो, ५२; (सम ७१; महा), "बावन्नं होंति जिणभवणा" (सुख ६, १)। °**वन्न** वि [°**पञ्चाश**] बावनवाँ; (पउम ५२, ३०)। °**वीस** स्त्रीन [°**विंशति**] बाईस, २२; (भग; जी ३४), स्त्री—°**सा**; (पि ४४७)। °**वीस** वि [°**विंश**] बाईसवाँ, २२ वाँ; (पउम २०, ८२; पव ४६)। °**वीसइ** देखो °**वीस**=विंशति; (भग; पव १८६)। °**वीसइम** वि [°**विंशतितम**] १ बाईसवाँ, २२ वाँ; (पउम २२, ११०; श्रंत २६)। २ लगा तार दस दिन का उपवास; (णाया १, १—पत्र ७२)। °**वीसविह** वि [°**विंशतिविध**] बाईस प्रकार का; (सम ४०)। °**सट्ठ** वि [°**षष्ट**] बासठवाँ, ६२ वाँ; (पउम ६२, ३७)। °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] बासठ, ६२; (सम ७५; पिंग)। °**सी**, °**सीइ** स्त्री [°**अशीति**] बयासी, ८२; (नव २; सम ८६; कप्प; कम्म ५, १७)। °**सीइम** वि [°**अशीतितम**] बयासीवाँ; ८२ वाँ; (पउम ८२, १२२)। °**हत्तर** (अप) देखो °**हत्तरि**; (सण)। °**हत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] बहत्तर, ७२; (कप्प; कुमा; सुपा ३१६)।

बाअ पुं [**दे**] बाल, शिशु; (षड्)।

बाइया स्त्री [**दे**] मा, माता; गुजराती में 'बाई'; (कुप्र ८७)।

बाउल्लया, **बाउल्लिआ**, **बाउल्ली** स्त्री [**दे**] पञ्चालिका, पुतली; "आलिहियभित्तिबाउल्लयं व न हु मुंजिउं तरइ" (वज्जा ११८; कप्पू; दे ६, ६२)।

बाउस देखो **बउस**; (पिंड २४; ओघ ३४८)।

बाउसिय वि [**बाकुशिक**] 'बकुश' चारित्र वाला; (सुख ६, १)।

बाउसिया स्त्री [**बकुशिका**] 'बकुश' चारित्र वाली; (णाया १, १६—पत्र २०६)।

बाढ क्रिवि [**बाढ**] १ अतिशय, अत्यंत, घना; (उप ३२०; पाअ; महा)। °**क्कार** पुं [°**कार**] स्वीकार-सूचक उक्ति; (विसे ५६५)।

बाण पुं [**दे**] १ पनस वृक्ष, कटहर का पेड़; २ वि. सुभग; (दे ६, ६७)।

बाण पुंस्त्री [**बाण**] १ वृक्ष-विशेष, कटसरैया का गाछ; (पण्ण १७—पत्र ५२६; कुमा)। २ पुं. शर, बाण; (कुमा; गउड)। ३ पाँच की संख्या; (सुर १६, २४६)। °**वत्त** न [°**पात्र**] तूणीर, शरधि; (से १, १८)।

बाध देखो **बाह**=बाध्। कवकृ—**बाधीअमाण**; (पि ५६३)।

बाधा स्त्री [**बाधा**] विरोध; (धर्मसं ११७)।

बाधिय वि [**बाधित**] विरोध वाला, प्रमाण-विरुद्ध ; (धर्मसं २५६) ।

बाम्हण देखो **बम्हण**; (हे १, ६७; षड्) ।

बाय न [**बाक**] बक-समूह ; (श्रा २३) ।

बायर वि [**बादर**] १ स्थूल, मोटा, अ-सूक्ष्म ; (पणह १, १; पत्र १६२ ; दे ४४) २ नववाँ गुण-स्थानक ; (कम्म २, ३; ५ ; ७) । °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, स्थूलता-हेतु कर्म; (सम ६७) ।

बार न [**द्वार**] दरवाजा; (हे १, ७६) ।

बारगा स्त्री [**द्वारका**] स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी, जो आजकल भी काठियावाड़ में 'द्वारका' के ही नाम से प्रसिद्ध है; (उत्त २२, २२; २७) ।

बारवई स्त्री [**द्वारवती**] १ ऊपर देखो; (सम १५१; णाया १, ५; उप ६४८ टी) । २ भगवान् नेमिनाथ की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२६) ।

बाल पुं [**बाल**] १ बाल, केश; (उप ८३४) । २ बालक, शिशु; (कुमा; प्रासू ११६) । ३ वि. मूर्ख, अज्ञानी; (पाअ) । ४ नया, नूतन; (कप्पू) । ५ पुं. स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजा; (पउम १०, २१) । ६ वि. असंयत, संयम-रहित; (ठा ४, ३) । °**कइ** पुं [°**कवि**] तरुण कवि, नया कवि; (कप्पू) । °**क** पुं [°**र्क**] उदित होता सूर्य; (कुमा) । °**ग्गाह** पुं [°**ग्राह**] बालक की सार-सम्हाल करने वाला नौकर; (सुर १, १६२) । °**ग्गाहि** पुं [°**ग्राहिन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (णाया १, २—पत्र ८४) । °**घाय** वि [°**घात**] बाल-हत्या करने वाला; (णाया १, २; १८) । °**तव** पुंन [°**तपस्**] १ अज्ञानी की तपश्चर्या; (भग; औप) । २ वि. अज्ञान-पूर्वक तप करने वाला; (कम्म १, ५६) । °**तवस्सि** वि [°**तपस्विन्**] अज्ञान-पूर्वक तप करने वाला, मूर्ख तपस्वी; (पि ४०५) । °**पंडिअ** वि [°**पण्डित**] आंशिक त्याग करने वाला, कुछ अंशों में त्यागी और कुछ में अ-त्यागी; (भग)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] अनभिज्ञ; (धण ५०) । °**मरण** न [°**मरण**] अ-विरत दशा का मरण, अ-संयमी की मौत; (भग; सुपा ३५७) । °**वियण** पुंस्त्री [°**व्यजन**] चामर; (णाया १, ३), स्त्री—"उवणाहाओ बालवी(? वि)अणी" (ठा ५, १—पत्र ३०३) । °**हार** पुं [°**धार**] बालक की सार-सम्हाल करने वाला नौकर; (सुपा ४५८) ।

बाल देखो **बल** । °**ण्ण**, °**न्न** वि [°**ज्ञ**] बल को जानने वाला; (आचा १, २, ५, ५; आचा) ।

बाल न [**बाल्य**] बालत्व, बालपन, मूर्खता; (उत्त ७, ३०) । देखो **बल्ल** ।

बालअ देखो **बाल**=बाल; (गा १२६) ।

बालअ पुं [**दे**] वणिक्-पुत्र; (दे ६, ६२) ।

बालग्गपोइआ स्त्री [**दे**] १ जल-मन्दिर, तलाव आदि में बनवाया जाता छोटा प्रासाद; २ वलभी, अट्टालिका; (उत्त ६, २४) ।

बाला स्त्री [**बाला**] १ कुमारी, लड़की; (कुमा) । २ मनुष्य की दश अवस्थाओं में पहली दशा, दश वर्ष तक की अवस्था; (तंदु १६) । ३ छन्द-विशेष; (पिंग)

बालालुंबी स्त्री [**दे**] तिरस्कार, अवहेलना; (सुपा १४) ।

बालि वि [**बालिन्**] बाल-प्रधान, सुन्दर केश वाला; (अणु; बृह १) ।

बालिआ स्त्री [**बालिका**] बाला, कुमारी, लड़की; (प्रासू ५१; महा) ।

बालिआ स्त्री [**बालता**] १ बालकपन, शिशुता; (भग) । २ मूर्खता, बेवकूफी; "बिइया मंदस्स बालिया" (आचा) ।

बालिस वि [**बालिश**] मूर्ख, बेवकूफ; (पाअ; धण २३) ।

बाह सक [**बाध्**] १ विरोध करना । २ रोकना । ३ पीड़ा करना । ४ विनाश करना । बाहइ, बाहए; (पंचा ५, १५; हे १, १८७; उव), बाहंति; (कुप्र ६८) । कवकृ—**बाहिज्जंत**, **बाहीअमाण** ; (पउम १८, १६; सुपा ६४५; अभि २४४) । कृ— **बाहणिज्ज**; (कप्पू) ।

बाह पुं [**बाष्प**] अश्रु, आँसू; (हे २, ७०; पाअ; कुमा) ।

बाह पुं [**बाध**] विरोध; (भास ३४) ।

बाह देखो **बाढ**; (प्रयौ ३७) ।

बाह पुं [**बाहु**] हाथ, भुजा ; (संक्षि २) ।

बाहग वि [**बाधक**] १ रोकने वाला; (पंचा १, ४६) । २ विरोधी; "अब्भुवगयबाहगा नियमा" (श्रावक १६२) ।

बाहड पुं [**बाहड, वाग्भट**] राजा कुमारपाल का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री; (कुप्र ६) ।

बाहण न [**बाधन**] १ बाधा, विरोध; (धर्मसं १२७६) । २ विराधन; (पंचा १६, ५) ।

बाहणा स्त्री [**बाधना**] ऊपर देखो; (धर्मसं १११) ।

बाहर देखो **बाहिर**; (आचा) ।

बाहल पुं [**बाहल**] देश-विशेष; (आवम) ।

बाहल्ल न [**बाहल्य**] स्थूलता, मोटाई; (सम ३५; ठा ८—पत्र ४४०; औप) ।

बाहा स्त्री [**बाधा**] १ हरकत, हरज; २ विरोध; (सुपा १२६) । ३ पीड़ा, परस्पर संश्लेष से होने वाली पीड़ा; (जं १; भग १४, ८) ।

बाहा स्त्री [**बाहु**] हाथ, भुजा; (हे १, ३६; कुमा; महा; उवा; औप) ।

बाहा स्त्री [**दे. बाहा**] नरकावास-श्रेणी; (देवेन्द्र ११) ।

बाहि } अ [**बहिस्**] बाहर; (सुज्ज १६—पत्र २३९;
बाहिं } महा; आचा; कुमा; हे २, १४०; पि ४८१) ।

बाहिज्ज न [**बाधिर्य**] बधिरता, बहरापन; (विसे २०८) ।

बाहिर अ [**बहिस्**] बाहर; (हे २, १४०; षड्; आचा; उत्त) । °**ओ** अ [°**तस्**] बाहर से; (कप्प) ।

बाहिर वि [**बाह्य**] बाहर का; (आचा; ठा २, १—पत्र ५५; भग २, ८ टी) । °**उद्धि** पुं [°**ऊर्ध्विन्**] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनों पाष्णि मिला कर और पैर को फैला कर किया जाता कायोत्सर्ग; (चेइय ४८६) ।

बाहिरंग वि [**बहिरङ्ग**] बाहर का, बाह्य; (सूम २, १, ४२) ।

बाहिरिय वि [**बाहिरिक, बाह्य**] बाहर का, बाहर से संबन्ध रखने वाला; (सम ८३; णाया १, १; पिंड ६३६; औप; कप्प) ।

बाहिरिया स्त्री [**बाहिरिका**] किले के बाहर की गृह-पङ्क्ति, नगर के बाहर का मुहल्ला; (सूम २, ७, १; स ६६) ।

बाहिरिल्लि वि [**बाह्य**] बाहर का; (भग; पि ५९५) ।

बाहु पुंस्त्री [**बाहु**] १ हाथ, भुजा; (हे १, ३६; आचा; कुमा) । २ पुं. भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र, बाहुबलि; (कुप्र ३१०) । °**बलि** पुं [°**बलि**] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र, तक्षशिला का एक राजा; (सम ६०; पउम ४, ५२; उव) । २ बाहुबलि के प्रपौत्र का पुत्र; (पउम ५, ११) । °**मूल** न [°**मूल**] कक्षा, बगल; (कप्पू) ।

बाहुअ पुं [**बाहुक**] स्वनाम-ख्यात एक ऋषि; (सूम १, ३, ४, २) ।

बाहुडिअ वि [**दे**] लज्जित, शरमिंदा; (सुपा ४७४) ।

बाहुया स्त्री [**बाहुका**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष; (राज) ।

बाहुल्ग देखो **बाहु** ; (तंदु ३६) ।

बाहुलेय पुं [**बाहुलेय**] गो-वत्स, बैल, वृषभ; (आवम) ।

बाहुल्ल न [**बाहुल्य**] बहुलता, प्रचुरता; (पिंड ५६; भग; सुपा २७; उप ६०७) ।

बाहुल्ल वि [**वाग्वत्**] मधुर बोलने वाला; (कुमा; सुपा ६६०)।

बि वि. ब. [**द्वि**] दो, २; "बिन्नि" (हे ४, ४१८; नव ५; ठा २, २; कम्म ४, २; १०; सुर १, १४) । °**जडि** पुं [°**जटिन्**] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (सुज्ज २०)।
°**दल** न [°**दल**] चना आदि वह धान्य जिसके दो टुकड़े बराबर के होते हैं; "जह बिदलं मूगाणं" (वि ३) । °**याल** देखो बा-याल; (कम्म ६, २८) । °**यालसय** पुंन [°**चत्वारिंशच्छत**] एक सौ बेयालीस, १४२; (कम्म २, २६) । °**विह** वि [°**विध**] दो प्रकार का; (पिंग) ।
°**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] बासठ, ६२; (सुज्ज १०, ६ टी) ।
°**सत्तरि**, °**सयरि** स्त्री [°**सप्तति**] बहत्तर, ७२; (उव १६; जीवस २०६; कम्म ३, ५) ।

बि } वि [**द्वितीय**] दूसरा; (कम्म ३, १६; पिंग) ।
बिअ } °**कसाय** पुं [°**कषाय**] अप्रत्याख्यानावरण-नामक कषाय; (कम्म ४, ५६) ।

बिअ न [**द्विक**] दो का समुदाय, युग्म, युगल; (भग; कम्म १, ३३; प्रासू १६) ।

बिआया स्त्री [**दे**] कीट-विशेष, संलग्न रहने वाला कीट-द्वय; (दे ६, ६३) ।

बिइअ देखो **बिइज्ज**; (हे १, ५; पव १६४) ।

बिइआ देखो **बीआ**; (राज) ।

बिइज्ज वि [**द्वितीय**] १ दूसरा; (हे १, २४८; प्रासू ५६)। २ सहाय, मदद करने वाला; (पाअ; सुर ३, १४) ।

"जे दुहियम्मि न दुहिया, आवइपत्ते बिइज्जया नेव ।
पहुणा न ते उ भिच्चा, धुत्ता परमत्थओ णेया"
(सुर ७, १४५) ।

बिउण वि [**द्विगुण**] दुगुना; (हे १, ६४; २, ७६; गा २८६) । °**यर** वि [°**कारक**] दुगुना करने वाला; (भवि)।

बिउण सक [**द्विगुणय्**] दुगुना करना । बिउणेइ; (पि ५५६) ।

बिंट न [**वृन्त**] फलादि का बन्धन; "बंधणं बिंटं" (पाअ) ।
°**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] मदिरा, दारू; "बिंटसुरा पिट्ठखउरिया मइरा" (पाअ) ।

बिंत देखो **वून्त** ।

बिंदिय वि [**द्वीन्द्रिय**] जिसको त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियाँ हों वह; (औप) ।

बिंदु पुंन [**बिन्दु**] १ अल्प अंश; २ बिन्दी, शून्य, अनुस्वार; ३ दोनों भ्रू का मध्य भाग; ४ रेखागणित का एक चिह्न; "बिंदुओ,

बिंदूइ" (हे १, ३४; कप्प; उप १०२२; स्वप्न ३६; कस; कुमा)। °कला स्त्री [°कला] अनुस्वार, बिन्दी; (सिरि १६६)। °सार न [°सार] १ चौदहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष; (सम २६; विसे ११२६)। २ पुं. मौर्य वंश का एक राजा, राजा चन्द्रगुप्त का पुत्र; (विसे ८६२)।

बिंदुइअ वि [**बिन्दुकित**] बिन्दु-युक्त, बिन्दु-विलिप्त; (पात्र; गउड)।

बिंदुइज्जंत वि [**बिन्दूयमान**] बिन्दुओं से व्याप्त होता; (से ११, १२५)।

बिंद्रावण न [**वृन्दावन**] मथुरा के पास का एक वैष्णव-तीर्थ; (प्राकृ १७)।

बिंब सक [**बिम्ब्**] प्रतिबिम्बित करना। कर्म—बिंबिज्जइ; (सुक्त ४६)।

बिंब न [**बिम्ब**] १ प्रतिमा, मूर्त्ति; (कुमा)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ न. बिम्बीफल, कुन्दरुन का फल; (णाया १, ८—पत्र १२६; पात्र; कुमा; दे २, ३६)। ४ प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया; ५ अर्थ-शून्य आकार, "अगणं जणं पस्सति बिंबभूयं" (सूत्र १, १३, ८)। ६ सूर्य तथा चन्द्र का मण्डल; (गउड; कप्पू)।

बिंबवय न [**दे**] फल-विशेष, भिलावाँ; "बिंबवयं भल्लायं" (पात्र)।

बिंबिसार देखो **भिंभिसार**; (अंत)।

बिंबी स्त्री [**बिम्बी**] लता-विशेष, कुन्दरुन का गाछ; (कुमा)। °फल न [°फल] कुन्दरुन का फल; (सुपा २६३)।

बिंबोवणय न [**दे**] १ क्षोभ; २ विकार; ३ ओसीसा, उच्छीर्षक, (दे ६, ६८)।

बिंह सक [**बृंह्**] पोषण करना। कृ—देखो **बिंहणिज्ज**।

बिंहणिज्ज वि [**बृंहणीय**] पुष्टि-जनक; (ठा ६—पत्र ३७५; णाया १, १—पत्र १९)।

बिंहिअ वि [**बृंहित**] पुष्ट, उपचित; (हे १, १२८)।

बिग्गाइआ } स्त्री [**दे**] कीट-विशेष, संलग्न रहता कीट-युग्म;
बिग्गाई } गुजराती में 'बगाई'; (दे ६, ६३)।

बिज्जउर न [**बीजपूर**] फल-विशेष, एक तरह का नीबू; "बिज्जउरचिब्भिडेहिं कुणइ पिहाणाइं सव्वत्थ" (सुपा ६३०)।

बिज्जय (अप) देखो **बिइज्ज**; (भवि)।

बिट्ट पुं [**दे**] बेटा, लड़का, पुत्र; (चंड)

बिट्टी स्त्री [**दे**] बेटी, पुत्री, लड़की; (चंड; हे ४, ३३०)।

बिट्ठ वि [**दे**, **विष्ट**] बैठा हुआ, उपविष्ट; (ओघ ४७१)।

बिडाल पुं [**बिडाल**] मार्जार, बिल्ला; (पि २४१)।

बिडालिआ } स्त्री [**बिडालिका**, °**ली**] बिल्ली, मार्जारी;
बिडाली } (सम्मत्त १२२; पि २४१)। देखो **बिरालिआ**।

बिडिस देखो **बडिस**; (उप १४२ टी)।

बिदिय देखो **बिइअ**; (उप २७६)।

बिन्ना स्त्री [**बेन्ना**] भारत की एक नदी; (पिंड ५०३)।

बिब्बोअ पुं [**बिब्बोक**] १ स्त्री की शृंगार-चेष्टा-विशेष, इष्ट अर्थ की प्राप्ति होने पर गर्व से उत्पन्न अनादर-क्रिया; (पण्ह २, ४—पत्र १३१; णाया १, ८—पत्र १४२; भत्त १०६)। २ न. उपधान, ओसीसा; "सयणीअं तूलिअं सबिब्बोअं" (गच्छ ३, ८)।

बिब्बोइअ न [**बिब्बोकित**] स्त्री की शृंगार-चेष्टा का एक भेद; (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

बिब्बोयण न [**दे**] उपधान, ओसीसा; (णाया १, १—पत्र १३)।

बिभेलय देखो **बहेडय**; (पण्ण १—पत्र ३१)।

बिराड पुं [**बिडाल**] १ पिंगल-प्रसिद्ध मध्य-लघुक पाँच मात्रा वाला अक्षर-समूह; २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

बिराल देखो **बिडाल**; (सुर १, १८)।

बिरालिआ } देखो **बिडालिआ**; (सम्मत्त १२३; पात्र)।
बिराली } २ भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलने वाला एक प्रकार का प्राणी; (सूत्र २, ३, २५)।

बिरुद न [**बिरुद**] इल्काब, पदवी; (सम्मत्त १४१)।

बिल न [**बिल**] १ रन्ध्र,विवर, साँप आदि जन्तुओं के रहने का स्थान; (विपा १, ७; गउड)। २ कूप, कुआँ; (राय)। °कोलीकारक वि [**दे**, °**कोलीकारक**] दूसरे को व्यामुग्ध करने के लिए विस्वर वचन बोलने वाला; (पण्ह १, ३—पत्र ४४)। °पंतिया स्त्री [°**पङ्क्तिका**] खान की पद्धति; (पण्ह २,५—पत्र १५०)।

बिलाड } देखो **बिडाल**; (भग; पि २४१)।
बिलाल }

बिलालिआ देखो **बिरालिआ**; (पि २४१)।

बिल्ल पुं [**बिल्व**] १ वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़; (पण्ण १ उप १०३१ टी)। २ बेल का फल; (पात्र)।

बिल्लल पुं [**बिल्वल**] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४)। देखो **चिल्लल**=चिल्वल।

बिस न [**बिस**] कमल आदि के नाल का तन्तु, मृणाल; (गाया १, १३; कुमा; पाअ)। °**कंठी** स्त्री [°**कण्ठी**] बलाका, बक पक्षी की एक जाति; (दे ६, ९३)। देखो **भिस**=बिस।

बिसि देखो **बिसी**; (दे १, ८३)।

बिसिणी स्त्री [**बिसिनी**] कमलिनी, कमल का गाछ; (पि २०९)।

बिसी स्त्री [**बृषी**] ऋषि का आसन; (दे १, ८३; पि २०९)।

बिह अक [**भी**] डरना। बिहइ; (प्राकृ ६४; पि ५०१)।

बिह वि [**बृहत्**] बड़ा, महान्। °**णर** पुं [°**नल**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

बिहप्पइ, **बिहप्फइ**, **बिहस्सइ** } देखो **बहस्सइ**; (हे २, १३७; १,१३८; २, ६९; षड्; कुमा)।

बिहिअ देखो **बिंहिअ**; (प्राकृ ८)।

बिहेलग देखो **बिभेलय**; (दस ५, २, २४)।

बीअ देखो **बिइअ**; (हे १, ५; २, ७९; सुर १, ३८; सुपा ४८५)।

बीअ न [**बीज**] १ बीज, बीया; "लाउअबीअं इक्कं नासइ भारं गुडस्स जइ सहसा" (प्रासू १५१; आचा; जी १३; औप)। २ मूल कारण; "सारीरमाणसाणेयदुक्खबीयभूयकम्मवणदहण-सहं" (महा)। ३ वीर्य, शरीरान्तर्गत सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र; (सुपा ३९०; वव ६)। ४ 'ह्रीं' अक्षर; (सिरि १९६)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] मूल अर्थ को जानने से शेष अर्थों को निज बुद्धि से स्वयं जानने वाला; (औप)। °**मंत** वि [°**वत्**] बीज वाला; (णाया १, १)। °**रुइ** स्त्री [°**रुचि**] एक ही पद से अनेक पद और अर्थों के अनु-संधान द्वारा फैलने वाली रुचि; २ वि. उक्त रुचि वाला; (पण्ण १)। °**रुह** वि [°**रुह**] बीज से उत्पन्न होने वाली वनस्पति; (पण्ण १)। °**वाय** पुं [°**वाप**] क्षुद्र जन्तु-विशेष; (राज)। °**सुहुम** न [°**सूक्ष्म**] छिलके का अग्र भाग; (कप्प)।

बीअऊरय न [**बीजपूरक**] फल-विशेष, एक तरह का नींबू; (मा ३६)।

बीअजमण न [**दे**] बीज मलने का खल—खलिहान; (दे ६, ९३)।

बीअण पुं [**दे**] नीचे देखो; (दे ६, ९३ टी)।

बीअय पुंन [**दे, बीजक**] वृक्ष-विशेष, असन वृक्ष, विजयसार का गाछ; (दे ६, ९३; पाअ)।

बीआ स्त्री [**द्वितीया**] १ तिथि-विशेष, दूज; (सम २९; श्रा २८; रयण २; गाया १, १०; सुपा १९१)। २ द्वितीय विभक्ति; (चेइय ६०९)।

बीज देखो **बीअ**=बीज; (कुमा; पण्ह २, १—पत्र ९९)।

बीडग न [**वीटक**] बीड़ा, पान का बीड़ा, सज्जित ताम्बूल; (सुपा ३३९)।

बीडि, **बीडी** } स्त्री [**वीटि, °टी**] ऊपर देखो; "बिल्लदलबीडीओ कासवि मुहम्मि पक्खिवइ" (धर्मवि १४०)।

बीभच्छ, **बीभत्थ** } वि [**बीभत्स**] १ घृणोत्पादक, घृणा-जनक; २ भयंकर, भय-जनक; (उवा; तंदु ३८; णाया १, २; संबोध ४४)। ३ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५९, २)।

बीयत्तिय वि [**दे, बीजयितृ**] बीज बोने वाला, वपन करने वाला; २ पुं. पिता; "बीयं बीयत्तियस्सेव" (सुपा ३९०; ३९१)।

बीलय पुं [**दे**] ताडंक, कर्णभूषण-विशेष, कान का एक गहना; (दे ६, ९३)।

बीह अक [**भी**] डरना। बीहइ, बीहेइ; (हे ४, ५३; महा; पि २१३)। वकृ—**बीहंत**; (ओघभा १९; उप ७६८ टी; कुमा)। कृ—**बीहियव्व**; (स ६८२)।

बीहच्छ देखो **बीभच्छ**; (पि ३२७)।

बीहण, **बीहणग**, **बीहणय** } वि [**भीषण, °क**] भय-जनक, भयंकर; (पि २१३; पण्ह १, १; पउम ३५, ५४)।

बीहविय वि [**भीषित**] डराया हुआ; (सम्मत्त ११८)।

बीहिअ वि [**भीत**] १ डरा हुआ; (हे ४, ५३)। २ न. भय, डरना; "न य बीहिअं ममावि हु" (श्रा १४)।

बीहिर वि [**भेतृ**] डरने वाला; (कुमा ६, ३५)।

बुइअ वि [**उक्त**] कथित; (सूअ १, २, २, २४; १, १४, २५; पण्ह २, २)।

बुंदि पुंस्त्री [**दे**] १ चुम्बन; २ सूकर, सूअर; (दे ६, ९८)।

बुंदि स्त्री [**दे**] शरीर, देह; "इह बुंदिं चइत्ताणं तत्थ गंतूण सिज्झइ" (ठा १ टी—पत्र २४; सुज्ज २०; तंदु १३; सुपा ६५६; धम्म ६ टी; पाअ)। देखो **बोंदि**।

बुंदिणी स्त्री [**दे**] कुमारी-समूह; (दे ६, ९४)।

बुंदीर पुं [**दे**] १ महिष, भैंसा; २ वि. महान, बड़ा; (दे ६, ९८)।

बुंध न [बुध्न] १ वृक्ष का मूल; २ कोई भी मूल, मूलमात्र; (हे १, २६; षड्)।
बुंबा स्त्री [दे] चिल्लाहट, पुकार; (सुपा ५६५)।
बुंबु पुं [दे] ऊपर देखो; (कप्प ३१)।
बुंबुअ न [दे] वृन्द, यूथ, समूह; (दे ६, ६४)।
बुक्क अक [गर्ज्, बुक्क्] गर्जन करना, गरजना। बुक्कइ; (हे ४, ६८)।
बुक्क अक [भष्, बुक्क्] श्वान का भूँकना।। बुक्कइ; (षड्)।
बुक्क पुंन [दे] १ तुष, छिलका; (सुख १८, ३७)। २ वाद्य-विशेष; "बुक्कतंबुक्कसंबुक्कसद्दुक्कडं" (सुपा ५०)।
बुक्कण पुं [दे] काक, कौआ; (दे ६, ६४; पाअ)।
बुक्कस देखो **बोक्कस**; (राज)।
बुक्का स्त्री [दे] १ मुष्टि; (दे ६, ६४; पाअ)। २ व्रीहि-मुष्टि; (दे ६, ६४)। ३ वाद्य-विशेष; "ढक्काडक्कहुडुक्कासं-बुक्काकरडिपभिईणं आउज्जाणं" (सुपा १६५)।
बुक्का स्त्री [गर्जना] गर्जन, गर्जारव; (पउम ६, १०८; गउड)।
बुक्कार पुं [दे. बूत्कार] गर्जन, गर्जना; (पउम ७, १०५; गउड)।
बुक्कासार वि [दे] भीरु, डरपोक; (दे ६, ६५)।
बुक्किअ वि [गर्जित] जिसने गर्जना की हो वह; "अह बु-क्किआ तुह भडा" (कुमा)।
बुज्झ सक [बुध्] १ जानना, ज्ञान करना, समझना। २ जागना। बुज्झइ; (उव)। भूका—बुज्झिंसु; (भग)। भवि—बुज्झिहिइ; (औप)। वकृ—**बुज्झंत, बुज्झ-माण**; (पिंग; आचा)। संकृ—**बुज्झा**; (हे २, १५)। कृ—**बुद्ध, बोद्धव्व, बोधव्व**; (पिंग; कुमा; नव २३; भग; जी २१)।
बुज्झविय } वि [बोधित] १ जिसको ज्ञान कराया गया
बुज्झाविअ } हो वह; २ जगाया गया; (कुप्र ६४; सुपा ४२५; प्राकृ ६८)।
बुज्झिअ वि [बुद्ध] ज्ञात, विदित; (पाअ)।
बुज्झिर वि [बोद्धृ] १ जानने वाला; २ जागने वाला; (प्राकृ ६८)।
बुडबुड अक [बुडबुडय्] बुडबुड आवाज करना; "सुरा जहा बुडबुडेइ अव्वत्त" (चेइय ४६२)।
बुड्ड अक [ब्रुड्, मस्ज्] डूबना। बुड्डइ; (हे ४, १०१; उव; कुमा; भवि)। भवि—बुड्डीसु (अप); (हे ४, ४२३)। वकृ—**बुड्डंत, बुड्डमाण**; (कुमा; उप १०३१ टी)। प्रयो, वकृ—**बुड्डावंत**; (संबोध १५)।
बुड्ड वि [ब्रुडित, मग्न] डूबा हुआ, निमग्न; (धम्म १२ टी; गा ३७; रंभा २३; सुर १०, १८६; भवि), "बयबुड्डभंड-गाई" (पव ४ टी)।
बुड्डण न [ब्रुडन] डूबना; (संबे २; कप्पू)।
बुड्डिर पुं [दे] महिष, भैंसा; (षड्)।
बुड्ढ वि [वृद्ध] बूढ़ा; (पिंग)। स्त्री—°**ड्ढा**, °**ड्ढी**; (काप्र १६७; सिरि १७३)।
बुण्ण वि [दे] १ भीत, डरा हुआ; २ उद्विग्न; (दे ७, ६४ टी)।
बुत्ती स्त्री [दे] ऋतुमती स्त्री; (दे ६, ६४)।
बुद्ध वि [बुद्ध] १ विद्वान्, पण्डित, ज्ञात-तत्व; (सम १; उप ६१२ टी; श्रा १२; कुप्र ४०; श्रु १)। २ जागा हुआ, जागृत; (सुर ६, २४३)। ३ भूत, भविष्य और वर्त्तमान का जानकार; (चेइय ७१३)। ४ विज्ञात, विदित; (ठा ३, ४)। ५ पुं. जिन-देव, अर्हन्, तीर्थंकर; (सम ६०)। ६ बुद्धदेव, भगवान् बुद्ध; (पाअ; दे ७, ५१; उर ३, ७; कुप्र ४४०; धर्मसं ६७२)। ७ आचार्य, सूरि; (उत्त १, १७)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] आचार्य-शिष्य; (उत्त १, ७)। °**बोहिय** वि [°**बोधित**] आचार्य-बोधित; (नव ४३)। °**माणि** वि [°**मानिन्**] निज को पण्डित मानने वाला; (सूअ १, ११, २५)। °**लय** पुंन [°**लय**] बुद्ध-मन्दिर; (कुप्र ४४२)।
बुद्ध वि [बौद्ध] १ बुद्ध-भक्त; २ बुद्ध-संबन्धी; (ती ७; सम्मत्त ११६)।
बुद्ध देखो **बुज्झ**।
बुद्ध देखो **बुंध**; (सुज्ज २०)।
बुद्धंत पुंन [बुध्नान्त] अधो-भाग, नीचे का हिस्सा; "ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयइ" (सुज्ज २०)।
बुद्धि स्त्री [बुद्धि] १ मति, मेधा, मनीषा, प्रज्ञा; (ठा ४, ४; जी ६; कुमा; कप्प; प्रासू ४७)। २ देव-प्रतिमा-विशेष; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ महापुण्डरीक हृद की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२; इक)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। ५ तीर्थंकरी; ६ साध्वी; (राज) ७ अहिंसा, दया; (पण्ह २, १)। ८ पुं. इस नाम का एक मन्त्री; (उप ८४४)। °**कूड** न [°**कूट**] पर्वत-विशेष

का शिखर; (राज)। °बोहिय वि [°बोधित] १ तीर्थंकरी—स्त्री-तीर्थंकर—से प्रतिबोधित; २ सामान्य साधुओं से बोधित; (राज)। °मंत वि [°मत्] बुद्धि वाला; (उप ३३६; सुपा ३७२; महा)। °ल पुं [°ल] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध श्रेष्ठी; (महा)। २ देखो °ल्ल; (राज)। °ल्ल वि [°ल] बुद्ध, मूर्ख, दूसरे की बुद्धि पर जीने वाला; "कस्स पंडियमाण(? णि)स्स बुद्धिल्लस्स दुरप्पणो" (ओघभा २६ टी; २१)। °वंत देखो °मंत; (भवि)। °सागर, °सायर पुं [°सागर] विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी का एक सुप्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार; (सुर १६, २४५; सार्ध ६६; सम्मत ७६)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] बुद्धि में सिद्धहस्त, संपूर्ण बुद्धि वाला; (आवम)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक मन्त्रि-कन्या; (उप ७२८ टी)।

बुध देखो **बुह**; (पराह १, २; सुज्ज २०)।

बुब्बुअ अक [**बुबूय्**] बु बु आवाज करना, छाग का बोलना। बुब्बुयइ; (कुप्र २४)। वकृ—**बुब्बुयंत**; (कुप्र २४)।

बुब्बुअ पुं [**बुद्बुद**] बुलबुला, पानी का बुलका; (दे ६, ६५; औप; पिंड १६; गाया १, १; तं ४५; प्रासू ६६; दं १३)।

बुभुक्खा स्त्री [**बुभुक्षा**] भूख, खाने की इच्छा; (अभि २०७)।

बुय वि [**ब्रुव**] बोलने वाला; (सूअ १, ७, १०)।

बुयाण देखो **बुव**।

बुल वि [**दे**] बोड, भदन्त, धर्मिष्ठ; (पिंग १६८)।

बुलंबुला स्त्री [**दे**] बुलबुला, बुद्बुद; (दे ६, ६५)।

बुलबुल पुं [**दे**] ऊपर देखो; (षड्)।

बुल्ल देखो **बोल्ल**। बुल्लइ; (कुप्र २६; श्रा १४), बुल्लंति; (प्रासू ४)। प्रयो—बुल्लावेइ, बुलावेमि, बुल्लावए; (कुप्र १२७; सिरि ४४०)।

बुव सक [**ब्रू**] बोलना। बुवइ; (षड्; कुमा)। वकृ—**बुवंत, बुयाण, बुवाण**; (उत्त २३, २१; सूअ १, ७, १०; उत्त २३, ३१)। देखो **बू**।

बुस न [**बुस**] १ भुसा, यव आदि का कडंगर, नाज का छिलका; (ठा ८—पत्र ४१७)। २ तुच्छ धान्य, फल-रहित धान्य; (गउड)।

बुसि स्त्री [**वृषि, °सि**] मुनि का आसन। °म, °मंत वि [°मत्] संयमी, व्रती, मुनि; (सूअ २, ६, १४; आचा)।

बुसिआ स्त्री [**बुसिका**] यव आदि का कडंगर, भूसा; (दे २, १०३)।

बुह पुं [**बुध**] १ ग्रह-विशेष, एक ज्योतिष्क देव; (सुर ३, ५३; धर्मवि २४)। २ वि. पण्डित, विद्वान्; (ठा ४, ४; सुर ३, ५३; धर्मवि २४; कुमा; प्रास)

बुहप्फइ, **बुहप्फइ**, **बुहस्सइ** देखो **बहस्सइ**; (हे २, ५३; १३७; षड्; कुमा)।

बुहुक्ख सक [**बुभुक्ष**] खाने की इच्छा करना। बुहुक्खइ; (हे ४, ५; षड्)।

बुहुक्खा देखो **बुभुक्खा**; (राज)।

बुहुक्खिअ वि [**बुभुक्षित**] भूखा; (कुमा)।

बू सक [**ब्रू**] बोलना, कहना। बूम, बूया, बूहि; (उत्त २५, २८; सूअ १, १, ३, ६; १, १, १, २)। बिंति, बेंति, बेमि, बुमा; (कम्म ३, १२; महा; कप्प)। भूका—अब्बवी (उत्त २३, २१; २२; २५; ३१; ठा ३, २)। वकृ—**बिंत, बेंत**; (उप ७२८ टी; सुपा ३६०; विसे ११६)। संकृ—**बूइत्ता**; (ठा ३, २) देखो **बव, बुव**।

बूर पुं [**बूर**] वनस्पति-विशेष; (गाया १, १—पत्र ६; उत्त ३४, १६; कप्प; औप)। °णालिया, °नालिआ स्त्री [°नालिका] बूर से भरी हुई नली; (राज; भग)।

बूल वि [**दे**] मूक, वाचा-शक्ति से रहित; (पिंग १६८ टी)।

बूह सक [**बृंह्**] पुष्ट करना। बूहए; (सूअ २, ५, ३२)।

बे देखो **बि**; (वजा १०; हे ३, ११६; १२०; पिंग)। °**आसी** (अप) स्त्री [°**अशीति**] बयासी, ८२; (पिंग)। °**इंदिय** वि [°**इन्द्रिय**] त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रिय वाला प्राणी; (ठा १; भग; स ८३; जी १५)। °**हिय** [**द्वयाहिक**] दो दिन का; (जीवस ११६)।

बेंट देखो **विंट**; (महा)।

बेंत देखो **बू**।

बेंदि देखो **बे-इंदिय**; (पंच ५, ५६)।

बेट्ठ देखो **बिट्ठ**; (ओघभा १७४)।

बेड, **बेडय** पुं [**दे**] नौका, जहाज; (दे ६, ६५; सुर १३, ५०)।

बेडा, **बेडिया**, **बेडी** स्त्री [**दे**] नौका, जहाज; (उप ७२८ टी; सिरि ३८२; ४०७; श्रा १२; धम्म १२ टी), "पाणी-हि जलं तरइ अग्गिदंडेहि बेडिव्व" (धर्मवि १३२)।

बेड्डा स्त्री [**दे**] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ के बाल; (दे ६, ६५)।

बेदोणिय वि [**द्विद्रोणिक**] दो द्रोण का, द्रोण-द्वय-परिमित; "कप्पइ मे बेदोणियाए कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए" (उवा)।

बेमासिय वि [**द्वैमासिक**] दो मास का, दो महिने का संबन्ध रखने वाला; (पउम २२, २८)।

बेलि स्त्री [**दे**] स्थूणा, खूँटा; (दे ६, ६५; पाअ)।

बेल्ल देखो **बिल्ल**; (प्राकृ ५)।

बेल्लग पुं [**दे**] बैल, बलीवर्द; (आवम)।

बेस अक [**विश्, स्था**] बैठना; "अंतंतं भोक्खामि त्ति वेसए भुंजए य तह चेव" (ओघ ५७१)।

बेसक्खिज्ज न [**दे**] द्वेष्यत्व, रिपुता, दुश्मनाई; (दे ७, ७६ टी)।

बेसण न [**दे**] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा; (दे ६, ७५ टी)।

बेहिम वि [**दे, द्वैधिक**] दो टुकड़े करने योग्य, खण्डनीय; (दस ७, ३२)।

बोंगिल्ल वि [**दे**] १ भूषित, अलंकृत; २ पुं. आटोप, आडम्बर; (दे ६, ६६)।

बोंटण न [**दे**] चूचुक, स्तन का अग्र भाग; (दे ६, ६६)।

बोंड न [**दे**] १ चूचुक, स्तन-वृन्त; (दे ६, ६६)। २ फल-विशेष, कपास का फल; (औप; तंदु २०)। °**य** न [°**ज**] सूती वस्त्र, सूती कपड़ा; (सूअ २, २, ७३; औप)।

बोंद न [**दे**] मुख, मुँह; (दे ६, ६६)।

बोंदि स्त्री [**दे**] १ रूप; २ मुख, मुँह; (दे ६, ६६)। ३ शरीर, देह; (दे ६, ६६; पगह १, १; कप्प; औप; उत्त ३५, २०; स ७१२; विसे ३१६१; पव ५५; पंचा १०, ४)।

बोंदिया स्त्री [**दे**] शाखा; (सूअ २, २, ४६)।

बोकड } पुं [**दे**] छाग, बकरा; गुजराती में 'बोकडो'; (ती २; दे ६, ६६)। स्त्री—°**डी**; (दे ६, ६६ टी)।
बोक्कड

बोक्कस पुं [**बोक्कस**] १ अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)। २ वर्णसंकर जाति-विशेष, निषाद से अंबष्ठी की कुक्षि में उत्पन्न; (सुख ३, ४)।

बोक्कसालिय पुं [**दे**] तन्तुवाय, "कोट्ठागकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा बोकसालियकुलाणि वा" (आचा २, १, २, ३)।

बोक्कार देखो **बुक्कार**; (सुर १०, २२१)।

बोक्किय न [**बूत्कृत**] गर्जन, गर्जना; (पउम ५६, ५४)।

बोगिल्ल वि [**दे**] चितकबरा; "कसलं सबलं सारं किम्मीरं चित्तलं च बोगिल्लं" (पाअ)।

बोट्ट सक [**दे**] उच्छिष्ट करना, भूठा करना। गुजराती में 'बोटवुं'। "रयणीए रयणिचरा चरंति बोट्टंति अन्नमाईयं" (सुपा ४६१)।

बोड वि [**दे**] १ धार्मिक, धर्मिष्ठ; २ तरुण, युवा; (दे ६, ६६)। ३ मुण्डित-मस्तक; "एमेव अडइ बोडो" गुजराती में 'बोडो'; (पिंड २१७)।

बोडघेर न [**दे**] गुल्म-विशेष; (पाअ)।

बोडिय पुं [**बोटिक**] १ दिगम्बर जैन संप्रदाय; २ वि. दिगम्बर जैन संप्रदाय का अनुयायी; "बोडियसिवभूईओ बोडियलिंगस्स होइ उप्पत्ती" (विसे १०४१; २५५२)।

बोडिय वि [**दे**] मुण्डित-मस्तक (?); "बोडियमसिए धुवं मरणं" (ओघभा ८३ टी)।

बोड्डर न [**दे**] श्मश्रु, दाढी-मूँछ; (दे ६, ६५)।

बोड्डिआ स्त्री [**दे**] कपर्दिका, कौड़ी; "केसरि न लहइ बोड्डिअवि गय लक्खेहिं घेप्पंति" (हे ४, ३३५)।

बोदर वि [**दे**] पृथु, विशाल; (दे ६, ६६)।

बोदि देखो **बोंदि**; (औप)।

बोद्दह [**दे**] देखो **बोद्रह**; (पाअ)।

बोद्ध वि [**बौद्ध**] बुद्ध-भक्त; (संबोध ३४)।

बोद्धव्व देखो **बुज्झ**।

बोद्रह वि [**दे**] तरुण, जवान; (दे ७, ८०)।

बोधण न [**बोधन**] बोध, शिक्षा, उपदेश; (सम ११६)।

बोधव्व देखो **बुज्झ**।

बोधि देखो **बोहि**; (ठा २, १—पत्र ४६)। °**सत्त** पुं [°**सत्त्व**] सम्यग् दर्शन को प्राप्त प्राणी, अर्हन् देव का भक्त जीव; (मोह ३)।

बोधिअ वि [**बोधित**] ज्ञापित, अवगमित; (धर्मसं ५०६)।

बोर न [**बदर**] फल-विशेष, बेर; (गा २००; हे १७०; षड्; कुमा)।

बोरी स्त्री [**बदरी**] बेर का गाछ; (प्राकृ ४; हे १, १७०; कुमा; हेका २५६)।

बोल सक [**ब्रोडय्**] डुबाना। "तंबोलो तं बोलइ जिणवसहिट्ठिएण जेण खद्धो" (सार्ध ११४), "बुड्डं तं बोलए अन्नं" (सूक्त ६६), बोलेइ, बोलए; (संबोध १३), "केसिं च बंधित्तु गले सिलाओ उदगंसि बोलंति महालयंसि" (सूअ

१, ५, १, १०), बोलेमि; (सिरि १३८), "गुरुमणं लोए बोलेइ बहू" (उवर १५२)।

बोल अक [व्यति + क्रम] १ पसार होना, गुजरना। २ सक. उल्लंघन करना। "दुई ण एइ, चंदोवि उग्गमो, जामिणीवि बोलेइ" (गा ८५४), "पुणो नं बंधणा न बोलइ कयाइ" (श्रावक ३३), बोलए; (चंड)। देखो बोल=गम्।

बोल पुं [दे] १ कलकल, कोलाहल; (दे ६, ६० ; भग; भवि; कप्पू; उप ५०६), "हासबोलबहुला" (औप)। २ समूह; "कमढासुरेण रइयम्मि भीसणे पलयतुल्लजलबोले" (भाव १; कुलक ३४)।

बोलग पुंन [दे. ब्रोड] १ मज्जन, डूबना; २ कर्षण, खींचाव; "उच्चूलं बोलगं पज्जेनि" (विपा १, ६—पत्र ६८)।

बोलिअ वि [ब्रोडित] डुबाया हुआ; (वज्जा ६८)।

बोलिंदी स्त्री [दे] लिपि-विशेष, ब्राह्मी लिपि का एक भेद; "माहेसरीलिवी दामिलिवी बोलिंदिलीवी" (सम ३५)।

बोल्ल सक [कथय्] बोलना, कहना। बोल्लइ; (हे ४, २; प्राकृ ११६; सुर ८, १६७; भवि)। कर्म—बोल्लिअइ (अप); (कुमा)। कृ—बोल्लेवय (अप); (कुमा)। प्रयो—बोल्लावइ; (कुमा)।

बोल्लणअ वि [कथयितृ] बोलने का स्वभाव वाला; (हे ४, ४४३)।

बोल्ला स्त्री [कथा] वार्ता, बात; "नीयबोल्लाए" (उप १०१५)।

बोल्लाविय वि [कथित] बुलवाया हुआ; (स ४६१; ६६६)।

बोल्लिअ वि [कथित] १ उक्त; २ न. उक्ति; (भवि; हे ४, ३८३)।

बोव्व न [दे] खेत, खेत; (दे ६, ६६)।

बोह सक [बोधय्] १ समझाना, ज्ञान कराना। २ जगाना। बोहइ; (उव)। कर्म—बोहिज्जइ; (उव)। वकृ—बोहिंत, बोहेंत; (सुर १५, २४६; महा)। कवकृ—बोहिज्जंत; (सुर २, १४५; ८, १६५)। हेकृ—बोहेउं; (मञ्झ १७६)।

बोह पुं [बोध] १ ज्ञान, समझ; (जी १)। २ जागरण; (कुमा)।

बोहग देखो बोहय; (दं १)।

बोहण देखो बोधण; (उप २०६; सुर १, ३७; उवर १)।

बोहय वि [बोधक] बोध देने वाला, ज्ञान-दाता; (सम १; गाया १, १; भग; कप्प)।

बोहहर पुं [दे] मागध, स्तुति-पाठक; (दे ६, ६७)।

बोहारी स्त्री [दे] बुहारी, संमार्जनी, झाडू; (दे ६, ६७)।

बोहि स्त्री [बोधि] १ शुद्ध धर्म का लाभ, सद्धर्म की प्राप्ति; "दुल्लहा बोही" (उत्त ३६, २५८), "बोही जिणेहि भणिया भवंतरे सुद्धधम्मसंपत्ती" (चेइय ३३२; संबोध १४; सम ११६; उप ४८१ टी)। २ अहिंसा, अनुकम्पा, दया; (पण्ह २, १)। देखो बोधि।

बोहिअ वि [बोधित] १ ज्ञापित, समझाया हुआ; (भग)। २ विकासित, विबोधित; "रविकिरणतरुणबोहियसहस्सपत्त—" (कप्प)।

बोहिअ पुं [बोधिक] मनुष्य चुराने वाला चोर; (निचू १; चेइय ४४६)।

बोहिंत देखो बोह=बोधय्।

बोहिग देखो बोहिअ=बोधिक; (राज)।

बोहित्थ पुंन [दे] प्रवहण, जहाज, यानपात्र, नौका; (दे ६, ९६; स २०६; चेइय २६४; कुप्र २२२; सिरि ३८३; सम्मत्त १५७; सुपा ६४; भवि)।

बोहित्थिय वि [दे] प्रवहण-स्थित; (वज्जा १५८)।

°ब्भंस देखो भंस; (सुपा ५०६)।

°ब्भमर देखो भमर; (नाट—मुद्रा ३६)।

°ब्भास देखो अब्भास, "किंतु अइदूरवा सा दिट्ठिब्भासेवि कुणइ न हु कोइ" (सुपा ५६७)।

°ब्भि वि [भित्] भेदन करने वाला, नाश-कर्ता; "सगडब्भि" (आचा १, ३, ४, १)।

ब्रो (अप) देखो बू। ब्रोहि; (प्राकृ १२१)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि बआराइसद्दसंकलणो एगूणतीसइमो तरंगो समत्तो।

भ

भ पुं [**भ**] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप; प्रामा)। २ पिंगल-प्रसिद्ध आदि-गुरु और दो ह्रस्व अक्षरों की संज्ञा, भगण; (पिंग)। ३ न. नक्षत्र; (सुर १६, ४३)। °**आर** पुं [°**कार**] १ 'भ' अक्षर। २ भगण; (पिंग)। °**गण** पुं [°**गण**] भगण; (पिंग)।

भइ देखो **भव**=भू।

भइ स्त्री [**भृति**] वैतन, तनखाह; (णाया १, ८—पत्र १५०; विपा १, ४; उवा)। देखो **भूइ**।

भइअ वि [**भक्त**] १ विभक्त; (श्रावक १८५; सम ७६)। २ खण्डित; "अंगुलसंखासंखप्पएसभइयं पुढो पयरं" (पंच २, १२; औप)। ३ विकल्पित; (वव ६)।

भइअ / **भइअव्व** } देखो **भय**=भज्।

भइणि° / **भइणिआ** / **भइणी** } स्त्री [**भगिनी**] बहिन, स्वसा; (सुपा १५; स्वप्न १५; १७; विपा १, ४; प्रासू ७८; कुल २३५; कुमा)। °**वइ** पुं [°**पति**] बहनोई; (सुपा १५; ५३२)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] भागिनेय, भानजा; (सुपा १७)। देखो **बहिणी**।

भइरव वि [**भैरव**] १ भयंकर, भीषण, भय-जनक; (पाअ; सुपा १८२)। २ पुं. नाट्यादि-प्रसिद्ध एक रस, भयानक रस; ३ महादेव, शिव; ४ महादेव का एक अवतार; ५ राग-विशेष, भैरव राग; ६ नद-विशेष; (हे १, १५१; प्राप्र)। देखो **भेरव**।

भइरवी स्त्री [**भैरवी**] शिव-पत्नी, पार्वती; (गउड)।

भइरहि पुं [**भगीरथि**] सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र, भगीरथ; (पउम ५, १७५)।

भइल्ल वि [**दे**] भया, जात; (रंभा ११)।

भउम्हा (शौ) देखो **भमुहा**; (पि २५१)।

भउहा (अप) देखो **भमुहा**; (पिंग)।

भएयव्व देखो **भय**=भज्।

भंकार पुं [**भङ्कार**] भनकार, अव्यक्त आवाज विशेष; (उप पृ ८६)।

भंकारि वि [**भङ्कारिन्**] भनकार करने वाला; (सण)।

भंग पुं [**भङ्ग**] १ भाँगना, खण्ड, खण्डन; (ओघ ७८८; प्रासू १७०; जी १२; कुमा)। २ प्रकार, भेद, विकल्प; (भग; कम्म ३, ५)। ३ विनाश; (कुमा; प्रासू २१)। ४ रचना-विशेष; "तरंगरंगंतभंग—" (कप्प)। ५ पराजय; ६ पलायन; (पिंग)। °**रय** न [°**रत**] मैथुन-विशेष; (वज्जा १०८)।

भंग पुं [**भृङ्ग**] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी प्राचीन काल में पावापुरी थी; (इक)।

भंग (अप) देखो **भग्ग**=भग्न; (पिंग)।

भंगरय पुं [**भृङ्गरज, भृङ्गारक**] १ पौधा विशेष, भृङ्गराज, भँगरा; २ न. भँगरा का फूल; (वज्जा १०८; सुपा ३२४)।

भंगा स्त्री [**भङ्गा**] १ वनस्पति-विशेष, अतसी, पाट, कुष्टा; "कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, तं जहा—जंगिए भंगिए साणए पोत्तिए तिरीडपट्टए णामं पंचमए" (ठा ५, ३—पत्र ३३८)। २ वाद्य-विशेष; "—पडहहुडुकुडुक्काभेरीभंगापहुदिभूरिवज्जभंडतुमुल—" (विक्र ८७)।

भंगि स्त्री [**भङ्गि**] १ प्रकार, भेद; (हे ४, ३३६; ४११)। २ व्याज, छल, बहाना; "सहिभंगिभणिअसब्भाविआवराहाए" (गा ६१३)। ३ विच्छित्ति, विच्छेद; (राज)। ४ पुंस्त्री. देश-विशेष; "पावा भंगी य" (पव २७५; विचार ४६)।

भंगिअ न [**भङ्गिक, भाङ्गिक**] १ भङ्गा-मय, एक तरह का वस्त्र, पाट का बना हुआ कपड़ा; (ठा ३, ३; ५, ३—पत्र १३८; कस)। २ शास्त्र-विशेष; "जोगतिगस्सवि भंगियसुत्ते किरिया जओ भणिया" (चेइय २४५)।

भंगिल्ल वि [**भङ्गवत्**] प्रकार वाला, भेद-पतित; "पढमभंगिल्ला" (संबोध ३२)।

भंगी स्त्री [**भङ्गी**] देखो **भंगि**; (हे ४, ३३६; गा ६१३; विचार ४६)।

भंगी स्त्री [**भृङ्गी**] वनस्पति-विशेष;—१ भाँग, विजया; २ अतिविषा, अतिस का गाछ; (पराण १—पत्र ३६; पराण १७—पत्र ५३१)।

भंगुर वि [**भङ्गुर**] १ स्वयं भाँगने वाला, विनश्वर, विनाशशील; "तडिदंडाडंबरभंगुराइं ही विसयसोक्खाइं" (उप ६ टी; पराह १, ४; सुर १०, १८; स ११४; धर्मसं ११७१; विवे ११४)। २ कुटिल, वक्र; "कुडिलं वंकं भंगुरं" (पाअ)।

भंछा देखो **भत्था**; (राज)।

भंज सक [**भञ्ज्**] १ भाँगना, तोड़ना। २ पलायन कराना, भगाना। ३ पराजय करना। ४ विनाश करना। **भंजइ**,

भंजए; (हे ४, १०६; षड्; पि ५०६)। भवि—भंजिस्साइ; (पि ५३२)। कर्म—भज्जइ; (भग; महा)। वकृ—भंजंत; (गा १६७; सुपा ५६०)। कवकृ—भज्जंत, भज्जमाण; (से ६, ४४; सुर १०, २१७; स ६३)। संकृ—भंजिअ, भंजिउ, भंजिऊण, भंजिऊणं, भंजेऊण; (नाट; पि ५७६; महा; पि ५८५; महा), भज्जिउ (अप); (हे ४, ३६५)। हेकृ—भंजित्तए; (णाया १, ८), भंजणहं (अप); (हे ४, ४४१ टि)।

भंजअ } वि [**भञ्जक**] भाँगने वाला, भङ्ग करने वाला;
भंजग } (गा ५५२; पगह १, ४)। २ पुं. वृक्ष, पेड़; "भंजगा इव संनिवेसं नो चयंति" (आचा)।

भंजण न [**भञ्जन**] १ भङ्ग, खण्डन; (पव ३८; सुर १०, ६१)। २ विनाश; (सुपा ३७६; पगह १, १)। ३ वि. भंजन करने वाला, तोड़ने वाला; विनाशक; "भवभंजण" (सिरि ५४६), "रिउसंगभंजणेण" (कुमा)। स्त्री—°णी; (गा ७४५)।

भंजणा स्त्री [**भञ्जना**] ऊपर देखो; "विणओवयारम-(?र मा-)णस्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स" (विसे ३४६६; निचू १)।

भंजाविअ } वि [**भञ्जित**] १ भँगाया हुआ, तुड़वाया हुआ;
भंजिअ } (स ५४०)। २ भगाया हुआ; (पिंग)। ३ आक्रान्त; (तंदु ३८)।

भंजिअ देखो **भग्ग=भग्न**; (कुमा ६, ७०; पिंग; भवि)।

भंड सक [**भाण्डय्**] भँडारा करना, संग्रह करना, इकट्ठा करना। भंडइ; (सुख २, ४५)।

भंड सक [**भण्ड्**] भाँडना, भर्त्सना करना, गाली देना। भंडइ; (सण)। वकृ—**भंडंत**; (गा ३७६)। संकृ—**भंडिउं**; (वव १)।

भंड पुं [**भण्ड**] १ विट, भड़ुआ; (पव ३८)। २ भाँड, बहुरूपिया, मुख आदि के विकार से हँसाने का काम करने वाला, निर्लज्ज; (आव ६)।

भंड न [**दे**] १ वृन्ताक, बैंगन, भंटा; (दे ६, १००)। २ पुं. मागध, स्तुति-पाठक; ३ सखा, मित्र; ४ दौहित्र, पुत्री का पुत्र; (दे ६, १०६)। ५ पुंन. मण्डन, आभूषण, गहना; (दे ६, १०६; भग; औप)। ६ वि. छिन्न-मूर्धा, सिर-कटा; (दे ६, १०६)। ७ न. क्षुर, छुरा; ८ छुरे से मुण्डन; (राज)।

भंड } पुंन [**भाण्ड**] १ बर्तन, बासन, पात्र; "दुग्गाइदुह-
भंडग } भंडं पउइ अक्खंड" (संबोध १४; दे ३, २१; श्रा २७; सुपा १६८)। २ क्रयाणक, पगय, बेचने की वस्तु; (णाया १, १—पत्र ६०; औप; पगह १, १; उवा; कुमा)। ३ गृह, स्थान; (जीव ३)। ४ वस्त्र-पात्र आदि घर का उपकरण; (ठा ३, १; कप्प; ओघ ६६६; णाया १, ५)।

भंडण न [**दे. भण्डन**] १ कलह, वाक्-कलह, गाली-प्रदान; (दे ६, १०१; उत्त; महा; णाया १, १६—पत्र २१३; ओघ २१४; गा ६८६; उप ३३६; तंदु ५०)। २ क्रोध, गुस्सा; (सम ७१)।

भंडणा स्त्री [**भण्डना**] भाँडना, गाली-प्रदान; (उप ३३६)।

भंडय देखो **भंड=भगड**; (हे ४, ४२२)।

भंडय देखो **भंडग**; "पायसपयदहियाणं भरिऊणं भंडए गहए" (महा ८०, २४; उत्त २६, ८)।

भंडा स्त्री [**दे**] संबोधन-सूचक शब्द; (संक्षि ४७)।

भंडाआर } पुं [**भाण्डागार**] भंडार, कोठा, बखार; (मुद्रा
भंडागार } १४१; स १७२; सुपा २२१; २६)।

भंडागारि } पुंस्त्री [**भाण्डागारिन्, °क**] भंडारी,
भंडागारिअ } भंडार का अध्यक्ष; (णाया १, ८; कुप्र १०८)। स्त्री—°रिणी; (णाया १, ८)।

भंडार देखो **भंडागार**; (महा)।

भंडार पुं [**भाण्डकार**] बर्तन बनाने वाला शिल्पी; (राज)।

भंडारि } देखो **भंडागारि**; (स २०७; सुर ४, ६०)।
भंडारिअ }

भंडिअ पुं [**भाण्डिक**] भंडारी, भंडार का अध्यक्ष; (सुख २, ४५)।

भंडिआ स्त्री [**भाण्डिका**] स्थाली, थलिया; (ठा ८—पत्र ४१७)।

भंडिआ } स्त्री [**दे**] १ गंत्री, गाड़ी; (बृह ३; दे ६, १०६;
भंडी } आवम; निचू ३; वव ६)। २ शिरीष वृक्ष; ३ अटवी, जंगल; ४ असती, कुलटा; (दे ६, १०६)।

भंडीर पुं [**भण्डीर**] वृक्ष-विशेष, शिरीष वृक्ष; (कुमा)। °**वडिंसय**, °**वडेंसय** न [°**वतंसक**] मथुरा नगरी का एक उद्यान; "महुराए णयरीए भंडि(?डीर)वडेंसए उज्जाणे" (राज; णाया २—पत्र २५३)। °**वण** न [°**वन**] १ मथुरा का एक वन; (ती ७)। २ मथुरा का एक चैत्य; (आवम)।

भंडु न [**दे**] मुण्डन; (दे ६, १००)।

भंडुल्ल देखो **भंड**=भाण्ड; (भवि)।

भंत वि [**भ्रान्त**] १ घुमा हुआ; "भंतो जसो मेईणी (ए)" (पउम ३०, ६८)। २ भ्रान्ति-युक्त, भ्रम वाला, भूला हुआ; (दे १, २१)। ३ अपेत, अनवस्थित; (विसे ३४४८)। ४ पुं. प्रथम नरक का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ३)।

भंत वि [**भगवत्**] भगवान्, ऐश्वर्य-शाली; (ठा ३, १; भग; विसे ३४४८—३४५६)।

भंत वि [**भदन्त**] १ कल्याण-कारक; २ सुख-कारक; ३ पूज्य; (विसे ३४३६; कप्प; विपा १, १; कस; विसे ३४७४)।

भंत वि [**भजत्**] सेवा करता; (विसे ३४४६)।

भंत वि [**भात्, भ्राजत्**] चमकता, प्रकाशता; (विसे ३४४७)।

भंत वि [**भवान्त**] भव का—संसार का—अन्त करने वाला, मुक्ति का कारण; (विसे ३४४६)।

भंत वि [**भयान्त**] भय-नाशक; (विसे ३४४६)।

भंति स्त्री [**भ्रान्ति**] भ्रम, मिथ्या ज्ञान; (धर्मसं ७२१; ७२३; सुपा ३१२; भवि)।

भंति (अप) स्त्री [**भक्ति**] भक्ति, प्रकार; (पिंग)।

भंभल वि [**दे**] १ अप्रिय, अनिष्ट; (दे ६, ११०)। २ मूर्ख, अज्ञान, पागल, बेवकूफ; (दे ६, ११०; सुर ८, १६६)।

भंभसार पुं [**भम्भसार**] भगवान् महावीर के समकालीन और उनके परम भक्त एक मगधाधिपति, ये श्रेणिक और बिम्बिसार के नाम से भी प्रसिद्ध थे; (णाया १, १३; औप)। देखो **भिंभसार, भिंभिसार**।

भंभा स्त्री [**दे. भम्भा**] १ वाद्य-विशेष, भेरी; (दे ६ १००; णाया १, १७; विसे ७८ टी; सुर ३, ६६; सम्मत्त १०६; राय; भग ७, ६)। २ भाँ भाँ की आवाज; (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

भंभी स्त्री [**दे**] १ असती, कुलटा; (दे ६, ६६)। २ नीति-विशेष; (राज)।

भंस अक [**भ्रंश्**] १ नीचे गिरना। २ नष्ट होना। ३ स्खलित होना। भंसइ; (हे ४, १७७)।

भंस पुं [**भ्रंश**] १ स्खलना; २ विनाश; (सुपा ११३; सुर ४, २३०), "संपाडइ संपयाभंसं" (कुप्र ४१)।

भंसण न [**भ्रंशन**] ऊपर देखो; "को णु उवाओ जिणधम्मभंसणे होज्ज एईए" (सुपा ११३; सुर ४, १५)।

भसणा स्त्री [**भ्रंशना**] ऊपर देखो; (पण्ह २, ४; श्रावक ६५)।

भक्ख सक [**भक्षय्**] भक्षण करना, खाना। भक्खेइ; (महा)। कर्म—भक्खिज्जइ; (कुमा)। वकृ—**भक्खंत**; (सं १०२)। हेकृ—**भक्खिउं**; (महा)। कृ—**भक्ख, भक्खेय, भक्खणिज्ज**; (पउम ८४, ४; सुपा ३७०; णाया १, १०; सुर १४, ३४; श्रा २७)।

भक्ख पुं [**भक्ष**] भक्षण, भोजन; "भो कीर खीरसक्करदक्खाभक्खं करहि ताव" (सुपा २६७)।

भक्ख देखो **भक्ष**=भक्षय्।

भक्ख पुंन [**भक्ष्य**] खंड-खाद्य, चीनी का बना हुआ खाद्य द्रव्य, मिठाई; (सुज्ज २० टी)।

भक्खग वि [**भक्षक**] भक्षण करने वाला; (कुप्र २६)।

भक्खण न [**भक्षण**] १ भोजन; (पण्ण २८)। २ वि. खाने वाला; "सव्वभक्खणो" (श्रा २८)।

भक्खणया स्त्री [**भक्षणा**] भक्षण, भोजन; (उवा)।

भक्खर पुं [**भास्कर**] १ सूर्य, रवि; (उत्त २३, ७८; लहुअ १०)। २ अग्नि, वह्नि; ३ अर्क-वृक्ष; (चंड)।

भक्खराभ न [**भास्कराभ**] १ गोत्र-विशेष जो गोतम गोत्र की शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)।

भक्खावण न [**भक्षण**] खिलाना; (उप १५० टी)।

भक्खि वि [**भक्षिन्**] खाने वाला; (औप)।

भक्खिय वि [**भक्षित**] खाया हुआ; (भवि)।

भक्खेय देखो **भक्ख**=भक्षय्।

भग पुंन [**भग**] १ ऐश्वर्य; २ रूप; ३ श्री; ४ यश, कीर्ति; ५ धर्म; ६ प्रयत्न; "इस्सरियरूवसिरिजसधम्मपयत्ता मया भगाभिक्खा" (विसे १०४८; चेइय २८८)। ७ सूर्य, रवि; ८ माहात्म्य; ६ वैराग्य; १० मुक्ति, मोक्ष; ११ वीर्य; १२ इच्छा; (कप्प—टी)। १३ ज्ञान; (प्रामा)। १४ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र; (अणु)। १५ पुं. योनि, उत्पत्ति-स्थान; (पण्ह १, ४—पत्र ६८; सुज्ज १०, ८)। १६ देव-विशेष, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठाता देव, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३; सुज्ज १०, १२)। १७ गुदा और अण्डकोश के बीच का स्थान; (बृह ३)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] नृप-विशेष; (हे ४, २६६)। °**व** देखो °**वंत**; (भग; महा)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ ऐश्वर्यादि-संपन्ना, पूज्या; (पडि)। २ भगवती-सूत्र, पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (पंच

५, १२५) °वंत वि [°वत्] १ ऐश्वर्यादि-गुण-संपन्न; २ पुं. परमेश्वर, परमात्मा; (कप्प; विसे १०४८; प्रामा)।

भगंदर पुं [**भगन्दर**] रोग-विशेष; (गाया १, १३; विपा १, १)।

भगंदरि वि [**भगन्दरिन्**] भगन्दर रोग वाला; (श्रा १६; संबोध ४३)।

भगंदरिअ वि [**भगन्दरिक**] ऊपर देखो; (विपा १, ७)।

भगंदल देखो **भगंदर**; (राज)।

भगिणी देखो **बहिणी**; (गाया १, ८; कप्प; कुप्र २३६; महा)।

भगिरहि } पुं [**भगीरथि**] सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र;
भगीरहि } (पउम ५, १७६; २१५)।

भग्ग वि [**भग्न**] १ खण्डित, भाँगा हुआ; (सुर २, १०२; दं ४६; उवा)। २ पराजित; ३ पलायित, भागा हुआ; "जइ भग्गा पारक्कडा" (हे ४, ३७६; ३५४; महा; वव २)। °इ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष; (औप)।

भग्ग वि [**दे**] लिप्त, पोता हुआ; (दे ६, ६६)।

भग्ग न [**भाग्य**] नसीब, दैव; (सुर १३, १०५)।

भग्गव पुं [**भार्गव**] १ ग्रह-विशेष, शुक्र ग्रह; (पउम १७, १०८)। २ ऋषि-विशेष; (समु १८१)।

भग्गवेस न [**भार्गवेश**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६ टी; इक)।

भग्गिअ (अप) देखो **भग्ग=भग्न**; (पिंग)।

भच्च पुं [**दे**] भागिनेय, भानजा; (षड्)।

भच्छिअ वि [**भर्त्सित**] तिरस्कृत; (दे १, ८०; कुमा ३, ८६)।

भज देखो **भय=भज्**। वकृ—**भजंत, भजेंत, भजमाण; भजेमाण**; (षड्)।

भज्ज सक [**भ्रस्ज्**] पकाना, भुनना। भज्जंति, भज्जेंति; (सुज्जनि ८१; विपा १, ३)। वकृ—**भज्जंत, भज्जेंत**; (पिंड ५७४; विपा १, ३)।

भज्ज देखो **भंज**; (आचा २, १, १, २)।

भज्ज देखो **भय=भज्**।

भज्जंत देखो **भंज**।

भज्जण } न [**भ्रज्जन**] १ भुनन, भुनना; (पण्ह १, १;
भज्जणय } अनु ५)। २ भुनने का पात्र; (सुज्जनि ८१; विपा १, ३)।

भज्जमाण देखो **भंज**।

भज्जा स्त्री [**भार्या**] पत्नी, स्त्री; (कुमा; प्राप्र; ११६)।

भज्जिअ देखो **भग्ग=भग्न**; "तद्दयिवं वा छिन्नाडिं अभिक्कंत-भज्जियं पेहाए" (आचा २, १, १, २)।

भज्जिअ वि [**भृष्ट, भर्जित**] भुना हुआ, पकाया हुआ; (गा ५५७; आचा २, १, १, ३; विपा १, २; उवा)।

भज्जिआ स्त्री [**भर्जिका**] भाजी, शाक-भेद, पत्ताकार तरकारी; (पव २५६)।

भज्जिम वि [**भज्जिम**] भुनने योग्य; (आचा २, ४, २, १५)।

भज्जिर वि [**भङ्क्तृ**] भाँगने वाला; "कारफलभारभज्जिर-साहासयसंकुलो महासाही" (धर्मवि ५५; सण)।

भज्जेंत देखो **भज्ज=भ्रस्ज्**।

भट्ट पुं [**भट्ट**] १ मनुष्य-जाति विशेष, स्तुति-पाठक की एक जाति, भाट; "जयजयसद्दकरंतसुभट्ट" (सिरि १५५; सुपा २७१; उर ५ १२०)। २ वेदाभिज्ञ पण्डित, ब्राह्मण, विप्र; (उप १०३१ टी)। ३ स्वामित्व, मालिकी; (प्रति ७)।

भट्टारग } पुं [**भट्टारक**] १ पूज्य, पूजनीय; (आव ३;
भट्टारय } महा)। २ नाटक की भाषा में राजा; (प्राकृ ६५)।

भट्टि देखो **भत्तु=भर्तृ**; (ठा ३, १; सम ८६; कप्प; स १४४; प्रति ३; स्वप्न १५)।

भट्टिअ पुं [**दे**] विष्णु, श्रीकृष्ण; (हे २, १७४; दे ६, १००)।

भट्टिणी स्त्री [**भर्त्री**] स्वामिनी, मालिकिन; (स १३४)।

भट्टिणी स्त्री [**भट्टिनी**] नाटक की भाषा में वह रानी जिसका अभिषेक न किया गया हो; (प्रति ७)।

भट्टद्ध (शौ) देखो **भट्टारय**; (प्राकृ ६५)।

भट्ठ वि [**भ्रष्ट**] १ नीचे गिरा हुआ; २ च्युत, स्खलित; (महा; द्र ४३)। ३ नष्ट; (सुर ४, २१५; गाया १, ६)।

भट्ठ पुंन [**भ्राष्ट्र**] भर्जन-पात्र, भुनने का बर्तन; (दे ५, २०), "भट्ठियचणगो व्वि सयणीए कीस तडफडसि" (सुर ३, १४८)।

भट्ठि } स्त्री [**दे**] धूलि-रहित मार्ग; (ओघ २३; ३४ टी;
भट्ठी } भग ७, ६ टी—पत्र ३०७)।

भड पुं [**भट**] १ योद्धा, लड़ाका; (कुमा)। २ शूर, वीर; (से ३, ६; गाया १, १)। ३ म्लेच्छों की एक जाति; ४ वर्णसंकर जाति-विशेष, एक नीच मनुष्य-जाति; ५ राक्षस;

(हे १, १६५)। °खइआ स्त्री [°खादिता] दीक्षा-विशेष; (ठा ४, ४)।

भडक्क पुंस्त्री [दे] आडम्बर, ठाठमाठ; (सट्टि ४४ टी)। स्त्री—°क्का; (उव)।

भडग पुं [भटक] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली एक म्लेच्छ-जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४; इक)। देखो **भड**।

भडारय (अप) देखो **भट्टारय**; (भवि)।

भडित्त न [भटित्र] शूल-पक्व मांसादि, कबाब; (स २६२; कुप्र ४३२)।

भडिल वि [दे] संबोधन-सूचक शब्द; (संक्षि ४७)।

भण सक [भण्] कहना, बोलना, प्रतिपादन करना। भणइ, भणेइ; (हे ४, २३६; कुमा)। कर्म—भण्णइ, भणणए, भणिज्जइ; (पि ५४८, षड्; पिंग)। भूका—भणीअ; (कुमा)। भवि—भणिहि, भणिस्सं; (कुमा)। वकृ—**भणंत, भणमाण, भणेमाण**; (कुमा; महा; सुर १०, ११४)। कवकृ—**भण्णंत, भणिज्जंत, भणिज्जमाण, भणीअंत, भण्णमाण**; (कुमा; पि ५४८; गा १४५)। संकृ—**भणिअ, भणिउं, भणिऊण**; (कुमा; पि ३४६)। हेकृ—**भणिउ°, भणिउं**; (पउम ६४, १३; पि ५७६)। कृ—**भणिअव्व, भणेयव्व**; (अजि ३८; सुपा ६०८) कवकृ—**भन्नंत, भन्नमाण**; (सुर २, १६१; उप पृ २३; उप १०३१ टी)।

भणग त्रि [भण, °क] प्रतिपादन करने वाला; (वंदि)।

भणण न [भणन] कथन, उक्ति; (उप ५५३; सुपा २८३; संबोध ३)।

भणाविअ वि [भाणित] कहलाया हुआ; (सुपा ३५८)।

भणिअ वि [भणित] कथित; (भग)।

भणिइ स्त्री [भणिति] उक्ति, वचन; (सुर ६, १४५; सुपा २१४; धर्मवि ५८)।

भणिर वि [भणितृ] कहने वाला, वक्ता; (गा २६७; कुमा; सुर ११, २४४; श्रा १६)। स्त्री—°री; (कुमा)।

भणेमाण देखो **भण**।

भण्ण सक [भण्] कहना, बोलना। भण्णइ; (धात्वा १४७)।

भण्णमाण देखो **भण**=भण्।

भत्त पुंन [भक्त] १ आहार, भोजन; २ अन्न, नाज; (विपा १, १; ठा २, ४; महा)। ३ ओदन, भात; (प्रामा)। ४ लगातार सात दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ५ वि. भक्ति-युक्त, भक्तिमान्; "सा सुलसा बालप्पभिर्इं चेव हरिणेगमेसीभत्तया यावि होत्था" (अंत ७; उप पृ ६६; महा; पिंग)। °कहा स्त्री [°कथा] आहार-कथा, भोजन-संबन्धी वार्ता; (ठा ४, ४)। °च्छंद, °छंद पुं [°च्छन्द] रोग-विशेष, भोजन की अरुचि; "कच्छू जरो खासो सासो भत्तच्छंदो अक्खिदुक्खं" (महा; महा—टि)। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] आहार-त्याग-रूप अनशन, अनशन का एक भेद, मरण का एक प्रकार; (ठा २, ४—पत्र ६४; औप ३०, २)। °परिण्णा; °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] १ वही पूर्वोक्त अर्थ; (भत्त १६६; १०; पव १५७)। २ ग्रन्थ-विशेष; (भत्त १)। °पाणय न [°पानक] आहार-पानी, खान-पान; (विपा १, १)। °वेला स्त्री [°वेला] भोजन-समय; (विपा १, १)।

भत्त वि [भूत] उत्पन्न, संजात; (हे ४, ६०)।

भत्ति देखो **भत्तु**; (पिंग)।

भत्ति स्त्री [भक्ति] १ सेवा, विनय, आदर; (णाया १, ८—पत्र १२२; उव; औप; प्रासू २६)। २ रचना; (विसे १६३१; औप; सुपा ५२)। ३ एकाग्र-वृत्ति-विशेष; (आव २)। ४ कल्पना, उपचार; (धर्मसं ७४२)। ५ प्रकार, भेद; (ठा ६)। ६ विच्छित्ति-विशेष; (औप)। ७ अनुराग; (धर्म १)। ८ विभाग; ६ अवयव; १० श्रद्धा; (हे २, १५६)। °मंत, °वंत वि [°मत्] भक्ति वाला, भक्त; (पउम ६२, २८; उव; सुपा १६०; हे २, १५६; भवि)।

भत्तिज्ज पुं [भ्रातृव्य] भतीजा, भाई का पुत्र; (सिरि ७१६; धर्मवि १२७)।

भत्ती नीचे देखो।

भत्तु पुं [भर्तृ] १ स्वामी, पति, भतार; (णाया १, १६—पत्र २०७), "णववहू उवरतभत्तुया" (णाया १, ६; पाम; स्वप्न ५६)। २ अधिपति, अध्यक्ष; ३ राजा, नरेश; ४ वि. पोषक, पोषण करने वाला; ५ धारण करने वाला; (हे ३, ४४; ४५)। स्त्री—भत्ती; (पिंग)।

भत्तोस न [भक्तोष] १ भुना हुआ अन्न; (पंचा ५, २६; प्रभा १५)। २ सुखादिका, खाद्य-विशेष; (पव ३८)।

भत्थ पुंस्त्री [दे] भाथा, तूणीर, तरकस; "अह आरोवियचावो पिट्ठे दढबन्धभत्थओ अभओ" (धर्मवि १४६)।

भत्था स्त्री [भस्त्रा] चमड़े की धौंकनी, भाथी; (उप ३२० टी; धर्मवि १३०)।

भत्थिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत; (सम्मत्त १८६)।

भत्थी स्त्री [**भस्त्री**] भाथी, चमड़े की धोंकनी; "भत्थि व्व अक्खिपुण्णा वियमियमुदरं" (कुप्र २६६)।

भद्द सक [**भद्र**] १ सुख करना। २ कल्याण करना; (विसे ३४३६)। वकृ—**भदंत**; नीचे देखो।

भदंत वि [**भदन्त**] १ कल्याण-कारक; २ सुख-कारक; ३ पूज्य, पूजनीय; (विसे ३४३६; ३४३४)।

भद्द न [**दे**] आमलक, फल-विशेष; (दे ६, १००)।

भद्द) न [**भद्र**] १ मंगल, कल्याण; "भद्दं मिच्छादंसण-**भद्दअ**) समूहमइअस्स अमयसारस्स जिणवयणस्स भगवओ" (सम्मत्त १६७; प्रासू १६)। २ सुवर्ण, सोना; ३ मुस्तक, मोथा, नागरमोथा; (हे २, ८०)। ४ दो उपवास; (संबोध ५८)। ५ देव-विमान विशेष; (सम ३२)। ६ शरासन, मूठ; (गाया १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भद्रासन, आसन-विशेष; (आवम)। ८ वि. साधु, सरल, भला, सज्जन; ६ उत्तम, श्रेष्ठ; (भग; प्रासू १६; सुर ३, ४)। १० सुख-जनक, कल्याण-कारक; (गाया १, १)। ११ पुं. हाथी की एक उत्तम जाति; (ठा ४, २—पत्र २०८; महा)। १२ भारत-वर्ष का तीसरा भावी बलदेव; (सम १५४)। १३ अंग-विद्या का जानकार द्वितीय रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)। १४ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि; (सुज्ज १०, १५)। १५ छन्द-विशेष; (पिंग)। १६ स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य; (महानि ६; कप्प)। १७ व्यक्ति-वाचक नाम; (निर १, ३; आव १; धम्म)। १८ भारत-वर्ष का चौबीसवाँ भावी जिनदेव; (पव ७)। °**गुत्त** पुं [°**गुप्त**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनाचार्य; (णंदि; सार्ध २३)। °**गुत्तिय** न [°**गुप्तिक**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)। °**जस** पुं [°**यशस्**] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर; (ठा ८—पत्र ४२६)। २ एक जैन मुनि; (कप्प)। °**जसिय** न [°**यशस्क**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)। °**णंदि** पुं [°**नन्दिन्**] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार; (विपा २, २)। °**बाहु** पुं [°**बाहु**] स्वनाम-प्रसिद्ध प्राचीन जैना-चार्य और ग्रन्थकार; (कप्प; णंदि)। °**मुत्था** स्त्री [°**मुस्ता**] वनस्पति-विशेष, भद्रमोथा; (पण्ण १)। °**वया** स्त्री [°**पदा**] नक्षत्र-विशेष; (सुर १०, २२४)। °**साल** न [°**शाल**] मेरु पर्वत का एक वन; (ठा २, ३; इक)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ धरणेन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १; इक)। २ एक श्रेष्ठी का नाम; (आव ४)। °**स्स** न [°**अश्व**] नगर-विशेष; (इक)। °**ासण** न [°**आसन**] आसन-विशेष, सिंहासन; (गाया १, १; पण्ह १, ४; पाग्र; औप)।

भद्दव) पुं [**भाद्रपद**] मास-विशेष, भादों का महीना; **भद्दवय**) (वज्जा ८२; सुर ३, १३८)।

भद्दसिरी स्त्री [**दे**] श्रीखण्ड, चन्दन; (दे ६, १०२)।

भद्दा स्त्री [**भद्रा**] १ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ६)। २ प्रथम बलदेव की माता; (सम १५२)। ३ तीसरे चक्र-वर्ती की जननी; (सम १५२)। ४ द्वितीय चक्रवर्ती की स्त्री; (सम १५२)। ५ मेरु के पूर्व रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)। ६ एक प्रतिमा, व्रत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ६४)। ७ राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। ८ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि; (संबोध ५४)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। १० कामदेव श्रावक की भार्या का नाम; ११ चुलनीपिता-नामक उपासक की माता का नाम; (उवा)। १२ एक सार्थवाह-स्त्री का नाम; (विपा १, ४)। १३ गोशालक की माता का नाम; (भग १५)। १४ अहिंसा, दया; (पण्ह २, १)। १५ एक वापी; (दीव)। १६ एक नगरी; (आचू १)। १७ अनेक स्त्रियों का नाम; (गाया १, ८; १६; आवम)।

भद्दाकरि वि [**दे**] प्रलम्ब, अति लम्बा; (दे ६, १०२)।

भद्दिआ स्त्री [**भद्रिका, भद्रा**] १ शोभना, सुन्दर (स्त्री), (ओघभा १५)। २ नगरी-विशेष; (कप्प)।

भद्दिज्जिया स्त्री [**भद्रीया, भद्रीयिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

भद्दिलपुर न [**भद्दिलपुर**] भारतवर्ष का एक प्राचीन नगर; (अंत ४; कुप्र ८४; इक)।

भद्दुत्तरवडिंसग न [**भद्रोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम ३२)।

भद्दुत्तर°) स्त्री [**भद्रोत्तरा**] प्रतिमा-विशेष, प्रतिज्ञा का एक **भद्दोत्तर°** } भेद, एक तरह का व्रत; (औप; अंत ३०; पव **भद्दोत्तरा**) २७१)।

भद्र देखो **भद्द**; (हे २, ८०, प्राकृ १७)।

भन्नंत) देखो **भण**=भण्। **भन्नमाण**)

भप्प देखो **भस्स**=भस्मन्; (हे २, ५१; कुमा)।

भम सक [**भ्रम्**] भ्रमण करना, घूमना। **भमइ**; (हे ४, १६१; प्राकृ ६६)। वकृ—**भमंत, भममाण**; (गा

२०२; ३८७; कप्प; औप)। संकृ—भमिअ, भमिऊण; (षड्; गा ७४६)। कृ—भमिअव्व; (सुपा ४३८)।

भम पुं [भ्रम] १ भ्रमण; (कुप्र ४)। २ भ्रान्ति, मोह, मिथ्या-ज्ञान; (से ३, ४८; कुमा)।

भमग न [भ्रमक] लगातार एकतीस दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।

भमड देखो भम=भ्रम्। "भम्मि भमडइ एगुञ्चिय" (विवे १०८; हे ४, १६१)।

भमडिअ वि [भ्रान्त] १ घूमा हुआ, फिरा हुआ; (स ४७३)। २ भ्रान्ति-युक्त; (कुमा)। देखो भमिअ।

भमण न [भ्रमण] घूमना, चकराना; (दं ४६; कप्प)।

भममुह पुं [दे] आवर्त; (दे ६, १०१)।

भमया स्त्री [भ्रू] भौं, नेत्र के ऊपर की केश-पङ्क्ति; (हे २, १६७; कुमा)।

भमर पुं [भ्रमर] १ मधुकर, भौंरा; (हे १, २४४; कुमा; जी १८; प्रासू ११३)। २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ विट, रंडीबाज; (कप्पू)। °रुअ पुं [°रुच] अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)। °ावलि स्त्री [°ावलि] १ छन्द-विशेष; (पिंग)। २ भ्रमर-पंक्ति; (राय)।

भमरटेंटा स्त्री [दे] १ भ्रमर की तरह अक्षि-गोलक वाली; २ भ्रमर की तरह अस्थिर आचरण वाली; ३ शुष्क व्रण के दाग वाली; (कप्प)।

भमरिया स्त्री [भ्रमरिका] जन्तु-विशेष, बर्र; (जी १८)। देखो भमलिया।

भमरी स्त्री [भ्रमरी] स्त्री-भ्रमर, भौंरी; (दे)। नीचे देखो।

भमलिया, **भमली** स्त्री [भ्रमरीका, °री] १ पित्त के प्रकोप से होने वाला रोग-विशेष, चक्कर; "भमली पित्तु-दयाओ भमंतमहिदंसणं" (चेइय ४३५; पडि)। २ वाद्य-विशेष; (राय)।

भमस पुं [दे] तृण-विशेष, ईख की तरह का एक प्रकार का घास; (दे ६, १०१)।

भमाइअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (से ३, ६१)।

भमाड सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। भमाडेइ; (हे ४, ३०), भमाडेसु; (सुपा ११४)। वकृ—भमाडेंत; (पउम १०६, ११)।

भमाड देखो भम=भ्रम्। भमाडइ; (हे ४, १६१; भवि)।

भमाड पुं [भ्रम] भ्रमण, घूमना, चक्कर; (ओघभा २६ टी; ८३ टी)।

भमाडण न [भ्रमण] घुमाना; (उप पृ २७८)।

भमाडिअ देखो भमडिअ; (कुमा)।

भमाडिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (पउम १६, २५)।

भमाव देखो भमाड=भ्रमय्। भमावइ, भमावेइ; (पि ५५३; हे ४, ३०)।

भमास [दे] देखो भमस; (दे ६, १०१; पाअ)।

भमि स्त्री [भ्रमि] १ आवर्त, पानी का चक्राकार भ्रमण; (अच्चु ६३)। २ चित्त-भ्रम करने की शक्ति; (विसे १६५३)। ३ रोग-विशेष, चक्कर; "भमिपरिभमियसरीरो" (हम्मीर २८)।

भमिअ देखो भमडिअ; (जी ४८; भवि)। ३ न. भ्रमण; "भमिअमणिक्कंतदेहलीदेसं" (गा ५२५)।

भमिअ देखो भमाइअ; (पाअ)।

भमिअव्व, **भमिआ** देखो भम=भ्रम्।

भमिर वि [भ्रमितृ] भ्रमण करने वाला; (हे २, १४५; सुर १, ५५; ३, १८)।

भमुह न [भ्रू] नीचे देखो; "दीहाइं भमुहाइं" (आचा २, १३, १७)।

भमुहा स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजी; (पउम ३७, ५०; औप; आचा; पाअ)।

भम्म, **भम्मड** देखो भम=भ्रम्। भम्मइ; (प्राकृ ६६), भम्मसु; (गा ४१५; ४४७)। भम्मडइ; (हे ४, १६१)। भम्मडेइ; (कुमा)।

भम्मर (अप) देखो भमर; (पिंग)।

भय देखो भद। वकृ—देखो भयंत=भदंत।

भय सक [भज्] १ सेवा करना। २ विकल्प से करना। ३ विभाग करना। ४ ग्रहण करना। भयइ, भयए; (सम्म १२४; कुमा), भए, भएज्जा; (बृह १), भयंति; (विसे १६६०)। "तम्हा भय जीव वेरग्गं" (श्रु ६१)। वकृ—भयंत, भयमाण; (विसे ३४४६; सुज्ज १, २, २, १७)। कवकृ—"सव्वतुभयमाणसुहेहिं" (कप्प)। संकृ—भइत्ता; (ठा ६)। कृ—भइअ, भइअव्व, भएयव्व, भज्ज, भयणिज्ज; (विसे ६१८; २०४६; उत्त ३६, २३, २४; २५; कम्म ५, ११; विसे ६१५; उप ६०४; विसे ३२०२; ७४८; पव १८१; जीवस १४५; पंच ५, ८; विसे ६१६; जीवस १४७)।

भय न [**भय**] डर, त्रास, भीति; (आचा; गाया १, १; गा १०२; कुमा; प्रासू १६; १७३)। °**अर** वि [°**कर**] भय-जनक; (से ५, ४४; ११, ७५)। °**जणणी** स्त्री [°**जननी**] १ त्रास उत्पन्न करने वाली; (बृह १)। २ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४१)। °**वाह** पुं [°**वाह**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६३)।

भय देखो **भग**; (उत्र; कुमा; सण; सुपा ४२०; गउड)।

भय देखो **भव**; (औप; पिंग)।

भयंकर वि [**भयंकर**] १ भय-जनक, भीषण; (हे ४, ३३१; सण; भवि)। २ प्राणि-वध, हिंसा; (पण्ह १,१)।

भयंत देखो **भय**=भज्।

भयंत देखो **भंत**=भगवत्; (सूअ १, १६, ६)।

भयंत देखो **भदंत**; (ओघ ४८; उत्त २०, ११; औप)।

भयंत देखो **भंत**=भयान्त; (विसे ३४४६; ३४५३; ३४५४)।

भयंत देखो **भंत**=भवान्त; (विसे ३४५४; औप)।

भयंत वि [**भयत्र**] भय से रक्षा करने वाला; (औप; सूअ १, १६, ६)।

भयंतु वि [**भयत्रातृ**] भय से रक्षा करने वाला, "धम्ममाइक्खणे भयंतारो" (सूअ १, ४, १, २५)।

भयंतु वि [**भक्तृ**] सेवक, सेवा करने वाला; (औप)।

भयक) पुं [**भृतक**] १ नौकर, कर्मकर; (ठा ४, १; २)।
भयग) २ वि. पोषित; (पण्ह १, २; गाया १, २)।

भयण न [**भजन**] १ सेवा; (राज)। २ विभाग; (सम्म ११३)। ३ पुं. लोभ; (सूअ १, ६, ११)।

भयण देखो **भवण**; (नाट—चैत ४०)।

भयणा स्त्री [**भजना**] १ सेवा; (निचू १)। २ विकल्प; (भग; सम्म १२४; दं ३१; उव)।

भयप्पइ) देखो **बहस्सइ**; (हे २, १३७; षड्)।
भयप्फइ)

भयरूगाम पुं [**दे**] भंडेरक, गुजरात का एक गाँव; (दे ६, १०२)।

भयाणय वि [**भयानक**] भयंकर, भय-जनक; (स १२१)।

भयालि पुं [**भयालि**] भारतवर्ष के भावी अठारहवें जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम; (सम १५४)। देखो **सयालि**।

भयालु वि [**भीरु**] भीरु, डरपोक; (दे ६, १०७; नाट)।

भयावण (अप) देखो **भयाणय**; (भवि)।

भयावह वि [**भयावह**] भय-जनक, भय-कारक; (सूअ १, ११, २१)।

भर सक [**भृ**] १ भरना। २ धारण करना। ३ पोषण करना। भरइ; (भवि; पिंग)। भरमु; (कम्म ४, ७६)। वकृ—**भरंत**; (भवि)। कवकृ—**भरंत**, **भरेंत**, **भरिज्जंत**; (से ६, ६८; ८, ८; १, ३७)। संकृ—**भरेऊणं**; (आक ६)। कृ—**भरणिज्ज**, **भरणीअ**, **भत्तव्व**, **भरेअव्व**; (प्राप्र; नाट; राज; से ६, ३)।

भर सक [**स्मृ**] स्मरण करना, याद करना। भरइ; (हे ४, ७४; प्राप्र)। वकृ—**भरंत**; (गा ३८१; भवि)। संकृ—**भरिअ**, **भरिऊणं**; (कुमा)। प्रयो, वकृ—**भरावंत**; (कुमा)।

भर पुंन [**भर**] १ समूह, प्रकर, निकर; "जइअव्वं नह एगागिणावि भीमारिदुरभरं" (प्रवि १२; सुपा ५; प्राप्र)। २ भार, बोझ; (से ३, ५; प्रासू २६; गा ६)। ३ गुरुतर कार्य; "भरणित्थरणसमत्था" (विसे १६६ टी; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ४ प्रचुरता, अतिशय; ५ कर—राजदेय भाग—की प्रचुरता, कर की गुरुता; "करेहि य भरेहि य" (विपा १, १)। ६ पूर्णता, सम्पूर्णता; "इय चिंताए निद्दं अलहंतो निसिभरम्मि नरनाहो" (कुप्र ६)। ७ मध्य भाग; = जभावद; "भरमुवगए कालापसोए" (स ५३०)।

भरअ देखो **भरह**; (षड्)।

भरड पुं [**भरट**] वर्ण-विशेष, एक प्रकार का बावा; "मिच्छत्तगाहिगासिणा भरडएणं" (सम्मत्त १४५)।

भरण न [**स्मरण**] स्मृति; (गा २२२; ३७७)।

भरण न [**भरण**] १ भरना, पूरना; (गउड)। २ पोषण; (गा ५२७)। ३ शिल्प-विशेष, वस्त्र में बेल-बूटा आदि आकार की रचना; "सीवणं तुन्नणं भरणं" (गच्छ ३, ७)।

भरणी स्त्री [**भरणी**] नक्षत्र-विशेष; (सम ८; इक)।

भरध (शौ) देखो **भरह**; (प्राकृ ८५)।

भरह पुं [**भरत**] १ भगवान् आदिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र और प्रथम चक्रवर्ती राजा; (सम ६०; कुमा; सुर २, १३३)। २ राजा रामचन्द्र का छोटा भाई; (पउम २५, १४)। ३ नाट्य-शास्त्र का कर्ता एक मुनि; (सिरि ५६)। ४ वर्ष-विशेष, भारत वर्ष; "इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पन्नत्ता, तं जहा—भरहे हेमवए हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरण्णवए एरवए" (सम १२; जं १; पडि)। ५ भारतवर्ष का प्रथम भावी चक्रवर्ती; (सम १५४)। ६ भवर; ७ तन्तुवायः = नृप-विशेष, राजा दुष्यन्त का पुत्र; ८ भरत के वंशज राजा;

१० नट; (हे १, २१४; षड्)। ११ देव-विशेष; (जं ३)। १२ कूट-विशेष, पर्वत-विशेष का शिखर; (जं ४; ठा २, ३; ६)। °खित्त न [°क्षेत्र] भारतवर्ष; (सण)। °वास न [°वर्ष] भारतवर्ष, आर्यावर्त; (पण्ह १, ४)। °सत्थ न [°शास्त्र] भरतमुनि-प्रणीत नाट्य-शास्त्र; (सिरि ५६)। °ाहिव पुं [°ाधिप] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती; २ भरत चक्रवर्ती; (सण)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] वही अर्थ; (सण)।

भरहेसर पुं [**भरतेश्वर**] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती; २ चक्रवर्ती भरत; (कुमा २, १७; पडि)।

भरिअ वि [**भृत, भरित**] भरा हुआ, पूर्ण, व्याप्त; (विपा १, ३; औप; धर्मवि १४४; काप्र १७४; हेका २७२; प्रासू १०)।

भरिअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; 'भरिअं लुडिअं सुमरिअं" (पाअ; कुमा; भवि)।

भरिउल्लट्ट वि [**दे. भृतोल्लुठित**] भर कर खाली किया हुआ; (दे ७, ८१; पाअ)।

भरिम वि [**भरिम**] भर कर बनाया हुआ; (अणु)।

भरिया (अप) देखो **भारिया**; (कुमा)।

भरिली स्त्री [**भरिली**] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; (राज)।

भरु पुं [**भरु**] १ एक अनार्य देश; २ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (इक)।

भरुअच्छ पुं [**भृगुकच्छ**] गुजरात का एक प्रसिद्ध शहर जो आजकल 'भड़ौच' के नाम से प्रसिद्ध है; (काल; सुनि १०८६६; पडि)।

भरोच्छय न [**दे**] ताल का फल; (दे ६, १०२)।

भल देखो **भर=स्मृ**। भलइ; (हे ४, ७४)। प्रयो, वकृ—**भलावंत**; (कुमा)।

भल सक [**भल्**] सम्हालना। भलिज्जासु; (सुपा ५४६)। भवि—भलिस्सामि; (काल)। कृ—**भलेयव्व**; (ओघ ३८६ टी)। प्रयो, संकृ—**भलाविऊण**; (सिरि ३१२; ५६६)।

भलंत वि [**दे**] स्खलित होता, गिरता; (दे ६, १०१)।

भलाविअ वि [**भालित**] सौंपा हुआ, सम्हालने के लिये दिया हुआ; (श्रा १६)।

भलि पुंस्त्री [**दे**] कदाग्रह, हठ; "असुलहमेच्छण जाहं भलि ते नवि दूर गणंति" (हे ४, ३५३; चंड)।

भल्ल पुं [**भल्ल**] १ भालू, रीछ; (पण्ह १, १)। २ पुंन. अस्त्र-विशेष, भाला, बरछी; (गा ५०४; ५८५; ६६४)।

भल्ल } वि [**भद्र**] भला, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा; (कुमा; हे ४, ३५१; भवि)। °त्तण, °प्पण न [°त्व]
भल्लय }
भलमनसी, भलाई; (कुमा)।

भल्लय [**भल्लक**] देखो **भल्ल=भल्ल**; (उप पृ ३०; सण; आवम)।

भल्लाअय } पुं [**भल्लात, °क**] १ वृक्ष-विशेष, भिलावा का पेड़; (पण्ण १; दे १, २३)। २ भिलावा का फल; (दे १, २३; ५, २६; पाअ)।
भल्लातक }
भल्लाय }

भल्लि स्त्री [**भल्लि**] देखो **भल्ली**; (कुमा)।

भल्लिम पुंस्त्री [**भद्रत्व**] भलाई, भद्रता; (सुपा १२३; कुप्र १०८)।

भल्ली स्त्री [**भल्ली**] भाला, बरछी, अस्त्र-विशेष; (सुर २, २८; कुप्र २७४; सुपा ५३०)।

भल्लु पुंस्त्री [**दे**] भालू, रीछ; (दे ६, ९९)।

भल्लुंकी स्त्री [**दे**] शिवा, शृगाली; (दे ६, १०१; सण), "भल्लुंकी रुड़िया विकट्टंती" (संथा ६६)।

भल्लोड पुंन [**दे**] बाण का पुंख, शर का अग्र भाग, गुजराती में 'भालोडुं'; "कन्नायड्ढियधणुहपट्टदीसंतभल्लोडा" (सुर २, ७)।

भव अक [**भू**] १ होना। २ सक. प्राप्त करना। भवइ, भवए; (कप्प; महा), भए; (भग; ठा ३, १)। भूका—भविंसु; (भग)। भवि—भविस्सइ, भविस्सं; (कप्प; भग; पि ५२१)। वकृ—**भवंत**; (गउड ५८८), "भूयभाविभा(? भ)**वमाण**-भाविहीं" (कुप्र ४३७)। संकृ—**भविअ, भवित्ता, भवित्ताणं**; (अभि ५७; कप्प; भग; पि ५८३), **भइ** (अप); (पिंग)। कृ—**भवियव्व**; (णाया १, १; सुर ४, २०७; उव; भग; सुपा १६४)। देखो **भव्व**।

भव पुं [**भव**] १ संसार; (ठा ३, १; उवा; भग; विपा १, १; कुमा; जी ४१)। २ संसार का कारण; (सम्म १)। ३ जन्म, उत्पत्ति; (ठा ४, ३)। ४ नरकादि योनि, जन्म-स्थान; (आचा; ठा २, ३; ४, ३)। ५ महादेव, शिव; (पाअ)। ६ वि. होने वाला, भावी; (ठा १)। ७ उत्पन्न; "कणयपुरं नामेणं तत्थ भवो हं महाभाग !" (सुपा ५८४)। ८ न. देव-विमान-विशेष; (सम २)। °जिण वि [°जिन] रागादि को जीतने वाला; "सासणं जिणाणं भवजिणाणं" (सम्म १)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ देव आदि योनि में उत्पत्ति

[illegible] सर्वोत्[illegible] (ठा [illegible]) । [illegible] संसार में [illegible] [illegible]) । °त्थ वि [°स्थ] संसार में स्थित; [illegible]) । °त्थकेवलि वि [°स्थकेवलिन्] [illegible] (सम्म [illegible]) । °धारणिज्ज न [°धारणीय] [illegible] पर्यन्त संसार में धारण करने योग्य शरीर; (भग; इक) । °पच्चइय वि [°प्रत्ययिक] १ [illegible]-हेतुक; २ न. अवधिज्ञान का एक भेद; (ठा २, १; नंदि [illegible]) । °भूइ पुं [°भूति] संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि; (गउड) । °सिद्धिय, °सिद्धीय वि [°सिद्धिक] उसी जन्म में या बाद के किसी जन्म में मुक्त होने वाला, मुक्ति-गामी; (सम २; पण्ण १८; भग; विसे १२३०; जीवस [illegible]; श्रावक [illegible]; ठा १; विसे १२२६) । °अभिणंदि, °अभिनंदि, °अहिनंदि वि [°अभिनन्दिन्] संसार को पसंद करने वाला, संसार को अच्छा मानने वाला; (राज; संबोध ८; ४३) । °विग्गाहि न [°उपग्राहिन्] कर्म-विशेष; (धर्मसं १२८१) ।

भव देखो **भव्व**; (कम्म ४, ६) ।

भव } न [**भवत्**] तुम, आप; (कुमा; हे २, १७४) ।
भवंत }

भवंत देखो **भव=भू** ।

भवँ (अप) **भम=भ्रम्** । भवँइ; (सण) । वकृ—**भवँत**; (भवि) । संकृ—**भवँतु**; (सण) ।

भवँण (अप) देखो **भमण**; (भवि) ।

भवण न [**भवन**] १ उत्पत्ति, जन्म; (धर्मसं १७२) । २ गृह, मकान, वसति; (पाअ; कुमा) । ३ असुरकुमार आदि देवों का विमान; (पण्ण २) । ४ सत्ता; (विसे ६६) । °वइ पुं [°पति] एक देव-जाति; (भग) । °वासि पुं [°वासिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ; (ठा १०; औप) । °वासिणी स्त्री [°वासिनी] देवी-विशेष; (पण्ण १७; महा ६८, १२) । °ाहिव पुं [°ाधिप] एक देव-जाति; (सुपा ६२०) ।

भवमाण देखो **भव=भू** ।

भवर देखो **भमर**; (चंड) ।

भवाणी स्त्री [**भवानी**] शिव-पत्नी, पार्वती; (पाअ; समु १५७) । °कंत पुं [°कान्त] महादेव; (पिंग) ।

भवारिस वि [**भवादृश**] तुम्हारे जैसा, आपके तुल्य; (हे १, १४२; चंड; सुपा २७६) ।

भवि पुं [**भविन्**] भव्य जीव, मुक्ति-गामी प्राणी; (भवि) ।

भविअ देखो **भव=भू** ।

भविअ वि [**भव्य**] १ सुन्दर; (कुमा) । २ श्रेष्ठ, उत्तम; [illegible]) । ३ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी; (पण्ण १, [illegible]) । ४ भावी, होने वाला; (हे ३, १७८; षड्) । देखो **भव्व=भव्य** ।

भविअ वि [**भविक**] १ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी; २ संसारी, संसार में रहने वाला; (सुर ४, ८०) ।

°**भविअ** वि [°**भविक**] भव-संबन्धी; (सण) ।

भवित्ती स्त्री [**भवित्री**] होने वाली; (पिंग) ।

भवियव्व देखो **भव=भू** ।

भवियव्वया स्त्री [**भवितव्यता**] नियति, अवश्यंभाव; (महा)।

भविल (अप) देखो **भवास** । °त्त, °यत्त पुं [°दत्त] एक कथा-नायक; (भवि) ।

भविस्स पुं [**भविष्य**] १ भविष्य काल, आगामी समय; (पउम ३४, ४६; पि ५३०) । २ वि. भविष्य काल में होने वाला, भावी; (णाया १, १६—पत्र २१४; पउम ३५, ४६; सुर १, १३४; कप्पू) ।

भवीस (अप) ऊपर देखो; (भवि) ।

भव्व वि [**भव्य**] १ सुन्दर; "सव्वं भव्वं करिस्सामि" (सुपा ३३६) । २ उचित, योग्य; (विसे २८; ४४) । ३ श्रेष्ठ, उत्तम; (वज्जा १८) । ४ होता, वर्तमान; "एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा" (णाया १, १६—पत्र २१४; कप्प; विसे १३४२) । ५ भावी, होने वाला; (विसे ५८; पंच २, ८) । ६ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी; (विसे १८२२; ३; ४; ५; दं १) । °सिद्धीय देखो **भव-सिद्धीय**; "पज्जत्तापज्जत्ता सुहुमा किंचहिया भव्वसिद्धीया" (पंच २, ७८) ।

भव्व पुं [**दे**] भागिनेय, भानजा; (दे ६, १००) ।

भस सक [**भष्**] भूँकना, श्वान का बोलना । भसइ; (हे ४, १८६; षड्—पत्र २२२), भसंति; (सिरि ६२२) ।

भसग पुं [**भसक**] एक राज-कुमार, श्रीकृष्ण के बड़े भाई जरत्कुमार का एक पौत्र; (उत्त) ।

भसण देखो **भिसण** । भसणेमि; (पि ५५६) ।

भसण न [**भषण**] १ कुत्ते का शब्द; (श्रा २७) । २ पुं. श्वान, कुत्ता; (पाअ; सिरि ६२२) ।

भसणअ (अप) वि [**भषितृ**] भूँकने वाला; "सुणउ भसणउ" (हे ४, ४४३) ।

भसम पुं [**भस्मन्**] १ ग्रह-विशेष; "भसमग्गहपीडियं इमं तित्थं" (सड्ढि ४२ टी) । २ राख, भभूत; "भसमुद्धूलियगत्तो" (महा; सम्मत ७६) । देखो **भास=भस्मन्** ।

भसल देखो **भमर**; (हे १, २४४; २५४; कुमा; सुपा ४; पिंग)।

भसुआ स्त्री [**दे**] शिवा, शृगाली; (दे ६, १०१; पात्र)।

भसुम देखो **भसम**; (प्राकृ ३७)।

भसेल्ल पुं [**दे**] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग; "सालि-भसेल्लसरिसा से केसा" (उवा)।

भसोल न [**दे. भसोल**] एक नाट्य-विधि; (राज)।

भस्थ (मा) देखो **भट्ट**; (षड्)।

भस्थालय (मा) देखो **भट्टारय**; (षड्)।

भस्स देखो **भंस**=भ्रंश्। भस्सइ; (प्राकृ ७६)। वकृ—**भस्संत**; (काल)।

भस्स पुं [**भस्मन्**] १ ग्रह-विशेष; २ राख; (हे २, ५१)।

भस्सिअ वि [**भस्मित**] जलाकर राख किया हुआ, भस्म किया हुआ; (कुमा)।

भा अक [**भा**] चमकना, दीपना, प्रकाशना। "भा भाजो वा दित्तीए" (विसे ३४४७)। भाइ; (कप्पू), भासि; (गउड)। वकृ—देखो **भंत**=भात्।

भा स्त्री [**भा**] दीप्ति, प्रभा, कान्ति, तेज; (कुमा)। °**मंडल** पुं [°**मण्डल**] राजा जनक का पुत्र; (पउम २६, ८७)। °**वलय** न [°**वलय**] जिन-देव का एक महाप्रातिहार्य, पीठ के पीछे रखा जाता दीप्ति-मंडल; (संबोध २; सिरि १७७)।

भा } **भाअ** } अक [**भी**] डरना, भय करना। भाइ, भाअइ, भाआमि; (हे ४, ५३; षड्; महा; स्वप्न ८०), भादि (शौ); (प्राकृ ६३), भायइ; (सण)। भवि—भाइस्सदि, भाइस्सं (शौ); (पि ५३०)। वकृ—**भायंत**; (कुमा)। कृ—**भाइयव्व**; (पण्ह २, २; स ५६२; सुपा ४१)।

भाअ देखो **भा**=भा। भाअदि (शौ); (प्राकृ ६३)।

भाअ सक [**भायय्**] डराना। भाअइ, भाएइ; (प्राकृ ६४), भाएसि; (कपूर २४)। वकृ—**भायमाण**; (सुपा २४८)।

भाअ देखो **भाव**=भावय्। कृ—**भाएअव्व**; (नव २५)।

भाअ पुं [**भाग**] १ योग्य स्थान; २ एक देश; (से १३, ६)। ३ अंश, विभाग, हिस्सा; (पाअ; सुपा ४०७; पव—गाथा २३; उवा)। ४ भाग्य, नसीब; (सार्ध ८०)। °**धेअ** °**हेअ** पुंन [°**धेय**] १ भाग्य, नसीब; (से ११, ८५; स्वप्न ५१; हम्मीर १४; अभि १६७)। २ कर, राज-देय; ३ दायाद, भागीदार; "भाअहेओ, भाअहेअं" (प्राकृ ८८; नाट—चैत ६०)। देखो **भाग**।

भाअ पुं [**दे**] ज्येष्ठ भगिनी का पति; (दे ६, १०२)।

भाअ देखो **भाव**; (भवि)।

भाआव देखो **भाअ**=भायय्। भाआवेइ; (प्राकृ ६४)।

भाइ देखो **भागि**; "सारिव्व बंधवहमरणभाइणो जिण ण हुंति तइ दिट्ठे" (धण ३२; उप ६८६ टी)।

भाइ } **भाइअ** } पुं [**भ्रातृ**] भाई, बन्धु; (उप ५१६; महा; आवम)। °**बीया** स्त्री [°**द्वितीया**] पर्व-विशेष, कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि; (ती १६)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] भतीजा; (सुपा ४७०)। देखो **भाउ**।

भाइअ वि [**भाजित**] १ विभक्त किया हुआ, बाँटा हुआ; (पिंड २०८)। २ खण्डित; (पंच २, १०)।

भाइअ वि [**भीत**] १ डरा हुआ; २ न. डर, भय; (हे ४,५३)।

भाइणिज्ज } **भाइणेअ** } **भाइणेज्ज** } पुंस्त्री [**भागिनेय**] भगिनी-पुत्र, बहिन का लड़का, भानजा; (धम्म १२ टी; नाट—रत्ना ८५; स २७०; णाया १, ८—पत्र १३३; पउम ६६, ३६; कुप्र ४४०; महा)। स्त्री—°**ज्जी**; (पउम १७, ११२)।

भाइयव्व देखो **भा**=भी।

भाइर वि [**भीरु**] डरपोक; (दे ६, १०४)।

भाइल्ल पुं [**दे**] हालिक, कर्षक, कृषीबल; (दे ६, १०४)।

भाइल्ल वि [**भागिन्, °क**] भागीदार, साझीदार, अंश-ग्राही; (सूअ २, २, ६३; पण्ह १, २; ठा ३, १—पत्र ११३; णाया १, १४)। देखो **भागि**।

भाइहंड न [**दे. भ्रातृभाण्ड**] भाई, बहिन आदि स्वजन; गुजराती में 'भाँवड'; (कुप्र १५६)।

भाईरही स्त्री [**भागीरथी**] गंगा नदी; (गउड; हे ४, ३४७; नाट—विक्र २८)।

भाउ } **भाउअ** } पुं [**भ्रातृ**] भाई, बन्धु; (महा; सुर ३, ८८; पि ५५; हे १, १३१; उव)। °**जाया**, °**ज्जाइया** स्त्री [°**जाया**] भोजाई, भाई की स्त्री; (दे ६, १०३; सुपा २६४)।

भाउअ देखो **भाअ**=(दे); (दे ६, १०२ टी)।

भाउअ न [**दे**] आषाढ मास में मनाया जाता गौरी—पार्वती—का एक उत्सव; (दे ६, १०३)।

भाउग देखो **भाउ**; (उप १४६ टी; महा)।

भाउज्जा स्त्री [**दे**] भोजाई, भाई की पत्नी; (दे ६, १०३)।

भाउराअण पुं [**भागुरायण**] व्यक्ति-वाचक नाम; (मुद्रा २२३)।

भाएअव्व देखो **भाअ**=भावय्।

भाग पुं [**भाग**] १ अंश, हिस्सा; (कुमा; जी २७; हे १, १६७)। २ अचिन्त्य शक्ति, प्रभाव, माहात्म्य; "भागो-चिंता सत्ती स महाभागो महप्पभावो त्ति" (विसे १०५८)। ३ पूजा, भजन; (सूअ १, ८, २२)। ४ भाग्य, नसीब; "धन्ना कयपुन्ना हं महंतभागोइअंति मह अत्थि" (सिरि ८२३)। ५ प्रकार, भङ्गी; (राज)। ६ अवकाश; (सुज्ज १०, ३—पत्र १०४)। °**धेअ**, °**धेज्ज**, °**हेअ** देखो **भाअ-हेअ**; (पउम ६, ५७; २८, ८६; स ३३; सुर १४, ६; पाअ)। देखो **भाअ**=भाग।

भागवय वि [**भागवत**] १ भगवान् से संबन्ध रखने वाला; २ भगवान् का भक्त; (धर्मसं ३१२)। ३ न. ग्रन्थ-विशेष; (गांदि)।

भागि वि [**भागिन्**] १ भजने वाला, सेवन करने वाला; "आरस्स भागी" (उव), "किं पुण मरणंपि न मे संजायं मंदभग्गभागिस्स" (सुपा ५४७)। २ भागीदार, साझीदार, अंश-ग्राही; (प्रामा)।

भागिणेज्ज }
भागिणेय } देखो **भाइणेज्ज**; (महा; कुप्र ३३१)।

भागीरही देखो **भाईरही**; (पाअ)।

भाज अक [**भ्राज्**] चमकना। वकृ—**भाजंत**, **भंत**; (विसे ३४४७)।

भाड पुंन [**दे**] भाड, वह बड़ा चूल्हा जहां अन्न भुना जाता है, भट्ठी; "जाया भाडसमाणा मग्गा उत्ततवालुया अहियं" (धर्मवि १०४; सण)।

भाडय न [**भाटक**] भाड़ा, किराया; (सुर ६, १५७)।

भाडिय वि [**भाटकित**] भाड़े पर लिया हुआ; "बोहित्थं भाडियं वियडं" (सुर १३, ३५)।

भाडिया } स्त्री [**भाटिका**, °**टी**] भाड़ा, शुल्क, किराया;
भाडी } "एक्काय देइ भाडिं अन्नाहिं समं रमेइ रयणीए", "विलासिणीए दाऊण इच्छियं भाडिं" (सुपा ३८२; ३८३; उवा)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] बैल, गाड़ी आदि भाड़े पर देने का काम—धन्धा; "भाडियकम्मं" (स ५०; श्रा २२; पडि)।

भाण देखो **भण**=भण्। संकृ—**भाणिऊण**, **भाणिऊणं**; (पिंड ६१५; उव)। कृ—**भाणियव्व**; (ठा ४, २; सम ८४; भग; उवा; कप्प; औप)।

भाण देखो **भायण**; (औप ६६५; हे १, २६७; कुमा)।

भाणिअ वि [**भाणित**] १ पढ़ाया हुआ, पाठित; "नाणाम-त्थाइं भाणिआ" (स्यण ६८)। २ कहलाया हुआ; "मयणा-सिरिनामाए रन्नो भज्जाए भाणिओ मंती" (सुपा ५८७)।

भाणु पुं [**भानु**] १ सूर्य, रवि; (पउम ४९, ३६; पुप्फ १६४; सिरि ३२)। २ किरण; (प्रामा)। ३ भगवान् धर्मनाथ का पिता, एक राजा; (सम १५१)। ४ स्त्री. एक इन्द्राणी, शक्र की एक अग्र-महिषी; (पउम १०२,१५९)। °**कण्ण** पुं [°**क-र्ण**] रावण का एक अनुज; (पउम ७, ९७)। °**मई** स्त्री [°**मती**] रावण की एक पत्नी; (पउम ७४,१०)। °**मा-लिणी** [°**मालिनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३६)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] उज्जयिनी के राजा बलमित्र का छोटा भाई; (काल; विचार ४९४)। °**वेग** पुं [°**वेग**] एक विद्याधर का नाम; (महा; सण)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] राजा बलमित्र की बहिन; (काल)।

भाम देखो **भमाड**=भ्रमय्। भामेइ; (हे ४, ३०)। कवकृ—**भामिज्जंत**; (गा ४५१)। कृ—**भामेयव्व**; (ती ७)।

भामण न [**भ्रमण**] घुमाना, फिराना; (सम्मत्त १९४)।

भामर न [**भ्रामर**] १ मधु-विशेष, भ्रमरी का बनाया हुआ मधु; (पव ४)। २ पुं. दोधक छन्द का एक भेद; (पिंग)।

भामरी स्त्री [**भ्रामरी**] १ वीणा-विशेष; (आया १, १७—पत्र २२९)। २ प्रदक्षिणा; (कप्पू; भवि)।

भामिअ वि [**भ्रमित**] १ घुमाया हुआ; (से २, ३२)। २ भ्रान्त किया हुआ, भ्रान्त-चित्त किया हुआ; "धत्तूरभामिओ इव" (मन २७; धर्मवि २३)।

भामिणी स्त्री [**भागिनी**] भाग्य वाली; (हे १, १९०; कुमा)।

भामिणी स्त्री [**भामिनी**] १ कोप-शीला स्त्री; २ स्त्री, महिला; (श्रा १२; सुर १, ७६; सुपा ४७५; सम्मत्त १९३)।

भाय देखो **भाउ**; (कुमा)।

भायंत देखो **भा**=भी।

भायण पुंन [**भाजन**] १ पात्र; २ आधार; ३ योग्य; "भायणा, भायणाइं" (हे १, ३३; २६७), 'ति च्चिय धन्ना ते पुन्न-भायणा, ताण जीवियं सहलं' (सुपा ५६७; कुमा)।

भायणंग पुं [**भाजनाङ्ग**] कल्पवृक्ष की एक जाति, पात्र देने वाला कल्पवृक्ष; (पउम १०२, १२०)।

भायणिज्ज देखो **भाइणिज्ज**; (धर्मवि १२; काल)।

भायमाण देखो **भाअ**=भायय्।

भायर देखो **भाउ**; (कुमा)।

भायल पुं [**दे**] जात्य अश्व, उत्तम जाति का घोड़ा; (दे ६, १०४; पाअ)।

भार पुं [**भार**] १ बोझा, गुरुत्व; (कुमा)। २ भार वाली वस्तु, बोझ वाली चीज; (श्रा ४०)। ३ काम संपादन करने का अधिकार; "भारक्खमेवि पुत्ते जो नियभारं ठवित्तु नियपुत्ते, न य साहेइ सकज्जं" (प्रासू २७)। ४ परिणाम-विशेष; "लाउअबीअं इक्कं नासइ भारं गुडस्स जह सहसा" (प्रासू १५१)। ५ परिग्रह, धन-धान्य आदि का संग्रह; (पण्ह १, ५)। °**ग्गसो** अ [°**अशस्**] भार-भार के परिमाण से; "दसद्धवण्णमल्लं कुम्भग्गसो य भारग्गसो य" (णाया १, ८—पत्र १२५)। °**वह** वि [°**वह**] बोझा ढोने वाला; (श्रा ४०)। °**ावह** वि [°**ावह**] वही अर्थ; (पउम ६७, २६)।

भारई स्त्री [**भारती**] भाषा, वाणी, वाक्य, वचन; (पाअ)। देखो **भारही**।

भारदाय } न [**भारद्वाज**] १ गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र
भारद्दाय } की एक शाखा है; (कप्प; सुज्ज १०, १६)। २ पुं. भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न; "जे गोयमा ते गग्गा ते भारद्दा (द्दाया), ते अंगिरसा" (ठा ७—पत्र ३९०)। ३ पक्षि-विशेष; (ओघभा ८४)। ४ मुनि-विशेष; (पि २३६; २९८; ३६३)।

भारव देखो **भार**; (सुपा १४; ३८५)।

भारह न [**भारत**] १ भारतवर्ष, भरत-क्षेत्र; (उवा)। "जहा निसंते तवणच्चिमाली पभासई केवलभारहं तु" (दस ९, १, १४)। २ पाण्डव और कौरवों का युद्ध, महाभारत; (पउम १०५, १६)। ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें पाण्डव-कौरव युद्ध का वर्णन है, व्यास-मुनि-प्रणीत महाभारत; (कुमा; उर ३, ८)। ४ भरत मुनि-प्रणीत नाट्य-शास्त्र; (अणु)। ५ वि. भारतवर्ष-संबन्धी, भारत वर्ष का; (ठा २, ३—पत्र ६९); "तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पन्नत्ता, तं जहा—भारहे चेव सूरिए, एरवए चेव सूरिए" (सुज्ज १, ३)। °**खेत्त** न [°**क्षेत्र**] भारत वर्ष; (ठा २, ३ टी—पत्र ७१)।

भारहिअ वि [**भारतीय**] भारत-संबन्धी; "जा भारहियकहा इव भीमज्जुणनउलसउणिसोहिल्ला" (सुपा २६०)।

भारही स्त्री [**भारती**] १ सरस्वती देवी; (पि २०७)। २ देखो **भारई**; (स ३१६)।

भारिअ वि [**भारिक**] भारी, भार वाला, गुरु; (दे ४, २; णाया १, ६—पत्र ११४)।

भारिअ वि [**भारित**] १ भार वाला, भारी; (उप पृ १३४)। २ जिस पर भार लादा गया हो वह, भार-युक्त किया गया; (सुज्ज २, १५)।

भारिआ देखो **भज्जा**; (हे २, १०७; उवा; गाया २)।

भारिल्ल वि [**भारवत्**] भारी, बोझ वाला; (धर्मवि १३७)।

भारुंड पुं [**भारुण्ड**] दो मुँह और एक शरीर वाला पक्षी, पक्षि-विशेष; (कप्प; औप; महा; दे ६, १०८)।

भाल न [**भाल**] ललाट; (पाअ; कुमा)।

भालुंकी [**दे**] देखो **भल्लुंकी**; (भत्त १६०)।

भाल्ल पुंन [**दे**] मदन-वेदना, काम-पीड़ा; (संक्षि ४७)।

भाव सक [**भावय्**] १ वासित करना, गुणाधान करना। २ चिन्तन करना। भावेइ; (विवे ९८), भाविंति; (पिंड १२६), "भावेज्ज भावणं" (हि १६), भावेसु; (महा)। कर्म—भाविज्जइ; (प्रासू ३७)। वकृ—**भावेंत**, **भावमाण**, **भावेमाण**; (सुर ८, १८५; सुपा २६५; उवा)। संकृ—**भावेत्ता**, **भाविऊण**; (उवा; महा)। कृ—**भावणिज्ज**, **भावियव्व**, **भावेयव्व**; (कप्पू; काल; सुर १४, ८४)।

भाव अक [**भास्**] १ दिखाना, लगना, मालूम होना। २ पसंद होना, उचित मालूम होना।

"सो चेव देवलोगो देवसहस्सोवसोहिओ रम्मो।
तुह विरहियाइ इण्हिं भावइ नरओवमो मज्झ ॥"
(सुर ७, १६)।

"तं चिय इमं विमाणं रम्मं मणिकणगरयणविच्छुरियं।
तुमए मुक्कं भावइ घडियालयसच्छहं नाह ॥"
(सुर ७, १७)।

"एम्वहिं राहपओहरहं जं भावइ तं होउ" (हे ४, ४२०)।

भाव पुं [**भाव**] १ पदार्थ, वस्तु; "भावो वत्थु पयत्थो" (पाअ; विसे ७०; १६९२)। २ अभिप्राय, आशय; (आचा; पंचा १, १; प्रासू ४२)। ३ चित्त-विकार, मानस विकृति; "हावभावपललियविक्खेवविलाससालिणीहिं" (पण्ह २, ४—पत्र १३२)। ४ जन्म, उत्पत्ति; "पिंडो कज्जं पइसमयभाव उ" (विसे ७१)। ५ पर्याय, धर्म, वस्तु का परिणाम, द्रव्य की पूर्वापर अवस्था; (पण्ह १, ३; उत्त ३०, २३; विसे ६९; कम्म ४, १; ७०)। ६ धात्वर्थ-युक्त पदार्थ, विवक्षित क्रिया का अनुभव करने वाली वस्तु, पारमार्थिक पदार्थ; (विसे ४९)। ७ परमार्थ, वास्तविक सत्य; (विसे ४९)। ८ स्वभाव, स्वरूप; (अणु; णंदि)। ९ भवन, सत्ता; (विसे

६०; गउड ६७८)। १० ज्ञान, उपयोग; (आचू १; विसे ५०)। ११ चेष्टा; (णाया १, ८)। १२ क्रिया, पदार्थ; (अणु)। १३ विधि, कर्तव्योपदेश; "भावाभावमणंता" (भग ४१—पत्र ६७६)। १४ मन का परिणाम; (पंचा २, ३३; उव; कुमा ५, ५५)। १५ अन्तरङ्ग बहुमान, प्रेम, राग; (उव; कुमा ५, ८३; ८५)। १६ भावना, चिन्तन; (गउड १२०४; संबोध २४)। १७ नाटक की भाषा में विविध पदार्थों का चिन्तक पण्डित; (अभि १८२)। १८ आत्मा; (भग १७, ३)। १९ अवस्था, दशा; (कप्पू)। °केउ पुं [°केतु] ज्योतिष्क देव-विशेष, महाग्रह-विशेष; (ठा २, ३)। °त्थ पुं [°र्थ] तात्पर्य, रहस्य; (स ६)। °न्न, °न्नुय वि [°ज्ञ] अभिप्राय को जानने वाला; (आचा; महा)। °पाण पुं [°प्राण] ज्ञान आदि आत्मा का अन्तरङ्ग गुण; (पण्ण १)। °संजय पुं [°संयत] सच्चा साधु; (उप ७३२)। °साहु पुं [°साधु] वही अर्थ; (भग)। °ासव पुं [°ास्रव] वह आत्म-परिणाम, जिससे कर्म का आगमन हो; "आसवदि जेण कम्मं परिणामेणप्पणो स विण्णेओ भावासवो" (द्रव्य २९)।

भावअ वि [**भावक**] होने वाला; (प्राकृ ९०)। देखो **भावग**।

भावइआ स्त्री [**दे**] धार्मिक-गृहिणी; (दे ६, १०४)।

भावग वि [**भावक**] वासक पदार्थ, गुणाधायक वस्तु; (आचू ३)। देखो **भावअ**।

भावड पुं [**भावक**] स्वनाम-ख्यात एक जैन गृहस्थ; (ती २)।

भावण पुं [**भावन**] १ स्वनाम-ख्यात एक वणिक्; (पउम ५, ८२)। २ नीचे देखो; (संबोध २४; वि ६)।

भावणा स्त्री [**भावना**] १ वासना, गुणाधान, संस्कार-करण; (औप)। २ अनुप्रेक्षा, चिन्तन; ३ पर्यालोचन; (ओघभा ३; उव; प्रासू ३७)।

भावि वि [**भाविन्**] भविष्य में होने वाला; (कुमा; सण)।

भाविअ वि [**दे**] गृहीत, उपात्त; (दे ६, १०३)।

भाविअ न [**भाविक**] एक देव-विमान; (सम ३३)।

भाविअ वि [**भावित**] १ वासित; (पण्ह २, ५; उत्त १४, ५२; भग; प्रासू ३७)। २ भाव-युक्त; "जिणपवयणतिव्वभावियमइस्स" (उव)। ३ शुद्ध, निर्दोष; (बृह १)। °प्प वि [°ात्मन्] १ वासित अन्तःकरण वाला; (औप, णाया १, १)। २ पुं. मुहूर्त-विशेष, अहोरात्र का तेरहवाँ या अठारहवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३; सम ५१)। °प्पा स्त्री [°ात्मा] भगवान् धर्मनाथ की मुख्य शिष्या; (सम १५२)।

भाविंदिअ न [**भावेन्द्रिय**] उपयोग, ज्ञान; (भग)।

भाविर वि [**भावित्, भवितृ**] भविष्य में होने वाला, अवश्यभावी; "मज्झ भाविरदोहग्गपवासदुहिया मिलाणइ" (सुपा ६), "एत्थंतरम्मि भाविरनियपिउगुरुविरहग्गिदूसियमणेण" (सुपा ७५)।

भाविल्ल वि [**भाववत्**] भाव-युक्त; "पणवीसं भावणाई भाविल्लो पंचमहव्वयाईणं" (संबोध २४)।

भाविस्स देखो **भविस्स**; "भाविस्सभुवणभवंतभावआलोयलोयणं विमलं" (सुपा ८६)।

भावुक वि [**दे**] वयस्य, मित्र; (संक्षि ४७)।

भावुग } वि [**भावुक**] अन्य के संसर्ग का जिस पर असर
भावुय } हो सकती हो वह वस्तु; (ओघ ७७३; संबोध ५४)।

भास सक [**भाष्**] कहना, बोलना। भासइ, भासंति; (भग; उव)। भवि—भासिस्सामि; (भग)। वकृ—**भासंत**, **भासमाण**; (औप; भग; विपा १, १)। कवकृ—**भासिज्जमाण**; (भग; सम ६०)। संकृ—**भासित्ता**; (भग)। कृ—**भासिअव्व**; (भग; महा)।

भास अक [**भास्**] १ शोभना। २ लगना, मालूम होना। ३ प्रकाशना, चमकना। भासइ; (हे ४, २०३), भासए, भासंति, भाससि; (मोह २६; भत्त ११०; सुर ७, १६९)। वकृ—**भासंत**; (अच्चु ५४)।

भास सक [**भीषय्**] डराना। भासइ; (धात्वा १४७)।

भास पुं [**भास**] १ पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १; दे २, ६२)। २ दीप्ति, प्रकाश; "नावरिज्जइ कयावि। उक्कोसावरणम्मिवि जलयच्छन्नक्कभासो व्व" (विसे ४९८; भवि)।

भास पुं [**भस्मन्**] १ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३; विचार ५०७)। २ भस्म, राख; (णाया १, १; पण्ह २, ५)। °रासि पुं [°राशि] ग्रह-विशेष; (ठा २, ३; कप्प)।

भास न [**भाष्य**] व्याख्या-विशेष, पद्य-बद्ध टीका; (चैत्य १; उप ३५७ टी; विचार ३५२; सम्यक्त्वो ११)।

भास° देखो **भासा**; (कुमा)। °ण्णु वि [°ज्ञ] भाषा के गुण-दोष का जानकार; (धर्मसं ९२५)। °व वि [°वत्] वही अर्थ; (सूअ १, १३, १३)।

भासग वि [**भाषक**] बोलने वाला, वक्ता, प्रतिपादक; (विसे ४१०; पंचा १८, ९; ठा २, २—पत्र ५९)।

भासण न [**भासन**] चमक, दीप्ति, प्रकाश; "वरमल्लिभासणाणं" (औप)।

भासण न [**भाषण**] कथन, प्रतिपादन; (महा)।

भासणया } स्त्री [**भाषणा**] ऊपर देखो; (उप ५१६; **भासणा** } विसे १४७; उव)।

भासय देखो **भासग**; (विसे ३७४; पगण १८)।

भासय वि [**भासक**] प्रकाशक; (विसे ११०४)।

भासल वि [**दे**] दीप्त, प्रज्वलित; (दे ६, १०३)।

भासा स्त्री [**भाषा**] १ बोली; "अट्ठारसदेसीभासाविसारए" (औप १०६; कुमा)। २ वाक्य, वाणी, गिरा, वचन; (पाअ)। °**जड्ड** वि [°**जड**] बोलने की शक्ति से रहित, मूक; (आव ४)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] पुद्गलों को भाषा के रूप में परिणत करने की शक्ति; (भग ६, ४)। °**विजय** पुं [°**विचय**] १ भाषा का निर्णय; २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (ठा १०—पत्र ४६१)। °**विजय** पुं [°**विजय**] दृष्टिवाद; (ठा १०)। °**समिअ** वि [°**समित**] वाणी का संयम वाला; (भग)। °**समिइ** स्त्री [°**समिति**] वाणी का संयम; (सम १०)। देखो **भास**°।

भासा स्त्री [**भास्**] प्रकाश, आलोक, दीप्ति; (पाअ)।

भासि वि [**भाषिन्**] भाषक, वक्ता; (धर्मवि ५२; भवि)।

भासिअ वि [**भाषित**] १ उक्त, कथित, प्रतिपादित; (भग; आचा; सण; भवि)। २ न. भाषण, उक्ति; (आवम)।

भासिअ वि [**भाषिन्, °क**] वक्ता, बोलने वाला; (भवि)।

भासिअ वि [**दे**] दत्त, अर्पित; (दे ६, १०४)।

भासिअ वि [**भासित**] प्रकाश वाला, प्रकाश-युक्त; (निचू १३)।

भासिर वि [**भाषितृ**] वक्ता; (सुपा ५३८; सण)।

भासिर वि [**भास्वर**] दीप्र, देदीप्यमान; (कुमा)।

भासिल्ल वि [**भाषावत्**] भाषा-युक्त, बाणी-युक्त; (उत्त २७, ११)।

भासीकय वि [**भस्मीकृत**] जलाकर राख किया हुआ; (उप ६८६ टी)।

भासुंड अक [**दे**] बाहर निकलना। भासुंडइ; (दे ६, १०३ टी)।

भासुंडि स्त्री [**दे**] निःसरण, निर्गमन; (दे ६, १०३)।

भासुर वि [**भासुर**] १ भास्वर, दीप्तिमान, चमकता; (सुर ६, १८४; सुपा ३३; २७२; कुप्र ६०; धर्मसं १३२६ टी)। २ घोर, भीषण, भयंकर; "घोरा दारुणभासुरभइरवलल्लक्कभीमभीसणया" (पाअ)। ३ एक देव-विमान; (सम १३)। ४ छन्द-विशेष; (अजि ३०)।

भासुरिअ वि [**भासुरित**] देदीप्यमान किया हुआ; "भासुरभूसणभासुरिअंगा" (अजि २३)।

भि देखो °**भिम**; (आचा)।

भिअप्पइ }
भिअप्फइ } देखो **बहस्सइ**; (पि २१२; षड्)।
भिअस्सइ }

भिइ देखो **भइ**=भृति; (राज)।

भिउ पुं [**भृगु**] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष; २ पर्वत-सानु; ३ शुक्र-ग्रह; ४ महादेव, शिव; ५ जमदग्नि; ६ ऊँचा प्रदेश; ७ भृगु का वंशज; ८ रेखा, राजि; (हे १, १२८; षड्)। °**कच्छ** न [°**कच्छ**] नगर-विशेष, भड़ौच; (राज)।

भिउड न [**दे**] अंग-विशेष, शरीर का अवयव-विशेष (?); "मुत्तूण तुरगभिउडे खग्गं पिट्ठम्मि उत्तरीयं च", "तो तस्सेव य खग्गं भिउडाओ गिन्हिऊण चाणक्को" (धर्मवि ४१)।

भिउडि स्त्री [**भृकुटि**] १ भौं-भंग, भौं का विकार; (विपा १, ३; ४)। २ पुं. भगवान् नमिनाथ का शासन-देव; (संति ८)।

भिउडिय वि [**भृकुटित**] जिसने भौं चढ़ाई हो वह; (णाया १, ८)।

भिउडी देखो **भिउडि**; (कुमा)।

भिउर वि [**भिदुर**] विनश्वर; (आचा)।

भिउव्व पुं [**भार्गव**] भृगु मुनि का वंशज, परिव्राजक-विशेष; (औप)।

भिंग वि [**दे**] कृष्ण, काला; (दे ६, १०४)। २ नील, हरा; ३ स्त्रीकृत; (षड्)।

भिंग पुं [**भृङ्ग**] १ भ्रमर, मधुकर; (पउम ३३, १४८; पाअ)। २ पक्षि-विशेष; (पगण १७—पत्र ५२६)। ३ कीट-विशेष; ४ विदलित अंगार, कोयला; (णाया १, १—पत्र २४; औप)। ५ कल्पवृक्ष की एकजाति; (सम १७)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। ७ जार, उपपति; ८ भँगरा का पेड़; ९ पात्र-विशेष, झारी; (हे १, १२८)। °**णिभा** स्त्री [°**निभा**] एक पुष्करिणी; (इक)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] पुष्करिणी-विशेष; (जं ४)।

भिंगा स्त्री [**भृङ्गा**] एक पुष्करिणी, वापी-विशेष; (इक)।

भिंगार) **भिंगारक**) **भिंगारग**) पुं [**भृङ्गार, °क**] १ भाजन-विशेष, झारी; (पण्ह १, ४; औप)। २ पक्षि-विशेष, "भिंगार-रवंतभेरवरवे" (णाया १, १ —पत्र ३३), "भिंगारकदीणकंदियरवेसु" (णाया १, १ —पत्र ३३; पण्ह १, १; औप)। ३ सुवर्ण-मय जल-पात्र; (हे १, १२८; जं २)।

भिंगारी स्त्री [**दे. भृङ्गारी**] १ कीट-विशेष, चिरी, भिल्ली (दे ६, १०५; पात्र; उत्त ३६, १४८)। २ मशक, डाँस; (दे ६, १०५)।

भिंजा स्त्री [**दे**] अभ्यंग, मालिश; (सुत्र १, ४, २, ८)।

भिंटिया स्त्री [**दे. वृन्ताकी**] भंटा का गाछ; (उत्त १०३२ टी)।

भिंडिमाल) **भिंडिवाल**) पुं [**भिन्दिपाल**] शस्त्र-विशेष; (पण्ह १, १; औप; पउम ८, १२०; स ३८४; कुमा; हे २, ३८; प्राप्र)।

भिंद सक [**भिद्**] १ भेदना, तोड़ना। २ विभाग करना। भिंदइ, भिंदए; (महा; पड्)। भवि —भेच्छं, भिंदिस्संति; (हे ३, १७१; कुमा; पि ५३२)। कर्म—भिज्जइ; (आचा; पि ५४६)। वकृ—**भिंदंत**, **भिंदमाण**; (ग १३६, पि ५०६)। कवकृ—**भिज्जंत**, **भिज्जमाण**; (से ५, ६५; ठा २, ३; श्रा ६; भग; उवा; णाया १, ८; विसे २११)। संकृ—**भित्तूण**, **भित्तूणं**, **भिंदिअ**, **भिंदिऊण**, **भेत्तुआण**, **भेत्तूण**; (रंभा; उत्त ६, २२; नाट —विक्र १७; पि ५८६; हे २, १४६; महा)। हेकृ—**भिंदित्तए**, **भित्तुं**, **भेत्तुं**; (पि ५७८; कप्प; पि ५७४)। कृ—**भिंदियव्व**; (पण्ह २, १), **भेअव्व**; (से १०, २६)।

भिंदण न [**भेदन**] खण्डन, विच्छेद; (सुर १६, ५६)।

भिंदणया स्त्री [**भेदना**] ऊपर देखो; (सुर १, ७२)।

भिंदिवाल (शौ) देखो **भिंडिवाल**; (प्राकृ ८७)।

भिंभल देखो **भिब्भल**; (सुपा ८३; ३६५; पि २०६)।

भिंभलिय वि [**विह्वलित**] विह्वल किया हुआ, "ना गज्जइ मायंगो विंझवणे य (? म)यपवाहभिंभलिओ" (धर्मवि ८०)।

भिंभसार पुं [**भिम्भसार**] देखो **भंभसार**; (औप)।

भिंभा स्त्री [**भिम्भा**] देखो **भंभा**; (राज)।

भिंभिसार पुं [**भिम्भिसार**] देखो **भंभसार**; (ठा ६ —पत्र ४५८; पि २०६)।

भिंभी स्त्री [**भिम्भी**] वाद्य-विशेष, ढक्का; (ठा ६ टी —पत्र ४६१)।

भिक्ख सक [**भिक्ष्**] भीख माँगना, याचना करना। भिक्खइ; (संक्षि ३३)। वकृ—**भिक्खमाण**; (उत्त १४, २६)।

भिक्ख न [**भैक्ष**] १ भिक्षा, भीख। २ भिक्षा-समूह; (ओघभा २१६; २१७), "न कज्जं मम भिक्खेण" (उत्त २५, ४०)। °**जीविअ** वि [°**जीविक**] भीख से निर्वाह करने वाला, भिखमंगा; (प्राकृ ५; पि ८४)।

भिक्ख देखो **भिक्खा**; (पि ९७; कुप्र १८३; धर्मवि ३८)।

भिक्खण न [**भिक्षण**] भीख माँगना, याचन; (धर्मसं १०००)।

भिक्खा स्त्री [**भिक्षा**] भीख, याचना; (उवा; सुपा २७७; पिंग)। °**यर** वि [°**चर**] भिक्षुक, कप्प)। °**यरिया** स्त्री [°**चर्या**] भिक्षा के लिये पर्यटन; (आचा; औप; ओघभा ४४; उवा)। °**लाभिय** पुं [°**लाभिक**] भिक्षुक-विशेष; (औप)।

भिक्खाग) **भिक्खाय**) वि [**भिक्षाक**] भिक्षा माँगने वाला, भिक्षा से शरीर-निर्वाह करने वाला; (ठा ४, १—पत्र १८५; आचा २, १, ११, १; उत्त ५, २८; कप्प)।

भिक्खु पुंस्त्री [**भिक्षु**] १ भीख से निर्वाह करने वाला, साधु, मुनि, संन्यासी, ऋषि; (आचा; सम २१; कुमा; सुपा ३४६; प्रासू १६६), "भिक्खणसीलो य नया भिक्खु त्ति निदरिसिओ समए" (धर्मसं १००१)। २ बौद्ध संन्यासी; "कम्मं चयं न गच्छइ चउव्विहं भिक्खुसमयम्मि" (सूअनि ३१)। स्त्री—°**णी**; (आचा २, ५, १, १; गच्छ ३, ३१; कुप्र १८८)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] साधु का अभिग्रह-विशेष, मुनि का व्रत-विशेष; (भग; औप)। °**पडिया** स्त्री [°**प्रतिज्ञा**] साधु का उद्देश, साधु के निमित्त; "से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण वत्थं जाणेज्जा असंजए भिक्खुपडियाए कीयं वा धोयं वा रत्तं वा" (आचा २, ५, १, ४)।

भिक्खुंड देखो **भिच्छुंड**; (राज)।

भिखारि (अप) वि [**भिक्षाकारिन्**] भिखारी, भीख माँगने वाला; (पिंग)।

भिगु देखो **भिउ**; (पउम ५, ८६; औप ३७४)।

भिगुडि देखो **भिउडि**; (पि १२४)।

भिच्च पुं [**भृत्य**] १ दास, सेवक, नौकर; (पात्र; सुर २, ६२; सुपा ३०७)। २ वि. अच्छी तरह पोषण करने वाला; (विपा १, ७ —पत्र ७५)। ३ वि. भरणीय, पोषणीय; (पण्ह १, २—पत्र ४०)। °**भाव** पुं [°**भाव**] नौकरी; (सुर ४, १२६)।

भिच्छ° देखो **भिक्ख°**; (पि ६७)।
भिच्छा देखो **भिक्खा**; (गा १६२)।
भिच्छुंड वि [दे. **भिक्षोण्ड**] १ भिखारी, भिक्षा से निर्वाह करने वाला; २ पुं. बौद्ध साधु; (णाया १, १५—पत्र १९३)।
भिज्ज न [**भेद्य**] कर-विशेष, दण्ड-विशेष; (विपा १, १—पत्र ११)।
भिज्जा देखो **भिज्झा**; (ठा २, ३—पत्र ७१; सम ७१)।
भिज्जिय देखो **भिज्झिय**; (भग)।
भिज्झा स्त्री [**अभिध्या**] गृद्धि, लोभ; (कप्प)।
भिज्झिय वि [**अभिध्यित**] लोभ का विषय, सुन्दर; (भग ६, ३—पत्र २५३)।
भिट्ट सक [**दे**] भेटना। कर्म—"बहुविहभिट्टणएहिं भिट्टिज्जइ लद्धमाणेहिं" (सिरि ६०१)।
भिट्टण न [**दे**] भेंट, उपहार; गुजराती में 'भेटणुं'; (सिरि ७५६; ६०१)।
भिट्टा स्त्री [**दे**] ऊपर देखो; (सिरि ३६२)।
भिड सक [**दे**] भिड़ना—१ मिलना, सटना, सट जाना; २ लड़ना, मुठभेड़ करना। भिडइ; (भवि), भिडंति; (सिरि ४५०)। वकृ—**भिडंत**; (उप ३२० टी; भवि)।
भिडण न [**दे**] लड़ाई, मुठभेड; "सोंडीरसुहडभिडणिक्कलंपडं" (सुपा ५६६)।
भिडिय वि [**दे**] जिसने मुठभेड की हो वह, लड़ा हुआ; (महा; भवि)।
भिणासि पुं [**दे**] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)।
भिण्ण देखो **भिन्न**; (गउड; नाट—चैत ३४)। **°मरट्ठ** (अप) पुं [**°महाराष्ट्र**] छन्द का एक भेद; (पिंग)।
भित्त देखो **भिच्च**; (संक्षि ५)।
भित्तग } न [**भित्तक**] १ खण्ड, टुकड़ा; २ आधा हिस्सा;
भित्तय } (आचा २, ७, २, ८; ६; ७)।
भित्तर न [**दे**] १ द्वार, दरवाजा; (दे ६, १०५)। २ भीतर, अंदर; (पिंग)।
भित्ति स्त्री [**भित्ति**] भींत; (गउड; कुमा)। **°संध** न [**°सन्ध**] भींत का संधान; "जाएवि भित्तिसंधे खणियं खत्तं सुत्तिकखसत्थेणं" (महा)।
भित्तिरूल वि [**दे**] टंक से छिन्न; (दे ६, १०५)।
भित्तिल न [**भित्तिल**] एक देव-विमान; (सम ३८)।
भित्तु वि [**भेत्तृ**] भेदन करने वाला; (पव २)।
भित्तुं } देखो **भिंद**।
भित्तूण }
भिद देखो **भिंद**। भिदंति; (आचा २, १, ६, ६)। भवि—भिदिस्संति; (आचा २, १, ६, ६; पि ५३२)।
भिन्न वि [**भिन्न**] १ विदारित, खण्डित; (णाया १, ८; उव; भग; पाअ; महा)। २ प्रस्फुटित, स्फोटित; (ठा ४, ४; पण्ह २,१)। ३ अन्य, विसदृश, विलक्षण; (ठा १०)। ४ परित्यक्त, उज्झित; "जीवजढं भावओ भिन्नं" (बृह १; आव ४)। ५ ऊन, कम, न्यून; (भग)। **°कहा** स्त्री [**°कथा**] मैथुन-संबद्ध बात, रहस्यालाप; (ओघ ६६)। **°पिंडवाइय** वि [**°पिण्डपातिक**] स्फोटित अन्न आदि लेने की प्रतिज्ञा वाला; (पण्ह २, १—पत्र १००)। **°मास** पुं [**°मास**] पचीस दिन का महीना; (जीत)। **°मुहुत्त** न [**°मुहूर्त्त**] अन्तर्मुहूर्त, न्यून मुहूर्त; (भग)।
भिप्फ पुं [**भीष्म**] १ स्वनाम-ख्यात एक कुरुवंशीय क्षत्रिय, गांगेय, भीष्म पितामह; २ साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, भयानक रस; ३ वि. भय-जनक, भयंकर; (हे २, ५४; प्राकृ ६५; कुमा)।
भिब्भल वि [**विह्वल**] व्याकुल; (हे २, ५८; ६०; प्राकृ २४; कुमा; वज्जा १५६)।
भिब्भलण न [**विह्वलन**] व्याकुल बनाना; (कुमा)।
भिब्भिस अक [**भास् + यङ्=बाभास्य**] अत्यन्त दीपना। वकृ—**भिब्भसमाण, भिब्भिसमीण**; (णाया १, १—पत्र ३८; राय; पि ५५६)।
भिमोर पुं [**दे. हिमोर**] हिम का मध्य भाग(?); (हे २, १७४)।
भियग देखो **भयग**; (सण)।
भिलिंग सक [**दे**] अभ्यङ्ग करना, मालिश करना। भिलिंगेज्ज; (आचा २, १३, २; ४; ५; निचू १७)। वकृ—**भिलिंगंत**; (निचू १७)। प्रयो—भिलिंगावेज्ज; (निचू १७), वकृ—**भिलिंगात**; (निचू १७)।
भिलिंग } पुं [**दे**] धान्य-विशेष, मसूर; (कप्प; पंचा १०,
भिलिंगु } ७३)।
भिलिंज पुं [**दे**] अभ्यंग; (सूअ १, ४, २, ८ टी)।
भिलुगा स्त्री [**दे**] फटी हुई जमीन, भूमि की रेखा—फाट; (आचा २, १, ५, ५)।
भिल्ल पुं [**भिल्ल**] १ अनार्य देश-विशेष; (पव २७४ २ एक अनार्य जाति; (सुर २, ४; ६, ३४; महा)।

भिल्लमाल पुं [**भिल्लमाल**] स्वनाम-ख्यात एक क्षत्रिय क्षत्रिय-वंश; (विचे ११८)।

भिल्लायई स्त्री [**भल्लातकी**] भिलावाँ का पेड़; (उप १०३१ टी)।

भिल्लिअ वि [**भिल्लित**] खण्डित, तोड़ा हुआ; "पंचमहव्वय-तुंगो पायारो भिल्लिओ जेण" (उव)।

भिस देखो **भास**=भास्। भिसइ; (हे ४, २०३; षड्)। वकृ—**भिसंत, भिसमाण, भिसमीण**; (पउम ३, १२५; ९५, ३५; गाया १, १; औप; कुमा; गाया १, १; पि ५६२)।

भिस सक [**प्लुष्**] जलाना; (प्राकृ ६५; धात्वा १४७)।

भिस सक [**भायय**] डराना। भिसइ, भिसेइ; (प्राकृ ६४)।

भिस न [**भृश**] १ अत्यन्त, अतिशय; अतिशयित; "गलंत-भिसभिन्नदेहे य" (पिंड ५८३; उप ३२० टी; सत्त ६१; भवि)।

भिस देखो **बिस**; (प्राकृ १५; पगण १; सुत्र २, ३, १८)। °**कंदय** पुं [°**कन्दक**] एक प्रकार की खाने की मिष्ट वस्तु; (पगण १७—पत्र ५३३)। °**मुणाली** स्त्री [°**मृणाली**] कमलिनी; (पगण १)।

भिसअ पुं [**भिषज्**] १ वैद्य, चिकित्सक; (हे १, १८; कुमा)। २ भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम गणधर; (पव ८)।

भिसंत देखो **भिस**=भास्।

भिसंत न [**दे**] अनर्थ; (दे ६, १०५)।

भिसग देखो **भिसअ**; (गाया १, १—पत्र १५४)।

भिसण सक [**दे**] फेंकना, डालना। भिसणेमि; (गा ३१२)।

भिसमाण देखो **भिस**=भास्।

भिसरा स्त्री [**दे**] मत्स्य पकड़ने का जाल-विशेष; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

भिसाव सक [**भायय्**] डराना। भिसावेइ; (प्राकृ ६४)।

भिसिआ } स्त्री [**दे, बृषिका**] आसन-विशेष, ऋषि का
भिसिगा } आसन; (दे ६, १०५; भग; कुप्र ३७२; गाया १, ८; उप ६४८ टी; औप; सुत्र २, २, ४८)।

भिसिण देखो **भिसण**। भिसणेमि; (गा ३१२ अ)।

भिसिणी स्त्री [**बिसिनी**] कमलिनी, पद्मिनी; (हे १, २३८; कुमा; गा ३०८; काप्र ३१; महा; पात्र)।

भिसी स्त्री [**बृषी**] देखो **भिसिआ**; (पात्र)।

भिसोल न [**दे**] नृत्य-विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

भीह } अक [**भी**] डरना। भीहइ; (षड्)। कृ—**भेअव्व**;
भी } (सुपा ३८४)।

भी स्त्री [**भी**] १ भय; "न वंदओ सेइ गव्वभिउवालिं" (आचा)। २ वि. डरने वाला, भीरु; (आचा)।

भीअ वि [**भीत**] डरा हुआ; (हे २, १९३; ४, ५३; पात्र; कुमा; उवा)। °**भीय** वि [**भीत**] अत्यन्त डरा हुआ; (सुर ३, १६५)।

भीइ स्त्री [**भीति**] डर, भय; (सुर २, २३७; सिरि ८३६; प्रासू २४)।

भीइअ वि [**भीत**] डरा हुआ; (उप ६४०)।

भीइर वि [**भेतृ**] डरने वाला; "ना मरणभीइरं विमउवेह मं, पव्वइस्सं" (वसु)।

भीड [**दे**] देखो **भिड**। संकृ—**भीडिवि** (अप); (भवि)।

भीडिअ [**दे**] देखो **भिडिय**; (सुपा २९२)।

भीतर [**दे**] देखो **भित्तर**; (कुमा)।

भीम वि [**भीम**] १ भयंकर, भीषण; (पात्र; उव; पगह १, १; जी ४४; प्रासू १४४)। २ पुं. एक पाण्डव, भीमसेन; (गा ४४३)। ३ राक्षस-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ भारतवर्ष का भावी सातवाँ प्रतिवासुदेव; "अपराइए य भीमे महाभीमे य सुग्गीवे" (सम १५४)। ५ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६३)। ६ सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र; (पउम ५, १७५)। ७ दमयंती का पिता; (कुप्र ४८)। ८ एक कुल-पुत्र; (कुप्र १२२)। ९ गुजरात का चौलुक्य-वंशीय एक राजा—भीमदेव; (कुप्र ४)। १० हस्तिनापुर नगर का एक कूटग्राह—राज-पुरुष; (विपा १, २)। °**एव** पुं [°**देव**] गुजरात का एक चौलुक्य राजा; (कुप्र ५)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक राज-पुत्र; (धम्म)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २५९)। °**रह** पुं [°**रथ**] एक राजा, दमयंती का पिता; (कुप्र ४८)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ एक पाण्डव, भीम; (गाया १, १६)। २ एक कुलकर पुरुष; (सम १५०)। °**ावलि** पुं [°**ावलि**] अंग-विद्या का जानकार पहला रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)। °**ासुर** न [°**ासुर**] शास्त्र-विशेष; (अणु)।

भीरु } वि [**भीरु, °क**] डरपोक; (चेइअ ६६; गउड;
भीरुअ } उत्त २७, १०; अभि ८२)।

भीस सक [भीषय्] डराना। भीसइ; (धात्वा १४७), भीसेइ; (प्राकृ ६४)।

भीसण वि [भीषण] भयंकर, भय-जनक; (जी ४६; सण; पात्र)।

भीसय देखो **भेसग**; (राज)।

भीसाव देखो **भीस**। भीसावेइ; (धात्वा १४७)।

भीसिद (शौ) वि [भीषित] भय-भीत किया हुआ, डराया हुआ; (नाट—माल ५६)।

भीह अक [भी] डरना। भीहइ; (प्राकृ ६४)।

भुअ देखो **भुंज**। भुअइ, भुअए; (षड्)।

भुअ न [दे] भूर्ज-पत्र, वृक्ष-विशेष की छाल; (दे ६, १०६)। °**रुक्ख** पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष; भूर्जपत्र का पेड़; (पराग १—पत्र ३४)। °**वत्त** न [°पत्र] भोजपत्र; (गउड ६४१)।

भुअ पुंस्त्री [भुज] १ हाथ, कर; (कुमा)। २ गणित-प्रसिद्ध रेखा-विशेष; (हे १, ४)। स्त्री—°**आ**; (हे १, ४; पिंग; गउड; से १, ३)। °**परिसप्प** पुंस्त्री [°परिसर्प] हाथ से चलने वाला प्राणी, हाथ से चलने वाली सर्प-जाति; (जी २१; पराग १; जीव २)। स्त्री—°**प्पिणी**; (जीव २)। °**मूल** न [°मूल] कक्षा, काँख; (पात्र)। °**मोयग** पुं [°मोचक] रत्न की एक जाति; (भग; औप; उत्त ३६, ७६; तंदु २०)। °**सप्प** पुं [°सर्प] देखो °**परिसप्प**; (पव १५०)। °**ाल** वि [°वत्] बलवान् हाथ वाला; (सिरि ७६६)।

भुअअ देखो **भुअग**; (गउड; पिंग; से ७, ३६; पात्र)।

भुअइंद पुं [भुजगेन्द्र] १ श्रेष्ठ सर्प; (गउड)। २ शेष नाग, वासुकि; (अच्चु २७)। °**वुरेस** पुं [°पुरेश] श्रीकृष्ण; (अच्चु २७)।

भुअईसर } पुं [भुजगेश्वर] ऊपर देखो; (पगह १, ४
भुअएसर } —पत्र ७८; अच्चु ३६)। °**णअरणाह** पुं [°नगरनाथ] श्रीकृष्ण; (अच्चु ३६)।

भुअंग पुं [भुजंग] १ सर्प, साँप; (से ५, ६०; गा ६४०; गउड; सुर २, २४५; उव; महा; पात्र)। २ विट, रंडीबाज, वेश्या-गामी; (कुमा; वज्जा ११६)। ३ जार, उपपति; (कप्पू)। ४ द्यूतकार, जुआड़ी; (उप पृ २५२)। ५ चोर, तस्कर; "देव सलोत्तओ चेव मायापओयकुसलो वाणियवेसधारी गहिओ महाभुअंगो" (स ४३०)। ६ बदमाश, ठग; "तावसवेसधारिणो गहियनलियापओगखग्गा विसेसाकुमारसंतिआ चत्तारि महाभुयंग त्ति" (स ५२४)। °**कित्ति** स्त्री [°कृत्ति] कंचुक; (गा ६४०)। °**पआत** (अप) देखो °**प्पजाय**; (पिंग)। °**प्पजाय** न [°प्रयात] १ सर्प-गति; २ छन्द-विशेष; (भवि)। °**राअ** पुं [°राज] शेष नाग; (लि ८२)। °**वइ** पुं [°पति] शेष नाग; (गउड)। °**ापआअ** (अप) देखो °**प्पजाय**; (पिंग)।

भुअंगम पुं [भुजंगम] १ सर्प, साँप; (गउड १७८; पिंग)। २ स्वनाम-ख्यात एक चोर; (महा)।

भुअंगिणी } स्त्री [भुजङ्गी] १ विद्या-विशेष; (पउम ७,
भुअंगी } १४०)। २ नागिन; (सुपा १८१; भत्त ११७)।

भुअग पुं [भुजग] १ सर्प, साँप; (सुर २, २३६; महा; जी ३१)। २ एक देव-जाति, नाग-कुमार देव; (पगह १, ४)। ३ वानव्यंतर देवों की एक जाति, महोरग; (इक)। ४ रंडीबाज; "मं कुट्टणिव्व भुयगं तुमं पयारेसि अलियवयणेहिं" (कुप्र ३०६)। ५ वि. भोगी, विलासी; (णाया १, १ टी—पत्र ४; औप)। °**परिरिंगिअ** न [°परिरिङ्गित] छन्द-विशेष; (अजि १६)। °**वई** स्त्री [°वती] एक इन्द्राणी, अतिकाय-नामक महोरगेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (इक; ठा ४, १; णाया २)। °**वर** पुं [°वर] द्वीप-विशेष; (राज)।

भुअग वि [भोजक] पूजक, सेवा-कारक; (णाया १, १ टी—पत्र ४; औप; अंत)।

भुअगा स्त्री [भुजगा] एक इन्द्राणी, अतिकाय-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १, णाया २; इक)।

भुअगीसर देखो **भुअईसर**; (तंदु २०)।

भुअण देखो **भुवण**; (चंड; हास्य १२२; पिंग; गउड)।

भुअप्पइ }
भुअप्फइ } देखो **बहस्सइ**; (पि २१२; षड्)।
भुअस्सइ }

भुआ देखो **भुअ=भुज**।

भुइ स्त्री [भृति] १ भरण; २ पोषण; ३ वेतन; ४ मूल्य; (हे १, १३१; षड्)।

भुउडि देखो **भिउडि**; (पि १२४)।

भुंगल न [दे] वाद्य-विशेष; (सिरि ४१२)।

भुंज सक [भुज्] १ भोजन करना। २ पालन करना। ३ भोग करना। ४ अनुभव करना। भुंजइ; (हे ४, ११०; कस; उवा)। भुंजेज्जा; (कप्प)। "निरुसुयं भुंजसु सुहेणं" (सिरि १०४४)। भूका—भुंजित्था; (पि ५१७)

भवि—भुंजिहो, भोक्खमि, भोक्खामि, भोक्खमं, भोच्छं; (पि ५३२; कप्प; हे ३, १७१)। कर्म- भुज्जइ, भुंजिज्जइ; (हे ४, २४९)। वकृ—**भुंजंत, भुंजमाण, भुंजेमाण, भुंजाण**; (आचा; कुमा; विपा १, २; सम ३९; कप्प; पि ५०७; धर्मवि १२७)। कवकृ—**भुज्जंत**; (सुपा ३७५)। संकृ—**भुंजिअ, भुंजिआ, भुंजिऊण, भुंजिऊणं, भुंजित्ता, भुंजित्तु, भोच्चा, भोत्तुं, भोत्तूण**; (पि ५९१; सूअ १, ३, ४, २; सण; पि ५८५; उत्त ९, ३; पि ५०७; हे २, १५; कुमा; प्राकृ ३४)। हेकृ—**भुंजित्तए, भोत्तुं, भोत्तए**; (पि ५७८; हे ४, २१२; आचा), **भुंजण**; (अप); (कुमा)। कृ—**भुज्ज, भुंजियव्व, भुंजेयव्व, भोत्तव्व, भुत्तव्व, भोज्ज, भोग्ग**; (नंदु ३३; धर्मवि ४१; उप १३९ टी; श्रा १६; सुपा ४९५; पिंडभा ४५; सम्मत्त २१६; गाया १, १; पउम ६४, ६८; हे ४, २१२; सुपा ४९५; पउम ६८, २२; दे ७, २१; ओघ २१४; उप पृ ७५; सुपा १६३; भवि)।

भुंजग वि [**भोजक**] भोजन करने वाला; (पिंड १२३)।

भुंजण देखो **भुंज=भुज्**।

भुंजण न [**भोजन**] भोजन; (पिंड ५२१)।

भुंजणा स्त्री. ऊपर देखो; (पव १०१)।

भुंजय देखो **भुंजग**; (सण)।

भुंजाव सक [**भोजय्**] १ भोजन कराना। २ पालन कराना। ३ भोग कराना। भुंजावेइ; (महा)। कवकृ—**भुंजाविज्जंत**; (पउम २, ५)। संकृ—**भुंजाविऊण, भुंजावित्ता**; (पि ५८२)। हेकृ—**भुंजावेउं**; (पंचा १०, ४८ टी)।

भुंजावय वि [**भोजक**] भोजन कराने वाला; (स २४१)।

भुंजाविअ वि [**भोजित**] जिसको भोजन कराया गया हो वह; (धर्मवि ३८; कुप्र १६८)।

भुंजिअ देखो **भुंज=भुज्**।

भुंजिअ देखो **भुत्त**; (भवि)।

भुंजिर वि [**भोक्तृ**] भोजन करने वाला; (सुपा ११)।

भुंड पुंस्त्री [**दे**] **सूकर**, वराह; गुजराती में 'भुंड'; (दे ६, १०६)। स्त्री—**°डी, °डिणी**; (दे ६, १०६ टी; भवि)।

भुंडीर [**दे**] ऊपर देखो; (दे ६, १०६)।

भुंभल न [**दे**] मद्य-पात्र; (कम्म १, ५२)।

भुंहडि (अप) देखो **भूमि**; (हे ४, ३९५)।

भुक्क अक [**बुक्क्**] भूँकना, श्वान का बोलना। भुक्कइ; (गा ६६४ अ)।

भुक्कण पुं [**दे**] १ श्वान, कुत्ता; २ मद्य आदि का मान; (दे ६, ११०)।

भुक्किअ न [**बुक्कित**] श्वान का शब्द; (पाअ; पि २०९)।

भुक्किर वि [**बुक्कितृ**] भूँकने वाला; (कुमा)।

भुक्खा स्त्री [**दे. बुभुक्षा**] भूख, क्षुधा; (दे ६, १०६; णाया १, १—पत्र ३८; महा; उप ३७९; आरा ६६; सम्मत्त १५७)। °**लु** वि [°**वत्**] भूखा; (धर्मवि ६६)।

भुक्खिअ वि [**दे. बुभुक्षित**] भूखा, क्षुधातुर; (पाअ; कुप्र १२६; सुपा ५०१; उप ५२८ टी; स ५८३; वै २९)।

भुगुभुग अक [**भुगभुगाय्**] भुग भुग आवाज करना। वकृ—**भुगुभुगेंत**; (पउम १०५, ५६)।

भुग्ग वि [**भुग्न**] १ मोड़ा हुआ, वक्र, कुटिल; (गाया १, ८—पत्र १३३; उवा)। २ वि. भग्न, टूटा हुआ; (गाया १, ८)। ३ दग्ध, जला हुआ; "किं मज्झ जीविएणं एवं-विहपराभवग्गिभुग्गाए" (उप ७६८ टी)। ४ भूना हुआ; "चणउव्व भुग्गु" (कुप्र ४३२)।

भुज (अप) देखो **भुंज**। भुजइ; (सण)।

भुजंग देखो **भुअंग**; (भवि)।

भुजग देखो **भुअग=भुजग**; (धर्मवि १२४)।

भुज्ज देखो **भुंज**। भुज्जइ; (षड्)।

भुज्ज पुं [**भूर्ज**] १ वृक्ष-विशेष; २ न. वृक्ष-विशेष की छाल; (कप्पू; उप पृ १२७; सुपा २७०)। °**पत्त**, °**वत्त** न [°**पत्र**] वही अर्थ; (आवम; नाट—विक ३३)।

भुज्ज देखो **भुंज**।

भुज्ज वि [**भूयस्**] प्रभूत, अनल्प; (औप; पि ४१४)।

भुज्जिय वि [**दे. भुग्न**] १ भूना हुआ धान्य; २ पुं. धाना, भूना हुआ यव; (पराह २, ५—पत्र १४८)।

भुज्जो अक [**भूयस्**] फिर, पुनः; (उवा; सुपा २७२)।

भुण्ण पुं [**भ्रूण**] १ स्त्री का गर्भ; २ वालक, शिशु; (संक्षि १७)।

भुत्त वि [**भुक्त**] १ भक्षित; (गाया १, १; उवा; प्रासू ३८)। २ जिसने भोजन किया हो वह; "ते भायरो न भुत्ता" (सुख १, १५; कुप्र १२)। ३ सेवित; ४ अनुभूत; "अम्म ताय मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा" (उत्त १९, ११; गाया १, १)। ५ न. भक्षण, भोजन; "हासभुत्तासियाणि य" (उत्त १६, १२)। ६ विष-विशेष; (ठा ६)।

°भोगि वि [°भोगिन्] जिसने भोगों का सेवन किया हो वह; (गाया १, १)।

भुत्तवंत वि [भुक्तवत्] जिसने भोजन किया हो वह; (पि ३९७)।

भुत्तव्व देखो भुंज।

भुत्ति स्त्री [भुक्ति] १ भोजन; (अच्चु १७; अज्झ ८२)। २ भोग; (सुपा १०८)। ३ आजीविका के लिये दिया जाता गाँव, खेत आदि गिरास; "उज्जेणी नाम पुरी दिन्ना तस्स य कुमारभुत्तीए" (उप २११ टी; कुप्र १६६)। °वाल पुं [°पाल] गिरासदार; (धर्मवि १५४)।

भुत्तु वि [भोक्तृ] भोगने वाला; (श्रा ६, संबोध ३५)।

भुत्तूण पुं [दे] भृत्य, नौकर; (दे ६, १०६)।

भुत्थल्ल पुं [दे] बिल्ली को फेंका जाता भोजन; (कप्पू)।

भुम देखो भम=भ्रम्। भुमइ; (हे ४, १६१; सण)। संकृ—भुमिवि (अप); (सण)।

भुम°, **भुमगा**, **भुमया**, **भुमा** स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजि; (भग; उवा; हे २, १६७; औप; कुमा; पाअ; पव ७३)।

भुमिअ देखो भमिअ=भ्रान्त; "भुमिअभवणु" (कुमा)।

भुम्मि (अप) देखो भूमि; (पिंग)।

भुरुंडिआ स्त्री [दे] शिवा, शृगाली; (दे ६, १०१)।

भुरुंडिय, **भुरुकुंडिअ**, **भुरुहुंडिअ** वि [दे] उद्धूलित, धूलि-लिप्त; "धूलिभुरुं-डियपुत्तेहिं परिगया चिंतए तत्तो" (सुपा २२६; दे ६, १०६), "भूइभुर(? रु)कुंडियंगो" (कुप्र २६३)।

भुल्ल अक [भ्रंश्] १ च्युत होना। २ गिरना। ३ भूलना। "भुल्लंति ते मणा मग्गा हा पमाओ दुरंतओ" (आत्म १६; हे ४, १७७)।

भुल्ल वि [भ्रष्ट] भूला हुआ; "कामंधओ किं पभमेसि भुल्लो" (श्रु १५३; सुपा १२४; ५१६; कप्पू)।

भुल्लविअ वि [भ्रंशित] भ्रष्ट किया हुआ; (कुमा)।

भुल्लिर वि [भ्रंशिन्] भूलने वाला; "मयणअभुल्लिरदुल्ल-लियभल्लिसुभल्लतिक्खभल्लीहिं" (सुपा १२३)।

भुल्लुंकी [दे] देखो भल्लुंकी; (पाअ)।

भुव देखो हुव=भू। भुवइ; (पि ४७५)। भुअदि (शौ); (प्राला १४७)। भुका—भुवि; (भग)।

भुव देखो भुअ=भुज; (भवि)।

भुवइंद देखो भुअइंद; (से ५, ७१)।

भुवण न [भुवन] १ जगत्, लोक; (जी १; सुपा २१; कुमा २, १५)। २ जीव, प्राणी; "भुवणाभयदाणललिअस्स" (कुमा)। ३ आकाश; (प्रासू १००)। °क्खोहणी स्त्री [°क्षोभनी] विद्या-विशेष; (सुपा १७४)। °गुरु पुं [°गुरु] जगत् का गुरु; (सुपा ७५)। °नाह पुं [°नाथ] जगत् का त्राता; (उप पृ ३५७)। °पाल पुं [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गोपगिरि का एक राजा; (मुणि १०८६६)। °बंधु पुं [°बन्धु] १ जगत् का बन्धु; २ जिनदेव; (उप २११ टी)। °सोह पुं [°शोभ] सातवें बलदेव के दीक्षक एक जैन मुनि; (पउम २०, २०५)। °ालंकार पुं [°ालंकार] रावण का पट्ट-हस्ती; (पउम ८२, १११)।

भुवणा स्त्री [भुवना] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४०)।

भुश्का (मा) देखो भुक्खा; (प्राकृ १०१)।

भुस देखो बुस; "तुसरासी इवा भुसरासी इवा" (भग १५)।

भुसुंढि स्त्री [दे. भुशुण्डि] शस्त्र-विशेष; (सण)।

भू देखो भुव=भू। भोमि; (पि ४७६)। संकृ—भोत्ता, भोदूण (शौ); (हे ४, २७१)।

भू स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजि; "रन्ना भू-सन्नाए" (सुपा ५७६; श्रा १४; सुपा २२६; कुमा)।

भू स्त्री [भू] १ पृथिवी, धरती; (कुमा; कुप्र ११६; जीवस २७६; सिरि १०४४)। २ पृथ्वीकाय, पार्थिव शरीर वाला जीव; (कम्म ४, १०; १६; ३६)। °आर पुं [°दार] शूकर, सूअर; (किरात ६)। °कंत पुं [°कान्त] राजा, नर-पति; (श्रा २८)। °गोल पुं [°गोल] गोलाकार भूमण्डल; (कप्पू)। °चंद पुं [°चन्द्र] पृथिवी का चन्द्र, भूमि-चन्द्र; (कप्पू)। °चर वि [°चर] भूमि पर चलने-फिरने वाला मनुष्य आदि; (उप ६८६ टी)। °च्छत्त पुंन [°च्छत्र] वनस्पति-विशेष; (दे १, ६४)। °तणग देखो °यणय; (राज)। °धण पुं [°धन] राजा; (श्रा २८)। °धर पुं [°धर] १ राजा, नरपति; (धर्मवि ३)। २ पर्वत, पहाड़; (धर्मवि ३; कुप्र २६४)। °नाह पुं [°नाथ] राजा; (उप ६८६ टी; धर्मवि १०७)। °मह पुं [°मह] अहोरात्र का सत्ताईसवाँ मुहूर्त; (सम ५१)। °यणय पुंन [°तृणक] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ३४)। °रुह पुं [°रुह] वृक्ष, पेड़; (गउड; पुप्फ ३६२; धर्मवि १३८)। °व पुं [°प] राजा; (उप ७२८ टी; ती ३; श्रु ६६; काल)।

°वइ पुं [°पति] राजा; (सुपा ३६; पिंग)। °वाल पुं [°पाल] १ राजा; (गउड; सुपा ५६०)। २ व्यक्ति-वाचक नाम; (भवि)। °वित्त पुं [°वित्त] राजा; (अ २८)। °वीढ न [°पीठ] भूतल, भूमि-तल; (सुपा ५६३)। °हर देखो °धर; (सण)।

भूअ) पुं [भूयस्] कर्म-बन्ध का एक प्रकार, (कम्म ५, भूअ) २२; २३)। °गार पुं [°कार] वही अर्थ; (कम्म ५, २२)। देखो भूओगार।

भूअ पुं [दे] यन्त्रवाह, यन्त्र-वाहक पुरुष; (दे ६, १०७)।

भूअ वि [भूत] १ वृत्त, संजात, बना हुआ; २ अतीत, गुजरा हुआ; (पउ; पिंग)। ३ प्राप्त, लब्ध; (णाया १, १—पत्र ७४)। ४ समान, सदृश, तुल्य; "नगभूएहिं" (सुम २, ७, ७; ८ टी)। ५ वास्तविक, यथार्थ, सत्य; "भूम-त्थेहिं चिम गुणेहिं" (गउड)। "भूयत्थसत्थगंथो" (सम्मत्त १३६)। ६ विद्यमान; "एवं जह स इत्थो संतो भूओ तह-सहाभूओ" (विसे २२५१)। ७ उपमा, औपम्य; ८ ताद-र्थ्य, तदर्थ-भाव; "ओवम्मे तादत्थे व हुज्ज एसित्थ भूयसद्दो त्ति" (श्रावक १२४)। ६ न. प्रकृत्यर्थ; "उम्मत्तगभूए" (अ ५, १)। १० पुं. एक देव-जाति; (पण्ह १, ४; इक; णाया १, १—पत्र ३६)। ११ पिशाच; (पाम्र; दे ४, २५)। १२ समुद्र-विशेष; (देवेन्द्र २५५)। १३ द्वीप-विशेष; (सुज्ज १६)। १४ पुंन. जन्तु, प्राणी; "पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं", "भूयाणि वा जीवाणि वा" (आचा १, ६, ५, ४; १, ७, २, १; २, १, १, ११; पि ३६७), "हरियाणि भूआणि विलंबगाणि" (सूअ १, ७, ८; उवर १५६)। १५ पृथिवी आदि पाँच द्रव्य, महाभूत; (स १६५), "किं मन्ने पंच भूआ" (विसे १६८६)। १६ वृक्ष, पेड़, वनस्पति; (आचा १, १, ६, २)। °इंद पुं [°इन्द्र] भूत-देवों का इन्द्र; (पि १६०)। °ग्गह पुं [°ग्रह] भूत का आवेश; (जीव ३)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] जीव-समूह; (सम २६)। °त्थ वि [°ार्थ] यथार्थ, वास्तविक; (गउड; पउम २८, १४)। °दिण्णा देखो °दिन्ना; (पडि)। °दिन्न पुं [°दिन्न] १ एक जैन आचार्य; (णंदि)। २ एक चाण्डाल-नायक; (महा)। °दिन्ना स्त्री [°दिन्ना] १ एक अन्त-कृत् स्त्री; (अंत)। २ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी; (कप्प)। °मंडलपविभत्ति न [°मण्ड-लप्रविभक्ति] नाट्य-विधि का एक भेद; (राज)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष; (सम ३५)। °वडिंसा स्त्री [°ावतंसा] १ एक इन्द्राणी; (जीव ३)। २ एक राज-धानी; (दीव)। °वाइ, °वाइय, °वादिय पुं [°वादिन्, °वादिक] १ एक देव-जाति; (इक; पण्ह १, ४; ओप)। २ वि. भूत-ग्रह का उपचार करने वाला, मन्त्र-तन्त्रादि का जानकार; (सुर १, १४)। °वाय पुं [°वाद] १ यथार्थ वाद; २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (ठा १० —पत्र ४६१)। °विज्जा, °वेज्जा स्त्री [°विद्या] आयुर्वेद का एक भेद, भूत-निग्रह-विद्या; (विपा १, ७—पत्र ७५ टी)। °ाणंद पुं [°ानन्द] १ नागकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (इक, ठा २, ३—पत्र ८४)। २ राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती; (भग १७, १)। °ाणंदप्पह पुं [°ानन्द-प्रभ] भूतानन्द इन्द्र का एक उत्पात-पर्वत; (राज)। °ावाय देखो °वाय; (विसे ५५१; पत्र ६२ टी)।

भूअण्ण पुं [दे] जाती हुई खल-भूमि में किया जाता यज्ञ; (दे ६, १०७)।

भूआ स्त्री [भूता] १ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी; (कप्प; पडि)। २ इन्द्राणी की एक राजधानी; (जीव ३)।

भूइ स्त्री [भूति] १ संपत्ति, धन, दौलत; "ता परदेसं गंतुं विढविता भूरिभूइपब्भारं" (सुर १, २२३; सुपा १४८)। २ भस्म, राख; "जारमसाणसमुब्भवभूइसुहप्फंससिज्जिरंगीए" (गा ४०८; स ६ ; गउड)। ३ महादेव के अंग की भस्म; "भू-इभूसियं हरसरीरं व" (सुपा १४८; ३६३)। ४ वृद्धि; (सूअ १, ६, ६)। ५ जीव-रक्षा; (उत्त १२, ३३)। °कम्म पुंन [°कर्मन्] शरीर आदि की रक्षा के लिए किया जाता भस्मलेपन-सूत्रबंधनादि; (पव ७३ टी; बृह १)। °पण्ण, °पन्न वि [°प्रज्ञ] १ जीव-रक्षा की बुद्धि वाला; (उत्त १२, ३३)। २ ज्ञान की वृद्धि वाला, अनन्त-ज्ञानी; (सूअ १, ६, ६)। देखो भूई।

भूइंद पुं [भूतेन्द्र] भूतों का इन्द्र; (पि १६०)।

भूइट्ठ वि [भूयिष्ठ] अति प्रभूत, अत्यन्त; (विसे २०३६; विक १३१)।

भूइट्ठा स्त्री [भूतेष्टा] चतुर्दशी तिथि; (प्राकृ)।

भूई° देखो भूइ; (पव २—गा ११२)। °कम्मिय वि [°कर्मिक] भूति-कर्म करने वाला; (ओप)।

भूओ अ [भूयस्] १ फिर से, पुनः; (पउम ६८, २८; पंच २, १८)। २ बारंबार, फिर फिर; "भूओ य अहिलसंतं" (उप ६५१)। °गार पुं [°कार] कर्म-बन्ध का एक प्रकार,

थोड़ी कर्म-प्रकृति के बन्ध के बाद होने वाला अधिक-प्रकृति-बन्ध; (पंच ५, १२)।

भूओद पुं [**भूतोद**] समुद्र-विशेष; (सुज्ज १९)।

भूओवघाइय वि [**भूतोपघातिन्, °क**] जीवों की हिंसा करने वाला; (सम ३७; औप)।

भूंहडी (अप) देखो **भूमि**; (हे ४, ३९५ टि)।

भूण देखो **भुण्ण**; (संक्षि १७; सम्मत ८६)।

भूज देखो **भुज्ज**=भूर्ज; (प्राकृ २६)।

भूमआ देखो **भुमया**; (प्राप्र)।

भूमणया स्त्री [**दे**] स्थगन, आच्छादन; (वव १)।

भूमि स्त्री [**भूमि**] १ पृथिवी, धरती; (पउम ६९, ४८; गउड)। २ क्षेत्र; (कुमा)। ३ स्थल, जमीन, जगह, स्थान; (पाअ; उत्त; कुमा)। ४ काल, समय; (कप्प)। ५ माल, मजला, तला; "सत्तभूमियं पासायभवणं" (महा)। **°कंप** पुं [**°कम्प**] भू-कम्प; (पउम ६९, ४८)। **°गिह, °घर** न [**°गृह**] नीचे का घर, भोंयरा; (श्रा १६; महा)। **°गोयरिय** वि [**°गोचरिक**] स्थलचर, मनुष्य आदि; (पउम ५९, ५२)। स्त्री—**°री**; (पउम ७०, १२)। **°च्छत्त** न [**°च्छत्र**] वनस्पति-विशेष; (दे)। **°तल** न [**°तल**] धरा-पृष्ठ, भूतल; (सुर २, १०५)। **°देव** पुं [**°देव**] ब्राह्मण; (मोह १०७)। **°फोड** पुं [**°स्फोट**] वनस्पति-विशेष; (जी ९)। **°फोडी** स्त्री [**°स्फोटी**] एक जात का जहरीला जन्तु; "पासवणं कुणमाणो दट्ठो गुज्झम्मि भूमि-फोडीए" (सुपा ६२०)। **°भाग** पुं [**°भाग**] भूमि-प्रदेश; (महा)। **°रुह** पुंन [**°रुह**] भूमिस्फोट, वनस्पति-विशेष; (श्रा २०; पव ४)। **°वइ** पुं [**°पति**] राजा; (उप पृ १८८)। **°वाल** पुं [**°पाल**] राजा; (गउड)। **°सुअ** पुं [**°सुत**] मंगल-ग्रह; (मृच्छ १४६)। **°हर** देखो **°घर**; (महा)। देखो **भूमी**।

भूमिआ स्त्री [**भूमिका**] १ तला, मजला, माल; (महा)। २ नाटक में पात्र का वेशान्तर-ग्रहण; (कप्पू)।

भूमिंद पुं [**भूमीन्द्र**] राजा, नरपति; (सम्मत २१७)।

भूमी देखो **भूमि**; (से १२, ८८; कप्पू; पिंड ४४८; पउम ६४, १०)। **°तुडयकूड** न [**°तुडगकूट**] एक विद्याधर-नगर; (इक)। **°भुयंग** पुं [**°भुजङ्ग**] राजा; (मोह ८८)।

भूमीस पुं [**भूमीश**] राजा; (श्रा १२)।

भूमीसर पुं [**भूमीश्वर**] राजा; (सुपा ५०७)।

भूयिट्ठ देखो **भूइट्ठ**; (हास्य १२३)।

भूरि वि [**भूरि**] १ प्रचुर, अत्यन्त, प्रभूत; (गउड; कुमा; सुर १, २४८; २, ११४)। २ न. स्वर्ण, सोना; ३ धन, दौलत; (सार्ध ८४)। **°स्सव** पुं [**°श्रवस्**] एक चन्द्रवंशीय राजा; (नाट —वेणी ३७)।

भूस सक [**भूषय्**] १ सजावट करना। २ शोभाना, अलंकृत करना। भूसेमि; (कुमा)। वकृ—**भूसयंत**; (रंभा)। कृ—**भूस**; (रंभा)।

भूसण न [**भूषण**] १ अलंकार, गहना; (पाअ; कुमा)। २ सजावट; ३ शोभा-करण; (पण्ह २, ४; सण)।

भूसा स्त्री [**भूषा**] ऊपर देखो; (दे ३, ८; कुमा)।

भूसिअ वि [**भूषित**] मण्डित, अलंकृत; (गा ५२०; कुमा; काल)।

भूहरी स्त्री [**दे**] तिलक-विशेष; (सिरि १०२२)।

भे अ [**भोस्**] आमन्त्रण-सूचक अव्यय; (औप)।

भेअ पुंन [**भेद**] १ प्रकार; "पुढविभेआइ इच्चाई" (जी ४; ५)। २ विशेष, पार्थक्य; (ठा २, १; गउड; कप्पू)। ३ एक राज-नीति, फूट; "दाणमाणोवयारेहिं सामभेआइएहि य" (प्रासू ६७), "सामदंडभेयउवप्पयाणणीइसुप्पउत्तणयविहिन्नू" (णाया १, १—पत्र ११)। ४ घाव, आघात; "वड्ढंति वम्महविइण्णसरप्पसारा ताणं पआसइ लहुं चिअ चित्तभेओ" (कप्पू)। ५ मण्डल का अपान्तराल, बीच का भाग; "पडिवत्तीओ उदए तह अत्थमणेसु य।

भेयवा(? घा)ओ कण्णकला मुहुत्ताण गतीति य" (सुज्ज १, १)। ६ विच्छेद, पृथक्करण, विदारण; (औप; अणु)। **°कर** वि [**°कर**] विच्छेद-कर्ता; (औप)। **°घाय** पुं [**°घात**] मंडल के बीच में गमन; (सुज्ज १, १)। **°समावन्न** वि [**°समापन्न**] भेद-प्राप्त; (भग)।

भेअग वि [**भेदक**] भेद-कारक; (औप; भग)।

भेअण न [**भेदन**] १ विदारण, विच्छेदन; "कुंतस्स सत्तपायालभेयणे नूण सामत्थं" (चेइय ७४६; प्रासू १४०)। २ भेद, फूट करना; (पव १०६)। ३ विनाश; "कुलसयणमित्तभेयणकारिकाओ" (तंदु ४६)।

भेअय देखो **भेअग**; (भग)।

भेअव्व देखो **भिंद**।

भेअव्व देखो **भी**=भी।

भेइल्ल वि [**भेदवत्**] भेद वाला; "सम्मत्तनाणचरणा पत्तेयं अट्ठअट्ठभेइल्ला" (संबोध २२; पंच ४, १)।

भेउर देखो **भिउर**; (आचा; ठा २, ३)।

भेंडी स्त्री [**भिण्डा, °ण्डी**] गुल्म-विशेष, एक जाति की वनस्पति; (पण्ण १ — पत्र ३२)।
भेंभल देखो **भिंभल**; (से ६, ३७)।
भेंभलिद (शौ) देखो **भिंभलिअ**; (पि २०६)।
भेक देखो **भेग**; (हे १, १४७)।
भेक्खस पुं [**दे**] राक्षस-रिपु, राक्षस का प्रतिद्वन्द्वी; (कुप्र ११२)।
भेग पुं [**भेक**] मेंढक; (दे ४, ६; धर्मसं ४२७)।
भेच्छं देखो **भिंद**।
भेज्ज देखो **भिज्ज**; (विपा १, १ टी—पत्र १२)।
भेज्ज
भेज्जलय } वि [**दे**] भीरु, डरपोक; (दे ६, १०७; षड्)।
भेज्जलल
भेड वि [**दे. भेर**] भीरु, कायर; (हे १, २५१; दे ६, १०७; कुमा २, ६२)।
भेडक देखो **भेलय**; (मृच्छ १८०)।
भेत्तु वि [**भेत्तृ**] भेदन-कर्ता; (आचा)।
भेत्तुआण
भेत्तुं } देखो **भिंद**।
भेत्तूण
भेद देखो **भिंद**। संकृ—**भेदिअ**; (मृच्छ १४३)।
भेद देखो **भेअ**; (भग)।
भेदअ देखो **भेअय**; (वेणी ११२)।
भेदणया देखो **भेअण**; (उप पृ ३२१)।
भेदिअ देखो **भेद=भिंद**।
भेदिअ वि [**भेदित**] भिन्न किया हुआ; (भग)।
भेरंड पुं [**भेरण्ड**] देश-विशेष; (राज)।
भेरव न [**भैरव**] १ भय, डर; (कप्प)। २ पुं. राक्षस आदि भयंकर प्राणी; (सूअ १, २, २, १४; १६)। ३ देखो **भइरव**; (पउम ६, १८३; चेइय १००; औप; महा; पि ६१)। °**णंद** पुं [°**नन्द**] एक योगी का नाम; (कप्पू)।
भेरि } स्त्री [**भेरि, °री**] वाद्य-विशेष, ढक्का; (कप्प; पिंग;
भेरी } औप; सण)।
भेरुंड पुं [**भेरुण्ड**] भारुंड पक्षी, दो मुँह और एक शरीर वाला पक्षि-विशेष; (दे ६, ५०)।
भेरुंड पुं [**दे**] १ चित्रक, चित्ता, श्वापद पशु-विशेष; (दे ६, १०८)। २ निर्विष सर्प; "सविसो हम्मइ सप्पो भेरुंडो तत्थ मुच्चइ" (प्रासू १६)।

भेल्लाल पुं [**भेल्लाल**] वस्त्र-विशेष; (राज)।
भेल सक [**भेलय**] मिश्रण करना, मिलाना। गुजराती में 'भेळववुं'। संकृ—**भेलइत्ता**; (पि २०५)।
भेलय पुं [**दे. भेलक**] बेड़ा, डहुआ, नौका; (दे ६, ११०)।
भेलविय वि [**भेलित**] मिश्रित, युक्त; "नो नवभेलवियवाडी जत्थ मिन्नन्नमारो" (वसु)।
भेली स्त्री [**दे**] १ आज्ञा, हुकुम; २ बेड़ा, नौका; ३ चेटी, दासी; (दे ६, ११०)।
भेस सक [**भेषय्**] डराना। भेसइ, भेसेइ; (धात्वा १४८; प्राकृ ६४)। कर्म—भेसिज्जए; (धर्मवि ३)। वकृ—**भेसंत, भेसयंत**; (पउम ५३, ८६; धा १२)। कवकृ—**भेसिज्जंत**; (पउम ४६, ५४)। संकृ—**भेसेऊण**; (काल; पि ५८६)। हेकृ—**भेसेउं**; (कुप्र १११)।
भेसग पुं [**भीष्मक**] रुक्मिणी का पिता, कौण्डिन्य-नगर का एक राजा; (णाया १, १६; उप ६४८ टी)।
भेसज न [**भैषज**] औषध; (पउम १४, ५४; ५६)।
भेसज्ज न [**भैषज्य**] औषध, दवाई; (उवा; औप; रंभा)।
भेसण न [**भीषण**] डराना, त्रिलासन; (ओघ २०१)।
भेसणा स्त्री [**भीषणा**] ऊपर देखो; (पराह २, १—पत्र १००)।
भेसयंत देखो **भेस**।
भेसाव देखो **भेस**। भेसावइ; (धात्वा १४८)।
भेसाविय } वि [**भीषित**] डराया हुआ; (पउम ४६, ५३;
भेसिअ } से ७, ४५; सुर २, ११०; श्रावक ९३ टी)।
भो देखो **भुंज**। संकृ—**भोऊण, भोत्तूण**; (धात्वा १४८; संचि ३७)। हेकृ—**भोउं**; (धात्वा १४८; संचि ३७)। कृ—**भोत्तव्व**, (संचि ३७), **भोअव्व**; (धात्वा १४८)।
भो अ [**भोस्**] आमन्त्रण-द्योतक अव्यय; (प्राकृ ७६; उवा; औप; जी ५०)।
भो' स [**भवत्**] तुम, आप। स्त्री—भोई; (उत्त १४, ३३; स ११६)।
भोअ सक [**भोजय्**] खिलाना, भोजन कराना। भोयइ, भोयए; (सम्मत्त १२५; सूअ २, ६, २६)। संकृ—**भोइत्ता**; (उत्त ६, ३८)।
भोअ पुं [**दे. भोग**] भाड़ा, किराया; (दे ६, १०८)।
भोअ देखो **भोग**; (स ६५८; पात्र; सुपा ४०४; रंभा ३२)।
भोअ पुं [**भोज**] उज्जयिनी नगरी का एक सुप्रसिद्ध राजा; (रंभा)। °**राय** पुं [°**राज**] वही अर्थ; (सम्मत्त ७५)।

भोअ वि [**भौत**] भस्म से उपलिप्त; (धर्मसं ४१)।

भोअग वि [**भोजक**] १ खाने वाला; (पिंड ११७)। २ पालन-कर्ता; (बृह १)।

भोअडा स्त्री [**दे**] कच्छ, लंगोट; "योवत्थं भोयडादीयं" (निचू १)।

भोअण न [**भोजन**] १ भक्षण, खाना; २ भात आदि खाद्य वस्तु; (आचा; ठा ६; उवा; प्रासू १८०; स्वप्न ६२; सण)। ३ लगातार सतरह दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ४ उप-भोग, "विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए" (सूअ २, १, १७)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] भोजन देने वाली एक कल्पवृक्ष-जाति; (पउम १०२, ११६)।

भोअल (अप) पुं [**दे. भोल**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

भोइ वि [**भोजिन्**] भोजन करने वाला; (आचा; पिंड १२०; उव)।

भोइ देखो **भोगि**; (सुपा ४०४; संबोध ५०; पिंग; रंभा)।

भोइ } पुं [**दे. भोगिन्**, °**क**] १ ग्रामाध्यक्ष, ग्राम का
भोइअ } मुखिया, गाँव का नायक; (वव ७; दे ६, १०८; उत्त १५, ६; बृह १; ओघभा ४३; पिंड ४३६; सुख १, ३; पव २६८; भवि; सुपा १६५; गा ५५६)। २ महेश; (षड्)।

भोइअ वि [**भोगिक**] १ भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी; (उत्त १५, ६; गा ५५६)। २ भोग-वंश में उत्पन्न; (उत्त १५, ६)।

भोइअ वि [**भोजित**] जिसको भोजन कराया गया हो वह; (सुर १, २१४)।

भोइणी स्त्री [**दे. भोगिनी**] ग्रामाध्यक्ष की पत्नी; (पिंड ४३६; गा ६०३; ७३७; ७७६; निचू १०)।

भोइया } स्त्री [**भोग्या**] १ भार्या, पत्नी, स्त्री; (बृह १;
भोई } पिंड ३६८)। २ वेश्या; (वव ७)।

भोई देखो **भो**°=भवत्।

भोंड देखो **भुंड**; (गा ४०२)।

भोक्ख° देखो **भुंज**।

भोग पुंन [**भोग**] १ स्पर्श, रस आदि विषय, उपभोग्य पदार्थ; "रूवी भंते भोगा अरूवी" (भग ७, ७—पत्र ३१०), "भोग-भोगाइं भुंजमाणे विहरइ" (विपा १, २)। २ विषय-सेवा; (भग ६, ३३; औप), "भुंजंता बहुविहाइं भोगाइं" (संथा २७)। ३ मदन-व्यापार, काम-चेष्टा; "कामभोगे यं खलु मए अण्पाहट्टु" (सूअ २, १, १२)। ४ विषयेच्छा, विषयाभिलाष; (आचा)। ५ विषय-सुख; "चइत्तु भोगाइं असासयाइं" (उत्त १३, २०), 'तुच्छा य काम-भोगा" (प्रासू ६६), "अहिभोगे व्विय भोगे निहणंव धणं मलंव कमलंपि मन्नंता" (सुपा ८३)। ६ भोजन, आहार; (पंचा ५, ४; उप २०७)। ७ गुरु-स्थानीय जाति-विशेष, एक क्षत्रिय-कुल; (कप्प; सम १५१; ठा ३, १—पत्र ११३; ११४)। ८ अमात्य आदि गुरु-स्थानीय लोक, गुरु-वंश में उत्पन्न; (औप)। ९ शरीर, देह; (तंदु २०)। १० सर्प की फणा; (सुपा)। ११ सर्प का शरीर; (दे ६, ८६)। °**करा** देखो **भोगंकरा**; (इक)। °**कुल** न [°**कुल**] पूज्य-स्थानीय कुल-विशेष; (पि ३६७)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (आवम)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] भोग-तत्पर पुरुष; (ठा ३, १—पत्र ११३; ११४)। °**भागि** वि [°**भागिन्**] भोग-शाली; (पउम ५६, ८८)। °**भूम** वि [°**भूम**] भोग-भूमि में उत्पन्न; (पउम १०२, १६६)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] देवकुरु आदि अकर्म-भूमि; (इक)। °**भोग** पुंन [°**भोग**] भोगार्ह शब्दादि-विषय, मनोज्ञ शब्दादि; (भग ७, ७; विपा १, ६)। °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८; इक)। °**राय** पुं [°**राज**] भोग-कुल का राजा; (दस २, ८)। °**वइया** स्त्री [°**वतिका**] लिपि-विशेष; (पण्ण १—पत्र ६२), "भोगवयता(?इया)" (सम ३५)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८; इक)। २ पक्ष की दूसरी, सातवीं और बारहवीं रात्रि-तिथि; (सुज्ज १०, १५)। °**विस** पुं [°**विष**] सर्प की एक जाति; (पण्ण १—पत्र ५०)।

भोगंकरा स्त्री [**भोगंकरा**] अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)।

भोगा स्त्री [**भोगा**] देवी-विशेष; (इक)।

भोगि पुं [**भोगिन्**] १ सर्प, साँप; (सुपा ३६६; कुप्र २६८)। २ पुंन. शरीर, देह; (भग २, ५; ७, ७)। ३ वि. भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी; (सुपा ३६६; कुप्र २६८)।

भोग्ग }
भोच्चा }
भोच्छ° } देखो **भुंज**।
भोज्ज }

भोट्टंत पुं [**भोटान्त**] १ देश-विशेष, नेपाल के समीप का एक भारतीय देश, भोटान; २ भोटान का रहने वाला; (पिंग)।

भोण देखो **भोअण**; (षड्)।

भोत्त देखो **भुत्त**; (पड्; सुपा २, ६; सुपा ४६२)।

भोत्तए } देखो **भुंज**।
भोत्तव्व }

भोत्ता देखो **भुं=भुज=भुज्**।

भोत्तु वि [**भोक्तृ**] भोजन करने वाला; (विसे १४३६; दे २, ६८)।

भोत्तुं } देखो **भुंज**।
भोत्तूण }

भोत्तूण देखो **मुत्तूण**; (दे ६, ९६)।

भोदूण देखो **भू=भुव=भू**।

भोम वि [**भौम**] १ भूमि-संबन्धी; (सुज्ज १, ६, ११)। २ भूमि में उत्पन्न; (श्रोघ ३८ भा)। ३ भूमि का विकार; (ठा ८)। ४ पुं. मंगल-ग्रह; (पउम)। ५ पुं. नगराकार विशिष्ट स्थान; ६ नगर; (सम १४, ४८)। ७ निमित्त-शास्त्र विशेष, भूमि-कम्पादि से शुभाशुभ फल बतलाने वाला शास्त्र; (सम ४९)। ८ अहोरात्र का सताईसवाँ मुहूर्त; "अगवं च भोम (? म) रिसहे" (सुज्ज १०, १३)। °लिय न [°लीक] भूमि-संबन्धी मृषावाद; (पण्ह १, २)।

भोमिज्ज देखो **भोमेज्ज**; (सम २; उत्त ३६, २०३)।

भोमिर देखो **भमिर**; "लब्भइ गाइक्खाणे लोलेण सुभोमिरो जीवो" (संबोध ३२)।

भोमेज्ज } वि [**भौमेय**] १ भूमि का विकार, पार्थिव; (सम
भोमेयग } १००; सुपा ४८)। २ पुं. एक देव-जाति, भवनपति-नामक देव-जाति; (सम २)।

भोरुड पुं [**दे**] भारुंड पक्षी; (दे ६, १०८)।

भोल सक [**दे**] ठगना; (सुपा ६२२)।

भोल वि [**दे**] भद्र, सरल चित्त वाला; गुजराती में 'भोळुं'। स्त्री—°ला, °लिया; (महानि ६; सुपा ६१४)।

भोलग पुं [**भोलक**] यन्त्र-विशेष; "भोलगनामा जक्खो अभिवंछियसिद्धिदो अत्थि" (धर्मवि १४१)।

भोलव सक [**दे**] ठगना; गुजराती में 'भोळववुं'। संकृ—**भोलविउं**; (सुपा २६४)।

भोलवण न [**दे**] वञ्चन, प्रतारण; (सम्मत्त २२६)।

भोलविय } वि [**दे**] वञ्चित, ठगा हुआ; (कुप्र ४३४;
भोलिअ } सुपा ६२२)।

भोल्लय न [**दे**] पाथेय-विशेष, प्रवन्य-प्रवृत्त पाथेय; (दे ६, १०८)।

भोवाल (अप) देखो **भू-वाल**; (भवि)।

भ्रंहा (अप) देखो **भू=भ्रू**; (पिंग)।

भ्रंति (अप) देखो **भंति=भ्रान्ति**; (हे ४, ३६०)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि भआराइसद्दसंकलणो
तेतीसइमो तरंगो समत्तो।

म

म पुं [**म**] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष; (प्राप)।

म अ [**मा**] मत, नहीं; (हे ४, ४१८; कुमा; पिं ६४; २१९; भवि)।

मअआ स्त्री [**मृगया**] शिकार; (अभि ५३)।

मइ स्त्री [**मृति**] मौत, मरण; (सुर ३, १४३)।

मइ स्त्री [**मति**] १ बुद्धि, मेधा, मनीषा; "मेहा मई मणीसा" (पाअ; सुर २, ६४; कुमा; प्रासू ७१)। २ ज्ञान-विशेष, इन्द्रिय और मन से उत्पन्न होने वाला ज्ञान; (ठा ४, ४; णंदि; कम्म ३, १२; ४, १२, १४; विसे ८७)। °अन्नाण न [°अज्ञान] विपरीत मति-ज्ञान, मिथ्यादर्शन-युक्त मति-ज्ञान; (भग; विसे ११४; कम्म ४, ४१)। °णाण, °ण्णाण, °नाण न [°ज्ञान] ज्ञान-विशेष; (विसे १०४; ११४; ११७; कम्म १, ४)। °नाणावरण न [°ज्ञानावरण] मति-ज्ञान का आवारक कर्म; (विसे १०४)। °नाणि त्रि [°ज्ञानिन्] मति-ज्ञान वाला; (भग)। °पत्तिया स्त्री [°पात्रिका] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °भंस पुं [°भ्रंश] बुद्धि-विनाश; (भग; सुपा १३४)। °म, °मंत, °वंत वि [°मत्] बुद्धिमान्; (श्रोघ ६३०; आचा; भवि)।

मइ देखो **मई=मृगी**; (कुप्र ४४)।

मइअ वि [**मत्त**] मद-युक्त, उन्मत्त; (से ५, ६६; गा ४६८; ७०६; ७६१)।

मइअ देखो **मा=मा**।

मइअ वि [**दे. मतिक**] १ अभिसिंचित, तिरस्कृत; (दे ६, ११४)। २ न. बोये हुए बीजों के आच्छादन के काम में लगती एक काष्ठ-मय वस्तु, खेती का एक औजार; "नंगले मइयं सिया" (दस ७, २८; पण्ह १, १—पत्र ८)।

°**मइअ** वि [°**मय**] व्याकरण-प्रसिद्ध एक तद्धित-प्रत्यय, निर्वृत्त, बना हुआ; "धम्ममइएहि अइसुंदरेहिं" (उत्त), "जिण-पडिमं गोसीसचंदणमइयं" (महा) ।

मइआ स्त्री [**मृगया**] शिकार; (सिरि ११९५) ।

मइंद पुं [**मैन्द**] राम का एक सैनिक, वानर-विशेष; (से ४, ७; १३, ८३) ।

मइंद पुं [**मृगेन्द्र**] १ सिंह, पंचानन; (प्राकृ ३०; सुर १६, २४२; गउड) । २ छन्द का एक भेद; (पिंग) ।

मइज्ज देखो **मईअ**=मदीय; (षड्) ।

मइत्तो अ [**मत्**] मुझसे; (प्राप्र) ।

मइमोहणी स्त्री [**दे. मतिमोहनी**] सुरा, मदिरा, दारू; (दे ६, ११३; षड्) ।

मइरा स्त्री [**मदिरा**] ऊपर देखो; (पाअ; से २, ११; गा २७०; दे ६, ११३) ।

मइरेय न [**मैरेय**] ऊपर देखो; (पाअ) ।

मइल वि [**मलिन**] मैला, मल-युक्त, अ-स्वच्छ; (हे २, ३८; पाअ; गा ३४; प्रासू २५; भवि) ।

मइल पुं [**दे**] कलकल, कोलाहल; (दे ६, १४२) ।

मइल वि [**दे. मलिन**] गत-तेजस्क, तेज-रहित, फीका; (दे ६, १४२; से ३, ४७) ।

मइल सक [**मलिनय्**] मैला करना, मलिन बनाना । मइलइ, मइलेइ, मइलिंति, मइलेंति; (भवि; उत्त; पि ५५९) । कर्म—मइलिज्जइ; (भवि; पि ५५९) । वकृ—**मइलंत**; (पउम २, १००) । कृ—**मइलियव्व**; (स ३९९) ।

मइल अक [**दे. मलिनाय्**] तेज-रहित होना, फीका लगना । वकृ—**मइलंत**; (से ३, ४७; १०, २७) ।

मइलण न [**मलिनन**] मलिन करना; (गउड) ।

मइलणा स्त्री [**मलिनना**] १ ऊपर देखो; (ओघ ७८८) । २ मालिन्य, मलिनता; ३ कलंक; "लहइ कुलं मइलणं जेण" (सुर ६, १२०), "इमाए मइलणाए अमुगम्मि नयरुज्जाणसन्ने नग्गोहपायवे उब्बंधणेण अत्ताणयं परिच्चइउं ववसिओ चक्कदेवो" (स ६४) ।

मइलपुत्ती स्त्री [**दे**] पुष्पवती, रजस्वला स्त्री; (षड्) ।

मइलिअ वि [**मलिनित**] मलिन किया हुआ; (श्रावक ६५; पि ५५९; भवि) ।

मइल्ल वि [**मृत**] मरा हुआ । स्त्री—°**ल्लिया**; "एवं खलु सामी ! पउमावती देवी मइल्लियं दारियं पयाया । तए णं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेति, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं" (णाया १, १४—पत्र १८९) ।

मइहर पुं [**दे**] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया; (दे ६,१२१)। देखो **मयहर** ।

मई स्त्री [**दे**] मदिरा, दारू; (दे ६, ११३) ।

मई स्त्री [**मृगी**] हरिणी, स्त्री हरिण; (गा २८७; से ६, ८०; दे ३, ४६; कुप्र १०) ।

मई° देखो **मइ**=मति । °**म**, °**व** वि [°**मत्**] बुद्धि वाला; (पि ७३; ३६६; उप १४२ टी) ।

मईअ वि [**मदीय**] मेरा, अपना; (षड्; कुमा; स ४७७; महा) ।

मउ पुं [**दे**] पर्वत, पहाड़; (दे ६, ११३) ।

मउ } वि [**मृदु**, °**क**] कोमल, सुकुमार; (हे १, १२७; **मउअ** } षड्; सम ४१; सुर ३, ६७; कुमा) । स्त्री—°**उई**; (प्राकृ २८; गउड) ।

मउअ वि [**दे**] दीन, गरीब; (दे ६, ११४) ।

मउइअ वि [**मृदुकित**] जो कोमल बना हो; (गउड) ।

मउई देखो **मउ**=मृदु ।

मउंद पुं [**मुकुन्द**] १ विष्णु, श्रीकृष्ण; (राय) । २ वाद्य-विशेष; "दुंदुहिमउंदमद्दलतिलिमापमुहेण तूरसद्देण" (सुर ३, ६८), "महामउंदसंठाणसंठिए" (भग) ।

मउक्क देखो **माउक्क**=मृदुत्व; (षड्) ।

मउड पुंन [**मुकुट**] शिरो-भूषण, किरीट, सिरपेंच; (पत्र ३८; हे १, १०७; प्राप्र; कुमा; पाअ; औप) ।

मउड } पुं [**दे**] धम्मिल्ल, कबरी, जूट; (पाअ; दे ६, **मउडि** } ११७) ।

मउण देखो **मोण**; (हे १, १६२; चंड) ।

मउर पुंन [**मुकुर**] १ बाल-पुष्प, फूल की कली, बौर; (कुमा) । २ दर्पण, आईना, शीशा; ३ कुलाल-दण्ड; ४ बकुल का पेड़; ५ मल्लिका-वृक्ष; ६ कोली-वृक्ष; ७ ग्रन्थिपर्णवृक्ष, चोरक; (हे १, १०७; प्राकृ ७) ।

मउर } पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, ओंगा, लटजीरा, **मउरंद** } चिरचिरा; (दे ६, ११८) ।

मउल देखो **मउड**=मुकुट; (से ४, ५१) ।

मउल पुंन [**मुकुल**] थोड़ी विकसित कलि, कलिका, बौर; (रंभा २६) । २ देह, शरीर; ३ आत्मा; "मउलं, मउलो" (हे १, १०७; प्राप्र) ।

मउल अक [**मुकुलय्**] सकुचना, संकुचित होना। "मउलेंति णअणाइं" (गा ५)। वकृ—**मउलंत, मउलिंत**, (से ११, ६२; गि ४६१)।

मउलण न [**मुकुलन**] संकोच; "संकेअ मउलणं णअणाण" (हे २, १८४; विसे १२०६; गउड)।

मउलाअ अक [**मुकुलय्**] १ सकुचना। २ सक. संकुचित करना। वकृ—**मउलाअंत**; (नाट—मालती ५४; पि १२३)।

मउलाइय वि [**मुकुलित**] सकुचाया हुआ, संकुचित; (वज्जा १२६)।

मउलाव देखो **मउलाअ**। कर्म—मउलाविज्जंति; (पि १२३)। वकृ—**मउलावंत**; (पउम ३५, ८३)।

मउलावअ वि [**मुकुलायक**] संकुचित करने वाला; "केलिस विसमा विअसावओ व मउलावओ व अस्त्कोण" (गउड)।

मउलाविय देखो **मउलाइय**; (उत्तु १२१; सुपा २००; भवि)।

मउलि पुंस्त्री [**दे**] हृदय-रस का उच्छलन; (दे ६, ११४)।

मउलि पुं [**मुकुलिन्**] सर्प-विशेष; (पराह १, १—पत्र ८; पराण १—पत्र ५०)।

मउलि पुंस्त्री [**मौलि**] १ किरीट, मुकुट, सिरो-भूषण; (पाअ)। २ मस्तक, सिर; (कुप्र ३८६; कुमा; अजि २३; अच्चु ३४)। ३ सिर-वेष्टन विशेष, एक तरह की पगड़ी; (पव ३८)। ४ चूड़ा, चोटी; ५ संयत केश; ६ पुं. अशोक वृक्ष; ७ स्त्री. भूमि, पृथिवी; (हे १, १६२; प्राकृ १०)।

मउलिअ वि [**मुकुलित**] १ संकुचित; (सुर ३, ५५; गा ३२३; से १, ६५)। २ संवेष्टित; "संवेल्लिअं मउलिअं" (पाअ)। ३ मुकुलाकार किया हुआ; (औप)। ४ एकत्र स्थित; (कुमा)। ५ मुकुल-युक्त, कलिका-सहित; (राय)।

मउवी देखो मउई; (हे २, ११३; कुमा)।

मऊर पुंस्त्री [**मयूर**] पक्षि-विशेष, मोर; (प्राअ; हे १, १७१; गाया १, ३)। स्त्री—°री; (विपा १, ३)। °**माल** न [°**माल**] एक नगर; (पउम २१, ६)।

मऊरा स्त्री [**मयूरा**] एक रानी, महापद्म चक्रवर्ती की माता; (पउम २०, १४३)।

मऊह पुं [**मयूख**] १ किरण, रश्मि; (पाअ)। २ कान्ति, तेज; ३ शिखा; ४ शोभा; (हे १, १७१; प्राप्र)। ५ राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंकापति; (पउम ५, २६५)।

मए सक [**मदय्**] मद-युक्त करना, उन्मत्त बनाना। वकृ—**मएन्त**; (से २, १७)।

मएजारिस वि [**मादृश**] मेरे जैसा, मेरे तुल्य; "मएजारिसाण पुरिसाहमाण इअ चेट्ठिअं" (स ३३)।

मं (अप) देखो **म**=मा; (षड्; हे ४, ४१८; कुमा)। °**कार** पुं [°**कार**] 'मा' अक्षर; (ठा १०—पत्र ४६५)।

मंकड देखो **मक्कड**; (प्राचा)।

मंकण पुं [**मत्कुण**] खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष; गुजराती में 'मांकण'; (जी १६)।

मंकण पुंस्त्री [**दे. मर्कट**] बन्दर, वानर; स्त्री—°णी; "मयणेण मंकणीए पत्तीए व अंकणी बद्धा" (कुप्र १८६)।

मंकाइ पुं [**मङ्काति**] एक अन्तकृद् महर्षि; (अंत १८)।

मंकार पुं [**मकार**] 'म' अक्षर; (ठा १०—पत्र ४६५)।

मंकिअ न [**मङ्कित**] कूद कर जाना; (दे ८, १५)।

मंकुण देखो **मंकण**=मत्कुण; (दे; भवि)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] माडलिक हस्ति-विशेष; (पराण १—पत्र ४६)।

मंकुन [**दे**] देखो **मंगुल**; (गा ७८१)।

मंख देखो **मक्ख**=म्रक्ष्। वकृ—**मंखंत**; (राज)।

मंख पुं [**दे**] भाँड, भाण; (दे ६, ११२)।

मंख पुं [**मङ्ख**] एक भिक्षुक-जाति जो चित्र-पट दिखाकर जीवन-निर्वाह करती है; (णाया १, १ टी; औप; पराह २, ५; पिंड ३०६; कप्प)। °**फलग** न [°**फलक**] १ मंख का तख्ता; २ निर्वाह-हेतुक चैत्य; (पंचा ६, ४५ टी)।

मंखग न [**म्रक्षण**] १ मक्खन; "मंखणं व सुकुमालकरचरणा" (उप ६४८ टी)। २ अभ्यंग, मालिश; (सुर १२, ८)।

मंखलि पुं [**मङ्खलि**] एक मंख-भिक्षु, गोशालक का पिता। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] गोशालक, आजीवक मत का प्रवर्तक एक भिक्षु जो पहले भगवान् महावीर का शिष्य था; (ठा १०; उवा)।

मंग सक [**मङ्ग्**] १ जाना। २ लाँघना। ३ जानना। कर्म—मंगिज्जए; (विसे २२)।

मंग पुं [**मङ्ग**] १ धर्म; (विसे २२)। २ रञ्जन-द्रव्य विशेष, रंग के काम में आता एक द्रव्य; (सिरि १०५७)।

मंगइय देखो **मगइय**; (निर १, १)।

मंगरिया स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष; (राय)।

मंगल पुं [**मङ्गल**] १ ग्रह-विशेष, अंगारक ग्रह; (इक)। २ न. कल्याण, शुभ, क्षेम, श्रेय; (कुमा)। ३ विवाह-

सूर्त-बन्धन; (स्वप्न ४६) । ४ विघ्न-चय; (ठा ३, १) । ५ विघ्न-चय के लिए किया जाता इ-देष्टव-नमस्कार आदि शुभ कार्य; ६ विघ्न-चय का कारण, दुरित-नाश का निमित्त; (विसे १२; १३; २२; २३; २४; औप; कुमा) । ७ प्रशंसा-वाक्य, खुशामद; (सूअ १, ७, २५) । ८ इष्टार्थ-सिद्धि, वाञ्छित-प्राप्ति; (कप्प) । ९ तप-विशेष, आयंबिल; (संबोध ५८) । १० लगातार आठ दिनों का उपवास; (संबोध ५८) । ११ वि. इष्टार्थ-साधक, मंगल-कारक; (आव ४)। °ज्झय पुं [°ध्वज] मांगलिक ध्वज; (भग) । °तूर न [°तूर्य] मंगल-वाद्य; (महा) । °दीव पुं [°दीप] मांगलिक दीप, देव-मन्दिर में आरती के बाद किया जाता दीपक; (धर्मवि १२३; पंचा ८, २३) । °पाढय पुं [°पाठक] मागध, चारण; (पाअ) । °पाढिया स्त्री [°पाठिका] वीणा-विशेष, देवता के आगे सुबह और सन्ध्या में बजाई जाती वीणा; (राज) ।

मंगल वि [दे] १ सदृश, समान; (दे ६, ११८) । २ न. अग्नि, आग; ३ डोरा बूनने का एक साधन; ४ बन्दन-माला; (विसे २७) ।

मंगलग पुंन [मङ्गलक] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक पदार्थ; (सुपा ७७) ।

मंगलसज्झ न [दे] वह खेत जिसमें बीज बोना बाकी हो; (दे ६, १२६) ।

मंगला स्त्री [मङ्गला] भगवान् श्रीसुमतिनाथ की माता का नाम; (सम १५१) ।

मंगलालया स्त्री [मङ्गलालया] एक नगरी का नाम; (आचू १) ।

मंगलावइ पुं [मङ्गलापातिन्] सौमनस-पर्वत का एक कूट; (इक; जं ४) ।

मंगलावई स्त्री [मङ्गलावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३; इक) ।

मंगलावत्त पुं [मङ्गलावर्त] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३; इक) । २ देव-विशेष; (जं ४) । ३ न. एक देव-विमान; (सम १७) । ४ पर्वत विशेष का एक शिखर; (इक) ।

मंगलिअ, **मंगलीअ** वि [माङ्गलिक] १ मंगल-जनक; "सअल-जीवलोअमंगलिअजम्मलाहस्स" (उत्तर ६०; अच्चु ३६; सुपा ७८) । २ प्रशंसा-वाक्य बोलने वाला; "मुहमंगलीए" (सूअ १, ७, २५) ।

मंगल्ल वि [मङ्गल्य, माङ्गल्य] मंगल-कारी मंगल-जनक, मांगलिक; "पढमाणो जिणगुणगणनिबद्धमंगल्लवित्ताइं" (चेइय १६०; गाया १, १; सम १२२; कप्प; औप; सुर १, २३८; १५, १७३; सुपा ५५) ।

मंगी स्त्री [मङ्गी] षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३६३) ।

मंगु पुं [मङ्गु] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य, आर्यमङ्गु; (णंदि; ती ७; आत्म २३) ।

मंगुल न [दे] १ अनिष्ट; (दे ६, १४५; सुपा ३३८; सुक्त ८०) । २ पाप; (दे ६, १४५; वज्जा ८; गउड; सुक्त ८०) । ३ पुं. चोर, तस्कर; (दे ६, १४५) । ४ वि. असुन्दर, खराब; (पाअ; ठा ४, ४—पत्र २७१; स ७१३; दंस ३) । स्त्री—°ली; "मंगुली णं समणस्स भगवओ महा-वीरस्स धम्मपण्णत्ती" (उवा) ।

मंगुस पुं [दे] नकुल, न्यौला, भुजपरिसर्प-विशेष; (दे ६, ११८; सूअ २, ३, २५) ।

मंच पुं [दे] बन्ध; (दे ६, १११) ।

मंच पुं [मञ्च] १ मचान, उच्चासन; (कप्प; गउड) । २ गणितशास्त्र प्रसिद्ध दश योगों में तीसरा योग, जिसमें चन्द्रादि मंचाकार से रहते हैं; (सुज्ज १२—पत्र २३३) । °इमंच पुं [°तिमञ्च] १ मचान के ऊपर का मञ्च, ऊपर ऊपर रखा हुआ मंच; (औप) । २ गणित-प्रसिद्ध एक योग जिस में चन्द्र, सूर्य आदि नक्षत्र एक दूसरे के ऊपर रक्खे हुए मंचों के आकार से अवस्थित होते हैं; (सुज्ज १२) ।

मंची स्त्री [मञ्चा] खटिया, खाट; "ता आरुह मंचीए" (सुर १०, १६८; १६६) ।

मंछुडु (अप) अ [मङ्क्षु] शीघ्र, जल्दी; (भवि) ।

मंजर पुं [मार्जार] मंजार, बिल्ला, बिलाव; (हे २, १३२; कुमा) । देखो **मज्जर, मज्जार** ।

मंजरि स्त्री [मञ्जरि] देखो **मंजरी**; (औप) ।

मंजरिअ वि [मञ्जरित] मञ्जरी-युक्त; "मंजरिओ चूयनिकरो" (स ७१६) ।

मंजरिआ, **मंजरी** स्त्री [मञ्जरिका, °री] नवोत्पन्न सुकुमार पल्लवाकार लता, बौर; (कुमा; गउड) । °गुंडी स्त्री [°गुण्डी] वल्ली-विशेष; "तोमरिगुंडी य मंजरीगुंडी" (पाअ) ।

मंजार देखो **मंजर**; (हे १, २६) ।

मंजिआ स्त्री [दे] तुलसी; (दे ६, ११६) ।

मंतिअ वि [**मान्त्रिक**] मंत्र का ज्ञाता, "मंतेण मंतिएण व वारोण ताडिओ भुजगो" (धर्मवि ६; सत्त ११)।

मंतिण देखो **मंति=मन्त्रिन्**; "नियुद्दिमं मंतिणेहि कुसलेहि" (पउम २१, २०; ६६, ८; भवि)।

मंतु वि [**मन्तु**] १ ज्ञाता, जानकार; २ पुं जीव, प्राणी; (विसे ३५२५)।

मंतु देखो **मण्णु**; (हे २, ४४; षड्; निचू २)। **°म** वि [**°मत्**] क्रोध वाला, कोप-युक्त। स्त्री—**°मई**; (कुमा)।

मंतु पुंन [**मन्तु**] अपराध; "मंतुं विलियं विप्पियं" (पाअ)।

मंतुआ स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम; (दे ६, ११६; भवि)।

मंतेल्लि स्त्री [**दे**] सारिका, मैना; (दे ६, ११६)।

मंथ सक [**मन्थ्**] १ विलोडन करना। २ मारना, हिंसा करना। ३ अक. क्लेश पाना। मंथइ; (हे ४, १२१; प्राकृ ३३; षड्)। कवकृ—**मंथिज्जंत, मंथिज्जमाण, मच्छंत**; (पउम ११३, ३३; सुपा २६१; १६५; पराह १, ३—पत्र ५३)। संकृ—**मंथित्तु**; (सम्मत्त २२६)।

मंथ पुं [**मन्थ**] १ दही बिलोने का दराड, मथनी; (विसे ३८४)। २ केवलि-समुद्घात के समय मन्थाकार किया जाता जीव-प्रदेश-समूह; (ठा ६; औप)।

मंथ (अप) देखो **मत्थ=मस्त**; (पिंग)।

मंथण न [**मन्थन**] १ विलोडन, बिलोने की क्रिया; "खीरोअमंथणुच्छलिअदुद्धसित्तो व्व महुमहणो" (गा ११७)। २ घर्षण; "मंथणजाए अग्गी" (संबोध १)। ३ पुंन. मथनी, दही आदि मथने की लकड़ी; (प्राकृ १४)।

मंथणिआ स्त्री [**मन्थनिका**] १ मंथनी, महनी, दही मथने की छोटी लकड़ी; (राज)। २ मथानी, दधि-कलशी, दही महने की हँड़िया; (दे २, ६५)।

मंथणी स्त्री [**मन्थनी**] ऊपर देखो; (दे २, ५५)।

मंथर वि [**मन्थर**] १ मन्द, धीमा; (से १, ३८; गउड; पाअ; सुपा १)। २ विलम्ब से होने वाला; (पंचा ६, २२)। ३ पुं. मन्थन-दराड; "वीमाममंथरायमाणसलवोच्छिरणदूरवडणाओ" (गउड)।

मंथर वि [**दे. मन्थर**] १ कुटिल, वक्र, टेढ़ा; (दे ६, १४५; भवि)। २ स्त्रीन. कुसुम्भ, वृक्ष-विशेष, कसूम का पेड़; (दे ६, १४५)। स्त्री—**°रा**; "मंथरा कुसुंभी" (पाअ)।

मंथर वि [**दे**] बहु, प्रचुर, प्रभूत; (दे ६, १४५; भवि)।

मंथरिय वि [**मन्थरित**] मन्थर किया हुआ; (गउड)।

मंथाण पुं [**मन्थान**] १ विलोडन-दराड; "तत्तो विसुद्धपरिणाममंदरमंथाणमहियभवजलहीं" (धर्मवि १०२; दे ६, १४१; वज्जा ४; पाअ; सम्मु १५०)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मंथिअ वि [**मथित**] विलोडित; (दे २, ८८; पाअ)।

मंथु पुंन [**दे**] १ बदरादि-चूर्ण; (पराह २, ५; उत्त ८, १२; सुत्र ८, १२; दस ५, १, ६८; ५, २, २४; आचा)। २ चूर्ण, चुर, बुकनी; (आचा २, १, ८, ८)। ३ दूध का विकार-विशेष, मठा और माखन के बीच की अवस्था वाला पदार्थ; (पिंड २८२)।

मंद पुं [**मन्द**] १ ग्रह-विशेष, शनिश्चर; (सुर १०, २२४)। २ हाथी की एक जाति; (ठा ४, २—पत्र २०८)। ३ वि. अलस, धीमा, मृदु; (पाअ; प्रासू ११२)। ४ अल्प, थोड़ा; (प्रासू ४१)। ५ मूर्ख, जड़, अज्ञानी; (सुअ १, ४, १, २१; पाअ)। ६ नीच, खल; "मुहमेव अहीणं नह य मंदस्स" (प्रासू ११)। ७ रोग-ग्रस्त, रोगी; (उत्त ८, ५)। **°उण्णिया** स्त्री [**°पुण्यिका**] देवी-विशेष; (पंचा १६, २४)। **°भग्ग** वि [**°भाग्य**] कमनसीब; (सुपा ३९६; महा)। **°भाअ** वि [**°भाग, °भाग्य**] वही अर्थ; (स्वप्न २२; कुमा)। **°भाइ** वि [**°भागिन्**] वही अर्थ; (स ५४६; सुपा २१८)। **°भाग** देखो **°भाअ**; (सुर १०, ३८)।

मंद न [**मान्द्य**] १ बीमारी, रोग; " न य मंदगं मरई कोइ तिरिओ अहव मणुओ वा" (सुपा २२६)। २ मूर्खता, बेवकूफी; "बालस्स मंदयं बीयं" (सुअ १, ४, १, २६)।

मंदक्ख न [**मन्दाक्ष**] लज्जा, शरम; (राज)।

मंदग } न [**मन्दक**] गेय-विशेष, एक प्रकार का गान;
मंदय } (राज; ठा ४, ४—पत्र २८५)।

मंदर पुं [**मन्दर**] १ पर्वत-विशेष, मेरु पर्वत; (सुज्ज ५; सम १२; हे २, १७४; कप्प; सुपा ४७)। २ भगवान् विमलनाथ का प्रथम गणधर; (सम १५२)। ३ वानरद्वीप का एक राजा, मरुयकुमार का पुत्र; (पउम ६, ६७)। ४ छन्द का एक भेद; (पिंग)। ५ मन्दर-पर्वत का अधिष्ठायक देव; (जं ४)। **°पुर** न [**°पुर**] नगर-विशेष; (इक)।

मंदा स्त्री [**मन्दा**] १ मन्द-स्त्री; (वज्जा १०६)। २ मनुष्य की दश अवस्थाओं में तीसरी अवस्था—२१ से ३० वर्ष तक की दशा; (तंदु १६)।

मंदाइणी स्त्री [**मन्दाकिनी**] १ गंगा नदी, भागीरथी; (पउम १०, ५०; पाअ)। २ रामचन्द्र के पुत्र लव की स्त्री का नाम; (पउम १०६, १२)।

मंदाय क्रिवि [**मन्द**] शनैः, धीमे से; "मंदायं मंदायं पव्वइयाए" (जीव ३)।

मंदाय न [**मन्दाय**] गेय-विशेष; (जं १)।

मंदार पुं [**मन्दार**] १ कल्पवृक्ष-विशेष; (सुपा १)। २ पारिभद्र वृक्ष। ३ न. मन्दार वृक्ष का फूल; "मंदारदामरमणिज्जभूयं" (कप्प; गउड)। ४ पारिभद्र वृक्ष का फूल; (वज्जा १०६)।

मंदिअ वि [**मान्दिक**] मन्दता वाला, मन्द; "बाले य मंदिए मूढे" (उत्त ८, ५)।

मंदिर न [**मन्दिर**] १ गृह, घर; (गउड; भवि)। २ नगर-विशेष; (इक; आचू १)।

मंदिर वि [**मान्दिर**] मन्दिर-नगर का; "सीहपुरा सोहा वि य गोयपुरा मंदिरा य बहुणाया" (पउम ५५, ५३)।

मंदीर न [**दे**] १ शृङ्खल, साँकल; २ मन्थान-दण्ड; (दे ६, १४१)।

मंदुय पुं [**दे. मन्दुक**] जलजन्तु-विशेष; (पगह १, १—पत्र ७)।

मंदुरा स्त्री [**मन्दुरा**] अश्व-शाला; (सुपा ६७)।

मंदोदरी, मंदोयरी स्त्री [**मन्दोदरी**] १ रावण-पत्नी; (से १२, ६७)। २ एक वणिक्-पत्नी; (उप ५६७ टी)।

मंदोसण (मा) वि [**मन्दोष्ण**] अल्प गरम; (प्राकृ १०२)।

मंधाउ पुं [**मान्धातृ**] हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ६७)।

मंधादण पुं [**मन्धादन**] मेष, गाडर; "जहा मंधादए (?ऐ) नाम थिमिग्रं भुंजती दगं" (सुत्र १, ३, ४, ११)।

मंधाय पुं [**दे**] आढ्य, श्रीमंत; (दे ६, ११६)।

मंभीस (अप) सक [**मा+भी**] डरने का निषेध करना, अभय देना। संकृ—**मंभीसिवि**; (भवि)।

मंभीसिय देखो **माभीसिअ**; (भवि)।

मंस पुंन [**मांस**] मांस, गोश्त, पिशित; "अयमाउसो मंसे अयं अट्ठी" (सुत्र २, १, १६; आचा; ओघभा २४६; कुमा; हे १, २९)। °**इत्त** वि [°**वत्**] मांस-लोलुप; (सुख १, १५)। °**खल** न [°**खल**] मांस सुखाने का स्थान; (आचा २, १, ४, १)। °**चक्खु** पुंन [°**चक्षुस्**] १ मांस-मय चक्षु; २ वि. मांस-मय चक्षु वाला, ज्ञान-चक्षु-रहित; "अहिंस्से मंसचक्खुणा" (सम ६०)। °**ासण** वि [°**ाशन**] मांस-भक्षक; (कुमा)। °**ासि**, °**ासिण** वि [°**ाशिन्**] वही अर्थ; (पउम १०५, ४४; महा), "मंसासिणस्स" (पउम २६, ३७)।

मंसल वि [**मांसल**] पीन, पुष्ट, उपचित; (पाअ; हे १, २९; पगह १, ४)।

मंसी स्त्री [**मांसी**] गन्ध-द्रव्य-विशेष, जटामांसी; (पगह २, ५—पत्र १५०)।

मंसु पुंन [**श्मश्रु**] दाढ़ी-मूँछ—पुरुष के मुख पर का बाल; (सम ६०; औप; कुमा); "मंसू" (हे १, २६; प्राप्र), "मंसूइं" (उवा)।

मंसु देखो **मंस**; "मंसूणि छिन्नपुव्वाइं" (आचा)।

मंसुडग न [**दे. मांसोन्दुक**] मांस-खण्ड; (पिंड ५८६)।

मंसुल्ल वि [**मांसवत्**] मांस वाला; (हे २, १५९)।

मक्कंडेअ पुं [**मार्कण्डेय**] ऋषि-विशेष; (अभि २४३)।

मक्कड पुं [**मर्कट**] १ वानर, बन्दर; (गा १७१; उप पृ १८८; सुपा ६०६; दे २, ७२; कुप्र ६०; कुमा)। २ मकड़ा, जाल बनाने वाला कीड़ा; (आचा; कस; गा ६३; दे ६, ११६)। ३ छन्द का एक भेद; (पिंग)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] बन्ध-विशेष, नाराच-बन्ध; (कम्म १, ३६)। °**ासंताण** पुं [°**संतान**] मकड़ा का जाल; (पडि)।

मक्कडबंध न [**दे**] शृङ्खलाकार ग्रीवा-भूषण; (दे ६, १२७)।

मक्कडी स्त्री [**मर्कटी**] वानरी; (कुप्र ३०३)।

मक्कल (अप) देखो **मक्कड**; (पिंग)।

मक्कार पुं [**माकार**] १ 'मा' वर्ण; २ 'मा' के प्रयोग वाली दण्डनीति, निषेध-सूचक एक प्राचीन दण्ड-नीति; (ठा ७—पत्र ३९८)।

मक्कुण देखो **मंकुण**; (पव २६२; दे १, ९६)।

मक्कोड पुं [**दे**] १ यन्त्र-गुम्फनार्थ राशि, जन्तर गढ़ने के लिये बनाया जाता राशि; (दे ६, १४२)। २ पुंस्त्री. कीट-विशेष, चींटा, गुजराती में 'मकोडो', 'मंकोडो'; (निचू १; आवम; जी १६)। स्त्री—°**डा**; (दे ६, १४२)।

मक्ख सक [**म्रक्ष्**] १ चुपड़ना, स्नेहान्वित करना। घी, तेल आदि स्निग्ध द्रव्य से मालिश करना। मक्खइ; (षड्), मक्खंति; (उप १४७ टी), मक्खिज्ज, मक्खेज्ज;

(प्राचा २, १३ २, ३ [illegible]) । हेकृ—**मक्खेत्तए**; ([illegible]) । कृ—**मक्खियव्व**; (ओघ ३८६ टी) ।

मक्खण न [**म्रक्षण**] [illegible] मक्खन, नवनीत; ([illegible] २२) । २ मालिश, अभ्यंग; ([illegible]) ।

मक्खर पुं [**मस्कर**] १ [illegible]; २ ज्ञान; ३ [illegible], [illegible]; ४ छिद्र वाला बाँस; ([illegible] ९४; [illegible] ३०६) ।

मक्खिअ वि [**म्रक्षित**] चुपड़ा हुआ; (पाअ; दे ८, ६२; ओघ ३८६ टी) ।

मक्खिअ न [**माक्षिक**] मक्षिका-संचित मधु; (राज) ।

मक्खिआ स्त्री [**मक्षिका**] मक्खी; (दे ६, १२३) ।

मगइअ वि [**दे**] हस्त-पाशित, हाथ में बाँधा हुआ; (विपा १, ३—पत्र ४८; ४६) ।

मगण पुं [**मगण**] छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध तीन गुरु अक्षरों की संज्ञा; (पिंग) ।

मगदंतिआ स्त्री [**दे**] १ मालती का फूल; २ मोगरा का फूल; "कुसुमं वा मगदंतिअं" (दस ५, २, १३; १६) ।

मगर पुं [**मकर**] १ मगर-मच्छ, जलजन्तु-विशेष; (पराह १, २; औप; उव; सुर १३, ४२; णाया १, ४) । २ राहु; (सुज्ज २०) । देखो **मयर** ।

मगसिर स्त्रीन [**मृगशिरस्**] नक्षत्र-विशेष; "कत्तिय राहिणी मगसिर अद्दा य" (ठा २, ३—पत्र ७७) । स्त्री—°**रा**; "दो मगसिराओ" (ठा २, ३—पत्र ७७) ।

मगह देखो **मागह** । °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] तीर्थ-विशेष; (इक) ।

मगह } पुं. व. [**मगध**] देश-विशेष; (कुमा) । °**वरच्छ**
मगहग } [°**वराक्ष**] आभरण-विशेष; (औप पृ ४८ टि) । °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (महा) । देखो **मयह** ।

मगा अ [**दे**] पश्चात्, पीछे; मराठी में 'मग'; (दे १, ४ टी) ।

√**मग्ग** सक [**मार्गय्**] १ माँगना । २ खोजना । मग्गइ, मग्गंति; (उव; षड्; हे १, ३४) । वकृ—**मग्गंत**, **मग्गमाण**; (गा २०२; उप ६४८ टी; महा; सुपा ३०८) । संकृ—**मग्गेविणु** (अप); (भवि) । हेकृ—**मग्गिउं**; (महा) । कृ—**मग्गिअव्व**, **मग्गेयव्व**; (से १४, २७; सुपा ५१८) ।

√**मग्ग** सक [**मग्**] गमन करना, चलना । मग्गइ; (हे ४, २३०) ।

मग्ग पुं [**मार्ग**] १ रास्ता, पथ; (ओघ ३४; कुमा; प्रासू [illegible]) । २ अन्वेषण, खोज; (विसे १३८१) । °**ओ** अ [**तस्**] रास्ते से; (हे [illegible], ३७) । °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] मार्ग का जानकार; (उप ६४४) । °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ मार्ग में स्थित, २ [illegible] से ज्यादः वर्ष की उम्र वाला; (सूअ २, २, ६) । °**दय** वि [°**दय**] मार्ग-दर्शक; (भग; पडि) । °**विउ** वि [°**वित्**] मार्ग का जानकार; (आचा ८०२) । °**ह** वि [°**घ**] मार्ग-नाशक; (श्रु ७४) । °**णुसारि** वि [°**ानुसारिन्**] मार्ग का अनुयायी; (धर्म २) ।

मग्ग } पुं [**दे**] पश्चात्, पीछे; (दे ६, १११; से १,
मग्गअ } ५१; सुर २, ५६; पाअ; भग) ।

मग्गअ वि [**मार्गक**] माँगने वाला; (पउम ६६, ७३) ।

मग्गण पुं [**मार्गण**] १ याचक; (सुपा २४) । २ बाण, शर; (पाअ) । ३ न. अन्वेषण, खोज; (विसे १३८१) । ४ मार्गणा, विचारणा, पर्यालोचन; (ओघ; विसे १८०) ।

मग्गण° } स्त्री [**मार्गणा**] १ अन्वेषण, खोज; (उप पृ
मग्गणया } २७६; उप ६६२; आघ ३) । २ अन्वय-
मग्गणा } धर्म के पर्यालोचन द्वारा अन्वेषण, विचारणा, पर्यालोचना; (कम्म ४, १; २३; जीवस २) ।

मग्गण्णिर वि [**दे**] अनुगमन करने की आदत वाला; (दे ६, १२४) ।

मग्गसिर पुं [**मार्गशिर**] मास-विशेष, मगसिर मास, अगहन; (कप्प; हे ४, ३५७) ।

मग्गसिरी स्त्री [**मार्गशिरी**] १ मगसिर मास की पूर्णिमा; २ मगसिर की अमावस; (सुज्ज १०, ६) ।

मग्गिअ वि [**मार्गित**] १ अन्वेषित, गवेषित; (से ६, ३६) । २ माँगा हुआ, याचित; (महा) ।

मग्गिर वि [**मार्गयितृ**] खोज करने वाला; (सुपा ५८) ।

मग्गिल्ल वि [**दे**] पाश्चात्य, पीछे का; (विसे १३२६) ।

मग्गु पुं [**मद्गु**] पक्षि-विशेष, जल-काक; (सूअ १, ७, १५; हे २, ७७) ।

मघ पुं [**मघ**] मेघ; (भग ३, २; पराण २) ।

√**मघमघ** अक [**प्र + सृ**] फैलना, गन्ध का फैलना; गुजराती में 'मघमघवुं', मराठी में 'मघमघणें' । वकृ—**मघमघंत**, **मघमघिंत**, **मघमघेंत**; (सम १३७; कप्प; औप) ।

मघव पुं [**मघवन्**] १ इन्द्र, देव-राज; (कप्प; कुमा ७, ६४) । २ तृतीय चक्रवर्ती राजा; (सम १५२; पउम २०, १११) ।

मघवा स्त्री [**मघवा**] छठवीं नरक-भूमि; "मघव त्ति माघवत्ति य पुढवीणं नामधेयाइं" (जीवस १२)।

मघा स्त्री [**मघा**] १ ऊपर देखो; (ठा ७—पत्र ३८८; इक)। २ देखो **महा**=मघा; (राज)।

मघोण पुं [**दे. मघवन्**] देखो **मघव**; (षड् ; पि ४०३)।

✓**मच्च** अक [**मद्**] गर्व करना। मच्चइ; (षड् ; हे ४, २२५)।

मच्च (अप) देखो **मंच**; "मंकुणमच्चइ सुत्त वराई" (भवि)।

मच्च न [**दे**] मल, मैल; (दे ६, १११)।

मच्च } पुं [**मर्त्य**] मनुष्य, मानुष; (स २०८; रंभा; **मच्चिअ** } पाअ; सूअ १, ८, २; आचा)। °**लोअ** पुं [°**लोक**] मनुष्य-लोक; (कुप्र ४११)। °**लोईय** वि [°**लोकीय**] मनुष्य-लोक से संबन्ध रखने वाला; (सुपा ५१६)।

मच्चिअ वि [**दे**] मल-युक्त; (दे ६, १११ टी)।

मच्चिर वि [**मदितृ**] गर्व करने वाला; (कुमा)।

मच्चु पुं [**मृत्यु**] १ मौत, मरण; (आचा; सुर २, १३८; प्रासू १०६; महा)। २ यम, यमराज; (षड्)। ३ रावण का एक सैनिक; (पउम ५६, ३१)।

मच्छ पुं [**मत्स्य**] १ मछली; (णाया १, १; पाअ; जी २०; प्रासू ५०)। २ राहु; (सुज्ज २०)। ३ देश-विशेष; (इक; भवि)। ४ छन्द का एक भेद; (पिंग)। °**खल** न [°**खल**] मत्स्यों को सुखाने का स्थान; (आचा २, १, ४, १)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] मच्छीमार, धीवर; (पण्ह १, १; महा)।

मच्छंडिआ स्त्री [**मत्स्यण्डिका**] खण्डशर्करा, एक प्रकार की शक्कर; (पण्ह २, ४; णाया १, १७; पण्ण १७; पिंड २८३; मा ४३)।

मच्छंत देखो **मंथ**=मन्थ्।

मच्छंध देखो **मच्छ-बंध**; (विपा १, ८—पत्र ८२)।

मच्छर पुं [**मत्सर**] १ ईर्ष्या, द्वेष, डाह, पर-संपत्ति की असहिष्णुता; (उत्त)। २ कोप, क्रोध; ३ वि. ईर्ष्यालु, द्वेषी; ४ क्रोधी; ५ कृपण; (हे २, २१)।

मच्छर न [**मात्सर्य**] ईर्ष्या, द्वेष; (से ३, १६)।

मच्छरि वि [**मत्सरिन्**] मत्सर वाला; (पण्ह २, ३; उवा; पाअ)। स्त्री—°**णी**; (गा ८४; महा)।

मच्छरिअ वि [**मत्सरित, मत्सरिक**] ऊपर देखो; (पउम ८, ४६; पंचा १, ३२; भवि)।

मच्छल देखो **मच्छर**=मत्सर; (हे २, २१; षड्)।

मच्छिअ देखो **मक्खिअ**=माक्षिक; (पव ४—गाथा २२०)।

मच्छिअ वि [**मात्स्यिक**] मच्छीमार; (श्रा १२; अभि १८७; विपा १, ६; ७; पिंड ६३१)।

मच्छिका (मा) देखो **माउ**=मातृ; (प्राकृ १०२)।

मच्छिगा देखो **मच्छिया**; (पि ३२०)।

मच्छिया } स्त्री [**मक्षिका**] मक्खी; (णाया १, १६; **मच्छी** } जो १८; उत्त ३६, ६०; प्राप्र; सुपा २८१)।

मज्ज सक [**मद्**] अभिमान करना; । मज्जइ, मज्जई, मज्जेज्ज; (उत्र; सूअ १, २, २, १; धर्मसं ७८)।

✓**मज्ज** अक [**मस्ज्**] १ स्नान करना। २ डूबना। मज्जइ; (हे ४, १०१), मज्जामा; (महा ५७, ७; धर्मसं ८६४)। वकृ—**मज्जमाण**; (गा २४६; णाया १, १)। संकृ—**मज्जिऊण**; (महा)। प्रयो—संकृ—**मज्जावित्ता**; (ठा ३, १—पत्र ११७)।

✓**मज्ज** सक [**मृज्**] साफ करना, मार्जन करना। मज्जइ; (षड्; प्राकृ ६६; हे ४, १०५)।

मज्ज न [**मद्य**] दारू, मदिरा; (औप; उवा; हे २, २४; भवि)। °**इत्त** वि [°**वत्**] मदिरा-लालुप; (सुख १, १५)। °**व** वि [°**प**] मद्य-पान करने वाला; (पाअ)। °**वीअ** वि [°**पीत**] जिसने मद्य-पान किया हो वह; (विपा १, ६—पत्र ६७)।

मज्जग वि [**माद्यक**] मद्य-संबन्धी; "अन्नं वा मज्जगं रसं" (दस ५, २, ३६)।

मज्जण न [**मज्जन**] १ स्नान; २ डूबना; (सुर ३, ७६; कप्पू; गउड; कुमा)। °**घर** न [°**गृह**] स्नान-गृह; (णाया १, १—पत्र १६)। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] स्नान कराने वाली दासी; (णाया १, १—पत्र ३७)। °**पाली** स्त्री [°**पाली**] वही अर्थ; (कप्प)।

मज्जण न [**मार्जन**] १ साफ करना, शुद्धि; (कप्प)। २ वि. मार्जन करने वाला; (कुमा)। °**घर** न [°**गृह**] शुद्धि-गृह; (कप्प; औप)।

मज्जर देखो **मंजर**; (प्राकृ ५)। स्त्री—°**री**; "को जुन्न-मज्जरिं कंजिएण पवियारिउं तरइ" (सुर ३, १३३)।

मज्जविअ वि [**मज्जित**] १ स्नपित; २ स्नात; "एत्थ सरे रे पंथिअ गयवइवहुयाउ मज्जविया" (वज्जा ६०)।

मज्जा स्त्री [**दे. मर्या**] मर्यादा; (दे ६, ११३; भवि)।

मज्जा स्त्री [**मज्जा**] धातु-विशेष, चर्बी, हड्डी के भीतर का गूदा; (सम)।

मज्जाइल्ल वि [**मर्यादिन्**] मर्यादा वाला; (विक ४)।

मज्जाया स्त्री [**मर्यादा**] १ व्यवस्था-पूर्वक स्थिति, व्यवस्था; "रयणायरस्स मज्जाया" (प्रासू ६८; प्रावम)। २ सीमा, हद, अवधि; ३ कूल, किनारा; (हे २, २४)।

मज्जार पुंस्त्री [**मार्जार**] १ बिल्ला, बिलाव; (कुमा; भवि)। २ वनस्पति-विशेष; "वत्थुलपोरगमज्जारपोइवल्ली य पालक्का" (पराण १—पत्र ३४)। स्त्री— **रिआ**, **°री**; (कप्पू; पाअ)।

मज्जाविअ वि [**मज्जित**] स्नपित; (महा)।

मज्जिअ वि [**दे**] १ अवलोकित, निरीक्षित; २ पीत; (दे ६, १४४)।

मज्जिअ वि [**मज्जित**] स्नात; (पिंड ४३३; महा; पाअ)।

मज्जिअ वि [**मार्जित**] साफ किया हुआ; (पउम २०, १२७; कप्प; औप)।

मज्जिआ स्त्री [**मार्जिता**] रसाला, भक्ष्य-विशेष—दही, शक्कर आदि का बना हुआ और सुगन्ध से वासित एक प्रकार का खाद्य; (पाअ; दे ७, २; पव २५६)।

मज्जिर वि [**मज्जितृ**] मज्जन करने की आदत वाला; (गा ४७३; सण)।

मज्जोक्क वि [**दे**] अभिनव, नूतन; (दे ६, ११८)।

मज्झ न [**मध्य**] १ अन्तराल, मभार, बीच; (पाअ; कुमा; दे ३६; प्रासू ४०; १६७)। २ शरीर का अवयव-विशेष; (कप्पू)। ३ संख्या-विशेष, अन्त्य और परार्ध के बीच की संख्या; (हे २, ६०; प्राप्र)। ४ वि. मध्यवर्ती, बीच का; (प्रासू १२५)। **°एस** पुं [**°देश**] देश-विशेष, गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश, मध्य प्रान्त; (गउड)। **°गय** वि [**°गत**] १ बीच का, मध्य में स्थित; (आचा; कप्प)। २ पुं. अवधिज्ञान का एक भेद; (णंदि)। **°गेवेज्जय** न [**°ग्रैवेयक**] देवलोक-विशेष; (इक)। **°ट्ठिअ** वि [**°स्थित**] तटस्थ, मध्यस्थ; (रयण ४८)। **°ण्ण**, **°ण्ह** पुं [**°ाह्न**] दिन का मध्य भाग, दोपहर; (प्राप्र; प्राकृ १८; कुमा; अभि ५५; हे २, ८४; महा)। २ न. तप-विशेष, पूर्वार्ध तप; (संबोध ५८)। **°ण्हतरु** पुं [**°ाह्नतरु**] वृक्ष-विशेष, मध्याह्न समय में अत्यन्त फूलने वाले लाल रँग के फूल वाला वृक्ष; (कुमा)। **°त्थ** वि [**°स्थ**] तटस्थ; (उव; उप ६४८ टी; सुर १६, ६५)। २ बीच में रहा हुआ; (सुपा २१७)। **°देस** देखो **°एस**; (सुर ३, ११)। **°न्न** देखो **°ण्ण**; (हे २, ८४; सण)। **°म** वि [**°म**] मध्य का, मभला, बीच का; (भग; नाट—विक ५)। **°रत्त** पुं [**°रात्र**] निशीथ; (उप १३६; ५२८ टी)। **°रयणि** स्त्री [**°रजनि**] मध्य रात्रि; (स ६३६)। **°लोग** पुं [**°लोक**] मेरु पर्वत; (राज)। **°वत्ति** वि [**°वर्तिन्**] अन्तर्गत; (मोह ६४)। **°विलिअ** वि [**°विलित**] १ बीच में मुड़ा हुआ; २ चित्त में कुटिल; (वज्जा १२)।

मज्झआर न [**दे**] मभार, मध्य, अन्तराल; (दे ६, १२१; विक २८; उत्त; गा ३; विसे २६८१; सुर १, ४५; सुपा ४६; ११३; वज्जा १); "अणेगवग्गिआइ मज्झआरम्मि" (भत ७)।

मज्झंतिअ न [**दे**] मध्यन्दिन, मध्याह्न; (दे ६, १२४)।

मज्झंदिण न [**मध्यन्दिन**] मध्याह्न; (दे ६, १२४)।

मज्झंमज्झ न [**मध्यमध्य**] ठीक बीच; (भग; विपा १, १; सुर १, २४४)।

मज्झगार देखो **मज्झआर**; (राज)।

मज्झण्हिय वि [**माध्याह्निक**] मध्याह्न-संबन्धी; (धर्मवि १०५)।

मज्झत्थ न [**माध्यस्थ्य**] तटस्थता, मध्यस्थता; (उप ६१५; संबोध ४५)।

मज्झिम वि [**मध्यम**] १ मध्य-वर्ती, बीच का; (हे १, ४८; सम ४३; उवा; कप्प; औप; कुमा)। २ स्वर-विशेष; (ठा ७—पत्र ३९३)। **°रत्त** पुं [**°रात्र**] निशीथ, मध्य-रात्रि; (उप ५२८ टी)।

मज्झिमगंड न [**दे**] उदर, पेट; (दे ६, १२५)।

मज्झिमा स्त्री [**मध्यमा**] १ बीच की उंगली; (आचा ३६०)। २ एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

मज्झिमिल्ल वि [**मध्यम**] मध्य-वर्ती, बीच का; (अणु)।

मज्झिमिल्ला देखो **मज्झिमा**; (कप्प)।

मज्झिल्ल वि [**माध्यिक, मध्यम**] मभला, बीच का; (पव ३६; देवेन्द्र २३८)।

मट्ट वि [**दे**] शृङ्ग-रहित; (दे ६, ११२)।

मट्टिआ स्त्री [**मृत्तिका**] मट्टी, मिट्टी, माटी; (णाया १, १; औप; कुमा; महा)।

मट्टी स्त्री [**मृत, मृत्तिका**] ऊपर देखो; (जी ४; पडि; दे)।

मट्टुहिअ न [दे] १ परिणीत स्त्री का कोप; २ वि. कलुष; ३ अशुचि, मैला; (दे ६, १४६)।

मट्ठ वि [दे] अलस, आलसी, मन्द, जड; (दे ६, ११२; पाअ)।

मट्ठ वि [मृष्ट] १ मार्जित, शुद्ध; (सुअ १, ६, १२; औप)। २ मसृण, चिकना; (सम १३७; दे ८, ७)। ३ घिसा हुआ; (औप; हे २, १७४)। ४ न. मिरच, मरिच; (हे १, १२८)।

मड वि [दे. मृत] १ मरा हुआ, निर्जीव; (दे ६, १४१), "मडोव्व अप्पाणं" (वज्जा १४८), "मडे" (मा); (प्राकृ १०३)। °**इ** वि [°**दिन्**] निर्जीव वस्तु को खाने वाला; (भग)। °**सय** पुं [°**श्रय**] श्मशान; (निचू ३)।

मड पुं [दे] कंठ, गला; (दे ६, १४१)।

मडंब पुंन [दे. मडम्ब] ग्राम-विशेष, जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गाँव न हो ऐसा गाँव; (णाया १, १; भग; कप्प; औप; पण्ह १, ३; भवि)।

मडक्क पुं [दे] १ गर्व, अभिमान; "न किउ वयणु संचलिय मडक्कइ" (भवि)। २ मटका, कलश, घड़ा; मराठी में 'मडकें'; (भवि)।

मडक्किया स्त्री [दे] छोटा मटका, कलशी; (कुप्र ११६)।

मडप्प, **°प्पर**, **मडप्फर** पुं [दे] गर्व, अभिमान, अहंकार; "अज्जवि कंदप्पमडप्पखंडणे वहइ पंडिच्चं" (सुपा २६; कुप्र २२१; २८४; षड्; दे ६, १२०; पाअ; सुपा ६; प्रासू ८५; कुप्र २५५; सम्मत्त १८६; धम्म ८ टी; भवि; सण)।

मडभ वि [मडभ] कुब्ज, वामन; (राज)।

मडमड, **मडमडमड** अक [मडमडाय्] १ मड मड आवाज करना। २ सक. मड मड आवाज हो उस तरह मारना। मडमडमडंति; (पउम २६, ५३)। भवि—मडमडइस्सं, मडमडाइस्सं (मः); (पि ५२८; चारु ३५)।

मडमडाइअ वि [मडमडायित] मड मड आवाज हो उस तरह मारा हुआ; (उत्तर १०३)।

मडय न [मृतक] मुड्दा, मुर्दा, शव; (पाअ; हे १, २०६; सुपा २१६)। °**गिह** न [°**गृह**] कब्र; (निचू ३)। °**चेइअ** न [°**चैत्य**] मृतक के दाह होने पर या गाड़ने पर बनाया गया चैत्य—स्मारक-मन्दिर; (आचा २, १०, १६)। °**डाह** पुं [°**दाह**] चिता, जहां पर शव फूँके जाते हों; (आचा २, १०, १६)। °**थूभिया** स्त्री [°**स्तूपिका**] मृतक के स्थान पर बनाया गया छोटा स्तूप; (आचा २, १०, १६)।

मडय पुं [दे] आराम, बगीचा; (दे ६, ११५)।

मडवोज्झा स्त्री [दे] शिबिका, पालकी; (दे ६, १२२)।

मडह वि [दे] १ लघु, छोटा; (दे ६, ११७; पाअ; सण)। २ स्वल्प, थोड़ा; (गा १०५; स ८; गउड; वज्जा ४२)।

मडहर पुं [दे] गर्व, अभिमान; (दे ६, १२०)।

मडहिय वि [दे] अल्पीकृत, न्यून किया हुआ; (गउड)।

मडहुल्ल वि [दे] लघु, छोटा; "मडहुल्लियाए किं तुह इमीए किं वा दलेहिं तलिणेहिं" (वज्जा ४८)।

मडिआ स्त्री [दे] समाहत स्त्री, आहत महिला; (दे ६, ११४)।

मडुवइअ वि [दे] १ हत, विध्वस्त; २ तीक्ष्ण; (दे ६, १४६)।

मड्ड सक [मृद्] मर्दन करना। मड्डइ; (हे ४, १२६; प्राकृ ६८)।

मड्डा स्त्री [दे] १ बलात्कार, हठ, जबरदस्ती; (दे ६, १४०; पाअ; सुर ३, १३६; सुख २, १५)। २ आज्ञा, हुकुम; (दे ६, १४०; सुपा २७६)।

मड्डिअ वि [मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह; (हे २, ३६; षड्; पि २६१)।

मड्डुअ देखो **मद्दुअ**; (राज)।

मढ देखो **मड्ड**। मढइ; (हे ४, १२६)।

मढ पुंन [मठ] संन्यासिओं का आश्रय, व्रतिओं का निवास-स्थान; "मढो" (हे १, १६६; सुपा २३४; वज्जा ३४; भवि), "मढं" (प्राप्र)।

मढिअ देखो **मड्डिअ**; (कुमा)।

मढिअ वि [दे] १ खचित; गुजराती में 'मढेलुं'; "एयाउ ओसहीओ तिधाउमढियाउ धारिज्जा" (सिरि ३७०)। २ परिवेष्टित; (दे २, ७५; पाअ)।

मढी स्त्री [मठिका] छोटा मठ; (सुपा ११३)।

मण सक [मन्] १ मानना। २ जानना। ३ चिन्तन करना। मणइ, मणसि; (षड्; कुमा)। कवकृ—**मणिज्जमाण**; (भग १३, ७; विसे ८१३)।

मण पुंन [मनस्] मन, अन्तःकरण, चित्त; (भग १३, ७; विसे ३५२५; स्वप्न ४५; दं २२; कुमा; प्रासू ४४; ४८;

१२१)। °अगुत्ति स्त्री [°अगुप्ति] मन का असंयम; (पि १५६)। °करण न [°करण] चिन्तन, पर्यालोचन; (श्रावक ३३७)। °गुत्त वि [°गुप्त] मन को संयम में रखने वाला; (भग)। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] मन का संयम; (उत्त २४, २)। °जाणुअ वि [°ज्ञ] १ मन को जानने वाला, मन का जानकार; २ सुन्दर, मनोहर; (प्राकृ १८)। °जीविअ वि [°जीविक] मन को आत्मा मानने वाला; (पणह १, २—पत्र २८)। °जोअ पुं [°योग] मन की चेष्टा, मनो-व्यापार; (भग)। °ज्ज, °ण्णु, °ण्णुअ देखो °जाणुअ; (प्राकृ १८; षड्)। °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] विद्या-विशेष, मन को स्तब्ध करने वाली दिव्य शक्ति; (पउम ७, १३७)। °नाण न [°ज्ञान] मन का साक्षात्कार करने वाला ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान; (कम्म ३, १८, ४, १९; १७; २१)। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मनःपर्यव-नामक ज्ञान वाला; (कम्म ४, ४०)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलों को मन के रूप में परिणत करने की शक्ति; (भग ६, ४)। °पज्जव पुं [°पर्यव] ज्ञान-विशेष, दूसरे के मन की अवस्था को जानने वाला ज्ञान; (भग; औप; विसे ८३)। °पज्जवि वि [°पर्यविन्] मनःपर्यव ज्ञान वाला; (पव २१)। °पसिणविज्जा स्त्री [°प्रश्नविद्या] मन के प्रश्नों के उत्तर देने वाली विद्या; (सम १२३)। °बलिअ वि [°बलिन्, °क] मनो-बल वाला, दृढ मन वाला; (पणह २, १; औप)। °मोहण वि [°मोहन] मन को मुग्ध करने वाला, चित्ताकर्षक; (गा १२८)। °योगि वि [°योगिन्] मन की चेष्टा वाला; (भग)। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] मन के रूप में परिणत होने वाला पुद्गल-समूह; (राज)। °वज्ज न [°वज्र] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °समिइ स्त्री [°समिति] मन का संयम; (ठा ८—पत्र ४२२)। °समिय वि [°समित] मन को संयम में रखने वाला; (भग)। °हंस पुं [°हंस] छन्द-विशेष; (पिंग)। °हर वि [°हर] मनोहर, सुन्दर, चित्ताकर्षक; (हे १, १५६; औप; कुमा)। °हरण पुंन [°हरण] पिंगल-प्रसिद्ध एक मात्रा-पद्धति; (पिंग)। °भिराम, °भिरामेल्ल वि [°अभिराम] मनोहर; (सम १४६; औप; उप पृ ३२२; उप २२० टी)। °म वि [°आप] सुन्दर, मनोहर; (सम १४६; विपा १, १; औप; कप्प)। देखो मणो°।

मणं देखो मणयं; (प्राकृ ३८)।

मणंसि वि [मनस्विन्] प्रशस्त मन वाला; (हे १, २६)। स्त्री—°णी; (हे १, २६)।

मणंसिल स्त्री [मनःशिला] लाल वर्ण की एक उप मणंसिला धातु, मनसिल, मैनसिल; (कुमा; हे १, २६)।

मणग पुं [मनक] एक जैन बाल-मुनि, महर्षि शय्यंभवसूरि का पुत्र और शिष्य; (कप्प; धर्मवि ३८)। देखो मणय।

मणगुलिया स्त्री [दे] पीठिका; (राय)।

मणण न [मनन] १ ज्ञान, जानना; २ समझना; (विसे ३५२५); ३ चिन्तन; (श्रावक ३३७)।

मणय पुं [मनक] द्वितीय नरक-भूमि का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ६)। देखो मणग।

मणयं अ [मनाग्] अल्प, थोड़ा; (हे २, १६६; पाअ; षड्)।

मणस देखो मण=मनस्; "पसन्नमणसो करिस्सामि" (पउम ६, ६६), "जस्सो चेव तवस्सिस्स होइ अहीणमणसस्स" (आचा ४३७)।

मणसिल } देखो मणंसिला; (कुमा; हे १, २६; जी ३;
मणसिला } स्वप्न ६४)।

मणसीकय वि [मनसिकृत] चिन्तित; (पण्ण ३४—पत्र ७८२; सुपा २४७)।

मणसीकर सक [मनसि + कृ] चिन्तन करना, मन में रखना। मणसीकरे; (उत्त २, २५)।

मणस्सि देखो मणंसि; (धर्मवि १४६)।

मणा देखो मणयं; (हे २, १६६; कुमा)।

मणाउ } अ) ऊपर देखो; (कुमा; भवि; पि ११४; हे
मणाउं } ४, ४१८; ४२६)।

मणागं ऊपर देखो; (उप १३२; महा)।

मणाल देखो मुणाल; (राज)।

मणालिया स्त्री [मृणालिका] पद्म-कन्द का मूल; (तंदु २०)। देखो मुणालिआ।

मणासिला देखो मणंसिला; (हे १, २६; पि ६४)।

मणि पुंस्त्री [मणि] पत्थर-विशेष, मुक्ता आदि रत्न; (कप्प; औप; कुमा; जी ३; प्रासू ४)। °अंग पुं [°अङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो आभूषण देती है; (सम १७)। °आर पुं [°कार] जौहरी, रत्नों के गहनों का व्यापारी; (दे ७, ७७; मुद्रा ७६; गाया १, १३; धर्मवि ३६)। °कंचण न [°काञ्चन] रुक्मि-पर्वत का एक शिखर; (ठा २, ३—पत्र ७०)। °कूड न [°कूट] रुचक पर्वत का एक शिखर; (दीव)। °क्खइअ वि [°खचित] रत्न-

जटित; (पि १६६)। °चइया स्त्री [°चयिता] नगरी-विशेष; (विपा २, ६)। °चूड पुं [°चूड] एक विद्याधर नृप; (महा)। °जाल न [°जाल] भूषण-विशेष, मणि-माला; (औप)। °तोरण न [°तोरण] नगर-विशेष; (महा)। °प देखो °व; (से ६, ४३)। °पेढिया स्त्री [°पीठिका] मणि-मय पीठिका; (महा)। °प्पभ पुं [°प्रभ] एक विद्याधर; (महा)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि; (कप्प)। °भूमि स्त्री [°भूमि] मणि-खचित जमीन; (स्वप्न ५४)। °मइय, °मय वि [°मय] मणि-मय, रत्न-निर्वृत्त; (सुपा ६२; महा)। °रह पुं [°रथ] एक राजा का नाम; (महा)। °व पुं [°प] १ यक्ष; २ सर्प, नाग; (से २, २३)। ३ समुद्र; (से ६, ५०)। °वई स्त्री [°मती] नगरी-विशेष; (विपा २, ६—पत्र ११४ टि)। °वंध पुं [°बन्ध] हाथ और प्रकोष्ठ के बीच का अवयव; (सण)। °वालय पुं [°पालक, °वालक] समुद्र; (से २, २३)। °सलागा स्त्री [°शलाका] मद्य-विशेष; (राज)। °हियय पुं [°हृदय] देव-विशेष; (दीव)।

मणिअ न [**मणित**] संभोग-समय का स्त्री का अव्यक्त शब्द; (गा ३६२; रंभा)।

मणिअं देखो **मणयं**; (षड्; हे २, १६६; कुमा)।

मणिअड (अप) पुं [**मणि**] माला का सुमेरु; (हे ४, ४१४)।

मणिच्छिअ वि [**मनईप्सित**] मनोऽभीष्ट; (सुपा ३८४)।

मणिज्जमाण देखो **मण**=मन्।

मणिट्ठ वि [**मनइष्ट**] मन को प्रिय; (भवि)।

मणिणायहर न [**दे. मनिणगागृह**] समुद्र, सागर; (दे ६, १२८)।

मणिरइआ स्त्री [**दे**] कटीसूत्र; (दे ६, १२६)।

मणीसा स्त्री [**मनीषा**] बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा; (पाअ)।

मणीसि वि [**मनीषिन्**] बुद्धिमान्, पण्डित; (कप्पू)।

मणीसिद वि [**मनीषित**] वाञ्छित; (नाट—मृच्छ ५७)।

मणु पुं [**मनु**] १ स्मृति-कर्ता मुनि-विशेष; (विसे १५०८; उप १५० टी)। २ प्रजापति-विशेष; "चोद्दहमणुचोग्गुणओ" (कुमा; राज)। ३ मनुज, मनुष्य; "देवत्ताओ मणुतं" (पउम २१, ६३; कम्म १, १६; २, १६)। ४ न. एक देव-विमान; (सम २)।

मणुअ पुं [**मनुज**] १ मनुष्य, मानव; (उवा; भग; हे १, ८; पाअ; कुमा; सं ८२; प्रासू ४५)। २ भगवान् श्रेयांसनाथ का शासन-यक्ष; (संति ७)। ३ वि. मनुष्य-संबन्धी; "तिरिया मणुया य दिव्वगा उवसग्गा तिविहाहियासिया" (सूअ १, २, २, १५)।

मणुइंद पुं [**मनुजेन्द्र**] राजा, नरपति; (पउम ८५, २२; सुर १, ३२)।

मणुएसर पुं [**मनुजेश्वर**] ऊपर देखो; (सुपा २०४)।

मणुज्ज, **मणुण्ण** वि [**मनोज्ञ**] सुन्दर, मनोहर; (पाअ; उप १४२ टी; सम १४६; भग)।

मणुस, **मणुस्स** पुंस्त्री [**मनुष्य**] १ मानव, मर्त्य; (आचा; पि ३००; आचा; ठा ४, २; भग; श्रा २८; सुपा २०३; जी १६; प्रासू २८)। स्त्री—**°स्सी**; (भग; पण्ण १८; पव २४१)। °खेत्त न [°क्षेत्र] मनुष्य-लोक; (जीव ३)। °सेणियापरिकम्म पुं [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक सूत्र; (सम १२८)।

मणुस्स वि [**मानुष्य**] मनुष्य-संबन्धी; "दिव्वं व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहियएणं" (आप २१)।

मणुस्सिंद पुं [**मनुष्येन्द्र**] राजा, नर-पति; (उत्त १८, ३७; उप पृ १४२)।

मणूस देखो **मणुस्स**; (हे १, ४३; औप; उवर १२२; पि ६३)।

मणे अ [**मन्ये**] विमर्श-सूचक अव्यय; (हे २, २०७; षड्; प्राकृ २६; गा १११; कुमा)।

मणो° देखो **मण**=मनस्। °गम न [°गम] देवविमान-विशेष; "पालगपुप्फगसोमणससिरिवच्छनंदियावत्तकामगमपीतिगममणोगमविमलसव्वओभद्दसरिसनामधेज्जेहिं विमाणेहिं ओइण्णा" (औप)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर; (हे २, ८३; उप २६४ टी)। २ पुं. गुल्म-विशेष; "सरियए णोमालियकोरिंटयवत्थुजीवगमणोज्जे" (पण्ण १—पत्र ३२)। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] सुन्दर, मनोहर; (हे २, ८३; पि २७६)। °भव पुं [°भव] कामदेव, कन्दर्प; (सुपा ६८; पिंग)। °भिरमणिज्ज वि [°भिरमणीय] सुन्दर, चित्ताकर्षक; (पउम ८, १४३)। °भू पुं [°भू] कामदेव, कन्दर्प; (कप्पू)। °मय वि [°मय] मानसिक; 'सारीरमणोमयाणि दुक्खाणि" (पण्ह १, ३—पत्र ५५)। °माणसिय वि [°मानसिक] मन में ही रहने वाला—वचन से अप्रकटित—मानसिक दुःख आदि; (णाया १, १—पत्र २६)।

°रम वि [°रम] १ सुन्दर, रमणीय; (पाअ)। २ पुं. एक विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष; (देवेन्द्र १३६)। ३ मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। ४ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६५)। ५ किन्नर-देवों की एक जाति; ६ रुचक द्वीप का अधिष्ठायक देव; (राज)। ७ तृतीय ग्रैवेयक-विमान; (पव १९४)। ८ आठवें देवलोक के इन्द्र का पारियानिक विमान; (इक)। ९ एक देव-विमान; (सम १७)। १० मिथिला का एक चैत्य; (उत्त ९, ८; ९)। ११ उपवन-विशेष; (उप ९८६ टी)। °रमा स्त्री [°रमा] १ चतुर्थ वासुदेव की पटरानी का नाम; (पउम २०, १८६)। २ भगवान् सुपार्श्वनाथ की दीक्षा-शिबिका; (सुपा ७५; विचार १२९)। ३ शक की अञ्जुका-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)। °रह पुं [°रथ] १ मन का अभिलाष; (औप; कुमा; हे ४, ४१४)। २ पक्ष का तृतीय दिवस; (सुज्ज १०, १४—पत्र १४७)। °हंस पुं [°हंस] छन्द-विशेष; (पिंग)। °हर पुं [°हर] १ पक्ष का तृतीय दिवस; (सुज्ज १०, १४)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ वि. रमणीय, सुन्दर; (हे १, १५६; षड्; स्वप्न ५२; कुमा)। °हरा स्त्री [°हरा] भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२९)। °हव देखो °भव; (स ८१; कप्पू)। °हिराम वि [°भिराम] सुन्दर; (भवि)।

मणोसिला देखो **मणंसिला**; (हे १, २६; कुमा)।

मण्ण देखो **मण=मन्** । मण्णइ; (पि ४८८)। कर्म—मण्णिज्जइ; (कुप्र १०९)। वकृ—**मण्णमाण**; (नाट—चैत १३३)।

मण्णण न [**मानन**] मानना, आदर; (उप १५४)।

मण्णा देखो **मन्ना**; (राज)।

मण्णिय देखो **मन्निय**; (राज)।

मण्णु देखो **मन्नु**; (गा ११; ५०८; दे ६, ७१; वेणी १७)।

मण्णे देखो **मणे**; (कप्प)।

मत्त वि [**मत्त**] १ मद-युक्त, मतवाला; (उवा; प्रासू ६४; ६८; भवि)। २ न. मद्य, दारू; (ठा ७)। ३ मद, नशा; (पव १७१)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष; (ठा २, ३; इक)।

मत्त देखो **मेत्त=मात्र**; "वयणमत्तमिहाणं" (रंभा)।

मत्त न [**अमत्र, मात्र**] पात्र, भाजन; (आचा २, १, ६, ३; ओघ २५१)। देखो **मत्तय**।

मत्त (अप) देखो **मच्च=मर्त्य**; (भवि)।

मत्तंगय पुं [**मत्ताङ्गक, °द**] कल्पवृक्ष की एक जाति, मद्य देने वाला कल्पवृक्ष; (सम १७; पव १७१)।

मत्तंड पुं [**मार्तण्ड**] सूर्य, रवि; (सम्मत्त १४५; सिरि १००८)।

मत्तग न [**दे**] पेशाब, मूत्र; (कुलक ९)।

मत्तग } पुंन [**अमत्र, मात्रक**] १ पात्र, भाजन; २ छोटा
मत्तय } पात्र; "विइज्जमो मत्तमो होइ" (बृह ३; कप्प)।

मत्तय देखो **मत्तग=दे**; (कुलक १३)।

मत्तल्ली स्त्री [**दे**] बलात्कार; (दे ६, ११३)।

मत्तवारण पुंन [**मत्तवारण**] बरंडा, बरामदा, दालान; (दे ६, १२३; सुर ३, १००; भवि)।

मत्तवाल पुं [**दे**] मतवाला, मदोन्मत्त; (दे ६, १२२; षड्; सुख २, १७; सुपा ४८६)।

मत्ता स्त्री [**मात्रा**] १ परिमाण; (पिंड ६५१)। २ अंश, भाग, हिस्सा; (स ४८३)। ३ समय का सूक्ष्म माप; ४ सूक्ष्म उच्चारण-काल वाला वर्णावयव; (पिंग)। ५ अल्प, लेश, लव; (पाअ)।

मत्ता अ [**मत्वा**] जानकर; (सूअ १, २, २, ३२)।

मत्तालंब पुं [**दे. मत्तालम्ब**] बरंडा, बरामदा; (दे ६, १२३; सुर १, ५७)

मत्तिया स्त्री [**मृत्तिका**] मिट्टी; (णाया १—पत्र २५)। °वई स्त्री [°वती] नगरी-विशेष, दशार्णदेश की राजधानी; (पव २७५)।

मत्थ } पुंन [**मस्त, °क**] माथा, सिर; (से १, १; स
मत्थग } ३८५; औप)। °त्थ वि [°स्थ] सिर में
मत्थय } स्थित; (गउड)। °मणि पुं [°मणि] शिरो-मणि, प्रधान, मुख्य; (उप ६४८ टी)।

मत्थयधोय वि [**दे. धौतमस्तक**] दासत्व से मुक्त, गुलामी से मुक्त किया हुआ; (णाया १, १—पत्र ३७)।

मत्थुलुंग } न [**मस्तुलुङ्ग**] १ मस्तक-स्नेह, सिर में से
मत्थुलुय } निकलता एक प्रकार का चिकना पदार्थ; (पण्ह १, १; तंदु १०)। २ मेद का फिप्फिस आदि; (ठा ३, ४—पत्र १५०; भग; तंदु १०)।

मथिय देखो **महिअ=मथित**; (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

मद देखो **मय=मद**; (कुमा; प्रयौ १६; पि २०२)।

मद (मा) देखो **मय=मृत**; (प्राकृ १०३)।

मदण देखो **मयण**; (स्वप्न ६३; नाट—मृच्छ २३१)।

मदणसला(गा) देखो **मयणसलागा**; (पराण १—पत्र ५४)।

मदणा देखो **मयणा**=मदना; (गाया २—पत्र २५१) ।

मदणिज्ज वि [**मदनीय**] कामोद्दीपक, मदन-वर्धक; (गाया १, १—पत्र १६; औप) ।

मदि देखो **मइ**=मति; (मा ३२; कुमा; पि १६२) ।

मदीअ देखो **मईअ**; (स २३२) ।

मदुवी देखो **मउई**; (चंड) ।

मदोली स्त्री [**दे**] दूती, दूत-कर्म करने वाली स्त्री; (षड्) ।

मद्द सक [**मृद्**] १ चूर्ण करना । २ मालिश करना, मसलना, मलना । मद्दाहिं; (कप्प) । कर्म—मद्दीअदि; (नाट—मृच्छ १३५) । हेकृ—**मद्दिउं**; (पि ५८५) ।

मद्दण न [**मर्दन**] १ अंग-चप्पी, मालिश; (सुपा २४) । २ हिंसा करना; "तसथावरभूयमद्दणं विविहं" (उव) । ३ वि. मर्दन करने वाला; (ती ३) ।

मद्दल पुं [**मर्दल**] वाद्य-विशेष, मुरज, मृदंग; (दे ६, ११६; सुर ३, ६८; सिरि १५७) ।

मद्दलिअ वि [**मार्दलिक**] मृदंग बजाने वाला; (सुपा २६४; ५५३) ।

मद्दव न [**मार्दव**] मृदुता, नम्रता, विनय, अहंकार-निग्रह; (औप; कप्प) ।

मद्दवि वि [**मार्दविन्**] नम्र, विनीत; "अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं" (सूअ २, १, ५७; आचा) ।

मद्दविअ वि [**मार्दविक, °त**] ऊपर देखो; (बृह ४; वव १) ।

मद्दिअ देखो **मड्डिअ**; (पाअ) ।

मद्दी स्त्री [**माद्री**] १ राजा शिशुपाल की मा का नाम; (सूअ १, ३, १, १ टी) । २ राजा पाण्डु की एक स्त्री का नाम; (वेणी १७१) ।

मद्दुअ पुं [**मद्दुक**] भगवान् महावीर का राजगृह-निवासी एक उपासक; (भग १८, ७—पत्र ७५०) ।

मद्दुग पुं [**मद्गु, °क**] पक्षि-विशेष, जल-वायस; (भग ७, ६—पत्र ३०८) । देखो **मग्गु** ।

मद्दुग देखो **मुदुग**; (राज) ।

मधु देखो **महु**; (षड्; रंभा; पिंग) ।

मधुर देखो **महुर**; (निचू १; प्राकृ ८५) ।

मधुसित्थ देखो **महुसित्थ**; (ठा ४, ४—पत्र २७१) ।

मधुला स्त्री [**दे मधुला**] पाद-गण्ड; (राज) ।

मन अ [**दे**] निषेधार्थक अव्यय, मत, नहीं; (कुमा) ।

मनुस्स देखो **मणुस्स**; (चंड; भग) ।

मन्न देखो **मण्ण** । मन्नइ, मन्नसि; (आचा; महा), मन्नंते, मन्नेसि; (रंभा) । कर्म—मन्निज्जउ; (महा) । वकृ—**मन्नंत, मन्नमाण**; (सुर १४, १७१; आचा; महा; सुपा ३०७; सुर ३, १७४) ।

मन्न देखो **माण**=मानय् । कृ—**मन्न, मन्नाय, मन्नणिज्ज, मन्नियव्व, मन्निय**; (उप १०३६; धर्मवि ७६; भवि; सुर १०, ३८; सुपा ३६८; ठा १ टी—पत्र २१; सं ३५) ।

मन्ना स्त्री [**मनन**] १ मति, बुद्धि; (ठा १—पत्र १६) । २ आलोचन, चिन्तन; (सूअ २, १, ४१; ठा १) ।

मन्ना स्त्री [**मान्या**] अभ्युपगम, स्वीकार; (ठा १—पत्र १६) ।

मन्नाय देखो **मन्न**=मानय् ।

मन्नाविय वि [**मानित**] मनाया हुआ; (सुपा ११६) ।

मन्निय वि [**मत**] माना हुआ; (सुपा ६०५; कुमा) ।

मन्नु पुं [**मन्यु**] १ क्रोध, गुस्सा; (सुपा ६०४) । २ दैन्य, दीनता; "सोयसमुब्भूयगरुयमन्नुवसा" (सुर ११, १४४) । ३ अहंकार; ४ शोक, अफसोस; ५ क्रतु, यज्ञ; (हे २, २५; ४४) ।

मन्नुइय वि [**मन्युवित**] मन्यु-युक्त, कुपित; (सुख ४, १) ।

मन्नुसिय वि [**दे**] उद्विग्न; (स ५६६) ।

मन्ने देखो **मण्णे**; (हे १, १७१; रंभा) ।

मप्प न [**दे**] माप, बाँट; "तेण य सह वरुणेणं आणेवि य तस्स हट्टमप्पाणि" (सुपा ३६२) ।

मब्भीसडी } (अप) स्त्री [**मा भैषीः**] अभय-वचन; (हे
मब्भीसा } ४, ४२२) ।

ममकार पुं [**ममकार**] ममत्व, मोह, प्रेम, स्नेह; (गच्छ २, ४२) ।

ममच्चय वि [**मदीय**] मेरा; (सुख २, १५) ।

ममत्त न [**ममत्व**] ममता, मोह, स्नेह; (सुपा २६) ।

ममया स्त्री [**ममता**] ऊपर देखो; (पंचा १५, ३२) ।

ममा सक [**ममाय्**] ममता करना । ममाइ, ममायए; (सूअ १, १, ४२; उव) । वकृ—**ममायमाण, ममायमीण** (आचा; सूअ १, ६, २१) ।

ममाइ वि [**ममत्विन**] ममता वाला; (सुअ १, १, १, ४)।

ममाइय वि [**ममायित**] जिस पर ममता की गई हो वह; (आचा)।

ममाय वि [**ममाय**] ममत्व करने वाला; (निचू ११)।

ममि वि [**मामक**] मेरा, मदीय; "ममं वा ममिं वा" (सुअ २, २, ६)।

ममूर सक [**चूर्णय्**] चूरना। ममूरइ; (धात्वा १४८)।

मम्म पुंन [**मर्मन्**] १ जीवन-स्थान; २ सन्धि-स्थान; (गा ४४६; उप ६६१; हे १, ३२)। ३ मरण का कारण-भूत वचन आदि; (णाया १, ८)। ४ गुप्त बात; (प्रासू ११; सुपा ३०७)। ५ रहस्य, तात्पर्य; (श्रु २८)। °**य** वि [°**ग**] मर्म-वाचक (शब्द); (उत्त १, २५; सुख १, २५)।

मम्मक पुं [**दे**] गर्व, अहंकार; (षड्)।

मम्मका स्त्री [**दे**] १ उत्कण्ठा; २ गर्व; (दे ६, १४३)।

मम्मण न [**मन्मन**] १ अव्यक्त वचन; (हे २, ६१; दे ६, १४१; विपा १, ७; वा २६)। २ वि. अव्यक्त वचन बोलने वाला; (श्रा १२)।

मम्मण पुं [**दे**] १ मदन, कन्दर्प; २ रोष, गुस्सा; (दे ६, १४१)।

मम्मणिआ स्त्री [**दे**] नील मक्षिका; (दे ६, १२३)।

मम्मर पुं [**मर्मर**] शुष्क पत्तों का आवाज; (गा ३६५)।

मम्मह पुं [**मन्मथ**] कामदेव, कन्दर्प; (गा ४३०; अभि ६५)।

मम्मी स्त्री [**दे**] मामी, मातुल-पत्नी; (दे ६, ११२)।

मय न [**मत**] मनन, ज्ञान; (सुअ २, १, ५०)। २ अभिप्राय, आशय; (ओघनि १६०; सुअनि १२०)। ३ समय, दर्शन, धर्म; "समओ मयं" (पाअ; सम्मत्त २२८)। ४ वि. माना हुआ; (कम्म ४, ४६)। ५ इष्ट, अभीष्ट; (सुपा ३७१)। °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] दार्शनिक; (सुपा ५८२)।

मय पुं [**मय**] १ उष्ट्र, ऊँट; (सुख ६, १)। २ अश्वतर, खच्चर; "मयमहिसखरहकेसरि—" (पउम ६, ५६)। ३ एक विद्याधर-नरेश; (पउम ८, १)। °**हर** पुं [°**धर**] ऊँट वाला; (सुख ६, १)।

मय वि [**मृत**] मरा हुआ, जीव-रहित; (णाया १, १; उव; सुर २, १८; प्रासू १७; प्राप्र)। °**किच्च** न [°**कृत्य**] मरण के उपलक्ष में किया जाता भोज आदि कर्म; (विपा १, ३)।

मय पुंन [**मद**] १ गर्व, अभिमान; "पण्णाइं मयाइं विगिंच धीरा" (सुअ १, १३, १६; पाअ १३; उप ७२८ टी; कुमा; कम्म १, ३६)। २ हाथी के गण्ड-स्थल से भरता प्रवाही पदार्थ; (णाया १, १—पत्र ६५; कुमा)। ३ आमोद, हर्ष; ४ कस्तूरी; ५ मत्तता, नशा; ६ नद, बड़ी नदी; ७ वीर्य, शुक्र; (प्राप्र)। °**करि** पुं [°**करिन्**] मद वाला हाथी; (महा)। °**गल** वि [°**कल**] १ मद से उत्कट, मदो में चूर; "मअगलकुंजरगमणी" (पिंग)। २ पुं. हाथी; (सुपा ६०; हे १, १८२; पाअ; दे ६, १२५)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**णासणी** स्त्री [°**नाशनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४०)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४३)। °**मंजरी** स्त्री [°**मञ्जरी**] एक स्त्री का नाम; (महा)। °**वारण** पुं [°**वारण**] मद वाला हाथी; "मयवारणो व मत्तो निवाडिया-लाणवरखंभो" (महा)।

मय पुं [**मृग**] १ हरिण; (कुमा; उप ७२८ टी)। २ पशु, जानवर; ३ हाथी की एक जाति; ४ नक्षत्र-विशेष; ५ कस्तूरी; ६ मकर राशि; ७ अन्वेषण; ८ याचन, माँग; ६ यज्ञ-विशेष; (हे १, १२६)। °**च्छी** स्त्री [°**ाक्षी**] हरिण के नेत्रों के समान नेत्र वाली; (सुर ४, १६; सुपा ३५५; कुमा)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] सिंह; (स १११)। °**णाहि** पुंस्त्री [°**नाभि**] कस्तूरी; (पाअ; सुपा २००; गउड)। °**तण्हा** स्त्री [°**तृष्णा**] धूप में जल-भ्रान्ति; (दे; से ६, ३५)। °**तण्हिआ** स्त्री [°**तृष्णिका**] वही अर्थ; (पि ३७५)। °**तिण्हा** देखो °**तण्हा**; (पि ५४)। °**ति-ण्हिआ** देखो °**तण्हिआ**; (पि ५४)। °**धुत्त** पुं [°**धूर्त**] शृगाल, सियार; (दे ६, १२५)। °**नाभि** देखो °**णाहि**; (कुमा)। °**राय** पुं [°**राज**] सिंह, केसरी; (पउम २, १७; उप पृ ३०)। °**लंछण** पुं [°**लाञ्छन**] चन्द्रमा; (पाअ; कुमा; सुर १३, ५३)। °**लोअणा** स्त्री [°**लोचना**] गोरोचन, गोरोचना, पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष; (अभि १२७)। °**ारि** पुं [°**ारि**] सिंह; (पाअ)। °**ारिदमण** पुं [°**ारि-दमन**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६२)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] सिंह, केसरी; (पाअ; स ६)। देखो **मिअ, मिग**=मृग।

मयंक } देखो **मिअंक**; (हे १, १७७; १८०; कुमा; षड्;
मयंग } गा ३६६; रंभा)।

मयंग देखो **मायंग**=मातंग; "कूबर वरुणो भिउडी गोमेहो वामण मयंगो" (पव २६)।

मयंग पुं [**मृदङ्ग**] वाद्य-विशेष; (प्राकृ ८)।

मयंगय पुं [**मतङ्गज**] हाथी, हस्ती; (पउम ८०, ६६; उप पृ २६०)।

मयंगा स्त्री [**मृतगङ्गा**] जहां पर गंगा का प्रवाह रुक गया हो वह स्थान; (णाया १, ४—पत्र ६६)।

मयंतर न [**मतान्तर**] भिन्न मत, अन्य मत; (भग)।

मयंद देखो **मइंद**=मृगेन्द्र; (सुपा ६२)।

मयंध वि [**मदान्ध**] मद में अन्ध बना हुआ, मदोन्मत्त; (सुर २, ६६)।

मयग वि [**मृतक**] १ मरा हुआ; २ न. मुर्दा; (णाया १, ११; कुप्र २६; औप)। °**किच्च** न [°**कृत्य**] श्राद्ध आदि कर्म; (णाया १, २)।

मयड पुं [**दे**] आराम, बगीचा; (दे ६, ११५)।

मयण पुं [**मदन**] १ कन्दर्प, कामदेव; (पाअ; धण २५; कुमा; रंभा)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र; (पउम ६१, २०)। ३ एक वणिक्-पुत्र; (सुपा ६१७)। ४ छन्द का एक भेद; (पिंग)। ५ वि. मद-कारक, मादक; "मयणा दरनिव्वलिया निव्वलिया जह कोद्दवा तिविहा" (विसे १२२०)। ६ न. मीन, मोम; "मयणो मयणं विअ विलीणो" (धण २५; पाअ; सुर २, २४६)। °**घरिणी** स्त्री [°**गृहिणी**] काम-प्रिया, रति; (कुप्र १०६)। °**तालंक** पुं [°**ताटङ्क**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**तेरसी** स्त्री [°**त्रयोदशी**] चैत्र मास की शुक्ल त्रयोदशी तिथि; (कुप्र ३७८)। °**दुम** पुं [°**द्रुम**] वृक्ष-विशेष; (से ७, ६६)। °**फल** न [°**फल**] फल-विशेष, मैनफल; "तओ तेणुप्पलं मयणफलेण भावियं मणुस्स-हत्थे दिन्नं, एयं वररुइस्स देज्जाहि" (सुख २, १७)। °**मंजरी** स्त्री [°**मञ्जरी**] १ राजा चण्डप्रद्योत की एक स्त्री का नाम; २ एक श्रेष्ठि-कन्या; (महा)। °**रेहा** स्त्री [°**रेखा**] एक युवराज की पत्नी; (महा)। °**वेय** पुं [°**वेग**] पुरुष-विशेष का नाम; (भवि)। °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] राजा श्रीपाल की एक पत्नी; (सिरि ५३)। °**हरा** स्त्री [°**गृह**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**हल** देखो °**फल**; "मयणहल-रुंभओ ता उव्वमिया चंदहासमुरा" (धर्मवि ६४)।

मयणंकुस पुं [**मदनाङ्कुश**] श्रीरामचन्द्र का एक पुत्र, कुश; (पउम ६७, ६)।

मयणसलागा } स्त्री [**दे. मदनशलाका**] मैना, सारिका;
मयणसलाया } (जीव १ टी—पत्र ४१; दे ६, ११६)।

मयणसाला स्त्री [**दे. मदनशाला**] सारिका-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

मयणा स्त्री [**दे. मदना**] मैना, सारिका; (उप १२६ टी; आव १)।

मयणा स्त्री [**मदना**] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक पटरानी; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ शक्र के लोकपाल की एक स्त्री; (ठा ४, १—पत्र २०४)।

मयणाय पुं [**मैनाक**] १ द्वीप-विशेष; २ पर्वत-विशेष; (भवि)।

मयणिज्ज देखो **मदणिज्ज**; (कप्प; पगण १७)।

मयणिवास पुं [**दे**] कन्दर्प, कामदेव; (दे ६, १२६)।

मयर पुं [**मकर**] १ जलजन्तु-विशेष, मगर-मच्छ; (औप; सुर १३, ४६)। २ राशि-विशेष, मकर राशि; (सुर १३, ४६; विचार १०६)। ३ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २६)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**केउ** पुं [°**केतु**] कामदेव, कन्दर्प; (कप्पू)। °**द्धय** पुं [°**ध्वज**] वही; (पाअ; कुमा; रंभा)। °**लंछण** पुं [°**लाञ्छन**] वही; (कप्पू; पि ५४)। °**हर** पुंन [°**गृह**] वही; (पाअ; से १, १८; ४, ४८; वज्जा १५४; भवि)।

मयरंद पुं [**दे. मकरन्द**] पुष्प-रज, पुष्प-पराग; (दे ६, १२३; पाअ; कुमा ३, ५४)।

मयरंद पुं [**मकरन्द**] पुष्प-रस, पुष्प-मधु; (दे ६, १२३ सुर ३, १०; प्रासू ११३; कुमा)।

मयल देखो **मइल**=मलिन; (सुपा २६२)।

मयलणा देखो **मइलणा**; (सुपा १२४; २०६)।

मयलवुत्ती [**दे**] देखो **मइलपुत्ती**; (दे ६, १२५)।

मयलिअ देखो **मलिणिअ**; (उप ७२८ टी)।

मयल्लिगा स्त्री [**मतल्लिका**] प्रधान, श्रेष्ठ; "कूडक्खरविओ (?उ)मयल्लिगाणं" (रंभा १७)।

मयह देखो **मगह**। °**सामिय** पुं [°**स्वामिन्**] मगध देश का राजा; (पउम ६१, ११)। °**पुर** न [°**पुर**] राज गृह नगर; (वसु)। °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] मगध देश का राजा; (पउम २०, ४७)।

मयहर पुं [**दे**] १ ग्राम-प्रधान, ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया; (पव २६८; महा; पउम ८३, १६) । २ वि. वडील, मुखिया, नायक; "मयलहरूचारगहवहागणमयहरेण" (स २८०; महानि ४; पउम ८३, १३) । स्त्री--°**रिगा**, °**रिया**, °**री**; (उप १०३१ टी; सुर १, ३१; महा; सुपा ७८; १२६) ।

मयाई स्त्री [**दे**] शिरो-माला; (दे ६, ११५) ।

मयार पुं [**मकार**] १ 'म' अक्षर; २ मकारादि अश्लील — अवाच्य — शब्द; "जत्थ जयारमयारं समणी जंपइ गिहत्थपच्च-क्खं" (गच्छ ३, ४) ।

मयाल (अप) देखो **मराल**; (पिंग) ।

मयालि पुं [**मयालि**] जैन महर्षि-विशेष — १ एक अन्तकृद् मुनि; (अंत १४) । २ एक अनुत्तर-गामी मुनि; (अनु १) ।

मयाली स्त्री [**दे**] लता-विशेष, निद्राकरी लता; (दे ६, ११६; पाअ) ।

मर अक [**मृ**] मरना । **मरइ**, **मरए**; (हे ४, २३४; भग; उव; महा; षड्), **मरं**; (हे ३, १४१) । **मरिज्जइ**, **मरि-ज्जउ**; (भवि; पि ४७७)। भूका—**मरही**, **मरीअ**; (आचा; पि ४६६) । भवि—**मरिस्ससि**; (पि ५२२) । वकृ— **मरंत**, **मरमाण**; (गा ३७५; प्रासू ६४; सुपा ४०५; भग; सुपा ६५१; प्रासू ८३) । संकृ—**मरिऊण**; (पि ५८६)। हेकृ—**मरिउं**, **मरेउं**; (संचि ३४) । कृ—**मरियव्व**; (अंत २४; सुपा २१५; ५०१; प्रासू १०६), **मरिएव्वउं** (अप) ; (हे ४, ४३८) ।

मर पुं [**दे**] १ मशक; २ उल्लू, घूक; (दे ६, १४०) ।

मरअद } **मरगय** } पुंन [**मरकत**] नील वर्ण वाला रत्न-विशेष, पन्ना; (संक्षि ६; हे १, १८२; औप; षड्; गा ७५; काप्र ३१), "परिकम्मिओवि बहुसो काओ किं मरगओ होइ" (कुप्र ४०३) ।

मरजीवय पुं [**दे**, **मरजीवक**] समुद्र के भीतर उतर कर जो वस्तु निकालने का काम करता है वह; (सिरि ३८५) ।

मरट्ट पुं [**दे**] गर्व, अहंकार; (दे ६, १२०; सुर ४, १५४; प्रासू ८५; ती ३; भवि; सण; हे ४, ४२२; सिरि ६६२), "अखिलमइ(?र)ट्टकंदप्पमद्दणे लद्धजयपडायस्स" (धर्मवि ६७) ।

मरट्टा स्त्री [**दे**] उत्कर्ष;

"एईइ अहरहरिआरुणिममरट्टाइ(? इ) लज्जमाणाइ ।

चिबलताइ उब्बंधणं व वल्लीसु विरयंति ॥"

(कुप्र २६८) ।

मरट्ठ (अप) देखो **मरहट्ठ**; (पिंग) ।

मरढ देखो **मरहट्ट** । स्त्री—°**ढी**; (कप्पू) ।

मरण पुंन [**मरण**] मौत, मृत्यु; (आचा; भग; पाअ; जी ४३; प्रास १०७; ११६), "समा मरणा सव्वे तब्भवमरणेण णायव्वा" (पव १५७) ।

मरल देखो **मराल**=मराल; (प्राकृ ५) ।

मरह सक [**मृष्**] क्षमा करना । "खमंतु मरहंतु णं देवा-णुप्पिया" (णाया १, ८—पत्र १३५) ।

मरहट्ट पुंन [**महाराष्ट्र**] १ बड़ा देश; २ देश-विशेष, महाराष्ट्र, मराठा; "मरहट्ठं मरहट्टं" (हे १, ६६; प्राकृ ६; कुमा) । ३ सुराष्ट्र; (कुमा ३, ६०) । ४ पुं. महा-राष्ट्र देश का निवासी, मराठा; (पण्ह १, १—पत्र १४; पिंग) । ५ छन्द-विशेष; (पिंग) ।

मरहट्ठी स्त्री [**महाराष्ट्री**] १ महाराष्ट्र की रहने वाली स्त्री; २ प्राकृत भाषा का एक भेद; (पि ३५४) ।

मराल वि [**दे**] अलस, मन्द, आलसी; (दे ६, ११२; पाअ) ।

मराल पुं [**मराल**] १ हंस पक्षी; (पाअ) । २ छन्द-विशेष; (पिंग) ।

मराली स्त्री [**दे**] १ सारसी, सारस पक्षी की मादा; २ दूती; ३ सखी; (दे ६, १४२) ।

मरिअ वि [**मृत**] मरा हुआ; (सम्मत्त १३६) ।

मरिअ वि [**दे**] १ त्रुटित, टूटा हुआ; २ विस्तीर्ण; (षड्) ।

मरिअ देखो **मिरिअ**; (प्रयौ १०५; भास ८ टी) ।

मरिइ देखो **मरीइ**, "अह उप्पन्ने नाणे जिणस्स, मरिई तओ य निक्खंतो" (पउम ८२, २४) ।

मरिस सक [**मृष्**] सहन करना, क्षमा करना । **मरिसइ**, **मरिसेइ**, **मरिसउ**; (हे ४, २३५; महा; स ६७०) । कृ— **मरिसियव्व**; (स ६७०) ।

मरिसावणा स्त्री [**मर्षणा**] क्षमा; (स ६७१) ।

मरीइ पुं [**मरीचि**] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र और भरत चक्रवर्ती का पुत्र, जो भगवान् महावीर का जीव था; (पउम ११, ६४) । २ पुंस्त्री. किरण; (पण्ह १, ४— पत्र ७२; धर्मसं ७२३) ।

मरीइया स्त्री [**मरीचिका**] १ किरण-समूह; २ मृग-तृष्णा, किरण में जल-भ्रान्ति; (राज) ।

मरीचि देखो **मरीइ**; (औप; सुज्ज १, ६)।

मरीचिया देखो **मरीइया**; (औप)।

मरु पुं [**मरुत्**] १ पवन, वायु; २ देव, देवता; ३ सुगन्धी वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा; (षड्)। ४ हनूमान का पिता; (पउम ५३, ७६)। °**णंदण** पुं [°**नन्दन**] हनूमान; (पउम ५३, ७६)। °**स्सुय** पुं [°**सुत**] वही; (पउम १०१, १)। देखो **मरुअ**=मरुत्।

मरु } पुं [**मरु**, °**क**] १ निर्जल देश; (णाया १, **मरुअ** } १६—पत्र २०२; औप)। २ देश-विशेष, मारवाड़, (ती ५; महा; इक; पगह १, ४—पत्र ६८)। ३ पर्वत, ऊँचा पहाड़; (निचू ११)। ४ वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा; (पगह २, ५—पत्र १५०)। ५ ब्राह्मण, विप्र; (सुख २, ३७)। ६ एक नृप-वंश; ७ मरु-वंशीय राजा; "तस्स य पुट्टीए नंदो पणपन्नसयं च होइ वासाणं। मरुयाणं अट्ठसयं" (विचार ४६३)। ८ मरु देश का निवासी; (पगह १, १)। °**कंतार** न [°**कान्तार**] निर्जल जंगल; (अच्चु ८५)। °**त्थली** स्त्री [°**स्थली**] मरु-भूमि; (महा)। °**भू** स्त्री [°**भू**] वही; (श्रा २३)। °**य** वि [°**ज**] मरु देश में उत्पन्न; (पगह १, ४—पत्र ६८)।

मरुअ देखो **मरु**=मरुत्; (पगह १, ४—पत्र ६८)। २ एक देव-जाति; (ठा २, २)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] वानरद्वीप के एक राजा का नाम; (पउम ६, ६७)। °**वसभ** पुं [°**वृषभ**] इन्द्र; (पगह १, ४—पत्र ६८)।

मरुअअ } पुं [**मरुवक**] वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा; (गउड; **मरुअग** } पगण १—पत्र ३४)।

मरुआ स्त्री [**मरुता**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत)।

मरुइणी स्त्री [**मरुकिणी**] ब्राह्मण-स्त्री, ब्राह्मणी; (विसे ६२८)।

मरुंड देखो **मुरुंड**; (अंत; औप; णाया १, १—पत्र ३७)।

मरुकुंद पुं [**दे. मरुकुन्द**] मरुआ, मरुवे का गाछ; (भवि)।

मरुग देखो **मरुअ**=मरुक; (पगह १, १—पत्र १४; इक)।

मरुदेव पुं [**मरुदेव**] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिन-देव; (सम १५३)। ३ एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०; पउम ३, ५५)।

मरुदेवा } स्त्री [**मरुदेवा**, °**वी**] १ भगवान् ऋषभदेव की **मरुदेवी** } माता का नाम; (उव; सम १५०; १५१)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर मुक्ति पाई थी; (अंत)।

मरुद्देवा स्त्री [**मरुद्देवा**] भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर मुक्ति पाने वाली राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)।

मरुल्ल पुं [**दे**] भूत, पिशाच; (दे ६, ११४)।

मरुवय देखो **मरुअअ**; (गा ६७७; कुमा; विक्र २६)।

मरुस देखो **मरिस**। मरुसिज्ज; (भवि)।

मल देखो **मद्द**। मलइ, मलेइ; (हे ४, १२६; प्राकृ ६८; भवि), मलेमि; (से ३, ६३), मलेंति; (सुर १, ६७)। कर्म—मलिज्जइ; (पंचा १६, १०)। वकृ—**मलेंत**; (से ४, ४२)। कवकृ—**मलिज्जंत**; (से ३, १३)। संकृ—**मलिऊण, मलिऊणं**; (कुमा; पि ५८५)। कृ—**मलेव्व**; (वै ६६; निसा ३)।

मल पुं [**दे**] स्वेद, पसीना; (दे ६, १११)।

मल पुंन [**मल**] १ मैल; (कुमा; प्रासू २५)। २ पाप; (कुमा)। ३ बँधा हुआ कर्म; (चेइय ६२२)।

मलंपिअ वि [**दे**] गर्वी, अहंकारी; (दे ६, १२१)।

मलण न [**मर्दन, मलन**] मर्दन, मलना; (सम १२५; गउड; दे ३, ३४; सुपा ४४०; पंचा १६, १०)।

मलय पुं [**दे. मलक**] आस्तरण-विशेष; (णाया १, १—पत्र १३; १, १७—पत्र २२६)।

मलय पुं [**दे. मलय**] १ पहाड़ का एक भाग; (दे ६, १४४)। २ उद्यान, बगीचा; (दे ६, १४४; पाअ)।

मलय पुं [**मलय**] १ दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत; (सुपा ४५६; कुमा; षड्)। २ मलय-पर्वत के निकट-वर्ती देश-विशेष; (पव २७५; पिंग)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ देवविमान-विशेष; (देवेन्द्र १४३)। ५ न. श्रीखण्ड, चन्दन; (जीव ३)। ६ पुंस्त्री. मलय देश का निवासी; (पगह १, १)। °**केउ** पुं [°**केतु**] एक राजा का नाम; (सुपा ६०७)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (इक; राज)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक जैन उपासक का नाम; (सुपा ६४५)। °**द्दि** पुं [°**द्रि**] पर्वत-विशेष; (सुपा ४७७)। °**भव** वि [°**भव**] १ मलय देश में उत्पन्न। २ न. चन्दन; (गउड)। °**मई** स्त्री [°**मती**] राजा मलयकेतु की स्त्री; (सुपा ६०७)। °**य** [°**ज**] देखो °**भव**; (राज)। °**रुह** पुं [°**रुह**] चन्दन का पेड़; (सुर १, २८)। २ न. चन्दन-काष्ठ; (पाअ)।

°चल पुं [°चल] मलय पर्वत; (सुपा ४४६)। °णिल पुं [°निल] मलयाचल से बहता शीतल पवन; (कुमा)। °यल देखो °चल; (रंभा)।

मलय वि [मलयज] १ मलय देश में उत्पन्न; (अणु)। २ न. चन्दन; (भवि)।

मलवट्टी स्त्री [दे] तरुणी, युवति; (दे ६, १२४)।

मलहर पुं [दे] तुमुल-ध्वनि; (दे ६, १२०)।

मलि वि [मलिन्] मल वाला, मल-युक्त; (भवि)।

मलिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह; (गा ११०; कुमा; हे ३, १३५; औप; णाया १, १)।

मलिअ न [दे] १ लघु क्षेत्र; २ कुडव; (दे ६, १४४)।

मलिअ वि [मलित] मल-युक्त, मलिन; "मलमलियदेहवत्था" (सुपा १६६; गउड)।

मलिज्जंत देखो मल=मृद्।

मलिण वि [मलिन] मैला, मल-युक्त; (कुमा; सुपा ६०१)।

मलिणिय वि [मलिनित] मलिन किया हुआ; (उव)।

मलीमस वि [मलीमस] मलिन, मैला; (पाअ)।

मलेव्व देखो मल=मृद्।

मलेच्छ देखो मिलिच्छ; (पि ८४; नाट—चैत १८)।

मल्ल पुं [मल्ल] १ पहलवान, कुश्ती लड़ने वाला, बाहु-योद्धा; (औप; कप्प; पण्ह २, ४; कुमा)। २ पात्र; "दीवसिहा-पडिपिल्लणमल्ले मिल्लंति नीसासे" (कुप्र १३१)। ३ भींत का अवष्टम्भन-स्तम्भ; ४ छप्पर का आधार-भूत काष्ट; (भग ८, ६—पत्र ३७६)। °जुद्ध न [°युद्ध] कुश्ती; (कप्पू; हे ४, ३८२)। °दिन्न पुं [°दत्त] एक राज-कुमार; (णाया १, ८)। °वाइ पुं [°वादिन्] एक सुविख्यात प्राचीन जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (सम्मत्त १२०)।

मल्ल न [माल्य] १ पुष्प, फूल; (ठा ४, ४)। २ फूल की गुँथी हुई माला; (पाअ; औप)। ३ मस्तक-स्थित पुष्प-माला; (हे २, ७६)। ४ एक देव-विमान; (सम ३६)।

मल्लइ पुं [मल्लकि, °किन्] नृप-विशेष; (भग; औप; पि ८६)।

मल्लग, मल्लय न [दे. मल्लक] १ पात्र-विशेष, शराव; (विसे २४७ टी; पिंड ३१०; तंदु ४४; महा; कुलक १४; णाया १, ६; दे ६, १४५; प्रयौ ६७)। २ चषक, पान-पात्र; (दे ६, १४५)।

मल्लय न [दे] १ अपूप-भेद, एक तरह का पूआ; २ वि. कुसुम्भ से रक्त; (दे ६, १४५)।

मल्लाणी स्त्री [दे] मातुलानी, मामी; (दे ६, ११२; पाअ; प्राकृ ३८)।

मल्लि वि [माल्यिन्] माल्य-युक्त, माला वाला; (औप)।

मल्लि स्त्री [मल्लि] १ उन्नीसवें जिन-देव का नाम; (सम ४३; णाया १, ८; मंगल १२; पडि)। २ वृक्ष-विशेष, मोतिया का गाछ; (दे २, १८)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] उन्नीसवें जिन-देव; (महा; कुप्र ६३)।

मल्लिअज्जुण पुं [मल्लिकार्जुन] एक राजा का नाम; (कुमा)।

मल्लिआ स्त्री [मल्लिका] १ पुष्पवृक्ष-विशेष; (णाया १, ६; कुप्र ४६)। २ पुष्प-विशेष; (कुमा)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मल्ली देखो मल्लि; (णाया १, ८; पउम २०, ३५; विचार १४८; कुमा)।

मल्ह अक [दे] मौज मनाना, लीला करना। वकृ—मल्हंत; (दे ६, ११६ टी; भवि)।

मल्हण न [दे] लीला, मौज; (दे ६, ११६)।

मव सक [मापय्] मपना, माप करना, नापना। मवंति; (सिरि ४२५)। कर्म—"आउयाइं मविज्जंति" (कम्म ५, ८५ टी)। कवकृ—मविज्जमाण; (विसे १४००)।

मविय वि [मापित] मापा हुआ; (तंदु ३१)।

मच्छली (मा) स्त्री [मत्स्य] मछली; (पि २३३)।

मस, मसअ पुं [मश, °क] १ शरीर पर का तिलाकार काला दाग, तिल; (पव २५७)। २ मच्छड़, क्षुद्र जन्तु-विशेष; (गा ५६०; चारु १०; वज्जा ४६)।

मसक्कसार न [मसक्कसार] इन्द्रों का एक स्वयं आभाव्य विमान; (देवेन्द्र २६३)।

मसग देखो मसअ; (भग; औप; पउम ३३, १०८; जी १८)।

मसण वि [मसृण] १ स्निग्ध, चिकना; २ सुकुमाल, कोमल, अ-कर्कश; ३ मन्द, धीमा; (हे १, १३०; कुमा)।

मसरक्क सक [दे] सकुचना, समेटना। संकृ—"दमवि करंगुलीउ मसरक्किवि (अप)" (भवि)।

मसाण न [श्मशान] मसान, मरघट; (गा ४०८; प्राप्र; कुमा)।

मसार पुं [दे. मसार] मसृणता-संपादक पाषाण-विशेष, कसौटी का पत्थर; (णाया १, १—पत्र ६; औप)।

मसारगल्ल पुं [मसारगल्ल] एक रत्न-जाति; (णाया १, १—पत्र ३१; कप्प; उत्त ३६, ७६; इक)।

मसि स्त्री [**मसि**] १ काजल, कज्जल; (कप्पू)। २ स्याही, सियाही; (सुर २, ५)।
मसिंहार पुं [**मसिंहार**] क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष; (औप)।
मसिण देखो **मसण**; (हे १, १३०; कुमा; औप; से १, ४५; ५, ६४)।
मसिण वि [**दे**] रम्य, सुन्दर; (दे ६, ११८)।
मसिणिअ वि [**मसृणित**] १ मृष्ट, शुद्ध किया हुआ, मार्जित; "रोसिणिअं मसिणिअं" (पाअ)। २ स्निग्ध किया हुआ; (से ६, ६)। ३ विलुलित, विमर्दित; (से १, ५५)।
मसी देखो **मसि**; (उवा)।
मसूर, **मसूरग**, **मसूरय** पुंन [**मसूर**, **°क**] १ धान्य-विशेष, मसूरि; (ठा ४, ३; सम १४६; पिंड ६२३)। २ उच्छीर्षक, ओसीसा; (सुर २, ८३; कप्प)। ३ वस्त्र या चर्म का वृत्ताकार आसन; (पव ८४)।
मस्सु देखो **मंसु**; (संक्षि १२; पि ३१२)।
मस्सूरग देखो **मसूरग**; "मस्सूरए य थिबुगे" (जीवस ५२)।
मह सक [**काङ्क्ष्**] चाहना, वाञ्छना। महइ; (हे ४, १९२; कुमा; सण)।
मह सक [**मथ्**] १ मथना, विलोड़न करना। २ मारना। महेज्जा; (उवा)।
मह सक [**मह्**] पूजना। महइ; (कुमा), महेह; (सिरि ५६६)। संकृ—**महिअ**; (कुमा)। कृ—**महणिज्ज**; (उप पृ १२६)।
मह पुंन [**मह**] उत्सव; (विपा १, १—पत्र ५; रंभा; पाअ; सण)।
मह पुं [**मख**] यज्ञ; (चंड; गउड)।
मह वि [**महत्**] १ बड़ा, वृद्ध; २ विपुल, विस्तीर्ण; ३ उत्तम, श्रेष्ठ; "एगं महं सत्तुस्सेहं" (णाया १, १—पत्र १३; काल; जी ७; हे १, ५)। स्त्री—**°ई**; (उव; महा)। **°एवी** स्त्री [**°देवी**] पटरानी; (भवि)। **°कंतजस** पुं [**°कान्तयशस्**] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६५)। **°कमलंग** न [**°कमलाङ्ग**] संख्या-विशेष, ८४ लाख कमल की संख्या; (जो २) **°कव्व** न [**°काव्य**] सर्ग-बद्ध उत्तम काव्य-ग्रन्थ; (भवि)। **°काल** देखो **महा-काल**; (देवेन्द्र २४)। **°गइ** पुं [**°गति**] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश; (पउम ५, २६५)। **°ग्गह** देखो **महा-गह**; (सम ६३)। **°ग्घ** वि [**°अर्घ**] महा-मूल्य, कीमती; (सुर ३, १०३; सुपा ३७)। **°ग्घविअ** वि [**°अर्घित**] १ महँघा, दुर्लभ; (से १४, ३७)। २ विभुषित; "विमलंगोवंगगुण-महग्घविया" (सुपा १; ६०)। ३ सम्मानित; "अच्चिय-वंदियपूइयसक्कारियपणमिओ महग्घविओ" (उव)। **°ग्घिम** (अप) वि [**°अर्घित**] बहु-मूल्य, महँघा; (भवि)। **°चंद** पुं [**°चन्द्र**] १ राजकुमार-विशेष; (विपा २, ५; ६)। २ एक राजा; (विपा १, ४)। **°च्च** वि [**°अर्च**] १ बड़ा ऐश्वर्य वाला; २ बड़ी पूजा—सत्कार वाला; (ठा ३, १—पत्र ११७; भग)। **°च्च** वि [**°अर्च्य**] अति पूज्य; (ठा ३, १; भग)। **°च्छरिय** न [**°आश्चर्य**] बड़ा आश्चर्य; (सुर १०, ११८)। **°जक्ख** पुं [**°यक्ष**] भगवान् अजितनाथ का शासनाधिष्ठायक देव; (पव २६; संति ७)। **°जाला** स्त्री [**°ज्वाला**] विद्यादेवी-विशेष; (संति ६)। **°ज्जुइय** वि [**°द्युतिक**] महान् तेज वाला; (भग औप)। **°ड्ढि** स्त्री [**°ऋद्धि**] महान् वैभव; (राय)। **°ड्ढिय**, **°ड्ढीअ** वि [**°ऋद्धिक**] विपुल वैभव वाला; (भग; ओघभा १०)। **°ण्णव** पुं [**°अर्णव**] महा-सागर; (सुपा ४१७; हे १, २६६)। **°ण्णवा** स्त्री [**°अर्णवा**] १ बड़ी नदी; २ समुद्र-गामिनी; (कस ४, २७ टि; बृह ४)। **°तुडियंग** न [**°त्रुटिताङ्ग**] ८४ लाख त्रुटित की संख्या; (जो २)। **°त्तण** न [**°त्व**] बड़ाई, महत्ता; (श्रा २७)। **°त्तर** वि [**°तर**] १ बहुत बड़ा; (स्वप्न २८)। २ मुखिया, नायक, प्रधान; (कप्प; औप; विपा १, ८)। ३ अन्तःपुर का रक्षक; (औप)। स्त्री—**°रिया**, **°री**; (ठा ४, १—पत्र १६८; इक)। **°त्थ** वि [**°अर्थ**] महान् अर्थ वाला; (णाया १, ८; श्रा २७)। **°त्थ** न [**°अस्त्र**] अस्त्र-विशेष, बड़ा हथियार; (पउम ७१, ६७)। **°त्थिम** पुंस्त्री [**°र्थत्व**] महार्थता; (भवि)। **°दलिल्ल** वि [**°दलिल**] बड़ा दल वाला; (प्रासू १२३)। **°द्दह** पुं [**°द्रह**] बड़ा ह्रद; (णाया १, १—पत्र ६४; गा १८६ अ)। **°द्दि** स्त्री [**°अर्द्रि**] १ बड़ी याचना; २ परिग्रह; (पराह १, ५—पत्र ९२)। **°द्दुम** पुं [**°द्रुम**] १ महान् वृक्ष; (हे ४, ४४५)। २ वैरोचन इन्द्र के एक पदाति-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। **°द्धि** वि [**°ऋद्धि**] बड़ी ऋद्धि वाला; (कुमा)। **°धूम** पुं [**°धूम**] बड़ा धुँआ; (महा)। **°न्नव** देखो **°ण्णव**; (श्रा २८)। **°पाण** न [**°प्राण**] ध्यान-विशेष; (सिरि १३३०)। **°पुंडरीअ** पुं [**°पुण्डरीक**] ग्रह-विशेष;

(हे २, १२०) । °प्प पुं [°आत्मन्] महान् आत्मा, महा-पुरुष; (पउम ११८, १२१) । °प्फल वि [°फल] महान् फल वाला; (सुपा ६२१) । °बाहु पुं [°बाहु] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५. २६५)। °बोह पुं [°अवोघ] महा-सागर;

"इय दुत्तरं मोत्तुं रयणा निव्वासिया नहा सुगया ।
महबोहि जंतूणं जह पुणरवि नागया तत्थ" (सम्मत १२०)।

°ब्बल पुं [°बल] १ एक राज-कुमार; (विपा २, ७; भग ११, ११; अंत)। २ वि. विपुल बल वाला; (भग; औप)। देखो महा-बल । °ब्भय वि [°भय] महाभय-जनक; (पगह १, १) । °ब्भूय न [°भूत] पृथिवी आदि पाँच द्रव्य; (सूत्र २. १, २२) । °मरुय पुं [°मरुत] एक महर्षि, अन्तकृद् मुनि-विशेष; (अंत २५) । °मास पुं [°अश्व] महान् अश्व; (औप) । °यर देखो °त्तर; (गाया १, १—पत्र ३७) । °रव पुं [°रव] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६६) । °रिसि पुं [°ऋषि] महर्षि, महा-मुनि; (उव; रयण ३७) । °रिह वि [°अर्ह] बड़े के योग्य, बहु-मूल्य, कीमती; (विपा १, ३; औप; पि १४०) । °वाय पुं [°वात] महान् पवन; (ओघ ३८७) । °व्वइय वि [°व्रतिक] महाव्रत वाला; (सुपा ४७४) । °व्वय पुंन [°व्रत] महान् व्रत; "महव्वया पंच हुंति इमे" (पउम ११, २३), "सेसा महव्वया ते उत्तरगुणसंजुयावि न हु सम्मं" (सिक्खा ४८; भग; उव)। °व्वय पुं [°व्यय] विपुल खर्च; (उप पृ १०८) । °सलागा स्त्री [°शलाका] पल्य-विशेष, एक प्रकार का नाप; (जीवस १३६) । °सिव पुं [°शिव] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता; (सम १५२) । °सुक्क देखो महा-सुक्क; (देवेन्द्र १३५) । °सेण पुं [°सेन] १ आठवें जिन-देव का पिता; (सम १५०) । २ एक राजा; (महा)। ३ एक यादव; (उप ६४८ टी) । ४ न. वन-विशेष; (विसे १४८४) । देखो महा-सेण । देखो महा° ।

महअर पुं [दे] गह्वर-पति, निकुञ्ज का मालिक; (दे ६, १२३) ।

महइ अ [**महाति**] १ अति बड़ा; २ अत्यन्त विपुल । °जड वि [°जट] अति बड़ी जटा वाला; (पउम ५८, १२) । **महाइंदइ** पुं [°महेन्द्रजित्] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ६) । **महापुरिस** पुं [°महापुरुष] १ सर्वोत्तम पुरुष, सर्व-श्रेष्ठ पुरुष; २ जिन-देव, जिन भगवान; (पउम १. १८) । °**महालय** वि [°महत्] अत्यन्त बड़ा; "महइमहालयंसि संसारंसि" (उवा; सम ७२), स्त्री—°लिया; (भग; उवा) ।

महई देखो **मह**=महत् ।

महंग पुं [**दे**] उष्ट्र, ऊँट; (दे ६, ११७) ।

महंत देखो **मह**=महत्; (आचा; औप; कुमा) ।

महच्च न [**माहत्य**] १ महत्त्व, २ वि. महत्त्व वाला; (ठा ३, १—पत्र ११७) ।

महण न [**दे**] पिता का घर; (दे ६, ११४) ।

महण न [**मथन**] १ विलोडन; (से १, ४६; वज्जा ८) । २ घर्षण; (कुप्र १४८) । ३ वि. मारने वाला; "दरित-नागदप्पमहणा" (पगह १, ४) । ४ विनाश करने वाला; "नाणं च चरणं च भवमहणं" (संबोध ३५; सुर ७, २२५) । स्त्री—°णी; (आ ४६) ।

महण पुं [**महन**] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६२) ।

महणिज्ज देखो **मह**=मह् ।

महति देखो **महइ**; (ठा ३. ४; गाया १, १; औप) ।

महत्थार न [**दे**] १ भाण्ड, भाजन; २ भोजन; (दे ६, १२५) ।

महप्पुर पुं [**दे**] माहात्म्य, प्रभाव; "तुह मुहचंदपहाए करिनाण महप्पुरो एसो" (रंभा ४३) ।

महमह देखो **मघमघ** । महमहइ; (हे ४, ७८; षड्; गा ४६७), महमेहइ; (उव) । वकृ—**महमहंत**; (काप्र ६१७) । संकृ—**महमहिअ**; (कुमा) ।

महमहिअ वि [**प्रसृत**] १ फैला हुआ; (हे १, १४६; वज्जा १५०)। २ सुरभित; (रंभा) ।

महम्मह देखो **महमह**; "जिमलआमिरी महम्महइ" (गा ६०४) ।

महया° देखो **महा**; "महयाहिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे" (गाया १, १ टी—पत्र ६; औप; विपा १, १; भग) ।

महर वि [**दे**] अ-समर्थ, अ-शक्त; (दे ६, ११३)।

महलयपक्ख देखो **महालवक्ख**; (षड्—पृष्ठ १७६) ।

महल्ल वि [**दे**, **महत्**] १ वृद्ध, बड़ा; (दे ६, १४३; उवा; गउड; सुर १, ५४; पंचा ५, १६; संबोध ४७; ओघ १३६; प्रासू १४६; जय १२; सुपा ११७) । २ पृथुल, विशाल,

विस्तीर्ण; (दे ६, १४३; प्रवि १०; स ६६२; भवि)। स्त्री—°ल्लिया; (औप; सुपा ११६; ५८७)।

महल्ल वि [दे] १ मुखर, वाचाट, बकवादी; (दे ६, १४३; षड्)। २ पुं. जलधि, समुद्र; (दे ६, १४३)। ३ समूह, निवह; (दे ६, १४३; सुर १, ५४)।

महल्लिर देखो **महल्ल**; "हरिसिहकडिणमहल्लिरपयनहरपरंपराए विकरालो" (सुपा ११)।

महव देखो **मघव**; (कुमा; भवि)।

महा स्त्री [**मघा**] नक्षत्र-विशेष; (सम १२; सुज्ज १०, ५; इक)।

महा° देखो **मह**=महत्; (उवा)। °**अडड** न [°**अटट**] संख्या-विशेष, ८४ लाख महाअटटांग की संख्या; (जो २)। °**अडडंग** न [°**अटटाङ्ग**] संख्या-विशेष, ८४ लाख अटट; (जो २)। °**आल** देखो °**काल**; (नाट—चैत ८२)। °**ऊह** न [°**ऊह**] संख्या-विशेष, ८४ लाख महाऊहांग की संख्या; (जो २)। °**कइ** पुं [°**कवि**] श्रेष्ठ कवि, समर्थ कवि; (गउड; चेइय ८४३; रंभा)। °**कंदिय** पुं [°**क्रन्दित**] व्यन्तर देवों की एक जाति; (पराह १, ४; औप; इक)। °**कच्छ** पुं [°**कच्छ**] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय-क्षेत्र—प्रान्त; (ठा २, ३; इक)। २ देव-विशेष; (जं ४)। °**कच्छा** स्त्री [°**कच्छा**] अतिकाय-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४; णाया २; इक)। °**कण्ह** पुं [°**कृष्ण**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, १)। °**कण्हा** स्त्री [°**कृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ जैन ग्रन्थ-विशेष; (णंदि)। २ काल का एक परिमाण; (भग १५)। °**कमल** न [°**कमल**] संख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकमलांग की संख्या; (जो २)। °**कव्व** देखो °**मह-कव्व**; (सम्मत्त १४६)। °**काय** पुं [°**काय**] १ महोरग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३; इक)। २ वि. महान् शरीर वाला; (उवा)। °**काल** पुं [°**काल**] १ महाग्रह-विशेष, एक ग्रह-देवता; (सुज्ज २०; ठा २, ३)। २ दक्षिण लवण-समुद्र के पाताल-कलश का अधिष्ठायक देव; (ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक इन्द्र, पिशाच-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति; (सम २८)। ५ वायु-कुमार देवों का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६८)। ६ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६८)। ७ नव निधिओं में एक निधि, जो धातुओं की पूर्ति करता है; (उप ६८६ टी; ठा ६—पत्र ४४६)। ८ सातवीं नरक-भूमि का एक नरकावास; (ठा ५, ३—पत्र ३४१; सम ५८)। ६ पिशाच देवों की एक जाति; (राज)। १० उज्जयिनी नगरी का एक प्राचीन जैन मन्दिर; (कुप्र १७४)। ११ शिव, महादेव; (आव ६)। १२ उज्जयिनी का एक का श्मशान; (अंत)। १३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, १)। १४ न. एक देव-विमान; (सम ३५)। °**काली** स्त्री [°**काली**] १ एक विद्या-देवी; (संति ५)। २ भगवान् सुमतिनाथ की शासन-देवी; (संति ६)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °**किण्हा** स्त्री [°**कृष्णा**] एक महा-नदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °**कुमुद**, °**कुमुय** न [°**कुमुद**] १ एक देव-विमान; (सम ३३)। २ संख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकुमुदांग की संख्या; (जो २)। °**कुमुयअंग** न [°**कुमुदाङ्ग**] संख्या-विशेष, कुमुद को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)।— °**कुम्म** पुं [°**कूर्म**] कूर्मावतार; (गउड)। °**कुल** न [°**कुल**] १ श्रेष्ठ कुल; (निचू ८)। २ वि. प्रशस्त कुल में उत्पन्न; "निक्खंता जे महाकुला" (सूअ १, ८, २४)। °**गंगा** स्त्री [°**गङ्गा**] परिमाण-विशेष; (भग १५)। °**गह** पुं [°**ग्रह**] १ सूर्य आदि ज्योतिष्क; (सार्ध ८७)। °**गह** वि [°**आग्रह**] आग्रही, हठी; (सार्ध ८७)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] १ एक जैन महर्षि; (उव; कप्प)। २ बड़ा पर्वत; (गउड)। °**गोव** पुं [°**गोप**] १ महान् रक्षक; २ जिन भगवान्; (उवा; विसे २६५६)। °**घोस** पुं [°**घोष**] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव; (सम १५४)। २ एक इन्द्र, स्तनित कुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक कुलकर पुरुष; (सम १५०)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति; (सम २६)। ५ न. देवविमान-विशेष; (सम १२; १७)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] ऐरवत वर्ष के एक भावी तीर्थंकर; (सम १५४)। °**जणिअ** पुं [°**जनिक**] श्रेष्ठी, सार्थवाह आदि नगर के गरय-मान्य लोक; (कुमा)। °**जलहि** [°**जलधि**] महा-सागर; (सुपा ४७४)। °**जस** [°**यशस्**] १ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र; (ठा ८—पत्र ४२६)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ भावी तीर्थंकर-देव

(सम १५४)। ३ वि. महान् यशस्वी; (उत्त १२, २३)। °**जाइ** स्त्री [°**जाति**] कुल-विशेष; (पगण १)। °**जाण** न [°**यान**] १ बड़ा यान—वाहन; २ चारित्र, संयम; (आचा)। ३ एक विद्याधर-नगर का नाम; (इक)। ४ पुं. मोक्ष, मुक्ति; (आचा)। °**जुद्ध** न [°**युद्ध**] बड़ी लड़ाई; (जीव ३)। °**जुम्म** पुंन [°**युग्म**] महान् राशि; (भग ३५)। °**ण** देखो °**यण**; "गामदुआर-ब्भासे अगडसमीवे महाणमज्झे वा" (ओघ ६६)। °**णई** स्त्री [°**नदी**] बड़ी नदी; (गउड; पउम ४०, १३)। °**णंदियावत्त** पुं [°**नन्द्यावर्त**] १ घोष-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६८)। २ न. एक देव-विमान; (सम ३२)। °**णगर** देखो °**नगर**; (राज)। °**णलिण** देखो °**नलिण**; (राज)। °**णील** न [°**नील**] १ रत्न-विशेष; २ वि. अति नील वर्ण वाला; (जीव ३; औप)। °**णीला** देखो °**नीला**; (राज)। °**णुभाअ**, °**णुभाग** वि [°**अनुभाग**] महानुभाव, महाशय; (नाट—मालती ३६; गच्छ १, ४; भग; सिरि १६)। °**णुभाव** वि [°**अनुभाव**] वही अर्थ; (सुर २, ३५; द ६६)। °**तमपहा** स्त्री [°**तमःप्रभा**] सप्तम नरक-पृथिवी; (पव १७२)। °**तमा** स्त्री [°**तमा**] वही; (चेइय ७५६)। °**तीरा** स्त्री [°**तीरा**] नदी-विशेष; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °**तुडिय** न [°**त्रुटित**] महात्रुटितांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, संख्या-विशेष; (जो २)। °**दामड्ढि** पुं [°**दामास्थि**] ईशानेन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति; (इक)। °**दामड्ढि** पुं [°**दामर्द्धि**] वही; (ठा ५, १—पत्र ३०३)। °**दुम** देखो **मह-द्दुम**; (इक)। २ न. एक देव-विमान; (सम ३५)। °**दुम-सेण** पुं [°**द्रुमसेन**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अनु २)। °**देव** पुं [°**देव**] १ श्रेष्ठ देव, जिन-देव; (पउम १०६, १२)। २ शिव, गौरी-पति; (पउम १०६, १२; सम्मत्त ७६)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] पटरानी; (कप्पू)। °**धण** पुं [°**धन**] एक वणिक्; (पउम ५५, ३८)। °**धणु** पुं [°**धनुष्**] बलदेव का एक पुत्र; (निर १, ५)। °**नई** स्त्री [°**नदी**] बड़ी नदी; (सम २७; कस)। °**नंदिआवत्त** देखो °**णंदियावत्त**; (इक)। °**नगर** न [°**नगर**] बड़ा शहर; (पराह २, ४)। °**नय** पुं [°**नद**] ब्रह्म-पुत्रा आदि बड़ी नदी; (आवम)। °**नलिण** न [°**नलिन**] १ संख्या-विशेष, महानलिनांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। २ एक देव-विमान; (सम ३३)। °**नलिणंग** न [°**नलिनाङ्ग**] संख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। °**निज्जामय** पुं [°**निर्यामक**] श्रेष्ठ कर्णधार; (उवा)। °**निद्दा** स्त्री [°**निद्रा**] मृत्यु, मरण; (पउम ६, १६८)। °**निनाद**, °**निनाय** वि [°**निनाद**] प्रख्यात, प्रसिद्ध; (ओघ ८६; ८६ टी)। °**निसीह** न [°**निशीथ**] एक जैन आगम-ग्रन्थ; (गच्छ ३, २६)। °**नीला** स्त्री [°**नीला**] एक महानदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °**पउम** पुं [°**पद्म**] १ भरतक्षेत्र का भावी प्रथम तीर्थंकर; (सम १५३)। २ पुंडरीकिणी नगरी का एक राजा और पीछे से राजर्षि; (णाया १, १६—पत्र २४३)। ३ भारतवर्ष में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा; (सम १५२; पउम २०, १४३)। ४ भरतक्षेत्र का भावी नववाँ चक्रवर्ती राजा; (सम १५४)। ५ एक राजा; (ठा ८)। ६ एक निधि; (ठा ६—पत्र ४४६)। ७ एक द्रह; (सम १०४; ठा २, ३—पत्र ७२)। ८ राजा श्रेणिक का एक पौत्र; (निर १, १)। ९ देव-विशेष; (दीव)। १० वृक्ष-विशेष; (ठा २, ३)। ११ न. संख्या-विशेष; महापद्मांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। १२ एक देव-विमान; (सम ३३)। °**पउमअंग** न [°**पद्माङ्ग**] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। °**पउमा** स्त्री [°**पद्मा**] राजा श्रेणिक की एक पुत्र-वधू; (निर १, १)। °**पंडिय** वि [°**पण्डित**] श्रेष्ठ विद्वान्; (रंभा)। °**पट्टण** न [°**पत्तन**] बड़ा शहर; (उवा)। °**पण्ण**, °**पन्न** वि [°**प्रज्ञ**] श्रेष्ठ बुद्धि वाला; (उप ७७३; पि २७६)। °**पभ** न [°**प्रभ**] एक देव-विमान; (सम १३)। °**पभा** स्त्री [°**प्रभा**] एक राज्ञी; (उप १०३१ टी)। °**पम्ह** पुं [°**पक्ष्म**] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त; (ठा २, ३)। °**परिण्णा**, °**परिन्ना** स्त्री [°**परिज्ञा**] आचा-रांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का सातवाँ अध्ययन; (राज; आक)। °**पसु** पुं [°**पशु**] मनुष्य; (गउड)। °**पह** पुं [°**पथ**] बड़ा रास्ता, राज-मार्ग; (भग; पराह १, ३; औप)। °**पाण** न [°**प्राण**] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान; (उत्त १८, २८)। °**पायाल** पुं [°**पाताल**]

बड़ा पाताल-कलश; (ठा ४, २—पत्र २२६; सम ७१)। °पालि स्त्री [°पालि] १ बड़ा पल्य; २ सागरोपम-परिमित भव-स्थिति—आयु;

"अहमासि महापाणे जुइमं वरिससओवमे।
जा सा पालिमहापाली दिव्वा वरिससओवमा"
(उत्त १८, २८)।

°पिउ पुं [°पितृ] पिता का बड़ा भाई; (विपा १, ३—पत्र ४०)। °पीढ पुं [°पीठ] एक जैन महर्षि; (सट्ठि ८१ टी)। °पुंख न [°पुङ्ख] एक देव-विमान; (सम २२)। °पुंड न [°पुण्ड्र] एक देव-विमान; (सम २२)। °पुंडरीय न [°पुण्डरीक] १ विशाल श्वेत कमल; (राय)। २ पुं. ग्रह-विशेष; (सम १०४)। ३ देव-विशेष; ४ देखो °पोंडरीअ; (राज)। °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर-नगर; (इक)। २ नगर-विशेष; (विपा २, ७)। °पुरा स्त्री [°पुरी] महापद्म-विजय की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०)। °पुरिस पुं [°पुरुष] १ श्रेष्ठ पुरुष; (पराह २, ४)। २ किंपुरुष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। °पुरी देखो °पुरा; (इक)। °पोंडरीअ न [°पुण्डरीक] एक देव-विमान; (स ३३)। देखो °पुंडरीय; (ठा २, ३—पत्र ७२)। °फल देखो मह-प्फल; (उवा)। °फलिह न [°स्फटिक] शिखरी पर्वत का एक उत्तर-दिशा-स्थित कूट; (राज)। °बल वि [°बल] १ महान् बल वाला; (भग)। २ पुं. ऐरवत क्षेत्र का एक भावी तीर्थंकर; (सम १५४)। ३ चक्रवर्ती भरत के वंश में उत्पन्न एक राजा; (पउम ५, ४; ठा ८—पत्र ४२६)। ४ सोमवंशीय एक नर-पति; (पउम ५, १०)। ५ पाँचवें बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम; (पउम २०, १६०)। ६ भारतवर्ष का भावी छठवाँ वासुदेव; (सम १५४)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भारत-वर्ष का भावी चतुर्थ वासुदेव; (सम १५४)। २ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३०)। ३ अपर विदेह-वर्ष में उत्पन्न एक वासुदेव; (आव ४)। °भद्द न [°भद्र] तप-विशेष; (पव २७१)। °भद्दपडिमा स्त्री [°भद्रप्रतिमा] नीचे देखो; (औप)। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] व्रत-विशेष, कायोत्सर्ग-ध्यान का एक व्रत; (ठा २, ३—पत्र ६४)। °भय देखो मह-ब्भय; (आचा)। °भाअ, °भाग वि [°भाग] महानुभाव, महाशय; (अभि १७४; महा; सुपा ५१८; उप पृ ३)। °भीम पुं [°भीम] १ राक्षसों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ भारत-वर्ष का भावी आठवाँ प्रतिवासुदेव; (सम १५४)। ३ वि. बडा भयानक; (दंस ४)। °भीमसेण पुं [°भीमसेन] एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०)। °भुअ पुं [°भुज] देव-विशेष; (दीव)। °भुअंग पुं [°भुजङ्ग] शेष नाग; (से ७, ५६)। °भोया स्त्री [°भोगा] एक महा-नदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °मउंद पुंन [°मुकुन्द] वाद्य-विशेष; (भग)। °मंति पुं [°मन्त्रिन्] १ सर्वोच्च अमात्य, प्रधान मन्त्री; (औप; सुपा २२३; णाया १, १)। २ हस्ति-सैन्य का अध्यक्ष; (णाया १, १—पत्र १६)। °मंस न [°मांस] मनुष्य का मांस; (कप्पू)। °मच्च पुं [°अमात्य] प्रधान मन्त्री; (कुमा)। °मत्त पुं [°मात्र] हस्तिपक, हाथी का महावत;

"तत्तो नरसिंहनिवस्स कुंजरा सिंहभयविहुरहियया।
अवगणियमहामत्ता मत्तावि पलाइया झत्ति" (कुप्र ३६४)।

°मरुया स्त्री [°मरुता] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत)। °मह पुं [°मह] महोत्सव; (आव ४)। °महंत वि [°महत्] अति बड़ा; (सुपा ५६४; स ६६३)। °माइ (अप) स्त्री [°माया] छन्द-विशेष; (पिंग)। °माउआ स्त्री [°मातृका] माता की बडी बहन; (विपा १, ३—पत्र ४०)। °माढर पुं [°माठर] ईशानेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक)। °माणसिआ स्त्री [°मानसिका] एक विद्या-देवी; (संति ६)। °माहण पुं [°ब्राह्मण] श्रेष्ठ ब्राह्मण; (उवा)। °मुणि पुं [°मुनि] श्रेष्ठ साधु; (कुमा)। °मेह पुं [°मेघ] बड़ा मेघ; (णाया १, १—पत्र ४; ठा ४, ४)। °मेह वि [°मेध] बुद्धिमान्; (उप १४२ टी)। °मोक्ख वि [°मूर्ख] बड़ा बेवकूफ; (उप १०३१ टी)। °यण पुं [°जन] श्रेष्ठ लोक; (सुपा २६१)। °यस देखो °जस; (औप; कप्प)। °रक्खस पुं [°राक्षस] लंका नगरी का एक राजा जो धनवाहन का पुत्र था; (पउम ५, १३६)। °रह पुं [°रथ] १ बड़ा रथ; (पराह २, ४—पत्र १३०)। २ वि. बड़ा रथ वाला; ३ बड़ा योद्धा, दस हजार योद्धाओं के साथ अकेला भूझने वाला; (सूअ १, ३, १, १; गउड)। °रहि वि [°रथिन्] देखो पूर्व का २रा और ३रा अर्थ; (उप ७२८ टी)। °राय पुं [°राज] १ बड़ा राजा, राजाधिराज; (उप ७६८ टी; रंभा; महा)। २ सामानिक देव, इन्द्र

समान ऋद्धि वाला देव; (सुर १५, ६) । ३ लोकपाल देव; (सम ८६)। °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] बलि-नामक इन्द्र का एक सेना-पति; (इक)। °रिसि पुं [°ऋषि] बड़ा मुनि, श्रेष्ठ साधु; (उत्त)। °रिह, °रुह देखो मह-रिह; (पि १४०; अभि १८७)। °रोरु पुं [°रोरु] अप्रतिष्ठान नरकेन्द्रक की उत्तर दिशा में स्थित एक नरकावास; (देवेन्द्र २४) । °रोरुअ पुं [°रोरुक, °रौरव] सातवीं नरक-भूमि का एक नरकावास—नरक-स्थान; (सम ५८, ठा ५, ३—पत्र ३४१; इक) । °रोहिणी स्त्री [°रोहिणी] एक महा-विद्या; (राज)। °लंजर पुं [°अलञ्जर] बड़ा जल-कुम्भ; (ठा ४, २—पत्र २२६)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] १ एक श्रेष्ठि-भार्या; (उप ७२८ टी)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ श्रेष्ठ लक्ष्मी; ४ लक्ष्मी-विशेष; (नाट)। °लयंग न [°लताङ्ग] संख्या-विशेष, लता-नामक संख्या को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (इक; जो २)। °लया स्त्री [°लता] संख्या-विशेष, महालतांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। °लोहिअक्ख पुं [°लोहिताक्ष] बलीन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)। °वक्क न [°वाक्य] परस्पर-संबद्ध अर्थ वाले वाक्यों का समुदाय; (उप ८५६)। °वच्छ पुं [°वत्स] विजय-विशेष, विदेह वर्ष का एक प्रान्त; (ठा २, ३; इक) । °वच्छा स्त्री [°वत्सा] वही; (इक)। °वण न [°वन] मथुरा के निकट का एक वन; (ती ७)। °वण पुंन [°आपण] बड़ी दुकान; (भवि)। °वप्प पुं [°वप्र] विजयक्षेत्र-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °वय देखो मह-व्वय; (सुपा ६५०)। °वराह पुं [°वराह] १ विष्णु का एक अवतार; (गउड)। २ बड़ा सुअर; (सुअ १, ७, २५)। °वह देखो °पह; (से १, ५८)। °वाउ पुं [°वायु] ईशानेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक)। °वाड पुं [°वाट] बड़ा बाड़ा, महान् गोष्ठ; "निव्वाणमहावाडं" (उवा)। °विगइ स्त्री [°विकृति] अति विकार-जनक ये वस्तु—मधु, मांस, मद्य और माखन; (ठा ४, १—पत्र २०४; अंत)। °विजय वि [°विजय] बड़ा विजय वाला; "महाविजयपुप्फुत्तरपवरपुंडरीयाओ महाविमाणाओ" (कप्प)। °विदेह पुं [°विदेह] वर्ष-विशेष, क्षेत्र-विशेष; (सम १२; उवा; औप; अंत)। °विमाण न [°विमान] श्रेष्ठ देव-गृह; (उवा)। °विल न [°बिल] कन्दरा आदि बड़ा विवर; (कुमा)। °वीर पुं [°वीर] १ वर्तमान समय के अन्तिम तीर्थंकर; (सम १; उवा; विपा १, १)। २ वि. महान् पराक्रमी; (किरात १६)। °वीरिअ पुं [°वीर्य] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ५)। °वीहि, °वीही स्त्री [°वीथि, °थी] १ बड़ा बाजार; (पउम ६६, ३४)। २ श्रेष्ठ मार्ग; (आचा)। °वेग पुं [°वेग] एक देव-जाति, भूतों की एक जाति; (राज; इक)। °वेजयंती स्त्री [°वैजयन्ती] बड़ी पताका, विजय-पताका; (कप्प)। °सई स्त्री [°सती] उत्तम पतिव्रता स्त्री; (उप ७२८ टी; पडि)। °सउणि स्त्री [°शकुनि] एक विद्याधर-स्त्री; (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। °सड्ढि वि [°श्रद्धिन्] बड़ी श्रद्धा वाला; (आचा; पि ३३३)। °सत्त वि [°सत्त्व] पराक्रमी; (द ११; महा)। °समुद्द पुं [°समुद्र] महा-सागर; (उवा)। °सयग, °सयय पुं [°शतक] भगवान् महावीर का एक उपासक; (उवा)। °सामाण न [°सामान] एक देव-विमान; (सम ३३)। °साल पुं [°शाल] एक युवराज; (पडि)। °सिलाकंटय पुं [°शिलाकण्टक] राजा कूणिक और चेटकराज की लडाई; (भग ७, ६—पत्र ३१५)। °सीह पुं [°सिंह] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता; (ठा ६—पत्र ४४७)। °सीहणिक्कीलिय, °सीहनिकीलिय न [°सिंहनिक्रीडित] तप-विशेष; (राज; पव २७१—गाथा १५२२)। °सीहसेण पुं [°सिंहसेन] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (अनु २)। °सुक्क पुं [°शुक्र] १ एक देव-लोक, सातवाँ देवलोक; (सम ३३; विपा २, १)। २ सातवें देवलोक का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ न. एक देव-विमान; (सम ३३)। °सुमिण पुं [°स्वप्न] उत्तम फल का सूचक स्वप्न; (णाया १, १—पत्र १३; पि ४४७)। °सुर पुं [°असुर] १ बड़ा दानव; २ दानवों का राजा हिरण्यकशिपु; (से १, २; गउड)। °सुव्वय, °सुव्वया स्त्री [°सुव्रता] भगवान् नेमिनाथ की मुख्य श्राविका; (कप्प; आवम)। °सूला स्त्री [°शूला] फाँसी; (श्रा २७)। °सेअ पुं [°श्वेत] एक इन्द्र, कूष्माण्ड-नामक वानव्यन्तर देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (इक; ठा २, ३—पत्र ८५)। °सेण पुं [°सेन] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव; (सम १५४)। २ राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अनु २)। ३

एक राजा; (विपा १, ६—पत्र ८८)। ४ एक यादव; (णाया १, ५)। ५ न. एक वन; (विसे २०८६)। देखो °**मह-सेण**। °**सेणकण्ह** पुं [°**सेनकृष्ण**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (पि ५२)। °**सेणकण्हा** स्त्री [°**सेनकृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °**सेल** पुं [°**शैल**] १ बड़ा पर्वत; (णाया १, १)। २ न. नगर-विशेष; (पउम ५५, ५३)। °**सोआम**, °**सोदाम** पुं [°**सौदाम**] वैरोचन बलीन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १; इक)। °**हरि** पुं [°**हरि**] एक नर-पति, दसवें चक्रवर्ती का पिता; (सम १५२)। °**हिमव**, °**हिमवंत** पुं [°**हिमवत्**] १ पर्वत-विशेष; (पउम १०२, १०५; ठा २, ३; महा)। २ देव-विशेष; (जं ४)।

महाअत्त वि [**दे**] आढ्य, श्रीमन्त; (दे ६, ११६)।

महाइय पुं [**दे**] महात्मा; (भवि)।

महाणड पुं [**दे. महानट**] रुद्र, महादेव; (दे ६, १२१)।

महाणस न [**महानस**] रसोई-घर, पाक-स्थान; (णाया १, ८; गा १३; उप २५६ टी)।

महाणसि वि [**महानसिन्**] रसोई बनाने वाला, रसोइया। स्त्री—°**णी**; (णाया १, ७—पत्र ११७)।

महाणसिय वि [**महानसिक**] ऊपर देखो; (विपा १, ८)।

महाबिल न [**दे. महाबिल**] व्योम, आकाश; (दे ६, १२१)।

महारिय (अप) वि [**मदीय**] मेरा; (जय ३०)।

महाल पुं [**दे**] जार, उपपति; (दे ६, ११६)।

महालक्ख वि [**दे**] तरुण, जवान; (दे ६, १२१)।

महालय देखो **मह**=महत्; (णाया १, ८; उवा; औप), "मा कासि कम्माइं महालयाइं" (उत्त १३, २६)। स्त्री—°**लिया**; (औप)।

महालय पुंन [**महालय**] १ उत्सवों का स्थान; (सम ७२)। २ बड़ा आलय; ३ वि. बृहत्काय, बड़ा शरीर वाला; (सूअ २, ५, ६)।

महालवक्ख पुं [**दे. महालयपक्ष**] श्राद्ध-पक्ष, आश्विन (गुजराती भाद्रपद) मास का कृष्ण पक्ष; (दे ६, १२७)।

महावल्ली स्त्री [**दे**] नलिनी, कमलिनी; (दे ६, १२२)।

महासउण पुं [**दे**] उल्लू, घूक-पक्षी; (दे ६, १२७)।

महासद्दा स्त्री [**दे**] शिवा, शृगाली; (दे ६, १२०; पाअ)।

महासेल वि [**माहाशैल**] महाशैल नगर से संबन्ध रखने वाला, महाशैल का; (पउम ५५, ५३)।

महि° देखो **मही**; (कुमा)। °**अल** न [°**तल**] भू-पीठ, भूमि-पृष्ठ; (कुमा; गउड; प्रासू ४५)। °**गोयर** पुं [°**गोचर**] मनुष्य; (भवि; सण)। °**पट्ठ** न [°**पृष्ठ**] भूमि-तल; (षड्)। °**पाल** पुं [°**पाल**] राजा; (उव)। °**मंडल** न [°**मण्डल**] भू-मण्डल; (भवि; हे ४, ३७२)। °**रमण** पुं [°**रमण**] राजा; (श्रा २७)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा; (णाया १, १ टी; औप)। °**वट्ठ** देखो °**पट्ठ**; (हे १, १२९; कुमा)। °**वल्लह** पुं [°**वल्लभ**] राजा; (गु १०)। °**वाल** पुं [°**पाल**] १ राजा, नरपति; (हे १, २२९)। २ व्यक्ति-वाचक नाम; (भवि)। °**वेढ** पुं [°**वेष्ट, पीठ**] मही-तल, भू-तल; (से १, ४; ४९)। °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] राजा; (कुमा)। °**हर** पुं [°**धर**] १ पर्वत; (पाअ; से ३, ३८; ४, १७; कुप्र ११७)। २ राजा; (कुप्र ११७)।

महिअ वि [**मथित**] विलोडित; (से २, १८; पाअ)।

महिअ वि [**महित**] १ पूजित, सत्कृत; (से १२, ४७; उवा; औप)। २ न. एक देव-विमान; (सम ४१)। ३ पूजा, सत्कार; (णाया १, १)।

महिअ वि [**महीयस्**] बड़ा, गुरु; "राअनिओओ महिओ को णाम गआगअमिह करेइ" (मुद्रा १८७)।

महिअदुद्दुअ न [**दे**] घी का किट्ट, घृत-मल; (राज)।

महिआ स्त्री [**महिका**] १ सूक्ष्म वर्षा, सूक्ष्म जल-तुषार; (पराण १; जी ५)। २ धूमिका, धुंध, कुहरा; (ओघ ३०; पाअ)। ३ मेघ-समूह; "घणनिवहो कालिआ महिआ" (पाअ)। देखो **मिहिआ**।

महिंद पुं [**महेन्द्र**] १ बड़ा इन्द्र, देवाधीश; (औप; कप्प; णाया १, १ टी—पत्र ६)। २ पर्वत-विशेष; (से ६, ५९)। ३ अति महान्, खूब बड़ा; (ठा ४, २—पत्र २३०)। ४ एक राजा; (पउम ५०, २३)। ५ ऐरवत वर्ष का भावी १५वाँ तीर्थंकर; (पव ७)। ६ पुंन. एक देव-विमान; (सम २२; देवेन्द्र १४१)। °**कंत** न [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम २७)। °**केउ** पुं [°**केतु**] हनूमान के मातामह का नाम; (पउम ५०, १९)। °**ज्झय**

[°ध्वज] १ बड़ा ध्वज; २ इन्द्र के ध्वज के समान ध्वज, बड़ा इन्द्र-ध्वज; (ठा ४, ४—पत्र २३०)। ३ न. एक देव-विमान; (सम २२)। °दुहिया स्त्री [°दुहिता] अञ्जनासुन्दरी, हनुमान की माता; (पउम ५०, २३)। °विक्कम पुं [°विक्रम] इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ६)। °सीह पुं [°सिंह] १ कुरु देश का एक राजा; (उप ७२८ टी)। २ सनत्कुमार चक्रवर्ती का एक मित्र; (महा)।

महिंदुत्तरवडिंसय न [**महेन्द्रोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम २७)।

महिगा देखो **महिआ**; (जीवम ३१)।

महिच्छ वि [**महेच्छ**] महत्त्वाकाङ्क्षी; (सुअ २, २, ६१)।

महिच्छा स्त्री [**महेच्छा**] महत्त्वाकाङ्क्षा, अपरिमित वाञ्छा; (पण्ह १, ५)।

महिट्ठ वि [**दे**] मट्ठा से संसृष्ट, तक्र-संस्कारित; (विपा १, ८—पत्र ८३)।

महिड्ढि, **महिड्ढिय**, **महिड्ढीय** वि [**महर्द्धि**, °**क**] बड़ी ऋद्धि वाला, महान् वैभव वाला; (श्रा २७; भग; ओघमा ६; औप; पि ७३)।

महिम पुंस्त्री [**महिमन्**] १ महत्त्व, माहात्म्य, गौरव; (हे १, ३५; कुमा; गउड; भवि)। २ योगी का एक प्रकार का ऐश्वर्य; (हे १, ३५)।

महिला देखो **मिहिला**; (महा; राज)।

महिला स्त्री [**महिला**] स्त्री, नारी; (कुमा; हे ३, ४१; पात्र)। °**थूभ** पुं [°**स्तूप**] कूप आदि का किनारा; (विसे २०६४)।

महिलिया स्त्री [**महिलिका**, **महिला**] ऊपर देखो; (गाया १, २; पउम १४, १४५; प्रासु २४)।

महिलिया स्त्री [**मिथिलिका**, **मिथिला**] देखो **मिहिला**; (कप्प)।

महिस पुं [**महिष**] भैंसा; (गउड; औप; गा ५४८)। °**ासुर** पुं [°**ासुर**] एक दानव; (स ४३७)।

महिसंद पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, शिग्रु का पेड़; (दे ६, १२०)।

महिसिक्क न [**दे**] महिषी-समूह; (दे ६, १२४)।

महिसी स्त्री [**महिषी**] १ राज-पत्नी; (ठा ४, १)। २ भैंस; (पात्र; पउम २६, ४१)।

महिस्सर पुं [**महेश्वर**] एक इन्द्र, भूतवादि-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। देखो **महेसर**।

मही स्त्री [**मही**] १ पृथिवी, भूमि, धरणी; (कुमा; पात्र)। २ एक नदी; (ठा ५, ३—पत्र ३०८)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] राजा; (उप पृ १६१)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] राजा; (उप ७२८ टी)। °**पाल** पुं [°**पाल**] वही अर्थ; (उप १५० टी; उव)। °**रुह** पुं [°**रुह**] वृक्ष, पेड़; (पात्र; सुर ३, ११०; १६, २४८)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा; (श्रा २८; उप १४६ टी; सुपा ३८)। °**वीढ** न [°**पीठ**] भूमि-तल; (सुर २, ७४)। °**स** पुं [°**श**] राजा; (श्रा १४)। °**सक्क** पुं [°**शक्र**] वही अर्थ; (श्रा १४)। देखो **महि**।

महु पुं [**मधु**] १ एक दैत्य; (से १, १; अच्चु ४०)। २ वसन्त ऋतु; "सुरही महू वसंतो" (पात्र; कुमा)। ३ चैत्र मास; (सुर ३, ४०; १६, १०७; पिंग)। ४ पाँचवाँ प्रति-वासुदेव राजा; (पउम ५, १५६)। ५ एक राजा; (भु ६१)। ६ मथुरा का एक राज-कुमार; (पउम १२, २)। ७ चक्रवर्ती का एक देव-कृत महल; (उत्त १३, १३)। ८ मधूक का पेड़, महुआ का गाछ; (कुमा)। ९ अशोक वृक्ष; (चंड)। १० न. मद्य, दारू; (से २, २७)। ११ चौद, शहद; (कुमा; पव ४; ठा ४, १)। १२ पुष्प-रस; १३ मधुर रस; १४ जल, पानी; (प्राप्र; हे ३, २५)। १५ छन्द-विशेष; (पिंग)। १६ मधुर, मिष्ट वस्तु; (पण्ह २, १)। °**अर** पुंस्त्री [°**कर**] भ्रमर, भमरा; (पात्र; स्वप्न ७३; औप; कप्प; पिंग)। स्त्री—°**रिआ**, °**री**; (अभि १६०; नाट—मृच्छ ५७)। °**अरवित्ति** स्त्री [°**करवृत्ति**] माधुकरी, भिक्षा-वृत्ति; (सुपा ८३)। °**अरीगीय** न [°**करीगीत**] नाट्यविधि-विशेष; (महा)। °**आसव** वि [°**आश्रव**] लब्धि-विशेष वाला, जिसके प्रभाव से वचन मधुर लगे ऐसी लब्धि वाला; (पण्ह २, १—पत्र १००)। °**गुलिया** स्त्री [°**गुटिका**] शहद की गोली; (ठा ४, २)। °**पडल** न [°**पटल**] मधपुडा; (दे ३, १२)। °**भार** पुं [°**भार**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**मक्खिया**, **मच्छिआ** स्त्री [°**मक्षिका**] शहद की मक्खी; "अह उड्डियाउ तोमरमुहाउ महुक्खि(?मक्खि)याउ सव्वत्तो" (धर्मवि १२४; गा ६३४)। °**मय** वि [°**मय**] मधु से भरा हुआ; (से १, ३०)। °**मह** पुं [°**मथ**] विष्णु, वासुदेव, उपेन्द्र; (पात्र; से १, १७)। २ भ्रमर; (से १,

१७)। °मा पुं [°मह] वसन्त का उत्सव; (से १, १७)। °महण पुं [°मथन] १ विष्णु; (से १, १; वज्जा २४; गा ११७; हे ४, ३८४; पि १४३; पिंग)। २ समुद्र, सागर; ३ सेतु, पुल; (से १, १)। °मास पुं [°मास] चैत मास; (भवि)। °मित्त पुंन [°मित्र] कामदेव; (सुपा ५३६)। °मेहण न [°मेहन] रोग-विशेष, मधु-प्रमेह; (आचा १, ६, १, २)। °मेहणि वि [°मेहनिन्] मधु-प्रमेह रोग वाला; (आचा)। °मेहि पुं [°मेहिन्] वही अर्थ; (आचा)। °राय पुं [°राज] एक राजा; (रयण ७४)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] १ औषधि-विशेष, यष्टिमधु; २ इक्षु, ईख; (हे १, २४७)। °वक्क पुं [°पर्क] १ दधि-युक्त मधु, दही और शहद; २ षोडशोपचार-पूजा का छठवाँ उपचार; (उत्तर १०३)। °वार पुं [°वार] मद्य, दारू; (पाअ)। °सिंगी स्त्री [°शृङ्गी] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ३५)। °सूयण पुं [°सूदन] विष्णु; (गउड; सुपा ७)।

महुअ पुं [**मधूक**] १ वृक्ष-विशेष, महुआ का गाछ; (गा १०३)। २ न. महुआ का फल; (प्राप्र; हे १, २२२)।

महुअ पुं [**दे**] १ पक्षि-विशेष, श्रीवद पक्षी; २ मागध, स्तुति-पाठक; (दे ६, १४४)।

महुण सक [**मथ्**] १ विलोडन करना। २ विनाश करना। वकृ—"तओ विमुक्कट्टहासा जलियजलणपिंगलकेसा **महुणिंत**-जालाकरालपिसाया मुक्का" (महा)।

महुत्त (अप) देखो **मुहुत्त**; (भवि)।

महुप्पल न [**महोत्पल**] कमल, पद्म; "महुप्पलं पंकयं नलिणं" (पाअ)।

महुमुह पुं [**दे. मधुमुख**] पिशुन, दुर्जन, खल; (दे ६, १२२)।

मडुर पुं [**मडुर**] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली अनार्य मनुष्य-जाति; (पराह १, १ —पत्र १४)।

महुर वि [**मधुर**] १ मीठा, मिष्ट; (कुमा; प्रासू ३३; गउड; गा ४०१)। २ कोमल; (भग ६, ३१; औप)। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-भाषी; (पउम ६, १३३)।

महुरा स्त्री [**मथुरा**] भारत की एक प्रसिद्ध नगरी, मथुरा; (ठा १०; सम १५३; पराह १, ३; हे २, १५०; कुमा; वज्जा १२२)। [illegible] पुं [°मङ्गु] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (सिक्खा [illegible])। [illegible]हिव पुं [°धिप] मथुरा का राजा; (कुमा)।

महुरालिअ वि [**दे**] परिचित; (दे ६, १२५)।

महुरिम पुंस्त्री [**मधुरिमन्**] मधुरता, माधुर्य; (सुपा २६४; कुप्र ५०)।

महुरेस पुं [**मथुरेश**] मथुरा का राजा; (कुमा)।

महुला स्त्री [**दे**] रोग-विशेष, पाद-गराड; (निचू २)।

महुसित्थ न [**मधुसिक्थ**] १ मदन, मोम; (उप पृ २०६)। २ पंक-विशेष, स्त्री के पैर में लगा हुआ अलता तक लगने वाला कादा; (ओघभा ३३)। ३ कला-विशेष; (स ६०२)।

महुस्सव देखो **महूसव**; (राज)।

महूअ देखो **महुअ**=मधूक; (कुमा; हे १, १२२)।

महूसव पुं [**महोत्सव**] बड़ा उत्सव; (सुर ३, १०८; नाट—मृच्छ ५४)।

महेंद देखो **महिंद**; (से ६, २२)।

महेड्ड पुं [**दे**] पंक, कादा; (दे ६, ११६)।

महेब्भ पुं [**महेभ्य**] बड़ा शेठ; (श्रा १६)।

महेभ पुं [**महेभ**] बड़ा हाथी; (कुमा)।

महेला स्त्री [**महेला**] स्त्री, नारी; (हे १, १४६; कुमा)।

महेस [**महेश**] नीचे देखो; (लि ६४; भवि)।

महेसर पुं [**महेश्वर**] १ महादेव, शिव; (पउम ३५, ६४; धर्मवि १२८)। २ जिनदेव, अर्हन्; (पउम १०६, १२)। ३ श्रीमन्त, आढ्य; (सिरि ४२)। ४ भूतवादि देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (इक)। °दत्त पुं [°दत्त] एक पुरोहित; (विपा १, ५)।

महेसि देखो **मह-रिसि**; (सम १२३; पराह १, १; उप ३५७; ७२८ टी; अभि ११८)।

महोअर पुं [**महोदर**] १ रावण का एक भाई; (से १२, ५४)। २ वि. बहु-भक्षी; (निचू १)।

महोअहि पुं [**महोदधि**] महासागर; (से ५, २; महा)। °रव पुं [°रव] वानर-वंश का एक राजा; (पउम ६, ६३)।

महोच्छव देखो **महूसव**; (सुर ६, ११०)।

महोदहि देखो **महोअहि**; (पराह २, ४; उप ७२८ टी)।

महोरग पुं [**महोरग**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति; (पराह १, ४—पत्र ६८; इक)। २ बड़ा साँप; ३ महा-काय सर्प की एक जाति; (पराह १, १—पत्र ८)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष; (महा)।

महोसव देखो **महूसव**; (नाट—रत्ना २४)।

महोसहि स्त्री [**महौषधि**] श्रेष्ठ ओषधि; (गउड) ।

मा अ [**मा**] मत, नहीं; (चेइय ६८४; प्रासू २१) ।

मा स्त्री [**मा**] १ लक्ष्मी, दौलत; (से ३, १४; सुर १६, ४२) । २ शोभा; (से ३, १४) ।

मा } अक [**मा**] १ समाना, अटना । २ सक, माप
माअ } करना । ३ निश्चय करना, जानना । **माइ, माअइ,** माइज्जा, माएज्जा; (पव ४०; कुमा; प्राकृ ६६; संवेग १८; औप) । वकृ—**मंत, माअंत;** (कुमा ४, ३०; से २, ८; गा २७८) । कवकृ—**मिज्जंत, मिज्जमाण;** (से ७, ६६; सम ७६; जीवस १४४) । कृ—**माअव्व,** "वाया सहस्स-**मइया**", **माइअ;** (से ६, ३; महा; कप्प) । देखो **मेअ**=मेय ।

माअडि पुं [**मातलि**] इन्द्र का सारथि; (से १४, ६१) ।

माअरा देखो **माइ**=मातृ; (कुमा; हे ३, ४६) ।

माअलि देखो **माअडि;** (से १४, ४६) ।

माअलिआ स्त्री [**दे**] मातृष्वसा, माता की बहिन; (दे ६, १३१) ।

माअही स्त्री [**मागधी**] काव्य की एक रीति; (कप्पू) । देखो **मागहिआ** ।

माआरा } स्त्री [**मातृ**] १ मा, जननी; (षड्; ठा ४, ३;
माइ } कुमा; सुपा ३७७) । २ देवता, देवी; (हे १, १३५; ३, ४६; सुख ३, ६) । ३ स्त्री, नारी; ४ माया; (पंचा १७, ४८) । ५ भूमि; ६ विभूति; ७ लक्ष्मी; ८ रेवती; ९ आखुकर्णी; १० जटामांसी; ११ इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायण; (षड्; हे १, १३५; ३, ४६) । °**घर** न [°**गृह**] देवी-मन्दिर; (सुख ३, ६) । °**ट्ठाण,** °**ठाण** न [°**स्थान**] १ माया-स्थान; (पंचा १७, ४८; सम ३६)। २ माया, कपट-दोष; (पंचा १७, ४८; उत्र ८४) । °**मेह** पुं [°**मेध**] यज्ञ-विशेष, जिसमें माता का वध किया जाय वह यज्ञ; (पउम ११, ४२) । °**हर** देखो °**घर;** (हे १, १३५) । देखो **माउ, माया**=मातृ ।

माइ वि [**मायिन्**] माया-युक्त, मायावी; (भग; कम्म ४, ४०)।

माइ अ [**मा**] मत, नहीं; (प्राकृ ७८) ।

माइ } वि [**दे**] १ रोमश, रोम वाला, प्रभूत बालों से
माइअ } युक्त; (दे ६, १२८; गाया १, १८—पत्र २३७)। २ मयूरित, पुष्प-विशेष वाला; (औप; भग; गाया १, १ टी—पत्र ५; अंत) ।

माइअ वि [**मात**] समाया हुआ, अटा हुआ; (सुख ६, १)।

माइअ वि [**मायिक**] मायावी; (दे ६, १४७; गाया १, १४) ।

माइअ वि [**मात्रिक**] मात्रा-युक्त, परिमित; (तंदु २०; पन्ह १, ४—पत्र ६८) ।

माइअ देखो **मा**=मा ।

माइं देखो **माइ**=मा; (हे २, १६१; कुमा) ।

माइंगण न [**दे**] वृन्ताक, भंटा; (उप ५६३) ।

माइंद [**दे**] देखो **मायंद;** (प्राप्र; स ४१६) ।

माइंद पुं [**मृगेन्द्र**] सिंह, केसरी; "एक्कसरपहरदारियमाइंद-गइंदजुज्झलंभिडिए" (वज्जा ४२) ।

माइंदजाल } न [**मायेन्द्रजाल**] माया-कर्म, बनावटी
माइंदयाल } प्रपंच; (सुर २, २२६; स ६६०) ।

माइंदा स्त्री [**दे**] आमलकी, आमला का गाछ; (दे ६, १२६) ।

माइण्हिआ स्त्री [**मृगतृष्णिका**] धूप में जल की भ्रान्ति; (उप २२० टी; मोह २३) ।

माइलि वि [**दे**] मृदु, कोमल; (दे ६, १२६) ।

माइल्ल देखो **माइ**=मायिन्; (सूअ १, ४, १, १८; आचा; भग; ओघ ४१३; पउम ३१, ४१; औप; ठा ४, ४) ।

माइवाह } पुंस्त्री [**दे, मातृवाह**] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष,
माईवाह } क्षुद्र कीट-विशेष; (उत्त ३६, १२६; जी १५; पुप्फ २६५) । स्त्री—°**हा;** (सुख १८, ३५; जी १५)।

माउ देखो **माइ**=मातृ; (भग; सुर १, १७६; औप; प्रामा; कुमा; षड्; हे १, १३४; १३५) । °**ग्गाम** पुं [°**ग्राम**] स्त्री-वर्ग; (कुप्र १) । °**च्छा** देखो °**सिआ;** (हे २, १४२; गा ६४८) । °**पिउ** पुं [°**पितृ**] माँ-बाप; (सुर १, १७६)। °**मही** स्त्री [°**मही**] माँ की माँ; (रंभा २०)। °**सिआ,** °**सी,** °**स्सिआ** स्त्री [°**ष्वसृ**] माँ की बहिन, माउसी; (हे २, १४२; कुमा; विपा १, ३; सुर ११, २१६; पि १४८; विपा १, ३—पत्र ४१) ।

माउ } वि [**मातृ,** °**क**] १ प्रमाता, प्रमाण-कर्ता, सत्य
माउअ } ज्ञान वाला; २ परिमाण-कर्ता, नापने वाला; ३ पुं, जीव; ४ आकाश; "माऊ", "माउओ" (षड्; हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८; हे १, १३४) ।

माउअ वि [**मातृक**] माता-संबन्धी; (हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८; राज) ।

माउअ पुंन [**मातृक,** °**का**] १ अकार आदि छयालीस अक्षर; "बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा" (सम ६६; आव

५)। २ स्वर; ३ करण; (हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८)। नीचे देखो।

माउआ स्त्री [**मातृका**] १ माता, माँ; (गाया १, ६—पत्र १५८)। २ ऊपर देखो; (सम ६६)। °**पय** पुंन [°**पद**] शास्त्रों के सार-भूत शब्द—उत्पाद, व्यय और धौव्य; (सम ६६)।

माउआ स्त्री [**दे. मातृका**] दुर्गा, पार्वती, उमा; (दे ६, १४७)।

माउआ स्त्री [**दे**] १ सखी, सहेली; (दे ६, १४७; पात्र; गाया १, ६—पत्र १५८)। २ ऊपर के होठ पर के बाल, मूँछ; "रत्तगंडमंसुयाहिं माउयाहिं उवसोहियाइं" (गाया १, ६—पत्र १५८)।

माउक्क वि [**मृदु, °क**] कोमल, सुकुमार; (हे १, १२७; २, ६६; कुमा)।

माउक्क न [**मृदुत्व**] कोमलता; (हे १, १२७; २, २; कुमा)।

माउच्चा स्त्री [**दे. मातृष्वसृ**] देखो **माउ-च्छा**; (षड्)।

माउच्चा स्त्री [**दे**] सखी, सहेली; (षड्)।

माउच्छ वि [**दे**] मृदु, कोमल; (दे ६, १२६)।

माउत्त } देखो **माउक्क**=मृदुत्व; (कुमा; हे २, २;
माउत्तण } षड्)।

माउल पुं [**मातुल**] माँ का भाई, मामा; (सुर ३, ८१; रंभा; महा)।

माउलिअ देखो **मउलिअ**; (से ११, ६१)।

माउलिंग देखो **माहुलिंग**; (राज)।

माउलिंगा } स्त्री [**मातुलिङ्गा, °ङ्गी**] बीजौरे का गाछ;
माउलिंगी } (पराग १—पत्र ३२; पउम ४२, ६)।

माउलुंग देखो **माहुलिंग**; (हे १, २१४; अनु)।

मागंदिअ पुं [**माकन्दिक**] माकन्दिकपुत्र-नामक एक जैन मुनि; (भग १८—१ टी)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] वही अर्थ; (भग १८, ३)।

मागसीसी स्त्री [**मार्गशीर्षी**] १ अगहन मास की पूर्णिमा; २ अगहन की अमावास्या; (इक)।

मागह } वि [**मागध, °क**] १ मगध-देशीय, मगध देश
मागहय } में उत्पन्न, मगध देश का, मगध-संबंधी; (ओघ ७१३; विसे १४६६; पव ६१; गाया १, ८; पउम ६६, ५५)। २ पुं. स्तुति-पाठक, बन्दी; (पात्र; औप)। °**भासा** स्त्री [°**भाषा**] देखो **मागहिआ** का पहला अर्थ; (राज)।

मागहिआ स्त्री [**मागधिका**] १ मगध देश की भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद; २ कला-विशेष; (औप)। ३ छन्द-विशेष; (सुख २, ४५; अजि ४)।

माघवई स्त्री [**माघवती**] सातवीं नरक-भूमि; (पव १४३; इक; ठा ७—पत्र ३८८)।

माघवा } [**माघवा, °वी**] ऊपर देखो; "मघव त्ति माघ-
माघवी } व त्ति य पुढवीणं नामधेयाइं" (जीवस १२; इक)।

माज्जार देखो **मज्जार**; (संक्षि २)।

माडंबिअ पुं [**माडम्बिक**] १ 'मडंब' का अधिपति; (गाया १, १; औप; कप्प)। २ प्रत्यन्त —सीमा-प्रान्त—का राजा; (पराह १, ५—पत्र ६४)।

माडिअ न [**दे**] गृह, घर; (दे ६, १२८)।

माढर पुं [**माठर**] १ सौधर्मेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक)। २ न. गोत्र-विशेष; (कप्प)। ३ शास्त्र-विशेष; (गांदि)।

माढरी स्त्री [**माठरी**] वनस्पति-विशेष; (पराग १—पत्र ३६)।

माढिअ वि [**माठित**] सन्नाह-युक्त, वर्मित; (कुमा)।

माढी स्त्री [**माठी**] कवच, वर्म, बख्तर; (दे ६, १२८ टी; पराह १, ३—पत्र ४४; पात्र; से १२, ६२)।

माण सक [**मानय्**] १ सम्मान करना, आदर करना। २ अनुभव करना। माणइ, माणेइ, माणंति, माणेमि; (हे १, २२८; महा; कुमा; सिरि ६६)। वकृ—**माणंत, माणेमाण**; (सुर २, १८२; गाया १, १—पत्र ३३)। कवकृ—**माणिज्जंत**; (गा ३२०)। हेकृ—**माणिउं, माणेउं**; (महा; कुमा)। कृ—**माणणिज्ज, माणणीअ, माणेयव्व**; (उव; सुर १२, १६५; अभि १०७; उप १०३१ टी), " जया य **माणिमो** होइ पच्छा होइ अ-**माणिमो**" (दसचू १, ५)।

माण पुंन [**मान**] १ गर्व, अहंकार, अभिमान; "अड्ढदीकयमाणिणिमाणो" (कुमा), "पुव्वं विबुहसमक्खं गुरुणो एयस्स खंडियं माणं" (सम्मत्त ११६)। २ माप, परिमाण; ३ नापने का साधन, बाँट आदि; (अणु; कप्प; जी ३०; श्रा १४)। ४ प्रमाण, सबूत; (विसे ६४६; धर्मसं ५२५)। ५ आदर, सत्कार; (गाया १, १; कप्प)। ६ पुं. एक

श्रेष्ठि-पुत्र, (सुपा ४४५)। °इंत, °इत्त, °इल्ल वि [°वत्] मान वाला; (पउ; हे २, १५६; हेका ३१, पि ५९५); स्त्री— °त्ता, °त्ती; (कुमा; गउड)। °तुंग पुं [°तुङ्ग] एक प्राचीन जैन कवि; (नमि ११)। °वई स्त्री [°वती] १ मान वाली स्त्री, (से १०, ६६)। २ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ११)। °संघ न [°संघ] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °वाइ वि [°वादिन्] अहंकारी; (आचा)।

माण वि [**मान**] मान-संबन्धी, मान का; "कोहाए माणाए मायाए" (पडि)।

माण न [**दे**] परिमाण-विशेष, दस सेर का नाप; गुजराती में 'माणुं'; (उप १५४)।

माणंसि वि [**दे**] १ मायावी, कपटी; (दे ६, १४७; षड्)। २ स्त्री. चन्द्र-वधू; (दे ६, १४७)।

माणंसि देखो **मणंसि**; (काप्र १६६; संनि १७; षड्)।

माणण न [**मानन**] १ आदर, सत्कार; (आचा)। २ मानना; (रयण ८४)। ३ अनुभव; ४ सुख का अनुभव; "सुहसमाणणे" (अजि ३१)।

माणणा स्त्री [**मानना**] ऊपर देखो; (पगह २, १; रयण ८४)।

माणय देखो **माण**=(दे); (सुपा ३५८)।

माणव पुं [**मानव**] १ मनुष्य, मर्त्य; (पात्र; सुपा २४३)। २ भगवान् महावीर का एक गण; (ठा ६—पत्र ४५१; कप्प)।

माणवग } पुं [**मानवक**] १ एक निधि, अस्त्र-शस्त्रों की
माणवय } पूर्ति करने वाला निधि; (उप ९८६ टी; ठा ६—पत्र ४४९; इक)। २ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष, एक महाग्रह; (ठा २, ३; सुज्ज २०)। ३ सौधर्म देवलोक का एक चैत्य-स्तम्भ; (सम ६३)।

माणवी स्त्री [**मानवी**] एक विद्या-देवी; (संति ६)।

माणस न [**मानस**] १ सरोवर-विशेष; (पगह १, ४; औप; महा; कुमा)। २ मन, अन्तःकरण; (पात्र; कुमा)। ३ वि. मन-संबन्धी, मन का; (सुर ४, ७५)। ४ पुं. भूतानन्द के गन्धर्व-सैन्य का नायक; (इक)।

माणसिअ वि [**मानसिक**] मन-संबन्धी, मन का; (श्रा २४; औप)।

माणसिआ स्त्री [**मानसिका**] एक विद्या-देवी; (संति ६)।

माणि वि [**मानिन्**] १ मान-युक्त, मान वाला; (उव; कुप्र २४८; कम्म ४, ४०); स्त्री— °**णिणी**; (कुमा)। २ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २)। ३ पर्वत-विशेष; ४ कूट-विशेष; (राज; इक)।

माणिअ वि [**दे, मानित**] अनुभूत; (दे ६, १३०; पात्र)।

माणिअ वि [**मानित**] सत्कृत; (गउड)।

माणिक्क न [**माणिक्य**] रत्न-विशेष, माणिक; (सुपा २३७; वज्जा २०; कप्पू)।

माणिण देखो **माणि**; (पउम ७३, २७)।

माणिभद्द पुं [**माणिभद्र**] १ यक्ष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५; इक)। २ यक्षदेवों की एक जाति; (सिरि ६६६; इक)। ३ देव-विशेष; ४ शिखर-विशेष; (राज; इक)। ५ एक देव-विमान; (राज)।

माणिम देखो **माण**=मानय्।

माणुस पुंन [**मानुष**] १ मनुष्य, मानव, मर्त्य; (सुत्र १, ११, ३; पगह १, १; उव; सुर ३, ५६; प्राप्र; कुमा), "जं पुण हिययाणंदं जणेइ तं माणुसं विरलं" (कुप्र ६), "मयाणि माइपिइपमुहमाणुसाणि सव्वाणि" (कुप्र २६)। २ वि. मनुष्य-संबन्धी; "तिविहं कहावत्थुं ति पुव्वायरियपवाओ, तं जहा, दिव्वं दिव्वमाणुसं माणुसं च" (स २)।

माणुसी स्त्री [**मानुषी**] १ स्त्री-मनुष्य, मानवी; (पव २४१; कुप्र १६०)। २ मनुष्य से संबन्ध रखने वाली; "माणुसी भासा" (कुप्र ६७)।

माणुसुत्तर } पुं [**मानुषोत्तर**] १ पर्वत-विशेष, मनुष्य-
माणुसोत्तर } लोक-सीमा-कारक पर्वत; (राज; ठा ३, ४; जीव ३)। २ न. एक देव-विमान; (सम २)।

माणुस्स देखो **माणुस**; (आचा; औप; धर्मवि १३; उपपं २; विसे ३००७), "माणुस्सं लोगं" (ठा ३, ३—पत्र १४२), "माणुस्सगाइं भोगभोगाइं" (कप्प)।

माणुस्स } न [**मानुष्य, °क**] मनुष्यत्व, मानसपन;
माणुस्सय } (सुपा १६६; स १३१; प्रासू ४७; पउम ३१, ८१)।

माणुस्सी देखो **माणुसी**; (पव २४०)।

माणूस देखो **माणुस**; (सुर २, १७२; ठा ३, ३—पत्र १४२)।

माणेसर पुं [**माणेश्वर**] माणिभद्र यक्ष; (भवि)।

माणोरमा (अप) स्त्री [**मनोरमा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

मातंग देखो **मायंग**; (औप)।

मातंजण देखो **मायंजण**; (ठा २, ३—पत्र ८०)।

माद्दुलिंग देखो **माहुलिंग**; (आचा २, १, ८, १)।

मादलिआ स्त्री [दे] माता, जननी; (दे ६, १३१)।

मादु देखो **माउ**=स्त्री; (प्राकृ ८)।

माधवो देखो **माहवी**=माधवी; (हास्य १३३)।

माभाइ पुंस्त्री [दे] अभय-प्रदान, अभय-दान, अभय; (दे ६, १२६; षड्)।

माभीसिअ न [दे] ऊपर देखो; (दे ६, १२६)।

माम अ. कोमल आमन्त्रण का सूचक अव्यय; (पउम ३८, ३६)।

माम, मामग पुं [दे] मामा, माँ का भाई; (सुपा १६; १६५)।

मामग, मामय वि [**मामक**] १ मदीय, मेरा; (आचा; अच्चु ७३)। २ ममता वाला; (सूअ १, २, २, २८)।

मामय देखो **मामग**=(दे); (पउम ६८, ५५; स ७३१)।

मामा स्त्री [दे] मामी, मामा की बहू; (दे ६, ११२)।

मामाय वि [**मामाक**] 'मा' 'मा' बोलने वाला, निवारक; (ओघ ४३५)।

मामास पुं [**मामाष**] १ अनार्य देश-विशेष; २ अनार्य देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (इक)।

मामि अ. सखी के आमन्त्रण में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (हे २, १६५; कुमा)।

मामिया, मामी स्त्री [दे] मामी, मामा की बहू; (विपा १, ३—पत्र ४१; दे ६, ११२; गा २०४; प्राकृ ३८)।

[मा]य वि [**मात**] समाया हुआ; (कम्म ५, ८५ टी; पुप्फ १७२; महा)।

[मा]य वि [**मायावत्**] कपट वाला; "कोहाए माणाए मायाए लोभाए" (पडि)।

[मा]य देखो **मेत्त**=मात्र; "लोमुक्खणणमायमवि" (सूअ २, १, ४८)।

[मा]य° देखो **माया**=माया; (आचा)।

[मा]य° देखो **मत्ता**=मात्रा। **°न्न** वि [**°ज्ञ**] परिमाण का जानकार; (सूम २, १, ५७)।

[मा]यइ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष; (पउम ५३, ७६)।

[मा]यंग पुं [**मातङ्ग**] १ भगवान् सुपार्श्वनाथ का शासन-यक्ष; २ भगवान महावीर का शासन-यक्ष; (संति ७; ८)। ३ हस्ती, हाथी; (पाअ; सुर १, ११)। ४ चाण्डाल, डोम; (पाअ)।

मायंगी स्त्री [**मातङ्गी**] १ चाण्डालिन; (निचू १)। २ विद्या-विशेष; (आचू १)।

मायंजण पुं [**मातञ्जन**] पर्वत-विशेष; (इक)।

मायंड पुं [**मार्तण्ड**] सूर्य, रवि; (सुपा २४३; कुप्र ८७)।

मायंद पुं [**दे. माकन्द**] आम्र, आम का पेड़; (हे २, १७४; प्राप्र; दे ६, १२८; कुप्र ७१; १०६)।

मायंदिअ देखो **मागंदिअ**; (भग १८, १)।

मायंदी स्त्री [**माकन्दी**] नगरी-विशेष; (स ६; कुप्र १०६)।

मायंदी स्त्री [दे] श्वेताम्बर साध्वी; (दे ६, १२६)।

मायण्हिया स्त्री [**मृगतृष्णिका**] किरण में जल-भ्रान्ति, मरु-मरीचिका;

"जह मुद्धमओो मायण्हियाए तिसिओो करेइ जल-बुद्धिं।
तह निव्विवेयपुरिसो कुणइ अधम्मेवि धम्ममइं" (सुपा ५००)।

मायहिय (अप) देखो **मागहिया**; (भवि)।

माया देखो **माइ**=मातृ; "मायाइ अहं भणिओो" (धर्मवि ५; पाअ; विपा १, ६; षड्)। **°पिइ, °पिति** पुंन [**°पितृ**] माँ-बाप; (पि ३६१; स १८४)। **°मह** पुं [**°मह**] माँ का बाप; (सुर ११, ४६; सुपा ३८४)। **°वित्त** देखो **°पिइ**; "दुहियाण होइ सरणं मायावित्तं महिलियाणं" (पउम १७, २१), "तेणेव देवेण तहिं मायावित्ताइं रोवमाणाइं" (सुर ६, २३५; १, २३६; धर्मवि २१; महा)।

माया देखो **मत्ता**=मात्रा; "नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता; (उत्त १६, ८; औप; उव; कस)।

माया स्त्री [**माया**] १ कपट, छल, शाठ्य, धोखा; (भग; कुमा; ठा ३, ४; पाअ; प्रासू १७५)। २ इन्द्रजाल (दे ३, ५३; उप ८२३)। ३ मन्त्राक्षर-विशेष; 'ह्रीं' अक्षर; (सिरि १६७)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। **°णर** पुं [**°नर**] पुरुष-वेश-धारी स्त्री-आदि; (धर्मसं १२७८)। **°बीय** न [**°बीज**] 'ह्रीँ' अक्षर; (सिरि ४०१)। **°मोस** पुंन [**°मृषा**] कपट-पूर्वक असत्य वचन; (गाया १, १; पण्ह १, २; भग; औप)। **°वत्तिअ, °वत्तीय** वि [**°प्रत्ययिक**] कपट से होने वाला, छल-मूलक (भग; ठा २, १; नव १७)। **°वि** वि [**°विन्**] माया-युक्त; (पउम ८८, ११); स्त्री—**°विणी**; (६२७)।

मायि त्रि [**मायिन्**] माया-युक्त, मायावी; (उवा; पि ४०५)।

मार सक [**मारय्**] १ ताड़न करना। २ हिंसा करना। मारइ, मारेइ; (आचा; कुमा; भग)। भवि—**मारेहिसि**; (पि ५२८)। कर्म—**मारिज्जइ**; (उव)। वकृ—**मारंत, मारेंत**; (भग ६२; पउम १०५, ३६)। कवकृ—**मारिज्जंत**; (सुपा १५७)। संकृ—**मारेत्ता**; (महा), **मारि** (अप); (हे ४, ४३६)। हेकृ—**मारेउं**; (महा)। कृ—**मारियव्व, मारेयव्व**; (पउम ११, ४२), **मारणिज्ज**; (उप ३५७ टी)।

मार पुं [**मार**] १ ताड़न; (सुपा २२६)। २ मरण, मौत; (आचा; सूअ २, २, १७; उप पृ ३०८)। ३ यम, जम; (सूअ १, १, ३, ७)। ४ कामदेव, कंदर्प; (उप ७६८ टी)। ५ चौथी नरक का एक नरकावास; (ठा ४, ४—पत्र २६५; देवेन्द्र १०)। ६ वि. मारने वाला; (णाया १, १६—पत्र २०२)। °**वहू** स्त्री [°**वधू**] रति; (सुपा ३०४)।

मारग वि [**मारक**] मारने वाला; स्त्री—°**रिगा**; (कुप्र २३५)।

मारण न [**मारण**] १ ताड़न; २ हिंसा; (भग; स १२१)।

मारणअ (अप) वि [**मारयितृ**] मारने वाला; (हे ४, ४४३)।

मारणंतिअ वि [**मारणान्तिक**] मरण के अन्त समय का; (सम ११; ११६; औप; उवा; कप्प)।

मारणया } स्त्री [**मारणा**] मारना; (भग; पण्ह १, १;
मारणा } विपा १, १)।

मारय देखो **मारग**; (उव; संबोध ४३)।

मारा स्त्री [**मारा**] प्राणि-वध का स्थान, शूना; (णाया १, १६—पत्र २०२)।

मारि स्त्री [**मारि**] १ रोग-विशेष, मृत्यु-दायक रोग; (स २४२)। २ मारण; (आवम)। ३ मौत, मृत्यु; (उप ३२६)।

मारि देखो **मार**=मारय्।

मारि वि [**मारिन्**] मारने वाला; (महा)।

मारिज्ज पुं [**मारीच**] रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ७)। देखो **मारीअ**।

मारिज्जि देखो **मरिइ**; (पउम ८२, २६)।

मारिय वि [**मारित**] मारा हुआ; (महा)।

मारिलग्गा स्त्री [**दे**] कुत्सित स्त्री; (दे ६, १३१)।

मारिव पुंन [**दे**] गौरव; "गौरवं मारिवं" (गंदि ४७)।

मारिस त्रि [**मादृश**] मेरे जैसा; (कुमा)।

मारी स्त्री [**मारी**] देखो **मारि**; (स २४२)।

मारीअ पुं [**मारीच**] ऋषि-विशेष; (अभि २४६)। देखो **मारिज्ज**।

मारीइ } पुं [**मारीचि**] १ एक विद्याधर सामन्त राजा;
मारीजि } (पउम ८, १३२)। २ रावण का एक सुभट; पउम ५६, २७)।

मारुअ पुं [**मारुत**] १ पवन, वायु; (पाअ; सुपा २०४; सुर ३, ४०; १३, १८४; आप १४; महा)। २ हनूमान का पिता; (से २, ४४)। °**तणय** पुं [°**तनय**] हनूमान; (से २, ४४; हे ३, ८७)। °**त्थ** न [°**स्त्र**] अस्त्र-विशेष, वायव्यास्त्र; (पउम ५६, ६१))

मारुअ वि [**मारुक**] मरु देश का, मरु-संबन्धी; "णो अमयवल्लरी मारुयम्मि कत्थइ थले होइ" (उप ६८६ टी)।

मारुइ पुं [**मारुति**] हनूमान; (से १, ३७)।

माल अक [**माल्**] १ शोभना। २ वेष्टित होना। कृ—"अच्चिसहस्समालणीयं" (णाया १, १—पत्र ३८)।

माल पुं [**दे**] १ आराम, बगीचा; (दे ६, १४६)। २ मञ्च, आसन-विशेष; (दे ६, १४६; णाया १, १—पत्र ६३; पंचा १३, १४)। ३ वि. मञ्जु; (दे ६, १४६)।

माल पुं [**दे. माल**] १ देश-विशेष; (पउम ६८, ६५)। २ घर का उपरि-भाग, तला, मजला; गुजराती में 'माळो' (णाया १, ६—पत्र ५७; चेइय ४८१; पंचा १३, १४; ठा ३, ४—पत्र १५६)। ३ वनस्पति-विशेष; (जं १)।

माल° देखो **माला**। °**गार** वि [°**कार**] माली; (उप पृ १६६)।

मालइ } स्त्री [**मालती**] १ लता-विशेष; २ पुष्प-विशेष;
मालई } (पउम ५३, ७६; पाअ; कुमा)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मालंकार पुं [**मालङ्कार**] वैरोचन बलीन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)।

मालणीय देखो **माल**=माल्।

मालय देखो **माल**=दे. माल; (ठा ३, १—पत्र १२३)।

मालव पुं [**मालव**] १ भारतीय देश-विशेष; (इक; उप १४२ टी)। २ मालव देश का निवासी मनुष्य; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

मालवंत पुं [**माल्यवत्**] १ पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ६६; ८०; सम १०२)। २ एक राज-कुमार; (पउम ६, २२०)। °**परियाग**, °**परियाय** पुं [°**पर्याय**] पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०; ६६)।

मालविणी स्त्री [**मालविनी**] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।

माला स्त्री [**माला**] १ फूल आदि का हार; "मल्लं माला दामं" (पाअ; स्वप्न ७२; सुपा ३१६; प्रासू ३०; कुमा)। २ पंक्ति, श्रेणी; (पाअ)। ३ समूह; "जलमालकद्दमालं" (सूअनि १६१)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**इल्ल** वि [°**वत्**] माला वाला; (प्राप्र)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] माली, पुष्प-व्यवसायी; स्त्री—°**णी**; (सुपा ५१०)। °**गार** वि [°**कार**] वही अर्थ; (उप १४२; टी; अंत १८; सुपा ५६२; उप पृ १५६)। °**धर** पुं [°**धर**] प्रतिमा के ऊपर के भाग की रचना-विशेष; (चेइय ६३)। °**यार**, °**र** देखो °**कार**; (अंत १८; उप पृ १५७; गा ५६६); स्त्री—°**री**; (कुमा; गा ५६७)। °**हरा** स्त्री [°**धरा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

माला स्त्री [**दे**] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका; (दे ६, १२८)।

मालाकुंकुम न [**दे**] प्रधान कुंकुम; (दे ६, १३२)।

मालि पुंस्त्री [**मालि**] वृक्ष-विशेष; (सम १५२)।

मालि पुं [**मालिन्**] १ पाताल-लंका का एक राजा; (पउम ६, २२०)। २ देश-विशेष; (इक)। ३ वि. माली, पुष्प-व्यवसायी; (कुमा)। ४ शोभने वाला; (कुमा)।

मालिअ [**मालिक**] ऊपर देखो; (दे २, ८; पराह १, २; सुपा २७३; उप पृ १५७)।

मालिअ वि [**मालित**] शोभित, विभूषित; "परलोए पुण कल्लाणमालिआमालिआ कमेणेव" (सा २३; पाअ; उप २६४ टी)।

मालिआ [**मालिका, माला**] देखो **माला**=माला; (सा २३; स्वप्न ५३; औप; उवा)।

मालिज्ज न [**मालीय**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।

मालिणी स्त्री [**मालिनी**] १ माली की स्त्री; (कुमा)। २ शोभने वाली; (औप)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ माला वाली; (गउड)।

मालिण्ण, **मालिन्न** न [**मालिन्य**] मलिनता; (उप पृ २२; सुपा ३५२; ५८६)।

मालुग, **मालुय** पुं [**मालुक**] १ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष; (सुख ३६, १३८)। २ वृक्ष-विशेष; (पराण १—पत्र ३१; णाया १, २—पत्र ७८)।

मालुया स्त्री [**मालुका**] १ वल्ली, लता; (सूअ १, ३, २, १०)। २ वल्ली-विशेष; (पराण १—पत्र ३३)।

मालुहाणी स्त्री [**मालुधानी**] लता-विशेष; (गउड)।

मालूर पुं [**दे. मालूर**] कपित्थ, कैथ का गाछ; (दे ६, १३०)।

मालूर पुं [**मालूर**] १ बिल्व वृक्ष, बेल का गाछ; (दे ३, १६; गा ५७६; गउड; कुमा)। २ न. बेल का फल; (पाअ; गउड)।

माविअ वि [**मापित**] मापा हुआ; (से ६, ६०; दे ८, ४८)।

मास देखो **मंस**=मांस; (हे १, २६; ७०; कुमा; उप ७२८ टी)।

मास पुं [**मास**] १ महिना, तीस दिन का समय; (ठा २, ४; उप ७६८ टी; जी ३५)। २ समय, काल; "कालमासे कालं किच्चा" (विपा १, १; २; कुप्र ३५), "पसवमासे" (कुप्र ४०४)। ३ पर्व—वनस्पति-विशेष; "वीरुणा-(?णी) तह इक्कडे य मासे य" (पराण १—पत्र ३३)। °**उस** देखो °**तुस**; (राज)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] एक स्थान में महिना तक रहने का आचार; (बृह ६)। °**खमण** न [°**क्षपण**] लगातार एक मास का उपवास; (णाया १, १; विपा २, १; भग)। °**गुरु** न [°**गुरु**] तप-विशेष, एकाशन तप; (संबोध ५७)। °**तुस** पुं [°**तुष**] एक जैन मुनि; (विवे ५१)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] १ नगरी-विशेष, भंगी देश की राजधानी; (इक)। २ 'वर्त' देश की राजधानी; "पावा भंगी य, मासपुरी वट्टा" (पव २७५)। °**पूरिया** स्त्री [°**पूरिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °**लहु** न [°**लघु**] तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप; (संबोध ५७)।

मास पुं [**माष**] १ अनार्य देश-विशेष; २ देश-विशेष में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पराह १, १—पत्र १४)। ३ धान्य-विशेष, उड़द; (दे १, ६८)। ४ परिमाण-विशेष, मासा; (वज्जा १६०)। °**पण्णी** स्त्री [°**पर्णी**] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ३६)।

मासल देखो **मंसल**; (हे १, २६; कुमा)।

मासलिय वि [**मांसलित**] पुष्ट किया हुआ; (गउड; सुपा ४७४)।

मासाहस पुं [**मासाहस**] पक्षि-विशेष; "मासाहसमसउणि-समो किं वा चिट्ठामि पंचलिओ" (संबे ६; उव; उप ३. ३)।

मासिअ पुं [**दे**] पिशुन, खल, दुर्जन; (दे ६, १२२)।

मासिअ त्रि [**मासिक**] मास-संबन्धी; (उवा; औप)।

मासिआ स्त्री [**मातृष्वसृ**] माँ की बहिन; (धर्मवि २२)।

मासु देखो **मंसु**=श्मश्रु; (हे २, ८६)।

मासुरी स्त्री [**दे**] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ; (दे ६. १३०; पाम)।

माह पुं [**माघ**] १ मास-विशेष, माघ का महिना; (पाअ; हे ४. ३५७)। २ संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि; ३ एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ, शिशुपाल-वध काव्य; (हे १, १८७)।

माह न [**दे**] कुन्द का फूल; (दे ६, १२८)।

माहण पुंस्त्री [**माहन, ब्राह्मण**] हिंसा से निवृत्त, अहिंसक;— १ मुनि, साधु, ऋषि; २ श्रावक, जैन उपासक; ३ ब्राह्मण; (आचा; सूअ २, २, ४८; ५४; भग १, ७; २, ५; प्रासू ८०; महा); स्त्री— °णी; (कप्प)। °**कुंड** न [**कुण्ड**] मगध देश का एक ग्राम; (आचू १)।

माहप्प पुंन [**माहात्म्य**] १ महत्त्व, गौरव; २ महिमा, प्रभाव; (हे १, ३३; गउड; कुमा; सुर ३, ५३; प्रासू १७)।

माहप्पया स्त्री. ऊपर देखो; (उप ७६८ टी)।

माहय पुं [**दे**] चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष; (उत्त ३६, १४६)।

माहव पुं [**माधव**] १ श्रीकृष्ण, नारायण; (गा ४४३; वज्जा १३०)। २ वसन्त ऋतु; ३ वैशाख मास; (गा ७७७; रुक्मि ५३)। °**पणइणी** स्त्री [°**प्रणयिनी**] लक्ष्मी; (स ५२३)।

माहविआ स्त्री [**माधविका**] नीचे देखो; (पाअ)।

माहवी स्त्री [**माधवी**] १ लता-विशेष; (गा ३२२; अभि १६६; स्वप्न ३६)। २ एक राज-पत्नी; (पउम ६, १२६; २०, १८४)।

माहारयण न [**दे**] १ वस्त्र, कपड़ा; २ वस्त्र-विशेष; (दे ६, १३२)।

माहिंद पुं [**माहेन्द्र**] १ एक देव-लोक; (सम ८)। २ एक इन्द्र, माहेन्द्र देवलोक का स्वामी; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ ज्वर-विशेष; "माहिंदजरो जाओ" (सुपा ६०६)। ४ दिन का एक मुहूर्त; (सम ५१)। ५ वि. महेन्द्र-संबन्धी; (पउम ५५, १६)।

माहिल पुं [**दे**] महिषी-पाल, भैंस चराने वाला; (दे ६, १३०)।

माहिवाय पुं [**दे**] १ शिशिर पवन; (दे ६, १३१)। २ माघ का पवन; (षड्)।

माहिसी देखो **महिसी**; (कप्प)।

माही स्त्री [**माघी**] १ माघ मास की पूर्णिमा; २ माघ की अमावास्या; (सुज्ज १०, ६)।

माहुर वि [**माथुर**] मथुरा का; (भत्त १४५)।

माहुर न [**दे**] शाक, तरकारी; (दे ६, १३०)।

माहुर } वि [**माधुर, क**] १ मधुर रस वाला; २
माहुरय } आम्ल-रस से भिन्न रस वाला; (उवा)।

माहुरिअ न [**माधुर्य**] मधुरता; (प्राकृ १६)।

माहुलिंग पुं [**मातुलिङ्ग**] १ बीजपूर वृक्ष, बीजौरानीबू का पेड़; (हे १, २१४; चंड)। २ न. बीजौरे का फल; (षड्; कुमा)।

माहेसर वि [**माहेश्वर**] १ महेश्वर-भक्त; (सिरि ४८)। २ न. नगर-विशेष; (पउम १०, ३४)।

माहेसरी स्त्री [**माहेश्वरी**] १ लिपि-विशेष; (सम ३५)। २ नगरी-विशेष; (राज)।

मि (अप) देखो **अवि**=अपि; (भवि)।

मि स्त्री [**मृत्**] मिट्टी, मट्टी; 'जह मिल्लेवावगमादलाबुणो-वस्समेव गइभावो' (विसे ३१४२)। °**प्पिंड** पुं [**पिण्ड**] मिट्टी का पिंडा; (अभि २००)। °**म्मय** वि [**मय**] मिट्टी का बना हुआ; (उप २४२; पिंड ३३४; सुपा २७०)।

मिअ देखो **मय**=मृग; "सवणिंदियदोसेणं मिओ मओ वाहबा-णेण" (सुर ८, १४२; उत्त १, ५; पगह १, १; सम ६०; रंभा; ठा ४, २; पि ५४)। °**चक्क** न [**चक्र**] विद्या-विशेष, ग्राम-प्रवेश आदि में मृगों के दर्शन आदि से शुभाशुभ फल जानने की विद्या; (सूअ २, २, २७)। °**णअणी**, °**नयणा** स्त्री [**नयना**] देखो **मय-च्छी**; (नाट; सुर ६, १५३)। °**मय** पुं [**मद**] कस्तूरी; (रंभा ३५)। °**रिउ** पुं [**रिपु**] सिंह; (सुपा ५७१)। °**वाहण** पुं [**वाहन**] भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर; (सम १५३)।

मिअ देखो **मित्त**=मित्र; (प्राप्र)।

मिअ वि [**दे**] अलंकृत, विभूषित; (षड्)।

मिअ वि [**मित**] मानोपेत, परिमित; (उत्त १६, ८; सम १५२; कप्प)। २ थोड़ा, अल्प; "मिअं तुच्छं" (पाअ)।

°वाइ वि [°वादिन्] आत्म आदि पदार्थों को परिमित मानने वाला; (ठा ८—पत्र ४२७)।

मिअ देखो मिव=इव; (गा २०६ अ; नाट)।

मिअ° देखो मिआ। °ग्गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष; (विपा १, १)।

मिअआ स्त्री [मृगया] शिकार; (नाट —शकु २७)।

मिअंक पुं [मृगाङ्क] १ चन्द्र, चाँद; (हे १, १३०; प्राप्र; कुमा; कप्र १६४)। २ चन्द्र का विमान; (सुज्ज २०)। ३ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ७)। °मणि पुं [°मणि] चन्द्रकान्त मणि; (कप्पू)।

मिअंग देखो मयंग=मृदंग; (कप्पू)।

मिअसिर देखो मगसिर; (पि ५४)।

मिआ स्त्री [मृगा] १ राजा विजय की पत्नी; (विपा १,१)। २ राजा बलभद्र की पत्नी; (उत्त १६, १) °उत्त, °पुत्त पुं [°पुत्र] १ राजा विजय का एक पुत्र; (विपा १, १; कर्म १५)। २ राजा बलभद्र का एक पुत्र, जिसका दूसरा नाम बलश्री था; (उत्त १६, २)। °वई स्त्री [°वती] १ प्रथम वासुदेव की माता का नाम; (सम १५२)। २ राजा शतानीक की पटरानी का नाम; (विपा १, ५)।

मिइ स्त्री [मिति] १ मान, परिमाण; २ हद, अवधि; "किं दुक्करसुवायाणं न मिई जमुत्तायसत्तीए" (धर्मवि १४३)।

मिइ देखो मिउ=मृत्; (धर्मसं ५५८)।

मिइंग देखो मयंग=मृदंग; (हे १, १३७; कुमा)।

मिइंद देखो मइंद=मृगेन्द्र; (अभि २४२)।

मिउ स्त्री [मृद्] मिट्टी, मट्टी; "मिउदंडचक्कचीवरसामग्गीवसा कुलालुव्व" (सम्मत्त २२४), "मिउपिंडो दव्वघडो सुसावगो तह य दव्वसाहु त्ति" (उप २५५ टी)।

मिउ वि [मृदु] कोमल, सुकुमार; (औप; कुमा; सण)।

मिंचण न [दे] मींचना, निमीलन; (दे ३, ३०)।

मिंज°, मिंजा, मिंजिय स्त्री [मज्जा] १ शरीर-स्थित धातु-विशेष, हाड के बीच का अवयव-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८; महा; उवा; औप)। २ मध्यवर्ती अवयव; "पेहुणमिंजिया इवा" (पण्ण १७ —पत्र ५२६)।

मिंठ, मिंठिल पुं [दे] हस्तिपक, हाथी का महावत; (उप १२८ टी; कुप्र ३६८; महा; भत ७६; धर्मवि ८१; १३५; मन १०; उप १३०) देखो मेंठ।

मिंढ, मिंढय पुंस्त्री [मेढ्र] १ मेंढा, मेष, गाडर; (विसे ३०४ सी; उप पृ २०५; कुप्र १६२), "ते य दरा मिंढया ते य" (धर्मवि १४०)। स्त्री—°ढिया; (पात्र)। २ न. पुरुष-लिंग, पुरुष-चिह्न; (राज)। °मुह पुं [°मुख] १ अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)। २ न. नगर-विशेष; (राज)। देखो मेंढ।

मिंढिय पुं [मेण्ढिक] ग्राम-विशेष; (कर्म १)।

मिग देखो मय=मृग; (विपा १, ७; सुर २, २२७; सुपा १६८; उव), "सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा" (सूअ १, ६, २१)। °गंध पुं [°गन्ध] युगलिक मनुष्य की एक जाति; (इक)। °नाह पुं [°नाथ] सिंह; (सुपा ६३२)। °वइ पुं [°पति] सिंह; (पण्ह १, १; सुपा ६३६)। °वालुंकी स्त्री [°वालुङ्की] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १७—पत्र ५३०)। °ारि पुं [°ारि] सिंह; (उव; सुर ६, २७०)। °ाहिव पुं [°धिप] सिंह; (पण्ह २, ५)।

मिगया स्त्री [मृगया] शिकार; (सुपा २१४; कुप्र २३; मोह ६२)।

मिगव्व न [मृगव्य] ऊपर देखो; (उत्त १८, १)।

मिगसिर देखो मगसिर; (सम ८; इक; पि ४३६)।

मिगावई देखो मिआ-वई; (पउम २०, १८४; २२, ५५; उव; अंत; कुप्र १८३; पडि)।

मिगी स्त्री [मृगी] १ हरिणी; (महा)। २ विद्या-विशेष; (राज)। °पद न [°पद] स्त्री का गुह्य स्थान, योनि; (राज)।

मिच्चु देखो मच्चु; (षड्; कुमा)।

मिच्छ (अप) देखो इच्छ=इष्; "न उ देइ कप्पु मिच्छइ न न दंडु" (भवि)।

मिच्छ पुं [म्लेच्छ] यवन, अनार्य मनुष्य; (पउम २७, १८; ३४, ४१; ती १५; संबोध १६)। °पहु पुं [°प्रभु] म्लेच्छों का राजा; (रंभा)। °पिय न [°प्रिय] पलाण्डु, लशुन; "मिच्छप्पियं तु भुत्तं जा गंधो ता न हिंडंति" (बृह ५)। °ाहिव पुं [°ाधिप] यवनों का राजा; (पउम १२, १४)।

मिच्छ न [मिथ्य] १ असत्य वचन, झूठ; २ वि. असत्य, झूठा; "मिच्छं ते एवमाहंसु" (भग), "तं तहा, नेव मिच्छं" (पउम २३, २६)। ३ मिथ्यादृष्टि, सत्य पर विश्वास नहीं रखने वाला, तत्त्व का अश्रद्धालु; "मिच्छो हियाहियविभागनाणसण्णासमभिओ कोइ" (विसे ५१६)।

मिच्छ° देखो मिच्छा; (कम्म ३, २; ४)। °कार पुं [°कार] मिथ्या-करण; (आचम)। °त्त न [°त्व] सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा, सत्य धर्म का अविश्वास; (ठा ३, ३

आचु ६; भग; औप; उप ५३१; कुमा)। °त्ति वि [°त्विन्] सत्य धर्म पर विश्वास नहीं करने वाला, परमार्थ का अश्रद्धालु; (दं १८)। °दिट्ठि, °दिट्ठीय, °दिट्ठि, °दिट्ठिय वि [°दृष्टि, °क] सत्य धर्म पर श्रद्धा नहीं रखने वाला, जिन-धर्म से भिन्न धर्म को मानने वाला; (सम २६; कुमा; ठा २, २; औप; ठा १)।

मिच्छा अ [**मिथ्या**] १ असत्य, झूठा; (पाअ)। २ कर्म-विशेष, मिथ्यात्व-मोहनीय कर्म; (कम्म २, ४; १४)। ३ गुण-स्थानक विशेष, प्रथम गुण-स्थानक; (कम्म २, २; ३; १३)। °**दंसण** न [°**दर्शन**] १ सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा; (सम ८; भग; औप)। २ असत्य धर्म; (कुमा)। °**णाण** न [°**ज्ञान**] असत्य ज्ञान, विपरीत ज्ञान, अज्ञान; (भग)। °**सुअ** न [°**श्रुत**] असत्य शास्त्र, मिथ्यादृष्टि-प्रणीत शास्त्र; (णंदि)।

मिज्ज अक [**मृ**] मरना। मिज्जंति; (सूअ १, ७, ६)। वकृ—**मिज्जमाण**; (भग)।

मिज्जंत, **मिज्जमाण** } देखो **मा**=मा।

मेज्झ वि [**मेध्य**] शुचि, पवित्र; (उप ७२८ टी)।

मेट सक [**दे**] मिटाना, लोप करना। मिटिज्जसु; (पिंग)। प्रयो—मिटावइ; (पिंग)।

मिट्ठ वि [**मिष्ट, मृष्ट**] मीठा, मधुर; "मुहमिट्ठा मणदुट्ठा वेसा सिट्ठाण कइमिट्ठा" (धर्मवि ६५; कप्पू; सुर १२, १७; हे १, १२८, रंभा)।

मिण सक [**मा, मी**] १ परिमाण करना, नापना, तौलना। २ जानना, निश्चय करना। मिणइ; (विसे २१८६), मिणसु; (पव २५४)।

मिणण न [**मान**] मान, माप, परिमाण; (उप पृ ६७)।

मिणाय न [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती; (दे ६, ११३)।

मिणाल देखो **मुणाल**; (प्राकृ ८; रंभा)।

मित्त पुं [**मित्र**] १ सूर्य, रवि; (सुपा ६४५; सुख ४, ६; पाअ; वज्जा १४४)। २ नक्षत्रदेव-विशेष, अनुराधा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२)। ३ अहोरात्र का तीसरा मुहूर्त; (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। ४ एक राजा का नाम; (विपा १, २)। ५ पुंन. दोस्त, वयस्य, सखा; "मित्तो सही वयंसो" (पाअ), "पहाण-मित्ता" (स ७०७), "तिविहो मित्तो हवइ" (स ७१५; सुपा ६४५; प्रासू ७६)। °**केसी** स्त्री [°**केशी**] रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; "अलंबुसा मित्त (?-त्त)केसी" (ठा ८—पत्र ४३७; इक)। °**गा** स्त्री [°**गा**] वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। °**णंदि** पुं [°**नन्दिन्**] एक राजा का नाम; (विपा २, १०)। °**दाम** पुं [°**दाम**] एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०)। °**देवा** स्त्री [°**देवा**] अनुराधा नक्षत्र; (राज)। °**व** वि [°**वत्**] मित्र वाला; (उत्त ३, १८)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक पुरोहित-पुत्र; (सुपा ५०७)।

मित्त देखो **मेत्त**=मात्र; (कप्प; जी ३१ प्रासू १४५)।

मित्तल पुं [**दे**] कन्दर्प, काम; (दे ६, १२६; सुर १३, ११८)।

मित्ति स्त्री [**मिति**] १ मान, परिमाण; २ सापेक्षता; "उस्सग्गववायाणं मित्तीए अह ण भेदणं दुट्ठं। उस्सग्गववायाणं मित्तीइ नहेव उवगरणं" (अज्झ ३७)।

मित्तिआ स्त्री [**मृत्तिका**] मिट्टी, मट्टी; (अभि २४३)। °**वई** स्त्री [°**वती**] दशार्ण देश की प्राचीन राजधानी; (विचार ४८)।

मित्तिज्ज अक [**मित्त्रीय्**] मित्र को चाहना। वकृ—**मित्ति-ज्जमाण**; (उत्त ११, ७)।

मित्तिय न [**मैत्रेय**] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स गोत्र की एक शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३९०)।

मित्तिवय पुं [**दे**] ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई; (दे ६, १३२)।

मित्ती स्त्री [**मैत्री**] मित्रता, दोस्ती; (सूअ २, ७, ३६; श्रा १४; प्रासू ८)।

मिथुण देखो **मिहुण**; (पउम ६६, ३१)।

मिदु देखो **मिउ**; (अभि १८३; नाट—रत्ना ८०)।

मिरिअ पुंन [**मिरिच**] १ मरिच का गाछ; २ मिरच, मिर्चा; (पण्ण १७—पत्र ५३१; हे १, ४६; ठा ३, १ टी; पव २५९)।

मिरिआ स्त्री [**दे**] कुटी, झोंपड़ी; (दे ६, १३२)।

मिरिइ, **मिरी**, **मिरीइ**, **मिरीय** } पुंस्त्री [**मरीचि**] किरण, प्रभा, तेज; "चंचल-मिरिइकवयं" (औप), "सप्पहा समिरि(? री)या" (औप), "निक्कंकडच्छाया समिरीया" (औप; ठा ४, १—पत्र २२६), "विज्जुघणमिरीइसूरदिप्पंत-

तेय—" (ओप), "सूरमिरीयकवयं विखिम्मुयंतेहिं" (पराह १, ४—पत्र ७२)।

मिल अक [**मिल्**] मिलना। मिलइ; (हे ४, ३३२; रंभा; महा)। कर्म—मिलिज्जइ; (हे ४, ४३४)। वकृ—**मिलंत**; (से १०, १६)।

मिलक्खु पुंन. देखो **मिच्छ**=म्लेच्छ; (ओघ ४४०; धर्मसं ५०८; ती १५; उत्त १०, १६), "मिलक्खूणि" (पि ३८१)।

मिलण न [**मिलन**] मेल, मिलना, एकत्रित होना; "लोगमिलणम्मि" (उप ५७८; सुपा २५०)।

मिलणा स्त्री. ऊपर देखो; (उप १२८ टी; उप ७०६)।

मिला } अक [**म्लै**] म्लान होना, निस्तेज होना।
मिलाअ } मिलाइ, मिलाअइ; (हे २, १०६; ४, १८; २४०; षड्)। वकृ—**मिलाअंत, मिलाअमाण**; (पि १३६; ठा ३, ३; णाया १, ११)।

मिलाअ } वि [**म्लान**] निस्तेज, विच्छाय; (णाया १,
मिलाण } १—पत्र ३७; स ४२५; हे २, १०६; कुमा; महा)।

मिलाण न [**दे**] पर्याण (?) "—थासगमिलाणचमरीगंड-परिमंडियकडीण" (ओप)।

मिलाणि स्त्री [**म्लानि**] विच्छायता; (उप १४२ टी)।

मिलिअ वि [**मिलित**] मिला हुआ; (गा ४४३; कुमा)।

मिलिअ वि [**मेलित**] मिलाया हुआ; (कुमा)।

मिलिच्छ देखो **मिच्छ**=म्लेच्छ; (हे १, ८४; हम्मीर ३४)।

मिलिट्ठ वि [**म्लिष्ट**] १ अस्पष्ट वाक्य वाला; २ म्लान; ३ न. अस्पष्ट वाक्य; (प्राकृ २७)।

मिलिमिलिमिल अक [**दे**] चमकना। वकृ—**मिलिमिलिमिलंत**; (पराह १, ३—पत्र ४४)।

मिलीण देखो **मिलिअ**; (ओघभा २२ टी)।

मिल्ल सक [**मुच्**] छोड़ना, त्यागना। मिल्लइ; (भवि)। वकृ—**मिल्लंत**; (सुपा ३१७)। कृ—**मिल्लेव** (अप); (कुमा)। प्रयो—कवकृ—**मिल्लाविज्जंत**; (कुप्र १६२)।

मिल्लाविअ वि [**मोचित**] छुड़ाया हुआ; (सुपा ३८८; हम्मीर १८; कुप्र ४०१)।

मिल्लिअ (अप) देखो **मिलिअ**; (पिंग)।

मिल्लिर वि [**मोक्तृ**] छोड़ने वाला; (कुमा)।

मिल्ह देखो **मिल्ल**। मिल्हइ; (आत्मानु २२), मिल्हंति; (कुप्र १७)। भवि—मिल्हिस्सं; (कुप्र १०)। कृ—**मिल्हियव्व**; (सिरि ३५७)।

मिल्हिय वि [**मुक्त**] छोड़ा हुआ; (श्रा २७)।

मिव देखो **इव**; (हे २, १८२; प्राप्र; कुमा)।

मिस सक [**मिस्**] शब्द करना। वकृ—**मिसंत**; (तंदु ४४)।

मिस न [**मिष**] बहाना, छल, व्याज; (चेइय ८३१; सिक्खा २६; रंभा; कुमा)।

मिसमिस अक [**दे**] १ अत्यन्त चमकना। २ खूब जलना। वकृ—**मिसमिसंत**; (णाया १, १—पत्र १६; तंदु २६; उप ६४८ टी)।

मिसल (अप) सक [**मिश्रय्**] मिश्रण करना, मिलाना। मराठी में 'मिसलणें'। मिसलइ; (भवि)।

मिसल (अप) देखो **मीस, मीसालिअ**; (भवि)।

मिसिमिस देखो **मिसमिस**। वकृ—**मिसिमिसंत, मिसिमिसिंत, मिसिमिसिमाण, मिसिमिसीयमाण, मिसिमिसेंत, मिसिमिसेमाण**; (ओप; कप्प; पि ५५८; उवा; पि ५५८; णाया १, १—पत्र ६४)।

मिसिमिसिय वि [**दे**] उद्दीप्त, उत्तेजित; (सुर ३, ५०)।

मिस्स सक [**मिश्रय्**] मिश्रण करना, मिलाना। मिस्सइ; (हे ४, २८)।

मिस्स देखो **मीस**=मिश्र; (भग)।

°**मिस्स** पुं [°**मिश्र**] पूज्य, पूजनीय; "वसिट्ठमिस्सेसु" (उत्तर १०३)।

मिस्साकूर पुंन [**मिश्राकूर**] खाद्य-विशेष; "अणुराहाहिं मिस्साकूरं भोच्चा कज्जं साधेंति" (सुज्ज १०, १७)।

मिह अक [**मिध्**] स्नेह करना। मिहसि; (सुर ४, २१)।

मिह देखो **मिस**=मिष; "निग्गओ अलियगामंतरगमणमिहेण" (महा)।

मिह देखो **मिहो**; (आचा)।

मिहिआ स्त्री [**दे**] मेघ-समूह; (दे ६, १३२)। देखो **महिआ**।

मिहिआ स्त्री [**मेघिका**] अल्प मेघ; (से ४, १७)। देखो **महिआ**।

मिहिर पुं [**मिहिर**] सूर्य, रवि; (उप पृ ३५०; सुपा ४१६; धर्मा ५)।

"सायरनिसायराण' मंदसिंहदीण मिहिरमलिणाणं।
दूरेवि वसंताणं पडिवन्नं नन्नहा होइ" (उप ७२८ टी)।

मिहिला स्त्री [**मिथिला**] नगरी-विशेष; (ठा १०; पउम २०, ४५; याया १, ८—पत्र १२६; इक)।

मिहु } देखो **मिहो**; (उप ६४७; आचा)।
मिहुं }

मिहुण न [**मिथुन**] १ स्त्री-पुरुष का युग्म, दंपती; (हे १. १८७; पाअ; कुमा)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि; (विचार १०६)।

मिहो अ [**मिथस्**] परस्पर, आपस में; (उप ६७६; स ५३६; पि ३४७)।

मीअ न [**दे**] समकाल, उसी समय; (दे ६, १३३)।

मीण पुं [**मीन**] १ मत्स्य, मछली; (पाअ; गउड; औप ११६; सुर ३, ५३; १३, ४६)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष; (सुर ३, ५३; विचार १०६; संबोध ५४)।

मीत देखो **मित्त**=मित्र; (संक्षि १७)।

मीमंस सक [**मीमांस्**] विचार करना। कृ—"अ-**मीमंसा** गुरू" (स ७३०)।

मीमंसा स्त्री [**मीमांसा**] जैमिनीय दर्शन; (सुख ३, १; धर्मवि ३८)।

मीमंसिय वि [**मीमांसित**] विचारित; (उप ६८६ टी)।

मीरा स्त्री [**दे**] दीर्घ चुल्ली, बड़ा चुल्हा; (सुअनि ७६)।

मील अक [**मील्**] मीचाना, सकुचाना। मीलइ; (हे ४, २३२; षड्)।

मील देखो **मिल**; (वि ११)।

मीलच्छीकार पुं [**मीलच्छीकार**] १ यवन देश-विशेष; "मीलच्छीकारदेसोवरि चलिदो खप्परखाणराया" (हम्मीर ३५)। २ एक यवन राजा; (हम्मीर ३५)।

मीलण न [**मीलन**] संकोच; (कुमा)।

मीलण देखो **मिलण**; "खणजणमणमीलणोवमा विसया" (वि ११; राज)।

मीलिअ देखो **मिलिअ**=मिलित; (पिंग)।

मीस सक [**मिश्रय्**] मिलाना, मिश्रण करना। कर्म—मीसिज्जइ; (पि ६४)।

मीस वि [**मिश्र**] १ संयुक्त, मिला हुआ, मिश्रित; (हे १, ४३; २, १७०; कुमा; कम्म २, १३; १५; ४, १३; १७; २४; भग; औप; दं २२)। २ न. लगातार तीन दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।

मीसालिअ वि [**मिश्र**] संयुक्त, मिला हुआ; (हे २, १७०; कुमा)।

मीसिय वि [**मिश्रित**] ऊपर देखो; (कुमा; कप्प; भवि)।

मुअ सक [**मोदय्**] खुश करना। कवकृ—**मुइज्जंत**; (से ७, ३७)।

मुअ सक [**मुच्**] छोड़ना। मुअइ; (हे ४, ९१), मुअंति; (गा ३१६)। वकृ—**मुअंत**, **मुयमाण**; (गा ६४१; से ३, ३६; पि ४८५)। संकृ—**मुइत्ता**; (भग)।

मुअ वि [**मृत**] मरा हुआ; (से ३, १२; गा १४२; वज्जा १५८; प्रासू ५३; पउम १८, १६; उप ६४८ टी)। °**वहण** न [°**वहन**] शव-यान, ठठरी; (दे २, २०)।

मुअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; (सुअ २, ७, ३८; आचा)।

मुअंक देखो **मिअंक**; (प्राकृ ८)।

मुअंग देखो **मिअंग**; (पड्; सम्मत्त २१८)।

मुअंगी स्त्री [**दे**] कीटिका, चींटी; (दे ६, १३४)।

मुअग्ग पुं [**दे**] 'आत्मा बाह्य और अभ्यन्तर पुद्गलों से बना हुआ है' ऐसा मिथ्या ज्ञान; (ठा ७ टी—पत्र ३८३)।

मुअण न [**मोचन**] छुटकारा, छोड़ना; (सम्मत्त ७८; विसे ३३१६; उप ५२०)।

मुअल (अप) देखो **मुअ**=मृत; (पिंग)।

मुआ स्त्री [**मृद्**] मिट्टी; (संक्षि ४)।

मुआ स्त्री [**मुद्**] हर्ष, खुशी, आनन्द; "सुरयरसाओवि मुयं अहियं उवजणइ तस्स सा एसा" (रंभा)।

मुआइणी स्त्री [**दे**] डुम्बी, चाण्डालिन; (दे ६, १३५)।

मुआविअ वि [**मोचित**] छुड़वाया हुआ; (स ४४६)।

मुइ वि [**मोचिन्**] छोड़ने वाला; (विसे ३४०२)।

मुइअ वि [**मुदित**] १ हर्षित, मोद-प्राप्त; (सुर ७, २२३; प्रासू १०५; उव; औप)। २ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३२)।

मुइअ वि [**दे**] योनि-शुद्ध, निर्दोष माता वाला; "मुइओ जो होई जोणिसुद्धो" (औप—टी)।

मुइअंगा देखो **मुअंगी**; "उवलिप्पंते काया मुइअंगाई नवरि छद्दे" (पिंड ३५१)।

मुइंग देखो **मिअंग**; (हे १, ४६; १३७; प्राप्र; उवा; कप्प; सुपा ३६२; पाअ)। °**पुक्खर** पुंन [°**पुष्कर**] मृदंग का ऊपरला भाग; (भग)।

मुइंगलिया } स्त्री [**दे**] कीटिका, चींटी; (उप १३४ टी;
मुइंगा } संथा ८६; विसे १२०८; पिंड ३५१ टी) ।
मुइंगि वि [**मृदङ्गिन्**] मृदंग बजाने वाला; (कुमा) ।
मुइंद देखो **मइंद**=मृगेन्द्र; (प्राकृ ८) ।
मुइज्जंत देखो **मुअ**=मोदय् ।
मुइर वि [**मोक्तृ**] छोड़ने वाला; (सण) ।
मुउ देखो **मिउ**; (काल) ।
मुउंद पुं [**मुचुकुन्द**] १ नृप-विशेष; (अच्चु ६६) । २ पुष्पवृक्ष-विशेष; (कप्पू) ।
मुउंद पुं [**मुकुन्द**] विष्णु, नारायण; (नाट—चैत १२६)।
मुउर देखो **मउर**=मुकुर; (षड्) ।
मुउल देखो **मउल**=मुकुल; (षड्; मुद्रा ८४) ।
मुंगायण न [**मृङ्गायण**] गोत्र-विशेष, विशाखा नक्षत्र का गोत्र; (इक) ।
मुंच देखो **मुअ**=मुच् । मुंचइ, मुंचए; (षड्; कुमा) । भूका—मुंची; (भत्त ७६) । भवि—मोच्छं, मोच्छिहि, मुंचिहिइ; (हे ३, १७१; पि ५२६) । कर्म—मुच्चइ; मुच्चए, मुच्चंति; (आचा; हे ४, २०६; महा; भग), भवि—मुच्चिहिति; (भग) । वकृ—**मुंचंत**; (कुमा) । कवकृ—**मुच्चंत**; (पि ५४२) । संकृ—**मोत्तुं**, **मोत्तुआण**, **मोत्तूण**; (कुमा; षड्; प्राकृ ३४) । हेकृ—**मोत्तुं**; (कुमा); **मुंचणहिं** (अप); (कुमा) । कृ—**मोत्तव्व**, **मुत्तव्व**; (हे ४, २१२; गा ६७२; सुपा ५८६) ।
मुंज पुंन [**मुञ्ज**] मूँज, तृण-विशेष, जिसकी रस्सी बनाई जाती है; (सूअ २, १, १६; गच्छ २, ३६; उप ६४८ टी)। °**मेहला** स्त्री [°**मेखला**] मूँज का कटीसूत्र; (गाया १, १६—पत्र २१३) ।
मुंजइ न [**मौञ्जकिन्**] १ गोत्र-विशेष; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०) ।
मुंजायण पुं [**मौञ्जायन**] ऋषि-विशेष; (हे १, १६०; प्राप्र) ।
मुंजि पुं [**मौञ्जिन्**] ऊपर देखो; (प्राकृ १०) ।
मुंट वि [**दे**] हीन शरीर वाला;
"जे बंभचेरभट्ठा पाए पाडंति बंभयारीणं ।
ते हुंति टुंटमुंटा बोहीवि सुदुल्लहा तेसिं" (संबोध १४) ।
मुंड सक [**मुण्डय्**] १ मूँडना, बाल उखाड़ना । २ दीक्षा देना, संन्यास देना । मुंडइ; (भवि), मुंडेह; (सूअ २, २, ६३) । प्रयो—वकृ—**मुंडावेंत**; (पंचा १०, ४८ टी), हेकृ—**मुंडावेउं**, **मुंडावित्तए**, **मुंडावेत्तए**; (पंचा १०, ४८; ठा २, १; कस) ।
मुंड पुंन [**मुण्ड**] १ मस्तक, सिर; (हे ४, ४४६; पिंग) । २ वि. मुण्डित, दीक्षित, प्रव्रजित; (कप्प; उवा; पिंड ३१४)। °**परसु** पुं [°**परशु**] नंगा कुल्हाड़ा, तीक्ष्ण कुठार; (पण्ह १, ३—पत्र ५४) ।
मुंडण न [**मुण्डन**] केशों का अपनयन; (पंचा २, २; स २७१; सुर १२, ४५) ।
मुंडा स्त्री [**दे**] मृगी, हरिणी; (दे ६, १३३) ।
मुंडाविअ वि [**मुण्डित**] मूँडाया हुआ; (भग; महा; णाया १, १) ।
मुंडि वि [**मुण्डिन्**] मुण्डन करने वाला; (उव; औप; भत्त १००) ।
मुंडिअ वि [**मुण्डित**] मुण्डन-युक्त; (भग; उप ६३४; महा) ।
मुंडी स्त्री [**दे**] नीरङ्गी, शिरो-वस्त्र, घूँघट; (दे ६, १३३) ।
मुंढ } पुं [**मूर्धन्**] मूर्धा, मस्तक, सिर; (हे १, २६;
मुंढाण } २, ४१; षड्) । देखो **मुद्ध**=मूर्धन् ।
मुकलाव सक [**दे**] भेजवाना; गुजराती में 'मोकलाववुं'। संकृ—**मुकलाविऊण**; (सिरि ४७४) ।
मुक (अप) सक [**मुच्**] छोड़ना; गुजराती में 'मूकवुं'। मुकइ; (प्राकृ ११९) । संकृ—**मुकिअ**; (नाट—चैत ७६) ।
मुक्क वि [**मूक**] वाक्-शक्ति से रहित; (हे २, ६६; सुपा ५५२; षड्) ।
मुक्क देखो **मुकल**; (विसे ५५०) ।
मुक्क वि [**मुक्त**] १ छोड़ा हुआ, त्यक्त; (उवा; सुपा ४७५; महा; पाअ) । २ मुक्ति-प्राप्त, मोक्ष-प्राप्त; (हे २, २)। ३ लगातार पाँच दिन के उपवास; (संबोध ५८) । देखो **मुत्त**=मुक्त ।
मुक्कय न [**दे**] दुलहिन के अतिरिक्त अन्य निमन्त्रित कन्याओं का विवाह; (दे १, १३५) ।
मुक्कल वि [**दे**] १ उचित, योग्य; (दे ६, १४७) । २ स्वैर, स्वतन्त्र, बन्धन-मुक्त; (दे ६, १४७; सुर १, २३३; विवे १८; गउड; सिरि ३५३; पाअ; सुपा १६८) ।
मुक्कुंडी स्त्री [**दे**] जूट; (दे ६, ११७) ।
मुक्कुरुड पुं [**दे**] राशि, ढेर; (दे ६, १३६) ।

मुक्ख पुं [**मोक्ष**] १ मुक्ति, निर्वाण; (सुर १४, ६१; हे २, ८६; सार्ध ८६)। २ छुटकारा; "रिणमुक्खं" (स्यण ६५; धर्मवि २१)।

मुक्ख वि [**मूर्ख**] अज्ञानी, बेवकूफ; (हे २, ११२; कुमा; गा ८२; सुपा २३१)।

मुक्ख वि [**मुख्य**] प्रधान, नायक; (हास्य १२५)।

मुक्ख पुंन [**मुष्क**] १ अण्डकोष; २ वृत्त-विशेष; ३ चोर, तस्कर; ४ वि. मांसल, पुष्ट; (प्राप्र)।

मुक्खण देखो **मोक्खण**; (सिक्खा ४५)।

मुक्खणी स्त्री [**मोक्षणी**] स्तम्भन से छुटकारा करने वाली विद्या-विशेष; (धर्मवि १२४)।

मुख देखो **मुह**=मुख; (प्रासू ६; राज)।

मुग देखो **मुग्ग**; "एगमुगभरुव्वहणे असमत्थो किं गिरिं वहइ" (सुपा ४६१)।

मुगुंद देखो **मउंद**=मुकुन्द; (आचा २, १, २, ४; विसे ७८ टी)।

मुगुंस पुंस्त्री [**दे**] हाथ से चलने वाले जन्तु की एक जाति, भुजपरिसर्प-जातीय एक प्राणी; (पगह १, १—पत्र ८)। स्त्री—°**सा**; (उवा)। देखो **मंगुस, मुग्गस**।

मुग्ग पुं [**मुद्ग**] १ धान्य-विशेष, मूँग; (उवा)। २ रोग-विशेष; (ति १३)। ३ पक्षि-विशेष, जल-काक; (प्राप्र)। °**पण्णी** स्त्री [°**पर्णी**] वनस्पति-विशेष; (पगण १—पत्र ३६)। °**सेल** पुं [°**शैल**] पर्वत-विशेष, कभी नहीं भिजने वाला एक पर्वत; (उप ७२८ टी)।

मुग्गड पुं [**दे**] मोगल, म्लेच्छ-जाति विशेष; (हे ४, ४०६)। देखो **मोग्गड**।

मुग्गर न [**मुद्गर**] १ पुष्प-विशेष; (वज्जा १०६)। २ देखो **मोग्गर**; (प्राप्र; आप ३६; कप्प)।

मुग्गरय न [**दे, मुग्धारत**] मुग्धा के साथ रमण; (वज्जा १०६)।

मुग्गल देखो **मुग्गड**; (ती १५)।

मुग्गस पुं [**दे**] नकुल, न्यौला; (दे ६, ११८)।

मुग्गाह अक [**प्र+सृ**] फैलना। मुग्गाहइ(?); (धात्वा १४८)।

मुग्गिल, } पुं [**दे**] पर्वत-विशेष; (ती ७; भत्त १६१)।
मुग्गिल्ल }

मुग्गुसु देखो **मुग्गस**; (दे ६, ११८)।

मुग्घड देखो **मुग्गड**; (हे ४, ४०६)।

मुग्घुरुड देखो **मुक्कुरुड**; (दे ६, १३६)।

मुचकुंद } देखो **मुउउंद**; (सुर ३, ३६; कुमा)।
मुचुकुंद }

मुच्छ अक [**मूर्च्छ्**] १ मूर्च्छित होना। २ आसक्त होना। ३ बढ़ना। मुच्छइ, मुच्छए; (कप; सूअ १, १, ४, २)। वकृ—**मुच्छंत, मुच्छमाण**; (गा ५४६; आचा)।

मुच्छणा स्त्री [**मूर्च्छना**] गान का एक अंग; (ठा ७—पत्र ३६५)।

मुच्छा स्त्री [**मूर्च्छा**] १ मोह; (ठा २, ४; प्रासू १७६)। २ अचेतनावस्था, बेहोशी; (उव; पडि)। ३ गृद्धि, आसक्ति; (सम ७१)। ४ मूर्छना, गान का एक अंग; (ठा ७—पत्र ३६३)।

मुच्छाविअ वि [**मूर्च्छित**] मूर्छा-युक्त किया हुआ; (से १२, ३८)।

मुच्छिअ वि [**मूर्च्छित**] १ मूर्च्छा-युक्त; (प्रासू ५७; उवा)। २ पुं. नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २७)।

मुच्छिज्जंत वि [**मूर्च्छायमान**] मूर्च्छा को प्राप्त होता; (से १३, ४३)।

मुच्छिम पुं [**मूर्च्छिम**] मत्स्य-विशेष;

"वायाए काएणं मणरहिआणं न दारुणं कम्मं।
जोअणसहस्समाणो मुच्छिममच्छो उआहरणं" (मन ३)।

मुच्छिर वि [**मूर्च्छितृ**] १ बढ़ने वाला; २ बेहोशी वाला; (कुमा)।

मुज्झ अक [**मुह्**] १ मोह करना। २ घबड़ाना। मुज्झइ; (आचा; उव; महा)। भवि—मुज्झिहिति; (औप)। कृ—**मुज्झियव्व**; (पगह २, ५—पत्र १४६; उव)।

मुट्टिम पुंस्त्री [**दे**] गर्व, अहंकार, गुजराती में 'मोटाई'; "कय-मुट्टिमंगीकारो" (हम्मीर ३५)। देखो **मोट्टिम**।

मुट्ठ वि [**मुष्ट, मुषित**] जिसकी चोरी हुई हो वह; (पिंड ४६६; सुर २, ११२; सुपा ३६१; महा)।

मुट्ठि पुंस्त्री [**मुष्टि**] मुट्ठी, मूठी, मुक्का; "मुट्ठिणा", "मुट्ठीअ" (पि ३७६; ३८५; पाअ; रंभा; भवि)। °**जुज्झ** न [°**युद्ध**] मुष्टि से की जाती लड़ाई, मुक्कामुक्की; (आचा)। °**पुत्थय** न [°**पुस्तक**] १ चार अंगुल लम्बा वृत्ताकार पुस्तक; २ चार अंगुल लम्बा चतुष्कोण पुस्तक; (पत्र ८०)।

मुट्ठिअ पुं [**मौष्टिक**] १ अनार्य देश-विशेष; २ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (पगह १, १—पत्र १४)। ३ मुट्ठी से

लड़ने वाला मल्ल; (पराह २, ५—पत्र १४६)। ४ वि. मुष्टि-संबन्धी; (कप्प)।

मुट्ठिअ पुं [**मुष्टिक**] १ मल्ल-विशेष, जिसको बलदेव ने मारा था; (पराह १, ४—पत्र ७२; पिंग)। २ अनार्य देश-विशेष; ३ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (इक)।

मुड्ढ देखो **मुंढ**; (कुमा)।

मुड्ढ वि [**मुग्ध, मूढ**] मूर्ख, बेवकूफ; (हम्मीर ५१)।

मुण सक [**ज्ञा, मुण्**] जानना। मुणइ, मुणंति, मुणिमो; (हे ४, ७; कुमा)। कर्म—मुणिज्जइ; (हे ४, २५२), मुणिज्जामि; (हास्य १३८)। वकृ—**मुणंत, मुणिंत**; (महा; पउम ४८, ६)। कवकृ—**मुणिज्जमाण**; (से २, ३६)। संकृ—**मुणिय, मुणिउं, मुणिऊण, मुणेऊणं**; (औप; महा)। कृ—**मुणिअव्व, मुणेअव्व**; (कुमा; से ४, २४; नव ४२; कप्प; उव; जी ३२)।

मुणण न [**ज्ञान, मुणन**] ज्ञान, जानकारी; (कुप्र १८४; संबोध २५; धर्मवि १२५; सण)।

मुणमुण सक [**मुणमुणाय्**] अव्यक्त शब्द करना, बड़बड़ना। वकृ—**मुणमुणंत, मुणमुणिंत**; (महा)।

मुणाल पुंन [**मृणाल**] १ पद्मकन्द के ऊपर की वेल—लता; (आचा २, १, ८, ११)। २ बिस, पद्मनाल; ३ पद्म आदि के नाल का तन्तु—सूत्र; (पाअ; णाया १, १३; औप)। ४ वीरण का मूल; ५ पद्म, कमल; "मुणालो", "मुणालं" (प्राप्र; हे १, १३१)।

मुणालि पुं [**मृणालिन्**] १ पद्म-समूह; २ पद्म-युक्त प्रदेश, कमल वाला स्थान; "मुणाली बाणाली" (सुपा ४१३)।

मुणालिआ, मुणाली स्त्री [**मृणालिका, °ली**] १ बिस-तन्तु, कमल-नाल का सूता; (नाट—रत्ना २६)। २ बिस का अंकुर; (गउड)। ३ कमलिनी; (राज)। देखो **मणालिया**।

मुणि पुं [**मुनि**] १ राग-द्वेष-रहित मनुष्य, संत, साधु, ऋषि, यती; (आचा; पाअ; कुमा; गउड)। २ अगस्त्य ऋषि; "जलहिजलं व मुणिणा" (सुपा ४८६)। ३ सात की संख्या; ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार, जो वादी देवसूरि के गुरु थे; (धम्मो २५)। २ एक राज-पुत्र; (महा)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] साधुओं का नायक; (सुपा १६०; २५०)। °**पुंगव** पुं [°**पुङ्गव**] श्रेष्ठ मुनि; (सुपा ६७; श्रु ४१)। °**राय** पुं [°**राज**] मुनि-नायक; (सुपा १६०)। °**वइ** पुं [°**पति**] वही अर्थ; (सुपा १८१; २०६)। °**वर** पुं [°**वर**] श्रेष्ठ मुनि; (सुर ४, ५६; सुपा २४४)। °**वेजयंत** पुं [°**वैजयन्त**] मुनि-प्रधान, श्रेष्ठ मुनि; (सूअ १, ६, २०)। °**सीह** पुं [°**सिंह**] श्रेष्ठ मुनि; (पि ४३६)। °**सुव्वय** पुं [°**सुव्रत**] १ वर्तमान काल में उत्पन्न भारतवर्ष के बीसवें तीर्थंकर; (सम ४३)। २ भारतवर्ष के एक भावी तीर्थंकर; (सम १५३)।

मुणि पुं [**दे. मुनि**] वृक्ष-विशेष, अगस्ति-द्रुम; (दे ६, १३३; कुमा)।

मुणिअ वि [**ज्ञात, मुणित**] जाना हुआ; (हे २, १६६; पाअ; कुमा; अवि १६; पराह १, २; उप १४३ टी)।

मुणिंद पुं [**मुनीन्द्र**] श्रेष्ठ मुनि; (हे १, ८४; भग)।

मुणिर वि [**ज्ञातृ, मुणितृ**] जानने वाला; (सण)।

मुणीस पुं [**मुनीश**] मुनि-नायक; (उप १४१ टी; भवि)।

मुणीसर पुं [**मुनीश्वर**] ऊपर देखो; (सुपा ३६६)।

मुणीसिम (अप) पुंन [**मनुष्यत्व**] १ मनुष्यपन; २ पुरुषार्थ; (हे ४, ३३०)।

मुत्त सक [**मूत्रय्**] मूतना, पेशाब करना। मुत्तंति; (कुप्र ६२)।

मुत्त न [**मूत्र**] प्रस्रवण, पेशाब; (सुपा ६१६)।

मुत्त देखो **मुक्क**=मुक्त; (सम १; से २, ३०; जी २)। °**ालय** पुंस्त्री [°**ालय**] मुक्त जीवों का स्थान, ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी; (इक)। स्त्री—°**या**; (ठा ८—पत्र ४४०; सम २२)।

मुत्त वि [**मूर्त**] १ मूर्ति वाला, रूप वाला, आकार वाला; (चैत्य ६१)। २ कठिन; ३ मूढ़; ४ मूर्च्छा-युक्त; (हे २, ३०)। ५ पुं. उपवास, एक दिन का उपवास; (संबोध ५८)। ६ एक प्राण का नाम; (कप्प)।

मुत्त° देखो **मुत्ता**; (औप; पि ६७; चैत्य १४)।

मुत्तव्व देखो **मुंच**।

मुत्ता स्त्री [**मुक्ता**] मोती, मौक्तिक; (कुमा)। °**जाल** न [°**जाल**] मुक्ता-समूह, मोतिओं की माला; (औप; पि ६७)। °**दाम** न [°**दामन्**] मोतिओं की माला; (अ ४, २)। °**वलि, °वली** स्त्री [°**वलि, °ली**] १ मोती की माला, मोती का हार; (सम ४४; पाअ)। २ तप-विशेष; (अंत ३१)। ३ द्वीप-विशेष; ४ समुद्र-विशेष; (राज)। °**सुत्ति** स्त्री [°**शुक्ति**] १ मोती की छीप; २ मुद्रा-विशेष; (चेइय २४०; पंचा ३, २१)। °**हल** न [°**फल**

मोती; (हे १, २३६; कुमा; प्रामु २)। °हल्लिल वि [°फलवत्] मोती वाला; (कप्पू)।

मुत्ति स्त्री [**मूर्त्ति**] १ रूप, आकार; "मुत्तिविमुत्तेतु" (पिंड ५६; विसे ३१८२)। २ प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति, प्रतिमा; "चउ मुहमुत्तिचउक्कं" (संबोध २)। ३ शरीर, देह; (सुर १, ३; पाअ)। ४ काठिन्य, कठिनत्व; (हे २, ३०; प्राप्र)। °**मंत** वि [°**मत्**] मूर्ति वाला, मूर्त, रूपी; (धर्मवि ६; सुपा ३८६; श्रु ६७)।

मुत्ति स्त्री [**मुक्ति**] १ मोक्ष, निर्वाण; (आचा; पाअ; प्रासू १५५)। २ निर्लोभता, संतोष; (श्रा ३१)। ३ मुक्त जीवों का स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (ठा ८—पत्र ४४०)। ४ निःसंगता; (आचा)।

मुत्ति वि [**मूत्रिन्**] बहु-मूत्र रोग वाला; "उयरिं च पास मुत्तिं च सूणियं च गिलासिणं" (आचा)।

मुत्ति वि [**मौक्तिन्, मौक्तिक**] मोती परोने वाला; (उप पृ २१०)।

मुत्तिअ न [**मौक्तिक**] मुक्ता, मोती; (से ५, ४६; कुप्र ३; कुमा; सुपा २४; २४६; प्रासू ३६; १७१)। देखो **मोत्तिअ**।

मुत्तोली स्त्री [**दे**] १ मूत्राशय; (तंदु ४१)। २ वह छोटा कोठा जो ऊपर नीचे संकीर्ण और मध्य में विशाल हो; (राज)।

मुत्थ त्रि [**मुस्त**] मोथा, नागरमोथा; (गउड)। स्त्री—°**त्था**; (संबोध ४४; कुमा)।

मुदग्ग देखो **मुअग्ग**; (ठा ७—पत्र ३८२)।

मुदा स्त्री [**मुद्**] हर्ष, खुशी। °**गर** वि [°**कर**] हर्ष-जनक; (सूअ १, ६, ६)।

मुदुग पुं [**दे**] ग्राह-विशेष, जल-जन्तु की एक जाति; (जीव १ टी—पत्र ३६)।

मुद्द सक [**मुद्रय्**] १ मोहर लगाना। २ बंद करना। ३ अंकन करना। मुद्देह; (धम्म ११ टी)।

मुद्दंग पुं [**दे**] १ उत्सव; २ सम्मान (?); (स ४६३; ४६४)।

मुद्दग } **मुद्दय** } पुं [**मुद्रिका**] अँगूठी; (उवा), "लद्धो भद्द ! तुमे किं अह अंगुलिमुद्दओ एसो" (पउम ५३, २४)।

मुद्दा स्त्री [**मुद्रा**] १ मोहर, छाप; (सुपा ३२१; वज्जा १५६)। २ अँगूठी; (उवा)। ३ अंग-विन्यास-विशेष; (चैत्य १४)।

मुद्दिअ वि [**मुद्रित**] १ जिस पर मोहर लगाई गई हो वह; २ बंद किया हुआ; (णाया १, २—पत्र ८६; ठा ३, १—पत्र १२३; कप्पू; सुपा १५४; कुप्र ३१)।

मुद्दिअ } **मुद्दिआ** } स्त्री [**मुद्रिका**] अँगूठी; (पराह १, ४; कप्प; औप; तंदु २६)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] ग्रन्थि-बन्ध, बन्ध-विशेष; (ओघ ४०२; ४०५)।

मुद्दिआ स्त्री [**मृद्वीका**] १ द्राक्षा की लता; (पराण १—पत्र ३३)। २ द्राक्षा; (ठा ४, ३—पत्र २३६; उत्त ३४, १५; पव १५५)।

मुद्दी स्त्री [**दे**] चुम्बन; (दे ६, १३३)।

मुद्दुय देखो **मुदुग**; (पराण १—पत्र ४८)।

मुद्ध देखो **मुंढ**; (औप; कप्प; ओघभा १६; कुमा)। °**न्न** वि [°**न्य**] १ मस्तक में उत्पन्न; २ मस्तक-स्थ, अग्रेसर; ३ मूर्धस्थानीय षकार आदि वर्ण; (कुमा)। °**य** पुं [°**ज**] केश, बाल; (पराह १, ३—पत्र ५४)। °**सूल** न [°**शूल**] मस्तक-पीड़ा, रोग-विशेष; (णाया १, १३)।

मुद्ध वि [**मुग्ध**] १ मूढ, मोह-युक्त; २ सुन्दर, मनोहर, मोह-जनक; (हे २, ७७; प्राप्र; कुमा; विपा १, ७—पत्र ७७)।

मुद्धा स्त्री [**मुग्धा**] मुग्ध स्त्री, नायिका का एक भेद; (कुमा)।

मुद्धा (अप) देखो **मुहा**; (कुमा)।

मुद्धाण देखो **मुंढ**; (उवा; कप्प; पि ४०२)।

मुब्भ पुं [**दे**] घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ, गुजराती में 'मोभ'; (दे ६, १३३)। देखो **मोब्भ**।

मुमुक्खु वि [**मुमुक्षु**] मुक्त होने की चाह वाला; (सम्मत्त १४०)।

मुम्मुइ } **मुम्मुय** } वि [**मूकमूक**] १ अत्यन्त मूक; २ अव्यक्त-भाषी; (सूअ १, १२, ५; राज)।

मुम्मुर सक [**चूर्णय्**] चूरना, चूर्ण करना। मुम्मुरइ; (प्राकृ ७५)।

मुम्मुर पुं [**दे**] करीष, गोइंठा; (दे ६, १४७)।

मुम्मुर पुं [**दे. मुर्मुर**] १ करीषाग्नि, गोइंठा की आग; (दे ६, १४७; जी ६)। २ तुषाग्नि; (सुर ३, १८७)। ३ भस्म-च्छन्न अग्नि, भस्म-मिश्रित अग्नि-कण; (उप ६४८ टी; जी ६; जीव १)।

मुम्मुही स्त्री [**मुन्मुखी**] मनुष्य की दश दशाओं में नववीं दशा—८० से ६० वर्ष तक की अवस्था; (ठा १०—पत्र ५१६; तंदु १६)।

मुर अक [**लड्**] १ विलास करना। २ सक. उत्पीडन करना। ३ जीभ चलाना। ४ उपक्षेप करना। ५ व्याप्त करना। ६ बोलना। ७ फेंकना। मुरइ; (प्राकृ ७३)।

मुर अक [**स्फुट्**] खीलना। मुरइ; (हे ४, ११४; षड्)।

मुर पुं [**मुर**] दैत्य-विशेष। °**रिउ** पुं [°**रिपु**] श्रीकृष्ण; (ती ३)। °**वेरिय** पुं [°**वैरिन्**] वही अर्थ; (कुमा)। °**ारि** पुं [°**ारि**] वही अर्थ; (वज्जा १५४)।

मुरई स्त्री [**दे**] असती, कुलटा; (दे ६, १३५)।

मुरज } पुं [**मुरज**] मृदङ्ग, वाद्य-विशेष; (कप्प; पाअ; **मुरय** } गा २५३; सुपा ३६३; अंत; धर्मवि ११२; कुप्र २८८; औप; उप पृ २३६)। देखो **मुरव**।

मुरल पुं.ब. [**मुरल**] एक भारतीय दक्षिण देश, केरल देश; "दिअर ण दिट्ठा तुए मुरला" (गा ८७६)।

मुरव देखो **मुरय**; (औप; उप पृ २३६)। २ अंग-विशेष, गल-घण्टिका; (औप)।

मुरवि स्त्री [**दे. मुरजिन्**] आभरण-विशेष; (औप)।

मुरिअ वि [**स्फुटित**] खीला हुआ; (कुमा)।

मुरिअ वि [**दे**] १ त्रुटित, टूटा हुआ; (दे ६, १३५)। २ मुड़ा हुआ; वक्र बना हुआ; (सुपा ५४७)।

मुरिअ पुं [**मौर्य**] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश; (उप २११ टी)। २ मौर्य वंश में उत्पन्न; "रायगिहे मू(? मु)रिय-बलभद्दे" (विसे २३५७)।

मुरुंड पुं [**मुरुण्ड**] १ अनार्य देश-विशेष; (इक; पव २७४)। २ पादलिप्तसूरि के समय का एक राजा; (पिंड ४६४; ४६८)। ३ पुंस्त्री. मुरुण्ड देश का निवासी मनुष्य; (पण्ह १, १—पत्र १४); स्त्री—°**डी**; (इक)।

मुरुक्कि स्त्री [**दे**] पक्वान्न-विशेष; (सण)।

मुरुक्ख देखो **मुक्ख**=मूर्ख; (हे २, ११२; कुमा; सुपा ६११; प्राकृ ६७)।

मुरुमुंड पुं [**दे**] जूट, केशों की लट; (दे ६, ११७)।

मुरुमुरिअ न [**दे**] रणरणक, उत्सुकता; (दे ६, १३६; पाअ)।

मुरुह देखो **मुरुक्ख**; (षड्)।

मुलासिअ पुं [**दे**] स्फुलिंग, अग्नि-कण; (दे ६, १३५)।

मुल्ल (अप) देखो **मुंच**। मुल्लइ; (प्राकृ ११६)।

मुल्ल } पुंन [**मूल्य**] कीमत; "को मुल्लो" (वज्जा **मुल्लिअ** } १५२; औप; पाअ; कुमा; प्रयौ ७७)।

मुव (अप) देखो **मुअ**=मुच्। मुवइ; (भवि)।

मुव्वह देखो **उव्वह**=उद् + वह्। मुव्वहइ; (हे २, १७४)।

मुस सक [**मुष्**] चोरी करना। मुसइ; (हे ४, २३६; सार्ध ६२)। भवि—मुसिस्सइ; (धर्मवि ४)। कर्म—मुसिज्जामो; (पि ४५५)। वकृ—**मुसंत**; (महा)। कवकृ—**मुसिज्जंत, मुसिज्जमाण**; (सुपा ४५०; कुप्र २४७)। संकृ—**मुसिऊण**; (स ६६३)।

मुसंढि देखो **मुसुंढि**; (सम १३७; पण्ह १, १—पत्र ८; उत्त ३६, १००; पण्ण १—पत्र ३५)।

मुसण न [**मोषण**] चोरी; (सार्ध ६०; धर्मवि ५६)।

मुसल पुंन [**मुसल**] १ मूषल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं; (औप; उवा; षड्; हे १, ११३) । २ मान-विशेष; (सम ६८)। °**धर** पुं [°**धर**] बलदेव; (कुमा)। °**ाउह** पुं [°**ायुध**] बलदेव; (पाअ)।

मुसल वि [**दे**] मांसल, पुष्ट; (षड्)।

मुसलि पुं [**मुसलिन्**] बलदेव; (दे १, ११८; सण)।

मुसली देखो **मोसली**; (ओघभा १६१)।

मुसह न [**दे**] मन की आकुलता; (दे ६, १३४)।

मुसा अ. स्त्री [**मृषा**] मिथ्या, अनृत, झूठ, असत्य भाषण; (उवा; षड्; हे १, १३६; कस), "अयाणंता मुसं वए" (सूअ १, १, ३, ८; उत्त)। °**वाद** देखो °**वाय**; (सूअ १, ३, ४, ८)। °**वादि** वि [°**वादिन्**] झूठ बोलने वाला; (पण्ह १, २; आचा २, ४, १, ८)। °**वाय** पुं [°**वाद**] झूठ बोलना, असत्य भाषण; (सम १०; भग; कस)।

मुसाविअ वि [**मोषित**] चुरवाया हुआ, चोरी कराया हुआ; (ओघ २६० टी)।

मुसिय वि [**मुषित**] चुराया हुआ; (सुपा २२०)।

मुसुंढि पुंस्त्री [**दे**] १ प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष; (औप)। २ वनस्पति-विशेष; (उत्त ३६, १००; सुख ३६, १००)।

मुसुमूर सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। मुसुमूरइ; (हे ४, १०६)। हेकृ—"तेसिं च केसमवि **मुसमु[?सुमू]रिउ**-मसमत्थो" (सम्मत्त १२३)।

मुसुमूरण न [**भञ्जन**] तोड़ना, खण्डन; (सम्मत्त १८७)।

मुसुमूराविअ वि [**भञ्जित**] भँगाया हुआ; (सम्मत्त ३०)।

मुसुमूरिअ वि [**भग्न**] भाँगा हुआ; (पाअ; कुमा; भग) ।
मुह देखो **मुज्झ** । "इय मा मुहसु मणेणं" (जीवा १०) । संकृ—**मुहिअ**; (पिंग) । कवकृ—**मुहिज्जंत**; (से ११, १००) ।
मुह न [**मुख**] १ मुँह, वदन; (पाअ; हे ३, १३४; कुमा; प्रासू १६) । २ अग्र भाग; (सुज्ज ४) । ३ उपाय; (उत्त २१, १६; सुख २१, १६) । ४ द्वार, दरवाजा; ५ आरम्भ; ६ नाटक आदि का सन्धि-विशेष; ७ नाटक आदि का शब्द-विशेष; ८ आद्य, प्रथम; ९ प्रधान, मुख्य; १० शब्द, आवाज; ११ नाटक; १२ वेद-शास्त्र; (प्राप्र; हे १, १८७) । १३ प्रवेश; (निचू ११) । १४ पुं. वृक्ष-विशेष, वडहल का गाछ; (सुज्ज १०, ८) । °**णंतग**, °**णंतय** न [°**नन्तक**] मुख-वस्त्रिका; (ओघभा १५८; पव २) । °**तूरय** न [°**तूर्य**] मुँह से बजाया जाता वाद्य; (भग) । °**धोवणिया** स्त्री [°**धावनिका**] मुँह धोने की सामग्री, दतवन आदि; "मुहधोवणियं खिप्पं उवणेमेहि" (उप ६४८ टी) । °**पत्ती** स्त्री [°**पत्री**] मुख-वस्त्रिका; (उवा; ओघ ६६६; द ५८) । °**पुत्तिया**, °**पोत्तिया**, °**पोत्ती** स्त्री [°**पोतिका**] मुख-वस्त्रिका, बोलते समय मुँह के आगे रखने का वस्त्र-खण्ड; (संबोध ५; विपा १, १; पव १२७) । °**फुल्ल** न [°**फुल्ल**] १ वडहल का फूल; २ चित्रा-नक्षत्र का संस्थान; (सुज्ज १०, ८) । °**भंडग** न [°**भाण्डक**] मुखाभरण; (औप) । °**मंगलिय**, °**मंगलीअ** वि [°**माङ्गलिक**] मुँह से पर-प्रशंसा करने वाला, खुशामदी; (कप्प; औप; सूअ १, ७, २५) । °**मक्कडा**, °**मक्कडिया** स्त्री [°**मर्कटा**, °**टिका**] गला पकड़ कर मुँह को मोड़ना, मुख-वक्रीकरण; (सुर १२, ६७; णाया १, ८—पत्र १४४) । °**वंत** वि [°**वत्**] मुँह वाला; (भवि) । °**वड** पुं [°**पट**] मुँह के आगे रखने का वस्त्र; (से २, २२; १३, ५६) । °**वडण** न [°**पतन**] मुँह से गिरना; (दे ६, १३६) । °**वण्ण** पुं [°**वर्ण**] प्रशंसा, खुशामद; (निचू ११) । °**वास** पुं [°**वास**] भोजन के अनन्तर खाया जाता पान, चूर्ण आदि मुँह को सुगन्धी बनाने वाला पदार्थ; (उवा ४२; उर ८, ५) । °**वीणिआ** स्त्री [°**वीणिका**] मुँह से विकृत शब्द करना, मुँह से वाद्य का शब्द करना; (निचू ५) ।
मुहड देखो **मुहल** । °**सय** न [°**शय**] एक नगर; (ती १५) ।
मुहत्थडी स्त्री [**दे**] मुँह से गिरना; (दे ६, १३६) ।
मुहर देखो **मुहल**=मुखर; (सुपा २२८) ।
मुहरिय वि [**मुखरित**] वाचाल बना हुआ, आवाज करता; (सुर ३, ५४) ।
मुहरोमराइ स्त्री [**दे**] भ्रू, भौं; (दे ६, १३६; षड्; १५३) ।
मुहल न [**दे**] मुख, मुँह; (दे ६, १३४; षड्) ।
मुहल वि [**मुखर**] १ वाचाट, बकवादी; (गा ५७८; सुर ३, १८; सुपा ४) । २ पुं. काक, कौआ; ३ शंख; (हे १, २५४; प्राप्र) । °**रव** पुं [°**रव**] तुमुल, कोलाहल; (पाअ) ।
मुहा अ. स्त्री [**मुधा**] व्यर्थ, निरर्थक; (पाअ; सुर ३, १; धर्मसं ११३२; श्रा २८; प्रासू ६), "मुहाइ हारिंति अप्पाणं" (संबोध ४६) । °**जीवि** वि [°**जीविन्**] भिक्षा पर निर्वाह करने वाला; (उत्त २५, २८) ।
मुहिअ न [**दे**] मुफ्त, बिना मूल्य, मुफ्त में करना; (दे ६, १३४) ।
मुहिआ स्त्री [**दे. मुधिका**] ऊपर देखो; (दे ६, १३४; कुमा; पाअ), "तं सव्वंवि हु कुमरस्स तस्स मुहिआइ सेवगा जाया" (सिरि ४५७), "जिणसासणंपि कहमवि लद्धं हारंसि "मुहियाए" (सुपा १२४), "मुह(? हि)याइ गिण्हह लक्खं" (कुप्र २३७) ।
मुहु } अ [**मुहुस्**] बार बार; (प्रासू २६; हे ४, ४४४;
मुहुं } पि १८१) ।
मुहुत्त } पुंन [**मुहूर्त**] दो घड़ी का काल, अड़तालीस मि-
मुहुत्ताग } निट का समय; (ठा २, ४; हे २, ३०; औप; भग; कप्प; प्रासू १०५; इक; स्वप्न ६४; आचा; ओघ ५२१)।
मुहुमुह देखो **महुमुह**; (पाअ) ।
मुहुल देखो **मुहल**=मुखर; (पाअ) ।
मुहुल्ल देखो **मुह**=मुख; (हे २, १६४; षड्; भवि) ।
मूअ देखो **मुक**=मूक; (हे २, ६६; आचा; गउड; विपा १, १) ।
मूअ देखो **मुअ**=मृत; "लज्जाइ कह ण मूओ सेवंतो गामवाहलियं" (वज्जा ५४) ।
मूअल } वि [**दे. मूक**] मूक, वाक्-शक्ति से हीन; (दे
मूअल्ल } ६, १३७; सुर ११, १५४) ।
मूअल्लइअ } वि [**दे. मूकायित**] मूक बना हुआ; (से ५,
मूअल्लिअ } ४१; गउड; पि ५९५) ।

मूइंगलिया } देखो **मुइंगलिया**; (उप १३४ टी; ओघ
मूइंगा } ५५८)।

मूइल्लअ वि [**मृत**] मरा हुआ;
"एरिहं वारेइ जणो तइआ मूइल्लओ, कहिं व गओ।
जाहे विसं व जाअं सव्वंगपहोलिरं पेम्मं" (गा ६६६ अ)।

मूड } पुं [**दे**] अन्न का एक दीर्घ परिमाण; "इगमूडलक्ख-
मूढ } समहियमवि धन्नं अत्थि तायगिहे" (सुपा ४२७), "तो तेहि ताडिओ सो गाढं कणमूढउव्व लउडेहिं" (धर्मवि १४०)।

मूढ वि [**मूढ**] मूर्ख, मुग्ध; (प्राप्र; कस; पउम १, २८; महा; प्रासू २६)। °**नइय** न [°**नयिक**] श्रुत-विशेष; शास्त्र-विशेष; (आवम)। °**विसूइया** स्त्री [°**विसूचिका**] रोग-विशेष; (सुपा १३)।

मूण न [**मौन**] चुप्पी; (स ४७७; पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

मूयग पुं [**दे. मूयक**] मेवाड़ देश में प्रसिद्ध एक प्रकार का तृण; (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

मूर सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। मूरइ; (हे ४, १०६)। भूका—मूरीअ; (कुमा)।

मूरग वि [**भञ्जक**] भाँगने वाला, चूरने वाला; (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

मूल न [**मूल**] १ जड़; (ठा ६; गउड; कुमा; गा २३२)। २ निबन्धन, कारण; (पण्ह १, ३—पत्र ४२)। ३ आदि, आरम्भ; (पण्ह २, ४)। ४ आद्य कारण; (आचानि १, २, १—गाथा १७३; १७४)। ५ समीप, पास, निकट; (ओघ ३८४; सुर १०, ६)। ६ नक्षत्र-विशेष; (सुर १०, २२३)। ७ व्रतों का पुनः स्थापन; (औप; पंचा १६, २१)। ८ पिप्पली-मूल; (आचानि १, २, १)। ९ वशीकरण आदि के लिए किया जाता ओषधि-प्रयोग; "अमंतमूलं वसीकरणं" (प्रासू १४)। १० आद्य, प्रथम, पहला; ११ मुख्य; (संबोध ३; आवम; सुपा ३६४)। १२ मूलधन, पुंजी; (उत्त ७, १४; १५)। १३ चरण, पैर; १४ सूरण, कन्द-विशेष; १५ टीका आदि से व्याख्येय ग्रन्थ; (संक्षि २१)। १६ प्रायश्चित्त-विशेष; (विसे १२४६)। १७ पुंन. कन्द-विशेष, मूली; (अनु ६; श्रा २०)। °**छेज्ज** वि [°**छेद्य**] मूल-नामक प्रायश्चित्त से नाश-योग्य; (विसे १२४६)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] कृष्ण-पुत्र शाम्ब की एक पत्नी; (अंत १५)। °**देव** पुं [°**देव**] व्यक्ति-वाचक नाम; (महा; सुपा ५२६)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)। °**नायग** पुं [°**नायक**] मन्दिर की अनेक प्रतिमाओं में मुख्य प्रतिमा; (संबोध ३)। °**प्पाडि** त्रि [°**उत्पाटिन्**] मूल को उखाड़ने वाला; (संक्षि २१)। °**बिंब** न [°**बिम्ब**] मुख्य प्रतिमा; (संबोध ३)। °**राय** पुं [°**राज**] गुजरात का चौलुक्य-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा; (कुप्र ४)। °**वंत** वि [°**वत्**] मूल वाला; (औप; णाया १, १)। °**सिरि** स्त्री [°**श्री**] शाम्बकुमार की एक पत्नी; (अंत १५)।

मूलग } न [**मूलक**] १ कन्द-विशेष, मूली, मुरई; (पण्ण
मूलय } १; जी १३)। २ शाक-विशेष; (पव १५४; कुमा)।

मूलिआ स्त्री [**मूलिका**] ओषधि-विशेष; (उप ६०३)।

मूलिय न [**मौलिक**] मूलधन, पुंजी; (उत्त ७, १६; २१)।

मूलिल्ल वि [**मूल, मौलिक**] प्रधान, मुख्य; "मूलिल्लवाहणे" (सिरि ४२३)

मूलिल्ल वि [**मूलवत्**] मूलधन वाला, पुंजी वाला; "अत्थि य देवदत्ताए गाढाणुरत्तो मूलिल्लो मित्तसेणो अयलनामा सत्थवाहपुत्तो" (महा)।

मूली स्त्री [**मूली**] ओषधि-विशेष, वशीकरण आदि के कार्य में लगती ओषधि; (महा)।

मूस देखो **मुस=मुष्**। मूसइ; (संक्षि ३६)।

मूसग } पुं [**मूषक, मूषिक**] मूसा, चूहा; (उव; सुर १,
मूसय } १८; हे १, ८८; षड्; कुमा)।

मूसरि वि [**दे**] भग्न, भाँगा हुआ; (दे ६, १३७)।

मूसल वि [**दे**] उपचित; (दे ६, १३७)।

मूसल देखो **मुसल=मुसल**; (हे १, ११३; कुमा)।

मूसा देखो **मुसा**; (हे १, १३६)।

मूसा स्त्री [**मूषा**] मूस, धातु गालने का पात्र; (कप्प; आरा १००; सुर १३, १८०)।

मूसा स्त्री [**दे**] लघु द्वार, छोटा दरवाजा; (दे ६, १३७)।

मूसाअ न [**दे**] ऊपर देखो; (दे ६, १३७)।

मूसिय देखो **मूसय**; (आचा)। °**ारि** पुं [°**ारि**] मार्जार, बिल्ला; (आचा)।

मे अ [**मे**] १ मेरा; २ मुझसे; (स्वप्न १५; ठा १)।

मेअ पुं [**मेद**] १ अनार्य देश-विशेष; (इक)। २ अनार्य मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ पुंस्त्री. चाण्डाल; (सम्मत्त १७२); स्त्री—**मेई**; (सम्मत्त १७२)।

मेअ वि [**मेय**] १ जानने योग्य, प्रमेय, पदार्थ, वस्तु; (उत्त १८, २३)। २ नापने योग्य; (षड्)। °**न्न** वि [°**ज्ञ**] पदार्थ-ज्ञाता; (उत्त १८, २३; सुख १८, २३)।

मेअ पुंन [**मेदस्**] शरीर-स्थित धातु-विशेष, चर्बी; (तंदु ३८; गाया १, १२—पत्र १७३; गउड)।

मेअज्ज न [**दे**] धान्य, अन्न; (दे ६, १३८)।

मेअज्ज पुं [**मेदार्य**] मेदार्य गोत्र में उत्पन्न; (सूअ २, ७, ५)।

मेअज्ज पुं [**मेतार्य**] १ भगवान् महावीर का दसवाँ गणधर; (सम १९)। २ एक जैन महर्षि; (उत्त; सुपा ४०६; विवे ४३)।

मेअय वि [**मेचक**] काला, कृष्ण-वर्ण; (गउड ३३६)।

मेअर वि [**दे**] अ-सहन, अ-सहिष्णु; (दे ६, १३८)।

मेअल पुं [**मेकल**] पर्वत-विशेष। °**कन्ना** स्त्री [°**कन्या**] नर्मदा नदी; (पाअ)।

मेअवाडय पुंन [**मेदपाटक**] एक भारतीय देश, मेवाड़; "याह दाहविअं सअलंपि मेअवाडयं हम्मीरवीरेहिं" (हम्मीर २७)।

मेइणि° } स्त्री [**मेदिनी**] १ पृथिवी, धरती; (सुपा ३२;
मेइणी } कुमा; प्रासू ५२)। २ चाण्डालिन; (सुपा १६; सम्मत्त १७२)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] राजा; (उप पृ १८६; सुपा १०८)। °**पइ** पुं [°**पति**] १ राजा; २ चाण्डाल; "जो विबुहपणयचरणोवि गोत्तभेई न, मेइणिपईवि न हु मायंगो" (सुपा ३२)। °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] राजा; (उप ७२८ टी)।

मेइणीसर पुं [**मेदिनीश्वर**] राजा; (उप ७२८ टी)।

मेंठ पुं [**दे**] हस्तिपक, महावत; (दे ६, १३८)। देखो **मिंठ**।

मेंठी स्त्री [**दे**] मेंढी, मेषी, गडरिया; (दे ६, १३८)।

मेंढ पुंस्त्री [**मेढ्र**] मेंढा, मेष, गाडर; (ठा ४, २)। स्त्री—°**ढी**; (दे ६, १३८)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ अन्तर्द्वीप-विशेष में रहने वाली मनुष्य-जाति; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °**विसाणा** स्त्री [°**विषाणा**] वनस्पति-विशेष, मेढाशिंगी; (ठा ४, १—पत्र १८५)। देखो **मिंढ**।

मेक्खला देखो **मेहला**; (राज)।

मेघ देखो **मेह**; (कुमा; सुपा २०१)। °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] नन्दन वन के शिखर पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। °**वई** स्त्री [°**वती**] एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] एक विद्याधर राज-कुमार; (पउम ५, ६५)।

मेघंकरा स्त्री [**मेघङ्करा**] एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)।

मेच्छ देखो **मिच्छ**=म्लेच्छ; (ओघ २४; औप; उप ७२८ टी; मुद्रा २६७)।

मेज्ज देखो **मेअ**=मेय; (षड्; गाया १, ८—पत्र १३२; श्रा १८)।

मेज्झ देखो **मिज्झ**; (महा ४, ११; ४०, २४)।

मेट देखो **मिट**। प्रयो—मेटाव; (पिंग)।

मेडंभ पुं [**दे**] मृग-तन्तु; (दे ६, १३९)।

मेडय पुं [**दे**] मजला, तला, गुजराती में 'मेडो'; "तस्स य मयणहराणं संचारिमकट्ठमेडयस्सुवरिं" (सुपा ३५१)।

मेड्ड देखो **मेंढ**; (उप पृ २२४)।

मेढ पुं [**दे**] वणिक्-सहाय, वणिक् को मदद करने वाला; (दे ६, १३८)।

मेढक पुं [**दे**] काष्ठ-विशेष, काष्ठ का छोटा डंडा; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

मेढि पुं [**मेथि**] पशुबन्धन-काष्ठ; खले के बीच का काष्ठ जहाँ पशु को बाँध कर धान्य-मर्दन किया जाता है; (हे १, २१५; गच्छ १, ८; गाया १, १—पत्र ११)। २ आधार, आधार-स्तम्भ; "सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू मेढीभूए" (उवा), "सुत्तत्थविऊ लक्खणजुत्तो गच्छस्स मेढिभूओ अ" (श्रा १; कुप्र २६६; संबोध २४)। °**भूअ** वि [°**भूत**] १ आधार-सदृश, आधार-भूत; (भग)। २ नाभि-भूत, मध्य में स्थित; (कुमा)।

मेणआ } स्त्री [**मेनका**] १ हिमालय की पत्नी; २
मेणक्का } स्वर्ग की एक वेश्या; (अभि ४२; नाट—विक्र ४७; पिंग)।

मेत्त न [**मात्र**] १ साकल्य, संपूर्णता; २ अवधारण; "भोअणमेत्तं" (हे १, ८१)।

मेत्तल [**दे**] देखो **मित्तल**; (सुर १२, १५२)।

मेत्ती स्त्री [**मैत्री**] मित्रता, दोस्ती; (से १, ९; गा २७२; स ७१६; उव)।

मेधुणिया देखो **मेहुणिआ**; (निचू १)।

मेर (अप) वि [**मदीय**] मेरा; (प्राकृ १२०; भवि)।

मेरग पुं [**मेरक, मैरेयक**] १ तृतीय प्रतिवासुदेव राजा; (पउम ५, १५६)। २ मद्य-विशेष; (उवा; विपा १, २—पत्र २७)। ३ वनस्पति का त्वचा-रहित टुकड़ा; "उच्छु-मेरगं" (आचा २, १, ८, १०)।

मेरा स्त्री [**दे. मिरा**] मर्यादा; (दे ६, ११३; पाअ; कुप्र ३३५; अज्झ ६७; सण; हे १, ८७; कुमा; औप)।

मेरा स्त्री [**मेरा**] १ तृण-विशेष, मुञ्ज की सलाई; (पण्ह २, ३—पत्र १२३)। २ दशवें चक्रवर्ती की माता; (सम १५२)।

मेरु पुं [**मेरु**] १ पर्वत-विशेष; (उव; प्रासू १५४)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मेल सक [**मेलय्**] १ मिलाना। २ इकट्ठा करना। मेलइ, मेलंति; (भवि; पि ४८६)। संकृ—**मेलित्ता, मेलिय**; (पि ४८६; महा)।

मेल पुं [**मेल**] मेल, मिलाप, संगम, संयोग, मिलन; (सुअनि १५; दे ६, ५२; सार्ध १०६), "दिट्ठो पियमेलगो मए सु-विणो" (कुप्र २१०)।

मेलण न [**मेलन**] ऊपर देखो; (प्रासू ३५)।

मेलय पुं [**मेलक**] १ संबन्ध, संयोग; (कुमा)। २ मेला, जन-समूह का एकत्रित होना; (दे ७, ८६; त्रि ८६)।

मेलव सक [**मेलय्, मिश्रय्**] मिलाना, मिश्रण करना। मेल-वइ; (हे ४, २८)। भवि—मेलवेहिसि; (पि ५२२)। संकृ—**मेलवि** (अप); (हे ४, ४२६)।

मेलाइयव्व नीचे देखो।

मेलाय अक [**मिल्**] एकत्रित होना। "पडिनिक्खमित्ता एग-यओ मेलायंति" (भग)। संकृ—**मेलायित्ता**; (भग)। कृ—**मेलाइयव्व**; (ओघभा २२ टी)।

मेलाव देखो **मेलव**। मेलावइ; (भवि)।

मेलाव पुंन [**मेल**] १ मिलाप, संगम, मिलन; (सुपा ४६६), "निच्चं चिय मेलावं सुमग्गनिरयाण अइदुलहं" (सट्ठि १४३)।

मेलावग देखो **मेलय**; (आत्महि १६)।

मेलावड (अप) देखो **मेलय**; "मणवल्लहमेलावडउ पुन्निहिं लब्भइ एहु" (सिरि ७३)।

मेलावय देखो **मेलावग**; (सुपा ३६१; भवि)।

मेलाविअ वि [**मेलित**] मिलाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ; (से १०, २८)।

मेलिअ वि [**मिलित**] मिला हुआ; (ठा ३, १ टी—पत्र ११६; महा; उव),

"एवं सुसीलवंतो असीलवंतेहिं मेलिओ संतो। पावेइ गुणपरिहाणी मेलणदोसाणुसंगेणं" (प्रासू ३५)।

मेली स्त्री [**दे**] संहति, जन-समूह का एकत्रित होना, मेला; (दे ६, १३८)।

मेलीण देखो **मिलीण**; (पउम २, ६), "अण्णोण्णकडक्खं-तरपेसिअमेलीणदिट्ठिपसराइं" (गा ६६६; ७०२ अ)।

मेल्ल देखो **मिल्ल**। मेल्लइ; (हे ४, ६१), मेल्लेमि; (कुप्र १६)। वकृ—**मेल्लंत**; (महा)। संकृ—**मेल्लेवि**, **मेल्लेप्पिणु** (अप); (हे ४, ३५३; पि ५८८)। कृ—**मेल्लियव्व**; (उप ५५५)।

मेल्लण न [**मोचन**] छोड़ना, परित्याग; (प्रासू १०२)।

मेल्लाविय वि [**मोचित**] छुड़वाया हुआ; (सुर ८, ६८; महा)।

मेव देखो **एव**; (पि ३३६)।

मेवाड } **मेवाढ** } देखो **मेअवाडय**; (ती १५; मोह ८८)।

मेस पुं [**मेष**] १ मेंढा, गाड़र; (सुर ३, ५३)। २ राशि-विशेष; (विचार १०६; सुर ३, ५३)।

मेह पुं [**मेघ**] १ अभ्र, जलधर; (औप)। २ कालागुरु, सुगंधी धूप-द्रव्य विशेष; (से ६, ४६)। ३ भगवान् सुमति-नाथ का पिता; (सम १५०)। ४ एक जैन महर्षि; (अंत १८)। ५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (णाया १, १—पत्र ३७)। ६ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३२)। ७ छन्द-विशेष; (पिंग)। ८ एक वणिक्-पुत्र; (सुपा ६१७)। ९ एक जैन मुनि; (कप्प)। १० देव-विशेष; (राज)। ११ मुस्तक, ओषधि-विशेष, मोथा; १२ एक राक्षस; १३ राग-विशेष; (प्राप्र; हे १, १८७)। १४ एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (णाया १, १; उव)। °**ज्झाण** पुं [°**ध्यान**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६६)। °**णाअ** पुं [°**नाद**] रावण का एक पुत्र; (से १३, ६८)। °**पुर** न [°**पुर**] वैताढ्य पर्वत के दक्षिण श्रेणी का एक नगर; (पउम ६, २)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ देव-विशेष; (राज)। २ एक अन्तर्द्वीप; ३ अन्तर्द्वीप-विशेष का निवासी मनुष्य; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °**रव** न [°**रव**] विन्ध्यस्थली का एक जैन तीर्थ; (पउम ७७, ६१)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] १ राक्षस-वंश का आदि पुरुष, जो लंका का राजा था;

(पउम ५, २५१)। २ रावण का एक पुत्र; (पउम ८, ६४)। °सीह पुं [°सिंह] विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, ४३)। देखो मेघ।

मेह पुं [मेह] १ सेचन; (सूअ १, ४, २, १२)। २ रोग-विशेष, प्रमेह; (धा २०; सुज्ज १, १५)

मेहंकरा देखो **मेघंकरा**; (इक)।

मेहच्छीर न [दे] जल, पानी; (दे ६, १३६)।

मेहण न [मेहन] १ झरन, टपकना; २ प्रस्रवण, मूत्र; "महुमेहणं" (आचा १, ६, १, २)। ३ पुरुष-लिंग; (राज)।

मेहणि वि [मेहनिन्] झरने वाला; (आचा)।

मेहर पुं [दे] ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया; (दे ६, १२१; सुर १५, १६८)।

मेहरि पुंस्त्री [दे] काष्ठ-कीट, घुण; (जी १५)।

मेहरिया, **मेहरी** स्त्री [दे] गाने वाली स्त्री; (सुपा ३६४)।

मेहलय पुं. ब. [मेखलक] देश-विशेष; (पउम ६८, ६६)।

मेहला स्त्री [मेखला] काञ्ची, करधनी; (पाअ; पग्ह १, ४; औप; गा ४६३)।

मेहलिज्जिया स्त्री [मेखलिया] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

मेहा स्त्री [मेघा] एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)।

मेहा स्त्री [मेधा] बुद्धि, मनीषा, प्रज्ञा; (सम १२५; से १, १६; हास्य १२५)। °**अर** वि [°कर] १ बुद्धि-वर्धक; २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)।

मेहावई देखो **मेघ-वई**; (इक)।

मेहावण्ण न [मेघावर्ण] एक विद्याधर-नगर; (इक)।

मेहावि वि [मेधाविन्] बुद्धिमान्, प्राज्ञ; (ठा ५, ३; गाथा १, १; आचा; कप्प; औप; उप १४२ टी; कुप्र १४०; धर्मवि ६८)। स्त्री—°**णी**; (नाट—शकु ११६)।

मेहि देखो **मेढि**; (से ६, ४२)।

मेहि वि [मेहिन्] प्रस्रवण करने वाला; "महुमेहिणं" (आचा)।

मेहिय न [मेघिक] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।

मेहिल पुं [मेघिल] भगवान् पार्श्वनाथ के वंश का एक जैन मुनि; (भग)।

मेहुण } न [मैथुन] रति-क्रिया, संभोग; (सम १०; **मेहुणय** } पण्ह १, ४; उवा; औप; प्रासू १३६; महा)।

मेहुणय पुं [दे] फुफा का लड़का; (दे ६, १४८)।

मेहुणिअ पुं [दे] मामा का लड़का; (बृह ४)।

मेहुणिआ स्त्री [दे] १ साली, भार्या की बहिन; (दे ६, १४८)। २ मामा की लड़की; (दे ६, १४८; बृह ४)।

मेहुन्न देखो **मेहुण**; "हिंसालियचोरिक्के मेहुन्नपरिग्गहे य निसिभत्ते" (श्रोघ ७८१)।

मो अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अवधारण, निश्चय; (सूअनि ८६; श्रावक १२५)। २ पाद-पूर्ति; (पउम १०२, ८६; धर्मसं ६४५; श्रावक ६०)।

मोअ सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। मोअइ; (प्राकृ ७०; ११६)। वकृ—**मोअंत**; (से ८, ६१)।

मोअ सक [मोचय्] छुड़वाना, त्याग कराना। मोअअदि (शौ); (नाट—मालवि ४१)। कवकृ—**मोइज्जंत**; (गा ६५२)।

मोअ पुं [मोद] हर्ष, खुशी; (रयण १५; महा; भवि)।

मोअ वि [दे] १ अधिगत; २ पुं. चिर्भट आदि का बीज-कोश; (दे ६, १४८)। ३ मूत्र, पेशाब; (सूअ १, ४, २, १२; पिंड ४६८; कस; पभा १५)। °**पडिमा** स्त्री [°प्रतिमा] प्रस्रवण-विषयक नियम-विशेष; (ठा ४, २—पत्र ६४; औप; वव ६)।

मोअइ पुं [मोचकि] वृक्ष-विशेष; "सल्लइमोयइमालुयबउल-पलासे करंजे य" (पण्ण १—पत्र ३१)।

मोअग वि [मोचक] मुक्त करने वाला; (सम १; पडि; सुपा २३४)।

मोअग पुं [मोदक] लडडू, मिष्टान्न-विशेष; (अंत ६; सुपा ४०६)। देखो **मोदअ**।

मोअण न [मोचन] नीचे देखो; (स ५७५; गउड)।

मोअणा स्त्री [मोचना] १ परित्याग; (श्रावक ११५)। २ मुक्ति, छुटकारा; (सूअ १, १४, १८)। ३ छुड़वाना, मुक्त कराना; (उप ५१०)।

मोअय देखो **मोअग**; (भग; पउम ११५, ६; सुपा ४०६; नाट—विक्र २१)।

मोआ स्त्री [मोचा] कदली वृक्ष, केला का गाछ; (राज)।

मोआव सक [मोचय्] छुड़वाना। मोआवेमि, मोआवेहि; (नाट—शकु २५; मृच्छ ३१६)। भवि—मोआवइस्ससि;

(पि ५२८)। कर्म—मोयाविज्जइ; (कुप्र २६१)। वकृ—**मोयावंत**; (सुपा १८६)।
मोआवण न [**मोचन**] छुटकारा कराना; (सिरि ६१८; स ४७)।
मोआविअ } वि [**मोचित**] छुड़वाया हुआ; (पि ५५२;
मोइअ } नाट—मृच्छ ८६; सुर १०, ६; सुपा ४७७; महा; सुर २, ३६; ६, ७८; सुपा २३२; भवि)।
मोइल पुं [**दे**] मत्स्य-विशेष; (नाट)।
मोंड देखो **मुंड**=मुण्ड; (हे १,११६; २०२)।
मोकल्ल सक [**दे**] भेजना; गुजराती में 'मोकलवुं', मराठी में 'मोकलणें'। मोकल्लइ; (भवि)।
मोक देखो **मुक्क**=मुक्त; (षड्)।
मोकणिआ } स्त्री [**दे**] कृष्ण कर्णिका, कमल का काला
मोक्कणी } मध्य भाग; (दे ६, १४०)।
मोकल देखो **मोकल्ल**; । "नियपियरं भणसु तुमं मोक्कलइ जेण सिग्घंपि" (सुपा ६१२)।
मोकल देखो **मुक्कल**; (सुपा ५८०; हे ४, ३६६)।
मोकलिय वि [**दे**] १ प्रेषित, भेजा हुआ; (सुपा ५२१)। २ विसृष्ट; (सुपा १४०)।
मोक्ख देखो **मुक्ख**=मोक्ष; (ओप; कुमा; हे २, १७६; उप २६४ टी; भग; वसु)।
मोक्ख देखो **मुक्ख**=मूर्ख; (उप ५५५)।
मोक्ख न [**दे**] वनस्पति-विशेष; (सूअ २, २, ७)।
मोक्खण न [**मोक्षण**] मुक्ति, छुटकारा; (स ४१८; सुर २, १७)।
मोग्गड पुं [**दे**] व्यन्तर-विशेष; (सुपा ४०८)। देखो **मुग्गड**।
मोग्गर पुं [**दे**] मुकुल, कलिका, बौर; (दे ६, १३६)।
मोग्गर पुं [**मुद्गर**] मुगरा, मोगरी; २ कमरख का पेड़; (हे १, ११६; २, ७७)। ३ पुष्पवृक्ष-विशेष, मोगरा का गाछ; (पराग १—पत्र ३२)। ४ देखो **मुग्गर**। °**पाणि** पुं [°**पाणि**] एक जैन महर्षि; (अंत १८)।
मोग्गरिअ वि [**दे**] संकुचित, मुकुलित; (दे ६, १३६ टी)।
मोग्गल्लायण } न [**मौद्गल्यायन**, °**ल्या**°] १ गोत्र-
मोग्गल्लायण } विशेष; (इक; ठा ७; सुज्ज १०, १६)। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)।
मोग्गाह देखो **मुग्गाह**। मोग्गाहइ (?); (धात्वा १४६)।
मोघ देखो **मोह**=मोघ; "मोघमणोरहा" (पराह १, ३—पत्र ५५)।
मोच देखो **मोअ**=मोचय्। संकृ—**मोचिअ**; (अभि ४७)।
मोच न [**दे**] अर्धजंघी, एक प्रकार का जूता; (दे ६, १३६)।
मोच देखो **मोअ**=(दे); (सूअ १, ४, २, १२)।
मोचग देखो **मोअग**=मोचक; (वसु)।
मोट्टाय अक [**रम्**] क्रीड़ा करना। मोट्टायइ; (हे ४, १६८)।
मोट्टाइअ न [**रत**] रति-क्रीड़ा, रत, मैथुन; (कुमा)।
मोट्टाइअ न [**मोट्टायित**] चेष्टा-विशेष, प्रिय-कथा आदि में भावना से उत्पन्न चेष्टा; (कुमा)।
मोट्टिम न [**दे**] बलात्कार; (पि २३७)। देखो **मुट्टिम**।
मोड सक [**मोटय्**] १ मोड़ना, टेढ़ा करना। २ भाँगना। मोडसि; (सुर ७, ६)। वकृ—**मोडंत, मोडिंत, मोडयंत**; (भवि; महा; स २५७)। कवकृ—**मोडिज्जमाण**; उप पृ ३४)। संकृ—**मोडेउं**; (सुपा १३८)।
मोड पुं [**दे**] जूट, लट; (दे ६, ११७)।
मोडग वि [**मोटक**] मोड़ने वाला; (पराह १, ४—पत्र ७२)।
मोडण न [**मोटन**] मोड़न, मोड़ना; (वज्जा ३८)।
मोडणा स्त्री [**मोटना**] ऊपर देखो; (पराह १, ३—पत्र ५३)।
मोडिअ वि [**मोटित**] १ भग्न, भाँगा हुआ; (गा ५४६; णाया १, ६—पत्र १५७; पराह १, ३—पत्र ५३)। २ आम्रेडित, मोड़ा हुआ; (विपा १, ६—पत्र ६८; स ३३५)।
मोढ पुं [**मोढ**] एक वणिक्-कुल; (कुप्र २०)।
मोढेरय न [**मोढेरक**] नगर-विशेष; (दे ६, १०२; ती ७)।
मोण न [**मौन**] मुनिपन; वाणी का संयम, चुप्पी; (औप; सुपा २३७; महा)। °**चर** वि [°**चर**] मौन व्रत वाला, वाणी का संयम वाला, वाचंयम; (ठा ५, १—पत्र २६६; पराह २, १—पत्र १००)। °**पय** न [°**पद**] संयम, चारित्र; (सूअ १, १३, ६)।
मोणावणा स्त्री [**दे**] प्रथम प्रसूति के समय पिता की ओर से किया जाता उत्सव-पूर्वक निमन्त्रण; (उप ७६८ टी)।
मोणि वि [**मौनिन्**] मौन वाला; (उव; सुपा १४; संबोध २१)।
मोत्त देखो **मुत्त**=मुक्त; (धर्मसं ७५)।

मोसव्व देखो **मुंच** ।

मोत्ता देखो **मुत्ता**; (से ७, २५; संक्षि ४; प्राकृ ६; पउ ८०) ।

मोत्ति देखो **मुत्ति=मुक्ति**; (पगह १, ५—पत्र ९४) ।

मोत्तिअ देखो **मुत्तिअ**; (गा ३७०; स्वप्न ६३; औप; सुपा २३१; महा; गउड) । °**दाम** न [°**दाम**] छन्द-विशेष; (पिंग) ।

मोत्तुआण, **मोत्तुं**, **मोत्तूण** } देखो **मुंच=मुच्** ।

मोत्थ देखो **मुत्थ**; (जी ९; संक्षि ४; पि १२५; प्रामा) ।

मोदअ देखो **मोअग=मोदक**; (स्वप्न ६०) । २ न. छन्द-विशेष; (पिंग) ।

मोब्भ [**दे**] देखो **मुब्भ**; (दे ८, ४) ।

मोर पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, १४०) ।

मोर पुं [**मोर**] १ पक्षि-विशेष, मयूर; (हे १, १७१; कुमा)। २ छन्द-विशेष; (पिंग) । °**बंध** पुं [°**बन्ध**] एक प्रकार का बन्धन; (सुपा ३४५) । °**सिहा** स्त्री [°**शिखा**] एक महौषधि; (ती ५) ।

मोरउल्ला अ. मुधा, व्यर्थ; (हे २, २१४; कुमा) ।

मोरंड पुं [**दे**] तिल आदि का मोदक, खाद्य-विशेष; (राज)।

मोरग वि [**मयूरक**] मयूर के पिच्छों से निष्पन्न; (आचा २, २, ३, १८) ।

मोरत्तय पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, १४०) ।

मोरिय पुं [**मौर्य**] १ एक क्षत्रिय-वंश; २ मौर्य वंश में उत्पन्न; (पि १३४) । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] भगवान् महावीर का एक गणधर—प्रधान शिष्य; (सम १९) ।

मोरी स्त्री [**मोरी**] १ मयूर पक्षी की मादा; (पि १६६; नाट —मृच्छ १८) । २ विद्या-विशेष; (सुपा ४०१) ।

मोलग पुं [**दे. मौलक**] बाँधने के लिए गाड़ा हुआ खूँटा; (उव) ।

मोलि देखो **मउलि**; (काल; सम १९) ।

मोल्ल देखो **मुल्ल**; (हे १, १२४; उव; उप पृ १०४; णाया १, १—पत्र ६०; भग) ।

मोस पुं [**मोष**] १ चोरी; २ चोरी का माल; "राया जंपइ मोसं एसिं अप्पसु" (सुपा २२१; महा) ।

मोस पुंन [**मृषा**] झूठ, असत्य भाषण; "चउव्विहे मोसे पणत्ते", "दसविहे मोसे पगणत्ते" (ठा ४, १; १०; औप; कप्प) ।

मोसण वि [**मोषण**] चोरी करने वाला; (कुप्र ४७) ।

मोसलि, **मोसली** } स्त्री [**दे. मुशली, मौशली**] वस्त्रादि-निरीक्षण का एक दोष, वस्त्र आदि की प्रतिलेखना करते समय मुशल की तरह ऊँचे या नीचे भींत आदि का स्पर्श करना, प्रतिलेखना का एक दोष; "वज्जेयव्वा य मोसली तइया" (उत्त २६, २६; २५; ओघ २६५; २६६) ।

मोसा देखो **मुसा**; (उवा; हे १, १३६) ।

मोह सक [**मोहय्**] १ भ्रम में डालना । २ मुग्ध करना । मोहइ; (भवि) । वकृ—**मोहंत, मोहेंत**; (पउम ४, ८६; ११, ६६) । कृ—देखो **मोहणिज्ज** ।

मोह देखो **मऊह**; (हे १, १७१; कुमा; कुप्र ४३७) ।

मोह वि [**मोघ**] १ निष्फल, निरर्थक; (से १०, ७०; गा ४८२), "मोहाइ पत्थणाए सो पुण सोएइ अप्पाणं" (अच्चु १७५; आत्म १); क्रिवि. "मोहं कओ पयासो" (चेइय ७५०) । २ असत्य, मिथ्या; "मिच्छा मोहं विहलं अलिअं असच्चं असब्भूअं" (पाअ) ।

मोह पुं [**मोह**] १ मूढता, अज्ञता, अज्ञान; (आचा; कुमा; पगह १, १) । २ विपरीत ज्ञान; (कुमा २, ५३) । ३ चित्त की व्याकुलता; (कुमा ५, ५) । ४ राग, प्रेम; ५ काम-क्रीडा; "मोहाउरा मणुस्सा तह कामदुहं सुहं बिंति" (प्रासू ८८; पगह १, ४) । ६ मूर्छा, बेहोशी; (स्वप्न ३१; स ६९६) । ७ कर्म-विशेष, मोहनीय कर्म; (कम्म ४, ६०; ६९) । ८ छन्द-विशेष; (पिंग) ।

मोहण न [**मोहन**] १ मुग्ध करना; २ मन्त्र आदि से वश करना; (सुपा ५९९) । ३ मूर्च्छा, बेहोशी; (निसा ९) । ४ वशीकरण, मुग्ध करने वाला मन्त्रादि-कर्म; (सुपा ५९९) । ५ काम का एक बाण; ६ प्रेम, अनुराग; (कप्पू) । ७ मैथुन, रति-क्रिया; (स ७६०; णाया १, ८; जीव ३) । ८ वि. व्याकुल बनाने वाला; (स ५५७; ७४४) । ९ मोहक, मुग्ध करने वाला; "मोहणं पसूणंपि" (धर्मवि ६५; सुर ३, २९; कर्पूर २५) ।

मोहणिज्ज वि [**मोहनीय**] १ मोह-जनक; २ न. कर्म-विशेष, मोह का कारण-भूत कर्म; (सम ६६; भग; अंत; औप)।

मोहणी स्त्री [**मोहनी**] एक महौषधि; (ती ५) ।

मोहर न [**मौखर्य**] वाचाटता, बकवाद; (पगह २, ५—पत्र १४८; पुप्फ १८०) ।

मोहर वि [**मौखर**] वाचाट, बकवादी; (ठा १०—पत्र ५१६)।
मोहरिअ वि [**मौखरिक**] ऊपर देखो; (ठा ६—पत्र ३७१; औप; सुपा ५२०)।
मोहरिअ न [**मौखर्य**] वाचालता, बकवाद; (उवा; सुपा ५१४)।
मोहि वि [**मोहिन्**] मुग्ध करने वाला; (भवि)।
मोहिणी स्त्री [**मोहिनी**] छन्द-विशेष; (पिंग)।
मोहिय वि [**मोहित**] १ मुग्ध किया हुआ; (पराह १, ४; द्र १४)। २ न. निधुवन, मैथुन, रति-क्रीडा; (णाया १, ६—पत्र १६५)।
मोहुत्तिय वि [**मौहूर्तिक**] ज्योतिष-शास्त्र का जानकार; (कुप्र ५)।
मौलिअ देखो **मोरिय**; "णिवेदेह दाव णंदकुलणगकुलिसस्स मौलिअकुलपडिट्ठावकस्स अज्जचाणक्कस्स" (मुद्रा ३०६)।
म्मि अ. पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (पिंग)।
म्मिव देखो **इव**; (प्राकृ २६)।
म्हस देखो **भंस**=भ्रंश्। म्हसइ; (प्राकृ ७६)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि मआराइसद्दसंकलणो
एगतीसइमो तरंगो समत्तो।

——:०:——

य

य पुं [**य**] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष, अन्तस्थ यकार; (प्राप्र; प्रामा)।
य अ [**च**] १ हेतु-सूचक अव्यय; (धर्मसं ३८५)। २—देखो **च**=अ; (ठा ३, १; ८; पउम ६, ८४; १५, २; श्रा १२; आचा; रंभा; कम्म २,३३; ४, ६; १०; देवेन्द्र ११; प्रासू २७)।
°**य** देखो °**ज**; (आचा)।
°**य** वि [°**द**] देने वाला; (औप; राय; जीव ३)।
यउणा देखो **जँउणा**; (संक्षि ७)।
यंच सक [**अञ्च्**] १ गमन करना। २ पूजा करना। संकृ—**यंचिय**; (ठा ५, १—पत्र ३००)।
°**यंत** वि [**यत**] प्रयत्नशील, उद्योगी; "अ-यंते" (सुअ २, २, ६३)।
°**यंद** देखो **चंद**; (सुपा २२६)।
°**यक्क** देखो **चक्क**; "दिसा-यक्कं" (पउम ६, ७१)।
°**यड** देखो **तड**=तट; (गउड)।
°**यण** देखो **जण**=जन; (सुर १, १२१)।
यणद्दण (अप) देखो **जणद्दण**; "तो वि ण देउ यणद्दणउ गोअरीहोइ मणस्सु" (पि १४ टि)।
°**यण्ण** देखो **कण्ण**=कर्ण; (पउम ६६, २८)।
°**यत्तिअ** वि [**यात्रिक**] यात्रा करने वाला, भ्रमण करने वाला; "सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं" (उवा; बृह १)।
यदावि अ [**यद्यपि**] अभ्युपगम-सूचक अव्यय, स्वीकार-द्योतक निपात; (पंचा १४, ३६)।
यन्नोवइय देखो **जण्णोवईय**; (उप ६४८ टी)।
यम देखो **जम**=यम; "दो अस्सा दो यमा" (ठा २, ३—पत्र ७७)।
°**यर** देखो **कर**=कर; (गउड)।
°**यल** देखो **तल**=तल; (उवा)।
या देखो **जा**=या; "सुरनारगा य सम्मद्दिट्ठी जं यंति सुरमणुएसु" (विसे ४३१; कुमा ८, ८)।
याण सक [**ज्ञा**] जानना। याणइ, याणाइ, याणेइ, याणंति, याणामो, याणिमो; (पि ५१०; उव; भग; धर्मवि १७; वै ६३; प्रासू १०२)।
याण देखो **जाण**=यान; (सम २)।
°**याल** देखो **काल**; (पउम ६, २४३)।
याव (अप) देखो **जाव**=यावत्; (कुमा)।
°**युत्त** देखो **जुत्त**=युक्त; "एयम् अयुत्तं जम्हा" (अज्झ १६७; रंभा)।
येव } (पै. मा) देखो **एव**; (पि ६०; ९५)।
येव्व }
यूचिश (मा) } देखो **चिट्ठ**=स्था। यूचिशदि (शाकारी
यूचिश्त (पै) } भाषा); (प्राकृ १०५)। यूचिश्तदि (पै); (प्राकृ १२६)।
य्येव (शौ) देखो **एव**; (हे ४, २८०)।
य्येव्व देखो **येव**; (पि ९५)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि यआराइसद्दसंकलणो
बत्तीसइमो तरंगो समत्तो।

र

र पुं [**र**] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (सिरि १९६; पिंग)। °**गण** पुं [°**गण**] छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध मध्य-लघु अक्षर वाले तीन स्वरों का समुदाय; (पिंग)।

र अ. पाद-पूरक अव्यय; (हे २, २१७; कुमा)।

रइ स्त्री [**रति**] १ काम-क्रीड़ा, सुरत, मैथुन; (से १, ३२; कुमा)। २ कामदेव की स्त्री; (कुमा)। ३ प्रीति, प्रेम, अनुराग; (कुमा; सुपा ५११)। ४ कर्म-विशेष; (कम्म २, १०)। ५ भगवान् पद्मप्रभ की मुख्य शिष्या; (पव ८)। ६ पुं. भूतानन्द-नामक इन्द्र का एक सेनापति; (इक)। °**अर,** °**कर** वि [°**कर**] १ रति-जनक; (गा ३२६)। २ पुं. पर्वत-विशेष; (पगह १, ५; ठा १०; महा)। °**कीला** स्त्री [°**क्रीडा**] काम-क्रीडा; (महा)। °**केलि** स्त्री [°**केलि**] वही अर्थ; (काप्र २०१)। °**घर** न [°**गृह**] सुरत-मन्दिर, विलास-गृह; (पि ३६६ए)। °**णाह,** °**नाह** पुं [°**नाथ**] कामदेव; (कुमा; सुर ६, ३१)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] वही अर्थ; (कुमा)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] किन्नर-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (इक; ठा ४, १—पत्र २०४)। °**प्पिय** पुं [°**प्रिय**] १ कामदेव; (सुपा ७५)। २ एक इन्द्र; ३ किन्नर देवों की एक जाति; (राज)। °**प्पिया** स्त्री [°**प्रिया**] वानव्यन्तरों के इन्द्र-विशेष की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। °**भवण** न [°**भवन**] कामक्रीडा-गृह; (महा)। °**मंत** वि [°**मत्**] १ राग-जनक; २ पुं. कामदेव, कन्दर्प; (तंदु ४६)। °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] शयन-गृह; (पाअ)। °**रमण** पुं [°**रमण**] कामदेव; (सुपा ४; २८६; कप्पू)। °**लंभ** पुं [°**लम्भ**] १ सुरत की प्राप्ति; २ कामदेव; (से ११, ८)। °**वइ** पुं [°**पति**] कामदेव; (कुमा; सुपा २६२)। °**विद्धि** स्त्री [°**वृद्धि**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४४)। °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] एक राज-कन्या; (उप ७२८ टी)। °**सूहव** पुं [°**सुभग**] कामदेव; (कुमा)। °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] किन्नरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (इक; ठा ४, १—पत्र २०४)। °**हर** न [°**गृह**] शयन-गृह, सुरत-मन्दिर; (उप ६४८ टी; महा)।

रइ पुं [**रवि**] सूर्य, सूरज; (गा ३४; से १, १४; ३२; कप्पू)।

रइअ वि [**रचित**] बनाया हुआ, निर्मित; (सुर ४, २४४; कुमा; औप; कप्प)।

रइआव सक [**रचय्**] बनवाना। संकृ—**रइआविअ;** (ती ३)।

रइगेल्ल वि [**दे**] अभिलषित; (दे ७, ३)।

रइगेल्ली स्त्री [**दे**] रति-तृष्णा; (दे ७, ३)।

रइज्जंत देखो **रय**=रचय्।

रइलक्ख न [**दे**] जघन, नितम्ब; (दे ७, १३; पड्)।

रइलक्ख न [**दे. रतिलक्ष**] रति-संयोग, मैथुन; (दे ७, १३)।

रइल्लिय वि [**रजस्वल**] रज से युक्त, रज वाला; (पि ५६५)।

रइवाडिया देखो **राय-वाडिआ;** "सामिय रइवाडियासमओ" (सिरि १०६)।

रईसर पुं [**रतीश्वर**] कामदेव, कन्दर्प; (कुमा)।

रउताणिया स्त्री [**दे**] रोग-विशेष, पामा, खुजली; (सिरि ३०६)।

रउद्द देखो **रोद्द**=रौद्र; "रउद्दलुद्दे हिं अलोहखिज्जो" (यति ४२; भवि)।

रउरव वि [**रौरव**] भयंकर, घोर। °**काल** पुं [°**काल**] माता के उदर में पसार किया जाता समय-विशेष; "नवमासहिं नियकुक्खहिं धरियउ पुणु रउरवकालहो नीसरियउ" (भवि)।

रओ° देखो **रय**=रजस्; (पिंड ६ टी; सण)।

रंक वि [**रङ्क**] गरीब, दीन; (पिंग)।

रंखोल अक [**दोलय्**] १ झूलना। २ हिलना, चलना, काँपना। रंखोलइ; (हे ४, ४८; वज्जा ६४)।

रंखोलिय वि [**दोलित**] कम्पित; (गउड)।

रंखोलिर वि [**दोलितृ**] झूलने वाला; (गउड; कुमा; पाअ)।

रंग अक [**रङ्ग्**] इधर-उधर चलना। वकृ—**रंगंत;** (कप्प; पउम १०, ३१; पगह १, ३—पत्र ५५)।

रंग सक [**रङ्ग्य्**] रँगना। कर्म—रंगिज्जइ; (संबोध १७)। वकृ—"रायगिहं वरनयरं वर-नय-**रंगंत**-मंदिरं अत्थि" (कुम्मा १८)।

रंग न [**दे**] राँग, राँगा, धातु-विशेष, सीसा; (दे ७, १; से २, २६)।

रंग पुं [**रङ्ग**] १ राग, प्रेम; (सिरि ६१५)। २ नाट्य-शाला, प्रेक्षा-भूमि; (पाअ; सुपा १; कुमा)। ३ युद्ध-मण्डप, जय-भूमि; (धर्मसं ७८३)। ४ संग्राम, लड़ाई; (पिंग)।

५ रक्त वर्ण, लाली; (से २, २६)। ६ वर्ण, रँग; (भवि)। ७ रँगना, रंजन, रँग चढाना; (गउड)। °अ वि [°द] कुतूहल-जनक; (से ६, ४२)।

रंगण न [**रङ्गन**] १ राग, रँगना; २ पुं. जीव, आत्मा; (भग २०, २—पत्र ७७६)।

रंगिर वि [**रङ्गितृ**] चलने वाला; (सुपा ३)।

रंगिल्ल वि [**रङ्गवत्**] रँग वाला; (उर ६, २)।

रंज सक [**रञ्जय्**] १ रँग लगाना। २ खुशी करना। रंजए, रंजेइ; (वज्जा १३६; हे ४, ४६)। कर्म—रंजिज्जइ; (महा)। वकृ—**रंजंत**; (संवे ३)। संकृ—**रंजिऊण**; (पि ५८६)। कृ—**रंजियव्व**; (आत्महि ६)।

रंजग वि [**रञ्जक**] रञ्जन करने वाला; (रंभा)।

रंजण न [**रञ्जन**] १ रँगना; (विसे २६६१)। २ खुशी करना; "परचित्तरंजणे" (उप ६८६ टी; संवे ५)। ३ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ वि. खुशी करने वाला, राग-जनक; (कुमा)।

रंजण पुं [**दे**] १ घडा, कुम्भ; (दे ७, ३)। २ कुण्डा, पात्र-विशेष; (दे ७, ३; पाअ)।

रंजविय } **रंजिअ** } वि [**रञ्जित**] राग-युक्त किया हुआ; (सण; से ६, ४८; गउड; महा; हेका २७२)।

रंडा स्त्री [**रण्डा**] राँड, विधवा; (उप पृ ३१३; वज्जा ४४; कप्पू; पिंग)।

रंढुअ न [**दे**] रज्जु, रस्सी; गुजराती में 'राढवुं'; (दे ७, ३)।

रंध सक [**रध्, राधय्**] राँधना, पकाना। "रंधो राधयतेः स्मृतः" रंधइ; (प्राकृ ७०), रंधेहि; (स २४६)। वकृ—**रंधंत**; (णाया १, ७—पत्र ११७)। संकृ—**रंधिऊण**; (कुप्र २०५)।

रंध न [**रन्ध्र**] छिद्र, विवर; (गा ६५२; रंभा; भवि)।

रंधण न [**रन्धन, राधन**] राँधना, पचन, पाक; (गा १४; पव ३८; सूअनि १२१ टी; सुपा १२; ४०१)। °**घर** न [°**गृह**] पाक-गृह; (रयण ३१)।

रंप सक [**तक्ष्**] छिलना, पतला करना। रंपइ; (हे ४, १६४; प्राकृ ६५; षड्)।

रंपण न [**तक्षण**] तनू-करण, पतला करना; (कुमा)।

रंफ देखो **रंप**। रंफइ, रंफए; (हे ४, १६४; षड्)।

रंफण देखो **रंपण**; (कुमा)।

रंभ सक [**गम्**] जाना, गति करना। रंभइ; (हे ४, १६२), रंभंति; (कुमा)।

रंभ देखो **रंफ**। रंभइ; (धात्वा १४६)।

रंभ सक [**आ+रभ्**] आरम्भ करना। रंभइ; (षड्)।

रंभ पुं [**दे**] अन्दोलन-फलक, हिंडोले का तख्ता; (दे ७, १)।

रंभा स्त्री [**रम्भा**] १ कदली, केला का गाछ; (सुपा २५४; ६०५; कुप्र ११७; पाअ)। २ देवांगना-विशेष, एक अप्सरा; (सुपा २५४; रयण ५)। ३ वैरोचन-नामक बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२; णाया २—पत्र २५१)। ४ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ८)।

रक्ख सक [**रक्ष्**] रक्षण करना, पालन करना। रक्खइ; (उव; महा)। भूका—रक्खीअ; (कुमा)। वकृ—**रक्खंत**; (गा ३८; औप; मा ३७)। कवकृ—**रक्खीअमाण**; (नाट—मालती २८)। कृ—**रक्ख, रक्खणिज्ज, रक्खियव्व, रक्खेयव्व**; (से ३, ५; सार्ध १००; गउड; सुपा २४०)।

रक्ख पुंन [**रक्षस्**] राक्षस; (पाअ; कुप्र ११३; सुपा १३०; सट्ठि ६ टी; संबोध ४४)।

रक्ख वि [**रक्ष**] १ रक्षक, रक्षा करने वाला; (उप पृ ३६८; कप्प)। २ पुं. एक जैन मुनि; (कप्प)।

रक्ख देखो **रक्ख=रक्ष्**।

रक्खअ } **रक्खग** } वि [**रक्षक**] रक्षण-कर्ता; (नाट—मालवि ४३; रंभा; कुप्र २३३; सार्ध ६६)।

रक्खण न [**रक्षण**] रक्षा, पालन; (सुर १३, १६७; गउड; प्रासू २३)।

रक्खणा स्त्री [**रक्षणा**] ऊपर देखो; (उप ८५०; स ६६)।

रक्खणिया स्त्री [**दे**] रखी हुई स्त्री, रखात; (सुपा ३८३)।

रक्खवाल वि [**दे**] रखवाला, रक्षा करने वाला; (महा)।

रक्खस पुं [**राक्षस**] १ देवों की एक जाति; (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ विद्याधर-मनुष्यों का एक वंश; (पउम ५, २५२)। ३ वंश-विशेष में उत्पन्न मनुष्य, एक विद्याधर-जाति; "तेणं चिय खयराणं रक्खसनामं कयं लोए" (पउम ५, २५७)। ४ निशाचर, क्रव्याद; (से १५, १७; नाट—मृच्छ १३२)। ५ अहोरात्र का तीसवाँ मुहूर्त; (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। °**उरी** स्त्री [°**पुरी**] लंका नगरी; (से १२, ८४)। °**णअरी** स्त्री [°**नगरी**] वही अर्थ; (से १२, ७८)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] राक्षसों का राजा; (से ८, १०४)। °**त्थ** न [°**ास्त्र**] अस्त्र-विशेष; (पउम ७१, ६३)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] सिंहल

द्वीप; (पउम ५, १२६) । °नाह देखो °णाह; (पउम ६, ३६) । °वइ पुं [°पति] राक्षसों का मुखिया; (पउम ५, १२३; से ११, १) । °हिव पुं [°धिप] वही अर्थ; (से १५, ८७; ६१) ।

रक्खसिंद पुं [**राक्षसेन्द्र**] राक्षसों का राजा; (पउम १२, ४) ।

रक्खसी स्त्री [**राक्षसी**] १ राक्षस की स्त्री; (नाट—मृच्छ २३८) । २ लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी) ।

रक्खसेंद देखो **रक्खसिंद**; (से १२, ५७) ।

रक्खा स्त्री [**रक्षा**] १ रक्षण, पालन; (श्रा १०; सुपा १०३; ११३) । २ राख, भस्म; "सो चंदणं रक्खकए दहिज्जा" (सत २८; सुपा ६५७) ।

रक्खिअ वि [**रक्षित**] १ पालित; (गउड; गा ३३३) । २ पुं. एक प्रसिद्ध जैन महर्षि; (कप्प; विसे २२८८) ।

रक्खिआ देखो **रक्खसी**; (रंभा १७) ।

रक्खो स्त्री [**रक्षी**] भगवान् अरनाथ की मुख्य साध्वी; (सम १५२; पव ८) ।

रगिल्ल [**दे**] देखो **रइगेल्ल**; (षड्) ।

रग्ग देखो **रत्त**=रक्त; (हे २, १०; ८६; षड्) ।

रग्गय न [**दे**] कुसुम्भ-वस्त्र; (दे ७, ३; पाअ; गउड) ।

रघुस पुं [**रघुष**] हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ६६) ।

रच्च अक [**दे. रञ्ज्**] राचना, आसक्त होना, अनुराग करना । रच्चइ, रच्चंति, रच्चेह; (कुमा; वज्जा ११२) । कर्म—"रत्ते रच्चिज्जए जम्हा" (कुप्र १३२) । वकृ—**रच्चंत**; (भवि) । प्रयो—रच्चावंति; (वज्जा ११२) ।

रच्चण न [**दे. रञ्जन**] १ अनुराग; २ वि. अनुराग करने वाला, राचने वाला; (कुमा) ।

रच्चिर वि [**दे. रञ्जितृ**] राचने वाला; (कुमा) ।

रच्छा देखो **रक्खा**; (रंभा १६) ।

रच्छा स्त्री [**रथ्या**] मुहल्ला; (गा ११६; औप; कस) ।

रच्छामय पुं [**दे. रथ्यामृग**] श्वान, कुत्ता; (दे ७, ४) ।

रज देखो **रय**=रजस्; (कुमा) ।

रजक } पुंस्त्री [**रजक**] धोबी, कपड़ा धोने का धंधा करने वाला; (श्रा १२; दे ५, ३२) । स्त्री—°की; (दे १, ११४) ।
रजग }

रजय देखो **रयय**=रजत; (इक) ।

रज्ज अक [**रञ्ज्**] १ अनुराग करना, आसक्त होना । २ रँगाना, रँग-युक्त होना । रज्जइ; (आचा; उव), रज्जह; (णाया १, ८—पत्र १४८) । भवि—रज्जिहिति; (औप) । वकृ—**रज्जंत**, **रज्जमाण**; (से १०, २०; णाया १, १७; उत २८, ३) । कृ—**रज्जियव्व**; (पण्ह २, ५—पत्र १४६) ।

रज्ज न [**राज्य**] १ राज, राजा का अधिकृत देश; २ शासन, हुकूमत; (णाया १, ८; कुमा; दं ४७; भग; प्रासू) । °पालिया स्त्री [°पालिका] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प) । °वइ पुं [°पति] राजा; (कप्प) । °सिरी स्त्री [°श्री] राज्य-लक्ष्मी; (महा) । °हिसेय पुं [°भिषेक] राज-गद्दी पर बैठाने का उत्सव; (पउम ७७, ३६) ।

रज्जव पुंन. नीचे देखो; "खररज्जवेसु बद्धा" (पउम ३६, ११६) ।

रज्जु स्त्री [**रज्जु**] १ रस्सी; (पाअ; उवा) । २ एक प्रकार का नाप; "चउदसरज्जू लोगो" (पव १४३) ।

रज्जु वि [**दे**] लेखक, लिखने का काम करने वाला; (कप्प) । °सभा स्त्री [°सभा] १ लेखक-गृह; २ शुल्क-गृह, चूंगी-घर; "हत्थिपालस्स रन्नो रज्जुसभाए" (कप्प) ।

रज्झिय देखो **रहिअ**=रहित; "अरज्झियाभितावा तहवी तविंति" (सूअ १, ५, १, १७) ।

रट्ठ न [**राष्ट्र**] देश, जनपद; (सुपा ३०७; महा) । °उड, °कूड पुं [°कूट] राज-नियुक्त प्रतिनिधि, सूबा; (विपा १, १ टी—पत्र ११; विपा १, १—पत्र ११) ।

रट्ठिअ वि [**राष्ट्रिय**] १ देश-संबन्धी । २ पुं. नाटक की भाषा में राजा का साला; (अभि १६४) ।

रट्ठिअ पुं [**राष्ट्रिक**] देश की चिन्ता के लिए नियुक्त राज-प्रतिनिधि, सूबा; (पण्ह १, ५—पत्र ६४) ।

रड अक [**रट्**] १ रोना । २ चिल्लाना । रडइ; (भवि) । वकृ—**रडंत**; (हे ४, ४४५; भवि) ।

रडण न [**रटन**] चिल्लाहट, चीस; (पिंड २२५) ।

रडिय न [**रटित**] १ रुदन, रोना; (पण्ह २, ५) । २ आवाज करना, शब्द-करण; "परहुयवहुय रडियं कुहुकुहुमहुर-सद्देण" (रंभा) । ३ चिल्लाना, चीस; (णाया १, १—पत्र ६३) । ४ वि. कलहायित, झगड़ाखोर; "कलहाइअं रडिअं" (पाअ) ।

रडरडिय न [**रटरटित**] शब्द-विशेष, वाद्य-विशेष का आवाज; (सुपा ५०) ।

रड्डु वि [**दे**] खिसक कर गिरा हुआ, गुजराती में 'रडेलुं' (कुप्र ४५६)।

रड्डा स्त्री [**रड्डा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

रण पुंन [**रण**] १ संग्राम, लड़ाई; (कुमा; पाअ)। २ पुं. शब्द, आवाज; (पाअ)। °**खंभउर** न [°**स्तम्भपुर**] अजमेर के समीप का एक प्राचीन नगर; "रणखंभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा" (मुणि १०६०१)।

रणक्कार पुं [**रणत्कार**] शब्द-विशेष; (गउड)।

रणझण अक [**रणझणाय्**] 'रन् झन्' आवाज करना। रणझणइ; (वज्जा १२८)। वकृ—**रणझणंत**; (भवि)।

रणझणिर वि [**रणझणायितृ**] 'रन् झन्' आवाज करने वाला; (सुपा ६४१; धर्मवि ८८)।

रणरण अक [**रणरणाय्**] 'रन् रन्' आवाज करना। वकृ—**रणरणंत**; (पिंग)।

रणरण } पुं [**दे. रणरणक**] १ निःश्वास, नीसास; "अइ-
रणय } उण्हा रणरणया दुप्पेच्छा दूसहा दुरालोया" वज्जा ७८)। २ उद्वेग, पीड़ा, अ-धृति; "गरुयपियसंग-सामंससमुच्छलियरणरणाइन्नं" (सुर ४, २३०; पाअ)। उत्कण्ठा, औत्सुक्य; (दे १, १३६; गउड; रुक्मि ४८; वे २)।

रणाय देखो **रणरण**=रणरणाय्। वकृ—**रणरणायंत**; पउम ६४, ३६)।

णिअ न [**रणित**] शब्द, आवाज; (सुर १, २४८)।

णिर वि [**रणितृ**] आवाज करने वाला; (सुपा ३२७; गउड)।

ण्ण न [**अरण्य**] जंगल, अटवी; (हे १, ६६; प्राप्र; औप)।

त्त पुं [**रक्त**] १ लाल वर्ण, लाल रँग; २ कुसुम्भ; ३ वृक्ष-विशेष, हिज्जल का पेड़; (हे २, १०)। ४ न. कुंकुम; ५ ताम्र, ताँबा; ६ सिंदूर; ७ हिंगुल; ८ खून, रुधिर; ९ राग; (प्राप्र)। १० वि. रँगा हुआ; (हेका २७२)। ११ लाल रँग वाला; (पाअ)। १२ अनुराग-युक्त; (ओघ ७५७; प्रासू १५५; १६०)। °**कंबला** स्त्री [°**कम्बला**] मेरु पर्वत के पण्डक वन में स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवों का अभिषेक किया जाता है; (ठा २, ३—पत्र ८०)। °**कूड** न [°**कूट**] शिखर-विशेष; (राज)। °**कोरिंटय** पुं [°**कुरण्टक**] वृक्ष-विशेष; (पउम ५३, ७९)। °**क्ख**, °**च्छ** वि [°**ाक्ष**] १ लाल आँख वाला; (राज; सुर २, ६), स्त्री—°**च्छी**; (ओघभा २२ टी)। २ पुं महिष, भैंसा; (दे ७, १३)। °**ट्ठ** पुं [°**ार्थ**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४४)। °**धाउ** पुं [°**धातु**] कुण्डल पर्वत का एक शिखर; (दीव)। °**पड** पुं [°**पट**] परिव्राजक, संन्यासी; (णाया १, १५—पत्र १९३)। °**प्पवाय** पुं [°**प्रपात**] द्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७३)। °**प्पह** पुं [°**प्रभ**] कुण्डल-पर्वत का एक शिखर; (दीव)। °**रयण** न [°**रत्न**] रत्न की एक जाति, पद्म-राग मणि; (औप)। °**वई** स्त्री [°**वती**] एक नदी; (सम २७; ४३; इक)। °**वड** देखो °**पड**; (सुख ८, १३)। °**सुभद्दा** स्त्री [°**सुभद्रा**] श्रीकृष्ण की एक भगिनी; (पण्ह १, ४—पत्र ८५)। °**ासोग**, °**ासोय** पुं [°**ाशोक**] लाल अशोक का पेड़; (णाया १, १; महा)।

°**रत्त** पुं [°**रात्र**] रात, निशा; (जी ३४)।

रत्तग देखो **रत्त**=रक्त; (महा)।

रत्तंदण न [**रक्तचन्दन**] लाल चन्दन; (सुपा १८१)।

रत्तक्खर न [**दे**] सीधु, मद्य-विशेष; (दे ७, ४)।

रत्तच्छ पुं [**दे**] १ हंस; २ व्याघ्र; (दे ७, १३)।

रत्तडि (अप) देखो **रत्ति**=रात्रि; (पि ५९९)।

रत्तय न [**दे. रक्तक**] बन्धूक वृक्ष का फूल; (दे ७, ३)।

रत्ता स्त्री [**रक्ता**] एक नदी; (सम २७; ४३; इक)। °**वइप्पवाय** पुं [°**वतीप्रपात**] द्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७३)।

रत्ति स्त्री [**दे**] आज्ञा, हुकुम; (दे ७, १)।

रत्ति स्त्री [**रात्रि**] रात, निशा; (हे २, ७९; कुमा; प्रासू ६०)। °**अंधय** वि [°**अन्धक**] रात को नहीं देख सकने वाला; (गा ६६७; हेका २६)। °**अर** वि [°**चर**] १ रात में विहरने वाला; २ पुं. राक्षस; (षड्)। °**दिवह** न [°**दिवस**] रात-दिन, अहर्निश; (पि ८८)। देखो **राइ**=रात्रि।

रत्तिंचर देखो **रत्ति**=अर; (धर्मवि ७२)।

रत्तिंदिअह न [**रात्रिंदिवस**] रात-दिन, अहर्निश, निरन्तर; (अच्चु ७८)।

रत्तिंदिय } न [**रात्रिन्दिव**] ऊपर देखो; (पउम ८, १६४;
रत्तिंदिव } ७५, ८५)।

रत्तिंध वि [**रात्र्यन्ध**] जो रात में न देख सकता हो वह; (प्रासू १७५)।

रत्तीअ पुं [**दे**] नापित, हजाम; (दे ७, २; पाअ)।

रत्तुप्पल न [**रक्तोत्पल**] लाल कमल; (पण्ह १, ४)।
रत्तोआ स्त्री [**रक्तोदा**] एक नदी; (इक)।
रत्तोप्पल देखो **रत्तुप्पल**; (नाट—मृच्छ १४५)।
रत्था देखो **रच्छा**; (गा ४०; अंत १२; सुर १, ६६)।
रद्ध वि [**रद्ध, राद्ध**] राँधा हुआ, पक्व; (पिंड १६५; सुपा ६३६)।
रद्धि वि [**दे**] प्रधान, श्रेष्ठ; (दे ७, २)।
रन्न देखो **रण्ण**; (सुपा ४०१; कुमा)।
रप्प सक [**आ + क्रम्**] आक्रमण करना। रप्पइ; (प्राकृ ७३)।
रप्फ पुं [**दे**] वल्मीक, गुजराती में 'राफडो'; (दे ७, १; पाअ)। २ राग-विशेष; "करि कंपु पायनूलिसु रप्फय" (सण)।
रप्फडिआ स्त्री [**दे**] गोधा, गोह; (दे ७, ४)।
रब्बा वि [**दे**] राब, यवागू; (श्रा १४; उर २, १२; धर्मवि ४२)।
रभस देखो **रहस**=रभस; (गा ८७१; ८६४; ६३४)।
रम अक [**रम्**] १ क्रीड़ा करना। २ संभोग करना। रमइ, रमए, रमंते, रमिज्ज, रमेज्जा; (कुमा)। भवि—रमिस्सदि, रमिहिइ; (कुमा)। कर्म—रमिज्जइ; (कुमा)। वकृ—**रमंत, रममाण**; (गा ४४; कुमा)। संकृ—**रमिअ, रमिउं, रमिऊण, रंतूण**; (हे २, १४६; ३, १३६; महा; पि ३१२), **रमेप्पि, रमेप्पिणु, रमेवि** (अप); (पि ५८८)। हेकृ—**रमिउं**; (उप पृ ३८)। कृ—**रमिअव्व**; (गा ४६१), देखो **रमणिज्ज, रमणीअ, रम्म**। प्रयो—रमावेंति; (पि ५५२)।
रमण न [**रमण**] १ क्रीडा, क्रीडन; २ सुरत, संभोग, रति-क्रीड़ा; (पव ३८; कुमा; उप पृ १८७)। ३ स्मर-कूपिका, योनि; (कुमा)। ४ पुं. जघन, नितम्ब; (पाअ)। ५ पति, वर, स्वामी; (पउम ५१, १६; कुमा; पिंग)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)।
रमणिज्ज वि [**रमणीय**] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य; (प्राप्र; पाअ; अभि २००)। २ न. एक देव-विमान; (सम १७)। ३ पुं. नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में उत्तर दिशा की ओर स्थित एक अञ्जन-गिरि; (पव २६६ टी)। ४ एक विजय, प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)।
रमणी स्त्री [**रमणी**] १ नारी, स्त्री; (पाअ; उप पृ १८७; प्रासू १५५; १८०)। २ एक पुष्करिणी; (इक)।
रमणीअ वि [**रमणीय**] रम्य, मनोरम; (प्राप्र; स्वप्न ४०; गउड; सुपा २५५; भवि)।
रमा स्त्री [**रमा**] लक्ष्मी, श्री; (कुम्मा ३)।
रमिअ देखो **रम**।
रमिअ वि [**रत**] १ क्रीडित, जिसने क्रीडा की हो वह; (कुमा ४, ५०)। २ न. रमण, क्रीड़ा; (गाया १, ६—पत्र १६५; कुमा; सुपा ३७६; प्रासू ६५)।
रमिअ वि [**रमित**] रमाया हुआ; (कुमा ३, ८६)।
रमिर वि [**रन्तृ**] रमण करने वाला; (कुमा)।
रम्म वि [**रम्य**] १ मनोरम, रमणीय, सुन्दर; (पाअ; से ६, ४७; सुर १, ६६; प्रासू ७१)। २ पुं. विजय-विशेष, एक प्रान्त; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ चम्पक का गाछ, (से ६, ४७)। ४ न. एक देव-विमान; (सम १७)।
रम्मग, **रम्मय** पुं [**रम्यक**] १ एक विजय, प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ एक युगलिक-क्षेत्र, जंबू-द्वीप का वर्ष-विशेष; (सम १२; ठा २, ३—पत्र ६७; इक)। ३ न. एक देव-विमान; (सम १७)। ४ पर्वत-विशेष का एक कूट; (जं ४)।
रम्ह देखो **रंफ**। रम्हइ; (प्राकृ ६५)।
रय सक [**रञ्ज्**] रँगना। "नो धोएज्जा, नो रएज्जा, नो धो-यरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा" (आचा)।
रय सक [**रचय्**] बनाना, निर्माण करना। रयइ, रएइ; (हे ४, ६४; षड्; महा)। कवकृ—**रइज्जंत**; (से ८, ८७)।
रय पुंन [**रजस्**] १ रेणु, धूल; (औप; पाअ; कुप्र २१)। २ पराग, पुष्प-रज; (से ३, ४८)। ३ सांख्य-दर्शन में उक्त प्रकृति का एक गुण; (कुप्र २१)। ४ बध्यमान कर्म; (कुमा ७, ५८; चेइय ६२२; उव)। °**त्ताण** न [°**त्राण**] जैन मुनि का एक उपकरण; (ओघ ६६८; पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °**स्सला** स्त्री [°**स्वला**] ऋतुमती स्त्री; (दे १, १२५)। °**हर** पुंन [°**हर**] जैन मुनि का एक उप-करण; (संबोध १५)। °**हरण** न [°**हरण**] वही अर्थ; (गाया १, १; कस)।
रय वि [**रत**] १ अनुरक्त, आसक्त; (औप; उव; सुर १, १२; सुपा ३०६; प्रासू १६६)। २ स्थित; (से ६, ४२)। ३ न. रति-कर्म, मैथुन; (सम १५; उव; गा १५५; स १८०; वज्जा १०० ; सुपा ४०३)।
रय पुं [**रय**] वेग; (कुमा; से २, ७; सण)।

रयं देखो **रव**; (पउम ११४, १७)।

रयग देखो **रयय**=रजक; (श्रा १२; सुपा ५८८)।

रयण न [**रञ्जन**] रँगना, रँग-युक्त करना; (सुम्र १, ६, १२)।

रयण वि [**रचन**] करने वाला, निर्माता; "चेडीसचिंतारयणु" (सण)।

रयण पुं [**रदन**] दाँत, दशन; (उप ६८६ टी; पात्र; काप्र १७२; नाट—शकु १३)।

रयण पुंन [**रत्न**] १ माणिक्य आदि बहु-मूल्य पत्थर, मणि; "दुवे रयणा समुप्पन्ना"; (निर १, १; उप ५६३; गाया १, १; सुपा १४७; जी ३; कुमा; हे २, १०१)। २ श्रेष्ठ, स्व-जाति में उत्तम; (सम २६; कुमा ३, ४७), "तहवि हु चंद-सरिच्छा विरला रयणायरे रयणा" (वज्जा १५६)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ द्वीप-विशेष; (गाया १, ६; पउम ५५, १७)। ५ पर्वत-विशेष का एक कूट; (ठा ४, ३; ८)। ६ पुं. ब. रत्नद्वीप का निवासी; (पउम ५५, १७)। °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (सण)। °**चित्त** पुं [°**चित्र**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, १५)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष; (गाया १, ६—पत्र १६५)। °**निहि** पुं [°**निधि**] समुद्र, सागर; (सुपा ७, १२६)। °**पुढवी** स्त्री [°**पृथिवी**] पहली नरक-भूमि, रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी; (स १३२)। °**पुर** देखो °**उर**; (कुप्र ६; महा; सण)। °**प्पभा**, °**प्पहा** स्त्री [°**प्रभा**] १ पहली नरक-भूमि; (ठा ७—पत्र ३८८; औप; भग)। २ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ रत्न का तेज; (स १३३)। °**मय** वि [°**मय**] रत्नों का बना हुआ; (महा)। °**माला** स्त्री [°**माला**] छन्द-विशेष; (अजि २४)। °**मालि** पुं [°**मालिन्**] विद्याधर-वंश में उत्पन्न नमि-राज का एक पुत्र; (पउम ५, १४)। °**मुस** वि [°**मुष्**] रत्नों को चुराने वाला; (षड्)। °**रह** पुं [°**रथ**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, १४)। °**रासि** पुं [°**राशि**] समुद्र; (प्रारू)। °**वइ** पुं [°**पति**] रत्नों का मालिक, धनी, श्रीमंत; (सुपा २६६)। °**वई** स्त्री [°**वती**] एक रानी; (रयण ३)। °**वज्ज** पुं [°**वज्र**] विद्याधर-वंशीय एक राजा; (पउम ५, १४)। °**वह** वि [°**वह**] रत्न-धारक; (गउड १०७१)। °**संचय** न [°**संचय**] १ रुचक पर्वत का एक कूट; (इक)। २ एक नगर; (इक; सुज्ज ३, २०)। °**संचया** स्त्री [°**संचया**] १ मंगलावती-नामक विजय की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ ईशानेन्द्र की वसुन्धरा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)। °**समया** स्त्री [°**समया**] मंगलावती-नामक विजय की एक राजधानी; (इक)। °**सार** पुं [°**सार**] १ एक राजा; (राज)। २ एक शेठ का नाम; (उप ७२८ टी)। °**सिंह** पुं [°**सिंह**] एक जैन आचार्य, संवेगचूलिका-कुलक का कर्ता; (संवे १२)। °**सिह** पुं [°**शिख**] एक राजा; (उप १०३१ टी)। °**सेहर** पुं [°**शेखर**] १ एक राजा; (रयण ३)। २ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी में विद्यमान एक जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (सिरि १३४०)। °**ाअर**, °**ागर** पुं [°**ाकर**] १ रत्न की खान; (षड्)। २ समुद्र; (पात्र; सुपा ३७; प्रासू ६७; गाया १, १७—पत्र २२८)। °**ाभा** स्त्री [°**ाभा**] देखो °**प्पभा**; (उत्त ३६, १५७)। °**ामय** देखो °**मय**; (महा; औप)। °**ायरसुअ** पुं [°**ाकरसुत**] १ चन्द्रमा; २ एक वणिक्-पुत्र; (श्रा १६)। °**ावलि**, °**ावली** स्त्री [°**ावलि**, °**ावली**] १ रत्नों का हार; (सम्म २२)। २ तप-विशेष; (अंत २५)। ३ ग्रन्थ-विशेष; (दे ८, ७७)। ४ एक विद्याधर-राज-कन्या; (पउम ६, ५२)। °**ावह** न [°**ावह**] नगर-विशेष; (महा)। °**ासव** पुं [°**ास्रव**] रावण का पिता; (पउम ७, ५६; ७१)। °**ासवसुअ** पुं [°**ास्रवसुत**] रावण; (पउम ८, २३१)। °**ाहिय** वि [°**ाधिक**] ज्येष्ठ, अवस्था में बड़ा; (राज)।

रयणप्पभिय वि [**रात्नप्रभिक**] रत्नप्रभा-संबन्धी; (पंच २, ६६)।

रयणा स्त्री [**रचना**] निर्माण, कृति; (उत्त १५, १८; चेइय ८६६; सुपा ३०४; रंभा)।

रयणा स्त्री [**रत्ना**] रत्नप्रभा-नामक नरक-भूमि; (पव १७५)।

रयणि पुंस्त्री [**रत्नि**] एक हाथ का नाप, बद्ध-मुष्टि हाथ का परिमाण; (कस; पव ५८; १७६)।

रयणि स्त्री [**रजनि**] देखो **रयणी**=रजनी; (गाया १, २—पत्र ७६; कप्प)। °**अर** पुं [°**चर**] १ राक्षस; (से १०, ६६; पात्र)। °**अर**, °**कर** पुं [°**कर**] चन्द्रमा; (हे १, ८ टि; कप्प)। °**णाह**, °**नाह** पुं [°**नाथ**] चन्द्रमा; (पात्र; सुपा ३३)। °**भत्त** न [°**भक्त**] रात्रि में खाना; (सुपा ४६५)। °**रमण** पुं [°**रमण**] चन्द्रमा; (सण)।

°वल्लह पुं [°वल्लभ] चन्द्रमा; (कप्पू)। °विराम पुं [°विराम] प्रातःकाल, सुबह; (पाअ)।

रयणिंद पुं [**रजनीन्द्र**] चन्द्रमा; (नाण)।

रयणिद्धय न [**दे**] कुमुद, कमल; (दे ७, ४; षड्)।

रयणी स्त्री [**रत्नी**] देखो **रयणि**=रत्नि; (ठा ९; सम १२; जीवस १७७; जी ३३; औप)।

रयणी स्त्री [**रजनी**] १ रात्रि, रात; (पाअ; प्रासू १३६; कुमा)। २ ईशानेन्द्र के लोकपाल की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ४ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३९३)। ५ षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना; "मंगी कोरव्वीया हरी य रयणी(? यणी) सारकंता य" (ठा ७—पत्र ३९३)। °भोअण न [°भोजन] रात में खाना; (श्रा २०)। °सार न [°सार] सुरत, मैथुन; (से ३, ४८)। देखो **रयणि**=रजनि; (हे १, ८)।

रयणुच्चय } पुं [**रत्नोच्चय**] १ मेरु-पर्वत; (सुज्ज ५ **रयणोच्चय** } टी—पत्र ७७; इक)। २ कूट-विशेष; (इक)।

रयणोच्चया स्त्री [**रत्नोच्चया**] वसुगुप्ता-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)।

रयत } न [**रजत**] १ रूप्य, चाँदी; (णाया १, १—पत्र ६६; प्राकृ १२; प्राप्र; पाअ; उवा; औप)। २ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३१)। ३ हाथी का दाँत; ४ हार, माला; ५ सुवर्ण, सोना; ६ रुधिर, खून; ७ शैल, पर्वत; ८ धवल वर्ण; ९ शिखर-विशेष; १० वि. सफेद वर्ण वाला, श्वेत; (प्राकृ १२; प्राप्र; हे १, १७७; १८०; २०९)। °गिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष; (णाया १, १; औप)। °वत्त न [°पात्र] चाँदी का बरतन; (गउड)। °मय वि [°मय] चाँदी का बना हुआ; (णाया १, १—पत्र ५४; पि ७०)।
रयद }
रयय }

रयय पुं [**रजक**] धोबी; (स २८६; पाअ)।

रयवली स्त्री [**दे**] शिशुत्व, बाल्य; (दे ७, ३)।

रयवाडी देखो **राय-वाडिआ**; (सिरि ७५८)।

रयाव सक [**रचय्**] बनवाना, निर्माण कराना। रयावेइ, रयाविंति, रयावेह; (कप्प)। संकृ—**रयावेत्ता**; (कप्प)।

रयाविय वि [**रचित**] बनवाया हुआ; (स ४३५)।

रल्ला स्त्री [**दे**] प्रियंगु, मालकाँगनी; (दे ७, १)।

रव सक [**रु**] १ कहना, बोलना। २ वध करना। ३ गति करना। ४ आक्रंदन करना। ५ शब्द करना। "सुद्धं रवति परिसाए" (सूअ १, ४, १, १८)। रवइ; (हे ४, २३३; संक्षि ३३)। वकृ—**रवंत, रवेंत**; (णाया १, १—पत्र ६५; पिंग; औप)।

रव सक [**रावय्**] बुलवाना, आह्वान करना। वकृ—**रवेंत**; (औप)।

रव सक [**दे**] आर्द्र करना। भवि—रवेहिइ; (गांदि)।

रव पुं [**रव**] १ शब्द, आवाज; (कप्प; महा; सण; भवि)। २ वि. मधुर शब्द वाला; "रवं अलसं कलमंजुलं" (पाअ)।

रव (अप) देखो **रय**=रजस्; (भवि)।

रवँण } (अप) देखो **रमण**; (भवि)।
रवण }

रवण न [**रवण**] आवाज करना; "पच्चासन्ने य करेणुया सया रवणसीला आसी" (महा)।

रवण्ण } (अप) देखो **रम्म**=रम्य; (हे ४, ४२२; **रवन्न** } भवि)।

रवय पुं [**दे**] मन्थान-दण्ड, बिलोने की लकड़ी; गुजराती में 'रवैयो'; (दे ७, ३)।

रवरव अक [**रोरूय्**] १ खूब आवाज करना। २ बारंबार आवाज करना। वकृ—**रवरवंत**; (औप)।

रवि वि [**रविन्**] आवाज करने वाला; (से २, २९)।

रवि न [**रवि**] १ सूर्य, सूरज; (से २, २९; गउड; सण)। २ राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ५, २६२)। ३ अर्क वृक्ष, आक का पेड़; (हे १, १७२)। °तेअ पुं [°तेजस्] १ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५,४)। २ राक्षस वंश का एक राजा; एक लंकेश; (पउम ५, २६५)। °तेया स्त्री [°तेजा] एक विद्या; (पउम ७, १४१)। °नंदण पुं [°नन्दन] शनि-ग्रह; (श्रा १२)। °प्पभ पुं [°प्रभ] वानरद्वीप का राजा; (पउम ६, ६८)। °भत्ता स्त्री [°भक्ता] एक महौषधि; (ती ५)। °भास पुं [°भास] खड्ग-विशेष, सूर्यहास खड्ग; (पउम ५५, २६)। °वार पुं [°वार] दिन-विशेष, रविवार; (कुप्र ४११)। °सुअ पुं [°सुत] १ शनिश्चर ग्रह; (से ८, २८; सुपा ३९)। २ रामचन्द्र का एक सेनापति, सुग्रीव; (से १५, ५९)। °हास पुं [°हास] सूर्यहास खड्ग; (पउम ५३, २७)।

रविय वि [दे] आर्द्र किया हुआ, भिजाया हुआ; (विसे १४५६)।

रव्वारिअ पुं [दे] दूत, संदेश-हारक; "जेण अवज्झो रव्वारिओ त्ति" (सुपा ४२८)।

रस सक [रस्] चिल्लाना, आवाज करना। रसइ; (गा ४३६)। वकृ—**रसंत**; (सुर २, ७४; सुपा २७३)।

रस पुंन [रस] १ जिह्वा का विषय—मधुर, तिक्त आदि; "एगे रसे", "एवं गंधाइं रसाइं फासाइं" (ठा १०—पत्र ४७१; प्रासू १७४)। २ स्वभाव, प्रकृति; (से ४, ३२)। ३ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध शृङ्गार आदि नव रस; (उत्त १४, ३२; धर्मवि १३; सिरि ३६)। ४ जल, पानी; (से २, २७; धर्मवि १३)। ५ सुख; (उत्त १४, ३१)। ६ आसक्ति, दिलचस्पी; (सत्त ५३; गउड)। ७ अनुराग, प्रेम; (पात्र)। ८ मद्य आदि द्रव पदार्थ; (पराह १, १; कुमा)। ६ पारद, पारा; (निचू १३)। १० भुक्त अन्न का प्रथम परिणाम, शरीरस्थ धातु-विशेष; (गउड)। ११ कर्म-विशेष; (कम्म २, ३१)। १२ छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध प्रस्तार-विशेष; (पिंग)। १३ माधुर्य आदि रस वाला पदार्थ; (सम ११; नव २८)। °**नाम** न [°नामन्] कर्म-विशेष; (सम ६७)। °**न्न** वि [°ज्ञ] रस का जानकार; (सुपा २६१)। °**भेइ** वि [°भेदिन्] रस वाली चीजों का भेल-सेल करने वाला; (पउम ७५, ५२)। °**मंत** वि [°वत्] रस-युक्त; (भग; ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °**वई** स्त्री [°वती] रसोई; (सुपा ११)। °**ल**, °**लु** वि [°वत्] रस वाला; (हे २, १५६; सुख ३, १)। °**वण** पुं [°पण] मद्य की दुकान; (पव ११२)।

रसण न [रसन] जिह्वा, जीभ; (पराह १, १—पत्र २३; आचा)।

रसणा स्त्री [रसना] १ मेखला, कांची; (पात्र; गउड; से १, १८)। २ जिह्वा, जीभ; (पात्र)। °**ल** वि [°वत्] रसना वाला; (सुपा ५५६)।

रसड्ढ न [दे] चुल्ली-मूल, चूल्हे का मूल भाग; (दे ७, २)।

रसा स्त्री [रसा] पृथिवी, धरती; (हे १, १७७; १८०; कुमा)।

रसाउ पुं [दे. रसायुष्] भ्रमर, भौंरा; (दे ७, २; पात्र)।

रसाय पुं [दे] ऊपर देखो; (दे ७, २)।

रसायण न [रसायन] वैद्यक-प्रसिद्ध औषध-विशेष; (विपा १, ७; प्रासू १६२; भवि)।

रसाल पुं [रसाल] आम्र वृक्ष, आम का गाछ; (सम्मत्त १७३)।

रसाला स्त्री [दे. रसाला] मार्जिता, पेय-विशेष; (दे ७, २; पात्र)।

रसालु पुं [दे. रसालु] मज्जिका, राज-योग्य पाक-विशेष—दो पल घी, एक पल मधु, आधा आढक दही, वीस मिरचा तथा दस पल चीनी या गुड़ से बनता पाक; (ठा ३, १—पत्र ११८; सुज्ज २० टी; पव २५६)।

रसि देखो **रस्सि**; (प्राकृ २६)।

रसिअ वि [रसिक] १ रस-ज्ञ, रसिया, शौकीन; (से १, ६)। २ रस-युक्त, रस वाला; (सुपा २६; २१७; पउम ३१, ४६)।

रसिअ वि [रसित] १ रस-युक्त, रस वाला; (पव २)। २ न. शब्द, आवाज; (गउड; पराह १, १)।

रसिआ स्त्री [दे. रसिका] १ पूय, पीब, व्रण से निकलता गंदा सफेद खून, गुजराती में 'रसी'; (श्रा १२; विपा १, ७; पराह १, १)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

रसिंद पुं [रसेन्द्र] पारद, पारा; (जो ३; श्रु १५८)।

रसिग देखो **रसिअ**=रसिक; (पंचा २, ३४)।

रसिर वि [रसितृ] आवाज करने वाला; (सण)।

रसोइ (अप) देखो **रस-वई**; (भवि)।

रस्सि पुंस्त्री [रश्मि] १ किरण; "भरहं समासियाओ आइच्चं चेव रस्सीओ" (पउम ८०, ६४; पात्र; प्राप्र)। २ रस्सी, रज्जु; (प्रासू ११७)।

रह अक [दे] रहना। रहइ, रहए, रहेइ; (पिंग; महा; सिरि ८६३), रहसु, रहह; (सिरि ३५५; ३५३)।

रह सक [रह्] त्यागना, छोड़ना; (कप्पू; पिंग)।

रह पुं [रभस] उत्साह; "पुणो पुणो ते स-रहं दुहेंति" (सूअ १, ५, १, १८)। देखो **रहस**=रभस।

रह पुंन [रहस्] १ एकान्त, निर्जन; "तत्थ रहो त्ति आगच्छ" (कुप्र ८२), "लहु मे रहं देसु" (सुपा १७४; वज्जा १५२)। २ प्रच्छन्न, गोप्य; (ठा ३, ४)।

रह पुंन [रथ] १ यान-विशेष, स्यन्दन; "धम्मस्स निव्वाणपहे रहाणि" (सत्त १८; पात्र; कुमा)। २ एक जैन महर्षि; (कप्प)। °**कार** पुं [°कार] रथ-निर्माता, वर्धकि; (सुपा ४४४; कुप्र १०४; उव)। °**चरिया** स्त्री [°चर्या] रथ को हाँकना; "ईसत्थसत्थरहचरियाकुसलो" (महा)। °**जत्ता** स्त्री [°यात्रा] उत्सव-विशेष; (सुपा ५४१; सुर १६, १६;

सिरि ११७५)। °णेउर न [°नूपुर] नगर-विशेष; (पउम २८, ७; इक)। °णेउरचक्कवाल न [°नूपुरचक्रवाल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक नगर; (पउम ५, ६४; इक)। °नेमि पुं [°नेमि] भगवान् नेमिनाथ का भाई; (उत्त २२, ३६)। °नेमिज्ज न [°नेमीय] उत्तराध्ययन सूत्र का बाईसवाँ अध्ययन; (उत्त २२)। °मुसल पुं [°मुसल] भारतवर्ष की एक प्राचीन लड़ाई, राजा कोणिक और राजा चेटक की संग्राम; (भग ७, ६)। °यार देखो °कार; (पाअ)। °रेणु पुं [°रेणु] एक नाप, आठ त्रसरेणु का एक परिमाण; (इक)। °वीरउर, °वीरपुर न [°वीर-पुर] एक नगर; (राज; विसे २५५०)।

रहइं अ [रभसा] वेग से; (स ७६२)।

रहंग पुंस्त्री [रथाङ्ग] १ चक्रवाक पक्षी; (पाअ; सुर ३, २४७; कुमा); स्त्री—°गी; (सुपा ४६८; सुर १०, १८५; कुमा)। २ न. चक्र, पहिया; (पाअ)।

रहट्ट देखो अरहट्ट; (गा ४६०; पि १४२)।

रहण न [दे] रहना, स्थिति, निवास; (धर्मवि २१; रयण ६)।

रहण न [रहन] १ त्याग; २ विरति, विराम; "रसरहणं" (पिंग)।

रहमाण पुं [दे] १ यवन मत का एक तत्त्व-वेत्ता; (मोह १००)। २ खुदा, अल्ला, परमेश्वर; (ती १५)।

रहस पुं [रभस] १ औत्सुक्य, उत्कण्ठा; (कुमा)। २ वेग; ३ हर्ष; ४ पूर्वापर का अविचार; (संक्षि ७; गउड)।

रहस देखो रहस्स=रहस्य; "रहसाभक्खाणे" (उवा; संबोध ४२; सुपा ४५४)।

रहसा अ [रभसा] वेग से; (गउड)।

रहस्स वि [रहस्य] १ गुह्य, गोपनीय; (पाअ; सुपा ३१८)। २ एकान्त में उत्पन्न, एकान्त का; (हे २, २०४)। ३ न. तत्त्व, तात्पर्य, भावार्थ; (ओघ ७६०; रंभा १६)। ४ अपवाद-स्थान; (बृह ६)।

रहस्स वि [ह्रस्व] १ लघु, छोटा; (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ एक मात्रा वाला स्वर; (उत्त २६, ७२)।

रहस्स न [ह्रास्व] १ लाघव, छोटाई। °मंत वि [°वत्] लघु, छोटा; (सूअ २, १, १३)।

रहस्सिय वि [राहसिक] प्रच्छन्न, गुप्त; (विपा १, १—पत्र ५)।

रहाविअ वि [दे] स्थापित, रखवाया हुआ; (धर्मवि १२)।

रहि वि [रथिन्] १ रथ में लड़ने वाला योद्धा; (उप ७२८ टी)। २ रथ को हाँकने वाला; (कुप्र २८७; ४६०; धर्मवि १११)।

रहिअ वि [रथिक] ऊपर देखो; "रहिएहिं महारहिणो" (उप ७२८ टी; पण्ह २, ४—पत्र १३०; धर्मवि २०)।

रहिअ वि [रहित] परित्यक्त, वर्जित, शून्य; (उवा; दं ३२)।

रहिअ वि [दे] रहा हुआ, स्थित; (धर्मवि २२)।

रहु पुं [रघु] १ सूर्य वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा; (उत्तर ५०)। २ पुं. ब. रघु-वंश में उत्पन्न क्षत्रिय; (से ४, १६)। ३ पुं. श्रीरामचन्द्र; "ताहे कयंतसरिसी देइ रहू रिवुबले दिट्ठी" (पउम ११३, २१)। ४ कालि-दास-प्रणीत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ; (गउड)। °आर पुं [°कार] रघुवंश-नामक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ का कर्ता, कवि कालिदास; (गउड)। °णाह पुं [°नाथ] १ श्री रामचन्द्र; (से १४, १६; पउम ११३, ५५)। २ लक्ष्मण; (से १४, ६२)। °तणय पुं [°तनय] वही अर्थ; (से २, १; १४, २६)। °तिलय पुं [°तिलक] श्रीरामचन्द्र; (सुपा २०४)। °त्तम पुं [°उत्तम] वही अर्थ; (पउम १०२, १७६)। °पुंगव पुं [°पुङ्गव] वही; (से ३, ५; हे २, १८८; ३, ७०)। °सुअ पुं [°सुत] वही; (से ५, १६)।

रहो° देखो रह=रहस्; (कप्प; औप)। °कम्म न [°कर्मन्] एकान्त-व्यापार; (ठा ६—पत्र ४६०)।

रा सक [रा] देना, दान करना। राइ; (धात्वा १४६)।

रा अक [रै] शब्द करना, आवाज करना। राइ; (प्राकृ ६६)।

रा अक [ली] श्लेष करना, चिपकना। राइ; (षड्)।

राअला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी; (दे ७, १)।

राइ देखो रत्ति; (हे २, ८८; काप्र १८६; महा; षड्)। २ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ३ ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि-भोजन, रात में खाना; (सुपा ४८५)। °भोअण न [°भोजन] वही अर्थ; (सम ३६; कस)। देखो राई=रात्रि।

राइ स्त्री [राजि] पंक्ति, श्रेणि; (पाअ; औप)। २ रेखा, लकीर; (कम्म १, १६; सुपा १६७)। ३ राई, राज-सर्षप, एक प्रकार का मसाला; (दे ६, ८८)।

राइ वि [**रागिन्**] राग-युक्त, राग वाला; (दसा ६)। स्त्री—°**णी**; (महा)।

राइ° देखो **राय**=राजन्; (हे २, १४८; ३, ५२; ५३; कुमा)।

राइअ वि [**राजित**] शोभित; (से १, ५६; कुमा ६, ६३)।

राइअ वि [**रात्रिक**] रात्रि-संबन्धी; (उत्त २६, ४६; औप; पडि)।

राइआ स्त्री [**राजिका**] राई का गाछ; "गोलाणईअ कच्छे चक्खंतो राइआइ पत्ताइं" (गा १७१ अ)। देखो **राइगा**।

राइंद पुं [**राजेन्द्र**] बड़ा राजा; (कुमा)।

राइंदिअ पुं [**रात्रिन्दिव**] रात-दिन, अहोरात्र; (भग; आचा; कप्प; पव ७८; सम २१)।

राइक्क वि [**राजकीय**] राज-संबन्धी; (हे २, १४८; कुमा)।

राइगा स्त्री [**राजिका**] राई, राज-सर्सों; (कुप्र ४५)।

राइणिअ वि [**रात्निक**] १ चारित्र वाला, संयमी; (पंचा १२, ६)। २ पर्याय से ज्येष्ठ, साधुत्व-प्राप्ति की अवस्था से बड़ा; (सम ३७; ५८; कप्प)।

राइणिअ वि [**राजकल्प**] राजा के समान वैभव वाला, श्रीमन्त; (सूअ १, २, ३, ३)।

राइण्ण } **राइन्न** } पुं [**राजन्य**] राजवंशीय, क्षत्रिय; (सम १५१; कप्प; औप; भग)।

राइल्ल वि [**रागिन्**] राग-युक्त; (देवेन्द्र २७८)।

राई स्त्री [**राजी**] देखो **राइ**=राजि; (गउड; सुपा ३४; प्रासू ६२; पव २५६)।

राई स्त्री [**रात्रि**] देखो **राइ**=रात्रि; (पाअ; णाया २—पत्र १५०; औप; सुपा ४६१; कस)। °**दिवस** न [°**दिवस**] रात्रिदिवस, अहर्निश; (सुपा १२७)।

राईमई स्त्री [**राजीमती**] राजा उग्रसेन की पुत्री और भगवान नेमिनाथ की पत्नी; (पडि)।

राईव न [**राजीव**] कमल, पद्म; (पाअ; हे १, १८०)।

राईसर पुं [**राजेश्वर**] १ राजाओं के मालिक, महाराज; २ युवराज; (औप; उवा; कप्प)।

राउत्त पुं [**राजपुत्र**] राजपूत, क्षत्रिय; (प्राकृ ३०)।

राउल पुं [**राजकुल**] १ राजाओं का यूथ, राज-समूह; (कुमा; हे १, २६७; प्राप्र)। २ राजा का वंश; (षड्)। ३ राज-गृह, दरबार; "णं ईदिसस्स राउलस्स दूरेण पणामो कीरदि, जत्थ बंभणावि एवं विडंबिज्जंति" (मोह ११)। देखो **राओल**।

राउलिय वि [**राजकुलिक**] राजकुल-संबन्धी; (सुख २, ३१)।

राउल्ल देखो **राइक्क**; (प्राकृ ३५)।

राएसि पुं [**राजर्षि**] १ श्रेष्ठ राजा; २ ऋषि-तुल्य राजा, संयतात्मा भूपति; (अभि ३६; विक्र ६८; मोह ३)।

राओ अ [**रात्रौ**] रात में; (णाया १, १—पत्र ६१; सुपा ४६७; कप्प)।

राओल देखो **राउल**;

"सो किंपि धणं सयणेहिं विलसियं किंपि वाणिपुत्तेहिं।
किंपि गयं राओले एस अपुत्तत्ति भणिऊण ॥"
(धर्मवि १४०)।

राग देखो **राय**=राग; (कप्प; सुपा २४१)।

रागि देखो **राइ**=रागिन्; (पउम ११७, ४१)।

राघव देखो **राहव**। °**घरिणी** स्त्री [°**गृहिणी**] सीता, जानकी; (पउम ४६, ५७)।

राच } **राचि°** } [**चूपै. पै**] देखो **राय**=राजन्; (हे ४, ३२५; ३०४; प्राप्र)।

राज देखो **राय**=राजन्; (हे ४, २६७; पि १६८)।

राजस वि [**राजस**] रजो-गुण-प्रधान; "राजसचित्तस्स पुरस्स" (कुप्र ४२८)।

राडि स्त्री [**राटि**] बूम, चिल्लाहट; (सुख २, १५)।

राडि स्त्री [**दे. राटि**] संग्राम, लडाई; (दे ७, ४)।

राढा स्त्री [**राढा**] १ विभूषा; (धर्मसं १०१८; कप्पू)। २ भव्यता; (वज्जा १८)। ३ बंगाल का एक प्रान्त; ४ बंगाल देश की एक नगरी; (कप्पू)। °**इत्त** वि [°**वत्**] भव्य आत्मा; "गंजणरहिओ धम्मो राढाइत्ताण संपडइ" (वज्जा १८)। °**मणि** पुं [°**मणि**] काच-मणि; (उत्त २०, ४२)।

राण सक [**वि+नम्**] विशेष नमना। राणइ (?); (धात्वा १४६)।

राण पुं [**राजन्**] राणा, राजा; (चंड; सिरि ११४)।

राणय पुं [**राजक**] १ राणा, राजा; (ती १५; सिरि १२३; १२५)। २ छोटा राजा; (सिरि ६८६; १०४०)।

राणिआ } **राणी** } स्त्री [**राज्ञिका, °ज्ञी**] रानी, राज-पत्नी; (कुम्मा ३; श्रावक ६३ टी; सिरि १२५; २६७)।

राम सक [**रमय्**] रमण कराना। कृ —**रामेयव्व**; (भग ८५)।

राम पुं [**राम**] १ श्री रामचन्द्र, राजा दशरथ का बड़ा पुत्र; (गा ३५; उप पृ ३७५; कुमा)। २ परशुराम; (कुमा १, ३१)। ३ चत्रिय परिव्राजक-विशेष; (औप)। ४ बल-देव, बलभद्र, वासुदेव का बड़ा भाई; (पात्र)। ५ वि. रमने वाला; (उप पृ ३७५)। °**कण्ह** पुं [°**कृष्ण**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (राज)। °**कण्हा** स्त्री [°**कृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष; (पउम ४०, १६)। °**गुत्त** पुं [°**गुप्त**] एक राजर्षि; (सूत्र १, ३, ४, २)। °**देव** पुं [°**देव**] श्रीरामचन्द्र; (पउम ४५, २६)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] एक जैन मुनि; (अनु २)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] अयोध्या नगरी; (ती ११)। °**रक्खिआ** स्त्री [°**रक्षिता**] ईशानेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२६; इक)।

रामणिज्जअ न [**रामणीयक**] रमणीयता, सौन्दर्य; (विक २८)।

रामा स्त्री [**रामा**] १ स्त्री, महिला, नारी; (तंदु ५०; कुमा; पाअ; वज्जा १०६; उप ३५७ टी)। २ नववें जिनदेव की माता; (सम १५१)। ३ ईशानेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२६; इक)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)।

रामायण न [**रामायण**] १ वाल्मीकि-कृत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ; (पउम २, ११६; महा)। २ रामचन्द्र तथा रावण की लड़ाई; (पउम १०५, १६)।

रामिअ वि [**रमित**] रमण कराया हुआ; (गा ५६; पउम ८०, १९)।

रामेसर पुं [**रामेश्वर**] दक्षिण भारत का एक हिन्दू-तीर्थ; (सम्मत्त ८४)।

राय अक [**राज्**] चमकना, शोभना। रायइ; (हे ४, १००)। वकृ—**राय**°, **रायमाण**; (कप्प)।

राय देखो **रा**=रै। रायइ; (प्राकृ ६६)।

राय पुं [**राग**] १ प्रेम, प्रीति; (प्रासू १८०)। २ मत्सर, द्वेष; "न पेमराइल्ला" (देवेन्द्र २७८)। ३ रँगना, रंजन; ४ वर्णन; ५ अनुराग; ६ राजा, नरपति; ७ चन्द्र, चाँद; ८ लाल वर्ण; ९ लाल रँग वाली वस्तु; १० वसन्त आदि स्वर; (हे १, ६८)।

राय पुं [**राजन्**] १ राजा, नर-पति, नरेश; (आचा; उवा; श्र ३५; सुर १०३)। २ चन्द्र, चन्द्रमा; (श्रा २७; सम्मत्त ३; सर्वेसि ३)। ३ एक महाग्रह; (सुज्ज २०)। ४ इन्द्र। ५ क्षत्रिय। ६ यक्ष। ७ नृप, पवित्र; ८ श्रेष्ठ, उत्तम; (हे ३, ४९; ५०)। ९ इच्छा, अभिलाष; (से १, ६)। १० छन्द-विशेष; (पिंग)। °**ईअ** वि [°**की-य**] राज-संबन्धी; (प्राकृ ३५)। °**उत्त** पुं [°**पुत्र**] राज-पुत्र, राज-कुमार; (सुर ३, १६५)। °**उल** देखो **रा-उल**; (हे १, २६७; कुमा; षड्; प्राप; अभि १८४)। °**काअ** देखो °**ईअ**; (नाट —शकु १०४)। °**कुल** देखो °**उल**; (महा)। °**केर**, °**क्क** वि [°**कीय**] राज-संबन्धी; (हे २, १४८; कुमा; षड्)। °**गिह** न [°**गृह**] मगध देश की प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है; (ठा १०—पत्र ४७७; उवा; अंत)। °**गिही** स्त्री [°**गृही**] वही अर्थ; (ती ३)। °**चंपय** पुं [°**चम्पक**] वृक्ष-विशेष, उत्तम चम्पक-वृक्ष; (श्रा १२)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] राजा का कर्तव्य; (नाट —उत्तर ४१)। °**धाणी** स्त्री [°**धानी**] राज-नगर, राजा का मुख्य नगर, जहाँ राजा रहता हो; (नाट—चैत १३२)। °**पत्ती** स्त्री [°**पत्नी**] रानी; (सुर१३, ५;सुपा ३५५)। °**पसेणीय** वि [°**प्रश्नीय**] एक जैन आगम-ग्रन्थ; (राय)। °**पह** पुं [°**पथ**] राज-मार्ग; (महा; नाट—चैत १३०)। °**पिंड** पुं [°**पिण्ड**] राजा के घर की भिक्षा—आहार; (सम ३९)। °**पुत्त** देखो °**उत्त**; (गउड)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम २, ८)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] राजा का आदमी, राज-कर्मचारी; (पउम २८, ४)। °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] राजपथ, सड़क; (औप; महा)। °**मास** पुं [°**माष**] धान्य-विशेष, बरबटी; (श्रा १८; संबोध ४३)। °**राय** पुं [°**राज**] राजाओं का राजा, राजेश्वर; (सुपा १०७)। °**रिसि** देखो **राएसि**; (णाया १, ५—पत्र १११; उप ७२८ टी; कुमा; सण)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] वृक्ष-विशेष; (औप)। °**लच्छी** स्त्री [°**लक्ष्मी**] राज-वैभव; (अभि १३१; महा)। °**ललिय** पुं [°**ललित**] आठवें बलदेव के पूर्व जन्म का नाम; (सम १५३)। °**वट्टय** न [°**वार्त्तक**] राज-संब-न्धी वार्ता-समूह; (हे २, ३०)। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] लता-विशेष; (पराण १—पत्र ३६)। °**वाडिआ**, °**वाडी** स्त्री [°**पाटिका**, °**पाटी**] चतुरंग सैन्य-श्रम-करण, राजा की चतुर्विध सेना के साथ सवारी; (कुमा; कुप्र ११९; १२०; सुपा

२२२)। °सद्दूल पुं [°शार्दूल] चक्रवर्ती राजा, श्रेष्ठ राजा; (सम १५२)। °सिट्ठि पुं [°श्रेष्ठिन्] नगर-शेठ; (भवि)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज-लक्ष्मी; (से १, १३)। °सुअ पुं [°सुत] राज-कुमार; (कप्पू ; उप ७२८ टी)। °सुअ पुं [°शुक] उत्तम तोता; (उप ७२८ टी)। °सुअ पुं [°सूय] यज्ञ-विशेष; "पिइमेहमाइमेहे रायसुए आसमेह-पसुमेहे" (पउम ११, ४२)। °सेण पुं [°सेन] छन्द-विशेष; (पिंग)। °सेहर पुं [°शेखर] १ महादेव, शिव; २ एक राजा; (सुपा ५२६)। ३ एक कवि, कर्पूरमंजरी का कर्ता; (कप्पू)। °हंस पुंस्त्री [°हंस] १ उत्तम हंस-पक्षी; २ श्रेष्ठ राजा; (सुर १२, ३४; गा ६२४; गउड; सुपा १३६; रंभा; भवि); स्त्री—°सी; (सुपा ३३४; नाट—रत्ना २३)। °हर न [°गृह] राजा का महल; (पउम ८२, ८६; हे २, १४४)। °हाणी देखो °धाणी; (सम ८०; पउम २०, ८)। °हिराय, °ाहिराय पुं [°अधि-राज] राजाओं का राजा, चक्रवर्ती राजा; (काल; सुपा १०५)। °ाहिव पुं [°ाधिप] वही अर्थ; (सुपा १०५)।

राय देखो **राव**=राव; (से ६, ७२)।

राय पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी; (दे ७, ४)।

राय पुं [रात्र] रात्रि, रात; (आचा)।

राय° देखो **राय**=राज्।

रायंछुअ } **रायंबु** } पुंन [दे] १ वेतस का पेड़; (पाअ; दे ७, १४)। २ पुं. शरभ; (दे ७, १४)।

रायंस पुं [राजांस] राज-यक्ष्मा, क्षय का व्याधि; (आचा)।

रायंसि वि [राजांसिन्] राज-यक्ष्मा वाला, क्षय का रोगी; (आचा)।

रायगइ स्त्री [दे] जलौका; (दे ७, ५)।

रायग्गल पुं [राजार्गल] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)।

रायणिअ देखो **राइणिअ**=रात्निक; (उव; ओघभा २२३)।

रायणी स्त्री [राजादनी] खिन्नी, खिरनी का पेड़; (पउम ५३, ७६)।

रायण्ण देखो **राइण्ण**; (ठा ३, १—पत्र ११४; उप ३५६ टी)।

रायमइया स्त्री [राजीमतिका] देखो **राईमई**; (कुप्र १)।

रायस देखो **राजस**; (स ३; से ३, १५)।

रायाण देखो **राय**=राजन् ; (हे ३, ५६; षड्)।

राल } **रालग** } **रालय** } पुंन [राल, °क] धान्य-विशेष, एक प्रकार की कङ्गु; (सूअ २, २, ११; ठा ७—पत्र ४०५; पिंड १६२; वज्जा ३४)।

राला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी; (दे ७, १)।

राव सक [दे] आर्द्र करना; भवि—रावेहिति; (विसे २४६ टी)।

राव देखो **रंज**=रञ्जय्। रावेइ; (हे ४, ४६)। हेकृ—**राविउं**; (कुमा)।

राव सक [रावय्] पुकारना, आह्वान करना। वकृ—**रावेंत**; (औप)।

राव पुं [राव] १ रोला, कलकल; (पाअ)। २ पुकार, आवाज; (सुपा ३४८; कुमा)।

रावण पुं [रावण] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध लंका-पति; (पि ३६०)। २ गुल्म-विशेष; (पराग १—पत्र ३२)।

राविअ वि [रञ्जित] रँगा हुआ; (दे ७, ५)।

राविअ वि [दे] आस्वादित; (दे ७, ५)।

रास } **रासग** } पुं [रास, °क] एक प्रकार का नृत्य, जिसमें एक दूसरे का हाथ पकड़ कर नाचते नाचते और गान करते करते मंडलाकार फिरना होता है; (दे २, ३८; पाअ; वज्जा १२२; सम्मत्त १४१; धर्मवि ८१)।

रासभ देखो **रासह**; (सुर २, १०२)।

रासय देखो **रासग**; (सुर १, ४६; सुपा ५०; ४३३)।

रासह पुंस्त्री [रासभ] गर्दभ, गदहा; (पाअ; प्राप्र; रंभा)। स्त्री—°ही; (काल)।

रासाणंदिअय न [रासानन्दितक] छन्द-विशेष; (अजि १२)।

रासालुद्धय पुं [रासालुब्धक] छन्द-विशेष; (अजि १०)।

रासि देखो **रस्सि**; (संक्षि १७)।

रासि पुंस्त्री [राशि] १ समूह, ढग, ढेर; (ओघ ४०७; औप; सुर २, ५; कुमा)। २ ज्योतिष्क-प्रसिद्ध मेष आदि बारह राशि; (विचार १०६)। ३ गणित-विशेष; (ठा ४, ३)।

राह पुं [राध] १ वैशाख मास; २ वसन्त ऋतु; (से १, १३)। ३ एक जैन आचार्य; (उप २८५; सुख २, १५)।

राह पुं [दे] १ दयित, प्रिय; २ वि. निरन्तर; ३ शोभित; ४ सनाथ; ५ पलित, सफेद केश वाला; (दे ७, १३)। ६ रुचिर, सुन्दर; (पाअ)।

ाहअ } पुं [**राघव**] १ रघु-वंश में उत्पन्न; (उत्तर २०) ।
ाहव } २ श्रीरामचन्द्र; (से १२, २२; १, १३; ४५) ।

ाहा स्त्री [**राधा**] १ वृन्दावन की एक प्रधान गोपी, श्रीकृष्ण की पत्नी; (वज्जा १२२; पिंग) । २ राधावेध में रखी जाती पूतली; (उप पृ १३०) । ३ शक्ति-विशेष; ४ कर्ण की पालन करने वाली माता; (प्राकृ ४२) । °**मंडव** पुं [°**मण्डप**] जहां पर राधावेध किया जाय वह स्थान; (सुपा २६६) । °**वेह** पुं [°**वेध**] एक तरह की वेध-क्रिया, जिसमें चक्राकार घूमती पूतली की वाम चक्षु वींधी जाती है; (उप ६३५; सुपा २५५) ।

ाहिआ } स्त्री [**राधिका**] ऊपर देखो; (गा ८६; हे ४,
ाही } ४४२; प्राकृ ४२) ।

ाहु पुं [**राहु**] १ ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८; पाअ) । २ कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०) । ३ विक्रम की पहली शताब्दी के एक जैन आचार्य; (पउम ११८, ११७) ।

ाहेअ पुं [**राधेय**] राधा-पुत्र, कर्ण; (गउड) ।

रि अ [**रे**] संभाषण-सूचक अव्यय; (तंदु ५०; ५२ टी) ।

रि सक [**ऋ**] गमन करना । कर्म —अज्जए; (विसे १३६६)।

रिअ सक [**री**] गमन करना । रियइ, रियंति, रिए; (सूअ २, २, २०; सुपा ४४५; उत्त २४, ४) । वकृ—**रियंत**; (पउम २८, ४) ।

रिअ सक [**प्र+विश्**] प्रवेश करना, पैठना । रिअइ; (हे ४, १८३; कुमा) ।

रिअ न [**ऋत**] १ गमन; "पुरओ रियं सोहमाणे" (भग) । २ सत्य; (भग ८, ७) ।

रिअ वि [**दे**] लून, काटा हुआ; (षड्) ।

रिउ देखो **उउ**; (हे १, १४१; कुमा; पव १४१) ।

रिउ वि [**ऋजु**] १ सरल, सीधा; (सुपा ३४६) । २ न. विशेष पदार्थ, सामान्य-भिन्न वस्तु; (पव २७०) । °**सुत्त** पुं [°**सूत्र**] नय-विशेष; (विसे २२३१; २६०८) । देखो **उज्जु** ।

रिउ पुं [**रिपु**] शत्रु, वैरी, दुश्मन; (सुर २, ६६; कुमा) । °**महण** पुं [°**मथन**] राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ५, २६३) ।

रिउ स्त्री [**ऋच्**] वेद का नियत अक्षर-पाद वाला अंश; °**व्वेय** पुं [°**वेद**] एक वेद-ग्रन्थ; (णाया १, ५; कप्प) ।

रिंखण न [**रिङ्खण**] सर्पण, गति, चाल; (पउम २५, १२)।

रिंखि वि [**रिङ्खिन्**] चलने वाला; "गिद्धावरंति हइन्ना गिद्ध व्व रिंखी हइन्नर" (पिंग ४५१) ।

रिंग देखो **रिग** । रिंगइ, रिंगए; (हे ४, २५६ टि; षड्; पिंग) । वकृ—**रिंगंत**; (हास्य १४६) ।

रिंगण न [**रिङ्गण**] चलना, सर्पण; (पव २) ।

रिंगणी स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, कण्टकारिका, गुजराती में 'रिंगणी'; (दे २, ४; उर २, ८) ।

रिंगिअ न [**दे**] भ्रमण; (दे ७, ६) ।

रिंगिअ न [**रिङ्गित**] १ रेंगना, कच्छप की तरह हाथ के बल चलना; २ गुरु-वन्दन का एक दोष; (गुभा २४) ।

रिंगिसिया स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष; (राज) ।

रिंछ (अप) देखो **रिच्छ=ऋक्ष**; (भवि) ।

रिंछोली स्त्री [**दे**] पंक्ति, श्रेणि; (दे ७, ७; सुर ३, ३१; विसे १४३६ टी; पाअ; चेइय ४४; सम्मत्त १८८; धर्मवि ३७; भवि) ।

रिंडी स्त्री [**दे**] कन्थाप्राया, कन्था की तरह का फटा-टूटा आच्छादन-वस्त्र; (दे ७, ५) ।

रिक्क वि [**दे**] स्तोक, थोड़ा; (दे ७, ६) ।

रिक्क देखो **रित्त=रिक्त**; (आचा; पाअ; पउम ८, ११८; सुपा ४२२; चउ ३६) ।

रिक्किअ वि [**दे**] शटित, सड़ा हुआ; (दे ७, ७) ।

रिक्ख अक [**रिङ्ख्**] चलना । वकृ—"गिरिव्व अच्छिन्न-पक्खो अंतरिक्खे **रिक्खंतो** लक्खिज्जइ" (कुप्र ६७) ।

रिक्ख वि [**दे**] १ वृद्ध, बूढ़ा; २ पुं. वयः-परिणाम, वृद्धता; (दे ७, ६) ।

रिक्ख पुं [**ऋक्ष**] १ भालू, श्वापद प्राणि-विशेष; (हे २, १६) । २ न. नक्षत्र; (पाअ; सुर ३, २६; ८, ११६) । °**पह** पुं [°**पथ**] आकाश; (सुर ११, १७१) । °**राय** पुं [°**राज**] वानर-वंश का एक राजा; (पउम ८, २३४)।

रिक्खण न [**दे**] १ उपलम्भ, अधिगम; २ कथन; (दे ७, १४) ।

रिक्खा देखो **रेहा=रेखा**; (ओघ १७६) ।

रिग } अक [**रिङ्ग्**] १ रेंगना, चलना । २ प्रवेश
रिग्ग } करना । रिगइ, रिग्गइ; (हे ४, २५६; टि) ।

रिग्ग पुं [**दे**] प्रवेश; (दे ७, ५) ।

रिच्च स्त्रीन. देखो **रिउ=ऋच्**; (पि ५६; ३१८) । स्त्री—°**चा**; (नाट—रत्ना ३८) ।

रुइअ देखो **रुण्ण**=रुदित; (स १२०)।

रुइर वि [**रुचिर**] १ सुन्दर, मनोरम; (पाअ)। २ दीप्र, क्रान्ति-युक्त; (तंदु २०)। ३ पुंन. एक विमानेन्द्रक, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३१)।

रुइर वि [**रोदितृ**] रोने वाला; स्त्री—°**री**; (पि ५९६; गा २१६ अ)।

रुइल वि [**रुचिर, °ल**] १ शोभन, सुन्दर; (औप; णाया १, १ टी; तंदु २०)। २ दीप्र, चमकता; (पराह १, ४—पत्र ७८; सूअ २, १, ३)। ३ पुंन. एक देव-विमान; (सम ३८)।

रुइल्ल न [**रुचिर, रुचिमत्**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**कंत** न [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**कूड** न [°**कूट**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**ज्झय** न [°**ध्वज**] देवविमान-विशेष; (सम १५)। °**प्पभ** न [°**प्रभ**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**लेस** न [°**लेश्य**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] देवविमान-विशेष; (सम १५)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**सिट्ठ** न [°**सृष्ट**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**ावत्त** न [°**ावर्त**] एक देव-विमान; (सम १५)।

रुइल्लुत्तरवडिंसग न [**रुचिरोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम १५)।

रुंच सक [**रुञ्च्**] रुई से उसके बीज को अलग करने की क्रिया करना। वकृ—**रुंचंत**; (पिंड ५७४)।

रुंचण न [**रुञ्चन**] रुई से कपास को अलग करने की क्रिया; (पिंड ५८८)।

रुंचणी स्त्री [**दे**] घरट्टी, दलने का पत्थर-यन्त्र; (दे ७, ८)।

रुंज अक [**रु**] आवाज करना। रुंजइ; (हे ४, ५७; षड्)।

रुंजग पुं [**दे, रुञ्जक**] वृक्ष, पेड़, गाछ; "कुड्डा महीरुहा वच्छा रोवगा रुंजगाइ अ" (दसनि १)।

रुंजिय न [**रवण**] शब्द, आवाज, गर्जना; (स ४२०)।

रुंट देखो **रुंज**। रुंटइ; (हे ४, ५७; षड्)। वकृ—**रुंटंत**; (स ६२; पउम १०५, ५५; गउड)।

रुंटणया स्त्री [**दे**] अवज्ञा, अनादर; (पिंड २१०)।

रुंटणिया स्त्री [**दे, रवणिका**] रोदन-क्रिया; (णाया १,

रुंटिअ न [**रुत**] गुञ्जारव, आवाज; "रुंटिअं अलिविरुअं" (पाअ; कुमा)।

रुंड पुंन [**रुण्ड**] बिना सिर का धड़, कबन्ध; "पडिया य मुंडरुंडा" (कुप्र १३५; गउड; भवि; सण)।

रुंढ पुं [**दे**] आक्षिक, कितव, जूआड़ी; (दे ७, ८)।

रुंढिअ वि [**दे**] सफल; (दे ७, ८)।

रुंद वि [**दे**] १ विपुल, प्रचुर; (दे ७, १४; गा ४०२; सुपा २६३; वज्जा १२८; १६२)। २ विशाल, विस्तीर्ण; (विसे ७१०; स ७०२; पव ६१; औप)। ३ स्थूल, मोटा, पीन; (पाअ)। ४ मुखर, वाचाल; (दे ७, १४)।

रुंदी स्त्री [**दे**] विस्तीर्णता, लम्बाई; (वज्जा १६४)।

रुंध सक [**रुध्**] रोकना, अटकाना। रुंधइ; (हे ४, १३३; २१८)। कर्म—रुंधिज्जइ, रुब्भइ, रुब्भए; (हे ४, २४५; कुमा)। वकृ—**रुंधंत**; (कुमा)। कवकृ—**रुब्भंत, रुब्भमाण, रुज्झंत**; (पउम ७३, २६; से ४, १७; भवि) कृ—**रुंधिअव्व**; (अभि ५०)।

रुंधिअ वि [**रुद्ध**] रोका हुआ; (कुमा)।

रुंप पुंन [**दे**] १ त्वचा, सूक्ष्म छाल; (गा ११६; १२० वज्जा ४२)। २ उल्लिखन; (वज्जा ४२)।

रुंपण न [**रोपण**] रोपाना, वपन कराना, वापन; (पिं १६२)।

रुंफ देखो **रुंप**; (पि २०८)।

रुंभ देखो **रुंध**। रुंभइ; (हे ४, २१८; प्राप्र)। वकृ—**रुंभंत**; (पि ५३५)। कृ—**रुंभिअव्व**; (से ६, ३)।

रुंभण न [**रोधन**] रोक, अटकायत; (पराह १, १; कुप्र ३७७; गा ६६०)।

रुंभय वि [**रोधक**] रोकने वाला; (स ३८१)।

रुंभाविअ वि [**रोधित**] रुकवाया हुआ, बँद किया हुआ; (धा २७)।

रुंभिअ वि [**रुद्ध**] रोका हुआ; (हेका ६६; सुपा १२७)।

रुक्किणी देखो **रुप्पिणी**; (पि २७७)।

रुक्ख पुंन [**वृक्ष**] पेड़, गाछ, पादप; (णाया १, १; हे २ १२७; प्राप्र; उव; कुमा; जी २७; प्रति ६; प्रासू १६८ "रुक्खाइं, रुक्खाणि" (पि ३५८)। २. संयम, विरति (सूअ १, ४, १, २५)। °**मूल** न [°**मूल**] पेड़ जड़; (कप्प)। °**मूलिय** पुं [°**मूलिक**] वृक्ष के मूल रहने वाला वानप्रस्थ; (औप)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**

वनस्पति-शास्त्र; (स ३११)। °उवेद पुं [°युर्वेद] वही अर्थ; (विसे १७७५)।

रुक्खल्ल ऊपर देखो; (षड्)।

रुक्खिम पुंस्त्री [**वृक्षत्व**] वृक्षपन; (षड्)।

रुग्ग वि [**रुग्ण**] भग्न, भाँगा हुआ; (पाअ; गउड ५६१)।

रुचिर देखो **रुइर**; (दे १, १४६)।

रुच्च अक [**रुच्**] रुचना, पसंद पड़ना। रुच्चइ, रुच्चए; (वज्जा १०६; महा; सिरि १०६; भवि)। वकृ—**रुच्चंत, रुच्चमाण**; (भवि; उप १४३ टी)।

रुच्च सक [**दे**] व्रीहि आदि को यन्त्र में निस्तुष करना। वकृ—**रुच्चंत**; (णाया १, ७—पत्र ११७)।

रुच्चि देखो **रुइ=**रुचि; (कप्पू)।

रुच्छ देखो **रुक्ख**; (संक्षि १५)।

रुच्मि देखो **रुप्पि**; (हे २, ५२; कुमा)।

रुज्ज न [**रोदन**] रुदन, रोना; "दीहुण्हा णीसासा, रणरणओ, रुज्जणगिरं गेअं" (गा ८४३)।

रुज्झ देखो **रुंध**। रुज्झइ; (हे ४, २१८)।

रुज्झ देखो **रुह=**रुह्।

रुज्झंत देखो **रुंध**।

रुज्झिअ वि [**रुद्ध**] रोका हुआ; (कुमा)।

रुट्टिया स्त्री [**दे**] रोटी; (सट्टि ३६)।

रुट्ठ वि [**रुष्ट**] रोष-युक्त; (उवा; सुर २, १२१)। २ पुं. नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २८)।

रुणरुण न [**दे**] करुण क्रन्दन; (भवि)।

रुणरुण अक [**दे**] करुण क्रन्दन करना। रुणरुणइ; (वज्जा ५०; भवि)। वकृ—**रुणरुणंत**; (भवि)।

रुणुरुण देखो **रुणरुण**; (पउम १०५, ५८)।

रुणुरुणिय वि [**दे**] करुण क्रन्दन वाला; (पउम १०५, ५८)।

रुण्ण न [**रुदित**] रोदन, रोना; (हे १, २०९; प्राप्र; गा १८)।

रुत्थिणी देखो **रुप्पिणी**; (षड्)।

रुदिअ देखो **रुण्ण**; (नाट—मालती १०६)।

रुद्द पुं [**रुद्र**] १ महादेव, शिव; (सम्मत्त १४५; हेका ५६)। २ शिव-मूर्ति विशेष; (णाया १, १—पत्र ३९)। ३ जिन देव, जिन भगवान् ; (पउम १०९, १२)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति; (सम २८)। ५ नृप-विशेष, एक वासुदेव का पिता; (पउम २०, १८२; सम १५२)। ६ ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२)। ७ अंग-विद्या का जानकार पुरुष; (विचार ४८४)। ८ वि. भयंकर, भय-जनक; (सम्मत्त १४५)। देखो **रोद्द=**रुद्र।

रुद्द देखो **रोद्द=**रौद्र; (सम ६)।

रुद्दक्ख पुं [**रुद्राक्ष**] वृक्ष-विशेष; (पउम ५३, ७९)।

रुद्दाणी स्त्री [**रुद्राणी**] शिव-पत्नी, दुर्गा; (मनु १५४)।

रुद्ध वि [**रुद्ध**] रोका हुआ; (कुमा)।

रुद्ध देखो **रुद्द**; (हे २, ८०)।

रुन्न देखो **रुण्ण**; (सुर २, १२६)।

रुप्प सक [**रोपय्**] रोपना, बोना; "महयारभरियदेसे रुप्पसि धत्तूरयं तुमं वच्छ" (धर्मवि ६७)।

रुप्प न [**रुक्म**] १ काञ्चन, सोना; २ लोहा; ३ धतूरा; ४ नागकेसर; (प्राप्र)। ५ चाँदी, रजत; (जं ४)।

रुप्प न [**रूप्य**] चाँदी, रजत; (औप; सुर ३, ६; कप्पू)। °**कूड** पुं [°**कूट**] रुक्मि पर्वत का एक कूट; (राज)। °**कूलप्पवाय** पुं [°**कूलप्रपात**] द्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७३)। °**कूला** स्त्री [°**कूला**] १ एक महानदी; (ठा २, ३—पत्र ७२; ८०; सम २७; इक)। २ एक देवी; ३ रुक्मि पर्वत का एक कूट; (जं ४)। °**मय** वि [°**मय**] चाँदी का बना हुआ; (णाया १, १—पत्र ५२; कुमा)। °**भास** पुं [°**भास**] एक ज्योतिष्क महा-ग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७८)।

रुप्प वि [**रौप्य**] रूपा का, चाँदी का; (णाया १, १—पत्र २४; उर ८, ४)।

रुप्पय देखो **रुप्प=**रूप्य; "रुप्पयं रययं" (पाअ; महा)।

रुप्पि पुं [**रुक्मिन्**] १ कौण्डिन्य नगर का एक राजा, रुक्मिणी का भाई; (णाया १, १६—पत्र २०९; कुमा; रुक्मि ४२)। २ कुणाल देश का एक राजा; (णाया १, ८—पत्र १४०)। ३ एक वर्षधर-पर्वत; (ठा २, ३—पत्र ६९; सम १२; ७२)। ४ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ५ देव-विशेष; (जं ४)। ६ रुक्मि पर्वत का एक कूट; (जं ४)। ७ वि. सुवर्ण वाला; ८ चाँदी वाला; (हे २, ५२; ८९)। °**कूड** पुंन [°**कूट**] रुक्मि पर्वत का एक कूट; (ठा २, ३; सम ६३)।

रुप्पिणी स्त्री [**रुक्मिणी**] १ द्वितीय वासुदेव की एक पटरानी; (पउम २०, १८६)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव की एक अग्र-

महिषी; (पउम २०, १८७; पडि)। ३ एक श्रेष्ठि-पत्नी; (सुपा ३३४)।

रुप्पोभास पुं [**रूप्यावभास**] १ एक महाग्रह; (सुज्ज २०)। २ वि. रजत की तरह चमकता; (जं ४)।

रुब्भंत } देखो **रुंध**।
रुब्भमाण }

रुम्मिणी देखो **रुप्पिणी**; (षड्)।

रुम्ह सक [**म्लापय्**] म्लान करना, मलिन करना। "प-रुम्हाह जसं" (से ३, ४)।

रुरु पुं [**रुरु**] १ मृग-विशेष; (पउम ६, ५६; पगह १, १—पत्र ७)। २ वनस्पति-विशेष; (पगण १—पत्र ३५)। ३ एक अनार्य देश; ४ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (पगह १, १—पत्र १४)।

रुरुव अक [**रोरूय्**] १ खूब आवाज करना; २ बारंबार चिल्लाना। वकृ—**रुरुवेंत**; (स २१३)।

रुल अक [**लुट्**] लेटना। वकृ—**रुलंत, रुलिंत**; (पगह १, ३—पत्र ४५), "पाडियगयघडतुरयं **रुलंत**वरसुहडधडस-याइन्नं" (धर्मवि ८०)।

रुलुघुल अक [**दे**] नीचे साँस लेना, निःश्वास डालना। वकृ—**रुलुघुलंत**; (भवि)।

रुव देखो **रुअ=रुद्**। रुवइ; (हे ४, २२६; प्राकृ ६८; संक्षि ३६; भवि; महा), रुवामि; (कुप्र ६६)। कर्म—रुव्वइ, रुविज्जइ; (हे ४, २४६)।

रुवण न [**रोदन**] रोना; (उप ३३५)।

रुवणा स्त्री. ऊपर देखो; (ओघभा ३०)।

रुविल देखो **रुइल**; (औप)।

रुव्व देखो **रुअ=रुद्**। रुव्वइ; (संक्षि ३६; प्राकृ ६८)।

रुसा स्त्री [**रोष**] रोष, गुस्सा; (कुमा)।

रुसिय देखो **रूसिअ**; (पउम ५५, १५)।

रुह अक [**रुह्**] १ उत्पन्न होना। २ सक. घाव को सूखाना। रुहइ; (नाट)। कर्म—"जेण विदारियद्दीवि खग्गाइपहारो इमीए पक्खालणोयएणांपि पणट्ठवेयणां तक्खणा चेव रुब्भइ त्ति" (स ४१३)।

°**रुह** वि [**रुह**] उत्पन्न होने वाला; (आचा)।

रुरुह अक [**दे**] मन्द मन्द बहना। "वामंगि सुत्ति रुरुरुह वाउ" (भवि)।

रुरुक्स पुं [**दे**] उत्कण्ठा; (भवि)।

रूअ न [**दे. रूत**] रुई, तूला; (दे ७, ६; कप्प; पव ८४; देवेन्द्र ३३२; धर्मसं ६८०; भग; संबोध ३१)।

रूअ पुं [**रूप**] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६७)। ३ आकृति, आकार; (गा १३२)। ४ वि. सदृश, तुल्य; (दे ६, ४६)। °**कंत** पुं [°**कान्त**] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)। °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] १ भूतानन्द-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी-महत्तरिका; (राज)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] पूर्णभद्र और विशि[ष्ट इन्द्र का] एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६७; १६८)। [°प्प]**भा** स्त्री [°**प्रभा**] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ६—पत्र ३६१)। देखो **रूव=रूप**; (गउड)।

रूअंस पुं [**रूपांश**] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६७; १६८)।

रूअंसा स्त्री [**रूपांशा**] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ६—पत्र ३६१)।

रूअग } पुंन [**रूपक**] १ रुपया; (हे ४, ४२२)। २
रूअय } पुं. एक गृहस्थ; (णाया २—पत्र २५२)। ३ रूपा देवी का सिंहासन; (णाया २—पत्र २५२)। °**वडिंसय** न [°**ावतंसक**] रूपा देवी का भवन; (णाया २)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] एक गृहस्थ-स्त्री; (णाया २)। °**ावई** स्त्री [°**वती**] भूतानन्द-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २)। देखो **रूवय=रूपक**।

रूअरुइआ [**दे**] देखो **रुअरुइआ**; (षड्)।

रूआ स्त्री [**रूपा**] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ४, १—पत्र १६८)।

रूआमाला स्त्री [**रूपमाला**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

रूआर वि [**रूपकार**] मूर्ति बनाने वाला; "मोत्तुमजोग्गं जोग्गे दलिए रूवं करेइ रूआरो" (विसे ११९०)।

रूआवई स्त्री [**रूपवती**] एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ४, १—पत्र १६८)।

रूढ वि [**रूढ**] १ परंपरागत, रूढि-सिद्ध; २ प्रसिद्ध; "रूढ क्कमेण सव्वे नराहिवा तत्थ उवविट्ठा" (उप ६४८ टी)। ३ प्रगुण, तंदुरुस्त; (पाअ)।

रूढि स्त्री [**रूढि**] परम्परा से चली आती प्रसिद्धि; "जं रूढ्ढ रूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ" (सुपा ६१८; कप्प)।

रूप पुं [**रूप**] पशु, जानवर; (मृच्छ २००)। देखो **रूअ**=रूप; (ठा ६—पत्र ३६१)।

रूपि पुं [**रूपिन्**] शौनिक, कसाई; (मृच्छ २००)।

रूरुइय न [**दे**] उत्सुकता, रणरणक; (पाअ)।

रूव पुंन [**रूप**] १ आकृति, आकार; (णाया १, १; पात्र)। २ सौन्दर्य, सुन्दरता; (कुमा; ठा ४, २; प्रासू ४७; ७१)। ३ वर्ण, शुक्र आदि रँग; (औप; ठा १; २, ३)। ४ मूर्ति; (विसे १११०)। ५ स्वभाव; (ठा ८)। ६ शब्द, नाम; ७ श्लोक; ८ नाटक आदि दृश्य काव्य; (हे १, १४२)। ९ एक की संख्या, एक; (कम्म ४, ७७; ७८; ७९; ८०; ८१)। १०—११ रूप वाला, वर्ण वाला; (हे १, १४२)। १२—देखो **रूअ, रूप**=रूप। °**कंता** देखो **रूअ-कंता**; (ठा ६—पत्र ३६१; इक)। °**धार** वि [°**धार**] रूप-धारी; "जलयरमच्छगणाणं अणेगमच्छाइरूव-धारेणं" (स्वा ८)। °**प्पभा** देखो **रूअ-प्पभा**; (इक)। °**मंत** देखो °**वंत**; (पउम १२, ५७; ६१, २६)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ भूतानन्द-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ६—पत्र ३६१)। २ सुरूप-नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ एक दिक्कुमारी महत्तरिका; (ठा ६)। °**वंत**, °**स्सि** वि [°**वत्**] रूप वाला, सु-रूप; (श्रा १०; उवा; उप पृ ३३२; सुपा ४७४; उव)।

रूवग पुंन [**रूपक**] १ रुपया; (उप पृ २८०; धम्म ८ टी; कुप्र ४१४)। २ साहित्य-प्रसिद्ध एक अलंकार; (सुर १, २९; विसे ९९९ टी)। देखो **रूअग**=रूपक।

रूवमिणी स्त्री [**दे**] रूपवती स्त्री; (दे ७, ९)।

रूवय देखो **रूवग**; (कुप्र १२३; ४१३; भास ३४)।

रूवस्सिणी देखो **रूवमिणी**; (षड्)।

रूवा देखो **रूआ**; (इक)।

रूवि वि [**रूपिन्**] रूप वाला; (आचा; भग; स ८३)।

रूवि पुंस्त्री [**दे**] गुच्छ-विशेष, अर्क-वृक्ष, आक का पेड़; (पराण १—पत्र ३२; दे ७, ९)।

रूस अक [**रुष्**] गुस्सा करना। **रूसइ, रूसए**; (उव; कुमा; हे ४, २३६; प्राकृ ६८; षड्)। कर्म—**रूसिज्जइ**; (हे ४, ४१८)। हेकृ—**रूसिउं, रूसेउं**; (हे ३, १४१; पि ५७३)। कृ—**रूसिअव्व, रूसेयव्व**; (गा ४६६; पउम १, ४—पत्र २५०; सुर १६, ६४)। प्रयो—संकृ—**रूसविअ**; (कुमा)।

रूसण न [**रोषण**] १ रोष, गुस्सा; (गा ६३५; हे ४, ४१८)। २ वि. गुस्साखोर, रोष करने वाला; (सुपा १, ३४; नंदि ४८)।

रूसिअ वि [**रुष्ट**] रोष-युक्त; (सुपा १, १३; १६)।

रे अ [**रे**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ परिहास; २ अधिक्षेप; (संक्षि ४७)। ३ संभाषण; (हे २, २०१; कुमा)। ४ आक्षेप; (संक्षि ३८)। ५ तिरस्कार; (पव ३८)।

रेअ पुं [**रेतस्**] वीर्य, शुक्र; (राज)।

रेअव सक [**मुच्**] छोड़ना, त्यागना। **रेअवइ**; (हे ४, ९१)।

रेअविअ वि [**मुक्त**] छोड़ा हुआ, त्यक्त; (कुमा; दे ७, ०१)।

रेअविअ वि [**दे, रेचित**] खाली-कृत, शून्य किया हुआ, खाली किया हुआ; (दे ७, ११; पाअ; से ११, २)।

रेआ स्त्री [**रै**] १ धन; २ सुवर्ण, सोना; (षड्)।

रेइअ वि [**रेचित**] रिक्त किया हुआ; (से ७, ३१)।

रेंकिअ वि [**दे**] १ आक्रान्त; २ लीन; ३ व्रीडित, लज्जित; (दे ७, १४)।

रेकार पुं [**रेकार**] 'रे' शब्द, 'रे' की आवाज; (पव ३८)।

रेड्ढि देखो **रिड्ढि**; (संक्षि ३)।

रेणा स्त्री [**रेणा**] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी, एक जैन साध्वी; (कप्प; पडि)।

रेणि पुंस्त्री [**दे**] पङ्क, कर्दम; (दे ७, ९)।

रेणु पुंस्त्री [**रेणु**] १ रज, धूली; (कुमा)। २ पराग; (स्वप्न ७६)।

रेणुया स्त्री [**रेणुका**] ओषधि-विशेष; (पराण १—पत्र ३६)।

रेभ पुं [**रेफ**] १ 'र' अक्षर, रकार; (कुमा)। २ वि. दुष्ट; ३ अधम, नीच; ४ क्रूर, निर्दय; ५ कृपण, गरीब; (हे १, २३६; षड्)।

रेरिज्ज अक [**राराज्य्**] अतिशय शोभना। वकृ—**रेरिज्जमाण**; (णाया १, २—पत्र ७८; १, ११—पत्र १७१)।

रेल्ल सक [**प्लावय्**] सराबोर करना। वकृ—**रेल्लंत**; (कुमा)।

रेल्लि स्त्री [**दे**] रेल, स्रोत, प्रवाह; (राज)।

रेवइय न [**रैवतिक**] एक उद्यान का नाम; (कप्प)।

रेवइआ स्त्री [**रेवतिका**] भूत-ग्रह विशेष; (सुख २, १६)।

रेवई स्त्री [**रेवती**] १ बलदेव की स्त्री; (कुमा)। २ एक श्राविका का नाम; (ठा ६—पत्र ४५५; सम १५४)। ३ एक नक्षत्र; (सम ५७)।

रेवई स्त्री [**दे. रेवती**] मातृका, देवी; (दे ७, १०)।

रेवंत पुं [**रेवन्त**] सूर्य का एक पुत्र, देव-विशेष; "रेवंत-तणुभवा इव अस्सकिसोरा सुलक्खणिणो" (धर्मवि १४२; सुपा ५६)।

रेवज्जिअ वि [**दे**] उपालब्ध; (दे ७, १०)।

रेवण पुं [**रेवण**] व्यक्ति-वाचक नाम, एक साधारण काव्य-ग्रन्थ का कर्ता; (धर्मवि १४२)।

रेवय न [**दे**] प्रणाम, नमस्कार; (दे ७, ६)।

रेवय पुं [**रैवत**] गिरनार पर्वत; (णाया १, ५—पत्र ६६; अंत; कुप्र १८)।

रेवलिआ स्त्री [**दे**] वालुकावर्त, धूल का आवर्त; (दे ७, १०)।

रेवा स्त्री [**रेवा**] नदी-विशेष, नर्मदा; (गा ५७८; पाअ; कुमा; प्रासू ६७)।

रेसणिआ } स्त्री [**दे**] १ करोटिका, एक प्रकार का कांस्य-
रेसणी } भाजन; (पाअ; दे ७, १५)। २ अक्षि-निकोच; (दे ७, १५)।

रेसम्मि देखो **रेसिम्मि**; "जो उण सद्धा-रहिओ दाणं देइ ज-सकित्तिरेसम्मि" (स १५७)।

रेसि (अप) देखो **रेसिं**; (हे ४, ४२५; सण)।

रेसिअ वि [**दे**] छिन्न, काटा हुआ; (दे ७, ६)।

रेसिं (अप) नीचे देखो; (हे ४, ४२५)।

रेसिम्मि अ. निमित्त, लिए, वास्ते; "दंसणनाणचरित्ताण एस रेसिम्मि सुपसत्थो" (पंचा १६, ४०)।

रेह अक [**राज्**] दीपना, शोभना, चमकना। रेहइ, रेहए; (हे ४, १००; धात्वा १५०; महा)। वकृ—**रेहंत**; (कप्प)।

रेहा स्त्री [**रेखा**] १ चिह्न-विशेष, लकीर; (ओघ ४८६; गउड; सुपा ४१; वज्जा ६४)। २ पंक्ति, श्रेणि; (कप्पू)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।

रेहा स्त्री [**राजना**] शोभा, दीप्ति; (कप्पू)।

रेहिअ न [**दे**] छिन्न पुच्छ, कटा हुआ पूँछ; (दे ७, १०)।

रेहिअ वि [**राजित**] शोभित; (सुर १०, १८६)।

रेहिर वि [**रेखावत्**] रेखा वाला; (हे २, १५६)।

रेहिर } वि [**राजितृ**] शोभने वाला; (सुर १, ५०;
रेहिल्ल } सुपा ५६), "नयरे नयरेहिल्ले" (उप ७२८ टी)।

रेहिल्ल देखो **रेहिर**=रेखावत्; (उव ७२८ टी)।

रोअ देखो **रुअ**=रुद्। रोअइ; (संक्षि ३६; प्राकृ ३८)। वकृ—**रोअंत, रोयमाण**; (गा ५४६; उप पृ १२८; सुर २, २२६)। हेकृ—**रोउं**; (संक्षि ३७)। कृ—**रोअ-व्वअ, रोइअव्व**; (से ३, ४८; गा ३४८; हेका ३३)।

रोअ देखो **रुच्च**=रुच्। रोयइ, रोयए; (भग; उव), "रोएइ जं पहुणं तं चेव कुणंति सेवगा निच्चं" (रंभा)। वकृ—**रोयंत**; (श्रा ६)।

रोअ सक [**रोचय्**] १ रुचि करना। २ पसंद करना, चाहना। रोयइ, रोएमि, रोएहि; (उत्त १८, ३३; भग)। संकृ—**रोयइत्ता**; (उत्त २६, १)।

रोअ पुं [**रोच**] रुचि;

"दुक्कररोया विउसा बाला भणियंपि नेव बुज्झंति।
तो मज्झिमबुद्धीणं हियत्थमेसो पयासो मे" (चेइय २६०)।

रोअ पुं [**रोग**] आमय, बिमारी; (पाअ)।

रोअग वि [**रोचक**] १ रुचि-जनक; २ न. सम्यक्त्व का एक भेद; (संबोध ३५; सुपा ५५१)।

रोअण न [**रोदन**] रोना, रुदन; (दे ५, १०; कुप्र २३१; २८६)।

रोअण पुं [**रोचन**] १ एक दिग्हस्ति-कूट; (इक)। २ न. गोरोचन; (गउड)।

रोअणा स्त्री [**रोचना**] गोरोचन; (से ११, ४५; गउड)।

रोअणिआ स्त्री [**दे**] डाकिनी, डाइन; (दे ७, १२; पाअ)।

रोअव्वअ देखो **रोअ**=रुद्।

रोआविअ वि [**रोदित**] रुलाया हुआ; (गा ३५७; सुपा ३१७)।

रोइ वि [**रोगिन्**] रोग वाला, बिमार; (गउड)।

रोइ देखो **रुइ**=रुचि; "अवि सुंदरेवि दिण्णे दुक्कररोई कलहमाई" (पिंड ३२१)।

रोइअ वि [**रोचित**] १ पसंद आया हुआ; (भग)। चिकीर्षित; (ठा ६—पत्र ३५५)।

रोइर वि [**रोदितृ**] रोने वाला; (गा ३८६; षड्)।

रोंकण वि [**दे**] रंक, गरीब; (दे ७, ११)।

रोंच सक [**पिष्**] पीसना। रोंचइ, (हे ४, १८५)।

रोक्कअ वि [दे] प्रोक्षित, अभिषिक्त; (षड्)।

रोक्कणि } वि [दे] १ शृंगी, शृंग वाला। २ नृशंस,
रोक्कणिअ } निर्दय; (दे ७, १६)।

रोग पुं [रोग] १ बिमारी, व्याधि; (उवा; पणह १, ४)। २ एक ब्राह्मण-जातीय श्रावक; (उप ५३६)।

रोगि वि [रोगिन्] बिमार; (सुपा ५७६)।

रोगिअ वि [रोगिक, °त] ऊपर देखो; (सुत्र १, १४)।

रोगिणिआ स्त्री [रोगिणिका] रोग के कारण ली जाती दीक्षा; (ठा १०—पत्र ४७३)।

रोगिल्ल देखो **रोगि**; (प्रामा)।

रोघस वि [दे] रंक, गरीब; (दे ७, ११)।

रोच्च देखो **रोंच**। रोचइ; (षड्)।

रोज्झ पुं [दे] ऋश्य, पशु-विशेष; गुजराती में 'रोझ'; (दे ७, १२; विपा १, ४; पाअ)।

रोट्ट पुंन [दे] १ तंदुल-पिष्ट, चावल आदि का आटा, पिसान, गुजराती में 'लोट'; (दे ७, ११; ओघ ३६३; ३७४; पिंड ४४; बृह १)।

रोट्टग पुं [दे] रोटी; (महा)।

रोड सक [दे] १ रोकना, अटकायत करना। २ अनादर करना। ३ हैरान करना। रोडिसि; (स ५७५)। कवकृ—**रोडिज्जंत**; (उप पृ १३३)।

रोड न [दे] घर का मान, गृह-प्रमाण; (दे ७, ११)।

रोडी स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाष; २ व्रणी की शिबिका; (दे ७, १५)।

रोत्तव्व देखो **रुअ=रुद्**।

रोद्द पुं [रौद्र] १ अहोरात का पहला मुहूर्त; (सम ५१)। २ एक नृपति, तृतीय बलदेव और वासुदेव का पिता; (ठा ६—पत्र ४४७)। ३ अलंकार-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों में एक रस; (अणु)। ४ वि. दारुण, भयंकर, भीषण; (ठा ४, ४; महा)। ५ न. ध्यान-विशेष, हिंसा आदि क्रूर कर्म का चिन्तन; (औप)।

रोद्द पुं [रुद्र] अहोरात का पहला मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। देखो **रुद्द=रुद्र**।

रोद्ध वि [दे] १ कुथिताक्ष; २ न. मल; (दे ७, १५)।

रोम पुंन [रोमन्] लोम, बाल, रोंआ; (औप; पाअ; गउड)। °**कूव** पुं [°कूप] लोम का छिद्र; (णाया १, १—पत्र १३; सुर ३, १०१)।

रोमंच पुं [रोमाञ्च] रोमों का खड़ा होना, भय या हर्ष से रोमों का उठ जाना, पुलक; (कुमा; काल; भवि; गण)।

रोमंचइअ } वि [रोमाञ्चित] पुलकित, जिसके रोम खड़े
रोमंचिअ } हुए हों वह; (पउम ३, १०४; १०२, २०३; पाअ; भवि)।

रोमंथ पुं [रोमन्थ] पगुराना, चबी हुई वस्तु का पुनः चबाना; (से ६, ८७; पाअ; सण)।

रोमंथ } अक [रोमन्थय्] चबी हुई चीज का फिर से
रोमंथाअ } चबाना, पगुराना। रोमंथइ; (हे ४, ४३)। वकृ—**रोमंथाअमाण**; (चारु ७)।

रोमग } पुं [रोमक] १ अनार्य देश-विशेष, रोम देश;
रोमय } (पत्र २७४)। २ रोम देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पणह १, १—पत्र १४)।

रोमय पुं [रोमज] पक्षि-विशेष, रोम की पाँख वाला पक्षी; (जी २२)।

रोमराइ स्त्री [दे] जघन, नितम्ब; (दे ७, १२)।

रोमलयासय न [दे] पेट, उदर; (दे ७, १२)।

रोमस वि [रोमश] रोम-युक्त, रोम वाला; (दे ३, ११; पाअ)।

रोमूसल न [दे] जघन, नितम्ब; (दे ७, १२)।

रोर पुं [रोर] चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास; (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

रोर वि [दे] रंक, गरीब, निर्धन; (दे ७, ११; पाअ; सुर २, १०५; सुपा २६६)।

रोरु पुं [रोरु] सातवीं नरक-पृथिवी का एक नरकावास; (देवेन्द्र २४; इक)।

रोरुअ पुं [रोरुक, रौरव] १ रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का दूसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ३)। २ रत्नप्रभा का तेरहवाँ नरकेन्द्रक; (देवेन्द्र ५)। ३ सातवीं नरक-पृथिवी का एक नरकावास—नरक-स्थान; (ठा ५, ३—पत्र ३४१; सम ५८; इक)। ५ चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास; (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

रोल पुं [दे] १ कलह, झगड़ा; (दे ७, १५)। २ रव, कोलाहल, कलकल आवाज; (दे ७, १५; पाअ; कुमा; सुपा ५७६; चेइय १८४; मोह ५)।

रोलंब पुं [दे, रोलम्ब] भ्रमर, मधुकर; (दे ७, १; कुप्र ५८)।

रोला स्त्री [**रोला**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

रोव देखो **रुअ=रुद्**। रोवइ; (हे ४, २२६; संक्षि ३६; प्राकृ ६८; षड्; महा; सुर १०, १७१; भवि)। वकृ—**रोवंत, रोवमाण**; (पउम १७, ३७; सुर २, १२४; ६, २३५; पउम ११०, ३५)। संकृ—**रोविऊण**; (पि ५८६)। हेकृ—**रोविउं**; (स १००)।

रोव पुं [**दे. रोप**] पौधा; गुजराती में 'रोपो'; (सम्मत्त १४४)।

रोवण न [**रोदन**] रोना; (सुर ६, ७६)।

रोवाविअ देखो **रोआविअ**; (वज्जा ६२)।

रोविअ वि [**रोपित**] १ बोया हुआ। २ स्थापित; (से १३, ३०)।

रोविंदय न [**दे**] गेय-विशेष, एक प्रकार का गान; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

रोविर देखो **रोइर**; (दे ७, ७; कुमा; हे २, १४५)।

रोविर वि [**रोपयितृ**] बोने वाला; (हे २, १४५)।

रोस देखो **रूस**। रोसइ(?); (धात्वा १५०)।

रोस पुं [**रोष**] गुस्सा, क्रोध; (हे २, १६०; १६१)। °**इल्ल**, °**इंत** वि [°**वत्**] रोष वाला; (संक्षि २०; प्राप्र)।

रोसण वि [**रोषण**] रोष करने वाला, गुस्साखोर; (उप १४७ टी; सुख १, १३)।

रोसविअ वि [**रोषित**] कोपित, कुपित किया हुआ; (पउम ११०, १३)।

रोसाण सक [**मृज्**] मार्जन करना, शुद्ध करना। रोसाणइ; (हे ४, १०५; प्राकृ ६६; षड्)।

रोसाणिअ वि [**मृष्ट**] शुद्ध किया हुआ, मार्जित; (पाअ; कुमा; पिंग)।

रोसिअ देखो **रोसविअ**; (पउम ६६, ११; भवि)।

रोह अक [**रुह्**] उत्पन्न होना। रोहंति; (गउड)।

रोह देखो **रुंध**। संकृ—**रोहिऊण, रोहेउं**; (काल; बृह ३)।

रोह पुं [**रोध**] १ घेरा, नगर आदि का सैन्य से वेष्टन; (गाथा १, ८—पत्र १४६; उप पृ ८४; कुप्र १५८)। २ रुकावट, अटकाव; (कुप्र १; द्रव्य ४६)। ३ कैद; (पुप्फ १८६)।

रोह पुं [**रोधस्**] तट, किनारा; (पाअ)।

रोह पुं [**रोह**] १ एक जैन मुनि; (भग)। २ प्ररोह, व्रण आदि का सूख जाना; (दे ६, ६५)। ३ वि. रोहक, रोहण-कर्ता; (भवि)।

रोह पुं [**दे**] १ प्रमाण; २ नमन; ३ मार्गण; (दे ७, १६)।

रोहग वि [**रोधक**] घेरा डालने वाला, अटकाव करने वाला; "रोहगसंजुत्तीए रोहिओ कुमारेण" (स ६३५), "रोहगसंजुत्ती उण कीरउ" (सुर १२, १०१)।

रोहग देखो **रोह=रोध**; (स ६३५; सुर १२, १०१)।

रोहग पुं [**रोहक**] एक नट-कुमार; (उप पृ २१५)।

रोहगुत्त पुं [**रोहगुप्त**] १ एक जैन मुनि; (कप्प)। २ त्रैराशिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य; (विसे २४५२)।

रोहण न [**रोधन**] १ अटकाव; (आरा ७२)। २ वि. रोकने वाला; (द्रव्य ३४)।

रोहण न [**रोहण**] १ चढ़ना, आरोहण; (सुपा ४३८; कुप्र ३६६)। २ उत्पत्ति; (विसे १७५३)। ३ पुं. पर्वत-विशेष; (सुपा ३२; कुप्र ६)। ४ एक दिग्हस्ति-कूट; (इक)।

रोहिअ [**दे**] देखो **रोज्झ**; (दे ७, १२; पाअ; पण्ह १, १—पत्र ७)।

रोहिअ वि [**रोधित**] घेरा हुआ; "रोहियं पाडलिपुरं तेण" (धर्मवि ४२; कुप्र ३६६; स ६३५)।

रोहिअ वि [**रोहित**] १ सुखाया हुआ (घाव); (उप पृ ७६)। २ द्वीप-विशेष; (जं ४)। ३ पुं. मत्स्य-विशेष; (स २५७)। ४ न. तृण-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)। ५ कूट-विशेष; (ठा २, ३; ८)।

रोहिअंस पुं [**रोहितांश**] एक द्वीप; (जं ४)।

रोहिअंस°, **रोहिअंसा** } स्त्री [**रोहितांशा**] एक नदी; (सम २७; इक)। °**पवाय** पुं [°**प्रपात**] द्रह-विशेष; (ठा २, ३; जं ४)।

रोहिअप्पवाय पुं [**रोहिताप्रपात**] द्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७२)।

रोहिआ स्त्री [**रोहित्, रोहिता**] एक नदी; (सम २७; इक; ठा २, ३—पत्र ७२; ८०)।

रोहिंसा स्त्री [**रोहिदंशा**] एक नदी; (इक)।

रोहिणिअ पुं [**रौहिणेय**] एक प्रसिद्ध चोर का नाम; (श्रा २७)।

रोहिणी स्त्री [**रोहिणी**] १ नक्षत्र-विशेष; (सम १०)। २ चन्द्र की पत्नी; (श्रा १६)। ३ ओषधि-विशेष; (उत्त ३४, १०; सुर १०, २२३)। ४ भविष्य में भारतवर्ष में तीर्थंकर होने वाली एक श्राविका; (सम १५४)। ५ नववें बलदेव की माता का नाम; (सम १५२)। ६ एक विद्या-

देवी; (संनि ५) । ७ शक्रेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२६) । ८ सत्पुरुष-नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४) । ६ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४) । १० तप-विशेष; (पव २७१; पंचा १६, २३) । ११ गौ, गैया; (पाअ) । °रमण पुं [°रमण] चन्द्रमा; (पाअ)।

रोहीडग न [**रोहीतक**] नगर-विशेष; (संथा ६८) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि रयाराइसद्दसंकलणो तेत्तीसइमो तरंगो समत्तो ।

——:o:——

ल

ल पुं [**ल**] मूर्ध-स्थानीय अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप) ।

लइ अ. ले, अच्छा, ठीक; (भवि) ।

लइ देखो **लय**=ला ।

लइअ वि [**दे. लगित**] १ परिहित, पहना हुआ; २ अंग में पिनद्ध; (दे ७, १८; पिंड ५६१; भवि) ।

लइअल्ल पुं [**दे**] वृषभ, बैल; (दे ७, १६) ।

लइआ स्त्री [**लतिका, लता**] देखो **लया**; (नाट—रत्ना ७; गउड; उप ७६८ टी) ।

लइणा } स्त्री [**दे**] लता, वल्ली; (षड् ; दे ७, १८) ।
लइणी }

लउअ पुं [**लकुच**] वृक्ष-विशेष, बड़हल का गाछ; (औप; पि ३६८) ।

लउड } पुं [**लकुट**] लकड़ी, यष्टि; (दे ७, १६; सुर २, ८; औप) ।
लउल }

लउस } पुं [**लकुश**] १ अनार्य देश-विशेष; (पव २७४; इक) । २ पुंस्त्री. लकुश देश का निवासी मनुष्य; स्त्री—°**सिया**; (णाया १, १—पत्र ३७; औप; इक) ।
लउसय }

लंका स्त्री [**लङ्का**] नगरी-विशेष, सिंहलद्वीप की राजधानी; (से ३, ६२; पउम ४६, १६; कप्पू) । °**लय** वि [°**लय**] लंका-निवासी; (वज्जा १३०) । °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] हनूमान की एक पत्नी; (पउम ५२, २१) । °**सोग** पुं [°**शोक**] राक्षस वंश का एक राजा; (पउम ५, २६५)। °**हिव** पुं [°**धिप**] लंका का राजा; (उप टू ३७५) । °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] वही अर्थ; (पउम ४६, १७) ।

लंका स्त्री [**दे**] शाखा; (वज्जा १३०) ।

लंख } पुंस्त्री [**लङ्ख**] बड़े बाँस के ऊपर खेल करने वाली
लंखग } एक नट-जाति; (णाया १, १—पत्र २; पण्ह २, ५—पत्र १३२; औप; कप्प) । स्त्री—°**खिगा**; (उप १०३४) ।

लंगल न [**लाङ्गल**] हल; "खित्तेसु वहंति लंगलाण सया" (धर्मवि २४; हे १, २५६; षड् ८०) ।

लंगलि पुं [**लाङ्गलिन्**] बलभद्र, बलदेव; (कुमा) ।

लंगलि } स्त्री [**लाङ्गली**] वल्ली-विशेष, शारदी लता;
लंगली } (कुमा) ।

लंगिम पुंस्त्री [**दे**] १ जवानी, यौवन; २ ताजापन, नवीनता; "पिसुणइ तणुलट्ठी लंगिमं चंगिमं च" (कप्पू) ।

लंगूल न [**लाङ्गूल**] पुच्छ, पूँछ; (हे १, २५६; पाअ; कप्प; कुमा) ।

लंगूलि वि [**लाङ्गूलिन्**] पुच्छ वाला, पशु; (कुमा) ।

लंगोल देखो **लंगूल**; (सुज्ज १०, ८) ।

लंघ सक [**लङ्घ्, लङ्घय्**] १ लाँघना, अतिक्रमण करना । २ भोजन नहीं करना । लंघइ, लंघेइ; (महा; भवि) । कर्म—लंघिज्जइ; (कुमा) । वकृ—**लंघंत, लंघयंत**; (सुपा २७१; पउम ६७, २१) । संकृ—**लंघित्ता, लंघिऊण**; (महा) । हेकृ—**लंघेउं**; (पि ५७३) । कृ—**लंघणिज्ज**; (से २, ४४), **लंघ**; (कुमा १, १७) ।

लंघण न [**लङ्घन**] १ अतिक्रमण; (सुर ५, १६२) । २ अ-भोजन; (उप १३५ टी) ।

लंघि वि [**लङ्घिन्**] लंघन करने वाला; (कप्पू) ।

लंघिअ वि [**लङ्घित**] जिसका लंघन किया गया हो वह; (गउड) ।

लंच पुं [**दे**] कुक्कुट, मुर्गा; (दे ७, १७) ।

लंचा स्त्री [**लञ्चा**] घुस, रिशवत; (पाअ; पण्ह १, ३—पत्र ५३; दे १, ६२; ७, १७; सुपा ३०८) ।

लंचिल्ल वि [**लाञ्चिक**] घुसखोर, रिशवत ले कर काम करने वाला; (वव १) ।

लंछ पुं [**लञ्छ**] चोरों की एक जाति; (विपा १, १—पत्र ११) ।

लंछण न. [**लाञ्छन**] १ चिह्न, निशानी; (पाअ)। २ नाम; ३ अंकन, चिह्न करना; (हे १, २५; ३०)।

लंछणा स्त्री [**लाञ्छना**] चिह्न करना; (उप ५२२)।

लंछिअ वि [**लाञ्छित**] चिह्नित, कृत-चिह्न; (पव १५४; गाया १, २—पत्र ८६; ठा ३, १; कस; कप्पू)।

लंडुअ वि [**दे. लण्डित**] उत्क्षिप्त; "चंडप्पवादलंडुओ विअ वरंडो पव्वदादो दूरं आरोविअ पाडिदो म्हि" (चारु ३)।

लंतक } पुं [**लान्तक**] १ देवलोक, छठवाँ देवलोक; (भग;
लंतग } औप; अंत; इक)। २ एक देव-विमान; (सम
लंतय } २७; देवेन्द्र १३४)। ३ षष्ठ देवलोक के निवासी देव; ४ षष्ठ देवलोक का इन्द्र; (राज; ठा २, ३—पत्र ८५)।

लंद पुंन [**लन्द**] काल, समय; (कप्प; पव ७०)।

लंदय पुंन [**दे**] कलिन्दक, गो आदि का खादन-पात्र; (पव २)।

लंपड त्रि [**लम्पट**] लोलुप, लालची, लुब्ध; (पाअ; सुपा १०७; ५६६; सुर ३, १०)।

लंपाग पुं [**लम्पाक**] देश-विशेष; (पउम ६८, ५६)।

लंपिक्ख पुं [**दे**] चोर, तस्कर; (दे ७, १६)।

लंब सक [**लम्ब्**] १ सहारा लेना, आलम्बन करना। २ अक. लटकना। लंबेइ; (महा)। वकृ—**लंबंत, लंबमाण**; (औप; सुर ३, ७१; ४, २४२; कप्प; वसु)। संकृ—**लंबिऊण**; (महा)।

लंब वि [**लम्ब**] लम्बा, दीर्घ; "उड्ढा उट्ठस्स चेव लंबा" (उवा; गाया १, ८—पत्र १३३)।

लंब पुं [**दे**] गोवाट, गो-वाड़ा; (दे ७, २६)।

लंबअ न [**लम्बक**] ललन्तिका, नाभि-पर्यन्त लटकती माला आदि; (स्वप्न ६३)।

लंबणा स्त्री [**लम्बना**] रज्जु, रस्सी; (स १०१)।

लंबा स्त्री [**दे**] १ वल्लरी, लता; (षड्)। २ केश, बाल; (षड्; दे ७, २६)।

लंबाली स्त्री [**दे**] पुष्प-विशेष; (दे ७, १६)।

लंबि वि [**लम्बिन्**] लटकता; (गउड)।

लंबिअ } वि [**लम्बित**] १ लटकता हुआ; (गा ५३२;
लंबिअय } सुर ३, ७०)। २ पुं. वानप्रस्थ का एक भेद; (औप)।

लंबिर वि [**लम्बितृ**] लटकने वाला; (कुमा; गउड)।

लंबुअ वि [**लम्बुक**] १ लम्बी लकड़ी के अन्त भाग में बँधा हुआ मिट्टी का ढेला; २ भींत में लगा हुआ ईंटों का समूह; (मृच्छ ६)।

लंबुत्तर पुंन [**लम्बोत्तर**] कायोत्सर्ग का एक दोष, चोलपट्ट को नाभि-मंडल से ऊपर रख कर और जानु को चोलपट्ट से नीचे रख कर कायोत्सर्ग करना; (चेइय ४८४)।

लंबूस पुंन [**दे. लम्बूष**] कन्दुक के आकार का एक आभरण; "छत्तं चमर-पडाया दप्पणलंबूसया वियाणं च" (पउम ३२, ७६; ६६, १२)।

लंबोदर } वि [**लम्बोदर**] १ बड़ा पेट वाला; (सुख १,
लंबोयर } १४; उवा)। २ पुं. गणपति, गणेश; (श्रा १२; कुप्र ६७)।

लंभ सक [**लभ्**] प्राप्त करना। "अज्जेवाहं न लंभामि अवि लाभो सुए सिया" (उत्त २, ३१)। भवि—लंभिस्सं; (पि ५२५)। कर्म—लंभीअदि, लंभीआमो (शौ) (पि ५४१)। संकृ—**लंभिअ, लंभित्ता**; (मा १६ नाट—चैत ६१; ठा ३, २)।

लंभ सक [**लम्भय्**] प्राप्त कराना। संकृ—**लंभिअ**; (नाट—चैत ४४)। कृ—**लंभइदव्व** (शौ), **लंभणिज्ज, लंभणीअ**; (मा ५१; नाट—मालती ३६; चैत १२५)।

लंभ पुं [**लाभ**] प्राप्ति; (पउम १००, ४३; से ११, ३' गउड; सिरि ८२२; सुपा ३६४)। देखो **लाह**=लाभ।

लंभण पुं [**लम्भन**] मत्स्य की एक जाति; (विपा १, टी—पत्र ८४)।

लंभिअ देखो **लंभ**=लभ्, लम्भय्।

लंभिअ वि [**लब्ध**] प्राप्त; (नाट—चैत १२५)।

लंभिअ वि [**लम्भित**] प्राप्त कराया हुआ, प्रापित; (२, ७, ३७; स ३१०; अच्चु ७१)।

लक्कुड म [**दे. लकुट**] लकडी, यष्टि; (दे ७, १६; पाअ)।

लक्ख सक [**लक्षय्**] १ जानना। २ पहचानना। ३ देखना। लक्खइ; (महा)। कर्म—लक्खिज्जए, लक्खीयसि; (विसे २१४६; महा; काल)। कवकृ—**लक्खिज्जंत**; (से ११, ४५)। कृ—**लक्खणीअ**; (नाट—शकु २४), देखो **लक्ख**=लक्ष्य।

लक्ख पुंन [**दे**] काय, शरीर, देह; (दे ७, १७)।

लक्ख पुंन [**लक्ष**] संख्या-विशेष, सौ हजार; (जी ४५; सुपा १०३; २४८; कुमा; प्रासु ६६)। °**पाग** पुं [°**पाक** लाख रूपयों के व्यय से बनता एक तरह का पाक; (ठा ६)

लक्ख वि [**लक्ष्य**] १ पहचानने योग्य; "विरलक्खगं" (पउम ८२, ८४)। २ जिसमें जाना जाय वह, लक्षण, प्रकाशक; "भुअदण्डवीअलक्खं चावं" (से ५, १७)। ३ वेध्य, निशाना; "लक्खविंधण—" (धर्मवि ५२; दे २, २६; कुमा)।

लक्ख[^] देखो **लक्खा**; (पडि)।

लक्खग वि [**लक्षक**] पहचानने वाला; (पउम ८२, ८४; कुप्र ३००)।

लक्खण पुंन [**लक्षण**] १ इतर से भेद का बोधक चिह्न; २ वस्तु-स्वरूप; (ठा ३, ३; ४, १; जी ११; विसे २१४६; २१४७; २१४८)। ३ चिह्न; "लक्खणपुण्णं" (कुमा)। ४ व्याकरण-शास्त्र; "लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ" (सुपा १४१; ६५७)। ५ व्याकरण आदि का सूत्र; ६ प्रतिपाद्य, विषय; (हे २, ३)। ७ पुं. लक्ष्मण; ८ सारस पक्षी; "लक्खणो" (प्राकृ २२)। °**संवच्छर** पुं [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष; (सुज्ज १०, २०)।

लक्खण पुं [**लक्ष्मण**] श्रीराम का छोटा भाई; (से १, ४८)। देखो **लखमण**।

लक्खणा स्त्री [**लक्षणा**] १ शब्द-वृत्ति विशेष, शब्द की एक शक्ति जिससे मुख्य अर्थ के बाध होने पर भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है; (दे १, ३)। २ एक महौषधि; (ती ५)।

लक्खणा स्त्री [**लक्ष्मणा**] १ आठवें जिनदेव की माता; (सम १५१)। २ उसी जन्म में मुक्ति पाने वाली श्रीकृष्ण की एक पत्नी; (अंत १५)। ३ एक अमात्य की स्त्री; (उप ७२८ टी)।

लक्खणिय वि [**लाक्षणिक, लाक्षण्य**] १ लक्षणों का जानकार; २ लक्षण-युक्त; (सुपा १३६)।

लक्खमण } पुं [**लक्ष्मण**] विक्रम की बारहवीं शताब्दी
लखमण } का एक जैन मुनि और ग्रन्थकार; (सुपा ६५८)।

लक्खा स्त्री [**लाक्षा**] लाख, लाह, जतु, चपड़ा; (णाया १, १—पत्र २४; पगह २, ५)। °**रुणिय** वि [°**रुणित**] लाख से रँगा हुआ; (पाअ)।

लक्खिअ वि [**लक्षित**] १ जाना हुआ; २ पहचाना हुआ; ३ देखा हुआ; (गउड; नाट—रत्ना १४)।

लग न [**दे**] निकट, पास; (पिंग)।

लगंड न [**लगण्ड**] वक्र काष्ठ; (पंचा १८, १६; स ५६६)। °**साइ** वि [°**शायिन्**] वक्र काष्ठ की तरह सोने वाला; (पगह २, १—पत्र १००; औप; कस; पंचा १८, १६; ठा ५, १—पत्र २९६)। °**ासण** न [°**ासन**] आसन-विशेष; (सुपा ८५)।

लगुड देखो **लउड**; (कुप्र ३८६)।

लग्ग सक [**लग्**] लगना, संग करना, संबन्ध करना। लग्गइ; (हे ४, २३०; ४२०; ४२२; प्राकृ ६८; प्राप्र; उव)। भवि—लग्गिस्सं, लग्गिहिइ; (पि ५२७)। वकृ—**लग्गंत, लग्गमाण**; (चेइय ११२; उप ६६६; गा १०५)। संकृ—**लग्गूण**; (कुप्र ६६), **लग्गित्ति** (अप); (हे ४, ३३६)। कृ—**लग्गिअव्व**; (सुर १०, ११२)।

लग्ग न [**दे**] १ चिह्न; २ वि. अ-घटमान, असं-बद्ध; (दे ७, १७)।

लग्ग न [**लग्न**] १ मेष आदि राशि का उदय; (सुर २, १७०; मोह १०१)। २ वि. संसक्त, संबद्ध; (पाअ; कुमा; सुर २, ५६)। ३ पुं. स्तुति-पाठक; (हे २, ६८)।

लग्गण न [**लगन**] संग, संबन्ध; "वडपायवसाहालग्गणेण" (सुर १५, १४; उप १३४; ५३८)।

लग्गणय पुं [**लग्नक**] प्रतिभू, जामीन; (पाअ)।

लग्गूण देखो **लग्ग=लग्**।

लघिम पुंस्त्री [**लघिमन्**] १ लघुता, लाघव; २ योग की एक सिद्धि; "लंघिज्ज लघिमगुणओ अनिलस्सवि लाघवं साहू" (कुप्र २७७)। ३ विद्या-विशेष; (पउम ७, १३६)।

लचय न [**दे**] तृण-विशेष, गण्डूत् तृण; (दे ७, १७)।

लच्छ देखो **लक्ख=लक्ष्य**; (नाट)।

लच्छ[^] देखो **लभ**।

लच्छण देखो **लक्खण=लक्षण**; (सुपा ६४; प्राकृ २२; नाट—चैत ५५)।

लच्छि } स्त्री [**लक्ष्मी**] १ संपत्ति, वैभव; २ धन, द्रव्य;
लच्छी } ३ कान्ति; ४ औषध-विशेष; ५ फलिनी वृक्ष; ६ स्थल-पद्मिनी; ७ हरिद्रा; ८ मुक्ता, मोती; ९ शटी-नामक ओषधि; (कुमा; प्राकृ ३०; हे २, १७)। १० शोभा; (से २, ११)। ११ विष्णु-पत्नी; (पाअ; से २, ११)। १२ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, १०)। १३ षष्ठ वासुदेव की माता; (पउम २०, १८४)। १४ पुंडरीक द्रह की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२)। १५ देव-प्रतिमा विशेष; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। १६ छन्द-विशेष; (पिंग)। १७ एक वणिक्-पत्नी; (उप ७२८ टी)। १८ शिखरी पर्वत का एक कूट; (इक)। °**निलय**

लंछण न [**लाञ्छन**] १ चिह्न, निशानी; (पात्र)। २ नाम; ३ अंकन, चिह्न करना; (हे १, २५; ३०)।

लंछणा स्त्री [**लाञ्छना**] चिह्न करना; (उप ५२२)।

लंछिअ वि [**लाञ्छित**] चिह्नित, कृत-चिह्न; (पव १५४; गाया १, २—पत्र ८६; ठा ३, १; कस; कप्पू)।

लंडुअ वि [**दे. लण्डित**] उत्क्षिप्त; "चंडप्पवादलंडुओ विअ वरंडो पव्वदादो दूरं आरोविअ पाडिदो म्हि" (चारु ३)।

लंतक } पुं [**लान्तक**] १ देवलोक, छठवाँ देवलोक; (भग; **लंतग** } औप; अंत; इक)। २ एक देव-विमान; (सम **लंतय** } २७; देवेन्द्र १३४)। ३ षष्ठ देवलोक के निवासी देव; ४ षष्ठ देवलोक का इन्द्र; (राज; ठा २, ३—पत्र ८५)।

लंद पुंन [**लन्द**] काल, समय; (कप्प; पव ७०)।

लंदय पुंन [**दे**] कलिन्दक, गो आदि का खादन-पात्र; (पव २)।

लंपड वि [**लम्पट**] लोलुप, लालची, लुब्ध; (पात्र; सुपा १०७; ५६६; सुर ३, १०)।

लंपाग पुं [**लम्पाक**] देश-विशेष; (पउम ६८, ५६)।

लंपिक्ख पुं [**दे**] चोर, तस्कर; (दे ७, १६)।

लंब सक [**लम्ब्**] १ सहारा लेना, आलम्बन करना। २ अक. लटकना। लंबेइ; (महा)। वकृ—**लंबंत, लंबमाण**; (औप; सुर ३, ७१; ४, २४२; कप्प; वसु)। संकृ—**लंबिऊण**; (महा)।

लंब वि [**लम्ब**] लम्बा, दीर्घ; "उड्ढा उड्ढस्स चेव लंबा" (उवा; गाया १, ८—पत्र १३३)।

लंब पुं [**दे**] गोवाट, गो-वाड़ा; (दे ७, २६)।

लंबअ न [**लम्बक**] ललन्तिका, नाभि-पर्यन्त लटकती माला आदि; (स्वप्न ६३)।

लंबणा स्त्री [**लम्बना**] रज्जु, रस्सी; (स १०१)।

लंबा स्त्री [**दे**] १ वल्लरी, लता; (षड्)। २ केश, बाल; (षड्; दे ७, २६)।

लंबाली स्त्री [**दे**] पुष्प-विशेष; (दे ७, १६)।

लंबि वि [**लम्बिन्**] लटकता; (गउड)।

लंबिअ } वि [**लम्बित**] १ लटकता हुआ; (गा ५३२; **लंबिअय** } सुर ३, ७०)। २ पुं. वानप्रस्थ का एक भेद; (औप)।

लंबिर वि [**लम्बितृ**] लटकने वाला; (कुमा; गउड)।

लंबुअ वि [**लम्बुक**] १ लम्बी लकड़ी के अन्त भाग में बँधा हुआ मिट्टी का ढेला; २ भींत में लगा हुआ ईंटों का समूह; (मृच्छ ६)।

लंबुत्तर पुंन [**लम्बोत्तर**] कायोत्सर्ग का एक दोष, चोलपट्ट को नाभि-मंडल से ऊपर रख कर और जानु को चोलपट्ट से नीचे रख कर कायोत्सर्ग करना; (चेइय ४८४)।

लंबूस पुंन [**दे. लम्बूष**] कन्दुक के आकार का एक आभरण; "छत्तं चमर-पडाया दप्पणलंबूसया वियाणं च" (पउम ३२, ७६; ६६, १२)।

लंबोदर } वि [**लम्बोदर**] १ बड़ा पेट वाला; (सुख १, **लंबोयर** } १४; उवा)। २ पुं. गणपति, गणेश; (श्रा १२; कुप्र ६७)।

लंभ सक [**लभ्**] प्राप्त करना। "अज्जेवाहं न लंभामि अवि लाभो सुए सिया" (उत्त २, ३१)। भवि—लंभिस्सं; (पि ५२५)। कर्म—लंभीअदि, लंभीआमो (शौ); (पि ५४१)। संकृ—**लंभिअ, लंभित्ता**; (मा १६; नाट—चैत ६१; ठा ३, २)।

लंभ सक [**लम्भय्**] प्राप्त कराना। संकृ—**लंभिअ**; (नाट—चैत ४४)। कृ—**लंभइदव्व** (शौ), **लंभणिज्ज, लंभणीअ**; (मा ५१; नाट—मालती ३६; चैत १२५)।

लंभ पुं [**लाभ**] प्राप्ति; (पउम १००, ४३; से ११, ३१; गउड; सिरि ८२२; सुपा ३६४)। देखो **लाह**=लाभ।

लंभण पुं [**लम्भन**] मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८ टी—पत्र ८४)।

लंभिअ देखो **लंभ**=लभ्, लम्भय्।

लंभिअ वि [**लब्ध**] प्राप्त; (नाट—चैत १२५)।

लंभिअ वि [**लम्भित**] प्राप्त कराया हुआ, प्रापित; (सुख २, ७, ३७; स ३१०; अच्चु ७१)।

लक्कुड म [**दे. लकुट**] लकडी, यष्टि; (दे ७, १६; पात्र)।

लक्ख सक [**लक्षय्**] १ जानना। २ पहचानना। देखना। लक्खइ; (महा)। कर्म—लक्खिज्जए, लक्खेयसि; (विसे २१४६; महा; काल)। कवकृ—**लक्खिज्जंत**; (से ११, ४५)। कृ—**लक्खणीअ**; (नाट-शाकु २४), देखो **लक्ख**=लक्ष्य।

लक्ख पुंन [**दे**] काय, शरीर, देह; (दे ७, १७)।

लक्ख पुंन [**लक्ष**] संख्या-विशेष, सौ हजार; (जी ४५; ६ १०३; २४८; कुमा; प्रासू ६६)। °**पाग** पुं [°**पाक**] लाख रूपयों के व्यय से बनता एक तरह का पाक; (ठा ६

लक्ख त्रि [**लक्ष्य**] १ पहचानने योग्य; "चिरलक्खगो" (पउम ८२, ८४)। २ जिससे जाना जाय वह, लक्षण, प्रकाशक; "सुमदप्पवीअलक्खं चावं" (से ५, १७)। ३ वेध्य, निशाना; "लक्खविंधण—" (धर्मवि ५२; दे २, २६; कुमा)।

लक्ख ° देखो **लक्खा**; (पडि)।

लक्खग वि [**लक्षक**] पहचानने वाला; (पउम ८२, ८४; कुप्र ३००)।

लक्खण पुंन [**लक्षण**] १ इतर से भेद का बोधक चिह्न; २ वस्तु-स्वरूप; (ठा ३, ३; ४, १; जी ११; विसे २१४६; २१४७; २१४८)। ३ चिह्न; "लक्खणपुण्णं" (कुमा)। ४ व्याकरण-शास्त्र; "लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ" (सुपा १४१; ६५७)। ५ व्याकरण आदि का सूत्र; ६ प्रतिपाद्य, विषय; (हे २, ३)। ७ पुं. लक्ष्मण; ८ सारस पक्षी; "लक्खणो" (प्राकृ २२)। °**संवच्छर** पुं [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष; (सुज्ज १०, २०)।

लक्खण पुं [**लक्ष्मण**] श्रीराम का छोटा भाई; (से १, ४८)। देखो **लक्खमण**।

लक्खणा स्त्री [**लक्षणा**] १ शब्द-वृत्ति विशेष, शब्द की एक शक्ति जिससे मुख्य अर्थ के बाध होने पर भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है; (दे १, ३)। २ एक महौषधि; (ती ५)।

लक्खणा स्त्री [**लक्ष्मणा**] १ आठवें जिनदेव की माता; (सम १५१)। २ उसी जन्म में मुक्ति पाने वाली श्रीकृष्ण की एक पत्नी; (अंत १५)। ३ एक अमात्य की स्त्री; (उप ७२८ टी)।

लक्खणिय वि [**लाक्षणिक, लाक्षण्य**] १ लक्षणों का जानकार; २ लक्षण-युक्त; (सुपा १३६)।

लक्खमण } पुं [**लक्ष्मण**] विक्रम की बारहवीं शताब्दी
लखमण } का एक जैन मुनि और ग्रन्थकार; (सुपा ६५८)।

लक्खा स्त्री [**लाक्षा**] लाख, लाह, जतु, चपड़ा; (णाया १, १—पत्त २४; पण्ह २, ५)। °**रुणिय** वि [°**रुणित**] लाख से रँगा हुआ; (पात्र)।

लक्खिअ वि [**लक्षित**] १ जाना हुआ; २ पहचाना हुआ; ३ देखा हुआ; (गउड; नाट—रत्ना १४)।

लग न [**दे**] निकट, पास; (पिंग)।

लगंड न [**लगण्ड**] वक्र काष्ठ; (पंचा १८, १६; स ५६६)। °**साइ** वि [°**शायिन्**] वक्र काष्ठ की तरह सोने वाला; (पण्ह २, १—पत्र १००; औप; कस; पंचा १८, १६; ठा ५, १—पत्र २९६)। °**ासण** न [°**ासन**] आसन-विशेष; (सुपा ८५)।

लगुड देखो **लउड**; (कुप्र ३८९)।

लग्ग सक [**लग्**] लगना, संग करना, संबन्ध करना। लग्गइ; (हे ४, २३०; ४२०; ४२२; प्राकृ ६८; प्राप्र; उव)। भवि—लग्गिस्सं, लग्गिहिइ; (पि ५२७)। वकृ—**लग्गंत, लग्गमाण**; (चेइय ११२; उप ६६६; गा १०५)। संकृ—**लग्गूण**; (कुप्र ६६), **लग्गिवि** (अप); (हे ४, ३३९)। कृ—**लग्गिअव्व**; (सुर १०, ११२)।

लग्ग न [**दे**] १ चिह्न; २ त्रि. अ-घटमान, असं-बद्ध; (दे ७, १७)।

लग्ग न [**लग्न**] १ मेष आदि राशि का उदय; (सुर २, १७०; मोह १०१)। २ त्रि. संसक्त, संबद्ध; (पाअ; कुमा; सुर २, ५६)। ३ पुं. स्तुति-पाठक; (हे २, ६८)।

लग्गण न [**लगन**] संग, संबन्ध; "वडपायवसाहालग्गणेण" (सुर १५, १४; उप १३४; ५३८)।

लग्गणय पुं [**लग्नक**] प्रतिभू, जामीन; (पाअ)।

लग्गूण देखो **लग्ग**=लग्।

लघिम पुंस्त्री [**लघिमन्**] १ लघुता, लाघव; २ योग की एक सिद्धि; "लंघिज लघिमगुणओ अनिलस्सवि लाघवं साहू" (कुप्र २७७)। ३ विद्या-विशेष; (पउम ७, १३६)।

लचय न [**दे**] तृण-विशेष, गण्डूत् तृण; (दे ७, १७)।

लच्छ देखो **लक्ख**=लक्ष्य; (नाट)।

लच्छ ° देखो **लभ**।

लच्छण देखो **लक्खण**=लक्षण; (सुपा ६४; प्राकृ २२; नाट—चैत ५५)।

लच्छि ° } स्त्री [**लक्ष्मी**] १ संपत्ति, वैभव; २ धन, द्रव्य;
लच्छी } ३ कान्ति; ४ औषध-विशेष; ५ फलिनी वृक्ष; ६ स्थल-पद्मिनी; ७ हरिद्रा; ८ मुक्ता, मोती; ९ शटी-नामक ओषधि; (कुमा; प्राकृ ३०; हे २, १७)। १० शोभा; (से २, ११)। ११ विष्णु-पत्नी; (पाअ; से २, ११)। १२ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, १०)। १३ षष्ठ वासुदेव की माता; (पउम २०, १८४)। १४ पुंडरीक द्रह की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्त ७२)। १५ देव-प्रतिमा विशेष; (णाया १, १ टी—पत्त ४३)। १६ छन्द-विशेष; (पिंग)। १७ एक वणिक्-पत्नी; (उप ७२८ टी)। १८ शिखरी पर्वत का एक कूट; (इक)। °**निलय**

पुं [°निलय] वासुदेव; (पउम ३७, ३७)। °मई स्त्री [°मती] १ छठवें वासुदेव की माता; (सम १५२)। २ ग्यारहवें चक्रवर्ती का स्त्री-रत्न; (सम १५२)। °मंदिर न [°मन्दिर] नगर-विशेष; (सुपा ६३२)। °वइ पुं [°पति] लक्ष्मी का स्वामी, श्रीकृष्ण; (प्राकृ ३०)। °वई स्त्री [°वती] दक्षिण रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। °हर पुं [°धर] १ वासुदेव; (पउम ३८, ३४)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ न. नगर-विशेष; (इक)।

लज्जुक (अशो) देखो **रज्जु**=(दे); (कप्प—रज्जु)।

लज्ज अक [लस्ज्] शरमाना। लज्जइ; (उव; महा)। कर्म—लज्जिज्जइ; (हे ४, ४१६)। वकृ—**लज्जंत**, **लज्जमाण**; (उप पृ ५५; महा; आचा)। कृ—**लज्जणिज्ज**; (से ११, २६; गाया १, ८—पत्र १४३)।

लज्जण } न [लज्जन] १ शरम, लाज; (सा ८; राज)।
लज्जणय } २ वि. लज्जा-कारक; "किं एत्तो लज्जणयं... ...जं पहरिज्जइ दीणे पलायमाणे पमत्ते वा" (सुपा २१५; भवि)।

लज्जा स्त्री [लज्जा] १ लाज, शरम; (औप; कुमा; प्रासू ६६; गा ६१०)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ संयम; (भग २, ५; औप)।

लज्जापइत्तअ (शौ) वि [लज्जयितृ] लजाने वाला; "जुवइवेसलज्जापइत्तअं" (मा ४२)।

लज्जालु वि [लज्जालु] लज्जावान्, शरमिंदा; (उप १७६ टी)।

लज्जालु } स्त्री [लज्जालु] १ लता-विशेष; (षड्;
लज्जालुआ } हे २, १५६; १७४)। २ लज्जा वाली
लज्जालुइणी } स्त्री; (षड्; हे २, १५६; १७४; सुर २, १५६; गा १२७; प्राकृ ३५)।

लज्जालुइणी स्त्री [दे] कलह-कारिणी स्त्री; (षड्)।

लज्जालुइर } वि [लज्जालु] लज्जाशील, शरमिंदा। स्त्री—
लज्जालुर } °री; (गा ४८२; ६१२ अ)।

लज्जाव सक [लज्जय्] शरमिंदा बनाना। लज्जावेदि (शौ); (नाट—मृच्छ ११०)। कृ—**लज्जावणिज्ज**; (स ३६८; भवि)।

लज्जावण वि [लज्जन] शरमिन्दा करने वाला; (पण्ह १, [illegible] ५६)।

लज्जाविय वि [लज्जित] लजवाया हुआ; (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जिअ वि [लज्जित] १ लज्जा-युक्त; (पाअ)। २ न. लज्जा, शरम; "न लज्जिअं अप्पणोवि पलिआणं" (श्रा १४)।

लज्जिर वि [लज्जितृ] लज्जा-शील; (हे २, १४५; गा १५०; कुमा; वज्जा ८; भवि)। स्त्री—°री; (पि ५६६)।

लज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी; २ वि. रस्सी की तरह सरल, सीधा; "चाई लज्जू धन्ने तवस्सी" (पण्ह २, ५—पत्र १४६; भग)।

लज्जु वि [लज्जावत्] लज्जा-युक्त, लज्जा वाला; "एसणासमिओ लज्जू गामे अनियओ चरे" (उत्त ६, १७)।

लज्जु देखो **रिज्जु**=ऋजु; (भग)।

लज्भ° देखो **लभ**।

लट्ट } न [दे] १ खसखस आदि का तेल; (पभा ३१)।
लट्टय } २ कुसुम्भ; "लट्टयवसणा" (दे ७, १७)।

लट्टा स्त्री [दे. लट्टा] धान्य-विशेष, कुसुम्भ धान्य; (पव १५४)।

लट्टा स्त्री [लट्वा] १ वृक्ष-विशेष; (कुमा)। २ कुसुम्भ; (बृह १)। ३ गौरेया, पक्षि-विशेष; ४ भ्रमर, भौंरा; ५ वाद्य-विशेष; (दे २, ५५)।

लट्ठ वि [दे] १ अन्यासक्त; (दे ७, २६)। २ मनोहर, सुन्दर, रम्य; (दे ७, २६; पाअ; गाया १, १; पण्ह १, ४; सुर १, २६; कुप्र ११; श्रु ६; पुप्फ ३४; सार्ध २१; धण ५; सुपा १५६)। ३ प्रियंवद, प्रिय-भाषी; (दे ७, २६)। ४ प्रधान, मुख्य; "खमियव्वो अवराहो ममावि पाविट्ठलट्ठस्स" (उप ७२८ टी)। °दंत पुं [°दन्त] १ एक जैन मुनि; (अनु १)। २ द्वीप-विशेष, एक अन्तर्द्वीप; ३ द्वीप-विशे में रहने वाला मनुष्य; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)।

लट्ठरी स्त्री [दे] सुन्दर, रमणीय; (कुप्र २१०)।

लट्ठि स्त्री [यष्टि] लाठी, छड़ी; (औप; कुमा)।

लट्ठिअ न [दे] खाद्य-विशेष; "जेहाहिं लट्ठिएणं भोच्चा कज्जं साहिंति" (सुज्ज १०, १७)।

लडह वि [दे] १ रम्य, सुन्दर; (दे ७, १७; सुपा ६; सिरि ४७; ८७५; गउड; औप; कप्प; कुमा; हेका २६५; सण; भवि)। २ सुकुमार, कोमल; (काप्र ७६५; भवि)। ३ विदग्ध, चतुर; (दे ७, १७)। ४ प्रधान मुख्य; (कुमा)।

लडहक्खमिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त; (दे ७, २०)।

लडहा स्त्री [**दे**] विलासवती स्त्री; (षड्)।

लडाल देखो **णडाल**; (प्राकृ ३५; पि २६०)।

लड्डिय न [**दे**] लाड़, स्नेह, प्यार; (भवि)।

लड्डुअ } पुं [**लड्डुक**] लड्डू, मोदक; (गा ६४१; प्रयौ
लड्डुग } ८३; कुप्र २०६; भवि; पउम ८४, ४; पिंड ३७७)।

लड्डुयार वि [**लड्डुककार**] लड्डू बनाने वाला, हलवाई; (कुप्र २०६)।

लढ सक [**स्मृ**] स्मरण करना, याद करना। लढइ; (हे ४, ७४)। वकृ—**लढंत**; (कुमा)।

लढिअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; (पाअ)।

लण्ह वि [**श्लक्ष्ण**] १ चिकना, मसृण; (सम १३७; ठा ४, २; औप; कप्पू)। २ अल्प, थोड़ा; ३ न. लोहा, धातु-विशेष; (हे २, ७७; प्राकृ १८)।

लत्त वि [**लप्त, लपित**] उक्त, कथित; (सुपा २३४)।

लत्ता } स्त्री [**दे**] १ लात, पार्ष्णि-प्रहार; (सुपा २३८;
लत्तिआ } ठा २, ३—पत्र ६३)। २ आतोद्य-विशेष; (ठा २, ३; आचा २, ११, ३)।

लदण } (मा) देखो **रयण**=रत्न; (अभि १८४; प्राकृ
लदन } १०२)।

लद्द सक [**दे**] भार भरना, बोझ डालना, गुजराती में 'लादवुं'। हेकृ—**लद्दउं**; (सुपा २७५)।

लद्दण न [**दे**] भार-क्षेप; (स ५३७)।

लद्दी स्त्री [**दे**]. हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती में 'लीद'; (सुपा १३७)।

लद्ध वि [**लब्ध**] प्राप्त; (भग; उवा; औप; हे ३, २३)।

लद्धि स्त्री [**लब्धि**] १ क्षयोपशम, ज्ञान आदि के आवारक कर्मों का विनाश और उपशान्ति; (विसे २९९७)। २ सामर्थ्य-विशेष, योग आदि से प्राप्त होती विशिष्ट शक्ति; (पव २७०; संबोध २८)। ३ अहिंसा; (पण्ह २, १—पत्र ९९)। ४ प्राप्ति, लाभ; (भग ८, २)। ५ इन्द्रिय और मन से होने वाला विज्ञान, श्रुत ज्ञान का उपयोग; (विसे ४६६)। ६ योग्यता; (अणु)। °**पुलाअ** पुं [°**पुलाक**] लब्धि-विशेष-संपन्न मुनि; "संघाइयाण कज्जे चुण्णिज्जा चक्कवट्टिमवि जीए। तीए लद्धीइ जुओ लद्धिपुलाओ" (संबोध २८)।

लद्धिअ वि [**लब्ध**] प्राप्त; (वै ६९)।

लद्धिल्ल वि [**लब्धिमत्**] लब्धि-युक्त; (पंच १, ७)।

लद्धुं } देखो **लभ**।
लद्धूण }

लप्पसिया स्त्री [**दे**] लपसी, एक प्रकार का पक्वान्न; (पव ४)।

लब्भ नीचे देखो।

लभ सक [**लभ्**] प्राप्त करना। लभइ, लभए; (आचा; कस, विसे १२१५)। भवि—लच्छिमि, लभिस्सं, लभिस्सामि; (उव; महा; पि ५२५)। कर्म—लब्भइ, लब्भइ; (महा ६०, १६; हे १, १८७; ४, २४९; कुमा)। संकृ—ल-भिय, लद्धुं, लद्धूण; (पंच ५, १६४; आचा; काल)। हेकृ—लद्धुं; (काल)। कृ—**लब्भ**; (पण्ह २, १; विसे २८३७; सुपा ११; २३३; स १७५; नाट)।

लय सक [**ला**] ग्रहण करना। लयइ, लयंति; (उव)। कर्म—लइज्जइ, लिज्जइ; (भवि; सिरि ९९३)। वकृ—**लयंत**; (वज्जा २८; महा; सिरि ३७५)। संकृ—**लइ**, **लएवि, लएविणु** (अप); (पिंग; भवि)। देखो **ले**= ला।

लय न [**दे**] नव-दम्पति का आपस में नाम लेने का उत्सव; (दे ७, १६)।

लय देखो **लव**=लव; (गउड; से ५, १४)।

लय पुं [**लय**] १ श्लेष; २ मन की साम्यावस्था; (कुमा)। ३ लीनता, तल्लीनता; ४ तिरोभाव; (विसे २६६६)। ५ संगीत का एक अंग, स्वर-विशेष; (स ७०४; हास्य १२३)।

लय² देखो **लया**। °**हरय** न [°**गृहक**] लता-गृह; (सुपा ३८१)।

लयंग न [**लताङ्ग**] संख्या-विशेष, चौरासी लाख पूर्व; "पुव्वाण सयसहस्सं चुलसीइगुणं लयंगमिह होइ" (जो २)।

लयण वि [**दे**] १ तनु, कृश, क्षाम; (दे ७, २७; पाअ)। २ मृदु, कोमल; ३ न. वल्ली, लता; (दे ७, २७)।

लयण न [**लयन**] १ तिरोभाव, छिपना; (विसे २८१७; दे ७, २४)। २ अवस्थान; (सुर ३, २०६)। ३ देखो **लेण**; (राज)।

लयणी स्त्री [**दे**] लता, वल्ली; (पाअ; षड्)।

लया स्त्री [**लता**] १ वल्ली, वल्लरी; (पण्ण १; गा २८; काप्र ७२३; कुमा; कप्प)। २ प्रकार, भेद; "संघाडो त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठा" (बृह १)। ३ तप-विशेष; (पव २७१)। ४ संख्या-विशेष, चौरासी लाख लतांग-परिमित संख्या; (जो २)। ५ कम्बा, छड़ी, यष्टि;

"कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य" (णाया १, २—पत्र ८६; विपा १, ६—पत्र ६६)। °जुद्ध न [°युद्ध] लड़ने की एक कला, एक तरह का युद्ध; (औप)।

लयापुरिस पुं [दे] वह स्थान जहां पद्म-हस्त स्त्री का चित्रण किया जाय; "पउमकरा जत्थ वहू लिहिज्जए सो लयापुरिसो" (दे ७, २०)।

लल अक [लल्, लड्] १ विलास करना, मौज करना। २ झूलना। ललइ, ललेइ; (प्राकृ ७३; सण; महा; सुपा ४०३)। वकृ—**ललंत, ललमाण**; (गा ४४६; सुर २, २३७; भवि; औप; सुपा १८१; १८७)।

ललणा स्त्री [ललना] स्त्री, महिला, नारी; (तंदु ५०; सुपा ४६७)।

ललाड देखो **णडाल**; (औप; पि २६०)।

ललाम न [ललामन्] प्रधान, नायक; (अभि ६५)।

ललिअ न [ललित] १ विलास, मौज, लीला; (पाअ; पव १६६; औप)। २ अंग-विन्यास-विशेष; (पराह १, ४)। ३ प्रसन्नता, प्रसाद; (विपा १, २ टी—पत्र २२)। ४ वि. क्रीडा-प्रधान, मौजी; (णाया १, १६—पत्र २०५)। ५ शोभा-युक्त, सुन्दर, मनोहर; (णाया १, १; औप; राय)। ६ मंजु, मधुर; (पाअ)। ७ ईप्सित, अभिलषित; (णाया १, ६)। °मित्त पुं [°मित्र] सातवें वासुदेव का पूर्व-जन्मीय नाम; (सम १५३; पउम २०, १७१)। °वित्थरा स्त्री [°विस्तरा] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि का बनाया हुआ एक जैन ग्रन्थ; (चेइय २५६)।

ललिअंग पुं [ललिताङ्ग] एक राज-कुमार; (उप ६८६ टी)।

ललिअय न [ललितक] छन्द-विशेष; (अजि १८)।

ललिआ स्त्री [ललिता] एक पुरोहित-स्त्री; (उप ७२८ टी)।

लल्ल वि [दे] १ स-स्पृह, स्पृहा वाला; २ न्यून, अधूरा; (दे ७, २६)।

लल्ल वि [लल्ल] अव्यक्त आवाज वाला; (पराह १, २)।

लल्लक्क पुं [लल्लक्क] छठवीं नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र १२)।

लल्लक्क वि [दे] १ भीम, भयंकर; (दे ७, १८; पाअ; सुर १६, १४८); "लल्लक्कनरयविभ्रमणाओ" (भत्त ११०)। २ पुं. ललकार, लड़ाई आदि के लिए आह्वान; (उप ७६८ टी)।

लल्लि स्त्री [दे] खुशामद; (धर्मवि ३८; जय १६)।

लल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल-विशेष; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

लव सक [लू] काटना। संकृ—**लविऊण**; हेकृ—**लविउं**; कृ—**लविअव्व**; (प्राकृ ६६)।

लव सक [लप्] बोलना, कहना। लवइ; (कुमा; संबोध १८; सण), लवे; (भास ६६)। वकृ—**लवंत, लवमाण**; (सुपा २६७; सुर ३, ६१)।

लव सक [प्र + वर्तय्] प्रवृत्ति कराना। "णो विज्जू लवंति" (सुज्ज २०)।

लव वि [लप] वाचाट, बकवादी; (सूअ २, ६, १५)।

लव पुं [लव] १ समय का एक सूक्ष्म परिमाण, सात स्तोक, मुहूर्त का सतरहवाँ अंश; (ठा २, ४—पत्र ८६; सम ८५)। २ लेश, अल्प, थोड़ा; (पाअ; प्रासू ६६; ११८; सण)। ३ न. कर्म; (सूअ १, २, २, २०; २, ६, ६)। °सत्तम पुं [°सप्तम] अनुत्तरविमान निवासी देव, सर्वोत्तम देव-जाति; (पराह २, ४; उव; सूअ १, ६, २४)।

लवअ पुं [दे. लवक] गोंद, लासा, चेंप, निर्यास; "लवओ गुंदो" (पाअ)।

लवइअ वि [दे. लवकित] नूतन दल से युक्त, अंकुरित, पल्लवित; (औप; भग; णाया १, १ टी—पत्र ५)।

लवंग पुंन [लवङ्ग] १ वृक्ष-विशेष; (पराण १—पत्र ३४; कुप्र २४६)। २ वृक्ष-विशेष का फूल; (णाया १, १—पत्र १२; पराह २, ५)।

लवण न [लवन] छेदन, काटना; (विसे ३२०६)।

लवण न [लवण] १ लोन, नमक; (कुमा)। २ पुं. रस-विशेष, क्षार रस; (अणु)। ३ समुद्र-विशेष; (सम ६७; णाया १, ६; पउम ६६, १८)। ४ सीता का एक पुत्र, लव; (पउम ६७, १६)। ५ मधुराज का एक पुत्र; (पउम ८६, ४७)। °जल पुं [°जल] लवण समुद्र; (पउम ५७, २७)। °ोय पुं [°ोद] लवण समुद्र; (पउम ६४, १३) देखो **लोण**।

लवणिम पुंस्त्री [लवणिमन्] लावण्य; (कुमा)।

लवल न [लवल] पुष्प-विशेष; (कुमा)।

लवली स्त्री [लवली] लता-विशेष; (सुपा ३८१; कुप्र २४६)।

लवव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ; (षड्)।

लविअ वि [लपित] उक्त, कथित; (सूअ १, ६, ३५; कुमा; सुपा २६७)।

लवित्त न [**लवित्र**] दात, घास काटने का एक औज़ार; (दे १, ८२)।

लविर वि [**लपितृ**] बोलने वाला; (सण)। स्त्री—°रा; (कुमा)।

लस अक [**लस्**] १ श्लेष करना। २ चमकना। ३ क्रीडा करना। लसइ; (प्राकृ ७२)। वकृ—**लसंत**; (सण)।

लसइ पुं [**दे**] काम, कन्दर्प; (दे ७, १८)।

लसक न [**दे**] तरु-चीर, पेड़ का दूध; (दे ७, १८)।

लसण देखो **लसुण**; (सुअ १, ७, १३)।

लसिर वि [**लसितृ**] १ श्लिष्ट होने वाला; २ चमकने वाला, दीप्र; (से ८, ४४)।

लसुअ न [**दे**] तैल, तेल; (दे ७, १८)।

लसुण न [**लशुन**] ल्हसुन, कन्द-विशेष; (श्रा २०)।

लह देखो **लभ**। लहइ, लहेइ, लहए; (महा; पि ४५७)। भवि—लहिस्सामो; (महा)। कर्म—लहिज्जइ; (हे ४, २४९)। वकृ—**लहंत**; (प्रारू)। संकृ—**लहिउं**, **लहिऊण**; (कुप्र १; महा), **लहेप्पि**, **लहेप्पिणु**, **लहेवि** (अप); (पि ५८८)। कृ—**लहणिज्ज**, **लहिअव्व**; (श्रा १४; सुर ६, ५३; सुपा ४२७)।

लहग पुं [**दे**] वासी अन्न में पैदा होने वाला द्वीन्द्रिय कीट-विशेष; (जी १५)।

लहण न [**लभन**] १ लाभ, प्राप्ति; २ ग्रहण, स्वीकार; (श्रा १४)।

लहर पुं [**लहर**] एक वणिक्-पुत्र; (सुपा ६१७)।

लहरि, **लहरी** स्त्री [**लहरि**, °**री**] तरंग, कल्लोल; (सण; प्रासू ६६; कुमा)।

लहाविअ वि [**लम्भित**] प्रापित, प्राप्त कराया हुआ; (कुप्र २३२)।

लहिअ देखो **लद्ध**; (कप्प; पिंग)।

लहिम देखो **लघिम**; (षड्)।

लहु, **लहुअ** वि [**लघु**] १ छोटा, जघन्य; (कुमा; सुपा ३६०; कम्म ४, ७२; महा)। २ हलका; (से ७, ४४; पाअ)। ३ तुच्छ, निःसार; (पण्ह १, २—पत्र २८; पण्ह २, २—पत्र ११९)। ४ श्लाघनीय, प्रशंसनीय; (से १२, ५३)। ५ थोड़ा, अल्प; (सुपा ३५४)। ६ मनोहर, सुन्दर; (हे २, १२२)। स्त्री—°ई, °वी; (षड्; प्राकृ २८; गउड; हे २, ११३)। ७ न. कृष्णागुरु, सुगन्धि धूप-द्रव्य विशेष; ८ वीरण-मूल; (हे २, १२२)। ९ शीघ्र, जल्दी; (द ५६; पण्ह २, २—पत्र ११९)। १० स्पर्श-विशेष; (भग)। ११ लघुस्पर्श-नामक एक कर्म-भेद; (कम्म १, ४१)। १२ पुं. एक मात्रा वाला अक्षर; (हे ३, १३४)। °**कम्म** वि [°**कर्मन्**] जिसके अल्प ही कर्म अवशिष्ट रहे हों, शीघ्र मुक्ति-गामी; (सुपा ३५४)। °**करण** न [°**करण**] दक्षता, चातुर्य; (णाया १, ३—पत्र ९२; उवा)। °**परक्कम** पुं [°**पराक्रम**] ईशानेन्द्र का एक पदाति-सेनापति; (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक)। °**संखिज्ज** न [°**संख्येय**] संख्या-विशेष, जघन्य संख्यात; (कम्म ४, ७२)।

लहुअ सक [**लघय्**, **लघु+कृ**] लघु करना। लहुअंति, लहुएसि; (श्रा २०; गा ३४५)। वकृ—**लहुअंत**; (से १५, २७)।

लहुअवड पुं [**दे**] न्यग्रोध वृक्ष; (दे ७, २०)।

लहुआइअ, **लहुइअ** वि [**लघूकृत**] लघु किया हुआ; (से ६, ४; १२, ५४; स २०७; गउड)।

लहुई देखो **लहु**।

लहुग देखो **लहु**; (कप्प; द ५८)।

लहुवी देखो **लहु**।

लाइअ वि [**लागित**] लगाया हुआ; (से २, २६; वज्जा ५०)।

लाइअ वि [**दे**] १ गृहीत, स्वीकृत; (दे ७, २७)। २ धृष्ट; (से २, २६)। ३ न. भूषा, मण्डन; (दे ७, २७)। ४ भूमि को गोबर आदि से लीपना; (सम १३७; कप्प; औप; णाया १, १ टी—पत्र ३)। ५ चर्मार्ध, आधा चमड़ा; (दे ७, २७)।

लाइअव्व देखो **लाय**=लावय्।

लाइज्जंत देखो **लाय**=लागय्।

लाइम वि [**दे**] १ लाजा के योग्य, खोई के योग्य; २ रोपण के योग्य, बोने लायक; (आचा २, ४, २, १५; दस ७, ३४)।

लाइल्ल पुं [**दे**] वृषभ, बैल; (दे ७, १९)।

लाउ देखो **अलाउ**; (हे १, ६६; भग; कस; औप)।

लाऊ देखो **अलाऊ**; (हे १, ६६; कुमा)।

लाख (अप) देखो **लक्ख**=लक्ष; (पिंग)।

लाग पुं [**दे**] चुंगी, एक प्रकार का सरकारी कर; गुजराती में 'लागो'; (सिरि ४३३; ४३४)।

लाघव न [**लाघव**] लघुता, लघुपन; (भग; कप्प; सुपा १०३; कुप्र ३७७; किरात १६)।

लाघवि वि [**लाघविन्**] लघुता-युक्त, लाघव वाला; (उत्त २६, ४२; आचा)।

लाघविअ न [**लाघविक**] लघुता, लाघव; (ठा ५, ३—पत्र ३४२; विसे ७ टी; सुअ २, १, ५७; भग)।

लाज देखो **लाय**=लाज; (दे ५, १०)।

लाड पुं [**लाट**] देश-विशेष; (सुपा ६५८; कुप्र २५४; सत्त ६७ टी; भवि; सण; इक)।

लाडी स्त्री [**लाटी**] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।

लाढ पुं [**लाढ**] देश-विशेष, एक आर्य देश; (आचा; पत्र २७५; विचार ४६)।

लाढ वि [**दे**] १ निर्दोष आहार से आत्मा का निर्वाह करने वाला, संयमी, आत्म-निग्रही; (सूअ १, १०, ३; सुख २, १८)। २ प्रधान, मुख्य; (उत्त १५, २)। ३ पुं. एक जैन आचार्य; (राज)।

लाण न [**लान**] ग्रहण, आदान; (से ७, ६०)।

लाबू देखो **लाऊ**; (षड्)।

लाभ पुं [**लाभ**] १ नफा, फायदा; (उव; सुख ८, १३)। २ प्राप्ति; (ठा ३, ४)। ३ सूद, ब्याज; (उप ६५७)।

लाभंतराइय न [**लाभान्तरायिक**] लाभ का प्रतिबन्धक कर्म; (धर्मसं ६४८)।

लाभिय } वि [**लाभिक**] लाभ-युक्त, लाभ वाला; (औप;
लाभिल्ल } कर्म १७)।

लाम वि [**दे**] रम्य, सुन्दर; (औप)।

लामंजय न [**दे**] तृण-विशेष, उशीर तृण; (पाअ)।

लामा स्त्री [**दे**] डाकिनी, डाइन; (दे ७, २१)।

लाय सक [**लागय्**] लगाना, जोड़ना। लाएसि; (विसे ४२३)। वकृ—**लायंत**; (भवि)। कवकृ—**लाइज्जंत**; (से १३, १३)। संकृ—**लाइवि** (अप); (हे ४, ३३१; ३७६)।

लाय सक [**लावय्**] १ कटवाना। २ काटना, छेदना। कृ—**लाइअव्व**; (से १५, ७५)।

लाय देखो **लाइअ**=(दे); "लाउल्लोइय—" (औप)।

लाय वि [**लात**] १ आत्त, गृहीत; २ न्यस्त, स्थापित; (औप)। ३ न. लग्न का एक दोष; "लायाइदोसमुक्कं नरवर अइसोहणं लग्गं" (सुपा १०८)।

लाय पुंस्त्री [**लाज**] १ आर्द्र तण्डुल; २ ब. भ्रष्ट धान्य, भुँजा हुआ नाज, खोई; (कप्पू)।

लायण न [**लागन**] लगवाना; (गा ४५८)।

लायण्ण न [**लावण्य**] १ शरीर-सौन्दर्य-विशेष, शरीर-कान्ति; (पाअ; कुमा; सण; पि १८६)। २ लवणत्व, खारत्व; (हे १, १७७; १८०)।

लाल सक [**लालय्**] स्नेह-पूर्वक पालन करना। लालंति; (तंदु ५०)। कवकृ—**लालिज्जंत** (सुर २, ७३; सुपा २४)।

लालंप अक [**वि+लप्**] विलाप करना। लालंपइ; (प्राकृ ७३)।

लालंपिअ न [**दे**] १ प्रवाल; २ खलीन; ३ आक्रन्दित; (दे ७, २७)।

लालंभ देखो **लालंप**। लालंभइ; (प्राकृ ७३)।

लालण न [**लालन**] स्नेह-पूर्वक पालन; (पउम २६, ८८)।

लालप्प देखो **लालंप**। लालप्पइ; (प्राकृ ७३)।

लालप्प सक [**लालप्य्**] १ खूब बकना। २ बारबार बोलना। ३ गर्हित बोलना। लालप्पइ; (सूअ १, १०, १६)। वकृ—**लालप्पमाण**; (उत्त १४, १०; आचा)।

लालप्पण न [**लालपन**] गर्हित जल्पन; (पण्ह १, ३—पत्र ४३)।

लालम्भ } देखो **लालंप**। लालम्भइ, लालम्हइ; (प्राकृ
लालम्ह } ७३; धात्वा १५०)।

लालय न [**लालक**] लाला, लार; (दे ५, १६)।

लालस वि [**दे**] १ मृदु, कोमल; २ इच्छा; (दे ७, २१)।

लालस वि [**लालस**] लम्पट, लोलुप; (पाअ; हे ४, ४०१)।

लाला स्त्री [**लाला**] लार, मुँह से गिरता जल-लव; (औप; गा ५५१; कुमा; सुपा २२६)।

लालिअ देखो **ललिअ**; "कुसुमिअहरिअंदणकणयदंडपरिरंभलालिअंगीओ" (गउड)।

लालिअ वि [**लालित**] स्नेह-पूर्वक पालित; (भवि)।

लालिच (अप) पुं [**नालिच**] वृक्ष-विशेष; (पिंग)।

लालिल्ल वि [**लालावत्**] लार वाला; (सुपा ५३१)।

लाव सक [**लापय्**] बुलवाना, कहलाना। लावएज्जा; (सूअ १, ७, २४)।

लाव देखो **लावग**; (उप ५०७)।

लावंज न [**दे**] सुगन्धी तृण-विशेष, उशीर, खश; (दे ७, २१)।

लावक } पुं [**लावक**] १ पक्षि-विशेष; (विपा १, ७—
लावग } पत्र ७५; पगह १, १—पत्र ८)। २ वि. काटने वाला; (विसे ३२०६)।

लावणिअ वि [**लावणिक**] लवण से संस्कृत; (विपा १, २—पत्र २७)

लावण्ण } देखो **लायण्ण**; (ओप; रंभा; काल; अभि ६२;
लावन्न } भवि)।

लावय देखो **लावग**; (उत्रा)।

लाविय (अप) वि [**लात**] लाया हुआ; (भवि)।

लाविया स्त्री [**दे**] उपलोभन; (सूअ १, २, १, १८)।

लाविर वि [**लवितृ**] काटने वाला; (गा ३५५)।

लास न [**लास्य**] १ भरतशास्त्र-प्रसिद्ध गेयपद आदि; (कुमा)। २ नृत्य, नाच; (पाअ)। ३ स्त्री का नाच; ४ वाद्य, नृत्य और गीत का समुदाय; (हे २, ६२)।

लासक } पुं [**लासक**] १ रास गाने वाला; २ जय-
लासग } शब्द बोलने वाला, भाण्ड; (णाया १, १ टी—पत्र २; औप; पगह २, ४—पत्र १३२; कप्प)।

लासय पुं [**लासक, ह्रासक**] १ अनार्य देश-विशेष; २ पुंस्त्री. अनार्य-देश-विशेष का रहने वाला; . स्त्री—°**सिया**; (औप; णाया १, १—पत्र ३७; इक; अंत)। देखो **ल्हासिय**।

लासयविहय पुं [**दे. लासकविहग**] मयूर, मोर; (दे ७, २१)।

लाह सक [**श्लाघ्**] प्रशंसा करना। लाहइ; (हे १, १८७)।

लाह देखो **लाभ**; (उव; हे ४, ३९०; श्रा १२; णाया १, ६)।

लाहण न [**दे**] भोज्य-भेद, खाद्य वस्तु की भेंट; (दे ७, २१; ६, ७३; सट्ठि ७८ टी; रंभा १३)।

लाहल देखो **णाहल**; (हे १, २५६; कुमा)।

लाहव देखो **लाघव**; (किरात १७)।

लाहवि देखो **लाघवि**; (भवि)।

लाहविय देखो **लाघविअ**; (राज)।

लिअ सक [**लिप्**] लेपन करना, लीपना। लिअइ; (प्राकृ ७१)।

लिअ वि [**लिप्त**] १ लीपा हुआ; (गा ५२८)। २ न. लेप; (प्राकृ ७७)।

लिआर पुं [**लकार**] 'ल' वर्ण; (प्राकृ ६)।

लिंकिअ वि [**दे**] १ आलिंगित; २ लीन; (दे ७, २८)।

लिंखय देखो **लंख**; (सुपा ३५६)।

लिंग सक [**लिङ्ग्**] १ जानना। २ गति करना। ३ आलिंगन करना। कर्म—लिंगिज्जइ; (संबोध ५१)।

लिंग न [**लिङ्ग**] १ चिह्न, निशानी; (प्रासू २४; गउड)। २ दार्शनिकों का वेष-धारण, साधु का अपने धर्म के अनुसार वेष; (कुमा; विसे २५८५ टि; ठा ५, १—पत्र ३०३)। ३ अनुमान प्रमाण का साधक हेतु; (विसे १५५०)। ४ पुंश्चिह्न, पुरुष का असाधारण चिह्न; (गउड)। ५ शब्द का धर्म-विशेष, पुंलिंग आदि; (कुमा; राज)। °**द्धय** पुं [°**ध्वज**] वेष-धारी साधु; (उप ४८६)। °**जीव** पुं [°**जीव**] वही अर्थ; (ठा ५, १)।

लिंगि वि [**लिङ्गिन्**] १ साध्य, हेतु से जानी जाती वस्तु; (विसे १५५०)। २ किसी धर्म के वेष को धारण करने वाला, साधु, संन्यासी; (पउम २२, ३; सुर २, १३०); स्त्री—°**णी**; (पुप्फ ४५४)

लिंगिय वि [**लैङ्गिक**] १ अनुमान प्रमाण; (विसे ६५)। २ किसी धर्म के वेष को धारण करने वाला साधु, संन्यासी; (मोह १०१)।

लिंछ न [**दे**] १ चुल्ली-स्थान, चुल्हा का आश्रय; २ अग्नि-विशेष; (ठा ८ टी—पत्र ४१६)। देखो **लिच्छ**।

लिंड न [**दे**] १ हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती में 'लींद'; (णाया १, १—पत्र ६३; उप २६४ टी; नि २)। २ शेवल-रहित पुराना पानी; (पगह २, ५—पत्र १५१)।

लिंडिया स्त्री [**दे**] अज आदि की विष्ठा; गुजराती में 'लिंडी'; (उप पृ २३७)।

लिंत देखो **ले**=ला।

लिंप सक [**लिप्**] लीपना, लेप करना। लिंपइ; (हे ४, १४९; प्राकृ ७१)। कर्म—लिप्पइ; (आचा)। वकृ—**लिंपेमाण**; (णाया १, ६)। कवकृ—**लिप्पंत, लिप्पमाण**; (संबोध १६५; रयण २६)।

लिंपण न [**लेपन**] लेप, लीपना; (पिंड २४६; सुपा ६१६)।

लिंपाविय वि [**लेपित**] लेप कराया हुआ; (कुप्र १४०)।

लिंपिय वि [**लिप्त**] लीपा हुआ; (कुमा)।

लिंब पुं [**निम्ब**] वृक्ष-विशेष, नीम का पेड़, मराठी में 'लिंब' (हे १, २३०; कुमा; स ३५)।

लिंब पुं [**दे. लिम्ब**] आस्तरण-विशेष; (णाया १, १—प

लिंबड (अप) देखो **लिंब**=निम्ब; गुजराती में 'लिंबडो'; (हे ४, ३८७; पि २४७)।
लिंबोहली स्त्री [**दे**] निम्ब-फल; (सूक्त ८६)।
लिकार देखो **लिआर**; (पि ५६)।
लिक्क अक [**नि+ली**] छिपना। लिक्कइ; (हे ४, ५५; षड्)। वकृ—**लिक्कंत**; (कुमा)।
लिक्ख न [**लेख्य**] लेखा, हिसाब; "लिक्खं गणिऊण चिंतए सिट्ठी" (सिरि ४१८; सुपा ४२५)। देखो **लेक्ख**।
लिक्ख स्त्रीन [**दे**] छोटा स्रोत; (दे ७, २१); स्त्री—°**क्खा**; (दे ७, २१)।
लिक्खा स्त्री [**लिक्षा**] १ लघु यूका; (दे ८, ६६; सं ६७)। २ परिमाण-विशेष; (इक)।
लिखाप (अशो) सक [**लेखय्**] लिखवाना। भवि—लिखापयिस्सं; (पि ७)।
लिखापित (अशो) वि [**लेखित**] लिखवाया हुआ; (पि ७)।
लिच्छ सक [**लिप्स्**] प्राप्त करने को चाहना। लिच्छइ; (हे २, २१)।
लिच्छ देखो **लिंछ**; (ठा ८—पत्र ४३७)।
लिच्छवि देखो **लेच्छइ**=लेच्छकि; (अंत)।
लिच्छा स्त्री [**लिप्सा**] लाभ की इच्छा; (उप ९३०; प्राकृ २३)।
लिच्छु वि [**लिप्सु**] लाभ की चाह वाला; (सुख ६, १; कुमा)।
लिज्जिअ (अप) वि [**लात**] गृहीत; (पिंग)।
लिट्टिअ न [**दे**] १ चाटु, खुशामद; (दे ७, २२)। २ वि. लम्पट, लोलुप; (सुपा ५६३)।
लिट्ठु देखो **लेट्ठु**; (वसु)।
लित्त वि [**लिप्त**] १ लेप-युक्त, लिपा हुआ; (हे १, ६; कुमा; भवि)। २ संवेष्टित; (सूअ १, ३, ३, १३)।
लित्ति पुंस्त्री [**दे**] खड्ग आदि का दोष; (दे ७, २२)।
लिप्प देखो **लित्त**; (गा ५१६; गउड)।
लिप्प देखो **लेप्प**; (कुप्र ३८४)।
लिप्पंत } देखो **लिंप**।
लिप्पमाण }
लिब्भंत देखो **लिह**=लिह्।
लिल्लिर वि [**दे**] १ हरा, आर्द्र; २ हरा रँग वाला; "अइलिल्लिरपट्टबंधणमिसेण चोरसु पट्टबंधं व जो फुडं तत्थ उव्वहइ" (धर्मवि ७३)।
लिवि } स्त्री [**लिपि, °पी**] अक्षर-लेखन-प्रक्रिया; (सम
लिवी } ३५; भग)।
लिस अक [**स्वप्**] सोना, शयन करना। लिसइ; (हे ४, १४६)।
लिस सक [**श्लिष्**] आलिंगन करना। भवि—लिसिस्सामो; (सूअ २, ७, १०)।
लिसय वि [**दे**] तनूकृत, क्षीण; (दे ७, २२)।
लिस्स देखो **लिस**=श्लिष्। लिस्संति; (सूअ १, ४, १, २)।
लिह सक [**लिख्**] १ लिखना। २ रेखा करना। लिहइ; (हे १, १८७; प्राकृ ७०)। कर्म—लिक्खइ; (उव)। प्रयो—लिहावेइ, लिहावंति; (कुप्र ३४८; सिरि १२७८)।
लिह सक [**लिह्**] चाटना। लिहइ; (कुमा; प्राकृ ७०)। कर्म—लिहिज्जइ, लिब्भइ; (हे ४, २४५)। वकृ—**लिहंत**; (भत्त १४२)। कवकृ—**लिब्भंत**; (से ६, ४१)। कृ—**लेज्झ**; (णाया १, १७—पत्र २३२)।
लिहण न [**लेहन**] चाटन; (उर १, ८; षड्; रंभा १६)।
लिहण न [**लेखन**] १ लिखना, लेख; (कुप्र ३६८)। २ रेखा-करण; (तंदु ५०)। ३ लिखवाना; "पवयणलिहणं सहस्से लक्खे जिणभवणकारवणं" (संबोध ३६)।
लिहा स्त्री [**लेखा**] देखो **रेहा**=रेखा; "इक्क चिय मह भइणी मयणा धन्नाण धू(?धु)रि लहइ लिहं" (सिरि ९७७)।
लिहावण न [**लेखन**] लिखवाना; (उप ७२४)।
लिहाविय वि [**लेखित**] लिखवाया हुआ; (स ६०)।
लिहिअ वि [**लिखित**] १ लिखा हुआ; (प्रासू ५८)। २ उल्लिखित; (उवा)। ३ रेखा किया हुआ, चित्रित; (कुमा)।
लिहिअ (अप) वि [**लात**] लिया हुआ, गृहीत; (पिंग)।
लीढ वि [**लीढ**] १ चाटा हुआ; (सुपा ६५१)। २ स्पृष्ट; "नरिंदसिरि(? सिर)कुसुमलीढपायवीढे" (कुप्र ५)। ३ युक्त; (पव १२५)।
लीण वि [**लीन**] लय-युक्त; (कुमा)।
लील पुं [**दे**] यज्ञ; (दे ७, २३)।
लीला स्त्री [**लीला**] १ विलास, मौज; २ क्रीड़ा; (कुमा; पाअ; प्रासू ६१)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ विलास-वती स्त्री; (प्रासू ६१)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**वह** वि [°**वह**] लीला-वाहक; (गउड)।
लीलाइअ न [**लीलायित**] १ क्रीड़ा, केलि; (कप्पू)। २ प्रभाव; "धम्मस्स लीलाइयं" (उप १०३१ टी)।

लीलाय सक [**लीलाय्**] लीला करना । वकृ—**लीलायंत**; (गाया १, १—पत्र १३; कप्प)। कृ—**लीलाइयव्व**; (गउड)।

लीव पुं [**दे**] बाल, बालक; (दे ७, २२; सुर १५, २१८)।

लीहा देखो **लिहा**; (गाया १, ८—पत्र १४५; कुमा; भवि; सुपा १०६; १२४)।

लुअ सक [**लू**] छेदना, काटना । लुएज्जा; (पि ४७३)।

लुअ देखो **लुंप**। लुअइ; (प्राकृ ७१)।

लुअ वि [**लून**] काटा हुआ, छिन्न; (हे ४, २५८; गा ८; से ३, ४२; दे ७, २३; सुर १३, १७५; सुपा ५२४)।

लुअ वि [**लुप्त**] १ जिसका लोप किया गया हो वह; २ न. लोप; (प्राकृ ७७)।

लुअंत वि [**लूनवत्**] जिसने छेदन किया हो वह; (धात्वा १५१)।

लुंक वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ; (दे ७, २३)।

लुंकणी स्त्री [**दे**] लुकना, छिपना; (दे ७, २४)।

लुंख पुं [**दे**] नियम; (दे ७, २३)।

लुंखाय पुं [**दे**] निर्णय; (दे ७, २३)।

लुंखिअ वि [**दे**] कलुष, मलिन; (से १५, ४२)।

लुंच सक [**लुञ्च्**] १ बाल उखाड़ना । २ अपनयन करना, दूर करना । लुंचइ; (भवि)। भूका—लुंचिंसु; (आचा)।

लुंचिअ वि [**लुञ्चित**] केश-रहित किया हुआ, मुण्डित; (कुप्र २६२; सुपा ६४१)।

लुंछ सक [**मृज्, प्र+उञ्छ्**] मार्जन करना, पोंछना । लुंछइ; (हे ४, १०५; प्राकृ ६७; धात्वा १५१)। वकृ—**लुंछंत**; (कुमा)।

लुंट सक [**लुण्ट्**] लूटना । लुंटंति; (सुपा ३५२)। वकृ—**लुंटंत**; (धर्मवि १२३)। कवकृ—**लुंटिज्जंत**; (सुर २, १४)।

लुंटण न [**लुण्टन**] लूट; (सुर २, ४६; कुमा)।

लुंटाक वि [**लुण्टाक**] लूटने वाला, लुटेरा; (धर्मवि १२३)।

लुंठग वि [**लुण्ठक**] खल, दुर्जन; "चेडवंदवेढिआ उवहसिज्जमाणा लुंठगलोएण, अणुकंपिज्जंती धम्मिअजणेण" (सुख २, ६)।

लुंठिअ वि [**लुण्ठित**] बलाद् गृहीत, जबरदस्ती से लिया हुआ; (पिंग)।

लुंप सक [**लुप्**] १ लोप करना, विनाश करना । २ उत्पीड़न करना । लुंपइ, लुंपंति; (प्राकृ ७१; सूअ १, ३, ४, ५)। कर्म—लुप्पइ; (आचा); लुप्पंति; (सूअ १, २, १, १३)। कवकृ—**लुप्पंत, लुप्पमाण**; (पि ५४२; उत्त)। संकृ—**लुंपित्ता**; (पि ५८२)।

लुंपइत्तु वि [**लोपयितृ**] लोप करने वाला; (आचा; सूअ २, २, ६)।

लुंपणा स्त्री [**लोपना**] विनाश; (पण्ह १, १—पत्र ६)।

लुंपित्तु वि [**लोप्तृ**] लोप करने वाला; (आचा)।

लुंबी स्त्री [**दे. लुम्बी**] १ स्तबक, फलों का गुच्छा; (दे ७, २८; कुमा; गा ३२२; कुप्र ४३०)। २ लता, वल्ली; (दे ७, २८)।

लुक्क अक [**नि+ली**] लुकना, छिपना । लुक्कइ; (हे ४, ५५; षड्)। वकृ—**लुक्कंत**; (कुमा; वज्जा ५६)।

लुक्क अक [**तुड्**] टूटना । लुक्कइ; (हे ४, ११६)।

लुक्क वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ; (षड्)।

लुक्क वि [**निलीन**] लुका हुआ, छिपा हुआ; (गा ४६; ५५८; पिंग)।

लुक्क वि [**रुग्ण**] १ भग्न; (कुमा)। २ बिमार, रोगी; (हे २, २)।

लुक्क वि [**लुञ्चित**] मुण्डित, केश-रहित; (कप्प; पिंड २१७)।

लुक्कमाण देखो **लोअ**=लोक्।

लुक्किअ वि [**तुडित**] टूटा हुआ, खण्डित; (कुमा)।

लुक्किअ वि [**निलीन**] लुका हुआ, छिपा हुआ; (पिंग)।

लुक्ख पुं [**रूक्ष**] १ स्पर्श-विशेष, लूखा स्पर्श; (ठा १; सम ४१)। २ वि. रूक्ष स्पर्श वाला, स्नेह-रहित, लूखा; (णाया १, १—पत्र ७३; कप्प; औप)। देखो **लूह**=रूक्ष।

लुग्ग वि [**दे. रुग्ण**] १ भग्न, भाँगा हुआ; (दे ७, २३; हे २, २; ४, २५८)। २ रोगी, बिमार; (हे २, २; ४, २५८; षड्)।

लुच्छ देखो **लुंछ**=मृज्। लुच्छइ; (षड्)।

लुट्ट सक [**लुण्ट्**] लूटना । लुट्टइ; (षड्)।

लुट्ट देखो **लोट्ट**=स्वप् । लुट्टइ; (कुमा ६, १००)।

लुट्ट वि [**लुण्टित**] लूटा गया; (धर्मवि ७)।

लुट्ठ पुं [**लोष्ट**] रोड़ा, ईंट आदि का टुकड़ा; (दे ७, २६)।

लुड्ड देखो **लुद्ध**; (प्राकृ २१)।

लुढ अक [**लुठ्**] लुढकना, लेटना । वकृ—**लुढमाण**; (स २५४)।

२)। ३ न. तप-विशेष, निर्विकृतिक तप; (संबोध ५८)। देखो **लुक्ख**।

लूहिय वि [**रूक्षित**] पोंछा हुआ; (णाया १,१—पत्र १६; कप्प; औप)।

ले सक [**ला**] लेना, ग्रहण करना। लेइ; (हे ४, २३८; कुमा)। वकृ—**लिंत**; (सुपा ५३२; पिंग)। संकृ—**लेवि** (अप); (हे ४, ४४०)। हेकृ—**लेविणु** (अप); (हे ४, ४४१)।

लेक्ख न [**लेख्य**] १ व्यवहार, व्यापार; (सुपा ४२४)। २ लेखा, हिसाब; (कुप्र २३८)।

लेक्खा देखो **लिहा**; (गउड)।

लेख देखो **लेह**=लेख; (सम ३५)।

लेखापित देखो **लिखापित**; (पि ७)।

लेच्छइ पुं [**लेच्छकि**] १ क्षत्रिय-विशेष; २ एक प्रसिद्ध राज-वंश; (सुअ १, १३, १०; भग; कप्प; औप; अंत)।

लेच्छइ पुं [**लिप्सुक, लेच्छकि**] १ वणिक्, वैश्य; २ एक वणिग्-जाति; (सुअ २, १, १३)।

लेच्छारिय वि [**दे**] खरण्टित, लिप्त; (पिंड २१०)।

लेज्झ देखो **लिह**=लिह्।

लेट्ठु पुंन [**लेष्टु**] रोड़ा, ईंट पत्थर आदि का टुकड़ा; (विसे २४६६; औप; उव; कप्प; महा)।

लेडु } पुंन [**दे, लेष्टु**] ऊपर देखो; (पाअ; दे ७, २४)।
लेडुअ }

लेडुक्क पुं [**दे**] १ रोड़ा, लोष्ट; २ वि. लम्पट; (दे ७, २६)।

लेढिअ न [**दे**] स्मरण, स्मृति; (दे ७, २५)।

लढुक्क पुं [**दे**] रोड़ा, लोष्ट; (दे ७, २४; पाअ)।

लेण न [**लयन**] १ गिरि-वर्ती पाषाण-गृह; (णाया १, २—पत्र ७६)। २ बिल, जन्तु-गृह; (कप्प)। °**विहि** पुंस्त्री [°**विधि**] कला-विशेष; (औप)। देखो **लयण**=लयन।

लेप्प न [**लेप्य**] भित्ति, भींत; (धर्मसं २६; कुप्र ३००)।

लेलु देखो **लेडु**; (आचा; सुअ २, २, १८; पिंड ३४६)।

लेव पुं [**लेप**] १ लेपन; (सम ३६; पउम २, २८)। २ नाभि-प्रमाण जल; (ओघभा ३४)। ३ पुं. भगवान् महावीर के समय का नालंदा-निवासी एक गृहस्थ; (सुअ २, ७, २)। °**कड**, °**ंड** वि [°**कृत**] लेप-मिश्रित; (ओघ ५६५; पत्र ४ टी—पत्र ४६; पडि)।

लेवण न [**लेपन**] लेप-करण; (पत्र १३३)।

लेस पुं [**लेश**] १ अल्प, स्तोक, लव, थोड़ा; (पाअ; दे ७, २८)। २ संक्षेप; (दे १)।

लेस वि [**दे**] १ लिखित; २ आश्वस्त; ३ निःशब्द, शब्द-रहित; ४ पुं. निद्रा; (दे ७, २८)।

लेस पुं [**श्लेष**] संश्लेष, संबन्ध, मिलान; (राय)।

लेसण न [**श्लेषण**] ऊपर देखो; (विसे ३००७)।

लेसणया } स्त्री [**श्लेषणा**] ऊपर देखो; (औप; ठा ४, ४—पत्र २८०; राज)।
लेसणा }

लेसणी स्त्री [**श्लेषणी**] विद्या-विशेष; (सुअ २, २, २७; णाया १, १६—पत्र २१३)।

लेसा स्त्री [**लेश्या**] १ तेज, दीप्ति; २ मंडल, बिम्ब; "चंदस्स लेसं आवरेत्ताणं चिट्ठइ" (सम २६)। ३ किरण; (सुज्ज १६)। ४ देह-सौन्दर्य; (राज)। ५ आत्मा का परिणाम-विशेष, कृष्णादि द्रव्यों के सांनिध्य से उत्पन्न होने वाला आत्मा का शुभ या अशुभ परिणाम; ६ आत्मा के शुभ या अशुभ परिणाम की उत्पत्ति में निमित्त-भूत कृष्णादि द्रव्य; (भग; उवा; औप; पव १५२; जीवस ७४; संबोध ४८; पण्ण १७; कम्म ४, १; ६; ३१)।

लेसिय वि [**श्लेषित**] श्लेष-युक्त; (स ७६२)।

लेस्सा देखो **लेसा**; (भग)।

लेह देखो **लिह**=लिख्। लेहइ; (प्राकृ ७०)।

लेह देखो **लिह**=लिह्। लेहइ; (प्राकृ ७०)।

लेह (अप) देखो **लह**=लभ्। लेहइ; (पिंग)।

लेह पुं [**लेह**] अवलेह, चाटन; (पउम २, २८)।

लेह पुं [**लेख**] १ लिखना, लेखन, अक्षर-विन्यास; ([illegible] २४४; उवा)। २ पत्र, चिट्ठी; (कप्पू)। ३ देव, देवता; ४ लिपि; ५ वि. लेख्य, जो लिखा जाय; (हे २, १८९); ६ लेखक, लिखने वाला; "अज्जवि लेहत्तणे तरहा" (वज्जा १००)। °**वाह** वि [°**वाह**] चिट्ठी ले जाने वाला, पत्र-वाहक; (पउम ३१, १; सुपा ५१६)। °**वाहग**, °**वाह**[**य**] वि [°**वाहक**] वही अर्थ; (सुपा ३३१; ३३२)। °**सा**[**ला**] स्त्री [°**शाला**] पाठशाला; (उप ७२८ टी)। °**[आ]य**[**रि**]**य** पुं [°**चार्य**] उपाध्याय, शिक्षक; (महा)।

लेहड वि [**दे**] लम्पट, लुब्ध; (दे ७, २५; वव)।

लेहण न [**लेहन**] चाटन, आस्वादन; (पउम ३, १०७)।

लेहणी स्त्री [**लेखनी**] कलम, लेखिनी; (पउम २६, ५; २४४)।

लेहल देखो **लेहड**; (गा ४६१)।

लेहा देखो **लिहा**; (औप; कप्प; कप्पू; कुप्र ३६६; स्वप्न ५२)।
लेहिय वि [**लेखित**] लिखवाया हुआ; (ती ७)।
लेहुड पुं [**दे**] लोष्ट, रोड़ा, ढेला; (दे ७, २४)।
लोअ देखो **रोअ**=रोचय्। संकृ—लोएया; (कस)।
लोअ सक [**लोक्, लोकय्**] देखना। वकृ—**लोअअंत**; (नाट)। कवकृ—**लुक्कमाण**; (उप १४२ टी)। संकृ—**लोइउं**; (कुप्र ३)।
लोअ पुं [**लोक**] १ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों का आधार-भूत आकाश-क्षेत्र, जगत, संसार, भुवन; २ जीव, अजीव आदि द्रव्य; ३ समय, आवलिका आदि काल; ४ गुण, पर्याय, धर्म; ५ जन, मनुष्य आदि प्राणि-वर्ग; (ठा १—पत्र १३; टी—पत्र १४; भग; हे १, १८०; कुमा; जी १४; प्रासू ५२; ७१; उव; सुर १, ६६)। ६ आलोक, प्रकाश; (वज्जा १०६)। °**ग्ग** न [°**ग्र**] १ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, मुक्त-स्थान; (णाया १, ५—पत्र १०५; इक)। २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण; (पाअ)। °**ग्गथूभिआ** स्त्री [°**ग्रस्तूपिका**] मुक्त-स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (इक)। °**ग्गपडिबुज्झणा** स्त्री [°**ग्रप्रतिबोधना**] वही अर्थ; (इक)। °**णाभि** पुं [°**नाभि**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। °**प्पवाय** पुं [°**प्रवाद**] जन-श्रुति, कहावत; (सुर २, ४७)। °**मज्झ** पुं [°**मध्य**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। °**वाय** पुं [°**वाद**] जन-श्रुति, लोकोक्ति; (स २६०; मा ४८)। °**गास** पुं [°**काश**] लोक-क्षेत्र, अलोक-भिन्न आकाश; (भग)। °**हाणय** न [°**भाणक**] कहावत, लोकोक्ति; (भवि)। देखो **लोग**।
लोअ पुं [**लोच**] लुञ्चन, केशों का उत्पाटन; (सुपा ६४१; कुप्र १७३; णाया १, १—पत्र ६०; औप; उव)।
लोअ पुं [**लोप**] अ-दर्शन, विध्वंस; (चेइय ६६१)।
लोअंतिय पुं [**लोकान्तिक**] एक देव-जाति; (कप्प)।
लोअग न [**दे. लोचक**] गुण-रहित अन्न, खराब नाज; (कस)।
लोअडी (अप) स्त्री [**लोमपटी**] कम्बल; (हे ४, ४२३)।
लोअण पुंन [**लोचन**] आँख, चक्षु, नेत्र; (हे १, ३३; २, १८४; कुमा; पाअ; सुर २, २२२)। °**वत्त** न [°**पत्र**] अक्षि-लोम, बरवनी, पद्म; (से ६, ६८)।
लोअणिल्ल वि [**लोचनवत्**] आँख वाला; (सुपा २००)।
लोअाणी स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ३६)।
लोइअ वि [**लोकित**] निरीक्षित, दृष्ट; (मा २७१; स ७१३)।
लोइअ वि [**लौकिक**] लोक-संबन्धी, सांसारिक; (आचा; विपा १, २—पत्र ३०; णाया १, ६—पत्र १६६)।
लोउत्तर वि [**लोकोत्तर**] लोक-प्रधान, लोक-श्रेष्ठ, असाधारण; "लोउत्तरं चरिअं" (श्रा १६; विसे ८७०)। देखो **लोगुत्तर**।
लोउत्तरिय वि [**लोकोत्तरिक**] ऊपर देखो; (श्रा १)।
लोंक वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ; (दे ७, २३)।
लोग देखो **लोअ**=लोक; (ठा ३, २; ३, ३—पत्र १४; कप्प; कुमा; सुर १, ७६; हे १, १७७; प्रासू २५; ४७)। ७ न. एक देव-विमान; (सम २५)। °**कंत** न [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**कूड** न [°**कूट**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**ग्गचूलिआ** स्त्री [°**ग्रचूलिका**] मुक्त-स्थान, सिद्धि-शिला; (सम २२)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] लोक-व्यवहार; (णाया १, २—पत्र ८८)। °**ट्ठिइ** स्त्री [°**स्थिति**] लोक-व्यवस्था; (ठा ३, ३)। °**दव्व** न [°**द्रव्य**] जीव, अजीव आदि पदार्थ-समूह; (भग)। °**नाभि** पुं [°**नाभि**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५ टी—पत्र ७७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] जगत का स्वामी, परमेश्वर; (सम १; भग)। °**परिपूरणा** स्त्री [°**परिपूरणा**] ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, मुक्त-स्थान; (सम २२)। °**पाल** पुं [°**पाल**] इन्द्रों के दिक्पाल, देव-विशेष; (ठा ३, १; औप)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**बिंदुसार** पुंन [°**बिन्दुसार**] चौदहवाँ पूर्व-ग्रन्थ; (सम ४४)। °**मज्झावसिअ** पुंन [°**मध्यावसित**] अभिनय-विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८५)। °**मज्झावसाणिअ** पुंन [°**मध्यावसानिक**] वही अर्थ; (राय)। °**रूव** न [°**रूप**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**लेस** न [°**लेश्य**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] एक देव-विमान; (सम २५) °**वाल** देखो °**पाल**; (कुप्र १३५)। °**वीर** पुं [°**वीर**] भगवान् महावीर; (उव)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**सिट्ठ** न [°**सृष्ट**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**हिअ** न [°**हित**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**यय** न [°**ायत**] नास्तिक-प्रणीत शास्त्र, चार्वाक-दर्शन; (णंदि)। °**लोग** पुंन [°**लोक**] परिपूर्ण आकाश-क्षेत्र, संपूर्ण जगत; (उव; पि २०२)। °**वत्त** न [°**ावर्त**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**क्खाण** न [°**ाख्यान**] लोकोक्ति, जन-श्रुति; (उप ५३० टी)।
लोगंतिय देखो **लोअंतिय**; (पि ४६३)।

लोगिग देखो **लोइअ**=लौकिक; (सं १२४८)।

लोगुत्तर देखो **लोउत्तर**। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] एक देव-विमान; (सम २५)।

लोगुत्तरिय देखो **लोउत्तरिय**; (७६५)।

लोट्ट अक [**स्वप्**] लोटना, सोना। लोट्टइ; (हे ४, १४६)। वकृ—**लोट्टय**; (पाअ)।

लोट्ट अक [**लुठ्**] १ लेटना। २ प्रवृत्त होना। लोट्टइ, लोट्टंती; (प्राकृ ७२; सुअ १, ४, ..)। वकृ—**लोट्टंत**; (सुपा ४६८)।

लोट्ट } पुं [**दे**] १ कचा चावल; (दे ७, ४)। २ पुंस्त्री. **लोट्टय** } हाथी का छोटा बच्चा; (णा १, १—पत्र ६३), स्त्री—°**ट्टिया**; (णाया १, १)।

लोट्टिअ वि [**दे**] उपविष्ट; (दे ७, २)।

लोट्ठ वि [**दे**] स्मृत; (षड्)।

लोट्ठु पुं [**लोष्ट**] रोड़ा, ढेला; (७, ४)।

लोडाविअ वि [**लोटित**] घुमाया हुआ; (गा ७८६)।

लोढ सक [**दे**] कपास निकालना। गुजराती में 'लोढवुं'। वकृ—**लोढयंत**; (राज)।

लोढ पुं [**दे**] १ लोढ़ा, शिलापुत्र, पीसने का पत्थर; (दस ५, १, ४५; उवा)। २ ओषधि-विशेष, पद्मिनीकन्द; (पत्र ४; श्रा २०; संबोध ४४)। ३ वि. स्मृत। ४ शांत; (दे ७, २६)।

लोढय पुं [**दे. लोढक**] कपास से बीज निकालने का यन्त्र; (गउड)।

लोढिअ वि [**लोठित**] लेटवाया गया, सोवाया हुआ; (पउम ६१, ६७)।

लोण न [**लवण**] १ लून, नमक। २ लावण्य, शरीर-कान्ति; (गा ३१६; कुमा)। ३ पुं. वृक्ष-विशेष; (पउम ४२, ७; श्रा २०; पत्र ४)। ४—देखो **लवण**; (हे १, १७१; प्राप्र; गउड; औप)।

लोणिय वि [**लावणिक**] लवण-युक्त, लवण-संबन्धी; (ओघ ७७६)।

लोण्ण न [**लावण्य**] शरीर-कान्ति (प्राकृ ५)।

लोत्त न [**लोप्त्र**] चोरी का माल; (स १७३)।

लोद्ध पुं [**लोध्र**] वृक्ष-विशेष; (णाया १, १—पत्र ६५; पराग १; सुअ १, ४, २, ७; औप; कुमा)। देखो **लुद्ध**=लोध्र।

लोद्ध देखो **लुद्ध**=लुब्ध; (पाअ; हे ३, ४७; १०, २२३; प्राप्र)।

लोप्प देखो **लुंप**। "जो एवं वायं लोप्पइ सो तिनिवि लोप्पयंतो किं कयावि धम्मिउं पारोयइ" (स ४६२)।

लोभ सक [**लोभय्**] लुभाना, लालच देना। कवकृ—**लोभिज्जंत**; (सुपा ६१)।

लोभ पुं [**लोभ**] लालच, तृष्णा; (आचा; कप्प; औप; उव; ठा ३, ४)। २ वि. लोभ-युक्त; (पडि)।

लोभि } वि [**लोभिन्**] लोभ वाला; (कम्म ४, ४०; **लोभिल्ल** } पउम ४, ४६)।

लोम पुंन [**लोम**] रोम, रोआँ, रुँगटा; (उवा)। °**पक्खि** पुं [°**पक्षिन्**] रोम के पँख वाला पक्षी; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °**स** वि [°**श**] लोम-युक्त; (गउड)। °**हत्थ** पुं [°**हस्त**] पींछी, रोमों का बना हुआ झाड़ू; (विपा १, ७—पत्र ७८; औप; णाया १, २)। °**हरिस** पुं [°**हर्ष**] १ नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २७)। २ रोमाञ्च, रोमों का खड़ा होना; (उत्त ५, ३१)। °**हार** पुं [°**हार**] मार कर धन लूटने वाला चोर; (उत्त ६, २८)। °**ाहार** पुं [°**ाहार**] रुँगटों से लिया जाता आहार, त्वचा से ली जाती खुराक; (भग; सुमनि १७१)।

लोमसी स्त्री [**दे**] १ ककड़ी, खीरा; (उप पृ २५२)। २ वल्ली-विशेष, ककड़ी का गाछ; (वव १)।

लोर पुंन [**दे**] १ नेत्र, आँख; २ अश्रु, आँसू; (पिंग)।

लोल अक [**लुठ्**] १ लेटना। २ सक. विलोडन करना। लोलइ; (पिंड ४२२; पिंग), "लोलेइ रक्खसबलं" (पउम ७१; ४०)। वकृ—**लोलंत**, **लोलमाण**; (कप्प; पिंग; पउम ५३, ७६)।

लोल सक [**लोठय्**] लेटाना। लोलेइ, लोलेमि; (उवा)।

लोल वि [**लोल**] १ लम्पट, लुब्ध, आसक्त; (णाया १, १ टी—पत्र ५; औप; कप्प; पाअ; सुपा ३६५)। २ पुं. रत्नप्रभा नरक का एक नरकावास; (ठा ६—पत्र ३६५; देवेन्द्र ३०)। ३ शर्कराप्रभा-नामक द्वितीय नरक-पृथिवी का नवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान; (देवेन्द्र ७)। °**मज्झ** पुं [°**मध्य**] नरकावास-विशेष; (ठा ६ टी—पत्र ३६७)। °**सिट्ठ** पुं [°**शिष्ट**] नरकावास-विशेष; (ठा ६ टी)। °**ावत्त** पुं [°**ावर्त**] नरकावास-विशेष; (ठा ६ टी; देवेन्द्र ७)।

लोलंठिअ न [**दे**] चाटु, खुशामद; (दे ७, २२)।

लोलण न [**लोठन**] १ लेटना, घोलन; (सुअ १, ५, १, १७)। २ लेटवाना; (उप ५१०)।

लोलपच्छ पुं [**लोलपाक्ष**] नरक-स्थान-विशेष; (देवेन्द्र ३०)।